



Dedicated to the Glory of Our Lord Jesus Christ



For Stephanie

31st July 2025



OFFICIAL OPEN BIBLE 0.1

[www.openbible.uk](http://www.openbible.uk)



Attribution-ShareAlike 4.0 International

CC BY-SA 4.0

Deed

<https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

**Visit above to see the legal code**

**You are free to:**

**Share — copy and redistribute the material in any medium or format for any purpose, even commercially.**

**Adapt — remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.**

**The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.**

**Under the following terms:**

**Attribution —**

**You must give appropriate credit , provide a link to the license, and indicate if changes were made . You may do so in any reasonable manner, but not in any way**

**that suggests the licensor  
endorses you or your use.**

**ShareAlike —**

**If you remix, transform, or  
build upon the material, you  
must distribute your  
contributions under the same  
license as the original.**

**No additional restrictions — You may not apply legal  
terms or technological  
measures that legally restrict  
others from doing anything  
the license permits.**

**Notices:**

**You do not have to comply with the license for elements  
of the material in the public domain or where your use is  
permitted by an applicable exception or limitation .**

**No warranties are given. The license may not give you all  
of the permissions necessary for your intended use. For  
example, other rights such as publicity, privacy, or moral  
rights may limit how you use the material**

**Basically it's open source**



## We Are OTB – The Open Bible

The English Bible (especially the King James and modern versions) is the most read and distributed book in human history, by a wide margin. It is likely the book that the greatest number of humans — alive or dead — have read, heard, or encountered.

### Yet there is a problem

Access to modern English Bibles is more restricted than most people realise. Bible publishing has become big business. Many English translations are locked behind copyright, owned by publishers who control how, where, and when the Bible can be used. This creates serious barriers.

If you want to use Scripture in study, teaching, apps, websites, or creative work, you'll quickly hit licensing restrictions. These legal limits stop people from freely sharing, quoting, or adapting God's Word.

### What these restrictions mean in practice:

- **Teachers and Pastors:** Can't freely prepare and distribute teaching materials.
- **App Developers:** Can't build open, free Bible apps using modern translations.
- **Content Creators:** Must navigate copyright minefields just to use Bible verses in books, podcasts, or videos.

- **Missionaries and Ministries:** Face red tape and licensing costs for global distribution.
- **Simplified Versions:** Hard to legally create versions for children, non-native English speakers, or those with limited literacy.

**Even the Authorised Version (KJV) — which many assume is copyright-free — is *not* fully free. In the UK, the nation of the "Native" English Speakers. It is still under Crown Copyright and subject to controlled use in England, Wales, and Scotland. While the English language is used abroad, the English people can't legally use the most famous English version in England, Wales, or Scotland without permission. The indigenous users of the language that spawned the most read book in all of human history (the KJV) are still not free to print it.**

**The Bible should be freely available. But today, it's often treated like a product.**

# **Public Domain Doesn't Solve the Problem**

**Public domain Bibles sound like a solution — but they come with issues of their own:**

- 1. They're outdated: Most are over a century old (e.g., KJV, ASV), using archaic language that's difficult for modern readers, or partially copyrighted due to geography.**
- 2. They're vulnerable: Newer public domain Bibles (like BSB or WEB) can be taken, altered, and then locked behind new copyrights. This has already happened.**

**Take the ASV as an example:**

**While the ASV is in the public domain, every major update to it has become restricted:**

- RSV – copyrighted**
- NASB – copyrighted**
- AMP – copyrighted**
- ESV – copyrighted (from RSV)**

**Nothing in the ASV prevented these updates from becoming proprietary. Public domain doesn't guarantee future freedom.**

## **The Open Bible: A New Approach**

**The Open Bible (OTB) is designed to fix this. It's published under a Creative Commons ShareAlike (CC-BY-SA) licence, which protects your right to use, adapt, and share — not just now, but forever.**

- **It stays free:** Any future versions must also stay open. This “copyleft” model ensures the Bible cannot be locked down again.
- **It's free to use:** You can quote it, teach from it, build on it, translate it, even sell it — with no special permission required.

**This is the power of open source. It protects not just the present, but the future of Scripture.**

## **More Than a Translation — This Is a Movement**

**The Open Bible isn't just another translation. It's a mission to reclaim the Bible as a truly public book — one that is:**

- **Free from licensing control**
- **Open to all**
- **Accessible in modern English**
- **Protected against future restrictions**





## उत्पत्ति

**1** आदि में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सुषिक्षा।<sup>2</sup> पृथ्वी सूनी और आकाशहीन थी, गहरे जल पर अंधकार छाया हुआ था, और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडरा रहा था।<sup>3</sup> तब परमेश्वर ने कहा, "उजाला हो," और उजाला हो गया।<sup>4</sup> परमेश्वर ने देखा कि उजाला अच्छा है, और उसने उजाले को अंधकार से अलग किया।<sup>5</sup> परमेश्वर ने उजाले को दिन कहा, और अंधकार को रात कहा। सांझ हुई और भीर हुई—पहला दिन।<sup>6</sup> परमेश्वर ने कहा, "पानी के बीच एक स्थान हो जो नीचे के पानी को ऊपर के पानी से अलग करे!"<sup>7</sup> इस प्रकार परमेश्वर ने आकाशमंडल बनाया और उसके नीचे के पानी को ऊपर के पानी से अलग किया। और ऐसा ही हुआ।<sup>8</sup> परमेश्वर ने आकाशमंडल को 'आकाश' कहा। सांझ हुई और भीर हुई—दूसरा दिन।<sup>9</sup> परमेश्वर ने कहा, "आकाश के नीचे के जल एक स्थान पर इकट्ठा हों ताकि सूखी भूमि धूरिखाइ दे।"<sup>10</sup> और ऐसा ही हुआ।<sup>11</sup> परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, और इकट्ठे जल को समुद्र कहा। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।<sup>12</sup> फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी पर वनस्पति उत्पन्न हो—बीज देने वाले पौधे और फलदार वृक्ष, प्रत्येक अपनी जाति के अनुसार।"<sup>13</sup> और ऐसा ही हुआ।<sup>14</sup> पृथ्वी ने बीज देने वाले पौधे और फलदार वृक्ष उत्पन्न किए, जिनमें बीज था, प्रत्येक अपनी जाति के अनुसार। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।<sup>15</sup> सांझ हुई और भीर हुई—तीसरा दिन।<sup>16</sup> परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ हों जो दिन को रात से अलग करें, और वे ऋतुएँ, दिन और रव्श चिह्नित करें।"<sup>17</sup> और वे पृथ्वी पर प्रकाश डालें।<sup>18</sup> और ऐसा ही हुआ।<sup>19</sup> परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई—बड़ी ज्योति दिन पर शासन करने के लिए, और छोटी ज्योति रात पर शासन करने के लिए। उसने तारों को भी बनाया।<sup>20</sup> परमेश्वर ने उहें आकाश में रखा ताकि वे पृथ्वी पर प्रकाश डालें,<sup>21</sup> दिन और रात पर शासन करने के लिए, और उजाले को अंधकार से अलग करने के लिए। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।<sup>22</sup> सांझ हुई और भीर हुई—चौथा दिन।<sup>23</sup> परमेश्वर ने कहा, "जल में जीवित प्राणी भैंसें, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश में उड़ें।"<sup>24</sup> इस प्रकार परमेश्वर ने बड़े समुद्री जीव और जल में हर प्रकार के जीवित प्राणी बनाए, और हर प्रकार के पंख वाले पक्षी। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।<sup>25</sup> फिर परमेश्वर ने उहें आशीर्वाद दिया और कहा, "फलों और बढ़ों, समुद्र को भर दो; और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।"<sup>26</sup> सांझ हुई और भीर हुई—पाँचवाँ दिन।<sup>27</sup> परमेश्वर ने कहा, "परमेश्वर भी पाए जाते हैं।"<sup>28</sup> और ऐसा ही हुआ।<sup>29</sup> परमेश्वर ने उहें बनाया। वे मछलियाँ, पक्षियाँ, पशुओं, पूरी पृथ्वी, और भूमि पर रेंगने वाले सभी जीवों पर शासन करें।<sup>30</sup> इस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाए, हमारे समान। वे मछलियाँ, पक्षियाँ, पशुओं, पूरी पृथ्वी, और भूमि पर रेंगने वाले सभी जीवों पर शासन करें।<sup>31</sup> फिर परमेश्वर की छवि में उसने उहें बनाया—पुरुष और महिला उसने उहें बनाया।<sup>32</sup> परमेश्वर ने उहें आशीर्वाद दिया और कहा, "फलों और बढ़ों; पृथ्वी को भर दो और उसे वश में करो। मछलियाँ, पक्षियाँ, और पृथ्वी पर चलने वाले हर जीव पर शासन करो।"<sup>33</sup> फिर परमेश्वर ने कहा, "देखो, मैं तुम्हें हर बीज देने वाला पौधा देता हूँ जो पूरी पृथ्वी पर है और हर वृक्ष जिसका फल बीज वाला है। वे तुम्हारे भोजन के लिए होंगे।"<sup>34</sup> और सभी पशुओं, पक्षियों और हर जीवित प्राणी को मैं हर हरी पौधे देता हूँ।<sup>35</sup> और ऐसा ही हुआ।<sup>36</sup> परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, उस पर दृष्टि डाली, और यह बहुत ही अच्छा था। सांझ हुई और भीर हुई—छठा दिन।

**2** इस प्रकार आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का निर्माण पूरा हुआ।<sup>37</sup> सातवें दिन तक, परमेश्वर ने अपना सारा कार्य पूरा कर लिया, और वह अपने सारे श्रम से विश्राम करने लगे।<sup>38</sup> परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीर्वाद दिया और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उस दिन उहोंने अपनी सारी सुषिक्षा के कार्य से विश्राम किया।<sup>39</sup> यह आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्णन है जब वे बनाए गए थे, जब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।<sup>40</sup> अब तक कोई ज्ञाती या पौधा नहीं उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने वर्षा नहीं की थी, और मिट्टी को जोतने के लिए कोई नहीं था।<sup>41</sup> इसके बजाय, पृथ्वी से धारा उठी और उसने भूमि की पूरी सतह को सीधा।<sup>42</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य की मिट्टी की धूल से बनाया और उसके नधनों में जीवन की श्वास फूंकी, और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।<sup>43</sup> और यहोवा परमेश्वर ने पूर्वी की ओर एदेन में एक बगीचा लगाया, और वहाँ उसने उस मनुष्य को रखा जिसे उसने बनाया था।<sup>44</sup> भूमि से यहोवा परमेश्वर ने हर प्रकार के वृक्ष को उगाया—जो देखने में सुंदर और खाने में अच्छा था। जीवन का वृक्ष बीजे के बीच में था, और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष भी।<sup>45</sup> एदेन से एक नदी बीजे को सीधे के लिए बहती थी, और वहाँ से वह चार धाराओं में विभाजित हो गई।<sup>46</sup> पहली का नाम पिशेशन है; यह हविला की पूरी भूमि में बहती है, जहाँ सोना है।<sup>47</sup> उस भूमि का सोना शुद्ध है; वहाँ सुगंधित राल और ओनिक्स पत्थर भी पाए जाते हैं।<sup>48</sup> दूसरी नदी का नाम गीहोन है;

## उत्पत्ति

यह कूश की पूरी भूमि में घूमती है।<sup>14</sup> तीसरी नदी तिप्रिस है, यह अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी युफ्रेटस है।<sup>15</sup> यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को लिया और उसे एदेन के बगीचे में रखा ताकि वह उसकी देखभाल करे और उसे काम में लगाए।<sup>16</sup> और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, “तू बगीचे के किसी भी वृक्ष का फल स्वतंत्रता से खा सकता है,<sup>17</sup> परंतु भले और बुरे के जान के वृक्ष का फल तू नहीं खाएगा, क्योंकि जब तू उससे खाएगा तो निश्चित रूप से मर जाएगा।”<sup>18</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊंगा जो उसके लिए उपयुक्त हो।”<sup>19</sup> अब यहोवा परमेश्वर ने भूमि से मैदान के हर जीव और आकाश के हर पक्षी को बनाया था। वह उन्हें मनुष्य के पास लाए ताकि वह देखे कि वह उन्हें क्या नाम देगा, और जो कुछ भी मनुष्य ने हर जीवित प्राणी को कहा, वही उसका नाम हुआ।<sup>20</sup> इस प्रकार मनुष्य ने सभी पशुओं, आकाश के पक्षियों और जंगली जानवरों के नाम रखे। परंतु आदम के लिए कोई उपयुक्त सहायक नहीं मिला।<sup>21</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य पर गहरी नींद डाली, और जब वह सो रहा था, उसने उसकी एक पसली निकाल ली और उसकी जगह मांस भर दिया।<sup>22</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने उस पसली से एक स्त्री का निर्माण किया और उसे मनुष्य के पास लाया।<sup>23</sup> और मनुष्य ने कहा, “यह अब मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस है; इसे स्त्री कहा जाएगा, क्योंकि यह ‘पुरुष’ से निकाली गई है।”<sup>24</sup> इसी कारण एक पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पती से जुड़ जाएगा, और वे एक शरीर हो जाएंगे।<sup>25</sup> और मनुष्य और उसकी पती दोनों नन्हे और उन्हें कोई लज्जा नहीं थी।

**3** अब सर्प किसी भी जंगली प्राणी से अधिक चतुर था जिसे यहोवा परमेश्वर ने बनाया था। उसने स्त्री से कहा, “क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा, ‘तुम बगीचे के किसी भी वृक्ष का फल नहीं खा सकते?’”<sup>26</sup> स्त्री ने सर्प से कहा, “हम बगीचे के वृक्षों का फल खा सकते हैं,<sup>27</sup> परंतु बगीचे के बीच में जो वृक्ष है, उसके विषय में परमेश्वर ने कहा, ‘तुम उसे न खाओ और न उसे कुओं, नहीं तो तुम मर जाओगे।’”<sup>28</sup> सर्प ने कहा, “तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे।”<sup>29</sup> क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जब तुम इसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे, भले और बुरे को जानने वाले।<sup>30</sup> जब स्त्री ने देखा कि वह वृक्ष भोजन के लिए अच्छा है, देखने में मनोहर है, और बुद्धि प्राप्त करने के लिए वांछनीय है, तो उसने उसका फल लिया और खा लिया। उसने अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी खा

लिया।<sup>31</sup> तब दोनों की आँखें खुल गईं, और उन्हें पता चला कि वे नम्र हैं। इसलिए उन्होंने अंजीर के पते जोड़कर अपने लिए लंगोट बनाए।<sup>32</sup> उन्होंने दिन की ठंडक में यहोवा परमेश्वर की आवाज़ सुनी जो बगीचे में चल रहा था, और वे यहोवा परमेश्वर से बगीचे के वृक्षों के बीच छिप गए।<sup>33</sup> परंतु यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को पुकारा, “तुम कहाँ हो?”<sup>34</sup> उसने उत्तर दिया, “मैंने बगीचे में आपकी आवाज़ सुनी और मैं डर गया क्योंकि मैं नम्र था, इसलिए मैं छिप गया।”<sup>35</sup> परमेश्वर ने कहा, “तुमसे किसे कहा कि तुम नम्र हो? क्या तुमने उस वृक्ष का फल खाया जिससे मैंने तुम्हें खाने को मना किया था?”<sup>36</sup> मनुष्य ने उत्तर दिया, “जो स्त्री आपने मेरे साथ रहने को दी—उसने मुझे उस वृक्ष का फल दिया, और मैंने खा लिया।”<sup>37</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा: “क्योंकि तूने यह किया है, तू सब पशुओं और जंगली जानवरों से अधिक शापित है। तू अपने पेट के बल चेपेगा और जीवन भर धूँध खाएगा।”<sup>38</sup> और मैं तुझमें और स्त्री में, और तेरे वंश और उसके वंश में तेरे उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल देगा, और तू उसकी एड़ी को ढसेगा।”<sup>39</sup> स्त्री से उसने कहा: “मैं तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ा में बच्चों को जन्म देगी। तेरा अभिलाषा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुत्व करेगा।”<sup>40</sup> मनुष्य से उसने कहा: “क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और उस वृक्ष का फल खाया जिससे मैंने तुझे खाने को मना किया था, इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू जीवन भर दुःख के साथ उससे भोजन प्राप्त करेगा।”<sup>41</sup> यह तेरे लिए कैंट और ऊँटकटरे उत्पन्न करेगी, और तू खेतों की वनस्पति खाएगा।<sup>42</sup> तू अपने माथे के पसीने से रोती खाएगा जब तक कि तू भूमि में लौट न जाए, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू मिट्टी है, और मिट्टी में ही लौट जाएगा।”<sup>43</sup> मनुष्य ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि वह सब जीवितों की माता बनी।<sup>44</sup> यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए और उन्हें पहनाया।<sup>45</sup> और यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मनुष्य अब हम में से एक के समान हो गया है, भले और बुरे को जानने वाला। अब ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और जीवन के वृक्ष से भी ले और खा ले, और सदा जीवित रहे।”<sup>46</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर ने उसे अदन की वाटिका से निकाल दिया ताकि वह उस भूमि को जोत सके जिससे वह लिया गया था।<sup>47</sup> मनुष्य को निकालने के बाद, उसने जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा के लिए करूँबों और एक जलती हुई तलवार को जो इधर-उधर घूमती थी, रखा।

## उत्पत्ति

**4** अब आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ संबंध बनाए, और वह गर्भवती हुई और कैन को जन्म दिया। उसने कहा, "प्रभु की सहायता से मैंने एक पुरुष को जन्म दिया है।"<sup>2</sup> बाद में उसने उसके भाई हाबिल को जन्म दिया। अब हाबिल भेड़-बकरियों का पालन करता था, और कैन भूमि की खेती करता था।<sup>3</sup> समय के साथ, कैन ने भूमि की उपज में से प्रभु के लिए एक भेट चढ़ाई।<sup>4</sup> और हाबिल ने भी अपनी भेड़-बकरियों के कुछ पहलौठे के मोटे भागों को भेट के रूप में चढ़ाया। प्रभु ने हाबिल और उसकी भेट पर कृपा दृष्टि की,<sup>5</sup> परंतु कैन और उसकी भेट पर उसने कृपा दृष्टि नहीं की। इसलिए कैन बहुत क्रोधित हो गया, और उसका चेहरा उत्तर गया।<sup>6</sup> तब प्रभु ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित है? औं तेरा चेहरा क्यों उत्तर हुआ है?" यदि तू सही करेगा, तो क्या तू स्वीकार नहीं होगा? परंतु यदि तू सही नहीं करेगा, तो पाप तेरे द्वार पर धार लगाए बैठत है; उसकी इच्छा तुझ पर अधिकार करना की है, परंतु तुझे उस पर अधिकार करना होगा।"<sup>7</sup> कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "चलो मैदान में चलें।" और जब वे मैदान में थे, कैन ने अपने भाई हाबिल के विरुद्ध उठकर उसे मार डाला।<sup>8</sup> तब प्रभु ने कैन से कहा, "तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उसने उत्तर दिया, "मुझे नहीं पता। क्या मैं अपने भाई का रक्षक हूँ?"<sup>9</sup> प्रभु ने कहा, "तूने क्या किया है? सुन! तेरे भाई का खून मुझसे भूमि से पुकार रहा है।"<sup>10</sup> अब तू शापित और भूमि से निष्कासित है, जिसने अपना मुँह खोलकर तेरे हाथ से तेरे भाई का खून ग्रहण किया है।<sup>11</sup> जब तू भूमि की खेती करेगा, तो वह अब तुझे अपनी उपज नहीं देगी। तू पृथ्वी पर एक बैचैन भटकने वाला होगा।"<sup>12</sup> कैन ने प्रभु से कहा, "मेरा दंड सहन करने से अधिक है।"<sup>13</sup> आज तू मुझे भूमि से निकाल रहा है, और मैं तेरी उपस्थिति से छिपा रहूँगा। मैं पृथ्वी पर एक भगोड़ा और भटकने वाला होऊँगा, और जो कोई मुझे पाएगा वह मुझे मार डालेगा।"<sup>14</sup> परंतु प्रभु ने उससे कहा, "ऐसा नहीं होगा! जो कोई कैन को मराएगा, वह सात गुना प्रतिशोध भुगतेगा।"<sup>15</sup> तब प्रभु ने कैन पर एक निशान लगाया ताकि जो कोई उसे पाए वह उसे न मारे।<sup>16</sup> इसलिए कैन प्रभु की उपस्थिति से निकलकर अदन के पूर्व में नोड देश में बस गया।<sup>17</sup> कैन ने अपनी पत्नी को जाना, और वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्म दिया। कैन ने एक नगर बनाया और उसका नाम अपने पुत्र हनोक के नाम पर रखा।<sup>18</sup> हनोक से इरद उत्पन्न हुआ। इरद से महूयाएल उत्पन्न हुआ, महूयाएल से मतूशाएल उत्पन्न हुआ, और मतूशाएल से लामेक उत्पन्न हुआ।<sup>19</sup> लामेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया, एक का नाम आदा और दूसरी का नाम सिल्ला था।<sup>20</sup> आदा ने याबाल को जन्म दिया; वह उन लोगों का पिता था जो

तंबुओं में रहते हैं और पश्चात्तलन करते हैं।<sup>21</sup> उसके भाई का नाम युबाल था; वह उन सभी का पिता था जो तार वाले वायं यंत्र और बांसुरी बजाते हैं।<sup>22</sup> सिल्ला ने भी एक पुत्र को जन्म दिया, तुबाल-कैन, जो कांसे और लोहे के सभी प्रकार के औजार बनाता था। तुबाल-कैन की बहन का नाम नामा था।<sup>23</sup> लामेक ने अपनी पतियों से कहा: "आदा और सिल्ला, मेरी आवाज़ सुनो; लामेक की पतियाँ, मेरे शब्दों पर ध्यान दो। मैंने एक व्यक्ति को मारा है जिसकी उसने मुझे घायल किया, एक युवा व्यक्ति को क्योंकि उसने मुझे चोट पहुँचाई।"<sup>24</sup> यदि कैन का सात गुना प्रतिशोध होता है, तो लामेक का सत्तर-सात गुना।<sup>25</sup> आदम ने फिर अपनी पत्नी को जाना, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शेत रखा, यह कहते हुए, "परमेश्वर ने मुझे हाबिल के स्थान पर एक और संतान दी है, क्योंकि कैन ने उसे मार डाला।"<sup>26</sup> शेष से भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम एनोश रखा। उस समय लोग प्रभु के नाम को पुकारने लगे।

**5** यह आदम की पीढ़ियों की पुस्तक है। जब परमेश्वर ने मानवजाति को बनाया, तो उसने उहँवें परमेश्वर की समानता में बनाया।<sup>2</sup> उसने उहँवें नर और नारी के रूप में बनाया और उहँवें आशीर्वद दिया। और उनके सृजन के दिन उहँवें 'मानवजाति' नाम दिया।<sup>3</sup> जब आदम 130 वर्ष का था, तब उसने अपनी ही समानता में, अपनी छवि के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न किया, और उसका नाम शेत रखा।<sup>4</sup> शेष का पिता बनने के बाद, आदम 800 वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>5</sup> इस प्रकार आदम की कुल आयु 930 वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>6</sup> जब शेष 105 वर्ष का था, तब उसने एनोश को उत्पन्न किया।<sup>7</sup> एनोश का पिता बनने के बाद, शेष 807 वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>8</sup> शेष की कुल आयु 912 वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>9</sup> जब एनोश 90 वर्ष का था, तब उसने केनान को उत्पन्न किया।<sup>10</sup> केनान का पिता बनने के बाद, एनोश 815 वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>11</sup> एनोश की कुल आयु 905 वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>12</sup> जब केनान 70 वर्ष का था, तब उसने महललेल को उत्पन्न किया।<sup>13</sup> महललेल का पिता बनने के बाद, केनान 840 वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>14</sup> केनान की कुल आयु 910 वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>15</sup> जब महललेल 65 वर्ष का था, तब उसने यारेद को उत्पन्न किया।<sup>16</sup> यारेद का पिता बनने के बाद, महललेल 830 वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी

## उत्पत्ति

हुई।<sup>17</sup> महललेल की कुल आयु ८९५ वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>18</sup> जब यारेद १६२ वर्ष का था, तब उसने हनोक को उत्पन्न किया।<sup>19</sup> हनोक का पिता बनने के बाद, यारेद ८०० वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>20</sup> यारेद की कुल आयु ९६२ वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>21</sup> जब हनोक ६५ वर्ष का था, तब उसने मतूशेलह को उत्पन्न किया।<sup>22</sup> मतूशेलह का पिता बनने के बाद, हनोक ३०० वर्ष का परमेश्वर के साथ चलता रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>23</sup> हनोक की कुल आयु ३६५ वर्ष की हुई।<sup>24</sup> हनोक परमेश्वर के साथ चलता रहा; फिर वह नहीं रहा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।<sup>25</sup> जब मतूशेलह १८७ वर्ष का था, तब उसने लेमेक को उत्पन्न किया।<sup>26</sup> लेमेक का पिता बनने के बाद, मतूशेलह ७८२ वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>27</sup> मतूशेलह की कुल आयु ९६९ वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>28</sup> जब लेमेक १८२ वर्ष का था, तब उसने एक पुत्र उत्पन्न किया।<sup>29</sup> उसने उसका नाम नूह रखा और कहा, “यह हमें हमारे श्रम और हमारे हाथों की पीड़ादायक मेहनत से आराम देगा, जो उस भूमि के कारण है जिसे यहोवा ने साधित किया है।”<sup>30</sup> नूह का पिता बनने के बाद, लेमेक ५९५ वर्ष जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ भी हुईं।<sup>31</sup> लेमेक की कुल आयु ७७७ वर्ष की हुई, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।<sup>32</sup> जब नूह ५०० वर्ष का था, तब उसने शेम, हाम, और याफेत को उत्पन्न किया।

**6** जब मनुष्यों ने पृथ्वी पर बढ़ना शुरू किया और उनके लिए पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं, <sup>2</sup> तो परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्यों की पुत्रियाँ सुरक्षा हैं, और उन्होंने उन में से जिसे चाहा, उसे अपनी पत्नी बना लिया।<sup>3</sup> तब यहोवा ने कहा, “मेरा आत्मा मनुष्य के साथ सदा विवाद नहीं करेगा, क्योंकि वे नश्वर हैं; उनके दिन १२० वर्ष होंगा।”<sup>4</sup> उन दिनों पृथ्वी पर नफीलीम थे—और बाद में भी—जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों के पास गए और उनसे संतान उत्पन्न की। वे प्राचीन समय के वीर पुरुष थे, प्रसिद्ध पुरुष।<sup>5</sup> यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टा बहुत बढ़ गई है, और उसके हृदय की हर कल्पना निरंतर बुरी ही होती है।<sup>6</sup> यहोवा ने पछताया कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया, और उसका हृदय अत्यंत दुखी हुआ।<sup>7</sup> इसलिए यहोवा ने कहा, “मैं मनुष्य को, जिसे मैंने बनाया है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा—मनुष्य, पश्च, रोगने वाले जीव, और आकाश के पक्षी—क्योंकि मुझे पछतावा है कि मैंने उन्हें बनाया।”<sup>8</sup> परन्तु नूह ने यहोवा की वृष्टि में अनुग्रह पाया।<sup>9</sup> यह नूह की

वंशावली है। नूह अपने समय के लोगों में धर्मी और निर्दोष पुरुष था, और वह परमेश्वर के साथ चलता था।<sup>10</sup> नूह के तीन पुत्र थे: शेम, हाम, और याफेत।<sup>11</sup> अब पृथ्वी परमेश्वर की वृष्टि में भ्रष्ट हो गई थी, और वह हिंसा से भर गई थी।<sup>12</sup> परमेश्वर ने पृथ्वी को देखा और देखा कि वह भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि सभी प्राणी पृथ्वी पर अपनी चाल भ्रष्ट कर चुके थे।<sup>13</sup> इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, “मैं सभी लोगों का अंत करने जा रहा हूँ, क्योंकि पृथ्वी उनके कारण हिंसा से भर गई है। मैं निश्चित रूप से उन्हें और पृथ्वी की नष्ट कर दूँगा।”<sup>14</sup> अपने लिए देवदार की लकड़ी का एक जहाज बनाओ। उसमें कमरे बनाओ और उसे भीतर और बाहर पिच से लेप करो।<sup>15</sup> इसे इस प्रकार बनाना: जहाज की लंबाई ३०० हाथ, चौड़ाई ५० हाथ, और ऊँचाई ३० हाथ होनी चाहिए।<sup>16</sup> इसके लिए एक छत बनाओ, छत के नीचे चारों ओर एक हाथ ऊँचा खुला स्थान छोड़ो। जहाज के किनारे में एक दरवाजा लगाओ और निचले, मध्य, और ऊपरी डेक बनाओ।<sup>17</sup> मैं पृथ्वी पर जलप्रलय लाने जा रहा हूँ ताकि आकाश के नीचे का हर जीवित प्राणी नष्ट हो जाए—हर प्राणी जिसमें जीवन की सांस है। पृथ्वी पर सब कुछ नष्ट हो जाएगा।<sup>18</sup> परन्तु मैं तुम्हारे साथ अपनी चाचा स्थापित करूँगा, और तुम जहाज में प्रवेश करोगे—तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पत्नी, और तुम्हारे पुत्रों की पत्रियाँ तुम्हारे साथ।<sup>19</sup> तुम हर जीवित प्राणी में से दो को, नर और मादा, जहाज में लाओ ताकि वे तुम्हारे साथ जीवित रहें।<sup>20</sup> हर प्रकार के पक्षी, हर प्रकार के पशु और हर प्रकार के रेंगने वाले जीव में से दो तुम्हारे पास आएँगे ताकि वे जीवित रहें।<sup>21</sup> तुम हर प्रकार के खाने योग्य भेजन को इकट्ठा करके अपने और उनके लिए भोजन के रूप में रख लो।<sup>22</sup> नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।

**7** तब यहोवा ने नूह से कहा, “तू और तेरे सारे परिवार के लोग जहाज में प्रवेश करो, क्योंकि मैंने इस पीढ़ी में तुझे धर्मी पाया है।<sup>2</sup> साफ़ पशुओं में से हर प्रकार के सात जोड़े, नर और मादा, और अशुद्ध पशुओं में से हर प्रकार के एक जोड़े, नर और मादा, अपने साथ ले लो।<sup>3</sup> और पक्षियों में से भी हर प्रकार के सात जोड़े, नर और मादा, ताकि उनकी संतानि पृथ्वी पर जीवित रहे।<sup>4</sup> क्योंकि सात दिन बाद मैं पृथ्वी पर चालीस दिन और चालीस रात तक वर्षा करने वाला हूँ, और मैं पृथ्वी के चेहरे से हर जीवित वस्तु को मिटा दूँगा जिसे मैंने बनाया है।<sup>5</sup> और नूह ने वह सब किया जो यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।<sup>6</sup> जब पृथ्वी पर जलप्रलय आया, तब नूह की आयु छह सौ वर्ष की थी।<sup>7</sup> और नूह, उसके पुत्र, उसकी पत्नी और उसके पुत्रों की पत्रियाँ जलप्रलय के जल से

## उत्पत्ति

बचने के लिए जहाज़ में प्रवेश कर गए।<sup>8</sup> साफ़ और अशुद्ध पशुओं के जोड़े, पक्षियों के जोड़े, और ज़मीन पर रँगने वाले सभी जीवों के जोड़े,<sup>9</sup> नर और मादा, नूह के पास आए और जहाज़ में प्रवेश किए, जैसा कि परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी।<sup>10</sup> और सात दिन बाद जलप्रलय का जल पृथ्वी पर आया।<sup>11</sup> नूह के जीवन के छह सौवें वर्ष में, दूसरे महीने के सत्रहवें दिन—उस दिन महान गहराई के सभी सोते फूट पड़े, और आकाश की खिड़कियाँ खुल गईं।<sup>12</sup> और पृथ्वी पर चालीस दिन और चालीस रात तक वर्षा हुई।<sup>13</sup> उसी दिन नूह ने जहाज़ में प्रवेश किया, उसके पुत्र शेम, हाम, और याफ़ेत, उसकी पत्नी और उसके तीनों पुत्रों की पत्रियाँ थी।<sup>14</sup> उनके साथ हर प्रकार के जंगली जानवर, पशु, ज़मीन पर रँगने वाले जीव, और पक्षी—हर प्रकार के पंख वाले जीव थे।<sup>15</sup> जीवन की सांस लेने वाले सभी जीवों के जोड़े नूह के पास आए और जहाज़ में प्रवेश किए।<sup>16</sup> प्रवेश करने वाले सभी जीवों के नर और मादा थे, जैसा कि परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। तब यहोवा ने उसे अंदर बंद कर दिया।<sup>17</sup> चालीस दिन तक जलप्रलय पृथ्वी पर आता रहा, और जैसे-जैसे जल बढ़ता गया, जहाज़ पृथ्वी से ऊँचा उठता गया।<sup>18</sup> जल पृथ्वी पर बहुत बढ़ गया, और जहाज़ जल की सतह पर तैरता रहा।<sup>19</sup> वे बहुत ऊँचे उठे, और उन्होंने पूरे आकाश के नीचे के सभी ऊँचे पहाड़ों को ढक लिया।<sup>20</sup> जल पहाड़ों से पंद्रह हाथ ऊपर तक बढ़ गया।<sup>21</sup> पृथ्वी पर चलने वाली हर जीवित वस्तु नष्ट हो गई—पक्षी, पशु, जंगली जानवर, पृथ्वी पर रँगने वाले सभी जीव, और सभी मानव।<sup>22</sup> सूखी भूमि पर जो कुछ भी जीवन की सांस लेता था, वह सब मर गया।<sup>23</sup> पृथ्वी के चेहरे से हर जीवित वस्तु मिटा दी गई। केवल नूह और जो उसके साथ जहाज़ में थे, वही बचे।<sup>24</sup> जल ने पृथ्वी को एक सौ पचास दिन तक ढके रखा।

**8** परन्तु परमेश्वर ने नूह और सब वन्य पशुओं और घरेलू पशुओं को, जो उसके साथ जहाज़ में थे, स्मरण किया, और उसने पृथ्वी पर एक वायु भेजी, और जल घटने लगा।<sup>2</sup> तब गहरे के सोते और आकाश के झारोखे बंद हो गए, और आकाश से वर्षा रुक गई।<sup>3</sup> जल पृथ्वी से लगातार घटता गया। सौ पचास दिन के अंत में जल कम हो गया,<sup>4</sup> और सातवें महीने के सत्रहवें दिन जहाज़ अरारात के पहाड़ों पर ठहर गया।<sup>5</sup> जल दसवें महीने तक घटता रहा, और दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई देने लगीं।<sup>6</sup> चालीस दिन और बीतने के बाद नूह ने जहाज़ में बनाई खिड़की खोली<sup>7</sup> और एक कौवा भेजा, और वह तब तक इधर-उधर उड़ता रहा जब तक कि पृथ्वी से जल सूख नहीं गया।<sup>8</sup> फिर उसने एक कबूतर भेजा कि देखे कि क्या भूमि की सतह

से जल घट गया है।<sup>9</sup> परन्तु कबूतर को कहीं विश्राम का स्थान न मिला, क्योंकि सारी पृथ्वी की सतह पर जल था; इसलिए वह नूह के पास जहाज़ में लौट आया। उसने हाथ बढ़ाकर कबूतर को पकड़ा और उसे अपने पास जहाज़ में ले लिया।<sup>10</sup> उसने सात दिन और प्रतीक्षा की और फिर से कबूतर को जहाज़ से बाहर भेजा।<sup>11</sup> शाम को कबूतर उसके पास लौटा, और उसके चोंच में एक ताजा तोड़ा हुआ जैतून का पत्ता था। तब नूह ने जान लिया कि पृथ्वी से जल घट गया है।<sup>12</sup> उसने सात दिन और प्रतीक्षा की और फिर से कबूतर को बाहर भेजा, परन्तु इस बार वह उसके पास नहीं लौटा।<sup>13</sup> नूह के छः सौ एकवें वर्ष के पहले महीने के पहले दिन तक पृथ्वी से जल सूख गया था। नूह ने जहाज़ का आवरण हटाया और देखा कि भूमि की सतह सूखी है।<sup>14</sup> दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन तक पृथ्वी पूरी तरह सूख गई थी।<sup>15</sup> तब परमेश्वर ने नूह से कहा,<sup>16</sup> “तू अपनी पत्नी और अपने पुत्रों और उनकी पत्रियों के साथ जहाज़ से बाहर आ।<sup>17</sup> अपने साथ जो भी जीवित प्राणी हैं—सब पक्षी, पशु, और जो भी भूमि पर रँगने वाले जीव हैं—उड़ें बाहर ले आ ताकि वे पृथ्वी पर फैल सकें और बढ़ें।”<sup>18</sup> इसलिए नूह अपने पुत्रों, अपनी पत्नी और अपने पुत्रों की पत्रियों के साथ बाहर आया।<sup>19</sup> सब पशु, सब रँगने वाले जीव और सब पक्षी—जो कुछ भी पृथ्वी पर चलता है—परिवारों के अनुसार जहाज़ से बाहर आए।<sup>20</sup> तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और शुद्ध पक्षियों में से कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया।<sup>21</sup> यहोवा ने उस सुखद सुर्योद को सूँघा और अपने मन में कहा, “मैं फिर कभी मनुष्य के कारण भूमि को शाप नहीं दूँगा, यद्यपि मनुष्य के हृदय की कल्पनाँ बचपन से ही बुरी होती हैं। और मैं फिर कभी सब जीवित प्राणियों का विनाश नहीं करूँगा जैसा कि मैंने किया है।<sup>22</sup> जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने का समय, ठड़ और गर्भी, ग्रीष्म और शीत, दिन और रात कभी समाप्त नहीं होगा।”

**9** तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीर्वाद दिया और उससे कहा, “फलवत हो और बढ़ो, और पृथ्वी को भर दो।<sup>2</sup> तुम्हारा भय और डर पृथ्वी के सभी पशुओं पर, और हर पक्षी पर, हर जीव पर जो भूमि पर चलता है, और समुद्र की सभी मछलियों पर पड़ुआ—वे तुम्हारे हाथ में दिए गए हैं।<sup>3</sup> जो कुछ भी जीवित है और चलता है वह तुम्हारे लिए भोजन होगा। जैसे मैंने तुम्हें हरी पौधें दी थीं, वैसे ही अब मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ।<sup>4</sup> परन्तु तुम ऐसा मास न खाना जिसमें उसका जीवनरक्त अभी भी हो।<sup>5</sup> और तुम्हारे जीवनरक्त के लिए मैं अवश्य ही हिसाब मांगूँगा। मैं इसे हर पशु से और हर मनुष्य से भी

## उत्पत्ति

मांगूंगा। मैं दूसरे व्यक्ति के जीवन के लिए हिसाब मांगूंगा।<sup>6</sup> जो कोई मनुष्य का रक्त बहाता है, उसका रक्त मनुष्यों द्वारा बहाया जाएगा; क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया है।<sup>7</sup> तुम्हारे लिए, फलवंत हो और बढ़ो; पृथ्वी पर फैल जाओ और इसे भर दो।<sup>8</sup> तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा:<sup>9</sup> “अब मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतानों के साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ”<sup>10</sup> और हर जीवित प्राणी के साथ जो तुम्हारे साथ है—पक्षी, पशु, और सभी वन्य पशु, वे सब जो तुम्हारे साथ जहाज से बाहर आए—पृथ्वी के हर जीवित प्राणी के साथ।<sup>11</sup> मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ: फिर कभी जलप्रलय से सभी जीवन नष्ट नहीं होगा; फिर कभी पृथ्वी को नष्ट करने के लिए बाढ़ नहीं आएगी।<sup>12</sup> और परमेश्वर ने कहा, “यह वाचा का चिन्ह है जो मैं अपने और तुम्हारे और तुम्हारों साथ के हर जीवित प्राणी के बीच स्थापित कर रहा हूँ, आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए;<sup>13</sup> मैंने अपना इंद्रधनुष बाढ़ों में रखा है, और यह मेरे और पृथ्वी के बीच वाचा का चिन्ह होगा।<sup>14</sup> जब भी मैं पृथ्वी पर बाढ़ लाऊंगा और आकाश में इंद्रधनुष दिखाई देगा,<sup>15</sup> मैं अपने और तुम्हारे और हर प्रकार के सभी जीवित प्राणियों के बीच अपनी वाचा को याद करूँगा। फिर कभी जलप्रलय सभी जीवन को नष्ट करने के लिए नहीं आएगा।<sup>16</sup> जब भी आकाश में इंद्रधनुष दिखाई देगा, मैं उसे देखूँगा और पृथ्वी पर हर प्रकार के सभी जीवित प्राणियों के साथ परमेश्वर और उनके बीच की अनन्त वाचा को याद करूँगा।<sup>17</sup> इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, “यह वह वाचा का चिन्ह है जो मैंने अपने और पृथ्वी पर सभी जीवन के बीच स्थापित किया है।”<sup>18</sup> नूह के पुत्र जो जहाज से बाहर आए थे, वे शेम, हाम, और याफ़त थे। हाम कनान का पिता था।<sup>19</sup> ये नूह के तीन पुत्र थे, और उनसे पूरी पृथ्वी की जनसंख्या बढ़ी।<sup>20</sup> नूह, जो भूमि का व्यक्ति था, ने एक दाख की बारी लगाना शुरू किया।<sup>21</sup> जब उसने उसकी कुछ शराब पी, तो वह नशे में हो गया और अपने तंबू के अंदर नम्र होकर लेट गया।<sup>22</sup> हाम, कनान का पिता, ने अपने पिता की नगरा देखी और बाहर अपने दोनों भाइयों को बताया।<sup>23</sup> परन्तु शेम और याफ़त ने एक वस्त लिया, पीछे की ओर चले और अपने पिता की नगरा को ढक दिया। उनके चेहरे मुड़े हुए थे ताकि वे उसे न देख सकें।<sup>24</sup> जब नूह जागा और उसे पता चला कि उसके छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया है,<sup>25</sup> तो उसने कहा, “कनान शापित हो! वह अपने भाइयों का सबसे नीच दास होगा।”<sup>26</sup> उसने यह भी कहा, “यहोवा, शेम का परमेश्वर, धन्य हो! कनान शेम का सेवक हो।”<sup>27</sup> परमेश्वर याफ़ेन्त के क्षेत्र का विस्तार करे! वह शेम के तंबूओं में

निवास करे, और कनान उसका सेवक हो।”<sup>28</sup> नूह बाढ़ के बाद 350 वर्ष जीवित रहा।<sup>29</sup> नूह कुल 950 वर्ष जीवित रहा, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।

**10** ये नूह के पुत्रों की पीढ़ियों का वर्णन है: शेम, हाम, और याफ़त। जलप्रलय के बाद उनके पुत्र उत्पन्न हुए।<sup>2</sup> याफ़त के पुत्र: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबाल, मेशेक, और तीरास।<sup>3</sup> गोमेर के पुत्र: अश्कनाज़, रिफात, और तोगरमा।<sup>4</sup> यावान के पुत्र: एलीशा, तरशीश, किलीम, और दोदानिम।<sup>5</sup> इनसे समुद्री जातियाँ अपनी-अपनी भाषाओं के अनुसार अपने-अपने राष्ट्रों में फैल गईं।<sup>6</sup> हाम के पुत्र: कूश, मिस, पूत, और कनान।<sup>7</sup> कूश के पुत्र: सबा, हविला, सबता, रामा, और सब्केका। रामा के पुत्र: शेबा और ददान।<sup>8</sup> कूश निम्रोद का पिता था, जो पृथ्वी पर एक पराक्रमी योद्धा बना।<sup>9</sup> वह यहोवा के सामने एक पराक्रमी शिकारी।<sup>10</sup> उसके राज्य के पहले केंद्र बाबेल, एक, अवकद और कलनेह थे, जो शिनार देश में थे।<sup>11</sup> वह उस देश से अश्शर गया, जहाँ उसने नीनवे, रहोबोथ ईर, कला का निर्माण किया,<sup>12</sup> और रेसन का, जो नीनवे और कला के बीच है; यह एक महान नगर है।<sup>13</sup> मिस लूदियों, अनामीमियों, लेहबीमियों, नफ्तहियों का पिता था,<sup>14</sup> पतरोसियों, करस्तुहियों (जिनसे पलिश्ती उत्पन्न हुए) और कप्तारियों का।<sup>15</sup> कनान सिदोन का पिता था, जो उसका पहलौठा था, और हितियों का भी,<sup>16</sup> यब्बियों, एमोरियों, गिर्गाशियों का,<sup>17</sup> हिवियों, अर्कियों, सीनियों का,<sup>18</sup> अर्वादियों, जेमारियों और हमाटियों का। बाढ़ में कनानी कुल फैल गए।<sup>19</sup> और कनान की सीमाएँ सिदोन से गेरार की ओर गाजा तक, और फिर सोदेम, अमोरा, अदमा और जबोईम की ओर लाशा तक फैलीं।<sup>20</sup> ये हाम के पुत्र हैं, उनके कुलों और भाषाओं के अनुसार, उनके प्रदेशों और राष्ट्रों में।<sup>21</sup> शेम के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो याफ़त का बड़ा भाई था; शेम एबर के सभी पुत्रों का पूर्वज था।<sup>22</sup> शेम के पुत्र: एलाम, अश्शर, अर्फ़क्षद, लूद, और अराम।<sup>23</sup> अराम के पुत्र: ऊज़, हूल, गेतर और मशा।<sup>24</sup> अर्फ़क्षद शेलह का पिता था, और शेलह एबर का पिता था।<sup>25</sup> एबर के दो पुत्र उत्पन्न हुए: एक का नाम पेलेघ था, क्योंकि उसके समय में पृथ्वी विभाजित हुई थी; उसका भाई योक्तान था।<sup>26</sup> योक्तान अलमोदाद, शलेफ़, हज़मवित, येरह का पिता था,<sup>27</sup> हदोराम, ऊज़ाल, दिक्ला,<sup>28</sup> ओबाल, अबीमाएल, शेबा,<sup>29</sup> औफिर, हविला और योबाब। ये सभी योक्तान के पुत्र थे।<sup>30</sup> जिस क्षेत्र में वे रहते थे वह मेषा से लेकर पूर्वी पहाड़ी देश में सेफार तक फैला था।<sup>31</sup> ये शेम के पुत्र हैं, उनके कुलों और भाषाओं के अनुसार, उनके प्रदेशों

## उत्पत्ति

और राष्ट्रों में। <sup>32</sup> ये नूह के पुत्रों के परिवार हैं, उनकी वंशावलियों के अनुसार, उनके राष्ट्रों में। इनसे जलप्रलय के बाद पृथ्वी पर राष्ट्र फैल गए।

**11** अब सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और समान शब्दावली थी। <sup>2</sup> जब लोग पूर्व की ओर बढ़े, तो उन्होंने शिनार देश में एक मैदान पाया और वहाँ बस गए। <sup>3</sup> उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "आओ, हम ईंटें बनाएं और उहाँे अच्छी तरह से पकाएं।" उन्होंने पत्थर के बजाय ईंट का उपयोग किया, और गर्गे के लिए तार का। <sup>4</sup> फिर उन्होंने कहा, "आओ, हम अपने लिए एक नगर बनाएं, जिसमें एक मीनार हो जो आकाश तक पहुँचे, ताकि हम अपने लिए एक नाम बना सकें और सारी पृथ्वी के ऊपर बिखेर न जाएं।" <sup>5</sup> परन्तु प्रभु नीचे आए कि उस नार और मीनार को देखें जो लोग बना रहे थे। <sup>6</sup> प्रभु ने कहा, "यदि वे एक ही भाषा बोलने वाले एक ही लोग होकर यह करना शुरू कर चुके हैं, तो उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा जो वे योजना बनाते हैं।" <sup>7</sup> आओ, हम नीचे चलें और उनकी भाषा को भ्रमित करें ताकि वे एक-दूसरे को न समझ सकें।" <sup>8</sup> इसलिए प्रभु ने उन्हें वहाँ से सारी पृथ्वी पर बिखेर दिया, और उन्होंने नगर बनाना बंद कर दिया। <sup>9</sup> इसीलिए उसे बाबिल कहा गया—क्योंकि वहाँ प्रभु ने सारी दुनिया की भाषा को भ्रमित कर दिया। वहाँ से प्रभु ने उन्हें सारी पृथ्वी के ऊपर बिखेर दिया। <sup>10</sup> यह शेष के परिवार की वंशावली है। जलप्रलय के दो वर्ष बाद, जब शेष 100 वर्ष का था, उसने अर्फक्सद को जन्म दिया। <sup>11</sup> अर्फक्सद के पिता बनने के बाद, शेष 500 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>12</sup> जब अर्फक्सद 35 वर्ष का था, उसने शेलह को जन्म दिया। <sup>13</sup> शेलह के पिता बनने के बाद, अर्फक्सद 403 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>14</sup> जब शेलह 30 वर्ष का था, उसने एबर को जन्म दिया। <sup>15</sup> एबर के पिता बनने के बाद, शेलह 403 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>16</sup> जब एबर 34 वर्ष का था, उसने पेलेग को जन्म दिया। <sup>17</sup> पेलेग के पिता बनने के बाद, एबर 430 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>18</sup> जब पेलेग 30 वर्ष का था, उसने रियू को जन्म दिया। <sup>19</sup> रियू के पिता बनने के बाद, रियू 207 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>20</sup> जब रियू 32 वर्ष का था, उसने सरुग को जन्म दिया। <sup>21</sup> सरुग के पिता बनने के बाद, रियू 207 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>22</sup> जब सरुग 30 वर्ष का था, उसने नाहोर को जन्म दिया। <sup>23</sup> नाहोर के पिता बनने के बाद, सरुग 200 वर्ष और जीवित रहा और

उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>24</sup> जब नाहोर 29 वर्ष का था, उसने तेरह को जन्म दिया। <sup>25</sup> तेरह के पिता बनने के बाद, नाहोर 119 वर्ष और जीवित रहा और उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। <sup>26</sup> जब तेरह 70 वर्ष का था, उसने अब्राम, नाहोर और हारान को जन्म दिया। <sup>27</sup> यह तेरह के परिवार की वंशावली है। तेरह अब्राम, नाहोर और हारान का पिता बना। हारान लूट का पिता बना। <sup>28</sup> जब उसके पिता तेरह जीवित थे, हारान का निधन चैलियनों के ऊर में हुआ, जो उसके जन्म का देश था। <sup>29</sup> अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी का नाम सारे था, और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था, जो हारान की बेटी थी, जो मिल्का और इस्का दोनों का पिता था। <sup>30</sup> अब सारे बाँझ थीं; उसके कोई संतान नहीं थी। <sup>31</sup> तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, अपने पोते लूट जो हारान का पुत्र था, और अपनी पुत्रवधू सारे को लिया, और वे चैलियनों के ऊर से कनान देश की ओर जाने के लिए निकले। तेरह जब वे हारान पहुँचे, तो वहाँ बस गए। <sup>32</sup> तेरह 205 वर्ष जीवित रहा, और उसका निधन हारान में हुआ।

**12** यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, अपनी जाति और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में जा जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।" <sup>2</sup> मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीर्वाद दूँगा। मैं तेरा नाम महान करूँगा, और तू एक आशीर्वाद होगा। <sup>3</sup> जो तुझे आशीर्वाद देंगे, उन्हें मैं आशीर्वाद दूँगा, और जो तुझे शाप देंगे, उन्हें मैं शाप दूँगा। और तेरे द्वारा पृथ्वी के सभी लोग आशीर्वाद पाएंगे।" <sup>4</sup> इसलिए अब्राम चला गया, जैसा कि यहोवा ने उसे कहा था; और लूट उसके साथ गया। जब अब्राम हारान से निकला, तब वह पचहत्तर वर्ष का था। <sup>5</sup> उसने अपनी पत्नी सारे, अपने भतीजे लूट, सारी संपत्ति जो उन्होंने इकट्ठा की थी और जो लोग उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सबको लिया, और वे कनान देश की ओर चल पड़े। जब वे वहाँ पहुँचे,

<sup>6</sup> अब्राम देश के भीतर मोरे के महान वृक्ष के स्थान तक शकेम तक यात्रा की। उस समय कनानी लोग उस देश में थे। <sup>7</sup> तब यहोवा अब्राम के सामने प्रकट हुआ और कहा, "मैं तेरे वंशजों को यह देश दूँगा।" इसलिए उसने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई, जो उसके सामने प्रकट हुआ था। <sup>8</sup> वहाँ से वह बेतेल के पूर्व की पहाड़ियों की ओर बढ़ा और अपना तम्बू खड़ा किया, पाश्चिम में बेतेल और पूर्व में ऐ के साथ। वहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और यहोवा के नाम को पुकारा। <sup>9</sup> फिर अब्राम ने यात्रा की और नेगेव की ओर बढ़ा। <sup>10</sup> अब उस देश में अकाल पड़ा, इसलिए अब्राम कुछ समय के लिए वहाँ रहने के लिए मिस्र चला गया क्योंकि अकाल बहुत

## उत्पत्ति

गंभीर था।<sup>11</sup> जब वह मिस्र में प्रवेश करने वाला था, उसने अपनी पत्नी सारै से कहा, "देखो, मैं जानता हूँ कि तुम कितनी सुंदर स्त्री हो।"<sup>12</sup> जब मिस्री तुम्हें देखेंगे, तो वे कहेंगे, यह उसकी पत्नी है।' और वे मुझे मार डालेंगे लेकिन तुम्हें जीवित छोड़ देंगे।<sup>13</sup> कृपा कहो कि तुम मेरी बहन हो, ताकि तुम्हारे कारण मुझे अच्छा व्यवहार मिले और तुम्हारे कारण मेरी जान बची रहे।"<sup>14</sup> जब अब्राम मिस्र पहुँचा, तो मिस्रियों ने देखा कि सारै बहुत सुंदर थी।<sup>15</sup> और जब फ़िरैन के अधिकारियों ने उसे देखा, तो उन्होंने फ़िरैन के सामने उसकी प्रशंसा की, और उसे उसके महल में ले जाया गया।<sup>16</sup> उसने अब्राम के साथ उसके कारण अच्छा व्यवहार किया, और अब्राम ने भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे, सेवक और ऊँट प्राप्त किए।<sup>17</sup> परन्तु यहोवा ने सारै, अब्राम की पत्नी के कारण फ़िरैन और उसके घर पर बड़ी विपत्तियाँ भेजीं।<sup>18</sup> तब फ़िरैन ने अब्राम को बुलाया और कहा, "तूम मेरे साथ यह क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है?"<sup>19</sup> तूने क्यों कहा, "वह मेरी बहन है," ताकि मैं उसे अपनी पत्नी बना लूँ। अब, यहाँ तेरी पत्नी है। उसे ले और चला जा।"<sup>20</sup> तब फ़िरैन ने अब्राम के बारे में अपने आदमियों को आदेश दिया, और उन्होंने उसे उसकी पत्नी और उसके पास जो कुछ था, सबके साथ विदा कर दिया।

**13** इसलिए अब्राम मिस्र से नेगेव की ओर अपनी पत्नी और अपनी सारी संपत्ति के साथ ऊपर चला गया, और लूत भी उसके साथ गया।<sup>2</sup> अब्राम पशुधन, चाँदी, और सोने में बहुत धनी हो गया था।<sup>3</sup> नेगेव से, वह स्थान-स्थान पर जाता रहा जब तक कि वह बेतेल नहीं पहुँचा, उस स्थान पर जो बेतेल और ऐ के बीच था जहाँ पहले उसका तंबू था।<sup>4</sup> यह वही स्थान था जहाँ उसने पहली बार एक वेदी बनाई थी, और वहाँ अब्राम ने यहोवा के नाम को पुकारा।<sup>5</sup> अब लूत, जो अब्राम के साथ घूम रहा था, उसके पास भी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और तंबू थे।<sup>6</sup> परंतु भूमि उन्हें एक साथ रहते हुए सहारा नहीं दे सकती थी, क्योंकि उनकी संपत्ति इतनी अधिक थी कि वे एक साथ नहीं रह सकते थे।<sup>7</sup> और अब्राम के पशुओं के चरवाहों और लूत के पशुओं के चरवाहों के बीच विवाद उत्पन्न हुआ। उस समय कनानी और परिजी भी उस भूमि में रहते थे।<sup>8</sup> इसलिए अब्राम ने लूत से कहा, "तुम और मेरे बीच, या तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई विवाद न हो, क्योंकि हम निकट संबंधी हैं।" क्या पूरी भूमि तुम्हारे सामने नहीं है? आओ, हम अलग हो जाएँ। यदि तुम बाईं और जाओगे, तो मैं दाईं और जाऊँगा; यदि तुम दाईं और जाओगे, तो मैं बाईं और जाऊँगा।"<sup>9</sup> लूत ने चारों ओर देखा और

देखा कि जोआर की ओर यरदन का पूरा मैदान अच्छी तरह से सिंचित था, जैसे यहोवा का बाग, जैसे मिस्र की भूमि। यह उस समय की बात है जब यहोवा ने सदोम और अमोरा का नाश नहीं किया था।<sup>11</sup> इसलिए लूत ने अपने लिए यरदन के पूरे मैदान को चुना और पूर्व की ओर चल पड़ा। दोनों पुरुष अलग हो गए।<sup>12</sup> अब्राम कनान की भूमि में रहा, जबकि लूत मैदान के नगरों के बीच रहा और सदोम के पास अपने तंबू गाड़े।<sup>13</sup> अब सदोम के लोग दृष्ट थे और यहोवा के विरुद्ध बहुत पाप करते थे।<sup>14</sup> लूत के अलग हो जाने के बाद यहोवा ने अब्राम से कहा, "जहाँ तुम हो वहाँ से अपनी आँखें उठाओ और उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम देखो।"<sup>15</sup> जो भूमि तुम देखते हो, वह मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को सदा के लिए दँगा।<sup>16</sup> मैं तुम्हारे वंशजों को पृथ्वी की धूल के समान बना दँगा, ताकि यदि कोई धूल को गिन सके, तो तुम्हारे वंशज भी गिने जा सकें।<sup>17</sup> जाओ, भूमि की लंबाई और चौड़ाई में चलो, क्योंकि मैं इसे तुम्हें दे रहा हूँ।<sup>18</sup> इसलिए अब्राम ने अपने तंबू उठाए और हिब्रोन के मध्ये के महान वृक्षों के पास जाकर रहने लगा, जहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई।

**14** उस समय, शिनार का राजा अग्नाफेल, एलासार का राजा अर्योख, एलाम का राजा केदोरलाओमेर, और गोयिम का राजा तिदाल<sup>2</sup> सोदोम के राजा बेरा, गोमोरा के राजा बिरशा, अदमा के राजा शिनाब, जबोईम के राजा शेम्बर, और बेला (जो सोअर है) के राजा के विरुद्ध युद्ध करने गए।<sup>3</sup> ये सभी राजा सिद्धिम की घाटी (नमक सागर) में एकत्र हुए।<sup>4</sup> बारह वर्षों तक वे केदोरलाओमेर के अधीन रहे, लेकिन तेरहवें वर्ष में उन्होंने विद्रोह किया।<sup>5</sup> चौदहवें वर्ष में, केदोरलाओमेर और उसके साथ जुड़े राजाओं ने अश्वेरोत-कर्नेम में रेफाइम, हम में जूजियों, और शावे-कियातिम में एमियों को पराजित किया।<sup>6</sup> और सोईर के पहाड़ी देश में हीरियों को, एल-पारान तक जो मरुभूमि के पास है।<sup>7</sup> फिर वे लौटकर एन-मिशपत (जो कादेश है) गए, और उन्होंने अमालोकियों के पूरे क्षेत्र को जीत लिया, साथ ही हजाजेन-तामार में रहने वाले एमोरियों को भी।<sup>8</sup> फिर सदोम, गोमोरा, अदमा, जबोईम, और बेला के राजा बाहर निकले और सिद्धिम की घाटी में अपनी युद्ध रेखाएँ खड़ी कीं।<sup>9</sup> केदोरलाओमेर और उसके सहयोगियों के खिलाफ—चार राजा पाँच के खिलाफ।<sup>10</sup> अब सिद्धिम की घाटी तार के गड्ढों से भरी थी, और जब सदोम और गोमोरा के राजा भागे, तो कुछ उनमें पिर गए, और बाकी पहाड़ियों की ओर भाग गए।<sup>11</sup> विजयी राजाओं ने सदोम और गोमोरा के सभी सामान और उनके सभी भोजन को कब्जे में ले लिया; फिर वे चले

## उत्पत्ति

गए।<sup>12</sup> उहोंने अब्राम के भतीजे लूत और उसकी संपत्ति भी तो ली, क्योंकि वह सदोम में रह रहा था।<sup>13</sup> एक व्यक्ति जो बच निकला था, अब्राम इब्रानी के पास आया और यह सुचना दी। उस समय, अब्राम एमोरी मग्ने के महान् वृक्षों के पास रह रहा था, जो एशकोल और अनर का भाई था, और ये सभी अब्राम के सहयोगी थे।<sup>14</sup> जब अब्राम ने सुना कि उसका संबंधी बंदी बना लिया गया है, तो उसने अपने घर में जन्मे 318 प्रशिक्षित पुरुषों को बुलाया और शत्रु का पीछा किया, यहाँ तक कि दान तक।<sup>15</sup> रात के समय, अब्राम ने अपने बलों को उनके खिलाफ विभाजित किया, हमला किया, और उहों पराजित किया, उनका पीछा होवा तक किया, जो दामिश्क के उत्तर में है।<sup>16</sup> उसने सभी सामानों को पुनः प्राप्त किया और अपने संबंधी लूत और उसकी संपत्ति को, साथ ही महिलाओं और अन्य लोगों को वापस लाया।<sup>17</sup> केदोरलाओमेर और सहयोगी राजाओं को पराजित करने के बाद अब्राम लौट आया, सदोम का राजा उसे शरों की धारी (जो राजा की धारी है) में मिलने आया।<sup>18</sup> फिर शालेम का राजा मेल्कीसेदेक रोटी और दाखमधु लेकर आया। वह परमप्रधान ईश्वर का याजक था।<sup>19</sup> और उसने अब्राम को आशीर्वाद दिया और कहा, “परमप्रधान ईश्वर द्वारा, जो स्वर्ण और पृथ्वी का सृजनकर्ता है, अब्राम को आशीर्वादित किया जाए।<sup>20</sup> और परमप्रधान ईश्वर को आशीर्वादित किया जाए, जिसने आपके शत्रुओं को आपके हाथ में सौंप दिया।”<sup>21</sup> फिर अब्राम ने उसे सब कुछ का दसवां हिस्सा दिया।<sup>22</sup> सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, “मुझे लोग दे दो और सामान अपने पास रखो।”<sup>23</sup> लेकिन अब्राम ने उत्तर दिया, “मैंने परमप्रधान ईश्वर, जो स्वर्ण और पृथ्वी का सृजनकर्ता है, के प्रति हाथ उठाया है,<sup>24</sup> कि मैं आपके किसी भी चीज़ को स्वीकार नहीं करूँगा, यहाँ तक कि एक धागा या जूते का फीता भी नहीं, ताकि आप कभी न कह सकें, मैंने अब्राम को धनी बनाया।”<sup>25</sup> मैं केवल वही स्वीकार करूँगा जो मेरे लोगों ने खाया है और जो हिस्सा उन लोगों का है जो मेरे साथ गए थे—अनर, एशकोल, और मग्ने। उहों उनका हिस्सा लेने दो।”

**15** इन घटनाओं के बाद, प्रभु का वचन अब्राम के पास एक दर्शन में आया: “डरो मत, अब्राम। मैं तुम्हारी ढाल हूँ; तुम्हारा प्रतिफल बहुत बड़ा होगा।”<sup>26</sup> लेकिन अब्राम ने कहा, “हे प्रभु परमश्वर, अप मुझे क्या दे सकते हैं, क्योंकि मैं निःसंतान हूँ और मेरे घर का वारिस दामिश्क का एलीएज़र है?”<sup>27</sup> और अब्राम ने कहा, “देखो, आपने मुझे कोई संतान नहीं दी है, इसलिए मेरे घर का एक सेवक मेरा वारिस होगा।”<sup>28</sup> तब प्रभु का वचन उसके पास आया: “यह व्यक्ति तुम्हारा वारिस नहीं होगा,

बल्कि वह जो तुम्हारे अपने शरीर से उत्पन्न होगा, वही तुम्हारा वारिस होगा।”<sup>29</sup> परमेश्वर ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आकाश की ओर देखो और तारों को गिनो—यदि तुम उहों गिन सको।” फिर उसने कहा, “तुम्हारी संतान भी ऐसी ही होगी।”<sup>30</sup> और अब्राम ने प्रभु पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धर्म के रूप में गिना गया।<sup>31</sup> उसने उससे यह भी कहा, “मैं वही प्रभु हूँ जिसने तुम्हें कसदियों के ऊर से बाहर निकाला ताकि यह भूमि तुम्हें देने के लिए।”<sup>32</sup> लेकिन अब्राम ने कहा, “हे प्रभु परमेश्वर, मैं कैसे जान सकता हूँ कि मैं इसे प्राप्त करूँगा?”<sup>33</sup> उसने उत्तर दिया, “मेरे लिए एक तीन वर्ष की गाय, एक तीन वर्ष की बकरी, एक तीन वर्ष का मेठा, एक कबूतर और एक युवा पंछी लाओ।”<sup>34</sup> तो अब्राम ने ये सब उसके पास लाए, उन्हें दो भागों में काटा, और प्रत्येक आधे को एक दूसरे के सामने रखा, लेकिन पक्षियों को नहीं काटा।<sup>35</sup> शिकारी पक्षी उन शर्वों पर उत्तरे, लेकिन अब्राम ने उन्हें भगा दिया।<sup>36</sup> जैसे ही सूरज डूब रहा था, अब्राम गहरी नींद में गिर गया, और उस पर एक भयानक अंधकार छा गया।<sup>37</sup> तब प्रभु ने अब्राम से कहा, “यह निश्चित रूप से जान लो: तुम्हारी संताने एक ऐसी भूमि में परदेशी होंगी जो उनकी अपनी नहीं है, जहाँ वे चार सौ वर्षों तक दासता में रहेंगी और सताई जाएँगी।”<sup>38</sup> लेकिन मैं उस राष्ट्र का न्याय करूँगा जिसकी वे सेवा करेंगे, और उसके बाद वे बड़ी संपत्ति के साथ बाहर आएँगे।<sup>39</sup> तुम, हालांकि, शांति से अपने पूर्वजों के पास जाओगे और एक अच्छे वृद्धावस्था में दफनाए जाओगे।<sup>40</sup> चौथी पीढ़ी में, वे यहाँ लौट आएँगे, क्योंकि एमोरियों का पाप अभी तक अपनी पूर्ण माप तक नहीं पहुँचा है।<sup>41</sup> तब जब सूरज डूब गया और अंधेरा हो गया, एक धूमपान करने वाला अग्निपात्र और एक जलती हुई मशाल प्रकट हुई और विभाजित टुकड़ों के बीच से गुजरी।<sup>42</sup> उस दिन प्रभु ने अब्राम के साथ एक वाचा बांधी और कहा, “मैं तुम्हारी संतानों को यह भूमि देता हूँ, मिस की नदी से लेकर महान नदी, यूफेट्स तक—<sup>43</sup> केनियों, केनिजियों, कच्चोनियों की भूमि,<sup>44</sup> हितियों, परिजियों, रफाईयों की,<sup>45</sup> एमोरियों, कनानियों, गिरांशियों, और यद्बृतियों की।”

**16** अब सरै, अब्राम की पत्नी, ने उसे कोई संतान नहीं दी थी। परंतु उसके पास हाजिर नामक एक मिसी दासी थी।<sup>46</sup> तब उसने अब्राम से कहा, “प्रभु ने मुझे संतान होने से रोक रखा है। जाओ, मेरी दासी के साथ सोओ; शायद मैं उसके द्वारा एक परिवार बना सकू।” और अब्राम ने सरै की बात मान ली।<sup>47</sup> तो जब अब्राम कनान में दस वर्ष तक रह चुका था, सरै ने अपनी मिसी दासी हाजिर को लिया और उसे अपने पति को उसकी

## उत्पत्ति

पती बनने के लिए दे दिया।<sup>4</sup> वह हाजिर के साथ सोया, और वह गर्भवती हो गई। जब उसे एहसास हुआ कि वह गर्भवती है, तो उसने अपनी स्वामिनी को तुच्छ समझना शुरू कर दिया।<sup>5</sup> तब सौं ने अब्राम से कहा, “तुम मेरे काट के लिए जिमेदार हो। मैंने अपनी दासी को तुम्हारी बाहों में दिया, और अब जब उसे पता चला कि वह गर्भवती है, तो वह मुझे तुच्छ समझती है। प्रभु तुम्हारे और मेरे बीच याय करें।”<sup>6</sup> अब्राम ने उत्तर दिया, “तुम्हारी दासी तुम्हारे हाथ में है। उसके साथ वही करो जो तुम्हें उचित लगे।” तब सौं ने हाजिर के साथ दुर्घट्यवहार किया; इसलिए वह उससे भाग गई।<sup>7</sup> प्रभु के द्वात ने हाजिर को रेगिस्तान में एक झारने के पास पाया; यह शूर के रासों के बगल में खिलना था।<sup>8</sup> और उसने कहा, “हाजिर, सौं की दासी, तुम कहाँ से आई हो, और कहाँ जा रही हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं अपनी स्वामिनी सौं से भाग रही हूँ।”<sup>9</sup> तब प्रभु के द्वात ने उससे कहा, “अपनी स्वामिनी के पास लौट जाओ और उसके अधीन रहो।”<sup>10</sup> द्वात ने कहा, “मैं तुम्हारे वंशजों को इतना बढ़ाऊँगा कि वे गिने नहीं जा सकेंगे।”<sup>11</sup> प्रभु के द्वात ने उससे यह भी कहा: “तुम अब गर्भवती हो और एक पुत्र को जन्म दोगी। उसका नाम इश्माएल रखना, क्योंकि प्रभु ने तुम्हारी दुर्दर्शा सुनी है।”<sup>12</sup> वह मनुष्यों में जंगली गणि के समान होगा; उसका हाथ सबके खिलाफ होगा और सबका हाथ उसके खिलाफ होगा, और वह अपने सभी भाइयों के सामने विरोध में रहेगा।<sup>13</sup> उसने प्रभु को, जिसने उससे बात की थी, यह नाम दिया: “तुम वह ईश्वर हो जो मुझे देखता है,” क्योंकि उसने कहा, “अब मैंने उसे देखा है जो मुझे देखता है।”<sup>14</sup> इसलिए उस कुएं का नाम बीयर लहाई रोई पड़ा; यह अभी भी कादेश और बेरेद के बीच में है।<sup>15</sup> तो हाजिर ने अब्राम को एक पुत्र को जन्म दिया, और अब्राम ने उस पुत्र का नाम इश्माएल रखा जिसे उसने जन्म दिया था।<sup>16</sup> जब हाजिर ने अब्राम को इश्माएल को जन्म दिया, तब अब्राम छियासी वर्ष का था।

**17** जब अब्राम निन्यानवे वर्ष के थे, तब यहोवा उनके सामने प्रकट हुए और कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरे सामने विश्वासयोग्य होकर चलो और निर्दोष रहो।”<sup>1</sup> तब मैं अपने और तुम्हारे बीच अपनी वाचा को स्थापित करूँगा और तुम्हारी संख्याओं को बहुत बढ़ाऊँगा।<sup>2</sup> अब्राम ने मुँह के बल गिरकर प्रणाम किया, और परमेश्वर ने उनसे कहा, “मेरे लिए, यह तुम्हारे साथ मेरी वाचा है: तुम बहुत सी जातियों के पिता बनोगे।”<sup>3</sup> अब तुम्हारा नाम अब्राम नहीं रहेगा; तुम्हारा नाम अब्राहम होगा, क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत सी जातियों का पिता बनेगा, और मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।<sup>4</sup> लेकिन मेरी वाचा मैं इसहाक के साथ स्थापित करूँगा उसके बाद उसकी संतानों के लिए।<sup>5</sup> इश्माएल के लिए, मैंने तुम्हें सुना है: मैं उसे निश्चित रूप से आशीर्वद दूँगा; मैं उसे फलवंत बनाऊँगा और उसकी संख्याओं को बढ़ाऊँगा। वह बारह शासकों का पिता बनेगा, और मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।<sup>6</sup> लेकिन मेरी वाचा मैं इसहाक के साथ स्थापित करूँगा, जिसे सारा तुम्हें अगले वर्ष इस समय तक देगी।<sup>7</sup> जब परमेश्वर ने अब्राहम से बात करना समाप्त किया, तब वह उनसे ऊपर चले गए।<sup>8</sup> उसी दिन अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल और अपने घर में जन्मे या अपने पैसे से

बनाऊँगा, मैं तुम्हारे वंश से जातियाँ उत्पन्न करूँगा, और राजा तुम्हारे वंश से आएँग।<sup>9</sup> मैं अपनी वाचा को तुम्हारे और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतानों के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी एक सदा की वाचा के रूप में स्थापित करूँगा, ताकि मैं तुम्हारा परमेश्वर और तुम्हारी संतानों का परमेश्वर बनूँ।<sup>10</sup> कनान की पूरी भूमि, जहाँ तुम अब परदेशी के रूप में निवास कर रहे हो, मैं तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतानों को एक सदा की संपत्ति के रूप में ढूँगा; और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा।<sup>11</sup> तब परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “तुम्हारे लिए, तुम्हें मेरी वाचा का पालन करना होगा, तुम और तुम्हारे बाद तुम्हारी संताने पीढ़ी दर पीढ़ी।”<sup>12</sup> यह मेरी वाचा है तुम्हारे और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतानों के साथ: तुम मैं से हर पुरुष का खतना किया जाएगा।<sup>13</sup> तुम्हारा खतना किया जाएगा, और यह मेरे और तुम्हारे बीच वाचा का चिन्ह होगा।<sup>14</sup> आने वाली पीढ़ियों के लिए, तुम मैं से हर पुरुष जो आठ दिन का है, उसका खतना किया जाएगा, वाहे वह तुम्हारे घर में जन्मा हो या किसी विदेशी से खरीदा गया हो।<sup>15</sup> चाहे वह तुम्हारे घर में जन्मा हो या तुम्हारे पैसे से खरीदा गया हो, उसका खतना किया जाएगा। तुम्हारे शरीर में मेरी वाचा एक सदा की वाचा होगी।<sup>16</sup> कोई भी अछता पुरुष जिसका खतना नहीं किया गया है, वह अपनी प्रजा से काट दिया जाएगा; उसने मेरी वाचा तोड़ी है।<sup>17</sup> परमेश्वर ने अब्राहम से यह भी कहा, “तुम्हारी पत्नी सौरे के लिए, तुम उसे सौर नहीं कहोगे; उसका नाम सारा होगा।”<sup>18</sup> मैं उसे आशीर्वाद दूँगा और निश्चित रूप से उससे तुम्हें एक पुत्र दूँगा। मैं उसे आशीर्वाद दूँगा ताकि वह जातियों की माता बने; लोगों के राजा उससे उत्पन्न होंगे।<sup>19</sup> अब्राहम मूँह के बल गिरकर हँसे और अपने मन में कहा, “क्या सौ वर्ष के पुरुष को पुत्र होगा? क्या नब्बे वर्ष की सारा संतान उत्पन्न करेगी?”<sup>20</sup> और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, “यदि केवल इश्माएल तेरी आशीर्वाद के अधीन रह सकता।”<sup>21</sup> तब परमेश्वर ने कहा, “हाँ, लेकिन तुम्हारी पत्नी सारा तुम्हें एक पुत्र देगी, और तुम उसका नाम इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ अपनी वाचा को एक सदा की वाचा के रूप में स्थापित करूँगा उसके बाद उसकी संतानों के लिए।”<sup>22</sup> इश्माएल के लिए, मैंने तुम्हें सुना है: मैं उसे निश्चित रूप से आशीर्वाद दूँगा; मैं उसे फलवंत बनाऊँगा और उसकी संख्याओं को बढ़ाऊँगा। वह बारह शासकों का पिता बनेगा, और मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।<sup>23</sup> लेकिन मेरी वाचा मैं इसहाक के साथ स्थापित करूँगा, जिसे सारा तुम्हें अगले वर्ष इस समय तक देगी।<sup>24</sup> जब परमेश्वर ने अब्राहम से बात करना समाप्त किया, तब वह उनसे ऊपर चले गए।<sup>25</sup> उसी दिन अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल और अपने घर में जन्मे या अपने पैसे से

## उत्पत्ति

खरीदे गए सभी पुरुषों को लिया—अपने घर के हर पुरुष को—और उनका खतना किया, जैसा कि परमेश्वर ने उहें बताया था।<sup>24</sup> अब्राहम का खतना किया गया जब वह निन्यानवे वर्ष के थे,<sup>25</sup> और उनके पुत्र इश्माएल तेरह वर्ष के थे।<sup>26</sup> अब्राहम और उनके पुत्र इश्माएल दोनों का उसी दिन खतना किया गया।<sup>27</sup> और अब्राहम के घर के हर पुरुष, चाहे वह घर में जन्मा हो या किसी विदेशी से खरीदा गया हो, उनके साथ खतना किया गया।

**18** प्रभु ने अब्राहम को मगरे के महान वृक्षों के पास दर्शन दिया, जब वह दिन की गर्मी में अपने तंबू के द्वार पर बैठा था।<sup>2</sup> अब्राहम ने ऊपर देखा और तीन पुरुषों को पास खड़े देखा। जब उसने उन्हें देखा, तो वह अपने तंबू के द्वार से डौड़कर उनसे मिलने गया और भूमि पर झुककर प्रणाम किया।<sup>3</sup> उसने कहा, “मेरे प्रभु, यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो कृपया अपने दास के पास से न जाएं।” थोड़ा पानी लाने दे, और तब आप सब अपने पैर धीं थे और इस वृक्ष के नीचे विश्राम करें।<sup>4</sup> मैं आपके लिए कुछ खाने का प्रबंध करूँगा, ताकि आप ताज़ी महसूस कर सकें और फिर अपने मार्ग पर जा सकें—अब जब आप अपने दास के पास आए हैं।” उन्होंने उत्तर दिया, “बहुत अच्छा, जैसा तुम कहते हो वैसा करो।”<sup>5</sup> तब अब्राहम जल्दी से सारा के तंबू में गया। उसने कहा, “जल्दी करो, तीन सेआ उत्तम आटा लो और उसे गूँथकर रोटी बनाओ।”<sup>6</sup> फिर वह झुंझु के पास दौड़ा और एक उत्तम, कोमल बछड़ा चुना और उसे एक सेवक को दिया, जिसने उसे जल्दी से तैयार किया।<sup>7</sup> उसने दही और दूध और वह बछड़ा जो तैयार किया गया था, लाकर उनके सामने रखा। जब वे खा रहे थे, वह उनके पास वृक्ष के नीचे खड़ा रहा।<sup>8</sup> उन्होंने उससे पूछा, “तुम्हारी पत्नी सारा कहाँ है?” उसने कहा, “वह वहाँ तंबू में है।”<sup>9</sup> तब उन्हमें से एक ने कहा, “मैं निश्चित रूप से अगले वर्ष इसी समय तुम्हारे पास लौटूंगा, और तुम्हारी पत्नी सारा का एक पुत्र होगा।”<sup>10</sup> अब सारा तंबू के द्वार पर सुन रही थी, जो उसके पीछे थी, और सारा की आयु संतान उत्पन्न करने की नहीं रही थी।<sup>11</sup> इसलिए सारा ने अपने मन में हँसकर कहा, “अब जब मैं बूढ़ी हो गई हूँ और मेरा स्वामी भी बूढ़ा है, क्या मुझे अब यह सुख मिलगा?”<sup>12</sup> तब प्रभु ने अब्राहम से कहा, “सारा क्यों हँसी और कहने लगी, क्या मैं सचमुच अब बूढ़ी होकर संतान उत्पन्न करूँगी?”<sup>13</sup> क्या प्रभु के लिए कुछ भी कठिन है? मैं अगले वर्ष नियत समय पर तुम्हारे पास लौटूंगा, और सारा का एक पुत्र होगा।”<sup>14</sup> सारा डर गई, इसलिए उसने इनकार किया, “मैं नहीं हँसी।” लेकिन

उसने कहा, “हाँ, तुम हँसी थीं।”<sup>15</sup> जब पुरुष उठकर चलने लगे, तो उन्होंने सोदोम की ओर देखा, और अब्राहम उनके साथ उन्हें विदा करने चला।<sup>16</sup> तब प्रभु ने कहा, “क्या मैं अब्राहम से वह छिपाऊँ जो मैं करने जा रहा हूँ?”<sup>17</sup> अब्राहम निश्चित रूप से एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा, और पूर्वी की सभी जातियाँ उसके माध्यम से आशीर्वादित होंगी।<sup>18</sup> क्योंकि मैंने उसे चुना है, ताकि वह अपने बच्चों और अपने घराने को प्रभु की राह पर चलने के लिए निर्देशित करे, जो सही और न्यायपूर्ण है, ताकि प्रभु अब्राहम के लिए वह ला सके जो उसने उससे वादा किया है।”<sup>19</sup> तब प्रभु ने कहा, “सोदोम और गमोरा के विरुद्ध चिल्लाहट बहुत बड़ी है और उनका पाप बहुत गंभीर है<sup>20</sup> कि मैं नीचे जाकर देखूँ कि उन्होंने जो किया है वह उतना ही बुरा है जितना कि मेरे पास पहुँची चिल्लाहट। यदि नहीं, तो मैं जान लूँगा।”<sup>21</sup> पुरुष मुड़कर सोदोम की ओर चले गए, लेकिन अब्राहम प्रभु के सामने खड़ा रहा।<sup>22</sup> तब अब्राहम ने उसके पास जाकर कहा, “क्या आप सचमुच धर्मियों को दुष्टों के साथ नष्ट कर देंगे? ”<sup>23</sup> यदि नगर में पचास धर्मी लोग हों तो क्या आप सचमुच उसे नष्ट कर देंगे और पचास धर्मियों के कारण उस स्थान को नहीं बचाएंगे?<sup>24</sup> अपके लिए ऐसा करना दूर की बात है—धर्मियों को दुष्टों के साथ मार डालना, धर्मियों और दुष्टों के साथ एक जैसा व्यवहार करना! आपके लिए ऐसा करना दूर की बात है! क्या सारी पूर्वी की न्यायाधीश सही काम नहीं करेगा?”<sup>25</sup> प्रभु ने कहा, “यदि मैं सोदोम नगर में पचास धर्मी लोग पाऊँ, तो मैं उनके कारण पूरे स्थान को बचाऊँगा।”<sup>26</sup> तब अब्राहम ने फिर से कहा: “अब जब मैंने प्रभु से बात करने का साहस किया है, यद्यपि मैं केवल धूल और राख हूँ,<sup>27</sup> यदि धर्मियों की संख्या पचास से पाँच कम हो तो क्या आप पाँच लोगों की कमी के कारण पूरे नगर को नष्ट कर देंगे?” उसने कहा, “यदि मैं वहाँ पैतालीस पाऊँ, तो मैं उसे नष्ट नहीं करूँगा।”<sup>28</sup> फिर उसने उससे कहा, “पदि वहाँ केवल चालीस कारण, मैं ऐसा नहीं करूँगा।”<sup>29</sup> तब उसने कहा, “प्रभु क्रीधित न हों, लेकिन मुझे बोलने दें। यदि वहाँ केवल तीस पाऊँ, तो मैं ऐसा नहीं करूँगा।”<sup>30</sup> अब्राहम ने कहा, “अब जब मैंने प्रभु से बात करने का साहस किया है, यदि वहाँ केवल बीस मिलें तो क्या होगा?” उसने कहा, “बीस के कारण, मैं उसे नष्ट नहीं करूँगा।”<sup>31</sup> तब उसने कहा, “प्रभु क्रीधित न हों, लेकिन मुझे बोलने दें। यदि वहाँ केवल तीस पाऊँ, तो मैं ऐसा नहीं करूँगा।”<sup>32</sup> तब उसने कहा, “प्रभु क्रीधित न हों, लेकिन मुझे एक बार और बोलने दें। यदि वहाँ केवल दस मिलें तो क्या होगा?” उसने उत्तर दिया, “दस के कारण, मैं उसे नष्ट नहीं करूँगा।”<sup>33</sup> जब प्रभु ने अब्राहम से बात करना समाप्त

## उत्पत्ति

किया, तो वह चला गया, और अब्राहम अपने स्थान पर लौट आया।

**19** दो स्वर्गद्वार संध्या को सदोम पहुँचे, और लूत नगर के द्वार पर बैठे थे। जब उसने उन्हें देखा, तो वह उनसे मिलने के लिए उठा और भूमि पर मुँह के बल झुक गया।<sup>2</sup> उसने कहा, “मेरे प्रभुओं, कृपया अपने दास के घर की ओर मुड़ें। आप अपने पैर धो सकते हैं और रात बिता सकते हैं, और फिर सुबह जल्दी अपने रास्ते पर जा सकते हैं।” उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं हम चौक में रात बिताएंगे।”<sup>3</sup> परन्तु लूत ने जोर देकर कहा, इसलिए वे उसके साथ गए और उसके घर में प्रवेश किया। उसने उनके लिए भोजन तैयार किया, बिना खमीर की रोटी बनाई, और उन्होंने खाया।<sup>4</sup> उनके बिस्तर पर जाने से पहले, सदोम के नगर के हर भाग से सभी पुरुष—युवा और वृद्ध—उसके घर को घेर लिया।<sup>5</sup> उन्होंने लूत से पुकारकर कहा, “वे पुरुष कहाँ हैं जो आज रात तुम्हारे पास आए हैं? उन्हें हमारे पास बाहर लाओ ताकि हम उन्हें अच्छी तरह से जान सकें।”<sup>6</sup> लूत बाहर जाकर उनसे मिला और दरवाजा बंद कर लिया।<sup>7</sup> उसने कहा, “कृपया, मेरे भाइयों, यह दुष्ट कार्य न करो।<sup>8</sup> देखो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने कभी पुरुष के साथ नहीं ही हैं। मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊँगा, और तुम उनके साथ जैसा चाहो वैसा कर सकते हो। परन्तु इन पुरुषों के साथ कुछ न करो, क्योंकि वे मेरी छत के नीचे आए हैं।”<sup>9</sup> उन्होंने उत्तर दिया, “रास्ते से हट जाओ। यह व्यक्ति यहाँ परदेशी की रूप में आया है, और अब वह न्यायाधीश बनना चाहता है। हम तुम्हारे साथ उनसे भी बुरा व्यवहार करेंगे।” और वे लूत पर जोर से दबाव डालें लगे और दरवाजा तोड़ने के लिए पास आए।<sup>10</sup> परन्तु अंदर के पुरुषों ने हाथ बढ़ाकर लूत को घर के अंदर खींच लिया और दरवाजा बंद कर दिया।<sup>11</sup> फिर उन्होंने घर के दरवाजे पर खड़े पुरुषों को, युवा और वृद्ध, अंधा कर दिया, ताकि वे दरवाजा न पा सकें।<sup>12</sup> पुरुषों ने लूत से कहा, “क्या यहाँ तुम्हारा कोई और है—दामाद, पुत्र या पुत्रियाँ, या नगर में कोई और जो तुम्हारा हो? उन्हें यहाँ से बाहर ले आओ, <sup>13</sup> क्योंकि हम इस स्थान को नष्ट करने जा रहे हैं। इसके लोगों के विरुद्ध पुकार इतनी बढ़ी है कि यहोवा ने हमें इसे नष्ट करने के लिए भेजा है।”<sup>14</sup> तब लूत बाहर गया और अपने दामादों से, जो उसकी बेटियों से विवाह करने वाले थे, बात की। उसने कहा, “इस स्थान से बाहर निकलो, क्योंकि यहोवा इस नगर को नष्ट करने वाला है।” परन्तु उसके दामादों ने सोचा कि वह मजाक कर रहा है।<sup>15</sup> भीर होते ही, स्वर्गद्वारों ने लूत को जल्दी करने के लिए कहा, “जल्दी करो! अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियों को ले लो जो

यहाँ हैं, नहीं तो जब नगर को दंडित किया जाएगा तो तुम भी बह जाओगे।”<sup>16</sup> जब वह हिचकिचाया, तो पुरुषों ने उसका हाथ और उसकी पत्नी और बेटियों के हाथ पकड़ लिए और उन्हें नगर से सुरक्षित बाहर ले गए, क्योंकि यहोवा ने उन पर दया की थी।<sup>17</sup> जैसे ही उन्होंने उन्हें बाहर निकाला, उनमें से एक ने कहा, “अपनी जान बचाने के लिए भागो! पीछे मत देखो, और मैदान में कहीं मत रुको! पहाड़ों की ओर भागो नहीं तो तुम बह जाओगे।”<sup>18</sup> परन्तु लूत ने उनसे कहा, “नहीं, मेरे प्रभुओं, कृपया।”<sup>19</sup> आपके दास ने आपकी छिंट में अनुग्रह पाया है, और आपने मेरे जीवन को बचाने में मुझ पर बड़ी कृपा दिखाई है। परन्तु मैं पहाड़ों की ओर नहीं भाग सकता; यह विपत्ति मुझ पर आ जाएगी, और मैं मर जाऊँगा।<sup>20</sup> देखो, यहाँ एक नगर है जो भागने के लिए पर्याप्त निकट है, और यह छोटा है। मुझे वहाँ भागने दो—यह बहुत छोटा है, है ना? तब मेरा जीवन बच जाएगा।<sup>21</sup> उसने उससे कहा, “ठीक है, मैं इस अनुरोध को भी स्वीकार करूँगा; मैं उस नगर को नष्ट नहीं करूँगा जिसके बारे में तुमने कहा है।”<sup>22</sup> परन्तु जट्ठी वहाँ भागो, क्योंकि जब तक तुम वहाँ नहीं पहुँचते, मैं कुछ नहीं कर सकता।”<sup>23</sup> इसलिए उस नगर का नाम सोअर पड़ा।<sup>24</sup> जब लूत सोअर पहुँचा, तब तक सूर्य भूमि पर उग चुका था।<sup>25</sup> तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर आकाश से जलता हुआ गंधक बरसाया—यहोवा की ओर से।<sup>26</sup> इस प्रकार उसने उन नगरों और पूरे मैदान को उलट दिया, उन नगरों में रहने वाले सभी लोगों को नष्ट कर दिया—और साथ ही भूमि की वनस्पति को भी।<sup>27</sup> परन्तु लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर देखा, और वह नमक का खंभा बन गई।<sup>28</sup> अगले दिन सुबह जल्दी, अब्राहम उठकर उस स्थान पर लौटा जहाँ वह यहोवा के सामने खड़ा था।<sup>29</sup> उसने सदोम और अमोरा की ओर, मैदान की सारी भूमि की ओर देखा, और उसने देखा कि भूमि से धना धूआँ उठ रहा था, जैसे भट्टी से धूआँ उठता है।<sup>30</sup> इसलिए जब परमेश्वर ने मैदान के नगरों को नष्ट किया, तो उसने अब्राहम को याद किया, और उसने लूत को उस विपत्ति से बाहर निकाला जिसने उन नगरों को उलट दिया जाहाँ लूत रहता था।<sup>31</sup> लूत और उसकी दो बेटियाँ सोअर छोड़कर पहाड़ों में बस गए, क्योंकि हवा सोअर में रहने से डरता था। वह और उसकी दो बेटियाँ एक गुफा में रहते थे।<sup>32</sup> एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “हमारे पिता बूढ़े हैं, और यहाँ कोई पुरुष नहीं है जो हमें संतान दे सके, जैसा कि पृथ्वी भर में प्रथा है।”<sup>33</sup> आओ, हम अपने पिता को दाखमधु पिलाएँ और फिर उसके साथ सोएँ और अपने पिता के माध्यम से अपनी वंशावली को बनाए रखें।”<sup>34</sup> उस रात उन्होंने अपने पिता को दाखमधु पिलाया, और बड़ी बेटी

## उत्पत्ति

अंदर गई और उसके साथ सोई। उसे यह पता नहीं चला जब वह लेटी या जब वह उठी।<sup>34</sup> अगले दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “कल रात मैं अपने पिता के साथ सोई थी। आओ, हम उसे आज रात फिर से दाखमधु पिलाएँ, और तुम अंदर जाओ और उसके साथ सोओ ताकि हम अपनी वंशवाली को बनाए रखें।”<sup>35</sup> इसलिए उहोने उस रात भी अपने पिता को दाखमधु पिलाया, और छोटी बेटी अंदर गई और उसके साथ सोई। फिर भी उसे यह पता नहीं चला।<sup>36</sup> इस प्रकार लूट की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हो गईं।<sup>37</sup> बड़ी बेटी का एक पुत्र हुआ, और उसने उसका नाम मोआब रखा; वह आज के मोआवियों का पिता है।<sup>38</sup> छोटी बेटी का भी एक पुत्र हुआ, और उसने उसका नाम बेन-अमी रखा; वह आज के अम्मानियों का पिता है।

**20** अब्राहम वहां से नेगेव क्षेत्र की ओर चले गए और कादेश और शूर के बीच रहने लगे। कुछ समय के लिए वे गेरार में ठहरे।<sup>2</sup> वहां अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के बारे में कहा, “वह मेरी बहन है।” इसलिए गेरार के राजा अबीमेलक ने सारा को बुलावा लिया और उसे ले लिया।<sup>3</sup> लेकिन परमेश्वर ने अबीमेलक के पास एक रात स्वप्न में आकर कहा, “तू उस स्त्री के कारण मरने के योग्य है जिसे तूने लिया है; वह एक विवाहित स्त्री है।”<sup>4</sup> अब अबीमेलक ने उसके पास नहीं गया था, इसलिए उसने कहा, “प्रभु, क्या आप निर्दोष राष्ट्र को नष्ट करेंगे? ”<sup>5</sup> क्या उसने मुझसे नहीं कहा, “वह मेरी बहन है”; और क्या उसने भी नहीं कहा, “वह मेरा भाई है”? मैंने यह सब साफ़ मन और निर्दोष हथों से किया है।<sup>6</sup> तब परमेश्वर ने स्वप्न में उससे कहा, “हाँ, मुझे पता है कि तूने यह साफ़ मन से किया, और इसलिए मैंने तुझे मेरे विरुद्ध पाप करने से रोका। यही कारण है कि मैंने तुझे उसे छूने नहीं दिया।”<sup>7</sup> अब उस आदमी की पत्नी को लौटा दे, क्योंकि वह एक नकी है, और वह तेरे लिए प्रार्थना करेगा और तू जीवित रहेगा। लेकिन यदि तू उसे नहीं लौटाता, तो जान ले कि तू और तेरे सारे लोग निश्चित रूप से मर जाएंगे।”<sup>8</sup> अगली सुबह जल्दी अबीमेलक ने अपने सभी अधिकारियों को बुलाया, और जब उसने उहाँ सब कुछ बताया जो हुआ था, तो वे बहुत डर गए।<sup>9</sup> तब अबीमेलक ने अब्राहम को बुलाया और कहा, “तूने हमारे साथ क्या किया है? मैंने तेरा क्या बिगड़ा है कि तूने मुझ पर और मेरे राज्य पर ऐसा दोष लाया? ”<sup>10</sup> अबीमेलक ने अब्राहम से पूछा, “तूने यह क्यों किया?”<sup>11</sup> अब्राहम ने उत्तर दिया, “मैंने अपने आप से कहा, निश्चित रूप से इस स्थान पर परमेश्वर का कोई भय नहीं है, और वे मेरी पत्नी के कारण मुझे मार डालेंगे।”<sup>12</sup> इसके अलावा, वह वास्तव में मेरी बहन है, मेरे पिता की बेटी है, हालांकि

मेरी मां की नहीं; और वह मेरी पत्नी बन गई।<sup>13</sup> और जब परमेश्वर ने मुझे मेरे पिता के घर से भटकाया, तो मैंने उससे कहा, “जहाँ भी हम जाएं, मेरी वफादारी दिखाओ; मेरे बारे में कहो, “वह मेरा भाई है।”<sup>14</sup> तब अबीमेलक ने भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल और पुरुष और महिला सेवक अब्राहम को दिए, और उसने सारा को उसे लौटा दिया।<sup>15</sup> और अबीमेलक ने कहा, “मेरा देश तेरे सामने है; जहाँ चाहो वहां रहो।”<sup>16</sup> सारा से उसने कहा, “मैं तेरे भाई को एक हजार शेकेल चांदी दे रहा हूँ। यह उन सभी के सामने तुझे हुई अपमान को ढकने के लिए है जो तेरे साथ हैं, तू पूरी तरह से निर्दोष है।”<sup>17</sup> तब अब्राहम ने परमेश्वर से प्रार्थना की, और परमेश्वर ने अबीमेलक, उसकी पत्नी और उसकी महिला दासियों को चांगा किया ताकि वे फिर से बच्चे पैदा कर सकें,<sup>18</sup> क्योंकि प्रभु ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलक के घर की सभी स्त्रियों को गर्भवती होने से रोक रखा था।

**21** अब यहोवा ने सारा पर अनुग्रह किया जैसा उसने कहा था, और यहोवा ने सारा के लिए वही किया जो उसने वादा किया था।<sup>2</sup> सारा गर्भवती हुई और उसने अब्राहम के बुढ़ापे में एक पुत्र को जन्म दिया, ठीक उसी समय जब परमेश्वर ने उसे वादा किया था।<sup>3</sup> अब्राहम ने उस पुत्र का नाम इसहाक रखा जिसे सारा ने उसे जन्म दिया था।<sup>4</sup> जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब अब्राहम ने उसे खतना किया, जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।<sup>5</sup> अब्राहम सौ वर्ष का था जब उसका पुत्र इसहाक उसके लिए जन्मा।<sup>6</sup> सारा ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे हंसी दी है, और जो कोई इस बारे में सुनेगा वह मेरे साथ हँसेगा।”<sup>7</sup> और उसने जोड़ा, “कौन अब्राहम से कहता कि सारा बच्चों को दूध पिलाएगी? फिर भी मैंने उसके बुढ़ापे में उसे एक पुत्र को जन्म दिया है।”<sup>8</sup> बालक बड़ा हुआ और उसका दूध छुड़ाया गया, और जिस दिन इसहाक का दूध छुड़ाया गया, अब्राहम ने एक बड़ा भीज आयोजित किया।<sup>9</sup> पर सारा ने देखा कि मिसी हाजिरा का पुत्र, जिसे उसने अब्राहम के लिए जन्म दिया था, मजाक कर रहा था,<sup>10</sup> और उसने अब्राहम से कहा, “उस दासी और उसके पुत्र को निकाल दो, क्योंकि उस स्त्री का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ विरासत में भाग नहीं लेगा।”<sup>11</sup> यह बात अब्राहम को बहुत दुखी कर गई क्योंकि यह उसके पुत्र से संबंधित थी।<sup>12</sup> परमेश्वर ने उससे कहा, “लड़के और अपनी दासी के बारे में इतना दुखी मत हो। जो कुछ सारा तुमसे कहती है, उसे सुनो, क्योंकि इसहाक के माध्यम से तुम्हारी संतान गिनी जाएगी।<sup>13</sup> मैं दासी के पुत्र को भी एक राष्ट्र बनाऊंगा, क्योंकि वह तुम्हारी संतान

## उत्पत्ति

है।<sup>14</sup> अगली सुबह जल्दी अब्राहम ने कुछ भोजन और पानी की एक धैरी ली और हाजिरा को दी। उसने उर्वें उसके कंधों पर रखा और उसे लड़के के साथ विदा किया।<sup>15</sup> जब धैरी का पानी समाप्त हो गया, तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे रख दिया।<sup>16</sup> फिर वह थोड़ी दूर जाकर बैठ गई, क्योंकि उसने सोचा, "मैं लड़के को मरते हुए नहीं देख सकता।"<sup>17</sup> और वह वहाँ बैठकर रोने लगी।<sup>18</sup> परमेश्वर ने लड़के के रोने की आवाज सुनी, और परमेश्वर के द्वारा ने स्वर्ण से हाजिरा को पुकारा और कहा, "या बात है, हाजिरा? मत डरो; परमेश्वर ने लड़के के रोने की आवाज सुनी है जैसा वह वहाँ पड़ा है।"<sup>19</sup> लड़के को उठाओ और उसका हाथ पकड़ो, क्योंकि मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।<sup>20</sup> फिर परमेश्वर ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पानी का एक कुआं देखा। इसलिए वह गई और धैरी को पानी से भरा और लड़के को पानी पिलाया।<sup>21</sup> परमेश्वर लड़के के साथ था जब वह बड़ा हुआ। वह रेगिस्तान में रहने लगा और एक तीरंदाज बन गया।<sup>22</sup> जब वह पारान के रेगिस्तान में रह रहा था, उसकी माँ ने उसके लिए मिस्र से एक पती लाई।<sup>23</sup> उसी समय अबीमेलेक और उसकी सेना के सेनापति फीकल ने अब्राहम से कहा, "परमेश्वर तुम्हारे साथ है जो कुछ भी तुम करते हो।"<sup>24</sup> अब परमेश्वर के सामने मुझसे यह शपथ लो कि तुम मेरे या मेरे वंशजों के साथ थोखा नहीं करोगे। मुझे और उस भूमि को, जहाँ तुम रह रहे हो, वही कृपा दिखाओ जो मैंने तुम्हें दिखाई है।<sup>25</sup> अब्राहम ने कहा, "मैं शपथ लेता हूँ।"<sup>26</sup> फिर अब्राहम ने अबीमेलेक से एक पानी के कुएं के बारे में शिकायत की जिसे अबीमेलेक के सेवकों ने छीन लिया था।<sup>27</sup> पर अबीमेलेक ने कहा, "मुझे नहीं पता कि यह किसने किया है। तुमने मुझे नहीं बताया, और मैंने इसके बारे में आज ही सुना है।"<sup>28</sup> इसलिए अब्राहम ने भेड़-बकरियाँ और मवेशी लाए और अबीमेलेक को दिए, और दोनों पुरुषों ने एक संधि की।<sup>29</sup> अब्राहम ने झुंड से सात भेड़ के मेमनों को अलग किया,<sup>30</sup> और अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, "इन सात भेड़ के मेमनों का क्या अर्थ है जिन्हें तुमने अलग रखा है?"<sup>31</sup> उसने उत्तर दिया, "मेरे हाथ से इन सात मेमनों को स्वीकार करो ताकि यह गताही हो कि मैंने इस कुएं को खोदा है।"<sup>32</sup> इसलिए उस स्थान का नाम बेर्शबा रखा गया, क्योंकि दोनों पुरुषों ने वहाँ शपथ ली थी।<sup>33</sup> बेर्शबा में संधि होने के बाद, अबीमेलेक और उसकी सेना के सेनापति फीकल परिशिष्टों की भूमि में लौट गए।<sup>34</sup> अब्राहम ने बेर्शबा में एक इमली का पेड़ लगाया, और वहाँ उसने यहोवा, अनंत परमेश्वर के नाम को पुकारा।<sup>35</sup> और अब्राहम परिशिष्टों की भूमि में लंबे समय तक रहा।

**22** कुछ समय बाद परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। उसने उससे कहा, "अब्राहम!" और उसने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"<sup>36</sup> परमेश्वर ने कहा, "अपने पुत्र, अपने एकमात्र पुत्र, जिसे तुम प्रेम करते हो—इसहाक को लेकर मोरियाह प्रदेश में जाओ। उसे वहाँ एक पहाड़ पर होमबलि के रूप में चढ़ाओ, जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।"<sup>37</sup> अगली सुबह जल्दी अब्राहम उठकर अपने गधे पर सामान लादा। उसने अपने साथ दो सेवकों और अपने पुत्र इसहाक को लिया। जब उसने होमबलि के लिए पर्याप्त लकड़ी काट ली, तो वह उस स्थान के लिए निकल पड़ा जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे बताया था।<sup>38</sup> तीसरे दिन अब्राहम ने ऊपर देखा और दूर में उस स्थान को देखा।<sup>39</sup> उसने अपने सेवकों से कहा, "तुम यहाँ गधे के साथ रुको, जबकि मैं और लड़का वहाँ जाकर पूजा करेंगे और किरण तुम्हारे पास लौट आएंगे।"<sup>40</sup> अब्राहम ने होमबलि के लिए लकड़ी ली और उसे अपने पुत्र इसहाक पर रखा, और वह आग और छुरी लेकर चला। जब वे दोनों साथ-साथ चल रहे थे, इसहाक ने कहा, "पिता?" "हाँ, मेरे पुत्र?" अब्राहम ने उत्तर दिया। "आग और लकड़ी यहाँ हैं," इसहाक ने कहा, "पर होमबलि के लिए मेंमा कहाँ है?"<sup>41</sup> अब्राहम ने उत्तर दिया, "परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेंमा प्रदान करेगा, मेरे पुत्र।" और वे दोनों साथ-साथ चलते रहे।<sup>42</sup> जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे बताया था, अब्राहम ने एक वेदी बनाई और उस पर लकड़ी की व्यवस्थित किया। उसने अपने पुत्र इसहाक को बाँधा और उसे लकड़ी के ऊपर वेदी पर रखा।<sup>43</sup> फिर उसने अपने हाथ को बढ़ाया और अपने पुत्र को मारने के लिए छुरी ली।<sup>44</sup> परन्तु यहोवा के द्वारा ने स्वर्ण से उसे पुकारा, "अब्राहम! अब्राहम!" "मैं यहाँ हूँ।" उसने उत्तर दिया।<sup>45</sup> "लड़के पर हाथ मत उठाओ," उसने कहा। "उसके साथ कुछ मत करो। अब मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर का भय मानते हो, क्योंकि तुमने मुझसे अपने पुत्र, अपने एकमात्र पुत्र को नहीं रोका।"<sup>46</sup> अब्राहम ने ऊपर देखा और देखा कि एक मेढ़ा अपनी सींगों से ज्ञाही में फँसा हुआ है। वह गया और उसने मेढ़े को लिया और उसे अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि के रूप में ढाया।<sup>47</sup> इसलिए अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा-पिरेह रखा। और आज तक कहा जाता है, "यहोवा के पर्वत पर यह प्रदान किया जाएगा।"<sup>48</sup> यहोवा के द्वारा ने अब्राहम को स्वर्ण से दूसरी बार पुकारा<sup>49</sup> और कहा, "मैं अपने आप से शपथ खाता हूँ, यहोवा की घोषणा है, कि क्योंकि तुमने यह किया है और अपने पुत्र, अपने एकमात्र पुत्र को नहीं रोका है,"<sup>50</sup> मैं अवश्य तुम्हें आशीर्वाद द्वारा और तुम्हारे वंशजों को आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की रेत के समान असंख्य बनाऊँगा। तुम्हारे

## उत्पत्ति

वंशज अपने शत्रुओं के द्वारों का अधिकार करेंगे,<sup>18</sup> और तुम्हरे वंश के माध्यम से पृथ्वी की सभी जातियाँ आशीर्वाद पाएंगी, क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा मानी है।<sup>19</sup> फिर अब्राहम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे सब मिलकर बोर्झेबा के लिए निकल पड़े। और अब्राहम बोर्झेबा में रहा।<sup>20</sup> कुछ समय बाद अब्राहम को बताया गया, “मिल्का ने भी तुम्हरे भाई नाहोर के लिए संतान उत्पन्न की है।<sup>21</sup> उज पहला पुत्र बुजु उसका भाई, केमूएल (जो आराम का पिता है),<sup>22</sup> केसेद, हजो, पिलदाश, यिदलाफ और बतूएल।”<sup>23</sup> बतूएल रिबका का पिता बना। मिल्का ने ये आठ पुत्र अब्राहम के भाई नाहोर के लिए उत्पन्न किए।<sup>24</sup> उसकी उपपत्नी, जिसका नाम रिउमा था, ने भी पुत्र उत्पन्न किए: तेबह, गहाम, तहाश और माकाह।

**23** सारा 127 वर्ष की आयु तक जीवित रही।<sup>2</sup> वह कनान देश के किर्चत अर्बा (यानी हेब्रोन) में मरी, और अब्राहम सारा के लिए शोक करने और उसके लिए रोने गए।<sup>3</sup> फिर अब्राहम अपनी मृत पत्नी के पास से उठकर हितियों से बात करने लगे।<sup>4</sup> “मैं तुम्हारे बीच एक परदेशी और अजनबी हूँ। मुझे एक कब्रिस्तान के लिए कुछ संपत्ति बेच दो ताकि मैं अपनी मृत पत्नी को दफना सकूँ।”<sup>5</sup> हितियों ने अब्राहम को उत्तर दिया, “महाशय, हमारी बात सुनें। आप हमारे बीच एक महान राजकुमार हैं। अपनी मृत पत्नी को हमारे सबसे अच्छे कब्रों में दफनाएं। हम में से कोई भी आपको अपनी कब्र देने से इंकार नहीं करेगा।”<sup>6</sup> फिर अब्राहम उठे और हितियों, जो उस देश के लोग थे, के सामने झुक गए।<sup>7</sup> उन्होंने उनसे कहा, “यदि आप मुझे मेरी मृत पत्नी को दफनाने की अनुमति देते हैं, तो मेरी बात सुनें और मेरे लिए जोहर के पुत्र एप्रोन से बात करें।”<sup>8</sup> ताकि वह मुझे मखपेला की गुफा बेच दे, जो उसके पास है और उसके खेत के अंत में है। उससे कहे कि वह मुझे इसे पूरी कीमत पर बेच दे ताकि मैं इसे आपके बीच एक कब्रिस्तान के रूप में प्राप्त कर सकूँ।”<sup>9</sup> एप्रोन हिती अपनी प्रजा के बीच बैठा था और उसने उन सभी हितियों के सुनने में अब्राहम को उत्तर दिया जो नगर के द्वार पर आए थे।<sup>11</sup> “नहीं, मेरे प्रभु,” उसने कहा। “मेरी बात सुनें, मैं आपको यह खेत देता हूँ, और मैं आपको इसमें जो गुफा है वह भी देता हूँ। मैं इसे अपनी प्रजा के सामने आपको देता हूँ। अपनी मृत पत्नी को दफनाएं।”<sup>12</sup> फिर अब्राहम ने उस देश के लोगों के सामने फिर से झुककर प्रणाम किया।<sup>13</sup> और उन्होंने एप्रोन से उनके सुनने में कहा, “मेरी बात सुनें, यदि आप चाहें। मैं इस खेत की कीमत चुकाऊंगा। इसे मुझसे स्वीकार करें ताकि मैं वहाँ अपनी मृत पत्नी को दफना सकूँ।”<sup>14</sup> एप्रोन

ने अब्राहम को उत्तर दिया, <sup>15</sup> “मेरी बात सुनें, मेरे प्रभु; यह भूमि चार सौ शेकल चांदी की है, लेकिन यह आपके और मेरे बीच क्या है? अपनी मृत पत्नी को दफनाएं।”<sup>16</sup> अब्राहम ने एप्रोन की शर्तों को स्वीकार कर लिया और हितियों के सुनने में उसके लिए वह कीमत तौल दी: चार सौ शेकल चांदी, जो व्यापारियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मानक के अनुसार थी।<sup>17</sup> इस प्रकार ममरे के पास मखपेला में एप्रोन का खेत—खेत और उसमें गुफा, और खेत की सीमाओं के भीतर सभी पेड़—कानूनी रूप से स्थानांतरित कर दिए गए।<sup>18</sup> अब्राहम की संपत्ति के रूप में उन सभी हितियों की उपस्थिति में जो नगर के द्वार पर आए थे।<sup>19</sup> बाद में अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को ममरे के पास मखपेला के खेत की गुफा में दफनाया (यानी हेब्रोन) कनान देश में।<sup>20</sup> इस प्रकार खेत और उसमें गुफा हितियों द्वारा अब्राहम को एक कब्रिस्तान के रूप में दे दी गई।

**24** अब्राहम बूढ़े हो चुके थे, और वे वर्षों में बहुत आगे बढ़ चुके थे, और यहोवा ने उन्हें हर पहलू में आशीर्वाद दिया था।<sup>2</sup> अब्राहम ने अपने घर के वरिष्ठ सेवक से कहा, जो उनकी सारी संपत्ति का प्रबंध करता था, “कृपया अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे रखो, <sup>3</sup> और मैं तुम्हें स्वर्ग के परमेश्वर और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की शपथ दिलाऊंगा, कि तुम मेरे पुत्र के लिए कनानियों की पुत्रियों में से, जिनके बीच मैं निवास करता हूँ, पत्नी नहीं चुनोगे;<sup>4</sup> परन्तु तुम में देश और मेरे परिवार के पास जाओ, और मेरे पुत्र इसाहाक के लिए एक पत्नी ढंगो।”<sup>5</sup> सेवक ने उससे पूछा, “यदि स्त्री मेरे साथ इस देश में लौटने को तैयार न हो, तो क्या मुझे आपके पुत्र को उस देश में वापस ले जाना चाहिए, जहाँ से आप आए थे?”<sup>6</sup> “सावधान रहो कि मेरे पुत्र को वहाँ वापस न ले जाना,” अब्राहम ने उत्तर दिया।<sup>7</sup> “स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, जो मुझसे मेरे पिता के घर और मेरे देश से लाए, और जिसने मुझसे कहा और शपथ ली, ‘मैं यह देश तुम्हारे वंशजों को दूंगा—वह तुम्हारे आगे अपना दूत भेजा, और तुम वहाँ से मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी ले आओगे।’ परन्तु यदि स्त्री तुम्हारा अनुसरण करने को तैयार न हो, तो तुम मेरी इस शपथ से मुक्त हो जाओगे; केवल मेरे पुत्र को वहाँ वापस न ले जाना।”<sup>9</sup> इसलिए सेवक ने अपने स्वामी अब्राहम की जांघ के नीचे हाथ रखा और इस विषय में उसे शपथ दिलाई।<sup>10</sup> फिर सेवक ने अपने स्वामी के दस ऊंट लिए और अपने साथ अपने स्वामी की विभिन्न अच्छी चीजें लेकर चला गया। वह मेसोपोटामिया, नाहोर के नगर में गया।<sup>11</sup> वह ऊंटों को नगर के बाहर जल के कुएँ के पास शाम के समय ठहराया, जब स्त्रियाँ आमतौर पर जल भरने जाती हैं।<sup>12</sup> और उसने प्रार्थना

## उत्पत्ति

की, “हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, कृपया मुझे आज सफलता दें, और मेरे स्वामी अब्राहम पर कृपा करें।”<sup>13</sup> देखो, मैं झरने के पास खड़ा हूँ, और नगर की पुत्रियाँ जल भरने आ रही हैं।<sup>14</sup> वह युवती जिससे मैं कहूँ, ‘कृपया अपना घड़ा नीचे कर दो ताकि मैं पी सकूँ,’ और जो उत्तर दे, ‘पी लो, और मैं तुम्हारे ऊंटों को भी पानी पिलाऊँगी—वही वह हो जिसे अपने अपने सेवक इसहाक के लिए नियुक्त किया है। इससे मैं जानूँगा कि आपने मेरे स्वामी पर कृपा की है।”<sup>15</sup> उसके प्रार्थना समाप्त करने से पहले ही, रिबका अपने कथे पर घड़ा लेकर बाहर आई। वह मिल्का के पुत्र बधूएल की पुत्री थी, जो अब्राहम के भाई नाहोर की पत्नी थी।<sup>16</sup> युवती बहुत सुंदर थी, एक कुँवारी, किसी पुरुष ने उसके साथ नहीं सोया था। वह झरने पर गई, अपना घड़ा भरा, और ऊपर आई।<sup>17</sup> सेवक ने जल्दी से उसके पास जाकर कहा, “कृपया मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी दो।”<sup>18</sup> ‘पी लो, मेरे स्वामी,’ उसने कहा, और जल्दी से अपने घड़े को अपने हाथों में नीचे किया और उसे पीने के लिए दिया।<sup>19</sup> जब उसने उसे पीने के लिए दिया, तो उसने कहा, “मैं तुम्हारे ऊंटों के लिए पी भी पानी भरूँगी, जब तक कि वे पी न लें।”<sup>20</sup> इसलिए उसने जल्दी से अपने घड़े को नाद में खाली किया, कुँपैं पर दौड़कर और पानी भरा, और सभी ऊंटों के लिए पर्याप्त पानी भरा।<sup>21</sup> वह आदमी चुपचाप उसे ध्यान से देखता रहा कि यहोवा ने उसकी यात्रा को सफल बनाया है या नहीं।<sup>22</sup> जब ऊंटों ने पीना समाप्त किया, तो उस आदमी ने आधे शेकेल का सोने का नधुना और दस शेकेल के दो सोने के कंगन निकारे।<sup>23</sup> फिर उसने पूछा, “तुम किसकी पुत्री हो? कृपया मुझे बताओ, क्या तुम्हारे पिता के घर में हमारे ठहरने के लिए जगह है?”<sup>24</sup> उसने उत्तर दिया, “मैं बधूएल की पुत्री हूँ, जो मिल्का ने नाहोर को जन्म दिया।”<sup>25</sup> और उसने कहा, “हमारे पास बहुत सारा तिनका और चारा है, और रात बिताने के लिए जगह भी है।”<sup>26</sup> फिर उस आदमी ने घुटने टेककर यहोवा की आराधना की,<sup>27</sup> कहते हुए, “धन्य है यहोवा, मेरे स्वामी अब्राहम का परमेश्वर, जिसने मेरे स्वामी पर अपनी कृपा और विश्वसयोग्यता नहीं छोड़ी। जहाँ तक मेरा संबंध है, यहोवा ने मुझे मेरे स्वामी के रिश्टेदारों के घर की यात्रा पर मार्गदर्शन किया है।”<sup>28</sup> युवती दौड़कर अपनी माता के घर को इन बातों की सूचना दी।<sup>29</sup> अब रिबका का एक भाई था जिसका नाम लाबान था, और वह झरने पर उस आदमी के पास दौड़ा।<sup>30</sup> जैसे ही उसने नधुना देखा, और अपनी बहन की बाहों पर कंगन देखे, और रिबका की बात सुनी कि उस आदमी ने उससे क्या कहा, वह उस आदमी के पास गया और उसे ऊंटों के पास झरने के पास खड़ा पाया।<sup>31</sup> ‘आओ, तुम जो

यहोवा के द्वारा आशीर्वदित हो,’ उसने कहा। “तुम यहाँ बाहर क्यों खड़े हो? मैंने घर और ऊंटों के लिए जगह तैयार की है।”<sup>32</sup> इसलिए वह आदमी घर गया, और ऊंटों को उतारा गया। ऊंटों के लिए तिनका और चारा लाया गया, और उसके पैरों और उसके साथ के लोगों के पैरों को धोने के लिए पानी लाया गया।<sup>33</sup> उसके सामने भोजन रखा गया, परन्तु उसने कहा, “मैं तब तक नहीं खाऊँगा जब तक मैं तुम्हें वह न कह दूँ जो मुझे कहना है।”<sup>34</sup> ‘बोलो,’ लाबान ने कहा।<sup>35</sup> यहोवा ने मेरे स्वामी को बहुत आशीर्वद दिया है, और वह धनी हो गया है। उसने उसे भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल, चौंदी और सोना, पुरुष और महिला सेवक, ऊंट और गधे दिए हैं।<sup>36</sup> मेरे स्वामी की पत्नी सारा ने अपनी वृद्धावस्था में उसे एक पुत्र दिया, और उसने उसे अपनी सारी संपत्ति दे दी है।<sup>37</sup> मेरे स्वामी ने मुझे शपथ दिलाई, कहते हुए, तुम मेरे पुत्र के लिए कनानियों की पुत्रियों में से, जिनके देश में मैं रहता हूँ, पत्नी नहीं लोग़;<sup>38</sup> परन्तु तुम मेरे पिता के परिवार और मेरे अपने कुटुम्ब के पास जाओ, और मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी ढूँढ़ो।<sup>39</sup> तब मैंने अपने स्वामी से पूछा, यदि स्त्री मेरा अनुसरण नहीं करती तो क्या होगा?<sup>40</sup> उसने उत्तर दिया, यहोवा, जिसके सामने मैं चला हूँ, तुम्हारे साथ अपना दूत भेजोगा और तुम्हारी यात्रा को सफल बनाएगा, ताकि तुम मेरे पुत्र के लिए मेरे अपने कुटुम्ब और मेरे पिता के परिवार से एक पत्नी ढूँढ़ सको।<sup>41</sup> यदि तुम मेरे परिवार के पास जाओ और वे उसे तुम्हें देने से इंकार कर दें—तब तुम मेरी शपथ से मुक्त हो जाओग।<sup>42</sup> “जब मैं आज झरने पर आया, तो मैंने प्रार्थना की, हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, यदि आप चाहें, तो कृपया उस यात्रा को सफल बनाएं जिस पर मैं आया हूँ।”<sup>43</sup> देखो, मैं झरने के पास खड़ा हूँ। यदि कोई युवती जल भरने आए और मैं उससे कहूँ, “कृपया मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी पीने दो,”<sup>44</sup> और वह उत्तर दे, “पी लो, और मैं तुम्हारे ऊंटों के लिए भी पानी भरूँगी,” तो वही वह हो जिसे यहोवा ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिए चुना है।<sup>45</sup> “मेरे हृदय में प्रार्थना समाप्त करने से पहले ही, रिबका अपने कथे पर घड़ा लेकर बाहर आई। वह झरने पर गई और पानी भरा, और मैंने उससे कहा, ‘कृपया मुझे पीने के लिए दो।’<sup>46</sup> उसने जल्दी से अपने कथे से घड़ा नीचे किया और कहा, ‘पी लो, और मैं तुम्हारे ऊंटों को भी पानी पिलाऊँगी।’ इसलिए मैंने पीया, और उसने ऊंटों को भी पानी पिलाया।<sup>47</sup> मैंने उससे पूछा, ‘तुम किसकी पुत्री हो?’ उसने कहा, ‘बधूल की पुत्री, नाहोर का पुत्र, जिसे मिल्का ने उसे जन्म दिया।’ फिर मैंने उसके नाक में नधुना और उसकी कलाई पर कंगन डाले।<sup>48</sup> मैंने

## उत्पत्ति

झुककर यहोवा की आराधना की। मैंने यहोवा की स्तुति की, मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर की, जिसने मुझे सही मार्ग पर मेरे स्वामी के भाई की पुत्री को उसके पुत्र के लिए लेने के लिए मार्गदर्शन किया।<sup>49</sup> अब यदि तुम मेरे स्वामी पर कृपा और विश्वासयोग्यता दिखाओगे, तो मुझे बताओ; और यदि नहीं, तो मुझे बताओ, ताकि मुझे पता चले कि किस दिशा में मुड़ना है।”<sup>50</sup> लाबान और बधूएल ने उत्तर दिया, “यह मामला यहोवा से है; हम तुहाँ अच्छा या बुरा कुछ नहीं कह सकते।”<sup>51</sup> यहाँ रिबका है; उसे ले जाओ और जाओ, और उसे तुम्हारे स्वामी के पुत्र की पत्नी बनने दो, जैसा कि यहोवा ने कहा है।”<sup>52</sup> जब अब्राहम के सेवक ने उनके शब्द सुने, तो वह यहोवा के सामने भूमि पर झुक गया।<sup>53</sup> फिर सेवक ने चाँदी और सोने के आभूषण और वस्त्र निकाले और रिबका को दिए; उसने उसके भाई और उसकी माता को भी कीमती उपहार दिए।<sup>54</sup> फिर उसने और उसके साथ के लोगों ने खाया और पिया और वहाँ रात बिताई। जब वे सुबह उठे, तो उसने कहा, “मुझे मेरे स्वामी के पास जाने के लिए विदा करो।”<sup>55</sup> परन्तु उसके भाई और उसकी माता ने कहा, “युवती को हमारे साथ कुछ दिन, कहो दस दिन, रहने दो; फिर वह जा सकती है।”<sup>56</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, “मुझे मेरे विलंब न करो, अब जब कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सफल बनाया है। मुझे मेरे स्वामी के पास जाने के लिए विदा करो।”<sup>57</sup> तब उन्होंने कहा, “आओ, हम युवती को बुलाएँ और उससे पूछें।”<sup>58</sup> इसलिए उन्होंने रिबका को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम इस आदमी के साथ जाओगी?” उसने कहा, “मैं जाऊँगी।”<sup>59</sup> इसलिए उन्होंने अपनी बहन रिबका को उसकी यात्रा पर भेजा, उसके दाई और अब्राहम के सेवक और उसके लोगों के साथ।<sup>60</sup> और उन्होंने रिबका को आशीर्वाद दिया और उससे कहा, “हमारी बहन, तुम हजारों दस हजारों बनो; तुम्हारे वंशज उन लोगों के द्वारों का अधिकार प्राप्त करें जो उनसे घृणा करते हैं।”<sup>61</sup> फिर रिबका और उसकी सेविकाएँ तैयार हुईं और ऊंटों पर बैठीं और उस आदमी का अनुसरण किया। इसलिए सेवक रिबका को लेकर चला गया।<sup>62</sup> अब इसकां बियर लहाई रोई से आया था, क्योंकि वह नेगेव में निवास कर रहा था।<sup>63</sup> वह एक शाम को मैदान में चिंतन करने गया, और जब उसने ऊपर देखा, तो उसने ऊंटों को अते देखा।<sup>64</sup> रिबका ने भी ऊपर देखा और इसहाक को देखा, “वह अपने ऊंट से उत्तर गई।”<sup>65</sup> और सेवक से पूछा, “वह आदमी कौन है जो मैदान में हमसे मिलने आ रहा है?” सेवक ने उत्तर दिया, “वह मेरा स्वामी है।” इसलिए उसने अपनी धूधट ली और अपने को ढक लिया।<sup>66</sup> फिर सेवक ने इसहाक को सब कुछ बताया जो उसने किया था।<sup>67</sup> इसहाक

उसे अपनी माता सारा के तंबू में ले आया, और उसने रिबका से विवाह किया। वह उसकी पत्नी बनी, और उसने उससे प्रेम किया; और इसहाक अपनी माता की मृत्यु के बाद सांत्वना प्राप्त की।

**25** अब्राहम ने एक और पत्नी ली, जिसका नाम केतूरा था।<sup>2</sup> उसने उसे ज़िग्रान, योक्षान, मिदान, मिद्यान, ईशबाक और शूअह को जन्म दिया।<sup>3</sup> योक्षान शेबा और देदान का पिता था। देदान के वंशज अशूरी, लेतूशी और लेतुरमी थे।<sup>4</sup> मिद्यान के पुत्र एफा, एफेर, हनोक, अबीदा और एलदाआह थे। ये सभी केतूरा के वंशज थे।<sup>5</sup> अब्राहम ने अपनी सारी संपत्ति इसहाक को दे दी।<sup>6</sup> परन्तु जब वह जीवित था, उसने अपनी रखैतों के पुत्रों को उपहार दिए और उन्हें अपने पुत्र इसहाक से दूर पूर्ब के देश में भेज दिया।<sup>7</sup> अब्राहम कुल 175 वर्ष जीवित रहे।<sup>8</sup> फिर अब्राहम ने अंतिम सांस ली और वृद्धावस्था में, एक बुद्ध और पूर्ण आयु में मर गए; और वह अपने लोगों में मिल गए।<sup>9</sup> उनके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उन्हें मररे के पास मखपेला की गुफा में, हिंडी सोहर के पुत्र एप्रोन के खेत में दफनाया।<sup>10</sup> वह खेत जो अब्राहम ने हितियों से खरीदा था। वहाँ अब्राहम को उनकी पत्नी सारा के साथ दफनाया गया।<sup>11</sup> अब्राहम की मृत्यु के बाद, परमेश्वर ने उनके पुत्र इसहाक को आशीर्वाद दिया, जो बीर लहाई रोई के पास रहते थे।<sup>12</sup> यह अब्राहम के पुत्र इश्माएल के परिवार की वंशशाली है, जिसे हाजिरा मिस्री, सारा की दासी, ने अब्राहम के लिए जन्म दिया।<sup>13</sup> ये इश्माएल के पुत्रों के नाम हैं, उनके जन्म के क्रम में: नबायोत, जो पहला था, फिर केदार, अदबेल, मिबसाम,<sup>14</sup> मिश्मा, दूमा, मस्सा,<sup>15</sup> हृदद, तेमा, यतूर, नफीश और केदमा।<sup>16</sup> ये इश्माएल के पुत्र थे, और ये उनके बस्तियों और शिविरों के अनुसार बारह जनजातीय शासकों के नाम हैं।<sup>17</sup> इश्माएल कुल 137 वर्ष जीवित रहे। उन्होंने अंतिम सांस ली और मर गए, और अपने लोगों में मिल गए।<sup>18</sup> उनके वंशज हविला से लेकर शूर तक के क्षेत्र में बसे, मिस्र की पूर्वी सीमा के पास, अशूर की ओर जाते हुए। और वे अपने सभी रिश्तेदारों के प्रति शत्रुता में रहते थे।<sup>19</sup> यह अब्राहम के पुत्र इसहाक के परिवार की वंशशाली है। अब्राहम इसहाक का पिता बना,<sup>20</sup> और इसहाक चालीस वर्ष का था जब उसने पद्धन अराम के अरामी बेतूएल की पुत्री और लाबान की बहन रिबका से विवाह किया।<sup>21</sup> इसहाक ने अपनी पत्नी के लिए यहोवा से प्रार्थना की, क्योंकि वह निःसंतान थी। यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुनी, और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हो गई।<sup>22</sup> बच्चे उसके गर्भ में एक-दूसरे से टकरा रहे थे, और उसने कहा, “यह मेरे साथ क्यों हो रहा है?” इसलिए वह

## उत्पत्ति

यहोवा से पूछने गई।<sup>23</sup> यहोवा ने उससे कहा, "तेरे गर्भ में दो जातियाँ हैं, और तेरे भीतर से दो लोग अलग होंगे; एक दूसरे से अधिक शक्तिशाली होगा, और बड़ा छोटे की सेवा करेगा।"<sup>24</sup> जब उसके प्रसव का समय आया, तो उसके गर्भ में जुड़वां लड़के थे।<sup>25</sup> पहला जो बाहर आया वह लाल था, और उसका पूरा शरीर एक बालों वाले वस्त्र की तरह था; इसलिए उन्होंने उसका नाम एसाव रखा।<sup>26</sup> इसके बाद, उसका भाई बाहर आया, उसकी एड़ी पकड़ते हुए; इसलिए उसका नाम याकूब रखा गया। जब रिबका ने उन्हें जन्म दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था।<sup>27</sup> लड़के बड़े हुए, और एसाव एक कुशल शिकारी बन गया, खुले देश का आदमी, जबकि याकूब तबुअँ के बीच घर पर रहने में संतुष्ट था।<sup>28</sup> इसहाक, जिसे जंगली खेल का स्वाद पसंद था, एसाव से प्रेम करता था, लेकिन रिबका याकूब से प्रेम करती थी।<sup>29</sup> एक बार जब याकूब कुछ स्टू पका रहा था, एसाव खुले देश से भूखा आया।<sup>30</sup> उसने याकूब से कहा, "जल्दी करो, मुझे उस लाल स्टू में से कुछ दे दो। मैं भूखा हूँ।" इसलिए उसे एदोम भी कहा गया।<sup>31</sup> याकूब ने उत्तर दिया, "पहले मुझे अपनी पैतृक संपत्ति बेच दो।"<sup>32</sup> "देखो, मैं मरने वाला हूँ," एसाव ने कहा। 'मेरे लिए पैतृक संपत्ति का क्या लाभ?'<sup>33</sup> लेकिन याकूब ने कहा, "पहले मुझे शपथ दिलाओ।"<sup>34</sup> इसलिए उसने उसे शपथ दिलाई, अपनी पैतृक संपत्ति याकूब को बेच दी।<sup>35</sup> फिर याकूब ने एसाव को कुछ रोटी और मसूर की स्टू दी। उसने खाया और पिया, और फिर उठकर चला गया। इस प्रकार एसाव ने अपनी पैतृक संपत्ति का तिरस्कार किया।

**26** अब उस देश में अकाल पड़ा - अब्राहम के समय के पहले अकाल के अलावा - और इसहाक पलिशित्यों के राजा अबीमेलेक के पास गरार गया।<sup>2</sup> प्रभु इसहाक के समाने प्रकट हुए और कहा, "पिस मत जाओ; उस देश में रहो जहाँ मैं तुम्हें रहने के लिए कहता हूँ।"<sup>3</sup> कुछ समय के लिए इस देश में रहो, और मैं तुम्हरे साथ रहूँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। क्योंकि मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को ये सभी देश दूँगा और उस शपथ की पुष्टि करूँगा जो मैंने तुम्हरे पिता अब्राहम से की थी।<sup>4</sup> मैं तुम्हरे वंशजों को आकाश के तारों के समान अनेक कर दूँगा और उन्हें ये सभी देश दूँगा, और तुम्हारे वंश के माध्यम से पृथ्वी की सभी जातियाँ आशीर्वादित होंगी,<sup>5</sup> क्योंकि अब्राहम ने मेरी आज्ञा मानी और जो कुछ मैंने उससे माँगा वह सब किया, मेरी आज्ञाओं, मेरे नियमों और मेरे निर्देशों का पालन किया।"<sup>6</sup> इसलिए इसहाक गरार में रहा।<sup>7</sup> जब उस स्थान के पुरुषों ने उसकी पत्नी के बारे में पूछा, तो उसने कहा, "वह मेरी बहन है,"

क्योंकि वह कहने से डरता था, "वह मेरी पत्नी है।" उसने सोचा, "वे मुझे रिबका के कारण मार सकते हैं, क्योंकि वह सुंदर है।"<sup>8</sup> जब इसहाक वहाँ लंबे समय तक रहा, तो पलिशित्यों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की से देखा और इसहाक को उसकी पत्नी रिबका को प्यार करते हुए देखा।<sup>9</sup> तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया और कहा, "वह वास्तव में तुम्हारी पत्नी है। तुमने क्यों कहा, 'वह मेरी बहन है?'" इसहाक ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने सोचा कि मैं उसके कारण अपनी जान खो सकता हूँ।"<sup>10</sup> तब अबीमेलेक ने कहा, "तुमने यह हमारे साथ क्या किया? हम में से कोई तुम्हारी पत्नी के साथ सो सकता था, और तुमने हम पर दोष लाया होता।"<sup>11</sup> इसलिए अबीमेलेक ने सभी लोगों को आदेश दिया: "जो कोई इस व्यक्ति या उसकी पत्नी को नुकसान पहुँचाएगा, उसे निश्चित रूप से मार डाला जाएगा।"<sup>12</sup> इसहाक ने उस देश में फसल बोर्ड और उसी वर्ष सौ गुना फसल प्राप्त की, क्योंकि प्रभु ने उसे आशीर्वाद दिया।<sup>13</sup> वह व्यक्ति धनी हो गया, और उसकी संपत्ति बहुती गई जब तक कि वह बहुत धनी नहीं हो गया।<sup>14</sup> उसके पास इतनी अधिक भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और सेवक थे कि पलिशित्यों ने उससे ईर्ष्या की।<sup>15</sup> इसलिए उसके पिता के सेवकों ने अब्राहम के समय में जो कुएँ खोदे थे, उन्हें पलिशित्यों ने मिट्टी से भर दिया।<sup>16</sup> तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमसे दूर चलो जाओ; तुम हमारे लिए बहुत शक्तिशाली हो गए हो।"<sup>17</sup> इसलिए इसहाक वहाँ से चला गया और गरार की घाटी में डोरा डाला, जहाँ उसने निवास किया।<sup>18</sup> इसहाक ने उन कुओं को फिर से खोला जो उसके पिता अब्राहम के समय में खोदे गए थे, जिन्हें अब्राहम की मृत्यु के बाद पलिशित्यों ने बंद कर दिया था, और उन्हें वही नाम दिए जो उसके पिता ने दिए थे।<sup>19</sup> इसहाक के सेवकों ने घाटी में खोदाइ की और वहाँ ताजे पानी का एक कुआँ पाया।<sup>20</sup> लेकिन गरार के चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया और कहा, "यह पानी हमारा है!" इसलिए उसने उस कुएँ का नाम एसक रखा, क्योंकि उन्होंने उसके विवाद किया।<sup>21</sup> फिर उन्होंने एक और कुआँ खोदा, लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ; इसलिए उसने उसका नाम सिखा रखा।<sup>22</sup> वह वहाँ से आगे बढ़ा और एक और कुआँ खोदा, और उस पर कोई झगड़ा नहीं हुआ। उसने उसका नाम रहोबोत रखा, यह कहते हुए, "अब प्रभु ने हर्में स्थान दिया है और हम इस देश में फलेंगे-फूलेंगे।"<sup>23</sup> वहाँ से वह बर्शेबा गया।<sup>24</sup> उस रात प्रभु उसके समाने प्रकट हुए और कहा, "मैं तुम्हारे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ। मत डोरा, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा और अपने सेवक अब्राहम के कारण तुम्हारे वंशजों की संखा बढ़ाऊँगा।"<sup>25</sup> इसहाक ने वहाँ एक वेदी

## उत्पत्ति

बनाई और प्रभु के नाम का आह्वान किया। वहाँ उसने अपना तंबू लगाया, और उसके सेवकों ने एक कुआँ खोदा।<sup>26</sup> इस बीच, अबीमेलेक गरार से उसके पास आया, अपने व्यक्तिगत सलाहकार अहुजात और अपनी सेना के कमांडर फीकल के साथ।<sup>27</sup> इसहाक ने उसने पूछा, “तुम मेरे पास क्यों आए हो, जब तुम मुझसे शत्रुता रखते थे और मुझे दूर भेज दिया था?”<sup>28</sup> उहोंने उत्तर दिया, “हमने स्पष्ट रूप से देखा कि प्रभु तुम्हारे साथ है; इसलिए हमने कहा, हमारे बीच एक शपथबद्ध समझौता होना चाहिए—हमारे और तुम्हारे बीच। हम तुम्हारे साथ एक सधि करें”<sup>29</sup> कि तुम हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे, जैसे हमने तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया और हमेशा तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया और तुम्हें शांति से भेज दिया। और अब तुम प्रभु द्वारा आशीर्वादित हो।”<sup>30</sup> तब इसहाक ने उनके लिए एक भोज बनाया, और उहोंने खाया और पिया।<sup>31</sup> अगली सुबह जल्दी पुरुषों ने एक-दूरसे से शपथ ली। फिर इसहाक ने उन्हें उनके रास्ते पर भेज दिया, और वे उसे शांति से छोड़ गए।<sup>32</sup> उसी दिन इसहाक के सेवक आए और उसे उस कुँए के बारे में बताया जो उहोंने खोदा था। उहोंने कहा, “हमें पानी मिला है!”<sup>33</sup> उसने उसका नाम शिबा रखा, और आज तक उस नगर का नाम बैरेबा है।<sup>34</sup> जब एसाव चालीस वर्ष का था, उसने हिती बिरी की बेटी जुडिथ और हिती लौन की बेटी बासेमथ से विवाह किया।<sup>35</sup> वे इसहाक और रिबका के लिए दुःख का कारण बने।

**27** जब इसहाक कुढ़े हो गए और उनकी आँखें इतनी कमजोर हो गई कि वे देख नहीं सकते थे, उहोंने अपने बड़े बेटे एसाव को बुलाया और उससे कहा, “मेरे बेटे!” एसाव ने उत्तर दिया, “यहाँ मैं हूँ।”<sup>2</sup> इसहाक ने कहा, “मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और अपनी मृत्यु के दिन को नहीं जानता।”<sup>3</sup> अब, अपने उपकरण—अपना तरकश और धनुष—ले लो और खुले मैदान में जाकर मेरे लिए कुछ जंगली शिकार का शिकार करो।<sup>4</sup> मेरे लिए वैसा ही स्वादिष्ट भोजन तैयार करो जैसा मुझे पसंद है और मुझे खाने के लिए लाओ, ताकि मैं तुम्हें मरने से पहले अपनी आशीर्वाद दे सकूँ।<sup>5</sup> अब रिबका सुन रही थी जब इसहाक अपने बेटे एसाव से बात कर रहे थे। जब एसाव शिकार करने और उसे वापस लाने के लिए खुले मैदान में गया,<sup>6</sup> रिबका ने अपने बेटे याकूब से कहा, “देखो, मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से कहते सुना,”<sup>7</sup> मेरे लिए कुछ शिकार लाओ और मेरे लिए कुछ स्वादिष्ट भोजन तैयार करो, ताकि मैं मरने से पहले प्रभु की उपस्थिति में तुम्हें आशीर्वाद दे सकूँ।<sup>8</sup> अब, मेरे बेटे, ध्यान से सुनो और जो मैं कहती हूँ वह करो: <sup>9</sup> हुंडि

मैं जाओ और मेरे लिए दो अच्छे युवा बकरों को लाओ, ताकि मैं तुम्हारे पिता के लिए कुछ स्वादिष्ट भोजन तैयार कर सकूँ, जैसा उहोंने पसंद है।<sup>10</sup> फिर इसे अपने पिता को खाने के लिए ले जाओ, ताकि वह मरने से पहले तुम्हें आशीर्वाद दे सके।<sup>11</sup> याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, “लेकिन मेरा भाई एसाव एक बालों वाला आदमी है जबकि मेरी त्वाय चिकनी है।<sup>12</sup> क्या होगा अगर मेरे पिता मुझे छू लें? मैं उहोंने थोखा देने वाला प्रतीत होऊंगा और आशीर्वाद के बाजाय अपने ऊपर श्राप ले आऊंगा।”<sup>13</sup> उसकी माँ ने उससे कहा, “मेरे बेटे, श्राप मुझे पर पढ़े। बस वही करो जो मैं कहती हूँ, जाओ और उहोंने मेरे लिए लाओ।”<sup>14</sup> तो वह गया और उन्हें लाया और अपनी माँ के पास लाया, और उसने कुछ स्वादिष्ट भोजन तैयार किया, जैसा उसके पिता को पसंद था।<sup>15</sup> फिर रिबका ने अपने बड़े बेटे एसाव के सबसे अच्छे कपड़े, जो उसके पास घर में थे, लिए और अपने छोटे बेटे याकूब को पहनाए।<sup>16</sup> उसने उसके हाथों और उसकी गर्भन के चिकने हिस्से के बकरी की खाल से ढक दिया।<sup>17</sup> फिर उसने अपने बेटे याकूब को वह स्वादिष्ट भोजन और रोटी दी जो उसने बनाई थी।<sup>18</sup> वह अपने पिता के पास गया और कहा, “मेरे पिता!”<sup>19</sup> मैं, मेरे बेटे,” उसने उत्तर दिया। “कौन है?”<sup>20</sup> याकूब ने अपने पिता से कहा, “मैं आपका पहलौठा एसाव हूँ।” मैंने जैसा आपने कहा था वैसा किया है। कृपया उठकर मेरे शिकार में से कुछ खाएं, ताकि आप मुझे आशीर्वाद दे सकें।”<sup>21</sup> इसहाक ने अपने बेटे से पूछा, “तुमने इसे इतनी जल्दी कैसे पाया, मेरे बेटे?” उसने उत्तर दिया, “आपके परमेश्वर यहोवा ने मुझे सफलता दी।”<sup>22</sup> फिर इसहाक ने याकूब से कहा, “पास आओ ताकि मैं तुम्हें छू सकूँ, मेरे बेटे, यह जानने के लिए कि तुम वास्तव में मेरे बेटे एसाव हो या नहीं।”<sup>23</sup> याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया, जिसने उसे छूआ और कहा, “आवाज याकूब की है, लेकिन हाथ एसाव के हैं।”<sup>24</sup> वह उसे पहचान नहीं पाया, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई एसाव की तरह बालों वाले थे; इसलिए उसने उसे आशीर्वाद दिया।<sup>25</sup> फिर उसने कहा, “मेरे बेटे, अपने शिकार में से कुछ लाओ ताकि मैं खा सकूँ और तुम्हें आशीर्वाद दे सकूँ।”<sup>26</sup> याकूब ने उसे लाकर खिलाया; और उसने कुछ दाखमधू भी लाया और उसने पिया।<sup>27</sup> फिर उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, “यहाँ आओ, मेरे बेटे, और मुझे चूमो।”<sup>28</sup> तो वह उसके पास गया और उसे चूमा। जब इसहाक ने उसके कपड़ों की गंध को पकड़ा, उसने उसे आशीर्वाद दिया और कहा: “आह, मेरे बेटे की गंध उस खेत की गंध जैसी है जिसे यहोवा ने आशीर्वाद दिया है।

## उत्पत्ति

दे—अनाज और नए दाखमधु की प्रचुरता।<sup>29</sup> राष्ट्र तुम्हारी सेवा करें और लोग तुम्हारे सामने दूँकें। अपने भाईयों के ऊपर प्रभु बनो, और तुम्हारी माता के पुत्र तुम्हारे सामने दूँकें। जो तुम्हें श्राप दें वे श्रापित हों और जो तुम्हें आशीर्वाद दें वे आशीर्वादित हों।<sup>30</sup> इसहाक ने उसे आशीर्वाद देने के बाद और याकूब अपने पिता की उपस्थिति से मुश्किल से बाहर निकला था, कि उसका भाई एसाव शिकार से आया।<sup>31</sup> उसने भी कुछ स्वादिष्ट भोजन तैयार किया और उसे अपने पिता के पास लाया। फिर उसने उससे कहा, “मेरे पिता, कृपया उठकर मेरे शिकार में से कुछ खाएं, ताकि आप मुझे आशीर्वाद दे सकें।”<sup>32</sup> उसके पिता इसहाक ने उससे पूछा, “तुम कौन हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं आपका बेटा हूँ, आपका पहलौठ, एसाव।”<sup>33</sup> इसहाक जोर से काँप उठा और कहा, “फिर वह कौन था जिसने शिकार किया और उसे मेरे पास लाया? मैंने उसे खा लिया है और उसे आशीर्वाद दिया है—और वह वास्तव में आशीर्वादित होगा।”<sup>34</sup> जब एसाव ने अपने पिता के शब्द सुने, वह जोर से और कड़वे रोने के साथ चिल्लाया और अपने पिता से कहा, “मुझे भी आशीर्वाद दें—मुझे भी, मेरे पिता!”<sup>35</sup> लेकिन उसने कहा, “तुम्हारा भाई छल से आया और तुम्हारा आशीर्वाद ले लिया।”<sup>36</sup> एसाव ने कहा, “क्या उसका नाम याकूब सही नहीं है? यह दूसरी बार है जब उसने मुझे धोखा दिया है: उसने मेरा जन्मसिद्ध अधिकार लिया, और अब उसने मेरा आशीर्वाद ले लिया।” फिर उसने पूछा, “क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद नहीं रखा है?”<sup>37</sup> इसहाक ने एसाव को उत्तर दिया, “मैंने उसे तुम्हारे ऊपर प्रभु बना दिया है और उसके सभी रिश्वेदारों को उसके सेवक बना दिया है, और मैंने उसे अनाज और नए दाखमधु से बनाए रखा है। तो मैं तुम्हरे लिए क्या कर सकता हूँ, मेरे बेटे?”<sup>38</sup> एसाव ने अपने पिता से कहा, “क्या आपके पास केवल एक ही आशीर्वाद है, मेरे पिता? मुझे भी आशीर्वाद दें, मेरे पिता!” फिर एसाव जोर से रोया।<sup>39</sup> उसके पिता इसहाक ने उसे उत्तर दिया, “तुम्हारा निवास पृथीवी की समृद्धि से दूर होगा, स्वर्ग की ओस से दूर।”<sup>40</sup> तुम तलवार के सहारे जीवित रहोगे और अपने भाई की सेवा करोगे। लेकिन जब तुम बेचैन हो जाओगे, तो तुम उसकी जुए को अपनी गर्दन से उतार फेंकोगे।”<sup>41</sup> एसाव ने याकूब के खिलाफ द्वेष रखा क्योंकि उसके पिता ने उसे आशीर्वाद दिया था। उसने अपने आप से कहा, “मेरे पिता के शोक के दिन निकट हैं; तब मैं अपने भाई याकूब को मार डालूँगा।”<sup>42</sup> जब रिबका को बताया गया कि उसके बड़े बेटे एसाव ने क्या कहा है, उसने अपने छोटे बेटे याकूब को बुलाया और उससे कहा, “तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने की योजना बना रहा है।”<sup>43</sup> अब, मेरे बेटे, जो मैं कहती हूँ वह

करो: तुरंत मेरे भाई लाबान के पास हरान भाग जाओ।

<sup>44</sup> कुछ समय के लिए उसके साथ रहो जब तक कि तुम्हारे भाई का क्रोध शांत न हो जाए।<sup>45</sup> जब तुम्हारा भाई अब तुम पर क्रोधित नहीं होगा और जो तुमने उससे किया है उसे भूल जाएगा, तो मैं तुम्हें वहाँ से वापस बुलाऊँगी। क्यों मझे एक ही दिन में तुम दोनों को खोना चाहिए?”<sup>46</sup> फिर रिबका ने इसहाक से कहा, “मैं इन हिती स्त्रियों के कारण जीने से तंग आ गई हूँ। यदि याकूब उनमें से एक को, हेत की पुत्रियों में से, पती बनाता है, तो मेरा जीवन जीने लायक नहीं रहेगा।”

**28** इसलिए इसहाक ने याकूब को बुलाया और उसे आशीर्वाद दिया। फिर उसने उसे आज्ञा दी: “किसी कनानी स्त्री से विवाह मत करना।”<sup>2</sup> तुरंत पद्धन अराम जाओ, अपनी माता के पिता बृत्यूल के घर। वहाँ अपने लिए अपनी माता के भाई लाबान की पुत्रियों में से एक पती लेना।<sup>3</sup> सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हें फलवंत बनाए और तुम्हारी संख्या बढ़ाए जब तक कि तुम लोगों का समुदाय न बन जाओ।<sup>4</sup> वह तुम्हें और तुम्हारे बचांजों को अब्राहम की दिया गया आशीर्वाद दे, ताकि तुम उस भूमि का अधिकार प्राप्त कर सको जहाँ तुम अब परदेशी के रूप में निवास कर रहे हो, वह भूमि जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी।”<sup>5</sup> फिर इसहाक ने याकूब को विदा किया, और वह पद्धन अराम को गया, अरामी बृत्यूल के पुत्र लाबान के पास, जो रिबका का भाई था, जो याकूब और एसाव की माता थी।<sup>6</sup> अब एसाव ने जाना कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया और उसे पद्धन अराम भेजा कि वहाँ से एक पती ले आए, और जब उसने उसे आशीर्वाद दिया तो उसे आज्ञा दी, “किसी कनानी स्त्री से विवाह मत करना,”<sup>7</sup> और याकूब ने अपने पिता और माता की बात मानी और पद्धन अराम को गया।<sup>8</sup> तब एसाव ने देखा कि कनानी स्त्रियों उसके पिता इसहाक को अप्रसन्न करती हैं,<sup>9</sup> इसलिए वह इश्माएल के पास गया और महलात से विवाह किया, जो नवायोत की बहन और इश्माएल की पुत्री थी, जो अब्राहम का पुत्र था, उन पतियों के अलावा जो उसके पास पहले से थीं।<sup>10</sup> याकूब बेर्शेबा से चला और हारान की ओर चला।<sup>11</sup> जब वह एक निश्चित स्थान पर पहुँचा, तो वह रात के लिए रुका क्योंकि सूर्य अस्त हो चुका था। वहाँ के एक पथर को लेकर उसने उसे अपने सिर के नीचे रखा और सोने के लिए लेट गया।<sup>12</sup> उसने एक स्वप्न देखा जिसमें उसने एक सीढ़ी देखी जो पृथी पर टिकी हुई थी, और उसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुँच रहा था, और परमेश्वर के द्वारा उस पर चढ़ते और उतरते थे।<sup>13</sup> उसके ऊपर यहोवा खड़ा था, और उसने कहा: “मैं यहोवा हूँ, तुम्हारे पिता अब्राहम

## उत्पत्ति

का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर। मैं तुम्हें और तुम्हरे वंशजों को वह भूमि दूँगा जिस पर तुम लेटे हो।<sup>14</sup> तुम्हरे वंशज पृथी की धूल के समान होंगे, और तुम पश्चिम और पूर्व, उत्तर और दक्षिण में फैलोगे। पृथी के सभी लोग तुम्हरे और तुम्हरे वंश के माध्यम से आशीर्वादित होंगे।<sup>15</sup> मैं तुम्हरे साथ हूँ और जहाँ भी तुम जाओगे तुम्हारी रक्षा करूँगा, और तुम्हें इस भूमि पर वापस लाऊँगा। जब तक मैं तुम्हरे लिए जो कुछ मैंने बादा किया है उसे पूरा नहीं कर लौँगा, तब तक मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।<sup>16</sup> जब याकूब नीद से जागा, तो उसने सोचा, “निश्चित रूप से यहोवा इस स्थान पर है, और मुझे इसका पता नहीं था।”<sup>17</sup> वह डर गया और कहा, “यह स्थान कितना अद्भुत है! यह परमेश्वर का घर है; यह स्वर्ग का द्वार है।”<sup>18</sup> अगली सुबह जल्दी याकूब ने उस पथर को लिया जिसे उसने अपने सिर के नीचे रखा था और उसे एक स्तंभ के रूप में खड़ा किया और उसके ऊपर तेल डाला।<sup>19</sup> उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा, हालांकि उस नगर का नाम पहले लूज था।<sup>20</sup> तब याकूब ने एक मत्रत मानी, “यदि परमेश्वर मेरे साथ रहेगा और इस यात्रा में मेरी रक्षा करेगा जो मैं कर रहा हूँ और मुझे खाने के लिए भोजन और पहनने के लिए कपड़े देगा।<sup>21</sup> ताकि मैं अपने पिता के घर सुरक्षित लौट सकूँ, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा।<sup>22</sup> और यह पथर जिसे मैंने एक स्तंभ के रूप में खड़ा किया है, परमेश्वर का घर होगा, और जो कुछ भी तू मुझे देगा, उसका दसवा हिस्सा मैं तुझे दूँगा।”

**29** तब याकूब अपनी यात्रा पर आगे बढ़ा और पूर्व लोगों के देश में पहुँचा।<sup>2</sup> वहाँ उसने खुले मैदान में एक कुआँ देखा, जिसके पास तीन झुंड भेड़े लेटी थीं क्योंकि उन झुंडों को उस कुएँ से पानी पिलाया जाता था। एक बड़ा पथर कुएँ के मुँह को ढके हुए था।<sup>3</sup> जब सभी झुंड वहाँ इकट्ठे होते, तो चरवाहे कुएँ के मुँह से पथर हटा देते और भेड़ों को पानी पिलाते। फिर वे पथर को उसकी जगह पर वापस रख देते।<sup>4</sup> याकूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयों, तुम कहाँ से हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “हम हारान से हैं।”<sup>5</sup> उसने उनसे कहा, “क्या तुम लाबान को जानते हो, जो नाहोर का पोता है?” उन्होंने उत्तर दिया, “हाँ, हम उसे जानते हैं।”<sup>6</sup> तब याकूब ने उनसे पूछा, “क्या वह कुशल से है?” उन्होंने कहा, “हाँ, वह कुशल से है, और यहाँ उसकी बेटी राहेल भेड़ों के साथ आ रही है।”<sup>7</sup> “देखो,” उसने कहा, “सूरज अभी ऊँचा है; यह झुंडों को इकट्ठा करने का समय नहीं है। भेड़ों को पानी पिलाओ और उन्हें चरागाह में वापस ले जाओ।”<sup>8</sup> लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, “हम नहीं कर सकते जब तक कि सभी झुंड इकट्ठे न हों जाएँ और कुएँ

के मुँह से पथर हटा न दिया जाए। तब हम भेड़ों को पानी पिलाएँगे।”<sup>9</sup> जब वह उनसे बात कर ही रहा था, राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आई, क्योंकि वह एक चरवाहा थी।<sup>10</sup> जब याकूब ने लाबान की बेटी राहेल को देखा, जो उसकी माँ का भाई था, और लाबान की भेड़ों को देखा, तो वह कुएँ के पास गया और पथर को हटा दिया और अपने मामा की भेड़ों को पानी पिलाया।<sup>11</sup> तब याकूब ने राहेल को चूमा और जोर से रोने लगा।<sup>12</sup> उसने राहेल को बताया कि वह उसके पिता का रिश्तेदार है और रिबका का पुत्र है। इसलिए वह दौड़कर अपने पिता को बताने गई।<sup>13</sup> जैसे ही लाबान ने याकूब के बारे में सुना, जो उसकी बहन का पुत्र था, वह उसे मिलने के लिए दौड़ा। उसने उसे गले लगाया और चूमा और उसे अपने घर ले गया। याकूब ने उसे सब कुछ बताया।<sup>14</sup> तब लाबान ने उससे कहा, “तुम वास्तव में मेरी अपनी हड्डी और मांस हो।” याकूब उसके साथ एक मरीने तक रहा,<sup>15</sup> लाबान ने उससे कहा, “सिफ़ इसलिए कि तुम मेरे रिश्तेदार हो, क्या तुम्हें मेरे लिए मुफ्त में काम करना चाहिए? मुझे बताओ कि तुम्हारी मजदूरी क्या होनी चाहिए।”<sup>16</sup> अब लाबान की दो बेटियाँ थीं; बड़ी का नाम लिया था, और छोटी का नाम राहेल था।<sup>17</sup> लिया की अर्खें कमज़ोर थीं, लेकिन राहेल का शरीर सुंदर और आकर्षक था।<sup>18</sup> याकूब राहेल से प्रेम करता था और उसने कहा, “मैं तुम्हारी छोटी बेटी राहेल के लिए सात साल तक काम करूँगा।”<sup>19</sup> लाबान ने कहा, “यह बेहतर है कि मैं उसे तुम्हें दूँ बजाय किरी और आदमी को। मेरे साथ रहो।”<sup>20</sup> इसलिए याकूब ने राहेल के लिए सात साल तक सेवा की, लेकिन उसके लिए वे कुछ ही दिनों के समान लगे क्योंकि वह उससे प्रेम करता था।<sup>21</sup> तब याकूब ने लाबान से कहा, “मुझे मेरी पती दो। मेरा समय पूरा हो गया है, और मैं उसके साथ रहना चाहता हूँ।”<sup>22</sup> इसलिए लाबान ने उस स्थान के सभी लोगों को इकट्ठा किया और एक भोज दिया।<sup>23</sup> लेकिन जब शाम आई, तो उसने अपनी बेटी लिया को लिया और याकूब को दे दिया, और याकूब ने उसके साथ सहवास किया।<sup>24</sup> और लाबान ने अपनी सेविका जिल्या को अपनी बेटी को उसकी दासी के रूप में दिया।<sup>25</sup> जब सुबह हुई, तो वहाँ लिया थी। इसलिए याकूब ने लाबान से कहा, “तुमने मेरे साथ यह क्या किया है? मैंने तुम्हारी सेवा राहेल के लिए की थी, है न? तुमने मुझे थोखा क्यों दिया?”<sup>26</sup> लाबान ने उत्तर दिया, “वहाँ हमारी प्रथा नहीं है कि छोटी बेटी को बड़ी से पहले विवाह में दिया जाए।”<sup>27</sup> इस बेटी की विवाह सप्ताह पूरी करो; फिर हम तुम्हें छोटी भी देंगे, बदले में सात और साल की सेवा के लिए।”<sup>28</sup> और याकूब ने ऐसा ही किया। उसने लिया के साथ सप्ताह पूरा किया, और फिर

## उत्पत्ति

लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल को उसकी पत्नी के रूप में दिया।<sup>29</sup> लाबान ने अपनी सेविका बिल्हा को अपनी बेटी राहेल को उसकी दासी के रूप में दिया।<sup>30</sup> याकूब ने राहेल के साथ भी सहवास किया, और वह राहेल से लिया से अधिक प्रेम करता था। और उसने लाबान के लिए सात और साल काम किया।<sup>31</sup> जब यहोवा ने देखा कि लिया अप्रेमित है, उसने उसे गर्भवती होने की शक्ति दी, लेकिन राहेल निःसंतान रही।<sup>32</sup> लिया गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम रूबेन रखा, क्योंकि उसने कहा, “यह इसलिए है क्योंकि यहोवा ने मेरी दुर्दशा देखी है। निश्चय ही अब मेरा पति मुझसे प्रेम करेगा।”<sup>33</sup> वह फिर गर्भवती हुई, और जब उसने एक पुत्र को जन्म दिया, तो उसने कहा, “क्योंकि यहोवा ने सुना कि मैं अप्रेमित हूँ, उसने मुझे यह भी दिया।” इसलिए उसने उसका नाम शिमोन रखा।<sup>34</sup> फिर वह गर्भवती हुई, और जब उसने एक पुत्र को जन्म दिया, तो उसने कहा, “अब अंततः मेरा पति मुझसे जुड़ जाएगा, क्योंकि मैंने उसे तीन पुत्र दिए हैं।” इसलिए उसका नाम लेवी रखा गया।<sup>35</sup> वह फिर गर्भवती हुई, और जब उसने एक पुत्र को जन्म दिया, तो उसने कहा, “इस बार मैं यहोवा की स्तुति करूँगी।” इसलिए उसने उसका नाम यहूदा रखा। तब उसने बच्चों को जन्म देना बंद कर दिया।

**30** अब जब राहेल ने देखा कि उसने याकूब के लिए कोई संतान नहीं उत्पन्न की, तो वह अपनी बहन से ईर्ष्या करने लगी; और उसने याकूब से कहा, “मुझे संतान दो, नहीं तो मैं मर जाऊँगी!”<sup>2</sup> तब याकूब का क्रोध राहेल पर भड़क उठा, और उसने कहा, “क्या मैं परमेश्वर के स्थान पर हूँ, जिसने तुम्हारे गर्भ का फल तुमसे रोक रखा है?”<sup>3</sup> तब उसने कहा, “यह मेरी दासी बिल्हा है; उसके पास जाओ, ताकि वह मेरे घुटनों पर संतान उत्पन्न करे, जिससे मैं भी उसके द्वारा संतान प्राप्त कर सकूँ।”<sup>4</sup> तब उसने अपनी दासी बिल्हा को याकूब की पत्नी के रूप में दिया, और याकूब उसके पास गया।<sup>5</sup> बिल्हा गर्भवती हुई और उसने याकूब के लिए एक पुत्र उत्पन्न किया।<sup>6</sup> तब राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे न्याय दिया है, और सचमुच मेरी आवाज़ सुनी है और मुझे एक पुत्र दिया है।” इसलिए उसने उसका नाम दान रखा।<sup>7</sup> और राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब के लिए दूसरा पुत्र उत्पन्न किया।<sup>8</sup> तब राहेल ने कहा, “महान संघर्षों के साथ मैंने अपनी बहन के साथ संघर्ष किया है, और मैंने सचमुच विजय प्राप्त की है।” और उसने उसका नाम नदाताली रखा।<sup>9</sup> जब लिआ ने देखा कि उसने संतान उत्पन्न करना बंद कर दिया है, तो उसने अपनी दासी ज़िल्पा को लिया और

उसे याकूब को पत्नी के रूप में दिया।<sup>10</sup> और लिआ की दासी ज़िल्पा ने याकूब के लिए एक पुत्र उत्पन्न किया।<sup>11</sup> तब लिआ ने कहा, “कितना भाग्यशाली!” इसलिए उसने उसका नाम गाद रखा।<sup>12</sup> और लिआ की दासी ज़िल्पा ने याकूब के लिए दूसरा पुत्र उत्पन्न किया।<sup>13</sup> तब लिआ ने कहा, “मैं कितनी खुश हूँ। क्योंकि महिलाएं मुझे खुश कहेंगी।” इसलिए उसने उसका नाम आशेर रखा।<sup>14</sup> अब गौहं की कटाई के दिनों में रूबेन गया और खेत में मंदराके पाए, और उहाँे अपनी माँ लिआ के पास लाया। तब राहेल ने लिआ से कहा, “कृपया मुझे अपने पुत्र के मंदराके में से कुछ दो।”<sup>15</sup> पर उसने उससे कहा, “क्या यह पर्याप्त नहीं है कि तुमने मेरे पति को तो लिया? क्या तुम मेरे पुत्र के मंदराके भी लोगी?” तब राहेल ने कहा, “इसलिए वह आज रात तुम्हारे साथ रहेगा तुम्हारे पुत्र के मंदराके के बदले।”<sup>16</sup> जब याकूब शाम को खेत से आया, तो लिआ उससे मिलने गई और कहा, “तुम्हें मेरे पास आना होगा, क्योंकि मैंने तुम्हें अपने पुत्र के मंदराके के साथ किराए पर लिया है।” इसलिए वह उस रात उसके साथ रहा।<sup>17</sup> परमेश्वर ने लिआ की सुनी, और उसने गर्भ धारण किया और याकूब के लिए पैंचवाँ पुत्र उत्पन्न किया।<sup>18</sup> तब लिआ ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है क्योंकि मैंने अपनी दासी को अपने पति को दिया।” इसलिए उसने उसका नाम इस्साकार रखा।<sup>19</sup> लिआ ने फिर गर्भ धारण किया और याकूब के लिए छठा पुत्र उत्पन्न किया।<sup>20</sup> तब लिआ ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे एक अच्छा उपहार दिया है। अब मेरा पति मेरे साथ रहेगा, क्योंकि मैंने उसके लिए छह पुत्र उत्पन्न किए हैं।” इसलिए उसने उसका नाम ज़बुलुन रखा।<sup>21</sup> बाद में उसने एक बेटी को जन्म दिया, और उसका नाम दीना रखा।<sup>22</sup> तब परमेश्वर ने राहेल को याद किया, और परमेश्वर ने उसकी सुनी और उसके गर्भ को खोला।<sup>23</sup> इसलिए उसने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया, और कहा, “परमेश्वर ने मेरी शर्म को दूर कर दिया है।”<sup>24</sup> और उसने उसका नाम यूसुफ रखा, यह कहते हुए, “प्रभु मुझे एक और पुत्र दे।”<sup>25</sup> अब यह हुआ कि जब राहेल ने यूसुफ को जन्म दिया, तो याकूब ने लाबान से कहा, “मुझे जाने दो, ताकि मैं अपनी जगह और अपने देश में जा सकूँ।”<sup>26</sup> मुझे मेरी पतियाँ और मेरे बच्चे दे जिनके लिए मैंने तुम्हारी सेवा की है, और मुझे जाने दो; क्योंकि तुम स्वयं जानते हो कि मैंने तुम्हारी सेवा कैसे की है।<sup>27</sup> पर लाबान ने उससे कहा, “यदि अब यह तुम्हें प्रसन्न करता है, तो ठहरो; मैंने यह जान लिया है कि प्रभु ने तुम्हारे कराण मुझे आशीर्वाद दिया है।”<sup>28</sup> और उसने कहा, “मुझे अपनी मजदूरी बताओ, और मैं उसे दूंगा।”<sup>29</sup> पर याकूब ने उससे कहा, “तुम स्वयं जानते हो कि मैंने तुम्हारी सेवा कैसे की है।”

## उत्पत्ति

और तुम्हारे पशुओं का मेरे साथ कैसा व्यवहार हुआ है।  
३० क्योंकि तुम्हारे पास मेरे आने से पहले बहुत कम था,  
और यह बढ़कर एक बड़ी संख्या हो गई है, और प्रभु ने  
तुम्हें हर जगह आशीर्वाद दिया है जहाँ मैं गया हूँ। लेकिन  
अब, मैं अपने घर के लिए भी कब प्रवंध करूँगा?"<sup>31</sup> तो  
उसने कहा, "मैं तुम्हें क्या दूँ?" और याकूब ने कहा, "तुम  
मुझे कुछ भी नहीं दोगे। यदि तुम मेरे लिए यह एक काम  
करोगे, तो मैं किर से तुम्हारे झुंड की देखभाल और  
रखवाली करूँगा;<sup>32</sup> आज मैं तुम्हारे पूरे झुंड के बीच से  
गुज़ारने दूँ, वहाँ से हर चित्तीदार और धब्बेदार भेड़, और  
मेमनों में से हर काली भेड़, और बकरियों में से धब्बेदार  
और चित्तीदार को निकाल दूँ, और वही मेरी मजदूरी  
होगी।<sup>33</sup> इसलिए मेरी ईमानदारी बाद में मेरे लिए उत्तर  
देगी, जब तुम मेरी मजदूरी की जांच करोगे। जो भी  
बकरियों में से चित्तीदार और धब्बेदार और मेमनों में से  
काला नहीं होगा, यदि मेरे पास पाया गया, तो उसे चोरी  
समझा जाएगा!"<sup>34</sup> लाबान ने कहा, "अच्छा, यह तुम्हारे  
शब्द के अनुसार हो।"<sup>35</sup> तो उसने उसी दिन धारीदार  
और धब्बेदार नर बकरों और सभी चित्तीदार और  
धब्बेदार मादा बकरियों को, जिन पर सफेद था, और  
सभी काली भेड़ों को निकाल दिया, और उन्हें अपने पुत्रों  
की देखभाल में दे दिया।<sup>36</sup> और उसने अपने और  
याकूब के बीच तीन दिन की यात्रा की दूरी रखी, और  
याकूब ने लाबान के बाकी झुंडों को खिलाया।<sup>37</sup> तब  
याकूब ने ताजा पोपलर, बादाम, और चितकबरे पेढ़ों की  
छड़े लीं, और उनमें सफेद धारियाँ छील दीं, जिससे छड़ों  
में जो सफेद था वह प्रकट हो गया।<sup>38</sup> उसने उन छड़ों  
को झुंडों के सामने नादों में रखा, अर्थात् पानी की  
नालियों में जहाँ झुंड पानी पीने आते थे; और वे पानी  
पीते समय मिलते थे।<sup>39</sup> इसलिए झुंड छड़ों के पास  
मिलते थे, और झुंड धारीदार, चित्तीदार, और धब्बेदार  
संतानों को उत्पन्न करते थे।<sup>40</sup> याकूब ने मेमनों को  
अलग किया, और झुंडों को धारीदार और लाबान के  
झुंड में सभी काली की ओर मुख किया; और उसने अपने  
झुंडों को अलग रखा और उन्हें लाबान के झुंड के साथ  
नहीं रखा।<sup>41</sup> इसके अलावा, जब भी झुंड के मजबूत  
मिलते थे, याकूब छड़ों को झुंड की टृष्णा में पानी की  
नादों में रखता था, ताकि वे छड़ों के पास मिलें।<sup>42</sup> पर  
जब झुंड कमजोर होता था, तो वह उन्हें नहीं रखता था;  
इसलिए कमजोर लाबान के थे, और मजबूत याकूब के।<sup>43</sup>  
इसलिए वह व्यक्ति अत्यधिक समृद्ध हो गया, और  
उसके पास बड़े झुंड, और स्त्री और पुरुष सेवक, और  
ऊँट और गधे थे।

**31** अब याकूब ने लाबान के पुत्रों के शब्द सुने, जो  
कह रहे थे, "याकूब ने हमारे पिता की सारी संपत्ति ले ली

है, और हमारे पिता की जो कुछ थी, उससे उसने यह  
सारी समृद्धि बना ली है!"<sup>2</sup> और याकूब ने लाबान के  
व्यवहार को देखा, और देखो, वह पहले जैसा मित्रवत  
नहीं था।<sup>3</sup> तब यहोता ने याकूब से कहा, "अपने पितरों  
की भूमि और अपने संबंधियों के पास लौट जाओ, और  
मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"<sup>4</sup> इसलिए याकूब ने संदेश भेजा  
और राहेल और लिया को अपने झुंड के पास मैदान में  
बुलाया,<sup>5</sup> और उनसे कहा, "मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पिता  
का व्यवहार मेरे प्रति पहले जैसा मित्रवत नहीं है, परंतु  
मेरे पिता का परमेश्वर मेरे साथ रहा है।"<sup>6</sup> तुम जानते हो  
कि मैंने तुम्हारे पिता की सेवा अपनी पूरी शक्ति से की  
है।<sup>7</sup> फिर भी तुम्हारे पिता ने मुझे धोखा दिया और मेरी  
मजदूरी दस बार बदल दी; परंतु परमेश्वर ने उसे मुझे  
हानि पहुँचाने की अनुमति नहीं दी।<sup>8</sup> यदि वह कहता,  
चित्तीदार तुम्हारी मजदूरी होगी, तो सारी भेड़ें चित्तीदार  
जन्म देतीं; और यदि वह कहता, "धारीदार तुम्हारी  
मजदूरी होगी," तो सारी भेड़ें धारीदार जन्म देतीं।<sup>9</sup> इस  
प्रकार परमेश्वर ने तुम्हारे पिता की पशुधन को ले लिया  
और मुझे दे दिया।<sup>10</sup> और यह उस समय की बात है  
जब झुंड मिलन कर रहा था कि जैने अपनी आँखें उठाईं  
और एक स्वप्न में देखा, और देखो, नर बकरियाँ जो  
मिलन कर रही थीं, वे धारीदार, चित्तीदार, या धब्बेदार  
थीं।<sup>11</sup> तब परमेश्वर के दूत ने मुझे स्वप्न में कहा, "याकूब,"  
और मैंने कहा, "यहाँ मैं हूँ।"<sup>12</sup> उसने कहा, "अब अपनी  
आँखें उठाओ और देखो कि जो नर बकरियाँ मिलन कर  
रही हैं वे धारीदार, चित्तीदार, या धब्बेदार हैं; क्योंकि मैंने  
सब कुछ देखा है जो लाबान तुम्हारे साथ कर रहा है।"<sup>13</sup>  
मैं बेतेल का परमेश्वर हूँ, जहाँ तुमने मुझसे एक स्मारक पत्थर  
अभिषिक्त किया था, जहाँ तुमने मुझसे एक प्रतिज्ञा की  
थी; अब उठो, इस भूमि को छोड़ो, और अपनी जन्मभूमि  
की ओर लौट जाओ।"<sup>14</sup> राहेल और लिया ने उसे उत्तर  
दिया और कहा, "क्या हमारे पिता के घर में हमारे लिए  
कोई हिस्सा या विरासत बची है?"<sup>15</sup> क्या वह हमें  
विदेशियों के समान नहीं मानता? क्योंकि उसने हमें बेच  
दिया है, और हमारे खरीद मूल्य को पूरी तरह से खा  
लिया है।<sup>16</sup> मिथित रूप से जो भी धन परमेश्वर ने हमारे  
पिता से लिया है वह हमारा और हमारे बच्चों का है; अब  
फिर, जो कुछ परमेश्वर ने तुमसे कहा है वह करो।"<sup>17</sup>  
तब याकूब उठ खड़ा हुआ और अपने बच्चों और अपनी  
पतियों को ऊँटों पर चढ़ा दिया;<sup>18</sup> और उसने अपनी  
सारी पशुधन और अत्यधिक समृद्ध हो गया, और लेकर कनान की भूमि की  
ओर अपने पिता इसहाक के पास जाने के लिए चला  
गया।<sup>19</sup> जब लाबान अपनी भेड़ों की ऊन करतरने गया  
था, राहेल ने अपने पिता के घर के देवताओं को चुरा

## उत्पत्ति

लिया।<sup>20</sup> और याकूब ने लाबान अरामी को धोखा दिया, उसे यह न बताकर कि वह भाग रहा था।<sup>21</sup> इसलिए वह अपनी सारी संपत्ति लेकर भाग गया; और वह उठ खड़ा हुआ और फरात नदी को पार कर गया, और गिलाद के पहाड़ी देश की ओर चला गया।<sup>22</sup> जब लाबान को तीसरे दिन यह सूचना मिली कि याकूब भाग गया है,<sup>23</sup> तो उसने अपने संबंधियों को लेकर उसका पीछा किया, सात दिन की यात्रा की दूरी तक, और गिलाद के पहाड़ी देश में उसे पकड़ लिया।<sup>24</sup> हालांकि, परमेश्वर ने लाबान अरामी के पास रात के स्वप्न में आकर उससे कहा, “सावधान रहो कि तुम याकूब से न तो अच्छा और न ही बुरा बोलो।”<sup>25</sup> इसलिए लाबान ने याकूब को पकड़ लिया। अब याकूब ने पहाड़ी देश में अपना तंबू गाढ़ा था, और लाबान अपने संबंधियों के साथ गिलाद के पहाड़ी देश में डेरा डाले हुए था।<sup>26</sup> तब लाबान ने याकूब से कहा, “तुमने मुझे धोखा देकर और मेरी बेटियों को तलवार के बिंदियों की तरह ले जाकर क्या किया है?”<sup>27</sup> तुमने चुपके से क्यों भागकर मुझे धोखा दिया, और मुझे नहीं बताया, ताकि मैं तुम्हें खुशी और गीतों के साथ, डफ और वीणा के साथ विदा करता;<sup>28</sup> और मुझे अपने पोते-पोतियों और अपनी बेटियों को चूमने की अनुमति नहीं दी? अब तुमने मूर्खता की है।<sup>29</sup> मेरे पास तुम्हें हानि पहुँचाने की शक्ति है, लेकिन तुम्हरे पिता के परमेश्वर ने मुझसे कल रात कहा, “सावधान रहो कि तुम याकूब से न तो अच्छा और न ही बुरा बोलो।”<sup>30</sup> अब तुम चले गए हो क्योंकि तुम अपने पिता के घर के लिए बहुत लालायित थे; लेकिन तुमने मेरे देवताओं को क्यों चुरा लिया?”<sup>31</sup> तब याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, “क्योंकि मैं डर गया था, क्योंकि मैंने सोचा कि तुम मझसे अपनी बेटियों को बलपूर्वक ले जाओगे।<sup>32</sup> जिसके पास तुम्हारे देवता मिलें, वह जीवित न रहे; हमारे संबंधियों के सामने, मेरे सामान में से जो तुम्हारा है उसे पहचानो और उसे ले लो।” अब याकूब नहीं जानता था कि राहेल ने उन्हें चुरा लिया था।<sup>33</sup> इसलिए लाबान याकूब के तंबू में, लिया के तंबू में, और दो दासी के तंबू में गया, लेकिन उन्हें नहीं पाया। फिर वह लिया के तंबू से बाहर गया और राहेल के तंबू में प्रवेश किया।<sup>34</sup> अब राहेल ने घर के देवताओं को लिया और उन्हें ऊँट की काठी में रख दिया, और वह उन पर बैठ गई। इसलिए लाबान ने पूरे तंबू की तलाशी ली लेकिन उन्हें नहीं पाया।<sup>35</sup> और उसने अपने पिता से कहा, “मेरे प्रभु क्रोधित न हों कि मैं आपके सामने खड़ी नहीं हो सकती, क्योंकि स्त्रियों की रीति मुझ पर है।” इसलिए उसने खोज की लेकिन घर के देवताओं को नहीं पाया।<sup>36</sup> तब याकूब क्रोधित हो गया और लाबान से बहस की; और याकूब ने लाबान से कहा, “मेरा अपराध क्या है? मेरा पाप क्या है, कि तुमने मुझे इतनी

गर्मजौशी से पीछा किया? ”<sup>37</sup> हालांकि तुमने मेरे सारे सामान की तलाशी ली है, तुम्हें अपने घर के सामान में से क्या मिला है? इसे मेरे और तुम्हरे संबंधियों के सामने यहाँ रखो, ताकि वे हमारे बीच निर्णय करें।<sup>38</sup> बीस वर्षों तक मैं तुम्हरे साथ रहा; तुम्हारी भेड़ें और तुम्हारी बकरियाँ गर्भपात नहीं करती थीं, और न ही मैंने तुम्हरे झुंड के मेंढों को खाया।<sup>39</sup> मैं तुम्हरे पास फटे हुए शव नहीं लाया; मैंने खुद नुकसान उठाया। तुमने इसे मेरे हाथ से माँगा चाहे दिन में चोरी हुआ हो या रात में।<sup>40</sup> मैं ऐसा था: दिन में गर्मी ने मुझे खा दिया, और रात में ठंड ने, और मेरी नींद मेरी आँखों से भाग गई।<sup>41</sup> बीस वर्षों तक मैं तुम्हरे घर में रहा; मैंने तुम्हारी दो बेटियों के लिए छोटे वर्षों तक सेवा की, और तुम्हरे झुंड के लिए छह वर्षों तक, और तुमने मेरी मजदूरी दस बार बढ़ाती।<sup>42</sup> यदि मेरे पिता का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भय मेरे साथ नहीं होता, तो अब तुम मुझे खाली हाथ विदा कर देते। परमेश्वर ने मेरे कष्ट और मेरे हाथों की मेहनत को देखा है, और कल रात न्याय किया है।<sup>43</sup> तब लाबान ने याकूब को उत्तर दिया, “बेटियाँ मेरी बेटियाँ हैं, बच्चे मेरे बच्चे हैं, और झुंड मेरे झुंड हैं, और जो कुछ तुम देखते हो वह मेरा है। लेकिन आज मैं अपनी बेटियों या उनके बच्चों के लिए क्या कर सकता हूँ जिन्हें उहोंने जन्म दिया है?”<sup>44</sup> तो अब आओ, हम एक वाचा करें, तुम और मैं, और यह तुम्हरे और मेरे बीच एक साक्षी हो।”<sup>45</sup> तब याकूब ने एक पत्थर लिया और उसे एक स्तंभ के रूप में खड़ा किया।<sup>46</sup> और याकूब ने अपने संबंधियों से कहा, “पत्थर इकट्ठा करो।” इसलिए उहोंने पत्थर लिए और एक ढेर बनाया, और वे ढेर के पास बैठकर भोजन किया।<sup>47</sup> अब लाबान ने उसे याग-सहदूता कहा, लेकिन याकूब ने उसे गलीद कहा।<sup>48</sup> तब लाबान ने कहा, “यह ढेर आज तुम्हारे और मेरे बीच एक साक्षी है।” इसलिए इसका नाम गलीद रखा गया,<sup>49</sup> और मिस्त्रा, क्योंकि उसने कहा, “जब हम एक दूसरे से अनुपस्थित हों, तब यहीवा तुम्हारे और मेरे बीच देखे।”<sup>50</sup> यदि तुम मेरी बेटियों के साथ बुरा व्यवहार करते हो, या मेरी बेटियों के अलावा पलियाँ लेते हो, यद्यपि हमारे साथ कोई नहीं है, देखो, परमेश्वर तुम्हारे और मेरे बीच खड़ा किया है।<sup>51</sup> लाबान ने याकूब से भी कहा, “देखो यह ढेर और देखो यह स्तंभ जो मैंने तुम्हरे और मेरे बीच खड़ा किया है।”<sup>52</sup> यह ढेर एक साक्षी है, और यह स्तंभ एक साक्षी है, कि मैं इस ढेर को तुम्हारे पास हानि पहुँचाने के लिए पार नहीं करूँगा, और तुम इस ढेर और इस स्तंभ को मेरे पास हानि पहुँचाने के लिए पार नहीं करोगे।<sup>53</sup> अब्राहम का परमेश्वर और नाहोर का परमेश्वर, उनके पिता का परमेश्वर, हमारे बीच न्याय करें।” इसलिए याकूब ने अपने पिता इसहाक के भय की शपथ ली।<sup>54</sup> तब याकूब

## उत्पत्ति

ने पहाड़ पर एक बलिदान चढ़ाया, और अपने संबंधियों को भोजन करने के लिए बुलाया; और उन्होंने भोजन किया और रात को पहाड़ पर बिताया।<sup>55</sup> सुबह जलदी लाबान उठा, और अपने पोते-प्रतिवांयों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें आशीर्वाद दिया। तब लाबान चला गया और अपने स्थान पर लौट आया।

**32** याकूब भी अपनी राह पर चला गया, और परमेश्वर के द्वात उससे मिले।<sup>2</sup> जब याकूब ने उन्हें देखा, तो उसने कहा, "यह परमेश्वर का शिविर है!" इसलिए उसने उस स्थान का नाम महनैरम रखा।<sup>3</sup> याकूब ने अपने भाई एसाव के पास, जो सेर्हर के देश, एदोम की धूमि में था, दूत भेजे।<sup>4</sup> उसने उन्हें निर्देश दिया: "तुम मेरे प्रभु एसाव से यह कहना: 'आपका सेवक याकूब कहता है मैं लाबान के साथ रह रहा था और अब तक वहीं रहा हूँ।'<sup>5</sup> मेरे पास गाय-बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, नर और मादा सेवक हैं। अब मैं यह संदेश अपने प्रभु को भेज रहा हूँ, कि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह पा सकूँ।"<sup>6</sup> जब दूत याकूब के पास लौटे, तो उन्हने कहा, "हम आपके भाई एसाव के पास गए, और अब वह आपसे मिलने आ रहा है, और उसके साथ चार सौ आदमी हैं।"<sup>7</sup> भय और संकट में याकूब ने अपने साथ के लोगों को दो समूहों में बाँट दिया, और भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को भी।<sup>8</sup> उसने सोचा, "यदि एसाव एक समूह पर आक्रमण करता है, तो जो समूह बचा रहेगा वह भाग सकता है।"<sup>9</sup> तब याकूब ने प्रार्थना की, "हे मेरे पिता अब्राहम के परमेश्वर, मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, प्रभु, अपने मुझसे कहा था, 'अपने देश और अपने रिशेदारों के पास लौट जाओ, और मैं तुम्हें समदृश करूँगा।'<sup>10</sup> मैं आपके सभी दया और विश्वास के योग्य नहीं हूँ जो अपने अपने सेवक को दिखाया है। जब मैंने इस यरदान को पार किया था, तब मेरे पास केवल मेरी लाठी थी, लेकिन अब मैं दो शिविर बन गया हूँ।<sup>11</sup> मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचाइए, मैं प्रार्थना करता हूँ, क्योंकि मुझे डर है कि वह आकर मुझ पर और बच्चों के साथ माताओं पर हमला करेगा।<sup>12</sup> लेकिन आपने कहा है, 'मैं तुम्हें अवश्य समदृश करूँगा और तुम्हरे वंशजों को सम्मुखी की रेत के समान बनाऊँगा, जिसे गिना नहीं जा सकता।'<sup>13</sup> वह रात वहीं बिताई, और जो कुछ उसके पासथा उसमें से उसने अपने भाई एसाव के लिए एक उपहार चुना:<sup>14</sup> दो सौ मादा बकरियाँ और बीस नर बकरियाँ, दो सौ भेड़े और बीस मेढ़े,<sup>15</sup> तीस मादा ऊँट उनके बच्चों के साथ, चालासी गायें और दस बैल, बीस मादा गधे और दस नर गधे।<sup>16</sup> उसने उन्हें अपने सेवकों की देखभाल में दिया, प्रत्येक झूँड को अलग-अलग, और अपने सेवकों से कहा, "मेरे आगे जाओ, और झूँडों के बीच कुछ जगह

बनाए रखो।"<sup>17</sup> उसने आगे वाले को निर्देश दिया: "जब मेरा भाई एसाव तुमसे मिले और पूछे, 'तुम किसके हो, और कहाँ जा रहे हों, और तुम्हारे सामने ये सब जानवर किसके हैं?'<sup>18</sup> तब तुम कहना, वे आपके सेवक याकूब के हैं। ये मेरे प्रभु एसाव के लिए भेजे गए उपहार हैं, और वह हमारे पीछे आ रहा है।"<sup>19</sup> उसने दूसरे, तीसरे, और सभी अन्य लोगों को भी निर्देश दिया जो झूँडों के पीछे थे: "जब तुम एसाव से मिलो तो तुम भी यही बात कहो।"<sup>20</sup> और यह सुनिश्चित करना कि कहो, 'आपका सेवक याकूब हमारे पीछे आ रहा है।'<sup>21</sup> क्योंकि उसने सोचा, "मैं इन उपहारों से उसे शांत करूँगा जो मैं आगे भेज रहा हूँ; बाद में, जब मैं उसे देवींगा, शायद वह मुझे स्वीकार कर ले।"<sup>22</sup> इसलिए याकूब के उपहार उसके आगे चले गए, लेकिन न खर्च शिविर में रात बिताई।<sup>23</sup> उस रात याकूब उठा और अपनी दो पत्नियों, अपनी दो दासी और अपने ग्यारह पुत्रों को लेकर यज्ञोक के घाट को पार किया।<sup>24</sup> जब उसने उन्हें धारा के पार भेज दिया, तो उसने अपनी सभी संपत्ति भी भेज दी।<sup>25</sup> इसलिए याकूब अकेला रह गया, और एक आदमी उसके साथ भीर तक कुश्टी करता रहा।<sup>26</sup> जब उस आदमी ने देखा कि वह उसे पराजित नहीं कर सकता, तो उसने याकूब की जाँघ के जोड़ को छू दिया ताकि उसकी जाँघ कुश्टी करते समय उखड़ गई।<sup>27</sup> तब उस आदमी ने कहा, "मुझे जाने दो, क्योंकि भीर हो गई है।"<sup>28</sup> लेकिन याकूब ने उत्तर दिया, "मैं आपको तब तक नहीं जाने दूँगा जब तक आप मुझे आशीर्वाद नहीं देते।"<sup>29</sup> उस आदमी ने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" "याकूब," उसने उत्तर दिया।<sup>30</sup> तब उस आदमी ने कहा, "तुम्हारा नाम अब याकूब नहीं, बल्कि इसाएल होगा, क्योंकि तुमने परमेश्वर और मनुष्यों के साथ संघर्ष किया है और विजय प्राप्त की है।"<sup>31</sup> याकूब ने कहा, "कृपया मुझे अपना नाम बताइए।"<sup>32</sup> लेकिन उसने उत्तर दिया, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो?" तब उसने उसे वहीं आशीर्वाद दिया।<sup>33</sup> इसलिए याकूब ने उस स्थान का नाम पनौल रखा, यह कहते हुए, "यह इसलिए है क्योंकि मैंने परमेश्वर को आमने-सामने देखा, और फिर भी मेरी जान बच गई।"<sup>34</sup> जब वह पनौल से गुजरा, तो सूरज उसके ऊपर उगा, और वह अपनी जाँघ के कारण लंगड़ा रहा था।<sup>35</sup> इसलिए आज तक इसाएली जाँघ के जोड़ से जुड़े नस को नहीं खाते, क्योंकि याकूब की जाँघ के जोड़ को नस के पास छुआ गया था।

**33** याकूब ने ऊपर देखा और एसाव को चार सौ आदमियों के साथ आते हुए देखा। इसलिए उसने बच्चों को लिआ, राहेल, और दो दासियों के बीच ऊँट दिया।<sup>2</sup> उसने दासियों और उनके बच्चों को आगे रखा, लिआ

## उत्पत्ति

और उसके बच्चों को उनके पीछे, और राहेल और यूसुफ को सबसे पीछे रखा।<sup>3</sup> वह स्वयं आगे बढ़ा और अपने भाई के पास पहुँचते हुए सात बार भूमि पर झूका।<sup>4</sup> परन्तु एसाव याकूब से मिलने के लिए दौड़ा और उसे गले लगाया; उसने उसकी गर्दन में बैहँ डार्टी और उसे ढामा। और वे दोनों रोए।<sup>5</sup> फिर एसाव ने ऊपर देखा और स्त्रियों और बच्चों को देखा। उसने पछा, "ये तुम्हारे साथ कौन हैं?" याकूब ने उत्तर दिया, "ये वे बच्चे हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपके सेवक को कृपा से दिया है।"<sup>6</sup> फिर दासियाँ और उनके बच्चे आगे आए और झुक गए।<sup>7</sup> इसके बाद लिआ और उसके बच्चे आए और झुक गए। अंत में यूसुफ और राहेल आए, और वे भी झुक गए।<sup>8</sup> एसाव ने पछा, "ये सब दुंड जो मैंने मिले, उनका क्या मतलब है?" याकूब ने कहा, "मेरे प्रभु की दृष्टि में कृपा पाने के लिए।"<sup>9</sup> परन्तु एसाव ने कहा, "मेरे पास पहले से ही बहुत है, मेरे भाई। जो तुम्हारे पास है उसे अपने पास रखो।"<sup>10</sup> "नहीं, कृपया!" याकूब ने कहा। "यदि मैंने आपकी दृष्टि में कृपा पाई है, तो कृपया मुझसे यह उपहार स्वीकार करें। क्योंकि आपका चेहरा देखना परमेश्वर का चेहरा देखने के समान है, अब जब आपने मुझे कृपा से स्वीकार किया है।"<sup>11</sup> कृपया उस उपहार को स्वीकार करें जो आपके लिए लाया गया था, क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर कृपा की है और मेरे पास सब कुछ है जिसकी मुझे आवश्यकता है।<sup>12</sup> और क्योंकि याकूब ने जोर दिया, एसाव ने उसे स्वीकार कर लिया।<sup>13</sup> फिर एसाव ने कहा, "आओ हम चलें, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"<sup>14</sup> परन्तु याकूब ने उससे कहा, "मेरे प्रभु जानते हैं कि बच्चे कोमल हैं और मुझे उन भेड़ों और गायों की देखभाल करनी है जो अपने बच्चों को दृढ़ पिला रही हैं। यदि उन्हें बहुत तेजी से चलाया गया, तो वे मर जाएँगी।<sup>15</sup> एसाव मेरे प्रभु अपने सेवक से आगे बढ़े, जबकि मैं धीरे-धीरे झुंडों और बच्चों की चाल के अनुसार चलता हूँ जब तक कि मैं अपने प्रभु के पास सेर्वर में न पहुँच जाऊँ।"<sup>16</sup> एसाव ने कहा, "फिर मैं तुम्हारे साथ कुछ अपने आदमियों को छोड़ दूँ।"<sup>17</sup> लेकिन ऐसा क्यों करें?" याकूब ने पूछा। "बस मुझे मेरे प्रभु की दृष्टि में कृपा पाने दें।"<sup>18</sup> तो उस दिन एसाव अपने रास्ते सेर्वर की ओर चल पड़ा।<sup>19</sup> हालाँकि, याकूब सुककोत गया, जहाँ उसने अपने लिए एक स्थान बनाया और अपने पशुओं के लिए आश्रय बनाए। इसलिए उस स्थान का नाम सुककोत पड़ा।<sup>20</sup> पद्मन अराम से आने के बाद, याकूब कनान में शेकेम नगर में सुरक्षित रूप से पहुँचा और नगर के दृश्य में डेरा डाला।<sup>21</sup> सौ चाँदी के टुकड़ों के लिए, उसने हम्मोर के पुत्रों से, जो शेकेम के पिता थे, उस भूमि पर टुकड़ा खरीदा जहाँ उसने अपना तंबू लगाया था।<sup>22</sup> वहाँ

उसने एक वेदी बनाई और उसका नाम एल एलोह इज़राइल रखा।

**34** अब दीनाह, जो लिआह की बेटी थी और याकूब की संतान थी, उस देश की स्त्रियों से मिलने बाहर गई।<sup>23</sup> जब हमोर का प्रत शकेम, जो उस क्षेत्र का शासक था, ने उसे देखा, तो उसने उसे पकड़ लिया और उसके साथ बलात्कार किया।<sup>24</sup> उसका हृदय याकूब की बेटी दीनाह की ओर आकर्षित हुआ; उसने उस युवती से प्रेम किया और उससे कोपमता से बात की।<sup>25</sup> और शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, "इस लड़की को मेरी पत्नी के रूप में मेरे लिए ले आओ।"<sup>26</sup> जब याकूब ने सुना कि उसकी बेटी दीनाह को अपवित्र किया गया है, तो उसके बेटे खेतों में उसके पशुओं के साथ थे; इसलिए उसने कुछ नहीं किया जब तक वे घर नहीं लौटे।<sup>27</sup> तब शकेम के पिता हमोर याकूब से बात करने बाहर गए।<sup>28</sup> इस बीच, याकूब के बेटे खेतों से आ गए थे। जब उन्होंने सुना कि क्या हुआ है, तो वे गहरे दुखी और क्रोधित हुए, क्योंकि शकेम ने याकूब की बेटी का अपमान करके इस्ताएल में एक अपमानजनक काम किया था—ऐसी बात जो नहीं की जानी चाहिए थी।<sup>29</sup> लेकिन हमोर ने उनसे कहा, "मेरे बेटे शकेम का दिल आपकी बेटी पर लगा है। कृपया उसे उसकी पत्नी के रूप में दे दें।"<sup>30</sup> हमसे विवाह संबंध बनाएं; हमें अपनी बेटियाँ दें और हमारी बेटियाँ अपने लिए लें।<sup>31</sup> आप हमारे बीच बस सकते हैं; यह भूमि आपके लिए खुली है। इसमें बसें, व्यापार करें, और इसमें संपत्ति प्राप्त करें।<sup>32</sup> तब शकेम ने दीनाह के पिता और भाइयों से कहा, "मुझे आपकी नजरों में अनुग्रह प्राप्त करने दें, और मैं आपको जो भी आप मांगें, वह दूंगा।"<sup>33</sup> दुल्हन के लिए मूल्य जितना ऊँचा चाहें, उतना बनाएं, और मैं जो भी आप मुझसे मांगें, वह दूंगा। केवल मुझे युवती को मेरी पत्नी के रूप में दें।"<sup>34</sup> क्योंकि उनकी बहन दीनाह को अपवित्र किया गया था, याकूब के बेटों ने शकेम और उसके पिता हमोर से छलपूर्वक उत्तर दिया।<sup>35</sup> उन्होंने उनसे कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते, हम अपनी बहन को एक ऐसे व्यक्ति को नहीं दे सकते जो खतना नहीं किया गया हो।" यह हमारे लिए अपमानजनक होगा।<sup>36</sup> हम आपके साथ केवल एक शर्त पर समझौता करेंगे: कि आप हमारे जैसे बनें और अपने सभी पुरुषों का खतना करें।<sup>37</sup> तब हम आपको अपनी बेटियाँ देंगे और आपकी बेटियाँ अपने लिए लेंगे। हम आपके बीच बसेंगे और आपके साथ एक लोग बनेंगे।<sup>38</sup> लेकिन यदि आप खतना करने के लिए सहमत नहीं होते, तो हम अपनी बहन को ले जाएँगे और चले जाएँगे।<sup>39</sup> उनका प्रस्ताव हमोर और उसके पुत्र शकेम को अच्छा लगा।<sup>40</sup> युवा व्यक्ति, जो अपने पिता

## उत्पत्ति

के परिवार में सबसे सम्मानित था, ने जो उन्होंने कहा था, उसे करने में कोई समय नहीं गवाया, क्योंकि वह याकूब की बेटी से प्रसन्न था।<sup>20</sup> इसलिए हमारे और उसका पुत्र शकेम अपने नगर के द्वार पर गए और अपने नगर के पुरुषों से बात की।<sup>21</sup> उन्होंने कहा, “ये लोग हमारे प्रति मित्रत्व हैं। उन्हें हमारे देश में बसने दें और व्यापार करने दें; भूमि में उनके लिए बहुत जगह है। हम उनकी बेटियों से विवाह कर सकते हैं और उन्हें अपनी बेटियाँ देसकते हैं।<sup>22</sup> लेकिन पुरुष के बजाए इस शर्त पर हमारे साथ एक लोग के रूप में बसने के लिए सहमत होंगे कि हमारे पुरुषों का खतना किया जाए, जैसे कि वे स्वयं हैं।<sup>23</sup> क्या उनकी पशुधन, उनकी संपत्ति और उनके अन्य सभी जानवर हमारे नहीं बन जाएंगे? इसलिए हम उनकी शर्त से सहमत हों, और वे हमारे बीच बस जाएंगे।”<sup>24</sup> नगर के द्वार से बाहर जाने वाले सभी पुरुष हमारे और उसके पुत्र शकेम से सहमत हुए, और नगर के हर पुरुष का खतना किया गया।<sup>25</sup> तीन दिन बाद, जब वे सभी अभी भी दर्द में थे, याकूब के दो बेटे, शिमोन और लेवी, दीनाह के भाई, अपनी तलवारें लेकर बिना चेतावनी के नगर पर हमला किया और हर पुरुष को मार डाला।<sup>26</sup> उन्होंने हमारे और उसके पुत्र शकेम को तलवार से मार डाला और दीनाह को शकेम के घर से निकाल लिया और चले गए।<sup>27</sup> याकूब के बेटे मृत शरीरों पर आए और उस नगर को लूट लिया जहाँ उनकी बहन को अपवित्र किया गया था।<sup>28</sup> उन्होंने उनके द्वारों, पशुओं और गधों को और नगर में और खेतों में उनके सभी अन्य सामानों को जब्त कर लिया।<sup>29</sup> उन्होंने उनकी सारी संपत्ति और उनकी सभी स्थियों और बच्चों को उठा लिया, घरों में की गई हर चीज को लूट लिया।<sup>30</sup> तब याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, “तुमने मुझे इस देश में रहने वाले कनानी और परिजियों के लिए अप्रिय बना दिया है।<sup>31</sup> लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, “क्या उसे हमारी बहन के साथ वेश्या की तरह व्यवहार करना चाहिए था?”

**35** तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, “बेतेल को जाओ और वहाँ बस जाओ, और परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाओ, जो तुम्हें तब प्रकट हुआ था जब तुम अपने भाई ईसाव से भाग रहे थे।”<sup>32</sup> तब याकूब ने अपने परिवार और उन सब से जो उसके साथ थे कहा, “तुम्हारे पास जो विदेशी देवता हैं उन्हें हटा दो, अपने अप को शुद्ध करो और अपने वस्त्र बदलो।”<sup>33</sup> फिर आओ, हम बेतेल को चलें, जहाँ मैं परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाऊँगा, जिसने मेरी संकट के दिन में मेरी सुनवाई की और जहाँ भी मैं गया, मेरे साथ रहा।”<sup>34</sup> तब उन्होंने याकूब को अपने पास के सभी विदेशी देवता और उनके

कानों की बालियाँ दे दीं, और याकूब ने उन्हें शेकेम के बलूत के पेड़ की नीचे गाढ़ दिया।<sup>35</sup> फिर वे चले, और परमेश्वर का भय उनके चारों ओर के नगरों पर छा गया, ताकि किसी ने उनका पीछा नहीं किया।<sup>36</sup> याकूब और उसके साथ सभी लोग लूज (जो कि बेतेल है) कनान देश में पहुँचे।<sup>37</sup> वहाँ उसने एक वेदी बनाई, और उस स्थान का नाम एल बेतेल रखा, क्योंकि वहाँ परमेश्वर ने उसे प्रकट किया था जब वह अपने भाई से भाग रहा था।<sup>38</sup> अब रिबका की धाय देवीरा की मृत्यु हो गई और उसे बेतेल के बाहर बलूत के नीचे दफनाया गया। इसलिए उसका नाम अलोन बकूत रखा गया।<sup>39</sup> पहले अराम से लौटने के बाद, परमेश्वर फिर से याकूब को प्रकट हुआ और उसे आशीर्वाद दिया।<sup>40</sup> परमेश्वर ने उससे कहा, “तुम्हारा नाम याकूब है, लेकिन अब तुम्हे याकूब नहीं कहा जाएगा; तुम्हारा नाम इसाएल होगा।”<sup>41</sup> इसलिए उसने उसका नाम इसाएल रखा।<sup>42</sup> और परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; फलवंत हो और बढ़ो। एक राष्ट्र और राष्ट्रों की मंडली तुमसे आएगी, और राजा तुम्हारे शरीर से उत्पन्न होंगे।<sup>43</sup> जो भूमि मैंने अब्राहम और इसाहाक को दी थी, वही मैं तुम्हें द्वौंगा, और तुम्हारे बाद तुम्हारे बच्चों को यह भूमि द्वौंगा।”<sup>44</sup> फिर परमेश्वर उस स्थान से ऊपर चला गया जहाँ उसने उससे बात की थी।<sup>45</sup> याकूब ने उस स्थान का नाम जहाँ परमेश्वर ने उससे बात की थी बेतेल रखा।<sup>46</sup> फिर वे बेतेल से आगे बढ़े। जब वे एप्राथ से कुछ दूरी पर थे, राहेल को प्रसव पीड़ा हुई और उसे बहुत कठिनाई हुई।<sup>47</sup> और जब उसे प्रसव में बहुत कठिनाई हो रही थी, दाई ने उससे कहा, “दोरो मत, क्योंकि तुम्हारे पास एक और पुत्र है।”<sup>48</sup> जैसे ही उसने अंतिम सांस ली—क्योंकि वह मर रही थी—उसने अपने पुत्र का नाम बेन-ओनी रखा। लेकिन उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा।<sup>49</sup> इसलिए राहेल की मृत्यु हो गई और उसे एप्राथ (जो कि बेतेल है) के रास्ते में दफनाया गया।<sup>50</sup> उसकी कब्र पर याकूब ने एक स्तंभ खड़ा किया, और अज तक वह स्तंभ राहेल की कब्र को चिह्नित करता है।<sup>51</sup> इसाएल फिर से आगे बढ़ा और मिगदल एदाक के परे अपना तंबू लगाया।<sup>52</sup> जब इसाएल उस क्षेत्र में रह रहा था, रूबेन ने जाकर अपने पिता की उपणी बिल्हा के साथ सोया, और इसाएल ने यह सुना।<sup>53</sup> याकूब के बारह पुत्र थे: लिआह के पुत्र: रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार और जबुलून।<sup>54</sup> राहेल के पुत्र: यूसुफ और बिन्यामीन।<sup>55</sup> राहेल की दासी बिल्हा के पुत्र: दान और नप्ताली।<sup>56</sup> लिआह की दासी जिल्पा के पुत्र: गाद और आशेर। ये

## उत्पत्ति

याकूब के पुत्र थे, जो पद्धन अराम में उसके लिए उत्पन्न हुए थे।<sup>27</sup> याकूब अपने पिता इसहाक के पास पहुँचे में, किर्यात अर्बा (जो कि हेब्रोन है) के पास पहुँचा, जहाँ अब्राहम और इसहाक रहे थे।<sup>28</sup> इसहाक ने एक सौ अस्सी वर्ष जीवित रहे।<sup>29</sup> फिर उन्होंने अंतिम सांस ली और मरे और अपने लोगों में मिल गए, वृद्ध और वर्षों से परिपूर्ण। और उनके पुत्र एसाव और याकूब ने उन्हें दफनाया।

**36** अब ये एसाव की पीढ़ियों के वंशावली के अभिलेख हैं (अर्थात्, एदोम)।<sup>2</sup> एसाव ने कनान की पुत्रियों में से पतियाँ लीं: हिती एलोन की पुत्री आदा, और हिव्वा सिबोन की पोती और अनाह की पुत्री ओहोलिबामा,<sup>3</sup> और बेसमत, इशमाएल की पुत्री, नेबायोत की बहन।<sup>4</sup> आदा ने एसाव को एलीफज को जन्म दिया, और बेसमत ने रुझाएल को जन्म दिया,<sup>5</sup> और ओहोलिबामा ने यऊश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। ये एसाव के पुत्र हैं जो कनान देश में उससे उत्पन्न हुए।<sup>6</sup> तब एसाव ने अपनी पतियाँ, अपने पुत्र, अपनी पुत्रियाँ, और अपने सारे घराने, और अपने पशुधन और अपनी सारी संपत्ति जो उसने कनान देश में प्राप्त की थी, ती और अपने बाई याकूब से दूर किसी अन्य देश में चला गया।<sup>7</sup> क्योंकि उनकी संपत्ति इतनी बढ़ गई थी कि वे एक साथ नहीं रह सकते थे, और जिस देश में वे रहते थे वह उनके पशुधन के कारण उन्हें सहारा नहीं दे सकता था।<sup>8</sup> इसलिए एसाव सेर्ईर के पहाड़ी देश में बस गया; एसाव एदोम है।<sup>9</sup> ये फिर एसाव की पीढ़ियों के अभिलेख हैं, जो सेर्ईर के पहाड़ी देश में एदोमियों के पिता थे।<sup>10</sup> ये एसाव के पुत्रों के नाम हैं: एलीफज, एसाव की पत्नी आदा का पुत्र, रुझाएल, एसाव की पत्नी बेसमत का पुत्र।<sup>11</sup> एलीफज के पुत्र थे: तेमान, ओमर, जेफो, गताम, और केनज।<sup>12</sup> तिमना एसाव के पुत्र एलीफज की उपर्याप्ती थी, और उसने एलीफज को अमालेक को जन्म दिया। ये एसाव की पत्नी आदा के पुत्र हैं।<sup>13</sup> ये रुझाएल के पुत्र हैं: नहत, जेहरह, शम्मा, और मिज्जा। ये एसाव की पत्नी बेसमत के पुत्र थे।<sup>14</sup> ये एसाव की पत्नी ओहोलिबामा के पुत्र थे, जो अनाह की पुत्री और सिबोन की पोती थी: उसने एसाव को यऊश, यालाम और कोरह को जन्म दिया।<sup>15</sup> ये एसाव के पुत्रों में से प्रमुख हैं: एसाव के पहलाठे एलीफज के पुत्र: प्रमुख तेमान, प्रमुख ओमर, प्रमुख जेफो, प्रमुख केनज, <sup>16</sup> प्रमुख कोरह, प्रमुख गताम, प्रमुख अमालेक। ये एलीफज से एदोम देश में उत्तरे प्रमुख हैं। ये आदा के पुत्र हैं।<sup>17</sup> ये रुझाएल, एसाव के पुत्र के पुत्र हैं: प्रमुख नहत, प्रमुख जेहरह, प्रमुख शम्मा, प्रमुख मिज्जा। ये रुझाएल से एदोम देश में उत्तरे प्रमुख हैं। ये एसाव की पत्नी बेसमत के पुत्र हैं।<sup>18</sup> ये

एसाव की पत्नी ओहोलिबामा के पुत्र हैं: प्रमुख यऊश, प्रमुख यालाम, प्रमुख कोरह। ये एसाव की पत्नी ओहोलिबामा, अनाह की पुत्री से उत्तरे प्रमुख हैं।<sup>19</sup> ये एसाव के पुत्र (अर्थात्, एदोम) हैं, और ये उनके प्रमुख हैं।<sup>20</sup> ये सेर्ईर के होरी के पुत्र हैं, जो देश के निवासी थे: लोतान, शोबाल, सिबोन, अनाह,<sup>21</sup> दिशोन, एजर, और दिशान। ये होरी से उत्तरे प्रमुख हैं, सेर्ईर के पुत्र एदोम देश में।<sup>22</sup> लोतान के पुत्र थे: होरी और हेमाम। और लोतान की बहन तिमना थी।<sup>23</sup> ये शोबाल के पुत्र हैं: अल्वान, मनहत, एबाल, शेफो, और ओनाम।<sup>24</sup> ये सिबोन के पुत्र हैं: अयाह और अनाह—वह अनाह है जिसने जंगल में गर्भ पानी के सोते पाए जब वह अपने पिता सिबोन के गर्भों को चरा रहा था।<sup>25</sup> ये अनाह के बच्चे हैं: दिशोन और ओहोलिबामा, अनाह की पुत्री।<sup>26</sup> ये दिशोन के पुत्र हैं: हेमदान, एशबान, इथान, और केरान।<sup>27</sup> ये एजर के पुत्र हैं: बिलहान, जावान, और अकरान।<sup>28</sup> ये दिशान के पुत्र हैं: उज और अरान।<sup>29</sup> ये होरी से उत्तरे प्रमुख हैं: प्रमुख लोतान, प्रमुख शोबाल, प्रमुख सिबोन, प्रमुख अनाह,<sup>30</sup> प्रमुख दिशोन, प्रमुख एजर, प्रमुख दिशान। ये होरी से उत्तरे प्रमुख हैं, उनके विभिन्न प्रमुखों के अनुसार सेर्ईर देश में।<sup>31</sup> अब ये वे राजा हैं जिन्होंने एदोम देश में राज्य किया, इससे पहले कि इसाएल के पुत्रों पर कोई राजा राज्य करता:<sup>32</sup> बेला, बेओर का पुत्र, एदोम में राज्य करता था, और उसके नगर का नाम दिनहाबा था।<sup>33</sup> तब बेला की मृत्यु हो गई, और जोबाब, जेहरह का पुत्र, बोसरा का, उसके स्थान पर राजा हुआ।<sup>34</sup> तब जोबाब की मृत्यु हो गई, और हुषाम, तेमानी देश का, उसके स्थान पर राजा हुआ।<sup>35</sup> तब हुषाम की मृत्यु हो गई, और हृदद, बेदद का पुत्र, जिसने मोआब के मैदान में मिद्यान को पराजित किया, उसके स्थान पर राजा हुआ; और उसके नगर का नाम अविथथ।<sup>36</sup> तब हृदद की मृत्यु हो गई, और समला, मसरेका का, उसके स्थान पर राजा हुआ।<sup>37</sup> तब समला की मृत्यु हो गई, और शाऊल, रहोबीथ का, यूकेट्स नदी पर, उसके स्थान पर राजा हुआ।<sup>38</sup> तब शाऊल की मृत्यु हो गई, और बाल-हानान, अचबोर का पुत्र, उसके स्थान पर राजा हुआ।<sup>39</sup> तब बाल-हानान, अचबोर का पुत्र, की मृत्यु हो गई, और हृदार उसके स्थान पर राजा हुआ; और उसके नगर का नाम पाऊथा, और उसकी पत्नी का नाम मेहेतबेल था, जो मातरेद की पुत्री, मेजाहब की पुत्री थी।<sup>40</sup> अब ये एसाव से उत्तरे प्रमुखों के नाम हैं, उनके परिवारों और उनके स्थानों के अनुसार, उनके नामों से: प्रमुख तिमना, प्रमुख अल्वा, प्रमुख जेतेथ,<sup>41</sup> प्रमुख ओहोलिबामा, प्रमुख एला, प्रमुख पिनोन,<sup>42</sup> प्रमुख केनज, प्रमुख तेमान, प्रमुख मिङ्गार,<sup>43</sup> प्रमुख मगदीएल, प्रमुख ईर्शम। ये एदोम के प्रमुख हैं (अर्थात्, एसाव,

## उत्पत्ति

एदोमियों के पिता), उनके निवास स्थानों के अनुसार उनके अधिकार में भूमि में।

**37** अब याकूब उस देश में रहने लगा जहाँ उसके पिता निवास करते थे, अर्थात् कनान देश में।<sup>2</sup> ये याकूब की पीढ़ियों का इतिहास है। यूसुफ, जब वह सत्रह वर्ष का था, अपने भाइयों के साथ झुंड चरा रहा था जबकि वह अभी युवा था, बिल्हा और जिल्या के पुत्रों के साथ, जो उसके पिता की परिवारी थीं। और यूसुफ ने उनके बारे में अपने पिता को एक बुरी रिपोर्ट दी।<sup>3</sup> अब इसाएल यूसुफ को अपने सभी पुत्रों से अधिक प्रेम करता था, क्योंकि वह उसके वृद्धावस्था का पुत्र था; और उसने उसे एक बहुरंगी अंगरखा बनवाया।<sup>4</sup> और उसके भाइयों ने देखा कि उनके पिता उसे अपने सभी भाइयों से अधिक प्रेम करते हैं; इसलिए वे उससे घृणा करने लगे और उससे मित्रता से बात नहीं कर सकते थे।<sup>5</sup> फिर यूसुफ ने एक सपना देखा, और जब उसने उसे अपने भाइयों को बताया, तो वे उससे और भी अधिक घृणा करने लगे।<sup>6</sup> और उसने उनसे कहा, “कृपया इस सपने को सुनो जो मैंने देखा है;<sup>7</sup> देखो, हम खेत में पूरीलियाँ बाँध रहे थे, और देखो, मेरी पूरी उठ खड़ी हुई और स्थिर रही, और देखो, तुहारी पूरीलियाँ मेरी पूरी के चारों ओर इकट्ठा हो गईं और उसे प्रणाम किया।”<sup>8</sup> तब उसके भाइयों ने उससे कहा, “क्या वास्तव में तू हम पर राज्य करेगा? या क्या वास्तव में तू हम पर शासन करेगा?” इसलिए वे उसके सपनों और उसके शब्दों के कारण उससे और भी अधिक घृणा करने लगे।<sup>9</sup> फिर उसने एक और सपना देखा, और अपने भाइयों को बताया, और कहा, “देखो, मैंने एक और सपना देखा है; और देखो, सूर्य और चंद्रमा, और यारह तारे मुझे प्रणाम कर रहे थे।”<sup>10</sup> उसने इसे अपने पिता और अपने भाइयों को भी बताया; और उसके पिता ने उसे ढांटा और उससे कहा, “यह सपना क्या है जो तूने देखा है? क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई वास्तव में आकर तेरे सामने भूमि पर दूकेंगे?”<sup>11</sup> और उसके भाई उससे ईर्ष्णा करने लगे, परंतु उसके पिता ने इस बात को मन में रखा।<sup>12</sup> फिर उसके भाई अपने पिता के झुंड को चराने के लिए शेकेम चले गए।<sup>13</sup> इसाएल ने यूसुफ से कहा, “क्या तेरे भाई शेकेम में झुंड नहीं चरा रहे हैं? आ, मैं तुझे उनके पास भेजूँगा।” और उसने उससे कहा, “मैं जाऊँगा।”<sup>14</sup> तब उसन उससे कहा, “अब जा और अपने भाइयों की कुशलता और झुंड की कुशलता देख और मुझे खबर ला।”<sup>15</sup> इसलिए उसने उसे हेब्रोन की घाटी से भेजा, और वह शेकेम पहुँचा।<sup>16</sup> एक आदमी ने उसे पाया, और देखो, वह मैदान में भटक रहा था; और उस आदमी ने उससे पूछा, “तू क्या झुंड रहा है?”<sup>16</sup> और उसने कहा,

“मैं अपने भाइयों को झुंड रहा हूँ; कृपया मुझे बता कि वे कहाँ झुंड चरा रहे हैं।”<sup>17</sup> तब उस आदमी ने कहा, “वे यहाँ से चले गए हैं; क्योंकि मैंने उन्हें कहते सुना, ‘चलो, दोतान चलो।’” इसलिए यूसुफ अपने भाइयों के पीछे गया और उन्हें दोतान में पाया।<sup>18</sup> जब उन्होंने उसे दूर से देखा, और उसके पास आने से पहले, उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाई।<sup>19</sup> उन्होंने एक-दूसरे से कहा, “यह सपना देखने वाला आ रहा है।”<sup>20</sup> अब आओ, हम उसे मार डालें और उसे एक गड्ढे में फेंक दें; और हम कहेंगे, ‘एक जंगली जानवर ने उसे खा लिया।’ फिर हम देखेंगे कि उसके सपनों का क्या होगा!”<sup>21</sup> लेकिन रूबेन ने यह सुना और उसे उनके हाथों से बचाया, यह कहकर, “चलो उसका जीवन न लै।”<sup>22</sup> फिर रूबेन ने उनसे कहा, “रक्त न बहाओ। उसे इस जंगल में गड्ढे में फेंक दो, परंतु उस पर हाथ न लगाओ—” ताकि बाद में वह उसे उनके हाथों से बचाकर उसके पिता के पास लौटा सके।<sup>23</sup> तो ऐसा हुआ कि जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तो उन्होंने यूसुफ का अंगरखा, वह बहुरंगी अंगरखा जो उस पर था, उतार लिया;<sup>24</sup> और उन्होंने उस पकड़कर गड्ढे में फेंक दिया। अब वह गड्ढा खाली था, उसमें पानी नहीं था।<sup>25</sup> फिर वे भोजन करने के लिए बैठ गए। लेकिन जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई और देखा, तो देखो, इश्माएलियों का एक कारवाँ गिलाद से आ रहा था, उनके ऊँट लेबडानम रेजिन, बाल्सम और गंधरस ले जा रहे थे, उन्हें मिस्त्र ले जाने के लिए।<sup>26</sup> और यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, “हमारे लिए क्या लाभ है यदि हम अपने भाई को मार डालें और उसके रक्त को छिपा दें?”<sup>27</sup> आओ, हम उसे इश्माएलियों को बेच दें और उस पर हाथ न लगाएँ, क्योंकि वह हमारा भाई है, हमारा अपना मांस है।” और उसके भाइयों ने उसकी बात मानी।<sup>28</sup> तब कुछ मिद्यान व्यापारी वहाँ से गुजरे, इसलिए उन्होंने उसे गड्ढे से निकाला और यूसुफ को इश्माएलियों को बीस शेकेल चाँदी में बेच दिया। इसलिए वे यूसुफ को मिस्र ले गए।<sup>29</sup> अब रूबेन गड्ढे के पास लौटा, और देखो, यूसुफ गड्ढे में नहीं था; इसलिए उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले।<sup>30</sup> वह अपने भाइयों के पास लौटा और कहा, “लङ्का का वहाँ नहीं है, मेरे लिए, मैं कहाँ जाऊँ?”<sup>31</sup> इसलिए उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया, और एक बकरी के बच्चे को मार डाला, और अंगरखे को रक्त में डुबो दिया;<sup>32</sup> और उन्होंने बहुरंगी अंगरखा भेजा और उसे अपने पिता के पास ले गए और कहा, “हमने इसे पाया है; कृपया इसे देखो कि यह तुम्हारे पुत्र का अंगरखा है या नहीं।”<sup>33</sup> तब उसने उसे देखा और कहा, “यह मेरे पुत्र का अंगरखा है। एक जंगली जानवर ने उसे खा लिया है; यूसुफ निश्चित रूप से टुकड़े-टुकड़े हो गया है।”<sup>34</sup> इसलिए याकूब ने अपने वस्त्र फाड़ डाले,

## उत्पत्ति

और अपनी कमर पर टाट बँध लिया, और अपने पुत्र के लिए कई दिनों तक शोक मनाया।<sup>35</sup> तब उसके सभी पुत्र और उसकी सभी पुत्रियाँ उसे सांत्वना देने के लिए उठ खड़े हुए, परंतु उसने सांत्वना तोने से इनकार कर दिया। और उसने कहा, "निश्चय ही मैं अपने पुत्र के लिए शोक करते हुए शिओल में जाऊँगा।" इसलिए उसके पिता उसके लिए रोए।<sup>36</sup> इस बीच, मिद्यानियों ने उसे मिस्त्र में पोटिफर को बेच दिया, जो फ़िरैन का अधिकारी था, अंगरक्षक का कपाना।

**38** उस समय यहूदा अपने भाइयों को छोड़कर अदुल्लाम के एक व्यक्ति हीरा के पास रहने चला गया।<sup>2</sup> तब हाँ यहूदा की मुलाकात श्रूआ नामक कनानी व्यक्ति की बेटी से हुई। उसने उससे विवाह किया और उसके साथ संबंध बनाए।<sup>3</sup> वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम एर रखा गया।<sup>4</sup> उसने फिर से गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम ओनान रखा।<sup>5</sup> उसने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शेला रखा। यह केंजिब में था जब उसने उसे जन्म दिया।<sup>6</sup> यहूदा ने अपने पहली लौटे पुत्र एर के लिए एक पत्नी ली, जिसका नाम तामार था।<sup>7</sup> लेकिन यहूदा का पहली लौटा पुत्र एर, यहोवा की दृष्टि में दुष्ट था; इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला।<sup>8</sup> तब यहूदा ने ओनान से कहा, "अपने भाई की पत्नी के साथ सोता, वह अपने वीर्य को ज़मीन पर गिरा देता ताकि अपने भाई के लिए संतान न पैदा हो।"<sup>9</sup> उसका किया हुआ यहोवा की दृष्टि में दुष्ट था; इसलिए यहोवा ने उसे भी मार डाला।<sup>10</sup> तब यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार से कहा, "अपने पिता के घर में विधवा के रूप में तब तक रहो जब तक मेरा पुत्र शेला बढ़ा न हो जाए।"<sup>11</sup> क्योंकि उसने सोचा, "वह भी मर सकता है, जैसे उसके भाई मर गए।" इसलिए तामार अपने पिता के घर में रहने चली गई।<sup>12</sup> काफी समय बाद यहूदा की पत्नी, श्रूआ की बेटी, मर गई। जब यहूदा अपने शोक से उबर गया, तो वह तिप्पाह में उन लोगों के पास गया जो उसकी भेड़ों की ऊन करत रहे थे, और उसका मित्र अदुल्लामी हीरा उसके साथ गया।<sup>13</sup> जब तामार को बताया गया, "तुम्हारा ससुर अपनी भेड़ों की ऊन करतने के लिए तिप्पाह जा रहा है,"<sup>14</sup> तो उसने अपनी विधवा के कपड़े उतार दिए, खुद को एक धूंधट से ढक लिया ताकि वह पहचान में न आए, और एनाम के प्रवेश द्वारा पर बैठ गई, जो तिप्पाह के रास्ते में है। उसने देखा कि शेला अब बड़ा हो गया था, फिर भी उसे उसकी पत्नी के रूप में नहीं

दिया गया था।<sup>15</sup> जब यहूदा ने उसे देखा, तो उसने सोचा कि वह एक वेश्या है, क्योंकि उसने अपना चेहरा ढक रखा था।<sup>16</sup> यह न जानकर कि वह उसकी पुत्रवधू है, वह उसके पास सड़क के किनारे रखा गया और कहा, "आओ, मेरे साथ सोओ।" उसने पूछा, "तुम मुझे क्या दोगे मेरे साथ सोने के लिए?"<sup>17</sup> उसने कहा, "मैं तुम्हें अपनी भेड़-बकरियों में से एक बकरी का बच्चा भेजूँगा।" उसने पूछा, "क्या तुम मुझे कुछ गारंटी दोगे जब तक तुम इसे भजो?"<sup>18</sup> उसने कहा, "मैं तुम्हें क्या गारंटी दूँ?" उसने उत्तर दिया, "तुम्हारी मुरर और उसकी डोरी, और तुम्हारे हाथ में जो छाई है।" इसलिए उसने उहँे उसे दे दिया और उसके साथ सोया, और वह उससे गर्भवती हो गई।<sup>19</sup> वहाँ से जाने के बाद, उसने अपना धूंधट उतार दिया और फिर से अपनी विधवा के कपड़े पहन लिए।<sup>20</sup> इस बीच यहूदा ने अपने मित्र अदुल्लामी के द्वारा उस स्त्री से अपनी गारंटी वापस लेने के लिए एक बकरी का बच्चा भेजा, लेकिन वह उसे नहीं मिला।<sup>21</sup> उसने वहाँ रहने वाले लोगों से पूछा, "वह मंदिर की वेश्या कहाँ है जो एनाम के रास्ते पर थी?" उन्होंने कहा, "यहाँ कोई मंदिर की वेश्या नहीं रही।"<sup>22</sup> इसलिए वह यहूदा के पास वापस गया और कहा, "मैंने उसे नहीं पाया।" इसके अलावा, वहाँ रहने वाले लोगों ने कहा, यहाँ कोई मंदिर की वेश्या नहीं रही।"<sup>23</sup> तब यहूदा ने कहा, "उसे जो कुछ उसके पास है, रखने दो, नहीं तो हम हंसी का पात्र बन जाएंगे। अखिरकार, मैंने उसे यह बकरी का बच्चा भेजा था, लेकिन तुमने उसे नहीं पाया।"<sup>24</sup> लगभग तीन महीने बाद यहूदा को बताया गया, "तुम्हारी पुत्रवधू तामार वेश्यावृत्ति की दोषी है, और इसके परिणामस्वरूप वह अब गर्भवती है।" यहूदा ने कहा, "उसे बाहर लाओ और उसे जलाकर मार डालो।"<sup>25</sup> जब उसे बाहर लाया जा रहा था, उसने अपने ससुर को एक संदेश भेजा। उसने कहा, "मैं उस व्यक्ति से गर्भवती हूं जिसका ये है।"<sup>26</sup> और उसने जोड़ा, "देखो कि क्या तुम पहचान सकते हो कि ये मुरह, डोरी और छाई किसकी हैं।"<sup>27</sup> यहूदा ने उहँे पहचाना और कहा, "वह मुझसे अधिक धर्मी है, क्योंकि मैंने उसे अपने पुत्र शेला को नहीं दिया।"<sup>28</sup> और उसने फिर कभी उसके साथ नहीं सोया।<sup>29</sup> जब उसके जन्म देने का समय आया, तो उसके गर्भ में जुड़वा लड़के थे।<sup>30</sup> जब वह जन्म दे रही थी, उनमें से एक ने अपना हाथ बाहर निकाला; इसलिए दाई ने एक लाल धागा लिया और उसे उसकी कलाई पर बांध दिया और कहा, "यह पहले बाहर आया।"<sup>31</sup> लेकिन जब उसने अपना हाथ वापस खींच लिया, तो उसका भाई बाहर आया, और उसने कहा, "तो तुमने इस तरह से बाहर निकाला!" और उसका नाम पेरेझ़ रखा गया।<sup>32</sup>

## उत्पत्ति

फिर उसका भाई, जिसकी कलाई पर लाल धागा था,  
बाहर आया। और उसका नाम ज़ेरह रखा गया।

### 39 अब यूसुफ को मिस ले जाया गया था।

पोतीकर, जो फिरौन के अधिकारियों में से एक था और अंगरक्षकों का कपान था, ने उसे इश्माएलियों से खरीदा जिन्होंने उसे वहाँ ले गए थे।<sup>2</sup> यहोवा यूसुफ के साथ था, जिससे वह समृद्ध हुआ, और वह अपने मिसी स्वामी के घर में रहने लगा।<sup>3</sup> जब उसके स्वामी ने देखा कि यहोवा उसके साथ है और यहोवा उसे जो कुछ भी वह करता है उसमें सफलता देता है,<sup>4</sup> यूसुफ ने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया और उसका सेवक बन गया। पोतीकर ने उसे अपने घर का प्रभारी बना दिया, और उसने जो कुछ भी उसके पास था उसे उसकी देखभाल में सौंप दिया।<sup>5</sup> जिस समय से उसने उसे अपने घर और अपनी सारी संपत्ति का प्रभारी बनाया, यहोवा ने यूसुफ के कारण मिसी के घर को आशीर्वाद दिया।<sup>6</sup> अब यूसुफ सुंदर और सुडौल था।<sup>7</sup> और कुछ समय बाद उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ पर ध्यान दिया और कहा, “मेरे साथ सोने आओ!”<sup>8</sup> परन्तु उसने मना कर दिया। उसने उससे कहा, “मेरे प्रभारी होने के साथ, मेरे स्वामी को घर में किसी भी चीज़ की चिंता नहीं है; जो कुछ भी उसके पास है उसने मेरी देखभाल में सौंप दिया है।”<sup>9</sup> इस घर में मुझसे बड़ा कोई नहीं है। मेरे स्वामी ने मुझसे कुछ भी नहीं रोका है सिवाय तुम्हरे, क्योंकि तुम उसकी पत्नी हो। फिर मैं कैसे ऐसा दृष्ट काम कर सकता हूँ और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकता हूँ?”<sup>10</sup> और यद्यपि वह दिन-प्रतिदिन यूसुफ से बात करती रही, उसने उसके साथ सोने या उसके साथ रहने से इनकार कर दिया।<sup>11</sup> एक दिन वह अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए घर में गया, और घर के कोई भी सेवक अंदर नहीं थे।<sup>12</sup> उसने उसे उसके चोगे से पकड़ लिया और कहा, “मेरे साथ सोने आओ!” लेकिन उसने अपना चोगा उसके हाथ में छोड़ दिया और घर से बाहर भाग गया।<sup>13</sup> जब उसने देखा कि उसने अपना चोगा उसके हाथ में छोड़ दिया है और घर से बाहर भाग गया है,<sup>14</sup> तो उसने अपने घर के सेवकों को बुलाया। उसने कहा, “देखो, यह इब्रानी हमें अपमानित करने के लिए लाया गया है! वह मेरे साथ सोने के लिए यहाँ आया, लेकिन मैंने चिल्लाया।<sup>15</sup> जब उसने मेरी चीख़ सुनी, तो वह अपना चोगा मेरे पास छोड़कर भाग गया।”<sup>16</sup> उसने उसका चोगा अपने पास रखा। जब तक कि उसका स्वामी घर नहीं आया।<sup>17</sup> फिर उसने उसे यह कहानी सुनाई: “वह इब्रानी दास जिसे तुम हमारे पास लाए थे, मेरे साथ अपमान करने के लिए आया था।<sup>18</sup> लेकिन जैसे ही मैंने मदद के लिए चीख़ पुकार की, उसने अपना चोगा मेरे पास छोड़ दिया और

घर से बाहर भाग गया।”<sup>19</sup> जब उसके स्वामी ने अपनी पत्नी की कहानी सुनी, तो वह क्रोध से भर गया।<sup>20</sup> यूसुफ के स्वामी ने उसे पकड़ लिया और उसे जेल में डाल दिया, जहाँ राजा के कैदियों को रखा जाता था।<sup>21</sup> परन्तु यहोवा यूसुफ के साथ था; उसने उस पर कृपा की और उसे जेल के अधिकारी की दृष्टि में अनुग्रह दिया।<sup>22</sup> इसलिए अधिकारी ने जेल में रखे गए सभी लोगों का प्रभारी यूसुफ को बना दिया, और वह वहाँ किए गए सभी कार्यों के लिए जिम्मेदार था।<sup>23</sup> अधिकारी ने यूसुफ की देखभाल में किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था और उसे जो कुछ भी वह करता था उसमें सफलता देता था।

**40** फिर इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि मिस के राजा के लिये प्याला भरने वाला और रसोइया अपने स्वामी, मिस के राजा को नाराज़ कर बैठे।<sup>2</sup> और फिरौन अपने दो अधिकारियों, मुख्य प्याला भरने वाले और मुख्य रसोइया पर क्रोधित हुआ।<sup>3</sup> इसलिये उसने उहैं प्रहरी के प्रधान के घर में, उसी जेल में जहाँ यूसुफ बंद था, कैद कर दिया।<sup>4</sup> और प्रहरी के प्रधान ने यूसुफ को उनके ऊपर नियुक्त किया, और उसने उनकी देखभाल की; और वे कुछ समय तक कैद में रहे।<sup>5</sup> फिर मिस के राजा के प्याला भरने वाले और रसोइया, जो जेल में बंद थे, दोनों ने एक ही रात में सपना देखा, प्रत्येक ने अपना सपना और उसकी अपनी व्याख्या के साथ।<sup>6</sup> जब यूसुफ सुबह उनके पास आया और उहैं देखा, तो देखो, वे उदास थे।<sup>7</sup> इसलिये उसने फिरौन के अधिकारियों से पूछा जो उसके साथ उसके स्वामी के घर में कैद में थे,

“आज तुम्हारे चैहेरे इतने उदास क्यों हैं?”

<sup>8</sup> और उन्होंने उससे कहा,

“हमने एक सपना देखा है, और उसे समझाने वाला कोई नहीं है।” तब यूसुफ ने उनसे कहा, “क्या व्याख्याएँ परमेश्वर की नहीं होती? कृपया मुझे बताओ!”

<sup>9</sup> तब मुख्य प्याला भरने वाले ने यूसुफ को अपना सपना बताया, और उससे कहा,

“मेरे सपने में देखो, मेरे सामने एक बेल थी;<sup>10</sup> और उस बेल पर तीन शाखाएँ थीं। और जब वह कली रही थी, उसकी कलियाँ निकलीं और उसके गुच्छों में पके अंगूर उत्पन्न हुए।<sup>11</sup> अब फिरौन का प्याला मेरे हाथ में

## उत्पत्ति

था, इसलिए मैंने अंगूर लिए और उन्हें फिरैन के प्याले में निचोड़ा, और मैंने प्याला फिरैन के हाथ में रखा।<sup>12</sup>

<sup>12</sup> तब यूसुफ ने उससे कहा,

“यह उसकी व्याख्या है तीन शाखाएँ तीन दिन हैं,<sup>13</sup> तीन दिनों के भीतर फिरैन तुम्हारा सिर उठाएगा और तुम्हें तुम्हारे पद पर बहाल करेगा; और तुम फिरैन के प्याले को उसके हाथ में रखोगे जैसे तुम पहले उसके प्याला भरने वाले थे।<sup>14</sup> केवल जब तुम्हारे लिये सब अच्छा हो, तो मुझे याद रखना, और कृपया मुझ पर कृपया करना और फिरैन से मेरा उल्लेख करना, और मुझे इस जेल से बाहर निकालना।<sup>15</sup> क्योंकि वास्तव में मुझे इब्रियों के देश से अपहरण कर लाया गया था, और यहाँ तक कि यहाँ भी मैंने कुछ नहीं किया कि उन्होंने मुझे कालकोठरी में डाल दिया।”

<sup>16</sup> जब मुख्य रसोइया ने देखा कि उसने अनुकूल व्याख्या की है, तो उसने यूसुफ से कहा,

“मैंने भी अपने सपने में देखा, और देखो, मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ थीं,<sup>17</sup> और सबसे ऊपरी टोकरी में फिरैन के लिए सभी प्रकार के बेक किए हुए भोजन थे, और पक्षी उन्हें मेरे सिर पर से टोकरी में से खा रहे थे।”<sup>18</sup>

<sup>18</sup> तब यूसुफ ने उत्तर दिया और कहा,

“यह व्याख्या है तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं;<sup>19</sup> तीन दिनों के भीतर फिरैन तुम्हारा सिर तुमसे उठाएगा और तुम्हें एक पेंड पर लटकाएगा, और पक्षी तुम्हारा मांस तुमसे खा जाएगा।”

<sup>20</sup> तो ऐसा हुआ कि तीसरे दिन, जो फिरैन का जन्मदिन था, उसने अपने सभी सेवकों के लिए एक भोज आयोजित किया; और उसने मुख्य प्याला भरने वाले और मुख्य रसोइया का सिर अपने सेवकों के बीच उठाया।<sup>21</sup> उसने मुख्य प्याला भरने वाले को उसके पद पर बहाल किया, और उसने प्याला फिरैन के हाथ में रखा;<sup>22</sup> लेकिन उसने मुख्य रसोइया को लटका दिया, जैसा कि यूसुफ ने उन्हें व्याख्या की थी।<sup>23</sup> फिर भी मुख्य प्याला भरने वाले ने यूसुफ को याद नहीं किया, बल्कि उसे भूल गया।

**41** अब दो पूर्ण वर्षों के अंत में ऐसा हुआ कि फिरैन ने एक सपना देखा, और देखो, वह नील नदी के किनारे खड़ा था।<sup>2</sup> और देखो, नील से सात गायें निकलीं, सुंदर और मोटी; और वे दलदल की घास में चरने लगीं।<sup>3</sup> फिर देखो, उनके बाद नील से सात अन्य गायें निकलीं, कुरुप और पतली, और वे नील के किनारे अन्य गायों के पास खड़ी हो गईं।<sup>4</sup> कुरुप और पतली गायों ने सात सुंदर और मोटी गायों को खा लिया। फिर फिरैन जाग गया।<sup>5</sup> लेकिन वह फिर सो गया और दूसरी बार सपना देखा; और देखो, एक ही डंठल पर सात बालियाँ निकलीं, मोटी और अच्छी।<sup>6</sup> फिर देखो, सात बालियाँ, पतली और पूरब की हवा से झुलसी हुईं, उनके बाद उग आईं।<sup>7</sup> और पतली बालियों ने सात मोटी और पूरी बालियों को नियाल लिया। फिर फिरैन जाग गया, और देखो, यह एक सपना था।<sup>8</sup> अब सुबह में उसकी आत्मा व्याकुल थी, इसलिए उसने संदेशवाहकों को भेजा और मिस्र के सभी जादूराओं और सभी बुद्धिमानों को बुलाया। और फिरैन ने उन्हें अपने सपने बताए, लेकिन कोई भी उन्हें फिरैन के लिए समझा नहीं सका।<sup>9</sup> तब मुख्य पियाला वाहक ने फिरैन से कहा, “मैं आज अपने अपराधों का उल्लेख करना चाहूँगा।<sup>10</sup> फिरैन अपने सेवकों से क्रोधित था, और उसने मुझे और मुख्य रसोइये को रक्षक के कप्तान के घर में बंदी बना दिया।<sup>11</sup> हम दोनों ने एक ही रात को सपना देखा, उसने और मैंने; हम में से प्रत्येक ने अपने-अपने सपने की व्याख्या के अनुसार सपना देखा।<sup>12</sup> अब हमारे साथ वहाँ एक इबानी युवक था, रक्षक के कप्तान का सेवक, और हमने उसे सपने बताए, और उसने हमारे लिए हमारे सपनों की व्याख्या की, वैसा ही हुआ; फिरैन ने मुझे मेरे पद पर बहाल कर दिया, लेकिन उसने दूसरे व्यक्ति को फांसी दे दी।”<sup>14</sup> तब फिरैन ने जोसेफ को बुलाने के लिए संदेश भेजा, और उन्होंने उसे जल्दी से कालकोठरी से बाहर लाया; और जब उसने अपने आप को शेव किया और अपने कपड़े बदले, तो वह फिरैन के पास आया।<sup>15</sup> फिरैन ने जोसेफ से कहा, “मैंने एक सपना देखा है, लेकिन कोई इसे समझा नहीं सकता। और मैंने तुम्हारे बारे में सुना है कि जब तुम एक सपना सुनते हो, तो तुम उसकी व्याख्या कर सकते हो।”<sup>16</sup> जोसेफ ने फिरैन को उत्तर दिया, “यह मुझसे संबंधित नहीं है; परमेश्वर फिरैन को उसके अपने भले के लिए उत्तर देगा।”<sup>17</sup> तो फिरैन ने जोसेफ से कहा, “मेरे सपने में, देखो, मैं नील के किनारे खड़ा था;<sup>18</sup> और देखो, सात गायें, मोटी और सुंदर, नील से निकलीं, और वे दलदल की घास में चरने लगीं।<sup>19</sup> फिर देखो, उनके बाद सात

## उत्पत्ति

अन्य गायें निकलीं, गरीब और बहुत कुरुप और पतली, जैसी कुरुपता मैंने पूरे मिस देश में कभी नहीं देखी; <sup>29</sup> और पतली और कुरुप गायों ने पहली सात मोटी गायों को खा लिया। <sup>30</sup> फिर भी जब उन्होंने उन्हें खा लिया, तो यह पता नहीं चला कि उन्होंने उन्हें खा लिया है; क्योंकि वे पहले की तरह ही कुरुप थीं। फिर मैं जाग गया। <sup>31</sup> मैंने अपने सपने में भी देखा, और देखो, एक ही डंठल पर सात बालियाँ, पूरी और अच्छी, निकलीं; <sup>32</sup> और देखो, सात बालियाँ, सूखी, पतली, और पूरब की हवा से झुलसी हुई, उनके बाद उगा आईं, <sup>33</sup> और पतली बालियों ने सात अच्छी बालियों को निगल लिया। फिर मैंने इसे जाटूगरों को बताया, लेकिन कोई भी इसे मुझे समझा नहीं सका।” <sup>34</sup> तब जोसेफ ने फ़िरैन से कहा, “फ़िरैन के सपने एक ही हैं; परमेश्वर ने फ़िरैन को बताया है कि वह क्या करने वाला है।” <sup>35</sup> सात अच्छी गायें सात वर्ष हैं; सपने एक ही हैं। <sup>36</sup> सात पतली और कुरुप गायें जो उनके बाद निकलीं, सात वर्ष हैं, और पूरब की हवा से झुलसी हुई सात पतली बालियाँ सात वर्ष के अकाल का संकेत हैं। <sup>37</sup> जैसा कि मैंने फ़िरैन से कहा है: परमेश्वर ने फ़िरैन को दिखाया है कि वह क्या करने वाला है। <sup>38</sup> देखो, मिस देश में सात वर्षों की बड़ी समृद्धि आ रही है; <sup>39</sup> और उनके बाद सात वर्ष का अकाल आएगा, और मिस देश में सारी समृद्धि भुला दी जाएगी, और अकाल देश को नष्ट कर देगा। <sup>40</sup> इसलिए उस बाद के अकाल के कारण देश में समृद्धि अज्ञात रहेगी; क्योंकि यह बहुत गंभीर होगा। <sup>41</sup> अब फ़िरैन को सपना दो बार दिखाने का अर्थ यह है कि यह मामला परमेश्वर द्वारा पूछि किया गया है, और परमेश्वर इसे शीघ्रता से लाएगा। <sup>42</sup> तो अब फ़िरैन को एक विवेकशील और बुद्धिमान व्यक्ति की तलाश करनी चाहिए, और उसे मिस देश पर नियुक्त करना चाहिए। <sup>43</sup> फ़िरैन को देश के प्रभारी निरीक्षकों को नियुक्त करने के लिए कार्यवाही करनी चाहिए, और उसे मिस देश की उपज का पाँचवां हिस्सा सात वर्षों की समृद्धि के दौरान लेना चाहिए। <sup>44</sup> फिर उन्हें इन अच्छे वर्षों के सभी भोजन को इकट्ठा करने दें जो आ रहे हैं, और फ़िरैन के अधिकार के तहत शहरों में अनाज के लिए भोजन को संग्रहीत करें, और उन्हें इसकी रक्षा करने दें। <sup>45</sup> भोजन को मिस देश में होने वाले सात वर्षों के अकाल के लिए एक आरक्षित के रूप में उपयोग किया जाए, ताकि अकाल के दौरान देश नष्ट न हो।” <sup>46</sup> अब यह प्रस्ताव फ़िरैन और उसके सभी सेवकों को अच्छा लगा। <sup>47</sup> तब फ़िरैन ने अपने सेवकों से कहा, “क्या हम इस तरह का व्यक्ति पा सकते हैं, जिसमें एक दिव्य आत्मा हो?” <sup>48</sup> तो फ़िरैन ने जोसेफ से कहा, “चूंकि परमेश्वर ने तुम्हें यह सब बताया है, इसलिए कोई भी तुम्हारे जैसा विवेकशील

और बुद्धिमान नहीं है।” <sup>49</sup> तुम मेरे घर के प्रभारी रहोगे, और मेरे सभी लोग तुम्हारे प्रति आजाकारी होंगे; केवल सिंहासन के मामले में मैं तुमसे बड़ा रहूँगा।” <sup>50</sup> फ़िरैन ने जोसेफ से भी कहा, “देखो, मैंने तुम्हें मिस देश के सभी पानियों का नियुक्त किया है।” <sup>51</sup> तब फ़िरैन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकालकर जोसेफ के हाथ में डाल दी, और उसे महीन लिनन के वस्त्र पहनाया, और उसके गले में सोने की माला डाल दी। <sup>52</sup> और उसने उसे अपनी दूसरी रथ में सवारी कराई; और उसके आगे घोषणा की गई, “धूमेने टेक दो!” और उसने उसे मिस देश के सभी पर नियुक्त किया। <sup>53</sup> इसके अलावा, फ़िरैन ने जोसेफ से कहा, “हालांकि मैं फ़िरैन हूँ, फ़िर भी तुम्हारी अनुमति के बिना कोई भी मिस देश में अपना हाथ या पैर नहीं उठाएगा।” <sup>54</sup> तब फ़िरैन ने जोसेफ का नाम जाफ़नाथ-पानेह रखा; और उसने उसे ओन के पुजारी पोतीफेरा की पुत्री असनाथ को उसकी पत्नी के रूप में दिया। और जोसेफ मिस देश के ऊपर चला गया। <sup>55</sup> अब जोसेफ तीस वर्ष का था जब वह मिस के राजा फ़िरैन के समने खड़ा था। और जोसेफ फ़िरैन की उपस्थिति से बाहर गया और मिस देश के सभी में गया। <sup>56</sup> समृद्धि के सात वर्षों के दौरान भूमि ने प्रबुर मात्रा में उत्पादन किया। <sup>57</sup> तो उसने इन सात वर्षों के सभी भोजन को इकट्ठा किया जो मिस देश में हुए, और भोजन को शहरों में संग्रहीत किया। उसने प्रयोक्त शहर में उसके अपने आसपास के क्षेत्रों से भोजन संग्रहीत किया। <sup>58</sup> जोसेफ ने समृद्ध की रेत की तरह प्रबुर मात्रा में अनाज संग्रहीत किया, जब तक कि उसने इसे मापान बंद नहीं कर दिया, क्योंकि यह माप से परे था। <sup>59</sup> अब अकाल के वर्ष के आने से पहले, जोसेफ के दो पत्र हुए, जिन्हें ओन के पुजारी पोतीफेरा की पुत्री असनाथ ने उसे जन्म दिया। <sup>60</sup> जोसेफ ने पहले पुत्र का नाम मनश्वे रखा, “क्योंकि” उसने कहा, “परमेश्वर ने मुझे मेरी सारी परेशानी और मेरे पिता के घर को भुला दिया है।” <sup>61</sup> और उसने दूसरे का नाम एप्रैम रखा, “क्योंकि” उसने कहा, “परमेश्वर ने मुझे मेरे कष्ट के देश में फलदायी बनाया है।” <sup>62</sup> जब मिस देश में हुई समृद्धि के सात वर्षों का अंत हुआ, <sup>63</sup> और जैसे जोसेफ ने कहा था, वैसे ही अकाल के सात वर्षों की शुरुआत हुई, तब सभी देशों में अकाल पड़ा; लेकिन मिस देश में रोटी थी। <sup>64</sup> तो जब मिस देश में अकाल पड़ा, तो लोग फ़िरैन के पास रोटी के लिए चिल्लाए; और फ़िरैन ने सभी मिसियों से कहा, “जोसेफ के पास जाओ; वह जो कहे, वही करो।” <sup>65</sup> जब अकाल पूरी पृथ्वी के चेहरे पर फैल गया, तब जोसेफ ने सभी भंडार खोल दिए और मिसियों को अनाज बेचा; और मिस देश में अकाल गंभीर था। <sup>66</sup> तब सारी पृथ्वी

## उत्पत्ति

जोसेफ के पास मिस्र में अनाज खरीदने आई, क्योंकि पूरी पृथ्वी में अकाल गंभीर था।

**42** अब याकूब ने देखा कि मिस्र में अनाज है, और याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, “तुम एक-दूसरे को क्यों देख रहे हो?”<sup>2</sup> उसने कहा, “देखो, मैंने सुना है कि मिस्र में अनाज है; वहाँ जाओ और हमारे लिए वहाँ से कुछ खरीदो, ताकि हम जीवित रहे और मरें नहीं।”<sup>3</sup> इसलिए यूसुफ के दस भाई मिस्र से अनाज खरीदने के लिए गए।<sup>4</sup> परन्तु याकूब ने यूसुफ के भाई बिन्यामीन को उसके भाइयों के साथ नहीं भेजा, क्योंकि उसने कहा, “मुझे डर है कि उसे कोई हानि न हो।”<sup>5</sup> इसलिए इसाएल के पुत्र उन लोगों के बीच अनाज खरीदने आए, जो आ रहे थे, क्योंकि कनान देश में भी अकाल था।<sup>6</sup> अब यूसुफ उस देश का शासक था; वही उस देश के सभी लोगों को अनाज बेचता था। और यूसुफ के भाई आए और उसके सामने भूमि पर मुँह के बल झुक गए।<sup>7</sup> जब यूसुफ ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान लिया, परन्तु उसने अपने आप को उससे छिपा लिया और उनसे कठोरता से बात की। और उसने उनसे कहा, “तुम कहाँ से आए हो?” और उन्होंने कहा, “कनान देश से, भोजन खरीदने के लिए।”<sup>8</sup> परन्तु यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, यद्यपि उन्होंने उसे नहीं पहचाना।<sup>9</sup> और यूसुफ को वे ख्वफ याद आए जो उसने उनके बोरे में देखे थे, और उसने उनसे कहा, “तुम जासूस हो; तुम हमारे देश के असुरक्षित भागों को देखने आए हो।”<sup>10</sup> और उन्होंने उससे कहा, “नहीं, मेरे प्रभु परन्तु आपके दास भोजन खरीदने आए हैं।”<sup>11</sup> हम सब एक ही आदमी के पुत्र हैं; हम ईमानदार लोग हैं, आपके दास जासूस नहीं हैं।”<sup>12</sup> फिर भी उसने उनसे कहा, “नहीं, परन्तु तुम हमारे देश के असुरक्षित भागों को देखने आए हो।”<sup>13</sup> और उन्होंने कहा, “आपके दास कुल मिलाकर बारह भाई हैं, कनान देश में एक ही आदमी के पुत्र, और देखो, सबसे छोटा आज हमारे पिता के साथ है, और एक अब जीवित नहीं है।”<sup>14</sup> परन्तु यूसुफ ने उनसे कहा, “जैसा मैंने तुमसे कहा, तुम जासूस हो;”<sup>15</sup> इससे तुम्हारी परीक्षा होगी: फिरौन के जीवन की शापथ, तुम इस स्थान को नहीं छोड़ोगे जब तक कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ नहीं आता।<sup>16</sup> तुममें से एक को भेजो ताकि वह तुम्हारे भाई को ले आए, जबकि तुम बंदी रहो, ताकि तुम्हारे शब्दों की परीक्षा हो सके, कि तुममें सच्चाई है या नहीं। परन्तु यदि नहीं, फिरौन के जीवन की शापथ, तुम निश्चित रूप से जासूस हो।”<sup>17</sup> इसलिए उसने उन्हें तीन दिन के लिए एक साथ जेल में डाल दिया।<sup>18</sup> अब यूसुफ ने तीसरे दिन उनसे कहा, “यह करो और जीवित रहो, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता हूँ।”<sup>19</sup> यदि तुम

ईमानदार लोग हो, तो तुम्हारे भाइयों में से एक को तुम्हारी जेल में बंदी रखा जाए; परन्तु बाकी तुम जाओ, अपने घरों के अकाल के लिए अनाज ले जाओ,<sup>20</sup> और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास लाओ, ताकि तुम्हारे शब्द सत्यापित हों, और तुम मरोग नहीं।”<sup>21</sup> और उन्होंने ऐसा ही किया।<sup>22</sup> तब उन्होंने एक-दूसरे से कहा, “सचमुच हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं, क्योंकि हमने उसकी आत्मा की पीड़ा देखी जब उसने हमसे विनती की, फिर भी हमने नहीं सुना; इस कारण से यह पीड़ा हम पर आई है।”<sup>23</sup> रूबने ने उनसे उत्तर दिया, “क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था, ‘लड़के के विरुद्ध पाप मत करो?’ फिर भी तुमने नहीं सुना। अब उसके खून का स्याय माँगा जा रहा है।”<sup>24</sup> वे नहीं जानते थे, हालांकि, कि यूसुफ समझता था, क्योंकि उनके बीच एक द्विभाषिया था।<sup>25</sup> तब उसने उनसे मुँह-मोड़ लिया और रोया। परन्तु जब वह उनके पास लौटा और उनसे बात की, तो उसने शिमोन को उनसे लिया और उनके सामने बाँध दिया।<sup>26</sup> तब यूसुफ ने आदेश दिया कि उनके बैग अनाज से भर दिए जाएं, और हर आदमी के पैसे उसके बोरे में लौटा दिए जाएं, और उन्हें यात्रा के लिए प्रावधान दिए जाएं। और उनके लिए ऐसा ही किया गया।<sup>27</sup> इसलिए उन्होंने अपने गधों को अनाज से लादा और वहाँ से चले गए।<sup>28</sup> परन्तु जब उनमें से एक ने अपने गधे को रात के शिविर स्थल पर चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तो उसने अपने पैसे देखे, और देखो, वह उसके बोरे में मुँह में था!<sup>29</sup> और उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरे पैसे लौटा दिए गए हैं, और देखो, यह मेरे बोरे में है!” तब उनके दिल ढूब गए, और वे एक-दूसरे से काँपते हुए बोले, “यह क्या है जो परमेश्वर ने हमसे किया है?”<sup>30</sup> जब वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आए, तो उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था, कहते हुए,<sup>31</sup> “उस देश के प्रभु ने हमसे कठोरता से बात की, और हमें देश के जासूसों के रूप में लिया।”<sup>32</sup> परन्तु हमने उससे कहा, “हम ईमानदार लोग हैं; हम जासूस नहीं हैं।”<sup>33</sup> हम बारह भाई हैं, हमारे पिता के पुत्र; एक अब जीवित नहीं है, और सबसे छोटा आज कनान देश में हमारे पिता के साथ है।<sup>34</sup> उस देश के प्रभु ने हमसे कहा, “इससे मैं जानूँगा कि तुम ईमानदार लोग हो: अपने भाइयों में से एक को मेरे साथ छोड़ दो और अपने घरों के अकाल के लिए अनाज ले जाओ, और जाओ।”<sup>35</sup> परन्तु अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास लाओ ताकि मैं जान सकूँ कि तुम जासूस नहीं हो, लिक्कि ईमानदार लोग हो। मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें ढूँगा, और तुम देश में व्यापार कर सकते हो।”<sup>36</sup> अब ऐसा हुआ, जब वे अपने बोरे खाली कर रहे थे, कि देखो, हर आदमी का पैसों का बैग उसके बोरे में था; और जब उन्होंने और उनके पिता

## उत्पत्ति

ने अपने पैसों के बैग देखे, तो वे डर गए।<sup>36</sup> तब उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से वंचित कर दिया है। यूसुफ अब नहीं है, और शिमोन अब नहीं है, और अब तुम बिन्यामीन को ले जाओगे; ये सब बातें मेरे विरुद्ध हैं।”<sup>37</sup> तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, “यदि मैं उसे तुम्हारे पास वापस न लाऊँ, तो तुम मेरे दो पुत्रों को मार सकते हो; उसे मेरी देखभाल में रखो, और मैं उसे तुम्हारे पास लौटा दूँगा।”<sup>38</sup> परन्तु याकूब ने कहा, “मेरा पुरुष तुम्हारे साथ नहीं जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर चुका है, और वह अकेला बचा है। यदि उसे उस यात्रा में काई हानि हो जाए जो तुम कर रहे हो, तो तुम मेरे सफेद बालों को शोक में शिंओल में ले जाओगे।”

**43** अब उस देश में अकाल बहुत ही भयंकर था।<sup>2</sup> जब उन्होंने मिस से लाया हुआ अनाज खा लिया, तो उनके पिता ने उनसे कहा, “फिर जाओ, हमारे लिए थोड़ा भोजन खरीद लो।”<sup>3</sup> लेकिन यहूदा ने उनसे कहा, “उस आदमी ने हमें साफ-साफ चेतावनी दी थी, ‘जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो, तब तक तुम मेरा मुख न देखोगे।’”<sup>4</sup> यदि आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजते हैं, तो हम नीचे जाकर आपके लिए भोजन खरीदेंगे।<sup>5</sup> लेकिन यदि आप उसे नहीं भेजते हैं, तो हम नीचे नहीं जाएंगे; क्योंकि उस आदमी ने हमसे कहा था, “जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो, तब तक तुम मेरा मुख न देखोगे।”<sup>6</sup> तब इसाएल ने कहा, “तुमने उस आदमी को यह बताकर मुझे इतनी बुरी तरह क्यों सताया कि तुम्हारा एक और भाई है?”<sup>7</sup> लेकिन उन्होंने कहा, “उस आदमी ने हमसे और हमारे रिश्तेदारों के बारे में विशेष रूप से पूछा, ‘क्या तुम्हारा पिता अभी भी जीवित है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ इसलिए हमने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। क्या हम यह जान सकते थे कि वह कहेगा, ‘अपने भाई को नीचे लाओ?’”<sup>8</sup> तब यहूदा ने अपने पिता इसाएल से कहा, “लड़के को मेरे साथ भेज दो और हम उठकर जाएंगे, ताकि हम जीवित रहें और मरें नहीं—हम, आप और हमारे छोटे बच्चे।”<sup>9</sup> मैं स्वयं उसके लिए जिम्मेदारी लूंगा! आप उसे मुझसे वापस मांग सकते हैं। यदि मैं उसे आपके पास वापस नहीं लाता और उसे आपके सामने प्रस्तुत नहीं करता, तो आप मुझे हमेशा के लिए दोषी ठहरा सकते हैं।<sup>10</sup> क्योंकि यदि हमने देरी नहीं की होती, तो हम अब तक दो बार लौट सकते थे।”<sup>11</sup> तब उनके पिता इसाएल ने उनसे कहा, “यदि ऐसा ही होना चाहिए, तो यह करो: अपने थैलों में देश के कुछ उत्तम उत्पाद ले लो, और उस आदमी के लिए एक उपहार ले जाओ—थोड़ा सा बाम और थोड़ा सा शहद, लाल्बानम रेजिन और गंधरस, पिस्ता और बादाम।”<sup>12</sup> और अपने हाथ में दुगना पैसा ले

लो, और अपने हाथ में वह पैसा वापस ले लो जो तुम्हारे थैलों के मुंह में लौटाया गया था; शायद यह एक गलती थी।<sup>13</sup> अपने भाई को भी ले लो, और उठो, उस आदमी के पास लौट जाओ;”<sup>14</sup> और सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें उस आदमी की वृष्टि में दया प्रदान करे, ताकि वह तुम्हारे दूसरे भाई और बिन्यामीन को तुम्हें छोड़ दे। और जहां तक मेरा सवाल है, यदि मैं अपने बच्चों से वंचित हो जाऊँ, तो मैं वंचित हो जाऊँ।”<sup>15</sup> तो उन आदमियों ने यह उपहार लिया, और उन्होंने अपने हाथ में दुगना पैसा लिया, और बिन्यामीन, फिर वे निकल पड़े और मिस गए, और यूसुफ के सामने खड़े हुए।<sup>16</sup> जब यूसुफ ने बिन्यामीन को उनके साथ देखा, तो उनसे अपने घर के प्रबंधक से कहा, “आदमियों को घर में ले आओ, और एक पशु को मारकर तैयार करो; क्योंकि आदमियों को दोपहर में मेरे साथ भोजन करना है।”<sup>17</sup> तो उस आदमी ने जैसा यूसुफ ने कहा था वैसा ही किया, और आदमियों को यूसुफ के घर ले आया।<sup>18</sup> अब आदमियों को डर लग रहा था, क्योंकि उन्हें यूसुफ के घर लाया गया था; और उन्होंने कहा, “यह हमारे थैलों में पहली बार लौटा गए ऐसे के कारण है कि हमें अंदर लाया जा रहा है, ताकि वह हम पर हमला करे और हमें प्रास्त करे, और हमें हमारे गधों के साथ दास बना लो।”<sup>19</sup> तो उन्होंने यूसुफ के घर के प्रबंधक के पास जाकर, घर के प्रवेश द्वार पर उससे बात की,<sup>20</sup> और कहा, “हे मेरे प्रभु, हम वास्तव में पहली बार भोजन खरीदने के लिए नीचे आए थे;<sup>21</sup> लेकिन ऐसा हुआ कि जब हम रात के शिविर स्थल पर आए, तो हमने अपने थैलों को खोला, और देखो, प्रत्येक आदमी का पैसा उसके थैले के मुंह में था, हमारा पूरा पैसा। इसलिए हम इसे अपने हाथ में वापस ले आए हैं।”<sup>22</sup> हमने अपने हाथ में भोजन खरीदने के लिए और पैसा भी नीचे लाया है। हमें नहीं पता कि हमारे थैलों में हमारा पैसा किसने रखा।”<sup>23</sup> लेकिन उनसे कहा, “तुम्हें शांति मिले, डरो मत। तुम्हारे परमेश्वर और तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम्हारे थैलों में तुम्हें खजाना दिया है; तुम्हारा पैसा वास्तव में प्राप्त किया गया था।”<sup>24</sup> फिर उसने शिमोन को उनके पास लाया।<sup>25</sup> तब उस आदमी ने आदमियों को यूसुफ के घर में लाया और उन्हें पानी दिया, और उन्होंने अपने पैर धोए; और उसने उनके गधों को चारा दिया।<sup>26</sup> तो उन्होंने दोपहर में यूसुफ के आगमन के लिए उपहार तैयार किया; क्योंकि उन्होंने सुना था कि उन्हें वहां भोजन करना है।<sup>27</sup> जब यूसुफ घर में आया, तो उन्होंने उसे वह उपहार दिया जो उनके हाथ में था, और उसके सामने भूमि पर ढक्का गए।<sup>28</sup> तब उसने उनसे उनके कुशलक्षण के बारे में पूछा, और कहा, “क्या तुम्हारे उस वृद्ध पिता का हालचाल ठीक है, जिसके बारे में तुमने बात की थी? क्या वह अभी भी

## उत्पत्ति

जीवित है?"<sup>28</sup> और उन्होंने कहा, "आपका सेवक हमारा पिता ठीक है; वह अभी भी जीवित है।" फिर वे फिर से द्वृक्कर प्रणाम करने लगे।<sup>29</sup> और जब उसने अपनी आँखें उठाईं और अपने भाई बिन्यामीन को देखा, अपनी माँ के बेटे को, तो उसने कहा, "क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है, जिसके बारे में तुमने मझसे बात की थी?" फिर उसने कहा, "परमेश्वर तुम्हें अनुग्रह दे, मेरे बेटे।"<sup>30</sup> यूसुफ जल्दी से बाहर चला गया, क्योंकि वह अपने भाई के प्रति गहराई से प्रभावित था, और वह रोने के लिए एक स्थान ढूँढने लगा; इसलिए वह अपने कक्ष में गया और वहाँ रोया।<sup>31</sup> फिर उसने अपना घेरा धोया और बाहर आया; और उसने खुद को नियंत्रित किया और कहा, "भीजन परोसें।"<sup>32</sup> फिर उन्होंने उसे अकेले परोसा, और उन्हें उनके लिए अलग से, और मिसियों को जो उसके साथ खाते थे, उनके लिए अलग से, क्योंकि मिसियों ने हिरू के साथ रोटी नहीं खा सकते थे, क्योंकि यह मिसियों के लिए एक धृणित बात है।<sup>33</sup> अब वे उसके सामने बैठे थे, ज्येष्ठ उसके जन्मसिद्ध अधिकार के अनुसार और सबसे छोटा उसकी युवावस्था के अनुसार, और आदमियों ने एक-दूसरे की ओर आश्वर्य से देखा।<sup>34</sup> उसने उन्हें अपनी मेज से हिस्से दिए, लेकिन बिन्यामीन का हिस्सा उनके किसी भी हिस्से से पाँच गुना अधिक था। तो उन्होंने उसके साथ स्वतंत्रा से पिया।

**44** अब यूसुफ ने अपने घर के भण्डारी को ये निर्देश दिए: "पुरुषों को बोरियों को जितना भीजन वे ले जा सकते हैं, उतने से भर दो, और प्रयोक्ता की चाँदी उसकी बोरी के मुँह में रख दो।"<sup>2</sup> फिर मेरा याला, चाँदी वाला, सबसे छोटे के बोरी के मुँह में रख दो, उसके अनाज के लिए चाँदी के साथ।<sup>1</sup> और उसने जैसा यूसुफ ने कहा था वैसा ही किया।<sup>3</sup> जैसे ही सुबह हुई, पुरुषों को उनके गधों के साथ उनके रास्ते पर भेज दिया गया।<sup>4</sup> वे शहर से बहुत दूर नहीं गए थे जब यूसुफ ने अपने भण्डारी से कहा, "उन पुरुषों के पीछे तुरंत जाओ, और जब तुम उन्हें पकड़ लो, तो कहो, 'तुमने भलाई का बदला बुराई से क्यों दिया?'<sup>5</sup> क्या यह वही याला नहीं है जिससे मेरा स्वामी पीता है और भविष्यवाणी के लिए भी उपयोग करता है? यह एक बुरा काम है जो तुमने किया है!"<sup>6</sup> जब उसने उन्हें पकड़ा, तो उसने ये शब्द उन्हें दोहराए।<sup>7</sup> लेकिन उन्होंने उससे कहा, "मेरा स्वामी ऐसा क्यों कहता है? तुम्हारे सेवकों से ऐसा कुछ करना बहुत दूर है।"<sup>8</sup> हमने तो कनान देश से वह चाँदी भी वापस ला दी जो हमें अपनी बोरियों के मुँह में मिली थी। तो हम तुम्हारे स्वामी के घर से चाँदी या सोना क्यों चुराएँगे?<sup>9</sup> यदि तुम्हारे सेवकों में से किसी के पास यह पाया जाए, तो वह मर जाएगा; और हम बाकी सब मेरे स्वामी के

दास बन जाएँगे।"<sup>10</sup> "बहुत अच्छा," उसने कहा, "जैसा तुम कहते हो वैसा ही हो। जिसके पास यह पाया जाएगा, वह मेरा दास बनेगा; बाकी तुम सब निर्दोष रहोगे।"<sup>11</sup> उनमें से प्रयोक्ता ने जल्दी से अपनी बोरी को जमीन पर उतारा और उसे खोला।<sup>12</sup> फिर भण्डारी ने खोज शुरू की, सबसे बड़े से शरू करके सबसे छोटे तक। और याला बिन्यामीन की बोरी में पाया गया।<sup>13</sup> यह देखकर उन्होंने अपने कपड़े फाड़े। फिर उन्होंने अपने गधों पर लादकर शहर की ओर लौट गए।<sup>14</sup> यूसुफ अभी भी घर में था जब यहाँ और उसके भाई अंदर आए, और वे उसके सामने जमीन पर गिर पड़े।<sup>15</sup> यूसुफ ने उनसे कहा, "यह क्या है जो तुमने किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मेरे जैसा व्यक्ति भविष्यवाणी के द्वारा चीजें जान सकता है?"<sup>16</sup> "हम मेरे स्वामी से क्या कह सकते हैं?" यहाँ ने उत्तर दिया। "हम क्या कह सकते हैं? हम अपनी निर्दोषता कैसे साबित कर सकते हैं? परमेश्वर ने तुम्हारे सेवकों के अपराध को प्रकट कर दिया है। अब हम मेरे स्वामी के दास हैं—हम स्वयं और वह भी जिसके पास याला पाया गया।"<sup>17</sup> लेकिन यूसुफ ने कहा, "मुझसे ऐसा काम करना बहुत दूर है! केवल वही व्यक्ति जिसके पास याला पाया गया, मेरा दास बनेगा। बाकी तुम सब अपने पिता के पास शास्ति से लौट जाओ।"<sup>18</sup> तब यहाँ उसके पास आया और कहा, "मेरे स्वामी, कृपया अपने सेवक को एक शब्द कहने दें। अपने सेवक पर क्रोध न करें, यद्यपि आप स्वयं फिरौन के समान हैं।"<sup>19</sup> मेरे स्वामी ने अपने सेवकों से पूछा, 'क्या तुम्हारा कोई पिता या भाई है?'<sup>20</sup> और हमने उत्तर दिया, 'हमारा एक दृढ़ पिता है, और उसके बूढ़ापे में जन्मा एक छोटा पत्र है।' उसका भाई मर चुका है, और वह अपनी माँ का एकमात्र पुत्र बचा है, और उसका पिता उसे प्यार करता है।'<sup>21</sup> तब आपने अपने सेवकों से कहा, 'उसे मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे स्वयं देख सकूँ।'<sup>22</sup> और हमने मेरे स्वामी से कहा, 'लड़का अपने पिता को छोड़ नहीं सकता; यदि वह उसे छोड़ता है, तो उसका पिता मर जाएगा।'<sup>23</sup> लेकिन आपने अपने सेवकों से कहा, 'जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ नहीं आता, तुम मेरा मुँह फिर नहीं देखोगा।'<sup>24</sup> जब हम आपके सेवक मेरे पिता के पास लौटे, तो हमने उन्हें बताया कि मेरे स्वामी ने क्या कहा था।<sup>25</sup> तब हमारे पिता ने कहा, 'वापस जाओ और थोड़ा और भीजन खरीदो।'<sup>26</sup> लेकिन हमने कहा, 'हम नीचे नहीं जा सकते। केवल यदि हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ हो, तो हम जाएंगे। हम उस व्यक्ति का मुँह नहीं देख सकते जब तक हमारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ न हो।'<sup>27</sup> आपके सेवक मेरे पिता ने हमसे कहा, 'तुम जानते हो कि मेरी पत्नी ने मुझे दो पुत्र दिए थे।'<sup>28</sup> उनमें

## उत्पत्ति

से एक मुझसे दूर चला गया, और मैंने कहा, “वह निश्चित रूप से टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है।” और तब से मैंने उसे नहीं देखा है।<sup>29</sup> यदि तुम इसे भी मुझसे ले जाओ और इसे कुछ हानि हो, तो तुम मेरे सफेद बालों को दुःख में कब्र में ले जाओगे।”<sup>30</sup> तो अब, यदि लड़का हमारे साथ नहीं है जब मैं आपके सेवक मेरे पिता के पास लौटूँगा, और यदि मेरे पिता, जिनका जीवन लड़के के जीवन से गहराई से जुड़ा है,<sup>31</sup> देखेंगे कि लड़का वहाँ नहीं है, तो वह मर जाएगा। आपके सेवक हमारे पिता के सफेद बालों को दुःख में कब्र में ले जाएंगे।<sup>32</sup> आपके सेवक ने लड़के की सुरक्षा की गारंटी मेरे पिता को दी थी। मैंने कहा, यदि मैं उसे आपके पास वापस नहीं लाऊँ, तो मैं अपने पूरे जीवन के लिए आपके सामने दोषी रहूँगा।”<sup>33</sup> अब कृपया, अपने सेवक को लड़के के स्थान पर मेरे स्वामी का दास बनने दें, और लड़के को उसके भाइयों के साथ लौटने दें।<sup>34</sup> मैं अपने पिता के पास कैसे लौट सकता हूँ यदि लड़का मेरे साथ नहीं है? नहीं। मुझे वह दुःख देखने न दें जो मेरे पिता पर आएगा।

**45** तब यूसुफ अपने सामने खड़े सभी लोगों के सामने अपने आपको नियंत्रित नहीं कर सका, और उसने चिल्लाकर कहा, “सभी को मेरे पास से बाहर कर दो।” इसलिए जब यूसुफ ने अपने भाइयों को अपने बारे में बताया, तब उसके साथ कोई नहीं था।<sup>2</sup> तब वह इतनी जोर से रोया कि मिथियों ने उसे सुना, और फिरौन के घराने ने इसके बारे में सुना।<sup>3</sup> और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ हूँ। क्या मेरा पिता अब भी जीवित है?” परंतु उसके भाई उसे उत्तर नहीं दे सके, क्योंकि वे उसकी उपस्थिति में भयभीत थे।<sup>4</sup> तब यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “कृपया मेरे पास आओ।” और वे उसके पास आए। और उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ, जिसे तुमने मिस को बेचा था।”<sup>5</sup> अब तुम अपने आप से दुखी क्योंकि तुमने मुझे यहाँ बेचा, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे आगे मुझे जीवन बचाने के लिए भेजा।<sup>6</sup> क्योंकि इस भूमि में दो वर्षों से अकाल पड़ा है, और अब भी पाँच वर्ष हैं जिनमें न तो बुवाई होगी और न ही कटाई।<sup>7</sup> इसलिए परमेश्वर ने तुम्हारे आगे मुझे भेजा ताकि पृथ्वी पर तुम्हारे लिए एक अवशेष सुनिश्चित कर सके, और तुम्हें एक महान उद्धार द्वारा जीवित रख सके।<sup>8</sup> अब, इसलिए, यह तुम नहीं थे जिन्होंने मुझे यहाँ भेजा, बल्कि परमेश्वर; और उसने मुझे फिरौन का पिता और उसके पूरे घराने का स्वामी, और मिस की सारी भूमि का शासक बनाया है।<sup>9</sup> जल्दी करो और मेरे पिता के पास जाओ, और उनसे कहो, “यह तुम्हारा पुत्र यूसुफ कहता है: “परमेश्वर ने मुझे पूरे मिस का स्वामी बनाया है, मेरे पास नीचे आओ, विलंब मत

करो।”<sup>10</sup> तुम गोशेन के देश में रहोगे, और तुम मेरे निकट रहोगे, तुम और तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे पोते, और तुम्हारी भड़-बकरियाँ, तुम्हारे पश्च, और जो कुछ तुम्हारे पास है।<sup>11</sup> वहाँ मैं तुम्हारे लिए भी प्रबंध करूँगा, क्योंकि अब भी पाँच वर्षों का अकाल आने वाला है, और तुम और तुम्हारा घराना और जो कुछ तुम्हारे पास है वह निर्धन हो जाएगा।”<sup>12</sup> देखो, तुम्हारी आँखें देख रही हैं, और मेरे भाई बिन्यामीन की आँखें देख रही हैं, कि यह मेरा मुँह है जो तुमसे बोल रहा है।<sup>13</sup> अब तुम्हें मेरे पिता को मिस में मेरी सारी महिमा के बारे में बताना होगा, और जो कुछ तुमने देखा है, और तुम्हें जल्दी करनी होगी और मेरे पिता को यहाँ लाना होगा।”<sup>14</sup> तब वह अपने भाई बिन्यामीन के गले में गिर पड़ा और रोया, और बिन्यामीन उसके गले में रोया।<sup>15</sup> और उसने अपने सभी भाइयों को चूमा और उन पर रोया, और बाद में उसके भाइयों ने उससे बात की।<sup>16</sup> अब जब यह समाचार फिरौन के घर में सुना गया कि यूसुफ के भाई आ गए हैं, तो यह फिरौन और उसके सेवकों को प्रसन्न हुआ।<sup>17</sup> तब फिरौन ने यूसुफ से कहा, “अपने भाइयों से कहो, ‘ऐसा करो: अपने पशुओं को लादो और कनान देश को जाओ,’<sup>18</sup> और अपने पिता और अपने घरानों को लेकर मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें मिस की भूमि का सर्वोत्तम दूरा, और तुम भूमि की उत्तम वस्तुयाँ खा आओगे।”<sup>19</sup> अब तुम्हें आदेश दिया गया है: ऐसा करो, मिस की भूमि से अपने बच्चों और अपनी पत्रियों के लिए गाड़ियाँ ले लो, और अपने पिता को लाओ और आओ।<sup>20</sup> अपनी संपत्ति की चिंता मत करो, क्योंकि मिस की सारी भूमि का सर्वोत्तम दूरा, और उसने तीन सौ चाँदी के सिक्के और पाँच वस्त्रों का परिवर्तन दिया।<sup>21</sup> अब अपने पिता को उसने निप्पलिखित भेजा: दस नर गधे मिस की सर्वोत्तम वस्तुओं से लदे हुए, और दस मादा गधे अनाज, रोटी, और यात्रा के लिए अपने पिता के लिए भोजन से लदे हुए।<sup>22</sup> इसलिए उसने अपने भाइयों को विदा किया, और जब वे प्रस्थान कर रहे थे, उसने उनसे कहा, “यात्रा में झगड़ा मत करना।”<sup>23</sup> तब वे मिस से ऊपर गए और कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आए।<sup>24</sup> और उन्होंने उसने कहा, “यूसुफ अब भी जीवित है, और वास्तव में वह मिस की सारी भूमि का शासक है।” परंतु वह स्तब्ध हो गया, क्योंकि उसने उन पर विश्वास नहीं किया।<sup>25</sup> फिर भी जब उन्होंने उसे यूसुफ के सभी शब्द बताए जो उसने उनसे कह थे, और जब उसने गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ ने उसे ले जाने के लिए भेजी थीं, तो उनके पिता

## उत्पत्ति

याकूब की आत्मा पुनर्जीवित हो गई।<sup>28</sup> तब इसाएल ने कहा, “यह पर्याप्त है; मेरा पुत्र यूसुफ अब भी जीवित है। मैं जाऊँगा और उसे मरने से पहले देखूँगा।”

**46** इसाएल अपने सब कुछ लेकर बर्शेबा को गया, और अपने पिता इस्हाक के परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाए।<sup>2</sup> और परमेश्वर ने रात के दर्शन में इसाएल से कहा, “याकूब, याकूब!” और उसने कहा, “मैं हायहौं हूँ।”<sup>3</sup> तब उसने कहा, “मैं परमेश्वर हूँ, तुम्हारे पिता का परमेश्वर; मिस्र को जाने से मत डरो, क्योंकि मैं वहाँ तुम्हें एक बड़ी जाति बनाऊँगा।”<sup>4</sup> मैं तुम्हारे साथ मिस्र को जाऊँगा, और मैं तुम्हें फिर से अवश्य ऊपर लाऊँगा; और यूसुफ तुम्हारी आँखें बंद करेगा।”<sup>5</sup> तब याकूब बर्शेबा से चता, और इसाएल के पुत्रों ने अपने पिता याकूब और अपने छोटे बच्चों और अपनी पत्नियों को उन रथों में बिठाया जो फिरैन ने उसे ले जाने के लिए भेजे थे।<sup>6</sup> और वे अपने पशुधन और अपनी संपत्ति जो उहाँने कनान देश में प्राप्त की थी, लेकर मिस्र आए, याकूब और उसके सब वंशज उसके साथ;<sup>7</sup> उसके पुत्र और उसके पोते उसके साथ, उसकी बेटियाँ और उसकी पोतियाँ, और उसके सब वंशज वह अपने साथ मिस्र लाया।<sup>8</sup> अब ये इसाएल के पुत्रों के नाम हैं जो मिस्र आए, याकूब और उसके पुत्र: रूबेन, याकूब का पहिलौठा।<sup>9</sup> रूबेन के पुत्र: हनोक, पलू, हेसोन, और करमी।<sup>10</sup> शिमोन के पुत्र: यमूल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर, और शाऊल जो एक कनानी स्त्री का पुत्र था।<sup>11</sup> लेकी के पुत्र: गेशोन, कहात, और मरारी।<sup>12</sup> यहूदा के पुत्र: एर, ओनान, शेला, पेरेज, और जेरह (परंतु एर और ओनान कनान देश में मर गए)। और पेरेज के पुत्र थे हेसोन और हमूल।<sup>13</sup> इस्ताकार के पुत्र: तोला, पूव्याह, योब, और शिग्गोन।<sup>14</sup> जबूलून के पुत्र: सेरेद, एलोन, और यख्लीएल।<sup>15</sup> ये लिआह के पुत्र हैं, जिन्हें उसने पद्धन-अराम में याकूब की जन्म दिया, और उसकी बेटी दीनाह; उसके सब पुत्र और उसकी सब बेटियाँ मिलकर तैतीस हुए।<sup>16</sup> गाद के पुत्र: सिप्पोन, हारी, शूरी, एज्बोन, एरी, अरूदी, और अरेती।<sup>17</sup> आशेर के पुत्र: इम्मा, ईश्वा, ईश्वी, बेरियाह, और उनकी बहन सेरह। और बेरियाह के पुत्र: हेबर और मलकीएल।<sup>18</sup> ये जिल्पाह के पुत्र हैं, जिन्हें लाबान ने अपनी बेटी लिआह को दिया; और उसने याकूब को ये सोलह व्यक्ति जन्म दिए।<sup>19</sup> याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र: यूसुफ और बिन्यामीन।<sup>20</sup> अब यूसुफ को मिस्र देश में मनश्शे और एप्रेम उत्पन्न हुए, जिन्हें औन के पुजारी पोतीफेरा की बेटी आसनाथ ने उसे जन्म दिया।<sup>21</sup> बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकर, अशबेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुष्पिम, हुष्पिम, और आर्द।<sup>22</sup> ये राहेल के पुत्र हैं, जो याकूब को

जन्मे, कुल मिलाकर चौदह व्यक्ति थे।<sup>23</sup> दान का पुत्र: हुषीम।<sup>24</sup> नप्ताली के पुत्र: यहजेल, गूनी, येजर, और शिल्लेम।<sup>25</sup> ये बिल्वा के पुत्र हैं, जिन्हें लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया, और उसने याकूब को ये सात व्यक्ति जन्म दिए।<sup>26</sup> याकूब के सब लोग, जो मिस्र आए, उसके सीधे वंशज, याकूब के पुत्रों की पत्नियों को छोड़कर, कुल मिलाकर छियासठ व्यक्ति थे,<sup>27</sup> और यूसुफ के पुत्र, जो उसे मिस्र में उत्पन्न हुए, दो थे: याकूब के घर के सब लोग, जो मिस्र आए, कुल मिलाकर सतर थे।<sup>28</sup> अब याकूब ने यहूदा को यूसुफ के पास भेजा, ताकि वह उसे गोशेन में मार्ग दिखाएँ; और वे गोशेन देश में आए।<sup>29</sup> तब यूसुफ ने अपने रथ को तैयार किया और गोशेन को अपने पिता इसाएल से मिलने गया; और जब वह उसके सामने आया, तो वह उसकी गर्दन पर गिर पड़ा और बहुत देर तक उसकी गर्दन पर रोता रहा।<sup>30</sup> तब इसाएल ने यूसुफ से कहा, “अब मैं मर सकता हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हारा चेहरा देखा है, कि तुम अब भी जीवित हो।”<sup>31</sup> परंतु यूसुफ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा, “मैं ऊपर जाकर फिरैन को बताऊँगा, और उससे कहूँगा, ‘मेरे भाई’ और मेरे पिता का घराना, जो कनान देश में था, मेरे पास आए हैं,”<sup>32</sup> और वे लोग चरवाहे हैं, क्योंकि वे पशुधन के रखवाले रहे हैं; और वे अपनी भेड़-बकरियाँ और अपने झूँड और जो कुछ उनके पास है, लेकर आए हैं।<sup>33</sup> जब फिरैन तुम्हें बुलाए और कहे, “तुम्हारा व्यवसाय क्या है?”<sup>34</sup> तब तुम गोशेन देश में रह सको: क्योंकि हर चरवाहा मिसियों के लिए घृणास्पद है।”

**47** तब यूसुफ ने जाकर फिरैन को बताया, और कहा, “मेरे पिता और मेरे भाई, और उनकी भेड़-बकरियाँ और उनके झूँड, और जो कुछ उनके पास है, कनान देश से आ गए हैं; और देखो, वे गोशेन देश में हैं।”<sup>2</sup> और उसने अपने भाइयों में से पाँच पुरुषों को लिया और उन्हें फिरैन के सामने प्रस्तुत किया।<sup>3</sup> तब फिरैन ने उसके भाइयों से पूछा, “तुम्हारा व्यवसाय क्या है?” तो उन्होंने फिरैन से कहा, “तेरे दास चरवाहे हैं, हम और हमारे पिता दोनों।”<sup>4</sup> उन्होंने फिरैन से यह भी कहा, “हम इस देश में निवास करने आए हैं, क्योंकि तेरे दासों की भेड़-बकरियों के लिए चराई नहीं है, क्योंकि कनान देश में अकाल बहुत भयानक है। अब, कृपया तेरे दासों को गोशेन देश में रहने दे।”<sup>5</sup> तब फिरैन ने यूसुफ से कहा, “तेरे पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं।”<sup>6</sup> मिस्र देश तेरे सामने है; अपने पिता और अपने भाइयों को देश के सबसे अच्छे हिस्से में बसा दे, उन्हें गोशेन

## उत्पत्ति

देश में रहने दे; और यदि तू उनमें कोई योग्य पुरुष जानता है, तो उन्हें मेरे पशुओं की प्रभारी बना दे।”<sup>7</sup> तब यूसुफ अपने पिता याकूब को लाया और उन्हें फिरौन के सामने प्रस्तुत किया; और याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया।<sup>8</sup> और फिरौन ने याकूब से कहा, “तुम्हारी उम्र कितनी है?”<sup>9</sup> तो याकूब ने फिरौन से कहा, “मेरे परदेशी जीवन के वर्ष एक सौ तीस हैं; मेरे जीवन के वर्ष थोड़े और अप्रिय रहे हैं, और उन्होंने उन वर्षों को नहीं पाया जो मेरे पिता ने अपने परदेशी जीवन के दिनों में जिए।”<sup>10</sup> तो याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया, और उसकी उपस्थिति से बाहर चला गया।<sup>11</sup> अब यूसुफ ने अपने पिता और अपने भाइयों को बसाया, और उन्हें मिस्र देश में, देश के सबसे अच्छे हिस्से में, रामसेस देश में, फिरौन के आदेशानुसार संपत्ति दी।<sup>12</sup> और यूसुफ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के पूरे घराने को उनके छोटे बच्चों की संख्या के अनुसार भोजन प्रदान किया।<sup>13</sup> अब पूरे देश में भोजन नहीं था, क्योंकि अकाल बहुत भयानक था, इसलिए मिस्र देश और कनान देश अकाल के कारण दुर्बल हो गए।<sup>14</sup> और यूसुफ ने मिस्र देश और कनान देश में जो भी धन पाया गया था, उसे उस अनाज के लिए भुगतान में इकट्ठा किया जो उन्होंने खरीदा था, और यूसुफ ने धन फिरौन के घर में लाया।<sup>15</sup> जब मिस्र देश और कनान देश का धन समाप्त हो गया, तो सभी मिस्री यूसुफ के पास आए, यह कहते हुए, “हमें भोजन दे, क्योंकि हम तुम्हारी उपस्थिति में क्यों मरें? क्योंकि हमारा धन समाप्त हो गया है।”<sup>16</sup> तब यूसुफ ने कहा, “अपने पशुओं को दे दो, और मैं तुम्हें तुम्हारे पशुओं के लिए भोजन दूँगा, क्योंकि तुम्हारा धन समाप्त हो गया है।”<sup>17</sup> तो वे अपने पशुओं को यूसुफ के पास लाए, और यूसुफ ने उन्हें घोड़ों, भेड़-बकरियों, झुंडों, और गधों के बदले में भोजन दिया।<sup>18</sup> जब वह वर्ष उनके सभी पशुओं के बदले में भोजन दिया।<sup>19</sup> अब इसके पास आए और उससे कहा, “हम अपने स्वामी से यह नहीं छिपाएंगे कि हमारा सारा धन खर्च हो गया है, और पशु मेरे स्वामी के हैं। मेरे स्वामी के लिए कुछ भी नहीं बचा है सिवाय हमारे शरीर और हमारी भूमि के।”<sup>20</sup> हम तुम्हारी अँखों के सामने क्यों मरें, हम और हमारी भूमि दोनों? हमें और हमारी भूमि को भोजन के लिए खरीद लो, और हम और हमारी भूमि फिरौन के दास होंगे। तो हमें बीज दो, ताकि हम जीवित रहें और न मरें, और भूमि उजाड़ न हो।”<sup>21</sup> तो यूसुफ ने फिरौन के लिए मिस्र की सारी भूमि खरीद ली, क्योंकि हर मिस्री ने अपना खेत बेच दिया, क्योंकि अकाल उन पर भयानक था। और भूमि फिरौन की हो गई।<sup>22</sup> जहाँ तक लोगों की बात है, उसने उन्हें मिस्र की सीमा के एक

छोर से दूसरे छोर तक शहरों में स्थानांतरित कर दिया।<sup>23</sup> केवल याजकों की भूमि उसने नहीं खरीदी, क्योंकि याजकों को फिरौन से एक हिस्सा मिला था, और वे उस हिस्से से जीवित रहते थे जो फिरौन ने उन्हें दिया था; इसलिए उन्होंने अपनी भूमि नहीं बेची।<sup>24</sup> तब यूसुफ ने लोगों से कहा, “देखो, मैंने आज तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फिरौन के लिए खरीदा है; अब, यहाँ तुम्हारे लिए बीज है, और तुम भूमि में बो सकते हो।”<sup>25</sup> फसल के समय तुम फिरौन को पाँचवाँ हिस्सा दोगे, और चार हिस्से तुम्हारे अपने होंगे खेत के बीज के लिए और तुम्हारे भोजन के लिए, और तुम्हारे घरों के लोगों के लिए और तुम्हारे घोटे बच्चों के भोजन के लिए।”<sup>26</sup> तो उन्होंने कहा, “तुमने हमारे जीवन को बचाया है! हमें मेरे स्वामी की दृष्टि में अनुग्रह मिले, और हम फिरौन के दास होंगे।”<sup>27</sup> यूसुफ ने मिस्र की भूमि के बारे में एक नियम बनाया जो आज तक मान्य है, कि फिरौन को पाँचवाँ हिस्सा मिलना था; केवल याजकों की भूमि फिरौन की नहीं हुई।<sup>28</sup> अब इसाएल मिस्र देश में, गोशन में रहते थे, और उन्होंने उसमें संपत्ति प्राप्त की और फलवंत हुए और बहुत अधिक बढ़ गए।<sup>29</sup> और याकूब मिस्र देश में सत्रह वर्ष तक जीवित रहे; तो याकूब के जीवन की लंबाई एक सौ सेतारीस वर्ष थी।<sup>30</sup> जब इसाएल के मरने का समय निकट आया, तो उसने अपने पुत्र यूसुफ को बुलाया और उससे कहा, “कृपया, यदि मैंने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो अब अपना हाथ मेरी जाँच के नीचे रखो और मुझसे कृपा और विश्वास के साथ व्यवहार करो: मुझे मिस्र में मत दफनाना।”<sup>31</sup> परन्तु जब मैं अपने पितरों के संग लेता हूँ, तो तुम मुझे मिस्र से बाहर ले जाकर उनके दफन स्थान में दफनाना।” और उसने कहा, “मैं जैसा तुमने कहा है वैसा ही करूँगा।”<sup>32</sup> तब उसने कहा, “मुझसे शपथ खाओ।” तो उसने उससे शपथ खाई। तब इसाएल ने बिस्तर के सिरहाने पर झुककर आराधना की।

**48** अब इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि यूसुफ से कहा गया, “देखो, तुम्हारे पिता बीमार हैं।” तब वह अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एश्रैम को अपने साथ ले गया।<sup>2</sup> जब याकूब से कहा गया, “देखो, तुम्हारा पुत्र यूसुफ तुम्हारे पास आया है,” तब इसाएल ने अपनी शक्ति एकत्र की और बिस्तर पर बैठ गया।<sup>3</sup> तब याकूब ने यूसुफ से कहा, “सर्वशक्तिमान परमेश्वर कनान देश में लौज में मुझ पर प्रकट हुए और मुझे आशीर्वाद दिया,<sup>4</sup> और उन्होंने मुझसे कहा, ‘देखो, मैं तुम्हें फलवंत और बहुसंख्यक बनाऊंगा, और तुम्हें बहुत सी जातियों का समूह बनाऊंगा, और इस देश को तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों को एक सदा की संपत्ति के रूप में दूंगा।’<sup>5</sup> अब

## उत्पत्ति

तुम्हारे दो पुत्र, जो तुम्हारे लिए मिस्र देश में मेरे मिस्र में आने से पहले जानी थे, मेरे हैं; एप्रैम और मनश्शे मेरे होंगे, जैसे रूबेन और शिमोन हैं।<sup>6</sup> परन्तु तुम्हारे वे बच्चे जो उनके बाद उत्पन्न हुए हैं, तुम्हारे होंगे; वे अपनी विरासत में अपने भाइयों के नाम से पृकारे जाएंगे।<sup>7</sup> अब मेरे लिए, जब मैं पद्धन से आया, राहेल मेरी दुःख में कनान देश में यात्रा के समय मर गई, जब इफ्रात तक जाने के लिए कुछ दूरी बाकी थी; और मैंने उसे इफ्रात के रास्ते में दफनाया (जो कि बेथलहम है)<sup>8</sup>। जब इसाएल ने यूसुफ के पुत्रों को देखा, तो उसने कहा, “ये कौन हैं?”<sup>9</sup> और यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “वे मेरे पुत्र हैं, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे यहाँ दिया है”। तब उसने कहा, “कृपया उन्हें मेरे पास लाओ, तकि मैं उन्हें आशीर्वाद दूँ।”<sup>10</sup> अब इसाएल की आँखें उम्र के कारण इतनी धूधली थीं कि वह देख नहीं सकता था। और यूसुफ उन्हें उसके पास ले आया, और उसने उन्हें चूमा और गले लगाया।<sup>11</sup> और इसाएल ने यूसुफ से कहा, “मैंने कंपी नहीं सोचा था कि मैं तुम्हारा चेहरा देखूंगा, और देखो, परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे बच्चों को भी दिखाया है”।<sup>12</sup> तब यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों से उठाया, और अपने चेहरे को भूमि पर झुकाया।<sup>13</sup> और यूसुफ ने उन्हें दोनों को लिया, एप्रैम को अपनी दाहिनी और इसाएल की बाई<sup>14</sup> और, और मनश्शे को अपनी बाई<sup>15</sup> और इसाएल की दाहिनी और, और उन्हें उसके पास ले आया।<sup>14</sup> परन्तु इसाएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर रखा, जो छोटा था, और अपना बायां हाथ मनश्शे के सिर पर रखा, अपने हाथों को क्रॉस करते हुए, यद्यपि मनश्शे पहलौठा था।<sup>15</sup> और उसने यूसुफ को आशीर्वाद दिया, और कहा,

“वह परमेश्वर जिसके सामने मेरे पितर अब्राहम और इसहाक थे, वह परमेश्वर जिसने मुझे आज तक मेरे जीवन भर चरवाहा किया है,<sup>16</sup> वह दूर जिसने मुझे सब बुराई से छुड़ाया है, लड़कों को आशीर्वाद दे, और मेरा नाम उन में जीवित रहे, और मेरे पितरों अब्राहम और इसहाक के नाम, और वे पूर्वी के बीच में एक बड़ी भीड़ बन जाएँ।”

<sup>17</sup> जब यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने अपना दाहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा है, तो उसे यह अच्छा नहीं लगा; और उसने अपने पिता का हाथ पकड़कर उसे एप्रैम के सिर से मनश्शे के सिर पर ले जाने का प्रयास किया।<sup>18</sup> और यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “ऐसा नहीं, मेरे पिता, क्योंकि यह पहलौठा है। अपना दाहिना हाथ उसके सिर पर रखो।”<sup>19</sup> परन्तु उसके पिता ने मना कर दिया और कहा, “मैं जानता हूँ, मेरे पुत्र, मैं जानता हूँ; वह

भी एक जाति बनेगा और वह भी महान होगा। परन्तु उसका छोटा भाई उससे बड़ा होगा, और उसके बंशज बहुत सी जातियों का समूह बनेगा।”<sup>20</sup> तब उसने उन्हें उस दिन आशीर्वाद दिया, कहते हुए,

“तुम्हारे द्वारा इसाएल आशीर्वाद देगा, कहते हुए ‘परमेश्वर तुम्हें एप्रैम और मनश्शे के समान बनाए।’”

और उसने एप्रैम को मनश्शे से पहले रखा।<sup>21</sup> तब इसाएल ने यूसुफ से कहा, “देखो, मैं मरने वाला हूँ, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा, और तुम्हें तुम्हारे पितरों की भूमि में वापस लाएगा।”<sup>22</sup> और मैं तुम्हें तुम्हारे भाइयों से एक भाग अधिक देता हूँ, जिसे मैंने एप्रैमी के हाथ से अपनी तलवार और धनुष से लिया।”

**49** तब याकूब ने अपने पुत्रों को बुलाया और कहा, “इकट्ठे हो जाओ, ताकि मैं तुम्हें बता सकूँ कि आने वाले दिनों में तुम्हारे साथ क्या होगा।”<sup>23</sup> इकट्ठे हो जाओ और सुनो, याकूब के पुत्रों; और इसाएल अपने पिता की बात सुनो।<sup>24</sup> रूबेन, तुम मेरे पहिलौं हो, मेरी शक्ति और मेरी सामर्थ्य का आरंभ, गौरव में प्रधान और शक्ति में प्रधान।<sup>25</sup> जल की भाँति अनियंत्रित, तुम प्रधानता नहीं पाओगे, क्योंकि तुम अपने पिता के बिस्तर पर चढ़ गए; तब तुमने उसे अपवित्र किया—वह मेरे बिस्तर पर चढ़ गया।<sup>26</sup> शिमोन और लेटी भाई हैं; उनकी तलवारें हिंसा के उपकरण हैं।<sup>27</sup> मेरी आत्मा उनकी सभा में प्रवेश न करें; मेरी महिमा उनकी मंडली के साथ न हो, क्योंकि अपने क्रोध में उहाँने मनुष्यों को मारा, और अपनी इच्छा से उहाँने बैलों को लंगड़ा कर दिया।<sup>28</sup> उनका क्रोध शापित हो, क्योंकि वह ध्यंकर है; और उनका क्रोध, क्योंकि वह निर्दिष्ट है। मैं उन्हें याकूब में बिखेर दूँगा, और इसाएल में उन्हें तिर-बितर कर दूँगा।<sup>29</sup> यहूदा, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे; तुम्हारा हाथ तुम्हारे शत्रुओं की गर्दन पर होगा; तुम्हारे पिता के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे।<sup>30</sup> यहूदा एक शेर का बच्चा है; शिकार से, मेरे पुत्र, तुम ऊपर चढ़ गए हो। वह झुकता है, वह शेर की तरह लेटता है, और शेर की तरह, कौन उसे उठाने का साहस करेगा?<sup>31</sup> राजदंड यहूदा से नहीं हटेगा, न ही शासक की छड़ी उसके पैरों के बीच से, जब तक शीलोह न आ जाए, और उसके पास लोगों की आज्ञाकारिता होगी।<sup>32</sup> वह अपनी गधी के बच्चे को अंगू की बेल से बांधता है, और अपनी गधी के बच्चे को उत्तम बेल से; वह अपने वस्त्रों को दाखरस में थोकता है, और अपने वस्त्रों को अंगू के रक्त में।<sup>33</sup> उसकी आँखें दाखरस से धूधली हैं, और उसके दांत दूध से सफेद हैं।<sup>34</sup> जबलून समुद्र के किनारे बसेगा; और वह जहाजों के

## उत्पत्ति

लिए एक बंदरगाह होगा, और उसकी सीमा सिद्धान की ओर होगी।<sup>14</sup> इस्साकार एक बलवान गधा है, जो भेड़ों के बाड़ों के बीच लेटा है।<sup>15</sup> जब उसने देखा कि विश्राम का स्थान अच्छा है, और भूमि मनोहर है, तो उसने बोझ उठाने के लिए अपना कंधा झुका दिया, और जबरन श्रम में दास बन गया।<sup>16</sup> दान अपनी प्रजा का स्याय करेगा, इस्साएल के गोत्रों में से एक के रूप में।<sup>17</sup> दान मार्ग में एक सर्प होगा, पथ पर एक विषधर, जो घोड़े की एड़ी काटता है, ताकि उसका सवार पीछे की ओर गिर पड़े।<sup>18</sup> तेरी मुक्ति की प्रतीक्षा करता हूँ, हे प्रभु।<sup>19</sup> जहाँ तक गाढ़ का सवाल है, एक लुटेरों का दल उस पर हमला करेगा, लेकिन वह उनकी एड़ी पर हमला करेगा।<sup>20</sup> आशेर का भोजन समृद्ध होगा, और वह राजसी व्यंजन प्रदान करेगा।<sup>21</sup> नपाती एक खुला हुआ हरिण है; वह सुंदर चंचन कहता है।<sup>22</sup> यूसुफ एक फलदायी शाखा है, एक फलदायी शाखा एक झरने के पास; उसकी शाखाएं दीवार पर चढ़ जाती हैं।<sup>23</sup> धनुष्ठरियों ने उसे उकसाया, और उस पर तीर चलाए और उसे सताया;<sup>24</sup> लेकिन उसकी धनुष खिर रही, और उसकी भुजाएं फुर्तीली रहीं, याकूब के शक्तिशाली के हाथों से (वहाँ से है इस्साएल का चरवाहा, परस्र),<sup>25</sup> तुम्हारे पिता के परमेश्वर से जो तुम्हारी सहायता करता है, और सर्वशक्तिमान से जो तुम्हें आशीर्वाद देता है ऊपर आकाश के आशीर्वादों के साथ, नीचे गहराई के आशीर्वादों के साथ, स्तनों और गर्भ के आशीर्वादों के साथ।<sup>26</sup> तुम्हारे पिता के आशीर्वाद में पूर्वजों के आशीर्वादों से बढ़कर हैं सैदेव के पहाड़ों की सबसे दूर की सीमा तक; वे यूसुफ के सिर पर हों, और उसके भाइयों में प्रतिष्ठित के सिर के मुकुट पर।<sup>27</sup> बिन्यामीन एक भयंकर भेड़िया है; प्रातःकाल वह शिकार को खाता है, और संध्या को वह लूट को बांटता है।<sup>28</sup> ये सब इस्साएल के बारह गोत्र हैं, और यह वही है जो उनके पिता ने उन्हें कहा जब उसने उन्हें आशीर्वाद दिया। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया, प्रयोक को उसके लिए उपयुक्त आशीर्वाद के साथ।<sup>29</sup> तब उसने उन्हें आज्ञा दी और उनसे कहा, “मैं अपने लोगों में मिलाया जाने वाला हूँ; मुझे मेरे पूर्वजों के साथ उस गुफा में दफनाना जो हिती एप्रोन के खेत में है,<sup>30</sup> उस गुफा में जो ममरे के सामने मकपेला के खेत में है, जो कनान की भूमि में है, जिसे अब्राहम ने हिती एप्रोन से उस खेत के साथ एक दफनाने की जगह के रूप में खरीदा था।<sup>31</sup> वहाँ उन्होंने अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को दफनाया, वहाँ उन्होंने इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को दफनाया, और वहाँ मैंने लिया को दफनाया—<sup>32</sup> वह खेत और उसमें की गुफा, हितीयों के पुत्रों से खरीदी गई।<sup>33</sup> जब याकूब ने अपने पुत्रों को आज्ञा देना समाप्त

किया, तो उसने अपने पैरों को बिस्तर में खींच लिया और अंतिम सांस ली, और अपने लोगों में मिल गया।

**50** यूसुफ अपने पिता पर गिर पड़ा और उनके ऊपर रोया और उन्हें चुमा।<sup>2</sup> फिर यूसुफ ने अपने सेवा में चिकित्सकों को अपने पिता इस्साएल का शव सुरक्षित करने का निर्देश दिया। इसलिए चिकित्सकों ने उनका शव सुरक्षित करने में चालीस दिन लगे, क्योंकि यही समय आवश्यक था, और मिसियों ने उनके लिए सत्तर दिन शोक मनाया।<sup>4</sup> जब शोक के दिन बीत गए, तो यूसुफ ने फ़िरौन के दरबार से कहा, “यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो फ़िरौन से मेरे लिए बात करें।<sup>5</sup> उसे बताएं, भेरे पिता ने मुझसे शाश्य दिलाई और कहा, “मैं मरने वाला हूँ। मुझे कनान देश में उस कब्र में दफनाना, जिसे मैंने अपने लिए खोदा था।” अब मुझे ऊपर जाने दें और अपने पिता को दफनाने दें; फिर मैं लौट आऊंगा।”<sup>6</sup> फ़िरौन ने कहा, “जाओ और अपने पिता को दफनाओ, जैसा उसने तुम्हें शाश्य दिलाई थी।”<sup>7</sup> इसलिए यूसुफ अपने पिता को दफनाने के लिए ऊपर गया। फ़िरौन के सभी अधिकारी उसके साथ गए—उसके दरबार के गणमान्य व्यक्ति और मिस्र के सभी गणमान्य व्यक्ति—<sup>8</sup> यूसुफ के परिवार के सभी सदस्य और उसके भाई और उसके पिता के परिवार के लोग भी। केवल उनके बच्चे और भेड़-बकरियाँ और मवेशी गोशेन में रहे गए।<sup>9</sup> रथ और घुड़सवार भी उसके साथ गए। यह एक बहुत बड़ा समूह था।<sup>10</sup> जब वे यरदन के पास अंतद के खलिहान पर पहुँचे, तो उन्होंने जोर से और कड़वाहट से विलाप किया; वहाँ यूसुफ ने अपने पिता के लिए सात दिन का शोक मनाया।<sup>11</sup> जब वहाँ रहने वाले कनानियों ने अंतद के खलिहान पर शोक देखा, तो उन्होंने कहा, “मिस्री एक गंभीर शोक समारोह मना रहे हैं।”<sup>12</sup> इसलिए उस स्थान का नाम अब्दे लिज्जम रखा गया।<sup>13</sup> इसलिए याकूब के पुत्रों ने जैसा उसने उन्हें आदेश दिया था, वैसा ही किया।<sup>14</sup> वे उसे कनान देश में ले गए और उसे मकपेला के खेत की गुफा में दफनाया, जो मम्रे के पास है, वह खेत किसे अब्राहम ने दफनाने के स्थान के रूप में खरीदा था।<sup>15</sup> अपने पिता को दफनाने के बाद, यूसुफ अपने भाइयों और उन सभी के साथ मिस्र लौट आया जो उसके साथ गए थे।<sup>16</sup> जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि उनके पिता मर चुके हैं, तो उन्होंने कहा, “क्या होगा यदि यूसुफ हमसे नाराज हो और हमारे द्वारा किए गए सभी गलत कामों का बदला ले?”<sup>17</sup> इसलिए उन्होंने यूसुफ को संदेश भेजा, “तुम्हारे पिता ने मरने से पहले ये निर्देश छोड़े: यह वही है जो तुम्हें यूसुफ से कहना है: मैं तुमसे अपने भाइयों के पापों और गलतियों को माफ

## उत्पत्ति

करने के लिए कहता हूँ जो उन्होंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हुए कीं। अब कृपया अपने पिता के परमेश्वर के सेवकों के पापों को माफ करें।<sup>18</sup> जब उनका संदेश उसके पास पहुँचा, तो यूसुफ रोया। फिर उसके भाई आए और उसके सामने गिर पड़े। “हम तुम्हारे दास हैं,” उन्होंने कहा।<sup>19</sup> लेकिन यूसुफ ने उनसे कहा, “डरो मत। क्या मैं परमेश्वर के स्थान पर हूँ?<sup>20</sup> तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन परमेश्वर ने इसे अच्छे के लिए इरादा किया, जो अब हो रहा है, कई जीवनों को बचाने के लिए।<sup>21</sup> इसलिए, डरो मत। मैं तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए प्रबंध करूँगा।” और उसने उन्हें आश्वस्त किया और उनसे दयालुता से बात की।<sup>22</sup> यूसुफ मिस्र में अपने पिता के पूरे परिवार के साथ रहा। वह 110 वर्ष जीवित रहा।<sup>23</sup> उसने इफ्काइम की तीसरी पीढ़ी के बच्चों को देखा, और मकीर के पुत्र मनश्शे के बच्चों को भी, जिन्हें जन्म के समय यूसुफ की गोद में रखा गया था।<sup>24</sup> फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरने वाला हूँ। लेकिन परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएगा जिसका उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शापथ ली थी।”<sup>25</sup> और यूसुफ ने इसाएंसियों को शापथ दिलाई और कहा, “परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारी सहायता करेगा, और फिर तुम्हें मेरी हड्डियों को इस स्थान से ले जाना होगा।”<sup>26</sup> इसलिए यूसुफ 110 वर्ष की आयु में मरा। और उनके शव को सुरक्षित करने के बाद, उन्हें मिस्र में एक ताबूत में रखा गया।

## निर्गमन

**१** ये इसाएल के पुत्रों के नाम हैं जो याकूब के साथ मिस आए, प्रत्येक अपने परिवार के साथः<sup>२</sup> रूबेन, शिमोन, लेवी, और यहूदा,<sup>३</sup> इस्साकार, जबूलून, और बिन्यामीन,<sup>४</sup> दान और नप्ताली, गाद और आशेर।<sup>५</sup> याकूब के सीधे वंशजों की कुल संख्या सत्तर थी। यूसुफ पहले से ही मिस में था।<sup>६</sup> फिर यूसुफ, उसके सभी भाई, और उस पीढ़ी के सभी लोग मर गए।<sup>७</sup> परन्तु इसाएली फलवंत हुए, बहुत बढ़ गए, और बहुत अधिक संख्या में हो गए; देख उनके साथ भर गया।<sup>८</sup> फिर एक नया राजा, जो यूसुफ के बारे में नहीं जानता था, मिस में सत्ता में आया।<sup>९</sup> उसने अपनी प्रजा से कहा, "देखो, इसाएल के लोग हमसे बहुत अधिक और बहुत शक्तिशाली हो गए हैं।"<sup>१०</sup> आओ, हम उनसे बुद्धिमानी से निपटें, नहीं तो वे और भी बढ़ जाएंगे, और यदि युद्ध छिड़ जाए, तो वे हमारे शत्रुओं के साथ मिलकर हमसे लड़ सकते हैं और देश छोड़ सकते हैं।"<sup>११</sup> इसलिए उन्होंने उन पर जबरन श्रम के साथ अत्याचार करने के लिए निरीक्षकों को नियुक्त किया, और इसाएलियों ने फिरौन के लिए भंडार नगर बनाएँ; पीथेम और रामसेस।<sup>१२</sup> परन्तु जितना अधिक उन पर अत्याचार किया गया, उतना ही वे बढ़े और फैले; इसलिए मिसियों को इसाएलियों से डर लगने लगा।<sup>१३</sup> उन्होंने इसाएलियों को निर्दयता से सेवा करने के लिए मजबूर किया,<sup>१४</sup> और उनकी ज़िंदगी को ईंट और गरे के कठोर श्रम से और हर प्रकार के खेत के काम से कड़वा बना दिया। उनके सभी कार्यों में, मिसियों ने उनके साथ कूरता से व्यवहार किया।<sup>१५</sup> फिर मिस के राजा ने इब्रानी दाइयों से कहा—जिनमें से एक का नाम शिफ्रा और दूसरी का नाम यूआ था—<sup>१६</sup> "जब तुम इब्रानी स्त्रियों की प्रसव के समय सहायता करती हो, यदि तुम देखो कि बच्चा लड़का है, तो उसे मार डालो; परन्तु यदि वह लड़की है, तो उसे जीवित रहने दो।"<sup>१७</sup> परन्तु दाइयों ने परमेश्वर का भय माना और मिस के राजा की आज्ञा के अनुसार नहीं किया। उन्होंने लड़कों को जीवित रहने दिया।<sup>१८</sup> इसलिए मिस के राजा ने दाइयों को बुलाया और उनसे कहा, "तुमने ऐसा क्यों किया? तुमने लड़कों को जीवित क्यों रहने दिया?"<sup>१९</sup> दाइयों ने फिरौन से कहा, "इब्रानी स्त्रियों मिसी स्त्रियों जैसी नहीं होतीं; वे बलवान होती हैं और दाईं के पहुँचने से पहले ही जन्म दे देती हैं!"<sup>२०</sup> इसलिए परमेश्वर ने दाइयों के साथ भलाई की, और लोग बढ़े और और भी अधिक संख्या में हो गए।<sup>२१</sup> और क्योंकि दाइयों ने परमेश्वर का भय माना, उसने उन्हें अपने परिवार दिए।<sup>२२</sup> फिर फिरौन ने अपनी सारी प्रजा को यह अदेश दिया: "इब्रानियों से जन्मे हर पुत्र को तुम नील नदी में फेंक दो, परन्तु हर बेटी को जीवित रहने दो।"

**२** अब लेवी के गोत्र का एक व्यक्ति लेवी की एक स्त्री से विवाह किया।<sup>२३</sup> और उसने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसने देखा कि वह एक सुंदर बालक है, तो उसने उसे तीन महीने तक छुपाकर रखा।<sup>२४</sup> लैकिन जब वह उसे और अधिक छुपा नहीं सकी, तो उसने उसके लिए एक पपीरस की टोकरी ली और उसे तार और पिच से लेपित किया। उसने बालक को उसमें रखा और उसे नील नदी के किनारे सरकंडों के बीच रख दिया।<sup>२५</sup> उसकी बहन दूर खड़ी होकर देखती रही कि उसके साथ क्या होगा।<sup>२६</sup> तब फिरौन की बेटी नील में स्नान करने के लिए नीचे आई, और उसकी सेविकाएं नदी के किनारे चल रही थीं। उसने सरकंडों के बीच टोकरी देती और अपनी दासी को उसे लाने के लिए भेजा।<sup>२७</sup> उसने उसे खोला और बच्चे को देखा। वह रो रहा था, और उस पर दया आई। उसने कहा, "यह इब्रानियों के बच्चों में से एक है।"<sup>२८</sup> तब उसकी बहन ने फिरौन की बेटी से कहा, "क्या मैं आपके लिए एक इब्रानी स्त्री को बुलाऊं जो बच्चे को दूध पिलाए?"<sup>२९</sup> "जाओ," उसने उत्तर दिया। इसलिए लड़की गई और बच्चे की माँ को लाई।<sup>३०</sup> फिरौन की बेटी ने उससे कहा, "इस बच्चे को ले जाओ और मेरे लिए इसे दूध पिलाओ, और मैं तुम्हें इसका वेतन दूंगी।"<sup>३१</sup> इसलिए स्त्री ने बच्चे को लिया और उसे दूध पिलाया।<sup>३२</sup> जब बच्चा बड़ा हुआ, तो वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका पुत्र बन गया। उसने उसका नाम मूसा रखा, यह कहते हुए, "मैंने उसे पानी से निकाला।"<sup>३३</sup> एक दिन, जब मूसा बड़ा हो गया, तो वह अपनी जाति के लोगों के पास गया और उनके कठिन परिश्रम को देखा। उसने देखा कि एक मिसी एक इब्रानी को मार रहा है, जो उसकी ही जाति का था।<sup>३४</sup> चारों ओर देखकर और यह सुनिश्चित कर कि कोई नहीं देख रहा है, उसने मिसी को मार डाला और उसे रेत में छुपा दिया।<sup>३५</sup> आगे दिन वह बाहर गया और दो इब्रानियों को लड़ते देखा। उसने गलत व्यक्ति से पूछा, "तुम अपने साथी इब्रानी की क्यों मार रहे हो?"<sup>३६</sup> उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "तुम्हें हमारे ऊपर शासक और न्यायालीश किसने बनाया? क्या तुम मुझे भी मार डालने का विचार कर रहे हो जैसे तुमने मिसी को मारा?" तब मूसा डर गया और सोचा, "जो मैंने किया वह अवश्य ही पता चल गया है।"<sup>३७</sup> जब फिरौन ने यह सुना, तो उसने मूसा को मारने की कोशिश की, लैकिन मूसा फिरौन से भाग गया और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा, जहां वह एक कुएं के पास बैठ गया।<sup>३८</sup> अब मिद्यान का एक पुरोहित था जिसकी सात बेटियाँ थीं, और वे पानी खींचने और अपने पिता के झुंड को पानी पिलाने के लिए आईं।<sup>३९</sup> लैकिन कुछ चरवाहे आए और उन्हें भगा दिया। तब मूसा उठ खड़ा हुआ और

## निर्गमन

उनकी मदद की और उनके झुंड को पानी पिलाया।<sup>18</sup> जब लड़कियाँ अपने पिता रुल के पास लौटीं, तो उसने उनसे पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी कैसे लौट आईं?”<sup>19</sup> उन्होंने उत्तर दिया, “एक मिसी ने हमें चरवाहों से बचाया। उसने हमारे लिए पानी भी खींचा और झुंड को पानी पिलाया।”<sup>20</sup> “और वह कहाँ है?” रुल ने अपनी बेटियों से पूछा। “तुमने उस आदमी को क्यों छोड़ दिया? उसे कुछ खाने के लिए बुलायो।”<sup>21</sup> मूसा उस व्यक्ति के साथ रहने के लिए सहमत हो गया, जिसने अपनी बेटी सिप्पोरा को मूसा से विवाह के लिए दिया।<sup>22</sup> उसने एक पुत्र को जन्म दिया, और मूसा ने उसका नाम गेशीम रखा, यह कहते हुए, “मैं एक परदेशी देश में परदेशी बन गया हूँ।”<sup>23</sup> उस लंबे समय के दौरान, मिस का राजा मर गया। इसाएली अपनी दासता के कारण कराह उठे और चिल्लाए, और उनकी सहायता की पुकार परमेश्वर तक पहुँची।<sup>24</sup> परमेश्वर ने उनकी कराह सुनी और अब्राहम, इसहाक, और याकूब के साथ अपनी बाचा को स्मरण किया।<sup>25</sup> इसलिए परमेश्वर ने इसाएलियों पर दृष्टि डाली और उनकी सुधि ली।

**3** अब मूसा अपने सुसुर यित्रो, जो मिद्यान का याजक था, की भेड़-बकरियों को चरा रहा था। वह भेड़-बकरियों को जंगल के पार ले गया और परमेश्वर के पर्वत होरेब पर पहुँचा।<sup>2</sup> वहाँ यहोवा के द्रूत ने उसे ज्ञाड़ी के बीच से आग की लपटों में दर्शन दिया। मूसा ने देखा कि ज्ञाड़ी जल रही है, पर वह भस्म नहीं हो रही।<sup>3</sup> तब मूसा ने सोचा, “मैं जाकर इस अद्भुत दृश्य को देखूँगा—यह ज्ञाड़ी क्यों नहीं जल रही है।”<sup>4</sup> जब यहोवा ने देखा कि वह देखने के लिए आया है, तो परमेश्वर ने उसे ज्ञाड़ी के बीच से पुकारा, “मूसा! मूसा!” और मूसा ने कहा, “मैं यहाँ हूँ।”<sup>5</sup> परमेश्वर ने कहा, “और निकट मत आओ। अपनी जूतियाँ उतार दो, क्योंकि जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह पवित्र भूमि है।”<sup>6</sup> फिर उसने कहा, “मैं तुम्हारे पिता का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।”<sup>7</sup> इस पर मूसा ने अपना चेहरा छिपा लिया, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर देखने से डरता था।<sup>8</sup> यहोवा ने कहा, “मैंने सचमुच मिस में अपने लोगों की दुर्दशा देखी है। मैंने उनके दासता के कारण उनकी पुकार सुनी है, और मैं उनकी पीड़ा के विषय में चिंतित हूँ।”<sup>9</sup> इसलिए मैं उन्हें मिसियों के हाथ से छुड़ाने और उन्हें उस देश से निकालकर एक अच्छे और विशाल देश में, दूध और शहद की धारा वाले देश में ले जाने के लिए उतारा हूँ...<sup>10</sup> और अब इसाएलियों की पुकार मेरे पास पहुँची है, और मैंने देखा है कि मिसी उन्हें कैसे दबा रहे हैं।<sup>11</sup> इसलिए अब जा ओ। मैं तुम्हें फिरोन के पास भेज रहा हूँ ताकि तुम मेरे लोगों,

इसाएलियों को मिस से बाहर निकालो।”<sup>12</sup> पर मूसा ने परमेश्वर से कहा, “मैं कौन हूँ कि फिरौन के पास जाऊँ और इसाएलियों को मिस से बाहर निकालूँ?”<sup>13</sup> और परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। और यह तुम्हारे लिए चिन्ह होगा कि मैंने तुम्हें भेजा है: जब तुम लोगों को मिस से बाहर ले आओगे, तो तुम इस पर्वत पर परमेश्वर की आराधना करोगे।”<sup>14</sup> मूसा ने परमेश्वर से कहा, “मान लो कि मैं इसाएलियों के पास जाकर उनसे कहूँ, ‘तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, और वे मुझसे पूछें, “उक्का नाम क्या है?” तब मैं उन्हें क्या बताऊँ?”<sup>15</sup> परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं हूँ तुम्हारे पितरों का परमेश्वर—अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर—ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।”<sup>16</sup> यह मेरा नाम सदा के लिए है।<sup>17</sup> जाओ, इसाएल के पुरनियों को इकट्ठा करो और उनसे कहो, “यहोवा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, मुझे दिखाई दिया और कहा: “मैंने तुम्हारी देखभाल की है और देखा है कि मिस में तुम्हारे साथ क्या किया गया है।”<sup>18</sup> और मैंने वादा किया है कि मैं तुम्हें मिस में तुम्हारी दुर्दशा से निकालकर कनानियों के देश में ले जाऊँगा... एक ऐसा देश जो दूध और शहद की धारा से बहता है।”<sup>19</sup> इसाएल के पुरनिये तुम्हारी बात सुनोगे। तब तुम और पुरनिये मिस के राजा के पास जाकर कहो, “यहोवा, इब्रियों का परमेश्वर, हमसे मिला है।”<sup>20</sup> पर मैं जानता हूँ कि मिस का राजा तुम्हें जाने नहीं देगा जब तक कि एक शक्तिशाली हाथ उसे मजबूर न करे।<sup>21</sup> इसलिए मैं अपना हाथ बढ़ाऊँगा और मिसियों पर सभी अद्भुत कार्यों के साथ प्रहार करूँगा जो मैं करूँगा। उसके बाद वह तुम्हें जाने देगा।<sup>22</sup> और मैं मिसियों को इस लोगों के प्रति अनुकूल बनाऊँगा, ताकि जब तुम जाओ, तो खाली हाथ न जाओ।<sup>23</sup> हर स्ती अपनी पड़ासी से चाँदी और सोने के गहने और कस्त माँगेगी, जिन्हें तुम अपने बेटों और बेटियों पर पहना ओगे। इस प्रकार तुम मिसियों को लूट लोगे।

**4** मूसा ने उत्तर दिया, “यदि वे मुझ पर विश्वास न करें या मेरी बात न सुनें और कहें, ‘यहोवा ने तुम्हें दर्शन नहीं दिया’ तो क्या होगा?”<sup>2</sup> तब यहोवा ने उससे कहा, “तेरे हाथ में क्या है?” उसने उत्तर दिया, “एक लाठी।”<sup>3</sup> यहोवा ने कहा, “इसे जमीन पर डाल दे।” सो मूसा ने उसे जमीन पर डाल दिया, और वह एक साँप बन गया, और वह उससे भाग गया।<sup>4</sup> तब यहोवा ने कहा, “अपना हाथ बढ़ा और उसकी पूँछ पकड़ लो।” सो मूसा ने हाथ बढ़ाया और साँप को पकड़ लिया, और वह फिर से

## निर्गमन

लाठी बन गया।<sup>5</sup> यहोवा ने कहा, “यह इसलिए है कि वे विश्वास करें कि यहोवा, उनके पितरों का परमेश्वर, तुझ पर प्रकट हुआ है।”<sup>6</sup> तब यहोवा ने कहा, “अपना हाथ अपनी छाती में डाल।” सो मूसा ने ऐसा किया, और जब उसने उसे बाहर निकाला, तो वह कोढ़ से सफेद हो गया।<sup>7</sup> “अब उसे अपनी छाती में वापस डाल,” उसने कहा। मूसा ने अपना हाथ वापस डाला, और जब उसने उसे बाहर निकाला, तो वह पुनः खस्त हो गया।<sup>8</sup> तब यहोवा ने कहा, “यदि वे तुझ पर विश्वास न करें या पहले चिन्ह पर ध्यान न दें, तो वे दूसरे पर विश्वास कर सकते हैं।”<sup>9</sup> पर यदि वे इन दो चिन्हों पर विश्वास न करें या तेरी बात न सुनें, तो कुछ जल नील नदी से ले और उसे ज़मीन पर डाल दे, और वह रक्त में बदल जाएगा।”<sup>10</sup> मूसा ने यहोवा से कहा, “हे प्रभु, कृपया मुझे क्षमा करें। मैं कभी भी वाक्यपूर्ण नहीं रहा... मैं बोलने में थीमा हूँ।”<sup>11</sup> यहोवा ने कहा, “किसने मनुष्यों को उनके मुख दिए? कौन उन्हें बहरा या गुंगा बनाता है? क्या यह मैं, यहोवा नहीं हूँ।”<sup>12</sup> अब जा, मैं तुझे बोलने में सहायता करूँगा और तुझे सिखाऊंगा कि क्या कहना है।”<sup>13</sup> पर मूसा ने कहा, “कृपया किसी और को भेजें।”<sup>14</sup> तब यहोवा का क्रोध मूसा पर भड़क उठा और उसने कहा, “तेरे भई लेवी का हारून क्या? मुझे पता है कि वह अच्छी तरह से बोल सकता है। वह पहले से ही तुझसे मिलने के लिए आ रहा है।”<sup>15</sup> तू उससे बात करेगा और उसके मुख में शब्द लालेगा; मैं तुम दोनों को बोलने में सहायता करूँगा और तुम्हें सिखाऊंगा कि क्या करना है।”<sup>16</sup> वह तेरे लिए लोगों से बात करेगा, और यह ऐसा होगा जैसे वह तेरा मुख हो और तू उसके लिए परमेश्वर हो।”<sup>17</sup> पर तू इस लाठी को अपने हाथ में ले ले ताकि तू इसके साथ चिन्ह कर सके।”<sup>18</sup> तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौट आया और कहा, “मुझे अपने लोगों के पास मिस लौटने दे।” यित्रो ने कहा, “शांति से जाओ।”<sup>19</sup> अब यहोवा ने मिशन में मूसा से कहा था, “मिस लौट जा, क्योंकि वे सब भर गए हैं जो तुझे मारना चाहते थे।”<sup>20</sup> सो मूसा ने अपनी पत्नी और पुत्रों को लिया, उन्हें एक गधे पर बैठाया और मिस लौट आया, परमेश्वर की लाठी को लेकर।<sup>21</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “जब तू मिस लौटेगा, तो फिरैन के सामने वे सब अद्भुत काम कर जो मैंने तुझे दिए हैं। पर मैं उसके हृदय को कठोर कर दूँगा, ताकि वह लोगों को जाने न दे।”<sup>22</sup> फिर तू फिरैन से कह, यहोवा यह कहता है: इसाएल मेरा पहिलौठा पुत्र है।<sup>23</sup> और मैंने तुझसे कहा, “मेरे पुत्र को जाने दे, ताकि वह मेरी उपासना कर सके।” पर तूने मना कर दिया, इसलिए मैं तेरे पहिलौठे पुत्र को मार डालूंगा।”<sup>24</sup> रास्ते में एक ठहरने की जगह पर, यहोवा मूसा से मिला और उसे मारने वाला था।<sup>25</sup> पर सिप्पोरा ने एक चक्रमक पथर

की छुरी ली, अपने पुत्र का खतना किया और मूसा के पैरों को छुआ। “निश्चय ही तू मेरे लिए रक्त का दूल्हा है,” उसने कहा।<sup>26</sup> तब यहोवा ने उसे छोड़ दिया। उस समय उसने “रक्त का दूल्हा” कहा, खतना के संदर्भ में।<sup>27</sup> यहोवा ने हारून से कहा, “जंगल में मूसा से मिलने जाओ।” सो वह परमेश्वर के पर्वत पर उससे मिला और उसे चूमा।<sup>28</sup> तब मूसा ने हास्तन को सब कुछ बताया जो यहोवा ने कहा था और उन चिन्हों के बारे में जो उसने उसे अदेश दिए थे।<sup>29</sup> मूसा और हारून ने इसाएलियों के सभी प्राचीनों को इकट्ठा किया,<sup>30</sup> और हारून ने उन्हें सब कुछ बताया जो यहोवा ने मूसा से कहा था। उसने लोगों के सामने चिन्ह भी दिखाए,<sup>31</sup> और लोगों ने विश्वास किया। जब उन्होंने सुना कि यहोवा उनकी चिंता कर रहा है और उनकी पीड़ा देखी है, तो वे झुक कर पूजा करने लगे।

**5** इसके बाद मूसा और हारून फिरैन के पास गए और कहा, “इसाएल के परमेश्वर यहोवा यों कहता है: मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे जंगल में मेरे लिए एक उत्सव मना सकें।”<sup>2</sup> परन्तु फिरैन ने कहा, “यहोवा कोन है, कि मैं उसकी बात मानकर इसाएल को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इसाएल को नहीं जाने दूँगा।”<sup>3</sup> तब उन्होंने कहा, “हिब्रियों के परमेश्वर ने हमसे भेंट की है। हमें तीन दिन की यात्रा करने दे, ताकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ा सकें, नहीं तो वह हम पर महामारी या तलवार से प्रहार कर सकता है।”<sup>4</sup> परन्तु मिस्स के राजा ने उत्तर दिया, “मूसा और हारून, तुम लोगों को उनके काम से क्यों हटा रहे हो? अपने काम पर लौट जाओ।”<sup>5</sup> फिरैन ने यह भी कहा, “देखो, देश के लोग अब बहुत हो गए हैं, और तुम उन्हें उनके काम से रोक रहे हो।”<sup>6</sup> उसी दिन फिरैन ने लोगों के ऊपर के दास-प्रभुओं और अधिकारियों को यह आदेश दिया: “तुम अब लोगों को ईट बनाने के लिए तिनके नहीं दोगे जैसा पहले देते थे। उन्हें जाकर अपने लिए तिनके इकट्ठा करने दो।”<sup>7</sup> परन्तु उनसे उतनी ही ईटें बनवाओ जितनी पहले बनती थीं; कोटा कम मत करो। वे आलसी हैं; इसलिए वे चिल्लाते हैं, हमें अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने जाने दो।”<sup>8</sup> काम को पुरुषों के लिए कठिन बना दो ताकि वे काम करते रहें और जूठे शब्दों पर ध्यान न दें।”<sup>9</sup> तो दास-प्रभु और अधिकारी बाहर गए और लोगों से कहा, “फिरैन यों कहता है: मैं तुम्हें अब और तिनके नहीं दूँगा।”<sup>10</sup> जहां कहीं भी तिनके मिले, वहां जाकर खुद इकट्ठा करो, परन्तु तुहारा काम कम नहीं होगा।”<sup>11</sup> तो लोग पूरे मिस्स में तिनके के लिए ढूँठ इकट्ठा करने के लिए बिखर गए।<sup>12</sup> दास-प्रभु उन्हें दबाव डालते रहे, कहते हुए, “हर दिन अपना काम पूरा

## निर्गमन

करो, जैसे जब तुम्हारे पास तिनके होते थे।”<sup>14</sup> फिरौन के दास-प्रभु इसाएली अधिकारियों को पीटते थे जिन्हें उन्होंने नियुक्त किया था, मांगते हुए, “तुमने कल या आज अपनी ईंटों का कोटा क्यों नहीं पूरा किया, जैसा पहले होता था?”<sup>15</sup> तब इसाएली अधिकारी फिरौन के पास गए और अपील की: “तुमने अपने सेवकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया है?”<sup>16</sup> तुम्हारे सेवकों को तिनके नहीं दिए जाते, फिर भी हमसे कहा जाता है, ईंटें बनाओ! तुम्हारे सेवकों को पीटा जाता है, परन्तु दोष तुम्हारे अपने लोगों का है!”<sup>17</sup> परन्तु फिरौन ने कहा, “आलसी! तुम आलसी हो! इसलिए तुम कहते हो, हमें यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने जाने दो।”<sup>18</sup> अब काम पर लग जाओ। तुम्हें कोई तिनका नहीं दिया जाएगा, फिर भी तुम्हें अपनी पूरी ईंटों का कोटा पूरा करना होगा।”<sup>19</sup> इसाएली अधिकारियों ने महसूस किया कि वे मुसीबत में हैं जब उन्हें बताया गया, “तुम्हें दैनिक ईंटों की संख्या कम नहीं करनी चाहिए।”<sup>20</sup> जब वे फिरौन के पास से निकले, तो उन्होंने मूसा और हारून को इंतजार करते हुए पापा,<sup>21</sup> और उन्होंने कहा, “यहोवा तुम पर दृष्टि करे और न्याय करे! तुमने हमें फिरौन और उसके अधिकारियों के लिए धृणास्पद बना दिया है और उनके हाथ में हमें मारने के लिए तलवार दे दी है।”<sup>22</sup> तब मूसा यहोवा के पास लौटकर कहने लगे, “प्रभु, तुमने इस लोगों पर विपत्ति क्यों लाई है? तुमने मुझे क्यों भेजा? ”<sup>23</sup> जब से मैं फिरौन के पास तुम्हारे नाम में बोलने गया, उसने इस लोगों पर और अधिक हानि पहुंचाई है, और तुमने अपने लोगों को बिलकुल नहीं छुड़ाया।”

**6** तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तू देखोगा कि मैं फिरौन के साथ क्या करूँगा; मेरे शक्तिशाली हाथ के कारण वह उन्हें जाने देगा, और मेरे शक्तिशाली हाथ के कारण वह उन्हें अपने देश से निकाल देगा।”<sup>24</sup> परमेश्वर ने मूसा से भी कहा, “मैं यहोवा हूँ।”<sup>25</sup> मैं अब्राहम, इसहाक, और याकूब के सामने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में प्रकट हुआ, परंतु अपने नाम यहोवा से मैंने उन्हें पूरी तरह से नहीं जाना।<sup>26</sup> मैंने उनके साथ अपनी वाचा भी स्थापित की कि मैं उन्हें कनान देश द्वांग, जहाँ वे परदेशी के रूप में निवास करते थे।<sup>27</sup> और मैंने इसाएलियों की कराहट सुनी है, जिन्हें मिस्री दास बना रहे हैं, और मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है।<sup>28</sup> इसलिए, इसाएलियों से कहो: ‘मैं यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जुए से बाहर निकालूंगा, मैं तुम्हें दासता से मुक्त करूँगा और तुम्हें एक विस्तारित भुजा और न्याय के महान कार्यों के साथ छुड़ाऊंगा।’<sup>29</sup> मैं तुम्हें अपनी प्राजा के रूप में लूंगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूंगा। तब तुम जानोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो

तुम्हें मिस्र की उत्तीर्ण से बाहर लाया।<sup>30</sup> और मैं तुम्हें उस देश में ले जाऊंगा, जिसे मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब को देने के लिए शपथ खाई थी। मैं इसे तुम्हें तुम्हारी संपत्ति के रूप में द्वांगा। मैं यहोवा हूँ।”<sup>31</sup> मूसा ने यह इसाएलियों को बताया, परंतु उन्होंने उसकी नहीं सुनी क्योंकि वे निराश और कठोर परिश्रम से थके हुए थे।<sup>32</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “जाओ, मिस्र के राजा फिरौन से कहो कि वह इसाएलियों को अपने देश से जाने दे।”<sup>33</sup> पर मूसा ने यहोवा से कहा, “यदि इसाएली मेरी नहीं सुनते, तो फिरौन क्यों सुनेगा, क्योंकि मैं तो हकलाता हूँ?”<sup>34</sup> तब यहोवा ने मूसा और हारून को इसाएलियों और मिस्र के राजा फिरौन के विषय में आदेश दिया, कि वे इसाएलियों को मिस्र देश से बाहर ले जाएं।<sup>35</sup> ये उनके परिवारों के प्रधान थे: रूबेन, जो इसाएल का पहिलौता था, के पुत्र हनोक, पत्नी हेसोन और कर्मी थे। ये रूबेन के कुल थे।<sup>36</sup> शिमोन के पुत्र यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और शाऊल—जो एक कनानी स्त्री का पुत्र था। ये शिमोन के कुल थे।<sup>37</sup> ये लेवी के पुत्रों के नाम उनके वंशावली के अनुसार थे:

गेर्शोन, कहात और मरारी। लेवी 1.37 वर्ष जीवित रहा।<sup>38</sup> गेर्शोन के पुत्र, कुलों के अनुसार, लिङ्गी और शिमी थे।<sup>39</sup> कहात के पुत्र अम्राम, यिजहार, हेब्रान और उज्जीएल थे। कहात 1.33 वर्ष जीवित रहा।<sup>40</sup> मरारी के पुत्र महली और मूरी थे। ये लेवी के कुल थे उनके वंशावली के अनुसार।<sup>41</sup> अम्राम ने अपने पिता की बहन योकिबेद से विवाह किया, जिसने उसे हारून और मूसा को जन्म दिया। अम्राम 1.37 वर्ष जीवित रहा।<sup>42</sup> यिजहार के पुत्र कोरह, नेफेग और जिक्रि थे।<sup>43</sup> उज्जीएल के पुत्र मिशाएल, एल्जाफ़ान और सिमी थे।<sup>44</sup> हारून ने एलिशेबा से विवाह किया, जो अमीनादाब की पुत्री और नहशोन की बहन थी, और उसने उसे नादाब, अबीहू, एलोआजर और इथामार को जन्म दिया।<sup>45</sup> कोरह के पुत्र अस्सीर, एकाना और अबियासाफ थे। ये कोरहियों के कुल थे।<sup>46</sup> हारून के पुत्र एलोआजर ने पूरीएल की एक पुत्री से विवाह किया, और उसने उसे फिनहास को जन्म दिया। ये लेवी परिवारों के प्रधान थे उनके कुलों के अनुसार।<sup>47</sup> यही हारून और मूसा थे जिन्हें यहोवा ने कहा, “इसाएलियों को उनके दलों के अनुसार मिस्र से बाहर ले जाओ।”<sup>48</sup> वे वही थे जिन्होंने मिस्र के राजा फिरौन से बात की थी कि इसाएलियों को मिस्र से बाहर ले जाए—यही मूसा और हारून थे।<sup>49</sup> जब यहोवा ने मिस्र में मूसा से बात की,<sup>50</sup> तो उसने उससे कहा, “मैं यहोवा हूँ।”<sup>51</sup> मिस्र के राजा फिरौन से वह सब कहो जो मैं तुमसे कहता हूँ।”<sup>52</sup> पर मूसा ने यहोवा से कहा, “चूंकि मैं हकलाता हूँ, फिरौन मेरी क्यों सुनेगा?”

## निर्गमन

**7** तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘देख, मैंने तुझे फिरैन के लिए ईश्वर के समान बनाया है, और तेरा भाई हारून तेरा नबी होगा।<sup>2</sup> तु वह सब कहेगा जो मैं तुझे आज्ञा द्वागा, और तेरा भाई हारून फिरैन से कहेगा कि वह इसाएलियों को अपनी भूमि से जाने दे।<sup>3</sup> परन्तु मैं फिरैन के हृदय को कठोर कर दूँगा, और यद्यपि मैं मिस में अपने चिन्ह और चमकार बढ़ाऊंगा, <sup>4</sup> फिरैन तेरी नहीं सुनेगा। तब मैं मिस पर अपना हाथ रखूँगा और अपने लोगों को, इसाएलियों को, महान् न्याय के द्वारा बाहर निकाल लूँगा।<sup>5</sup> और मिसी जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ जब मैं मिस के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और इसाएलियों को बाहर निकाल लूँगा।<sup>6</sup> मूसा और हारून ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी।<sup>7</sup> जब उन्होंने फिरैन से बात की, तब मूसा अस्सी वर्ष का और हारून तिरासी वर्ष का था।<sup>8</sup> यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, ‘जब फिरैन कहे, “कोई चमकार दिखाओ,” तो हारून से कहना, ‘अपनी लाठी ले और उसे फिरैन के सामने डाल दे,’ और वह एक सर्प बन जाएगी।’<sup>10</sup> तब मूसा और हारून फिरैन के पास गए और वैसा ही किया जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी। हारून ने अपनी लाठी फिरैन और उसके अधिकारियों के सामने डाल दी, और वह एक सर्प बन गई।<sup>11</sup> तब फिरैन ने जानी पुरुषों और जादूगरों को बुलाया, और मिसी जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं से वही किया।<sup>12</sup> प्रत्येक ने अपनी लाठी ढाली, और वे सर्प बन गईं। परन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल लिया।<sup>13</sup> फिर भी फिरैन का हृदय कठोर हो गया और उसने उनकी नहीं सुनी, जैसा यहोवा ने कहा था।<sup>14</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘फिरैन का हृदय अड़िग है; वह लोगों को जाने देने से इंकार करता है।’<sup>15</sup> प्रातःकाल फिरैन के पास जाओ जब वह नदी की ओर जाता है। नील नदी के किनारे पर उसका सामना करो, और अपने हाथ में वह लाठी लौ जो सर्प में बदल गई थी।<sup>16</sup> उससे कहो, यहोवा, इब्रियों का परमेश्वर, ने मुझे तुझसे कहने के लिए भेजा है: मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे जंगल में मेरी उपासना कर सकें। परन्तु अब तक तूने नहीं सुना है।<sup>17</sup> यहोवा यह कहता है: इससे तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ। जो लाटी मेरे हाथ में है उससे मैं नील नदी के जल को मारूँगा, और वह रक्त में बदल जाएगा।<sup>18</sup> नदी की मछलियाँ मर जाएँगी, और नदी से दुर्घट उठेगी; मिसी उसका जल नहीं पी सकेंगे।’<sup>19</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, ‘हारून से कहो, ‘अपनी लाठी ले और मिस के जलों पर—नदियों, नहरों, तालाबों और सभी जलाशयों पर—हाथ बढ़ा, और वे रक्त में बदल जाएँगे।’<sup>20</sup> मूसा और हारून ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी। उसने अपनी लाठी उठाई और नील नदी के जल को

मारा, और सारा जल रक्त में बदल गया।<sup>21</sup> नील की मछलियाँ मर गईं, और नदी इतनी दुर्घट हो गई कि मिसी उसका जल नहीं पी सके। मिस में हर जगह रक्त ही रक्त था।<sup>22</sup> परन्तु मिसी जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं से वही किया, और फिरैन का हृदय कठोर हो गया; उसने मूसा और हारून की नहीं सुनी।<sup>23</sup> इसके बायाँ, वह मुड़ा और अपने महल में चला गया, और इस बात को भी उसने मन में नहीं लिया।<sup>24</sup> और सभी मिसी नील के किनारे खुदाई करने लगे ताकि पीने का पानी मिल सके, क्योंकि वे नदी का जल नहीं पी सकते थे।<sup>25</sup> सात पूरे दिन बीत गए जब यहोवा ने नील नदी को मारा।

**8** तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘फिरैन के पास जाओ और उससे कहो, ‘यहोवा यह कहता है: मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे मेरी उपासना कर सकें।’<sup>2</sup> यदि तू उन्हें जाने नहीं देगा, तो मैं तेरे पूरे देश पर मेंढकों की विपत्ति भेजूँगा।<sup>3</sup> नाइल नदी में मेंढक भर जाएंगे। वे तेरे महल, तेरे शयनकक्ष, और तेरे बिस्तर पर, तेरे अधिकारियों और तेरे लोगों के घरों में, और तेरे ओवन और गूंजने के बर्तनों में आ जाएंगे।<sup>4</sup> मेंढक तुझ पर, तेरे लोगों पर, और तेरे सभी अधिकारियों पर चढ़ आएंगे।’<sup>5</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘हारून से कहो, ‘अपनी छड़ी की नदियों, नहरों और तालाबों पर फैला दे, और मिस देश पर मेंढक आ जाए।’<sup>6</sup> इसलिए हारून ने मिस की जलधाराओं पर अपना हाथ फैलाया, और मेंढक आ गए और देश को ढक लिया।<sup>7</sup> परन्तु जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं से वही किया; उन्होंने भी मिस देश पर मेंढक ला दिए।<sup>8</sup> फिरैन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा, ‘यहोवा से प्रार्थना करो कि वह मुझसे और मेरे लोगों से मेंढकों को हटा दे, और मैं तुम्हारे लोगों को यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए जाने दूँगा।’<sup>9</sup> मूसा ने फिरैन से कहा, ‘मैं तुम्हें यह सम्मान देता हूँ कि तुम समय निश्चिरित करो जब मैं तुम्हारे और तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारे लोगों के लिए प्रार्थना करूँ, ताकि तुम और तुम्हारे घरों से मेंढक हट जाएं, केवल नाइल में रह जाएं।’<sup>10</sup> ‘कल,’ फिरैन ने कहा। मूसा ने उत्तर दिया, ‘जैसा तुम कहते हो वैसा ही होगा, ताकि तुम जान सको कि हमारे परमेश्वर यहोवा के समान कोई नहीं है।’<sup>11</sup> मेंढक तुझसे और तेरे घरों से, तेरे अधिकारियों और तेरे लोगों से हट जाएंगे, वे केवल नाइल में रहेंगे।’<sup>12</sup> मूसा और हारून फिरैन के पास से चले गए, और मूसा ने फिरैन पर लाए गए मेंढकों के विषय में यहोवा से प्रार्थना की।<sup>13</sup> और यहोवा ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया। घरों में, आंगनों में, और खेतों में मेंढक मर गए।<sup>14</sup> वे घेरों में इकट्ठे किए गए, और देश उनसे बदबूदार हो गया।<sup>15</sup> परन्तु जब फिरैन ने देखा कि

## निर्गमन

राहत मिल गई है, तो उसने अपना हृदय कठोर कर लिया और उनकी नहीं सुनी, जैसा कि यहोवा ने कहा था।<sup>16</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून से कहो, ‘अपनी छड़ी को बढ़ा और भूमि की धूल पर मार,’ और मिस देश में धूल मच्छरों में बदल जाएगी।”<sup>17</sup> उन्होंने ऐसा किया, और जब हारून ने अपनी छड़ी के साथ हाथ फैलाया और धूल पर मारा, तो मच्छर मनुष्यों और पशुओं पर आ गए। मिस की सारी धूल मच्छरों में बदल गई।<sup>18</sup> परन्तु जब जादूगरों ने अपनी गुता कलाओं से मच्छर उत्पन्न करने का प्रयास किया, तो वे नहीं कर सके। क्योंकि मच्छर हर जगह मनुष्यों और पशुओं पर थे,<sup>19</sup> जादूगरों ने फिरैन से कहा, “यह परमेश्वर की उंगली है।” परन्तु फिरैन का हृदय कठोर था और उसने नहीं सुनी, जैसा कि यहोवा ने कहा था।<sup>20</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “प्रातःकाल उठकर फिरैन का सामना करो जब वह जल के पास जाता है, और उससे कहो, यहोवा यह कहता है: मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे मेरी उपासना कर सकें।”<sup>21</sup> यदि तू मेरे लोगों को जाने नहीं देगा, तो मैं तेरे और तेरे अधिकारियों, तेरे लोगों और तेरे घरों पर मक्खियों के झुंड भेजूंगा। मिसियों के घर मक्खियों से भर जाएंगे, और यहां तक कि भूमि भी उनसे ढक जाएगी।<sup>22</sup> परन्तु उस दिन मैं गोशन देश के साथ भिन्न व्यवहार करूंगा, जहां मेरे लोग रहते हैं; वहां मक्खियों के झुंड नहीं होंगे, ताकि तू जान सके कि मैं, यहोवा, इस देश में हूँ।<sup>23</sup> मैं अपने लोगों और तेरे लोगों के बीच भेद करूँगा। यह चिन्ह कल घटित होगा।”<sup>24</sup> और यहोवा ने ऐसा किया। मक्खियों के घने झुंड फिरैन के महल और उसके अधिकारियों के घरों में आ गए; मिस के पूरे देश में मक्खियों से भूमि नष्ट हो गई।<sup>25</sup> तब फिरैन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा, “यहां देश में ही अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाओ।”<sup>26</sup> परन्तु मूसा ने कहा, “यह उचित नहीं होगा। जो बलिदान हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए चढ़ाते हैं, वे मिसियों के लिए घृणास्पद होंगे। यदि हम ऐसे बलिदान चढ़ाएं जो उन्हें अपमानित करें, तो क्या वे हमें पत्सरों से नहीं मारेंगे?<sup>27</sup> हमें अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए जंगल में तीन दिन की यात्रा करनी चाहिए, जैसा कि वह हमें अदेश देता है।”<sup>28</sup> फिरैन ने कहा, “मैं तुम्हें जंगल में अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए जाने दूंगा, परन्तु तुम बहुत दूर मत जाना। अब मेरे लिए प्रार्थना करो।”<sup>29</sup> मूसा ने उत्तर दिया, “जैसे ही मैं तुम्हसे विदा होता हूँ, मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा, और कल मक्खियाँ फिरैन, उसके अधिकारियों, और उसके लोगों से हट जाएंगी। परन्तु फिरैन फिर से छल से काम न करे और लोगों को बलिदान चढ़ाने के लिए जाने से न रोक।”<sup>30</sup> तब मूसा

फिरैन के पास से चला गया और यहोवा से प्रार्थना की, <sup>31</sup> और यहोवा ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया। मक्खियाँ फिरैन, उसके अधिकारियों, और उसके लोगों से हट गईं; एक भी नहीं बची।<sup>32</sup> परन्तु फिरैन ने फिर से अपना हृदय कठोर कर लिया और लोगों को जाने नहीं दिया।

**9** तब यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरैन के पास जाओ और उससे कहो, ‘यहोवा, इक्कियों का परमेश्वर, यह कहता है: “मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी सेवा कर सकें।”<sup>33</sup> क्योंकि यदि तुम उन्हें जाने नहीं दोगे और उन्हें रोकते रहोगे,<sup>34</sup> देखो, यहोवा का हाथ तुम्हारे मैदान में रहने वाले पशुओं पर, घोड़ों पर, गधों पर, ऊँटों पर, गायों के झुंडों पर और भेड़ों के झुंडों पर एक बहुत ही भयंकर महामारी लाएगा।<sup>35</sup> परन्तु यहोवा इसाएल के पशुओं और मिस के पशुओं के बीच भेद करेगा, ताकि इसाएल के पुत्रों की जो कुछ भी है, उसमें से कुछ भी न मरे।”<sup>36</sup> और यहोवा ने एक निश्चित समय ठहराया, यह कहते हुए, “कल यहोवा इस देश में यह काम करेगा।”<sup>37</sup> अतः यहोवा ने अगले दिन यह काम किया, और मिस के सभी पशु मर गए; परन्तु इसाएल के पुत्रों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा।<sup>38</sup> और फिरैन ने अदामी भेजे, और देखो, इसाएल के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। परन्तु फिरैन का हृदय कठोर हो गया, और उसने लोगों को जाने नहीं दिया।<sup>39</sup> तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, “भट्टी की राख की मुट्ठियाँ भर लो, और मूसा उसे फिरैन के सामने आकाश की ओर उड़ा दे।”<sup>40</sup> और वह मिस के सारे देश में महीन धूल बन जाएगी, और मिस के सारे देश में हर व्यक्ति और पशु पर फोड़े बनकर घावों के साथ फूटेगी।<sup>41</sup> अतः उन्होंने भट्टी की राख ली और फिरैन के सामने खड़े हुए; और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह लोगों और पशुओं पर फोड़े बनकर घावों के साथ फूट गई।<sup>42</sup> जादूगर मूसा के सामने खड़े नहीं हो सके क्योंकि फोड़े जादूगरों पर और सभी मिसियों पर थे।<sup>43</sup> परन्तु यहोवा ने फिरैन का हृदय कठोर कर दिया, और उसने उनकी बात नहीं सुनी, जैसा कि यहोवा ने मूसा से कहा था।<sup>44</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “प्रातःकाल उठकर फिरैन के सामने खड़े हो जाओ और उससे कहो, ‘यहोवा, इक्कियों का परमेश्वर, यह कहता है: “मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी सेवा कर सकें।”<sup>45</sup> क्योंकि इस बार मैं अपनी सारी विपत्तियाँ तुम पर और तुम्हारे सेवकों पर और तुम्हारे लोगों पर भेजने का रहा हूँ, ताकि तुम जानों कि सारी पृथ्वी पर मेरे जैसा कोई नहीं है।”<sup>46</sup> क्योंकि यदि अब तक मैंने अपना हाथ बढ़ाकर तुम्हें और तुम्हारे लोगों को महामारी से मारा होता, तो तुम पृथ्वी से मिट गए होते।

## निर्गमन

<sup>16</sup> परन्तु वास्तव में, इसी कारण मैंने तुम्हें रहने दिया है: ताकि मैं तुम्हें अपनी शक्ति दिखाऊं, और पृथ्वी भर में मेरा नाम धोषित किया जाए। <sup>17</sup> फिर भी तुम में लोगों के विरुद्ध अपने आप को ऊँचा करते हो और उन्हें जाने नहीं देते। <sup>18</sup> देखो, कल इसी समय के आस-पास, मैं बहुत भारी ओले भेजूंगा, जैसे मिस्र में उसकी स्थापना के दिन से अब तक नहीं देखे गए हैं। <sup>19</sup> अतः अब, सदैश भेजो, अपने पशुओं और जो कुछ भी तुम्हारे पास मैदान में है, उसे सुरक्षित स्थान पर ले आओ। हर व्यक्ति और पशु जो मैदान में पाया जाता है और घर नहीं लाया जाता है, जब उन पर ओले पिरेंगे, तो वह मर जाएगा।”<sup>20</sup> फिरौन के सेवकों में से जो कोई यहोवा के वचन से डरता था, उसने अपने सेवकों और अपने पशुओं को घरों में जल्दी से ले आया; <sup>21</sup> परन्तु जो कोई यहोवा के वचन पर ध्यान नहीं देता था, उसने अपने सेवकों और अपने पशुओं को मैदान में छोड़ दिया। <sup>22</sup> अब यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाओ, ताकि मिस्र के सारे देश में, लोगों पर, पशुओं पर, और मैदान के हर पौधे पर ओले पिरें।” <sup>23</sup> अतः मूसा ने अपनी छड़ी आकाश की ओर बढ़ाई, और यहोवा ने गरज और ओले भेजे, और आग पृथ्वी पर दौड़ी। और यहोवा ने मिस्र के देश पर आग चमक रही थी, बहुत ही भयंकर, जैसे मिस्र के सारे देश में उसके राष्ट्र बनने के बाद से नहीं हुई थी। <sup>24</sup> ओलों ने मिस्र के सारे देश में मैदान में जो कुछ भी था, उसे मारा, वाहे वह लोग हों या पशु, ओलों ने मैदान के हर पौधे को भी मारा और मैदान के हर पेड़ को तोड़ दिया। <sup>25</sup> केवल गोशेन के देश में, जहाँ इसाएल के पुत्र थे, वहाँ ओले नहीं गिरे। <sup>26</sup> तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलावाया और उनसे कहा, “इस बार मैंने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरे लोग दृष्ट हैं। <sup>27</sup> यहोवा से प्रार्थना करो, क्योंकि परमेश्वर की गरज और ओलों की अब बहुत हो चुकी है; और मैं तुम्हें जाने द्वागा, और तुम अब और नहीं ठहरोगे।” <sup>28</sup> मूसा ने उससे कहा, “जैसे ही मैं नारा से बाहर जाऊंगा, मैं यहोवा की ओर अपने हाथ फैलाऊंगा; गरजना बंद हो जाएगी और अब ओले नहीं पिरेंगे, ताकि तुम जानो कि पृथ्वी यहोवा की है।” <sup>29</sup> परन्तु जहाँ तक तुम्हारा और तुम्हारे सेवकों का सवाल है, मुझे पता है कि तुम अब भी यहोवा परमेश्वर से नहीं डरते।” <sup>30</sup> अब सन और जौ नष्ट हो गए थे, क्योंकि जो बालियों में था और सन कली में था। <sup>31</sup> परन्तु गौहूं और स्पेल नष्ट नहीं हुए, क्योंकि वे देर से पकते हैं। <sup>32</sup> अतः मूसा फिरौन से मिलकर नगर से बाहर चला गया, और यहोवा की ओर अपने हाथ फैलाए; और गरज और ओले बंद हो गए, और पृथ्वी पर अब और वर्षा नहीं हुई। <sup>33</sup> परन्तु जब

फिरौन ने देखा कि वर्षा, ओले, और गरज बंद हो गए हैं, तो उसने फिर पाप किया और अपना हृदय कठोर कर लिया, उसने और उसके सेवकों ने। <sup>34</sup> अतः फिरौन का हृदय कठोर हो गया, और उसने इसाएल के पुत्रों को जाने नहीं दिया, जैसा कि यहोवा ने मूसा के माध्यम से कहा था।

**10** तब यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाओ, क्योंकि मैंने उसके और उसके अधिकारियों के हृदय को कठोर कर दिया है ताकि मैं उनके बीच ये चमत्कार कर सकूँ, <sup>2</sup> ताकि तुम अपने बच्चों और पोते-पोतियों को बता सको कि मैंने भिस्तियों के साथ कैसे कठोरता से व्यवहार किया और उनके बीच अपने चमत्कार किए, और ताकि तुम जान सको कि मैं यहोवा हूँ।” <sup>3</sup> तब मूसा और हारून फिरौन के पास गए और कहा, “यह यहोवा, इब्रियों का परमेश्वर, कहता है: तुम कब तक मेरे सामने अपने आप को नम्र करने से इनकार करोगे? मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी उपासना कर सकें।” <sup>4</sup> यदि तुम उन्हें जाने देने से इनकार करते हो, तो मैं कल तुम्हारे देश में टिड़ियाँ लांड़ेंगा। <sup>5</sup> वे भूमि को इस प्रकार ढक लेंगी कि कोई पृथ्वी को देख नहीं सकेगा। वे ओले के बाद जो कुछ भी बचा है, उसे खा जाएँगी, जिसमें तुम्हारे खेतों में उग रहे हर पेड़ शामिल हैं। <sup>6</sup> वे तुम्हारे घरों और तुम्हारे सभी अधिकारियों और सभी मिसियों के घरों को भर देंगी—ऐसा कुछ जो तुम्हारे पूर्वजों ने या उनके पूर्वजों ने इस देश में बसने के बाद से नहीं देखा है।” <sup>7</sup> तब मूसा ने मुड़कर फिरौन को छोड़ दिया। <sup>8</sup> फिरौन के अधिकारियों ने उससे कहा, “यह व्यक्ति कब तक हमारे लिए फैंदा बना रहेगा? लोगों को जाने दो ताकि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना कर सकें। क्या तुम अब भी नहीं समझते कि मिस्र नष्ट हो चुका है?” <sup>9</sup> तब मूसा और हारून को फिरौन के पास वापस लाया गया। उसने कहा, “जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो।” उसने पूछा, “लेकिन वास्तव में कौन-कौन जाएगा?” <sup>10</sup> मूसा ने उत्तर दिया, “हम अपने युवा और बुद्ध, अपने पुत्रों और पुत्रियों के साथ, और अपनी भेड़ों और मवेशियों के साथ जाएँगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिए एक पर्व मनाना है।” <sup>11</sup> फिरौन ने कहा, “यहोवा तुम्हारे साथ हो—यदि मैं तुम्हें तुम्हारी स्त्रियों और बच्चों के साथ जाने दूँ। स्पष्ट है कि तुम बुराई पर तुले हो।” <sup>12</sup> नहीं! केवल पुरुषों को जाने दो और यहोवा की उपासना करो, क्योंकि यही तुम्हने माँगा है।” <sup>13</sup> तब मूसा और हारून को फिरौन की उपस्थिति से बाहर निकाल दिया गया। <sup>14</sup> और यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ मिस्र पर फैला दो ताकि टिड़ियाँ देश पर छा जाएँ और खेतों में उग रही

## निर्गमन

हर बीज़ को खा जाएँ—ओले के बाद जो कुछ भी बचा है।<sup>13</sup> तब मूसा ने मिस्र पर अपनी छड़ी फैलाई, और यहोवा ने पूरे दिन और रात देश पर पूर्वी हवा बहाई। सुबह तक हवा टिड़ियाँ ले आई।<sup>14</sup> उहोंने पूरे मिस्र पर आक्रमण किया और बड़ी संख्या में बस गए। पहले कभी ऐसा टिड़ियों का प्रकोप नहीं हुआ था, और न ही फिर कभी होगा।<sup>15</sup> उहोंने भूमि की सतह को ढक लिया जब तक कि वह उनके साथ अंधकारमय नहीं हो गई। उहोंने खेतों में सभी पौधों और ओलों से बची हुई सभी फलों को खा लिया। कुछ भी हरा नहीं बचा।<sup>16</sup> फिरौन ने जल्दी से मूसा और हारून को बुलाया और कहा, “मैंने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा और तुम्हारे खिलाफ पाप किया है।<sup>17</sup> अब एक बार फिर मेरे पाप को क्षमा करो और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो कि वह इस घातक प्रकोप को मुझसे दूर कर दे।”<sup>18</sup> मूसा फिरौन को छोड़कर यहोवा से प्रार्थना करने गए।<sup>19</sup> और यहोवा ने हवा को बहुत तेज पश्चिमी हवा में बदल दिया, जिसने टिड़ियों को पकड़ लिया और उहोंने लाल सागर में उड़ा दिया। मिस्र में कहीं भी एक भी टिड़ी नहीं बची।<sup>20</sup> लेकिन यहोवा ने फिरौन का हृदय कठोर कर दिया, और उसने इसाएलियों को जाने नहीं दिया।<sup>21</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “आकाश की ओर अपना हाथ फैलाओ ताकि मिस्र पर अंधकार छा जाए—एक ऐसा अंधकार जिसे महसूस किया जा सके।”<sup>22</sup> तब मूसा ने आकाश की ओर अपना हाथ फैलाया, और तीन दिनों तक किसी और को देख नहीं सका और न ही अपनी जगह से हिल सका। फिर भी सभी इसाएलियों के निवास स्थानों में प्रकाश था।<sup>23</sup> तब फिरौन ने मूसा को बुलाया और कहा, “जाओ, यहोवा की उपासना करो। तुम्हारी स्थियाँ और बच्चे भी तुम्हारे साथ जा सकते हैं—केवल अपनी भेड़-बकरियों और मर्वेशियों को पीछे छोड़ दो।”<sup>24</sup> लेकिन मूसा ने कहा, “तुम्हें हमें बलिदान और होम्बलि भी ले जाने देना होगा ताकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने प्रस्तुत कर सकें।”<sup>25</sup> हमारे मवेशी भी हमारे साथ जाएंगे—एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। हमें उनमें से कुछ का उपयोग अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करने के लिए करना होगा, और जब तक हम वहाँ नहीं पहुँचते, हम नहीं जान पाएंगे कि हमें क्या चढ़ाना है।”<sup>26</sup> लेकिन यहोवा ने फिरौन का हृदय कठोर कर दिया, और वह उहोंने जाने देने के लिए तैयार नहीं था।<sup>27</sup> फिरौन ने मूसा से कहा, “मेरी वृष्टि से बाहर हो जाओ! ध्यान रखना कि तुम फिर कभी मेरे सामने प्रकट न हो! जिस दिन तुम मेरा चेहरा देखोगे, तुम मर जाओगे।”<sup>28</sup> “जैसा तुम कहते हो,” मूसा ने उत्तर दिया। “मैं फिर कभी तुम्हारे सामने प्रकट नहीं होऊँगा।”

**11** अब यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं फिरौन और मिस्र पर एक और विपत्ति लाऊंगा। उसके बाद, वह तुम्हें यहाँ से जाने देगा, और जब वह ऐसा करेगा, तो वह तुम्हें पूरी तरह से बाहर निकाल देगा।<sup>2</sup> लोगों से कहो कि वे अपने पड़ोसियों से चांदी और सोने के वस्त्र मांगें।”<sup>3</sup> यहोवा ने मिस्रवासियों को लोगों के प्रति अनुकूल बना दिया, और मूसा को फिरौन के अधिकारियों और लोगों द्वारा मिस्र में बहुत सम्मानित किया गया।<sup>4</sup> तब मूसा ने कहा, “यहोवा यह कहता है: ‘आधी रात के समय मैं मिस्र के बीच से होकर जाऊंगा।’<sup>5</sup> मिस्र में हर पहिलौठा मरेगा, फिरौन के पहिलौठे से लेकर चक्रवीर पर काम करने वाली दासी के पहिलौठे तक, और सभी पशुओं के पहिलौठे भी।<sup>6</sup> मिस्र में जोर-जोर से विलाप होगा—जैसा पहले कभी नहीं हुआ और न कभी होगा।<sup>7</sup> परंतु इसाएलियों में किसी व्यक्ति या पशु पर कुत्ता भी नहीं भौंकेगा।<sup>8</sup> तब तुम जानोगे कि यहोवा मिस्र और इसाएल के बीच भेद करता है।<sup>9</sup> तुम्हारे सभी अधिकारी मेरे पास आएंगे, मेरे सामने झुकेंगे और कहेंगे, “जाओ, तुम और तुम्हारे साथ चलने वाले सभी लोग।” उसके बाद मैं चला जाऊंगा।” तब मूसा, क्रोध से भरा हुआ, फिरौन के पास से चला गया।<sup>10</sup> यहोवा ने मूसा से कहा था, “फिरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा—ताकि मेरे चमक्तार मिस्र में अधिक होंगे।”<sup>11</sup> मूसा और हारून ने फिरौन के सामने ये सभी चमक्तार किए, लेकिन यहोवा ने फिरौन के हृदय को कठोर कर दिया, और उसने इसाएलियों को अपने देश से बाहर जाने नहीं दिया।

**12** जब वे मिस्र देश में थे, तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,<sup>2</sup> “यह महीना तुम्हारे लिए महीनों का आरंभ होगा; यह तुम्हारे लिए वर्ष का पहला महीना होगा।”<sup>3</sup> इसाएल की सारी मण्डली से कहो, इस महीने के दसवें दिन, प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक मेस्त्रा ले, एक घराने के लिए एक मेस्त्रा।<sup>4</sup> अब यदि घराना मेस्त्रे के लिए बहुत छोटा हो, तो वह और उसका निकटतम पड़ोसी अपने घरों में जितने लोग हैं, उनके अनुसार एक मेस्त्रा लें; तुम मेस्त्रे को इस प्रकार विभाजित करो कि प्रत्येक व्यक्ति जितना खा सके।<sup>5</sup> तुम्हारा मेस्त्रा एक वर्ष का निर्दोष नर होना चाहिए; तुम उसे भेड़ या बकरियों में से ले सकते हो।<sup>6</sup> और तुम उसे उसी महीने के चौदहवें दिन तक रखोगे; तब इसाएल की सारी मण्डली उसे सांझे के समय वध करेगी।<sup>7</sup> फिर वे उसके कुछ रक्त को लेकर उन घरों के द्वारों की दीनों चौखटों और ऊपरी चौखट पर लगाएंगे, जिनमें वे उसे खाएंगे।<sup>8</sup> वे उसी रात उसका मांस आग में भूनकर खाएंगे, और वे उसे अखमीरी रोटी और कड़वे साग के साथ खाएंगे।<sup>9</sup> उसमें से कुछ भी

## निर्गमन

कच्चा या पानी में उबला हुआ मत खाना, परन्तु आग में भुजा हुआ—उसका सिर, उसकी टाँगें और उसकी अंतड़ियाँ।<sup>10</sup> और उसमें से कुछ भी सुबह तक मत छोड़ना, परन्तु जो कुछ सुबह तक बचा रहे, उसे आग में जला देना।<sup>11</sup> अब तुम उसे इस प्रकार खाओः अपनी कमर में पटका बाँधकर, अपने पैरों में जूते पहनकर, और अपने हाथ में लाठी लेकर। तुम उसे जल्दी में खाओगे—यह यहोवा का फसह है।<sup>12</sup> क्योंकि मैं उस रात मिस देश में होकर जाऊँगा, और मिस देश के सब पहिलौठों को, वाहे मनुष्य हो या पशु, मार डालौँगा; और मिस के सब देवताओं के विरुद्ध मैं न्याय करूँगा—मैं यहोवा हूँ।<sup>13</sup> रक्त तुम्हारे लिए उन घरों पर चिन्ह होगा जहाँ तुम रहते हो; और जब मैं रक्त देखूँगा, तो तुम्हारे ऊपर से होकर जाऊँगा, और जब मैं मिस देश को मारूँगा, तो कोई पिपति तुम्हारे ऊपर आकर तुम्हें नाश नहीं करेगी।<sup>14</sup> यह दिन तुम्हारे लिए अस्तरणीय होगा, और तुम इसे यहोवा के लिए पर्व के रूप में मनाओगे; अपनी पीढ़ियों में इसे सदा की विधि के रूप में मनाओ।<sup>15</sup> सात दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाओगे, परन्तु पहले दिन अपने घरों से खमीर निकाल दो; क्योंकि जो कोई पहले दिन से लेकर सातवें दिन तक कुछ भी खमीरयुक्त खाएगा, वह व्यक्ति इसाएल से काट डाला जाएगा।<sup>16</sup> पहले दिन तुम्हारे पास एक पवित्र सभा होगी, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा होगी; उन पर कोई काम नहीं किया जाएगा, सिवाय इसके कि जो कुछ वह व्यक्ति को खाना चाहिए—वही अकेला तुम्हारे द्वारा तैयार किया जाए।<sup>17</sup> तुम अखमीरी रोटी के पर्व को भी मनाओगे, क्योंकि इसी दिन मैं तुम्हारी भीड़ को मिस देश से बाहर ले आया; इसलिए तुम इस दिन को अपनी पीढ़ियों में सदा की विधि के रूप में मनाओ।<sup>18</sup> पहले महीने के चौदहवें दिन की संध्या से लेकर महीने के इक्कीसवें दिन की संध्या तक तुम अखमीरी रोटी खाओगे।<sup>19</sup> सात दिन तक तुम्हारे घरों में कोई खमीर नहीं पाया जाएगा; क्योंकि जो कोई खमीरयुक्त खाएगा, वह व्यक्ति इसाएल की मण्डली से काट डाला जाएगा, वाहे वह परदेशी हो या देश का निवासी।<sup>20</sup> तुम कुछ भी खमीरयुक्त खाने से बचना, अपने सभी निवास स्थानों में तुम अखमीरी रोटी खाओगे।<sup>21</sup> तब मूसा ने इसाएल के सब पुरनियों को बुलाया और उनसे कहा, “जाओ और अपने-अपने परिवार के अनुसार अपने लिए मेंझे चुनो, और फसह का मेस्त्रा बलिदान करो।<sup>22</sup> और तुम हिसोप का एक गुच्छा लो, उसे उस रक्त में डुबाओ जो कटोरे में है, और उस रक्त का कुछ कटोरे में से ऊपरी चौखट और दोनों चौखटों पर लगाओ; और तुम में से कोई भी सुबह तक अपने घर के द्वार के बाहर न जाए।<sup>23</sup> क्योंकि यहोवा मिसियों को मारने के लिए होकर जाएगा; परन्तु जब वह

ऊपरी चौखट और दोनों चौखटों पर रक्त देखेगा, तो यहोवा द्वारा के ऊपर होकर जाएगा और तुम्हारे घरों में विनाशक को प्रवेश करने और तुम्हें मारने की अनुमति नहीं देगा।<sup>24</sup> और तुम इस घटना को अपने और अपने बच्चों के लिए सदा के लिए एक विधि के रूप में मानाना।<sup>25</sup> जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे यहोवा तुम्हें देगा, जैसा उसने बादा किया है, तब तुम इस विधि को बनाए रखना।<sup>26</sup> और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें, ‘तुम्हारे लिए इस विधि का क्या अर्थ है?’<sup>27</sup> तब तुम कहोगे, ‘यह यहोवा का फसह बलिदान है क्योंकि उसने मिस में इसाएल के घरों को छोड़ दिया जब उसने मिसियों को मारा, परन्तु हमारे घरों को बचा लिया।’<sup>28</sup> और लोग झुक्कार कर देवत करने लगे।<sup>29</sup> तब इसाएल के पुत्रों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी, उन्होंने वैसा ही किया।<sup>30</sup> और इसलिए, आधी रात के आसपास, यहोवा ने मिस देश के सभी पहिलौठों को मारा। फिरैन के सिंहासन पर बैठे हुए पहिलौठे से लेकर कैदखाने में बंद कैदी के पहिलौठे तक, और सभी पशुओं के पहिलौठों।<sup>31</sup> तब फिरैन रात में उठा, वह और उसके सभी सेवक और सभी मिसी, और मिस में एक बड़ा विलाप हुआ, क्योंकि ऐसा कोई घर नहीं था जहाँ कोई मरा न हो।<sup>32</sup> और उसने रात में मूसा और हारून को बुलाया और कहा, “उठो, मेरे लोगों से दूर चले जाओ, तुम और इसाएल के पुत्र; और जाओ, यहोवा की सेवा करो, जैसा तुमने कहा है।<sup>33</sup> अपनी भेड़ों और अपने द्वांडों को भी ले लो, जैसा तुमने कहा है, और जाओ, और मुझे भी आशीर्वद दो।”<sup>34</sup> मिसियों ने लोगों को जल्दी से देश से बाहर भेजने के लिए आग्रह किया, क्योंकि उन्होंने कहा, “हम सब नाश हो जाएँगे।”<sup>35</sup> इसलिए लोगों ने अपनी खमीर रहित रोटी ली, और अपनी गूंधों की काठियों को अपने कपड़ों में लपेटकर अपने कंधों पर उठा लिया।<sup>36</sup> अब इसाएल के पुत्रों ने मूसा के बचन के अनुसार किया था, क्योंकि उन्होंने मिसियों से चौंदी और सोने के सामान और वस्त्र माँगे थे;<sup>37</sup> और यहोवा ने लोगों की मिसियों की दृष्टि में अनुग्रह दिया, ताकि उन्होंने उन्हें वह दिया जो उन्होंने माँगा। इसलिए उन्होंने मिसियों को लूटा।<sup>38</sup> इसाएल के पुत्र रामसेस से सुकौत तक यात्रा की, लगभग छह लाख पैदल चलने वाले पुरुष, बच्चों को छोड़कर।<sup>39</sup> उनके साथ एक मिश्रित भीड़ भी ऊपर गई, साथ ही भेड़-बकरियाँ और झुंड, बहुत बड़ी संख्या में पशुधन।<sup>40</sup> और उन्होंने उस आटे को जो वे मिस से लाए थे, अखमीरी रोटी के केंद्र में पकाया। क्योंकि वह खमीरयुक्त नहीं हुआ था, क्योंकि उन्हें मिस से बाहर निकाल दिया गया था और वे विलंब नहीं कर सकते थे, और न ही उन्होंने अपने लिए कोई प्रावधान तैयार किया था।<sup>41</sup> अब

## निर्गमन

इसाएल के पुत्रों ने मिस्र में 430 वर्ष तक निवास किया था।<sup>41</sup> और 430 वर्ष के अंत में, उसी दिन, यहोवा की सारी भीड़ मिस्र देश से बाहर चली गई।<sup>42</sup> यह रात यहोवा के लिए मनाई जाने वाली है क्योंकि उसने उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला; यह रात यहोवा के लिए है, जिसे इसाएल के सभी पुत्र अपनी पीढ़ियों में मनाया।<sup>43</sup> और यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, “यह फसह की विधि है: कोई भी विदेशी इसे न खाए;<sup>44</sup> परन्तु जो कोई दास किसी ने धन से खरीदा हो, उसे तुमने खतना किया हो, तब वह इसे खा सकता है।<sup>45</sup> कोई आगंतुक या किराए का मज़बूर इसे न खाए।<sup>46</sup> इसे एक ही घर में खाया जाना चाहिए; तुम मांस का कोई भी हिस्सा घर के बाहर न ले जाओ, न ही उसकी कोई हड्डी तोड़ो।<sup>47</sup> इसाएल की सारी मण्डली इसे मनाएगी।<sup>48</sup> परन्तु यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहता है और यहोवा के लिए फसह मनाता है, तो उसके सभी पुरुषों का खतना किया जाए, और तब वह इसे मनाने के लिए आ सकता है, और वह देश के निवासी के समान होगा। परन्तु कोई भी बिना खतना किया हुआ व्यक्ति इसे न खाए।<sup>49</sup> देशी और तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशी के लिए एक ही नियम लागू होगा।”<sup>50</sup> तब इसाएल के सभी पुत्रों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें आज्ञा दी गई थी; उन्होंने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी।<sup>51</sup> और उसी दिन, यहोवा ने इसाएल के पुत्रों को उनकी भीड़ के साथ मिस्र देश से बाहर निकाला।

**13** तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “हर पहलौठे नर को मेरे लिए पवित्र करो। जो कुछ भी इसापलियों में गर्भ खोलता है, वहे वह मनुष्य हो या पशु, वह मेरा है।”<sup>3</sup> तब मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो, जिस दिन तुम मिस्र से, दासत्व के घर से निकलो थे, क्योंकि एक शक्तिशाली हाथ द्वारा यहोवा ने तुम्हें बाहर निकाला। कोई खमीरयुक्त रोटी नहीं खाई जाएगी।”<sup>4</sup> तुम आज निकल रहे हो, अवीव के महीने में।<sup>5</sup> जब यहोवा तुम्हें कनानी, हिती, एमोरी, हिब्बी, और यबूसी लोगों की भूमि में लाएगा—वह भूमि जिसे उसने तुम्हारे पूर्वों को देने की शरथ खर्ची थी, दूध और शहद की बहती भूमि—तब तुम इस महीने में इस समारोह का पालन करोगे।<sup>6</sup> सात दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाओगे, और सातवें दिन यहोवा के लिए एक पर्व होगा।<sup>7</sup> सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई जानी चाहिए; तुम्हारे बीच या तुम्हारी सीमाओं में कोई खमीरयुक्त रोटी या खमीर नहीं दिखाई दी चाहिए।<sup>8</sup> और उस दिन तुम अपने बच्चे से कहोगे, ‘यह इस कारण है जो यहोवा ने मेरे लिए किया जब मैं मिस्र से बाहर आया।’<sup>9</sup> यह पालन तुम्हारे लिए तुम्हारे हाथ पर एक चिन्ह और तुम्हारे माथे पर एक स्मरण

होगा, ताकि यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुख में रहे। क्योंकि एक शक्तिशाली हाथ द्वारा यहोवा ने तुम्हें मिस्र से बाहर निकाला।<sup>10</sup> तुम्हें इस विधि का पालन उसके नियत समय पर वर्ष दर वर्ष करना चाहिए।<sup>11</sup> जब यहोवा तुम्हें कनानी लोगों की भूमि में लाएगा, जैसा उसने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वों से वादा किया था, और इसे तुम्हें देगा,<sup>12</sup> तब तुम हर गर्भ के पहले जन्मे को यहोवा को अर्पित करोगे। तुम्हारे पशुओं का हर पहलौठा नर यहोवा का है।<sup>13</sup> तुम हर पहलौठे गधे को एक मेमने से छुड़ा सकते हो, लेकिन यदि तुम उसे नहीं छुड़ाते हो, तो उसकी गर्दन तोड़ दो। तुम्हें अपने पुत्रों के हर पहलौठे को भी छुड़ाना चाहिए।<sup>14</sup> भविष्य में, जब तुम्हारा बच्चा पूछे, ‘इसका क्या अर्थ है?’ तो तुम उन्हें बताओ, एक शक्तिशाली हाथ द्वारा यहोवा ने हमे मिस्र से, दासत्व के घर से बाहर निकाला।<sup>15</sup> जब फिरौन ने हमें जाने देने से हठपूर्वक इंकार किया, तब यहोवा ने मिस्र में हर पहलौठे को मारा, जाहे वह मनुष्य हो या पशु। इसालिए मैं यहोवा के लिए हर नर को जो गर्भ खोलता है अर्पित करता हूँ और अपने पुत्रों के हर पहलौठे को छुड़ाता हूँ।<sup>16</sup> तो यह तुम्हारे हाथ पर एक चिन्ह और तुम्हारे माथे पर एक प्रतीक होगा कि यहोवा ने हमें एक शक्तिशाली हाथ द्वारा मिस्र से बाहर निकाला।<sup>17</sup> जब फिरौन ने लोगों को जाने दिया, तो परमेश्वर ने उन्हें पलिशितयों के मार्ग से नहीं ले जाया, यद्यपि वह छोटा था। परमेश्वर ने कहा, “यदि वे युद्ध का सामना करते हैं, तो वे अपना मन बदल सकते हैं और मिस्र लौट सकते हैं।”<sup>18</sup> इसलिए परमेश्वर ने लोगों को लाल सागर की ओर मरुस्थल के मार्ग से धुमाकर ले जाया। इसाएली मिस्र से युद्ध के लिए तैयार होकर निकले।<sup>19</sup> मूसा ने यूसुफ की हड्डियाँ अपने साथ लीं, क्योंकि यूसुफ ने इसालियों से शपथ ली थी, यह कहते हुए, “परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारी सहायता करेगा, और तब तुम्हें मेरी हड्डियाँ यहाँ से अपने साथ ले जानी चाहिए।”<sup>20</sup> वे सुकौत से चरों और जगल के किनारे एथाम में डेरा डाला।<sup>21</sup> यहोवा दिन में बादल के खंभे में उनके आगे अगे चला ताकि उन्हें मार्ग दिखाए और रात में अग्नि के खंभे में ताकि उन्हें प्रकाश दे, ताकि वे दिन या रात में यात्रा कर सकें।<sup>22</sup> दिन में बादल का खंभा और रात में अग्नि का खंभा लोगों के सामने से कभी नहीं हटा।

**14** तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसालियों से कहो कि वे लौटकर पी हाहिरोत के पास, मिर्गोद और समुद्र के बीच, डेरा डालें, वे समुद्र के सामने, बाल सिपोन के विपरीत, डेरा डालें।”<sup>3</sup> फिरौन सोचेगा, ‘इसाएली भ्रम में भटक रहे हैं, रेगिस्तान से पिरे हुए हैं।’<sup>4</sup>

## निर्गमन

और मैं फिरौन का हृदय कठोर कर दूँगा, और वह उनका पीछा करेगा। परन्तु मैं फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा अपनी महिमा प्राप्त करूँगा, और मिसी जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।<sup>5</sup> इसाएलियों ने ऐसा ही किया।<sup>6</sup> जब मिस के राजा को बताया गया कि लोग भाग गए हैं, तो फिरौन और उसके अधिकारियों ने अपना मन बदल लिया और कहा, "हमने यह क्या किया? हमने इसाएलियों को जाने दिया और उनकी सेवाएँ खो दीं!"<sup>6</sup> इसलिए उसने अपना रथ तैयार किया और अपनी सेना को साथ लिया।<sup>7</sup> उसने अपने सबसे अच्छे छह सौ रथ लिए, और मिस के सभी अन्य रथ भी, और उन सभी पर अधिकारियों को नियुक्त किया।<sup>8</sup> यहोवा ने मिस के राजा फिरौन का हृदय कठोर कर दिया, ताकि वह इसाएलियों का पीछा करे, जो साहसपूर्वक बाहर जा रहे थे।<sup>9</sup> मिस—फिरौन के सभी घोड़े और रथ, घुड़सवार और सैनिक—इसाएलियों का पीछा करते हुए समुद्र के पास उनके डेरा डालने के स्थान पर पहुँच गए।<sup>10</sup> जब फिरौन निकट आया, तो इसाएलियों ने ऊपर देखा, और मिसी उनके पीछे आ रहे थे। वे भयभीत हो गए और यहोवा को पुकारने लगे।<sup>11</sup> उन्होंने मूसा से कहा, "क्या मिस में कबं नहीं थीं कि तुम हमें मरने के लिए रेगिस्तान में ले आए? तुमने हमें मिस से बाहर लाकर क्या किया?"<sup>12</sup> क्या हमने तुमसे मिस में नहीं कहा था, "हमें अकेला छोड़ दो; हमें मिसियों की सेवा करने दो?" मिसियों की सेवा करना रेगिस्तान में मरने से बेहतर होता।<sup>13</sup> मूसा ने लोगों से कहा, "डोरा मत। स्थिर रहो और तुम वह उद्धार देखोगे जो यहोवा आज तुम्हें देगा।"<sup>14</sup> यहोवा तुम्हारे लिए लड़ेगा; तुम्हें केवल शांत रहना है।<sup>15</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम मुझसे क्यों पुकार रहे हो? इसाएलियों से कहो कि आगे बढ़ें।"<sup>16</sup> अपनी लाठी उठाओ और अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाओ ताकि पानी विभाजित हो जाए और इसाएली सूखी भूमि पर से होकर जा सकें।<sup>17</sup> मैं मिसियों के हृदयों को कठोर कर दूँगा ताकि वे उनके पीछे जाएँ, और मैं फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा अपनी महिमा प्राप्त करूँगा।<sup>18</sup> मिसी जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ जब मैं फिरौन, उसके रथों और उसके घुड़सवारों के द्वारा अपनी महिमा प्राप्त करूँगा।<sup>19</sup> तब परमेश्वर का दृत, जो इसाएल की सेना के आगे चल रहा था, पीछे हटकर उनके पीछे चला गया।<sup>20</sup> बादल का खंभा भी आगे से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया, मिस और इसाएल की सेनाओं के बीच आ गया। सारी रात बादल ने एक और अंधकार और दूसरी ओर प्रकाश दिया, ताकि कोई भी पक्ष दूसरे के निकट न आ सके।<sup>21</sup> तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाया, और सारी रात यहोवा ने एक प्रबल पूर्वी हवा से समुद्र को पीछे छकेल दिया और उसे सूखी भूमि में बदल दिया।<sup>22</sup>

इसाएली सूखी भूमि पर से होकर समुद्र के बीच से गए, उनके दाँए और बाँए जल की दीवार थी।<sup>23</sup> मिसियों ने उनका पीछा किया, और फिरौन के सभी घोड़े, रथ और घुड़सवार उनके पीछे समुद्र में गए।<sup>24</sup> रात की अंतिम पहर के दौरान, यहोवा ने आग और बादल के खंभे से नीचे देखा और मिसी सेना को भ्रम में डाल दिया।<sup>25</sup> उसने उनके रथों के पहियों को जाम कर दिया जिससे उन्हें चलाने में कठिनाई हुई। और मिसियों ने कहा, "आओ इसाएलियों से दूर हो जाएँ! यहोवा उनके लिए मिस के खिलाफ लड़ रहा है।"<sup>26</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाओ ताकि जल मिसियों, उनके रथों और उनके घुड़सवारों पर लौट आए।"<sup>27</sup> इसलिए मूसा ने अपना हाथ फैलाया, और भौर होते ही समुद्र अपनी जगह पर लौट आया। मिसी उसकी ओर भाग रहे थे, और यहोवा ने उन्हें समुद्र में बहा दिया।<sup>28</sup> जल लौट आया और रथों और घुड़सवारों को ढक लिया—फिरौन की पूरी सेना। उनमें से एक भी जीवित नहीं बचा।<sup>29</sup> परन्तु इसाएली सूखी भूमि पर से होकर समुद्र के बीच से गए, उनके दाँए और बाँए जल की दीवार थी।<sup>30</sup> उस दिन यहोवा ने इसाएल को मिसियों के हाथ से बचाया, और इसाएल ने मिसियों को तट पर मृत पड़े देखा।<sup>31</sup> जब इसाएलियों ने मिसियों के खिलाफ यहोवा के शक्तिशाली हाथ को देखा, तो लोगों ने यहोवा का भय किया और उस पर और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

## 15

तब मूसा और इसाएलियों ने यह गीत यहोवा के लिए गाया:

## निर्गमन

गए।<sup>9</sup> शत्रु ने घमंड किया, ‘मैं पीछा करूँगा, मैं पकड़ लूँगा’ मैं लूट को बांटूँगा और अपनी इच्छा पूरी करूँगा; मैं अपनी तलवार खींचूँगा और अपने हाथ से उहँने नष्ट कर द्वंगा।<sup>10</sup> परंतु तूने अपनी सांस से फूँका, और समुद्र ने उहँनें ढक लिया, वे सीसे की तरह प्रबल जल में डुब गए।<sup>11</sup> है यहोवा, देवताओं में तेरे समान कौन है? तेरे समान कौन है? पवित्रता में महिमान्वित महिमा में अद्भुत चमलकार करने वाला।<sup>12</sup> तूने अपना दाहिना हाथ फैलाया, पृथ्वी ने उहँने निगल लिया।<sup>13</sup> अपनी अटल प्रेम में तू उन लोगों को ले जाएगा जिन्हें तूने छुड़ाया है, अपनी शक्ति में तू उहँने अपने पवित्र निवास तक मार्गदर्शन करेगा।<sup>14</sup> राष्ट्र सुनेंगे और काषेंगे, पलिस्थियों के लोग पीड़ा में पड़ जाएंगे।<sup>15</sup> एदम के प्रथान भयभीत हो जाएंगे; मोआब के नेता कांपेंगे, कनान के लोग धूपिल जाएंगे;<sup>16</sup> भय और डर उन पर आ पड़ेगा, तेरी भूजा की शक्ति से वे पत्थर की तरह स्त्रिर हो जाएंगे— जब तक तेरे लोग पर न कर जाएं है यहोवा, जब तक तेरे खरीदे हुए लोग पार न कर जाएं।<sup>17</sup> तू उहँने लाकर अपनी विरासत के पर्वत पर लगाएगा— वह स्थान है यहोवा, जो तूने अपने निवास के लिए बनाया है, वह पवित्रत्यान् है यहोवा, जो तेरे हाथों ने स्थापित किया है।<sup>18</sup> यहोवा सदा सर्वदा के लिए राज्य करेगा।

<sup>19</sup> जब फिरैन के घोड़े, रथ और घुड़सवार समुद्र में गए, तो यहोवा ने उन पर जल वापस ला दिया, परंतु इसाएली सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से चलकर पार हो गए।<sup>20</sup> तब मरियम भविष्यद्वक्ता, हारून की बहन, ने अपने हाथ में डफ लिया, और सभी महिलाएं उसके पीछे डफ और नृत्य के साथ चलने लगीं।<sup>21</sup> मरियम ने उनके लिए गाया:

“यहोवा के लिए गाओ, क्योंकि वह अतंत महिमान्वित है, घोड़े और उसके सवार को उसने समुद्र में फेंक दिया है”

<sup>22</sup> तब मूसा ने इसाएल को लाल समुद्र से आगे बढ़ाया और वे शूर के मरुभूमि में गए। तीन दिन तक वे मरुभूमि में चले बिना पानी पाए।<sup>23</sup> जब वे मारा पहुँचे, तो वे उसका पानी नहीं पी सके क्योंकि वह कड़वा था। (इसीलिए उस स्थान का नाम मारा पड़ा।)<sup>24</sup> इसलिए लोग मूसा के खिलाफ बड़बड़ाने लगे, “हम क्या पियेंगे?”<sup>25</sup> मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। उसने उसे पानी में फेंक दिया, और पानी पीने योग्य बन गया। वहां यहोवा ने एक नियम जारी किया और उहँने परखा।<sup>26</sup> उसने कहा,

“यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात ध्यान से सुनोगे और उसकी दृष्टि में सही काम करोगे, यदि तुम उसकी आज्ञाओं पर ध्यान दोगे और उसके सभी नियमों का पालन करोगे, तो मैं उन बीमारियों में से कोई भी तुम पर नहीं लाउंगा जो मैंने मिसियों पर लाए थे, क्योंकि मैं यहोवा हूँ जो उहँने चंगा करता हूँ।”<sup>27</sup> तब वे एलीम पहुँचे, जहां बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे, और उन्होंने वहां पानी के पास डेरा डाला।

**16** इसाएल की सारी मण्डली एलीम से चलकर सीन नामक जंगल में पहुँची, जो एलीम और सीने के बीच में है, यह मिस्स से निकलने के दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन तूआ।<sup>2</sup> वहाँ जंगल में सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध कुँडकुँडाने लगी।<sup>3</sup> इसाएलियों ने कहा, “भला होता कि हम मिस्स में यहोवा के हाथ से मर जाते। वहाँ हम मांस के हांडियों के पास बैठकर जितना खाना चाहते थे उतना खाते थे, पर तुम हमें इस जंगल में इस सारी मण्डली को भूखा मारने के लिए ले आए हो।”<sup>4</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “देखो, मैं तुम्हारे लिए आकाश से रोटी बरसाऊँगा। लोग बाहर जाकर हर दिन के लिए उतना ही इकट्ठा करें जितना उहँने चाहिए। इस प्रकार मैं उहँने परखूँगा कि वे मेरी आज्ञाओं पर चलते हैं या नहीं।<sup>5</sup> छठे दिन वे जो कुछ लाएँगे, उसे तैयार करें, और वह अन्य दिनों के मुकाबले दोगुना होगा।”<sup>6</sup> तब मूसा और हारून ने सारे इसाएलियों से कहा, “शाम को तुम जानोगे कि यहोवा ही है जिसने तुहँने मिस्स से निकाला है,<sup>7</sup> और सुबह को तुम यहोवा की महिमा देखोगे, क्योंकि उसने तुम्हारी कुँडकुँडाहट सुन ली है। हम कौन हैं, जो तुम हमारे विरुद्ध कुँडकुँडाते हो?”<sup>8</sup> मूसा ने यह भी कहा, “जब यहोवा तुहँने शाम को मांस और सुबह को जितनी रोटी चाहिए उतनी देगा, तब तुम जानोगे कि यहोवा ही है। तुम्हारी कुँडकुँडाहट हमारे विरुद्ध नहीं, बल्कि यहोवा के विरुद्ध है।”<sup>9</sup> तब मूसा ने हारून से कहा, “सारी मण्डली से कहो: यहोवा के सामने आओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।”<sup>10</sup> जब हारून मण्डली से बातें कर रहा था, तब उहँने जंगल की ओर देखा, और यहोवा की महिमा बादल में प्रकट हुई।<sup>11</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>12</sup> “मैंने इसाएलियों की कुँडकुँडाहट सुन ली है। उनसे कहो: संध्या को तुम मांस खाओगे, और सुबह को रोटी से तृप्त हो जाओगे। तब तुम जानोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”<sup>13</sup> उसी शाम को बढ़ेरे आई और शिविर को ढक लिया, और सुबह को शिविर के चारों ओर ओस की परत थी।<sup>14</sup> जब ओस सूख गई, तो जंगल की भूमि पर पतली परत जैसे पाले की तरह दिखाई दी।<sup>15</sup> जब इसाएलियों ने उसे देखा, तो वे एक-दूसरे से पूछने लगे,

## निर्गमन

“यह क्या है?” क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वह क्या था। मूसा ने कहा, “यह वही रोटी है जो यहोवा ने तुम्हें खाने के लिए दी है।”<sup>16</sup> यहोवा ने यह आज्ञा दी है: हर व्यक्ति उतना ही इकट्ठा करे जितना उसे चाहिए। अपने तंबू में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ओमेर लें।”<sup>17</sup> इसाएलियों ने वैसा ही किया; कुछ ने अधिक इकट्ठा किया, कुछ ने कम।<sup>18</sup> लेकिन जब उन्होंने उसे ओमेर से मापा, तो जिसने अधिक इकट्ठा किया था उसके पास कुछ भी बचा नहीं, और जिसने कम इकट्ठा किया था उसके पास कमी नहीं हुई। हर किसी ने उतना ही इकट्ठा किया जितना उसे चाहिए था।<sup>19</sup> तब मूसा ने उनसे कहा, “कोई भी इसे सुबह तक न रखे।”<sup>20</sup> लेकिन कुछ ने मूसा की बात नहीं मानी और उसे सुबह तक रखा। वह कीड़ों से भर गया और उसमें से बदबू आने लगी। इसलिए मूसा उनसे क्रोधित हुआ।<sup>21</sup> हर सुबह वे उतना ही इकट्ठा करते जितना उन्हें चाहिए था, और जब सूर्य गर्म होता, तो वह पिघल जाता।<sup>22</sup> छठे दिन उन्होंने दोगुना इकट्ठा किया—प्रत्येक व्यक्ति के लिए दो ओमेर—और समुदाय के नेताओं ने आकर मूसा को यह बताया।<sup>23</sup> उसने उनसे कहा, “यहोवा ने यह आज्ञा दी है: कल विश्राम का दिन है, यहोवा का पवित्र सब्ता। जो कुछ तुम पकाना चाहते हो उसे पका लो और जो कुछ उबालना चाहते हो उसे उबाल लो। जो कुछ बचा है उसे सुबह तक रखो।”<sup>24</sup> इसलिए उन्होंने उसे सुबह तक रखा, जैसा मूसा ने आज्ञा दी थी, और उसमें से बदबू नहीं आई और न ही उसमें कीड़े पड़े।<sup>25</sup> मूसा ने कहा, “आज इसे खाओ, क्योंकि आज यहोवा का सब्त है। आज के दिन तुम्हें भूमि पर मत्रा नहीं मिलेगा।”<sup>26</sup> छह दिन तक इसे इकट्ठा करो, लेकिन सातवें दिन, जो सब्त है, उसमें कुछ नहीं मिलेगा।”<sup>27</sup> किर भी, कुछ लोग सातवें दिन इसे इकट्ठा करने के लिए बाहर गए, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला।<sup>28</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम कब तक मेरी आज्ञाओं और निर्देशों का पालन करने से इनकार करोगे? ”<sup>29</sup> ध्यान दो कि यहोवा ने तुम्हें सब्त दिया है; इसलिए वह छठे दिन तुम्हें दो दिन की रोटी देता है। सातवें दिन हर कोई वहीं रहे जहाँ वह है।<sup>30</sup> इसलिए लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।<sup>31</sup> इसाएल के लोगों ने उस रोटी को मत्रा कहा। यह धनिया के बीज की तरह सफिद था और शहद के साथ बने वैफर्स की तरह स्वादिष्ट था।<sup>32</sup> मूसा ने कहा, “यहोवा ने यह आज्ञा दी है: मत्रा का एक ओमेर आने वाली पीढ़ियों के लिए रखो, ताकि वे देख सकें कि जब मैंने तुम्हें मिस्र से निकाला था तब मैंने तुम्हें जंगल में रोटी दी थी।”<sup>33</sup> इसलिए मूसा ने हारून से कहा, “एक बर्तन लो और उसमें मत्रा का एक ओमेर रखो। किर इसे यहोवा के सामने रखो ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह सुरक्षित रहे।”<sup>34</sup> जैसा यहोवा

ने मूसा को आज्ञा दी थी, हारून ने उसे बाचा की संधि की पट्टियों के साथ रखा, ताकि वह सुरक्षित रहे।<sup>35</sup> इसाएलियों ने चारीस वर्षों तक मत्रा खाया, जब तक वे बसे हुए देश में नहीं पहुँचे; उन्होंने मत्रा खाया जब तक वे कनान की सीमा तक नहीं पहुँचे।<sup>36</sup> (एक ओमेर एक एफा का दसवां हिस्सा है।)

**17** इसाएली समुदाय ने सीन के मरुभूमि से प्रस्थान किया, और वे स्थान-स्थान पर यात्रा करते रहे जैसा कि प्रभु ने निर्देश दिया था। वे रपीदीम में डेरा डाले, लेकिन वहाँ लोगों के पीने के लिए पानी नहीं था।<sup>3</sup> इसलिए उन्होंने मूसा से झगड़ा किया और कहा, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने उत्तर दिया, “तुम मझसे क्यों झगड़ते हो? तुम प्रभु की परीक्षा क्यों लेते हो?”<sup>3</sup> लेकिन लोग वहाँ पानी के लिए आपसे थे, और उन्होंने मूसा के खिलाफ शिकायत की। उन्होंने कहा, “तुम हमें मिस्र से क्यों लाए ताकि हम और हमारे बच्चे और पश्च प्यास से मर जाएं?”<sup>4</sup> तब मूसा ने प्रभु से पुकार कर कहा, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? वे मुझे पस्तर मारने के लिए लगभग तैयार हैं।”<sup>5</sup> प्रभु ने मूसा को उत्तर दिया, “लोगों के सामने जाओ। इसाएल के कुछ बुजुर्गों को अपने साथ ले लो और अपने हाथ में वह छड़ी लो जिससे तुमने नील नदी को मारा था—और जाओ।”<sup>6</sup> मैं होरेक की चट्टान के पास तुम्हरे सामने खड़ा रहूँगा। चट्टान को मारो, और उसमें से पानी निकलेगा ताकि लोग पी सकें।”<sup>7</sup> इसलिए मूसा ने इसाएल के बुजुर्गों के सामने ऐसा किया।<sup>8</sup> और उसने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीवा रखा क्योंकि इसाएलियों ने झगड़ा किया और प्रभु की परीक्षा ली, यह कहते हुए, “क्या प्रभु हमारे बीच है या नहीं?”<sup>9</sup> अमालेकी आए और रपीदीम में इसाएलियों पर हमारा किया।<sup>10</sup> मूसा ने यहोशू से कहा, “हमारे कुछ लोगों को चुनो और अमालेकीयों से लड़ने के लिए बाहर जाओ। कल मैं पहाड़ी की चोटी पर प्रभु की छड़ी के साथ खड़ा रहूँगा।”<sup>11</sup> इसलिए यहोशू ने अमालेकीयों से लड़ाई की जैसा कि मूसा ने निर्देश दिया था, और मूसा, हारून और हर पहाड़ी की चोटी पर गए।<sup>12</sup> जब तक मूसा ने अपने हाथ ऊपर रखे, इसाएली जीतते रहे, लेकिन जब भी उसने अपने हाथ नीचे किए, अमालेकी जीतते रहे।<sup>13</sup> जब मूसा के हाथ थक गए, तो उन्होंने एक पत्थर लिया और उसे उसके नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया।

हारून और हूर ने उसके हाथों को ऊपर उठाए रखा—एक-एक और—ताकि उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे।<sup>14</sup> इसलिए यहोशू ने तलवार से अमालेकी सेना को पराजित किया।<sup>15</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा, “इसे एक झक्कौल पर लिखो ताकि इसे याद रखा जाए और यहोशू को सुनाओ, क्योंकि मैं अमालेक का नाम आकाश के

## निर्गमन

नीचे से पूरी तरह मिटा दूंगा।"<sup>15</sup> मूसा ने एक बेदी बनाई और उसका नाम रखा, "प्रभु मेरा धज है।"<sup>16</sup> उसने कहा, "क्योंकि हाथ प्रभु के सिंहासन के खिलाफ उठाए गए थे, प्रभु अमालेकियों के खिलाफ पीढ़ी दर पीढ़ी युद्ध में रहेंगे।"

**18** अब मिद्यान के याजक और मूसा के सासुर, यित्रो ने उन सब बातों के बारे में सुना जो परमेश्वर ने मूसा और उसकी प्रजा इसाएल के लिए की थीं—कैसे यहोवा ने इसाएल को मिस्र से बाहर निकाला था।<sup>2</sup> जब मूसा ने अपनी पत्नी सिप्पोरा को भेज दिया था, तब उसके सासुर यित्रो ने उसे ग्रहण किया,<sup>3</sup> और उसके दो पुत्रों को भी। एक का नाम गेरेशम था, क्योंकि मूसा ने कहा था, "मैं परदेश में परदेशी हो गया हूँ।"<sup>4</sup> और दूसरे का नाम एलीएज़र था, क्योंकि उसने कहा था, "मेरे पिता का परमेश्वर मेरा साहायक था; उसने मुझे फिरौन की तलवार से बचाया।"<sup>5</sup> यित्रो, मूसा का सासुर, परमेश्वर के पर्वत के निकट जंगल में जहाँ वह डेरा डाले हुए था, वहाँ उसके पास आया।<sup>6</sup> उसने मूसा के पास संदेश भेजा, "मैं, तुम्हारा ससुर यित्रो, तुम्हारे पास तुम्हारी पत्नी और उसके दो पुत्रों के साथ आ रहा हूँ।"<sup>7</sup> तब मूसा अपने सासुर से मिलने बाहर गया, झुक्कर क्षणांत्र किया और उसे चूमा। उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया और तंतु में गए।<sup>8</sup> मूसा ने अपने सासुर को सब कुछ बताया जो यहोवा ने फिरौन और मिसियों के लिए इसाएल के खातिर किया था, और उन सब कठिनाइयों के बारे में जो उन्होंने यात्रा में ज्ञेत्री थीं और कैसे यहोवा ने उन्हें छुड़ाया।<sup>9</sup> यित्रो यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ कि यहोवा ने इसाएल के लिए कितनी अच्छी बातें कीं, उन्हें मिसियों के हाथ से छुड़ाया।<sup>10</sup> उसने कहा, "यहोवा की स्तुति हो, जिसने तुम्हें मिसियों और फिरौन के हाथ से छुड़ाया, और जिसने लोगों को मिसियों के हाथ से छुड़ाया।"<sup>11</sup> अब मैं जानता हूँ कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है, क्योंकि उसने यह उन पर किया जिन्होंने इसाएल के साथ अहंकार किया था।<sup>12</sup> तब यित्रो, मूसा के सासुर, ने परमेश्वर के लिए होमबलि और अन्य बलिदान चढ़ाए, और हारून सभी इसाएल के पुरानियों के साथ मूसा के सासुर के साथ परमेश्वर के सामने भोजन करने आए।<sup>13</sup> अगले दिन मूसा लोगों के लिए न्याय करने बैठा, और वे सुबह से शाम तक उसके चारों ओर खड़े रहे।<sup>14</sup> जब उसके सासुर ने देखा कि मूसा लोगों के लिए क्या कर रहा है, तो उसने कहा, "वह तुम क्या कर रहे हो? तुम अकेले न्यायाधीश के रूप में क्यों बैठते हो जबकि सभी लोग सुबह से शाम तक तुम्हारे चारों ओर खड़े रहते हैं?"<sup>15</sup> मूसा ने उसे उत्तर दिया, "क्योंकि लोग परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए मेरे पास आते हैं।"<sup>16</sup> जब भी उनके

बीच कोई विवाद होता है, तो वह मेरे पास लाया जाता है, और मैं पक्षों के बीच निर्णय करता हूँ और उन्हें परमेश्वर के आदेश और कानून बताता हूँ।"<sup>17</sup> मूसा के सासुर ने उत्तर दिया, "जो तुम कर रहे हो वह अच्छा नहीं है।"<sup>18</sup> तुम और ये लोग जो तुम्हारे पास आते हैं, केवल खुद को थका रहे हो। यह काम बहुत भारी है; तुम इसे अकेले नहीं संभाल सकते।<sup>19</sup> अब मेरी बात सुनो और मैं तुम्हें कुछ सलाह दूंगा, और परमेश्वर तुम्हारे साथ हो। तुम्हें लोगों के प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के सामने रहना चाहिए और उनके विवादों को उसके पास लाना चाहिए।<sup>20</sup> उन्हें उसके आदेश और निर्देश सिखाओ, और उन्हें दिखाओ कि उन्हें कैसे जीना है और कैसे व्यवहार करना है।<sup>21</sup> लेकिन सभी लोगों में से सक्षम पुरुषों का चयन करो—जो परमेश्वर का भय मानते हैं, विश्वासीय पुरुष जो बैर्मान लाभ से नफरत करते हैं—और उन्हें हजारों, सैकड़ों, पचासों और दसों के ऊपर अधिकारियों के रूप में नियुक्त करो।<sup>22</sup> उन्हें सभी समय लोगों के लिए न्यायाधीश के रूप में सेवा करने दो, लेकिन हर कठिन मामले को तुम्हारे पास लाने दो; सरल मामलों का वे खुद निर्णय कर सकते हैं। इससे तुम्हारा बोझ हल्का होगा, क्योंकि वे इसे तुम्हारे साथ साझा करेंगे।<sup>23</sup> यदि तुम ऐसा करते हो और परमेश्वर ऐसा आदेश देता है, तो तुम इस बोझ को सहन कर सकोगे, और ये सभी लोग संतुष्ट होकर अपने घर लौटेंगे।"<sup>24</sup> मूसा ने अपने सासुर की बात सुनी और उसने सब कुछ किया जो उसने कहा था।<sup>25</sup> उसने सभी इसाएल में से सक्षम पुरुषों को चुना और उन्हें लोगों के ऊपर नेताओं के रूप में नियुक्त किया, हजारों, सैकड़ों, पचासों और दसों के ऊपर अधिकारियों के रूप में।<sup>26</sup> उन्होंने सभी समय लोगों के लिए न्यायाधीश के रूप में सेवा की। कठिन मामलों को वे मूसा के पास लाते थे, लेकिन सरल मामलों का वे खुद निर्णय करते थे।<sup>27</sup> तब मूसा ने अपने सासुर को विदा किया, और यित्रो अपने देश लौट गया।

**19** इसाएलियों के मिस्र से निकलने के तीसरे महीने के पहले दिन, वे सीनै के रेगिस्तान में आए।<sup>2</sup> रेफिदीम से चलने के बाद, वे सीनै के रेगिस्तान में प्रवेश किए, और इसाएल वहाँ पर्वत के सामने डेरा डाले।<sup>3</sup> तब मूसा परमेश्वर के पास ऊपर गया, और यहोवा ने उसे पर्वत से बुलाकर कहा, "यह वही है जो तुम याकूब के बंशजों से कहोगे और इसाएल के लोगों को बताओगे: <sup>4</sup> तुमने स्वयं देखा कि मैंने मिस्र के साथ क्या किया, और कैसे मैंने तुम्हें उकाब के पंखों पर उठाकर अपने पास लाया।<sup>5</sup> अब यदि तुम सचमुच मेरी वाणी सुनोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो तुम सब राष्ट्रों में से मेरे लिए विशेष धन्य होगे—क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी है।<sup>6</sup> तुम मेरे लिए

## निर्गमन

याजकों का राज्य और पवित्र राष्ट्र बनोगे।”<sup>9</sup> ये वही शब्द हैं जो तुम इसाएलियों से कहोगे।”<sup>10</sup> इसलिए मूसा वापस गया और लोगों के प्राचीनों को बुलाकर उनके सामने वे सभी शब्द रखे जो यहोवा ने उसे कहने के लिए आदेश दिए थे।<sup>11</sup> सभी लोगों ने एक साथ उत्तर दिया, “हम वह सब करेंगे जो यहोवा ने कहा है।” इसलिए मूसा ने

उनका उत्तर यहोवा के पास वापस ले गया।<sup>12</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं एक घने बादल में तुम्हारे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुम्हारे साथ बोलते हुए सुन सकें और सदा तुम पर विश्वास रखें।” तब मूसा ने यहोवा को बताया कि लोगों ने क्या कहा था।<sup>13</sup> और यहोवा ने मूसा से कहा, “लोगों के पास जाओ और आज और कल उन्हें पवित्र करो। उन्हें अपने वस्त्र धोने चाहिए।<sup>14</sup> और तीसरे दिन के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि उस दिन यहोवा सीनै पर्वत पर सभी लोगों के सामने उत्तरेगा।<sup>15</sup> पर्वत के चारों ओर सीमा निर्धारित करो और लोगों से कहो: ‘सावधान रहो कि पर्वत के पास न आओ या उसके आधार को न छुओ। जो कोई पर्वत को छूता है उसे मार डाला जाएगा।<sup>16</sup> उन्हें पत्थरों से मारा जाएगा या तीरों से मारा जाएगा; उन पर हाथ नहीं लगाया जाएगा। कोई व्यक्ति या पशु जीवित नहीं रहेगा।’ केवल जब मेंढे का सींग लंबी ध्वनि करेरा, तब वे पर्वत पर चढ़ सकते हैं।”<sup>17</sup> मूसा पर्वत से नीचे लोगों के पास गया, उसने उन्हें पवित्र किया, और उन्होंने अपने वस्त्र धोए।<sup>18</sup> तब उसने लोगों से कहा, “तीसरे दिन के लिए तैयार रहो। यौन संबंधों से दूर रहो।”<sup>19</sup> तीसरे दिन की सुबह बिजली और गरज के साथ, पर्वत पर एक घने बादल के साथ, और एक जोरदार तुरही की ध्वनि के साथ थी। शिविर में हर कोई कांप उठा।<sup>20</sup> तब मूसा लोगों को शिविर से बाहर परमेश्वर से मिलने के लिए ले गया, और वे पर्वत के नीचे खड़े हो गए।<sup>21</sup> सीनै पर्वत धूंध से ढका हुआ था, क्योंकि यहोवा उस पर आग में उतरा था। धूंध भट्टी के धूंध से तरह उठ रहा था, और पूरा पर्वत जौर से कांप रहा था।<sup>22</sup> जैसे-जैसे तुरही की ध्वनि और तेज होती गई, मूसा ने बोला और परमेश्वर की आवाज ने उसे उत्तर दिया।<sup>23</sup> यहोवा सीनै पर्वत के शिखर पर उतरा और मूसा को पर्वत के शिखर पर बुलाया। इसलिए मूसा ऊपर गया।<sup>24</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “नीचे जाओ और लोगों को चेतावनी दो कि वे यहोवा को देखने के लिए जबरदस्ती न करें, नहीं तो उनमें से कई मर जाएंगे।<sup>25</sup> यहाँ तक कि जो याजक यहोवा के पास आते हैं, उन्हें भी अपने आप को पवित्र करना चाहिए, नहीं तो यहोवा उनके विरुद्ध प्रकट होगा।”<sup>26</sup> मूसा ने यहोवा से कहा, “लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते, क्योंकि आपने स्वयं हमें चेतावनी दी थी: ‘पर्वत के चारों ओर सीमा निर्धारित करो और इसे पवित्र ठहराओ।’”<sup>27</sup> यहोवा ने उत्तर दिया,

“नीचे जाओ और हारून को अपने साथ लाओ। लेकिन याजकों और लोगों को जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए या यहोवा के पास नहीं आना चाहिए, नहीं तो वह उनके विरुद्ध प्रकट होगा।”<sup>28</sup> इसलिए मूसा लोगों के पास गया और उन्हें बताया।

**20** तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे:<sup>29</sup> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे मिस्र देश से, दासत्व के घर से निकाल लाया।<sup>30</sup> तू मेरे सामने किसी और देवता को न मानना।<sup>31</sup> तू अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना, न तो ऊपर आकाश में जो कुछ है, न नीचे पृथ्वी पर जो कुछ है, और न नीचे जल में जो कुछ है।<sup>32</sup> तू उनके आगे दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, एक जलनशील ईश्वर हूँ, जो मुझसे बैर रखनेवालों के पाप का दण्ड उनके बच्चों को, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देता हूँ,<sup>33</sup> और जो मुझसे प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन पर हजारों पीढ़ियों तक दया करता हूँ।<sup>34</sup> तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो उसके नाम का दुरुपयोग करता है, उसे यहोवा निर्दोष नहीं ठहराएगा।<sup>35</sup> विश्राम दिन को स्मरण रखना, कि उसे पवित्र मानना।<sup>36</sup> छः दिन तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना,<sup>37</sup> परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा का विश्राम दिन है; उस दिन तू कोई काम न करना, न तू न तेरा पुत्र, न तेरी पुत्री, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, और न तेरे नगर में रहनेवाला परदेशी।<sup>38</sup> क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र, और जो कुछ उनमें है, वह सब बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीर्वाद दिया और उसे पवित्र ठहराया।<sup>39</sup> तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे तेरे दिन उस देश में बढ़ें, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है।<sup>40</sup> तू हृष्या न करना।<sup>41</sup> तू व्यभिचार न करना।<sup>42</sup> तू चोरी न करना।<sup>43</sup> तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।<sup>44</sup> तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने पड़ोसी की पत्नी, या उसके दास, या उसकी दासी, या उसके बैल, या उसके गद्दे, या उसके किसी भी वस्तु का लालच न करना।<sup>45</sup> जब सब लोगों ने गर्जन और बिजलियाँ देखीं, और तुरही की ध्वनि सुनी, और पर्वत को धूंधाँधार देखा, तब वे डर गए और दूर खड़े हो गए।<sup>46</sup> और मूसा से कहा, “तू ही हमसे बोल, और हम सुनेंगे; परन्तु परमेश्वर हमसे न बोले, नहीं तो हम मर जाएँगे।”<sup>47</sup> मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत; क्योंकि परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा लेने आया है, ताकि उसका भय तुम्हारे सामने रहे और तुम पाप न करो।”<sup>48</sup> लोग दूर खड़े रहे, और मूसा उस घने अंधकार के पास

## निर्गमन

गया जहाँ परमेश्वर था।<sup>22</sup> तब यहोता ने मूसा से कहा, “इसाएलियों से कह, तुमने देखा है कि मैंने स्वर्ग से तुमसे बातें की हैं।<sup>23</sup> तुम मेरे साथ कोई देवता न बनाना; न तो चाँदी के देवता बनाना, न सोने के देवता।<sup>24</sup> मेरे लिए मिट्टी की वेदी बनाना और उस पर अपनी होमबलि और मेलबलि, अपनी भेड़-बकरियाँ और अपने गाय-बैल ढाना। जहाँ कहीं मैं अपने नाम का स्मरण कराऊँगा, वहाँ मैं तेरे पास आकर तुझे आशीर्वद दूँगा।<sup>25</sup> यदि तू मेरे लिए पत्तरों की वेदी बनाए, तो उसे तराशे हुए पत्तरों की न बनाना; क्योंकि यदि तू उस पर औजार चलाएगा, तो वह अपवित्र हो जाएगी।<sup>26</sup> और मेरी वेदी पर सीढ़ियों से न चढ़ना, नहीं तो तेरी नम्रता उस पर प्रकट हो जाएगी।”

**21** ये वे विधियाँ हैं जिन्हें तुम्हें इसाएलियों के सामने रखना हैः<sup>2</sup> यदि तुम एक हिन्दू दास खरीदते हो, तो वह तुम्हारी सेवा छाड़ वर्ष तक करेगा। परंतु सातों वर्ष में, वह बिना कुछ चुकाए स्वतंत्र हो जाएगा।<sup>3</sup> यदि वह अकेला आया हो, तो वह अकेला ही स्वतंत्र होगा; परंतु यदि उसकी पत्नी उसके साथ आई हो, तो वह भी उसके साथ जाएगी।<sup>4</sup> यदि उसका स्वामी उसे एक पत्नी देता है और वह उससे पुत्र या पुत्रियाँ उत्पन्न करती है, तो वह पत्नी और उसके बच्चे स्वामी के होंगे, और केवल वह व्यक्ति स्वतंत्र होगा।<sup>5</sup> परंतु यदि दास यह कहता है, मैं अपने स्वामी, अपनी पत्नी और बच्चों से प्रेम करता हूँ और स्वतंत्र नहीं होना चाहता;<sup>6</sup> तो उसका स्वामी उसे न्यायालीशों के सामने ले जाएगा। वह उसे दरवाजे या चौखट के पास ले जाकर उसकी कान में छेद करेगा। तब वह जीवनभर उसका दास रहेगा।<sup>7</sup> यदि कोई व्यक्ति अपनी बेटी को दासी के रूप में बेचता है, तो वह पुरुष दासों की तरह स्वतंत्र नहीं होगी।<sup>8</sup> यदि वह उस स्वामी की प्रसन्न नहीं करती जिसने उसे अपने लिए चुना है, तो उसे उसे छुड़ाने की अनुमति देनी होगी। उसे विदेशी लोगों को बेचने का अधिकार नहीं है, क्योंकि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है।<sup>9</sup> यदि वह उसे अपने पुत्र के लिए चुनता है, तो उसे उसे बेटी के अधिकार देने होंगे।<sup>10</sup> यदि वह दूसरी स्त्री से विवाह करता है, तो उसे पहली को उसके भोजन, वस्त्र और वैवाहिक अधिकारों से वंचित नहीं करना चाहिए।<sup>11</sup> यदि वह उसे ये तीन चीजें नहीं देता, तो वह बिना कुछ चुकाए स्वतंत्र हो जाएगी।<sup>12</sup> जो कोई किसी व्यक्ति को मारता है और उसे मार डालता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>13</sup> हालांकि, यदि यह जानवृक्षर नहीं था बल्कि ईश्वर की इच्छा से हुआ, तो मैं एक स्थान निर्धारित करूँगा जहाँ हत्यारा भाग सकता है।<sup>14</sup> परंतु यदि कोई व्यक्ति को जानवृक्षकर योजना बनाकर किसी अन्य व्यक्ति को जानवृक्षकर

मारता है, तो तुम उस व्यक्ति को मेरे वेदी से भी ले जाकर मृत्यु दंड दोगे।<sup>15</sup> जो कोई अपने पिता या माता पर हमला करता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>16</sup> जो कोई किसी को अगवा करता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा, चारे पीड़ित को बेचा गया हो या वह अभी भी अपहरणकर्ता के कब्जे में हो।<sup>17</sup> जो कोई अपने पिता या माता को शाप देता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>18</sup> यदि लोग झगड़ते हैं और एक व्यक्ति दूसरे को पथर या मुट्ठी से मारता है और पीड़ित नहीं मरता लेकिन बिस्तर पर पड़ा रहता है,<sup>19</sup> तो जिसने चोट मारी है, उसे दोषी नहीं ठहराया जाएगा यदि दूसरा व्यक्ति उठकर लाठी के सहरे चल सकता है। हालांकि, उसे समय की हानि के लिए भुगतान करना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि पीड़ित पूरी तरह से ठीक हो जाए।<sup>20</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पुरुष या महिला दास को छड़ी से मारता है और दास की मृत्यु हो जाती है, तो उसे दंडित किया जाएगा।<sup>21</sup> परंतु यदि दास एक या दो दिन बाद ठीक हो जाता है, तो उस व्यक्ति को दंडित नहीं किया जाएगा, क्योंकि दास उसकी संपत्ति है।<sup>22</sup> यदि लोग लड़ते हैं और एक गर्भवती स्त्री को मारते हैं और वह समय से पहले जन्म देती है, लेकिन कोई गंभीर चोट नहीं होती, तो अपराधी को वह जुर्माना देना होगा जो स्त्री का पाति मांगता है और अदालत अनुमति देती है।<sup>23</sup> परंतु यदि गंभीर चोट होती है, तो जीवन के बदले जीवन लेना होगा,<sup>24</sup> औंख के बदले औंख, दांत के बदले दांत, हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर,<sup>25</sup> जलने के बदले जलना, घाव के बदले घाव, चोट के बदले चोट।<sup>26</sup> यदि कोई व्यक्ति दास की औंख पर मारता है और उसे नष्ट कर देता है, तो उसे दास की औंख के बदले स्वतंत्र करना होगा।<sup>27</sup> और यदि वह दास का दांत तोड़ देता है, तो उसे दास का दांत के बदले स्वतंत्र करना होगा।<sup>28</sup> यदि कोई बैल किसी पुरुष या महिला को मार डालता है, तो बैल को पथर से मारकर मार डालना चाहिए। परंतु मालिक को दोषी नहीं ठहराया जाएगा।<sup>29</sup> हालांकि, यदि बैल को आक्रामक होने के लिए जाना जाता था और मालिक को चेतावनी यी गई थी लेकिन उसने उसे नियंत्रित नहीं किया और वह किसी को मार डालता है, तो बैल को पथर से मारना चाहिए और मालिक को भी मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>30</sup> यदि भुगतान की मांग की जाती है, तो मालिक अपनी जान बचाने के लिए जो भी मांग जाता है, उसे चुकाकर अपनी जान छुड़ा सकता है।<sup>31</sup> यह नियम तब भी लागू होता है यदि बैल किसी पुत्र या पुत्री को मारता है।<sup>32</sup> यदि बैल किसी पुरुष या महिला दास को मारता है, तो मालिक को दास के स्वामी को तीस शेकेल चाँदी का भुगतान करना होगा, और बैल को पथर से

## निर्गमन

मारना होगा। <sup>33</sup> यदि कोई व्यक्ति गङ्गा खोलता है या खोदता है और उसे ढकता नहीं है और कोई जानवर उसमें गिर जाता है, <sup>34</sup> तो जिसने गङ्गा खोला है, उसे नुकसान का भुगतान करना होगा और मृत जानवर का स्वामित्व लेना होगा। <sup>35</sup> यदि एक व्यक्ति का बैल दूसरे के बैल को घायल कर देता है जिससे वह मर जाता है, तो उन्हें जीवित बैल को बेचकर पैसे और मृत जानवर को बांटना होगा। <sup>36</sup> परंतु यदि यह जात था कि बैल को मारने की आदत थी, फिर भी मालिक ने उसे नियन्त्रित नहीं किया, तो मालिक को जानवर के बदले जानवर का भुगतान करना होगा, और मृत जानवर उसका हो जाएगा।

**22** यदि कोई व्यक्ति बैल या भेड़ चुराता है और उसे मार डालता है या बेच देता है, तो उसे बैल के लिए पाँच बैल और भेड़ के लिए चार भेड़ चुकानी होंगी। <sup>2</sup> यदि चोर को चोरी करते समय पकड़ा जाता है और उसे मार दिया जाता है, तो उसके लिए कोई रक्तपात का दोष नहीं होगा। <sup>3</sup> लेकिन यदि सूरज उस पर उग आया है, तो रक्तपात का दोष होगा; उसे अवश्य ही प्रतिपूर्ति करनी होगी। यदि उसके पास कुछ नहीं है, तो उसे उसकी चोरी के लिए बेचा जाएगा। <sup>4</sup> यदि जो उसने चुराया है वह वास्तव में उसके पास जीवित पाया जाता है, चाहे वह बैल हो या गधा या भेड़, तो उसे दोगुना चुकाना होगा। <sup>5</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने खेत या अंगूर के बगीचे को चरने देता है और अपने पशु को छोड़ देता है ताकि वह दूसरे व्यक्ति के खेत में चर सके, तो उसे अपने खेत और अपने अंगूर के बगीचे के सर्वश्रेष्ठ से प्रतिपूर्ति करनी होगी। <sup>6</sup> यदि आग लग जाती है और कांटेदार झाड़ियों तक फैल जाती है ताकि ढेर किया हुआ अनाज या खड़ा अनाज या स्वयं खेत जल जाए, तो जिसने आग लगाई है उसे अवश्य ही प्रतिपूर्ति करनी होगी। <sup>7</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को पैसे या सामान रखने के लिए देता है और वह व्यक्ति के घर से चोरी हो जाता है, तो उसे दोगुना चुकाना होगा। <sup>8</sup> यदि चोर पकड़ा नहीं जाता है, तो घर का मालिक न्यायाधीशों के सामने उपस्थित होगा ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि उसने अपने पड़ोसी की संपत्ति पर हाथ डाला है या नहीं। <sup>9</sup> हर विश्वासघात के लिए, चाहे वह बैल, गधा, भेड़, कपड़े, या किसी खोई हुई वस्तु के लिए ही जिसके बारे में कोई कहता है, "यह वही है," दोनों पक्षों का मामला न्यायाधीशों के सामने आएगा। जिसे न्यायाधीश दोषी ठहराएं, उसे अपने पड़ोसी को दोगुना चुकाना होगा। <sup>10</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को गधा, बैल, भेड़, या कोई भी जानवर रखने के लिए देता है और वह मर

जाता है या घायल हो जाता है या भगा दिया जाता है जबकि कोई नहीं देख रहा है, <sup>11</sup> उन दोनों के बीच प्रभु के सामने शपथ ली जाएगी कि उसने अपने पड़ोसी की संपत्ति पर हाथ नहीं डाला है; और उसका मालिक इसे स्वीकार करेगा, और उसे प्रतिपूर्ति नहीं करनी होगी। <sup>12</sup> लेकिन यदि वास्तव में उससे चोरी हो जाता है, तो उसे उसके मालिक को प्रतिपूर्ति करनी होगी। <sup>13</sup> यदि वह टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है, तो उसे इसे प्रमाण के रूप में लाना चाहिए; उसे टुकड़े-टुकड़े किए गए के लिए प्रतिपूर्ति नहीं करनी होगी। <sup>14</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से कुछ उधार लेता है, और वह घायल हो जाता है या मर जाता है जबकि उसका मालिक उसके साथ नहीं है, तो उसे पूरी प्रतिपूर्ति करनी होगी। <sup>15</sup> यदि उसके मालिक उसके साथ है, तो उसे प्रतिपूर्ति नहीं करनी होगी; यदि वह किराए पर लिया गया था, तो वह उसके किराए के लिए आया था। <sup>16</sup> यदि कोई व्यक्ति एक कुंवारी को बहकाता है जो मंगनी नहीं की गई है और उसके साथ सोता है, तो उसे उसके लिए विवाह मूल्य चुकाना होगा ताकि वह उसकी पत्नी बन सके। <sup>17</sup> यदि उसका पिता उसे देने से पूरी तरह से इनकार करता है, तो उसे कुवारियों के विवाह मूल्य के बराबर धन चुकाना होगा। <sup>18</sup> तुम एक जादूगरनी को जीवित नहीं रहने दोगे। <sup>19</sup> जो कोई जानवर के साथ सोता है, उसे अवश्य ही मृत्यु दंड दिया जाएगा। <sup>20</sup> जो कोई किसी देवता को बलिदान करता है, प्रभु के अलावा, उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा। <sup>21</sup> तुम किसी अजनबी पर अत्याचार या अन्याय नहीं करोगे, क्योंकि तुम मिस्र देश में अजनबी थे। <sup>22</sup> तुम किसी विधवा या अनाथ पर अत्याचार नहीं करोगे। <sup>23</sup> यदि तुम उन पर अत्याचार करते हो, और वे मुझसे चिल्लाते हैं, तो मैं अवश्य ही उनकी पुकार सुनूना; <sup>24</sup> और मेरा क्रोध भड़क उठेगा, और मैं तुम्हें तलवार से मार डालूगा, और तुम्हारी पतियाँ विधवा हो जाएँगी और तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएँगे। <sup>25</sup> यदि तुम मेरे लोगों को, तुम्हारे बीच के गरीबों को, पैसा उधार देते हो, तो तुम उसके प्रति ऋणदाता की तरह व्यवहार नहीं करोगे; तुम उससे व्याज नहीं लोगे। <sup>26</sup> यदि तुम कभी अपने पड़ोसी की चादर को गिरवी रखते हो, तो तुम उसे सूर्यास्त से पहले उसे लौटा दोगे, <sup>27</sup> क्योंकि वह उसकी एकमात्र आवरण है; यह उसके शरीर के लिए उसकी चादर है। वह और किसमें सोएगा? और जब वह मुझसे चिल्लापागा, तो मैं उसे सुनूना, क्योंकि मैं दयातु हूँ <sup>28</sup> तुम ईश्वर को शाप नहीं दोगे, न ही अपने लोगों के शासक को शाप दोगे। <sup>29</sup> तुम अपनी फसल और अपनी पुरानी फसल से भेंट देने में देरी नहीं करोगे। तुम्हारे पुत्रों के पहलोंठे को तुम मुझे दोगे। <sup>30</sup> तुम अपने बैलों और अपनी भेड़ों के साथ भी

## निर्गमन

ऐसा ही करोगे; वह अपनी माँ के साथ सात दिन रहेगा, और आठवें दिन तुम उसे मुझे दोगे।<sup>31</sup> तुम मेरे लिए पवित्र लोग होगे; इसलिए तुम मैदान में जानवरों द्वारा फाड़े गए मांस को नहीं खाओगे; तुम उसे कुत्तों को फेंक दोगे।

**23** झूठी रिपोर्ट मत फैलाओ। दोषी व्यक्ति की सहायता मत करो एक दुर्भवनापूर्ण गवाह बनकर।<sup>2</sup> भीड़ का अनुसरण करके गलत काम मत करो। जब तुम मुकदमे में गवाही देते हों, तो बहुमत के पक्ष में जाकर न्याय को विकृत मत करो।<sup>3</sup> और मुकदमे में गरीब व्यक्ति के प्रति पक्षपात मत दिखाओ।<sup>4</sup> यदि तुम अपने शत्रु के बैल या गधे को भटकते हुए देखो, तो उसे अवश्य लौटाओ।<sup>5</sup> यदि तुम उस व्यक्ति के गधे को देखो जो तुमसे घुणा करता है, जो अपने बोज़क के नीचे गिरा हुआ है, तो उसे अनदेखा मत करो; पशु की सहायता करो।<sup>6</sup> मुकदमों में गरीबों को न्याय से वंचित मत करो।<sup>7</sup> झूठे आरोप से कुछ लेना-देना मत रखो और निर्दोष व्यक्ति को मृत्यु के घाट मत उतारो, क्योंकि मैं दोषियों को निर्दोष नहीं ठहराऊँगा।<sup>8</sup> घूस मत लो, क्योंकि घूस देखने वालों की अँखें बंद कर देती हैं और निर्दोष के शब्दों को मरोड़ देती हैं।<sup>9</sup> परदेशी पर अत्याचार मत करो; तुम स्वयं जानते हो कि परदेशी होना कैसा लगता है, क्योंकि तुम मिस्स में परदेशी थे।<sup>10</sup> छह वर्षों तक तुम अपने खेतों में बीज बोओं और उनकी उपज इकट्ठा करो,<sup>11</sup> परंतु सातवें वर्ष में भूमि को बिना जोते और बिना उपयोग किए छोड़ दो। तब तुम्हारे लोगों में से गरीब लोग उससे भीजन प्राप्त कर सकते हैं, और जंगली जानवर जो बचा है उसे खा सकते हैं। अपने अंगूर के बागों और जैतून के बागों के साथ भी ऐसा ही करो।<sup>12</sup> छह दिन अपना काम करो, परंतु सातवें दिन काम मत करो, ताकि तुम्हारे बैल और गधे विश्राम कर सकें, और तुम्हारे सेवक का बच्चा और परदेशी ताज़गी पा सकें।<sup>13</sup> जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे करने में सावधान रहो। अन्य देवताओं के नाम का उच्चारण मत करो; उन्हें अपने होंठों पर मत अने दो।<sup>14</sup> वर्ष में तीन बार मेरे लिए एक वर्ष मनाओ।<sup>15</sup> खमीर रहित रोटी का पर्व मनाओ; सात दिनों तक बिना खमीर की रोटी खाओ, जैसा मैंने तुम्हें आज्ञा दी है। यह अवीव महीने में निर्धारित समय पर करो, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्स से निकले थे। कोई भी मेरे सामने खाली हाथ न आए।<sup>16</sup> फसल के पहले फल के साथ फसल का पर्व मनाओ, जो तुम अपने खेत में बोते हो। वर्ष के अंत में जब तुम अपने खेत से फसल इकट्ठा करते हों, तो संग्रहीत करने का पर्व मनाओ।<sup>17</sup> वर्ष में तीन बार तुम्हारे सभी पुरुष प्रभु परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।<sup>18</sup> मेरे लिए बलिदान

के रक्त को खमीर वाली किसी भी चीज़ के साथ मत चढ़ाओं, और मेरे पर्व के बलिदानों की चर्ची को सुबह तक मत रहने दो।<sup>19</sup> अपनी भूमि के पहले फलों का सर्वश्रेष्ठ भाग अपने परमेश्वर यहोवा के घर में लाओ। एक बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत पकाओ।<sup>20</sup> मैं तुम्हारे आगे एक स्वर्गद्वार भेज रहा हूँ जो तुम्हें रास्ते में सुरक्षित रखेगा और तुम्हें उस स्थान पर ले जाएगा जिसे मैंने तैयार किया है।<sup>21</sup> उस पर ध्यान दो और जो वह कहता है उसे सुनो। उसके खिलाफ विद्रोह मत करो; वह तुम्हारे विद्रोह को क्षमा नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें है।<sup>22</sup> यदि तुम ध्यानपूर्वक उसकी बात सुनते हो और जो कुछ मैं कहता हूँ उसे करते हो, तो मैं तुम्हारे शत्रुओं का शत्रु बन जाऊँगा और जो तुम्हारा विरोध करते हैं उनके विरोध करूँगा।<sup>23</sup> मेरा स्वर्गद्वार तुम्हारे आगे जाएगा और तुम्हें एमोरी, हिती, परिज्जी, कनानी, हिल्वी और यबूसी के देशों में ले जाएगा, और मैं उहाँसे कर दूँगा।<sup>24</sup> उनके देवताओं के सामने मत ज्ञाको, न उनकी पूजा करो, न उनके रीति-रिवाजों का अनुसरण करो। तुम्हें उहाँसे नष्ट करना होगा और उनके पवित्र परस्तों को टुकड़े-टुकड़े करना होगा।<sup>25</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और उसकी आशीष तुम्हारे भोजन और पानी पर होगी। मैं तुम्हारे बीच से बीमारी को दूर कर दूँगा,<sup>26</sup> और तुम्हारे देश में कोई गर्भापत नहीं करेगा और न ही बौज़ होगा। मैं तुम्हें पूर्ण आयु दूँगा।<sup>27</sup> मैं तुम्हारे आगे अपना आतंक भेजूँगा और हर उस राष्ट्र को भ्रमित कर दूँगा जिसका तुम सामना करोगे। मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं को पीठ दिखाकर भगाने पर मजबूर कर दूँगा।<sup>28</sup> मैं तुम्हारे आगे तैया भेजूँगा जो हिल्वी, कनानी और हितियों को तुम्हारे सामने से भगा देंगे।<sup>29</sup> परंतु मैं उन्हें एक ही वर्ष में नहीं भगाऊँगा, क्योंकि भूमि उजाड़ हो जाएगी और जंगली जानवर तुम्हारे लिए बहुत अधिक हो जाएंगे।<sup>30</sup> थोड़ा-थोड़ा करके मैं उन्हें तुम्हारे सामने से भगाऊँगा, जब तक कि तुम बढ़ न जाओ और भूमि का अधिकार न कर लो।<sup>31</sup> मैं तुम्हारी सीमाएँ लाल सागर से लेकर भूमध्य सागर तक, और रेगिस्तान से लेकर यूकेट्सन नदी तक स्थापित करूँगा। मैं उस भूमि में रहने वाले लोगों को तुम्हारे हाथों में ढूँगा, और तुम उन्हें भगा दोगे।<sup>32</sup> उनके साथ या उनके देवताओं के साथ कोई वाचा मत करो।<sup>33</sup> उन्हें तुम्हारी भूमि में नहीं रहना चाहिए, अन्यथा वे तुम्हें मेरे खिलाफ पाप करने के लिए प्रेरित करेंगे, क्योंकि उनके देवताओं की पूजा निश्चित रूप से तुम्हारे लिए एक फंदा होगी।

**24** तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तू और हारून, नादाब और अबीहू, और इसाएल के सत्तर प्राचीन मेरे पास आओ। तुम दूर से ही आराधना करना।<sup>2</sup> परन्तु

## निर्गमन

मूसा अकेला ही यहोवा के पास आए; और अन्य लोग पास न आएं। और लोग उसके साथ ऊपर न आएं।<sup>3</sup> जब मूसा ने जाकर लोगों को यहोवा के सब वचन और विधियाँ बताईं, तो उन्होंने एक स्वर में उत्तर दिया, "जो कुछ यहोवा ने कहा है, हम उसे करेंगे।"<sup>4</sup> तब मूसा ने यहोवा के सब वचनों को लिख लिया। उसने आगे दिन सुबह जल्ती उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी बनाई, और इसाएल के बारह गोत्रों के प्रतिनिधित्व में बारह पत्थर के खंभे खड़े किए।<sup>5</sup> तब उसने युवा इसाएली पुरुषों को भेजा, और उन्होंने होमबलि चढ़ाई और यहोवा के लिए मेलबलि के रूप में युवा बैल बलिदान किए।<sup>6</sup> मूसा ने रक्त का आधा भाग लिया और उसे कटोरों में रखा, और बाकी आधे को वेदी पर छिड़का।<sup>7</sup> तब उसने वाचा की पुस्तक ली और उसे लोगों को पढ़कर सुनाया। उन्होंने उत्तर दिया, "हम सब कुछ करेंगे जो यहोवा ने कहा है; हम आज्ञा मानेंगे।"<sup>8</sup> तब मूसा ने रक्त लिया, उसे लोगों पर छिड़का और कहा, "यह वह वाचा का रक्त है जो यहोवा ने इन सब वचनों के अनुसार तुम्हारे साथ बाँधी है।"<sup>9</sup> मूसा और हारून, नादाव और अबीहू, और इसाएल के सत्तर प्राचीन ऊपर गए<sup>10</sup> और उन्होंने इसाएल के परमेश्वर को देखा। उसके पैरों के नीचे नीलम का सा फर्श था, जो आकाश के समान स्पष्ट था।<sup>11</sup> परन्तु परमेश्वर ने इसाएलियों के नेताओं पर हाथ नहीं उठाया; उन्होंने परमेश्वर को देखा, और उन्होंने खाया और पिया।<sup>12</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास पर्वत पर आओ और यहाँ ठहरो, और मैं तुम्हें पत्थर की पट्टिकाएँ ढाँगा, जिन पर मैंने उनकी शिक्षा के लिए विधि और आज्ञाएँ लिखी हैं।"<sup>13</sup> तब मूसा ने अपने सहायक यहोश्व के साथ प्रस्थान किया, और मूसा परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया।<sup>14</sup> उसने प्राचीनों से कहा, "हमारे लौटने तक यहाँ ठहरो। हारून और हर तुम्हारे साथ हैं—जिस किसी का कोई विवाद हो, वह उनके पास जाए।"<sup>15</sup> जब मूसा पर्वत पर चढ़ा, तो बादल ने उसे ढक लिया,<sup>16</sup> और यहोवा की महिमा सीने पर्वत पर ठहरी। छह दिन तक बादल पर्वत को ढके रहा, और सातवें दिन यहोवा ने बादल के भीतर से मूसा को बुलाया।<sup>17</sup> इसाएलियों को यहोवा की महिमा पर्वत के ऊपर भस्म करने वाली आग के समान दिखाई दी।<sup>18</sup> तब मूसा बादल में प्रवेश कर गया जब वह पर्वत पर चढ़ा। और वह पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा।

**25** यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> "इसाएलियों से कहो कि वे मेरे लिए एक भेट लाएँ। तुम उस भेट को उन सभी से प्राप्त करो जिनका हृदय देने के लिए प्रेरित होता है।<sup>3</sup> ये वे भेटें हैं जिन्हें तुम उनसे प्राप्त करोगे: सोना, चाँदी और पीतल;<sup>4</sup> नीला, बैगनी और लाल रंग का सूत और

उत्तम मलमल; बकरी के बाल,<sup>5</sup> लाल रंग में रंगी हुई मेंढे की खालें और मजबूत चमड़ा; बबूल की लकड़ी;<sup>6</sup> दीपक के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के तेल और सुगंधित धूप के लिए मसाले;<sup>7</sup> और ओनिक्स पत्थर और अन्य रत्न जो एपोद और ब्रेस्टपीस पर जड़े जाएँ।<sup>8</sup> फिर वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएँ, और मैं उनके बीच निवास करूँगा।<sup>9</sup> इस तंबू और उसके सभी सामानों को उसी नमूने के अनुसार बनाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।<sup>10</sup> "उनसे बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवाओ—ढाई हाथ लंबा, डेढ़ हाथ चौड़ा, और डेढ़ हाथ ऊँचा।<sup>11</sup> उसे अंदर और बाहर शुद्ध सोने से मढ़वाओ, और उसके चारों ओर सोने की मोलिंग बनाओ।<sup>12</sup> उसके लिए चार सोने के छल्ले ढालो और उन्हें उसके चार पैरों पर लगाओ। दो छल्ले एक तरफ और दो दूसरी तरफ।<sup>13</sup> फिर बबूल की लकड़ी के डडे बनाओ और उन्हें सोने से मढ़वाओ।<sup>14</sup> डंडों को सन्दूक के किनारों पर छल्लों में डालो ताकि उठाया जा सके।<sup>15</sup> डेढ़ इस सन्दूक के छल्लों में बने रहेंगे; उन्हें हटाया नहीं जाएगा।<sup>16</sup> फिर सन्दूक में वाचा की विधि की पट्टियाँ रखो, जो मैं तुम्हें दूँगा।<sup>17</sup> "शुद्ध सोने का एक प्रायश्चित्त आवरण बनाओ—ढाई हाथ लंबा और डेढ़ हाथ चौड़ा।<sup>18</sup> आवरण के सिरों पर हथौड़े से बनाए हुए दो करूब बनाओ।<sup>19</sup> एक करूब एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बनाओ; करूबों की आवरण के साथ एक ही टुकड़े के रूप में बनाओ, दोनों सिरों पर।<sup>20</sup> करूबों के पंख ऊपर की ओर फैले हुए हों, आवरण को ढकते हुए। करूब एक-दूसरे की ओर मुँह किए हुए हों, आवरण की ओर देखते हुए।<sup>21</sup> आवरण को सन्दूक के ऊपर रखो और सन्दूक में वाचा की विधि की पट्टियाँ रखो जो मैं तुम्हें दूँगा।<sup>22</sup> वहाँ, आवरण के ऊपर, उन दो करूबों के बीच जो वाचा की विधि के सन्दूक पर हैं, मैं तुमसे मिलूँगा और इसाएलियों के लिए अपनी सभी आज्ञाएँ दूँगा।<sup>23</sup> "बबूल की लकड़ी की एक मेज बनाओ—दो हाथ लंबी, एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची।<sup>24</sup> उसे शुद्ध सोने से मढ़वाओ और उसके चारों ओर सोने की मोलिंग बनाओ।<sup>25</sup> उसके चारों ओर एक हाथ की चौड़ाई का एक किनारा भी बनाओ और उस किनारे पर सोने की मोलिंग लगाओ।<sup>26</sup> मेज के लिए चार सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें चार कोनों पर लगाओ, जहाँ चार पैर हैं।<sup>27</sup> छल्ले किनारे के पास होने चाहिए ताकि मेज को उठाने के लिए डंडे रखे जा सकें।<sup>28</sup> बबूल की लकड़ी के डडे बनाओ, उन्हें सोने से मढ़वाओ, और उनके साथ मेज उठाओ।<sup>29</sup> इसके प्लेट और बर्टन शुद्ध सोने के बनाओ, साथ ही इसके जग और कटोरे भेट चढ़ाने के लिए।<sup>30</sup> इस मेज पर मेरी उपस्थिति की रोटी हमेशा के लिए मेरे सामने रखो।<sup>31</sup> "शुद्ध सोने का एक दीपस्तंभ

## निर्गमन

बनाओ। उसके आधार और डंडे को हथौड़े से बनाओ, और उसके फूल जैसे कप, कलियाँ और फूल एक ही टुकड़े के रूप में बनाओ।<sup>32</sup> दीपस्तंभ के किनारों से छह शाखाएँ निकलें—तीन एक तरफ और तीन दूसरी तरफ।<sup>33</sup> बादाम के फूलों के आकार के तीन कप, कलियों और फूलों के साथ एक शाखा पर हों, आगे शाखा पर तीन और—और दीपस्तंभ से निकलने वाली सभी छह शाखाओं के लिए वही।<sup>34</sup> और दीपस्तंभ पर चार कप बादाम के फूलों के आकार के हों, कलियों और फूलों के साथ।<sup>35</sup> पहली जोड़ी शाखाओं के नीचे एक कली, दूसरी जोड़ी के नीचे दूसरी, और तीसरी जोड़ी के नीचे तीसरी—सभी छह शाखाओं के लिए।<sup>36</sup> कलियाँ और शाखाएँ दीपस्तंभ के साथ एक ही टुकड़े के रूप में हों, शुद्ध सोने से हथौड़े से बनाई गई।<sup>37</sup> फिर इसके सात दीपक बनाओ और उन्हें इस प्रकार सेट करो कि वे इसके सामने का क्षेत्र प्रकाशित करें।<sup>38</sup> इसके बीती काटने वाले और ट्रे शुद्ध सोने का एक टैटेंट उपयोग किया जाए।<sup>39</sup> देखो कि तुम उन्हें उसी नमूने के अनुसार बनाओ जो तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया है।

**26** "तम्बू के लिए दस परदे बनाओ, जो महीन काते हुए सूर्त और नीले, बैंगनी और लाल रंग के धागों से बने हों, और उन पर कुशल कारीगर द्वारा बुने हुए करूब बनाए गए हों।<sup>2</sup> सभी परदे एक ही आकार के होने चाहिए—अट्टाइस हाथ लंबे और चार हाथ चौड़े।<sup>3</sup> पाँच परदों को एक साथ जोड़ो, और बाकी पाँच को भी इसी तरह जोड़ो।<sup>4</sup> एक सेट के अंतिम परदे के किनारे पर नीले कपड़े के फंटे बनाओ, और दूसरे सेट के अंतिम परदे पर भी ऐसा ही करो।<sup>5</sup> एक परदे पर पचास फंटे बनाओ और दूसरे परदे के किनारे पर भी पचास फंटे बनाओ, ताकि फंटे एक-दूसरे के सामने हों।<sup>6</sup> फिर पचास सोने के बटन बनाओ और उनका उपयोग परदों को जोड़ने के लिए करो ताकि तम्बू एक इकाई बन जाए।<sup>7</sup> तम्बू के ऊपर एक छतरी बनाने के लिए बकरी के बातों के परदे बनाओ—कुल मिलाकर घ्यारह।<sup>8</sup> सभी घ्यारह परदे एक ही आकार के होने चाहिए—तीस हाथ लंबे और चार हाथ चौड़े।<sup>9</sup> पाँच परदों को एक सेट में जोड़ो और बाकी छह को दूसरे सेट में। छठे परदे को तम्बू के सामने दोहरा मोड़ो।<sup>10</sup> एक सेट के अंतिम परदे के किनारे पर पचास फंटे बनाओ, और दूसरे सेट के परदे के किनारे पर भी पचास फंटे बनाओ।<sup>11</sup> फिर पचास कांस्य के बटन बनाओ और उन्हें फंटों में डालकर तम्बू को एक इकाई के रूप में जोड़ो।<sup>12</sup> जो आधा परदा बचा है, उसे तम्बू के पिछले हिस्से में लटका रहने दो।<sup>13</sup> तम्बू के परदे तम्बू से लंबे होंगे—प्रत्येक

तरफ आधा हाथ—ताकि वे तम्बू के किनारों पर लटकें और उसे ढंकें।<sup>14</sup> तम्बू के लिए लाल रंग में रंगे हुए मेडे की खाल की एक आवरण बनाओ, और उसके ऊपर एक मजबूत चमड़े की आवरण।<sup>15</sup> "तम्बू के लिए बबूल की लकड़ी के सीधे खड़े फ्रेम बनाओ।<sup>16</sup> प्रत्येक फ्रेम दस हाथ लंबा और डेढ़ हाथ चौड़ा होना चाहिए,<sup>17</sup> दो समानांतर प्रक्षेपणों के साथ। तम्बू के सभी फ्रेम इसी तरह बनाओ।<sup>18</sup> तम्बू के दक्षिणी तरफ के लिए बीस फ्रेम बनाओ<sup>19</sup> और उनके नीचे चालीस चांदी के आधार बनाओ—प्रत्येक फ्रेम के लिए दो आधार, प्रत्येक प्रक्षेपण के नीचे एक।<sup>20</sup> तम्बू के उत्तरी तरफ के लिए बीस फ्रेम बनाओ<sup>21</sup> और चालीस चांदी के आधार—प्रत्येक फ्रेम के नीचे दो।<sup>22</sup> तम्बू के दूर के छोर के लिए, जो पश्चिमी छोर है, छह फ्रेम बनाओ,<sup>23</sup> और दूर के छोर पर कोरों के लिए दो फ्रेम बनाओ।<sup>24</sup> ये कोने के फ्रेम नीचे और ऊपर एक ही अंगूठी से जुड़े होने चाहिए। दोनों कोने के फ्रेम इसी तरह बनाओ।<sup>25</sup> इस प्रकार आठ फ्रेम और सोलह चांदी के आधार होंगे—प्रत्येक फ्रेम के नीचे दो।<sup>26</sup> "बबूल की लकड़ी के कॉसबार भी बनाओ: तम्बू के एक तरफ के फ्रेम के लिए पाँच,<sup>27</sup> दूसरी तरफ के लिए पाँच, और तम्बू के दूर के छोर पर पश्चिमी तरफ के फ्रेम के लिए पाँच।<sup>28</sup> मध्य का कॉसबार फ्रेम मध्य में एक छोर से दूसरे छोर तक फैला होना चाहिए।<sup>29</sup> फ्रेम को सोने से मढ़ो और कॉसबार को पकड़ने के लिए सोने की अंगूठियाँ बनाओ।<sup>30</sup> कॉसबार को भी सोने से मढ़ो।<sup>31</sup> तम्बू को उस योजना के अनुसार स्थापित करो जो तुम्हें पर्वत पर दिखाई गई थी।<sup>32</sup> "नीले, बैंगनी और लाल रंग के धागों और महीन काते हुए सूत से एक परदा बनाओ, जिस पर कुशल कारीगर द्वारा बुने हुए करूब बनाए गए हों।<sup>33</sup> इस सोने के हुक के साथ बबूल की लकड़ी के चार खंभे पर लटकाओ, जो सोने से मढ़े हों और चार चांदी के आधारों पर खड़े हों।<sup>34</sup> परदे को बटनों से लटकाओ और वाचा के सन्दूक को परदे के पीछे रखो। परदा पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करोगा।<sup>35</sup> परम पवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक पर प्रायश्चित्त का ढक्कन रखो।<sup>36</sup> परदे के बाहर मेज को तम्बू के उत्तरी तरफ रखो और दीपस्तंभ को उसके विपरीत दक्षिणी तरफ रखो।<sup>37</sup> परदे के प्रवेश द्वार के लिए एक परदा बनाओ, जो नीले, बैंगनी और लाल रंग के धागों और महीन काते हुए सूत से बना हो—कदाई करने वाले की कारीगरी।<sup>38</sup> परदे के लिए बबूल की लकड़ी के पाँच खंभे बनाओ और उन्हें सोने से मढ़ो। उनके लिए सोने के हुक बनाओ और उनके लिए पाँच कांस्य के आधार ढालो।

## निर्गमन

**27** "बूबूल की लकड़ी का एक वेदी बनाओ, जो पाँच हाथ लंबी और पाँच हाथ चौड़ी हो — यह चौकोर हो — और तीन हाथ ऊँची हो।<sup>2</sup> चारों कोनों पर एक-एक सींग बनाओ, ताकि सींग और वेदी एक ही टुकड़े के रूप में हों। वेदी की कांसे से मढ़ो।<sup>3</sup> इसके सभी बर्तन कांसे के बनाओ — इसकी राख हटाने के लिए बर्तन, फावड़े, छिड़काव के कठोरे, मांस कांटे और अग्रिमात्र।<sup>4</sup> इसके लिए एक जाली बनाओ, कांसे की जाली, और जाली के चारों कोनों पर एक-एक कांसे की अंगूठी बनाओ।<sup>5</sup> इसे वेदी के किनारे की नीचे रखो ताकि यह वेदी के आधे ऊँचाई तक हो।<sup>6</sup> वेदी के लिए बूबूल की लकड़ी के ढंडे बनाओ और उन्हें कांसे से मढ़ो।<sup>7</sup> ढंडों को अंगूठियों में डालो ताकि जब इसे उठाया जाए तो वे वेदी के दो किनारों पर हों।<sup>8</sup> वेदी को तत्त्वों से खोखला बनाओ। इसे उसी प्रकार बनाना जैसा तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया था।<sup>9</sup> "मिलापवाले तंबू के लिए एक अँगन बनाओ। दक्षिण दिशा सौ हाथ लंबी हो और उसमें बारीक काटे हुए सन के परदे हों,<sup>10</sup> बीस खंभे और बीस कांसे के आधार हों, और खंभों पर चांदी के हुक और बैंड हों।<sup>11</sup> उत्तर दिशा भी सौ हाथ लंबी हो और उसमें बीस खंभे और बीस कांसे के आधार हों, खंभों पर चांदी के हुक और बैंड हों।<sup>12</sup> अँगन के पश्चिमी छोर पर पचास हाथ चौड़े परदे हों, दस खंभे और दस आधार हों।<sup>13</sup> पूर्वी छोर, सूर्योदय की ओर, भी पचास हाथ चौड़ा हो।<sup>14</sup> प्रवेश के एक तरफ पंद्रह हाथ लंबे परदे हों, तीन खंभे और तीन आधार हों,<sup>15</sup> और दूसरी तरफ पंद्रह हाथ के परदे हों, तीन खंभे और तीन आधार हों।<sup>16</sup> अँगन के प्रवेश के लिए, बीस हाथ लंबा परदा प्रदान करो, नीले, बैंगनी और लाल धागे और बारीक काटे हुए सन का — कढ़ाई का काम — चार खंभे और चार आधार के साथ।<sup>17</sup> अँगन के चारों ओर के सभी खंभों पर चांदी के बैंड और हुक हों, और कांसे के आधार हों।<sup>18</sup> अँगन सौ हाथ लंबा और पचास हाथ चौड़ा हो, बारीक काटे हुए सन के परदे पाँच हाथ ऊँचे हों, और कांसे के आधार हों।<sup>19</sup> मिलापवाले तंबू की सेवा में उपयोग होने वाले सभी अन्य वस्तु, उसमें और अँगन के लिए सभी खूंटी कांसे के बनाए जाएँ।<sup>20</sup> "इसाएलियों को आदेश दो कि वे तुम्हरे लिए शुद्ध जैतून का तेल लाएं ताकि दीपक जलते रहें।<sup>21</sup> मिलापवाले तंबू में, वाचा के सन्दूक की रक्षा करने वाले परदे के बाहर, हारून और उसके पुत्र दीपकों को संधा से सुबह तक प्रभु के सामने जलाते रहें। यह इसाएलियों के बीच आने वाली पीड़ियों के लिए एक स्थायी नियम है।

**28** अपने भाई हारून और उसके पुत्र नादाब, अबीबू, एलीआज़र, और इथामार को मेरे पास लाओ,

ताकि वे मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सकें।<sup>22</sup> हारून के लिए पवित्र वस्त्र बनाओ, ताकि उसे गरिमा और सम्मान मिले।<sup>23</sup> सभी कुशल कारीगरों को निर्देश दो, जिहें मैंने क्षमता दी है, कि वे हारून के लिए वस्त्र बनाएं ताकि उसे याजक के रूप में अभिषिक्त किया जा सके।<sup>24</sup> ये वे वस्त्र हैं जो वे बनाएँगे: एक ब्रेस्टपीस, एक एपोद, एक चोगा, एक बुने हुए पैटर्न वाला अंगरखा, एक पगड़ी, और एक कमरबंद। ये वस्त्र हारून और उसके पुत्रों के लिए बनाए जाएंगे ताकि वे मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सकें।<sup>25</sup> वे सोना, नीला, बैंगनी, और लाल धागा, और महीन लिनन का उपयोग करेंगे।<sup>26</sup> एपोद को सोना, नीला, बैंगनी, और लाल धागा, और महीन लिनन से कुशलता से बुना हुआ बनाओ।<sup>27</sup> इसमें दो कंधे के टुकड़े होने चाहिए जो दो किनारों पर जुड़े हों।<sup>28</sup> इसकी कमरबंद को उसी शैली में और उसी सामरी का उपयोग करके एपोद के साथ संलग्न किया जाना चाहिए।<sup>29</sup> दो सुलेमानी पत्तर लो और उन पर इसाएल के पुत्रों के नाम खुदवाओ,<sup>30</sup> एक पत्तर पर छह नाम और दूसरे पत्तर पर अन्य छह नाम, जन्म के क्रम में।<sup>31</sup> पत्तरों को एक मुहर की तरह खुदवाओं और उन्हें सोने की सेटिंग्स में माउंट करो।<sup>32</sup> पत्तरों को एपोद के कंधे के टुकड़ों पर इसाएल के पुत्रों के स्मारक पत्तरों के रूप में संलग्न करो। हारून की उनके नाम अपने कंधों पर लेकर प्रभु के सामने जाना है।<sup>33</sup> सोने की सेटिंग्स बनाओ<sup>34</sup> और शुद्ध सोने की दो चौटीदार जंजीर बनाओ, और उन जंजीरों को सेटिंग्स से जोड़ो।<sup>35</sup> निर्णय लेने के लिए एक ब्रेस्टपीस बनाओ, जो एपोद के समान कार्यकुशलता में हो: सोना, नीला, बैंगनी, और लाल धागा, और महीन लिनन।<sup>36</sup> यह चौकोर होना चाहिए, दोपुना मोड़ा हुआ, एक स्पैन लंबा और एक स्पैन चौड़ा।<sup>37</sup> इस पर चार पंक्तियों में पत्तर माउंट करो। पहली पंक्ति: कार्नेलियन, क्राइसोलाइट, और बेरिल;<sup>38</sup> दूसरी पंक्ति: फिरोज़ा, लैपिस लाज़ुली, और पत्ता;<sup>39</sup> तीसरी पंक्ति: जैसिंथ, अगेट, और नीलम;<sup>40</sup> चौथी पंक्ति: टोपाज़, सुलेमानी, और जैस्पर। उन्हें सोने की सेटिंग्स में माउंट करो।<sup>41</sup> बारह पत्तरों में से प्रत्येक एक इसाएल के गोत्र का प्रतिनिधित्व करेगा, एक मुहर की तरह एक गोत्र के नाम के साथ खुदा हुआ।<sup>42</sup> ब्रेस्टपीस के लिए शुद्ध सोने की जंजीरें बनाओ, जो रस्सियों की तरह मुड़ी हुई हों।<sup>43</sup> ब्रेस्टपीस के लिए दो सोने की अगूठियां बनाओ और उन्हें इसके ऊपरी कोनों पर संलग्न करो।<sup>44</sup> दो सोने की रस्सियों को ब्रेस्टपीस के कोनों की अंगूठियों से जोड़ो,<sup>45</sup> और रस्सियों के अन्य छोरों को एपोद के कंधे के टुकड़ों पर सोने की सेटिंग्स से जोड़ो।<sup>46</sup> दो और सोने की अंगूठियां बनाओ और उन्हें ब्रेस्टपीस के निचले कोनों पर अंदरूनी किनारे पर संलग्न करो।<sup>47</sup> किर एपोद के लिए

## निर्गमन

दो और अंगूठियाँ बनाओ और उन्हें सामने की ओर, कमरबंद के ठीक ऊपर की सिलाई के पास, नीचे की ओर संलग्न करो।<sup>28</sup> ब्रेस्टपीस को नीले धागे से एपोद की अंगूठियों से कसकर बांधो, ताकि यह कमरबंद के ऊपर रहे और ढीला न हो।<sup>29</sup> जब भी हारून पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा, वह इसाएल के पुत्रों के नाम ब्रेस्टपीस पर अपने हृदय के ऊपर लेकर जाएगा, प्रभु के सामने एक निरंतर स्मारक के रूप में।<sup>30</sup> उत्रिम और थुम्मीम को ब्रेस्टपीस में रखो, ताकि वे हारून के हृदय के ऊपर हौं जब वह प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करे। वह इसाएलियों के लिए निर्णय के साधन को हमेशा अपने हृदय के ऊपर लेकर जाएगा।<sup>31</sup> एपोद का चोगा पूरी तरह से नीले कपड़े का बनाओ।<sup>32</sup> इसके केंद्र में सिर के लिए एक उद्घाटन होना चाहिए, जिसमें एक मजबूत किनारा हो ताकि फटने से बच सके।<sup>33</sup> नीले, बैंगनी, और लाल धागे के अनार चोगे के किनारे पर बनाओ, उनके बीच में सोने की घंटियाँ हों।<sup>34</sup> सोने की घंटियों और अनारों को चोगे के किनारे पर बारी-बारी से लगाओ।<sup>35</sup> हारून को इसे पहनना चाहिए जब वह सेवा करता है, ताकि जब वह प्रभु के सामने पवित्र स्थान में प्रवेश करता और बाहर निकलता है, तो घंटियों की आवाज़ सुनाई दे, और वह न मरे।<sup>36</sup> शुद्ध सोने की एक पट्टी बनाओ और उस पर एक मुहर की तरह खुदवाओ: "प्रभु के लिए पवित्र।"<sup>37</sup> इसे नीले धागे से पांगी पर बांधो; इसे सामने पहना जाना चाहिए।<sup>38</sup> यह हारून के माथे पर लगातार रहेगा, ताकि वह पवित्र भेटों से जुड़ी दोष को वहन कर सके। भेट प्रभु के लिए स्वीकार्य होगी।<sup>39</sup> महीन लिनन का अंगरखा बुनो, और पगड़ी भी महीन लिनन की बनाओ। कमरबंद को कुशलता से कढ़ाई किया जाना चाहिए।<sup>40</sup> हारून के पुत्रों के लिए अंगरखे, कमरबंद, और टोपी बनाओ, ताकि उन्हें गरिमा और सम्मान मिले।<sup>41</sup> इन वस्त्रों को हारून और उसके पुत्रों पर पहनाने के बाद, उनका अभिषेक और अधिषेक करो, और उन्हें मेरे लिए याजक के रूप में सेवा करने के लिए अभिषिक्त करो।<sup>42</sup> कमर से जांध तक ढकने वाले लिनन के अंतर्वस्त्र बनाओ, ताकि जब वे मिलाप के तंतु में प्रवेश करें या वेदी के पास आएं तो उन्हें पहना जा सके।<sup>43</sup> ये वस्त्र हमेशा पहने जाने चाहिए, नहीं तो वे दोषी होंगे और मर जाएंगे। यह हारून और उसके वंशजों के लिए एक स्थायी नियम है।

**29** "अब यह वह है जो तुम उन्हें मेरे लिए याजक के रूप में सेवा करने के लिए पवित्र करने के लिए करोगे: एक बछड़ा और दो निर्दोष मेड़े लो, <sup>2</sup> और अखमीरी रोटी, तेल के साथ मिश्रित अखमीरी केक, और तेल के साथ फैलाए गए अखमीरी वेफर; तुम उन्हें अच्छे गैहूं के

आटे से बनाओगे।<sup>3</sup> तुम उन्हें एक टोकरी में रखोगे और बछड़े और दो मेड़ों के साथ टोकरी में प्रस्तुत करोगे।<sup>4</sup> फिर तुम हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तंबू के प्रवेश द्वार पर लाओगे, और उन्हें पानी से धोओगे।<sup>5</sup> और तुम वस्त्र लोगे और हारून को अंगरखा, एपोद का वस्त्र, एपोद और छाती का पटका पहनाओगे, और कुशलता से बुने हुए एपोद के पटके को उसके चारों ओर लपेटोगे;<sup>6</sup> और तुम उसके सिर पर पांगी रखोगे और पांगी पर पवित्र मुकुट रखोगे।<sup>7</sup> फिर तुम अभिषेक का तेल लोगे और उसके सिर पर उडेलोगे, और उसका अभिषेक करोगे।<sup>8</sup> तुम उसके पुत्रों की लाओगे और उन्हें अंगरखे पहनाओगे।<sup>9</sup> और तुम उन्हें, हारून और उसके पुत्रों को, कमरबंद बांधोगे, और उनके सिर पर पटके बांधोगे; और याजकत उनका स्थायी नियम होगा। इसलिए तुम हारून और उसके पुत्रों का अभिषेक करोगे।<sup>10</sup> फिर तुम बछड़े को मिलापवाले तंबू के सामने लाओगे, और हारून और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपने हाथ रखोगे।<sup>11</sup> और तुम बछड़े को मिलापवाले तंबू के प्रवेश द्वार पर यहोवा के सामने वध करोगे।<sup>12</sup> तुम बछड़े के कुछ रक्त को लेकर एपनी उगली से वेदी के सींगों पर लगाओगे, और बाकी का सारा रक्त वेदी के आधार पर उडेलोगे।<sup>13</sup> तुम सभी चर्बी जो अंतिडियों को ढकती है, यकृत की लोब, और दो गुर्दे जो उन पर चर्बी के साथ हैं, लोगे, और उन्हें वेदी पर धूप में चढ़ाओगे।<sup>14</sup> परंतु बछड़े का मांस, उसकी खाल, और उसकी गंदीगी, तुम शिविर के बाहर आग में जलाओगे; यह पाप का बलिदान है।<sup>15</sup> तुम एक मेड़ा भी लोगे, और हारून और उसके पुत्र मेड़े के सिर पर अपने हाथ रखोगे;<sup>16</sup> और तुम मेड़े को वध करोगे, और उसका रक्त लेकर वेदी के चारों ओर छिड़कोगे।<sup>17</sup> फिर तुम मेड़े को टुकड़ों में काटोगे, और उसकी अंतिडियों और उसकी टांगों को धोकार कर उसके टुकड़ों और उसके सिर के साथ रखोगे।<sup>18</sup> तुम पूरे मेड़े की वेदी पर धूप में चढ़ाओगे; यह यहोवा के लिए हामबलि है: यह एक सुखद सुर्यांश है, यहोवा के लिए अप्रि द्वारा चढ़ावा है।<sup>19</sup> फिर तुम दूसरे मेड़े की लोगे, और हारून और उसके पुत्र मेड़े के सिर पर अपने हाथ रखोगे,<sup>20</sup> और तुम मेड़े को वध करोगे, और उसका कुछ रक्त लेकर हारून के दाहिने कान की लोब पर और उसके पुत्रों के दाहिने कानों की लोब पर, और उनके दाहिने हाथों के अंगूठों पर, और उनके दाहिने पैरों के बड़े अंगूठों पर लगाओगे, और बाकी का रक्त वेदी के चारों ओर छिड़कोगे।<sup>21</sup> फिर तुम वेदी पर के कुछ रक्त और कुछ अभिषेक का तेल लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उसके पुत्रों के वस्त्रों पर छिड़कोगे; ताकि वह और उसके वस्त्र, और उसके पुत्र और उसके पुत्रों के

## निर्गमन

वस्त्र पवित्र किए जाएं।<sup>22</sup> तुम मेढ़े की चर्बी और मोटी पूँछ, और अंतिमियों को ढकने वाली चर्बी, और यकृत की लोब, और दो गुर्जे जो उन पर चर्बी के साथ हैं, और दाहिनी जाघ (क्योंकि यह अभिषेक का मेढ़ा है),<sup>23</sup> और एक रोटी की लोई, और तेल के साथ मिश्रित रोटी का एक केक, और अखमारी रोटी की टोकरी से एक वफर जो यहोवा के सामने रखी गई है;<sup>24</sup> और तुम इन सबको हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखोगे, और उन्हें यहोवा के सामने लहराते हुए चढ़ावा के रूप में लहराओगे।<sup>25</sup> फिर तुम उन्हें उनके हाथों से लेकर वेदी पर होमबलि के साथ धूप में चढ़ाओगे, यहोवा के सामने एक सुखद सुगंध के रूप में; यह यहोवा के लिए अप्रिद्वारा चढ़ावा है।<sup>26</sup> फिर तुम अभिषेक के मेढ़े की छाती को लेकर यहोवा के सामने लहराते हुए चढ़ावा के रूप में लहराओगे; और यह तुम्हारा हिस्सा होगा।<sup>27</sup> और तुम लहराते हुए चढ़ावे की छाती और अभिषेक के मेढ़े की जांघ को पवित्र करोगे, जो लहराई गई और उठाई गई थी, जो हारून के लिए और उसके पुत्रों के लिए थी।<sup>28</sup> यह इसाएल के पुत्रों से हारून और उसके पुत्रों के लिए एक स्थायी नियम होगा, क्योंकि यह एक चढ़ावा है; और यह इसाएल के पुत्रों से उनके शांति बलिदानों से यहोवा के लिए एक चढ़ावा होगा।<sup>29</sup> हारून के पवित्र वस्त्र उसके बाद उसके पुत्रों के लिए होंगे, ताकि वे उनमें अभिषेक और अभिषिक्त हो सकें।<sup>30</sup> सात दिनों के लिए उसके स्थान पर जो उसका पुत्र याजक होगा, जब वह पवित्र स्थान में सेवा करने के लिए मिलापवाले तंबू में प्रवेश करेगा, तो वह उन्हें पहनेगा।<sup>31</sup> तुम अभिषेक के मेढ़े को लेकर उसके मांस को एक पवित्र स्थान में उबालोगे।<sup>32</sup> और हारून और उसके पुत्र मेढ़े का मांस और टोकरी में की रोटी को मिलापवाले तंबू के प्रवेश द्वारा पर खाएंगे।<sup>33</sup> वे उन चीजों को खाएंगे जिनके द्वारा उनके अभिषेक और पवित्रीकरण के समय प्रायश्चित्त किया गया था; परंतु कोई साधारण व्यक्ति उन्हें नहीं खा सकता, क्योंकि वे पवित्र हैं।<sup>34</sup> और यदि अभिषेक के मांस या रोटी में से कुछ भी सुखर तक बचा रहे, तो तुम बाकी की आग में जला दोगे; इसे नहीं खाया जाएगा, क्योंकि यह पवित्र है।<sup>35</sup> इसलिए तुम हारून और उसके पुत्रों के साथ वह सब कुछ करोगे जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है; तुम उन्हें सात दिनों तक अभिषिक्त करोगे।<sup>36</sup> प्रत्येक दिन तुम प्रायश्चित्त के लिए एक बछड़े को पाप के बलिदान के रूप में चढ़ाओगे, और जब तुम उसके लिए प्रायश्चित्त करोगे, तो वेदी को शुद्ध करोगे, और उसे पवित्र करने के लिए उसका अभिषेक करोगे।<sup>37</sup> सात दिनों तक तुम वेदी के लिए प्रायश्चित्त करोगे और उसे पवित्र करोगे; तब वेदी अति पवित्र हो जाएगी, और जो कुछ भी वेदी की छुएगा, वह पवित्र होगा।<sup>38</sup> अब यह वह है जो

तुम वेदी पर चढ़ाओगे: प्रत्येक दिन लगातार दो एक वर्ष के मेमने।<sup>39</sup> एक मेमने को तुम सुबह चढ़ाओगे, और दूसरे मेमने को सांझा के समय चढ़ाओगे;<sup>40</sup> और एक मेमने के साथ एक एका का दसवां हिस्सा अच्छे आटे का, एक हिन का चौथाई हिस्सा पिटे हुए तेल का, और एक हिन का चौथाई हिस्सा दाखरस का पेय चढ़ावा के रूप में होगा।<sup>41</sup> दूसरे मेमने को तुम सांझा के समय चढ़ाओगे, और उसके साथ वही अन्न चढ़ावा और वही पेय चढ़ावा चढ़ाओगे जैसा सुबह में, एक सुखद सुर्धा के रूप में, यहोवा के लिए अग्नि द्वारा चढ़ावा।<sup>42</sup> यह तुम्हारी पीढ़ियों में मिलापवाले तंबू के प्रवेश द्वारा पर यहोवा के सामने एक निरंतर होमबलि होगा, जहां मैं तुमसे मिलाने और तुमसे बात करने के लिए आऊंगा।<sup>43</sup> मैं वहां इसाएल के पुत्रों से मिलूंगा, और यह मेरी महिमा से पवित्र किया जाएगा।<sup>44</sup> मैं मिलापवाले तंबू और वेदी को पवित्र करूंगा; मैं हारून और उसके पुत्रों को भी पवित्र करूंगा ताकि वे मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सकें।<sup>45</sup> मैं इसाएल के पुत्रों के बीच निवास करूंगा और उनका परमेश्वर बनूंगा।<sup>46</sup> वे जानेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं जिसने उन्हें मिस देश से बाहर निकाला, ताकि मैं उनके बीच निवास कर सकूं; मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं।

**30** “धूप जलाने के लिए बबूल की लकड़ी का एक वेदी बनाओ।<sup>2</sup> यह चौकोर होना चाहिए—एक हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा—और दो हाथ ऊँचा, और इसके सींग उसी के साथ एक टुकड़े में बने होने चाहिए।<sup>3</sup> इसे शुद्ध सोने से मढ़ो—ऊपर, किनारे, और सींग—और इसके चारों ओर सोने की एक मोलिङ्ग बनाओ।<sup>4</sup> मोलिङ्ग के नीचे दो सोने की अंगूठियाँ बनाओ—एक प्रत्येक तरफ—ताकि उन डंडों को पकड़ सके जिनसे इसे उठाया जाएगा।<sup>5</sup> डंडों की बबूल की लकड़ी से बनाओ और उन्हें सोने से मढ़ो।<sup>6</sup> वेदी की उस पर्दे के सामने रखो जो वाचा के सन्दूक की व्यवस्था को ढकता है—प्रायश्चित्त के ढकन के सामने जहाँ मैं तुमसे मिलूंगा।<sup>7</sup> हर सुबह जब हारून दीपकों की देखभाल करता है, तो उसे इस पर सुर्धात धूप जलानी चाहिए।<sup>8</sup> उसे संधा के समय भी धूप जलानी चाहिए जब वह दीपकों को जलाता है, ताकि धूप पीढ़ियों तक प्रभु के सामने निरंतर जले।<sup>9</sup> इस पर कोई अन्य धूप, होमबलि, अन्नबलि, या पेचबलि न चढ़ाना।<sup>10</sup> साल में एक बार हारून इसके सींगों पर प्रायश्चित्त करेगा। प्रायश्चित्त के लिए पापबलि के रक्त से, उसे यह पीढ़ियों तक साल में एक बार करना चाहिए। यह प्रभु के लिए अंतर्यंत पवित्र है।<sup>11</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>12</sup> “जब तुम इसाएलियों की गिनती करोगे, तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवन के

## निर्गमन

लिए प्रभु को एक प्रायश्चित्त देना चाहिए। जब तुम उनकी गिनती करोगे, तो उन पर कोई विपत्ति नहीं आएगी।<sup>13</sup> बीस वर्ष से ऊपर के प्रत्येक व्यक्ति को आधा शेकेल देना चाहिए, पवित्रस्थान के मानक के अनुसार।<sup>14</sup> जो भी गिन जाते हैं, बीस वर्ष और उससे ऊपर के, उन्हें प्रभु को भेट देनी चाहिए।<sup>15</sup> धनी अधिक न दे और गरीब आधे शेकेल से कम न दे, जब प्रभु को प्रायश्चित्त के लिए भेट दी जाती है।<sup>16</sup> इसाएलियों से प्रायश्चित्त का धन प्राप्त करो और इसे मिलापवाले तम्बू की सेवा के लिए उपयोग करो। यह इसाएलियों के लिए प्रभु के सामने रखो, स्मारक होगा, तुम्हारे जीवन के लिए प्रायश्चित्त करेगा।<sup>17</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>18</sup> “धोने के लिए एक कांसे का बेसिन और कांसे का स्टैंड बनाओ।” इसे मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच रखो, और इसमें पाणी डालो।<sup>19</sup> हारून और उसके पुत्र अपने हाथ और पैर इससे धोएँ।<sup>20</sup> जब भी वे मिलापवाले तम्बू में जाएँ या वेदी के पास आएँ, तो उन्हें पानी से धोना चाहिए ताकि वे न मरें।<sup>21</sup> उन्हें अपने हाथ और पैर धोने चाहिए ताकि वे न मरें। यह उनके और उनके वंशजों के लिए एक स्थायी नियम है।<sup>22</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>23</sup> “सबसे उत्तम मसाले लो: तरल गंधर्स, सुर्यांधित दालचीनी, सुर्यांधित गन्ना, और कासिया—सभी को पवित्रस्थान के मानक के अनुसार मापो—और एक हिन जैतून का तेल।”<sup>24</sup> इन्हें मिलाकर एक पवित्र अभिषेक का तेल बनाओ, एक इत्र बनाने वाले के द्वारा मिश्रित।<sup>25</sup> इसे मिलापवाले तम्बू वाचा के सन्दूक की व्यवस्था,<sup>26</sup> मेज और उसके सभी सामान, दीपस्तंभ और उसके उपकरण, धूप की वेदी,<sup>27</sup> होमबलि की वेदी और उसके सभी उपकरण, और बेसिन और उसके स्टैंड को अभिषेक करने के लिए उपयोग करो।<sup>28</sup> तुम उन्हें पवित्र करो ताकि वे अत्यंत पवित्र हो जाएँ, और जो भी उन्हें छुएगा वह पवित्र होगा।<sup>29</sup> हारून और उसके पुत्रों का अभिषेक करो और उन्हें पवित्र करो ताकि वे मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सकें।<sup>30</sup> इसाएलियों से कहो: यह मेरे लिए आने वाली पीढ़ियों के लिए पवित्र अभिषेक का तेल होगा।<sup>31</sup> इसे किसी और के शरीर पर न डालो, और उसी सूख का उपयोग करके कोई अच्य तेल न बनाओ। यह पवित्र है, और तुम्हें इसे पवित्र मानना चाहिए।<sup>32</sup> जो कोई इसके समान तेल बनाता है या इसे किसी याजक के अलावा किसी और पर लगाता है, उसे उसकी प्रजा से काट दिया जाएगा।<sup>33</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>34</sup> “सुर्यांधित मसाले लो—गोंद रेजिन, अोनिका और गलबानम—और शुद्ध लोबान, सभी समान मात्रा में,<sup>35</sup> और एक सुर्यांधित धूप का मिश्रण बनाओ, एक इत्र बनाने वाले का कार्य।” इसके नमकीन और शुद्ध और पवित्र होना चाहिए।<sup>36</sup> इसके कुछ को पीसकर पाउडर बनाओ और इसे मिलापवाले

तम्बू में वाचा के सन्दूक की व्यवस्था के सामने रखो, जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा।<sup>37</sup> धूप को अत्यंत पवित्र मानो।<sup>38</sup> अपने लिए इस सूत्र के साथ कोई धूप न बनाओ। इसे प्रभु के लिए पवित्र मानो। जो कोई इसे व्यक्तिगत उपयोग के लिए बनाता है, उसे उसकी प्रजा से काट दिया जाएगा।

**31** तब यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “देख, मैंने यहदा के गोत्र के ह्रां के पुत्र ऊरी के पुत्र बेज़लेल को चुना है,<sup>3</sup> और मैंने उसे परमेश्वर की आत्मा से, बुद्धि, समझ, ज्ञान और हर प्रकार की कारीगरी से भर दिया है—<sup>4</sup> सोने, चांदी और पीतल में कलात्मक कार्यों को डिजाइन करने के लिए,<sup>5</sup> पत्थरों को काटने और जड़ने के लिए, लकड़ी में काम करने के लिए, और हर प्रकार की कलात्मक कारीगरी में संलग्न होने के लिए।<sup>6</sup> इसके अलावा, मैंने दान के गोत्र के अहिसमाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके साथ काम करने के लिए नियुक्त किया है। मैंने सभी कुशल कारीगरों को वह सब कुछ बनाने की क्षमता दी है जो मैंने उन्हें आज्ञा दी है:<sup>7</sup> मिलाप का तम्बू वाचा की संदूक जिस पर प्रायश्चित्त का ढक्कन है, और तबू के सभी सामान—<sup>8</sup> मेज़ और उसके सामान, शुद्ध सोने का दीपस्तंभ और उसके सभी उपकरण, धूप की वेदी,<sup>9</sup> होमबलि की वेदी और उसके सभी उपकरण, बेसिन और उसके स्टैंड—<sup>10</sup> और बुने हुए वस्त्र, दोनों पवित्र वस्त्र हारून याजक के लिए और उसके पुत्रों के लिए जब वे याजक के रूप में सेवा करते हैं,<sup>11</sup> साथ ही अभिषेक का तेल और पवित्र स्थान के लिए सुर्यांधित धूप। उन्हें उन्हें ठीक वैसे ही बनाना है जैसे मैंने उन्हें आज्ञा दी है।<sup>12</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>13</sup> “इसाएलियों से कहो, तुम मेरे विश्रामदिनों का पालन अवश्य करो। यह मेरे और तुम्हारे बीच आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चिन्ह होगा, ताकि तुम जान सको कि मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें पवित्र करता हूँ।”<sup>14</sup> विश्रामदिन का पालन करो, क्योंकि यह तुम्हारे लिए पवित्र है। जो कोई इसे अपवित्र करेगा उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा। जो कोई उस दिन काम करेगा उसे अपनी प्रजा से काट दिया जाएगा।<sup>15</sup> छह दिन काम किया जा सकता है, परन्तु सातवां दिन विश्राम का दिन है, यो यहोवा के लिए पवित्र है। जो कोई विश्रामदिन पर काम करेगा उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>16</sup> इसाएली विश्रामदिन का पालन करेंगे, आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे एक स्थायी वाचा के रूप में मनाएंगे।<sup>17</sup> यह मेरे और इसाएलियों के बीच सदा के लिए एक चिन्ह है। क्योंकि छह दिनों में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन उसने विश्राम किया और ताजगी पाई।”<sup>18</sup> जब यहोवा ने सीने पर्वत पर मूसा से बात करना समाप्त किया, तो उसने

## निर्गमन

उसे वाचा की व्यवस्था की दो पटिकाएँ दीं, पत्थर की पटिकाएँ जो परमेश्वर की उंगली से अकित थीं।

**32** जब लोगों ने देखा कि मूसा पहाड़ से नीचे आने में देरी कर रहे हैं, तो वे हारून के पास इकट्ठा हुए और कहा, "आओ, हमारे लिए देवता बनाओ जो हमारे आगे चले। इस मूसा के बारे में, जो हमें मिस्र से बाहर लाया, हमें नहीं पता कि उसके साथ क्या हुआ है।"<sup>2</sup> हारून ने उसने कहा, "अपने पत्रियों, बेटों और बेटियों के पहने हुए सोने के कुंडल उत्तराकर में पास लाओ।"<sup>3</sup> तो सभी लोगों ने अपने कुंडल उत्तराकर हारून के पास लाए।<sup>4</sup> उसने जो कुछ उन्होंने दिया उसे लिया, उसे पिघलाया, और एक बछड़े की मूर्ति बनाई।<sup>5</sup> ये हैं तुम्हारे देवता, इसाएल, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए।<sup>6</sup> जब हारून ने यह देखा, तो उसने बछड़े के सामने एक वेदी बनाई और घोषणा की, "कल यहोवा के लिए एक पर्व होगा।"<sup>7</sup> तो अगले दिन लोग जल्दी उठे और होमबलि चढ़ाए और मेलबलि लाए। इसके बाद, वे खाने-पीने बैठे और मौज-मस्ती में लग गए।<sup>8</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुरंत नीचे जाओ, क्योंकि तुम्हारे लोग, जिहें तुम मिस्र से बाहर लाए, उन्होंने अपने आप को भ्रष्ट कर दिया है।"<sup>9</sup> उन्होंने जल्दी से उस मार्ग से रथ गए हैं जो मैंने उन्हें आज्ञा दी थी और एक बछड़े की ढली हुर्र मूर्ति बनाई है। उन्होंने उसे प्रणाम किया, उसके लिए बलि चढ़ाई, और कहा, ये हैं तुम्हारे देवता, इसाएल, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए।<sup>10</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "मैंने इन लोगों को देखा है, और वे वास्तव में हठीले लोग हैं।<sup>11</sup> अब मुझे अकेला छोड़ दो ताकि मेरा क्रोध उनके खिलाफ भड़क सके और मैं उन्हें नष्ट कर दूँ। तब मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।"<sup>12</sup> लेकिन मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से विनती की, "प्रभु, क्यों आपका क्रोध आपके लोगों पर भड़कता है, जिहें आपने महान शक्ति और शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर लाया।"<sup>13</sup> मिसियों को क्यों कहना चाहिए, 'वह उन्हें बुरे इरादे से बाहर लाया, उन्हें पहाड़ों में मारने और पृथकी के चेहरे से मिटाने के लिए?' अपने भयंकर क्रोध से मुड़ें, अपने लोगों पर विपत्ति न लाए।<sup>14</sup> अपने सेवकों अश्राहम, इसाहक, और इसाएल को याद करें, जिहें आपने अपने ही नाम से शपथ ली थीं: मैं तुम्हारे वंशजों को आकाश के तरों के समान असंख्य बनाऊंगा और उन्हें यह सारी भूमि दूर्गा जिसे मैंने वादा किया था।"<sup>15</sup> तब यहोवा ने अपने लोगों पर जो विपत्ति की धमकी दी थी, उसे नहीं लाया।<sup>16</sup> मूसा ने मुड़कर पहाड़ से नीचे आए और अपने हाथों में वाचा की दो पटिकाएँ लीं। पटिकाएँ दोनों ओर से अकित थीं, सामने और पीछे।<sup>17</sup> पटिकाएँ दोनों पर कार्य थीं; लेखन परमेश्वर का लेखन था, पटिकाओं पर

अंकित।<sup>18</sup> जब यहोशू ने लोगों की चिल्लाहट की आवाज़ सुनी, तो उसने मूसा से कहा, "शिविर में युद्ध की आवाज़ है।"<sup>19</sup> मूसा ने उत्तर दिया,

"यह विजय की आवाज़ नहीं है, और न ही यह हार की आवाज़ है, यह गाने की आवाज़ है जो मैं सुन रहा हूँ।"

<sup>20</sup> जब मूसा शिविर के पास पहुँचे और बछड़े और नाच देखे, तो उनका क्रोध भड़क उठा, और उन्होंने पटिकाओं को अपने हाथों से फेंक दिया, उन्हें पहाड़ के तल पर तोड़ दिया।<sup>21</sup> उन्होंने बछड़े को लिया जो उन्होंने बनाया था, उसे आग में जलाया, उसे पीसकर चूर्ण बना दिया, उसे पानी पर छिड़क दिया, और इसाएलियों को उसे पीने के लिए मज़बूर किया।<sup>22</sup> उन्होंने हारून से कहा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया, कि तुमने उन्हें इतनी बड़ी पाप में डाल दिया?"<sup>23</sup> "क्रोधित न हो, मेरे प्रभु!" हारून ने उत्तर दिया। "आप जानते हैं कि ये लोग बुराई के लिए कितने प्रवृत्त हैं।<sup>24</sup> उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे लिए देवता बनाओ जो हमारे आगे चले। इस मूसा के बारे में, हमें नहीं पता कि उसके साथ क्या हुआ है।'<sup>25</sup> तो मैंने उसने कहा, 'मुझे अपना सोना लाओ।' उन्होंने मुझे दिया, मैंने उसे आग में फेंक दिया, और यह बछड़ा बाहर आ गया।"<sup>26</sup> मूसा ने देखा कि लोग उन्मुक्त हो रहे थे और हारून ने उन्हें नियंत्रण से बाहर कर दिया था और उनके शत्रुओं के लिए हंडी का पात्र बना दिया था।<sup>27</sup> तब वह शिविर के प्रवेश द्वार पर खड़ा हुआ और कहा, "जो यहोवा के लिए है, वह मेरे पास आए।"<sup>28</sup> और सभी लेवी उसके पास इकट्ठा हुए।<sup>29</sup> तब उसने उसने उसने कहा, "यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का कहना है: प्रत्येक व्यक्ति अपनी तलवार अपनी कमर पर बांध ले। शिविर के एक छोर से दूसरे छोर तक जाकर अपने भाई, मित्र, और पड़ोसी को मार डालो।"<sup>30</sup> लेवियों ने जैसा मूसा ने आदेश दिया था, वैसा ही किया, और उस दिन लगभग तीन हजार लोग मारे गए।<sup>31</sup> तब मूसा ने कहा, "आज तुम यहोवा के लिए अलग किए गए हो, क्योंकि तुमने अपने ही पुत्रों और भाइयों के खिलाफ थे, और उसने आज तुम्हें अशीर्वद दिया है।"<sup>32</sup> अगले दिन मूसा ने लोगों से कहा, "तुमने एक बड़ा पाप किया है। लेकिन अब मैं यहोवा के पास जाऊंगा; शायद मैं तुम्हारे पाप के लिए प्रायश्चित्त कर सकूँ।"<sup>33</sup> तो मूसा यहोवा के पास वापस गया और कहा, "इन लोगों ने कितना बड़ा पाप किया है! उन्होंने अपने लिए सोने के देवता बनाए हैं।"<sup>34</sup> लेकिन अब, कृपया उनके पाप को क्षमा करें—लेकिन यदि नहीं, तो मुझे उस पुस्तक से मिटा दें जिसे आपने लिखा है।"<sup>35</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "जो मेरे खिलाफ पाप करता है, मैं उसे अपनी

## निर्गमन

पुस्तक से मिटा दूँगा।<sup>34</sup> अब जाओ, लोगों को उस स्थान पर ले जाओ जिसका मैंने उल्लेख किया था, और मेरा दूत तुम्हरे आगे जाएगा। हालांकि, जब मुझे दंड देने का समय आएगा, तो मैं उनके पाप के लिए उन्हें दंड दूँगा।"<sup>35</sup> और यहोवा ने लोगों को एक महामारी से मारा क्योंकि उन्होंने उस बछड़े के साथ किया जो हारून ने बनाया था।

**33** तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तू और वे लोग जिन्हें तुमिस से निकाल लाया है, वहाँ से चलो और उस देश में जाओ जिसका मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर बादा किया था, यह कहते हुए कि मैं इसे तुम्हारे वंशजों को दूँगा।"<sup>1</sup> मैं तुम्हारे आगे एक स्वर्गदूत भेज़ूँगा और कनानी, एमोरी, हिती, अर्जिजी, हिक्की और याकूसी लोगों को निकाल दूँगा।<sup>2</sup> उस देश में जाओ जो दूध और मधु की धारा बहाता है। परन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, क्योंकि तुम एक हठीले लोग हो और मैं मार्ग में तुहाँने नष्ट कर सकता हूँ।"<sup>4</sup> जब लोगों ने ये दुखायी बातें सुनीं, तो वे शोक करने लगे, और किसी ने की कोई आभूषण नहीं पहना।<sup>5</sup> क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, "इसाएलियों से कहो, 'तुम एक क्षण के लिए भी चलूँ तो मैं तुहाँने नष्ट कर सकता हूँ।' अब अपने आभूषण उतार दो और मैं निर्णय करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या करना है।"<sup>6</sup> इसलिए इसाएलियों ने होरेब पर्वत पर अपने आभूषण उतार दिए।<sup>7</sup> अब मूसा एक तम्बू लेकर उसे शिविर से कुछ दूरी पर खड़ा कर देता था। वह उसे मिलाप का तम्बू कहता था। जो कोई यहोवा से पूछना चाहता था, वह शिविर के बाहर उस तम्बू में जाता था।<sup>8</sup> जब भी मूसा तम्बू में जाता, सभी लोग उठकर अपने-अपने तम्बूओं के द्वार पर खड़े हो जाते और उसे तब तक देखते रहते जब तक वह तम्बू में प्रवेश नहीं कर लेता।<sup>9</sup> जैसे ही मूसा तम्बू में प्रवेश करता, बादल का खम्भा नीचे आकर द्वार पर ठहर जाता और यहोवा मूसा से बात करता।<sup>10</sup> जब भी लोग देखते कि बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर खड़ा है, वे सब खड़े होकर अपने-अपने तम्बू के द्वार पर आराधना करते।<sup>11</sup> यहोवा मूसा से आमने-सामने बात करता, जैसे कोई अपने मित्र से बात करता है। फिर मूसा शिविर में लौट आता, परन्तु उसका युवा सहायक नून का पुत्र यहोशू तम्बू से नहीं निकलता।<sup>12</sup> मूसा ने यहोवा से कहा, "तू मुझसे कहता है, 'इन लोगों का नेतृत्व कर,' परन्तु तूने मुझे यह नहीं बताया कि तू मेरे साथ किसे भेजोगा। तूने कहा, 'मैं तुझे नाम से जानता हूँ और तूने मुझसे अनुग्रह पाया है।'"<sup>13</sup> यदि तु मुझसे प्रसन्न है, तो मुझे अपनी राहें सिखा ताकि मैं तुझे जान सकूँ और तुझसे अनुग्रह पाता रहूँ। याद रख

कि यह राष्ट्र तेरे लोग हैं।"<sup>14</sup> यहोवा ने उत्तर दिया, "मेरा उपस्थिति तेरे साथ जाएगी, और मैं तुझे विश्राम दूँगा।"<sup>15</sup> तब मूसा ने उससे कहा, "यदि तेरी उपस्थिति हमारे साथ नहीं जाती, तो हमें यहाँ से मत भेज।"<sup>16</sup> कैसे कोई जान सकेगा कि तू मुझसे और तेरे लोगों से प्रसन्न है, जब तक तू हमारे साथ नहीं जाता? और क्या बात हमें और तेरे लोगों को पृथ्वी के सभी अन्य लोगों से अलग करती है?"<sup>17</sup> और यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं वही करूँगा जो तूने माँगा है, क्योंकि मैं तुझसे प्रसन्न हूँ और तुझे नाम से जानता हूँ।"<sup>18</sup> तब मूसा ने कहा, "अब मुझे अपनी महिमा दिखा।"<sup>19</sup> और यहोवा ने कहा, "मैं अपनी सारी भलाई तेरे सामने से गुजराऊँगा, और तेरे सामने अपने नाम, यहोवा, का प्रचार करूँगा। मैं जिस पर अनुग्रह करूँ, उस पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर ददा करूँ, उस पर ददा करूँगा।"<sup>20</sup> परन्तु<sup>21</sup> उसने कहा, "तू मेरा मुख नहीं देख सकता, क्योंकि कोई भी मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता।"<sup>22</sup> तब यहोवा ने कहा, "मेरे पास एक स्थान है जहाँ तू चट्टान पर खड़ा हो सकता है।<sup>23</sup> जब मेरी महिमा वहाँ से गुजरेगी, मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं वहाँ से न गुजर जाऊँ, तब तक अपने हाथ से तुझे ढक दूँगा।" फिर मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तू मेरी पीठ देख सकेगा; परन्तु मेरा मुख नहीं देखा जा सकता।"

**34** प्रभु ने मूसा से कहा, "पहली पट्टियों की तरह दो पथर की पट्टियाँ तराश लो, और मैं उन पर वही शब्द लिखूँगा जो पहली पट्टियों पर थे, जिन्हें तुमने तोड़ दिया था।"<sup>2</sup> सुबह तैयार रहना, और सीनी पर्वत पर चढ़ना। वहाँ पर्वत के ऊपर मेरे सामने उपस्थित होना।<sup>3</sup> कोई भी तुम्हारे साथ नहीं आएगा और न ही पर्वत पर कहीं दिखाई देगा; यहाँ तक कि झुंड या मवेशी भी उसके सामने चर नहीं सकते।"<sup>4</sup> इसलिए मूसा ने पहली पट्टियों की तरह दो पथर की पट्टियाँ तराशी और प्रभु के आदेशनुसार सुबह जल्दी सीनी पर्वत पर चढ़ गया। उसने अपने हाथों में दो पथर की पट्टियाँ लीं।<sup>5</sup> फिर प्रभु बादल में नीचे आया और वहाँ उसके साथ खड़ा होकर अपने नाम, प्रभु, की धोषणा की।<sup>6</sup> और उसने मूसा के सामने से गुजरते हुए कहा, "प्रभु, प्रभु, दयालु और कृपातु, क्रोध में धीमा, प्रेम और विश्वास में प्रबु,"<sup>7</sup> हजारों के लिए प्रेम बनाए रखता है, और दृष्टा, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है। फिर भी वह दोषियों को बिना दंड के नहीं छोड़ता; वह माता-पिता के पापों के लिए बच्चों और उनके बच्चों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक दंड देता है।"<sup>8</sup> मूसा सुन्तर भूमि पर छुक गया और उपासना की।<sup>9</sup> उसने कहा, "प्रभु, यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो प्रभु हमारे साथ चले। यद्यपि यह

## निर्गमन

एक हठीला लोग है, हमारे पापों को क्षमा करें और हमें अपनी विरासत के रूप में लें।<sup>10</sup> फिर प्रभु ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ एक वाचा कर रहा हूँ। तुम्हारे सभी लोगों के सामने मैं ऐसे अद्भुत कार्य करूँगा जो किसी भी राष्ट्र में पहले कभी नहीं किए गए। जिन लोगों के बीच तुम रहते हो वे देखेंगे कि मैं, प्रभु, तुम्हारे लिए कितना अद्भुत कार्य करूँगा।<sup>11</sup> आज जो मैं आदेश देता हूँ उसका पालन करो। मैं तुम्हारे सामने से एमोरी, कनानी, हिती, परिज्जी, हिक्की और यशूवी की निकाल द्वांग।<sup>12</sup> सावधान रहो कि जिस भूमि में तुम जा रहे हो वहाँ के निवासियों के साथ कोई संघि न करो, नहीं तो वे तुम्हारे लिए फंदा बन जाएंगे।<sup>13</sup> उनकी वेदियों को तोड़ दो, उनके पवित्र पथरों को चूर कर दो और उनके अशोरा खाँभों को काट दो।<sup>14</sup> किसी अन्य देवता की उपासना मत करो, क्योंकि प्रभु, जिसका नाम ईर्ष्णालू है, एक ईर्ष्णालू देवता है।<sup>15</sup> सावधान रहो कि उन लोगों के साथ कोई संघि न करो जो उस भूमि में रहते हैं; जब वे अपने देवताओं के साथ वेशावृत्ति करते हैं और उन्हें बलिदान देते हैं, तो वे तुम्हें अमरित करेंगे और तुम उनके बलिदान खाओगे।<sup>16</sup> और जब तुम अपने पुत्रों के लिए उनकी कुछ बेटियों को परियों के रूप में ले जाओगे, तो वे तुम्हारे पुत्रों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करेंगी।<sup>17</sup> कोई भी मूर्ति मत बनाओ।<sup>18</sup> अखमीरी रोटी का पर्व मनाओ। सात दिनों तक बिना खमीर की रोटी खाओ, जैसा मैंने आदेश दिया था, अवीव महीने में, क्योंकि उसी समय तुम मिस्र से निकलते थे।<sup>19</sup> हर गर्भ का पहला बच्चा मेरा है, तुम्हारे पशुओं के सभी पहलौटे नर, याहे बैल हीं या भेड़।<sup>20</sup> पहले गथ को एक मेमने के साथ छुड़ाओ। यदि तुम उसे छुड़ाते नहीं हो, तो उसकी गर्दन तोड़ दो। अपने सभी पहलौटे पुत्रों को छुड़ाओ। कोई भी मेरे सामने खाली हाथ न आए।<sup>21</sup> छह दिन काम करो, लेकिन सातवें दिन विश्राम करो; यहाँ तक कि जुताई और फसल के समय भी तुम्हें विश्राम करना चाहिए।<sup>22</sup> सप्ताहों का पर्व गेहूँ की फसल के पहले फलों के साथ मनाओ, और वर्ष के अंत में इनादरिंग का पर्व।<sup>23</sup> साल में तीन बार तुम्हारे सभी उरुष प्रभु, इसाएल के परमेश्वर, के सामने उपस्थित होगे।<sup>24</sup> मैं तुम्हारे सामने से राष्ट्रों की निकाल द्वांग और तुम्हारी भूमि का विस्तार करूँगा, और जब तुम साल में तीन बार प्रभु अपने परमेश्वर के सामने उपस्थित होने जाओगे, तो कोई भी तुम्हारी भूमि की लालसा नहीं करेगा।<sup>25</sup> किसी भी खमीर वाली चीज के साथ बलिदान के रक्त की पेशकश मत करो, और न ही फसह के बलिदान को सुबह तक रहने दो।<sup>26</sup> अपनी भूमि के पहले फलों का सर्वश्रेष्ठ प्रभु अपने परमेश्वर के घर में लाओ। एक बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत पकाओ।<sup>27</sup> फिर प्रभु ने मूसा से कहा, "इन शब्दों को

लिखो, क्योंकि इनके अनुसार मैंने तुम्हारे और इस्साएल के साथ एक वाचा की है।"<sup>28</sup> मूसा वहाँ प्रभु के साथ चालीस दिन और चालीस रात रहा बिना रोटी खाए या पानी पिए। और उसने पढ़ियों पर वाचा के शब्द लिखे - दस आज्ञाएँ।<sup>29</sup> जब मूसा सनै पर्वत से दो पढ़ियों के साथ नीचे आया, जिन पर वाचा की व्यवस्था लिखी थी, उसका चेहरा चमक रहा था क्योंकि उसने प्रभु के साथ बात की थी, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं था।<sup>30</sup> जब हारून और इस्साएलियों ने देखा कि उसका चेहरा चमक रहा है, तो वे उसके पास आने से डर गए।<sup>31</sup> लेकिन मूसा ने उन्हें बुलाया, और हारून और सभी नेता उसके पास आए, और उसने उनसे बात की।<sup>32</sup> बाद में सभी इस्साएली पास आए, और उसने उन्हें सभी आदेश दिए जो प्रभु ने उसे सीनै पर्वत पर दिए थे।<sup>33</sup> जब मूसा ने उनसे बात करना समाप्त किया, तो उसने अपने चेहरे पर एक आवरण डाल दिया।<sup>34</sup> लेकिन जब भी वह प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करता था उससे बात करने के लिए, वह आवरण हटा देता था जब तक कि वह बाहर नहीं आता था।<sup>35</sup> और जब वह बाहर आता और इस्साएलियों को बताता कि उसे क्या आदेश दिया गया था, तो वे देखते कि उसका चेहरा चमक रहा है। फिर मूसा अपने चेहरे पर आवरण डाल देता था जब तक कि वह प्रभु से बात करने के लिए अंदर नहीं जाता था।

**35** मूसा ने पूरे इस्साएली समुदाय को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "ये वे बातें हैं जिन्हें करने की आज्ञा यहोवा ने तुम्हें दी है: २ छ: दिन तक काम किया जाए, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे लिए पवित्र दिन होगा, यहोवा के लिए विश्राम का सब्ज़। जो कोई उस दिन काम करेगा उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>३</sup> सब्ज़ के दिन अपने निवास स्थानों में आग मत जलाओ।"<sup>४</sup> मूसा ने पूरे इस्साएली समुदाय से कहा, "यह वही है जो यहोवा ने आज्ञा दी है: ५ जो कुछ तुम्हारे पास है, उसमें से यहोवा के लिए एक भेट लो। जो कोई स्वेच्छा से दे, वह यहोवा के लिए सोना, चाँदी और पीतल की भेट लाएँ;<sup>५</sup> नीला, बैंगनी और किरमिजी सूत और उत्तम मलमल, बकरी के बाल;<sup>६</sup> लाल रंगे हुए मेंढे की खाले और इकाऊं चमड़ा; बबूल की लकड़ी;<sup>८</sup> दीपक के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के तेल और सुगंधित धूप के लिए मसाले;<sup>९</sup> और अँक्स पस्तर और अन्य रन जो एपोद और छाती के पट्ट पर जड़े जाएँ।<sup>१०</sup> "तुम में से जो भी कुशल हैं, वे आकर वह सब कुछ बनाएं जो यहोवा ने आज्ञा दी है:<sup>११</sup> तम्बू और उसके आवरण, क्लौस्स, फ्रेम, कॉस्बार, खेंभे और आधार;<sup>१२</sup> पवित्र सन्दूक और उसके ढंडे और प्रायश्चित का ढक्कन और पर्दा जो उसे ढकता है;<sup>१३</sup> मेज और उसके ढंडे और उसके सभी सामान और

## निर्गमन

उपस्थिति की रोटी,<sup>14</sup> दीपक जो प्रकाश के लिए है उसके सामान, दीपक और प्रकाश के लिए तेल,<sup>15</sup> धूप की वेदी और उसके डंडे, अभिषेक का तेल और सुगंधित धूप; तम्बू के प्रवेश द्वार के लिए पर्दा;<sup>16</sup> होमबलि की वेदी और उसकी पीतल की जाती, उसके डंडे और उसके सभी बर्नन; बेसिन और उसका स्टैंड;<sup>17</sup> अँगन के पर्दे और उसके खंभे और आधार, और आँगन के प्रवेश द्वार के लिए पर्दा;<sup>18</sup> तम्बू और अँगन के लिए खूंटी और उनकी रसियाँ;<sup>19</sup> पवित्र स्पान में सेवा करने के लिए बुने हुए वस्त्र—हारून के लिए पवित्र वस्त्र और उसके पुतों के लिए वस्त्र जब वे याजक के रूप में सेवा करते हैं।<sup>20</sup> तब पूरा इसाएली समुदाय मूरा की उपस्थिति से हट गया।<sup>21</sup> और जो कोई स्वेच्छा से था और जिसका हृदय प्रेरित हुआ, वह आपा और यहोवा के लिए भेंट लाया, मिलाप के तम्बू के काम के लिए, उसकी सारी सेवा के लिए, और पवित्र वस्त्रों के लिए।<sup>22</sup> जो भी स्वेच्छा से थे—पुरुष और महिलाएं समान रूप से—आए और सोने के आभूषण लाएँ ब्रोच, कान की बालियाँ, अंगूठियाँ और गहने। वे सभी अपने सोने को यहोवा के लिए एक तरंग भेंट के रूप में प्रस्तुत करते थे।<sup>23</sup> जिसके पास नीला, बैंगनी या किरमिजी सूत, या उत्तम मलमल, या बकरी के बाल, लाल रंगे हुए मेढ़े की खाल या टिकाऊ चमड़ा था, वह उन्हें लाया।<sup>24</sup> जो लोग चाँदी या पीतल की भेंट प्रस्तुत करते थे, वे इसे यहोवा के लिए एक भेंट के रूप में लाते थे, और जिसके पास बबूल की लकड़ी थी, वह किसी भी काम के लिए उसे लाता था।<sup>25</sup> हर कुशल महिला अपने हाथों से काती और जो उसने काता था—नीला, बैंगनी या किरमिजी सूत या उत्तम मलमल—उसे लाती थी।<sup>26</sup> जो महिलाएं स्वेच्छा से थीं और जिनके पास कौशल था, उन्होंने बकरी के बाल काता।<sup>27</sup> नेताओं ने ऑंक्स पत्थर और अन्य रत्न लाए जो एपोद और छाती के पट्टे पर जड़े जाएं।<sup>28</sup> उन्होंने दीपक के लिए और अभिषेक के तेल और सुगंधित धूप के लिए मसाले और जैतून का तेल भी लाया।<sup>29</sup> सभी इसाएली पुरुष और महिलाएं जो स्वेच्छा से थे, उन्होंने यहोवा के लिए स्वेच्छा से भेंटे लाई, उन सभी कामों के लिए जो यहोवा ने मूरा के माध्यम से करने की आज्ञा दी थी।<sup>30</sup> तब मूरा ने इसाएलियों से कहा, “देखो, यहोवा ने यहूदा के गोत्र के हूर के पुत्र ऊरी के पुत्र बेज़लेल को चुना है, और उसे परमेश्वर की आमा से, ज्ञान, समझ, ज्ञान और सभी प्रकार की कला-कौशल से भर दिया है—<sup>32</sup> सोने, चाँदी और पीतल में कलास्क डिजाइन बनाने के लिए,<sup>33</sup> पत्थरों को काटने और जड़ने के लिए, लकड़ी में काम करने के लिए और सभी प्रकार की कलास्क कारीगरी में संलग्न होने के लिए।<sup>34</sup> और उसने उसे और दान के गोत्र के अहिसासक के पुत्र ओहोलीआब को

दूसरों को सिखाने की क्षमता दी है।<sup>35</sup> उसने उन्हें नकाशीकारों, डिजाइनरों, नीले, बैंगनी और किरमिजी सूत और उत्तम मलमल में कढ़ाई करने वालों और बुनकरों के रूप में सभी प्रकार के काम करने की कुशलता से भर दिया है—वे सभी कुशल कारीगर और डिजाइनर हैं।

**36** बेज़लेल, ओहोलीआब और हर कुशल व्यक्ति जिन्हें प्रभु ने योग्यता दी थी, पवित्रस्थान के निर्माण का कार्य करने के लिए, प्रभु की सभी आज्ञाओं का पालन करते हुए कार्य करने वाले थे।<sup>2</sup> मूरा ने बेज़लेल और ओहोलीआब और हर कुशल व्यक्ति को बुलाया जिनके हृदय को कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया था।<sup>3</sup> उन्होंने मूरा से सभी योगदान प्राप्त किए जो इसाएलियों ने लाए थे। लोग सुबह—सुबह और अधिक उपहार लाते रहे।<sup>4</sup> इसलिए सभी कुशल कारीगरों ने जो कार्य वे कर रहे थे उसे छोड़ दिया<sup>5</sup> और मूरा से कहा, “लोग उस कार्य के लिए जो प्रभु ने हमें करने की आज्ञा दी है, उससे अधिक ला रहे हैं।”<sup>6</sup> तब मूरा ने शिवर में एक आदेश भेजा: “कोई भी पुरुष या महिला पवित्रस्थान के लिए और उछल न लाए।” इसलिए लोगों को और लाने से रोका गया।<sup>7</sup> क्योंकि जो पहले ही दिया गया था वह सभी कार्य करने के लिए पर्याप्त से अधिक था।<sup>8</sup> लोगों में से सभी कुशल कारीगरों ने दस परदों से मिलकर तम्बू बनाया, जो बारीक काते हुए सन के थे, और नीले, बैंगनी और लाल धांगे से बने थे, जिन पर करूबों की कढ़ाई थी।<sup>9</sup> प्रत्येक पर्दा एक ही आकार का था: अद्वैतस हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा।<sup>10</sup> उन्होंने पाँच परदों को एक सेट में और अन्य पाँच को दूसरे सेट में जोड़ा।<sup>11</sup> उन्होंने प्रत्येक सेट के अंतिम पर्दे के किनारे पर नीले कपड़े के फटें बनाए।<sup>12</sup> एक पर्दे पर पचास फटें थे और दूसरे सेट के संबंधित पर्दे पर भी पचास फटें थे।<sup>13</sup> उन्होंने पचास सोने के विलाप्स बनाए और दानों सेटों के परदों को जोड़ दिया, ताकि तम्बू एक ही गया।<sup>14</sup> उन्होंने तम्बू को ढकने के लिए बकरी के बातों के घार हपरदे बनाए।<sup>15</sup> प्रत्येक पर्दा तीस हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा था।<sup>16</sup> उन्होंने पाँच परदों को एक सेट में और छह को दूसरे सेट में जोड़ा।<sup>17</sup> उन्होंने प्रत्येक सेट के अंतिम पर्दे के किनारे पर पचास फटें बनाए।<sup>18</sup> फिर उन्होंने तम्बू को जोड़ने के लिए पचास कांस्य के विलाप्स बनाए।<sup>19</sup> उन्होंने तम्बू के लिए लाल रंगे हुए मेढ़े की खाल से एक आवरण और एक बाहरी आवरण मजबूत चमड़े का बनाया।<sup>20</sup> उन्होंने तम्बू के लिए बबूल की लकड़ी के खड़े फ्रेम बनाए।<sup>21</sup> प्रत्येक फ्रेम दस हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ चौड़ा था।<sup>22</sup> प्रत्येक फ्रेम में दो जोड़ थे, जो एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।<sup>23</sup> उन्होंने तम्बू के दक्षिणी ओर

## निर्गमन

के लिए बीस फ्रेम बनाए<sup>24</sup> और उनके नीचे चालीस चौंदी के आधार बनाए—प्रत्येक फ्रेम के लिए दो आधार।<sup>25</sup> उत्तरी ओर के लिए, उन्होंने बीस फ्रेम बनाए<sup>26</sup> और चालीस चौंदी के आधार—प्रत्येक फ्रेम के नीचे दो।<sup>27</sup> पश्चिमी छोर के लिए, उन्होंने छह फ्रेम बनाए<sup>28</sup> और तम्बू के पीछे के कोनों के लिए दो फ्रेम बनाए।<sup>29</sup> ये कोने के फ्रेम नीचे और ऊपर दोनों पर एक ही अंगूठी से जुड़े हुए थे।<sup>30</sup> इस प्रकार आठ फ्रेम और सोलह चौंदी के आधार थे—प्रत्येक फ्रेम के नीचे दो।<sup>31</sup> उन्होंने बबूल की लकड़ी के क्रॉसबार बनाएः एक ओर के फ्रेम के लिए पाँच,<sup>32</sup> दूसरी ओर के फ्रेम के लिए पाँच, और पश्चिमी छोर के लिए पाँच।<sup>33</sup> उन्होंने मध्य क्रॉसबार को फ्रेम के आधे ऊँचाई पर एक छोर से दूसरे छोर तक चलाया।<sup>34</sup> उन्होंने फ्रेम को सोने से मढ़ा और क्रॉसबार को पकड़ने के लिए सोने की अंगूठियाँ बनाई। क्रॉसबार भी सोने से मढ़े गए थे।<sup>35</sup> उन्होंने नीले, बैंगनी, और लाल धागे और बारीक काटे हुए सन से पर्दा बनाया, जिसमें कुशल कारीगर द्वारा करूँबों की बुनाई की गई थी।<sup>36</sup> उन्होंने बबूल की लकड़ी के चार खंभे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा। उनके हुक सोने के थे, और उनके लिए चार चांदी के आधार ढाले।<sup>37</sup> तम्बू के प्रवेश द्वार के लिए, उन्होंने नीले, बैंगनी, और लाल धागे और बारीक काटे हुए सन से पर्दा बनाया—कढ़ाई करने वाले का कार्य।<sup>38</sup> उन्होंने इसके लिए पाँच खंभे बनाए। उन्होंने शीर्ष और बैंड को सोने से मढ़ा और पाँच कांस्य के आधार बनाए।

**37** बेजलेल ने बबूल की लकड़ी से सन्दूक बनाया, जो ढाई हाथ लंबा, डेढ़ हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊँचा था।<sup>2</sup> उसने इसे अंदर और बाहर से शुद्ध सोने से मढ़ा और उसके चारों ओर सोने की एक मोलिंग बनाई।<sup>3</sup> उसने चार सोने के छल्ले ढाले और उन्हें इसके चार पैरों पर लाया, प्रत्येक तरफ दो छल्ले।<sup>4</sup> उसने बबूल की लकड़ी के डंडे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा।<sup>5</sup> उसने सन्दूक को उठाने के लिए डंडों को छल्लों में डाला।<sup>6</sup> उसने शुद्ध सोने का प्रायश्चित्त का ढक्कन बनाया, जो ढाई हाथ लंबा और डेढ़ हाथ चौड़ा था।<sup>7</sup> उसने ढक्कन के सिरों पर हयोड़े से बनाए हुए सोने के दो करुब बनाए।<sup>8</sup> एक करुब एक सिर पर था, और दूसरा करुब दूसरे सिरे पर; दोनों ढक्कन के साथ एक ही टुकड़े के थे।<sup>9</sup> करुबों के पंखे ऊपर की ओर फैले हुए थे, जो ढक्कन को ढक रहे थे। वे एक-दूसरे की ओर मुँह किए हुए थे, और ढक्कन की ओर देख रहे थे।<sup>10</sup> उसने बबूल की लकड़ी से मेज बनाई, जो दो हाथ लंबी, एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची थी।<sup>11</sup> उसने इसे शुद्ध सोने से मढ़ा और उसके चारों ओर सोने की एक

मोलिंग बनाई।<sup>12</sup> उसने एक हथेती चौड़ी किनारी बनाई और उस पर सोने की मोलिंग लगाई।<sup>13</sup> उसने चार सोने के छल्ले ढाले और उन्हें मेज के चारों कोनों पर लगाया, जहाँ पैर थे।<sup>14</sup> छल्ले किनारी के पास थे ताकि मेज को उठाने के लिए डंडे रखे जा सकें।<sup>15</sup> उसने बबूल की लकड़ी के डंडे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा।<sup>16</sup> उसने मेज के लिए बर्तन बनाए—उसकी लेटें, थालियाँ, कटोरे, और जग—शुद्ध सोने से।<sup>17</sup> उसने शुद्ध सोने से दीपस्तंभ बनाया। आधार और ठंडल को हथोड़े से बनाया गया, और उसके फूलों के समान प्यारे, कलियाँ, और फूल एक ही टुकड़े के थे।<sup>18</sup> छह शाखाएँ इसके किनारों से निकली—तीन एक तरफ और तीन दूसरी तरफ।<sup>19</sup> प्रत्येक शाखा में तीन प्याले बादाम के फूलों के आकार के थे, कलियाँ और पंखुडियाँ के साथ।<sup>20</sup> दीपस्तंभ में स्वर्य चार प्याले बादाम के फूलों के आकार के थे, कलियाँ और पंखुडियों के साथ।<sup>21</sup> पहली जोड़ी शाखाओं के नीचे एक करती थी, दूसरी जोड़ी के नीचे दूसरी, और तीसरी जोड़ी के नीचे तीसरी—कुल छह शाखाएँ।<sup>22</sup> कलियाँ और शाखाएँ दीपस्तंभ के साथ एक ही टुकड़े के थे, शुद्ध सोने से हयोड़े से बनाए गए।<sup>23</sup> उसने इसके सात दीपक, बत्ती काटने के उपकरण, और ट्रे शुद्ध सोने से बनाए।<sup>24</sup> दीपस्तंभ और उसके सभी सामान के लिए एक किलोग्राम शुद्ध सोना प्रयोग किया गया।<sup>25</sup> उसने बबूल की लकड़ी से धूप की बैटी बनाई, जो एक हाथ चौड़ी और दो हाथ ऊँची थी, और उसके सींग एक ही टुकड़े के थे।<sup>26</sup> उसने ऊपर, किनारों और सींगों को शुद्ध सोने से मढ़ा और उसके चारों ओर सोने की मोलिंग बनाई।<sup>27</sup> उसने मोलिंग के नीचे विपरीत किनारों पर दो सोने के छल्ले बनाए ताकि इसे उठाने के लिए डंडे रखे जा सकें।<sup>28</sup> उसने बबूल की लकड़ी के डंडे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा।<sup>29</sup> उसने पवित्र अभिषेक का तेल और शुद्ध, सुर्यांशु धूप भी बनाई—इत्र बनाने वाले के काम के अनुसार।

## निर्गमन

उन्होंने इसे तख्तों से खोखला बनाया।<sup>8</sup> उन्होंने कांसे का बेसिन और उसका स्टैड उन स्थियों के दर्पणों से बनाया जो मिलाप के तंबू के द्वार पर सेवा करती थीं।<sup>9</sup> फिर उन्होंने अँगन बनाया। दक्षिण दिशा सौ हाथ लंबी थी और उसमें बारीक काते हुए सूत के परदे थे,<sup>10</sup> जिसमें बीस खंभे और बीस कांसे के आधार थे, खंभों पर चाँदी के हुक और बैंड थे।<sup>11</sup> उत्तर दिशा भी सौ हाथ लंबी थी, जिसमें वही परदे, खंभे, आधार, हुक और बैंड थे।<sup>12</sup> पश्चिमी छोर पवास हाथ चौड़ा था, जिसमें परदे, दस खंभे, दस आधार, चाँदी के हुक और बैंड थे।<sup>13</sup> पूर्वी छोर भी पवास हाथ चौड़ा था।<sup>14</sup> प्रवेश के एक ओर पंद्रह हाथ लंबे परदे थे, जिसमें तीन खंभे और तीन आधार थे,<sup>15</sup> और प्रवेश के दूसरी ओर पंद्रह हाथ लंबे परदे थे, जिसमें तीन खंभे और तीन आधार थे।<sup>16</sup> अँगन के चारों ओर के सभी परदे बारीक काते हुए सूत के थे।<sup>17</sup> खंभों के आधार कांसे के थे। हुक और बैंड चाँदी के थे। खंभों के शीर्ष चाँदी से मढ़े हुए थे, और सभी खंभों पर चाँदी के बैंड थे।<sup>18</sup> प्रवेश के लिए परदा नीले, बैंगनी और लाल सूत से कढाई किया हुआ था, जो बारीक काते हुए सूत पर था। यह बीस हाथ लंबा और पाँच हाथ ऊँचा था,<sup>19</sup> जिसमें चार खंभे और चार कांसे के आधार थे। हुक और बैंड चाँदी के थे, और उनके शीर्ष चाँदी से मढ़े हुए थे।<sup>20</sup> तंबू और अँगन के सभी खूँटी कांसे के थे।<sup>21</sup> यह तंबू की सूखी है, वाचा के नियम का तंबू, जिसे मूसा के आदेश पर लेवियों द्वारा इथामार, हारून के पुत्र, के अधीन दर्ज किया गया।<sup>22</sup> यहूदा के गोत्र के दूर के पुत्र उरी के पुत्र बैज्ञलेत ने वह सब कुछ बनाया जो यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।<sup>23</sup> उसके साथ दान के गोत्र के अहिसामक के पुत्र ओहोलीआब था—जो एक कारीगर और डिज़िनर था और नीले, बैंगनी और लाल सूत और बारीक सूत में कढाई करने वाला था।<sup>24</sup> लहराने के अर्पण से काम में उपयोग की गई सोने की कुल मात्रा उन्नीस किकर और 730 शेकेल थी, जो पवित्र स्थान के मानक के अनुसार थी।<sup>25</sup> सामुदायिक गिनती से प्राप्त चाँदी की मात्रा 100 किकर और 1,775 शेकेल थी।<sup>26</sup> यह हर उस स्थिति से था जो बीस वर्ष या उससे अधिक अयु का था और गिना गया था, कुल 603,550 व्यक्ति।<sup>27</sup> सो किकर चाँदी का उपयोग पवित्र स्थान और परदे के आधारों को ढालने के लिए किया गया—100 आधार 100 किकर से, एक आधार प्रति किकर।<sup>28</sup> 1,775 शेकेल का उपयोग हुक बनाने और खंभों के शीर्ष को मढ़ने और बैंड बनाने के लिए किया गया।<sup>29</sup> अर्पण से कांसे की मात्रा 70 किकर और 2,400 शेकेल थी।<sup>30</sup> इसका उपयोग मिलाप के तंबू के प्रवेश के लिए आधार, कांसे की बैंदी और उसकी जाली, उसके सभी बर्तनों के लिए किया गया,<sup>31</sup> और चारों ओर

के अँगन और प्रवेश परदे के लिए आधार, साथ ही तंबू और अँगन के सभी खूँटे के लिए भी।

**39** अब नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े से, उन्होंने पवित्र स्थान में सेवा करने के लिए बारीक बुने हुए वस्त्र बनाए, और हारून के लिए पवित्र वस्त्र भी बनाए, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>2</sup> उसने सोने का एपोद बनाया, और नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े और बारीक काते हुए मलमल का।<sup>3</sup> फिर उन्होंने सोने की चारे पीटकर उन्हें धागों में काटा, ताकि उन्हें नीले, बैंगनी, लाल कपड़े और बारीक मलमल में बुना जा सके, कुशल कारीगर का काम।<sup>4</sup> उन्होंने एपोद के लिए जोड़ने वाले कंथे के टुकड़े बनाए; यह उसके दो ऊपरी सिरों पर जोड़ा गया था।<sup>5</sup> और उसके ऊपर की कौशलपूर्वक बुनी हुई पट्टी, जो उस पर थी, उसकी कारीगरी के समान थी, उसी सामग्री की: सोने की, और नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े की, और बारीक काते हुए मलमल की, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>6</sup> उन्होंने ओनेस्स पत्तर भी बनाए, सोने की जाली में जड़े हुए, मुहर की नक्काशी की तरह खुदे हुए, इसाएल के पुत्रों के नामों के अनुसार।<sup>7</sup> और उसने उन्हें एपोद के कंथे के टुकड़ों पर रखा, इसाएल के पुत्रों के लिए स्मारक पत्तर के रूप में, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>8</sup> और उसने छाती का पट्टा बनाया, कुशल कारीगर का काम, एपोद के काम की तरह: सोने का, और नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े का, और बारीक काते हुए मलमल का।<sup>9</sup> यह चौकोर था; उन्होंने छाती का पट्टा दोगुना मोड़कर बनाया, एक बित्ते लंबा और एक बित्ते चौड़ा जब दोगुना मोड़ा गया।<sup>10</sup> और उन्होंने उस पर चार पंक्तियों में पत्तर जड़े। पहली पंक्ति में मार्णिक, पुखराज, और पञ्चा था;<sup>11</sup> और दूसरी पंक्ति: फिरोज़ा, नीलम, और हीरा;<sup>12</sup> और तीसरी पंक्ति: लहसुनिया, अगेट, और बैंगनी पत्तर;<sup>13</sup> और चौथी पंक्ति: पीला पत्तर, ओनेक्स, और जैस्पर। जब वे जड़े गए थे, तो वे सोने की जाली में जड़े हुए थे।<sup>14</sup> पत्तर इसाएल के पुत्रों के नामों के अनुसार: वे मुहर की तरह खुदे हुए थे, प्रत्येक अपने नाम के साथ बारह गोत्रों के लिए।<sup>15</sup> और उन्होंने छाती के पट्टे पर जंजीरें बनाई, जैसे कि रस्सियाँ, शुद्ध सोने की धुमावदार कारीगरी की।<sup>16</sup> उन्होंने दो सोने की जाली की सेटिंस और दो सोने की अंगूठियाँ भी बनाई, और छाती के पट्टे के दो सिरों पर दो अंगूठियाँ लगाई।<sup>17</sup> फिर उन्होंने दो सोने की रस्सियाँ छाती के पट्टे के सिरों पर दो अंगूठियों में डाली।<sup>18</sup> और उन्होंने दो रस्सियों के अन्य दो सिरों को दो जाली की सेटिंस पर लगाया, और उन्हें एपोद के कंथे के टुकड़ों पर, उसके

## निर्गमन

सामने लगाया।<sup>19</sup> उन्होंने सोने की दो अंगूठियाँ बनाई और उन्हें छाती के पट्टे के दो सिरों पर, एपोद के पास के भीतरी किनारे पर रखा।<sup>20</sup> उन्होंने एपोद के कंधे के टुकड़ों के नीचे, उसके सामने, जहाँ वह जुड़ा था, के पास, एपोद की बुनी हुई पट्टी के ऊपर, दो और सोने की अंगूठियाँ बनाई।<sup>21</sup> और उन्होंने छाती के पट्टे को उसकी अंगूठियों से एपोद की अंगूठियों से नीले डोरी से बँधा, ताकि यह एपोद की बुनी हुई पट्टी पर हो, और छाती का पट्टा एपोद से ढीला न हो, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>22</sup> फिर उसने एपोद का वस्त बुनी हुई कारीगरी का बनाया, सब नीला;<sup>23</sup> और वस्त का उद्घाटन ऊपर के केंद्र में था, जैसे कि एक कोट का उद्घाटन, उसके उद्घाटन के चारों ओर एक बंधन के साथ, ताकि यह न फटे।<sup>24</sup> उन्होंने वस्त के किनारे पर नीले बैंगनी, और लाल कपड़े के अनार और काते हुए मलमल बनाए।<sup>25</sup> उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ भी बनाई, और वस्त के किनारे के चारों ओर अनारों के बीच घंटियाँ लगाई,<sup>26</sup> वस्त के किनारे के चारों ओर सेवा के लिए एक घंटी और एक अनार, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>27</sup> उन्होंने हारून और उसके पुत्रों के लिए बारीक बुने हुए मलमल की अंगरखियाँ भी बनाई,<sup>28</sup> और बारीक मलमल की पगड़ी, और बारीक मलमल की सजावटी टोपियाँ, और बारीक काते हुए मलमल के अंतर्वस्त,<sup>29</sup> और बारीक काते हुए मलमल की पट्टी, और नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े की, कढ़ाई करने वाले का काम, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>30</sup> उन्होंने शुद्ध सोने का पवित्र मुकुट का पट्टिका भी बनाई, और उन्होंने उस पर मुहर की नकाशी की तरह खुदाई की, "यहोवा के लिए पवित्र।"<sup>31</sup> और उन्होंने उसे नीले डोरी से बँधा, ताकि उसे पागड़ी के ऊपर बँधा जा सके, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>32</sup> इस प्रकार मिलाप के तंबू का सारा काम पूरा हुआ; और इसाएल के पुत्रों ने सब कुछ किया जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी; उन्होंने ऐसा किया।<sup>33</sup> फिर वे तंबू की मूसा के पास लाए: तंबू और उसके सभी सामान, उसके क्लोस्स, उसके बोर्ड, उसके क्रॉसबार, उसके स्टंभ, और उसके आधार;<sup>34</sup> और मेंढ़ी की खाल का ढकना, लाल रंग में रंगा हुआ, और बारीक चमड़े का ढकना, और पर्दा का परदा;<sup>35</sup> गवाही का सन्दूक और उसके डंडे, और प्रायश्चित का ढकना;<sup>36</sup> मेज, उसके सभी बर्तन, और उपस्थिति की रोटी;<sup>37</sup> शुद्ध सोने का दीपस्तंभ, उसके दीपों की व्यवस्था के साथ और उसके सभी बर्तन, और दीप के लिए तेल;<sup>38</sup> और सोने की वेदी, अभिषेक का तेल, और सुर्यांशित धूप, और तंबू के प्रवेश के लिए पर्दा;<sup>39</sup> पीतल की वेदी और उसकी पीतल की जाली, उसके डंडे, और उसके सभी बर्तन, बेसिन और उसका

स्टैंड;<sup>40</sup> औंगन के लिए पर्दे, उसके स्टंभ और उसके आधार, और आँगन के फाटक के लिए पर्दा, उसकी रस्सियाँ और उसके खूटे, और तंबू की सेवा के लिए सभी उपकरण, मिलाप के तंबू के लिए;<sup>41</sup> पवित्र स्थान में सेवा करने के लिए बुने हुए वस्त, और हारून याजक के लिए पवित्र वस्त और उसके पुत्रों के वस्त, याजक के रूप में सेवा करने के लिए।<sup>42</sup> इस प्रकार इसाएल के पुत्रों ने सब काम किया जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>43</sup> और मूसा ने सब काम का निरीक्षण किया, और देखो, उन्होंने उसे किया; जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी थी, उन्होंने ऐसा किया। और मूसा ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

**40** तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> "पहले महीने के पहले दिन को मिलापवाले तम्बू अर्थात् तम्बू का निर्माण करो। <sup>3</sup> वाचा के सन्दूक को अंदर रखो और उसे परदे से ढक दो। <sup>4</sup> मेज को अंदर लाओ और उस पर जो कुछ रखना है उसे रखो। दीपस्तम्भ को अंदर लाओ और उसके दीपक लगाओ। <sup>5</sup> वाचा के सन्दूक के सामने सोने की धूप की वेदी रखो और तम्बू के प्रवेश द्वार पर परदा लगाओ। <sup>6</sup> होमबलि की वेदी को तम्बू अर्थात् मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार के सामने रखो। <sup>7</sup> मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में जलापात्र रखो और उसमें पानी भरो। <sup>8</sup> इसके चारों ओर औंगन का निर्माण करो और प्रवेश द्वार पर परदा लगाओ। <sup>9</sup> अभिषेक का तेल लेकर तम्बू और उसके सभी सामान को पवित्र करो, और वह पवित्र हो जाएगा। <sup>10</sup> होमबलि की वेदी और उसके सभी उपकरणों का अभिषेक करो; वेदी को पवित्र करो और वह परम पवित्र हो जाएगी। <sup>11</sup> जलापात्र और उसके आधार का अभिषेक करो और उन्हें पवित्र करो। <sup>12</sup> हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार पर लाओ और उन्हें पानी से थोओ। <sup>13</sup> हारून को पवित्र वस्त पहनाओ और उसका अभिषेक करो और उसे पवित्र करो ताकि वह मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सके। <sup>14</sup> उसके पुत्रों को लाओ और उन्हें अंगरखे पहनाओ। <sup>15</sup> जैसे तुमने उनके पिता का अभिषेक किया, वैसे ही उनका भी अभिषेक करो, ताकि वे भी मेरे लिए याजक के रूप में सेवा कर सके। उनका अभिषेक उन्हें उनकी पीढ़ियों में स्थायी याजकता के रूप में चिह्नित करेगा।" <sup>16</sup> मूसा ने सब कुछ वैसे ही किया जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। <sup>17</sup> इस प्रकार दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन को तम्बू का निर्माण किया गया। <sup>18</sup> जब मूसा ने तम्बू का निर्माण किया, तो उसने उसकी नींव रखी, उसके छाँचे को खड़ा किया, उसके क्रॉसबार डाले और उसके खंभे खड़े किए। <sup>19</sup> फिर उसने तम्बू पर तम्बू का कपड़ा फैलाया

## निर्गमन

और उसके ऊपर आवरण रखा, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>20</sup> उसने वाचा की व्यवस्था की पट्टियाँ लीं और उन्हें सन्दूक में रखा, सन्दूक में डंडे लगाए और उसके ऊपर प्रायश्चित्त का आवरण रखा।<sup>21</sup> फिर उसने सन्दूक को तम्बू में लाया, परदा लटकाया, और वाचा की व्यवस्था के सन्दूक को ढक दिया, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>22</sup>

उसने मेज को तम्बू के ऊतरी ओर, परदे के बाहर रखा।

<sup>23</sup> उसने उस पर यहोवा के सामने रोटी रखी, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>24</sup> उसने दीपस्तम्भ को तम्बू में मेज के विपरीत दक्षिण दिशा में रखा।<sup>25</sup> उसने यहोवा के सामने दीपक लगाए, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>26</sup>

मूसा ने सोने की वेदी को तम्बू में परदे के सामने रखा<sup>27</sup> और उस पर सुगंधित धूप जलाई, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>28</sup> फिर उसने तम्बू के प्रवेश द्वार पर परदा

लटकाया।<sup>29</sup> उसने होमबलि की वेदी को तम्बू के प्रवेश द्वार के पास रखा और उस पर होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>30</sup> उसने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में जतापत्र रखा और उसमें धोने के लिए पानी भरा।<sup>31</sup> मूसा, हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ और पाँव धोने के लिए इसका उपयोग किया।

<sup>32</sup> वे जब भी मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करते या वेदी के पास जाते, तो धोते थे, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>33</sup>

फिर मूसा ने तम्बू और वेदी के चारों ओर आँगन का निर्माण किया और प्रवेश द्वार पर परदा लटकाया। और इस प्रकार मूसा ने कार्य पूरा किया।<sup>34</sup> तब बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया, और यहोवा की महिमा ने तम्बू को भर दिया।<sup>35</sup> मूसा मिलापवाले तम्बू में प्रवेश नहीं कर सका क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था,

और यहोवा की महिमा ने तम्बू को भर दिया।<sup>36</sup>

इसाएलियों की सभी यात्राओं में, जब भी बादल तम्बू के ऊपर से उठता, वे यात्रा करते;<sup>37</sup> परन्तु यदि बादल नहीं उठता, तो वे यात्रा नहीं करते—जब तक कि वह दिन न आ जाए जब वह उठता।<sup>38</sup> इस प्रकार यहोवा का बादल दिन में तम्बू के ऊपर रहता था, और रात में बादल में आग होती थी, इसाएलियों की सभी यात्राओं में उनके सामने।

## लेवियों

**1** प्रभु ने मूसा को बुलाया और मिलापवाले तंबू से उससे कहा, <sup>2</sup> “इस्माएलियों से कहोः जब तुम्हें से कोई प्रभु के लिए भेट लाए तो तुम्हारी भेट पशुओं में से होनी चाहिए—या तो गाय-बैल के झुंड से या भेड़-बकरियों के झुंड से। <sup>3</sup> यदि भेट गाय-बैल के झुंड से हो और वह होमबलि हो, तो वह निर्दोष नर होना चाहिए। उसे मिलापवाले तंबू के प्रवेशद्वार पर लाओ तकि वह प्रभु के सामने स्वीकार किया जा सके। <sup>4</sup> तुम्हें होमबलि के सिर पर हाथ रखना चाहिए, और यह तुम्हारे लिए स्वीकार किया जाएगा ताकि तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त हो सके। <sup>5</sup> तुम्हें जवान बैल को प्रभु के सामने वध करना चाहिए, और हारून के पुत्र याजक रक्त को लेकर उसे मिलापवाले तंबू के प्रवेशद्वार पर वेदी के किनारों पर छिड़केंगे। <sup>6</sup> फिर होमबलि की खाल उतारो और उसे टुकड़ों में काटो। <sup>7</sup> हारून के पुत्र याजक वेदी पर आग लगाएंगे और आग पर लकड़ी सजाएंगे। <sup>8</sup> फिर हारून के पुत्र टुकड़ों को—सिर और चर्बी सहित—वेदी पर जलती हुई लकड़ी पर सजाएंगे। <sup>9</sup> तुम्हें अंतरिक अंगों और पैरों को पानी से धोना चाहिए, और याजक उसे वेदी पर पूरी तरह से जलाएगा। यह होमबलि है, अन्नबलि है, एक सुगंध जो प्रभु को प्रसन्न करती है। <sup>10</sup> यदि भेट भेड़-बकरियों के झुंड से हो और वह होमबलि हो, तो वह निर्दोष नर होना चाहिए। <sup>11</sup> उसे वेदी के उत्तर दिशा में प्रभु के सामने वध करो, और हारून के पुत्र याजक उसके रक्त को वेदी के किनारों पर छिड़केंगे। <sup>12</sup> उसे टुकड़ों में काटो, और याजक उन्हें, सिर और चर्बी सहित, वेदी पर जलती हुई लकड़ी पर सजाएंगे। <sup>13</sup> तुम्हें अंतरिक अंगों और पैरों को पानी से धोना चाहिए, और याजक उसे पूरी तरह से वेदी पर चढ़ाएगा और जलाएगा। यह होमबलि है, अन्नबलि है, एक सुगंध जो प्रभु को प्रसन्न करती है। <sup>14</sup> यदि प्रभु के लिए भेट पक्षियों की हो और वह होमबलि हो, तो तुम्हें कबूतर या जवान पंछी चढ़ाना चाहिए। <sup>15</sup> याजक उसे वेदी पर लाएगा, सिर की मरोड़कर वेदी पर जलाएगा। उसका रक्त वेदी के किनारे पर बहाया जाएगा। <sup>16</sup> वह फसल और पंखों को हटाकर वेदी के पूर्व दिशा में, जहां राख होती है, फेंक देगा। <sup>17</sup> वह उसे पंखों से खोल देगा, बिना पूरी तरह से विभाजित किए, और उसे आग पर लकड़ी के साथ जलाएगा। यह होमबलि है, अन्नबलि है, एक सुगंध जो प्रभु को प्रसन्न करती है।

**2** जब कोई व्यक्ति यहोवा के लिए अन्न भेट लाए, तो उसकी भेट उत्तम आटे की होनी चाहिए। उसे उस पर तेल डालना चाहिए और उस पर लोबान रखना चाहिए, <sup>2</sup> और उसे हारून के पुत्रों, याजकों के पास ले जाना चाहिए। याजक आटे और तेल की एक मुट्ठी, साथ ही

सारे लोबान को लेकर, इसे वेदी पर स्मरणीय अंश के रूप में जलाएगा—यह एक खाद्य भेट है, जो यहोवा को सुआधित होती है। <sup>3</sup> अन्न भेट का शेष भाग हारून और उसके पुत्रों का होता है। यह यहोवा के समक्ष प्रस्तुत की गई खाद्य भेटों का सबसे पवित्र भाग है। <sup>4</sup> यदि तुम ओवन में पकी हुई अन्न भेट लाते हो, तो यह बिना खमीर के बने मटे रोटियों का होना चाहिए, जो तेल के साथ मिश्रित हों, या बिना खमीर के पतली रोटियाँ, जो तेल से चुपड़ी हों। <sup>5</sup> यदि तुम्हारी अन्न भेट तरवे पर तैयार की गई है, तो यह उत्तम आटे और तेल के साथ बिना खमीर की होनी चाहिए। <sup>6</sup> इसे टुकड़ों में तोड़कर उस पर तेल डालो; यह अन्न भेट है। <sup>7</sup> यदि तुम्हारी अन्न भेट कढ़ाई में पकाई गई है, तो यह उत्तम आटे और तेल की होनी चाहिए। <sup>8</sup> इन चीजों से बनी अन्न भेट को यहोवा के पास लाओ, इसे याजक के सामने प्रस्तुत करो, जो इसे वेदी तक ले जाएगा। <sup>9</sup> वह स्मरणीय अंश को निकालकर वेदी पर खाद्य भेट के रूप में जलाएगा, जो यहोवा को सुआधित होती है। <sup>10</sup> अन्न भेट का शेष भाग हारून और उसके पुत्रों का होता है। यह यहोवा के लिए खाद्य भेटों का सबसे पवित्र भाग है। <sup>11</sup> हर अन्न भेट जो तुम यहोवा के लिए लाते हो, वह बिना खमीर की होनी चाहिए, क्योंकि तुम यहोवा के समक्ष प्रस्तुत की गई खाद्य भेट में कोई खमीर या शहद नहीं जलाओगे। <sup>12</sup> तुम उन्हें यहोवा के पास पहिलौटी की भेट के रूप में ला सकते हो, लेकिन उन्हें वेदी पर सुआधित भेट के रूप में नहीं चढ़ाया जाना चाहिए। <sup>13</sup> अपनी सभी अन्न भेटों को नमक के साथ सजाओ। अपनी अन्न भेटों से अपने परमेश्वर की वाचा का नमक न छोड़ो; अपनी सभी भेटों में नमक डालो। <sup>14</sup> यदि तुम यहोवा के लिए पहिलौटी की अन्न भेट लाते हो, तो आग में भुने हुए नए अनाज के कुचले हुए सिर चढ़ाओ। <sup>15</sup> उस पर तेल और लोबान डालो; यह अन्न भेट है। <sup>16</sup> याजक कुचले हुए अनाज और तेल के स्मरणीय अंश को, साथ ही सारे लोबान को, यहोवा के लिए खाद्य भेट के रूप में जलाएगा।

**3** यदि कोई मेलबलि चढ़ाता है और वह झुंड से है, तो वह नर या मादा हो सकता है, लेकिन उसमें कोई दोष नहीं होना चाहिए। इसे प्रभु के सामने प्रस्तुत करें। <sup>2</sup> अपनी भेट के सिर पर हाथ रखें और इसे मिलापवाले तंबू के प्रवेश द्वार पर वध करें। तब हारून के पुत्र वेदी के किनारों पर रक्त छिड़केंगे। <sup>3</sup> मेलबलि से, प्रभु के लिए एक अन्नबलि प्रस्तुत करें; वह चर्बी जो अंतरिक अंगों को ढकती है और उनसे जुड़ी सभी चर्बी, <sup>4</sup> दोनों गुर्दे उनके पास की चर्बी के साथ, और यकृत की लंबी लोब, जिसे गुर्दों के साथ निकालना चाहिए। <sup>5</sup> हारून के पुत्र इसे वेदी पर जलाएंगे, जो जलती हुई अन्नबलि के

## लेवियों

ऊपर लकड़ी पर है। यह एक अन्नबलि है, जो प्रभु को सुगंधित होती है।<sup>6</sup> यदि भेट बूँद से है, चाहे भेड़ हो या बकरी, तो उसमें कोई दोष नहीं होना चाहिए।<sup>7</sup> यदि वह एक मेमना है, तो इसे प्रभु के सामने प्रस्तुत करें,<sup>8</sup> उसके सिर पर हाथ रखें और मिलापवाले तंबू के सामने वध करें। तब हारून के पुत्र उसके रक्त को वेदी के किनारों पर छिड़केंगे।<sup>9</sup> मेलबलि से, प्रभु के लिए एक अन्नबलि प्रस्तुत करें: चर्बी, पूरी चर्बीवाली पूँछ जो रीढ़ की हड्डी के पास से काटी जाती है, आंतरिक अंगों को ढकने वाली चर्बी,<sup>10</sup> दोनों गुर्दे उनके पास की चर्बी के साथ, और यकृत की लंबी लोब, जिसे गुर्दों के साथ निकालना चाहिए।<sup>11</sup> याजक इसे वेदी पर एक अन्नबलि के रूप में जलाएगा, जो प्रभु को प्रस्तुत की जाती है।<sup>12</sup> यदि भेट एक बकरी है, तो इसे प्रभु के सामने प्रस्तुत किया जाए,<sup>13</sup> उसके सिर पर हाथ रखें और मिलापवाले तंबू के सामने वध करें। हारून के पुत्र उसके रक्त को वेदी के किनारों पर छिड़केंगे।<sup>14</sup> एक अन्नबलि के रूप में वह चर्बी प्रस्तुत करें जो आंतरिक अंगों को ढकती है और उनसे जुड़ी सभी चर्बी,<sup>15</sup> दोनों गुर्दे उनके पास की चर्बी के साथ, और यकृत की लंबी लोब, जिसे गुर्दों के साथ निकालना चाहिए।<sup>16</sup> याजक उन्हें वेदी पर एक अन्नबलि के रूप में जलाएगा, एक सुगंधित सुआध। सारी चर्बी प्रभु की होती है।<sup>17</sup> यह आने वाली पीटियों के लिए एक स्थायी नियम है, जहाँ भी आप रहते हैं: आपको कोई भी चर्बी या कोई भी रक्त नहीं खाना चाहिए।

**4** यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो: यदि कोई अनजाने में पाप करता है और यहोवा की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है—<sup>3</sup> यदि अभिषिक्त याजक पाप करता है, जिससे लोगों पर दोष आता है, तो उसे यहोवा के सामने एक निर्दोष युवा बैल को पापबलि के रूप में लाना चाहिए जो उसने पाप किया है।<sup>4</sup> उसे बैल को यहोवा के सामने मिलापवाले तंबू के द्वार पर लाना चाहिए, उसके सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे यहोवा के सामने वध करना चाहिए।<sup>5</sup> फिर अभिषिक्त याजक बैल के कुछ रक्त को लेकर मिलापवाले तंबू में ले जाएगा।<sup>6</sup> उसे अपनी उंगली को रक्त में डुबोकर उसे पवित्रस्थान के पर्दे के सामने यहोवा के सामने सात बार छिड़कना चाहिए।<sup>7</sup> याजक कुछ रक्त को मिलापवाले तंबू में यहोवा के सामने सुगंधित धूप की वेदी के सींगों पर लगाएगा। बाकी रक्त को आधार पर तंबू के द्वार पर उड़ेलेगा।<sup>8</sup> वह सारी चर्बी को निकालकर वेदी पर जलाएगा,<sup>9</sup> और इस बैल के साथ वही करेगा जैसा उसने पहले पापबलि के बैल के साथ किया था। इस प्रकार याजक समुदाय के लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।<sup>10</sup> फिर वह बैल को शिविर के बाहर ले जाएगा और उसे पहले बैल की तरह जलाएगा। यह सभा के लिए एक पापबलि है।<sup>11</sup> जब कोई नेता अनजाने में पाप करता है और यहोवा अपने परमेश्वर की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, तो वह दोषी है।<sup>12</sup> जब उसे अपने पाप का पता चलता है, तो उसे एक निर्दोष नर बकरी लानी चाहिए।<sup>13</sup> उसे बकरी के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर वध करना चाहिए जहाँ होमबलि वध की जाती है।<sup>14</sup> उसे एक निर्दोष नर बकरी को लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाएगा। बाकी रक्त को वह वेदी के आधार पर उड़ेलेगा।<sup>15</sup> वह सारी चर्बी को वेदी पर जलाएगा जैसे मेलबलि में किया जाता है। इस प्रकार याजक नेता के पाप के लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा मिल जाएगी।<sup>16</sup> यदि समुदाय का कोई सदस्य अनजाने में पाप करता है और यहोवा की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, तो वह दोषी है।<sup>17</sup> जब उसे अपने पाप का पता चलता है, तो उसे एक निर्दोष मादा बकरी लानी चाहिए।<sup>18</sup> उसे पापबलि के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे होमबलि के स्थान पर वध करना चाहिए।<sup>19</sup> फिर याजक

वह गुर्दों के साथ निकालेगा—<sup>20</sup> जैसे मेलबलि के बैल से चर्बी निकाली जाती है। फिर याजक उन्हें होमबलि की वेदी पर जलाएगा।<sup>21</sup> लेकिन बैल की खाल, उसका सारा मांस, उसका सिर, पैर, आंतरिक अंग और आंते—<sup>22</sup> अर्थात् बैल का बाकी हिस्सा—उसे शिविर के बाहर एक शुद्ध स्थान पर ले जाना चाहिए जहाँ राख फेंकी जाती है, और उसे राख के द्वे पर लकड़ी की आग में जलाना चाहिए।<sup>23</sup> यदि पूरा इसाएली समुदाय अनजाने में पाप करता है और यहोवा की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, भले ही समुदाय अनजान हो, वे दोषी हैं।<sup>24</sup> जब उन्हें अपने किए गए पाप का पता चलता है, तो सभा को एक युवा बैल को पापबलि के रूप में लाना चाहिए और उसे मिलापवाले तंबू के सामने प्रस्तुत करना चाहिए।<sup>25</sup> समुदाय के बुजुर्गों की यहोवा के सामने बैल के सिर पर हाथ रखना चाहिए, और उसे यहोवा के सामने प्रस्तुत करना चाहिए।<sup>26</sup> फिर अभिषिक्त याजक बैल के कुछ रक्त को मिलापवाले तंबू में ले जाएगा।<sup>27</sup> वह अपनी उंगली को रक्त में डुबोकर उसे पर्दे के सामने यहोवा के सामने सात बार छिड़कना चाहिए।<sup>28</sup> वह कुछ रक्त को मिलापवाले तंबू में यहोवा के सामने वेदी के सींगों पर लगाएगा। बाकी रक्त को वह होमबलि की वेदी के आधार पर तंबू के द्वार पर उड़ेलेगा।<sup>29</sup> वह सारी चर्बी को निकालकर वेदी पर जलाएगा और इस बैल के साथ वही करेगा जैसा उसने पहले पापबलि के बैल के साथ किया था। इस प्रकार याजक समुदाय के लिए क्षमा मिल जाएगी।<sup>30</sup> फिर वह बैल को शिविर के बाहर ले जाएगा और उसे पहले बैल की तरह जलाएगा। यह सभा के लिए एक पापबलि है।<sup>31</sup> जब कोई नेता अनजाने में पाप करता है और यहोवा अपने परमेश्वर की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, तो वह दोषी है।<sup>32</sup> जब उसे अपने पाप का पता चलता है, तो उसे एक निर्दोष नर बकरी लानी चाहिए।<sup>33</sup> उसे बकरी के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर वध करना चाहिए जहाँ होमबलि वध की जाती है।<sup>34</sup> उसे एक निर्दोष मादा बकरी लानी चाहिए।<sup>35</sup> फिर याजक नेता के पाप के लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा मिल जाएगी।<sup>36</sup> यदि समुदाय का कोई सदस्य अनजाने में पाप करता है और यहोवा की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, तो वह दोषी है।<sup>37</sup> जब उसे अपने पाप का पता चलता है, तो उसे एक निर्दोष मादा बकरी लानी चाहिए।<sup>38</sup> उसे पापबलि के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे होमबलि के स्थान पर वध करना चाहिए।<sup>39</sup> फिर याजक

## लेवियों

अपनी उंगली से कुछ रक्त लेकर वेदी के सीधों पर लगाएगा। बाकी रक्त को वह वेदी के आधार पर उंडेलेगा।<sup>31</sup> वे सारी चर्बी को निकालकर वेदी पर जलाएंगे। इस प्रकार याजक प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।<sup>32</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पापबलि के रूप में एक भेड़ का बच्चा लाता है, तो वह एक निर्दोष मादा होनी चाहिए।<sup>33</sup> उसे उसके सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर पापबलि के लिए वध करना चाहिए जहाँ होमबलि वध की जाती है।<sup>34</sup> फिर याजक अपनी उंगली से कुछ रक्त लेकर वेदी के सीधों पर लगाएगा, और बाकी रक्त को आधार पर उंडेलेगा।<sup>35</sup> वे सारी चर्बी को निकालेंगे, जैसे मेलबलि में किया जाता है, और याजक उसे वेदी पर जलाएगा। इस प्रकार याजक उनके लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।

**5** यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और जब वह किसी सर्वजनिक आरोप को सुनता है कि उसे गवाही देनी है, जो उसने देखा या सीखा है, और वह नहीं बोलता, तो उसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा।<sup>2</sup> यदि वे किसी धार्मिक रूप से अशुद्ध वस्तु को छूते हैं—चाहे वह अशुद्ध जंगली जानवर, पशुधन, या ज़मीन पर चलने वाला प्राणी हो—यहाँ तक कि अनजाने में, वे अशुद्ध और दोषी हो जाते हैं।<sup>3</sup> यदि वे मानव अशुद्धता को छूते हैं, कोई भी वस्तु जो उन्हें अशुद्ध बना सकती है, यहाँ तक कि बिना जाने, वे दोषी हो जाते हैं।<sup>4</sup> यदि वे कोई लापरवाह शपथ लेते हैं—चाहे अच्छा करने की हो या बुरा करने की—और बाद में उसे महसूस करते हैं, तो वे दोषी हैं।<sup>5</sup> जब कोई व्यक्ति इन मामलों में से किसी भी दोषी होने का एहसास करता है, तो उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि उसने किस प्रकार पाप किया है।<sup>6</sup> उन्हें उस पाप के लिए जो उन्होंने किया है, प्रभु के लिए एक दोष भेट लानी चाहिए—झुड़ से एक मादा भेड़ या बकरी। याजक उनके पक्ष में प्रायश्चित्त करेगा।<sup>7</sup> यदि वे एक भेड़ का खर्च नहीं उठा सकते, तो उन्हें दो कबूतर या दो युगा कबूतर लाने चाहिए—एक पाप भेट के लिए और दूसरा होम भेट के लिए।<sup>8</sup> उन्हें याजक के पास लाना चाहिए, जो पहले पाप भेट के लिए एक को अर्पित करेगा। याजक उसकी गर्दन मरोड़ा लैकिन पूरी तरह से अलग नहीं करेगा।<sup>9</sup> उसे पाप भेट के खुन का कुछ भाग वेदी के किनारे पर छिड़कना चाहिए और बाकी को उसके आधार पर बहा देना चाहिए। यह एक पाप भेट है।<sup>10</sup> फिर याजक दूसरे पक्षी को होम भेट के रूप में अर्पित करेगा, सामान्य प्रक्रिया के अनुसार। इस प्रकार, याजक उनके लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।<sup>11</sup> यदि वे दो कबूतरों का खर्च नहीं उठा सकते, तो

उन्हें पाप भेट के रूप में एक एपा के दसवें भाग का सबसे अच्छा आटा लाना चाहिए। उन्हें तेल या धूप नहीं डालना चाहिए, क्योंकि यह एक पाप भेट है।<sup>12</sup> उन्हें इसे याजक के पास लाना चाहिए, जो एक मुट्ठी भर स्मारक भाग के रूप में लेगा और उसे वेदी पर प्रभु के लिए भोजन भेट के रूप में जलाएगा। यह एक पाप भेट है।<sup>13</sup> इस प्रकार याजक उनके लिए इन मामलों में किए गए किसी भी पाप के लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी। बाकी याजक का है, जैसे अन्न भेट के साथ होता है।<sup>14</sup> प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>15</sup> “यदि कोई व्यक्ति अविक्षापूर्ण होता है और अनजाने में प्रभु की पवित्र वस्तुओं के संबंध में पाप करता है, तो उसे प्रभु के लिए एक दोष भेट लानी चाहिए—एक निर्दोष और उचित मूल्य का मेढ़ा, पवित्रथान के शेकल के अनुसार चांदी में।”<sup>16</sup> उन्हें पवित्र वस्तुओं के संबंध में जो करने में विफल रहे हैं, उसका प्रतिपूर्ति करना चाहिए, उसकी कीमत का पांचवां भाग जोड़कर याजक को देना चाहिए। याजक मेढ़े के साथ उनके लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।<sup>17</sup> यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और प्रभु की किसी भी आज्ञा में निषिद्ध कार्य करता है, यहाँ तक कि अनजाने में, तो वह दोषी है और उसे परिणाम भुगतना होगा।<sup>18</sup> उन्हें याजक के पास एक निर्दोष मेढ़ा लाना चाहिए, उचित मूल्य का, एक दोष भेट के रूप में। याजक उनके लिए प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें क्षमा मिल जाएगी।<sup>19</sup> यह एक दोष भेट है, उन्होंने प्रभु के विरुद्ध गलत कार्य किया है।

**6** यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>2</sup> “यदि कोई पाप करता है और यहोवा के विरुद्ध विश्वासात करता है, किसी पड़ोसी को धोखा देकर, जो कुछ उनके भरोसे पर छोड़ा गया या उनकी देखभाल में छोड़ा गया था, या चोरी या जबरन वसूली से, <sup>3</sup> या यदि वे खोई हुई संपत्ति पाते हैं और उसके बारे में झूठ बोलते हैं, या यदि वे किसी भी ऐसे पाप के बारे में झूठी शपथ लेते हैं जो लोग कर सकते हैं—<sup>4</sup> जब वे दोषी हो जाते हैं, तो उन्हें जो कुछ उन्होंने चुराया है या जबरन वसूली से लिया है, या जो कुछ उनके भरोसे पर छोड़ा गया था, या जो खोई हुई संपत्ति उन्होंने पाई थी, उसे लौटाना होगा, <sup>5</sup> या जो कुछ भी था उसके बारे में उन्होंने झूठी शपथ ली थी। उन्हें पूरी तरह से पुनःस्थापन करना होगा, उसकी कीमत का पांचवां हिस्सा जोड़ना होगा, और जिस दिन वे अपने दोष का अर्पण प्रस्तुत करते हैं, उस दिन उसे मालिक को देना होगा। <sup>6</sup> फिर उन्हें याजक के पास, यहोवा के लिए दोष का अर्पण के रूप में, बिना दोष का और उचित मूल्य का एक मेढ़ा लाना होगा। <sup>7</sup> इस प्रकार याजक यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करेगा, और उन्हें इन सभी

## लेवियों

बातों के लिए क्षमा किया जाएगा जो उन्होंने की थी।<sup>8</sup> जिससे वे दोषी हो गए थे।<sup>9</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>9</sup> “हारून और उसके पुत्रों को आदेश हैः; यह होमबलि के लिए नियम हैः; होमबलि को वेदी की अप्ति पर रात भर सुबह तक रहना चाहिए, और वेदी पर आग जलाती रहनी चाहिए।<sup>10</sup> याजक को अपने सूती वस्त्र और सूती अंतर्वस्त्र पहनने चाहिए, और आग द्वारा भस्म किए गए होमबलि की राख को हटाकर वेदी के पास रखना चाहिए।<sup>11</sup> किर उसे उन वस्त्रों को उतारना चाहिए, अच्युत वस्त्र पहनने चाहिए, और राख को शिविर के बाहर एक धार्मिक रूप से स्वच्छ स्थान पर ले जाना चाहिए।<sup>12</sup> वेदी पर आग लगातार जलाती रहनी चाहिए; यह बुझनी नहीं चाहिए। प्रत्येक सुबह याजक को लकड़ी जोड़नी चाहिए। उस पर होमबलि को व्यवस्थित करना चाहिए, और उस पर मेलबलि की चर्बी को जलाना चाहिए।<sup>13</sup> वेदी पर आग हर समय जलाती रहनी चाहिए; यह कभी नहीं बुझनी चाहिए।<sup>14</sup> ये अनाज अपर्ण के लिए निर्देश हैं: हारून के पुत्रों को इसे यहोवा के सामने, वेदी के सामने लाना चाहिए।<sup>15</sup> याजक को अनाज अपर्ण से उत्तम आटे की एक मुट्ठी लेनी चाहिए, तेल के साथ मिलाकर और उस पर सभी धूप रखनी चाहिए, और इसे वेदी पर एक स्मारक भाग के रूप में लाना चाहिए, जो यहोवा को एक सुधारित सुरांध के रूप में प्रस्त्र करता है।<sup>16</sup> हारून और उसके पुत्रों को बाकी खाना चाहिए, लेकिन इसे खीमीर के बिना एक पवित्र स्थान में खाना चाहिए—मिलापवाले तंबू के अंगन में।<sup>17</sup> इसे खीमीर के साथ नहीं पकाना चाहिए; मैंने इसे उनके अन्नबलियों के हिस्से के रूप में दिया है। यह पापबलि और दोषबलि की तरह अत्यंत पवित्र है।<sup>18</sup> हारून का कोई भी पुरुष वंशज इसे खा सकता है। यह पीढ़ियों के लिए एक स्थायी नियम है। जो कुछ भी इन अपर्णों को छूता है वह पवित्र हो जाएगा।<sup>19</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>20</sup> “यह अपर्ण है जो हारून और उसके पुत्रों को यहोवा के लिए उस दिन लाना चाहिए जब वह अभिषिक्त होता है: उत्तम आटे का एक दसवां हिस्सा एक नियमित अनाज अपर्ण के रूप में, आधा सुबह और आधा शाम को।<sup>21</sup> इसे तवे पर तेल के साथ तैयार करें, इसे अच्छी तरह मिलाकर लाएं और अनाज अपर्ण को बेक किए गए टुकड़ों में यहोवा को एक सुधारित सुरांध के रूप में प्रस्तुत करें।<sup>22</sup> वह पुत्र जो याजक के रूप में उसका उत्तराधिकारी होगा, उसे तैयार करेगा; यह यहोवा का है और इसे पूरी तरह से जलाना चाहिए।<sup>23</sup> याजक का हर अनाज अपर्ण पूरी तरह से जलाना चाहिए; इसे नहीं खाना चाहिए।<sup>24</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>25</sup> हारून और उसके पुत्रों से कहें, यह पापबलि के लिए निर्देश हैं। पापबलि को यहोवा के सामने उसी स्थान पर बलि चढ़ाना चाहिए

जहां होमबलि चढ़ाई जाती है—यह अत्यंत पवित्र है।<sup>26</sup> याजक जो इसे अपर्ण करता है, उसे खाना चाहिए; इसे पवित्र स्थान में, पवित्र अंगन में खाना चाहिए।<sup>27</sup> जो कुछ भी अपर्ण के मांस को छूता है वह पवित्र हो जाएगा। यदि इसका कोई रक्त वस्त्र पर छिड़कता है, तो उसे पवित्र स्थान में धोना चाहिए।<sup>28</sup> जिस मिट्टी के बर्तन में अपर्ण पकाया जाता है उसे तोड़ना चाहिए। यदि यह कांस्य के बर्तन में पकाया जाता है, तो उसे रगड़कर और पानी से धोना चाहिए।<sup>29</sup> याजक के परिवार का कोई भी पुरुष इसे खा सकता है; यह अत्यंत पवित्र है।<sup>30</sup> लेकिन कोई भी पापबलि जिसका रक्त मिलापवाले तंबू में प्रायश्चित्त करने के लिए पवित्र स्थान में लाया जाता है, उसे नहीं खाना चाहिए; उसे जलाना चाहिए।

**7** <sup>7</sup> “यह दोषबलि के लिए निर्देश हैं। यह अति पवित्र है।<sup>2</sup> दोषबलि को उसी स्थान पर बलि चढ़ाया जाना चाहिए जहाँ होमबलि चढ़ाया जाता है, और उसके रक्त को वेदी के किनारों पर छिड़कना चाहिए।<sup>3</sup> उसकी सारी चर्बी अपर्ण की जानी चाहिए—पूँछ की चर्बी, आंतरिक अंगों को ढकने वाली चर्बी,<sup>4</sup> दोनों गुर्दे, जिन पर कमर के पास की चर्बी होती है, और यकृत का लंबा टुकड़ा, जिसे गुर्दे के साथ हटाया जाना चाहिए।<sup>5</sup> याजक उन्हें वेदी पर यहोवा के लिए भोजन की भेट के रूप में जलाएगा। यह दोषबलि है।<sup>6</sup> याजक के परिवार का कोई भी पुरुष इसे खा सकता है, लेकिन इसे पवित्र स्थान में ही खाया जाना चाहिए; यह अति पवित्र है।<sup>7</sup> पापबलि और दोषबलि के लिए वही नियम लागू होता है: दोनों उस याजक के होते हैं जो उनके साथ प्रायश्चित्त करता है।<sup>8</sup> जो याजक किसी के लिए होमबलि चढ़ाता है, वह उसकी खाल रख सकता है।<sup>9</sup> हर अनाज की भेट जो ओदन में बेक की जाती है या पैन या तवे पर तैयार की जाती है, उस याजक की होती है जो इसे चढ़ाता है।<sup>10</sup> हर दूसरी अनाज की भेट, जो तेल के साथ मिलाइ गई हो या सूखी हो, वह समान रूप से हारून के सभी पुत्रों की होती है।<sup>11</sup> ये वे नियम हैं जो कोई भी यहोवा को मेलबलि के रूप में प्रस्तुत कर सकता है:<sup>12</sup> यदि वे इसे कूकजता के रूप में अपर्ण करते हैं, तो उन्हें बिना खीमीर के मोटी रोटियाँ, जो तेल के साथ मिलाइ गई हों, पतली रोटियाँ, जो तेल से चुपड़ी हों, और अच्छी तरह से गंथे हुए महीन आटे की रोटियाँ, जो तेल के साथ मिलाइ गई हों, अपर्ण करनी चाहिए।<sup>13</sup> उनकी धन्यवाद की मेलबलि के साथ, उन्हें खीमीर के साथ बनाई गई रोटियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए।<sup>14</sup> उन्हें प्रत्येक प्रकार की एक रोटी यहोवा के लिए अपर्ण के रूप में लानी चाहिए। यह उस याजक की होती है जो मेलबलि के रक्त को छिड़कता है।<sup>15</sup> उनकी धन्यवाद की मेलबलि का मांस उसी दिन खा लिया जाना

## लेवियों

चाहिए जिस दिन यह अर्पित किया जाता है, इसका कोई भी हिस्सा सुबह तक नहीं बचना चाहिए।<sup>16</sup> यदि उनकी भेट एक प्रतिज्ञा या स्वेच्छा की भेट है, तो इसे उसी दिन खाया जा सकता है जिस दिन यह अर्पित किया जाता है और जो कुछ बचा हो उसे अगले दिन खाया जा सकता है।<sup>17</sup> बलि के मांस का कोई भी हिस्सा जो तीसरे दिन तक बचा हो, उसे जला देना चाहिए।<sup>18</sup> यदि तीसरे दिन कुछ खाया जाता है, तो उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। यह उसे श्रेय नहीं दिया जाएगा जिसने इसे अर्पित किया, और इसे अशुद्ध माना जाएगा।<sup>19</sup> मांस जो किसी भी अशुद्ध वस्तु को छूता है, उसे नहीं खाना चाहिए; इसे जला देना चाहिए। कोई भी शुद्ध व्यक्ति अन्य मांस खा सकता है,<sup>20</sup> लेकिन यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति मेलबलि के मांस में से कुछ खाता है, तो उसे अपने लोगों से काट दिया जाना चाहिए।<sup>21</sup> यदि कोई व्यक्ति किसी अशुद्ध वस्तु को छूता है और फिर मेलबलि में से खाता है, तो उसे अपने लोगों से काट दिया जाना चाहिए।<sup>22</sup> यहोवा ने मूसा से कहा:<sup>23</sup> “इसाएलियों से कहो—गाय, भेड़, या बकरी की कोई भी चर्बी मत खाओ।”<sup>24</sup> मरे हुए या जंगली जानवरों द्वारा फाड़े गए जानवरों की चर्बी का उपयोग किसी अन्य उद्देश्य के लिए किया जा सकता है, लेकिन खाने के लिए नहीं।<sup>25</sup> जो कोई यहोवा के लिए भोजन की भेट के रूप में प्रस्तुत किए गए जानवर की चर्बी खाता है, उसे अपने लोगों से काट दिया जाना चाहिए।<sup>26</sup> और जहाँ कहीं भी तुम रहते हो, तुम्हें किसी भी पक्षी या जानवर का रक्त नहीं खाना चाहिए।<sup>27</sup> जो कोई रक्त खाता है, उसे अपने लोगों से काट दिया जाना चाहिए।<sup>28</sup> यहोवा ने मूसा से कहा:<sup>29</sup> “इसाएलियों से कहो: जो कोई मेलबलि लाता है, उसे उसका एक भाग यहोवा के लिए अपनी भेट के रूप में लाना चाहिए।”<sup>30</sup> उह्नें अपने हाथों से यहोवा के लिए भोजन की भेट प्रस्तुत करनी चाहिए; उह्नें चर्बी के साथ छाती लानी चाहिए, जिसे हिलाने की भेट के रूप में हिलाया जाना चाहिए।<sup>31</sup> याजक चर्बी की वेदी पर जलाएगा, लेकिन छाती हारून और उसके पुत्रों की होती है।<sup>32</sup> तुम्हें अपनी मेलबलियों की दाहिनी जांघ याजक को अर्पण के रूप में देनी चाहिए।<sup>33</sup> हारून का वह पुत्र जो रक्त और चर्बी अर्पित करता है, उसे दाहिनी जांघ का हिस्सा मिलेगा।<sup>34</sup> मैंने इसाएलियों की मेलबलियों से छाती और जांघ को लिया है और उह्नें हारून और उसके पुत्रों को उनके स्थायी हिस्से के रूप में दिया है।<sup>35</sup> यह वह हिस्सा है जो यहोवा ने हारून और उसके पुत्रों को उस दिन दिया जब उह्नें याजक के रूप में सेवा करने के लिए प्रस्तुत किया गया।<sup>36</sup> जिस दिन उनका अभिषेक किया गया, उस दिन यहोवा ने आज्ञा दी कि यह इसाएलियों द्वारा उन्हें स्थायी नियम के रूप में दिया जाए।<sup>37</sup> ये, तब, होमबलि, अनाज

की भेट, पापबलि, दोषबलि, अभिषेक की भेट और मेलबलि के लिए नियम हैं।<sup>38</sup> यहोवा ने ये आज्ञाएँ मूसा को सीनै पर्त पर दीं, जिस दिन उसने इसाएलियों को जंगल में सीनै में अपनी भेटें लाने की आज्ञा दी।

**8** प्रभु ने मूसा से कहा:<sup>2</sup> “हारून और उसके पुत्रों को, उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पाप बलिदान के लिए एक बैल, दो मेढ़े, और बिना समीरी की रोटी की एक टोकरी ले आओ।”<sup>3</sup> पूरी सभा को मिलापवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठा करो।”<sup>4</sup> मूसा ने जैसा प्रभु ने आदेश दिया था, वैसा ही किया, और समुदाय मिलापवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठा हुई।<sup>5</sup> मूसा ने कहा, “यह बही है जो प्रभु ने करने का आदेश दिया है।”<sup>6</sup> फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को आगे लाया और उह्नें पानी से धोया।<sup>7</sup> उसने हारून को अंगरखा पहनाया, उसके चारों ओर कमरबंद बांधा, उसे चोपा पहनाया, और उसे एपोद पहनाया। उसने एपोद की बुनी हुई कमरबंद को उसके चारों ओर बांधा।<sup>8</sup> उसने उसके ऊपर छाती का पटका रखा और उसमें उरीम और थुम्मिम रखा।<sup>9</sup> उसने हारून के सिर पर पगड़ी रखी और पगड़ी के सामने सोने की पट्टी, पवित्र विह्न, लगाया, जैसा कि प्रभु ने आदेश दिया था।<sup>10</sup> फिर मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और तंबू और उसमें सब कुछ अभिषेक किया, उन्हें पवित्र किया।<sup>11</sup> उसने वेदी पर सात बार तेल छिड़का, वेदी और उसके बर्तनों, बेसिन और उसके स्टैंड को अभिषेक किया, उह्नें पवित्र किया।<sup>12</sup> उसने हारून के सिर पर अभिषेक का तेल डाला और उसे पवित्र करने के लिए अभिषेक किया।<sup>13</sup> फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को आगे लाया, उह्नें अंगरखे पहनाए, उनके चारों ओर कमरबंद बांधे, और उनके सिर पर टोपियाँ लगाईं, जैसा कि प्रभु ने आदेश दिया था।<sup>14</sup> उसने पाप बलिदान के लिए बैल लाया, और हारून और उसके पुत्रों ने उसके सिर पर द्वाध रखे।<sup>15</sup> मूसा ने बैल की वध किया और उसके कुछ खून की लिया। अपनी उंगली से उसने वेदी के सींगों पर लगाया और उसे शुद्ध किया, और बाकी खून को उसकी नींव पर डाला।<sup>16</sup> उसने अंतरिक अंगों के चारों ओर की सारी चर्बी, जिगर का लंबा लोब, और गुर्दे के साथ उनकी चर्बी ती, और उह्नें वेदी पर जलाया।<sup>17</sup> लेकिन बैल की खाल, मांस, और आंतों को उसने शिविर के बाहर जलाया, जैसा कि प्रभु ने आदेश दिया था।<sup>18</sup> फिर उसने होम बलिदान के लिए मेढ़ा प्रस्तुत किया, और हारून और उसके पुत्रों ने उसके सिर पर द्वाध रखे।<sup>19</sup> मूसा ने मेढ़े को वध किया और वेदी के किनारों पर खून छिड़का।<sup>20</sup> उसने मेढ़े को टुकड़ों में काटा और सिर, दुकड़े, और चर्बी को जलाया।<sup>21</sup> उसने अंतरिक अंगों और पैरों को पानी से धोया और पौरे मेढ़े को वेदी पर

## लेवियों

जलाया, एक सुखद सुगंध के रूप में, प्रभु के लिए होम बलिदान के रूप में, जैसा कि आदेश दिया गया था।<sup>22</sup> फिर उसने दूसरा मेढ़ा प्रस्तुत किया—अभिषेक के लिए मेढ़ा—और हारून और उसके पुत्रों ने उसके सिर पर हाथ रखे।<sup>23</sup> मूसा ने उसे वध किया, उसके कुछ खुन को लिया और हारून के दाहिने कान, दाहिने अंगूठे, और दाहिने बड़े पैर के अंगूठे पर लगाया।<sup>24</sup> उसने हारून के पुत्रों के साथ भी ऐसा ही किया। फिर उसने वेदी के चारों ओर खून छिड़का।<sup>25</sup> उसने चर्बी के हिस्से, चर्बी की पूँछ, अंतरिक चर्बी, गुर्दे के साथ उनकी चर्बी, जिगर का लंबा लोब, और दाहिनी जांघ पर रखा।<sup>26</sup> प्रभु के सामने बिना खमीर की रोटी की टोकरी से उसने एक मोटी रोटी, एक तेल वाली रोटी, और एक पतली रोटी ली, उन्हें चर्बी और दाहिनी जांघ पर रखा।<sup>27</sup> उसने ये सब हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखे, जिन्होंने उन्हें प्रभु के सामने एक हिलाने वाले बलिदान के रूप में हिलाया।<sup>28</sup> फिर मूसा ने उन्हें वापस लिया और उन्हें होम बलिदान के ऊपर वेदी पर जलाया, एक अभिषेक बलिदान के रूप में—प्रभु के लिए एक सुखद सुगंध।<sup>29</sup> उसने भी छाती को लिया और उसे प्रभु के सामने हिलाया। यह अभिषेक मेढ़े का मूसा का हिस्सा था, जैसा कि आदेश दिया गया था।<sup>30</sup> मूसा ने कुछ अभिषेक का तेल और वेदी से खून लिया और उन्हें हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर छिड़का। इस प्रकार वे पवित्र किए गए।<sup>31</sup> मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, “मिलापवाले तंबू के द्वारा पर मांस को उबातो और अभिषेक बलिदान की टोकरी से रोटी के साथ खाओ, जैसा कि आदेश दिया गया है।”<sup>32</sup> “बचा हआ मांस और रोटी जला दो।”<sup>33</sup> “तंबू के द्वारा से सात दिनों तक बाहर मत निकलो, जब तक कि तुम्हारे अभिषेक के दिन पूरे न हो जाएं, क्योंकि तुम्हें अभिषेक करने में सात दिन लगते हैं।”<sup>34</sup> “आज जो कुछ किया गया है, वह प्रभु द्वारा तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त करने के लिए आदेशित किया गया था।”<sup>35</sup> “सात दिनों तक दिन और रात तंबू के द्वारा पर रहो। जब तक समय पूरा न हो जाए, बाहर मत निकलो, नहीं तो तुम मर जाओगे, क्योंकि यह वही है जो प्रभु ने आदेश दिया है।”<sup>36</sup> इस प्रकार हारून और उसके पुत्रों ने सब कुछ किया जो प्रभु ने मूसा के माध्यम से आदेश दिया था।

**9** आठवें दिन मूसा ने हारून, उसके पुत्रों और इस्माएल के बुजुर्गों को बुलाया।<sup>2</sup> उसने हारून से कहा, “एक बछड़ा पापबलि के लिए और एक मेढ़ा होमबलि के लिए, दोनों निरोष, लेकर प्रभु के सामने प्रस्तुत करो।<sup>3</sup> फिर इस्माएलियों से कहो: ‘पापबलि के लिए एक बकरा, होमबलि के लिए एक बछड़ा और एक भेड़ का

बच्चा, दोनों एक वर्ष के और निर्दोष, लेकर आओ, <sup>4</sup> साथ ही एक बैल और एक मेढ़ा मेलबलि के लिए प्रभु के सामने बलिदान करने के लिए, और तेल के साथ मिलाया हुआ अन्नबलि। क्योंकि आज प्रभु तुम्हें दर्शन देगा।”<sup>5</sup> वे जो मूसा ने आज्ञा दी थी, उसे मिलापवाले तंबू के सामने लाए, और सारी सभा प्रभु के सामने आकर खड़ी हो गई।<sup>6</sup> फिर मूसा ने कहा, “यह वही है जो प्रभु ने तुम्हें करने की आज्ञा दी है, ताकि प्रभु की महिमा तुम्हें दिखाई दे।”<sup>7</sup> मूसा ने हारून से कहा, “वेदी के पास आओ और अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाओ ताकि अपने और लोगों के लिए प्रायश्चित्त कर सको। फिर लोगों के बलिदान को प्रस्तुत करो ताकि उनके लिए प्रायश्चित्त कर सको, जैसा कि प्रभु ने आज्ञा दी है।”<sup>8</sup> इसलिए हारून वेदी के पास आया और अपने लिए पापबलि के रूप में बछड़े का वध किया।<sup>9</sup> उसके पुत्र उसके पास रक्त लाए, और उसने अपनी उंगली उसमें ढुबाई और वेदी के सींगों पर लगाया। बाकी उसने वेदी के आधार पर उंडेल दिया।<sup>10</sup> उसने पापबलि की चर्बी, गुर्दे, और यकृत की लंबी लोब को वेदी पर जलाया, जैसा कि प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>11</sup> उसने मांस और खाल को शिविर के बाहर जलाया।<sup>12</sup> फिर उसने होमबलि का वध किया। उसके पुत्र उसके पास रक्त लाए, और उसने उसे वेदी के किनारों पर छिड़का।<sup>13</sup> उन्होंने होमबलि को ढुकड़े-ढुकड़े करके, सिर सहित, उसके पास लाए, और उसने उन्हें वेदी पर जलाया।<sup>14</sup> उसने आंतरिक अंगों और पैरों को धोया और उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया।<sup>15</sup> फिर उसने लोगों के बलिदान को प्रस्तुत किया। उसने लोगों के पापबलि के लिए बकरे का वध किया, और उसे पहले की तरह चढ़ाया।<sup>16</sup> उसने होमबलि को लाया और उसे निर्धारित तरीके से चढ़ाया।<sup>17</sup> उसने अन्नबलि भी लाया, उसका एक मुट्ठी भर लिया, और उसे सुबह की होमबलि के साथ वेदी पर जलाया।<sup>18</sup> उसने बैल और मेढ़े का वध किया जो लोगों के मेलबलि के लिए थे। उसके पुत्र उसके पास रक्त लाए, और उसने उसे वेदी के किनारों पर छिड़का।<sup>19</sup> बैल और मेढ़े के चर्बी के हिस्से—चर्बी की पूँछ, अंगों की ढकने वाली चर्बी, गुर्दे और यकृत की लंबी लोब—<sup>20</sup> उन्होंने स्तनों के ऊपर रखा, और हारून ने वेदी पर चर्बी को जलाया।<sup>21</sup> हारून ने स्तनों और दाहिनी जांघों को प्रभु के सामने लहराते हुए चढ़ाया, जैसा कि मूसा ने आज्ञा दी थी।<sup>22</sup> फिर हारून ने अपने हाथ लोगों की ओर उठाए और उन्हें आशीर्वाद दिया। पापबलि, होमबलि और मेलबलि समाप्त करने के बाद, वह नीचे उतरा।<sup>23</sup> फिर मूसा और हारून मिलापवाले तंबू में गए। जब वे बाहर आए, तो उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया—और प्रभु की महिमा सबको दिखाई दी।<sup>24</sup> प्रभु की उपस्थिति से आग

## लेवियों

निकली और वेदी पर होमबलि और चर्बी के हिस्सों को भस्म कर दिया। और जब लोगों ने इसे देखा, तो वे आनंद से चिल्लाए और मुँह के बल गिर पड़े।

**10** हारून के पुत्र नादाब और अबीहू ने अपनी धूपदान ली, उनमें आग डाली और धूप चढ़ाया; और उन्होंने प्रभु के सामने अनश्विकत आग चढ़ाई, जिसे उसने आज्ञा नहीं दी थी।<sup>2</sup> तब प्रभु की उपर्युक्ति से आग निकली और उन्हें भस्म कर दिया, और वे प्रभु के सामने मर गए।<sup>3</sup> मूसा ने हारून से कहा, "यह वही है जो प्रभु ने कहा था: 'जो मेरे निकट आते हैं, उनके बीच मैं पवित्र ठहरूँगा'; और सब लोगों के सामने मैं आदर पाऊँगा।"<sup>4</sup> हारून चुप रहा।<sup>5</sup> मूसा ने मिशाएल और एल्जाफान को बुलाया, जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे, और उनसे कहा, "आओ और अपने संबंधियों को शिविर के बाहर, पवित्र स्थान से दूर ले जाओ।"<sup>6</sup> वे आए और उन्हें उनके कुर्ती में ही शिविर के बाहर ले गए, जैसा मूसा ने आदेश दिया था।<sup>7</sup> तब मूसा ने हारून और उसके शेष पुत्रों एवं आज्ज़ार और इथामार से कहा, "अपने बालों को अस्त-व्यस्त न होने दो और न अपने वस्त फाझ़ी, नहीं तो तुम मर जाओगे और प्रभु पूरी समुदाय पर क्रीधित होगा। परंतु अपने संबंधियों के लिए शोक मनाने दो।"<sup>8</sup> "मिलाप के तंबू के द्वार से बाहर न जाओ, नहीं तो तुम मर जाओगे, क्योंकि प्रभु का अभिषेक तेल तुम पर है।"<sup>9</sup> इसलिए उन्होंने जैसा मूसा ने कहा था वैसा ही किया।<sup>10</sup> तब प्रभु ने हारून से कहा: "तुम और तुम्हारे पुत्र जब भी मिलाप के तंबू में जाओ, तो न तो दाखरस और न ही कोई अन्य किंवित पेय पियो, नहीं तो तुम मर जाओगे। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी नियम है।"<sup>11</sup> तुम्हें पवित्र और साधारण, शुद्ध और अशुद्ध के बीच भेट करना चाहिए,<sup>12</sup> और तुम्हें इसाएलियों को वे सभी विधियाँ सिखानी चाहिए जो प्रभु ने मूसा के माध्यम से दी हैं।<sup>13</sup> मूसा ने हारून और उसके शेष पुत्रों से कहा, "प्रभु के लिए अर्पित भीजन के अंश से शेष अनाज की भेट लो और उसे वेदी के पास खाओ, क्योंकि यह अलंकृत पवित्र है।"<sup>14</sup> इसे पवित्र स्थान में खाओ, क्योंकि यह तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का भोजन अंश है, जैसा प्रभु ने आदेश दिया है।<sup>15</sup> तुम लहराई गई छाती और प्रस्तुत जांघ को भी खा सकते हो, एक धार्मिक रूप से शुद्ध स्थान में—तुम और तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ। ये इसाएलियों के मेल बलिदानों से तुम्हारे अंश के रूप में दिए गए हैं।<sup>16</sup> जांघ और छाती को भोजन अर्पण के वसा भागों के साथ लाकर प्रभु के सामने लहराई गई भेट के रूप में लहराया जाना चाहिए। ये तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए एक स्थायी अंश के रूप में हैं, जैसा प्रभु ने आदेश दिया है।"<sup>17</sup> जब मूसा ने

पाप बलिदान की बकरी के बारे में पूछा और पाया कि उसे जला दिया गया था, तो वह एलीआज़र और इथामार, हारून के जीवित पुत्रों पर क्रोधित हुआ।<sup>18</sup> उसने पूछा, "तुमने पाप बलिदान को पवित्र स्थान में क्यों नहीं खाया? यह अर्यत पवित्र है और इसे तुम्हें समुदाय के अपराध को दूर करने और प्रभु के सामने उनके लिए प्रायश्चित्त करने के लिए दिया गया था।"<sup>19</sup> हारून ने मूसा से कहा, "आज उन्होंने प्रभु के सामने अपने पाप और हाम बलिदान चढ़ाए, लेकिन ऐसी बातें मेरे साथ हुई हैं। क्या प्रभु आज पाप बलिदान खाने से प्रसन्न होते?"<sup>20</sup> जब मूसा ने यह सुना, तो वह संतुष्ट हुआ।

**11** यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> "इसाएलियों से कहो: ये वे जीव हैं जिन्हें तुम भूमि पर रहने वाले सभी पशुओं में से खा सकते हो: <sup>3</sup> तुम किसी भी ऐसे पशु को खा सकते हों जिसकी खुरें फटी हुई हैं और जो जुगाली करता हो। <sup>4</sup> परन्तु जो केवल जुगाली करते हैं या जिनकी केवल खुरें फटी हुई हैं, उन्हें मत खाओ। ऊंट, यद्यपि वह जुगाली करता है, परन्तु उसकी खुरें फटी हुई नहीं हैं—वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। <sup>5</sup> शाफन, यद्यपि वह जुगाली करता है, परन्तु उसकी खुरें फटी हुई नहीं हैं—वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। <sup>6</sup> खरगोश, यद्यपि वह जुगाली करता है, परन्तु उसकी खुरें फटी हुई नहीं हैं—वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। <sup>7</sup> और सुअर, यद्यपि उसकी खुरें फटी हुई हैं, परन्तु वह जुगाली नहीं करता—वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। <sup>8</sup> तुम उनके मांस को मत खाओ और उनके शवों को मत छुओ; वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। <sup>9</sup> सभी जल में रहने वाले जीवों में से, तुम उन जीवों को खा सकते हो जिनके पंख और शल्क होते हैं। <sup>10</sup> परन्तु जो कुछ समुद्रों या नदियों में रहता है और जिसके पंख और शल्क नहीं होते, उसे अशुद्ध माना जाएगा। <sup>11</sup> तुम उन्हें अशुद्ध मानो। उनके मांस को मत खाओ और उनके शवों को धृणास्पद मानो। <sup>12</sup> जल में जो कुछ भी पंख और शल्क नहीं रखता, उसे तुम्हारे लिए अशुद्ध माना जाएगा। <sup>13</sup> ये वे पक्षी हैं जिन्हें तुम अशुद्ध मानोगे और मत खाओ क्योंकि वे धृणास्पद हैं: गिद्ध, गिद्ध की जाति, काला गिद्ध,<sup>14</sup> लाल चील, किसी भी प्रकार की काली चील,<sup>15</sup> किसी भी प्रकार की कौआ,

<sup>16</sup> सींग वाला उल्लू, चीखने वाला उल्लू, गंगा, किसी भी प्रकार की बाज़ा,<sup>17</sup> छोटा उल्लू, जलकाग, बड़ा उल्लू,<sup>18</sup> सफेद उल्लू, मरुस्तीर्य उल्लू, मछलीमार,<sup>19</sup> सारस, किसी भी प्रकार की बगुला, हुदहुद और चमगाड़।<sup>20</sup> सभी उड़ने वाले कीड़े जो चार पैरों पर चलते हैं, उन्हें अशुद्ध माना जाएगा।<sup>21</sup> परन्तु तुम कुछ पंख वाले कीड़ों

## लेवियों

को खा सकते हों जो चार पैरों पर चलते हैं यदि उनके पास जमीन पर कूदने के लिए जोड़दार पैर होते हैं—जैसे टिड़ी, टिड़ी की जाति, झिंगुर और टिड़ै।<sup>22</sup> इनमें से तुम खा सकते हों: सभी प्रकार की टिड़ी, टिड़ी की जाति, झिंगुर और टिड़ै।<sup>23</sup> परन्तु सभी अन्य पंख वाले कीड़े जिनके चार पैर होते हैं, उन्हें तुम अशुद्ध मानोगे।<sup>24</sup> तुम इनसे अपने आप को अशुद्ध करोगे; जो कोई उनके शर्वों को छूता है, वह संध्या तक अशुद्ध रहेगा।<sup>25</sup> जो कोई उनके शर्वों में से एक को उठाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और संध्या तक अशुद्ध रहना चाहिए।<sup>26</sup> हर वह पशु जिसकी खुरे फटी हुई नहीं हैं या जो जुगाली नहीं करता, वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है; जो कोई उनके शर्वों को छूता है, वह अशुद्ध रहेगा।<sup>27</sup> सभी पशु जो पंखों पर चलते हैं उनमें से जो जमीन पर चलते हैं, वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं; जो कोई उनके शर्वों को छूता है, वह संध्या तक अशुद्ध रहेगा।<sup>28</sup> जो कोई उनके शर्वों को उठाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और संध्या तक अशुद्ध रहना चाहिए। ये पशु तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।<sup>29</sup> जमीन पर चलने वाले पशुओं में से, ये तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं: नेवला, चूहा, और किसी भी प्रकार की बड़ी छिपकली,<sup>30</sup> गिरिगिट, गोह, दीवार छिपकली, चमकीली छिपकली और गिरिगिट।<sup>31</sup> ये सभी जीवों में तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। जो कोई उन्हें छूता है जब वे मर जाते हैं, वह संध्या तक अशुद्ध रहेगा।<sup>32</sup> जब उनमें से एक मर जाता है और किसी बीज पर गिरता है, तो वह वस्तु अशुद्ध हो जाती है—चाहे वह लकड़ी हो, कपड़ा हो, चमड़ा हो या बोरी। उसे पानी में डाल दो; वह संध्या तक अशुद्ध रहेगा, फिर वह शुद्ध हो जाएगा।<sup>33</sup> यदि उनमें से एक मिट्टी के बर्तन में गिरता है, तो उसमें जो कुछ भी है वह अशुद्ध हो जाएगा, और तुम्हें बर्तन को तोड़ देना चाहिए।<sup>34</sup> कोई भी भोजन जो खाया जा सकता है, वह अशुद्ध है, और कोई भी तरल जो उससे पिया जा सकता है, वह अशुद्ध है।<sup>35</sup> जिस किसी बीज पर उनके शर्वों में से एक गिरता है, वह अशुद्ध हो जाता है। यदि वह अवन या पकाने का बर्तन है, तो उसे तोड़ देना चाहिए; वह अशुद्ध है और अशुद्ध रहेगा।<sup>36</sup> पानी इकट्ठा करने के लिए कोई झारना या कुंड शुद्ध रहता है, परन्तु जो कोई शव को छूता है, वह अशुद्ध हो जाता है।<sup>37</sup> यदि कोई शव बोने के लिए रखे गए बीज पर गिरता है, तो वह शुद्ध रहता है।<sup>38</sup> परन्तु यदि बीज पर पानी डाला गया है और उस पर कोई शव गिरता है, तो वह अशुद्ध है।<sup>39</sup> यदि कोई पशु जिसे तुम खाने की अनुमति रखते हो, मर जाता है, तो जो कोई उसके शव को छूता है, वह संध्या तक अशुद्ध रहेगा।<sup>40</sup> जो कोई उसके शव का कुछ खाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और संध्या तक अशुद्ध रहना चाहिए। जो

कोई शव को उठाता है, उसे भी ऐसा ही करना चाहिए।<sup>41</sup> हर जीव जो जमीन पर चलता है, घृणास्पद है; उसे नहीं खाना चाहिए।<sup>42</sup> तुम किसी भी जीव को मत खाओ जो जमीन पर चलता है—चाहे वह पेट के बल चलता हो या चार पैरों पर चलता हो या कई पैरों पर चलता हो।<sup>43</sup> इन जीवों में से किसी से अपने आप को अशुद्ध मत करो। उनसे अपने आप को अशुद्ध मत बनाओ या उनसे अशुद्ध मत बनो।<sup>44</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; अपने आप को पवित्र करो और पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। किसी भी जीव से अपने आप को अशुद्ध मत बनाओ जो जमीन पर चलता है।<sup>45</sup> मैं यहोवा हूँ, जिसने तुम्हें मिस्र से बाहर लाया ताकि तुम्हारा परमेश्वर बन सकें; इसलिए पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।<sup>46</sup> ये पशुओं, पक्षियों, जल में चलने वाले हर जीव और जमीन पर चलने वाले हर जीव के संबंध में नियम हैं।<sup>47</sup> तुम्हें अशुद्ध और शुद्ध के बीच, उन जीवों के बीच जो खाए जा सकते हैं और जो नहीं खाए जा सकते, भेद करना चाहिए।

**12** प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>2</sup> "इसाएलियों से कहो: एक स्त्री जो गर्भवती होती है और पुत्र को जन्म देती है, वह सात दिनों के लिए धार्मिक रीति से अशुद्ध होगी, जैसे वह अपनी मासिक अवधि के दौरान अशुद्ध होती है।<sup>3</sup> आठवें दिन लड़के का खतना किया जाएगा।<sup>4</sup> फिर स्त्री को अपने रक्तसाव से शुद्ध होने के लिए तैतीस दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी। उस किसी पवित्र वस्तु को नहीं छूना चाहिए और न ही पवित्रस्थान में जाना चाहिए जब तक उसकी शुद्धि पूरी न हो जाए।<sup>5</sup> यदि वह एक पुत्री को जन्म देती है, तो वह दो सप्ताह के लिए अशुद्ध होगी, जैसे उसकी मासिक अवधि के दौरान, और उसे शुद्ध होने के लिए छियास्थ दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी।<sup>6</sup> जब उसकी शुद्धि के दिन पूरे हो जाते हैं, चाहे वह पुत्री ही या पुत्री, उसे एक वर्ष का मैमान होमबलि के लिए मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना होगा।<sup>7</sup> याजक उन्हें प्रभु के सामने अर्पित करेगा ताकि उसके लिए प्रायश्चित्त कर सके। तब वह अपने रक्तसाव से शुद्ध होगी। ये नियम एक स्त्री के लिए हैं जो लड़के या लड़की को जन्म देती है।<sup>8</sup> लेकिन यदि वह मेमने का खर्च नहीं उठा सकती, तो उसे दो फाख्ताएँ या दो युवा कबूतर लाने चाहिए—एक होमबलि के लिए और दूसरा पापबलि के लिए। इस प्रकार, याजक उसके लिए प्रायश्चित्त करेगा, और वह शुद्ध होगी।

**13** यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> "जब किसी के शरीर पर सूजन, दाने या रंग बदलने का कोई

## लेवियों

निशान हो, जो एक अपवित्र त्वचा रोग हो सकता है, तो उसे हारून याजक या उसके पुत्रों में से किसी के पास लाया जाए।<sup>3</sup> याजक को त्वचा की जाँच करनी चाहिए। यदि धाव में बाल सफेद हो गए हैं और धाव त्वचा से गहरा दिखाई देता है, तो यह एक अपवित्र रोग है। याजक को उन्हें अशुद्ध घोषित करना चाहिए।<sup>4</sup> यदि धाव का रंग नहीं बदला है या वह त्वचा से गहरा नहीं दिखाई देता और उसमें सफेद बाल नहीं हैं, तो याजक को व्यक्ति को सात दिनों के लिए अलग करना चाहिए।<sup>5</sup> सातवें दिन, याजक उन्हें जाँच करेगा। यदि धाव अपरिवर्तित रहता है और नहीं फैला है, तो उन्हें फिर से सात दिनों के लिए अलग किया जाना चाहिए।<sup>6</sup> उसके बाद, यदि धाव फीका पड़ गया है और नहीं फैला है, तो याजक उन्हें शुद्ध घोषित करेगा—यह केवल एक दाना था। उन्हें अपने कपड़े धोने चाहिए।<sup>7</sup> लेकिन यदि दाना फैलता है, तो याजक ने उन्हें शुद्ध घोषित करने के बाद, उन्हें फिर से याजक के पास जाना चाहिए।<sup>8</sup> याजक उन्हें फिर से जाँच करेगा, और यदि दाना फैल गया है, तो वे अशुद्ध हैं।<sup>9</sup> यदि किसी को अपवित्र रोग है, तो उन्हें याजक के पास लाया जाना चाहिए।<sup>10</sup> याजक उन्हें जाँच करेगा, और यदि उसमें सफेद सूजन और कच्चा मास है,<sup>11</sup> तो यह एक पुराना रोग है। याजक उन्हें बिना अलग किए अशुद्ध घोषित करेगा—वे फहले से ही अशुद्ध हैं।<sup>12</sup> यदि रोग फैलता है और पूरी त्वचा को ढक लेता है,<sup>13</sup> तो याजक उन्हें शुद्ध घोषित करेगा, बशर्ते कि सारी त्वचा सफेद हो गई हो—वे शुद्ध हैं।<sup>14</sup> लेकिन यदि कच्चा मास दिखाई देता है, तो वे अशुद्ध हैं।<sup>15</sup> याजक को कच्चे मास की जाँच करनी चाहिए और उन्हें अशुद्ध घोषित करना चाहिए। कच्चा मास अशुद्धता को दर्शाता है।<sup>16</sup> यदि कच्चा मास फिर से सफेद हो जाता है, तो व्यक्ति को याजक के पास वापस जाना चाहिए।<sup>17</sup> याजक फिर से जाँच करेगा, और यदि धाव सफेद हो गया है, तो वे शुद्ध हैं।<sup>18</sup> यदि किसी के पास फोड़ा था वहाँ सफेद सूजन या लाल-सफेद दाग दिखाई देता है, तो उन्हें याजक को दिखाना चाहिए।<sup>19</sup> यदि यह त्वचा से गहरा दिखाई देता है और बाल सफेद हो गए हैं, तो यह एक अपवित्र रोग है। याजक को उन्हें अशुद्ध घोषित करना चाहिए।<sup>21</sup> यदि यह गहरा नहीं दिखाई देता और कोई सफेद बाल नहीं है, तो व्यक्ति को अलग किया जाना चाहिए।<sup>22</sup> यदि धाव फैलता है, तो वे अशुद्ध हैं।<sup>23</sup> लेकिन यदि यह वैसा ही रहता है, तो यह केवल फोड़े का निशान है।<sup>24</sup> यदि किसी की त्वचा पर जलन होती है और वह लाल-सफेद या सफेद दाग बन जाता है,<sup>25</sup> याजक को इसकी जाँच करनी चाहिए। यदि दाग में बाल सफेद हो गए हैं और यह गहरा दिखाई देता है, तो यह

एक अपवित्र रोग है। व्यक्ति अशुद्ध है।<sup>26</sup> यदि कोई सफेद बाल नहीं है और दाग त्वचा से गहरा नहीं है, तो याजक उन्हें अलग करेगा।<sup>27</sup> यदि यह फैलता है, तो वे अशुद्ध हैं। यदि यह वैसा ही रहता है, तो यह केवल जलन का निशान है।<sup>28</sup> यदि किसी पुरुष या महिला के सिर या ठोड़ी पर धाव है,<sup>29</sup> याजक को धाव की जाँच करनी चाहिए। यदि यह त्वचा से गहरा दिखाई देता है और बाल पतले और पीले हैं, तो वे अशुद्ध हैं—यह एक अपवित्र रोग है।<sup>30</sup> यदि यह गहरा नहीं दिखाई देता और कोई काले बाल नहीं हैं, तो याजक को व्यक्ति को अलग करना चाहिए।<sup>31</sup> यदि सात दिनों के बाद यह नहीं फैला है और कोई पीला बाल नहीं दिखाई देता, तो वे शुद्ध हैं।<sup>32</sup> यदि धाव फैलता है और पीला बाल दिखाई देता है, तो व्यक्ति अशुद्ध है।<sup>33</sup> उन्हें धाव के चारों ओर शेष करना चाहिए लेकिन स्वयं धाव को नहीं छूना चाहिए।<sup>34</sup> यदि क्षेत्र नहीं फैलता है, तो व्यक्ति को अपने कपड़े धोने चाहिए और वे शुद्ध होंगे।<sup>35</sup> लेकिन यदि यह फैलता है, तो उन्हें फिर से याजक के पास जाना चाहिए।<sup>36</sup> याजक उन्हें जाँच करेगा और यदि यह फैल गया है, तो उन्हें अशुद्ध घोषित करेगा।<sup>37</sup> यदि धाव नहीं फैला है और काले बाल वापस आ गए हैं, तो व्यक्ति शुद्ध है।<sup>38</sup> यदि किसी के शरीर पर सफेद धब्बे हैं, तो याजक को उनकी जाँच करनी चाहिए।<sup>39</sup> यदि धब्बे फीके सफेद हैं, तो यह एक हानिरहित दाना है और व्यक्ति शुद्ध है।<sup>40</sup> यदि कोई पुरुष अपने बाल खो देता है और गंजा हो जाता है, तो वह शुद्ध है।<sup>41</sup> यदि वह अपने माथे के सामने से बाल खो देता है, तो वह शुद्ध है।<sup>42</sup> लेकिन यदि गंजे सिर या माथे पर लाल-सफेद धाव दिखाई देता है, तो यह एक अपवित्र रोग है।<sup>43</sup> याजक को इसकी जाँच करनी चाहिए, और यदि यह त्वचा रोग जैसा दिखता है, तो व्यक्ति अशुद्ध है।<sup>44</sup> उन्हें अशुद्ध घोषित किया जाना चाहिए। रोग उनके सिर पर है।<sup>45</sup> ऐसे रोग से ग्रस्त व्यक्ति को फटे कपड़े पहनने चाहिए, अपने बालों को बिखारा हुआ रहने देना चाहिए, अपने चेहरे के निचले हिस्से को ढकना चाहिए और चिल्लाना चाहिए, 'अशुद्ध! अशुद्ध!'<sup>46</sup> जब तक उनके पास रोग है, वे अशुद्ध रहते हैं और उन्हें शिरिंग के बाहर रहना चाहिए।<sup>47</sup> यदि कोई कपड़ा—ऊन या लिनन—अपवित्र फाफूंदी से ग्रस्त है,<sup>48</sup> चाहे वह बुना हुआ हो या बुना हुआ, या कोई चमड़े का लेख,<sup>49</sup> और यदि दाग हरा या लाल है, तो इसे याजक को दिखाना चाहिए।<sup>50</sup> याजक इसकी जाँच करेगा और इसे सात दिनों के लिए अलग करेगा।<sup>51</sup> यदि फाफूंदी फैल गई है, तो यह एक अपवित्र फाफूंदी है और लेख अशुद्ध है।<sup>52</sup> उसे कपड़ा या चमड़ा जलाना चाहिए क्योंकि फाफूंदी स्थायी है।<sup>53</sup> लेकिन यदि फाफूंदी नहीं फैली है, तो उसे लेख को धोना चाहिए।<sup>54</sup> किर उसे इसे

## लेवियों

फिर से सात दिनों के लिए अलग करना चाहिए।<sup>55</sup> यदि यह फीका पड़ गया है, तो उसे प्रभावित हिस्से को फाइ देना चाहिए।<sup>56</sup> यदि फाफूंदी फिर से दिखाई देती है, तो इसे जलाना चाहिए।<sup>57</sup> लेकिन यदि यह धोने के बाद गायब हो जाती है, तो इसे फिर से धोना चाहिए, और यह शुद्ध होगा।<sup>58</sup> ये कपड़े या चमड़े में अपवित्र फफूंदी के लिए नियम हैं।<sup>59</sup> यह निर्धारित करने के लिए कि यह शुद्ध है या अशुद्ध।

**14** यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “ये नियम उन लोगों के लिए हैं जो अशुद्ध त्वचा रोग से शुद्ध किए गए हैं। उन्हें याजक के पास लाया जाना चाहिए।<sup>3</sup> याजक को शिविर के बाहर जाकर उनका निरीक्षण करना चाहिए। यदि वे ठीक हो गए हैं,<sup>4</sup> तो याजक को दो जीवित शुद्ध पक्षी, कुछ देवदार की लकड़ी, लाल ऊन, और हाइसोप लाने का आदेश देना चाहिए।<sup>5</sup> फिर याजक को आदेश देना चाहिए कि एक पक्षी को ताजे पानी के ऊपर मिट्टी के बर्तन में मारा जाए।<sup>6</sup> वह जीवित पक्षी को देवदार की लकड़ी, लाल ऊन, और हाइसोप के साथ ले और मरे गए पक्षी के खून में डुबोए।<sup>7</sup> वह सात बार त्वचा रोग से शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति पर छिड़काव करे और उसे शुद्ध घोषित करे। फिर वह जीवित पक्षी को खुले मैदान में छोड़ दे।<sup>8</sup> शुद्ध किया जाने वाला व्यक्ति अपने कपड़े धोए, अपने सभी बाल मुंडाए, और पानी से स्नान करे। फिर वह शिविर में आ सकता है लेकिन उसे अपने तंबू के बाहर सात दिन रहना होगा।<sup>9</sup> सातवें दिन उसे अपने सभी बाल—सिर, दाढ़ी, भौंहें—मुंडाने होंगे और अपने कपड़े धोने होंगे और फिर से स्नान करना होगा। तब वह शुद्ध होगा।<sup>10</sup> आठवें दिन, उन्हें दो नर भेड़ के बच्चे और एक मादा भेड़ का बच्चा, प्रत्येक बिना दोष के, अनाज की भेट और तेल का एक लोटा लाना होगा।<sup>11</sup> याजक उन्हें मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने प्रस्तुत करेगा।<sup>12</sup> वह एक नर भेड़ के बच्चे को अपराध भेट के रूप में ले और तेल के लोटे के साथ यहोवा के सामने हिलाए।<sup>13</sup> फिर वह पवित्र स्थान में भेड़ के बच्चे को मरेगा जहाँ पाप भेट और होम भेट मारी जाती है।<sup>14</sup> याजक कुछ खून ले और शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के दाहिने कान की लोब, दाहिने अंगूठे, और दाहिने बड़े पैर के अंगूठे पर लगाए।<sup>15</sup> फिर याजक कुछ तेल ले और उसे अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले।<sup>16</sup> वह अपनी दाहिनी उंगली को तेल में डुबोए और यहोवा के सामने सात बार छिड़काव करे।<sup>17</sup> लाकी तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के दाहिने कान की लोब, अंगूठे, और बड़े पैर के अंगूठे पर लगाए।<sup>18</sup> याजक के हाथ में बच्चे तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर लगाएगा।<sup>19</sup> वह कबूतरों से यहोवा के सामने सात बार छिड़काव करेगा।<sup>20</sup> वह कुछ तेल उस व्यक्ति के दाहिने कान की लोब, अंगूठे, और बड़े पैर के अंगूठे पर लगाएगा जहाँ खून लगाया गया था।<sup>21</sup> उसके हाथ में बच्चे तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर लगाएगा।<sup>22</sup> वह कबूतरों से यहोवा को चढ़ाएगा—एक पाप भेट के लिए और एक होम भेट के लिए—अनाज की भेट के साथ।<sup>23</sup> इस प्रकार, याजक प्रायश्चित्त करेगा, और वे शुद्ध होंगे।<sup>24</sup> ये नियम उन लोगों के लिए हैं जिनके पास अशुद्ध त्वचा रोग है लेकिन वे सामान्य भेटों का खर्च नहीं उठा सकते।<sup>25</sup> यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,<sup>26</sup> “जब तुम कनान देश में प्रवेश करोगे, जिसे मैं तुम्हें दे रहा हूँ, और मैं एक घर में फैलाता हुआ फफूंद डालूँ,<sup>27</sup> तो मालिक को याजक के पास जाकर कहना चाहिए, मेरे घर में फफूंद जैसा कुछ देखा है।”<sup>28</sup> याजक को घर को खाली करने का आदेश देना चाहिए इससे पहले कि वह उसे जांचने के लिए प्रवेश करे, ताकि कुछ भी अशुद्ध घोषित न हो।<sup>29</sup> यदि फफूंद हरे या लाल रंग का दिखाई देता है और दीवार में गहरा है,<sup>30</sup> तो याजक बाहर जाकर घर को सात दिनों के लिए बंद कर देगा।<sup>31</sup> सातवें दिन, वह लोटकर घर का निरीक्षण करेगा। यदि फफूंद फैल गया है,<sup>32</sup> तो उसे आदेश देना चाहिए कि दूषित पत्थरों को निकालकर शहर के बाहर फेंक दिया जाए।<sup>33</sup> घर को पूरी तरह से खुरचकर प्लास्टर को शहर के बाहर फेंक दिया जाना चाहिए।<sup>34</sup> फिर नए पत्थर लाए जाएं और घर को फिर से प्लास्टर किया जाए।<sup>35</sup> यदि फफूंद इसके बाद फिर से दिखाई दे,<sup>36</sup> तो याजक को इसका निरीक्षण करना चाहिए। यदि यह फैल गया है, तो घर अशुद्ध है—इसे पूरी तरह से गिरा दिया जाना चाहिए।<sup>37</sup> सभी सामग्री को शहर के बाहर एक अशुद्ध स्थान पर ले जाया जाना

## लेवियों

चाहिए।<sup>46</sup> जो कोई घर में जाता है जबकि यह बंद है, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>47</sup> जो कोई घर में सोता या खाता है उसे अपने कपड़े धोने चाहिए।<sup>48</sup> यदि घर को फिर से प्लास्टर करने के बाद फफूंद नहीं फैला है, तो याजक इसे शुद्ध घोषित करेगा।<sup>49</sup> घर को शुद्ध करने के लिए, उसे दो पक्षी, देवदार की लकड़ी, लाल ऊन, और हाइसोप लेना चाहिए।<sup>50</sup> उसे एक पक्षी को ताजे पानी के ऊपर मिट्टी के बर्तन में मारना चाहिए।<sup>51</sup> वह देवदार की लकड़ी, हाइसोप, लाल ऊन, और जीवित पक्षी को ले, उन्हें खून और पानी में डुबोए, और घर पर सात बार छिकाव करे।<sup>52</sup> वह पक्षी के खून, ताजे पानी, जीवित पक्षी, लकड़ी, हाइसोप, और ऊन के साथ घर को शुद्ध करेगा।<sup>53</sup> फिर वह जीवित पक्षी को खुले मैदान में छोड़ देगा। इस प्रकार, वह घर के लिए प्रायश्चित्त करेगा, और यह शुद्ध होगा।<sup>54</sup> ये नियम किसी भी अशुद्ध त्वचा की स्थिति के लिए हैं।<sup>55</sup> कपड़े, धरां के लिए,<sup>56</sup> सूजन, दाने या चमकदार स्थान—<sup>57</sup> यह निर्धारित करने के लिए कि कुछ शुद्ध है या अशुद्ध। ये अशुद्ध त्वचा रोगों और फफूंद के लिए नियम हैं।

## 15 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

“इसाएलियों से कहो: जब किसी पुरुष के शरीर से साव होता है, तो वह साव अशुद्ध होता है।<sup>3</sup> चाहे वह साव बहता रहे या रुक जाए, वह उसे अशुद्ध कर देगा।<sup>4</sup> जिस बिस्तर पर वह व्यक्ति लेटा है, वह अशुद्ध होगा, और जिस किसी वस्तु पर वह बैठता है, वह भी अशुद्ध होगी।<sup>5</sup> जो कोई उसके बिस्तर को छूता है, उसे अपने कपड़े धोने होंगे और पानी से सान करना होगा; वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>6</sup> जो कोई उसके वस्तु पर बैठता है, जिस पर वह व्यक्ति बैठा है, उसे अपने कपड़े धोने होंगे और सान करना होगा; वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>7</sup> जो कोई उस व्यक्ति को छूता है, उसे धोना और सान करना होगा; वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>8</sup> यदि वह व्यक्ति किसी शुद्ध व्यक्ति पर थूक देता है, तो उस व्यक्ति को धोना और सान करना होगा; वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>9</sup> जिस काठी पर वह व्यक्ति सवारी करता है, वह अशुद्ध होगी।<sup>10</sup> जो कोई उसके नीचे की किसी वस्तु को छूता है, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। जो कोई ऐसी वस्तु उंठाता है, उसे धोना और सान करना होगा।<sup>11</sup> जिस किसी को वह व्यक्ति बिना हाथ धोए छूता है, उसे धोना और सान करना होगा।<sup>12</sup> जिस मिट्टी के बर्तन को वह व्यक्ति छूता है, उसे तोड़ देना चाहिए, और किसी भी लकड़ी की वस्तु को पानी से धोना चाहिए।<sup>13</sup> जब वह व्यक्ति साव से ठीक हो जाता है, तो उसे सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी, अपने कपड़े धोने होंगे, और ताजे पानी में सान करना होगा ताकि वह शुद्ध हो सके।

<sup>14</sup> आठवें दिन उसे दो कबूतर या दो युवा कबूतर लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने लाना होगा और उन्हें याजक को देना होगा।<sup>15</sup> याजक उन्हें बलिदान करेगा—एक पापबलि के लिए और दूसरा होमबलि के लिए। इस प्रकार याजक प्रायश्चित्त करेगा, और वह शुद्ध हो जाएगा।<sup>16</sup> जब किसी पुरुष का वीर्य साव होता है, तो उसे अपने पूरे शरीर को सान करना होगा और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>17</sup> किसी भी कपड़े या चमड़े को जिस पर वीर्य हो, उसे पानी से धोना होगा, और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>18</sup> जब किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ संभोग होता है और वीर्य साव होता है, तो दोनों को सान करना होगा और वे शाम तक अशुद्ध रहेंगे।<sup>19</sup> जब किसी स्त्री का मासिक धर्म होता है, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। जो कोई उसे छूता है, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>20</sup> जिस किसी वस्तु पर वह लेटती या बैठती है, वह अशुद्ध होगी।<sup>21</sup> जो कोई उसके बिस्तर को छूता है, उसे धोना और सान करना होगा; वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>22</sup> जो कोई उस वस्तु को छूता है, जिस पर वह बैठती है, उसे भी ऐसा ही करना होगा।<sup>23</sup> यदि कोई व्यक्ति उस वस्तु को छूता है जो बिस्तर या कुर्सी पर थी, तो वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>24</sup> यदि कोई पुरुष उसके मासिक धर्म के दौरान उसके साथ संभोग करता है, तो दोनों सात दिन तक अशुद्ध रहेंगे।<sup>25</sup> यदि किसी स्त्री का रक्तसाव उसके मासिक धर्म के बाहर होता है या यह यदि यह सामान्य समय से अधिक चलता है, तो वह साव के चलते रहने तक अशुद्ध रहेंगी।<sup>26</sup> जिस बिस्तर पर वह लेटती है या जिस किसी वस्तु पर वह बैठती है, वह उस समय के दौरान अशुद्ध होगी।<sup>27</sup> जो कोई इन वस्तुओं को छूता है, वह अशुद्ध रहेगा और उसे धोना और सान करना होगा।<sup>28</sup> जब उसका साव बंद हो जाता है, तो उसे सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी, और फिर वह शुद्ध होगी।<sup>29</sup> आठवें दिन उसे दो कबूतर या दो युवा कबूतर याजक के पास मिलापवाले तंबू के द्वार पर लाना होगा।<sup>30</sup> याजक उन्हें बलिदान करेगा, एक पापबलि के लिए और एक होमबलि के लिए। इस प्रकार, वह उसके लिए प्रायश्चित्त करेगा।<sup>31</sup> तुर्हे इसाएलियों को उन वस्तुओं से अलग रखना होगा जो उन्हें अशुद्ध करती हैं ताकि वे मेरे तंबू को अशुद्ध करके मर न जाएं।<sup>32</sup> ये नियम उस व्यक्ति के लिए हैं जिसके शरीर से साव होता है, वीर्य साव से अशुद्ध होने वाले किसी व्यक्ति के लिए,<sup>33</sup> किसी स्त्री के मासिक धर्म के दौरान, किसी व्यक्ति के लिए जिसके शरीर से साव होता है, पुरुष या स्त्री, और उस पुरुष के लिए जो किसी अशुद्ध स्त्री के साथ संभोग करता है।

## लेवियों

**16** यहोवा ने मूसा से हारून के दो पुत्रों की मृत्यु के बाद बात की, जो यहोवा के पास आने पर मर गए थे।<sup>2</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: “अपने भाई हारून से कहो कि वह जब चाहे पर्दे के पीछे परम पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के ढक्कन के सामने न आए, नहीं तो वह मर जाएगा, क्योंकि मैं ढक्कन के ऊपर बादल में प्रकट होता हूँ।”<sup>3</sup> हारून को पवित्र स्थान में इस प्रकार प्रवेश करना है: एक युवा बैल पापबलि के लिए और एक मेडा होमबलि के लिए लेकर।<sup>4</sup> उसे पवित्र सूती अंगरखा, सूती अंतवर्त, और कमरबंद पहनना है, और सूती पगड़ी से अपने को लपेटना है—ये पवित्र वस्त्र हैं। उन्हें पहनने से पहले उसे पानी से स्नान करना होगा।<sup>5</sup> इस्साएली समुदाय से उसे दो नर बकरों को पापबलि के लिए और एक मेडा होमबलि के लिए लेना है।<sup>6</sup> हारून को अपने पापबलि के लिए बैल चढ़ाना है ताकि वह अपने और अपने परिवार के लिए प्रायश्चित्त कर सके।<sup>7</sup> फिर उसे दो बकरों को लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने प्रस्तुत करना है।<sup>8</sup> उसे दो बकरों के लिए चिट्ठियाँ डालनी हैं—एक चिट्ठी यहोवा के लिए और दूसरी चिट्ठी अज्ञाद बकरे के लिए।<sup>9</sup> हारून को यहोवा के लिए चुने गए बकरे को पापबलि के रूप में बलिदान करना है।<sup>10</sup> लेकिन आज्ञाद बकरे के रूप में चुने गए बकरे को यहोवा के सामने जीवित प्रस्तुत करना है ताकि उसे जंगल में भेजकर प्रायश्चित्त किया जा सके।<sup>11</sup>

हारून को अपने पापबलि के लिए बैल लाना है ताकि वह अपने और अपने परिवार के लिए प्रायश्चित्त कर सके, और उसे मारना है।<sup>12</sup> उसे जलते अंगरारों से भरा धूपदान और सुगंधित धूप की दो मुट्ठियाँ लेकर पर्दे के अंदर ले जाना है।<sup>13</sup> उसे यहोवा के सामने आग पर धूप डालनी है, और धूप का बादल प्रायश्चित्त के ढक्कन को ढक लेगा ताकि वह न मरे।<sup>14</sup> उसे बैल के कुछ सून को लेकर अपनी उंगली से प्रायश्चित्त के ढक्कन के सामने छिड़कना है और सात बार उसके सामने छिड़कना है।<sup>15</sup> फिर उसे लोगों के पापबलि के लिए बकरे को मारना है और उसके साथ भी वही करना है।<sup>16</sup> इस प्रकार वह परम पवित्र स्थान के लिए प्रायश्चित्त करेगा, इसे इस्साएलियों की अशुद्धता से शुद्ध करेगा।<sup>17</sup> जब तक वह प्रायश्चित्त कर रहा है, तब तक कोई भी मिलापवाले तंबू में नहीं होना चाहिए, जब तक कि वह बाहर न आ जाए और अपने, अपने परिवार, और पूरी सभा के लिए प्रायश्चित्त न कर ले।<sup>18</sup> फिर उसे बाहर आकर वेदी के लिए प्रायश्चित्त करना है, बैल और बकरे के सून का उपयोग करके।<sup>19</sup> उसे सात बार छिड़ककर इसे शुद्ध और पवित्र करना है।<sup>20</sup> जब वह प्रायश्चित्त कर चुका है, तो उसे जीवित बकरे को आगे लाना है।<sup>21</sup> उसे उसके सिर पर दोनों हाथ रखना है और इस्साएलियों के

सभी पापों को उस पर स्वीकार करना है, फिर बकरे को जंगल में भेज देना है।<sup>22</sup> बकरा अपने ऊपर उनके सभी पापों को दूर स्थान पर ले जाएगा, और मनुष्य उसे छोड़ देगा।<sup>23</sup> हारून को मिलापवाले तंबू में जाना है, सूती वस्त्रों को उतारकर वहीं छोड़ देना है।<sup>24</sup> उसे पवित्र स्थान में स्नान करना है और अपने नियमित वस्त्र पहनने हैं, फिर होमबलि चढ़ाने के लिए बाहर आना है।<sup>25</sup> उसे पापबलि की बर्बी को वेदी पर जलाना है।<sup>26</sup> जिस व्यक्ति ने बकरे को छोड़ा है, उसे अपने वस्त्र थोने और पानी से स्नान करने की आवश्यकता है।<sup>27</sup> पापबलि के लिए बैल और बकरे को शिविर के बाहर ले जाकर जलाना है।<sup>28</sup> जो व्यक्ति उन्हें जलाता है, उसे भी अपने वस्त्र थोने और स्नान करने की आवश्यकता है।<sup>29</sup> यह एक स्थायी विधि है: सातवें महीने के दसवें दिन, आपको अपने आप को नकारना है और कोई काम नहीं करना है।<sup>30</sup> इस दिन, आपके लिए प्रायश्चित्त किया जाएगा ताकि आपको आपके सभी पापों से शुद्ध किया जा सके।<sup>31</sup> यह विश्राम का दिन है, और आपको अपने आप को नकारना है। यह एक स्थायी विधि है।<sup>32</sup> जो याजक अभिषिक्त और नियुक्त है, वह प्रायश्चित्त करेगा।<sup>33</sup> वह पवित्र स्थान, मिलापवाले तंबू वेदी, याजकों और लोगों के लिए प्रायश्चित्त करेगा।<sup>34</sup> यह एक स्थायी विधि है। इस्साएलियों के सभी पापों के लिए वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त किया जाएगा।

**17** यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून और उसके पुत्रों और सभी इस्साएलियों से कहो: यह वही है जो यहोवा ने अज्ञा दी है: <sup>3</sup> कोई भी इस्साएली जो शिविर के अंदर या बाहर बैल, भेड़, या बकरी का बलिदान करता है,<sup>4</sup> बजाय इसके कि उसे मिलापवाले तंबू के द्वार पर लाकर यहोवा को अर्पित करें, वह खन बहाने का दोषी है। उस व्यक्ति को अलग कर दिया जाना चाहिए।<sup>5</sup> यह इसलिए है ताकि इस्साएली अपने बलिदानों को यहोवा के पास मिलापवाले तंबू के द्वार पर लाएं, बजाय इसके कि उन्हें खुले मैदानों में अर्पित करें।<sup>6</sup> याजक को वेदी के खिलाफ खन छिड़कना चाहिए और चर्बी को यहोवा के लिए एक सुखद सुगंध के रूप में जलाना चाहिए।<sup>7</sup> उन्हें अब बकरी के देवताओं को बलिदान नहीं देना चाहिए। यह एक स्थायी विधि है।<sup>8</sup> उनसे कहो: कोई भी इस्साएली या विदेशी जो होमबलि या बलिदान अर्पित करता है<sup>9</sup> और उसे मिलापवाले तंबू में नहीं लाता, उसे लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।<sup>10</sup> कोई भी इस्साएली या विदेशी जो खन खाता है, मैं उसके खिलाफ अपना मुख करूँगा और उसे अलग कर दूँगा।<sup>11</sup> क्योंकि प्राणी का जीवन उसके खन में है, और मैंने इसे तुम्हारे जीवन के प्रायश्चित्त के लिए दिया है।<sup>12</sup> इसीलिए तुममें से कोई भी

## लेवियों

खून नहीं खा सकता, और न ही तुम्हरे बीच कोई विदेशी खून खा सकता है।<sup>13</sup> कोई भी इसाएली या विदेशी जो भोजन के लिए किसी जानवर या पक्षी का शिकार करता है, उसे उसका खून बहाकर धरती से ढक देना चाहिए।<sup>14</sup> क्योंकि हर प्राणी का जीवन उसका खून है। जो कोई इसे खाता है उसे अलग कर दिया जाना चाहिए।<sup>15</sup> जो कोई मरा हुआ या जंगली जानवरों द्वारा फाड़ा हुआ जानवर खाता है, उसे अपने कपड़े धोने और सान करने चाहिए, और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>16</sup> यदि वे नहीं धोते या सान नहीं करते, तो उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

**18** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”<sup>3</sup> तुम मिस्र में जैसा करते थे, जहाँ तुम पहले रहते थे, वैसा नहीं करना चाहिए, और न ही कनान में जैसा करते हैं, जहाँ मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। उनके आचरण का अनुसरण मत करो।<sup>4</sup> तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए और मेरे आदेशों का ध्यानपूर्वक पालन करना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>5</sup> मेरे विधियों और नियमों का पालन करो, क्योंकि जो व्यक्ति उनका पालन करता है, वह उनके द्वारा जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूँ।<sup>6</sup> कोई भी व्यक्ति किसी निकट संबंधी के साथ यौन संबंध बनाने के लिए पास नहीं जाना चाहिए। मैं यहोवा हूँ।<sup>7</sup> अपनी माँ के साथ यौन संबंध बनाकर अपने पिता का अपमान मत करो। वह तुम्हारी माँ है; उसके साथ संबंध मत बनाओ।<sup>8</sup> अपने पिता की पत्नी के साथ यौन संबंध मत बनाओ; यह तुम्हरे पिता का अपमान होगा।<sup>9</sup> अपनी बहन के साथ यौन संबंध मत बनाओ, याहे वह तुम्हारे पिता की बेटी ही या तुम्हारी माँ की बेटी, चाहे वह घर में पैदा हुई हो या कहीं और।<sup>10</sup> अपने बेटे की बेटी या अपनी बेटी की बेटी के साथ यौन संबंध मत बनाओ; यह तुम्हारा अपमान होगा।<sup>11</sup> अपने पिता की पत्नी की बेटी के साथ यौन संबंध मत बनाओ—वह तुम्हारी बहन है।<sup>12</sup> अपने पिता की बहन के साथ यौन संबंध मत बनाओ; वह तुम्हरे पिता की निकट संबंधी है।<sup>13</sup> अपनी माँ की बहन के साथ यौन संबंध मत बनाओ, क्योंकि वह निकट संबंधी है।<sup>14</sup> अपने पिता के भाई का अपमान मत करो उसकी पत्नी के पास जाओ।<sup>15</sup> अपनी बहू के साथ यौन संबंध मत बनाओ; वह तुम्हरे बेटे की पत्नी है।<sup>16</sup> अपने भाई की पत्नी के साथ यौन संबंध मत बनाओ; यह तुम्हारे भाई का अपमान होगा।<sup>17</sup> एक स्त्री और उसकी बेटी या उसकी पोती के साथ यौन संबंध मत बनाओ। यह दुष्टा है।<sup>18</sup> अपनी पत्नी के रहते हुए उसकी बहन से विवाह मत करो, जिससे उनके बीच प्रतिवृद्धिता उत्पन्न हो।<sup>19</sup> मासिक धर्म के समय किसी स्त्री के पास यौन संबंध

बनाने के लिए मत जाओ।<sup>20</sup> अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन संबंध मत बनाओ और अपने आप को उसके साथ अपवित्र मत करो।<sup>21</sup> अपने किसी भी बच्चे को मोलेक के लिए बलिदान मत दो, क्योंकि यह तुम्हरे परमेश्वर के नाम को अपवित्र करता है।<sup>22</sup> किसी पुरुष के साथ वैसे यौन संबंध मत बनाओ जैसे स्त्री के साथ बनाते हो; यह धृणास्पद है।<sup>23</sup> किसी पशु के साथ यौन संबंध मत बनाओ; यह विकृति है।<sup>24</sup> इन तरीकों से अपने आप को अपवित्र मत करो, क्योंकि जिन जातियों को मैं निकाल रहा हूँ, वे इसी प्रकार अपवित्र हो गईं।<sup>25</sup> यहाँ तक कि भूमि भी अपवित्र हो गई, और मैंने उसके पाप के लिए उसे दंडित किया, और उसने अपने निवासियों को उगल दिया।<sup>26</sup> लेकिन तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए और इन धृणास्पद चीजों में से कोई भी नहीं करना चाहिए—चाहे तुम देशी हो या तुम्हरे बीच रहने वाला विदेशी।<sup>27</sup> इन सभी चीजों को उन लोगों ने किया था या तुमसे पहले भूमि में रहते थे, और भूमि अपवित्र हो गई।<sup>28</sup> यदि तुम इसे अपवित्र करोगे, तो भूमि तुम्हें उगल देगी जैसे उसने तुम्हारे पहले की जातियों को उगल दिया।<sup>29</sup> जो कोई भी इन धृणास्पद चीजों में से कोई भी करता है, उसे अपनी जाति से काट दिया जाना चाहिए।<sup>30</sup> मेरे आदेशों का पालन करो और उन धृणास्पद रीति-रिवाजों का अनुसरण मत करो जो तुमसे पहले प्रचलित थे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

**19** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसाएल की सारी सभा से कहो: पवित्र बनो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, पवित्र हूँ।”<sup>3</sup> तुम में से हर एक को अपनी माता और पिता का आदार करना चाहिए, और मेरे विश्रामदिनों को मानना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>4</sup> मूर्तियों की ओर न फिरो और अपने लिए धातु के देवता न बनाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>5</sup> जब तुम यहोवा के लिए मेलबति चढ़ाओ, तो उसे इस प्रकार चढ़ाओ कि वह स्वीकार हो।<sup>6</sup> उसे उसी दिन या अगले दिन खा लिया जाना चाहिए। जो कुछ तीसरे दिन कुछ खाया जाए, तो वह अशुद्ध है और स्वीकार नहीं किया जाएगा।<sup>7</sup> जो कोई उसे खाएगा, वह अपने अपराध का भार उठाएगा और काट दिया जाएगा।<sup>8</sup> जब तुम अपनी फसल काटो, तो किनारों तक न काटो और न ही बिखरे हुए बालों को इकट्ठा करो।<sup>9</sup> अपने दाख की बारी को दूसरी बार न छानो और न गिरे हुए अंगूरों को उठाओ। उन्हें गरीबों और परदेशियों के लिए छोड़ दो।<sup>10</sup> चोरी न करो। चूँठ न बोलो। एक-दूसरे को धोखा न दो।<sup>11</sup> मेरे नाम की झूठी शपथ न लो।<sup>12</sup> अपने पड़ोसी की धोखा न दो।<sup>13</sup> अपने पड़ोसी की धोखा न दो।<sup>14</sup> बहरों को

## लेवियों

श्राप न दो और न अंधों के सामने ठोकर का कारण रखो।<sup>15</sup> न्याय को विकृत न करो। गरीबों का पक्षपात न करो और न ही महान लोगों की चापलूसी करो।<sup>16</sup> निंदा न फैलाओ और अपने पड़ोसी के जीवन को खतरे में न डालो।<sup>17</sup> अपने दिल में किसी इसाएली भाई से घुणा न करो। अपने पड़ोसी को स्पष्ट रूप से डांटों ताकि तुम उनके अपराध में भागीदार न बनो।<sup>18</sup> बदला न लो या द्वेष न रखो। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। मैं यहोवा हूँ।<sup>19</sup> मेरे नियमों का पालन करो। विभिन्न प्रकार के पशुओं को मिलाओ मत। अपने खेत में दो प्रकार के बीज मत भोजो। दो प्रकार की सामग्री से बने वस्त मत पहनो।<sup>20</sup> यदि कोई व्यक्ति एक दासी के साथ सोए जो किसी अच्युत के लिए वचनबद्ध है लेकिन अभी तक मुक्त नहीं हुई है, तो दंड होना चाहिए, लेकिन मृत्यु नहीं। उन्हें एक अपराध बलि लानी चाहिए।<sup>21</sup> याजक अपराध बलि के मेंदे के साथ उसके लिए प्रायश्चित्त करेगा।<sup>22</sup> याजक प्रायश्चित्त करेगा, और उसे क्षमा किया जाएगा।<sup>23</sup> जब तुम देश में प्रवेश करो और पेड़ लगाओ, तो तीन वर्षों तक उसके फल को वर्जित समझो।<sup>24</sup> चौथे वर्ष में सभी फल पवित्र और सुस्ति की भेट होंगे।<sup>25</sup> पाँचवें वर्ष में तुम उसके फल खा सकते हो।<sup>26</sup> खून के साथ मांस मत खाओ।<sup>27</sup> ज्योतिष या शकुन मत देखो।<sup>28</sup> अपने शरीर को मत काटो या खुद को गोदवाओ।<sup>29</sup> अपनी बेटी को वेश्या बनाकर अपमानित मत करो।<sup>30</sup> मेरे विश्रामदिनों का पालन करो और मेरे पवित्रस्थान का आदर करो।<sup>31</sup> माध्यमों या आत्माओं की ओर न फिरो।<sup>32</sup> बृद्धों के सामने खड़े होओ, बुजु़गों का आदर करो।<sup>33</sup> परदेशी को मत सताओ या उत्तेजित करो।<sup>34</sup> तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशी को अपने देशवासी के समान मानो। उनसे अपने समान प्रेम करो।<sup>35</sup> माप में बैरेमानी न करो।<sup>36</sup> ईमानदार तरजू, वजन, और माप का उपयोग करो। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>37</sup> मेरे सभी नियमों और विधियों का पालन करो और उनका पालन करो। मैं यहोवा हूँ।

**20** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसाएलीयों से कहो: कोई भी इसाएली या परदेशी जो अपने बच्चों में से किसी को भी मोलेक को बलिदान करता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए। समुदाय के लोग उन्हें पत्तरों से मार डालें।<sup>3</sup> मैं स्वयं अपना मुख उनके विरुद्ध करूँगा और उन्हें उनकी प्रजा से काट द्वागा, क्योंकि मोलेक को बच्चों का बलिदान देकर, उन्होंने मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है और मेरे पवित्र नाम का अपमान किया है।<sup>4</sup> यदि समुदाय अपनी अँखें बंद कर लेता है और उन्हें मृत्यु दंड नहीं देता, <sup>5</sup> तो मैं अपना मुख उनके और उनके परिवार के विरुद्ध करूँगा और उन सभी को

काट द्वागा जो मोलेक के पास वेश्यावृत्ति करने में उनका अनुसरण करते हैं।<sup>6</sup> मैं उन सभी के विरुद्ध भी अपना मुख करूँगा जो माध्यमों और आत्माओं की ओर मुड़ते हैं। मैं उन्हें उनकी प्रजा से काट द्वागा।<sup>7</sup> अपने आप को पवित्र करो और पवित्र बनो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>8</sup> मेरे विधियों का पालन करो और उनका अनुसरण करो। मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें पवित्र करता हूँ।<sup>9</sup> जो कोई अपने पिता या माता को शाप देता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>10</sup> यदि कोई पुरुष की पत्नी के साथ व्यधिचार करता है, तो दोनों व्यधिचारी और व्यधिचारिणी को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>11</sup> यदि कोई पुरुष अपने पिता की पत्नी के साथ सोता है, तो उसने अपने पिता का अपमान किया है।<sup>12</sup> दोनों को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>13</sup> यदि कोई पुरुष अपनी पुत्रवधू के साथ सोता है, तो दोनों को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>14</sup> यदि कोई पुरुष एक स्त्री की पत्नी के साथ सोता है, तो दोनों ने घृणित कार्य किया है। उन्हें मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>15</sup> यदि कोई पुरुष एक स्त्री और उसकी माँ दोनों से विवाह करता है, तो यह दुष्टता है। सभी तीनों को आग से जलाया जाना चाहिए।<sup>16</sup> यदि कोई पुरुष किसी पशु के साथ यौन संबंध रखता है, तो उसे मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए, और पशु को मार दिया जाना चाहिए।<sup>17</sup> यदि कोई स्त्री किसी पशु के पास संभेद के लिए जाती है, तो उसे और पशु दोनों को मार दिया जाना चाहिए।<sup>18</sup> यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के मासिक धर्म के दौरान उसके साथ सोता है, तो उन्हें दोनों को काट दिया जाना चाहिए।<sup>19</sup> अपनी माता की बहन या अपने पिता की बहन के साथ यौन संबंध न रखें।<sup>20</sup> यदि कोई पुरुष अपनी चाची के साथ सोता है, तो वह दोषी है।<sup>21</sup> यदि कोई पुरुष अपने भाई की पत्नी से विवाह करता है, तो यह अशुद्धता है। वे निःसंतान रहेंगे।<sup>22</sup> मेरे सभी विधियों और कानूनों का पालन करो, अन्यथा भूमि तुम्हें उगल देगी।<sup>23</sup> उन जातियों की प्रथाओं का अनुसरण न करो जिन्हें मैं निकाल रहा हूँ।<sup>24</sup> मैं उनसे घृणा करता था।<sup>25</sup> मैंने तुमसे कहा, तुम उनकी भूमि का अधिकार करोगे।<sup>26</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिसने तुम्हें जातियों से अलग किया है।<sup>27</sup> तुम्हें स्वच्छ और अशुद्ध पशुओं और पक्षियों के बीच भेद कराना चाहिए।<sup>28</sup> तुम मेरे लिए पवित्र हो, क्योंकि मैं, यहोवा, पवित्र हूँ, और मैंने तुम्हें अलग किया है।<sup>29</sup> जो पुरुष या स्त्री माध्यम या आत्मा-विद्या करने वाले होते हैं, उन्हें मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए। तुम उन्हें पत्तरों से मार डालो।

## लेवियों

**21** यहोवा ने मूसा से कहा: “हारून के पुत्रों, याजकों से कहो। कोई भी अपने लोगों में किसी मृत व्यक्ति के लिए—अपने को धार्मिक रूप से अशुद्ध न करे, <sup>2</sup> केवल निकट संबंधी के लिए—माता, पिता, पुत्र, पुत्री, या भाई। <sup>3</sup> वह अपनी अविवाहित बहन के लिए भी अशुद्ध हो सकता है जो उस पर निर्भर है। <sup>4</sup> लेकिन वह केवल विवाह संबंधी रिश्तेदार के लिए अपने को अशुद्ध न करे। <sup>5</sup> याजकों को अपने सिर नहीं मुंडवाना चाहिए, अपनी दाढ़ी के किनारों को नहीं काटना चाहिए, या अपने शरीर को नहीं काटना चाहिए। <sup>6</sup> उन्हें अपने परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए और उसके नाम को अपवित्र नहीं करना चाहिए। <sup>7</sup> उन्हें उन स्त्रियों से विवाह नहीं करना चाहिए जो वेश्यावृत्ति से अपवित्र हुई हैं या अपने पतियों से तलाकशुदा हैं। <sup>8</sup> उन्हें पवित्र के रूप में अलग करो, क्योंकि वे तुम्हारे परमेश्वर का भोजन अर्पित करते हैं। <sup>9</sup> यदि किसी याजक की बेटी वेश्या बन जाती है, तो वह अपने पिता को अपमानित करती है। उसे आग में जलाना चाहिए। <sup>10</sup> महायाजक, जिस पर अभिषेक का तेल डाला गया है और वस्त्र पहनने के लिए पवित्र किया गया है, उसे अपने बालों को बिखरने नहीं देना चाहिए या अपने वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए। <sup>11</sup> उसे उस स्थान में प्रवेश नहीं करना चाहिए जहाँ कोई मृत शरीर है, या अपने को अशुद्ध नहीं करना चाहिए, यहाँ तक कि निकट संबंधी के लिए भी। <sup>12</sup> उसे पवित्र स्थान नहीं छोड़ना चाहिए या उसे अपवित्र नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह पवित्र किया गया है। <sup>13</sup> उसे एक कुंवारी से विवाह करना चाहिए। <sup>14</sup> उसे विधवा, तलाकशुदा स्त्री, या वेश्या से विवाह नहीं करना चाहिए। <sup>15</sup> उसे अपने वंश को अपने लोगों में अपवित्र नहीं करना चाहिए। <sup>16</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>17</sup> “हारून से कहो: कोई भी दोषयुक्त व्यक्ति भोजन अर्पण करने के लिए निकट नहीं आए। <sup>18</sup> कोई भी जो अंधा, लंगड़ा, विकृत या विकलांग है, <sup>19</sup> कोई भी जिसके पैर या हाथ विकृत हैं, <sup>20</sup> या जो कूबड़ वाला है, बौना है, या जिसकी आँखें में दोष हैं, त्वचा रोग है या क्षतिप्रस्त अंडकोष हैं। <sup>21</sup> हारून के वंश में से कोई भी दोषयुक्त व्यक्ति भोजन अर्पण करने के लिए निकट नहीं आए। <sup>22</sup> वह पवित्र भोजन खा सकता है, लेकिन पर्दे या वेदी के पास नहीं आना चाहिए। <sup>23</sup> उसे पवित्र स्थान को अपवित्र नहीं करना चाहिए। <sup>24</sup> तो मूसा ने यह हारून, उसके पुत्रों, और सभी इसाएलियों से कहा।

**22** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “हारून और उसके पुत्रों से कहो कि वे इसाएलियों के पवित्र भेंटों का आदर करें, जिन्हें वे मेरे लिए पवित्र करते हैं, ताकि वे मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न करें। मैं यहोवा हूँ। <sup>3</sup> उनसे कहो:

यदि तुम्हारे वंशजों में से कोई पवित्र भेंट को छूता है जबकि वह धार्मिक रीति से अशुद्ध है, तो उसे मेरी उपस्थिति से काट दिया जाना चाहिए। <sup>4</sup> यदि हारून का कोई वंशज त्वचा रोग या शरीर से साव से ग्रस्त है, तो वह तब तक पवित्र भेंट नहीं खा सकता जब तक वह शुद्ध न हो जाए। <sup>5</sup> जो कोई शव से अपवित्र या अशुद्ध व्यक्ति को छूता है, <sup>6</sup> या जो कोई रेणे वाले जीव या अशुद्ध व्यक्ति को छूता है, वह संथात तक अशुद्ध हो जाता है और जब तक वह जल से नहीं धोता, तब तक पवित्र भेंट नहीं खा सकता। <sup>7</sup> जब सूर्य अस्त होता है, तब वे शुद्ध हो जाते हैं, और वे पवित्र भेंट खा सकते हैं, क्योंकि वे उनका भोजन हैं। <sup>8</sup> उन्हें कुछ भी मृत या जंगली जानवरों द्वारा फाड़ा हुआ नहीं खाना चाहिए, नहीं तो वे अशुद्ध हो जाएंगे। <sup>9</sup> याजकों को मेरी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, नहीं तो वे दोषी होंगे और उसे अपवित्र करने के लिए मर जाएंगे। मैं यहोवा हूँ जो उन्हें पवित्र करता हूँ। <sup>10</sup> याजक के परिवार के बाहर कोई भी पवित्र भेंट नहीं खा सकता, जिसमें मेहमान या किराए के मजदूर भी शामिल हैं। <sup>11</sup> लेकिन याजक के घर में जन्मा दास इसे खा सकता है, जैसे कि वह जिसे उसके पैसे से खरीदा गया हो। <sup>12</sup> यदि याजक की बेटी किसी याजक के बाहर शादी करती है, तो वह पवित्र भेंट नहीं खा सकती। <sup>13</sup> लेकिन यदि वह विधवा या तलाकशुदा हो जाती है और उसके कोई बच्चे नहीं हैं और वह अपने पिता के घर टौटी है, तो वह अपने पिता का भोजन खा सकती है। <sup>14</sup> यदि कोई गलती से पवित्र भेंट खा लेता है, तो उसे भेंट के मूल्य के पांचवें भाग के साथ उसे चुकाना होगा। <sup>15</sup> याजकों को पवित्र भेंटों को अपवित्र नहीं करना चाहिए। <sup>16</sup> अनधिकृत लोगों को उन्हें खाने की अनुमति देकर, वे दोष लाएंगे और पुनःस्थापन की आवश्यकता होगी। मैं यहोवा हूँ जो उन्हें पवित्र करता हूँ। <sup>17</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>18</sup> “हारून और उसके पुत्रों और सभी इसाएलियों से कहो: यदि कोई यहोवा के लिए स्वेच्छा से भेंट लाता है, <sup>19</sup> तो वह बिना दोष के नर होना चाहिए, चाहे वह गाय, भेड़ या बकरी हो, ताकि वह स्वीकार किया जा सके। <sup>20</sup> किसी दोषयुक्त वस्तु को न लाओ, नहीं तो वह स्वीकार नहीं की जाएगी। <sup>21</sup> जब कोई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए या स्वेच्छा से मेलबाली लाता है, तो वह बिना दोष के होना चाहिए। <sup>22</sup> यहोवा को अंधा, घायल, या अंग पशु न चढ़ाओ। <sup>23</sup> एक बैल या भेड़ जिसका अंग बढ़ा हुआ या छोटा है, उसे स्वेच्छा से भेंट के रूप में दिया जा सकता है, लेकिन प्रतिज्ञा के लिए नहीं। <sup>24</sup> ऐसे पशु को न चढ़ाओ जिसके अंडकोष चोटिल, कुचले, फटे या कटे हों। <sup>25</sup> तुम्हें ऐसे पशु को किसी विदेशी से भी स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे दोषपूर्ण हैं। <sup>26</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>27</sup> “जब कोई

## लेवियों

बछड़ा, मेमना या बकरी पैदा होता है, तो उसे सात दिनों तक अपनी माँ के साथ रहना चाहिए। आठवें दिन से, उसे भेट के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।<sup>28</sup> एक ही दिन में गाय या भेड़ और उसके बच्चे को न मारो।<sup>29</sup> जब तुम यहोवा के लिए धन्यवाद भेट चढ़ाते हो, तो उसे ऐसे तरीके से करो जो स्त्रीकार्य हो।<sup>30</sup> उसे उसी दिन खा लिया जाना चाहिए; उसे सुबह तक न छोड़ो।<sup>31</sup> मेरी आज्ञाओं का पालन करो और उनका अनुसरण करो। मैं यहोवा हूँ।<sup>32</sup> मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न करो। मुझे इसाएलियों के बीच पवित्र माना जाना चाहिए।<sup>33</sup> मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस्र से तुम्हारा परमेश्वर बनने के लिए बाहर लाया; मैं यहोवा हूँ।

**23** प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो: ये मेरे नियत पर्व हैं, पवित्र सभाएँ जिन्हें तुम उनके नियत समय पर घोषित करोगे।<sup>3</sup> छ: दिन काम किया जा सकता है, परन्तु सातवाँ दिन विश्राम का सञ्चालन है, पवित्र सभाएँ जिन्हें तुम उनके नियत समय पर घोषित करोगे।<sup>5</sup> पहले महीने के चौदहवें दिन संध्या के समय फसल शुरू होता है।<sup>6</sup> खीमर रहित रोटी का पर्व पंद्रहवें दिन से शुरू होता है और सात दिन तक चलता है, खीमर रहित रोटी खाओ।<sup>7</sup> पहले दिन पवित्र सभा करो और कोई नियमित काम मत करो।<sup>8</sup> सात दिन तक प्रभु के लिए भोजन की भेट चढ़ाओ। सातवें दिन फिर पवित्र सभा करो और कोई काम मत करो।<sup>9</sup> प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>10</sup> “जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुम्हें दे रहा हूँ और उसकी फसल काटोगे, तो अपनी फसल की पहली पूली याजक के पास लाओ।<sup>11</sup> वह पूरी को प्रभु के सामने हिलाए ताकि वह स्वीकार की जाए। सञ्चालन के अगले दिन यह करो।<sup>12</sup> उस दिन, एक वर्ष का निर्दोष नर मेमना होमबलि के रूप में बलिदान करो।<sup>13</sup> इसके साथ अनाज की भेट और पेय की भेट चढ़ाओ।<sup>14</sup> जब तक यह भेट प्रस्तुत न की जाए, तब तक कोई रोटी या नई फसल मत खाओ।<sup>15</sup> सञ्चालन के अगले दिन से सात पूर्ण सप्ताह गिनो।<sup>16</sup> पचासवें दिन, प्रभु के लिए नई फसल की भेट चढ़ाओ।<sup>17</sup> खीमर के साथ बने दो रोटी की भेट लाओ।<sup>18</sup> उनके साथ सात नर मेमने, एक युवा बैल और दो मेंढे—सभी निर्दोष—प्रस्तुत करो।<sup>19</sup> फिर एक नर बकरी पापबलि के लिए और दो मेमने मेलबलि के लिए बलिदान करो।<sup>20</sup> याजक उर्वे प्रभु के सामने हिलाए। वे पवित्र हैं और याजक के हैं।<sup>21</sup> उसी दिन पवित्र सभा करो और कोई काम मत करो। यह एक स्थायी विधि है।<sup>22</sup> जब तुम फसल काटो, तो किनारों तक न काटो और न ही बचे हुए को इकट्ठा करो। उर्वे गरीबों और विदेशियों के लिए छोड़ दो।<sup>23</sup> प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>24</sup>

“सातवें महीने के पहले दिन, सञ्चालन का दिन मनाओ, तुरही की धनि के साथ पवित्र सभा।<sup>25</sup> कोई नियमित काम मत करो और भोजन की भेट चढ़ाओ।<sup>26</sup> प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>27</sup> “सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित्त का दिन है। पवित्र सभा करो और अपने आप को वंचित करो।<sup>28</sup> कोई काम मत करो, क्योंकि यह प्रायश्चित्त का दिन है।<sup>29</sup> जो कोई अपने आप को वंचित नहीं करता, उसे काट दिया जाएगा।<sup>30</sup> मैं उस दिन काम करने वाले को नष्ट कर दूँगा।<sup>31</sup> तुम लिकुल भी काम नहीं करोगे। यह एक स्थायी विधि है।<sup>32</sup> यह सञ्चालन विश्राम का दिन है। इसे शाम से शुरू करके अगले शाम तक मनाओ।<sup>33</sup> प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>34</sup> “सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से तेबुओं का पर्व शुरू होता है। यह सात दिन तक चलता है।<sup>35</sup> पहले दिन पवित्र सभा करो और कोई नियमित काम मत करो।<sup>36</sup> सात दिन तक भोजन की भेट चढ़ाओ। आठवें दिन फिर सभा करो और भेट चढ़ाओ।<sup>37</sup> ये प्रभु के नियत पर्व हैं, जिन्हें तुम पवित्र सभाओं के रूप में घोषित करोगो।<sup>38</sup> ये भेटें तुम्हारे नियमित सञ्चालन, उपहार और प्रतिज्ञाओं के अतिरिक्त हैं।<sup>39</sup> सातवें महीने के पंद्रहवें दिन, फसल के बाद, प्रभु के लिए सात दिन का पर्व मनाओ।<sup>40</sup> पेड़ों की शाखाएँ—खजूर, पतेदार और पाँपलर—लो और प्रभु के सामने आनन्दित हो।<sup>41</sup> इस पर्व को वार्षिक रूप से मनाओ। यह सभी पीढ़ियों के लिए एक स्थायी विधि है।<sup>42</sup> सात दिन तक अस्थायी आश्रयों में रहो।<sup>43</sup> यह तुम्हें याद दिलाता है कि मैंने इसाएलियों को मिस से निकालते समय ज्ञोपङ्गियों में रहने के लिए बनाया था। मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूँ।<sup>44</sup> इस प्रकार मूसा ने इसाएलियों को प्रभु के नियत पर्वों की घोषणा की।

**24** प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “इसाएलियों को आदेश दो कि वे तुम्हारे लिए दबाए हुए जेतून के तेल को दीपकों के लिए लाएं, ताकि वे निरंतर जलते रहें।<sup>3</sup> हारून को संध्या से सुबह तक प्रभु के सामने, मिलापवाले तेबु में वाचा की व्यवस्था के पर्वें के बाहर, दीपकों को निरंतर जलाए रखना है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी विधि होनी चाहिए।<sup>4</sup> प्रभु के सामने शुद्ध सोने के दीपसंभ पर दीपकों को निरंतर देखभाल करनी चाहिए।<sup>5</sup> सबसे उत्तम आटा लो और बारह रोटियाँ बनाओ, प्रत्येक रोटी के लिए दो-तिहाई एपा का उपयोग करते हुए।<sup>6</sup> उर्वे दो ढेरों में सजाओ, प्रत्येक ढेर में छह, प्रभु के सामने शुद्ध सोने की मेज पर।<sup>7</sup> प्रत्येक ढेर के साथ शुद्ध धूप रखो ताकि यह स्मरणीय अंश और प्रभु के लिए भोजन अर्पण के रूप में हो।<sup>8</sup> हर सञ्चालन को, हारून को उर्वे प्रभु के सामने नियमित रूप से सजाना है, एक स्थायी वाचा के रूप में। यह इसाएलियों के लिए है।<sup>9</sup>

## लेवियों

रोटियाँ हारून और उसके पुत्रों की हैं। उन्हें पवित्र स्थान में इसे खाना है, क्योंकि यह उनके भोजन अर्पण के स्थायी हिस्से का सबसे पवित्र भाग है।<sup>10</sup> अब एक व्यक्ति जो एक इसाएली माँ और एक मिसी पिता का पुत्र था, इस्माएलियों के बीच बाहर गया, और शिविर में उसके और एक पूर्ण इसाएली के बीच झगड़ा हो गया।<sup>11</sup> इसाएली स्त्री के पुत्र ने नाम की निंदा की और शाप दिया; इसलिए वे उसे मूसा के पास लाए। (उसकी माँ का नाम शैलोमिथ था, जो दान के गोत्र के डिन्ही की पुत्री थी।)<sup>12</sup> उहोंने उसे हिरासत में रखा जब तक कि प्रभु की इच्छा उनके लिए स्पष्ट नहीं हो गई।<sup>13</sup> तब प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>14</sup> “निंदक को शिविर के बाहर ले जाओ। सभी जिन्होंने उसे सुना है, वे अपने हाथ उसके सिर पर रखें, और पूरी सभा उसे परमेश्वर मारो।”<sup>15</sup> इसाएलियों से कहो: जो कोई अपने परमेश्वर को शाप देता है, उसे उत्तरदायी ठहराया जाएगा।<sup>16</sup> जो कोई प्रभु के नाम की निंदा करता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा। पूरी सभा उहें पत्तर मरोगी—चाहे वह विदेशी हो या देश में जन्मा—जब वे नाम की निंदा करते हैं।<sup>17</sup> जो कोई किसी मानव की जान लेता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>18</sup> जो कोई किसी पशु की जान लेता है, उसे प्रतिपूर्ति करनी होगी—जीवन के बदले जीवन।<sup>19</sup> जो कोई अपने पड़ोसी को चोट पहुँचाता है, उसे उसी प्रकार से चोट पहुँचाई जाएगी:<sup>20</sup> हड्डी के बदले हड्डी, औंख के बदले औंख, दांत के बदले दांत। जिसने चोट पहुँचाई है, उसे वही चोट सहनी होगी।<sup>21</sup> जो कोई पशु को मारता है, उसे प्रतिपूर्ति करनी होगी, लेकिन जो कोई मानव को मारता है, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा।<sup>22</sup> तुम्हारे लिए विदेशी और देश में जन्मे के लिए एक ही कानून होना चाहिए। मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूँ।<sup>23</sup> तब मूसा ने इसाएलियों से बात की, और उहोंने निंदक को शिविर के बाहर ले जाकर पत्तर मारा। इसाएलियों ने जैसा प्रभु ने मूसा को आदेश दिया था, वैसा ही किया।

**25** तब यहोवा ने सीनी पर्वत पर मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो, ‘जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुर्हें दे रहा हूँ, तब वह देश यहोवा के लिए विश्राम का सब्त मनाएगा।<sup>3</sup> छ ह वर्षों तक तुम अपने खेत में बीज बोओगे, और छ ह वर्षों तक अपनी दाख की बारी की छंटाई करोगे और उसकी उपज इकट्ठा करोगे।<sup>4</sup> परंतु सातवें वर्ष में उस देश को विश्राम का सब्त होगा, यहोवा के लिए एक सब्त; तुम अपने खेत में बीज नहीं बोओगे और न अपनी दाख की बारी की छंटाई करोगे।<sup>5</sup> तुम अपनी स्वयं उगी उपज नहीं काटोगे और न अपनी बिना छंटी दाख की बारी के अंगूर इकट्ठा करोगे; उस देश को सब्तीय वर्ष मिलेगा।<sup>6</sup> तुम सब के लिए उस देश

की सब्तीय उपज भोजन के लिए होगी; तुम्हारे लिए, तुम्हारे दास-दासियों के लिए, तुम्हारे किराए के मजदूर और तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशियों के लिए, जो तुम्हारे बीच अजनबी के रूप में रहत हैं।<sup>7</sup> यहाँ तक कि तुम्हारे पश्च और तुम्हारे देश में रहने वाले जानवर भी उसकी सारी उपज खाएँगे।<sup>8</sup> तुम अपने लिए सात सब्तीय वर्षों की गिनती करोगे, सात बार सात वर्ष, ताकि तुम्हारे पास सात सब्तीय वर्षों का समय हो, अर्थात् उनचास वर्ष।<sup>9</sup> तब तुम सातवें महीने के दसवें दिन एक मेढ़े का सींग बजाओगे; प्रायश्चित के दिन तुम अपने पूरे देश में एक सींग बजाओगे।<sup>10</sup> तुम पचासवें वर्ष को पवित्र ठहराओगे और उसके सभी निवासियों के लिए देश भर में स्वर्तंत्रता की घोषणा करोगे। यह तुम्हारे लिए एक जुबली होगी, और तुम में से प्रत्येक अपने स्वामित्व में लौटेगा, और तुम में से प्रत्येक अपने परिवार में लौटेगा।<sup>11</sup> तुम्हारे लिए पचासवां वर्ष जुबली होगा; तुम बीज नहीं बोओगे, न उसकी स्वयं उगी उपज काटोगे, न उसकी बिना छंटी दाख की बारी से अंगूर इकट्ठा करोगे।<sup>12</sup> क्योंकि यह एक जुबली है; यह तुम्हारे लिए पवित्र होगा। तुम उसकी उपज खेत से खाओगे।<sup>13</sup> इस जुबली वर्ष में, तुम में से प्रत्येक अपने स्वामित्व में लौटेगा।<sup>14</sup> इसके अलावा, यदि तुम अपने पड़ोसी को कुछ बेचते हो, या अपने पड़ोसी के हाथ से कुछ खरीदते हो, तो एक-दूसरे के साथ अन्याय मत करो।<sup>15</sup> जुबली के बाद के वर्षों की संख्या के अनुसार, तुम अपने पड़ोसी से खरीदोगे; वह तुम्हें फसल के वर्षों की संख्या के अनुपात में तुम उसकी कीमत बढ़ाओगे, और कम वर्षों की अनुपात में तुम उसकी कीमत घटाओगे, क्योंकि वह तुम्हें फसलों की संख्या बेच रहा है।<sup>16</sup> इसलिए तुम एक-दूसरे के साथ अन्याय मत करो, बल्कि अपने परमेश्वर का भय मानो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर योद्धा हूँ।<sup>17</sup> इसलिए तुम मेरी विधियों का पालन करोगे और मेरे नियमों का पालन करोगे ताकि उहें पूरा कर सको, ताकि तुम उस देश में सुरक्षित रह सको।<sup>18</sup> तब वह देश अपनी उपज देगा, ताकि तुम अपनी भूख मिटा सको और उस पर सुरक्षित रह सको।<sup>19</sup> परंतु यदि तुम कहो, ‘सातवें वर्ष में हम यह खाएँगे यदि दम बीज नहीं बोएँ और न अपनी उपज इकट्ठा करें?’<sup>20</sup> तब मैं छठे वर्ष में तुम्हारे लिए अपनी आशीर्वाद की व्यवस्था करूँगा ताकि वह तीन वर्षों की उपज लाए।<sup>21</sup> जब तुम आठवें वर्ष में बीज बोओगे, तब भी तुम पुरानी उपज खा सकते हो जब तक कि नौवें वर्ष की उपज नहीं आ जाती; तब तक तुम पुरानी उपज खाओगे।<sup>22</sup> इसके अलावा, वह देश स्थायी रूप से नहीं बैचा जाएगा, क्योंकि वह देश मेरा है; क्योंकि तुम मेरे साथ केवल अजनबी और अस्थायी निवासी हो।<sup>23</sup>

## लेवियों

इसलिए अपनी संपत्ति के हर टुकड़े के लिए, तुम उस देश के पुनः प्राप्ति की व्यवस्था करोगे।<sup>25</sup> यदि तुम्हारा कोई साथी देशवासी इतना गरीब हो जाता है कि वह अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा बेच देता है, तो उसका निकटतम रिश्तेदार आएगा और जो उसके भाई ने बेचा है उसे पुनः प्राप्त करेगा।<sup>26</sup> या यदि किसी के पास कोई पुनः प्राप्तकर्ता नहीं है, लेकिन वह ठीक हो जाता है और उसे पुनः प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साधन मिलते हैं,<sup>27</sup> तब वह उसकी बिक्री के बाद से वर्षों की गणना करेगा और उसे उस व्यक्ति को वापस करेगा जिसे उसने बेचा था, और इस प्रकार अपनी संपत्ति में लौटेगा।<sup>28</sup> परंतु यदि वह इसे अपने लिए वापस पाने के लिए पर्याप्त साधन नहीं पाता है, तो जो उसने बेचा है वह जुबली वर्ष तक उसके खरीदार के हाथ में रहेगा; परंतु जुबली में वह वापस आ जाएगा, ताकि वह अपनी संपत्ति में लौट सके।<sup>29</sup> इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति एक दीवार वाले शहर में एक आवासीय घर बेचता है, तो उसकी पुनः प्राप्ति का अधिकार उसकी बिक्री के एक पूरे वर्ष के बाद तक वैध रहेगा; उसकी पुनः प्राप्ति का अधिकार एक वर्ष तक रहता है।<sup>30</sup> परंतु यदि वह उसके लिए एक पूरे वर्ष के भीतर पुनः प्राप्त नहीं किया जाता है, तो दीवार वाले शहर में जो घर है वह उसके खरीदार के लिए खायी रूप से उसकी पीढ़ियों के लिए चला जाता है; यह जुबली में वापस नहीं आता।<sup>31</sup> हालांकि, उन गाँवों के घर जिनके चारों ओर कोई दीवार नहीं है, उन्हें खुले खेतों के रूप में माना जाएगा; उनके पास पुनः प्राप्ति का अधिकार है और वे जुबली में वापस आते हैं।<sup>32</sup> जहाँ तक लेवियों के शहरों के बात है, लेवियों के पास उन शहरों के घरों के लिए खायी पुनः प्राप्ति का अधिकार है जो उनकी संपत्ति है।<sup>33</sup> इसलिए, जो लेवियों का है वह पुनः प्राप्त किया जा सकता है, और उनके स्वामित के शहर में बेचा गया घर जुबली में वापस आता है, क्योंकि लेवियों के शहरों के घर इसापल के पुत्रों के बीच उनकी संपत्ति है।<sup>34</sup> परंतु उनके शहरों के चरागाह के मैदान नहीं बेचे जाएंगे, क्योंकि वह उनकी स्थायी संपत्ति है।<sup>35</sup> अब यदि तुम्हारा कोई देशवासी गरीब हो जाता है और उसके साथन तुम्हारे संबंध में कम हो जाते हैं, तो तुम उसे सहारा दोगे, जैसे कोई अजनकी या अस्थायी निवासी, ताकि वह तुम्हारे साथ रह सके।<sup>36</sup> उससे किसी भी प्रकार का ब्याज मत लो, बल्कि अपने परमेश्वर का भय मानो, ताकि तुम्हारा देशवासी तुम्हारे साथ रह सके।<sup>37</sup> तुम उसे अपने चाँदी को ब्याज पर मत दो, न अपने भोजन को लाभ के लिए।<sup>38</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जिसने तुम्हें मिस्र देश से निकाला ताकि तुम्हें कनान देश ढूँ, और तुम्हारा परमेश्वर बनूँ।<sup>39</sup> अब यदि तुम्हारा कोई देशवासी तुम्हारे संबंध में इतना गरीब हो जाता है

कि वह खुद को तुम्हें बेच देता है, तो तुम उसे दास की सेवा के अधीन नहीं करोगे।<sup>40</sup> वह तुम्हारे साथ एक किराए के मजदूर के रूप में रहेगा, जैसे कि वह एक अस्थायी निवासी हो; वह जुबली वर्ष तक तुम्हारे साथ सेवा करेगा।<sup>41</sup> तब वह तुम्हें छोड़ देगा, वह और उसके बेटे उसके साथ, और अपने परिवार में लौट जाएगा, ताकि वह अपने पूर्जों की संपत्ति में लौट सके।<sup>42</sup> क्योंकि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैंने मिस्र देश से निकाला; उन्हें दास की बिक्री में नहीं बेचा जाना चाहिए।<sup>43</sup> तुम उसके ऊपर कठोरता से शासन नहीं करोगे, बल्कि अपने परमेश्वर का आदर करोगे।<sup>44</sup> जहाँ तक तुम्हारे पुरुष और महिला दासों की बात है जिन्हें तुम रख सकते हो—तुम अपने चारों ओर की जातियों से पुरुष और महिला दास प्राप्त कर सकते हो।<sup>45</sup> तुम उन्हें उन परदेशियों के पुत्रों से भी प्राप्त कर सकते हो जो तुम्हारे बीच रहते हैं, और उनके परिवारों से जो तुम्हारे साथ हैं, जिन्हें उन्होंने तुम्हारे देश में जन्म दिया है; वे भी तुम्हारी संपत्ति बन सकते हैं।<sup>46</sup> तुम उन्हें अपने पुत्रों को अपने बाद एक संपत्ति के रूप में दे सकते हो; तुम उन्हें खायी दासों के रूप में उपयोग कर सकते हो। परंतु अपने साथी इसापिलियों के संबंध में, तुम एक-दूसरे के ऊपर कठोरता से शासन नहीं करोगे।<sup>47</sup> अब यदि तुम्हारे साथ रहने वाले किसी परदेशी या अस्थायी निवासी के साधन पर्याप्त हो जाते हैं, और तुम्हारा कोई देशवासी उसके संबंध में इतना गरीब हो जाता है कि वह खुद को तुम्हारे साथ रहने वाले परदेशी को बेच देता है, या परदेशी के परिवार के वंशजों को,<sup>48</sup> तब उसके पास खुद को बेचने के बाद पुनः प्राप्ति का अधिकार होगा। उसके भाइयों में से कोई उसे पुनः प्राप्त कर सकता है,<sup>49</sup> या उसका चाचा, या उसके चाचा का पुत्र उसे पुनः प्राप्त कर सकता है, या उसके परिवार से कोई रक्त संबंधी उसे पुनः प्राप्त कर सकता है; या यदि वह समृद्ध होता है, तो वह खुद को पुनः प्राप्त कर सकता है।<sup>50</sup> तब वह अपने खरीदार के साथ उस वर्ष से गणना करेगा जब उसने खुद को उसे बेचा था, जुबली वर्ष तक; और उसकी बिक्री की कीमत वर्षों की संख्या के अनुसार होगी। यह उसके साथ एक किराए के मजदूर के दिनों के समान होगा।<sup>51</sup> यदि अभी भी कई वर्ष हैं, तो वह अपनी पुनः प्राप्ति के लिए उनके अनुपात में अपनी खरीद मूल्य का हिस्सा वापस करेगा;<sup>52</sup> परंतु यदि जुबली वर्ष तक केवल कुछ वर्ष शेष हैं, तो वह उसके साथ इस प्रकार गणना करेगा। शेष वर्षों के अनुपात में, वह अपनी पुनः प्राप्ति के लिए राशि वापस करेगा।<sup>53</sup> वह उसके साथ वर्ष दर वर्ष किराए के मजदूर के समान रहेगा; वह तुम्हारी दृष्टि में उसके ऊपर कठोरता से शासन नहीं करेगा।<sup>54</sup> यहाँ तक कि यदि वह इन साधनों से पुनः प्राप्त नहीं किया

## लेवियों

जाता है, तो भी वह जुबली वर्ष में छोड़ देगा, वह और उसके बेटे उसके साथ।<sup>55</sup> क्योंकि इसाएल के पुत्र मेरे सेवक हैं, वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैंने मिस देश से निकाला। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

**26** तुम अपने लिए मूर्तियाँ न बनाओ, न कोई प्रतिमा या पवित्र पश्चर स्थापित करो। न ही अपने देश में कोई तराशा हुआ पथर रखो ताकि उसके सामने झुको। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>2</sup> मेरे विश्रामदिनों का पालन करो और मेरे पवित्रस्थान का आदर करो। मैं यहोवा हूँ।<sup>3</sup> यदि तुम मेरी विधियों का पालन करोगे और मेरी आज्ञाओं का ध्यानपूर्वक पालन करोगे,<sup>4</sup> तो मैं समय पर तर्ष भेंगूँगा, और भूमि अपनी उपज देगी और वृक्ष अपने फल देंगे।<sup>5</sup> तुम्हारी दंवाई अंगूर की फसल तक चलेगी और अंगूर की फसल बुवाई तक चलेगी। तुम भरपेट खाओगे और अपने देश में सुरक्षित रहोगे।<sup>6</sup> मैं देश में शांति दूंगा, और तुम बिना डर के लेटोगे। मैं जंगली जानरों को हटा दूंगा, और तलवार तुम्हारे देश से नहीं जुरोगी।<sup>7</sup> तुम अपने शत्रुओं का पीछा करोगे, और वे तुम्हारे सामने तलवार से गिरेंगे।<sup>8</sup> तुममें से पाँच चीजों को खदेंगें, और सौ दस हजार को खदेंगें, और तुम्हारे शत्रु गिरेंगे।<sup>9</sup> मैं तुम पर कृपा दृष्टि करूँगा और तुम्हें फलदायी बनाऊँगा और तुम्हारी संख्या बढ़ाऊँगा, और मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा को बनाए रखूँगा।<sup>10</sup> तुम पिछले साल की फसल खा रहे होगे जब तुम्हें नई फसल के लिए जगह बनाने के लिए उसे हटाना पड़ेगा।<sup>11</sup> मैं अपना निवास स्थान तुम्हारे बीच में स्थापित करूँगा, और मैं तुम्हें अस्वीकार नहीं करूँगा।<sup>12</sup> मैं तुम्हारे बीच चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा, और तुम मेरे लोग बनोगे।<sup>13</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिसने तुम्हें मिस से बाहर निकाला ताकि तुम अब दास न रहो। मैंने तुम्हारे जुप की छड़ों को तोड़ दिया और तुम्हें सीधा चलने में सक्षम बनाया।<sup>14</sup> परन्तु यदि तुम मेरी नहीं सुनोगे या इन सभी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे,<sup>15</sup> और यदि तुम मेरी विधियों को अस्वीकार करोगे और मेरे नियमों का तिरस्कार करोगे,<sup>16</sup> तो मैं तुम पर अवाचनक अंतक लाऊँगा—नष्ट करने वाली बीमारियाँ और बुखार जो तुम्हारी दृष्टि को नष्ट कर देंगे और तुम्हारी शक्ति को क्षीण कर देंगे। तुम व्यर्थ में बीज बोओगे क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसे खा जाएंगे।<sup>17</sup> मैं अपना मुख तुमसे फेर लूँगा, और तुम अपने शत्रुओं द्वारा पराजित हो जाओगे।<sup>18</sup> यदि तुम फिर भी नहीं सुनोगे, तो मैं तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना दंड दूंगा।<sup>19</sup> मैं तुम्हारे शक्ति के गर्व को लोड दूंगा। मैं तुम्हारे आकाश को लोहे जैसा और तुम्हारी भूमि को पीतल जैसी बना दूंगा।<sup>20</sup> तुम्हारी शक्ति व्यर्थ में खर्च होगी; तुम्हारी भूमि अपनी

उपज नहीं देगी।<sup>21</sup> यदि तुम शत्रुतापूर्ण बने रहोगे और सुनने से इनकार करोगे, तो मैं तुम्हारी विपत्तियों को सात गुना बढ़ा दूंगा।<sup>22</sup> मैं जंगली जानवर भेजूँगा जो तुम्हारे बच्चों को लूट लेंगे और तुम्हारे पशुओं को नष्ट कर देंगे।

<sup>23</sup> यदि तुम फिर भी मेरी अनुशासन को स्वीकार नहीं करोगे,<sup>24</sup> तो मैं तुम्हें एक महामारी से पीड़ित करूँगा और तुम्हें शत्रुओं के हाथों में सौंप दूंगा।<sup>25</sup> मैं तलवार लाऊँगा और तुम शहरों में घेर लिए जाओगे। मैं तुम्हारी रोटी की आपृति काट दूंगा।<sup>26</sup> दस महिलाएँ एक ही ओवन में रोटी बेक करेंगी और उसे बजन से बाटेंगी।<sup>27</sup> यदि इसके बावजूद तुम फिर भी नहीं सुनोगे,<sup>28</sup> तो मैं तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना दंड दूंगा।<sup>29</sup> तुम अपने बेटों और बेटियों का मांस खा ओगे।<sup>30</sup> मैं तुम्हारे ऊँचे स्थानों को नष्ट कर दूंगा और तुम्हारे धूप के वेदियों को काट दूंगा।<sup>31</sup> मैं तुम्हारे शहरों को उजाड़ दूंगा और तुम्हारे प्रतिम स्थानों को वीरान कर दूंगा।<sup>32</sup> मैं भूमि को वीरान कर दूंगा, और वहाँ रहने वाले तुम्हारे शत्रु चिकित होंगे।<sup>33</sup> मैं तुम्हें राश्ट्रों में बिखेर दूंगा और तुम्हारे खिलाफ अपनी तलवार खींच लूंगा।<sup>34</sup> तब भूमि अपने

विश्रामदिनों का आनंद उठाएगी जब तक वह वीरान पड़ी रहेगी।<sup>35</sup> जब तक वह वीरान पड़ी रहेगी, वह विश्राम करेगी।<sup>36</sup> मैं उन लोगों के दिलों को, जो अपने शत्रुओं की भूमि में बचे रहेंगे, इतना भयभीत कर दूंगा कि हवा में उड़ने वाले पते की आवाज से वे भाग जाएंगे।

<sup>37</sup> वे तलवार से भागने वालों की तरह ठोकर खाएंगे, भले ही कोई उनका पीछा न कर रहा हो।<sup>38</sup> तुम राश्ट्रों के बीच नष्ट हो जाओगे।<sup>39</sup> जो तुम में से बचेंगे वे अपने पापों और अपने पूर्वजों के पापों के कारण क्षीण हो जाएंगे।<sup>40</sup> परन्तु यदि वे अपने पापों और अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करेंगे—उनकी अविश्वास और मेरे प्रति शत्रुता—<sup>41</sup> जिसने मुझे उनके प्रति शत्रु बना दिया और मुझे उन्हें उनके शत्रुओं की भूमि में भेज दिया—तब जब उनके दिल नम होंगे और वे प्रायश्चित्त करेंगे,<sup>42</sup> तो मैं याकूब, इसहाक, और अब्राहम के साथ अपनी वाचा को स्मरण करूँगा, और मैं भूमि को स्मरण करूँगा।<sup>43</sup> भूमि खाली छोड़ दी जाएगी और अपने विश्राम का आनंद उठाएगी।<sup>44</sup> पिर भी इसके बावजूद, मैं उन्हें अस्वीकार नहीं करूँगा या उन्हें नष्ट करने के लिए अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा।<sup>45</sup> उनके लिए, मैं उनके पूर्वजों के साथ की गई वाचा को स्मरण करूँगा, जिन्हें मैंने मिस से बाहर निकाला।<sup>46</sup> ये वे विधियाँ, कानून, और नियम हैं जिन्हें यहोवा ने मूसा के माध्यम से अपने और इसाएलियों के बीच सीनै पर्वत पर स्थापित किया।

**27** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो: जब कोई व्यक्ति यहोवा को एक विशेष मन्त्र के रूप में

## लेवियों

किसी व्यक्ति को एक निश्चित मूल्य पर समर्पित करता है, <sup>3</sup> तो बीस से साठ वर्ष के बीच के पुरुष का मूल्य पचास शेकेल बांदी होगा। <sup>4</sup> महिला के लिए, मूल्य तीस शेकेल होगा। <sup>5</sup> पांच से बीस वर्ष के पुरुष का मूल्य बीस शेकेल है; महिला का दस शेकेल। <sup>6</sup> एक महीने से पांच वर्ष के पुरुष का मूल्य पांच शेकेल है; महिला का तीन शेकेल। <sup>7</sup> साठ वर्ष से अधिक के पुरुष का मूल्य पंद्रह शेकेल है; महिला का दस शेकेल। <sup>8</sup> यदि कोई व्यक्ति निर्धारित मूल्य चुकाने में असमर्थ है, तो उसे याजक के पास प्रस्तुत करना चाहिए, जो व्यक्ति की समर्थ के अनुसार मूल्य निर्धारित करेगा। <sup>9</sup> यदि जो मन्त्र किया गया है वह एक पशु है जो बलिदान के रूप में स्वीकार्य है, तो वह पवित्र हो जाता है। <sup>10</sup> उसे न तो बदलना चाहिए और न ही उसका स्थानापन्न करना चाहिए। <sup>11</sup> यदि मन्त्र किया गया पशु अशुद्ध है, तो याजक उसका मूल्य निर्धारित करेगा। <sup>12</sup> चाहे उच्च हो या निम्न, जो भी मूल्य याजक निर्धारित करेगा, वह स्थिर रहेगा। <sup>13</sup> यदि मालिक उसे छुड़ाना चाहता है, तो उसे एक पांचवां हिस्सा जोड़ना होगा। <sup>14</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने घर को समर्पित करता है, तो याजक उसका मूल्य निर्धारित करेगा। <sup>15</sup> यदि समर्पित करने वाला उसे छुड़ाना चाहता है, तो उसे एक पांचवां हिस्सा जोड़ना होगा। <sup>16</sup> यदि कोई व्यक्ति अपनी भूमि का कुछ हिस्सा समर्पित करता है, तो उसका मूल्य उस बीज की मात्रा के अनुसार गणना की जाती है जो उसे बोने के लिए चाहिए। <sup>17</sup> यदि समर्पण जुबली वर्ष में किया गया है, तो पूरा मूल्य स्थिर रहेगा। <sup>18</sup> यदि जुबली के बाद, मूल्य शेर वर्षों के अनुसार घटा दिया जाता है। <sup>19</sup> यदि जिसने खेत को समर्पित किया है वह उसे छुड़ाना चाहता है, तो उसे एक पांचवां हिस्सा जोड़ना होगा। <sup>20</sup> यदि उसे छुड़ाया नहीं गया और किसी और को बेच दिया गया, तो उसे कभी वापस नहीं खरीदा जा सकता। <sup>21</sup> जब जुबली में खेत छोड़ा जाता है, तो वह पवित्र हो जाता है, जैसे कि एक समर्पित खेत, जो याजकों का होता है। <sup>22</sup> यदि कोई व्यक्ति एक ऐसा खेत समर्पित करता है जिसे उसने खरीदा है—जो उसकी विरासत का हिस्सा नहीं है—<sup>23</sup> तो याजक उसकी मूल्य जुबली वर्ष तक निर्धारित करेगा। <sup>24</sup> जुबली वर्ष में, खेत मूल मालिक के पास लौट आता है। <sup>25</sup> हर मूल्य को पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए। <sup>26</sup> कोई भी पशु का पहिलौठा समर्पित नहीं कर सकता, क्योंकि वह पहले से ही यहोवा का होता है। <sup>27</sup> यदि वह एक अशुद्ध पशु है, तो उसे एक पांचवां हिस्सा जोड़कर छुड़ाया जा सकता है, या उसे बेचना होगा। <sup>28</sup> लेकिन जो कुछ भी व्यक्ति यहोवा को समर्पित करता है—चाहे वह मानव हो, पशु हो या भूमि—बेचा या छुड़ाया नहीं जा सकता; वह सबसे पवित्र है। <sup>29</sup> कोई भी जो

विनाश के लिए समर्पित है, छुड़ाया नहीं जा सकता; उन्हें मृत्यु के लिए सौंपा जाना चाहिए। <sup>30</sup> भूमि से सब कुछ का दशमांश यहोवा का होता है। <sup>31</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने दशमांश का कुछ हिस्सा छुड़ाना चाहता है, तो उसे एक पांचवां हिस्सा जोड़ना होगा। <sup>32</sup> हर दसवां पशु जो चरवाहे की छड़ी के नीचे से गुजरता है, यहोवा के लिए पवित्र होता है। <sup>33</sup> उन्हें अच्छे को बुरे से अलग नहीं करना चाहिए या कोई स्थानापन्न नहीं करना चाहिए। <sup>34</sup> ये वे अदेश हैं जो यहोवा ने मूसा को सीने पर्वत पर इसालियों के लिए दिए।

## गिनती

**1** सिनै के मरुभूमि में मिलाप के तम्बू में दूसरे महीने के पहले दिन, जब इसाएली मिस से निकल आए थे, तब यहोंवा ने मूसा से कहा: <sup>2</sup> “इसाएलियों की पूरी मण्डली की गणना करो, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार, हर एक पुरुष का नाम लेकर, एक-एक करके। <sup>3</sup> तुम और हारून इसाएल में बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी पुरुषों की गणना करो सेना में सेवा करने योग्य हैं। <sup>4</sup> प्रत्येक गोत्र से एक व्यक्ति, जो अपने परिवार का मुखिया हो, तुम्हारी सहायता करेगा। <sup>5</sup> ये वे पुरुष हैं जो तुम्हारी सहायता करेंगे: रूबन से, शेडेऊर का पुत्र एलीज़ूर; <sup>6</sup> शियोन से, जूरीशैदै का पुत्र शेलूपीएल; <sup>7</sup> यहूदा से, अमीन्दाब का पुत्र नहशीन; <sup>8</sup> इस्साकार से, जूआर का पुत्र नतनएल; <sup>9</sup> जबूलून से, हेलोन का पुत्र एलीआब; <sup>10</sup> यूसुफ के पुत्रों से: एप्रेम से, अमीहूद का पुत्र एलीशामा; मनश्शे से, पेदहसूर का पुत्र गमतीएल; <sup>11</sup> बिन्यामीन से, गिदे-ओनी का पुत्र अबीदन; <sup>12</sup> दान से, अमीशैदै का पुत्र अहीएज़ेर; <sup>13</sup> आशेर से, ओक्रान का पुत्र परीएल; <sup>14</sup> गाद से, देक्कएल का पुत्र एलियासाफ; <sup>15</sup> नप्ताली से, एनान का पुत्र अहीरा।” <sup>16</sup> ये वे पुरुष थे जो मण्डली से चुने गए थे, उनके पूर्वजों के गोत्रों के नेता थे। <sup>17</sup> मूसा और हारून ने इन पुरुषों को लिया, जैसा कि अदेश दिया गया था, <sup>18</sup> और दूसरे महीने के पहले दिन, उहोंने पूरी मण्डली को इकट्ठा किया। लोगों को नाम, परिवार और गोत्र के अनुसार पंजीकृत किया गया, सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे। <sup>19</sup> जैसा कि यहोंवा ने मूसा को आदेश दिया था, उसने सिनै के मरुभूमि में उनकी गणना की। <sup>20</sup> रूबन के वंशजों से, इसाएल के पहिलौठे: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 46,500 थी। <sup>21</sup> शियोन के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 59,300 थी। <sup>22</sup> गाद के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 45,650 थी। <sup>23</sup> यहूदा के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 74,600 थी। <sup>24</sup> इस्साकार के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 54,400 थी। <sup>25</sup> जबूलून के

वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 57,400 थी। <sup>26</sup> यूसुफ के पुत्र एप्रेम के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 40,500 थी। <sup>27</sup> यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 32,200 थी। <sup>28</sup> बिन्यामीन के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 35,400 थी। <sup>29</sup> दान के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 62,700 थी। <sup>30</sup> आशेर के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 41,500 थी। <sup>31</sup> नप्ताली के वंशजों से: सभी पुरुष बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के जो सेना में सेवा करने योग्य थे, उनके कुलों और परिवारों के अनुसार नाम लेकर सूचीबद्ध किए गए, उनकी संख्या 53,400 थी। <sup>32</sup> ये वे पुरुष थे जिनकी गणना मूसा और हारून ने की, इसाएल के बारह नेताओं की सहायता से। <sup>33</sup> बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के पुरुषों की कुल संख्या जो इसाएल की सेना में सेवा करने योग्य थे, 603,550 थी। <sup>34</sup> हालांकि, लेवियों की गणना उनमें नहीं की गई। <sup>35</sup> यहोंवा ने मूसा से कहा था: <sup>36</sup> “लेवी के गोत्र की गणना मत करो और उहें जनगणना में शामिल मत करो।” <sup>37</sup> लेवियों को वाचा के तम्बू के ऊपर नियुक्त करो—वे उसकी देखभाल करेंगे और उसे उठाएंगे। वे उसके चारों ओर डेरा डालेंगे। <sup>38</sup> जब तम्बू की स्पानांतरित किया जाएगा, तो लेवी उसे छोलेंगे; जब उसे स्थापित किया जाएगा, तो वे उसकी देखभाल करेंगे। कोई बाहरी व्यक्ति जो पास आएगा, उसे मार डाला जाएगा। <sup>39</sup> इसाएली अपने-अपने ध्वज के अनुसार अपने-अपने विभागों में डेरा डालेंगे। <sup>40</sup> लेवी तम्बू के चारों ओर डेरा डालेंगे ताकि मेरी कोध इसाएली समुदाय पर न गिरे। <sup>41</sup> लेवी वाचा के तम्बू की देखभाल के लिए जिम्मेदार हैं। <sup>42</sup> इसाएलियों ने सब कुछ वैसे ही किया जैसा यहोंवा ने मूसा को आदेश दिया था। <sup>43</sup> नप्ताली के गोत्र की गणना की गई संख्या 53,400 थी।

## गिनती

<sup>44</sup> ये वे हैं जिनकी गणना की गई, जिन्हें मूसा और हारून ने इसाएल के नेताओं के साथ गिना, बारह पुरुष, प्रत्येक अपने पिता के घराने से। <sup>45</sup> इसलिए इसाएल के सभी पुरुष, बीस वर्ष और उससे ऊपर के, जो इसाएल में युद्ध के लिए जाने योग्य थे, <sup>46</sup> सभी गणना किए गए पुरुष 603,550 थे। <sup>47</sup> हालांकि, लेखियों की गणना उनके पिता के गोत्र के अनुसार नहीं की गई। <sup>48</sup> योग्यों की यहोवा ने मूसा से कहा था, <sup>49</sup> “केवल लेवी के गोत्र की गणना मत करो, न ही उन्हें इसाएल के पुत्रों के बीच जनगणना में शामिल करो।” <sup>50</sup> परन्तु तुम लेवियों को वाचा के तम्बू और उसकी वस्तुओं और उसके सब सामानों के ऊपर नियुक्त करो। वे तम्बू और उसकी सभी वस्तुओं को उठाएंगे, और वे उसकी देखभाल करेंगे; वे तम्बू के चारों ओर डेरा डालेंगे। <sup>51</sup> इसलिए जब तम्बू को स्थानान्तरित किया जाएगा, तो लेवी उसे खोलेंगे; और जब तम्बू डेरा डालेगा, तो लेवी उसे स्थापित करेंगे। लेकिन जो बाहरी व्यक्ति पास आएगा, उसे मार डाला जाएगा। <sup>52</sup> इसाएल के पुत्र अपने-अपने शिविर में, और अपनी-अपनी ध्वज के अनुसार, अपनी सेनाओं के साथ डेरा डालेंगे। <sup>53</sup> परन्तु लेवी वाचा के तम्बू के चारों ओर डेरा डालेंगे, ताकि इसाएल के पुत्रों की मण्डली पर कोई क्रोध न आए। इसलिए लेवी वाचा के तम्बू की सेवाओं का पालन करेंगे।” <sup>54</sup> इसलिए इसाएल के पुत्रों ने किया; जैसा कि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था, उन्होंने वैसा ही किया।

**2** प्रभु ने मूसा और हारून से कहा: <sup>2</sup> “इसाएली लोग मिलाप के तंबू के चारों ओर कुछ दूरी पर अपने-अपने ध्वज के नीचे, अपने परिवारों के बैनरों के साथ डेरा डालें।” <sup>3</sup> पूर्व दिशा में, सूर्योदय की ओर, यहौदा की टुकड़ियाँ अपने ध्वज के नीचे डेरा डालेंगी। नेता अमीनादाब का पुत्र नहशीन है। <sup>4</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 74,600 है। <sup>5</sup> उनके बगल में इसाकार का गोत्र है, जिसका नेतृत्व जूआर का पुत्र नतनएल करता है। <sup>6</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 54,400 है। <sup>7</sup> फिर जबूलून का गोत्र है, जिसका नेतृत्व हेलोन का पुत्र एलीआब करता है। <sup>8</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 57,400 है। <sup>9</sup> यहौदा के शिविर में कुल संख्या 186,400 है। वे सबसे पहले प्रस्थान करेंगे। <sup>10</sup> दक्षिण दिशा में रूबेन का शिविर है, शेदेऊर का पुत्र एलीजूर के अधीन। <sup>11</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 46,500 है। <sup>12</sup> इसके बाद शेहुमीएल का पुत्र जूरीशाद्वाई के अधीन शिमोन का गोत्र है। <sup>13</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 59,300 है। <sup>14</sup> फिर गाद का गोत्र है, देलएल का पुत्र एलीआसाफ के अधीन। <sup>15</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 45,650 है। <sup>16</sup> रूबेन के शिविर में कुल संख्या 151,450 है। वे दूसरे स्थान पर

प्रस्थान करेंगे। <sup>17</sup> फिर मिलाप का तंबू और लेवियों का शिविर प्रस्थान करेगा, शिविरों के बीच में। वे उसी क्रम में चलेंगे जैसे वे डेरा डाले हुए थे, प्रत्येक अपने स्थान पर अपने ध्वज के नीचे। <sup>18</sup> पश्चिम दिशा में एप्रैम का शिविर है, अमीहूद का पुत्र एलीशामा के अधीन। <sup>19</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 40,500 है। <sup>20</sup> उसके बगल में मनश्शे का गोत्र है, जिसका नेतृत्व पेदहजूर का पुत्र गमलीएल करता है। <sup>21</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 32,200 है। <sup>22</sup> फिर बिन्यामीन का गोत्र है, गिदे-ओनी का पुत्र अबीदन के अधीन। <sup>23</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 35,400 है। <sup>24</sup> एप्रैम के शिविर में कुल संख्या 108,100 है। वे तीसरे स्थान पर प्रस्थान करेंगे। <sup>25</sup> उत्तर दिशा में दान का शिविर है, अमीशाद्वाई का पुत्र अहिएजर के अधीन। <sup>26</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 62,700 है। <sup>27</sup> इसके बाद आशेर का गोत्र है, ओक्रान का पुत्र पगिएल के अधीन। <sup>28</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 41,500 है। <sup>29</sup> फिर नप्ताली का गोत्र है, एना का पुत्र अहीरा के अधीन। <sup>30</sup> उसकी टुकड़ी की संख्या 53,400 है। <sup>31</sup> दान के शिविर में कुल संख्या 157,600 है। वे अपने ध्वज के नीचे सबसे अंत में प्रस्थान करेंगे। <sup>32</sup> ये इसाएली हैं जो परिवार के अनुसार गिने गए। कुल संख्या 603,550 है। <sup>33</sup> लेवियों को नहीं गिना गया, जैसा कि प्रभु ने मूसा को आदेश दिया था। <sup>34</sup> इसलिए इसाएलियों ने प्रभु द्वारा मूसा को दिए गए सभी आदेशों का पालन किया। उन्होंने अपने ध्वजों के नीचे डेरा डाला और क्रम में प्रस्थान किया, प्रत्येक अपने कबीले और परिवार के साथ।

**3** यह हारून और मूसा का विवरण है जब यहोवा ने मूसा से सीनै पर्वत पर बात की थी। <sup>2</sup> ये हारून के पुत्रों के नाम हैं: नादाब पहिलौठा, अबीहू, एलीआज़र, और इथामार। <sup>3</sup> वे अधिषिक्त याजक थे, सेवा के लिए नियुक्त किए गए थे। <sup>4</sup> परन्तु नादाब और अबीहू यहोवा के सामने मर गए जब उन्होंने अनधिकृत आग चढ़ाई। उनके कोई संतान नहीं थी, इसलिए एलीआज़र और इथामार ने अपने पिता हारून के अधीन याजक के रूप में सेवा की। <sup>5</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “<sup>6</sup> लेवी के गोत्र को ले आओ और उन्हें हारून के सामने प्रस्तुत करो ताकि वे उसकी सहायता करें।” <sup>7</sup> वे उसके और संपूर्ण समुदाय के लिए मिलापवाले तम्बू में सेवा कार्य करें, तम्बू के काम को करें हुए। <sup>8</sup> वे सभी उपकरणों की देखभाल करें और इसाएलियों के लिए सेवा कार्य करें। <sup>9</sup> लेवियों को हारून और उसके पुत्रों को दे दो; वे इसाएलियों में से उसे दिए गए हैं। <sup>10</sup> हारून और उसके पुत्रों की याजक के रूप में नियुक्त करो, परन्तु जो कोई और पवित्र स्थान के पास आएगा, उसे मार डाला जाए।”

## गिनती

<sup>11</sup> यहोवा ने मूसा से और भी कहा, <sup>12</sup> “मैंने लेवियों को हर इसाएली स्त्री के पहिलौठे पुरुष संतान के स्थान पर लिया है। लेवी मेरे हैं। <sup>13</sup> हर पहिलौठा मेरा है। जब मैंने मिस में सभी पहिलौठों को मारा, तब मैंने इसाएल में हर पहिलौठों को अपने लिए अलग किया—चाहे वह मनुष्य हो या पशु। <sup>14</sup> यहोवा ने मूसा से सीने के मरुभूमि में कहा, <sup>15</sup> “लेवियों को उनके कुलों और परिवर्गों के अनुसार गिनो, हर पुरुष जो एक महीने का या उससे अधिक हो।” <sup>16</sup> इसलिए मूसा ने उन्हें गिना, जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी थी। <sup>17</sup> ये लेवी के पुत्रों के नाम थे: गेशान, कहात, और मरारी। <sup>18</sup> ये गेशानी कुलों के नाम थे: लिङ्गी और शिमी। <sup>19</sup> कहाती कुल: अग्राम, यज्ञहार, हेब्न, और उज्जीएल। <sup>20</sup> मरारी कुल: महली और मूरी। <sup>21</sup> गेशान के अंतर्गत लिङ्गी और शिमी के कुल थे। <sup>22</sup> सभी पुरुषों की संख्या जो एक महीने के या उससे अधिक थे, 7,500 थी। <sup>23</sup> वे पश्चिम में, तम्बू के पीछे डेरा डालने वाले थे। <sup>24</sup> गेशानियों के नेता एलियासाफ पुत्र लाएल थे। <sup>25</sup> वे तम्बू के आवरण, और प्रवेश द्वार के पर्दों के लिए उत्तरदायी थे। <sup>26</sup> आंगन की लटकनें और रस्सियाँ भी। <sup>27</sup> कहात के अंतर्गत अग्राम, यज्ञहार, हेब्न, और उज्जीएल के कुल थे। <sup>28</sup> पुरुषों की संख्या जो एक महीने के या उससे अधिक थे, 8,600 थी। <sup>29</sup> वे तम्बू के दक्षिण दिशा में डेरा डालने वाले थे। <sup>30</sup> उनके नेता एलियाफान पुत्र उज्जीएल थे। <sup>31</sup> वे सन्दूक, मेज़, दीपस्तंभ, वेदियाँ, और पवित्र स्थान के उपकरणों के लिए उत्तरदायी थे। <sup>32</sup> एलीआज़र पुत्र हारून उन सभी के प्रभारी थे जो पवित्र स्थान के लिए उत्तरदायी थे। <sup>33</sup> मरारी के अंतर्गत महली और मूरी के कुल थे। <sup>34</sup> पुरुषों की संख्या जो एक महीने के या उससे अधिक थे, 6,200 थी। <sup>35</sup> उनके नेता जूरीएल पुत्र अबीहेल थे। <sup>36</sup> वे तम्बू के ढाँचे, कॉस्टार्स, खंभे, और आधारों की देखभाल के लिए नियुक्त थे। <sup>37</sup> आंगन के चारों ओर के खंभे और उनके उपयोग से संबंधित सभी चीज़ें भी। <sup>38</sup> मूसा, हारून, और उसके पुत्र तम्बू के पूर्व में डेरा डालने वाले थे। <sup>39</sup> मूसा और हारून द्वारा गिने गए लेवियों की कुल संख्या 22,000 थी। <sup>40</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: “सभी इसाएली पुरुष पहिलौठों को गिनो जो एक महीने के या उससे अधिक हैं और उन्हें नाम से सूचीबद्ध करो।” <sup>41</sup> पहिलौठों के स्थान पर लेवियों को मेरे लिए ले लो, और लेवियों के पशुओं को उनके सभी पहिलौठे पशुओं के स्थान पर। <sup>42</sup> इसलिए मूसा ने सभी इसाएली पहिलौठों को गिना, <sup>43</sup> और संख्या 22,273 थी। <sup>44</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>45</sup> “पहिलौठों के स्थान पर लेवियों को ले लो, और उनके पशुओं के स्थान पर लेवियों के पशुओं को। लेवी मेरे हैं।” <sup>46</sup> 273 पहिलौठों को छुड़ाने के लिए जो लेवियों की संख्या से अधिक हैं, <sup>47</sup> प्रत्येक व्यक्ति के लिए

पाँच शेकेल इकट्ठा करो। <sup>48</sup> यह धन हारून और उसके पुत्रों को दे दो। <sup>49</sup> इसलिए मूसा ने उन लोगों से छुड़ाई का धन इकट्ठा किया जो लेवियों की संख्या से अधिक थे। <sup>50</sup> उसने 1,365 शेकेल इकट्ठा किए। <sup>51</sup> मूसा ने यह धन हारून और उसके पुत्रों को दिया, जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी थी।

**4** तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> “लेवी के पुत्रों में से कहात के वंशजों की गिनती करो, उनके परिवारों के अनुसार, उनके पिताओं के घरानों के अनुसार, <sup>3</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक, हर वह व्यक्ति जो मिलापवाले तम्बू में सेवा करने के लिए प्रवेश कर सकता है।” <sup>4</sup> यह कहात के वंशजों का मिलापवाले तम्बू में कार्य है, जो परम पवित्र वस्तुओं के विषय में है। <sup>5</sup> जब छावनी चलने लगे, तब हारून और उसके पुत्र भीतर जाकर परदे के पर्दे को उतारें, और गवाही के सन्दूक को उससे ढक दें; <sup>6</sup> और वे उस पर उत्तम चमड़े का आवरण रखें, और उस पर शुद्ध नीले रंग का कपड़ा बिछाएं, और उसके ले जाने के ढंडे डालें। <sup>7</sup> उपस्थिति की रोटी की मेज पर भी वे नीले रंग का कपड़ा बिछाएं, और उस पर थालियाँ, पैन, बलिदान के कटोरे, और पेय अर्पण के लिए जार रखें; और निरंतर रोटी उस पर होनी चाहिए। <sup>8</sup> और वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाएं, और उसी को उत्तम चमड़े के आवरण से ढक दें, और उसके ले जाने के ढंडे डालें। <sup>9</sup> फिर वे एक नीला कपड़ा लें और दीपक के लिए दीपस्तंभ को ढकें, उसके दीपकों, उसके चिमटे, उसके ट्रे, और उसके सभी तेल के बर्तनों के साथ, जिनसे वे उसकी सेवा करते हैं; <sup>10</sup> और वे उसे और उसके सभी बर्तनों को उत्तम चमड़े के आवरण में रखें, और उसे ले जाने की बार पर रखें। <sup>11</sup> सुनहरे वेदी पर वे नीले रंग का कपड़ा बिछाएं, और उसे उत्तम चमड़े के आवरण से ढक दें, और उसके ले जाने के ढंडे डालें; <sup>12</sup> और वे सेवा के सभी बर्तनों की तरे जिनसे वे पवित्र स्थान में सेवा करते हैं, और उन्हें नीले रंग के कपड़े में रखें, और उन्हें उत्तम चमड़े के आवरण से ढक दें, और उन्हें ले जाने की बार पर रखें। <sup>13</sup> फिर वे वेदी से राख को साफ करें, और उस पर बैंगनी रंग का कपड़ा बिछाएं। <sup>14</sup> वे उस पर उसके सभी बर्तन रखें जिनसे वे उसकी सेवा करते हैं: अग्रिपात्र, कांटे, फावड़े, और कटोरे, वेदी के सभी बर्तन; और वे उस पर उत्तम चमड़े का आवरण बिछाएं और उसके ले जाने के ढंडे डालें। <sup>15</sup> जब हारून और उसके पुत्र पवित्र वस्तुओं और पवित्र स्थान के सभी सामान को ढक चुके हों, जब छावनी चलने लगे, तब कहात के वंशज उड़े ले जाने के लिए आएं, ताकि वे पवित्र वस्तुओं को न छूएं और मर न जाएं। ये वे वस्तुएं हैं जिन्हें कहात के पुत्र मिलापवाले

## गिनती

तम्बू में ले जाने के लिए हैं।<sup>16</sup> अब एलेआज़र, हारून के पुत्र, याजक की जिम्मेदारी है दीपक के लिए तेल, सुधांधित धूप, निरंतर अन्न अर्पण, और अभिषेक का तेल—तम्बू और उसमें सब कुछ, पवित्र स्थान और उसके सामान के साथ।"<sup>17</sup> तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, <sup>18</sup> "कहातियों के परिवारों के गोत्र को लेवियों में से समाप्त न होने दो।"<sup>19</sup> बल्कि, उनके लिए यह करो ताकि वे जीवित रहें और न मरें जब वे परम पवित्र वस्तुओं के पास आएः हारून और उसके पुत्र भीतर जाएं और उनमें से प्रत्येक को उसके कार्य और उसके भार के लिए नियुक्त करें;<sup>20</sup> परंतु वे पवित्र वस्तुओं को देखने के लिए भीतर न आएँ, यहां तक कि एक क्षण के लिए भी नहीं, अन्यथा वे मर जाएंगे।"<sup>21</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>22</sup> "गर्शन के पुत्रों की भी गिनती करो, उनके पिताओं के घरानों के अनुसार, उनके परिवारों के अनुसार;<sup>23</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी को गिनो; वे सभी जो सेवा करने के लिए मिलापवाले तम्बू में कार्य करने के लिए प्रवेश कर सकते हैं।"<sup>24</sup> यह गर्शनियों के परिवारों की सेवा है, सेवा करने और ले जाने में;<sup>25</sup> वे तम्बू के परदे, मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण को, और उसके ऊपर के उत्तम चमड़े के आवरण को, और मिलापवाले तम्बू के प्रवेश के परदे को ले जाएंगे,<sup>26</sup> और आँगन के परदे, आँगन के द्वार के प्रवेश का परदा जो तम्बू और वेदी के चारों ओर है, और उनकी रस्सियाँ, और उनकी सेवा के सभी उपकरण; और जो कुछ उन्हें करना है, वे करेंगे।<sup>27</sup> गर्शनियों के पुत्रों की सभी सेवा, उनके सभी भार, और उनके सभी कार्य, हारून और उसके पुत्रों के आदेश पर किए जाएंगे; और तुम उन्हें उनके सभी भार के रूप में एक कर्तव्य के रूप में नियुक्त करोगे।<sup>28</sup> यह गर्शनियों के पुत्रों के परिवारों की सेवा है मिलापवाले तम्बू में, और उनके कर्तव्य हारून के लिए तम्बूशन में होंगे।<sup>29</sup> मेरारी के पुत्रों के लिए, तुम उन्हें उनके परिवारों के अनुसार, उनके पिताओं के घरानों के अनुसार गिनो;<sup>30</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी को गिनो, हर वह व्यक्ति जो मिलापवाले तम्बू में सेवा करने के लिए प्रवेश कर सकता है।<sup>31</sup> अब यह उनके भार का कर्तव्य है, मिलापवाले तम्बू में उनकी सभी सेवा के लिए: तम्बू के तख्ते, उसके क्रांसबार, उसके खंभे, उसके आधार,<sup>32</sup> और आँगन के चारों ओर के खंभे, उनके आधार, उनके खट्टे, और उनकी रस्सियाँ, उनके सभी उपकरण और उनकी सभी सेवा के साथ; और तुम प्रत्येक व्यक्ति को उसके नाम से वह वस्तु सौंपोगे जिसे वह ले जाने वाला है।<sup>33</sup> यह मेरारी के पुत्रों के परिवारों की सेवा है, मिलापवाले तम्बू में उनकी सभी सेवा के लिए, हारून के पुत्र इथामार के निर्देशन में।"<sup>34</sup> इसलिए मूसा, हारून,

और मण्डली के नेताओं ने कहातियों के पुत्रों की गिनती की, उनके परिवारों के अनुसार, और उनके पिताओं के घरानों के अनुसार,<sup>35</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी, जो मिलापवाले तम्बू में कार्य के लिए सेवा में प्रवेश कर सकते थे;<sup>36</sup> उनकी गिनती उनके परिवारों के अनुसार 2,750 थी।<sup>37</sup> ये कहातियों के परिवारों के गिने हुए लोग थे, जो मिलापवाले तम्बू में सेवा कर रहे थे, जिन्हें मूसा और हारून ने यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा के माध्यम से गिना था।<sup>38</sup> गर्शन के पुत्रों की गिनती, उनके परिवारों के अनुसार और उनके पिताओं के घरानों के अनुसार,<sup>39</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी, जो मिलापवाले तम्बू में कार्य के लिए सेवा में प्रवेश कर सकते थे—<sup>40</sup> उनकी गिनती उनके परिवारों के अनुसार, उनके पिताओं के घरानों के अनुसार, 2,630 थी।<sup>41</sup> ये गर्शन के पुत्रों के परिवारों के गिने हुए लोग थे, जो मिलापवाले तम्बू में सेवा कर रहे थे, जिन्हें मूसा और हारून ने यहोवा के आदेश के अनुसार गिना था।<sup>42</sup> मेरारी के पुत्रों के परिवारों की गिनती, उनके परिवारों के अनुसार, उनके पिताओं के घरानों के अनुसार,<sup>43</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी, जो मिलापवाले तम्बू में कार्य के लिए सेवा में प्रवेश कर सकते थे—<sup>44</sup> उनकी गिनती उनके परिवारों के अनुसार 3,200 थी।<sup>45</sup> ये मेरारी के पुत्रों के परिवारों के गिने हुए लोग थे, जिन्हें मूसा और हारून ने यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा के माध्यम से गिना था।<sup>46</sup> सभी तेवियों के गिने हुए लोग, जिन्हें मूसा, हारून, और इसाएल के नेताओं ने उनके परिवारों के अनुसार और उनके पिताओं के घरानों के अनुसार गिना था,<sup>47</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के सभी, जो सेवा के कार्य और मिलापवाले तम्बू में ले जाने के कार्य के लिए प्रवेश कर सकते थे—<sup>48</sup> उनकी गिनती 8,580 थी।<sup>49</sup> यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा के माध्यम से, उन्हें गिना गया, प्रत्येक को उसकी सेवा या ले जाने के कर्तव्य के अनुसार; इसलिए ये उसके गिने हुए लोग थे, जैसे यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

**5** प्रभु ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> "इसाएलियों को आदेश दो कि वे शिविर से उन सभी को बाहर भेज दें जिनके पास त्वचा रोग है, जो साव से ग्रस्त हैं, या जो मृत शरीर के संपर्क में आने से धार्मिक रूप से अशुद्ध हो गए हैं।<sup>3</sup> पुरुष और महिला दोनों को बाहर भेजो; उन्हें शिविर के बाहर भेज दो ताकि वे इसे अशुद्ध न करें, क्योंकि मैं उनके बीच निवास करता हूँ।"<sup>4</sup> इसाएलियों ने ऐसा ही किया; उन्होंने उन्हें शिविर के बाहर भेज दिया जैसा कि प्रभु ने मूसा को निर्देश दिया था।<sup>5</sup> प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>6</sup> "इसाएलियों से कहो: कोई भी पुरुष या महिला जो किसी

## गिनती

अन्य के साथ अन्याय करता है, वह प्रभु के प्रति विश्वासघाती है और दोषी है।<sup>7</sup> उन्हें अपने पाप को स्वीकार करना चाहिए और पूर्ण प्रतिपूर्ति करनी चाहिए, मूल्य का पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर उसे देना चाहिए जिसे उहोंने अन्याय किया है।<sup>8</sup> यदि प्रतिपूर्ति प्राप्त करने के लिए कोई संबंधी नहीं है, तो यह प्रभु का है और यह याजक के पास जाता है, प्रायश्चित्त के मेढ़े के साथ।<sup>9</sup> सभी पवित्र योगदान जो इसाएलीय याजक के पास लाते हैं, वे उसके होते हैं।<sup>10</sup> प्रस्तुत किए गए उपहार उस याजक के होते हैं जो उन्हें प्राप्त करता है।<sup>11</sup> फिर प्रभु ने मूसा से कहा,<sup>12</sup> “इसाएलियों से कहो: यदि किसी व्यक्ति की पत्नी भटक जाती है और उसके प्रति विश्वासघाती होती है,<sup>13</sup> और कोई अन्य व्यक्ति उसके साथ यौन संबंध बनाता है बिना गवाहों के और वह पकड़ी नहीं जाती,<sup>14</sup> लेकिन पति उसे संदेह करता है और ईर्ष्या करता है,<sup>15</sup> तो उसे अपनी पत्नी को याजक के पास लाना चाहिए और ईर्ष्या का अनाज अर्पण करना चाहिए—बिना तेल या धूप के, क्योंकि यह दोष को उजागर करने के लिए एक अर्पण है।<sup>16</sup> याजक उसे आगे लाएगा और उसे प्रभु के सामने खड़ा करेगा।<sup>17</sup> वह एक मिट्टी के बर्टन में पवित्र जल लेगा और उसमें तंबू के फशं की कुछ धूल डाल देगा।<sup>18</sup> वह उसके बाल खोल देगा, अर्पण को उसके हाथों में रखेगा, और उस कढ़वे जल को पकड़ेगा जो शाप लाता है।<sup>19</sup> याजक उसे शाप दिलाएगा, कहेगा: यदि तुमने अपने आप को अशुद्ध नहीं किया है, तो इस कढ़वे जल से मुक्त रहो।<sup>20</sup> लेकिन यदि तुमने भटक कर अपने आप को किसी अन्य व्यक्ति के साथ अशुद्ध किया है,<sup>21</sup> तो प्रभु तुम्हें तुम्हारे लोगों में शाप बना दे।<sup>22</sup> यह जल तुम्हारे पेट को फुला दे और तुम्हारी कोख को गम्भापात कर दे।<sup>23</sup> और स्त्री कहेगी, आमीन। ऐसा ही हो।<sup>24</sup> याजक इन शापों को एक स्कॉल पर लिखेगा और उन्हें कढ़वे जल में धो देगा।<sup>25</sup> वह स्त्री को वह जल पिलाएगा, जो कढ़वाहट और शाप लाता है।<sup>26</sup> याजक अनाज के अर्पण को लेगा और उसे प्रभु के सामने हिलाएगा।<sup>27</sup> फिर वह अर्पण के एक हिस्से को वेदी पर जलाएगा।<sup>28</sup> यदि वह दोषी है, तो जल उसे पीड़ा देगा और वह शाप बन जाएगी।<sup>29</sup> यदि वह निर्दोष है, तो वह बिना हानि के रहेगी और बच्चे पैदा कर सकेगी।<sup>30</sup> यह ईर्ष्या का कानून है जब कोई स्त्री भटक जाती है या जब कोई पुरुष ईर्ष्या करता है।<sup>31</sup> पुरुष किसी गलत काम से निर्दोष है, लेकिन स्त्री परिणाम भुगतती है।

**6** प्रभु ने मूसा से कहा:<sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो: यदि कोई पुरुष या स्त्री विशेष मन्त्र मानता है, नाज़ीर की

मन्त्र, अपने आप को प्रभु के लिए अलग करने की,<sup>3</sup> तो उन्हें दाख-मदिरा और अन्य किञ्चित पेय से दूर रहना चाहिए। उन्हें दाख-मदिरा या अन्य किञ्चित पेय से बना सिरका नहीं पीना चाहिए। उन्हें अंगूर का रस नहीं पीना चाहिए और न ही अंगूर या किंशमिश खाना चाहिए।<sup>4</sup> जब तक वे अपने नाज़ीर मन्त्र के अधीन हैं, उन्हें अंगूर की बेल से निकली किसी भी चीज़ को नहीं खाना चाहिए—यहां तक कि बीज या छिलके भी नहीं।<sup>5</sup> अपने नाज़ीर मन्त्र की पूरी अवधि के दौरान, उनके सिर पर कोई उसरा नहीं चलना चाहिए। उन्हें पवित्र रहना चाहिए जब तक कि उनकी प्रभु के प्रति समर्पण की अवधि समाप्त न हो जाए; उन्हें अपने बाल लंबे होने देना चाहिए।<sup>6</sup> अपने समर्पण के समय के दौरान, उन्हें किसी मृत शरीर के पास नहीं जाना चाहिए।<sup>7</sup> यहां तक कि यदि उनके पिता या माता, भाई या बहन की मृत्यु हो जाती है, तो भी उन्हें उनके लिए धार्मिक रूप से अशुद्ध नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनके सिर पर उनके परमेश्वर के प्रति समर्पण का प्रतीक है।<sup>8</sup> उनके अलगाव की पूरी अवधि के दौरान, वे प्रभु के लिए पवित्र हैं।<sup>9</sup> यदि कोई अचानक उनकी उपस्थिति में मर जाता है, जिससे उनके समर्पण के प्रतीक बाल अशुद्ध हो जाते हैं, तो उन्हें अपने सिर को सातवें दिन, शुद्धिकरण के दिन, मुंडवाना चाहिए।<sup>10</sup> आठवें दिन उन्हें दो कबूतर या दो युवा पंछी याजक के पास मिलाप के तंबू के प्रवेश द्वार पर लाना चाहिए।<sup>11</sup> याजक को एक को पापबति और दुपरे को होमबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए, उस नाज़ीर के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए जिसने मृत शरीर के पास जाकर पाप किया। उसी दिन उन्हें अपने सिर को पुनः समर्पित करना चाहिए।<sup>12</sup> उन्हें अपनी मन्त्र की पूरी अवधि के लिए प्रभु को पुनः समर्पित करना चाहिए, और एक वर्ष का नर मेमना अपराधबति के रूप में लाना चाहिए। पहले के दिन नहीं गिने जाएंगे।<sup>13</sup> यह नाज़ीर की व्यवस्था है जब उनकी समर्पण की अवधि समाप्त होती है: उन्हें मिलाप के तंबू के प्रवेश द्वार पर लाया जाना चाहिए।<sup>14</sup> वहां उन्हें अपने अर्पण प्रभु को प्रस्तुत करने चाहिए: एक वर्ष का निर्दोष मादा मेमना पापबति के लिए, और निर्दोष मेढ़ा मेलबति के लिए,<sup>15</sup> अपने अन्नबति और पैयबति के साथ, और बिना खमीर की रोटी की टोकरी, जो उत्तम आटे से बनी हो, तेल के साथ मिश्रित केक, और तेल से चुपड़ी हुई वेफर।<sup>16</sup> याजक को इन सबको प्रभु के सामने प्रस्तुत करना चाहिए और पापबति और होमबलि चढ़ानी चाहिए।<sup>17</sup> उसे मेढ़ों को मेलबति के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, बिना खमीर की रोटी की टोकरी के साथ। फिर उसे अन्नबति और पैयबति चढ़ानी चाहिए।<sup>18</sup> मिलाप के तंबू के प्रवेश द्वार पर, नाज़ीर को

## गिनती

अपने समर्पण के प्रतीक बाल मुंडवाना चाहिए। उन्हें बाल लेकर मेलबलि की आग में डालना चाहिए।<sup>19</sup> याजक को मेढ़े के उबले हुए कंधे, एक मोटी रोटी और टोकरी से एक वेफर लेना चाहिए, और उन्हें नाज़ीर के हाथों में रखना चाहिए जब वे अपने बाल मुंडवा चुके हों।<sup>20</sup> याजक उन्हें प्रभु के सामने एक हिलाने वाले अपण के रूप में हिलाएगा। वे याजक के लिए होंगे, हिलाई गई छाती और प्रस्तुत की गई जांच के साथ। इसके बाद, नाज़ीर दास-मंदिरा पी सकते हैं।<sup>21</sup> यह नाज़ीर की व्यवस्था है जो अपनी मन्त्रत के अनुसार प्रभु को अर्पण करता है, इसके अलावा जो कुछ भी वे वहन कर सकते हैं। उन्हें अपनी मन्त्रत पूरी करनी चाहिए जो उन्होंने की है।<sup>22</sup> प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>23</sup> “हारून और उसके पुत्रों से कहो, इस प्रकार तुम इसाएलियों को आशीर्वाद देना। उनसे कहो:

<sup>24</sup> प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दें और तुम्हारी रक्षा करें।<sup>25</sup> प्रभु अपना मुख तुम पर चमकाएं और तुम पर अनुग्रह करें।  
<sup>26</sup> प्रभु अपना मुख तुम्हारी ओर करें और तुम्हें शारीरिक दें।

<sup>27</sup> इस प्रकार वे इसाएलियों पर मेरा नाम रखेंगे, और मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा।”

7 अब जिस दिन मूसा ने मण्डप को खड़ा करना सामाजिक विधि, उसने उसे और उसकी सब वस्तुओं को और वेदी और उसके सब उपकरणों को अभिषेक किया और पवित्र ठहराया; उसने उनका भी अभिषेक किया और उन्हें पवित्र ठहराया।<sup>2</sup> तब इसाएल के नेताओं ने, उनके पितरों के घरानों के प्रधानों ने, भेंट चढ़ाई। ये गोत्रों के नेता थे; वे वहीं थे जो गिने गए थे।<sup>3</sup> जब वे अपनी भेंट यहोवा के सामने लाए, तो छह ढक्के हुए रथ और बारह बैल—हर दो नेताओं के लिए एक रथ, और हर एक के लिए एक बैल—उन्होंने उन्हें मण्डप के सामने प्रस्तुत किया।<sup>4</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इन चीजों को उनसे स्वीकार करो, ताकि वे मिलापवाले तम्बू की सेवा में उपयोग की जा सकें; और तुम उन्हें लेवियों को उनकी सेवा के अनुसार दो।”<sup>5</sup> तो मूसा ने रथों और बैलों को लिया और उन्हें लेवियों को दे दिया।<sup>6</sup> उसने दो रथ और चार बैल गेरशोन के पुत्रों को उनकी सेवा के अनुसार दिए,<sup>7</sup> और चार रथ और आठ बैल उसने मरारी के पुत्रों को उनकी सेवा के अनुसार दिए, जो इथामार, हारून के पुत्र, याजक के अधीन थे।<sup>8</sup> परन्तु कहात के पुत्रों को उसने कुछ नहीं दिया, क्योंकि उनकी सेवा पवित्र वस्तुओं की थी, जिन्हें वे कंधे पर उठाते थे।<sup>9</sup> नेताओं ने वेदी के अभिषेक के लिए भेंट चढ़ाई, जब वह अभिषेक की गई

थी, तो नेताओं ने अपनी भेंट वेदी के सामने प्रस्तुत की।<sup>10</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “उन्हें अपनी भेंट प्रस्तुत करने दो, प्रत्येक दिन एक नेता, वेदी के अभिषेक के लिए।”<sup>11</sup> अब पहले दिन अपनी भेंट प्रस्तुत करने वाला यहूदा के गोत्र का अमीन्दाब का पुत्र नहशोन था;<sup>12</sup> और उसकी भेंट एक चाँदी की थाती थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकल था, और एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे;<sup>13</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ;<sup>14</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्मा, होमबलि के रूप में;<sup>15</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में;<sup>16</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेष्ट्रे एक वर्ष के। यह अमीन्दाब के पुत्र नहशोन की भेंट थी।

<sup>18</sup> दूसरे दिन इस्साकार के नेता, जूआर का पुत्र नथनेल ने भेंट प्रस्तुत की।

<sup>19</sup> और उसने एक चाँदी की थाती चढ़ाई जिसका वजन एक सौ तीस शेकेल था, और एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे;<sup>20</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ;<sup>21</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्मा, होमबलि के रूप में;<sup>22</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में;<sup>23</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेष्ट्रे एक वर्ष के। यह जूआर के पुत्र नथनेल की भेंट थी।

<sup>24</sup> तीसरे दिन जेबुलुन के पुत्रों के नेता, हेलोन का पुत्र एलीआब ने भेंट प्रस्तुत की।

<sup>25</sup> और उसकी भेंट एक चाँदी की थाती थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकेल था, और एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे;<sup>26</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ;<sup>27</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्मा, होमबलि के रूप में;<sup>28</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में;<sup>29</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेष्ट्रे एक वर्ष के। यह हेलोन के पुत्र एलीआब की भेंट थी।

गिनती

<sup>३०</sup> चौथे दिन रूब्बेन के पुत्रों के नेता, शेदेउर का पुत्र एलीज़र ने भेंट प्रस्तुत की।

<sup>31</sup> उसकी भेंट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकल था, और एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से मध्ये हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>32</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>33</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेघा, होमबलि के रूप में; <sup>34</sup> एक नर बकरी या पापबलि के रूप में, <sup>35</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेड़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेंद्रे एक वर्ष के। यह शेदेतर के पुत्र एलीज़ूर की भेंट थी।

<sup>36</sup> पाँचवे दिन शिमोन के पुत्रों के नेता, जूरीशद्वार्द का पुत्र शेलमीले ने भेट प्रस्तुत की।

<sup>37</sup> और उसकी भेट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर शेकल का था, पवित्र खान के शेकल के अनुसार, दोगां उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>38</sup> दस शेकल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>39</sup> एक बैल, एक मेडा, और एक वर्ष का एक नर मेघा, होमबलि के रूप में; <sup>40</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में, <sup>41</sup> और मैलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेडा, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेघे एक वर्ष के। यह जूरीशदाई के पुत्र शेलमीएल की भेट थी।

<sup>42</sup> छठे दिन गाद के पुत्रों के नेता, देउएल का पुत्र एलियासाफ ने भेट प्रस्तूत की।

<sup>43</sup> और उसकी भेट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकल था, और एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकल का था, पवित्र स्थान के शेकल के अनुसार, दोगां उत्तम आठे से भरि हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>44</sup> दस शेकल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>45</sup> एक बैल, एक मेडा, और एक वर्ष का एक नर मेघा, होमबलि के रूप में; <sup>46</sup> एक नर बकरी यापबलि के रूप में, <sup>47</sup> और मेनबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेडे, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेघे एक वर्ष के। यह देउएल के पुत्र एलियासाफ की भेट थी।

<sup>48</sup> सातवें दिन एप्रैल के पुत्रों के नेता, अमीहूद का पुत्र एलीशामा ने भेंट प्रस्तुत की।

49) और उसकी भेंट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस श्केल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर श्केल का था, पवित्र स्थान के श्केल के अनुसार, दोगों उत्तम आदे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबिति के रूप में थे; 50 दस श्केल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; 51 एक बैल, एक मेडा, और एक वर्ष का एक नर मेघा, होमबलि के रूप में; 52 एक नर बकरी पापबलि के रूप में, 53 और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेडे, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेघे एक वर्ष के। यह अमीहृद के पुत्र एलीशामा की भेंट थी।

<sup>54</sup> आठवें दिन मनश्शे के पुत्रों के नेता, पेदहजूर का पुत्र गमलीएल ने भेंट प्रस्तुत की।

55 और उसकी भेंट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस श्केल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर श्केल का था, पवित्र स्थान के श्केल के अनुसार, दोनों उत्तम आदे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबिति के रूप में थे; <sup>56</sup> दस श्केल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>57</sup> एक बैल, एक मेडा, और एक वर्ष का एक नर मेम्पा, होमबलि के रूप में; <sup>58</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में, <sup>59</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेडा, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेम्पे एक वर्ष के। यह पेदहजूर के पुत्र गमलीएल की भेंट थी।

<sup>६०</sup> नौवें दिन बिन्यामीन के पुत्रों के नेता, गिदेओनी का पुत्र अबीदान ने भेट प्रस्तुत की।

६१ और उसकी भेंट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस श्केल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर शेकेल का था, पवित्र खान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आदे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबिति के रूप में थे; <sup>62</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>63</sup> एक बैल, एक मेडा, और एक वर्ष का एक नर मेघा, होमबलि के रूप में; <sup>64</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में, <sup>65</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेडा, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेघे एक वर्ष के। यह गिदेओनी के पुत्र अबीदान की भेंट थी।

## गिनती

<sup>६६</sup> दसवें दिन दान के पुत्रों के नेता, अमीशद्वाई का पुत्र अहिएजर ने भेट प्रस्तुत की।

<sup>६७</sup> और उसकी भेट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकेल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर शेकेल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>६८</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>६९</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्ता, होमबलि के रूप में; <sup>७०</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में; <sup>७१</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेस्ते एक वर्ष के। यह अमीशद्वाई के पुत्र अहिएजर की भेट थी।

<sup>७२</sup> ग्यारहवें दिन आशेर के पुत्रों के नेता, ओक्रान का पुत्र पगीएल ने भेट प्रस्तुत की।

<sup>७३</sup> और उसकी भेट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकेल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर शेकेल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>७४</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>७५</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्ता, होमबलि के रूप में; <sup>७६</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में; <sup>७७</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेस्ते एक वर्ष के। यह ओक्रान के पुत्र पगीएल की भेट थी।

<sup>७८</sup> बारहवें दिन नपाली के पुत्रों के नेता, एनान का पुत्र अहिरा ने भेट प्रस्तुत की।

<sup>७९</sup> और उसकी भेट एक चाँदी की थाली थी जिसका वजन एक सौ तीस शेकेल था, और एक चाँदी का कटोरा सतर शेकेल का था, पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, दोनों उत्तम आटे से भरे हुए थे जो तेल के साथ मिलाकर अन्नबलि के रूप में थे; <sup>८०</sup> दस शेकेल का एक सोने का पात्र, धूप से भरा हुआ; <sup>८१</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर मेस्ता, होमबलि के रूप में; <sup>८२</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में; <sup>८३</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के रूप में: दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच नर बकरियाँ, पाँच नर मेस्ते एक वर्ष के। यह एनान के पुत्र अहिरा की भेट थी।

<sup>८४</sup> यह वेदी के अभिषेक के लिए भेट थी जिस दिन वह अभिषेक की गई थी, इसाएल के नेताओं से: बारह चाँदी की थालियाँ, बारह चाँदी के कटोरे, बारह सोने के पात्र, <sup>८५</sup> प्रयेक चाँदी की थाली का वजन एक सौ तीस शेकेल था, और प्रयेक कटोरे का सतर, सब बर्तनों की चाँदी 2,400 शेकेल थी पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार; <sup>८६</sup> बारह सोने के पात्र, धूप से भरे हुए, प्रयेक का वजन दस शेकेल पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार, सब पात्रों का सोना 120 शेकेल था; <sup>८७</sup> सब होमबलि के लिए पशु बारह बैल, बारह मेढ़े, बारह एक वर्ष के नर मेस्ते, उनके अन्नबलि के साथ; और बारह नर बकरियाँ पापबलि के रूप में; <sup>८८</sup> और मेलबलि के लिए बलिदान के लिए सब पशु चौबीस बैल, साठ मेढ़े, साठ नर बकरियाँ, और साठ एक वर्ष के नर मेस्ते थे। यह वेदी के अभिषेक के लिए भेट थी जब वह अभिषेक की गई थी।

<sup>८९</sup> अब जब मूसा मिलापवाले तम्बू में उससे बात करने के लिए प्रवेश करता था, तो वह उसे साक्षी के सन्दूक पर के प्रायश्चित्त के ढक्कन के ऊपर से, दो करुबों के बीच से बोलता हुआ सुनता था; इसलिए उसने उससे बात की।

**८** प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>२</sup> “हारून से कहो: जब तुम सात दीपकों को स्थापित करो, तो उन्हें दीपस्तंभ के सामने के क्षेत्र को प्रकाशमान करना चाहिए।” <sup>३</sup> हारून ने ऐसा ही किया; उसने दीपकों को दीपस्तंभ पर आगे की ओर व्यवस्थित किया, जैसा कि प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी। <sup>४</sup> दीपस्तंभ इस प्रकार बनाया गया था: यह ठोंके हुए सोने से बना था, उसके अधार से लेकर उसके फूलों तक। यह ठीक उसी नमूने के अनुसार बनाया गया था जो प्रभु ने मूसा को दिखाया था। <sup>५</sup> प्रभु ने फिर से मूसा से कहा: <sup>६</sup> “इसाएलियों में से लेवियों को तो लो और उन्हें सेवा के लिए शुद्ध करो।” <sup>७</sup> उन्हें शुद्ध करने के लिए, यह करो: उन पर शुद्धिकरण का जल छिड़को, फिर उन्हें अपने पूरे शरीर को मुंडवाना और अपने वस्त्र धोना होगा। इससे वे धार्मिक रूप से शुद्ध हो जाएंगे। <sup>८</sup> फिर वे एक युवा बैल को अन्न भेट के साथ, जो उत्तम आटे और तेल से मिला हो, लेंगे, और तुम एक दूसरा युवा बैल पाप बलि के लिए लेंगे। <sup>९</sup> लेवियों को मिलापवाले तंबू के सामने लाओ और पूरे इसाएली समुदाय को इकट्ठा करो। <sup>१०</sup> तुम लेवियों को प्रभु के सामने प्रस्तुत कराओ। <sup>११</sup> हारून लेवियों को इसाएलियों की ओर से प्रभु के सामने एक हिलाने की भेट के रूप में प्रस्तुत करेगा, ताकि वे प्रभु का कार्य कर सकें। <sup>१२</sup> लेवी अपने हाथों को बैलों के सिरों पर रखेंगे। एक बैल को पाप बलि के रूप में और

## गिनती

दूसरे को प्रभु के लिए होम बलि के रूप में उपयोग करो ताकि लेवियों के लिए प्रायश्चित्त किया जा सके।<sup>13</sup> तब तुम लेवियों को हारून और उसके पुत्रों के सामने खड़ा करोगे और उहें प्रभु के सामने एक हिलाने की भेट के रूप में प्रस्तुत करोगे।<sup>14</sup> इस प्रकार तुम लेवियों को बाकी इसाएलियों से अलग करोगे, और लेवी मेरे होंगे।<sup>15</sup> जब तुमने उहें शुद्ध कर लिया और प्रस्तुत कर दिया, तब लेवी मिलापवाले तंबू में अपना कार्य करने आएंगे।<sup>16</sup> वे इसाएलियों में से पूरी तरह से मुझे दिए गए हैं। मैंने उहें अपने लिए लिया है, इसाएलियों के हर गर्भ के पहले जन्मे के बदले में।<sup>17</sup> इसाएलियों में से हर पहला जन्मा मेरा है, चाहे मनुष्य ही या पशु। मैंने उहें अपने लिए अलग किया जिस दिन मैंने मिस्र में सभी पहले जन्मों को मारा था।<sup>18</sup> मैंने लेवियों को इसाएलियों के पहले जन्मों के बदले में लिया है।<sup>19</sup> मैंने लेवियों को इसाएलियों में से हारून और उसके पुत्रों को उपहार के रूप में दिया है, ताकि वे मिलापवाले तंबू में सेवा करें और उनके लिए प्रायश्चित्त करें, ताकि जब वे पवित्र स्थान के पास आएं तो इसाएलियों पर कोई विपत्ति न आए।<sup>20</sup> मूसा, हारून, और पूरे इसाएली समुदाय ने लेवियों के संबंध में सब कुछ ठीक वैसे ही किया जैसा कि प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी।<sup>21</sup> लेवियों ने स्वयं को शुद्ध किया और अपने वस्त्र धारा। फिर हारून ने उहें प्रभु के सामने एक हिलाने की भेट के रूप में प्रस्तुत किया और उहें शुद्ध करने के लिए उनके लिए प्रायश्चित्त किया।<sup>22</sup> उसके बाद, लेवी मिलापवाले तंबू में अपनी डूरी करने आए हारून और उसके पुत्रों के अधीन। उहोंने जैसा प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही किया।<sup>23</sup> प्रभु ने मूसा से कहा: “यह लेवियों के लिए लागू होता है: पच्चीस वर्ष या उससे अधिक आयु के पुरुष मिलापवाले तंबू में काम करने के लिए आएंगे।<sup>24</sup> लेकिन पचास वर्ष की आयु में, उहें नियमित सेवा से सेवनावृत होना होगा और वे अब और काम नहीं कर सकते।<sup>25</sup> वे अपने भाइयों की मिलापवाले तंबू में उनकी डूरी करने में सहायता कर सकते हैं, लेकिन वे स्वयं काम नहीं करेंगे। इस प्रकार, तुम लेवियों को जिम्मेदारियां रौपेंगो।”

**9** प्रभु ने मूसा से सिनाई के मरुभूमि में मिस्र से निकलने के दूसरे वर्ष के पहले महीने में कहा:<sup>2</sup> “इसाएलियों को नियत समय पर फसह मनाने को कहो।<sup>3</sup> इस महीने के चौदहवें दिन की संधा को इसे सभी नियमों और आवश्यकताओं के अनुसार मनाओ।”<sup>4</sup> इसलिए मूसा ने इसाएलियों से फसह मनाने को कहा,<sup>5</sup> और उहोंने पहले महीने के चौदहवें दिन की संधा को सिनाई के मरुभूमि में प्रभु की सभी आज्ञाओं के अनुसार फसह मनाया।<sup>6</sup> परंतु कुछ लोग उस दिन फसह नहीं

मना सके क्योंकि वे एक मृत शरीर के संपर्क में आने के कारण धार्मिक रूप से अशुद्ध थे। वे उसी दिन मूसा और हारून के पास आए।<sup>7</sup> उहोंने मूसा से कहा, “हम एक मृत शरीर के कारण अशुद्ध हो गए हैं, लेकिन हमें प्रभु की भेट को उसके नियत समय पर अन्य इसाएलियों के साथ क्यों नहीं लाना चाहिए?”<sup>8</sup> मूसा ने उहें उत्तर दिया, “रुको, जब तक मैं तुम्हारे विषय में प्रभु की आज्ञा न जान लूं।”<sup>9</sup> फिर प्रभु ने मूसा से कहा, “इसाएलियों से कहो: यदि तुम मैं से कोई या तुहारी संतानें एक मृत शरीर के कारण धार्मिक रूप से अशुद्ध हैं या यात्रा पर हैं, तो भी वे प्रभु का फसह मना सकते हैं।”<sup>11</sup> वे इसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन की संधा को मनाएं। उहें बिना खमीर की रोटी और कड़वे साग के साथ मेमना खाना चाहिए।<sup>12</sup> उहें सुबह तक कुछ भी नहीं छोड़ना चाहिए और उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़नी चाहिए। उहें सभी फसह के नियमों का पालन करना चाहिए।<sup>13</sup> लेकिन कोई भी जो शुद्ध है और यात्रा पर नहीं है और फसह नहीं मनाता है, उसे अपनी प्रजा से काट दिया जाना चाहिए क्योंकि उसने प्रभु की भेट प्रस्तुत नहीं की। वे अपने पाप के परिणाम भुगतेंगे।<sup>14</sup> तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी भी प्रभु के लिए फसह मनाएगा, उसके नियमों और विनियमों के अनुसार। उहोंने विदेशी और देशज दोनों के लिए एक ही कानून लागू करना चाहिए।<sup>15</sup> जिस दिन मण्डप, वाचा की विधि का तम्बू स्थापित किया गया, बादल ने उसे ढक लिया। शाम से सुबह तक, मण्डप के ऊपर का बादल आग की तरह दिखता था।<sup>16</sup> यह इसी प्रकार होता रहा: बादल ने उसे ढक लिया, और रात में वह आग की तरह दिखता था।<sup>17</sup> जब भी बादल तम्बू के ऊपर से उठता, इसाएली प्रस्थान करते। जहां भी बादल ठहरता, इसाएली डेरा डालते।<sup>18</sup> प्रभु की आज्ञा पर इसाएली प्रस्थान करते, और उसकी आज्ञा पर वे डेरा डालते। जब तक बादल मण्डप के ऊपर रहता, वे डेरा डालते रहते।<sup>19</sup> जब बादल मण्डप के ऊपर लंबे समय तक रहता, इसाएली प्रभु की आज्ञा का पालन करते और प्रस्थान नहीं करते।<sup>20</sup> कभी-कभी बादल मण्डप के ऊपर केवल कुछ दिनों के लिए रहता। प्रभु की आज्ञा पर वे डेरा डालते, और फिर उसकी आज्ञा पर वे प्रस्थान करते।<sup>21</sup> कभी-कभी बादल केवल शाम से सुबह तक रहता, और जब वह सुबह उठता, वे प्रस्थान करते। चाहे दिन ही या रात, जब भी बादल उठता, वे प्रस्थान करते।<sup>22</sup> चाहे बादल दो दिन, एक महीना, या एक वर्ष तक रहता, इसाएली डेरा डाले रहते और तब तक प्रस्थान नहीं करते जब तक वह नहीं उठता।<sup>23</sup> प्रभु की आज्ञा पर वे डेरा डालते, और प्रभु की आज्ञा पर वे प्रस्थान करते। उहोंने प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया, जैसा कि मूसा के माध्यम से दिया गया था।

## गिनती

**10** प्रभु ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “तू हथौड़े से बनी चाँदी की दो तुरहियाँ बना। उनका उपयोग समुदाय को इकट्ठा करने और चलने के संकेत देने के लिए कर। <sup>3</sup> जब दोनों बजे, तो पूरी समुदाय को मिलाप के तंबू के द्वार पर इकट्ठा होना है। <sup>4</sup> यदि केवल एक बजे, तो केवल नेता ही इकट्ठा हों। <sup>5</sup> जब तुरही की आवाज सुनाई दे, तो पूर्ण के शिखियों को चलना है। <sup>6</sup> दूसरी आवाज पर, दक्षिण के शिखियों को चलना है। <sup>7</sup> सभा को इकट्ठा करने के लिए तुरहियाँ बजाओ, लेकिन उसी संकेत के साथ नहीं। <sup>8</sup> हास्तन के पुत्र तुरहियाँ बजाएँ। यह एक स्थायी नियम है। <sup>9</sup> जब तुम अपने देश में दुश्मन के खिलाफ युद्ध करने जाओ, तो तुरहियाँ बजाओ। तब प्रभु तुम्हें याद करेगे और बचाएँगे। <sup>10</sup> अपने पर्वीं और त्योहारों में और होमबलियों पर भी उन्हें बजाओ। वे परमेश्वर के समने एक स्मरण के रूप में काम करेंगे। मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ।” <sup>11</sup> दूसरे महीने के बीसवें दिन, दूसरे वर्ष में, बादल तंबू के ऊपर से उठ गया। <sup>12</sup> तब इसाएली सैने के मरुभूमि से चल पड़े, और बादल पारान के मरुभूमि में ठहर गया। <sup>13</sup> वे उस क्रम में चले जो प्रभु ने मूसा के माध्यम से आदेश दिया था। <sup>14</sup> यहूदा का दल, अमीन्दाब के पुत्र नहशौन के नेतृत्व में, पहले चला। <sup>15</sup> इसके बाद इस्साकार, नथनएल के पुत्र जुआर के नेतृत्व में। <sup>16</sup> फिर जबूलन, एलीआब के पुत्र हेलोन के नेतृत्व में। <sup>17</sup> फिर तंबू की उतारा गया, और गेरशोनी और मरारी चल पड़े, उसे ले जाते हुए। <sup>18</sup> इसके बाद रूबेन, एलिज़ार के पुत्र शेडऊर के नेतृत्व में। <sup>19</sup> फिर शिमोन, शेलुमीएल के पुत्र जूरीशहाई के नेतृत्व में। <sup>20</sup> फिर गाद, एल्यासाफ के पुत्र देऊएल के नेतृत्व में। <sup>21</sup> फिर कहाती चल पड़े, पवित्र वस्तुएँ ले जाते हुए। <sup>22</sup> फिर एप्रैम, एलीशामा के पुत्र अमीहूद के नेतृत्व में। <sup>23</sup> इसके बाद मनशो, गमलीएल के पुत्र पेदबहूर के नेतृत्व में। <sup>24</sup> फिर बिन्यामीन, अबीदन के पुत्र गिदेओनी के नेतृत्व में। <sup>25</sup> अंत में दान, अहियेज़ेर के पुत्र अमीशहाई के नेतृत्व में। <sup>26</sup> फिर आशर, पापीएल के पुत्र ओक्रान के नेतृत्व में। <sup>27</sup> अंत में नपाली, अहिरा के पुत्र एनान के नेतृत्व में। <sup>28</sup> यह इसाएली दलों के चलने का क्रम था जब वे चले। <sup>29</sup> मूसा ने होबाब से कहा, जो उसका पियाना का रिश्तेदार था, “हम उस देश के लिए चल रहे हैं जिसे प्रभु ने वादा किया है। हमारे साथ आओ और हम तुम्हारा भला करेंगे।” <sup>30</sup> लेकिन होबाब ने उत्तर दिया, “मैं नहीं जाऊँगा; मैं अपने देश लौट रहा हूँ।” <sup>31</sup> लेकिन मूसा ने कहा, “कृपया हमें मत छोड़ो। तुम जानते हो कि हमें कहाँ डेरा डालना चाहिए। तुम हमारे मार्गदर्शक हो सकते हो।” <sup>32</sup> “यदि तुम हमारे साथ आओगे, तो जो भी अच्छा प्रभु हमें देगा, हम तुम्हारे साथ साझा करेंगे।” <sup>33</sup> तो वे प्रभु के पर्वत से चले, और वाचा का सन्दूक उनके आगे तीन दिन तक

चला। <sup>34</sup> जब वे चले, तो प्रभु का बादल दिन में उनके ऊपर था। <sup>35</sup> जब भी सन्दूक चला, मूसा ने कहा, “उठो, प्रभु! तेरे शत्रु तितर-बितर हों।” <sup>36</sup> और जब वह ठहरता, तो वह कहता, “लौट आओ, प्रभु, इसाएल के अनगिनत हजारों के पास।”

**11** अब लोग अपनी कठिनाइयों के बारे में शिकायत करने लगे, और यहोवा ने इसे सुना। उसकी ब्रोध भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके बीच जल उठी। <sup>2</sup> जब लोगों ने मूसा से पुकारा, तो उसने यहोवा से प्रार्थना की और आग बुझ गई। <sup>3</sup> इसलिए उस स्थान का नाम तबेरा रखा गया, क्योंकि यहोवा की आग उनके बीच जल उठी थी। <sup>4</sup> उनके बीच की मिली-जुली भीड़ ने दूसरी खाने की वस्तुओं की लालसा की। इसाएली भी रोने लगे और कहने लगे, “काश! हमारे पास मांस खाने को होता! <sup>5</sup> हम उन मछलियों को याद करते हैं जो हम मिस्त्र में बिना मूल्य के खाते थे—और खीरी, खरबूजे, लहसुन, प्याज और लहसुन भी। <sup>6</sup> लेकिन अब हमारी भूख मिट गई है; हमें कुछ भी नहीं दिखता सिवाय इस मन्त्र का!” <sup>7</sup> मन्त्रा धनिया के बीज के समान था और रात के समान दिखता था। <sup>8</sup> लोग इसे इकट्ठा करने के लिए चारों ओर जाते थे। वे इसे हाथ की चक्की में पीसते या ओखली में कूटते, इसे बर्टन में पकाते या कैक बनाते। इसका स्वाद जैतून के तेल में बेक की गई चीज़ के समान था। <sup>9</sup> जब रात में शिक्किर पर ओस गिराती थी, तो मन्त्रा भी गिराता था। <sup>10</sup> मूसा ने हर परिवार के लोगों को अपने तंबूओं के द्वार पर रोते हुए सुना। यहोवा अत्यधिक क्रोधित हो गया, और मूसा विंतित हुआ। <sup>11</sup> उसने यहोवा से पूछा, “तूने अपने सेवक पर यह संकट क्यों लाया है? मैंने तुझे नाराज़ करने के लिए क्या किया है कि तूने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया।” <sup>12</sup> क्या मैंने उन्हें जन्म दिया? तू मुझे क्यों कहता है कि मैं उन्हें अपनी बाहों में उठाऊँ, जैसे एक नर्स शिशु की उठाती है, उस देश तक जिसे तूने देने का वादा किया था? <sup>13</sup> मैं इन सब लोगों के लिए मांस कहाँ से लाऊँ? वे मुझसे लगातार रोते रहते हैं, “हमें मांस खाने के लिए दो।” <sup>14</sup> मैं अकेला इन सब लोगों को नहीं उठा सकता; यह बोझ बहुत भारी है। <sup>15</sup> यदि तू मुझे इस प्रकार से व्यवहार करने जा रहा है, तो कृपया मुझे मार डाल—यदि मैंने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है—और मुझे अपनी बर्बादी का सामना न करने दे।” <sup>16</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: “इसाएल के सतर बुजुर्गों को मेरे पास लाओ जिन्हें तुम नेता के रूप में जानते हो। उन्हें मिलाप के तंबू में लाओ, ताकि वे तुम्हारे साथ खड़े हों।” <sup>17</sup> मैं नीचे आऊंगा और वहाँ तुम्हारे साथ बात करूँगा। मैं तुम्हारे ऊपर की आत्मा का कुछ हिस्सा लेकर उन

## गिनती

पर रखूँगा। वे बोझ उठाने में मदद करेंगे।<sup>18</sup> लोगों से कहो: ‘अपने आपको पवित्र करो, क्योंकि कल तुम मांस खाओगे। तुमने विलाप किया है, कहा कि तुम मिस में बेहतर थे। अब यहोवा तुम्हें मांस देगा।’<sup>19</sup> तुम इसे एक दिन के लिए नहीं, या दो, या पांच, दस या बीस दिन के लिए नहीं खाओगे,<sup>20</sup> बल्कि पूरे महीने के लिए—जब तक कि यह तुम्हारी नासिका से बाहर न आ जाए और तुम इसे धृणा न करने लगो—क्योंकि तुमने यहोवा को अस्तीकर कर दिया है और उसके सामने विलाप किया है।<sup>21</sup> लेकिन मूसा ने कहा, “यहाँ मैं छह लाख पुरुषों के बीच हूँ। मैं उनके लिए एक महीने के लिए मांस कहाँ से लाऊँ? <sup>22</sup> क्या झुंड और मवेशी पर्याप्त होंगे? क्या समुद्र की सारी मछलियाँ पर्याप्त होंगी?”<sup>23</sup> यहोवा ने उत्तर दिया, “क्या यहोवा की भुजा छोटी है? अब तुम देखोगे कि मेरा वरचन सब होता है या नहीं।”<sup>24</sup> इसलिए मूसा बाहर गया और लोगों को बताया कि यहोवा ने क्या कहा था। उसने सतर बुजुर्गों को इकट्ठा किया और उन्हें तंबू के चारों ओर खड़ा किया।<sup>25</sup> फिर यहोवा बादल में नीचे आया और उससे बात की, मूसा पर से आता का कुछ हिस्सा लेकर सतर बुजुर्गों पर रखा। उन्होंने भविष्यवाणी की, लेकिन फिर ऐसा नहीं किया।<sup>26</sup> हालांकि, दो व्यक्तिएँ, एलदाद और मेदाद, शिविर में रहे। आत्मा उन पर भी आई, और उन्होंने शिविर में भविष्यवाणी की।<sup>27</sup> एक युवक दौड़कर मूसा को बताने गया, “एलदाद और मेदाद शिविर में भविष्यवाणी कर रहे हैं!”<sup>28</sup> नून का पुत्र यहोशू, जो युवावस्था से मूसा का सहायक था, ने कहा, “मूसा, मेरे प्रभु, उन्हें रोकें!”<sup>29</sup> लेकिन मूसा ने उत्तर दिया, “क्या तुम मेरे लिए ईर्ष्या कर रहे हो? मैं चाहता हूँ कि यहोवा के सब लोग भविष्यद्वक्ता हों।”<sup>30</sup> फिर मूसा और बुजुर्ग शिविर में लौट आए।<sup>31</sup> अब यहोवा की ओर से एक हवा समुद्र से बटेरों को लेकर आई। वे शिविर के चारों ओर गिरे, हर दिशा में लगभग तीन फीट गहरे तक, जितना एक दिन की यात्रा हो सकती थी।<sup>32</sup> लोगों ने उस दिन, रात और अगले दिन बटेरों को इकट्ठा किया। किसी ने दस हॉमरिंसे कम नहीं इकट्ठा किया। उन्होंने उहें शिविर के चारों ओर फैला दिया।<sup>33</sup> लेकिन जब मास अपनी उनके दांतों के बीच ही था, इससे पहले कि वह खाया जाता, यहोवा का क्रोध भड़क उठा, और उसने उहें एक गंभीर महामारी से मारा।<sup>34</sup> इसलिए उस स्थान का नाम किब्रोथ हत्तावाह रखा गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफनाया जिहोंने दूसरी खाने की वस्तुओं की लालसा की थी।<sup>35</sup> किब्रोथ हत्तावाह से लोग हसेरोथ की ओर चले और वहाँ ठहरे।

## 12 मिरियम और हारून ने मूसा के खिलाफ बोलना शुरू किया क्योंकि उसने कूशी स्त्री से विवाह

किया था।<sup>2</sup> “क्या प्रभु ने केवल मूसा के माध्यम से ही बात की है?” उन्होंने पूछा। “क्या उसने हमारे माध्यम से भी नहीं बोला है?” और प्रभु ने यह सुना।<sup>3</sup> अब मूसा बहुत ही नग्न व्यक्ति था, पृथ्वी पर किसी और से अधिक नम्र।<sup>4</sup> तुरंत ही प्रभु ने मूसा, हारून, और मिरियम से कहा, “तुम तीनों मिलाप के तंबू के बाहर आओ।”<sup>5</sup> फिर प्रभु बादल के स्तंभ में नीचे आए और द्वार पर खड़े हुए। उन्होंने हारून और मिरियम को बुलाया।<sup>6</sup> जब दोनों आगे बढ़े, तो उन्होंने कहा: “मेरे शब्दों को सुनो:

जब तुम में कोई नकी होता है, तो मैं अपने आप को दर्शन में प्रकट करता हूँ और स्वप्नों में बात करता हूँ।<sup>7</sup> लेकिन मेरे सेवक मूसा के साथ ऐसा नहीं है, वह मेरे पूरे घर में विश्वासयोग्य है।<sup>8</sup> मैं उससे आमने-सामने बात करता हूँ, स्पष्ट रूप से और पहलेलियों में नहीं, वह प्रभु का रूप देखता है। फिर तुम उससे बोलने में क्यों नहीं डरते थे?

<sup>9</sup> प्रभु का क्रोध उन पर भड़क उठा, और वह चला गया।<sup>10</sup> जब बादल उठा, तो मिरियम की त्वचा कोढ़ से सफेद हो गई—यह बर्फ के समान सफेद हो गई। हारून ने उसकी ओर देखा और देखा कि उसे एक अपवित्र त्वचा रोग हो गया है।<sup>11</sup> उसने मूसा से कहा, “कृपया, मेरे प्रभु उस पाप को हमारे खिलाफ न रखो जो हमने मूर्खता से किया है।<sup>12</sup> उसे मृत धूण के समान न होने दो जो अपनी माँ के गर्भ से आता है और उसका मांस आधा खाया हुआ होता है।”<sup>13</sup> तब मूसा ने प्रभु से पुकार कर कहा, “कृपया, भागवन्, उसे चंगा करो।”<sup>14</sup> प्रभु ने मूसा से कहा, “यदि उसके पिता ने उसके चेहरे पर धूका होता, तो क्या वह सात दिन के लिए अपमानित न होती? उसे सात दिन के लिए शिविर के बाहर बंद करो; उसके बाद वह लौट सकती है।”<sup>15</sup> इसलिए मिरियम को सात दिन के लिए शिविर के बाहर बंद कर दिया गया, और लोग तब तक आगे नहीं बढ़े जब तक वह वापस नहीं लाई गई।<sup>16</sup> इसके बाद, लोग हज़ेरोत से चले गए और पारान के मरुभूमि में शिविर लगाया।

## 13 यहोवा ने मूसा से कहा,

<sup>2</sup> “कुछ पुरुषों को कनान देश की खोज करने के लिए भेजो, जिसे मैं इसापलियों को दे रहा हूँ। प्रत्येक पूर्जों के गोत्र से एक नेता की भेजो।”<sup>3</sup> यहोवा के आदेश पर, मूसा ने उहें पारान के मरुभूमि से भेजा। वे सभी इसापलियों के बीच नेता थे।<sup>4</sup> ये उनके नाम हैं: रूबेन से ज़क्कूर का पुत्र शम्मूआ;<sup>5</sup> शिमोन से, होरी का पुत्र शाफात;<sup>6</sup> यहूदा, से येफ्रेह का पुत्र कालेब;<sup>7</sup> इस्साकार से, यूसुफ का पुत्र इगाल;<sup>8</sup> एप्रैम से, नून का पुत्र होशेया;<sup>9</sup> बिन्यामीन से,

## गिनती

राफू का पुत्र पल्ती,<sup>10</sup> जबूलून से, सोदी का पुत्र गदीएल;  
११ मनश्शो से, सुसि का पुत्र गदी;<sup>12</sup> दान से, गमली का  
पुत्र अमीएल;<sup>13</sup> आशेर से, मीकाएल का पुत्र सेथूर;<sup>14</sup>  
नपताली से, वोपसी का पुत्र नहवी;<sup>15</sup> गाद से, माकी का  
पुत्र गेयूएल।<sup>16</sup> ये उन पुरुषों के नाम थे जिन्हें मूसा ने  
देश की खोज करने के लिए भेजा। मूसा ने नून के पुत्र  
हौशेया को यहोशू नाम दिया।<sup>17</sup> जब मूसा ने उन्हें  
कनान की खोज करने के लिए भेजा, तो उसने कहा,  
“नेगेव से होकर पहाड़ी देश में जाओ।”<sup>18</sup> देखो कि वह  
देश कैसा है और वहाँ के लोग बलवान हैं या कमज़ोर,  
कम हैं या अधिक।<sup>19</sup> वे किस प्रकार के देश में रहते हैं?  
क्या वह अच्छा है या बुरा? नगर कैसे हैं? क्या वे बिना  
दीवारों के हैं या किलेबंद?<sup>20</sup> मिट्टी कैसी है? क्या वहाँ  
पेड़ हैं? देश के कुछ फलों को लाने की पूरी कोशिश  
करो।” (यह पहले पके अंगूरों का मौसम था)।<sup>21</sup> इसलिए  
वे ज़िन के मरुभूमि से लेकर रहोब तक देश की खोज  
करने गए।<sup>22</sup> वे नेगेव से होकर हेब्रोन पहुंचे, जहाँ  
अहिमान, शोर्शी और तम्मै—अनाक के वंशज—रहते थे।  
२३ एशकोल की घाटी में उन्होंने अंगूरों का एक गुच्छा  
काटा। उसे ले जाने के लिए दो आदमियों की जरूरत  
पड़ी। वे कुछ अनार और अंजीर भी लाए।<sup>24</sup> उस स्थान  
की एशकोल की घाटी कहा गया क्योंकि वहाँ  
इसाएलियों ने अंगूरों का गुच्छा काटा था।<sup>25</sup> चालीस  
दिनों के अंत में वे देश की खोज से लौटे।<sup>26</sup> वे मूसा,  
हारून और पूरे इसाएली समुदाय के पास कादेश में  
लौटे और उन्हें रिपोर्ट दी और फल दिखाए।<sup>27</sup> उन्होंने  
कहा, “हम उस देश में गए जहाँ आपने हमें भेजा था,  
और वह सचमुच दूध और शहद से भरपूर है। यह  
उसका फल है।<sup>28</sup> लेकिन वहाँ के लोग शक्तिशाली हैं,  
और नगर बड़े और किलेबंद हैं। हमने वहाँ अनाक के  
वंशजों को भी देखा।<sup>29</sup> अमालेकी नेगेव में रहते हैं;  
हिती, यबूसी और एमोरी पहाड़ियों में; और कनानी  
समुद्र के पास और यरदन के किनारे रहते हैं।”<sup>30</sup> तब  
कालेब ने मूसा के सामने लोगों को शांत किया और  
कहा, “हमें ऊपर जाकर उस देश को अपने अधिकार में  
लेना चाहिए, क्योंकि हम निश्चित रूप से ऐसा कर सकते  
हैं।”<sup>31</sup> लेकिन जो पुरुष उसके साथ गए थे, उन्होंने कहा,  
“हम उन लोगों पर आक्रमण नहीं कर सकते; वे हमसे  
अधिक शक्तिशाली हैं।”<sup>32</sup> और उन्होंने इसाएलियों के  
बीच एक बुरी रिपोर्ट फैलाई: “वह देश वहाँ रहने वालों  
को निगल जाता है। हमने जो लोग देखे वे सभी बड़े  
आकार के थे।”<sup>33</sup> हमने वहाँ नेफिलीम को देखा। हम  
अपनी ही नजर में टिढ़े जैसे थे, और हम उनके नजर में  
भी तैसे ही थे।”

**14** उस रात सारी मण्डली के लोग ऊँचे स्वर में  
चिल्लाने लगे और झोर-झोर से रोने लगे।<sup>2</sup> सभी  
इसाएली मूसा और हारून के विरुद्ध कुङ्कुङ्ने लगे  
और कहने लगे, “काश हम मिस में मां जाते। या इस  
जंगल में।<sup>3</sup> प्रभु हमें इस देश में क्यों ला रहा है ताकि हम  
तलवार से मारे जाएँ? हमारी पत्नियाँ और बच्चे लूट लिए  
जाएँगे। क्या मिस लौट जाना बेहतर नहीं होगा?”<sup>4</sup> वे  
एक-दूसरे से कहने लगे, “आओ, हम एक नेता चुनें और  
मिस लौट चंचें।”<sup>5</sup> तब मूसा और हारून पूरी सभा के  
सामने मुँह के बल गिर पड़े।<sup>6</sup> नून के पुत्र यहोशू और  
यपुन्ने के पुत्र कालेब, जो उन लोगों में से थे जिन्होंने देश  
की जाँच की थी, अपने वस्त्र फाड़ डाले।<sup>7</sup> उन्होंने कहा,  
“जिस देश से हम गुज़रे हैं वह अल्पतं अच्छा है।”<sup>8</sup> यदि  
प्रभु हमसे प्रसन्न हैं, तो वह हमें इस देश में लाएगा और  
इसे हमें देगा—एक ऐसा देश जो दृथ और शहद से  
बहता है।<sup>9</sup> केवल प्रभु के विरुद्ध विद्रोह मत करो। उन  
लोगों से मत डरो, क्योंकि हम उन्हें निगल जाएँगे।  
उनकी रक्षा चली गई है, लेकिन प्रभु हमारे साथ है।”<sup>10</sup>  
लेकिन पूरी सभा ने उन्हें पत्सरवाह करने की बात की।  
तभी प्रभु की महिमा मिलाप के तंबू में प्रकट हुई।<sup>11</sup> प्रभु  
ने मूसा से कहा, “ये लोग कब तक मेरा अपमान करेंगे?  
मेरे सभी विद्वानों के बावजूद, वे अब भी विश्वास नहीं  
करते।”<sup>12</sup> मैं उन्हें एक महामारी से मार डालूँगा और  
नष्ट कर दूँगा, लेकिन मैं तुम्हें उनसे बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।”<sup>13</sup>  
मूसा ने प्रभु से कहा, “तब मिसी इसे सुनेंगे।”<sup>14</sup> वे पहले  
ही सुन चुके हैं कि आप, प्रभु, इन लोगों के साथ हैं, और  
आप बादल और आग में उनके आगे चलते हैं।<sup>15</sup> यदि  
आप इन सभी लोगों को मार डालते हैं, तो राष्ट्र कहेंगे,<sup>16</sup>  
प्रभु उन्हें उस देश में नहीं ला सके जो उन्होंने बादा  
किया था, इसलिए उन्होंने उन्हें जंगल में मार डाला।<sup>17</sup>  
अब प्रभु की शक्ति प्रदर्शित हो, जैसा आपने कहा था: <sup>18</sup>  
“प्रभु क्रोध में धीमा है, प्रेम में प्रवृत्त है और पाप और  
विद्रोह को क्षमा करता है। फिर भी वह दोषियों को बिना  
दंड के नहीं छोड़ता।”<sup>19</sup> आपके महान प्रेम के अनुसार,  
इन लोगों के पाप को क्षमा करें, जैसा आपने मिस से  
अब तक किया है।<sup>20</sup> प्रभु ने उत्तर दिया, “मैंने उन्हें  
क्षमा कर दिया है, जैसा तुमने मांगा।”<sup>21</sup> फिर भी, जैसे मैं  
जीवित हूँ, उनमें से कोई भी जिसने मेरी महिमा और  
चमत्कार देखे और किर भी मुझे परखा, उस देश में  
प्रवेश नहीं करेगा।<sup>22</sup> उनमें से कोई भी उस देश को  
नहीं देखेगा जिसका मैंने बादा किया था।<sup>23</sup> लेकिन मेरे  
सेवक कालेब, जिसने एक अलग आत्मा रखी और पूरी  
तरह से मेरा अनुसरण किया, उसे मैं उस देश में  
लाऊँगा।<sup>24</sup> अब अमालेकी और कनानी घाटियों में रहते  
हैं। कल वापस लौटोंगे और जंगल की ओर जाओ।”<sup>25</sup>  
प्रभु ने मूसा और हारून से कहा: “यह दुष्ट मण्डली

## गिनती

कब तक कुङ्कुङ्कुङ्काएगी? मैंने उनकी शिकायतें सुनी हैं।  
२७ उन्हें कहो: जैसे मैं जीवित हूँ, प्रभु पोषित करता है, मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हें कहते सुना है: <sup>२८</sup> इस जगल में तुम्हारे शरीर गिरेंगे—तुम में से हर एक जो बीस वर्ष या उससे अधिक आयु का है जिसने मेरे विरुद्ध कुङ्कुङ्काया। <sup>२९</sup> तुममें से कोई भी उस देश में प्रवेश नहीं करगा, सिवाय कालेब और यहोशू के। <sup>३०</sup> तुम्हारे बच्चे, जिनके बारे में तुमने कहा था कि वे लूट लिए जाएँगे, मैं उन्हें लाऊँगा। वे उस देश का आनंद लेंगे जिसे तुमने ठुकरा दिया। <sup>३१</sup> लेकिन तुम—तुम्हारे शरीर इस जगल में गिरेंगे। <sup>३२</sup> तुम्हारे बच्चे चालीस वर्षों तक चरवाहे होंगे, तुम्हारी अविश्वसिता के कारण दुख उठाएँगे। <sup>३३</sup> चालीस वर्षों तक—जिस दिन तुमने देश की जाँच की थी उसके लिए एक वर्ष—तुम अपनी दोष सहोगे। <sup>३४</sup> तुम जानोगे कि मेरे विरुद्ध होना कैसा होता है। <sup>३५</sup> प्रभु ने कहा है: जनगणना में गिने गए सभी लोग जंगल में मर जाएँगे। <sup>३६</sup> तो जो लोग बुरी रिपोर्ट फैलाते थे, वे एक हमामारी से मारे गए। <sup>३७</sup> केवल यहोशू और कालेब बचे। <sup>३८</sup> जब मूसा ने यह इसाएलियों को बताया, तो वे कड़वे होकर शोक करने लगे। <sup>३९</sup> अगली सुबह वे पहाड़ी देश की ओर गए। “हमने पाप किया है,” उन्होंने कहा। “हम उस देश में जाने के लिए तैयार हैं जिसका प्रभु ने बादा किया था।” <sup>४०</sup> लेकिन मूसा ने कहा, “तुम प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करों कर रहे हो? यह सफल नहीं होगा। <sup>४१</sup> ऊपर मत जाओ, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ नहीं हैं। तुम पराजित हो जाओगे।” <sup>४२</sup> क्योंकि अमालोकी और कनानी वहाँ तुम्हारा सामना करेंगे। क्योंकि तुमने प्रभु से मूँह मोड़ा, तुम तलवार से गिरोगे।” <sup>४३</sup> फिर भी, अपने अनुमान में वे पहाड़ी देश की ओर बढ़े। <sup>४४</sup> लेकिन वाचा का सन्दर्भ और मूसा शिविर से नहीं निकले। <sup>४५</sup> तब अमालोकी और कनानी ने उन पर आक्रमण किया और उन्हें होर्मा तक मार गिराया।

**15** यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>२</sup> “इसाएलियों से कहो: जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुम्हें दे रहा हूँ, <sup>३</sup> और तुम अपि द्वारा चढ़ावा चढ़ाओगे— चाहे वह होमबलि हो, मन्त्रत पूरी करने के लिए बलिदान हो, या स्वेच्छा या पर्व का चढ़ावा हो — <sup>४</sup> तो जो व्यक्ति चढ़ावा लाएगा, वह तेल के साथ मिला हुआ उत्तम आटे का अन्नबलि भी लाए। <sup>५</sup> प्रत्येक ममने के साथ, एक चौथाई हिन दाखरस का पेयबलि के रूप में लाओ। <sup>६</sup> एक मेढ़े के साथ, दो-दसवां एपा आटे के साथ एक तिहाई हिन तेल लाओ, <sup>७</sup> और एक तिहाई हिन दाखरस का पेयबलि के रूप में लाओ। <sup>८</sup> एक युवा बैल के लिए, तीन-दसवां एपा आटे के साथ आधा हिन तेल लाओ। <sup>९</sup> और आधा हिन दाखरस। यह एक खाद्य चढ़ावा है, जो यहोवा के

लिए सुखद सुगंध है। <sup>१०</sup> यह प्रत्येक पशु के लिए किया जाना चाहिए, चाहे वह बैल हो, मेडा हो, या मेमना हो। <sup>११</sup> प्रत्येक चढ़ावे के लिए इस पैटर्न का पालन करो। <sup>१२</sup> प्रत्येक के लिए ऐसा करो, चाहे जितने भी तुम तैयार करो। <sup>१३</sup> प्रत्येक देशज व्यक्ति को चढ़ावा लाते समय ये बातें करनी चाहिए। <sup>१४</sup> और यदि कोई विदेशी या तुम्हारे बीच रखने वाला कोई व्यक्ति चढ़ावा लाना चाहता है, तो उन्हें भी ऐसा ही करना चाहिए। <sup>१५</sup> एक ही कानून तुम और विदेशी दोनों पर लागू होता है। <sup>१६</sup> तुम और उनके लिए एक ही नियम और विनियम लागू होते हैं।” <sup>१७</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>१८</sup> “इसाएलियों से कहो: जब तुम देश का भोजन खाओ, <sup>१९</sup> तो यहोवा के लिए एक अंश चढ़ावे के रूप में प्रस्तुत करो। <sup>२०</sup> अपने पीसे हुए आटे के पहले फल से यह चढ़ावा दो। <sup>२१</sup> यदि तुम अनजाने में किसी आज्ञा का पालन करने में असफल होते हो, <sup>२२</sup> चाहे वह सीधे दी गई हो या मूसा के माध्यम से, <sup>२३</sup> और समुदाय दोषी हो जाता है, तो पूरी सभा को एक युवा बैल होमबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए, <sup>२५</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में। याजक समुदाय के लिए प्रायश्चित्त करता है, और उन्हें क्षमा मिलती है। <sup>२६</sup> यह वही विदेशी के लिए भी लागू होता है जो उनके बीच रहता है। <sup>२७</sup> यदि कोई व्यक्ति अनजाने में पाप करता है, तो उसे एक वर्ष की मादा बकरी लानी चाहिए। <sup>२८</sup> याजक प्रायश्चित्त करता है, और उन्हें क्षमा मिलती है। <sup>२९</sup> एक ही कानून देशज और विदेशी दोनों पर लागू होता है। <sup>३०</sup> लेकिन जो कोई भी जानबूझकर पाप करता है, चाहे वह देशज हो या विदेशी, वह यहोवा की निंदा करता है। उन्हें काट दिया जाना चाहिए। <sup>३१</sup> क्योंकि उन्होंने यहोवा के वचन का तिरस्कार किया है, उन्हें अपने अपराध का भार उठाना होगा। <sup>३२</sup> जब इसाएली जंगल में थे, तो एक व्यक्ति को सब्ज के दिन लकड़ी इकट्ठा करते हुए पाया गया। <sup>३३</sup> उसे मूसा और हारून के पास लाया गया और हिरासत में रखा गया, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं था कि क्या किया जाना चाहिए। <sup>३४</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>३५</sup> “उस व्यक्ति को मरना होगा। पूरी सभा उसे शिविर के बाहर पत्थर मारकर मारो।” <sup>३६</sup> इसलिए सभा ने उसे बाहर ले जाकर पत्थर मारकर मारा, जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी थी। <sup>३७</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>३८</sup> “इसाएलियों से कहो: पीढ़ियों तक, अपने वस्तों के कोनों पर झूमर बनाओ, <sup>३९</sup> प्रत्येक झूमर पर नीले रंग की डोरी के साथ। जब तुम उन्हें देखोगे, तो तुम यहोवा की सभी आज्ञाओं को याद करोगे और उनका पालन करोगे। <sup>४०</sup> तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, न कि अपनी इच्छाओं का। <sup>४१</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस से तुम्हारा

## गिनती

परमेश्वर बनने के लिए बाहर लाया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

**16** अब कोरह, जो इज़हार का पुत्र, कोहात का पुत्र, और लेवी का पुत्र था, दातान और अबीराम, जो एलियाब के पुत्र थे, और ओन जो पेलेथ का पुत्र था, और रुबेन के पुत्रों के साथ, कार्वाई की,<sup>2</sup> और वे मूसा के सामने उठ खड़े हुए इसाएल के कुछ पुत्रों के साथ, दो सौ पचास सभा के नेता, जो सभा में चुने गए थे, प्रसिद्ध पुरुष।<sup>3</sup> वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए और उनसे कहा, “आप बहुत दूर चले गए हैं। क्योंकि सारी सभा पवित्र है, उनमें से हर एक, और यहोवा उनके बीच में है; तो आप अपने आप को यहोवा की सभा के ऊपर क्वों उठाते हैं?”<sup>4</sup> जब मूसा ने यह सुना, तो वह अपने चेहरे के बल गिर पड़ा।<sup>5</sup> और उनसे कोरह और उसके सारे समूह से कहा, “कल सुबह यहोवा प्रकट करेगा कि कौन उसका है, और कौन पवित्र है, और उसे अपने पास लाएगा; जिसे वह चुनेगा, उसे वह अपने पास लाएगा।<sup>6</sup> यह करो: अपने लिए धूपदान लो, कोरह और तुम्हारा सारा समूह,<sup>7</sup> और उनमें आग ढालो, और उन पर धूप रखो यहोवा के सामने कल; और वह व्यक्ति जिसे यहोवा चुनेगा वही पवित्र होगा। तुम बहुत दूर चले गए हो, है लेवी के पुत्रों।<sup>8</sup> तब मूसा ने कोरह से कहा, “अब सुनो, है लेवी के पुत्रों: क्या यह तुम्हारे लिए छोटा कर्तव्य है कि इसाएल के परमेश्वर ने तुम्हें इसाएल की सभा से अलग किया है, ताकि तुम्हें अपने पास लाए, यहोवा के तंबू की सेवा करने के लिए, और सभा के सामने खड़े होकर उनकी सेवा करने के लिए;<sup>10</sup> और उसने तुम्हें, कोरह, और तुम्हारे सभी भाइयों, लेवी के पुत्रों को तुम्हारे साथ लाया है? फिर भी तुम याजकाई भी चाहते हो?<sup>11</sup> इसलिए तुम और तुम्हारा सारा समूह वही हो जो यहोवा के विरुद्ध इकट्ठे हुए हो; पर हारून के लिए, वह कौन है, कि तुम उसके विरुद्ध बढ़बढ़ते हो?<sup>12</sup> तब मूसा ने दातान और अबीराम, एलियाब के पुत्रों को बुलाने के लिए भेजा; पर उन्होंने कहा, “हम नहीं आएंगे।<sup>13</sup> क्या यह पर्याप्त नहीं है कि तुम हमें दूध और मधु की बहने वाली भूमि से लाए हो ताकि हमें जंगल में मरवा दो, पर तुम अपने आप को हमारे ऊपर शासक नियुक्त करना भी चाहते हो? <sup>14</sup> हम वास्तव में, तुमने हमें दूध और मधु की बहने वाली भूमि में नहीं लाया, न ही हमें खेतों और अंगूर के बागों की विरासत दी है। क्या तुम इन लोगों की आँखें निकालोगे? हम नहीं आएंगे!”<sup>15</sup> तब मूसा बहुत क्रोधित हुआ और यहोवा से कहा, “उनके भेट पर ध्यान न दो! मैंने उनसे एक भी गधा नहीं लिया है, न ही मैंने उनमें से किसी को नुकसान पहुँचाया है!”<sup>16</sup> मूसा ने कोरह से कहा, “तुम और तुम्हारा सारा समूह कल यहोवा के

सामने उपस्थित हो, तुम और वे हारून के साथ।<sup>17</sup> और तुम में से प्रत्येक अपनी धूपदान ले और उसमें धूप रखे, और तुम में से प्रत्येक अपनी धूपदान यहोवा के सामने लाए, दो सौ पचास धूपदान; तुम और हारून भी अपनी-अपनी धूपदान लाओ।”<sup>18</sup> तो उन्होंने, प्रत्येक ने अपनी धूपदान ली, और उसमें आग ढाली, और उस पर धूप रखी; और वे मिलापवाले तंबू के द्वार पर मूसा और हारून के साथ खड़े हो गए।<sup>19</sup> तो कोरह ने सारी सभा को उनके विरुद्ध मिलापवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठा किया। और यहोवा की महिमा सारी सभा को दिखाई दी।<sup>20</sup> तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,<sup>21</sup> “इस सभा से अपने आप को अलग कर लो, ताकि मैं उन्हें तुरंत नष्ट कर दूँ।”<sup>22</sup> पर वे अपने चेहरे के बल गिर पड़े और कहा, “न है परमेश्वर, मानवता की आमाजों के परमेश्वर, जब एक व्यक्ति पाप करते हैं, तो क्या आप पूरी सभा से क्रोधित होंगे?”<sup>23</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>24</sup> “सभा से कहो, ‘कोरह, दातान, और अबीराम के तंबूओं के आसपास के क्षेत्रों से दूर हो जाओ।’”<sup>25</sup> तब मूसा उठा और दातान और अबीराम के पास गया, और इसाएल के बुजुर्ग उसके पीछे चल रहे थे।<sup>26</sup> और उनसे सभा से कहा, “अब इन दुष्ट पुरुषों के तंबूओं से दूर हो जाओ, और जो कुछ उनका है उसे मत छुओ, नहीं तो तुम उनके सभी पार्थी में बह जाओगे।”<sup>27</sup> तो वे कोरह, दातान, और अबीराम के तंबूओं के आसपास के क्षेत्रों से दूर हो गए; और दातान और अबीराम बाहर आए और अपने तंबूओं के द्वार पर खड़े हो गए, अपनी पत्रियों, अपने पुत्रों, और अपने छोटे बच्चों के साथ।<sup>28</sup> तब मूसा ने कहा, “इससे तुम जानोगे कि यहोवा ने मुझे ये सारे कार्य करने के लिए भेजा है; क्योंकि यह मेरा कार्य नहीं है।”<sup>29</sup> यदि ये लोग सभी मानवजाति की मृत्यु मरते हैं, या यदि वे सभी मानवजाति के भाग्य को भ्राता ते हैं, तो यहोवा ने मुझे नहीं भेजा है।<sup>30</sup> पर यदि यहोवा एक पूरी नई चीज़ लाता है और भूमि अपना मुँह खोलती है और उन्हें उनके सभी सामानों के साथ निगल जाती है, और वे जीवित शिंओल में चले जाते हैं, तो तुम जानोगे कि इन लोगों ने यहोवा का अनादर किया है।”<sup>31</sup> और जैसे ही उसने ये सभी शब्द कहे, उनके नीचे की भूमि फट गई;<sup>32</sup> और पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और उन्हें, उनके घरों को, और कोरह के सभी लोगों को उनके सभी सामानों के साथ निगल लिया।<sup>33</sup> तो वे और जो कुछ उनका था वह सब जीवित शिंओल में चला गया; और पृथ्वी उनके ऊपर बंद हो गई, और वे सभा के बीच से नष्ट हो गए।<sup>34</sup> तब उनके चारों ओर के सभी इसाएली उनके चिल्लाने पर भाग गए, क्योंकि उन्होंने कहा, “पृथ्वी हमें भी निगल सकती है!”<sup>35</sup> यहोवा से आग भी निकली और उन दो सौ पचास पुरुषों को भस्म कर दिया जो धूप चढ़ा रहे थे।

## गिनती

<sup>३६</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>३७</sup> “हारून के पुत्र एलिआज़र याजक से कहो कि वह आग के बीच से धूपदान उठा ले, क्योंकि वे पवित्र हैं, और तुम जलते हुए कोयलों को और दूर बिखेर दो।<sup>३८</sup> इन लोगों की धूपदानों के लिए जिह्वोंने अपनी जान की कीमत पर पाप किया है, उन्हें वेदी के लिए पत्त के रूप में हथौडे से पीटकर बना दो, क्योंकि उन्होंने उन्हें यहोवा के सामने प्रस्तुत किया और वे पवित्र हैं; और वे इसाएल के पुत्रों के लिए एक संकेत के रूप में काम करेंगे।”<sup>३९</sup> तो एलिआज़र याजक ने कांस्य की धूपदाने लीं जो उन पुरुषों ने प्रस्तुत की थीं जो जल गए थे, और उन्होंने उन्हें वेदी के लिए एक आवरण के रूप में हथौडे से पीटकर बना दिया,<sup>४०</sup> इसाएल के पुत्रों के लिए एक स्मरण के रूप में कि कोई भी साधारण व्यक्ति जो हारून के वंशजों में से नहीं है, यहोवा के सामने धूप जलाने के लिए पास न आए, ताकि वह कोरह और उसके समूह के समान न हो—जैसा कि यहोवा ने मूसा के माध्यम से उससे कहा था।<sup>४१</sup> पर अगले दिन इसाएल के पुत्रों की सारी सभा मूसा और हारून के विरुद्ध बड़बड़ाई, कहने लगे, “तुम ही हो जिह्वोंने यहोवा के लोगों की मृत्यु का कारण बने हो!”<sup>४२</sup> हालांकि, जब सभा मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठी हुई, तो उन्होंने मिलापवाले तंबू की ओर मुँझकर देखा, और देखो, बालद ने उसे ढक लिया और यहोवा की महिमा प्रकट हुई।<sup>४३</sup> तब मूसा और हारून मिलापवाले तंबू के सामने आए।<sup>४४</sup> और यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>४५</sup> “इस सभा से दूर हो जाओ, ताकि मैं उन्हें तुरंत नष्ट कर दूँ।” तब वे अपने चेहरे के बल गिर पड़े।<sup>४६</sup> और मूसा ने हारून से कहा, “अपनी धूपदान लो और उसमें वेदी से आग डालो, और उस पर धूप रखो; फिर इसे जन्ती से सभा के पास ले जाओ और उनके लिए प्रायश्चित्त करो, क्योंकि यहोवा से क्रोध निकला है, महामारी शुरू हो गई है।”<sup>४७</sup> तब हारून ने जैसा मूसा ने कहा था वैसा ही किया, और सभा के बीच में दौड़ा, क्योंकि लोगों के बीच महामारी शुरू हो गई थी। तो उसने धूप डाली और लोगों के लिए प्रायश्चित्त किया।<sup>४८</sup> और वह मरे हुए और जीवितों के बीच खड़ा हो गया, ताकि महामारी रुक गई।<sup>४९</sup> पर जो महामारी से मरे थे वे 14,700 थे, उन लोगों के अलावा जो कोरह के कारण मरे थे।<sup>५०</sup> तब हारून मिलापवाले तंबू के द्वार पर मूसा के पास लौट आया, क्योंकि महामारी रुक गई थी।

**17** यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>१</sup> “इसाएलियों से कहो कि वे अपने-अपने पूर्वजों के गोत्रों से एक-एक छड़ी लें, कुल मिलाकर बारह छड़ियाँ, प्रत्येक नेता से एक। प्रत्येक व्यक्ति का नाम उसकी छड़ी पर लिखो।<sup>३</sup> लेवी की छड़ी पर हारून का नाम लिखो, क्योंकि प्रत्येक

पूर्वज के घराने के मुखिया के लिए एक छड़ी होनी चाहिए।<sup>४</sup> उन्हें मिलापवाले तंबू में वाचा के सन्दूक के सामने रखो, जहाँ मैं तुमसे मिलता हूँ।<sup>५</sup> जिस व्यक्ति की छड़ी मैं चुनूँगा, वह अंकुरित होगी। इससे इसाएलियों की तुम्हारे विरुद्ध की जाने वाली कुड़कुड़ाहट समाप्त हो जाएगी।”<sup>६</sup> तब मूसा ने इसाएलियों से बात की, और उनके नेताओं ने उसे बारह छड़ियाँ दीं, प्रत्येक गोत्र के नेताओं से एक। हारून की छड़ी उनमें थी।<sup>७</sup> मूसा ने छड़ियों को वाचा के तंबू में यहोवा के सामने रखा।<sup>८</sup> अगले दिन मूसा तंबू में गया और देखा कि हारून की छड़ी, जो लेवी के गोत्र का प्रतिनिधित्व करती थी, न केवल अंकुरित हुई थी बल्कि उसमें कलियाँ भी फूटी थीं, फूल खिले थे, और पके हुए बादाम भी लगे थे।<sup>९</sup> तब मूसा ने यहोवा के सामने से सभी छड़ियाँ निकालकर इसाएलियों के पास लाया। उन्होंने उन्हें देखा, और प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी छड़ी ले ली।<sup>१०</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून की छड़ी को वाचा की व्यवस्था के सन्दूक के सामने वापस रखो ताकि यह विद्रोहियों के खिलाफ एक चिह्न के रूप में रखा जाए। इससे उनकी शिकायतें समाप्त हो जाएंगी ताकि वे मर न जाएं।”<sup>११</sup> मूसा ने यहोवा की अज्ञा के अनुसार वैसा ही किया।<sup>१२</sup> इसाएलियों ने मूसा से कहा, “देखो, हम नाश हो रहे हैं! हम खो गए हैं, हम सब खो गए हैं।”<sup>१३</sup> जो कोई भी यहोवा के तंबू के पास आता है, वह मर जाता है। क्या हम सब मरने वाले हैं?

**18** यहोवा ने हारून से कहा, “तू तेरे पुत्र और तेरे पूर्वजों का घराना पवित्रस्थान के अपराधों के लिए उत्तरदायी होगा। केवल तू और तेरे पुत्र याजकाई से संबंधित अपराधों के लिए उत्तरदायी होंगे।”<sup>१</sup> अपने पूर्वजों के गोत्र से अपने सभी लेवियों को लाकर तेरी सहायता करने के लिए और वाचा के तंबू के सामने सेवा करने के लिए नियुक्त करा।<sup>२</sup> वे तेरे और तम्भ के कार्यों के लिए उत्तरदायी होंगे, परन्तु वे पवित्रस्थान या वेदी के निकट न जाएं, नहीं तो वे और तू दोनों मर जाओगे।<sup>३</sup> वे तेरे साथ जुड़कर मिलाप के तंबू की देखभाल करें, तम्भ में सब काम करें, और कोई बाहरी व्यक्ति तेरे निकट न आए।<sup>४</sup> तू पवित्रस्थान और वेदी की देखभाल के लिए उत्तरदायी होगा, ताकि इसाएलियों पर फिर कभी क्रोध न आए।<sup>५</sup> मैंने स्वयं इसाएलियों में से तेरे सभी लेवियों को तुझे उपहार के रूप में चुना है, जो मिलाप के तम्भ में काम करने के लिए यहोवा को दिए गए हैं।<sup>६</sup> परन्तु केवल तू और तेरे पुत्र वेदी और पर्दे के पीछे के सभी मामलों में याजक के रूप में सेवा कर सकते हैं। मैं तुझे याजकाई की सेवा उपहार के रूप में दे रहा हूँ। कोई और जो निकट आएगा उसे मार डाला

## गिनती

जाएगा।<sup>8</sup> यहोवा ने हारून से कहा, "मैंने स्वयं तुझे मेरे लिए प्रस्तुत किए गए भेटों का प्रभार दिया है। सभी पवित्र भेटों जो इसाएली मुझे देते हैं, मैं तुझे और तेरे पुत्रों को तुम्हारे हिस्से के रूप में देता हूँ।<sup>9</sup> तुझे सबसे पवित्र भेटों का हिस्सा मिलेगा जो आग से बचाकर रखी जाती है। ये तेरे हैं: हर भेट जो वे लाते हैं—अनाज, पाप, और दोष भेट—तुझ और तेरे पुत्रों की है।<sup>10</sup> इसे सबसे पवित्र रूप में खाओ; हर पुरुष इसे खा सकता है। इसे पवित्र मानो।<sup>11</sup> यह भी तेरा है: लहराने की भेटें जो इसाएली लाते हैं। तू और तेरे पुत्र और पुत्रियों इसे खा सकते हैं। तेरे घर में जो भी धार्मिक रूप से शुद्ध है, वह इसे खा सकता है।<sup>12</sup> मैं तुझे तेल, नई दाखमधू, और अनाज का सबसे अच्छा हिस्सा देता हूँ—पहली उपज जो वे यहोवा को देते हैं।<sup>13</sup> उनकी भूमि से जो भी पहली पकी हुई उपज वे यहोवा को लाते हैं, वह तेरा है। तेरे घर में जो भी शुद्ध है, वह इसे खा सकता है।<sup>14</sup> इसाएल में जो कुछ भी यहोवा को समर्पित है, वह तेरा है।<sup>15</sup> हर पहलौठा पुरुष, चाहे वह मानव हो या पशु, जो यहोवा को अर्पित किया जाता है, वह तेरा है। परन्तु तुझे हर पहलौठा मानव और हर अशुद्ध पशु को छुड़ाना होगा।<sup>16</sup> उन्हें एक माह की आयु में छुड़ाओ, पांच शेरेक चाँदी के लिए, पवित्रस्थान के शेरेक के अनुसार।<sup>17</sup> परन्तु गाय, भेड़, या बकरी के पहलौठे को छुड़ाना नहीं चाहिए; वे पवित्र हैं। उनकी रक्त की बेदी पर छिड़कों और उनकी चर्बी की भोजन भेट के रूप में जलाओ।<sup>18</sup> उनका मांस तेरा है, जैसे लहराने की भेट का वक्ष और दाहिना जांघ तेरा है।<sup>19</sup> जो कुछ भी पवित्र भेटों से अलग किया गया है जो इसाएली यहोवा को प्रस्तुत करते हैं, मैं तुझे और तेरे पुत्रों और पुत्रियों को एक स्थायी वाचा के रूप में देता हूँ। यह यहोवा के सामने नमक की वाचा है।<sup>20</sup> यहोवा ने हारून से कहा, "रेरे पास उनकी भूमि में कोई विरासत नहीं होगी, न ही तेरा उनमें कोई हिस्सा होगा; मैं तेरा हिस्सा और तेरी विरासत हूँ।"<sup>21</sup> मैं लेवियों को इसाएल में सभी दशमांश उनकी विरासत के रूप में देता हूँ, उनके मिलाप के तम्बू में किए गए काम के बदले में।<sup>22</sup> इसाएली अब मिलाप के तम्बू के निकट नहीं आ सकते, नहीं तो वे परिणाम भुगतेंगे और मर जाएंगे।<sup>23</sup> लेवियों को ही काम करना है और अपराधों के लिए उत्तरदायी होना है। यह एक स्थायी विधि है।<sup>24</sup> इसके बजाय, मैं लेवियों को दशमांश देता हूँ जो इसाएली यहोवा को भेट के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसलिए मैंने कहा कि उनके पास कोई विरासत नहीं होगी।<sup>25</sup> यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>26</sup> "लेवियों से कहो: जब तुम इसाएलियों से दशमांश प्राप्त करते हो, तो उस दशमांश का दसवां हिस्सा यहोवा को अनाज के रूप में गहाई के तल से या दाखमधू के

रस के रूप में गिना जाएगा।<sup>28</sup> तुम्हें यह हिस्सा यहोवा को प्रस्तुत करना होगा जो तुम्हें दिया गया है।<sup>29</sup> इसका सबसे अच्छा और पवित्र हिस्सा यहोवा के हिस्से के रूप में अर्पित करो।<sup>30</sup> लेवियों से कहो: जब तुम सबसे अच्छा हिस्सा प्रस्तुत करते हो, तो यह तुम्हारे लिए गहाई के तल से उपज के रूप में गिना जाएगा।<sup>31</sup> तुम और तुम्हारे घराने बाकी को कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह तुम्हारे काम के लिए तुम्हारी मजदुरी है।<sup>32</sup> सबसे अच्छा हिस्सा प्रस्तुत करके, तुम दोषी नहीं ठहरोगे। परन्तु पवित्र भेटों की अपवित्र न करना, नहीं तो तुम मर जाओगे।"

**19** प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> "यह वह विधि है जो प्रभु ने आज्ञा दी है: इसाएलियों से कहो कि वे तुम्हारे पास एक लाल बछिया लाएं, जो निर्दोष और बिना किसी दोष के हो, और जिसे कभी जुआ न दिया गया हो।<sup>3</sup> उसे एलोआज़र याजक को दो: उसे शिविर के बाहर ले जाकर उसके सामने वध किया जाना चाहिए।<sup>4</sup> एलोआज़र को अपनी उंगली पर उसका कुछ खून लेना चाहिए और उसे मिलापवाले तंबू के सामने सात बार छिड़कना चाहिए।<sup>5</sup> पूरी बछिया को उसकी दृष्टि में जलाया जाना चाहिए—चमड़ा, मांस, खून, और गोबर।<sup>6</sup> याजक को देवदार की लकड़ी, जड़ी-बूटी, और लाल ऊन को बछिया को जलाने वाली आग में डालना चाहिए।<sup>7</sup> फिर उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और पानी में साना करना चाहिए; उसके बाद, वह शिविर में वापस आ सकता है, लेकिन वह शाम तक धार्मिक रूप से अशुद्ध रहेगा।<sup>8</sup> जो इसे जलाया उसे भी अपने कपड़े धोने चाहिए और साना करना चाहिए; वह भी शाम तक अशुद्ध रहेगा।<sup>9</sup> एक शुद्ध व्यक्ति बछिया की राख को इकट्ठा करके शिविर के बाहर एक धार्मिक रूप से शुद्ध स्थान में रखना चाहिए। उन्हें इसाएली समुदाय द्वारा शुद्धिकरण के जल में उपयोग के लिए रखा जाना चाहिए—यह पाप को दूर करने के लिए है।<sup>10</sup> जो व्यक्ति राख इकट्ठा करता है उसे भी अपने कपड़े धोने चाहिए, और वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। यह इसाएलियों और उनके बीच रहने वाले विदेशियों के लिए एक स्थायी विधि है।<sup>11</sup> जो कोई भी मृत शरीर को छूता है वह सात दिनों के लिए अशुद्ध रहेगा।<sup>12</sup> उन्हें तीसरे दिन और सातवें दिन जल से शुद्ध करना चाहिए; तब वे शुद्ध होंगे। लेकिन यदि वे किसी भी दिन ऐसा करने में असफल होते हैं, तो वे अशुद्ध रहेंगे।<sup>13</sup> जो कोई शराब को छूता है और स्वयं को शुद्ध करने में असफल होता है, वह प्रभु के तंबू को अपवित्र करता है। उन्हें इसाएल से काट दिया जाना चाहिए क्योंकि शुद्धिकरण का जल उन पर नहीं लगाया गया था।<sup>14</sup> यह वह विधि है जब कोई तंबू में

## गिनती

मरता है। जो कोई भी तंबू में प्रवेश करता है और जो कोई भी उसमें है वह सात दिनों के लिए अशुद्ध हो जाता है।<sup>15</sup> और हर खुला पात्र जिस पर ढक्कन नहीं है, वह अशुद्ध है।<sup>16</sup> जो कोई तलवार से मारे गए व्यक्ति या मृत शरीर को छूता है, या मानव हड्डी या कब्ब को छूता है, वह सात दिनों के लिए अशुद्ध है।<sup>17</sup> शुद्धिकरण के लिए, जले हुए शुद्धिकरण बलिदान की कुछ राख लें और उन्हें एक जार में ताजे पानी के साथ डालें।<sup>18</sup> फिर एक शुद्ध व्यक्ति जड़ी-बूटी ले, उसे पानी में डुबोए, और उसे तंबू पर, सभी सामनों पर, और वहाँ उपस्थित लोगों पर छिड़के, साथ ही उस व्यक्ति पर भी जिसने हड्डी, मारे गए व्यक्ति, शव, या कब्ब को छुआ था।<sup>19</sup> शुद्ध व्यक्ति को तीसरे और सातवें दिन अशुद्ध व्यक्ति पर छिड़कना चाहिए। सातवें दिन उन्हें शुद्ध करना चाहिए और उन्हें अपने कपड़े धोने चाहिए और सान करना चाहिए। वे शाम तक शुद्ध हो जाएंगे।<sup>20</sup> लेकिन यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति स्वयं को शुद्ध करने में असफल होता है, तो उन्हें काट दिया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने परिवत्र स्थान को अपवित्र किया है। उन्होंने शुद्धिकरण का जल नहीं प्राप्त किया।<sup>21</sup> यह एक स्थायी विधि है। जो कोई शुद्धिकरण के जल को छिड़कता है उसे अपने कपड़े धोने चाहिए, और जो कोई भी जल को छूता है वह शाम तक अशुद्ध हो जाता है।<sup>22</sup> जो कुछ भी अशुद्ध व्यक्ति छूता है वह अशुद्ध हो जाता है, और जो कोई भी उसे छूता है वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।

**20** पहले महीने में समस्त इसाएली समुदाय जिन के मरुस्थल में पहुँचा, और वे कादेश में रुके। वहीं मिरियम की मृतु हुई और उसे दफनाया गया।<sup>2</sup> अब समुदाय के लिए पानी नहीं था, और लोग मूसा और हारून के विरोध में इकट्ठा हुए।<sup>3</sup> वे मूसा से झाङड़ने लगे और कहने लगे, "काश हम मर जाते जब हमारे भाई प्रभु के सामने मरे।"<sup>4</sup> तुमने प्रभु की इस समुदाय को इस मरुस्थल में क्यों लाया, कि हम और हमारे पश्च यहाँ मर जाएं? <sup>5</sup> तुम हमें प्रिस से इस भयानक स्थान पर क्यों लाए? यहाँ न तो अनाज है, न अंजीर, न अंगूष्ठ, न अनार—और न ही पीने के लिए पानी है।<sup>6</sup> मूसा और हारून सभा से मिलाप के तंबू के द्वार पर गए और मुँह के बल पिए, और प्रभु की महिमा उनके सामने प्रकट हुई।<sup>7</sup> प्रभु ने मूसा से कहा, <sup>8</sup> "लाठी ले लो, और तुम और तुम्हारा भाई हारून समुदाय को इकट्ठा करो। उस चट्टान से उनकी आँखों के सामने बात करो, और वह अपना पानी उड़ेलेगी।<sup>9</sup> तो मूसा ने प्रभु की उपस्थिति से लाठी ली, जैसा कि उन्होंने अदेश दिया था।<sup>10</sup> उन्होंने और हारून ने चट्टान के सामने समुदाय को इकट्ठा किया, और मूसा ने उनसे कहा, "सुनो, तुम विद्रोहियों,

क्या हमें इस चट्टान से तुम्हरे लिए पानी निकालना चाहिए?"<sup>11</sup> फिर मूसा ने अपनी भुजा उठाई और अपनी लाठी से चट्टान को दो बार मारा। पानी फूट पड़ा, और समुदाय और उनके पशुओं ने पानी पिया।<sup>12</sup> लेकिन प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, "क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया कि मुझे इसाएलियों की दृष्टि में परिव्रत मानो, तुम इस समुदाय को उस देश में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें देता हूँ।"<sup>13</sup> ये मरिबा के जल थे, जहाँ इसाएलियों ने प्रभु से झगड़ा किया और जहाँ वह उनके बीच परिव्रत सिद्ध हुआ।<sup>14</sup> कादेश से, मूसा ने एदोम के राजा के पास दूत भेजे, कहने लगे: "यह तुम्हारा भाई इसाएल कहता है: तुम उन सभी कठिनाइयों के बारे में जानते हो जो हमने अनुभव की हैं।<sup>15</sup> हमारे पूर्वज मिस्स गए, और हम वहाँ कई वर्षों तक रहे। मिस्सियों ने हमारे और हमारे पूर्वजों के साथ दुर्ब्ववहार किया।<sup>16</sup> लेकिन जब हमने प्रभु से पुकार की, तो उसने हमारी सुनी और एक दूत भेजा और हमें मिस्स से बाहर निकाला। अब हम कादेश में हैं, जो तुम्हरे क्षेत्र की सीमा पर एक नगर है।<sup>17</sup> कृपया हमें अपनी भूमि से गुजरने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग से नहीं गुजरेंगे, और किसी कुएँ का पानी नहीं पीएंगे। हम राजा के राजमार्ग पर रेंगेंगे जब तक कि हम तुम्हारे क्षेत्र से न गुजर जाएं।"<sup>18</sup> लेकिन एदोम ने उत्तर दिया: "तुम यहाँ से नहीं गुजर सकते। अगर तुमने कोशिश की, तो हम बाहर आकर तुम पर हमला करेंगे।"<sup>19</sup> इसाएलियों ने उत्तर दिया, "हम मुच्य सङ्क पर चलेंगे। अगर हम या हमारे पशु तुम्हारा पानी पीते हैं, तो हम उसके लिए भुगतान करेंगे। हम केवल पैदल गुजरने की अनुमति मांगते हैं—और कुछ नहीं।"<sup>20</sup> फिर से एदोम ने उत्तर दिया: "तुम यहाँ से नहीं गुजर सकते।"<sup>21</sup> फिर एदोम उनके खिलाफ एक बड़ी और शक्तिशाली सेना के साथ बाहर आया।<sup>22</sup> चूंकि एदोम ने उन्हें गुजरने की अनुमति नहीं दी, इसाएल उनसे दूर हो गया।<sup>23</sup> समस्त इसाएली समुदाय कादेश से निकलकर हीर पर्वत पर आया।<sup>24</sup> वहाँ प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, "हारून अपने लोगों के पास इकट्ठा होगा। वह उस देश में प्रवेश नहीं करेगा जो मैं इसाएलियों को देता हूँ, क्योंकि तुम दोनों ने मेरे अदेश का पालन नहीं किया था। मरिबा के जल पर।"<sup>25</sup> हारून और उसके पुत्र एलेआजर को हीर पर्वत पर ले जाओ।<sup>26</sup> हारून के वस्त्र उतारो और उन्हें एलेआजर पर डालो। हारून अपने लोगों के पास इकट्ठा होगा; वह वहीं मरेगा।<sup>27</sup> मूसा ने प्रभु के अदेश के अनुसार किया। वे समस्त समुदाय की दृष्टि में हीर पर्वत पर गए।<sup>28</sup> मूसा ने हारून के वस्त्र उतारे और उन्हें एलेआजर पर डाल दिया। हारून वहाँ पर्वत के ऊपर मरा।<sup>29</sup> जब समस्त समुदाय

## गिनती

ने जाना कि हारून की मृत्यु हो गई है, तो समस्त इसाएल ने उसके लिए तीस दिन तक शोक मनाया।

**21** जब अराद के कनानी राजा ने, जो नेगेव में रहता था, सुना कि इसाएल अंतारीम के मार्ग से आ रहा है तो उसने उन पर आक्रमण किया और उनमें से कुछ को बंदी बना लिया।<sup>2</sup> तब इसाएल ने यहोवा से मन्त्रत मानी: "पदि तू इन लोगों को हमारे हाथ में कर देगा, तो हम उनकी नगरियों को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।"<sup>3</sup> यहोवा ने इसाएल की प्रार्थना सुनी और कनानियों को उनके हाथ में कर दिया। उन्होंने उन्हें और उनके नगरों को पूरी तरह नष्ट कर दिया, इसलिए उस स्थान का नाम होर्मा रखा गया।<sup>4</sup> वे होर पर्वत से लाल सागर के मार्ग पर एदोम के चारों ओर जाने के लिए यात्रा करने लगे। लेकिन रास्ते में लोग अधीर हो गए।<sup>5</sup> उन्होंने परमेश्वर और मूसा के खिलाफ कहा, "तू हमें मिस्र से क्यों लाया कि हम इस जंगल में मरें? यहाँ कोई रोटी नहीं है। यहाँ कोई पानी नहीं है! और हम इस दर्यारी भौजन से धृणा करते हैं!"<sup>6</sup> तब यहोवा ने उनके बीच विषेष सांप भेजे; उन्होंने लोगों को काटा, और बहुत से इसाएली मारे गए।<sup>7</sup> लोग मूसा के पास आए और कहा, "हमने यहोवा और आपके खिलाफ बोलकर पाप किया है। प्रार्थना करें कि यहोवा सांपों को हाता दे।"<sup>8</sup> इसलिए मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना की।<sup>9</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "एक सांप बनाकर उसे एक खंभे पर रखो; जिसे भी सांप काटे, वह उसे देखकर जीवित रहेगा।"<sup>10</sup> इसलिए मूसा ने एक कांसे का सांप बनाया और उसे एक खंभे पर रखा। जब किसी को सांप काटा और वह कांसे के सांप को देखता, तो वह जीवित रहता।<sup>11</sup> इसाएली आगे बढ़े और ओबोत में डेरा डाला।<sup>12</sup> फिर वे ओबोत से चले और मोआब की ओर सूर्योदय के सामने के जंगल में इये अबारीम में डेरा डाला।<sup>13</sup> वहाँ से वे ज़ेरेद घाटी में चले गए और वहाँ डेरा डाला, जो जंगल में है और एमोरी क्षेत्र में कैला हुआ है। अर्नन मोआब और एमोरियों के बीच की सीमा है।<sup>14</sup> इसलिए यहोवा के युद्धों की पुस्तक कहती है: "सुफ़ा में वहेब और अर्नन की घाटियाँ,<sup>15</sup> और उन घाटियों की ढलानें जो आर की बस्ती की ओर जाती हैं और मोआब की सीमा के साथ स्थित हैं।"<sup>16</sup> वहाँ से वे बीर के पास गए, वह कुआँ जहाँ यहोवा ने मूसा से कहा, "लोगों को इकट्ठा करो और मैं उन्हें पानी दूंगा।"<sup>17</sup> तब इसाएल ने यह गीत गाया:

<sup>18</sup> "उठो, है कुआँ! इसके बारे में गाओ, उस कुएँ के बारे में जो राजकुमारों ने खोदा, जिसे लोगों के प्रतिष्ठित

व्यक्तियों ने खोदा— राजदंडों और डंडों से।" फिर वे जंगल से मत्ताना गए

<sup>19</sup> मत्ताना से नहलीएल, नहलीएल से बामोत,<sup>20</sup> और बामोत से मोआब की घाटी में गए जहाँ पिसगा की चोटी बंजर भूमि को देखती है।<sup>21</sup> इसाएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूत भेजे:<sup>22</sup> "हमें आपके देश से गुजरने दें। हम खेतों या अंगू के बांगों में नहीं जाएंगे, न ही किसी कुँएँ का पानी पीएंगे। हम राजा के राजमार्ग के साथ चलेंगे जब तक कि हम आपके क्षेत्र से पार न हो जाएं।"<sup>23</sup> लेकिन सीहोन ने इसाएल को अपने क्षेत्र से गुजरने नहीं दिया। उसने अपनी पूरी सेना इकट्ठी की और इसाएल का सामना करने के लिए जंगल में चला गया। जब वह यहाज पहुँचा, तो उसने इसाएल से युद्ध किया।<sup>24</sup> हालांकि, इसाएल ने उसे तलवार से मार दिया और उसकी भूमि को अर्नन से यब्बोक तक, अम्मोनियों की सीमा तक ले लिया।<sup>25</sup> इसाएल ने एमोरियों के सभी नगरों को कब्जा कर लिया और उनमें बस गए, जिसमें हेशबोन और उसके आसपास की बस्तियाँ शामिल थीं।<sup>26</sup> हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था, जिसने मोआब के पूर्वी राजा को हराया था और अर्नन तक उसकी सारी भूमि ले ली थी।<sup>27</sup> इसीलिए कवि कहते हैं: "हेशबोन आओ और इसे फिर से बनाओ; सीहोन का नगर पुनः स्थापित हो।"

<sup>28</sup> हेशबोन से आग निकली, सीहोन के नगर से एक ज्वाला। इसने मोआब के आर को भस्म कर दिया, अर्नन की चौंचाइयों के नागरियों को।<sup>29</sup> थिकार है तुम्हें मोआब, तुम नष्ट हो गए केमोश के लोग। उसने अपने पुत्रों को भगोड़ों के रूप में दिया और अपनी बेटियों को बंदी बनाकर एमोरियों के राजा सीहोन को सौप दिया।<sup>30</sup> लेकिन हमने उन्हें उत्खान कैंकरा, हेशबोन का प्रभुत्व दीक्षित तक चला गया, हमने नोपह तक नष्ट कर दिया, जो मेदेबा तक फैला है।"

<sup>31</sup> इसलिए इसाएल एमोरियों की भूमि में बस गया।<sup>32</sup> मूसा ने याजेर की खोज के लिए लोगों को भेजा, और उन्होंने उसकी बस्तियों को कब्जा कर लिया और एमोरियों को बाहर निकाल दिया।<sup>33</sup> फिर वे बाशान की ओर जाने वाले मार्ग पर चले, और बाशान के राजा ओग और उसकी पूरी सेना एद्रेई में उनसे मिलने के लिए निकली।<sup>34</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है, उसकी पूरी सेना और उसकी भूमि के साथ। उसके साथ वही करो जो तुमने सीहोन के साथ किया था।"<sup>35</sup> इसलिए उन्होंने उसे, उसके पुत्रों और उसकी पूरी सेना को मार डाला,

## गिनती

कोई भी जीवित नहीं बचा। और उन्होंने उसकी भूमि पर कब्जा कर लिया।

**22** तब इसाएली मोआब के मैदानों में यात्रा करके यरदन के पास यरीहो के सामने डेरा डाले।<sup>2</sup> अब सिप्पोर का पुत्र बालाक ने देखा कि इसाएल ने एमोरियों के साथ क्या किया था,<sup>3</sup> और मोआब बहुत डर गया क्योंकि लोग बहुत थे। वास्तव में, इसाएलियों के कारण मोआब भय से भर गया था।<sup>4</sup> मोआबियों ने मिद्यान के बुजुर्गों से कहा, “यह भीड़ हमारे चारों ओर सब कुछ चाट जाएगी, जैसे बैल धास चाटा है।”<sup>5</sup> इसलिए मोआब के राजा बालाक ने<sup>6</sup> दूत भेजे कि बोर के पुत्र बिलाम को बुलाएं, जो यूफ्रेट्स के पास पेटोर में था। उसने कहा, “एक लोग मिस से आए हैं, वे भूमि के चेहरे को ढक रहे हैं और मेरे पास बस रहे हैं।”<sup>7</sup> अब आओ और मेरे लिए उन्हें शाप दो, क्योंकि वे बहुत शक्तिशाली हैं। शायद तब मैं उन्हें हरा संकूंगा और उन्हें बाहर निकाल संकूंगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिसे तुम अशीर्वद देते हो वह अशीर्वदित होता है, और जिसे तुम शाप देते हो वह शापित होता है।<sup>8</sup> मोआब और मिद्यान के बुजुर्ग भविष्यवाणी के लिए भुगतान लेकर बिलाम के पास गए। उन्होंने उसे बताया कि बालाक ने क्या कहा था।<sup>9</sup> “यहाँ रात बिताओ,” बिलाम ने कहा, “और मैं जो कुछ भी यहोवा मुझे बताएगा, वह तुम्हें बताऊंगा।”<sup>10</sup> इसलिए मोआबी अधिकारी उसके साथ रहे।<sup>11</sup> परमेश्वर बिलाम के पास आए और पूछा, “ये लोग कौन हैं जो तुम्हारे साथ हैं?”<sup>12</sup> बिलाम ने कहा, “मोआब के राजा बालाक ने मुझे संदेश भेजा:<sup>13</sup> ‘एक लोग मिस से आए हैं और भूमि को ढक रहे हैं। अब आओ और मेरे लिए उन्हें शाप दो; शायद मैं उनसे लड़ संकूंगा और उन्हें भगा संकूंगा।’”<sup>14</sup> परंतु परमेश्वर ने बिलाम से कहा, “उनके साथ मत जाओ। तुम्हें उन्हें शाप नहीं देना चाहिए, क्योंकि वे अशीर्वदित हैं।”<sup>15</sup> अगली सुबह, बिलाम ने बालाक के अधिकारियों से कहा, “अपने देश लौट जाओ, जो अधिक संख्या में और अधिक प्रतिष्ठित थे।”<sup>16</sup> वे बिलाम के पास आए और कहा, “बालाक कहता है: तुम्हें आने से कोई चीज़ न रोक।”<sup>17</sup> मैं तुम्हें अच्छे से पुरस्कृत करूँगा। आओ और मेरे लिए इस लोगों को शाप दो।”<sup>18</sup> परंतु बिलाम ने उत्तर दिया, “पर्दि बालाक मुझे अपने महल को चांदी और सोने से भरकर दे, तब भी मैं यहोवा की आज्ञा के बाहर कुछ नहीं कर सकता।”<sup>19</sup> परंतु यहाँ रात बिताओ, और मैं जानूंगा कि यहोवा और क्या कहता है।”<sup>20</sup> उस

रात परमेश्वर बिलाम के पास आए और कहा, “चूँकि ये लोग तुम्हें बुलाने आए हैं, उनके साथ जाओ, परंतु केवल वही करो जो मैं तुम्हें कहता हूँ।”<sup>21</sup> बिलाम सुन्ह उठकर अपने गधे पर काठी बांधकर मोआबी अधिकारियों के साथ चला गया।<sup>22</sup> परंतु जब वह गया, तो परमेश्वर बहुत क्रोधित हुआ, और यहोवा का दूत उसे रोकने के लिए मार्ग में खड़ा हुआ। बिलाम अपने गधे पर सवार था, और उसके दो सेवक उसके साथ थे।<sup>23</sup> जब गधे ने देखा कि यहोवा का दूत मार्ग में खड़ा है और तलवार खींची हुई है, तो वह खेत की ओर मुड़ गया। बिलाम ने उसे मार्ग पर लाने के लिए पीटा।<sup>24</sup> फिर दूत ने दो अंगू के बागों के बीच एक संकीर्ण मार्ग में खड़ा हुआ, दोनों ओर दीवारें थीं।<sup>25</sup> जब गधे ने दूत को देखा, तो वह दीवार के पास दब गया, जिससे बिलाम का पैर कुचल गया। उसने उसे फिर पीटा।<sup>26</sup> फिर दूत आगे बढ़कर एक संकीर्ण स्थान पर खड़ा हुआ जहाँ मुझे नीं कोई जगह नहीं थी।<sup>27</sup> जब गधे ने दूत को देखा, तो वह बिलाम के नीचे लेट गया, और वह क्रोधित होकर उसे अपनी छाड़ी से पीटा।<sup>28</sup> तब यहोवा ने गधे का मुँह खोला, और उसने बिलाम से कहा, “तुमने मुझे तीन बार क्यों पीटा?”<sup>29</sup> बिलाम ने उत्तर दिया, “तुमने मुझे मूर्ख बनाया है। काश मेरे पास तलवार होती, तो मैं तुम्हें मार डालता।”<sup>30</sup> गधे ने कहा, “क्या मैं तुम्हारा अपना गधा नहीं हूँ, जिस पर तुम हमेशा सवार होते हो? क्या मैंने तुम्हारे साथ ऐसा करने की आदत बनाई है?” “नहीं,” उसने कहा।<sup>31</sup> तब यहोवा ने बिलाम की आँखें खोली, और उसने देखा कि दूत मार्ग में तलवार खींचे खड़ा है। वह झुककर मुँह के बल पिर पड़ा।<sup>32</sup> दूत ने कहा, “तुमने अपने गधे को तीन बार क्यों पीटा? मैं तुम्हारा विरोध करने आया हूँ क्योंकि तुम्हारा मार्ग मेरे सामने लापरवाह है।”<sup>33</sup> गधे ने मुझे देखा और मुड़ गया। यदि ऐसा नहीं होता, तो मैं तुम्हें मार डालता और उसे छोड़ देता।”<sup>34</sup> बिलाम ने कहा, “मैंने पाप किया है। मुझे यह नहीं पता था कि आप मार्ग में खड़े हैं। यदि आप अप्रसन्न हैं, तो मैं वापस जाऊँगा।”<sup>35</sup> दूत ने कहा, “आदमी के साथ जाओ, परंतु केवल वही बोलों जो मैं तुम्हें कहता हूँ।” इसलिए बिलाम बालाक के अधिकारियों के साथ चला गया।<sup>36</sup> जब बालाक ने सुना कि बिलाम आ रहा है, तो वह उससे मिलने गया।<sup>37</sup> बालाक ने कहा, “क्या मैंने तुम्हें तुरंत बुलाने के लिए नहीं भेजा था? तुम क्यों नहीं आए? क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं तुम्हें पुरस्कृत कर सकता हूँ?”<sup>38</sup> बिलाम ने उत्तर दिया, “मैं आया हूँ, परंतु मैं केवल वही शब्द बोल सकता हूँ जो परमेश्वर मेरे मुँह में डालता है।”<sup>39</sup> फिर बिलाम बालाक के साथ कियाति हूँजीत गया।<sup>40</sup> बालाक ने मवैशियों और भेड़ों की बलि दी, और बिलाम और अधिकारियों को भाग दिए।<sup>41</sup>

## गिनती

अगली सुबह बालाक बिलाम को बामोत बाल ले गया, जहाँ से वह सोगों का एक भाग देख सकता था।

**23** बिलाम ने बालाक से कहा, “यहाँ मेरे लिए सात वेदियाँ बनवाओ, और सात बैल और सात मेंढे तैयार करो।”<sup>2</sup> बालाक ने जैसा बिलाम ने कहा था वैसा ही किया, और उहोंने प्रत्येक वेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।<sup>3</sup> फिर बिलाम ने बालाक से कहा, “तुम यहाँ अपनी भेट के पास ठहरो, जबकि मैं अलग जाता हूँ। शायद यहोवा मुझसे मिलेन आए, और मैं तुहाँ वह बताऊँगा जो वह प्रकट करेगा।” सो वह एक उजाड़ ऊँचाई पर गया।<sup>4</sup> परमेश्वर बिलाम से मिला, और बिलाम ने कहा, “मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं और प्रत्येक पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया है।”<sup>5</sup> यहोवा ने बिलाम के मुँह में एक संदेश रखा और कहा, “बालाक के पास लौट जाओ और उसे यह वचन दो।”<sup>6</sup> सो वह बालाक के पास लौटा, जो अपनी भेट के पास मोआबी अधिकारियों के साथ खड़ा था।<sup>7</sup> तब बिलाम ने अपना संदेश दिया:

“बालाक मुझे अराम से लाया, मोआब के राजा ने पूर्वी पहाड़ों से। ‘आओ’ उसने कहा, ‘याकूब को मेरे लिए शाप दो; आओ, इसाएल को धिक्कारो।’<sup>8</sup> परन्तु मैं उहों कैसे शप दूँ जिन्हें परमेश्वर ने शाप नहीं दिया? मैं उहों कैसे धिक्कारूँ जिन्हें यहोवा ने धिक्कारा नहीं?<sup>9</sup> चट्टानी ऊँचाइयों से मैं उहों देखता हूँ पहाड़ियों से मैं उहों देखता हूँ— एक लोग जो अलग रहते हैं, जो अपने को अन्य जातियों में नहीं गिनते।<sup>10</sup> कौन याकूब की धूल को गिन सकता है या इसाएल का चौथाई भाग भी गिन सकता है? मुझे धर्मियों की मृत्यु मरने दो, और मेरा अंत उनके जैसा हो।”

11 बालाक ने बिलाम से कहा, “तुमने मेरे साथ क्या किया है? मैंने तुहाँ अपने शत्रुओं को शाप देने के लिए बुलाया था, परन्तु तुमने उहों आशीर्वाद ही दिया है!”<sup>12</sup> बिलाम ने उत्तर दिया, “क्या मुझे वही नहीं बोलना चाहिए जो यहोवा मेरे मुँह में रखता है?”<sup>13</sup> फिर बालाक ने कहा, “मेरे साथ एक और स्थान पर चलो जहाँ से तुम उहों देख सको; तुम उहों के बीच अधिक रूप से देखोगे—सभी को नहीं—और वहाँ से तुम उहों शाप दे सकते हो।”<sup>14</sup> सो वह उसे पिसाग की चोटी पर जोफिम के मैदान में ले गया। वहाँ उसने सात वेदियाँ बनवाई और प्रत्येक पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।<sup>15</sup> बिलाम ने कहा, “यहाँ अपनी भेट के पास ठहरो जबकि मैं वहाँ यहोवा से मिलूँ।”<sup>16</sup> यहोवा बिलाम से मिला और उसके मुँह में एक संदेश रखा और कहा, “बालाक के पास लौट जाओ

और उसे यह वचन दो।”<sup>17</sup> सो वह उसके पास गया और उसे अपनी भेट के पास मोआबी अधिकारियों के साथ खड़ा पाया। बालाक ने पूछा, “यहोवा ने क्या कहा?”<sup>18</sup> तब बिलाम ने अपना संदेश दिया:

<sup>19</sup> “उठो बालाक, और सुनो! मेरी बात सुनो, सिप्पोर के पुत्र।<sup>20</sup> परमेश्वर मनुष्य नहीं है, कि वह इस्तु बोले, न ही वह मानव है, कि वह अपना मन बदले। क्या वह बोलता है और कार्य नहीं करता? क्या वह वादा करता है और पूरा नहीं करता?<sup>21</sup> मुझे आशीर्वाद देने की आज्ञा मिली है, उसने आशीर्वाद दिया है, और मैं उसे बदल नहीं सकता।<sup>22</sup> याकूब मेरे कोई दुर्भाग्य नहीं देखा जाता, इसाएल में कोई दुख नहीं देखा जाता। यहोवा उनका परमेश्वर उनके साथ है, उनके बीच एक राजा का जयघोष है।<sup>23</sup> परमेश्वर उहों मिस्र से बाहर लाया, उनके पास जंगली बैल की शक्ति है।<sup>24</sup> याकूब के विरुद्ध कोई बुरा शकुन नहीं है। अब याकूब और इसाएल के बारे में कहा जाएगा, ‘देखो! परमेश्वर ने यह किया है।’<sup>25</sup> लोग शेरस्ती की तरह उठते हैं, वे शेर की तरह स्वयं को जगाते हैं। वे तब तक आराम नहीं करते जब तक वे अपने शिकार को खा नहीं लेते और अपने शिकारों का खून नहीं पी लेते।”

<sup>26</sup> फिर बालाक ने बिलाम से कहा, “न तो उहों शाप दो और न ही उहों आशीर्वाद दो।”<sup>27</sup> परन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, “क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा कहता है?”<sup>28</sup> फिर बालाक ने कहा, “आओ, मैं तुहाँ एक और स्थान पर ले जाऊँ। शायद यह परमेश्वर को प्रसन्न करे कि वहाँ से तुम उहों शाप दे सको।”<sup>29</sup> और बालाक ने बिलाम को पोर की चोटी पर ले गया, जो उजाड़ भूमि की ओर देखती थी।<sup>30</sup> बिलाम ने फिर से सात वेदियाँ बनवाई और प्रत्येक पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।

**24** अब जब बालाम ने देखा कि इसाएल को आशीर्वाद देना यहोवा को अच्छा लगा, तो उसने पहले की तरह शकुन नहीं देखा, बल्कि अपना मुख जंगल की ओर किया।<sup>1</sup> जब बालाम ने देखा कि इसाएल गो-त्र-गोत्र करके डेरा डाले हुए हैं, तो परमेश्वर की आत्मा उस पर आई।<sup>2</sup> और उसने यह भविष्यवाणी की:

“बोर के पुत्र बालाम की भविष्यवाणी, उस व्यक्ति की भविष्यवाणी जिसकी अँखें स्पृष्ट रूप से देखती हैं,<sup>4</sup> उस व्यक्ति की भविष्यवाणी जो परमेश्वर के वचन सुनता है, जो सर्वशक्तिमान से दर्शन देखता है, जो

## गिनती

भूमि पर गिरता है, और जिसकी अँखें खुली हैं<sup>5</sup> हे  
याकूब, तेरे तंबू कितने सुन्दर हैं हे इस्माएल, तेरे निवास  
कितने सुन्दर हैं<sup>6</sup> जैसे घाटियाँ वे फैलती हैं, जैसे नदी  
के किनारे बगीचे जैसे यहोवा द्वारा लगाए गए एलो,  
जैसे जल के किनारे देवदार।<sup>7</sup> उनके बालियों से जल  
बहेगा, उनकी संतानों को प्रचुर जल मिलेगा। उनका  
राजा अगाग से बड़ा होगा, उनका राज्य उन्नत होगा।<sup>8</sup>  
परमेश्वर उन्हें मिस्स से बाहर लाया, उनके पास जंगली  
बैल की शक्ति है। वे शत्रु राष्ट्रों को निगल जाते हैं,  
उनकी हड्डियों को टुकड़े टुकड़े कर देते हैं और तीरों  
से उन्हें भेदते हैं।<sup>9</sup> वे सिंह की तरह झुकते और लेते हैं,  
जैसे सिंहनी—कौन उन्हें उठान का साहस करेगा?  
धन्य हैं वे जो तुझे आशीर्वद देते हैं, और शापित हैं वे  
जो तुझे शाप देते हैं।<sup>10</sup>

<sup>10</sup> तब बालाक का क्रोध बालाम पर भड़क उठा। उसने  
अपने हाथों को ताली बजाई और कहा, “मैंने तुझे अपने  
शत्रुओं को शाप देने के लिए बुलाया था, पर तूने उन्हें  
तीन बार आशीर्वद दिया है।<sup>11</sup> अब उन्नत चले जाओ।  
और घर लौट जाओ! मैंने तुम्हें अच्छा इनाम देने का वादा  
किया था, परंतु यहोवा ने तुम्हें इनाम से वंचित रखा है।”<sup>12</sup>  
<sup>11</sup> बालाम ने उत्तर दिया, “क्या मैंने उन दूतों से नहीं  
कहा था जिन्हें तुमने मेरे पास भेजा था:<sup>13</sup> यदि बालाक  
मुझे अपने महल का सारा चाँदी और सोना भी दे, तो भी  
मैं यहोवा की आज्ञा से आगे नहीं बढ़ सकता।<sup>14</sup> अब मैं  
अपनी प्रजा के पास लौट रहा हूँ, परंतु मैं तुम्हें बताता हूँ  
कि यह प्रजा तुम्हारी प्रजा के साथ आने वाले दिनों में  
क्या करेगी।”<sup>15</sup> तब बालाम ने अपनी चौथी भविष्यवाणी  
की:

“बोर के पुत्र बालाम की भविष्यवाणी, उस व्यक्ति की  
भविष्यवाणी जिसकी अँखें स्पष्ट रूप से देखती हैं,<sup>16</sup>  
उस व्यक्ति की भविष्यवाणी जो परमेश्वर के चरन  
सुनता है, जो परमप्रधान से ज्ञान प्राप्त करता है, जो  
सर्वशक्तिमान से दर्शन देखता है, जो भूमि पर निरता  
है, और जिसकी अँखें खुली हैं<sup>17</sup> मैं उसे देखता हूँ  
परंतु अभी नहीं मैं उसे देखता हूँ परंतु निकट नहीं।  
याकूब से एक तारा निकलेगा, इस्माएल से एक राजदंड  
उठेगा। वह मोआब की ललाट को कुचल देगा, शेत के  
सभी लोगों की खोपड़ी को तोड़ देगा।<sup>18</sup> एदोम पर  
विजय प्राप्त होगी, सेइर उसका शत्रु पर विजय प्राप्त  
होगी, परंतु इस्माएल शक्तिशाली होगा।<sup>19</sup> याकूब से  
एक शासक निकलेगा वह सुनिश्चित करेगा कि नगर के  
कोई भी जीवित न बचे।”<sup>20</sup>

<sup>20</sup> तब बालाम ने अमालेक को देखा और अपना संदेश  
कहा:

“अमालेक राष्ट्रों में प्रथम था, परंतु उनका अंत पूर्ण  
विनाश होगा।”

<sup>21</sup> तब उसने केनीयों को देखा और अपना संदेश कहा:

“तेरा निवास स्थान सुरक्षित है तेरा धोसला चट्ठान में  
बसा है<sup>22</sup> किर भी तुम केनीयों का नाश होगा जब  
अश्शूर तुम्हें बंदी बना लेगा।”

<sup>23</sup> फिर उसने फिर से कहा:

“हाया जब परमेश्वर ऐसा करता है तो कौन जीवित रह  
सकता है?<sup>24</sup> जहाज कुप्रस के तटों से आएंगे, वे  
अश्शूर और एबर को वश में कर लेंगे, परंतु वे भी  
विनाश को प्राप्त होंगे।”

<sup>25</sup> तब बालाम उठकर घर लौट गया, और बालाक  
अपनी राह चला गया।

**25** जब इस्माएल शित्तिम क्षेत्र में ठहरा हुआ था, तब  
लोगों ने मोआब की बेटियों के साथ यौन अनैतिकता में  
संलग्न होना शुरू कर दिया।<sup>2</sup> इन महिलाओं ने  
इसापिलियों को अपने देवताओं के लिए बलिदान भोज में  
शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, और लोगों ने उन  
देवताओं के सामने झुककर भोजन किया।<sup>3</sup> इस प्रकार,  
इस्माएल ने पीओर के बाल की पूजा के साथ खुद को  
जोड़ लिया, और यहोवा का क्रोध उनके खिलाफ भड़क  
उठा।<sup>4</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “लोगों के सभी  
नेताओं को ले लो और उन्हें दिन के उजाले में यहोवा के  
सामने फांसी दो, ताकि मेरा भयंकर क्रोध इस्माएल से दूर  
हो सके।”<sup>5</sup> इसलिए मूसा ने इस्माएल के न्यायियों को  
निर्देश दिया, “तुम में से प्रत्येक को अपने लोगों में से उन  
लोगों को मार डालना चाहिए जिन्होंने पीओर के बाल की  
पूजा में भाग लिया है।”<sup>6</sup> तब देखो, एक इसाएली व्यक्ति  
एक मिद्यानित महिला को अपने परिवार में मूसा और  
पूरे सभा के सामने ले आया, जबकि वे मिलापवाले तंबू  
के प्रवेश द्वार पर रो रहे थे।<sup>7</sup> जब फिनहास, जो  
एलोआज्जर का पुत्र और याजक हारून का पोता था, ने  
यह देखा, तो वह सभा से उठकर भाला हाथ में लेकर,<sup>8</sup>  
उनके पीछे अंदर के कक्ष में गया। उसने इस्माएली  
व्यक्ति और महिला दोनों को पेट के आर-पार भेद  
दिया। इस प्रकार इस्माएल पर आई महामारी रुक गई।<sup>9</sup>  
फिर भी, चौबीस हजार लोग पहले ही महामारी में मर

## गिनती

चुके थे।<sup>10</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>11</sup> “एले-आज़र का पुत्र फिनहास, याजक हारून का पोता, ने इसाएलियों से मेरा क्रोध दूर कर दिया है, क्योंकि उसने मेरे बीच मेरी जलन के साथ उत्साह दिखाया, ताकि मैं अपने क्रोध में उह्वें नष्ट न कर दूँ।<sup>12</sup> इसलिए, उससे कहो: मैं उसे अपनी शांति की वाचा देता हूँ।<sup>13</sup> यह उसके लिए और उसके बाद उसके वंशजों के लिए एक अनन्त याजकत्व की वाचा होगी, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर के लिए उत्साह दिखाया और इसाएलियों के लिए प्रायश्चित्त किया।<sup>14</sup> मारे गए इसाएली व्यक्ति का नाम जिम्मी था, जो सालू का पुत्र और एक शिमोनित परिवार का नेता था।<sup>15</sup> मारी गई मिद्यानित महिला का नाम कोज़बी था, जो ज़ूरी की बेटी और एक मिद्यानित कवीले के प्रमुख की बेटी थी।<sup>16</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,<sup>17</sup> “मिद्यानियों को शत्रु मानो और उह्वें मार डालो,<sup>18</sup> क्योंकि उह्वोंने पीओर के मामले में और उनकी बेटी कोज़बी के मामले में तुम्हारे साथ छल किया है, जो पीओर के कारण आई महामारी के दौरान मारी गई थी।”

**26** फिर ऐसा हुआ कि महामारी के बाद, यहोवा ने मूसा और याजक हारून के पुत्र एलीआज़र से कहा,<sup>2</sup> “इसाएल के पुत्रों की सारी मण्डली की बीस वर्ष और उससे ऊपर की आयु के लोगों की उनके पितरों के घरानों के अनुसार गिनती करो, जो इसाएल में युद्ध करने योग्य हैं।”<sup>3</sup> तब मूसा और याजक एलीआज़र ने यरीहो के पास यरदन के मैदानी भाग में मोआब के मैदान में उनसे कहा, <sup>4</sup> “बीस वर्ष और उससे ऊपर की आयु के लोगों की गिनती करो, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी है।” अब इसाएल के पुत्र जो मिस्र देश से निकले थे, वे इस प्रकार हैं: ५ रूबेन, इसाएल का पहिलौठः रूबेन के पुत्र हनोक, जिनसे हनोकियों का कुल हुआ; पलू, जिनसे पलूड़ियों का कुल हुआ; कार्मी, जिनसे कार्मियों का कुल हुआ।<sup>6</sup> ये रूबेनियों के कुल हैं, और उनकी गिनती 43,730 थी।

<sup>8</sup> पलू का पुत्रः एलीआब। <sup>9</sup> एलीआब के पुत्रः नेमूएल, और दातान और अबीराम। ये वही दातान और अबीराम हैं जिन्हें मण्डली ने बुलाया था, जिन्होंने मूसा और हारून के विरुद्ध कोरह के समूह में लड़ाई की, जब उह्वोंने यहोवा के विरुद्ध लड़ाई की।<sup>10</sup> और पृथ्वी ने अपना मुंह खोला और उह्वें कोरह के साथ निगल लिया, जब वह समूह मर गया, जब आग ने 250 पुरुषों को भस्म कर दिया, ताकि वे चेतावनी बन जाएँ।<sup>11</sup> परन्तु कोरह के पुत्र पूरी तरह से नष्ट नहीं हुए।

<sup>12</sup> शिमोन के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः नेमूएल, जिनसे नेमूएलियों का कुल हुआ; यामिन, जिनसे यामिनियों का कुल हुआ;<sup>13</sup> ज़ेरह, जिनसे ज़ेरहियों का कुल हुआ; शाऊल, जिनसे शाऊलियों का कुल हुआ।<sup>14</sup> ये शिमोनियों के कुल हैं, 22,200।<sup>15</sup> गाद के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः ज़ेफोन, जिनसे ज़ेफोनियों का कुल हुआ; हग्मी, जिनसे हग्मियों का कुल हुआ; शूनी, जिनसे शूनियों का कुल हुआ;<sup>16</sup> ओज़नी, जिनसे ओज़नियों का कुल हुआ; एरी, जिनसे एरियों का कुल हुआ;<sup>17</sup> अरद, जिनसे अरदियों का कुल हुआ; अरेली, जिनसे अरेलियों का कुल हुआ।<sup>18</sup> ये गाद के पुत्रों के कुल हैं, और उनकी गिनती 40,500 थी।<sup>19</sup> यहूदा के पुत्र एर और ओनान थे, परन्तु एर और ओनान कनान देश में मर गए।<sup>20</sup> यहूदा के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः शेला, जिनसे शेलानियों का कुल हुआ; पेरेज़, जिनसे पेरेज़ियों का कुल हुआ; ज़ेरह, जिनसे ज़ेरहियों का कुल हुआ।<sup>21</sup> पेरेज़ के पुत्र थे: हेत्रोन, जिनसे हेत्रोनियों का कुल हुआ; हामूल, जिनसे हामूलियों का कुल हुआ।

<sup>22</sup> ये यहूदा के कुल हैं, और उनकी गिनती 76,500 थी।<sup>23</sup> इस्साकार के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः तोला, जिनसे तोलाइयों का कुल हुआ; पूवह, जिनसे पूवनियों का कुल हुआ;<sup>24</sup> याशब, जिनसे याशूबियों का कुल हुआ; शिमरोन, जिनसे शिमरोनियों का कुल हुआ।<sup>25</sup> ये इस्साकार के कुल हैं, और उनकी गिनती 64,300 थी।<sup>26</sup> ज़बुलून के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः सेरेद, जिनसे सेरेदियों का कुल हुआ; एलोन, जिनसे एलोनियों का कुल हुआ; याहलील, जिनसे याहलीलियों का कुल हुआ।<sup>27</sup> ये ज़बुलूलियों के कुल हैं, और उनकी गिनती 60,500 थी।<sup>28</sup> यूसुफ के पुत्र उनके कुलों के अनुसारः मनश्शे और एप्रैम।

मनश्शे के पुत्रः माकीर, जिनसे माकीरियों का कुल हुआ; और माकीर ने गिलाद को जन्म दिया: गिलाद, जिनसे गिलादियों का कुल हुआ।

<sup>30</sup> ये गिलाद के पुत्र हैं: यीएज़र, जिनसे यीएज़रियों का कुल हुआ; हेलेक, जिनसे हेलेकियों का कुल हुआ।<sup>31</sup> और अस्सीएल, जिनसे अस्सीएलियों का कुल हुआ; और शेकेम, जिनसे शेकेमियों का कुल हुआ;<sup>32</sup> और शेमीदा, जिनसे शेमीदाइयों का कुल हुआ; और हेफेर, जिनसे हेफेरियों का कुल हुआ।<sup>33</sup> अब हेफेर का पुत्र ज़ेलोफहद था, जिसके कोई पुत्र नहीं थे, परन्तु केवल पुत्रियाँ थीं; और ज़ेलोफहद की पुत्रियों के नाम थे: महला, नोहा, होगला, मिल्का, और तिरजा।

## गिनती

<sup>34</sup> ये मनश्शे के कुल हैं, और उनकी गिनती 52,700 थी। <sup>35</sup> ये एप्रैम के पुत्र उनके कुलों के अनुसार हैं: श्रथेला, जिनसे श्रथेलाहियों का कुल हुआ; बैकर, जिनसे बैकरियों का कुल हुआ; ताहन, जिनसे ताहनियों का कुल हुआ। <sup>36</sup> और ये श्रथेला के पुत्र हैं: एरान, जिनसे एरानियों का कुल हुआ। <sup>37</sup> ये एप्रैम के पुत्रों के कुल हैं, और उनकी गिनती 32,500 थी। ये यूसुफ के पुत्र उनके कुलों के अनुसार हैं। <sup>38</sup> बिन्यामीन के पुत्र उनके कुलों के अनुसार: बेला, जिनसे बेलाइयों का कुल हुआ; अधिराम, जिनसे अशबेलियों का कुल हुआ; <sup>39</sup> शेफूपाम, जिनसे शूपामियों का कुल हुआ; हूपाम, जिनसे हूपामियों का कुल हुआ। <sup>40</sup> बेला के पुत्र थे: आर्द और नामा: आर्द, जिनसे आर्दियों का कुल हुआ; नामा, जिनसे नामियों का कुल हुआ।

<sup>41</sup> ये बिन्यामीन के पुत्र उनके कुलों के अनुसार हैं, और उनकी गिनती 45,600 थी। <sup>42</sup> ये दान के पुत्र उनके कुलों के अनुसार हैं: शूहाम, जिनसे शूहामियों का कुल हुआ। ये दान के कुल उनके कुलों के अनुसार हैं। <sup>43</sup> शूहामियों के सभी कुल, और उनकी गिनती 64,400 थी। <sup>44</sup> आशेर के पुत्र उनके कुलों के अनुसार: ईम्मा, जिनसे ईम्मियों का कुल हुआ; ईश्वी, जिनसे ईश्वियों का कुल हुआ; बेरियाह, जिनसे बेरियाइयों का कुल हुआ। <sup>45</sup> बेरियाह के पुत्र हेबर, जिनसे हेबरियों का कुल हुआ; मलकीएल, जिनसे मलकीएलियों का कुल हुआ। <sup>46</sup> आशेर की पुत्री का नाम सेरह था।

<sup>47</sup> ये आशेर के पुत्रों के कुल हैं, और उनकी गिनती 53,400 थी। <sup>48</sup> नप्ताती के पुत्र उनके कुलों के अनुसार: याहज़ील, जिनसे याहज़ीलियों का कुल हुआ; गूरी, जिनसे गूरियों का कुल हुआ; <sup>49</sup> येज़र, जिनसे येज़रियों का कुल हुआ; शिल्लेम, जिनसे शिल्लेमियों का कुल हुआ। <sup>50</sup> ये नप्ताती के कुल उनके कुलों के अनुसार हैं, और उनकी गिनती 45,400 थी। <sup>51</sup> ये इसाएल के पुत्रों की गिनती है: 601,730।

<sup>52</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>53</sup> “हनके लिए भूमि को नामों की संख्या के अनुसार विरासत के रूप में विभाजित किया जाएगा। <sup>54</sup> बड़ी मण्डली की उनकी विरासत बढ़ाओ, और छोटी मण्डली की उनकी विरासत घटाओ; प्रयेक को उसकी गिनती के अनुसार विरासत दी जाएगी। <sup>55</sup> परन्तु भूमि को विट्ठी डालकर विभाजित किया जाएगा; वे अपने पितरों के गोत्रों के नाम के अनुसार अपनी विरासत प्राप्त करेंगे। <sup>56</sup> उनकी विरासत

बड़ी और छोटी मण्डली के बीच विट्ठी डालकर विभाजित की जाएगी।

<sup>57</sup> अब ये लेवी के कुल हैं, जिनकी गिनती की गई: गेर्शोन, जिनसे गेर्शोनियों का कुल हुआ; कहात, जिनसे कहातियों का कुल हुआ; मेरारी, जिनसे मेरारियों का कुल हुआ। <sup>58</sup> ये लेवी के कुल हैं: लिबनियों का कुल, हेब्रोनियों का कुल, महलियों का कुल, मूशियों का कुल, कोरहियों का कुल।

कहात ने अप्राम को जन्म दिया। <sup>59</sup> अप्राम की पत्नी का नाम योकेबेद था, जो मिस में लेवी की पुत्री थी; और अप्राम से उसने हारून और मूसा और उनकी बहन मिरियम को जन्म दिया। <sup>60</sup> हारून से नादाब और अबीहू, एलीआज़र और इथामार उत्पन्न हुए। <sup>61</sup> परन्तु नादाब और अबीहू भर गए जब उन्होंने यहोवा के सामने अजीब आग चढ़ाई। <sup>62</sup> उनकी गिनती 23,000 थी, एक महीने के और उससे ऊपर के सभी पुरुष, क्योंकि उन्हें इसाएल के पुत्रों में नहीं गिना गया था क्योंकि उन्हें इसाएल के पुत्रों में कोई विरासत नहीं दी गई थी। <sup>63</sup> ये वे हैं जिनकी गिनती मूसा और याजक एलीआज़र ने की, जिन्होंने मोआब के मैदान में यरीहो के पास यरदन में इसाएल के पुत्रों की गिनती की। <sup>64</sup> परन्तु इनमें से कोई भी व्यक्ति नहीं था जिनकी गिनती मूसा और याजक हारून ने की थी, जिन्होंने सिनै के जंगल में इसाएल के पुत्रों की गिनती की थी। <sup>65</sup> क्योंकि यहोवा ने उनके विषय में कहा था, “वे जंगल में अवश्य मरेंगे।” और उनमें से कोई भी नहीं बचा, सिवाय यपुत्रेह के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू के।

**27** यूसूफ के पुत्र मनश्शे के वंशों में से हेफेर के पुत्र, गिलाद के पुत्र, माकीर के पुत्र, मनश्शे के पुत्र, सेलोफहद की बेटियाँ आगे आईं। उनके नाम ये महला, नोहा, होगला, मिल्का, और तिर्जा। <sup>2</sup> वे मूसा, याजक एल्याज़र, नेताओं और पूरी मण्डली के सामने मिलाप के तम्बू के प्रवेश द्वार पर खड़ी हुईं और कहा: <sup>3</sup> “हमारे पिता जंगल में मरे। वह उन लोगों में से नहीं थे जिन्होंने कोरह के साथ मिलकर यहोवा के विरुद्ध बागवत की थी, बल्कि अपने पाप के कारण मरे और उनके कोई पुत्र नहीं थे। <sup>4</sup> हमारे पिता का नाम उसके वंश से केवल इसलिए क्यों हटा दिया जाए क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं थे? हमें हमारे पिता के रिश्तेदारों के बीच संपत्ति दी जाए।” <sup>5</sup> तब मूसा ने उनका मामला यहोवा के सामने रखा। <sup>6</sup> यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>7</sup> “सेलोफहद की बेटियों का दावा न्यायसंगत है। तुम्हें निश्चित रूप से उन्हें उनके पिता के रिश्तेदारों के बीच कानूनी विरासत देनी चाहिए।

## गिनती

और उनके पिता की संपत्ति उन्हें स्थानांतरित करनी चाहिए।<sup>5</sup> इसाएलियों से कहो: यदि कोई व्यक्ति बिना पुरु के मर जाता है, तो उसकी विरासत उसकी बेटी को दी जाए।<sup>6</sup> यदि उसकी कोई बेटी नहीं है, तो उसकी विरासत उसके भाइयों को दी जाए।<sup>7</sup> यदि उसके कोई भाई नहीं हैं, तो उसे उसके पिता के भाइयों को दी जाए।<sup>8</sup> यदि उसके पिता के कोई भाई नहीं हैं, तो उसे उसके वंश में उसके निकटतम रिश्तेदार को दी जाए। यह इसाएलियों के लिए एक कानूनी आवश्यकता होनी चाहिए, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया।<sup>9</sup> इस प्रिय यहोवा ने मूसा से कहा, “इस अबारीम पर्वत पर चढ़ो और उस भूमि को देखो जो मैंने इसाएलियों को दी है।<sup>10</sup> जब तुम इसे देख लोगे, तो तुम भी अपने लोगों के पास इकट्ठे हो जाओगे, जैसे तुम्हारे भाई हारून इकट्ठे हो गए थे।<sup>11</sup> क्योंकि जब लोग सीन के जंगल में झगड़ रहे थे, तुमने मेरे निर्देशों के विरुद्ध विद्रोह किया और मेरे पवित्रता को उनके सामने बनाए रखने में असफल रहे।<sup>12</sup> तब मूसा ने यहोवा से कहा, “अभी मानवता की आत्माओं के परमेश्वर यहोवा, समुदाय पर किसी को नियुक्त करें,<sup>13</sup> जो उन्हें बाहर ले जाए और अंदर लाए, ताकि यहोवा के लोग बिना चरवाहे के भेड़ों की तरह न हो।”<sup>14</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “नून के पुत्र यहोशु को लो, जिसमें आत्मा है, और उस पर अपना हाथ रखो।<sup>15</sup> उसे एल्याजार याजक और पूरी मण्डली के सामने खड़ा करो। उन्हें उनके सामने नियुक्त करो।<sup>16</sup> उसे अपनी कुछ अधिकार दो, ताकि इसाएल की पूरी मण्डली उसकी आज्ञा का पालन करे।<sup>17</sup> उसे एल्याजार के सामने खड़ा होना है, जो यहोवा का सामने उरीम के माध्यम से उसके लिए निर्णय प्राप्त करेगा। उसकी आज्ञा पर वे बाहर जाएंगे और उसकी आज्ञा पर वे लौटेंगे—वह और उसके साथ सभी इसाएली।”<sup>18</sup> तब मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार किया। उसने यहोशु को लिया, उसे एल्याजार और सभी लोगों के सामने खड़ा किया,<sup>19</sup> उस पर हाथ रखे और उसे नियुक्त किया, जैसा कि यहोवा ने मूसा के माध्यम से कहा था।

**28** प्रभु ने मूसा से कहा:<sup>20</sup> “इसाएलियों को यह आदेश दो और उनसे कहो: मेरे लिए नियुक्त समयों पर भोजन बलिदान प्रस्तुत करने में सावधान रहो, जो मेरे लिए एक सुखद सुर्योद है।”<sup>21</sup> उनसे कहो: “यह वह भोजन बलिदान है जिसे तुम्हें प्रभु के लिए प्रस्तुत करना चाहिए; दो निर्देश एक वर्ष के नर मेमने प्रत्येक दिन, एक नियमित होमबलि के रूप में।”<sup>22</sup> एक मेमना सुबह और दूसरा संध्या के समय अर्पित करो।<sup>23</sup> इसके साथ एक एपा का दसवां भाग महीन आटा और एक हिन का चौथाई भाग तेल मिलाकर अर्पित करो।<sup>24</sup> यह दैनिक

होमबलि है जो सीने पर्वत पर प्रभु के लिए एक सुखद सुर्योद के रूप में स्थापित किया गया था।<sup>25</sup> इसके साथ पेय बलिदान एक हिन का चौथाई भाग किञ्चित पेय के रूप में प्रत्येक मेमने के लिए है। इसे पवित्र स्थान पर प्रभु के लिए उठेलो।<sup>26</sup> दूसरा मेमना संध्या के समय अर्पित करो, उसी अन्न बलिदान और पेय बलिदान के साथ जैसा कि सुबह होता है—प्रभु के लिए एक सुखद सुर्योद।<sup>27</sup> विश्राम के दिन, दो निर्देश एक वर्ष के नर मेमने प्रस्तुत करो, दो एपा का दसवा भाग महीन आटा तेल के साथ मिलाकर अन्न बलिदान के रूप में, और इसका पेय बलिदान।<sup>28</sup> यह विश्राम का होमबलि है जो नियमित होमबलि और इसके पेय बलिदान के अलावा है।<sup>29</sup> प्रत्येक महीने के पहले दिन, प्रभु के लिए दो युवा बैल, एक मेढ़ा, और सात निर्देश एक वर्ष के नर मेमने होमबलि के रूप में प्रस्तुत करो।<sup>30</sup> प्रत्येक बैल के साथ, तीन एपा का दसवां भाग महीन आटा तेल के साथ मिलाकर अर्पित करो; मेढ़े के साथ, दो-दसवां भाग;<sup>31</sup> और प्रत्येक मेमने के साथ, एक-दसवां भाग, भोजन बलिदान के रूप में, प्रभु के लिए एक सुखद सुर्योद।<sup>32</sup> पेय बलिदान शामिल करो: प्रत्येक बैल के साथ आधा हिन शराब, मेढ़े के साथ एक तिहाई, और प्रत्येक मेमने के साथ एक चौथाई। यह आपकी पौधियों के दौरान मासिक होमबलि है।<sup>33</sup> इसके अलावा एक नर बकरी को पाप बलिदान के रूप में प्रभु के लिए प्रस्तुत करो, नियमित होमबलि और इसके पेय बलिदान के अलावा।<sup>34</sup> पहले महीने के चौदहवें दिन, प्रभु का फस्ह मनाया जाएगा।<sup>35</sup> उस महीने के पंद्रहवें दिन, एक पर्व आरंभ होता है। सात दिनों तक, तुम्हें बिना खमीर की रोटी खानी चाहिए।<sup>36</sup> पहले दिन, एक पवित्र सभा करो और कोई साधारण काम न करो।<sup>37</sup> प्रभु के लिए होमबलि के रूप में दो युवा बैल, एक मेढ़ा, और सात निर्देश एक वर्ष के नर मेमने प्रस्तुत करो।<sup>38</sup> उन्हें महीन आटे के अन्न बलिदान के साथ तेल मिलाकर अर्पित करो: प्रत्येक बैल के साथ तीन एपा का दसवां भाग, मेढ़े के साथ दो-दसवां भाग,<sup>39</sup> और प्रत्येक सात मेमनों के साथ एक-दसवां भाग।<sup>40</sup> तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त करने के लिए एक नर बकरी की पाप बलिदान के रूप में शामिल करो।<sup>41</sup> इनको सुबह के होमबलि के अलावा अर्पित करो।<sup>42</sup> सात दिनों तक प्रतिदिन यह भोजन बलिदान, प्रभु के लिए एक सुखद सुर्योद के रूप में अर्पित करो। इन्हें नियमित होमबलि और इसके पेय बलिदान के साथ अर्पित किया जाना चाहिए।<sup>43</sup> सातवें दिन, एक पवित्र सभा करो और कोई साधारण काम न करो।<sup>44</sup> पहली फसल के दिन, जब तुम सप्ताहों के पर्व के दौरान एक नया अन्न बलिदान प्रस्तुत करते हो, एक पवित्र सभा करो और कोई साधारण काम न करो।<sup>45</sup> होमबलि के रूप में

## गिनती

दो युवा बैल, एक मेढ़ा, और सात निर्दोष एक वर्ष के नर मेमने प्रस्तुत करो।<sup>28</sup> उन्हें महीन आटे के अन्न बलिदान के साथ तेल मिलाकर अपर्ति करो: प्रत्येक बैल के साथ तीन एपा का दसवां भाग, मेढ़े के साथ दो-दसवां भाग,<sup>29</sup> और प्रत्येक सात मेमनों के साथ एक-दसवां भाग।<sup>30</sup> तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त करने के लिए एक नर बकरी को भी प्रस्तुत करो।<sup>31</sup> ये बलिदान नियमित दैनिक होमबलि और इसके पेय बलिदान के अलावा हैं। सुनिश्चित करो कि वे बिना दोष के हों।

**29** "अब सातवें महीने के पहले दिन, तुम्हें एक पवित्र सभा करनी होगी; तुम कोई श्रमसाध्य काम नहीं करोगे। यह तुम्हारे लिए तुरहियों के फूँकने का दिन होगा।<sup>2</sup> तुम प्रभु के लिए एक सुखद सुगंध के रूप में एक होमबलि छढ़ाओगे: एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष के सात निर्दोष नर मेम्पे;<sup>3</sup> उनके अनाज की भेट भी, तेल के साथ मिली हुई उत्तम आटा: बैल के लिए तीन-दसवां एपा, मेढ़ा के लिए दो-दसवां,<sup>4</sup> और प्रत्येक सात मेम्पों के लिए एक-दसवां;<sup>5</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त करने के लिए;<sup>6</sup> नए चौंद की होमबलि के अलावा, और उसकी अनाज की भेट,<sup>7</sup> और निरंतर होमबलि, और उसकी अनाज की भेट, और उनके पेय भेट, उनके नियम के अनुसार, एक सुखद सुगंध के रूप में, आग द्वारा प्रभु के लिए एक भेट।<sup>8</sup> फिर इस सातवें महीने के दसवें दिन तुम्हें एक पवित्र सभा करनी होगी, और तुम्हें अपने आप को नग्न करना होगा; तुम कोई काम नहीं करोगे।<sup>9</sup> तुम प्रभु के लिए एक सुखद सुगंध के रूप में एक होमबलि प्रस्तुत करोगे: एक बैल, एक मेढ़ा, और एक वर्ष के सात निर्दोष नर मेम्पे;<sup>10</sup> और उनकी अनाज की भेट, तेल के साथ मिली हुई उत्तम आटा: बैल के लिए तीन-दसवां एपा, एक मेढ़ा के लिए दो-दसवां,<sup>11</sup> प्रत्येक सात मेम्पों के लिए एक-दसवां;<sup>12</sup> एक नर बकरी पापबलि के रूप में, प्रायश्चित्त की पापबलि के अलावा, और निरंतर होमबलि, और उसकी अनाज की भेट, और उनके पेय भेट।<sup>13</sup> फिर सातवें महीने के पंद्रहवें दिन तुम्हें एक पवित्र सभा करनी होगी; तुम कोई श्रमसाध्य काम नहीं करोगे, और तुम सात दिनों तक प्रभु के लिए एक पर्व मनाओगे।<sup>14</sup> तुम एक होमबलि प्रस्तुत करोगे, आग द्वारा एक भेट के रूप में प्रभु के लिए एक सुखद सुगंध: तेरह बैल, दो मेढ़े, और एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>15</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट और उनकी अनाज की भेट, तेल के साथ मिली हुई उत्तम आटा:<sup>16</sup> एक बैल, एक मेढ़ा, एक वर्ष के सात निर्दोष नर मेम्पे;<sup>17</sup> उनकी अनाज की भेट और उनकी पेय भेट बैल के लिए, मेढ़ा के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>18</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उनकी पेय भेट के अलावा।<sup>19</sup> फिर चौथे दिन: दस बैल, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>20</sup> और उनकी अनाज की भेट और एक पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>21</sup> और उनकी अनाज की भेट और पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>22</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>23</sup> फिर पांचवें दिन: नौ बैल, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>24</sup> और उनकी अनाज की भेट और एक पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>25</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>26</sup> फिर पांचवें दिन: नौ बैल, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>27</sup> और उनकी अनाज की भेट और एक पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>28</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>29</sup> फिर छठे दिन: आठ बैल, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>30</sup> और उनकी अनाज की भेट और एक पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>31</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>32</sup> फिर सातवें दिन: सात बैल, दो मेढ़े, एक वर्ष के चौदह निर्दोष नर मेम्पे;<sup>33</sup> और उनकी अनाज की भेट और एक पेय भेट बैलों के लिए, मेढ़ों के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>34</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि, उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>35</sup> आठवें दिन तुम्हें एक पवित्र सभा करनी होगी; तुम कोई श्रमसाध्य काम नहीं करोगे।<sup>36</sup> तुम एक होमबलि प्रस्तुत करोगे, आग द्वारा एक भेट, प्रभु के लिए एक सुखद सुगंध: एक बैल, एक मेढ़ा, एक वर्ष के सात निर्दोष नर मेम्पे;<sup>37</sup> उनकी अनाज की भेट और उनकी पेय भेट बैल के लिए, मेढ़ा के लिए, और मेम्पों के लिए, उनकी संख्या के अनुसार जैसा निर्धारित है;<sup>38</sup> और एक नर बकरी पापबलि के रूप में, निरंतर होमबलि और उसकी अनाज की भेट और उसकी पेय भेट के अलावा।<sup>39</sup> तुम

## गिनती

इहें प्रभु के लिए अपने नियत समयों पर प्रस्तुत करोगे, तुम्हारी मन्त्रत की भेटों और तुम्हारी स्वैच्छिक भेटों के अलावा, तुम्हारी होमबलियों, तुम्हारी अनाज की भेटों, तुम्हारी पेय भेटों, और तुम्हारी शांति भेटों के लिए।<sup>40</sup> मूसा ने इसाएल के पुत्रों से वह सब कुछ कहा जो प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी।

**30** मूसा ने इसाएल की गोत्रों के प्रधानों से कहा: “यह वही है जो यहोवा ने आज्ञा दी है: २ जब कोई पुरुष यहोवा से एक मन्त्र करता है या एक प्रतिज्ञा करके अपने आप को बँधता है, तो उसे अपने वयन को नहीं तोड़ना चाहिए। उसे वह सब कुछ करना चाहिए जो उसने कहा है।<sup>3</sup> यदि कोई युवा स्त्री, जो अभी भी अपने पिता के घर में रहती है, यहोवा ने एक मन्त्र करती है या एक प्रतिज्ञा करके अपने आप को बँधती है, <sup>४</sup> और उसके पिता उसकी मन्त्र सुनते हैं लेकिन उसे कुछ नहीं कहते, तो उसकी सभी मन्त्रें और प्रतिज्ञाएँ स्थिर रहेंगी।<sup>५</sup> लेकिन यदि उसके पिता उसी दिन उसे मना कर देते हैं तो जिस दिन वह सुनते हैं, तो उसकी कोई भी मन्त्र या प्रतिज्ञा स्थिर नहीं रहेगी। यहोवा उसे मुक्त करेगा क्योंकि उसके पिता ने उसे रोक दिया है।<sup>६</sup> यदि वह मन्त्र करने या जल्दबाजी में प्रतिज्ञा करने के बाद विवाह करती है, <sup>७</sup> और उसका पति इसे सुनता है लेकिन उसे कुछ नहीं कहता, तो उसकी मन्त्रें स्थिर रहेंगी।<sup>८</sup> लेकिन यदि उसका पति उसी दिन उहें रद्द कर देता है जिस दिन वह उहें सुनता है, तो जो उसने प्रतिज्ञा की थी वह स्थिर नहीं रहेगी, और यहोवा उसे मुक्त करेगा।<sup>९</sup> किसी विधाया या तलाकशुदा स्त्री द्वारा की गई कोई भी मन्त्र उसके लिए बाध्यकारी होती है।<sup>१०</sup> यदि कोई स्त्री अपने पति के साथ रहते हुए मन्त्र या प्रतिज्ञा करती है,<sup>११</sup> और उसका पति इसे सुनता है और चुप रहता है, तो उसकी सभी मन्त्रें वैध होंगी।<sup>१२</sup> लेकिन यदि उसका पति उहें सुनते ही रद्द कर देता है, तो वे बाध्यकारी नहीं होंगी। यहोवा उसे मुक्त करेगा।<sup>१३</sup> उसका पति उसकी किसी भी मन्त्र या प्रतिज्ञा को पुण्य या रद्द कर सकता है।<sup>१४</sup> यदि वह दिन-प्रतिदिन चुप रहता है, तो वह उसकी सभी मन्त्रों और प्रतिज्ञाओं को पुण्य करता है।<sup>१५</sup> लेकिन यदि वह बाद में उहें रद्द करता है, तो वह उसके दोष के लिए जिम्मेदार होगा।<sup>१६</sup> ये वही नियम हैं जो यहोवा ने मूसा को एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच, और एक पिता और उसकी बेटी के बीच दिए हैं, जब तक वह उसके घर में रहती है।

**31** तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>२</sup> “मिद्यानियों से इसाएलियों के पुत्रों के लिए पूर्ण प्रतिशोध लो; उसके बाद तुम अपने लोगों के पास इकट्ठे हो जाओगे।”<sup>३</sup> तब

मूसा ने लोगों से कहा, “तुम में से पुरुषों को युद्ध के लिए हथियारबंद करो, ताकि वे मिद्यान के विरुद्ध जाकर यहोवा का प्रतिशोध मिद्यान पर लें।<sup>४</sup> तुम इसाएल की सभी गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र से एक हजार को युद्ध के लिए भेजोगे।”<sup>५</sup> इसलिए इसाएल के हजारों में से, प्रत्येक गोत्र से एक हजार चुने गए, बारह हजार युद्ध के लिए हथियारबंद किए गए।<sup>६</sup> और मूसा ने उहें, प्रत्येक गोत्र से एक हजार, युद्ध के लिए भेजा, और एलीआज्जर के पुत्र फिनहास को उनके साथ युद्ध के लिए भेजा, और उसके हाथ में पवित्र बर्तन और अलार्म के लिए तुरहियां थीं।<sup>७</sup> इसलिए उहोंने मिद्यान के विरुद्ध युद्ध किया, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, और उहोंने हर पुरुष को मार डाला।<sup>८</sup> उहोंने मिद्यान के राजाओं को भी मारा, उन मारे गए लोगों के साथ: एवी, रेकम, सूर, हूर, और रेबा, मिद्यान के पांच राजा; और उहोंने बालाम, बोर के पुत्र को भी तलवार से मार डाला।<sup>९</sup> और इसाएल के पुत्रों ने मिद्यान की स्त्रियों और उनके छोटे बच्चों को बंदी बना लिया, और उनके सभी मवेशियों, सभी झुंडों, और सभी सामानों को लूट लिया।<sup>१०</sup> तब उहोंने उनके सभी नारों को जला दिया जहाँ वे रहते थे, और उनके सभी शिविरों को आग से जला दिया।<sup>११</sup> और उहोंने सभी लूट और सभी शिकार को, लोगों और पशुओं दोनों को ले लिया।<sup>१२</sup> वे बंदियों और शिकार और लूट को मूसा, और एलीआज्जर याजक, और इसाएल के पुत्रों की मण्डली के पास, मोआब के मैदानों में, जो यरदन के विपरीत यरीही के पास हैं, शिविर में लाए।<sup>१३</sup> और मूसा, और एलीआज्जर याजक, और मण्डली के सभी नेता उनसे मिलने के लिए शिविर के बाहर गए।<sup>१४</sup> परन्तु मूसा सेना के अधिकारियों पर, हजारों के कपानों और सैकड़ों के कपानों पर, जो युद्ध सेवा से आए थे, क्रोधित हुआ।<sup>१५</sup> और मूसा ने उनसे कहा, “क्या तुमने सभी स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया है?”<sup>१६</sup> देखो, उहोंने बालाम की सलाह के माध्यम से इसाएल के पुत्रों को पोर के मामलों में यहोवा के प्रति अविश्वासी बना दिया, जिससे यहोवा की मण्डली में महामारी फैल गई।<sup>१७</sup> अब इसलिए, छोटे बच्चों में से हर पुरुष को मार डालो, और हर स्त्री को मार डालो जिसने किसी पुरुष को अंतरंग रूप से जाना है।<sup>१८</sup> हालांकि, सभी लड़कियों को जिहोंने किसी पुरुष को अंतरंग रूप से नहीं जाना है, अपने लिए जीवित रखो।<sup>१९</sup> और तुम, शिविर के बाहर सात दिनों तक डेरा डालो; जिसने किसी व्यक्ति को मारा है, और जिसने किसी मारे गए व्यक्ति को छुआ है, अपने आप को और अपने बंदियों को तीसरे दिन और सातवें दिन शुद्ध करो।<sup>२०</sup> तुम अपने लिए हर वस्त्र और हर चमड़े की वस्तु, और बकरियों के बालों का सारा काम, और लकड़ी की सभी वस्तुओं को भी शुद्ध करो।”<sup>२१</sup> तब

## गिनती

एलीआज़र याजक ने उन युद्ध के पुरुषों से कहा जो युद्ध के लिए गए थे, "यह वह विधि है जो यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी है: <sup>22</sup> केवल सोना और चांदी, कांसा, लोहा, टिन, और सीसा, <sup>23</sup> हर वह चीज़ जो आग सह सकती है, उसे आग से गुजारो, और वह शुद्ध होगी, परन्तु उसे अशुद्धता के लिए जल से शुद्ध किया जाएगा। परन्तु जो कुछ आग सह नहीं सकता उसे जल से गुजारो। <sup>24</sup> और तुम अपने वस्त्रों को सातवें दिन धोओगे और शुद्ध हो जाओगे, और उसके बाद तुम शिरिं में प्रवेश कर सकते हो।" <sup>25</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, "उम और एलीआज़र याजक और मण्डली के पितरों के घरों के नेता, जो लूट पकड़ी गई है, उन लोगों और पशुओं की गिनती करो; <sup>27</sup> और लूट को उन पुरुषों के बीच बांट दो जिसने युद्ध में भाग लिया और युद्ध के लिए गए, और पूरी मण्डली के बीच।" <sup>28</sup> और युद्ध के लिए गए पुरुषों से यहोवा के लिए एक कर लगाओः व्यक्तियों में से, मरविशयों में से, गधों में से, और भेड़ों में से, पांच सौ में से एक; <sup>29</sup> उनके आधे से इसे लौ और इसे एलीआज़र याजक को यहोवा के लिए एक भेट के रूप में दो। <sup>30</sup> और इसाएल के पुत्रों के आधे से, तुम व्यक्तियों में से, मरविशयों में से, गधों में से, और भेड़ों में से, सभी पशुओं में से, पचास में से एक निकालोगे, और उन्हें लैवियों को दोगे जो यहोवा के तम्बू की जिम्मेदारी रखते हैं।" <sup>31</sup> इसलिए मूसा और एलीआज़र याजक ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। <sup>32</sup> अब लूट जो युद्ध के पुरुषों ने ली थी, उसमें से बची रुद्धी थी 675,000 भेड़ें, <sup>33</sup> 72,000 मवेशी, <sup>34</sup> 61,000 गधे, <sup>35</sup> और लोगों में से, उन स्थियों में से जिन्होंने किसी पुरुष को अंतरंग रूप से नहीं जाना था, सभी व्यक्तियों की संख्या 32,000 थी। <sup>36</sup> आधा, जो युद्ध के लिए गए लोगों का हिस्सा था, 337,500 भेड़ें थीं, <sup>37</sup> और भेड़ों से यहोवा का कर 675 था। <sup>38</sup> मरविशयों की संख्या 36,000 थी, जिनमें से यहोवा का कर बहतर था। <sup>39</sup> और गधों की संख्या 30,500 थी, जिनमें से यहोवा का कर इकसठ था। <sup>40</sup> और लोगों की संख्या 16,000 थी, जिनमें से यहोवा का कर बत्तीस व्यक्ति थे। <sup>41</sup> और मूसा ने वह कर जो यहोवा की भेट थी, एलीआज़र याजक को दिया, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। <sup>42</sup> जहाँ तक इसाएल के पुत्रों के आधे का सवाल है, जिसे मूसा ने युद्ध के लिए गए पुरुषों से अलग किया था— <sup>43</sup> अब मण्डली का आधा हिस्सा 337,500 भेड़ें था, <sup>44</sup> 36,000 मवेशी, <sup>45</sup> 30,500 गधे, <sup>46</sup> और 16,000 लोग— <sup>47</sup> और इसाएल के पुत्रों के आधे से, मूसा ने लोगों और पशुओं में से पचास में से एक लिया, और उन्हें लैवियों को दिया, जो यहोवा के तम्बू की जिम्मेदारी रखते थे, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। <sup>48</sup> तब सेना

के हजारों के ऊपर के अधिकारी, हजारों के कप्तान और सैकड़ों के कप्तान, मूसा के पास आए, <sup>49</sup> और उन्होंने मूसा से कहा, "आपके सेवकों ने उन युद्ध के पुरुषों की गिनती की है जो हमारे अधिकार में हैं, और हम में से कोई भी गायब नहीं है।" <sup>50</sup> इसलिए हमने यहोवा के लिए भेट के रूप में वह लाया है जो प्रत्येक व्यक्ति ने पाया: सोने की वस्तुएं—पायल, कंगन, अंगूठियां, बालियां, और हार—अपने लिए यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करने के लिए।" <sup>51</sup> मूसा और एलीआज़र याजक ने उनसे सोना लिया, सभी प्रकार की निर्मित वस्तुएं। <sup>52</sup> सभी सोने की भेट जो उन्होंने यहोवा को प्रस्तुत की, हजारों के कप्तानों और सैकड़ों के कप्तानों से, 16,750 शेकेल थी। <sup>53</sup> युद्ध के पुरुषों ने लूट ली थी, प्रत्येक व्यक्ति ने अपने लिए। <sup>54</sup> इसलिए मूसा और एलीआज़र याजक ने हजारों और सैकड़ों के कप्तानों से सोना लिया, और इसे मण्डली के तम्बू में इसाएल के पुत्रों के लिए यहोवा के सामने एक स्मारक के रूप में लाए।

**32** रूबेन और गाद की जातियों के पास बहुत बड़ी पशु और चुंबु थे। उन्होंने देखा कि याजेर और गिलाद की भूमि पशुओं के लिए उपयुक्त थी। <sup>2</sup> वे मूसा, एलीआज़र याजक, और मण्डली के नेताओं के पास आए और कहा: <sup>3</sup> "अतरोत, दिबोन, याजेर, निग्रह, हेशबोन, एलेआलेह, सेबाम, नबो, और बोआन की भूमि—<sup>4</sup> वह भूमि जिसे प्रभु ने इसाएल की मण्डली के सामने जीत लिया—वह पशुओं के लिए उपयुक्त है, और आपके सेवकों के पास पशु हैं।" <sup>5</sup> यदि हमने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो यह भूमि हमारी विरासत के रूप में दी जाए। हमें यरदन पार न कराए।" <sup>6</sup> मूसा ने कहा, "क्या आपके साथी इसाएली युद्ध में जाएंगे जबकि आप यहाँ बैठे रहेंगे?" <sup>7</sup> आप इसाएल के लोगों को उस भूमि में जाने से क्यों हतोत्साहित करते हैं जिसे प्रभु ने उन्हें दी है? <sup>8</sup> यही आपके पिताओं ने किया जब मैंने उन्हें कादेश बरने से भूमि देखने के लिए भेजा था। <sup>9</sup> वे एश्कोल की घाटी में गए और लोगों को भूमि में प्रवेश करने से हतोत्साहित किया। <sup>10</sup> उस दिन प्रभु का क्रोध भड़क उठा, और उसने शपथ ली: <sup>11</sup> "मिस से निकले हुए बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के कोई भी पुरुष उस भूमि को नहीं देखेगा जिसे मैंने अब्राहम, इस्हाक, और याकूब को शपथ खाकर दी थी।" <sup>12</sup> एक भी नहीं—केवल येहुव्रेह का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू—क्योंकि उन्होंने प्रभु का पूरी तरह अनुसरण किया। <sup>13</sup> प्रभु का क्रोध इसाएल पर भड़क उठा, और उसने उन्हें चालीस वर्षों तक भटकने दिया जब तक कि पूरी पीढ़ी मर नहीं गई। <sup>14</sup> अब आप अपने पूर्वजों की तरह

## गिनती

व्यवहार कर रहे हैं, एक पापी संतुति, प्रभु के क्रोध को बढ़ा रहे हैं।<sup>15</sup> यदि आप उससे मुड़ते हैं, तो वह फिर से लोगों को जंगल में छोड़ देगा, और आप उनकी विनाश के कारण बनेंगे।<sup>16</sup> फिर वे मूसा के पास आए और कहा, “हमें यहाँ हमारे पशुओं के लिए भेड़-बाड़े और हमारे परिवारों के लिए नगर बनाने दें।<sup>17</sup> लेकिन हम स्वयं युद्ध के लिए सुसज्जित होकर इसाएलियों को पार कराएंगे, जब तक कि प्रयोक को उनकी विरासत न मिल जाए।<sup>18</sup> हम यरदन के पार उनके साथ भूमि का दावा नहीं करेंगे, क्योंकि हमने अपनी हिस्सेदारी पूर्णी किनारे पर प्राप्त कर ली है।<sup>19</sup> तब मूसा ने कहा, “यदि आप ऐसा करेंगे—अपने आप को सुसज्जित करें और प्रभु के सामने युद्ध में जाएं,<sup>20</sup> और यदि आप में से हर एक यरदन पार करेगा जब तक कि प्रभु ने अपने शत्रुओं को बाहर नहीं कर दिया।<sup>21</sup> तब जब भूमि प्रभु के सामने अधीन हो जाएगी, आप लौट सकते हैं। आपने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया होगा, और यह भूमि प्रभु के सामने आकारी होगी।<sup>22</sup> लेकिन यदि आप ऐसा करने में असफल होते हैं, तो आपने प्रभु के खिलाफ पाप किया होगा, और निश्चित रहें कि आपका पाप आपको ढूढ़ निकालेगा।<sup>23</sup> अपने परिवारों के लिए नगर और अपने झुंडों के लिए बाड़े बनाएं, लेकिन जो आपने वादा किया है, वह करें।<sup>24</sup> गाढ़ी और रूबेनी मूसा से बोले, “हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।<sup>25</sup> हमारे बच्चे और पलियाँ, झुंड और पशु यहाँ रहेंगे।<sup>26</sup> लेकिन आपके सेवक, युद्ध के लिए सुसज्जित, प्रभु के सामने लड़ाई के लिए पार करेंगे, जैसा कि हमारे स्वामी कहते हैं।<sup>27</sup> तब मूसा ने उनके बारे में एलीआज़र, यहोशू, और जातियों के नेताओं को निर्देश दिए।<sup>28</sup> उसने कहा, “यदि गाढ़ी और रूबेनी यरदन पार युद्ध के लिए सुसज्जित होकर जाते हैं, तो उन्हें गिलाद की भूमि दें।<sup>29</sup> लेकिन यदि वे पार नहीं करते, तो उन्हें कनान में अपके बीच भूमि स्वीकार करनी होगी।<sup>30</sup> गाढ़ी और रूबेनी ने उत्तर दिया, “हम वही करेंगे जो प्रभु ने कहा है।<sup>31</sup> हम कनान में सुसज्जित होकर पार करेंगे, प्रपु के सामने, और उसके बाद अपनी विरासत का अधिकार लेंगे।<sup>32</sup> इसलिए मूसा ने गाढ़ और रूबेन की जातियों और मनश्शे के आधे गोत्र को सिहोन और ओग का राज्य—भूमि, नगर, और आसपास का क्षेत्र—दिया।<sup>33</sup> गाढ़ी ने दिबान, अतरोत, अरोएर को फिर से बनाया,<sup>34</sup> अतरोत शोपान, याजेर, योगबाहा,<sup>35</sup> बेत निग्रह, और बेत हारान को किलाबंद नगरों के रूप में और उनके झुंडों के लिए बाड़ों के रूप में बनाया।<sup>36</sup> रूबेनियों ने हेशबोन, एलेआलेह, किरीयातेम को फिर से बनाया,<sup>37</sup> नबो, बाल भियोन (नाम बदले गए), और सिभाह।

उन्होंने उन नगरों को नए नाम दिए जिन्हें उन्होंने फिर से बनाया।<sup>38</sup> मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशज गिलाद गए, उसे कब्जा किया, और एमोरियों को बाहर निकाला।<sup>39</sup> इसलिए मूसा ने माकीर को गिलाद दिया, और वह वहाँ बस गया।<sup>40</sup> मनश्शे के एक अन्य वंशज याईर ने गाँवों को कब्जा किया और उन्हें हव्वोत याईर कहा।<sup>41</sup> नोबाह ने केनाथ और उसके आसपास की बसियों को कब्जा किया और उसका नाम नोबाह रखा।

**33** ये इसाएलियों की यात्राएँ हैं, जो मिस्र से अपने दलों में मूसा और हारून के नेतृत्व में निकले थे।<sup>2</sup> प्रभु की आज्ञा से, मूसा ने उनकी यात्रा के चरणों को दर्ज किया। ये उनके चरण हैं, प्रश्नान बिंदुओं के अनुसार सूचीबद्धः<sup>3</sup> वे पहले महीने की पंद्रहवीं तारीख को रामसेस से निकले। फसह के अगले दिन सुबह, इसाएली सभी मिसियों की दृष्टि में साहसर्पूर्वक मार्च करते हुए निकले,<sup>4</sup> जबकि मिसी अपने सभी पहलौठों को दफना रहे थे, जिन्हें प्रभु ने मारा था। प्रभु ने उनके देवताओं पर न्याय किया था।<sup>5</sup> इसाएली रामसेस से निकलकर सुक्रोत में डेरा डाले।<sup>6</sup> वे सुक्रोत से निकलकर एथाम में, जंगल के किनारे पर डेरा डाले।<sup>7</sup> वे एथाम से चले और पीछे मुड़कर पी हाहिरोत की ओर, बाल ज़ेफोन के पूर्व में, मिग्दोत के पास डेरा डाले।<sup>8</sup> वे पी हाहिरोत से निकले, समुद्र के बीच से होकर जंगल में गए, एथाम के जंगल में तीन दिन की यात्रा की, और मारा में डेरा डाले।<sup>9</sup> मारा से वे एलीम आए, जहाँ बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे, और वहाँ डेरा डाले।<sup>10</sup> वे एलीम से निकलकर लाल सागर के पास डेरा डाले।<sup>11</sup> फिर वे लाल सागर से निकलकर सीन के जंगल में डेरा डाले।<sup>12</sup> वे सीन के जंगल से यात्रा करके दोपाका में डेरा डाले।<sup>13</sup> वे दोपाका से निकलकर अलूश में डेरा डाले।<sup>14</sup> वे अलूश से निकलकर रेफिदिम में डेरा डाले, जहाँ लोगों के पीने के लिए एपानी नहीं था।<sup>15</sup> वे रेफिदिम से चले और सीने के जंगल में डेरा डाले।<sup>16</sup> वे सीने के जंगल से निकलकर किब्रीथ हत्तावाह में डेरा डाले।<sup>17</sup> वे किब्रीथ हत्तावाह से निकलकर हसेरोत में डेरा डाले।<sup>18</sup> वे रिथमा से निकलकर रिथमोन पेरेज में डेरा डाले।<sup>19</sup> वे रिथमोन पेरेज से यात्रा करके लिङ्गा में डेरा डाले।<sup>20</sup> वे लिङ्गा से निकलकर रिस्सा में डेरा डाले।<sup>21</sup> वे लिङ्गा से निकलकर रिस्सा से केहेलाथ में डेरा डाले।<sup>22</sup> वे रिस्सा से निकलकर केहेलाथ में डेरा डाले।<sup>23</sup> वे माउंट शेफर से निकलकर हरादा में डेरा डाले।<sup>24</sup> वे माउंट शेफर से निकलकर मखेलोथ में डेरा डाले।<sup>25</sup> वे हरादा से निकलकर तहथ में डेरा डाले।<sup>26</sup> वे मखेलोथ से निकलकर तहथ में डेरा डाले।<sup>27</sup> वे तहथ से यात्रा करके तेरह में डेरा डाले।<sup>28</sup> वे तेरह से निकलकर मिथ्का में

## गिनती

डेरा डाले। <sup>29</sup> वे मिथ्का से निकलकर हशमोना में डेरा डाले। <sup>30</sup> वे हशमोना से निकलकर मोसेरोथ में डेरा डाले। <sup>31</sup> वे मोसेरोथ से निकलकर बेने जाकान में डेरा डाले। <sup>32</sup> वे बेने जाकान से यात्रा करके होर हग्गिदगद में डेरा डाले। <sup>33</sup> वे होर हग्गिदगद से निकलकर योतबाथा में डेरा डाले। <sup>34</sup> वे योतबाथा से निकलकर अबरोना में डेरा डाले। <sup>35</sup> वे अबरोना से निकलकर एजियन गेबर में डेरा डाले। <sup>36</sup> वे एजियन गेबर से निकलकर ज़िन के ज़ंगल में, अर्पात् कादेश में डेरा डाले। <sup>37</sup> वे कादेश से निकलकर माउट होर में, एदोम की सीमा पर डेरा डाले। <sup>38</sup> प्रभु की आज्ञा से, हारून याजक माउट होर पर चढ़ा और वहाँ मर गया, मिस से इस्साएलियों के निकलने के चालीसवें वर्ष के पांचवें महीने के पहले दिन। <sup>39</sup> हारून की आयु 123 वर्ष थी जब वह माउट होर पर मरा। <sup>40</sup> अरद का कनान राजा, जो कनान में नेगेव में रहता था, ने सुना कि इस्साएली आ रहे हैं। <sup>41</sup> वे माउट होर से निकलकर ज़लमोना में डेरा डाले। <sup>42</sup> वे ज़लमोना से निकलकर पुनोन में डेरा डाले। <sup>43</sup> वे पुनोन से निकलकर ओबोत में डेरा डाले। <sup>44</sup> वे ओबोत से निकलकर इये अबारीम में, मोआब की सीमा पर डेरा डाले। <sup>45</sup> वे इये अबारीम से यात्रा करके डिबोन गाद में डेरा डाले। <sup>46</sup> वे डिबोन गाद से निकलकर अलमोन डिबलाथाइम में डेरा डाले। <sup>47</sup> वे अलमोन डिबलाथाइम से निकलकर अबारीम के पहाड़ों में, नेबो के पास डेरा डाले। <sup>48</sup> वे अबारीम के पहाड़ों से निकलकर मोआब के मैदानों में, यरदन के पास, यरीहो के सामने डेरा डाले। <sup>49</sup> वहाँ वे यरदन के किनारे बैथ येशिमोत से अबेल शित्तिम तक डेरा डाले। <sup>50</sup> प्रभु ने मोआब के मैदानों में, यरदन के पास, यरीहो के सामने मूसा से कहा: <sup>51</sup> "इस्साएलियों से कहो: जब तुम यरदन पार करके कनान की भूमि में प्रवेश करोगे, <sup>52</sup> तो तुम्हें देश के सभी निवासियों को अपने सामने से निकाल देना चाहिए। उनकी सभी खुदी हुई मृत्यियों और ढली हुई प्रतिमाओं को नष्ट कर दो, और उनके सभी ऊँचे स्थानों को ध्वस्त कर दो। <sup>53</sup> भूमि को अपने अधिकार में ले लो और उसमें बस जाओ, क्योंकि मैंने इसे तुम्हारे द्वारा विरासत के रूप में दिया है।" <sup>54</sup> अपनी जातियों के अनुसार भूमि का वितरण करो। बड़ी जाति को बड़ी विरासत दो, और छोटी जाति को छोटी। <sup>55</sup> लेकिन यदि तुम निवासियों को नहीं निकालोगे, तो वे जिन्हें तुम रहने दोगे, वे तुम्हारे पक्ष में काँटे बोंगे और उस भूमि में तुम्हें परेशान करेंगे जहाँ तुम रहते हो।" <sup>56</sup> तब मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा जो मैंने उनके साथ करने की योजना बनाई थी।"

**34** प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>2</sup> "इस्साएलियों को आदेश दो और उनसे कहो: जब तुम कनान देश में प्रवेश

करोगे, तो यह तुम्हारी विरासत के रूप में देश की सीमाएँ होंगी। <sup>3</sup> तुम्हारी दक्षिणी सीमा एदोम के साथ ज़िन के ज़ंगल से शुरू होगी। यह पूर्व में खारे सागर के अंत से चलेगी, <sup>4</sup> बिक्कू चढ़ाई के दक्षिण से पार करते हुए ज़िन तक जाएगी, और कादेश बरनेआ के दक्षिण से होते हुए हज़ार अदार तक और अजमोन तक जाएगी। <sup>5</sup> अजमोन से सीमा मिस की थारा की ओर मुड़कर भूमध्य सागर पर समाप्त होगी। <sup>6</sup> तुम्हारी पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर का तट होगा। यह तुम्हारी पश्चिमी सीमा होगी। <sup>7</sup> तुम्हारी उत्तरी सीमा भूमध्य सागर से शुरू होकर होर पर्वत तक एक रेखा खींचेगी। <sup>8</sup> होर पर्वत से लेबो हमाथ तक, फिर ज़ेदाद तक एक रेखा खींचो। <sup>9</sup> सीमा ज़िफ्रोन तक जारी रहेगी और हज़ार एनान पर समाप्त होगी। यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी। <sup>10</sup> तुम्हारी पूर्वी सीमा के लिए, हज़ार एनान से शेफान तक एक रेखा खींचो। <sup>11</sup> सीमा शेफान से रिबला तक, ऐन के पूर्व में जाएगी, फिर नीचे उत्तरकर गलील सागर के पूर्वी किनारे के साथ चलेगी। <sup>12</sup> यह यरदन के साथ चलेगी और खारे सागर पर समाप्त होगी। यह तुम्हारी भूमि होगी, इसके चारों ओर की सीमाओं के साथ।" <sup>13</sup> मूसा ने इस्साएलियों को आदेश दिया: "यह वह भूमि है जिसे तुम विरासत के रूप में चिट्ठी डालकर बांटोगे। प्रभु ने इसे साढ़े नौ गोत्रों को सौंपा है।" <sup>14</sup> रूबेन और गाद के गोत्र, साथ ही मनश्शे के आधे गोत्र ने पहले ही यरदन के पूर्वी किनारे पर अपनी विरासत प्राप्त कर ली है। <sup>15</sup> इन दो और आधे गोत्रों ने यरीहो के सामने, यरदन के पूर्व में अपनी विरासत प्राप्त की है।" <sup>16</sup> प्रभु ने मूसा से कहा: <sup>17</sup> "ये उन व्यक्तियों के नाम हैं जो तुम्हारे बीच भूमि को विरासत के रूप में बांटेंगे: एलाज़र याजक और नून का पुत्र यहोश।" <sup>18</sup> प्रत्येक गोत्र से एक नेता को भूमि बाँटने में मदद के लिए नियुक्त करो। <sup>19</sup> यहाँ उनके नाम हैं: यहूदा के गोत्र से, यपुत्रेह का पुत्र कालेब; <sup>20</sup> शियोन के गोत्र से, अमीहूद का पुत्र शमूएल; <sup>21</sup> बिन्यामीन के गोत्र से, किसलौन का पुत्र एलीदाद; <sup>22</sup> दान के गोत्र से, एक नेता, योगारी का पुत्र बुक्की; <sup>23</sup> मनश्शे के गोत्र से, एफ़ोद का पुत्र हनीएल; <sup>24</sup> एप्रेम के गोत्र से, शिफ्तान का पुत्र केमूएल; <sup>25</sup> जबूलून के गोत्र से, परगाख का पुत्र एलीज़ाफ़ून; <sup>26</sup> इस्साकार के गोत्र से, अज्जान का पुत्र पल्लीएल; <sup>27</sup> आशेर के गोत्र से, शेतोमी का पुत्र अहीहूद; <sup>28</sup> और नप्ताली के गोत्र से, अमीहूद का पुत्र पेदाहेल।" <sup>29</sup> ये वे व्यक्ति थे जिन्हें प्रभु ने कनान देश में इस्साएलियों के बीच विरासत बाँटने के लिए नियुक्त किया था।

**35** मोआब के मैदानों में, यरदन के पार, यरीहो के सामने, यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>2</sup> "इस्साएलियों को आज्ञा दो कि वे अपने अधिकार में मिली हुई संपत्ति में से

## गिनती

लेवियों को रहने के लिए नगर दैं। और लेवियों को उनके पशुओं के लिए चारों ओर चरागाह भी दैं।<sup>3</sup> ये नगर उनके रहने के लिए होंगे, और उनके चारों ओर के खेत उनके पशुओं के लिए होंगे।<sup>4</sup> नगरों के चारों ओर का चरागाह नगर की दीवार से चारों दिशाओं में एक हजार हाथ तक फैला होगा।<sup>5</sup> नगर के बाहर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, और उत्तर की ओर दो हजार हाथ नापो, और नगर बीच में होगा। यह उनकी चराइ का क्षेत्र होगा।<sup>6</sup> लेवियों को जो नगर दिए जाएंगे, उनमें से छह शरण के नगर होंगे, जहाँ कोई अनजाने में किसी को मार डालने वाला भाग सके। इसके अलावा उन्हें बयालीस और नगर भी दी।<sup>7</sup> कुल मिलाकर, लेवियों को अड़तालीस नगर देने हैं, उनके चारों ओर के चरागाहों के साथ।<sup>8</sup> नगर बड़े गोत्रों से अधिक संख्या में लिए जाएंगे, और छोटे गोत्रों से कम, जैसा कि प्रत्येक गोत्र को मिली हुई संपत्ति के अनुसार।<sup>9</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा: <sup>10</sup> “इसाएलियों से कहो: जब तुम यरदन पार कर कनान में प्रवेश करोगे,<sup>11</sup> तो कुछ नगरों को शरण के नगर के रूप में चुनो, जहाँ कोई अनजाने में किसी को मार डालने वाला भाग सके।<sup>12</sup> वे रक्त के प्रतिशोधी से सुरक्षा के स्थान के रूप में काम करेंगे, ताकि हत्यारा सभा के सामने मुकदमे से पहले न मरे।<sup>13</sup> तुम्हें छह शरण के नगर निर्धारित करने होंगे।<sup>14</sup> तीन यरदन के पूर्वी ओर और तीन कनान में स्थापित किए जाएं।<sup>15</sup> ये छह नगर इसाएलियों, विदेशियों, और अस्थायी निवासियों के लिए समान रूप से होंगे। कोई भी जो अनजाने में किसी को मार डाले, वहाँ भाग सके।<sup>16</sup> लेकिन यदि कोई लोहे की वस्तु से किसी को मारे और वह व्यक्ति मर जाए, तो वह हत्यारा है। हत्यारे को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए।<sup>17</sup> यदि वे किसी को पथर से मारे जो मृत्यु का कारण बन सकता है, और वह व्यक्ति मर जाए, तो वे दोषी हैं।<sup>18</sup> यदि वे लकड़ी की वस्तु से मारे जो मार सकती है, और पीड़ित मर जाए, तो हमलावर हत्यारा है और उसे फासी दी जानी चाहिए।<sup>19</sup> रक्त का प्रतिशोधी हत्यारे को मिलते ही मार डाले।<sup>20</sup> यदि कोई द्वेष से किसी की धक्का दे या किसी पर दुर्भवनापूर्ण इरादे से कुछ फेंके, और वह व्यक्ति मर जाए,<sup>21</sup> या यदि वे शत्रुपार्पण हाथ से उन्हें मारें और वह व्यक्ति मर जाए, तो यह हत्या है। हत्यारे को रक्त के प्रतिशोधी की विरासत से उत्तीर्ण होना चाहिए।<sup>22</sup> लेकिन यदि कोई बिना शत्रुता के गलती से किसी की धक्का दे, या अनजाने में कुछ फेंके,<sup>23</sup> या बिना देखे पथर गिरा दे, और वह व्यक्ति मर जाए, जबकि वह न तो शत्रु था और न ही लक्षित,<sup>24</sup> तो सभा को इन कानूनों के आधार पर हत्यारे और रक्त के प्रतिशोधी के बीच याय करना चाहिए।<sup>25</sup> यदि सभा यह निर्धारित करती है कि यह अनजाने में था, तो उन्हें हत्यारे की रक्षा करनी

चाहिए और उसे शरण के नगर में वापस भेज देना चाहिए।<sup>26</sup> यदि हत्यारा महायाजक की मृत्यु से पहले शरण के नगर को छोड़ दे,<sup>27</sup> और रक्त का प्रतिशोधी उसे नगर के बाहर पाकर मार डाले, तो प्रतिशोधी दोषी नहीं होगा।<sup>28</sup> हत्यारे को महायाजक की मृत्यु तक शरण के नगर में रहना चाहिए; तभी वे घर लौट सकते हैं।<sup>29</sup> ये सभी पीढ़ियों के लिए कानूनी आवश्यकताएं हैं।<sup>30</sup> जो कोई हत्या का दोषी पाया जाए, उसे गवाहों की गवाही के आधार पर फासी दी जानी चाहिए। किसी को एक गवाह की गवाही पर फासी नहीं दी जानी चाहिए।<sup>31</sup> तुम्हें मृत्यु दंड के लिए दोषी ठहराए गए हत्यारे के जीवन के लिए फिरोती स्वीकार नहीं करनी चाहिए—उन्हें फांसी दी जानी चाहिए।<sup>32</sup> महायाजक की मृत्यु से पहले शरण के नगर से किसी को भागने और घर लौटने की अनुमति के लिए भुगतान स्वीकार न करें।<sup>33</sup> उस भूमि को अपवित्र करता है, और इसके लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं किया जा सकता। सिवाय उस व्यक्ति के रक्त के जिसने इसे बहाया।<sup>34</sup> उस भूमि को प्रदूषित न करो जहाँ तुम रहते हो, क्योंकि मैं, यहोवा, इसाएलियों के बीच निवास करता हूँ।

**36** अब गिलाद के पुत्रों के परिवार के पिताओं के घराने के प्रधान, माकीर के पुत्र, मनश्चे के पुत्र, मूसुफ के पुत्रों के परिवारों में से, आगे आए और मूसा और इसाएल के पुत्रों के पिताओं के घराने के प्रधानों के सामने बोले।<sup>2</sup> और उन्होंने कहा, “प्रभु ने मेरे प्रभु को आज्ञा दी कि इसाएल के पुत्रों को भूमि को चिट्ठी डालकर विरासत में दें, और मेरे प्रभु को प्रभु द्वारा आज्ञा दी गई कि हमारे भाई सलोफहद की विरासत उसकी पुत्रियों को दें।<sup>3</sup> परंतु यदि वे इसाएल के पुत्रों के अन्य गोत्रों के पुत्रों में से किसी से विवाह करती हैं, तो उनकी विरासत हमारे पिताओं की विरासत से ले ली जाएगी, और जिस गोत्र से वे संबंधित हैं, उसकी विरासत में जोड़ दी जाएगी; इस प्रकार यह हमारी निर्धारित विरासत से ले ली जाएगी।<sup>4</sup> और जब इसाएल के पुत्रों का जुबली आएगा, तब उनकी विरासत उस गोत्र की विरासत में जोड़ दी जाएगी जिससे वे संबंधित हैं; इसलिए उनकी विरासत हमारे पिताओं के गोत्र की विरासत से ले ली जाएगी।”<sup>5</sup> तब मूसा ने प्रभु के वचन के अनुसार इसाएल के पुत्रों को आज्ञा दी, यह कहते हुए, “यूसुफ के पुत्रों का गोत्र अपनी बातों में सही है।<sup>6</sup> यह वही है जो प्रभु ने सलोफहद की पुत्रियों के विषय में आज्ञा दी है, यह कहते हुए, ‘उन्हें जिसे चाहें उससे विवाह करने दें, केवल उन्हें अपने पिता के गोत्र के परिवार के भीतर ही विवाह करना चाहिए।’<sup>7</sup> इसलिए इसाएल के पुत्रों की कोई भी

## गिनती

विरासत गोत्र से गोत्र में स्थानांतरित नहीं की जाएगी, क्योंकि इसाएल के पुत्रों को अपने पिताओं के गोत्र की विरासत का अधिकार बनाए रखना चाहिए।<sup>8</sup> और हर वह पुत्री जो इसाएल के पुत्रों के किसी भी गोत्र से विरासत में आती है, अपने पिता के गोत्र के परिवार में से किसी की पती बनेगी, ताकि इसाएल के पुत्रों को अपने पिताओं की विरासत का अधिकार प्राप्त हो सके।<sup>9</sup>

इसलिए कोई भी विरासत एक गोत्र से दूसरे गोत्र में स्थानांतरित नहीं की जाएगी, क्योंकि इसाएल के पुत्रों के गोत्रों को अपनी-अपनी विरासत का अधिकार बनाए रखना चाहिए।<sup>10</sup> जैसा कि प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसे ही सलोफहट की पुत्रियों ने किया:<sup>11</sup> महला, तिज़ा, होगला, मिल्का, और नोहा, सलोफहट की पुत्रियों ने अपने चाचाओं के पुत्रों से विवाह किया।<sup>12</sup> उन्होंने यूसुफ के पुत्र मनश्शे के पुत्रों के परिवारों में से विवाह किया, और उनकी विरासत उनके पिता के परिवार के गोत्र के साथ बनी रही।<sup>13</sup> ये वे आज्ञाएँ और विधियाँ हैं जिन्हें प्रभु ने मूसा के माध्यम से इसाएल के पुत्रों को मोआब के मैदानों में, यरदन के पास यरीहो के सामने, आज्ञा दी।

## व्यवस्थाविवरण

**१** ये वे वचन हैं जो मूसा ने यरदन के पूर्व में जंगल में, अराबा में, सूफ के सामने, परान, तोफेल, लावान, हसरोत और दीज़हाब के बीच में, समस्त इसाएल से कहे।<sup>२</sup> होरेब से कादेश बर्नेआ तक सेईर पर्वत के रास्ते ग्यारह दिन का मार्ग है।<sup>३</sup> चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें मर्हिने के पहले दिन को, मूसा ने इसाएलियों से सब कुछ कहा जो यहोवा ने उनके विषय में उसे आज्ञा दी थी।<sup>४</sup> यह तब हुआ जब उसने एमोरी के राजा सिहोन को, जो हेशबोन में राज्य करता था, और बाशान के राजा ओग को, जो अश्तारोत और एद्रेइ में राज्य करता था, पर विजय प्राप्त की थी।<sup>५</sup> यरदन के पूर्व में मोआब देश में, मूसा ने इस व्यवस्था को समझाना शुरू किया, यह कहते हुएः<sup>६</sup> “यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमसे होरेब में कहाः ‘तुम इस पर्वत पर पर्याप्त समय तक ठहरो हो।’” शिविर को तोड़ो और आगे बढ़ो। एमोरी के पहाड़ी देश में और उसके आस-पास के सभी क्षेत्रों में जाओ—अराबा, पहाड़ी, पश्चिमी तलहटी, नेगेव, और समुद्र तट तक—कनानियों और लेबनान के देश में, महान नदी, यूफ्रेटीस तक।<sup>७</sup> देखो, मैंने तुम्हारे सामने देश रखा है। जाओ और उस देश को अधिकार में लो जिसका यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों—अब्राहम, इसहाक, और याकूब—से और उनके बाद उनके वंशजों से शाश्य ली थी।<sup>८</sup> उस समय मैंने तुमसे कहा, मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सकता।<sup>९</sup> यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारी संत्ता बढ़ाई है, और आज तुम आकाश के तारों के समान असंख्य हो।<sup>१०</sup> यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, तुम्हें हजार गुना बढ़ाए और तुम्हें अशीविद दे, जैसा उसने वादा किया था।<sup>११</sup> परंतु मैं अकेला तुम्हारी समस्याओं, बोझों और विवादों को कैसे सह सकता हूँ?<sup>१२</sup> अपने प्रत्येक गोत्र से तुद्धिमान, समझदार और सम्मानित पुरुषों को चुनो, और मैं उन्हें तुम्हारे नेता नियुक्त करूँगा।<sup>१३</sup> उमने मूँझे उत्तर दिया और कहा, “जो आप करने का प्रस्ताव कर रहे हैं वह अच्छा है।”<sup>१४</sup> इसलिए मैंने तुम्हारे गोत्रों के प्रमुखों—बुद्धिमान और अनुभवी पुरुषों—को लिया और उन्हें तुम्हारे ऊपर नेता बनाया: हजारों, सैकड़ों, पचासों, और दसों के सेनापति, और प्रत्येक गोत्र के अधिकारी।<sup>१५</sup> मैंने उस समय तुम्हारे न्यायाधीशों को आदेश दिया: “अपने भाइयों के बीच के मामले सुनो और न्याय करो, चाहे वह इसाएलियों के बीच हो या इसाएलियों और विदेशियों के बीच।”<sup>१६</sup> न्याय करने में पक्षपात न करो। छाटे और बड़े दोनों को समान रूप से सुनो। किसी व्यक्ति से मत डरो, क्योंकि न्याय परमेश्वर का है। कोई भी मामला जो बहुत कठिन हो, मेरे पास लाओ, और मैं उसे सुनूँगा।<sup>१७</sup> उस समय मैंने तुम्हें उन सभी बातों के बारे में निर्देश दिए जो तुम्हें करनी थीं।<sup>१८</sup> फिर हम होरेब से चले और उस विशाल और भयानक जंगल से होकर यात्रा की जो तुमने

देखी, एमोरी के पहाड़ी देश के रास्ते पर, जैसा यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी थी। जब हम कादेश बर्नेआ पहुँचे,<sup>१९</sup> तब मैंने तुमसे कहा: “तुम एमोरी के पहाड़ी देश का पहुँच गए हो, जिसे यहोवा हमारा परमेश्वर हमें दे रहा है।”<sup>२०</sup> देखो, यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे सामने देश रखा है। ऊपर जाओ और अधिकार में लो, जैसा यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुमसे कहा था। मत डरो और न निराश हो।<sup>२१</sup> फिर तुम सब मेरे पास आए और कहा, “आओ हम पुरुषों को आगे भेजो ताकि वे देश की खोज करें और उस मार्ग की रिपोर्ट लाएं जिसे हमें लेना चाहिए और उन नगरों की जो हमें मिलेंगी।”<sup>२२</sup> यह विचार मुझे अच्छा लगा, इसलिए मैंने तुमसे से बाहर पुरुषों को चुना, प्रत्येक गोत्र से एक।<sup>२३</sup> वे पहाड़ी देश में गए और एशकोल की घाटी में पहुँचे और उसकी खोज की।<sup>२४</sup> वे देश के कुछ फल लेकर हमारे पास लौटे और रिपोर्ट दी, “यह एक अच्छा देश है जिसे यहोवा हमारा परमेश्वर हमें दे रहा है।”<sup>२५</sup> परंतु तुम ऊपर जाने के लिए तैयार नहीं थो तुमने यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।<sup>२६</sup> तुमने अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाया और कहा, “यहोवा हमसे धृणा करता है; उसने हमें एमोरी के हाथों में देने के लिए मिस्स से बाहर निकाला ताकि हमें नष्ट कर दे।”<sup>२७</sup> हम कहाँ जा सकते हैं? हमारे भाइयों ने हमारा मनोबल गिरा दिया है। वे कहते हैं कि लोग हमसे अधिक शक्तिशाली और लंबे हैं; नगर बड़े हैं, जिनकी दीवारें आकाश तक ऊँची हैं। हमने वहाँ अनाकियों को भी देखा।<sup>२८</sup> तब मैंने तुमसे कहा, “उनसे भयभीत या डरो मत।”<sup>२९</sup> यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे आगे चलता है, तुम्हारे लिए लड़ेगा, जैसा उसने मिस्स में तुम्हारे लिए किया था,<sup>३०</sup> और जंगल में, जहाँ तुमने देखा कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें कैसे ले गया, जैसे एक पिता अपने पुत्र को ले जाता है, उस पूरे मार्ग पर जिसे तुमने लिया जब तक तुम इस स्थान पर नहीं पहुँचे।<sup>३१</sup> परंतु इन सबके बाद भी, तुमने यहोवा अपने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया,<sup>३२</sup> जो यात्रा में तुम्हारे आगे गया, रात में आग के द्वारा और दिन में बादल के द्वारा, तुम्हारे लिए शिविर लगाने के स्थान खोजने और तुम्हें मार्ग दिखाने के लिए।<sup>३३</sup> जब यहोवा ने तुम्हारे शब्द सुने, वह क्रोधित हुआ और उसने शपथ खाईः<sup>३४</sup> “इस दुष्ट पीढ़ी के इन लोगों में से कोई भी उस अच्छे देश को नहीं देखेगा जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने की शाश्य ली थी,”<sup>३५</sup> केवल येहुवेन का पुत्र कालेब। वह इसे देखेगा, और मैं उसे और उसके वंशजों को वह देश द्वांगा जिस पर उसने पैर रखा था, क्योंकि उसने यहोवा का पूरी तरह से अनुसरण किया।<sup>३६</sup> तुम्हारी वजह से, यहोवा मुझसे भी क्रोधित हुआ और कहा, “तुम भी इसमें प्रवेश नहीं करोगे।”<sup>३७</sup> परंतु नून का पुत्र यहोश,

## व्यवस्थाविवरण

जो तुम्हारे सामने खड़ा है, इसमें प्रवेश करेगा। उसे प्रोत्साहित करो, क्योंकि वह इसाएल को इसे विरासत में दिलाएगा।<sup>39</sup> और वे बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा था कि वे तूट बन जाएंगे—तुम्हारे पुत्र जो अभी तक भले और बुरे को नहीं जानते—वे देश में प्रवेश करेंगे। मैं उन्हें इसे दूंगा, और वे इसे अधिकार में लेंगे।<sup>40</sup> परंतु तुम—मुझे और लाल सागर के मार्ग से जंगल की ओर प्रस्थान करो।<sup>41</sup> तब तुमने उत्तर दिया, ‘हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। हम ऊपर जाएंगे और लड़ेंगे, जैसा यहोवा ने हमें आज्ञा दी थी।’ और तुमसे से प्रत्येक ने अपने हाथियार पहन लिए, यह सोचकर कि पहाड़ी देश में चढ़ना आसान होगा।<sup>42</sup> परंतु यहोवा ने मुझसे कहा, ‘उन्हें बताओ, ऊपर न जाओ और न लड़ो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ, और तुम अपने शत्रुओं द्वारा पराजित हो जाओगे।’<sup>43</sup> इसलिए मैंने तुमसे कहा, परंतु तुमने नहीं सुनी। तुमसे यहोवा के बचन का उल्लंघन किया और घमंडपूर्क पहाड़ी देश में चढ़ गए।<sup>44</sup> तब वहाँ रहने वाले एमरी बाहर आए और मधुमालिखियों की तरह तुम पर हमला किया। उन्होंने तुम्हें सईर से लेकर होर्मा तक खड़ेद़े दिया।<sup>45</sup> तुम लौटे और यहोवा के सामने रोए, परंतु उसने तुम्हारी नहीं सुनी और न ही ध्यान दिया।<sup>46</sup> इसलिए तुम कांदेश में कई दिन रहे—वह सब समय जो तुमने वहाँ बिताया।

**2** तब हम वापस मुड़े और प्रभु के निर्देशानुसार लाल सागर की ओर जंगल में यात्रा की, और हम लंबे समय तक सईर पर्वत के क्षेत्र में भटकते रहे।<sup>2</sup> तब प्रभु ने मुझसे कहा, <sup>3</sup> ‘तुमने इस पर्वत के चारों ओर बहुत समय तक चक्कर लगाया है। अब उत्तर की ओर मुड़ा।’<sup>4</sup> लोगों को यह निर्देश दो: तुम अपने संबंधियों, एसाव के बंशजों के क्षेत्र से गुजरने वाले हो, जो सईर में रहते हैं। वे तुमसे डरेंगे, लेकिन बहुत सावधान रहना।<sup>5</sup> उनसे युद्ध मत करना, क्योंकि मैं तुम्हें उनकी भूमि का एक भी कदम नहीं दूँगा—क्योंकि मैंने सईर पर्वत को एसाव को संपत्ति के रूप में दिया है।<sup>6</sup> तुम जो भोजन खाओगे और जो पानी पियोगे, उसके लिए उन्हें चांदी में भ्रातान करना।<sup>7</sup> वास्तव में, तुम्हारे परमेश्वर प्रभु ने तुम्हारे सभी कार्यों में तुम्हें आशीर्वाद दिया है। उसने इस विशाल जंगल में तुम्हारी यात्रा की देखभाल की है। ये चालीस वर्ष, तुम्हारे परमेश्वर प्रभु तुम्हारे साथ रहे हैं, और उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।<sup>8</sup> इसलिए हम अपने संबंधियों, सईर में रहने वाले एसाव के बंशजों के पास से गुजरो। हमने आराबा और एलाथ और एज़ियन गेबेर के मार्ग से बचते हुए मोआब के जंगल की ओर मुड़ गए।<sup>9</sup> तब प्रभु ने मुझसे कहा, ‘मोआवियों को परेशान मत करो या उन्हें युद्ध के लिए उकसाओ, क्योंकि मैं तुम्हें

भूमि का कोई हिस्सा नहीं दूँगा। मैंने आर को लूट के बंशजों को उनकी संपत्ति के रूप में दिया है।’<sup>10</sup> वहाँ पहले एमिम रहते थे—एक महान और अनेक लोग, अनाकियों के समान ऊंचे।<sup>11</sup> अनाकियों की तरह, उन्हें भी रफाईम माना जाता था, हालांकि मोआबी उन्हें एमिम कहते थे।<sup>12</sup> पहले होरी लोग सईर में रहते थे, लेकिन एसाव के बंशजों ने उन्हें बाहर निकाल दिया, उन्हें नष्ट कर दिया और उनकी जगह बस गए—जैसे इसाएल ने उस भूमि के साथ किया जो प्रभु ने उन्हें दी थी।<sup>13</sup> अब उठो और ज़ेरेद घाटी को पार करो।’<sup>14</sup> इसलिए हमने ज़ेरेद को पार किया।<sup>15</sup> जब से हमने कादेश बरनेआ छोड़ा और ज़ेरेद घाटी को पार किया, वह समय अडुतीस वर्ष था—जब तक कि योद्धाओं की पूरी पीढ़ी शिविर से नष्ट नहीं हो गई, जैसा कि प्रभु ने उनसे शाश्य ली थी।<sup>16</sup> प्रभु का हाथ उनके खिलाफ था, उन्हें शिविर से समाप्त करने के लिए, जब तक कि सभी समाप्त नहीं हो गए।<sup>17</sup> जब सभी योद्धा नष्ट हो गए, प्रभु ने मुझसे कहा:<sup>18</sup> ‘आज तुम अर में मोआब के क्षेत्र से गुजरने वाले हो।’<sup>19</sup> जब तुम अम्मोनियों के पास आओ, तो उन्हें परेशान मत करो या उन्हें उकसाओ, क्योंकि मैं तुम्हें अम्मोनियों की भूमि का कोई हिस्सा नहीं दूँगा। मैंने इसे लूट के बंशजों को उनकी संपत्ति के रूप में दिया है।<sup>20</sup> (उस भूमि की भी रफाईम की भूमि माना जाता था, जो पहले वहाँ रहते थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमिम कहते थे—<sup>21</sup> एक महान और अनेक लोग, अनाकियों के समान ऊंचे—लेकिन प्रभु ने उन्हें अम्मोनियों के सामने नष्ट कर दिया, जिहोनें उन्हें बाहर निकाल दिया और उनकी जगह बस गए।<sup>22</sup> जैसे उसने सईर में रहने वाले एसाव के बंशजों के लिए किया—उसने उनके सामने होरी लोगों को नष्ट कर दिया, और वे उनकी जगह बस गए आज तक।<sup>23</sup> अक्ती लोग गाजा तक के गांवों में रहते थे, लेकिन कैफ्तोरी, जो क्रेते से आए थे, ने उन्हें नष्ट कर दिया और उनकी जगह बस गए।)<sup>24</sup> उठो! चलो और अनोन घाटी को पार करो। देखो, मैंने तुम्हें एमरी सिहोन, हेशबोन के राजा, और उसकी भूमि की सौंप दिया है। इसे कब्जा करना शुरू करो; उससे युद्ध करो।<sup>25</sup> आज मैं तुम्हारे डर और भय को आकाश के नीचे की जातियों पर डालना शुरू करूँगा। जब वे तुम्हारी खबर सुनेंगे, तो वे तुम्हारे कारण कांपेंगे और पीड़ा में होंगे।<sup>26</sup> तब मैंने केदेमेत के जंगल से हेशबोन के राजा सिहोन के पास शांति के शब्दों के साथ दूत भेजे:<sup>27</sup> हमें अपनी भूमि से गुजरने दो। हम मुख्य सङ्क पर रहेंगे और दाएं या बाएं नहीं मुड़ेंगे।<sup>28</sup> हम तुमसे चांदी में भोजन और पानी खरीदेंगे। केवल हमें पैदल गुजरने दो,<sup>29</sup> जैसा कि सईर में एसाव के बंशजों और आर में मोआवियों ने हमें करने दिया—जब तक कि हम यरदन को पार न कर लें

## व्यवस्थाविवरण

उस भूमि में जिसे हमारा परमेश्वर प्रभु हमें दे रहा है।<sup>30</sup> लेकिन हेशबोन के राजा सिहोन ने हमें गुजरने नहीं दिया, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर प्रभु ने उसकी आत्मा को कठोर कर दिया और उसके हृदय को अड़ियल बना दिया ताकि वह तुम्हें सौंप दे।<sup>31</sup> प्रभु ने मुझसे कहा, ‘देखो, मैंने सिहोन और उसकी भूमि को तुम्हें देना शुरू कर दिया है। इसे कब्जा करना शुरू करो।’<sup>32</sup> तब सिहोन अपने सभी लोगों के साथ हमें जहाज में सामना करने आया।<sup>33</sup> हमारे परमेश्वर प्रभु ने उसे हमारे हाथों में सौंप दिया, और हमने उसे, उसके पुत्रों और उसकी पूरी सेना को मार डाला।<sup>34</sup> उस समय हमने उसके सभी नगरों को कब्जा कर लिया और हर पुरुष, महिला और बच्चे को प्रतिबंध के अधीन कर दिया—हमने कोई जीवित नहीं छोड़ा।<sup>35</sup> हमने पशुशन और नगरों से लूट को अपनी लूट के रूप में लिया।<sup>36</sup> अरनोन घाटी के किनारे पर अरोएर से और घाटी में नगर से, गिलाद तक, कोई भी नगर हमारे लिए बहुत मजबूत नहीं था। हमारे परमेश्वर प्रभु ने उन सभी को हमारे हाथों में दे दिया।<sup>37</sup> लेकिन तुम अम्मोनियों की भूमि के पास नहीं गए, या यज्वोक नदी के किनारे, या पहाड़ी देश के नगरों में, या किसी क्षेत्र में जिसे प्रभु ने हमें मना किया था।

**3** तब हम मुड़े और बाशान की ओर जानेवाले मार्ग पर चढ़े, और बाशान का राजा ओग अपने सब लोगों के साथ हमारे विरुद्ध एंड्रेझ में लड़ने के लिए निकला।<sup>2</sup> परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, ‘उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसे, उसके सब लोगों और उसकी भूमि को रोरे हाथ में कर दिया है। उसके साथ वही कर जो तूने एमोरी राजा सिहोन के साथ किया, जो हेशबोन में रहाथा।’<sup>3</sup> इसलिए हमारे परमेश्वर यहोवा ने बाशान के राजा ओग और उसके सब लोगों को हमारे हाथ में कर दिया, और हमने उहाँे मार डाला जब तक कि उनमें से कोई जीवित न बचा।<sup>4</sup> हमने उसकी सब नगरों को—कुल साठ नगर, अर्गोब का सारा प्रदेश, बाशान के राज्य का सारा क्षेत्र—पर अधिकार कर लिया।<sup>5</sup> इन सब नगरों में ऊँची दीवारें, फाटक और किवाड़ थे, इसके अलावा बहुत से बिना दीवार वाले गाँव भी थे।<sup>6</sup> हमने उहाँे नष्ट कर दिया, जैसा हमने हेशबोन के राजा सीहोन के साथ किया था—प्रयुक्त नगर, पुरुष, स्त्री, और बालक।<sup>7</sup> परन्तु हमने पशुओं और नगरों की लूट को अपने लिए रख लिया।<sup>8</sup> तब हमने यरदन के पूर्व के क्षेत्र को, अरनोन घाटी से लेकर हर्मोन पर्वत तक, दो एमोरी राजाओं से ले लिया।<sup>9</sup> (सिदीनियों ने हर्मोन को सिरयोन कहा, और एमोरी लोग इसे सेनिर कहते हैं।)<sup>10</sup> हमने पठार के सभी नगरों और गिलाद और बाशान के सभी नगरों को, सलेखा और एंड्रेझ तक, ओग के राज्य के नगरों को ले लिया।<sup>11</sup>

बाशान का राजा ओग रेफाईम का अंतिम था। उसका पलंग, जो लोहे का बना था, तेरह फुट लंबा और छह फुट चौड़ा था। यह अब भी अम्मोनियों के रब्बा में है।<sup>12</sup> उस समय हमने भूमि पर अधिकार कर लिया। मैंने रूबेनियों और गादियों को अरनोन घाटी के पास अरोएर से लेकर गिलाद के आधे पहाड़ी देश तक, उसके नगरों सहित, दिया।<sup>13</sup> गिलाद का शेष भाग और बाशान का सारा राज्य, ओग का राज्य, मैंने मनश्शे के आधे गोत्रों को दिया—अर्गोब का सारा क्षेत्र, बाशान का सारा प्रदेश। इसे एक समय में रेफाईम की भूमि कहा जाता था।<sup>14</sup> मनश्शे के पुर्य याईर ने अर्गोब के पूरे क्षेत्र को गेशूरी और माकाती की सीमा तक लिया और उसका नाम हवोत याईर रखा, और यह नाम आज तक बना हुआ है।<sup>15</sup> मैंने माकार को गिलाद दिया।<sup>16</sup> रूबेनियों और गादियों को मैंने गिलाद से अरनोन घाटी तक का क्षेत्र दिया, जिसमें घाटी और अम्मोन की सीमा शामिल है,<sup>17</sup> तथा अराबा, जिसका सीमा यरदन है, किन्त्रेत र से लेकर अराबा के सागर (नमक सागर) तक, पिसगा की ढलानों के नीचे।<sup>18</sup> उस समय मैंने तुम्हें यह आज्ञा दी: ‘तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें इस भूमि को अधिकार करने के लिए दिया है। परन्तु तुम्हारे सभी योद्धा, जो युद्ध के लिए सुसज्जित हैं, तुम्हारे इसाएली भाइयों के आगे पार जाएं।<sup>19</sup> केवल तुम्हारी पत्नियों, बच्चे, और पशु—मुझे पता है कि तुम्हारे पास बहुत पशु हैं—उन नगरों में रह सकते हैं जो मैंने तुम्हें दिए हैं।<sup>20</sup> जब यहोवा तुम्हारे भाइयों को विश्राम देगा जैसा उसने तुम्हें दिया है, और वे भी यरदन के पार भूमि का अधिकार करेंगे, तब तुम में से प्रत्येक अपने उस अधिकार में लौट सकता है जो मैंने तुम्हें दिया है।<sup>21</sup> उस समय मैंने यहोश को आज्ञा दी: ‘तुमने अपनी ऊँचों से देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने इन दो राजाओं के साथ क्या किया। यहोवा वही करेगा उन सभी राज्यों के साथ जिनका तुम अब सामना कर रहे हो।<sup>22</sup> उनसे मत डरो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा स्वयं तुम्हारे लिए लड़ता है।’<sup>23</sup> उस समय मैंने यहोवा से विनिती की:<sup>24</sup> ‘हे प्रभु यहोवा, आपने अपने दास को अपनी महानाता और अपनी शक्तिशाली भुजा दिखाना शुरू किया है। स्वर्ग या पृथ्वी पर कौन सा देवता है जो आपके कार्यों और शक्तिशाली कृतियों को कर सकता है? <sup>25</sup> मुझे यरदन के पार जाकर उस अच्छी भूमि को देखने दें—सुंदर पहाड़ी देश और लेबानोन।’<sup>26</sup> परन्तु यहोवा मुझसे क्रोधित था तुम्हारे कराण और उसने नहीं सुना। उसने कहा, ‘बस, इस विषय में मुझसे फिर बात मत करना।’<sup>27</sup> पिसगा की चोटी पर चढ़कर पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, और पूर्व की ओर देखो। अपनी ऊँचों से भूमि को देखो, क्योंकि तुम यरदन को पार नहीं करोगे।<sup>28</sup> परन्तु यहोश को नियुक्त करो और उसे प्रोत्साहित और

## व्यवस्थाविवरण

मजबूत करो, क्योंकि वह लोगों को पार ले जाएगा और उन्हें उस भूमि का अधिकार दिलाएगा जिसे तुम देखोगे।<sup>29</sup> इसलिए हम बेथ पेओर के सामने की घाटी में रहे।

**4** अब, इसाएल, उन विधियों और नियमों को सुनो जिन्हें तुम्हें सिखा रहा हूँ ताकि तुम उनका पालन कर सको, जिससे तुम जीवित रह सको और उस देश में प्रवेश कर सको और उसे प्राप्त कर सको जो तुम्हरे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहे हैं। जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ उसमें कुछ भी न जोड़ो और न ही उससे कुछ घटाओ, बल्कि उन आज्ञाओं का पालन करो जो तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी हैं।<sup>3</sup> तुम्हारी अँखों ने देखा है कि यहोवा ने बालपोर में क्या किया। तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने उन सबको नष्ट कर दिया जो बालपोर के पीछे चले थे।<sup>4</sup> लेकिन तुम सब जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लगे रहे, आज जीवित हो।<sup>5</sup> देखो, मैंने तुम्हें विधियाँ और नियम सिखाए हैं, जैसा कि मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे आज्ञा दी थी, ताकि तुम उस देश में उनका पालन कर सको जिसमें तुम प्रवेश करने जा रहे हो।<sup>6</sup> उनका पालन करो और उन्हें करो, क्योंकि इससे तुम्हारी बुद्धि और समझ का प्रदर्शन होगा, और अन्य राष्ट्र यह सुनकर कहेंगे, निश्चित रूप से यह महान राष्ट्र बुद्धिमान और समझदार है।<sup>7</sup> क्योंकि कौन सा महान राष्ट्र है जिसका परमेश्वर उनके निकट है जैसे कि हमारा परमेश्वर यहोवा जब भी हम उसे पुकारते हैं?<sup>8</sup> और कौन सा महान राष्ट्र है जिसके पास ऐसे धर्मी विधियाँ और नियम हैं जैसे कि यह संपूर्ण व्यवस्था जो मैं आज तुम्हरे सामने रख रहा हूँ?<sup>9</sup> सिर्फ सावधान रहो और अपने आप पर ध्यान दो ताकि तुम उन चीजों को न भूलो जो तुम्हारी अँखों ने देखी हैं और उन्हें अपने दिल से कभी न जाने दो जब तक तुम जीवित हो। उन्हें अपने बच्चों और पाते-पोतियों को सिखाओ।<sup>10</sup> उस दिन को याद करो जब तुम होरेब में अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े थे, जब उसने कहा, 'लोगों को मेरे सामने इकट्ठा करो ताकि वे मेरे शब्द सुन सकें और जब तक वे धर्मी पर जीवित हैं, मुझसे डरना सीखें, और ताकि वे उन्हें अपने बच्चों को सिखा सकें।'<sup>11</sup> तुम पास आए और पर्वत के तल पर खड़े हुए जब वह आग से आकाश तक जल रहा था, अंधकार, बादल, और धने अंधकार के साथ।<sup>12</sup> फिर यहोवा ने आग से तुमसे बात की। तुमने शब्दों की आवाज सुनी लेकिन कोई रूप नहीं देखा; केवल एक आवाज थी।<sup>13</sup> उसने तुम्हें अपनी वाचा घोषित की, दस आज्ञाएँ, जिन्हें उसने तुम्हें पालन करने की आज्ञा दी, और उसने उन्हें दो पत्थर की पटिकाओं पर लिखा।<sup>14</sup> उस समय यहोवा ने मुझे यह सिखाने का

निर्देश दिया कि तुम उन विधियों और नियमों का पालन करो जो तुम यरदन को पार कर उस देश में प्राप्त करने जा रहे हो।<sup>15</sup> अपने आप पर ध्यान दो, क्योंकि तुमने कोई रूप नहीं देखा जब यहोवा ने होरेब में आग से तुमसे बात की।<sup>16</sup> अपने आप को भृत न करो किसी मूर्ति को बनाकर, किसी भी आकृति के रूप में—चाहे वह पुरुष हो या महिला,<sup>17</sup> या पृथी पर कोई पशु, या आकाश में उड़ने वाला कोई पश्ची,<sup>18</sup> या जमीन पर चलने वाला कोई जीव, या नीचे के जल में कोई मछली।<sup>19</sup> और जब तुम आकाश की ओर देखो और सर्व, चंद्रमा, और तारों को देखो—सभी आकाशीय समूह—तो उनके सामने ज्ञाने या उनकी पूजा करने के लिए मत खिंचो। ये तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने आकाश के नीचे सभी राष्ट्रों को दिए हैं।<sup>20</sup> लेकिन यहोवा ने तुम्हें चुना और तुम्हें मिस्र की लोहे की भट्टी से बाहर लाया ताकि तुम उसके अपने लोग बनो, जैसा कि तुम आज हो।<sup>21</sup> यहोवा मुझसे तुम्हारी वजह से क्रोधित हुआ और उसने गंभीरता से शपथ ली कि मैं यरदन को पार नहीं करूँगा और न ही उस अच्छे देश में प्रवेश करूँगा जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत के रूप में दे रहा है।<sup>22</sup> मैं इस देश में मार जाऊँगा; मैं यरदन को पार नहीं करूँगा, लेकिन तुम पार करोगे और उस अच्छे देश को प्राप्त करोगे।<sup>23</sup> सावधान रहो कि अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को न भूलो जो उसने तुम्हरे साथ की है; अपने लिए किसी भी रूप की मूर्ति मत बनाओ जिसे तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने मना किया है।<sup>24</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा एक भस्म करने वाली आग है, एक ईर्ष्यालु परमेश्वर।<sup>25</sup> जब तुम्हरे बच्चे और पोते हो जाएं और तुम उस देश में लंबे समय तक रहो, यदि तुम फिर भृत हो जाओ और एक मूर्ति बनाओ, जो यहोवा की वृत्ति में बुरा है, उसे क्रोधित करने के लिए—<sup>26</sup> मैं आज आकाश और पृथी की तुम्हरे खिलाफ गवाह के रूप में बुलाता हूँ कि तुम उस देश से जल्दी नष्ट हो जाओगे जिसे तुम यरदन को पार कर प्राप्त करने जा रहे हो। तुम वहाँ लंबे समय तक नहीं रहोगे बल्कि पूरी तरह से नष्ट हो जाओगे।<sup>27</sup> यहोवा तुम्हें लोगों के बीच बिखेर देगा, और तुमसे मेरी केवल कुछ ही उन राष्ट्रों में जीवित रहेंगे जहाँ यहोवा तुम्हें ले जाएगा।<sup>28</sup> वहाँ तुम लकड़ी और पश्चर के मनुष्य-निर्मित देवताओं की पूजा करोगे, जो देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते, खा नहीं सकते, या सूध नहीं सकते।<sup>29</sup> लेकिन यदि वहाँ से तुम अपने परमेश्वर यहोवा को खोजोगे, तो तुम उसे पाओगे यदि तुम उसे अपने पूरे दिल और आत्मा से खोजोगे।<sup>30</sup> तुम्हारा विपत्ति में, जब ये सब बातें तुम्हारे साथ बाद के दिनों में घटित होंगी, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौटोगे और उसकी आवाज का पालन करोगे।<sup>31</sup>

## व्यवस्थाविवरण

क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा दयातु है; वह तुम्हें न तो छोड़ देगा और न ही नष्ट करेगा और न ही तुम्हारे पूर्वजों के साथ की गई वाचा को भूलेगा।<sup>32</sup> अब पूर्व के दिनों के बारे में पूछो, तुम्हारे समय से पहले, उस दिन से जब परमेश्वर ने धरती पर मानवता को बनाया: क्या ऐसा कुछ महान कभी हुआ है? क्या ऐसा कुछ सुना गया है?<sup>33</sup> क्या किसी अन्य लोगों ने आग के बीच से परमेश्वर की आवाज़ सुनी है, जैसा कि तुमने सुना है, और जीवित रहे? <sup>34</sup> क्या किसी देवता ने कभी किसी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के बीच से परीक्षणों, चिन्हों, चमक्कारों, युद्ध, और महान कार्यों के द्वारा निकालने का प्रयास किया है, जैसा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारी अँखों के सामने किया? <sup>35</sup> तुम्हें ये बातें इसलिए दिखाई गई ताकि तुम जान सको कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसके अलावा कोई नहीं है। <sup>36</sup> स्वर्ग से उसने तुम्हें अपनी आवाज़ सुनाई ताकि तुम्हें अनुशासन मिले। धरती पर उसने तुम्हें अपनी महान आग दिखाई, और तुमने आग के भीतर से उसके शब्द सुने। <sup>37</sup> क्योंकि उसने तुम्हारे पूर्वजों से प्रेम किया, उसने उनके वंशजों को चुना और तुम्हें अपनी उपस्थिति और महान शक्ति से मिस्र से बाहर लाया, <sup>38</sup> ताकि तुम्हारे सामने तुमसे बड़े और मज़बूत राष्ट्रों को निकाल दे, और तुम्हें उनके देश में लाए ताकि वह तुम्हें उसे विरासत के रूप में दे सके, जैसा कि ख्वर्ग में ऊपर और धरती पर नीचे यहोवा ही परमेश्वर है। उसके अलावा कोई नहीं है। <sup>39</sup> उसकी विधियों और आज्ञाओं का पालन करो, ताकि तुम्हारे साथ और तुम्हारे बच्चों के साथ सब कुछ अच्छा हो, और तुम उस देश में लंबे समय तक जीवित रह सको जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें हमेशा के लिए दे रहा है। <sup>40</sup> फिर मूसा ने यरदन के पूर्व में तीन नगर अलग किए, <sup>41</sup> जहाँ कोई व्यक्ति जिसने अनजाने में किसी को मारा हो, बिना पूर्व शक्तुता के, शरण के लिए भाग सके और अपनी जान बचा सके: <sup>42</sup> रूबनियों के लिए जंगल के पठार में बेज़र, गादियों के लिए गिलाद में रामोत, और मनश्चियों के लिए बाशान में गोलान। <sup>43</sup> यह वह व्यवस्था है जो मूसा ने इसाएलियों के सामने रखी: <sup>44</sup> ये वे विधियाँ, आदेश, और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इसाएलियों को मिस्र से निकलने के बाद घोषित किया, <sup>45</sup> बेतपोर के पास की घाटी में, यरदन के पूर्व में, एमोरी राजा सिहोन के देश में, जो हेशबोन में शासन करता था और जिसे मूसा और इसाएलियों ने मिस्र से निकलने के बाद पराजित किया। <sup>46</sup> उन्होंने उसकी भूमि और बाशान के राजा आगे के क्षेत्र को प्राप्त किया— यरदन के पूर्व में दो एमोरी राजा। <sup>47</sup> यह भूमि अरोएर से, जो अर्नोन घाटी के पास है, सियोन पर्वत (अर्थात् हर्मोन) तक फैली हुई थी, <sup>48</sup> और इसमें यरदन के पूर्व में सभी

अराबा शामिल थे, अराबा के सागर तक, पिसगा की ढलानों के नीचे।

**5** मूसा ने समस्त इसाएल को बुलाया और उनसे कहा: “हे इसाएल, उन विधियों और नियमों को सुनो जिन्हें मैं आज तुम्हारे सामने प्रकट कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और उनका पालन करने में सावधान रहो।<sup>2</sup> हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब में हमारे साथ एक वाचा बांधी।<sup>3</sup> यह वाचा केवल हमारे पूर्वजों के साथ ही नहीं, बल्कि हम सबके साथ बांधी गई है जो आज यहाँ जीवित हैं।<sup>4</sup> यहोवा ने पर्वत पर आग के बीच से तुम्हें आमेसमने का बात की।<sup>5</sup> उस समय मैं यहोवा और तुम्हारे बीच खड़ा था ताकि तुम्हें उसका वचन सुनाऊँ, क्योंकि तुम आग से डरते थे और पर्वत पर नहीं चढ़ो। और उसने कहा: <sup>6</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से, दासत्व के घर से निकाल लाया।<sup>7</sup> तुम्हारे पास मेरे सिवा और कई देवता नहीं होगा।<sup>8</sup> तुम अपने लिए कोई मूर्ति न बनाओ, न तो आकाश में, न पृथ्वी पर, न जल के नीचे किसी भी रूप में।<sup>9</sup> तुम उन्हें दंडवत न करो और न उनकी सेवा करो; क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, एक जलनशील परमेश्वर हूँ, जो मुझसे बैर करने वालों के पाप का दंड उनके बच्चों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देता हूँ,<sup>10</sup> परंतु जो मुझसे प्रेम करते हैं और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन पर हजारों पीढ़ियों तक अनुग्रह करता हूँ।<sup>11</sup> तुम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरुपयोग न करो, क्योंकि यहोवा उस निर्दोष नहीं ठहराएगा जो उसके नाम का दुरुपयोग करता है।<sup>12</sup> विश्राम दिन को पवित्र मानकर उसका पालन करो, जैसा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है।<sup>13</sup> छ: दिन तुम परिश्रम करो और अपना सारा काम करो,<sup>14</sup> परंतु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्राम दिन है। उस दिन तुम कोई काम न करो—न तुम, न तुम्हारा बेटा या बेटी, न तुम्हारा दास या दासी, न तुम्हारा बैल, गधा या कोई भी पशु, न तुम्हारे नगरों में रहने वाला कोई परदेशी—ताकि तुम्हारे दास और दासियाँ भी तुम्हारी तरह विश्राम कर सकें।<sup>15</sup> स्मरण रखो कि तुम मिस्र में दास थे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें वहाँ से बलवान हाथ और बड़े हुए भुजा के साथ निकाला। इसलिए तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें विश्राम दिन का पालन करने की आज्ञा दी है।<sup>16</sup> अपने पिता और अपनी माता का आदर करो, जैसा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है, ताकि तुम्हारी आयु लंबी हो और तुम्हारा भला हो उस देश में जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>17</sup> तुम हल्ता न करना।<sup>18</sup> तुम अपने व्यधिचार न करना।<sup>19</sup> तुम चोरी न करना।<sup>20</sup> तुम अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।<sup>21</sup> तुम अपने पड़ोसी की

## व्यवस्थाविवरण

पती की लालसा न करना। तुम अपने पड़ोसी के घर, खेत, दास, बैल, गधा, या किसी भी वस्तु की इच्छा न करना जो तुम्हारे पड़ोसी की हो।<sup>22</sup> ये वे आज्ञाएँ हैं जिन्हें यहोवा ने पर्वत पर आग, बादल, और गहरे अंधकार के बीच से तुम्हारी पूरी सभा के सामने ऊँचे स्वर में प्रकट किया। उसने और कुछ नहीं जोड़ा। फिर उसने उन्हें दो पथर की पट्टिकाओं पर लिखकर मुझे दिया।<sup>23</sup> जब तुमने अंधकार से आवाज़ सुनी, जबकि पर्वत आग से जल रहा था, तो तुम्हारे सभी गोत्रों के नेता और बुजुर्ग मेरे पास आए।<sup>24</sup> और तुमने कहा, हमारे परमेश्वर यहोवा ने अपनी महिमा और महानता हमें दिखाई है, और हमने आग में से उसकी आवाज़ सुनी है। आज हमने देखा है कि मनुष्य जीवित रह सकता है, भले ही परमेश्वर उससे बात करे।<sup>25</sup> परंतु अब, हम क्यों मरें? यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ सुनते रहें, तो हम अवश्य मर जाएँगे।<sup>26</sup> क्योंकि कौन है जो जीवों में से जीवित परमेश्वर की आवाज़ आग में से सुनकर जीवित रहा है, जैसा कि हमने सुना है?<sup>27</sup> तुम पास जाकर हमारे परमेश्वर यहोवा की सारी बातें सुनो। फिर जो कुछ भी हमारे परमेश्वर यहोवा तुमसे कहे, वह हमें बताओ। हम सुनेंगे और पालन करेंगे।<sup>28</sup> यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनीं, और उसने मुझसे कहा, ‘मैंने इस लोगों की बातें सुनी हैं, और वे जो कुछ भी बोले हैं, उसमें वे सही हैं।’<sup>29</sup> यदि उनके हृदय हमेशा मुझसे डरने और मेरी सारी आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रवृत्त होते, तो उनका और उनके बच्चों का सदा के लिए भला होता।<sup>30</sup> जाओ, उनसे कहो: ‘अपने तंबुओं में लौट जाओ।’<sup>31</sup> परंतु तुम यहाँ मेरे साथ रहो ताकि मैं तुम्हें सारी आज्ञाएँ, विधियाँ, और नियम दूँ। जिन्हें तुम्हें उन्हें सिखाना है, ताकि वे उस देश में उनका पालन करें जिसे मैं उन्हें अधिकार करने के लिए दे रहा हूँ।<sup>32</sup> इसलिए सावधान रहो कि जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है, उसका पालन करो; दाएँ या बाएँ न मुड़ो।<sup>33</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की सारी आज्ञाओं का पालन करते हुए चलो, ताकि तुम जीवित रहो, समृद्ध हो, और उस देश में अपने दिन लंबे करो जिसे तुम अधिकार करोगे।

**6** ये वे आज्ञाएँ, विधियाँ, और नियम हैं जिन्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए निर्देशित किया है ताकि तुम उस देश में उनका पालन कर सको जिसे तुम अधिकार में लेने जा रहे हो, <sup>2</sup> ताकि तुम, तुम्हारे बच्चे, और उनके वंशज अपने जीवन भर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानें, उसकी सभी विधियाँ और आज्ञाओं का पालन करके जो मैं तुम्हें देता हूँ, और ताकि तुम लंबी आयु का आनंद ले सको।<sup>3</sup> इसलिए सुनो, हे इसाएल,

तुम्हारा भला हो, और तुम उस देश में बहुत बढ़ जाओ जो दूध और मधु से बहता है, जैसा कि तुम्हारे पूर्जों के परमेश्वर यहोवा ने तुमसे बादा किया था।<sup>4</sup> सुनो, हे इसाएल: हमारा परमेश्वर यहोवा, यहोवा एक ही है।<sup>5</sup> तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा, और अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करना।<sup>6</sup> ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुम्हें देता हूँ, तुम्हारे हृदय पर होनी चाहिए।<sup>7</sup> इन्हें अपने बच्चों पर प्रभाव डालो। इनके बारे में बात करो जब तुम घर पर बैठो और जब तुम रास्ते में चलो, जब तुम लेटो और जब तुम उठो।<sup>8</sup> इन्हें अपने हाथों पर प्रतीक के रूप में बांधों और इन्हें अपने माथे पर बांधों।<sup>9</sup> इन्हें अपने घरों के दरवाजों और अपने फाटकों पर लिखो।<sup>10</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में लाएगा जिसका उसने तुम्हारे पूर्जों— अब्राहम, इसहाक, और याकूब—से बादा किया था, एक ऐसा देश जिसमें महान और शानदार नगर हैं जिन्हें तुमने नहीं बनाया,<sup>11</sup> घर जो अच्छी चीजों से भरे हैं जिन्हें तुमने प्रदान नहीं किया, कुएँ जिन्हें तुमने नहीं खोदा, और अंगूर के बगा और जैतून के बाग और जैतून के बाग और जैतून के बाग और संतुष्ट हो जाओगे,<sup>12</sup> सावधान रहना कि तुम यहोवा को न भूलो, जिसने तुम्हें मिस से, दासता के देश से बाहर निकाला।<sup>13</sup> अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानो, केवल उसी की सेवा करो, और उसी के नाम में अपनी शपथ लो।<sup>14</sup> अन्य देवताओं का अनुसरण न करो, जो तुम्हारे चारों ओर के लोगों के देवता हैं।<sup>15</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, जो तुम्हारे बीच में है, एक ईर्ष्यालू परमेश्वर है और उसकी क्रोध की अग्नि तुम्हारे विरुद्ध भड़क उठेगी, और वह तुम्हें इस भूमि से मिटा देगा।<sup>16</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा मत लो जैसा कि तुमने मस्सा में किया था।<sup>17</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं और विधियों और नियमों का पालन करने में सावधान रहो जो उसने तुम्हें दिए हैं।<sup>18</sup> जो सही और अच्छा है वह यहोवा की दृष्टि में करो, ताकि तुम्हारा भला हो और तुम उस अच्छे देश में प्रवेश कर सको और उसे अधिकार में ले सको जिसका यहोवा ने तुम्हारे पूर्जों से शपथ लेकर बादा किया था,<sup>19</sup> तुम्हारे सामने से सभी श्रुतियों को बाहर निकालो दूप, जैसा कि यहोवा ने कहा था।<sup>20</sup> भविष्य में, जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें, ये विधियाँ और नियम क्या हैं जिन्हें हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है?<sup>21</sup> तब तुम कहना: ‘हम मिस में फ़िरान के दास थे, लेकिन यहोवा ने हमें एक शक्तिशाली हाथ से मिस से बाहर निकाला।’<sup>22</sup> हमारी अँखों के सामने, यहोवा ने मिस, फ़िरान, और उसके पूरे घराने के विरुद्ध महान और भयानक चिन्ह और चमत्कार किए।<sup>23</sup> लेकिन उसने हमें वहाँ से बाहर निकाला ताकि हमें उस देश में ले जाए और हमें वह

## व्यवस्थाविवरण

भूमि दे सके जिसका उसने हमारे पूर्वजों से शपथ लेकर बादा किया था।<sup>24</sup> यहोवा ने हमें इन सभी विधियों का पालन करने और उसका भय मानने की आज्ञा दी, ताकि हम हमेशा समृद्ध रहें और जीवित रहें, जैसा कि आज है।<sup>25</sup> और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने इस संपूर्ण नियम का पालन करने में सावधान रहें, जैसा कि उसने हमें आज्ञा दी है, तो वह हमारी धार्मिकता होगी।

**7** जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में ले जाएगा जिसे तुम अधिकार करने के लिए जा रहे हो, और तुम्हारे सामने से कई जातियों को हटा देगा—हिती, गिरांशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिक्वी, और यबूसी—जो तुमसे बड़ी और अधिक शक्तिशाली हैं,<sup>2</sup> और जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप देगा और तुम उन्हें पराजित करोगे, तो तुम्हें उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर देना चाहिए। उनके साथ कोई संघ मत करो और उन पर दया मत दिखाओ।<sup>3</sup> उनके साथ विवाह संबंध मत बनाओ। अपनी बेटियों को उनके पुत्रों को मत दो और उनकी बेटियों को अपने पुत्रों के लिए मत लो।<sup>4</sup> क्योंकि वे तुम्हारे बच्चों को मेरे पीछे चलने से रोक देंगे और अन्य देवताओं की सेवा करने के लिए प्रेरित करेंगे, और यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा और वह तुम्हें शीशी नष्ट कर देगा।<sup>5</sup> तुम्हें उनके साथ ऐसा करना है: उनके विदियों को गिरा दो, उनके पवित्र पथरों को तोड़ दो, उनके अशेरा खंभों को काट दो, और उनके मूर्तियों को आग में जला दो।<sup>6</sup> क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र लोग हो। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें पूर्वी के सभी लोगों में से चुना है ताकि तुम उसकी प्रिय संपत्ति बनो।<sup>7</sup> यहोवा ने तुम पर अपना प्रेम इसलिए नहीं रखा या तुम्हें इसलिए नहीं चुना क्योंकि तुम अन्य लोगों से अधिक संख्या में थे—क्योंकि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे—<sup>8</sup> बल्कि इसलिए कि यहोवा ने तुमसे प्रेम किया और उसने तुम्हारे पूर्वजों से की गई शपथ को निभाया, उसने तुम्हें एक शक्तिशाली हाथ से बाहर निकाला और तुम्हें दासता के देश से छुड़ाया, मिस के राजा फिरैन की शक्ति से।<sup>9</sup> इसलिए जान लो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है; वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है, जो उन लोगों से प्रेम करता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, उनके लिए हजार पीढ़ियों तक अपनी प्रेम की वाचा का निभाता है।<sup>10</sup> परंतु वह उन लोगों को जो उससे घृणा करते हैं, उनके सामने ही दंड देता है, उन्हें नष्ट करने के लिए। वह उनसे घृणा करने वालों को दंड देने में धीमा नहीं होगा।<sup>11</sup> इसलिए, आज मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ, विधियाँ, और नियम दे रहा हूँ, उनका पालन करने में सावधान रहो।<sup>12</sup> यदि तुम इन नियमों को सुनोगे और उनका पालन करने में सावधान

रहोगे, तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ अपनी प्रेम की वाचा को निभाएगा, जैसा उसने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ ली थी।<sup>13</sup> वह तुम्हारे प्रेम करेगा और तुम्हें आशीर्वाद देगा और तुम्हारी संख्या बढ़ाएगा। वह तुम्हारी गर्भ की फल, तुम्हारी भूमि की फसल—तुम्हारे अनाज, नई दाखमध्य, और तेल—तुम्हारे पशुओं के बछड़े और तुम्हारी भेड़ों के मेमोनों को आशीर्वाद देगा, उस देश में जिसे देने की शपथ उसने तुम्हारे पूर्वजों से की थी।<sup>14</sup> तुम अन्य लोगों से अधिक आशीर्वादित होगे; तुम्हारे बीच कोई निस्तान नहीं होगा, न ही तुम्हारे पशुओं में कोई बिना संतान के होगा।<sup>15</sup> यहोवा तुम्हें हर बीमारी से मुक्त रखेगा। वह तुम पर मिस में जात भयानक बीमारियाँ नहीं डालेगा, बल्कि उन सभी पर डालेगा जो तुमसे घृणा करते हैं।<sup>16</sup> तुम्हें उन सभी लोगों का नष्ट करना चाहिए जिहें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों में सौंपता है। उन पर दया मत करो, और उनके देवताओं की सेवा मत करो, क्योंकि वह तुम्हारे लिए एक जाल होगा।<sup>17</sup> तुम अपने आप से कह सकते हो, ये जातियाँ हमासे अधिक शक्तिशाली हैं। हम उन्हें कैसे बाहर निकाल सकते हैं?<sup>18</sup> परंतु उनसे मत डरो। यदा करो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने फिरैन और पूरे मिस के साथ क्या किया।<sup>19</sup> तुमने अपनी आँखों से देखा कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें बाहर निकालने के लिए महान परीक्षाएँ, चिन्ह, चमक्लार, शक्तिशाली हाथ और फैलाए हुए भुजाओं के साथ क्या किया। यहोवा वही करेगा उन सभी लोगों के साथ जिनसे तुम अब डरते हो।<sup>20</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनके बीच भिन्नभिन्न हठ भेजेगा जब तक कि जो बचे हैं और जो तुमसे छिपते हैं वे नष्ट न हो जाएँ।<sup>21</sup> उनसे भयभीत मत हो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, जो तुम्हारे बीच है, महान और भयानक है।<sup>22</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तुम्हारे सामने से धीरे-धीरे बाहर निकालेगा। तुम्हें उन्हें एक साथ समाप्त करने की अनुमति नहीं होगी, अन्यथा जंगली जानवर तुम्हारे चारों ओर बढ़ जाएँगे।<sup>23</sup> परंतु तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप देगा। वह उन्हें महान भ्रम में डाल देगा जब तक कि वे नष्ट न हो जाएँ।<sup>24</sup> वह उनके राजा और उनकी तुम्हारे हाथों में सौंप देगा, और तुम उनके नामों को आकाश के नीचे से मिटा दोगे। कोई भी तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सकेगा; तुम उन्हें नष्ट कर दोगे।<sup>25</sup> उनके देवताओं की मूर्तियों को आग में जला दो। उनके ऊपर की बाँदी और सोने की लालसा मत करो, और उसे अपने लिए मत लो, अन्यथा वह तुम्हारे लिए एक जाल बन जाएगा। यह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए घृणास्पद है।<sup>26</sup> अपने घर में कोई घृणास्पद वस्तु मत लाओ, अन्यथा तुम उसके सामने नष्ट होने के लिए अलग कर दिए जाओगे। इसे अशुद्ध मानो और पूरी

## व्यवस्थाविवरण

तरह से घृणा करो, क्योंकि यह नष्ट होने के लिए अलग किया गया है।

**8** आज मैं तुम्हें जो भी आज्ञा दे रहा हूँ, उसे सावधानीपूर्वक मानो, ताकि तुम जीवित रहो, बढ़ो, और उस देश को प्राप्त करो जिसे प्रभु ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ लेकर देने का वचन दिया था।<sup>2</sup> याद करो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने इन चालीस वर्षों में तुम्हें जंगल में कैसे चलाया, ताकि तुम्हें नम्र और परखा जा सके, यह जानने के लिए कि तुम्हारे हृदय में क्या है—क्या तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे।<sup>3</sup> उसने तुम्हें भूखा रखकर और फिर मत्रा खिलाकर नम्र किया, जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे, ताकि वह तुम्हें यह सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता, बल्कि हर उस वचन पर जो यहोवा के मुख से निकलता है।<sup>4</sup> इन चालीस वर्षों में तुम्हारे वस्त्र पुराने नहीं हुए और तुम्हारे पैर नहीं सूजे।<sup>5</sup> तुम्हारे हृदय में यह जान लो कि जैसे एक व्यक्ति अपने पुत्र को अनुशासित करता है, वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें अनुशासित करता है।<sup>6</sup> इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करो, उसके मार्गों में चलो और उससे डरो।<sup>7</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें एक अच्छे देश में जो जा रहा है—एक ऐसा देश जिसमें नदियाँ, सौते और घासियाँ और पहाड़ियों में उभरते भूमिगत जल हैं।<sup>8</sup> गेहूँ, जौ, बैल, अंजीर के पेढ़ और अनार का देश; जैतून के तेल और शहद का देश;<sup>9</sup> एक ऐसा देश जहाँ रोटी की कमी नहीं होगी और तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी; एक ऐसा देश जहाँ चट्टानें लोहा हैं और तुम पहाड़ियों से तांबा खोद सकते हो।<sup>10</sup> जब तुम खा चुके हो और संतुष्ट हो जाओ, तो उस अच्छे देश के लिए अपने परमेश्वर यहोवा को आशीर्वाद दो जो उसने तुम्हें दिया है।<sup>11</sup> सावधान रहो कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को न भूलो, उसकी आज्ञाओं, विधियों और नियमों का पालन न करके जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।<sup>12</sup> अन्यथा, जब तुम खाओगे और भर जाओगे, और अच्छे घर बनाओगे और उनमें रहोगे,<sup>13</sup> और तुम्हारे झुंड और गल्ले बढ़ेंगे, और तुम्हारा चाँदी और सोना बढ़ेगा, और जो कुछ तुम्हारा पास है वह बढ़ेगा,<sup>14</sup> तब तुम्हारा हृदय गर्वित हो जाएगा और तुम अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाओगे, जिसने तुम्हें मिस्स से, दासत्व के देश से बाहर निकाला।<sup>15</sup> वह तुम्हें विशाल और भयानक जंगल से ले गया, जिसमें विषेले साँप और बिछू थे, एक व्यासा देश जहाँ पानी नहीं था। उसने तुम्हारे लिए एक ठोठ चट्टान से पानी निकाला।<sup>16</sup> उसने जंगल में तुम्हें मत्रा खिलाया, जो तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञात नहीं था, ताकि वह तुम्हें नम्र और परखे, ताकि अंत में तुम्हारा भला हो सकते।<sup>17</sup> तुम अपने आप से कह सकते

हो, ‘मेरी अपनी शक्ति और सामर्थ्य ने मेरे लिए यह धन उत्पन्न किया है।’<sup>18</sup> लेकिन अपने परमेश्वर यहोवा को याद करो, क्योंकि वही तुम्हें धन उत्पन्न करने की क्षमता देता है, और इस प्रकार वह अपनी वाचा की पुष्टि करता है, जिसे उसने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ लेकर किया था, जैसा कि आज है।<sup>19</sup> यदि तुम कभी अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाओ और अन्य देवताओं का अनुसरण करो और उनकी सेवा करो और उन्हें प्रणाम करो, तो मैं आज तुम्हें गंभीरता से चेतावनी देता हूँ कि तुम निश्चित रूप से नष्ट हो जाओगे।<sup>20</sup> जिन राष्ट्रों को यहोवा ने तुम्हारे सामने नष्ट किया, उनकी तरह तुम भी नष्ट हो जाओगे यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ का पालन नहीं करोगे।

**9** हे इसाएल, सुन: आज तुम यरदन को पार करने जा रहे हो ताकि उन जातियों को बाहर निकाल सको जो तुमसे बड़ी और शक्तिशाली हैं, जिनके बड़े-बड़े नगर आकाश तक गढ़वाले हैं।<sup>2</sup> वे लोग बलवान और लंबे हैं—अनाकीम। तुम उनके बारे में जानते हो, और यह सुना है, ‘अनाक के वंशजों के सामने कौन टिक सकता है?’<sup>3</sup> परन्तु आज यह समझ लो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे आगे एक भस्म करने वाली आग के सामना जाता है। वह उन्हें नष्ट करेगा और तुम्हारे सामने उन्हें वश में करेगा। इसलिए तुम उन्हें शीघ्रता से बाहर निकालोगे और नष्ट कर दोगे, जैसा कि यहोवा ने वादा किया है।<sup>4</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे सामने से बाहर निकाल देगा, तो अपने मन में यह न कहना, मेरी धार्मिकता के कारण यहोवा ने मुझे इस देश को प्राप्त करने के लिए लाया है।<sup>5</sup> बल्कि, यह इन जातियों की दुष्टता के कारण है कि यहोवा उन्हें तुम्हारे सामने से बाहर निकाल रहा है।<sup>5</sup> यह तुम्हारी धार्मिकता या तुम्हारे हृदय की सिधाई के कारण नहीं है कि तुम उनके देश को प्राप्त करने जा रहे हो। बल्कि, यह उनकी दुष्टता के कारण है कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे सामने से बाहर निकाल रहा है, ताकि वह अपने पूर्वजों—अब्राहम, इसहाक, और याकूब से किए गए वचन की पुष्टि कर सके।<sup>6</sup> इसलिए जान लो कि यह तुम्हारी धार्मिकता के कारण नहीं है कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें यह अच्छा देश प्राप्त करने के लिए दे रहा है—क्योंकि तुम एक हठीले लोग हो।<sup>7</sup> स्मरण रखो और न भूलो कि तुमने जंगल में अपने परमेश्वर यहोवा को कैसे क्रोधित किया। मिस्स से निकलने के दिन से लेकर यहाँ तक पहुँचने तक, तुम यहोवा के प्रति विद्रोही रहे हो।<sup>8</sup> होरेब में तुमने यहोवा के क्रोध को इतना भड़काया कि वह तुम्हें नष्ट करने के लिए तैयार हो गया।<sup>9</sup> जब मैं पत्थर की पट्टिकाएँ लेने के लिए पर्वत पर चढ़ा, जो वह

## व्यवस्थाविवरण

वाचा की पट्टिकाएँ थीं जो यहोवा ने तुम्हरे साथ की, मैं पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा। मैंने तो रोटी खाई और न ही पानी पिया।<sup>10</sup> यहोवा ने मुझे अपनी उंगली से लिखी हुई दो पत्थर की पट्टिकाएँ दीं। उन पर वे सब बचन थे जो यहोवा ने पर्वत पर अप्रि से सभा के दिन तुम्से कहे थे।<sup>11</sup> चालीस दिन और चालीस रात के अंत में, यहोवा ने मुझे दो पत्थर की पट्टिकाएँ दी—वाचा की पट्टिकाएँ।<sup>12</sup> फिर यहोवा ने मुझसे कहा, ‘उठो और यहाँ से शीघ्रता से नीचे जाओ, क्योंकि तुम्हारे लोग जिन्हे तुम मिस से निकाल लाए हो, उन्होंने अपने को भ्रष्ट कर लिया है। उन्होंने शीघ्रता से उस मार्ग से हटकर जो मैंने उन्हें आज्ञा दी थी, अपने लिए एक मूर्ति बना ली है।’<sup>13</sup> और यहोवा ने कहा, ‘मैंने इस लोगों को देखा है, और वे वास्तव में हठीते लोग हैं।’<sup>14</sup> मुझे अकेला छोड़ दो, ताकि मैं उन्हें नष्ट कर दूँ और उनके नाम को आकाश के नीचे से मिटा दूँ। फिर मैं तुम्हें उनसे अधिक शक्तिशाली और अधिक संख्या में एक जाति बना दूँगा।’<sup>15</sup> इसलिए मैं मुड़ा और पर्वत से नीचे आया, जबकि वह अप्रि से जल रहा था, और मेरे हाथों में वाचा की दो पट्टिकाएँ थीं।<sup>16</sup> और मैंने देखा कि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है; तुमने अपने लिए एक बछड़ा मूर्ति बना ली थी। तुमने शीघ्रता से उस मार्ग से हटकर जो यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी थी।<sup>17</sup> इसलिए मैंने उन दो पट्टिकाओं को लिया और उन्हें अपने हाथों से फेंक दिया, और उन्हें तुम्हारी आँखों के सामने तोड़ दिया।<sup>18</sup> फिर मैं यहोवा के सामने चालीस दिन और चालीस रात तक लेटा रहा, जैसा कि मैंने पहरी बार किया था। मैंने रोटी नहीं खाई और न ही पानी पिया क्योंकि तुमने जो पाप किया था, वह यहोवा की दृष्टि में बुरा था और उसे क्रोधित कर दिया था।<sup>19</sup> मैं यहोवा के भयंकर क्रोध से डर गया था, जो तुम पर इतना क्रोधित था कि वह तुम्हें नष्ट करने के लिए तैयार था। लेकिन यहोवा ने उस समय भी मेरी सुनी।<sup>20</sup> यहोवा हारून पर इतना क्रोधित था कि उसे नष्ट कर देता, लेकिन मैंने उस समय हारून के लिए भी प्रार्थना की।<sup>21</sup> फिर मैंने उस पापी वस्तु को लिया जो तुमने बनाई थी—बछड़ा—और उसे अग्नि में जला दिया, उसे कुचलकर बारीक धूल बना दिया, और उस धूल को पर्वत से बहने वाली धारा में फेंक दिया।<sup>22</sup> तुमने ताबेराह, मस्सा, और किंब्रोथ हत्तावाह में भी यहोवा को क्रोधित किया।<sup>23</sup> और जब यहोवा ने तुम्हें कादेश बरनेअ से कहा, ‘जाओ और उस देश को प्राप्त करो जो मैंने तुम्हें दिया है; तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह किया। तुमने न तो उस पर विश्वास किया और न ही उसकी आज्ञा मानी।<sup>24</sup> तुम यहोवा के विरुद्ध विद्रोही रहे हो जिस दिन से मैंने तुम्हें जाना है।<sup>25</sup> इसलिए मैं उन चालीस दिन

और चालीस रात यहोवा के सामने लेटा रहा क्योंकि यहोवा ने कहा था कि वह तुम्हें नष्ट कर देगा।<sup>26</sup> मैंने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, ‘हे प्रभु परमेश्वर, अपनी प्रजा को नष्ट न कर, अपनी संपत्ति को, जिसे तूने अपनी महानता से छुड़ाया और बलवान हाथ से मिस से बाहर लाया।’<sup>27</sup> अपने दास अब्राहम, इस्हाक, और याकूब को स्मरण कर। इस लोगों की हठधर्मी, उनकी दुष्टता और पाप को न देख।<sup>28</sup> अन्यथा, वह देश जहाँ से तूने हमें निकाला, कहेगा, ‘क्योंकि यहोवा उन्हें उस देश में लाने में सक्षम नहीं था जिसका उसने वादा किया था, और क्योंकि वह उनसे धृणा करता था, उसने उन्हें जंगल में मारने के लिए बाहर निकाला।’<sup>29</sup> फिर भी वे तेरी प्रजा हैं—तेरी संपत्ति—जिसे तूने अपनी महान शक्ति और फैले हुए हाथ से बाहर निकाला।

**10** उस समय यहोवा ने मुझसे कहा, ‘पहली पट्टिकाओं जैसी दो पत्थर की पट्टिकाएँ काटो, और मेरे पास पहाड़ पर आओ। साथ ही एक लकड़ी का सन्दूक भी बनाओ।’<sup>2</sup> मैं उन पट्टिकाओं पर वही शब्द लिखूँगा जो पहली पट्टिकाओं पर थे, जिन्हें तुमने तोड़ दिया था। फिर तुम उन्हें सन्दूक में रख देना।<sup>3</sup> इसलिए मैंने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया और पहली पट्टिकाओं जैसी दो पत्थर की पट्टिकाएँ काटी। मैं उन दो पट्टिकाओं को अपने हाथों में लेकर पहाड़ पर चढ़ गया।<sup>4</sup> यहोवा ने उन पट्टिकाओं पर वही लिखा जो उसने पहले लिखा था—दस आज्ञाएँ जो उसने आग से पहाड़ पर सभा के दिन तुमसे कही थीं। फिर उसने उन्हें मुझे दिया।<sup>5</sup> मैं मुड़ा और पहाड़ से नीचे आया और उन पट्टिकाओं को सन्दूक में रखा जो मैंने बनाया था। वे वहीं हैं, जैसा कि यहोवा ने मुझे आज्ञा दी थी।<sup>6</sup> इसलिए बेने याकान के कुओं से मोसेरा तक यात्रा की। वहाँ हारून की मृत्यु हुई और उसे दफनाया गया, और उसके पुत्र एलाइज़र ने उसके स्थान पर याजक का पद ग्रहण किया।<sup>7</sup> वहाँ से वे गुदगुदा गए, और गुदगुदा से योतबाता गए, जो एक बहते जल की भूमि है।<sup>8</sup> उस समय, यहोवा ने लेकी के गोत्र की अलग किया ताकि वे यहोवा की वाचा के सन्दूक को उठाँ, यहोवा के सामने खड़े होकर उसकी सेवा करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दें, जैसा कि वे आज भी करते हैं।<sup>9</sup> इसलिए लेवियों का कोई हिस्सा या विरासत उनके साथी इसाएलियों के बीच नहीं है; यहोवा उनकी विरासत है, जैसा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन्हें वादा किया था।<sup>10</sup> मैं पहली की तरह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर ठहरा, और यहोवा ने फिर मेरी सुनी। वह तुम्हें नष्ट करने के लिए तैयार नहीं था।<sup>11</sup> यहोवा ने मुझसे कहा, ‘जाओ और लोगों का नेतृत्व करो, ताकि वे उस

## व्यवस्थाविवरण

भूमि में प्रवेश करें और उसे प्राप्त करें जिसका मैने उनके पूर्वजों को देने की शपथ ली थी।<sup>12</sup> और अब, इसाएल, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुमसे क्या चाहता है सिवाय इसके कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानो, उसकी सारी राहों पर चलो, उससे प्रेम करो, अपने परमेश्वर यहोवा की अपने सारे हृदय और अपनी सारी आत्मा से सेवा करो,<sup>13</sup> और यहोवा की आज्ञाओं और विधियों का पालन करो, जिन्हें मैं आज तुम्हारे भले के लिए तुम्हें आदेश दे रहा हूँ।<sup>14</sup> तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के हैं आकाश—यहाँ तक कि उच्चतम आकाश—पृथी और उसमें सब कुछ।<sup>15</sup> फिर भी यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों पर अपना प्रेम रखा और उनके बाद उनके वंशजों को चुना—तुम्हें—सभी राष्ट्रों के ऊपर, जैसा कि आज है।<sup>16</sup> इसलिए, अपने हृदयों का खनन करो और अब और ही न बनो।<sup>17</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा देवताओं का देवता और प्रभुओं का प्रभु है, महान, शक्तिशाली, और भयानक परमेश्वर, जो पक्षपात नहीं करता और न ही रिश्वत लेता है।<sup>18</sup> वह अनारोग्य और विध्वाओं का न्याय करता है, और तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशी से प्रेम करता है, उन्हें भीजन और वस्त देता है।<sup>19</sup> इसलिए तुम्हें परदेशी से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि तुम स्वयं मिस्स में परदेशी थे।<sup>20</sup> अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानो और उसकी सेवा करो। उससे चिपके रहो और उसके नाम की शपथ खो खाओ।<sup>21</sup> वह तुम्हारी स्तुति है, और वह तुम्हारा परमेश्वर है, जिसने तुम्हारे लिए वे महान और भयानक काम किए हैं जो तुम्हारी आँखों ने देखे हैं।<sup>22</sup> तुम्हारे पूर्वज सत्तर की संख्या में मिस्स गए थे, लेकिन अब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें आकाश के तारों के समान असंख्य बना दिया है।

**11** तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो और उसके आदेशों, विधियों, नियमों और आज्ञाओं का सदा पालन करो।<sup>2</sup> आज यह जन लो: मैं तुम्हारे बच्चों से नहीं बोल रहा हूँ, जिन्होंने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की शिक्षा—उसकी महानता, शक्तिशाली हाथ, और फैला हुआ भुजा—नहीं देखी है,<sup>3</sup> उन चिन्हों और कार्यों को जो उसने मिस्स में किरौने, मिस्स के राजा और उसकी पूरी भूमि के विरुद्ध किए,<sup>4</sup> जो उसने मिस्स की सेना, घोड़ों और रथों के साथ किया—कैसे उसने लाल समृद्ध के जल को उन पर ढक दिया जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे, और कैसे उसने उन्हें सदा के लिए नष्ट कर दिया।<sup>5</sup> याद करो कि उसने तुम्हारे लिए जंगल में क्या किया जब तक तुम इस स्थान पर नहीं आए।<sup>6</sup> और जो उसने दातान और अबीराम, लौलीआब के पुत्र, रूबेन के वंशजों के साथ किया—कैसे पृथी ने अपना मुँह खोला और उन्हें, उनके घरों, तंबुओं और उनके साथ चलने वाली हर

जीवित वस्तु को निगल लिया, सभी इसाएल के बीच में।  
7 तुम्हारी अपनी आँखों ने यहोवा के सभी महान कार्य देखे हैं।<sup>8</sup> इसलिए आज मैं तुम्हें जो सभी आज्ञाएँ देता हूँ, उनका पालन करो, ताकि तुम्हें उस भूमि में प्रवेश करने और उसे प्राप्त करने की शक्ति मिले जिसमें तुम प्रवेश कर रहे हो।<sup>9</sup> और ताकि तुम उस भूमि में लंबे समय तक जीवित रहो जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और उनके वंशजों को देने की शपथ ली थी—दूध और मधु की बहती हुई भूमि।<sup>10</sup> जिस भूमि में तुम प्रवेश कर रहे हो, वह मिस्स की भूमि जैसी नहीं है, जहाँ तुम बीज बोते थे और उसे हाथ से सीधते थे जैसे कि एक सबजी के बगीचे में।<sup>11</sup> परन्तु जिस भूमि में तुम प्रवेश कर रहे हो, वह पहाड़ियों और घाटियों की भूमि है, जो आकाश से वर्षा द्वारा सीधी जाती है।<sup>12</sup> यह वह भूमि है जिसकी देखभाल तुम्हारा परमेश्वर यहोवा करता है, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आँखें सदा उस पर रहती हैं, वर्ष के आरंभ से लेकर अंत तक।<sup>13</sup> यदि तुम आज मैं जो आज्ञाएँ देता हूँ, उनका विश्वासपूर्वक पालन करोगे—अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखोगे और उसे अपने पूरे हृदय और आत्मा से सेवा करोगे—<sup>14</sup> तो मैं तुम्हारी भूमि पर उसके मौसम में वर्षा भेजूँगा—प्रारंभिक और अंतिम वर्षा—ताकि तुम अपना अन्न, नई दाखमधु और तेल इकट्ठा कर सको।<sup>15</sup> मैं तुम्हारे पशुओं के लिए तुम्हारे खेतों में धास प्रदान करूँगा, और तुम खाओगे और तृप्त होगे।<sup>16</sup> परन्तु सावधान रहो, नहीं तो तुम्हारे हृदय बहक जाएंगे और तुम अन्य देवताओं की पूजा और सेवा करने के लिए मुड़ जाओगे।<sup>17</sup> तब यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा, और वह आकाश को बंद कर देगा ताकि वर्षा न हो, और भूमि कोई उपज न दे, और तुम उस अच्छी भूमि से शीघ्र नष्ट हो जाओगे जिसे यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>18</sup> इसलिए मेरे इन वचनों को अपने हृदय और मन में बसाओ। उन्हें अपने हाथों पर प्रतीक के रूप में बांधो और उन्हें अपने माथे पर बांधो।<sup>19</sup> उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ, जब तुम घर पर बैठो, जब तुम रास्ते में चलो, जब तुम लेटो, और जब तुम उठो।<sup>20</sup> उन्हें अपने घरों के दरवाजों के चौखटों और अपने फाटकों पर लिखो,<sup>21</sup> ताकि तुम्हारे दिन और तुम्हारे बच्चों के दिन उस भूमि में अधिक हों जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने की शपथ ली थी—जितने दिन आकाश पृथी के ऊपर है।<sup>22</sup> यदि तुम सावधानीपूर्वक इन सभी आज्ञाओं का पालन करोगे जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ—अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखोगे, उसकी राहों पर चलोगे और उससे चिपके रहोगे—<sup>23</sup> तो यहोवा तुम्हारे सामने से इन सभी जातियों को निकाल देगा, और तुम उन जातियों को बैद्यखल करोगे जो तुमसे बड़ी और मजबूत हैं।<sup>24</sup> हर वह स्थान जहाँ तुम्हारे पैर का तलवा पड़ेगा, तुम्हारा

## व्यवस्थाविवरण

होगा। तुम्हारी सीमा जंगल से लेकर लेबानोन तक और यूफेंट्स नदी से लेकर भूमध्य सागर तक होगी।<sup>25</sup> कोई भी तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सकेगा। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा लोगों को हर जगह तुम्हारा भय मानने के लिए प्रेरित करेगा, जैसा उसने वादा किया था।<sup>26</sup> देखो, मैं आज तुम्हारे सामने आशीर्वाद और शाप रख रहा हूँ—<sup>27</sup> आशीर्वाद, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करोगे जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ,<sup>28</sup> और शाप, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का उल्लंघन करोगे और उस मार्ग से हट जाओगे जो मैं आज तुम्हें आदेश देता हूँ, उन अन्य देवताओं का अनुसरण करने के लिए जिन्हें तुम नहीं जानते।<sup>29</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस भूमि में लाएगा जिसमें तुम प्रवेश कर रहे हो, तो तुम आशीर्वाद को गरिजिम पर्वत पर और शाप को एबाल पर्वत पर धोषित करोगे।<sup>30</sup> क्या वे यरदन के पार, सङ्क के पश्चिम में, सूर्यस्त की ओर, अराचा में रहने वाले कनानी लोगों की भूमि में, गिलगाल के सामने, मोरे के बांज वृक्षों के पास नहीं हैं?<sup>31</sup> क्योंकि तुम यरदन को पार करने वाले हो और उस भूमि को प्राप्त करने के लिए प्रवेश करने वाले हो जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे प्राप्त कर लोगे और उसमें बस जाओगे,<sup>32</sup> तो उन सभी विधियों और नियमों का पालन करना सुनिश्चित करो जो मैं आज तुम्हारे सामने रख रहा हूँ।

**12** ये वे विधियाँ और नियम हैं जिन्हें तुम्हें उस देश में सावधानीपूर्वक पालन करना होगा, जिसे तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा तुम्हें देने जा रहे हैं, जब तक तुम पृथ्वी पर जीवित रहो।<sup>2</sup> तुम्हें उन सभी स्थानों को पूरी तरह से नए कर देना चाहिए, जहाँ वे जातियाँ जिनका तुम अधिकार करोगे, अपने देवताओं की पूजा करती थीं—ऊँचे पहाड़ों पर, पहाड़ियों पर, और हर हिरे-भरे पेढ़ के नीचे।<sup>3</sup> उनकी वैदियों को शिरा दो, उनके स्तरों को तोड़ दो, उनके अशेरा खंभों को जला दो, और उनके देवताओं की खुदी हुई मूरियों को काट डालो। उन स्थानों से उनके नाम मिटा दो।<sup>4</sup> तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की पूजा इस प्रकार नहीं करनी चाहिए।<sup>5</sup> इसके बजाय, तुम्हें उस स्थान की खोज करनी चाहिए जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सभी गोत्रों में से चुनेंगे, ताकि वहाँ अपना नाम स्थापित करें और निवास करें। तुम्हें वहाँ जाना चाहिए।<sup>6</sup> उस स्थान पर तुम्हें अपने होमबलि, बलिदान, दशमांश, विशेष उपहार, मन्त्र के बलिदान, स्वेच्छा के बलिदान, और तुम्हारे झुंडों और पशुओं के पहिलौठे को लाना चाहिए।<sup>7</sup> वहाँ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति में, तुम और तुम्हारे परिवार खाओगे और उन सभी में आनंदित होगे जो

तुमने प्राप्त किया है, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है।<sup>8</sup> तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए जैसा हम आज यहाँ कर रहे हैं—हर व्यक्ति अपने ही दृष्टिकोण में सही कर रहा है—<sup>9</sup> क्योंकि तुम अब तक उस विश्वास स्थान और विरासत में नहीं पहुँचे हो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>10</sup> परन्तु जब तुम यरदन को पार करोगे और उस देश में निवास करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, और वह तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से विश्राम देगा, ताकि तुम सुरक्षित रह सको,<sup>11</sup> तब उस स्थान पर जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम के निवास के लिए चुनेगा, तुम्हें वह सब कुछ लाना चाहिए जो मैं तुम्हें आदेश देता हूँ—तुम्हारे होमबलि, बलिदान, दशमांश, योगदान, और यहोवा को मन्त्रत के उत्तम बलिदान।<sup>12</sup> और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनंदित होगे—तुम, तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ, तुम्हारे दास और दासियाँ, और तुम्हारे द्वारों के भीतर का लेवी, क्योंकि उसके पास तुम्हारे बीच कोई भगा या विरासत नहीं है।<sup>13</sup> सावधान रहो कि तुम अपने होमबलि को किसी भी स्थान पर न चढ़ाओं जो तुम देखो।<sup>14</sup> उन्हें केवल उस स्थान पर चढ़ाओं जिसे यहोवा तुम्हारे गोत्रों में से किसी एक में चुनेगा। वहाँ तुम वह सब कुछ करोगे जो मैं तुम्हें आदेश देता हूँ।<sup>15</sup> हालाँकि, तुम अपने नगरों में अपनी इच्छा के अनुसार मांस काट सकते हो और खा सकते हो, जैसा कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें आशीर्वाद देता है। दोनों, धार्मिक और अधार्मिक, इसे खा सकते हैं, जैसे वे हिरण या हरिण को खाते हैं।<sup>16</sup> परन्तु तुम्हें रक्त नहीं खाना चाहिए; इसे पानी की तरह भूमि पर बहा दो।<sup>17</sup> तुम्हें अपने नगरों के भीतर अपने अनाज, नई दाखमध्य, तेल का दशमांश, या तुम्हारे झुंडों और पशुओं के पहिलौठे, या तुम्हारे मन्त्रत के बलिदान, स्वेच्छा के बलिदान, या विशेष उपहार नहीं खाने चाहिए।<sup>18</sup> तुम्हें उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर खाना चाहिए जिसे वह चुनेगा—तुम, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे सेवक, और लेवी—और उन सभी में आनंदित होगे जो तुमने किया है, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है।<sup>19</sup> सावधान रहो कि जब तक तुम अपने देश में जीवित रहो, लेवी की उपेक्षा न करो।<sup>20</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी भूमि का विस्तार करेगा, जैसा कि उसने वादा किया है, और तुम मांस खाने की इच्छा करोगे, तो तुम जहाँ कहीं भी रहो, ऐसा कर सकते हो।<sup>21</sup> यदि वह स्थान जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनता है, बहुत दूर है, तो तुम अपने झुंडों और पशुओं से पशु काट सकते हो जिन्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देगा है और उन्हें अपने नगरों में खा सकते हो, जैसा कि मैंने आदेश दिया है।<sup>22</sup> इसे वैसे ही खाओ जैसे हिरण या हरिण को खाते हो—

## व्यवस्थाविवरण

धार्मिक और अधार्मिक दोनों इसे खा सकते हैं।<sup>23</sup> परन्तु सुनिश्चित करो कि रक्त न खाओ, क्योंकि रक्त जीवन है, और तुम्हें जीवन को मांस के साथ नहीं खाना चाहिए।<sup>24</sup> इसे मत खाओ; इसे पानी की तरह भूमि पर बहा दो।<sup>25</sup> इसे मत खाओ, ताकि तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों के साथ भला हो, क्योंकि तुम यहोवा की दृष्टि में सही कर रहे हो।<sup>26</sup> परन्तु तुम्हारे पास जो पवित्र वस्तुएँ हैं और तुम्हारे मन्त्रत के बलिदान, उन्हें उस स्थान पर ले जाना चाहिए जिसे यहोवा चुनेगा।<sup>27</sup> अपने होमबलि—मांस और रक्त दोनों—अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर ढाओ।

तुम्हारे बलिदानों का रक्त वेदी के पास बहाया जाना चाहिए, परन्तु तुम मांस खा सकते हो।<sup>28</sup> साधाधान रहो कि उन सभी आदेशों का पालन करो जो मैं तुम्हें देता हूँ, ताकि तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के साथ भला हो, क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और सही कर रहे हो।<sup>29</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने उन जातियों को काट डालेगा जिन्हें तुम अधिकार कर रहे हो, और तुम उनके देश में बस जाओगे,<sup>30</sup> साधाधान रहो कि उनके तरीकों में न फँसी जब वे तुम्हारे सामने नष्ट हो जाएँ। उनके देवताओं के बारे में यह न पूछो, इन जातियों ने अपने देवताओं की सेवा कैसे की? मैं भी ऐसा ही करूँगा।<sup>31</sup> तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की पूजा उस प्रकार नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वे अपने देवताओं के लिए हर धृणित कार्य करते हैं जिसे यहोवा धृणा करता है। वे अपने पुत्रों और पुत्रियों को आग में जलाकर अपने देवताओं को अर्पित करते हैं।<sup>32</sup> सुनिश्चित करो कि जो कुछ मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, उसे पूछो करो। इसमें कुछ भी न जोड़ो और न ही कुछ घटाओ।

**13** यदि तुम्हारे बीच कोई नबी या स्वप्न देखने वाला उठे और तुम्हें कोई चिन्ह या चमकाकर दिखाए,<sup>2</sup> और वह चिन्ह या चमकाकर पूरा हो जाए, और वह कहे, 'आओ, हम अन्य देवताओं का अनुसरण करें—ऐसे देवता जिन्हें तुमने नहीं जाना—' और उनकी पूजा करें,<sup>3</sup> तो तुम्हें उस नबी या स्वप्न देखने वाले की बातों को नहीं सुनना चाहिए। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परिकाले रहा है कि यह जान सके कि तुम उसे अपने पूरे हृदय और आत्मा से प्रेम करते हो या नहीं।<sup>4</sup> तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिए, उससे डरना चाहिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, उसकी आवाज़ सुननी चाहिए, उसकी सेवा करनी चाहिए, और उससे चिपके रहना चाहिए।<sup>5</sup> उस नबी या स्वप्न देखने वाले को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह की बात की, जिसने तुम्हें मिस से बाहर निकाला और दासता के

देश से छुड़ाया। उन्होंने तुम्हें उस मार्ग से मोड़ने की कोशिश की जिसे यहोवा ने तुम्हें चलने के लिए आज्ञा दी। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना चाहिए।<sup>6</sup> यदि तुम्हारा भाई—तुम्हारी माँ का पुत्र—या तुम्हारा पुत्र या पुत्री, तुम्हारी प्रिय पत्री, या तुम्हारा निकटतम मित्र तुम्हें गुरु रूप से उकसाए, कहे, 'आओ, हम अन्य देवताओं की पूजा करें—ऐसे देवता जिन्हें न तो तुमने और न तुम्हारे पूर्वजों ने जाना,'<sup>7</sup> तुम्हारे चारों और के लोगों के देवता, चाहे वे पास हों या दूर, पर्याए के एक छोर से दूसरे छोर तक—<sup>8</sup> तो तुम्हें उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए या उनकी बात नहीं माननी चाहिए। उन पर कोई दया या करुणा मत दिखाओ और उन्हें छिपाओ मत।<sup>9</sup> तुम्हें निश्चित रूप से उन्हें मृत्यु दंड देना चाहिए। तुम्हारा हाथ उन्हें दंडित करने में पहला होना चाहिए, और उसके बाद सभी लोगों के हाथ।<sup>10</sup> उन्हें पर्याए से मारकर मृत्यु दंड दो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से मोड़ने की कोशिश की, जिसने तुम्हें मिस देश से बाहर निकाला, दासता के घर से।<sup>11</sup> तब सारा इसाएल सुनेगा और डरेगा, और तुम्हारे बीच कोई भी ऐसा बुरा काम फिर नहीं करेगा।<sup>12</sup> यदि तुम सुनते हो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा द्वारा तुम्हें निवास करने के लिए दिए गए नगरों में से किसी मैं कहा जाता है,<sup>13</sup> कि तुम्हारे बीच कुछ दुष्ट पुरुषों ने निवासियों को बहकाया है, कह रहे हैं, 'आओ, हम अन्य देवताओं की पूजा करें, जिन्हें तुमने नहीं जाना,'<sup>14</sup> तो तुम्हें पूरी तरह से जांच करनी चाहिए। यह रिपोर्ट सत्य है और यह प्रमाणित हो जाता है कि तुम्हारे बीच ऐसी पृथिवी धृणित बातें हुई हैं,<sup>15</sup> तो तुम्हें उस नगर के निवासियों को तलवार से मार देना चाहिए। उसे और उसमें सब कुछ पूर्ण विनाश के लिए समर्पित कर दो—चाहे लोग हों या पशु।<sup>16</sup> सारी लूट को सार्वजनिक चौक के बीच में इकट्ठा करो और पूरे नगर और उसकी सारी लूट को अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पूरी होम बलि के रूप में जला दो। यह एक स्थायी खंडहर बना रहे, कभी पुनर्निर्मित न हो।<sup>17</sup> लूट में से कुछ भी अपने लिए न रखो, ताकि यहोवा अपनी प्रवर्चं क्रीध से फिर जाए, तुम्हें दया दिखाए, और तुम पर करुणा करे, और तुम्हारी संख्या बढ़ाए जैसा कि उसने तुम्हारे पूर्वजों से शापथ ली थी—<sup>18</sup> क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन करते हो, उसकी सभी आज्ञाओं को मानते हो, और उसकी दृष्टि में जो सही है वह करते हो।

**14** तुम अपने परमेश्वर यहोवा के बच्चे हो। मृतकों के लिए अपने शरीर को न काटो और न ही अपने सिर के आगे के हिस्से को मुंडाओ।<sup>1</sup> क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र लोग हो। पर्याए के

## व्यवस्थाविवरण

सभी लोगों में से, यहोवा ने तुम्हें अपनी अनगोल संपति बनने के लिए चुना है।<sup>3</sup> किसी भी धृणास्पद वस्तु को मत खाओ।<sup>4</sup> ये वे जानवर हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: बैल, भेड़, बकरी,<sup>5</sup> हिरण, गजल, रो हिरण, जंगली बकरी, आइबेक्स, मृग, और पहाड़ी भेड़।<sup>6</sup> तुम किसी भी जानवर को खा सकते हो जिसकी खुरें विभाजित होती हैं और जो जुगाली करता है।<sup>7</sup> हालांकि, जो जुगाली करते हैं या जिनकी खुरें विभाजित होती हैं, उनमें से तुम ऊंठ, खरागोश, या हायरेक्स को नहीं खा सकते। यद्यपि वे जुगाली करते हैं, उनकी खुरें विभाजित नहीं होती—वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।<sup>8</sup> सुअर भी अशुद्ध है क्योंकि उसकी खुरें विभाजित होती हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। उनके मांस को मत खाओ और उनके शर्क को मत छुओ।<sup>9</sup> सभी जलचर प्राणियों में से, तुम किसी भी ऐसे प्राणी को खा सकते हो जिसकी पंख और शल्क होते हैं।<sup>10</sup> लेकिन जिनके पंख और शल्क नहीं होते, उन्हें मत खाओ; वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।<sup>11</sup> तुम किसी भी शुद्ध पक्षी को खा सकते हो।<sup>12</sup> लेकिन तुम्हें गरुड़, गिर्द, काला गिर्द नहीं खाना चाहिए,<sup>13</sup> लाल चील, काली चील, और अन्य शिकारी पक्षी,<sup>14</sup> सभी कौंये,<sup>15</sup> शुतुरमुर्मु, निशाचर पक्षी, समुद्री पक्षी, और सभी प्रकार के बाज़,<sup>16</sup> छोटा उल्लू, बड़ा उल्लू, सफेद उल्लू,<sup>17</sup> मरुस्थलीय उल्लू, मछलीमार पक्षी, जलकौवा,<sup>18</sup> सारस, सभी प्रकार के बगुला, हुदहुद, और चमगादड़।<sup>19</sup> सभी पंख वाले कोड़े जो झुंड में उड़ते हैं, तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं; उन्हें मत खाओ।<sup>20</sup> लेकिन किसी भी शुद्ध पंख वाले प्राणी को तुम खा सकते हो।<sup>21</sup> किसी भी मृत पाई गई वस्तु को मत खाओ। तुम इसे अपने नगरों में रहने वाले विदेशी को दे सकते हो, या किसी विदेशी को बेच सकते हो, लेकिन तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र लोग हो। एक बच्चे बकरी को उसकी माँ के दूध में मत पकाओ।<sup>22</sup> सुनिश्चित करो कि तुम अपने खेतों की प्रयोक वर्ष की उपज का दसवां हिस्सा अलग रखो।<sup>23</sup> अपने अनाज, नई दाखमधू, और तेल का दशमांश, और अपने झुंडों और पशुओं के पहलौठों को अपने परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति में उस स्थान पर खाओ जिसे वह अपने नाम के निवास के रूप में चुनेगा, ताकि तुम हमेशा अपने परमेश्वर यहोवा का आदर करना सीखो।<sup>24</sup> लेकिन यदि दूरी बहुत अधिक है और तुम अपने दशमांश को नहीं ले जा सकते, क्योंकि स्थान बहुत दूर है और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है,<sup>25</sup> तो उसे चाँदी के लिए बदल दो। चाँदी अपने साथ ले जाओ और उस स्थान पर जाओ जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनेगा।<sup>26</sup> चाँदी का उपयोग जो कुछ भी तुम्हें पसद हो उसे खरीदने के लिए करो—गाय, भेड़, दाखमधू, मजबूत पेय, या जो कुछ भी

तुम चाहो। फिर वहाँ अपने परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति में खाओ और आनंदित हो—तुम और तुम्हारा परिवार।<sup>27</sup> और अपने नगरों में रहने वाले लेवियों की उपेक्षा मत करो, क्योंकि उनके पास अपनी कोई संपत्ति नहीं है।<sup>28</sup> प्रयोक तीन वर्षों के अंत में, उस वर्ष की अपनी सारी उपज का दसवां हिस्सा लाओ और उसे अपने नगरों में संग्रहीत करो।<sup>29</sup> तब लेवी (क्योंकि उनके पास कोई संपत्ति नहीं है), और विदेशी, अनाथ, और विधवाएँ जो तुम्हारे नगरों में हैं, आकर खा सकते हैं और संषुष्ट हो सकते हैं, ताकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सभी कार्यों में तुम्हें आशीर्वाद दे।

**15** हर सात साल के अंत में, आपको ऋण माफ करना चाहिए।<sup>2</sup> मुक्ति का तरीका यह है: हर लेनदार को अपने पड़ोसी को दिया हुआ ऋण माफ करना चाहिए। उसे अपने पड़ोसी या भाई से भुगतान की मांग नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यहोवा की मुक्ति की घोषणा की गई है।<sup>3</sup> आप किसी विदेशी से भुगतान की मांग कर सकते हैं, लेकिन अपने साथी इसाएली के द्वारा बकाया किसी भी ऋण को माफ करना चाहिए।<sup>4</sup> हालांकि, आपके बीच कोई गरीब नहीं होना चाहिए, क्योंकि यहोवा आपको उस भूमि में समृद्ध रूप से आशीर्वाद देगा जिसे वह आपको आपकी विरासत के रूप में दे रहा है,<sup>5</sup> यदि आप केवल अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ को ध्यान से सुनें, और आज मैं आपको जो सभी आज्ञाएँ दे रहा हूँ, उन्हें ध्यान से पालन करें।<sup>6</sup> क्योंकि आपका परमेश्वर यहोवा आपको वैसे ही आशीर्वाद देगा जैसा उसने वादा किया था। आप कई राष्ट्रों को उधार देंगे लेकिन किसी से उधार नहीं लेंगे। आप कई राष्ट्रों पर शासन करेंगे, लेकिन कोई भी आप पर शासन नहीं करेगा।<sup>7</sup> यदि आपके बीच कोई गरीब व्यक्ति है, आपके साथी इसाएली में से एक, जो आपके नगरों में है, उस भूमि में जिसे आपका परमेश्वर यहोवा आपको दे रहा है, तो अपने दिल को कठोर न करें या अपने जरूरतमंद भाई के खिलाफ अपना हाथ बंद न करें।<sup>8</sup> इसके बजाय, उसके लिए अपना हाथ खुला रखें और उसे उसकी जरूरत के अनुसार स्वतंत्र रूप से उधार दें।<sup>9</sup> सारथान रहें कि आप इस दृष्टि विचार को न पारें: सातवाँ वर्ष, ऋण माफ करने का वर्ष, निकट है; और इसलिए आप अपने गरीब भाई को अनिच्छा से देखें और उसे कुछ न दें। वह आपके खिलाफ यहोवा से पुकार सकता है, और आप पाप के दोषी होंगे।<sup>10</sup> उसे उदारता से दें, और ऐसा बिना किसी अनिच्छा के करें। तब आपका परमेश्वर यहोवा आपके सभी कामों में और हर उस चीज़ में जिसे आप हाथ लगाते हैं, आपको आशीर्वाद देगा।<sup>11</sup> भूमि में हमेशा गरीब लोग होंगे। इसलिए मैं आपको आदेश देता

## व्यवस्थाविवरण

हूँ कि अपने साथी इस्राएलियों के प्रति, जो आपकी भूमि में गरीब और जरूरतमंद हैं, खुले हाथ से रहें।<sup>12</sup> यदि कोई साथी इब्रानी पुरुष या महिला खुद को आपको बेचता है और छह साल तक आपकी सेवा करता है, तो सातवें वर्ष में आपको उसे स्वतंत्र कर देना चाहिए।<sup>13</sup> और जब आप उसे मुक्त करें, तो उसे खाली हाथ न भेजें।<sup>14</sup> उसे अपनी भेड़-बकरी, अपने अनाज के खलिहान, और अपनी दाखमधु की कोल्हू से उदारता से दें। उसे वैसे ही दें जैसे आपका परमेश्वर यहोवा आपको आशीर्वाद दे चुका है।<sup>15</sup> याद रखें कि आप मिस्र में दास थे और आपका परमेश्वर यहोवा ने आपको छुड़ाया। इसलिए मैं आज आपको यह आदेश दे रहा हूँ।<sup>16</sup> लेकिन यदि आपका सेवक आपसे कहता है, मैं आपको छोड़ना नहीं चाहता; क्योंकि वह आपसे और आपके परिवार से प्रेम करता है और आपके साथ अच्छा महसूस करता है,<sup>17</sup> तो एक छेदक लें और उसके कान को दरवाजे के पास छेद दें, और वह जीवन भर आपका सेवक रहेगा। अपनी महिला सेवक के लिए भी ऐसा ही करें।<sup>18</sup> अपने सेवक को स्वतंत्र करने को कठिनाई न समझें, क्योंकि उनकी सेवा आपके लिए छह साल तक एक किराए के मजदूर से दोगुनी मूल्यान थी। और आपका परमेश्वर यहोवा आपके सभी कार्यों में आपको आशीर्वाद देगा।<sup>19</sup> अपने परमेश्वर यहोवा के लिए अपने हर झुंड और भेड़-बकरी के पहले जन्मे नर को अलग करें। अपने बैटों के पहले जन्मे को काम में न लें और अपने भेड़ों के पहले जन्मे को न करें।<sup>20</sup> आप और आपका परिवार हर वर्ष अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर खाएं जिसे वह चुनता है।<sup>21</sup> लेकिन यदि जानवर में कोई दोष है—यदि वह लंगड़ा या अंधा है या उसमें कोई गंभीर खोट है—तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान न करें।<sup>22</sup> अपने नगरों में इसे खाएं। जैसे गजेल या हिरण को खाते हैं, वैसे ही इसे शुद्ध और अशुद्ध दोनों खा सकते हैं।<sup>23</sup> लेकिन आपको खून नहीं खाना चाहिए; इसे पानी की तरह जमीन पर बहा दें।

**16** अबिक के महीने का ध्यान रखो और अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह का पर्व मनाओ, क्योंकि उसी महीने में उसने तुम्हें रातोंरात मिस्र से बाहर निकाला था।<sup>2</sup> अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह के रूप में अपने झुंड या पशुओं में से एक पशु की बलि दो, उस स्थान पर जहाँ यहोवा अपने नाम को स्पाइपत करने के लिए चुनेगा।<sup>3</sup> इसे खमीर वाली किसी भी चीज़ के साथ मत खाओ। सात दिनों तक बिना खमीर की रोटी खाओ, जो कठिनाई की रोटी है—क्योंकि तुम जल्दी में मिस्र से निकले थे—ताकि तुम अपने जीवन भर उस दिन को याद रख सको जब तुम मिस्र से निकले थे।<sup>4</sup> सात

दिनों तक तुम्हरे देश में कहीं भी खमीर नहीं पाया जाना चाहिए, और संध्या की बलि का कोई भी मांस सुबह तक नहीं बचना चाहिए।<sup>5</sup> तुम अपने परमेश्वर यहोवा द्वारा दिए गए किसी भी नगर में फसह की बलि नहीं दे सकते, बल्कि केवल उस स्थान पर जहाँ तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम के निवास के रूप में चुनेगा। वहाँ तुम्हें संध्या के समय, सूर्यास्त के समय, जब तुम मिस्र से निकले थे, फसह की बलि देनी चाहिए।<sup>7</sup> उसे पकाओ और अपने परमेश्वर यहोवा द्वारा चुने गए स्थान पर खाओ। फिर सुबह अपने तबुओं में लौट जाओ।<sup>8</sup> छह दिनों तक बिना खमीर की रोटी खाओ, और सातवें दिन अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र सभा करो; कोई काम मत करो।<sup>9</sup> जब तुम खड़ी फसल पर दरांती चलाना शुरू करो, तब से सात सप्ताह गिनो।<sup>10</sup> फिर अपने परमेश्वर यहोवा के लिए सप्ताहों का पर्व मनाओ, अपनी इच्छा से दी गई भेट के साथ, जो तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है।<sup>11</sup> अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनंद मनाओ—तुम, तुम्हरे बच्चे, तुम्हारे पुरुष और महिला सेवक, तुम्हरे नगरों के लेवी, विदेशी, अनाथ, और विधवाएँ—उस स्थान पर जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनेगा।<sup>12</sup> याद रखो कि तुम मिस्र में दास थे, और इन विधियों का पालन सावधानी से करो।<sup>13</sup> जब तुम अपनी खलिहान और अंगूर के रस के उत्पादन को इकट्ठा कर लो, तब सात दिनों तक तबुओं का पर्व मनाओ।<sup>14</sup> अपने पर्व पर आनंद मनाओ—तुम, तुम्हरे बच्चे, तुम्हारे सेवक, और लेवी, विदेशी, अनाथ, और विधवाएँ जो तुम्हारे नगरों में रहती हैं।<sup>15</sup> सात दिनों तक अपने परमेश्वर यहोवा के लिए उस स्थान पर पर्व मनाओ जिसे वह चुनेगा। यहोवा तुम्हारी सारी फसल और तुम्हरे हाथों के सारे कार्यों में तुम्हें आशीर्वाद देगा, और तुम्हारा आनंद पूर्ण होगा।<sup>16</sup> साल में तीन बार तुम्हारे सभी पुरुष तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर उपस्थित होंगे जिसे वह चुनेगा: बिना खमीर की रोटी का पर्व, सप्ताहों का पर्व, और तबुओं का पर्व। कोई भी यहोवा के सामने खाली हाथ नहीं आएगा।<sup>17</sup> तुम में से प्रत्येक को एक उपहार लाना चाहिए जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें जिताना आशीर्वाद दिया है उसके अनुपात में हो।<sup>18</sup> अपने प्रत्येक गोत्र के लिए अपने परमेश्वर यहोवा द्वारा दिए गए प्रत्येक नगर में न्यायाधीश और अधिकारी नियुक्त करो, और वे लोगों का न्याय निष्पक्षता से करेंगे।<sup>19</sup> न्याय को विकृत मत करो और पक्षपात मत करो। रिक्षत मत लो, क्योंकि रिक्षत बुद्धिमानों की आँखें अंधी कर देती हैं और धर्मियों के शब्दों को मरोड़ देती है।<sup>20</sup> न्याय का पीछा करो और केवल न्याय का, ताकि तुम जीवित रह सको और उस भूमि का अधिकार प्राप्त कर सको जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>21</sup>

## व्यवस्थाविवरण

अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बनाए गए वेदी के बगल में कोई लकड़ी का अशेरा खंभा मत लगाओ, <sup>22</sup> और कोई पत्रिव पथर खड़ा मत करो, क्योंकि ये चीज़ें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा धृता है।

**17** अपने परमेश्वर यहोवा के लिए किसी बैल या भड़ी की बलि मत चढ़ाओ जिसमें कोई दोष या खोट हो, क्योंकि वह उसके लिए धृणास्पद होगा। <sup>2</sup> यदि तुम्हारे बीच, तुम्हारे किसी नगर में, जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, कोई पुरुष या स्त्री यहोवा की दृष्टि में बुरा काम करता पाया जाए, जो उसकी वाचा का उल्लंघन है— <sup>3</sup> अच्छे देवताओं की सेवा करने और उनके समने झुकेने के लिए, चाहे वह सूर्य, चंद्रमा या आकाश के तारों की पूजा हो, जिसे मैंने आज्ञा नहीं दी है— <sup>4</sup> और यह बात तुम्हें बताई जाती है और तुम इसे सुनते हो, तो तुम्हें इसे अच्छी तरह से जांचना चाहिए। यदि यह सर्व सिद्ध होता है कि इसाएल में ऐसा धृणास्पद काम किया गया है, <sup>5</sup> तो उस पुरुष या स्त्री को, जिसे यह बुरा काम किया है, अपने नगर के द्वार पर लाओ और उहाँ पर्यारों से मार डालो। <sup>6</sup> दो या तीन गवाहों की गवाही पर ही मृत्यु के योग्य व्यक्ति को मारा जाए। एक गवाह की गवाही पर किसी को भी मृत्यु दंड नहीं दिया जाएगा। <sup>7</sup> गवाहों के हाथ पहले उसे मारने के लिए उठने चाहिए, और उसके बाद सभी लोगों के हाथ। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना चाहिए। <sup>8</sup> यदि कोई मामला तुम्हारे लिए न्याय करने में बहुत कठिन हो—चाहे वह खुत का मामला हो, मुकदमे का हो, या हमले का—तब तुम्हें उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनते हैं। <sup>9</sup> लेवीय याजकों और उस समय के न्यायाधीश के पास जाओ। उनसे पूछो, और वे तुम्हें कानूनी निर्णय बताएंगे। <sup>10</sup> तुम्हें उस निर्णय के अनुसार कार्य करना चाहिए जो वे तुम्हें उस स्थान पर देते हैं जिसे यहोवा चुनता है। जो कुछ वे तुम्हें बताते हैं, उसे सावधानीपूर्वक करो। <sup>11</sup> उस कानून का पालन करो जो वे तुम्हें सिखाते हैं और उस निर्णय का पालन करो जो वे सुनाते हैं। जो कुछ वे तुम्हें बताते हैं, उससे न तो दाँ मुँदो और न ही बाँगें। <sup>12</sup> करो भी व्यक्ति जो घर्मंड में आकर उस याजक की बात नहीं सुनता जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने सेवा करने के लिए खड़ा होता है, या न्यायाधीश की बात नहीं सुनता, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा। तुम्हें इसाएल से बुराई को दूर करना चाहिए। <sup>13</sup> तब सभी लोग सुनेंगे और डरेंगे, और फिर कभी घर्मंड में आकर ऐसा नहीं करेंगे। <sup>14</sup> जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है और उसे प्राप्त कर लोगे और वहाँ बस जाओगे, और तुम कहोगे, ‘आओ हम अपने ऊपर एक राजा नियुक्त करें जैसे हमारे चारों और

की सभी जातियों के पास है,’ <sup>15</sup> तो तुम्हें अपने ऊपर एक राजा नियुक्त करना चाहिए जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुने। वह तुम्हारे भाइयों में से एक होना चाहिए। तुम अपने ऊपर किसी विदेशी को नियुक्त नहीं कर सकते, जो तुम्हारा भाई नहीं है। <sup>16</sup> राजा को अपने लिए बहुत से घोड़े नहीं रखने चाहिए और न ही लोगों को मिस्र भेजना चाहिए अधिक घोड़े लाने के लिए, क्योंकि यहोवा ने तुमसे कहा है, ‘तुम फिर कभी उस मार्ग पर वापस नहीं जाओगे।’ <sup>17</sup> उसे बहुत सी पलियाँ नहीं लेनी चाहिए, नहीं तो उसका हृदय भटक जाएगा। न ही उसे बहुत अधिक चाँदी और सोना इकट्ठा करना चाहिए। <sup>18</sup> जब वह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठता है, तो उसे लेवीय याजकों द्वारा रखे गए स्क्रॉल से इस कानून की एक प्रति अपने लिए लिखनी चाहिए। <sup>19</sup> यह उसके साथ रहनी चाहिए, और उसे अपने जीवन के सभी दिनों में इससे पढ़ना चाहिए, ताकि वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना सीखे और इस कानून और इन विधियों के सभी शब्दों का सावधानीपूर्वक पालन करे। <sup>20</sup> इस प्रकार, उसका हृदय अपने भाइयों से ऊपर नहीं उठेगा, और वह आज्ञा से न तो दाँ मुँदेगा और न ही बाँगें। तब वह और उसके वंशज इसाएल में अपने राज्य में लंबे समय तक शासन करेगे।

**18** लेवी के याजक—वास्तव में लेवी की पूरी जाति—का इसाएल के साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं होगा। वे प्रभु के लिए अग्नि द्वारा चढ़ाए गए बलिदानों को खाएंगे, क्योंकि वही उनकी मीरास है। <sup>2</sup> उनका उनके साथी इसाएलियों के बीच कोई मीरास नहीं होगा। प्रभु ही उनकी मीरास है, जैसा कि उसने उनसे वादा किया था। <sup>3</sup> यह याजकों का लोगों से अधिकार होगा; जो कोई बलिदान चढ़ाता है, चाहे वह बैल ही या भेड़, उसे याजक को कंधा, गाल और पेट देना होगा। <sup>4</sup> तुम्हें उसे अपने अनाज, नई दाखमधु, और तेल का पहिलौठा, और अपनी भेड़ों की पहली कतरन भी देनी होगी। <sup>5</sup> क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसे और उसके वंशजों को तुम्हारी सभी जातियों में से चुना है कि वे प्रभु के नाम में सदा सेवा करें। <sup>6</sup> यदि कोई लेवी इसाएल के तुम्हारे नगरों में से एक को छोड़कर, जहाँ वह रह रहा है, उस स्थान पर आता है, जिसे प्रभु चुनता है, जब भी वह चाहे, <sup>7</sup> तो वह अपने परमेश्वर यहोवा के नाम में सेवा कर सकता है जैसे उसके सभी साथी लेवी जो वहाँ प्रभु के सामने खड़े होते हैं। <sup>8</sup> वे अपने लाप्तों में समान रूप से भाग लेंगे, सिवाय इसके कि जो वे अपने पारिवारिक संपत्ति की बिक्री से प्राप्त करते हैं। <sup>9</sup> जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, तो उन जातियों की धृणित प्रथाओं की नकल करना

## व्यवस्थाविवरण

मत सीखो।<sup>10</sup> तुम्हारे बीच कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में बलिदान चढ़ाए, या जो भविष्याणी, जादू, शकुन देखना, जादू-टोना करता हो,<sup>11</sup> मंत्र फेंकता हो, या माध्यम, आत्मवादी, या मृतकों से परामर्श करता हो।<sup>12</sup> जो कोई ये काम करता है वह प्रभु के लिए घृणित है, और इन घृणित प्रथाओं के कारण तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तुम्हारे सामने से किनाकल रहा है।

<sup>13</sup> तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने निर्दोष होना चाहिए।<sup>14</sup> जिन जातियों को तुम बेदखल करोगे वे जादू-टोना और भविष्याणी करने वालों की सुनिटी हैं, लेकिन तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी है।<sup>15</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच से, तुम्हारे साथी इसाएलियों में से मेरे समान एक नवी उठाएगा। तुम्हें उसकी सुनी चाहिए।<sup>16</sup> यह वही है जो तुमने अपने परमेश्वर यहोवा से होरेब में सभा के दिन माँगा था जब तुमने कहा, ‘मूझे अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज और यह बड़ी आग अब और न सुनाइ दे, नहीं तो मैं मर जाऊँगा।’<sup>17</sup> प्रभु ने मृश्यसे कहा, जो उन्होंने कहा है वह अच्छा है।<sup>18</sup> मैं उनके लिए उनके भाइयों में से तुम्हारे समान एक नवी उठाऊँगा। मैं अपने वचन उसके मुँह में डालूँगा, और वह उन्हें वही सब कहेगा जो मैं उसे आदेश द्वांगा।<sup>19</sup> मैं किसी की भी जवाबदेह ठहराऊँगा जो मेरे वचनों को नहीं सुनता जो वह मेरे नाम में बोलता है।<sup>20</sup> लेकिन जो नवी मेरे नाम में कोई ऐसा वचन बोलने का साहस करता है जिसे मैंने उसे बोलने का आदेश नहीं दिया है, या जो अन्य देवताओं के नाम में बोलता है, उसे मरना होगा।<sup>21</sup> तुम अपने दिल में पूछ सकते हो, ‘हम कैसे पहचान सकते हैं कि प्रभु ने कोई संदेश नहीं बोला है?’<sup>22</sup> यदि कोई नवी प्रभु के नाम में कुछ कहता है और वह नहीं होता या पूरा नहीं होता, तो वह एक संदेश है जिसे प्रभु ने नहीं बोला है। नवी ने अभिमानपूर्वक बोला है। उससे मत डरो।

**19** जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों का नाश कर देगा जिनकी भूमि वह तुम्हें दे रहा है, और जब तुम उस भूमि को अपने अधिकार में लेकर उनके नगरों और घरों में बस जाओगे,<sup>2</sup> तब तुम अपने लिए उस भूमि में तीन नगर अलग करोगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें अधिकार में देने के लिए दे रहा है।<sup>3</sup> सङ्कें तैयार करो और उस क्षेत्र को तीन भागों में बाँट दो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, ताकि जो कोई अनजाने में किसी को मार डाले, वहाँ भाग सके।<sup>4</sup> अब यह उस व्यक्ति का मामला है जो इन नगरों में से एक में भाग सकता है और जीवित रह सकता है: जो अपने पड़ोसी को अनजाने में मार डाले, बिना पूर्व घृणा के—<sup>5</sup> उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के साथ

जंगल में लकड़ी काटने जाता है, और जब वह कुल्हाड़ी चलाता है, तो उसका सिर हैंडल से फिसल जाता है और दूसरे व्यक्ति को लग जाता है और उसे मार डालता है—ऐसा व्यक्ति इन नगरों में से एक में भाग सकता है और जीवित रह सकता है।<sup>6</sup> अन्यथा, रक्त का प्रतिशोध लेने वाला पीछा कर सकता है और भागने वाले को पकड़ सकता है, यदि दूरी बहुत अधिक हो, और उसे मार सकता है, यद्यपि वह मृत्यु के योग्य नहीं था, क्योंकि उसने पहले अपने पड़ोसी से घृणा नहीं की थी।<sup>7</sup> इसलिए, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तीन नगर अलग करो।<sup>8</sup> और यदि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी भूमि का विस्तार करता है, जैसा उसने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ ली थी, और तुम्हें वह सारी भूमि देता है जो उसने उन्हें देने का बाद किया था—<sup>9</sup> क्योंकि तुम सावधानीपूर्वक उन सभी आदेशों का पालन करते हो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ—अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करने और हमेशा उसकी राहों पर चलने के लिए—तब तुम इन तीन नगरों में तीन और जोड़ोगे।<sup>10</sup> यह इसलिए करो ताकि तुम्हारी भूमि में निर्दोष रक्त न बहाया जाए, और ताकि तुम रक्तपात के दोषी न हो।<sup>11</sup> परन्तु यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से घृणा करता है, उसके लिए घात लगाता है, उसके विरुद्ध उठता है और उसे घातक रूप से मारता है ताकि वह मर जाए, और फिर इन नगरों में से एक में भाग जाता है,<sup>12</sup> तो उसके नगर के प्राचीरों को उसके लिए भेजना चाहिए, उसे वहाँ से वापस लाना चाहिए, और उसे रक्त का प्रतिशोध लेने वाले के हाथ में सौंप देना चाहिए, ताकि वह मर जाए।<sup>13</sup> कोई दया मत दिखाओ। तुम्हें इसाएल से निर्दोष रक्त बहाने के दोष को दूर करना चाहिए, ताकि तुम्हारा भला हो।<sup>14</sup> अपने पड़ोसी की सीमा पत्थर को मत हटाओ जो तुम्हारे पूर्वजों द्वारा स्थापित किया गया है उस विरासत में जो तुम्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा दे रहा है।<sup>15</sup> किसी भी अपराध या अपराध के लिए किसी को दोषी ठहराने के लिए एक गवाह पर्याप्त नहीं है। किसी मामले को दो या तीन गवाहों की गवाही से स्थापित किया जाना चाहिए।<sup>16</sup> यदि कोई दुष्प्राप्ति हो जाए तो विवाद में शामिल दोनों पक्षों को यहोवा के सामने, उन याजकों और न्यायाधीशों के सामने खड़ा होना चाहिए जो उस समय पद पर हैं।<sup>18</sup> न्यायाधीशों को पूरी जांच करनी चाहिए, और यदि गवाह झूठा पाया जाता है, जिसने दूरे के खिलाफ झूठी गवाही दी है,<sup>19</sup> तो तुम्हें झूठे गवाह के साथ वही करना चाहिए जो उन्होंने दूसरे पक्ष के साथ करने का इरादा किया था। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना चाहिए।<sup>20</sup> बाकी लोग सुनेंगे और डरेंगे, और फिर कभी तुम्हारे बीच ऐसा बुरा काम नहीं किया जाएगा।<sup>21</sup> तुम्हें

## व्यवस्थाविवरण

कोई दया नहीं दिखानी चाहिए: जीवन के लिए जीवन, अँख के लिए आँख, दाँत के लिए दाँत, हाथ के लिए हाथ, पैर के लिए पैर।

**20** जब तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने जाओ और घोड़ों, रथों और अपनी सेना से बड़ी सेना को देखो, तो उनसे मत डरो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया, तुम्हारे साथ है।<sup>2</sup> जब तुम युद्ध में जाने के लिए तैयार हो, तो याजक आगे आकर सेना को संबोधित करेगा।<sup>3</sup> वह कहेगा: हे इसाएल, सुनो। आज तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जा रहे हो। न तो कायर बनो और न ही डरो; उनके सामने

घबराओ या कांपो मत,<sup>4</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही है जो तुम्हारे साथ जाकर तुम्हारे शत्रुओं के विरुद्ध तुम्हारे लिए युद्ध करेगा और तुम्हें विजय देगा।<sup>5</sup> तब अधिकारी सेना से कहेंगे: क्या किसी ने नया घर बनाया है और अभी तक उसे समर्पित नहीं किया है? उसे घर लौटने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर सकता है और कोई और उसे समर्पित कर सकता है।<sup>6</sup> क्या किसी ने दाख की बारी लगाई है और उसका फल नहीं खाया है? उसे घर लौटने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर सकता है और कोई और उसका फल खा सकता है।<sup>7</sup> क्या किसी ने किसी स्त्री से सगाई की है और अभी तक उससे विवाह नहीं किया है? उसे घर लौटने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर सकता है और कोई और उससे विवाह कर सकता है।<sup>8</sup> तब अधिकारी और जोड़ेंगे: क्या कोई डरपोक या कायर है? उसे घर लौटने दो ताकि उसके साथी सैनिक भी निराश न हों।<sup>9</sup> जब अधिकारी सेना से बात करना समाप्त कर लें, तो वे उसके ऊपर सेनापति नियुक्त करेंगे।<sup>10</sup> जब तुम किसी नगर के पास युद्ध करने के लिए जाओ, तो उसे शांति की शर्तें प्रस्तावित करो।<sup>11</sup> यदि वह स्त्रीकार करता है और अपने द्वारा खोलता है, तो उसमें सभी लोग तुम्हारे नियंत्रण में जबरन श्रमिक बन जाएंगे।<sup>12</sup> लेकिन यदि वह शांति नहीं करता और तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करता है, तो उसे धेर लो।<sup>13</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उसे तुम्हारे हाथों में दे दे, तो सभी पुरुषों को तलवार से मार डालो।<sup>14</sup> लेकिन स्त्रियाँ, बच्चे, पशुधन, और नगर में बाकी सब कुछ—तुम इहें अपने लिए लूट के रूप में ले सकते हो। तुम अपने शत्रुओं से प्राप्त लूट का आनंद ले सकते हो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है।<sup>15</sup> तुम उन सभी नगरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करोगे जो तुम्हें दूर हैं और निकटवर्ती राष्ट्रों के नहीं हैं।<sup>16</sup> लेकिन उन राष्ट्रों के नगरों में जिन्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विवासत के रूप में दे रहा है, कुछ भी जीवित न छोड़ो।<sup>17</sup> तुम्हें उहें पूरी तरह से नष्ट करना होगा—हिती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी, और

यबूसी—जैसा कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आदेश दिया है,<sup>18</sup> ताकि वे तुम्हें अपने देवताओं के लिए किए गए सभी घृणित कार्यों की नकल करना न सिखाएं, और ताकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो।<sup>19</sup> जब तुम किसी नगर को घेरने के लिए लंबे समय तक लड़ाई करते हो, तो उसके पेड़ों को कुल्हाड़ी से काटकर नष्ट मत करो। तुम उनके फल खा सकते हो, लेकिन उहें काटो मत। क्या मैदान के पेड़ लोग हैं, कि तुम उहें धेरो?<sup>20</sup> हालांकि, तुम उन पेड़ों को काट सकते हो जिन्हें तुम जानते हो कि वे फल नहीं देते, ताकि उस नगर के विरुद्ध धेराबंदी का काम बना सको जो तुम्हारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है, जब तक कि वह गिर न जाए।

**21** यदि किसी को मारा हुआ पाया जाए, जो उस खेत में पड़ा हो जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें अधिकार करने के लिए दे रहा है, और यह न पता हो कि उसे किसने मारा,<sup>2</sup> तो तुम्हारे पुरनिये और न्यायी बाहर जाएं और शरीर से चारों ओर के नगरों की दर्री मारें।<sup>3</sup> जो नगर उस शरीर के सबसे निकट हो, उसके पुरनिये एक ऐसी बछिया लें जो कभी काम में न ली गई हो और न ही जुए में जोड़ी गई हो,<sup>4</sup> और उसे एक ऐसी घाटी में ले जाएं जिसमें धारा बहती हो और जो न तो जोती गई हो और न ही बोई गई हो। वहां, उस घाटी में, वे बछिया की गर्दन तोड़ दें।<sup>5</sup> फिर याजक, लेवी के पुत्र—जिन्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपनी सेवा करने और उसके नाम में आशीर्वाद देने के लिए चुनता है—आगे आएं, और उनके शब्द सभी विवादों और हमलों का निपटारा करेंगे।<sup>6</sup> उस नगर के सभी पुरनिये, जो शरीर के सबसे निकट हैं, उस बछिया के ऊपर अपने हाथ धोएंगे जिसकी गर्दन घाटी में तोड़ी गई थी,<sup>7</sup> और वे घोषणा करेंगे, हमारे हाथों ने इस खून को नहीं बहाया, न ही हमारी अंखों ने इसे होते देखा।<sup>8</sup> अपने लोगों इसाएल के लिए प्रायाश्चित्त प्रदान करें, वे यहोवा, जिन्हें आपने छुड़ाया है, और निर्दोष खून का दोष अपने लोगों पर न लगाएं। तब खून बहाने का प्रायाश्चित्त किया जाएगा।<sup>9</sup> इस प्रकार, तुम निर्दोष खून का दोष अपने बीच से हटा दोगे, यहोवा की दृष्टि में सही काम करें।

<sup>10</sup> जब तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने जाओ और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उहें तुम्हारे हाथों में दे दे और तुम उहें बंदी बना लो,<sup>11</sup> यदि तुम बांदियों में से किसी सुंदर स्त्री को देखो और उसकी ओर आकर्षित हो जाओ, और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहो,<sup>12</sup> तो उसे अपने घर ले आओ। वह अपना सिर मुंडवाएगी, अपने नाखून काटेगी,<sup>13</sup> और उन कपड़ों को छोड़ देगी जो उसने बंदी बनाए जाने पर पहने थे। वह तुम्हारे घर में

## व्यवस्थाविवरण

रहेंगी और अपने पिता और माता के लिए एक पूरा महीना शोक करेगी। उसके बाद, तुम उसके पास जा सकते हों और उसके पति बन सकते हों, और वह तुम्हारी पत्नी होगी।<sup>14</sup> यदि बाद में तुम उससे प्रसन्न न हों, तो उसे जहां चाहे वहां जाने दो। तुम उसे बेच नहीं सकते या उसे दास की तरह नहीं मान सकते, क्योंकि तुमने उसका अपमान किया है।

<sup>15</sup> यदि किसी व्यक्ति की दो पतियां हों, एक प्रिय और दूसरी अप्रिय, और दोनों उसे पुत्र दें, लेकिन पहलौठा पुत्र अप्रिय पत्नी का हो, <sup>16</sup> जब वह अपनी संपत्ति अपने पुत्रों को दे, तो वह प्रिय पत्नी के पुत्र को पहलौठे का अधिकार नहीं दे सकता, वास्तविक पहलौठे के बजाय। <sup>17</sup> इसके बजाय, उसे पहलौठे को, जो अप्रिय पत्नी का पुत्र है, स्वीकार करना चाहिए, और उसे अपनी सारी संपत्ति का दोहरा हिस्सा देना चाहिए, क्योंकि वह उसकी शक्ति की शुरुआत है और सही पहलौठा है।

<sup>18</sup> यदि किसी के पास एक हठी और विद्रोही पुत्र हो जो अपने माता-पिता की आज्ञा न माने, यहां तक कि वे उसे अनुशासन दें, <sup>19</sup> तो उसके पिता और माता उसे पकड़कर उसके नगर के फाटक पर पुरुनियों के पास ले जाएं। <sup>20</sup> वे पुरुनियों से कहें, यह हमारा पुत्र हठी और विद्रोही है। वह हमारी आज्ञा नहीं मानता। वह पेटू और शराबी है। <sup>21</sup> तब उसके नगर के सभी पुरुष उस पत्तर मारकर मार डायें। इस प्रकार, तुम अपने बीच से बुराई को दूर करेंगे, और सारा इस्साएल सुनेगा और डरेगा।

<sup>22</sup> यदि कोई व्यक्ति किसी पूँजी अपग्राध का दोषी हो और उसे मध्यु दंड दिया जाए, और तुम उसके शरीर को पेड़ पर लटकाओ, <sup>23</sup> तो उसका शरीर रात भर पेड़ पर नहीं रहना चाहिए। तुम्हें उसे उसी दिन दफनाना चाहिए, क्योंकि जो कोई पेड़ पर लटका होता है वह शापित होता है। उस भूमि को अपवित्र न करो जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत के रूप में दे रहा है।

**22** यदि तुम अपने भाई के बैल या भेड़ को भटकते हुए देखो, तो उसे अनदेखा मत करो। तुम्हें उसे अपने भाई के पास लौटाना चाहिए।<sup>2</sup> यदि तुम्हारा भाई पास में नहीं रहता या तुम नहीं जानते कि यह किसका है, तो उसे अपने घे ले जाओ और तब तक रखो जब तक वह उसे खोजने न आए। फिर तुम्हें उसे लौटाना चाहिए।<sup>3</sup> यदि तुम उसके गधे, चादर, या उसकी खेंडी हुई कोई भी चीज़ पाओ, तो भी ऐसा ही करो। इसे अनदेखा मत करो।<sup>4</sup> यदि तुम अपने भाई के गधे या बैल को सङ्क

पर गिरा हुआ देखो, तो उससे मुँह मत मोड़ो। उसकी मदद करो और उसे उठाओ।

<sup>5</sup> एक स्त्री को पुरुष का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए, और एक पुरुष को स्त्री का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए। जो कोई ऐसा करता है वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए घृणाप्सद है।

<sup>6</sup> यदि तुम सङ्कड़ के किनारे, पेड़ पर या ज़मीन पर, किसी पक्षी का धोसला पाओं, और उसमें जूँजे या अंडे हों और माँ पक्षी उन पर बैठी हो, तो माँ को बच्चों के साथ मत लो। <sup>7</sup> तुम बच्चों को ले सकते हो, लेकिन माँ को अवश्य छोड़ दो, ताकि तुम्हारा भला हो और तुम लंबी आयु तक जीवित रहो।

<sup>8</sup> जब तुम नया घर बनाओ, तो अपनी छत के चारों ओर एक परकोटा बनाओ ताकि यदि कोई उससे गिर जाए तो तुम्हारे घर पर खून का दोष न आए।

<sup>9</sup> अपने अंगूर के बगीचे में दो प्रकार के बीज मत बोओ। यदि तुम ऐसा करते हो, तो पूरी फसल अपवित्र हो जाएगी, जो बीज तुम बोते हों और अंगूर के बगीचे की उपज दोनों। <sup>10</sup> एक बैल और गधे को एक साथ जोड़कर हल मत चलाओ। <sup>11</sup> ऊन और लिनन से बने वस्त्र को एक साथ बुनकर मत पहनो। <sup>12</sup> तुम्हारे वस्त्र के चार कोनों पर झुम्के बनाओ।

<sup>13</sup> यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह करता है और उसके साथ रहने के बाद उसे नापसंद करता है, <sup>14</sup> और उस पर लज्जाजनक आचरण का आरोप लगाता है और उसे बदनाम करता है, यह कहते हुए, मैंने इस स्त्री से विवाह किया, लेकिन जब मैं उसके पास गया, तो मुझे उसकी कौमार्यता का प्रमाण नहीं मिला; <sup>15</sup> तो उस स्त्री के पिता और माता को उसके कौमार्यता का प्रमाण नगर के फाटक पर प्राचीनों के पास लाना चाहिए। <sup>16</sup> पिता प्राचीनों से कहेगा, मैंने अपनी बेटी को इस पुरुष को पत्नी के रूप में दिया था, लेकिन अब वह उसे अस्तीकार करता है।<sup>17</sup> उसने उस पर लज्जाजनक आचरण का आरोप लगाया है, यह कहते हुए कि उसे उसकी कौमार्यता का प्रमाण नहीं मिला। लेकिन यहाँ प्रमाण है। फिर वे प्राचीनों के सामने कपड़ा फैलाएँगे। <sup>18</sup> प्राचीन उस पुरुष को पकड़कर दंड देंगे। <sup>19</sup> वे उसे सौ शेकेल चाँदी का जुर्माना करेंगे और उसे स्त्री के पिता को देंगे, क्योंकि उसने इस्साएल की एक कुंवरी को बदनाम किया है। वह उसकी पत्नी बनी रहेंगी; वह उसे जीवन भर तालाक नहीं दे सकता। <sup>20</sup> लेकिन यदि आरोप सत्य है

## व्यवस्थाविवरण

और युवती की कौमार्यता का कोई प्रमाण नहीं मिलता, <sup>21</sup> तो उसे उसके पिता के घर के द्वार पर लाया जाएगा, और उसके नगर के लोग उसे पत्थरों से मार डालेंगे, क्योंकि उसने इसाएल में एक लज्जाजनक कार्य किया है, अपने पिता के घर में रहते हुए व्यभिचार किया। इस प्रकार, तुम अपने बीच से बुराई को दूर करोगे।

<sup>22</sup> यदि कोई पुरुष किसी अन्य पुरुष की पती के साथ पाया जाता है, तो दोनों पुरुष और स्त्री को मरना होगा। तुम्हें इसाएल में बुराई को दूर करना चाहिए। <sup>23</sup> यदि कोई कुंवारी विवाह के लिए वचनबद्ध है और कोई पुरुष उसे नगर में पाता है और उसके साथ सोता है, <sup>24</sup> तो तुम दोनों को उस नगर के फाटक पर ले जाकर पत्थरों से मार डालोगे—स्त्री को इसलिए कि उसने नगर में होते हुए भी सहायता के लिए नहीं पुकारा, और पुरुष को इसलिए कि उसने दूसरे पुरुष की पती का अपमान किया। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना चाहिए। <sup>25</sup> लेकिन यदि कोई पुरुष किसी वचनबद्ध स्त्री को ग्रामीण क्षेत्र में पाता है और उसे बलपूर्वक उसके साथ सोता है, तो केवल पुरुष को मरना होगा। <sup>26</sup> स्त्री के साथ कुछ मत करो; उसने कोई पाप नहीं किया है जो मृत्यु के योग्य हो। यह मामला उस व्यक्ति के समान है जो पड़ोसी पर हमला करता है और उसे मार डालता है। <sup>27</sup> क्योंकि पुरुष ने उसे ग्रामीण क्षेत्र में पाया, और यद्यपि वचनबद्ध स्त्री ने चिल्लाया, उसे बचाने के लिए कोई नहीं था। <sup>28</sup> यदि कोई पुरुष किसी कुंवारी को पाता है जो विवाह के लिए वचनबद्ध नहीं है और उसके साथ बलपूर्वक संबंध बनाता है, और वे पकड़े जाते हैं, <sup>29</sup> तो उसे स्त्री को पिता को पचास शेकेल चाँदी देनी होगी। उसे उससे विवाह करना होगा, और वह उसे जीवन भर तताक नहीं दे सकता। <sup>30</sup> कोई पुरुष अपने पिता की पती से विवाह नहीं करेगा, न ही अपने पिता के विवाह बिस्तर का अपमान करेगा।

**23** कोई भी व्यक्ति जिसे कुचलकर या काटकर नयुंसक बना दिया गया हो, वह प्रभु की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता। <sup>2</sup> कोई भी व्यक्ति जो अवैध संबंध से उत्पत्त हुआ हो, वह दसवीं पीढ़ी तक भी प्रभु की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता। <sup>3</sup> कोई भी अमोनी या मोआबी प्रभु की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता, दसवीं पीढ़ी तक भी नहीं। <sup>4</sup> उन्होंने मिस्र से बाहर निकलने पर तुम्हें रोटी और पानी से नहीं मिलाया, और उन्होंने अराम-हनैरै के पेटोर से बोर के पुरु बिलाम को तुम्हें शाप देने के लिए बुलाया। <sup>5</sup> परन्तु तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की बात नहीं मानी और तुम्हारे लिए शाप को आशीर्वद में बदल दिया, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुमसे प्रेम

करता है। <sup>6</sup> तुम कभी भी उनके लिए शांति या समृद्धि की खोज नहीं करना, अपने सभी दिनों के लिए। <sup>7</sup> एदोमी से घुणा मत करो, क्योंकि वह तुम्हारा रिश्तेदार है। मिस्री से घुणा मत करो, क्योंकि तुम उसके देश में परदेशी थे। <sup>8</sup> उनकी तीसरी पीढ़ी के वंशज प्रभु की सभा में प्रवेश कर सकते हैं। <sup>9</sup> जब तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने जाओ और शिविर लगाओ, तो अपने आप को हर अशुद्ध वस्तु से दूर रखना। <sup>10</sup> यदि कोई व्यक्ति रात में धार्मिक रूप से अशुद्ध हो जाता है, तो उसे शिविर छोड़ देना चाहिए और शाम तक वापस नहीं आना चाहिए। <sup>11</sup> सूर्यस्त के समय, वह अपने आप को धो सकता है और शिविर में फिर से प्रवेश कर सकता है। <sup>12</sup> तुम्हारे पास शिविर के बाहर एक निर्दिष्ट क्षेत्र होना चाहिए जहाँ तुम अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर सको। <sup>13</sup> अपने उपकरणों के साथ एक औजात ले जाओ, ताकि जब तुम अपनी आवश्यकताएँ पूरी करो, तो एक गद्वा खोदकर अपने मल को ढक सको। <sup>14</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शिविर में तुम्हारी रक्षा और उद्धार के लिए चलता है। तुम्हारा शिविर पवित्र होना चाहिए, ताकि वह कोई भी अशोभनीय वस्तु न देखे और तुमसे दूर न हो जाए। <sup>15</sup> उस दास को मत सौंपो जो अपने स्वामी से भागकर तुम्हारे पास आया हो। <sup>16</sup> उसे तुम्हारे नारों में जहाँ वह चाहे वहाँ रहें दो। उसे उत्तीर्णि मत करो। <sup>17</sup> कोई भी इसाएली पुरुष या महिला मंदिर वेश्या नहीं बनना चाहिए। <sup>18</sup> तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के घर में किसी भी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए वेश्या या पुरुष वेश्या की कमाई नहीं लानी चाहिए, क्योंकि दोनों ही प्रभु के लिए घृणास्पद हैं। <sup>19</sup> अपने साथी इसाएली से पैसे, भोजन, या किसी भी उथार दी गई वस्तु पर ब्याज मत लो। <sup>20</sup> तुम विदेशी से ब्याज ले सकते हो, लेकिन अपने साथी इसाएली से नहीं, ताकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उस देश में तुम्हें आशीर्वद दे सके जिसे तुम अधिकार करने जा रहे हो। <sup>21</sup> यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से कोई प्रतिज्ञा करते हो, तो उसे पूरा करने में देरी मत करो, क्योंकि वह निश्चित रूप से इसे तुमसे मार्गिणा, और यदि तुम ऐसा करने में असफल होते हो तो तुम दोषी होगे। <sup>22</sup> लेकिन यदि तुम प्रतिज्ञा करने से बचते हो, तो तुम दोषी नहीं होगे। <sup>23</sup> जो कुछ तुम्हारे हाँठों ने प्रतिज्ञा की है, उसे करने में सावधान रहो, क्योंकि तुमने स्वेच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रतिज्ञा की है। <sup>24</sup> यदि तुम अपने पड़ोसी के अंगूर के बीचे में प्रवेश करते हो, तो तुम अपनी भूख के लिए अंगूर खा सकते हो, लेकिन अपनी टोकरी में कोई नहीं डाल सकते। <sup>25</sup> यदि तुम अपने पड़ोसी के अनाज के खेत में प्रवेश करते हो, तो तुम अपने हाथ से बालियों को तोड़

## व्यवस्थाविवरण

सकते हो, लेकिन दरांती का उपयोग करके फसल नहीं काट सकते।

**24** यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह करता है और वह उसके दृष्टि में किसी अशोभनीय कारण से अनुग्रह नहीं पाती, तो वह उसे तलाक का प्रमाण पत्र लिख सकता है, उसे दे सकता है, और उसे अपने घर से विदा कर सकता है।<sup>2</sup> यदि उसके घर से निकलने के बाद वह किसी अन्य पुरुष की पती बन जाती है,<sup>3</sup> और उसका दूसरा पति भी उसे नापसंद करता है और उसे तलाक का प्रमाण पत्र लिखता है, तो उसे देता है और उसे विदा करता है, या यदि वह मर जाता है,<sup>4</sup> तो उसका पहला पति, जिसने उसे विदा किया था, उसे फिर से अपनी पती के रूप में नहीं ले सकता, क्योंकि वह अपवित्र हो चुकी है। यह प्रभु के सामने धृणास्पद है।<sup>5</sup> नवविवाहित पुरुष को पुद्धर में नहीं भेजा जाना चाहिए या किसी कर्तव्य के लिए नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। उसे एक वर्ष तक घर पर रहकर अपनी पती को सुख देने के लिए स्वतंत्र रहना चाहिए।<sup>6</sup> दो चक्रवियों का जोड़ा, या यहां तक कि ऊपरी चक्रवियों को भी गिरवी के रूप में न लें, क्योंकि यह किसी की आजीविका को सुरक्षा के रूप में लेना होगा।<sup>7</sup> यदि कोई व्यक्ति किसी साथी इसाएली का अपहरण करता है और उसे संपत्ति के रूप में व्यवहार करता है या बेचता है, तो अपहरणकर्ता को मस्तु दंड दिया जाना चाहिए। आपको अपने बीच से बुराई को दूर करना चाहिए।<sup>8</sup> संक्रामक त्वचा रोगों के मामलों में सावधान रहें। लेवीय याजकों के निर्देशों का ठीक से पालन करें। मैंने जो कुछ उन्हें आज्ञा दी है, उसे ध्यानपूर्क पालन करें।<sup>9</sup> यदि रखें कि मिस्र से बाहर आने के बाद यात्रा के दौरान प्रभु आपके परमेश्वर ने मिरियम के साथ क्या किया था।<sup>10</sup> जब आप अपने पड़ोसी को किसी भी प्रकार का ऋण देते हैं, तो उनके घर में जाकर गिरवी के रूप में यी गई वस्तु को न लें।<sup>11</sup> बाहर खड़े रहें और व्यक्ति को गिरवी की वस्तु बाहर लाने दें।<sup>12</sup> यदि व्यक्ति गरीब है, तो उनकी गिरवी की वस्तु को अपने पास रखकर न सोएं।<sup>13</sup> सूर्यस्त से पहले चादर लौटा दें ताकि आपका पड़ोसी उसमें सो सके। तब वे आपको आशीर्वाद देंगे, और यह आपके परमेश्वर प्रभु के सामने एक धार्मिक कार्य माना जाएगा।<sup>14</sup> किसी गरीब और जरूरतमंद मजदूर का लाभ न उठाएं, चाहे वह आपका साथी इसाएली हो या आपके नारों में निवास करने वाला विदेशी।<sup>15</sup> उन्हें उनका वेतन प्रत्येक दिन सूर्यस्त से पहले दें, क्योंकि वे गरीब हैं और उस पर निर्भर हैं। अन्यथा वे आपके खिलाफ प्रभु के पास पुकार सकते हैं, और आप पाप के दोषी होगे।<sup>16</sup> माता-पिता को उनके बच्चों के लिए मस्तु दंड नहीं

दिया जाना चाहिए, न ही बच्चों को उनके माता-पिता के लिए; प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही पाप के लिए मरेगा।<sup>17</sup> विदेशी या अनाथ को न्याय से वंचित न करें, या विधवा की चादर को गिरवी के रूप में न लें।<sup>18</sup> याद रखें कि आप मिस्र में दास थे और आपके परमेश्वर प्रभु ने आपको छुड़ाया। इसलिए मैं आपको यह करने की आज्ञा देता हूँ।<sup>19</sup> जब आप अपने खेत में फसल काट रहे हों और एक पूला भूल जाएं, तो उसे लेने के लिए वापस न जाएं। इसे विदेशी, अनाथ, और विधवा के लिए छोड़ दें।<sup>20</sup> जब आप अपने पेड़ों से जैतून तोड़ते हैं, तो शाखाओं को दूसरी बार न जाएं। जो बचा है उसे विदेशी, अनाथ, और विधवा के लिए छोड़ दें।<sup>21</sup> जब आप अपने दाख की बारी के अंगूर इकट्ठा करते हैं, तो बैलों पर फिर से न जाएं। जो बचा है उसे विदेशी, अनाथ, और विधवा के लिए छोड़ दें।<sup>22</sup> याद रखें कि आप मिस्र देश में दास थे। इसलिए मैं आपको यह करने की आज्ञा देता हूँ।

**25** यदि लोगों के बीच विवाद हो और वे उसे अदालत में ले जाएं, तो न्यायाधीश उनके बीच निर्णय करेंगे, निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएंगे।<sup>2</sup> यदि दोषी व्यक्ति को मारने की सजा दी जानी चाहिए, तो न्यायाधीश उसे उसके सामने उसकी अपराध की गंभीरता के अनुसार कोड़े लगाने का आदेश देंगे।<sup>3</sup> उसे चालीस कोड़े तक दिए जा सकते हैं, लेकिन उससे अधिक नहीं। अन्यथा, तुम्हारा भाई तुम्हारी दृष्टि में अपमानित होगा।<sup>4</sup> जब बैल अनाज को रौंद रहा हो, तो उसका मुंह न बांधो।<sup>5</sup> यदि भाई एक साथ रहते हैं और उनमें से एक बिना पुत्र के मर जाता है, तो उसकी विधवा को परिवार के बाहर विवाह नहीं करना चाहिए। उसके मृत पति का भाई उसे अपनी पती के रूप में लेगा और उसके प्रति देवर का कर्तव्य पूरा करेगा।<sup>6</sup> जो पहला पुत्र वह जम देगी, उसका नाम मृत भाई के नाम पर रखा जाएगा, ताकि उसका नाम इसाएल से मिट न जाए।<sup>7</sup> यदि वह व्यक्ति अपने भाई की विधवा से विवाह नहीं करना चाहता, तो वह फाटक पर बुजुर्गों के पास जाकर करेंगी, मंरे पति का भाई इसाएल में अपने भाई का नाम बनाए रखने से इनकार करता है।<sup>8</sup> तब बुजुर्ग उसे बुलाएंगे और उससे बात करेंगे। यदि वह यह कहने पर अड़ा रहता है, मैं उसे नहीं लेना चाहता;<sup>9</sup> तब उसके भाई की विधवा बुजुर्गों के सामने उसके पास जाकर उसकी जूती उतार देगी, उसके चेहरे पर थूक देगी, और कहेंगी, यह उस व्यक्ति के साथ किया जाता है जो अपने भाई का घर बनाने से इनकार करता है।<sup>10</sup> और उसकी परिवार को इसाएल में बिना जूती वाला घर के रूप में जाना जाएगा।<sup>11</sup> यदि दो पुरुष लड़ रहे हों और उनमें से

## व्यवस्थाविवरण

एक की पक्की अपने पति को बचाने के लिए हस्तक्षेप करती है और दूसरे पुरुष के गुप्तांग को पकड़ लेती है, <sup>12</sup> तो तुम उसका हाथ काट डालो। उसे दया मत दिखाओ। <sup>13</sup> अपने पास दो भिन्न वजन न रखो—एक बड़ा और एक छोटा। <sup>14</sup> अपने घर में दो भिन्न माप न रखो—एक बड़ा और एक छोटा। <sup>15</sup> तुम्हारे पास सही और ईमानदार वजन और माप होना चाहिए, ताकि तुम उस देश में लंबे समय तक जीवित रह सको जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है। <sup>16</sup> क्योंकि जो कोई ईमानी से व्यवहार करता है वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए धूणास्पद है। <sup>17</sup> याद करो कि अमालेक ने तुम्हारे साथ यात्रा के दौरान क्या किया, जब तुम मिस्र से बाहर आए थे—<sup>18</sup> कैसे उसने तुम्हें रास्ते में हमला किया जब तुम थके और कमज़ोर थे, और पीछे रह गए लोगों को मार डाला। उसे परमेश्वर का कोई भय नहीं था। <sup>19</sup> जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें चारों ओर के सभी शत्रुओं से विश्राम देगा उस देश में जो वह तुम्हें दे रहा है, तो तुम अमालेक के नाम को आकाश के नीचे से मिटा दोगे। इसे मत भूलना!

**26** जब तुम उस देश में प्रवेश करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत के रूप में दे रहा है, और उसका अधिकार प्राप्त कर उसमें बस जाओगे, <sup>2</sup> तो तुम्हें उस भूमि के सब उपज के पहले फल में से कुछ लेना चाहिए, जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, उसे एक टोकरी में रखो, और उस स्थान पर जाओ जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम के निवास के लिए चुनेगा। <sup>3</sup> उस समय के याजक के पास जाओ और उससे कहो, मैं आज यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के सामने यह घोषणा करता हूँ कि मैं उस देश में आ गया हूँ जिसे यहोवा ने हमारे पूर्वजों से देने की शरपथ खाई थी। <sup>4</sup> तब याजक तुम्हारे हाथ से टोकरी लेगा और उसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की बेटी के सामने रखेगा। <sup>5</sup> तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने कहोगे: मेरा पिता एक भटकता हुआ अरामी था,

वह मिस्र गया और वहाँ परदेशी के रूप में थोड़े लोगों के साथ रहा, परंतु वहाँ वह एक महान् शक्तिशाली, और बहुत बड़ी जाति बन गया।

<sup>6</sup> पर मिसियों ने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया और हमें सताया,

और हम पर कठोर श्रम का बोझ डाला।

<sup>7</sup> तब हमने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को पुकारा,

और यहोवा ने हमारी आवाज सुनी और हमारी कठिनाई श्रम, और उत्तीर्ण को देखा।

<sup>8</sup> इसलिए यहोवा ने हमें मिस्र से एक शक्तिशाली हाथ और फैले हुए भुजाओं के साथ, बड़े भय, चिन्हों, और चमकतारों के साथ बाहर निकाला। <sup>9</sup> वह हमें इस स्थान पर लाया और हमें यह देश दिया, एक ऐसा देश जो दूध और मधु से बहता है। <sup>10</sup> और अब, मैं उस भूमि के पहले फल लाता हूँ जिसे तू हे यहोवा, मुझे दिया है। फिर इसे अपने परमेश्वर यहोवा के सामने रखो और उसके सामने झुको। <sup>11</sup> तुम, लेती और तुम्हारे बीच रहेने वाला परदेशी उन सभी अच्छी चीजों में आनंदित होंगे जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे घर को दी हैं।

<sup>12</sup> जब तुम तीसरे वर्ष में, जो दशमांश का वर्ष है, अपनी सारी उपज का दसवाँ हिस्सा अलग कर चुके हो, और उसे लेती, परदेशी, अनाथ, और विधवा को दे चुके हो, ताकि वे तुम्हारे नगरों में खा सकें और सतुर हो सकें, <sup>13</sup> तब अपने परमेश्वर यहोवा से कहो, मैंने अपने घर से पवित्र भाग को निकाल दिया है और उसे लेती, परदेशी, अनाथ, और विधवा को दिया है, जैसा कि तूने मुझे आज्ञा दी थी। मैंने तेरी किसी भी आज्ञा से मुँह नहीं मोड़ा, और न ही उत्तें भुलाया। <sup>14</sup> मैंने शोक के समय में दशमांश में से कुछ नहीं खाया,

न ही उसे अशुद्ध होने पर निकाल, न ही उसे मरे हुओं के लिए अपित किया। मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा मानी है और सब कुछ किया है जो तूने मुझे आज्ञा दी।

<sup>15</sup> अपने पवित्र निवास से, स्वर्ग से नीचे देख और अपने इसाएल लोगों को आशीर्वाद दे और उस भूमि को जिसे तूने हमें दिया है, जैसा कि तूने हमारे पूर्वजों से शपथ साई थी—एक ऐसा देश जो दूध और मधु से बहता है।

<sup>16</sup> आज के दिन तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें इन विधियों और नियमों का पालन करने की आज्ञा देता है। इसलिए, तुम्हें इन्हें पूरे दिल और पूरे प्राण से पालन करना चाहिए। <sup>17</sup> तुमने आज यह घोषणा की है कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर है और तुम उसकी राहों पर चलोगे, उसकी विधियों, आज्ञाओं, और नियमों का पालन करोगे, और उसकी आवाज सुनोगे। <sup>18</sup> और यहोवा ने आज यह घोषणा की है कि तुम उसकी प्रिय संपत्ति हो, जैसा उसने बादा किया था, और तुम उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करोगे। <sup>19</sup> वह तुम्हें उन सभी राष्ट्रों से ऊपर स्थापित करेगा जो उसने बनाए हैं, प्रशंसा, प्रसिद्धि, और

## व्यवस्थाविवरण

सम्मान में, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र लोग बनोगे, जैसा कि उसने कहा है।

**27** तब मूसा और इसाएल के प्राचीनों ने लोगों को यह आज्ञा दीः ‘सभी आज्ञाओं का पालन करो जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।’<sup>2</sup> और जिस दिन तुम यरदन को पार कर उस देश में प्रवेश करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है, तुम बड़े पश्यरों को खड़ा करना और उन पर चूना पोतना,<sup>3</sup> और जब तुम पार कर चुके हो, तो उन पर इस व्यवस्था के सभी शब्द लिखना, ताकि तुम उस देश में प्रवेश कर सको जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है—एक ऐसा देश जो द्रौढ़ और मधु से बहता है, जैसा कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें चवन दिया था।<sup>4</sup> इसलिए जब तुम यरदन को पार कर चुके हो, तो उन पश्यरों को एबाल पर्वत पर खड़ा करना, जैसा कि मैं आज तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ, और उन पर चूना पोतना।<sup>5</sup> तुम वहाँ अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक वेदी भी बनाना, पश्यरों की वेदी। उन पर लोहे के औजार का उपयोग न करना।<sup>6</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी बिना काटे हुए पश्यरों से बनाना, और उस पर अपने परमेश्वर यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाना।<sup>7</sup> शांति बलि चढ़ाना और वहाँ खाना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनंदित होना।<sup>8</sup> तुम इस व्यवस्था के सभी शब्दों को पश्यरों पर बहुत स्पष्ट रूप से लिखना।

° तब मूसा और लेवीय याजकों ने समस्त इसाएल से कहा, ‘चुप रहो और सुनो, हे इसाएल। आज के दिन तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लोग बन गए हो।’<sup>10</sup> इसलिए तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज का पालन करो, और उसकी आज्ञाओं और विधियों का पालन करो जिन्हें मैं आज तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ।

11 उसी दिन मूसा ने लोगों को यह आदेश दियाः<sup>12</sup> ये लोग जब तुम यरदन को पार कर चुके हो, तो लोगों को आशीर्वाद देने के लिए गेरिजीम पर्वत पर खड़े होंगे: शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ, और बियामीन।<sup>13</sup> और ये लोग अभिशप्त के लिए एबाल पर्वत पर खड़े होंगे: रूबेन, गाद, आशोर, जब्रून, दान, और ननाली।<sup>14</sup> तब लेवीय लोग समस्त इसाएल के पुरुषों से ऊँची आवाज में कहेंगे:<sup>15</sup> ‘शापित है वह जो युद्धी हुई या ढली हुई मूर्ति बनाता है, जो यहोवा के लिए धृणास्पद है, कारीगरों का काम है, और उसे गुप्त रूप से स्थापित करता है।’

और सभी लोग उत्तर देंगे और कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>16</sup> ‘शापित है वह जो अपने पिता या माता का अपमान करता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>17</sup> ‘शापित है वह जो अपने पड़ोसी की सीमा चिन्ह को हटाता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>18</sup> ‘शापित है वह जो अंधे को मार्ग में भटकाता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>19</sup> ‘शापित है वह जो परदेशी, अनाथ, या विधवा से न्याय को रोकता है।’ और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’<sup>20</sup> ‘शापित है वह जो अपने पिता की पती के साथ सोता है, क्योंकि उसने अपने पिता की नग्रता को प्रकट किया है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>21</sup> ‘शापित है वह जो किसी पशु के साथ सोता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>22</sup> ‘शापित है वह जो अपनी बहन के साथ सोता है, चाहे वह उसके पिता की बेटी हो या उसकी माता की।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>23</sup> ‘शापित है वह जो अपनी सास के साथ सोता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>24</sup> ‘शापित है वह जो अपने पड़ोसी को गुप्त रूप से मारता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

<sup>25</sup> ‘शापित है वह जो निर्दोष व्यक्ति को मारने के लिए रिश्वत लेता है।’

और सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन।’

## व्यवस्थाविवरण

<sup>26</sup> 'शापित है वह जो इस व्यवस्था के शब्दों को नहीं मानता और उनका पालन नहीं करता।'

और सभी लोग कहेंगे 'आमीन।'

**28** "अब यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात ध्यान से नुसोगे, और उसके सब आज्ञाओं का पालन करने में सावधान रहोगे, जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें पृथी की सब जातियों से ऊँचा करेगा।<sup>2</sup> और ये सब आशीर्वाद तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हें प्राप्त होंगे यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानोगे;<sup>3</sup> "तुम नगर में आशीर्वादित होगे, और तुम देश में आशीर्वादित होगे।<sup>4</sup> "तुम्हारे गर्भ के फल, तुम्हारी भूमि की उपज, तुम्हारे पशुओं की संतान, तुम्हारी गाय-बैल की बछिया, और तुम्हारी भेड़-बकरी के बच्चे आशीर्वादित होंगे।<sup>5</sup> "तुम्हारी लोकरी और तुम्हारा गूँधने का पात्र शापित होगा।<sup>6</sup> "तुम आशीर्वादित होगे जब तुम भीतर आओगे, और आशीर्वादित होगे जब तुम बाहर जाओगे।<sup>7</sup> "यहोवा तुम्हारे शत्रुओं को जो तुम्हारे विरुद्ध उठेंगे, तुम्हारे सामने पराजित करेगा; वे एक मार्ग से तुम्हारे विरुद्ध आएंगे और सात मार्गों से तुम्हारे सामने से भागेंगे।<sup>8</sup> यहोवा तुम्हारे खलिहानों में और तुम्हारे हाथ के सब कामों में तुम्हारे लिए आशीर्वाद की आज्ञा देगा, और वह तुम्हें उस देश में आशीर्वाद देगा जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>9</sup> यहोवा तुम्हें अपने पवित्र लोगों के रूप में स्थापित करेगा, जैसा उसने तुम्हें शाथ स्खाकर कहा था, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करोगे और उसकी राहों पर चलोगे।<sup>10</sup> तब पृथी की सब जातियाँ देख लेंगी कि तुम यहोवा के नाम से युकरे जाते हो, और वे तुमसे दरेंगी।<sup>11</sup> और यहोवा तुम्हें तुम्हारे गर्भ के फल में, तुम्हारे पशुओं की संतान में, और तुम्हारी भूमि की उपज में अधिक समृद्धि देगा, उस देश में जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी।<sup>12</sup> यहोवा तुम्हारे लिए अपने अच्छे भंडार, आकाश को खोलेगा, तुम्हारे देश में उसके समय पर वर्षा देगा और तुम्हारे हाथ के हर काम को आशीर्वाद देगा; और तुम बहुत सी जातियों को उधर देगे, परंतु तुम उधर नहीं लोगे।<sup>13</sup> और यहोवा तुम्हें सिर बनाएगा, पूँछ नहीं, और तुम केवल ऊपर रहोगे, नीचे नहीं, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को सुनोगे, जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, और उनका पालन करोगे,<sup>14</sup> और उन सब शब्दों से न हटोगे जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, न तो दाँैंगे और न बाँैंगे, अन्य देवताओं के पीछे चलने और उनकी सेवा करने के लिए।<sup>15</sup> "परंतु यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात नहीं मानोगे, उसके सब आज्ञाओं और विधियों

का पालन करने में सावधान नहीं रहोगे जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, तो ये सब शाप तुम पर आ जाएंगे और तुम्हें पकड़ लेंगे:<sup>16</sup> "तुम नगर में शापित होगे, और तुम देश में शापित होगे।<sup>17</sup> "तुम्हारी टोकरी और तुम्हारा गूँधने का पात्र शापित होगा।<sup>18</sup> "तुम्हारे गर्भ के फल, तुम्हारी भूमि की उपज, तुम्हारी गाय-बैल की बछिया, और तुम्हारी भेड़-बकरी के बच्चे शापित होंगे।<sup>19</sup> "तुम शापित होगे जब तुम भीतर आओगे, और शापित होगे जब तुम बाहर जाओगे।<sup>20</sup> "यहोवा तुम्हारे विशुद्ध शाप, आतंक, और ताड़ना भेजेगा, जो कुछ भी तुम करने का प्रयास करोगे उसमें, जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते और शीघ्र ही नष्ट नहीं हो जाते, तुम्हारे कर्मों की बुराई के कारण, क्योंकि तुमने मुझे छोड़ दिया है।<sup>21</sup> यहोवा तुम्हारे साथ महामारी को तब तक चिपका देगा जब तक कि वह तुम्हें उस देश से समाप्त नहीं कर देता जहाँ तुम प्रवेश कर रहे हो तुम्हारे प्राप्त करने के लिए।<sup>22</sup> यहोवा तुम्हें क्षय, ज्वर, बुखार, जलन, तलवार, झुलसा, और फर्कंदी से मरोगा, और वे तुम्हारा पीछा करेंगे जब तक कि तुम नष्ट नहीं हो जाते।<sup>23</sup> तुम्हारे सिर के ऊपर का आकाश पीतल होगा, और तुम्हारे नीचे की धरती लोहा।<sup>24</sup> यहोवा तुम्हारे देश की वर्षा की धूल और राख में बदल देगा; यह आकाश से तुम पर गिरेंगी जब तक कि तुम नष्ट नहीं हो जाते।<sup>25</sup> "यहोवा तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं से पराजित करेगा; तुम उनके विरुद्ध एक मार्ग से जाओगे, परंतु उनके सामने से सात मार्गों से भागोगे, और तुम पृथी के सब राज्यों के लिए आतंक का उदाहरण बनोगे।<sup>26</sup> और तुम्हारी मृत देह आकाश के सब पक्षियों और पृथी के पशुओं के लिए भोजन बनेगी, और उन्हें डराने वाला कोई नहीं होगा।<sup>27</sup> "यहोवा तुम्हें मिस के फोड़े और फुंसियों, फोड़ों और खुजली से मरोगा, जिनसे तुम ठीक नहीं हो सकते।<sup>28</sup> यहोवा तुम्हें पागलपन, अंधापन, और मन की उलझन से मरोगा;<sup>29</sup> और तुम दोपहर को टोटोलोगे, जैसे अंधा अंधेरे में टोटोलता है, और तुम अपने मार्गों में सफल नहीं होगे; परंतु तुम हमेशा अत्याचारित और लूटे जाओगे, और तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।<sup>30</sup> तुम एक स्त्री से सगाई करोगे, परंतु दूसरा पुरुष उसे अपमानित करेगा; तुम एक घर बनाओगे, परंतु उसमें नहीं रहोगे; तुम एक दाख की बारी लगाओगे, परंतु उसके फल का उपयोग नहीं करोगे।<sup>31</sup> तुम्हारा बैल तुम्हारी अँखों के सामने मारा जाएगा, परंतु तुम उसमें से कुछ नहीं खाओगे; तुम्हारा गधा तुमसे छीन लिया जाएगा और तुम्हें वापस नहीं दिया जाएगा; तुम्हारी भेड़-बकरियाँ तुम्हारे शत्रुओं को दी जाएंगी, और तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।<sup>32</sup> तुम्हारे बेटे और बेटियाँ दूसरे लोगों को दे दी जाएंगी, जबकि तुम्हारी आँखें उन्हें देखकर हमेशा तरसती रहेंगी; परंतु तुम कुछ नहीं कर

## व्यवस्थाविवरण

सकोगे।<sup>33</sup> एक ऐसा लोग जिसे तुम नहीं जानते, तुम्हारी भूमि की उपज और तुम्हारे सब परिश्रम को खा जाएगा, और तुम हमेशा अत्याचारित और कुचले जा ओगे।<sup>34</sup> और तुम उस दश्य से पागल हो जाओगे जो तुम्हारी अँखें देखेंगी।<sup>35</sup> यहोवा तुम्हें धूटनों और पैरों पर गंभीर फोड़े से मरेगा, जिसे तुम ठीक नहीं हो सकते—तुम्हारे पैर के तलवे से लेकर तुम्हारे सिर के शीर्ष तक।<sup>36</sup>

यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को, जिसे तुम अपने ऊपर नियुक्त करोगे, एक ऐसे राष्ट्र में ले जाएगा जिसे न तुम जानते हो और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे, और वहाँ तुम लकड़ी और पथर के देवताओं की सेवा करोगे।<sup>37</sup> और तुम उन सब लोगों के बीच एक आतंक, एक कहावत, और एक उपहास बन जाओगे जहाँ यहोवा तुम्हें ले जाएगा।<sup>38</sup> तुम खेत में बहुत सा बीज ले जाओगे, परंतु थोड़ा ही इकट्ठा करोगे, क्योंकि टिड़ी उसे खा जाएगी।<sup>39</sup> तुम दाख की बारियाँ लगाओगे और उनकी देखभाल करोगे, परंतु न तो दाखरस पियोगे और न ही अंगूर इकट्ठा करोगे, क्योंकि कीड़ा उहें खा जाएगा।<sup>40</sup> तुम्हारे पूरे क्षेत्र में जैतून के पेड़ होंगे, परंतु तुम अपने आप को तेल से अधिकतम नहीं करोगे, क्योंकि तुम्हारे जैतून गिर जाएंगे।<sup>41</sup> तुम बेटे और बेटियाँ पैदा करोगे, परंतु वे तुम्हारे नहीं रहेंगे, क्योंकि वे बंदी बना लिए जाएँगे।<sup>42</sup> टिड़ी तुम्हारे सब पेड़ों और तुम्हारी भूमि की उपज को अपने अधिकार में ले लेंगी।<sup>43</sup> तुम्हारे बीच का परदेशी तुम्हारे ऊपर ऊँचा और ऊँचा उठाएगा, और तुम नीचे और नीचे गिरोगे।<sup>44</sup> वह तुम्हें उधार देगा, परंतु तुम उसे उधार नहीं दोगे; वह सिर होगा, और तुम पूछ।<sup>45</sup> तो ये सब शाप पर आ जाएँगे और तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हें पकड़ लेंगे जब तक कि तुम नष्ट नहीं हो जाते, क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की बात नहीं मानी, उसकी आज्ञाओं और विधियों का पालन नहीं किया जिन्हें उसने तुम्हें दिया था।<sup>46</sup> और वे तुम्हारे और तुम्हारी संतानों के लिए सदा के लिए एक चिन्ह और एक आश्वार्य बन जाएँगे।<sup>47</sup> क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा खुशी और प्रसन्न हृदय से नहीं की, सब वस्तुओं की प्रवृत्तता के लिए आभार में,<sup>48</sup> इसलिए तुम अपने शत्रुओं की सेवा करोगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे विशुद्ध भेजेगा, भूख में, यास में, नम्रता में, और सब वस्तुओं की कमी में; और वह तुम्हारी गर्दन पर लोहे का जुआ रखेगा जब तक कि वह तुम्हें नष्ट नहीं कर देता।<sup>49</sup> यहोवा तुम्हारे विशुद्ध एक राष्ट्र को दूर से, पृथ्वी के छोर से लाएगा, जैसे कि एक गरुड़ नीचे गिरता है—एक ऐसा राष्ट्र जिसकी भाषा तुम नहीं समझोगे,<sup>50</sup> एक ऐसा राष्ट्र जिसकी दृष्टि में न बढ़ोंगे कि लिए समान होगा, और न युवाओं के लिए अनुग्रह।<sup>51</sup> और वह तुम्हारे पशुओं की संतान और तुम्हारी भूमि की उपज को खा जाएगा जब

तक कि तुम नष्ट नहीं हो जाते, वह तुम्हें कोई अनाज, नया दाखरस, तेल, तुम्हारी गाय-बैल की बछिया, या तुम्हारी भेड़-बकरी के बच्चे नहीं छोड़ेगा जब तक कि वह तुम्हें समाप्त नहीं कर देता।<sup>52</sup> और वह तुम्हारे सब नगरों में तुम्हें धेर लेगा जब तक कि तुम्हारी ऊँची और ढूँढ़ दीवारें जिन पर तुम भरोसा करते हो, तुम्हारे देश भर में गिर नहीं जातीं; और वह तुम्हारे सब नगरों में तुम्हें धेर लेगा तुम्हारे देश भर में जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।<sup>53</sup> तब तुम अपने शरीर की संतान, अपने बेटों और बेटियों का मास खाओगे जिन्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देगा, उस धेरे और संकट के दौरान जिसमें तुम्हारा शत्रु तुम्हें दबाएगा।<sup>54</sup> तुम्हारे बीच का वह व्यक्ति जो कोमल और बहुत नाजुक है, अपने भाई के प्रति, अपनी प्रिय पति के प्रति, और अपने बाकी बच्चों के प्रति जो बचेंगे, शत्रुतापूर्ण होगा,<sup>55</sup> ताकि वह उनमें से किसी को भी अपने बच्चों के मास का एक टुकड़ा भी नहीं देगा जिसे वह खाएगा, क्योंकि उसके पास और कुछ नहीं बचा होगा, उस धेरे और संकट के दौरान जिसमें तुम्हारा शत्रु तुम्हें तुम्हारे सब नगरों में दबाएगा।<sup>56</sup> तुम्हारे बीच की वह कोमल और नाजुक स्त्री, जो अपनी नाजुकता और कोमलता के कारण अपने पैर का तलवा जमीन पर नहीं रखती थी, अपने प्रिय पति के प्रति, अपने बेटे और बेटी के प्रति शत्रुतापूर्ण होगी,<sup>57</sup> और अपने पैरों के बीच से निकलने वाले अपने गर्भ के बाद के प्रति, और अपने बच्चों के प्रति जिन्हें वह जन्म देगी; क्योंकि वह उहें गुप्त रूप से खाएगी क्योंकि उसके पास और कुछ नहीं होगा, उस धेरे और संकट के दौरान जिसमें तुम्हारा शत्रु तुम्हें तुम्हारे नगरों में दबाएगा।<sup>58</sup> यदि तुम इस पुस्तक में लिखे गए इस नियम के सब शब्दों का पालन करने में सावधान नहीं रहोगे, इस आदरप्रीय और भयानक नाम, अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानने के लिए,<sup>59</sup> तब यहोवा तुम पर और तुम्हारी संतानों पर असाधारण विपत्तियाँ लाएगा, गंभीर और दीर्घकालिक विपत्तियाँ, और दुखदायी और दीर्घकालिक बीमारियाँ।<sup>60</sup> और वह तुम पर मिस्र की सब बीमारियाँ लाएगा जिनसे तुम डरते थे, और वे तुमसे विपक्षी रहेंगी।<sup>61</sup> इसके अलावा, हर बीमारी और हर विपत्ति जो इस नियम की पुस्तक में नहीं लिखी गई है, यहोवा तुम्हारे ऊपर लाएगा जब तक कि तुम नष्ट नहीं हो जाते।<sup>62</sup> तब तुम थोड़े रह जाओगे, जबकि तुम आकाश के तारों के समान अनेक थे, क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की बात नहीं मानी।<sup>63</sup> और यह होगा कि, जैसे यहोवा तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुआ तुम्हें समझूँ और बढ़ाने के लिए, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होगा तुम्हें नष्ट और नाश करने के लिए; और तुम उस देश से उत्थाप दिए जाओगे जिसे तुम प्राप्त करने

## व्यवस्थाविवरण

के लिए प्रवेश कर रहे हों।<sup>64</sup> इसके अलावा, यहोवा तुम्हें सब जातियों में बिखर देगा, पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक; और वहाँ तुम लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जिन्हें न तुम जानते हो और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे।<sup>65</sup> और उन जातियों के बीच तुम्हें कोई विश्राम नहीं मिलेगा, और न तुम्हारे पैर के तलवे के लिए कोई विश्राम स्थान होगा; परंतु वहाँ यहोवा तुम्हें एक कांपाता हुआ हृदय, आँखों की विफलता, और आत्मा की निराशा देगा।<sup>66</sup> तो तुम्हारा जीवन तुम्हारे सामने संदेह में लटका रहेगा; और तुम रात और दिन भयभीत रहोगे, और तुम्हारे जीवन की कोई निश्चितता नहीं होगी।<sup>67</sup>

सुबह में तुम कहोगे, 'यदि केवल यह शाम होती' और शाम में तुम कहोगे, 'यदि केवल यह सुबह होती' तुम्हारे हृदय के भय के कारण जो तुम महसूस करोगे, और तुम्हारी आँखों के दृश्य के कारण जो तुम देखोगे।<sup>68</sup> और यहोवा तुम्हें जहाजों में मिस्र वापस ले जाएगा, उसी मार्ग से जिसके बारे में मैंने तुम्से कहा था, 'तुम उसे फिर कभी नहीं देखोगे!' और वहाँ तुम अपने आप को अपने शत्रुओं के लिए पुरुष और महिला दास के रूप में बेचने का प्रयास करोगे, परंतु कोई खरीदार नहीं होगा।"

**29** ये वे वचन हैं जो यहोवा ने मूसा को मोआब देश में इसाएलियों के साथ वाचा करने की आज्ञा दी, इसके अलावा जो वाचा उसने होरेब में उनके साथ की थी।

<sup>2</sup> मूसा ने समस्त इसाएल को बुलाकर उनसे कहा, 'तुमने वह सब देखा है जो यहोवा ने तुम्हारी आँखों के सामने मिस्र देश में, फिरौन, उसके सब सेवकों और उसके सारे देश के साथ किया—<sup>3</sup> वे महान परीक्षाएँ जो तुम्हारी आँखों ने देखी हैं, वे शक्तिशाली विन्दु और चमकार।<sup>4</sup> फिर भी आज तक यहोवा ने तुम्हें समझने का हृदय, देखने की आँखें, या सुनने के कान नहीं दिए हैं।<sup>5</sup> मैंने तुम्हें चारीस वर्षों तक जंगल में चलाया है। तुम्हारे कपड़े तुम पर पुराने नहीं हुए, और तुम्हारे पाँव की जूतियाँ नहीं घिरीं।<sup>6</sup> तुमने न रोटी खाई, न दाखमधु या मदिरा पी, ताकि तुम जान सको कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।<sup>7</sup> जब तुम इस स्थान पर आए, तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग तुमसे लड़ने के लिए निकले, परन्तु हमने उन्हें पराजित किया।<sup>8</sup> हमने उनकी भूमि ली और उसे रूबेनियों, गाटियों, और मनश्शे के आधे गोत्र को विरासत के रूप में दे दिया।<sup>9</sup> इसलिए, इस वाचा के वचनों का पालन करो और उन्हें करो, ताकि तुम जो कुछ भी करो उसमें सफल हो सको।

<sup>10</sup> तुम सब आज अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े हो—तुम्हारे नेता, तुम्हारे गोत्र, तुम्हारे बुजुर्ग, और तुम्हारे

अधिकारी, इसाएल के सभी पुरुष,<sup>11</sup> तुम्हारे बच्चे, तुम्हारी पत्नियाँ, और वह परदेशी जो तुम्हारे शिविर में है, जो तुम्हारी लकड़ी काटता है से लेकर जो तुम्हारा पानी भरता है—<sup>12</sup> कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा में प्रवेश कर सको, और उसकी शपथ में, जो आज तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ कर रहा है,<sup>13</sup> ताकि वह आज तुम्हें अपनी प्रजा के रूप में स्थापित कर सके, और वह तुम्हारा परमेश्वर हो सके, जैसा उसने तुम्हसे वादा किया और जैसा उसने तुम्हारे पूर्वजों, अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाई।

<sup>14</sup> मैं यह वाचा और यह शपथ केवल तुम्हसे नहीं कर रहा हूँ जो आज यहाँ हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े हो,<sup>15</sup> बल्कि उनसे भी जो आज हमारे साथ यहाँ नहीं हैं।

<sup>16</sup> तुम जानते हो कि हम मिस्र देश में कैसे बसे थे और कैसे हमने उन जातियों को पार किया जिनसे तुम मिले।

<sup>17</sup> तुमने उनके धृषित वस्त देखे, उनके लकड़ी और पत्थर, चाँदी और सोने के मूर्तियों को देखा, जो उनके बीच थीं।<sup>18</sup> सावधान रहो कि कहीं तुम्हें कोई पुरुष या स्त्री, कुल या गोत्र न हो, जिसका हृदय आज हमारे

परमेश्वर यहोवा से फिरकर उन जातियों के देवताओं की सेवा करने लगे; कहीं तुम्हें कोई ऐसा मूल न हो जो विषैला और कड़वा फल लाए।<sup>19</sup> जब ऐसा व्यक्ति इस शपथ के वचनों को सुने, तो वह अपने हृदय में

आशीर्वाद दे सकता है, यह कहते हुए, 'मैं शांति में रहूँगा, यद्यपि मैं अपने हृदय की हठ में चलता हूँ,' इस प्रकार जलयुक्त भूमि पर भी विपत्ति लाता है और सूखी पर भी।

<sup>20</sup> यहोवा उसे नहीं बछोरा; यहोवा का क्रोध और ईर्ष्या उस व्यक्ति के विरुद्ध भड़क उठाएगी। इस पुस्तक में लिखे गए सभी शाप उस पर आँएंगे, और यहोवा उसका नाम आकाश के नीचे से मिटा देगा।<sup>21</sup> यहोवा उसे इसाएल के सभी गोत्रों से विपत्ति के लिए अलग कर देगा, इस पुस्तक की व्यवस्था में लिखे गए सभी शापों के अनुसार।

<sup>22</sup> आने वाली पीढ़ी, तुम्हारे बाद उठने वाले तुम्हारे बच्चे, और दूर देश से आने वाला परदेशी, इस भूमि की विपत्तियों और उन रोगों को देखेंगे जिनसे यहोवा ने इसे पीड़ित किया है, और वे कहेंगे,<sup>23</sup> सारी भूमि गंधक और नमक है, जलती हुई बर्बादी, बिना बोई और अनुपजाऊ, जिसमें कोई पौधा नहीं उगता,

जैसे सदोम और अमोरा, अदमा और ज़ेबोईम का विनाश, जिसे यहोवा ने अपने क्रोध और रोष में नष्ट कर दिया।

## व्यवस्थाविवरण

<sup>24</sup> सभी जातियाँ कहेंगी, यहोवा ने इस भूमि के साथ ऐसा क्यों किया? यह महान जलता हुआ क्रोध क्यों? <sup>25</sup> तब लोग उत्तर देंगे, क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की वाचा को छोड़ दिया, जो उसने उनके साथ की थी जब उसने उन्हें मिस से बाहर निकाला था। <sup>26</sup> वे गए और अन्य देवताओं की सेवा की और उनकी पूजा की, जिनको वे नहीं जानते थे और जिन्हें उसने उन्हें नहीं दिया था। <sup>27</sup> इसलिए यहोवा का क्रोध भूमि के विरुद्ध भड़क उठा, इस पुस्तक में लिखे गए सभी शापों को उस पर लाते हुए। <sup>28</sup> यहोवा ने उन्हें अपने क्रोध, रोष, और महान आत्मोश में उनकी भूमि से उखाड़ दिया, और उन्हें एक अन्य भूमि में डाल दिया, जैसा कि आज है।

<sup>29</sup> गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा की हैं, परन्तु जो बातें प्रकट की गई हैं वे हमारे और हमारे बच्चों के लिए सदा के लिए हैं, ताकि हम इस व्यवस्था के सभी वचनों का पालन कर सकें।

**30** जब ये सब बातें तुम पर आएंगी — आशीर्वाद और शाप, जिन्हें मैंने तुम्हारे सामने रखा है — और तुम उन्हें अपने हृदय में ले लोगे उन सभी राष्ट्रों में जहाँ तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें ले गया है, <sup>2</sup> और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर लौटोगे, तुम और तुम्हारे बच्चे, और उसकी वाणी को अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से मानोगे, जैसा कि मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूँ, <sup>3</sup> तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग्य को पुनःस्थापित करेगा और तुम पर दया करेगा, और वह तुम्हें फिर से उन सभी लोगों में से इकट्ठा करेगा जहाँ तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें खिखें चुका है। <sup>4</sup> यदि तुम्हारे निवासित स्वर्ग के सबसे दूर छोर पर भी हों, तो भी वहाँ से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें इकट्ठा करेगा, और वहाँ से वह तुम्हें वापस लाएगा। <sup>5</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस भूमि में लाएगा जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने अधिकार किया था, और तुम उसे अधिकार करोगे। वह तुम्हें समृद्ध करेगा और तुम्हारे पूर्वजों से अधिक बढ़ाएगा। <sup>6</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हृदय और तुम्हारी संतानों के हृदय का खतना करेगा, ताकि तुम अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम कर सको, और तुम जीवित रहो। <sup>7</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन सभी शापों को तुम्हारे शत्रुओं पर और उन पर जो तुमसे घृणा करते हैं, जो तुम्हारा उत्सीड़न करते हैं, डाल देगा। <sup>8</sup> तुम फिर से यहोवा की वाणी का पालन करोगे और उन सभी आज्ञाओं का पालन करोगे जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। <sup>9</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें समृद्ध करेगा, तुम्हारे गर्भ के फल में, तुम्हारे पशुओं की संतानों में, और

तुम्हारी भूमि की उपज में, उस भूमि में जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी। <sup>10</sup> यह तब होगा जब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाणी का पालन करोगे, उसकी आज्ञाओं और विधियों को मानोगे जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं, और तुम अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर लौटोगे।

<sup>11</sup> क्योंकि यह आज्ञा जो मैं आज तुम्हें देता हूँ, तुम्हारे लिए न तो बहुत कठिन है और न ही तुम्हारी पर्हुँच से बाहर है। <sup>12</sup> यह स्वर्ग में नहीं है, कि तुम कहो, 'कौन हमारे लिए स्वर्ग में चढ़ेगा' और इसे हमारे लिए लाएगा, ताकि हम इसे सुनें और इसे करें? <sup>13</sup> और न ही यह समृद्ध के पार है, कि तुम कहो, 'कौन हमारे लिए समृद्ध के पार जाएगा' और इसे हमारे लिए लाएगा, ताकि हम इसे सुनें और इसे करें? <sup>14</sup> परन्तु यह वह चरन तुम्हारे बहुत निकट है, तुम्हारे मुँह में और तुम्हारे हृदय में, ताकि तुम इसे कर सको।

<sup>15</sup> देखो, मैंने आज तुम्हारे सामने जीवन और समृद्धि, मृत्यु और विपत्ति रखी है। <sup>16</sup> क्योंकि मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसकी मार्गी पर चलो, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों का पालन करो, ताकि तुम जीवित रहो और बढ़ो, और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस भूमि में आशीर्वाद दे जहाँ तुम प्रवेश करने और अधिकार करने जा रहे हो। <sup>17</sup> परन्तु यदि तुम्हारा हृदय फिर जाता है और तुम नहीं सुनोग, परन्तु अन्य देवताओं की पूजा करने और उनकी सेवा करने के लिए खींचे जाते हो, <sup>18</sup> तो मैं आज तुम्हें घोषित करता हूँ कि तुम निश्चय ही नष्ट हो जाओग। तुम उस भूमि में लंबे समय तक नहीं रहोगे जिसे तुम यरदन पार कर प्रवेश करने और अधिकार करने जा रहे हो। <sup>19</sup> मैं आज तुम्हारे विरुद्ध आकाश और पृथ्वी को साक्षी बनाता हूँ, कि मैंने तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु, आशीर्वाद और शाप रखा है।

इसलिए जीवन को चुना, ताकि तुम और तुम्हारी संताने जीवित रहें,

<sup>20</sup> अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करने, उसकी वाणी का पालन करने, और उससे चिपके रहने के लिए, क्योंकि वही तुम्हारा जीवन और तुम्हारे दिनों की लंबाई है,

ताकि तुम उस भूमि में बस सको जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों अब्लाहम, इसहाक, और याकूब को देने की शपथ खाई थी।

## व्यवस्थाविवरण

**31** मूसा ने जाकर इन वचनों को समस्त इस्माएलियों से कहा।<sup>2</sup> उसने उनसे कहा, 'अब मेरी आयु एक सौ बीस वर्ष हो गई है, और मैं अब बाहर जाने और आने में सक्षम नहीं हूँ। यहोवा ने मुझसे कहा है, "तू इस यरदन को पार नहीं करेगा।"<sup>3</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा स्वयं तुम्हारे आगे-आगे पार जाएगा। वह इन जातियों को तुम्हारे सामने नष्ट करेगा, और तुम उन्हें बेदखल करोगे। यहोशू तुम्हारे आगे-आगे पार जाएगा, जैसा कि यहोवा ने कहा है।<sup>4</sup> यहोवा उनके साथ वही करेगा जैसा उसने एपोरी के राजाओं सीहोन और ओग के साथ किया, और उनकी भूमि के साथ, जब उसने उन्हें नष्ट कर दिया।<sup>5</sup> यहोवा उन्हें तुम्हारे हाथ में सीप देगा, और तुम उनके साथ वही करोगे जैसा मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।<sup>6</sup> मजबूत और साहसी बनो। उनसे भयभीत या निराश न हो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही है जो तुम्हारे साथ जाता है। वह तुम्हें असफल नहीं करेगा और न ही तुम्हें छोड़ेगा।

<sup>7</sup> तब मूसा ने यहोशू को बुलाया और समस्त इस्माएल के सामने उससे कहा, 'मजबूत और साहसी बनो, क्योंकि तुम इस लोगों के साथ उस भूमि में जाओगे जिसे यहोवा ने उनके पूर्वजों को देने की शपथ ली थी, और तुम उन्हें उसका अधिकारी बनाओगे।<sup>8</sup> यहोवा स्वयं तुम्हारे आगे-आगे जाएगा और तुम्हारे साथ रहेगा। वह तुम्हें असफल नहीं करेगा और न ही तुम्हें छोड़ेगा। भयभीत या निराश न हो।

<sup>9</sup> मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और इसे याजकों को, जो लेखी के पुत्र थे और यहोवा की वाचा की सन्दूक को उठाते थे, और इस्माएल के सभी पुनियों को दिया।<sup>10</sup> मूसा ने उन्हें आज्ञा दी, 'हर सातवें वर्ष के अंत में, मुक्ति के वर्ष के समय, झोपड़ियों के पर्व के दौरान,<sup>11</sup> जब समस्त इस्माएल तुहरे परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर उपस्थित होगा जिसे वह चुनेगा, तुम इस व्यवस्था को समस्त इस्माएल के सुनने में पढ़ोगे।<sup>12</sup> लोगों को इकट्ठा करो—पुरुष, महिलाएँ, बच्चे, और तुम्हारे द्वारों के भीतर रहने वाले परदेशी—कि वे सुनें और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानना सीखें और इस व्यवस्था के सभी वचनों को करने में सावधान रहें,<sup>13</sup> और उनके बच्चे, जिन्होंने इसे नहीं जाना, सुनें और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानना सीखें, जब तक तुम उस भूमि में जीवित रहो जिसे तुम यरदन पार करके अधिकार करने जा रहे हो।

<sup>14</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, 'देख, वे दिन आ रहे हैं जब तुम्हें मरना होगा। यहोशू को बुलाओ, और मिलाप के

तम्बू में अपने आप को प्रस्तुत करो, कि मैं उसे नियुक्त करूँ।' तो मूसा और यहोशू गए और मिलाप के तम्बू में अपने आप को प्रस्तुत किया।<sup>15</sup> यहोवा तम्बू में बादल के स्तम्भ में प्रकट हुआ, और बादल का स्तम्भ तम्बू के द्वार पर खड़ा हुआ।<sup>16</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, 'देख, तुम शीघ्र ही अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करोगे, और ये लोग उठकर उस देश के परदेशी देवताओं के साथ व्यभिचार करेंगे जिसमें वे प्रवेश कर रहे हैं। वे मुझे छोड़ देंगे और उस वाचा को तोड़ देंगे जो मैंने उनके साथ की है।'<sup>17</sup> उस दिन मेरा क्रोध उनके विरुद्ध भड़क उठाए, और मैं उन्हें छोड़ दूँगा और अपना मुख उनसे छिपा लूँगा, ताकि वे नष्ट हो जाएँ। उन पर कई बुराइयाँ और संकट आएँगे, और वे उस दिन कहेंगे, 'क्या ये बुराइयाँ हम पर इसलिए नहीं आई क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे बीच नहीं है?'<sup>18</sup> मैं उस दिन अपना मुख अवश्य ही छिपा लूँगा, क्योंकि उन्होंने जो बुराइ की है, अन्य देवताओं की ओर मुड़कर।

<sup>19</sup> अब इसलिए, इस गीत को लिखो और इसे इस्माएल के लोगों को सिखाओ। इसे उनके मुँह में डालो, कि यह गीत मेरे लिए इस्माएल के लोगों के विरुद्ध एक गवाह हो।

<sup>20</sup> क्योंकि जब मैं उन्हें उस भूमि में ले जाऊँगा जो दूध और मधु से बहती है, जिसे मैंने उनके पूर्वजों को देने की शपथ ली थी, और वे खाएँगे और संतुष्ट होंगे और मोटे हो जाएँगे, तो वे अन्य देवताओं की ओर मुड़ेंगे और उनकी सेवा करेंगे, और मुझे तुच्छ जानेंगे और मेरी वाचा को तोड़ देंगे।<sup>21</sup> जब उन पर कई बुराइयाँ और संकट आएँगे, तो यह गीत उनके विरुद्ध एक गवाह के रूप में गवाही देगा, क्योंकि यह उनके वंशजों के मुँह से नहीं भूलेगा। क्योंकि मैं उनके झुकाव को जानता हूँ, जो वे अभी भी कर रहे हैं, इससे पहले कि मैंने उन्हें उस भूमि में लाया जिसे देने की मैंने शपथ ली थी।<sup>22</sup> तो मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखा और इसे इस्माएल के लोगों को सिखाया।

<sup>23</sup> यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू को नियुक्त किया, यह कहते हुए, 'मजबूत और साहसी बनो, क्योंकि तुम इस्माएल के लोगों को उस भूमि में ले जाओगे जिसे देने की मैंने शपथ ली थी, और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।'

<sup>24</sup> जब मूसा ने इस व्यवस्था के वचनों को एक पुस्तक में अंत तक लिखना समाप्त किया,<sup>25</sup> मूसा ने उन लेखियों को आज्ञा दी जो यहोवा की वाचा की सन्दूक को उठाते थे, यह कहते हुए,<sup>26</sup> इस व्यवस्था की पुस्तक को ले और इसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की वाचा की सन्दूक के बगल में रखो, कि यह तुम्हारे विरुद्ध एक गवाह के रूप

# व्यवस्थाविवरण

मैं वहाँ रहे।<sup>27</sup> क्योंकि मैं तुम्हारी विद्रोही प्रवृत्ति और तुम्हारी कठोर गर्दन को जानता हूँ। देखो, जबकि मैं आज तुम्हारे साथ जीवित हूँ, तुम यहोवा के विरुद्ध विद्रोही रहे हो; मेरे मरने के बाद कितना अधिक?

<sup>28</sup> मेरे पास तुम्हारे गोत्रों के सभी पुरनियों और तुम्हारे अधिकारियों को इकट्ठा करो, कि मैं उनके सुनने में ये वचन कहूँ और उनके विरुद्ध आकाश और पृथ्वी को गवाह बनाऊँ।<sup>29</sup> क्योंकि मुझे पता है कि मेरे मरने के बाद तुम अवश्य ही भ्रष्ट आचरण करोगे और उस मार्फ से हट जाओगे जिसे मैंने तुम्हें आज्ञा दी है। आने वाले दिनों में, तुम्हारे ऊपर बुराई आएगी क्योंकि तुम यहोवा की दृष्टि में बुराई करोगे, अपने हाथों के कामों से उसे क्रोधित करोगे।

<sup>30</sup> तब मूसा ने इस गीत के वचनों को समस्त इस्राएल की सापा के सुनने में कहा, जब तक वे समाप्त नहीं हो गए।

**32** हे आकाश, सुनो, और मैं बोलूँगा,

और पृथ्वी मेरे मुख की बातों को सुने।

<sup>2</sup> मेरी शिक्षा वर्षा की तरह गिरे,

मेरी वाणी ओस की तरह टपके, नई धास पर कोमल बैछारों की तरह, कोमल पौधों पर प्रवृत्त वर्षा की तरह।

<sup>3</sup> क्योंकि मैं यहोवा के नाम का प्रचार करूँगा;

हमारे परमेश्वर की महानता का वर्णन करो।

<sup>4</sup> चट्टान, उसका कार्य सिद्ध है,

क्योंकि उसकी सारी राहें न्यायपूर्ण हैं। विश्वासयोग्य परमेश्वर, अन्याय रहित, धर्मी और सीधा वही है।

<sup>5</sup> उन्होंने उसके प्रति भ्रष्ट आचरण किया; वे अब उसके बच्चे नहीं रहे, क्योंकि उनकी दोषपूर्ण पीढ़ी एक विकृत और टेढ़ी पीढ़ी है।<sup>6</sup> क्या तुम यहोवा को इसी प्रकार चुकाते हो,

हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोग! क्या वह तुम्हारा पिता नहीं है, जिसने तुम्हें रचा, जिसने तुम्हें बनाया और स्थिर किया?

<sup>7</sup> पुराने दिनों को स्मरण करो;

कई पीढ़ियों के वर्षों पर विचार करो। अपने पिता से पूछो, और वह तुम्हें दिखाएगा, अपने बुजुर्गों से, और वे तुम्हें बताएंगे।

<sup>8</sup> जब परमप्रधान ने राष्ट्रों को उनकी विरासत दी, जब उसने मानवजाति को विभाजित किया, उसने लोगों की सीमाएँ इस्राएल के पुत्रों की संख्या के अनुसार निर्धारित की।<sup>9</sup> क्योंकि यहोवा का भाग उसका लोग है, याकूब उसकी विरासत का भाग है।

<sup>10</sup> उसने उसे एक मरुस्थल में पाया,

जंगल की गर्जन भरी बर्बदी में, उसने उसे धेरा, उसकी देखभाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह रखा।

<sup>11</sup> जैसे एक गरुड़ अपने घोंसले को हिलाता है,

अपने बच्चों के ऊपर फड़फड़ाता है, उसने अपने पंख फैलाए और उन्हें पकड़ा, उसने उन्हें अपने पंखों पर उठाया।

<sup>12</sup> यहोवा ने अकेले उसे मार्गदर्शन दिया; उसके साथ कोई विदेशी देवता नहीं था।<sup>13</sup> उसने उसे भूमि के ऊंचे स्थानों पर चलाया,

और उसने खेत की उपज खाई। उसने उसे चट्टान से मधु छुसाया, और चकमक पत्थर से तेल,

<sup>14</sup> गायों के दही और झुंड के दूध के साथ,

मेमनों की बर्बी के साथ बाशान के मेढ़ों और बकरों के साथ गेहूँ के उत्तम से— और तुमने अंगूर के झागदार रक्त की पिया।

<sup>15</sup> परन्तु यशूरुन मोटा हो गया और लात मारी;

तुम माटे मोटे और विकने हो गए तब उसने अपने बनाने वाले परमेश्वर को ल्याग दिया और अपनी उद्धार की छट्टान का तिरस्कार किया।

## व्यवस्थाविवरण

<sup>16</sup> उन्होंने उसे विदेशी देवताओं से जलन दिलाईः, घृणित वस्तुओं से उन्होंने उसे क्रोधित किया। <sup>17</sup> उन्होंने दुष्टामाओं को बलिदान चढ़ाया, परमेश्वर को नहीं,

उन देवताओं को जिन्हें वे नहीं जानते थे, नए देवताओं को जो हाल ही में आए जिनसे तुम्हारे पूर्वज नहीं डरते थे।

<sup>18</sup> तुमने उस चट्ठान की उपेक्षा की जिसने तुम्हें जन्म दिया, और उस परमेश्वर को भूल गए जिसने तुम्हें जन्म दिया।

<sup>19</sup> यहोवा ने इसे देखा और उन्हें तुच्छ जाना, अपने पुत्रों और पुत्रियों की उत्तेजना के कारण।

<sup>20</sup> उसने कहा, 'मैं उनसे अपना मुख छिपाऊंगा,

मैं देखूँगा कि उनका अंत क्या होगा, क्योंकि वे एक विकृत पीढ़ी हैं, जिनमें कोई विकासयोग्यता नहीं है।'

<sup>21</sup> उन्होंने मुझे उस से जलन दिलाई जो परमेश्वर नहीं है;

उन्होंने मुझे अपने व्यर्थ मूर्तियों से क्रोधित किया। इसलिए मैं उन्हें उस से जलन दिलाऊंगा जो लोग नहीं हैं, मैं उन्हें एक मूर्ख राष्ट्र से क्रोधित करूँगा।

<sup>22</sup> क्योंकि मेरी क्रोध की आग जल उठी है,

और यह शिओल की गहराई तक जलती है, पृथ्वी और उसकी उपज को भस्म करती है, और पहाड़ों की नीच को जलाती है।

<sup>23</sup> मैं उन पर विपत्तियाँ ढेर कर दूँगा;

मैं अपने तीर उन पर खर्च करूँगा।

<sup>24</sup> वे भूख से नष्ट हो जाएंगे,

महामारी और कड़वी विपत्ति से प्रस्तु, मैं उनके विरुद्ध पशुओं के दांत भेजूँगा, धूल में रोगने वाली चीजों के विष के साथ।

<sup>25</sup> सड़क में तलवार शोक करेगी,

और कक्षों में आतंक मारेगा, जवान आदमी और कुंगरी, द्रुध पीता बच्चा और बूढ़ा आदमी।

<sup>26</sup> मैंने कहा होता, 'मैं उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा,

मैं उनके स्मरण को मानवजाति से मिटा दूँगा.'

<sup>27</sup> परन्तु मैं शत्रु की ताने से डरता था,

कहीं उनके विरोधी गलत न समझें, कहीं वे न कहें: 'हमारा हाथ विजयी है, यहोवा ने यह सब नहीं किया।'

<sup>28</sup> क्योंकि वे एक ऐसी जाति हैं जिसमें कोई सलाह नहीं है, और उनमें कोई समझ नहीं है। <sup>29</sup> यदि वे बुद्धिमान होते, तो वे इसे समझते;

ते अपने अंतिम परिणाम को समझते।

<sup>30</sup> कैसे एक हजार को खदेड़ सकता है,

और दो दस हजार को भगाते हैं, जब तक उनकी चट्ठान ने उन्हें बेच नहीं दिया, और यहोवा ने उन्हें छोड़ नहीं दिया?

<sup>31</sup> क्योंकि उनकी चट्ठान हमारी चट्ठान के समान नहीं है, यहां तक कि हमारे शत्रु भी इसे मानते हैं। <sup>32</sup> क्योंकि उनकी बेल सदोम की बेल से है

और गमोरा के खेतों से उनके अंगूर विष के अंगूर हैं, उनके गुच्छे कड़वे हैं।

<sup>33</sup> उनकी शराब सर्पों का विष है, कूर विष है।

<sup>34</sup> क्या यह मेरे पास संप्रहित नहीं है,

मेरे खजानों में सील किया हुआ?

<sup>35</sup> प्रतिशोध मेरा है, और प्रतिफल,

उनके पैर फिसलने के समय के लिए क्योंकि उनके विपत्ति का दिन निकट है, और उनका विनाश शीघ्र आता है।

<sup>36</sup> क्योंकि यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा

## व्यवस्थाविवरण

और अपने सेवकों पर दया करेगा, जब वह देखेगा कि  
उनकी शक्ति खम्ह हो गई है और कोई नहीं बचा है,  
बंधुआ या स्वतंत्र।

<sup>37</sup> तब वह कहेगा, 'उनके देवता कहाँ हैं,

वह चट्टान जिसमें उन्होंने शरण ती थी,

<sup>38</sup> जिन्होंने उनके बलिदानों की चर्बी खाई

और उनके पेय अर्पण की शराब पी? उन्हें उठने दो  
और तुम्हारी सहायता करें, उन्हें तुम्हारी रक्षा होने दो।

<sup>39</sup> अब देखो कि मैं, हाँ मैं ही हूँ,

और मेरे सिवा कोई परमेश्वर नहीं है; मैं मारता हूँ और  
मैं जीवित करता हूँ, मैं ध्याल करता हूँ और मैं चंगा  
करता हूँ, और कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके।

<sup>40</sup> क्योंकि मैं स्वर्म की ओर अपना हाथ उठाता हूँ

और शपथ खाता हूँ, जैसा कि मैं सदा जीवित हूँ

<sup>41</sup> यदि मैं अपनी चमकदार तलवार को तेज करता हूँ

और मेरा हाथ न्याय पर पकड़ लेता है, मैं अपने  
विरोधियों को प्रतिशोध द्वांगा और जो मुझसे घृणा करते  
हैं उन्हें प्रतिफल द्वांगा।

<sup>42</sup> मैं अपने तीरों को खून से मदहोश कर द्वांगा,

और मेरी तलवार मांस को खा जाएगी— मारे गए और  
बंदियों के खून के साथ दुश्मन के लंबे बालों वाले  
सिरों से।

<sup>43</sup> हे राष्ट्रों, उसके लोगों के साथ आनन्दित हो,

क्योंकि वह अपने सेवकों के खून का प्रतिशोध लेगा;  
वह अपने विरोधियों को प्रतिशोध देगा और अपनी  
भूमि और अपने लोगों के लिए प्रायश्चित्त करेगा।

<sup>44</sup> मूसा नून के पुत्र यहोशू के साथ आया और इस गीत  
के सभी शब्दों को लोगों के सुनने में कहा। <sup>45</sup> जब मूसा  
ने इसाएल से ये सभी शब्द कहे, <sup>46</sup> तो उसने उनसे  
कहा, 'आज मैं तुम्हें जिन शब्दों से चेतावनी दे रहा हूँ,

उन्हें अपने दिल में लो, ताकि तुम उन्हें अपने बच्चों को  
आदेश दे सको, कि वे इस व्यवस्था के सभी शब्दों को  
करने में सावधान रहें। <sup>47</sup> क्योंकि यह तुम्हारे लिए कोई  
खाली शब्द नहीं है, बल्कि तुम्हारा जीवन है, और इस  
शब्द के द्वारा तुम उस भूमि में तंबे समय तक जीवित  
रहोगे जिसे तुम जोर्डन पार कर के प्राप्त करने जा रहे  
हो।

<sup>48</sup> उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>49</sup> 'इस अबारीम  
पर्वत पर चढ़ो, नेबो पर्वत, जो मोआब देश में है, यरीहो  
के सामने, और उस कनान देश को देखो, जिसे मैं  
इसाएल के लोगों को एक संपत्ति के रूप में दे रहा हूँ। <sup>50</sup>  
और उस पर्वत पर मरा जाओ जिस पर तुम चढ़ते हो,  
और अपनी जाति में मिल जाओ, जैसे तुम्हारा भर्त  
हारून होर पर्वत पर मरा और अपनी जाति में मिला, <sup>51</sup>  
क्योंकि तुमने मेरे प्रति विश्वासघात किया इसाएल के  
लोगों के बीच में मेरिबा-कादेश के जल में, जिन के  
कारण तुमने मुझे इसाएल के लोगों के बीच परिव्रत नहीं  
माना। <sup>52</sup> क्योंकि तुम उस भूमि को अपने सामने देखोगे,  
परन्तु तुम वहाँ नहीं जाओगे, उस भूमि में जिसे मैं  
इसाएल के लोगों को दे रहा हूँ।

**33** यह वह आशीर्वाद है जिससे परमेश्वर के मनुष्य  
मूसा ने अपनी मृत्यु से पहले इसाएल के लोगों को  
आशीर्वाद दिया। <sup>2</sup> उसने कहा, 'यहोवा सीनै से आया

और सेइर से हम पर उदय हुआ; वह परान पर्वत से  
चमका, वह दस हजार पवित्रों के साथ आया, उसके  
दाहिने हाथ से उनके लिए एक अग्रिम्य व्यवस्था  
निकली।

<sup>3</sup> निश्चय ही, वह अपने लोगों से प्रेम करता है;

उसके सभी पवित्र उसके हाथ में हैं। वे आपके चरणों  
का अनुसरण करते हैं, आपके चरनों से शिक्षा प्राप्त  
करते हैं।

<sup>4</sup> मूसा ने हमें एक व्यवस्था दी, याकूब की सभा के लिए  
एक विशासत। <sup>5</sup> जब लोगों के प्रधान इकट्ठे हुए, इसाएल  
के सभी गोत्र एक साथ, तब वह येशूरून में राजा था।

<sup>6</sup> रूबेन जीवित रहे और न मरे, यद्यपि उसके लोग  
संख्या में कम हों।

<sup>7</sup> और यह उसने यहोवा के विषय में कहा:

## व्यवस्थाविवरण

<sup>१</sup> हे यहोवा, यहूदा की आवाज़ सुन, और उसे उसके लोगों के पास ले आ। वह उनके लिए अपने हाथों से संघर्ष करता है। उसके विरोधियों के विरुद्ध सहायता कर।<sup>१</sup>

<sup>२</sup> लेती के विषय में उसने कहा:

‘तेरे धुमीम और ऊरीम तेरे विश्वासयोग्य सेवक के हैं। दूने उसे मस्सा में परखा, और मरीबा के जल में उसके साथ विवाद किया।

<sup>३</sup> उसने अपने पिता और माता के विषय में कहा,

“मैं उनकी परवाह नहीं करता।” उसने अपने भाइयों को नहीं पहचाना, न ही अपने बच्चों को जाना, क्योंकि उन्होंने तेरे चरन का पालन किया और तेरी वाचा का पालन किया।

<sup>४</sup> वे याकूब को तेरे नियम सिखाएंगे,

और इसाएल को तेरी व्यवस्था, वे तेरे सामने धूप चढ़ाएंगे, और तेरी वेदी पर सम्पूर्ण होमबलि चढ़ाएंगे।

<sup>५</sup> हे यहोवा, उसके पदार्थ को आशीर्वाद दे,

और उसके हाथों के काम को स्वीकार कर। जो उसके विरुद्ध उठते हैं उनके कटि को कुचल दे, कि उसके शत्रु फिर न ठड़े।

<sup>६</sup> बिन्नामीन के विषय में उसने कहा:

‘यहोवा का प्रिय सुरक्षित रहता है। परमप्रधान उसे दिन भर आश्रय देता है, और वह उसके कंधों के बीच विश्राम करता है।’

<sup>७</sup> पूर्सुफ के विषय में उसने कहा:

‘यहोवा से धन्य हो उसकी भूमि ऊपर आकाश के उत्तम उपहारों के साथ, और नीचे गहरे जल के साथ,

<sup>८</sup> सूर्य के उत्तम फलों के साथ,

और महीनों की समृद्ध उपज के साथ

<sup>९</sup> प्राचीन पर्वतों की उत्तम उपज के साथ,

और अनन्त पहाड़ियों की प्रचुरता के साथ,

<sup>१०</sup> पृथ्वी के उत्तम उपहारों और उसकी पूर्ता के साथ,

और उस पर कृपा जो ज्ञाड़ी में प्रकट हुआ। ये पूर्सुफ के सिर पर आएं, उसके भाइयों के बीच राजकुमार के मुकुट पर।

<sup>११</sup> उसकी महिमा एक पहलौठे बैल के समान है,

और उसके सींग जंगली बैल के सींगों के समान हैं। उनसे वह लोगों को मार डालेगा, सभी को पृथ्वी के छोर तक। ऐसे हैं इफ्राइम के दस हजार, और ऐसे हैं मनश्च के हजार।

<sup>१२</sup> जबुलून के विषय में उसने कहा:

‘जबुलून, अपने बाहर जाने में आनन्द कर, और इस्साकार, अपने तबूओं में।

<sup>१३</sup> वे लोगों को अपने पर्वत पर बुलाएंगे;

वहाँ वे धर्ममय बलिदान चढ़ाएंगे; क्योंकि वे समुद्रों की प्रचुरता से खींचते हैं और रेत के छिपे खजाने से।

<sup>१४</sup> गाद के विषय में उसने कहा:

‘धन्य है वह जो गाद को बढ़ाता है। वह सिंह के समान निवास करता है, भुजा और सिर का मुकुट फाड़ता है।

<sup>१५</sup> उसने अपने लिए उत्तम चुना,

क्योंकि वहाँ एक सेनापति का भाग सुरक्षित था, वह लोगों के प्रमुखों के साथ आया, यहोवा के न्याय को लागू करते हुए, और इसाएल के साथ उसकी विधियों को।

<sup>१६</sup> दान के विषय में उसने कहा:

‘दान एक सिंह का बच्चा है, जो बाशान से छलांग लगाता है।

<sup>१७</sup> नप्ताली के विषय में उसने कहा:

## व्यवस्थाविवरण

‘हे नपाली कृपा से संतुष्ट, और यहोवा के आशीर्वद से पूर्ण झील और दक्षिण का अधिकार कर।’

<sup>24</sup> आशेर के विषय में उसने कहा:

‘पुत्रों में सबसे धन्य हो आशेर उसके भाई उसे प्रिय मानें, और वह अपने पैर को तेल में डुबाए।

<sup>25</sup> तेरी बारें लोहे और कांसे की होंगी,

और जैसे तेरे दिन, वैसे ही तेरी शक्ति होगी।

<sup>26</sup> येशुरून, तेरे समान कोई परमेश्वर नहीं है,

जो तेरी सहायता के लिए आकाश में सवारी करता है,  
अपनी महिमा में आकाश के माध्यम से।

<sup>27</sup> अनन्त परमेश्वर तेरा निवास स्थान है,

और नीचे अनन्त भुजाएँ हैं। वह तेरे सामने शत्रु को बाहर निकालता है, कहता है, ‘नष्ट कर।’

<sup>28</sup> इसाएल सुरक्षित निवास करता है,

याकूब का सोत सुरक्षित है, अनाज और दाखमधु की भूमि में, जहाँ आकाश से ओस गिरती है।

<sup>29</sup> धन्य है तू, हे इसाएल!

तेरे समान कौन है, एक लोग जो यहोवा द्वारा बचाया गया है, तेरी सहायता की ढाल, और तेरी विजय की तलवार। तेरे शत्रु तेरे सामने छुकेंगे, और तू उनके ऊँचे स्थानों पर चलेगा।

**34** तब मूसा मोआब के मैदानों से नबो पर्वत पर, पिसगा की चोटी तक गया, जो यरीहो के सामने है। और यहोवा ने उसे सारा देश दिखाया: गिलाद से लेकर दान तक, <sup>2</sup> सारा नपाली, एप्रेम और मनश्यों का देश, सारा यहूदा का देश पश्चिमी समुद्र तक, <sup>3</sup> नेगेब और यरीहो की घाटी का मैदान, खजूर के वृक्षों का नगर, सोआर तक। <sup>4</sup> यहोवा ने उससे कहा, ‘यह वही देश है जिसका मैंने अब्राहम, इसाहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था, “मैं इसे तुम्हारे वंशजों को दुंगा।” मैंने तुम्हें इसे अपनी आँखों से देखने दिया है, परन्तु तुम वहाँ पार नहीं जाओगे।’

<sup>5</sup> इसलिए मूसा, जो यहोवा का सेवक था, यहोवा के वचन के अनुसार मोआब के देश में वहीं मर गया। <sup>6</sup> उसने उसे मोआब के देश में, बेथ-पेओर के सामने की घाटी में दफनाया, परन्तु आज तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र हाँहाँ है। <sup>7</sup> मूसा की मृत्यु के समय उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष थी। उसकी आँखें धृष्टिली नहीं हुई थीं, और उसकी शक्ति कम नहीं हुई थी।

<sup>8</sup> इसाएलियों ने मोआब के मैदानों में मूसा के लिए तीस दिन तक विलाप किया। तब मूसा के लिए विलाप और शोक के दिन समाप्त हो गए।

<sup>9</sup> नून का पुत्र यहोश बुद्धि की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने उस पर अपने हाथ रखे थे। इसाएलियों ने उसकी आज्ञा मात्री और जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही किया।

<sup>10</sup> तब से इसाएल में मूसा के समान कोई नवी नहीं उठा, जिसे यहोवा ने आमने-सामने जाना हो, <sup>11</sup> उन सभी चिह्नों और चमत्कारों में जो यहोवा ने उसे मिस देश में, फिरौन और उसके सभी सेवकों और उसके सभी देश के लिए करने को भेजा था, <sup>12</sup> और उन सभी महान शक्तियों और सभी महान भयानक कार्यों में जो मूसा ने सारे इसाएल के सामने किए।

# यहोशू

**1** यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद, यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बात की, जिसने मूसा की निष्ठापूर्वक सेवा की थी।

<sup>2</sup> “मेरा सेवक मूसा मर गया है। अब तुम तैयार हो जाओ, तुम और ये सब लोग, यरदन नदी को पार करने के लिए—उस देश में जिस मैं उन्हें, इसाएलियों को, दे रहा हूँ।

<sup>3</sup> हर वह स्थान जहाँ तुम अपने पाँव रखोगे, मैंने तुम्हें दे दिया है, जैसा कि मैंने मूसा से वादा किया था।

<sup>4</sup> तुम्हारी सीमा जंगल और लेबानोन से लेकर महान नदी, यूफ्रेट्स तक—सभी हितियों का देश—और पश्चिम में भूमध्य सागर तक विस्तृत होगी।

<sup>5</sup> तुम्हारे जीवन के सभी दिनों में कोई भी तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सकगा। जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ रहूँगा; मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा और न ही त्यागूँगा।

<sup>6</sup> मजबूत और साहसी बनो, क्योंकि तुम इन लोगों को उस देश का उत्तराधिकारी बनाओगे जिसे देने की मैंने उनके पूर्वजों से शपथ ली थी।

<sup>7</sup> केवल मजबूत और बहुत साहसी बनो। मेरे सेवक मूसा ने जो तुम्हें आज्ञा दी है, उसके अनुसार जीने में सावधान रहो। उससे दाँए या बाँए न मुड़ो, ताकि तुम जहाँ भी जाओ, सफल हो सको।

<sup>8</sup> इस व्यवस्था की पुस्तक को हमेशा अपने हाँठों पर बनाए रखो। दिन-रात इसका ध्यान करो, ताकि तुम इसमें लिखी हर बात को करने में सावधान रहो। तब तुम सफल होगे और समृद्ध होगे।

<sup>9</sup> क्या मैंने तुम्हें आज्ञा नहीं दी है? मजबूत और साहसी बनो। डरो मत और निराश मत हो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम जाओ।”

<sup>10</sup> तब यहोशू ने लोगों के अधिकारियों को आज्ञा दी,

<sup>11</sup> “शिविर में जाओ और लोगों से कहो, ‘अपनी सामग्री तैयार करो, क्योंकि तीन दिनों के भीतर तुम यरदन को पार करोगे और उस देश को प्राप्त करोगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है।’”

<sup>12</sup> लेकिन रूबेनियों, गादियों, और मनशशो के आधे गोत्र से यहोशू ने कहा,

<sup>13</sup> “याद रखो कि यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी थी: ‘तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम दे रहा है और यह देश तुम्हें दिया है।’

<sup>14</sup> तुम्हारी पलियाँ, बच्चे, और पशुधन यरदन के पूर्व में उस देश में रह सकते हैं जो मूसा ने तुम्हें दिया था, लेकिन तुम्हारे सभी योद्धा, पूरी तरह से सशस्त्र, तुम्हारे साथी इसाएलियों के आगे जाकर उनकी मदद करें।

<sup>15</sup> जब तक यहोवा तुम्हारे साथी इसाएलियों को भी विश्राम न दे दें जैसा उसने तुम्हें दिया है, और जब तक वे भी उस देश को प्राप्त न कर ले जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उहाँ दे रहा है। उसके बाद, तुम लौट सकते हो और अपने देश पर अधिकार कर सकते हो, जिसे यहोवा के दास मूसा ने यरदन के पूर्व में तुम्हें दिया था।”

<sup>16</sup> तब उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, “जो कुछ तुमने हमें आज्ञा दी है, हम करेंगे, और जहाँ भी तुम हमें भेजोगे, हम वहाँ जाएँगे।

<sup>17</sup> जैसे हम पूरी तरह से मूसा की आज्ञा मानते थे, वैसे ही हम तुम्हारी आज्ञा मानेंगे। केवल तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ रहे जैसा कि वह मूसा के साथ था।

<sup>18</sup> जो कोई तुम्हारे वरचन के विरुद्ध विद्रोह करेगा और जो कुछ तुम आज्ञा दोगे उसे नहीं मानेगा, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा। केवल मजबूत और साहसी बनो।”

**2** फिर नून के पुत्र यहोशू ने शितीम से दो पुरुषों को गुप्त रूप से जासूस के रूप में भेजा। उसने कहा, “जाओ, इस देश की, विशेषकर यरीहों की, जाँच करो।” तो वे गए और राहाब नाम की एक वेश्या के घर में प्रवेश किया और वहाँ ठहरे।

<sup>2</sup> लेकिन किसी ने यरीहों के राजा को बताया, “देखो, कुछ इसाएली यहाँ आज रात देश की जाँच करने आए हैं।”

<sup>3</sup> इसलिए यरीहों के राजा ने राहाब को संदेश भेजा: “उन पुरुषों को बाहर लाओ जो तुम्हारे पास आए और तुम्हारे घर में प्रवेश किए, क्योंकि वे पूरे देश की जाँच करने आए हैं।”

# यहोशू

<sup>४</sup> लेकिन उस स्त्री ने उन दो पुरुषों को ले लिया और उन्हें छिपा दिया। उसने उत्तर दिया, “हाँ, पुरुष मेरे पास आए थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे कहाँ से आए थे।”

<sup>५</sup> और जब रात को फाटक बंद करने का समय आया, तो पुरुष चले गए। मुझे नहीं पता कि वे किस दिशा में गए। जल्दी जाओ—शायद तुम उन्हें पकड़ सको।”

<sup>६</sup> लेकिन उसने वास्तव में उन्हें छत पर से जाकर उन सन के डंठलों के नीचे छिपा दिया था जो उसने वहाँ बिछाए थे।

<sup>७</sup> तो पुरुषों ने यरदन के घाटों की ओर सङ्क पर उनका पीछा किया, और जैसे ही वे पीछा करने के लिए निकले, फाटक बंद कर दिया गया।

<sup>८</sup> रात के लिए जासूसों के लेटेने से पहले, राहाब छत पर उनके पास गई

<sup>९</sup> और उनसे कहा, “मुझे पता है कि यहोवा ने यह देश तुम्हें दिया है और तुम्हारे कारण हम पर भय छा गया है, और सभी लोग तुम्हारे कारण डर से पिघल रहे हैं।

<sup>१०</sup> क्योंकि हमने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे सामने लाल समुद्र का पानी कैसे सुखा दिया जब तुम मिस से बाहर आए, और तुमने सिहोन और ओग के साथ, यरदन के पूर्व के दो ऐमोरी राजाओं के साथ क्या किया, जिन्हें तुमने पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

<sup>११</sup> जब हमने यह सुना, तो हमारे दिल पिघल गए और तुम्हारे कारण किसी में भी साहस नहीं बचा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा—वह ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है।

<sup>१२</sup> अब, कृपया यहोवा की शपथ लेकर मुझसे वचन दो कि तुम मेरे परिवार पर कृपा दिखाओगे, क्योंकि मैंने तुम पर कृपा दिखाई है। मुझे एक निश्चित संकेत दो।

<sup>१३</sup> कि तुम मेरे पिता और माता, मेरे भाइयों और बहनों, और उन सभी को जो उनके हैं, बचा लोगे, और हमें मृत्यु से बचा लोगे।”

<sup>१४</sup> पुरुषों ने उससे कहा, “हमारे प्राण तुम्हारे लिए। यदि तुम किसी को नहीं बताओगी कि हम क्या कर रहे हैं, तो

जब यहोवा हमें यह देश देगा, हम तुम्हारे साथ कृपा और विश्वासयोग्यता से पेश आएंगे।”

<sup>१५</sup> तो उसने उन्हें खिड़की से एक रस्सी के द्वारा नीचे उतार दिया, क्योंकि उसका घर शहर की दीवार में बना हुआ था, और वह दीवार के भीतर रहती थी।

<sup>१६</sup> और उसने उनसे कहा, “पहाड़ियों की ओर जाओ ताकि पीछा करने वाले तुम्हें न पा सकें। वहाँ तीन दिन तक छिपे रहो। जब तक वे लौट न आएं; फिर अपने रास्ते चले जाना।”

<sup>१७</sup> पुरुषों ने उससे कहा, “यह शपथ जो तुमने हमें दिलाई है, बाध्यकारी नहीं होगी।

<sup>१८</sup> जब तक कि हम इस देश में प्रवेश न करें, तुम उस खिड़की में पहल लाल डोरी न बांधो जिससे तुमने हमें उतारा। और अपने पिता, माता, भाइयों और अपने पूरे परिवार को अपने घर में इकट्ठा करो।

<sup>१९</sup> यदि कोई तुम्हारे घर के बाहर जाता है, तो उसका खून उसके अपने सिर पर होगा, और हम जिम्मेदार नहीं होंगे। लेकिन यदि कोई तुम्हारे साथ घर में है, और उसे हानि पहुँचवती है, तो उसका खून हमारे सिर पर होगा।

<sup>२०</sup> लेकिन यदि तुम किसी को बताओगी कि हम क्या कर रहे हैं, तो हम उस शपथ से मुक्त हो जाएंगे जो तुमने हमें दिलाई है।”

<sup>२१</sup> उसने उत्तर दिया, “जैसा तुम कहते हो वैसा ही हो।” तो उसने उन्हें विदा किया, और वे चले गए। और उसने खिड़की में लाल डोरी बांध दी।

<sup>२२</sup> जासूस पहाड़ियों की ओर गए और वहाँ तीन दिन तक रहे जब तक पीछा करने वालों ने सङ्क के साथ खोज नहीं की और उन्हें बिना पाए लौट आए।

<sup>२३</sup> फिर वे दो पुरुष लौट आए, पहाड़ियों से नीचे आए, नदी पार की, और नून के पुत्र यहोशू के पास आए। उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था।

<sup>२४</sup> उन्होंने यहोशू से कहा, “निश्चित रूप से यहोवा ने पूरा देश हमारे हाथों में दे दिया है; सभी लोग हमारे कारण डर से पिघल रहे हैं।”

# यहोशू

**3** प्रातःकाल में, यहोशू और सब इसाएली शिर्तीम से निकलकर यरदन के पास गए, जहाँ उन्होंने पार करने से पहले डेरा डाला।

<sup>2</sup> तीन दिन के बाद, अधिकारियों ने छावनी में होकर लोगों के बीच से गुजरे

<sup>3</sup> और लोगों को आज्ञा दी: “जब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा का सन्दूक लेवियों के याजकों द्वारा ले जाया जाता देखो, तब तुम अपनी जगह से निकलकर उसके पीछे चलो।”

<sup>4</sup> परन्तु तुम और सन्दूक के बीच लगभग दो हजार हाथ की दूरी बनाए रखना। उसके निकट न जाना, ताकि तुम जान सको कि किस मार्ग पर चलना है, क्योंकि तुम इस मार्ग से पहले कभी नहीं गए हो।”

<sup>5</sup> तब यहोशू ने लोगों से कहा, “अपने आप को पवित्र करो, क्योंकि कल यहोवा तुम्हारे बीच अद्भुत कार्य करेगा।”

<sup>6</sup> और यहोशू ने याजकों से कहा, “वाचा का सन्दूक उठाओ और लोगों के आगे बढ़ो।” तो उन्होंने उसे उठाया और उनके आगे बढ़े।

<sup>7</sup> यहोवा ने यहोशू से कहा, “आज मैं तुम्हें सब इसाएल के सामने महान करना आरंभ करूँगा, ताकि वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ भी रहूँगा।

<sup>8</sup> वाचा का सन्दूक ले जाने वाले याजकों को यह आज्ञा दी: “जब तुम यरदन के जल के किनारे पहुँचो, तो नदी में स्थिर खड़े रहो।”

<sup>9</sup> तब यहोशू ने इसाएलियों से कहा, “यहाँ आओ और अपने परमेश्वर यहोवा के बचन सुनो।”

<sup>10</sup> वह आगे बोला, “इससे तुम जानोगे कि जीवित परमेश्वर तुम्हारे बीच में है और वह निश्चय ही तुम्हारे सामने से कनानी, हिती, हिल्बी, परिज्जी, गिगारी, एमोरी और यबूसी को निकाल देगा।

<sup>11</sup> देखो, समस्त पृथ्वी के प्रभु की वाचा का सन्दूक तुम्हारे आगे यरदन में जाएगा।

<sup>12</sup> अब इसाएल के गोत्रों में से बारह पुरुष चुन लो, प्रत्येक गोत्र से एक पुरुष।

<sup>13</sup> और जब यहोवा के सन्दूक को ले जाने वाले याजकों के पाँव यरदन के जल में स्थिर हो जाएँगे, तब यरदन का जल कट जाएगा। नीचे की ओर बहता हुआ जल एक ढेर में खड़ा हो जाएगा।”

<sup>14</sup> इसलिए जब लोग यरदन को पार करने के लिए डेरा छोड़कर चले, तो वाचा का सन्दूक ले जाने वाले याजक उनके आगे बढ़े।

<sup>15</sup> अब यरदन फसल के मौसम में अपने किनारों से बाहर बहता है। परन्तु जैसे ही सन्दूक ले जाने वाले याजक यरदन के पास पहुँचे और उनके पाँव जल के किनारे को छू गए,

<sup>16</sup> ऊपर से बहता हुआ जल रुक गया। यह एक ढेर में खड़ा हो गया, बहुत दूर एक नगर आदम के पास, जो ज़ेरेतान के निकट है। और नीचे की ओर बहता हुआ जल अरबाह के सागर (लवण सागर) की ओर पूरी तरह कट गया। इसलिए लोगों ने यरीहो के सामने पार किया।

<sup>17</sup> यहोवा की वाचा का सन्दूक ले जाने वाले याजक यरदन के बीच में सूखी भूमि पर दृढ़ता से खड़े रहे, जब तक कि सब इसाएली सूखी भूमि पर पार नहीं हो गए, और तब तक पूरा प्राण यरदन को पार कर चुका था।

**4** जब सारी जाति यरदन को पार कर चुकी, तब यहोवा ने यहोशू से कहा,

<sup>2</sup> “लोगों में से बारह पुरुषों को चुन लो, प्रत्येक गोत्र से एक-एक को,

<sup>3</sup> और उन्हें आज्ञा दो, यरदन के बीच से, जहाँ याजकों के पाँव दृढ़ता से खड़े थे, वहाँ से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ ले जाओ। उन्हें उस स्थान पर रखो जहाँ आज रात तुम डेरा डालोगे।”

<sup>4</sup> तब यहोशू ने उन बारह पुरुषों को बुलाया जिन्हें उसने इसाएलियों में से नियुक्त किया था, प्रत्येक गोत्र से एक-एक को,

<sup>5</sup> और उनसे कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा की सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाओ। तुम मैं से

# यहोशू

प्रत्येक अपने कंधे पर एक पत्थर उठाए, इसाएलियों के प्रत्येक गोत्र के लिए एक-एक,

<sup>६</sup> ताकि यह तुम में एक चिन्ह हो। भविष्य में जब तुम्हारे बच्चे पूछें, ‘ये पत्थर तुम्हारे लिए क्या अर्थ रखते हैं?’

<sup>७</sup> तब तुम उन्हें बताना, यहोवा की वाचा की सन्दूक के सामने यरदन का जल रुक गया था। जब यह पार हुआ, तब यरदन का जल रुक गया।<sup>१</sup> ये पत्थर इसाएलियों के लिए सदा के लिए एक स्मारक होंगे।”

<sup>८</sup> इसाएलियों ने जैसा यहोशू ने आज्ञा दी थी, वैसा ही किया। उन्होंने यरदन के बीच से बाहर पत्थर उठाए, जैसा यहोवा ने यहोशू को निर्देश दिया था—प्रत्येक गोत्र के लिए एक-एक—और उन्हें उस शिविर में ले गए, जहाँ उन्होंने उन्हें रखा।

<sup>९</sup> यहोशू ने यरदन के बीच में भी बाहर पत्थर खड़े किए, उस स्थान पर जहाँ वाचा की सन्दूक उठाने वाले याजक खड़े थे। और वे आज तक वहाँ हैं।

<sup>१०</sup> वाचा की सन्दूक उठाने वाले याजक यरदन के बीच में खड़े रहे जब तक कि यहोवा ने यहोशू को जो कुछ भी लोगों से कहने को कहा था, वह पूरा नहीं हो गया, जैसा कि मूसा ने यहोशू को निर्देश दिया था। लोग जल्दी से पार हो गए,

<sup>११</sup> और जब सब लोग पार हो चुके, तब यहोवा की सन्दूक और याजक लोगों के देखते हुए दूसरी ओर आ गए।

<sup>१२</sup> रूबेन, गाद, और मनश्शे के आधे गोत्र के पुरुष, जैसे मूसा ने उन्हें निर्देश दिया था, युद्ध के लिए सुसज्जित होकर इसाएलियों के आगे पार हो गए।

<sup>१३</sup> लगभग चालीस हजार युद्ध के लिए सुसज्जित पुरुष यरदन के पार होकर यहोवा के मैदानों में युद्ध के लिए गए।

<sup>१४</sup> उस दिन यहोवा ने यहोशू को सारे इसाएल के सामने महान किया, और वे उसके जीवन भर उससे भयभीत रहे, जैसे वे मूसा से भयभीत रहते थे।

<sup>१५</sup> तब यहोवा ने यहोशू से कहा,

<sup>१६</sup> “वाचा की सन्दूक उठाने वाले याजकों को यरदन से बाहर आने की आज्ञा दो।”

<sup>१७</sup> तब यहोशू ने याजकों को आज्ञा दी, “यरदन से बाहर आओ।”

<sup>१८</sup> और जब वाचा की सन्दूक उठाने वाले याजक नदी से बाहर आए, और उनके पाँव सूखी भूमि पर पढ़े, तब यरदन का जल अपनी जगह लौट आया और पहले की तरह उसके किनारे भर गए।

<sup>१९</sup> पहले महीने के दसवें दिन, लोग यरदन से ऊपर जाकर गिलगाल में, यहोवा की पूर्वी सीमा पर, डेरा डाले।

<sup>२०</sup> वहाँ गिलगाल में, यहोशू ने वे बाहर पत्थर खड़े किए जो उन्होंने यरदन से लिए थे।

<sup>२१</sup> उसने इसाएलियों से कहा, “भविष्य में जब तुम्हारे बच्चे अपने पिता से पूछें, ‘ये पत्थर क्या अर्थ रखते हैं?’

<sup>२२</sup> तब तुम अपने बच्चों को बताना, ‘इसाएल ने सूखी भूमि पर यरदन को पार किया।’

<sup>२३</sup> क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यरदन के जल को तुम्हारे सामने सूखा दिया जब तक तुम पार नहीं हो गए, जैसे उसने हमारे सामने लाल समुद्र को सूखा दिया जब तक हम पार नहीं हो गए।

<sup>२४</sup> उसने यह इसलिए किया ताकि पृथ्वी के सभी लोग जान सकें कि यहोवा का हाथ शक्तिशाली है, और ताकि तुम सदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानो।”

**५** जब यरदन के पश्चिम के सब एमोरी राजा और समुद्र के किनारे के सब कनानी राजा यह सुनकर कि कैसे यहोवा ने इसाएलियों के सामने यरदन के जल को सुखा दिया था जब तक कि वे पार नहीं हो गए, उनके हृदय पिघल गए और वे इसाएलियों का सामना करने का साहस खो बैठे।

<sup>२</sup> उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, “वक्तव्य पत्थर की छुरियाँ बना और इसाएल के पुत्रों का फिर से खतना कर।”

<sup>३</sup> तब यहोशू ने चकमक पत्थर की छुरियाँ बनाई और गिरेख-हारालोत में इसाएल के पुत्रों का खतना किया।

# यहोशू

<sup>4</sup> यह वह कारण है कि यहोशू ने उनका खतना किया: मिस्स से बाहर आए सभी पुरुष—जो सैन्य आयु के थे—वे मिस छोड़ने के बाद मार्ग में जंगल में मर गए थे।

<sup>5</sup> हालांकि जो लोग बाहर आए थे उनका खतना किया गया था, परंतु जंगल में यात्रा के दौरान जो पैदा हुए थे उनका खतना नहीं किया गया था।

<sup>6</sup> इसाएली चातीस वर्षों तक जंगल में घूमते रहे जब तक कि वे सभी पुरुष जो मिस छोड़ने पर सैन्य आयु के थे, मर नहीं गए, क्योंकि उन्होंने यहोवा की आवाज़ नहीं सुनी थी। यहोवा ने शपथ ली थी कि वे उस भूमि को नहीं देखेंगे जिसे उसने उनके पूर्वजों से वादा किया था—दूध और मधु की बहती हुई भूमि।

<sup>7</sup> इसलिए उसने उनके स्थान पर उनके बच्चों को उठाया, और यहीं वे थे जिनका यहोशू ने खतना किया। वे अभी भी बिना खतना के थे क्योंकि यात्रा के दौरान उनका खतना नहीं किया गया था।

<sup>8</sup> और जब पूरी जाति का खतना हो गया, तो वे अपने स्थानों पर शिविर में तब तक रहे जब तक कि वे स्वस्थ नहीं हो गए।

<sup>9</sup> तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “आज मैंने तुमसे मिस्स की लज्जा को दूर कर दिया है।” इसलिए उस स्थान का नाम आज तक गिलगाल पड़ा।

<sup>10</sup> महीने के चौदहवें दिन की संध्या को, जब वे यरीहो के मैदानों पर गिलगाल में शिविर में थे, इसाएलियों ने फसह मनाया।

<sup>11</sup> फसह के अगले दिन, उन्होंने भूमि की उपज में से कुछ खाया—खमीर रहित रोटी और भुना हुआ अनाज।

<sup>12</sup> जिस दिन उन्होंने इस भोजन को खाया, उसके अगले दिन मत्रा बंद हो गया। इसाएलियों के लिए अब मत्रा नहीं था, परंतु उस वर्ष उन्होंने कनान की उपज खाई।

<sup>13</sup> अब जब यहोशू यरीहो के निकट था, उसने ऊपर देखा और देखा कि एक आदमी उसके सामने खड़ा है, जिसके हाथ में खींची हुई तलवार है। यहोशू उसके पास गया और उससे पूछा, “क्या तुम हमारे लिए हो, या हमारे दुश्मनों के लिए?”

<sup>14</sup> “नहीं,” उसने उत्तर दिया, “परंतु अब मैं यहोवा की सेना का सेनापति बनकर आया हूँ।” तब यहोशू ने प्रद्वा से मुँह के बल गिरकर उससे पूछा, “मेरे प्रभु अपने सेवक से क्या कहते हैं?”

<sup>15</sup> यहोवा की सेना के सेनापति ने उत्तर दिया, “अपनी जूतियाँ उतार दो, क्योंकि जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह पवित्र है।” और यहोशू ने ऐसा ही किया।

**6** अब यरीहो इसाएलियों के कारण कड़ी सुरक्षा में बंद था। कोई बाहर नहीं जाता था, और कोई अंदर नहीं आता था।

<sup>2</sup> तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “देख, मैंने यरीहो को उसके राजा और शक्तिशाली योद्धाओं के साथ तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है।

<sup>3</sup> अपने सभी योद्धाओं के साथ नगर के चारों ओर घूमें। यह छह दिनों तक प्रतिदिन एक बार करें।

<sup>4</sup> सात याजक सात मेढ़ों के सींगों से बने तुरहियां लेकर सन्दूक के आगे चलें। सातवें दिन, नगर के चारों ओर सात बार घूमें, और याजक तुरहियां बजाएं।

<sup>5</sup> जब मेढ़ के सींग पर लंबी धनि सुनाई दे, और जब तुम तुरही की आवाज सुनो, तो सभी लोग जोर से चिल्लाएं। तब नगर की दीवार गिर जाएगी, और लोग सीधे आगे बढ़ेंगे।

<sup>6</sup> इसलिए नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को बुलाकर उनसे कहा, “वाचा के सन्दूक को उठाओ, और सात याजक सात मेढ़ों के सींगों की तुरहियां लेकर यहोवा के सन्दूक के आगे चलें।”

<sup>7</sup> और उसने लोगों से कहा, “आगे बढ़ो और नगर के चारों ओर घूमें, सशस्त्र लोग यहोवा के सन्दूक के आगे चलें।”

<sup>8</sup> जब यहोशू ने लोगों से बात की, तो सात याजक जो यहोवा के सामने सात तुरहियां लेकर चल रहे थे, आगे बढ़े, तुरहियां बजाते हुए, और यहोवा का वाचा का सन्दूक उनके पीछे चला।

# यहोशू

<sup>९</sup> सशस्त्र गार्ड उन याजकों के आगे चले जो तुरहिया बजा रहे थे, और पीछे का गार्ड सन्दूक के पीछे चला, जबकि तुरहियां बजती रहीं।

<sup>१०</sup> परन्तु यहोशू ने लोगों को आज्ञा दी थी, “जब तक मैं तुहँसे चिल्लाने के लिए न कहूँ, तब तक न तो चिल्लाना, न अपनी आवाज उठाना, और न ही कोई शब्द कहना। तब तुम चिल्लाना।”

<sup>११</sup> इसलिए उसने यहोवा के सन्दूक को नगर के चारों ओर एक बार प्रभास्या, और फिर वे शिविर में लौट आए और रात वहीं बिताइ।

<sup>१२</sup> अगली सुबह यहोशू जल्दी उठे, और याजकों ने फिर से यहोवा के सन्दूक को उठाया।

<sup>१३</sup> सात याजक जो सात तुरहियां लेकर चल रहे थे, आगे बढ़े, तुरहियां बजाते हुए, और सशस्त्र लोग उनके आगे चले, जबकि पीछे का गार्ड यहोवा के सन्दूक के पीछे चला। इस समय, तुरहियां बजती रहीं।

<sup>१४</sup> दूसरे दिन, उन्होंने नगर के चारों ओर एक बार घूमा और शिविर में लौट आए। उन्होंने यह छह दिनों तक किया।

<sup>१५</sup> सातवें दिन, वे सुबह जल्दी उठे और उसी तरह नगर के चारों ओर सात बार घूमें। उस दिन केवल, उन्होंने नगर के चारों ओर सात बार घूमा।

<sup>१६</sup> सातवीं बार, जब याजकों ने तुरहियां बजाई, तो यहोशू ने लोगों से कहा, “चिल्लाओ! क्योंकि यहोवा ने तुम्हें नगर दे दिया है।

<sup>१७</sup> नगर और उसमें सब कुछ यहोवा के लिए विनाश के लिए समर्पित है। केवल रहाब वेश्या और उसके घर में जो भी उसके साथ हैं, उन्हें बचाया, क्योंकि उसने हमारे भेजे हुए गुप्तरखों को छिपाया था।

<sup>१८</sup> परन्तु विनाश के लिए समर्पित वस्तुओं से दूर रहो, नहीं तो तुम स्वयं विनाश के लिए समर्पित हो जाओगे। यदि तुम उनमें से कुछ भी लेते हों, तो तुम इसाएल के शिविर पर विपत्ति लाओगे और उसे विनाश के योग्य बना दोगे।

<sup>१९</sup> सारी चांदी और सोना, और कांसे और लोहे की वस्तुएं, यहोवा के लिए पवित्र हैं और उसकी कोषागार में जानी चाहिए।”

<sup>२०</sup> जब तुरहियां बजीं, तो लोगों ने चिल्लाया, और जैसे ही उन्होंने ध्वनि सुनी, उन्होंने जोर से चिल्लाया। तब दीवार गिर गई, और सभी लोग सीधे आगे बढ़े और नगर पर कब्जा कर लिया।

<sup>२१</sup> उन्होंने नगर को विनाश के लिए समर्पित कर दिया और उसमें के सभी जीवित प्राणियों को तलवार से नष्ट कर दिया—पुरुष और महिलाएं, युवा और वृद्ध, गाय-बैल, भेड़-बकरियां, और गधे।

<sup>२२</sup> परन्तु यहोशू ने उन दो व्यक्तियों से कहा जिन्होंने देश की जासूसी की थी, “वेश्या के घर जाओ और उसे और उसके साथ जो भी हैं, उन्हें बाहर ले आओ, जैसा तुमने उससे शपथ ली थी।”

<sup>२३</sup> इसलिए वे युवा व्यक्ति जो जासूस थे, अंदर गए और रहाब, उसके पिता, माता, भाइयों, और उसके साथ जो भी थे, उन्हें बाहर ले आए। उन्होंने उसके पूरे परिवार को बाहर लाकर इसाएल के शिविर के बाहर रखा।

<sup>२४</sup> फिर उन्होंने नगर और उसमें सब कुछ जला दिया। परन्तु उन्होंने चांदी, सोना, और कांसे और लोहे की वस्तुएं यहोवा के घर की कोषागार में रखीं।

<sup>२५</sup> परन्तु यहोशू ने रहाब वेश्या, उसके परिवार, और उसके साथ जो भी थे, उन्हें बचाया, क्योंकि उसने उन व्यक्तियों को छिपाया था जिन्हें यहोशू ने यरीहो की जासूसी के लिए भेजा था। और वह आज तक इसालियों के बीच रहती है।

<sup>२६</sup> उस समय यहोशू ने यह गंभीर शपथ ली: “यहोवा के सामने शापित हो वह व्यक्ति जो इस नगर, यरीहो को फिर से बनाने का प्रयास करेगा:

अपने पहिले ठोटे की कीमत पर वह इसकी नींव रखेगा;  
अपने सबसे छोटे की कीमत पर वह इसके द्वारा  
लगाएगा।”

<sup>२७</sup> इसलिए यहोवा यहोशू के साथ था, और उसकी प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई।

## यहोशू

7 परन्तु इसाएलियों ने नाश के लिए समर्पित वस्तुओं के विषय में विश्वासघात किया। यहूदा के गोत्र के जरह के पुत्र जब्दी के पुत्र करमी के पुत्र आखन ने कुछ समर्पित वस्तुएँ ले लीं। इसलिए यहोवा का क्रोध इसाएलियों पर भड़क उठा।

2 अब यहोशू ने येरीहो से ऐ के पास, जो बेरेतों के पूर्व में बेथ-आवन के निकट है, लोगों को भेजा और उनसे कहा, “जाकर उस देश की जासूसी करो।” तो वे लोग गए और ऐ की जासूसी की।

3 जब वे यहोशू के पास लौटे, तो उन्होंने कहा, “सभी लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं है। लगभग दो या तीन हजार लोग ऐ पर आक्रमण कर सकते हैं; सभी लोगों को वहाँ परेशान न करें, क्योंकि वे थोड़े हैं।”

4 तो लगभग तीन हजार लोग गए, परन्तु ऐ के लोगों ने उन्हें पीछे धकेल दिया।

5 जिन्होंने उनमें से लगभग छत्तीस को मार डाला। उन्होंने इसाएलियों को नगर के फाटक से लेकर शेबारिम तक खदेढ़ा और ढलानों पर उन्हें मार डाला। इससे लोगों के दिल पिघल गए और पानी की तरह हो गए।

6 तब यहोशू ने अपने वस्तु फाड़े और यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा, और इसाएल के पुरनियों के साथ वहाँ शाम तक पड़ा रहा। उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली।

7 यहोशू ने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा, आपने इस लोगों को यरदन के पार क्यों लाया, केवल हमें एपोरियों के हाथों में सौंपने के लिए, ताकि वे हमें नष्ट कर दें? यदि हम यरदन के उस पार संतुष्ट रहते तो अच्छा होता!

8 मुझे क्षमा करें, प्रभु, अब मैं क्या कह सकता हूँ, जब इसाएल अपने शत्रुओं द्वारा पराजित हो गया है?

9 कनानी और इस देश के सभी निवासी इसके बारे में सुनेंगे। वे हमें घेर लेंगे और पृथ्वी से हमारे नाम का नाश कर देंगे। तब आप अपने महान नाम की महिमा के लिए क्या करेंगे?”

10 यहोवा ने यहोशू से कहा, “उठो! तुम मुँह के बल क्यों गिरे हो?

11 इसाएल ने पाप किया है; उन्होंने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है, जिसे मैंने उन्हें पालन करने की आज्ञा दी थी। उन्होंने कुछ समर्पित वस्तुएँ ले ली हैं। उन्होंने चोरी की है, झूठ बोला है, और उन्हें अपनी संपत्ति के साथ मिला लिया है।

12 इसीलिए इसाएली अपने शत्रुओं के सामने खड़े नहीं हो सकते, वे अपनी पीठ दिखाकर भागते हैं क्योंकि वे नाश के योग्य हो गए हैं। जब तक तुम अपने बीच से नाश के लिए समर्पित वस्तुओं को नहीं हटाते, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।

13 जाओ, लोगों को पवित्र करो। उनसे कहो, ‘कल के लिए अपने आप को पवित्र करो, क्योंकि यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, यह कहता है: इसाएल, तुम्हारे बीच में समर्पित वस्तुएँ हैं। जब तक तुम उन्हें नहीं हटाते, तुम अपने शत्रुओं के सामने खड़े नहीं हो सकते।

14 सुबह में, अपने आप को गोत्र-गोत्र प्रस्तुत करो। जिस गोत्र को यहोवा चुनेगा, वह कुल-कुल प्रस्तुत होगा, फिर जिस कुल को यहोवा चुनेगा, वह परिवार-परिवार प्रस्तुत होगा, और जिस परिवार को यहोवा चुनेगा, वह व्यक्ति-व्यक्ति प्रस्तुत होगा।

15 जिस किसी के पास समर्पित वस्तुएँ पाई जाएँगी, उसे आग से नष्ट कर दिया जाएगा, उसके सभी सामान के साथ, क्योंकि उसने यहोवा की वाचा को तोड़ा है और इसाएल में एक अपमानजनक कार्य किया है।”

16 अगली सुबह जल्दी यहोशू ने इसाएल को गोत्र-गोत्र प्रस्तुत किया, और यहूदा का गोत्र चुना गया।

17 उसने यहूदा के गोत्र को कुल-कुल प्रस्तुत किया, और जरही का कुल चुना गया। उसने जरही के कुल को परिवार-परिवार प्रस्तुत किया, और जब्दी चुना गया।

18 फिर उसने जब्दी के परिवार को व्यक्ति-व्यक्ति प्रस्तुत किया, और करमी का पुत्र आखन, जो जब्दी का पुत्र और जरह का पुत्र था, चुना गया।

19 तब यहोशू ने आखन से कहा, “मेरे पुत्र, यहोवा, इसाएल के परमेश्वर की महिमा करो, और उसका समान करो। मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है; इसे मुझसे मत छुपाओ।”

## यहोशू

<sup>20</sup> आखन ने उत्तर दिया, “यह सच है। मैंने यहोवा, इसाएल के परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। यह मैंने किया:

<sup>21</sup> जब मैंने लूट में बाबुल की एक सुंदर चादर, दो सौ शेकेल चाँदी, और पचास शेकेल वजन की एक सोने की छाड़ देखी, तो मैंने उन्हें लालसा की ओर उन्हें ले लिया। वे मेरे तम्बू के अंदर जमीन में छिपे हुए हैं, चाँदी नीचे हैं।”

<sup>22</sup> तो यहोशू ने दूतों को भेजा, और वे तम्बू की ओर दौड़े। वहाँ वह था, तम्बू में छिपा हुआ, चाँदी नीचे थी।

<sup>23</sup> उन्होंने वस्तुओं को तम्बू से निकाला, उन्हें यहोशू और सभी इसाएलियों के पास लाया, और उन्हें यहोवा के सामने रख दिया।

<sup>24</sup> तब यहोशू सभी इसाएल के साथ, जरह के पुत्र आखन, चाँदी, चादर, सोने की छाड़, उसके पुत्रों और पुत्रियों, उसके बैलों, गायों, और भेड़ों, उसके तम्बू और उसके सभी सामान को लेकर अकोर की घाटी में ले गया।

<sup>25</sup> यहोशू ने कहा, “तुमने हम पर संकट क्यों लाया? आज यहोवा तुम पर संकट लाएगा।” तब सभी इसाएल ने उसे पत्तरों से मारा, और बाकी को पत्तरों से मारने के बाद, उन्होंने उन्हें जला दिया।

<sup>26</sup> आखन पर उन्होंने पत्तरों का एक बड़ा ढेर बना दिया, जो आज तक बना हुआ है। तब यहोवा ने अपने भयंकर क्रोध से मुड़ गया। इसलिए, उस स्थान को तब से अकोर की घाटी कहा जाता है।

**8** तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “डरो मत और निराश मत होओ। अपने साथ सभी योद्धाओं को ले लो, और ऐ पर आक्रमण करने के लिए जाओ। देखो, मैंने ऐ के राजा, उसके लोगों, उसके नगर और उसकी भूमि को तुम्हरे हाथ में दे दिया है।<sup>2</sup> तुम ऐ और उसके राजा के साथ वही करना जो तुमने यरीहे और उसके राजा के साथ किया था, सिवाय इसके कि तुम लूट और पशुओं को अपने लिए ले सकते हो। नगर के पीछे घाट लगाओ।”

<sup>3</sup> इसलिए यहोशू और सभी सैनिक ऐ के खिलाफ जाने के लिए तैयार हो गए। उसने तीस हजार मजबूत

योद्धाओं को चुना और उन्हें रात में भेजा<sup>4</sup> इन आदेशों के साथ: “ध्यान से सुनो। तुम्हें नगर के पीछे घाट लगाना है। इससे बहुत दूर मत जाओ। तुम सब तैयार रहो।<sup>5</sup> मैं और मेरे साथ के सभी लोग नगर के पास आएंगे। जब वे पहले की तरह हमारे खिलाफ बाहर आएंगे, तो हम उनसे भाग जाएंगे।<sup>6</sup> वे हमारा पीछा करेंगे जब तक हम उन्हें नगर से दूर नहीं खीच लेते, क्योंकि वे सोचेंगे, वे हमसे पहले की तरह भाग रहे हैं।<sup>7</sup> इसलिए हम उनके सामने से भागेंगे।<sup>8</sup> तब तुम घाट से उठकर नगर को ले लेना। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इसे तुम्हारे हाथ में दे देगा।<sup>9</sup> जब तुमने नगर को ले लिया, तो उसे आग लगा देना। जैसा यहोवा ने आदेश दिया है, वैसा ही करो। इसे देखो; तुम्हारे पास तुम्हारे आदेश हैं।”

<sup>9</sup> इसलिए यहोशू ने उन्हें भेज दिया, और वे घाट की जगह पर गए और बेत-एल और ऐ के बीच, नगर के पश्चिम में, इंतजार करने लगे, जबकि यहोशू उस रात लोगों के बीच रहा।

<sup>10</sup> अगली सुबह जल्दी यहोशू ने अपनी सेना को इकट्ठा किया और इसाएल के नेतृत्व में बाहर निकला।<sup>11</sup> सभी योद्धा जो उसके साथ थे, नगर के पास गए और उसके निकट आ गए। वे ऐ के उत्तर में, उनके और नगर के बीच की घाटी के साथ, डेरा डाले हुए थे।<sup>12</sup> यहोशू ने लगभग पाँच हजार पुरुषों को लिया और उन्हें बेत-एल और ऐ के बीच, नगर के पश्चिम में, घाट में रखा।<sup>13</sup> इसलिए लोगों ने पूरी सेना को तैनात किया—मुख्य शिविर के लोग नगर के उत्तर में और घाट के लोग पश्चिम में। उस रात यहोशू घाटी में गया।

<sup>14</sup> जब ऐ के राजा ने यह देखा, तो वह और नगर के सभी लोग सुबह जल्दी इसाएल से युद्ध करने के लिए अराबा के सामने एक स्थान पर बाहर गए। उसे यह नहीं पता था कि उसके खिलाफ नगर के पीछे घाट लगाई गई थी।<sup>15</sup> यहोशू और सभी इसाएल ने अपने आप को उनके सामने पीछे हटने दिया, और वे जंगल की ओर भागे।<sup>16</sup> ऐ के सभी पुरुषों को उनका पीछा करने के लिए बुलाया गया, और उन्होंने यहोशू का पीछा किया और नगर से दूर खीचे गए।<sup>17</sup> ऐ का बेत-एल में कोई भी व्यक्ति नहीं बचा जो इसाएल के पीछे नहीं गया। उन्होंने नगर को खुला छोड़ दिया और पीछा करने के लिए गए।

<sup>18</sup> तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “अपने हाथ में भाला ऐ की ओर बढ़ाओ, क्योंकि मैं इसे तुम्हारे हाथ में द्लागा।” इसलिए यहोशू ने नगर की ओर भाला बढ़ाया।<sup>19</sup> जैसे ही उसने ऐसा किया, घाट में छिपे पुरुष जल्दी से अपनी

## यहोशू

जगह से उठे, दौड़े और नगर में प्रवेश किया। उन्होंने इसे कब्जा कर लिया और तुरंत आग लगा दी।

<sup>20</sup> ऐ के पुरुषों ने पीछे मुड़कर देखा और देखा कि नगर से धूमां आकाश की ओर उठ रहा है, परंतु उनके पास किसी भी दिशा में भागने का कोई मौका नहीं था।

इसाएली जो भाग रहे थे, उन्होंने अपने पीछा करने वालों के खिलाफ पलटावर किया। <sup>21</sup> जब यहोशू और सभी इसाएल ने देखा कि घाट ने नगर को ले लिया है और उससे धूमां उठ रहा है, तो उन्होंने ऐ के पुरुषों को मार गिराया। <sup>22</sup> जो लोग घाट में थे, वे भी उनके खिलाफ बाहर आए, इसलिए ऐ के पुरुष दो सेनाओं के बीच फंस गए। इसाएल ने उन्हें मार गिराया जब तक कि कोई भी जीवित नहीं बचा या भाग नहीं सका। <sup>23</sup> परंतु उन्होंने ऐ के राजा को जीवित पकड़ लिया और उसे यहोशू के पास लाए।

<sup>24</sup> जब इसाएल ने ऐ के सभी निवासियों को खुले देश में मार गिराया, जहां उन्होंने उनका पीछा किया था, और सभी तलवार से गिर गए थे, तब सभी इसाएली ऐ लौट आए और उसे भी तलवार से मार दिया। <sup>25</sup> उस दिन बारह हजार पुरुष और महिलाएं मारे गए—ऐ के सभी लोग। <sup>26</sup> यहोशू ने उस हाथ को वापस नहीं खींचा जिसमें भाला था, जब तक कि उसने ऐ में रहने वाले सभी को नष्ट नहीं कर दिया।

<sup>27</sup> परंतु इसाएल ने उस नगर की पश्चुधन और लूट को अपने लिए ले लिया, जैसा कि यहोशू ने यहोशू की आदेश दिया था। <sup>28</sup> इसलिए यहोशू ने ऐ को जला दिया और इसे एक स्थायी खंडहर बना दिया, जो आज तक एक उजाड़ स्थान है। <sup>29</sup> उसने ऐ के राजा को एक पेड़ पर लटका दिया और उसकी लाश को शाम तक वहीं छोड़ दिया। सूर्यस्त पर, यहोशू ने उन्हें उसकी लाश को नीचे उतारने, नगर के द्वार के प्रवेश द्वार पर फेंकने, और उसके ऊपर पस्तरों का एक बड़ा ढेर बनाने का आदेश दिया, जो आज तक बना हुआ है।

<sup>30</sup> तब यहोशू ने माउंट एबाल पर इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिए एक वेदी बनाई, <sup>31</sup> जैसा कि यहोवा के सेवक मूसा ने इसाएलियों को आदेश दिया था। उसने इसे मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखे अनुसार बनाया—बिना काटे पस्तरों की वेदी जिस पर कोई लोहे का औजार नहीं लगाया गया था। उन्होंने उस पर यहोवा को होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि चढ़ाए। <sup>32</sup> वहां, इसाएलियों की उपस्थिति में, यहोशू ने पस्तरों पर मूसा की व्यवस्था की एक प्रति लिखी।

<sup>33</sup> सभी इसाएली—विदेशी और नागरिक समान रूप से—अपने बुजुर्गों, अधिकारियों और व्यायाधीशों के साथ, लैवियों के पुरोहितों के सामने खड़े थे, जो उसे ले जा रहे थे। आधे लोग माउंट गेरिज़िम के सामने खड़े थे, जैसा कि मूसा ने इसाएल के लोगों को आशीर्वाद देने के लिए आदेश दिया था। <sup>34</sup> तब यहोशू ने व्यवस्था के सभी शब्दों को जोर से पढ़ा—आशीर्वाद और शाप—जैसा कि व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है। <sup>35</sup> मूसा ने जो कुछ भी आदेश दिया था, उसका एक भी शब्द ऐसा नहीं पढ़ा, जिसमें महिलाएं, बच्चे, और उनके बीच रहने वाले विदेशी शामिल थे।

**9** जब यरदन के पश्चिम के सभी राजाओं ने इन बातों के बारे में सुना—पहाड़ी देश में, पश्चिमी ढलानों में, और लेबनान तक के भूमध्य सागर के पूरे तट पर (हिती, एमोरी, कनानी, पारज्जी, हिक्की, और यबूसी)—<sup>2</sup> वे सब मिलकर यहोशू और इसाएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्र हुए।

<sup>3</sup> परन्तु जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ के साथ क्या किया है, <sup>4</sup> तो उन्होंने छल से काम लिया। उन्होंने जाकर भोजन सामग्री तैयार की और अपने गधों पर फटे पुराने बोरे लादे, और पुराने फटे और सिले हुए मदिरा के मशक की भी। <sup>5</sup> उन्होंने अपने पैरों में पैबंद लगे जूते और अपने ऊपर पुराने वस्त्र पहने। उनके भोजन की सारी रोटी सूखी और फूँफूँी लम्ही हुई थी। <sup>6</sup> तब वे गिलगाल के शिरिर में यहोशू के पास गए और उससे और इसाएल के पुरुषों से कहा, “हम एक दूर देश से आए हैं। हमारे साथ एक संधि करो।”

<sup>7</sup> परन्तु इसाएलियों ने हिक्यियों से कहा, “हो सकता है कि तुम हमारे पास ही रहते हो। तब हम तुम्हारे साथ संधि कैसे कर सकते हैं?” <sup>8</sup> उन्होंने यहोशू से कहा, “हम आपके सेवक हैं।” परन्तु यहोशू ने पूछा, “तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो?”

<sup>9</sup> उन्होंने उत्तर दिया, “आपके सेवक आपके परमेश्वर यहोवा के नाम के कारण बहुत दूर देश से आए हैं। क्योंकि हमने उसकी ख्याति और मिस्र में उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में सुना है, <sup>10</sup> और यरदन के पूर्व के एमोरी के दो राजाओं के साथ उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में—हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, जो अश्तरोत में रहते थे। <sup>11</sup> इसलिए हमारे बुजुर्गों और हमारे देश में रहने वाले

# यहोशू

सभी लोगों ने हमें कहा, ‘अपने यात्रा के लिए भोजन सामग्री ले लो। जाओ और उनसे मिलो, और कहो, “हम आपके सेवक हैं; हमारे साथ एक संधि करो।”<sup>12</sup> हमारी रोटी देखो। जब हमने इसे घर पर पैक किया था, तब यह गर्म थी, जिस दिन हम आपके पास आने के लिए निकले थे, परन्तु अब देखो यह कितनी सूखी और फ़र्फ़ुदी लारी है।<sup>13</sup> और ये मदिरा के मशक जो हमने भरे थे, न ए थे, परन्तु अब ये फटे हुए हैं। और हमारे कपड़े और जूते इस बहुत लंबी यात्रा के कारण धिस गए हैं।

<sup>14</sup> इसाएल के पुरुषों ने उनकी भोजन सामग्री का नमूना लिया, परन्तु यहोवा की सलाह नहीं ली।<sup>15</sup> तब यहोशू ने उनके साथ शांति संधि की ताकि वे जीवित रहें, और मण्डली के नेताओं ने उन्हें शपथ दिलाई।

<sup>16</sup> उनके साथ संधि करने के तीन दिन बाद, इसाएलियों ने सुना कि वे उनके पड़ोसी हैं जो उनके पास रहते हैं।

<sup>17</sup> इसलिए इसाएल निकले और तीसरे दिन उनके नगरों में पहुँचे। उनके नगर गिबोन, केफिरा, बीरोत, और किर्पत-यारीम थे।<sup>18</sup> परन्तु इसाएलियों ने उन पर आक्रमण नहीं किया, क्योंकि मण्डली के नेताओं ने उन्हें इसाएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ दिलाई थी। इसलिए पूरी मण्डली नेताओं के विरुद्ध कुँडकुँडाई।

<sup>19</sup> परन्तु सभी नेताओं ने उत्तर दिया, “हमने उन्हें इसाएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ दी है, और अब हम उन्हें छू नहीं सकते।<sup>20</sup> यह वही है जो हम उनके साथ करेंगे: हम उन्हें जीवित रहने देंगे, ताकि हम पर उस शपथ के कारण क्रीध न आए जो हमने उन्हें दी थी।”<sup>21</sup> उन्होंने कहा, “उन्हें जीवित रहने दो, परन्तु उन्हें पूरी मण्डली के लिए लकड़ी काटने वाले और पानी भरने वाले बनने दो।” इसलिए नेताओं ने अपना वचन निभाया।

<sup>22</sup> तब यहोशू ने गिबोनियों को बुलाया और कहा, “तुमने हमें यह कहकर धोखा क्यों दिया, ‘हम तुमसे बहुत दूर रहते हैं’; जबकि वास्तव में तुम हमारे पास रहते हो? <sup>23</sup> अब इसलिए, तुम शापित हो। तुम कभी भी मेरे परमेश्वर के घर के लिए लकड़ी काटने वाले और पानी भरने वाले सेवा से मुक्त नहीं होगे।”

<sup>24</sup> उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, “आपके सेवकों को स्थृत रूप से बताया गया था कि आपके परमेश्वर यहोवा ने अपने सेवक मूसा को आज्ञा दी थी कि वह आपको पूरा देश दे और आपके सामने सभी निवासियों को नष्ट कर दे। इसलिए हम आपके कारण अपने जीवन के लिए बहुत डर गए, और यहीं कारण है कि हमने ऐसा किया।

<sup>25</sup> अब हम आपके हाथ में हैं। जो कुछ भी आपकी दृष्टि में अच्छा और सही लगे, हमारे साथ वही करें।”

<sup>26</sup> इसलिए यहोशू ने उन्हें इसाएलियों से बचाया, और उन्होंने उन्हें नहीं मारा।<sup>27</sup> उस दिन उसने उन्हें मण्डली और यहोवा की वेदी के लिए लकड़ी काटने वाले और पानी भरने वाले बना दिया—उस स्थान पर जिसे यहोवा चुनेगा—और वे आज तक वही हैं।

**10** अब यरूशलैम के राजा अदोनी-सेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया है और उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया है—ऐ और उसके राजा के साथ वही किया जो यरीहो और उसके राजा के साथ किया था—और यह भी कि गिबोन के लोगों ने इसाएल के साथ शांति कर ली है और उनके बीच रह रहे हैं।<sup>2</sup> वह और उसके लोग बहुत चिंतित हो गए, क्योंकि गिबोन एक बड़ा नगर था, जैसे एक राजसी नगर; यह ऐ से बड़ा था, और इसके सभी लोग योद्धा थे।

<sup>3</sup> इसलिए यरूशलैम के राजा अदोनी-सेदेक ने हेब्रोन के राजा होहम, यरमूथ के राजा पीराम, लाकीश के राजा याकिया, और एलोन के राजा देबीर को संदेश भेजा:<sup>4</sup> “आओ और मेरी सहायता करो गिबोन पर आक्रमण करने में, क्योंकि इसने यहोशू और इसाएलियों के साथ शांति कर ली है।”

<sup>5</sup> तब एमोरियों के पांच राजा—यरूशलैम, हेब्रोन, यरमूथ, लाकीश और एलोन के राजा—मिलकर एकजुट हो गए। वे अपनी सभी सेनाओं के साथ गिबोन के निकट आकर युद्ध करने के लिए डेरा डाल दिए।

<sup>6</sup> गिबोनियों ने गिलगाल में यहोशू के शिविर में संदेश भेजा: “अपने सेवकों को मत छोड़ो। जल्दी से हमारे पास आओ और हमें बचाओ! हमारी सहायता करो, क्योंकि पहाड़ी देश में रहने वाले एमोरियों के सभी राजा हमारे खिलाफ एकजुट हो गए हैं।”

<sup>7</sup> इसलिए यहोशू गिलगाल से अपनी पूरी सेना के साथ, जिसमें सबसे अच्छे योद्धा शामिल थे, ऊपर गया।<sup>8</sup> यहोवा ने यहोशू से कहा, “उनसे मत डरो; मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ में दे दिया है। उनमें से कोई भी तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सकेगा।”

<sup>9</sup> गिलगाल से पूरी रात की यात्रा के बाद, यहोशू ने उन्हें आश्र्वयकित कर दिया।<sup>10</sup> यहोवा ने उन्हें इसाएल के सामने भ्रमित कर दिया। यहोशू और इसाएलियों ने

## यहोशू

गिबोन में उन्हें पूरी तरह से पराजित कर दिया। इसाएल ने उन्हें बैथ होरोन की ओर जाने वाली सड़क पर पीछा किया और अजेका और मव्वकेदा तक उन्हें मार गिराया।<sup>11</sup> जब वे इसाएल के सामने बैथ होरोन से अजेका की ओर भाग रहे थे, तो यहोवा ने आकाश से उन पर बड़े ओले गिराय, और ओलों से मरने वालों की संख्या इसाएलियों की तलवार से मारे गए लोगों से अधिक थी।

<sup>12</sup> जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इसाएल के हाथ में दे दिया, यहोशू ने इसाएल के सामने यहोवा से कहा:

“हे सूर्य, गिबोन के ऊपर ठहर जा, और तू हे चंद्रमा, अच्छालोन की धाटी के ऊपर ठहर जा।”

<sup>13</sup> इसलिए सूर्य ठहर गया,

और चंद्रमा रुक गया, जब तक कि राष्ट्र ने अपने शत्रुओं से बदला नहीं ले लिया। जैसा कि याशार की पुस्तक में लिखा है— सूर्य आकाश की बीच में ठहर गया और लगभग एक पूरा दिन ढलने में देरी हुई।

<sup>14</sup> ऐसा दिन पहले कभी नहीं हुआ और न ही उसके बाद, जब यहोवा ने मनुष्य की आवाज सुनी। निश्चय ही यहोवा इसाएल के लिए लड़ रहा था।

<sup>15</sup> तब यहोशू सभी इसाएल के साथ गिलगाल के शिविर में लौट आया।

<sup>16</sup> अब पांच राजा भाग गए थे और मव्वकेदा की गुफा में छिप गए थे।<sup>17</sup> जब यहोशू को बताया गया कि पांच राजा गुफा में छिपे हुए पाए गए हैं,<sup>18</sup> तो उसने कहा, “गुफा के मुँह पर बड़े पत्थर लुढ़का दो, और वहां पहरा देने के लिए लोग नियुक्त करो।<sup>19</sup> परन्तु तुम स्वयं वहां मत रुको। अपने शत्रुओं का पीछा करो और उन्हें पीछे से आक्रमण करो। उन्हें उनके नगरों तक पहुँचने मत दो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने उन्हें तुम्हारे हाथ में दे दिया है।”

<sup>20</sup> इसलिए यहोशू और इसाएलियों ने उन्हें पूरी तरह से पराजित कर दिया, लेकिन कुछ बचे लोग अपने सुरक्षित नगरों तक पहुँचने में सफल हो गए।<sup>21</sup> तब पूरी सेना सुरक्षित रूप से मव्वकेदा के शिविर में यहोशू के पास लौट आई, और किसी ने भी इसाएलियों के खिलाफ एक शब्द नहीं कहा।

<sup>22</sup> तब यहोशू ने कहा, “गुफा का मुँह खोलो और उन पांच राजाओं को मेरे पास बाहर लाओ।”<sup>23</sup> इसलिए उन्होंने राजाओं को बाहर लाया: यरूशलैम, हेब्रोन, यरमूथ, लाकीश और एग्लोन के राजा।<sup>24</sup> जब उन्होंने राजाओं को यहोशू के पास लाया, तो उसने इसाएल के सभी पुरुषों को बुलाया और सेना के सेनापतियों से कहा, “आओ और इन राजाओं की गर्दनों पर अपने पैर रखो।<sup>25</sup> यहोशू ने उनसे कहा, “मत डरो और निराश मत हो। दृढ़ और साहसी बो। यह वही है जो यहोवा तुम्हारे द्वारा लड़े गए सभी शत्रुओं के साथ करेगा।”

<sup>26</sup> फिर यहोशू ने राजाओं को मारा और उन्हें मार डाला और उनके शवों को पांच पेड़ों पर लटका दिया। वे शाम तक वहीं लटके रहे।<sup>27</sup> सूर्यास्त के समय, यहोशू ने आदेश दिया कि उन्हें पेड़ों से उतारकर उस गुफा में फेंक दिया जाए जहाँ वे छिपे थे। गुफा के मुँह पर बड़े पत्थर रख दिए गए, और वे आज तक वहीं हैं।

<sup>28</sup> उस दिन यहोशू ने मव्वकेदा को कब्जा कर लिया। उसने नगर और उसके राजा को तलवार से मार डाला, उसमें सभी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। उसने कोई भी जीवित नहीं छोड़ा और उसके राजा के साथ वहीं व्यवहार किया जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था।

<sup>29</sup> फिर यहोशू और सभी इसाएली मव्वकेदा से लिङ्गा की ओर बढ़े और उस पर आक्रमण किया।<sup>30</sup> यहोवा ने इसे भी इसाएल के हाथ में दे दिया, उसके राजा के साथ। यहोशू ने नगर और उसके सभी लोगों को तलवार से मार डाला। उसने कोई भी जीवित नहीं छोड़ा और उसके राजा के साथ वहीं व्यवहार किया जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था।

<sup>31</sup> फिर यहोशू और सभी इसाएली लिङ्गा से लाकीश की ओर गए; उसने उस पर घेरा डाल दिया और उस पर आक्रमण किया।<sup>32</sup> यहोवा ने लाकीश को इसाएल के हाथ में दे दिया, और उन्होंने इसे दूसरे दिन में कब्जा कर लिया। उसने इसे तलवार से मारा और उसमें सभी को, जैसे उसने लिङ्गा के साथ किया था।

<sup>33</sup> फिर गेझेर का राजा होराम लाकीश की सहायता के लिए आया, लेकिन यहोशू ने उसे और उसकी सेना को मार डाला, कोई भी जीवित नहीं छोड़ा।

# यहोशू

<sup>34</sup> फिर यहोशू और सभी इस्साएली लाकीश से एग्लोन की ओर बढ़े; उन्होंने उस पर धेरा डाल दिया और उस पर आक्रमण किया। <sup>35</sup> उसी दिन उन्होंने इसे कब्जा कर लिया और इसे तलवार से मारा। उसने उसमें सभी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, जैसे उसने लाकीश के साथ किया था।

<sup>36</sup> फिर यहोशू और सभी इस्साएली एग्लोन की ओर गए और उस पर आक्रमण किया। <sup>37</sup> उन्होंने नगर को कब्जा कर लिया और उसके राजा, उसके गांवों, और उसमें सभी को तलवार से मार डाला। उन्होंने कोई भी जीवित नहीं छोड़ा, जैसे एग्लोन में किया था। उसने इसे और उसमें सभी को नष्ट कर दिया।

<sup>38</sup> फिर यहोशू और सभी इस्साएली देवीर की ओर लौटे और उस पर आक्रमण किया। <sup>39</sup> उन्होंने नगर, उसके राजा, और उसके गांवों को लिया। उन्होंने उन्हें तलवार से मारा और उसमें सभी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। उसने कोई भी जीवित नहीं छोड़ा। उसने देवीर और उसके राजा के साथ वही किया जो उसने हेब्रोन और लिब्ना और उसके राजा के साथ किया था।

<sup>40</sup> इस प्रकार यहोशू ने पूरे क्षेत्र—पहाड़ी देश, नेगेव, पश्चिमी पहाड़ियाँ, और पर्वतीय ढालान—सहित सभी राजाओं को जीत लिया। उसने कोई भी जीवित नहीं छोड़ा। उसने सभी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, जैसा कि इस्साएल के परमेश्वर यहोवा ने आदेश दिया था।

<sup>41</sup> यहोशू ने कोदेश बरने से गाजा तक, और गोशेन के पूरे क्षेत्र को गिबोन तक वश में कर लिया। <sup>42</sup> इन सभी राजाओं और उनकी भूमि को यहोशू ने एक ही अभियान में जीत लिया, क्योंकि इस्साएल के परमेश्वर यहोवा ने इस्साएल के लिए लड़ाई लड़ी।

<sup>43</sup> फिर यहोशू सभी इस्साएल के साथ गिलगाल के शिविर में लौट आया।

**11** जब हाजोर के राजा याबीन ने यह सुना, तो उसने मदोन के राजा योबाब, शिमरोन और अक्साफ के राजाओं को संदेश भेजा, <sup>2</sup> और उत्तरी पहाड़ी प्रदेश के राजाओं को, किंत्रेत के दक्षिण में अराबा में, पश्चिमी पहाड़ियों में, और पश्चिम में नाकोत दोर में; <sup>3</sup> पूर्व और पश्चिम के कनानियों को, पहाड़ी प्रदेश के एमेरियों, हितियों, परिजियों और यदूसियों को, और मिस्पा क्षेत्र में हमोन पर्वत के नीचे के हिंदियों को। <sup>4</sup> वे अपनी सारी सेनाओं के साथ आए—समुद्र तट की रेत के समान

असंख्य—साथ ही कई घोड़े और रथ। <sup>5</sup> इन सभी राजाओं ने मिलकर इस्साएल के विरुद्ध लड़ने के लिए मेरोम के जलाशयों पर शिविर लगाया।

<sup>6</sup> यहोवा ने यहोशू से कहा, “उनसे मत डर, क्योंकि कल इसी समय तक मैं उन्हें इस्साएल के हाथों में दे द्वृगा, मारे जाएं। तुम उनके घोड़ों के पुढ़े काट डालना और उनके रथों को जला देना।”

<sup>7</sup> इसलिए यहोशू और उसकी पूरी सेना अचानक मेरोम के जलाशयों पर उनके विरुद्ध आए और उन पर आक्रमण किया, <sup>8</sup> और यहोवा ने उन्हें इस्साएल के हाथ में दे दिया। उन्होंने उन्हें हराया और उनका पीछा करते हुए सिदेन महान, मिसफोत माइम, और पूर्व की ओर मिस्पा की घाटी तक गए। उन्होंने उन्हें मारा जब तक कि कोई भी जीवित नहीं बचा। <sup>9</sup> यहोशू ने उनके साथ वही किया जैसा यहोवा ने निर्देश दिया था: उसने उनके घोड़ों के पुढ़े काट डाले और उनके रथों को जला दिया।

<sup>10</sup> उस समय यहोशू लौटकर हाजोर को कब्जा कर लिया और उसके राजा को तलवार से मार डाला। हाजोर पहले इन सभी राज्यों का मुख्य था। <sup>11</sup> उन्होंने उसमें सभी को तलवार से मारा, उन्हें विनाश के लिए समर्पित किया। कोई भी जीवित नहीं बचा, और उसने हाजोर को जला दिया।

<sup>12</sup> यहोशू ने इन सभी राजसी नगरों और उनके राजाओं को कब्जा कर लिया और उन्हें तलवार से मारा। उसने उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दिया, जैसा कि यहोवा के सेवक मूसा ने आदेश दिया था। <sup>13</sup> फिर भी इस्साएल ने उन नगरों में से किसी को नहीं जलाया जो उनके टीले पर बने थे—सिवाय हाजोर के, जिसे यहोशू ने जला दिया। <sup>14</sup> इसाएलियों ने इन नगरों की सारी लूट और पशुधन अपने लिए ले लिए, लेकिन उन्होंने सभी लोगों को तलवार से मारा जब तक कि उन्होंने उन्हें नष्ट नहीं कर दिया, कोई भी जीवित नहीं छोड़ा। <sup>15</sup> जैसा कि यहोवा ने अपने सेवक मूसा को आदेश दिया था, वैसे ही मूसा ने यहोशू को आदेश दिया, और यहोशू ने उसे किया। उसने यहोवा ने मूसा को जो कुछ भी आदेश दिया था, उसमें से कुछ भी अधूरा नहीं छोड़ा।

<sup>16</sup> इसलिए यहोशू ने इस पूरे देश को ले लिया: पहाड़ी प्रदेश, सभी नेगेव, गोशेन का पूरा क्षेत्र, पश्चिमी पहाड़ियाँ, अराबा और इस्साएल के पहाड़ों के साथ उनके तलहटी, <sup>17</sup> हलाक पर्वत से, जो सेइर की ओर उठता है, लेबानोन की घाटी में बाल-गाद तक हमोन पर्वत के नीचे। उसने

# यहोशू

उनके सभी राजाओं को कब्जा कर लिया और उन्हें मार डाला।<sup>18</sup> यहोशू ने इन सभी राजाओं के विरुद्ध लंबे समय तक युद्ध किया।<sup>19</sup> कोई भी नगर इसाएलियों के साथ शांति नहीं किया सिवाय गिबोन में रहने वाले हिवियों के। अन्य सभी युद्ध में लिए गए।<sup>20</sup> क्योंकि यह यहोवा ही था जिसने उनके हृदयों को कठोर किया ताकि वे इसाएल के विरुद्ध युद्ध करें, ताकि वे विनाश के लिए समर्पित हों, बिना दया के नष्ट कर दिए जाएं, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

<sup>21</sup> उस समय यहोशू गया और अनाकियों को पहाड़ी प्रदेश से नष्ट कर दिया—हेब्रोन, देबीर और अनाब से, यहदा के सभी पहाड़ी प्रदेश से, और इसाएल के सभी पहाड़ी प्रदेश से। यहोशू ने उन्हें और उनके नगरों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।<sup>22</sup> इसाएलियों के देश में कोई अनाकी नहीं बचा; केवल गाजा, गات और अशदोद में कुछ बचे।

<sup>23</sup> इसलिए यहोशू ने पूरे देश को ले लिया, जैसा कि यहोवा ने मूसा से कहा था, और इसे इसाएल को उनकी जनजातीय विभाजन के अनुसार विरासत के रूप में दिया। फिर देश को युद्ध से विश्राम मिला।

**12** ये उस देश के राजा हैं जिन्हें इसाएलियों ने पराजित किया और जिनकी भूमि उन्होंने यरदन के पूर्व में अनोन घाटी से लेकर हर्मोन पर्वत तक, और समस्त पूर्वी अराबा तक अपने अधिकार में ले ली: <sup>2</sup> एमोरी राजा सीहोन, जो हेशबोन में राज्य करता था। उसने अनोन घाटी के किनारे पर स्थित अरोए से लेकर घाटी के मध्य तक, और यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों की सीमा है, शासन किया। इसमें गिलाद का आधा भाग शामिल था।<sup>3</sup> उसने पूर्वी अराबा पर भी शासन किया, गलील सागर से लेकर अराबा सागर (लवण सागर) तक, बेथ येशिमोत तक, और फिर पिसगा की ढालानों के नीचे दक्षिण की ओर।

<sup>4</sup> और बाशान के राजा ओग का क्षेत्र, जो रेफाईम के अंतिम में से एक था, जो अश्तारोत और एट्रेई में राज्य करता था।<sup>5</sup> उसने हर्मोन पर्वत, सालेका, बाशान के सभी क्षेत्रों पर गेशूरी और माकाथियों की सीमा तक, और गिलाद के आधे भाग पर हेशबोन के राजा सीहोन की सीमा तक, और गिलाद के आधे भाग पर हेशबोन के राजा सीहोन की सीमा तक।<sup>6</sup> प्रभु के सेवक मूसा और इसाएलियों ने उन्हें पराजित किया। और प्रभु के सेवक मूसा ने उनकी भूमि को रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया।

<sup>7</sup> यहाँ वे राजा हैं जिनको यहोशू और इसाएलियों ने यरदन के पश्चिम में पराजित किया, लेबनान की घाटी में बाल गद से लेकर सेरेइर की ओर उठने वाले हलाक पर्वत तक। यहोशू ने उनकी भूमि को इसाएल के गोत्रों को उनके विभाजन के अनुसार विरासत के रूप में दिया—<sup>8</sup> पहाड़ी देश, पश्चिमी ढलान, अराबा, पर्वतीय ढलान, जंगल, और नेगेव—हितियों, एमोरियों, कनानियों, परिजियों, हिक्यियों, और यबूसीयों की भूमि:

<sup>9</sup> यरीहो का राजा, एक; बेतेल के पास ऐ का राजा, एक; <sup>10</sup> यरूशलाम का राजा, एक; देव्रोन का राजा, एक;<sup>11</sup> यर्मूत का राजा, एक; लाकीश का राजा, एक; <sup>12</sup> एलोन का राजा, एक; गेज़ेर का राजा, एक; <sup>13</sup> देबीर का राजा, एक; गेदेर का राजा, एक; <sup>14</sup> होर्मा का राजा, एक; अराद का राजा, एक; <sup>15</sup> लिबा का राजा, एक; अदुल्लाम का राजा, एक; <sup>16</sup> मक्केदा का राजा, एक; बेतेल का राजा, एक; <sup>17</sup> तप्पूआह का राजा, एक; हेफेर का राजा, एक; <sup>18</sup> अफेक का राजा, एक; लाशारोन का राजा, एक; <sup>19</sup> मादोन का राजा, एक; हाजोर का राजा, एक; <sup>20</sup> शिमरोन मेरोन का राजा, एक; अवशाफ का राजा, एक; <sup>21</sup> तानाक का राजा, एक; मग्दोवी का राजा, एक; <sup>22</sup> केदेश का राजा, एक; कर्मेल में योकनेआम का राजा, एक; <sup>23</sup> नाफ़ोथ दोर में दोर का राजा, एक; गिलगाल में गोथिम का राजा, एक; <sup>24</sup> तिरज्ञा का राजा, एक; कुल मिलाकर, इकतीस राजा।

**13** जब यहोशू बूढ़ा और आयु में बहुत आगे बढ़ चुका था, तब यहोवा ने उससे कहा, “तू अब बहुत बूढ़ा हो गया है, और अभी भी बहुत भूमि शेष है जिसे अधिकार में लेना है।<sup>2</sup> यह वह भूमि है जो शेष है: पलिशियों और गेशूरीयों के सभी क्षेत्र,<sup>3</sup> मिस के पूर्व में शिहोर नदी से लेकर उत्तर में एक्रोन की सीमा तक (सभी कनानी गिने जाते हैं); गाजा, अशदोद, अश्कलोन, गत, और एक्रोन में पलिशियों के पाँच शासक; और अक्यियों के क्षेत्र।<sup>4</sup> दक्षिण में, सभी कनानियों की भूमि, सिदोनियों के मियारा से लेकर अफेक तक, एमोरियों की सीमा तक;<sup>5</sup> और गेबालियों की भूमि और सभी लेबनान पूर्व की ओर, बाल गद से लेकर हर्मोन पर्वत के नीचे लेबो हमाथ तक।<sup>6</sup> लेबनान से लेकर मिसरेफोत माइम तक पहाड़ी देश के सभी निवासी, सभी सिदोनी—मैं स्वयं उन्हें इसाएलियों के सामने से निकाल दूँगा। इस भूमि को इसाएल को एक विरासत के रूप में आवंटित करना सुनिश्चित करें, जैसा मैंने तुम्हें निर्देशित किया है;<sup>7</sup> और इसे नौ गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र के बीच एक विरासत के रूप में विभाजित करें।”

## यहोशू

<sup>४</sup> मनश्शे के दूसरे आधे भाग, रूबेनियों और गादियों ने अपनी विरासत यरदन के पूर्व में प्राप्त की थी, जैसा कि यहोवा के सेवक मूसा ने उहें सौंपा था। <sup>५</sup> यह अरोएर से लेकर अर्नोन घाटी के किनारे तक फैला था, जिसमें घाटी के बीच में स्थित नगर और मदीबा का पूरा पठार शामिल था, जो दिबोन तक था; <sup>६</sup> और एमोरियों के राजा सीहोन के सभी नगर, जो हेशबोन में राज्य करते थे, अमोनियों की सीमा तक; <sup>७</sup> गिलाद और गेशूरी और माकाथियों का क्षेत्र, हर्मोन पर्वत का सारा क्षेत्र, और बाशान का सारा क्षेत्र जो सलेका तक फैला था—<sup>१२</sup> अर्थात्, बाशान में ओग का पूरा राज्य, जो अश्तारोत और एद्रेई में राज्य करता था। वह रेफाइम के अंतिम लोगों में से एक था। मूसा ने उन्हें पराजित किया और उनकी भूमि ले ली थी। <sup>१३</sup> लेकिन इसाएलियों ने गेशूरी और माकाथियों को नहीं निकाला, इसलिए वे आज तक इसाएलियों के बीच रहते हैं।

<sup>१४</sup> लेकिन लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई विरासत नहीं दी; यहोवा, इसाएल के परमेश्वर के लिए अग्रि द्वारा किए गए बलिदान ही उनकी विरासत है, जैसा कि उसने उन्हें वादा किया था।

<sup>१५</sup> यह वह है जो मूसा ने रूबेन के गोत्र को, कुलों के अनुसार दिया था: <sup>१६</sup> अरोएर से लेकर अर्नोन घाटी के किनारे तक का क्षेत्र, और घाटी के बीच में स्थित नगर, और मदीबा के पास का पूरा पठार; <sup>१७</sup> हेशबोन और उसके पठार के सभी नगर, जिनमें दिबोन, बामोत बाल, बेथ बाल मियोन, <sup>१८</sup> यहज, केदेमोत, मेफत, <sup>१९</sup> किर्याथैम, सिभा, घाटी में पहाड़ी पर स्थित जेरेथ शाहर, <sup>२०</sup> बेथ पोर, पिसगा की ढालानें, और बेथ येशिमोत—<sup>२१</sup> पठार के सभी नगर और एमोरियों के राजा सीहोन का पूरा राज्य, जो हेशबोन में राज्य करता था। मूसा ने उसे और पियान के प्रमुखों—एवी, रेकम, सूर, हाव, और रेबा—को पराजित किया, जो सीहोन के सहयोगी थे और उस भूमि में रहते थे। <sup>२२</sup> युद्ध में मारे गए लोगों के अलावा, इसाएलियों ने बलाम पुत्र बेओर को तलवार से मार डाला, जो जादू-टोना करता था। <sup>२३</sup> रूबेनियों की सीमा यरदन का किनारा था। यह रूबेनियों की विरासत थी, कुलों के अनुसार, जिसमें नगर और उनके गाँव शामिल थे।

<sup>२४</sup> यह वह है जो मूसा ने गाद के गोत्र को, कुलों के अनुसार दिया था: <sup>२५</sup> याजेर का क्षेत्र, गिलाद के सभी नगर, और अमोनियों की आधी भूमि जो रब्बा के पास अरोएर तक फैली थी; <sup>२६</sup> और हेशबोन से लेकर रामत मिस्या और बेतोनिम तक, और महनैम से लेकर देवीर

के क्षेत्र तक; <sup>२७</sup> और घाटी में: बेथ हराम, बेथ निम्मा, सुकोत और जाफोन, हेशबोन के राजा सीहोन के राज्य का शेष भाग; यरदन सीमा के रूप में कार्य करता था, जो गलील सागर के पूर्वी सिरे तक था। <sup>२८</sup> यह गादियों की विरासत थी, कुलों के अनुसार, जिसमें नगर और उनके गाँव शामिल थे।

<sup>२९</sup> यह वह है जो मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्र को, कुलों के अनुसार दिया था: <sup>३०</sup> महनैम से लेकर बाशान तक का क्षेत्र, बाशान के राजा ओग का पूरा राज्य—बाशान में याईर की सभी बस्तियाँ, साठ नगर, <sup>३१</sup> गिलाद का आधा भाग, और अश्तारोत और एद्रेई, बाशान में ओग के शाही नगर। यह माकीर के पुत्र मनश्शे के वंशजों के लिए था—माकीर के आधे पुत्रों के लिए, कुलों के अनुसार।

<sup>३२</sup> यह वह विरासत है जो मूसा ने मोआब के मैदानों में, यरदन के पूर्व में, यरीहो के सामने वितरित की थी। <sup>३३</sup> लेकिन लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई विरासत नहीं दी; यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, उनकी विरासत है, जैसा उसने उन्हें वादा किया था।

**१४** ये वे क्षेत्र हैं जो इसाएलियों ने कनान देश में विरासत में पाए, जिन्हें याजक एलीआजर, नून का पुत्र यहोशू और इसाएल की गोत्रों के प्रधानों ने उन्हें बांटा। <sup>१</sup> उनकी विरासते नी और आधे गोत्रों को चिट्ठी डालकर दी गई, जैसा कि प्रभु ने मूसा के माध्यम से आज्ञा दी थी। <sup>२</sup> मूसा ने यरदन के पूर्व में दो और आधे गोत्रों को उनकी विरासत दी थी, लेकिन उसने लेवियों को उनके बीच कोई हिस्सा नहीं दिया था। <sup>३</sup> क्योंकि युसुफ के वंशज दो गोत्र बन गए थे—मनश्शे और एप्रैम। लेवियों को भूमि का कोई हिस्सा नहीं मिला, केवल रहने के लिए नगर मिले, और उनके झुंडों और पशुओं के लिए चरागाह भूमि मिली। <sup>५</sup> इसाएलियों ने जैसा प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही किया, और उन्होंने भूमि का विभाजन किया।

<sup>६</sup> अब यहूदा के लोग गिलगाल में यहोशू के पास आए, और केनज्जी येपुब्रेह का पुत्र कालेब उससे कहने लगा, "तुम जानते हो कि प्रभु ने कादेश बरनेआ में परमेश्वर के मनुष्य मूसा से तुम्हारे और मेरे बारे में क्या कहा था।" <sup>७</sup> जब प्रभु के सेवक मूसा ने मुझे कादेश बरनेआ से देश की जासूसी करने के लिए भेजा था, तब मेरी आयु चालीस वर्ष की थी, और मैंने अपने दिल के अनुसार एक रिपोर्ट वापस लाई थी। <sup>८</sup> लेकिन मेरे साथ गए मेरे साथी जासूसों ने लोगों के दिलों को भय से पिघला दिया। मैंने,

## यहोशू

हालांकि, अपने परमेश्वर यहोवा का पूरी तरह से अनुसरण किया।<sup>9</sup> इसलिए उस दिन मूसा ने मुझसे शपथ ली, जिस भूमि पर तुम्हारे पैर चले हैं वह तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की सदा के लिए विरासत होगी, क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा का पूरी तरह से अनुसरण किया है।<sup>10</sup>

१० अब तब, जैसा कि प्रभु ने वादा किया था, उसने मुझे जीवित रखा है चालीस-पाँच वर्षों से जब उसने यह मूसा से कहा था—जब इसाएल जंगल में घूमता रहा। इसलिए मैं आज यहाँ हूँ, पचासी वर्ष का।<sup>11</sup> मैं आज भी उतना ही मज़बूत हूँ जितना कि उस दिन था जब मूसा ने मुझे भेजा था; मैं अब भी युद्ध के लिए उतना ही उत्साही हूँ जितना तब था।<sup>12</sup> अब मुझे यह पहाड़ी देश दो जो उस दिन प्रभु ने मुझे वादा किया था। तुमने स्वयं सुना था कि वहाँ अनाकीम थे और उनके नगर बड़े और किलेबंद थे, लेकिन प्रभु मेरी साहायता करेगा उहाँ बाहर निकालने में, जैसा उसने कहा था।<sup>13</sup>

<sup>13</sup> तब यहोशू ने येपुन्नेह के पुत्र कालेब को आशीर्वाद दिया और उसे हेब्रोन उसकी विरासत के रूप में दिया।<sup>14</sup> इसलिए हेब्रोन तब से येपुन्नेह के पुत्र कालेब केनज्जी का रहा है, क्योंकि उसने इसाएल के परमेश्वर यहोवा का पूरी तरह से अनुसरण किया।<sup>15</sup> (हेब्रोन को पहले किर्यत अर्बा कहा जाता था, अर्बा के नाम पर, जो अनाकीम में सबसे महान व्यक्ति था।) तब देश ने युद्ध से विश्राम पाया।

**15** यहूदा के गोत्र के लिए उनके कुलों के अनुसार भूमि का बांटवारा दक्षिण की ओर एदोम की सीमा तक, और दक्षिण के सुदूर में सीन के जंगल तक फैला हुआ था।<sup>1</sup> उनकी दक्षिणी सीमा नमक सागर के अंत से शुरू होती थी,<sup>2</sup> वह बिच्छ की चढ़ाई के दक्षिण से होकर सीन तक जाती थी, कालेश बर्झों के दक्षिण से ऊपर जाती थी, हेजरोन से होकर गुजराती थी, और अद्वार तक जाती थी और कार्का की ओर मुड़ती थी।<sup>4</sup> फिर वह अज्मोन से होकर मिस की बाढ़ी से मिलती थी और सागर पर समाप्त होती थी। यह उनकी दक्षिणी सीमा थी।<sup>5</sup> पूर्वी सीमा नमक सागर थी, जो यरदन के मुहाने तक फैली थी। उत्तरी सीमा यरदन के मुहाने पर सागर की खाड़ी से शुरू होती थी,<sup>6</sup> बेत होगला तक जाती थी और बेत अरबा के उत्तर से होकर गुजराती थी, फिर वह रुबन के पुत्र बोहन के पत्थर तक जाती थी।<sup>7</sup> सीमा फिर अकोर की घाटी से देवीर तक जाती थी और गिलगाल की ओर उत्तर की ओर मुड़ती थी, जो अद्विमिम की चढ़ाई के सामने घाटी के दक्षिणी ओर थी। यह एन शेमेश के जल

तक जाती थी और एन रोगेल पर समाप्त होती थी।<sup>8</sup> फिर यह बेन हिन्नोम की घाटी के ऊपर से यबूसी नगर (जो यरूशलेम है) के दक्षिणी ढलान के साथ ऊपर जाती थी। वहाँ से यह हिन्नोम घाटी के पश्चिम में पहाड़ी की घाटी तक चढ़ती थी, जो रेफाइम घाटी के उत्तरी छोर पर थी।<sup>9</sup> सीमा फिर पहाड़ी की घाटी से नेफोह के जल के स्रोत तक मुड़ती थी, माउंट एफ्रोन के नगरों तक जाती थी, और बालाह (जो कि किर्यत यारीम है) की ओर मुड़ती थी।<sup>10</sup> फिर यह बालाह से पश्चिम की ओर माउंट सेइर तक मुड़ती थी, माउंट यारीम (जो कि केसालोन है) के उत्तरी ढलान के साथ गुजरती थी, बेत शेमेश तक नीचे जाती थी, और तिन्हा को पार करती थी।<sup>11</sup> सीमा फिर एकोन की ढलान तक जाती थी, शिक्केरोन की ओर मुड़ती थी, माउंट बालाह तक जाती थी, और जबनील तक पहुँचती थी। सीमा सागर पर समाप्त होती थी।<sup>12</sup> पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर का तट था। ये यहूदा के वंशजों की सीमाएं थीं, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>13</sup> यहोवा की आज्ञा के अनुसार, यहोशू ने यहूदा में येफुन्नेह के पुत्र कालेब को एक भाग दिया—किर्यत अर्बा, जो कि हेब्रोन है। (अर्बा अनाक का पूर्वज था।)<sup>14</sup> हेब्रोन से कालेब ने तीन अनाकियों—शेशी, अहिमान, और तल्मै, अनाक के वंशजों को बाहर निकाला।<sup>15</sup> वहाँ से वह देवीर में रहने वाले लोगों के खिलाफ गया (जिसे पहले किर्यत सेफर कहा जाता था),<sup>16</sup> और कालेब ने कहा, “जो व्यक्ति किर्यत सेफर पर आक्रमण करेगा और उसे जीत लेगा, उसे मैं अपनी बेटी अक्सा का विवाह दूंगा।”<sup>17</sup> केनाज का पुत्र ओलीएल, जो कालेब का भाई था, ने इसे जीता; इसलिए कालेब ने अपनी बेटी अक्सा का विवाह उसे दिया।<sup>18</sup> जब वह उसके पास आई, तो उसने उसे अपने पिता से एक खेत मांगने के लिए उकसाया। जब वह अपने गधे से उत्तरी, तो कालेब ने उससे पूछा, “तुम्हें क्या चाहिए?”<sup>19</sup> उसने उत्तर दिया, “मुझे आशीर्वाद दो। चूंकि तुमने मुझे नेगेव में भूमि दी है, मुझे जल के स्रोत भी दो।” इसलिए कालेब ने उसे ऊपरी और निचले स्रोत दिए।

<sup>20</sup> यह यहूदा के गोत्र की विरासत है, उनके कुलों के अनुसार;<sup>21</sup> यहूदा के गोत्र के दक्षिणी नगर, एदोम की सीमा की ओर नेगेव में थे: कब्जील, एदर, यागूर,<sup>22</sup> किनाह, दिमोना, अदादा,<sup>23</sup> केदेस, हज़ोर, इतनान,<sup>24</sup> ज़िफ, तेलम, बेलोत,<sup>25</sup> हज़ोर हदताह, केरियोत हेज़िरोन (जो कि हज़ोर है),<sup>26</sup> अमाम, शेमा, मोलदाह,<sup>27</sup> हज़ार गदा, हेशमोन, बेत पेलेट,<sup>28</sup> हज़ार शुअल, बेर्षेबा, बिस्योतियाह,<sup>29</sup> बालाह, ईम, एजेम,<sup>30</sup> एलतोद, केसील, होर्मा,<sup>31</sup> ज़िक्लग, मदमत्राह, संसन्नाह,<sup>32</sup> लेबाओत,

## यहोशू

शित्तिम, अर्द्धन, और रिमोन—कुल मिलाकर उनतीस नगर और उनके गांव।

<sup>33</sup> पश्चिमी पहाड़ियों में: एश्टाओल, सोराह, अश्वाह, <sup>34</sup> जानोआह, एन गत्रिम, तप्पूह, एनाम, <sup>35</sup> यर्मूथ, अदुल्लाम, सोकोह, अज्जेकाह, <sup>36</sup> शाराइम, अदिथाइम, गेदेराह, और गेदेरोथाइम—चौदह नगर और उनके गांव।

<sup>37</sup> ज़ेनान, हदशाह, मिगाला गद, <sup>38</sup> दिलेअन, मिज्जपेह, योक्तोएल, <sup>39</sup> लाकीश, बोज्जकाथ, एलोन, <sup>40</sup> कब्बोन, लहास, कितलीश, <sup>41</sup> गेदोरोथ, बेत दागोन, नामा, और मक्केदाह—सोलह नगर और उनके गांव।

<sup>42</sup> लिब्बाह, एथेर, अशान, <sup>43</sup> इफ्ताह, अश्वाह, नेज़िब, <sup>44</sup> कईलाह, अकज़ीब, और मरेशाह—नौ नगर और उनके गांव।

<sup>45</sup> एक्नोन, उसके आसपास की बस्तियों और गांवों के साथ; <sup>46</sup> एक्नोन से पश्चिम की ओर, अशदोद के निकटवर्ती सभी लोग, उनके गांवों के साथ; <sup>47</sup> अशदोद, उसके आसपास की बस्तियों और गांवों के साथ; गाजा, उसके बस्तियों और गांवों के साथ, मिस की वादी तक और भूमध्य सागर के तट तक।

<sup>48</sup> पहाड़ी देश में: शामिर, यसीर, सोकोह, <sup>49</sup> दन्नाह, किर्यत सन्नाह (जो कि देवीर है), <sup>50</sup> अनाब, एश्टेमोह, अनीम, <sup>51</sup> गोशेन, होलोन, और गिलोह—ग्यारह नगर और उनके गांव।

<sup>52</sup> अरब, दूमाह, एशान, <sup>53</sup> जानुम, बेत तप्पूह, अफेकाह, <sup>54</sup> हुम्ताह, किर्यत अर्बा (जो कि हेब्रोन है), और ज़िओर—नौ नगर और उनके गांव।

<sup>55</sup> मौन, कर्मल, ज़िफ, युत्ताह, <sup>56</sup> यित्रेल, योक्तेआम, जानोआह, <sup>57</sup> कैइन, गिबेआ, और तिम्माह—दस नगर और उनके गांव।

<sup>58</sup> हलहुल, बेत ज़ूर, गेदोर, <sup>59</sup> माराथ, बेत अनोत, और एलतेकन—चह नगर और उनके गांव।

<sup>60</sup> किर्यत बाल (जो कि किर्यत पारीम है) और रब्बाह—दो नगर और उनके गांव।

<sup>61</sup> ज़ंगल में: बेत अरबा, मिदिन, सेकाका, <sup>62</sup> निब्बान, नमक का नगर, और एन गदी—छह नगर और उनके गांव।

<sup>63</sup> लेकिन यहूदा के लोग यब्बसियों को यरूशलेम में से बाहर नहीं निकाल सके। इसलिए आज तक यब्बसी वहाँ यहूदा के लोगों के साथ रहते हैं।

**16** यूसुफ के वंशजों के लिए भाग जो यरीहो के यरदन से यरीहो के पूर्वी जल तक, ज़ंगल के माध्यम से यरीहो से बेतेल के पहाड़ी देश में जाता था। <sup>2</sup> यह बेतेल (अर्थात् लूज) से आगे बढ़कर अर्कियों के क्षेत्र में अतारोत तक पार कर गया। <sup>3</sup> यह पश्चिम की ओर याफ्तोतियों के क्षेत्र में नीचे उतरकर निचले बेथ होरोन और गेज़ेर की सीमा तक गया, और भूमध्य सागर पर समाप्त हुआ। <sup>4</sup> इस प्रकार यूसुफ के वंशज—मनश्शे और एप्रैम—अपनी विरासत प्राप्त की।

<sup>5</sup> यह एप्रैम का क्षेत्र था, उनके कुलों के अनुसार: उनकी विरासत की सीमा अतारोत अदार से पूर्व में ऊपरी बेथ होरोन तक गई, <sup>6</sup> और समुद्र की ओर बढ़ी। उत्तर में मिक्वेथात से यह पूर्व की ओर तानाथ शीलो की ओर मुड़ी, और इसके पूर्व में यनोह तक गई। <sup>7</sup> फिर यह यनोह से अतारोत और नाराह तक नीचे गई, यरीहो को छूती हुई, और यरदन पर समाप्त हुई। <sup>8</sup> तप्पूअह से सीमा कनाह घाटी की ओर पश्चिम में गई और समुद्र पर समाप्त हुई। यह एप्रैम के गोत्र की विरासत थी, उनके कुलों के अनुसार, <sup>9</sup> उन नगरों के साथ जो मनश्शयों की विरासत में एप्रैमियों के लिए अतग किए गए थे—सभी नगर और उनके गांव।

<sup>10</sup> लेकिन उर्होने गेज़ेर में रहने वाले कनानियों को नहीं निकाला; इसलिए आज तक कनानी एप्रैम के लोगों के बीच रहते हैं लेकिन उन्हें श्रम में लगाया जाता है।

**17** यह यूसुफ के पहलौठे मनश्शे के गोत्र के लिए भाग था: माकीर, जो मनश्शे का पहलौठा और गिलाद का पिता था—जो युद्ध का व्यक्ति था—उसे गिलाद और बाशान दिए गए। <sup>2</sup> इसलिए मनश्शे के बाकी गोत्र के लिए उनके कुलों के अनुसार भाग बांटा गया—अबिएज़र, हेलेक, असीएल, शेकेम, हेफेर, और शेमोदा के वंशजों के लिए। ये मनश्शे के पुत्र यूसुफ के कुलों के पुरुष वंशज थे। <sup>3</sup> अब हेफेर के पुत्र, गिलाद के पुत्र, माकीर के पुत्र, मनश्शे के पुत्र, सेलोफहद के कोई पुत्र नहीं थे, केवल युवियाँ थीं। उनके नाम थे: महला, नोहा, होगला, मिल्का, और तिर्ज़ा। <sup>4</sup> वे एलिआज़र याजक, नून

# यहोशू

के पुत्र यहोशू, और नेताओं के पास गई, और कहा, "यहोवा ने मूसा को हमारे रिश्तेदारों के बीच हमें एक विरासत देने की आज्ञा दी थी।" इसलिए यहोशू ने उन्हें उनके पिता के चाचाओं के बीच यहोवा की आज्ञा के अनुसार एक विरासत दी।<sup>5</sup> मनश्शे का हिस्सा दस भागों में बंटा था, गिलाद और बाशान के अलावा, जो यरदन के पूर्व में स्थित थे,<sup>6</sup> क्योंकि मनश्शे के गोत्र की पुत्रियों को पुत्रों के साथ विरासत मिली थी। गिलाद की भूमि मनश्शे के बाकी वंशजों की थी।

<sup>7</sup> मनश्शे की सीमा आशेर से लेकर मिकमेतात तक, शेकेम के पूर्व में थी। फिर सीमा दक्षिण की ओर उन लोगों को शामिल करने के लिए चली जो एन तप्पूअह में रहते थे।<sup>8</sup> तप्पूअह की भूमि सर्व मनश्शे की थी, लेकिन तप्पूअह, जो मनश्शे की सीमा पर था, इफ्रैम के वंशजों की थी।<sup>9</sup> फिर सीमा कानाह घाटी की ओर उतरी, घाटी के दक्षिण में। इफ्रैम के नगर मनश्शे के नगरों में थे, लेकिन मनश्शे की सीमा घाटी के उत्तर में थी और समुद्र पर समाप्त होती थी।<sup>10</sup> दक्षिण की भूमि इफ्रैम की थी और उत्तर की मनश्शे की। समुद्र उनकी सीमा थी। वे उत्तर में आशेर और पूर्व में इस्साकार से मिलते थे।<sup>11</sup> इस्साकार और आशेर के भीतर, मनश्शे के पास बेथ शान, इल्लाम, और दोर, एन्दोर, तानक, और मेगिद्दो के लोग थे—प्रत्येक अपने आसपास की बस्तियों के साथ।<sup>12</sup> फिर भी मनश्शे के वंशज उन नगरों के लोगों को बाहर नहीं निकाल सके, और कनानी वहाँ रहने में तगे रहे।<sup>13</sup> हालांकि, जब इसाएरी शक्तिशाली हो गए, तो उन्होंने कनानियों को जबरन श्रम में लगाया, लेकिन उन्हें पूरी तरह से बाहर नहीं निकाला।

<sup>14</sup> यूसुफ के वंशजों ने यहोशू से कहा, "आपने हमें केवल एक भाग और एक हिस्सा ही विरासत के लिए क्यों दिया है? हम बहुत लोग हैं, और यहोवा ने हमें बहुत आशीष दी है!"<sup>15</sup> यहोशू ने उत्तर दिया, "यदि आप इन्हें अधिक हैं और इफ्रैम का पहाड़ी देश आपके लिए छोटा है, तो परिजियों और रफाईम के क्षेत्र में जंगल में जाकर अपने लिए भूमि साफ करें।"<sup>16</sup> यूसुफ के वंशजों ने कहा, "पहाड़ी देश हमारे लिए पर्याप्त नहीं है, और सभी कनानी जो मैदान में रहते हैं, उनके पास लोहे के रथ हैं—चाहे वे बेथ शान और उसकी बस्तियों में हों या पिंडेल की घाटी में।"

<sup>17</sup> लेकिन यहोशू ने यूसुफ के गोत्रों से कहा—इफ्रैम और मनश्शे—"आप बहुत लोग और बहुत शक्तिशाली हैं। आपके पास केवल एक हिस्सा नहीं होगा।"<sup>18</sup> जंगल का पहाड़ी देश भी आपका होगा। इसे साफ करें, और

इसकी सबसे दूर की सीमाएँ आपकी होंगी। यद्यपि कनानियों के पास लोहे के रथ हैं और वे शक्तिशाली हैं, आप उन्हें बाहर निकाल सकते हैं।"

**18** इसाएलियों की सारी सभा शीलों में इकट्ठी हुई और वहाँ भिलापवाले तम्बू को खड़ा किया। अब भूमि उनके नियंत्रण में थी,<sup>2</sup> परन्तु इसाएल की सात गोत्र अभी भी अपनी मीरास प्राप्त नहीं कर पाई थीं।

<sup>3</sup> तब यहोशू ने इसाएलियों से कहा, "तुम कब तक प्रतीक्षा करोगे, इससे पहले कि तुम उस भूमि को अधिकार में तेना शुरू करो जो तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है?"<sup>4</sup> प्रत्येक गोत्र से तीन पुरुष नियुक्त करा। मैं उन्हें भूमि का सर्वेक्षण करने और उसकी एक विवरणिका लिखने के लिए भेजूंगा, प्रत्येक मीरास के अनुसार, और फिर मेरे पास लौट आओ।<sup>5</sup> तुम भूमि को सात भागों में विभाजित करोगा। यहूदा दक्षिण में अपने क्षेत्र में रहेगा, और यूसुफ का धराना उत्तर में अपने क्षेत्र में रहेगा।<sup>6</sup> जब तुम भूमि को सात भागों का विवरण लिख चुके हो, तो उसे यहाँ मेरे पास लाओ, और मैं तुम्हारे लिए हमारे परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति में चिट्ठियाँ डालूँगा।<sup>7</sup> परन्तु लेवी लोग तुम्हारे बीच कोई भाग नहीं पाएंगे, क्योंकि यहोवा की याजकीय सेवा ही उनकी मीरास है। और गाद, रुबेन, और मनश्शे के आधे गोत्र ने पहले ही यरदन के पूर्व में अपनी मीरास प्राप्त कर ली है, जो यहोवा के सेवक मूसा ने उन्हें दी थी।"

<sup>8</sup> जब पुरुष भूमि का नक्शा बनाने के लिए निकले, तो यहोशू ने उन्हें निर्देश दिया, "जाओ और भूमि का सर्वेक्षण करो और उसका विवरण लिखो। फिर मेरे पास लौट आओ, और मैं तुम्हारे लिए यहाँ शीलों में यहोवा की उपस्थिति में चिट्ठियाँ डालूँगा।"<sup>9</sup> इसलिए पुरुष गए, भूमि में यात्रा की, और उसे नगरों के अनुसार सात भागों में एक पुस्तक में विवरण लिखा। फिर वे शीलों के शिविर में यहोशू के पास लौट आए।<sup>10</sup> यहोशू ने शीलों में यहोवा की उपस्थिति में उनके लिए चिट्ठियाँ डाली, और वहाँ उसने इसाएलियों को उनके गोत्रीय विभाजनों के अनुसार भूमि वितरित की।

<sup>11</sup> बिन्यामीन के गोत्र के लिए चिट्ठी निकली, उनके कुलों के अनुसार। उनका निर्धारित क्षेत्र यहूदा और यूसुफ के गोत्रों के बीच था:<sup>12</sup> उत्तर दिशा में उनकी सीमा यरदन से शुरू होती है, यरीहो की उत्तरी ढलान पर जाती है, पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में जाती है, और बेथ अवेन के जंगल में समाप्त होती है।<sup>13</sup> वहाँ से यह लूज (जो कि

## यहोशू

बेथेल है) को पार करती है, और निचले बेथ होरोन के दक्षिण की पहाड़ी पर अतरोत अदार तक जाती है।<sup>14</sup> बेथ होरोन के दक्षिण की पहाड़ी के सामने से, सीमा पश्चिम की ओर मुड़कर दक्षिण की ओर जाती है और यहदा के तोगों के नगर किर्यत बाअल (जो कि किर्यत यारीम है) के दक्षिणी ढालान पर जाती है। यह पश्चिमी सीमा थी।<sup>15</sup> दक्षिणी सीमा किर्यत यारीम के बाहरी इलाके से शुरू होती है और नेफेतोह के जल के सोते तक पश्चिम की ओर जाती है।<sup>16</sup> यह बेन हित्रोम की घाटी के सामने की पहाड़ी के पैर तक जाती है, रेफाईम की घाटी के उत्तर में। यह हित्रोम की घाटी में यबूसी नगर के दक्षिणी ढालान के साथ नीचे जाती है और एन रोगेल तक जाती है।<sup>17</sup> यह फिर उत्तर की ओर मुड़ती है, एन शेमेश तक जाती है, गेलीलोत तक जाती है (जो अटुमिम की चढ़ाई के सामने है), और रूबेन के पुत्र बोहन के पथर तक जाती है।<sup>18</sup> यह बेथ अराबा की उत्तरी ढालान से होकर अराबा में नीचे जाती है।<sup>19</sup> सीमा बेथ होगाल की उत्तरी ढालान तक जाती है और यरदन के मुहाने पर, नमक समुद्र की उत्तरी खाड़ी में समाप्त होती है। यह दक्षिणी सीमा थी।<sup>20</sup> यरदन पूर्वी सीमा बनाता था। ये बिन्यामीन के गोत्र की मीरास की सीमाएँ थीं, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>21</sup> बिन्यामीन के गोत्र के नगर, उनके कुलों के अनुसार, थे: यरीहो, बेथ होगाल, एमेक केज़ीज़,<sup>22</sup> बेथ अराबा, ज़ेरैम, बेथेल,<sup>23</sup> अव्विम, परा, ओफ्रा,<sup>24</sup> कफर अम्मोनी, ओफ्पी, और गेबा—बारह नगर और उनके गाँव।<sup>25</sup> गिबोन, रामाह, बेपेरोथ,<sup>26</sup> मिज़पा, केफिरा, मोजा,<sup>27</sup> रेकेम, ईरोल, तराला,<sup>28</sup> जेला, हेलेफ, यबूसी नगर (जो कि यरूशलेम है), गिबा, और किर्यत—चौदह नगर और उनके गाँव। यह बिन्यामीन के गोत्र की मीरास थी, उनके कुलों के अनुसार।

**19** दूसरी चिठ्ठी शिमोन के गोत्र के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार। उनकी विरासत यहदा के क्षेत्र के भीतर थी।<sup>2</sup> इसमें शामिल थे: बेरशेबा (या शेबा), मोलादा,<sup>3</sup> हज़र शूआल, बाला, एज़ोम,<sup>4</sup> एलतोद, बेतुल, हौर्मा,<sup>5</sup> सिकलग, बेत मरकबोत, हज़र सुसा,<sup>6</sup> बेत लेबाओत, और शारुहेन—तेरह नगर और उनके गाँव।<sup>7</sup> ऐन, रिम्मोन, एथेर, और अशान—चार नगर और उनके गाँव—<sup>8</sup> और इन नगरों के चारों ओर के सभी गाँव, बालात बियर (नेगेव का रामाह) तक। यह शिमोन के गोत्र की विरासत थी, उनके कुलों के अनुसार।<sup>9</sup>

शिमोनियों की विरासत यहदा के हिस्से से ली गई थी, क्योंकि यहदा का हिस्सा उनकी आवश्यकता से अधिक

था। इसलिए शिमोन को उनकी विरासत यहदा के क्षेत्र के भीतर मिली।

<sup>10</sup> तीसरी चिठ्ठी जबुलून के गोत्र के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार। उनकी विरासत की सीमा सारिद तक गई।<sup>11</sup> यह पश्चिम की ओर मराला तक गई, डब्बेशेत को छुआ, और जोकनीम के पास की घाटी तक विस्तारित हुई।<sup>12</sup> यह सारिद से पूर्व की ओर सूर्योदय की दिशा में किसलाख ताबोर की सीमा तक मुड़ी, डब्बेश तक गई और याकिया तक ऊपर गई।<sup>13</sup> फिर यह गण्ड हेफेर और एथ काज़िन की ओर पूर्व की ओर बढ़ी, रिम्मोन पर निकली, और नेआह की ओर मुड़ी।<sup>14</sup> सीमा उत्तर की ओर हन्नायेन के चारों ओर धिरी और इस्ताह एल की घाटी में समाप्त हुई।<sup>15</sup> इसमें कट्टाथ, नहल्लाल, शिमरोन, इदलाह, और बेतलेहेम शामिल थे—बारह नगर और उनके गाँव।<sup>16</sup> ये नगर और उनके गाँव जबुलून की विरासत थे, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>17</sup> चौथी चिठ्ठी इस्साकार के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार।<sup>18</sup> उनका क्षेत्र शामिल था: यिग्नेल, केशुल्लोथ, शूनेम,<sup>19</sup> हफरैम, शियोन, अनाहरथ,<sup>20</sup> रब्बिथ, किशोन, एबेज़,<sup>21</sup> रमेथ, एन हन्निम, एन हद्दाह, और बेत पज़ोज़।<sup>22</sup> सीमा ताबोर, शहन्जुमाह, और बेत शेमेश तक पहुँची, और यरदन पर समाप्त हुई—सोलह नगर और उनके गाँव।<sup>23</sup> ये नगर और उनके गाँव इस्साकार की विरासत थे, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>24</sup> पाँचवीं चिठ्ठी आशेर के गोत्र के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार।<sup>25</sup> उनका क्षेत्र शामिल था: हेलकथ, हाटी, बेतन, अकशाफ,<sup>26</sup> अल्लमेतेक, अमद, और मिशाल। पश्चिम में सीमा कार्मेल और शिहोर विबनाथ को छूती थी।<sup>27</sup> यह पूर्व की ओर बेत दागोन की ओर मुड़ी, जबुलून और इस्ताह एल की घाटी तक पहुँची, और उत्तर की ओर बेत एमेके और नेल तक गई, काबुल को बाँझ और छोड़ते हुए।<sup>28</sup> यह अब्दोन, रहोब, हामोन, और काना तक गई, महान सिदोन तक।<sup>29</sup> फिर सीमा रामाह की ओर मुड़ी, टायर के किलेबंद नगर की ओर, होसा की ओर मुड़ी, और समुद्र पर समाप्त हुई। इसमें महलाब, अचज़ीब शामिल थे,<sup>30</sup> उम्मा, अफेक, और रहोब—बाईस नगर और उनके गाँव।<sup>31</sup> ये नगर और उनके गाँव आशेर के गोत्र की विरासत थे, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>32</sup> छठी चिठ्ठी नप्ताली के गोत्र के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार।<sup>33</sup> उनकी सीमा हेलेफ और ज़ानान्निम के बलूत से शुरू हुई, अदामी नेकब और जबनीएल को

# यहोशू

शामिल किया, और लक्ष्म तक विस्तारित हुई और यरदन पर समाप्त हुई।<sup>34</sup> सीमा पश्चिम की ओर अज्ञानेथ ताबोर की ओर मुड़ी और वहाँ से हक्कोक तक गई। यह दक्षिण में जबूलून को, पश्चिम में आशेर को, और पूर्व में यरदन को छूती थी।<sup>35</sup> किलोवंद नगर थे: ज़िद्दिम, ज़ेर, हम्मथ, रक्कथ, किन्नरेत्र,<sup>36</sup> अदामाह, रामाह, हज़ोर,<sup>37</sup> केदेस, एद्रेस, एन हज़ोर,<sup>38</sup> आयरन, मिंदाल एल, होरेम, बेत अनाथ, और बेत शेमेश—उत्तीर्ण नगर और उनके गाँव।<sup>39</sup> ये नगर और उनके गाँव नप्ताली के गोत्र की विरासत थे, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>40</sup> सातवीं चिठ्ठी दान के गोत्र के लिए निकली, उनके कुलों के अनुसार।<sup>41</sup> उनकी विरासत का क्षेत्र शामिल था: सोराह, एश्टाओल, इर शेमेश,<sup>42</sup> शालिब्न, ऐयालोन, इतलाह,<sup>43</sup> एलोन, तिम्हाह, एकोन,<sup>44</sup> एलतोकेह, गिब्बेथोन, बालाथ,<sup>45</sup> यहूद, बेने बेरक, गथ रिम्मोन,<sup>46</sup> मे यार्कोन, और रक्कोन, जो याफा के सामने का क्षेत्र है।<sup>47</sup> लैकिन दानियों का क्षेत्र उनसे छिन गया, इसलिए वे ऊपर गए और लेशेम पर आक्रमण किया, उसे तलवार से लिया, और उसे बसाया। उन्होंने उसमें बसकर उसका नाम अपने पूर्वज दान के नाम पर रखा।<sup>48</sup> ये नगर और उनके गाँव दान के गोत्र की विरासत थे, उनके कुलों के अनुसार।

<sup>49</sup> जब उन्होंने भूमि को उसके आवंटित हिस्सों में विभाजित कर लिया, तो इसाएलियों ने नून के पुत्र यहोशू को उनके बीच एक विरासत दी।<sup>50</sup> जैसा कि प्रभु ने अदेश दिया था, उन्होंने उसे वह नगर दिया जो उसने मार्गिंगा था—ऐप्रैम के पहाड़ी देश में तिम्हाथ सेरह। उसने नगर को बनाया और वहाँ बस गया।<sup>51</sup> ये वे विरासतें हैं जो एलीआज़र याजक, नून के पुत्र यहोशू और इसाएल के गोत्रों के प्रमुखों ने शीलों में प्रभु की उपस्थिति में मिलापवाले तंबू के द्वार पर चिठ्ठी डालकर बाँटी। इस प्रकार उन्होंने भूमि का विभाजन समाप्त किया।

**20** तब यहोवा ने यहोशू से कहा,<sup>2</sup> “इसाएलियों से कहो कि शरण के नगर ठहराएं, जैसा मैंने तुर्हं मूसा के माध्यम से निर्देशित किया था,<sup>3</sup> ताकि जो कोई अनजाने में और बिना पूर्व विचार के किसी व्यक्ति की हत्या कर दे, वह वहाँ भाग सके और रक्त का बदला लेने वाले से सुरक्षा पा सके।

<sup>4</sup> जब कोई इन नगरों में से किसी एक में भागता है, तो उसे नगर के फाटक के प्रवेश द्वार पर खड़ा होना चाहिए और उस नगर के प्राचीनों के सामने अपनी बात प्रस्तुत

करनी चाहिए। उन्हें नगर में प्रवेश दिया जाएगा और उनके बीच रहने के लिए स्थान दिया जाएगा।<sup>5</sup> यदि रक्त का बदला लेने वाला उनका पीछा करता है, तो प्राचीन उन्हें सौंप नहीं सकते, क्योंकि उन्होंने अपने पङ्गोत्ती की हत्या अनजाने में और बिना पूर्व द्वेष के की थी।<sup>6</sup> उन्हें उस नगर में तब तक रहना चाहिए जब तक कि वे सभा के सामने मुकदमे में खड़े न हो जाएं और उस समय सेवा कर रहे महायाजक की मृत्यु न हो जाए। तब वे अपने घर लौट सकते हैं, उस नगर में जहाँ से वे भागे थे।”<sup>7</sup>

<sup>7</sup> इसलिए उन्होंने गलील में नप्ताली के पहाड़ी प्रदेश में केदेश को, ऐप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में शेकेम को, और यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में किर्यत अर्बा (यानी हेब्रोन) को अलग किया।<sup>8</sup> और यरीहो के पूर्व में यरदन के पार उन्होंने ठहराया: रेगिस्तान में पठार पर रूबेन के गोत्र से बेज़ेर, गिलाद में गाद के गोत्र से रामोत, और बाशान में मनश्शे के गोत्र से गोलान।

<sup>9</sup> ये सभी इसाएलियों और उनके बीच निवास करने वाले किसी भी विदेशी के लिए नियुक्त नगर थे, ताकि जो कोई अनजाने में किसी अन्य की हत्या कर दे, वह वहाँ भाग सके और सभा के सामने मुकदमे में खड़े होने से पहले रक्त का बदला लेने वाले के हाथों मर न जाए।

**21** लेवी के कुलों के प्रधान एलीआज़र याजक, नून के पुत्र यहोशू और इसाएलियों के अन्य गोत्रों के प्रधानों के पास आए।<sup>2</sup> और कनान के शीलों में उनसे कहा, “प्रभु ने मूसा के माध्यम से आज्ञा दी थी कि हमें रहने के लिए नगर दिए जाएं, और हमारे पशुओं के लिए चरागाह भूमि भी दी जाए।”<sup>3</sup> इसलिए इसाएलियों ने अपने विरासत से लेवियों को प्रभु की आज्ञा के अनुसार निम्नलिखित नगर और चरागाह भूमि दी।

<sup>4</sup> कोहातियों के लिए, कुल के अनुसार, चिठ्ठी निकली। याजक हारून के वशज लेवियों को यहूदा, शिमोन, और बिन्यामीन के गोत्रों से तेरह नगर दिए गए।<sup>5</sup> कोहाती कुलों के बाकी लोगों को इफ्राइम, दान, और मनश्शे के आधे गोत्र के कुलों से दस नगर दिए गए।<sup>6</sup> गेरशोन के वंशजों को इसाकार, आशेर, नप्ताली, और बाशान में मनश्शे के आधे गोत्र से तेरह नगर दिए गए।<sup>7</sup> मरारी के वंशजों को उनके कुलों के अनुसार रूबेन, गाद, और जबूलून के गोत्रों से बारह नगर दिए गए।<sup>8</sup> इस प्रकार इसाएलियों ने लेवियों को ये नगर और उनकी चरागाह भूमि दी, जैसा कि प्रभु ने मूसा के माध्यम से आज्ञा दी थी।

# यहोशू

९ यहूदा और शिमोन के गोत्रों से, उन्होंने निप्पलिखित नगर दिए, जो नाम से निर्दिष्ट थे,<sup>१०</sup> हारून के वंशजों को, जो लेवियों के कोहाती कुलों से थे, क्योंकि उनकी पहली चिठ्ठी थीः<sup>११</sup> उन्होंने उन्हें किरीयत अर्बा (जो हेब्रोन है) और उसके चारों ओर की चरागाह भूमि यहूदा के पहाड़ी देश में दी। (अर्बा अनाक का पूर्वज था।)<sup>१२</sup> परंतु नगर के चारों ओर के खेत और गाँव कालेब, युग्रेह के पुत्र को उनकी संपत्ति के रूप में दिए गए थे।<sup>१३</sup> इस प्रकार हारून के वंशज याजकों को हेब्रोन (जो अनाजाने में मारने वाले के लिए शरण का नगर था), लिङ्गा,<sup>१४</sup> यतीर, एश्टेमोआ,<sup>१५</sup> होलोन, देवीर,<sup>१६</sup> ऐन, युताह, और बेथ शेमेश—इन दो गोत्रों से नौ नगर दिए गए।

१७ बिन्यामीन के गोत्र से उन्होंने गिबोन, गेबा,<sup>१८</sup> अनातोत, और अल्मोन—चार नगर दिए।<sup>१९</sup> हारून के वंशज याजकों के लिए नगरों की कुल संख्या तेरह थी, उनके चरागाह भूमि के साथ।

२० लेवियों के कोहाती कुलों के बाकी लोगों को इफ्राइम के गोत्र से नगर दिए गए।<sup>२१</sup> इफ्राइम के पहाड़ी देश में उन्हें शेकेम (जो शरण का नगर था), गेजेर,<sup>२२</sup> किङ्गाइम, और बेथ होरोन—चार नगर और उनकी चरागाह भूमि दी गई।

२३ दान के गोत्र से उन्हें एल्लेकेह, गिब्बेतोन,<sup>२४</sup> अय्यालोन, और गथ रिम्मोन—चार नगर दिए गए।

२५ मनश्शे के आधे गोत्र से उन्हें तानक और गथ रिम्मोन—दो नगर दिए गए।<sup>२६</sup> इन सभी दस नगरों और उनकी चरागाह भूमि को कोहाती कुलों के बाकी लोगों को दिया गया।

२७ गेरशोनी लेवियों को मिला: मनश्शे के आधे गोत्र से, बाशान में गोलान (जो शरण का नगर था), और बे एश्टराह—दो नगर;<sup>२८</sup> इस्साकार के गोत्र से: किशोन, दावेरेथ,<sup>२९</sup> यर्मूथ, और एन गन्निम—चार नगर;<sup>३०</sup> आशेर के गोत्र से: मिशाल, अब्दोन,<sup>३१</sup> हेल्काथ, और रहोब—चार नगर;<sup>३२</sup> नप्ताली के गोत्र से: गलील में केदेश (जो शरण का नगर था), हम्मोत दोर, और कार्तान—तीन नगर।<sup>३३</sup> गेरशोनी कुलों के लिए नगरों की कुल संख्या तेरह थी, उनकी चरागाह भूमि के साथ।

३४ मरारी लेवियों को मिला: जबूलून के गोत्र से: योकेनेआम, कार्ताह,<sup>३५</sup> दिम्माह, और नहल्लाल—चार नगर;<sup>३६</sup> रूबेन के गोत्र से: बेजर, यहज़,<sup>३७</sup> केदेमोत, और मेफात—चार नगर;<sup>३८</sup> गाद के गोत्र से: गिलाद में

रामोत (जो शरण का नगर था), महनैम,<sup>३९</sup> हेशबोन, और याजेर—कुल चार नगर।<sup>४०</sup> मरारी कुलों के लिए, लेवियों के बाकी लोगों के लिए, नगरों की कुल संख्या बारह थी।

४१ कुल मिलाकर लेवियों को इस्साएल के गोत्रों में चालीस नगर और उनकी चरागाह भूमि दी गई।<sup>४२</sup> इनमें से प्रत्येक नगर के चारों ओर चरागाह भूमि थी; यह सभी के लिए सत्य था।

४३ इस प्रकार प्रभु ने इस्साएल को वह सारी भूमि दी, जिसकी उसने उनके पूर्वजों को शापथ दी थी, और उन्होंने उसे प्राप्त किया और वहाँ बस गए।<sup>४४</sup> प्रभु ने उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया, जैसा कि उसने उनके पूर्वजों को शापथ दी थी। उनके किसी भी शावु ने उनका सामना नहीं किया; प्रभु ने उनके सभी शत्रुओं को उनके हाथ में दे दिया।<sup>४५</sup> प्रभु की इस्साएल के लिए की गई कोई भी अच्छी प्रतिज्ञा असफल नहीं हुई; उनमें से हर एक पूरी हुई।

**२२** तब यहोशू ने रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र को बुलाया।<sup>२</sup> और उनसे कहा, “तुमने वह सब किया जो यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा दी, और तुमने मेरी हर आज्ञा का पालन किया।<sup>३</sup> अब तक तुमने अपने इस्साएली भाइयों को नहीं छोड़ा है, बल्कि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन किया है।<sup>४</sup> अब जब यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे इस्साएली भाइयों को विश्राम दिया है, जैसा उसने वादा किया था, तो अपने धरों को लौट जाओ, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के उस पार तुम्हें दिए थे।<sup>५</sup> परन्तु यहोवा के दास मूसा ने जो आज्ञा और व्यवस्था तुम्हें दी थी, उसका पालन करने में सावधान रहोः अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसकी सब राहों पर चरो, उसकी आज्ञाओं का पालन करो, उससे चिपके रहो, और अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से उसकी सेवा करो।”<sup>६</sup> तब यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें विदा किया, और वे अपने धरों को चले गए।

<sup>७</sup> (मनश्शे के आधे गोत्र की मूसा ने बाशान में भूमि दी थी, और दूसरे आधे को यहोशू ने यरदन के पश्चिम में उनके इस्साएली भाइयों के बीच भूमि दी थी।) जब यहोशू ने उन्हें धर भेजा, तो उसने उन्हें आशीर्वाद दिया,<sup>८</sup> कहते हुए, “अपने धरों को बड़ी सम्पत्ति के साथ लौटो—बड़ी संख्या में पशुधन, चाँदी, सोना, पीतल और लोहा, और बहुत सारे वस्त्र। अपने इस्साएली भाइयों के साथ अपने शत्रुओं से लूट का बंटवारा करो।”

## यहोशू

<sup>9</sup> इसलिए रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र ने कनान में शीलों में इसाएलियों को छोड़ दिया और अपने देश गिलाद को लौट गए, जो उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा के माध्यम से प्राप्त किया था। <sup>10</sup> जब वे कनान में यरदन के क्षेत्र में पहुँचे, तो रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र ने यरदन के पास एक बड़ा वेदी बनाया।

<sup>11</sup> जब इसाएलियों ने सुना कि उन्होंने कनान की सीमा पर गिलीलीत में यरदन के पास, इसाएली पक्ष में वेदी बनाई है, <sup>12</sup> तो इसाएल की पूरी सभा शीलों में इकट्ठा हुई ताकि उनके विरुद्ध युद्ध करें।

<sup>13</sup> इसलिए इसाएलियों ने एलीआज़र के पुत्र पीनहास पुरोहित को गिलाद देश में—रूबेन, गाद, और मनश्शे के आधे गोत्र के पास भेजा। <sup>14</sup> उसके साथ उन्होंने दस प्रमुख पुरुष भेजे, इसाएल के प्रत्येक गोत्र से एक, जो इसाएली कुलों के परिवार विभाग का मुखिया था।

<sup>15</sup> जब वे गिलाद पहुँचे—रूबेन, गाद, और मनश्शे के आधे गोत्र के पास—तो उन्होंने उनसे कहा: <sup>16</sup> “यहोवा की पूरी सभा कहरी है: तुमने इसाएल के परमेश्वर के साथ विश्वासघात कैसे किया? तुमने यहोवा से कैसे मुँह मोड़ा और अब उसके विरुद्ध विद्रोह हैं अपने लिए एक वेदी बनाई? <sup>17</sup> क्या पाप का पाप हमारे लिए पर्याप्त नहीं था? आज तक हम उस पाप से शुद्ध नहीं हुए हैं, यद्यपि यहोवा की सभा पर एक महामारी आई थी! <sup>18</sup> और अब तुम यहोवा से मुँह मोड़ रहे हो! यदि तुम आज यहोवा के विरुद्ध विद्रोह करते हों, तो कल वह इसाएल की पूरी सभा पर क्रोधित होगा। <sup>19</sup> यदि तुम्हारे पास जो भूमि है वह अशुद्ध है, तो यहोवा की भूमि पर आओ, जहाँ यहोवा का तंबू खड़ा है, और हमारे साथ भूमि साझा करो।

परन्तु यहोवा के विरुद्ध या हमारे विरुद्ध विद्रोह न करो, अपने लिए यहोवा हमारे परमेश्वर की वेदी के अलावा कोई अच्युत वेदी बनाकर। <sup>20</sup> जब ज़ेरह का पुत्र अचान समर्पित वस्तुओं के संबंध में विश्वासघाती था, तो क्या इसाएल की पूरी सभा पर क्रोध नहीं आया? वह अकेला नहीं था जिसने अपने पाप के लिए मरा!”

<sup>21</sup> तब रूबेन, गाद, और मनश्शे के आधे गोत्र ने इसाएली कुलों के मुखियाओं को उत्तर दिया: <sup>22</sup> “शक्तिशाली, परमेश्वर, यहोवा! शक्तिशाली, परमेश्वर, यहोवा! वह जानता है! और इसाएल को जानने दो: यदि यह विद्रोह य यहोवा की अवज्ञा में हुआ है, तो आज हमें न बछरो। <sup>23</sup> यदि हमने यहोवा से मुँह मोड़ने के लिए या होमबलि, अन्नबलि, या बलिदान चढ़ाने के लिए अपनी

वेदी बनाई है, तो यहोवा स्वयं हमें जवाबदेह ठहराए। <sup>24</sup> नहीं! हमने यह इसलिए किया कि भविष्य में तुम्हारी संताने हमारी संतानों से कह सकती हैं, ‘तुम्हारा यहोवा, इसाएल के परमेश्वर से क्या लेना-देना है?’ <sup>25</sup> यहोवा ने हमारे और तुम्हारे बीच यरदन को एक सीमा बना दिया है—तुम रूबेनियों और गादियों के लिए! तुम्हारा यहोवा में कोई हिस्सा नहीं है।” इसलिए तुम्हारी संताने हमारी संतानों को यहोवा का भय मानने से रोक सकती हैं। <sup>26</sup> इसीलिए हमने कहा, ‘आओ, हम एक वेदी बनाएँ।’ न कि होमबलि या बलिदान के लिए, <sup>27</sup> बल्कि हमारे और तुम्हारे बीच और हमारे बाद की पीढ़ियों के लिए एक गवाह के रूप में, कि हम अपने होमबलि, बलिदान, और मेलबलि के साथ यहोवा की आराधना उसके पवित्रस्थान में करेंगे। तब भविष्य में तुम्हारी संताने हमारी संतानों से नहीं कह सकेंगी, ‘तुम्हारा यहोवा में कोई हिस्सा नहीं है।’ <sup>28</sup> और हमने कहा: यदि वे कभी हमसे या हमारी संतानों से यह कहें, तो हम उत्तर देंगे, ‘देखो यहोवा की वेदी की प्रतीकृति जो हमारे पूर्वजों ने बनाई थी।’ यह होमबलि और बलिदान के लिए नहीं है, बल्कि हमारे और तुम्हारे बीच एक गवाह के रूप में है।” <sup>29</sup> हमारे लिए यहोवा के विरुद्ध विद्रोह करना और आज उससे मुँह मोड़ना दूर हो, होमबलि, अन्नबलि, और बलिदान के लिए एक वेदी बनाकर—यहोवा हमारे परमेश्वर की वेदी के अलावा जो उसके तंबू के सामने खड़ी है।”

<sup>30</sup> जब पीनहास पुरोहित और नेताओं ने सुना कि रूबेन, गाद, और मनश्शे ने क्या कहा, तो वे प्रसन्न हुए। <sup>31</sup> और एलीआज़र के पुत्र पीनहास पुरोहित ने उनसे कहा, “अब हम जानते हैं कि यहोवा हमारे साथ है, क्योंकि तुमने इस मामले में उसके प्रति विश्वासघात नहीं किया। तुमने इसाएलियों को यहोवा के क्रोध से बचा लिया है।”

<sup>32</sup> तब एलीआज़र के पुत्र पीनहास पुरोहित और नेता कनान में अपने बैठक से रूबेनियों और गादियों के साथ गिलाद में लौटे और इसाएलियों को रिपोर्ट दी। <sup>33</sup> इसाएली रिपोर्ट सुनकर प्रसन्न हुए और परमेश्वर की स्तुति की। उन्होंने उनके विरुद्ध युद्ध करने और रूबेनियों और गादियों के निवास स्थान को नष्ट करने की बात नहीं की।

<sup>34</sup> और रूबेनियों और गादियों ने वेदी को यह नाम दिया: हमारे बीच एक गवाह—कि यहोवा परमेश्वर है।

**23** बहुत समय बाद, जब यहोवा ने इसाएल को उनके चारों ओर के सभी शत्रुओं से विश्राम दिया, और यहोशू बूढ़ा और वृद्ध हो गया था, <sup>2</sup> तब यहोशू ने

## यहोशू

इस्माइल के सभी लोगों को बुलाया—उनके पुरनियों, नेताओं, न्यायियों, और अधिकारियों को—और उनसे कहा: “अब मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ।”<sup>3</sup> तुमने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे लिए इन सभी जातियों के साथ क्या किया है। क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे लिए युद्ध किया है।<sup>4</sup> याद रखो कि मैंने तुम्हारे गोत्रों को विरासत के रूप में उन सभी जातियों को बॉट दिया है जो बची हैं, साथ ही वे जो मैंने जीती हैं—यर्दन और पश्चिम में भूमध्य सागर के बीच।<sup>5</sup> तुम्हारे परमेश्वर यहोवा स्वयं उन्हें तुम्हारे लिए बाहर करेगा। वह उन्हें तुम्हारे सामने से निकाल देगा, और तुम उनकी भूमि पर अधिकार करोगे, जैसा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमसे वादा किया है।

“बहुत बलवान रहो। मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसका पालन करने में सावधान रहो, बिना दाएँ या बाएँ मुड़े।”<sup>7</sup> उन जातियों के साथ संबंध न रखो जो तुम्हारे बीच बची हैं; उनके देवताओं के नाम न लो और न ही उनके द्वारा शापथ लो। तुम्हें उन्हें सेवा नहीं करनी चाहिए क्या या उनके सामने झुकना नहीं चाहिए।<sup>8</sup> इसके बजाय, अपने परमेश्वर यहोवा से चिपके रहो, जैसा कि तुम अब तक करते आए हो।<sup>9</sup> यहोवा ने तुम्हारे सामने से महान और शक्तिशाली जातियों को बाहर किया है, और आज तक कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सका है।<sup>10</sup> तुम में से एक हजार को भगाता है, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिए लड़ता है, जैसा कि उसने वादा किया था।<sup>11</sup> इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करने में बहुत सावधान रहो।

12 परन्तु यदि तुम मुड़कर इन जातियों के बचे हुए लोगों के साथ संबंध बनाते हो, और यदि तुम उनके साथ विवाह करते हो और उनके साथ संबंध रखते हो,<sup>13</sup> तो तुम निश्चित हो सकते हो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अब तुम्हारे सामने से इन जातियों को बाहर नहीं करेगा। इसके बजाय, वे तुम्हारे लिए फंदे और जाल बन जाएँगी, तुम्हारी पीठ पर कोडे और तुम्हारी आँखों में कैंट, जब तक तुम इस अच्छी भूमि से नष्ट नहीं हो जाते जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है।

14 अब मैं पृथ्वी के सभी मार्ग पर जाने वाला हूँ। तुम अपने पूर्व दिल और आत्मा से जानते हो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने जो भी अच्छे वादे तुम्हें दिए हैं, उनमें से एक भी असफल नहीं हुआ है। हर वादा पूरा हुआ है; एक भी असफल नहीं हुआ।<sup>15</sup> परन्तु जैसे ही तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिए गए सभी अच्छे वादे पूरे किए हैं, वैसे ही यहोवा उन सभी बुरी बातों को तुम पर

लाएगा जिनके बारे में उसने तुम्हें चेतावनी दी है, जब तक कि वह तुम्हें इस अच्छी भूमि से नष्ट नहीं कर देता जो उसने तुम्हें दी है।<sup>16</sup> यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा का उल्लंघन करते हो, जिसे उसने तुम्हें आज्ञा दी है, और जाकर अन्य देवताओं की सेवा करते हो और उनके सामने झुकते हो, तो यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा, और तुम इस अच्छी भूमि से जल्दी नष्ट हो जाओगे जो उसने तुम्हें दी है।

24 तब यहोशू ने इस्माइल की सभी गोत्रों को शेकेम में इकट्ठा किया। उसने इस्माइल के पुरनियों, नेताओं, न्यायियों और अधिकारियों को बुलाया, और वे परमेश्वर के सामने प्रस्तुत हुए।<sup>2</sup> यहोशू ने सभी लोगों से कहा, “इस्माइल के परमेश्वर यहोवा यह कहता है: ‘बहुत समय पहले तुम्हारे पूर्वज, जिनमें अब्राहम और नाहोर के पिता तेरह भी शामिल थे, फरात नन्दी के पार रहते थे और अन्य देवताओं की पूजा करते थे।’ परन्तु मैंने तुम्हारे पिता अब्राहम को फरात के पार से लिया और उसे कनान देश में ले आया और उसे बहुत संतानें दी। मैंने उसे इस्हाक दिया,<sup>4</sup> और इस्हाक को मैंने याकूब और एसाव दिया। मैंने एसाव को सेर्वर का पहाड़ी देश दिया, परन्तु याकूब और उसके पुत्र मिस्र में चले गए।

5 तब मैंने मूसा और हारून को भेजा, और मैंने मिस्र को उन पर किए गए कार्यों से पीड़ित किया, और उसके बाद मैंने तुम्हें बाहर निकाला।<sup>6</sup> जब मैंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर निकाला, तो तुम समुद्र के किनारे आए, और मिस्रियों ने रथों और घुड़सवारों के साथ तुम्हारा पीछा किया और लाल समुद्र तक पहुँच गए।<sup>7</sup> परन्तु उन्होंने यहोवा को पुकारा, और उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच अंधकार डाल दिया; उसने समुद्र को उनके ऊपर लाकर ढक दिया। तुमने अपनी आँखों से देखा कि मैंने मिस्रियों के साथ क्या किया। फिर तुम लंबे समय तक जंगल में रहे।

8 मैं तुम्हें एमोरियों के देश में लाया जो यरदन के पूर्व में रहते थे। उन्होंने तुम्हारे विरुद्ध युद्ध किया, परन्तु मैंने उन्हें तुम्हारे हाथों में दे दिया। जब मैंने उन्हें तुम्हारे सामने नष्ट किया, तो तुमने उनके देश पर अधिकार कर लिया।<sup>9</sup> तब मीओब के राजा, सिप्पोर के पुत्र बालाक ने इस्माइल के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी की। उसने बोर के पुत्र बिलाम को तुम्हें शाप देने के लिए बुलाया,<sup>10</sup> परन्तु मैंने बिलाम की नहीं सुनी। इसलिए उसने तुम्हें बार-बार आशीर्वाद दिया, और मैंने तुम्हें उसके हाथ से छुड़ाया।

## यहोशू

<sup>11</sup> तब तुम यरदन को पार करके यरीहो आए। यरीहो के लोगों ने तुम्हरे विरुद्ध युद्ध किया, जैसे एमोरी, परिज्जी, कनानी, हिती, गिराशी, हिल्वी, और यहूसी ने भी किया, परन्तु मैंने उहें तुम्हारे हाथों में दे दिया। <sup>12</sup> मैंने तुम्हरे ओंग भौंरा भेजा, जिसने उहें तुम्हरे सामने से भगा दिया—साथ ही दो एमोरी राजा भी। तुमने यह अपने तलवार और धनुष से नहीं किया। <sup>13</sup> इसलिए मैंने उहें वह देश दिया जिसके लिए तुमने मेहनत नहीं की, और वे नार दिए जिन्हें तुमने नहीं बनाया—और तुम उनमें रहते हो और उन दाख की बारियों और जैतून के बांगों से खाते हो जिन्हें तुमने नहीं लगाया।'

<sup>14</sup> “अब, इसलिए, यहोवा का भय मानो और उसे पूरी निष्ठा के साथ सेवा करो। उन देवताओं को फेंक दो जिनकी तुम्हरे पूर्वज फरात के पार और मिस्र में पूजा करते थे, और यहोवा की सेवा करो। <sup>15</sup> परन्तु यदि यहोवा की सेवा करना तुम्हें अप्रिय लगता है, तो आज ही अपने लिए चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे—क्या वे देवता जिनकी तुम्हरे पूर्वज फरात के पार सेवा करते थे, या एमोरियों के देवता जिनके देश में तुम रह रहे हो। परन्तु मैं और मेरा धराना यहोवा की सेवा करेंगे।”

<sup>16</sup> तब लोगों ने उत्तर दिया, “यह हमसे दूर हो कि हम यहोवा को छोड़कर अन्य देवताओं की सेवा करें।” <sup>17</sup> यह हमारे परमेश्वर यहोवा ही थे जिन्होंने हमें और हमारे माता-पिता को मिस्र से, उस दासता के देश से बाहर निकाला, और हमारे सामने वे महान चमक्कार किए। उहोंने हमारी पूरी यात्रा में और उन सभी राष्ट्रों के बीच हमारी रक्षा की जिनसे होकर हम गुजरे। <sup>18</sup> और यहोवा ने हमारे सामने से सभी राष्ट्रों को, जिनमें एमोरी भी शामिल थे, जो इस देश में रहते थे, भगा दिया। हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है।”

<sup>19</sup> यहोशू ने लोगों से कहा, “तुम यहोवा की सेवा नहीं कर सकते। वह एक पवित्र परमेश्वर है; वह एक ईर्षालु परमेश्वर है। वह तुम्हारी विद्रोह और तुम्हरे पापों को क्षमा नहीं करेगा।” <sup>20</sup> यदि तुम यहोवा को छोड़कर विदेशी देवताओं की सेवा करोगे, तो वह मुँहकर तुम पर विपत्ति लाएगा और तुम्हारा अंत कर देगा, उसके बाद जब वह तुम्हरे साथ भला कर चुका होगा।”

<sup>21</sup> परन्तु लोगों ने यहोशू से कहा, “नहीं! हम यहोवा की सेवा करेंगे।” <sup>22</sup> तब यहोशू ने कहा, “तुम अपने विरुद्ध गवाह हो कि तुमने यहोवा की सेवा करने के लिए चुना है।” “हाँ, हम गवाह हैं,” उहोंने उत्तर दिया। <sup>23</sup> “अब फिर,” यहोशू ने कहा, “उन विदेशी देवताओं को फेंक

दो जो तुम्हरे बीच हैं और अपने हृदयों को यहोवा, इसाएल के परमेश्वर की ओर समर्पित करो।” <sup>24</sup> और लोगों ने यहोशू से कहा, “हम अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।”

<sup>25</sup> उस दिन यहोशू ने लोगों के लिए एक वाचा बांधी, और वहां शेकेम में उसने उनके लिए विधियों और नियमों की पुष्टि की। <sup>26</sup> और यहोशू ने इन बातों को परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा। फिर उसने एक बड़ा पत्तर लिया और उसे यहोवा के पवित्र स्थान के पास, बलूत के पेढ़ के नीचे स्थापित किया। <sup>27</sup> “देखो!” उसने सभी लोगों से कहा। “यह पत्तर हमारे विरुद्ध गवाह होगा। इसने उन सभी शब्दों को सुना है जो यहोवा ने हमसे कहे हैं। यदि तुम अपने परमेश्वर के प्रति असत्य हो, तो यह तुम्हरे विरुद्ध गवाह होगा।”

<sup>28</sup> तब यहोशू ने लोगों को उनके अपने-अपने उत्तराधिकार के लिए विदा किया।

<sup>29</sup> इन बातों के बाद, यहोशू नून का पुत्र, यहोवा का सेवक, एक सौ दस वर्ष की आयु में मरा। <sup>30</sup> और उहोंने उसे उसके उत्तराधिकार के देश में, एप्रैम के पहाड़ी देश में, गाश पर्वत के उत्तर में, तिम्मत सेरह में दफनाया।

<sup>31</sup> इसाएल ने यहोशू के जीवनकाल में और उन पुनर्नियों के जीवनकाल में, जिन्होंने यहोशू के बाद जीवित रहे और जिन्होंने इसाएल के लिए यहोवा द्वारा किए गए सभी कार्यों का अनुभव किया, यहोवा की सेवा की।

<sup>32</sup> यूसुफ की हड्डियाँ, जिन्हें इसाएलियों ने मिस्र से लाया था, शेकेम में उस भूमि के भूखंड में दफनाइ गई जिसे याकूब ने शेकेम के पिता हमोर के पुत्रों से सौ चार्दी के टुकड़ों में खरीदा था। यह यूसुफ के वंशजों का उत्तराधिकार बन गया।

<sup>33</sup> और हारून का पुत्र एलीआज़र मरा और उसे गिबेआ में दफनाया गया, जो उसके पुत्र पिन्हास को एप्रैम के पहाड़ी देश में दिया गया था।

## न्यायियों

**१** यहोशू की मृत्यु के बाद, इसाएलियों ने यहोवा से पूछा, "हमारे लिए कौन पहले कनानियों के विरुद्ध चढ़ाई करेगा और उनसे युद्ध करेगा?"<sup>२</sup> यहोवा ने उत्तर दिया, "यहूदा चढ़ाई करेगा। मैंने उस भूमि को उनके हाथ में दे दिया है।"<sup>३</sup> तब यहूदा के पुरुषों ने अपने साथी इसाएलियों सिमोनियों से कहा, "हमारे क्षेत्र में हमारे साथ चला और कनानियों के विरुद्ध युद्ध में हमारी सहायता करो। हम बदले में तुम्हारे क्षेत्र में तुम्हारे साथ चलेंगे।" इसलिए सिमोनियों ने उनके साथ चलने का निर्णय लिया।

<sup>४</sup> जब यहूदा ने आक्रमण किया, तो यहोवा ने कनानियों और परिजियों को उनके हाथ में दे दिया, और उन्होंने बेजेक में दस हजार पुरुषों को मार डाला।<sup>५</sup> वहीं उन्होंने अदोनी-बेजेक को पाया और उसके विरुद्ध युद्ध किया, और कनानियों और परिजियों को भगाया।<sup>६</sup> अदोनी-बेजेक भाग गया, लेकिन उन्होंने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया और उसके अंगूठे और बड़े पैर के अंगूठे काट दिए।<sup>७</sup> तब अदोनी-बेजेक ने कहा, "सत्तर राजा जिनके अंगूठे और बड़े पैर के अंगूठे काट दिए गए थे, मेरे मेज़ के नीचे से टुकड़े उठाते थे। अब परमेश्वर ने मुझे प्रतिफल दिया है।"<sup>८</sup> वे उसे यरूशलेम ले गए, और वह वहीं मर गया।

<sup>९</sup> यहूदा के पुरुषों ने यरूशलेम पर भी आक्रमण किया और उसे जीत लिया। उन्होंने नगर को तलवार से मार डाला और उसे आग लगा दी।<sup>१०</sup> इसके बाद, यहूदा के पुरुष पहाड़ी देश, नेगेव और पश्चिमी पहाड़ियों में रहने वाले कनानियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए नीचे गए।<sup>११</sup> वे हेब्रोन में रहने वाले कनानियों के विरुद्ध चले (जिसे पहले किर्यात अर्बा कहा जाता था) और शोशाई, अहिमान, और तल्पी को पराजित किया।

<sup>१२</sup> वहां से वे देवीर में रहने वाले लोगों के विरुद्ध बढ़े (जिसे पहले किर्यात सेफर कहा जाता था)।<sup>१३</sup> और कालेब ने कहा, "जो कोई किर्यात सेफर पर आक्रमण करेगा और उसे जीत लेगा, उसे मैं अपनी बेटी अवसा का विवाह दूंगा।"<sup>१४</sup> केनाज़ का पुत्र ओनीएल, कालेब का छोटा भाई, उसे जीत लिया; इसलिए कालेब ने अपनी बेटी अवसा का विवाह उससे कर दिया।<sup>१५</sup> जब वह ओनीएल के पास आई, तो उसने उसे अपने पिता से एक खेत मांगने के लिए प्रेरित किया। जब वह अपने गधे से उतरी, तो कालेब ने उससे पूछा, "तुम क्या वाहनी हो?"

<sup>१६</sup> उसने उत्तर दिया, "मुझे एक आशीर्वाद दो। चूंकि आपने मुझे नेगेव में भूमि दी है, मुझे जल के सोते भी

दो।"<sup>१७</sup> इसलिए कालेब ने उसे ऊपरी और निचले सोते दिए।

<sup>१८</sup> मूसा के ससुर के वंशज, केनी, यहूदा के लोगों के साथ खजूर के नगर से यहूदा के मरुभूमि में गए, जो नेगेव में अराद के पास है। वे वहां के लोगों के बीच बस गए।

<sup>१९</sup> तब यहूदा के पुरुष अपने साथी इसाएलियों सिमोनियों के साथ गए और ज़ोफाई में रहने वाले कनानियों पर आक्रमण किया, और उन्होंने नगर को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इसलिए उसका नाम होर्मा रखा गया।<sup>२०</sup> यहूदा ने गाजा, अश्कलोन और एक्रोन को भी उनके क्षेत्र साहित जीत लिया।<sup>२१</sup> यहोवा यहूदा के पुरुषों के साथ था। उन्होंने पहाड़ी देश पर अधिकार कर लिया, लेकिन वे मैदान के लोगों को निकालने में असमर्थ थे, क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे।<sup>२२</sup> जैसा कि मूसा ने वादा किया था, हेब्रोन कालेब को दिया गया, जिसने अनाक के तीन पुत्रों को निकाल दिया।

<sup>२३</sup> हालांकि, बिन्यामीनियों ने यरूशलेम में रहने वाले यबूसीयों को नहीं निकाला। इसलिए आज तक यबूसी वहां बिन्यामीनियों के साथ रहते हैं।

<sup>२४</sup> यूसुफ के गोत्र भी बेतेल के विरुद्ध चढ़ाई करने गए, और यहोवा उनके साथ था।<sup>२५</sup> जब उन्होंने बेतेल (जिसे पहले लूज़ कहा जाता था) की जासूसी के लिए पुरुष भेजे,<sup>२६</sup> तो जासूसों ने एक आदमी को नगर से बाहर आते देखा और उससे कहा, "हमें नगर में कैसे प्रवेश करना है, यह दिखाओ, और हम सुनिश्चित करेंगे कि तुम्हारा भला हो।"<sup>२७</sup> तो उसने उन्हें दिखाया, और उन्होंने नगर को तलवार से मार डाला लेकिन उस आदमी और उसके पूरे परिवार को बर्खा दिया।<sup>२८</sup> फिर वह हितियों के देश में गया, जहां उसने एक नगर बसाया और उसका नाम लूज़ रखा, जो आज तक उसका नाम है।

<sup>२९</sup> लेकिन मनश्शे ने बेथ शान, तानाक, दोर, इबतीआम, या मेंगिदो और उनके आस-पास की बस्तियों के लोगों को नहीं निकाला, क्योंकि कनानी उस भूमि में रहने के लिए दृढ़ थे।<sup>३०</sup> जब इसाएल शक्तिशाली हो गया, तो उन्होंने कनानियों को जबरन श्रम के लिए मजबूर किया लेकिन उन्हें पूरी तरह से नहीं निकाला।

<sup>३१</sup> न ही ऐप्रेम ने गेझेर में रहने वाले कनानियों को निकाला, इसलिए वे उनके बीच में रहते रहे।<sup>३२</sup> जब बुलून ने कित्रोन या नहालोल में रहने वाले कनानियों को नहीं

## न्यायियों

निकाला, इसलिए वे उनके बीच में रहते रहे, तैकिन जबुलून ने उन्हें जबरन श्रम के लिए मजाबूर किया।<sup>31</sup> न ही आशेर ने अक्को, सिदोन, अहलाब, अक्सिब, हेल्बा, अफेक या रहोब में रहने वालों को निकाला।<sup>32</sup> आशेरियों ने उस भूमि के कनानी निवासियों के बीच में निवास किया व्योंगी उन्होंने उन्हें नहीं निकाला।<sup>33</sup> नफताली ने बेथ शेमेश या बेथ अनात में रहने वालों को नहीं निकाला, बल्कि वहां के कनानियों के बीच में निवास किया। और बेथ शेमेश और बेथ अनात के लोग उनके लिए जबरन श्रम करने लगे।

<sup>34</sup> एमोरियों ने दानी लोगों को पहाड़ी देश तक सीमित कर दिया, उन्हें मैदान में उत्तरने की अनुमति नहीं दी।<sup>35</sup> और एमोरी हेसर पर्वत, अथ्यालोन, और शाल्विम में ढृता से डटे रहे। लैकिन जब यूसुफ के गोत्रों की शक्ति बढ़ी, तो उन्होंने उन्हें जबरन श्रम के लिए मजाबूर किया।<sup>36</sup> एमोरियों की सीमा बिच्छू दर्द से लेकर सेला और उससे आगे तक थी।

**2** यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम तक गया और कहा, “मैं तुम्हें मिस से निकाल लाया और तुम्हारे पूर्वजों से वादा की गई भूमि में तुम्हें लाया। मैंने कहा, ‘मैं कभी भी तुम्हारे साथ अपने वाचा को नहीं तोड़ूँगा,’<sup>2</sup> और तुम इस देश के लोगों के साथ वाचा नहीं करोगे, बल्कि उनके वेदियों को गिरा दोगे।” फिर भी तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी। तुमने ऐसा क्यों किया? और मैंने भी कहा है, “मैं उन्हें तुम्हारे सामने से नहीं भगाऊँगा; वे तुम्हारे लिए जाल बन जाएँगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फ़दा बन जाएँगे।”<sup>1</sup>

<sup>4</sup> जब यहोवा के दूत ने इन बातों को सब इस्माएलियों से कहा, तो लोग जोर से रोने लगे,<sup>5</sup> और उन्होंने उस श्यान का नाम बोकीम रखा। वहाँ उन्होंने यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाए।

<sup>6</sup> जब यहोशू ने इस्माएलियों को विदा किया, तो वे अपनी-अपनी विरासत के अनुसार भूमि पर अधिकार करने गए।<sup>7</sup> लोगों ने यहोवा की सेवा की यहोशू के जीवनकाल में और उन बुजुर्गों के जीवनकाल में जिन्होंने यहोशू के बाद जीवित रहे और उन सभी महान कार्यों को देखा जो यहोवा ने इस्माएल के लिए किए थे।<sup>8</sup> नून का पुत्र यहोशू जो यहोवा का सेवक था, एक सौ दस वर्ष की आयु में मरा।<sup>9</sup> उसे उसकी विरासत की भूमि में, इक्फैम के पहाड़ी देश में, गाश पर्वत के उत्तर में, तिम्रत हरेस में दफनाया गया।

<sup>10</sup> उस पूरी पीढ़ी के अपने पूर्वजों के पास जाने के बाद, एक और पीढ़ी उठी जो न तो यहोवा को जानती थी और न ही उसने इस्माएल के लिए क्या किया था।<sup>11</sup> तब इस्माएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया और बालों की सेवा की।<sup>12</sup> उन्होंने यहोवा को, अपने पूर्वजों के परमेश्वर को, जिसने उन्हें मिस से निकाला था, छोड़ दिया। उन्होंने अपने चारों ओर के लोगों के विभिन्न देवताओं का अनुसरण किया और उनकी पूजा की। उन्होंने यहोवा के क्रोध को भड़काया,<sup>13</sup> व्योंगी उन्होंने उसे छोड़ दिया और बाल और अशोरेथ की सेवा की।

<sup>14</sup> इस्माएल के प्रति अपने क्रोध में यहोवा ने उन्हें लुटेरों के हाथों में देखा यिन्होंने उन्हें लुटा। उसने उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं के हाथों में बेच दिया, जिनका वे अब सामना नहीं कर सकते थे।<sup>15</sup> जब भी इस्माएल लड़ाई के लिए बाहर जाते, यहोवा का हाथ उनके खिलाफ होता था उन्हें हराने के लिए, जैसा कि उसने उनसे शापथ ली थी। वे बड़ी संकट में थे।

<sup>16</sup> तब यहोवा ने न्यायियों को उठाया, जिन्होंने उन्हें इन लुटेरों के हाथों से बचाया।<sup>17</sup> फिर भी वे अपने न्यायियों की नहीं सुनते थे और अन्य देवताओं के पीछे चलकर उनकी पूजा करते थे। वे जट्टी ही अपने पूर्वजों के मार्ग से हट गए, जिन्होंने यहोवा की आज्ञाओं का पालन किया था।<sup>18</sup> जब भी यहोवा उनके लिए एक न्यायी को उठाता था, वह न्यायी के साथ होता था और उनके शत्रुओं के हाथों से उन्हें बचाता था जब तक न्यायी जीवित रहता था; व्योंगी की यहोवा उन पर दया करता था उनके उन लोगों के कारण जो उन्हें दबाते और सताते थे।<sup>19</sup> लैकिन जब न्यायी मर जाता, लोग अपने पूर्वजों से भी अधिक बष्ट मार्ग पर लौट जाते, अन्य देवताओं का अनुसरण करते और उनकी सेवा और पूजा करते। वे अपनी बुरी प्रथाओं और हठीले मार्गों की छोड़ने से इनकार करते थे।

<sup>20</sup> इसलिए यहोवा इस्माएल से बहुत क्रोधित हुआ और कहा, “क्योंकि इस राष्ट्र ने उस वाचा का उल्लंघन किया है जो मैंने उनके पूर्वजों के लिए ठार्हराई थी और मेरी नहीं सुनी,<sup>21</sup> मैं अब उनके सामने से उन राष्ट्रों को नहीं भगाऊँगा जिन्हें यहोशू ने मरते समय छोड़ा था।<sup>22</sup> मैं उनका उपयोग इस्माएल की परीक्षा के लिए करूँगा और देखूँगा कि क्या वे यहोवा के मार्ग का पालन करेंगे और उसमें चलेंगे जैसे उनके पूर्वजों ने किया था।”

<sup>23</sup> यहोवा ने उन राष्ट्रों को रहने दिया; उसने उन्हें एक बार में नहीं भगाया, उन्हें यहोशू के हाथों में नहीं दिया।

## न्यायियों

**३** ये वे जातियाँ हैं जिन्हें यहोवा ने छोड़ा ताकि उन सब इसाएलियों की परीक्षा ले सके जिन्होंने कनान में युद्ध का अनुभव नहीं किया था।<sup>२</sup> (उसने ऐसा केवल उन इसाएलियों के वंशजों को युद्ध सिखाने के लिए किया था जिन्हें पहले युद्ध का अनुभव नहीं था):<sup>३</sup> पलिशितयों के पाँच शासक, सभी कनानी, सिदोनी, और हिल्वी जो लेबनानी पाहड़ों में बाल हर्मोन पर्वत से लेकर लेबो हमायथ तक रहते थे।<sup>४</sup> वे इसाएलियों की परीक्षा लेने के लिए छोड़े गए थे ताकि यह देखा जा सके कि वे यहोवा की आज्ञाओं का पालन करेंगे या नहीं, जो उसने उनके पूर्वजों को मूसा के माध्यम से दी थी।<sup>५</sup> इसाएली कनानी, हिती, एपोरी, परिजी, हिल्वी और यहूसी लोगों के बीच में रहते थे।<sup>६</sup> उन्होंने उनकी बेटियों से विवाह किया और अपनी बेटियों को उनके पुत्रों को दिया, और उनके देवताओं की सेवा की।

<sup>७</sup> इसाएलियों ने यहोवा की विष्णु में बुरा किया; उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को भुला दिया और बाल और अशेरों की सेवा की।<sup>८</sup> यहोवा का क्रोध इसाएल पर भड़क उठा, इसलिए उसने उन्हें अराम नाहरैम के राजा कूशान-रिशाथैम के हाथों बेच दिया, जिनके अधीन वे आठ वर्षों तक रहे।<sup>९</sup> परन्तु जब इसाएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, तो उसने उनके लिए एक उद्धारकर्ता उठाया—ओलीएल, केनज का पुत्र, कालेब का छोटा भाई—जिसने उन्हें बचाया।<sup>१०</sup> यहोवा की आत्मा उस पर आई, जिससे वह इसाएल का नायी बना और युद्ध करने गया। यहोवा ने अराम के राजा कूशान-रिशाथैम को ओलीएल के हाथों में दे दिया, जिसने उसे पराजित किया।<sup>११</sup> इसलिए देश में चालीस वर्षों तक शांति रही, जब तक केनज का पुत्र ओलीएल मर नहीं गया।

<sup>१२</sup> फिर से इसाएलियों ने यहोवा की विष्णु में बुरा किया, और क्योंकि उन्होंने यह बुरा किया, यहोवा ने मोआब के राजा एलोन को इसाएल पर अधिकार दिया।<sup>१३</sup> अम्मोनी और अमालेकी को अपने साथ मिलाकर, एलोन ने इसाएल पर आक्रमण किया, और उन्होंने खजूरों के नगर पर कब्जा कर लिया।<sup>१४</sup> इसाएलियों को मोआब के राजा एलोन के अधीन अठारह वर्षों तक रहना पड़ा।<sup>१५</sup> फिर से इसाएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, और उसने उनके लिए एक उद्धारकर्ता दिया—एहूद, एक बाएं हाथ का व्यक्ति, गेरा का पुत्र, बिन्यामिनी। इसाएलियों ने उसे मोआब के राजा एलोन के पास भेट के साथ भेजा।<sup>१६</sup> अब एहूद ने एक दोधारी तलवार बनाई, जो लगभग एक हाथ लंबी थी, जिसे उसने अपने कपड़ों के नीचे अपनी दाहिनी जांघ पर बाँध लिया।<sup>१७</sup> उसने मोआब के राजा एलोन को भेट प्रस्तुत की, जो

बहुत मोटा व्यक्ति था।<sup>१८</sup> एहूद ने भेट प्रस्तुत करने के बाद, उन लोगों को भेज दिया जिन्होंने इसे उठाया था।<sup>१९</sup> लैकिन गिलगाल के पास पथर की मूर्तियों तक पहुँचे वह स्वयं एलोन के पास गापस गया और कहा, “महाराज, मेरे पास आपके लिए एक गुप्त संदेश है।” राजा ने अपने सेवकों से कहा, “हमें अकेला छोड़ दो।” और वे सब चले गए।<sup>२०</sup> तब एहूद उसके पास पहुँचा जब वह अपने महल के ऊपरी कमरे में अकेला बैठा था। “मेरे पास आपके लिए परमेश्वर का संदेश है,” एहूद ने कहा। जब राजा अपनी सीट से उठा,<sup>२१</sup> एहूद ने अपने बाएं हाथ से तलवार खींची और उसे राजा के पेट में घोप दिया।<sup>२२</sup> वहाँ तक कि हैंडल भी लोट के बाद अंदर चला गया, और उसकी आंतें बाहर निकल गईं। एहूद ने तलवार बाहर नहीं खींची, और वर्चनी ने उसे ढक लिया।<sup>२३</sup> फिर एहूद बरामदे से बाहर गया; उसने ऊपरी कमरे के दरवाजे बंद कर दिए और उन्हें ताला लगा दिया।

<sup>२४</sup> उसके जाने के बाद, सेवक आए और ऊपरी कमरे के दरवाजे बंद पाए। उन्होंने कहा, “वह महल के अंदरूनी कमरे में अपने को हल्का कर रहा होगा।”<sup>२५</sup> वे इतनी देर तक इंतजार करते रहे कि उन्हें शर्मिंदगी होने लगी, लैकिन जब उसने दरवाजे नहीं खोले तो उन्होंने चाढ़ी से ताला खोला। वहाँ उन्होंने अपने स्वामी को फर्ज पर गिरा हुआ, मृत पाया।<sup>२६</sup> जब वे इंतजार कर रहे थे, एहूद भाग निकला। वह पथर की मूर्तियों के पास से गुजरा और सेर्ईरा की ओर भाग गया।<sup>२७</sup> जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने एप्रैम के पहाड़ी देश में तुरही बजाई, और इसाएली उसके साथ पहाड़ियों से नीचे आए, और वह उनका नेतृत्व कर रहा था।<sup>२८</sup> “मेरे पीछे चलो,” उसने आदेश दिया, “क्योंकि यहोवा ने मोआब को, तुम्हारे श्रुतों को, तुहारे हाथों में दे दिया है।” इसलिए उन्होंने उसके पीछे चलकर यरदन के घाटों पर कब्जा कर लिया जो मोआब की ओर जाते थे; उन्होंने किसी को भी पार करने की अनुमति नहीं दी।<sup>२९</sup> उस समय उन्होंने लगभग दस हजार मोआबियों को मारा, सभी बलवान और शक्तिशाली; एक भी नहीं बचा।<sup>३०</sup> उस दिन मोआब इसाएल के अधीन हो गया, और देश में अस्ती वर्षों तक शांति रही।

<sup>३१</sup> एहूद के बाद अनात का पुत्र शमगर आया, जिसने एक बेल हाकने की छड़ी से छह सौ पलिशितयों को मारा। उसने भी इसाएल को बचाया।

**४** फिर इसाएलियों ने यहूद की मृत्यु के बाद यहोवा की विष्णु में बुरा किया।<sup>३२</sup> इसलिए यहोवा ने उन्हें कनान के राजा याबीन के हाथों में बेच दिया, जो हाजार में राज्य

## न्यायियों

करता था। उसकी सेना का सेनापति सिसेरा था, जो हरोषेत हगोयिम में रहता था।<sup>3</sup> क्योंकि उसके पास लोहे के बने नौ सौ रथ थे और उसने बीस वर्षों तक इसाएलियों पर निर्दयता से अत्याचार किया, उन्होंने यहोवा से सहायता के लिए पुकारा।

<sup>4</sup> उस समय देबोरा, जो लपिदोत की पत्नी और एक भविष्यद्वाका थी, इसाएल का नेतृत्व कर रही थी।<sup>5</sup> वह एप्रेम के पहाड़ी देश में रामाह और बेटेल के बीच देबोरा के खजूरों के पेढ़ के नीचे व्याय करती थी, और इसाएली उसके पास अपने विवादों का निर्णय कराने आते थे।<sup>6</sup> उसने नपाली के केदेश से अबीनोअम के पुत्र बाराक को बुलाया और उससे कहा, “क्या यहोवा, इसाएल के परमेश्वर ने तुम्हें यह आज्ञा नहीं दी, जाओ, नपाली और जब्लून के दस हजार पुरुषों को लेकर ताबोर पर्वत पर चढ़ जाओ? ”<sup>7</sup> मैं याबीन की सेना के सेनापति सिसेरा को उसके रथों और सैनिकों के साथ किशोन नदी की ओर ले आऊंगा और उसे तुम्हारे हाथों में द्वागा!”<sup>8</sup> बाराक ने उससे कहा, “यदि तुम मेरे साथ जाओगी, तो मैं जाऊंगा; पर यदि तुम मेरे साथ नहीं जाओगी, तो मैं नहीं जाऊंगा!”<sup>9</sup> “निश्चित रूप से मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी,” देबोरा ने कहा। “लेकिन जिस मार्ग पर तुम जा रहे हो, उसके कारण समान तुम्हारा नहीं होगा, क्योंकि यहोवा सिसेरा को एक स्त्री के हाथों में सौंप देगा।” इसलिए देबोरा बाराक के साथ केदेश गई।<sup>10</sup> वहाँ बाराक ने जब्लून और नपाली को बुलाया, और दस हजार पुरुष उसके नेतृत्व में ऊपर गए। देबोरा भी उसके साथ गई।

<sup>11</sup> अब हेब्र के नीने ने अन्य केनियों को छोड़ दिया था, जो मूसा को साले होबाब के वंशज थे, और उसने केदेश के पास जाअननीम के महान वृक्ष के पास अपना तंबू लगाया।<sup>12</sup> जब उन्होंने सिसेरा को बताया कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पर्वत पर चढ़ गया है,<sup>13</sup> सिसेरा ने हरोषेत हगोयिम से किशोन नदी की ओर अपने सभी पुरुषों और लोहे के बने नौ सौ रथों को बुलाया।<sup>14</sup> तब देबोरा ने बाराक से कहा, “जाओ! यह वह दिन है जब यहोवा ने सिसेरा को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है। क्या यहोवा तुम्हारे आगे नहीं गया?” इसलिए बाराक ताबोर पर्वत से नीचे उतरा और उसके पीछे दस हजार पुरुष थे।<sup>15</sup> बाराक की प्राप्ति पर, यहोवा ने सिसेरा और उसके सभी रथों और सेना को तलवार से पराजित कर दिया, और सिसेरा अपने रथ से उतरकर पैदल भाग गया।<sup>16</sup> बाराक ने रथों और सेना का पीछा हरोषेत हगोयिम तक किया, और सिसेरा की सभी सेना तलवार से गिर गई; एक भी पुरुष नहीं बचा।

<sup>17</sup> इस बीच, सिसेरा पैदल भागकर हेब्र के नीनी की पत्नी याएल के तंबू में गया, क्योंकि हाजोर के राजा याबीन और हेब्र के परिवार के बीच एक संघि थी।<sup>18</sup> याएल सिसेरा से मिलने बाहर आई और उससे कहा, “आओ, मेरे स्वामी, अंदर आओ। डरो मत।” इसलिए वह उसके तंबू में गया, और उसने उसे एक कंबल से ढक दिया।<sup>19</sup> “मैं यासा हूँ” उसने कहा। “कृपया मुझे कुछ पानी दो।” उसने धूध की एक धैली खोली, उसे पीने को दिया, और उसे ढक दिया।<sup>20</sup> “तंबू के द्वार पर खड़ी रहो,” उसने उससे कहा। “यदि कोई आता है और तुमसे पूछता है, ‘क्या यहाँ कोई है?’ तो कहो ‘नहीं।’”<sup>21</sup> लेकिन याएल, हेब्र की पत्नी, एक तंबू की खूंटी और एक हथौड़ा उठाकर चुपचाप उसके पास गई जबकि वह गहरी नींद में थका हुआ लेटा था। उसने खूंटी को उसके सिर के आर-पार जमीन में ठोक दिया, और वह मर गया।

<sup>22</sup> तभी बाराक सिसेरा का पीछा करते हुए वहाँ आया, और याएल उससे मिलने बाहर आई। “आओ,” उसने कहा, “मैं तुम्हें वह आदमी दिखाऊंगी जिसे तुम हूँड़ रहे हो।” इसलिए वह उसके साथ अंदर गया, और वहाँ सिसेरा लेटा था, उसके सिर में तंबू की खूंटी ठुक्री हुई—मृत।<sup>23</sup> उस दिन परमेश्वर ने कनान के राजा याबीन को इसाएलियों के सामने द्युका दिया।<sup>24</sup> और इसाएलियों का हाथ कनान के राजा याबीन पर और अधिक दबाव डालता गया जब तक कि उन्होंने उसे नष्ट नहीं कर दिया।

**5** उस दिन देबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गया: <sup>2</sup> “जब इसाएल में प्रधान आगे बढ़ते हैं, जब लोग स्वेच्छा से अपने को अपरित करते हैं—प्रभु की स्तुति करो।”<sup>3</sup> “हे राजाओं, सुनो! हे शासकों, ध्यान दो! मैं प्रभु के लिए गाऊंगा, मैं इसाएल के परमेश्वर, प्रभु के लिए संती बनाऊंगा।”<sup>4</sup> “जब तू प्रभु, सेर्हीर से निकला, जब तू दृष्टेम की भूमि से चला, तो पृथ्वी कांप उठी, आकाश बरसा, बादल पानी बरसाने लगे।”<sup>5</sup> सिनाई के प्रभु के सामने पर्वत कांप उठे, इसाएल के परमेश्वर के सामने।<sup>6</sup> “उमात के पुत्र शामगर के दिनों में, याएल के दिनों में, राजमार्ग छोड़ दिए गए; यात्री घुमावदार रास्तों पर चले।”<sup>7</sup> इसाएल में गाँव के लोग लड़ने को तैयार नहीं थे; वे रुके रहे जब तक मैं, देबोरा, उठी, जब तक मैं उठी, इसाएल में एक माँ।<sup>8</sup> जब युद्ध नगर के द्वारों पर आया, तब परमेश्वर ने नए नेताओं को चुना, पर इसाएल में चालीस हजार के बीच न तो एक ढाल थी और न एक भाला।<sup>9</sup> मेरा हृदय इसाएल के सेनापतियों के साथ है, लोगों के बीच स्वेच्छा से सेवा करने वालों के साथ। प्रभु की स्तुति करो!

## न्यायियों

<sup>10</sup> “तुम जो सफेद गधों पर सवारी करते हो, अपने कंबलों पर बैठते हो, और जो सड़क पर चलते हो, ध्यान दो <sup>11</sup> जल के स्थानों पर गायकों की आवाज़ पर। वे प्रभु की विजयों का वर्णन करते हैं, इसाएल में उसके गाँव वालों की विजयों का।” तब प्रभु के लोग नगर के द्वारों पर गए। <sup>12</sup> ‘जागो, जागो, देखोरा! जागो, जागो, गीत गाओ! उठो, बाराक! अपने बंदियों को बंदी बनाओ, अबीनोअम के पुत्र।’

<sup>13</sup> “श्रेष्ठजनों का अवशेष नीचे आया; प्रभु के लोग मेरे पास आए शक्तिशाली के विरुद्ध।” <sup>14</sup> कुछ इफ्रैम से आए, जिनकी जड़ें अमालेक में थीं; बिन्यामीन तुम्हारे पीछे चलने वाले लोगों के साथ था। मकीर से सेनापति नीचे आए, जबूलून से वे जो सेनापति की छड़ी धारण करते थे। <sup>15</sup> इस्साकार के प्रधान देखोरा के साथ थे; इस्साकार बाराक के साथ था, उसके आदेश के तहत घाटी में भेजा गया। रूबेन के जिलों में बहुत मन की खोज थी। <sup>16</sup> तुम भेड़शालाओं में क्यों रुके झुड़ों के लिए सीटी सुनने के लिए? रूबेन के जिलों में बहुत मन की खोज थी। <sup>17</sup> गिलाद यरदन के पार रहा। और दान—वह जहाजों के पास क्यों रुका रहा? आशेर तट पर रहा और अपनी खाड़ियों में ठहरा। <sup>18</sup> जबूलून के लोगों ने अपनी जान जोखिम में डाली; नप्ताली ने भी छतों वाले खेतों पर ऐसा ही किया।

<sup>19</sup> “राजा आए, उन्होंने लड़ाई की, कनान के राजाओं ने लड़ाई की। तानक में, मरीदों के जल के पास, उन्होंने चांदी की कोई लूट नहीं ली।” <sup>20</sup> आकाश से तारे लड़े, अपनी कक्षाओं से उन्होंने सिसरो के विरुद्ध लड़ाई की। <sup>21</sup> किशोन नदी ने उन्हें बहा दिया, पुरानी नदी, किशोन नदी। आगे बढ़ो, मेरी आत्मा; मजबूत बनो! <sup>22</sup> तब घोड़ों के खुँहों की गङ्गाढाहट हुई— दौड़ते हुए, दौड़ते हुए उसके शक्तिशाली घोड़े गए। <sup>23</sup> मेरोज को शापित करो; प्रभु के द्रूत ने कहा। इसके लोगों को कड़ाई से शापित करो, क्योंकि वे प्रभु की सहायता के लिए नहीं आए, शक्तिशाली के विरुद्ध प्रभु की सहायता के लिए।”

<sup>24</sup> “सभी स्थियों में सबसे धन्य हो याएल, केनी हाबेर की पत्ती, तंबू में रहने वाली स्थियों में सबसे धन्य।” <sup>25</sup> उसने पानी मांगा, और उसने उसे दृथ दिया; राजाओं के योग्य कटोरे में उसने उसे दही दिया। <sup>26</sup> उसका हाथ तंबू की खूंटी के लिए बढ़ा, उसका दाहिना हाथ काम करने वाले के हथोड़े के लिए। उसने सिसरो को मारा, उसका सिर कुचल दिया, उसने उसके मस्तक को चूर-चूर कर दिया। <sup>27</sup> उसके पैरों पर

वह गिरा, वह गिरा; वह वहीं पड़ा। उसके पैरों पर वह गिरा, वह गिरा; जहां वह गिरा, वहीं वह गिरा—मृत।

<sup>28</sup> \*खिड़की से सिसरो की माँ ने झांका; जाली के पीछे उसने पुकारा, ‘उसका रथ आने में इतना समय क्यों लगा रहा है? उसके रथों की खड़खड़ाहट में देरी क्यों हो रही है?’ <sup>29</sup> उसकी सबसे बुद्धिमान स्त्रियाँ उसे उत्तर देती हैं; वास्तव में, वह स्वयं से कहती रहती है, <sup>30</sup> क्या वे लूट नहीं पा रहे हैं और बांट रहे हैं? प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक या दो स्त्रियाँ, सिसरो के लिए लूट के रूप में रंगीन वस्त, रंगीन कढाई वाले वस्त— यह सब लूट के रूप में?

<sup>31</sup> “तो हे प्रभु, तेरे सभी शत्रु नष्ट हो जाएं! परंतु जो तुम्हारे प्रेम करते हैं वे सूर्य के समान हों जब वह अपनी शक्ति में उदय होता है।” तब देश में चालीस वर्षों तक शांति रही।

**6** इसाएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और सात वर्षों तक उसने उन्हें मिद्यानियों के हाथों में सौंप दिया। <sup>2</sup> क्योंकि मिद्यान की शक्ति इतनी अत्याचारी थी, इसाएलियों ने अपने लिए पहाड़ों की दरारों, गुफाओं और किलों में आश्रय तैयार किए। <sup>3</sup> जब भी इसाएली फसल बोते, मिद्यानी, अमालेकी और अन्य पूर्वी लोग देश पर आक्रमण कर देते। <sup>4</sup> वे भूमि पर डेरा डालते और गाजा तक की फसलें नष्ट कर देते और इसाएल के लिए एक भी जीवित वस्तु नहीं छोड़ते, न भेड़, न गाय, न गधे। <sup>5</sup> वे अपने मरविशयों और तंबुओं के साथ टिड़ियों के झुंड की तरह आते थे। उन्हें या उनके ऊंटों को गिनना असंभव था; वे भूमि पर आक्रमण करते थे ताकि उसे नष्ट कर सकें। <sup>6</sup> मिद्यान ने इसाएलियों को इतना गरीब कर दिया कि उन्होंने यहोवा से सहायता के लिए पुकार की।

<sup>7</sup> जब इसाएलियों ने मिद्यान के कारण यहोवा से पुकार की, <sup>8</sup> तो उसने उनके पास एक नबी भेजा, जिसने कहा, “यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, यह कहता है: मैंने तुम्हें मिस्र से, दासता की भूमि से ऊपर उठाया।” <sup>9</sup> मैंने तुम्हें मिसियों के हाथ से बचाया। और मैंने तुम्हें तुम्हारे सभी उत्तीर्णों के हाथ से छुड़ाया। मैंने उन्हें तुम्हारे सामने से बाहर निकाला और तुम्हें उनकी भूमि दी। <sup>10</sup> मैंने तुम्हें कहा, ‘मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; उन एमोरियों के देवताओं की उपासना मत करो, जिनकी भूमि में तुम रहते हो।’ लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी।”

<sup>11</sup> यहोवा का द्रूत ओफ्रा में एक बलुत के पेड़ के नीचे आया, जो अबीएज़री योआश का था, जहां उसका पुत्र गिदेन मिद्यानियों से बचाने के लिए अंगूर के रस के कुंड

## न्यायियों

में गेहूँ पीट रहा था।<sup>12</sup> जब यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ, तो उसने कहा, “यहोवा तुम्हरे साथ है वे वीर योद्धा।”<sup>13</sup> “मुझे क्षमा करें, मेरे प्रभु!” गिदोन ने उत्तर दिया, “लेकिन यदि यहोवा हमारे साथ है, तो यह सब हमारे साथ क्यों हुआ? हमारे पूर्वजों ने जो आश्वर्यकर्म हमें बताए थे, वे कहाँ हैं? क्या यहोवा हमें मिस से नहीं लाया? लेकिन अब यहोवा ने हमें छोड़ दिया है और हमें मिद्यान के हाथ में दे दिया है।”<sup>14</sup> यहोवा ने उसकी ओर देखा और कहा, “तुम्हारी जो शक्ति है उसमें जाओ और इसाएल को मिद्यान के हाथ से बचाओ। क्या मैं तुम्हें नहीं भेज रहा हूँ?”<sup>15</sup> “मुझे क्षमा करें, मेरे प्रभु!” गिदोन ने उत्तर दिया, “लेकिन मैं इसाएल को कैसे बचा सकता हूँ? मेरा कुल मनश्चे में सबसे कमज़ोर है, और मैं अपने परिवार में सबसे छोटा हूँ।”<sup>16</sup> यहोवा ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, और तुम मिद्यानियों को मार गिराओगे, एक भी जीवित नहीं बचेगा।”<sup>17</sup> गिदोन ने उत्तर दिया, “यदि अब मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो मुझे एक संकेत दें कि वास्तव में आप ही मुझसे बात कर रहे हैं।”<sup>18</sup> कृपया तब तक न जाएँ जब तक मैं लौटकर अपनी भेंट लाकर आपके सामने न रख दूँ।” और यहोवा ने कहा, “मैं तुम्हारे लौटने तक प्रतीक्षा करूँगा।”<sup>19</sup> गिदोन अंदर गया, एक युवा बकरी तैयार की, और एक एपा आटे से बिना खमीर की रोटी बनाई। मांस को एक टोकी मैं और उसके शोरबा को एक बर्तन में रखकर, वह उर्वे बाहर लाया और बलूत के नीचे अर्पित किया।<sup>20</sup> परमेश्वर के दूत ने उससे कहा, “मांस और बिना खमीर की रोटी को इस चट्ठान पर रखो, और शोरबा उँडेल दो।” और गिदोन ने ऐसा ही किया।<sup>21</sup> तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ में जो छड़ी थी, उसके सिरे से मांस और बिना खमीर की रोटी को छुआ। चट्ठान से आग निकली, जिसने मांस और रोटी को भस्त कर दिया। और यहोवा का दूत अदृश्य हो गया।<sup>22</sup> जब गिदोन ने समझा कि यह यहोवा का दूत था, तो वह बोला, “हाय, प्रभु यहोवा! मैंने यहोवा के दूत को आमने-सामने देखा है।”<sup>23</sup> लेकिन यहोवा ने उससे कहा, “शांति! डरो मत। तुम मरने वाले नहीं हो।”<sup>24</sup> इसलिए गिदोन ने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और उसे यहोवा-शालोम कहा। आज तक यह अबी-एजरी ओफ्रा में छढ़ी है।

<sup>25</sup> उसी रात यहोवा ने उससे कहा, “अपने पिता के झुंड से दूसरी बैल को ले लो, जो सात वर्ष का है। अपने पिता की बाल की वेदी को गिरा दो और उसके पास की अशेरा खंभे को काट दो।”<sup>26</sup> फिर इस ऊँचाई पर अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक उचित प्रकार की वेदी बनाओ। उस अशेरा खंभे की लकड़ी का उपयोग करके

दूसरी बैल की होमबल्ति के रूप में अर्पित करो।”<sup>27</sup> तो गिदोन ने अपने दस से वेदों को लिया और जैसा यहोवा ने उसे कहा था, वैसा ही किया। लेकिन वह अपने परिवार और नगरवासियों से डरता था, इसलिए उसने यह काम रात में किया, दिन में नहीं।<sup>28</sup> सुबह जब नगर के लोग उठे, तो बाल की वेदी टूटी हुई थी, उसके पास की अशेरा खंभे की काटा हुआ था, और दूसरी बैल नई वेदी पर बलि चढ़ाई गई थी।<sup>29</sup> उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, “यह किसने किया?” जब उन्होंने ध्यान से जाँच की, तो उहें बताया गया, “योआश के पुत्र गिदोन ने यह किया है।”<sup>30</sup> नगर के लोगों ने योआश से माँग की, “अपने पुत्र को बाहर लाओ। उसे मरना चाहिए, क्योंकि उसने बाल की वेदी को तोड़ दिया है और उसके पास की अशेरा खंभे को काट दिया है।”<sup>31</sup> लेकिन योआश ने अपने चारों ओर के शत्रुतापूर्ण भीड़ से कहा, “क्या तुम बाल की ओर से वकालत करने जा रहे हो? क्या तुम उसे बचाने की कोशिश कर रहे हो? जो कोई उसके लिए लड़ेगा, उसे सुबह तक मार डाला जाएगा! यदि बाल वास्तव में एक देवता है, तो वह अपनी वेदी को तोड़ने वाले का स्वयं बचाव कर सकता है।”<sup>32</sup> इसलिए क्योंकि गिदोन ने बाल की वेदी को तोड़ दिया, उन्होंने उसे उस दिन यरब्जाल नाम दिया, यह कहते हुए, “बाल उससे लड़ाई करें।”

<sup>33</sup> अब सभी मिद्यानी, अमालेकी और अन्य पूर्वी लोग एक-जूट हुए और यरदन को पार कर प्रियेल की घाटी में डेरा डाला।<sup>34</sup> तब यहोवा की आमा गिदोन पर आई, और उसने तुरही बजाई, अबी-एजरी उसे अनुसरण करने के लिए बुलाए गए।<sup>35</sup> उसने मनश्चे के चारों ओर दूत भेजे, उहें हथियार उठाने के लिए बुलाया, और अशेर, जब्लून और नदाली में भी, ताकि वे भी उनसे मिलने के लिए ऊपर आए।<sup>36</sup> गिदोन ने परमेश्वर से कहा, “यदि आप मेरी हाथ से इसाएल को बचाएंगे, जैसा आपने वादा किया है।”<sup>37</sup> देखिए, मैं खलिहान में एक ऊन का ऊन रखूँगा। यदि कैवल ऊन पर ओस हो और सारी भूमि सूखी हो, तो मैं जान जाऊँगा कि आप मेरी हाथ से इसाएल को बचाएंगे, जैसा आपने कहा।”<sup>38</sup> और ऐसा ही हुआ। गिदोन अगले दिन सुबह जल्दी उठा; उसने ऊन को निचोड़ा और ओस को एक कटोरे में भर दिया—पानी से भरा हुआ।<sup>39</sup> तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, “मुझ पर क्रोधित न हों। मुझे एक और अनुरोध करने दें। ऊन के साथ एक और परीक्षण की अनुमति दें। इस बार ऊन को सूखा रहने दें और भूमि को ओस से ढक दें।”<sup>40</sup> उस रात परमेश्वर ने ऐसा ही किया। केवल ऊन सूखा था; सारी भूमि ओस से ढकी हुई थी।

## न्यायियों

**7** सुबह-सुबह येरुब-बाल (यानी, गिदोन) और उसके सभी लोग हारोद के सोते के पास डेरा डाले हुए थे। मिद्यान का शिविर उनके उत्तर में मरे पहाड़ी के पास की घाटी में था।<sup>2</sup> यहोवा ने गिदोन से कहा, “तेरे पास बहुत अधिक लोग हैं। मैं मिद्यान को उनके हाथों में नहीं सौंप सकता, नहीं तो इसाएल मेरे विरुद्ध घमंड करेगा, कहेगा, ‘मेरी अपनी शक्ति ने मुझे बचाया है।’”<sup>3</sup> अब सेना से घोषणा कर, “जो कोई उर दे कंपाता है, वह गिलाद पर्वत से लौट सकता है।”<sup>4</sup> इसलिए बाईस हजार लोग लौट गए, जबकि दस हजार रह गए।<sup>4</sup> परन्तु यहोवा ने गिदोन से कहा, “अभी भी बहुत अधिक लोग हैं। उन्हें यानी के पास ले जाओ, और मैं वहाँ तुम्हारे लिए उहाँे छांट दूँगा।” यदि मैं कहूँ, “यह तुम्हारे साथ जाएगा;” तो वह नहीं जाएगा।”<sup>5</sup> इसलिए गिदोन ने लोगों को पानी के पास ले गया। वहाँ यहोवा ने उसके कहा, “जो लोग कुत्ते की तरह जीभ से पानी चाटते हैं, उन्हें उन लोगों से अलग कर जो घुटानों के बल झुककर पीते हैं।”<sup>6</sup> उनमें से तीन सौ ने हाथों से पानी पीया, कुत्तों की तरह चाटते हुए। बाकी सब घुटानों के बल झुककर पीने लगे।<sup>7</sup> यहोवा ने गिदोन से कहा, “इन तीन सौ लोगों के साथ जो चाटते हैं, मैं उन्हें बचाऊँगा और मिद्यानियों को तेरे हाथ में दूँगा। बाकी सबको घर भेज दे।”<sup>8</sup> इसलिए गिदोन ने बाकी इसाएलियों को घर भेज दिया, परन्तु तीन सौ की रखा, जिन्होंने दूसरों के सामान और तुरहियाँ ले लीं। अब मिद्यान का शिविर उसके नीचे की घाटी में था।

<sup>9</sup> उस रात यहोवा ने गिदोन से कहा, “उठ, शिविर के विरुद्ध जा, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में देने जा रहा हूँ।”<sup>10</sup> यदि तू आक्रमण करने से डरता है, तो अपने सेवक पूरा के साथ शिविर में जा<sup>11</sup> और सुन कि वे क्या कह रहे हैं। इसके बाद, तू शिविर पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित होगा।” इसलिए वह और पूरा शिविर की चौकियों तक गए।<sup>12</sup> मिद्यानी, अमालेकी और अन्य सभी पूर्वी लोग घाटी में बर्से हुए थे, जैसे टिक्कियाँ धनी होती हैं। उनके ऊँटों की गिनती समुद्र के किनारों की रेत के समान नहीं की जा सकती थी।<sup>13</sup> गिदोन वहाँ पहुँचा, जब एक आदमी अपने मित्र को अपना सपना बता रहा था। “मैंने एक सपना देखा,” उसने कहा। “एक गोल जौ की रोटी मिद्यानी शिविर में लुढ़क आई। उसने तंबू को इतनी ताकत से मारा कि तंबू उलट गया और गिर गया।”<sup>14</sup> उसके मित्र ने उत्तर दिया, “यह गिदोन योआश के पुत्र, इसाएली की तलवार के अलावा कुछ नहीं हो सकता। परमेश्वर ने मिद्यानियों और पूरे शिविर को उसके हाथ में दे दिया है।”

<sup>15</sup> जब गिदोन ने सपना और उसकी व्याख्या सुनी, तो वह झुककर पूजा करने लगा। वह इसाएल के शिविर में लौट आया और पुकारकर कहा, “उठो यहोवा ने मिद्यानी शिविर को तुम्हारे हाथ में दे दिया है।”<sup>16</sup> तीन सौ लोगों को तीन टुकड़ियों में बाँटकर, उसने सबके हाथों में तुरहियाँ और खाली घड़े दिए, जिनमें मशालें थीं।<sup>17</sup> “मुझे देखो।” उसने उनसे कहा। “मेरे नेतृत्व का पालन करो। जब मैं शिविर के किनारे पहुँचूँ तो वही करो जो मैं करता हूँ।”<sup>18</sup> जब मैं और मेरे साथ के सभी लोग अपनी तुरहियाँ फूँकेंगे, तब शिविर के चारों ओर से तुम भी अपनी तुरहियाँ फूँको और चिल्लाओ, “यहोवा और गिदोन के लिए।”

<sup>19</sup> गिदोन और उसके साथ के सौ लोग मध्य पहरे की शरुआत में शिविर के किनारे पहुँचे, जब पहरेदार बदल चुके थे। उन्होंने अपनी तुरहियाँ फूँकीं और अपने हाथों में जो घड़े थे उन्हें तोड़ दिया।<sup>20</sup> तीनों टुकड़ियों ने तुरहियाँ फूँकीं और घड़े तोड़ दिए। बाहें हाथों में मशालें पकड़कर और दाएँ हाथों में फैँकेने के लिए तुरहियाँ पकड़कर, उन्होंने चिल्लाया, “यहोवा और गिदोन के लिए तलवार।”<sup>21</sup> जब प्रत्येक व्यक्ति ने शिविर के चारों ओर अपनी स्थिति बनाए रखी, तो सभी मिद्यानी भागाने लगे, चिल्लाते हुए।<sup>22</sup> जब तीन सौ तुरहियाँ बर्जी, तो यहोवा ने शिविर में सभी लोगों को एक-दूसरे पर तलवार चलाने के लिए प्रेरित किया। सेना देख शिताह से ज़ेराह की ओर, अबेल महोला की सीमा तक तबत के पास भाग गई।

<sup>23</sup> नपाली, आशेर और सरे मनश्शे के इसाएली बुलाए गए, और उन्होंने मिद्यानियों का पीछा किया।<sup>24</sup> गिदोन ने एप्रैम के पहाड़ी देश में सदेशवाहक भेजे, कहकर, “मिद्यानियों के विरुद्ध उत्तर आओ और बैथ बराह तक यरदन के जल को उनके आगे पकड़ लो।” इसलिए एप्रैम के सभी लोग बुलाए गए, और उन्होंने बैथ बराह तक यरदन के जल को पकड़ लिया।<sup>25</sup> उन्होंने मिद्यानी नेताओं औरेब को भी पकड़ लिया। उन्होंने औरेब को औरेब की चट्टान पर मारा और ज़ीब को ज़ीब के अंगूरस कुँड में मारा। उन्होंने मिद्यानियों का पीछा किया और ऐरेब और ज़ीब के सिर गिदोन के पास यरदन ले आए।

**8** अब ऐप्रैमियों ने गिदोन से पूछा, “तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? जब तुम मिद्यान से तड़ने गए थे, तब हमें क्यों नहीं बुलाया?” और उन्होंने उसे तीत्रता से चुनाती दी।<sup>2</sup> परन्तु उसने उहाँ उत्तर दिया, “तुम्हारी तुलना में मैंने क्या हासिल किया है? क्या ऐप्रैम की

## न्यायियों

बालियों का संग्रह अबीएज़र की पूरी फसल से बेहतर नहीं है? <sup>3</sup> परमेश्वर ने ओरेब और ज़ीब, मिद्यानी नेताओं को तुम्हारे हाथों में दे दिया। तुम्हारी तुलना में मैं क्या कर सका?" इस पर, उनके प्रति उनकी नाराजगी कम हो गई।

\* गिदोन और उसके तीन सौ लोग, थके हुए लैकिन अभी भी पीछा करते हुए, परदन पर आए और उसे पार किया। <sup>5</sup> उसने सुक्कोत के लोगों से कहा, "मेरे सैनिकों को कुछ रोटी दो, वे थके हुए हैं, और मैं अभी भी ज़ेबह और सलमुन्ना, मिद्यान के राजा औं का पीछा कर रहा हूँ।" <sup>6</sup> परंतु सुक्कोत के अधिकारियोंने कहा, "क्या ज़ेबह और सलमुन्ना के हाथ पहले से ही तुम्हारे कब्जे में हैं? हम तुम्हारे सैनिकों को रोटी क्यों देंगे?" <sup>7</sup> तब गिदोन ने उत्तर दिया, "इसी के लिए, जब यहोवा ज़ेबह और सलमुन्ना को मेरे हाथ में दे देगा, तब मैं तुम्हारे शरीर को मरम्भूमि के कांटों और झाड़ियों से फाड़ दूँगा।"

<sup>8</sup> वहाँ से वह पनुएल गया और वही अनुरोध किया, परंतु उन्होंने भी सुक्कोत के लोगों की तरह उत्तर दिया। <sup>9</sup> इसलिए उसने पनुएल के लोगों से कहा, "जब मैं विजय के साथ लौटूँगा, तो इस मीनार को गिरा दूँगा।"

<sup>10</sup> अब ज़ेबह और सलमुन्ना करकोर में थे, लगभग पंद्रह हजार लोगों की सेना के साथ—पूर्वी लोगों की सेनाओं में से जितने बचे थे। एक लाख बीस हजार तलवारधारी मारे गए थे। <sup>11</sup> गिदोन नोबाह और योगबाह के पूर्व के खानाबदीशों के मार्मा से ऊपर गया और असावधान सेना पर हमता किया। <sup>12</sup> मिद्यान के दो राजा, ज़ेबह और सलमुन्ना, भाग गए, लैकिन उसने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया, उनकी पूरी सेना को पराजित कर दिया।

<sup>13</sup> फिर योआश का पुत्र गिदोन हेरस के दर्द से युद्ध से लौट आया। <sup>14</sup> उसने सुक्कोत के एक युवा व्यक्ति को पकड़ा और उससे पूछताछ की, और उस युवा ने उसके लिए सुक्कोत के सतर-सात अधिकारियों के नाम लिखे, जो नगर के बुजुर्ग थे। <sup>15</sup> तब गिदोन आया और सुक्कोत के लोगों से कहा, "यहाँ ज़ेबह और सलमुन्ना हैं, जिनके बारे में तुमने मुझे ताना मारा था, ज्या वे पहले से ही तुम्हारे कब्जे में हैं?" <sup>16</sup> उसने नगर के बुजुर्गों को लिया और सुक्कोत के लोगों को मरम्भूमि के कांटों और झाड़ियों से सजा दी। <sup>17</sup> उसने पनुएल की मीनार को भी गिरा दिया और नगर के लोगों को मार डाला।

<sup>18</sup> तब उसने ज़ेबह और सलमुन्ना से पूछा, "तुमने ताबोर में किस प्रकार के लोगों को मारा था?" "तुम्हारे जैसे लोग," उन्होंने उत्तर दिया, "प्रत्येक राजकुमार के समान।" <sup>19</sup> गिदोन ने उत्तर दिया, "वे मेरे भाई थे, मेरी अपनी माँ के बेटे। जैसे ही यहोवा जीवित है, यदि तुमने उनके जीवन को बख्शा होता, तो मैं तुम्हें नहीं मारता।" <sup>20</sup> अपने सबसे बड़े पुत्र येतर से कहा, "उन्हें मार डालो।" लैकिन लड़के ने अपनी तलवार नहीं खींची, क्योंकि वह केवल एक लड़का था और डर गया था। <sup>21</sup> ज़ेबह और सलमुन्ना ने कहा, "आओ, इसे खुद करो। जैसा आदमी होता है, वैसी ही उसकी शक्ति होती है।" तो गिदोन आगे बढ़ा और उन्हें मार डाला, और उनके ऊंटों की गर्दन से आभूषण ले लिए।

<sup>22</sup> इसाएलियों ने गिदोन से कहा, "हम पर शासन करो—तुम, तुम्हारा पुत्र और तुम्हारा पोता—क्योंकि तुमने हमें मिद्यान के हाथ से बचाया है।" <sup>23</sup> लैकिन गिदोन ने उनसे कहा, "मैं तुम पर शासन नहीं करूँगा, न ही मेरा पुत्र। यहोवा तुम पर शासन करेगा।" <sup>24</sup> और उसने कहा, "मेरी एक विनती है—कि तुम मैं से प्रत्येक अपनी लूट का एक कुँडल मुझे दे।" (इसाएलियों की प्रथा थी कि वे सोने के कुँडल पहनते थे।) <sup>25</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "हम उन्हें देने में प्रसन्न होंगे।" इसलिए उन्होंने एक वस्त्र फैलाया, और उनमें से प्रत्येक ने अपनी लूट का एक कुँडल उस पर फेंक दिया। <sup>26</sup> सोने के कुँडलों का वजन सत्रह सौ शेकल था, मिद्यान के राजा औं से लिए गए आभूषणों, लटकनों और बैंगनी वस्त्रों या उनके ऊंटों की गर्दन पर लगी जंजीरों को छोड़कर। <sup>27</sup> गिदोन ने उस सोने को एक एफोद में बनाया, जिसे उसने अपने नगर ओफ्रा में रखा। सारा इसाएल वहाँ उसकी पूजा करके उसके प्रति विफादार हो गया, और यह गिदोन और उसके परिवार के लिए एक फंदा बन गया।

<sup>28</sup> इस प्रकार मिद्यान इसाएलियों के सम्में दब गया और फिर कभी सिर नहीं उठाया। गिदोन के जीवनकाल में, भूमि में चालीस वर्षों तक शांति रही। <sup>29</sup> योआश का पुत्र येरुब-बाल घर लौट आया और रहने लगा। <sup>30</sup> उसके अने सतर पुत्र थे, क्योंकि उसकी कई पतियाँ थीं। <sup>31</sup> उसकी रखैल, जो शेकेम में रहती थी, ने भी उसे एक पुत्र दिया, जिसका नाम उसने अबीमेलेक रखा। <sup>32</sup> योआश का पुत्र गिदोन बृद्धावस्था में मरा और उसे अबीएज़ियों के ओफ्रा में अपने पिता योआश की कब्र में दफनाया गया।

<sup>33</sup> गिदोन के मरते ही इसाएली फिर से बालों की पूजा करने लगे। उन्होंने बाल-बेरिथ को अपना देवता बना

## न्यायियों

लिया<sup>34</sup> और अपने परमेश्वर यहोवा को याद नहीं किया, जिसने उन्हें चारों ओर से उनके सभी शत्रुओं के हाथों से बचाया था।<sup>35</sup> उन्होंने येरुब-बाल (यानी गिदोन) के परिवार के प्रति कोई वफादारी नहीं दिखाई, बावजूद इसके कि उसने उनके लिए कितनी अच्छी चीजें की थीं।

**९** येरुब-बाल का पुत्र अबीमेलेक अपने माता के भाइयों के पास शेकेम गया और उनसे और अपनी माता के पूरे कुटुंब से कहा,<sup>2</sup> “शेकेम के सभी नागरिकों से पूछो, तुम्हारे लिए क्या बेहतर है: येरुब-बाल के सभी सत्तर पुत्रों का तुम पर शासन करना, या केवल एक व्यक्ति का? याद रखो, मैं तुम्हारा रक्त और मांस हूँ।”<sup>3</sup> जब भाइयों ने यह सब शेकेम के नागरिकों से कहा, तो वे अबीमेलेक का अनुसरण करने के लिए इच्छुक हो गए, क्योंकि उन्होंने कहा, “वह हमारा संबंधी है।”<sup>4</sup> उन्होंने उसे बाल-बैरिथ के मंदिर से सत्तर शेकेल चांदी दी, और अबीमेलेक ने उसका उपयोग लापरवाह बदमाशों को किराए पर लेने के लिए किया, जो उसके अनुयायी बन गए।<sup>5</sup> वह अपने पिता के घर ओप्रा गया और येरुब-बाल के सत्तर पुत्रों को एक ही पत्थर पर मार डाला। लेकिन येरुब-बाल का सबसे छोटा पुत्र योताम छिपकर बच गया।<sup>6</sup> तब शेकेम और बेथ मिलो के सभी नागरिक वह तुम्हारा संबंधी है।<sup>7</sup> तो यदि तुमने आज येरुब-बाल और उसके परिवार के प्रति ईमानदारी और सच्चाई से काम किया है, तो अबीमेलेक तुम्हारी खुशी हो, और तुम उसकी भी!<sup>8</sup> लेकिन यदि नहीं, तो अबीमेलेक से आग निकलकर तुम्हें, शेकेम और बेथ मिलो के नागरिकों को भस्म कर दे, और तुमसे आग निकलकर अबीमेलेक को भस्म कर दे!”<sup>9</sup> <sup>21</sup> तब योताम भाग गया, बीर में जाकर छिप गया, और वहाँ रहने लगा क्योंकि वह अपने भाई अबीमेलेक से डरता था।

<sup>7</sup> जब योताम को इस बारे में बताया गया, तो वह गैरिजिम पर्वत के शीर्ष पर चढ़ गया और उनसे चिल्लाकर कहा, “शेकेम के नागरिकों, मेरी बात सुनो, ताकि परमेश्वर तुम्हारी सुने।”<sup>10</sup> एक दिन वृक्ष अपने लिए एक राजा का अभिषेक करने के लिए निकले। उन्होंने जैतून के वृक्ष से कहा, “हमारा राजा बनो।”<sup>11</sup> लेकिन जैतून के वृक्ष ने उत्तर दिया, “क्या मैं अपना तेल छोड़ दूँ, जिससे देवताओं और मनुष्यों का समान होता है, और वृक्षों पर शासन करूँ?”<sup>12</sup> फिर वृक्षों ने अंजीर के वृक्ष से कहा, ‘‘आओ और हमारे राजा बनो।’’<sup>13</sup> लेकिन अंजीर के वृक्ष ने उत्तर दिया, “क्या मैं अपनी मिठास और अपने अच्छे फल को छोड़ दूँ और वृक्षों पर शासन करूँ?”<sup>14</sup> तब वृक्षों ने बेल से कहा, ‘‘आओ और हमारे राजा बनो।’’<sup>15</sup> लेकिन बेल ने उत्तर दिया, “क्या मैं अपनी दाखरस को छोड़ दूँ, जो देवताओं और मनुष्यों को प्रसन्न करती है, और वृक्षों पर शासन करूँ?”<sup>16</sup> अंत में सभी वृक्षों ने कांटेदार झाड़ी से कहा, ‘‘आओ और हमारे राजा बनो।’’<sup>17</sup>

<sup>15</sup> कांटेदार झाड़ी ने वृक्षों से कहा, “यदि तुम सच में मुझे अपने उपर राजा का अभिषेक करना चाहते हो, तो आओ और मेरी छाया में शरण लो; लेकिन यदि नहीं, तो

कांटेदार झाड़ी से आग निकलकर लैबनान के देवदारों को भस्म कर दे।”

<sup>16</sup> “क्या तुमने अबीमेलेक को राजा बनाकर ईमानदारी और सच्चाई से काम किया है? क्या तुमने येरुब-बाल और उसके परिवार के साथ नाय किया है? क्या तुमने उसके साथ उसके योग्य व्यवहार किया है?”<sup>18</sup> याद रखो कि मेरे पिता ने तुम्हारे लिए लड़ाई की ओर तुम्हें मिद्यान से बचाने के लिए अपनी जान जीखिम में डाली।<sup>19</sup> लेकिन आज तुमने मेरे पिता के परिवार के खिलाफ विद्रोह किया है। तुमने उसके सत्तर पुत्रों को एक ही पत्थर पर मार डाला और अबीमेलेक, जो उसकी दासी का पुत्र है, को शेकेम के नागरिकों पर राजा बना दिया क्योंकि वह तुम्हारा संबंधी है।<sup>20</sup> तो यदि तुमने आज येरुब-बाल और उसके परिवार के प्रति ईमानदारी और सच्चाई से काम किया है, तो अबीमेलेक तुम्हारी खुशी हो, और तुम उसकी भी!<sup>21</sup> लेकिन यदि नहीं, तो अबीमेलेक से आग निकलकर तुम्हें, शेकेम और बेथ मिलो के नागरिकों को भस्म कर दे, और तुमसे आग निकलकर अबीमेलेक को भस्म कर दे!”<sup>22</sup> <sup>21</sup> तब योताम भाग गया, बीर में जाकर छिप गया, और वहाँ रहने लगा क्योंकि वह अपने भाई अबीमेलेक से डरता था।

<sup>22</sup> अबीमेलेक ने तीन साल तक इसाएल पर शासन किया,<sup>23</sup> तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शेकेम के नागरिकों के बीच वैर उत्पन्न किया, ताकि वे उसके खिलाफ विश्वासघात करें।<sup>24</sup> परमेश्वर ने यह इसलिए किया ताकि येरुब-बाल के सत्तर पुत्रों के खिलाफ अपराध का बदला लिया जा सके—उनके खून का बहना—और अबीमेलेक और शेकेम के नागरिकों, जिन्होंने उसके भाइयों की हत्या में उसकी मदद की, को जिम्मेदार ठहराया जा सके।<sup>25</sup> उसके विरोध में, शेकेम के नागरिकों ने पहाड़ियों पर घाट लगाई ताकि जो कोई भी वहाँ से गुजरे, उसे लूट सके, और यह अबीमेलेक को बताया गया।

<sup>26</sup> अब एबेद का पुत्र गाल अपने कुटुंब के साथ शेकेम में आया, और उसके नागरिकों ने उस पर विश्वास किया।<sup>27</sup> जब वे खेतों में गए और अंगू इकट्ठे किए और उन्हें रौदा, तो उन्होंने अपने देवता के मंदिर में एक उत्सव मनाया। जब वे खा-पी रहे थे, तो उन्होंने अबीमेलेक की शाप दिया।<sup>28</sup> तब गाल ने कहा, “अबीमेलेक कौन है, और शेकेम कौन है, कि हम उसके अधीन हों?” क्या वह येरुब-बाल का पुत्र नहीं है, और क्या जेबूल उसका उप-शासक नहीं है? हमोर के परिवार की सेवा करो, शेकेम के संस्थापक! हम अबीमेलेक की सेवा क्यों करें?<sup>29</sup> यदि

## न्यायियों

केवल ये लोग मेरे अधीन होते! तब मैं उसे हटा देता।"  
उसने अबीमेलेक से कहा, "अपनी पूरी सेना को  
बुलाओ!"

<sup>39</sup> जब शहर के गवर्नर जेबुल ने एबेद के पुत्र गाल की बात सुनी, तो वह बहुत क्रोधित हुआ। <sup>31</sup> उसने अबीमेलेक को गुप्त रूप से संदेश भेजा, "एबेद का पुत्र गाल और उसके संबंधी शेकेम में आए हैं और शहर को तुम्हारे खिलाफ उकसा रहे हैं। <sup>32</sup> अब, रात के दौरान तुम और तुम्हारे लोग खेतों में छिपकर रहो। <sup>33</sup> सुबह सूर्योदय पर, शहर पर आक्रमण करो। जब गाल और उसके लोग तुम्हारे खिलाफ आएंगे, तो उन्हें पराजित करने का अवसर प्राप्त करो।" <sup>34</sup> तो अबीमेलेक और उसकी सभी सेना रात में निकली और शेकेम के पास चार टुकड़ियों में छिपकर रहे। <sup>35</sup> अब एबेद का पुत्र गाल बाहर गया और शहर के द्वार के प्रवेश पर खड़ा था, जैसे ही अबीमेलेक और उसकी सेना अपनी छिपी जगहों से बाहर आए। <sup>36</sup> जब गाल ने उन्हें देखा, तो उसने जेबुल से कहा, "देखो, लोग पहाड़ों की चट्टियों से नीचे आ रहे हैं।" जेबुल ने उत्तर दिया, "तुम पहाड़ों की छायाओं को मनुष्यों के रूप में समझ रहे हो।" <sup>37</sup> लेकिन गाल ने फिर से कहा, "देखो, लोग केंद्रीय पहाड़ी से नीचे आ रहे हैं, और एक टुकड़ी भविष्यतकातों के पेड़ की दिशा से आ रही है।" <sup>38</sup> तब जेबुल ने उससे कहा, "अब तुम्हारी बड़ी बात कहाँ है, तुम जो कहते थे, अबीमेलेक कौन है कि हम उसके अधीन हों? क्या ये वही लोग नहीं हैं जिनका तुमने मजाक उड़ाया था? बाहर जाओ और उनसे लड़ो।" <sup>39</sup> तो गाल शेकेम के नागरिकों को लेकर अबीमेलेक से लड़ने गया। <sup>40</sup> अबीमेलेक ने उसे शहर के द्वार के प्रवेश तक खेड़ा, और जब वे भगे तो कई लोग मारे गए। <sup>41</sup> तब अबीमेलेक अरुमा में रहा, और जेबुल ने गाल और उसके कुटुंब को शेकेम से बाहर निकाल दिया।

<sup>42</sup> अगले दिन शेकेम के लोग खेतों में गए, और यह अबीमेलेक को बताया गया। <sup>43</sup> तो उसने अपने लोगों को लिया, उन्हें तीन टुकड़ियों में विभाजित किया और खेतों में घात लगाई। जब उसने देखा कि लोग शहर से बाहर आ रहे हैं, तो उसने उन पर आक्रमण किया। <sup>44</sup> अबीमेलेक और उसके साथ की टुकड़ियों ने शहर के द्वार के प्रवेश पर एक स्थिति पर तेजी से आगे बढ़े। दो टुकड़ियों ने खेतों में उन पर हमला किया और उन्हें मार डाला। <sup>45</sup> सारा दिन अबीमेलेक ने शहर पर हमला जारी रखा जब तक कि उसने उसे कब्जा नहीं कर लिया और उसके लोगों को मार डाला। फिर उसने शहर को नष्ट कर दिया और उस पर नमक छिड़क दिया।

<sup>46</sup> यह सुनकर, शेकेम के टॉवर के नागरिक एल-बेरिथ के मंदिर के गढ़ में चले गए। <sup>47</sup> जब अबीमेलेक ने सुना कि वे वहाँ इकट्ठे हुए हैं, <sup>48</sup> वह और उसके सभी लोग माउंट ज़ात्मोन पर चढ़ गए। उसने एक कुत्खाड़ी ली, एक शाखा काटी और उसे अपने कंधों पर उठा लिया। उसने अपने लोगों से कहा, "जल्दी करो! जो तुमने मुझे करते देखा है, वही करो।" <sup>49</sup> तो प्रत्येक व्यक्ति ने एक शाखा काटी और अबीमेलेक का अनुसरण किया। उहोंने उन्हें गढ़ के खिलाफ ढेर कर दिया और उसमें आग लगा दी जबकि लोग अपनी भी अंदर थे। इस प्रकार शेकेम के टॉवर में सभी लोग—लगभग एक हजार पुरुष और महिलाएँ—मारे गए।

<sup>50</sup> फिर अबीमेलेक थेबेझ गया और उसे धेर लिया और कब्जा कर लिया। <sup>51</sup> लेकिन शहर के अंदर, एक मजबूत टॉवर था। सभी पुरुष और महिलाएँ, शहर के नेताओं के साथ, उसमें भाग गए और खुद को बंद कर लिया। वे टॉवर की छत पर चढ़ गए। <sup>52</sup> अबीमेलेक टॉवर की ओर गया और उसे तूफान से धेर लिया। लेकिन जब वह उसे आग लगाने के लिए प्रवेश के पास पहुँचा, <sup>53</sup> एक महिला ने उसके सिर पर एक ऊपरी चक्की का पासर गिराया और उसकी खोपड़ी फोड़ दी। <sup>54</sup> जल्दी से उसने अपने हथियार-वाहक से कहा, "अपनी तलवार खींचो और मुझे मार डालो, ताकि वे यह न करें, एक महिला ने उसे मारा।" <sup>55</sup> तो उसके सेवक ने उसे भेद दिया, और वह मर गया।

<sup>56</sup> जब इस्साएलियों ने देखा कि अबीमेलेक मर गया है, तो वे घर लौट गए। <sup>56</sup> इस प्रकार परमेश्वर ने उस दुष्टता का प्रतिफल दिया जो अबीमेलेक ने अपने पिता के साथ की थी, उसके सतर भाइयों की हत्या करके। <sup>57</sup> परमेश्वर ने शेकेम के लोगों को भी उनकी सारी दुष्टता का प्रतिफल दिया। ये रुब-बाल के पुत्र योताम का शाप उन पर आ पड़ा।

**10** अबीमेलेक के समय के बाद, इस्साकार के एक व्यक्ति जिसका नाम तोला था, जो फूआह का पुत्र और दोदी का पुत्र था, इस्साएल को बचाने के लिए उठा। वह एप्रैम के पहाड़ी देश में शमीर में रहता था। <sup>58</sup> उसने इस्साएल का तेईस वर्षों तक नेतृत्व किया; फिर वह मर गया और शमीर में दफनाया गया।

<sup>59</sup> उसके बाद गिलाद के याईर ने इस्साएल का बाईस वर्षों तक नेतृत्व किया। <sup>60</sup> उसके तीस पूर्व थे, जो तीस गधों पर सवार होते थे। उहोंने गिलाद के तीस नगरों पर अधिकार किया, जिन्हें आज भी हव्वोत याईर कहा जाता

## न्यायियों

है।<sup>5</sup> जब याईर्क की मृत्यु हुई, तो उसे कामोन में दफनाया गया।

<sup>6</sup> फिर इसाएलियों ने यहोवा की वृष्टि में बुरा किया। उन्होंने बाल और अष्टरोत, और अराम, सिदोन, मोआब, अम्मोनियों और पलिशियों के देवताओं की सेवा की। क्योंकि उन्होंने यहोवा को त्याग दिया और उसकी सेवा नहीं की,<sup>7</sup> तो वह उनसे क्रोधित ही गया। उसने उन्हें पलिशियों और अम्मोनियों के हाथों बैच दिया,<sup>8</sup> जिन्होंने उस वर्ष इसाएलियों को तोड़ा और कुचल दिया। अठारह वर्षों तक उन्होंने यरदन के पूर्वी ओर गिलाद में सभी इसाएलियों को सताया—जो एमोरीयों की भूमि थी।<sup>9</sup> अम्मोनियों ने यरदन को पार कर यहूदा, बिन्यामीन और एप्रेम के खिलाफ लड़ाई की; इसाएल बड़ी संकट में था।

<sup>10</sup> तब इसाएलियों ने यहोवा की ओर पुकारा, “हमने आपके खिलाफ पाप किया है, अपने परमेश्वर को त्याग कर बालों की सेवा की है!”<sup>11</sup> यहोवा ने उत्तर दिया, “जब मिस्री, एपोरी, अम्मोनी, पलिशी,<sup>12</sup> सिदोनी, अमालेकी और माओनी तुम्हें सताते थे और तुम मुझसे सहायता के लिए पुकारते थे, क्या मैंने तुम्हें उनके हाथों से नहीं बचाया?<sup>13</sup> लेकिन तुमने मुझे त्याग दिया और अन्य देवताओं की सेवा की, इसलिए मैं अब तुम्हें नहीं बचाऊंगा।<sup>14</sup> जा जो और उन देवताओं के पास पुकारो जिन्हें तुमने चुना है। जब तुम संकट में हो तो वे तुम्हें बचाएं।”

<sup>15</sup> लेकिन इसाएलियों ने यहोवा से कहा, “हमने पाप किया है। हमारे साथ जो भी आप उचित समझें, करें, लेकिन कृपया हमें अब बचाएं।”<sup>16</sup> फिर उन्होंने अपने बीच के विदेशी देवताओं को हटा दिया और यहोवा की सेवा की। और वह इसाएल की दुर्दशा को और सहन नहीं कर सका।

<sup>17</sup> जब अम्मोनियों को युद्ध के लिए बुलाया गया और गिलाद में डेरा डाला, तो इसाएली इकट्ठे हुए और मिस्पा में डेरा डाला।<sup>18</sup> गिलाद के लोगों के नेताओं ने एक-दूसरे से कहा, “जो कोई अम्मोनियों पर आक्रमण करने का नेतृत्व करेगा, वह गिलाद में रहने वाले सभी लोगों का प्रधान होगा।”

**11** गिलाद का पुत्र यिप्तह एक शक्तिशाली योद्धा था। उसके पिता गिलाद थे; उसकी माता एक वेश्या थी।<sup>2</sup> गिलाद की पत्नी ने भी उसे पुत्र उत्पन्न किए, और जब वे बड़े हुए, तो उन्होंने यिप्तह को बाहर निकाल दिया।

उन्होंने कहा, “तुम्हें हमारे परिवार में कोई विरासत नहीं मिलेगी, क्योंकि तुम दूसरी स्त्री के पुत्र हो।”<sup>3</sup> इसलिए यिप्तह अपने भाइयों से भाग गया और तोब देश में बस गया, जहाँ कुछ साहसी लोग उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए और उसका अनुसरण करने लगे।

<sup>4</sup> कुछ समय बाद, जब अम्मोनी इसाएल के विरुद्ध लड़ रहे थे,<sup>5</sup> गिलाद के पुरुषिये यिप्तह को तोब देश से लाने गए।<sup>6</sup> उन्होंने कहा, “आओ, हमारे सेनापति बनो, ताकि हम अम्मोनियों से लड़ सकें।”<sup>7</sup> यिप्तह ने उनसे कहा, “क्या तुमने मुझसे धूणा नहीं की और मुझे मेरे पिता के घर से नहीं कालाता? अब तुम मेरे पास क्यों आए हो, जब तुम संकट में हो?”<sup>8</sup> गिलाद के पुरुषियों ने उससे कहा, “फिर भी, अब हम तुम्हारी ओर मुड़ रहे हैं। हमारे साथ आओ और अम्मोनियों से लड़ो, और तुम गिलाद में रहने वाले सभी लोगों के ऊपर प्रधान बनोगे।”<sup>9</sup> यिप्तह ने उत्तर दिया, “मान लो कि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने के लिए वापस ले जाते हों, और यहोवा उन्हें मेरे हाथ में दे देता है—क्या मैं वास्तव में तुम्हारा प्रधान बनूँगा?”<sup>10</sup> गिलाद के पुरुषियों ने उत्तर दिया, “यहोवा हमारा साक्षी है; हम निश्चित रूप से वही करेंगे जो तुम कहते हो।”<sup>11</sup> इसलिए यिप्तह गिलाद के पुरुषियों के साथ गया, और लोगों ने उसे उनके ऊपर प्रधान और सेनापति बना दिया। और उसने अपने सभी वर्चनों को यहोवा के समर्मे मिस्पा में दोहराया।

<sup>12</sup> फिर यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास दूत भेजे और पूछा: “तुम्हारा मुझसे क्या विरोध है कि तुमने मेरे देश पर आक्रमण किया है?”<sup>13</sup> अम्मोनी राजा ने यिप्तह के दूतों को उत्तर दिया, “जब इसाएल मिस्र से निकला, तो उन्होंने मेरे देश को अरनों से लेकर यब्बोक तक, यरदन तक ले लिया। अब इसे शांति से वापस दे दो।”<sup>14</sup> यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास फिर से दूत भेजे,<sup>15</sup> कहते हुए: “यिप्तह यह कहता है: इसाएल ने मोआब की भूमि या अम्मोनियों की भूमि नहीं ली।”<sup>16</sup> जब वे मिस्र से निकले, तो इसाएल जंगल से होकर लाल समुद्र तक और कादेश तक गए।<sup>17</sup> फिर इसाएल ने एदोम के राजा के पास दूत भेजे, कहते हुए, “हमें आपके देश से गुजरने की अनुमति दें।”<sup>18</sup> लेकिन एदोम के राजा ने नहीं सुना। उन्होंने मोआब के राजा के पास भी भेजा, और उसने भी मना कर दिया। इसलिए इसाएल कादेश में ही रहे।<sup>19</sup> फिर वे जंगल से होकर चले, एदोम और मोआब के किनारे से होते हुए मोआब की भूमि के पूर्वी किनारे से होकर अरनों के पार शिविर लगाया। उन्होंने मोआब की सीमा में प्रवेश नहीं किया, क्योंकि अरनों उसकी सीमा थी।<sup>20</sup> फिर इसाएल ने एमोरी राजा सिहोन के पास दूत भेजे,

## न्यायियों

जो हेशबोन में राज्य करता था, और उससे कहा, 'हमें आपके देश से होकर हमारे स्थान तक जाने दें।'<sup>20</sup> लेकिन सिहोन ने इसाएल को अपने देश से गुजरने पर विश्वास नहीं किया। उसने अपनी सारी सेना को इकट्ठा किया और यहाज में शिविर लगाया और इसाएल से लड़ाई की।<sup>21</sup> फिर इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने सिहोन और उसके सभी लोगों को इसाएल के हाथ में दे दिया, और उन्होंने उन्हें पराजित किया। इसाएल ने उस देश में रहने वाले एमोरियों की सारी भूमि पर अधिकार कर लिया,<sup>22</sup> अरन्तों से लेकर यज्ञोक तक और रेगिस्तान से यरदन तक सब कुछ कब्जा कर लिया।

<sup>23</sup> "अब जब इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने अपने लोगों इसाएल के सामने एमोरियों को निकाल दिया है, तो तुम्हें इसे लेने का क्या अधिकार है?"<sup>24</sup> क्या तुम अपने देवता केमोश से जो कुछ पाते हो, उसे नहीं लोगे? वैसे ही, जो कुछ यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है, हम उसे लेंगे।<sup>25</sup> क्या तुम मोआब के राजा सिप्पार के पुत्र बालाक से बेहतर हो? क्या उसने कभी इसाएल से विगाद किया या उनसे लड़ा? <sup>26</sup> तीन सौ वर्षों से इसाएल हेशबोन, अरोएर, आसपास की बस्तियों और अरन्तों के किनारे के सभी नगरों में बसा हुआ है। तुमने उस समय के दौरान उन्हें क्यों नहीं वापस लिया?<sup>27</sup> मैंने तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं किया है, लेकिन तुम मुझसे युद्ध करके अन्याय कर रहे हो। इस दिन यहोवा, न्यायाधीश, इसाएलियों और अम्मोनियों के बीच विवाद का निर्णय करें।"<sup>28</sup> लेकिन अम्मोन के राजा ने यिप्तह द्वारा भेजे गए संदेश पर ध्यान नहीं दिया।

<sup>29</sup> फिर यहोवा की आत्मा यिप्तह पर आई। वह गिलाद और मनश्शे से होकर, गिलाद के मिस्पा से होकर, अम्मोनियों के विरुद्ध आगे बढ़ा।<sup>30</sup> और यिप्तह ने यहोवा से एक मन्त्र मानी: "यदि तू अम्मोनियों को मेरे हाथ में दे दे, <sup>31</sup> तो जब मैं अम्मोनियों से विजय प्राप्त कर लौटूंगा, तब जो कुछ मेरे घर के द्वार से मुझे मिलने के लिए निकलेगा, वह यहोवा का होगा, और मैं उसे होम्बलि चढ़ाऊंगा।"<sup>32</sup> फिर यिप्तह अम्मोनियों से लड़ने गया, और यहोवा ने उन्हें उसके हाथ में दे दिया।<sup>33</sup> उसने अरोएर से लेकर मिनि�थ के निकट तक, अबेल केरामिम तक बीस नगरों को नष्ट कर दिया। इस प्रकार इसाएल ने अम्मोन को पराजित किया।

<sup>34</sup> जब यिप्तह अपने घर मिस्पा में लौटा, तो कौन उसे मिलने के लिए निकला, परन्तु उसकी पुत्री, जो डफली बजाते हुए नाच रही थी। वह उसकी एकमात्र संतान थी। उसके अलावा, उसका न तो कोई पुत्र था और न ही

पुत्री।<sup>35</sup> जब उसने उसे देखा, तो उसने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, "अरे नहीं, मेरी पुत्री! तुमने मुझे नीचे गिरा दिया है और मैं बर्बाद हो गया हूँ। मैंने यहोवा से वचन दिया है और उसे तोड़ नहीं सकता।"<sup>36</sup> "मेरे पिता," उसने उत्तर दिया, "तुमने यहोवा से वचन दिया है। जो कुछ तुमने कहा है, वह मुझ पर करो, अब जब कि यहोवा ने तुम्हारे शत्रुओं, अम्मोनियों से तुम्हारा प्रतिशोध लिया है।"<sup>37</sup> लेकिन मुझे यह एक अनुरोध दो, उसने कहा। "मुझे दो महीने की अनुमति दो कि मैं पहाड़ियों में जाकर अपने मित्रों के साथ विलाप करूँ, क्योंकि मैं कभी विवाह नहीं करूँगी!"<sup>38</sup> "तुम जा सकती हो," उसने कहा। और उसने उसे दो महीने के लिए जाने दिया। वह और उसके मित्र पहाड़ियों में गए और विलाप किया क्योंकि वह कभी विवाह नहीं करेगी।<sup>39</sup> दो महीने के बाद, वह अपने पिता के पास लौटी, और उसने उसके साथ वही किया जैसा उसने मन्त्र मानी थी। और वह कुंवारी थी। इससे इसाएलियों की पंखरा उत्पन्न हुई<sup>40</sup> कि प्रत्येक वर्ष इसाएल की युवतियां गिलादी यिप्तह की पुत्री को स्मरण करने के लिए चार दिन बाहर जाती हैं।

**12** एप्रैम के लोग इकट्ठे हुए और वे जाकोन तक पार कर गए। उन्होंने यहथृप्ति से कहा, "तुमने हमें बुलाए बिना अम्मोनियों से लड़ाई करने क्यों गए? हम तुम्हारे सिर पर तुम्हारा घर जला देंगे।"<sup>2</sup> यहथृप्ति ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं और मेरे लोग अम्मोनियों के साथ एक बड़ी लड़ाई में लगे थे, और यद्यपि मैंने बुलाया, तुमने मुझे उनके हाथ से नहीं बचाया।"<sup>3</sup> जब मैंने देखा कि तुम मदद नहीं करोगे, तो मैंने अपनी जान जोखिम में डालकर अम्मोनियों से लड़ने के लिए पार किया, और प्रभु ने मुझे उनके ऊपर विजय दी। अब तुम आज मुझसे लड़ने क्यों आए हो?"

<sup>4</sup> तब यहथृप्ति ने गिलाद के लोगों को इकट्ठा किया और एप्रैम के विरुद्ध युद्ध किया। गिलादियों ने उन्हें मार गिराया, क्योंकि एप्रैमियों ने कहा था, "तुम गिलादी एप्रैम और मनश्शे से भगड़े हो।"<sup>5</sup> गिलादियों ने यरदन के घाटों को पकड़ लिया जो एप्रैम की ओर जाते थे, और जब भी एप्रैम का कोई बचा हुआ व्यक्ति कहता, "मुझे पार करने दो," तो गिलाद के लोग उससे पूछते, "या तुम एप्रैमी हो?" यदि वह उत्तर देता, "नहीं,"<sup>6</sup> तो वे कहते, "ठीक है, 'सिब्बोलेथ' कहो।"<sup>7</sup> यदि वह "सिब्बोलेथ" कहता, क्योंकि वह शब्द को सही ढंग से उच्चारण नहीं कर सकता था, तो वे उसे पकड़ लेते और यरदन के घाटों पर मार डातते। उस समय ब्यालीस हजार एप्रैमियों को मारा गया।

## न्यायियों

<sup>7</sup> यहर्थ हने इसाएल का नेतृत्व छह वर्षों तक किया। फिर उसकी मृत्यु हो गई और उसे गिलाद के एक नगर में दफनाया गया।

<sup>8</sup> उसके बाद, बेतलेहेम का इब्जान इसाएल का नेता बना। <sup>9</sup> उसके तीस बेटे और तीस बेटियाँ थीं। उसने अपनी बेटियों की शादी अपने कबीले के बाहर कर दी, और अपने बेटों के लिए बाहर से तीस युवतियों को परियों के रूप में लाया। इब्जान ने सात वर्षों तक इसाएल का नेतृत्व किया। <sup>10</sup> फिर इब्जान की मृत्यु हो गई और उसे बेटलेहेम में दफनाया गया।

<sup>11</sup> उसके बाद, जेबुलुन का एलोन दस वर्षों तक इसाएल का नेता बना। <sup>12</sup> फिर एलोन की मृत्यु हो गई और उसे जेबुलुन के देश में अय्यालोन में दफनाया गया।

<sup>13</sup> उसके बाद, हिलेते का पुत्र अब्दोन, पिराथोन से, इसाएल का नेता बना। <sup>14</sup> उसके चालीस बेटे और तीस पोते थे, जो सत्तर गाधों पर सवारी करते थे। उसने आठ वर्षों तक इसाएल का नेतृत्व किया। <sup>15</sup> फिर हिलेते का पुत्र अब्दोन की मृत्यु हो गई और उसे एत्रैम में पिराथोन में, अमालेकियों के पहाड़ी देश में दफनाया गया।

**13** फिर इसाएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, इसलिए यहोवा ने उन्हें चालीस वर्षों के लिए परिशिष्टियों के हाथों में सौंप दिया।

<sup>2</sup> सोरा का एक व्यक्ति, जिसका नाम मनोअह था, जो दान के गोत्र से था, उसकी पत्नी थी जो संतानहीन थी, और संतान उत्पन्न करने में असमर्थ थी। <sup>3</sup> यहोवा का दूत उसके पास प्रकट हुआ और कहा, "तू बांझ और संतानहीन है, परन्तु तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी।" <sup>4</sup> अब ध्यान रखना कि तू कोई दाखमधु या अन्य कोई किञ्चित पेय न पीना और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना थी। <sup>5</sup> तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, जिसके सिर पर कभी उस्तरा नहीं चलेगा, क्योंकि वह लड़का गर्भ से ही परमेश्वर के लिए नाज़ीर होगा। वह इसाएल को परिशिष्टियों के हाथों से छुड़ाने में अगुवाई करेगा।"

<sup>6</sup> तब वह स्त्री अपने पति के पास गई और उसे बताया, "एक परमेश्वर का व्यक्ति मेरे पास आया। वह परमेश्वर के दूत की तरह दिखता था, बहुत अद्भुत। मैंने उससे नहीं पूछा कि वह कहाँ से आया है, और उसने मुझे अपना नाम नहीं बताया।" <sup>7</sup> परन्तु उसने मुझसे कहा, "तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी। अब ध्यान

रखना, दाखमधु या अन्य कोई किञ्चित पेय न पीना और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना, क्योंकि वह लड़का गर्भ से लेकर अपनी मृत्यु तक परमेश्वर का नाज़ीर होगा।"

<sup>8</sup> तब मनोअह ने यहोवा से प्रार्थना की: "हे प्रभु, अपने दास को क्षमा करें। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप जो परमेश्वर का व्यक्ति हमारे पास भेज चुके हैं, उसे फिर से आने दें ताकि वह हमें सिखाए कि उस लड़के को कैसे पालना है जो जन्म लेने वाला है।" <sup>9</sup> परमेश्वर ने मनोअह की सुनी, और परमेश्वर का दूत फिर से उस स्त्री के पास आया था, जब वह खेत में थी; परन्तु उसका पति मनोअह उसके साथ नहीं था। <sup>10</sup> वह स्त्री जल्दी से अपने पति को बताने गई, "वह यहाँ है। वह व्यक्ति जो उस दिन मेरे पास आया था, वापस आ गया है।" <sup>11</sup> मनोअह उठा और अपनी पत्नी के पीछे गया। जब वह उस व्यक्ति के पास पहुँचा, तो उसने कहा, "क्या आप वही हैं जिन्होंने मेरी पत्नी से बात की थी?" "मैं हूँ," उसने कहा।

<sup>12</sup> तब मनोअह ने उससे पूछा, "जब आपके शब्द पूरे होंगे, तो उस लड़के के जीवन और कार्य को नियंत्रित करने वाला नियम क्या होगा?" <sup>13</sup> यहोवा के दूत ने उत्तर दिया, "तुम्हारी पत्नी को वह सब कुछ करना चाहिए जो मैंने उसे बताया है।" <sup>14</sup> उसे दाख की बेल से कुछ भी नहीं खाना चाहिए, न दाखमधु या कोई अन्य किञ्चित पेय पीना चाहिए, न कोई अशुद्ध वस्तु खाना चाहिए। उसे वह सब कुछ करना चाहिए जो मैंने उसे आज्ञा दी है।"

<sup>15</sup> मनोअह ने यहोवा के दूत से कहा, "हम चाहते हैं कि आप तब तक रहें जब तक हम आपके लिए एक बकरी का बच्चा तैयार करें।" <sup>16</sup> यहोवा के दूत ने उत्तर दिया, "भले ही तुम मुझे रोको, मैं तुम्हारा कोई भीजन नहीं खाऊंगा। परन्तु यदि तुम होमबलि तैयार करते हो, तो उसे यहोवा को अर्पित करो।" (मनोअह नहीं जानता था कि वह यहोवा का दूत था।) <sup>17</sup> तब मनोअह ने यहोवा के दूत से पूछा, "आपका नाम क्या है, ताकि जब आपका वचन सत्य हो, तो हम आपका सम्मान कर सकें?" <sup>18</sup> उसने उत्तर दिया, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो? यह समझ से परे है।"

<sup>19</sup> तब मनोअह ने एक बकरी का बच्चा लिया, अनाज की भेंट के साथ, और उसे यहोवा के लिए एक चट्टान पर बलिदान किया। और यहोवा ने एक अद्भुत कार्य किया जब मनोअह और उसकी पत्नी देख रहे थे: <sup>20</sup> जैसे ही ज्वाला वेदी से आकाश की ओर उठी, यहोवा का दूत ज्वाला में चढ़ गया। यह देखकर, मनोअह और उसकी पत्नी ने अपने चेहरे के बल भूमि पर गिर पड़े। <sup>21</sup> जब

## न्यायियों

यहोवा का दूत फिर से मनोअह और उसकी पती को नहीं दिखा, मनोअह ने समझ लिया कि वह यहोवा का दूत था।<sup>22</sup> "हम मने के लिए अभिशप्त हैं!" उसने अपनी पती से कहा। "हमने परमेश्वर को देखा है!"<sup>23</sup> परन्तु उसकी पती ने उत्तर दिया, "यदि यहोवा हमें मारने का इशारा रखता, तो वह हमारे हाथ से होमबलि और अनाज की भेंट स्वीकार नहीं करता, न हमें ये सब बातें दिखाता या अब हमें यह बताता।"

<sup>24</sup> उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शिमशोन रखा। जैसे-जैसे लड़का बड़ा हुआ, यहोवा की कृपा उस पर बनी रही।<sup>25</sup> और यहोवा की आत्मा ने उसे प्रेरित करना शुरू किया जब वह सोरा और एश्टाओल के बीच महने दान में था।

**14** शिमशोन तिम्माह गया और वहाँ एक युवा पलिश्ती स्त्री को देखा।<sup>2</sup> जब वह लौटा, तो उसने अपने पिता और माता से कहा, "मैंने तिम्माह में एक पलिश्ती स्त्री को देखा है; अब उसे मेरे लिए पती के रूप में ले आओ!"<sup>3</sup> उसके पिता और माता ने उत्तर दिया, "व्या तुम्हारे रिशेदारों में या हमारी जाति में कोई उपयुक्त स्त्री नहीं है? क्या तुम्हें एक अछेदित पलिश्ती से विवाह करना चाहिए?" परन्तु शिमशोन ने अपने पिता से कहा, "उसे मेरे लिए ले आओ। वह मेरी दृष्टि में ठीक है।"<sup>4</sup> (उसके माता-पिता नहीं जानते थे कि यह यहोवा की ओर से था, जो पलिश्तियों से टकराने का अंवरसर खोज रहा था; क्योंकि उस समय वे इसाएल पर शासन कर रहे थे।)

<sup>5</sup> शिमशोन अपने पिता और माता के साथ तिम्माह गया। जब वे तिम्माह के अंगूर के बागों के पास पहुँचे, तो अचानक एक युवा सिंह गर्जन करता हुआ उसकी ओर आया।<sup>6</sup> यहोवा की आत्मा उस पर बलपूर्वक आई, जिससे उसने सिंह को अपने नंगे हाथों से ऐसे फाड़ डाला जैसे कोई बकरी के बच्चे को फाड़ता है। परन्तु उसने अपने पिता या माता को नहीं बताया कि उसने क्या किया था।<sup>7</sup> फिर वह नीचे गया और उस स्त्री से बात की, और वह उसे पसंद आई।

<sup>8</sup> कुछ समय बाद, जब वह उससे विवाह करने के लिए वापस गया, तो उसने सिंह के शव को देखने के लिए मुड़ा, और उसमें मधुमक्खियों का झूंड और कुछ शहद था।<sup>9</sup> उसने अपने हाथों से शहद निकाला और खाने हुए चला गया। जब उसने अपने माता-पिता से मिलकर उन्हें भी दिया, और उन्होंने भी खाया। परन्तु उसने उन्हें नहीं बताया कि उसने शहद सिंह के शव से लिया था।

<sup>10</sup> अब उसके पिता उस स्त्री को देखने के लिए नीचे गए, और वहाँ शिमशोन ने एक भोज दिया, जैसा कि युवकों के लिए प्रथा थी।<sup>11</sup> जब लोगों ने उसे देखा, तो उन्होंने उसके साथ रहने के लिए तीस साथी छुने।<sup>12</sup> "मैं तुम्हें एक पहेली बताता हूँ," शिमशोन ने उनसे कहा। "यदि तुम भोज के सात दिनों के भीतर इसका उत्तर दे सकते हो, तो मैं तुम्हें तीस लिनन वस्त्र और तीस जोड़ी कपड़े दूँगा।<sup>13</sup> परन्तु यदि तुम उत्तर नहीं दे सकते, तो तुम्हें मुझे तीस लिनन वस्त्र और तीस जोड़ी कपड़े देने होंगे।"  
"हमें अपनी पहेली बताओ," उन्होंने कहा। "नुने दो।"<sup>14</sup> उसने उत्तर दिया,

"भक्ति से कुछ खाने योग्य निकला; बलवान से कुछ मीठा निकला।" तीन दिन तक वे उत्तर नहीं दे सके।

<sup>15</sup> चौथे दिन, उन्होंने शिमशोन की पती से कहा, "अपने पति को समझाकर पहेली का उत्तर हमें बताओ, नहीं तो हम तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर को जला देंगे। क्या तुमने हमें यहाँ हमारी संपत्ति चुराने के लिए बुलाया है?"

<sup>16</sup> तब शिमशोन की पती ने उस पर रोते हुए कहा, "तुम मुझसे धूम करते हो! तुम वास्तव में मुझसे प्रेम नहीं करते। तुमने मेरे लोगों को एक पहेली दी है, परन्तु मुझे उसका उत्तर नहीं बताया।"<sup>17</sup> "मैंने अपने पिता या माता को भी नहीं बताया," उसने उत्तर दिया, "तो मैं तुम्हें क्यों बताऊँ?"<sup>18</sup> वह भोज के पूरे सात दिनों तक रोती रही। अतः सातवें दिन उसने उसे अंततः बताया, क्योंकि वह उसे लगातार दबाव डालती रही। उसने बदले में अपने लोगों को पहेली का उत्तर बताया।<sup>19</sup> सातवें दिन सूर्यास्त से पहले, नगर के पुरुषों ने उससे कहा,

"शहद से मीठा क्या है? मिंह से बलवान क्या है?"  
शिमशोन ने उनसे कहा, "यदि तुमने मेरी बछिया के साथ हल न जोता होता, तो तुम मेरी पहेली का उत्तर न या सकते।"

<sup>20</sup> फिर यहोवा की आत्मा उस पर बलपूर्वक आई। वह अश्कलीन गया, वहाँ के तीस पुरुषों को मारा, उनकी संपत्ति ली और जो लोग पहेली का उत्तर दे चुके थे, उन्हें उनके कपड़े दिए। क्रौध से जलता हुआ, वह अपने पिता के घर लौट आया।<sup>21</sup> और शिमशोन की पती को उसके एक साथी को दे दिया गया जो भोज में उसके साथ था।

**15** कुछ समय बाद, जब वह उससे विवाह करने के लिए फसल के समय, शिमशोन एक बकरी का बच्चा लेकर अपनी पती से मिलने गया। उसने कहा, "मैं अपनी पती के कमरे में जाऊंगा।"<sup>22</sup> लेकिन उसके पिता ने उसे अंदर जाने नहीं

## न्यायियों

दिया।<sup>2</sup> उसने कहा, "मुझे पूरा यकीन था कि तुम उससे नफरत करते हो, इसलिए मैंने उसे तुम्हारे साथी को दे दिया। क्या उसकी छोटी बहन अधिक आकर्षक नहीं है? उसे ले लो!"<sup>3</sup> शिमशोन ने उनसे कहा, "इस बार मेरे पास पलिशितयों से बदला लेने का अधिकार है; मैं वास्तव में उन्हें नुकसान पहुंचाऊंगा!"

<sup>4</sup> तब वह बाहर गया और तीन सौ लोमड़ियों को पकड़ा और उन्हें जोड़े में पूँछ से पूँछ बांध दिया। फिर उसने हर जाड़ी की पूँछ में एक मशाल बांध दी।<sup>5</sup> मशालों को जलाया और लोमड़ियों को पलिशितयों की खड़ी फसल में छोड़ दिया। उसने गढ़ों और खड़ी फसल को, साथ ही अंगूर के बांगों और जैतून के बांगों को जला दिया।

<sup>6</sup> जब पलिशितयों ने पूछा, "यह किसने किया?" उन्हें बताया गया, "तिझी के दामाद शिमशोन ने, क्योंकि उसकी पत्नी को उसके साथी को दे दिया गया था।"<sup>7</sup> इसलिए पलिशिती ऊपर गए और उसे और उसके पिता को जला दिया।<sup>8</sup> शिमशोन ने उनसे कहा, "चूँकि तुमने ऐसा किया है, मैं कसम खाता हूँ कि जब तक मैं तुमसे बदला नहीं ले लूंगा, तब तक नहीं रुक़गा!"<sup>9</sup> <sup>8</sup> उसने उन पर क्रूरता से हमला किया और उनमें से कई को मार डाला। फिर वह नीचे गया और एताम की चट्टान की गुफा में रहा।

<sup>10</sup> पलिशिती यहूदा में ऊपर गए और लेही के पास फैल गए।<sup>11</sup> यहूदा के लोगों ने पूछा, "तुम हमसे लड़ने क्यों आए हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हम शिमशोन को बंदी बनाने आए हैं, जैसा उसने हमारे साथ किया, वैसा ही हम उसके साथ करेंगे!"<sup>12</sup> तब यहूदा के तीन हजार आदमी एताम की चट्टान की गुफा में शिमशोन के पास गए और उससे कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि पलिशिती हम पर शासन करते हैं? तुमने हमारे साथ क्या किया?" उसने उत्तर दिया, मैंने केवल वहीं किया जो उन्होंने मेरे साथ किया।<sup>13</sup> उन्होंने उससे कहा, "हम तुम्हें बांधकर पलिशितयों के हवाले करने आए हैं।"<sup>14</sup> शिमशोन ने कहा, "मुझसे बाद करो कि तुम खुद मुझे नहीं मारेंगे!"<sup>15</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "सहमति है। हम केवल तुम्हें बांधकर उन्हें सौंप देंगे। हम तुम्हें नहीं मारेंगे!" इसलिए उसे दो नई रस्सियों से बांध दिया और चट्टान से ऊपर ले गए।

<sup>16</sup> जैसे ही वह लेही के पास पहुंचा, पलिशिती उसकी ओर चिल्लाते हुए आए। प्रभु की आत्मा उस पर शक्तिशाली रूप से आई। उसकी बांगों पर की रस्सियाँ जले हुए सन की तरह हो गईं, और उसके हाथों से बंधन गिर गए।<sup>15</sup>

गधे की ताज़ा जबड़े की हड्डी पाकर, उसने उसे पकड़ लिया और एक हजार आदमियों को मार गिराया।<sup>16</sup> तब शिमशोन ने कहा,

"गधे की जबड़े की हड्डी से मैंने उन्हें गधों की तरह बना दिया। गधे की जबड़े की हड्डी से मैंने एक हजार आदमियों को मार डाला!"

<sup>17</sup> जब उसने बोलना समाप्त किया, तो उसने जबड़े की हड्डी फेंक दी, और उस स्थान का नाम रामत लेही पड़ा।

<sup>18</sup> क्योंकि वह बहुत प्यासा था, उसने प्रभु से पुकार कर कहा, "आपने अपने सेवक को यह महान विजय दी है। क्या अब मुझे प्यास से मरना होगा और खत्म हितों के हाथों में गिरना होगा?"<sup>19</sup> तब परमेश्वर ने लेही में एक खोखले स्थान को खोला, और उसमें से पानी निकला। शिमशोन ने पिया, उसकी शक्ति लौट आई, और वह पुनर्जीवित हुआ। इसलिए उस झरने का नाम एन हृकरारे पड़ा, और यह अपी भी लेही में है।

<sup>20</sup> शिमशोन ने पलिशितयों के दिनों में बीस वर्षों तक इसाएल का नेतृत्व किया।

**16** एक दिन शिमशोन गाज़ा गया, जहाँ उसने एक वेश्या को देखा। वह उसके साथ रात बिताने के लिए अंदर गया।<sup>2</sup> गाज़ा के लोगों को बताया गया, "शिमशोन यहाँ है!" तो उन्होंने उस स्थान को घेर लिया और रात भर शहर के द्वार पर उसकी घात में बैठे रहे। उन्होंने रात में कोई कदम नहीं उठाया, कहते हुए, "सुबह होते ही हम उसे मार देंगे!"<sup>3</sup> लेकिन शिमशोन वहाँ केवल आधी रात तक लेटा रहा। फिर वह उठकर शहर के द्वार के दरवाजों को, दोनों खंभों के साथ, उखाड़ लिया, बार सहित। उसने उन्हें अपने कंधों पर उठाया और उन्हें हेब्रोन की ओर मुख करने वाली पहाड़ी के शीर्ष पर ले गया।

<sup>4</sup> कुछ समय बाद, वह सोरेक की घाटी में एक स्ती से प्रेम करने लगा जिसका नाम दलिला था।<sup>5</sup> पलिशितयों के शासक उसके पास गए और कहा, "देखो कि क्या तुम उसे उसके महान बल का रहस्य बताने के लिए तुम्हा सकती हो और हम उसे कैसे पराजित कर सकते हैं ताकि हम उसे बांध सकें और उसे वश में कर सकें। हम में से प्रत्येक तुम्हें ग्यारह शू शेकेल चाँदी देंगे।"<sup>6</sup> तो दलिला ने शिमशोन से कहा, "मुझे तुम्हारे महान बल का रहस्य बताओ और कैसे तुम्हें बांधकर वश में किया जा सकता है!"<sup>7</sup> शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, "यदि कोई मुझे सात ताज़े धनुष की डोरियों से बांधता है जो सूखी

## न्यायियों

नहीं हैं, तो मैं किसी अन्य व्यक्ति की तरह कमज़ोर हो जाऊँगा।"<sup>8</sup> <sup>8</sup> फिर पलिश्टियों के शासक उसके पास सात ताज़े धनुष की डोरियाँ लाए जो सूखी नहीं थीं, और उसने उसे उनसे बांध दिया। <sup>9</sup> कमरे में छिपे हुए पुरुषों के साथ, उसने उसे पुकारा, "शिमशोन, पलिश्टी तुम पर आ गए हैं!" लेकिन उसने धनुष की डोरियों को इतनी आसानी से तोड़ दिया जैसे कि एक धागा आग के पास अनें पर टूट जाता है। इसलिए उसके बल का रहस्य पता नहीं चला।

<sup>10</sup> फिर दलिला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे मूर्ख बनाया है; तुमने मुझसे झूठ बोला। अब आओ, मुझे बताओ कि तुम्हें कैसे बांधा जा सकता है।"<sup>11</sup> <sup>11</sup> उसने कहा, "यदि कोई मुझे नई रस्सियों से कसकर बांधता है जो कभी उपयोग नहीं की गई है, तो मैं किसी अन्य व्यक्ति की तरह कमज़ोर हो जाऊँगा।"<sup>12</sup> <sup>12</sup> तो दलिला ने नई रस्सियों से उसे बांध दिया। फिर कमरे में छिपे हुए पुरुषों के साथ, उसने उसे पुकारा, "शिमशोन, पलिश्टी तुम पर आ गए हैं!" लेकिन उसने रस्सियों को अपने हाथों से ऐसे तोड़ दिया जैसे वे धागे हैं।

<sup>13</sup> फिर दलिला ने शिमशोन से कहा, "इस समय तक तुम मुझे मूर्ख बना रहे हो और मुझसे झूठ भोल रहे हो। मुझे बताओ कि तुम्हें कैसे बांधा जा सकता है।"<sup>14</sup> <sup>14</sup> उसने उत्तर दिया, "यदि तुम मेरे बालों की सात लटों को करघे के कपड़े में बुनकर पिन से कस दो, तो मैं किसी अन्य व्यक्ति की तरह कमज़ोर हो जाऊँगा।"<sup>15</sup> <sup>15</sup> तो जब वह सो रहा था, दलिला ने उसके बालों की सात लटों को कपड़े में बुन दिया, और पिन से कस दिया। फिर उसने उसे पुकारा, "शिमशोन, पलिश्टी तुम पर आ गए हैं!" वह अपनी नींद से जागा और करघे को कपड़े और पिन के साथ खींच लिया।

<sup>16</sup> फिर उसने उससे कहा, "तुम कैसे कह सकते हो, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; जब तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते हो? यह तीसरी बार है जब तुमने मुझे मूर्ख बनाया है और मुझे अपने महान बल का रहस्य नहीं बताया।"<sup>17</sup> <sup>17</sup> ऐसी ही बातें कहकर उसने उसे दिन-प्रतिदिन तंग किया जब तक कि वह इससे तंग नहीं आ गया। <sup>18</sup> <sup>18</sup> तो उसने उसे सब कुछ बता दिया। "मेरे सिर पर कभी उस्तरा नहीं चला," उसने कहा, "व्यांकि मैं अपनी माँ के गर्भ से ही परमेश्वर के लिए समर्पित नाज़ीर हूँ। यदि मेरा सिर मुंडा जाए, तो मेरी शक्ति मुझे छोड़ देगी, और मैं किसी अन्य व्यक्ति की तरह कमज़ोर हो जाऊँगा।"

<sup>19</sup> जब दलिला ने देखा कि उसने उसे सब कुछ बता दिया है, तो उसने पलिश्टियों के शासकों को संदेश भेजा, "एक बार फिर आओ; उसने मुझे सब कुछ बता दिया है।"<sup>20</sup> <sup>20</sup> तो पलिश्टियों के शासक चाँदी लेकर लौटे। <sup>21</sup> <sup>21</sup> उसे अपनी गोद में सुलाकर, उसने किसी को बुलाया कि उसके बालों की सात लटों को मुंडवा दे। और उसने उसे वश में करना शुरू कर दिया, और उसकी शक्ति उसे छोड़ गई। <sup>22</sup> <sup>22</sup> फिर उसने पुकारा, "शिमशोन, पलिश्टी तुम पर आ गए हैं!" वह अपनी नींद से जागा और सोचा, "मैं फहरे की तरह बाहर जाऊँगा और अपने आप को छुड़ा दूँगा।"<sup>23</sup> <sup>23</sup> लेकिन उसे पता नहीं था कि यहोवा उसे छोड़ चुका था।

<sup>24</sup> <sup>24</sup> फिर पलिश्टियों ने उसे पकड़ लिया, उसकी आँखें फोड़ दीं और उसे गाज़ा ले गए। उसे कांस्य की बेड़ियों से बांधकर, उन्होंने उसे जेल में अनाज पीसने के लिए लगा दिया।

<sup>25</sup> <sup>25</sup> लेकिन उसके सिर के बाल फिर से बढ़ने लगे जब उन्हें मुंडा गया था। <sup>26</sup> <sup>26</sup> अब पलिश्टियों के शासक दागोन अपने देवता को एक बड़ा बलिदान चढ़ाने और उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए, कहते हुए, "हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथों में सौंप दिया है।"<sup>27</sup> <sup>27</sup> जब लोगों ने उसे देखा, तो उन्होंने अपने देवता की स्तुति की, कहते हुए,

"हमारे देवता ने हमारे शत्रु को हमारे हाथों में सौंप दिया है, जिसने हमारे देश को नष्ट किया और हमारे मारे गए लोगों को बढ़ाया।"

<sup>28</sup> <sup>28</sup> जब वे आनंद में थे, तो उन्होंने चिल्लाया, "शिमशोन को बाहर लाओ ताकि वह हमें मनोरंजन करे।"<sup>29</sup> <sup>29</sup> तो उन्होंने शिमशोन को जेल से बाहर बुलाया, और उसने उनके लिए प्रदर्शन किया। जब उन्होंने उसे स्तंभों के बीच खड़ा किया, <sup>30</sup> शिमशोन ने उस सेवक से कहा जिसने उसका हाथ पकड़ा था, "मुझे उन स्तंभों के पास रखो जो मंदिर का समर्थन करते हैं, ताकि मैं उनके खिलाफ झुक सकूँ।"

<sup>31</sup> <sup>31</sup> अब मंदिर पुरुषों और महिलाओं से भरा हुआ था; सभी पलिश्टियों के शासक वहाँ थे, और छत पर लगभग तीन हजार पुरुष और महिलाएँ थीं जो शिमशोन का प्रदर्शन देख रहे थे। <sup>32</sup> <sup>32</sup> फिर शिमशोन ने यहोवा से प्रार्थना की, "सर्वशक्तिमान प्रभु, मुझे याद करो। कृपया, परमेश्वर, मुझे एक बार और शक्ति दो, और मुझे एक ही वार में पलिश्टियों से अपनी दो आँखों का बदला लेने

## न्यायियों

दो।<sup>29</sup> फिर शिमशोन ने उन दो केंद्रीय स्तंभों की ओर हाथ बढ़ाया जिन पर मंदिर खड़ा था। अपने आप को उनके खिलाफ झुकाकर, उसका दाहिना हाथ एक पर और बायाँ हाथ दूसरे पर,<sup>30</sup> शिमशोन ने कहा, "मुझे पलिशियों के साथ मरने दो!" फिर उसने पूरी ताकत से धक्का दिया, और मंदिर शासकों और उसमें सभी लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार उसने अपनी मृत्यु के समय जितने मारे, उससे अधिक मारे जब वह जीवित था।

<sup>31</sup> फिर उसके भाई और उसके पिता का पूरा परिवार उसे लेने के लिए नीचे गए। उन्होंने उसे वापस लाकर ज़ोरा और एश्टाओल के बीच मनोआह उसके पिता की कब्र में दफनाया। उसने इजराइल का बीस वर्षों तक नेतृत्व किया।

**17** एप्रैम के पहाड़ी देश में मीकाह नाम का एक व्यक्ति था,<sup>2</sup> जिसने अपनी माता से कहा, "वे ग्यारह सौ शेरेल चांदी जो तुमसे ली गई थी और जिसके बारे में मैंने तुम्हें शाप देते सुना था — वह चांदी मेरे पास है; मैंने ही उसे लिया था!" तब उसकी माता ने कहा, "यहोवा तेरा भला करे, मेरे पुत्र!"<sup>3</sup> जब उसने ग्यारह सौ शेरेल चांदी अपनी माता को लौटाई, तो उसने कहा, "मैं इस चांदी को यहोवा के लिए अपने पुत्र के लिए समर्पित करती हूँ ताकि वह चांदी से मढ़ी हुई एक मूर्ति बनाए। मैं इसे तुम्हें वापस दूँगा!"<sup>4</sup> इसलिए जब उसने चांदी अपनी माता को लौटाई, तो उसने दो सौ शेरेल लेकर एक सुनार को दी, जिसने उसे एक मूर्ति के आकार में ढाल दिया। और उसे मीकाह के घर में रखा गया।

<sup>5</sup> अब इस व्यक्ति मीकाह के पास एक मंदिर था, और उसने एक एपोद और कुछ घर के देवता बनाए और अपने पुत्रों में से एक को अपना याजक नियुक्त किया।<sup>6</sup> उन दिनों इसाएल में कोई राजा नहीं था; हर कोई अपनी दृष्टि में जो सही था वही करता था।

<sup>7</sup> यहूदा के बेतलेहम से एक युवा लेवी, जो यहूदा के कबीले के भीतर रह रहा था,<sup>8</sup> उस नगर को छोड़कर रहने के लिए दूसरी जगह की खोज में निकला। अपनी यात्रा के दौरान वह एप्रैम के पहाड़ी देश में मीकाह के घर आया।<sup>9</sup> मीकाह ने उससे पूछा, "तुम कहाँ से हो?" "मैं यहूदा के बेतलेहम से एक लेवी हूँ," उसने कहा, "और मैं रहने के लिए एक जगह खोज रहा हूँ।"<sup>10</sup> तब मीकाह ने उससे कहा, "मेरे साथ रहो और मेरे पिता और याजक बनो, और मैं तुम्हें सालाना दस शेरेल चांदी, तुम्हारे कपड़े, और भोजन दूँगा!"<sup>11</sup> इसलिए लेवी ने उसके साथ रहने के लिए सहमति दी, और वह युवक उसके

पुत्रों में से एक के समान हो गया।<sup>12</sup> तब मीकाह ने लेवी को नियुक्त किया, और वह युवक उसका याजक बन गया और उसके घर में रहने लगा।<sup>13</sup> और मीकाह ने कहा, "अब मुझे पता है कि यहोवा मेरे साथ भला करेगा, क्योंकि मेरे पास एक लेवी याजक है।"

**18** उन दिनों इसाएल का कोई राजा नहीं था। और उन दिनों दानियों का गोत्र अपने लिए बसने के लिए एक स्थान खोज रहा था, क्योंकि वे अभी तक इसाएल के गोत्रों के बीच अपनी विरासत में नहीं आए थे।<sup>2</sup> इसलिए दानियों ने ज़ोरा और एश्टाओल से अपने पाँच प्रमुख पुरुषों को भूमि की जासूसी करने और उसे देखने के लिए भेजा। ये पुरुष उनके सभी कुटुम्बों का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने उनसे कहा, "जाओं, भूमि का पता लगाओ।"<sup>3</sup> इसलिए वे एप्रैम के पहाड़ी देश में प्रवेश कर गए और मीका के घर पहुँचे, जहाँ उन्होंने रात बिताई।<sup>4</sup> जब वे मीका के घर के पास थे, उन्होंने उस युवा लेवी के स्वर को पहचाना। इसलिए वे अंदर गए और उससे पूछा, "तुम्हें यहाँ कौन लाया? तुम इस स्थान पर क्या कर रहे हो? तुम यहाँ क्यों हो? "<sup>5</sup> उसने उन्हें बताया कि मीका ने उसके लिए क्या किया है, और कहा, "उसने मुझे नौकरी पर रखा है, और मैं उसका पुरोहित हूँ।"<sup>6</sup> फिर उन्होंने उससे कहा, "कृपया परमेश्वर से पूछो कि क्या हमारी यात्रा सफल होगी!"<sup>7</sup> पुरोहित ने उन्हें उत्तर दिया, "शांति से जाओ। तुम्हारी यात्रा को प्रभु की स्वीकृति है।"

<sup>7</sup> इसलिए पाँच पुरुष लायश गए, जहाँ उन्होंने देखा कि लोग सुरक्षित रूप से रह रहे थे, सिद्धानियों की तरह — शांतिपूर्ण और सुकृतिपूर्ण। उन पर कोई शासक अत्याचार नहीं कर रहा था, और वे सिद्धानियों से दूर रहते थे और किसी और के साथ उनका कोई संबंध नहीं था।<sup>8</sup> जब वे ज़ोरा और एश्टाओल लौटे, तो उनके साथी दानियों ने पूछा, "तुमने क्या पाया?"<sup>9</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "चलो, उन पर हमला करें! हमने भूमि देखी है, और यह बहुत अच्छी है। क्या तुम कुछ नहीं करने जा रहे हो? वहाँ जाकर इसे अपने कब्जे में लेने में संकोच मत करो।<sup>10</sup> जब तुम वहाँ पहुँचोगे, तो तुम एक अनजान लोगों और एक विशाल भूमि को पाओगे जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे हाथों में दिया है — एक ऐसी भूमि जिसमें कुछ भी कमी नहीं है।"

<sup>11</sup> फिर दानी गोत्र के छह सौ पुरुष, युद्ध के लिए सुसज्जित, ज़ोरा और एश्टाओल से निकल पड़े।<sup>12</sup> अपने रास्ते में उन्होंने यहूदा के किरीयत यारीम के पास डेरा डाला। इसलिए किरीयत यारीम के पश्चिम में उस स्थान

## न्यायियों

को आज तक महानेहे दान कहा जाता है।<sup>13</sup> वहाँ से वे एप्रैम के पहाड़ी देश में गए और मीका के घर पहुँचे।

<sup>14</sup> फिर वे पाँच पुरुष जिन्होंने लायश की भूमि की जासूसी की थी, अपने साथी दानियों से बोले, “क्या तुम जानते हो कि इन घरों में से एक में एक एपोद, कुछ गृह देवता और चाँदी से मढ़ी हुई एक मूर्ति है? अब तुम जानते हो कि क्या करना है!”<sup>15</sup> इसलिए वे वहाँ मुड़े और मीका के स्थान पर युआ लेकी के घर गए और उसे नमकार किया।<sup>16</sup> छह सौ दानीय युद के लिए सुसज्जित, द्वार के प्रवेश द्वार पर खड़े थे।<sup>17</sup> वे पाँच पुरुष जिन्होंने भूमि की जासूसी की थी, अंदर गए और खुदी हुई मूर्ति, एपोद, गृह देवता और मढ़ी हुई मूर्ति ले गए, जबकि पुरोहित छह सौ सुसज्जित पुरुषों के साथ प्रवेश द्वार पर खड़ा था।<sup>18</sup> जब पुरुष मीका के घर में गए और खुदी हुई मूर्ति, एपोद, गृह देवता और धातु की मूर्ति ले गए, तो पुरोहित ने उनसे कहा, “तुम क्या कर रहे हो?”<sup>19</sup> उन्होंने उसे उत्तर दिया, “चुप रहा! एक शब्द मत कहो। हमारे साथ आओ और हमारे पिता और पुरोहित बनो। क्या यह बेहतर नहीं है कि तुम इसाएळ के एक गोत्र और कुटुम्ब के लिए पुरोहित बनो बजाय केवल एक आदमी के घर के?”<sup>20</sup> पुरोहित बहुत प्रसन्न हुआ। उसने एपोद, गृह देवता और मूर्ति ली, और लोगों के साथ चला गया।

<sup>21</sup> अपने छोटे बच्चों, अपने पशुओं और अपने सामान को अपने आगे रखते हुए, वे मुड़े और चले गए।<sup>22</sup> जब वे मीका के घर से कुछ दूरी पर चले गए, तो मीका के पास रहने वाले पुरुषों को बुलाया गया और उन्होंने दानियों को पकड़ लिया।<sup>23</sup> जब वे उनके पीछे चिल्लाए, तो दानियों ने मुड़कर मीका से कहा, “तुम्हें क्या हुआ कि तुमने अपने पुरुषों को लड़ाई के लिए बुलाया?”<sup>24</sup> उसने उत्तर दिया, “तुमने मेरे बनाए देवताओं और मेरे पुरोहित को ले लिया, और चले गए। मेरे पास और क्या है? तुम कैसे पूछ सकते हो, ‘तुम्हें क्या हुआ?’”<sup>25</sup> दानियों ने उत्तर दिया, “हमसे बहस मत करो, नहीं तो कुछ पुरुष क्रोधित हो सकते हैं और तुम पर हमला कर सकते हैं, और तुम और तुम्हारा परिवार अपनी जान गंवा सकते हैं।”<sup>26</sup> इसलिए दानी अपने रास्ते चले गए, और मीका, यह देखकर कि वे उसके लिए बहुत मजबूत थे, मुड़कर घर लौटे गया।

<sup>27</sup> फिर उन्होंने मीका द्वारा बनाई गई चीजें और उसके पुरोहित को लिया, और लायश गए, एक शांत और अनजान लोगों के पास। उन्होंने उन पर तलवार से हमला किया और उनके शहर को जला दिया।<sup>28</sup> उन्हें

बचाने वाला कोई नहीं था, क्योंकि वे सिदेन से दूर रहते थे और किसी और के साथ उनका कोई गठबंधन नहीं था। शहर बैथ रहोब के पास की घाटी में था। दानियों ने शहर को फिर से बनाया और वहाँ बस गए।<sup>29</sup> उन्होंने उसका नाम अपने पूर्वज दान के नाम पर रखा, जो इसाएल के लिए पैदा हुआ था – हालांकि शहर को पहले लायश कहा जाता था।<sup>30</sup> वहाँ दानियों ने अपने लिए खुदी हुई मूर्ति स्थापित की, और योना के पुत्र गेरशोम के पुत्र योना और उसके पुत्र दान के गोत्र के लिए पुरोहित थे जब तक कि भूमि की बदीगृह की अवधि नहीं आई।<sup>31</sup> वे मीका द्वारा बनाई गई खुदी हुई मूर्ति का उपयोग करते रहे, जब तक कि परमेश्वर का घर शीलो में था।

**19** उन दिनों में, जब इसाएल का कोई राजा नहीं था, एप्रैम के दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्र में एक लेकी रहता था। उसने यहदा के बेतलेहेम से एक उपपत्ती ली।<sup>2</sup> लेकिन वह उसके प्रति विश्वासघातिनी हुई और उसे छोड़कर अपने पिता के घर बेतलेहेम लौट गई। वह वहाँ चार महीने तक रही।<sup>3</sup> फिर उसका पिता उसके पीछे गया, उससे कोमलता से बात करने और उसे वापस लाने के लिए। वह अपने सेवक और दो गांवों के साथ गया। उसने उसे अपने पिता के घर में लाया, और जब उसके पिता ने उसे देखा, तो उसने उसे खुशी से ख़्वागत किया।<sup>4</sup> उसके संसुर, लड़की के पिता ने उसे ठहरने के लिए आग्रह किया, इसलिए वह तीन दिन तक उसके साथ रहा। उन्होंने खाया, पिया, और वहाँ रहे।<sup>5</sup> चौथे दिन वे जलदी उठे, और लेती ने प्रस्थान करने की तैयारी की। लेकिन लड़की के पिता ने अपने दामाद से कहा, “कुछ खाओ ताकि तुम्हारी ताकत बनी रहे, और फिर तुम जा सकते हो।”<sup>6</sup> तो वे बैठकर साथ में खाए और पिए। और लड़की के पिता ने कहा, “कृपया रात को ठहरो और आनंद लो।”<sup>7</sup> वह आदमी उठकर जाने लगा, लेकिन उसके संसुर ने उसे मनाया, इसलिए वह उस रात वहाँ रहा।

<sup>8</sup> पाँचवें दिन की सुबह, वह जाने के लिए उठा, लेकिन लड़की के पिता ने कहा, “कुछ खाओ और दिन के बाद तक प्रतीक्षा करो।” तो वे साथ में खाए।<sup>9</sup> जब वह आदमी, उसकी उपपत्ती और सेवक उठकर जाने लगे, तो उसके संसुर ने कहा, “देखो, दिन लगभग समाप्त हो गया है। ठहरो और आनंद लो। कल तुम सुबह जलदी अपने घर के लिए निकल सकते हो।”<sup>10</sup> लेकिन वह आदमी एक और रात ठहरने के लिए तैयार नहीं था। वह यबूस (जो यूरशलेम है) की ओर अपने दो गांधों और अपनी उपपत्ती के साथ चला गया।<sup>11</sup> जब वे यबूस के

## न्यायियों

पास पहुँचे, तो दिन लगभग समाप्त हो गया था। सेवक ने अपने स्वामी से कहा, “आओ, हम इस यदूसी नगर में रुकें और रात बिताएं।”<sup>12</sup> उसके स्वामी ने उत्तर दिया, “हम किसी विदेशी नगर में नहीं जाएंगे, जिनके लोग इसाएली नहीं हैं। हम गिबा की ओर बढ़ेंगे।”<sup>13</sup> उसने जोड़ा, “आओ, हम गिबा या रामा तक पहुँचने की कोशिश करें और उन स्थानों में से किसी एक में रात बिताएं।”<sup>14</sup> तो वे आगे बढ़े, और जब वे बिन्यामीन के गिबा के पास पहुँचे, तो सूर्य अस्त हो गया।

<sup>15</sup> वे गिबा में रात बिताने के लिए रुके। वे नगर के चौक में जाकर बैठे, लेकिन कोई उर्वरा रात के लिए अंदर नहीं ले गया।<sup>16</sup> उस शाम, एक बूढ़ा आदमी खेतों में अपने काम से आया। वह एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र से था लेकिन गिबा में रह रहा था, जहाँ के लोग बिन्यामीन के थे।<sup>17</sup> जब उसने नगर के चौक में याकी को देखा, तो बूढ़े आदमी ने पूछा, “तुम कहाँ जा रहे हो? तुम कहाँ से आए हो?”<sup>18</sup> उसने उत्तर दिया, “हम यहूदा के बेटलैहेम से एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र के एक दूरस्थ क्षेत्र की ओर जा रहे हैं, जहाँ मैं रहता हूँ। मैं बेटलैहेम गया था, और अब मैं प्रभु के पर जा रहा हूँ। लेकिन किसी ने मुझे रात के लिए अंदर नहीं लिया है।”<sup>19</sup> हमारे पास हमारे गधों के लिए भूसा और चारा है, और मेरे तुहारे सेवक, और मेरे साथ की युवती और सेवक के लिए रोटी और दाखमधू है। हमें किसी चीज़ की कमी नहीं है।”<sup>20</sup> “तुम मेरे घर में स्वागत हो,” बूढ़े आदमी ने कहा। “मुझे जो कुछ चाहिए वह प्रदान करने दो। केवल चौक में रात मत बिताओ।”<sup>21</sup> तो उसने उसे अपने घर में ले लिया और गधों को खिलाया। उनके पैर धोने के बाद, उहोंने खाया और पिया।

<sup>22</sup> जब वे आनंद से रहे थे, नगर के कुछ दुर्घे लोग घर को धैर लिया। दरवाजे पर धमकाते हुए, उहोंने बूढ़े आदमी से खिलाकर कहा, “उस आदमी को बाहर लाओ जो तुम्हारे घर आया है ताकि हम उसके साथ संभोग कर सकें।”<sup>23</sup> घर के मालिक ने बाहर आकर उनसे कहा, “नहीं, मेरे मित्रों, इतना नीच मत बनो। चूंकि यह आदमी मेरा अतिथि है, यह धृणित काम मत करो।”<sup>24</sup> देखो, यहाँ मेरी कुंवारी बेटी और उसकी उपपत्नी हैं। मैं उहोंने अभी तुम्हारे पास लाता हूँ, और तुम उहोंने उपयोग कर सकते हों और उनके साथ जो चाही कर सकते हों। लेकिन इस आदमी के साथ ऐसा अपमानजनक काम मत करो।”<sup>25</sup> लेकिन लोग उसकी बात नहीं माने। तो आदमी ने अपनी उपपत्नी को लिया और उन्हें बाहर भेज दिया, और उहोंने उसे रात भर बलाकार किया और दुर्व्यवहार किया। सुबह होते ही उहोंने उसे छोड़ दिया।<sup>26</sup> सुबह

होते ही वह महिला वापस लौटकर उस घर के दरवाजे पर गिर पड़ी जहाँ उसका स्वामी ठहरा हुआ था, और दिन के उजाले तक वहीं पड़ी रही।

<sup>27</sup> जब उसका स्वामी सुबह उठा और घर का दरवाजा खोला, वह अपने रास्ते पर चलने के लिए बाहर गया। वहाँ उसकी उपपत्नी पड़ी थी, घर के दरवाजे की चौखट पर गिरी हुई, उसके हाथ चौखट पर थे।<sup>28</sup> उसने उससे कहा, “उठो; चलो चलते हैं।” लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। फिर उसने उसे अपने गधे पर रखा और घर के लिए निकल पड़ा।<sup>29</sup> जब वह घर पहुँचा, तो उसने एक चाकू लिया और अपनी उपपत्नी को टुकड़े-टुकड़े करके बाहर भागों में काटा, और उन्हें इसाएल के पूरे क्षेत्र में भेज दिया।<sup>30</sup> जो कोई भी इसे देखता था, कहता था, “ऐसी बात कभी नहीं देखी गई या की गई है, जब से इसाएली मिस्स से निकले थे। कल्पना करो! हमें कुछ करना चाहिए! बोलो!”

**20** तब दान से लेकर बेर्शबा तक और गिलाद की भूमि से सभी इसाएली एक जुट होकर मिज़पा में यहोवा के सामने इकट्ठे हुए।<sup>2</sup> इसाएल की सभी जातियों के नेताओं ने परमेश्वर की प्रजा की सभा में अपनी जगह ली – चार लाख तलवारधारी पुरुष।<sup>3</sup> (बिन्यामीनियों ने सुना कि इसाएली मिज़पा में आए हैं।) तब इसाएलियों ने कहा, “हमें बाताओं कि यह भयानक घटना कैसे हुई।”<sup>4</sup> तब लेवी, मारी गई स्त्री का पापि, ने कहा, “मैं अपनी रखैल के साथ रात बिताने के लिए बिन्यामीन के गिबा में आया।<sup>5</sup> रात के समय गिबा के लोग मेरे पीछे आए और घर को धेर लिया, मुझे मार डालने का इरादा रखते थे। उहोंने मेरी रखैल के साथ दुर्व्यवहार किया जब तक कि वह मर नहीं गई।”<sup>6</sup> मैंने अपनी रखैल को लिया, उसे टुकड़ों में काटा और इसाएल की विरासत के क्षेत्र में भेज दिया, क्योंकि उन्होंने इसाएल में एक भयानक कार्य किया।<sup>7</sup> अब, सभी इसाएली, यहाँ बोलो और अपना निर्णय दो।”

<sup>8</sup> सभी लोग एक साथ उठे और कहा, “हम में से कोई भी घर नहीं जाएगा। कोई भी अपने घर नहीं लौटेगा।”<sup>9</sup> यह हम गिबा के साथ करेंगे: हम चिट्ठियाँ डालेंगे<sup>10</sup> और इसाएल की सभी जातियों से सौ में से दस पुरुष लेंगे, और हजार में से सौ, और दस हजार में से हजार, सेना के लिए आपूर्ति लाने के लिए। जब सेना बिन्यामीन के गिबा में पहुँचेगी, तो वे इसाएल में किए गए भयानक कार्य के लिए उन्हें दंड देंगे।”<sup>11</sup> इस प्रकार सभी इसाएली एक जुट होकर शहर के खिलाफ इकट्ठे हुए।

## न्यायियों

<sup>12</sup> इसाएल की जातियों ने बिन्यामीन की जाति में दूत भेजे, यह कहते हुए, “तुम्हारे बीच यह बुरा कार्य कैसे हुआ? <sup>13</sup> अब उन दुष्ट गिबा के पुरुषों को हमारे हवाले कर दो ताकि हम उन्हें मार सकें और इसाएल से बुराई को दूर कर सकें।” लेकिन बिन्यामीनियों ने अपने इसाएली भाइयों की नहीं सुनी। <sup>14</sup> वे अपने शहरों से गिबा में इकट्ठे होकर इसाएलियों के खिलाफ लड़ने के लिए आए। <sup>15</sup> तुरंत बिन्यामीनियों ने अपने शहरों से छब्बीस हजार तलवारधारी पुरुषों को संगठित किया, इसके अलावा गिबा से सात सौ चुने हुए पुरुष। <sup>16</sup> इन सभी में से सात सौ चुने हुए सैनिक ये जो बाएं हाथ के थे, जो बाल पर पत्तर मार सकते थे और चूकते नहीं थे। <sup>17</sup> बिन्यामीन को छोड़कर, इसाएल ने चार लाख तलवारधारी पुरुषों को संगठित किया, जो सभी युद्ध में अनुभवी थे।

<sup>18</sup> इसाएली बेतेल गए और परमेश्वर से पूछा। उन्होंने कहा, “हम में से कौन पहले बिन्यामीनियों के खिलाफ लड़ाई के लिए जाएगा?” यहोवा ने उत्तर दिया, “यहूदा पहले जाएगा।” <sup>19</sup> अगली सुबह इसाएली गिबा के पास डेरा डालकर निकले। <sup>20</sup> इसाएली बिन्यामीनियों से लड़ने के लिए निकले और गिबा के खिलाफ युद्ध की स्थिति में खड़े हो गए। <sup>21</sup> बिन्यामीनियों ने गिबा से बाहर आकर उस दिन युद्ध के मैदान पर बाईस हजार इसाएलियों को काट डाला।

<sup>22</sup> लेकिन इसाएलियों ने एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया और फिर से अपनी स्थिति में खड़े हो गए जहाँ वे पहले दिन खड़े थे। <sup>23</sup> इसाएली यहोवा के सामने शाम तक रोते रहे, और उन्होंने यहोवा से पूछा। उन्होंने कहा, “क्या हम फिर से बिन्यामीनियों के खिलाफ लड़ाई के लिए जाएं, जो हमारे इसाएली भाई हैं?” यहोवा ने उत्तर दिया, “उनके खिलाफ जाओ।” <sup>24</sup> तब इसाएली दूसरे दिन बिन्यामीनियों के पास गए। <sup>25</sup> इस बार, जब बिन्यामीनियों ने गिबा से बाहर आकर उनका सामना किया, उन्होंने अठारह हजार इसाएलियों को काट डाला, जो सभी तलवारधारी थे। <sup>26</sup> तब सभी इसाएली, पूरी सेना, बेतेल गए, और वहाँ यहोवा के सामने रोते हुए बढ़े। उन्होंने उस दिन शाम तक उपवास किया और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। <sup>27</sup> और इसाएलियों ने यहोवा से पूछा। (उन दिनों परमेश्वर की वाचा का सन्दूक वहाँ था, <sup>28</sup> और एलीअजर के पुत्र फिनहास, जो हास्तन का पुत्र था, उसके सामने सेवा कर रहा था।) उन्होंने पूछा, “क्या हम फिर से बिन्यामीनियों के खिलाफ लड़ाई के लिए जाएं, जो हमारे इसाएली भाई

हैं, या नहीं?” यहोवा ने उत्तर दिया, “जाओ, क्योंकि कल मैं उन्हें तुम्हारे हाथ में ढूंगा।”

<sup>29</sup> तब इसाएल ने गिबा के चारों ओर घात लगाई। <sup>30</sup> वे तीसरे दिन बिन्यामीनियों के खिलाफ गए और गिबा के खिलाफ उसी तरह से स्थिति में खड़े हो गए जैसे पहले किया था। <sup>31</sup> बिन्यामीनियों ने उनका सामना करने के लिए बाहर आए और शहर से दूर खींच गए। उन्होंने इसाएलियों पर पहले की तरह हानि पहुँचाना शुरू कर दिया, लगभग तीस पुरुष, कहते हुए, “हम उन्हें पहले की तरह हरा रहे हैं!” <sup>32</sup> लेकिन इसाएलियों ने कहा, “चलो पीछे हटें और उन्हें शहर से सड़कों पर खींच लें।” <sup>33</sup> इसाएल के सभी पुरुष अपनी जगहों से हिले और बाल-तामार में स्थिति में खड़े हो गए, और इसाएली घात गिबा के पश्चिम से अपने छिपने के स्थान से बाहर निकला। <sup>34</sup> तब इसाएल के दस हजार श्रेष्ठ योद्धाओं ने गिबा पर हमला किया, और लड़ाई तीव्र थी। बिन्यामीनियों को यह एहसास नहीं हुआ कि विपत्ति निकट थी।

<sup>35</sup> यहोवा ने इसाएल के सामने बिन्यामीन को पराजित किया, और उस दिन इसाएलियों ने पच्चीस हजार एक सौ बिन्यामीनियों को मारा, जो सभी तलवारधारी थे। <sup>36</sup> तब बिन्यामीनियों ने देखा कि वे पराजित हो गए हैं। अब इसाएल के पुरुष बिन्यामीन के सामने पीछे हट गए थे, क्योंकि वे गिबा के पास लगाई गई घात पर निभर थे। <sup>37</sup> जो घाट में थे, वे दौड़कर अंदर घुसे और पूरे शहर को तलवार से मार डाला। <sup>38</sup> अब इसाएलियों ने घात के साथ एक सकेत पर सहमति की थी: जब वे शहर से धूंप का एक बड़ा बादल उठाते देखेंगे, <sup>39</sup> तो इसाएली युद्ध में मुड़ जाएंगे। बिन्यामीनियों ने इसाएलियों पर हानि पहुँचाना शुरू कर दिया था, लगभग तीस पुरुष, और उन्होंने कहा, “हम उन्हें पहले युद्ध की तरह हरा रहे हैं!” <sup>40</sup> लेकिन जब शहर से धूंप उठाने लगा, तो बिन्यामीनियों ने मुड़कर देखा कि पूरा शहर धूंप में जल रहा है।

<sup>41</sup> तब इसाएली मुड़े और बिन्यामीनियों को भय हुआ, क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि विपत्ति उन पर आ गई है। <sup>42</sup> इसलिए वे इसाएलियों के सामने जंगल की दिशा में भागे, लेकिन वे युद्ध से बच नहीं सके। और जो इसाएली शहरों से आए थे, उन्होंने उन्हें वहाँ काट डाला। <sup>43</sup> उन्होंने बिन्यामीनियों को धेर लिया, उनका पीछा किया, और गिबा के पूर्व में उन्हें आसानी से पछाड़ दिया। <sup>44</sup> अठारह हजार बिन्यामीनियों के पुरुष मिरे – सभी वीर योद्धा। <sup>45</sup> जब वे जंगल की ओर रिमोन की चट्टान की ओर भागे, तो इसाएलियों ने सड़कों पर पाँच

## न्यायियों

हजार पुरुषों को काट डाला। उन्होंने गिदोम तक पीछा किया और दो हजार और को मार डाला।<sup>46</sup> उस दिन, पच्चीस हजार बिन्यामिनियों के तलवारधारी गिरे, जो सभी वीर योद्धा थे।<sup>47</sup> लेकिन छह सौ पुरुष जंगल में रिमोन की चट्टान की ओर भाग गए, जहाँ वे चार महीने तक रहे।<sup>48</sup> इसाएल के पुरुष बिन्यामीन लौटे और सभी शहरों को तलवार से मारा, जिसमें जानवर और जो कुछ भी मिला। सभी शहरों को उन्होंने आग लगा दी।

**21** इसाएल के पुरुषों ने मिस्या में शपथ खाई थी: “हम में से कोई भी अपनी बेटी का विवाह एक बिन्यामिनी से नहीं करेगा।”<sup>2</sup> लोग बेतेल गए और शाम तक परमेश्वर के सामने बैठे रहे, अपनी आवाजें उठाते हुए और कड़वे आँख बहाते हुए।<sup>3</sup> “हे इसाएल के परमेश्वर, प्रभु,” वे पुकारे, “यह इसाएल के साथ क्यों हुआ है? आज इसाएल से एक गोत्र क्यों गायब होना चाहिए?”

<sup>4</sup> अगले दिन सुबह लोगों ने एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।<sup>5</sup> फिर इसाएलियों ने पूछा, “इसाएल के सभी गोत्रों में से कौन मिस्या में प्रभु के सामने आने में असफल रहा?” उन्होंने एक गंभीर शपथ खाई थी कि जो कोई भी मिस्या में प्रभु के सामने इकट्ठा होने में असफल रहेगा, उसे मार डाला जाएगा।<sup>6</sup> अब इसाएली अपने साथी इसाएलियों, बिन्यामिनियों के लिए शोक कर रहे थे। उन्होंने कहा, “आज इसाएल से एक गोत्र कट गया है।<sup>7</sup> हम बचे हुए लोगों के लिए परियाँ कैसे प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि हमने प्रभु की शपथ खाई है कि हम उन्हें अपनी बेटियों में से किसी का विवाह नहीं करेंगे?”

<sup>8</sup> फिर उन्होंने पूछा, “इसाएल के किस गोत्र ने मिस्या में प्रभु के सामने सभा में आने में असफल रहा?” उन्होंने पाया कि याबेश गिलाद से कोई भी शिविर में नहीं आया था।<sup>9</sup> जब उन्होंने लोगों की गिनती की, तो उन्होंने पाया कि याबेश गिलाद से कोई भी वहाँ नहीं था।<sup>10</sup> इसलिए सभा ने याबेश गिलाद को बार रह जाये योद्धा भेजे और निर्देश दिया: “जाओ और वहाँ रहने वाले लोगों को तलवार से मार डालो — उन पुरुषों और महिलाओं को जिन्होंने किसी पुरुष के साथ सोया है।”<sup>11</sup> उन्होंने याबेश गिलाद के लोगों में से चार सौ युवा महिलाओं को पाया जिन्होंने कभी किसी पुरुष के साथ नहीं सोया था, और उन्हें कनान के शीलों में शिविर में लाए।

<sup>12</sup> उन्होंने याबेश गिलाद के लोगों में से चार सौ युवा महिलाओं को पाया जिन्होंने कभी किसी पुरुष के साथ नहीं सोया था, और उन्हें कनान के देश में शीलों के

शिविर में लाए।<sup>13</sup> फिर पूरी सभा ने रिमोन की चट्टान पर बिन्यामिनियों को शांति का प्रस्ताव भेजा।<sup>14</sup> इसलिए बिन्यामिनी उस समय लौट आए, और इसाएलियों ने उन्हें याबेश गिलाद की उन महिलाओं को दिया जिन्हें बचाया गया था। लेकिन उन सभी के लिए पर्याप्त नहीं थीं।

<sup>15</sup> लोग बिन्यामिन के लिए शोक कर रहे थे, क्योंकि प्रभु ने इसाएल के गोत्रों में एक अंतर कर दिया था।<sup>16</sup> और सभा के बुजायों ने कहा, “बिन्यामिन की महिलाओं के नाम ही जाने के बाद, हम बचे हुए पुरुषों के लिए परियाँ कैसे प्रदान करेंगे?”<sup>17</sup> बिन्यामिन के बचे हुए लोगों के वंशज होने चाहिए। उन्होंने कहा, “ताकि इसाएल का एक गोत्र नष्ट न हो जाए।”<sup>18</sup> हम उन्हें अपनी बेटियाँ परियाँ के रूप में नहीं दे सकते, क्योंकि हम इसाएलियों ने यह शपथ खाई है: ‘शापित हो जो कोई बिन्यामिनी को पत्नी देता है।’

<sup>19</sup> लेकिन देखो, शीलों में प्रभु का वार्षिक उत्सव है, जो बेतेल के उत्तर में, उस सड़क के पूर्व में है जो बेतेल से शेकम जाती है, और लेबोना के दक्षिण में है।”<sup>20</sup> इसलिए उन्होंने बिन्यामिनियों को निर्देश दिया, “जाओ और दाख की बारियों में छिप जाओ।”<sup>21</sup> और देखो। जब शीलों की युवा महिलाएँ नृत्य में शामिल होने के लिए बाहर आएँ, तो दाख की बारियों से दौड़कर उनमें से प्रत्येक को अपनी पत्नी के रूप में पकड़ लो। फिर बिन्यामिन की भूमि में लौट जाओ।”<sup>22</sup> जब उनके पिता या भाई हमसे शिकायत करेंगे, तो हम उनसे कहेंगे, “कृपाया उन्हें रखने की कृपा करें, क्योंकि हमने युद्ध के दौरान उनके लिए परियाँ नहीं पाईं, और आप अपनी शपथ तोड़ने के दोषी नहीं होंगे, क्योंकि आपने अपनी बेटियाँ उन्हें नहीं दीं।”

<sup>23</sup> तो बिन्यामिनियों ने वही किया। जब युवा महिलाएँ नृत्य कर रही थीं, प्रत्येक पुरुष ने एक को पकड़ा और उसे अपनी पत्नी बना लिया। फिर वे अपनी विरासत में लौट आए, अपने नारों का पुनर्निर्माण किया और उनमें बस गए।<sup>24</sup> उस समय इसाएली उस स्थान को छोड़कर अपने गोत्रों और कुलों के पास लौट गए, प्रत्येक अपनी अपनी विरासत में।

<sup>25</sup> उन दिनों इसाएल का कोई राजा नहीं था; हर कोई अपनी दृष्टि में जो सही था वही करता था।

## रूत

**1** उन दिनों में जब न्यायी शासन कर रहे थे, उस देश में अकाल पड़ा। इसलिए यहूदा के बेतलेहेम का एक व्यक्ति, अपनी पत्नी और दो पुत्रों के साथ, थोड़े समय के लिए मोआब देश में रहने चला गया।<sup>2</sup> उस व्यक्ति का नाम एलीमेलक था, उसकी पत्नी का नाम नाओमी था, और उसके दो पुत्रों के नाम महलोन और किल्योन थे। वे यहूदा के बेतलेहेम के एप्राटा थे। वे मोआब में गए और वहाँ रहने लगे।<sup>3</sup> अब एलीमेलक, नाओमी का पति, मर गया, और वह अपने दो पुत्रों के साथ रह गई।<sup>4</sup> उन्होंने मोआबी स्थितों से विवाह किया, एक का नाम ओर्पा था और दूसरी का नाम रूत था। वे वहाँ लंगभग दस वर्ष तक रहे।<sup>5</sup> महलोन और किल्योन दोनों भी मर गए, और नाओमी अपने दो पुत्रों और पति के बिना रह गई।

<sup>6</sup> जब नाओमी ने मोआब में सुना कि प्रभु ने अपने लोगों की सहायता की है और उन्हें भोजन प्रदान किया है, तो उसने और उसकी बहुओं ने वहाँ से घर लौटने की तैयारी की।<sup>7</sup> अपनी दो बहुओं के साथ वह उस स्थान से चली जहाँ वह रह रही थी और उस मार्ग पर चल पड़ी जो उन्हें यहूदा की भूमि में वापस ले जाएगा।<sup>8</sup> तब नाओमी ने अपनी दो बहुओं से कहा, “मुझे मैं से प्रत्येक अपनी माँ के घर वापस जाऊ।” प्रभु उम पर कृपा करे, जैसे तुमने अपने मृत पतियों और मुझ पर कृपा की है।<sup>9</sup> प्रभु तुम्हें यह आशीर्वाद दे कि तुम मैं से प्रत्येक को किसी अच्युत पति के घर में विश्राम मिले।” तब उसने उन्हें अलविदा कहा, और वे जोर से रोईं।<sup>10</sup> और उससे कहा, “हम तुम्हारे साथ तुम्हारी प्रजा के पास लौटेंगे।”

<sup>11</sup> लेकिन नाओमी ने कहा, “घर लौट जाओ, मेरी बेटियों। तुम मेरे साथ क्यों आओगी? क्या मेरे पास और पुरु होंगे, जो तुम्हारे पति बन सकें? घर लौट जाओ, मेरी बेटियों, मैं बहुत बूढ़ी हूँ कि किसी और पति को पा सकूँ। यदि मुझे लगता कि मेरे लिए अभी भी आशा है – यदि आज रात मेरा पति होता और फिर पुत्रों को जन्म देती –<sup>13</sup> तो क्या तुम उनके बड़े होने तक प्रतीक्षा करोगी? क्या तुम उनके लिए अविवाहित रहोगी? नहीं, मेरी बेटियों। मेरे लिए यह तुम्हारे मुकाबले अधिक कड़वा है, क्योंकि प्रभु का हाथ मेरे विरुद्ध हो गया है।”

<sup>14</sup> इस पर वे फिर से जोर से रोईं। तब ओर्पा ने अपनी सास को अलविदा कहा, लेकिन रूत उससे चिपकी रही।<sup>15</sup> “देखो,” नाओमी ने कहा, “तुम्हारी ननद अपनी प्रजा और अपने देवताओं के पास लौट रही है। उसके साथ वापस जाओ।”<sup>16</sup> लेकिन रूत ने उत्तर दिया, “मुझे छोड़ने या तुमसे लौटने के लिए मजबूर मत करो। जहाँ तुम जाओगी मैं जाऊँगी, और जहाँ तुम रहोगी मैं रहूँगी।

तुम्हारी प्रजा मेरी प्रजा होगी और तुम्हारा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।<sup>17</sup> जहाँ तुम मरोगी मैं मरूँगी, और वहीं दफनाई जाऊँगी। प्रभु मुझसे ऐसा ही करे, और इससे भी अधिक, यदि मृत्यु भी तुम्हें और मुझे अलग करे।”<sup>18</sup> जब नाओमी ने देखा कि रूत उसके साथ जाने के लिए दृढ़ है, तो उसने उसे मनाना बंद कर दिया।

<sup>19</sup> तो वे दोनों महिलाएँ बेतलेहेम तक गईं। जब वे बेतलेहेम पहुँचीं, तो पूरे शहर में उनके कारण हलचल मच गई, और महिलाओं ने कहा, “क्या यह नाओमी हो सकती है?”<sup>20</sup> “मुझे नाओमी मत कहो,” उसने उनसे कहा। “मुझे मारा कहो, क्योंकि सर्वशक्तिमान ने मेरा जीवन बहुत कड़वा कर दिया है।”<sup>21</sup> मैं भरी-पूरी गई थी, लेकिन प्रभु ने मुझे खाली वापस लाया है। मुझे नाओमी क्यों कहती हो? प्रभु ने मुझे दुःख दिया है; सर्वशक्तिमान ने मुझ पर विपत्ति लाई है।”<sup>22</sup> इसलिए नाओमी मोआब से लौट आई, अपनी बहू रूत मोआबी के साथ, बेतलेहेम में पहुँची जब जौ की फसल शुरू हो रही थी।

**2** अब नाओमी के पति की ओर से एक संबंधी था, जो एलीमेलक के कुल का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, जिसका नाम बोअञ्ज था।<sup>2</sup> और मोआबी रूत ने नाओमी से कहा, “मुझे खेतों में जाने दो और किसी के पीछे बचे हुए अनाज को बीनने दो, जिसकी आँखों में मुझे अनुग्रह मिले।” नाओमी ने उससे कहा, “जाओ, मेरी बेटी।”<sup>3</sup> तो वह बाहर गई, एक खेत में प्रवेश किया और कटाई करने वालों के पीछे बीनने लगी। जैसा कि हुआ, वह एक खेत में काम कर रही थी जो बोअञ्ज का था, जो एलीमेलक के कुल का था।

<sup>4</sup> तभी बोअञ्ज बेतलेहेम से आया और कटाई करने वालों का अभिवादन किया, “प्रभु तुम्हारे साथ हो!”<sup>5</sup> “प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दो!” उन्होंने उत्तर दिया।<sup>6</sup> बोअञ्ज ने अपने कटाई करने वालों के अधिकारी से पूछा, “वह युवती किसकी है?”<sup>7</sup> अधिकारी ने उत्तर दिया, “वह मोआबी है जो नाओमी के साथ मोआब से वापस आई है।”<sup>8</sup> उसने कहा, “कृपया मुझे कटाई करने वालों के पीछे बंडलों के बीच बीनने और इकट्ठा करने दो।” वह सुबह से यहाँ आई है और अब तक यहाँ रही है, सिवाय एक छोटे विश्राम के जो उसने आश्रय में लिया।”

<sup>9</sup> तो बोअञ्ज ने रूत से कहा, “मेरी बेटी, मेरी बात सुनो। किसी और खेत में बीनने के लिए मत जाओ और यहाँ से मत जाओ। मेरे लिए काम करने वाली महिलाओं के साथ यहाँ रहो।”<sup>10</sup> उस खेत को देखो जहाँ पुरुष कटाई कर रहे हैं, और महिलाओं के पीछे चलो। मैंने पुरुषों से

## रूत

कहा है कि वे तुम्हें हाथ न लगाएँ। और जब भी तुम्हें प्यास लगे, जाओ और उन पानी के मटकों से पी लो जिन्हें पुरुषों ने भरा है।<sup>10</sup> इस पर, उसने अपने चेहरे को जमीन पर झुकाया। उसने उससे पूछा, “मुझे आपकी अँखों में ऐसा अनुग्रह क्यों मिला कि आपने मुझ पर ध्यान दिया — एक विदेशी पर?”

<sup>11</sup> बोअज्ज ने उत्तर दिया, “मुझे तुम्हारे पति की मृत्यु के बाद से तुम्हारी सास के लिए किए गए सभी कामों के बारे में बताया गया है — कैसे तुमने अपने पिता और माता और अपने देश को छोड़ दिया और उन लोगों के साथ रहने आईं जिन्हें तुम पहले नहीं जानती थीं।<sup>12</sup> प्रभु तुम्हें तुम्हारे द्वारा किए गए कामों का प्रतिफल दे। प्रभु, इसाएल के परमेश्वर, तुम्हें भरपूर इनाम दे, जिनके पंखों के नीचे तुमने शरण ली है।”<sup>13</sup> उसने कहा, “क्या मैं आपके अँखों में अनुग्रह पाती रहूँ, मेरे प्रभु? आपने अपने दास से दयालुता से बात करके मुझे आराम दिया है — हालांकि मेरे पास आपके दासों में से एक का भी स्थान नहीं है।”

<sup>14</sup> भोजन के समय बोअज्ज ने उससे कहा, “यहाँ आओ। कुछ रोटी लो और उसे सिरके में ढुबो।” जब वह कटाई करने वालों के साथ बैठी, तो उसने उसे कुछ भुना हुआ अनाज दिया। उसने जितना चाहा खाया और कुछ बचा भी लिया।<sup>15</sup> जैसे ही वह बीनने के लिए उठी, बोअज्ज ने अपने पुरुषों को आदेश दिया, “उसे बंडलों के बीच बीनने दो और उसे डांटो मत।<sup>16</sup> यहाँ तक कि उसके लिए बंडलों से कुछ डंठल खींच कर छोड़ दो ताकि वह उहें उठा सके, और उसे फटकारो मत।”

<sup>17</sup> तो रूत शाम तक खेत में बीनती रही। फिर उसने जो जौ इकट्ठा किया था उसे पीटा, और यह लगभग एक एफाह के बराबर था।<sup>18</sup> वह इसे शहर में ले गई, और उसकी सास ने देखा कि उसने जितना इकट्ठा किया था। रूत ने जो कुछ उसने खाया था उसके बाद बचा हुआ भी उसे दिया।<sup>19</sup> उसकी सास ने उससे पूछा, “तुमने आज कहाँ बीनाई की? तुमने कहाँ काम किया? धन्य हो वह व्यक्ति जिसने तुम पर ध्यान दिया!” फिर रूत ने उसे उस व्यक्ति के बारे में बताया जिसके स्थान पर वह काम कर रही थी। “जिस व्यक्ति के साथ मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज्ज है,” उसने कहा।

<sup>20</sup> “प्रभु उसे आशीर्वाद दो।” नाओमी ने अपनी बहू से कहा। “उसने जीवित और मृतकों के प्रति दयालुता दिखाना नहीं छोड़ा है।” उसने जोड़ा, “वह व्यक्ति हमारा निकट संबंधी है; वह हमारे संरक्षक-मुकितदाताओं में से

एक है।”<sup>21</sup> फिर मोआबी रूत ने कहा, “उसने मुझसे यह भी कहा, ‘मेरे काम करने वालों के साथ रहो जब तक कि वे मेरी सारी फसल काट न लें।’”<sup>22</sup> नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा, “मेरी बेटी, तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम उसके लिए काम करने वाली महिलाओं के साथ जाओ, व्यांकिं कि किसी और के खेत में तुम्हें नुकसान हो सकता है।”<sup>23</sup> तो रूत बोअज्ज की महिलाओं के करीब रही जब तक कि जौ और गेहूँ की फसलें समाप्त नहीं हो गईं। और वह अपनी सास के साथ रहती थी।

**3** एक दिन रूत की सास नाओमी ने उससे कहा, “मेरी बेटी, क्या मुझे तुम्हारे लिए एक घर नहीं खोजना चाहिए, जहाँ तुम्हारा भला हो? <sup>2</sup> अब बोअज्ज, जिनकी महिलाओं के साथ तुमने काम किया है, हमारे रिश्तेदार हैं। आज रात वह खलिहान में जौ फटकेंगे।<sup>3</sup> थी लो, इत्र लगाओ, और अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन लो। फिर खलिहान में जाओ, लेकिन जब तक वह खाना-पीना समाप्त न कर ले, उसे यह मत बताना कि तुम वहाँ हो।<sup>4</sup> जब वह लेट जाए, तो ध्यान से देखो कि वह कहाँ लेटा है। फिर जाकर उसके पैरों को खोल दो और लेट जाओ। वह तुम्हें बताएगा कि क्या करना है।”<sup>5</sup> “मैं जो कुछ भी आप कहेंगी, वह करूँगी,” रूत ने उत्तर दिया।<sup>6</sup> तो वह खलिहान में गई और अपनी सास ने जो कुछ कहा था, वह सब किया।

7 जब बोअज्ज ने खाना-पीना समाप्त कर लिया और वह अच्छे मूड़ में था, तो वह अनाज के ढेर के सुदूर छोर पर लेट गया। रूत धीरे से आई, उसके पैरों को खोला, और लेट गई।<sup>8</sup> रात के बीच में कुछ ऐसा हुआ कि आदमी चौक गया; उसने मुड़कर देखा—और उसके पैरों के पास एक स्त्री लेटी थी।<sup>9</sup> “तुम कौन हो?” उसने गूछा। “मैं आपकी दासी रूत हूँ,” उसने कहा। “अपने वस्त्र का कोना मुझ पर कैला दीजिए, व्यांकिं आप हमारे परिवार के संरक्षक-मुकितदाता हैं।”<sup>10</sup> प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे, मेरी बेटी,<sup>11</sup> उसने उत्तर दिया। “यह दया उस दया से भी बड़ी है जो तुमने पहले दिखाई थी: तुमने जवान पुरुषों के पीछे नहीं दौड़ी, चाहे वे धनी हों या गरीब।”<sup>11</sup> और अब, मेरी बेटी, डरो मत। मैं तुम्हारे लिए वह सब करूँगा जो तुम माँगती हो। मेरे नगर के सभी लोग जानते हैं कि तुम एक कुलीन चरित्र की स्त्री हो।<sup>12</sup> हालांकि यह सच है कि मैं हमारे परिवार का संरक्षक-मुकितदाता हूँ, एक और हौ जो मुझसे अधिक निकट संबंधी है।<sup>13</sup> रात भर यहाँ रहो, और सुबह यदि वह तुम्हारे संरक्षक-मुकितदाता के रूप में अपना कर्तव्य निभाना चाहता है, तो अच्छा है; उसे तुम्हें मुक्त करने दो। लेकिन अगर वह तैयार नहीं

## रूत

है, तो जैसे ही प्रभु जीवित है, मैं इसे करूँगा। यहाँ सुबह तक लेटी रहो।”

<sup>14</sup> तो वह सुबह तक उसके पैरों के पास लेटी रही, लेकिन किसी के पहचान में आने से पहले उठ गई, और उसने कहा, “किसी को यह नहीं पता चलना चाहिए कि एक स्त्री खलिहान में आई थी।” <sup>15</sup> उसने यह भी कहा, “जो शॉल तुम पहन रही हो, उसे लाओ और फैला दो।” जब उसने ऐसा किया, तो उसने उसमें छह माप जौ डाला और गठरी को उस पर रख दिया। फिर वह नगर वापस चला गया।

<sup>16</sup> जब रूत अपनी सास के पास आई, तो नाओमी ने पूछा, “कैसा रहा, मेरी बेटी?” फिर उसने उसे सब कुछ बताया जो बोअज़ ने उसके लिए किया था <sup>17</sup> और जोड़ा, “उसने मुझे ये छह माप जौ दिए, यह कहते हुए, ‘अपनी सास के पास खाली हाथ मट जाओ।’” <sup>18</sup> फिर नाओमी ने कहा, “रुको, मेरी बेटी, जब तक तुम यह न जान लो कि क्या होता है। क्योंकि वह आदमी तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक यह मामला आज ही निपट नहीं जाता।”

**4** इस बीच बोअज़ नगर के फाटक पर गया और वहाँ बैठ गया, तभी वह निकटतम कुटुंबी-उद्धारक आया जिसका उसने उल्लेख किया था। बोअज़ ने कहा, “मेरे मित्र, यहाँ आओ और बैठो।” तो वह वहाँ आया और बैठ गया। <sup>2</sup> बोअज़ ने नगर के दस बुजुर्गों को बुलाया और कहा, “पहाँ बैठो,” और वे बैठ गए। <sup>3</sup> फिर उसने कुटुंबी-उद्धारक से कहा, “नाओमी, जो मोआब से वापस आई है, हमारे रिश्टेदार एतिमेलक की भूमि बेच रही है।” <sup>4</sup> मैंने सोचा कि मैं इस मामले को आपके ध्यान में लाऊँ और सुझाव दूँ कि आप इसे यहाँ बैठे लोगों और मेरी प्रजा के बुजुर्गों के सामने खरीद तैं। यदि आप इसे उद्धार करेंगे, तो करें। लेकिन यदि आप नहीं करेंगे, तो मुझे बताएं, ताकि मैं जान सकूँ। क्योंकि इसे करने का अधिकार केवल आपके पास है, और मैं अगली पंक्ति में हूँ।” मैं इसे उद्धार करूँगा, उसने कहा।

<sup>5</sup> फिर बोअज़ ने कहा, “जिस दिन आप नाओमी से भूमि खरीदेंगे, आप मोआबी रूत की भी प्राप्त करेंगे, जो मृतक की विधवा है, ताकि मृतक के नाम को उसकी संपत्ति के साथ बनाए रखें।” <sup>6</sup> इस पर, कुटुंबी-उद्धारक ने कहा, “तब मैं इसे उद्धार नहीं कर सकता, क्योंकि मैं अपनी संपत्ति को खतरे में डाल सकता हूँ। आप इसे स्वयं उद्धार करें। मैं इसे नहीं कर सकता।” <sup>7</sup> अब पहले के समय में इसाएल में, संपत्ति के उद्धार और हस्तांतरण को अंतिम रूप देने के लिए, एक पक्ष ने अपनी जूती

उतारकर दूसरे को दे दी। यह इसाएल में लेन-देन को कानूनी रूप देने की विधि थी। <sup>8</sup> तो कुटुंबी-उद्धारक ने बोअज़ से कहा, “इसे स्वयं खरीद लो।” और उसने अपनी जूती उतार दी।

<sup>9</sup> फिर बोअज़ ने बुजुर्गों और सभी लोगों से घोषणा की, “आज आप गवाह हैं कि मैंने नाओमी से एलीमेलोक, किल्योन और मखलोन की सारी संपत्ति खरीद ली है।” <sup>10</sup> मैंने मोआबी रूत, मखलोन की विधवा को भी अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त किया है, ताकि मृतक के नाम को उसकी संपत्ति के साथ बनाए रखें, ताकि उसका नाम उसके परिवार से या उसके गृहनगर से गायब न हो। आज आप गवाह हैं।” <sup>11</sup> फिर फाटक पर उपस्थित बुजुर्गों और सभी लोगों ने कहा, “हम गवाह हैं। प्रभु उस स्त्री को जो आपके घर में आ रही है, राहेल और लिया की तरह बनाए, जिहोंने मिलकर इसाएल के परिवार को बनाया। आपका प्रभाव एप्राथा में हो और आप बेतलेहेम में प्रसिद्ध हो।” <sup>12</sup> उस संतान के द्वारा जो प्रभु आपको इस युग त्रिसी से देगा, आपका परिवार पेरज़ के समान हो, जिसे तामार ने यहूदा को जन्म दिया।”

<sup>13</sup> तो बोअज़ ने रूत को लिया और वह उसकी पत्नी बन गई। जब उसने उसके साथ संबंध बनाए, तो प्रभु ने उसे गर्भवती होने की शक्ति दी, और उसने एक पुरु को जन्म दिया। <sup>14</sup> स्त्रियों ने नाओमी से कहा, “प्रभु की सुन्ति हो, जिसने आज आपको बिना कुटुंबी-उद्धारक के नहीं छोड़ा। वह पूरे इसाएल में प्रसिद्ध हो।” <sup>15</sup> वह आपके जीवन को नया करेगा और आपकी वृद्धावस्था में आपको सहारा देगा। क्योंकि आपकी बहू, जो आपसे प्रेम करती है और जो आपके लिए सात पुरुओं से भी बेहतर है, ने उसे जन्म दिया है।” <sup>16</sup> फिर नाओमी ने बच्चे को अपनी बाहों में लिया और उसकी देखभाल की। <sup>17</sup> वहाँ रहने वाली स्त्रियों ने कहा, “नाओमी का एक पुरु है!” और उहोंने उसका नाम ओबेद रखा। वह यिशै का पिता था, जो दाऊद का पिता था।

<sup>18</sup> यह, फिर, पेरज़ की बंशावली है: पेरज़ हेज़रोन का पिता था, <sup>19</sup> हेज़रोन राम का पिता था, राम अमी-न्दाब का पिता था, <sup>20</sup> अमी-न्दाब नहशोन का पिता था, नहशोन सलमोन का पिता था, <sup>21</sup> सलमोन बोअज़ का पिता था, बोअज़ ओबेद का पिता था, <sup>22</sup> ओबेद यिशै का पिता था, और यिशै दाऊद का पिता था।

# 1 शमूएल

**1** एप्रैम के पहाड़ी देश में रामातैम सोफीम का एक व्यक्ति था, जिसका नाम एल्काना था, जो यहोवा का पुत्र, एलीहू का पुत्र, तोहू का पुत्र, और जूफ का पुत्र था, और वह एप्रैमी था।<sup>2</sup> उसकी दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था, और दूसरी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना के बच्चे थे, परन्तु हन्ना के कोई संतान नहीं थी।<sup>3</sup> हर वर्ष यह व्यक्ति अपने नगर से शीलो में यहोवा के सेनाओं के परमेश्वर की आराधना करने और बलिदान चढ़ाने जाता था, जहाँ एली के दो पुत्र – होप्री और पीनहास – यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते थे।<sup>4</sup> जब भी एल्काना अपना बलिदान चढ़ाता, वह अपनी पत्नी पनिन्ना और उसके सभी पुत्रों और पुत्रियों को मास के हिस्से देता।<sup>5</sup> परन्तु हन्ना को वह दोहरा हिस्सा देता, क्योंकि वह उससे प्रेम करता था, यद्यपि यहोवा ने उसकी कोख बंद कर रखी थी।<sup>6</sup> उसकी प्रतिद्वन्द्वी उसे कड़ाई से चिढ़ाती थी ताकि उसे परेशान करे, क्योंकि यहोवा ने उसकी कोख बंद कर रखी थी।<sup>7</sup> यह वर्ष दर वर्ष होता रहा। जब भी हन्ना यहोवा के घर जाती, उसकी प्रतिद्वन्द्वी उसे चिढ़ाती, और वह रोती और खाना नहीं खाती।<sup>8</sup> उसका पति एल्काना उससे कहता, “हन्ना, तुम क्यों रो रही हो? तुम क्यों नहीं खा रही हो? तुम इतनी उदास क्यों हो? क्या मैं तुम्हारे लिए दस पुत्रों से बेहतर नहीं हूँ?”

<sup>9</sup> जब उन्होंने शीलो में खा-पी लिया, हन्ना उठ खड़ी हुई। अब एली याजक यहोवा के मंदिर के द्वार के पास अपनी कुर्सी पर बैठा था।<sup>10</sup> हन्ना असंत दुखी थी, और वह यहोवा से प्रार्थना कर रही थी, कड़ाई से रो रही थी।<sup>11</sup> उसने एक मन्त्र मानी, “हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू सचमुच अपनी दासी की दुर्दशा पर ध्यान देगा, मुझे याद करेगा और अपनी दासी को नहीं भूलेगा, और अपनी दासी को एक पुत्र देगा, तो मैं उसे उसके जीवन के सभी दिनों के लिए यहोवा को अर्पित कर दूँगी, और उसके सिर पर कभी उस्तरा नहीं चलेगा।”<sup>12</sup> जब वह यहोवा के सामने प्रार्थना करती रही, एली उसके मुँह को देख रहा था।<sup>13</sup> हन्ना अपने हृदय में बोल रही थी; उसके हौंठ हिल रहे थे, परन्तु उसकी आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी। इसलिए एली ने सोचा कि वह नशे में है।<sup>14</sup> एली ने उससे कहा, “तू कब तक नशे में रहेगी? अपनी मदिरा दूर कर!”<sup>15</sup> परन्तु हन्ना ने उत्तर दिया, “नहीं, मेरे प्रभु, मैं एक दुखी आत्मा वाली स्त्री हूँ। मैंने न तो मदिरा पी है और न ही कोई तीव्र पेय, परन्तु मैंने अपनी आत्मा को यहोवा के सामने उंडेल दिया है।<sup>16</sup> अपनी दासी को दुष्ट स्त्री न समझ, क्योंकि मैंने अपनी पीड़ा और दुःख के कारण अब तक प्रार्थना की है।”<sup>17</sup> तब एली ने उत्तर दिया, “शांति से जाओ, और इसाएल का परमेश्वर तुम्हें वह दे जो तुमने उससे माँगा है।”<sup>18</sup> उसने कहा, “तेरी

दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए।” तब वह अपने मार्ग पर चली गई और कुछ खाया, और उसका चेहरा अब और उदास नहीं था।

<sup>19</sup> अगली सुबह वे जल्दी उठे और यहोवा के सामने आराधना की, फिर अपने घर रामाह लौट आए। एल्काना अपनी पत्नी हन्ना के संग हुआ, और यहोवा ने उसे याद किया।<sup>20</sup> समय पर, हन्ना गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम शमूएल रखा, यह कहते हुए, “क्योंकि मैंने उसे यहोवा से माँगा था।”<sup>21</sup> जब एल्काना अपने सारे धराने के साथ यहोवा के लिए वार्षिक बलिदान चढ़ाने और अपनी मन्त्र पूरी करने गया,<sup>22</sup> हन्ना नहीं गई। उसने अपने पति से कहा, “जब लड़का दूध छुड़ा लेगा, तब मैं उसे ले जाऊँगी, ताकि वह यहोवा के सामने प्रकट हो और वहाँ स्थायी रूप से रहे।”<sup>23</sup> उसका पति एल्काना उससे कहता, “जो तुझे सबसे अच्छा लगे वही कर। जब तक तूने उसका दूध नहीं छुड़ाया है, तब तक रुकी रह; केवल यहोवा अपना वचन पूरा करे।” इसलिए वह घर पर रही और अपने पुत्र को दूध पिलाती रही जब तक उसने उसका दूध नहीं छुड़ाया।

<sup>24</sup> जब उसने उसका दूध छुड़ा लिया, वह उसे अपने साथ शीलो में यहोवा के घर ले गई, तीन साल के बैल, एक एफा आटा, और मदिरा की एक मशक के साथ। लड़का अभी छोटा था।<sup>25</sup> उन्होंने बैल का वध किया और बच्चे को एली के पास ले आए।<sup>26</sup> उसने उससे कहा, “मेरे प्रभु, मुझे क्षमा करें। जैसे आप जीतिहैं, मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूँ जो यहाँ आपके पास खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना कर रही थी।”<sup>27</sup> मैंने इस बच्चे के लिए प्रार्थना की थी, और यहोवा ने मुझे वह दिया जो मैंने उससे माँगा था।<sup>28</sup> अब मैं उसे यहोवा को समर्पित कर रही हूँ। जब तक वह जीति रहेगा, वह यहोवा को दिया गया है।” और उसने वहाँ यहोवा की आराधना की।

**2** तब हन्ना ने प्रार्थना की और कहा:

“मेरा हृदय यहोवा में आनंदित है, मेरी सींग यहोवा के द्वारा ऊँची उठी है। मेरा मुँह मेरे शूलों पर गर्व करता है, क्योंकि मैं तेरी मुक्ति में आनंदित हूँ।”<sup>2</sup> “यहोवा के समान पवित्र कोई नहीं है, क्योंकि तेरे सिवा कोई नहीं है, और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्ठान नहीं है।”<sup>3</sup>

<sup>3</sup> “इतना गर्व से न बोलो, तुम्हारे मुँह से अंकंकार न निकले, क्योंकि यहोवा ज्ञान का परमेश्वर है, और उसके द्वारा कर्म तौले जाते हैं।”<sup>4</sup> “शक्तिशाली के धनुष टूट गए हैं, पर जो ठोकर खाए थे वे अब शक्ति

# 1 शमूएल

से सुसज्जित हैं।<sup>5</sup> "जो भरपूर थे वे रोटी के लिए मजदूरी करते हैं पर जो भूखे थे वे अब संतुष्ट हैं। यहाँ तक कि बौँझ ने सात जन्मे हैं पर जिसके बहुत पुरा थे वह दुर्बल हो गई है।<sup>6</sup> "यहोवा मृत्यु लाता है और जीवन देता है, वह कब्र में उतारता है और ऊपर उठाता है।"<sup>7</sup> "यहोवा निधन बनाता है और धनी बनाता है, वह नीचे लाता है और ऊँचा उठाता है।"<sup>8</sup> "वह निर्धनों को धूल से उठाता है, वह दरिद्रों को राख के देर से उठाता है ताकि उन्हें राजकुमारों के साथ बैठाए और सम्मान की गद्दी का उत्तराधिकारी बनाए। क्योंकि पृथ्वी की नीचे यहोवा की हैं, और उसने उन पर संसार को स्थापित किया है।"<sup>9</sup> "वह अपने विश्वासयोग्य लोगों के पाँवों की रक्षा करता है, पर दुष्ट अंधकार में दुष्प करा दिए जाएंगे, क्योंकि बल से कोई व्यक्ति प्रबल नहीं होगा।"<sup>10</sup> "जो यहोवा का विरोध करते हैं वे दूट जाएंगे, वह स्वर्ग से उनके विरुद्ध गर्जना करेगा। यहोवा पृथ्वी के छोरों का न्याय करेगा। वह अपने राजा को शक्ति देगा और अपने अभिषिक्त की सींग को ऊँचा करेगा।"

<sup>11</sup> तब एल्काना अपने घर रामाह लौट गया, परंतु वह लड़का यहोवा की सेवा में एती याजक के अधीन रहा। <sup>12</sup> अब एली के पुत्र दुष्ट लोग थे; उनका यहोवा के प्रति कोई सम्मान नहीं था। <sup>13</sup> याजकों की प्रथा यह थी कि जब कोई बलिदान लाता, तो याजक का सेवक तीन-प्रांग वाले कांटे के साथ आता जब मांस उबल रहा होता, <sup>14</sup> और वह उसे पतीले या बर्तन या कड़ायी या हड़े में डालता। जो कुछ कांटा ऊपर लाता, वह याजक अपने लिए ले लेता। इस प्रकार वे शीलोह में आए सभी इसाएलियों के साथ व्यवहार करते थे। <sup>15</sup> यहाँ तक कि जब चर्बी जलने से पहले, याजक का सेवक बलिदान देने वाले से कहता, "याजक को भूनने के लिए मांस दो। वह तुमसे उबला हुआ मांस नहीं लेगा—केवल कच्चा।" <sup>16</sup> यदि वह व्यक्ति उससे कहता, "पहले चर्बी जलने दो, और फिर तुम जितना चाहो ले लो," तो वह उत्तर देता, "नहीं, अभी दे दो। यदि नहीं, तो मैं इसे बलपूर्वक ले लूँगा।"<sup>17</sup> इसलिए युवकों का पाप यहोवा के सामने बहुत बड़ा था, क्योंकि वे यहोवा के अर्पण का तिरस्कार करते थे।

<sup>18</sup> परंतु शमूएल यहोवा के सामने सेवा करता था—एक लड़का जो एक लिनन का एपोद पहने था। <sup>19</sup> हर वर्ष उसकी माँ उसके लिए एक छोटी चोगा बनाती और जब वह अपने पति के साथ वार्षिक बलिदान चढ़ाने जाती तब उसे लाती। <sup>20</sup> एली एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देता, कहता, "यहोवा इस स्त्री से तुम्हें संतान

दें, उस एक के स्थान पर जिसे उसने यहोवा को समर्पित किया।" तब वे घर लौट जाते। <sup>21</sup> और यहोवा ने हन्ना को स्मरण किया, और उसने गर्भ धारण किया और तीन पुत्रों और दो पुत्रियों को जन्म दिया। इस बीच, लड़का शमूएल यहोवा की उपस्थिति में बढ़ता गया।

<sup>22</sup> अब एली बहुत बूढ़ा था, और उसने सुना कि उसके पुत्र इसाएल के सभी लोगों के साथ क्या कर रहे थे—कैसे वे उन इसलियों के साथ सोते थे जो मिलाप के तंत्र के द्वार पर सेवा करती थीं। <sup>23</sup> इसलिए उसने उनसे कहा, "तुम ऐसा क्यों करते हो? क्योंकि मैं तुम्हारे दुष्ट कर्मों के बारे में सभी लोगों से सुनता रहता हूँ।" <sup>24</sup> नहीं, मेरे पुत्रों; जो रिपोर्ट मैं यहोवा के लोगों के बीच फैलती सुनता हूँ वह अच्छी नहीं है। <sup>25</sup> यदि कोई मुरुष दूसरों के विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसके लिए मध्यस्थ हो सकता है; पर यदि कोई यहोवा के विरुद्ध पाप करता है, तो कौन मध्यस्थ करेगा?" परंतु उन्होंने अपने पिता की बात नहीं मानी, क्योंकि यहोवा की इच्छा थी कि उन्हें मृत्यु के लिए दे दिया जाए।

<sup>26</sup> और लड़का शमूएल कद में और यहोवा और लोगों के साथ अनुग्रह में बढ़ता गया।

<sup>27</sup> एक परमेश्वर का व्यक्ति एली के पास आया और उससे कहा, "यहोवा यह कहता है: क्या मैंने स्पष्ट रूप से अपने पूर्वजों के घर को प्रकट नहीं किया जब वे मिस में, फिरैन के अधीन थे?" <sup>28</sup> मैंने तुम्हारे पूर्वज को इसाएल के सभी गोत्रों में से चुना कि वह मेरा याजक हो, मेरे वेदी पर बलिदान चढ़ाए, धूप जलाए, और मेरे सम्पन्न एपोद पहने। मैंने तुम्हारे परिवार को इसाएलियों से आग द्वारा किए गए सभी अर्पण दिए। <sup>29</sup> फिर तुम मेरे बलिदान और अर्पण का तिरस्कार करों करते हो जो मैंने अपने निवास स्थान में आज्ञा दी है? तुम अपने पुत्रों को मुझसे अधिक सम्मान क्यों देते हो, मेरे लोगों इसाएल द्वारा किए गए हर अर्पण के उत्तम भागों पर मोटे होने के लिए?" <sup>30</sup> "इसलिए यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, घोषणा करता है: मैंने बादा किया था कि तुम्हारा परिवार और तुम्हारे पूर्वजों का परिवार हमेशा मेरे सामने सेवा करेगा। परंतु अब," यहोवा घोषणा करता है, "मुझसे दूर रहो! क्योंकि जो मुझे सम्मान देते हैं, मैं उन्हें सम्मान ढूँगा, परंतु जो मुझे तुच्छ जानते हैं, वे तिरस्कृत होंगे।" <sup>31</sup> वह समय आ रहा है जब मैं तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे परिवार की शक्ति को काट ढूँगा, ताकि तुम्हारे घर में कोई वृद्ध न हो। <sup>32</sup> तुम मेरे निवास स्थान में संकट देखोगे, यद्यपि इसाएल के लिए अच्छा किया जाएगा, और तुम्हारे परिवार की पंक्ति में कभी कोई वृद्ध नहीं होगा। <sup>33</sup> तुममें

# 1 शमूएल

से जो कोई मेरे वेदी से नहीं काटा जाएगा, वह केवल तुम्हारी आँखों को दुख और तुम्हारे हृदय को पीड़ा देने के लिए बचेगा, और तुम्हारे सभी वंशज जीवन के प्रमुख में मर जाएंगे।<sup>34</sup> और यह चिन्ह तुम्हारे लिए तुम्हारे दो पुत्रों, होमी और फिनहास के संबंध में आएगा: वे दोनों एक ही दिन मर जाएंगे।<sup>35</sup> तब मैं अपने लिए एक विश्वासयोग्य याजक को उठाऊँगा, जो मेरे हृदय और मन में जो है वह करेगा। मैं उसके घर को स्थापित करूँगा, और वह हमेशा मेरे अधिकृत के सामने सेवा करेगा।<sup>36</sup> तब तुम्हारे परिवार में जो कोई बचा होगा, वह उसके सामने एक चाँदी का टुकड़ा और एक रोटी का टुकड़ा माँगने के लिए झूकेगा, कहेगा, 'कृपया मुझे कुछ याजकीय पद पर नियुक्त करें ताकि मुझे खाने के लिए भोजन मिल सके।'

**3** लड़का शमूएल, एली के अधीन यहोवा की सेवा करता था। उन दिनों यहोवा का वचन दुर्लभ था; दर्शन व्यापक नहीं थे।<sup>2</sup> एक रात एली, जिसकी दृष्टि धूपरूपी हो गई थी ताकि वह अच्छी तरह देख न सके, अपने स्थान पर लेटा हुआ था।<sup>3</sup> परमेश्वर का दीपक अपी तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मंदिर में लेटा हुआ था, जहाँ परमेश्वर का सन्दर्भ था।<sup>4</sup> तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा। उसने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"<sup>5</sup> वह एली के पास दौड़ा और कहा, "मैं यहाँ हूँ, क्योंकि आपने मुझे पुकारा।"<sup>6</sup> पर एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं पुकारा; वापस जाकर लेट जाओ।"<sup>7</sup> इसलिए वह जाकर लेट गया।<sup>8</sup> फिर यहोवा ने पुकारा, "शमूएल!" शमूएल उठकर एली के पास गया और कहा, "मैं यहाँ हूँ, क्योंकि आपने मुझे पुकारा।"<sup>9</sup> पर एली ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें नहीं पुकारा, मेरे बेटे। वापस जाकर लेट जाओ।"<sup>10</sup> अब तक शमूएल यहोवा को नहीं जानता था, और यहोवा का वचन उसे प्रकट नहीं हुआ था।<sup>11</sup> यहोवा ने तीसरी बार शमूएल को पुकारा। वह उठकर एली के पास गया और कहा, "मैं यहाँ हूँ, क्योंकि आपने मुझे पुकारा।"<sup>12</sup> तब एली समझ गया कि यहोवा लड़के को पुकार रहा है।<sup>13</sup> इसलिए एली ने शमूएल से कहा, "जाकर लेट जाओ, और यदि वह तुम्हें फिर पुकारे, तो कहना, 'बोलिए, यहोवा, क्योंकि आपका सेवक सुन रहा है।'"<sup>14</sup> इसलिए शमूएल जाकर अपने स्थान पर लेट गया।<sup>15</sup> यहोवा वहाँ आया और पहले की तरह पुकारा, "शमूएल! शमूएल!" तब शमूएल ने कहा, "बोलिए, क्योंकि आपका सेवक सुन रहा है।"

<sup>11</sup> और यहोवा ने शमूएल से कहा, "देख, मैं इसाएल में ऐसा कुछ करने जा रहा हूँ कि जो कोई इसे सुनेगा उसके कान झनझना उठेंगे।<sup>12</sup> उस दिन मैं एली के विरुद्ध सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके घर के

विषय में कहा है—आरंभ से अंत तक।<sup>13</sup> क्योंकि मैंने उसे बताया था कि मैं उसके परिवार का सदा के लिए न्याय करूँगा क्योंकि उसने अपने बेटों की अधर्मता के बारे में जानकर भी उहें नहीं रोका, जिन्होंने परमेश्वर की निंदा की।<sup>14</sup> इसलिए मैंने एली के घर से स्थाप ली, 'एली के घर का अपराध कभी भी बलिदान या भेट से प्रायश्चित नहीं किया जाएगा।'"

<sup>15</sup> शमूएल सुबह तक लेटा रहा। फिर उसने यहोवा के घर के दरवाजे खोले। पर शमूएल एली को दर्शन के बारे में बताने से डरता था।<sup>16</sup> एली ने उसे बुलाया और कहा, "शमूएल, मेरे बेटे।"<sup>17</sup> शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"

<sup>17</sup> "उसने तुमसे क्या कहा?" एली ने पूछा। "मुझसे मत छिपाओ।" यदि तुमसे मुझसे कुछ भी छिपाया जो उसने तुमसे कहा, तो परमेश्वर तुम्हारे साथ वैसा ही करे, बल्कि और भी बुरा करे।<sup>18</sup> इसलिए शमूएल ने उसे सब कुछ बताया और कुछ भी नहीं छिपाया। तब एली ने कहा, "वह यहोवा है; वह वही करे जो उसकी दृष्टि में अच्छा है।"

<sup>19</sup> शमूएल बड़ा हुआ, और यहोवा उसके साथ था, और उसने शमूएल के किसी भी वचन को भूमि पर गिरने नहीं दिया।<sup>20</sup> और दान से लेकर बर्षेबा तक सारे इसाएल ने पहचाना कि शमूएल यहोवा का नबी ठहराया गया है।<sup>21</sup> यहोवा शीलों में प्रकट होता रहा, क्योंकि वहाँ उसने अपने वचन द्वारा शमूएल को प्रकट किया।

**4** और शमूएल का वचन सारे इसाएल में फैल गया।

अब इसाएली पलिशितयों से लड़ने के लिए बाहर निकले। उहोंने एबेनेजर में डेरा डाला, और पलिशितयों ने अफेक में शिविर लगाया।<sup>2</sup> पलिशितयों ने इसाएल से मिलने के लिए अपनी सेनाएँ तैयार कीं, और जब युद्ध फैला, तो इसाएल को पलिशितयों ने हरा दिया, जिन्होंने युद्धभूमि में लाभग चार हजार पुरुषों को मार डाला।<sup>3</sup> जब सैनिक शिविर में लौटे, तो इसाएल के बुजुर्गों ने कहा, "आज यहोवा ने हमें पलिशितयों से क्यों हराया? आओ, हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलों से ले आएं, ताकि वह हमारे साथ चले और हमें हमारे शत्रुओं से बचाए।"<sup>4</sup> इसलिए लोगों ने शीलों में पुरुषों को भेजा, और वे सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक ले आए, जो करूँबों के बीच में विराजमान है। और एली के दो पुत्र, होमी और फिनहास, वहाँ परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ थे।<sup>5</sup> जब यहोवा की वाचा का सन्दूक शिविर में आया, तो सारे इसाएल ने इतनी बड़ी जयकार की कि भूमि हिल गई।<sup>6</sup> पलिशितयों ने जयकार की

# 1 शमूएल

आवाज़ सुनी और पूछा, “यह इब्रियों के शिविर में इतनी जौरदार जयकार क्यों हो रही है?” जब उन्हें पता चला कि यहोवा का सन्दूक शिविर में आ गया है, <sup>7</sup> पलिशित्यों को डर लगा। उन्होंने कहा, “उनके शिविर में एक देवता आ गया है। हाय हम पर। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। <sup>8</sup> हाय हम पर। कौन हमें इन शक्तिशाली देवताओं के हाथ से बचा सकता है? ये वही देवता हैं जिन्होंने जंगल में मिसियों को हर प्रकार की विपत्तियों से मारा था। <sup>9</sup> साहस करो और पुरुष बनो, हे पलिशित्यों, नहीं तो तुम इब्रियों के दास बन जाओगे, जैसे वे तुम्हारे थे। पुरुष बनो, और लड़ो!”

<sup>10</sup> इसलिए पलिशित्यों ने लडाई की, और इसाएल हार गया। हर आदमी अपने तम्बू की ओर भागा। वध बहुत बड़ा था—इसाएल के तीस हजार पैदल सैनिक गिर गए।

<sup>11</sup> परमेश्वर का सन्दूक पकड़ लिया गया, और एली के दो पुत्र, होप्टी और फिनहास, मर गए।

<sup>12</sup> बिन्यामीन के गोत्र का एक आदमी युद्ध की रेखा से भागकर उसी दिन शीतो आया, उसके कपड़े फटे हुए थे और उसके सिर पर धूल थी। <sup>13</sup> जब वह पहुँचा, एली संदूक के किनारे अपनी सीट पर बैठा देख रहा था, क्योंकि उसका दिल परमेश्वर के सन्दूक के लिए काँप रहा था। जब वह आदमी नगर में प्रवेश किया और जो हुआ था वह बताया, तो सारे नगर ने चिल्लाहट सुनी और पूछा, “इस हलचल का क्या अर्थ है?” वह आदमी एली को बताने के लिए जल्दी से आया। <sup>14</sup> एली अट्टाने वर्ष का था, और उसकी अँखें इतनी कमज़ोर थीं कि वह देख नहीं सकता था। <sup>15</sup> उस आदमी ने एली से कहा, “मैं युद्ध की रेखा से आया हूँ—मैं आज उससे भागा हूँ!” एली ने पूछा, “क्या हुआ, मेरे पुत्र?” <sup>16</sup> जब उसने संदेशवाहक ने उत्तर दिया, “इसाएल पलिशित्यों के सामने से भाग गया है, और लोगों में एक बड़ा वध हुआ है। आपके दो पुत्र, होप्टी और फिनहास, मर गए हैं, और परमेश्वर का सन्दूक पकड़ लिया गया है।” <sup>17</sup> जब उसने परमेश्वर के सन्दूक का उल्लेख किया, एली फाटक के पास अपनी सीट से पीछे की ओर गिर गया। उसकी गर्दन टूट गई और वह मर गया, क्योंकि वह बड़ा और भारी था। उसने इसाएल का चालीस वर्षों तक न्याय किया था।

<sup>18</sup> अब एली की बहू, फिनहास की पत्नी, गर्भवती थी और प्रसव के समय के निकट थी। जब उसने सुना कि परमेश्वर का सन्दूक पकड़ लिया गया है, और उसके ससुर और उसके पति मर गए हैं, तो वह प्रसव पीड़ा में चली गई और दर्द से अभिभूत होकर उसने जन्म दिया।

<sup>20</sup> जब वह मर रही थी, तो उसके पास खड़ी महिलाओं ने कहा, “डरो मत, तुमने एक पुत्र को जन्म दिया है।” लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया या ध्यान नहीं दिया। <sup>21</sup> उसने लड़के का नाम इकावोद रखा, यह कहते हुए, “इसाएल से महिमा चली गई है,” क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक पकड़ लिया गया था और उसके ससुर और उसके पति की मृत्यु हो गई थी। <sup>22</sup> उसने कहा, “इसाएल से महिमा चली गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक ले लिया गया है।”

**5** जब पलिशित्यों ने परमेश्वर के सन्दूक को पकड़ लिया, तो वे उसे एबनेज़र से अशदोद ले गए। <sup>23</sup> उन्होंने सन्दूक को दागोन के मंदिर में ले जाकर दागोन के पास रख दिया। <sup>24</sup> जब अशदोद के लोग आगे दिन सुबह जल्दी उठे, तो देखा कि दागोन परमेश्वर के सन्दूक के सामने मुँह के बल गिरा पड़ा है। उन्होंने दागोन को उठाकर फिर से उसकी जगह पर खड़ा कर दिया। <sup>25</sup> लेकिन अगले दिन सुबह जब वे जल्दी उठे, तो देखा कि दागोन फिर से परमेश्वर के सन्दूक के सामने मुँह के बल गिरा पड़ा है। उसका सिर और दोनों हाथ टूटकर दहलीज़ पर पड़े थे; केवल उसका धड़ बचा था। <sup>26</sup> इसी कारण आज तक दागोन के याजक और जो कोई भी अशदोद में दागोन के मंदिर में प्रवेश करता है, दहलीज़ पर पैर नहीं रखता।

<sup>6</sup> प्रभु का हाथ अशदोद के लोगों के विरुद्ध भारी था। उसने उन्हें नष्ट कर दिया और उन्हें फोड़ों से पीड़ित किया। <sup>7</sup> जब अशदोद के लोगों ने देखा कि क्या हो रहा है, तो उन्होंने कहा, “इसाएल के परमेश्वर का सन्दूक हमारे साथ नहीं रह सकता, क्योंकि उसका हाथ हमारे और हमारे देवता दागोन के विरुद्ध कठोर है।” <sup>8</sup> इसलिए उन्होंने पलिशित्यों के सभी शासकों को बुलाया और पूछा, “हम इसाएल के परमेश्वर के सन्दूक के साथ क्या करें?” उन्होंने उत्तर दिया, “इसे गथ ले जाया जाए।” इसलिए वे इसाएल के परमेश्वर के सन्दूक को वहाँ ले गए। <sup>9</sup> लेकिन जब उन्होंने इसे वहाँ ले जाया, तो प्रभु का हाथ उस नगर के विरुद्ध भी था। उसने उस पर महान आतंक लाया, नगर के लोगों को, छोटे और बड़े दोनों को, फोड़ों से पीड़ित किया, और वे नार में फैल गए। <sup>10</sup> इसलिए उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को एक्रोन भेज दिया। लेकिन जैसे ही सन्दूक एक्रोन में आया, लोगों ने चिल्लाकर कहा, “उन्होंने इसाएल के परमेश्वर का सन्दूक हमें और हमारे लोगों को मारने के लिए यहाँ लाया है!” <sup>11</sup> इसलिए उन्होंने पलिशित्यों के सभी शासकों को बुलाया और कहा, “इसाएल के परमेश्वर के सन्दूक को यहाँ से भेज दो। इसे इसकी अपनी जगह पर वापस

# 1 शमूएल

जाने दो, ताकि यह हमें और हमारे लोगों को न मारे।”  
क्योंकि मृत्यु और आतंक ने नगर को भर दिया था; वहाँ पर परमेश्वर का हाथ बहुत भारी था।<sup>12</sup> जो लोग बच गए थे, वे फोड़ों से पीड़ित थे, और नगर की चिल्लाहट सर्व तक पहुँची।

**6** प्रभु की वाचा का संदूक पलिशितयों के क्षेत्र में सात महीने तक रहा।<sup>2</sup> तब पलिशितयों ने याजकों और ज्योतिषियों को बुलाया और कहा, “हम प्रभु की वाचा के संदूक के साथ क्या करें? हमें बताओ कि इसे इसके स्थान पर कैसे भेजा जाए।”<sup>3</sup> उन्होंने उत्तर दिया, “यदि तुम इसाएल के परमेश्वर की वाचा का संदूक वापस भेजते हों, तो इसे खाली मत भेजो, बल्कि इसके साथ एक दोष भेट अवश्य भेजो। तब तुम चंगे हो जाओगे, और तुम समझ जाओगे कि उसकी हाथ तुमसे क्यों नहीं हट रहा है।”<sup>4</sup> पलिशितयों ने पूछा, “हम उसे कौन सी दोष भेट भेजें?” उन्होंने उत्तर दिया, “पांच सोने के फोड़े और पांच सोने के चूहे, पलिशितयों के शासकों की संख्या के अनुसार, क्योंकि वही विपत्ति तुम सब और तुम्हारे शासकों पर पड़ी है।”<sup>5</sup> इसलिए अपने देश को नष्ट करने वाले फोड़ों और चूहों के मॉडल बनाओ, और इसाएल के परमेश्वर का सम्मान करो। शायद वह तुमसे तुम्हारे देवताओं से, और तुम्हारे देश से अपना हाथ हटा ले।<sup>6</sup> तुम अपने हृदय को मिसियों और फिरान की तरह कठोर क्यों करते हो? जब उसने उनके साथ कठोरता से व्यवहार किया, तो क्या उन्होंने लोगों को जाने नहीं दिया, और वे चले गए?

**7** अब, एक नई गाड़ी बनाओ और दो गायें लो जो हाल ही में बछड़ा दी हीं और जिन्हें कभी जुआ नहीं पहनाया गया हो। गायों को गाड़ी में जोत दो, लेकिन उनके बछड़ों को अलग कर उन्हें बंद कर दो।<sup>8</sup> फिर प्रभु की वाचा का संदूक गाड़ी पर रखो और उसके बगल में एक डिल्ले में वे सोने की वस्तुएं रखो जिन्हें तुम दोष भेट के रूप में भेज रहे हो। इसे भेज दो, और इसे अपने रास्ते पर जाने दो।<sup>9</sup> देखो कि यह क्या करती है। यदि यह अपने देश, बेथ-शमेश की ओर जाती है, तो प्रभु ने यह विपत्ति हम पर लाई है। लेकिन यदि यह नहीं जाती, तो हम जान लेंगे कि यह उसकी हाथ नहीं थी जिसने हमें मारा—यह संयोग से हुआ।”

<sup>10</sup> इसलिए उन्होंने निर्देशानुसार किया। उन्होंने दो गायें लीं और उन्हें गाड़ी में जोत दिया, और उनके बछड़ों को घर में बंद कर दिया।<sup>11</sup> उन्होंने प्रभु की वाचा का संदूक गाड़ी पर रखा, साथ ही उस डिल्ले को जिसमें सोने के चूहे और उनके फोड़ों के मॉडल थे।<sup>12</sup> फिर गायें सीधे

बेथ-शमेश की ओर गईं, रास्ते पर ही रंभाती हुईं। वे दाँह या बाँह नहीं मुड़ीं। पलिशितयों के शासक उनके पीछे-पीछे बेथ-शमेश की सीमा तक गए।

**13** अब बेथ-शमेश के लोग धाटी में गोहूँ की कटाई कर रहे थे। जब उन्होंने ऊपर देखा और संदूक को देखा, तो वे उस दृश्य को देखकर आनन्दित हुए।<sup>14</sup> गाड़ी बेथ-शमेश के यहोश के खेत में आई और एक बड़े बड़े बाल दिलान के पास रुक गई। लोगों ने गाड़ी की लकड़ी को काट दिया और गायों को प्रभु के लिए होमवर्ति के रूप में बलिदान किया।<sup>15</sup> लेवीयों ने प्रभु की वाचा का संदूक और उसके बगल में सोने की वस्तुओं वाला डिल्ला उतारा, और उन्हें बड़े पत्थर पर रखा। उस दिन बेथ-शमेश के लोगों ने प्रभु को होमवर्ति चढ़ाए और बलिदान किए।<sup>16</sup> जब पलिशितयों के पांच शासकों ने यह देखा, तो वे उसी दिन एक्झोन लौट गए।

**17** ये सोने के फोड़े हैं जिन्हें पलिशितयों ने प्रभु को दोष भेट के रूप में भेजा—अशदोद, गाजा, अश्कलोन, गत, और एक्झोन के लिए एक-एक।<sup>18</sup> और सोने के चूहे पलिशितयों के पांच शासकों के अधीन सभी नगरों की संख्या के अनुसार थे, चाहे वे किलेबंद हों या ग्रामीण। वह बड़ा पत्थर जिस पर लेवीयों ने प्रभु की वाचा का संदूक रखा था, आज भी बेथ-शमेश के यहोश के खेत में गवाह है।

**19** लेकिन परमेश्वर ने बेथ-शमेश के कुछ लोगों को मार डाला क्योंकि उन्होंने प्रभु की वाचा के संदूक में झाँका था। उसने उसमें से सत्तर को मार डाला, और लोग शोक करने लगे क्योंकि प्रभु ने उन्हें एक गंभीर चोट दी थी।<sup>20</sup> और बेथ-शमेश के लोगों ने कहा, “प्रभु, इस पवित्र परमेश्वर के समाने कौन खड़ा रह सकता है? यहाँ से वाचा का संदूक किसके पास जाएगा?”<sup>21</sup> इसलिए उन्होंने किरीयत-यारीम के लोगों के पास संदेशवाहक भेजे, यह कहते हुए, “पलिशितयों ने प्रभु की वाचा का संदूक लौटा दिया है। नीचे आओ और इसे अपने पास ले जाओ।”

**7** इसलिए किरीयत-यारीम के लोग आए और उन्होंने यहोवा के सन्दूक को उठा लिया। वे इसे पहाड़ी पर अबीनादाब के घर ले गए और उसके पुत्र एलीआज़र को यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिए अधिष्ठेक किया।<sup>2</sup> सन्दूक किरीयत-यारीम में बहुत समय तक रहा—कुल बीस वर्ष। तब पूरे इसाएल का घराना यहोवा की ओर शोक के साथ लौट आया।<sup>3</sup> शमूएल ने इसाएल के सभी लोगों से कहा, “यदि तुम सचमुच अपने पूरे दिल

# 1 शमूएल

से यहोवा की ओर लौट रहे हो, तो अपने बीच से विदेशी देवताओं और अश्तोरेतों को हटा दो। अपने आप को यहोवा के प्रति समर्पित करो और केवल उसी की सेवा करो, और वह तुम्हें पलिशितयों के हाथ से छुड़ाएगा।”<sup>4</sup> इसलिए इसाएलियों ने बालों और अश्तोरेतों को हटा दिया और केवल यहोवा की सेवा की।

<sup>5</sup> तब शमूएल ने कहा, “मिज्जा में पूरे इसाएल को इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे लिए यहोवा से प्रार्थना करूँगा।”<sup>6</sup> जब वे मिज्जा में इकट्ठा हुए, तो उन्होंने पानी खींचा और उसे यहोवा के सामने उंडेल दिया। उस दिन उन्होंने उपवास किया, और उन्होंने स्वीकार किया, “हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।” और शमूएल मिज्जा में इसाएलियों के ऊपर न्याय कर रहा था।<sup>7</sup> जब पलिशितयों ने सुना कि इसाएल मिज्जा में इकट्ठा हुआ है, तो उनके शासक उन पर हमला करने के लिए ऊपर गए। जब इसाएलियों ने यह सुना, तो वे पलिशितयों से डर गए।<sup>8</sup> उन्होंने शमूएल से कहा, “हमारे लिए हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करना बंद मत करो, ताकि वह हमें पलिशितयों से बचा सके।”<sup>9</sup> तब शमूएल ने एक दूध पीता मैमना लिया और उसे यहोवा के लिए पूर्ण होमबलि के रूप में चढ़ाया। उसने इसाएल की ओर से यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने उसकी सुनी।

<sup>10</sup> जब शमूएल होमबलि चढ़ा रहा था, तब पलिशिती इसाएल से युद्ध करने के लिए निकट आए। लेकिन उस दिन यहोवा ने पलिशितयों के खिलाफ जोर से गर्जना की और उन्हें इतनी उलझन में डाल दिया कि वे इसाएल के सामने पराजित हो गए।<sup>11</sup> इसाएल के लोग मिज्जा से बाहर निकले और पलिशितयों का पीछा किया, उन्हें बेथ-कर के नीचे तक मार गिराया।<sup>12</sup> तब शमूएल ने एक पथर लिया और उसे मिज्जा और शेन के बीच में छुड़ा किया। उसने उसका नाम एवेन-एजर रखा, यह कहते हुए, “अब तक यहोवा ने हमारी सहायता की है।”

<sup>13</sup> इसलिए पलिशिती दब गए और फिर कभी इसाएली क्षेत्र पर आक्रमण नहीं किया। शमूएल के जीवनकाल के दौरान यहोवा का हाथ पलिशितयों के खिलाफ था।<sup>14</sup> वे नगर जो पलिशितयों ने इसाएल से लिए थे, वापस कर दिए गए, एक्रोन से गाथ तक, और इसाएल ने पलिशितयों से आसपास के क्षेत्र को पुनः प्राप्त किया। और इसाएल और एमोरियों के बीच शांति थी।

<sup>15</sup> शमूएल अपने जीवन के बाकी समय तक इसाएल पर न्याय करता रहा।<sup>16</sup> हर साल वह बेतेल से गिलगाल से मिज्जा तक यात्रा करता था, और उन सभी स्थानों में

इसाएल का न्याय करता था।<sup>17</sup> लेकिन वह हमेशा रामा लौटता था, जहाँ उसका घर था, और वहाँ भी वह इसाएल का न्याय करता था। और उसने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई।

**8** जब शमूएल बूढ़ा हो गया, तो उसने अपने पुत्रों को इसाएल पर न्यायी नियुक्त किया।<sup>18</sup> उसके पहलोंठे का नाम योल था, और दूसरे का नाम अबियाह। वे बेर्शबा में न्यायी के रूप में सेवा करते थे।<sup>19</sup> परंतु उसके पुत्र उसके उदाहरण का अनुसरण नहीं करते थे। वे अनुचित लाभ की खोज में रहते थे, घूस लेते थे, और न्याय को विकृत करते थे।

<sup>4</sup> तब इसाएल के सभी प्राचीन एकत्र हुए और रामाह में शमूएल के पास आए।<sup>5</sup> उन्होंने उससे कहा, “तुम बूढ़े हो गए हो, और तुम्हारे पुत्र तुम्हारे माझे पर नहीं चलते। हमारे ऊपर एक राजा नियुक्त करो, जैसे अन्य जातियों के पास होता है।”<sup>6</sup> परंतु यह अनुरोध शमूएल को अप्रसन्न कर गया, विशेषकर उनका राजा के लिए न्याय करने की मांग। इसलिए उसने यहोवा से प्रार्थना की।<sup>7</sup> यहोवा ने शमूएल से कहा, “लोगों की बात सुनो जो वे तुमसे कहते हैं। उन्होंने तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे उनके राजा के रूप में अस्वीकार किया है।”<sup>8</sup> वे तुम्हारे साथ वैसा ही कर रहे हैं जैसा उन्होंने मेरे साथ किया है जब से मैंने उन्हें मिस से बाहर निकाला—मुझे छोड़कर अन्य देवताओं की सेवा की।<sup>9</sup> अब उनकी बात सुनो, परंतु उन्हें गंभीर चेतावनी दो और समझाओ कि जो राजा उनके ऊपर राज्य करेगा, वह क्या करेगा।”<sup>10</sup>

<sup>10</sup> तब शमूएल ने उन लोगों को यहोवा के सभी शब्द बताए जो उससे राजा मांग रहे थे।<sup>11</sup> उसने कहा, “यह वही करेगा जो राजा तुम्हारे ऊपर शासन करेगा: वह तुम्हारे पुत्रों को लेगा और उन्हें अपने रथों और घोड़ों के लिए नियुक्त करेगा, और वे उसके रथों के आगे दौड़ेंगे।<sup>12</sup> वह हजारों और पचासों के सेनापति नियुक्त करेगा, और अन्य को अपनी भूमि जोतने और अपनी फसल काटने के लिए, और युद्ध के हथियार और अपने रथों के उपकरण बनाने के लिए नियुक्त करेगा।<sup>13</sup> वह तुम्हारे बेटियों को सुनाधित द्रव्य बनाने वाली, रसोइया और बेकर बनाएगा।<sup>14</sup> वह तुम्हारे खेतों, दाख की बारीयों और जैतून के बागों में से सबसे अच्छे ले लेगा, और उन्हें अपने अधिकारियों को देगा।<sup>15</sup> वह तुम्हारे अनाज और तुम्हारी पुरानी फसल का दसवां हिस्सा ले लेगा और उसे अपने खोजों और अधिकारियों को देगा।<sup>16</sup> वह तुम्हारे पुरुष और महिला सेवकों, तुम्हारे सबसे अच्छे पशुओं और गांधों को ले लेगा, और उन्हें अपनी सेवा में

# 1 शमूएल

लगाएगा।<sup>17</sup> वह तुम्हारी भेड़ों का दसवां हिस्सा ले जाओगे, और तुम स्वयं उसके सेवक बन जाओगे।<sup>18</sup> जब वह दिन आएगा, तो तुम उस राजा के कारण चिल्लाओगे जिसे तुमने अपने लिए चुना है, परंतु उस दिन यहोवा तुम्हारी नहीं सुनेगा।"

<sup>19</sup> परंतु लोगों ने शमूएल की बात सुनने से इनकार कर दिया। "नहीं!" उन्होंने कहा। "हम चाहते हैं कि हमारे ऊपर एक राजा हो।"<sup>20</sup> तब हम सभी अन्य जातियों के समान होंगे, हमारे पास एक राजा होगा जो हमारा नेतृत्व करेगा और हमारे समाने जाएगा और हमारी लड़ाइयाँ लड़ेगा।"<sup>21</sup> जब शमूएल ने लोगों की सारी बातें सुनी, तो उसने उन्हें यहोवा के सामने दोहराया।<sup>22</sup> और यहोवा ने शमूएल से कहा, "उनकी बात सुनो और उनके लिए एक राजा नियुक्त करो।" तब शमूएल ने इसाएल के पुरुषों से कहा, "तुम में से प्रत्येक अपने अपने नगर लौट जाओ।"

**१ बिन्यामीन गोत्र में एक व्यक्ति था जिसका नाम कीश था, वह अबीएल का पुत्र, ज़ेरो का पुत्र, बकोरथ का पुत्र, अफीह का पुत्र था, और वह एक धनी बिन्यामीन गोत्र का व्यक्ति था।<sup>२</sup> उसके एक पुत्र था जिसका नाम शाऊल था, वह एक चुना हुआ और सुंदर युवक था। इसाएल के पुत्रों में कोई भी उससे अधिक प्रभावशाली नहीं था; उसके कंधों से ऊपर वह सभी लोगों से लंबा था।<sup>३</sup> अब कीश के गधे खो गए थे, जो शाऊल के पिता थे। इसालिए कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, "अपने साथ एक सेवक ले लो और गधों की खोज में जाओ।"<sup>४</sup> वह ऐप्रैम के पहाड़ी देश से होकर और शालीम के देश से होकर गया, लेकिन उन्हें नहीं पाया। फिर वे शालीम के देश से होकर गए, और वे वहां नहीं थे। वह बिन्यामीन के क्षेत्र से भी होकर गया, लेकिन उन्हें नहीं पाया।<sup>५</sup> जब वे ज़ूफ़ के देश में पहुंचे, तो शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा, "आओ, हम लौट चलें, नहीं तो मेरे पिता गधों की चिंता छोड़कर हमारी चिंता करने लगेंगे।"<sup>६</sup> लेकिन सेवक ने कहा, "देखो, इस नगर में एक परमेश्वर का व्यक्ति है, और वह सम्मानित व्यक्ति है। जो कुछ वह कहता है वह अवश्य पूरा होता है। आओ, हम वहां चलें; शायद वह हमें हमारा मार्ग बता सके।"<sup>७</sup> तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "लेकिन देखो, अगर हम जाते हैं, तो हम उस व्यक्ति को क्या देंगे? हमारे पास की रोटियाँ समाप्त हो गई हैं, और हमारे पास परमेश्वर के व्यक्ति को देने के लिए कोई उपहार नहीं है। हमारे पास क्या है?"<sup>८</sup> सेवक ने फिर से शाऊल को उत्तर दिया और कहा, "देखो, मेरे पास एक चौथाई श्लेष लांदी है। मैं इसे परमेश्वर के व्यक्ति को द्वारा, और वह हमें हमारा मार्ग बताएगा।"<sup>९</sup> (पूर्व में इसाएल में, जब कोई व्यक्ति**

परमेश्वर से पूछने जाता था, तो वह कहता था, "आओ, हम दर्शी के पास चलें," क्योंकि आज के भविष्यवक्ता को पहले दर्शी कहा जाता था।)<sup>१०</sup> तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "तुम्हारी सलाह अच्छी है; आओ, हम चलें।" इसलिए वे उस नगर में गए जहां परमेश्वर का व्यक्ति था।

<sup>११</sup> जब वे नगर की ओर पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, तो उन्होंने कुछ युवतियों को पानी भरने जाते हुए देखा, और उनसे पूछा, "क्या दर्शी यहां है?"<sup>१२</sup> उन्होंने उत्तर दिया और कहा, "हाँ, वह आपके आगे ही है। जल्दी करो, क्योंकि आज वह नगर में आया है, क्योंकि लोग ऊँचे स्थान पर बलिदान कर रहे हैं।"<sup>१३</sup> जैसे ही आप नगर में प्रवेश करोंगे, आप उसे ऊँचे स्थान पर खाने के लिए जाने से पहले पाएंगे, क्योंकि लोग उसके आने तक नहीं खाएंगे। उसे बलिदान को आशीर्वाद देना होगा; उसके बाद आमंत्रित लोग खाएंगे। अब ऊपर जाओ, क्योंकि आप उसे तुरंत पा लेंगे।"<sup>१४</sup> इसलिए वे नगर में गए। जैसे ही वे प्रवेश कर रहे थे, देखो, शमूएल उनके सामने ऊँचे स्थान पर जाने के लिए आ रहा था।

<sup>१५</sup> अब प्रभु ने शमूएल को एक दिन पहले प्रकट किया था जब शाऊल आया, कहा,<sup>१६</sup> "कल इस समय के लगभग मैं तुम्हारे पास बिन्यामीन के देश से एक व्यक्ति भेज़ूंगा, और तुम उसे मेरे लोगों इसाएल का प्रधान अधिष्ठित करोगे। वह मेरे लोगों को पलिशितयों के हाथ से छुड़ाएगा, क्योंकि मैंने अपने लोगों की ओर ध्यान दिया है, क्योंकि उनकी पुकार मेरे पास आई है।"<sup>१७</sup> जब शमूएल ने शाऊल को देखा, तो प्रभु ने उससे कहा, "देखो, यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था! वह मेरे लोगों पर शासन करेगा।"

<sup>१८</sup> तब शाऊल ने शमूएल के पास द्वारा में जाकर कहा, "कृपया मुझे बताएं कि दर्शी का घर कहाँ है।"<sup>१९</sup> शमूएल ने शाऊल को उत्तर दिया और कहा, "मैं ही दर्शी हूँ। मेरे आगे ऊँचे स्थान पर जाओ, क्योंकि आज तुम मेरे साथ खाओगे। सुबह मैं तुम्हें जाने दूंगा और तुम्हारे दिल की सारी बातें बताऊँगा।"<sup>२०</sup> जहाँ तक तुम्हारे गधों का सवाल है जो तीन दिन पहले खो गए थे, उनकी चिंता मत करो, क्योंकि वे मिल गए हैं। और इसाएल की सारी इच्छा किसकी ओर मुड़ी है, यदि तुम्हारी और तुम्हारे पिता के घर की ओर नहीं?"<sup>२१</sup> शाऊल ने उत्तर दिया और कहा, "क्या मैं बिन्यामीन का नहीं हूँ, जो इसाएल के सबसे छोटे गोत्र का है, और क्या मेरा परिवार बिन्यामीन के गोत्र के सभी कुलों में सबसे छोटा नहीं है? फिर आपने मुझसे इस तरह क्यों बात की?"

# 1 शमूएल

<sup>22</sup> तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को लिया और उन्हें सभा भवन में लाया, और उन्हें आमंत्रित लोगों के प्रमुख स्थान पर बैठाया—लगभग तीस लोग। <sup>23</sup> और शमूएल ने रसोइये से कहा, “वह हिस्सा लाओ जो मैंने तुम्हें दिया था, जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था, ‘इसे अलग रखो।’” <sup>24</sup> इसलिए रसोइये ने जांघ और जो कुछ उस पर था उसे उठाया और शाऊल के सामने रख दिया। और शमूएल ने कहा, “देखो, जो आरक्षित किया गया है वह तुम्हारे सामने रखा गया है। खाओ, क्योंकि यह तुम्हारे लिए नियत समय तक रखा गया था, क्योंकि मैंने कहा था, ‘मैंने लोगों को आमंत्रित किया है।’” इसलिए शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ खाया।

<sup>25</sup> जब वे ऊँचे स्थान से नगर में उतरे, तो शमूएल ने शाऊल से छत पर बात की। <sup>26</sup> वे जल्दी उठे, और सुबह होते ही शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाया, कहा, “उठो, कि मैं तुम्हें तुम्हारे मार्ग पर भेज सकूँ।” इसलिए शाऊल उठ गया, और दोनों, वह और शमूएल, सड़क पर चले गए। <sup>27</sup> जब वे नगर के किनारे तक जा रहे थे, शमूएल ने शाऊल से कहा, “सेवक से कहो कि वह हमसे आगे चला जाए”—और सेवक आगे चला गया—“लेकिन तुम एक पल के लिए ठहरो, कि मैं तुम्हें परमेश्वर का वचन बता सकूँ।”

**10** तब शमूएल ने तेल की एक कुप्पी ली और उसे शाऊल के सिर पर उंडेला, उसे चूमा, और कहा, “या यहोवा ने तुम्हें अपनी विरासत पर शासक के रूप में अधिकृत नहीं किया है?” <sup>2</sup> जब तुम आज मुझसे विदा हो जाओगे, तो तुम राहेल की कब्र के पास, बिन्यामीन के क्षेत्र में ज़ेलज़ाह में दो पुरुषों को पाओगे। वे तुमसे कहेंगे, वे गथे जिन्हें तुम ढूँढ़ने गए थे, मिल गए हैं। अब तुम्हारे पिता गथों की चिंता छोड़कर तुम्हारे लिए चिंतित हैं, यह कहते हुए, “मैं अपने पुत्र के बारे में क्या करूँ?” <sup>3</sup> तब तुम वहां से आगे बढ़ोगे और ताबोर के बांज के पेड़ के पास पहुंचोगे। वहां तीन पुरुष जो बेतेल में परमेश्वर के पास जा रहे होंगे, तुमसे मिलेंगे, एक तीन बकरी के बच्चे लिए हुए, दूसरा तीन रोटी की लोई लिए हुए, और तीसरा दाखमूढ़ की एक मशक किए हुए। <sup>4</sup> वे तुम्हें अभिवादन करेंगे और तुम्हें दो रोटी की लोई देंगे, जिन्हें तुम उनके हाथ से ले लेना। <sup>5</sup> इसके बाद, तुम गिबेध-हाएलोहीम पहुंचोगे, जहां पलिश्टरों की चौकी है। जैसे ही तुम नगर के पास पहुंचोगे, तुम्हें भविष्यवक्ताओं का एक समूह मिलेगा जो ऊँचे स्थान से उत्तर रहे होंगे, उनके सामने बीणा, डफ, बांसुरी और सारंगी होंगी, और वे भविष्यवाणी कर रहे होंगे। <sup>6</sup> तब यहोवा की आत्मा तुम पर बलपूर्वक आएगी, और तुम उनके साथ भविष्यवाणी

करोगे और एक नए व्यक्ति में बदल जाओगे। <sup>7</sup> और जब ये चिन्ह तुम्हारे पास आएंगे, तो जो तुम्हारे हाथ में आए उसे करो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे साथ है। <sup>8</sup> तुम मेरे पहले गिलगाल जाओगे। और देखो, मैं तुम्हारे पास होमबलि चढ़ाने और शांति बलि चढ़ाने के लिए आऊंगा। तुम सात दिन प्रतीक्षा करना, जब तक मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें नहीं बताऊं कि तुम्हें क्या करना चाहिए।”

<sup>9</sup> फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही शाऊल शमूएल से विदा होकर चला, परमेश्वर ने उसे एक नया हृदय दिया, और वे सभी चिन्ह उसी दिन पूरे हुए। <sup>10</sup> जब वे गिबेआ पहुंचे, तो देखो, भविष्यवक्ताओं का एक समूह उससे मिला; और परमेश्वर की आत्मा उस पर आई, और उसने उनके बीच भविष्यवाणी की। <sup>11</sup> और जब सभी जिन्हें उसे पहले से जानते थे, देखा कि वह भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी कर रहा है, तो लोगों ने एक-दूसरे से कहा, “किश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल भी भविष्यवक्ताओं में से है?” <sup>12</sup> और वहां से किसी ने उत्तर दिया और कहा, “लेकिन उनका पिता कौन है?” इसलिए यह एक कहावत बन गई: “क्या शाऊल भी भविष्यवक्ताओं में से है?” <sup>13</sup> जब उसने भविष्यवाणी करना समाप्त किया, तो वह ऊँचे स्थान पर आया।

<sup>14</sup> शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से कहा, “तुम कहां गए थे?” और उसने कहा, “गधों को ढूँढ़ने। जब हमने देखा कि वे नहीं मिल रहे हैं, तो हम शमूएल के पास गए।” <sup>15</sup> शाऊल के चाचा ने कहा, “कृपया मुझे बताओ कि शमूएल ने तुमसे क्या कहा।” <sup>16</sup> शाऊल ने अपने चाचा से कहा, “उसने हमें साफ़-साफ़ बताया कि गधे मिल गए हैं।” लेकिन उसने उसे राज्य के विषय में नहीं बताया, जिसके बारे में शमूएल ने बात की थी।

<sup>17</sup> तब शमूएल ने लोगों को मिज़पा में यहोवा के पास इकट्ठा किया। <sup>18</sup> उसने इसाएल के पुत्रों से कहा, “यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है, ‘मैंने इसाएल को मिस्स से बाहर निकाला, और मैंने तुम्हें मिसियों के हाथ से और उन सभी राज्यों की शक्ति से बचाया जो तुम्हें दबाते थे।’” <sup>19</sup> लेकिन आज तुमने अपने परमेश्वर को ढुकरा दिया है, जो तुम्हें तुम्हारी सभी विपत्तियों और संकटों से बचाता है, और तुमने कहा है, ‘नहीं! हमारे ऊपर एक राजा नियुक्त करो।’ अब इसलिए अपने गोत्रों और कुलों के अनुसार यहोवा के सामने प्रस्तुत हो जाओ।” <sup>20</sup> इसलिए शमूएल ने इसाएल के सभी गोत्रों को पास लाया, और बिन्यामीन के गोत्र को चिट्ठी द्वारा लिया गया। <sup>21</sup> फिर उसने बिन्यामीन के गोत्र को उसके परिवारों के अनुसार पास लाया, और मत्री के परिवार को

# 1 शमूएल

लिया गया, और किश का पुत्र शाऊल लिया गया।  
लेकिन जब उन्होंने उसे ढूँढा, तो वह नहीं मिला।<sup>22</sup>  
इसलिए उन्होंने यहोवा से और पूछा, “क्या वह व्यक्ति  
यहां आया है?” और यहोवा ने कहा, “देखो, वह सामान  
के बीच छिपा हुआ है।”<sup>23</sup> इसलिए वे दौड़कर उसे वहां  
से ले आए। और जब वह लोगों के बीच खड़ा हुआ, तो  
वह कंधों से ऊपर तक सभी लोगों से लंबा था।<sup>24</sup>

शमूएल ने सभी लोगों से कहा, “क्या तुम देखते हो कि  
यहोवा ने किसे चुना है? निश्चय ही उसके समान कोई  
नहीं है सभी लोगों में।” इसलिए सभी लोगों ने चिल्लाया,  
“राजा जीवित रहें।”

<sup>25</sup> तब शमूएल ने लोगों को राजतंत्र के नियम बताए और  
उन्हें एक पुस्तक में लिखकर यहोवा के सामने रख  
दिया। फिर शमूएल ने सभी लोगों को उनके अपने घर  
भेज दिया।<sup>26</sup> शाऊल भी गिरेखा में अपने घर गया; और  
वे वीर पुरुष जिनके हृदय को परमेश्वर ने छू लिया था,  
उसके साथ गए।<sup>27</sup> लेकिन कुछ निकम्मे पुरुषों ने कहा,  
“यह आदमी हमें कैसे बचा सकता है?” और उन्होंने उसे  
तुच्छ जाना और उसे कोई भेट नहीं दी। लेकिन शाऊल  
ने शांति बनाए रखी।

**11** तब अम्मोनी नाहाश याबेश-गिलाद पर चढ़ाई  
करके उसके चारों ओर घेरा डाल दिया। और याबेश के  
सब पुरुषों ने नाहाश से कहा, “हमसे एक वाचा कर लो,  
और हम तुम्हारी सेवा करेंगे।”<sup>28</sup> परन्तु अम्मोनी नाहाश  
ने उनसे कहा, “मैं इस शर्त पर तुमसे वाचा करूँगा—कि  
मैं तुम में से हर एक की दाहिनी अंख निकाल दूँ, और  
इस प्रकार सारे इसाएल पर अपमान लाऊँ।”<sup>29</sup> याबेश  
के प्राचीरों ने उससे कहा, “हमें सात दिन का समय दो  
ताकि हम इसाएल के सारे प्रदेश में दूर भेज सकें। तब,  
यदि हमें कोई बचाने वाला न मिले, तो हम तुम्हारे पास  
आत्मसमर्पण कर देंगे।”<sup>30</sup> जब दूर शाऊल के गिरा में  
आए और उन्होंने लोगों के कानों में ये शर्तें बताईं, तो सब  
लोग जोर-जोर से रोने लगे।<sup>31</sup> अब देखो, शाऊल बैलों के  
पीछे से खेत से आ रहा था, और उसने कहा, “लोगों को  
क्या हुआ है, कि वे रो रहे हैं?” तब उन्होंने उसे याबेश के  
पुरुषों के शब्द बताए।<sup>32</sup> तब परमेश्वर की आत्मा शाऊल  
पर बलपूर्वक आई जब उसने ये शब्द सुने, और उसका  
क्रोध बहुत भड़क उठा।<sup>33</sup> उसने बैलों की एक जोड़ी ली  
और उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके दूरों के हाथों इसाएल के  
सारे प्रदेश में भेजा, यह कहते हुए, “जो कोई शाऊल  
और शमूएल के पीछे नहीं आएगा, उसके बैलों के साथ  
ऐसा ही किया जाएगा।” तब यहोवा का भय लोगों पर छा  
गया, और वे एक व्यक्ति के समान बाहर आए।<sup>34</sup> जब  
उसने उन्हें बैजेक में इकट्ठा किया, तो इसाएल के पुत्र

तीन लाख थे, और यहूदा के पुरुष तीस हजार।<sup>35</sup> उन्होंने  
आए हुए दूरों से कहा, “याबेश-गिलाद के पुरुषों से यह  
कहो, ‘कल, जब सूर्य गर्म होगा, तुम्हें उद्धार मिलेगा।’”  
तो दूर गए और याबेश के पुरुषों को बताया, और वे  
प्रसन्न हुए।<sup>36</sup> तब याबेश के पुरुषों ने कहा, “कल हम  
तुम्हारे पास बाहर आएंगे, और तुम हमसे जो अच्छा  
समझो, वह कर सकते हो।”

<sup>11</sup> अगले दिन शाऊल ने सेना को तीन भागों में बांटा,  
और वे भरो में शिविर के बीच में आए और दोपहर की  
गर्मी तक अम्मोनियों को मार गिराया। जो बचे वे तितर-  
बितर हो गए, ताकि उनमें से दो भी एक साथ न रह  
सकें।<sup>37</sup> तब लोगों ने शमूएल से कहा, “वह कौन था  
जिसने कहा था, ‘क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा?’ उन  
पुरुषों को यहां लाओ, कि हम उन्हें मार डालें।”<sup>38</sup> परन्तु  
शाऊल ने कहा, “आज किसी को मार डाला नहीं  
जाएगा, क्योंकि आज यहोवा ने इसाएल को उद्धार दिया  
है।”

<sup>14</sup> तब शमूएल ने लोगों से कहा, “आओ, हम गिलगाल  
चलें और वहां राज्य का नवीनीकरण करें।”<sup>39</sup> सो सब  
लोग गिलगाल गए, और वहां उन्होंने यहोवा के सामने  
गिलगाल में शाऊल को राजा बनाया। वहां उन्होंने  
यहोवा के सामने मेलबलि चढ़ाए, और शाऊल और  
इसाएल के सब पुरुष बहुत आनंदित हुए।

**12** तब शमूएल ने सारे इसाएल से कहा, “देखो, मैंने  
तुम्हारी बात सुनी है जो तुमने मुझसे कही, और तुम्हारे  
ऊपर एक राजा नियुक्त किया है।”<sup>40</sup> अब यहाँ राजा  
तुम्हारे सामने चल रहा है, और मैं बूढ़ा और श्वेतकेरी ही  
गया हूँ; और देखो, मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। मैंने अपनी  
जीवनी से लेकर आज तक तुम्हारे सामने चलन किया  
है।<sup>41</sup> यहाँ मैं हूँ। प्रभु और उसके अभिषिक्त के सामने  
मेरे विरुद्ध गवाही दो: किसका बैल मैंने लिया है? या  
किसका गांव मैंने लिया है? किसको मैंने धोखा दिया है?  
किसको मैंने सताया है? किसके हाथ से मैंने घृस लेकर  
अपनी आँखें अंधी कर ली हैं? मेरे विरुद्ध गवाही दो, और  
मैं तुम्हें उसे लौटाऊँगा।”<sup>42</sup> और उन्होंने कहा, “तूने हमें न  
धोखा दिया है, न सताया है, न किसी आदमी के हाथ से  
कुछ लिया है।”<sup>43</sup> उसने उनसे कहा, “प्रभु तुम्हारे विरुद्ध  
गवाह है, और उसका अभिषिक्त आज के दिन गवाह है,  
कि तुमने मेरे हाथ में कुछ नहीं पाया।” और उन्होंने  
कहा, “वह गवाह है।”

<sup>6</sup> तब शमूएल ने लोगों से कहा, “यह वही प्रभु है जिसने  
मूसा और हारून को नियुक्त किया और तुम्हारे पितरों

# 1 शमूएल

को मिस्र देश से बाहर लाया।<sup>7</sup> अब इसलिए ठहरे, कि मैं तुम्हारे साथ प्रभु के सामने उन सब धर्मयाकार्यों के विषय में विवाद करूँ, जो उसने तुम्हारे और तुम्हारे पितरों के लिए किए हैं।<sup>8</sup> जब याकूब मिस्र में गया और तुम्हारे पितरों ने प्रभु की ओर पुकारा, तब प्रभु ने मूसा और हारून को भेजा, जिन्होंने तुम्हारे पितरों को मिस्र से बाहर लाया और उन्हें इस स्थान में बसाया।<sup>9</sup> परन्तु उन्होंने अपने परमेश्वर प्रभु को भुला दिया, इसलिए उसने उन्हें हजार की सेवा के सेनापति सिसेरा के हाथ में, और पलिशितयों के हाथ में, और मोआब के राजा के हाथ में बेच दिया, और उन्होंने उनके विरुद्ध युद्ध किया।<sup>10</sup> तब उन्होंने प्रभु की ओर पुकारा और कहा, 'हमने पाप किया है, क्योंकि हमने प्रभु को छोड़ दिया और बालों और अश्वों की सेवा की है; परन्तु अब हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा, और हम तेरी सेवा करेंगे।'<sup>11</sup> तब प्रभु ने येरुब्बाल और बेदान और यिप्पह और शमूएल को भेजा, और उम्हें तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया, और तुम सुरक्षित रहे।<sup>12</sup> परन्तु जब तुमने देखा कि अम्मीनियों का राजा नहाश तुम्हारे विरुद्ध आया, तो तुमने मुझसे कहा, 'नहीं, परन्तु हमारे ऊपर एक राजा राज्य करेगा — जब तुम्हारा परमेश्वर प्रभु तुम्हारा राजा था।'<sup>13</sup> अब इसलिए देखो वह राजा जिसे तुमने चुना है, जिसके लिए तुमने माँगा था; और देखो, प्रभु ने तुम्हारे ऊपर एक राजा नियुक्त किया है।<sup>14</sup> यदि तुम प्रभु का भय मानोगे और उसकी सेवा करोगे, और उसकी आवाज़ सुनोगे और प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह नहीं करोगे, और यदि तुम और वह राजा जो तुम्हारे ऊपर राज्य करता है, प्रभु तुम्हारे परमेश्वर का अनुसरण करेंगे, तो सब कुछ अच्छा होगा।<sup>15</sup> परन्तु यदि तुम प्रभु की आवाज़ नहीं सुनोगे, और प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करोगे, तो प्रभु का हाथ तुम्हारे और तुम्हारे राजा के विरुद्ध होगा।

<sup>16</sup> अब इसलिए ठहरे और यह महान कार्य देखो जो प्रभु तुम्हारी आँखों के सामने करेगा।<sup>17</sup> क्या आज गेहूँ की कटाई नहीं है? मैं प्रभु से प्रार्थना करूँगा, कि वह गरज और वर्षा भेजे। तब तुम जानोगे और देखोगे कि तुम्हारी दुष्टा कितनी बड़ी है, जो तुमने प्रभु की वृद्धि में की है, अपने लिए एक राजा माँगकर।<sup>18</sup> इसलिए शमूएल ने प्रभु से प्रार्थना की, और प्रभु ने उस दिन गरज और वर्षा भेजी; और सभी लोग प्रभु और शमूएल से बहुत डर गए।

<sup>19</sup> और सभी लोगों ने शमूएल से कहा, "अपने सेवकों के लिए अपने परमेश्वर प्रभु से प्रार्थना करो, कि हम मर न जाएँ; क्योंकि हमने अपने सभी पापों में यह बुराई जोड़ दी है, अपने लिए एक राजा माँगकर।"<sup>20</sup> तब शमूएल ने

लोगों से कहा, "डरो मत। तुमने यह सब बुराई की है, फिर भी प्रभु का अनुसरण करने से मत हटो, परन्तु पूरे मन से प्रभु की सेवा करो।<sup>21</sup> और व्यर्थ की वस्तुओं के पीछे मत जाओ जो न लाभ दे सकती हैं और न छुड़ा सकती हैं, क्योंकि वे कुछ भी नहीं हैं।<sup>22</sup> क्योंकि प्रभु अपने महान नाम के कारण अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, क्योंकि प्रभु को यह अच्छा लगा कि वह तुम्हें अपना लोग बनाए।<sup>23</sup> इसके अलावा, मेरे लिए यह दूर हो कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बंद करके प्रभु के विरुद्ध पाप करूँ; परन्तु मैं तुम्हें अच्छे और सही मार्ग में शिक्षा द्दूँगा।<sup>24</sup> केवल प्रभु का भय मानो और उसे सच्चाई में पूरे मन से सेवा करो; क्योंकि विचार करो कि उसने तुम्हारे लिए कितने महान कार्य किए हैं।<sup>25</sup> परन्तु यदि तुम अब भी दुष्टा करोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों बहा दिए जाओगे।

**13** साऊल तीस वर्ष का था जब उसने राज्य करना शुरू किया, और उसने इसाएल पर बायालीस वर्ष तक राज्य किया।<sup>2</sup> साऊल ने इसाएल से तीन हजार पुरुषों को चुना। दो हजार साऊल के साथ मिकमाश और बेतेल के पहाड़ी देश में थे, और एक हजार योनातन के साथ बियामीन के गिबा में थे। बाकी लोगों को उसने उनके तंबुओं में भेज दिया।<sup>3</sup> योनातन ने पलिशितयों की चौकी जो गेबा में थी, पर हमला किया, और पलिशितयों ने यह सुना। साऊल ने पूरे देश में तुरही बजाई, यह कहते हुए, "इत्रियों को सुनो दो!"<sup>4</sup> और सरे इसाएल ने सुना कि साऊल ने पलिशितयों की चौकी पर हमला किया है, और इसाएल पलिशितयों के लिए घृणास्पद बन गया है। इसलिए लोग गिलगाल में साऊल के पास इकट्ठे हुए।

<sup>5</sup> पलिशिती इसाएल से लड़ने के लिए इकट्ठे हुए—तीस हजार रथ, छह हजार धुड़सवार, और समुद्र के किनारे की रेत के समान असंख्य सैनिक। वे मिकमाश में, बेथ-आवेन के पूर्व में आकर डेरा डाले।<sup>6</sup> जब इसाएल के पुरुषों ने देखा कि वे संकट में हैं—क्योंकि लोग दबाव में थे—तो वे गुफाओं, झाड़ियों, चट्टानों, तहखानों और गड्ढों में छिप गए।<sup>7</sup> कुछ इब्रानी यददन को पार कर गाद और गिलाल की भूमि में चले गए। परन्तु साऊल गिलगाल में रहा, और सभी लोग कांपते हुए उसके पीछे चले।<sup>8</sup> उसने सात दिन तक प्रतीक्षा की, जैसा कि शमूएल ने निर्धारित किया था। परन्तु शमूएल गिलगाल नहीं आया, और लोग उससे बिखरने लगे।<sup>9</sup> तब साऊल ने कहा, "मेरे पास होमबलि और मेलबलि लाओ।"<sup>10</sup> और उसने होमबलि चढ़ाई।<sup>11</sup> जैसे ही उसने होमबलि चढ़ाना समाप्त किया, देखो, शमूएल आया। साऊल उससे

# 1 शमूएल

मिलने और उसका स्वागत करने के लिए बाहर गया।<sup>11</sup> परन्तु शमूएल ने कहा, “तुमने क्या किया?” और साऊल ने उत्तर दिया, “जब मैंने देखा कि लोग मुझसे बिखर रहे हैं, और तुम निर्धारित दिनों में नहीं आए, और पलिश्टी मिकमाश में इकट्ठे हो रहे हैं,<sup>12</sup> तो मैंने कहा, ‘अब पलिश्टी गिलगाल में मुझ पर आक्रमण करेंगे, और मैंने यहोवा की कृपा नहीं मारी है।’ इसलिए मैंने अपने आप को मजबूर किया और होमबलि चढ़ाई।”<sup>13</sup> तब शमूएल ने साऊल से कहा, “तुमने मूर्खता की है। तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया, जो उसने तुम्हें दी थी। अब यहोवा तुम्हारे राज्य को इसाएल पर सदा के लिए स्थिर करता।”<sup>14</sup> परन्तु अब तुम्हारा राज्य स्थिर नहीं रहेगा। यहोवा ने अपने एक ऐसा व्यक्ति खोज लिया है जो उसके हृदय के अनुसार है, और यहोवा ने उसे अपने लोगों का शासक नियुक्त किया है, क्योंकि तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया।”

<sup>15</sup> तब शमूएल उठा और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा में चला गया। और साऊल ने उन लोगों को गिना जो उसके साथ थे, लगभग छह सौ पुरुष।<sup>16</sup> अब साऊल और उसका पुत्र योनातन और जो लोग उनके साथ थे, वे बिन्यामीन के गिबा में ठहरे हुए थे, जबकि पलिश्टी मिकमाश में डेरा डाले हुए थे।<sup>17</sup> और पलिश्टियों की छावनी से तीन दलों में लुटेरे निकले: एक दल ओफ्रा की ओर, शूल की भूमि की ओर मुड़ा;<sup>18</sup> दूसरा दल बेथ-होरेन की ओर मुड़ा; और तीसरा दल ज़ेबोइम की घाटी की ओर, ज़ंगल की ओर मुड़ा।

<sup>19</sup> अब इसाएल के पूरे देश में कोई लोहार नहीं पाया जाता था, क्योंकि पलिश्टियों ने कहा, “अन्यथा इब्रानी तलवरें या भाले बना लेंगे।”<sup>20</sup> इसलिए सभी इसाएली पलिश्टियों के पास गए, प्रयेक अपने हल, कुदाल, कुल्हाड़ी, या हंसिया को तेज करने के लिए।<sup>21</sup> हल, कुदाल, कांटे, और कुल्हाड़ियों को तेज करने और गोड़ों को ठीक करने के लिए दो-तिहाई श्रेकल का शुल्क था।<sup>22</sup> इसलिए युद्ध के दिन, साऊल और योनातन के साथ जो लोग थे, उनके हाथ में न तो तलवार थी और न ही भाला, केवल साऊल और उसके पुत्र योनातन के पास थे।<sup>23</sup> और पलिश्टियों की चौकी मिकमाश के दर्जे की ओर निकली।

**14** अब एक दिन ऐसा हुआ कि शाऊल के पुत्र योनातन ने अपने हथियार उठाने वाले जवान से कहा, “आओ, हम पलिश्टियों की चौकी की पास चलें जो दूसरी ओर है।” लेकिन उसने अपने पिता को नहीं बताया।<sup>2</sup>

शाऊल गिबा के बाहरी इलाके में मिग्रेन में अनार के पेड़ की नींवे ठहरा हुआ था। उसके साथ लगभग छह सौ लोग थे,<sup>3</sup> और अहियाह, जो अहीतूब का पुत्र, इखाबोद का भाई, फिनहास का पुत्र, एली का पुत्र, शीलो में प्रभु का याजक था, वह एपोद पहने हुए था। लेकिन लोगों को यह नहीं पता था कि योनातान चला गया है।<sup>4</sup> अब उन दर्जे के बीच जिनसे होकर योनातान पलिश्टियों की चौकी पर जाने की काशिश कर रहा था, एक तरफ एक तीव्र चट्ठान थी और दूसरी तरफ एक तीव्र चट्ठान थी; एक को बोज़ेंज कहा जाता था, और दूसरे को सनहा।<sup>5</sup> एक चट्ठान उत्तर में मिकमाश के सामने उठी हुई थी, और दूसरी दक्षिण में गेबा के सामने।<sup>6</sup> और योनातान ने अपने हथियार उठाने वाले जवान से कहा, “आओ, हम इन खतनारहित लोगों की चौकी के पास चलें। हो सकता है कि प्रभु हमारे लिए काम करे, क्योंकि प्रभु को बचाने से कोई नहीं रोक सकता, चाहे वह बहुतों के द्वारा हो या थोड़े के द्वारा।”<sup>7</sup> और उसके हथियार उठाने वाले ने उससे कहा, “जो कुछ तुम्हारे दिल में है वह सब करो। आगे बढ़ो; मैं तुम्हारे साथ दिल और आमा से हूँ।”<sup>8</sup> तब योनातान ने कहा, “अब हम उन लोगों के पास जाकर अपने आप को दिखाएं।”<sup>9</sup> यदि वे हमसे कहें, ‘रुको जब तक हम तुम्हारे पास आएं,’ तो हम अपने स्थान पर स्थिर खड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएंगे।<sup>10</sup> लेकिन यदि वे कहें, ‘हमारे पास आओ,’ तो हम ऊपर जाएंगे, क्योंकि प्रभु ने उन्हें हमारे हाथ में दे दिया है। यह हमारे लिए संकेत होगा।”

<sup>11</sup> जब दोनों ने पलिश्टियों की चौकी के सामने अपने आप को प्रकट किया, तो पलिश्टियों ने कहा, “देखो, इब्रानी उन छेदों से बाहर आ रहे हैं जहाँ वे छिपे थे।”<sup>12</sup> और चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार उठाने वाले को पुकारा और कहा, “हमारे पास आओ, और हम तुम्हें कुछ दिखाएंगे।” योनातान ने अपने हथियार उठाने वाले से कहा, “मेरे पीछे आओ, क्योंकि प्रभु ने उहें इसाएल के हाथ में दे दिया है।”<sup>13</sup> तब योनातान ने अपने हाथों और पैरों पर चढ़ाई की, और उसके पीछे उसका हथियार उठाने वाला। और वे योनातान के सामने गिर पड़े, और उसके पीछे उसके हथियार उठाने वाले ने उहें मारा।<sup>14</sup> उस पहले हमले में, योनातान और उसके हथियार उठाने वाले ने लगभग बीस लोगों को मारा, लगभग आधे फरलाग की भूमि के भीतर।<sup>15</sup> और छावनी में, मैदान में, और सभी लोगों के बीच एक कंपकंपी थी। चौकी और यहाँ तक कि लुटेरे भी कांप उठे, और पृथ्वी हिल गई, और यह परमेश्वर से एक बड़ी घबराहट हो गई।

# 1 शमूएल

<sup>16</sup> बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरेदारों ने देखा, और देखो, भीड़ पिघल गई और हर दिशा में बिखर गई। <sup>17</sup> तब शाऊल ने उन लोगों से कहा जो उसके साथ थे, “गिनती करो और देखो कि कौन हमारे बीच से गया है।” और जब उन्होंने गिनती की, तो देखो, योनातान और उसका हथियार उठाने वाला वहाँ नहीं थे। <sup>18</sup> इसलिए शाऊल ने अधियाह से कहा, “यहाँ परमेश्वर का सन्दूक लाओ।” क्योंकि उस समय परमेश्वर का सन्दूक इसाएलियों के साथ था। <sup>19</sup> और जब शाऊल याजक से बात कर रहा था, तब पलिशियों की छावनी में कोताहल बढ़ता गया। तब शाऊल ने याजक से कहा, “अपना हाथ वापस ले लो।” <sup>20</sup> तब शाऊल और उसके साथ के सभी लोग इकट्ठे हुए और युद्ध में गए; और देखो, हर व्यक्ति की तलवार उसके साथी के खिलाफ थी, और वहाँ बड़ी उलझन थी। <sup>21</sup> अब वे इब्रानी जो पहले पलिशियों के साथ थे और आसपास के देश से उनके साथ छावनी में गए थे, वे भी उन इसाएलियों के साथ शामिल हो गए जो शाऊल और योनातान के साथ थे। <sup>22</sup> और सभी इसाएली लोग जो इफैम के पहाड़ी देश में छिपे थे, उन्होंने सुना कि पलिशियों भाग रहे हैं, और वे भी युद्ध में उनके पाठें लगे। <sup>23</sup> इस प्रकार उस दिन प्रभु ने इसाएल को बचाया, और युद्ध बेथ-अवेन के परे चला गया।

<sup>24</sup> अब उस दिन इसाएल के लोग कठिनाई में थे, क्योंकि शाऊल ने लोगों पर शापथ रखी थी, यह कहते हुए, “शापित हो वह व्यक्ति जो शाम से पहले भोजन खाए, जब तक कि मैं अपने शत्रुओं से बदला न ले लूँ।” इसलिए किसी ने भी भोजन का स्वाद नहीं लिया। <sup>25</sup> अब सभी देश के लोग जंगल में गए, और वहाँ जमीन पर शहद था। <sup>26</sup> और जब लोग जंगल में गए, तो देखो, शहद टपक रहा था, लेकिन किसी ने भी अपने हाथ को मुँह में नहीं डाला, क्योंकि लोग शापथ से डरते थे। <sup>27</sup> लेकिन योनातान ने अपने पिता को लोगों को शापथ दिलाते हुए नहीं सुना था; इसलिए उसने अपने हाथ में जो डंडा था उसका सिरा बढ़ाया और उसे मधुकोष में डुबोया, और अपने हाथ को मुँह में डाला, और उसकी आँखें चमक उठीं। <sup>28</sup> तब लोगों में से एक ने कहा, “तुम्हारे पिता ने लोगों को शापथ दिलाई है, यह कहते हुए, ‘शापित हो वह व्यक्ति जो आज भोजन खाए।’” और लोग कमज़ोर हो गए। <sup>29</sup> तब योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने देश को परेशान किया है। देखो, मेरी आँखें कैसे चमक उठीं हैं क्योंकि मैंने इस शहद का थोड़ा सा स्वाद लिया है।” <sup>30</sup> किंतु अच्छा होता यदि लोग आज अपने शत्रुओं की लूट का स्वतंत्रता से खा सकते जो उन्होंने पाइ। क्योंकि अब पलिशियों के बीच कत्तोंआम बड़ा नहीं हुआ है।”

<sup>31</sup> उन्होंने उस दिन मिकमाश से अप्यालोन तक पलिशियों को मारा, और लोग बहुत कमज़ोर हो गए। <sup>32</sup> लोग लालच से लूट पर टूट पड़े और भेड़, बैल, और बछड़े ले गए, और उन्हें जमीन पर मार डाला; और लोगों ने उन्हें खून के साथ खाया। <sup>33</sup> तब यह शाऊल को बताया गया, यह कहते हुए, “देखो, लोग प्रभु के खिलाफ पाप कर रहे हैं खून के साथ मांस खाकर।” और उसने कहा, “तुमने विश्वासघात किया है; यहाँ मेरे पास एक बड़ा पत्थर लाओ।” <sup>34</sup> तब शाऊल ने कहा, “लोगों के बीच मैं फैला जाओ और उन्हें कहो, ‘हर एक अपाना बैल या भेड़ लाए, और यहाँ मार डाले और खाए, और खून के साथ खाकर प्रभु के खिलाफ पाप न करो।’” इसलिए सभी लोग अपने बैल उस रात लाए और उन्हें वहाँ मारा। <sup>35</sup> और शाऊल ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई—यह पहली वेदी थी जो उसने प्रभु के लिए बनाई।

<sup>36</sup> तब शाऊल ने कहा, “आओ, हम रात में पलिशियों के पीछे चलें और सुबह की रोशनी तक उन्हें लूटें, और उनमें से एक व्यक्ति को ‘भी न छोड़ें।’” और उन्होंने कहा, “जो कुछ तुम्हें अच्छा लगे वह करो।” लेकिन याजक ने कहा, “आओ, यहाँ परमेश्वर के पास आएं।” <sup>37</sup> और शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मैं पलिशियों के पीछे जाऊँ? क्या आप उन्हें इसाएल के हाथ में देरों?” लेकिन उस दिन उसने उसे उत्तर नहीं दिया। <sup>38</sup> तब शाऊल ने कहा, “यहाँ आओ, सभी लोगों के प्रमुख, और जानो और देखो कि आज यह पाप कहाँ हुआ है।” <sup>39</sup> क्योंकि जैसे प्रभु जीवित है, जो इसाएल को बचाता है, यहाँ तक कि यदि यह मेरा पुत्र योनातान भी हो, तो वह अवश्य मरेगा।” लेकिन सभी लोगों में से किसी ने भी उसे उत्तर नहीं दिया। <sup>40</sup> तब उसने सभी इसाएलियों से कहा, “तुम एक तरफ रहो, और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी तरफ रहेंगे।” और लोगों ने शाऊल से कहा, “जो कुछ तुम्हें अच्छा लगे वह करो।” <sup>41</sup> इसलिए शाऊल ने प्रभु से कहा, “हे इसाएल के परमेश्वर, एक सही भाग दो।” और योनातान और शाऊल पकड़े गए, लेकिन लोग बच गए। <sup>42</sup> तब शाऊल ने कहा, “मेरे और मेरे पुत्र योनातान के बीच मैं भाग डालो।” और योनातान पकड़ा गया। <sup>43</sup> तब शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है।” और योनातान ने उसे बताया, “मैंने वास्तव में अपने हाथ में जो डंडा था उसके सिरे से थोड़ा शहद चखा। यहाँ मैं हूँ; मुझे मरना होगा।” <sup>44</sup> और शाऊल ने कहा, “परमेश्वर मुझे ऐसा करे और अधिक भी, क्योंकि तुम अवश्य मरेगा, योनातान।” <sup>45</sup> लेकिन लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मरेगा, जिसने इसाएल में यह महान उद्धार किया है? ऐसा न हो! जैसे प्रभु जीवित है, उसके सिर का एक बाल भी जमीन पर नहीं

# 1 शमूएल

गिरेगा, क्योंकि उसने आज परमेश्वर के साथ काम किया है।<sup>47</sup> इसलिए लोगों ने योनातान को बचाया, और वह नहीं मरा।<sup>48</sup> तब शाऊल ने पलिश्चितयों का पीछा करना छोड़ दिया, और पलिश्चिती अपने स्थान पर चले गए।

<sup>47</sup> अब जब शाऊल ने इसाएल पर राज्य लिया, तो उसने अपने सभी शत्रुओं के खिलाफ चारों ओर से लड़ाई की—मोआब, अम्पोनियों, एदोम, सोबा के राजाओं, और पलिश्चितयों के खिलाफ। और जहाँ भी वह मुड़ा, उसने उन्हें पराजित किया।<sup>49</sup> उसने वीरता से काम किया और अमालेकियों को मारा, और इसाएल को उनके हाथों से छुड़ाया जो उन्हें तृट्टे थे।<sup>50</sup> अब शाऊल के पुत्र योनातान, इश्वी, और मल्की-शूआ थे। और उसकी दो बेटियों के नाम ये थे: पहली का नाम मेरब था, और छोटी का नाम मीकल था।<sup>51</sup> और शाऊल की पत्नी का नाम अहिनोआम था, जो अहिमाज़ की बेटी थी। और उसकी सेना के सेनापति का नाम अबनेर था, जो नेर का पुत्र और शाऊल का चाचा था।<sup>52</sup> कीर्ता शाऊल का पिता था, और नेर, अबनेर का पिता, अबीएल का पुत्र था।<sup>53</sup> शाऊल के सभी दिनों में पलिश्चितयों के खिलाफ कड़ी लड़ाई थी। और जब भी शाऊल ने किसी शक्तिशाली व्यक्ति या वीर व्यक्ति को देखा, तो उसने उसे अपनी सेवा में ले लिया।

**15** शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने मुझे अपने लोगों इसाएल पर तुझे राजा अभिषिक्त करने के लिए भेजा है; अब इसलिए, यहोवा के वर्चों को सुना।<sup>2</sup> सेनाओं के यहोवा का यह कहना है: मैं अमालेक को उसके इसाएल के प्रति किए गए कार्य के लिए दंड द्वागा, कि उसने कैसे मिस्र से आते समय उसका विरोध किया।<sup>3</sup> अब जा और अमालेक पर आक्रमण कर और जो कुछ उनके पास है उसे पूरी तरह से नष्ट कर दे। उन्हें मत छोड़, बल्कि पुरुष और स्त्री, बालक और शिशु, बैल और भेड़, ऊंट और गदहे को मार डाल।”

<sup>4</sup> तब शाऊल ने लोगों को बुलाया और उन्हें तेला में गिना: दो लाख पैदल सैनिक और यहूदा के दस हजार आदमी।<sup>5</sup> शाऊल अमालेक के नगर में आया और घाटी में घाट लगाकर बैठा।<sup>6</sup> शाऊल ने केनी लोगों से कहा, “जाओ, अमालेकियों के बीच से निकल जाओ, ताकि मैं तुम्हें उनके साथ नष्ट न कर दूँ। क्योंकि तुमने मिस्र से आते समय इसाएल के सभी पुत्रों के प्रति कृपा दिखाई थी।” इसलिए केनी लोग अमालेकियों के बीच से निकल गए।<sup>7</sup> तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक, जो मिस्र के पूर्व में है, अमालेकियों को मार डाला।<sup>8</sup> उसने अमालेकियों के राजा अगाग को जीवित पकड़ा, और

तलवार की धार से सभी लोगों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।<sup>9</sup> परंतु शाऊल और लोगों ने अगाग और भेड़ों, बैलों, मोटे जानवरों, मेमनों और सभी अच्छे को छोड़ दिया, और उन्हें पूरी तरह से नष्ट करने के लिए अनिच्छुक थे। लेकिन जो कुछ तुच्छ और बेकार था, उसे उन्होंने पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

<sup>10</sup> तब यहोवा का वचन शमूएल के पास आया, कहता हुआ, <sup>11</sup> “मुझे खेद है कि मैंने शाऊल को राजा बनाया, क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करने से मूँह मोड़ लिया है और मेरे आदेशों का पालन नहीं किया है।” और शमूएल को दुख हुआ और उसने सारी रात यहोवा से प्रार्थना की।<sup>12</sup> शमूएल सुबह जल्दी उठा शाऊल से मिलने के लिए; और शमूएल को बताया गया, “शाऊल कर्मल में आया, और देखो, उसने अपने लिए एक स्पारक खड़ा किया, फिर मुङ्कर गिलगाल की ओर चला गया।”<sup>13</sup> शमूएल शाऊल के पास आया, और शाऊल ने उससे कहा, “तू यहोवा का आशीर्वादित है! मैंने यहोवा की आज्ञा का पालन किया है।”<sup>14</sup> परंतु शमूएल ने कहा, “फिर यह भेड़ों का मिमियाना मेरे कानों में क्या है, और ये बैलों की आवाज जो मैं सुन रहा हूँ?”<sup>15</sup> शाऊल ने कहा, “वे उन्हें अमालेकियों से लाए हैं, क्योंकि लोगों ने भेड़ों और बैलों में से सबसे अच्छे को यहोवा तेरे परमेश्वर के लिए बलिदान करने के लिए बचा लिया है; परंतु बाकी को हमने पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।”

<sup>16</sup> तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “रुक! मैं तुझे बताऊंगा कि यहोवा ने मुझे कल रात क्या कहा।” और उसने उससे कहा, “कह!”<sup>17</sup> शमूएल ने कहा, “क्या यह सच नहीं है, कि यद्यपि तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तुझे इसाएल के गोंत्रों का प्रधान बनाया गया? और यहोवा ने तुझे इसाएल का राजा अभिषिक्त किया,<sup>18</sup> और यहोवा ने तुझे एक मिशन पर भेजा और कहा, ‘जा और पापियों, अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट कर, और उनके खिलाफ तब तक लड़ाई कर जब तक वे समाप्त न हो जाएं।’<sup>19</sup> फिर तूने यहोवा की आवाज का पालन क्यों नहीं किया, बल्कि लूट पर दौड़ा और यहोवा की दृष्टि में बुराई की?”<sup>20</sup> तब शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने यहोवा की आवाज का पालन किया, और उस मिशन पर गया जिस पर यहोवा ने मुझे भेजा, और अमालेक के राजा अगाग को वापस लाया, और अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।”<sup>21</sup> परंतु लोगों ने कुछ लूट, भेड़ और बैल, विनाश के लिए समर्पित चीजों में से सबसे अच्छे को लिया, गिलगाल में यहोवा तेरे परमेश्वर के लिए बलिदान करने के लिए।”

# 1 शमूएल

<sup>22</sup> शमूएल ने कहा,

“क्या यहोवा को होमबलियों और बलिदानों में उतनी ही प्रसन्नता है जितनी यहोवा की आवाज़ का पालन करने में है? देख अज्ञा मानना बलिदान से बेहतर है, और सुनना मेंदों की चर्ची से।<sup>23</sup> क्योंकि विद्रोह जाह्वा टोने के पाप के समान है, और अवज्ञा अधर्म और मूर्तिपूजा के समान है। क्योंकि तूने यहोवा के वचन को अस्वीकार किया है, उसने भी तुझे राजा होने से अस्वीकार कर दिया है।”

<sup>24</sup> तब शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है; मैंने वास्तव में यहोवा की आज्ञा और तेरे वचनों का उल्लंघन किया है, क्योंकि मैंने लोगों से डरकर उनकी आवाज़ सुनी।<sup>25</sup> अब इसलिए, कृपया मेरे पाप को क्षमा कर और मेरे साथ लौट चल, ताकि मैं यहोवा की उपासना कर सकूँ।”<sup>26</sup> परंतु शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ नहीं लौटूँगा; क्योंकि तूने यहोवा के वचन को अस्वीकार किया है, और यहोवा ने तुझे इसाएल का राजा होने से अस्वीकार कर दिया है।”<sup>27</sup> जब शमूएल जाने के लिए मुड़ा, तो शाऊल ने उसकी चादर का किनारा पकड़ लिया, और वह फट गई।<sup>28</sup> तब शमूएल ने उससे कहा, “यहोवा ने आज तुझसे इसाएल का राज्य छीन लिया है और उसे तेरे पड़ोसी को दे दिया है जो तुझसे बेहतर है।”<sup>29</sup> इसके अलावा इसाएल की महिमा न तो झूठ बोलेगी और न ही अपने मन को बदलेगी; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि वह अपने मन को बदले।”

<sup>30</sup> तब शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है; परंतु कृपया अब मेरे लोगों के बुजुर्गों और इसाएल के सामने मेरा समान कर, और मेरे साथ लौट चल, ताकि मैं यहोवा तेरे परमेश्वर की उपासना कर सकूँ।”<sup>31</sup> इसलिए शमूएल शऊल के बाद लौटा, और शाऊल ने यहोवा की उपासना की।<sup>32</sup> तब शमूएल ने कहा, “मेरे पास अमालोकियों के राजा अगाग को लाओ।” और अगाग खुशी से उसके पास आया। और अगाग ने कहा, “निश्चित रूप से मृत्यु की कङ्गवाहट अब समाप्त हो गई है।”<sup>33</sup> परंतु शमूएल ने कहा,

“जैसे तेरी तलवार ने स्त्रियों को निःसंतान किया है, जैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निःसंतान होगी।” और शमूएल ने गिलगाल में यहोवा के सामने अगाग को टुकड़े टुकड़े कर दिया।

<sup>34</sup> तब शमूएल रामाह को गया, परंतु शाऊल गिबा में अपने घर चला गया।<sup>35</sup> शमूएल ने शाऊल को उसकी

मृत्यु के दिन तक फिर नहीं देखा; क्योंकि शमूएल शाऊल के लिए शोक करता रहा, और यहोवा को खेद हुआ कि उसने शाऊल को इसाएल का राजा बनाया।

**16** यहोवा ने शमूएल से कहा, “तू कब तक शाऊल के लिए शोक करेगा, क्योंकि मैंने उसे इसाएल पर राजा होने से अस्वीकार कर दिया है? अपनी सीमा में तेल भर और जां; मैं तुझे बेतलेहेमी पिशी के पास भेज रहा हूँ, क्योंकि मैंने उसके पुत्रों में से एक को अपने लिए राजा चुना है।”<sup>2</sup> परंतु शमूएल ने कहा, “मैं कैसे जाऊँ? यदि शाऊल को वह पता चला, तो वह मुझे मार डालेगा।” और यहोवा ने कहा, “अपने साथ एक बछिया ले जा और कह, मैं यहोवा के लिए बलिदान करने आया हूँ।”<sup>3</sup> फिर पिशी को बलिदान के लिए आमंत्रित करना, और मैं तुझे दिखाऊँगा कि क्या करना है; और जिसे मैं तुझे संकेत द्वारा उसके लिए तू मेरा अभिषेक करेगा।”<sup>4</sup> तो शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने कहा और बेतलेहेम गया। नगर के पुरनिये कांपते हुए उससे मिलने आए और कहा, “क्या तू शांति से आया है?”<sup>5</sup> उसने कहा, “हाँ, शांति से; मैं यहोवा के लिए बलिदान करने आया हूँ।” अपने आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलिदान में आओ।”<sup>6</sup> फिर उसने पिशी और उसके पुत्रों को पवित्र किया और उन्हें बलिदान के लिए आमंत्रित किया।

<sup>6</sup> जब वे आए, तो उसने एलीआब को देखा और सोचा, “निश्चित रूप से यहोवा का अभिषेक उसके सामने है।”  
<sup>7</sup> परंतु यहोवा ने शमूएल से कहा,

“उसके रूप या उसकी कद्द काठी को मत देख, क्योंकि मैंने उसे अस्वीकार कर दिया है। क्योंकि यहोवा जैसा देखता है वैसा मनुष्य नहीं देखता, क्योंकि मनुष्य बाहरी रूप को देखता है, परंतु यहोवा हृदय को देखता है।”

<sup>8</sup> फिर पिशी ने अबीनादाब को बुलाया और उसे शमूएल के सामने से गुजरने दिया। परंतु उसने कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना है।”<sup>9</sup> इसके बाद पिशी ने शम्मा को गुजरने दिया। परंतु उसने कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना है।”<sup>10</sup> तो पिशी ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने से गुजरने दिया। परंतु शमूएल ने पिशी से कहा, “यहोवा ने इनको नहीं चुना है।”

<sup>11</sup> तब शमूएल ने पिशी से कहा, “क्या ये सब लड़के हैं?” और उसने कहा, “अभी सबसे छोटा बाकी है, परंतु देखो, वह भेड़ों को चरा रहा है।” तो शमूएल ने पिशी से कहा, “उसे भेज और बुला ले, क्योंकि जब तक वह यहाँ

# 1 शमूएल

नहीं आता, हम नहीं बैठेंगे।”<sup>12</sup> तो उसने उसे भेजा और उसे लाया। अब वह लालिमा लिए हुए, सुंदर आँखों वाला और सुंदर रूप वाला था। और यहोवा ने कहा, “उठ, उसका अभिषेक कर; क्योंकि यही है।”<sup>13</sup> तब शमूएल ने तेल की सींग ली और उसके भाइयों के बीच उसका अभिषेक किया; और उस दिन से यहोवा की आत्मा दाऊद पर बलपूर्वक आई। और शमूएल उठकर रामाह को चला गया।

<sup>14</sup> अब यहोवा की आत्मा शाऊल से दूर हो गई, और यहोवा की ओर से एक बुरी आत्मा उसे सताने लगी।<sup>15</sup> तब शाऊल के सेवकों ने उससे कहा, “देखो अब, परमेश्वर की ओर से एक बुरी आत्मा तुझे सताती है।”<sup>16</sup> हमारे प्रभु अब अनें सेवकों को जो रोते सामने हैं, आज्ञा दें। वे एक ऐसे व्यक्ति को खोजें जो वीणा बजाने में कुशल हो; और जब परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा तुझ पर आएगी, तो वह बजाएगा, और तू अच्छा हो जाएगा।”<sup>17</sup> तो शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, “अब मेरे लिए एक ऐसा व्यक्ति लाओ जो अच्छी तरह से बजा सके और उसे मेरे पास लाओ।”<sup>18</sup> तब एक जवान ने उत्तर दिया और कहा, “देखो, मैंने यिशै के बेतलेहेमी पुत्र को देखा है जो बजाने में कुशल है, एक वीर व्यक्ति, योद्धा, भाषण में निपुण, और सुंदर व्यक्ति है; और यहोवा उसके साथ है।”

<sup>19</sup> तो शाऊल ने यिशै के पास दूत भेजे और कहा, “अपने पुत्र दाऊद को, जो झुंड के साथ है, मेरे पास भेज।”<sup>20</sup> और यिशै ने रोटी से लदा हुआ गधा, एक मटके में दाखमधु, और एक बकरी का बच्चा लिया, और उन्हें अपने पुत्र दाऊद के द्वारा शाऊल के पास भेजा।<sup>21</sup> तब दाऊद शाऊल के पास आया और उसकी सेवा में प्रवेश किया; और शाऊल ने उसे अत्यधिक प्यार किया, और वह उसका हथियाराहक बन गया।<sup>22</sup> और शाऊल ने यिशै के पास संदेश भेजा, “अब दाऊद को मेरी सेवा में रहने दो, क्योंकि उसने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है।”<sup>23</sup> तो ऐसा हुआ कि जब भी परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा शाऊल पर आती, दाऊद वीणा लेता और अपन हाथ से बजाता; और शाऊल ताज़ी महसूस करता और अच्छा हो जाता, और बुरी आत्मा उसे छोड़ देती।

**17** अब पलिश्ती अपनी सेनाएँ युद्ध के लिए इकट्ठा हुईं, और वे यहोवा के सोकोह में इकट्ठा हुईं; और उहोंने सोकोह और अजेका के बीच, एफ़ेस-दम्मीम में डेरा डाला।<sup>2</sup> शाऊल और इसाएल के लोग इकट्ठा हुए और एला की घाटी में डेरा डाला, और पलिश्तियों से मिलने के लिए पंक्तियाँ बनाईं।<sup>3</sup> पलिश्ती एक तरफ पहाड़ पर

खड़े थे, जबकि इसाएल दूसरी तरफ पहाड़ पर खड़ा था, और उनके बीच घाटी थी।<sup>4</sup> तब पलिश्तियों की छावनी से एक वीर योद्धा बाहर आया, जिसका नाम गोलियत था, जो गथ का था, जिसकी ऊँचाई छ ह हाथ और एक बित्ते थी।<sup>5</sup> उसके सिर पर पीतल का टोप था, और उसने जिरहबखतर पहना था जिसका वजन पाँच हजार शेकेल पीतल का था।<sup>6</sup> उसके पैरों पर पीतल के पत्ते थे और उसके कंधों के बीच पीतल की भाला लटक रही थी।<sup>7</sup> उसके भाले की ढंडी जुलाहे के बीम के समान थी, और उसके भाले की लोही की नोक का वजन छ ह सौ शेकेल लोहे का था; और उसका ढालावाहक उसके आगे चलता था।<sup>8</sup> वह खड़ा हुआ और इसाएल की पक्तियों को ललकार कर उनसे कहा, “तुम युद्ध के लिए क्यों पंक्तिबद्ध होते हो? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूँ और तुम साऊल के सेवक नहीं हो? अपने लिए एक आदमी चुनो और उसे मेरे पास आने दो।”<sup>9</sup> यदि वह मुझसे लड़ने और मुझे मारने में सक्षम है, तो हम तुम्हारे सेवक बन जाएंगे; लैकिन यदि मैं उस पर विजय प्राप्त करूँ और उसे मार दूँ, तो तुम हमारे सेवक बन जाओगे और हमारी सेवा करोगे।”<sup>10</sup> पलिश्ती ने कहा, “मैं आज इसाएल की पक्तियों को ललकारता हूँ। मुझे एक आदमी दो, ताकि हम एक साथ लड़ सकें।”<sup>11</sup> जब साऊल और समस्त इसाएल ने पलिश्ती के ये शब्द सुने, तो वे भयभीत और बहुत डर गए।

<sup>12</sup> अब दाऊद यहोवा के बेतलेहम के एप्टारी का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था। उसके आठ पुत्र थे, और साऊल के समय में वह बूढ़ा और वृद्ध था।<sup>13</sup> यिशै के तीन बड़े पुत्र साऊल के साथ युद्ध में गए थे। उसके तीन पुत्रों के नाम जो युद्ध में गए थे, वे थे एलीआब, जो पहिलीठा था, दूसरा अवीनादाब, और तीसरा शम्मा।<sup>14</sup> दाऊद सबसे छोटा था। अब तीन बड़े साऊल के पीछे हो लिए,<sup>15</sup> परन्तु दाऊद साऊल के पास से बेतलेहम में अपने पिता की भेड़-बकरियों की देखभाल करने के लिए आता-जाता था।<sup>16</sup> चालीस दिन तक पलिश्ती हर सुबह और शाम को आगे बढ़ता और अपनी स्थिति लेता।

<sup>17</sup> तब यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “अब अपने भाइयों के लिए भुए हुए अनाज का एक एपा और ये दस रोटियाँ ले लो, और अपने भाइयों के शिविर में दौड़कर जाओ।<sup>18</sup> इन दस पनीरों को उनके हजार के सेनापति को भी दो, और अपने भाइयों की कुशलता की जाँच करो, और उनकी खबर लेकर आओ।”<sup>19</sup> अब साऊल और इसाएल के सभी लोग एला की घाटी में पलिश्तियों से लड़ रहे थे।<sup>20</sup> इसलिए दाऊद सुबह जल्दी उठा, भेड़-बकरियों को एक रखवाले के पास छोड़ दिया,

# 1 शमूएल

सामान लिया और जैसा पिछे ने उसे आदेश दिया था, वैसे ही गया। वह छावनी में पहुँचा जब सेना युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध हो रही थी और युद्ध का नारा लगा रही थी।<sup>21</sup> इसाएल और पलिश्ती सेना के खिलाफ सेना के रूप में युद्ध के लिए तैयार हो गए।<sup>22</sup> तब दाऊद ने सामान को सामान के रखवाले के पास छोड़ा, युद्ध की पंक्ति की ओर दौड़ा, और अपने भाईयों का अभिवादन किया।<sup>23</sup> जब वह उनसे बात कर रहा था, तो देखो, गथ का पलिश्ती योद्धा गोलियत पलिश्तीयों की सेना से ऊपर आ रहा था, और उसने पहले की तरह वही शब्द कहे; और दाऊद ने उसे सुना।<sup>24</sup> जब इसाएल के सभी लोगों ने उस आदमी को देखा, तो वे उससे भाग गए और बहुत डर गए।

<sup>25</sup> इसाएल के लोगों ने कहा, “क्या तुमने इस आदमी को देखा है जो ऊपर आ रहा है? निश्चय ही वह इसाएल को ललकारने के लिए आ रहा है। और यह होगा कि राजा उस आदमी को जो उसे मार डालेगा, बड़ी धन-संपत्ति से समृद्ध करेगा, उसे अपनी बेटी देगा, और उसके पिता के घर की इसाएल में मुकर्त करेगा।”<sup>26</sup> तब दाऊद ने उन लोगों से जो उसके पास खड़े थे, कहा, “उस आदमी के लिए क्या किया जाएगा जो इस पलिश्ती को मार डालेगा और इसाएल से इस अपमान को दूर करेगा? क्योंकि यह खतना रहित पलिश्ती कौन है, जो जीवित परमेश्वर की सेनाओं को ललकारे?”<sup>27</sup> और लोगों ने उसे उसी तरह उत्तर दिया, “उस आदमी के लिए यही किया जाएगा जो उसे मार डालेगा।”<sup>28</sup> अब जब उसके बड़े भाई लेलीआब ने सुना कि वह लोगों से बात कर रहा है; और लेलीआब का क्रोध दाऊद पर भड़क उठा और उसने कहा, “तू यहाँ क्यों आया है? और तूने जंगल में उन कुछ भेड़-बकरियों को किसके पास छोड़ा है? मैं तेरे अभिमान और तेरे हृदय की बुराई को जानता हूँ, क्योंकि तू युद्ध देखने के लिए आया है।”<sup>29</sup> परन्तु दाऊद ने कहा, “अब मैंने क्या किया है? क्या यह केवल एक प्रश्न नहीं था?”<sup>30</sup> तब उसने उससे मुड़कर दूसरे से वही बात कही; और लोगों ने उसे पहले की तरह उत्तर दिया।

<sup>31</sup> जब दाऊद के कहे शब्द सुने गए, तो उन्हें साऊल के पास बताया गया, और उसने उसे बुलाया।<sup>32</sup> दाऊद ने साऊल से कहा, “इस पलिश्ती के कारण किसी का मन न गिरे; आपका सेवक जाकर उससे लड़ागा।”<sup>33</sup> परन्तु साऊल ने दाऊद से कहा, “तू इस पलिश्ती से लड़ने के लिए नहीं जा सकता, क्योंकि तू केवल एक युवक है, और वह अपनी जवानी से ही योद्धा रहा है।”<sup>34</sup> परन्तु दाऊद ने साऊल से कहा, “आपका सेवक अपने पिता की भेड़-बकरियों की देखभाल कर रहा था। जब एक

सिंह या भालू आया और झुंड से एक मेमना ले गया,<sup>35</sup> तो मैं उसके पीछे गया और उसे मारा, और मेमने को उसके मुँह से छुड़ाया। और जब वह मुझ पर उठा, तो मैंने उसकी दाढ़ी से पकड़ लिया और उसे मारा और मार डाला।<sup>36</sup> आपके सेवक ने सिंह और भालू दोनों को मारा है; और यह खतना रहित पलिश्ती उन में से एक के समान होगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेनाओं को ललकारा है।”<sup>37</sup> और दाऊद ने कहा, “यहोवा, जिसने मुझे सिंह के पंजे और भालू के पंजे से बचाया, वह मुझे इस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।” और साऊल ने दाऊद से कहा, “जा, और यहोवा तेरे साथ रहे।”

<sup>38</sup> तब साऊल ने दाऊद को अपने वस्त्र पहनाए और उसके सिर पर पीतल का टोप रखा, और उसे कवच पहनाया।<sup>39</sup> दाऊद ने अपने कवच के ऊपर अपनी तलवार बाँधी और चलने की कोशिश की, परन्तु वह उनका आदी नहीं था। इसलिए दाऊद ने साऊल से कहा, “मैं इनसे नहीं चल सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं हूँ।” और दाऊद ने उन्हें उतार दिया।<sup>40</sup> तब उसने अपने हाथ में अपनी लाठी ली, और अपने लिए नाले से पाँच चिकने पत्थर चुने, और उन्हें उस चरवाते की पैती में रखा जो उसके पास थी, अर्थात् उसकी झोली में, और उसकी गोफन उसके हाथ में थी। और वह पलिश्ती के पास पहुँचा।<sup>41</sup> इस बीच पलिश्ती अगे बढ़ा और दाऊद के पास आया, उसके आगे ढालवाहक था।<sup>42</sup> जब पलिश्ती ने देखा और दाऊद को देखा, तो उसने उसे तुच्छ जाना, क्योंकि वह केवल एक युवक था, और लालिमा लिए हुए, सुंदर रूप वाला था।<sup>43</sup> पलिश्ती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू मेरे पास लाठियों के साथ आता है?” और पलिश्ती ने अपने देवताओं के द्वारा दाऊद को शाप दिया।<sup>44</sup> पलिश्ती ने दाऊद से भी कहा, “मेरे पास आ, और मैं तेरे मास को आकाश के पक्षियों और मैदान के जानवरों को ढूँगा।”

<sup>45</sup> तब दाऊद ने पलिश्ती से कहा,

“तू तलवार, भाला, और Javelin के साथ मेरे पास आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम में तेरे पास आता हूँ, इसाएल की सेनाओं के परमेश्वर के नाम में, जिसे तूने ललकारा है।”<sup>46</sup> आज यहोवा तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा, और मैं तुझे मारकर तेरा सिर तुझसे अलग कर दूँगा। और मैं आज पलिश्तीयों की सेना की लाशों को आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जंगली जानवरों को ढूँगा, ताकि सारी पृथ्वी जान सके कि इसाएल में एक परमेश्वर है,<sup>47</sup> और यह सारी सभा

# 1 शमूएल

जान ले कि यहोवा तलवार या भाले से नहीं बचता;  
क्योंकि युद्ध यहोवा का है, और वह तुझे हमारे हाथ में  
सौंप देगा।<sup>48</sup>

<sup>48</sup> तब ऐसा हुआ कि जब पलिश्ती उठा और दाऊद से मिलने के लिए आगे बढ़ा, तब दाऊद जल्दी से युद्ध की पंक्ति की ओर दौड़ा ताकि पलिश्ती से मिल सके।<sup>49</sup> और दाऊद ने अपने थेले में हाथ डाला और उसमें से एक पथर निकाला और उसे गोफन से मारा, और पलिश्ती के माथे पर मारा। पथर उसके माथे में धूंस गया, और वह मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा।<sup>50</sup> इस प्रकार दाऊद ने गोफन और पथर से पलिश्ती पर विजय प्राप्त की, और उसने पलिश्ती को मारा और उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में कोई तलवार नहीं थी।<sup>51</sup> तब दाऊद दौड़ा और पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया, उसकी तलवार ली और म्यान से खींची, और उसे मार डाला और उसका सिर काट दिया। जब पलिश्तियों ने देखा कि उनका वीर योद्धा मर गया है, तो वे भग गए।<sup>52</sup> तब इसाएल और यहूदा के लोग उठे और चिल्लाएं और पलिश्तियों का पीछा किया घाटी तक, और एकोन के फाटकों तक। और मारे गए पलिश्ती शाराईम के मार्ग पर, गथ और एकोन तक पड़े रहे।<sup>53</sup> तब इसाएल के पुत्र पलिश्तियों का पीछा करके लौटे और उनके शिविरों को तूटा।<sup>54</sup> दाऊद ने पलिश्ती का सिर लिया और उसे यश्शलेम ले गया, परन्तु उसने उसके हथियार अपने तम्बू में रखे।

<sup>55</sup> अब जब साऊल ने देखा कि दाऊद पलिश्ती के खिलाफ जा रहा है, तो उसने सेना के सेनापति अबनेर से कहा, “अबनेर, यह युवक किसका पुत्र है?” और अबनेर ने कहा, “जैसा कि आपकी आत्मा जीवित है, हे राजा, मैं नहीं जानता।”<sup>56</sup> राजा ने कहा, “जाँच करो कि यह युवक किसका पुत्र है।”<sup>57</sup> तो जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, अबनेर ने उसे लिया और उसे साऊल के सामने लाया उसके हाथ में पलिश्ती का सिर था।<sup>58</sup> साऊल ने उससे कहा, “तू किसका पुत्र है, हे युवक?” और दाऊद ने कहा, “मैं आपके सेवक पिशौ का पुत्र हूँ, जो बेतलैहम का है।”

**18** जब शाऊल से बात करना समाप्त हुआ, तब योनातान का मन दाऊद के मन से ऐसा जुड़ गया कि योनातान ने उसे अपने समान प्रेम किया।<sup>2</sup> उस दिन शाऊल ने उसे अपने पास रख लिया और उसे उसके पिता के घर लौटने नहीं दिया।<sup>3</sup> तब योनातान ने दाऊद के साथ एक वाचा बाँधी क्योंकि वह उसे अपने समान प्रेम करता था।<sup>4</sup> योनातान ने अपने ऊपर का चोगा

उतारकर दाऊद को दे दिया, साथ ही अपनी कवच, तलवार, धनुष और कमरबंद भी।<sup>5</sup> और दाऊद जहाँ कहीं शाऊल ने उसे भेजा, वहाँ सफल हुआ, इसलिए शाऊल ने उसे युद्ध के पुरुषों पर अधिकारी नियुक्त किया। और यह सब लोगों की दृष्टि में और शाऊल के सेवकों की दृष्टि में भी अच्छा लगा।

<sup>6</sup> जब वे लौट रहे थे, और दाऊद पलिश्तियों को मारकर वापस आ रहा था, तब इसाएल के सब नगरों की स्तिथि राजा शाऊल से मिलने के लिए डफली, हर्ष और संगीत के साथ गाती और नाचती हुई निकली।<sup>7</sup> स्तिथि गाते हुए कहने लगीं,

“शाऊल ने अपने हजारों को मारा, और दाऊद ने अपने दस हजारों को।”

<sup>8</sup> तब शाऊल बहुत क्रोधित हुआ, क्योंकि यह बात उसे अप्रसन्न लगी, और उसने कहा, “उन्होंने दाऊद को दस हजारों का श्रेय दिया है, पर मुझे केवल हजारों का। अब उसे और क्या मिल सकता है सिवाय राज्य के?”<sup>9</sup> इसलिए शाऊल ने उस दिन से दाऊद को संदेह की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया।

<sup>10</sup> अगले दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर की ओर से एक बुरी आत्मा शाऊल पर बलपूर्वक आई, और वह घर के बीच में पागल हो गया, जबकि दाऊद अपने हाथ से बीणा बजा रहा था, जैसा कि वह करता था। और शाऊल के हाथ में एक भाला था।<sup>11</sup> तब शाऊल ने भाला फेंका, क्योंकि उसने सोचा, “मैं दाऊद को दीवार में पिन कर दूँगा।” लेकिन दाऊद उसकी उपस्थिति से दो बार बच निकला।<sup>12</sup> अब शाऊल दाऊद से डरता था, क्योंकि यहोवा उसके साथ था लेकिन शाऊल से दूर हो गया था।

<sup>13</sup> इसलिए शाऊल ने उसे अपनी उपस्थिति से हटा दिया और उसे हजारों का सेनापति नियुक्त किया; और वह लोगों के सामने बाहर जाता और आता था।<sup>14</sup> दाऊद अपने सभी मार्गों में सफल था, और यहोवा उसके साथ था।<sup>15</sup> जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत सफल है, तो वह उससे डर गया।<sup>16</sup> परन्तु समस्त इसाएल और यहूदा दाऊद को प्रेम करते थे, क्योंकि वह युद्ध के लिए बाहर जाता और उनके सामने लौटा था।

<sup>17</sup> तब शाऊल ने दाऊद से कहा, “यह मेरी बड़ी बेटी मेरेब है, मैं उसे तुम्हें पती के रूप में दूँगा। केवल मेरे लिए वीर पुरुष बनो और यहोवा की लड़ाइयाँ लड़ो।” क्योंकि शाऊल ने सोचा, “मेरे हाथ उसके विरुद्ध न हों, परन्तु पलिश्तियों के हाथ उसके विरुद्ध हों।”<sup>18</sup> परन्तु

# 1 शमूएल

दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं कौन हूँ, और मेरा जीवन या मेरे पिता का परिवार इसाएल में क्या है, कि मैं राजा का दामाद बनूँ?"<sup>19</sup> इसलिए ऐसा हुआ कि जब मेरब, शाऊल की बेटी, को दाऊद को दिया जाना था, तब उसे अंद्रीएल महोलाती को पत्नी के रूप में दिया गया।

<sup>20</sup> अब मीकल, शाऊल की बेटी, दाऊद से प्रेम करती थी। जब उन्होंने शाऊल को बताया, तो यह बात उसे प्रसन्न लगी। <sup>21</sup> शाऊल ने सोचा, "मैं उसे उसे दूँगा, ताकि वह उसके लिए फंदा बने, और पलिशियों का हाथ उसके विरुद्ध हो।"<sup>22</sup> इसलिए शाऊल ने दाऊद से कहा, "आज के दिन तुम दूसरी बार मेरे दामाद बन सकते हो।"<sup>23</sup> तब शाऊल ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, "दाऊद से गुप्त रूप से कहो, देखो, राजा तुमसे प्रसन्न है, और उसके सभी सेवक तुमसे प्रेम करते हैं। अब राजा का दामाद बन जाओ।"<sup>24</sup> इसलिए शाऊल के सेवकों ने ये शब्द दाऊद से कहे। परन्तु दाऊद ने कहा, "क्या तुम्हारी वृद्धि में राजा का दामाद बनना तुच्छ है, जब मैं एक गरीब आदमी हूँ और कम आंका गया हूँ?"<sup>25</sup> शाऊल के सेवकों ने दाऊद के कहे अनुसार उसे बताया। <sup>26</sup> तब शाऊल ने कहा, "यह दाऊद से कहो: राजा को कई दहेज नहीं चाहिए सिवाय पलिशियों के सौ खलचियों के, ताकि राजा के शत्रुओं से बदला लिया जा सके।"<sup>27</sup> परन्तु शाऊल का इरादा था कि दाऊद पलिशियों के हाथ से मारा जाए।

<sup>28</sup> जब उसके सेवकों ने दाऊद को ये शब्द बताए, तो राजा का दामाद बनना दाऊद को अच्छा लगा। निर्धारित समय समाप्त होने से पहले, <sup>29</sup> दाऊद और उसके लोग निकले, और उन्होंने पलिशियों में से दो सौ पुरुषों को मारा। तब दाऊद उनके खलचियों को लाया और पूरी संख्या राजा को प्रस्तुत की, ताकि वह राजा का दामाद बन सके। इसलिए शाऊल ने उसे अपनी बेटी मीकल को पत्नी के रूप में दिया। <sup>30</sup> जब शाऊल ने देखा और जाना कि यहोवा दाऊद के साथ है, और मीकल, शाऊल की बेटी, उससे प्रेम करती है,<sup>31</sup> शाऊल दाऊद से और भी अधिक डर गया। इसलिए शाऊल दाऊद का शत्रु बना रहा। <sup>32</sup> तब पलिशियों के सेनापति युद्ध के लिए निकले, और ऐसा हुआ कि जब भी वे निकले, दाऊद शाऊल के सभी सेवकों से अधिक सफल होता था।

**19** अब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सभी सेवकों से कहा कि दाऊद को मार डालो। परन्तु योनातान, शाऊल का पुत्र, दाऊद से बहुत प्रसन्न था। <sup>2</sup> इसलिए योनातान ने दाऊद को सूचित किया, कहा, "मेरे पिता शाऊल तुम्हें मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।

अब तुम सुबह सावधान रहो, और एक गुप्त स्थान में रहो और छिप जाओ।<sup>3</sup> मैं बाहर जाऊँगा और अपने पिता के पास उस खेत में खड़ा रहूँगा जहाँ तुम हो, और मैं तुम्हारे बारे में अपने पिता से बात करूँगा; और यदि मैं कुछ भी जानूँगा, तो मैं तुम्हें बताऊँगा।"<sup>4</sup> <sup>5</sup> तब योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की भलाई की बात की और उससे कहा, "राजा अपने सेवक दाऊद के विरुद्ध पाप न करें, क्योंकि उसने आपके विरुद्ध पाप नहीं किया है, और उसके कर्म आपके लिए बहुत लाभकारी रहे हैं।" <sup>6</sup> क्योंकि उसने अपने प्राण को अपने हाथ में लिया और पलिशियों को मारा, और यहोवा ने सारे इसाएल के लिए एक बड़ी विजय दिलाई। आपने इसे देखा और आनन्दित हुए। फिर आप निर्दोष रक्त के विरुद्ध पाप क्यों करेंगे, बिना कारण दाऊद को मार डालकर?"<sup>7</sup> शाऊल ने योनातान की बात सुनी, और शाऊल ने शपथ ली, "जैसा यहोवा जीवित है, दाऊद को मार नहीं डाला जाएगा।"<sup>8</sup> <sup>9</sup> तब योनातान ने दाऊद को बुलाया और उसे ये सारी बातें बताई। योनातान ने दाऊद को शाऊल के पास लाया, और वह पहले की तरह उसके सामने था।

<sup>10</sup> जब फिर से युद्ध हुआ, तो दाऊद बाहर गया और पलिशियों से लड़ा और उन्हें बड़ी मार से हराया, ताकि वे उसके सामने भाग गए। <sup>11</sup> अब यहोवा की ओर से एक दृष्ट आत्मा शाऊल पर आई जब वह अपने घर में भाला हाथ में लिए बैठा था, और दाऊद अपने हाथ से वीणा बजा रहा था। <sup>12</sup> शाऊल ने दाऊद को भाले से दीवार पर चिपकाने की कोशिश की, परन्तु वह शाऊल की उपस्थिति से बच निकला, ताकि उसने भाले को दीवार में मार दिया। दाऊद भाग गया और उस रात बच निकला। <sup>13</sup> तब शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत भेजे ताकि उसे सुबह मार डाला जाए। परन्तु मीकल, दाऊद की पत्नी, ने उससे कहा, "यदि तुम आज रात अपने प्राण नहीं बचाते, तो कल तुम मार डाले जाओगे।"<sup>14</sup> इसलिए मीकल ने दाऊद को खिड़की से नीचे उतारा, और वह भाग गया और उसे बिस्तर पर रखा, उसके सिर पर बकरी के बालों की चादर डाली, और उसे कपड़ों से ढक दिया। <sup>15</sup> जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ने के लिए दूत भेजे, तो उसने कहा, "वह बीमार है।"<sup>16</sup> <sup>17</sup> तब शाऊल ने दूतों को देखने के लिए भेजा, कहा, "उसे बिस्तर पर मेरे पास लाओ, ताकि मैं उसे मार सकूँ।"<sup>18</sup> जब दूत अंदर आए, तो देखा, मूर्ति बिस्तर पर पी और उसके सिर पर बकरी के बालों की चादर थी। <sup>19</sup> तब शाऊल ने मीकल से कहा, "तुमने मुझे इस तरह धोखा क्यों दिया और मेरे शत्रु को जाने दिया, ताकि वह

# 1 शमूएल

बच निकला?" और मीकल ने शाऊल से कहा, "उसने मुझसे कहा, 'मुझे जाने दो! मैं तुम्हें क्यों मारूँ?'"

<sup>18</sup> अब दाऊद भाग गया और बच निकला, और रामाह में शमूएल के पास आया, और उसे बताया कि शाऊल ने उसके साथ क्या किया है। तब वह और शमूएल नायोथ में रहे। <sup>19</sup> शाऊल को यह सूचना मिली, कहा, "देखो, दाऊद रामाह के नायोथ में है।" <sup>20</sup> तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ने के लिए दूत भेजे, परन्तु जब उन्होंने नवियों के समूह को देखा जो शमूएल के साथ भविष्यवाणी कर रहे थे, तो शाऊल के दृतों पर भी परमेश्वर की आत्मा आई, और वे भी भविष्यवाणी करने लगे। <sup>21</sup> जब यह शाऊल को बताया गया, तो उसने अन्य दूत भेजे, और वे भी भविष्यवाणी करने लगे। इसलिए शाऊल ने फिर से तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी भविष्यवाणी करने लगे। <sup>22</sup> तब वह स्वयं रामाह गया और सैकू के बड़े कुएँ पर आया। और उसने पूछा, "शमूएल और दाऊद कहाँ हैं?" किसी ने कहा, "देखो, वे रामाह के नायोथ में हैं।" <sup>23</sup> इसलिए वह रामाह के नायोथ में गया। और परमेश्वर की आत्मा उस पर भी आई, ताकि वह लगातार भविष्यवाणी करता हुआ रामाह के नायोथ में पहुँचा। <sup>24</sup> तब उसने भी अपने कपड़े उतार दिए, और वह भी शमूएल के सामने भविष्यवाणी करने लगा, और वह दिन भर और रात भर नम्र पड़ा रहा। इसलिए वे कहते हैं, "क्या शाऊल भी नवियों में है?"

**20** तब दाऊद रामा के नायोथ से भागा, और योनातन के पास आकर कहने लगा, "मैंने क्या किया है? मेरा अपराध क्या है? आपके पिता के सामने मेरा पाप क्या है, कि वह मेरी जान लेना चाहते हैं?" <sup>2</sup> परन्तु उसने उससे कहा, "ऐसा नहीं होगा! तुम नहीं मरोगे। देखो, मेरे पिता कुछ भी बड़ा या छोटा बिना मुझे बताए नहीं करते। मेरे पिता इस बात को मुझसे क्यों छिपाएंगे? ऐसा नहीं है!" <sup>3</sup> फिर भी दाऊद ने फिर से शपथ खाइ और कहा, "आपके पिता अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, और उन्होंने कहा, 'योनातन को यह नहीं पता चलना चाहिए, ताकि वह दुखी न हो।' परन्तु सचमुच, जैसे यहोवा जीवित है और जैसे आप स्वयं जीवित हैं, मेरे और मृत्यु के बीच केवल एक कदम है।" <sup>4</sup> तब योनातन ने दाऊद से कहा, "जो कुछ तुम कहोगे, मैं तुम्हारे लिए करूँगा।" <sup>5</sup> दाऊद ने योनातन से कहा, "देखो, कल नया चाँद है, और मुझे राजा के साथ भोजन करने के लिए बैठना अपेक्षित है। परन्तु मुझे जाने दो, ताकि मैं तीसरी संध्या तक मैदान में छिपा रह सकूँ।" <sup>6</sup> यदि तुम्हारे पिता मुझे बिल्कुल याद करते हैं, तो कह देना, 'दाऊद ने मुझसे बेतलहेम, अपने

नगर, जाने की अनुमति मांगी है, क्योंकि वहाँ पूरे परिवार के लिए वार्षिक बलिदान है।" <sup>7</sup> यदि वह कहें, 'यह अच्छा है,' तो तुम्हारा सेवक सुरक्षित रहेगा; परन्तु यदि वह क्रोधित हो जाएं, तो जान लेना कि उन्होंने मुझे हानि पहुँचाने का निश्चय किया है। <sup>8</sup> इसलिए अपने सेवक के साथ कृपा से व्यवहार करो, क्योंकि तुमने अपने सेवक को यहोवा की वाचा में अपने साथ लाया है। परन्तु यदि मुझमें कोई अपराध है, तो स्वयं मुझे मार डालो; क्योंकि तुम मुझे अपने पिता के पास क्यों लाओगे?" <sup>9</sup> योनातन ने कहा, "तुमसे ऐसा कभी न हो। क्योंकि यदि मैं सचमुच जानता हूँ कि मेरे पिता ने तुम्हें हानि पहुँचाने का निश्चय किया है, तो क्या मैं तुम्हें सूचित नहीं करूँगा?"

<sup>10</sup> तब दाऊद ने योनातन से कहा, "यदि तुम्हारे पिता तुम्हें कठोरता से उत्तर दें, तो मुझे कौन सूचित करेगा?" <sup>11</sup> योनातन ने दाऊद से कहा, "आओ, हम मैदान में चलें।" तो वे दोनों मैदान में चले गए। <sup>12</sup> तब योनातन ने दाऊद से कहा, "यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, साक्षी हो। जब मैं कल इस समय या तीसरे दिन अपने पिता से यह बात जान लूँगा, यदि दाऊद के साथ सब कुछ ठीक है, तो क्या मैं तुम्हें सूचित नहीं करूँगा और तुम्हें प्रकट नहीं करूँगा?" <sup>13</sup> परन्तु यदि मेरे पिता को तुम्हें हानि पहुँचाना अच्छा लगे, तो यहोवा मुझ योनातन के साथ कठोरता से और अधिक करे, यदि मैं तुम्हें सूचित न करूँ और तुम्हें भेज न दूँ, ताकि तुम सुरक्षित जा सको। और यहोवा तुम्हारे साथ हो जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा है।" <sup>14</sup> यदि मैं अभी भी जीवित हूँ, तो क्या तुम यहोवा की कृपा मुझ पर नहीं दिखाओगे, ताकि मैं न मरूँ? <sup>15</sup> और तुम अपनी वफादारी मेरे घर से सदा के लिए नहीं काटोगे, यहाँ तक कि जब यहोवा दाऊद के सभी शत्रुओं को पृथ्वी के चैहेरे से समाप्त कर देगा।" <sup>16</sup> तब योनातन ने दाऊद के घर के साथ एक वाचा बाँधी, कहा, "यहोवा इसे दाऊद के शत्रुओं के हाथों से मारेंगे।" <sup>17</sup> योनातन ने दाऊद से फिर से शपथ ली क्योंकि वह उससे प्रेम करता था, क्योंकि उसने उसे अपने जीवन के समान प्रेम किया।

<sup>18</sup> तब योनातन ने उससे कहा, "कल नया चाँद है, और तुम्हारी कमी महसूस की जाएगी, क्योंकि तुम्हारी सीट खाली होगी।" <sup>19</sup> जब तुम तीन दिन तक रुके रहोगे, तो तुम जल्दी से नीचे जाओ और उस स्थान पर आओ जहाँ तुमने उस महत्वपूर्ण दिन छिपाया था, और तुम पथर एजेल के पास रहोगे। <sup>20</sup> और मैं लक्ष्य की ओर तीर चलाऊंगा। <sup>21</sup> तब देखो, मैं लड़के को भेजूँगा और कहुँगा, 'जाओ, तीर ढूँढो।' यदि मैं विशेष रूप से लड़के से कहूँ, 'देखो, तीर तुम्हारे इस तरफ हैं; उन्हें ले आओ,'

# 1 शमूएल

तो बाहर आओ, क्योंकि तुम्हरे लिए सुरक्षा है और कोई हानि नहीं है, जैसा यहोवा जीवित है।<sup>22</sup> परन्तु यदि मैं युवक से कहूँ, देखो, तीर तुम्हारे परे हैं, तो जाओ, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें भेजा है।<sup>23</sup> जहाँ तक उस बात का संबंध है जो तुम और मैंने कही है, देखो, यहोवा तुम्हरे और मेरे बीच सदा के लिए है।<sup>24</sup>

<sup>24</sup> तो दाऊद मैदान में छिप गया; और जब नया चाँद आया, तो राजा भोजन करने के लिए बैठ गया।<sup>25</sup> राजा अपनी सीट पर बैठा जैसा कि सामान्य रूप से, दीवार के पास की सीट पर; तब योनातन उठ गया और अब्रेर शाऊल के बगल में बैठ गया, परन्तु दाऊद की जगह खाली थी।<sup>26</sup> फिर भी शाऊल ने उस दिन कुछ नहीं कहा, क्योंकि उसने सोचा, “यह एक दुर्धना हो सकती है; वह धार्मिक रूप से अशुद्ध नहीं है, निश्चित रूप से वह अशुद्ध नहीं है।”<sup>27</sup> और यह अगले दिन हुआ, नया चाँद का दूसरा दिन, कि दाऊद की जगह खाली थी। तो शाऊल ने अपने पुत्र योनातन से कहा, “यिशै का पुत्र भोजन के लिए क्यों नहीं आया, न कल और न आज?”<sup>28</sup> योनातन ने शाऊल को उत्तर दिया, “दाऊद ने मुझसे बेतवेहम जाने की अनुमति मांगी।<sup>29</sup> उसने कहा, ‘कृपया मुझे जाने दो, क्योंकि हमारे परिवार का नगर में बलिदान है, और मेरे भाई ने मुझे उपस्थित होने का आदेश दिया है। अब यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो कृपया मुझे जाने दें ताकि मैं अपने भाइयों को देख सकूँ।’ इस कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया।”

<sup>30</sup> तब शाऊल का क्रोध योनातन पर भड़क उठा और उसने उससे कहा, “तू एक विकृत, विद्वाही स्त्री का पुत्र है। क्या मैं नहीं जानता कि तू यिशै के पुत्र को अपनी लज्जा और अपनी माता की नग्नता की लज्जा के लिए चुन रहा है?<sup>31</sup> क्योंकि जब तक यिशै का पुत्र पृथ्वी पर जीवित है, तू और तेरा राज्य स्थापित नहीं होगा। अब, किसी को भेज और उसे मेरे पास लाओ, क्योंकि वह मरने के योग्य है!”<sup>32</sup> परन्तु योनातन ने अपने पिता शाऊल को उत्तर दिया और उससे कहा, “उसे क्यों मारा जाना चाहिए? उसने क्या किया है?”<sup>33</sup> तब शाऊल ने उसे मारने के लिए अपनी भाला फेंकी; इसलिए योनातन को पता चला कि उसके पिता ने दाऊद को मारने का निश्चय किया है।<sup>34</sup> तो योनातन क्रोध में जलता हुआ मेज से उठ गया, और नए चाँद के दूसरे दिन भोजन नहीं किया, क्योंकि वह दाऊद के कारण दुखी था क्योंकि उसके पिता ने उसे अपमानित किया था।

<sup>35</sup> अब यह सुबह हुआ कि योनातन दाऊद के साथ मिलने के लिए मैदान में गया, और एक छोटा लड़का उसके साथ था।<sup>36</sup> और उसने अपने लड़के से कहा, “दौड़ो, अब तीर ढूँढो जो मैं चलाने जा रहा हूँ।” जैसे ही लड़का दौड़ा, उसने उसके परे एक तीर चलाया।<sup>37</sup> जब लड़का उस ख्याल पर पहुँचा जहाँ योनातन ने तीर चलाया था, योनातन ने लड़के के पीछे पुकारा और कहा, “क्या तीर तुम्हारे परे नहीं है?”<sup>38</sup> और योनातन ने लड़के के पीछे पुकारा, “जल्दी करो, जल्दी करो, रुको मत!” और योनातन के लड़के ने तीर उठाया और अपने स्वामी के पास आया।<sup>39</sup> परन्तु लड़के को कुछ भी पता नहीं था; केवल योनातन और दाऊद को इस बात का पता था।<sup>40</sup> तब योनातन ने अपने हृथियार अपने लड़के को दे दिए और उससे कहा, “जाओ, उन्हें नगर में ले जाओ।”<sup>41</sup> जब लड़का चला गया, दाऊद दक्षिण दिशा से उठ खड़ा हुआ और भूमि पर गिरकर तीन बार झुका। और उन्होंने एक-दूसरे को चूमा और एक साथ रोए, परन्तु दाऊद अधिक रोया।<sup>42</sup> योनातन ने दाऊद से कहा, “सुरक्षित जाओ, क्योंकि हमने यहोवा के नाम में शपथ खाई है, कहते हुए, ‘यहोवा मेरे और तुम्हारे बीच, और मेरे वंशजों और तुम्हारे वंशजों के बीच सदा के लिए रहेगा।’” तो दाऊद निकल पड़ा और योनातन नगर में चला गया।

**21** तब दाऊद नोब में आया, जहाँ अहीमेलेक याजक था। और अहीमेलेक डरते हुए दाऊद से मिलने आया और उससे कहा, “तू अकेला क्यों है, और तेरे साथ कोई क्यों नहीं है?”<sup>2</sup> दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, “राजा ने मुझे एक काम सौंपा है और मुझसे कहा है, जिस काम के लिए मैं तुझे भेज रहा हूँ, उसके बारे में किसी को कुछ न बताना।” और मैंने जवानों को एक निश्चित ख्याल पर भेज दिया है।<sup>3</sup> अब, तुम्हारे पास क्या है? मुझे पाँच रोटियाँ दो, या जो कुछ भी मिल सके।”<sup>4</sup> याजक ने दाऊद को उत्तर दिया और कहा, “साधारण रोटी यहाँ नहीं है, परन्तु पवित्र रोटी है—यदि लोगों ने अपने आप को स्त्रियों से दूर रखा हो।”<sup>5</sup> दाऊद ने याजक को उत्तर दिया और उससे कहा, “वास्तव में, जब मैं बाहर जाता हूँ, तो स्त्रियाँ हमसे दूर रहती हैं। युवकों के बर्तन पवित्र होते हैं, यद्यपि यह एक साधारण यात्रा थी; तो आज उनके बर्तन कितने अधिक पवित्र होंगे?”<sup>6</sup> इसलिए याजक ने उसे पवित्र रोटी दी, क्योंकि वहाँ कोई रोटी नहीं थी सिवाय परमेश्वर के सामने की रोटी के, जो प्रभु के सामने से हटाई गई थी ताकि जब उसे हटाया जाए, तो उसकी जगह गरम रोटी रखी जा सके।

# 1 शमूएल

<sup>7</sup> अब उस दिन शाऊल के एक सेवक वहाँ था, जो प्रभु के सामने रोका गया था। उसका नाम दोएग एदोमी था, जो शाऊल के चरवाहों का प्रधान था। <sup>8</sup> दाऊद ने अहीमेलेक से कहा, “क्या यहाँ कोई भाला या तलवार नहीं है? क्योंकि मैं अपनी तलवार या अपने हथियार नहीं लाया, क्योंकि राजा का काम अत्यावश्यक था।” <sup>9</sup> तब याजक ने कहा, “गोलियत पलिश्टी की तलवार, जिसे तूने एला की घाटी में मारा था, देख, वह एपोद के पीछे कपड़े में लिपटी हुई है। यदि तू उसे लेना चाहता है, तो ले ले, क्योंकि यहाँ उसके सिवा और कोई नहीं है।” और दाऊद ने कहा, “इसके जैसी कोई सुन्दरी नहीं है, इसे मुझे दे दो।”

<sup>10</sup> तब दाऊद उठा और उस दिन शाऊल से भाग गया, और गत के राजा आकीश के पास गया। <sup>11</sup> परन्तु आकीश के सेवकों ने उससे कहा, “क्या यह वही दाऊद नहीं है जो देश का राजा है? क्या उन्होंने नाचते समय उसके बारे में यह नहीं गाया था,

‘शाऊल ने हजारों को मारा, और दाऊद ने दसियों हजारों को?’

<sup>12</sup> दाऊद ने इन बातों को मन में लिया और गत के राजा आकीश से बहुत डर गया। <sup>13</sup> इसलिए उसने उनके सामने अपने व्यवहार को बदल लिया, और उनके हाथों में पागल होने का नाटक किया, और फाटक के दरवाजों पर लिखने लगा, और अपनी लार को अपनी दाढ़ी पर बहने दिया। <sup>14</sup> तब आकीश ने अपने सेवकों से कहा, “देखो, तुम देख रहे हो कि यह आदमी पागल है। तुम इसे मेरे पास क्यों लाए हो? <sup>15</sup> क्या मेरे पास पागलों की कमी है, जो तुमने इसको मेरे सामने पागल की तरह व्यवहार करने के लिए लाया है? क्या यह आदमी मेरे घर में आएगा?”

**22** तब दाऊद वहाँ से चला गया और अदुल्लाम की गुफा में भाग गया। और जब उसके भाइयों और उसके पिता के पूरे परिवार ने इसके बारे में सुना, तो वे वहाँ उसके पास गए। <sup>2</sup> जो कोई संकट में था, जो कोई ऋणी था, और जो कोई असंतुष्ट था, वे सब उसके पास इकट्ठे हो गए; और वह उनके नेता बन गया। अब उसके साथ लगभग चार सौ आदमी थे। <sup>3</sup> और दाऊद वहाँ से मोआब के मिस्पा गया। उसने मोआब के राजा से कहा, “कृपया मेरे पिता और मेरी माता को आपके पास रहने दें जब तक कि मैं यह न जान लूँ कि परमेश्वर मेरे लिए क्या करेगा।” <sup>4</sup> तब उसने उन्हें मोआब के राजा के पास छोड़ दिया; और वे उसके साथ तब तक रहे जब

तक दाऊद गढ़ में था। <sup>5</sup> परंतु भविष्यद्वक्ता गाद ने दाऊद से कहा, “गढ़ में मत रहो; निकलो और यहूदा के देश में जाओ।” इसलिए दाऊद निकल गया और हेरथ के जंगल में गया।

<sup>6</sup> तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके साथ के लोग खो लिए गए हैं। अब शाऊल गिरा में, पहाड़ी पर तमरिस्क के पेड़ के नीचे बैठा था, उसके हाथ में भाला था, और उसके सभी सेवक उसके चारों ओर खड़े थे। <sup>7</sup> शाऊल ने अपने चारों ओर खड़े सेवकों से कहा, “अब सुनो, हे बिन्यामीनियों! क्या यिशै का पुत्र तुम सबको खेत और दाख की बारियाँ देगा? क्या वह तुम सबको हजारों और सैकड़ों के सेनापति बनाएगा? <sup>8</sup> क्योंकि तुम सबने मेरे खिलाफ षड्यंत्र रचा है, ताकि कोई मुझे सूचित न करे जब मेरा पुत्र यिशै के पुत्र के साथ वाचा करता है, और तुम में से कोई भी मेरे लिए चिंतित नहीं है या मुझे सूचित नहीं करता कि मेरे पुत्र ने मेरे खिलाफ मेरे सेवक को उकसाया है, जैसा कि आज है!” <sup>9</sup> तब एदोमी दोएगा, जो शाऊल के सेवकों के पास खड़ा था, ने कहा, “मैंने यिशै के पुत्र को नोब आते देखा, अहिमेलेक के पुत्र अहितूब के पास। <sup>10</sup> और उसने उसके लिए यहोवा से पूछा, उसे भोजन दिया, और उसे पलिश्टी गोलियत की तलवार दी।”

<sup>11</sup> तब राजा ने किसी को अहिमेलेक याजक, अहितूब के पुत्र, और उसके पिता के पूरे परिवार को बुलाने के लिए भेजा, जो नोब में याजक थे; और वे सब राजा के पास आए। <sup>12</sup> शाऊल ने कहा, “अब सुनो, अहितूब के पुत्र।” और उसने कहा, “यहाँ मैं हूँ, मेरे प्रभु।” <sup>13</sup> तब शाऊल ने उससे कहा, “तुमने और यिशै के पुत्र ने मेरे खिलाफ षड्यंत्र क्यों रचा है, उसे रोटी और तलवार देकर, और उसके लिए परमेश्वर से पूछकर, ताकि वह मेरे खिलाफ उठ खड़ा हो, धात लगाकर, जैसा कि आज है?” <sup>14</sup> अहिमेलेक ने राजा को उत्तर दिया और कहा, “और आपके सभी सेवकों में से कौन दाऊद जैसा विश्वासयोग्य है, राजा का दामाद, आपके अंगरक्षक का सेनापति, और आपके घर में समानित? <sup>15</sup> क्या मैंने आज ही उसके लिए परमेश्वर से पूछना शुरू किया? ऐसा मुझसे न हो! राजा अपने सेवक पर या मेरे पिता के किसी भी घराने पर कुछ न थोपे, क्योंकि आपके सेवक को इस पूरे मामले के बारे में कुछ भी नहीं पता।” <sup>16</sup> परंतु राजा ने कहा, “तुम अवश्य मरोगे, अहिमेलेक, तुम और तुम्हारे पिता का पूरा घराना!” <sup>17</sup> और राजा ने अपने सेवकों से कहा, “मुझे और यहोवा के याजकों को मार डालो, क्योंकि उनका हाथ भी दाऊद के साथ है, और क्योंकि वे जानते थे कि वह भाग रहा था और मुझे सूचित नहीं

# 1 शमूएल

किया।<sup>6</sup> परंतु राजा के सेवक यहोवा के याजकों पर हाथ उठाने के लिए तैयार नहीं थे।<sup>7</sup> तब राजा ने दोएग से कहा, “तुम मुझो और याजकों पर हमला करो।” इसलिए एदोमी दोएग मुड़ा और याजकों पर हमला किया, और उस दिन उसने पचासी पुरुषों को मार डाला जिह्वोंने लिनेन एपोद पहना था।<sup>8</sup> उसने याजकों के नगर नोब को भी तलवार की धार से मारा, पुरुषों और महिलाओं, बच्चों और शिशुओं को; बैल, गधे, और भेड़ को भी तलवार की धार से मारा।

<sup>9</sup> परंतु अहितूब के पुत्र अहिमेलक का एक पुत्र, जिसका नाम अवियाथार था, बच निकला और दाऊद के पास भाग गया।<sup>10</sup> अवियाथार ने दाऊद को सूचित किया कि शाऊल ने यहोवा के याजकों को मार डाला है।<sup>11</sup> तब दाऊद ने अवियाथार से कहा, “मैं उस दिन जानता था, जब एदोमी दोएग वहाँ था, कि वह निश्चित रूप से शाऊल को बताएगा। मैंनै स्वयं आपके पिता के घराने के प्रत्येक व्यक्ति के खिलाफ हो गया हूँ।<sup>12</sup> मेरे साथ रहो; डरो मत, क्योंकि जो मेरी जान लेना चाहता है वह तुम्हारी जान भी लेना चाहता है, परंतु तुम मेरे साथ सुरक्षित हो।”

**23** फिर उहोने दाऊद से कहा, “देखो, पलिश्टी कैइलाह के विरुद्ध लड़ रहे हैं और खलिहानों को लूट रहे हैं।”<sup>13</sup> तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं जाकर इन पलिश्टियों पर आक्रमण करूँ?” और यहोवा ने दाऊद से कहा, “जाओ और पलिश्टियों पर आक्रमण करो और कैइलाह को बचाओ।”<sup>14</sup> परंतु दाऊद के आदमियों ने उससे कहा, “देखो, हम यहूदा में वहाँ डरते हैं। तो फिर कितना अधिक यहि दम कैइलाह में पलिश्टियों की पंक्तियों के विरुद्ध जाएँ?”<sup>15</sup> तब दाऊद ने एक बार फिर यहोवा से पूछा। और यहोवा ने उसे उत्तर दिया और कहा, “उठो, कैइलाह को जाओ, क्योंकि मैं पलिश्टियों को तुम्हारे हाथ में कर दूँगा।”<sup>16</sup> तब दाऊद और उसके आदमी कैइलाह गए और पलिश्टियों से लड़े। उसने उनके पशुओं को हाँक लिया और उहों बड़ी मार दी। इस प्रकार दाऊद ने कैइलाह के निवासियों को बचाया।

<sup>6</sup> अब जब अवियातर, अहिमेलक का पुत्र, कैइलाह में दाऊद के पास भाग आया, तो वह अपने हाथ में एक एपोद लेकर आया।<sup>7</sup> जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कैइलाह में आ गया है, तो शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है, क्योंकि उसने अपने आप को एक दोहरे फाटक और बारों वाले नगर में बंद कर लिया है।”<sup>8</sup> तब शाऊल ने सब लोगों को युद्ध

के लिए बुलाया, कैइलाह को जाकर दाऊद और उसके आदमियों को घेरने के लिए।<sup>9</sup> अब दाऊद जानता था कि शाऊल उसके विरुद्ध बुराई की योजना बना रहा है; इसलिए उसने अवियातर याजक से कहा, “यहाँ एपोद ले आओ।”<sup>10</sup> तब दाऊद ने कहा, “इसाएल के परमेश्वर यहोवा, आपके दास ने निश्चित रूप से सुना है कि शाऊल कैइलाह आ रहा है, मेरे कारण नगर को नष्ट करने के लिए।”<sup>11</sup> क्या कैइलाह के लोग मुझे उसके हाथ में सौंप देंगे? क्या शाऊल नीचे आएगा जैसा आपके दास ने सुना है? इसाएल के परमेश्वर यहोवा, मैं प्राणना करता हूँ, अपने दास को बताए।” और यहोवा ने कहा, “वह नीचे आएगा।”<sup>12</sup> तब दाऊद ने कहा, “क्या कैइलाह के लोग मुझे और मेरे आदमियों को शाऊल के हाथ में सौंप देंगे?” और यहोवा ने कहा, “वे तुम्हें सौंप देंगे।”<sup>13</sup> तो दाऊद और उसके आदमी, लगभग छह सौ, उठे और कैइलाह से चले गए, और वे जहाँ भी जा सकते थे गए। जब शाऊल को बताया गया कि दाऊद कैइलाह से भाग गया है, तो उसने पीछा करना छोड़ दिया।

<sup>14</sup> दाऊद जंगल के गढ़ों में रहा और ज़िफ़ के जंगल के पहाड़ी देश में रहा। और शाऊल ने हर दिन उसे खोजा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में नहीं दिया।<sup>15</sup> अब दाऊद को पता चला कि शाऊल उसके प्राण को खोजने के लिए निकला है, जबकि दाऊद ज़िफ़ के जंगल में होरेश में था।<sup>16</sup> और योनातन, शाऊल का पुत्र, उठकर होरेश में दाऊद के पास गया, और उसे परमेश्वर में प्रोत्साहित किया।<sup>17</sup> उसने उससे कहा, “मत डरो, क्योंकि मेरे पिता शाऊल का हाथ तुम्हें नहीं पाएगा, और तुम इसाएल के राजा बनोगे और मैं तुम्हारे बाद दूसरा रहूँगा; और मेरे पिता शाऊल को भी यह पता है।”<sup>18</sup> तो उन दोनों ने यहोवा के समने एक वाचा बंधी। और दाऊद होरेश में रहा, जबकि योनातन अपने घर चला गया।

<sup>19</sup> तब ज़िफ़ी गिबा में शाऊल के पास आए, कहने लगे, “क्या दाऊद हमारे साथ होरेश के गढ़ों में, हकिला की पहाड़ी पर, जो येशिमोन के दक्षिण में है, नहीं छिपा है?

<sup>20</sup> अब, हे राजा, नीचे आओ, जैसा कि आपकी आस्मा की इच्छा है; और हमारा भाग उसे राजा के हाथ में सौंपना होगा।”<sup>21</sup> शाऊल ने कहा, “तुम यहोवा के आशीर्वादित हो, क्योंकि तुमने मुझ पर दया की है।”<sup>22</sup> अब जाओ, बहुत सावधान रहो, और पता करो कि वह कहाँ है और किसने उसे वहाँ देखा है, क्योंकि मुझे बताया गया है कि वह बहुत चालाक है।<sup>23</sup> तो देखो और उसके छिपने के सभी स्थानों का पता लगाओ, और मैं तुम्हारे निश्चितता के साथ मेरे पास लौट आओ, और मैं तुम्हारे

# 1 शमूएल

साथ जाऊँगा। और यदि वह देश में है, तो मैं उसे यहूदा के हजारों में से खोज निकालूँगा।"

<sup>24</sup> तब वे उठकर शाऊल से पहले ज़िफ गए। अब दाऊद और उसके आदमी माओन के जंगल में थे, ये भीमोन के दक्षिण में अराबा में। <sup>25</sup> जब शाऊल और उसके आदमी उसे खोजने गए, तो उन्होंने दाऊद को बताया, और वह चट्टान के पास गया और माओन के जंगल में रहा। जब शाऊल ने वह सुना, तो उसने माओन के जंगल में दाऊद का पीछा किया। <sup>26</sup> और शाऊल पहाड़ के एक तरफ गया, और दाऊद और उसके आदमी पहाड़ के दूसरी तरफ। और दाऊद शाऊल से बचने के लिए जल्दी कर रहा था, क्योंकि शाऊल और उसके आदमी दाऊद और उसके आदमियों को पकड़ने के लिए उन्हें धेर रहे थे। <sup>27</sup> परन्तु शाऊल के पास एक दूत आया, कहने लगा, "जल्दी आओ, क्योंकि पलिशियों ने देश पर आक्रमण कर दिया है!" <sup>28</sup> तो शाऊल ने दाऊद का पीछा करना छोड़ दिया और पलिशियों का सामना करने के लिए चला गया; इसलिए उन्होंने उस स्थान को पलायन की चट्टान कहा। <sup>29</sup> और दाऊद वहाँ से उठकर एंगेडी के गढ़ों में रहा।

**24** जब शाऊल पलिशियों का पीछा करके लौटा, तो उसे बताया गया, "देखो, दाऊद एंगदी के जंगल में है।" <sup>2</sup> तब शाऊल ने सारे इसाएल में से तीन हजार चुने हुए पुरुष लिए और दाऊद और उसके आदमियों की खोज में जंगली बकरियों की चट्टानों के सामने गया। <sup>3</sup> वह रास्ते में भेड़ों के बाढ़ों के पास आया, जहाँ एक गुफा थी; और शाऊल अंदर गया ताकि वह अपने आप को राहत दे सके। अब दाऊद और उसके आदमी गुफा के अंदरूनी हिस्सों में बैठे थे। <sup>4</sup> दाऊद के आदमियों ने उससे कहा, "देखो, यह वही दिन है जिसके बारे में यहोवा ने तुमसे कहा था, देखो, मैं तुम्हारे शरु को तुम्हारे हाथ में देने वाला हूँ, और तुम उसके साथ वैसा ही करोगे जैसा तुम्हें अच्छा लगा।" तब दाऊद उठकर चुपके से शाऊल के वस्त का किनारा काट लिया। <sup>5</sup> लेकिन इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद का अंतःकरण उसे परेशान करने लगा क्योंकि उसने शाऊल के वस्त का किनारा काट लिया था। <sup>6</sup> इसलिए उसने अपने आदमियों से कहा, "यहोवा के कारण मुझसे यह बात दूर रहे कि मैं अपने प्रभु, यहोवा के अधिकारित के साथ ऐसा करूँ, उसके विरुद्ध हाथ बढ़ाऊँ, क्योंकि वह यहोवा का अधिकारित है।" <sup>7</sup> और दाऊद ने अपने आदमियों को इन शब्दों से फटकारा और उन्हें शाऊल के विरुद्ध उठने नहीं दिया। और शाऊल उठकर गुफा से बाहर चला गया और अपने मार्ग पर चला गया।

<sup>8</sup> इसके बाद दाऊद उठा और गुफा से बाहर गया, और शाऊल के पीछे पुकारकर कहा, "मेरे प्रभु राजा!" जब शाऊल ने पीछे देखा, तो दाऊद ने अपना मुँह जमीन की ओर झुकाया और दंडवत किया। <sup>9</sup> दाऊद ने शाऊल से कहा, "तुम उन लोगों की बातों को क्यों सुनते हो जो कहते हैं, देखो, दाऊद तुम्हें हानि पहुँचाने की कोशिश कर रहा है?" <sup>10</sup> देखो, आज तुहारी आँखों ने देखा कि यहोवा ने आज तुम्हें गुफा में मेरे हाथ में दे दिया, और कुछ ने कहा कि तुम्हें मार डालूँ लेकिन मैंने तुम्हें बछा दिया। और मैंने कहा, मैं अपने प्रभु के विरुद्ध हाथ नहीं बढ़ाऊँगा, क्योंकि वह यहोवा का अधिकारित है।" <sup>11</sup> इसलिए, मेरे पिता देखो! वास्तव में, अपने वस्त का किनारा मेरे हाथ में देखो! क्योंकि मैंने तुम्हारे वस्त का किनारा काटा लेकिन तुम्हें नहीं मारा, जानो और समझो कि मेरे हाथों में कोई बुराई या विद्रोह नहीं है, और मैंने तुम्हारे विरुद्ध पाप नहीं किया है, यद्यपि तुम मेरी जान लेने के लिए तप्तर हो। <sup>12</sup> यहोवा तुम्हारे और मेरे बीच न्याय करे, और यहोवा तुम्हारे विरुद्ध मुझसे बदला ले; लेकिन मेरा हाथ तुम्हारे विरुद्ध नहीं उठेगा। <sup>13</sup> जैसा कि प्राचीनों की कहावत कहती है,

'दुष्टों से दुष्टता निकलती है; लेकिन मेरा हाथ तुम्हारे विरुद्ध नहीं उठेगा।'

<sup>14</sup> इसाएल का राजा किसके पीछे आया है? तुम किसका पीछा कर रहे हो? एक मरा हुआ कुत्ता, एक अकेला पिस्तू। <sup>15</sup> इसलिए यहोवा न्यायी हो और तुम्हारे और मेरे बीच निर्णय करें; और वह देखें और मेरे कारण की पैरवी करें और मुझे तुम्हारे हाथ से बचाए।'

<sup>16</sup> अब जब दाऊद ने ये शब्द शाऊल से कहे, तो शाऊल ने कहा, "क्या यह तुम्हारी आवाज है, मेरे पुत्र दाऊद?" तब शाऊल ने अपनी आवाज उठाई और रोया। <sup>17</sup> और उसने दाऊद से कहा, "तुम मुझसे अधिक धर्मी हो; क्योंकि तुमने मेरे साथ अच्छा किया है, जबकि मैंने तुम्हारे साथ बुरा किया है।" <sup>18</sup> तुमने आज यह घोषित किया है कि तुमने मेरे साथ अच्छा किया है, कि यहोवा ने मुझे तुम्हारे हाथ में दे दिया और फिर भी तुमने मुझे नहीं मारा। <sup>19</sup> क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपने शत्रु को पाता है, तो क्या वह उसे सुरक्षित जाने देगा? यहोवा तुम्हें इस दिन के लिए अच्छे से प्रतिफल दे जो तुमने मेरे लिए किया है। <sup>20</sup> अब देखो, मुझे पता है कि तुम निश्चित रूप से राजा बनोगे, और इसाएल का राज्य तुम्हारे हाथ में स्थापित होगा। <sup>21</sup> तो अब यहोवा की शपथ खाओ कि तुम मेरे बाद मेरे वंशजों को नहीं काटोगे, और तुम मेरे पिता के घर से मेरा नाम नहीं मिटाओगे।" <sup>22</sup> और दाऊद

# 1 शमूएल

ने शाऊल से शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया, लेकिन दाऊद और उसके आदमी गढ़ में चले गए।

**25** तब शमूएल की मृत्यु हो गई, और समस्त इसलिए इकट्ठा होकर उसके लिए शोक मनाने लगे, और उसे रामाह में उसके घर में दफनाया। और दाऊद उठकर पारान के जंगल में चला गया।

<sup>2</sup> अब मौन में एक व्यक्ति था जिसका व्यवसाय कर्मेल में था; और वह व्यक्ति बहुत धनी था, और उसके पास तीन हजार भेड़े और एक हजार बकरियाँ थीं। और ऐसा हुआ कि जब वह कर्मेल में अपनी भेड़ों की ऊन करत रहा था—<sup>3</sup> अब उस व्यक्ति का नाम नाबाल था, और उसकी पती का नाम अबीगैल था। वह स्त्री बुद्धिमान और सुंदर थी, परंतु वह व्यक्ति कठोर और अपने व्यवहार में दुष्ट था, और वह कालेब के वंश का था। <sup>4</sup> तब दाऊद ने जंगल में सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों की ऊन करत रहा है। <sup>5</sup> इसलिए दाऊद ने दस जवानों को भेजा; और दाऊद ने उन जवानों से कहा, "कर्मेल पर जाओ, नाबाल के पास जाओ, और मेरे नाम से उसे नमस्कार करो।" <sup>6</sup> और यह कहो: 'तुम्हें शांति मिले, और तुम्हारे घर को शांति मिले, और जो कुछ तुम्हारा है उसे शांति मिले।' <sup>7</sup> अब मैंने सुन है कि तुम्हारे पास ऊन करतरें वाले हैं। अब तुम्हारे चरवाहे हमारे साथ थे, और हमने उन्हें अपमानित नहीं किया, और जब तक वे कर्मेल में थे, तब तक उन्हें कुछ भी नहीं खोया। <sup>8</sup> अपने जवानों से पूछो और वे तुम्हें बताएंगे। इसलिए, मेरे जवानों को तुम्हारी दृष्टि में कृपा मिले, क्योंकि हम एक उत्सव के दिन आए हैं। कृपया जो कुछ तुम्हारे पास है उसे अपने सेवकों और अपने पुत्र दाऊद को दो।" <sup>9</sup> जब दाऊद के जवान आए, तो उन्होंने नाबाल से दाऊद के नाम से ये सभी बातें कहीं; फिर वे रुके। <sup>10</sup> परंतु नाबाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर दिया और कहा, "दाऊद कौन है? और यिशै का पुत्र कौन है? आजकल बहुत से सेवक हैं जो अपने-अपने स्वामी से भाग रहे हैं।" <sup>11</sup> क्या मैं अपनी रोटी और अपना पानी और अपना मांस, जो मैंने अपने ऊन करतरें वालों के लिए काटा है, उन लोगों को दे दूँ जिनकी उत्पत्ति मैं नहीं जानता?" <sup>12</sup> इसलिए दाऊद के जवान लौटकर वापस चले गए; और वे आए और उसे ये सभी बातें बताईं। <sup>13</sup> दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "तुम में से प्रत्येक अपनी तलवार बांध लो!" इसलिए प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी तलवार बांध ली, और दाऊद ने भी अपनी तलवार बांध ली। और लगभग चार सौ लोग दाऊद के पीछे चले गए, जबकि दो सौ सामान के पास रहे।

<sup>14</sup> परंतु नाबाल की पत्नी अबीगैल से एक जवान ने कहा, "देखो, दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी के पास दूत भेजे थे, और उसने उन पर क्रोधित होकर चिल्लाया।" <sup>15</sup> फिर भी लोग हमारे साथ बहुत अच्छे थे, और हमें अपमानित नहीं किया गया, न ही हमने कुछ खोया जब तक हम उनके साथ थे, जब हम खेतों में थे। <sup>16</sup> वे हमारे लिए रात और दिन दोनों समय एक दीवार थे, जब तक हम उनके साथ भेड़े चराते थे। <sup>17</sup> अब, जान लो और विचार करो कि तुम्हें क्या करना चाहिए, क्योंकि हमारे स्वामी और उसके समस्त घराने के विरुद्ध हानि निश्चित है, और वह ऐसा निकम्मा व्यक्ति है कि कोई उससे बात नहीं कर सकता।" <sup>18</sup> तब अबीगैल ने जल्दी की और दो सौ रोटियाँ, दो मट्टके दाखरस, पांच तैयार भेड़े, पांच सियाह भुजा हुआ अनाज, एक सौ गुच्छे किशमिश, और दो सौ अंजीर की टिकियाँ लीं, और उन्हें गधों पर लाद दिया। <sup>19</sup> उसने अपने जवानों से कहा, "मेरे आगे चलो; देखो, मैं तुम्हारे पीछे आ रही हूँ।" परंतु उसने अपने पति नाबाल को नहीं बताया। <sup>20</sup> और ऐसा हुआ कि जब वह अपने गधे पर सवार होकर पहाड़ के छिपे हुए भाग से निचे आ रही थी, तब देखो, दाऊद और उसके लोग उसकी ओर आ रहे थे; इसलिए वह उनसे मिली। <sup>21</sup> अब दाऊद ने कहा था, "यह निश्चित रूप से व्यर्थ था कि मैंने इस व्यक्ति के सब कुछ को जंगल में सुक्षित रखा, ताकि उसका कुछ भी न खोए; और उसने मुझे भलाई के बदले बुराई दी है।" <sup>22</sup> दाऊद के शत्रुओं को ऐसा ही करे परमेश्वर, और इससे भी अधिक, यदि सुख ह तक मैं उसके किसी भी पुरुष को जीवित छोड़ दूँ।"

<sup>23</sup> जब अबीगैल ने दाऊद को देखा, तो वह जल्दी से अपने गधे से उतरी, और दाऊद के सामने गिरकर भूमि पर झुक गई। <sup>24</sup> वह उसके पैरों पर गिरी और कहा, "केवल मुझ पर, मेरे स्वामी, दोष है।" और कृपया अपने दास की बात सुनें, और अपने दास के शब्दों को सुनें। <sup>25</sup> कृपया मेरे स्वामी इस निकम्मे व्यक्ति, नाबाल, पर ध्यान न दें, क्योंकि जैसा उसका नाम है, वैसा ही वह है: नाबाल उसका नाम है, और मूर्खता उसके साथ है। परंतु मैं, आपकी दास, ने आपके भेजे हुए जवानों को नहीं देखा। <sup>26</sup> अब, मेरे स्वामी, जैसे भगवान जीवित हैं और जैसे आपकी आत्मा जीवित है, चूंकि भगवान ने आपको रक्तपात से रोका है, और अपने हाथ से बदला लेने से रोका है, अब, आपके शत्रु और जो मेरे स्वामी के विरुद्ध बुराई चाहते हैं, वे नाबाल के समान हैं। <sup>27</sup> और अब, यह उपहार जो आपकी दास ने मेरे स्वामी के लिए लाया है, उन जवानों को दिया जाए जो मेरे स्वामी के साथ हैं। <sup>28</sup> कृपया अपनी दास के अपराध को क्षमा करें, क्योंकि भगवान निश्चित रूप से मेरे स्वामी के लिए एक स्थायी

# 1 शमूएल

घर बनाएंगे, क्योंकि मेरे स्वामी भगवान की लड़ाई लड़ रहे हैं, और आपके सभी दिनों में आप में बुराई नहीं पाई जाएगी।<sup>29</sup> और जब कोई आपको पीछा करने और आपके जीवन की खोज करने के लिए उठेगा, तो मेरे स्वामी का जीवन भगवान आपके परमेश्वर के साथ जीवितों के बंडल में बंधा रहेगा; परंतु आपके शत्रुओं के जीवन को वह गुलेल से बाहर फेंक देगा।<sup>30</sup> और जब भगवान मेरे स्वामी के लिए आपके बारे में कही गई सभी अच्छी बातें पूरी करेंगे, और आपको इसाएल का शासक नियुक्त करेंगे,<sup>31</sup> तो यह आपके लिए कोई बाधा नहीं बनेगा, या मेरे स्वामी के लिए कोई परेशान दिल नहीं होगा, बिना कारण रक्तपात करने और मेरे स्वामी के द्वारा बदला लेने के कारण। जब भगवान मेरे स्वामी के साथ अच्छा करेंगे, तब अपनी दास को याद रखना।"

<sup>32</sup> तब दाऊद ने अबीगैल से कहा, "धन्य है भगवान, इसाएल के परमेश्वर, जिन्होंने आपको आज मुझसे मिलने के लिए भेजा,<sup>33</sup> और धन्य है आपकी समझ, और धन्य हैं आप, जिन्होंने मुझे आज रक्तपात से और अपने हाथ से बदला लेने से रोका।<sup>34</sup> फिर भी, जैसे इसाएल के भगवान जीवित हैं, जिन्होंने मुझे आपको नुकसान पहुँचाने से रोका है, यदि आप मुझसे मिलने के लिए जल्दी नहीं आतीं, तो निश्चित रूप से सुबह तक नाबाल के किसी भी पुरुष को जीवित नहीं छोड़ा जाता।"<sup>35</sup> इसलिए दाऊद ने उसके हाथ से वह स्वीकार किया जो उसने उसे लाया था, और उसने कहा, "अपने घर शांति से जाओ। देखो, मैंने तुम्हारी बात सुनी है और तुम्हारी याचिका को स्वीकार किया है।"

<sup>36</sup> तब अबीगैल नाबाल के पास आई, और देखो, वह अपने घर में एक राजा के भोज की तरह भीज कर रहा था। और नाबाल का दिल उसके भीतर प्रसन्न था, क्योंकि वह बहुत नशे में था; इसलिए उसने उसे सुबह के प्रकाश तक कुछ भी नहीं बताया।<sup>37</sup> परंतु सुबह, जब नाबाल का नशा उत्तर गया, उसकी पत्नी ने उसे ये बातें बताईं, और उसका दिल उसके भीतर मर गया, और वह पत्तर के समान हो गया।<sup>38</sup> लगभग दस दिन बाद, भगवान ने नाबाल को मारा और वह मर गया।

<sup>39</sup> जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया है, तो उसने कहा, "धन्य है भगवान, जिन्होंने नाबाल के हाथ से मुझ पर किए गए अपमान का कारण प्रस्तुत किया, और अपने सेवक को बुराई से बचाया। भगवान ने नाबाल की बुराई को उसके अपने सिर पर लौटाया है।" तब दाऊद ने अबीगैल को अपनी पत्नी के रूप में तेने का प्रस्ताव भेजा।<sup>40</sup> जब दाऊद के सेवक कर्मेल में अबीगैल के

पास आए, तो उन्होंने उससे कहा, "दाऊद ने हमें तुम्हारे पास भेजा है, तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में लेने के लिए।"<sup>41</sup> वह उठी और अपने चेहरे को भूमि पा झुकाकर कहा, "देखो, तुम्हारी दास मेरे स्वामी के सेवकों के पैर धोने के लिए एक दासी है।"<sup>42</sup> तब अबीगैल जल्दी से उठी, और एक गधे पर सवर हुई, उसके साथ उसकी पांच महिला सेविकाएँ थीं; और वह दाऊद के द्वारों के पीछे चली गई और उसकी पत्नी बन गई।

<sup>43</sup> दाऊद ने यिषेल की अहिनोअम को भी लिया, और वे दोनों उसकी पतियाँ बन गईं।<sup>44</sup> अब शाऊल ने अपनी बेटी मीकल, दाऊद की पत्नी, को पत्नी, लैश के पुत्र, को दे दिया, जो गल्लिम का था।

**26** तब जीफ़ी गिबा में शाऊल के पास आए और कहा, "क्या दाऊद हकीला पहाड़ी पर, जो येशीमोन के सामने है, छिपा नहीं है?"<sup>2</sup> इसलिए शाऊल ज़ीफ़ के जंगल में दाऊद को खोजने के लिए इज़राइल के तीन हजार चुने हुए पुरुषों को लेकर ज़ीफ़ के जंगल की ओर चला गया।<sup>3</sup> शाऊल हकीला पहाड़ी पर, जो येशीमोन के सामने है, सड़क के पास डेरा डाले हुए था। परन्तु दाऊद जंगल में रह रहा था, और उसने देखा कि शाऊल जंगल में उसके पीछे आया है।<sup>4</sup> दाऊद ने गुप्तराव भेजे, और उसने निश्चित रूप से जाना कि शाऊल वास्तव में आ गया है।<sup>5</sup> तब दाऊद उठा और उस खान पर गया जहाँ शाऊल ने डेरा डाला था। और दाऊद ने देखा कि शाऊल कहाँ लेटा रहा है, और अबनेर, नेर का पुत्र, उसकी सेना का प्रधान। अब शाऊल शिविर के अंतरिक धैर में लेटा था, और लोग उसके चारों ओर डेरा डाले हुए थे।

<sup>6</sup> तब दाऊद ने हिती अहिमेलेक और योआब के भाई, सरूयाह के पुत्र अबीशै से कहा, "कौन मेरे साथ शिविर में शाऊल के पास जाएगा?" और अबीशै ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा।"<sup>7</sup> तो दाऊद और अबीशै रात में लोगों के पास आए, और देखो, शाऊल शिविर के अंदर सो रहा था, उसके सिर के पास उसकी भाला जमीन में गड़ी थी। और अबनेर और लोग उसके चारों ओर लेटे हुए थे।<sup>8</sup> तब अबीशै ने दाऊद से कहा, "आज परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है; अब कृपया मुझे उसे भाले से एक ही बार में जमीन पर मारने दो, और मुझे उसे दूसरी बार मारने की आवश्यकता नहीं होगी।"<sup>9</sup> परन्तु दाऊद ने अबीशै से कहा, "उसे मारो, क्योंकि कौन यहोवा के अभिषिक्त के विरुद्ध हाथ बढ़ाकर निर्दोष रह सकता है?"<sup>10</sup> दाऊद ने यह भी कहा, "जैसे यहोवा जीवित है, यहोवा अवश्य ही उसे

# 1 शमूएल

मारेगा, या उसका दिन आएगा कि वह मरेगा, या वह युद्ध में जाएगा और नष्ट हो जाएगा।<sup>11</sup> यहोवा न करे कि मैं यहोवा के अभिषिक्त के विरुद्ध हाथ बढ़ाऊँ! परन्तु अब, कृपया उसके सिर के पास की भाला और पानी का घड़ा ले लो, और चलो।"<sup>12</sup> तो दाऊद ने शाऊल के सिर के पास से भाला और पानी का घड़ा लिया, और वे चले गए। परन्तु किसी ने इसे नहीं देखा या जाना, न ही कोई जागा, क्योंकि वे सब सो रहे थे, क्योंकि यहोवा की ओर से गहरी नींद उन पर पड़ी थी।

<sup>13</sup> तब दाऊद दूसरी ओर पार गया और पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो गया; उनके बीच एक बड़ा क्षेत्र था।<sup>14</sup> और दाऊद ने लोगों और नेर के पुत्र अबनेर को पुकारा, कहा, “क्या तुम उत्तर नहीं दोगे, अबनेर?” तब अबनेर ने उत्तर दिया, “नुम कौन हूँ जो राजा को पुकारते हो?”<sup>15</sup> तो दाऊद ने अबनेर से कहा, “क्या तुम एक आदमी नहीं हो? और इज़राइल में तुहारे जैसा कौन है? फिर तुमने अपने स्वामी राजा की रक्षा क्यों नहीं की? क्योंकि लोगों में से एक तुहारे स्वामी राजा को नष्ट करने आया था।<sup>16</sup> यह बात जो तुमने की है, अच्छी नहीं है। जैसे यहोवा जीवित है, तुम सबको मरना चाहिए, क्योंकि तुमने अपने स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की रक्षा नहीं की। अब देखो और देखो कि राजा की भाला और पानी का घड़ा जो उसके सिर के पास थे, कहाँ हैं।”

<sup>17</sup> तब शाऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचानी और कहा, “क्या यह तुहारी आवाज़ है, मेरे पुत्र दाऊद?” और दाऊद ने कहा, “यह मेरी आवाज़ है, मेरे स्वामी राजा।”<sup>18</sup> उसने यह भी कहा, “मेरे स्वामी मेरे सेवक का पीछा क्यों कर रहे हैं? मैंने क्या किया है, या मेरे हाथ में क्या बुराई है?”<sup>19</sup> अब कृपया मेरे स्वामी राजा मेरे सेवक के शब्दों को सुनें। यदि यहोवा ने तुहाँ मेरे विरुद्ध उकसाया है, तो वह एक भेट स्वीकार करें; परन्तु यदि यह लोग हैं, तो वे यहोवा के सामने शापित हैं, क्योंकि उन्होंने आज मुझे यहोवा की विरासत में कोई हिस्सा न होने के लिए निकाल दिया है, यह कहते हुए, ‘जाओ, अन्य देवताओं की सेवा करो।’<sup>20</sup> अब, यहोवा की उपस्थिति से दूर मेरी रक्त भूमि पर न गिरे, क्योंकि इज़राइल का राजा एक अकेले पिस्तू को खोजने के लिए निकला है, जैसे कोई पहाड़ों में तीतर का शिकार करता है।”

<sup>21</sup> तब शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है। लौट आओ, मेरे पुत्र दाऊद, क्योंकि मैं तुहाँ फिर से हानि नहीं पहुँचाऊँगा, क्योंकि आज तुम्हारी दृष्टि में मेरा जीवन मूल्यवान था। देखो, मैंने मूर्खता की है और एक भयानक गलती की है।”<sup>22</sup> दाऊद ने उत्तर दिया और कहा,

“देखो, राजा की भाला! अब युवकों में से एक को आकर इसे ले जाने दो।”<sup>23</sup> और यहोवा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी धार्मिकता और उसकी विश्वासयोग्यत के लिए प्रतिफल देगा, क्योंकि आज यहोवा ने तुहाँ मेरे हाथ में सौंप दिया, परन्तु मैंने यहोवा के अभिषिक्त के विरुद्ध हाथ बढ़ाने से इनकार कर दिया।<sup>24</sup> अब देखो, जैसे आज तुम्हारा जीवन मेरी दृष्टि में अत्यधिक मूल्यवान था, जैसे ही मेरा जीवन यहोवा की दृष्टि में अत्यधिक मूल्यवान हो, और वह मुझे सभी संकर्तों से बचाए।”<sup>25</sup> तब शाऊल ने दाऊद से कहा, “धन्य हो तुम, मेरे पुत्र दाऊद; तुम बहुत कुछ करोगे और निश्चित रूप से सफल होगे।” तो दाऊद अपने मार्ग पर चला गया, और शाऊल अपने स्थान पर लौट गया।

**27** तब दाऊद ने अपने आप से कहा, “अब मैं एक दिन शाऊल के हाथों मारा जाऊँगा। मेरे लिए इससे अच्छा कुछ नहीं है कि मैं पलिशितयों के देश में भाग जाऊँ, ताकि शाऊल मुझे इसलाई की सीमाओं के भीतर खोजने की आशा छोड़ दे, और मैं उसके हाथ से बच जाऊँ।”<sup>2</sup> इसलिए दाऊद ने उठकर प्रस्थान किया, और वह और उसके साथ के छह सौ आदमी, गति के राजा माओंके के पुत्र आकीश के पास गए।<sup>3</sup> और दाऊद आकीश के साथ गति में रहने लगा, वह और उसके आदमी, प्रत्येक अपने परिवार के साथ— दाऊद अपनी दो पत्नियों के साथ, यित्रेल की अहिनोअम और करमेल के नाबाल की विधा अबीगैल के साथ।<sup>4</sup> अब जब शाऊल को यह सूचना मिली कि दाऊद गति भाग गया है, तो उसने उसे खोजना बंद कर दिया।<sup>5</sup> तब दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि अब मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो मुझे किसी देश के नगर में एक स्थान दें, ताकि मैं वहाँ रह सकूँ। क्योंकि आपका सेवक आपके साथ राजसी नगर में क्यों रहें?”<sup>6</sup> इसलिए आकीश ने उस दिन उसे सिकलग दिया; इसलिए सिकलग आज तक यहदा के राजाओं का है।<sup>7</sup> अब वह समय जब दाऊद पलिशितयों के देश में रहा, एक वर्ष और चार महीने था।

<sup>8</sup> अब दाऊद और उसके आदमी गशूरी, गिर्जी और अमालेकी लोगों पर चढ़ाई करने गए; क्योंकि वे प्राचीन काल से उस भूमि के निवासी थे, जब आप शूर की ओर जाते हैं, यहाँ तक कि मिस की भूमि तक।<sup>9</sup> और दाऊद ने उस भूमि पर हमला किया और एक भी पुरुष या स्त्री को जीवित नहीं छोड़ा, बल्कि भेड़, गाय, गधे, ऊंठ और वस्त्र ले लिए। फिर वह लौटकर आकीश के पास आया।<sup>10</sup> अब आकीश कहता, “आज तुमने कहाँ छापा मारा?” और दाऊद कहता, “यहदा के नेगेव पर,” या

# 1 शमूएल

“यरहमेपत्रियों के नेगेव पर,” या “केनियों के नेगेव पर।”<sup>11</sup> और दाऊद ने एक भी पुरुष या स्त्री को जीवित नहीं छोड़ा, ताकि उन्हें गति लाया जा सके, कहते हुए,  
“अन्यथा वे हमारे बारे में बताएंगे, कहते हुए, ‘यह दाऊद ने किया है।’” इसलिए दाऊद ने इस व्यवहार का  
अभ्यास तब तक किया जब तक वह पलिशियों के देश में रहा।<sup>12</sup> इसलिए आकीश ने दाऊद पर विश्वास किया,  
कहते हुए, “उसने निश्चित रूप से अपने लोगों इसाएल को अपने से घृणित बना दिया है; इसलिए वह सदा के  
लिए मेरा सेवक रहेगा।”

**28** उन दिनों में ऐसा हुआ कि पलिशी अपनी सशस्त्र छावनियों को युद्ध के लिए इकट्ठा कर रहे थे,  
इसाएल के खिलाफ लड़ने के लिए। और आकीश ने दाऊद से कहा, “निश्चित जान लो कि तुम और तुम्हारे  
लोग मेरे साथ सेना में जाओगे।”<sup>2</sup> दाऊद ने आकीश से कहा, “बहुत अच्छा, तुम जान जाओगे कि तुम्हारा सेवक  
क्या कर सकता है।” तब आकीश ने दाऊद से कहा, “बहुत अच्छा, मैं तुम्हें जीवन भर के लिए अपना  
अंगरक्षक नियुक्त करूँगा।”

<sup>3</sup> अब शमूएल मर चुका था, और सारे इसाएल ने उसके लिए शोक मनाया और उसे रामाह में, उसके अपने नगर में दफनाया। और शाऊल ने देश से माध्यमों और आत्माओं से संपर्क करने वालों को हटा दिया था।<sup>4</sup>  
इसलिए पलिशी इकट्ठा हुए और शून्यमें आकर छावनी डाली; और शाऊल ने सारे इसाएल को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबोआ में छावनी डाली।<sup>5</sup> जब शाऊल ने पलिशियों की छावनी देखी, तो वह डर गया और उसका दिल बहुत काप उठा।<sup>6</sup> इसलिए शाऊल ने यहोवा से पूछा, परन्तु यहोवा ने उसे उत्तर नहीं दिया, न तो स्वप्नों के द्वारा, न उरीम के द्वारा, न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।<sup>7</sup> तब शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, “मेरे लिए एक ऐसी स्त्री को खोजो जो माध्यम हो, ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछ सकूँ।”<sup>8</sup> और उसके सेवकों ने उसके कहा, “देखो, एन्दोर में एक स्त्री है जो माध्यम है।”<sup>9</sup> इसलिए शाऊल ने अपने को भेस बदलकर अन्य वर्तन पहने और वह और उसके साथ दो आदमी गए, और वे रात को उस स्त्री के पास आए। और उसने कहा, “मेरे लिए एक आत्मा से परामर्श करो, कृपया, और मेरे लिए उसे ऊपर लाओ जिसे मैं तुम्हें नाम द्यूगा।”<sup>10</sup> परन्तु स्त्री ने उससे कहा, “देखो, तुम जानते हो कि शाऊल ने क्या किया है। उसने देश से माध्यमों और आत्माओं से संपर्क करने वालों को कैसे हटा दिया है। फिर क्यों तुम मेरे जीवन के लिए जाल बिछा रहे हो, मेरी मृत्यु लाने के लिए?”<sup>11</sup> इसलिए शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर

उससे कहा, “जैसे यहोवा जीवित है, इस बात के लिए तुम पर कोई दंड नहीं आएगा।”<sup>12</sup> तब स्त्री ने कहा, “मैं तुम्हारे लिए किसे ऊपर लाऊंगा?” और उसने कहा, “मेरे लिए शमूएल को ऊपर लाओ।”<sup>13</sup> जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तो वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई; और स्त्री ने शाऊल से कहा, “तुमने मुझे क्यों खोखा दिया? क्योंकि तुम शाऊल हो।”<sup>14</sup> परन्तु राजा ने उससे कहा, “डरो मत; परन्तु तुम क्या देखती हो?” और स्त्री ने शाऊल से कहा, “मैं देखती हूँ कि एक दिव्य प्राणी पृथ्वी से ऊपर आ रहा है।”<sup>15</sup> और उसने उससे कहा, “उसकी आकृति कैसी है?” और उसने कहा, “एक बूढ़ा आदमी ऊपर आ रहा है, और वह एक चोगे में लिपटा हुआ है।” तब शाऊल ने जान लिया कि वह शमूएल है, और वह अपने चेहरे के बल भूमि पर झुक गया और आदर किया।

<sup>15</sup> तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “तुमने मुझे ऊपर लाकर क्यों परेशान किया?” और शाऊल ने उत्तर दिया, “मैं बहुत संकट में हूँ; क्योंकि पलिशी मेरे विश्वद्वय युद्ध कर रहे हैं, और परमेश्वर मुझसे दूर हो गया है और अब मुझे उत्तर नहीं देता, न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, न स्वप्नों के द्वारा। इसलिए मैंने तुम्हें बुलाया है, ताकि तुम मुझे बता सको कि मुझे क्या करना चाहिए।”<sup>16</sup> शमूएल ने कहा, “फिर तुम मुझसे क्यों पूछते हो, जब यहोवा ने तुम्हें छोड़ दिया है और तुम्हारा शत्रु बन गया है?”<sup>17</sup> और यहोवा ने वही किया है जो उसने मेरे माध्यम से कहा था; क्योंकि यहोवा ने राज्य को तुम्हारे हाथ से छीन लिया है और तुम्हारे पड़ोसी, दाऊद को दे दिया है।<sup>18</sup> क्योंकि तुमने यहोवा की आवाज नहीं मानी और अमालेक पर उसकी भयंकर क्रोध को नहीं किया, इसलिए यहोवा ने आज तुम्हारे साथ यह किया है।<sup>19</sup> इसके अलावा, यहोवा इसाएल को तुम्हारे साथ पलिशियों के हाथ में भी सौंप देगा; और कल तुम और तुम्हारे बेटे मेरे साथ होंगे। वास्तव में, यहोवा इसाएल की सेना को पलिशियों के हाथ में सौंप देगा।”

<sup>20</sup> तब शाऊल तुरंत पूरी लंबाई में भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल के शब्दों के कारण बहुत डर गया। उसमें कोई ताकत नहीं थी, क्योंकि उसने पूरे दिन और पूरी रात कुछ नहीं खाया था।<sup>21</sup> तब स्त्री शाऊल के पास आई और देखा कि वह भयभीत था, और उससे कहा, “देखो, तुम्हारी दासी ने तुम्हारी बात मानी है, और मैंने अपने जीवन को अपने हाथ में लिया और तुम्हारे उन शब्दों को सुना जो तुमने मुझसे कहे।”<sup>22</sup> तो अब तुम भी, कृपया अपनी दासी की आवाज सुनो, और मुझे तुम्हारे सामने रोटी का एक टुकड़ा रखने दो, ताकि तुम खाओ और जब तुम अपने रास्ते पर जाओ तो ताकत पाओ।”<sup>23</sup>

# 1 शमूएल

परन्तु उसने मना कर दिया और कहा, “मैं नहीं खाऊंगा।” हालांकि, उसके सेवकों ने और स्त्री ने उसे आग्रह किया, और उसने उनकी बात सुनी। इसलिए वह भूमि से उठकर बिस्तर पर बैठ गया।<sup>24</sup> अब स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था, और उसने उसे जट्टी से मार डाला। और उसने आदा लिया, उसे गृंथा, और उससे बिना खसीरी की रोटी बनाई।<sup>25</sup> उसने उसे शाऊल और उसके सेवकों के सामने रखा, और उन्होंने खाया। फिर वे उठे और उस रात चले गए।

**29** अब पतिश्टी अपनी सारी सेनाओं को अफेक में इकट्ठा कर रहे थे, जबकि इसाएली धिजेल के सोते के पास डेरा डाले हुए थे।<sup>2</sup> और पतिश्टीयों के हाकिम सैकड़ों और हजारों की टुकड़ियों में अगे बढ़ रहे थे, और दाऊद और उसके लोग पीछे अकीश के साथ बढ़ रहे थे।<sup>3</sup> तब पतिश्टीयों के सेनापतियों ने कहा, “ये इती यहाँ क्या कर रहे हैं?” और अकीश ने पतिश्टीयों के सेनापतियों से कहा, “क्या यह दाऊद नहीं है, जो इसाएल के राजा शाऊल का सेवक है, जो अब तक कई दिनों और वर्षों से मेरे साथ है, और जब से वह मेरे पास आया है तब से आज तक मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया है?”<sup>4</sup> परन्तु पतिश्टीयों के सेनापति उस पर क्रोधित हुए, और पतिश्टीयों के सेनापति ने उससे कहा, “इस आदमी को वापस भेज दो, ताकि वह उस स्थान पर लौट जाए जहाँ तुमने उसे ठहराया है, और उसे हमारे साथ युद्ध में न जाने दो, ताकि वह युद्ध के दौरान हमारे लिए शत्रु न बन जाए। क्योंकि यह आदमी अपने स्वामी को कैसे प्रसन्न करेगा? क्या यह इन लोगों के सिरों के साथ नहीं होगा?”<sup>5</sup> क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके बारे में वे नृत्य में गाते हैं, कहते हुए,

‘शाऊल ने अपने हजारों को मारा, और दाऊद ने अपने दसियों हजारों को?’

६ तब अकीश ने दाऊद को बुलाया और उससे कहा, “जैसे यहोवा जीवित है, तुम इमानदार रहे हो, और सेना में मेरे साथ बाहर जाने और आने में तुम मेरी दृष्टि में अच्छे हो, क्योंकि जब से तुम मेरे पास आए हो तब से आज तक मैंने तुम में कोई बुराई नहीं पाई है। फिर भी, तुम हाकिमों की दृष्टि में प्रसन्न नहीं हो।<sup>7</sup> इसलिए अब लौट जाओ और शांति से जाओ, ताकि तुम पतिश्टीयों के हाकिमों को अप्रसन्न न करो।”<sup>8</sup> परन्तु दाऊद ने अकीश से कहा, “परन्तु मैंने क्या किया है? और तुमने अपने सेवक में क्या पाया है जब से मैं तुम्हारे सामने आया हूँ तब से आज तक, कि मैं अपने स्वामी राजा के शत्रुओं के विरुद्ध जाकर युद्ध न कर सकूँ?”<sup>9</sup> परन्तु

अकीश ने दाऊद को उत्तर दिया, “मैं जानता हूँ कि तुम मेरी दृष्टि में परमेश्वर के द्रूत के समान प्रसन्न हो; फिर भी, पतिश्टीयों के सेनापतियों ने कहा है, वह हमारे साथ युद्ध में न जाए।”<sup>10</sup> अब फिर, अपने स्वामी के सेवकों के साथ जो तुम्हारे साथ आए हैं, सुबह जल्दी उठो; और जब तुम सुबह जल्दी उठोगे और उजाला हो जाया, तो चले जाओ।<sup>11</sup> इसलिए दाऊद और उसके लोग सुबह जल्दी उठे, पलिश्टीयों के देश में लौटने के लिए। और पलिश्टीय जेल की ओर चले गए।

**30** फिर ऐसा हुआ कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन सिकलाग आए, तो अमालेकियों ने नेगेव और सिकलाग पर धारा बोला था, और सिकलाग को नष्ट कर दिया और उसे आग से जला दिया।<sup>2</sup> और उन्होंने स्तियों और उसमें जो भी थे, छोटे और बड़े, सबको बंदी बना लिया, बिना किसी को मारे, और उन्हें ले गए और अपने रास्ते चले गए।<sup>3</sup> जब दाऊद और उसके लोग नगर में आए, तो देखा, वह आग से जला हुआ था, और उनकी पतियाँ, उनके बेटे और उनकी बेटियाँ बंदी बना ली गई थीं।<sup>4</sup> तब दाऊद और उसके साथ के लोग अपनी आवाजें उठाकर रोए जब तक कि उनके रोने की शक्ति समाप्त नहीं हो गई।<sup>5</sup> अब दाऊद की दो पतियाँ बंदी बना ली गई थीं, यित्रेती अहिनोआम और करमेल के नाबाल की विधवा अबीगेल।<sup>6</sup> इसके अलावा, दाऊद बहुत संकट में था क्योंकि लोग उसे पथरवाह करने की बात कर रहे थे, क्योंकि सभी लोग अपने बेटों और बेटियों के कारण दुखी थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा में अपने आप को बलवंत किया।

७ तब दाऊद ने अबीअतर याजक से, जो अहिमेल का पुत्र था, कहा, “कृपया मेरे लिए एपोद ले आओ।”<sup>8</sup> सो अबीअतर ने दाऊद के पास एपोद लाया।<sup>9</sup> और दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं इस लुटेरों के दल का पीछा करूँ? क्या मैं उन्हें पकड़ लूँगा?” और उसने उससे कहा, “पीछा करो, क्योंकि तुम निश्चित रूप से उन्हें पकड़ लोगे, और तुम निश्चित रूप से सबको बचा लोगे।”<sup>10</sup> सो दाऊद चला, वह और उसके साथ के छह सौ लोग, और वे बेसोर की धारा पर आए, जहाँ पीछे रह गए लोग रुके थे।<sup>11</sup> परन्तु दाऊद ने पीछा किया, वह और चार सौ लोग, क्योंकि दो सौ लोग जो बेसोर की धारा को पार करने के लिए बहुत थके हुए थे, पीछे रह गए।

<sup>11</sup> अब उन्होंने मैदान में एक मिसी को पाया और उसे दाऊद के पास लाया, और उसे रोटी दी और उसने खाई, और उसे पीने के लिए पानी दिया।<sup>12</sup> उन्होंने उसे अंजीर का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिए,

# 1 शमूएल

और उसने खाया; तब उसकी आत्मा पुनर्जीवित हुई, क्योंकि उसने तीन दिन और तीन रातों तक रोटी नहीं खाई थी और पानी नहीं पिया था।<sup>13</sup> तब दाऊद ने उससे कहा, ‘तुम किसके हो, और कहाँ से हो?’ और उसने कहा, ‘मैं मिस का एक जवान आदमी हूँ, एक अमालेकी का सेवक, और मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ दिया जब मैं तीन दिन पहले बीमार हो गया था।<sup>14</sup> हमने केरेथियों के नेगेव पर धावा बोला, और यहूदा की भूमि पर, और कालेब के नेगेव पर, और हमने सिकलाग को आग से जला दिया।<sup>15</sup> तब दाऊद ने उससे कहा, “क्या तुम मुझे इस दल के पास ले जाओगे?” और उसने कहा, “मुझे परमेश्वर की शपथ दिलाओ कि तुम मुझे न मारोगे और न ही मेरे स्वामी के हाथ में सौंपोगे, और मैं तुम्हें इस दल के पास ले जाऊँगा।”

<sup>16</sup> अब जब उसने उसे नीचे ले गया, तो देखा, वे सब भूमि पर फैले हुए थे, खाते और पीते और जश्न मनाते हुए, क्योंकि उन्होंने पलिश्टियों की भूमि और यहूदा की भूमि से बहुत बड़ी लूट ली थी।<sup>17</sup> तब दाऊद ने उन्हें सांझ से लेकर अगले दिन की शाम तक मारा; और उनमें से एक भी आदमी नहीं बचा, सिवाय चार सौ जवानों के जो छाँटों पर सवार होकर भाग गए।<sup>18</sup> सो दाऊद ने वह सब कुछ वापस पा लिया जो अमालेकियों ने लिया था, और अपनी दो पत्रियों को बचा लिया।<sup>19</sup> और उनका कुछ भी नहीं खोया था, चाहे छोटा हो या बड़ा, बेटे या बेटियाँ, लूट या कुछ भी जो उन्होंने अपने लिए लिया था; दाऊद ने सब कुछ वापस लाया।<sup>20</sup> सो दाऊद ने सभी भेड़-बकरियों और मवेशियों को पकड़ा जो लोग अन्य पशुओं के आगे ले गए थे, और उन्होंने कहा, “यह दाऊद की लूट है।”

<sup>21</sup> जब दाऊद उन दो सौ लोगों के पास आया जो दाऊद का पीछा करने के लिए बहुत थके हुए थे और बेसोर की धारा पर भी पीछे रह गए थे, वे दाऊद से मिलने और उसके साथ के लोगों से मिलने के लिए बाहर आए। तब दाऊद ने लोगों के पास जाकर उनका अभिवादन किया।<sup>22</sup> तब उन सभी दुश्मानों का निकलमें लोगों ने जो दाऊद के साथ गए थे, कहा, “चूंकि वे हमारे साथ नहीं गए, हम उन्हें उस लूट में से कुछ नहीं देंगे जो हमने वापस पाई है, सिवाय प्रत्येक आदमी की पत्नी और उसके बच्चों के, ताकि वे उन्हें ले जाएं और छोड़ दें।”<sup>23</sup> परन्तु दाऊद ने कहा, “मेरे भाइयों, तुम ऐसा नहीं कर सकते, जो यहोवा ने हमें दिया है, जिसने हमें सुरक्षित रखा और हमारे विरुद्ध आए दल को हमारे हाथ में सौंप दिया।<sup>24</sup> और इस मामले में कौन तुम्हारी सुनेगा? क्योंकि जो युद्ध में जाता है उसका हिस्सा और जो

सामान के पास रहता है उसका हिस्सा समान होगा; वे समान रूप से साझा करेंगे।”<sup>25</sup> सो उस दिन से आगे, उन्होंने इसे इस्माएल के लिए एक नियम और एक आदेश बनाया।

<sup>26</sup> अब जब दाऊद सिकलाग में आया, उसने यहूदा के प्राचीनों को कुछ लूट भेजी, अपने पित्रों को, यह कहते हुए, “देखो, यहोवा के शत्रुओं की लूट से तुम्हारे लिए एक उपहार हैः”<sup>27</sup> बेताएल, नेगेव के रामोत, और यत्तीर में;<sup>28</sup> अरोएर, सिफ्मोत, और एश्तेमोआ में;<sup>29</sup> राकाल में, और येरहमीएलियों के नगरों में, और केनियों के नगरों में;<sup>30</sup> होर्मा, बोर-अशान, और अठाक में;<sup>31</sup> और हेब्रोन में, और उन सभी स्थानों में जहाँ दाऊद और उसके लोग चले थे।”

**31** अब पलिश्टी इस्माएल के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, और इस्माएल के लोग पलिश्टियों के सामने से भाग गए और गिलबोआ पर्वत पर मारे गए।<sup>2</sup> और पलिश्टियों ने शाऊल और उसके पुत्रों को पकड़ लिया; और पलिश्टियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब, और मल्की-शूआ को मार डाला।<sup>3</sup> युद्ध शाऊल के विरुद्ध बहुत भयंकर हो गया, और धनुधारियों ने उसे पा लिया; और वह धनुधारियों द्वारा गंभीर रूप से घायल हो गया।<sup>4</sup> तब शाऊल ने अपने हथियार-वाहक से कहा, “अपनी तलवार खींचो और मुझे इससे भेद दो, नहीं तो ये खतराहित लोग आकर मुझे भेदेंगे और मेरा अपमान करेंगे।” लेकिन उसका हथियार-वाहक अनिच्छुक था, क्योंकि वह बहुत डर गया था। इसलिए शाऊल ने तलवार ली और उस पर गिर पड़ा।<sup>5</sup> जब उसके हथियार-वाहक ने देखा कि शाऊल मर गया है, तो वह भी अपनी तलवार पर गिर पड़ा और उसके साथ मर गया।<sup>6</sup> इस प्रकार शाऊल अपने तीन पुत्रों, अपने हथियार-वाहक, और अपने सभी लोगों के साथ उस दिन मारा गया।

<sup>7</sup> जब इस्माएल के लोग जो घाटी के दूसरी ओर थे, और जो यरदन के पार थे, ने देखा कि इस्माएल के लोग भाग गए हैं और शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं, तो उन्होंने नगरों की छोड़ दिया और भाग गए; तब पलिश्टी आए और उनमें बस गए।<sup>8</sup> अगले दिन, जब पलिश्टी मरे हुए लोगों को लूटने आए, तो उन्होंने शाऊल और उसके तीन पुत्रों को गिलबोआ पर्वत पर गिरा हुआ पाया।<sup>9</sup> उन्होंने उसका सिर काट दिया और उसके हथियार उतार लिए, और उन्हें पलिश्टियों के देश में चारों ओर भेजा, ताकि अपने देवताओं के घर और लोगों को शुभ समाचार दे सकें।<sup>10</sup> फिर उन्होंने उसके

## 1 शमूएल

हथियारों को अश्तारोथ के मंदिर में रखा, और उसके शरीर को बेथ-शान की दीवार पर टांग दिया।

<sup>11</sup> अब जब याबेश-गिलाद के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल के साथ क्या किया है, <sup>12</sup> तो सभी तीर पुरुष उठे और पूरी रात चले, और शाऊल के शरीर और उसके पुत्रों के शरीर को बेथ-शान की दीवार से ले आए, और वे याबेश आए और उहाँ वहाँ जला दिया। <sup>13</sup> और उहोंने उनकी हड्डियों को याबेश में तामरिस्क के पेड़ के नीचे दफनाया, और सात दिन तक उपवास किया।

## 2 शमूएल

**1** शाऊल की मृत्यु के बाद, जब दाऊद अमालेकियों को पराजित करके लौटा, तो वह सिकलग में दो दिन ठहरा।<sup>2</sup> तीसरे दिन, शाऊल की छावनी से एक व्यक्ति आया, उसके कपड़े फटे हुए और सिर पर धूल थी। जब वह दाऊद के पास पहुँचा, तो उसने आदर में भूमि पर गिरकर प्रणाम किया।<sup>3</sup> दाऊद ने उससे पूछा, “तू कहाँ से आया है?” उसने उत्तर दिया, “मैं इसाएली छावनी से भागकर आया हूँ।”<sup>4</sup> दाऊद ने कहा, “क्या हुआ? मुझे बताओ।” उसने उत्तर दिया, “सैनिक युद्ध से भाग गए; बहुत से मारे गए और मर गए। शाऊल और उसका पुत्र योनातान मर चुके हैं।”<sup>5</sup> तब दाऊद ने उस जवान से पूछा जिसने उसे यह समाचार दिया था, “तुझे कैसे पता कि शाऊल और उसका पुत्र योनातान मर चुके हैं?”<sup>6</sup> उस जवान ने उत्तर दिया, “मैं गिलबोआ पर्वत पर था, और वहाँ शाऊल अपने भाले पर दूका हुआ था, और रथ और घुड़सवार उसके पास आ रहे थे।”<sup>7</sup> जब उसने मुङ्कुम मुझे देखा, तो उसने मुझे बुलाया, और मैंने कहा, “मैं यहाँ हूँ।”<sup>8</sup> उसने मुझसे पूछा, “तू कौन है?” मैंने उत्तर दिया, “मैं एक अमालेकी हूँ।”<sup>9</sup> तब उसने कहा, “मेरे ऊपर खड़ा हो और मुझे मार डाल, क्योंकि मैं पीढ़ा में हूँ फिर भी जीवित हूँ।”<sup>10</sup> इसलिए मैं उसके ऊपर खड़ा हुआ और उसे मार डाला, क्योंकि मुझे पता था कि एक बार जब वह गिर गया, तो वह जीवित नहीं रहेगा। किर मैंने उसके सिर पर का मुकुट और उसकी भुजा से कंगन लिया, और मैं उन्हें यहाँ अपने प्रभु के पास लाया हूँ।”

<sup>11</sup> तब दाऊद ने अपने कपड़े फाड़े, और उसके साथ के सभी पुरुषों ने भी ऐसा ही किया।<sup>12</sup> उहोंने शाऊल और उसके पुत्र योनातान के लिए, और प्रभु की प्रजा और इसाएल राष्ट्र के लिए, जो तलवार से गिर गए थे, शाम तक विलाप किया, रोए और उपवास किया।<sup>13</sup> तब दाऊद ने उस जवान से पूछा जिसने समाचार लाया था, “तू कहाँ से है?” उसने उत्तर दिया, “मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ, एक अमालेकी।”<sup>14</sup> दाऊद ने उससे कहा, “तुझे यह कैसे हुआ कि तू प्रभु के अभिषिक्त को नष्ट करने के लिए हाथ बढ़ाने से नहीं डरा?”<sup>15</sup> तब दाऊद ने अपने एक आदमी को बुलाया और कहा, “जाओ और उसे मार डालो।” तो उसने उसे मारा, और वह आदमी मर गया।<sup>16</sup> दाऊद ने उससे कहा, “तेरा खुन तेरे ही सिर पर है। तेरे ही मुँह ने तेरे खिलाफ गवाई दी जब तूने कहा, ‘मैंने प्रभु के अभिषिक्त को मारा।’”

<sup>17</sup> तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातान के लिए यह विलाप रचना की,<sup>18</sup> और उसने यहूदा के लोगों

को धनुष का यह गीत सिखाने का आदेश दिया – यह याशार की पुस्तक में लिखा है:

<sup>19</sup> हे इसाएल, तेरा वैभव तेरी ऊँचाइयों पर मारा गया। कैसे वीर गिर गए<sup>20</sup> इसे गत में न बताओ, इसे अश्कलोन की गलियों में न घोषित करो, कहीं पलिशितों की बेटियाँ आनंदित न हों, कहीं खतनारहितों की बेटियाँ विजय न मनाएँ।<sup>21</sup> गिलबोआ के पहाडँ, तुम पर न ओस गिरे, न वर्षा हो, न ही अर्णा देने वाले खेत हों, क्योंकि वहाँ वीरों की ढाल अपवित्र हुई शाऊल की ढाल—अब तेल से अभिषिक्त नहीं।<sup>22</sup> मारे गए लोगों के खन से वीरों के मास से योनातान का धनुष पीछे नहीं हटा, न ही शाऊल की तलवार खाली लौटी।<sup>23</sup> शाऊल और योनातान—जीवन में प्रिय और प्रशंसा के पात्र और मृत्यु में विभाजित नहीं। वे उकाबों से तेज थे, वे सिंहों से बलवान थे।<sup>24</sup> हे इसाएल की बेटियाँ, शाऊल के लिए रोओ, जिसने तुम्हें लाल और भव्य वस्त्र पहनाए। जिसने तुम्हारे कस्तों को सोने के अभूषणों से सजाया।<sup>25</sup> कैसे वीर युद्ध में गिर गए, योनातान तेरी ऊँचाइयों पर मारा गया।<sup>26</sup> मैं तेरे लिए शोक करता हूँ योनातान मेरे भाई, तू मेरे लिए बहुत प्रिय था। तेरा प्रेम मेरे लिए अद्भुत था जितियों के प्रेम से अधिक।<sup>27</sup> कैसे वीर गिर गए युद्ध के हथियार खो गए।

**2** इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊँ?” और यहोवा ने उससे कहा, “जाओ।” तब दाऊद ने कहा, “मैं कहाँ जाऊँ?” और उसने कहा, “हेब्रोन।”<sup>2</sup> तो दाऊद वहाँ गया, और उसकी दो पत्नियाँ भी, यिग्रेती अहिनोआम और करमेल के नाबाल की विधवा अवीगैल।<sup>3</sup> और दाऊद अपने उन लोगों को भी ले गया जो उसके साथ थे, हर एक अपने परिवार के साथ, और वे हेब्रोन के नगरों में बस गए।<sup>4</sup> तब यहूदा के लोग आए, और वहाँ उहोंने दाऊद को यहूदा के घराने का राजा अभिषिक्त किया। और उहोंने दाऊद से कहा, “याबेश-गिलाद के लोगों ने शाऊल को दफनाया था।”<sup>5</sup> तो दाऊद ने याबेश-गिलाद के लोगों के पास दूत भेजकर उनसे कहा, “यहोवा की ओर से तुम्हें आशीर्वाद मिले क्योंकि तुमने शाऊल अपने स्वामी पर यह कृपा दिखाई और उसे दफनाया।”<sup>6</sup> और अब यहोवा तुम्हें कृपा और स्वामी दिखाए, और मैं भी तुम्हें यह भलाई दिखाऊंगा क्योंकि तुमने यह काम किया है।<sup>7</sup> अब तुम्हारे हाथ मजबूत हों और वीर बनो, क्योंकि तुम्हारा स्वामी शाऊल मर चुका है, और यहूदा के घराने ने मुझे उनके ऊपर राजा अभिषिक्त किया है।”

## २ शमूएल

<sup>८</sup> परन्तु अबनेर, जो नेर का पुत्र और शाऊल की सेना का सेनापति था, उसने शाऊल के पुत्र ईश-बोशेत को लिया और उसे महनैम ले गया। <sup>९</sup> और उसने उसे गिलाद, अशूरी, यित्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन, यहाँ तक कि समस्त इसाएल का राजा बनाया। <sup>१०</sup> ईश-बोशेत, शाऊल का पुत्र, जब इसाएल का राजा बना, तब वह चालीस वर्ष का था, और उसने दो वर्ष राज्य किया। परन्तु यहूदा के घराने ने दाऊद का अनुसरण किया। <sup>११</sup> वह समय जब दाऊद हेब्रोन में यहूदा के घराने पर राजा था, सात वर्ष और छह महीने था।

<sup>१२</sup> अबनेर, नेर का पुत्र, महनैम से गिलोन गया शाऊल के पुत्र ईश-बोशेत के सेवकों के साथ। <sup>१३</sup> और योआब, सरूर्याह का पुत्र, और दाऊद के सेवक भी गए और उनसे मिले गिलोन के तालाब के पास; और वे बैठ गए, एक समूह तालाब के एक ओर और दूसरा समूह दूसरी ओर। <sup>१४</sup> तब अबनेर ने योआब से कहा, “अब जवानों को उठने दो और हमारे सामने प्रतिस्पर्धा करने दो।” और योआब ने कहा, “उहँ उठने दो।” <sup>१५</sup> तो वे गिनीती के अनुसार उठे: बारह बिन्यामीन और शाऊल के पुत्र ईश-बोशेत के लिए, और बारह दाऊद के सेवकों में से। <sup>१६</sup> और हर एक ने अपने प्रतिद्वंद्वी की सिर से पकड़ लिया और अपनी तलवार उसके प्रतिद्वंद्वी की तरफ धुसा दी; इसलिए वे एक साथ गिर पड़े। इसलिए उस स्थान को हेलकथ-हृज्जूरीम कहा गया, जो गिलोन में है। <sup>१७</sup> और उस दिन युद्ध बहुत भयंकर हो गया, और अबनेर और इसाएल के लोग दाऊद के सेवकों के सामने पराजित हुए।

<sup>१८</sup> अब सरूर्याह के तीन पुत्र वहाँ थे: योआब, अबीशै, और असीएल। और असीएल मैदान में एक हिरन की तरह तेज दौड़ता था। <sup>१९</sup> और असीएल ने अबनेर का पीछा किया और उसे दाँए या बाँए नहीं मुड़ा। <sup>२०</sup> तब अबनेर ने मुड़कर कहा, “क्या यह तू है, असीएल?” और उसने उत्तर दिया, “यह मैं हूँ।” <sup>२१</sup> तो अबनेर ने उससे कहा, “अपने दाँए या बाँए मुड़ और अपने लिए एक जवान को पकड़ ले, और उसका कवच ले लो।” परन्तु असीएल अबनेर का पीछा करने से नहीं मुड़ा। <sup>२२</sup> तो अबनेर ने फिर से असीएल से कहा, “मेरा पीछा करना छोड़ दे। क्योंकि मैं तुझे धरती पर क्यों मारूँ? तब मैं तेरे भाई योआब को कैसे मुँह दिखाऊँगा?” <sup>२३</sup> फिर भी, उसने मुड़ने से इनकार कर दिया; इसलिए अबनेर ने उसे भाले के पिछले सिरे से पेट में मारा, जिससे भाला उसकी पीठ से बाहर निकल गया। और वह वहीं गिर पड़ा और मर गया। और ऐसा हुआ कि जो कोई उस

स्थान पर आया जहाँ असीएल गिरा और मरा था, वह ठहर गया।

<sup>२४</sup> परन्तु योआब और अबीशै ने अबनेर का पीछा किया, और सर्व अस्त हो रहा था जब वे अम्मा की पहाड़ी पर पहुँचे, जो गिलोन के जंगल के मार्ग के समाने है। <sup>२५</sup> और बिन्यामीन के पुत्र अबनेर के पीछे इकट्ठे होकर एक दल बन गए, और वे पहाड़ी के शीर्ष पर खड़े हो गए। <sup>२६</sup> तब अबनेर ने योआब को पुकारकर कहा, “क्या तलवार हमेशा के लिए खाएगी? क्या तुम नहीं जानते कि अंत में यह कड़वा होगा? तुम कब तक लोगों को अपने भाईयों का पीछा करने से रोकने के लिए नहीं कहोगे?” <sup>२७</sup>

योआब ने कहा, “जैसा परमेश्वर जीवित है, यदि तुमने नहीं बोला होता, तो लोग केवल सुबह ही अपने भाई का पीछा करना छोड़ देते।” <sup>२८</sup> तो योआब ने तुरही बजाई, और सभी लोग रुक गए और इसाएल का पीछा नहीं किया, और न ही वे लड़ाई जारी रखी।

<sup>२९</sup> फिर अबनेर और उसके लोग सारी रात अराबा से होकर गए, यद्दन को पार किया, सारी सुबह चले, और महनैम पहुँचे। <sup>३०</sup> फिर योआब अबनेर का पीछा करने से लौटा, और जब उसने सभी लोगों को इकट्ठा किया, तो दाऊद के उत्तीर्स सेवक गायब थे, असीएल के अलावा। <sup>३१</sup> परन्तु दाऊद के सेवकों ने बिन्यामीन और अबनेर के लोगों में से बहुतों को मार डाला, जिससे तीन सौ साठ लोग मारे गए। <sup>३२</sup> और उन्होंने असीएल को उठाया और उसे उसके पिता की कब्र में दफनाया, जो बेतलेह में थी। फिर योआब और उसके लोग सारी रात यात्रा करते रहे जब तक कि दिन का प्रकाश नहीं हुआ हेब्रोन में।

**३** अब शाऊल के घर और दाऊद के घर के बीच युद्ध लंबा चला; और दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया, परन्तु शाऊल का घर अधिकाधिक कमज़ोर होता गया। <sup>२</sup> हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए: उसका पहलौठा अम्नोन था, जो यहेज़ेली अहिनोअम से हुआ; <sup>३</sup> और उसका दूसरा, किलिआब, जो कार्मेल के नाबाल की विधवा अबीगेल से हुआ; और तीसरा, अबशालोम, जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका का पुत्र था; <sup>४</sup> और चौथा, अदोनियाह, जो हायीत का पुत्र था; और पांचवां, शेफटियाह, जो अबीतल का पुत्र था; <sup>५</sup> और छठा, इतरेआम, जो एगला, दाऊद की पत्नी से हुआ। ये दाऊद के पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए।

<sup>६</sup> अब ऐसा हुआ कि जब शाऊल के घर और दाऊद के घर के बीच युद्ध हो रहा था, तब अब्रेल शाऊल के घर में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा था। <sup>७</sup> अब शाऊल की

## २ शमूएल

एक रखैल थी जिसका नाम रिज्पा था, जो अव्या की बेटी थी; और इश-बोशेत ने अंब्रेर से कहा, "तुम मेरे पिता की रखैल के पास क्यों गए हो?"<sup>८</sup> तब अंब्रेर इश-बोशेत के शब्दों से बहुत क्रोधित हुआ और कहा, "क्या मैं यहदा का कुत्रा का सिर हूँ? आज मैं तुम्हारे पिता शाऊल के घर, उसके भाईयों और उसके मित्रों के प्रति कपा दिखाता हूँ, और तुम्हें दाऊद के हाथ में नहीं सौंपता, फिर भी तुम आज मुझ पर एक स्त्री के साथ गलत करने का आरोप लगाते हो?"<sup>९</sup> अंब्रेर से ऐसा परमेश्वर करे, और अधिक भी करे, यदि जैसा यहोवा ने दाऊद से शपथ ली है, मैं उसके लिए ऐसा न करूँ:<sup>१०</sup> शाऊल के घर से राज्य को स्थानांतरित करने के लिए, और दाऊद के सिंहासन को इसाएल और यहदा पर स्थापित करने के लिए, दान से लेकर बेर्शबा तक!"<sup>११</sup> और इश-बोशेत अंब्रेर को एक भी शब्द में उत्तर नहीं दे सका, क्योंकि वह उससे डरता था।

<sup>12</sup> तब अंब्रेर ने दाऊद के पास अपने स्थान से दूर भेजे, यह कहते हुए, "यह भूमि किसकी है? मेरे साथ अपनी वाचा करो, और देखो, मेरा हाथ तुम्हारे साथ होगा ताकि मैं सारे इसाएल को तुम्हारे पास ते आऊ!"<sup>१३</sup> तब दाऊद ने कहा, "अच्छा, मैं तुम्हारे साथ वाचा करूँगा। परन्तु मैं तुम्हें एक बात की मांग करता हूँ: तुम मेरा मुख नहीं देखोगे जब तक तुम पहले मीकल, शाऊल की बेटी, को मेरे पास देखने के लिए नहीं लाओगे।"<sup>१४</sup> तब दाऊद ने इश-बोशेत, शाऊल के पुत्र, के पास दूर भेजे, यह कहते हुए, "मुझे मेरी पत्नी मीकल दे दो, जिसे मैंने फिलिस्तियों की सौ खलड़ी के लिए अपने लिए मंगनी की थी!"<sup>१५</sup> तब इश-बोशेत ने उसे उसके पति, पलतीएल, लैसा के पुत्र, से ले लिया।<sup>१६</sup> परन्तु उसका पति उसके साथ रोता हुआ गया, उसका पीछा करते हुए बहूरीम तक। तब अंब्रेर ने उससे कहा, "जाओ, लौट जाओ!" सो वह लौट गया।

<sup>17</sup> अब अंब्रेर ने इसाएल के प्राचीनों के साथ परामर्श किया, यह कहते हुए, "पिछले समय में तुम दाऊद को अपने ऊपर राजा बनाने की खोज में थे।<sup>१८</sup> अब इसे करो! क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय में कहा है, 'मेरे सेवक दाऊद के हाथ से मैं अपने लोगों इसाएल को बचाऊंगा फिलिस्तियों के हाथ से और उनके सभी शत्रुओं के हाथ से।'<sup>१९</sup> अंब्रेर ने बिन्यामीन के सुनने में भी बात की; और इसके अलावा अंब्रेर दाऊद से हेब्रोन में बात करने गया जो कुछ इसाएल की दृष्टि में और बिन्यामीन के घर की दृष्टि में अच्छा था।<sup>२०</sup> तब अंब्रेर और उसके साथ बीस आदमी दाऊद के पास हेब्रोन आए। और दाऊद ने अंब्रेर और उसके साथ के

आदमियों के लिए एक भोज किया।<sup>२१</sup> अंब्रेर ने दाऊद से कहा, "मूझे उठने दो और सारे इसाएल को मेरे प्रभु राजा के पास इकट्ठा करने दो, ताकि वे तुम्हारे साथ वाचा करें, और तुम उस सब पर राजा बन सको जो तुम्हारी आत्मा वाहती है।" सो दाऊद ने अंब्रेर को विदा किया, और वह शांति से चला गया।

<sup>22</sup> और देखो, दाऊद के सेवक और योआब एक छापे से आए और उनके साथ बहुत लूट लाई, परन्तु अंब्रेर दाऊद के साथ हेब्रोन में नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे विदा किया था, और वह शांति से चला गया था।<sup>२३</sup> जब योआब और उसके साथ की सारी सेना पहुँची, तो उन्होंने योआब को सूचित किया, यह कहते हुए, "नेर का पुत्र अंब्रेर राजा के पास आया था, और उसने उसे विदा किया है, और वह शांति से चला गया है।"<sup>२४</sup> तब योआब राजा के पास आया और कहा, "तुमने क्या किया? देखो, अंब्रेर तुम्हारे पास आया था। फिर तुमने उसे क्यों विदा किया, और वह पहले ही चला गया है?"<sup>२५</sup> तुम नेर के पुत्र अंब्रेर को जानते हो, कि वह तुम्हें खोखा देने और तुम्हारी गतिविधियों को जानने के लिए आया था और जो कुछ तुम करते हो उसे जानने के लिए।"

<sup>26</sup> जब योआब दाऊद से चला गया, तो उसने अंब्रेर के पीछे दूर भेजे, और उन्होंने उसे सीरह के कुएं से वापस लाया: परन्तु दाऊद को यह नहीं पता था।<sup>२७</sup> सो जब अंब्रेर हेब्रोन लौटा, तो योआब ने उसे फाटक के बीच में एकांत में बात करने के लिए बुलाया, और वहां उसने उसे पेट में मारा, ताकि वह अपने भाई असाहेल के खून के कारण मर गया।

<sup>28</sup> बाद में, जब दाऊद ने इसके बारे में सुना, तो उसने कहा, "मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अंब्रेर के खून से यहोवा के सामने सदा निर्दोष हैं।"<sup>२९</sup> यह योआब के सिर पर और उसके पिता के घर पर पड़े, और योआब के घर से कोई न हो जो बहता हो, या जो कोही हो, या जो तकली पकड़ता हो, या जो तलवार से गिरता हो, या जिसे रोटी की कमी हो।"<sup>३०</sup> सो योआब और उसके भाई अबीशै ने अंब्रेर को मारा, क्योंकि उसने गिब्रोन की लड़ाई में उनके भाई असाहेल को मार डाला था।

<sup>31</sup> तब दाऊद ने योआब और उसके साथ के सभी लोगों से कहा, "अपने कपड़े फाड़ो और टाट पहन लो, और अंब्रेर के सामने विलाप करो।" और राजा दाऊद शव के पीछे चला।<sup>३२</sup> उन्होंने अंब्रेर को हेब्रोन में दफनाया; और राजा ने अंब्रेर की कब्र पर अपनी आवाज उठाई और

## २ शमूएल

रोया, और सभी लोग रोए।<sup>३३</sup> और राजा ने अब्रेर के लिए शोकगीत गाया और कहा,

“क्या अब्रेर मूर्ख की तरह मरना चाहिए? <sup>३४</sup> तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे न ही तुम्हारे पैर कास्य की बेड़ियों में डाले गए थे, जैसे कोई टुक्रे के सामने पिरता है, तुम पिरे हो!” और सभी लोग किर से उसके लिए रोए।

<sup>३५</sup> तब सभी लोग दाऊद को उसकी विपत्ति में भोजन देने आए, परन्तु दाऊद ने शपथ खाई, यह कहते हुए, “परमेश्वर मुझसे ऐसा करे, और अधिक भी करे, यदि मैं सूर्यस्त से पहले रोटी या कुछ और चखूँ।”

<sup>३६</sup> सभी लोगों ने इसे ध्यान से देखा, और यह उन्हें प्रसन्न हुआ, जैसे कि राजा ने जो कुछ भी किया वह सभी लोगों को प्रसन्न करता था। <sup>३७</sup> तो उस दिन सभी लोग और सारे इस्राएल समझ गए कि नेर के पुत्र अब्रेर को मारने की राजा की इच्छा नहीं थी। <sup>३८</sup> तब राजा ने अपने सेवकों से कहा, “क्या तुम नहीं जानते कि आज इस्राएल में एक नेता और एक महान व्यक्ति गिर गया है? <sup>३९</sup> और मैं आज कमज़ोर हूँ, यद्यपि अभिषिक्त राजा हूँ; और ये लोग, सरूपाह के पुत्र, मेरे लिए बहुत कठोर हैं। यहोवा दुष्ट को उसके दुष्टता के अनुसार प्रतिफल दे!”

**४** जब शाऊल के पुत्र ईश-बोशेत ने सुना कि अब्रेर हेब्रेन में मर गया है, तो उसकी हिम्मत टूट गई, और सारे इस्राएल में हलचल मच गई।<sup>१</sup> और शाऊल के पुत्र के पास दो व्यक्ति थे जो लूट के दलों के सेनापति थे; एक का नाम बाना और दूसरे का नाम रेकाब था, जो रिम्मोन के पुत्र थे, जो बिएरोथी थे, बिन्यामीन के वंशज थे (क्योंकि बिएरोथ भी बिन्यामीन का हिस्सा माना जाता है, <sup>२</sup> और बिएरोथी लोग गित्तैम को भाग गए और वहाँ परदेशी के रूप में आज तक रहते हैं)।<sup>३</sup> अब योनातन, शाऊल का पुत्र, का एक पुत्र था जो दोनों पैरों से लंगड़ा था। वह पाँच वर्ष का था जब यिग्गेल से शाऊल और योनातन की खबर आई, और उसकी दाई उसे उठाकर भाग गई। लेकिन ऐसा हुआ कि भागने की जल्दी में वह गिर गया और लंगड़ा हो गया। और उसका नाम मपीबोशेत था।

<sup>५</sup> तो रिम्मोन के पुत्र, बिएरोथी रेकाब और बाना, दोपहर के समय ईश-बोशेत के घर गए, जब वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था।<sup>५</sup> और वे घर में ऐसे दाखिल हुए जैसे गैंड़ लेने के लिए आए हैं, और उन्होंने उसके पैट में वार किया; और रेकाब और उसका भाई बाना भाग निकले।<sup>६</sup> अब जब वे घर में आए, जब वह अपने शयनकक्ष में

बिस्तर पर लेटा हुआ था, उन्होंने उसे मारा और उसकी हत्या कर दी और उसका सिर काट दिया। और वे उसका सिर लेकर रात भर अराबा के रास्ते से चले गए।<sup>७</sup> फिर वे ईश-बोशेत का सिर दाऊद के पास हेब्रेन में लाए, और राजा से कहा, “देखो, यह ईश-बोशेत का सिर है, शाऊल का पुत्र, तुम्हारा शत्रु, जिसने तुम्हारी जान लेने की कोशिश की; प्रभु ने आज मेरे स्वामी राजा को शाऊल और उसके वंशजों पर प्रतिशोध दिया है।”

<sup>९</sup> लेकिन दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना, रिम्मोन के पुत्र बिएरोथी से कहा, “जैसे प्रभु जीवित है, जिसने मुझे सभी संकटों से मुक्त किया है,<sup>१०</sup> जब एक ने मुझे सूचित किया, कहकर, ‘देखो, शाऊल मर गया है,’ यह साचकर कि वह अच्छी खबर ला रहा है, मैंने उसे पकड़ लिया और सिक्कंग में मार डाला—यह था इनमां जो मैंने उसे उसकी खबर के लिए दिया।<sup>११</sup> तो कितना अधिक, जब दृष्ट पुरुषों ने एक धर्मी व्यक्ति को उसके अपने घर में उसके बिस्तर पर मार डाला, क्या मैं अब उसके खून का हिसाब तुम्हारे हाथों से नहीं लूँगा और तुम्हें पृथ्वी से समाप्त नहीं कर दूँगा?”<sup>१२</sup> फिर दाऊद ने जवानों को आज्ञा दी, और उन्होंने उन्हें मार डाला और उनके हाथ और पैर काट दिए, और उन्हें हेब्रेन में तालाब के पास लटका दिया। लेकिन उन्होंने ईश-बोशेत के सिर को लिया और उसे हेब्रेन में अब्रेर की कब्र में दफनाया।

**५** तब इस्राएल की सभी जातियाँ हेब्रेन में दाऊद के पास आईं और कहा, “देखो, हम तुम्हारी हड्डी और तुम्हारा मासं हैं।<sup>२</sup> पूर्व समय में, जब शाऊल हम पर राजा था, तुम वही थे जो इस्राएल को बाहर ले जाते और उन्हें अंदर लाते थे। और यहोवा ने तुमसे कहा, ‘तुम मेरे लोगों इस्राएल के चरवाहे बनोगे, और इस्राएल के ऊपर शासक बनोगे।’<sup>३</sup> इसलिए इस्राएल के सभी बुजुर्ग राजा के पास हेब्रेन में आए, और राजा दाऊद ने वहाँ यहोवा के सामने उनके साथ एक वाचा की; और उन्होंने दाऊद को इस्राएल का राजा अभिषिक्त किया।<sup>४</sup> दाऊद जब राज्य करने लगा तब वह तीस वर्ष का था, और उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया।<sup>५</sup> उसने हेब्रेन में यहूदा पर सात वर्ष और छह महीने तक राज्य किया, और यरूशलेम में उसने पूरे इस्राएल और यहूदा पर तैनीस वर्ष तक राज्य किया।<sup>६</sup>

<sup>६</sup> अब राजा और उसके लोग यरूशलेम गए यबूसियों के खिलाफ, जो उस देश के निवासी थे। और उन्होंने दाऊद से कहा, “तुम यहाँ नहीं आ सकते, बल्कि अंधे और लंगड़े तुम्हें दूर कर देंगे,” सोचते हुए, “दाऊद यहाँ प्रवेश नहीं कर सकता।”<sup>७</sup> फिर भी, दाऊद ने सियोन के गढ़

## २ शमूएल

को जीत लिया, जो दाऊद का नगर है।<sup>८</sup> और दाऊद ने उस दिन कहा, "जो कोई यद्युसियों पर हमला करेगा, उसे जल सुरंग के माध्यम से लंगड़े और अंधों तक पहुँचना होगा, जो दाऊद की आमा द्वारा तिरस्कृत हैं।"  
इसलिए वे कहते हैं, "अंधे और लंगड़े घर में नहीं आएंगे!"<sup>९</sup> इसलिए दाऊद गढ़ में रहने लगा और उसे दाऊद का नगर कहा। और उसने मिलों से चारों ओर से अंदर की ओर निर्माण किया।<sup>१०</sup> और दाऊद अधिकाधिक महान होता गया, क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके साथ था।

<sup>११</sup> तब सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास देवदार के वृक्षों के साथ संदेशवाहक भेजे, और बढ़द्वे और पत्तर काटने वाले; और उन्होंने दाऊद के लिए एक घर बनाया।<sup>१२</sup> और दाऊद ने समझा कि यहोवा ने उसे इसाएल का राजा स्थापित किया है, और उसने उसके राज्य को अपने लोगों इसाएल के लिए ऊँचा किया है।<sup>१३</sup> इस बीच दाऊद ने हेब्रैन से आने के बाद यरूशलेम से और अधिक उपपत्तियाँ और पलियाँ लीं, और दाऊद के और अधिक पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं।<sup>१४</sup> अब ये उनके नाम हैं जो यरूशलेम में उनके लिए उत्पन्न हुए: शमूआ, शोबाब, नातान, सुलैमान,<sup>१५</sup> इब्हार, एलीशूआ, नेफेग, याफिया,<sup>१६</sup> एलीशामा, एलीआदा, और एलिफेलेट।

<sup>१७</sup> अब जब पलिश्ती ने सुना कि उन्होंने दाऊद को इसाएल का राजा अभिषिक्त किया है, सभी पलिश्ती दाऊद की खींच में ऊपर गए। और दाऊद ने इसके बारे में सुना और गढ़ में नीचे चला गया।<sup>१८</sup> अब पलिश्ती आए और रफाईम की घाटी में फैल गए।<sup>१९</sup> इसलिए दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं पलिश्तियों के खिलाफ जाऊँ? क्या आप उन्हें मेरे हाथ में देंगें?" और यहोवा ने दाऊद से कहा, "उपर जाओ, क्योंकि मैं निश्चित रूप से पलिश्तियों को तुम्हारे हाथ में दूंगा।"<sup>२०</sup> इसलिए दाऊद बाल-पराजिम में आया और वहाँ उन्हें पराजित किया; और उसने कहा, "यहोवा ने मेरे शत्रुओं को मेरे सामने जल के प्रवाह की तरह तोड़ दिया है।"<sup>२१</sup> इसलिए उसने उस स्थान का नाम बाल-पराजिम रखा।<sup>२२</sup> और पलिश्तियों ने वहाँ अपने देवताओं को छोड़ दिया,

इसलिए दाऊद और उसके लोगों ने उन्हें उठा लिया।<sup>२३</sup> अब पलिश्ती फिर से ऊपर आए और रफाईम की घाटी में फैल गए।<sup>२४</sup> इसलिए दाऊद ने यहोवा से पूछा, और उसने कहा, "तुम सिधे ऊपर नहीं जाओगे; उनके पीछे से घेरकर बलसम के वृक्षों के सामने से आओ।"<sup>२५</sup> और ऐसा होगा, जब तुम बलसम के वृक्षों की चोटियों में

मार्चिंग की आवाज सुनोगे, तब तुरंत कार्य करो, क्योंकि यहोवा तुम्हरे आगे चल चुका होगा पलिश्तियों की सेना को मारने के लिए।"<sup>२६</sup> तब दाऊद ने ऐसा ही किया, जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी, और उसने गेबा से लेकर गेज़ेर तक पलिश्तियों को मारा और पराजित किया।

**६** अब दाऊद ने फिर से इसाएल के सब चुने हुए पुरुषों को इकट्ठा किया, तीस हजार।<sup>२७</sup> और दाऊद उठा और अपने साथ के सब लोगों के साथ बाले-पहुँचा गया, ताकि वहाँ से परमेश्वर के सन्दूक को ले आए, जो उस नाम से पुकारा जाता है, सेनाओं के यहोवा के नाम से, जो करूँबों के ऊपर विराजमान है।<sup>२८</sup> और उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को एक नई गाड़ी पर रखा, और उसे अबीनादाब के घर से ले चले, जो पहाड़ी पर था; और उज्जा और अहियो, अबीनादाब के पुत्र, नई गाड़ी को चला रहे थे।<sup>२९</sup> इस प्रकार वे परमेश्वर के सन्दूक को अबीनादाब के घर से ले चले, जो पहाड़ी पर था; और अहियो सन्दूक के आगे चल रहा था।<sup>३०</sup> इस बीच, दाऊद और इसाएल का सारा धराना यहोवा के सामने हर प्रकार के देवदार की लकड़ी के बने वाद्यत्रिंग के साथ, और वीणा, सारंगी, डफ, खंजरी, और झांझ के साथ आनन्द मना रहे थे।

<sup>६</sup> परन्तु जब वे नाकोन के खतिहान तक पहुँचे, तब उज्जा ने परमेश्वर के सन्दूक की ओर हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, क्योंकि बैल उसे लगभग उत्तरने ही वाले थे।<sup>३१</sup> और यहोवा का क्रोध उज्जा पर भड़क उठा, और परमेश्वर ने उसे उसकी असम्मानता के कारण वहाँ मारा; और वह परमेश्वर के सन्दूक के पास वहाँ मर गया।<sup>३२</sup> तब दाऊद यहोवा के उज्जा पर प्रकोप के कारण क्रोधित हुआ, और उस स्थान का नाम आज तक पेरज़-उज्जा पड़ा है।<sup>३३</sup> इसलिए दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया; और उसने कहा, "यहोवा का सन्दूक मेरे पास कैसे आ सकता है?"<sup>३४</sup> और दाऊद यहोवा के सन्दूक को अपने पास दाऊद के नगर में ले जाने के लिए तैयार नहीं था; परन्तु दाऊद ने उसे गिरी ओबेद-एदोम के घर में रख दिया।<sup>३५</sup> इस प्रकार यहोवा का सन्दूक गिरी ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेद-एदोम और उसके सारे धराने को आशीर्वाद दिया।

<sup>१२</sup> अब यह राजा दाऊद को बताया गया, "यहोवा ने ओबेद-एदोम के घराने को और जो कुछ उसका है, उसे परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशीर्वाद दिया है।"  
इसलिए दाऊद गया और ओबेद-एदोम के घर से

## २ शमूएल

परमेश्वर के सन्दूक को दाऊद के नगर में आनन्द के साथ ले आया।<sup>13</sup> और ऐसा हुआ कि जब यहोवा के सन्दूक को ले जाने वाले छह कदम चले, तो उसने एक बैल और एक मोटा बछड़ा बलिदान किया।<sup>14</sup> और दाऊद यहोवा के सामने अपनी पूरी शक्ति के साथ नृत्य कर रहा था, और वह एक सूती एपोद पहने हुए था।<sup>15</sup> इस प्रकार दाऊद और इसाएल का सारा घराना यहोवा के सन्दूक को आनन्द के जग्योष के साथ और तुरही की ध्वनि के साथ ला रहे थे।

<sup>16</sup> तब ऐसा हुआ कि जब यहोवा का सन्दूक दाऊद के नगर में आ रहा था, तो शाऊल की बेटी मीकल खिड़की से नीचे देख रही थी और उसने राजा दाऊद को यहोवा के सामने कूदते और नाचते देखा; और उसने अपने मन में उसे तुच्छ जाना।<sup>17</sup> इस प्रकार वे यहोवा के सन्दूक को लाए और उसे उसके स्थान पर रखा, उस तम्बू के भीतर जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था, और दाऊद ने यहोवा के सामने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।<sup>18</sup> जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना समाप्त किया, तो उसने सेनाओं के यहोवा के नाम से लोगों को आशीर्वाद दिया।<sup>19</sup> और उसने सब लोगों को, इसाएल की सारी भीड़ को, पुरुषों और स्त्रियों को, एक-एक रोटी का केक, मांस का एक टुकड़ा, और किशमिश का एक केक बाँटा। तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

<sup>20</sup> परन्तु जब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौटा, तो शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से मिलने बाहर आई और कहा, “आज इसाएल के राजा ने अपने को कैसे प्रतिष्ठित किया! उसने आज अपने सेवकों की दासियों के सामने अपने को उधाड़ा, जैसे निर्लज लोग अपने को उधाड़ते हैं!”<sup>21</sup> परन्तु दाऊद ने मीकल से कहा, “यह यहोवा के सामने था, जिसने मुझे तुम्हारे पिता और उसके सारे घराने से ऊपर चुन लिया, कि मुझे यहोवा की प्रजा, इसाएल पर शासक नियुक्त करे; इसलिए मैं यहोवा के सामने आनन्द मनाऊँगा।”<sup>22</sup> और मैं इससे भी अधिक अपने को तुच्छ समझूँगा, और अपनी दृष्टि में दीन बनूँगा; परन्तु जिन दासियों की तुमने बात की, उनके साथ मैं समानित रहूँगा।”<sup>23</sup> और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक कोई संतान नहीं हुई।

**७** अब ऐसा हुआ कि जब राजा अपने घर में रहने लगा, और यहोवा ने उसे उसके सभी शत्रुओं से चारों ओर से विश्वाम दिया,<sup>2</sup> तब राजा ने नातान नबी से कहा, “देखो, मैं देवदार की लकड़ी के घर में रहता हूँ, परन्तु

परमेश्वर का सन्दूक तम्बू के पर्दों के भीतर रहता है।”<sup>3</sup> नातान ने राजा से कहा, “जाओ, जो कुछ तुम्हारे मन में है, वह सब करो, क्योंकि यहोवा तुम्हारे साथ है।”

<sup>4</sup> परन्तु उसी रात को यहोवा का वचन नातान के पास आया, यह कहते हुए,<sup>5</sup> “जाओ और मेरे दास दाऊद से कहो, यहोवा यह कहता है: क्या तुम मेरे लिए एक घर बनाओगे, जिसमें मैं निवास करूँ? ”<sup>6</sup> क्योंकि जब से मैं इसाएल के पुत्रों को भिस से निकाल लाया, तब से लेकर आज तक मैंने किसी घर में निवास नहीं किया है; परन्तु मैं तम्बू में चलता रहा हूँ, जो निवास स्थान है।” जहाँ कहीं मैं इसाएल के सभी पुत्रों के साथ गया, क्या मैंने इसाएल के किसी भी गोत्र से, जिसे मैंने अपनी प्रजा इसाएल का चरवाहा बनने की आज्ञा दी थी, कभी यह कहा, “तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?”

<sup>8</sup> अब, यह वही है जो तुम मेरे दास दाऊद से कहोगे: ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है: मैंने तुम्हें चरागाह से, भेड़ों के पीछे से लिया, ताकि तुम मेरी प्रजा इसाएल के नेता बनो।’<sup>9</sup> और मैं तुम्हारे साथ रहा जहाँ कहीं तुम गए, और तुम्हारे सभी शत्रुओं को तुम्हारे सामने से नष्ट कर दिया; और मैं तुम्हारा नाम महान करूँगा, जैसे पृथ्वी के महान पुरुषों के नाम हैं।<sup>10</sup> और मैं अपनी प्रजा इसाएल के लिए एक स्थान स्थापित करूँगा और उन्हें रोपूँगा, ताकि वे अपने स्थान में निवास करें और फिर कभी परेशान न हों, और न ही दुष्ट उन्हें पहले की तरह सताएं,<sup>11</sup> यहाँ तक कि उस दिन से जब मैंने अपनी प्रजा इसाएल पर न्यायालीश नियुक्त किए; और मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से विश्राम द्वांगा। यहोवा भी तुमसे यह कहता है कि यहोवा तुम्हारे लिए एक घर बनाएगा।<sup>12</sup> जब तुम्हारे दिन पूरे हो जाएँगे और तुम अपने पितरों के साथ लेट जाएँगे, तो मैं तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशज को उठाऊँगा, जो तुम्हारे शरीर से उत्पन्न होगा, और मैं उसके राज्य को स्थिर करूँगा।<sup>13</sup> वह मेरे नाम के लिए एक घर बनाएगा, और मैं उसके राज्य के सिंहासन को सदा के लिए स्थिर करूँगा।<sup>14</sup> मैं उसके लिए पिता बनूँगा और वह मेरे लिए पुत्र होगा; जब वह कोई अपराध करेगा, तो मैं उसे मनुष्यों की छड़ी से और मानवजाति के पुत्रों की मार से ताड़ना दूँगा,<sup>15</sup> परन्तु मेरी कृपा उससे नहीं हटेगी, जैसा कि मैंने शाऊल से लिया, जिसे मैंने तुम्हारे सामने से हटा दिया।<sup>16</sup> तुम्हारा घर और तुम्हारा राज्य मेरे सामने सदा के लिए स्थिर रहेगा; तुम्हारा सिंहासन सदा के लिए स्थिर रहेगा।”<sup>17</sup> इन सभी शब्दों और इस पूरी दृष्टि के अनुसार, नातान ने दाऊद से कहा।

## २ शमूएल

<sup>18</sup> तब राजा दाऊद यहोवा के सामने गया और बैठकर कहा, “हे प्रभु यहोवा, मैं कौन हूँ, और मेरा घर कौन है, कि आपने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? <sup>19</sup> फिर भी यह आपके व्यक्तिकोण में एक छोटी बात थी, हे प्रभु यहोवा, क्योंकि आपने अपने दास के घर के बारे में दूर भविष्य की बात भी कही है। और यह मानवता की रीति है, हे प्रभु यहोवा! <sup>20</sup> फिर, दाऊद आपके सामने और क्या कह सकता है? क्योंकि आप अपने दास को जानते हैं, हे प्रभु यहोवा! <sup>21</sup> आपके वचन के कारण, और आपके अपने हृदय के अनुसार, आपने यह सारी महानता की है, ताकि आपके दास को पता चले। <sup>22</sup> इस कारण से आप महान हैं, हे प्रभु यहोवा; क्योंकि आपके समान कोई नहीं है, और आपके सिवा कोई परमेश्वर नहीं है, जैसा कि हमने अपने कानों से सुना है। <sup>23</sup> और कौन आपकी प्रजा, इसाएल के समान है, जो पृथ्वी पर एकमात्र राष्ट्र है जिसे परमेश्वर ने अपनी प्रजा के रूप में छुड़ाने के लिए खुद को एक नाम बनाने के लिए गया, और आपके लिए एक महान कार्य करने के लिए—आपके देश के लिए अद्भुत कार्य, क्योंकि आपकी प्रजा, जिसे अपने मिस्स से, अन्य राष्ट्रों और उनके देवताओं से अपने लिए छुड़ाया है? <sup>24</sup> क्योंकि आपने अपनी प्रजा इसाएल की अपनी प्रजा के रूप में सदा के लिए स्थापित किया है, और आप, हे यहोवा, उनके परमेश्वर बन गए हैं।

<sup>25</sup> अब हे प्रभु यहोवा, जो वचन आपने अपने दास और उसके घर के बारे में कहा है, उसे सदा के लिए स्थिर कीजिए, और जैसा आपने कहा है, वैसा ही कीजिए, <sup>26</sup> ताकि आपका नाम सदा के लिए महान हो, यह कहकर, सेनाओं का यहोवा इसाएल का परमेश्वर है; और आपके दास दाऊद का घर आपके सामने स्थिर रहे। <sup>27</sup> क्योंकि आप, सेनाओं के यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, ने अपने दास को यह प्रकट किया है, यह कहते हुए, ‘मैं तुम्हारे लिए एक घर बनाऊँगा;’ इससे आपके दास ने आपके सामने यह प्रार्थना करने का साहस पाया है। <sup>28</sup> अब फिर, हे प्रभु यहोवा, आप परमेश्वर हैं, और आपके वचन सत्य हैं, और आपने अपने दास से यह अच्छा वचन किया है। <sup>29</sup> और अब, कृपया आपके लिए यह अच्छा हो कि आप अपने दास के घर को आशीर्वद दें, ताकि वह आपके सामने सदा के लिए स्थिर रहे। क्योंकि आप, हे प्रभु यहोवा, ने कहा है; और आपकी आशीर्वद के साथ आपके दास का घर सदा के लिए आशीर्षित हो।”

**८** इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद ने पलिशियों को पराजित किया और उन्हें वश में कर लिया; और दाऊद ने पलिशियों के हाथ से मुख्य नगर पर नियंत्रण कर लिया। <sup>2</sup> और उसने मोआब को पराजित किया, और

उन्हें एक रेखा के साथ मापा, उन्हें भूमि पर लेटने के लिए कहा; उसने दो रेखाओं को मृत्यु के लिए मापा, और एक पूरी रेखा को जीवित रखने के लिए। इस प्रकार मोआबी दाऊद के सेवक बन गए, और भेट लाने लगे। <sup>3</sup> तब दाऊद ने रहोब के पुत्र हददेज़ेर को पराजित किया, जो सोबा का राजा था, जब वह अपनी शक्ति को यूफ्रेट्स नदी पर पुः स्थापित करने के लिए गया। <sup>4</sup> दाऊद ने उससे सत्रह सौ घुड़सवार और बीस हजार पैदल सैनिकों को पकड़ा; और दाऊद ने सभी रथों के धोड़ों को लंगड़ा कर दिया, परंतु सौ रथों के लिए पर्यांत छोड़ दिए। <sup>5</sup> जब दमिश्क के अरामी हददेज़ेर, सोबा का राजा की सहायता के लिए आए दाऊद ने अरामियों के बाइस हजार पुरुषों को मार गिराया। <sup>6</sup> तब दाऊद ने दमिश्क के अरामियों के बीच छावनियाँ स्थापित कीं, और अरामी दाऊद के सेवक बन गए, और भेट लाने लगे। और प्रभु ने दाऊद की हर जगह सहायता की। <sup>7</sup> और दाऊद ने हददेज़ेर के सेवकों द्वारा ले जाए जाने वाले सोने के ढालों को लिया, और उन्हें यूरुशलेम ले आया। <sup>8</sup> बेताह और बेरोथे, हददेज़ेर के नगरों से, राजा दाऊद ने बहुत बड़ी मात्रा में कांसा लिया।

<sup>9</sup> अब जब हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेज़ेर की पूरी सेना को पराजित कर दिया है, <sup>10</sup> तोई ने अपने पुत्र योराम को राजा दाऊद के पास भेजा ताकि वह उसे अभिवादन और आशीर्वद दे, क्योंकि उसने हददेज़ेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित किया (क्योंकि हददेज़ेर तोई के साथ युद्ध में था); और योराम ने चांदी, सोने, और कांसे की वस्त्रुएँ लाईं। <sup>11</sup> राजा दाऊद ने इन्हें भी प्रभु को समर्पित किया, उन चांदी और सोने के साथ जो उसने उन सभी राष्ट्रों से समर्पित की थी जिन्हें उसने वश में किया था: <sup>12</sup> अराम, मोआब, अम्मोनियों, पलिशियों, अमालेक, और हददेज़ेर के लूट से, जो रहोब का पुत्र और सोबा का राजा था। <sup>13</sup> इस प्रकार दाऊद ने अपना नाम बनाया जब वह नमक की घाटी में अठारह हजार अरामियों को मारकर लौटा। <sup>14</sup> उसने एदोम में छावनियाँ स्थापित कीं, और सभी एदोमी दाऊद के सेवक बन गए। और प्रभु ने दाऊद की हर जगह सहायता की।

<sup>15</sup> इस प्रकार दाऊद ने पूरे इसाएल पर राज्य किया; और दाऊद ने अपने सभी लोगों के लिए न्याय और धर्म की स्थापना की। <sup>16</sup> योआब, सरूपाया का पुत्र, सेना के ऊपर था, और यहोवापात, अहिलूद का पुत्र, सचिव था। <sup>17</sup> सादोक, अहितूब का पुत्र, और अहिमेलेक, अबियाथार का पुत्र, याजक थे, और सरायाह लेखक था।

## २ शमूएल

<sup>१८</sup> बनायाह, यहोयादा का पुत्र, करेथियों और पतेथियों के ऊपर था, और दाऊद के पुत्र प्रधान अधिकारी थे।

**९** तब दाऊद ने कहा, “क्या शाऊल के घराने में कोई बचा है, जिस पर मैं योनातान के कारण कृपा कर सकूँ?”<sup>१</sup> अब शाऊल के घराने का एक सेवक था जिसका नाम सीबा था, और उसे दाऊद के पास बुलाया गया। राजा ने उससे कहा, “क्या तुम सीबा हो?” और उसने कहा, “मैं आपका सेवक हूँ।”<sup>२</sup> तब राजा ने कहा, “क्या शाऊल के घराने में कोई नहीं बचा है जिस पर मैं परमेश्वर की कृपा कर सकूँ?” और सीबा ने राजा से कहा, “अभी भी योनातान का एक पुत्र है, जो दोनों पैरों से लंगड़ा है।”<sup>३</sup> इसलिए राजा ने उससे कहा, “वह कहाँ है?” और सीबा ने राजा से कहा, “देखिए, वह लोधिबार में अमीएल के पुरु माकीर के घर में है।”<sup>४</sup> तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर उसे अमीएल के पुरु माकीर के घर से, लोधिबार से बुलवाया।<sup>५</sup> मेफीबोशेत, जो योनातान का पुत्र और शाऊल का पोता था, दाऊद के पास आया और अपने चेहरे के बल गिरकर दंडवत किया। और दाऊद ने कहा, “मेफीबोशेत!” और उसने कहा, “यहाँ आपका सेवक हूँ।”<sup>६</sup> दाऊद ने उससे कहा, “डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे पिता योनातान के कारण तुम्हारे प्रति कृपा अवश्य दिखाऊंगा, और तुम्हारे दादा शाऊल की सारी भूमि तुम्हें लौटा दूँगा; और तुम स्वयं नियमित रूप से मेरी मेज पर भोजन करोगे।”<sup>७</sup> और उसने दंडवत किया और कहा, “आपका सेवक क्या है, कि आप एक मरे हुए कुत्ते के समान मुझ पर ध्यान दें?”

<sup>९</sup> तब राजा ने शाऊल के सेवक सीबा को बुलाया और उससे कहा, “जो कुछ शाऊल और उसके पूरे घराने का था वह सब मैंने तुम्हारे स्वामी के पोते को दे दिया है।”<sup>१०</sup> तुम और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे सेवक उसके लिए भूमि की खेती करेंगे, और उसकी उपज लाओगे ताकि तुम्हारे स्वामी के पोते के पास भोजन हो; फिर भी, मेफीबोशेत, तुम्हारे स्वामी का पोता, नियमित रूप से मेरी मेज पर भोजन करेगा।”<sup>११</sup> अब सीबा के पंद्रह पुत्र और बीस सेवक थे।<sup>१२</sup> तब सीबा ने राजा से कहा, “ये स्वामी राजा जो कुछ अपने सेवक को आज्ञा देते हैं, उसके अनुसार आपका सेवक करेगा।” इसलिए मेफीबोशेत दाऊद की मेज पर भोजन करता था, जैसे राजा के पुत्रों में से एक।<sup>१३</sup> मेफीबोशेत का एक छोटा पुत्र था जिसका नाम मीक था। और जो भी सीबा के घर में रहते थे वे मेफीबोशेत के सेवक थे।<sup>१४</sup> इसलिए मेफीबोशेत यरूशलेम में रहने लगा, क्योंकि वह नियमित रूप से राजा की मेज पर भोजन करता था। और वह दोनों पैरों से लंगड़ा था।

**१०** इसके बाद ऐसा हुआ कि अमोनियों का राजा मर गया, और उसके स्थान पर हानून उसका पुत्र राजा बना।<sup>१५</sup> तब दाऊद ने कहा, “मैं नाहाश के पुत्र हानून पर कृपा करूँगा, जैसे उसके पिता ने मुझ पर कृपा की थी।” इसलिए दाऊद ने अपने सेवकों को उसके पिता के विषय में उसे सांख्ना देने के लिए भेजा। परन्तु जब दाऊद के सेवक अमोनियों के देश में आए,<sup>१६</sup> तब अमोनियों के प्रधानों ने अपने स्वामी हानून से कहा, “क्या तू समझता है कि दाऊद ने तेरे पिता का समान किया है क्योंकि उसने तुझे सांख्ना देने वाले भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपने सेवकों को इसलिये नहीं भेजा है कि वह नगर की खोज करें, उसकी जासूसी करें और उसे नष्ट करें?”<sup>१७</sup> तब हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ लिया और उनकी आधी दाढ़ी मुंबुला दी, और उनके वस्त्रों को बीच से कूरह्वें तक काट दिया, और उन्हें विदा कर दिया।<sup>१८</sup> जब यह बात दाऊद को बताई गई, तो उसने उनके मिलने के लिए दूत भेजे, क्योंकि वे पुरुष बहुत अपमानित थे। और राजा ने कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ी फिर से न बढ़ जाए, तब तक यरीहो में ठहरो, फिर लौट आना।”

<sup>६</sup> जब अमोनियों ने देखा कि वे दाऊद के लिए अप्रिय हो गए हैं, तो अमोनियों ने बैथ-रहोब के अरामियों और सोबा के अरामियों को बीस हजार पैदल सैनिकों के साथ, और माका के राजा को एक हजार पुरुषों के साथ, और तोब के पुरुषों को बारह हजार पुरुषों के साथ किराए पर लिया।<sup>१९</sup> जब दाऊद ने यह सुना, तो उसने योआब और सारी सेना, योद्धाओं को भेजा।<sup>२०</sup> अमोनी बाहर निकले और नगर के प्रवेश द्वार पर युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध हुए, जबकि सोबा और रहोब के अरामी और तोब और माका के पुरुष मैदान में अकले थे।<sup>२१</sup> अब जब योआब ने देखा कि युद्ध उसके सामने और पीछे दोनों ओर से है, तो उसने इसाएल के कुछ श्रेष्ठ पुरुषों को चुना और उन्हें अरामियों के खिलाफ पंक्तिबद्ध किया।<sup>२२</sup> फिर उसने बाकी लोगों को अपने भाई अबीशै के अधीन कर दिया, और उन्हें अमोनियों के खिलाफ पंक्तिबद्ध किया।<sup>२३</sup> और उसने कहा, “यदि अरामी मेरे लिए बहुत मजबूत हैं, तो तुम मेरी सहायता करना; परन्तु यदि अमोनी तुम्हारे लिए बहुत मजबूत हैं, तो मैं तुम्हारी सहायता करने आऊंगा।”<sup>२४</sup> मजबूत बनो, और अपने लोगों और हमारे परमेश्वर के नगरों के लिए साहसी बनो; और यहोवा वही करें जो उसकी दृष्टि में अच्छा है।<sup>२५</sup> तो योआब और उसके साथ के लोग अरामियों के खिलाफ युद्ध के लिए आगे बढ़े, और वे उससे भाग गए।<sup>२६</sup> जब अमोनियों ने देखा कि अरामी भाग गए हैं, तो वे भी अबीशै से भागकर नगर में चले गए। तब योआब

## २ शमूएल

अम्मोनियों के खिलाफ लड़ाई से लौटकर यरूशलेम आया।

<sup>15</sup> जब अरामियों ने देखा कि वे इसाएल से हार गए हैं, तो उन्होंने फिर से संगठित किया। <sup>16</sup> और हददएज़र ने संदेश भेजा और उन अरामियों को बुलाया जो यूकॉट्स नदी के पार थे, और वे हेलाम आए; और हददएज़र की सेना के सेनापति शोबक ने उनका नेतृत्व किया। <sup>17</sup> जब यह दाऊद को बताया गया, तो उसने सारे इसाएल को इकट्ठा किया, परदन को पार किया, और हेलाम आया। और अरामी दाऊद का सामना करने के लिए पक्किबद्ध हुए और उसके खिलाफ लड़े। <sup>18</sup> परन्तु अरामी इसाएल से भाग गए, और दाऊद ने अरामियों के सात सौ रथियों और चालीस हजार घुड़सवारों को मार डाला, और उनकी सेना के सेनापति शोबक को मारा, और वह वहीं मरा। <sup>19</sup> जब हददएज़र के सेवक सभी राजाओं ने देखा कि वे इसाएल से हार गए हैं, तो उन्होंने इसाएल से शांति कर ली और उनकी सेवा की। इसलिए अरामी अम्मोनियों की सहायता करने से डर गए।

**११** फिर ऐसा हुआ कि वसंत ऋतु में, जब राजा युद्ध के लिए निकलते हैं, तब दाऊद ने योआब और अपने सेवकों को उसके साथ भेजा, और समस्त इसाएल को भी, और उन्होंने अम्मोनियों के पुत्रों को नष्ट किया और रख्बा को धेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में ही ठहरा रहा। <sup>२</sup> अब संध्या समय दाऊद अपने बिस्तर से उठा और राजा के घर की छत पर टहलने लगा, और छत से उसने एक स्त्री को सामन करते देखा; और वह स्त्री देखने में अत्यंत संदर्भ थी। <sup>३</sup> तब दाऊद ने सेवकों को भेजा और उस स्त्री के विषय में पूछताछ की। और किसी ने कहा, “क्या यह एलीआम की बेटी, हिती उरियाह की पती बतशेबा नहीं है?” <sup>४</sup> तब दाऊद ने दूर्तों को भेजा और उसे बुलाया गया, और जब वह उसके पास आई, तो उसने उसके साथ सोया — अब उसने अपनी अशुद्धता से शुद्धि प्राप्त कर ली थी— फिर वह अपने घर लौट गई। <sup>५</sup> और वह स्त्री गर्भवती हुई; इसलिए उसने दाऊद को सदेश भेजा, और कहा, “मैं गर्भवती हूँ।”

<sup>६</sup> तब दाऊद ने योआब के पास यह कहला भेजा, “हिती उरियाह को मेरे पास भेजो।” इसलिए योआब ने उरियाह को दाऊद के पास भेज दिया। <sup>७</sup> जब उरियाह उसके पास आया, तब दाऊद ने योआब की कुशलता और लोगों की कुशलता और युद्ध की स्थिति के बारे में पूछा। <sup>८</sup> तब दाऊद ने उरियाह से कहा, “अपने घर जाओ, और अपने पैर धो लो।” इसलिए उरियाह राजा के घर से चला गया, और राजा की ओर से एक उपहार

उसके पीछे भेजा गया। <sup>९</sup> परन्तु उरियाह राजा के घर के द्वार पर अपने प्रभु के सब सेवकों के साथ सोया, और अपने घर नहीं गया। <sup>१०</sup> जब उन्होंने दाऊद को यह सूचना दी, “उरियाह अपने घर नहीं गया,” तब दाऊद ने उरियाह से कहा, “क्या तुम यात्रा से नहीं आए हो? तुम अपने घर क्यों नहीं गए?” <sup>११</sup> और उरियाह ने दाऊद से कहा, “सदूक और इसाएल और यहूदा अस्पायी निवासों में रह रहे हैं, और मेरे प्रभु योआब और मेरे प्रभु के सेवक खुले मैदान में डेरा डाले हुए हैं। क्या मैं तब अपने घर जाकर खाऊँ और पिऊँ और अपनी पती के साथ सोऊँ? अपके जीवन और आपकी आत्मा के जीवन की शापथ, मैं ऐसा नहीं करूँगा।” <sup>१२</sup> तब दाऊद ने उरियाह से कहा, “आज भी यहाँ ठहरो, और कल मैं तुम्हें वापस भेज दूँगा।” इसलिए उरियाह उस दिन और अगले दिन यरूशलेम में ठहरा रहा। <sup>१३</sup> अब दाऊद ने उसे बुलाया, और उसने उसके सामने खाया और पिया, और उसे नशे में कर दिया। संध्या में वह अपने प्रभु के सेवकों के साथ अपने बिस्तर पर सोने चला गया, परन्तु वह अपने घर नहीं गया।

<sup>१४</sup> अब सुबह में दाऊद ने योआब को एक पत्र लिखा और उसे उरियाह के हाथ से भेजा। <sup>१५</sup> उसने पत्र में लिखा था, “उरियाह को सबसे भयंकर युद्ध की अग्रिम पंक्ति में रखो, और उससे पीछे हट जाओ, ताकि वह मारा जाए।” <sup>१६</sup> इसलिए जब योआब ने नगर पर नजर रखी, तो उसने उरियाह को उस स्थान पर नियुक्त किया जहाँ वह जानता था कि वीर पुरुष हैं। <sup>१७</sup> और नगर के पुरुष बाहर आए और योआब के विरुद्ध लड़े, और दाऊद के सेवकों में से कुछ लोग मारे गए, और हिती उरियाह भी मारा गया। <sup>१८</sup> तब योआब ने दाऊद को युद्ध की सारी घटनाओं की सूचना भेजी। <sup>१९</sup> उसने दूत को आदेश दिया, “जब तुम युद्ध की सारी घटनाओं की सूचना राजा को दे चुके हो, <sup>२०</sup> और यदि ऐसा होता है कि राजा का क्रोध भड़क उठे और वह तुमसे कहे, ‘तुम नगर के इतने निकट क्यों गए लड़ने के लिए? क्या तुम नहीं जानते थे कि वे दीवार से तीर चलाएँ?’ <sup>२१</sup> किसने यरुब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को मारा? क्या एक स्त्री ने दीवार से उस पर ऊपरी चक्की का पथर नहीं फेंका जिससे वह थेबेज़ में मर गया? तुम दीवार के इतने निकट क्यों गए? — तब तुम कह देना, ‘आपका सेवक हिती उरियाह भी मारा गया।’”

<sup>२२</sup> इसलिए दूत चला गया और उसने दाऊद को सब कुछ बताया जो योआब ने उसे रिपोर्ट करने के लिए भेजा था। <sup>२३</sup> और दूत ने दाऊद से कहा, “पुरुष हम पर हावी हो गए और मैदान में हम पर हमला किया, परन्तु

## 2 शमूएल

हमने उहें द्वार के प्रवेश तक दबा दिया।<sup>24</sup> तब तीरंदाजों ने दीवार से आपके सेवकों पर तीर चलाएः राजा के कुछ सेवक मारे गए, और आपका सेवक हिती उरियाह भी मारा गया।<sup>25</sup> तब दाऊद ने दूत से कहा, “यह तुम योआब से कह देना: इस बात से तुम्हें दुखी न होने दो, क्योंकि तलवार एक को भी खाती है और दूसरे को भी; अपने युद्ध को नार के विश्वद्वं मजबूत करो और उसे नष्ट करो; और उसे प्रोत्साहित करो।”

<sup>26</sup> अब जब उरियाह की पत्नी ने सुना कि उसका पति उरियाह मर गया है, तो उसने अपने पति के लिए शोक मनाया।<sup>27</sup> जब शोक का समय समाप्त हो गया, तब दाऊद ने सेवकों को भेजा और उसे अपने घर ले आया, और वह उसकी पत्नी बन गई; फिर उसने उसे एक पुत्र को जन्म दिया। परन्तु जो कुछ दाऊद ने किया था वह यहोवा की दृष्टि में बुरा था।

**12** तब यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा। और वह उसके पास आया और कहा, “एक नगर में दो व्यक्ति थे, एक धनी और दूसरा गरीब।<sup>2</sup> धनी व्यक्ति के पास बहुत सारी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे।<sup>3</sup> परंतु गरीब व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं था सिवाय एक छोटी मादा भेड़ के, जिसे उसने खरीदा और पाला-पोसा; और वह उसके और उसके बच्चों के साथ बड़ी हुई। वह उसके साथ खाती, उसके पाले से पीती, और उसकी गोद में लेटी रहती, और उसके लिए बेटी के समान थी।<sup>4</sup> अब एक यात्री धनी व्यक्ति के पास आया, और उसने अपने झुंड या गाय-बैल में से कोई जननदर लेने की हिम्मत नहीं की उस यात्री के लिए जो उसके पास आया था; इसलिए उसने गरीब व्यक्ति की मादा भेड़ ली और उसे उस व्यक्ति के लिए तैयार किया जो उसके पास आया था।<sup>5</sup> तब दाऊद का क्रोध उस व्यक्ति के खिलाफ बहुत भड़क उठा, और उसने नातान से कहा, “यहोवा की शपथ, जिसने यह किया है वह व्यक्ति निष्ठित रूप से मरने के योग्य है।<sup>6</sup> उसे उस भेड़ के लिए चार गुना मुआवजा देना होगा, क्योंकि उसने यह काम किया और उसके पास कोई दया नहीं थी।”<sup>7</sup> तब नातान ने दाऊद से कहा, “तू वही व्यक्ति है! यह वही है जो यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: मैंने तुझे इसाएल का राजा अभिषिक्त किया, और मैंने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया।<sup>8</sup> मैंने तुझे तेरे स्वामी का घर और तेरी स्वामी की परियाँ तेरी देखभाल में दीं, और मैंने तुझे इसाएल और यहूदा का घर दिया; और यदि यह भी कम होता, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देता! ”<sup>9</sup> तूने यहोवा के वचन का तिरस्कार क्यों किया, उसके दृष्टि में बुरा काम करके? तूने हिती उरियाह को तलवार से मार डाला,

तूने उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया, और तूने उसे अम्मोनियों की तलवार से मार डाला।<sup>10</sup> अब इसलिए, तलवार कभी तेरे घर से नहीं हटेगी, क्योंकि तूने मेरा तिरस्कार किया और तूने हिती उरियाह की पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया।<sup>11</sup> यह वही है जो यहोवा कहता है: देख, मैं तेरे ही घर से तेरे खिलाफ बुराई उठाऊंगा; मैं तेरी पत्नियों को तेरी आँखों के सामने ले जाऊंगा और उहें तेरे साथी को ढूंगा, और वह तेरी पत्नियों के साथ दिन-दहाड़े सोएगा।<sup>12</sup> वास्तव में, तूने यह गुत रूप से किया, परंतु मैं यह काम सारे इसाएल के सामने, और खुले दिन-दहाड़े करूँगा।”<sup>13</sup>

<sup>13</sup> तब दाऊद ने नातान से कहा, “मैंने यहोवा के खिलाफ पाप किया है।” और नातान ने दाऊद से कहा, “यहोवा ने भी तेरे पाप को जाने दिया है; तू नहीं मरेगा।<sup>14</sup> हालांकि, क्योंकि इस काम से तूने यहोवा का अपमान किया है, जो बच्चा तुझसे पैदा हुआ है वह निष्ठित रूप से मरेगा।”<sup>15</sup> तब नातान अपने घर चला गया। यहोवा ने उस बच्चे को मारा जिसे उरियाह की विधाने ने दाऊद को जन्म दिया, जिससे वह बहुत बीमार हो गया।<sup>16</sup> इसलिए दाऊद ने बच्चे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की; और दाऊद ने उपवास किया और सारी रात भूमि पर लेटा रहा।<sup>17</sup> उसके घर के बुजुर्ग उसके पास खड़े रहे ताकि उसे भूमि से उठाएं, परंतु वह अनिच्छक था और उनके साथ भोजन नहीं करता था।<sup>18</sup> फिर ऐसा हुआ कि सातवें दिन बच्चा मर गया। परंतु दाऊद के सेवक उसे बताने से डरते थे कि बच्चा मर गया है, क्योंकि उहोंने कहा, “देखो, जब बच्चा जीवित था, हमने उससे बात की और उसने हमारी बात नहीं सुनी; तो हम उसे कैसे बताएं कि बच्चा मर गया है, क्योंकि वह खुद को नुकसान पहुँचा सकता है?”<sup>19</sup> परंतु जब दाऊद ने देखा कि उसके सेवक आपस में फुसफुसा रहे हैं, तो उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया है; इसलिए दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, “क्या बच्चा मर गया है?” और उहोंने कहा, “वह मर गया है।”<sup>20</sup> तो दाऊद भूमि से उठा, धोया, अपने आप को अभिषेक किया, और अपने कपड़े बदले; और वह यहोवा के घर में गया और पूजा की। फिर वह अपने घर आया, और जब उसने अनुरोध किया, तो उहोंने उसे भोजन परोसा और उसने खाया।<sup>21</sup> तब उसके सेवकों ने उससे कहा, “यह क्या है जो तूने किया है? जब बच्चा जीवित था, तूने उपवास किया और रोया; परंतु जब बच्चा मर गया, तो तु उठा और भोजन किया।”<sup>22</sup> उसने कहा, “जब बच्चा जीवित था, मैंने उपवास किया और रोया; क्योंकि मैंने सोचा, कौन जानता है, यहोवा मुझ पर कृपा कर सकता है, और बच्चा जीवित रह सकता है।”<sup>23</sup> परंतु अब वह मर गया है; मैं क्यों उपवास करूँ? क्या मैं उसे

## 2 शमूएल

फिर से ला सकता हूँ? मैं उसके पास जा रहा हूँ, परंतु वह मेरे पास नहीं लौटेगा।"

<sup>24</sup> तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सांत्वना दी, और उसके पास गया और उसके साथ सोया; और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, और उसने उसका नाम सुजैमान रखा। अब यहोवा ने उसे प्यार किया,<sup>25</sup> और उसने नातान नबी के माध्यम से संदेश भेजा, और उसने उसका नाम यदीद्या रखा, यहोवा के कारण।

<sup>26</sup> अब योआब अम्मोनियों के रब्बा के खिलाफ लड़ा, और शाही नगर को जीत लिया।<sup>27</sup> तब योआब ने दाऊद को संदेश भेजा और कहा, "मैंने रब्बा के खिलाफ युद्ध किया है, मैंने जल नार को भी जीत लिया है।"<sup>28</sup> अब, बाकी लोगों को इकट्ठा कर, नगर के खिलाफ डेरा डाल और उसे जीत ले, अन्यथा मैं नगर को खुद जीत लूँगा, और उसका नाम मेरे नाम पर रखा जाएगा।"<sup>29</sup> इसलिए दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और रब्बा की ओर गया, नगर के खिलाफ लड़ा, और उसे जीत लिया।<sup>30</sup> तब उसने उनके राजा के सिर से मुकुट उतारा; और उसका वजन एक सोने का टैलेंथ था, और उसमें एक कीमती पश्चर था, और उसे दाऊद के सिर पर रखा गया। और उसने नगर की बड़ी मात्रा में लूट बाहर निकाली।<sup>31</sup> उसने वहां के लोगों को भी बाहर निकाला, और उन्हें आरी, तेज लोहे के औजार, और कुल्हाड़ियों के साथ काम पर लाया, और उन्हें ईंट की भट्टियों में भेज दिया। और उसने अम्मोनियों के सभी नगरों के साथ भी ऐसा ही किया। तब दाऊद और सभी लोग यरूशलेम लौट आए।

**13** इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद के पुत्र अबशालोम की एक सुंदर बहन थी जिसका नाम तामार था, और दाऊद के पुत्र अम्मोन ने उससे प्रेम किया।<sup>2</sup> अम्मोन अपनी बहन तामार के कारण इतना परेशान था कि वह बीमार हो गया, क्योंकि वह कुंवरी थी, और अम्मोन को उसके साथ कुछ करना कठिन लगा।<sup>3</sup> लेकिन अम्मोन का एक मित्र था जिसका नाम योना दाब था, जो दाऊद के भाई शिमाह का पुत्र था; और योना दाब बहुत चतुर व्यक्ति था।<sup>4</sup> उसने उससे कहा, "राजा का पुत्र होते हुए भी तुम हर सुबह इतने उदास क्यों हो? क्या तुम मुझे नहीं बताओगे?" तब अम्मोन ने उससे कहा, "मैं अपने भाई अबशालोम की बहन तामार से प्रेम करता हूँ।"<sup>5</sup> तब योना दाब ने उससे कहा, "अपने बिस्तर पर लेट जाओ और बीमार होने का नाटक करो, और जब तुम्हरे पिता तुम्हें देखें आएं, तो उनसे कहो, 'कृपया मेरी बहन तामार को आने दो और मुझे कुछ

खाने के लिए दे, और उसे मेरे सामने खाना तैयार करने दो, ताकि मैं उसे देख सकूँ और उसके हाथ से खा सकूँ।"<sup>6</sup> इसलिए अम्मोन लेट गया और बीमार होने का नाटक किया, और जब राजा उसे देखने आया, तो अम्मोन ने राजा से कहा, "कृपया मेरी बहन तामार को आने दो और मेरे सामने कुछ केक बना दे, ताकि मैं उसके हाथ से खा सकूँ।"<sup>7</sup> तब दाऊद ने तामार के घर संदेश भेजा, "अब अपने भाई अम्मोन के घर जाओ, और उसके लिए खाना तैयार करो।"<sup>8</sup> इसलिए तामार अपने भाई अम्मोन के घर गई, और वह लेटा हुआ था। और उसने आठ लिया, उसे गूंथा, उसके सामने केक बनाए, और केक बेक किए।<sup>9</sup> फिर उसने पैन लिया और उनके सामने परोसा, लेकिन उसने खाने से मना कर दिया। और अम्मोन ने कहा, "सब लोग मुझे छोड़कर चले जाएं।"<sup>10</sup> इसलिए सब लोग उसे छोड़कर चले गए।<sup>11</sup> तब अम्मोन ने तामार से कहा, "खाना शयनकक्ष में ले ले आओ, ताकि मैं तुम्हारे हाथ से खा सकूँ।" इसलिए तामार ने केक लिए जो उसने बनाए थे और उन्हें शयनकक्ष में अपने भाई अम्मोन के पास ले गई।<sup>12</sup> जब उसने उन्हें खाने के लिए उसके पास लाया, तो उसने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "आओ, मेरी बहन, मेरे साथ सोओ!"<sup>13</sup> लेकिन उसने उत्तर दिया, "नहीं, मेरे भाई! मुझे अपमानित मत करो, क्योंकि इसाएल में ऐसा काम नहीं किया जाता; यह अपमानजनक पाप मत करो।"<sup>14</sup> मेरे लिए, मैं अपनी शर्म को कहां छुपाऊँ? और तुम्हारे लिए, तुम इसाएल के मूर्खों में से एक हो जाओगे। अब, कृपया राजा से बात करो, क्योंकि वह मुझे तुमसे नहीं रोकेगा।<sup>15</sup> हालांकि, उसने उसकी बात नहीं सुनी; क्योंकि वह उससे अधिक शक्तिशाली था, उसने उसे अपमानित किया और उसके साथ सोया।<sup>16</sup> तब अम्मोन उससे बहुत धून करने लगा; क्योंकि जिस धून से उसने उससे धून की, वह उस प्रेम से अधिक थी जिससे उसने उससे प्रेम किया था। इसलिए अम्मोन ने उससे कहा, "उठो, यहां से चर्ची जाओ!"<sup>17</sup> लेकिन उसने उससे कहा, "नहीं, क्योंकि मुझे यहां से भेजने का यह अन्याय उस अन्याय से बड़ा है जो तुमने मुझसे किया है!" फिर भी उसने उसकी बात नहीं सुनी।<sup>18</sup> तब उसने अपने सेवक को बुलाया जो उसकी सेवा करता था और कहा, "अब इस स्त्री को मेरे सामने से बाहर निकालो, और उसके पीछे का दरवाजा बंद कर दो!"<sup>19</sup> अब वह लंबी आस्तीन का वस्त्र पहने हुए थी, क्योंकि राजा की कुंवरी पुत्रियाँ पहले इसी तरह का वस्त्र पहननी थीं। इसलिए उसके सेवक ने उसे बाहर निकाला और उसके पीछे का दरवाजा बंद कर दिया।<sup>20</sup> तब तामार ने अपने सिर पर राख डाला ली और जो लंबी आस्तीन का वस्त्र उस पर था उसे फाड़ डाला, और उसने अपने सिर पर हाथ रखा और जोर-जोर से रोती

## 2 शमूएल

हुई चली गई।<sup>20</sup> और उसके भाई अबशालोम ने उससे कहा, “क्या तुम्हारा भाई अम्मोन तुम्हारे साथ था? लेकिन अब, चूप रहो, मेरी बहन; वह तुम्हारा भाई है। इस मामले को दिल पर मत लो।” इसलिए तामार अपने भाई अबशालोम के घर में उदास रहकर रहने लगी।

<sup>21</sup> अब जब राजा दाऊद ने इन सभी बातों के बारे में सुना, तो वह बहुत क्रोधित हुआ।<sup>22</sup> लेकिन अबशालोम ने अम्मोन से न तो अच्छी बात की और न ही बुरी; क्योंकि अबशालोम अम्मोन से धृणा करता था क्योंकि उसने उसकी बहन तामार का अपमान किया था।

<sup>23</sup> अब यह दो पूरे वर्षों के बाद हुआ, कि अबशालोम के बाल-हाजर में, जो ऐप्रैल के पास है, उन कतरने वाले थे, और अबशालोम ने सभी राजा के पुत्रों को आमंत्रित किया।<sup>24</sup> तब अबशालोम राजा के पास आया और कहा, “अब देखो, तुम्हारे सेवक के पास उन कतरने वाले हैं; कृपया राजा और उसके सेवक तुम्हारे सेवक के साथ चलें।”<sup>25</sup> लेकिन राजा ने अबशालोम से कहा, “नहीं, मेरे पुत्र, हम सब नहीं जाएंगे, ताकि हम तुम्हारे लिए बोझ न बनें।” हालांकि उसने उसे मनाने की कोशिश की, वह नहीं गया; लेकिन उसने उसे आशीर्वाद दिया।<sup>26</sup> तब अबशालोम ने कहा, “यदि नहीं, तो कृपया मेरे भाई अम्मोन को हमारे साथ जाने दो।” और राजा ने उससे कहा, “वह तुम्हारे साथ क्यों जाए?”<sup>27</sup> फिर भी अबशालोम ने उसे मनाया, इसलिए उसने अम्मोन और सभी राजा के पुत्रों को उसके साथ जाने दिया।<sup>28</sup> तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश दिया, “देखो, जब अम्मोन का दिल शराब से प्रसान हो, और जब मैं तुमसे कहूँ, ‘अम्मोन को मारो,’ तब उसे मार डालो। डरो मत; क्या मैंने खुद तुम्हें आदेश नहीं दिया है? साहसी बनो और वीरता दिखाओ।”<sup>29</sup> और अबशालोम के सेवकों ने अम्मोन के साथ वैसा ही किया जैसा अबशालोम ने आदेश दिया था। तब सभी राजा के पुत्र उठे और प्रत्येक ने अपने खच्चर पर सवार होकर भाग गए।

<sup>30</sup> अब जब वे रास्ते में थे, तब दाऊद के पास यह समाचार आया, “अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को मारा है, और उनमें से एक भी नहीं बचा है!”<sup>31</sup> तब राजा उठ खड़ा हुआ, अपने वस्त्र फाड़ दिए, और भूमि पर लेट गया; और उसके सभी सेवक फटे वस्त्रों के साथ खड़े थे।<sup>32</sup> लेकिन योना दाब, शिमाह का पुत्र, दाऊद के भाई ने उत्तर दिया, “मेरे प्रभु को यह न समझना चाहिए कि उन्होंने सभी युवकों, राजा के पुत्रों को मार डाला है; क्योंकि केवल अम्मोन मरा है, क्योंकि अबशालोम ने यह

योजना बनाई थी जिस दिन से उसने उसकी बहन तामार का अपमान किया था।<sup>33</sup> अब, मेरे प्रभु राजा को इस समाचार को दिल पर नहीं लेना चाहिए, अर्थात्, सभी राजा के पुत्र मरे गए हैं,” क्योंकि केवल अम्मोन मरा है।”<sup>34</sup> अब अबशालोम भाग गया था। और जो युक्त पहरे पर था उसने अपनी आंखें उठाई और देखो, बहुत से लोग पहाड़ के किनारे से उसके पीछे की सड़क से आ रहे थे।<sup>35</sup> योना दाब ने राजा से कहा, “देखो, राजा के पुत्र आ गए हैं; तुम्हारे सेवक के वचन के अनुसार, ऐसा ही बुआ है।”<sup>36</sup> जैसे ही उसने बोलना समाप्त किया, देखो, राजा के पुत्र आए और अपनी आवाज उठाई और रोने लगे; और राजा और उसकी सभी सेवक भी बहुत जोर से रोए।

<sup>37</sup> अब अबशालोम भाग गया और गेशूर के राजा अम्मीहूद के पुत्र तल्मै के पास गया। और दाऊद अपने पुत्र के लिए हर दिन शोक करता रहा।<sup>38</sup> इसलिए अबशालोम भाग गया और गेशूर चला गया, और वह वहां तीन साल तक रहा।<sup>39</sup> और राजा दाऊद का मन अबशालोम के बारे में सांत्वना पा चुका था, क्योंकि वह मर चुका था।

**14** अब योआब, जो सरूप्याह का पुत्र था, समझ गया कि राजा का मन अबशालोम के बारे में चिंतित था।<sup>2</sup> इसलिए योआब ने तकोआ में भेजा और वहां से एक बुद्धिमान स्त्री को लाया। उसने उससे कहा, “कृपया शोक में होने का नाटक करो, और शोक के वस्त्र पहन लो। अपने आप को तेल से अभिषेक मत करो, बल्कि एक ऐसी स्त्री की तरह व्यवहार करो जो लंबे समय से मृतकों के लिए शोक कर रही है।”<sup>3</sup> फिर राजा के पास जाओ और उससे इस प्रकार बात करो।” इसलिए योआब ने उसके मुंह में शब्द डाले।<sup>4</sup> जब तकोआ की स्त्री ने राजा से बात की, तो वह अपने चेहरे के बल भूमि पर गिर पड़ी, और समान किया, कहती हुई, “मेरी सहायता करो, हे राजा।”<sup>5</sup> राजा ने उससे कहा, “तुझे क्या कष्ट है?” और उसने उत्तर दिया, “सच में ऐक विधाह हूँ, क्योंकि मेरे पति की मृत्यु हो गई है।”<sup>6</sup> अब आपकी दासी के दो पुत्र थे, परंतु वे दोनों खेत में झाङड़ पड़े, और उन्हें अलग करने वाला काई नहीं था। एक ने दूसरे को मारा और उसे मार डाला।<sup>7</sup> अब पूरा परिवार आपकी दासी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है, कहता है, ‘उसे लाओ जिसने अपने भाई को मारा, ताकि हम उसे उसके भाई को मारने के लिए मृत्यु दंड दें।’ वे वारिस को भी नष्ट कर देंगे, और इस प्रकार वे मेरी जलती हुई कोयला को बुझा देंगे जो बची है, मेरे पति के लिए न तो

## २ शमूएल

नाम और न ही अवशेष पृथ्वी पर छोड़ेंगे।”<sup>८</sup> तब राजा ने स्त्री से कहा, “अपने घर जाओ, और मैं तुम्हारे विषय में आदेश दूंगा।”<sup>९</sup> तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, “मेरे स्वामी राजा, दोष मुझ पर और मेरे पिता के घर पर हो, और राजा और उसका सिंहासन निर्दोष रहे।”<sup>१०</sup> राजा ने कहा, “यदि कोई तुझसे कुछ कहे, तो उसे मेरे पास लाओ, और वह तुझे फिर से नहीं छुएगा।”<sup>११</sup> तब उसने कहा, “कृपया राजा यहीवा अपने परमेश्वर को याद करे, कि रक्त का प्रतिशोधी और नष्ट न करे, ताकि वे मेरे पुत्र को समाप्त न करें।” और उसने कहा, “जैसे यहीवा जीवित है, तेरे पुत्र के सिर का एक बाल भी भूमि पर नहीं गिरिगा।”<sup>१२</sup> तब स्त्री ने कहा, “कृपया आपकी दासी को मेरे स्वामी राजा से एक शब्द कहने दें।” और उसने कहा, “बोला।”<sup>१३</sup> इसलिए स्त्री ने कहा, “फिर आपने परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध ऐसी योजना क्यों बनाई है? क्योंकि इस शब्द को बोलते हुए, राजा एक दोषी के समान है, इसमें कि राजा अपने निर्वासित को वापस नहीं लाता।”<sup>१४</sup> क्योंकि हम निश्चित रूप से मरेंगे, और भूमि पर गिरे हुए पानी के समान हैं, जिसे फिर से इकट्ठा नहीं किया जा सकता। फिर भी परमेश्वर जीवन नहीं लेता, बल्कि उपाय करता है ताकि निर्वासित उसके पास से बाहर न रहे।<sup>१५</sup> अब मैं इस मामले को मेरे स्वामी राजा से कहने आई हूं, क्योंकि लोगों ने मुझे डराया है। इसलिए आपकी दासी ने कहा, “मुझे राजा से बात करने दें; शायद राजा अपनी दासी की प्रार्थना पर कार्य करेगा।”<sup>१६</sup> क्योंकि राजा सुनेगा और अपनी दासी को उस व्यक्ति के हाथ से छुड़ाणा जो मुझे और मेरे पुत्र को परमेश्वर की विरासत से कटाने की कोशिश करता है।<sup>१७</sup> तब आपकी दासी ने सोचा, “मेरे स्वामी राजा का शब्द विश्राम लाएगा, क्योंकि मेरे स्वामी राजा परमेश्वर के दूत के समान है, अच्छे और बुरे को समझाने के लिए। और यहीवा आपका परमेश्वर आपके साथ हो।”<sup>१८</sup>

१८ तब राजा ने स्त्री को उत्तर दिया और कहा, “कृपया मुझसे कुछ भी न छुपाओ जो मैं तुमसे पूछने जा रहा हूं।” और स्त्री ने कहा, “मेरे स्वामी राजा भोले।”<sup>१९</sup> इसलिए राजा ने कहा, “क्या इस सब में योआब का हाथ तुम्हारे साथ है?” और स्त्री ने उत्तर दिया, “जैसे आपकी आत्मा जीवित है, मेरे स्वामी राजा, कोई भी दाएं या बाएं नहीं मुड़ सकता जो कुछ मेरे स्वामी राजा ने कहा है। यह वास्तव में आपके सेवक योआब थे जिन्होंने मुझे आदेश दिया, और यह वही थे जिन्होंने आपकी दासी के मुंह में ये सभी शब्द डाले।”<sup>२०</sup> आपके सेवक योआब ने इस स्थिति में यह परिवर्तन लाने के लिए यह किया है। लेकिन मेरे स्वामी बुद्धिमान हैं, परमेश्वर के दूत की बुद्धि के समान, यह जानने के लिए कि पृथ्वी में क्या है।”

<sup>२१</sup> तब राजा ने योआब से कहा, “देखो अब, मैं यह काम करूँगा। इसलिए जाओ, मुग्ध व्यक्ति अबशालोम को वापस लाओ।”<sup>२२</sup> योआब अपने चेहरे के बल भूमि पर गिर पड़ा, और राजा को आशीर्वाद दिया। तब योआब ने कहा, “आज आपके सेवक को पता चला कि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, मेरे स्वामी राजा, क्योंकि राजा ने अपने सेवक की प्रार्थना पूरी की है।”<sup>२३</sup> इसलिए योआब उठा और गेशर गया, और अबशालोम को यरूशलेम लाया।<sup>२४</sup> हालांकि, राजा ने कहा, “उसे अपने घर की ओर मुड़ने दो, और मेरा चेहरा न देखें।” इसलिए अबशालोम अपने घर की ओर मुड़ गया और राजा का चेहरा नहीं देखा।

<sup>२५</sup> अब पूरे इसाएल में अबशालोम के समान कोई नहीं था जो उसके रूप के लिए प्रशंसा किया गया हो; उसके पैर के तलवे से उसके सिर के मुकुट तक, उसमें कोई दोष नहीं था।<sup>२६</sup> और जब वह अपने सिर के बाल काटता था—क्योंकि यह हर साल के अंत में होता था जब वह इसे काटता था, क्योंकि यह उस पर भारी होता था, और जब वह इसे काटता था, तो वह अपने सिर के बालों का वजन राजा के माप के अनुसार दो सौ शेकेल करता था।<sup>२७</sup> अबशालोम के तीन पुत्र थीं, जिसका नाम तामार था। वह एक सुंदर रूप की स्त्री थी।

<sup>२८</sup> अब अबशालोम यरूशलेम में दो पूरे वर्ष रहा, और राजा का चेहरा नहीं देखा।<sup>२९</sup> तब अबशालोम ने योआब को राजा के पास भेजने के लिए बुलाया, लेकिन वह उसके पास नहीं आया। इसलिए उसने फिर से दूसरी बार भेजा, लेकिन वह फिर भी नहीं आया।<sup>३०</sup> इसलिए उसने अपने सेवकों से कहा, “देखो, योआब का खेत मेरे पास है, और उसके पास जाइं; जो आओ और उसे आग लगा दो।” इसलिए अबशालोम के सेवकों ने खेत में आग लगा दी।<sup>३१</sup> तब योआब उठा और अबशालोम के घर आया और उससे कहा, “तुम्हारे सेवकों ने मेरे खेत में आग क्यों लगाई?”<sup>३२</sup> अबशालोम ने योआब को उत्तर दिया, “देखो, मैंने तुम्हें भेजा, कहता हुआ, ‘यहां आओ, ताकि मैं तुम्हें राजा के पास भेज सकूँ, यह कहने के लिए, मैं गेशर से क्यों आया? मेरे लिए वहां रहना बेहतर होता।’ अब इसलिए, मुझे राजा का चेहरा देखने दो; और यदि मुझमें कोई दोष है, तो वह मुझे मृत्यु दंड दे।”<sup>३३</sup> इसलिए योआब राजा के पास गया और उसे बताया। तब उसने अबशालोम को बुलाया, जो राजा के पास आया और राजा के सामने अपने चेहरे के बल भूमि पर गिर पड़ा, और राजा ने अबशालोम को चूमा।

## 2 शमूएल

**15** इसके बाद, अबशालोम ने अपने लिए एक रथ और घोड़े, और पचास आदमी जो उसके आगे दौड़ें की व्यवस्था की।<sup>2</sup> और अबशालोम सुबह जल्दी उठकर फाटक के रास्ते के पास खड़ा हो जाता। जब भी कोई व्यक्ति राजा के सामने न्याय के लिए मुकदमा लाता, अबशालोम उसे बुलाकर कहता, "तुम किस नगर से हो?" और वह कहता, "तुम्हारा सेवक इसाएल के एक गोत्र से है।"<sup>3</sup> तब अबशालोम उससे कहता, "देखो, तुम्हारे दावे अच्छे और सही हैं, परन्तु तुम्हें सुनने के लिए राजा द्वारा कोई नियुक्त नहीं है।"<sup>4</sup> और अबशालोम कहता, "अह, यदि मुझे देश में न्यायाधीश नियुक्त किया जाता, तो हर व्यक्ति जो एक मामला या कारण लेकर आता, वह मेरे पास आता, और मैं उसे न्याय देता।"<sup>5</sup> और जब भी कोई व्यक्ति उसके सामने झुकने के लिए आता, वह अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता और उसे चूमता।<sup>6</sup> अबशालोम ने यह सब इसाएल के उन सभी लोगों के साथ किया जो न्याय के लिए राजा के पास आते थे; इस प्रकार अबशालोम ने इसाएल के लोगों के दिल चुरा लिए।

<sup>7</sup> अब चार वर्षों के अंत में, अबशालोम ने राजा से कहा, "कृपया मुझे जाने दें और अपनी मन्त्रत पूरी करने दें जो मैंने हेब्रोन में यहोवा के लिए की थी।"<sup>8</sup> क्योंकि जब मैं अराम के गेशर में रह रहा था, तब तुम्हारे सेवक ने मन्त्रत की थी, यदि यहोवा वास्तव में मुझे यरूशलेम वापस लाएगा, तो मैं यहोवा की सेवा करूँगा।"<sup>9</sup> और राजा ने उससे कहा, "शांति से जाओ।"<sup>10</sup> इसलिए वह उठकर हेब्रोन चला गया।<sup>11</sup> परन्तु अबशालोम ने इसाएल के सभी गोत्रों में गुपत चर भेजे, यह कहते हुए, "जैसे ही तुम तुरही की आवाज सुनो, तब तुम कहो, 'अबशालोम हेब्रोन में राजा है।'"<sup>12</sup> और दो सौ आदमी अबशालोम के साथ यरूशलेम से गए, जिन्हें अमंत्रित किया गया था; वे निर्दिष्टा में गए, कुछ भी नहीं जानते हुए।<sup>13</sup> और जब अबशालोम बलिदान चढ़ा रहा था, उसने गिलोनी अहीतोपेल को, जो दाऊद का सलाहकार था, उसकी नगर गिलोन हसे बुलाया। और बड़वंत्र मजबूत हो गया, और अबशालोम के साथ लोग बढ़े गए।

<sup>13</sup> तब एक संदेशवाहक दाऊद के पास आया, यह कहते हुए, "इसाएल के लोगों के दिल अबशालोम के साथ हैं।"<sup>14</sup> इसलिए दाऊद ने अपने सभी सेवकों से कहा यो यरूशलेम में उसके साथ थे, "उठो, चलो भग चलो, नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से नहीं बच पाएगा। जल्दी चलो, कहीं वह अचानक हम पर आक्रमण न कर दे और हम पर विपत्ति न लाए, और तलवार की धार से नगर को न मारो।"<sup>15</sup> तब राजा के

सेवकों ने उससे कहा, "देखो, तुम्हारे सेवक तैयार हैं जो कुछ भी मेरे प्रभु राजा चुनते हैं।"<sup>16</sup> इसलिए राजा बाहर निकला, और उसके साथ उसका पूरा परिवार भी। परन्तु राजा ने दस उपपत्रियों को घर की देखभाल के लिए छोड़ दिया।<sup>17</sup> और राजा बाहर निकला, और उसके साथ सभी लोग, और वे अतिम घर पर रुके।<sup>18</sup> अब उसके सभी सेवक उसके पास से गुजर गए, और सभी केरेथी, सभी पेतेथी, और सभी गिरी—छह सौ आदमी जो गध से उसके साथ आए थे—राजा के सामने से गुजरे।<sup>19</sup> तब राजा ने गिरी इत्तै से कहा, "तुम भी हमारे साथ क्यों जाते हो? लौट जाओ और राजा के साथ रहो, क्योंकि तुम एक विदेशी हो और अपने स्थान से निर्वासित हो।"<sup>20</sup> तुम केवल कल आए हो, और क्या मैं आज तुम्हें हमारे साथ भटकने के लिए कहूँ, क्योंकि मैं नहीं जानता कि मैं कहां जा रहा हूँ? लौट जाओ, और अपने भाइयों को वापस ले जाओ। दया और सत्य तुम्हारे साथ हो।"<sup>21</sup> परन्तु इत्तै ने राजा को उत्तर दिया और कहा, "जैसे यहोवा जीवित है, और जैसे मेरे प्रभु राजा जीवित हैं, निश्चित रूप से जहां भी मेरे प्रभु राजा होंगे, चाहे मृत्यु के लिए हो या जीवन के लिए, वहां तुम्हारा सेवक होगा।"<sup>22</sup> इसलिए दाऊद ने इत्तै से कहा, "फिर चलो, आगे बढ़ो।"<sup>23</sup> इसलिए गिरी इत्तै अपने सभी लोगों और छोटे बच्चों के साथ जो उसके साथ थे, आगे बढ़ा।

<sup>23</sup> सभी भूमि जोर से रोई जब सभी लोग गुजर गए। और राजा किंद्रोन की धारा पार कर गया, और सभी लोग जंगल के रास्ते की ओर पार कर गए।<sup>24</sup> देखो, सादोक भी आया, और सभी लेवी उसके साथ, जो परमेश्वर की वाचा का सन्दूक ले जा रहे थे। उहोनें परमेश्वर के सन्दूक को नीचे रखा, और अवियाधार ऊपर आया जब तक कि सभी लोग नगर से बाहर निकलने में समाप्त नहीं हो गए।<sup>25</sup> तब राजा ने सादोक से कहा, "परमेश्वर के सन्दूक को नगर में वापस ले जाओ। यदि मैं यहोवा की वृष्टि में अनुग्रह पाऊँ, तो वह मुझे वापस लाएगा और मृत्यु इसे और उसके निवास स्थान को देखने देगा।"<sup>26</sup> परन्तु यदि वह ऐसा कहे, "मुझे तुम्हें कोई प्रसन्नता नहीं है," देखो, मैं यहां हूँ, वह मेरे साथ जो अच्छे लोग वही करे।<sup>27</sup> राजा ने सादोक याजक से भी कहा, "क्या तुम एक वृष्टि नहीं हो? शांति से नगर में लौट जाओ, और तुम्हारे दो पुत्र तुम्हारे साथ हों, अहीमाज तुम्हारा पुत्र और अवियाधार का पुत्र योनातान।"<sup>28</sup> देखो, मैं जंगल के घाटों पर प्रतीक्षा करूँगा जब तक कि तुम्हारे द्वारा मुझे सूचित करने के लिए शब्द न आए।<sup>29</sup> इसलिए सादोक और अवियाधार परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम में वापस ले गए, और वहां रहे।

## २ शमूएल

<sup>३०</sup> और दाऊद जैतून के पर्वत की चढ़ाई पर गया, रोता हुआ जैसे वह गया। उसका सिर ढका हुआ था और वह नंगे पैर चला। और उसके साथ जो सभी लोग थे, उन्होंने अपने सिर ढक लिए और ऊपर गए, रोते हुए जैसे वे गए। <sup>३१</sup> तब किसी ने दाऊद से कहा, “अहीतोपेल अबशालोम के साथ षड्यंत्रकारियों में है।” और दाऊद ने कहा, “हे यहोवा, कृपया अहीतोपेल की सलाह को मूर्खता में बदल दो।” <sup>३२</sup> अब जब दाऊद उस शिखर पर आया जहां परमेश्वर की पूजा की जाती थी, देखो, हूँशी अर्कों उससे मिलने आया, उसकी चोला फटी हुई और सिर पर धूल थी। <sup>३३</sup> और दाऊद ने उससे कहा, “यदि तुम मेरे साथ पार करोगे, तो तुम मेरे लिए बोझ बोगे।” <sup>३४</sup> परन्तु यदि तुम नगर में लौट जाओ और अबशालोम से कहो, मैं तुम्हारा सेवक रहूँगा, हे राजा; जैसे मैं पहले तुम्हारे पिता का सेवक रहा हूँ, वैसे ही अब मैं तुम्हारा सेवक रहूँगा।” तब तुम मेरे लिए अहीतोपेल की सलाह को विफल कर सकते हो। <sup>३५</sup> क्या सादोक और अबियाधार याजक वहां तुम्हारे साथ नहीं होंगे? इसलिए जो कुछ भी तुम राजा के घर से सुनोगे, उसे सादोक और अबियाधार याजकों को बताओ। <sup>३६</sup> देखो, उनके दो पुत्र वहां उनके साथ हैं, अहीमाज़, सादोक का पुत्र, और योनातान, अबियाधार का पुत्र; और उनके द्वारा तुम मुझे जो कुछ भी सुनोगे भेजोगे।” <sup>३७</sup> इसलिए हूँशी, दाऊद का मित्र, नगर में आया जैसे ही अबशालोम यस्तश्लेम में प्रवेश कर रहा था।

**१६** जब दाऊद थोड़ी दूर शिखर से आगे बढ़ गया, तो मपीबोशेत का सेवक सीबा उससे मिला, जिसके पास दो काठी कसे हुए गधे थे, और उन पर दो सी रोटियाँ, सौ गुच्छे किशमिश, सौ ग्रीष्मकालीन फल, और एक मटकी दाखरस थी। <sup>१</sup> राजा ने सीबा से कहा, “तुम इनसे क्या करना चाहते हो?” सीबा ने कहा, “गधे राजा के परिवार के लिए सवारी करने के लिए हैं, रोटियाँ और ग्रीष्मकालीन फल जवानों के खाने के लिए हैं, और दाखरस जंगल में थके हुए लोगों के पीने के लिए हैं।” <sup>२</sup> तब राजा ने कहा, “और तुम्हारे स्वामी का पुत्र कहाँ है?” सीबा ने राजा से कहा, “देखो, वह यस्तश्लेम में ठराहा है, क्योंकि उसने कहा, ‘आज इसाएल का धराना मेरे पिता का राज्य मुझे लौटाएगा।’” <sup>३</sup> तब राजा ने सीबा से कहा, “देखो, जो कुछ मपीबोशेत का था, वह अब तुम्हारा है।” और सीबा ने कहा, “मैं आपके सामने झुकता हूँ, मेरे प्रभु राजा की दृष्टि में कृपा पाऊँ।”

<sup>५</sup> जब राजा दाऊद बहूरीम पहुँचा, तो देखो, वहाँ से शाऊल के धराने का एक व्यक्ति निकला, जिसका नाम शिमी था, जो गेरा का पुत्र था; वह लगातार शाप देते हुए

आ रहा था। <sup>६</sup> उसने दाऊद और राजा दाऊद के सभी सेवकों पर पथर फेंके, हालाँकि सभी लोग और सभी वीर उसके दाएँ और बाएँ थे। <sup>७</sup> तब शिमी ने शाप देते हुए कहा, “निकल जा, निकल जा, तू खून बहाने वाला व्यक्ति, तू निकमा आदमी! <sup>८</sup> यहोवा ने तुझे पर शाऊल के धराने का सारा खून लौटाया है, जिसकी जगह तूने राज्य किया है। यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ में दे दिया है। देख, तू अपनी ही बुराई में फँस गया है, क्योंकि तू खून बहाने वाला व्यक्ति है।” <sup>९</sup> तब अबीशै, जो सरुखाह का पुत्र था, राजा से कहने लगा, “यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों शाप दे रहा है? मुझे अभी जाकर उसका सिर काट लेने दे।” <sup>१०</sup> पर राजा ने कहा, “मुझे तुमसे क्या लेना-देना, सरुखाह के पुत्रों? यदि वह शाप देता है, और यदि यहोवा ने उससे कहा है, ‘दाऊद को शाप दे,’ तो कौन कहेगा, ‘तूने ऐसा क्यों किया?’” <sup>११</sup> तब दाऊद ने अबीशै और अपने सभी सेवकों से कहा, “देखो, मेरा अपना पुत्र, जो मेरे शरीर से उत्पन्न हुआ है, मेरी जन लेना चाहता है; तो अब यह बियामिनी कितना अधिक? उसे अकेला छोड़ दो और उसे शाप देने दो, क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है।” <sup>१२</sup> शायद यहोवा मेरी दुर्दशा पर ध्यान देगा और इस दिन उसके शाप के बदले मुझे भलाई लौटाएगा।” <sup>१३</sup> इसलिए दाऊद और उसके लोग मार्फ़ पर आगे बढ़ते रहे, और शिमी उसके सामने की पहाड़ी पर चलता रहा, शाप देते हुए, पथर फेंकते हुए, और धूल उड़ाते हुए। <sup>१४</sup> और राजा और उसके साथ के सभी लोग थके हुए पहुँचे, और उसने वहाँ अपनी ताजगी पाई।

<sup>१५</sup> अब अबशालोम और सभी लोग, इसाएल के पुरुष, यस्तश्लेम आए, और अहितोफेल उसके साथ था। <sup>१६</sup> तब हूँशी, जो अर्की था, दाऊद का मित्र, अबशालोम के पास आया और उससे कहा, “राजा जीवित रहे! राजा जीवित रहे!” <sup>१७</sup> पर अबशालोम ने हूँशी से कहा, “क्या यह तुम्हारी अपने मित्र के प्रति वफादारी है? तुम अपने मित्र के साथ क्यों नहीं गए?” <sup>१८</sup> तब हूँशी ने अबशालोम से कहा, “नहीं! क्योंकि जिसे यहोवा, ये लोग, और इसाएल के सभी पुरुष चुनते हैं, मैं उसका रहूँगा, और उसके साथ रहूँगा।” <sup>१९</sup> इसके अलावा, मुझे किसकी सेवा करनी चाहिए? क्या यह उसके पुत्र की नहीं होनी चाहिए? जैसे मैंने तुम्हारे पिता की सेवा की, वैसे ही मैं तुम्हारी सेवा करूँगा।”

<sup>२०</sup> तब अबशालोम ने अहितोफेल से कहा, “अपनी सलाह दो। हमें क्या करना चाहिए?” <sup>२१</sup> और अहितोफेल ने अबशालोम से कहा, “अपने पिता की रखेलियों के पास जाओ जिन्हें उसने घर की देखभाल के लिए छोड़ा

## 2 शमूएल

है। तब सारा इसाएल सुनेगा कि तुमने अपने पिता को अप्रिय बना दिया है। तब जो तुम्हरे साथ हैं उनके हाथ मजबूत होंगे।<sup>1</sup> <sup>22</sup> इसलिए उन्होंने अबशालोम के लिए छत पर एक तंबू खड़ा किया, और अबशालोम अपने पिता की रखेलियों के पास सारे इसाएल के सामने गया। <sup>23</sup> अब अहितोफेल की जो सलाह उसने उन दिनों में दी, वह ऐसी थी जैसे कोई परमेश्वर के चरन से पूछता हो। इस प्रकार अहितोफेल की सारी सलाह थी, चाहे वह दाऊद के साथ हो या अबशालोम के साथ।

**17** तब अहितोपेल ने अबशालोम से कहा, “मुझे बारह हजार आदमी चुनने दो, और मैं उठकर आज रात दाऊद का पीछा करूँगा।<sup>2</sup> मैं उस पर तब आक्रमण करूँगा जब वह थका हुआ और कमज़ोर होगा, और मैं उसे डराऊँगा ताकि उसके साथ के सभी लोग भाग जाएं। तब मैं केवल राजा को मार डालूँगा,<sup>3</sup> और मैं सभी लोगों को तुम्हरे पास वापस ले आऊँगा। सभी की वापसी उस व्यक्ति पर निर्भर करती है जैसे तुम खोज रहे हो; तब सभी लोग शांति में होगे।”<sup>4</sup> और यह सलाह अबशालोम और इसाएल के सभी पुरनियों की वृष्टि में सही लगी।

<sup>5</sup> परन्तु अबशालोम ने कहा, “अर्का हूँश को भी बुलाओ, और हम सुनें कि वह क्या कहता है।”<sup>6</sup> जब हूँश अबशालोम के पास आया, तो अबशालोम ने उससे कहा, “अहितोपेल ने इस प्रकार कहता है। क्या हम उसकी बात मानें? यदि नहीं, तो बोलो।”<sup>7</sup> तब हूँश ने अबशालोम से कहा, “इस बार अहितोपेल की दी गई सलाह अच्छी नहीं है।”<sup>8</sup> हूँश ने आगे कहा, “तुम अपने पिता और उसके आदमियों को जानते हो, कि वे शक्तिशाली हैं, और आत्मा में कटू हैं जैसे कि मैदान में अपने बच्चों से वंचित भालू। इसके अलावा, तुम्हरे पिता युद्ध के विरोधक हैं, वह रात को लोगों के साथ नहीं बिताएंगे।”<sup>9</sup> देखो, वह अभी किसी गढ़े में या किसी अन्य स्थान पर छिपा हुआ है। और जब उनमें से कुछ पहले हमले में गिरेंगे, तो जो कोई इसे सुनेगा, वह कहेगा, ‘अबशालोम के अनुयायियों में हयाकांड हुआ है।’<sup>10</sup> तब वह भी जो बहादुर है और जिसके पास शेर का हृदय है, पूरी तरह से पिघल जाएगा, क्योंकि सभी इसाएल जानते हैं कि तुम्हरे पिता एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं और जो उसके साथ हैं वे वीर हैं।”<sup>11</sup> “परन्तु मैं सलाह देता हूँ कि सभी इसाएल तुम्हरे पास इकट्ठा हों, दान से लेकर बेशबा तक, समृद्ध के किनारे की रेत के समान बहुतायत में, और तुम स्वयं युद्ध में जाओ।”<sup>12</sup> तब हम उस पर आक्रमण करेंगे जहाँ भी वह पाया जाएगा, और हम उस पर ऐसे गिरेंगे जैसे ओस भूमि पर गिरती

है। उस और उसके साथ के सभी आदमियों में से एक भी नहीं बचेगा।<sup>13</sup> यदि वह किसी नगर में चला जाता है, तो सभी इसाएल उस नगर में रस्सियाँ लाएंगे, और हम उसे घाटी में खींच लेंगे, ताकि वहाँ एक कंकड़ भी न मिले।”<sup>14</sup> तब अबशालोम और इसाएल के सभी लोगों ने कहा, “अर्का हूँश की सलाह अहितोपेल की सलाह से बेहतर है।” क्योंकि यहोवा ने अहितोपेल की अच्छी सलाह को विफल करने का अदिश दिया था, ताकि यहोवा अबशालोम पर विपत्ति लाए।

<sup>15</sup> तब हूँश ने सादोक और अबियाथर याजकों से कहा, “अहितोपेल ने अबशालोम और इसाएल के पुरनियों को इस प्रकार सलाह दी, परन्तु मैंने उन्हें भिन्न सलाह दी।”<sup>16</sup> अब इसलिए, शीघ्रता से भेजो और दाऊद से कहो, जंगल के घाटों पर रात मत बिताओ, बल्कि किसी भी तरह से पार कर जाओ, अन्यथा राजा और उसके साथ के सभी लोग निगल लिए जाएंगे।”<sup>17</sup> अब योनातान और अहिमाज़ एन-रोगेल में ठहरे हुए थे, और एक दासी जाकर उन्हें बताती थी, और वे जाकर राजा दाऊद को सूचित करते थे, क्योंकि वे शहर में प्रवेश करते हुए देखे जाने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।<sup>18</sup> परन्तु एक जवान ने उन्हें देखा और अबशालोम को बताया। इसलिए वे दोनों जल्दी से गए और बहूरीम में एक आदमी के घर पहुँचे, जिसके आंगन में एक कुआँ था, और वे उसमें उत्तर गए।<sup>19</sup> महिला ने एक आवरण लिया और कुआँ के मुँह पर फैला दिया और उस पर अनाज बिखेर दिया, इसलिए कुछ भी जात नहीं हुआ।<sup>20</sup> तब अबशालोम के सेवक उस महिला के घर आए और कहा, “अहिमाज़ और योनातान कहाँ हैं?” महिला ने उनसे कहा, “वे पानी की धारा पार कर गए हैं।” और उन्होंने खोजा और उन्हें नहीं पाया, और यरूशलेम लौट आए।<sup>21</sup> उनके जाने के बाद, लोग कुँसे से बाहर आए, और राजा दाऊद को बताया। उन्होंने दाऊद से कहा, “उठो और जल्दी से पानी पार करो, क्योंकि अहितोपेल ने तुम्हरे विरुद्ध इस प्रकार सलाह दी है।”<sup>22</sup> इसलिए दाऊद और उसके साथ के सभी लोग उठे और यरदन पार कर गए। सूर्योदय तक, एक भी व्यक्ति नहीं बचा था जिसने यरदन पार न किया हो।

<sup>23</sup> अब जब अहितोपेल ने देखा कि उसकी सलाह का पालन नहीं किया गया, तो उसने अपने गधे पर काठी करकी और उठकर अपने घर, अपने नगर को गया। उसने अपने घर को व्यवस्थित किया और फांसी लगा ली। इस प्रकार उसकी मृत्यु हो गई और उसे उसके पिता की कब्र में दफनाया गया।

## 2 शमूएल

<sup>24</sup> तब दाऊद महनैम आया। और अबशालोम यरदन पार कर गया, वह और इस्साएल के सभी लोग उसके साथ। <sup>25</sup> और अबशालोम ने योआब के स्थान पर सेना पर अमासा को नियुक्त किया। अब अमासा इतरा नामक इस्साएली का पुत्र था, जो नाहाश की बेटी अबीगैल के पास गया था, जो योआब की माँ सरूयाह की बहन थी। <sup>26</sup> और इस्साएल और अबशालोम गिलाद देश में डेरा डाले हुए थे।

<sup>27</sup> अब जब दाऊद महनैम पहुँचा, तो नाहाश का पुत्र शोबी, जो अम्मोनियों के रब्बा का था, लो-दबार के अम्मीएल का पुत्र माकीर, और रोगलीम का गिलादी बारजिल्लै, <sup>28</sup> बिस्तर, बेसिन, मिट्टी के बर्टन, गेंहूं, जौ, आटा, भुना हुआ अनाज, सेम, मसूर, भुने हुए बीज, <sup>29</sup> शहद, दही, भेड़, और झुंड से पनीर लाए, दाऊद और उसके साथ के लोगों के खाने के लिए; क्योंकि उन्होंने कहा, "लोग जंगल में भूखे, थके और प्यासे हैं।"

**18** तब दाऊद ने उन लोगों को इकट्ठा किया जो उसके साथ थे, और उनके ऊपर हजारों और सैकड़ों के सेनापति नियुक्त किए। <sup>2</sup> दाऊद ने सेना को भेजा: एक तिहाई योआब के अधीन, एक तिहाई अबीशै के अधीन, जो योआब का भाई था, और एक तिहाई इतै गिरी के अधीन। और राजा ने लोगों से कहा, "मैं स्वयं भी तुम्हारे साथ अवश्य जाऊंगा।" <sup>3</sup> परंतु लोगों ने कहा, "आप बाहर नहीं जाएंगे। क्योंकि यदि हम भाग जाएं, तो वे हमारी परवाह नहीं करेंगे; यहां तक कि यदि हम में से अधिक मर जाएं, तो भी वे परवाह नहीं करेंगे। परंतु आप हमारे दस हजार के बराबर हैं। इसलिए यह बेहतर है कि आप नगर से सहायता भेजने के लिए तैयार रहें।" <sup>4</sup> राजा ने उनसे कहा, "जो कुछ तुम्हें उचित लगे, मैं वही करूँगा।" इसलिए राजा फाटक के पास खड़ा हो गया, और सभी लोग सैकड़ों और हजारों की संख्या में बाहर गए। <sup>5</sup> और राजा ने योआब, अबीशै, और इतै को आदेश दिया, कहा, "मेरे लिए उस युवक अबशालोम के साथ कोमलता से व्यवहार करना।" और सभी लोगों ने सुना कि राजा ने अबशालोम के बारे में सेनापतियों को आदेश दिया।

<sup>6</sup> तब लोग इस्साएल से मिलने के लिए मैदान में गए, और युद्ध एप्रैम के जंगल में लड़ा गया। <sup>7</sup> वहां इस्साएल के लोग दाऊद के सेवकों द्वारा पराजित हुए, और उस दिन वहां का वध बड़ा था—बीस हजार पुरुष। <sup>8</sup> युद्ध पूरे देश में फैल गया, और उस दिन जंगल ने तलवार से अधिक लोगों को निगल लिया।

<sup>9</sup> अब अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला। अबशालोम अपने खच्चर पर सवार था, और खच्चर एक बड़े बलूत के घने शाखाओं के नीचे से गया। उसका सिर पेड़ में फंस गया, और वह आकाश और पृथी के बीच लटका रह गया, जबकि खच्चर जो उसके नीचे था, चलता रहा। <sup>10</sup> एक व्यक्ति ने इसे देखा और योआब को बताया, "देखो, मैंने अबशालोम को एक बलूत के पेड़ में लटका हुआ देखा।" <sup>11</sup> तब योआब ने उस व्यक्ति से कहा जिसने उसे बताया था, "तुमने उसे देखा! फिर तुमने उसे वहां जमीन पर क्यों नहीं मारा? मैं तुम्हें दस चांदी के सिक्के और एक कमरबंद देता।" <sup>12</sup> परंतु उस व्यक्ति ने योआब से कहा, "यदि मैं हजार चांदी के सिक्के भी प्राप्त करूँ, तब भी मैं राजा के पुत्र के खिलाफ हाथ नहीं बढ़ाऊंगा; क्योंकि हमारे सुनने में राजा ने तुम्हें अबीशै, और इतै को आदेश दिया था, मेरे लिए उस युवक अबशालोम की रक्षा करना।" <sup>13</sup> अन्यथा, यदि मैंने उसके जीवन के खिलाफ विश्वासघात किया होता, और राजा से कुछ भी छिपा नहीं है, तो तुम स्वयं दूर खड़े होते।" <sup>14</sup> तब योआब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ समय बर्बाद नहीं करूँगा।" इसलिए उसने अपने हाथ में तीन भाले लिए और उन्हें अबशालोम के हृदय में भौंक दिया जबकि वह अब भी बलूत के बीच जीवित था। <sup>15</sup> और दस जवान जो योआब का कवच उठाते थे, अबशालोम को धेर लिया और उसे मारा और मार डाला। <sup>16</sup> तब योआब ने तुरही बजाई, और लोग इस्साएल का पीछा करना छोड़कर लौट आए, क्योंकि योआब ने सेना को रोक दिया। <sup>17</sup> उन्होंने अबशालोम को लिया और उसे जंगल में एक बड़े गहैर में फेंक दिया, और उसके ऊपर बहुत बड़ा पत्तरों का ढेर खड़ा किया। और सभी इस्साएली भाग गए, प्रत्येक अपने तंबू में। <sup>18</sup> अबशालोम ने अपने जीवनकाल में अपने एक स्वंभ खड़ा किया था, जो राजा की घाटी में है, क्योंकि उसने कहा, "मेरे पास मेरा नाम बनाए रखने के लिए काई पुत्र नहीं हैं।" और उसने उस स्वंभ को अपने नाम से पुकारा, और आज तक उसे अबशालोम का स्मारक कहा जाता है।

<sup>19</sup> तब अहिमाज, सादोक का पुत्र, ने कहा, "मुझे दौड़ने दो और राजा को समाचार पहुँचाने दो, कि प्रभु ने उसे उसके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाकर न्याय दिलाया है।" <sup>20</sup> परंतु योआब ने उससे कहा, "तुम आज समाचार नहीं ले जाओगे, परंतु किसी और दिन समाचार ले जाओगे। आज तुम समाचार नहीं दोगे, क्योंकि राजा का पुत्र मर चुका है।" <sup>21</sup> तब योआब ने एक कूशी से कहा, "जाओ, राजा को जो तुमने देखा है वह बताओ।" इसलिए कूशी ने योआब को झुक्कर प्रणाम किया और दौड़ा। <sup>22</sup> अहिमाज, सादोक के पुत्र, ने फिर से योआब से कहा,

## २ शमूएल

"जो कुछ भी हो सकता है, कृपया मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ने दो।" और योआब ने कहा, "तुम क्यों दौड़ोगे, मेरे पुरु, जब तुम्हारे पास समाचार के लिए कोई पुरस्कार नहीं है?"<sup>23</sup> "परंतु जो कुछ भी हो सकता है," उसने कहा, "मैं दौड़ूंगा।" इसलिए उसने उससे कहा, "दौड़ो।" तब अहिमाज मैदान के रस्ते दौड़ा और कूशी से आगे निकल गया।

<sup>24</sup> अब दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा था, और प्रहरी दीवार के पास फाटक की छत पर गया, और उसने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, एक व्यक्ति अकेला दौड़ रहा था।<sup>25</sup> प्रहरी ने पुकारा और राजा को बताया। और राजा ने कहा, "यदि वह अकेला है, तो उसके मुँह में अच्छी खबर है।" और वह और करीब आया।<sup>26</sup> तब प्रहरी ने एक और व्यक्ति को दौड़ते हुए देखा, और प्रहरी ने द्वारपाल को पुकारा और कहा, "देखो, एक और व्यक्ति अकेला दौड़ रहा है।" और राजा ने कहा, "वह भी अच्छी खबर ला रहा है।"<sup>27</sup> प्रहरी ने कहा, "मुझे लगता है कि पहले का दौड़ना अहिमाज, सादोक के पुत्र, के दौड़ने जैसा है।" और राजा ने कहा, "वह एक अच्छा आदमी है, और वह अच्छी खबर के साथ आता है।"<sup>28</sup> तब अहिमाज ने पुकारा और राजा से कहा, "सब कुशल है।" और उसने राजा के सामने अपने चेहरे के बल झुककर प्रणाम किया और कहा, "धन्य है प्रभु, आपका परमेश्वर, जिसने उन लोगों को सौंप दिया जिन्होंने मेरे स्वामी राजा के खिलाफ हाथ उठाया।"<sup>29</sup> राजा ने कहा, "क्या युवक अबशालोम कुशल है?" और अहिमाज ने उत्तर दिया, "जब योआब ने राजा के सेवक, आपके सेवक, को भेजा, तो मैंने एक बड़ी हलचल देखी, परंतु मुझे नहीं पता कि वह क्या था।"<sup>30</sup> तब राजा ने कहा, "इधर हटकर खड़े हो जाओ।" इसलिए वह हटकर खड़ा हो गया।<sup>31</sup> तब देखो, कूशी आया और कहा, "मेरे स्वामी राजा को अच्छी खबर मिले, क्योंकि प्रभु ने आज आपको न्याय दिलाया है उन सभी के हाथ से जो आपके खिलाफ उठे थे।"<sup>32</sup> और राजा ने कूशी से कहा, "क्या युवक अबशालोम कुशल है?" और कूशी ने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी राजा के सभी शत्रु, और जो सभी आपके खिलाफ बुराई के लिए उठते हैं, वे उस युवक के समान हों।"

<sup>33</sup> तब राजा गहरे रूप से हिल गया, और वह फाटक के ऊपर के कक्ष में गया और रोया। जैसे वह गया, उसने कहा, "ओ मेरे पुत्र अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र अबशालोम! काश मैं तुम्हारे स्थान पर मर गया होता, और अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!"

**१९** फिर योआब को यह सूचना दी गई, "देखो, राजा अबशालोम के लिए रो रहा है और शोक मना रहा है।"<sup>2</sup> इसलिए उस दिन की विजय सभी लोगों के लिए शोक में बदल गई, क्योंकि लोगों ने उस दिन यह सुना, "राजा अपने पुत्र के लिए शोक कर रहा है।"<sup>3</sup> और लोग उस दिन शहर में चुपके से चले गए जैसे लोग युद्ध में हारकर अपमानित होकर भाग जाते हैं।<sup>4</sup> राजा ने अपना चेहरा ढक लिया और ऊँची आवाज में विलापा, "हे मेरे पुत्र अबशालोम, हे अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!"<sup>5</sup> फिर योआब राजा के घर में आया और कहा, "आज आपने अपने सभी सेवकों को शर्मिदा किया है, जिन्होंने आज आपके जीवन और आपके पुत्रों और पुत्रियों के जीवन को बचाया है। आपकी पतियों और आपकी रखौतों के जीवन को बचाया है,<sup>6</sup> उनसे प्रेम करके जो आपसे धूणा करते हैं और उनसे धूणा करके जो आपसे प्रेम करते हैं। आपने आज यह स्पष्ट कर दिया है कि सेनापति और सेवक आपके लिए कुछ नहीं हैं। क्योंकि आज मैं देखता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित होता और हम सब मर जाते, तो यह आपको प्रसन्न करता।<sup>7</sup> अब इसलिए उठो, बाहर जाओ और अपने सेवकों से प्रेमपूर्वक बात करो, क्योंकि मैं यहेवा की शपथ खाता हूँ, यदि आप बाहर नहीं जाते, तो आज रात आपके साथ कोई भी नहीं रहेगा। और यह आपके लिए उस सभी आपदा से भी बुरा होगा जो आपके युवावस्था से अब तक आप पर आई है।"

<sup>8</sup> इसलिए राजा उठकर फाटक में बैठ गया। और जब यह सभी लोगों को बताया गया, कहा गया, "देखो, राजा फाटक में बैठा है।" तब सभी लोग राजा के सामने आए। अब इसाएल भाग गए थे, प्रयोक अपने तम्बू में।<sup>9</sup> इसाएल की सभी जनजातियों के सभी लोग बहस कर रहे थे, कह रहे थे, "राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया और हमें पालिशितयों के हाथ से बचाया, तैकिन अब वह अबशालोम से भागकर देश से बाहर चला गया है।"<sup>10</sup> और अबशालोम, जिसे हमने अपने ऊपर अधिकृत किया था, युद्ध में मारा गया है। अब इसलिए, तुम राजा को वापस लाने के बारे में कुछ क्यों नहीं कहते?"<sup>11</sup> फिर राजा दाऊद ने सादोक और अबियाथर याजकों को संदेश भेजा, कहा, "यहां के पुत्रियों से कहो, 'तुम राजा को उसके घर वापस लाने में सबसे पीछे क्यों हों, क्योंकि सभी इसाएल का वजन राजा के वापस आया है, उसे उसके घर वापस लाने के लिए।'<sup>12</sup> तुम मेरे भाई हो; तुम मेरी हड्डी और मेरा मांस हो। फिर तुम राजा को वापस लाने में सबसे पीछे क्यों हों?"<sup>13</sup> और अमासा से कहो, "क्या तुम मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं हो? ईश्वर मुझे ऐसा करे और उससे भी अधिक यदि तुम

## 2 शमूएल

योआब के स्थान पर मेरी सेना के सेनापति नहीं रहोगे।”<sup>14</sup> इसलिए उसने यहूदा के सभी पुरुषों के दिल को एक व्यक्ति के रूप में बदल दिया, ताकि उन्होंने राजा को संदेश भेजा, कहा, “लौट आओ, तुम और तुम्हारे सभी सेवक।”

<sup>15</sup> फिर राजा लौटा और यरदन तक आया। और यहूदा के पुरुष गिलागल में राजा से मिलने आए, राजा को यरदन के पार ले जाने के लिए।<sup>16</sup> फिर शिमी, गेरा का पुत्र, जो चियामीन का था और बहूरीम से था, जल्दी से यहूदा के पुरुषों के साथ राजा डाऊद से मिलने आया।<sup>17</sup> और उसके साथ बिन्यामीन के एक हजार पुरुष थे, और साउल के घर का सेवक सीबा, उसके पंद्रह पुत्र और बीस सेवक; और वे राजा के सामने यरदन के पास दौड़े।<sup>18</sup> उन्होंने राजा के घराने को पार करने के लिए और जो उसे प्रसन्न करता था, वह करने के लिए घाट पार किया। फिर गेरा का पुत्र शिमी राजा के सामने गिर पड़ा। जब वह यरदन पार करने वाला था।<sup>19</sup> उसने राजा से कहा, “मेरे प्रभु मुझे दोषी न ठहराएं, और न ही उस दिन को याद करें जब आपके सेवक ने गलत किया था जब मेरे प्रभु राजा यरूशलेम से बाहर गए थे, कि राजा इसे दिल से ले।”<sup>20</sup> क्योंकि आपका सेवक जानता है कि मैंने पाप किया है। इसलिए, देखो, मैं आज आया हूँ, यूमुफ के घराने में सबसे पहले, मेरे प्रभु राजा से मिलने के लिए।<sup>21</sup> लेकिन अबीशै, सरूयाह का पुत्र, ने उत्तर दिया और कहा, “क्या शिमी को इसके लिए मृत्युउंड नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि उसने यहोवा के अभिषिक्त को शाप दिया?”<sup>22</sup> लेकिन डाऊद ने कहा, “मुझे और तुम्हें क्या, सरूयाह के पुत्रों, कि तुम आज मेरे विरोधी बन जाओ? क्या इसाएल में आज किसी व्यक्ति को मृत्युउंड दिया जाना चाहिए? क्योंकि क्या मैं नहीं जानता कि मैं आज इसाएल का राजा हूँ?”<sup>23</sup> इसलिए राजा ने शिमी से कहा, “तुम नहीं मरोगे।” और राजा ने उसे शपथ दिलाई।

<sup>24</sup> फिर मपीबोशेत, साउल का पुत्र, राजा से मिलने आया। उसने अपने पैरों की देखभाल नहीं की, न अपनी दाढ़ी को काटा, न अपने कपड़े धोए, जिस दिन से राजा गया था तब तक जब वह शांति में वापस नहीं आया।<sup>25</sup> यह तब हुआ जब वह यरूशलेम में राजा से मिलने आया, राजा ने उससे कहा, “तुम मेरे साथ क्यों नहीं गए, मपीबोशेत?”<sup>26</sup> उसने उत्तर दिया, “मेरे प्रभु राजा, मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया। क्योंकि आपके सेवक ने कहा, ‘मैं अपने लिए एक गधा काटी करूँगा, ताकि मैं उस पर सवार होकर राजा के साथ जाऊँ,’ क्योंकि आपका सेवक लंगड़ा है।”<sup>27</sup> और उसने आपके

सेवक को मेरे प्रभु राजा के सामने बदनाम किया है। लेकिन मेरे प्रभु राजा परमेश्वर के द्वार के समान है; इसलिए जो आपको अच्छा लगे वह करें।<sup>28</sup> क्योंकि मेरे पिता का पूरा घर मेरे प्रभु राजा के सामने मृतकों के समान था; फिर भी आपने अपने सेवक को उन लोगों में रखा जो आपकी मेज पर खाते हैं। इसलिए मेरे पास राजा से और कुछ कहने का क्या अधिकार है?”<sup>29</sup> इसलिए राजा ने उससे कहा, “तुम अपनी बातों के बारे में और क्यों बोलते हो? मैंने निर्णय लिया है: तुम और सीबा भूमि को बांट लो।”<sup>30</sup> और मपीबोशेत ने राजा से कहा, “उसे सब कुछ ले लेने दो, क्योंकि मेरे प्रभु राजा शांति से अपने घर वापस आ गए हैं।”

<sup>31</sup> अब बरजिल्लै गिलादी रोगलीम से नीचे आया, और वह राजा के साथ यरदन पार करने गया, उसे यरदन पार करने के लिए।<sup>32</sup> बरजिल्लै बहुत बढ़ व्यक्ति था, अस्सी वर्ष का, और उसने महनेम में रहते हुए राजा को भोजन प्रदान किया था, क्योंकि वह बहुत धनी व्यक्ति था।<sup>33</sup> राजा ने बरजिल्लै से कहा, “मेरे साथ आओ और मैं यरूशलेम में तुम्हारी देखभाल करूँगा।”<sup>34</sup> लेकिन बरजिल्लै ने राजा से कहा, “मेरे पास जीने के लिए कितना समय है, कि मैं राजा के साथ यरूशलेम जाऊँ? मैं आज अस्सी वर्ष का हूँ। क्या मैं अच्छे और बुरे के बीच भेद कर सकता हूँ? क्या आपका सेवक जो खाता है या जो पीता है उसका स्वाद ले सकता है? क्या मैं अब भी गाने वाले पुरुषों और गाने वाली स्त्रियों की आवाज सुन सकता हूँ? फिर आपका सेवक मेरे प्रभु राजा के लिए बोझ क्यों बोते? <sup>35</sup> आपका सेवक केवल राजा के साथ यरदन पार करेगा। राजा मुझे ऐसे इनाम से क्यों पुरस्कृत करें? <sup>36</sup> कृपया अपने सेवक को लौटाने दें, ताकि मैं अपने ही शहर में मर सकूँ अपने पिता और माता की कब्र के पास। लेकिन यहाँ आपका सेवक किम्बाम है, उसे मेरे प्रभु राजा के साथ पार करने दें, और उसके लिए जो भी आपको अच्छा लगे वह करूँगा। आप मुझसे जो भी चाहेंगे, मैं आपके लिए करूँगा।”<sup>37</sup> इसलिए सभी लोग यरदन पार कर गए, और राजा भी पार कर गया। और राजा ने बरजिल्लै को चूमा और उसे आशीर्वाद दिया, और वह अपने स्थान पर लौट गया।

<sup>40</sup> अब राजा गिलगाल की ओर बढ़ा, और किम्बाम उसके साथ गया। यहूदा के सभी लोग और इसाएल के आधे लोग भी राजा के साथ गए।<sup>41</sup> और देखो, इसाएल के सभी पुरुष राजा के पास आए और उससे कहा,

## 2 शमूएल

“हमारे भाइयों, यहूदा के पुरुषों ने आपको क्यों चुरा लिया, और राजा और उसके घराने को यरदन पार ले गए, और दाऊद के सभी पुरुषों को उसके साथ?”<sup>42</sup> यहूदा के सभी पुरुषों ने इसाएल के पुरुषों को उत्तर दिया, “क्योंकि राजा हमारे निकट संबंधी हैं। आप इस पर क्यों क्रोधित हैं? क्या हमने राजा के खर्च पर खाया है, या क्या उसने हमें कोई उपहार दिया है?”<sup>43</sup> फिर इसाएल के पुरुषों ने यहूदा के पुरुषों को उत्तर दिया और कहा, “हमारे पास राजा में दस हिस्से हैं; इसलिए हमारे पास दाऊद पर आपसे अधिक दावा है। फिर आपने हमें तिरस्कार से क्यों देखा? क्या हम राजा को वापस लाने की बात करने वाले पहले नहीं थे?” लेकिन यहूदा के पुरुषों के शब्द इसाएल के पुरुषों के शब्दों से अधिक कठोर थे।

**20** अब वहाँ एक निकम्मा आदमी था, जिसका नाम बिक्री का पुत्र शेबा था, जो एक बिन्यामिनी था। उसने तुरही बजाई और कहा, “हमारा दाऊद में कोई हिस्सा नहीं है, न ही पिशी के पुत्र में कोई विरासत है; हर आदमी अपने तंबू में जाए, हे इसाएल!”<sup>2</sup> इसलिए इसाएल के सभी लोग दाऊद से अलग हो गए और बिक्री के पुत्र शेबा का अनुसरण करने लगे। लेकिन यहूदा के लोग अपने राजा के प्रति वफादार रहे, यद्दन से लेकर यरूशलेम तक।

<sup>3</sup> तब दाऊद यरूशलेम में अपने घर आया। और राजा ने उन दस स्त्रियों को, जो उसके घर की देखाल करने के लिए छोड़ दी गई थीं, बंद कर दिया और उनके लिए प्रबंध किया, लेकिन उनके पास नहीं गया। इसलिए वे अपनी मृत्यु के दिन तक बंद रहीं, विधवाओं की तरह जीवन जीती रहीं।

<sup>4</sup> तब राजा ने अमासा से कहा, “यहूदा के लोगों को तीन दिनों के भीतर मेरे लिए इकट्ठा करा, और तुम स्वयं यहाँ उपस्थित रहो!”<sup>5</sup> इसलिए अमासा यहूदा को बुलाने गया, लेकिन वह निर्भारित समय से अधिक देर कर गया।<sup>6</sup> तब दाऊद ने अबीशे से कहा, “अब बिक्री का पुत्र शेबा हमें अबशालोम से अधिक हानि पहुँचाएगा। अपने स्वामी के सेवकों को ले लो और उसका जल्दी पीछा करो, ताकि वह किलेबंद शहरों को न पा सके और हमारी दृष्टि से बच न सके!”<sup>7</sup> इसलिए योआब के लोग उसके पीछे गए, वेरती, पेलेती और सभी वीर पुरुषों के साथ; और वे यरूशलेम से बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने के लिए निकले।<sup>8</sup> जब वे गिबोन के बड़े पथर पर थे, अमासा उनसे मिलने आया। अब योआब अपनी सैन्य वर्दी पहने हुए था, और उसके ऊपर उसकी

कमर पर एक म्यान में तलवार बंधी हुई थी; और जैसे ही वह आगे बढ़ा, वह गिर गई।<sup>9</sup> और योआब ने अमासा से कहा, “क्या तुम्हारा हाल ठीक है, मेरे भाई?” और योआब ने अमासा की दाढ़ी को अपने दाढ़िने हाथ से पकड़कर उसे चूमा।<sup>10</sup> लेकिन अमासा ने योआब के हाथ में तलवार को नहीं देखा। इसलिए योआब ने उसे पेट में मारा और उसकी अंतिडियाँ जमीन पर गिर गईं, और वह बिना दोबारा मारे मर गया। तब योआब और उसका भाई अबीशे बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने लगे।

<sup>11</sup> अब योआब के एक जवान आदमी ने उसके पास खड़े होकर कहा, “जो कोई योआब का पक्षधर है और जो कोई दाऊद के लिए है, वह योआब का अनुसरण करे!”<sup>12</sup> लेकिन अमासा अपने खून में सङ्कट के बीच में लोट रहा था। और जब उस आदमी ने देखा कि सभी लोग खड़े हैं, तो उसने अमासा को सङ्कट से हटा कर खेत में डाल दिया और उसके ऊपर एक वस्त डाल दिया, क्योंकि उसने देखा कि जो कोई भी उसके पास आता है वह खड़ा रहता है।<sup>13</sup> जब उसे सङ्कट से हटा दिया गया, तो सभी लोग योआब के पीछे बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने के लिए चले गए।

<sup>14</sup> अब वह इसाएल के सभी गोत्रों से होकर अबेल गया, यहाँ तक कि बेथ-माका, और सभी बिक्री के लोग इकट्ठा हुए और उसके पीछे चले गए।<sup>15</sup> वे अबेल के बेथ-माका में आए और उसे धेर लिया, और उन्होंने शहर के खिलाफ एक ढेर खड़ा किया, और वह प्राचीर के पास खड़ा था; और जो लोग योआब के साथ थे वे दीवार को गिराने के लिए उसे मार रहे थे।<sup>16</sup> तब एक बुद्धिमान स्त्री ने शहर से पुकार कर कहा, “सुनो, सुनो! कृपया योआब से कहो, यहाँ आओ ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ।”<sup>17</sup> इसलिए वह उसके पास आया, और स्त्री ने कहा, “क्या तुम योआब हो?” और उसने उत्तर दिया, “मैं हूँ।” तब उसने उससे कहा, “अपने सेवक के शब्दों को सुनो।” और उसने कहा, “मैं सुन रहा हूँ।”<sup>18</sup> तब उसने कहा, “पहले के समय में कहा जाता था, ‘अबेल में सलाह लें,’ और इस प्रकार वे विवादों का निपटारा करते थे।<sup>19</sup> मैं इसाएल में शांति और विश्वासयोग्यता में हूँ। तुम एक शहर और इसाएल में एक माँ को नष्ट करना चाहते हो। तुम क्यों प्रभु की विरासत को निगलना चाहते हो?”<sup>20</sup> योआब ने उत्तर दिया, “मुझसे दूर हो, मुझसे दूर हो कि मैं निगलूँ या नष्ट करूँ।”<sup>21</sup> ऐसा नहीं है। एप्रेम के पहाड़ी देश का एक आदमी, जिसका नाम बिक्री का पुत्र शेबा है, उसने राजा दाऊद के खिलाफ हाथ उठाया है। उसे ही सौंप दो, और मैं शहर से हट जाऊँगा।” स्त्री ने

## 2 शमूएल

योआब से कहा, “देखो, उसका सिर तुम्हें दीवार के ऊपर से फेंका जाएगा।”

22 तब स्त्री ने बुद्धिमानी से सभी लोगों के पास जाकर कहा। और उन्होंने बिक्री के पुत्र शाऊ का सिर काटकर योआब को फेंक दिया। इसलिए उसने तुरही बजाई, और वे शहर से तितर-बितर हो गए, हर आदमी अपने तंबू में योआब राजा के पास यरूशलैम लौट आया।

<sup>23</sup> अब योआब इसाएल की पूरी सेना का प्रधान था, और यहोयाह का पुत्र बनायाह चेती और पेलेती का प्रधान था। <sup>24</sup> अदोराम जबरन श्रम का अधिकारी था, और अहिलूद का पुत्र यहोशापात लेखा-जोखा रखने वाला था। <sup>25</sup> शेषा सचिव था, और सादोक और अबियाथार याजक थे। <sup>26</sup> और याईर का पुत्र ईरा भी दाऊद के लिए याजक था।

**21** अब दाऊद के दिनों में लगातार तीन वर्षों तक अकाल पड़ा; और दाऊद ने यहोवा से पूछा। यहोवा ने कहा, “यह शाऊल और उसके खूनी घराने के कारण है, क्योंकि उसने गिबोनियों को मार डाला था।” <sup>2</sup> तब राजा ने गिबोनियों को बुलाया और उनसे बात की। (अब गिबोनी इसाएल के पुत्रों में से नहीं थे, बल्कि ऐपोरियों के बचे हुए थे, और इसाएल के पुत्रों ने उनके साथ शपथ खाई थी; परन्तु शाऊल ने इसाएल के पुत्रों के लिए अपने उत्साह में उन्हें मार डालने की कोशिश की थी।) <sup>3</sup> इस प्रकार दाऊद ने गिबोनियों से कहा, “मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ, और मैं कैसे प्रायश्चित्त करूँ, कि तुम यहोवा की विरासत को आशीर्वाद दो?” <sup>4</sup> गिबोनियों ने उससे कहा, “हमारा शाऊल या उसके घराने के साथ चांदी या सोने का कोई दावा नहीं है, और न ही हमारे लिए इसाएल में किसी व्यक्ति को मार डालना है।” तब उसने कहा, “मैं तुम्हारे लिए जो कुछ कहोगे, वह करूँगा।” <sup>5</sup> तब उन्होंने राजा से कहा, “वह व्यक्ति जिसने हमें नष्ट किया और हमें समाप्त करने की योजना बनाई, कि हम इसाएल के पूरे क्षेत्र में कोई स्थान न पाएँ—<sup>6</sup> उसके पुत्रों में से सात व्यक्ति हमें सौंप दिए जाएं, और हम उन्हें यहोवा के सामने गिबा में, शाऊल के स्थान पर लटका देंगे, जो यहोवा का चुना हुआ था।” और राजा ने कहा, “मैं उन्हें ढूंगा।”

<sup>7</sup> परन्तु राजा ने मपीबोशेत को बचा लिया, जो शाऊल के पुत्र योनातन का पुत्र था, क्योंकि यहोवा की शपथ के कारण जो उनके बीच थी, दाऊद और शाऊल के पुत्र योनातन के बीच थी। <sup>8</sup> इसलिए राजा ने रिज्जा की दो पुत्रों को लिया, जो उसने शाऊल के लिए जन्मे थे—

अर्मोनी और मपीबोशेत— और मराब की पांच पुत्रों को, जो उसने अद्रीएल के लिए जन्मे थे, जो महोलाती बरजिलै का पुत्र था। <sup>9</sup> फिर उसने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के सामने लटका दिया। इस प्रकार वे सातों एक साथ गिर गए, और उन्हें फसल के पहले दिनों में, जौ की फसल की शुरुआत में मार डाला गया।

<sup>10</sup> तब रिज्जा, अया की पुत्री, ने टाट लिया और उसे चट्टान पर अपने लिए बिछा दिया, फसल की शुरुआत से लेकर जब तक उन पर आकाश से वर्षा नहीं हुई; और उसने दिन में पक्षियों को उन पर बैठने नहीं दिया, और न ही रात में जंगली जानवरों को। <sup>11</sup> जब दाऊद को बताया गया कि रिज्जा, अया की पुत्री और शाऊल की रखौल, ने क्या किया था, <sup>12</sup> दाऊद ने जाकर शाऊल की हड्डियों और उसके पुत्र योनातन की हड्डियों को याबेश-गिलाद के लोगों से लिया, जिन्होंने उन्हें बैथ-शान के सार्वजनिक चौक से चुरा लिया था, जहां पलिश्चियों ने उन्हें लटका दिया था, जिस दिन पलिश्चियों ने गिलबोआ में शाऊल को मारा था। <sup>13</sup> वह शाऊल की हड्डियों और उसके पुत्र योनातन की हड्डियों को वहां से ले आया, और उन्होंने उन लोगों की हड्डियों को इकट्ठा किया जिन्हें लटकाया गया था। <sup>14</sup> और उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियों को बिन्यामीन के देश में जेला में, किश के पिता की कब्र में दफनाया। इस प्रकार उन्होंने राजा के सभी अदेशों का पालन किया। और उसके बाद परमेश्वर ने भूमि के लिए प्रार्थना का उत्तर दिया।

<sup>15</sup> अब पलिश्चियों ने फिर से इसाएल के साथ युद्ध किया, और दाऊद अपने सेवकों के साथ नीचे गया और पलिश्चियों के खिलाफ लड़ा, और दाऊद थक गया। <sup>16</sup> तब इशाबी-बेनोब, जो दानव के वंशजों में से था, जिसका भाला तीन सौ शोकेल कांसे का था, और जो एक नई तलवार से सुसज्जित था, दाऊद को मारने का इशादा किया। <sup>17</sup> परन्तु अबीश, जो सरूयाह का पुत्र था, उसकी सहायता के लिए आया और पलिश्ची को मारा और उसे मार डाला। तब दाऊद के लोगों ने उससे शपथ ली, कहकर, “तुम हमारे साथ फिर से युद्ध के लिए बाहर नहीं जाओगे, ताकि इसाएल का दीपक बुझ न जाए।”

<sup>18</sup> अब इसके बाद फिर से गोब में पलिश्चियों के साथ युद्ध हुआ। तब हुसाती सिब्बैके ने साप को मारा, जो दानव के वंशजों में से था। <sup>19</sup> और फिर से गोब में पलिश्चियों के साथ युद्ध हुआ, और एल्हानान, जो बैथलेहम का यारे-अरिगिम का पुत्र था, ने गिर्ती गोलियत

## 2 शमूएल

को मारा, जिसके भाले का डंडा जुलाहे की बीम के समान था।<sup>20</sup> गथ में फिर से युद्ध हुआ, और वहां एक बड़ा कर वाला व्यक्ति था, जिसके प्रत्येक हाथ में छह अंगुलियाँ और प्रत्येक पैर में छह अंगूठे थे, कुल मिलाकर चौबीस; और वह भी दानवों के वंशजों में से था।<sup>21</sup> जब उसने इसाएल को ललकारा, तो शिमी का पुत्र योनान, जो दाऊद का भाई था, ने उसे मारा।<sup>22</sup> ये चारों गथ में दानव के लिए जन्मे थे, और वे दाऊद और उसके सेवकों के हाथ से गिर गए।

**22** और दाऊद ने इस गीत के शब्दों को यहोवा के लिए कहा किस दिन यहोवा ने उसे उसके सभी शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से छुड़ाया।<sup>2</sup> उसने कहा:

"यहोवा मेरा चट्टान और मेरा गढ़ और मेरा उद्धारकर्ता है,<sup>3</sup> मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान, जिसमें मैं शरण लेता हूँ, मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सीधा, मेरा दृढ़ स्थान और मेरी शरण;<sup>4</sup> मेरे उद्धारकर्ता, तु मुझे हिंसा से बचाता है। मैं यहोवा को पुकारता हूँ, जो स्तुति के योग्य है, और मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाता हूँ।"

<sup>5</sup> क्योंकि मृत्यु की लहरों ने मुझे घेर लिया, विनाश की धाराएँ मुझे अभिभूत कर गईं<sup>6</sup> शियोल की रस्सियाँ मुझे धंस रही थीं, मृत्यु के फैदे मैंने सामने थे।<sup>7</sup> मेरी संकट में मैंने यहोवा को पुकारा, हाँ, मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा;<sup>8</sup> उसके मंदिर से उसने मेरी आवाज़ सुनी, और मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पहुँची।

<sup>9</sup> तब पूर्वी हिल गई और काँप गई, स्वर्ग की नींव काँप गई और हिल गई, क्योंकि वह क्रोधित था।<sup>10</sup> उसके नथुने से धूआँ उठा, और उसके मुँह से आग ने भस्त्र किया, कोयले उसकी वजह से जल उठे।<sup>11</sup> उसने आकाश को झुका दिया, और नीचे आया उसके पैरों के नीचे घना अंधकार था।<sup>12</sup> वह एक करुंब पर सवार होकर उड़ा, वह हवा के पंखों पर प्रकट हुआ।<sup>13</sup> उसने अपने चारों और अंधकार को छत्र बना लिया, जल का समूह, आकाश के घने बाल।<sup>14</sup> उसके सामने की चमक से आग के कोयले जल उठे।<sup>15</sup> यहोवा ने स्वर्ग से गर्जना की, और परमप्रधान ने अपनी आवाज़ सुनाई।<sup>16</sup> उसने तीर भेजे और उह्नें तिर-बितर कर दिया, जिली, और उह्नें भगाया।<sup>17</sup> तब समूद्र की धाराएँ प्रकट हुईं संसार की नींव उजागर हो गई यहोवा की डाँट से, उसके नथुने की फूँक से।

<sup>17</sup> उसने ऊपर से हाथ बढ़ाया, उसने मुझे लिया, उसने मुझे कई जल से बाहर निकाला।<sup>18</sup> उसने मुझे मेरे शक्तिशाली शत्रु से छुड़ाया, उनसे जो मुझसे धूणा करते थे, क्योंकि वे मुझसे बहुत शक्तिशाली थे।<sup>19</sup> उह्नोंने मेरे विपत्ति के दिन मुझ पर हमला किया, परन्तु यहोवा मेरा सहारा था।<sup>20</sup> उसने मुझे एक विस्तृत स्थान पर निकाला; उसने मुझे बचाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था।

<sup>21</sup> यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार प्रतिफल दिया, मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे प्रतिफल दिया।<sup>22</sup> क्योंकि मैंने यहोवा के मार्गों को रखा है, और अपने परमेश्वर के विरुद्ध बुराई नहीं की है।<sup>23</sup> क्योंकि उसकी सभी विधियाँ मेरे सामने थीं, और मैंने उसकी विधियों से मुँह नहीं मोड़ा।<sup>24</sup> मैं उसके सामने निर्दोष था, और मैंने अपने आप को अपने अपराध से बचाया।<sup>25</sup> इसलिए यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार प्रतिफल दिया, उसकी आँखों के सामने मेरी शुद्धता के अनुसार।

<sup>26</sup> विश्वासयोग्य के साथ तू अपने को विश्वासयोग्य दिखाता है, निर्दोष के साथ तू अपने को निर्दोष दिखाता है;<sup>27</sup> शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता है, परन्तु कपटी के साथ तू अपने को चतुर दिखाता है।<sup>28</sup> और तू दीन लोगों को बचाता है, परन्तु तेरी आँखें अभिमानी पर हैं, जिन्हें तू नीचे लाता है।

<sup>29</sup> क्योंकि तू मेरा दीपक है, हे यहोवा, और यहोवा मेरी अंधकार को प्रकाशित करता है।<sup>30</sup> क्योंकि तेरे द्वारा मैं योद्धाओं की सेना पर दौड़ सकता हूँ, मेरे परमेश्वर के द्वारा मैं दीवार पर कूद सकता हूँ।<sup>31</sup> परमेश्वर के लिए उसका मार्ग निर्दोष है, यहोवा का वरन् शुद्ध है, वह उन सभी के लिए ढाल है जो उसमें शरण लेते हैं।<sup>32</sup> क्योंकि परमेश्वर कौन है, सिवाय यहोवा के? और कौन चट्टान है, सिवाय हमारे परमेश्वर के?<sup>33</sup> परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है, और वह मेरा मार्ग निर्दोष बनाता है।<sup>34</sup> वह मेरे पैरों को हिरण के पैरों जैसा बनाता है, और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।<sup>35</sup> वह मेरे हाथों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करता है, ताकि मेरी भुजाएँ कांस्य की धनुष को मोड़ सकें।<sup>36</sup> तूने मुझे अपनी उद्धार की ढाल भी दी है, और तेरी सहायता मुझे महान बनाती है।<sup>37</sup> तू मेरे नीचे मेरे कदमों को बढ़ाता है, और मेरे पैर नहीं किसले।

<sup>38</sup> मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया और उह्नें नष्ट कर दिया, और मैं तब तक नहीं लौटा जब तक वे नष्ट

## २ शमूएल

नहीं हो गए।<sup>३७</sup> मैंने उहनें खा लिया और उन्हें दूर कर दिया, ताकि वे किरन न उठें वे मेरे पैरों के नीचे गिर गए।<sup>३८</sup> क्योंकि तूने मुझे युद्ध के लिए शक्ति से कमर कसी है, तूने मेरे नीचे उन लोगों को दबा दिया जो मेरे विरुद्ध उठे।<sup>३९</sup> तूने मेरे शत्रुओं को मेरी ओर पीठ दिखाने के लिए मजबूर किया, और मैंने उन लोगों को नष्ट कर दिया जो मुझसे घृणा करते थे।<sup>४०</sup> उहनोंने देखा, परन्तु कोई बचाने वाला नहीं था—यहाँ तक कि यहांग का पास थी, परन्तु उसने उहनें उत्तर नहीं दिया।<sup>४१</sup> तब मैंने उहनें पृथ्वी की धूल की तरह पीस दिया, मैंने उन्हें कुवला और सड़कों के कीचड़ की तरह रौंदा।

<sup>४२</sup> तूने मुझे मेरी प्रजा के विवादों से बचाया, तूने मुझे राष्ट्रों का प्रधान बनाए रखा, एक प्रजा जिसे मैं नहीं जनना था, मेरी सेवा करती है।<sup>४३</sup> विदेशी लोग मुझसे आशाकारिता का दिखावा करते हैं, जैसे ही वे सुनते हैं वे मेरी आज्ञा मानते हैं।<sup>४४</sup> विदेशी लोग दिल हार जाते हैं, और अपने गढ़ों से काँपते हुए बाहर आते हैं।

<sup>४५</sup> यहोवा जीवित है, और धन्य है मेरी चट्टान्, और मेरा परमेश्वर, मेरे उद्धार की चट्टान, ऊँचा किया जाए।<sup>४६</sup> वह परमेश्वर जो मेरे लिए प्रतिशोध करता है, और मेरे अधीन लोगों को नीचे लाता है,<sup>४७</sup> जो मुझे मेरे शत्रुओं से भी बाहर निकालता है, तू मुझे उन लोगों से भी ऊँचा उठाता है जो मेरे विरुद्ध उठते हैं तू मुझे हिंसक व्यक्ति से बचाता है।<sup>४८</sup> इसलिए मैं तुझे है यहोवा, राष्ट्रों के बीच धन्यवाद द्वाँगा, और तेरे नाम की स्तुति करूँगा।<sup>४९</sup> वह अपने राजा के लिए उद्घार का गढ़ है, और अपने अभिषिक्त पर अनुग्रह दिखाता है, दाऊद और उसके वंशजों पर सदा के लिए।”

**२३** अब ये दाऊद के अंतिम वचन हैं: पिये के पुत्र दाऊद का कथन, उस मनुष्य का कथन जो ऊँचा उठाया गया, याकूब के परमेश्वर का अभिषिक्त, और इसाएल का मधुर भजनकार:

<sup>२</sup> “प्रभु की आत्मा ने मुझसे बातें कीं, और उसका वचन मेरी जीभ पर था।<sup>३</sup> इसाएल के परमेश्वर ने कहा, इसाएल की चट्टान ने मुझसे कहा: ‘जो मनुष्य धर्मपूर्वक मनुष्यों पर शासन करता है, जो परमेश्वर के भय में शासन करता है।’<sup>४</sup> वह उस सुबह के प्रकाश के समान है जब सूर्य उगता है, बिना बादलों की सुबह जब ताजा धारा पृथ्वी से उगती है, वर्षा के बाद की धूप से।<sup>५</sup> सचमुच क्या मेरा धर परमेश्वर के साथ ऐसा नहीं है? क्योंकि उसने मुझसे एक अनन्त वाचा की है, सब बातों में व्यवस्थित और सुरक्षित, क्या वह सचमुच मेरी सारी

मुक्ति और मेरी सारी इच्छा को नहीं बढ़ाएगा?<sup>६</sup> परंतु निकम्मे, उनमें से हर एक काटों की तरह दूर फेंक दिए जाएंगे, क्योंकि उन्हें हाथ में नहीं लिया जा सकता;<sup>७</sup> परंतु जो मनुष्य उहनें छूता है उसे लाहे और भाले के डंडे से सुसज्जित होना चाहिए और वे अपनी जगह पर पूरी तरह आग से जला दिए जाएंगे।”

<sup>८</sup> ये वे पराक्रमी पुरुषों के नाम हैं जो दाऊद के पास थे: योशेब-बश्शेबेत, एक तखमोनाइट, सेनापतियों का प्रधान—उसने एक समय में आठ सौ को मार डाला।<sup>९</sup> उसके बाद एलाज़ार था, जो अहीं का पुत्र और दोदो का पुत्र था, जो दाऊद के साथ तीन पराक्रमी पुरुषों में से एक था जब उहनोंने उन पलिश्तियों का सामान किया जो युद्ध के लिए इकट्ठे हुए थे, और इसाएल के लोग पीछे हट गए थे।<sup>१०</sup> वह उठा और पलिश्तियों को मारता रहा जब तक कि उसका हाथ थक नहीं गया और तलावर से चिपक नहीं गया, और उस दिन प्रभु ने एक बड़ी विजय दिलाई, और लोग उसके बाद लौटे केवल मारे गए लोगों को लूटने के लिए।<sup>११</sup> उसके बाद शम्मा था, जो अगे का पुत्र और हरारी था। और पलिश्ती एक दल में इकट्ठे हुए थे जहाँ मसूर से भरी एक भूमि का टुकड़ा था, और लोग पलिश्तियों से भाग गए।<sup>१२</sup> परंतु उसने भूमि के बीच में खड़ा होकर उसका बचाव किया, और पलिश्तियों को मारा; और प्रभु ने एक बड़ी विजय दिलाई।

<sup>१३</sup> फिर तीस प्रमुख पुरुषों में से तीन नीचे आए और कट्टी के समय दाऊद के पास अदुलालम की गुफा में आए, जबकि पलिश्तियों की छावनी रेफाईम की घाटी में थी।<sup>१४</sup> तब दाऊद गढ़ में था, और पलिश्तियों की चौकी तब बेतलेहेम में थी।<sup>१५</sup> और दाऊद ने एक इच्छा की और कहा, “ओह कि कोई मुझे बेतलेहेम के कुएँ से पानी पिलाए, जो फाटक के पास है।”<sup>१६</sup> तो तीन पराक्रमी पुरुषों ने पलिश्तियों की छावनी में से होकर अपना रास्ता बनाया, और बेतलेहेम के कुएँ से पानी निकाला जो फाटक के पास था, और उसे लेकर दाऊद के पास लाए। परंतु उसने उसे नहीं पिया, और उसे प्रभु के लिए अर्पण के रूप में उडेल दिया;<sup>१७</sup> और उसने कहा, “प्रभु मुझसे यह दूर करे कि मैं ऐसा करूँगा। क्या मैं उन पुरुषों का रक्त पीऊँ जो अपनी जान के जोखिम पर गए?” इसलिए उसने उसे नहीं पिया। ये बातें तीन पराक्रमी पुरुषों ने कीं।

<sup>१८</sup> अबिशै, योआब का भाई, जो सरूयाह का पुत्र था, तीस का प्रधान था। और उसने तीन सौ के खिलाफ भाले का प्रयोग किया और उहनें मारा, और उसका नाम तीन के समान था।<sup>१९</sup> वह तीस में सबसे सम्मानित था,

## २ शमूएल

इसलिए वह उनका सेनापति बना; परंतु वह तीन तक नहीं पहुँचा।<sup>२०</sup> फिर बनायाह यहोयादा का पुत्र था, कब्जील का एक वीर योद्धा, जिसने महान कार्य किए थे, मोआब के एरियल के दो पुत्रों को मारा। वह एक बर्फीले दिन में एक गड्ढे में एक सिंह को मारने भी गया।<sup>२१</sup> और उसने एक प्रभावशाली मिसी को मारा। अब मिसी के हाथ में एक भाला था, परंतु वह उसके पास एक डंडे के साथ गया, और मिसी के हाथ से भाला छीन लिया, और उसे उसके अपने भाले से मारा।<sup>२२</sup> ये बातें बनायाह यहोयादा के पुत्र ने कीं, और उसका नाम तीन प्राक्रमी पुरुषों के समान था।<sup>२३</sup> वह तीस में सम्मानित था, परंतु वह तीन तक नहीं पहुँचा। और दाऊद ने उसे अपने अंगरक्षक पर नियुक्त किया।

<sup>२४</sup> असाहेल योआब का भाई तीस में था; एलोहानान, दोदो का पुत्र, बेतलेहेम का,<sup>२५</sup> शम्मा हरोडी, एलीका हरोडी,<sup>२६</sup> हेलेज पलटी, ईरा इकेश का पुत्र, तेकोई,<sup>२७</sup> अलिएज़र अनातोथी, मेबुने हुबाती,<sup>२८</sup> जालमोन अहाहाई, महराई नेतोपाती,<sup>२९</sup> हेलेब बाना का पुत्र, नेतोपाती, इताई रिबाई का पुत्र, गिबा का, बिन्यामिन के पुत्रों का,<sup>३०</sup> बनायाह पिराथोनी, हिद्वाई गाश की धारा औं से,<sup>३१</sup> अबियालबोन अबरथी, अजमावेथ बरहमी,<sup>३२</sup> एलियाहबा शालबोनी, याशेन के पुत्र, जोनाथन,<sup>३३</sup> शम्मा हरारी, अहीआम शारार का पुत्र, अरारी,<sup>३४</sup> एलीफेलत अहस्बाई का पुत्र, माकाती का पुत्र, एलीआम अहिथोफेल का पुत्र, गिलोनी,<sup>३५</sup> हेज़रो रकमेलई, पाराई अबरई,<sup>३६</sup> इंगल नाथान का पुत्र, सोबा का, बानी गादी,<sup>३७</sup> जालेक अम्मोनी, नहराई बेरथी, योआब का पुत्र, सरूर्याह का शस्त्रधारी,<sup>३८</sup> ईशा इनी, गारेब इत्री,<sup>३९</sup> उरियाह हिती; कुल मिलाकर सौंतीस।

**२४** फिर से यहोवा का क्रोध इसाएल पर भड़क उठा, और उसने दाऊद को उनके विरुद्ध उकसाया, कहकर, "जाओ, इसाएल और यहोवा की गिनती करो।"<sup>१</sup> तब राजा ने योआब से, जो उसके साथ सेना का प्रधान था, कहा, "अब इसाएल के सभी गोंयों में धूमो, दान से लेकर बेरेशी तक, और लोगों की गिनती करो, ताकि मैं लोगों की संख्या जान सकूँ।"<sup>२</sup> परन्तु योआब ने राजा से कहा, "यहोवा, आपका परमेश्वर लोगों की संख्या को सौ गुना बढ़ा दे, जब तक मेरे प्रभु राजा की अँखें देखती रहें, परन्तु मेरे प्रभु राजा की इस बात में क्यों प्रसन्नता है?"<sup>३</sup> फिर भी, राजा का वचन योआब और सेना के प्रधानों पर प्रभावी हुआ। इसलिए योआब और सेना के प्रधान राजा की उपस्थिति से बाहर गए इसाएल के लोगों की गिनती करने के लिए।<sup>४</sup> वे यरदन पार करके अरोएर में डेरा डाले, जो गाद की घाटी के मध्य में और याजेर

की ओर है।<sup>५</sup> फिर वे गिलाद और ताहतीम-होदशी के देश में आए, और दान-यान और सिदोन के चारों ओर गए।<sup>६</sup> और वे सोर के किले और हिवियों और कनानियों के सभी नगरों में आए, और यहूदा के दक्षिण में बेरेशी तक गए।<sup>७</sup> इस प्रकार जब वे पूरे देश में धूम चुके, तो नौ महीने और बीस दिन के अंत में यरूशलेम आए।<sup>८</sup> और योआब ने राजा को लोगों की गिनती का अंकड़ा दिया: इसाएल में आठ लाख तलवार चलाने वाले पुरुष थे, और यहूदा के पुरुष पाँच लाख थे।

<sup>९</sup> अब दाऊद का हादय उसे तब कचोटने लगा जब उसने लोगों की गिनती कर ली। इसलिए दाऊद ने यहोवा से कहा, "मैंने जो किया है उसमें मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। परन्तु अब, हे यहोवा, कृपया अपने दास के अपराध को क्षमा करें, क्योंकि मैंने बहुत मूर्खता से काम किया है!"<sup>१०</sup> जब दाऊद सुबह उठा, तो यहोवा का वचन गाद भविष्यद्वक्ता, जो दाऊद का दर्शनकर्ता था, के पास आया, कहकर,<sup>११</sup> "जाओ और दाऊद से कहो, यहोवा यह कहता है: मैं तुम्हें तीन बातें पेश करता हूँ; उनमें से एक को चुनो, और मैं तुम्हारे लिए वह करूँगा!"<sup>१२</sup> इसलिए गाद दाऊद के पास आया और उससे कहा, "क्या तुम्हारे देश में सात साल का अकाल आएगा? या क्या तुम अपने शत्रुओं के सामने तीन महीने तक भागेगे जब वे तुम्हारा पीछा करेंगे? या क्या तुम्हारे देश में तीन दिन की महामारी होगी? अब विचार करो और देखो कि मैं उसे क्या उत्तर दूँ जिसने मुझे भेजा है!"<sup>१३</sup> तब दाऊद ने गाद से कहा, "मैं बड़ी विपत्ति में हूँ। अब हमें यहोवा के हाथ में गिरने दो, क्योंकि उसकी दया महान है; परन्तु मुझे मनषों के हाथ में न पड़ने दो।"

<sup>१५</sup> इसलिए यहोवा ने इसाएल पर सुबह से नियत समय तक महामारी भेजी, और दान से बेरेशी तक के लोगों में से सत्तर हजार पुरुष मारे गए।<sup>१६</sup> जब स्वर्गद्वारत ने यरूशलेम की ओर अपना हाथ बढ़ाया उस नष्ट करने के लिए, यहोवा ने उस विपत्ति से पक्षात्पाप किया, और उस स्वर्गद्वार से कहा जो लोगों को नष्ट कर रहा था, "अब बस! अपना हाथ रोक लो!" और यहोवा का स्वर्गद्वार अरौना यबूसी के खलिहान के पास था।<sup>१७</sup> तब दाऊद ने यहोवा से कहा जब उसने उस स्वर्गद्वार को देखा जो लोगों को मार रहा था, "देखो, यह मैंने ही पाप किया है, और यह मैंने ही गलत किया है; परन्तु ये भड़ें, उन्होंने क्या किया है? कृपया अपना हाथ मुझ पर और मेरे पिता के घर पर होने दे!"

<sup>१८</sup> इसलिए गाद उसी दिन दाऊद के पास आया और उससे कहा, "उठो, अरौना यबूसी के खलिहान पर

## 2 शमूएल

यहोवा के लिए एक वेदी बनाओ।"<sup>19</sup> दाऊद गाद के वचन के अनुसार ऊपर गया, जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी थी।<sup>20</sup> अरौना ने नीचे देखा और राजा और उसके सेवकों को अपनी ओर आते हुए देखा, और वह बाहर गया और राजा के सामने भूमि पर मुँह के बल झुका।<sup>21</sup> तब अरौना ने कहा, "मेरे प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों आए हैं?" दाऊद ने कहा, "तुमसे खलिहान खरीदने के लिए, यहोवा के लिए एक वेदी बनाने के लिए, ताकि लोगों से महामारी रोकी जा सके।"<sup>22</sup> अरौना ने दाऊद से कहा, "मेरे प्रभु राजा जो अच्छा समझें वह ले ले और चढ़ा दें। देखो, होमबलि के लिए बैल, खलिहान की लकड़ी और बैलों के जुए जलाने के लिए।<sup>23</sup> सब कुछ, हे राजा, अरौना राजा को देता है।" और अरौना ने राजा से कहा, "यहोवा, आपका परमेश्वर आपको स्वीकार करे।"<sup>24</sup> फिर भी, राजा ने अरौना से कहा, "नहीं, परन्तु मैं इसे तुमसे मूल्य देकर अवश्य खरीदूंगा; क्योंकि मैं अपने परमेश्वर यहोवा को वह होमबलि नहीं चढ़ाऊंगा जो मुझे कुछ न लगे।" इसलिए दाऊद ने खलिहान और बैलों को पचास शेरेकल चांदी में खरीदा।<sup>25</sup> तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई, और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और यहोवा ने देश के लिए प्रार्थना का उत्तर दिया, और इस्राएल से महामारी हटा दी गई।

# 1 राजा

**1** अब राजा दाऊद बूढ़े और वृद्ध हो गए थे, और यद्यपि उन्होंने उन्हें कंबल से ढक दिया, फिर भी वह गर्म नहीं हो सके।<sup>2</sup> तब उनके सेवकों ने उनसे कहा, “मेरे प्रभु राजा के लिए एक युवा कुंवारी की खोज की जाए, और वह राजा की सेवा करे और आपकी बाहों में लेटे, ताकि मेरे प्रभु राजा को गर्म रखा जा सके।”<sup>3</sup> इसलिए उन्होंने पूरे इसाएल के क्षेत्र में एक सुंदर युवा स्त्री की खोज की, और उन्हें शून्यम की अबीशग मिली, और उसे राजा के पास लाया गया।<sup>4</sup> युवती बहुत सुंदर थी, और उसने राजा की देखभाल की और उसकी सेवा की, लेकिन राजा ने उसके साथ संबंध नहीं बनाए।

<sup>5</sup> तब हीरीत के पुत्र अदोनियाह ने अपने आपको ऊँचा किया, यह कहते हुए, “मैं राजा बनूँगा।” और उसने अपने लिए रथ और घुड़सवार चैराय किए और पचास आदमी जो उसके आगे दौड़े।<sup>6</sup> उसके पिता ने कभी उसे यह कहकर नहीं डांटा, “तुमने यह क्यों किया?” और वह भी बहुत सुंदर व्यक्ति था, और वह अबशालोम के बाद पैदा हुआ था।<sup>7</sup> उसने योआब, जो सरूयाह का पुत्र था, और एब्यातार याजक से परामर्श किया, और उन्होंने अदोनियाह का अनुसरण किया और उसका समर्थन किया।<sup>8</sup> लेकिन सादोक याजक, यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान नबी, शिमी, रेझू, और दाऊद के शक्तिशाली लोग अदोनियाह के साथ नहीं थे।

<sup>9</sup> और अदोनियाह ने भेड़, बैल और मोटे पशु बलि किए जौहलेथ पथर के पास, जो एन-रोगेल के बगल में है। उसने अपने सभी भाइयों, राजा के पुत्रों को आमंत्रित किया, और यहदा के सभी लोगों को जो राजा के सेवक थे।<sup>10</sup> लेकिन उसने नातान नबी, बनायाह, शक्तिशाली पुरुषों, या अपने भाई सुलैमान को आमंत्रित नहीं किया।

<sup>11</sup> तब नातान ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा, “क्या तुमने नहीं सुना कि हीरीत का पुत्र अदोनियाह राजा बन गया है, और हमारे प्रभु दाऊद को यह नहीं पता? <sup>12</sup> अब आओ, मैं तुम्हें सलाह दूँ, ताकि तुम अपनी और अपने पुत्र सुलैमान की जान बचा सको।”<sup>13</sup> तुरंत राजा दाऊद के पास जाओ और उनसे कहो, ‘क्या आपने मेरे प्रभु राजा, अपनी दासी से यह शपथ नहीं ली थी, “निश्चित रूप से तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे सिंहासन पर बैठेगा?” फिर अदोनियाह राजा कैसे बन गया? <sup>14</sup> तब, जब तुम राजा से बात कर रही हो, मैं तुम्हारे बाद आऊंगा और तुम्हारे शब्दों की पुष्टि करूँगा।”

<sup>15</sup> इसलिए बतशेबा राजा के कक्ष में गई। अब राजा बहुत बूढ़े थे, और श्वेतम की अबीशग राजा की सेवा कर रही थी।<sup>16</sup> बतशेबा ने झुककर राजा के सामने प्रणाम किया, और राजा ने कहा, “तुम क्या चाहती हो?”<sup>17</sup> उसने उनसे कहा, “मेरे प्रभु, आपने अपने परमेश्वर यहोवा की शपथ अपनी दासी से ली थी, निश्चित रूप से तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे सिंहासन पर बैठेगा।”<sup>18</sup> लेकिन अब, देखो, अदोनियाह राजा बन गया है, और आप, मेरे प्रभु राजा, यह नहीं जानते।<sup>19</sup> और उसने बहुत सारे बैल, मोटे पशु और भेड़ बलि किए हैं, और राजा के सभी पुत्रों को आमंत्रित किया है, और एब्यातार याजक और सेना के सेनापति योआब को, लेकिन उसने आपके सेवक सुलैमान को आमंत्रित नहीं किया।<sup>20</sup> और आप, मेरे प्रभु राजा, इसाएल की सभी आँखें आप पर हैं, कि आप उन्हें बताएं कि मेरे प्रभु राजा के बाद कौन उसके सिंहासन पर बैठेगा।<sup>21</sup> अन्यथा यह होगा, जब मेरे प्रभु राजा अपने पूर्वजों के साथ लेटेंगे, कि मैं और मेरा पुत्र सुलैमान अपराधी माने जाएंगे।”

<sup>22</sup> अब जब वह राजा से बात कर रही थी, नातान नबी अंदर आए।<sup>23</sup> और उन्होंने राजा से कहा, “देखो, नातान नबी यहाँ है।”<sup>24</sup> और वह राजा के सामने आए और राजा के सामने अपना चेहरा जमीन पर झुकाया।<sup>25</sup> और नातान ने कहा, “मेरे प्रभु राजा, क्या आपने कहा, ‘अदोनियाह मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे सिंहासन पर बैठेगा?’<sup>26</sup> क्योंकि वह आज नीचे गया है और उसने बहुत सारे बैल, मोटे पशु और भेड़ बलि किए हैं, और राजा के सभी पुत्रों, सेना के सेनापतियों, और एब्यातार याजक को आमंत्रित किया है; और देखो, वे उसके सामने खा-पी रहे हैं और कह रहे हैं, ‘राजा अदोनियाह की जय हो!’<sup>27</sup> लेकिन मुझे, यहाँ तक कि आपके सेवक को, और सादोक याजक, और यहोयादा के पुत्र बनायाह, और आपके सेवक सुलैमान को—उसने आमंत्रित नहीं किया।<sup>28</sup> क्या यह बात मेरे प्रभु राजा द्वारा की गई है, और आपने अपने सेवकों को यह नहीं बताया कि मेरे प्रभु राजा के बाद कौन उसके सिंहासन पर बैठेगा?”

<sup>29</sup> तब राजा दाऊद ने उत्तर दिया और कहा, “बतशेबा को मेरे पास बुलाओ।” इसलिए वह राजा के समक्ष आई और राजा के सामने खड़ी हो गई।<sup>30</sup> और राजा ने शपथ ली और कहा, “जैसे यहोवा जीवित है, जिसने मुझे सभी संकटों से छुड़ाया है,<sup>31</sup> जैसे मैंने तुम्हें यहोवा, इसाएल के परमेश्वर की शपथ ली थी, यह कहते हुए, ‘सुलैमान तुम्हारा पुत्र मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे स्थान पर मेरे सिंहासन पर बैठेगा,’ मैं वास्तव में आज ऐसा

## 1 राजा

करूँगा।”<sup>31</sup> तब बतशेबा ने अपना चेहरा जमीन पर झुकाया, और राजा के सामने प्रणाम किया और कहा, “मेरे प्रभु राजा दाऊद की जय हो।”

<sup>32</sup> तब राजा दाऊद ने कहा, “मेरे पास सादोक याजक, नातान नबी, और यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुलाओ।” इसलिए वे राजा के समक्ष आए। <sup>33</sup> और राजा ने उनसे कहा, “अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ ले जाओ, और मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे अपने खच्चर पर सवारी कराओ, और उसे गीहोन ले जाओ।” <sup>34</sup> और सादोक याजक और नातान नबी उसे वहाँ इसाएल का राजा अभिषेक करें, और तुरही बजाएं और कहें, राजा सुलैमान की जय हो।” <sup>35</sup> फिर तुम उसके पीछे आओ, और वह मेरे सिंहासन पर बैठोगा और मेरे स्थान पर राजा होगा; क्योंकि मैंने उसे इसाएल और यहूदा का शासक नियुक्त किया है।” <sup>36</sup> और यहोयादा के पुत्र बनायाह ने राजा को उत्तर दिया और कहा, “आमीन। मेरे प्रभु राजा के परमेश्वर यहोवा इसे पुष्टि करें।” <sup>37</sup> जैसे यहोवा मेरे प्रभु राजा के साथ रहा है, वैसे ही वह सुलैमान के साथ भी रहे, और उसके सिंहासन को मेरे प्रभु राजा दाऊद के सिंहासन से बड़ा बनाए।”

<sup>38</sup> इसलिए सादोक याजक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह, और केरेथी और पेलेथी नीचे गए और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर सवारी कराई, और उसे गीहोन ले गए। <sup>39</sup> तब सादोक याजक ने तम्बू से तेल का सींग लिया और सुलैमान का अभिषेक किया। फिर उहोने तुरही बजाई, और सभी लोग उसके पीछे गए, और लोग बांसुरी बजाते और बड़ी खुशी के साथ अनंदित होते गए, ताकि उनकी आवाज़ से धरती हिल गई।

<sup>41</sup> अब अदोनियाह और उसके साथ के सभी मेहमानों ने इसे सुना जब वे भोज समाप्त कर रहे थे। जब योआब ने तुरही की आवाज़ सुनी, तो उसने कहा, “शहर में इतनी हलचल क्यों है?” <sup>42</sup> जब वह अभी भी बोल रहा था, तो देखो, एव्यातार याजक का पुत्र योनातान आया, और अदोनियाह ने कहा, “आओ, क्योंकि तुम एक योग्य व्यक्ति हो और अच्छी खबर लाते हो।” <sup>43</sup> लेकिन योनातान ने अदोनियाह को उत्तर दिया और कहा, “नहीं! हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया है।” <sup>44</sup> और राजा ने उसके साथ सादोक याजक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह, केरेथी और पेलेथी को भेजा है, और उहोने उसे राजा के खच्चर पर सवारी कराई है। <sup>45</sup> और सादोक याजक और नातान

नबी ने उसे गीहोन में राजा अभिषेक किया है, और वे वहाँ से आनंदित होकर आए हैं, ताकि शहर में हलचल हो। यह वही आवाज़ है जो आपने सुनी है।” <sup>46</sup> इसके अलावा, सुलैमान ने राज्य के सिंहासन पर बैठ लिया है।

<sup>47</sup> इसके अलावा, राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को आशीर्वाद देने आए, यह कहते हुए, ‘‘आपका परमेश्वर सुलैमान के नाम को आपके नाम से बेहतर बनाए, और उसके सिंहासन को आपके सिंहासन से बड़ा बनाए।’’ और राजा ने बिस्तर पर झुककर प्रणाम किया। <sup>48</sup> राजा ने यह भी कहा, “ध्य है यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, जिसने मेरे सिंहासन पर आज एक को बैठाया है जबकि मेरी अँखें इसे देख रही हैं।”

<sup>49</sup> तब अदोनियाह के सभी मेहमान भयभीत हो गए, और वे उठे और प्रत्येक अपने अपने रास्ते चले गए। <sup>50</sup> और अदोनियाह सुलैमान से डर गया, और वह उठा और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। <sup>51</sup> तब सुलैमान को यह सूचना दी गई, यह कहते हुए, “देखो, अदोनियाह राजा सुलैमान से डरता है; क्योंकि देखो, उसने वेदी के सींगों को पकड़ लिया है, यह कहते हुए, राजा सुलैमान आज मुझे शपथ दिलाएं कि वह अपने सेवक को तलवार से नहीं मारेगा।” <sup>52</sup> और सुलैमान ने कहा, “यदि वह एक योग्य व्यक्ति है, तो उसका एक भी बाल जमीन पर नहीं पिरेगा; लेकिन यदि उसमें दुष्टता पार्द जाती है, तो वह मरेगा।” <sup>53</sup> इसलिए राजा सुलैमान ने भेजा, और उहोने उसे वेदी से नीचे लाया। और वह आया और राजा सुलैमान के सामने चूका, और सुलैमान ने उससे कहा, “अपने घर जाओ।”

**2** अब दाऊद के मरने के दिन निकट आ गए, और उसने अपने पुत्र सुलैमान को आज्ञा दी, कहा, “मैं पृथ्वी के सभी लोगों के मार्ग पर जा रहा हूँ।” इसलिए, तुम दृढ़ रहो, और अपने आप को एक पुरुष सिद्ध करो। <sup>3</sup> अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन करो, उसके मार्गों में चलो, उसकी विधियों, उसकी आज्ञाओं, उसके न्यायों और उसकी साक्षियों को मानो, जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिया है, ताकि तुम जो कुछ करो और जहाँ कहीं भी जाओ, उसमें सफल हो सको, <sup>4</sup> ताकि यहोवा अपना वचन पूरा करे जो उसने मेरे विषय में कहा था, यदि तुम्हारे पुत्र अपने मार्ग में सावधान रहें, मेरे सामने सत्य में अपने पूरे हृदय और आत्मा के साथ चलें, तो तुम्हारे पास इसाएल के सिंहासन पर बैठने के लिए एक पुरुष की कमी नहीं होगी।”

<sup>5</sup> इसके अलावा, तुम जानते हो कि योआब, सरूयाह का पुत्र, ने मेरे साथ क्या किया, उसने इसाएल की सेनाओं

# 1 राजा

के दो सेनापतियों, नेर के पुत्र अबनेर और यतेर के पुत्र अमासा के साथ क्या किया, जिन्हें उसने मारा। और उसने शांति के समय में युद्ध का रक्त बहाया, और उसने युद्ध के रक्त को अपनी कमर के चारों ओर की पट्टी पर और अपने पैरों की जूतियों पर लगाया।<sup>6</sup>

इसलिए अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करो, और उसके सफेद बालों को शांति में कब्र में न जाने दो।<sup>7</sup> परंतु गिलाद के बरजिलै के पुत्रों पर कृपा दिखाओ, और उहें उन लोगों में से होने दो जो तुम्हारे मेज पर खाते हैं, क्योंकि वे मेरे पास आए जब मैं तुम्हारे भाई अबशालोम से भागा।<sup>8</sup> और देखो, तुम्हारे पास बहुरीम का बिन्नमिनी शिमी, गेरा का पुत्र है, जिसने मुझे महैम जाते समय एक गंभीर शाप दिया। परंतु जब वह यर्दन पर मुझसे मिलने आया, तो मैंने यहोवा की शपथ खाई, कहा, "मैं तुम्हें तलवार से नहीं मारूँगा।"<sup>9</sup> परंतु अब उसे निर्दोष न समझो, क्योंकि तुम एक बुद्धिमान व्यक्ति हो और जानोगे कि तुम्हें उसके साथ क्या करना चाहिए; और तुम उसके सफेद बालों को रक्त के साथ कब्र में ले जाओ।<sup>10</sup>

<sup>10</sup> इस प्रकार दाऊद अपने पितरों के साथ सो गया, और दाऊद के नगर में दफनाया गया।<sup>11</sup> दाऊद ने इसाएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। उसने हेब्रोन में सात वर्ष और यरूशलाम में तैतीस वर्ष राज्य किया।<sup>12</sup> फिर सुलैमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा, और उसका राज्य दृढ़ता से स्थापित हुआ।

<sup>13</sup> अब हमीरी का पुत्र अदोनियाह बथशेबा के पास आया, जो सुलैमान की माता पी, और उसने कहा, "क्या तुम शांति से आए हो?" और उसने कहा, "शांति से।"<sup>14</sup> फिर उसने कहा, "मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ कहने को है।" तो उसने कहा, "कहो।"<sup>15</sup> और उसने कहा, "तुम जानते हो कि राज्य मेरा था, और कि सभी इसाएल मुझसे अपेक्षा करते थे कि मैं राज्य करूँ। हालांकि, राज्य मेरा भाई का हो गया है, क्योंकि यह यहोवा की ओर से था।<sup>16</sup> अब मैं तुमसे एक याचना करता हूँ: मुझे अस्वीकार न करो।"<sup>17</sup> और उसने उससे कहा, "कहो।"<sup>17</sup> तब उसने कहा, "कृपया राजा सुलैमान से कहो—वह तुम्हें अस्वीकार नहीं करेगा—कि वह मुझे शूनेमिन अबीशग को पत्नी के रूप में दे।"<sup>18</sup> तो बथशेबा ने कहा, "बहुत अच्छा; मैं तुम्हारे लिए राजा से बात करूँगी।"

<sup>19</sup> तो बथशेबा अदोनियाह के लिए बात करने के लिए राजा सुलैमान के पास गई। और राजा ने उसे मिलने के लिए उठकर झुककर प्रणाम किया, और अपने सिंहासन पर बैठ गया और राजा की माता के लिए एक सिंहासन

रखा, और वह उसके दाहिने हाथ बैठ गई।<sup>20</sup> फिर उसने कहा, "मैं तुमसे एक छोटी सी याचना करती हूँ: मुझे अस्वीकार न करो।" और राजा ने उससे कहा, "माँ, पूछो, क्योंकि मैं तुम्हें अस्वीकार नहीं करूँगा।"<sup>21</sup> तो उसने कहा, "शूनेमिन अबीशग को तुम्हारे भाई अदोनियाह को पत्नी के रूप में दिया जाए।"<sup>22</sup> राजा सुलैमान ने अपनी माता से कहा, "तुम अदोनियाह के लिए शूनेमिन अबीशग क्यों माँग रही हो? उसके लिए राज्य भी माँग लो—क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है—यहाँ तक कि उसके लिए, अवियाधार याजक के लिए, और सरूपाया के पुत्र योआब के लिए भी!"<sup>23</sup> तब राजा सुलैमान ने यहोवा की शपथ खाई, कहा, "ईश्वर मुझे ऐसा करो, और अधिक भी करो, यदि अदोनियाह ने यह वचन अपने ही जीवन के विरुद्ध नहीं कहा है।"<sup>24</sup> अब इसलिए, जैसा कि यहोवा जीवित है, जिसने मुझे स्थापित किया है और मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया है, और जिसने मुझे एक घर बनाया है जैसा उसने बादा किया था—निश्चित रूप से अदोनियाह आज मारा जाएगा।<sup>25</sup> तो राजा सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेजा, और उसने उसे मार डाला और वह मर गया।

<sup>26</sup> फिर राजा ने अवियाधार याजक से कहा, "अनातोत में अपने खेतों में जाओ, क्योंकि तुम मने के योग्य हो; परंतु मैं तुम्हें इस समय नहीं मारूँगा, क्योंकि तुमने मेरे पिता दाऊद के सामने यहोवा परमेश्वर की बाचा को उठाया था, और क्योंकि तुमने उन सभी में कष्ट उठाया था जिनमें मेरे पिता ने कष्ट उठाया।"<sup>27</sup> तो सुलैमान ने अवियाधार को यहोवा के याजक पद से हटा दिया, ताकि यहोवा का वचन पूरा हो सके जो उसने शीलों में एली के घर के विषय में कहा था।

<sup>28</sup> अब योआब को यह समाचार भिता, क्योंकि योआब ने अदोनियाह का अनुसरण किया था, हालांकि उसने अबशालोम का अनुसरण नहीं किया था। तो योआब यहोवा के तंबू में भाग गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया।<sup>29</sup> और राजा सुलैमान ने बताया कि योआब यहोवा के तंबू में भाग गया है, और देखो, वह वेदी के पास है। तब सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेजा, कहा, "जाओ, उसे मार डालो।"<sup>30</sup> तो बनायाह यहोवा के तंबू में गया और उससे कहा, "राजा कहता है, 'बाहर आओ!'" परंतु उसने कहा, "नहीं, क्योंकि मैं यहाँ मरूँगा।"<sup>31</sup> तो बनायाह ने राजा के पास फिर से शब्द लाया, कहा, "योआब ने ऐसा कहा, और उसने मुझे ऐसा उत्तर दिया।"<sup>32</sup> तब राजा ने उससे कहा, "जैसा उसने कहा है, वैसा करो, और उसे मार डालो और दफना दो,

# 1 राजा

ताकि तुम मुझसे और मेरे पिता के घर से उस रक्त के अपराध को हटा सको जो योआब ने बिना कारण बहाया।<sup>32</sup> और यहोवा उसका रक्त उसके अपने सिर पर लौटाएगा, क्योंकि उसने दो पुरुषों को, जो उससे अधिक धर्मी और अच्छे थे, तलवार से मारा: नेर का पुत्र अबनेर, इसाएल की सेना का सेनापति, और यतेर का पुत्र अमासा, यहूदा की सेना का सेनापति, हालांकि मेरे पिता दाऊद को यह नहीं पता था।<sup>33</sup> तो उनका रक्त योआब के सिर पर और उसके वंशजों के सिर पर सदा के लिए लौटेगा। परंतु दाऊद और उसके वंशजों और उसके घर और उसके सिंहासन पर यहोवा की ओर से सदा के लिए शांति होगी।<sup>34</sup> फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह ऊपर गया और योआब की मारा और उसे मार डाला, और उसे जंगल में उसके अपने घर में दफनाया।

<sup>35</sup> राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को उसकी जगह सेना के ऊपर नियुक्त किया, और राजा ने अवियाधार की जगह सादोक को याजक नियुक्त किया।

<sup>36</sup> फिर राजा ने शिमी को बुलाया, और उससे कहा, “यरूशलेम में अपने लिए एक घर बनाओ और वहाँ रहो, और वहाँ से किसी अन्य स्थान पर न जाओ।”<sup>37</sup> क्योंकि जिस दिन तुम बाहर जाओगे और किंद्रोन की घाटी को पार करोगे, तुम निश्चित रूप से जानोगे कि तुम अवश्य मरोगे; तुम्हारा रक्त तुम्हारे अपने रिश पर होगा।<sup>38</sup> शिमी ने राजा से कहा, “वचन अच्छा है। जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है, वैसा ही तुम्हारा सेवक करेगा।” तो शिमी यरूशलेम में कई दिनों तक रहा।<sup>39</sup> परंतु तीन वर्ष के अंत में ऐसा हुआ, कि शिमी के दो सेवक माका के पुत्र आकीश, गथ के राजा, के पास भाग गए। और उन्होंने शिमी को बताया, कहा, “देखो, तुम्हारे सेवक गथ में हैं।”<sup>40</sup> तो शिमी उठा और अपने गथे पर काठी कसी, और गथ में आकीश के पास अपने सेवकों को खोजने गया, और शिमी गया और अपने सेवकों को गथ से ले आया।<sup>41</sup> और सुलैमान को बताया गया कि शिमी यरूशलेम से गथ गया और लौट आया।<sup>42</sup> तो राजा ने शिमी को बुलाया और उससे कहा, “क्या मैंने तुम्हें यहोवा की शपथ नहीं दिलाई थी और तुम्हें गंभीरता से चेतावनी नहीं दी थी, कहा, निश्चित रूप से जान लो कि जिस दिन तुम निकलोगे और कहीं भी जाओगे, तुम अवश्य मरोगे?” और तुमने मुझसे कहा, “जो वचन मैंने सुना है वह अच्छा है।”<sup>43</sup> फिर तुमने यहोवा की शपथ और वह आज्ञा क्यों नहीं रखी जो मैंने तुम्हें दी थी?”<sup>44</sup> राजा ने शिमी से भी कहा, “तुम अपने हृदय में जानते हो कि तुमने मेरे पिता दाऊद के साथ क्या बुराई की थी; इसलिए यहोवा

तुम्हारी बुराई को तुम्हारे अपने सिर पर लौटाएगा।<sup>45</sup> परंतु राजा सुलैमान धन्य होगा, और दाऊद का सिंहासन यहोवा के सामने सदा के लिए स्थापित रहेगा।”<sup>46</sup> तो राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी, और वह बाहर गया और उसे मार डाला और वह मर गया। इस प्रकार राज्य सुलैमान के हाथ में स्थापित हुआ।

**3** तब सुलैमान ने मिस के राजा फ़िरैन के साथ विवाह संबंध स्थापित किया, और फ़िरैन की बेटी को ले आया और उसे दाऊद के नगर में लाया, जब तक कि उसने अपना घर, और यहोवा का घर, और यरूशलेम के चारों ओर की दीवार का निर्माण पूरा नहीं कर लिया।<sup>2</sup> लोग अब भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ा रहे थे, क्योंकि यहोवा के नाम के लिए अभी तक कोई घर नहीं बना था।<sup>3</sup> अब सुलैमान यहोवा से प्रेम करता था, अपने पिता दाऊद की विधियों में चलता था, सिवाय इसके कि वह ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाता और धूप जलाता था।

<sup>4</sup> और राजा गिबोन में बलिदान चढ़ाने गया, क्योंकि वह महान ऊँचा स्थान था; सुलैमान ने उस वेदी पर एक हजार होमबलि चढ़ाई।<sup>5</sup> गिबोन में यहोवा ने सुलैमान को रात में एक स्प्र में दर्शन दिया; और परमेश्वर ने कहा, “तू मुझसे जो चाहे मांग ले।”<sup>6</sup> तब सुलैमान ने कहा, “तूने अपने दास दाऊद मेरे पिता पर बड़ी कृपा की है, जैसा कि वह तेरे सामने सत्य, धर्म और हृदय की सीधाई में चलता था; और तूने उसके लिए यह बड़ी कृपा रखी है, कि तूने उसे एक पुत्र दिया है जो आज के दिन उसके सिंहासन पर बैठा है।”<sup>7</sup> अब, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा बनाया है, फिर भी मैं केवल एक छोटा बच्चा हूँ; मुझे बाहर जाने और आने का ज्ञान नहीं है।<sup>8</sup> और तेरा दास तेरे चुने हुए लोगों के बीच में है, एक महान लोग जो गिने या मापे नहीं जा सकते।<sup>9</sup> इसलिए अपने दास को अपने लोगों का न्याय करने के लिए समझदार हृदय दे, अच्छे और बुरे के बीच भेद करने के लिए। क्योंकि कौन है जो तेरे इस महान लोगों का न्याय कर सके?

<sup>10</sup> अब यहोवा की दृष्टि में यह बात प्रसन्नजनक थी कि सुलैमान ने यह बात मांगी थी।<sup>11</sup> परमेश्वर ने उससे कहा, “क्योंकि तूने यह बात मांगी है, और अपने लिए लंबी आयु नहीं मांगी, न ही अपने लिए धन मांगा, न ही तूने अपने शत्रुओं के प्राण मांगे, बल्कि तूने अपने लिए न्याय समझने के लिए विवेक मांगा है।<sup>12</sup> देख, मैंने तेरे वचनों के अनुसार किया है। देख, मैंने तुझे एक बुद्धिमान और विवेकशील हृदय दिया है, ताकि तेरे पहले कोई तेरे

# 1 राजा

समान नहीं हुआ, और न तेरे बाद कोई तेरे समान उठेगा।<sup>13</sup> मैंने तुझे वह भी दिया है जो तूने नहीं मांगा, दोनों धन और सम्मान, ताकि तेरे सभी दिनों में राजाओं में तेरे समान कोई न हो।<sup>14</sup> और यदि तू मेरे मार्गों में चलेगा, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा, जैसा कि तेरे पिता दाऊद ने किया, तो मैं तेरे दिन बढ़ाऊंगा।<sup>15</sup> तब सुलैमान जग उठा, और देखो, यह एक स्वप्न था। और वह यस्तश्लेम आया और यहावा की बाचा की सन्दूक के सामने खड़ा हुआ, और होमबलि और शांति बलि चढ़ाई, और अपने सभी सेवकों के लिए एक भोज किया।

<sup>16</sup> तब दो स्त्रियाँ जो वेश्याएँ थीं राजा के पास आईं और उसके सामने खड़ी हुईं।<sup>17</sup> एक स्त्री ने कहा, “मेरे प्रभु कृपया सुनें: यह स्त्री और मैं एक ही घर में रहते हैं; और मैंने उस घर में एक बच्चे को जन्म दिया।<sup>18</sup> मेरे जन्म देने के तीसरे दिन, इस स्त्री ने भी एक बच्चे को जन्म दिया। हम साथ थे, घर में हमारे साथ कोई अजनबी नहीं था, सिर्फ हम दोनों थे।<sup>19</sup> और इस स्त्री का पुत्र रात में मर गया, क्योंकि वह उस पर लेट गई थी।<sup>20</sup> तो वह आधी रात को उठी और मेरे बेटे को मेरे पास से ले गई जब आपकी दासी सो रही थी, और उसे अपनी गोद में रख लिया, और अपने मृत पुत्र को मेरी गोद में रख दिया।<sup>21</sup> जब मैं सुबह अपने बेटे को द्रुध पिलाने के लिए उठी, तो देखो, वह मर चुका था; लेकिन जब मैंने सुबह उसे ध्यान से देखा, तो देखो, वह मेरा पुत्र नहीं था, जिसे मैंने जन्म दिया था।<sup>22</sup> तब दूसरी स्त्री ने कहा, “नहीं! क्योंकि जीवित पुत्र मेरा है, और मृत पुत्र तेरा है।” लेकिन पहली स्त्री ने कहा, “नहीं! क्योंकि मृत पुत्र तेरा है, और जीवित पुत्र मेरा है।” इस प्रकार वे राजा के सामने बोलती रहीं।

<sup>23</sup> तब राजा ने कहा, “यह कहती है, ‘यह मेरा पुत्र है, जो जीवित है, और तेरा पुत्र मृत है’; और दूसरी कहती है, ‘नहीं! क्योंकि तेरा पुत्र मृत है, और मेरा पुत्र जीवित है।’”<sup>24</sup> तब राजा ने कहा, “मेरे पास एक तलवार लाओ।” तो वे राजा के सामने एक तलवार लाए।<sup>25</sup> और राजा ने कहा, “जीवित बच्चे को दो टुकड़ों में काट दो, और आधा एक को और आधा दूसरी को दे दो।”<sup>26</sup> तब वह स्त्री जिसका बच्चा जीवित था, राजा से बोली, क्योंकि वह अपने पुत्र के लिए गहराई से प्रभावित थी, और कहा, “मेरे प्रभु कृपया, उसे जीवित बच्चा दे दो, और उसे कतर्ई मत मारो!” लेकिन दूसरी ने कहा, “वह न तो मेरा होगा और न तेरा; उसे काट दो।”<sup>27</sup> तब राजा ने उत्तर दिया, “पहली स्त्री को जीवित बच्चा दे दो, और उसे कतर्ई मत मारो। वह उसकी माँ है।”

<sup>28</sup> जब सारे इस्साएल ने उस न्याय के बारे में सुना जो राजा ने दिया, तो वे राजा से डर गए, क्योंकि उन्होंने देखा कि परमेश्वर की बुद्धि उसमें न्याय करने के लिए थी।

**4** अब राजा सुलैमान पूरे इस्साएल का राजा था।<sup>2</sup> ये उसके अधिकारी थे: सादोक का पुत्र अजर्याह याजक था;<sup>3</sup> एलीहोरेफ और अहियाह, शीशा के पुत्र, लेखक थे; अहीलूद का पुत्र यहोशापात अभिलेखक था;<sup>4</sup> यहोपादा का पुत्र बनायाह सोना पर था; सादोक और अविपातर याजक थे;<sup>5</sup> नातान का पुत्र अजर्याह उपाधिकारियों पर था; नातान का पुत्र जबूद, एक याजक, राजा का मित्र था;<sup>6</sup> अहीशार घर पर था; और अब्दा का पुत्र अदोनिराम बलाकारी श्रम पर था।

<sup>7</sup> सुलैमान के पास पूरे इस्साएल में बारह उपाधिकार थे, जो राजा और उसके घर के लिए भोजन प्रदान करते थे; प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष में एक महीने के लिए प्रदान करना पड़ता था।<sup>8</sup> ये उनके नाम हैं: बेन-हूर, एप्रेम के पहाड़ी देश में;<sup>9</sup> बेन-डेकर, मकाज और शालबिम में, और बेथ-शेमेश में, और एलोन-बेथ-हानन में;<sup>10</sup> बेन-हेसेद, अरुब्बोथ में (सोकोह उसका था, और हेफेर का सारा देश);<sup>11</sup> बेन-अबीनादाब, डोर की ऊँचाई में (तपथ, सुलैमान की पुरी, उसकी पत्नी थी);<sup>12</sup> अहीलूद का पुत्र बाना, तानक और मेंगिद्दो में, और सारे बेथ-शेन में, जो यित्रेल के नीचे जरेतन के पास है, बेथ-शेन से अबिल-महोला तक, जोक्मेआम के दूसरी ओर तक;<sup>13</sup> बेन-गेबर, रामोत-गिलाद में (याईर के नगर, मनशो का पुत्र, जो गिलाद में है, उसके थे; और अगोब का क्षत्र, जो बाशान में है—साठ बड़े नगर दीवारों और कांस्य की सलाखों के साथ);<sup>14</sup> इद्दो का पुत्र अहिनादाब, महनैम में;<sup>15</sup> अहिमाज, नपताली में (उसने भी बासेमथ, सुलैमान की पुत्री, को पत्नी के रूप में लिया);<sup>16</sup> हूशै का पुत्र बाना, आशेर और बायालोत में;<sup>17</sup> परूअह का पुत्र यहोशापात, इस्साकार में;<sup>18</sup> एला का पुत्र शिमी, बिन्यामीन में;<sup>19</sup> उरी का पुत्र गेबर, गिलाद के देश में, एमोरी राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश में; और एक उपाधिकारी था जो उस देश पर था।

<sup>20</sup> यहूदा और इस्साएल समुद्र के किनारे की रेत के समान बहुतायत में थे; वे खा रहे थे, पी रहे थे, और आनंदित हो रहे थे।<sup>21</sup> अब सुलैमान ने सभी राज्यों पर शासन किया नदी से लेकर पलाशियों के देश तक और मिस्र की सीमा तक; वे भेट लाते थे और सुलैमान की सेवा करते थे उसके जीवन के सभी दिनों में।

# 1 राजा

<sup>22</sup> सुलैमान के एक दिन का प्रावधान तीस कोर उत्तम आठा था, और साठ कोर भोजन, <sup>23</sup> दस मोटे बैत, बीस चरगाह में पाले गए बैत, सौ भेड़े, हिरण, गज़ेल, रोबक, और मोटे पक्षियों के अलावा। <sup>24</sup> क्योंकि उसके पास नदी के पश्चिम में सब कुछ था, तिप्पह से लेकर गाजा तक, नदी के पश्चिम के सभी राजाओं पर, और उसके चारों ओर सब तरफ शांति थी। <sup>25</sup> इसलिए यहूदा और इसाएल सुरक्षित रूप से रहते थे, प्रत्येक व्यक्ति अपनी बेल और अंजीर के पेड़ के नीचे, दान से लेकर बर्झंबा तक, सुलैमान के सभी दिनों में।

<sup>26</sup> सुलैमान के पास अपने रथों के लिए चालीस हजार घोड़ों के अस्तबल थे, और बारह हजार धूड़सवार थे। <sup>27</sup> वे उपाधिकारी राजा सुलैमान और सभी जो राजा सुलैमान की मेज पर आते थे, के लिए भोजन प्रदान करते थे, प्रत्येक अपने महीने में; उन्होंने किसी भी चीज़ की कमी नहीं होने दी। <sup>28</sup> वे घोड़ों और तेज घोड़ों के लिए जौ और भूसा भी लाते थे उस स्थान पर जहां इसकी आवश्यकता होती थी, प्रत्येक अपने आदेश के अनुसार।

<sup>29</sup> अब परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि और बहुत बड़ी समझ और समझ की चाँड़ाई दी, जैसे सम्रद्ध के किनारे की रेत। <sup>30</sup> सुलैमान की बुद्धि पूर्व के सभी लोगों की बुद्धि से अधिक थी, और मिस की सारी बुद्धि से भी। <sup>31</sup> क्योंकि वह सभी अन्य मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान था, एतान एङ्गाही, हमान, कलकोल, और दारदा, माहोल के पुणों से; और उसकी प्रसिद्धि सभी आसपास के राष्ट्रों में ज्ञात थी। <sup>32</sup> उसने तीन हजार नीतिवचन भी कहे, और उसके गीतों की संख्या एक हजार पाँच थी। <sup>33</sup> उसने पेढ़ों के बारे में बात की, लेबनान के देवदार से उस हाइसोप तक जो दीवार पर उगता है; उसने जानवरों, पक्षियों, सरीसूपों, और मछलियों के बारे में भी बात की। <sup>34</sup> लोग सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए सभी राष्ट्रों से आते थे, पृथ्वी के सभी राजाओं से जो उसकी बुद्धि के बारे में सुन चुके थे।

**5** अब सोर के राजा हीराम ने अपने सेवकों को सुलैमान के पास भेजा, जब उसने सुना कि उन्होंने उसे उसके पिता के स्थान पर राजा अधिषिक्त किया है, क्योंकि हीराम हमेशा दाऊद का मित्र रहा था। <sup>2</sup> तब सुलैमान ने हीराम के पास संदेश भेजा, कहते हुए, <sup>3</sup> "तुम जानते हो कि मेरे पिता दाऊद परमेश्वर यहोवा के नाम के लिए एक घर नहीं बना सके क्योंकि युद्धों के कारण जो उन्हें धों रहते थे, जब तक कि यहोवा ने उन्हें उनके पैरों के तले नहीं डाल दिया। <sup>4</sup> पर अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया है; न तो कोई

विरोधी है और न कोई विपत्ति। <sup>5</sup> इसलिए देखो, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के लिए एक घर बनाने का इरादा रखता हूँ, जैसा कि यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा था, तेरा पुत्र, जिसे मैं तेरे स्थान पर तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा, वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।" <sup>6</sup> अब, आदेश दो कि वे मेरे लिए लेबनान से देवदार काटें, और मेरे सेवक तुहुरे सेवकों के साथ जौगे; और मैं तुहुरे सेवकों के लिए मजदूरी दूँगा जो कुछ भी तुम कहोगे। क्योंकि तुम जानते हो कि हमारे बीच कोई नहीं है जो सिद्धान्यियों की तरह लकड़ी काटना जानता हो।"

<sup>7</sup> जब हीराम ने सुलैमान के शब्द सुने, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और कहा, "आज यहोवा धन्य है, जिसने दाऊद को इस महान प्रजा पर एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।" <sup>8</sup> इसलिए हीराम ने सुलैमान के पास संदेश भेजा, कहते हुए, "मैंने तुम्हारा सदेश सुना है जो तुमने मुझे भेजा है, मैं देवदार की लकड़ी और सरू की लकड़ी के संबंध में तुहुरी इच्छा पूरी करूँगा।" <sup>9</sup> मेरे सेवक उन्हें लेबनान से समुद्र तक ले आएंगे; और मैं उन्हें समुद्र के द्वारा उन स्थानों तक बेड़ों में बनाकर भैंसँग जहाँ तुम मुझे निर्देश दोगे, और मैं उन्हें वहाँ तोड़ दूँगा, और तुम उन्हें ले जाओगे। तब तुम मेरी इच्छा पूरी करोगे मेरे घराने को भोजन देकर।"

<sup>10</sup> इसलिए हीराम ने सुलैमान को वह सारी देवदार और सरू की लकड़ी दी जो वह चाहता था। <sup>11</sup> तब सुलैमान ने हीराम को उसके घराने के भीजन के लिए बीस हजार कोर गेहूँ और बीस कोर पिसा हुआ तेल दिया। सुलैमान यह हर वर्ष हीराम को देता था। <sup>12</sup> और यहोवा ने सुलैमान को बुद्धि दी, जैसा उसने उससे वादा किया था; और हीराम और सुलैमान के बीच शांति थी, और दोनों ने एक संधि की।

<sup>13</sup> अब राजा सुलैमान ने पूरे इसाएल से जबरन मजदूरों को बुलाया, और जबरन मजदूरों की संख्या तीस हजार पुरुष थी। <sup>14</sup> उसने उन्हें लेबनान भेजा, महीने में दस हजार की बारी में; वे लेबनान में एक महीने रहते थे और दो महीने घर पर। और अदोनिराम जबरन मजदूरों के ऊपर था। <sup>15</sup> अब सुलैमान के पास सत्तर हजार पुरुष थे जो भार उठाते थे, और अस्सी हजार जो पहाड़ों में पत्थर काटते थे, <sup>16</sup> सुलैमान के मुख्य अधिकारियों के अलावा जो काम के ऊपर थे, तीन हजार तीन सौ जो काम करने वाले लोगों पर शासन करते थे। <sup>17</sup> तब राजा ने आदेश दिया, और उन्होंने बड़े पत्थर, मूल्यवान पत्थर काटे, घर की नींव रखने के लिए कटे हुए पत्थर। <sup>18</sup> इसलिए सुलैमान के निर्माणकर्ताओं और हीराम के

## 1 राजा

निर्माणकर्ताओं और गेबाल के पुरुषों ने पत्थर काटे, और उन्होंने घर बनाने के लिए लकड़ी और पत्थर तैयार किए।

**6** अब ऐसा हुआ कि जब इस्माएलियों के मिस देश से निकलने के चार सौ अस्सीवें वर्ष में, सुलैमान के इस्माएल पर राज्य करने के चौथे वर्ष में, ज़िव महीने (जो दूसरा महीना है) में, उसने प्रभु के घर का निर्माण शुरू किया।<sup>2</sup> वह घर जिसे राजा सुलैमान ने प्रभु के लिए बनाया था, लंबाई में साठ हाथ, चौड़ाई में बीस हाथ, और ऊँचाई में तीस हाथ था।<sup>3</sup> घर के मुख्य भाग के सामने का बरामदा बीस हाथ लंबा था, घर की चौड़ाई के बराबर, और घर के सामने दस हाथ गहरा था।<sup>4</sup> और उसने घर के लिए कलात्मक फ्रेम वाले खिड़कियाँ बनाई।<sup>5</sup> उसने घर की दीवार के साथ एक परिशिष्ट भी बनाया घर की दीवारों के चारों ओर, मुख्य भाग और आंतरिक पवित्र स्थान दोनों के; और उसने चारों ओर सहायक कक्ष बनाए।<sup>6</sup> सबसे निचला तल पाँच हाथ चौड़ा था, मध्य तल छह हाथ चौड़ा था, और तीसरा तल सात हाथ चौड़ा था; क्योंकि उसने घर की दीवार पर चारों ओर कटाव बनाए, ताकि बीम घर की दीवारों में न डाली जाए।<sup>7</sup> घर पत्थर से बनाया गया था जो खदान में तैयार किया गया था, और घर में निर्माण के समय कोई हप्पौड़ा या कुल्हाड़ी या कोई लोहे का औजार नहीं सुना गया।<sup>8</sup> सबसे निचले सहायक कक्ष का द्वार घर के दाहिने ओर था; और वे धुमावदार सीढ़ियों से मध्य तल पर जाते थे, और मध्य तल से तीसरे पर।<sup>9</sup> तो उसने घर का निर्माण किया और उसे पूरा किया; और उसने घर को देवदार की बीमों और तख्तों से ढक दिया।<sup>10</sup> उसने पूरे घर के खिलाफ सहायक कक्ष भी बनाए, प्रत्येक पाँच हाथ ऊँचा; और वे देवदार की लकड़ी से घर से जुड़े हुए थे।

**11** अब प्रभु का वचन सुलैमान के पास आया, यह कहते हुए,<sup>11</sup> “इस घर के लिए जो तुम बना रहे हो, यदि तुम मेरी विधियों में चलते हो, मेरे नियमों का पालन करते हो, और मेरे सभी आदेशों को मानते हो, तो मैं तुम्हारे साथ अपना वचन पूरा करूँगा, जो मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से कहा था।<sup>12</sup> और मैं इस्माएल के पुत्रों के बीच निवास करूँगा, और अपनी प्रजा इस्माएल को नहीं छोड़ूँगा।”

**14** तो सुलैमान ने घर का निर्माण किया और उसे पूरा किया।<sup>15</sup> उसने घर की दीवारों को अंदर से देवदार से बनाया; घर की फर्श से लेकर छत तक उसने इसे अंदर से लकड़ी से ढक दिया, और उसने घर की फर्श को जुनिपर की तख्तों से ढक दिया।<sup>16</sup> उसने घर के पिछले हिस्से में बीस हाथ देवदार की तख्तों से बनाया फर्श से

लेकर छत तक; उसने इसे अंदर से एक आंतरिक पवित्र स्थान के रूप में बनाया, जो परम पवित्र स्थान था।<sup>17</sup> घर, अर्थत् आंतरिक पवित्र स्थान के सामने का मुख्य भाग, चारीस हाथ लंबा था।<sup>18</sup> घर के अंदर देवदार था, लौकी और खुले फूलों के आकार में नक्काशीदार; सब कुछ देवदार था, कोई पत्थर दिखाई नहीं देता था।<sup>19</sup> फिर उसने घर के अंदर एक आंतरिक पवित्र स्थान तैयार किया ताकि वहाँ प्रभु की वाचा का सन्दूक रखा जा सके।<sup>20</sup> आंतरिक पवित्र स्थान बीस हाथ लंबा, बीस हाथ चौड़ा, और बीस हाथ ऊँचा था, और उसने इसे दोनों ओर खिड़कियाँ बनाई।<sup>21</sup> तो सुलैमान ने घर के अंदर को शुद्ध सोने से ढक दिया। उसने दोनों ओर खिड़कियाँ बनाई, और उसने दोनों ओर खिड़कियाँ बनाई।<sup>22</sup> उसने पूरे घर को सोने से ढक दिया, जब तक कि पूरा घर पूरा नहीं हो गया। उसने आंतरिक पवित्र स्थान के पास की पूरी ओर खिड़की को भी सोने से ढक दिया।

**23** आंतरिक पवित्र स्थान में उसने जैतून की लकड़ी के दो करूँब बनाए, प्रत्येक दस हाथ ऊँचा।<sup>24</sup> एक करूँब के एक पंख की लंबाई पाँच हाथ थी, और दूसरे पंख की लंबाई पाँच हाथ थी; एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक दस हाथ थे।<sup>25</sup> दूसरा करूँब दस हाथ का था; दोनों करूँब समान आकार और आकार के थे।<sup>26</sup> एक करूँब की ऊँचाई दस हाथ थी, और दूसरा करूँब भी।<sup>27</sup> उसने करूँबों को अंतरिक घर में रखा, और करूँबों के पंख फैलाए गए थे, ताकि एक का पंख एक दीवार को छू रहा था, और दूसरे करूँब का पंख दूसरी दीवार को छू रहा था, और उनके पंख घर के केंद्र में एक-दूसरे को छू रहे थे।<sup>28</sup> उसने करूँबों को भी सोने से ढक दिया।

**29** फिर उसने घर की सभी दीवारों को चारों ओर नक्काशीदार चित्रों से सजाया करूँबों, खजूर के पेड़ों, और खुले फूलों के नक्काशीदार चित्रों से, आंतरिक कक्ष से बाहरी कक्ष तक।<sup>30</sup> उसने घर की फर्श को भी सोने से ढक दिया, आंतरिक कक्ष से बाहरी कक्ष तक।

**31** आंतरिक पवित्र स्थान के प्रवेश के लिए उसने जैतून की लकड़ी के दरवाजे बनाए, लिंटल और पाँच-पक्षीय दरवाजे के खंभे।<sup>32</sup> तो उसने जैतून की लकड़ी के दो दरवाजे बनाए, और उन पर करूँब, खजूर के पेड़, और खुले फूलों की नक्काशी की, और उन्हें सोने से ढक दिया; और उसने करूँबों और खजूर के पेड़ों पर सोना ठोका।<sup>33</sup> तो उसने मुख्य भाग के प्रवेश के लिए जैतून की लकड़ी के चार-पक्षीय दरवाजे के खंभे भी बनाए,<sup>34</sup> और सरू की लकड़ी के दो दरवाजे; एक दरवाजे के दो

# 1 राजा

पते कुँडों पर धूमते थे, और दूसरे दरवाजे के दो पते कुँडों पर धूमते थे।<sup>35</sup> उसने उन पर करूब, खजूर के पेड़, और खुले फूलों की नकाशी की, और उन्हें सोने से ढक दिया जो नकाशीदार काम पर समान रूप से लगाया गया था।

<sup>36</sup> और उसने आंतरिक अँगन को तीन पंक्तियों के कटे हुए पत्थर और देवदार की बीम की एक पंक्ति से बनाया।

<sup>37</sup> चौथे वर्ष में प्रभु के घर की नींव रखी गई, जिव महीने में।<sup>38</sup> यारहवें वर्ष में, बुल महीने (जो आठवां महीना है) में, घर अपने सभी भागों में और अपनी सभी योजनाओं के अनुसार पूरा हुआ। तो उसने इसे सात वर्षों में बनाया।

**7** अब सुलैमान ने अपने घर का निर्माण तेरह वर्षों में किया, और उसने अपने पूरे घर को पूरा किया।<sup>2</sup> उसने लबानोन के वन का भवन बनाया; उसकी लंबाई सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊँचाई तीस हाथ थी, चार कतार देवदार के स्तंभों पर, जिन पर देवदार की कढ़ियाँ थीं।<sup>3</sup> यह ऊपर के कक्षों के ऊपर देवदार से छतदार था जो पैतालीस स्तंभों पर थे, प्रत्येक कतार में पंद्रह।<sup>4</sup> तीन कतारों में कलात्मक खिड़की के फ्रेम थे, और खिड़की के सामने खिड़की थी तीन स्तरों में।<sup>5</sup> सभी दरवाजे और दरवाजों के चौखोटों में चौकोर कलात्मक फ्रेम थे, और खिड़की के सामने खिड़की थी तीन स्तरों में।<sup>6</sup> फिर उसने स्तंभों का हॉल बनाया; उसकी लंबाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ थी, और सामने एक बरामदा था जिसमें स्तंभ और उनके सामने एक छत्र था।<sup>7</sup> उसने सिंहासन का हॉल बनाया जहाँ वह न्याय करने वाला था, न्याय का हॉल, और यह फर्श से छत तक देवदार से पैनल किया गया था।<sup>8</sup> उसका घर जहाँ वह निवास करने वाला था, हॉल से अंदर के अँगन में, उसी कारीगरी का था। उसने फिरैन की बेटी के लिए भी ऐसा ही एक घर बनाया, जिसे सुलैमान ने पत्नी के रूप में लिया था।

<sup>9</sup> ये सभी कीमती पत्थरों से बने थे, आकार में कटे हुए, आरी से अंदर और बाहर काटे गए, नींव से लेकर छज्जों तक, और बाहर से लेकर बड़े अँगन तक।<sup>10</sup> नींव कीमती पत्थरों की थी, बड़े पत्थरों की, दस और आठ हाथ के पत्थरों की।<sup>11</sup> और ऊपर कीमती पत्थर थे, आकार में कटे हुए पत्थर, और देवदार।<sup>12</sup> तो बड़े अँगन के चारों ओर तीन कतार कटे हुए पत्थरों की थी

और देवदार की कड़ी की एक कतार थी, जैसे कि प्रभु के घर के आंतरिक अँगन की, और घर के ब्रामदे की।

<sup>13</sup> अब राजा सुलैमान ने शब्द भेजा और हूराम को सोर से बुलवाया।<sup>14</sup> वह नपाली के गोत्र की एक विधा का पुत्र था, और उसका पिता सोर का एक व्यक्ति था, एक कांस्य कार्यकर्ता, और वह कांस्य में कोई भी काम करने के लिए बुद्धि और समझ और कौशल से भरा हुआ था। इसलिए वह राजा सुलैमान के पास आया और अपने सभी काम किए।<sup>15</sup> उसने कांस्य के दो स्तंभ ढाले; एक स्तंभ की ऊँचाई अठारह हाथ थी, और दोनों की परिधि बारह हाथ की मापी गई।<sup>16</sup> उसने पिघले हुए कांस्य के दो सिर बनाए जो स्तंभों के शीर्ष पर रखने के लिए थे; एक सिर की ऊँचाई पाँच हाथ थी, और दूसरे सिर की ऊँचाई पाँच हाथ थी।<sup>17</sup> स्तंभों के शीर्ष पर जो सिर थे उनके लिए जालीदार काम और जंजीरों के मुड़े हुए धागे थे, प्रत्येक सिर के लिए सात।<sup>18</sup> इसलिए उसने स्तंभ बनाए, और एक जालीदार काम पर चारों ओर अनार की दो कतारें बनाई जो स्तंभों के शीर्ष पर सिर को ढकने के लिए थीं; और उसने दूसरे सिर के लिए भी ऐसा ही किया।<sup>19</sup> अब बरामदे में स्तंभों के शीर्ष पर जो सिर थे वे कुमुदिनी के डिजाइन के थे, चार हाथ।<sup>20</sup> और दो स्तंभों पर सिर थे जो गोलाकार भाग के ऊपर थे जो जालीदार काम के बगल में था, और अनारों की संख्या प्रत्येक सिर पर चारों ओर दो सौ थी।<sup>21</sup> और उसने मुख्य हॉल के बरामदे में स्तंभों को स्थापित किया; उसने दाँए स्तंभ को स्थापित किया और उसका नाम याकीन रखा, और उसने बाँए स्तंभ को स्थापित किया और उसका नाम बोअज रखा।<sup>22</sup> स्तंभों के शीर्ष पर कुमुदिनी का डिजाइन था। इसलिए स्तंभों का काम पूरा हुआ।

<sup>23</sup> उसने ढले हुए धातु का समुद्र भी बनाया, जो किनारे से किनारे तक दस हाथ का था, गोलाकार आकार में, और पाँच हाथ ऊँचा था, और उसकी परिधि तीस हाथ की मापी गई।<sup>24</sup> और उसके किनारे के नीचे लौकी चारों ओर थीं, एक हाथ में दस, समुद्र के चारों ओर घेरे हुए; लौकी को जब ढाला गया था तब दो कतारों में ढाला गया था।<sup>25</sup> यह बारह बैलों पर खड़ा था, तीन उत्तर की ओर, तीन पश्चिम की ओर, तीन दक्षिण की ओर, और तीन पूर्व की ओर; और समुद्र उनके ऊपर रखा गया था, और उनकी सभी पिछली टाँगें अंदर की ओर मुड़ी हुई थीं।<sup>26</sup> यह एक हाथ की मोटाई का था, और इसका किनारा कप के किनारे की तरह बनाया गया था, कुमुदिनी के पूरे की तरह; यह दो हजार बाथ पकड़ सकता था।

# 1 राजा

<sup>27</sup> फिर उसने कांस्य के दस स्टैंड बनाए; प्रत्येक स्टैंड की लंबाई चार हाथ, चौड़ाई चार हाथ, और ऊँचाई तीन हाथ थी। <sup>28</sup> और स्टैंड का डिजाइन यह था: उनके पास फ्रेमों के बीच सीमाएँ थीं; <sup>29</sup> और फ्रेमों के बीच की सीमाओं पर सिंह, बैल, और करुण थे। और फ्रेमों पर ऊपर एक आधार था, और सिंहों और बैलों के नीचे लटकने वाले काम की माला थी। <sup>30</sup> अब प्रत्येक स्टैंड के चार कांस्य पहिए थे जिनके कांस्य धूए थे, और उसके चार पैर सहारे थे; बेसिन के नीचे ढले हुए सहारे थे, प्रत्येक के किनारे पर माला। <sup>31</sup> इसके शीर्ष पर मुकुट के अंदर का उद्घाटन एक हाथ था, और उद्घाटन गोल था, जैसे एक आधार, एक हाथ और आधा व्यास में; और उद्घाटन पर भी नक्काशी थी। और उनकी सीमाएँ चौकोर थीं, गोल नहीं। <sup>32</sup> और चार पहियों के धुरे स्टैंड पर ही थे; एक पहिए की ऊँचाई एक हाथ और आधा थी। <sup>33</sup> पहियों की कारीगरी रथ के पहिए की कारीगरी की तरह थी। उनके धुरे, उनके रिम, उनके प्रवक्ता, और उनके हब सभी ढले हुए थे। <sup>34</sup> अब प्रत्येक स्टैंड के चार कोनों पर चार सहारे थे; इसके सहारे स्वर्य स्टैंड का हिस्सा थे। <sup>35</sup> स्टैंड के शीर्ष पर एक गोलाकार रूप आधा हाथ ऊँचा था, और स्टैंड के शीर्ष पर उसके ठहराव और उसकी सीमाएँ उसका हिस्सा थे। <sup>36</sup> और उसने उसके ठहराव की प्लेटों पर और उसकी सीमाओं पर नक्काशी की, करुण, सिंह, और खजूर के पेढ़, प्रत्येक के स्पष्ट स्थान के अनुसार, चारों ओर मालाओं के साथ। <sup>37</sup> उसने दस स्टैंड इस प्रकार बनाए: उन सभी का एक ढलान, एक माप, और एक रूप था।

<sup>38</sup> और उसने कांस्य के दस बेसिन बनाए, प्रत्येक स्टैंड के लिए एक बेसिन; प्रत्येक बेसिन चालीस बाथ रखता था और चार हाथ का था; और प्रत्येक दस स्टैंड पर एक बेसिन था। <sup>39</sup> फिर उसने स्टैंडों को स्पापित किया, घर के दाएँ और पाँच और घर के बाएँ और पाँच; और उसने समुद्र को घर के दाएँ और पूर्व की ओर दक्षिण की ओर स्थापित किया।

<sup>40</sup> अब हूराम ने बेसिन, फावड़े, और कटोरे बनाए। इस प्रकार हूराम ने प्रभु के घर में राजा सुलैमान के लिए किए गए सभी काम पूरे किए। <sup>41</sup> दो स्तंभ और दो कटोरे जो स्तंभों के शीर्ष पर थे, और दो जालीदार काम जो स्तंभों के शीर्ष पर कटोरे को ढकने के लिए थे; <sup>42</sup> और दो जालीदार कामों के लिए चार सौ अनार, प्रत्येक जालीदार काम के लिए अनार की दो करते जो स्तंभों पर कटोरे को ढकने के लिए थीं; <sup>43</sup> और दस स्टैंड जिन पर दस बेसिन थे; <sup>44</sup> और एक समुद्र और समुद्र के नीचे

बाहर बैल; <sup>45</sup> और बर्तन, फावड़े, और कटोरे। ये सभी बर्तन जो हूराम ने प्रभु के घर में राजा सुलैमान के लिए बनाए थे, वे चमकदार कांस्य के थे। <sup>46</sup> जॉर्डन के मैदान में राजा ने उन्हें ढाला, सुकोत और ज़ारेतान के बीच की मिट्टी की भूमि में। <sup>47</sup> सुलैमान ने सभी बर्तनों को बिना तौले छोड़ दिया, क्योंकि वे बहुत अधिक थे; कांस्य का वजन निर्धारित नहीं किया जा सका।

<sup>48</sup> सुलैमान ने प्रभु के घर में सभी फर्नीचर भी बनाए: सोने की वेटी और सोने की मेज पर उपस्थिति की रोटी थी; <sup>49</sup> और दीपसंतंभ, पाँच दाएँ ओर और पाँच बाएँ ओर, आंतरिक पवित्रस्थान के सामने, शुद्ध सोने के, फूलों, दीपों, और सोने की चिमटी के साथ; <sup>50</sup> और प्याले, चिमटी, कटोरे, चम्मच, और अग्रिपान, शुद्ध सोने के; और आंतरिक घर के दरवाजों के लिए काज, अर्पत्, परम पवित्र स्थान के लिए, और घर के दरवाजों के लिए, अर्पत्, सोने के नावे के।

<sup>51</sup> इस प्रकार राजा सुलैमान ने प्रभु के घर में किए गए सभी काम पूरे किए। और सुलैमान ने उन वस्तुओं को लाया जिन्हें उसके पिता दाऊद ने समर्पित किया था: चाँदी, सोना, और बर्तन; और उन्हें प्रभु के घर के खजानों में रखा।

**8** तब सुलैमान ने इसाएल के प्राचीनों और सब गोत्रों के प्रधानों को, इसाएल के पुत्रों के पितरों के घरानों के नेताओं को यूरश्लेम में राजा सुलैमान के पास बुलाया, कि वे दाऊद के नगर से, जो सिय्योन है, प्रभु की वाचा का सन्दूक से आएं। <sup>2</sup> इसाएल के सब लोग राजा सुलैमान के सामने एथानीम महीने के पर्व में, जो सातवां महीना है, इकट्ठे हुए। <sup>3</sup> तब इसाएल के सब प्राचीन आए, और याजकों ने सन्दूक को उठाया। <sup>4</sup> वे प्रभु के सन्दूक को, मण्डप और सब पवित्र पात्रों को जो मण्डप में थे, ले आए; और याजकों और लेवियों ने उन्हें उठाया। <sup>5</sup> और राजा सुलैमान और इसाएल की सारी मण्डली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी, सन्दूक के सामने थी, इतनी भेड़-बकरियां और बैल बलि चढ़ा रहे थे कि उनकी गिनती या संख्या नहीं हो सकती थी। <sup>6</sup> तब याजकों ने प्रभु की वाचा के सन्दूक को उसके स्थान पर रखा, घर के आंतरिक पवित्र स्थान में, अति पवित्र स्थान में, करुणों के पंखों के नीचे। <sup>7</sup> क्योंकि करुणों ने सन्दूक के स्थान के ऊपर अपने पंख फैलाए थे, और करुणों ने सन्दूक और उसके डंडों के ऊपर से ढक दिया था। <sup>8</sup> परंतु डंडे इतने लंबे थे कि डंडों के सिंह आंतरिक पवित्र स्थान के सामने पवित्र स्थान से देखे जा सकते थे, परंतु बाहर से नहीं देखे जा सकते थे; वे आज तक वहीं हैं। <sup>9</sup> सन्दूक में कुछ नहीं था

# 1 राजा

सिवाय दो पत्थर की पट्टियों के जो मूसा ने होरेब में रखी थीं, जहां प्रभु ने इसाएल के पुत्रों के साथ वाचा की थी जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे।

<sup>10</sup> और जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए, तब बादल ने प्रभु के घर को भर दिया, <sup>11</sup> ताकि याजक बादल के कारण सेवा करने के लिए खड़े नहीं हो सकें, क्योंकि प्रभु की महिमा ने प्रभु के घर को भर दिया।

<sup>12</sup> तब सुलैमान ने कहा, 'प्रभु ने कहा है कि वह घने बादल में वास करेगा। <sup>13</sup> मैंने सचमुच आपके लिए एक ऊंचा घर बनाया है, आपके निवास के लिए एक स्थान दादा के लिए।'

<sup>14</sup> तब राजा ने मुड़कर इसाएल की सारी मण्डली को आशीर्वाद दिया, जबकि इसाएल की सारी मण्डली खड़ी थी। <sup>15</sup> उसने कहा, 'इसाएल के परमेश्वर प्रभु की स्तुति हो, जिसने अपने मुख से मैं पिता दाऊद से कहा, और अपने हाथों से इसे पूरा किया, यह कहते हुए, <sup>16</sup> जिस दिन से मैंने अपने लोगों इसाएल को मिस्र से बाहर निकाला, मैंने इसाएल के सब गोत्रों में से किसी नगर को नहीं छुना कि वहां एक घर बनाया जाए कि मेरा नाम वहां हो, परंतु मैंने दाऊद को अपने लोगों इसाएल पर रखा।' <sup>17</sup> अब यह मेरे पिता दाऊद के मन में था कि प्रभु के नाम के लिए एक घर बनाया जाए, जो इसाएल का परमेश्वर है। <sup>18</sup> परंतु प्रभु ने मेरे पिता दाऊद से कहा, 'क्योंकि यह तुम्हारे मन में था कि मेरे नाम के लिए एक घर बनाया जाए, यह अच्छा था कि यह तुम्हारे मन में था। <sup>19</sup> फिर भी, तुम घर नहीं बनाओगे, परंतु तुम्हारा पुत्र जो तुम्हारे पास से उत्पन्न होगा, वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।' <sup>20</sup> अब प्रभु ने अपने वचन को पूरा किया जो उसने कहा था, क्योंकि मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठ खड़ा हुआ हूं और इसाएल के सिंहासन पर बैठा हूं जैसा कि प्रभु ने वादा किया था, और मैंने प्रभु के नाम के लिए घर बनाया है, जो इसाएल का परमेश्वर है। <sup>21</sup> और मैंने वहां सन्दर्भ के लिए एक स्थान रखा है, जिसमें प्रभु की वाचा है, जो उसने हमारे पितरों के साथ की थी जब उसने उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला।'

<sup>22</sup> तब सुलैमान प्रभु की वेदी के सामने खड़ा हुआ इसाएल की सारी मण्डली के सामने, और अपने हाथ आकाश की ओर फैलाए। <sup>23</sup> उसने कहा, 'हे इसाएल के परमेश्वर प्रभु, आपके सामान स्वर्ग में ऊपर या पृथीव पर नीचे कोई परमेश्वर नहीं है, जो वाचा को बनाए रखते हैं और अपने सेवकों के प्रति विश्वसयोग्यता दिखाते हैं जो अपने पूरे मन से आपके सामने चलते हैं, <sup>24</sup> जिन्होंने

अपने सेवक, मेरे पिता दाऊद के साथ वह रखा जो आपने उनसे वादा किया था; आपने अपने मुख से कहा और अपने हाथ से इसे पूरा किया, जैसा कि आज है। <sup>25</sup> अब, हे प्रभु, इसाएल के परमेश्वर, अपने सेवक दाऊद मेरे पिता के साथ वह बनाए रखें जो आपने उनसे वादा किया था, यह कहते हुए, 'आपके पास इसाएल के सिंहासन पर बैठें के लिए कोई व्यक्ति नहीं होगा, यदि केवल आपके पुत्र अपने मार्ग के प्रति सावधान रहें, मेरे सामने वैसे ही चर्चे जैसे आप चले हैं।' <sup>26</sup> अब, हे इसाएल के परमेश्वर, आपका वचन पूरा हो, जो आपने अपने सेवक, मेरे पिता दाऊद से कहा था।

<sup>27</sup> परंतु क्या परमेश्वर वास्तव में पृथीव पर वास करेगा? देखो, स्वर्ग और सर्वोच्च स्वर्ग आपको समाहित नहीं कर सकते, तो यह घर जो मैंने बनाया है, कितना कम! <sup>28</sup> फिर भी, अपने सेवक की प्रार्थना पर ध्यान दें और उसकी विनती पर, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, उस पुकार और प्रार्थना को सुनें जो आपका सेवक आज आपके सामने करता है, <sup>29</sup> ताकि आपकी आंखें इस घर की ओर रात और दिन खुली रहें, उस स्थान की ओर जिसे आपने कहा है, 'मेरा नाम वहां होगा,' उस प्रार्थना को सुनें जो आपका सेवक इस स्थान की ओर करेगा। <sup>30</sup> और अपने सेवक और अपने लोगों इसाएल की विनती सुनें जब वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें; स्वर्ग में अपने निवास स्थान में सुनें; और जब आप सुनें, क्षमा करें।

<sup>31</sup> यदि कोई अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है और उसे शपथ लेने की आवश्यकता होती है, और वह आपके वेदी के सामने इस घर में शपथ लेता है, <sup>32</sup> तब स्वर्ग में सुनें और कार्य करें और अपने सेवकों का न्याय करें, दुष्टों को उसके अपने सिर पर उसका मार्ग लाकर ढंड दें, और धर्मी को उसके धर्म के अनुसार उसे न्याय दें।

<sup>33</sup> जब आपके लोग इसाएल किसी शत्रु के सामने पराजित होते हैं क्योंकि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है, यदि वे फिर से आपकी ओर मुड़ें और आपके नाम को स्वीकार करें और प्रार्थना करें और इस घर में आपसे विनती करें, <sup>34</sup> तब स्वर्ग में सुनें, और अपने लोगों इसाएल के पाप को क्षमा करें, और उन्हें उस देश में वापस लाएं जो आपने उनके पितरों को दिया था।

<sup>35</sup> जब आकाश बंद हो जाता है और कोई वर्षा नहीं होती क्योंकि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है, और वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और आपके नाम को स्वीकार करें और जब आप उन्हें ढंड दें तो अपने पाप से

## 1 राजा

फिरें, <sup>36</sup> तब स्वर्ग में सुनें और अपने सेवकों और अपने लोगों इसाएल के पाप को क्षमा करें; वास्तव में, उन्हें वह अच्छा मार्ग सिखाएं जिसमें उन्हें चलना है। और अपने देश पर वर्षा भेजें, जो आपने अपने लोगों को विरासत के रूप में दिया है।

<sup>37</sup> यदि देश में अकाल हो, यदि महामारी हो, या झुलसा या फ़र्कूया हो, टिक्किया या टिड्डू हों, यदि उनका शत्रु उनके नगरों में उड़वें रहे, जो भी विपत्ति, जो भी रोग हो, <sup>38</sup> जो भी प्रार्थना या विनती कोई भी करे या आपके सभी लोग इसाएल करें, प्रत्येक अपने हृदय की विपत्ति को जानकर, और इस घर की ओर अपने हाथ फैलाकर, <sup>39</sup> तब स्वर्ग में अपने निवास स्थान में सुनें, और क्षमा करें, और कार्य करें और प्रत्येक को उसके सभी मार्गों के अनुसार दें, जिसका हृदय आप जानते हैं—क्योंकि आप अकेले ही सभी मनुष्यों के हृदयों को जानते हैं—<sup>40</sup> ताकि वे आपके भय में रहें उन सभी दिनों में जो वे उस देश में रहते हैं जो आपने हमारे पितरों को दिया है।

<sup>41</sup> इसके अलावा उस विदेशी के बारे में जो आपके लोगों इसाएल का नहीं है, जब वह आपके नाम के लिए द्वारा देश से आता है <sup>42</sup> (क्योंकि वे आपके महान नाम, आपकी शक्तिशाली हाथ, और आपके फैले हुए भूजा के बारे में सुनेंगे), जब वह आता है और इस घर की ओर प्रार्थना करता है, <sup>43</sup> स्वर्ग में अपने निवास स्थान में सुनें, और उस सब के अनुसार करें जिसके लिए विदेशी आपसे प्रार्थना करता है, ताकि पृथी के सभी लोग आपके नाम को जानें, आपके भय में रहें जैसे आपके लोग इसाएल करते हैं, और यह जानें कि यह घर जो मैंने बनाया है आपके नाम से पुकारा जाता है।

<sup>44</sup> जब आपके लोग अपने शत्रु के विरुद्ध युद्ध करते के लिए निकलते हैं, जिस मार्ग से आप उन्हें भेजते हैं, और वे उस नगर की ओर प्रभु से प्रार्थना करते हैं जिसे आपने चुना है और उस घर की ओर जो मैंने आपके नाम के लिए बनाया है, <sup>45</sup> तब स्वर्ग में उनकी प्रार्थना और उनकी विनती सुनें, और उनके कारण को बनाए रखें।

<sup>46</sup> जब वे आपके विरुद्ध पाप करते हैं (क्योंकि कोई नहीं है जो पाप नहीं करता), और आप उनसे क्रोधित होते हैं और उन्हें शत्रु के हवाले कर देते हैं, ताकि वे शत्रु के देश में ले जाए जाएं, दूर या पास; <sup>47</sup> यदि वे उस देश में जहां उन्हें बंदी बनाकर ले जाया गया है, इसे अपने मन में लें, और पश्चात्ताप करें और अपने बंदी बनाने वालों के देश में आपसे विनती करें, यह कहते हुए, हमने पाप किया है और गलत किया है, हमने दुष्टा की है; <sup>48</sup> यदि वे अपने

पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा के साथ आपकी ओर लौटें उनके शत्रुओं के देश में जिह्वोंने उन्हें बंदी बनाया है, और आपके देश की ओर प्रार्थना करें जो आपने उनके पितरों को दिया है, उस नगर की ओर जिसे आपने चुना है, और उस घर की ओर जो मैंने आपके नाम के लिए बनाया है, <sup>49</sup> तब स्वर्ग में अपने निवास स्थान में उनकी प्रार्थना और उनकी विनती सुनें, और उनके कारण को बनाए रखें, <sup>50</sup> और अपने लोगों को क्षमा करें जिह्वोंने आपके विरुद्ध पाप किया है, और उनके सभी अपराधों को जो उन्होंने आपके विरुद्ध किए हैं, और उन पर दया करें जिह्वोंने उन्हें बंदी बनाया है, ताकि वे उन पर दया करें। <sup>51</sup> क्योंकि वे आपके लोग और आपकी विरासत हैं जिह्वे आपने मिस से, लोहे की भट्टी के बीच से निकाला है—<sup>52</sup> ताकि आपके आंखें आपके सेवक की विनती की ओर खुली रहें और आपके लोगों इसाएल की विनती की ओर, उन्हें सुनने के लिए जब भी वे आपसे पुकारें। <sup>53</sup> क्योंकि आपने उन्हें पृथी के सभी लोगों से अपनी विरासत के रूप में अलग किया है, जैसा कि आपने अपने सेवक मूसा के माध्यम से कहा था, जब आपने हमारे पितरों को मिस से निकाला, हे प्रभु परमेश्वर।"

<sup>54</sup> जब सुलैमान ने प्रभु के सामने यह पूरी प्रार्थना और विनती समाप्त की, तो वह प्रभु की बेदी के सामने से उठ खड़ा हुआ, अपने घृतों पर झुका हुआ और अपने हाथ आकाश की ओर फैला हुआ। <sup>55</sup> और वह खड़ा हुआ और इसाएल की सारी मण्डली को ऊचे स्वर में आशीर्वाद दिया, यह कहते हुए, <sup>56</sup> "प्रभु की सुरुति हो, जिसने अपने लोगों इसाएल को विश्राम दिया, उस सब के अनुसार जो उसने वादा किया; उसके सभी अच्छे वादों में से एक भी शब्द विफल नहीं हुआ है, जो उसने अपने सेवक मूसा के माध्यम से वादा किया था।" <sup>57</sup> हमारा परमेश्वर प्रभु हमारे साथ हो, जैसा कि वह हमारे पितरों के साथ था; वह हमें न छोड़े और न ही त्यागे, <sup>58</sup> ताकि वह हमारे हृदयों को अपनी ओर निर्देशित करे, अपने सभी मार्गों में चलने के लिए और अपनी आज्ञाओं, अपने विधियों, और अपने नियमों को बनाए रखने के लिए, जो उसने हमारे पितरों को आदेश दिए। <sup>59</sup> और मेरी ये बातें, जिनके लिए मैंने प्रभु के सामने विनती की है, हमारे परमेश्वर प्रभु के निकट दिन और रात बनी रहें, ताकि वह अपने सेवक के कारण को बनाए रखें और अपने लोगों इसाएल के कारण को, जैसा कि प्रत्येक दिन आवश्यक है, <sup>60</sup> ताकि पृथी के सभी लोग जानें कि प्रभु ही परमेश्वर है; और कोई नहीं है। <sup>61</sup> इसिलिए आपका हृदय पूरी तरह से हमारे परमेश्वर प्रभु के प्रति समर्पित

## 1 राजा

हो, उसके विधियों में चलने और उसकी आज्ञाओं को बनाए रखने के लिए, जैसा कि आज है।<sup>1</sup>

<sup>62</sup> तब राजा और उसके साथ सभी इसाएलियों ने प्रभु के समाने बलिदान चढ़ाया। <sup>63</sup> सुलैमान ने शांति बलिदान के लिए बलिदान चढ़ाया, जो उसने प्रभु को चढ़ाया, बाईस हजार बैल और एक सौ बीस हजार भेड़ें। इस प्रकार राजा और इसाएल के सभी पुत्रों ने प्रभु के घर को समर्पित किया। <sup>64</sup> उसी दिन राजा ने अंगन के मध्य भाग को पवित्र किया जो प्रभु के घर के सामने था, क्योंकि वहाँ उसने होम बलिदान, अन्न बलिदान, और शांति बलिदान की चर्ची चढ़ाई; क्योंकि प्रभु के सामने की कांस्य वेदी बहुत छोटी ही होम बलिदान, अन्न बलिदान, और शांति बलिदान की चर्ची को समाहित करने के लिए। <sup>65</sup> इस प्रकार सुलैमान ने उस समय पर्व मनाया, और उसके साथ सभी इसाएली, हमात के प्रवेश द्वार से लेकर मिस की नदी तक की एक बड़ी सभा, हमारे परमेश्वर प्रभु के सामने, सात दिन और फिर सात दिन, कुल चौदह दिन। <sup>66</sup> आठवें दिन उसने लोगों को विदा किया, और उन्होंने राजा को आशीर्वाद दिया। फिर वे अपने तंबुओं में गए हर्षित और हृदय से प्रसन्न क्योंकि प्रभु ने अपने सेवक दाऊद और अपने लोगों इसाएल के लिए जो भलाई दिखाई थी।

**9** जब सुलैमान ने यहोवा के भवन का निर्माण पूरा कर लिया, और राजा के महल का, और जो कुछ सुलैमान करना चाहता था, वह सब पूरा कर लिया, <sup>2</sup> तब यहोवा ने दूसरी बार सुलैमान को दर्शन दिया, जैसा उसने गिरावन में उसे दर्शन दिया था। <sup>3</sup> और यहोवा ने उससे कहा, “मैंने तेरी प्रार्थना और विनती सुनी है जो तूने मेरे सामने की है, मैंने इस भवन को पवित्र किया है जो तूने बनाया है, और वहाँ अपना नाम सदा के लिए रखा है, और मेरी आर्खे और मेरा हृदय वहाँ सदा रहेंगे।” <sup>4</sup> जहाँ तक तेरा संबंध है, यदि तू मेरे सामने चलेगा जैसा तेरे पिता दाऊद ने पूरे मन और सच्चाई से चला, और मेरे सब अदेशों का पालन करेगा, और मेरी विधियों और नियमों को मानेगा, <sup>5</sup> तो मैं तेरे राज्य के सिंहासन को इसाएल पर सदा के लिए ख्याल करूँगा, जैसा मैंने तेरे पिता दाऊद से वादा किया था, यह कहते हुए, ‘इसाएल के सिंहासन पर तेरा कोई व्यक्ति नहीं होगा।’ <sup>6</sup> परन्तु यदि तू या तेरे पुत्र सचमुच मेरे पीछे चलना छोड़ देंगे, और मेरे अदेशों और विधियों का पालन नहीं करेंगे जो मैंने तुहारे सामने रखे हैं, और जाकर अन्य देवताओं की सेवा करेंगे और उन्हें पूजेंगे, <sup>7</sup> तो मैं इसाएल को उस भूमि से काट द्वांगा जो मैंने उन्हें दी है, और उस भवन को जो मैंने अपने नाम के लिए पवित्र किया है, मैं अपनी दृष्टि

से निकाल दूँगा। इस प्रकार इसाएल सब जातियों के बीच एक कहावत और उपहास का कारण बनेगा। <sup>8</sup> और यह भवन खंडहर बन जाएगा; जो कोई इसके पास से गुजरेगा, वह चकित होगा और फूंक मारेगा और कहेगा, यहोवा ने इस भूमि और इस भवन के साथ ऐसा क्यों किया? <sup>9</sup> और वे कहेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को छोड़ दिया, जो उनके पितरों को मिस देश से निकाल लाया था, और उन्होंने अन्य देवताओं को अपनाया और उनकी पूजा और सेवा की; इसलिए यहोवा ने उन पर यह सारी विपत्ति लाई।<sup>10</sup>

<sup>10</sup> अब बीस वर्ष के अंत में, जिसमें सुलैमान ने दो भवनों का निर्माण किया, यहोवा का भवन और राजा का महल, <sup>11</sup> सूर के राजा हीराम ने सुलैमान को देवदार और सनोबर की लकड़ी और सोना उसकी सारी इच्छा के अनुसार दिया, तब राजा सुलैमान ने हीराम को गलील के देश में बीस नगर दिए। <sup>12</sup> इसलिए हीराम सूर से उन नगरों को देखने के लिए आया जो सुलैमान ने उसे दिए थे, परन्तु वे उसे प्रसन्न नहीं हुए। <sup>13</sup> और उसने कहा, “ये कौन से नगर हैं जो तूने मुझे दिए हैं, मेरे भाई?” इसलिए उसने उन्हें आज तक कबूल का देश कहा। <sup>14</sup> और हीराम ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना भेजा।

<sup>15</sup> अब यह उस जबरन श्रम का विवरण है जो राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन का निर्माण करने के लिए लगाया, अपने महल का, मिलो का, यरूशलेम की दीवार का, हाज़ार, मेशिद्दो, और गेज़ेर का। <sup>16</sup> मिस के राजा फिरौन ने गेज़ेर पर चढ़ाई की थी, और उसे आग से जला दिया था, और उस नगर में रहने वाले कनानियों को मार डाला था, और उसे अपनी बेटी, सुलैमान की पत्नी को दहेज के रूप में दिया था। <sup>17</sup> इसलिए सुलैमान ने गेज़ेर का पुनर्निर्माण किया, और निचला बेत-होरेन, <sup>18</sup> बालात और यहूदा के देश में ज़ंगल में तामार, <sup>19</sup> और वे सभी भंडार नगर जो सुलैमान के थे, उसके रथों और उसके घुड़सवारों के नगर, और जो कुछ सुलैमान को यरूशलेम, लेबानोन में, और उसके अधीन सभी भूमि में बनाने की इच्छा थी।

<sup>20</sup> जहाँ तक उन सभी लोगों का संबंध है जो एमोरी, हिती, परिज्जी, हिल्वी, और यदूरी के थे, जो इसाएल के पुत्रों में से नहीं थे, <sup>21</sup> उनके वंशज जो उनके बाद भूमि में बचे थे, जिन्हें इसाएल के पुत्र पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सके, सुलैमान ने उन पर आज तक जबरन श्रम लगाया। <sup>22</sup> परन्तु सुलैमान ने इसाएल के पुत्रों को दास नहीं बनाया; वे योद्धा, उसके सेवक, उसके अधिकारी, उसके कप्तान, रथों के अधिकारी, और उसके घुड़सवार

# 1 राजा

थे।<sup>23</sup> ये सुलैमान के कार्यों पर नियुक्त मुख्य अधिकारी थे, पांच सौ पचास, जो काम करने वाले लोगों पर शासन करते थे।

<sup>24</sup> जैसे ही फिरैन की बेटी दाऊद के नगर से अपने घर आई जो सुलैमान ने उसके लिए बनाया था, तब उसने मिलों का निर्माण किया।<sup>25</sup> अब सुलैमान वर्ष में तीन बार होमबलि और शांति बलि चढ़ाता था उस वेदी पर जो उसने यहोवा के लिए बनाई थी, उसके साथ वेदी पर धूप जलाता था जो यहोवा के समर्मने थी। इस प्रकार उसने भवन का कार्य पूरा किया।

<sup>26</sup> राजा सुलैमान ने एजियन-गेब्र में जहाजों का एक बड़ा भी बनाया, जो एलोथ के पास लाल सागर के किनारे, एदोम के देश में है।<sup>27</sup> और हीराम ने अपने सेवकों को बेड़े के साथ भेजा, वे नाविक जो समुद्र को जानते थे, सुलैमान के सेवकों के साथ।<sup>28</sup> वे ओफिर गए और वहाँ से चार सौ बीस सोना लिया, और उसे राजा सुलैमान के पास लाए।

**10** जब शबा की रानी ने यहोवा के नाम के कारण सुलैमान की प्रसिद्धि के बारे में सुना, तो वह कठिन प्रश्नों के साथ उसे परखने के लिए आई।<sup>2</sup> वह यरूशलेम में बहुत बड़े दल के साथ आई, ऊटों के साथ जो मसाले, बहुत सारा सोना और बहुमूल्य पत्रर ले जा रहे थे। जब वह सुलैमान के पास आई, तो उसने अपने दिल की सारी बातें उसके कहरी।<sup>3</sup> सुलैमान ने उसके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया: राजा से कुछ भी छिपा नहीं था जो उसने उसे समझाया नहीं।<sup>4</sup> जब शबा की रानी ने सुलैमान की सारी बुद्धि देखी, वह घर जो उसने बनाया था,<sup>5</sup> उसकी मेज पर का भोजन, उसके सेवकों को बैठक, उसके मांत्रियों की उपस्थिति और उनकी पोशाक, उसके प्लाई भरने वाले, और उसकी सीढ़ी जिसे वह यहोवा के घर में जाता था, तो उसमें और कोई आत्मा नहीं रही।<sup>6</sup> तब उसने राजा से कहा, “जो रिपोर्ट मैंने अपने देश में आपके शब्दों और आपकी बुद्धि के बारे में सुनी थी, वह सच थी।<sup>7</sup> लेकिन मैंने उन रिपोर्टों पर विश्वास नहीं किया जब तक कि मैं खुद नहीं आई और अपनी अँखों से नहीं देखा। और देखो, मुझे आधा भी नहीं बताया गया था!

आप बुद्धि और समृद्धि में उस रिपोर्ट से भी अधिक हैं जो मैंने सुनी थी।<sup>8</sup> धन्य हैं आपके लोग, धन्य हैं ये सेवक जो आपके सामने लगातार खड़े रहते हैं और आपकी बुद्धि सुनते हैं।<sup>9</sup> धन्य है यहोवा आपका परमेश्वर, जिसने आप में प्रसन्नता पाई और आपको इसाएल के सिंहासन पर बैठाया। क्योंकि यहोवा ने इसाएल से सदा के लिए प्रेम किया, उसने आपको राजा बनाया, न्याय और धर्म

करने के लिए।”<sup>10</sup> तब उसने राजा को एक सौ बीस तोले सोना, बहुत बड़ी मात्रा में मसाले, और बहुमूल्य पत्रर दिए। शबा की रानी ने राजा सुलैमान को जितने मसाले दिए, उतने फिर कभी नहीं आए।

<sup>11</sup> हिराम के जहाज, जो ओफिर से सोना लाए थे, ओफिर से बहुत बड़ी मात्रा में अलमुग लकड़ी और बहुमूल्य पत्रर लाए।<sup>12</sup> राजा ने अलमुग लकड़ी से यहोवा के घर और राजा के घर के लिए सहारे बनाए, गायकों के लिए बीणा और सारंगी भी; ऐसे अलमुग लकड़ी फिर कभी नहीं आई और न ही आज तक देखी गई।

<sup>13</sup> राजा सुलैमान ने शबा की रानी को उसकी सभी इच्छाएँ दीं, जो कुछ उसने माँगा, इसके अलावा जो उसने उसे अपनी शाही उदारता से दिया। तब वह और उसके सेवक अपने देश लौट गए।

<sup>14</sup> अब सोने का बजन जो सुलैमान के पास एक वर्ष में आया, वह छ ह सौ छियासठ तोले सोना था,<sup>15</sup> व्यापारियों और सौदागरों के माल के अलावा और सभी अरब के राजाओं और देश के गवर्नरों से।<sup>16</sup> राजा सुलैमान ने दो सौ बड़े ढालें ठोके हुए सोने की बनाई, प्रत्येक ढाल में छह सौ शेकल सोना लगा।<sup>17</sup> और उसने तीन सौ ढालें ठोके हुए सोने की बनाई, प्रत्येक ढाल में तीन मिना सोना लगा; और राजा ने उन्हें लबानोन के वन के घर में रखा।

<sup>18</sup> इसके अलावा, राजा ने हाथी दाँत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और उसे परिष्कृत सोने से मढ़ा।<sup>19</sup> सिंहासन तक छ ह सीढ़ियाँ थीं और सिंहासन के पीछे एक गोल शीर्ष था, और सीट के दोनों ओर हाथी थे, और हाथों के बगल में दो सिंह खड़े थे।<sup>20</sup> बारह सिंह वहाँ छ ह सीढ़ियों पर खड़े थे, एक-एक सीढ़ी पर; ऐसा किसी अन्य राज्य के लिए नहीं बनाया गया था।<sup>21</sup> राजा सुलैमान के सभी पीने के बर्तन सोने के थे, और लबानोन के वन के घर के सभी बर्तन शुद्ध सोने के थे। कोई भी चाँदी का नहीं था; सुलैमान के दिनों में इसे मूल्यवान नहीं माना जाता था।

<sup>22</sup> क्योंकि राजा के पास समुद्र में तरशीश के जहाज थे हिराम के जहाजों के साथ; हर तीन साल में एक बार तरशीश के जहाज आते थे, सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बंदर और मोर लाते थे।<sup>23</sup> इस प्रकार राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथी के सभी राजाओं से महान हो गया।<sup>24</sup> सारी पृथी सुलैमान की उपस्थिति की खोज कर रही थी, उसकी बुद्धि सुनने के लिए जो परमेश्वर ने उसके दिल में डाली थी।<sup>25</sup> और वे प्रत्येक व्यक्ति अपना उपहार लाते

## 1 राजा

थे: चाँदी और सोने के लेख, वस्त्र, हथियार, मसाले, घोड़े और खच्चर, इतना हर साल।

<sup>26</sup> सुलैमान ने रथ और घुड़सवार इकट्ठे किए; उसके पास एक हजार चार सौ रथ और बारह हजार घुड़सवार थे, और उसने उन्हें रथ नगरों में और राजा के साथ यरूशलैम में रखा। <sup>27</sup> राजा ने यरूशलैम में चाँदी को पत्तरों के समान सामान्य बना दिया, और उसने देवदार को निचले देश के गूलर के समान प्रचुर मात्रा में बना दिया। <sup>28</sup> सुलैमान के घोड़े मिस्र और कूए से आयात किए गए थे; राजा के व्यापारी उन्हें कूए से कीमत पर प्राप्त करते थे। <sup>29</sup> मिस्र से एक रथ छह सौ शेकेल चाँदी में आयात किया गया था, और एक घोड़ा एक सौ पचास में; और उनके माध्यम से उन्होंने उन्हें सभी हितियों के राजाओं और अराम के राजाओं को निर्यात किया।

**11** अब राजा सुलैमान ने फिरैन की बेटी के अलावा कई विदेशी स्त्रियों से प्रेम किया: मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सिदोनी, और हिती स्त्रियाँ, <sup>2</sup> उन जातियों से जिनके बारे में यहोवा ने इसाएल के पुत्रों से कहा था, "तुम उनके साथ संबंध नहीं रखोगे, और न वे तुम्हारे साथ संबंध रखेंगे; वे निश्चित रूप से तुम्हारा हृदय अपने देवताओं की ओर मोड़ देंगे।" सुलैमान ने प्रेम में उनसे चिपक कर रखा। <sup>3</sup> उसके पास सात सौ रानियाँ, राजकुमारियाँ, और तीन सौ उपपतियाँ थीं, और उसकी पतियों ने उसका हृदय मोड़ दिया। <sup>4</sup> क्योंकि जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, उसकी पतियों ने उसका हृदय अन्य देवताओं की ओर मोड़ दिया; और उसका हृदय अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं रहा, जैसा कि उसके पिता दाऊद का हृदय था। <sup>5</sup> सुलैमान ने सिदोनियों की देवी अश्तरेत का अनुसरण किया, और अम्मोनियों के घृणित देवता मिलकोम का। <sup>6</sup> सुलैमान ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और पूरी तरह से यहोवा का अनुसरण नहीं किया, जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया था। <sup>7</sup> तब सुलैमान ने मोआब के घृणित देवता केमोश के लिए एक ऊँचा स्थान बनाया, उस पहाड़ पर जो यरूशलैम के पूर्व में है, और अम्मोन के पुत्रों के घृणित देवता मोलेक के लिए। <sup>8</sup> उसने अपनी सभी विदेशी पतियों के लिए भी ऐसा ही किया, जो धूप जलाती और अपने देवताओं को बलिदान करती थी।

<sup>9</sup> अब यहोवा सुलैमान से क्रोधित हुआ क्योंकि उसका हृदय इसाएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था, जो दो बार उसके सामने प्रकट हुआ था, <sup>10</sup> और उसे इस विषय में आज्ञा दी थी, कि वह अन्य देवताओं का अनुसरण न करे। परन्तु उसने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं

किया। <sup>11</sup> इसलिए यहोवा ने सुलैमान से कहा, "चौंके यह तुम्हारे द्वारा किया गया है, और तुमने मेरी वाचा और मेरी विधियों का पालन नहीं किया है, जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी थी, मैं निश्चित रूप से राज्य को तुमसे छीन लूँगा और इसे तुम्हारे सेवक को दे दूँगा।" <sup>12</sup> हालांकि, मैं तुम्हारे दिनों में ऐसा नहीं करूँगा तुम्हारे पिता दाऊद के कारण, परन्तु मैं इसे तुम्हारे पुत्र के हाथ से छीन लूँगा। <sup>13</sup> फिर भी मैं पूरे राज्य को नहीं छीनूँगा, परन्तु मैं तुम्हारे पुत्र को एक गोत्र दूँगा, मेरे सेवक दाऊद के कारण और यरूशलैम के कारण, जिसे मैंने चुना है।"

<sup>14</sup> तब यहोवा ने सुलैमान के विरुद्ध एक विरोधी को उठाया, एदोमी हृदद; वह एदोम में शाही वंश का था। <sup>15</sup> क्योंकि जब दाऊद एदोम में था, और योआब सेना का सेनापति भार पुरुष को मार डाला। <sup>16</sup> क्योंकि योआब और समस्त इसाएल वहाँ छह महीने तक रहे, जब तक उसने एदोम में हर पुरुष को समाज नहीं कर दिया। <sup>17</sup> परन्तु हृदद मिस्र भाग गया, वह और उसके साथ उसके पिता के सेवकों में से कुछ एदोमी, जब हृदद अभी एक छोटा लड़का था। <sup>18</sup> वे मिद्यान से चले और पारान पहुँचे, और उन्होंने पारान से लोगों को अपने साथ लिया और मिस्र आए, मिस्र के राजा फिरैन के पास, जिसने उसे एक घर दिया, और उसे जोनन निर्धारित किया, और उसे भूमि दी। <sup>19</sup> अब हृदद ने फिरैन की दृष्टि में बड़ी कृपा पाई, और उसने उसे अपनी पत्नी की बहन, ताहपेस रानी की बहन, पत्नी के रूप में दी। <sup>20</sup> ताहपेस की बहन ने उसके पुत्र गेनूबत को जन्म दिया, जिसे ताहपेस ने फिरैन के घर में दृश्य पिलाया, और गेनूबत फिरैन के घराने में फिरैन के पुत्रों के बीच था। <sup>21</sup> परन्तु जब हृदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद अपने पितरों के साथ लेट गया है, और कि योआब सेना का सेनापति भार गया है, हृदद ने फिरैन से कहा, "मुझे जाने दो, कि मैं अपने देश को जा सकूँ।" <sup>22</sup> तब फिरैन ने उससे कहा, "परन्तु तुम्हें मेरे साथ क्या कीमी थी, कि अब तुम अपने देश को जाने की खोज कर रहे हो?" और उसने कहा, "कुछ नहीं; फिर भी, तुम्हें मुझे अवश्य जाने देना चाहिए।"

<sup>23</sup> परमेश्वर ने उसे एक और विरोधी भी उठाया, एल्यादा का पुत्र रेजोन, जो अपने स्वामी हृददज़ेर राजा सोबा से भाग गया था। <sup>24</sup> उसने अपने लिए लोगों को इकट्ठा किया और एक दल का नेता बन गया, जब दाऊद ने सोबा के लोगों को मारा; और वे दमिश्क गए और वहाँ रहे, और दमिश्क में राज्य किया। <sup>25</sup> इसलिए वह सुलैमान के सभी दिनों में इसाएल का विरोधी था, उस

# 1 राजा

बुराई के साथ जो हृदद ने की; और उसने इसाएल से घुणा की और अराम पर राज्य किया।

<sup>26</sup> अब जरदाह के एप्रैमवंशी नबात का पुत्र यारोबाम, सुलैमान का सेवक—जिसकी माता का नाम एक विधवा थी, जिसका नाम जरूरआ था— ने भी राजा के लिरुद्ध हाथ उठाया। <sup>27</sup> अब यह वह कारण था कि उसने राजा के लिरुद्ध हाथ उठाया: सुलैमान ने मिलों का निर्माण किया और अपने पिता दाऊद के नगर की दरार को बंद कर दिया। <sup>28</sup> अब यारोबाम एक वीर योद्धा था, और जब सुलैमान ने देखा कि यह जवान आदमी परिश्रमी था, तो उसने उसे यूसुफ के घर के सभी जबरन श्रम का अधिकारी नियुक्त किया।

<sup>29</sup> अब उस समय ऐसा हुआ, जब यारोबाम यरूशलैम से बाहर गया, कि शीलोनी नबी अहीया ने उसे मार्ग में पाया। अब उसने अपने ऊपर एक नई चादर ओढ़ रखी थी, और वे दोनों मैदान में अकेले थे। <sup>30</sup> तब अहीया ने उस नई चादर को पकड़ लिया जो उसके ऊपर थी और उसे बाहर टुकड़ों में फाड़ दिया। <sup>31</sup> और उसने यारोबाम से कहा, “अपने लिए दस टुकड़े ले लो; क्योंकि यह वही है जो इसाएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: ‘देखो, मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीनने जा रहा हूँ और तुम्हें दस गोत्र दूँगा।’” <sup>32</sup> परन्तु वह एक गोत्र रखेगा, मेरे सेवक दाऊद के कारण और यरूशलैम के कारण, वह नगर जिसे मैंने इसाएल के सभी गोत्रों में से चुना है, <sup>33</sup> क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया है, और सिदेनियों की देवी अश्वोरेत के आगे झुक गए हैं, मोआब के देवता केमोश के आगे, और अम्मोन के पुत्रों के देवता मिलकोम के आगे, और उन्होंने मेरी राहों में नहीं चले, और न ही मेरी दृष्टि में जो सही है वह किया, न ही मेरी विधियों और मेरे नियमों का पालन किया, जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया था। <sup>34</sup> फिर भी, मैं उसके हाथ से पूरे राज्य को नहीं लूँगा, परन्तु मैं उसके जीवन के सभी दिनों के लिए शासक बनाऊँगा, मेरे सेवक दाऊद के कारण जिसे मैंने चुना, जिसने मेरी आज्ञाओं और मेरी विधियों का पालन किया। <sup>35</sup> परन्तु मैं राज्य को उसके पुत्र के हाथ से लूँगा और तुम्हें दूँगा—यानी, दस गोत्र। <sup>36</sup> परन्तु उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दूँगा, ताकि मेरे सेवक दाऊद का एक दीपक यरूशलैम में हमेशा मेरे सामने रहे, वह नगर जिसे मैंने अपने लिए चुना है ताकि मैं अपना नाम रख सकूँ। <sup>37</sup> हाताँकि, मैं तुम्हें लूँगा, और तुम जो कुछ भी चाहोगे उस पर राज्य करोगे, और तुम इसाएल के राजा बनोगे। <sup>38</sup> तब ऐसा होगा, यदि तुम मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करोगे और मेरी राहों में चलोगे, और मेरी दृष्टि में जो सही है वह करोगे मेरी विधियों और मेरी

आज्ञाओं का पालन करके, जैसा कि मेरे सेवक दाऊद ने किया, तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारे लिए एक स्थायी घर बनाऊँगा जैसा कि मैंने दाऊद के लिए बनाया था, और मैं इसाएल को तुम्हें दूँगा। <sup>39</sup> इसलिए मैं दाऊद के वंशजों को इसके लिए दबाऊँगा, परन्तु हमेशा नहीं।”<sup>40</sup>

<sup>40</sup> सुलैमान ने यारोबाम को मार डालने की कोशिश की, परन्तु यारोबाम उठ खड़ा हुआ और मिस्र भाग गया, मिस्र के राजा शिशक के पास, और वह सुलैमान की मृत्यु तक मिस्र में रहा।

<sup>41</sup> अब सुलैमान के बाकी कार्य, और जो कुछ उसने किया, और उसकी बुद्धिमत्ता, क्या वे सुलैमान के कार्यों की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं? <sup>42</sup> तो वह समय जब सुलैमान ने यरूशलैम में पूरे इसाएल पर राज्य किया, चालीस वर्ष था। <sup>43</sup> तब सुलैमान अपने पितरों के साथ लेट गया और अपने पिता दाऊद के नगर में दफनाया गया, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

**12** तब रहूबियाम शेकेम गया, क्योंकि समस्त इसाएल शेकेम आया था ताकि उसे राजा बनाए। <sup>2</sup> अब जब यारोबाम नबात का पुत्र यह सुना, वह अभी भी मिस्र में था जहाँ वह राजा सुलैमान के सामने से भाग गया था, और यारोबाम मिस्र में ही रहा। <sup>3</sup> और उन्होंने उसे बुलावा भेजा और बुलाया, और यारोबाम और समस्त इसाएल की सभा आई और रहूबियाम से कहा, <sup>4</sup> “आपके पिता ने हमारा जुआ भारी कर दिया; अब कृपया उस कठिन परिश्रम और भारी जुए को हल्का करें जो आपके पिता ने हम पर रखा, और हम आपकी सेवा करेंगे।” <sup>5</sup> तब उसने उनसे कहा, “तीन दिन के लिए चले जाओ, फिर मेरे पास लौट आओ।” इसलिए लागे चले गए।

<sup>6</sup> तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्गों से परामर्श किया जिन्होंने उसके पिता सुलैमान की सेवा की थी जब वह अभी जीवित था, कहकर, “आप मुझे इस लोगों को उत्तर देने के लिए क्या सलाह देते हैं?” <sup>7</sup> उन्होंने उससे कहा, “यदि आप आज इस लोगों के सेवक बनेंगे, और उनकी सेवा करेंगे और उनकी याचिका को मानेंगे और उनसे मधुर वचन बोलेंगे, तो वे सदा आपके सेवक रहेंगे।” <sup>8</sup> परन्तु उसने बुजुर्गों की दी हुई सलाह को त्याग दिया, और उन युवकों से परामर्श किया जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसकी सेवा करते थे। <sup>9</sup> उसने उनसे कहा, “आप क्या सलाह देते हैं, कि हम इस लोगों को क्या उत्तर दें जिन्होंने मुझसे कहा, ‘उस जुए को हल्का करें

## 1 राजा

जो आपके पिता ने हम पर रखा?"<sup>10</sup> जो युवक उसके साथ बड़े हुए थे, उन्होंने उससे कहा, "आप इस लोगों से कहें जिन्होंने आपसे कहा, 'आपके पिता ने हमारा जुआ भारी कर दिया, अब आप इसे हमारे लिए हल्का करें।' आप उनसे कहें, 'मेरी छोटी उंगली मेरे पिता की कमर से मोटी है।'<sup>11</sup> जहाँ मेरे पिता ने आपको भारी जुए से लादा, मैं आपके जुए में और जोड़ ढूँगा; मेरे पिता ने आपको कोड़ों से अनुशासित किया, परंतु मैं आपको बिछुओं से अनुशासित करूँगा।"

<sup>12</sup> तब यारोबाम और समस्त लोग तीसरे दिन रहूबियाम के पास आए, जैसा कि राजा ने निर्देश दिया था, कहकर, "तीसरे दिन मेरे पास लौट आओ।"<sup>13</sup> राजा ने लोगों को कठोरता से उत्तर दिया, क्योंकि उसने बुजुर्गों की दी हुई सलाह को त्याग दिया था,<sup>14</sup> और उसने उनसे युवकों की सलाह के अनुसार कहा, "मेरे पिता ने आपको जुआ भारी कर दिया, परंतु मैं आपके जुए में और जोड़ ढूँगा; मेरे पिता ने आपको कोड़ों से अनुशासित किया, परंतु मैं आपको बिछुओं से अनुशासित करूँगा।"<sup>15</sup> इसलिए राजा ने लोगों की बात नहीं मानी, क्योंकि यह प्रभु की ओर से एक घटना थी, ताकि वह अपना वचन स्थापित कर सके, जो प्रभु ने शीलोनी अहियाह के माध्यम से यारोबाम नबात के पुत्र से कहा था।

<sup>16</sup> जब समस्त इसाएल ने देखा कि राजा ने उनकी नहीं सुनी, लोगों ने राजा को उत्तर दिया, कहकर, "हमारा दाऊद में क्या हिस्सा है? हमारे पास पिशै के पुत्र में कोई विरासत नहीं है! अपने तंबुओं में जाओ, हे इसाएल! अब अपने घर को देखो, हे दाऊद!" इसलिए इसाएल अपने तंबुओं में चला गया।<sup>17</sup> परंतु जो इसाएल के पुत्र यहूदा के नगरों में रहते थे, रहूबियाम उन पर राज्य करता रहा।<sup>18</sup> तब राजा रहूबियाम ने अदोराम को भेजा, जो जबरन श्रम का प्रभारी था, परंतु समस्त इसाएल ने उसे पथरों से मार डाला। और राजा रहूबियाम ने जल्दी से अपने रथ चढ़कर यरूशलेम की ओर भाग लिया।<sup>19</sup> इसलिए इसाएल आज तक दाऊद के घर के खिलाफ विद्रोह में है।

<sup>20</sup> और ऐसा हुआ, जब समस्त इसाएल ने सुना कि यारोबाम लौट आया है, उन्होंने उसे सभा में बुलाया और उसे समस्त इसाएल का राजा बना दिया। दाऊद के घर का कोई भी अनुसरण नहीं किया सिवाय यहूदा के गोत्र के।<sup>21</sup> अब जब रहूबियाम यरूशलेम आया, उसने समस्त यहूदा के घर और बिन्यामीन के गोत्र को इकट्ठा किया, एक लाख अस्सी हजार चुने हुए पुरुष, इसाएल के घर के खिलाफ लड़ने के लिए ताकि रहूबियाम सुलैमान

के पुत्र के लिए राज्य को पुनः स्थापित कर सके।<sup>22</sup> परंतु परमेश्वर का वचन शेषमाया है, परमेश्वर के मनुष्य के पास आया, कहकर,<sup>23</sup> "रहूबियाम सुलैमान के पुत्र, यहूदा के राजा से कहो, और समस्त यहूदा और बिन्यामीन के घर से और बाकी लोगों से कहो,"<sup>24</sup> "यह प्रभु का कहना है: तुम न चढ़ो, न अपने रिश्तेदारों, इसाएल के पुत्रों के खिलाफ लड़ो; हर व्यक्ति अपने घर लौट जाए, क्योंकि यह मामला मुझसे है।"<sup>25</sup> इसलिए उन्होंने प्रभु के वचन को सुना, और लौट गए और अपने मार्मा पर चले गए, प्रभु के वचन के अनुसार।

<sup>26</sup> तब यारोबाम ने एप्रैल के पहाड़ी देश में शेकेम को बनाया, और वहाँ रहा। और वह वहाँ से बाहर गया और पन्नुएल को बनाया।<sup>27</sup> यारोबाम ने अपने दिल में कहा, "अब राज्य दाऊद के घर को लौट जाएगा।" यदि ये लोग यरूशलेम में प्रभु के घर में बलिदान चढ़ाने के लिए जाते हैं, तो इन लोगों का हृदय उनके स्थापी, यहूदा के राजा रहूबियाम की ओर लौट जाएगा; और वे सुझे मार डालेंगे और यहूदा के राजा रहूबियाम के पास लौट जाएंगा।"<sup>28</sup> इसलिए राजा ने परामर्श किया, और दो सोने के बछड़े बनाए, और उसने लोगों से कहा, "आपके लिए यरूशलेम जाना बहुत अधिक है; देखो, हे इसाएल, तुम्हारे देवता, जिन्होंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला।"<sup>29</sup> और उसने एक को बेतेल में रखा, और दूसरे को दान में रखा।<sup>30</sup> अब यह बात एक पाप बन गई, क्योंकि लोग दान तक एक के सामने पूजा करने के लिए रहे।<sup>31</sup> और उसने ऊँचे स्थानों पर घर बनाए, और सभी लोगों में से याजकों को नियुक्त किया जो लेटी के पुत्रों में से नहीं थे।<sup>32</sup> यारोबाम ने आठवें महीने में महीने के पंद्रहवें दिन एक पर्व स्थापित किया, जैसे यहूदा में पर्व होता है, और वह वेदी पर चढ़ा; इस प्रकार उसने बेतेल में किया, उन बछड़ों की बलिदान चढ़ाते हुए जिन्हें उसने बनाया था। और उसने उन ऊँचे स्थानों के याजकों को बेतेल में नियुक्त किया जिन्हे उसने बनाया था।<sup>33</sup> तब वह वेदी पर चढ़ा जो उसने बेतेल में आठवें महीने के पंद्रहवें दिन बनाई थी, उस महीने में जो उसने अपने दिल में ठहराया था; और उसने इसाएल के पुत्रों के लिए एक पर्व स्थापित किया, और वेदी पर धूप जलाने के लिए चढ़ा।

**13** अब देखो, यहूदा से एक परमेश्वर का जन यहोवा के वचन के द्वारा बेतेल आया, जब यारोबाम वेदी के पास खड़ा था धूप जलाने के लिए।<sup>2</sup> और उसने वेदी के विरुद्ध यहोवा के वचन के द्वारा पुकार कर कहा, "हे वेदी, हे वेदी, यहोवा यों कहता है: 'देखो, दाऊद के घराने में एक पुत्र उत्पन्न होगा, जिसका नाम योशियाह होगा;

# 1 राजा

और वह तुझ पर उन ऊँचे स्थानों के याजकों का बलिदान करेगा जो तुझ पर धूप जलाते हैं, और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाइ जाएँगी।”<sup>3</sup> तब उसने उसी दिन एक चिन्ह दिया, यह कहते हुए, “यह वह चिन्ह है जो यहोवा ने कहा है: देखो, वेदी फट जाएगी, और उस पर की राख बिखर जाएगी।”<sup>4</sup> अब जब राजा ने परमेश्वर के जन का वचन सुना, जो उसने बेतेल में वेदी के विरुद्ध पुकारा, यारोबाम ने वेदी से अपना हाथ बढ़ाकर कहा, “उसे पकड़ लो!” परन्तु उसका हाथ जो उसने उसकी ओर बढ़ाया था भूख गया, ताकि वह उसे अपने पास वापस नहीं खींच सका।<sup>5</sup> वेदी भी फट गई, और वेदी से राख बिखर गई, उस चिन्ह के अनुसार जो परमेश्वर के जन ने यहोवा के वचन के द्वारा दिया था।<sup>6</sup> तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, “कृपया अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो, और मेरे लिए प्रार्थना करो, ताकि मेरा हाथ मुझे फिर से मिल जाए।”<sup>7</sup> सो परमेश्वर के जन ने यहोवा से विनती की, और राजा का हाथ उसे फिर से मिल गया, और वह पहले जैसा हो गया।<sup>8</sup> तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, “मेरे साथ घर चलो और अपने आप को ताज़ा करो, और मैं तुम्हें एक उपहार दूँगा।”<sup>9</sup> परन्तु परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, “यदि तुम मुझे अपना आधा घर भी दो, तो भी मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, और न ही मैं इस स्थान में रोटी खाऊँगा या पानी पीऊँगा।”<sup>10</sup> व्यक्तियोंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा दी गई थी, ‘तू न तो रोटी खा, न पानी पी, और न ही जिस मार्ग से आया है उसी मार्ग से लौट।’<sup>11</sup> सो वह दूसरे मार्ग से चला गया और जिस मार्ग से वह बेतेल आया था उस मार्ग से नहीं लौटा।

11 अब एक बूढ़ा नबी बेतेल में रहता था, और उसके पुत्र आए और उसे उन सब कामों के बारे में बताया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; उन्होंने अपने पिता को वे वचन भी बताए जो उसने राजा से कहे थे।<sup>12</sup> और उनके पिता ने उनसे कहा, “वह किस मार्ग से गया?” अब उसके पुत्रों ने देखा था कि परमेश्वर का जन किस मार्ग से गया था, जो यहूदा से आया था।<sup>13</sup> तब उसने अपने पुत्रों से कहा, “मेरे लिए गदहे को काठी करो।” सो उन्होंने उसके लिए गदहे को काठी किया, और वह उस पर चढ़ गया।<sup>14</sup> और वह परमेश्वर के जन के पीछे गया, और उसे एक बलूत के पेड़ के नीचे बैठा हुआ पाया। और उसने उससे कहा, “व्या तुम वही परमेश्वर के जन हो जो यहूदा से आए हो?” और उसने कहा, “हाँ, मैं हूँ।”<sup>15</sup> तब उसने उससे कहा, “मेरे साथ घर चलो और रोटी खाओ।”<sup>16</sup> परन्तु उसने कहा, “मैं तुम्हारे साथ लौट नहीं सकता और न तुम्हारे साथ जा सकता हूँ, और न ही मैं इस स्थान में तुम्हारे साथ रोटी

खा सकता हूँ या पानी पी सकता हूँ।”<sup>17</sup> व्यक्तियोंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा दी गई थी: ‘तू वहाँ रोटी न खा और न पानी पी; जिस मार्ग से आया है उस मार्ग से लौट मत।’<sup>18</sup> परन्तु उसने उससे कहा, “मैं भी तुम्हारी तरह एक नबी हूँ, और एक स्वर्गद्वार ने यहोवा के वचन के द्वारा मुझसे कहा, ‘उसे अपने घर वापस ले आओ, ताकि वह रोटी खाए और पानी पीए।’”<sup>19</sup> परन्तु उसने उससे छूठ कहा।<sup>20</sup> सो वह उसके साथ वापस चला गया, और उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया।

20 अब ऐसा हुआ, जब वे मेज पर बैठे थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास आया जिसने उसे वापस लाया था;<sup>21</sup> और उसने यहूदा से आए परमेश्वर के जन को पुकार कर कहा, “यहोवा या यहोवा है।”<sup>22</sup> व्यक्तियोंकि तूने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया है, और उस आज्ञा का पालन नहीं किया जो तेरा परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी,<sup>23</sup> परन्तु लौट आया और उस स्थान में रोटी खाई और पानी पिया जिसके विषय में उसने तुम्हसे कहा था, “रोटी न खा और न पानी पी,” तेरा मृत शरीर तेरे पितरों की कब्र में नहीं आएगा।”<sup>24</sup> और ऐसा हुआ कि जब उसने रोटी खा ली और पानी पी लिया, तो उसने उसके लिए गदहे को काठी किया, उस नबी के लिए जिसे उसने वापस लाया था।<sup>25</sup> अब जब वह चला गया, तो एक सिंह ने उसे मार्ग में मिलकर मार डाला, और उसका मृत शरीर मार्ग में पड़ा रहा, गदहा उसके पास खड़ा था, और सिंह मृत शरीर के पास खड़ा था।<sup>26</sup> और देखो, लोग वहाँ से गुज़रे और उन्होंने मृत शरीर को मार्ग में पड़ा देखा, और सिंह को शरीर के पास खड़ा देखा; सो वे जाकर उस नगर में बताने लगे जहाँ वह बूढ़ा नबी रहता था।

26 अब जब उस नबी ने सुना जिसने उसे मार्ग से वापस लाया था, उसने कहा, “यह परमेश्वर का जन है, जिसने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया; इसलिए यहोवा ने उसे सिंह के हवाले कर दिया, और उसने उसे फाढ़कर मार डाला, जैसा कि यहोवा ने उससे कहा था।”<sup>27</sup> तब उसने अपने पुत्रों से कहा, “मेरे लिए गदहे को काठी करो।” सो उन्होंने उसे काठी किया।<sup>28</sup> और वह गया और उसने उसके मृत शरीर को मार्ग में पड़ा पाया, गदहा और सिंह मृत शरीर के पास खड़े थे; सिंह ने मृत शरीर को नहीं खाया और न ही गदहे पर हमला किया।<sup>29</sup> सो नबी ने परमेश्वर के जन के मृत शरीर को उठाया, और उसे गदहे पर रखकर वापस लाया; और वह बूढ़े नबी के नगर में आया, शोक करने और उसे दफनाने के लिए।<sup>30</sup> और उसने उसके मृत शरीर को अपनी कब्र में रखा, और उन्होंने उसके लिए शोक किया, कहते हुए,

# 1 राजा

“ओह, मेरे भाई!”<sup>31</sup> अब ऐसा हुआ, जब उसने उसे दफनाया, कि उसने अपने पुत्रों से कहा, “जब मैं मर जाऊँ, तो मुझे उसी कब्र में दफनाना जिसमें परमेश्वर का जन दफनाया गया है; मेरी हड्डियों को उसकी हड्डियों के पास रखना।<sup>32</sup> क्योंकि वह वचन अवश्य पूरा होगा जो उसने यहोवा के वचन के द्वारा बेताल में वेटी के विरुद्ध पुकारा, और उन सब ऊँचे स्थानों के घरों के विरुद्ध जो सामरिया के नगरों में हैं।”

<sup>33</sup> इस घटना के बाद, यारोबाम अपनी बुरी राह से नहीं मुड़ा, परन्तु उसने फिर से ऊँचे स्थानों के याजकों को सब लोगों में से चुना; जो कोई चाहता था, उसे उसने नियुक्त किया, इस प्रकार वे ऊँचे स्थानों के याजक बन गए।<sup>34</sup> यह घटना यारोबाम के घर के लिए पाप बन गई, ताकि उसे मिटा दिया जाए और पृथ्वी के चेहरे से समाप्त कर दिया जाए।

**14** उसी समय यारोबाम का पुत्र अबिय्याह बीमार हो गया।<sup>2</sup> और यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, “कृपया उठो और भेष बदलो ताकि लोग न जान सकें कि तुम यारोबाम की पत्नी हो, और शीतों जाओ। देखो, वहाँ अहिय्याह भविष्यद्वक्ता है, जिसने मेरे बारे में कहा हा कि मैं इस प्रजा का राजा बनूँगा।<sup>3</sup> अपने साथ दस रेटियाँ, कुछ केक, और एक घड़ा शहद ले जाओ, और उसके पास जाओ; वह तुम्हें बताएगा कि लड़के के साथ क्या होगा।”<sup>4</sup> तो यारोबाम की पत्नी ने ऐसा किया, और निकल पड़ी और शीतों गई, और अहिय्याह के घर पहुँची। अब अहिय्याह देख नहीं सकता था, क्योंकि उसकी ऊँचे दुद्धावधा के कारण धूंधली हो गई थी।<sup>5</sup> परन्तु यहोवा ने अहिय्याह से कहा था, “देखो, यारोबाम की पत्नी अपने पुत्र के विषय में पूछने के लिए आ रही है, क्योंकि वह बीमार है। तुम उसे यह और वह कहोगे, क्योंकि जब वह आएगा, तो वह किसी और के रूप में प्रकट होगी।”<sup>6</sup> तो जब अहिय्याह ने उसके पैरों की आवाज को दरवजे में आते सुना, तो उसने कहा, “आओ, यारोबाम की पत्नी! तुम किसी और के रूप में क्यों प्रकट हो रही हो? मैं तुम्हारे पास एक कठोर संदेश लेकर आया हूँ।”<sup>7</sup> जाओ, यारोबाम से कहो, यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, यह कहता है: “क्योंकि मैंने तुम्हें प्रजा के बीच से ऊँचा उठाया और अपने प्रजा इसाएल का नेता बनाया,<sup>8</sup> और दाऊद के घर से राज्य की फाइकर तुम्हें दे दिया— फिर भी तुम मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं रहे, जिसने मेरी आज्ञाओं का पालन किया और पूरे हृदय से मेरा अनुसरण किया, केवल वही करने के लिए जो मेरी दृष्टि में सही था—<sup>9</sup> तुमने भी उन सब से अधिक बुराई की है जो तुम्हारे पहले थे, और तुमने अपने

लिए अन्य देवताओं और ढली हुई मूर्तियाँ बनाई हैं, मुझे क्रोधित करने के लिए, और मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है—<sup>10</sup> इसलिए, देखो, मैं यारोबाम के घर पर विपत्ति ला रहा हूँ, और यारोबाम के घर से हर पुरुष व्यक्ति को, वह वह बंधुआ हो या स्वतंत्र, इसाएल में समाप्त कर दूंगा, और मैं यारोबाम के घर को ऐसे साफ कर दूंगा जैसे कोई गोबर को तब तक साफ करता है जब तक वह सब चला न जाए।<sup>11</sup> जो कोई यारोबाम के घर का नगर में मरेगा, उसे कुत्ते खाएँगे, और जो कोई मैदान में मरेगा, उसे आकाश के पक्षी खाएँगे; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।”<sup>12</sup> अब तुम, उठो, अपने घर जाओ। जब तुम्हारे पैर नगर में प्रवेश करेंगे, तो बालक मर जाएगा।<sup>13</sup> और सारा इसाएल उसके लिए विलाप करेगा और उसे दफनाएगा, क्योंकि यारोबाम के परिवार में से केवल वही कब्र में जाएगा, क्योंकि उसमें यहोवा, इसाएल के परमेश्वर के प्रति कुछ अच्छा पाया गया था, यारोबाम के घर में।<sup>14</sup> इसके अलावा, यहोवा अपने लिए इसाएल पर एक राजा उठाएगा जो उसी दिन यारोबाम के घर को समाप्त करेगा। अब और अब से!<sup>15</sup> क्योंकि यहोवा इसाएल को मारेगा, जैसे जल में सरकड़ा हिलता है; और वह इसाएल को इस अच्छी भूमि से उखाड़ फेंकेगा जो उसने उनके पितरों को दी थी, और उन्हें यूफ्रेट्स नदी के पार बिखेर देगा, क्योंकि उन्होंने अपने अशोरीम बनाए हैं, यहोवा को क्रोधित करने के लिए।<sup>16</sup> और वह इसाएल को यारोबाम के पापों के कारण छोड़ देगा, जो उसने किए और जिनसे उसने इसाएल को पाप में फँसाया।”<sup>17</sup> तब यारोबाम की पत्नी उठी और तिर्जा चली गई। जैसे ही वह घर की दहलीज पर पहुँची, बालक मर गया।<sup>18</sup> और सारा इसाएल उसे दफनाया और उसके लिए विलाप किया, यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने अपने सेवक अहिय्याह भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कहा था।

<sup>19</sup> अब यारोबाम के बाकी कार्यों के बारे में, उसने कैसे युद्ध किया और कैसे राज्य किया, देखो, वे इसाएल के राजा ओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।<sup>20</sup> और यारोबाम ने बाईस वर्ष तक राज्य किया; और वह अपने पितरों के साथ लेट गया, और उसका पुत्र नादाब उसके स्थान पर राजा हुआ।

<sup>21</sup> अब रहूबियाम, सुलैमान का पुत्र, यहूदा में राज्य करने लगा। रहूबियाम जब राजा बना, तब वह इकतालीस वर्ष का था, और उसने यरूशलाम में सत्रह वर्ष तक राज्य किया, वह नगर जिसे यहोवा ने इसाएल के सभी गोत्रों में से अपने नाम को वहाँ रखने के लिए चुना था। और उसकी माता का नाम नामा था, जो अम्मोनी थी।<sup>22</sup> और

## 1 राजा

यहूदा ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और उन्होंने उसे अपने पितरों से अधिक ईर्ष्या करने के लिए उकसाया, उन पापों के साथ जो उन्होंने किए।<sup>23</sup> क्योंकि उन्होंने भी अपने लिए ऊँचे स्थान, स्मारक पत्थर, और अशेरीम बनाए हर ऊँची पहाड़ी पर और हर हरे-भरे पेढ़ के नीचे।<sup>24</sup> देश में पुरुष देवदासी भी थे। उन्होंने उन सभी धृष्टिकार्यों को किया जिन्हें यहोवा ने इसाएल के पुरुषों के सामने से निकाल दिया था।<sup>25</sup> अब यह रहूबियाम के राज्य के पाँचवें वर्ष में हुआ, कि मिस्र का राजा शिशक यरूशलेम के विरुद्ध चढ़ आया।<sup>26</sup> और उसने यहोवा के घर के खजाने और राजा के घर के खजाने ले लिए, और उसने सब कुछ ले लिया; उसने वे सभी सोने की ढालें भी ले लीं जो सुलैमान ने बनाई थीं।<sup>27</sup> तो राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर पीतल की ढालें बनाई, और उन्हें उन पहरेदारों के अधिकारियों के संरक्षण में सौंप दिया जो राजा के घर के द्वार की रक्षा करते थे।<sup>28</sup> और ऐसा हुआ कि जब भी राजा यहोवा के घर में प्रवेश करता, पहरेदार उन्हें ले जाते और उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते।

<sup>29</sup> अब रहूबियाम के बाकी कार्यों और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>30</sup> और रहूबियाम और यारोबाम के बीच लगातार युद्ध होता रहा।<sup>31</sup> और रहूबियाम अपने पितरों के साथ लेट गया और दाऊद के नगर में अपने पितरों के साथ दफनाया गया। और उसकी माता का नाम नामा था, जो अम्मोनी थी। और उसका पुत्र अबियाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

**15** अब यारोबाम के अठारहवें वर्ष में, जो नबात का पुत्र था, अबीयाम यहूदा पर राजा बना।<sup>2</sup> उसने यरूशलेम में तीन वर्ष तक राज्य किया, और उसकी माता का नाम माका था, जो अबीशालोम की पुत्री थी।<sup>3</sup> उसने अपने पिता के सभी पापों में चलना जारी रखा जो उसने उसके पहले किए थे, और उसका हृदय अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं था, जैसे उसके पिता दाऊद का हृदय था।<sup>4</sup> परन्तु दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने उसे यरूशलेम में एक दीपक दिया, ताकि उसके बाद उसके पुत्र को उठाए और यरूशलेम को स्थिर करें;<sup>5</sup> क्योंकि दाऊद ने यहोवा की दृष्टि में जो ठीक था वह किया, और अपने जीवन के सभी दिनों में उसने जो कुछ भी उसे आज्ञा दी थी, उससे नहीं हटा, सिवाय हिती उरियाह के मामले के।<sup>6</sup> और रहूबियाम और यारोबाम के बीच उसके जीवन के सभी दिनों में युद्ध होता रहा।<sup>7</sup> अब अबीयाम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के

इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और अबीयाम और यारोबाम के बीच युद्ध होता रहा।<sup>8</sup> और अबीयाम अपने पितरों के साथ लेटा, और उन्हें दाऊद के नगर में दफनाया गया; और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राजा बना।

९ अब यारोबाम इसाएल का राजा के बीसवें वर्ष में, आसा यहूदा पर राजा बना।<sup>10</sup> उसने यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य किया, और उसकी माता का नाम माका था, जो अबीशालोम की पुत्री थी।<sup>11</sup> आसा ने यहोवा की दृष्टि में जो ठीक था वह किया, जैसे उसके पिता दाऊद ने किया था।<sup>12</sup> उसने देश से पुरुष वेश्याओं को भी हटा दिया, और अपने पिताओं द्वारा बनाए गए सभी मूर्तियों को हटा दिया।<sup>13</sup> और उसने अपनी माता माका को रानी माता के पद से भी हटा दिया, क्योंकि उसने एक भयानक मूर्ति बनाई थी जैसे अशेरा; और आसा ने उसकी भयानक मूर्ति को काट डाला और उसे किंद्रोन की धाटी में जला दिया।<sup>14</sup> परन्तु ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया गया; फिर भी, आसा का हृदय अपने सभी दिनों में यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित था।<sup>15</sup> और उसने यहोवा के घर में अपने पिता की पवित्र भेंट और अपनी पवित्र भेंट लाईः चाँदी, सोना, और बर्तन।

१६ अब आसा और बाशा इसाएल के बीच उनके सभी दिनों में युद्ध होता रहा।<sup>17</sup> और बाशा इसाएल का राजा यहूदा के विरुद्ध चढ़ाई करके रामा को मजबूत किया, ताकि कोई भी आसा यहूदा के राजा के पास न जा सके और न आ सके।<sup>18</sup> तब आसा ने सारी चाँदी और सोना लिया जो यहोवा के घर के खजानों में और राजा के घर के खजानों में बचा था, और उन्हें अपने सेवकों को सौंप दिया; और राजा आसा ने उन्हें बिन-हृदद को भेजा, जो तबरीमोन का पुत्र था, जो जेजियोन का पुत्र था, अराम का राजा, जो दमिश्क में रहता था, यह करते हुए,<sup>19</sup> "तुम्हरे और मेरे बीच एक संधि हो, जैसे मेरे पिता और तुम्हरे पिता के बीच थी। देखो, मैंने तुम्हें चाँदी और सोने का उपहार भेजा है। जाओ, इसाएल के राजा बाशा के साथ अपनी संधि तोड़ दो, ताकि वह मुझसे हट जाए।"<sup>20</sup> तो बिन-हृदद ने राजा आसा की बात सुनी और अपने सेनापतियों को इसाएल के नगरों के विरुद्ध भेजा, और उन्होंने इयोन, दान, अबेल-बेत-माका को जीत लिया, सभी किनेरोत को, नपाली की सारी भूमि के साथ।<sup>21</sup> जब बाशा ने इसके बारे में सुना, तो उसने रामा को मजबूत करना बंद कर दिया और तिर्जा में रहा।<sup>22</sup> तब राजा आसा ने सभी यहूदा को एक घोषणा की—कोई भी मुक्त नहीं था—

# 1 राजा

और उन्होंने रामा के पत्थरों और उसकी लकड़ी को उठा लिया जिससे बाशा ने निर्माण किया था, और राजा आसा ने उसे बिन्नामीन का गेबा और मिस्पा का निर्माण किया।

<sup>23</sup> अब आसा के सभी कार्य और उसकी सारी शक्ति और जो कुछ उसने किया, और जो नगर उसने बनाए, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? परन्तु अपनी बृद्धवस्था में वह अपने पितरों की बीमारी से पीड़ित हुआ। <sup>24</sup> और आसा अपने पितरों के साथ लेटा और अपने पितरों के साथ अपने पिता दाऊद के नगर में दफनया गया; और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>25</sup> अब नादाब यारोबाम का पुत्र यहूदा के राजा आसा के दूसरे वर्ष में इसाएल पर राजा बना, और उसने इसाएल पर दो वर्ष तक राज्य किया। <sup>26</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और अपने पिता के मार्ग में और उसके पाप में चला जिसमें उसने इसाएल को भटकाया। <sup>27</sup> तब बाशा अहिय्याह का पुत्र इस्साकार के घराने से उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा, और बाशा ने उसे गिब्बेतोन में मारा, जो पलिशियों का था, जब नादाब और सभी इसाएली गिब्बेतोन का धेराव कर रहे थे। <sup>28</sup> तो बाशा ने उसे यहूदा के राजा आसा के तीसरे वर्ष में मारा, और उसके स्थान पर राज्य किया। <sup>29</sup> और जैसे ही वह राजा बना, उसने यारोबाम के पूरे घराने को मार डाला। उसने यारोबाम के लिए किसी को जीवित नहीं छोड़ा, बल्कि उहाँ पूरी तरह से नष्ट कर दिया, यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने अपने सेवक शीलोनी अहिय्याह के माध्यम से कहा था, <sup>30</sup> यारोबाम के पापों के कारण, जो उसने किया, और जिसमें उसने इसाएल को भटकाया, उसके उकासे के कारण जिससे उसने इसाएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया।

<sup>31</sup> अब नादाब के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>32</sup> और आसा और बाशा इसाएल के राजा के बीच उनके सभी दिनों में युद्ध होता रहा।

<sup>33</sup> यहूदा के राजा आसा के तीसरे वर्ष में, अहिय्याह का पुत्र बाशा तिर्जा में इसाएल पर राजा बना, और चौबीस वर्ष तक राज्य किया। <sup>34</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और यारोबाम के मार्ग में और उसके पाप में चला जिसमें उसने इसाएल को भटकाया।

**16** अब यहोवा का वचन यहू, हनानी के पुत्र, के पास बाशा के विरुद्ध आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> “कूँकि मैंने तुम्हें धूल से उठाकर अपने लोगों इसाएल का नेता बनाया, पर तुम ने यारोबाम के मार्ग पर चलकर मेरे लोगों इसाएल को पाप में डाल दिया, उनके पापों से मुझे क्रोधित किया, <sup>3</sup> देखो, मैं बाशा और उसके घराने को नष्ट करने जा रहा हूँ, और मैं तुम्हारे घर को यारोबाम, नबात के पुत्र के घर के समान कर दूँगा। <sup>4</sup> जो कोई बाशा का नगर में मरेगा उसे कुते खाएँगे, और जो कोई खेत में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खाएँगे।” <sup>5</sup> अब बाशा के बाकी काम, जो उसने किए और उसकी शक्ति, क्या वे इसाएल के राजाओं की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>6</sup> और बाशा अपने पितरों के साथ सो गया और तिर्जा में दफनया गया, और उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राजा बना। <sup>7</sup> इसके अलावा, यहोवा का वचन भविष्यद्वक्ता यहू, हनानी के पुत्र, के द्वारा बाशा और उसके घराने के विरुद्ध भी आया, क्योंकि उसने यहोवा की दृष्टि में जो बुराई की, उससे उसे क्रोधित किया, यारोबाम के घर के समान होकर, और क्योंकि उसने उसे मारा।

<sup>8</sup> यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें वर्ष में, बाशा का पुत्र एला इसाएल का राजा तिर्जा में बना, और दो वर्ष तक राज्य किया। <sup>9</sup> पर उसके सेवक जिम्मी, जो उसके आधे रुपों का सेनापति था, ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा। अब एला तिर्जा में अरजा के घर में पीकर मतवाला हो रहा था, जो तिर्जा में घर का प्रबंधक था। <sup>10</sup> तब जिम्मी अंदर आया और उसे मारा और यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें वर्ष में उसे मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। <sup>11</sup> जब वह राजा बना, जैसे ही उसने अपने सिंहासन पर बैठा, उसने बाशा के सारे घराने को मार डाला; उसने एक भी पुरुष, न तो उसके रिशेदारों में से और न ही उसके मिम्री में से, जीवित नहीं छोड़ा। <sup>12</sup> इस प्रकार जिम्मी ने बाशा के सारे घराने को नष्ट कर दिया, जैसा कि यहोवा के वचन के अनुसार था, जो उसने बाशा के विरुद्ध भविष्यद्वक्ता यहू के द्वारा कहा था, <sup>13</sup> बाशा के सभी पापों और उसके पुत्र एला के पापों के कारण, जो उन्होंने किए और जिनमें उन्होंने इसाएल को डाला, इसाएल के परमेश्वर यहोवा को उनके मूर्तियों से क्रोधित किया। <sup>14</sup> अब एला के बाकी काम और जो कुछ उसने किया, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

<sup>15</sup> यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें वर्ष में, जिम्मी ने तिर्जा में सात दिन तक राज्य किया। अब लोग गिब्बेतोन के खिलाफ डेरा डाले हुए थे, जो पलिशियों का था। <sup>16</sup>

# 1 राजा

और जो लोग डेरा डाले हुए थे, उन्होंने सुना, "जिम्मी ने घड़वंत्र रचा और राजा को मार डाला।" इसलिए उस दिन शिविर में इसाएल के सभी लोगों ने ओम्प्री को, जो सेना का सेनापति था, इसाएल का राजा बना दिया।<sup>17</sup> तब ओम्प्री और उसके साथ इसाएल के सभी लोग गिर्भेतोन से तिर्जा की ओर चढ़ गए और उसे धेर लिया।<sup>18</sup> जब जिम्मी ने देखा कि नगर ले लिया गया है, तो वह राजा के घर के गढ़ में गया, और राजा के घर को अपने ऊपर आग से जला दिया, और मर गया,<sup>19</sup> क्योंकि उसके पापों के कारण जो उसने किए, यहोवा की दृष्टि में बुराई करते हुए, यारोबाम के मार्ग पर चलते हुए, और उसके पाप में जो उसने किया, इसाएल को पाप में डाल दिया।<sup>20</sup> अब जिम्मी के बाकी काम और उसके षड्यंत्र जो उसने किया, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

<sup>21</sup> तब इसाएल के लोग दो गुटों में बंट गए: आधे लोग गिनाथ के पुत्र तित्री का अनुसरण करते थे, उसे राजा बनाने के लिए; और आधे लोग ओम्प्री का अनुसरण करते थे।<sup>22</sup> परंतु ओम्प्री का अनुसरण करने वाले लोग गिनाथ के पुत्र तित्री का अनुसरण करने वाले लोगों पर हावी हो गए। इसलिए तित्री मर गया, और ओम्प्री राजा बन गया।<sup>23</sup> यहूदा के राजा आस के इकतीसवें वर्ष में, ओम्प्री इसाएल का राजा बना और बारह वर्ष तक राज्य किया; उसने तिर्जा में छह वर्ष तक राज्य किया।<sup>24</sup> और उसने शेमेर से दो किकर चांदी में शमरोन की पहाड़ी खरीदी, और उसने पहाड़ी पर निर्माण किया, और जो नगर उसने बनाया उसका नाम शमरोन रखा, शेमेर के नाम पर, जो पहाड़ी का मालिक था।<sup>25</sup> परंतु ओम्प्री ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और उससे पहले के सभी लोगों से अधिक दुष्टा की।<sup>26</sup> क्योंकि उसने पूरी तरह से यारोबाम, नबात के पुत्र के मार्ग पर चला, और उसके पापों में जिनमें उसने इसाएल को गुमराह किया, इसाएल के परमेश्वर यहोवा को उनके व्यर्थ मूर्तियों से क्रोधित किया।<sup>27</sup> अब ओम्प्री के बाकी काम जो उसने किए और उसकी शक्ति जो उसने दिखाई, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>28</sup> और ओम्प्री अपने पितरों के साथ सो गया और शमरोन में दफनाया गया, और उसका पुत्र अहाब उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>29</sup> अब ओम्प्री का पुत्र अहाब यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में इसाएल का राजा बना, और अहाब, ओम्प्री का पुत्र, शमरोन में इसाएल पर बाईस वर्ष तक राज्य किया।<sup>30</sup> ओम्प्री का पुत्र अहाब यहोवा की दृष्टि में बुराई करता था उससे पहले के सभी लोगों से अधिक।

<sup>31</sup> और ऐसा हुआ, जैसे यह उसके लिए एक तुच्छ बात थी कि वह यारोबाम, नबात के पुत्र के पापों में चला, कि उसने सिदोनियों के राजा एथबेल की पूरी इजेबेल को अपनी पत्नी बना लिया, और बाल की सेवा करने और उसकी पूजा करने चला गया।<sup>32</sup> इसलिए उसने बाल के लिए एक वेटी बनाई बाल के घर में, जो उसने शमरोन में बनाया था।<sup>33</sup> अहाब ने अशोरा भी बनाया। इस प्रकार अहाब ने इसाएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करने के लिए उससे पहले के सभी इसाएल के राजाओं से अधिक किया।<sup>34</sup> उसके दिनों में बैतीली दिपल ने यरीहो का निर्माण किया; उसने उसकी नींव अपने पहलौठे पुत्र अबीराम की हानि के साथ डाली, और उसके फाटक अपने सबसे छोटे पुत्र सेगूब की हानि के साथ खड़े किए, यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने नून के पुत्र यहोश के द्वारा कहा था।

**17** अब तिश्वी एलियाह, जो गिलाद के निवासियों में से था, ने अहाब से कहा, "इसाएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, जिसके सामने मैं खड़ा हूं, इन वर्षों में न तो ओस पड़ेगी और न वर्ष होगी, सिवाय मेरे वचन के!"<sup>2</sup> तब यहोवा का वचन उसके पास आया, यह कहते हुए,<sup>3</sup> "यहां से निकलकर पूर्व की ओर मुड़ो, और यरदन के पूर्व में स्थित केरित नामक नाले के पास छिप जाओ।"<sup>4</sup> और ऐसा होगा कि तुम उस नाले से पानी पियोगे, और मैंने कौवों को वहां तुम्हरे लिए भोजन लाने की आज्ञा दी है।<sup>5</sup> इसलिए वह गया और यहोवा के वचन के अनुसार किया, क्योंकि वह यरदन के पूर्व में स्थित केरित नामक नाले के पास रहने लगा।<sup>6</sup> कौवे उसे सुबह रोटी और मांस लाते थे, और शाम को भी रोटी और मांस लाते थे, और वह नाले से पानी पीता था।<sup>7</sup> परंतु कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि नाला सूख गया, क्योंकि देश में वर्षा नहीं हुई थी।

<sup>8</sup> तब यहोवा का वचन उसके पास आया, यह कहते हुए, "उठो, सिदोन के जारेपत को जाओ, और वहां ठहरो। देखो, मैंने वहां एक विधवा को तुम्हरे लिए भोजन देने की आज्ञा दी है।"<sup>10</sup> इसलिए वह उठा और जारेपत को गया, और जब वह नाल के द्वार पर पहुंचा, तो देखो, एक विधवा लकड़ियाँ बीन रही थी। और उसने उसे पुकारकर कहा, "कृपया मुझे एक प्याला पानी लाकर दो, ताकि मैं पी सकूँ।"<sup>11</sup> जब वह उसे लाने जा रही थी, तो उसने उसे पुकारकर कहा, "कृपया अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी लाकर दो।"<sup>12</sup> परंतु उसने कहा, "तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, मेरे पास कोई भोजन नहीं है, केवल कटोरे में एक मुट्ठी आठा और घड़े में थोड़ा सा तेल है। और देखो, मैं कुछ लकड़ियाँ बीन

## 1 राजा

रही हूं ताकि मैं जाकर इसे अपने और अपने बेटे के लिए तैयार कर सकूं, ताकि हम इसे खाकर मर जाएं।”<sup>13</sup> तब एलियाह ने उससे कहा, “डरो मत; जाओ, जैसा तुमने कहा है वैसा करो। परंतु पहले मेरे लिए उसमें से एक छोटा रोटी का केक बनाकर लाओ, और उसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बनाओ।”<sup>14</sup> क्योंकि इसाएल के परमेश्वर यहोवा का यह वचन है: कटोरे का आटा समाप्त नहीं होगा, और न ही घड़े का तेल खम्म होगा, जब तक यहोवा इस देश पर वर्षा नहीं करता।”<sup>15</sup> इसलिए वह गई और एलियाह के वचन के अनुसार सब कुछ किया, और वह, वह और उसका परिवार कई दिनों तक खाते रहे।<sup>16</sup> कटोरे का आटा समाप्त नहीं हुआ, और न ही घड़े का तेल खम्म हुआ, जैसा कि यहोवा ने एलियाह के माध्यम से कहा था।

“अब इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि उस स्त्री के पुत्र, जो घर की स्वामिनी थी, बीमार हो गया। और उसकी बीमारी बहुत गंभीर हो गई, यहां तक कि उसमें प्राण नहीं रहे।”<sup>17</sup> तब उसने एलियाह से कहा, “हे परमेश्वर के व्यक्ति, मेरा तुझसे क्या काम? तू मेरे पास मेरे अपराध को स्मरण कराने और मेरे पुत्र को मारने आया है।”<sup>18</sup> परंतु उसने उससे कहा, “मुझे अपना पुत्र दे!” तब उसने उसे उसकी गोद से लिया और उसे उस ऊपरी कमरे में ले गया जहां वह ठहरा था, और उसे अपने बिस्तर पर लिटा दिया।<sup>19</sup> और उसने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा, क्या तूने उस विधापर भी विपत्ति लाई है जिसके साथ मैं ठहरा हूं, उसके पुत्र को मारकर?”<sup>20</sup> तब उसने लड़के पर तीन बार फैलकर लेट गया, और यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा, कृपया इस लड़के का जीवन उसमें लौटे दे।”<sup>21</sup> और यहोवा ने एलियाह की आवाज सुनी, और लड़के का जीवन उसमें लौट आया और वह जीवित हो गया।<sup>22</sup> एलियाह ने लड़के को लिया और उसे ऊपरी कमरे से नीचे घर में लाया, और उसे उसकी मां को दिया; और एलियाह ने कहा, “देख, तेरा पुत्र जीवित है।”<sup>23</sup> तब उस स्त्री ने एलियाह से कहा, “अब मैं जानती हूं कि तू परमेश्वर का व्यक्ति है, और तेरे मुख में यहोवा का वचन सत्य है।”

**18** अब कई दिनों के बाद ऐसा हुआ कि तीसरे वर्ष में यहोवा का वचन एलियाह के पास आया, “जाओ, अपने आप को अहाब को दिखाओ, और मैं पृथ्वी पर वर्ष भेजूँगा।”<sup>24</sup> तो एलियाह अहाब को दिखाने के लिए गया। अब सामरिया में अकाल बहुत गंभीर था।<sup>25</sup> और अहाब ने ओबद्याह को बुलाया, जो घर के प्रबंधक थे। (ओबद्याह यहोवा से बहुत डरता था।)<sup>26</sup> क्योंकि जब

इज़ज़ेबेल ने यहोवा के नवियों को नष्ट किया, ओबद्याह ने सौ नवियों को लेकर उन्हें पचास-पचास की संख्या में एक गुफा में छिपा दिया, और उन्हें रोटी और पानी दिया।<sup>27</sup> तब अहाब ने ओबद्याह से कहा, “देश के सभी जलस्रोतों और सभी घाटियों में जाओ; शायद हमें घास मिल जाए ताकि घोड़ों और खच्चों को जीवित रख सकें, और कुछ पशुओं को मारना न पड़े।”<sup>28</sup> तो उन्होंने देश को आपस में बाँट लिया ताकि उसका सर्वेक्षण कर सकें; अहाब एक रास्ते पर अकेले गया, और ओबद्याह दूसरे रास्ते पर अकेले गया।<sup>29</sup> अब जब ओबद्याह रास्ते में था, तो देखो, एलियाह उससे मिला, और उसने उसे पहचाना और अपने चेहरे पर गिरकर कहा, “क्या यह आप हैं, मेरे स्वामी एलियाह?”<sup>30</sup> और उसने उससे कहा, “यह मैं हूं। जाओ, अपने स्वामी से कहो, देखो, एलियाह यहाँ है।”<sup>31</sup> पर उसने कहा, “मैंने कौन सा पाप किया है, कि आप अपने सेवक को अहाब के हाथ में साप रहे हैं ताकि वह मुझे मार डाले? ”<sup>32</sup> जैसे आपके परमेश्वर यहोवा जीवित हैं, कोई राष्ट्र या राज्य नहीं है जहाँ मेरे स्वामी ने आपको खोजने के लिए नहीं भेजा; और जब उन्होंने कहा, “वह यहाँ नहीं है,” तो उसने उस राज्य या राष्ट्र को शपथ दिलाई कि वे आपको नहीं पा सकें।<sup>33</sup> और अब आप कह रहे हैं, ‘जाओ, अपने स्वामी से कहो, “देखो, एलियाह यहाँ है।”’<sup>34</sup> और जब मैं आपको छोड़ दूँगा तो यहोवा की आत्मा आपको वहाँ ले जाएगी जहाँ मैं नहीं जानता, इसलिए जब मैं आकर अहाब को बताऊँगा और वह आपको नहीं पाएगा, तो वह मुझे मार डालेगा, हातांकि मैं आपका सेवक बचपन से यहोवा से डरता रहा हूं।<sup>35</sup> क्या मेरे स्वामी को यह नहीं बताया गया कि मैंने क्या किया जब इज़ज़ेबेल ने यहोवा के नवियों को मारा, कि मैंने यहोवा के सौ नवियों को पचास-पचास की संख्या में एक गुफा में छिपा दिया, और उन्हें रोटी और पानी दिया? <sup>36</sup> अब आप कह रहे हैं, ‘जाओ, अपने स्वामी से कहो, “देखो, एलियाह यहाँ है।”’ तब वह मुझे मार डालेगा।<sup>37</sup> पर एलियाह ने कहा, “जैसे सेनाओं का यहोवा जीवित है, जिसके सामने मैं खड़ा हूं, मैं आज निश्चित रूप से उसे दिखाऊँगा।”<sup>38</sup> तो अब ओबद्याह अहाब से मिलने गया और उसे सुचित किया; और अहाब एलियाह से मिलने गया।<sup>39</sup> जब अहाब ने एलियाह को देखा, तो अहाब ने उससे कहा, “क्या यह आप हैं, जो इसाएल के लिए आपदा नहीं लाई, बल्कि आप और आपके पिता के घर ने, क्योंकि आपने यहोवा की आज्ञाओं को त्याग दिया है और बालों का अनुसरण किया है।”<sup>40</sup> अब फिर, आदेश भेजो और मेरे पास मार्डंट कार्मल पर सभी इसाएल को इकट्ठा करो, साथ ही बाल

# 1 राजा

के 450 नबी और अशेरा के 400 नबी, जो इज़जेबेल की मेज पर खाते हैं।”

<sup>20</sup> तो अहाब ने इस्साएल के सभी पुत्रों के बीच आदेश भेजे और नवियों को मार्टट कार्मेल पर इकट्ठा किया। <sup>21</sup> तब एलियाह ने सभी लोगों के पास जाकर कहा, “आप कितने समय तक दो विकल्पों के बीच संघर्ष करते रहेंगे? यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करो; लेकिन यदि बाल, तो उसका अनुसरण करो।” पर लोगों ने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया। <sup>22</sup> तब एलियाह ने लोगों से कहा, “मैं अकेला यहोवा का नबी बचा हूँ, जबकि बाल के नबी 450 पुरुष हैं।” <sup>23</sup> अब उन्हें हामें दो बैल देने दें; और उन्हें अपने लिए एक बैल चुनने दें और उसे काटकर लकड़ी पर रखें, पर उसके नीचे आग न लगाएं; और मैं दूसरे बैल को तैयार करूँगा और उसे लकड़ी पर रखूँगा, और मैं उसके नीचे आग नहीं लगाऊँगा। <sup>24</sup> तब आप अपने देवता के नाम पर पुकारें, और मैं यहोवा के नाम पर पुकारूँगा; और जो देवता आग से उत्तर देगा, वही परमेश्वर है।” और सभी लोगों ने उत्तर दिया, “यह एक अच्छा विचार है।” <sup>25</sup> तो एलियाह ने बाल के नबियों से कहा, “अपने लिए एक बैल चुनें और पहले उसे तैयार करें, क्योंकि आप मैं से बहुत से हैं, और अपने देवता के नाम पर पुकारें, पर बैल के नीचे आग न लगाएं।” <sup>26</sup> तब उन्होंने उस बैल को लिया जो उन्हें दिया गया था और उसे तैयार किया, और वे सबह से दोपहर तक बाल के नाम पर पुकारते रहे, कहते हुए, “हे बाल, हमें उत्तर दो!” पर कोई आवाज नहीं थी, और कोई उत्तर नहीं मिला। और वे उस वेदी के चारों ओर लंगड़ाते रहे जो उन्होंने बनाई थी। <sup>27</sup> दोपहर में एलियाह ने उनका मजाक उड़ाया और कहा, “जोर से पुकारो, क्योंकि वह एक देवता है, निश्चित रूप से वह किसी काम में व्यस्त है, या रास्ते में है, या यात्रा पर है; शायद वह सो रहा है और जाग जाएगा।” <sup>28</sup> तो उन्होंने जोर से पुकारा, और अपनी प्रथा के अनुसार तलवारों और भातों से अपने आप को काटा जब तक कि उनके ऊपर खुन बहने लगा। <sup>29</sup> जब दोपहर बीत गई, तो वे शाम के बलिदान की समय तक बड़बड़ाते रहे; पर कोई आवाज नहीं थी, कोई उत्तर नहीं था, और कोई ध्यान नहीं दिया गया।

<sup>30</sup> तब एलियाह ने सभी लोगों से कहा, “मेरे पास आओ।” तो सभी लोग उसके पास आए। और उसने यहोवा की वेदी को ठीक किया जो गिरा दी गई थी। <sup>31</sup> तब एलियाह ने बाहर पथर लिए, याकूब के पुत्रों के गोत्रों की संख्या के अनुसार, जिनके पास यहोवा का वचन आया था, कहते हुए, “इस्साएल तुम्हारा नाम होगा।”

<sup>32</sup> और पथरों के साथ उसने यहोवा के नाम पर एक वेदी बनाई; और उसने वेदी के चारों ओर एक खाई बनाई, जो दो माप के बीज को समा सके। <sup>33</sup> तब उसने लकड़ी को व्यवस्थित किया, और बैल को टुकड़ों में काटकर लकड़ी पर रखा। और उसने कहा, “चार घड़ों को पानी से भरें और उसे होमबलि और लकड़ी पर डालें।” <sup>34</sup> तब उसने कहा, “इसे दूसरी बार करो,” और उन्होंने इसे दूसरी बार किया। तब उसने कहा, “इसे तीसरी बार करो,” और उन्होंने इसे तीसरी बार किया। <sup>35</sup> तो पानी वेदी के चारों ओर बह गया, और उसने खाई को भी पानी से भर दिया। <sup>36</sup> तब शाम के बलिदान के समय, एलियाह नबी ने पास आकर कहा, “हे यहोवा, अब्राहम, इस्हाक, और इस्साएल के परमेश्वर, आज यह जात हो कि तू इस्साएल में परमेश्वर है और मैं तेरा सेवक हूँ, और मैंने ये सब बातें तेरे वचन के अनुसार की हैं।” <sup>37</sup> मुझे उत्तर दे, हे यहोवा, मुझे उत्तर दे, ताकि ये लोग जान सकें कि तू यहोवा, परमेश्वर है, और तूने उनके हृदय को फिर से मोड़ दिया है।” <sup>38</sup> तब यहोवा की आग गिरी और होमबलि को भस्य कर दिया, लकड़ी, पत्थरों, और धूल को, और उसने खाई में जो पानी था उसे चाट लिया। <sup>39</sup> जब सभी लोगों ने यह देखा, तो वे अपने चेहरों पर गिर पड़े; और उन्होंने कहा, “यहोवा, वही परमेश्वर है; यहोवा, वही परमेश्वर है।” <sup>40</sup> तब एलियाह ने उनसे कहा, “बाल के नबियों को पकड़ लो; उनमें से एक भी बचने न पाए।” तो उन्होंने उन्हें पकड़ लिया; और एलियाह उन्हें किशोन की धारा पर ले गया, और वहाँ उनका वध किया।

<sup>41</sup> अब एलियाह ने अहाब से कहा, “ऊपर जाओ, खाओ और पियो; क्योंकि भारी वर्षा का गर्जन सुनाई दे रहा है।” <sup>42</sup> तो अहाब खाने और पीने के लिए ऊपर गया। पर एलियाह कार्मेल की चोटी पर गया; और वह जीवन पर झुक गया, और अपने घुटनों के बीच अपना वेहरा रखा। <sup>43</sup> और उसने अपने सेवक से कहा, “अब ऊपर जाओ, समुद्र की ओर देखो।” तो वह ऊपर गया और देखा, और कहा, “कुछ नहीं है।” पर उसने कहा, “फिर से जाओ।” सात बार। <sup>44</sup> और जब वह सातवीं बार लौटा, तो उसने कहा, “देखो, समुद्र से एक व्यक्ति के हाथ के आकार का बादल उठ रहा है।” और एलियाह ने कहा, “ऊपर जाओ, अहाब से कहो, ‘अपनी रथ तैयार करो और नीचे जाओ, ताकि भारी वर्षा तुम्हें न रोके।’” <sup>45</sup> इस बीच आकाश बादलों और हवा से अंधेरा हो गया, और भारी वर्षा हुई। और अहाब ने सवारी की ओर यित्रेल गया। <sup>46</sup> तब यहोवा का हाथ एलियाह पर था, और उसने अपनी चादर को अपनी कमर में बांध लिया और अहाब से पहले यित्रेल तक दौड़ा।

## 1 राजा

**19** अब अहाब ने यहेजेबेत को सब कुछ बताया जो एलियाह ने किया था, और कैसे उसने तलवार से सभी नबियों को मार डाला था।<sup>2</sup> तब यहेजेबेल ने एलियाह के पास एक दूत भेजा, कहकर, “देवता मुझे ऐसा करें और उससे भी अधिक, यदि कल इस समय तक मैं तुम्हारा जीवन उनमें से एक के जीवन के समान न कर दूँ।”<sup>3</sup> और वह डर गया, और अपने जीवन के लिए भग गया, और यहूदा के बेश्बा में आया, और उसने अपने सेवक को वहाँ छोड़ दिया।<sup>4</sup> परंतु वह स्वयं एक दिन का सफर करके जंगल में गया, और एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गया; और उसने अपने लिए मन्ने की प्रार्थना की, और कहा, “अब बहुत हुआ! हे प्रभु, मेरा जीवन ले ले, क्योंकि मैं अपने पिताओं से बेहतर नहीं हूँ।”<sup>5</sup> तब वह लेट गया और झाऊ के पेड़ के नीचे सो गया; परन्तु देखो, एक स्वर्गदूत उसे छू रहा था, और उसने उससे कहा, “उठो, खाओ।”<sup>6</sup> तब उसने देखा, और देखो, उसके सिरहाने गरम पत्तरों पर पका हुआ रोटी का एक ढुकड़ा था, और पानी का एक घड़ा। तो उसने खाया और पिया, और फिर से लेट गया।<sup>7</sup> परन्तु प्रभु का स्वर्गदूत दूसरी बार आया और उसे छूकर कहा, “उठो, खाओ, क्योंकि यात्रा तुम्हारे लिए बहुत लंबी है।”<sup>8</sup> तो वह उठा और खाया और पिया, और उस भोजन की शक्ति में चालीस दिन और चालीस रात परमेश्वर के पर्वत होरेब तक चला।

° तब वह एक गुफा में आया और वहाँ रात बिताई; और देखो, प्रभु का वचन उसके पास आया, और उसने उससे कहा, “एलियाह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”<sup>10</sup> उसने कहा, “मैं सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु के लिए बहुत उत्सुक रहा हूँ; क्योंकि इसाएल के पुत्रों ने तेरी वाचा को त्याग दिया है, तेरी वेदियों को गिरा दिया है, और तेरे नबियों को तलवार से मार डाला है। और मैं अकेला बचा हूँ, और वे मेरे जीवन को लेने के लिए खोज रहे हैं।”<sup>11</sup> तो उसने कहा, “बाहर जाओ और पर्वत पर प्रभु के सामने खड़े हो जाओ।” और देखो, प्रभु वहाँ से गुजर रहा था! और एक बड़ी और शक्तिशाली हवा पर्वतों को फाड़ रही थी और प्रभु के सामने चटानों को टुकड़े-टुकड़े कर रही थी; परन्तु प्रभु हवा में नहीं था। और हवा के बाद, एक भूकंप; परन्तु प्रभु भूकंप में नहीं था।<sup>12</sup> और भूकंप के बाद, एक आग; परन्तु प्रभु आग में नहीं था। और आग के बाद, एक धीर्घी सी फुसफुसाहट की आवाज।<sup>13</sup> जब एलियाह ने इसे सुना, तो उसने अपना चेहरा अपनी चादर में लपेट लिया और गुफा के द्वार पर खड़ा हो गया। और देखो, एक आवाज उसके पास आई और उसने कहा, “एलियाह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”<sup>14</sup> तब उसने कहा, “मैं सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु के लिए

बहुत उत्सुक रहा हूँ; क्योंकि इसाएल के पुत्रों ने तेरी वाचा को त्याग दिया है, तेरी वेदियों को गिरा दिया है, और तेरे नबियों को तलवार से मार डाला है। और मैं अकेला बचा हूँ; और वे मेरे जीवन को लेने के लिए खोज रहे हैं।”<sup>15</sup> प्रभु ने उससे कहा, “जाओ, दमिश्क के जंगल के मार्ग पर लौट जाओ, और जब तुम वहाँ पहुँचो, तो हजाएल को अराम का राजा अभिषिक्त करो;”<sup>16</sup> और निमशी के पुत्र यह को इसाएल का राजा अभिषिक्त करो; और अबिल-महोला के शापात के पुत्र एलीशा को अपने खान पर नवी अभिषिक्त करो।<sup>17</sup> और यह होगा कि जो हजाएल की तलवार से बच जाएगा, उसे यह मार डालेगा, और जो यह की तलवार से बच जाएगा, उसे एलीशा मार डालेगा।<sup>18</sup> फिर भी मैं इसाएल में सात हजार छोड़ दूँगा, सभी घृणने जिन्होंने बाल के सामने नहीं छुके और हर मुँह जिसन उसे चूमा नहीं।”

<sup>19</sup> तो वह वहाँ से चला और शापात के पुत्र एलीशा को पाया, जब वह अपने सामने बारह जोड़ी बैलों के साथ हल चला रहा था, और वह बारहवें के साथ था। और एलियाह उसके पास से गुजरा और अपनी चादर उस पर डाल दी।<sup>20</sup> तब उसने बैलों को छोड़ दिया और एलियाह के पीछे दौड़ा, और कहा, “कृपया मुझे अपने पिता और अपनी माता को चूमने दो, फिर मैं तुम्हारे पीछे चलूँगा।” और उसने उससे कहा, “वापस जाओ, क्योंकि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है?”<sup>21</sup> तो वह उसके पीछे से लौट आया, और बैलों की जोड़ी को लिया और उन्हें बलिदान किया, और उनके मांस को बैलों के उपकरणों के साथ उबाला, और लोगों को दिया, और उन्होंने खाया। तब वह उठा और एलियाह के पीछे चला, और उसकी सेवा की।

**20** अब अराम के राजा बिन-हदद ने अपनी सारी सेना को इकट्ठा किया। उसके साथ बतीस राजा, घोड़े और रथ थे। वह सामरिया पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया और उस पर हमला किया।<sup>2</sup> उसने इसाएल के राजा अहाब के पास दूत भेजा और कहा, “बिन-हदद यह कहता है: ‘तुम्हारा चांदी और सोना मेरा है।’ तुम्हारी सबसे अच्छी पत्रियाँ और बच्चे भी मेरे हैं।”<sup>4</sup> इसाएल के राजा ने उत्तर दिया, “जैसा आप कहते हैं, मेरे प्रभु राजा। मैं और जो कुछ मेरा है, वह सब आपका है।”<sup>5</sup> फिर दूत लौटकर आए और कहा, “बिन-हदद यह कहता है: मैंने तुम्हें यह कहने के लिए भेजा था कि मुझे तुम्हारा चांदी और सोना, तुम्हारी पत्रियाँ और तुम्हारे बच्चे दे दो।”<sup>6</sup> लैकिन अब मैं कल इसी समय अपने सेवकों को तुम्हारे पास भेजूँगा, और वे तुम्हारे घर और तुम्हारे अधिकारियों

# 1 राजा

के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ तुम्हारी दृष्टि में  
मूल्यवान होगा, वे उसे ले जाएंगे।"

"तब इसाएल के राजा ने देश के सभी प्राचीनों को  
बुलाया और कहा, "कृपया ध्यान दें कि यह व्यक्ति कैसे  
मुसीबत खोज रहा है। उसने मेरी पतियों, मेरे बच्चों, मेरे  
चांदी और मेरे सोने के लिए भेजा, और मैंने उसे मना  
नहीं किया।"<sup>8</sup> सभी प्राचीनों और लोगों ने उससे कहा,  
"उसकी बात मत सुनो और न ही मानो।"<sup>9</sup> इसलिए  
उसने बिन-हदद के दूतों से कहा, "मेरे प्रधु राजा से  
कहो: मैं तुम्हारे सेवक से पहली बार जो कुछ मांगा था,  
वह सब दंगा, लेकिन दूसरी मांग मैं पूरी नहीं कर  
सकता।"<sup>10</sup> इसलिए दूत चले गए और वापस रिपोर्ट की।<sup>11</sup>  
फिर बिन-हदद ने फिर से संदेश भेजा, "यदि मेरे पीछे  
अने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सामरिया में एक मुट्ठी धूल  
देने के लिए पर्याप्त धूल बची हो, तो देवता मुझे कठोर  
दंड दें।"<sup>12</sup> लेकिन इसाएल के राजा ने उत्तर दिया, "उसे  
कहो: जो अपनी कवच पहनता है, वह उस व्यक्ति की  
तरह धमंड न करे जो उसे उतारता है।"<sup>13</sup> जब बिन-  
हदद ने यह उत्तर सुना, तो वह और अन्य राजा अपने  
तंबुओं में शराब पी रहे थे। उसने अपने आदमियों को  
आदेश दिया, "हमले की तैयारी करो।" इसलिए उन्होंने  
शहर पर हमला करने की तैयारी की।

<sup>14</sup> फिर एक नबी इसाएल के राजा अहाब के पास आया  
और कहा, "यहोवा कहता है: यहा तुमने इस विशाल सेना  
को देखा है? मैं आज इसे तुम्हारे हाथ में दे दंगा, और  
तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"<sup>15</sup> अहाब ने पूछा, "किसके  
द्वारा?" और उसने कहा, "यहोवा कहता है: जिला  
अधिकारियों के युवा अधिकारियों द्वारा।"<sup>16</sup> फिर अहाब ने  
पूछा, "युद्ध कौन शुरू करेगा?" और उसने उत्तर दिया,  
"तुम करोगे।"<sup>17</sup> इसलिए अहाब ने जिला अधिकारियों के  
युवा अधिकारियों को इकट्ठा किया, कुल 232। फिर  
उसने बाकी सेना को इकट्ठा किया — सभी इसाएलियों  
को — जिनकी संख्या सात हजार थी।<sup>18</sup> वे दोपहर में  
बाहर निकले, जबकि बिन-हदद और उसके साथ बत्तीस  
राजा अपने तंबुओं में शराब पी रहे थे।<sup>19</sup> जिला  
अधिकारियों के युवा अधिकारी पहले बाहर निकले।  
बिन-हदद ने स्काउट्स भेजे, जिन्होंने रिपोर्ट की,  
"सामरिया से लोग आगे बढ़ रहे हैं।"<sup>20</sup> उसने कहा, "यदि  
वे शांति के लिए आए हैं, तो उन्हें जीवित पकड़ो; और  
यदि वे युद्ध के लिए आए हैं, तो उन्हें जीवित पकड़ो।"<sup>21</sup>  
इसलिए जिला अधिकारियों के युवा अधिकारी शहर से  
आगे बढ़े, उनके पीछे सेना थी।<sup>22</sup> प्रत्येक ने अपने  
प्रतिद्वंद्वी को मार गिराया, और अरामी भाग गए।  
इसाएल ने उनका पीछा किया, और अराम का राजा

बिन-हदद कुछ घुड़सवारों के साथ घोड़े पर भाग गया।  
<sup>23</sup> फिर इसाएल का राजा बाहर निकला और घोड़ों और  
रथों को मार गिराया, और अरामियों पर एक बड़ी हार  
डाली।

<sup>24</sup> फिर नबी इसाएल के राजा के पास आया और कहा,  
"जाओ और अपनी ताकत बढ़ाओ। ध्यान से विचार करो  
कि तुम्हें क्या करना चाहिए, क्योंकि वर्षत में अराम का  
राजा तुम्हारे खिलाफ वापस आएगा।"<sup>25</sup> इस बीच अराम  
के राजा के अधिकारियों ने उससे कहा, "उनके देवता  
पहाड़ियों के देवता हैं। यही कारण है कि वे हमसे  
अधिक शक्तिशाली थे। लेकिन अगर हम मैदानों में  
उनसे लड़ें, तो निश्चित रूप से हम उनसे अधिक  
शक्तिशाली होंगे।"<sup>26</sup> ऐसा करो: सभी राजाओं को उनके  
आदेशों से हटा दो और उनकी जगह सेनापतियों को  
नियुक्त करो।<sup>27</sup> इसके अलावा, एक सेना तैयार करो  
जैसे तुमने खोई थी — घोड़े के लिए घोड़ा और रथ के  
लिए रथ — ताकि हम मैदानों में उनसे लड़ सकें। तब  
निश्चित रूप से हम उहैं हरा देंगे।"<sup>28</sup> उसने सहमति दी  
और जैसा उन्होंने सलाह दी, वैसा किया।

<sup>29</sup> वर्षत में, बिन-हदद ने अरामियों को इकट्ठा किया  
और इसाएल के खिलाफ लड़ाई के लिए अफेक पर  
चार्दाई की।<sup>30</sup> इसाएली भी इकट्ठे किए गए और उहैं  
रसद दी गई, और वे उनसे मिलने के लिए बाहर निकले।  
इसाएल के लोग उनके सामने दो छोटे बकरियों के झुंड  
की तरह डेरा डाले हुए थे, जबकि अरामी देश भर में  
फैले हुए थे।<sup>31</sup> फिर एक परमेश्वर का आदमी आया और  
इसाएल के राजा से कहा, "यहोवा यह कहता है: क्योंकि  
अरामियों ने कहा है, 'यहोवा पहाड़ियों का देवता है'  
लेकिन घाटियों का देवता नहीं है; मैं इस विशाल सेना  
को तुम्हारे हाथ में दे दंगा, और तुम जानोगे कि मैं यहोवा  
हूँ।"

<sup>32</sup> वे सात दिनों तक एक-दूसरे के सामने डेरा डाले रहे।  
सातवें दिन, उन्होंने युद्ध किया, और इसाएलियों ने एक  
ही दिन में अरामियों के 100,000 पैदल सेनिकों को  
मार गिराया।<sup>33</sup> बाकी अफेक शहर में भाग गए, जहां  
दीवार उन पर गिर गई और 27,000 को मार डाला।  
बिन-हदद भाग गया और शहर के भीतर एक आंतरिक  
कमरे में छिप गया।<sup>34</sup> उसके अधिकारियों ने उससे  
कहा, "देखो, हमने सुना है कि इसाएल के राजा दयालु  
होते हैं। आओ हम टाट पहनें और अपने सिर पर  
रस्सियाँ डालें और इसाएल के राजा के पास जाएं।  
शायद वह तुम्हारी जान बख्ता दे।"<sup>35</sup> इसलिए उन्होंने  
टाट और रस्सियाँ पहनी, और इसाएल के राजा के पास

# 1 राजा

जाकर कहा, "आपका सेवक बिन-हदद कहता है: कृपया मुझे जीवित रहने दें।" अहाब ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी भी जीवित है? वह मेरा भाई है।"<sup>33</sup> लोगों ने इसे एक अच्छे संकेत के रूप में लिया और जल्दी से जवाब दिया, "हाँ, बिन-हदद आपका भाई है।" अहाब ने कहा, "जाओ और उसे लाओ।" इसलिए बिन-हदद बाहर आया, और अहाब ने उसे रथ में ढूँढ़ने के लिए बुलाया।<sup>34</sup> बिन-हदद ने कहा, "मैं उन शहरों को लौटाऊंगा जो मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से लिए थे। तुम दमिश्क में अपने लिए बाजार क्षेत्र स्थापित कर सकते हों, जैसे मेरे पिता ने सामरिया में किया था।" अहाब ने कहा, "इस समझौते के आधार पर, मैं तुम्हें जाने दूंगा।" इसलिए उसने उसके साथ संधि की और उसे जाने दिया।

<sup>35</sup> अब नबियों के पुरों में से एक व्यक्ति ने अपने पड़ोसी से यहोवा के वर्चन के द्वारा कहा, "मुझे मारो, कृपया।" लेकिन उस व्यक्ति ने उसे मारने से इकार कर दिया।<sup>36</sup> इसलिए नबी ने उससे कहा, "क्योंकि तुमने यहोवा की आवाज़ का पालन नहीं किया, जैसे ही तुम मुझे छोड़ोगे, एक शेर तुम्हें मार डालेगा।" और जैसे ही वह चला गया, एक शेर ने उसे पाया और मार डाला।<sup>37</sup> फिर उसने एक और व्यक्ति को पाया और कहा, "मुझे मारो, कृपया।" उस व्यक्ति ने उसे मारा और घायल कर दिया।<sup>38</sup> फिर नबी ने राजा के लिए सङ्क पर इंतजार किया, अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर खुद को छिपा लिया।<sup>39</sup> जब राजा वहाँ से गुज़रा, तो उसने उसे पुकारा, "आपका सेवक युद्ध के बीच में गया, और किसी ने आकर मेरे पास एक व्यक्ति लाया और कहा, इस व्यक्ति की रक्षा करो, यदि वह गायब हो जाए, तो तुम्हारी जान उसकी जान के लिए जाएगी, या फिर तुम्हें एक टैलेट चांदी चुकानी होगी।"<sup>40</sup> लेकिन जब आपका सेवक यहाँ-वहाँ व्यस्त था, तो वह व्यक्ति गायब हो गया।<sup>41</sup> और इसाएल के राजा ने उससे कहा, "यह तुम्हारा निर्णय है। तुमने खुद इसे तय किया है।"<sup>42</sup> फिर नबी ने जल्दी से अपनी आँखों से पट्टी हटा दी, और इसाएल के राजा ने उसे नबियों में से एक के रूप में पहचाना।<sup>43</sup> और उसने राजा से कहा, "यहोवा यह कहता है: क्योंकि तुमने अपने हाथ से उस व्यक्ति को जाने दिया जिसे मैंने नाश के लिए समर्पित किया था, तुम्हारी जान उसकी जान के लिए जाएगी, और तुम्हारे लोग उसके लोगों के लिए।"<sup>44</sup> इसलिए इसाएल का राजा अपने घर उदास और क्रोधित होकर वापस गया, और सामरिया आया।

**21** इन घटनाओं के बाद ऐसा हुआ कि यित्रेली नाबोत के पास यित्रेल में एक दाख की बारी थी, जो समरिया के राजा अहाब के महल के पास थी।<sup>2</sup> अहाब

ने नाबोत से कहा, "मुझे अपनी दाख की बारी दे दो ताकि मैं उसे सब्जी का बाग बना सकूँ, क्योंकि यह मेरे महल के पास है। मैं तुम्हें इसके बदले में एक बेहतर दाख की बारी दूंगा, या यदि तुम चाहो, तो मैं तुम्हें इसकी कीमत चांदी में दूंगा।"<sup>3</sup> पर नाबोत ने अहाब से कहा, "यहोवा न करे कि मैं तुम्हें अपने पूर्वजों की विरासत दूँ।"<sup>4</sup> इसलिए अहाब घर चला गया, उदास और क्रोधित होकर क्योंकि यित्रेली नाबोत ने कहा था, "मैं तुम्हें अपने पूर्वजों की विरासत नहीं दूंगा।" वह अपने बिस्तर पर लेट गया, अपना चेहरा मोड़ लिया, और खाने से इनकार कर दिया।

<sup>5</sup> उसकी पत्नी इज़ोबेल अंदर आई और पूछा, "तुम इतने परेशान क्यों हो? तुम खाना क्यों नहीं खा रहे हो?"<sup>5</sup> उसने उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने यित्रेली नाबोत से बात की और उससे अपनी दाख की बारी बेचने के लिए कहा, या यदि वह चाहे तो उसे बदलने के लिए कहा। लेकिन उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हें अपनी दाख की बारी नहीं दूंगा।"<sup>6</sup> <sup>7</sup> उसकी पत्नी इज़ोबेल ने कहा, "क्या इस तरह तुम इसाएल के राजा के रूप में कार्य करते हों? उठो और कुछ खाओ। खुश हो जाओ।" मैं तुम्हें यित्रेली नाबोत की दाख की बारी दिलाऊंगी।"<sup>8</sup> इसलिए उसने अहाब के नाम से पत्र लिखे, उह्यें उसकी मुहर से सील किया, और उह्यें नाबोत के शहर के बुजुर्गों और प्रतिष्ठित लोगों को भेजा।<sup>9</sup> उन पत्रों में उसने लिखा: "एक उपवास की घोषणा करो और नाबोत को लोगों के बीच एक प्रमुख स्थान पर बैठाओ।"<sup>10</sup> लेकिन उसके समाने दो बदमाशों को बैठाओ और उह्यें गवाही देने दो कि उसने परमेश्वर और राजा दोनों को शाप दिया है। फिर उसे बाहर ले जाकर पथरों से मार डालो।"

<sup>11</sup> इसलिए नाबोत के शहर के लोग—वहाँ के तुर्जुर्ग और प्रतिष्ठित लोग—ने ठीक वैसा ही किया जैसा इज़ोबेल ने अपने भेजे हुए पत्रों में निर्देश दिया था।<sup>12</sup> उह्योंने एक उपवास की घोषणा की और नाबोत को लोगों के बीच एक प्रमुख स्थान पर बैठाया।<sup>13</sup> फिर दो दोनों कीमे लोग आए और उसके समान बैठ गए, और लोगों के सामने गवाही दी, "नाबोत ने परमेश्वर और राजा को शाप दिया है।" इसलिए उह्योंने उसे शहर के बाहर ले जाकर पथरों से मार डाला।<sup>14</sup> फिर उह्योंने इज़ोबेल को खबर भेजी, "नाबोत को पथरों से मार डाला गया है।"

<sup>15</sup> जैसे ही इज़ोबेल ने सुना कि नाबोत को पथरों से मार डाला गया है और वह मर चुका है, उसने अहाब से कहा, "उठो और यित्रेली नाबोत की दाख की बारी का अधिकार ले लो, जिसे उसने तुम्हें बेचने से इनकार कर

## 1 राजा

दिया था। वह अब जीवित नहीं है, बल्कि मर चुका है।"<sup>16</sup> जब अहाब ने सुना कि नाबोत मर चुका है, तो वह उठा और दाख की बारी का अधिकार लेने के लिए नीचे चला गया।

<sup>17</sup> फिर यहोवा का वचन तिशबी एलियाह के पास आया: <sup>18</sup> "इसाएल के राजा अहाब से मिलने के लिए नीचे जाओ, जो समरिया में शासन करता है। वह अब नाबोत की दाख की बारी में है, जहां वह उसका अधिकार लेने गया है।" <sup>19</sup> उससे कहो: यहोवा यह कहता है: क्या तुमने हत्या की और अधिकार भी ले लिया? फिर उससे कहो, यहोवा यह कहता है: जिस खान पर कुर्तों ने नाबोत का खून चाटा था, कुर्ते तुम्हारा खून भी चांटेंगे—हाँ, तुम्हारा!" <sup>20</sup> अहाब ने एलियाह से कहा, "तो तुमने मुझे पा लिया, मेरे शत्रु।" एलियाह ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें पा लिया है, क्योंकि तुमने यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिए अपने आप को बेच दिया है।" <sup>21</sup> यहोवा यह कहता है: मैं तुम पर विपत्ति लाऊंगा। मैं तुम्हारी संतानों को मिटा दूँगा, और इसाएल में अहाब के हर पुरुष को—गुलाम या स्वतंत्र—काट डाऊंगा। <sup>22</sup> मैं तुम्हारे घर को यारोबाम पुत्र नबात और बाशा पुत्र अहीया के घर जैसा बनाऊंगा, क्योंकि तुमने मेरे क्रोध को भड़काया और इसाएल को पाप में डाला।" <sup>23</sup> और इज़जेबेल के बारे में, यहोवा भी कहता है: 'कुर्ते यिज्रेल की दीवार के पास इज़जेबेल को खा जाएंगे।' <sup>24</sup> कुर्ते शहर में मरने वाले अहाब के किसी भी व्यक्ति को खाएंगे, और पक्षी उन लोगों को खाएंगे जो ग्रामीण इलाकों में मरेंगे।"

<sup>25</sup> अहाब जैसा कोई नहीं था, जिसे यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिए अपने आप को बेच दिया, जिसे उसकी पत्नी इज़जेबेल ने उकसाया। <sup>26</sup> उसने मूर्तियों का अनुसरण करके सबसे धृष्टि तरीके से कार्य किया, जैसा कि एमोरीयों ने किया था, जिन्हें यहोवा ने इसाएल के सामने से निकाल दिया था।

<sup>27</sup> जब अहाब ने ये शब्द सुने, तो उसने अपने कपड़े फाढ़े, टाट पहना और उपवास किया। वह टाट में लेटा और चुपचाप और विनम्रता से चला। <sup>28</sup> फिर यहोवा का वचन तिशबी एलियाह के पास आया: <sup>29</sup> "क्या तुमने देखा कि अहाब ने मेरे सामने अपने आप को कैसे विनम्र किया है? क्योंकि उसने अपने आप को विनम्र किया है, मैं उसके जीवनकाल में विपत्ति नहीं लाऊंगा।" मैं उसके घर पर उसके पुत्र के दिनों में विपत्ति लाऊंगा।"

**22** तीन वर्षों तक अराम और इसाएल के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ। <sup>2</sup> परंतु तीसरे वर्ष, यहोशापात, जो यहूदा

का राजा था, इसाएल के राजा से मिलने गया। <sup>3</sup> इसाएल के राजा ने अपने सेवकों से कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि रामोत-गिलाद हमारा है? फिर भी हम अराम के राजा से इसे वापस लेने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं।" <sup>4</sup> तो उसने यहोशापात से पूछा, "क्या तुम मेरे साथ रामोत-गिलाद के विरुद्ध युद्ध करने जाओगे?" यहोशापात ने इसाएल के राजा को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे जैसा हूँ; मेरे लोग तुम्हारे लोग जैसे हैं, मेरे घोड़े तुम्हारे घोड़ों जैसे हैं।"

<sup>5</sup> परंतु यहोशापात ने इसाएल के राजा से कहा, "पहले, यहोवा का वचन पूछ लो।" <sup>6</sup> इसलिए इसाएल के राजा ने भविष्यद्वक्ताओं को इकट्ठा किया—लगभग चार सौ पुरुष—और उनसे पूछा, "क्या मैं रामोत-गिलाद के विरुद्ध युद्ध करने जाऊं, या रुक जाऊं?" उन्होंने उत्तर दिया, "जाओ, क्योंकि यहोवा इसे राजा के हाथ में दे देगा।" <sup>7</sup> परंतु यहोशापात ने पूछा, "क्या यहाँ यहोवा का कोई और भविष्यद्वक्ता नहीं है जिससे हम पूछ सकते?" <sup>8</sup> इसाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "अब भी एक व्यक्ति है जिसके माध्यम से हम यहोवा से पूछ सकते हैं, परंतु मैं उससे धृणा करता हूँ क्योंकि वह मेरे बारे में कभी कुछ अच्छा भविष्यवाणी नहीं करता—सिफ़ आपदा। वह इस्ला का पुत्र मीकायाह है।" यहोशापात ने उत्तर दिया, "राजा को ऐसा नहीं कहना चाहिए।" <sup>9</sup> इसलिए इसाएल के राजा ने एक अधिकारी को बुलाया और कहा, "इस्ला के पुत्र मीकायाह को तुरंत लेकर आओ।"

<sup>10</sup> अब इसाएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात अपने सिंहासनों पर बैठे थे, सामरिया के द्वारा के प्रवेश पर खलिहान में वस्त धारण किए हुए, और सभी भविष्यद्वक्ता उनके सामने भविष्यवाणी कर रहे थे। <sup>11</sup> केनाना का पुत्र जेदिकियाह ने लोडे के सींग बनाए थे, और उसने कहा, "यहोवा यह कहता है: इनसे तुम अरामियों को मारोगे जब तक वे नष्ट नहीं हो जाते।" <sup>12</sup> सभी भविष्यद्वक्ता वही बात कह रहे थे: "रामोत-गिलाद पर चढ़ाई करो और विजय प्राप्त करो, क्योंकि यहोवा इसे राजा के हाथ में दे देगा।"

<sup>13</sup> जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था, उसने उससे कहा, "देखो, भविष्यद्वक्ताओं के वचन सब एकमत हैं, राजा को सफलता का वचन दे रहे हैं। तुम्हारा वचन भी उनके जैसा हो, और अनुकूल बोलो।" <sup>14</sup> परंतु मीकायाह ने कहा, "जैसे यहोवा जीवित है, मैं वही कहूँगा जो यहोवा मुझे कहेगा।"

# 1 राजा

<sup>15</sup> जब वह राजा के सामने पहुँचा, तो राजा ने उससे पूछा, "मीकायाह, क्या हम रामोत-गिलाद के विरुद्ध युद्ध करने जाएं, या नहीं?" उसने उत्तर दिया, "जाओ और विजय प्राप्त करो, क्योंकि यहोवा इसे राजा के हाथ में दें देगा।"<sup>16</sup> परंतु राजा ने उससे कहा, "मैं तुम्हें कितनी बार शपथ दिलाऊं कि तुम मुझे यहोवा के नाम में केवल सत्य ही बताओ?"<sup>17</sup> तब मीकायाह ने कहा, "मैंने देखा कि इसाएल के सभी लोग पहाड़ों पर बिखरे हुए हैं, जैसे बिना चरवाहे की भेड़ें,

और यहोवा ने कहा, 'इन लोगों का कोई स्वामी नहीं हैं प्रत्येक अपने घर में शांति से लौट जाए।'

<sup>18</sup> इसाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वह मेरे बारे में कुछ अच्छा नहीं भविष्यवाणी करेगा, बल्कि केवल विपति?'<sup>19</sup> मीकायाह ने कहा, 'इसलिए यहोवा का वचन सुनो: मैंने यहोवा को उसके सिंहासन पर बैठे हुए देखा, और सर्वग की सारी सेना उसके दाएँ और बाएँ खड़ी थी।'<sup>20</sup> और यहोवा ने कहा, 'कौन अहाब को बहकाएगा कि वह रामोत-गिलाद में जाकर गिरे?' एक ने यह सुनाव दिया, और दूसरे ने वह।<sup>21</sup> तब एक आमा आगे बढ़ी, यहोवा के सामने खड़ी हुई, और कहा, 'मैं उसे बहकाऊंगा।'<sup>22</sup> कैसे? यहोवा ने पूछा। सभी उसके भविष्यद्वक्ताओं के मुख में एक झूठी आत्मा बनकर, उसने कहा। यहोवा ने कहा, 'तुम उसे बहकाने में सफल होगे। जाओ और ऐसा करो।'<sup>23</sup> तो अब यहोवा ने तुम्हारे इन सभी भविष्यद्वक्ताओं के मुख में एक झूठी आत्मा डाल दी है। यहोवा ने तुम्हारे लिए विपर्ति की धोषणा की है।"

<sup>24</sup> तब केनाना का पुत्र जेदिकियाह मीकायाह के पास आया और उसे गाल पर मारा। उसने कहा, 'यहोवा की आत्मा किस मार्ग से मुझसे होकर तुझसे बोलने गई?'<sup>25</sup> मीकायाह ने उत्तर दिया, 'तुम उस दिन जानोगे जब तुम एक भीतरी कक्ष में छिपने जाओगे।'<sup>26</sup> इसाएल के राजा ने आदेश दिया, 'मीकायाह को ले जाओ और उसे नगर के राज्यपाल आमोन और राजा के पुत्र योआश के पास भेज दो,'<sup>27</sup> और कहा, 'राजा यह कहता है: इस व्यक्ति को जेल में डाल दो और जब तक मैं सुरक्षित लौट न आऊं, उसे केवल रोटी और पानी दो।'<sup>28</sup> परंतु मीकायाह ने धोषणा की, 'यदि तुम कभी सुरक्षित लौटे, तो यहोवा ने मुझसे नहीं कहा है।' और उसने जोड़ा, 'सभी लोग ध्यान दें।'

<sup>29</sup> इसलिए इसाएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात रामोत-गिलाद की ओर गए।<sup>30</sup> इसाएल के

राजा ने यहोशापात से कहा, 'मैं युद्ध में जाने पर भेष बदल लूँगा, परंतु तुम अपने राजसी वस्त्र पहनो।'<sup>31</sup> इसलिए इसाएल के राजा ने भेष बदला और युद्ध में गया।<sup>32</sup> अब अराम के राजा ने अपने बत्तीस रथों के सेनापतियों को आदेश दिया, 'किसी से युद्ध मत करो, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, केवल इसाएल के राजा से।'<sup>33</sup> जब रथों के सेनापतियों ने यहोशापात को देखा, तो उन्होंने सोचा, 'निश्चित रूप से यह इसाएल का राजा है।'<sup>34</sup> इसलिए उन्होंने उस पर आक्रमण करने का प्रयास किया, परंतु यहोशापात ने पुकारा।<sup>35</sup> जब रथों के सेनापतियों ने देखा कि वह इसाएल का राजा नहीं है, तो वे उससे हट गए।

<sup>34</sup> परंतु किसी ने अपने धनुष को बिना लक्ष के खींचा और इसाएल के राजा को उसके कवच के जोड़े के बीच में मारा। उसने अपने रथ के चालक से कहा, 'मुझों और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो, क्योंकि मैं धायल हो गया हूँ।'<sup>35</sup> उस दिन युद्ध भयंकर था, और राजा अरामियों का सामना करते हुए अपने रथ में सहारा लेकर खड़ा रहा। परंतु उसके घाव से रक्त रथ के फर्श पर बह रहा था, और उस शम को वह मर गया।<sup>36</sup> सूर्यस्त के समय, सेना में एक पुकार उठी: 'हर व्यक्ति अपने नगर को लौटे, और हर व्यक्ति अपनी भूमि को लौटो।'<sup>37</sup> इसलिए राजा की मृत्यु हो गई और उसे सामरिया ते जाया गया, और वहाँ उसे दफनाया गया।<sup>38</sup> उन्होंने सामरिया के एक तालाब में रथ को धोया, जहाँ वेश्याएँ स्नान करती थीं, और कुत्तों ने उसका रक्त चाटा, जैसा कि यहोवा के वचन ने कहा था।

<sup>39</sup> अब अहाब के बाकी कार्य, और जो कुछ उसने किया—हाथी दांत का महल जो उसने बनाया और नगरों को जो उसने सुधार किया—क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>40</sup> अहाब अपने पूर्वजों के साथ सो गया, और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>41</sup> आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राजा बना, जब इसाएल के राजा अहाब का चौथा वर्ष था।<sup>42</sup> यहोशापात जब राजा बना, तब वह पैतीस वर्ष का था, और उसने यरूशलैम में पच्चीस वर्षों तक राज्य किया। उसकी माता का नाम शिल्ती की पुत्री अजूबा था।<sup>43</sup> उसने अपने पिता आसा के मार्गों पर चला और उनसे नहीं भटका; उसने यहोवा की दृष्टि में सही किया। फिर भी ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए, और लोग वहाँ बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते रहे।<sup>44</sup> यहोशापात ने इसाएल के राजा के साथ भी शांति स्थापित की।

## 1 राजा

<sup>45</sup> जहाँ तक यहोशापात के बाकी कार्यों का सवाल है,  
उसके किए गए पराक्रम और उसने जो युद्ध लड़े—क्या  
वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं  
लिखे हैं? <sup>46</sup> उसने भूमि से उन शेष पुरुष वेश्याओं को  
हटा दिया जो उसके पिता आसा के दिनों से बची थीं। <sup>47</sup>  
एदीम में कोई राजा नहीं था; एक उपराजा राजा के स्थान  
पर शासन करता था। <sup>48</sup> यहोशापात ने तर्शीश के जहाज  
बनाए ताकि वे ओफिर के लिए सोना लाने जाएं, परंतु वे  
कभी रवाना नहीं हुए, क्योंकि वे एजियन-गेबर में टूट  
गए। <sup>49</sup> उस समय, अहाब के पुत्र अहज्याह ने  
यहोशापात से कहा, “मेरे लोग तुम्हारे साथ जहाजों में  
चलें,” परंतु यहोशापात ने मना कर दिया।

<sup>50</sup> यहोशापात अपने पूर्वजों के साथ सो गया और उन्हें  
दाऊद, उसके पिता के नगर में उनके साथ दफनाया  
गया। और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राजा  
बना।

<sup>51</sup> अहाब का पुत्र अहज्याह सामरिया में इसाएल का  
राजा बना, जब यहूदा के राजा यहोशापात का सत्रहवाँ  
वर्ष था, और उसने इसाएल पर दो वर्षों तक राज्य  
किया। <sup>52</sup> उसने यहोवा की वस्ति में बुरा किया और अपने  
पिता और माता के मार्गों पर चला और नबात के पुत्र  
यारोबाम के मार्ग पर चला, जिसने इसाएल को पाप में  
डाला। <sup>53</sup> उसने बाल की सेवा की और उसकी पूजा की  
और इसाएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया, जैसा  
कि उसके पिता ने किया था।

## 2 राजा

**1** अहाब की मृत्यु के बाद, मोआब ने इसाएल के विरुद्ध विद्रोह किया।<sup>2</sup> अब अहज़ाह सामरिया में अपने ऊपरी कमरे की जाती से गिर गया और घायल हो गया। इसलिए उसने दूतों को भेजा और उनसे कहा, "जाओ और एकोन के देवता बाल-ज़ेबूब से पूछो कि क्या मैं इस चोट से ठीक हो जाऊंगा।"<sup>3</sup> परन्तु यहोवा के दूत ने तिशबी एलियाह से कहा, "उठो और सामरिया के राजा के दूतों से मिलो और उनसे कहो, 'क्या इसाएल में कोई परमेश्वर नहीं है कि तुम एकोन के देवता बाल-ज़ेबूब से परामर्श करने जा रहे हो?'<sup>4</sup> इसलिए यहोवा यह कहता है: तुम उस बिस्तर से नहीं उठोगे जिस पर तुम लेटे हो। तुम अवश्य मरोगे।"<sup>5</sup> इसलिए एलियाह चला गया।

<sup>5</sup> जब दूत राजा के पास लौटे, तो उसने उनसे पूछा, "तुम वापस क्यों आए हो?"<sup>6</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "एक व्यक्ति हमसे मिलने आया और कहा, उस राजा के पास लौट जाओ जिसने तुम्हें भेजा है और उससे कहो, यहोवा यह कहता है: क्या इसाएल में कोई परमेश्वर नहीं है कि तुम एकोन के देवता बाल-ज़ेबूब से परामर्श करने के लिए पुरुषों को भेज रहे हो? इसलिए तुम उस बिस्तर से नहीं उठोगे जिस पर तुम लेटे हो। तुम अवश्य मरोगे!"<sup>7</sup> राजा ने उनसे पूछा, "वह व्यक्ति कैसा था जो तुमसे मिलने आया और यह बात तुमसे कही?"<sup>8</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "वह एक आदमी था जो बालों के वस्त्र पहने हुए था और उसकी कमर पर चमड़े की पेटी बंधी थी।"<sup>9</sup> राजा ने कहा, "वह तिशबी एलियाह था।"

<sup>9</sup> फिर राजा ने पचास आदमियों के साथ एक कप्तान को एलियाह के पास भेजा। वह एलियाह के पास गया, जो एक पहाड़ी के ऊपर बैठा था, और उससे कहा, "परमेश्वर के व्यक्ति, राजा कहता है, 'नीचे आओ!'"<sup>10</sup> एलियाह ने कप्तान को उत्तर दिया, "यदि मैं परमेश्वर का व्यक्ति हूँ, तो आकाश से आग आए और तुम्हें और तुम्हारे पचास आदमियों को भस्म कर दे।"<sup>11</sup> तब आकाश से आग गिरी और कप्तान और उसके आदमियों को भस्म कर दिया।<sup>12</sup> इस पर, राजा ने फिर से पचास आदमियों के साथ एक और कप्तान को भेजा। उसने एलियाह से कहा, "परमेश्वर के व्यक्ति, राजा यह कहता है: 'तुमंत नीचे आओ!'"<sup>13</sup> एलियाह ने उत्तर दिया, "यदि मैं परमेश्वर का व्यक्ति हूँ, तो आकाश से आग आए और तुम्हें और तुम्हारे पचास आदमियों को भस्म कर दे।"<sup>14</sup> तब परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उन्हें भस्म कर दिया।

<sup>13</sup> इसलिए राजा ने तीसरे कप्तान को उसके पचास आदमियों के साथ भेजा। यह तीसरा कप्तान ऊपर गया,

एलियाह के सामने घुटने टेक दिए, और उससे विनती की, "परमेश्वर के व्यक्ति, कृपया मेरी और इन पचास सेवकों की जान की कदर करें।"<sup>14</sup> देखो, आग आकाश से गिरी और पहले दो कप्तानों और उनके आदमियों को भस्म कर दिया। लेकिन अब, कृपया मेरी जान को अपनी दृष्टि में कीमती समझो।"<sup>15</sup> तब यहोवा के दूत ने एलियाह से कहा, "इसके साथ नीचे जाओ; डरो मत।" इसलिए एलियाह उठा और उसके साथ राजा के पास गया।

<sup>16</sup> उसने राजा से कहा, "यहोवा यह कहता है: तुमने एकोन के देवता बाल-ज़ेबूब से परामर्श करने के लिए दूत भेजे हैं। क्या इसाएल में कोई परमेश्वर नहीं है जिससे उसके वचन की पूछताछ की जाए? इसलिए तुम उस बिस्तर से नहीं उठोगे जिस पर तुम लेटे हो। तुम अवश्य मरोगे!"<sup>17</sup> इसलिए अहज़ाह की मृत्यु हो गई, जैसा कि यहोवा के वचन के अनुसार एलियाह ने कहा था। क्योंकि उसका कोई पुत्र नहीं था, यहोवा ने यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में उसका स्थान लिया।

<sup>18</sup> अहज़ाह के बाकी कार्य और उसने जो कुछ किया, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

**2** जब यहोवा एलियाह को बवंडर में सर्वमें ले जाने वाला था, तब एलियाह और एलीशा गिलगाल से जा रहे थे।<sup>2</sup> एलियाह ने एलीशा से कहा, "यहीं ठहरो, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल भेजा है।"<sup>3</sup> पर एलीशा ने कहा, "जैसे यहोवा जीवित है और जैसे आप जीवित हैं, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।"<sup>4</sup> इसलिए वे बेतेल गए।<sup>5</sup> बेतेल के समूह ने एलीशा के पास आकर पूछा, "क्या तुम जानते हो कि आज यहोवा तुम्हारे स्वामी को तुमसे लेने वाला है?" उसने उत्तर दिया, "हाँ, मैं जानता हूँ – चुप रहो।"<sup>6</sup> फिर एलियाह ने उससे कहा, "एलीशा, यहीं ठहरो, क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो भेजा है।"<sup>7</sup> पर उसने उत्तर दिया, "जैसे यहोवा जीवित है और जैसे आप जीवित हैं, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।"<sup>8</sup> इसलिए वे यरीहो गए।<sup>9</sup> यरीहो के भविष्यद्वक्ताओं के समूह ने एलीशा के पास आकर कहा, "क्या तुम जानते हो कि आज यहोवा तुम्हारे स्वामी को तुमसे लेने वाला है?" और उसने उत्तर दिया, "हाँ, मैं जानता हूँ। चुप रहो।"<sup>10</sup> फिर एलियाह ने उससे कहा, "यहीं ठहरो, क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन भेजा है।"<sup>11</sup> पर एलीशा ने उत्तर दिया, "जैसे यहोवा जीवित है और जैसे आप जीवित हैं, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।"<sup>12</sup> इसलिए वे दोनों आगे बढ़े।

## 2 राजा

<sup>7</sup> भविष्यद्वक्ताओं के समूह के पचास आदमी गए और यरदन के किनारे पर खड़े हो गए, जहाँ एलियाह और एलीशा रुके थे। <sup>8</sup> फिर एलियाह ने अपनी चादर ली, उसे लपेटा और पानी पर मारा। पानी दो भागों में बंट गया, और वे दोनों सूखी भूमि पर पार हो गए। <sup>9</sup> जब वे पार हो गए, तो एलियाह ने एलीशा से कहा, "मुझसे माँग कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ, इससे पहले कि मैं तुमसे लिया जाऊँ।" एलीशा ने कहा, "मुझे आपके आत्मा का दुगुना भाग मिल जाए।" <sup>10</sup> एलियाह ने उत्तर दिया, "तुमने कठिन बात माँगी है। फिर भी यदि तुम मुझे देखते हो जब मैं तुमसे लिया जाऊँ, तो यह तुम्हारा होगा — अन्यथा नहीं।" <sup>11</sup> जब वे चल रहे थे और बात कर रहे थे, अचानक आग का रथ और आग के घोड़े प्रकट हुए और उन्होंने दोनों को अलग कर दिया, और एलियाह बवंडर में स्वर्ग में चला गया। <sup>12</sup> एलीशा ने इसे देखा और चिल्लाया, "मेरे पिता, मेरे पिता! इसाएल का रथ और उसके घुड़सवार!" और एलीशा ने उसे और नहीं देखा। फिर उसने अपने वस्त्र पकड़े और उन्हें दो टुकड़ों में फाड़ दिया।

<sup>13</sup> एलीशा ने एलियाह की चादर उठाई जो उससे गिर गई थी और वापस जाकर यरदन के किनारे छड़ा हुआ।

<sup>14</sup> उसने एलियाह की गिरी हुई चादर ली, पानी पर मारा, और कहा, "एलियाह का परमेश्वर यहोवा कहाँ है?" जब उसने पानी पर मारा, तो वह दो भागों में बंट गया, और एलीशा पार हो गया।

<sup>15</sup> जब यरीहो के भविष्यद्वक्ताओं के समूह ने, जो देख रहे थे, उसे देखा, तो उन्होंने कहा, "अब एलियाह की आत्मा एलीशा पर ठहर गई है।" और वे उससे मिलने आए और उसके सामने भूमि पर दूर कर दिया। <sup>16</sup> उन्होंने उससे कहा, "देखो, हम तुम्हारे सेवक पचास बलवान आदमी हैं। उन्हें जाकर तुम्हारे स्वामी को खोजने दो। शायद यहोवा की आत्मा ने उसे उठा लिया है और किसी पहाड़ या धाटी में रख दिया है।" पर एलीशा ने उत्तर दिया, "उन्हें मत भेजो।" <sup>17</sup> पर वे तब तक आग्रह करते रहे जब तक कि उसे मना करने में शर्म नहीं आई। इसलिए उसने कहा, "उन्हें भेजो।" और उन्होंने पचास आदमी भेजे, जिन्होंने तीन दिन तक खोज की पर उसे नहीं पाया। <sup>18</sup> जब वे एलीशा के पास लौटे, जो यरीहो में ठहरा था, उसने उनसे कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मत जाओ?"

<sup>19</sup> नगर के लोगों ने एलीशा से कहा, "देखो, हमारे स्वामी देख सकते हैं कि यह नगर अच्छी स्थिति में है, पर पानी खराब है और भूमि बंजर है।" <sup>20</sup> उसने कहा, "मुझे एक

नया कटोरा लाओ और उसमें नमक डालो।" तो वे उसे लाए। <sup>21</sup> फिर वह सोत पर गया और उसमें नमक डाला, कहते हुए, "यहोवा यह कहता है: मैंने इस पानी को चंगा कर दिया है। अब से यह न तो मृत्यु का कारण बनेगा और न ही भूमि को बंजर करेगा।" <sup>22</sup> और पानी आज तक शुद्ध बना हुआ है, जैसा कि एलीशा ने कहा था।

<sup>23</sup> वहाँ से एलीशा बेतेल गया। जब वह मार्ग पर चल रहा था, कुछ लड़के नगर से बाहर आए और उसका मजाक उड़ाते हुए कहने लगे, "ऊपर जा, गंगे! ऊपर जा, गंगे!" <sup>24</sup> उसने मुड़कर उनकी ओर देखा और यहोवा के नाम में उहें शाप दिया। फिर जंगल से दो भालू निकले और उन लड़कों में से ब्यालीस को फाड़ डाला। <sup>25</sup> वहाँ से एलीशा माउंट कर्मल गया, और फिर सामरिया लौट आया।

**3** यहोराम, अहाब का पुत्र, यहूदा के राजा यहोशापात के अठारहवें वर्ष में इसाएल का राजा बना, और वह बारह वर्ष तक राज्य करता रहा। <sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, परंतु अपने पिता और माता की तरह नहीं, क्योंकि उसने बाल के उस पवित्र स्तंभ को हटा दिया जो उसके पिता ने बनाया था। <sup>3</sup> फिर भी, उसने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को पकड़े रखा, जिसने इसाएल को पाप करवाया था। उसने उनसे दूर नहीं हुआ।

<sup>4</sup> अब मोआब का राजा मेषा भेड़ पालक था, और वह इसाएल के राजा को एक लाख मेमोनों और एक लाख मेंढों की ऊन का कर देता था। <sup>5</sup> परंतु अहाब की मृत्यु के बाद, मोआब के राजा ने इसाएल के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। <sup>6</sup> इसलिए राजा यहोराम उस समय सामरिया से निकला और समस्त इसाएल को इकट्ठा किया। <sup>7</sup> उसने यहूदा के राजा यहोशापात को यह संदेश भी भेजा: "मोआब का राजा मेरे विरुद्ध विद्रोह कर चुका है। क्या तुम मेरे साथ मोआब के विरुद्ध लड़ाई करने जाओगे?" यहोशापात ने उत्तर दिया, "मैं जाऊँगा। मैं तुम्हारे जैसा हूँ, मेरे लोग तुम्हारे लोगों के जैसे हैं, मेरे घोड़े तुम्हारे घोड़ों के जैसे हैं।" <sup>8</sup> फिर उसने पूछा, "हम किस रास्ते से जाएँ?" यहोराम ने उत्तर दिया, "एदोम के जंगल के रास्ते से।"

<sup>9</sup> इसलिए इसाएल का राजा, यहूदा का राजा, और एदोम का राजा निकल पड़े। सात दिन के घुमावदार मार्च के बाद, सेना और उनके साथ चलने वाले जानवरों के लिए पानी नहीं था। <sup>10</sup> तब इसाएल के राजा ने कहा, "हाय! यहोवा ने इन तीनों राजाओं को बुलाया है केवल उन्हें

## 2 राजा

मोआब के हाथ में सौंपने के लिए!“<sup>11</sup> परंतु यहोशापात ने कहा, “क्या यहाँ यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके माध्यम से हम यहोवा से पूछ सकें?” इसाएल के राजा के एक सेवक ने उत्तर दिया, “शापात का पुत्र एलीशा यहाँ है। वह एलियाह के हाथों पर पानी डालता था।”<sup>12</sup> यहोशापात ने कहा, “यहोवा का वचन उसके साथ है।” इसलिए इसाएल का राजा, यहोशापात, और एदोम का राजा उसके पास गए।

<sup>13</sup> एलीशा ने इसाएल के राजा से कहा, “मुझे तुमसे क्या लेना-देना है? अपने पिता के नबियों और अपनी माता के नबियों के पास जाओ।” परंतु इसाएल के राजा ने उससे कहा, “नहीं, क्योंकि यहोवा ने हमें तीनों राजाओं को इकट्ठा किया है ताकि हमें मोआब के हाथ में सौंप दे।”<sup>14</sup> एलीशा ने कहा, “जैसे सेनाओं का यहोवा जीवित है, जिसकी मैं सेवा करता हूँ, यदि मैं यहूदा के राजा यहोशापात की उपस्थिति का आदर न करता, तो मैं तुम्हारी ओर न देखता और न ही तुम्हे ध्यान देता।”<sup>15</sup> परंतु अब मेरे लिए एक संगीतकार लाओ।” और जैसे ही संगीतकार ने बजाना शुरू किया, यहोवा का हाथ एलीशा पर आया।<sup>16</sup> उसने कहा, “यहोवा यह कहता है: इस घाटी की खाइयों से भर दो।”<sup>17</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: तुम न तो हवा देखोगे और न ही बारिश,

फिर भी यह धारी पानी से भर जाएगी, और तुम तुम्हारी गायें और तुम्हारे जानवर पीएंगे।

<sup>18</sup> यह यहोवा की दृष्टि में एक सरल बात है। वह मोआब को भी तुम्हारे हाथ में सौंप देगा।<sup>19</sup> तुम हर किलेवर्द शहर और हर प्रमुख नगर को नष्ट कर दोगे। तुम हर अच्छे पेड़ को काट दोगे, सभी झरनों को बंद कर दोगे, और हर अच्छे खेत को पत्थरों से भर दोगे।”

<sup>20</sup> अगली सुबह, सुबह के बलिदान के समय के आसपास, अचानक एदोम की दिशा से पानी आया, और भूमि पानी से भर गई।

<sup>21</sup> अब सभी मोआबियों ने सुना कि राजा उनके खिलाफ लड़ाई करने आए हैं, इसलिए हर आदमी जो हथियार उठा सकता था, उसे बुलाया गया और सीमा पर तैनात किया गया।<sup>22</sup> जब वे सुबह जन्मी उठे, तो सूरज पानी पर चमक रहा था, और मोआबियों को वह लाल-खून के जैसा दिखा।<sup>23</sup> उन्होंने कहा, “यह खून है! राजाओं ने लड़ाई की और एक-दूसरे का वध कर दिया। अब तूने के लिए चलो, मोआब!”<sup>24</sup> परंतु जब मोआबी इसाएल के शिविर में आए, तो इसाएली उठे और उन्हें मार गिराया।

वे इसाएल के सामने भागे, जिन्होंने उनका पीछा किया और उन्हें मार गिराया।<sup>25</sup> उन्होंने नगरों को नष्ट कर दिया, और हर आदमी ने हर अच्छे खेत पर पथर फेंके जब तक कि वह ढक नहीं गया। उन्होंने सभी झरनों को बंद कर दिया और हर अच्छे पेड़ को काट दिया। केवल कीर-हारेसेथ बचा, परंतु उसे भी गोफन चलाने वालों ने घेर लिया और हमला किया।

<sup>26</sup> जब मोआब के राजा ने देखा कि लड़ाई उसके खिलाफ जा रही है, तो उसने सात सौ तलवाराजों को लिया ताकि एदोम के राजा के पास से निकल सके, परंतु वे सफल नहीं हुए।<sup>27</sup> फिर उसने अपने पहले जन्मे पुत्र को लिया, जो उसके बाद राजा बनने वाला था, और उसे दीवार पर होमबलि के रूप में चढ़ा दिया। इसाएल पर महान क्रोध आया, और वे उससे हट गए और अपने देश लौट गए।

**4** अब भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों की पत्नियों में से एक स्त्री एलीशा के पास आई और चिल्लाकर कहने लगी, “आपका सेवक, मेरा पति, मर गया है, और आप जानते हैं कि आपका सेवक यहोवा से डरता था। अब लेनदार आया है और मेरे दो बच्चों को अपने दास बनाने के लिए ले जा रहा है।”<sup>2</sup> एलीशा ने उससे कहा, “मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? मुझे बताओ, तुम्हारे घर में क्या है?” और उसने कहा, “आपकी दासी के पास घर में एक तेल का बर्तन छोड़कर कुछ नहीं है।”<sup>3</sup> तब उसने कहा, “जाओ, अपने लिए बाहर से, अपने सभी पड़ोसियों से, खाली बर्तन उधार लो; केवल कुछ ही मत लेना।”<sup>4</sup> फिर अंदर जाओ और अपने और अपने पुत्रों की पीछे दरवाजा बंद कर लो, और तेल को इन सभी बर्तनों में डालो; और जब यह भर जाए तो उसे अलग रख दो।”<sup>5</sup> तो वह उससे चली गई और अपने पुत्रों की पीछे दरवाजा बंद कर लिया। वे उसे बर्तन लाते रहे, और वह डालती रही।<sup>6</sup> जब बर्तन भर गए, तो उसने अपने पुत्र से कहा, “मुझे एक और बर्तन लाओ।” लेकिन उसने उससे कहा, “अब और नहीं है।” तब तेल रुक गया।<sup>7</sup> तो वह परमेश्वर के आदमी के पास गई और उसे बताया। और उसने कहा, “जाओ, तेल बेचो और अपना कर्ज चुकाओ, और तुम और तुम्हारे पुत्र बाकी पर जीवित रह सकते हो।”

<sup>8</sup> अब एक दिन ऐसा हुआ कि एलीशा शूनेम गया, जहाँ एक प्रमुख स्थी थी, और उसने उसे भोजन करने के लिए आग्रह किया। तो जब भी वह वहाँ से गुजरता, वह वहाँ भोजन करने के लिए रुकता।<sup>9</sup> और उसने अपने पति से कहा, “देखो, अब मैं जानती हूँ कि यह परमेश्वर का एक पवित्र आदमी है जो हमारे पास लगातार आता है।”<sup>10</sup>

## 2 राजा

कृपया, हम एक छोटी दीवारदार ऊपरी कोठरी बनाएं, और उसके लिए वहां एक बिस्तर, एक मेज, एक कुर्सी, और एक दीपक रखें; और जब वह हमारे पास आएगा, तो वह वहां ठहर सकेगा।"<sup>11</sup> एक दिन वह वहां आया और ऊपरी कोठरी में गया और वहां लेट गया।<sup>12</sup> और उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, "इस शून्येमनी स्त्री को बुलाओ।" तो उसने उसे बुलाया, और वह उसके सामने खड़ी हो गई।<sup>13</sup> और उसने उससे कहा, "अब उससे कहो, देखो, तुमने हमारे लिए यह सब कष्ट उठाया है; मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ? क्या मैं तुम्हारे लिए राजा या सेना के सेनापति से बात करूँ?" लेकिन उसने उत्तर दिया, "मैं अपने लोगों के बीच में रह रही हूँ।"<sup>14</sup> तो उसने कहा, "फिर उसके लिए क्या किया जाए?" और गेहजी ने उत्तर दिया, "खैर, उसके पास कोई पुत्र नहीं है, और उसका पाति बूढ़ा है।"<sup>15</sup> तब उसने कहा, "उसे बुलाओ।" तो उसने उसे बुलाया, और वह दरवाजे में खड़ी हो गई।<sup>16</sup> तब उसने कहा, "अगले वर्ष इस समय, तुम एक पुत्र को गले लगा दोगी।" लेकिन उसने कहा, "नहीं, मेरे स्त्रीमी, आप परमेश्वर के आदमी हैं, अपनी दासी से झूठ मत बोलो।"<sup>17</sup> लेकिन स्त्री ने गर्भ धारण किया और अगले वर्ष उसी समय एक पुत्र को जन्म दिया, जैसा कि एलीशा ने उससे कहा था।

<sup>18</sup> अब बालक बड़ा हो गया। और एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने पिता के पास, काटने वालों के पास गया।<sup>19</sup> और उसने अपने पिता से कहा, "मेरा सिर, मेरा सिर!" और उसने अपने सेवक से कहा, "उसे उसकी माँ के पास ले जाओ।"<sup>20</sup> जब उसने उसे उठाया और उसकी माँ के पास ले गया, तो वह दोपहर तक उसकी गोद में बैठा रहा, और फिर वह मर गया।<sup>21</sup> तो वह ऊपर गई और उसे परमेश्वर के आदमी के बिस्तर पर लिटा दिया, और उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया और चली गई।<sup>22</sup> उसने अपने पिता को बुलाया और कहा, "कृपया मुझे एक सेवक और एक गधा भेजो, ताकि मैं परमेश्वर के आदमी के पास दौड़कर जाऊं और लौट आऊं।"<sup>23</sup> लेकिन उसने कहा, "तुम आज उसके पास क्यों जा रही हो? यह न तो नया चाँद है और न ही सब्ज़।" और उसने कहा, "सब ठीक होगा।"<sup>24</sup> तब उसने गधे को काठी पर बांधा और अपने सेवक से कहा, "चलते रहो और जब तक मैं न कहूँ, मेरे लिए गति को धीमा मत करो।"<sup>25</sup> तो वह गई और परमेश्वर के आदमी के पास कर्मेल पर्वत पर आई। जब परमेश्वर के आदमी ने उसे दूर से देखा, तो उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, "देखो, वह शून्येमनी स्त्री है।"<sup>26</sup> अब कृपया उसके पास दौड़ी और उससे कहो, 'क्या तुम्हारा हाल ठीक है?' क्या तुम्हारे पिता का हाल ठीक है? क्या बालक का हाल ठीक है?' और

उसने उत्तर दिया, "सब ठीक है।"<sup>27</sup> जब वह पहाड़ी पर परमेश्वर के आदमी के पास आई, तो उसने उसके पैरों को पकड़ लिया। और गेहजी उसे दूर धकेलने के लिए आया, लेकिन परमेश्वर के आदमी ने कहा, "उसे अकेला छोड़ दो, क्योंकि उसकी आत्मा उसके भीतर परेशान है; और यहोवा ने इसे मुझसे छिपा रखा है और मुझे स्थित नहीं किया है।"<sup>28</sup> तब उसने कहा, "क्या मैंने अपने स्त्रीमी से पुत्र मांगा था? क्या मैंने नहीं कहा था, 'मुझे धोखा मत दो।'?"

<sup>29</sup> तब उसने गेहजी से कहा, "तैयार हो जाओ, मेरा ढंगा अपने हाथ में लो और जाओ। यदि तुम किसी से मिलो, तो उसे अभिवादन मत करना, और यदि कोई तुम्हें अभिवादन दे, तो उसे उत्तर मत देना। और मेरे ढंडे को लड़के के चेहरे पर रख दो।"<sup>30</sup> लेकिन लड़के की माँ ने कहा, "जैसे यहोवा जीवित है और जैसे आप स्वयं जीवित हैं, मैं आपको नहीं छोड़ूँगी।" तो वह उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे चला गया।<sup>31</sup> अब गेहजी उनके आगे गया और लड़के के चेहरे पर ढंगा रखा, लेकिन कोई आवाज या प्रतिक्रिया नहीं हुई। तो वह उससे मिलने के लिए लौटा और उसे बताया, "लड़का जागा नहीं है।"

<sup>32</sup> जब एलीशा घर में आया, देखो, लड़का मरा हुआ था और उसके बिस्तर पर पड़ा था।<sup>33</sup> तो वह अंदर गया और दोनों के पीछे दरवाजा बंद कर दिया, और यहोवा से प्रार्थना की।<sup>34</sup> फिर वह बिस्तर पर चढ़ गया और बच्चे पर लेट गया, उसके मुंह पर अपना मुंह, उसकी आँखों पर अपनी आँखें, और उसके हाथों पर अपने हाथ रखे, और जब वह उस पर झूका, तो बच्चे का मास गर्म हो गया।<sup>35</sup> फिर वह घर में एक बार इधर-उधर चला, और फिर से ऊपर गया और उस पर झूका; और लड़के ने सात बार छींक मारी और अपनी आँखें खोली।<sup>36</sup> और उसने गेहजी को बुलाया और कहा, "इस शून्येमनी को बुलाओ।"<sup>37</sup> तो उसने उसे बुलाया, और जब वह उसके पास आई, तो उसने कहा, "अपने पुत्र को उठालो।"<sup>38</sup> तब वह अंदर आई और उसके पैरों पर गिर गई और जमीन पर झूक गई। और उसने अपने पुत्र को उठाया और बाहर चली गई।

<sup>39</sup> जब एलीशा गिलगाल लौट आया, तो देश में अकाल था। जैसे ही भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र उसके सामने बैठे थे, उसने अपने सेवक से कहा, "बड़ा बर्तन रखो और भविष्यद्वक्ताओं के पूत्रों के लिए पकाने के लिए सूप बनाओ।"<sup>40</sup> तब एक बाहर जड़ी-कूटियाँ इकट्ठा करने के लिए गया, और एक जंगली बेल पाई, और उससे जंगली

## 2 राजा

लौकी की एक गोद भरकर इकट्ठा की, और आकर उन्हें सूप के बर्टन में काट दिया, हालांकि वे नहीं जानते थे कि वे क्या थे।<sup>40</sup> तो उन्होंने इसे पुरुषों को खाने के लिए परोसा। लेकिन जब वे सूप खा रहे थे, तो उन्होंने चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर के आदमी, बर्टन में मौत है!" और वे इसे खाने में असमर्थ थे।<sup>41</sup> तब उसने कहा, "आटा लाओ!" और उसने इसे बर्टन में डाल दिया और कहा, "इसे लोगों को परोस दो और खाने दो।" और बर्टन में कुछ भी हानिकारक नहीं था।

<sup>42</sup> अब एक आदमी बाल-शलीशा से आया, और परमेश्वर के आदमी के लिए पहली फसल की रोटी लाया; जौ की बीस रोटियाँ और अपने थेले में ताजे अनाज के कान। और एलीशा ने कहा, "उन्हें लोगों को दो ताकि वे खा सकें।"<sup>43</sup> लेकिन उसके सेवक ने कहा, "मैं इसे सौ पुरुषों के सामने कैसे रखूँ?" फिर भी उसने कहा, "उन्हें लोगों को दो ताकि वे खा सकें, क्योंकि यहोवा कहता है: 'वे खाएंगे और कुछ बचा रहेंगे।'"<sup>44</sup> तो उसने उन्हें उनके सामने रखा, और उन्होंने खाया और कुछ बचा रहा, यहोवा के वचन के अनुसार।

**5** अब अराम के राजा की सेना का सेनापति नामान अपने स्वामी की दृष्टि में एक महान व्यक्ति था और अत्यधिक सम्मानित था, क्योंकि उसके द्वारा यहोवा ने अराम को विजय दी थी। वह व्यक्ति एक वीर योद्धा भी था, परंतु वह कोढ़ी था।<sup>2</sup> अब अरामियों ने दल बनाकर इसाएल देश से एक युवा लड़की को बढ़ी बना लिया था; और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी।<sup>3</sup> और उसने अपनी स्वामियी से कहा, "एदि मेरा स्वामी सामरिया में जो भविष्यवक्ता है, उसके पास होता! तब वह उसे उसके कोढ़ से चंगा कर देता।"<sup>4</sup> इसलिए नामान ने जाकर अपने स्वामी को बताया, "यह वही है जो इसाएल देश की लड़की ने कहा।"<sup>5</sup> तब अराम के राजा ने कहा, "अब जाओ, और मैं इसाएल के राजा के पास एक पत्र भेजूँगा।" इसलिए वह चला गया और अपने साथ दस किक्कार कांची, छह हजार शेकेल सोना, और दस जोड़ी वस्त्र ले गया।<sup>6</sup> और उसने इसाएल के राजा को पत्र दिया, जिसमें लिखा था: "अब जब यह पत्र तुम्हें पहुँचे, देखो, मैंने अपने सेवक नामान को तुम्हरे पास भेजा है, ताकि तुम उसके कोढ़ से चंगा कर सको।"<sup>7</sup> परंतु जब इसाएल के राजा ने पत्र पढ़ा, तो उसने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूँ, जो मार सकता हूँ और जीवित कर सकता हूँ, कि यह व्यक्ति मुझसे एक व्यक्ति को उसके कोढ़ से चंगा करने के लिए कह रहा है? परंतु अब विचार करो, और देखो कि वह मुझसे झगड़ा करने की कोशिश कर रहा है।"

<sup>8</sup> अब ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के व्यक्ति एलीशा ने सुना कि इसाएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, तो उसने राजा के पास संदेश भेजा, "तुमने अपने वस्त्र क्यों फाड़े हैं? उसे मेरे पास आने दो, और वह जान लेगा कि इसाएल में एक भविष्यवक्ता है।"<sup>9</sup> इसलिए नामान अपने घोड़ों और रथ के साथ आया, और एलीशा के घर के द्वार पर खड़ा हुआ।<sup>10</sup> और एलीशा ने उसके पास एक दूत भेजा, "जाओ और यरदन में सात बार धोओ, और तुम्हारा शरीर फिर से स्वस्थ हो जाएगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे।"<sup>11</sup> परंतु नामान क्रोधित हो गया और चला गया, "देखो, मैंने सोचा था, 'वह निश्चित रूप से मेरे पास आएगा और खड़ा होगा, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का आह्वान करेगा, और उस स्थान पर हाथ हिलाएगा और कोढ़ी को चंगा करेगा।'"<sup>12</sup> क्या अबाना और फर्पर, दमिशक की नदियाँ, इसाएल के सभी जल से बेहतर नहीं हैं? क्या मैं उनमें धोकर शुद्ध नहीं हो सकता? इसलिए वह क्रोध में चला गया।<sup>13</sup> तब उसके सेवक उसके पास आए और उससे कहा, "मेरे पिता, यदि भविष्यवक्ता ने तुमसे कुछ महान करने को कहा होता, तो क्या तुमने उसे नहीं किया होता? तो फिर कितना अधिक, जब वह तुमसे कहता है, 'धोओ, और शुद्ध हो जाओ?'"<sup>14</sup> इसलिए वह नीचे गया और परमेश्वर के व्यक्ति के वचन के अनुसार यरदन में सात बार डुबकी लगाई; और उसका शरीर एक छोटे बच्चे के शरीर की तरह स्वस्थ हो गया, और वह शुद्ध हो गया।

<sup>15</sup> फिर वह अपने सभी दल के साथ परमेश्वर के व्यक्ति के पास लौटा, और उसके सामने खड़ा हुआ। और उसने कहा, "देखो अब, मुझे पता है कि पूरे पूर्वी पर कोई परमेश्वर नहीं है, सिवाय इसाएल के; इसलिए कृपया अब अपने सेवक से एक उपहार स्वीकार करें।"<sup>16</sup> परंतु उसने कहा, "जैसे यहोवा जीवित है, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करूँगा।"<sup>17</sup> और उसने उसे लेने के लिए आग्रह किया, परंतु उसने मना कर दिया।<sup>18</sup> इसलिए नामान ने कहा, "यदि नहीं, तो कृपया अपने सेवक को दो खच्चरों का भार मिट्टी दे दें; क्योंकि आपका सेवक अब अन्य देवताओं को होमबिलि या बलिदान नहीं चढ़ाएगा, केवल यहोवा को ही।"<sup>19</sup> इस मामले में कृपया यहोवा आपके सेवक को क्षमा करें: जब मेरा स्वामी रिम्मोन के घर में पूजा करने जाता है, और वह मेरे हाथ पर झुकता है और मैं रिम्मोन के घर में झुकता हूँ—जब मैं रिम्मोन के घर में झुकता हूँ, तो कृपया यहोवा आपके सेवक को इस मामले में क्षमा करें।<sup>20</sup> और उसने उससे कहा, "शांति से जाओ।" इसलिए वह उससे थोड़ी दूरी पर चला गया।

## 2 राजा

<sup>20</sup> परंतु एलीशा के सेवक गेहज़ी ने सोचा, “देखो, मेरे स्वामी ने इस अरामी नामान को छोड़ दिया है, उसके हाथ से जो कुछ उसने लाया था उसे स्वीकार नहीं किया। जैसे यहावा जीवित है, मैं उसके पीछे दौड़ुंगा और उससे कुछ लूंगा।” <sup>21</sup> इसलिए गेहज़ी ने नामान का पीछा किया। जब नामान ने देखा कि कोई उसके पीछे दौड़ रहा है, तो वह रथ से नीचे उत्तरा और उससे मिलने के लिए आया और कहा, “क्या सब कुछ ठीक है?” <sup>22</sup> और उसने कहा, “सब ठीक है। मेरे स्वामी ने मुझे भेजा है, देखो, अपनी अभिष्ठवक्ताओं के पुरुषों में से दो युवा मेरे पास इफ्रैम के पहाड़ी देश से आए हैं। कृपया उन्हें एक किक्कार चांदी और दो जड़ी वस्त्र दें।” <sup>23</sup> नामान ने कहा, “कृपया दो किक्कार लें।” और उसने उसे आग्रह किया और दो किक्कार चांदी को दो बैलियों में दो जड़ी वस्त्रों के साथ बांध दिया, और उन्हें अपने दो सेवकों को दिया; और वे उन्हें उसके सामने ले गए। <sup>24</sup> जब वह पहाड़ी पर आया, तो उसने उन्हें उनके हाथ से लिया और घर में रख दिया, और फिर उन लागों को भेज दिया, और वे चले गए। <sup>25</sup> परंतु वह अंदर गया और अपने स्वामी के सामने खड़ा हुआ। और एलीशा ने उससे कहा, “तुम कहाँ थे, गेहज़ी?” और उसने कहा, “आपका सेवक कहीं नहीं गया।” <sup>26</sup> तब उसने उससे कहा, “क्या मेरा मन तुम्हारे साथ नहीं गया था, जब वह व्यक्ति रथ से उत्तरकर तुमसे मिलने आया था? क्या यह समय है धन स्वीकार करने का, और वस्त्र, जैतूत के बाग, दाख की बारियां, भेड़, बैल, पुरुष और महिला सेवकों को स्वीकार करने का?” <sup>27</sup> इसलिए नामान का कोढ़ तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों पर सदा के लिए चिपका रहेगा।” इसलिए वह उसके सामने से कोढ़ी होकर, बर्फ के समान सफेद निकल गया।

**6** अब भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र एलीशा से कहने लगे, “देखो, जिस स्थान पर हम आपके सामने रह रहे हैं, वह हमारे लिए बहुत तंग है।” <sup>2</sup> कृपया हमें यर्दन नदी के पास जाने दें, और हम में से प्रत्येक वहाँ से एक लकड़ी का लट्ठा ले लें, और वहाँ अपने लिए एक स्थान बनाएं जहाँ हम रह सकें।” तो उसने कहा, “जाओ।” <sup>3</sup> तब एक ने कहा, “कृपया अपने सेवकों के साथ जाने के लिए तैयार रहें।” और उसने उत्तर किया, “मैं जाऊंगा।” <sup>4</sup> तो वह उनके साथ गया; और जब वे यर्दन के पास पहुंचे, तो उन्होंने पेढ़ काटे। <sup>5</sup> लोकिन जब एक लट्ठा काट रहा था, तो कुलहाड़ी का फल पानी में गिर गया। और उसने चिल्लाकर कहा, “अरे, मेरे स्वामी! यह उधार की थी!” <sup>6</sup> तब परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा, “यह कहाँ गिरा?” और जब उसने उसे स्थान दिखाया, तो उसने एक लकड़ी काटी और उसे वहाँ फेंक दिया, और लोहे को तैरने पर

मजबूर कर दिया। <sup>7</sup> और उसने कहा, “इसे अपने लिए उठा लो।” तो उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे ले लिया।

<sup>8</sup> अब अराम का राजा इस्माएल के खिलाफ युद्ध कर रहा था, और उसने अपने सेवकों से परामर्श किया, कहा, “फलां-फलां स्थान पर मेरा शिविर होगा।” <sup>9</sup> लोकिन परमेश्वर के व्यक्ति ने इस्माएल के राजा को संदेश भेजा, कहा, “सावधान रहो कि इस स्थान से न जाओ, क्योंकि अरामी वहाँ अ रहे हैं।” <sup>10</sup> तो इस्माएल के राजा ने उस स्थान पर किसी को भेजा जिसके बारे में परमेश्वर के व्यक्ति ने उसे बताया था। इस प्रकार उसने उसे चेतावनी दी, ताकि उसने वहाँ एक से अधिक बार या दो बार अपनी रक्षा की। <sup>11</sup> अब अराम के राजा का मन इस बात पर क्रोधित हो गया; और उसने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे कहा, “क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हम में से कौन इस्माएल के राजा के लिए है?” <sup>12</sup> उसके एक सेवक ने कहा, “नहीं, मेरे स्वामी राजा; लोकिन एलीशा, जो इस्माएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्माएल के राजा को वे बातें बताता है जो आप अपने शयनकक्ष में बोलते हैं।” <sup>13</sup> तो उसने कहा, “जाओ और देखो वह कहाँ है, ताकि मैं लोगों को भेजकर उसे पकड़वा सकूं।” और उसे बताया गया, कहा, “देखो, वह दोतान में है।” <sup>14</sup> तो उसने वहाँ घोड़े और रथ और एक बड़ी सेना भेजी, और वे रात में आए और शहर को घेर लिया।

<sup>15</sup> अब जब परमेश्वर के व्यक्ति का सेवक सुबह जल्दी उठा और बाहर गया, तो देखो, घोड़ों और रथों के साथ एक सेना शहर को घेर रही थी। और उसके सेवक ने उससे कहा, “हाय, मेरे स्वामी! हम क्या करें?” <sup>16</sup> तो उसने कहा, “डरो मत, क्योंकि जो हमारे साथ हैं वे उनसे अधिक हैं जो उनके साथ हैं।” <sup>17</sup> तब एलीशा ने प्रार्थना की और कहा, “प्रभु! कृपया उसकी अँखें खोल दें, ताकि वह देख सके।” और प्रभु ने सेवक की अँखें खोलीं, और उसने देखो; और देखो, पहाड़ एलीशा के चारों ओर आग की घोड़ों और रथों से भरा हुआ था।

<sup>18</sup> जब वे उसके पास आए, तो एलीशा ने प्रभु से प्रार्थना की और कहा, “मैं प्रार्थना करता हूँ, इन लोगों की अंधा कर दे।” तो उसने उन्हें एलीशा के वचन के अनुसार अंधा कर दिया। <sup>19</sup> तब एलीशा ने उनसे कहा, “यह मार्झ नहीं है, और यह शहर नहीं है। मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें उस व्यक्ति के पास ले जाऊंगा जिसे तुम खोज रहे हो।” और उसने उन्हें सामरिया में ले गया। <sup>20</sup> जब वे सामरिया में आए, तो एलीशा ने कहा, “हे प्रभु! इन लोगों की अँखें खोल दें, ताकि वे देख सकें।” तो प्रभु ने उनकी

## 2 राजा

अँखें खोलीं, और उहोंने देखा; और देखो, वे सामरिया के बीच में थे।<sup>21</sup> तब इसाएल के राजा ने, जब उसने उहों देखा, एलीशा से कहा, “क्या मैं उहों मार दूँ? क्या मैं उहों मार दूँ मेरे पिता?”<sup>22</sup> लेकिन उसने कहा, “तुम उहों नहीं मारोगे। क्या तुम उन लोगों को मारोगे जिहें तुमने अपनी तलवार और धनुष से बंदी बनाया है? उनके सामने रोटी और पानी रखो, ताकि वे खा-पीकर अपने स्वामी के पास जा सकें।”<sup>23</sup> तो उसने उनके लिए एक बड़ा भोज तैयार किया; और जब उहोंने खा-पी लिया, तो उसने उहों विदा कर दिया, और वे अपने स्वामी के पास चले गए। और अरामियों के लुटेरे दल फिर इसाएल की भूमि में नहीं आए।

<sup>24</sup> अब इसके बाद ऐसा हुआ कि अराम का राजा बेन-हदद अपनी सारी सेना को इकट्ठा किया, और सामरिया पर छढ़ाई की और उसे घेर लिया।<sup>25</sup> सामरिया में एक भयंकर अकाल पड़ा; और देखो, उहोंने उसे घेर रखा था जब तक कि एक गध का सिर अस्सी शेकेल चांदी में नहीं बिका, और कब के चौथाईं कब कबूतर की बीट पांच शेकेल चांदी में नहीं बिकी।<sup>26</sup> जब इसाएल का राजा दीवार पर से गुजर रहा था, तो एक स्त्री ने उसे पुकारकर कहा, “मदद करो, मेरे स्वामी राजा!”<sup>27</sup> लेकिन उसने कहा, “यदि प्रभु तुम्हारी मदद नहीं करता, तो मैं कहाँ से तुम्हारी मदद करूँ? खलिहान से, या दाखमधू के कुंड से?”<sup>28</sup> तब राजा ने उससे कहा, “तुम्हारी क्या समस्या है?” और उसने उत्तर दिया, “इस स्त्री ने मुझसे कहा, ‘अपने पुत्र को दे दे ताकि हम आज उसे खा ले, और हम कल मेरे पुत्र को खाएंगे।’<sup>29</sup> तो हमने मेरे पुत्र को पकाया और खा लिया; और मैंने उससे अगले दिन कहा, ‘अपने पुत्र को दे दे, ताकि हम उसे खा लें; लेकिन उसने अपने पुत्र को छिपा लिया है।’

<sup>30</sup> जब राजा ने स्त्री के शब्द सुने, तो उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले— और जब वह दीवार पर से गुजर रहा था, तो लोगों ने देखा, और देखो, उसके शरीर पर टाट था।<sup>31</sup> तब उसने कहा, “यदि एलीशा शापात का पुत्र आज उसके सिर पर बना रहे, तो परमेश्वर मुझे ऐसा करे और उससे भी अधिक करो।”<sup>32</sup> अब एलीशा अपने घर में बैठा था, और पुरनिये उसके साथ बैठे थे। और राजा ने अपने आगे एक व्यक्ति को भेजा, लेकिन दूत के आने से पहले, उसने पुरनियों से कहा, “क्या तुम देखते हो कि यह हत्यारे का पुत्र मेरे सिर को हटाने के लिए किसी को भेजा है? देखो, जब दूत आता है, तो दरवाजा बंद कर दो और उसे उसके खिलाफ बंद रखो। क्या उसके स्वामी के पैरों की आवाज उसके पीछे नहीं है?”<sup>33</sup> जब वह उनसे बात कर ही रहा था, तो देखो, दूत उसके पास

आया और कहा, “देखो, यह बुराई प्रभु से है; मैं प्रभु की प्रतीक्षा क्यों करूँ?”

**7** तब एलीशा ने कहा, “प्रभु का वचन सुनो: प्रभु यों कहता है, कल इस समय के लगभगा, सामरिया के फाटक पर एक शेकेल में उत्तम आटे का एक माप, और एक शेकेल में जौ के दो माप बिकेंगे।”<sup>2</sup> परन्तु उस अधिकारी ने, जिस पर राजा का हाथ था, परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, “देखो, यदि प्रभु आकाश में छिड़कियाँ बना दे, तो क्या यह बात ही सकती है?” तब उसने कहा, “देखो, तू अपनी आँखों से इसे देखेगा, परन्तु तू इसका कुछ भी नहीं खाएगा।”

<sup>3</sup> अब फाटक के प्रवेश पर चार कोटी पुरुष थे; और उहोंने एक-दूसरे से कहा, “हम यहाँ बैठे-बैठे क्यों मर रहे हैं?”<sup>4</sup> यदि हम कहें, “हम नगर में प्रवेश करेंगे”; तो नगर में अकाल है, और हम वहाँ मर जाएंगे। और यदि हम यहाँ बैठें, तो भी हम मर जाएंगे। इसलिए अब आओ, हम अरामियों की छावनी में चलें। यदि वे हमें जीवित छोड़ दें, तो हम जीवित रहेंगे; और यदि वे हमें मार डालें, तो हम मर जाएंगे।”<sup>5</sup> इसलिए वे संधा समय अरामियों की छावनी में जाने के लिए उठ खड़े हुए। जब वे अरामियों की छावनी के बाहरी भाग में पहुँचे, तो देखो, वहाँ कोई नहीं था।<sup>6</sup> क्योंकि प्रभु ने अरामियों की छावनी को रथों की ध्वनि और घोड़ों की ध्वनि सुनाई थी— अर्थात् एक बड़ी सेना की ध्वनि—ताकि वे एक-दूसरे से कहें, “देखो, इसाएल के राजा ने हम पर आक्रमण करने के लिए हतियों के राजा-ओं और मिसियों के राजा-ओं को किराए पर लिया है।”<sup>7</sup> इसलिए वे संधा समय उठे और भाग गए, और अपने तंबू घोड़े, और गधे— छावनी को जैसा था वैसा ही छोड़कर अपनी जान बचाने के लिए भाग गए।

<sup>8</sup> जब ये कोटी पुरुष छावनी के बाहरी भाग में पहुँचे, तो उहोंने एक तंबू में प्रवेश किया और खाया-पीया, और चाँदी, सोना, और वस्त्र ले गए, और उहों हिँपा दिया। फिर वे लौटे और दूसरे तंबू में प्रवेश किया, और वहाँ से भी चीजें ले गए, और उहों हिँपा दिया।<sup>9</sup> तब उहोंने एक-दूसरे से कहा, “हम जो कर रहे हैं वह सही नहीं है। यह दिन शुभ समाचार का दिन है, परन्तु हम चुप हैं। यदि हम सुबह की रोशनी तक प्रतीक्षा करें, तो दंड हमें पकड़ लेगा। अब आओ, हम राजा के घराने को बताएं।”<sup>10</sup> इसलिए वे आए और नगर के द्वारपालों को बुलाया, और उनसे कहा, “हम अरामियों की छावनी में गए, और देखो, वहाँ कोई नहीं था, न कोई मानव आवाज—केवल घोड़े और गधे बंधे हुए थे, और तंबू जैसे थे वैसे ही थे।”<sup>11</sup>

## 2 राजा

और द्वारपालों ने पुकारा, और यह राजा के घर के भीतर बताया गया।

<sup>12</sup> तब राजा रात में उठ खड़ा हुआ और अपने सेवकों से कहा, “अब मैं तुहँसे बताऊंगा कि अरामियों ने हमारे साथ क्या किया है। वे जानते हैं कि हम खूबे हैं, इसलिए वे छावनी से बाहर चले गए हैं और मैदान में छिप गए हैं, यह कहते हुए, ‘जब वे नगर से बाहर आएंगे, तो हम उन्हें जीवित पकड़ लेंगे और नगर में प्रवेश करेंगे।’<sup>13</sup> परन्तु उसके एक सेवक ने उत्तर दिया और कहा, ‘कृपया, कुछ पुरुषों को नगर में बचे हुए पाँच घोड़ों को ले जाने दें—देखो, वे उन सब इसाएलियों के समान होंगे जो इसमें बचे हैं—और उन्हें भेजो और देखें।’<sup>14</sup> इसलिए उन्होंने घोड़ों के साथ दो रथ लिए, और राजा ने उन्हें अरामियों की सेना के पीछे भेजा, यह कहते हुए, “जाओ और देखो।”<sup>15</sup> वे उनके पीछे यहदन तक गए, और देखो, सारा मार्ग वर्तों और उपकरणों से भरा था जो अरामियों ने अपनी जल्दी में फैक दिए थे। तब दूत लौटे और राजा को बताया।

<sup>16</sup> इसलिए लोग बाहर गए और अरामियों की छावनी को लूट लिया। तब एक शेकेल में उत्तम आटे का एक माप, और एक शेकेल में जौ के दो माप बिके, प्रभु के वचन के अनुसार।<sup>17</sup> अब राजा ने उस अधिकारी को नियुक्त किया, जिस पर वह द्वुकृता था, द्वार का प्रभारी बनाया; परन्तु लोगों ने उसे द्वार पर रौद डाला, और वह मर गया, जैसा कि परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा था, जब राजा उसके पास आया था।<sup>18</sup> और यह वैसा ही हुआ जैसा परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा से कहा था, “कल इस समय के लगभग, सामरिया के फाटक पर एक शेकेल में जौ के दो माप और एक शेकेल में उत्तम आटे का एक माप बिकेगा।”<sup>19</sup> तब उस अधिकारी ने परमेश्वर के व्यक्ति को उत्तर दिया और कहा, “अब देखो, यदि प्रभु आकाश में खिड़कियाँ बना दे, तो क्या ऐसा हो सकता है?” और उसने कहा, “देखो, तू अपनी आँखों से इसे देखोगा, परन्तु तू इसका कुछ भी नहीं खाएगा।”<sup>20</sup> और ऐसा ही उसके साथ हुआ, क्योंकि लोगों ने उसे द्वार पर रौद डाला, और वह मर गया।

**8** अब एलीशा ने उस स्त्री से कहा, जिसका पुत्र उसने जीवित किया था, “उठो और अपने परिवार के साथ जहाँ भी रह सको, वहाँ जाओ; क्योंकि प्रभु ने अकाल की घोषणा की है, और यह भी कहा है कि यह भूमि पर सात वर्षों तक रहेगा।”<sup>2</sup> तो वह स्त्री उठी और परमेश्वर के व्यक्ति के वचन के अनुसार कार्य किया, और अपने परिवार के साथ जाकर पलिश्तियों के देश में सात वर्षों

तक रही।<sup>3</sup> सात वर्षों के अंत में, वह स्त्री पलिश्तियों के देश से लौटी; और वह अपने घर और अपने खेत के लिए राजा से अपील करने गई।<sup>4</sup> अब राजा गहङ्गी से, जो परमेश्वर के व्यक्ति का सेवक था, बात कर रहा था, “कृपया मुझे एलीशा के किए हुए सभी महान कार्यों के बारे में बताओ।”<sup>5</sup> और जब वह राजा को यह बता रहा था कि उसने मृतकों को जीवन दिया, देखो, वह स्त्री जिसका पुत्र उसने जीवित किया था, अपने घर और अपने खेत के लिए राजा से अपील करने आई। तो गहङ्गी ने कहा, “मेरे प्रभु राजा, यह वहीं स्त्री है, और यह उसका पुत्र है, जिसे एलीशा ने जीवित किया था।”<sup>6</sup> जब राजा ने स्त्री से पूछा, तो उसने उसे पूरी कहानी बताई। तो राजा ने उसके लिए एक अधिकारी नियुक्त किया, यह कहते हुए, “उसकी सारी संपत्ति और उसके खेत की सारी उपज उसे वापस कर दो, जिस दिन से वह भूमि छोड़कर गई थी, तब से अब तक।”

<sup>7</sup> फिर एलीशा दमिश्क आया। अब अराम का राजा बेन-हदद बीमार था, और उसे बताया गया, “परमेश्वर का व्यक्ति यहाँ आया है।”<sup>8</sup> तो राजा ने हज़ाएल से कहा, “अपने हाथ में एक भेट लेकर परमेश्वर के व्यक्ति से मिलने जाओ, और उसके द्वारा प्रभु से पूछो, ‘क्या मैं इस बीमारी से ठीक हो जाऊँगा?’”<sup>9</sup> तो हज़ाएल उससे मिलने गया और अपने हाथ में दमिश्क की हर अच्छी चीज़ की भेट लेकर गया—चातीस ऊँटों का बोझ— और वह उसके सामने खड़ा हुआ और कहा, “आपका पुत्र अराम का राजा बेन-हदद ने मुझे अपके पास भेजा है, यह पूछने के लिए, ‘क्या मैं इस बीमारी से ठीक हो जाऊँगा?’”<sup>10</sup> फिर एलीशा ने उससे कहा, “जाओ, उससे कहो, ‘तुम निश्चित रूप से ठीक हो जाओगे,’ लेकिन प्रभु ने मुझे दिखाया है कि वह निश्चित रूप से मर जाएगा।”<sup>11</sup> और उसने उसे तब तक धूरा जब तक हज़ाएल शर्मिदा नहीं हुआ, और परमेश्वर का व्यक्ति रोपा।<sup>12</sup> हज़ाएल ने कहा, “मेरे प्रभु क्यों रो रहे हैं?” और उसने उत्तर दिया, “क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम इसाएल के पुत्रों के साथ क्या बुरा करोगे: तुम उनके किलों को आग लगा दोगे, उनके जवानों को तलवार से मारोगे, उनके छोटे बच्चों को पटक दोगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियों को चीर दोगे।”<sup>13</sup> फिर हज़ाएल ने कहा, “लेकिन आपका सेवक, जो एक कुत्ते से अधिक कुछ नहीं है, यह महान कार्य के से कर सकता है?” और एलीशा ने उत्तर दिया, “प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तुम अराम के राजा बनोगे।”<sup>14</sup> तो वह एलीशा को छोड़कर अपने स्वामी के पास लौटा, जिसने उससे पूछा, “एलीशा ने तुमसे क्या कहा?” और उसने कहा, “उसने मुझसे कहा कि तुम निश्चित रूप से ठीक हो जाओगे।”<sup>15</sup> लेकिन अगले दिन,

## 2 राजा

उसने कवर लिया और उसे पानी में भिगोया और उसके चेहरे पर फैला दिया, जिससे वह मर गया। और हज़ाएल उसकी जगह राजा बन गया।

<sup>16</sup> अब इसाएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के पाँचवें वर्ष में, जब यहोशापात यहूदा का राजा था, यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा का राजा बना। <sup>17</sup> वह बतीस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में आठ वर्षों तक राज्य किया। <sup>18</sup> उसने इसाएल के राजाओं के मार्ग में चला, जैसे अहाब के घराने ने किया था, क्योंकि अहाब की बेटी उसकी पत्नी बन गई थी। इसलिए उसने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया। <sup>19</sup> हालाँकि, प्रभु यहूदा को नष्ट करने के लिए तैयार नहीं था, अपने सेवक दाऊद के कारण, क्योंकि उसने उसे बादा किया था कि वह उसके पुत्रों के लिए हमेशा एक दीपक देगा।

<sup>20</sup> उसके दिनों में एदीम यहूदा के हाथ से विद्रोह कर गया, और अपने उपर एक राजा नियुक्त किया। <sup>21</sup> फिर योराम अपने सभी रथों के साथ ज़ैर को पार कर गया, और यह हुआ कि वह रात में उठा और एदीमियों पर हमला किया जिहोने उसे धेर लिया था, और रथों के कपानों को; लेकिन लोग अपने तंबुओं में भाग गए। <sup>22</sup> तो एदीम आज तक यहूदा के खिलाफ विद्रोह करता रहा। फिर उसी समय लिब्रा भी विद्रोह कर गया। <sup>23</sup> अब योराम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, ज्वा वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। <sup>24</sup> तो योराम अपने पूर्वजों के साथ सो गया और उसे दाऊद के नगर में अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया, और उसका पुत्र अहज्याह उसकी जगह राजा बना।

<sup>25</sup> इसाएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के बारहवें वर्ष में, यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा। <sup>26</sup> अहज्याह बाईस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में एक वर्ष तक राज्य किया। उसकी माता का नाम अत्याध्या था, जो इसाएल के राजा ओम्ब्री की पोती थी। <sup>27</sup> उसने अहाब के घराने के मार्ग में चला और प्रभु की दृष्टि में बुरा किया, जैसे अहाब के घराने ने किया था, क्योंकि वह अहाब के घराने का दामाद था। <sup>28</sup> वह अहाब के पुत्र योराम के साथ अराम के राजा हज़ाएल के खिलाफ युद्ध करने के लिए रामोत-गिलाद गया, और अरामियों ने योराम को घायल कर दिया। <sup>29</sup> तो राजा योराम अपने घायों को ठीक करने के लिए यिज़ेल लौटा, जो अरामियों ने रामाह में उसे दिए थे, जब उसने अराम के राजा हज़ाएल के खिलाफ युद्ध किया था। फिर यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र

अहज्याह यिज़ेल में अहाब के पुत्र योराम से मिलने गया, क्योंकि वह बीमार था।

**9** अब एलीशा नबी ने नबियों के पुत्रों में से एक को बुलाया और उससे कहा, “अपने को तैयार करो, इस तेल की कुपी को अपने हाथ में लो, और रामोत-गिलाद को जाओ।” <sup>2</sup> जब तुम वहाँ पहुँचो, तो यहोशापात के पुत्र, निमशी के पुत्र यह की खोजो, और उसके भाइयों के बीच से उसे उठाकर एक अंतरिक कक्ष में ले जाओ। <sup>3</sup> फिर तेल की कुपी लेकर उसके सिर पर उंडेलो, और कहो, “यहोवा यह कहता है: मैंने तुझे इसाएल पर राजा अधिष्ठित किया है।” फिर दरवाजा खोलो और भाग जाओ, और देर मत करो।” <sup>4</sup> तो नबी का सोवक, युवा व्यक्ति, रामोत-गिलाद को गया। <sup>5</sup> जब वह पहुँचा, तो देखो, सेना के सेनापति बैठे थे, और उसने कहा, “मेरे पास आपके लिए एक संदेश है, सेनापति।” और यहू ने कहा, “हम में से किसके लिए?” और उसने कहा, “आपके लिए, सेनापति।” <sup>6</sup> तो वह उठकर घर में गया, और युवा व्यक्ति ने उसके सिर पर तेल उंडेला और उससे कहा, “यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, यह कहता है: मैंने तुझे यहोवा के लोगों पर, इसाएल पर राजा अधिष्ठित किया है।” <sup>7</sup> तू अपने स्वामी अहाब के घर को मारेगा, ताकि मैं अपने सेवकों नबियों के खुन का बदला ले सकूँ, और यहोवा के सभी सेवकों के खुन का बदला, पिजेबेल के हाथ से। <sup>8</sup> क्योंकि अहाब का पुरा घर नष्ट हो जाएगा, और मैं इसाएल में अहाब से हर पुरुष व्यक्ति, दास और स्वतंत्र, को समाप्त कर दूँगा। <sup>9</sup> मैं अहाब के घर को यारोबाम के घर के समान बनाऊंगा, जो नबात का पुत्र था, और बाशा के घर के समान जो अहिय्याह का पुत्र था। <sup>10</sup> कुते यिज़ेल की भूमि में पिजेबेल को खाएंगे, और कोई उसे दफन नहीं करेगा।” फिर उसने दरवाजा खोला और भाग गया।

<sup>11</sup> अब यहू अपने स्वामी के सेवकों के पास गया, और उनमें से एक ने उससे कहा, “क्या सब कुछ ठीक है? यह पागल आदमी आपके पास क्यों आया?” और उसने उनसे कहा, “तुम उस आदमी और उसकी बातों को जानते हो।” <sup>12</sup> लेकिन उन्होंने कहा, “यह झूठ है। अब हमें बताओ।” और उसने कहा, “उसने मुझसे यह कहा: ‘यहोवा यह कहता है: मैंने तुझे इसाएल पर राजा अधिष्ठित किया है।’” <sup>13</sup> फिर उन्होंने जल्दी की, और हर आदमी ने अपना वस्त्र लिया और उसे नंगे सीढ़ियों पर उसके नीचे रखा, और तुरही बजाई, कहते हुए, “यहू राजा है।”

## 2 राजा

<sup>14</sup> तो यहू, यहोशापात का पुत्र, निमशी का पुत्र, ने योराम के खिलाफ साजिश रची। अब योराम रामोत-गिलाद में पहरा दे रहा था, वह और पूरा इसाएल, अराम के राजा हजाएल के कारण। <sup>15</sup> लेकिन राजा योराम यित्रेल लौट आया था ताकि उन घावों से ठीक हो सके जो अरामियों ने उसे दिए थे जब वह अराम के राजा हजाएल के खिलाफ लड़ा था। तो यहू ने कहा, “यदि यह तुम्हारा निर्णय है, तो कोई भी भाग न सके या शहर छोड़कर यित्रेल में जाकर यह न बताए।” <sup>16</sup> फिर यहू रथ में चढ़कर यित्रेल गया, क्योंकि योराम वहाँ ठीक हो रहा था। और यहूदा के राजा अहज्याह योराम को देखने आया था।

<sup>17</sup> अब पहरेदार यित्रेल में भीनार पर खड़ा था और उसने यहू के दल को आते देखा, और उसने कहा, “एक एक दल देखता हूँ” और योराम ने कहा, “एक घुड़सवार ले जाओ और उनसे मिलाने के लिए भेजो, और उससे कहो, ‘क्या यह शांति है?’” <sup>18</sup> तो एक घुड़सवार उनसे मिलने गया और कहा, “राजा यह कहता है, ‘क्या यह शांति है?’” और यहू ने कहा, “तुम्हारा शांति से क्या लेना-देना? मेरे पीछे हो जाओ।” और पहरेदार ने रिपोर्ट की, “दूर उनके पास गया, लेकिन वह वापस नहीं आया।” <sup>19</sup> फिर उसने दूसरा घुड़सवार भेजा, जो उनके पास गया और कहा, “राजा यह कहता है, ‘क्या यह शांति है?’” और यहू ने उत्तर दिया, “तुम्हारा शांति से क्या लेना-देना? मेरे पीछे हो जाओ।” <sup>20</sup> और पहरेदार ने रिपोर्ट की, “वह उनके पास गया, लेकिन वह वापस नहीं आया। और चलाना यहू, निम्नी के पुत्र के चलाने जैसा है, क्योंकि वह उप्रता से चलाता है।”

<sup>21</sup> फिर योराम ने कहा, “तैयार हो जाओ।” और उन्होंने उसका रथ तैयार किया। और इसाएल के राजा योराम और यहूदा के राजा अहज्याह बाहर गए, हर एक अपने रथ में, और वे यहू से मिलने गए और उसे नाबोत यित्रेली के खेत में पाया। <sup>22</sup> जब योराम ने यहू को देखा, तो उसने कहा, “क्या यह शांति है, यहू?” और उसने उत्तर दिया, “क्या शांति, जब तक तुम्हारी माता यिजेबेल की व्यधिचर और जादू-टोना इतनी अधिक है?” <sup>23</sup> तो योराम ने लगाम की मोड़ा और भाग गया, और अहज्याह से कहा, “यह थोखा है, अहज्याह!” <sup>24</sup> फिर यहू ने अपनी धनुष की पूरी ताकत से खींचा और योराम को उसकी भुजाओं के बीच मारा; और तीर उसके हृदय में चला गया, और वह अपने रथ में गिर पड़ा। <sup>25</sup> और यहू ने अपने अधिकारी बिदकर से कहा, “उसे उठाओ और उसे नाबोत यित्रेली के खेत में फेंक दो, क्योंकि याद करो, जब तुम और मैं उसके पिता अहाब के पीछे

सवारी कर रहे थे, यहोवा ने उसके खिलाफ यह वाक्य सुनाया था: <sup>26</sup> निश्चित रूप से मैंने कल नाबोत के खुन और उसके पुत्रों के खुन को देखा है; यहोवा कहता है, ‘और मैं तुम्हें इस संपत्ति में चुकाऊंगा,’ यहोवा कहता है। तो अब, उसे ले जाकर संपत्ति में फेंक दो, यहोवा के वचन के अनुसार।”<sup>1</sup>

<sup>27</sup> अब जब यहूदा का राजा अहज्याह ने यह देखा, तो वह बेध-हगमन की सड़क से भाग गया। लेकिन यहू ने उसका पीछा किया और कहा, “उसे भी रथ में मार दो।” तो उन्होंने उसे गुर की चढाई पर मारा, जो इब्लाम में है। लेकिन वह मेंगिद्वो भाग गया और वहाँ मर गया। <sup>28</sup> फिर उसके सेवकों ने उसे रथ में यरूशलैम ले जाकर उसे दाऊद के नगर में उसके पितरों के साथ उसकी कब्र में दफनाया। <sup>29</sup> अब अहज्याह यहूदा पर राजा बना, योराम के ग्यारहवें रथ में, जो अहाब का पुत्र था।

<sup>30</sup> अब जब यहू यित्रेल पहुँचा, तो यिजेबेल ने इसके बारे में सुना। और उसने अपनी आँखों पर श्रांगार किया और अपने सिर को सजाया और खिड़की से बाहर देखा। <sup>31</sup> जब यहू द्वारा में प्रवेश किया, तो उसने कहा, “क्या यह अच्छा है, जिमी, तुम्हारे स्वामी का हत्यारा?” <sup>32</sup> फिर उसने अपनी आँखें खिड़की की ओर उठाई और कहा, “कौन मेरे पक्ष में है? कौन?” और दो या तीन अधिकारीयों ने उसकी ओर देखा। <sup>33</sup> और उसने कहा, “उसे नीचे फेंक दो।” तो उन्होंने उसे नीचे फेंक दिया, और उसका कुछ खून दीवार और घोड़ों पर छिड़क गया, और उसने उसे पैरों तले रोंद दिया। <sup>34</sup> फिर वह अंदर गया और खाया और पिया, और उसने कहा, “अब इस शापित स्त्री को देखो और उसे दफनाओ, क्योंकि वह एक राजा की बेटी है।” <sup>35</sup> तो वे उसे दफनाने गए, लेकिन उन्होंने उसके सिर के खोपड़ी और पैरों और हाथों की हथेलियों के अलावा कुछ नहीं पाया। <sup>36</sup> इसलिए वे लौट आए और उसे सूचित किया। और उसने कहा, “यह यहोवा का वचन है, जो उसने अपने सेवक तिशब्बी एलियाह के द्वारा कहा था, ‘यित्रेल की संपत्ति में कुत्ते यिजेबेल का मास खाएंगे,’” <sup>37</sup> और यिजेबेल की लाश यित्रेल की संपत्ति में खेत के चेहरे पर खाद की तरह होगी, ताकि वे न कह सकें, “यह यिजेबेल है।”<sup>2</sup>

**10** अब अहाब के सत्तर पुत्र शमरोन में थे। इसलिए यहू ने पत्र लिखे और उन्हें शमरोन भेजा, यित्रेल के शासकों, पुरियों और अहाब के पुत्रों के संरक्षकों के पास, यह कहते हुए, <sup>2</sup> “अब जब यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचे, क्योंकि तुम्हारे पास तुम्हारे स्वामी के पुत्र हैं, और तुम्हारे पास रथ, घोड़े, एक सुरक्षित नगर और हथियार

## 2 राजा

हैं।<sup>3</sup> तो अपने स्वामी के पुत्रों में से सबसे अच्छे और सक्षम को चुनो, उसे उसके पिता के सिंहासन पर बैठाओ, और अपने स्वामी के घर के लिए लड़ो।"<sup>4</sup> पर वे बहुत डर गए और कहने लगे, "देखो, दो राजा उसके सामने खड़े नहीं रह सके; तो हम कैसे खड़े रह सकते हैं?"<sup>5</sup> और घर के अधीक्षक, और नगर के अधीक्षक, पुरुषियों और संरक्षकों के साथ, यहू के पास सदेश भेजा, यह कहते हुए, "हम तुम्हारे सेवक हैं, जो कुछ तुम कहांगे, हम करेंगे। हम किसी को राजा नहीं बनाएंगे। जो तुम्हारी दृष्टि में अच्छा है, वह करो।"<sup>6</sup> तब उसने उन्हें दूसरी बार पत्र लिखा, यह कहते हुए, "यदि तुम मेरी ओर हो, और मेरी आवाज़ सुनोगे, तो अपने स्वामी के पुत्रों के सिर ले आओ, और कल इस समय यित्रेल में मुझसे मिलो।"<sup>7</sup> अब राजा के पुत्र, सत्रर व्यक्ति, नगर के नेताओं के साथ थे, जो उन्हें पाल रहे थे।<sup>8</sup> और जब पत्र उनके पास पहुंचा, तो उन्होंने राजा के पुत्रों को लिया और उन्हें मार डाला, सत्रर व्यक्ति, और उनके सिर टोकरी में डालकर उन्हें यित्रेल में भेज दिया।<sup>9</sup> जब दूत आया और उसे बताया, "उन्होंने राजा के पुत्रों के सिर लाए हैं।" तो उसने कहा, "उन्हें द्वार के प्रवेश पर दो ढेर में रखो जब तक कि सुबह न हो।"

<sup>9</sup> सुबह वह बाहर गया और खड़ा होकर सब लोगों से कहा, "तुम धर्मी हो, देखो, मैंने अपने स्वामी के विरुद्ध घड़यंत्र रचा और उसे मार डाला। परंतु इन सबको किसने मारा?<sup>10</sup> तो जान लो कि प्रभु के वचन में से कुछ भी भूमि पर नहीं रिखेगा, जो प्रभु ने अहाब के घर के विषय में कहा था, क्योंकि प्रभु ने वही किया है जो उसने अपने सेवक एलियाह के द्वारा कहा था।"<sup>11</sup> इसलिए यहू ने यित्रेल में अहाब के घर के सभी शेष लोगों को मारा, और उसके सभी महान पुरुषों, उसके परिवर्तियों और उसके याजकों को, जब तक कि उसने उसे बिना किसी उत्तराधिकारी के छोड़ दिया।

<sup>12</sup> तब वह उठा और चला गया, और शमरोन की ओर गया। रास्ते में, जब वह चरवाहों के बेथ-एकेद पर था,<sup>13</sup> यहू ने यहूदा के राजा अहज्याह के रिश्तेदारों से मुलाकात की और कहा, "तुम कौन हो?" और उन्होंने उत्तर दिया, "हम अहज्याह के रिश्तेदार हैं, और हम राजा के पुत्रों और रानी माता के पुत्रों से मिलने आए हैं।"<sup>14</sup> तब उसने कहा, "उन्हें जीवित पकड़ लो।" तो उन्होंने उन्हें जीवित पकड़ लिया और बेथ-एकेद के कुएं पर उन्हें मार डाला, बायालीस पुरुष, और उनमें से किसी को जीवित नहीं छोड़ा।

<sup>15</sup> अब जब वह वहां से चला गया, तो वह यहोनादाब से मिला, जो रेकाब का पुत्र था, उससे मिलने के लिए आ रहा था; और उसने उसे अभिवादन किया और उससे कहा, "क्या तुम्हारा हृदय सही है, जैसा कि मेरा हृदय तुम्हारे हृदय के साथ है?" और यहोनादाब ने उत्तर दिया, "हाँ।" यहू ने कहा, "यदि ऐसा है, तो मुझे अपना हाथ दो।" और उसने उसे अपना हाथ दिया, और उसने उसे अपने रथ में अपने पास उठा लिया।<sup>16</sup> और उसने कहा, "मेरे साथ आओ और प्रभु के लिए मेरी उत्सुकता देखो।" तो उसने उसे अपने रथ में सवारी कराई।<sup>17</sup> जब वह शमरोन पहुंचा, तो उसने शमरोन में अहाब के सभी शेष लोगों को मारा, जब तक कि उसने उन्हें समाप्त नहीं कर दिया, प्रभु के वचन के अनुसार जो उसने एलियाह से कहा था।

<sup>18</sup> तब यहू ने सब लोगों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "अहाब ने बाल की थोड़ी सिंच की; यहू उसे बहुत सेवा करेगा।"<sup>19</sup> अब, बाल के सभी नवियों, उसके सभी उपासकों और उसके सभी याजकों को बुलाओ; कोई भी गायब न हो, क्योंकि मेरे पास बाल के लिए एक बड़ा बलिदान है, जो कोई गायब होगा, वह जीवित नहीं रहेगा।<sup>20</sup> परंतु यहू छल से काम कर रहा था, बाल के उपासकों को समाप्त करने के लिए।<sup>21</sup> और यहू ने कहा, "बाल के लिए एक पवित्र सभा की घोषणा करो।"<sup>22</sup> तो उन्होंने इसे घोषित किया।<sup>23</sup> तब यहू ने पूरे इसाएल में संदेश भेजा, और बाल के सभी उपासक आए, ताकि कोई भी न रहे जो न आए। जब वे बाल के घर में प्रवेश किए, तो बाल का घर एक छोर से दूसरे छोर तक भर गया।<sup>24</sup> और उसने वस्तों के प्रभारी व्यक्ति से कहा, "बाल के सभी उपासकों के लिए वस्त निकालो।"<sup>25</sup> तो उसने उनके लिए वस्त निकाले।<sup>26</sup> तब यहू और यहोनादाब रेकाब का पुत्र बाल के घर में प्रवेश किए, और उसने बाल के उपासकों से कहा, "सावधानी से देखो और सुनिश्चित करो कि तुम्हारे साथ प्रभु के सेवकों में से कोई नहीं है, केवल बाल के उपासक ही हैं।"<sup>27</sup> तब वे बलिदान और होमबलि चढ़ाने के लिए अंदर गए। अब यहू ने अपने लिए बाहर असी पुरुषों को तैनात किया था, और उसने कहा, "जो कोई उन पुरुषों में से किसी को भासने देगा जिन्हें मैं तुम्हारे हाथों में लाता हूं, वह अपने जीवन के बदले में अपना जीवन देगा।"<sup>28</sup> फिर ऐसा हुआ, जैसे ही उसने होमबलि चढ़ाना समाप्त किया, कि यहू ने पहरेदारों और अधिकारियों से कहा, "अंदर जाओ, उन्हें मार डालो; कोई भी बाहर न निकले।"<sup>29</sup> तो उन्होंने उन्हें तलवार की धार से मारा, और पहरेदारों और अधिकारियों ने उन्हें बाहर फेंक दिया, और बाल के घर के अंदर के कमरे में चले गए।<sup>30</sup> और उन्होंने बाल

## 2 राजा

के घर की स्मारक पत्थरों को बाहर निकाला और उन्हें जला दिया।<sup>27</sup> उन्होंने बाल के स्मारक पत्थर को भी गिरा दिया और बाल के घर को गिरा दिया, और उसे आज तक एक शौचालय बना दिया।

<sup>28</sup> इस प्रकार यह ने इसाएल से बाल का उन्मूलन किया।<sup>29</sup> हालांकि, यह ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों से मुंह नहीं मोड़ा, जिसने इसाएल को पाप में डाला था—विशेष रूप से, वे सोने के बछड़े जो बेतेल और दान में थे।<sup>30</sup> और प्रभु ने यह से कहा, "क्योंकि तुमने मेरी हृषि में जो सही है उसे पूरा करने में अच्छा किया है, और अहाब के घर के साथ वह सब किया है जो मेरे हृदय में था, तुम्हारे पुत्र चौथी पीढ़ी तक इसाएल के सिंहासन पर बैठेंगे।"<sup>31</sup> परंतु यह प्रभु की व्यवस्था में, इसाएल के परमेश्वर की, पूरे हृदय से चलने में सावधान नहीं था; उसने यारोबाम के पापों से मुंह नहीं मोड़ा, जो उसने इसाएल को करने के लिए प्रेरित किया।

<sup>32</sup> उन दिनों में प्रभु ने इसाएल से टुकड़े काटना शुरू किया; और हज़ाएल ने उन्हें इसाएल के पूरे क्षेत्र में हराया;<sup>33</sup> यर्दन के पूर्व से, गिलाद की सारी भूमि—गादियों, झूंबेनियों, और मनश्चियों की— अरोएर से, जो अर्नोन की घाटी के पास है, गिलाद और बाशान तक।<sup>34</sup> अब यह के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, और उसकी सारी शक्ति, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>35</sup> और यह अपने पितरों के साथ सो गया, और उसे शमरीन में दफनाया गया; और उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोआहाज राजा बना।<sup>36</sup> अब वह समय जब यह शमरीन में इसाएल पर राज्य करता था, अट्टाईस वर्ष था।

**11** जब अठिलियाह ने, जो अहज्याह की माता थी, देखा कि उसका पुत्र मर गया है, तो वह उठी और उसने राजवंश के सभी वंशजों को नष्ट कर दिया।<sup>2</sup> परन्तु यहोशेबा, जो राजा योराम की पुत्री और अहज्याह की बहन थी, ने अहज्याह के पुत्र योआश को लिया और उसे राजा के पुत्रों में से चुरा लिया, जिन्हें मार डाला जा रहा था, और उसे और उसकी धाय को एक शयनकक्ष में रखा। इस प्रकार उन्होंने उसे अठिलियाह से छुपा दिया, और वह मारा नहीं गया।<sup>3</sup> इसलिए वह छह वर्षों तक यहोवा के घर में उसके साथ छुपा रहा, जबकि अठिलियाह देश पर शासन कर रही थी।

<sup>4</sup> अब सातवें वर्ष में यहोयादा ने कारियों और पहरेदारों के सैकड़ों के कप्तानों को बुलाया, और उन्हें यहोवा के घर में लाया। फिर उसने उनके साथ एक वाचा की, उन्हें

यहोवा के घर में शपथ दिलाई, और उन्हें राजा का पुत्र दिखाया।<sup>5</sup> और उसने उन्हें आज्ञा दी, कहा, "यह वह बात है जो तुम करोगे: तुम में से एक तिहाई, जो सब्त के दिन आते हैं और राजा के घर की रखवाली करते हैं,<sup>6</sup> एक तिहाई सूर के फाटक पर रहेंगे, और एक तिहाई पहरेदार के पीछे के फाटक पर। और तुम घर की रक्षा के लिए उसकी रखवाली करोगे।" तुम में से दो दल, जो सब्त के दिन बाहर जाते हैं, राजा के लिए यहोवा के घर की रखवाली करेंगे।<sup>8</sup> और तुम राजा को चारों ओर से धर लोगों, प्रत्येक अपने हाथ में हथियार लिए हुए, और जो कोई पंक्तियों के भीतर आएगा उसे मार डाला जाएगा। और जब राजा बाहर जाए और जब वह अंदर आए, तो तुम उसके साथ रहोगे।"

<sup>9</sup> इसलिए सैकड़ों के कप्तानों ने सब कुछ किया जो यहोयादा याजक ने आज्ञा दी थी। उनमें से प्रत्येक ने अपने आदमियों को लिया जो सब्त के दिन आने वाले थे, उनके साथ जो सब्त के दिन बाहर जाने वाले थे, और यहोयादा याजक के पास आए।<sup>10</sup> और याजक ने सैकड़ों के कप्तानों को भाले और ढाले दीं जो राजा दाऊद की थीं, जो यहोवा के घर में थीं।<sup>11</sup> फिर पहरेदार खड़े हो गए, प्रत्येक अपने हाथ में हथियार लिए हुए, घर के दाहिनी ओर से बाईं ओर तक, वेदी और घर के पास, राजा के चारों ओर।<sup>12</sup> और उसने राजा के पुत्र को बाहर लाया और उसके सिर पर मुकुट रखा और उसे गवाही दी। और उन्होंने उसे राजा बनाया और उसका अभिषेक किया, और उन्होंने ताली बजाई और कहा, "राजा दीर्घायु हो!"

<sup>13</sup> जब अठिलियाह ने पहरेदारों और लोगों का शोर सुना, तो वह यहोवा के घर में लोगों के पास आई।<sup>14</sup> और उसने देखा, और देखो, राजा स्तंभ के पास खड़ा था, जैसा कि रीति थी, कप्तानों और तुरही बजाने वालों के साथ राजा के पास। और देश के सभी लोग अनन्दित हो रहे थे और तुरहियां बजा रहे थे। तब अठिलियाह ने अपने वस्त्र फाड़े और चिल्लाई, विश्वासधाति! विश्वासधाति!<sup>15</sup> तब यहोयादा याजक ने सेना पर नियुक्त सैकड़ों के कप्तानों को आज्ञा दी और उनसे कहा, "उसे पंक्तियों के बीच से बाहर ले जाओ, और जो कोई उसका अनुसरण करे उसे तलवार से मार डालो।" क्योंकि याजक ने कहा था, "उसे यहोवा के घर में मारा नहीं जाएगा।"<sup>16</sup> इसलिए उन्होंने उसे कपड़ लिया, और वह धोड़ों के प्रवेश द्वार से राजा के घर गई, और उसे वहीं मार डाला गया।

<sup>17</sup> तब यहोयादा ने यहोवा, राजा, और लोगों के बीच एक वाचा की, कि वे यहोवा के लोग होंगे; और राजा और

## 2 राजा

लोगों के बीच भी।<sup>18</sup> और देश के सभी लोग बाल के घर में आए और उसे गिरा दिया; उन्होंने उसकी वेदियों और उसकी मूर्तियों को पूरी तरह से तोड़ डाला, और उन्होंने बाल के याजक मत्सान को वेदियों के सामने मार डाला। और याजक ने यहोवा के घर पर अधिकारियों को नियुक्त किया।<sup>19</sup> और उसने सैकड़ों के कपाटानों और कारियों और पहरेदारों और देश के सभी लोगों को लिया, और वे राजा को यहोवा के घर से नीचे लाए, और पहरेदारों के फाटक के रास्ते से राजा के घर आए। और वह राजाओं के सिंहासन पर बैठा।<sup>20</sup> इसलिए देश के सभी लोग आनन्दित हुए, और नगर शांत था, क्योंकि उन्होंने अठलियाह को राजा के घर में तलवार से मार डाला था।

<sup>21</sup> जब यहोआश राजा बना, तब वह सात वर्ष का था।

**12** यहू के सातवें वर्ष में यहोआश राजा बना, और उसने यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम बेरेबा की ज़िबिया था।<sup>2</sup> यहोआश ने अपने सभी दिनों में वह किया जो यहोवा की दृष्टि में सही था, जिसमें यहोयादा याजक ने उसे शिक्षा दी।<sup>3</sup> केवल ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए; लोग अभी भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे।

<sup>4</sup> तब यहोआश ने याजकों से कहा, "सभी पवित्र भेंटों का धन जो यहोवा के घर में लाया जाता है, वर्तमान धन में—प्रत्येक व्यक्ति के मूल्यांकन का धन और वह सारा धन जो किसी के हृदय से प्रेरित होकर यहोवा के घर में लाया जाता है—<sup>5</sup> याजक उस अपने-अपने परिचितों से लें, और जहाँ कहीं भी घर में कोई क्षति पाई जाए, उसकी मरम्मत करें।"<sup>6</sup> लेकिन ऐसा हुआ कि राजा यहोआश के तईसवें वर्ष में, याजकों ने घर की क्षति की मरम्मत नहीं की थी।<sup>7</sup> तब राजा यहोआश ने यहोयादा याजक और अन्य याजकों को बुलाया, और उनसे कहा, "तुमने घर की क्षति की मरम्मत क्यों नहीं की? अब, अपने परिचितों से और धन न लो, बल्कि उसे घर की मरम्मत के लिए सोंप दो।"<sup>8</sup> इसलिए याजकों ने सहमति व्यक्त की कि वे लोगों से और धन नहीं लेंगे, और न ही स्वयं घर की क्षति की मरम्मत करेंगे।

<sup>9</sup> लेकिन यहोयादा याजक ने एक संदूक लिया, उसके ढक्कन में एक छेद किया, और उसे वेदी के बगल में रखा, दाहिनी ओर जब कोई यहोवा के घर में प्रवेश करता है; और जो याजक द्वारपाल थे, उन्होंने उसमें वह सारा धन डाल दिया जो यहोवा के घर में लाया गया था।<sup>10</sup> जब उन्होंने देखा कि संदूक में बहुत धन है, तो राजा

का लेखक और महायाजक आए, और उन्होंने धन को थैलों में रखा और यहोवा के घर में पाया गया धन गिना।

<sup>11</sup> फिर उन्होंने गिना हुआ धन उन लोगों के हाथ में दिया, जो काम करते थे, जो यहोवा के घर की देखरेख करते थे; और उन्होंने उसे बढ़ाई और निर्माणकर्ताओं को दिया जो यहोवा के घर पर काम करते थे,<sup>12</sup> और राजमिस्तियों और पत्रक काटने वालों को, और लकड़ी और कटे पत्तर खरीदने के लिए, ताकि यहोवा के घर की क्षति की मरम्मत की जा सके, और जो कुछ भी घर की मरम्मत के लिए आवश्यक था।<sup>13</sup> हालांकि, यहोवा के घर के लिए चांदी के प्याले, चिमटे, कटोरे, तुरहियां, कोई भी सोने या चांदी के बर्तन नहीं बनाए गए, उस धन से जो यहोवा के घर में लाया गया था;<sup>14</sup> क्योंकि उन्होंने उसे काम करने वालों को दिया, और उन्होंने उससे यहोवा के घर की मरम्मत की।<sup>15</sup> इसके अलावा, उन्होंने उन लोगों से लेखा-जोखा नहीं मांगा जिनके हाथ में उन्होंने काम करने वालों को भुगतान करने के लिए धन दिया था, क्योंकि वे विश्वासयोग्य थे।<sup>16</sup> दोष भेंटों का धन और पाप भेंटों का धन यहोवा के घर में नहीं लाया गया; वह याजकों का था।

<sup>17</sup> तब अराम के राजा हज़ाएल ने गात पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया, और हज़ाएल ने यरूशलेम पर चढ़ाई करने का इरादा किया।<sup>18</sup> इसलिए यहदा के राजा यहोआश ने सभी पवित्र वस्तुएं लीं जो योशापात, यहोराम और अहज्याह, उसके पिता, यहूदा के राजाओं ने समर्पित की थीं, और अपनी पवित्र वस्तुएं, और वह सारा सोना जो यहोवा के घर और राजा के घर के खजानों में पाया गया था, और उन्हें अराम के राजा हज़ाएल को भेजा। तब वह यरूशलेम से हट गया।

<sup>19</sup> अब योआश के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>20</sup> और उसके सेवकों ने उठकर एक साजिश रची, और योआश को मिलो के घर में, सिल्ला की ओर जाते समय मारा।<sup>21</sup> क्योंकि जोजाकार, शिमेथ का पुत्र, और यहोजाबाद, शोमेर का पुत्र, उसके सेवकों ने उसे मारा और वह मर गया। और उन्होंने उसे दाऊद के नगर में उसके पितरों के साथ दफनाया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र अमस्याह राजा बना।

**13** यहदा के राजा अहज्याह के पुत्र योआश के तईसवें वर्ष में, यह के पुत्र यहोआहाज इस्साएल का राजा बना और उसने सत्रह वर्ष तक शासन किया।<sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का अनुसरण किया, जिसने इस्साएल

## 2 राजा

को पाप में डाला; उसने उनसे दूर नहीं किया।<sup>3</sup> इसलिए यहोवा का क्रोध इसाएल के खिलाफ भड़क उठा, और उसने उन्हें लगातार अराम के राजा हजाएल के हाथ में सौंप दिया, और हजाएल के पुत्र बेन-हदद के हाथ में भी।<sup>4</sup> तब यहोआहाज ने यहोवा की कृपा के लिए प्रार्थना की, और यहोवा ने उसकी सुनी: क्योंकि उसने इसाएल की पीड़ा देखी, कि अराम का राजा उन्हें कैसे सताता था।<sup>5</sup> और यहोवा ने इसाएल को एक उद्धारकर्ता दिया, जिससे वे अरामियों के हाथ से बच निकले; और इसाएल के पुत्र अपने तबुओं में पहले की तरह रहने लगे।<sup>6</sup> फिर भी, उन्होंने यारोबाम के घर के पापों से दूर नहीं किया, जिससे उसने इसाएल को पाप में डाला, बल्कि उनमें चलते रहे; और अरेशा भी सामरिया में खड़ा रहा।<sup>7</sup> क्योंकि उसने यहोआहाज के लिए सेना में पचास छुड़सवार, दस रथ, और दस हजार पैदल सैनिकों से अधिक नहीं छोड़ा, क्योंकि अराम के राजा ने उन्हें नष्ट कर दिया था और उन्हें थ्रेसिंग के धूल के समान बना दिया था।

<sup>8</sup> अब यहोआहाज के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया और उसकी शक्ति, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>9</sup> और यहोआहाज अपने पितरों के साथ लेटा, और उसे सामरिया में दफनाया गया; और उसका पुत्र योआश उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>10</sup> यहूदा के राजा योआश के सैंतीसवें वर्ष में, यहोआहाज का पुत्र योआश सामरिया में इसाएल का राजा बना, और उसने सोलह वर्ष तक शासन किया।<sup>11</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; उसने नबात के पुत्र यारोबाम के सभी पापों से दूर नहीं किया, जिसने इसाएल को पाप में डाला, बल्कि उनमें चलता रहा।<sup>12</sup> अब योआश के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, और उसकी शक्ति जिससे उसने यहूदा के राजा अमज्याह के खिलाफ लड़ा, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>13</sup> तो योआश अपने पितरों के साथ लेटा, और यारोबाम उसके सिंहासन पर बैठा; और योआश को सामरिया में इसाएल के राजाओं के साथ दफनाया गया।

<sup>14</sup> जब एलीशा उस बीमारी से बीमार हो गए जिससे वह मरने वाले थे, तो इसाएल के राजा योआश उनके पास आए और उनके ऊपर रोए और कहा, “मेरे पिता, मेरे पिता, इसाएल के रथ और उसके छुड़सवार!”<sup>15</sup> और एलीशा ने उससे कहा, “एक धनुष और तीर ले लो।” तो उसने अपने लिए एक धनुष और तीर लिया।<sup>16</sup> तब

उसने इसाएल के राजा से कहा, “अपने हाथ को धनुष पर रखो।” और उसने अपना हाथ उस पर रखा, और एलीशा ने राजा के हाथों पर अपने हाथ रखे।<sup>17</sup> और उसने कहा, “पूर्व की ओर खिड़की खोलो,” और उसने उसे खोला। तब एलीशा ने कहा, “चलाओ।” और उसने चलाया। और उसने कहा, “यहोवा का विजय का तीर, और अराम पर विजय का तीर; क्योंकि तुम अफेक में अरामियों को मारोगे जब तक कि तुम उन्हें नष्ट नहीं कर दोगे।”<sup>18</sup> तब उसने कहा, “तीर ले लो,” और उसने उन्हें लिया। और उसने इसाएल के राजा से कहा, “भूमि पर मारो,” और उसने तीन बार मारा और रुक गया।<sup>19</sup> तब परमेश्वर का व्यक्ति उस पर क्रोधित हुआ और कहा, “तुम्हें पांच वा छह बार मारना चाहिए था; तब तुम अराम को मारते जब तक कि तुम उसे समाप्त नहीं कर देतो। लेकिन अब तुम अराम को केवल तीन बार मारोगे।”

<sup>20</sup> और एलीशा की मृत्यु हो गई, और उन्हें दफनाया गया। अब मो-आवियों के दल वर्संत ऋतु में भूमि पर आक्रमण करते थे।<sup>21</sup> और जब वे एक व्यक्ति को दफन कर रहे थे, तो उन्होंने एक तुटेरा दल देखा; और उन्होंने उस व्यक्ति को एलीशा की कब्र में फेंक दिया। और जब वह व्यक्ति एलीशा की हड्डियों को छू गया, तो वह जीवित हो गया और अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

<sup>22</sup> अब अराम के राजा हजाएल ने यहोआहाज के सभी दिनों में इसाएल को सताया था।<sup>23</sup> लेकिन यहोवा ने उन पर कृपा की और उन पर दया की और उनकी ओर मुड़ा, अब्राहम, इसहाक, और याकूब के साथ अपनी वाचा के कारण, और उन्हें नष्ट नहीं किया या अब तक अपनी उपस्थिति से बाहर नहीं फेंका।<sup>24</sup> जब अराम के राजा हजाएल की मृत्यु हो गई, तो उसका पुत्र बेन-हदद उसके स्थान पर राजा बना।<sup>25</sup> तब यहोआहाज के पुत्र योआश ने बेन-हदद के हाथ से फिर से उन नगरों को लिया जो उसने युद्ध में अपने पिता यहोआहाज के हाथ से लिए थे। योआश ने उसे तीन बार हराया और इसाएल के नगरों को पुनः प्राप्त किया।

**14** इसाएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के दूसरे वर्ष में, यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह राजा बने।<sup>2</sup> जब वह राजा बने, तब उनकी उम्र पच्चीस वर्ष थी, और उन्होंने यरूशलेम में उन्नीस वर्ष तक राज्य किया। और उनकी माता का नाम यहोअद्वीन था, जो यरूशलेम की थी।<sup>3</sup> उन्होंने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, परन्तु अपने पिता दाऊद के समान नहीं। उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा उनके पिता योआश ने किया था।<sup>4</sup> केवल ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए;

## 2 राजा

लोग अभी भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे।<sup>5</sup> अब ऐसा हुआ कि जब राज्य उनके हाथ में ढूँढ़ हो गया, तो उन्होंने उन सेवकों को मार डाला जिन्होंने उनके पिता राजा को मारा था।<sup>6</sup> परन्तु उन्होंने हायरों के पुत्रों को मृत्यु के घाट नहीं उतारा, जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी, “पिता पुत्रों के लिए मृत्यु के घाट नहीं उतारे जाएंगे, और न ही पुत्र पिता के लिए मृत्यु के घाट उतारे जाएंगे; परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपने पाप के लिए मृत्यु के घाट उतारा जाएगा।”

<sup>7</sup> उन्होंने नमक की घटी में दस हजार एदोमियों को मारा, और युद्ध में सेला को जीत लिया, और उसका नाम योक्तेल रखा, जैसा कि आज तक है।<sup>8</sup> तब अमस्याह ने योआश के पुत्र यहोआहाज के पुत्र, इस्साएल के राजा, को दूत भेजा, यह कहते हुए, “आओ, हम एक-दूसरे का सामना युद्ध में करें।”<sup>9</sup> परन्तु इस्साएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को एक संदेश भेजा, यह कहते हुए, “लेबनान में जो काटेदार ज्ञाड़ी थी, उसने लेबनान के देवदार को यह कहते हुए संदेश भेजा, ‘अपनी बेटी को मेरे पुत्र के लिए पत्नी के रूप में दे।’ परन्तु लेबनान में एक जंगली जानवर आया और काटेदार ज्ञाड़ी को रौंद दिया।<sup>10</sup> तुमने सचमुच एदोम को हरा दिया है, और तुम्हारा हृदय गर्व से भर गया है। अपने सम्मान का आनंद लो और अपने घर में रहो। तुम क्यों मुसीबत मोल लेते हो ताकि तुम गिर जाओ, तुम और तुम्हारे साथ यहूदा भी?”<sup>11</sup> परन्तु अमस्याह ने नहीं सुना। इस्सलिए इस्साएल के राजा योआश ऊपर गया, और वह और यहूदा का राजा अमस्याह एक-दूसरे का सामना बैथ-शेमेश में किया, जो यहूदा का है।<sup>12</sup> और यहूदा इस्साएल से हार गया, और हर आदमी अपने तंबू में भाग गया।<sup>13</sup> तब इस्साएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को पकड़ लिया, जो योआश का पुत्र और अहज्याह का पोता था, बैथ-शेमेश में, और यरूशलेम आया और यरूशलेम की दीवार को एप्रैम के फाटक से लेकर कोने के फाटक तक चार सौ हाथ तोड़ दिया।<sup>14</sup> और उसने सारा सोना और चांदी और सभी बर्तन जो यहोवा के घर में और राजा के घर के खजानों में पाए गए, बंधकों के साथ लिया, और सामरिया लौट आया।

<sup>15</sup> अब योआश के बाकी कार्य, जो उसने किए, और उसकी शक्ति, और कैसे उसने यहूदा के राजा अमस्याह के साथ लड़ाई की, क्या वे इस्साएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>16</sup> और योआश अपने पितरों के साथ लेट गया और सामरिया में इस्साएल

के राजाओं के साथ दफनाया गया, और उसका पुत्र यारोबाम उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>17</sup> यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह, इस्साएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश की मृत्यु के बाद पंद्रह वर्ष जीवित रहा।<sup>18</sup> अब अमस्याह के बाकी कार्य, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>19</sup> और उन्होंने यरूशलेम में उसके खिलाफ साजिश की, और वह लाकीश भाग गया। परन्तु उन्होंने उसके पीछे लाकीश में आदमी भेजे, और उन्होंने उसे वहां मार डाला।<sup>20</sup> तब वे उसे घोड़ों पर लाए, और उसे यरूशलेम में उसके पितरों के साथ दाऊद के नाम में दफनाया गया।<sup>21</sup> और यहूदा के सभी लोगों ने अर्जयाह को लिया, जो सोलह वर्ष का था, और उसे उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा बनाया।<sup>22</sup> उसने लौटाया जब राजा अपने पितरों के साथ लेट गया।

<sup>23</sup> यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के पंद्रहवें वर्ष में, इस्साएल के राजा योआश का पुत्र यारोबाम सामरिया में राजा बना, और इक्कतालीस वर्ष तक राज राज्य किया।<sup>24</sup> और उसने यहोवा की वृष्टि में बुरा किया; उसने यारोबाम के पुत्र नबात के सभी पापों से नहीं मुक्त, जिसने इस्साएल को पाप कराया।<sup>25</sup> उसने हमात के प्रवेश से लेकर अराबा के सागर तक इस्साएल की सीमा को पुनर्स्थापित किया, जैसा कि इस्साएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने अपने सेवक गथ-हेफेर के भविष्यद्वक्ता अभितै के पुत्र योना के माध्यम से कहा था।<sup>26</sup> क्योंकि यहोवा ने इस्साएल की पीढ़ी देखी, जो बहुत कड़वी थी; क्योंकि न तो कोई बंधुआ था और न ही कोई स्वतंत्र बचा था, और न ही इस्साएल के लिए कोई सहायक था।<sup>27</sup> फिर भी यहोवा ने यह नहीं कहा कि वह आकाश के नीचे से इस्साएल के नाम को मिटा देगा; परन्तु उसने उन्हें योआश के पुत्र यारोबाम के हाथ से बचाया।

<sup>28</sup> अब यारोबाम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, उसकी शक्ति, कैसे उसने युद्ध किया और कैसे उसने इस्साएल के लिए दमिश्क और हमात को पुनः प्राप्त किया, जो यहूदा का था, क्या वे इस्साएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>29</sup> और यारोबाम अपने पितरों के साथ लेट गया, इस्साएल के राजाओं के साथ, और उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान पर राजा बना।

## 2 राजा

**15** इसाएल के राजा यारोबाम के सत्ताइसवें वर्ष में, यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा बना।<sup>2</sup> वह सोलह वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में बाबन वर्ष राज्य किया; और उसकी माता का नाम यरूशलेम की यहोल्याह था।<sup>3</sup> उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, जैसा उसके पिता अमस्याह ने किया था।<sup>4</sup> केवल ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए; लोग अब भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे।<sup>5</sup> और यहोवा ने राजा को मारा, जिससे वह अपनी मृत्यु के दिन तक कोङी रहा। वह एक अलग घर में रहता था, जबकि राजा का पुत्र योताम घर के ऊपर था, देश के लोगों का न्याय करता था।<sup>6</sup> अब अजर्याह के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>7</sup> और अजर्याह अपने पितरों के साथ सो गया, और उन्हें दाऊद के नगर में उनके पितरों के साथ दफनाया गया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र योताम राजा बना।

<sup>8</sup> अजर्याह राजा के यहूदा के अड़तीसवें वर्ष में, यारोबाम का पुत्र जकर्याह इसाएल का राजा बना और उसने सामरिया में छह महीने राज्य किया।<sup>9</sup> उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, जैसा उसके पितरों ने किया था; उसने यारोबाम के पापों से नहीं फेरा, जिसने इसाएल को पाप में डाला।<sup>10</sup> तब याबेश का पुत्र शल्लूम उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचकर, उसे लोगों के सामने मार डाला, और उसे मारकर उसके स्थान पर राजा बना।<sup>11</sup> अब जकर्याह के बाकी कार्य, देखो, वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।<sup>12</sup> यह वही वचन है जो यहोवा ने यहू से कहा था, "तेरे पुत्र चौथी पीढ़ी तक इसाएल के सिंहासन पर बैठेंगे!" और ऐसा ही हुआ।

<sup>13</sup> याबेश का पुत्र शल्लूम यहूदा के राजा उज्जियाह के उन्तालीसवें वर्ष में राजा बना, और उसने सामरिया में एक महीने तक राज्य किया।<sup>14</sup> तब गादी का पुत्र मन्हेम तिर्जा से सामरिया आया, और उसने याबेश के पुत्र शल्लूम को सामरिया में मारा और उसे मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बना।<sup>15</sup> अब शल्लूम के बाकी कार्य और उसकी षड्यंत्र जो उसने की, देखो, वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।<sup>16</sup> तब मन्हेम ने तिर्जा से तिप्सह और उसके सभी सीमाओं को मारा, व्यक्तिकि उन्होंने उसके लिए दरवाजे नहीं खोले; इसलिए उसने उसे मारा, और उसके सभी गर्भवती महिलाओं को फाड़ डाला।

<sup>17</sup> अजर्याह राजा के यहूदा के उन्तालीसवें वर्ष में, गादी का पुत्र मन्हेम इसाएल का राजा बना, और उसने सामरिया में दस वर्ष राज्य किया।<sup>18</sup> उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था; उसने यारोबाम के पापों से नहीं फेरा, जिसने इसाएल को पाप में डाला।<sup>19</sup> असीरिया का राजा पुल देश के विरुद्ध आया, और मन्हेम ने पुल को एक हजार किकर चांदी दी, ताकि उसका हाथ उसके अधीन राज्य की पुष्टि करे।<sup>20</sup> तब मन्हेम ने इसाएल से धन लिया, सभी धनवान पुरुषों से, प्रत्येक व्यक्ति से पचास शकेल चांदी, असीरिया के राजा को देने के लिए। इसलिए असीरिया का राजा लौट गया और देश में नहीं ठहरा।<sup>21</sup> अब मन्हेम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?<sup>22</sup> और मन्हेम अपने पितरों के साथ सो गया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र पेकह्याह राजा बना।

<sup>23</sup> अजर्याह राजा के यहूदा के पचासवें वर्ष में, मन्हेम का पुत्र पेकह्याह इसाएल का राजा बना और उसने सामरिया में दो वर्ष राज्य किया।<sup>24</sup> उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था; उसने यारोबाम के पापों से नहीं फेरा, जिसने इसाएल को पाप में डाला।<sup>25</sup> तब रेमल्याह का पुत्र पेकह, उसका अधिकारी, उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचकर उसे सामरिया में, राजा के घर के गढ़ में मारा, अर्गोब और अर्यह के साथ, और गिलादियों के पचास पुरुषों के साथ। और उसने उसे मार डाला और उसके स्थान पर राजा बना।<sup>26</sup> अब पेकह्याह के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, देखो, वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

<sup>27</sup> अजर्याह राजा के यहूदा के बावनवें वर्ष में, रेमल्याह का पुत्र पेकह इसाएल का राजा बना और उसने सामरिया में बीस वर्ष राज्य किया।<sup>28</sup> उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था; उसने यारोबाम के पापों से नहीं फेरा, जिसने इसाएल को पाप में डाला।<sup>29</sup> इसाएल के राजा पेकह के दिनों में, असीरिया का राजा तिगलत-पिलेसर आया और उसने इयोन, अबेल-बेट-माका, यानोआह, केंद्रेस, हाजोर, गिलाद, और गलील, नप्ताली की सारी भूमि को कब्जा कर लिया; और उसने उनके निवासियों को असीरिया में निवासित कर दिया।<sup>30</sup> और होशेया, एला का पुत्र, रेमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध षड्यंत्र रचकर, उसे मार डाला और उसे मारकर उसके स्थान पर राजा बना, योताम के पुत्र उज्जियाह के बीसवें वर्ष में।<sup>31</sup> अब पेकह के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, देखो, वे इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

## 2 राजा

<sup>32</sup> रेमल्याह के पुत्र पेकह के इसाएल के राजा के दूसरे वर्ष में, उज्जियाह का पुत्र योताम यहूदा का राजा बना।

<sup>33</sup> वह पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष राज्य किया; और उसकी माता का नाम येरूशा था, जो सादोक की पुत्री थी। <sup>34</sup> उसने वही किया जो यहोवा की वृष्टि में ठीक था; उसने वही किया जैसा उसके पिता उज्जियाह ने किया था। <sup>35</sup>

केवल ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए; लोग अब भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे। उसने यहोवा के घर का ऊपरी फाटक बनाया। <sup>36</sup> अब योताम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>37</sup> उन दिनों में यहोवा ने अराम के राजा रेजिन और रेमल्याह के पुत्र पेकह को यहूदा के विरुद्ध भेजा। <sup>38</sup> और योताम अपने पितरों के साथ सो गया, और उसे उसके पितरों के साथ उसके पिता दाऊद के नगर में दफनाया गया; और उसके स्थान पर उसका पुत्र आहाज राजा बना।

**16** रेमल्याह के पुत्र पेकह के सत्रहवें वर्ष में, यहूदा के राजा योथाम का पुत्र आहाज राजा बना। <sup>2</sup> आहाज बीस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया। उसने अपने परमेश्वर यहोवा की वृष्टि में वह नहीं किया जो सही था, जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था। <sup>3</sup> परन्तु उसने इसाएल के राजाओं के मार्ग पर चला, और उसने अपने पुत्र को आग में से गुजराया, उन जातियों के धृणित कर्मों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इसाएल के पुत्रों के सामने से निकाल दिया था। <sup>4</sup> उसने ऊँचे स्थानों पर, पहाड़ियों पर, और हर हरे पेड़ के नीचे बलिदान चढ़ाए और धूप जलाया।

<sup>5</sup> तब अराम के राजा रेजिन और इसाएल के राजा रेमल्याह के पुत्र पेकह यरूशलेम पर युद्ध करने आए, और उन्होंने आहाज को धेर लिया, परन्तु उसे पराजित नहीं कर सके। <sup>6</sup> उस समय अराम के राजा रेजिन ने अराम के लिए एलात को पुनः प्राप्त किया, और यहूदियों को पूरी तरह से एलात से निकाल दिया; और अरामी लोग एलात में आकर बस गए और आज तक वहीं रहते हैं।

<sup>7</sup> इसलिए आहाज ने अश्शूर के राजा तिग्लत पिलेसर के पास दूत भेजे, कहकर, “मैं आपका सेवक और आपका पूर्व हूँ मेरे पास आओ और मुझे अराम के राजा के हाथ से बचाओ, और इसाएल के राजा के हाथ से भी, जो मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं!” <sup>8</sup> और आहाज ने वह चाँदी

और सोना लिया जो यहोवा के घर में पाया गया था और राजा के घर के खजानों में था, और उसे अश्शूर के राजा को उपहार के रूप में भेजा। <sup>9</sup> इसलिए अश्शूर के राजा ने उसकी बात सुनी; और अश्शूर का राजा दमिश्क के खिलाफ गया और उसे कब्जे में ले लिया, और उसके लोगों को निर्वासन में कीर ले गया, और रेजिन को मार डाला।

<sup>10</sup> अब राजा आहाज दमिश्क गया तिग्लत पिलेसर अश्शूर के राजा से मिलने, और उसने वह वेदी देखी जो दमिश्क में थी। और राजा आहाज ने याजक उरियाह को वेदी का नमूना और उसकी आकृति भेजी, उसकी सारी कारीगरी के अनुसार। <sup>11</sup> इसलिए याजक उरियाह ने वेदी बनाई, राजा आहाज ने जो कुछ दमिश्क से भेजा था, उसके अनुसार, याजक उरियाह ने उसे राजा के दमिश्क से आने से पहले बना दिया। <sup>12</sup> जब राजा दमिश्क से आया, तो राजा ने वेदी देखी; और राजा वेदी के पास गया और उस पर चढ़ा, <sup>13</sup> और उसने अपनी होमबलि और अपनी अन्नबलि चढ़ाई, और अपनी पेयबलि उंडेली और अपनी मेलबलियों का खून वेदी पर छिड़का। <sup>14</sup> और कांस्य की वेदी, जो यहोवा के सामने थी, उसे घर के सामने से, अपनी वेदी और यहोवा के घर के बीच से ले जाकर, अपनी वेदी के उत्तर की ओर रख दिया। <sup>15</sup> तब राजा आहाज ने याजक उरियाह को आज्ञा दी, कहकर, “महान वेदी पर सुबह की होमबलि और शाम की अन्नबलि चढ़ाओ, और राजा की होमबलि और उसकी अन्नबलि, सभी देश के लोगों की होमबलि, और उनकी अन्नबलि और उनकी पेयबलि; और उस पर सभी होमबलियों का खून और सभी बलिदानों का खून छिड़को। परन्तु कांस्य की वेदी मेरे लिए पूछताछ करने के लिए होगी।” <sup>16</sup> इसलिए याजक उरियाह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा राजा आहाज ने आज्ञा दी थी।

<sup>17</sup> तब राजा आहाज ने स्टैंडेस की सीमाओं को काट दिया, और उनसे धोने के बेसिन को हटा दिया; उसने समुद्र को भी कांस्य के बैलों से उतार दिया जो उसके नीचे थे, और उसे पत्थर के फर्श पर रख दिया। <sup>18</sup> और उसने सब्ल के लिए बने हुए ढके हुए मंडप को हटा दिया, जो उन्होंने घर में बनाया था, और राजा के लिए बाहरी प्रवेश को, यहोवा के घर से, अश्शूर के राजा के कारण।

<sup>19</sup> अब आहाज के बाकी कार्य, जो उसने किए, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं? <sup>20</sup> इसलिए आहाज अपने पितरों के साथ सो गया और अपने पितरों के साथ दाऊद के नगर में दफनाया

## 2 राजा

गया, और उसका पुत्र हिजकियाह उसके स्थान पर राजा बना।

**17** यहूदा के राजा आहाज के बारहवें वर्ष में, एला के पुत्र होशेया ने सामरिया में इसाएल पर राज्य किया, और वह नौ वर्ष तक राज्य करता रहा।<sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, हालांकि वह उससे पहले के इसाएल के राजा औं के समान नहीं था।<sup>3</sup> असीरिया का राजा शत्वनेसर उसके विरुद्ध आया, और होशेया उसका सेवक बन गया और उसे कर देने लगा।<sup>4</sup> परन्तु असीरिया के राजा ने होशेया में षड्यंत्र पाया, क्योंकि उसने मिस के राजा सो के पास दूत भेजे थे और असीरिया के राजा को कर नहीं दिया था, जैसा वह हर वर्ष करता था। इसलिए असीरिया के राजा ने उसे बंदी बना लिया और उसे कारागार में डाल दिया।<sup>5</sup> तब असीरिया के राजा ने सारे देश पर आक्रमण किया और सामरिया पर चढ़ाई की और उसे तीन वर्ष तक धेरे रखा।<sup>6</sup> होशेया के नौवें वर्ष में, असीरिया के राजा ने सामरिया को जीत लिया और इसाएल के लोगों को असीरिया में निवासित कर दिया, और उन्हें हालाह और हाबोर नदी के किनारे गोजान में और मादी के नगरों में बसाया।

<sup>7</sup> अब यह इसलिए हुआ क्योंकि इसाएल के पुत्रों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था, जिसने उन्हें मिस देश से, मिस के राजा फिरैन के हाथ से निकाल लाया था, और उन्होंने अन्य देवताओं का भय माना था।<sup>8</sup> और उन जातियों की रीति पर चले जिन्हें यहोवा ने इसाएल के पुत्रों के समाने से निकाल दिया था, और इसाएल के राजा औं की रीति पर चले जो उन्होंने चलाई थी।<sup>9</sup> और इसाएल के पुत्रों ने गुप्त रूप से वह कार्य किए जो उनके परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध ठीक नहीं थे। इसके अलावा, उन्होंने अपने सभी नगरों में ऊचे स्थान बनाए, प्रहरी के टावर से लेकर गढ़वाले नगर तक।<sup>10</sup> उन्होंने हर ऊचे पहाड़ पर और हर ऊचे पेड़ के ऊचे स्मारक पस्तर और अशरिम खड़े किए,<sup>11</sup> और वहां उन्होंने सभी ऊचे स्थानों पर धूप जलाया, जैसे उन जातियों ने किया जिन्हें यहोवा ने उनके सामने से हटा दिया था; और उन्होंने बुरे काम किए, यहोवा को क्रोधित किया।<sup>12</sup> उन्होंने मूर्तियों की सेवा की, जिनके विषय में यहोवा ने उनसे कहा था, "तुम यह काम नहीं करोगे!"<sup>13</sup> फिर भी यहोवा ने इसाएल और यहूदा को अपने सभी नबियों और हर दृष्टि के माध्यम से चेतावनी दी, कहा, "अपनी बुरी राहों से फिरो और मेरे आदेशों, मेरी विधियों का पालन करो उन सभी कानूनों के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पितरों को दिए थे, और जो मैंने तुम्हारे पास अपने

सेवकों नबियों के माध्यम से भेजे।"<sup>14</sup> हालांकि, उन्होंने नहीं सुना, बल्कि अपनी गर्दनें अकड़ी जैसे उनके पितरों ने किया, जिन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया।<sup>15</sup> उन्होंने उसकी विधियों और उसकी वाचा को ठुकरा दिया जो उसने उनके पितरों के साथ की थी, और उसकी चेतावनियों को जिनसे उसने उन्हें चेताया था। और उन्होंने मूर्तियों का अनुसरण किया और खाली हो गए, और उन जातियों का अनुसरण किया जो उनके चारों ओर थीं, जिनके विषय में यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि जैसा तो करते हैं वैसा न करें।<sup>16</sup> उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं को छोड़ दिया और अपने लिए धातु की बनी मूर्तियाँ—दो बछड़े—बनाए, और एक अशोरा बनाया, और सभी स्वर्णगी ज्योतियों की पूजा की और बाल की सेवा की।<sup>17</sup> फिर उन्होंने अपने पुत्रों और पुत्रियों को आग में से गुजारा, ज्योतिष किया और शकुन देखे, और अपने को यहोवा की दृष्टि में बुराई करने के लिए समर्पित कर दिया, उसे क्रोधित किया।<sup>18</sup> इसलिए यहोवा इसाएल से बहुत क्रोधित हुआ और उन्हें अपनी दृष्टि से हटा दिया; केवल यहूदा का गोत्र अकेला बचा।<sup>19</sup> यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन नहीं किया, बल्कि उन्होंने उन रीति-रिवाजों का अनुसरण किया जो इसाएल ने चलाई थी।<sup>20</sup> इसलिए यहोवा ने इसाएल के सभी वंशजों को अस्वीकार कर दिया और उन्हें पीड़ा दी, और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया, जब तक कि उसने उन्हें अपनी दृष्टि से बाहर नहीं कर दिया।<sup>21</sup> जब उसने इसाएल को दाऊद के घर से अलग कर दिया, तो उन्होंने नेबात के पुत्र यारोबाम को राजा बनाया। तब यारोबाम ने इसाएल को यहोवा का अनुसरण करने से दूर कर दिया और उन्हें एक बड़ा पाप करने के लिए प्रेरित किया।<sup>22</sup> और इसाएल के पुत्र यारोबाम के सभी पापों में चले जो उसने किए थे; वे उनसे नहीं हटे,<sup>23</sup> जब तक कि यहोवा ने इसाएल को अपनी दृष्टि से हटा नहीं दिया, जैसा कि उसने अपने सभी सेवकों नबियों के माध्यम से कहा था। इसलिए इसाएल को उनके अपने देश से असीरिया में निवासित कर दिया गया और आज तक वहीं हैं।

<sup>24</sup> फिर असीरिया के राजा ने बाबुल, कूथ, अब्वा, हमात, और सफरवाइम से लोगों को लाकर सामरिया के नगरों में इसाएल के पुत्रों के स्थान पर बसाया। इसलिए उन्होंने सामरिया का अधिकार कर लिया और उसके नगरों में बस गए।<sup>25</sup> और जब वे वहां बसने लगे, तो उन्होंने यहोवा का भय नहीं माना; इसलिए यहोवा ने उनके बीच सिंह भेजे जिन्होंने उनमें से कुछ को मार डाला।<sup>26</sup> इसलिए उन्होंने असीरिया के राजा से कहा, "वे जातियाँ जिन्हें आपने निवासित कर सामरिया के नगरों में बसाया

## 2 राजा

है उस देश के देवता की रीति नहीं जानते; इसलिए उसने उनके बीच सिंह भेजे हैं, और देखो, वे उन्हें मार रहे हैं, क्योंकि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते।<sup>27</sup> तब असीरिया के राजा ने आज्ञा दी, ‘उनमें से एक याजक को ले जाओ जिसे तुमने वहां से निवासित किया था, और उसे वहां जाकर बसने दो, और उसे उन्हें उस देश के देवता की रीति सिखाने दो।’<sup>28</sup> इसलिए उन याजकों में से एक जो सामरिया से निवासित किया गया था बेटपल में जाकर बस गया, और उन्हें सिखाया कि उन्हें यहोवा का भय कैसे मानना चाहिए।

<sup>29</sup> परन्तु हर जाति ने फिर भी अपने अपने देवता बनाए और उन्हें ऊंचे स्थानों के घरों में रखा जो सामरिया के लोगों ने बनाए थे, हर जाति ने अपने नगरों में जहां वे रह रहे थे।<sup>30</sup> बाबुल के लोगों ने सुकोत-बेनोत बनाए, कूर्ध के लोगों ने नर्तल बनाए, हमारत के लोगों ने अशिमा बनाए,<sup>31</sup> और अवियों ने निबहज और तर्तक बनाए, और सफरवियों ने अपने बच्चों को आग में जलाया अद्रम्मेलक और अन्मेलेक के लिए, जो सफरवाइम के देवता थे।<sup>32</sup> उन्होंने यहोवा का भी भय माना, और अपने में से ऊंचे स्थानों के याजक नियुक्त किए, जो उनके लिए ऊंचे स्थानों के घरों में कार्य करते थे।<sup>33</sup> उन्होंने यहोवा का भय माना, फिर भी अपने अपने देवताओं की सेवा की उन जातियों की रीति के अनुसार जिनके बीच से उन्हें निर्वासित किया गया था।<sup>34</sup> आज तक वे पहले की रीति के अनुसार कार्य करते हैं: वे यहोवा का भय नहीं मानते, न ही उसके विधियों, उसके नियमों, कानून, या उस आज्ञा का पालन करते हैं जो यहोवा ने याकूब के पुत्रों को दी थी, जिन्हें उसने इसाएल नाम दिया था;<sup>35</sup> जिनके साथ यहोवा ने एक वाचा की ओर उन्हें आज्ञा दी, कहा, “तुम अन्य देवताओं का भय नहीं मानोगे, न उनके आगे झुकोगे, न उनकी सेवा करोगे, न उनके लिए बलिदान करोगे।”<sup>36</sup> परन्तु यहोवा, जिसने तुरुहे मिस्र देश से बड़ी शक्ति और बड़े हुए हाथ से निकाला, उसी का तुम भय मानोगे, और उसी के आगे झुकोगे, और उसी के लिए बलिदान करोगे।<sup>37</sup> और वे विधियाँ, नियम, कानून, और आज्ञा जो उसने तुम्हारे लिए लिखी हैं, उनका पालन करने में सदैव सावधान रहोगे, और अन्य देवताओं का भय नहीं मानोगे।<sup>38</sup> और वह वाचा जो मैंने तुम्हारे साथ की है, उसे नहीं भूलोगे, और न ही अन्य देवताओं का भय मानोगे।<sup>39</sup> परन्तु अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानोगे; और वह तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं के हाथ से बचाएगा।”<sup>40</sup> हालांकि, उन्होंने नहीं सुना, बल्कि अपनी पहले की रीति के अनुसार कार्य करते रहे।<sup>41</sup> इसलिए जब ये जातियाँ यहोवा का भय मानती थीं, वे अपने मूर्तियों की भी सेवा करती थीं; उनके

बच्चे भी और उनके पोते भी, जैसा उनके पितरों ने किया, वैसे ही वे आज तक करते हैं।

**18** अब यह हुआ कि इसाएल के राजा एला के पुत्र होशे के तीसरे वर्ष में, यहूदा के राजा आहाज के पुत्र हिजकियाह राजा बना।<sup>2</sup> वह पचीस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम अबी था, जो जकर्याह की पुत्री थी।<sup>3</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था।<sup>4</sup> उसने ऊंचे स्थानों को हटा दिया, स्मारक पत्तरों को तोड़ दिया, अशेरा को काट डाला, और उस पीतल के सर्प को भी चूर-चूर कर दिया जिसे मूसा ने बनाया था, क्योंकि उन दिनों तक इसाएली उसे धूप जाता थे; और उसे नहुष्टान कहा जाता था।<sup>5</sup> उसने इसाएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया; इसलिए उसके बाद यहूदा के सभी राजाओं में से कोई भी उसके समान नहीं था, और न ही उसके बाहर।<sup>6</sup> क्योंकि वह यहोवा के साथ लगा रहा; वह उसकी पीछे चलने से नहीं हटा, बल्कि उसने उसकी आज्ञाओं का पालन किया, जो यहोवा ने मूसा को दी थीं।<sup>7</sup> और यहोवा उसके साथ था: जहाँ भी वह गया, वह सफल हुआ। और उसने अश्शूर के राजा के विरुद्ध विद्रोह किया और उसकी सेवा नहीं की।<sup>8</sup> उसने पतिशियों को गाजा और उसके क्षेत्र तक हराया, प्रहरी के मीनार से लेकर गढ़वाले नगर तक।

**9** अब राजा हिजकियाह के चौथे वर्ष में, जो इसाएल के राजा एला के पुत्र होशे का सातवाँ वर्ष था, अश्शूर के राजा शल्मनेसर सामरिया के विरुद्ध चढ़ आया और उसे धेर लिया।<sup>10</sup> तीन वर्ष के अंत में उन्होंने उसे जीत लिया; हिजकियाह के छठे वर्ष में, जो इसाएल के राजा होशे का नौवाँ वर्ष था, सामरिया लिया गया।<sup>11</sup> तब अश्शूर के राजा ने इसाएल को अश्शूर में निवासित कर दिया, और उन्हें हालह और हाबोर, गोजान की नदी के किनारे, और मादी के नारों में बसाया,<sup>12</sup> क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज का पालन नहीं किया, बल्कि उसके वाचा का उल्लंघन किया—जो कुछ यहोवा के सेवक मूसा ने आज्ञा दी थी; उन्होंने न तो सुना और न ही पालन किया।

**13** अब राजा हिजकियाह के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सेनहैरब यहूदा के सभी गढ़वाले नगरों के विरुद्ध चढ़ आया और उन्हें जीत लिया।<sup>14</sup> तब यहूदा के राजा हिजकियाह ने लाकीश में अश्शूर के राजा को संदेश भेजा, “मैंने पाप किया है; मुझसे दूर हो जाओ। जो कुछ तुम मुझ पर लगा आओगे, मैं साहूँगा!” इसलिए अश्शूर के

## 2 राजा

राजा ने यहूदा के राजा हिजकियाह पर तीन सौ किकर चाँदी और तीस किकर सोने का जुर्मना लगाया।<sup>15</sup> हिजकियाह ने उसे वह सारी चाँदी दे दी जो यहोवा के भवन में पाई गई, और राजा के भवन के खजानों में थी।<sup>16</sup> उस समय हिजकियाह ने यहोवा के मंदिर के दरवाजों से सोना काट दिया, और उन चौखटों से जो यहूदा के राजा हिजकियाह ने मढ़ाई थीं, और उसे अश्शूर के राजा को दे दिया।

<sup>17</sup> तब अश्शूर के राजा ने तर्तन, रब-सारीस, और रबशाके को लाकीश से एक बड़ी सेना के साथ राजा हिजकियाह के पास यरूशलेम भेजा। सो वे चढ़ आए और यरूशलेम पहुँचे। और वे ऊपर के जलाशय की नहर के पास खड़े हो गए, जो धोबी के मैदान के मार्ग पर है।<sup>18</sup> तब उन्होंने राजा को पुकारा, और हिल्कियाह का पुत्र एल्याकिम, जो घर का अधिकारी था, और शज्ञा लेखक, और आसाप का पुत्र योआह, अभिलेखक, उनके पास आए।<sup>19</sup> तब रबशाके ने उनसे कहा, “अब हिजकियाह से कहो, यह महान राजा, अश्शूर का राजा, यह कहता है: यह आत्मविक्षास क्या है जो तुम्हारे पास है? <sup>20</sup> तुम कहते हो—पर वे केवल खोखले शब्द हैं—‘मेरे पास युद्ध के लिए योजना और शक्ति है’।” अब तुमने किस पर भरोसा किया है, कि तुमने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है?<sup>21</sup> अब देखो, तुम इस टूटे हुए सरकंडे के डंडे, मिस पर भरोसा करते हो, जिस पर यदि कोई आदमी छुके, तो वह उसके हाथ में घुसकर उसे छेड़ देगा। फिरैन, मिस का राजा, उन सभी के लिए ऐसा ही है जो उस पर भरोसा करते हैं।<sup>22</sup> पर यदि तुम मुझसे कहते हो, “हमने अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया है,” क्या यह वही नहीं है जिसके लंबे स्थानों और वेदियों को हिजकियाह ने हटा दिया है, और यहूदा और यरूशलेम से कहा है, “तुम यरूशलेम में इस वेदी के समने पूजा करोगे?”<sup>23</sup> अब फिर, मेरे स्थानी अश्शूर के राजा के साथ एक शर्त लगा ओ, और मैं तुम्हें दो हजार धोड़े ढूँगा, यदि तुम अपनी ओर से उन पर सवार चढ़ा सको।<sup>24</sup> फिर तुम मेरे स्वामी के सेवकों में से सबसे छोटे अधिकारी को भी कैसे हरा सकते हो, और रथों और घुड़सवारों के लिए मिस पर भरोसा करते हो? <sup>25</sup> क्या अब मैं इस स्थान को नष्ट करने के लिए बिना यहोवा की स्त्रीकृति के आया हूँ? यहोवा ने मुझसे कहा, “इस देश पर चढ़ाई कर, और इसे नष्ट कर दे!””

<sup>26</sup> तब हिल्कियाह के पुत्र एल्याकिम, और शज्ञा और योआह ने रबशाके से कहा, “अब अपने सेवकों से अरामी में बात करो, क्योंकि हम उसे समझते हैं; और यहूदी भाषा में हमसे बात न करो, जो दीवार पर बैठे

लोगों के सुनने में है।”<sup>27</sup> पर रबशाके ने उनसे कहा, “क्या मेरे स्वामी ने मुझे केवल तुम्हारे स्वामी और तुम्हारे पास ये शब्द कहने के लिए भेजा है, और उन लोगों के पास नहीं जो दीवार पर बैठे हैं, ताकि वे तुम्हारे साथ अपनी ही मल खाएँ और अपनी ही मूर्ति पिएँ?”<sup>28</sup> तब रबशाके खड़ा हुआ और यहूदी भाषा में लंबे स्वर से पुकारा, और कहा, “महान राजा, अश्शूर के राजा का वचन सुनो! <sup>29</sup> यह राजा कहता है: हिजकियाह तुम्हें धोखा न दे, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचाने में सक्षम नहीं होगा। <sup>30</sup> न ही हिजकियाह तुम्हें यहोवा पर भरोसा करने दे, यह कहते हुए, “यहोवा निश्चित रूप से हमें बचाएगा, और यह नगर अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं सौंपा जाएगा।”<sup>31</sup> हिजकियाह की बात न सुनो; क्योंकि यह अश्शूर के राजा का वचन है: “मुझसे शांति करो और मेरे पास आओ, और तुम में से प्रत्येक अपनी बेल से खाएगा और अपने अंजीर के पेड़ से, और अपने कुएँ के जल से पिएगा,<sup>32</sup> जब तक मैं आकर तुम्हें तुम्हारे देश के समान एक देश में न ले जाऊँ, अनाज और नई दार्खमधु का देश, रोटी और दाख की बारियों का देश, जैतून के तेल और मधु का देश, ताकि तुम जीवित रहो और मरो नहीं।” पर हिजकियाह की बात न सुनो, क्योंकि वह तुम्हें यह कहकर गुमराह करता है, “यहोवा हमें बचाएगा।”<sup>33</sup> क्या राष्ट्रों के किसी भी देवता ने वास्तव में अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाया है?<sup>34</sup> हमात और अर्पद के देवता कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचाया है?<sup>35</sup> कौन से सभी देशों के देवताओं ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया है, कि यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा?”

<sup>36</sup> पर लोग चुप रहे और उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया, क्योंकि राजा की आज्ञा थी, “उसे उत्तर मत दो।”<sup>37</sup> तब हिल्कियाह का पुत्र एल्याकिम, जो घर का अधिकारी था, और शज्ञा लेखक, और आसाप का पुत्र योआह अभिलेखक, अपने वस्त फाड़कर हिजकियाह के पास आए, और उन्होंने उसे रबशाके के शब्द सुनाए।

**19** जब राजा हिजकियाह ने यह सुना, तो उसने अपने वस्त फाड़े, टाट से अपने को ढाँका, और यहोवा के भवन में प्रवेश किया।<sup>2</sup> तब उसने एलियाकिम को, जो घर का अधिकारी था, और शब्ना लेखक को, और याजकों के पुरनियों को, टाट से ढूँके हुए, आपोज के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह के पास भेजा।<sup>3</sup> उन्होंने उससे कहा, “हिजकियाह यह कहता है: ‘यह दिन संकट, ताड़ना, और अपमान का दिन है; क्योंकि बचे जन्म के समय पर आ गए हैं, और उन्हें जन्म देने की शक्ति नहीं

## 2 राजा

है।<sup>4</sup> शायद तुम्हारा परमेश्वर यहोवा रबशाके के सब वचनों को सुनेगा, जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर को अपमानित करने के लिए भेजा है, और उन वचनों को ताड़ना देगा जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने सुने हैं। इसलिए, उस बचे हुए के लिए प्रार्थना करो जो बचा है।”<sup>5</sup> तो राजा हिजकियाह के सेवक यशायाह के पास आए।<sup>6</sup> और यशायाह ने उनसे कहा, “अपने स्वामी से यह कहो: यहोवा यह कहता है: उन वचनों के कारण मत डरो, जिन्हें तुमने सुना है, जिनसे अश्शूर के राजा के सेवकों ने मेरी निंदा की है।” देखो, मैं उसमें एक आमा डालने जा रहा हूँ, ताकि वह एक अफवाह सुने और अपने देश लौट जाए। और मैं उसे उसके अपने देश में तलवार से गिरा दूँगा।”

<sup>8</sup> तब रबशाके लौटकर अश्�शूर के राजा को लिङ्गा से लड़ते हुए पाया, क्योंकि उसने सुना था कि राजा लाकीश छोड़ चुका है।<sup>9</sup> जब उसने कूश के राजा तिर्हिका के बारे में सुना, “देखो, वह तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिए निकला है,” तो उसने फिर से हिजकियाह के पास दूत भेजे, यह कहते हुए,<sup>10</sup> “यह यहूदा के राजा हिजकियाह से कहो: ‘तुम्हारा परमेश्वर, जिस पर तुम भरोसा करते हो, तुम्हें थोखा न दे, यह कहते हुए, “येरूशलेम को अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं दिया जाएगा।”<sup>11</sup> देखो, तुमने सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशों के साथ क्या किया है, उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दिया। तो क्या तुम बच जाओगे?<sup>12</sup> क्या उन राष्ट्रों के देवताओं ने, जिन्हें मेरे पिताओं ने नष्ट कर दिया, उन्हें बचाया—गोजान, हरान, रेजेफ, और तिलासर में रहने वाले एदेन के पुत्रों को?<sup>13</sup> हमात का राजा, अर्पाद का राजा, सेफरवैम के नार का राजा, और हेना और इव्वा के राजा कहाँ हैं?”

<sup>14</sup> तब हिजकियाह ने दूतों के हाथ से पत्र लिया और उसे पढ़ा, और वह यहोवा के भवन में गया और उसे यहोवा के सामने प्रार्थना की और कहा, “हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, करुबों के ऊपर विराजमान, तू ही परमेश्वर है, तू अकेला, पृथ्वी के सब राज्यों का। तू ना आकाश और पृथ्वी बनाई।<sup>15</sup> हे यहोवा, अपना कान झुका और सुन: हे यहोवा, अपनी आँखें खोल और देख, और सेनाचेरिब के वचनों को सुन, जो उसने जीवित परमेश्वर को अपमानित करने के लिए भेजे हैं।<sup>16</sup> सचमुच, हे यहोवा, अश्शूर के राजाओं ने राष्ट्रों और उनकी भूमि को उजाड़ दिया है,<sup>17</sup> और उनके देवताओं को आग में डाल दिया है, क्योंकि वे देवता नहीं थे बल्कि केवल मनुष्यों के हाथों का काम, लकड़ी और पत्थर थे। इसलिए उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया।<sup>18</sup> पर अब, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, कृपया हमें

उसके हाथ से बचा, ताकि पृथ्वी के सब राज्य जान लें कि तू अकेला, यहोवा, परमेश्वर है।”

<sup>20</sup> तब आमोज के पुत्र यशायाह ने हिजकियाह के पास यह संदेश भेजा, “यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का वचन है: क्योंकि तुमने अश्शूर के राजा सेनाचेरिब के बारे में मुझसे प्रार्थना की है, मैंने तुम्हारी सुनी है।<sup>21</sup> यह वह वचन है जो यहोवा ने उसके विरुद्ध कहा है:

‘उसने तुझे तुच्छ जाना और तेरा उपहास किया है, सियोन की कुँवारी बेटी उसने तेरे पीछे सिर हिलाया है, येरूशलेम की बेटी<sup>22</sup> तूने किसका उपहास किया और किसकी निंदा की। और किसके विरुद्ध तूने अपनी आजाज उठाई, और घमंड से अपनी आँखें उठाई।<sup>23</sup> इसाएल के पवित्र के विरुद्ध<sup>24</sup> तूने अपने दूतों के द्वारा यहोवा का उपहास किया, और कहा, “मैं अपने बहुत से रथों के साथ पहाड़ों की ऊँचाइयों पर आया, तेबानों के सुदूर भागों तक, और मैंने उसके ऊँचे देवदारों और उसके चुने हुए जुनिपरों को काट डाला। और मैंने उसके सबसे द्वार के विश्वाम स्थान में प्रवेश किया, उसके सबसे घने जंगल में।<sup>25</sup> मैंने कुँए खोदे और विदेशी जल पिया, और अपने पैरों के तलवों से मिस की सभी नदियों को सुखा दिया।”<sup>26</sup> क्या तूने नहीं सुना? बहुत पहले मैंने यह किया, प्राचीन काल से मैंने इसे योजना बनाई। अब मैंने इसे पूरा किया है, कि तू गढ़गाल नारों को खंडहरों के द्वारा मैं बदल दे।<sup>27</sup> इसलिए उनके निवासी शक्तिहीन थे, वे चकनाचूर और लजित हो गए। वे मैदान की बनस्पति और हरी धास के समान थे, छतों पर की धास के समान जो उगने से पहले ही झुलस जाती है।<sup>28</sup> पर मैं तेरे बैठने को जानता हूँ, तेरे बाहर जाने और तेरे अंदर आने को, और मेरे विरुद्ध तेरे क्रोध को।<sup>29</sup> क्योंकि तूने मेरे विरुद्ध क्रोध किया, और क्योंकि तेरा अंकार मेरे कानों तक पहुँच गया है, मैं तेरी नाक में अपनी हुक डालूँगा और तेरे होठों में अपनी लगाम डालूँगा, और तुझे उसी मार्फ से लौटा दूँगा जिससे तू आया था।

<sup>29</sup> तब यह तुम्हारे लिए चिन्ह होगा:

तुम इस वर्ष वही खा ओगे जो अपने आप उगता है, द्वासरे वर्ष वही जो उसी से उत्पन्न होता है, और तीसरे वर्ष बोआ, काटो, दाख की बारियाँ लगाओ, और उनके फल खाओ।<sup>30</sup> और यहूदा के घराने के जो बचे हुए हैं वे फिर से जड़ पकड़ोगे और ऊपर फल ढेंगे।<sup>31</sup> क्योंकि येरूशलेम से एक अवशेष निकलेगा, और

## 2 राजा

सियोन पर्वत से बचे हुए। यहोवा की जलन इसे पूरा करेगी।

<sup>32</sup> इसलिए यहोवा अश्शूर के राजा के बारे में यह कहता है:

‘वह इस नगर में नहीं आएगा, न वहाँ एक तीर चलाएगा; न उसके सामने एक ढाल लेकर आएगा, न उसके विरुद्ध एक धेराबदी का देर बनाएगा।<sup>33</sup> जिस मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट जाएगा, और वह इस नगर में नहीं आएगा।’ यहोवा की यह वाणी है।<sup>34</sup> क्योंकि मैं इस नगर की रक्षा करूँगा और इसे बचाऊँगा, अपने ही कारण, और अपने दास दाऊद के कारण।’

<sup>35</sup> तब उसी रात यह हुआ कि यहोवा का दूत निकला और अश्शूरियों के शिविर में 185,000 को मारा; और जब लोग सुबह उठे, तो देखो, वे सब मरे हुए शरीर थे।

<sup>36</sup> तो अश्शूर का राजा सेनाचेरिब चला गया और अपने घर लौट आया, और नीनवे में रहने लगा।<sup>37</sup> और ऐसा हुआ कि जब वह अपने देवत निसोक के घर में पूजा कर रहा था, तो अद्रम्मेलक और शेरेजर ने उसे तलावर से मार डाला, और वे अरारात देश को भाग गए। और उसका पुत्र एसाह्दोन उसके स्थान पर राजा बना।

**20** उन दिनों हिजकियाह घाटक रूप से बीमार हो गया। और आपोज के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता उसके पास आए और उससे कहा, “यहोवा यह कहता है: ‘अपने घर का प्रबंध कर लो, क्योंकि तुम मरने वाले हो’ और जीवित नहीं रहोगे।”<sup>1</sup> <sup>2</sup> तब उसने दीवार की ओर मुँह किया और यहोवा से प्रार्थना की, कहा, <sup>3</sup> “कृपया, हे यहोवा, बस याद करो कि मैंने तेरे सम्पन्ने पूरे मन और सच्चाई से चलने की कोशिश की है, और तेरी दृष्टि में जो अच्छा है वह किया है।” और हिजकियाह कड़वे अँसू बहाने लगा।

<sup>4</sup> अब यशायाह अभी मध्य अंगन से बाहर भी नहीं गए थे, कि यहोवा का वचन उनके पास आया, कहा,<sup>5</sup> “लौटकर मेरे लोगों के नेता हिजकियाह से कहो, यह तुम्हारे पिता दाऊद के परमेश्वर यहोवा का वचन है:

मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है, मैंने तुम्हारे अँसू देखे हैं देखो, मैं तुम्हें वंगा करने जा रहा हूँ। तीसरे दिन तुम यहोवा के भवन में जाओगे।<sup>6</sup> और मैं तुम्हारी आगु में पंद्रह वर्ष और जोड़ द्वाँगा, और मैं पुष्ट हूँ और इस नगर को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा, और मैं

अपने ही कारण से इस नगर की रक्षा करूँगा, और अपने सेवक दाऊद के कारण से।”<sup>7</sup>

<sup>7</sup> तब यशायाह ने कहा, “अंजीरों का एक केक लाओ।” और उन्होंने उसे लाकर फोड़े पर रखा, और वह स्वस्थ हो गया।<sup>8</sup> अब हिजकियाह ने यशायाह से कहा, “क्या विन्ह होगा कि यहोवा मुझे वंगा करेगा, और मैं तीसरे दिन यहोवा के भवन में जाऊँगा?”<sup>9</sup> यशायाह ने कहा, “यह तुम्हारे लिए यहोवा का चिन्ह होगा, कि यहोवा वह करेगा जो उसने कहा है:

क्या छाया दस कदम आगे बढ़ेगी, या वह दस कदम पीछे जाएगी?”

<sup>10</sup> सो हिजकियाह ने उत्तर दिया, “छाया का दस कदम पीछे जाना आसान है, नहीं, बल्कि उसे दस कदम पीछे ले जाओ।”<sup>11</sup> तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा से प्रार्थना की, और उसने अहाज की सीढ़ियों पर छाया को दस कदम पीछे कर दिया, जिससे वह सीढ़ियों पर उत्तर गई थी।

<sup>12</sup> उस समय बेरोदक-बलदान, बालदान का पुत्र, बाबुल का राजा, हिजकियाह के पास पत्र और एक उपहार भेजा, क्योंकि उसने सुना था कि हिजकियाह बीमार था।

<sup>13</sup> और हिजकियाह ने उन्हें सुना, और उन्हें अपने सारे खजाने का घर दिखाया— चँदी, सोना, बाम का तेल, सुगंधित तेल, उसका शस्त्रागार, और जो कुछ उसके खजानों में पाया गया। उसके घर में, और उसके सारे राज्य में ऐसा कुछ नहीं था, जो हिजकियाह ने उन्हें न दिखाया हो।<sup>14</sup> तब यशायाह भविष्यद्वक्ता राजा हिजकियाह के पास आए और उससे कहा, “इन लोगों ने क्या कहा, और वे कहाँ से तुम्हारे पास आए?” और हिजकियाह ने कहा, “वे एक दूर देश से, बाबुल से आए हैं।”<sup>15</sup> और उसने कहा, “उन्होंने तुम्हारे घर में क्या देखा?” सो हिजकियाह ने उत्तर दिया, “उन्होंने मेरे घर में सब कुछ देखा है, मेरे खजानों में ऐसा कुछ नहीं है जो मैंने उन्हें न दिखाया हो।”<sup>16</sup> तब यशायाह ने हिजकियाह से कहा, “यहोवा का वचन सुनो:

<sup>17</sup> ‘देखो, वे दिन आ रहे हैं जब तुम्हारे घर में सब कुछ, और जो कुछ तुम्हारे पिताओं ने आज तक संचित किया है, बाबुल ले जाया जाएगा, कुछ भी नहीं बचेगा। यहोवा कहता है।’<sup>18</sup> और तुम्हारे कुछ पुत्र जो तुमसे उत्पन्न होंगे, जिन्हें तुम जन्म देगे, ते जाए जाएँगे, और वे बाबुल के राजा के महल में अधिकारी बनेंगे।”

## 2 राजा

<sup>19</sup> तब हिजकियाह ने यशायाह से कहा, "यहोवा का वचन जो तुमने कहा है वह अच्छा है।" क्योंकि उसने सोचा, "क्या यह अच्छा नहीं है कि मेरे दिनों में शांति और सत्य होगा?"

<sup>20</sup> अब हिजकियाह के बाकी कार्य और उसकी सारी शक्ति, और कैसे उसने तालाब और नहर बनाई और नगर में पानी लाया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>21</sup> सो हिजकियाह अपने पितरों के संग सो गया, और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राजा बना।

**21** मनश्शे बाहर वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम हेप्सिबा था। <sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, उन जातियों के खिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इसाएल के बुत्रों के सामने से निकाल दिया था। <sup>3</sup> क्योंकि उसने ऊँचे स्थानों को फिर से बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकियाह ने नष्ट कर दिया था; और उसने बाल के लिए वेदियाँ बनाई और एक अशोरा खड़ा किया, जैसा कि इसाएल के राजा अहाब ने किया था, और वह आकाश की सारी सेना के सामने झूका और उनकी सेवा की। <sup>4</sup> उसने यहोवा के घर में वेदियाँ भी बनाई, जिसके विषय में यहोवा ने कहा था, "मैं यरूशलेम में अपना नाम रखूँगा।" <sup>5</sup> क्योंकि उसने यहोवा के घर के दो आँगनों में आकाश की सारी सेना के लिए वेदियाँ बनाई। <sup>6</sup> और उसने अपने पुत्र को आग में से गुजारा, जादू-टोना किया और भविष्यवाणी की, और माध्यमों और आकाओं से संपर्क किया। उसने यहोवा की दृष्टि में बहुत बुराई की, जिससे उसे क्रोधित किया। <sup>7</sup> फिर उसने उस अशोरा की खुदी हुई मूर्ति को जो उसने बनाई थी, उस घर में रखा जिसके विषय में यहोवा ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से कहा था, "इस घर में और यरूशलेम में, जिसे मैंने इसाएल की सभी जातियों में से चुना है, मैं अपना नाम सदा के लिए रखूँगा।" <sup>8</sup> और मैं इसाएल के पाँवों को फिर से उस भूमि से नहीं भटकाऊँगा जो मैंने उनके पितरों को दी थी, यदि वे केवल सावधान रहें कि वे सब कुछ करें जो मैंने उन्हें आज्ञा दी है, उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मेरे सेवक मूसा ने उन्हें आज्ञा दी थी। <sup>9</sup> पर उन्होंने नहीं सुना, और मनश्शे ने उन्हें और भी बुराई करने के लिए बहकाया उन जातियों से अधिक जिनको यहोवा ने इसाएल के पुत्रों के सामने से नष्ट कर दिया था।

<sup>10</sup> अब यहोवा ने अपने सेवकों, भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से कहा, <sup>11</sup> "क्योंकि यहूदा के राजा मनश्शे ने ये

घिनौने काम किए हैं, जो उससे पहले के एमोरियों से भी अधिक बुरे थे, और उसने यहूदा को अपने मूर्तियों के साथ पाप में डाल दिया है, <sup>12</sup> इसलिए यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है:

'देखो, मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति लाने जा रहा हूँ कि जो कोई इसके बारे में सुनेगा, उसके दोनों कान झनझनाने लगेंगे।' <sup>13</sup> और मैं यरूशलेम पर सामरिया की मापने की रेखा खींचूँगा, और अहाब के घर की तोत की डोरी, और मैं यरूशलेम को ऐसे पोछूँगा जैसे कोई थाली पोछता है, उसे पोछकर उल्टा कर देता है। <sup>14</sup> और मैं अपनी विरासत के बचे हुए को छोड़ दूँगा और उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूँगा, और वे अपने सभी शत्रुओं के लिए लूट और शिकार बन जाएँगे। <sup>15</sup> क्योंकि उन्होंने मेरी दृष्टि में बुराई की है, और मुझे क्रोधित करते रहे हैं जिस दिन से उनके पितर मिस्र से आए थे, यहाँ तक कि आज तक।'

<sup>16</sup> इसके अलावा, मनश्शे ने बहुत निर्दोष रक्त बहाया जब तक कि उसने यरूशलेम को एक छोर से दूसरे छोर तक भर नहीं दिया, उसके पाप के अलावा जिसमें उसने यहूदा को डाला, यहोवा की दृष्टि में बुराई करने में।

<sup>17</sup> अब मनश्शे के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, और उसका पाप जो उसने किया, क्या वे यहूदा के राजा आँओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>18</sup> और मनश्शे अपने पितरों के साथ लेट गया और उसे उसके अपने घर के बारीचे में, उज्जा के बारीचे में दफनाया गया, और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>19</sup> आमोन बाईस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम योतबा की हारूज़ की बेटी मशुल्लेमत था। <sup>20</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, जैसा कि उसके पिता मनश्शे ने किया था। <sup>21</sup> क्योंकि उसने अपने पिता के सभी मार्गों में चला, और उन मूर्तियों की सेवा की जिनकी उसके पिता ने सेवा की, और उनके सामने झूका। <sup>22</sup> इसलिए उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया, और यहोवा के मार्ग में नहीं चला। <sup>23</sup> और आमोन के सेवकों ने उसके खिलाफ बड़बड़ रखा और उसके अपने घर में राजा को मार डाला। <sup>24</sup> तब देश के लोगों ने उन सभी को मार डाला जिन्होंने राजा आमोन के खिलाफ बड़बड़ रखा था,

## 2 राजा

और देश के लोगों ने उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

<sup>25</sup> अब आमोन के बाकी कार्य, जो उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>26</sup> और उसे उज्जा के बीचे में उसकी कब्र में दफनाया गया, और उसका पुत्र योशियाह उसके स्थान पर राजा बना।

**22** योशियाह आठ वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलैम में इकतीस वर्ष राज्य किया। और उसकी माता का नाम यदिदा था, जो बोस्कत के अदाया की बेटी थी। <sup>2</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, और अपने पिता दाऊद के मार्ग पर चला, और न तो दाहिनी ओर मुड़ा और न बाई ओर।

<sup>3</sup> अब राजा योशियाह के अठारहवें वर्ष में, राजा ने शापान को, जो अजल्याह का पुत्र और मशुल्लाम का पोता था, यहोवा के भवन में भेजा, यह कहते हुए, <sup>4</sup> “महायाजक हिल्कियाह के पास जाओ, ताकि वह यहोवा के भवन में लाई गई धनराशि की गिनती करे, जो द्वारपालों ने लोगों से संग्रह की है।” <sup>5</sup> और उसे उन काम करने वालों को सौंप दें जो यहोवा के भवन की देखरेख करते हैं, और उसे उन काम करने वालों को दें जो यहोवा के भवन में हैं ताकि भवन की क्षति की मरम्मत कर सकें, <sup>6</sup> कारिगरों, निर्माताओं और राजमिस्त्रियों को, और भवन की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशी हुए पत्थर खरीदने के लिए।” हालांकि, उनके साथ दी गई धनराशि का कोई विसाब नहीं किया जाएगा, क्योंकि वे विश्वासघोष्य हैं।”

<sup>8</sup> तब महायाजक हिल्कियाह ने शापान लेखक से कहा, “मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है।” और हिल्कियाह ने पुस्तक शापान को दी, जिसने उसे पढ़ा। <sup>9</sup> और शापान लेखक राजा के पास आया और राजा को सूचना दी, और कहा, “आपके सेवकों ने उस धनराशि को खाली कर दिया है जो भवन में मिली थी, और उसे उन काम करने वालों को सौंप दिया है जो यहोवा के भवन की देखरेख करते हैं।” <sup>10</sup> अतिरिक्त, शापान लेखक ने राजा को सूचित किया, यह कहते हुए, “हिल्कियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है।” और शापान ने उसे राजा के सामने पढ़ा। <sup>11</sup> अब जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के शब्द सुने, तो उसने अपने वस्त्र फाड़ दिए। <sup>12</sup> तब राजा ने हिल्कियाह याजक को आज्ञा दी, शापान के पुत्र अहिकाम, मिकायाह के पुत्र अकबोर, शापान लेखक, और असायाह राजा के सेवक से कहा,

<sup>13</sup> “जाओ, मेरे लिए, और लोगों के लिए, और सारे यहूदा के लिए यहोवा से पूछो इस पुस्तक के शब्दों के विषय में जो मिली है— क्योंकि यहोवा का क्रोध हम पर भड़क रहा है, क्योंकि हमारे पूर्वजों ने इस पुस्तक के शब्दों को नहीं सुना, ताकि हमारे विषय में लिखी गई हर बात के अनुसार करें।”

<sup>14</sup> इसलिए हिल्कियाह याजक, अहिकाम, अकबोर, शापान, और असायाह हुल्दा भविष्यवक्ता के पास गए, जो दिक्षा के पुत्र शल्लूम की पली थी, हारहस का पुत्र, जो वस्त्रों का रखवाला था (अब वह यरूशलैम के दूसरे भाग में रही थी), और उन्होंने उससे बात की। <sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, “यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का वचन है: “उस व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है,

<sup>16</sup> “यह यहोवा का वचन है: देखो, मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर विपत्ति लाने वाला हूँ, जन सभी शब्दों के अनुसार जो यहूदा के राजा ने पढ़े हैं।” <sup>17</sup> क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया है और अन्य देवताओं के लिए धूप जलाया है, ताकि अपने हाथों के सभी कार्यों से मुझे क्रोधित करे, इसलिए मेरा क्रोध इस स्थान पर भड़क रहा है, और यह शांत नहीं होगा।”

<sup>18</sup> परंतु यहूदा के राजा से जिसने तुम्हें यहोवा से पूछने के लिए भेजा, यह है जो तुम उससे कहोगे:

“यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का वचन है: उन शब्दों के विषय में जो तुमने सुने हैं— <sup>19</sup> क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल था और तुमने यहोवा के सामने नग्रता दिखाई जब तुमने सुना कि मैंने इस स्थान और इसके निवासियों के विरुद्ध क्या कहा, कि वे भय और शाप का विषय बनेंगे, और तुमने अपने वक्त फाड़े और मेरे सामने रोए, मैंने वास्तव में तुम्हारी सुनी है,” यहोवा की यह वाणी है। <sup>20</sup> “इसलिए देखो, मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के पास इकट्ठा करूँगा, और तुम शांति से अपनी कब्र में इकट्ठे किए जाओगे, और तुम्हारी अँखें उस सभी विपत्ति को नहीं देखेंगी जो मैं इस स्थान पर लाने वाला हूँ।” <sup>21</sup> इसलिए उन्होंने राजा के पास यह शब्द वापस लाया।

**23** तब राजा ने दूत भेजा, और उन्होंने यहूदा और यरूशलैम के सब पुरानियों को उसके पास इकट्ठा किया। <sup>2</sup> और राजा यहोवा के भवन में गया, और यहूदा के सब लोग और यरूशलैम के सब निवासी उसके साथ गए, साथ ही याजक, भविष्यद्वक्ता, और सब लोग, छोटे

## 2 राजा

से लेकर बड़े तक; और उसने उनके सुनने में उस वाचा की पुस्तक के सब वचन पढ़े जो यहोवा के भवन में पाई गई थी।<sup>3</sup> तब राजा ने खंभे के पास खड़े होकर यहोवा के सामने वाचा बांधी, कि वह यहोवा के पीछे चलेगा, और उसके आजाओं, उसके साक्षों, और उसके विधियों को अपने सारे हदय और सारी आमा से मानेगा, ताकि इस वाचा के वचनों को पूरा करे जो इस पुस्तक में लिखे हैं। और सब लोगों ने वाचा की पुष्टि की।

\* तब राजा ने महापाजक हिलिक्याह को आज्ञा दी, और द्वारेरे क्रम के याजकों को, और द्वारपालों को, कि वे यहोवा के मंदिर से बाल के लिए बनाए गए सब पात्रों को बाहर निकालें, अशेरा को लिए, और आकाश की सारी सेना के लिए; और उसने उन्हें यरूशलेम के बाहर किंद्रोन की घाटी में जलाया, और उनकी राख को बैतल ले गया।<sup>5</sup> उसने उन मूर्तिपूजक याजकों को भी हटा दिया जिन्हें यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों में और यरूशलेम के चारों ओर ऊँचे स्थानों पर धूप जलाने के लिए नियुक्त किया था, और उन लोगों की भी जो बाल, सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्रों और आकाश की सारी सेना की धूप जलाते थे।<sup>6</sup> उसने अशेरा को यहोवा के भवन से बाहर लाकर यरूशलेम के बाहर किंद्रोन की घाटी में जलाया, और उसे चूर्ण किया, और उसकी राख को साधारण लोगों की कब्रों पर फेंक दिया।<sup>7</sup> उसने यहोवा के भवन में जो पुरुष वेश्याओं के घर थे, उन्हें भी गिरा दिया, जहाँ स्त्रियाँ अशेरा के लिए वस्त्र बुनती थीं।<sup>8</sup> तब उसने यहूदा के नगरों से सब याजकों को लाया, और उन ऊँचे स्थानों को अपवित्र किया जहाँ याजकों ने धूप जलाया था, गिरा से लेकर बेशर्बा तक। और उसने उन ऊँचे स्थानों को गिरा दिया जो नगर के द्वार पर यहाशू के द्वार के प्रवेश द्वार पर थे, जो नगर के द्वार पर बाईं और थे।<sup>9</sup> फिर भी, ऊँचे स्थानों के याजक यहोवा के वेदी पर यरूशलेम में नहीं गए, परंतु वे अपने भाइयों के बीच अखमीरी रोटी खाते थे।<sup>10</sup> उसने तोफेत को भी अपवित्र किया, जो हिन्द्रोम के पुत्र की घाटी में है, ताकि कोई भी अपने पुत्र या पुत्री को मोलेक के लिए आग में न ढाए।<sup>11</sup> और उसने उन घोड़ों को हटा दिया जो यहूदा के राजाओं ने सूर्य को दिए थे, यहोवा के भवन के प्रवेश द्वार पर, नाथन-मतिल के कक्ष के पास, जो परिशिष्ट में था; और उसने सूर्य के रथों को आग में जलाया।<sup>12</sup> वे वेदियाँ जो छत पर थीं, आहाज के ऊपरी कक्ष में, जो यहूदा के राजाओं ने बनाई थीं, और वे वेदियाँ जो मनश्शे ने यहोवा के भवन के दो आँगनों में बनाई थीं, राजा ने गिरा दीं; और उसने उन्हें वहाँ तोड़ा और उनकी धूल किंद्रोन की घाटी में फेंक दी।<sup>13</sup> वे ऊँचे स्थान जो यरूशलेम के सामने थे, जो विनाश के पर्वत के दाहिनी ओर थे, जिन्हें

इसाएल के राजा सुलैमान ने सीदोनियों की घृणित अश्तोरेत के लिए बनाया था, मोआब की घृणित केमोश के लिए, और अम्मोनियों की घृणित मिल्कोम के लिए, राजा ने अपवित्र कर दिया।<sup>14</sup> उसने स्मारक पत्तरों को भी तोड़ा, अशेरीम को काट डाला, और उनकी जगहों को मानव हड्डियों से भर दिया।

<sup>15</sup> इसके अलावा, वह वेदी जो बैतल में थी और ऊँचा स्थान जो नेबात के पुत्र यारोबाम ने बनाया था, जिसने इसाएल को पाप में डाला था, वहाँ तक कि उस वेदी और ऊँचे स्थान को उसने गिरा दिया। तब उसने उसके पत्तरों को तोड़ा, उन्हें चूर्ण किया, और अशेरा को जलाया।<sup>16</sup> अब जब योशियाह ने मुड़ा, तो उसने देखा कि पहाड़ पर कब्जे थीं, और उसने लोगों को भेजा और कब्रों से हड्डियों को लिया और उन्हें वेदी पर जलाया, और उसे अपवित्र किया, यहोवा के वचन के अनुसार जो परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा था, जिसने ये बातें कही थीं।

<sup>17</sup> तब उसने कहा, "यह स्मारक क्या है जो मैं देखता हूँ?" और नगर के लोगों ने उसे बताया, "यह परमेश्वर के व्यक्ति की कब्र है जो यहूदा से आया था, और उसने ये बातें कही थीं जो आपने बैतल की वेदी के विरुद्ध की हैं।"<sup>18</sup> और उसने कहा, "इसे अकेला छोड़ दो, कोई उसकी हड्डियों को न छेड़।"<sup>19</sup> इसलिए उन्होंने उसकी हड्डियों को नहीं छेड़ा, सामरिया से आए भविष्यद्वक्ता की सब मंदिरों को हटा दिया जो सामरिया के नगरों में थे, जो इसाएल के राजाओं ने यहोवा को क्रोधित करने के लिए बनाए थे; और उसने उनके साथ वही किया जो उसने बैतल में किया था।<sup>20</sup> और उसने वेदियों पर ऊँचे स्थानों के सब याजकों को जो वहाँ थे, मार डाला, और उन पर मानव हड्डियाँ जलाईं; तब वह यरूशलेम लौट आया।

<sup>21</sup> तब राजा ने सब लोगों को आज्ञा दी, कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह का पर्व मनाओ जैसा कि इस वाचा की पुस्तक में लिखा है।"<sup>22</sup> क्योंकि ऐसा फसह पर्व नहीं मनाया गया था जब से इसाएल के न्यायाधीशों के दिन थे, और न ही इसाएल के राजाओं और यहूदा के राजाओं के दिनों में।<sup>23</sup> परंतु राजा योशियाह के अठारहवें वर्ष में, यह फसह पर्व यरूशलेम में यहोवा के लिए मनाया गया।

<sup>24</sup> इसके अलावा, योशियाह ने माध्यमों, आमाओं से संपर्क करने वालों, घर के देवताओं, मूर्तियों, और यहूदा और यरूशलेम में देखी गई सब घृणाओं को हटा दिया, ताकि वह व्यवस्था के वचनों की पुष्टि कर सके जो

## 2 राजा

यहोवा के भवन में पाई गई पुस्तक में लिखे थे।<sup>25</sup> उसके पहले कोई राजा ऐसा नहीं था जो अपने सारे हृदय, सारी आत्मा, और सारी शक्ति से यहोवा की ओर मुड़ा, मूसा की सारी व्यवस्था के अनुसार; और उसके बाद कोई भी ऐसा नहीं उठा।

<sup>26</sup> किर भी, यहोवा ने अपनी महान क्रीध से मुंह नहीं मोड़ा जिससे उसकी जलन यहूदा के विरुद्ध भड़क उठी थी, क्योंकि मनश्चे ने उसे जितना क्रोधित किया था।<sup>27</sup> और यहोवा ने कहा, “मैं यहूदा को भी अपनी दृष्टि से हठा ढाँगा, जैसा मैंने इसाएल को हठा दिया है। और मैं यरूशलेम को, इस नगर को जिसे मैंने चुना है, और उस मंदिर को जिसे मैंने कहा था, ‘मेरा नाम वहाँ होगा।’”

<sup>28</sup> अब योशियाह के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>29</sup> उसके दिनों में मिस्र का राजा फिरौन नको अश्शूर के राजा से मिलने के लिए फरात नदी की ओर गया। और राजा योशियाह उससे मिलने गया, परंतु जब फिरौन नको ने उसे देखा तो उसने उसे मेंगिदो में मार डाला।<sup>30</sup> उसके सेवक उसके शरीर को मेंगिदो से रथ में ले गए, और उसे यरूशलेम लाए, और उसे उसकी अपनी कब्र में दफनाया। तब देश के लोगों ने योशियाह के पुत्र यहोआहाज को लिया, उसे अभिषेक किया, और उसे उसके पिता के स्थान पर राजा बनाया।

<sup>31</sup> यहोआहाज जब राजा बना तब वह तोईस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में तीन महीने राज्य किया। और उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लित्रा के विधायिका की पुरी थी।<sup>32</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसा उसके पिताओं ने किया था।<sup>33</sup> और फिरौन नको ने उसे हमात के देश में रिबला में बंदी बना लिया, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न करें; और उसने देश पर सौ किकर चाँदी और एक किकर सोने का ढंड लगाया।<sup>34</sup> तब फिरौन नको ने योशियाह के पुत्र एलियाकिम को उसके पिता योशियाह के स्थान पर राजा बनाया, और उसका नाम यहोयाकिम रखा। परंतु उसने यहोआहाज को लिया और उसे मिस्र ले गया, और वह वहाँ मर गया।<sup>35</sup> इसलिए यहोयाकिम ने फिरौन को चाँदी और सोना दिया, परंतु उसने देश पर कर लगाया ताकि फिरौन के आदेश पर धन दे सके। उसने देश के लोगों से चाँदी और सोना लिया, प्रत्येक के मूल्यांकन के अनुसार, ताकि उसे फिरौन नको को दे सके।

<sup>36</sup> यहोयाकिम जब राजा बना तब वह पचीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में यारह वर्ष राज्य किया।

और उसकी माता का नाम जेबिदा था, जो रूमह के पेदायाह की पुरी थी।<sup>37</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसा उसके पिताओं ने किया था।

**24** उसके दिनों में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर आया, और यहोयाकीम तीन वर्ष तक उसका दास बना रहा; परंतु फिर उसने विद्रोह किया और उसके विरुद्ध हो गया।<sup>2</sup> और यहोवा ने उसके विरुद्ध कसदियों के दल, अरामियों के दल भेजे। इस प्रकार उसने यहूदा के विरुद्ध उहें भेजा ताकि उसे नष्ट कर दे, जैसा कि यहोवा ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था।<sup>3</sup> वास्तव में, यह यहूदा पर यहोवा की आज्ञा से आया, उहें अपनी दृष्टि से हटाने के लिए क्योंकि मनश्चे के पापों के कारण, जैसा कि उसने सब किया था, <sup>4</sup> और निर्दोष रक्त के लिए भी जो उसने बहाया, क्योंकि उसने यरूशलेम को निर्दोष रक्त से भर दिया था; और यहोवा क्षमा करने के लिए तैयार नहीं था।

<sup>5</sup> अब यहोयाकीम के बाकी कार्य और जो कुछ उसने किया, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? <sup>6</sup> इसलिए यहोयाकीम अपने पितरों के साथ सो गया, और उसका पुत्र यहोयाकीम उसके स्थान पर राजा बना।<sup>7</sup> मिस्र का राजा फिर अपनी भूमि से बाहर नहीं निकला, क्योंकि बाबुल के राजा ने मिस्र के राजा के सब कुछ ले लिया था मिस्र की धारा से लेकर फरात नदी तक।

<sup>8</sup> यहोयाकीम जब राजा बना तब वह अठारह वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में तीन महीने राज्य किया। और उसकी माता का नाम नहुस्ता था, जो यरूशलेम के एलनाथान की बेटी थी।<sup>9</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसा कि उसके पिता ने किया था।

<sup>10</sup> उस समय बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के सेवक यरूशलेम पर चढ़ाई करने आए, और नगर घेर लिया गया।<sup>11</sup> और बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर नगर में आया, जब उसके सेवक उसे घेर रहे थे।<sup>12</sup> तब यहूदा का राजा यहोयाकीम बाबुल के राजा के पास गया, वह, उसकी माता, उसके सेवक, उसके सेनापति, और उसके अधिकारी। इसलिए बाबुल के राजा ने उसे उसके राज्य के आठवें वर्ष में बंदी बना लिया।<sup>13</sup> और वह वहाँ से यहोवा के भवन के सब खजाने, और राजा के घर के खजाने ले गया, और उसने सोने के सब पात्रों को काट डाला जो इसाएल के राजा सुलैमान ने यहोवा के मंदिर में बनाए थे, जैसा कि यहोवा ने कहा था।<sup>14</sup> तब उसने

## 2 राजा

यरूशलेम के सब लोगों को निर्वासन में ले गया; सब सेनापति और सब वीर योद्धा, दस हजार बंदी, और सब कारीगर और लोहार। केवल देश के सबसे गरीब लोग ही बच गए।<sup>15</sup> इसलिए उसने यहोयाकीन को बाबुल में निर्वासन में ले गया; राजा की माता, राजा की परियाँ, उसके अधिकारी, और देश के प्रमुख लोग, उन्हें यरूशलेम से बाबुल में निर्वासन में ले गया।<sup>16</sup> और सब वीर पुरुष, सात हजार, और कारीगर और लोहार, एक हजार, सब युद्ध के लिए मजबूत और योग्य, इन्हें बाबुल के राजा ने बाबुल में निर्वासन में ले गया।

<sup>17</sup> तब बाबुल के राजा ने उसके चाचा मत्तन्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया, और उसका नाम बदलकर सिदकियाह रखा।<sup>18</sup> सिदकियाह जब राजा बना तब वह इक्कीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में ग्यारह वर्ष राज्य किया। और उसकी माता का नाम हामूतलथा, जो लिङ्गा के यिर्माय ही बेटी थी।<sup>19</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसा कि यहोयाकीम ने किया था।<sup>20</sup> क्योंकि यह यहोवा के क्रोध के कारण था कि यह यरूशलेम और यहूदा में हुआ, जब तक कि उसने उन्हें अपनी उपस्थिति से बाहर नहीं कर दिया। और सिदकियाह ने बाबुल के राजा के विरुद्ध विद्रोह किया।

**25** उसके राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम के विरुद्ध आया, और उसके चारों ओर डेरा डाला, और उसके चारों ओर एक घेरा दीवार बनाई।<sup>21</sup> इस प्रकार, नगर राजा सिदकियाह के ग्यारहवें वर्ष तक घेरे में रहा।<sup>22</sup> वैयंग महीने के नौवें दिन, नगर में अकाल बहुत गंभीर हो गया, ताकि देश के लोगों के लिए भोजन नहीं था।<sup>23</sup> तब नगर में सेंध लगाई गई, और रात में सभी योद्धा राजा के बांधी के पास की दो दीवारों के बीच के फाटक के रास्ते से भाग गए, हाताकि कसदियों ने नगर को चारों ओर से घेर रखा था। और वे अराबों के रास्ते से चले गए।<sup>24</sup> हालांकि, कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया, और उसे यरीहों के मैदानों में पकड़ लिया, और उसकी सारी सेना उससे बिखर गई।<sup>25</sup> तब उन्होंने राजा को पकड़ लिया और उसे रिल्ला में बाबुल के राजा के पास ले गए, जहां उसका न्याय किया गया।<sup>26</sup> और उन्होंने सिदकियाह के पुत्रों को उसकी अंखों के सामने मार डाला, फिर सिदकियाह की अंखें फोड़ दीं और उसे कांस्य की बेंडियों में बांध दिया, और उसे बाबुल ले गए।

<sup>8</sup> पांचवें महीने के सातवें दिन, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के उत्तीर्णवे वर्ष में, नबूजरदान, अंगरक्षकों का कप्तान और बाबुल के राजा का सेवक, यरूशलेम आया।<sup>27</sup> और उसने प्रभु के घर, राजा के घर, और यरूशलेम के सभी घरों को जला दिया; यहां तक कि हर बड़े घर को उसने आग से जला दिया।<sup>28</sup> इसलिए अंगरक्षकों के कप्तान के साथ जो कसदियों की सेना थी उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर की दीवारों को गिरा दिया।<sup>29</sup> तब अंगरक्षकों का कप्तान नबूजरदान नगर में बचे हुए लोगों को निर्वासन में ले गया, जो बाबुल के राजा के पास भाग गए थे, और बाकी की जनसंख्या को भी।<sup>30</sup> लेकिन अंगरक्षकों के कप्तान ने देश के कुछ सबसे गरीब लोगों को दाख की बारी के रखवाले और किसान बनने के लिए छोड़ दिया।

<sup>13</sup> वे कांस्य के खंभे जो प्रभु के घर में थे, साथ ही खड़े और कांस्य समुद्र, कसदियों ने टुकड़ों में तोड़ दिया, जो कांस्य को बाबुल ले गए।<sup>31</sup> उन्होंने बर्टन, फावड़, बुझाने वाले, चम्मच, और मंदिर सेवा में उपयोग किए जाने वाले सभी कांस्य के बर्टन भी ले लिए।<sup>32</sup> अंगरक्षकों के कप्तान ने अभिप्राप्त और बैसिन भी ले लिए, जो भी उत्तम सोना और जो भी उत्तम चांदी थी।<sup>33</sup> दो खंभे, एक समुद्र, और खड़े जो सुलैमान ने प्रभु के घर के लिए बनाए थे—इन सभी बर्टनों का कांस्य वजन से परे था।

<sup>17</sup> एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी, और उस पर कांस्य की राजधानी थी; राजधानी की ऊंचाई तीन हाथ थी, उसके चारों ओर जाली का काम और अनार थे, सभी कांस्य के। और दूसरा खंभा भी इहीं की तरह था, जाली के काम के साथ।

<sup>18</sup> तब अंगरक्षकों के कप्तान ने सरायाह मुख्य याजक को लिया, और जेफन्याह दूसरे याजक को, और तीन द्वारायाओं को।<sup>34</sup> और नगर से उसने एक अधिकारी को लिया जो योद्धाओं का निरीक्षक था, राजा के पांच सलाहकार जो नगर में पाए गए थे, सेना के कप्तान के लेखक जो देश के लोगों को बुलाता था, और देश के साठ लोग जो नगर में पाए गए थे।<sup>35</sup> नबूजरदान, अंगरक्षकों का कप्तान, उन्हें रिल्ला में बाबुल के राजा के पास ले गया।<sup>36</sup> तब बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हमात के देश में रिल्ला में उन्हें मार डाला। इस प्रकार यहूदा को उसके देश से निर्वासन में ले जाया गया।

<sup>22</sup> जो लोग यहूदा के देश में बचे थे, जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने छोड़ दिया था, उसने उनके ऊपर अहिकाम के पुत्र गदल्याह को नियुक्त किया, जो शाफान का पुत्र था।<sup>37</sup> जब सभी सेनाओं के कप्तानों ने,

## 2 राजा

वे और उनके लोग, सुना कि बाबुल के राजा ने गदल्याह को राज्यपाल नियुक्त किया है, वे गदल्याह के पास मिस्पा में आए, अर्थात् नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह का पुत्र योहानान, तनहुमेथ का पुत्र सरायाह, जो नेतुफाती था, और माकाती का पुत्र याजान्याह, वे और उनके लोग।<sup>24</sup> तब गदल्याह ने उन्हें और उनके लोगों को शपथ दिलाइ और उनसे कहा, “कसदियों के सेवकों से मत डरो; देश में रहो और बाबुल के राजा की सेवा करो, और यह तुम्हरे लिए अच्छा होगा।”<sup>25</sup> लेकिन सातवें महीने में, नतन्याह का पुत्र इश्माएल, एलीशामा का पुत्र, राजसी परिवर से, दस लोगों के साथ आया और गदल्याह को मार डाला ताकि वह मर गया, उन यहूदियों और कसदियों के साथ जो मिस्पा में उसके साथ थे।<sup>26</sup> तब सभी लोग, छोटे से बड़े तक, और सेनाओं के कप्तान, उठे और मिस्स चले गए, क्योंकि वे कसदियों से डरते थे।

<sup>27</sup> यह यहूदा के राजा यहोयाकीन के निर्वासन के सैतीसवें वर्ष में हुआ, बारहवें महीने के सत्ताइसवें दिन, कि बाबुल के राजा एविल-मेरोदक, जिस वर्ष वह राजा बना, यहूदा के राजा यहोयाकीन को जेल से रिहा किया।<sup>28</sup> और उसने उससे दयालुता से बात की और उसके सिंहासन को बाबुल में उसके साथ रखने वाले राजाओं के सिंहासनों से ऊपर रखा।<sup>29</sup> इसलिए यहोयाकीन ने अपने जेल के कपड़े बदले, और अपने जीवन के सभी दिनों में राजा की उपस्थिति में नियमित रूप से भोजन किया।<sup>30</sup> और उसके भरण-पोषण के लिए, राजा द्वारा उसे नियमित भत्ता दिया गया, हर दिन के लिए एक हिस्सा, उसके जीवन भर।

# 1 इतिहास

**१** आदम, शेत, एनोश,<sup>२</sup> केनान, महललएल, यारेद,<sup>३</sup> हनोक, मत्सीलह, लेमेक,<sup>४</sup> नूह, और उनके पुत्र:

शेम, हाम, और याफेत।

५ याफेत के पुत्र थे:

गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तुबाल, मेशेक, और तीरास।

६ गोमेर के पुत्र थे:

अश्कनाज्ज, दिफात, और तोगस्मा।

७ यावान के पुत्र थे:

एलीशाह, तरशीश, कित्तीम, और रोडानीम।

८ हाम के पुत्र थे:

कूश, मिस्र, पूत, और कनान।

९ कूश के पुत्र थे:

सबा, हविला, सबता, रामा, और सब्लेका। और रामा के पुत्र थे: शेबा और ददान।<sup>१०</sup> कूश ने निम्रोद को जन्म दिया; वह पृथ्वी पर एक पराक्रमी व्यक्ति बनने लगा।

११ मिस्र ने इन लोगों को जन्म दिया:

लूद, अनाम, लहाब, नफूह,<sup>१२</sup> पत्रस, कसतूह (जिनसे पलिश्ती उत्पन्न हुए), और कप्टोर।

१३ कनान ने जन्म दिया

सिदोन, उसका पहिलौठा, और हैत,

<sup>१४</sup> और यबूसी, एमोरी, और गिराशी,<sup>१५</sup> और हिक्की, अर्की, और सिनी,<sup>१६</sup> और अर्वादी, सेमारी, और हमाती।

१७ शेम के पुत्र थे:

एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद, अराम, अराम के पुत्र थे ऊज़, हूल, गेतर, और मेशेक।

<sup>१८</sup> अर्पक्षद ने शेलह को जन्म दिया, और शेलह ने एबर को जन्म दिया। <sup>१९</sup> एबर के दो पुत्र हुए:

एक का नाम पेलेग था, क्योंकि उसके दिनों में पृथ्वी विभाजित हुई, और उसके भाई का नाम योक्तान था।

<sup>२०</sup> योक्तान ने जन्म दिया

अलगोदाद, शलेफ, हज़मवित, येरह,

<sup>२१</sup> हदोराम, ऊज़ल, दिकला,<sup>२२</sup> एबाल, अबीमाएल, शेबा, <sup>२३</sup> ओफीर, हविला, और योबाब। ये सब योक्तान के पुत्र थे।

<sup>२४</sup> शेम, अर्पक्षद, शेलह,<sup>२५</sup> एबर, पेलेग, रऊ, <sup>२६</sup> सरूग, नाहोर, तेरह,<sup>२७</sup> और अब्राम — अर्थात् अब्राहम।

<sup>२८</sup> अब्राहम के पुत्र थे इसहाक और इश्माएल।

<sup>२९</sup> ये उनकी पीढ़ियाँ हैं:

इश्माएल का पहिलौठा था नबायोत, फिर केदार, अदबेल, मिल्साम्।

<sup>३०</sup> मिश्मा, द्रामा, मस्सा, हदद, तेमा,<sup>३१</sup> येतूर, नफीश, और केदमा। ये इश्माएल के पुत्र थे।

<sup>३२</sup> अब्राहम की उपपती केतूरा के पुत्र, जिनसे उसने जन्म दिया:

जिम्रान, योक्षान, मिदान, मिद्यान, इशबाक, और शूह। योक्षान के पुत्र थे: शेबा और ददान।

<sup>३३</sup> मिद्यान के पुत्र थे:

एफा, एफेर, हनोक, अबीदा, और एलदाह। ये सब केतूरा के पुत्र थे।

<sup>३४</sup> अब्राहम ने इसहाक को जन्म दिया।

इसहाक के पुत्र थे: एसाव और इसाएल।

# 1 इतिहास

<sup>35</sup> एसाव के पुत्र थे:

एलीफ़ज़, रऊएल, येऊश, यालाम्, और कोरह/

<sup>36</sup> एलीफ़ज़ के पुत्र थे:

तेमान्, ओमार, जेफी, गताम्, केनाज़, तिम्मा, और अमालेक/

<sup>37</sup> रऊएल के पुत्र थे:

नाहत, ज़ेरह, शम्मा, और मिज्जा/

<sup>38</sup> सीर के पुत्र थे:

लोतान्, शोबाल, ज़िबैओन, अनाह, दिशोन्, एज़र, और दिशान/

<sup>39</sup> लोतान के पुत्र थे:

होरी और होमाम्, और तिम्मा लोतान की बहन थी।

<sup>40</sup> शोबाल के पुत्र थे:

अलियान्, मनहत, एबाल, शोफी, और ओनाम्, और ज़िबैओन के पुत्र थे: अयाह और अनाह।

<sup>41</sup> अनाह का पुत्र था:

दिशोन् और दिशोन के पुत्र थे: हमरान्, एशबान्, इथान्, और केरान।

<sup>42</sup> एज़र के पुत्र थे:

बिलहान्, ज़ावान्, और याकान। दिशान के पुत्र थे: ऊज़

और अरान।

<sup>43</sup> अब ये वे राजा हैं जो इसाएल के पुत्रों के ऊपर कोई राजा होने से पहले एदोम देश में राज्य करते थे: बेला, बेओर का पुत्र, और उसके नगर का नाम दिनहाबा था।

<sup>44</sup> जब बेला मरा, तो ज़ेरह का पुत्र योबाब बोसरा से उसके स्थान पर राजा हुआ। <sup>45</sup> जब योबाब मरा, तो हूशाम तेमानी देश से उसके स्थान पर राजा हुआ। <sup>46</sup> जब हूशाम मरा, तो बेदर का पुत्र हदद, जिसने मोआब के मैदान में मिद्यान को हराया, उसके स्थान पर राजा

हुआ; और उसके नगर का नाम अवीथ था। <sup>47</sup> जब हदद मरा, तो मसरेका का समला उसके स्थान पर राजा हुआ। <sup>48</sup> जब शाऊल मरा, तो अकबोर का पुत्र बाल-हानान उसके स्थान पर राजा हुआ। <sup>49</sup> जब बाल-हानान मरा, तो हदद उसके स्थान पर राजा हुआ; और उसके नगर का नाम पाई था, और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था, जो मातरेद की पुत्री, मेज़हाब की पुत्री थी।

<sup>51</sup> फिर हदद मरा। और एदोम के प्रमुख थे: प्रमुख तिम्मा, प्रमुख अलियाह, प्रमुख येतेथ, <sup>52</sup> प्रमुख ओहोलीबामा, प्रमुख एलाह, प्रमुख पिनोन, <sup>53</sup> प्रमुख केनाज़, प्रमुख तेमान, प्रमुख मिज्जार, <sup>54</sup> प्रमुख मगदीएल, प्रमुख ईराम। ये एदोम के प्रमुख थे।

**2** ये इसाएल के पुत्र थे:

रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, ज़बूलून, दान यूसुफ, बिन्यामीन, नप्ताली, गाद, और आशोर

<sup>2 . 3</sup> यहूदा के पुत्र थे:

एर, ओनान, और शेला। ये तीनों कनानी स्त्री बधशूआ से उसके लिए उत्पन्न हुए। एर, यहूदा का पाहिलौठा, यहोना की वृष्टि में दुष्ट था, इसलिए उसने उसे मार डाला।

<sup>4</sup> उसकी बहू तामार ने उसके लिए पेरेज और ज़ेरह को जन्म दिया।

यहूदा के कुल पाँच पुत्र थे।

<sup>5</sup> पेरेज के पुत्र थे:

हेसोन और हामूल।

<sup>6</sup> ज़ेरह के पुत्र थे:

ज़िम्मी, एथान, हेमान, काल्कोल, और दारा—कुल पाँच।

<sup>7</sup> कार्मी का पुत्र था:

अकार, जो इसाएल को संकट में डालने वाला था, जिसने प्रतिबंध का उल्लंघन किया।

# 1 इतिहास

<sup>८</sup> एथान का पुत्र था:

अजयाह्वा।

<sup>९</sup> अब हेसोन के पुत्र जो उसके लिए उत्पन्न हुए थे:

येरहमेएल, राम, और केलूबाई।

<sup>१०</sup> राम ने अमीन्दाब को जन्म दिया, और अमीन्दाब ने नहशोन को जन्म दिया,

यहदा के पुत्रों का नेता।

<sup>११</sup> नहशोन ने सलमा को जन्म दिया, और सलमा ने बोअज़ को जन्म दिया।

<sup>१२</sup> बोअज़ ने ओबेद को जन्म दिया, और ओबेद ने यिशै को जन्म दिया।

<sup>१३</sup> यिशै ने एलीआब को अपना पहिलौठा पुत्र बनाया,

फिर अबीनादाब को दूसरा, शम्मा को तीसरा,<sup>१४</sup> नन्थनेल को चौथा, रद्दाई को पाँचवाँ,<sup>१५</sup> औजेम को छठा, दाऊद को सातवाँ।

<sup>१६</sup> उनकी बहनें थीं:

सरूयाह और अबीगैल। और सरूयाह के तीन पुत्र थे अबशै, योआब, और असीएल।

<sup>१७</sup> अबीगैल ने अमासा को जन्म दिया,

और अमासा का विता यथेर इस्माएली था।

<sup>१८</sup> अब हेसोन के पुत्र केलूब ने अपनी पत्नी अजूबा और येरियोथ से संतान उत्पन्न की, और ये उसके पुत्र थे:

येरेह, शोबाब, और अदर्न।

<sup>१९</sup> जब अजूबा की मृत्यु हो गई, तो केलूब ने एप्राथ से विवाह किया,

और उसने उसे हुर को जन्म दिया।

<sup>२०</sup> हुर ने ऊरी को जन्म दिया, और ऊरी ने बेजलेल को जन्म दिया।

<sup>२१</sup> इसके बाद हेसोन ने माकीर की पुत्री से विवाह किया जो गिलाद का पिता था,

जब वह साठ वर्ष का था, और उसने उसे सेगूब को जन्म दिया।

<sup>२२</sup> सेगूब ने याईर को जन्म दिया, जिसके पास गिलाद देश में तैर्हस नगर थे।

<sup>२३</sup> परन्तु गेशूर और अराम ने उनसे याईर के नगरों को ले लिया, केनाथ और उसके गाँवों समेत, साठ बस्तियाँ। ये सब माकीर के वंशज थे, जो गिलाद का पिता था।

<sup>२४</sup> हेसोन की मृत्यु के बाद, कालेब-एप्राथ में, हेसोन की पत्नी अबीहैल ने उसे अशहूर को जन्म दिया,

जो तकोआ का पिता था।

<sup>२५</sup> अब येरहमेएल के पुत्र, जो हेसोन का पहिलौठा था, थे:

राम पहला, फिर बूनाह, ओरेन, ओजेम, और अहियाह।

<sup>२६</sup> येरहमेएल की एक और पत्नी थी, जिसका नाम अताराह था;

वह ओनाम की माता थी।

<sup>२७</sup> राम के पुत्र, जो येरहमेएल का पहिलौठा था, थे:

माअज, यामीन, और एकेर।

<sup>२८</sup> ओनाम के पुत्र थे:

शम्मा और यादा। और शम्मा के पुत्र थे: नादाब और अबीशूर।

<sup>२९</sup> अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था,

और उसने उसे अहबान और मोलिद को जन्म दिया।

<sup>३०</sup> नादाब के पुत्र थे:

# 1 इतिहास

सेलेद और अप्पाइम। सेलेद की कोई संतान नहीं थी।

<sup>45</sup> शम्मा का पुत्र था:

<sup>31</sup> अप्पाइम का पुत्र था:

ईश्वी। और ईश्वी का पुत्र था शेषान। और शेषान का पुत्र था अहलै।

<sup>32</sup> यादा के पुत्र, जो शम्मा का भाई था, थे:

जेथेर और योनातान। जेथेर की कोई संतान नहीं थी।

<sup>33</sup> योनातान के पुत्र थे:

पेलेथ और जाज्जा। ये येरहमेएल के वंशज थे।

<sup>34</sup> अब शेषान के कोई पुत्र नहीं थे, केवल पुत्रियाँ थीं। और शेषान का एक मिस्सी सेवक था जिसका नाम यर्हा था।

<sup>35</sup> शेषान ने अपनी पुत्री को यर्हा अपने सेवक को पत्नी के रूप में दिया,

और उसने उसे अत्तै को जन्म दिया।

<sup>36</sup> अत्तै ने नाथान को जन्म दिया, और नाथान ने ज़ाबाद को जन्म दिया, <sup>37</sup> ज़ाबाद ने एफलाल को जन्म दिया, और एफलाल ने ओबेद को जन्म दिया, <sup>38</sup> ओबेद ने यहू को जन्म दिया, और यहू ने अजर्याह को जन्म दिया, <sup>39</sup> अजर्याह ने हेलेज को जन्म दिया, और हेलेज ने एलेआसा को जन्म दिया, <sup>40</sup> एलेआसा ने सिस्मै को जन्म दिया, और सिस्मै ने शल्लूम को जन्म दिया, <sup>41</sup> शल्लूम ने येकय्याह को जन्म दिया, और येकय्याह ने एलीशामा को जन्म दिया।

<sup>42</sup> अब कालेब के पुत्र, जो येरहमेएल का भाई था, थे:

मेशा उसका पहला पुत्र, जो जिफ का पिता था, और मरेशा के पुत्र जो हेब्रोन के पिता थे।

<sup>43</sup> हेब्रोन के पुत्र थे:

कोरह, तप्पूआ, रेकम, और शेमा।

<sup>44</sup> शेमा ने रहम को जन्म दिया, जो योरकेम का पिता था; और रेकम ने शम्मा को जन्म दिया।

माओन, और माओन बैथज्यूर का पिता था।

<sup>46</sup> एफा, कालेब की उपपत्नी, ने हारान, मोज्जा, और गाजेज़ को जन्म दिया, और हारान ने गाजेज़ को जन्म दिया।

<sup>47</sup> यहदाइ के पुत्र थे:

रेगम, योथम, गेशान, पेलेट, एफा, और शाफ़।

<sup>48</sup> माकाह, कालेब की उपपत्नी, ने शेबेर और तिरहानाह को जन्म दिया।

<sup>49</sup> उसने शाफ़ को भी जन्म दिया जो मध्यनाह का पिता था, शेवा जो मखबेनाह और गिबेआ का पिता था; और कालेब की पुत्री का नाम अवशा था।

<sup>50</sup> ये कालेब के पुत्र थे: हुर के पुत्र, जो एप्राथा का पहला पुत्र था:

शोबाल जो किरीयत-यारीम का पिता था, <sup>51</sup> सलमा जो बेतलेहम का पिता था, और हरेफ जो बैथ-गादेर का पिता था।

<sup>52</sup> शोबाल जो किरीयत-यारीम का पिता था, के पुत्र थे:

हारोएह, मनहथियों का आधा, <sup>53</sup> और किरीयत-यारीम के परिवार इत्री, पुरी, शुमाती, और मिश्राई। इनसे ज़ोरथी और एस्ताओली उत्पन्न हुए।

<sup>54</sup> सलमा के पुत्र थे:

बेतलेहम और नतोफाती, अत्रीथ बेत-योआब, और मनहथियों का आधा, ज़ोरी।

<sup>55</sup> याबेज़ में रहने वाले लिपिकों के परिवार थे तीराथी, शिमेआथी, और सुकाथी। ये केनी थे जो हम्माथ से आए रेकाब के घर के पिता।

**3** अब ये दाऊद के पुत्र थे जो हिब्रोन में उसके लिए उत्पन्न हुए:

# 1 इतिहास

पहलौठा अम्मोन था, यहेत्रेती अदिनोआम से, दूसरा था  
दानिय्येल, कर्मली अबीगेल से,<sup>2</sup> तीसरा था  
अबशालोम, जो गेशूर के राजा तत्वे की बेटी माका का  
पुत्र था, चौथा था अदोनिय्याह, हग्गीत का पुत्र<sup>3</sup> पांचवां  
था शेफत्याह, अबीतल से, छठा था इतरेआम, जो  
उसकी पती एगला से था।

<sup>4</sup> छह पुत्र हिब्रोन में उसके लिए उत्पन्न हुए, और वहाँ  
उसने सात वर्ष और छह महीने राज्य किया। और  
यरूशलेम में उसने तैतीस वर्ष राज्य किया।

<sup>5</sup> ये यरूशलेम में उसके लिए उत्पन्न हुए:

शिमेआ, शोबाब, नातान, और सुलैमान—चार बथशूआ,  
अमील की बेटी से—<sup>6</sup> और इब्हार, एलीशामा,  
एलीफेलेट,<sup>7</sup> नोगा, नेकेग, और याकिया,<sup>8</sup> एलीशामा,  
एलीआदा, और एलीफेलेट—कुल मिलाकर नौ।

<sup>9</sup> ये सब दाऊद के पुत्र थे, उपपत्नियों के पुत्रों के अलावा;  
और तामार उनकी बहन थी।

<sup>10</sup> अब सुलैमान का पुत्र रहूबियाम था,

अबियाह उसका पुत्र, आसा उसका पुत्र, यहोशापात  
उसका पुत्र,<sup>11</sup> योराम उसका पुत्र, अहज्याह उसका  
पुत्र, योआश उसका पुत्र,<sup>12</sup> अमज्याह उसका पुत्र,  
अजर्याह उसका पुत्र, योताम उसका पुत्र,<sup>13</sup> आहाज  
उसका पुत्र, हिजकिय्याह उसका पुत्र, मनश्शे उसका  
पुत्र,<sup>14</sup> आमोन उसका पुत्र, योशियाह उसका पुत्र।

<sup>15</sup> योशियाह के पुत्र थे:

योहानान पहलौठा, दूसरा यहोयाकीम, तीसरा  
सिदकिय्याह, चौथा शल्लूम।

<sup>16</sup> यहोयाकीम के पुत्र थे:

यहोनिय्याह उसका पुत्र, सिदकिय्याह उसका पुत्र।

<sup>17</sup> यहोनिय्याह के पुत्र, जो बंदी था, थे:

शालतीएल उसका पुत्र,<sup>18</sup> और मलकीराम, पदायाह,  
शेनअजर, येकम्याह, होशामा, और नेदब्याह।

<sup>19</sup> पदायाह के पुत्र थे:

जरुब्बाबेल और शिमी। और जरुब्बाबेल के पुत्र थे  
मस्युलाम और हन्याह, और शेलीमीत उनकी बहन  
थी,<sup>20</sup> और हशुबाह, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह, और  
युशब्ब हेसेद—कुल मिलाकर पांच।

<sup>21</sup> हन्याह के पुत्र थे:

पेलत्याह और यशायाह, रफायाह के पुत्र, अलनि के  
पुत्र, ओबद्याह के पुत्र, और शेकन्याह के पुत्र।

<sup>22</sup> शेकन्याह के वंशज थे:

शमायाह और शमायाह के पुत्र, हत्या, इगाल,  
बरियाह, नेअर्याह, और शाफट—कुल मिलाकर छह।

<sup>23</sup> नेअर्याह के पुत्र थे:

एलियोएनाय, हिजकिय्याह, और अजरिकाम—कुल  
मिलाकर तीन।

<sup>24</sup> एलियोएनाय के पुत्र थे:

होदव्याह, एल्याशीब, पेलायाह, अकूब, योहानान,  
दलायाह, और अनानी—कुल मिलाकर सात।

**4** यहूदा के पुत्र थे:

परेज़, हेज़रोन, करमी, हूर, और शोबाल।

<sup>2</sup> शोबाल के पुत्र रयाह ने यहत को उत्पन्न किया,

और यहत ने अहमै और लाहद को उत्पन्न किया। ये  
सोराथियों के परिवार थे।

<sup>3</sup> ये एताम के पुत्र थे:

यित्रेल, इशमा, और इदबाश, और उनकी बहन का  
नाम हज्ज़लेलपोनी था।

<sup>4</sup> पेनुएल गेदोर का पिता था, और एज़र हूशा का पिता  
था।

# 1 इतिहास

ये हूर के पुत्र थे, जो एग्राथा का जेठा और बेतलेहेम का पिता था।

<sup>५</sup> तेकोआ का पिता अशहूर की दो पत्नियाँ थीं:

हेला और नारा।

<sup>६</sup> नारा ने उसे उत्पन्न किया:

अहुज्ञाम् हेफर तेमेनी और हाहशतारी। ये नारा के पुत्र थे।

<sup>७</sup> हेला के पुत्र थे:

ज़ेरेथ, इज़हार, और एतनान।

<sup>८</sup> कोज़ ने अनबू और ज़ोबेबह को उत्पन्न किया, और हारूम के पुत्र अहर्वेल के परिवारों को।

<sup>९</sup> अब याबेज़ अपने भाइयों से अधिक सम्माननीयथा, और उसकी माता ने उसका नाम याबेज़ रखा, यह कहते हुए, “क्योंकि मैंने उसे पीड़ा में जन्म दिया।”

<sup>१०</sup> अब याबेज़ ने इसाएल के परमेश्वर को पुकारा, यह कहते हुए,

“हे कि तू मुझे सचमुच आशीर्वद दो, और मेरी सीमा को बढ़ा दो, और तेरी हाथ मेरे साथ हो, और तू मुझे हानि से बचा ताकि यह मुझे दुख न दे।” और परमेश्वर ने उसे वह दिया जो उसने माँगा।

<sup>११</sup> शूहा के भाई केलूब ने मेहीर को उत्पन्न किया,

जो एश्टोन का पिता था।

<sup>१२</sup> एश्टोन ने बेथ-रापा, पासोह, और तेहिन्ना को उत्पन्न किया, जो इर-नहाश का पिता था।

ये रेका के पुरुष थे।

<sup>१३</sup> केनज़ के पुत्र थे:

ओथनीएल और सरायाह। और ओथनीएल का पुत्र हत्तह था।

<sup>१४</sup> मेओनोथाई ने ओफ्राह को उत्पन्न किया,

और सरायाह ने योआब को उत्पन्न किया, जो गै हराशिम का पिता था, क्योंकि वे कारीगर थे।

<sup>१५</sup> येफुन्नेह के पुत्र कालेब के पुत्र थे:

इस्ल, एला, और नाम, और एला का पुत्र केनज़ था।

<sup>१६</sup> यहल्लेलेर के पुत्र थे:

ज़िफ्र, ज़िफ्राह, तिरिया, और असरेएल।

<sup>१७</sup> एज़ाह के पुत्र थे:

यतरे, मरेद, एफ़ेर, और यालोन। और ये फिरौन की बेटी बिथ्याह के पुत्र हैं, जिसे मरेद ने लिया। उसने गर्भ धारण किया और मिरियम, शम्मी, और इश्बाह को उत्पन्न किया, जो एश्टोमोआ का पिता था।

<sup>१८</sup> उसकी यहूदी पत्नी ने गेदोर के पिता येरद को उत्पन्न किया, सोको के पिता हेबर को, और ज़ानोआ के पिता येकुथिएल को।

ये फिरौन की बेटी बिथ्याह के पुत्र थे, जिसे मरेद ने लिया था।

<sup>१९</sup> होदियाह की पत्नी, नाहम की बहन के पुत्र थे:

केइलाह के गार्मी का पिता, और एश्टोमोआ का माकाती।

<sup>२०</sup> शिमोन के पुत्र थे:

अम्मोन, रिना, बेहानन, और तीलोन। और इशी के पुत्र थे, जोहेथ और बेन-जोहेथ।

<sup>२१</sup> यहूदा के पुत्र शैला के पुत्र थे:

लेकह का पिता एर, मारेशाह का पिता लादाह, और बेथ-अशबेआ में लिन के काम करने वालों के घराने

<sup>२२</sup> योकीम, कोज़ेबा के पुरुष, योआश, और साराप, जो मोआब में शासन करते थे और याशूबी-लेहेम। लेकिन ये प्राचीन अभिलेख हैं।

# 1 इतिहास

<sup>23</sup> ये कुम्हार और नताइम और गेदेराह के निवासी थे; वे वहाँ राजा के काम के लिए रहते थे।

<sup>24</sup> शिमोन के पुत्र थे:

नेसूएल, यामीन, यारीब, ज़ेरह, और शाऊल,

<sup>25</sup> शल्लूम उसका पुत्र, मिबसाम उसका पुत्र, मिष्मा उसका पुत्र।

<sup>26</sup> मिष्मा के पुत्र थे:

हमूएल उसका पुत्र, ज़क़्रुर उसका पुत्र, शिमई उसका पुत्र।

<sup>27</sup> अब शिमई के सोलह पुत्र और छह बेटियाँ थीं, परंतु उसके भाइयों के बहुत पुत्र नहीं थे,

और उनके सारे परिवार यहूदा के पुत्रों की तरह नहीं बढ़े।

<sup>28</sup> वे बेर्शबा, मोलादा, और हज़र-शूएल में रहते थे, <sup>29</sup> बिल्हा, एज़ेम, और तोलाद में, <sup>30</sup> बेतुपेल, होर्मा, और सिक्लाग में, <sup>31</sup> बेत-मारकबोत, हज़र-सुसिम, बेत-बिरी, और शाराइम में।

ये उनके नगर थे जब तक दाऊद का राज्य था।

<sup>32</sup> उनके गाँव थे:

एताम् ऐन्, रिम्मोन्, तोकेन्, और आशान—पाँच नगर—

<sup>33</sup> और उनके चारों ओर के सभी बस्तियाँ बाले तक थीं।

ये उनकी निवास स्थान थे, और उनकी वंशावली है।

<sup>34</sup> मेशोबाब, यामलेख, और योशाह, अमज़ियाह का पुत्र, <sup>35</sup> और योएल और यहू, योशिबियाह का पुत्र, सरायाह का पुत्र, एसीएल का पुत्र, <sup>36</sup> और एलियोएन, याकूबाह, येशोहायाह, असायाह, अदिएल, येसिमिएल, बनायाह, <sup>37</sup> और जिजा, शिफ़ी का पुत्र, अल्लोन का पुत्र, यदायाह का पुत्र, शिमी का पुत्र, शेमायाह का पुत्र—

<sup>38</sup> इनका नाम लेकर उल्लेख किया गया था कि वे अपने परिवारों में नेता थे; और उनके पितरों के घर बहुत बढ़े।

<sup>39</sup> वे गेदोर के प्रवेश द्वार पर गए, घाटी के पूर्वी ओर, अपने झुंडों के लिए चरागाह खोजने।

<sup>40</sup> उन्हें समृद्ध और अच्छी चरागाह मिली, और भूमि विशाल, शांत, और शांतिपूर्ण थी;

क्योंकि जो वहाँ पहले रहते थे वे हमी थे।

<sup>41</sup> अब ये जो हिज़कियाह यहूदा के राजा के दिनों में नाम लेकर आए थे उनके तंबुओं और वहाँ पाए गए मयूरियों पर आक्रमण किया, और उन्हें आज तक पूरी तरह नष्ट कर दिया, और उनके स्थान पर बस गए, क्योंकि वहाँ उनके झुंडों के लिए चरागाह था।

<sup>42</sup> उनमें से, शिमोन के पुत्रों में से, पाँच सौ पुरुष सेईर पर्वत पर गए, पेलत्याह, नेरियाह, रपायाह, और उज़्जीएल, इशी के पुत्र, उनके नेता थे।

<sup>43</sup> उन्होंने अमालेकियों के शेष को नष्ट कर दिया जो बच गए थे, और वहाँ आज तक बसे हुए हैं।

**5** अब रूबेन के पुत्र, जो इसाएल का पाहिलौठा था (क्योंकि वह पहिलौठा था, परन्तु उसने अपने पिता के बिस्तर को अपवित्र किया,

इसलिए उसका जन्मसिद्ध अधिकार इसाएल के पुत्र यूसुफ के पुत्रों को दिया गया; इसलिए वह वंशावली में जन्मसिद्ध अधिकार के अनुसार नहीं गिना गया।

<sup>2</sup> यद्यपि यहूदा अपने भाइयों पर प्रबल हुआ,

और उसी से शासक उत्पन्न हुआ, किर भी जन्मसिद्ध अधिकार यूसुफ का था),

<sup>3</sup> इसाएल के पहिलौठे रूबेन के पुत्र थे:

हनोक, पलू, हेस्तोन, और करमी।

<sup>4</sup> योएल के पुत्र थे:

शमायाह उसका पुत्र, गोग उसका पुत्र, शिमी उसका पुत्र, <sup>5</sup> मीकाह उसका पुत्र, रयाह उसका पुत्र, बाल

# 1 इतिहास

उसका पुत्र, <sup>६</sup> और बीराह उसका पुत्र जिसे अश्वर के राजा तिलगथ पिलनेसर ने निर्वासन में ले लिया। वह रूबेनियों का एक नेता था।

<sup>७</sup> उनके परिवारों के अनुसार उनके संबंधी, उनकी पीढ़ियों की वंशावली में, मुखिया यहींएल, फिर जकर्याह, <sup>८</sup> और बेला, जो अजाज़ का पुत्र, शेमा का पुत्र, योएल का पुत्र था,

जो अरोएर में रहते थे, यहाँ तक कि नेबो और बाल-मेओन तक।

<sup>९</sup> पूर्व की ओर वे यूफ्रेट्स नदी से जंगल के प्रवेश द्वार तक बसे, क्योंकि गिलाद के देश में उनकी पशुधन बढ़ गई थी।

<sup>१०</sup> शाऊल के दिनों में उन्होंने हगरियों से युद्ध किया,

जो उनके हाथ से गिर गए और वे गिलाद के पूर्व में पूरे देश में उनके तंबुओं में बसे।

<sup>११</sup> अब गाद के पुत्र उनके सामने बाशान के देश में बसे, सलेका तक।

<sup>१२</sup> योएल मुखिया था,

और शाफाम द्विसरा, फिर यनै और शाफात बाशान में।

<sup>१३</sup> उनके पिता के घरानों के संबंधी थे:

मीकाएल, मेशुलाम, शेबा, योरी, याकान, जिया, और एबर—कुल मिलाकर सात।

<sup>१४</sup> ये अबीहैल के पुत्र थे, जो हूरी का पुत्र था,

योरोह का पुत्र, गिलाद का पुत्र, मीकाएल का पुत्र, येरीशी का पुत्र, यहदो का पुत्र, बूज का पुत्र—

<sup>१५</sup> अहीं, जो अब्दीएल का पुत्र, गूटी का पुत्र था,

उनके पिता के घरानों का मुखिया था।

<sup>१६</sup> वे गिलाद में, बाशान में और उसके नगरों में बसे, और शेरोन के सभी चरागाहों में, उनकी सीमाओं तक।

<sup>१७</sup> ये सभी यहूदा के राजा योताम के दिनों में, और इसाएल के राजा यारोबाम के दिनों में वंशावली में दर्ज किए गए थे।

<sup>१८</sup> रूबेन के पुत्र, गाद के वंशज, और मनश्शे के आधे गोत्र—

वीर पुरुष, जो ढाल और तलवार धारण करते थे, और ध्रुष चलाते थे, और युद्ध के लिए प्रशिक्षित थे—कुल मिलाकर 4,4,760, जो सैन्य सेवा के लिए निकले।

<sup>१९</sup> उन्होंने हगरियों के खिलाफ युद्ध किया,

यतूर, नफीश, और नोदाब।

<sup>२०</sup> उन्हें उनके खिलाफ मदद मिली, और हगरी और उनके साथ के सभी लोग उनके हाथ में सौंप दिए गए;

क्योंकि उन्होंने युद्ध में परमेश्वर को पुकारा, और उसने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, क्योंकि उन्होंने उस पर भरोसा किया।

<sup>२१</sup> उन्होंने उनकी पशुधन लिया:

पचास हजार ऊंट, दो लाख पचास हजार भेड़ें, दो हजार गधे, और एक लाख लोग।

<sup>२२</sup> क्योंकि बहुत से लोग घातक रूप से घायल होकर गिरे, क्योंकि युद्ध परमेश्वर का था।

और वे निर्वासन तक अपनी जगह में बसे रहे।

<sup>२३</sup> अब मनश्शे के आधे गोत्र के पुत्र उस देश में बसे; बाशान से लेकर बाल-हेर्मोन और सेनिर और हर्मोन पर्वत तक वे बहुत थे।

<sup>२४</sup> ये उनके पिता के घरानों के मुखिया थे:

एफ्रेद, ईशी, एलीएल, अप्रीएल, यिम्याह, होदव्याह, और यहदीएल—वीर पुरुष, प्रसिद्ध पुरुष, उनके पिता के घरानों के मुखिया।

<sup>२५</sup> परन्तु वे अपने पितरों के परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हो गए, और देश के लोगों के देवताओं के साथ

# 1 इतिहास

व्यभिचार किया, जिन्हें परमेश्वर ने उनके सामने नष्ट कर दिया था।

<sup>26</sup> इसलिए इस्माइल के परमेश्वर ने अश्वूर के राजा पुल की आत्मा को उभारा, यानी तिलगथ-पिलनेसेर राजा की आत्मा, और उसने उन्हें निर्वासन में ले लिया, अर्थात्:

रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र को, और उन्हें हालाह, हालोर, हारा, और गोजान की नदी तक ले गया, आज तक।

**6** लेवी के पुत्र थे:

गेशोम्, कहात, और मिरारी।

<sup>2</sup> कहात के पुत्र थे:

अम्राम्, यिजहार, हेब्रोन्, और उज्जीएल।

<sup>3</sup> अम्राम की संतानें थीं:

हारून, मूसा, और मरियम्। और हारून के पुत्र थे नादाब, अबीहू, एलीआज़र, और इथामार।

<sup>4</sup> एलीआज़र ने पिन्हास को उत्पन्न किया, और पिन्हास ने अबीशू को उत्पन्न किया, <sup>5</sup> और अबीशू ने बुक्की की उत्पन्न किया, और बुक्की ने उज्जी को उत्पन्न किया, <sup>6</sup> और उज्जी ने जरहाह को उत्पन्न किया, और जरहाह ने मेरायोत को उत्पन्न किया, <sup>7</sup> मेरायोत ने अमर्याह को उत्पन्न किया, और अमर्याह ने अहितूब को उत्पन्न किया, <sup>8</sup> और अहितूब ने सादोक को उत्पन्न किया, और सादोक ने अहिमाज जो को उत्पन्न किया, <sup>9</sup> और अहिमाज ने अजर्याह को उत्पन्न किया, और अजर्याह ने योहानान को उत्पन्न किया, <sup>10</sup> और योहानान ने अजर्याह को उत्पन्न किया (वह वही था जिसने यरूशलेम में सुलैमान द्वारा बनाए गए घर में याजक के रूप में सेवा की), <sup>11</sup> और अजर्याह ने अमर्याह को उत्पन्न किया, और अमर्याह ने अहितूब को उत्पन्न किया, <sup>12</sup> और अहितूब ने सादोक को उत्पन्न किया, और सादोक ने शल्लूम को उत्पन्न किया, <sup>13</sup> और शल्लूम ने हिल्कियाह को उत्पन्न किया, और हिल्कियाह ने अजर्याह को उत्पन्न किया, <sup>14</sup> और अजर्याह ने सरायाह को उत्पन्न किया, और सरायाह ने यहोजादक को उत्पन्न किया;

<sup>15</sup> और यहोजादक तब चला गया जब यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के हाथ से निर्वासन में ले लिया।

<sup>16</sup> लेवी के पुत्र थे:

गेशोम्, कहात, और मिरारी।

<sup>17</sup> ये गेशोम के पुत्रों के नाम हैं:

लिब्री और शिमी।

<sup>18</sup> कहात के पुत्र थे:

अम्राम्, यिजहार, हेब्रोन्, और उज्जीएल।

<sup>19</sup> मिरारी के पुत्र थे:

महली और पूशी। ये उनके पिताओं के धरानों के अनुसार लेवियों के परिवार हैं।

<sup>20</sup> गेशोम के वंशज:

लिब्री उसका पुत्र, याहत उसका पुत्र, जिम्मा उसका पुत्र <sup>21</sup> योआह उसका पुत्र, इद्वो उसका पुत्र, ज्ञेरह उसका पुत्र ये अथरै उसका पुत्र।

<sup>22</sup> कहात के वंशज थे:

अमीनादाब उसका पुत्र, कोरह उसका पुत्र, अस्सीर उसका पुत्र <sup>23</sup> एल्काना उसका पुत्र, एबियासफ उसका पुत्र, अस्सीर उसका पुत्र <sup>24</sup> तह्य उसका पुत्र ऊरीएल उसका पुत्र, उज्जियाह उसका पुत्र, शाऊल उसका पुत्र।

<sup>25</sup> एल्काना के पुत्र थे:

अमासै और अहिमोत।

<sup>26</sup> एल्काना:

एल्काना उसका पुत्र, सोफे उसका पुत्र, नहत उसका पुत्र <sup>27</sup> एलीआब उसका पुत्र, येरोहाम उसका पुत्र, एल्काना उसका पुत्र।

# 1 इतिहास

<sup>28</sup> शमूएल के पुत्र थे:

योएल पहिलौठा, और अविष्याह दूसरा।

<sup>29</sup> मिरारी के पुत्र थे:

महली, लिङ्गी उसका पुत्र, शिमी उसका पुत्र, उज्जा  
उसका पुत्र, <sup>30</sup> शिमेआ उसका पुत्र, हणिष्याह उसका  
पुत्र, असायाह उसका पुत्र।

<sup>31</sup> अब वे हैं जिन्हें दाऊद ने यहोवा के घर में गीत की  
सेवा के लिए नियुक्त किया, जब सन्दूक वहाँ विश्राम  
करने लाई।

<sup>32</sup> उन्होंने मिलापवाले तम्बू के मण्डप के सामने गीत के  
साथ सेवा की, जब तक सुतैमान ने यरूशलेम में यहोवा  
का घर नहीं बना लिया; और उन्होंने उन्हें दिए गए  
आदेश के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन किया।

<sup>33</sup> ये वे हैं जिन्होंने अपने पुत्रों के साथ सेवा की:  
कहातियों के पुत्रों में से:

हेमान गायक, योएल का पुत्र, शमूएल का पुत्र, <sup>34</sup>  
एल्काना का पुत्र, येरोहाम का पुत्र, एलीएल का पुत्र,  
तोआह का पुत्र, <sup>35</sup> सूफ़ का पुत्र, एल्काना का पुत्र,  
महथ का पुत्र, अमासी का पुत्र, <sup>36</sup> एल्काना का पुत्र  
योएल का पुत्र, अजर्यह का पुत्र, जफन्याह का पुत्र, <sup>37</sup>  
तहध का पुत्र, अस्सीर का पुत्र, एवियासफ का पुत्र  
कोरह का पुत्र, <sup>38</sup> यिजहार का पुत्र, कहात का पुत्र  
लेवी का पुत्र, इसाएल का पुत्र।

<sup>39</sup> हेमान का संबंधी आसाप उसके दाहिने हाथ पर खड़ा  
था,

आसाप बेरेछ्याह का पुत्र, शिमेआ का पुत्र, <sup>40</sup>  
मीकाएल का पुत्र, बासेयाह का पुत्र, मालिक्याह का  
पुत्र, <sup>41</sup> एथनी का पुत्र, जेरह का पुत्र, अदायाह का पुत्र,  
<sup>42</sup> एतान का पुत्र, जिम्मा का पुत्र, शिमी का पुत्र, <sup>43</sup>  
याहत का पुत्र, गोशम का पुत्र, लेवी का पुत्र।

<sup>44</sup> बाएँ हाथ पर उनके संबंधी थे,

मिरारी के पुत्र, एतान किणी का पुत्र, अब्दी का पुत्र,  
मलूक का पुत्र, <sup>45</sup> हशब्याह का पुत्र, अमस्याह का पुत्र  
हिलिक्याह का पुत्र, <sup>46</sup> अम्जी का पुत्र, बानी का पुत्र

शेमेर का पुत्र, <sup>47</sup> महली का पुत्र, मूशी का पुत्र, मिरारी  
का पुत्र लेवी का पुत्र।

<sup>48</sup> उनके संबंधी लेवीयों को परमेश्वर के घर के तम्बू की  
सारी सेवा के लिए नियुक्त किया गया था।

<sup>49</sup> परन्तु हारून और उसके पुत्रों ने होमबलि की वेदी  
और धूप की वेदी पर चढ़ावा चढ़ाया, और परमपवित्र  
स्थान के सारे काम के लिए, और इसाएल के लिए  
प्रायश्चित्त करने के लिए, जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा  
ने आज्ञा दी थी।

<sup>50</sup> ये हारून के पुत्र हैं:

एलीआज्जर उसका पुत्र, पिन्हास उसका पुत्र, अबीशू  
उसका पुत्र, <sup>51</sup> बुक्की उसका पुत्र, उज्जी उसका पुत्र,  
जरहाह उसका पुत्र, <sup>52</sup> मेरायोत उसका पुत्र, अमर्यह  
उसका पुत्र, अहित्रूब उसका पुत्र, <sup>53</sup> सादोक उसका  
पुत्र, और अहिमाज्ज उसका पुत्र।

<sup>54</sup> अब ये उनके निवास स्थान हैं उनके शिविरों के  
अनुसार उनकी सीमाओं के भीतर: हारून के पुत्रों को,  
कहातियों के परिवारों में से,

क्योंकि उनके लिए पहला भाग निकला था।

<sup>55</sup> उन्होंने उन्हें यहूदा के देश में हेब्रोन और उसके चारों  
ओर के चरागाह दिए, <sup>56</sup> परन्तु नगर के खेत और उसके  
गाँव, उन्होंने यपुत्रेह के पुत्र कालेब को दिए।

<sup>57</sup> हारून के पुत्रों को उन्होंने शरण के निम्नलिखित नगर  
दिए:

हेब्रोन, लिङ्गा उसके चरागाहों के साथ, यत्ती, एश्टेमोआ  
उसके चरागाहों के साथ, <sup>58</sup> हिलेन उसके चरागाहों के  
साथ, देक्कीर उसके चरागाहों के साथ, <sup>59</sup> अशान उसके  
चरागाहों के साथ, और बेत-शेमेश उसके चरागाहों के  
साथ।

<sup>60</sup> बिन्यामीन के गोत्र से उन्होंने दिए:

गेबा, आलेमेत, और अनातोत उनके चरागाहों के  
साथ। हारून के पुत्रों के परिवारों के लिए उनके सभी  
नगर तेरह नगर थे।

# 1 इतिहास

<sup>६१</sup> कहात के शेष पुत्रों को, गोत्र के परिवारों में से, उन्होंने आधे गोत्र, मनश्शो के आधे भाग से दस नगर दिए।

<sup>६२</sup> गेशोम के पुत्रों को, उनके परिवारों के अनुसार, उन्होंने इस्साकार, आशेर, नप्ताली, और बाशान में मनश्शो के गोत्रों से तेरह नगर दिए।

<sup>६३</sup> मिरारी के पुत्रों को, उनके परिवारों के अनुसार, उन्होंने रूबेन, गाद, और जब्लून के गोत्रों से बारह नगर दिए।

<sup>६४</sup> इस्साएल के पुत्रों ने लेवियों को उनके चरागाहों के साथ नगर दिए।

<sup>६५</sup> उन्होंने यहदा के पुत्रों के गोत्र, शिमोन के पुत्रों के गोत्र, और बिन्यामीन के पुत्रों के गोत्र से, इन नगरों को नाम से दिया।

<sup>६६</sup> अब कहात के पुत्रों के कुछ परिवारों के पास उनके क्षेत्र के नगर थे ऐप्रैम के गोत्र से।

<sup>६७</sup> उन्होंने उन्हें शरण के नगर दिए:

ऐप्रैम के पहाड़ी देश में शेकेम उसके चरागाहों के साथ, गेजेर उसके चरागाहों के साथ,<sup>६८</sup> योकमाम उसके चरागाहों के साथ, बेत-होरेन उसके चरागाहों के साथ,<sup>६९</sup> अल्यालोन उसके चरागाहों के साथ, और गधृ-रिम्मोन उसके चरागाहों के साथ;

<sup>७०</sup> और मनश्शो के आधे गोत्र से:

अन्नर उसके चरागाहों के साथ, और बिलेआम उसके चरागाहों के साथ, कहात के पुत्रों के शेष परिवारों के लिए।

<sup>७१</sup> गेशोम के पुत्रों को उन्होंने दिए:

मनश्शो के आधे गोत्र के परिवार से बाशान में गोलान उसके चरागाहों के साथ, और अश्तारोत उसके चरागाहों के साथ;

<sup>७२</sup> इस्साकार के गोत्र से:

केदेश उसके चरागाहों के साथ, दाबेरात उसके चरागाहों के साथ,<sup>७३</sup> रामोत उसके चरागाहों के साथ और आनम उसके चरागाहों के साथ।

<sup>७४</sup> आशेर के गोत्र से:

मशाल उसके चरागाहों के साथ, अब्दोन उसके चरागाहों के साथ,<sup>७५</sup> हुक्कोक उसके चरागाहों के साथ, और रहोब उसके चरागाहों के साथ।

<sup>७६</sup> नप्ताली के गोत्र से:

गलील में केदेश उसके चरागाहों के साथ, हामोन उसके चरागाहों के साथ, और कियतीम उसके चरागाहों के साथ।

<sup>७७</sup> लेवियों के शेष, मिरारी के पुत्रों को:

जब्लून के गोत्र से रिम्मोने उसके चरागाहों के साथ, ताबोर उसके चरागाहों के साथ,

<sup>७८</sup> और यरीहो के पार, यरदन के पूर्वी ओर:

रूबेन के गोत्र से जंगल में बेजर उसके चरागाहों के साथ, याहज़ा उसके चरागाहों के साथ,<sup>७९</sup> केमोथ उसके चरागाहों के साथ, और मिफ्रात उसके चरागाहों के साथ।

<sup>८०</sup> गाद के गोत्र से:

गिलाद में रामोत उसके चरागाहों के साथ, महनैम उसके चरागाहों के साथ,<sup>८१</sup> हेशबोन उसके चरागाहों के साथ, और याजेर उसके चरागाहों के साथ।

**7** अब इस्साकार के पुत्र थे:

तोला, पूह, यशूब, और शिम्रोन—कुल चार।

<sup>२</sup> तोला के पुत्र थे:

उज्जी, रफायाह, यरीएल, यहमार्झ, इब्साम, और शमूएल—अपने अपने पितरों के घरानों के प्रधान। तोला के वंशजों में उनकी पीढ़ियों में योद्धा पुरुष नियुक्त हुए दाऊद के दिनों में उनकी संच्छा बाइस्स हजार छह सौ थी।

# 1 इतिहास

<sup>३</sup> उज्जी का पुत्र यित्राहियाह था। और यित्राहियाह के पुत्र थे:

मीकाएल, ओबद्याह, योएल, और यिशियाह—कुल पाँच ये सब प्रधान पुरुष थे।

<sup>४</sup> और उनके साथ उनकी पीढ़ियों के अनुसार, उनके पितरों के घरानों में, युद्ध के लिए सेना के छत्तीस हजार सैनिक थे,

क्योंकि उनके पास बहुत सी पत्नियाँ और पुत्र थे।

<sup>५</sup> उनके संबंधी इस्साकार के सब घरानों में,

वीर पुरुष, वंशावली के अनुसार गिने गए—कुल अस्सी सात हजार।

<sup>६</sup> बिन्यामीन के पुत्र थे:

बेला, बेकर, और येदीएल—तीन।

<sup>७</sup> बेला के पुत्र थे:

एजबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत, और ईरी—कुल पाँच ये पितरों के घरानों के प्रधान, वीर पुरुष थे, और वंशावली के अनुसार गिने गए—बाईस हजार चौतीस।

<sup>८</sup> बेकर के पुत्र थे:

जेमिराह, योआश, एलीएजर, एलीयोएने, ओम्ब्री, यरीमोत, अवियाह, अनातोत, और आलेमेत। ये सब बेकर के पुत्र थे।

<sup>९</sup> वे अपनी पीढ़ियों के अनुसार वंशावली में गिने गए, अपने पितरों के घरानों के प्रधान, वीर पुरुष—

बीस हजार दो सौ।

<sup>१०</sup> येदीएल का पुत्र बिलहान था। और बिलहान के पुत्र थे:

येऊश, बिन्यामीन, एहूद, केनानाह, ज़ेथान, तरशीश, और अहिशाहर।

<sup>११</sup> ये सब येदीएल के पुत्र थे,

अपने पितरों के घरानों के प्रधान, सत्रह हजार दो सौ वीर पुरुष, युद्ध के लिए सेना के साथ जाने को तैयार।

<sup>१२</sup> शुप्पिम और हुप्पिम ईर के पुत्र थे;

हुशिम अहेर का पुत्र था।

<sup>१३</sup> नप्ताली के पुत्र थे:

याहूजीएल, गूर्नी, येज़र, और शल्लूम—बिल्हा के पुत्र।

<sup>१४</sup> मनश्शे के पुत्र थे:

अस्सीएल, जिसे उसकी अरामी रखैल ने जन्म दिया। उसने गिलाद के पिता माकीर को जन्म दिया।

<sup>१५</sup> माकीर ने हुप्पिम और शुप्पिम के लिए एक पत्नी ली,

जिसकी बहन का नाम माकाह था। और दूसरे का नाम ज़ेलोफहद था, और ज़ेलोफहद की पुत्रियाँ थीं।

<sup>१६</sup> माकीर की पत्नी माकाह ने एक पुत्र को जन्म दिया,

और उसने उसका नाम पेरेश रखा, और उसके भाई का नाम शेरेश था। उसके पुत्र थे: ऊलाम और रकेम।

<sup>१७</sup> ऊलाम का पुत्र बेदान था।

ये गिलाद के पुत्र, माकीर के पुत्र, मनश्शे के पुत्र थे।

<sup>१८</sup> उसकी बहन हामोलेखेत ने जन्म दिया:

इश्होद, अबीएजेर, और महला।

<sup>१९</sup> शेमीदा के पुत्र थे:

अहियान, शेकेम, लिवही, और अनियाम।

<sup>२०</sup> एपैम के पुत्र थे:

शूतेलह, और उसका पुत्र बेरेद, और उसका पुत्र तहथ, और उसका पुत्र एलेआदाह, और उसका पुत्र तहथ,<sup>२१</sup> और उसका पुत्र जाबाद, और उसका पुत्र शूतेलह, और एजर और एलेआद। परन्तु गथ के पुरुष जिन्होंने

# 1 इतिहास

देश में जन्म लिया था, ने उन्हें मार डाला, क्योंकि वे उनके पशुओं की लेने के लिए नीचे आए थे।

<sup>22</sup> उनके पिता एप्रैम ने बहुत दिनों तक शोक किया,  
और उसके संबंधी उसे सांत्वना देने आए।

<sup>23</sup> फिर वह अपनी पत्नी के पास गया, और उसने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया,

और उसने उसका नाम बेरियाह रखा, क्योंकि उसके घर पर विषयते आई थी।

<sup>24</sup> उसकी पुत्री शेएराह थी,

जिसने निचला और ऊपरी बैथ होरोन, और उज्जेन शेएराह का निर्माण किया।

<sup>25</sup> रेफह उसका पुत्र था,

उसके साथ रेशेफ, तेला उसका पुत्र, तहन उसका पुत्र  
<sup>26</sup> लादान उसका पुत्र, अम्मीहूद उसका पुत्र, एलीशमा  
उसका पुत्र,<sup>27</sup> तून उसका पुत्र, और यहांशु उसका  
पुत्र।

<sup>28</sup> उनकी संपत्तियाँ और निवास स्थान थे:

बेतेल अपने गाँवों के साथ, और पूर्व में नारान, और पश्चिम में गेझेर अपने गाँवों के साथ, साथ ही शेकेम अपने गाँवों के साथ, अस्या तक अपने गाँवों के साथ।

<sup>29</sup> और मनश्शे के पुत्रों की सीमाओं के साथ:

बैथ शान, तानक, मेगिदो, और दोर, अपने गाँवों के साथ। इनमें यूसुफ के पुत्र, इसाएल के पुत्र रहते थे।

<sup>30</sup> आशेर के पुत्र थे:

इम्नाह, ईश्वाह, ईवी, और बेरियाह, और उनकी बहन सेराह।

<sup>31</sup> बेरियाह के पुत्र थे:

हेबर और मल्कीएल, जो विरज्ञैथ के पिता थे।

<sup>32</sup> हेबर ने उत्पन्न किया:

यापलेत, शोमेर, होथम, और उनकी बहन शुआ।

<sup>33</sup> यापलेत के पुत्र थे:

पासक, बिम्हाल, और अश्वता ये यापलेत के पुत्र थे।

<sup>34</sup> शोमेर के पुत्र थे:

अहीं, रोहगाह, यहुब्बाह, और अराम।

<sup>35</sup> उसके भाई वेलेर के पुत्र थे:

ज़ोफह, इम्ना, शेलश, और अमाल।

<sup>36</sup> ज़ोफह के पुत्र थे:

शूआह, हरनेफेर, शूआल, बेरी, इम्ना,<sup>37</sup> बेज्जर, होद, शम्मा, शित्ताह, इशान, और बीरा।

<sup>38</sup> येतर के पुत्र थे:

येफुन्नेह, पिस्या, और अरा।

<sup>39</sup> उल्ला के पुत्र थे:

अराह, हन्नीएल, और रिजिया।

<sup>40</sup> ये सब आशेर के पुत्र थे,

पितरों के घरानों के प्रधान, चुने हुए और वीर पुरुष राजकुमारों के प्रधान। और उनकी संछा जो युद्ध के लिए सेवा में गिनी गई थी छब्बीस हजार पुरुष थे।

**8** और बिन्यामीन ने उत्पन्न किए:

बेला उसका पहलौठा, अशबेल द्वसरा, अहारह तीसरा,

<sup>2</sup> नोहा चौथा, और रापा पाँचवाँ।

<sup>3</sup> बेला के पुत्र थे:

अडार, गेरा, अबीहूद,<sup>4</sup> अबीशू नामान, अहोह,<sup>5</sup> गेरा, शफुकान, और हराम।

# 1 इतिहास

<sup>६</sup> ये एहुद के पुत्र हैं। ये गेबा के निवासियों के पिताओं के घरानों के प्रधान थे,

और उन्होंने उन्हें मनहात में निर्वसन में भेजा।

<sup>७</sup> अर्थात् नामान्, अहिगाह, और गेग—उसने उन्हें निर्वसन में भेजा। और उसने उज्जा और अहिहुद को उत्पन्न किया।

<sup>८</sup> शाहरैम ने मोआब के देश में संतान उत्पन्न की जब उसने अपनी पत्नियों हूशिम और बाराह को विदा कर दिया था।

<sup>९</sup> होदेश उसकी पत्नी से उसने उत्पन्न किया:

योबाब, जिब्या, मेशा, मल्काम, <sup>१०</sup> येऊज, सखिया, और मिमहि। ये उसके पुत्र थे, पिताओं के घरानों के प्रधान।

<sup>११</sup> हूशिम से उसने उत्पन्न किया:

अबीतूब और एलपल।

<sup>१२</sup> एलपल के पुत्र थे:

एबर, मिशाम, और शेमेड—जिन्होंने औनो और लोड को उसके नगरों के साथ बनाया—

<sup>१३</sup> और बेरिया और शेमा, जो अयालोन के निवासियों के पिताओं के घरानों के प्रधान थे, जिन्होंने गत के निवासियों को भगाया।

<sup>१४</sup> और अहियो, शाशक, और येरमोत, <sup>१५</sup> जबद्या, अरद, एदर, <sup>१६</sup> मीकाएल, इशपाह, और योहा, ये बेरिया के पुत्र थे।

<sup>१७</sup> जबद्या, मशुल्ताम, हिज्की, हेबर, <sup>१८</sup> इश्मरै, इजिल्याह, और योबाब, ये एलपल के पुत्र थे।

<sup>१९</sup> याकीम, जिक्रि, जब्दी, <sup>२०</sup> एलीएनै, जिल्लथै, एलीएल, <sup>२१</sup> अदायाह, बेरायाह, और शिप्रथ, ये शिमी के पुत्र थे।

<sup>२२</sup> इशपान, एबर, एलीएल, <sup>२३</sup> अबदोन, जिक्रि, हानान, <sup>२४</sup> हनन्याह, एलाम, अंतोथियाह, <sup>२५</sup> इफदियाह, और पनूएल, ये शाशक के पुत्र थे।

<sup>२६</sup> शमशेरै, शेहरियाह, अतल्याह, <sup>२७</sup> यारेशियाह, एलियाह, और जिक्रि, ये येरोहम के पुत्र थे।

<sup>२८</sup> ये उनके पीढ़ियों के अनुसार पिताओं के घरानों के प्रधान थे,

मुख्य लोग जो यरूशलेम में रहते थे।

<sup>२९</sup> अब गिबोन में, गिबोन का पिता येर्इएल रहता था,

और उसकी पत्नी का नाम माका था।

<sup>३०</sup> उसका पहलौठा पुत्र अब्दोन था, फिर सूर, किश, बाल, नादाब, <sup>३१</sup> गदोर, अहियो, और जकर।

<sup>३२</sup> मिकलोत ने शिमेआ को उत्पन्न किया।

दे भी अपने रिश्तेदारों के साथ यरूशलेम में अपने अन्य रिश्तेदारों के सामने रहते थे।

<sup>३३</sup> नेर ने किश को उत्पन्न किया,

किश ने शाऊल को उत्पन्न किया, शाऊल ने योनातान, मल्कीया अबीनादाब, और एशबाले को उत्पन्न किया।

<sup>३४</sup> योनातान का पुत्र मरीबाले था,

और मरीबाले ने मीकाएल को उत्पन्न किया।

<sup>३५</sup> मीकाएल के पुत्र थे:

पिथोन, मेलेक, तारिया, और आहाज।

<sup>३६</sup> आहाज ने यहोदा को उत्पन्न किया,

और यहोदा ने अलेमेथ, अजमारेथ, और जिमी को उत्पन्न किया, और जिमी ने मोजा को उत्पन्न किया।

<sup>३७</sup> मोजा ने बिनाए को उत्पन्न किया; रापा उसका पुत्र था,

एलेआसा उसका पुत्र, अज्जेल उसका पुत्र।

<sup>३८</sup> अज्जेल के छह पुत्र थे, और ये उनके नाम हैं:

# 1 इतिहास

अंग्रीकाम् बोकरू इश्माएल शेअर्याहि औबद्याह  
और हानाना। ये सब अज्ञेल के पुत्र थे।

<sup>39</sup> उसके भाई एशेक के पुत्र थे:

ऊलाम उसका पहलौठा, येऊश द्वासरा, और  
एलीफेलेट तीसरा।

<sup>40</sup> ऊलाम के पुत्र वीर योद्धा थे जो धनुष चलाते थे,

और उनके बहुत से पुत्र और पोते थे, 150। ये सब  
बिन्यामीन के पुत्रों में से थे।

**९** इस प्रकार समस्त इसाएल की वंशवलियों के  
अनुसार गणना की गई, और देखो, वे इसाएल के  
राजाओं की पुस्तक में लिखी हुई हैं। और यहूदा को  
उनकी विश्वासपात के कारण बाबुल में निवासित कर  
दिया गया।

<sup>2</sup> अब जो पहले अपने नगरों में अपनी संपत्तियों में बसे  
थे, वे थे:

इसाएली, याजक, लेवी और मांदिर के सेवक।

<sup>3</sup> यहूदा के पुत्रों में से, बिन्यामीन के पुत्रों में से, और एप्रेम  
और मनश्वे के पुत्रों में से कुछ यस्तश्लेषम बसे:

<sup>4</sup> अमीहृद का पुत्र ऊतै, ओम्री का पुत्र, इम्री का पुत्र,  
बानी का पुत्र, जेरेज के पुत्रों में से, यहूदा का पुत्र।

<sup>5</sup> शीलोनियों में से, असायाह, पहलौठा और उसके  
पुत्र।

<sup>6</sup> जेरेह के पुत्रों में से युएल और उनके संबंधी, 690।

<sup>7</sup> बिन्यामीन के पुत्रों में से सल्लू मेशुल्लाम का पुत्र  
होदव्याह का पुत्र, हस्सून्ना का पुत्र,<sup>४</sup> और इब्रियाह,  
येरोहम का पुत्र, और एला, उज्जी का पुत्र, मिक्री का  
पुत्र, और मेशुल्लाम, शेफट्याह का पुत्र, रज़एल का  
पुत्र, इन्नियाह का पुत्र,

<sup>९</sup> और उनके संबंधी उनकी पीढ़ियों के अनुसार  
956। ये सब अपने पिताओं के घरानों के प्रधान थे।

<sup>10</sup> याजकों में से, यदायाह, यहोयारीब, याकीन,

<sup>11</sup> और अजर्याह, हिल्कियाह का पुत्र, मेशुल्लाम का  
पुत्र, सादोक का पुत्र, मरायोत का पुत्र, अहितुब का  
पुत्र, जो परमेश्वर के घर का प्रधान अधिकारी था,

<sup>12</sup> और अदायाह, येरोहम का पुत्र, पश्हूर का पुत्र,  
मल्कियाह का पुत्र, और मासै, अदिएल का पुत्र,  
याहजेराह का पुत्र, मेशुल्लाम का पुत्र, मेशिल्लोमित का  
पुत्र, इम्पेर का पुत्र

<sup>13</sup> और उनके संबंधी, उनके पिताओं के घरानों के  
प्रधान, 1,760 सक्षम पुरुष जो परमेश्वर के घर की  
सेवा के काम के लिए थे।

<sup>14</sup> लेवियों में से, शमायाह, हस्शूब का पुत्र, अंग्रीकाम  
का पुत्र, हश्व्याह का पुत्र, मरारी के पुत्रों में से,

<sup>15</sup> और बकबक्कार, हेरश, और गालाल, और  
मत्त्याह, मीका का पुत्र, जिक्रि का पुत्र, आसाप का  
पुत्र

<sup>16</sup> और औबद्याह, शमायाह का पुत्र, गालाल का पुत्र,  
यदूतून का पुत्र, और बेरेयाह, असा का पुत्र, एल्काना  
का पुत्र, जो नेटोफाती बस्तियों में रहते थे।

<sup>17</sup> अब द्वारपाल थे:

शल्लूम, अकूब, तलमोन, अहिमान, और उनके  
संबंधी, शल्लूम प्रधान था।

<sup>18</sup> अब तक रह राजा के पूर्व द्वार पर था। ये लेवी के पुत्रों  
के शिविर के द्वारपाल थे।

<sup>19</sup> शल्लूम, कोरे का पुत्र, एवियासाफ का पुत्र, कोरह का  
पुत्र, और उसके पितृकुल के संबंधी, कोरहियों में से,  
तम्बू के द्वारों के रखवाले, सेवा के काम के ऊपर थे।

और उनके पिताओं ने प्रभु के शिविर के ऊपर, प्रवेश  
के रखवाले थे।

<sup>20</sup> फीनीहास, एलीआजर का पुत्र, पहले उनके ऊपर  
अधिकारी था, और प्रभु उसके साथ था।

<sup>21</sup> जकर्याह, मेशेलेम्याह का पुत्र, मिलापवाले तम्बू के  
प्रवेश का द्वारपाल था।

# 1 इतिहास

<sup>22</sup> जो सब द्वारपाल चुने गए थे, वे 212 थे। ये अपनी बस्तियों में वंशावली के अनुसार गिने गए थे,

जिन्हें दाऊद और दृष्टि शमूएल ने उनके विश्वासपात्र पद में नियुक्त किया था।

<sup>23</sup> इस प्रकार वे और उनके पुत्र प्रभु के घर के द्वारों की देखरेख करते थे,

अथवा तम्भु के घर की, पहरेदारों के रूप में।

<sup>24</sup> द्वारपाल चारों दिशाओं में थे:

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण।

<sup>25</sup> उनके संबंधी अपनी बस्तियों में से सात-सात दिन के अंतराल पर उनके साथ रहने आते थे;

<sup>26</sup> क्योंकि चारों प्रधान द्वारपाल, जो लेवी थे, उन्हें परमेश्वर के घर के कक्षों और भंडारों का उत्तरदायित्व सौंपा गया था।

<sup>27</sup> वे परमेश्वर के घर के चारों ओर रात बिताते थे, क्योंकि पहरा उनके सुपुर्द था;

और वे हर सुबह इसे खोलने के प्रभारी थे।

<sup>28</sup> अब उनमें से कुछ सेवा के बर्तनों के लिए जिम्मेदार थे, क्योंकि वे उन्हें अंदर लाते और बाहर ले जाते समय गिनते थे।

<sup>29</sup> उनमें से कुछ को फर्नीचर और पवित्र स्थान के सभी बर्तनों का, और महीन आटे, दाखरस, तेल, लोबान, और मसालों का उत्तरदायित्व सौंपा गया था।

<sup>30</sup> याजकों के पुत्रों में से कुछ मसालों के मिश्रण की तैयारी करते थे।

<sup>31</sup> मतिथ्याह, लेवियों में से, जो शल्लूम कोरही का पहलौठा था,

तवे में रोटी पकाने का उत्तरदायित्व था।

<sup>32</sup> कोहाथियों के पुत्रों के कुछ संबंधी प्रत्येक सब्ज को शोब्रेड तैयार करने के प्रभारी थे।

<sup>33</sup> अब ये गायक थे, लेवियों के पिताओं के घरानों के प्रधान, जो मंदिर के कक्षों में रहते थे और अन्य सेवा से मुक्त थे, क्योंकि वे दिन-रात अपने काम में लगे रहते थे।

<sup>34</sup> ये लेवियों के पिताओं के घरानों के प्रधान थे उनकी पीढ़ियों के अनुसार, प्रधान पुरुष, जो यरूशलैम में रहते थे।

<sup>35</sup> गिबोन में यिएल, गिबोन का पिता, रहता था,

और उसकी पत्नी का नाम माका था।

<sup>36</sup> उसका पहलौठा पुत्र अब्दोन था, फिर सूर, कीश, बाल, नेर, नादाब,<sup>37</sup> गेदोर, अहियो, जकर्याह, और मिक्लोत।

<sup>38</sup> मिक्लोत ने शिमीआम को उत्पन्न किया।

वे भी अपने संबंधियों के साथ यरूशलैम में अपने अन्य संबंधियों के सामने रहते थे।

<sup>39</sup> नेर ने कीश को उत्पन्न किया, और कीश ने शाऊल को उत्पन्न किया;

शाऊल ने योनातान, मल्कीशुआ, अबीनादाब, और एशबेल को उत्पन्न किया।

<sup>40</sup> योनातान का पुत्र मरीबबेल था,

और मरीबबेल ने मीका को उत्पन्न किया।

<sup>41</sup> मीका के पुत्र थे:

पिथोन, मेलेक, तह्वेआ, और आहाज।

<sup>42</sup> आहाज ने यारह को उत्पन्न किया,

और यारह ने आलेमेत, अजमावेत, और जिम्मी को उत्पन्न किया, और जिम्मी ने मोजा को उत्पन्न किया;

<sup>43</sup> मोजा ने बिनआ को उत्पन्न किया,

और उसका पुत्र रफायाह था, उसका पुत्र एलेआसा था, और उसका पुत्र अज्जेल था।

# 1 इतिहास

<sup>४४</sup> अज्ञेल के छह पुत्र थे जिनके नाम थे:

अक्रीकाम् बोकेरू इश्माएल् शोअर्याह् ओबद्याह्  
और हनाना् ये अज्ञेल के पुत्र थे।

**10** अब पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, और इस्राएल के पुरुष पलिश्तियों के सामने से भाग गए और गिलबोआ पर्वत पर मारे गए।

<sup>२</sup> पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों का पीछा करते रहे, और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब और मल्की-शूआ को मार डाला।

<sup>३</sup> युद्ध शाऊल के विरुद्ध भयंकर हो गया, और धनुर्धारियों ने उसे पा लिया;

और वह धनुधर्मीयों द्वारा धायल हो गया।

<sup>४</sup> तब शाऊल ने अपने शस्त्रधारी से कहा,

“अपनी तलवार खींच और मुझे भेद डाल नहीं तो ये खतनारहित आकर मेरा अपमान करेंगे” परंतु उसका शस्त्रधारी नहीं चाहता था क्योंकि वह बहुत डरता था। इसलिए शाऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिर पड़ा।

<sup>५</sup> जब उसके शस्त्रधारी ने देखा कि शाऊल मर गया है,

तो वह भी अपनी तलवार पर गिर पड़ा और मर गया।

<sup>६</sup> इस प्रकार शाऊल अपने तीन पुत्रों के साथ मर गया, और उसके घर के सभी लोग एक साथ मारे गए।

<sup>७</sup> जब घाटी में सभी इस्राएली पुरुषों ने देखा कि वे भाग गए हैं, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं,

तो उन्होंने अपने नगरों को छोड़ दिया और भाग गए। तब पलिश्ती आए और उनमें बस गए।

<sup>८</sup> अगले दिन जब पलिश्ती मारे गए लोगों को लूटने आए,

तो उन्होंने शाऊल और उसके पुत्रों को गिलबोआ पर्वत पर गिरा हुआ पाया।

<sup>९</sup> उन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर और उसके शस्त्र ले लिए, और पलिश्तियों की भूमि में चारों ओर दूत भेजे,

ताकि वे अपने देवताओं और लोगों को शुभ समाचार दें।

<sup>१०</sup> उन्होंने उसके शस्त्र अपने देवताओं के घर में रखे,

और उसके खोपड़ी को दागोन के घर में ठांग दिया।

<sup>११</sup> जब याबेश-गिलाद के सभी लोगों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल के साथ क्या किया है,

<sup>१२</sup> तो सभी वीर पुरुष उठे और शाऊल और उसके पुत्रों के शरीर को लिया, और वे उन्हें याबेश ले आए, और उन्होंने उनकी हड्डियों को याबेश में बलूत के नीचे दफनाया,

और उन्होंने सात दिन तक उपवास किया।

<sup>१३</sup> इस प्रकार शाऊल अपनी अविश्वासनीयता के कारण मर गया जो उसने यहोवा के विरुद्ध की थी,

क्योंकि उसने यहोवा के वचन को नहीं रखा, और इसलिए भी कि उसने एक माध्यम से परामर्श लिया, उससे पूछताछ की,

<sup>१४</sup> और यहोवा से परामर्श नहीं लिया।

इसलिए उसने उसे मृत्यु के घाट उतार दिया और राज को शिशी के पुत्र दाऊद को सौंप दिया।

**11** तब समस्त इस्राएल हेब्रोन में दाऊद के पास इकट्ठा हुआ और कहा,

“देखो, हम तुम्हारी हड्डी और तुम्हारा मांस हैं।

<sup>२</sup> पहले के समय में, जब शाऊल राजा था, तब भी तुम ही इस्राएल को बाहर ले जाते और भीतर लाते थे। और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमसे कहा: ‘तुम मेरे लोगों इस्राएल के चरवाहे बनोगे, और तुम मेरे लोगों इस्राएल के प्रधान बनोगे।’”

# 1 इतिहास

<sup>३</sup> इसलिए इसाएल के सब बुजुर्ग हेब्रोन में राजा के पास आए, और दाऊद ने हेब्रोन में यहोवा के सामने उनके साथ एक वाचा बाँधी;

और उन्होंने दाऊद का अभिषेक इसाएल पर राजा के रूप में किया, यहोवा के वचन के अनुसार जो शमूएल के द्वारा आया था।

<sup>४</sup> तब दाऊद और समस्त इसाएल यरूशलेम गए (जो यबूस है); और यबूसी उस देश के निवासी थे।

<sup>५</sup> यबूस के निवासियों ने दाऊद से कहा,

"पुम् यहाँ प्रवेश नहीं कर सकते।" फिर भी दाऊद ने सियोन के गढ़ पर कब्जा कर लिया, जो दाऊद का नगर कहलाता है।

<sup>६</sup> अब दाऊद ने कहा था,

"जो कोई पहले यबूसियों को मारेगा, वही प्रधान और सेनापति होगा।" योआब, सर्वाधार का पुत्र, पहले ऊपर गया, इसलिए वह प्रधान बन गया।

<sup>७</sup> तब दाऊद गढ़ में रहने लगा;

इसलिए उसे दाऊद का नगर कहा गया।

<sup>८</sup> उसने नगर को चारों ओर से बनाया, मिल्लों से लेकर चारों दिशाओं में,

और योआब ने नगर के शेष भाग की मरम्मत की।

<sup>९</sup> दाऊद महान और महानंतर होता गया,

क्योंकि सेनाओं का यहोवा उसके साथ था।

<sup>10</sup> अब ये वे वीर पुरुषों के प्रधान हैं जो दाऊद के पास थे, जिन्होंने उसे उसके राज्य में दृढ़ समर्थन दिया, समस्त इसाएल के साथ, उसे राजा बनाने के लिए यहोवा के वचन के अनुसार इसाएल के विषय में।

<sup>11</sup> ये दाऊद के वीर पुरुषों के नेता हैं:

हकमोनी का पुत्र यशोबाम, तीस के प्रमुख, उसने अपने भाले से तीन सौ को एक बार में मारा।

<sup>12</sup> उसके बाद ऐतेआज्जर था, ददो का पुत्र, अहोहाई, जो तीन वीर पुरुषों में से एक था।

<sup>13</sup> वह पास-दमम में दाऊद के साथ था, जब पलिश्ती वर्हाँ युद्ध के लिए इकट्ठा हुए थे,

और वहाँ जौ से भरा हुआ एक खेत था, और लोग पलिश्तियों के सामने से भाग गए।

<sup>14</sup> परन्तु उन्होंने खेत के बीच में खड़े होकर उसे बचाया, और पलिश्तियों को मारा;

और यहोवा ने उन्हें बड़ी विजय दी।

<sup>15</sup> अब तीस प्रमुख पुरुषों में से तीन चट्टान की ओर दाऊद के पास गए, अदुल्लाम की गुफा में,

जबकि पलिश्तियों की सेना रेफाईम की घाटी में डेरा डाले हुए थे।

<sup>16</sup> तब दाऊद गढ़ में था, जबकि पलिश्तियों की चौकी तब बेतलेहेम में थी।

<sup>17</sup> दाऊद की इच्छा हुई और उसने कहा,

"ओह, कोई मुझे बेतलेहेम के कुएँ से पानी पिलाए, जो फाटक के पास है।"

<sup>18</sup> तो तीनों पलिश्तियों की छावनी में से होकर गए और बेतलेहेम के कुएँ से पानी खींचा जो फाटक के पास था, और उसे लेकर दाऊद के पास आए;

फिर भी दाऊद ने उसे नहीं पिया, बल्कि उसे यहोवा के लिए उंडेल दिया।

<sup>19</sup> और उसने कहा,

"मेरे परमेश्वर से दूर हो कि मैं ऐसा करूँ। क्या मैं इन पुरुषों का रक्त पीऊँ जो अपनी जान जोखिम में डालकर गए थे? क्योंकि वे अपनी जान जोखिम में डालकर इसे लाए थे।" इसलिए उसने उसे नहीं पिया। ये तीन वीर पुरुषों के कार्य थे।

<sup>20</sup> योआब का भाई अबशै, वह तीस का प्रधान था।

# 1 इतिहास

उसने अपने भाले से तीन सौ को मारा, और उसका नाम तीनों के समान था।

<sup>21</sup> वह तीस में सम्मानित था,

परन्तु वह तीन तक नहीं पहुँचा। और दाऊद ने उसे अपने अंगरक्षक पर नियुक्त किया।

<sup>22</sup> यहोयादा का पुत्र बनायाह, कब्जील का एक वीर पुरुष, महान कार्यों में पराक्रमी, मोआब के एरियल के दो पुत्रों को मार डाला।

उसने एक बफर्टे दिन में एक गड्ढे में एक सिंह को भी मारा।

<sup>23</sup> उसने एक मिस्री को भी मारा, जो पाँच हाथ ऊँचा था।

अब मिस्री के हाथ में एक भाला था जो बुनकर के शहरीर के समान था, परन्तु वह उसके पास एक डंडे के साथ गया और मिस्री के हाथ से भाला छीन लिया और उसे उसके अपने भाले से मार डाला।

<sup>24</sup> ये कार्य यहोयादा के पुत्र बनायाह ने किए,

और उसका नाम तीन वीर पुरुषों के समान था।

<sup>25</sup> वह तीस में सम्मानित था,

परन्तु वह तीन तक नहीं पहुँचा। और दाऊद ने उसे अपने अंगरक्षक पर नियुक्त किया।

<sup>26</sup> अब सेनाओं के वीर पुरुष थे:

योआब का भाई असाहेल, बेथलेहेम का ददो का पुत्र एल्हानान,<sup>27</sup> हरोराई शम्पोत, पेलोनाई हेलेज,<sup>28</sup> तकोआ का इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोथ का अबीएजर,<sup>29</sup> हुणाती सिक्कैंके अहोहाई इलै,<sup>30</sup> नेतोफाती महारै, नेतोफाती बाना का पुत्र हेलेद,<sup>31</sup> गिबा का रिके का पुत्र इत्थे, बिन्यामीन के पुत्रों में से, पिराथोनाई बनायाह,<sup>32</sup> गाश की घाटियों का हुरै, अरबाथाई अबीएल,<sup>33</sup> बहुरुमाई अजमावेत, शालबोनाई एलियाबा,<sup>34</sup> गिजोनाई हाशेम के पुत्र, हराराई शागे का पुत्र योनातन,<sup>35</sup> हराराई साकर का पुत्र अहियायम्, ऊर का पुत्र एलीफाल,<sup>36</sup> मक्राराती हेफर, पेलोनाई अहियाह,<sup>37</sup> करमेलाई हेजरो, एजबाई

का पुत्र नाहै<sup>38</sup> नाथान का भाई योएल, हाग्री का पुत्र मिखार,<sup>39</sup> अम्मोनी जेलेक, ब्रेराथाई नाहै, योआब का पुत्र सर्स्याह का शस्त्रधारी,<sup>40</sup> इत्थाई ईरा, इत्थाई गारेब,<sup>41</sup> हिती ऊरियाह, अहलै का पुत्र जाबाद,<sup>42</sup> रूबनी शीजा का पुत्र अदिना, रूबनियों का प्रधान, और उसके साथ तीस,<sup>43</sup> माका का पुत्र हानान, और मिथ्याई योशाफात,<sup>44</sup> अररेराथाई उज्जिया, अरोराई होथाम के पुत्र शामा और यैईएल,<sup>45</sup> शिमी का पुत्र येजीएल, और उसका भाई योहा, तीत्साई,<sup>46</sup> महावैते एलीएल, और एलीनाम के पुत्र यरीबाई और योशायाह, और मोआवी इत्यमा,<sup>47</sup> एलीएल, ओबेद, और मेज़ोबाईत यासील।

**12** अब ये वे लोग हैं जो दाऊद के पास सिकलाग में आए, जब वह अभी भी कीश के पुत्र शाऊल के कारण प्रतिबंधित था;

और वे उन वीर पुरुषों में से थे जिन्होंने युद्ध में उसकी सहायता की।

<sup>2</sup> वे धनुष से लैस थे,

दाएँ हाथ और बाएँ हाथ दोनों से पत्थर फेंकने और धूष से तीर चलाने में सक्षम थे; वे शाऊल के बिन्यामीन से संबंधी थे।

<sup>3</sup> मुखिया अहिएज़र था, फिर योआश,

गिबेशी शमाह के पुत्र, और येजीएल और पेलेद, अजमावेत के पुत्र, और बरकाह, और यह अनातोथी,

<sup>4</sup> और इसमायाह गिबेओनी, तीस में से एक वीर पुरुष और तीस के ऊपर, फिर यिम्याह, यहजीएल, योहानान, योजाबाद गेदराती,

<sup>5</sup> एल्जाई, यरीमोत, बेल्याह, शेमयाह, शेफत्याह हरूफी,

<sup>6</sup> एल्काना, इशियाह, अज़रेल, योएज़र, और यशोबाम, कोराहियों के,

<sup>7</sup> और योएलाह और जबदियाह, गेदोर के यरोहम के पुत्र।

# 1 इतिहास

<sup>८</sup> गादी लोग वीर पुरुष थे जो दाऊद के पास जंगल में गढ़ में आए, वीरता के पुरुष, युद्ध के लिए प्रशिक्षित पुरुष,

जो ढाल और भाला संभाल सकते थे और जिनके चेहरे सिंहों के चेहरे जैसे थे, और वे पहाड़ों पर हिरन की तरह तेज थे।

<sup>९</sup> एजर पहला था, ओबद्याह द्वितीया, एलीआब तीसरा,

<sup>10</sup> मिष्पत्रा चौथा, यिर्याह पाँचवाँ

<sup>11</sup> अंती छठा, एलीएल सातवाँ

<sup>12</sup> योहानान आठवाँ, एल्जाबाद नौवाँ

<sup>13</sup> यिर्याह दसवाँ, मखबत्रै ग्यारहवाँ।

<sup>14</sup> ये गाद के पुत्रों में से सेना के कप्तान थे;

जो सबसे छोटा था वह सौ के बराबर था, और सबसे बड़ा हजार के।

<sup>15</sup> ये वे हैं जिन्होंने पहले महीने में यरदन को पार किया जब वह अपने सभी किनारों पर उफन रहा था,

और उन्होंने घाटियों में सभी को पूर्व और पश्चिम की ओर भगाया।

<sup>16</sup> फिर बिन्यामीन और यहूदा के कुछ पुत्र गढ़ में दाऊद के पास आए।

<sup>17</sup> दाऊद उनके मिलने के लिए बाहर गया और उनसे कहा,

“यदि तुम शांति से मेरी सहायता करने के लिए आते हों तो मेरा हृदय तुम्हारे साथ जुड़ा रहेगा, परंतु यदि मुझे मेरे शत्रुओं को धोखा देने के लिए यद्यपि मेरे हाथों में कोई हिस्सा नहीं है, तो हमारे पितरों का परमेश्वर देखे और न्याय करे।”

<sup>18</sup> फिर आत्मा अमासाई पर आया, जो तीस का मुखिया था, और उसने कहा,

“हम तुम्हारे हैं, दाऊद, और तुम्हारे साथ हैं, यिशै के पुत्र। शांति, शांति तुम्हें, और शांति उसे जो तुम्हारी सहायता करता है; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी सहायता करता है।” इसलिए दाऊद ने उन्हें स्वीकार किया और उन्हें सेना के कप्तान बना दिया।

<sup>19</sup> मनश्शे से कुछ लोग दाऊद के पास चले गए जब वह पलिशितयों के साथ शाऊल के विरुद्ध युद्ध करने जा रहा था। हालांकि, उन्होंने उनकी सहायता नहीं की,

क्योंकि पलिश्ती सरदारों ने परामर्श के बाद उसे भेज दिया, यह कहते हुए “वह हमारे सिर की कीमत पर अपने स्वामी शाऊल के पास चला जा सकता है।”

<sup>20</sup> जब वह सिकलाग गया, तो मनश्शे से जो लोग उसके पास आए वे थे:

अद्वाह, योज्ञाबाद, योदियेल, मीकाएल, योज्ञाबाद, एलीहू, और जिल्तै, मनश्शे के हजारों के कप्तान।

<sup>21</sup> उन्होंने दाऊद की लुटेरों के दल के विरुद्ध सहायता की,

क्योंकि वे सभी वीरता के पुरुष थे और सेना में कप्तान थे।

<sup>22</sup> क्योंकि दिन-प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता करने के लिए आते थे, जब तक कि वहाँ एक बड़ी सेना नहीं हो गई, जैसे परमेश्वर की सेना।

<sup>23</sup> अब ये युद्ध के लिए सुसज्जित विभाजनों की संख्या है, जो हेब्रोन में दाऊद के पास आए ताकि शाऊल के राज्य को उसके पास मोड़ सकें,

यहोवा के वरचन के अनुसार।

<sup>24</sup> यहूदा के पुत्र जो ढाल और भाला ले जाते थे:

6,800, युद्ध के लिए सुसज्जित।

<sup>25</sup> शिमोन के पुत्रों से, युद्ध के लिए वीरता के पुरुष:

7,100 /

<sup>26</sup> लेवी के पुत्रों से:

# 1 इतिहास

4,600 /

<sup>27</sup> यहोयादा हारून के घर का नेता था,

और उसके साथ 3,700 थे।

<sup>28</sup> साथ ही जादोक, एक युवा वीरता में शक्तिशाली,

और उसके पिता के घर से बाईस कप्तान।

<sup>29</sup> बिन्यामीन के पुत्रों से, शाऊल के संबंधी:

3,000; क्योंकि उस समय तक उनमें से अधिकांश ने शाऊल के घर के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखी थी।

<sup>30</sup> एप्रेम के पुत्रों से, वीरता के पुरुष, अपने पितरों के घरों में प्रसिद्ध पुरुषः

20,800 /

<sup>31</sup> मनश्शे के आधे गोत्र से:

18,000, जिन्हें नाम से दाऊद को राजा बनाने के लिए नामित किया गया था।

<sup>32</sup> इस्साकार के पुत्रों से, जो समय को समझते थे, इस्साएल को क्या करना चाहिए इस ज्ञान के साथः

उनके प्रमुख 200 थे, और उनके सभी संबंधी उनके आदेश में थे।

<sup>33</sup> जबूलून से, जो युद्ध के सभी प्रकार के हथियारों के साथ युद्ध के लिए तैयार थे:

50,000, जो किना किसी दोहरे मन के युद्ध में पंक्ति बना सकते थे।

<sup>34</sup> नप्ताली से:

1,000 कप्तान, और उनके साथ 37,000 ढाल और भाला के साथ।

<sup>35</sup> दानियों से, जो युद्ध में पंक्ति बना सकते थे:

28,600 /

<sup>36</sup> आशेर से, जो युद्ध के लिए बाहर गए, जो युद्ध में पंक्ति बना सकते थे:

40,000 /

<sup>37</sup> यरदन के दूसरी ओर से, रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र से, युद्ध के सभी प्रकार के हथियारों के साथः

120,000 /

<sup>38</sup> ये सभी, युद्ध के पुरुष जो युद्ध में पंक्ति बना सकते थे, हेब्रोन में एक पूर्ण हृदय के साथ आए ताकि दाऊद को पूरे इस्साएल का राजा बना सकें; और बाकी सभी इस्साएल एक मन के थे दाऊद को राजा बनाने के लिए।

<sup>39</sup> वे दाऊद के साथ तीन दिन वहाँ रहे, खाते और पीते हुए,

क्योंकि उनके संबंधियों ने उनके लिए प्रबंध किया था।

<sup>40</sup> इसके अलावा, जो उनके निकट थे, यहाँ तक कि इस्साकार, जबूलून, और नप्ताली तक, गधों, ऊँटों, खच्चरों, और बैलों पर भोजन लाए—आठे की बड़ी मात्रा, अंजीर के केक, किशमिश के केक, दाखमधु, तेल, बैल, और भेड़।

इस्साएल में वास्तव में आनंद था।

**13** तब दाऊद ने हजारों और सैकड़ों के प्रधानों से परामर्श किया,

यहाँ तक कि हर नेता से।

<sup>2</sup> दाऊद ने इस्साएल की सारी सभा से कहा,

"यदि यह तुम्हें अच्छा लगता है, और यदि यह हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर से है तो हम इस्साएल के पूरे देश में बचे हुए अपने बंधुओं को संदेश भेजें और उनके साथ उनके नगरों में रहने वाले याजकों और लौवियों को भी, ताकि वे हमसे मिल सकें।

<sup>3</sup> और हम अपने परमेश्वर की वाचा का सन्दर्भ वापस लाएँ, क्योंकि शाऊल के दिनों में हमने इसे नहीं खोजा था।"

# 1 इतिहास

<sup>४</sup> तब सारी सभा ने कहा कि वे ऐसा करेंगे,

क्योंकि यह बात सब लोगों की दृष्टि में सही थी।

<sup>५</sup> इसलिए दाऊद ने समस्त इस्साएल को एकत्र किया,  
पिस के शिहोर से लेकर हमात के प्रवेश द्वार तक,

ताकि वे किर्यात्-यारीम से परमेश्वर की वाचा का  
सन्दूक ला सकें।

<sup>६</sup> दाऊद और समस्त इस्साएल बाला तक गए, जो यहूदा  
का किर्यात्-यारीम है,

ताकि वहाँ से परमेश्वर की वाचा का सन्दूक लाएँ जो  
करूबों के ऊपर विराजमान यहोवा का है, जहाँ  
उसका नाम पुकारा जाता है।

<sup>७</sup> उहोने अबीनादाब के घर से परमेश्वर की वाचा का  
सन्दूक एक नए रथ पर रखा,

और उज्जा और अहियो रथ को बला रहे थे।

<sup>८</sup> दाऊद और समस्त इस्साएल परमेश्वर के सामने अपनी  
पूरी शक्ति से उत्सव मना रहे थे,

यहाँ तक कि गीत, वीणा, सारंगी, डफ, झांझ, और  
तुरहियों के साथ।

<sup>९</sup> जब वे कीदोन के खलिहान तक पहुँचे, उज्जा ने सन्दूक  
को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया,

क्योंकि बैल लगभग उसे उलटने वाले थे।

<sup>१०</sup> यहोवा का क्रोध उज्जा पर भड़क उठा, इसलिए उसने  
उसे मारा क्योंकि उसने सन्दूक की ओर हाथ बढ़ाया था;

और वह वहाँ परमेश्वर के सामने मर गया।

<sup>११</sup> तब दाऊद यहोवा के उज्जा पर प्रकोप के कारण  
फ्रोधित हुआ;

और उसने उस स्थान का नाम परेज-उज्जा रखा, जो  
आज तक है।

<sup>१२</sup> दाऊद उस दिन परमेश्वर से डर गया, और कहा,

"मैं परमेश्वर की वाचा का सन्दूक अपने पास कैसे ला  
सकता हूँ?"

<sup>१३</sup> इसलिए दाऊद ने सन्दूक को अपने पास, दाऊद के  
नगर में नहीं लाया,

बल्कि उसे गिर्ती ओबेद-एदोम के घर ले गया।

<sup>१४</sup> इस प्रकार परमेश्वर की वाचा का सन्दूक ओबेद-  
एदोम के परिवार के साथ उसके घर में तीन महीने तक  
रहा;

और यहोवा ने ओबेद-एदोम के घराने और उसके सब  
कुछ पर आशीष दी।

**१४** अब सूर के राजा हीराम ने दाऊद के पास  
देवदार की लकड़ी, राजमिस्त्री और बढ़ई भेजे,

ताकि उसके लिए एक घर बनाएं।

<sup>२</sup> और दाऊद ने समझ लिया कि यहोवा ने उसे इस्साएल  
पर राजा के रूप में स्थापित किया है,

और उसकी राज्य की बहुत महिमा की गई है, उसके  
लोगों इस्साएल के कारण।

<sup>३</sup> फिर दाऊद ने यरूशलेम में और पलियाँ तीं,

और दाऊद ने और पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न कीं।

<sup>४</sup> ये उसके यरूशलेम में उत्पन्न हुए पुत्रों के नाम हैं:

शम्मूआ, शोबाब, नातान, सुलैमान, <sup>५</sup> इभार, एलीशूआ,  
एल्पेलेट, <sup>६</sup> नोगह, नेफेग, याफिया, <sup>७</sup> एलीशामा,  
बेलियादा, और एलीफेलेट।

<sup>८</sup> जब पलिश्ती ने सुना कि दाऊद को समस्त इस्साएल  
का राजा अभिषिक्त किया गया है, सभी पलिश्ती दाऊद  
की खोज में गए;

और दाऊद ने यह सुना और उनके खिलाफ निकला।

<sup>९</sup> अब पलिश्ती आए और रेफाईम की घाटी में छापा  
मारा।

# 1 इतिहास

<sup>10</sup> तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा,

और उसके लिए एक तम्बू खड़ा किया।

“क्या मैं पलिशितयों के खिलाफ जाऊं, और क्या तू  
उन्हें मेरे हाथ में देगा?” और यहोवा ने उससे कहा,  
“जाओ, क्योंकि मैं उन्हें तुम्हारे हाथ में ढूँगा।”

<sup>11</sup> सो वे बाल-पराजिम तक गए, और दाऊद ने उन्हें वहां  
पराजित किया। और दाऊद ने कहा,

“परमेश्वर ने मेरे हाथ से मेरे शत्रुओं को तोड़ दिया है  
जैसे जल का प्रवाह।” इसलिए उन्होंने उस स्थान पर  
नाम बाल-पराजिम रखा।

<sup>12</sup> उन्होंने वहां अपने देवताओं को छोड़ दिया;

इसलिए दाऊद ने आदेश दिया और उन्हें आग से  
जला दिया गया।

<sup>13</sup> फिर पलिशितयों ने घाटी में एक और छापा मारा।

<sup>14</sup> दाऊद ने फिर से परमेश्वर से पूछा, और परमेश्वर ने  
उससे कहा,

“तुम सीधे उनके पीछे मत जाओ, उनके पीछे से  
घूमकर बाका-झाड़ियों के सामने से आओ।”

<sup>15</sup> और ऐसा होगा, जब तुम बाका-झाड़ियों के ऊपर से  
मार्हिंग की आवाज सुनोगे,

तब तुम युद्ध के लिए निकल जाओ, क्योंकि परमेश्वर  
तुम्हारे आगे जाकर पलिशितयों की सेना को मारेगा।”

<sup>16</sup> दाऊद ने ठीक वैसे ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे  
आदेश दिया था,

और उन्होंने गिबोन से लेकर गोज्रेर तक पलिशितयों की  
सेना को मारा।

<sup>17</sup> तब दाऊद की खाति सभी देशों में फैल गई;

तब दाऊद ने कहा,

“परमेश्वर के सन्दूक को कोई भी नहीं उठाएगा सिवाय  
लेवियों के, क्योंकि यहोवा ने उन्हें चुना है कि वे यहोवा  
के सन्दूक को उठाएं और सदैव उसकी सेवा करें।”

<sup>3</sup> और दाऊद ने समस्त इसाएल को यरूशलेम में  
इकट्ठा किया ताकि यहोवा के सन्दूक को उस स्थान पर  
लाया जाए जिसे उसने इसके लिए तैयार किया था।

<sup>4</sup> दाऊद ने हारून के पुत्रों और लेवियों को इकट्ठा किया:

<sup>5</sup> कहात के पुत्रों में से उरीएल प्रधान, और उसके  
<sup>120</sup> संबंधी;

<sup>6</sup> मरारी के पुत्रों में से असीया प्रधान, और उसके  
<sup>220</sup> संबंधी;

<sup>7</sup> गेरोम के पुत्रों में से योएल प्रधान, और उसके <sup>130</sup>  
संबंधी;

<sup>8</sup> एलीजाफान के पुत्रों में से शमायाह प्रधान, और  
उसके <sup>200</sup> संबंधी;

<sup>9</sup> हेब्रोन के पुत्रों में से एलीएल प्रधान, और उसके <sup>80</sup>  
संबंधी;

<sup>10</sup> उज्जीएल के पुत्रों में से अमीन्दाब प्रधान, और  
उसके <sup>112</sup> संबंधी।

<sup>11</sup> तब दाऊद ने याजक सादोक और अबियाथार को  
बुलाया, और लेवियों को:

उरीएल, असीया, योएल, शमायाह, एलीएल, और  
अमीन्दाब,

<sup>12</sup> और उनसे कहा,

“तुम लेवियों के पितरों के घरानों के प्रधान हो, अपने  
आप को और अपने संबंधियों को पवित्र करो, ताकि  
तुम इसाएल के परमेश्वर यहोवा के सन्दूक को उस  
स्थान पर लाओ जिसे मैंने इसके लिए तैयार किया है।”

**15** अब दाऊद ने अपने लिए दाऊदपुर में घर  
बनाए; और उसने परमेश्वर के सन्दूक के लिए एक स्थान  
तैयार किया,

# 1 इतिहास

<sup>13</sup> क्योंकि तुमने पहले इसे नहीं उठाया, हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम पर प्रकोप किया, क्योंकि हमने उसे विधि के अनुसार नहीं खोजा।<sup>14</sup>

<sup>14</sup> इसलिए याजकों और लेवियों ने अपने आप को पवित्र किया ताकि इसाएल के परमेश्वर यहोवा के सन्दूक को उठा सके।

<sup>15</sup> और लेवियों के पुत्रों ने परमेश्वर के सन्दूक को अपने कंधों पर डंडों के साथ उठाया,

जैसा कि मूसा ने यहोवा के वचन के अनुसार आज्ञा दी थी।

<sup>16</sup> तब दाऊद ने लेवियों के प्रधानों से कहा

कि वे अपने संबंधियों को गायक नियुक्त करें, संगीत के यंत्रों के साथ, वीणा, सारंगी, और झाँझ के साथ अपनी आवाज़ों को आनंद के साथ उठाने के लिए।

<sup>17</sup> इसलिए लेवियों ने नियुक्त किया:

योएल के पुत्र डेमान, और उसके संबंधियों में से असाप, बरेक्याह का पुत्र, और मरारी के पुत्रों में से उनके संबंधियों में से, एतान, कुशायाह का पुत्र,

<sup>18</sup> और उनके साथ उनके दूसरे श्रेणी के संबंधी:

जकर्याह, याज़ीएल, शेमिरामोथ, यहिएल, उत्री, एलीआब, बनायाह, मासेयाह, मत्तियाह, एलीफेलहु, मिकन्याह, ओबेद-एदोम, और यहिएल, द्वारपाल।

<sup>19</sup> इसलिए गायक, हेमान, आसाप, और एतान नियुक्त किए गए

कांस्य के झाँझ को जोर से बजाने के लिए

<sup>20</sup> और जकर्याह, अज़ीएल, शेमिरामोथ, यहिएल, उत्री, एलीआब, मासेयाह, और बनायाह

अलामोथ के लिए वीणा के साथ

<sup>21</sup> और मत्तियाह, एलीफेलहु, मिकन्याह, ओबेद-एदोम, यहिएल, और अज़जियाह

शेमिनिथ के लिए सारंगी के साथ, गायन का निर्देशन करने के लिए।

<sup>22</sup> चेनन्याह, लेवियों का प्रधान, गायन का प्रभारी था;

उसने गायन में निर्देश दिया क्योंकि वह कुशल था।

<sup>23</sup> और बरेक्याह और एल्कानाह सन्दूक के द्वारपाल थे।

<sup>24</sup> और याजक शेब्याह, योशापात, नतनएल, अमसै, जकर्याह, बनायाह, और एलीएज़र

परमेश्वर के सन्दूक के आगे तुराहियां बजाते थे। और ओबेद-एदोम और यहिएह भी सन्दूक के द्वारपाल थे।

<sup>25</sup> इसलिए दाऊद, इसाएल के पुरनियों और हजारों के प्रधानों के साथ, यहोवा की वाचा के सन्दूक को लाने के लिए गए।

ओबेद-एदोम के घर से आनंद के साथ।

<sup>26</sup> और क्योंकि परमेश्वर लेवियों की सहायता कर रहा था जो यहोवा की वाचा के सन्दूक को उठा रहे थे,

उन्होंने सात बैल और सात मेढ़े बलिदान किए।

<sup>27</sup> अब दाऊद महीन लिनन के वस्त्र में लिपटे हुए थे, सभी लेवी जो सन्दूक को उठा रहे थे, और गायक और गायक के नेता चेनन्याह के साथ।

दाऊद ने भी एक लिनन का एपोद पहना था।

<sup>28</sup> इसलिए समस्त इसाएल ने यहोवा की वाचा के सन्दूक को जयजयकार के साथ लाया,

और नरसिंगों की ध्वनि के साथ तुराहियों के साथ, जोर से बजने वाले झाँझ के साथ, वीणा और सारंगी के साथ।

<sup>29</sup> और जब यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर में आया, तब शाऊल की बेटी मीकल खिड़की से देख रही थी और उसने राजा दाऊद को कूदते और उत्सव मनाते देखा;

और उसने अपने हृदय में उसे तुच्छ जाना।

# 1 इतिहास

**16** और वे परमेश्वर की वाचा का सन्दूक लाए और उसे उस तम्भे में रखा जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था,

और उन्होंने परमेश्वर के सामने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।

<sup>2</sup> जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना समाप्त किया,

तब उसने यहोवा के नाम से लोगों को आशीर्वाद दिया।

<sup>3</sup> उसने इसाएल के प्रत्येक पुरुष और स्त्री को,

एक-एक रोटी, मांस का एक टुकड़ा, और किशमिश का एक केक वितरित किया।

<sup>4</sup> उसने कुछ लेवियों को यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने सेवकाई के लिए नियुक्त किया,

ताकि वे यहोवा, इसाएल के परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करें।

<sup>5</sup> आसाप प्रधान, और उसके बाद जकर्याह, किर येर्इएल, शेमिरामोत, यहीएल, मरित्याह, एलीआब, बनायाह, और ओबेद-एदोम, और येर्इएल वीणा और सारगी बजाते थे; आसाप ऊँचे स्वर में झाझ बजाते थे;

<sup>6</sup> और बनायाह और यहजीएल याजक लगातार परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के सामने तुराहियाँ बजाते थे।

<sup>7</sup> तब उसी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद करने के लिए यह गीत आसाप और उसके भाईयों को सौंपा

<sup>8</sup> यहोवा का धन्यवाद करो उसके नाम का आह्वान करो, उसके कामों को लोगों में प्रकट करो।

<sup>9</sup> उसके लिए गाओ, उसकी स्तुति करो, उसके सब अद्भुत कामों का वर्णन करो।

<sup>10</sup> उसके पवित्र नाम में गर्व करो, यहोवा को खोजने वालों का हृदय आनंदित हो।

<sup>11</sup> यहोवा और उसकी शक्ति को खोजो, उसके मुख का लगातार अनुसरण करो।

<sup>12</sup> उसके अद्भुत कामों को स्मरण करो जो उसने किए हैं, उसके चमत्कार और उसके मुख के निर्णयों को।

<sup>13</sup> हे इसाएल के वंशज, उसके सेवक, हे याकूब के पुत्र, उसके चुने हुए।

<sup>14</sup> वही यहोवा हमारा परमेश्वर है, उसके निर्णय सारी पृथ्वी पर हैं।

<sup>15</sup> उसकी वाचा को सदा स्मरण करो, वह वचन जो उसने हजार पीढ़ियों तक ठहराया है,

<sup>16</sup> वह वाचा जो उसने अब्राहम के साथ की, और उसकी शपथ इसहारक के लिए।

<sup>17</sup> उसने इसे याकूब के लिए एक विधि के रूप में ठहराया, इसाएल के लिए एक सदा की वाचा के रूप में,

<sup>18</sup> यह कहते हुए, "मैं तुम्हें कनान देश द्वाँगा, तुम्हारी विरासत के हिस्से के रूप में।"

<sup>19</sup> जब तुम संख्या में थोड़े थे, बहुत थोड़े, और उसमें परदरेशी थे,

<sup>20</sup> और वे राष्ट्र से राष्ट्र तक घूमते रहे, और एक राज्य से दूसरी प्रजा तक,

<sup>21</sup> उसने किसी को उन्हें सताने की अनुमति नहीं दी, और उसने उनके लिए राजाओं को डांटा, यह कहते हुए

<sup>22</sup> "मेरे अभिषिक्तों को मत छुओ, और मेरे भविष्यद्वक्ताओं को कोई हानि मत पहुँचाओ।"

<sup>23</sup> यहोवा के लिए गाओ, सारी पृथ्वी, उसकी उद्धार की शुभ सूचना दिन-प्रतिदिन सुनाओ।

# 1 इतिहास

<sup>24</sup> उसकी महिमा को राष्ट्रों में बताओ, उसके अद्भुत कामों को सब लोगों में।

<sup>25</sup> क्योंकि यहोवा महान है, और अत्यंत सुन्ति के योग्य है, वह सब देवताओं से अधिक भय योग्य है।

<sup>26</sup> क्योंकि सब लोगों के देवता मूर्तियाँ हैं, परन्तु यहोवा ने आकाशों को बनाया।

<sup>27</sup> उसकी उपस्थिति में वैभव और महिमा हैं, उसकी जगह में शक्ति और आनंद हैं।

<sup>28</sup> यहोवा को अपण करो हे लोगों के कुलों, यहोवा को महिमा और शक्ति अपण करो।

<sup>29</sup> यहोवा के नाम की महिमा को अपण करो, एक भेट लाओ, और उसके सामने आओ; पवित्र वस्त्रों में यहोवा की आराधना करो।

<sup>30</sup> उसके सामने कांप उठो, सारी पृथ्वी, वास्तव में ससार ढट्ठा से स्पायित है, वह नहीं हिलेगा।

<sup>31</sup> आकाश आनंदित हो, और पृथ्वी मग्न हो; और राष्ट्रों में कहें "यहोवा राज्य करता है।"

<sup>32</sup> समुद्र गरजे, और जो कुछ उसमें है, खेत आनंदित हो, और जो कुछ उसमें है।

<sup>33</sup> तब वन के दृक्ष्य यहोवा के सामने आनंद से गाएँ; क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने आ रहा है।

<sup>34</sup> यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह अच्छा है, क्योंकि उसकी विश्वासयोग्यता सदा की है।

<sup>35</sup> तब कहो, "हमें बचा, हमारे उद्घार के परमेश्वर, और हमें राष्ट्रों से इकट्ठा करो और बचा लो, ताकि हम तुम्हारे पवित्र नाम का धन्यवाद करें और तुम्हारी सुन्ति में महिमा करें।"

<sup>36</sup> धन्य है यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, अनंत से अनंत तक! तब सब लोगों ने कहा, "आमीन," और यहोवा की सुन्ति की।

<sup>37</sup> इसलिए उसने आसाप और उसके भाईयों को यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने छोड़ दिया,

ताकि वे सन्दूक के सामने लगातार सेवा करें, जैसा कि हर दिन का काम आवश्यक था;

<sup>38</sup> और ओबेद-एदोम को उसके अड़सठ भाईयों के साथ;

ओबेद-एदोम, जो यदूतून का पुत्र था, और होसा, द्वारापाल के रूप में।

<sup>39</sup> उसने सादोक याजक और उसके भाईयों को यहोवा के तम्बू के सामने छोड़ दिया जो गिबोन में ऊँचे स्थान पर था,

<sup>40</sup> यहोवा के लिए होमबलि की बेदी पर लगातार सुबह और शाम होमबलि चढ़ाने के लिए,

जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, जो उसने इसाएल को आज्ञा दी थी।

<sup>41</sup> उनके साथ हैमान और यदूतून थे, और बाकी जो चुने गए थे,

जिन्हें नाम से यहोवा का धन्यवाद करने के लिए नियुक्त किया गया था, क्योंकि उसकी विश्वासयोग्यता सदा की है।

<sup>42</sup> उनके साथ हैमान और यदूतून थे जो ऊँचे स्वर में बजाने के लिए तुरहियाँ और झाँझा बजाते थे,

और परमेश्वर के गीतों के लिए वाद्य यंत्रों के साथ, और यदूतून के पुत्र द्वार के लिए।

<sup>43</sup> तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए; और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिए लौट आया।

**17** जब दाऊद अपने घर में रहने लगा, तब दाऊद ने नबी नातान से कहा,

"देखो, मैं देवदार की लकड़ी के घर में रहता हूँ परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू के पर्दीं के नीचे है।"

<sup>2</sup> तब नातान ने दाऊद से कहा,

"जो कुछ तेरे मन में है, वह सब कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है।"

# 1 इतिहास

<sup>३</sup> परन्तु उसी रात को ऐसा हुआ, कि परमेश्वर का वचन नातान के पास आया, यह कहते हुए,

<sup>४</sup> "मेरे दास दाऊद से कह, 'यहोवा यह कहता हैँ; तू मेरे लिए घर नहीं बनाएगा जिसमें मैं निवास करूँ।

<sup>५</sup> क्योंकि जब से मैं इसाएल को ऊपर लाया, तब से आज तक मैंने किसी घर में निवास नहीं किया, परन्तु मैं तम्भू से तम्भू और एक निवास स्थान से द्रुसरे में जाता रहा हूँ।

<sup>६</sup> जहाँ कहीं मैं इसाएल के साथ चला, क्या मैंने इसाएल के किसी न्यायी से, जिसे मैंने अपनी प्रजा की चरवाही करने की आज्ञा दी थी, कहा, "तूने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?"

<sup>७</sup> अब, मेरे दास दाऊद से यह कह, 'सेनाओं का यहोवा यह कहता हैँ; मैंने तुझे चरागाह से, भेड़ों की पीछे से लिया, ताकि तू मेरी प्रजा इसाएल का नेता हो सके।

<sup>८</sup> मैं तेरे साथ रहा जहाँ कहीं तू गया, और मैंने तेरे सब शत्रुओं को तुझसे दूर किया; और मैं तेरा नाम पृथ्वी के महान लोगों के समान बनाऊँगा।

<sup>९</sup> और मैं अपनी प्रजा इसाएल के लिए एक स्थान ठहराऊँगा, और उन्हें लगाऊँगा, ताकि वे अपने स्थान में निवास करें और फिर कभी न हिलें, और दुष्ट लोग उन्हें फिर से नष्ट नहीं करेंगे जैसा पहले किया था।

<sup>१०</sup> जिस दिन से मैंने अपनी प्रजा इसाएल पर न्यायी ठहराएँगा और मैं तेरे सब शत्रुओं को दबा द्वौँगा। इसके अलावा, मैं तुझसे यह कहता हूँ कि यहोवा तेरे लिए एक घर बनाएगा।

<sup>११</sup> जब तेरे दिन पूरे हो जाएँगे और तू अपने पितरों के साथ जाएगा, तब मैं तेरे बाद तेरे वंशजों में से एक को उठाऊँगा, तेरे पुत्रों में से एक को, और मैं उसके राज्य को स्थिर करूँगा।

<sup>१२</sup> वह मेरे लिए एक घर बनाएगा, और मैं उसके सिंहासन को सदा के लिए स्थिर करूँगा।

<sup>१३</sup> मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा पुत्र होगा; और मैं अपनी कृपा उससे नहीं हटाऊँगा, जैसा मैंने उससे पहले वाले से हटाई थी।

<sup>१४</sup> परन्तु मैं उसे अपने घर और अपने राज्य में सदा के लिए स्थिर करूँगा, और उसका सिंहासन सदा के लिए स्थिर रहेगा।"

<sup>१५</sup> इन सब वचनों के अनुसार और इस सब दर्शन के अनुसार, नातान ने दाऊद से कहा।

<sup>१६</sup> तब राजा दाऊद यहोवा के सामने गया और बैठकर कहा,

"हे प्रभु परमेश्वर, मैं कौन हूँ और मेरा घर कौन है, कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है?

<sup>१७</sup> यह तेरी वाणि में एक छोटी बात थी, हे परमेश्वर परन्तु तूने अपने दास के घर के विषय में बहुत समय तक के लिए बात की है, और मुझे एक उच्च पद के व्यक्ति के समान देखा है, हे प्रभु परमेश्वर।

<sup>१८</sup> तेरे दास पर जो सम्मान किया गया है उसके विषय में दाऊद तुझसे और क्या कह सकता है? क्योंकि तू अपने दास को जानता है।

<sup>१९</sup> हे प्रभु अपने दास के कारण, और अपनी इच्छा के अनुसार, तूने यह सब महानता की है, ताकि इन सब महान बातों को प्रकट करो।

<sup>२०</sup> हे प्रभु तेरे समान कोई नहीं है, और तेरे सिवा कोई परमेश्वर नहीं है, जैसा कि हमने अपने कानों से सुना है।

<sup>२१</sup> और पृथ्वी पर कौन सी एक जाति तेरी प्रजा इसाएल के समान है, जिसे परमेश्वर ने अपने लिए एक प्रजा के रूप में छुड़ाया, ताकि तू अपने लिए एक नाम बना सके महान और भयानक कामों द्वारा, उन जातियों को निकालकर जो तेरी प्रजा के सामने थीं, जिन्हें तूने मिस्र से छुड़ाया?

<sup>२२</sup> क्योंकि तूने अपनी प्रजा इसाएल को सदा के लिए अपनी प्रजा बनाया है, और तू हे प्रभु उनका परमेश्वर बन गया है।

<sup>२३</sup> अब हे प्रभु, जो वचन तूने अपने दास और उसके घर के विषय में कहा है, वह सदा के लिए स्थिर हो, और जैसा तूने कहा है वैसा कर।

# 1 इतिहास

<sup>24</sup> तेरा नाम स्थिर हो और सदा के लिए महान हो, यह कहते हुए "सेनाओं का यहोवा इसाएल का परमेश्वर है, यहाँ तक कि इसाएल का परमेश्वर, और तेरे दास दाऊद का घर तेरे सामने स्थिर हो!"

<sup>25</sup> क्योंकि तू मेरे परमेश्वर, ने अपने दास को प्रकट किया है कि तू उसके लिए एक घर बनाएगा, इसलिए तेरे दास ने तेरे सामने प्रार्थना करने का साहस पाया है।

<sup>26</sup> अब, हे प्रभु, तू परमेश्वर है, और तूने अपने दास से यह अच्छा वचन कहा है।

<sup>27</sup> और अब, तूने अपने दास के घर को आशीर्वद देने की कृपा की है, कि वह सदा के लिए तेरे सामने बना रहे, क्योंकि तू हे प्रभु, ने आशीर्वद दिया है, और यह सदा के लिए आशीर्वादित है।

**18** इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद ने पलिशियों को पराजित किया और उन्हें वश में कर लिया,

और उसने गात और उसके गाँवों को पलिशियों के हाथ से ले लिया।

<sup>2</sup> और उसने मोआब को पराजित किया,

और मोआबियों ने दाऊद के सेवक बनकर उसे कर दिया।

<sup>3</sup> दाऊद ने हददेज़ेर, जो सोबा का राजा था, को हमात में पराजित किया,

जब वह अपनी सत्ता को यूफ्रेट्स नदी तक स्थापित करने जा रहा था।

<sup>4</sup> दाऊद ने उससे एक हजार रथ, सात हजार घुड़सवार, और बीस हजार पैदल सैनिक लिए।

और दाऊद ने सभी रथ के घोड़ों को लंगड़ा कर दिया, परंतु उनमें से सौ रथों के लिए पर्याप्त घोड़े बचा लिए।

<sup>5</sup> जब दमिश्क के अरामी हददेज़ेर राजा की सहायता के लिए आए, दाऊद ने अरामियों के बाईस हजार पुरुषों को मार गिराया।

<sup>6</sup> तब दाऊद ने दमिश्क के अरामियों के बीच में चौकियाँ स्थापित कीं,

और अरामी दाऊद के सेवक बन गए और कर देने लगे। और जहाँ कहीं दाऊद गया, वहाँ यहोवा ने उसकी सहायता की।

<sup>7</sup> और दाऊद ने सोबा के राजा हददेज़ेर के सेवकों द्वारा लाए गए सोने के ढालों को लिया,

और उन्हें यस्तलम ले आया।

<sup>8</sup> तिब्बत और कुन से भी, जो हददेज़ेर के नगर थे, दाऊद ने बहुत सारा पीतल लिया,

जिससे सुलैमान ने पीतल का समुद्र, स्तंभ और पीतल के बर्तन बनाए।

<sup>9</sup> जब हमात के राजा तोऊ ने सुना कि दाऊद ने सोबा के राजा हददेज़ेर की सारी सेना को पराजित कर दिया है,

<sup>10</sup> तो उसने अपने पुत्र हदोरेम को राजा दाऊद के पास भेजा कि वह उसे अभिवादन करे और उसे आशीर्वद दे,

क्योंकि उसने हददेज़ेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित किया था। क्योंकि हददेज़ेर तोऊ के साथ युद्ध में था। और वह सोने, चाँदी और पीतल के सभी प्रकार के वस्त्र लाया।

<sup>11</sup> राजा दाऊद ने इन सबको यहोवा को समर्पित किया,

उन चाँदी और सोने के साथ जो उसने सभी राष्ट्रों से लूटे थे। एदोम, मोआब, अम्मोन के पुत्रों, पलिशियों और अमालेक से।

<sup>12</sup> इसके अलावा, अबीशै, जो सर्वायह का पुत्र था, ने नमक की घाटी में अठारह हजार एदोमियों को पराजित किया।

<sup>13</sup> तब उसने एदोम में चौकियाँ स्थापित कीं, और सभी एदोमी दाऊद के सेवक बन गए।

और जहाँ कहीं दाऊद गया, वहाँ यहोवा ने उसकी सहायता की।

# 1 इतिहास

<sup>14</sup> इस प्रकार दाऊद ने पूरे इसाएल पर राज्य किया;

और उसने अपने सभी लोगों के लिए न्याय और धर्म का पालन किया।

<sup>15</sup> योआब, जो सर्वाह का पुत्र था, सेना पर था,

और यहोशापात, जो अहिलूद का पुत्र था, लेखा-जोखा रखने वाला था।

<sup>16</sup> सादोक, जो अहिलूब का पुत्र था, और अबीमेलेक, जो अवियाधार का पुत्र था, याजक थे,

और शावशा सचिव था,

<sup>17</sup> बनायाह, जो यहोयादा का पुत्र था, करेथियों और पेतिथियों पर था,

और दाऊद के पुत्र राजा के पास मुख्य अधिकारी थे।

**19** इसके बाद ऐसा हुआ कि अम्मोनियों के राजा नाहाश की मृत्यु हो गई,

और उसके स्थान पर उसका पुत्र राजा बना।

<sup>2</sup> तब दाऊद ने कहा,

“मैं नाहाश के पुत्र हानून के प्रति कृपा दिखाऊंगा, क्योंकि उसके पिता ने मेरे प्रति कृपा दिखाई थी।” इसलिए दाऊद ने उसके पिता के विषय में उसे सांत्वना देने के लिए दूत भेजे। और दाऊद के सेवक अम्मोनियों के देश में हानून के पास उसे सांत्वना देने के लिए आए।

<sup>3</sup> परन्तु अम्मोनियों के प्रधानों ने हानून से कहा,

“क्या तुम सोचते हो कि दाऊद तुम्हारे पिता का सम्मान कर रहा है क्योंकि उसने तुम्हारे पास सांत्वनादाता भेजे हैं? क्या उसके सेवक तुम्हारे पास देश की खोज करने, उसे गिराने और उसकी जासूसी करने नहीं आए हैं?”

<sup>4</sup> तब हानून ने दाऊद के सेवकों को लिया,

उनके आधे दाढ़ी मूँड़ दी और उनके वर्तों को कूल्हों तक काट दिया, और उन्हें विदा कर दिया।

<sup>5</sup> तब कुछ लोग गए और दाऊद को उन पुरुषों के बारे में सूचित किया,

और उसने उनसे मिलने के लिए दूत भेजे, क्योंकि वे पुरुष अत्यंत अपमानित थे। और राजा ने कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ी फिर से न बढ़ जाए, तब तक यहीं में ठहरो, और फिर लौट आओ।”

<sup>6</sup> जब अम्मोनियों ने देखा कि उन्होंने दाऊद के प्रति अपने को घृणास्पद बना लिया है, तब हानून और अम्मोनियों ने एक हजार किंवर चाँदी भेजी

अपने लिए मेसोपोटामिया, अराम-माका और सोबा से रथ और घुड़सवार किराए पर लेने के लिए।

<sup>7</sup> इसलिए उन्होंने अपने लिए बर्तीस हजार रथ किराए पर लिए, और माका के राजा और उसके लोगों को, जो मदीबा के सामने आकर डेरा डाले हुए थे। और अम्मोनियों ने अपने नगरों से इकट्ठा होकर युद्ध के लिए आए।

<sup>8</sup> जब दाऊद ने इसके बारे में सुना,

तो उसने योआब और सारी सेना, वीर पुरुषों को भेजा।

<sup>9</sup> और अम्मोनियों ने बाहर आकर नगर के प्रवेश द्वार पर युद्ध के लिए पंक्ति बनाई,

और जो राजा आए थे, वे अपने आप मैदान में थे।

<sup>10</sup> अब जब योआब ने देखा कि युद्ध उसके सामने और पीछे दोनों ओर से है,

तो उसने इसाएल के सभी बुने हुए पुरुषों में से बुना, और वे अरामियों के विरुद्ध पंक्ति में खड़े हुए।

<sup>11</sup> परन्तु शेष लोगों को उसने अपने भाई अबीशे के अधीन रखा,

और वे अम्मोनियों के विरुद्ध पंक्ति में खड़े हुए।

<sup>12</sup> और उसने कहा,

# 1 इतिहास

“यदि अरामी मेरे लिए बहुत मजबूत हैं, तो तुम मेरी सहायता करना, परन्तु यदि अम्मोनी तुम्हारे लिए बहुत मजबूत हैं, तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

<sup>13</sup> साहस्री बनो, और अपने लोगों के लिए और हमारे परमेश्वर के नगरों के लिए साहस दिखाओ; और यहोवा वही करे जो उसकी दृष्टि में अच्छा है।”

<sup>14</sup> इसलिए योआब और उसके साथ के लोग अरामियों के विरुद्ध युद्ध के लिए आगे बढ़े,

और वे उससे भाग गए।

<sup>15</sup> जब अम्मोनियों ने देखा कि अरामी भाग गए हैं,

तो वे भी अबीशै उसके भाई से भाग गए और नगर में प्रवेश किया। तब योआब यूरुशलेम आया।

<sup>16</sup> जब अरामियों ने देखा कि वे इसाएल से हार गए हैं, तो उन्होंने दूत भेजे और उन अरामियों को बुलाया जो यूफ्रात नदी के पार थे,

और शोफक हृददेज़ेर की सेना का सेनापति उनके नेतृत्व में था।

<sup>17</sup> जब दाऊद को सूचित किया गया, तो उसने सारे इसाएल को इकट्ठा किया,

और यरदन को पार किया, और उन पर आक्रमण किया, और उनके विरुद्ध पंक्ति में खड़ा हुआ। इसलिए जब दाऊद ने अरामियों के विरुद्ध युद्ध के लिए पंक्ति बनाई, तो उन्होंने उसके विरुद्ध युद्ध किया।

<sup>18</sup> परन्तु अरामी इसाएल से भाग गए, और दाऊद ने अरामियों के सात हजार रथियों और चालीस हजार पैदल सैनिकों को मार डाला,

और उसने शोफक सेना के सेनापति को मार डाला।

<sup>19</sup> जब हृददेज़ेर के सेवकों ने देखा कि वे इसाएल से हार गए हैं,

तो उन्होंने दाऊद के साथ शांति कर ली और उसकी सेवा की। इसलिए अरामी अम्मोनियों की सहायता करने के लिए तैयार नहीं थे।

**20** फिर ऐसा हुआ कि वसंत ऋतु में, जब राजा युद्ध के लिए बाहर जाते हैं, तब योआब ने सेना का नेतृत्व किया और अम्मोनियों की भूमि को नष्ट किया,

और रब्बा को घेर लिया। लेकिन दाऊद यूरुशलेम में रहा और योआब ने रब्बा को मारा और उसे जीत लिया।

<sup>2</sup> दाऊद ने उनके राजा के सिर से मुकुट उतार लिया,

और उसने पाया कि उसका वजन एक सोने की प्रतिभा के बराबर था, और उसमें एक कीमती पत्तर था, और उसे दाऊद के सिर पर रखा गया। और उसने शहर की लूट को बड़ी मात्रा में बाहर निकाला।

<sup>3</sup> उसने वहां के लोगों को बाहर निकाला, और उन्हें आरी, लोहे की कुल्हाड़ी, और कुल्हाड़ियों से काम पर लगा दिया।

और दाऊद ने अम्मोनियों के सभी शहरों के साथ ऐसा ही किया। फिर दाऊद और सभी लोग यूरुशलेम लौट आए।

<sup>4</sup> अब इसके बाद ऐसा हुआ कि गोज़र में पलिश्टियों के साथ युद्ध छिड़ गया;

तब हुशारी सिङ्कै ने सिप्पे को मारा, जो दैत्यों के वंशजों में से एक था, और वे पराजित हो गए।

<sup>5</sup> और पलिश्टियों के साथ फिर से युद्ध हुआ,

और याईर के पुत्र एल्हानान ने लहमी को मारा, जो गिती गोलियत का भाई था, जिसके भाले का डंडा जुलाहे की बीम के समान था।

<sup>6</sup> फिर गथ में युद्ध हुआ,

जहां एक महान कद का व्यक्ति था जिसके चौबीस अंगुल और पैर थे, प्रत्येक हाथ पर छह और प्रत्येक पैर पर छह, और वह भी दैत्यों के वंशजों में से था।

<sup>7</sup> जब उसने इसाएल को चुनौती दी, तो शिमेआ के पुत्र योनातान, जो दाऊद का भाई था, ने उसे मारा।

<sup>8</sup> ये गथ में दैत्यों के वंशज थे,

# 1 इतिहास

और वे दाऊद के हाथ और उसके सेवकों के हाथ से  
गिर गए।

## 21 तब शैतान ने इस्साएल के विरुद्ध खड़ा होकर

दाऊद को इस्साएल की गिनती करने के लिए  
उकसाया।

<sup>2</sup> इसलिए दाऊद ने योआब और लोगों के नेताओं से  
कहा,

"जाओ, बेर्झोंगा से दान तक इस्साएल की गिनती करो  
और मुझे रिपोर्ट लाकर दो, ताकि मैं उनकी संख्या  
जान सकूँ।"

<sup>3</sup> परन्तु योआब ने कहा,

"प्रभु अपने लोगों को सौ गुना बढ़ा दे। परन्तु मेरे स्वामी  
राजा क्या वे सब मेरे स्वामी के सेवक नहीं हैं? मेरे  
स्वामी इस बात की खोज क्यों करते हैं? क्यों वह  
इस्साएल पर दोष लाना चाहते हैं?"

<sup>4</sup> फिर भी, राजा का वचन योआब पर भारी पड़ा।  
इसलिए योआब चला गया और पूरे इस्साएल में गया,  
और यरूशलेम आया।

<sup>5</sup> योआब ने दाऊद को सभी लोगों की गिनती का  
आँकड़ा दिया।

और पूरे इस्साएल में 11,00,000 तलवार चलाने वाले  
पुरुष थे, और यहां में 4,70,000 तलवार चलाने  
वाले पुरुष थे।

<sup>6</sup> परन्तु उसने लेवी और बिन्यामीन को उनमें नहीं गिना,  
क्योंकि राजा की आज्ञा योआब को घृणित लगी।  
<sup>7</sup> अब परमेश्वर इस बात से अप्रसन्न थे,  
इसलिए उन्होंने इस्साएल को मारा।

<sup>8</sup> तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा,

"मैंने इस काम को करके बहुत बड़ा पाप किया है।  
परन्तु अब, कृपया अपने दास के दोष को क्षमा करें  
क्योंकि मैंने बहुत मूर्खता की है।"

<sup>9</sup> प्रभु ने गाद से, जो दाऊद का दर्शी था, कहा,

<sup>10</sup> "जाओ और दाऊद से कहो, 'यह प्रभु का वचन है  
मैं तुम्हें तीन बातें पेश कर रहा हूँ, अपने लिए उनमें से  
एक चुनो, जिसे मैं तुम्हारे लिए करूँगा।'"

<sup>11</sup> तब गाद दाऊद के पास आया और उससे कहा,

"यह प्रभु का वचन है।

<sup>12</sup> 'अपने लिए चुनो: या तो तीन साल का अकाल, या  
तीन महीने तक अपने शत्रुओं के सामने बह जाना, जब  
तुम्हारे शत्रुओं की तलवार तुम्हें पकड़ ले, या तीन दिन  
तक प्रभु की तलवार, देश में महामारी, और प्रभु का  
द्रूत इस्साएल के क्षेत्र में नाश करता हुआ।' अब तय  
करो कि मैं उसे क्या उत्तर द्वं जिसने मुझे भेजा है।'

<sup>13</sup> दाऊद ने गाद से कहा,

"मैं बड़ी विपत्ति में हूँ, कृपया मुझे प्रभु के हाथ में गिरने  
दो, क्योंकि उसकी दिया बहुत बड़ी है। परन्तु मुझे  
मनुष्यों के हाथ में न गिरने दो।"

<sup>14</sup> इसलिए प्रभु ने इस्साएल पर एक महामारी भेजी,

और इस्साएल के सतर हजार पुरुष गिर गए।

<sup>15</sup> और परमेश्वर ने यरूशलेम को नाश करने के लिए  
एक द्रूत भेजा; परन्तु जब वह उसे नाश करने वाला था,  
प्रभु ने देखा और उस विपत्ति से पछताया,

और नाश करने वाले द्रूत से कहा, "यह पर्याप्त है, अब  
अपना हाथ रोक लो।" और प्रभु का द्रूत अेननि यकूसी  
के खलिहान के पास खड़ा था।

<sup>16</sup> तब दाऊद ने अपनी आँखें उठाई और देखा कि प्रभु  
का द्रूत पृथ्वी और आकाश के बीच खड़ा है,

उसके हाथ में तलवार खींची हुई थी, जो यरूशलेम के  
ऊपर फैली हुई थी। और दाऊद और बुजुर्ग टाट से  
ढके हुए अपने चेहरों पर गिर पड़े।

# 1 इतिहास

<sup>17</sup> दाऊद ने परमेश्वर से कहा,

"क्या यह मैं नहीं था जिसने लोगों की मिनती करने का आदेश दिया था? वास्तव में, मैंने ही पाप किया है और बहुत बुरा किया है, परन्तु ये भेड़ें, उन्होंने क्या किया है? मेरे प्रभु परमेश्वर, कृपया अपना हाथ मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर रखो, परन्तु अपनी प्रजा पर नहीं, ताकि उन पर महामारी न हो।"

<sup>18</sup> तब प्रभु के दूत ने गाद को दाऊद से कहने की आज्ञा दी

कि दाऊद ओर्नन यकूसी के खलिहान पर प्रभु के लिए एक वेदी बनाए।

<sup>19</sup> इसलिए दाऊद गाद के वचन के अनुसार ऊपर गया,

जो उसने प्रभु के नाम में कहा था।

<sup>20</sup> अब ओर्नन ने मुड़कर देखा और दूत को देखा, और उसके चार बेटे जो उसके साथ थे, छिप गए।

और ओर्नन गेहूं की दंवाई कर रहा था।

<sup>21</sup> जब दाऊद ओर्नन के पास आया,

ओर्नन ने देखा और दाऊद को देखा, और खलिहान से बाहर आया, और दाऊद के सामने अपने चेहरे के बल गिर पड़ा।

<sup>22</sup> तब दाऊद ने ओर्नन से कहा,

"मूझे खलिहान का स्थान दे, ताकि मैं उस पर प्रभु के लिए एक वेदी बना सकूँ, मूझे इसे पूरी कीमत पर दे ताकि प्रजा से महामारी रुक सके।"

<sup>23</sup> परन्तु ओर्नन ने दाऊद से कहा,

"इसे अपने लिए ले लो, और मेरा स्वामी राजा जो कुछ अच्छा समझे वह करें। देखो, मैं होमबलियों के लिए बैल द्वंगा, लकड़ी के लिए दंवाई के साज, और अन्नबलि के लिए गेहूं मैं सब कुछ द्वंगा।"

<sup>24</sup> फिर भी, राजा दाऊद ने ओर्नन से कहा,

"नहीं, परन्तु मैं इसे पूरी कीमत पर अवश्य छोड़ूँगा; क्योंकि मैं प्रभु के लिए वह नहीं तुंगा जो तुम्हारा है, न ही ऐसा होमबलि चढ़ाऊँगा जिसकी मुझे कोई लागत नहीं।"

<sup>25</sup> इसलिए दाऊद ने ओर्नन को उस स्थान के लिए सोने के छह सौ शेकल वजन दिए।

<sup>26</sup> तब दाऊद ने वहां प्रभु के लिए एक वेदी बनाई,

और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और उसने प्रभु से प्रार्थना की, और उसने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग के साथ उसे उत्तर दिया।

<sup>27</sup> तब प्रभु ने दूत को आज्ञा दी,

और उसने अपनी तलवार को उसकी म्यान में रख दिया।

<sup>28</sup> उस समय, जब दाऊद ने देखा कि प्रभु ने उसे ओर्नन यकूसी के खलिहान पर उत्तर दिया है,

उसने वहां बलिदान चढ़ाया।

<sup>29</sup> अब प्रभु का तंबू जो मूसा ने जंगल में बनाया था,

और होमबलि की वेदी उस समय गिरोन के ऊंचे स्थान पर थी।

<sup>30</sup> परन्तु दाऊद उसके सामने जाकर परमेश्वर से पूछताछ नहीं कर सका,

क्योंकि वह प्रभु के दूत की तलवार से भयभीत था।

**22** तब दाऊद ने कहा,

"यह यहोवा परमेश्वर का धर है, और यह इसाएल के लिए होमबलि की वेदी है।"

<sup>2</sup> इसलिए दाऊद ने इसाएल की भूमि में रहने वाले परदेशियों को इकट्ठा करने का आदेश दिया,

और उसने पथर काटने वालों को नियुक्त किया ताकि वे परमेश्वर के धर के निर्माण के लिए तैयार पथर काट सकें।

# 1 इतिहास

<sup>३</sup> दाऊद ने द्वारों के दरवाजों के लिए कीरें बनाने के लिए बड़ी मात्रा में लोहे की तैयारी की,

और तौल से अधिक कांसा।

<sup>४</sup> और अनगिनत देवदार की लकड़ी, क्योंकि सीढ़ोंनियों और सोरियों ने दाऊद के पास बड़ी मात्रा में देवदार की लकड़ी लाई।

<sup>५</sup> दाऊद ने कहा,

"मेरा पुत्र सुलैमान युवा और अनुभवहीन है, और जो घर यहोवा के लिए बनाया जाना है वह अत्यधिक भव्य होना चाहिए सभी देशों में प्रसिद्ध और गौरवशाली। इसलिए मैं इसके लिए तैयारी करूँगा।" तो दाऊद ने अपनी मृत्यु से पहले पर्याप्त तैयारी की।

<sup>६</sup> फिर उसने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाया

और उसे इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिए एक घर बनाने का आदेश दिया।

<sup>७</sup> दाऊद ने सुलैमान से कहा,

"मेरे पुत्र, मेरे मन में यहोवा मेरे परमेश्वर के नाम के लिए एक घर बनाने की इच्छा थी।"

<sup>८</sup> लेकिन यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए 'तूने बहुत रक्त बहाया है और बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी हैं तू मेरे नाम के लिए घर नहीं बनाएगा, क्योंकि तूने मेरे सामने पृथ्वी पर बहुत रक्त बहाया है।'

<sup>९</sup> देख, तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो विश्राम का व्यक्ति होगा; और मैं उसे उसके चारों ओर के सभी शत्रुओं से विश्राम द्वंगा। उसका नाम सुलैमान होगा, और मैं उसके दिनों में इसाएल को शांति और शांति द्वंगा।"

<sup>१०</sup> वह मेरे नाम के लिए एक घर बनाएगा, और वह मेरा पुत्र होगा और मैं उसका पिता बनूंगा, और मैं उसके राज्य के सिंहासन को इसाएल पर सदा के लिए स्थिर करूँगा।"

<sup>११</sup> अब, मेरे पुत्र, यहोवा तेरे साथ हो, ताकि तू यहोवा अपने परमेश्वर का घर बनाने में सफल हो सके, जैसा कि उसने तेरे विषय में कहा है।

<sup>१२</sup> केवल यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे, और इसाएल पर अधिकार दे, ताकि तू यहोवा अपने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर सके।

<sup>१३</sup> तब तू समृद्ध होगा, यदि तू सावधानी से उन विधियों और नियमों का पालन करेगा जो यहोवा ने मूसा को इसाएल के विषय में आज्ञा दी थी। दृढ़ और साहसी बन, न डर और न घबरा।

<sup>१४</sup> अब देख, मैंने यहोवा के घर के लिए बड़ी मेहनत से तैयारी की है:

एक लाख तोले सोना, दस लाख तोले चांदी, और कांसा और लोहा अनगिनत मात्रा में, क्योंकि वे बहुतायत में हैं; मैंने लकड़ी और पत्थर भी तैयार किए हैं, और तू उनमें जोड़ सकता है।

<sup>१५</sup> इसके अलावा, तेरे पास कई काम करने वाले लोग हैं:

पत्थर काटने वाले, राजमिस्ती, बद्री, और हर प्रकार के काम में कृशल लोग।

<sup>१६</sup> सोने, चांदी, कांसे, और लोहे की कोई सीमा नहीं है। उठ और काम कर, और यहोवा तेरे साथ हो।"

<sup>१७</sup> दाऊद ने इसाएल के सभी नेताओं को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने का भी आदेश दिया, यह कहते हुए,

<sup>१८</sup> "क्या यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ नहीं है? और क्या उसने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया है? क्योंकि उसने इस भूमि के निवासियों को मेरे हाथ में दे दिया है, और यह भूमि यहोवा और उसके लोगों के सामने दश में हो गई है।"

<sup>१९</sup> अब अपने हृदय और आत्मा को यहोवा अपने परमेश्वर की खोज में लगा दो। उठो, और यहोवा परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ, ताकि तुम यहोवा की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं को उस घर में ला सको जो यहोवा के नाम के लिए बनाया जाना है।"

# 1 इतिहास

**23** जब दाऊद वृद्धावस्था को पहुँचा, तो उसने अपने पुत्र सुलैमान को इसाएल पर राजा बनाया।

<sup>2</sup> और उसने इसाएल के सब नेताओं को इकट्ठा किया

याजकों और लेवियों के साथ।

<sup>3</sup> लेवियों की गिनती तीस वर्ष और उससे ऊपर के लोगों से की गई,

और उनकी संख्या पुरुषों की गणना से अड़तीस हजार थी।

<sup>4</sup> इनमें से चौबीस हजार यहोवा के घर के काम की देखरेख करने वाले थे;

और छह हजार अधिकारी और न्यायाधीश थे।

<sup>5</sup> और चार हजार द्वारपाल थे, और चार हजार यहोवा की स्तुति करने वाले थे उन यंत्रों के साथ जो दाऊद ने स्तुति के लिए बनाए थे।

<sup>6</sup> दाऊद ने उन्हें लेवी के पुत्रों के अनुसार विभागों में बाँटा:

गेशोर्न, कहात, और मेरारी।

<sup>7</sup> गेशोर्नियों में से:

लादान और शिमी।

<sup>8</sup> लादान के पुत्र थे:

यहीएल पहला, फिर जेथाम और योएल—तीन।

<sup>9</sup> शिमी के पुत्र थे:

शेलोमोत, हज़ीएल, और हारान—तीन। ये लादान के पितरों के घरानों के प्रधान थे।

<sup>10</sup> शिमी के पुत्र थे:

यहत, जिना, यऊश, और बेरिया। ये चार शिमी के पुत्र थे।

<sup>11</sup> यहत पहला था, और जिजा द्वितीय; परन्तु यऊश और बेरिया के बहुत पुत्र नहीं थे,

इसलिए उन्हें एक पितृ परिवार के रूप में मिना गया।

<sup>12</sup> कहात के पुत्र थे:

अम्माम, यिज्हार, हेब्रोन, और उज्जीएल—चार।

<sup>13</sup> अम्माम के पुत्र थे:

हारून और मूसा। और हारून को सबसे पवित्र ठरहाया गया, वह और उसके पुत्र सदा के लिए यहोवा के सामने बलिदान चढ़ाने के लिए, उसकी सेवा करने और उसके नाम में आशीर्वाद देने के लिए।

<sup>14</sup> परन्तु मूसा, जो परमेश्वर का मनुष्य था, उसके पुत्र लेवी के गोत्र में मिने गए।

<sup>15</sup> मूसा के पुत्र थे:

गेशोर्म और एलीएजर।

<sup>16</sup> गेशोर्म का पुत्र शेबूएल प्रधान था।

<sup>17</sup> एलीएजर का पुत्र रहब्याह प्रधान था; और एलीएजर के और कोई पुत्र नहीं थे,

परन्तु रहब्याह के पुत्र बहुत थे।

<sup>18</sup> यिज्हार का पुत्र शेलोमीत प्रधान था।

<sup>19</sup> हेब्रोन के पुत्र थे:

येरियाह पहला, अमर्यह द्वितीय, यहज़ीएल तीसरा, और येकमेआम चौथा।

<sup>20</sup> उज्जीएल के पुत्र थे:

मीकाह पहला और यिशियाह द्वितीय।

<sup>21</sup> मेरारी के पुत्र थे:

महली और मूशी। महली के पुत्र थे: एलीआजर और कीश।

# 1 इतिहास

<sup>22</sup> एलीआजर की मृत्यु हो गई और उसके कोई पुत्र नहीं थे, केवल पुत्रियाँ थीं,

और उनके रिश्तेदार कीश के पुत्रों ने उन्हें पतियों के रूप में लिया।

<sup>23</sup> मूर्शी के पुत्र थे:

महली, एदर और यरेमोत—तीन।

<sup>24</sup> ये लेडी के पुत्र थे उनके पितरों के घरानों के अनुसार, पितरों के घरानों के प्रधान जो गिने गए, उनके व्यक्तिगत गणना के अनुसार नामों की संख्या के अनुसार,

जो यहोवा के घर की सेवा के काम के लिए थे, बीस वर्ष और उससे ऊपर के।

<sup>25</sup> क्योंकि दाऊद ने कहा,

"इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने अपने लोगों को विश्राम दिया है, और वह यरूशलेम में सदा के लिए निवास करता है।"

<sup>26</sup> और लेवियों को अब तम्बू और उसकी सेवा के लिए सब उपकरण उठाने की आवश्यकता नहीं होगी।"

<sup>27</sup> क्योंकि दाऊद के अंतिम शब्दों के अनुसार,

लेवी के पुत्र बीस वर्ष और उससे ऊपर के गिने गए।

<sup>28</sup> क्योंकि उनकी सेवा का कार्य हारून के पुत्रों की सहायता करना है यहोवा के घर की सेवा में,

अङ्गनों और कर्मणों में और सभी पवित्र वस्तुओं की शुद्धि में यहाँ तक कि परमेश्वर के घर की सेवा के काम में,

<sup>29</sup> और शोब्रेड, अन्नबलि के लिए उत्तम आटा, जिना खमीर की रोटियाँ, या जो तवे में या मिश्रित किया जाता है, और सभी माप और आकार की मात्रा।

<sup>30</sup> उन्हें हर सुबह खड़े होकर धन्यवाद देना और यहोवा की स्तुति करनी है,

और इसी प्रकार संख्या को भी,

<sup>31</sup> और यहोवा को सब होमबलि चढ़ाने के लिए सब्बों पर, नए चाँद पर, और नियत पर्वों पर, उनके संबंध में विधि द्वारा निर्धारित संख्या में यहोवा के सामने निरंतर।

<sup>32</sup> इसलिए उन्हें मिलापवाले तम्बू की सेवाओं का पालन करना है,

पवित्र स्थान की सेवाओं का, और हारून के पुत्रों की सेवाओं का, उनके रिश्तेदारों का, यहोवा के घर की सेवा के लिए।

**24** अब हारून के पुत्रों के विभाग ये थे:

हारून के पुत्र ये नादाब, अबीहू, एलीआजर, और इथामार।

<sup>2</sup> परन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता से पहले मर गए, और उनके कोई पुत्र नहीं थे।

इसलिए एलीआजर और इथामार ने याजक के रूप में सेवा की।

<sup>3</sup> दाऊद ने एलीआजर के पुत्रों में से सादोक और इथामार के पुत्रों में से अहिमेलेक के साथ,

उन्हें उनकी सेवा में सौंपे गए कर्तव्यों के अनुसार विभाजित किया।

<sup>4</sup> इथामार के पुत्रों की तुलना में एलीआजर के पुत्रों में अधिक प्रधान पुरुष पाए गए,

और उन्होंने उन्हें उसी के अनुसार विभाजित किया। एलीआजर के पुत्रों के पिता के घरानों के सोलह प्रधान थे, और इथामार के पुत्रों के आठ उनके पिता के घरानों के अनुसार थे।

<sup>5</sup> इसलिए वे एक समूह को दूसरे के साथ चिट्ठी डालकर विभाजित किए गए,

क्योंकि पवित्र स्थान के अधिकारी और परमेश्वर के अधिकारी एलीआजर और इथामार के पुत्रों में से थे।

# 1 इतिहास

<sup>६</sup> लेवीय शमायाह, नथनेल का पुत्र, राजा, अधिकारी, याजक सादोक, अबीअंतर का पुत्र अहिमेलेक के सामने उह्ने लिखता था,

और याजकों और लेवीयों के पिता के घरानों के प्रधानों के सामने— एक पिता का घराना एलीआजर के लिए और एक इथामार के लिए लिया गया।

<sup>७</sup> पहली चिठ्ठी यहोयारीब के लिए निकली,

द्वितीय यदायाह के लिए

<sup>८</sup> तीसरी हारिम के लिए चौथी सेओरीम के लिए

<sup>९</sup> पाँचवीं मलकियाह के लिए छठी मिजामिन के लिए

<sup>१०</sup> सातवीं हक्कोज के लिए आठवीं अबियाह के लिए

<sup>११</sup> नौवीं येशुआ के लिए दसवीं शेकन्याह के लिए

<sup>१२</sup> न्यारहवीं एल्याशीब के लिए बारहवीं याकिम के लिए

<sup>१३</sup> तेरहवीं हुप्पाह के लिए चौदहवीं येशेबाब के लिए

<sup>१४</sup> पंद्रहवीं बिल्गाह के लिए सोलहवीं इम्मर के लिए

<sup>१५</sup> सत्रहवीं हेजीर के लिए अठारहवीं हप्पिजेज के लिए

<sup>१६</sup> उन्नीसवीं पेतहाह के लिए बीसवीं यहेजकेल के लिए

<sup>१७</sup> इक्कीसवीं याकिन के लिए बाईसवीं गमूल के लिए

<sup>१८</sup> तेईसवीं देलायाह के लिए चौबीसवीं मआजियाह के लिए।

<sup>१९</sup> ये उनके मंत्रालय के लिए उनके कार्यालय थे जब वे अपने पिता हारून के माध्यम से उह्ने दिए गए नियम के अनुसार प्रभु के घर में आए,

जैसे कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने उह्ने अज्ञा दी थी।

<sup>२०</sup> अब लेवी के बाकी पुत्रों में से:

अग्राम के पुत्रों में से शूबाएल् शूबाएल के पुत्रों में से यहदेयाह।

<sup>२१</sup> रहब्याह के रहब्याह के पुत्रों में से ईशियाह पहला।

<sup>२२</sup> यिज्हारियों के शेलोमोत् शेलोमोत के पुत्रों में से याहत।

<sup>२३</sup> हेब्रोन के पुत्र येरियाह पहला, अमर्याह द्वितीय, यहजीएल तीसरा, येकमेआम चौथा।

<sup>२४</sup> उज्जीएल के पुत्र मीकाह मीकाह के पुत्रों में से शामीर।

<sup>२५</sup> मीकाह का भाई ईशियाह, ईशियाह के पुत्रों में से जकयाह।

<sup>२६</sup> मरारी के पुत्र महली और सूशी, याअजियाह के पुत्र बेनो।

<sup>२७</sup> याअजियाह के द्वारा मरारी के पुत्र बेनो, शोहम, ज़क्रूर और इब्री।

<sup>२८</sup> महली के एलीआजर, जिनके कोई पुत्र नहीं थे।

<sup>२९</sup> किश के किश का पुत्र येरहमेल।

<sup>३०</sup> मूशी के पुत्र थे:

महली, एदर और यरीमोता। ये लेवीयों के पुत्र उनके पिता के घरानों के अनुसार थे।

<sup>३१</sup> इह्नोने भी चिठ्ठियाँ डालीं जैसे उनके संबंधी हारून के पुत्रों ने राजा दाऊद, सादोक, अहिमेलेक, और याजकों और लेवीयों के पिता के घरानों के प्रधानों के सामने—

पिता के घरानों के प्रधान और उनके छोटे भाई के भी।

**२५** इसके अलावा, दाऊद और सेना के प्रधानों ने सेवा के लिए आसाप, हेमान और यदूतून के कुछ पुत्रों को अलग किया,

# 1 इतिहास

जो वीणा, सारंगी और झाँझ के साथ भविष्यवाणी करने वाले थे, और उनकी सेवा करने वालों की संख्या थी

<sup>2</sup> आसाप के पुत्रों में से जक्कूर, यूसुफ, नतन्याह, और अशरेलाह, आसाप के पुत्र आसाप के निर्देशन में थे, जो राजा के निर्देशन में भविष्यवाणी करते थे।

<sup>3</sup> यद्यूतन के: यद्यूतन के पुत्र गदल्याह, जेरी, यशायाह, शिमी, हशब्याह, और मतिथ्याह—छह, अपने पिता यद्यूतन के निर्देशन में वीणा के साथ, जो धन्यवाद देने और प्रभु की स्तुति करने में भविष्यवाणी करते थे।

<sup>4</sup> हेमान के: हेमान के पुत्र बुक्कियाह, मत्तन्याह, उज्जीएल, शेब्बैल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलियायाह, गिहलती, रोममती-एज़र, योशबेकाशाह, मलोथी, होथीर, और महजियोथ।

<sup>5</sup> ये सब हेमान के पुत्र थे, जो राजा के दृष्टा थे,

उसे परमेश्वर के वचनों के अनुसार ऊँचा करने के लिए, क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह पुत्र और तीन पुत्रियाँ दीं।

<sup>6</sup> ये सब उनके पिता के निर्देशन में थे

प्रभु के घर में गाने के लिए झाँझ, सारंगी, और वीणा के साथ, परमेश्वर के घर की सेवा के लिए। आसाप, यद्यूतन, और हेमान राजा के निर्देशन में थे।

<sup>7</sup> उनकी संख्या जो प्रभु के लिए गाने में प्रशिक्षित थे, उनके रिश्तेदारों के साथ, सभी जो कुशल थे, थी

288 /

<sup>8</sup> उन्होंने अपनी-अपनी सेवाओं के लिए चिठ्ठियाँ डालीं, सभी समान रूप से,

छोटे से लेकर बड़े तक, शिक्षक से लेकर शिष्य तक।

<sup>9</sup> आसाप के लिए पहली चिठ्ठी यूसुफ के नाम निकली,

दूसरी गदल्याह के लिए वह अपने रिश्तेदारों और पुत्रों के साथ बारह।

<sup>10</sup> तीसरी जक्कूर के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>11</sup> चौथी इज़री के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>12</sup> पाँचवीं नतन्याह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>13</sup> छठी बुक्कियाह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>14</sup> सातवीं येशरेला के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>15</sup> आठवीं यशायाह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>16</sup> नौवीं मत्तन्याह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>17</sup> दसवीं शिमी के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>18</sup> यारहवीं अ़ज़रेल के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>19</sup> बारहवीं हशब्याह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>20</sup> तेरहवीं शूब्ले के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>21</sup> चौदहवीं मतिथ्याह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>22</sup> पंद्रहवीं यरीमोत के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>23</sup> सोलहवीं हनन्याह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

<sup>24</sup> सत्रहवीं योशबेकाशाह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ, बारह।

# 1 इतिहास

<sup>25</sup> अठारहवीं हननी के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>26</sup> उत्रीसर्वी मलोथी के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>27</sup> बीसर्वी ललियाधाह के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>28</sup> इक्कीसर्वी होथीर के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>29</sup> बाईसर्वी गिद्दलती के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>30</sup> तईसर्वी महजियोथ के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

<sup>31</sup> चौबीसर्वी रोमस्ती-द्वारा के लिए उसके पुत्रों और रिश्तेदारों के साथ बारहः

**26** द्वारपालों के विभागों के लिए: कोरहियों में से, मेशेलेम्याह करों का पुत्र, आसाप के पुत्रों में से।

<sup>2</sup> मेशेलेम्याह के पुत्र थे:

जकर्यह पहिलौठा, यदियेल द्वसरा, जबदियाह तीसरा, यतनयेल चौथा,

<sup>3</sup> एलाम पाँचवाँ, यहोहानान छठा, एलिएहोएनाइ सातवाँ।

<sup>4</sup> ओबेद-एदोम के पुत्र थे:

शमायाह पहिलौठा, यहोजाबाद द्वसरा, योआह तीसरा, सकर चौथा, नतनएल पाँचवाँ,

<sup>5</sup> अम्मीएल छठा, इस्साकार सातवाँ, पेउल्लताइ आठवाँ, क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीर्वद दिया था।

<sup>6</sup> उसके पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए,

जो अपने पिता के घर पर शासन करते थे, क्योंकि वे वीर पुरुष थे।

<sup>7</sup> शमायाह के पुत्र थे:

ओथनी, रेफाएल, ओबेद, एल्जाबाद, जिनके भाई एलीहू और सेमव्याह, वीर पुरुष थे।

<sup>8</sup> ये सब ओबेद-एदोम के पुत्रों में से थे; वे और उनके पुत्र और उनके संबंधी कार्य के लिए सामर्थ्यवान पुरुष थे:

ओबेद-एदोम से बासठ।

<sup>9</sup> मेशेलेम्याह के पुत्र और संबंधी, सामर्थ्यवान पुरुष:

कुल मिलाकर अठारह।

<sup>10</sup> मैरेरी के पुत्रों में से होसा के भी पुत्र थे:

शिम्मी पहला (हालांकि वह पहिलौठा नहीं था, उसके पिता ने उसे पहला बनाया),

<sup>11</sup> हिल्कियाह द्वसरा, तेबलियाह तीसरा, जकर्यह चौथा। होसा के सभी पुत्र और संबंधी तेरह थे।

<sup>12</sup> इन द्वारपालों के विभागों को, प्रधान पुरुषों को, उनके संबंधियों के समान कर्तव्य दिए गए,

प्रभु के घर में सेवा करने के लिए।

<sup>13</sup> उन्होंने छोटे और बड़े समान रूप से चिट्ठियाँ डालीं, अपने पितरों के घरानों के अनुसार, प्रत्येक द्वार के लिए।

<sup>14</sup> पूर्व की ओर की चिट्ठी शलेम्याह को मिली। फिर उसके पुत्र जकर्यह के लिए, जो समझदार परामर्शदाता था, उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं,

और उसकी चिट्ठी उत्तर की ओर निकली।

<sup>15</sup> ओबेद-एदोम के लिए यह दक्षिण की ओर थी,

और उसके पुत्रों के लिए भंडारगुह।

<sup>16</sup> शुप्पिम और होसा के लिए यह पश्चिम की ओर थी,

शल्लेखेत के द्वार पर चढ़ाई के मार्ग पर। पहरेदार पहरेदार के अनुसार थे।

# 1 इतिहास

<sup>17</sup> पूर्व की ओर छह लेवी थे,

उत्तर की ओर चार प्रतिदिन, दक्षिण की ओर चार प्रतिदिन, और भंडारगृह पर दो-दो।

<sup>18</sup> पर्बर पर पश्चिम की ओर चार राजमार्ग पर थे

और पर्बर पर दो-

<sup>19</sup> ये कोराहियों के पुत्रों और मेरैरी के पुत्रों के द्वारपालों के विभाग थे।

<sup>20</sup> लेवियों में से, अहियाह परमेश्वर के घर के खजाने के ऊपर था

और समर्पित उपहारों के खजाने के ऊपर।

<sup>21</sup> लादान के पुत्र, लादान के गेरशोनियों के पुत्र, लादान के गेरशोनी के पितरों के घरानों के प्रधान थे:

यहियेली।

<sup>22</sup> यहियेली के पुत्र थे:

जेथाम और उसका भाई योएल, जो प्रभु के घर के खजाने के ऊपर थे।

<sup>23</sup> अमरामी, यिज्हारी, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों में से—

<sup>24</sup> शेबूएल, गेशोम का पुत्र, मूसा का पुत्र, खजाने के अधिकारी था।

<sup>25</sup> उसके संबंधी एलीएजेर से थे:

रहवियाह उसका पुत्र, और यशायाह उसका पुत्र, और योराम उसका पुत्र, और जिक्री उसका पुत्र, और शेलोमोथ उसका पुत्र।

<sup>26</sup> यह शेलोमोथ और उसके संबंधी समर्पित उपहारों के सभी खजानों के ऊपर थे,

जिन्हें राजा दाऊद और पितरों के घरानों के प्रधानों हजारों और सैकड़ों के सेनापतियों, और सेना के सेनापतियों ने समर्पित किया था।

<sup>27</sup> उहोंने युद्ध में जीते गए तूट के हिस्से को प्रभु के घर की मरम्मत के लिए समर्पित किया।

<sup>28</sup> और सब कुछ जो सामूहिक दर्शी ने समर्पित किया था,

और शाऊल किशा का पुत्र, और अबनेर नेर का पुत्र, और योआब, जरूर्याह का पुत्र, जो कुछ भी किसी ने समर्पित किया था, वह शेलोमोथ और उसके संबंधियों की देखरेख में था।

<sup>29</sup> यिज्हारी में से, केनन्याह और उसके पुत्रों को इसाएल के बाहरी कार्यों के लिए नियुक्त किया गया,

अधिकारी और न्यायाधीश के रूप में।

<sup>30</sup> हेब्रोनियों में से, हशबियाह और उसके संबंधी, 1,700 सामर्थ्यवान पुरुष,

यरदन के पश्चिम में इसाएल के मामलों का प्रभार रखते थे, प्रभु के सभी कार्यों और राजा की सेवा के लिए।

<sup>31</sup> हेब्रोनियों में से, येरियाह हेब्रोनियों का प्रधान था। उनकी वंशावलियों के अनुसार पितरों के घरानों द्वारा,

दाऊद के राज्य के चालीसवें वर्ष में उनकी जाँच की गई, और उनमें से योग्य पुरुष गिलाद के याजेर में पाए गए।

<sup>32</sup> और उसके संबंधी, योग्य पुरुष, 2,700 पितरों के घरानों के प्रधान थे।

और राजा दाऊद ने उहों स्वेच्छियों, गादियों, और मनश्च के आधे गोत्र के ऊपर नियुक्त किया, परमेश्वर और राजा के सभी मामलों के लिए।

**27** अब यह इसाएल के पुत्रों की संख्या है, पिताओं के घरानों के प्रधान, हजारों और सैकड़ों के सेनापति,

और उनके अधिकारी जो राजा की सेवा में थे, सभी विभागों के मामलों में जो महीने दर महीने वर्ष भर आते और जाते थे—प्रत्येक विभाग में 24,000 थे।

<sup>2</sup> पहले महीने के लिए पहले विभाग के ऊपर जब्दीएल का पुत्र यशोबाम था;

# 1 इतिहास

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>3</sup> वह पेरेज के पुत्रों में से था, और पहले महीने के लिए सेना के सभी सेनापतियों का प्रधान था।

<sup>4</sup> दूसरे महीने के विभाग के ऊपर अहोहाइट दोदाई था,

और मिक्लोत प्रधान अधिकारी था; और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>5</sup> तीसरे महीने के लिए सेना का तीसरा सेनापति यहोयादा का पुत्र बनायाह था, जो प्रधान था;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>6</sup> यह बनायाह तीस के शक्तिशाली पुरुषों में से था,

और तीस के ऊपर था; और उसके विभाग के ऊपर उसका पुत्र अमीजाबाद था।

<sup>7</sup> चौथे महीने के लिए चौथा था योआब का भाई असाहेल, और उसके बाद उसका पुत्र जबदियाह;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>8</sup> पांचवें महीने के लिए पांचवां था इत्राही शम्हूत;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>9</sup> छठे महीने के लिए छठा था तकोआई इक्केश का पुत्र ईरा;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>10</sup> सातवें महीने के लिए सातवां था एप्रैम के पुत्रों में से पेतोनी हलेज़;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>11</sup> आठवें महीने के लिए आठवां था जेरहियों में से हुषाती सिल्कैके;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>12</sup> नौवें महीने के लिए नौवां था बिन्यामिनियों में से अनातोथी अबीएज़र;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>13</sup> दसवें महीने के लिए दसवां था जेरहियों में से नेतोपाती महैरे;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>14</sup> चारहवें महीने के लिए चारहवां था एप्रैम के पुत्रों में से पिराथोनी बनायाह;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>15</sup> बारहवें महीने के लिए बारहवां था ओथनीएल का नेतोपाती हेल्वे;

और उसके विभाग में 24,000 थे।

<sup>16</sup> अब इसाएल के गोत्रों के ऊपर:

रूबेनियों के लिए जिक्री का पुत्र एलीएज़र प्रधान अधिकारी था; शिमोनियों के लिए माकाह का पुत्र शफटियाह,

<sup>17</sup> लेवी के लिए केसूएल का पुत्र हशब्याह; हारून के लिए सातोक;

<sup>18</sup> यहूदा के लिए एलीहू, दाऊद के भाइयों में से एक; इस्साकार के लिए मीकाएल का पुत्र ओम्ब्री;

<sup>19</sup> ज़ब्बूलून के लिए ओबद्याह का पुत्र इश्मायाह; नप्ताली के लिए अज़रीएल का पुत्र यरेमोत;

<sup>20</sup> एप्रैम के पुत्रों के लिए अज़ाजियाह का पुत्र होशेअ; मनश्शे के आधे गोत्र के लिए पेदायाह का पुत्र योएल

<sup>21</sup> गिलाद में मनश्शे के आधे गोत्र के लिए ज़कर्याह का पुत्र इद्दो; बिन्यामिन के लिए अबनेर का पुत्र यासियेल

<sup>22</sup> दान के लिए येरोहम का पुत्र अज़रीएल। ये इसाएल के गोत्रों के नेता थे।

# 1 इतिहास

<sup>23</sup> परन्तु दाऊद ने बीस वर्ष और उससे कम आयु के लोगों की गिनती नहीं की,

क्योंकि यहोवा ने कहा था कि वह इसाएल को आकाश के तारों के समान बढ़ाएगा।

<sup>24</sup> योआब, सरूपाह का पुत्र, ने उन्हें गिनना शुरू किया, परन्तु समाप्त नहीं किया; और इस कारण इसाएल पर क्रोध आया,

और यह संच्छा राजा दाऊद के इतिहास में शामिल नहीं की गई।

<sup>25</sup> अब राजा के भंडारों के ऊपर अदियोल का पुत्र अज्ञावेत था।

और देश में नगरों में गांवों में, और गढ़ों में भंडारों के ऊपर उज्जियाह का पुत्र योनाधन था;

<sup>26</sup> और खेत की जुताई के काम करने वालों के ऊपर क्लूब का पुत्र एज्जी था;

<sup>27</sup> और दाख की बारियों के ऊपर रामाती शिमी था, और दाख की बारियों के ऊपर रामाती शिमी था,

<sup>28</sup> और शपेला में जैतून के पेड़ों और गूलर के पेड़ों के ऊपर गेदीरी बाल-हानान था, और तेल के भंडारों के ऊपर योआशा था;

<sup>29</sup> और शारोन में चरने वाले पशुओं के ऊपर शारोनी शित्रि था, और घाटियों में पशुओं के ऊपर अदलै का पुत्र शाफट था;

<sup>30</sup> और झंटों के ऊपर इश्माएली ओबिल था, और गधों के ऊपर मेरोनीथी यहदियाह था;

<sup>31</sup> और भेड़ों के ऊपर हाग्री याज्जी था। ये सभी राजा दाऊद की संपत्ति के प्रबंधक थे।

<sup>32</sup> इसके अलावा, दाऊद के चाचा योनाधन एक सलाहकार, समझदार व्यक्ति और लेखक थे;

और हकमोनी का पुत्र यहीएल राजा के पुत्रों का शिक्षक था।

<sup>33</sup> अहिथोफेल राजा का सलाहकार था,

और अर्कोंहृशै राजा का मित्र था।

<sup>34</sup> यहोयादा, बनायाह का पुत्र, और अबियाथार अहिथोफेल के उत्तराधिकारी थे,

और योआब राजा की सेना का सेनापति था।

**28** अब दाऊद ने यरूशलैम में इसाएल के सभी अधिकारियों को इकट्ठा किया:

गोत्रों के नेता, उन विभागों के सेनापति जो राजा की सेना करते थे, हजारों और सैकड़ों के सेनापति राजा और उसके पुत्रों की सारी संपत्ति और पशुधन के निरीक्षक, अधिकारियों और वीर पुरुषों के साथ, और सभी वीर योद्धा।

<sup>2</sup> तब राजा दाऊद अपने पैरों पर खड़ा हुआ और कहा,

"मेरे भाइयों और मेरी प्रजा, मेरी बात सुनो, मेरे मन में यह था कि मैं यहोवा की वाचा के सन्दर्भ के लिए एक स्थायी घर बनाऊं, और हमारे परमेश्वर के पादपीठ के लिए। इसलिए मैंने इसे बनाने की तैयारी की थी।"

<sup>3</sup> परन्तु परमेश्वर ने मुझसे कहा,

'तू मेरे नाम के लिए घर नहीं बनाएगा, क्योंकि तू युद्ध का आदमी है और तूने खून बहाया है।'

<sup>4</sup> फिर भी, इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के घर से मुझे इसाएल पर सदा के लिए राजा चुना।

क्योंकि उसने यहदा को नेता होने के लिए चुना, और यहदा के घर में मेरे पिता के घर में, और मेरे पिता के पुत्रों में उसने मुझे पर प्रसन्नता की कि मुझे इसाएल पर राजा बनाए।

<sup>5</sup> और मेरे सभी पुत्रों में से (क्योंकि यहोवा ने मुझे बहुत से पुत्र दिए हैं),

उसने मेरे पुत्र मुलैमान को इसाएल पर यहोवा के राज्य के सिंहासन पर बैठने के लिए चुना है।

<sup>6</sup> उसने मुझसे कहा,

# 1 इतिहास

‘तेरा पुत्र सुलैमान वही है जो मेरे घर और मेरे अंगनों  
को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसे अपने लिए पुत्र चुना है,  
और मैं उसका पिता बनूँगा।

<sup>१</sup> मैं उसके राज्य को सदा के लिए स्थापित करूँगा  
यदि वह मेरे आदेशों और मेरे विधियों का दृढ़ता से  
पालन करता है, जैसा कि अब किया जाता है।

<sup>८</sup> तो अब, इसाएल की पूरी सभा के सामने, और हमारे  
परमेश्वर की सुनवाई में,

अपने परमेश्वर यहोवा की सभी अज्ञाओं का पालन  
करो और खोजो ताकि तुम अच्छी भूमि प्राप्त कर सको  
और इसे अपने उत्तों के लिए सदा के लिए विरासत के  
रूप में छोड़ सको।

<sup>९</sup> जहां तक तुम्हारा सवाल है, मेरे पुत्र सुलैमान, अपने  
पिता के परमेश्वर को जानो,

और उसे पूरे दिल से और एक इच्छुक मन से सेवा  
करो, क्योंकि यहोवा सभी दिलों की खोज करता है,  
और विचारों के हर इरादे को समझता है। यदि तुम  
उसे खोजोगे, तो वह तुम्हें मिलने देगा; परन्तु यदि तुम  
उसे त्याग दोगे, तो वह तुम्हें सदा के लिए अस्वीकार  
कर देगा।

<sup>10</sup> अब विचार करो, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें पवित्रस्थान  
के लिए घर बनाने के लिए चुना है, साहसी बनो और  
कार्य करो॥

<sup>11</sup> तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मंदिर के  
बारमदे की योजना दी,

उसकी इमारतों, उसके भंडारों उसके ऊपरी कक्षों  
उसके आंतरिक कक्षों, और दया सीट के लिए कक्ष;

<sup>12</sup> और उसकी मन की सभी योजनाओं को,

यहोवा के घर के अंगनों के लिए और सभी आस-पास  
के कक्षों के लिए परमेश्वर के घर के भंडारों के लिए  
और समर्पित वस्तुओं के भंडारों के लिए

<sup>13</sup> और याजकों और लेवियों के विभागों के लिए और  
यहोवा के घर की सेवा के सभी कार्यों के लिए और  
यहोवा के घर की सेवा के सभी बर्तनों के लिए

<sup>14</sup> सोने के बर्तनों के लिए हर सेवा के लिए सोने का  
वजन, और चांदी के बर्तनों के लिए हर सेवा के लिए  
चांदी का वजन,

<sup>15</sup> और सोने के दीपस्तंभों और उनके दीपों के लिए  
सोने का वजन, प्रत्येक दीपस्तंभ और उसके दीपों के  
लिए वजन, और चांदी के दीपस्तंभों और उनके दीपों  
के लिए चांदी का वजन, प्रत्येक दीपस्तंभ और उसके  
दीपों के लिए वजन, प्रत्येक दीपस्तंभ की सेवा के  
अनुसार

<sup>16</sup> और सोने का वजन, शोब्रेड की मेजों के लिए  
प्रत्येक मेज के लिए और चांदी की मेजों के लिए चांदी;

<sup>17</sup> और शुद्ध सोने के काटे, कटाए, और जगों के लिए  
और सोने के कटाए, प्रत्येक कटाए के लिए वजन, और  
चांदी के कटाए, प्रत्येक कटाए के लिए वजन;

<sup>18</sup> और धूप की वेदी के लिए परिष्कृत सोना वजन से  
और सोने के लिए रथ का मॉडल, करूब जो अपने  
पंख फैलाते हैं और यहोवा की वाचा के सन्दूक को  
ढकते हैं।

<sup>19</sup> “यह सब” दाऊद ने कहा, “यहोवा ने मुझे अपने  
हाथ से लिखकर समझाया, इस योजना के सभी  
विवरण।”

<sup>20</sup> तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा,

“मजबूत और साहसी बनो, और कार्य करो, न डरो  
और न निराश हो, क्योंकि यहोवा परमेश्वर, मेरा  
परमेश्वर, तुम्हारे साथ है। वह तुम्हें असफल नहीं करेगा  
और न ही तुम्हें छोड़ेगा जब तक कि यहोवा के घर की  
सेवा के सभी कार्य पूरे न हो जाएं।

<sup>21</sup> अब देखो, परमेश्वर के घर की सभी सेवा के लिए  
याजकों और लेवियों के विभाग हैं,

और किसी भी कौशल के हर इच्छुक व्यक्ति तुम्हारे  
साथ सभी कार्यों में होगा, सभी कार्यों के लिए साथ ही  
अधिकारी और सभी लोग तुम्हारे आदेश में पूरी तरह  
रहेंगे।”

**29** तब राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा,

# 1 इतिहास

<sup>१</sup> "मेरा पुत्र सुत्रैमान्, जिसे अकेले परमेश्वर ने चुना है,  
युवा और अनुभवहीन है, और कार्य महान है, क्योंकि  
मंदिर मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि प्रभु परमेश्वर के  
लिए है।"

<sup>२</sup> अब अपनी सारी सामर्थ्य से मैंने अपने परमेश्वर के  
भवन के लिए सामग्री जुटाई है।

सोने की वस्तुओं के लिए सोना, चांदी की वस्तुओं के  
लिए चांदी, कासे की वस्तुओं के लिए कांसा लोहे की  
वस्तुओं के लिए लोहा, और लकड़ी की वस्तुओं के  
लिए लकड़ी, औरकस पथर और जड़े हुए पथर,  
तिमाही और रंगीन पथर, और हर प्रकार के बहुमूल्य  
पथर और प्रचुर मात्रा में अलगास्टर।

<sup>३</sup> इसके अलावा, मेरे परमेश्वर के भवन में मेरी प्रसन्नता  
के कारण, मेरे पास जो सोना और चांदी का खजाना है,  
उसे मैं अपने परमेश्वर के भवन को देता हूँ,

उन सभी के ऊपर जो मैंने पहले ही पवित्र मंदिर के  
लिए प्रदान किया है।

<sup>४</sup> अर्थात् 3,000 किकर सोना (ओफीर का सोना),  
और 7,000 किकर शुद्ध चांदी, इमारतों की दीवारों  
को ढकने के लिए

<sup>५</sup> सोने की वस्तुओं के लिए सोना और चांदी की  
वस्तुओं के लिए चांदी, ताकि सभी कार्य कारिगरों द्वारा  
किया जा सके। पिर कौन आज प्रभु के लिए स्वयं को  
समर्पित करने के लिए तैयार हैं।

<sup>६</sup> तब पिताओं के घरों के नेताओं, इसाएल के गोत्रों के  
नेताओं, हजारों और सैकड़ों के सेनापतियों,

और राजा के कार्य के अधीक्षकों ने स्वेच्छा से भेंट दी;

<sup>७</sup> और परमेश्वर के भवन की सेवा के लिए उन्होंने दिया:

5,000 किकर और 10,000 सोने के सिक्के,  
10,000 किकर चांदी 18,000 किकर कांसा, और  
100,000 किकर लोहा।

<sup>८</sup> जिसके पास भी बहुमूल्य पथर थे, उन्होंने उन्हें प्रभु के  
भवन के खजाने में दिया,

गेरशोनी यहीएल की देखरेख में।

<sup>९</sup> तब लोग आनन्दित हुए क्योंकि उन्होंने इतनी स्वेच्छा से  
भेंट दी थी, क्योंकि उन्होंने प्रभु को पूरे मन से अपनी भेंट  
दी,

और राजा दाऊद भी अत्यधिक आनन्दित हुए।

<sup>१०</sup> इसलिए दाऊद ने सारी सभा के सामने प्रभु को  
आशीर्वाद दिया; और दाऊद ने कहा,

"हे इसाएल के हमारे पिता के परमेश्वर, आप सदा-  
सरदा धन्य हैं।

<sup>११</sup> हे प्रभु महानता, सामर्थ्य महिमा, विजय और  
महिमा आपके हैं, वास्तव में स्वर्ग और पृथ्वी की सब  
कुछ आपकी हैं, प्रभु राज्य आपका है, और आप सब  
के ऊपर प्रधानता रखते हैं।

<sup>१२</sup> धन और सम्मान दोनों आपसे आते हैं, और आप  
सब पर शासन करते हैं, और आपके हाथ में सामर्थ्य  
और शक्ति है, और यह आपके हाथ में है कि आप  
महान बनाएं और सबको सशक्त करें।

<sup>१३</sup> अब इसलिए हमारे परमेश्वर, हम आपको धन्यवाद  
देते हैं, और आपके महिमामय नाम की सुन्नी करते  
हैं।

<sup>१४</sup> परन्तु मैं कौन हूँ, और मेरे लोग कौन हैं कि हम  
इतनी उदारता से भेंट दे सकें? क्योंकि सब कुछ  
आपसे आता है, और आपके हाथ से हमने आपको  
दिया है।

<sup>१५</sup> क्योंकि हम आपके सामने परदेशी और अस्थायी  
निवासी हैं, जिसे हमारे सभी पूर्वज थे, पृथ्वी पर हमारे  
दिन छाया के समान हैं, और कोई आशा नहीं है।

<sup>१६</sup> हे हमारे परमेश्वर, यह सारी प्रबुरता जो हमने  
आपके पवित्र नाम के लिए एक घर बनाने के लिए  
प्रदान की है, यह आपके हाथ से है, और सब कुछ  
आपका है।

<sup>१७</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ, मेरे परमेश्वर, कि आप हृदय  
की परीक्षा लेते हैं, और सच्चाई में प्रसन्न होते हैं, मैंने  
अपने हृदय की सच्चाई में स्वेच्छा से ये सब चीजें भेंट

# 1 इतिहास

की हैं। इसलिए अब आनन्द के साथ मैंने आपके लोगों को देखा है, जो यहाँ उपस्थित हैं। आपके लिए स्वेच्छा से भट्टे देते हैं।

<sup>18</sup> है अब्राहम इसहाक, और इसाएल के परमेश्वर हमारे पूर्वजों के, इसे अपने लोगों के हृदयों के इरादों में सदा के लिए बनाए रखें, और उनके हृदयों को आपकी ओर निर्देशित करें।

<sup>19</sup> और मेरे पुत्र सुलैमान को एक पूर्ण हृदय दें आपकी आज्ञाओं, आपकी गवाहियों और आपकी विधियों को मानने के लिए। और उन्हें सब करने के लिए, और मंदिर का निर्माण करने के लिए, जिसके लिए मैंने प्रावधान किया है।"

<sup>20</sup> तब दाऊद ने सारी सभा से कहा,

"अब अपने परमेश्वर प्रभु को आशीर्वाद दो।" और सारी सभा ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर, प्रभु को आशीर्वाद दिया, और प्रभु और राजा के सामने झुककर प्रणाम किया।

<sup>21</sup> अगले दिन उन्होंने प्रभु के लिए बलिदान किए,

और प्रभु के लिए होमबलि चढ़ाए। एक हजार बैल, एक हजार मध्डे, और एक हजार भेड़ के बच्चे, उनके पेय बलिदानों और सभी इसाएल के लिए प्रचुर मात्रा में बलिदानों के साथ।

<sup>22</sup> इसलिए उन्होंने उस दिन प्रभु के सामने बड़े आनन्द के साथ खाया और पिया। और उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा बनाया,

और उसे प्रभु के लिए शासक के रूप में अभिषिक्त किया, और सादोक को याजक के रूप में।

<sup>23</sup> तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के स्थान पर प्रभु के सिंहासन पर राजा के रूप में बैठा; और वह सफल हुआ,

और सारे इसाएल ने उसकी आज्ञा मानी।

<sup>24</sup> सभी अधिकारी, शक्तिशाली पुरुष, और राजा दाऊद के सभी पुत्रों ने राजा सुलैमान के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा की।

<sup>25</sup> प्रभु ने सुलैमान को सारे इसाएल की दृष्टि में अत्यधिक सम्मानित किया,

और उसे राजसी महिमा प्रदान की जो उससे पहले किसी भी राजा को इसाएल में नहीं दी गई थी।

<sup>26</sup> अब यिशै का पुत्र दाऊद सारे इसाएल पर राज्य करता था।

<sup>27</sup> इसाएल पर उसके राज्य की अवधि चालीस वर्ष थी:

उसने हेब्रोन में सात वर्ष राज्य किया, और यस्तु शतम में तैनीस वर्ष।

<sup>28</sup> तब वह वृद्धावस्था में मरा, दिनों, धन, और सम्मान से परिपूर्ण;

और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

<sup>29</sup> अब राजा दाऊद के कार्य, पहले से लेकर अंतिम तक,

शमूल दृष्टा की इतिहास पुस्तक में लिखे गए हैं: नातान भविष्यद्वक्ता की इतिहास पुस्तक में, और गाद दृष्टा की इतिहास पुस्तक में,

<sup>30</sup> उसके सारे राज्य, उसकी शक्ति, और जो परिस्थितियाँ उस पर, इसाएल पर, और सभी देशों के राज्यों पर आईं।

## 2 इतिहास

**१** अब दाऊद के पुत्र सुलैमान ने अपने राज्य पर दृढ़ता से अधिकार कर लिया,

और उसके परमेश्वर यहोवा उसके साथ था और उसने उसे अत्यधिक महान किया।

**२** सुलैमान ने सारे इसाएल से बात की,

हजारों और सैकड़ों के सेनापतियों से न्यायियों से और इसाएल के सभी नेताओं से, पिताओं के घरानों के प्रमुखों से।

**३** तब सुलैमान और उसके साथ सारी सभा गिबोन के उस ऊँचे स्थान पर गए,

क्योंकि वहाँ परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू था, जिसे यहोवा के सेवक मूसा ने जंगल में बनाया था।

**४** हालाँकि, दाऊद ने किर्यत-यारीम से परमेश्वर के सन्दूक को उठा लिया था

उस स्थान पर जहाँ उसने उसके लिए तैयारी की थी, क्योंकि उसने यरूशलेम में उसके लिए एक तम्बू खड़ा किया था।

**५** अब कांस्य की वेदी, जिसे उरी के पुत्र बेजलेल ने बनाया था,

वह यहोवा के तम्बू के सामने थी, और सुलैमान और सभा ने उसे खोजा।

**६** सुलैमान वहाँ यहोवा के सामने कांस्य की वेदी पर गया जो मिलापवाले तम्बू में थी,

और उस पर एक हजार हौमबलि चढ़ाई।

**७** उस रात परमेश्वर सुलैमान के पास प्रकट हुआ और उससे कहा,

“माँग जो मैं तुझे दूँ॥”

**८** सुलैमान ने परमेश्वर से कहा,

“तूने मेरे पिता दाऊद पर बड़ी विश्वासयोग्यता दिखाई है, और तूने मुझे उनके स्थान पर राजा बनाया है।

९ अब हे यहोवा परमेश्वर, मेरे पिता दाऊद से किया गया तेरा वचन पूरा हुआ है, क्योंकि तूने मुझे उन लोगों पर राजा बनाया है जो पृथ्वी की धूल के समान असंछ्य हैं।

१० अब मुझे ज्ञान और समझ दे, ताकि मैं इन लोगों के सामने बाहर और भीतर जा सकूँ, क्योंकि कौन है जो तेरे इस महान लोगों पर शासन कर सके?”

**११** तब परमेश्वर ने सुलैमान से कहा,

“क्योंकि यह तेरे हृदय में था, और तूने धन, सम्पत्ति, या सम्मान या अपने शतुरों के जीवन की माँग नहीं की और न ही तूने लम्बी आयु की माँग की, बल्कि तूने अपने लिए ज्ञान और समझ की माँग की ताकि तू उन लोगों पर शासन कर सके जिन पर मैंने तुझे राजा बनाया है,

**१२** ज्ञान और समझ तुझे दी गई है। मैं तुझे धन, सम्पत्ति, और सम्मान भी द्वाँगा, जैसा कि तुझसे पहले किसी राजा के पास नहीं था, और न ही तेरे बाद कोई होगा।”

**१३** तो सुलैमान गिबोन के उस ऊँचे स्थान से चला गया,

मिलापवाले तम्बू से, यरूशलेम को, और उसने इसाएल पर शासन किया।

**१४** सुलैमान ने रथों और घुड़सवारों को इकट्ठा किया।

उसके पास 1,400 रथ और 12,000 घुड़सवार थे और उसने उन्हें रथों के नगरों में और राजा के साथ यरूशलेम में रखा।

**१५** राजा ने यरूशलेम में चाँदी और सोने को परथरों के समान प्रदुर भात्रा में बना दिया,

और उसने देवदार को निचले प्रदेश के गूलर के समान प्रदुर भात्रा में बना दिया।

**१६** सुलैमान के घोड़े मिस्र और कू से आयात किए गए थे;

## 2 इतिहास

राजा के व्यापारियों ने उन्हें कू से एक मूल्य पर प्राप्त किया।

<sup>17</sup> उन्होंने मिस्र से रथों को छह सौ शेकेल चाँदी प्रति रथ के लिए आयात किया,

और धोड़ों को एक सौ पचास के लिए और इसी प्रकार से उन्होंने उन्हें हितियों के सभी राजाओं और अराम के राजाओं को नियर्ति किया।

**2** अब सुलैमान ने यहोवा के नाम के लिए एक घर बनाने का निश्चय किया,

और अपने लिए एक राजमहल।

<sup>2</sup> इसलिए सुलैमान ने सत्तर हजार लोगों को बोझ उठाने के लिए नियुक्त किया,

अस्सी हजार लोगों को पहाड़ों में पत्थर काटने के लिए और 3,600 परविक्षकों को लोगों का निर्देशन करने के लिए।

<sup>3</sup> फिर सुलैमान ने सूर के राजा हूराम को संदेश भेजा, कहा,

"जैसे तुमने मेरे पिता दाऊद के साथ व्यवहार किया और उसे देवदार भेजा ताकि वह उसके लिए एक घर बना सके, वैसे ही मेरे लिए करो।"

<sup>4</sup> देखो, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के लिए एक घर बना रहा हूँ, उसे पवित्र करने के लिए उसके सामने सुगंधित धूप जलाने के लिए निरंतर शोब्रेड रखने के लिए और सुबह और शाम को होमबलि चढ़ाने के लिए सब्ज़ों पर, नए चाँद पर, और हमारे परमेश्वर यहोवा की नियत पर्वों पर। यह इसाएल में सदा के लिए किया जाना है।

<sup>5</sup> वह घर जो मैं बनाने जा रहा हूँ बड़ा होगा, क्योंकि हमारा परमेश्वर सभी देवताओं से बड़ा है।

<sup>6</sup> परंतु कौन उसके लिए घर बना सकता है, क्योंकि आकाश और आकाश के आकाश भी उसे समा नहीं सकते; तो मैं कौन हूँ, कि मैं उसके लिए घर बनाऊँ, सिवाय उसके सामने धूप जलाने के?

<sup>7</sup> अब मुझे एक कुशल व्यक्ति भेजें जो सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, बैंगनी, लाल, और बैंगनी कपड़ों में काम कर सके, और जो खुदाई करना जानता हो, उन कुशल कारीगरों के साथ काम करने के लिए जो मेरे साथ यहूदा और यरूशलेम में हैं, जिन्हें मेरे पिता दाऊद ने प्रदान किया।

<sup>8</sup> मुझे लेबनान से देवदार, सरू, और अल्युम लकड़ी भी भेजें, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपके सेवक लेबनान में लकड़ी काटना जानते हैं, और वास्तव में मेरे सेवक आपके सेवकों के साथ काम करेंगे,

<sup>9</sup> मेरे लिए लकड़ी की प्रचुरता तैयार करने के लिए क्योंकि वह घर जो मैं बनाने जा रहा हूँ, बड़ा और अद्भुत होगा।

<sup>10</sup> अब देखो, मैं आपके सेवकों को, जो लकड़ी काटते हैं, द्वांगा, बीस हजार कोर पिसा हुआ गेहूँ, बीस हजार कोर जै, बीस हजार बाथ दाखरस, और बीस हजार बाथ तेल।"

<sup>11</sup> फिर सूर के राजा हूराम ने सुलैमान को एक पत्र में उत्तर दिया:

"क्योंकि यहोवा अपने लोगों से प्रेम करता है उसने तुम्हें उनके ऊपर राजा बनाया है।"

<sup>12</sup> हूराम ने यह भी कहा,

"बन्ध्य है यहोवा, इस्साएल का परमेश्वर, जिसने आकाश और पृथ्वी बनाई, जिसने राजा दाऊद को एक बुद्धिमान पुत्र दिया, जो विवेक और समझ से युक्त है, जो यहोवा के लिए एक घर और अपने लिए एक राजमहल बनाएगा।"

<sup>13</sup> अब मैं हूराम अब्दी को भेज रहा हूँ, एक कुशल व्यक्ति, जो समझ से युक्त है,

<sup>14</sup> एक दानी स्त्री और सूर के पिता का पुत्र, जो सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, पथर, और लकड़ी में काम करना जानता है, और बैंगनी, बैंगनी, लिनन, और लाल कपड़ों में, और जो सभी प्रकार की खुदाई करना जानता है, और उसे कोई भी डिज़ाइन सौंपा जा सकता है, आपके कुशल कारीगरों के साथ और मेरे प्रभु दाऊद आपके पिता के साथ काम करने के लिए।

## 2 इतिहास

<sup>१५</sup> अब फिर, मेरे प्रभु अपने सेवकों को वह गेहूँ जौ,  
तेल, और दाखरस भेजें, जिनकी उड्ठोने बात की है।

<sup>१६</sup> हम लेबनान से जो भी लकड़ी आपको चाहिए  
काटेंगे और उसे समुद्र के रास्ते बेड़ों पर यापा तक  
लाएंगे, ताकि आप उसे यरूशलैम तक ले जा सकें।

<sup>१७</sup> फिर सुलैमान ने इसाएल की भूमि में सभी विदेशियों  
की निर्माण की,

उस जनगणना के अनुसार जो उसके पिता दाऊद ने  
की थी, और 153,600 पाए गए।

<sup>१८</sup> उसने उनमें से सत्तर हजार को बोझ उठाने के लिए  
नियुक्त किया, अस्सी हजार को पहाड़ों में पथर बाटने  
के लिए और 3,600 पर्यवेक्षकों को काम करने वाले  
लोगों का निर्देशन करने के लिए।

**३** तब सुलैमान ने यरूशलैम में मोरियाह पर्वत पर  
यहोवा के भवन का निर्माण आरंभ किया,

जहाँ यहोवा ने उसके पिता दाऊद को दर्शन दिया था,  
उस स्थान पर जिसे दाऊद ने यद्यसी ओर्नन के  
खिलान पर तैयार किया था।

<sup>२</sup> उसने अपने राज्य के चौथे वर्ष के दूसरे महीने के दूसरे  
दिन निर्माण आरंभ किया।

<sup>३</sup> अब ये वे नींव हैं जो सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के  
निर्माण के लिए रखी थीं।

पुरानी माप के अनुसार लंबाई साठ हाथ थी, और  
चौड़ाई बीस हाथ थी।

<sup>४</sup> भवन के सामने का बरामदा भवन की चौड़ाई के  
समान था, बीस हाथ,

और ऊँचाई 120 थी, और उसने अंदर को शुद्ध सोने  
से मढ़वा दिया।

<sup>५</sup> उसने मुख्य कक्ष को देवदार की लकड़ी से मढ़वाया  
और उसे उत्तम सोने से मढ़वाया,

और उसे खजूर के पेड़ों और जंजीरों से सजाया।

<sup>६</sup> उसने भवन को बहुमूल्य पथरों से भी सजाया;

और सोना पारवाइम का सोना था।

<sup>७</sup> उसने भवन, उसकी बीमों, उसकी चौखटों, उसकी  
दीवारों, और उसके दरवाजों को सोने से मढ़वाया,

और उसने दीवारों पर करूब बनाए।

<sup>८</sup> तब उसने परमपवित्र स्थान बनाया।

उसकी लंबाई, भवन की चौड़ाई के अनुसार, बीस हाथ  
थी, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ थी, और उसने उसे  
उत्तम सोने से मढ़वाया, जो 600 किकर था।

<sup>९</sup> कीलों का वजन पचास शेकेल सोना था।

उसने ऊपरी कक्षों को भी सोने से मढ़वाया।

<sup>१०</sup> तब उसने परमपवित्र स्थान में दो मूर्तिकृत करूब  
बनाए

और उन्हें सोने से मढ़वाया।

<sup>११</sup> करूबों के पंखों का विस्तार बीस हाथ था:

एक का पंख, पाँच हाथ, भवन की दीवार को छूता था,  
और उसका दूसरा पंख, पाँच हाथ, दूसरे करूब के  
पंख को छूता था।

<sup>१२</sup> दूसरे करूब का पंख, पाँच हाथ, भवन की दूसरी  
दीवार को छूता था, और उसका दूसरा पंख, पाँच हाथ,  
पहले करूब के पंख से जुड़ा था।

<sup>१३</sup> इन करूबों के पंख बीस हाथ तक फैले हुए थे,

और वे अपने पैरों पर खड़े होकर मुख्य कक्ष की ओर  
मुख किए हुए थे।

<sup>१४</sup> उसने बैंगनी, बैंगनी, लाल, और उत्तम मलमल का  
परदा बनाया,

और उसने उसमें करूब बनाए।

## 2 इतिहास

<sup>१५</sup> उसने भवन के सामने दो स्तंभ भी बनाए, जो पैरीस हाथ ऊँचे थे,

और प्रत्येक के शीर्ष पर पाँच हाथ का मुकुट था।

<sup>१६</sup> उसने आंतरिक पवित्रस्थान में जंजीरें बनाई और उन्हें स्तंभों के शीर्ष पर रखा,

और उसने सौ अनार बनाए और उन्हें जंजीरों पर रखा।

<sup>१७</sup> उसने मंदिर के सामने स्तंभ खड़े किए,

एक दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर, और उसने दाहिनी ओर वाले का नाम याकीन रखा, और बाईं ओर वाले का नाम बोअज़ रखा।

**४** तब उसने कांसे की एक वेदी बनाई,

जिसकी लंबाई बीस हाथ, चौड़ाई बीस हाथ, और ऊँचाई दस हाथ थी।

<sup>२</sup> उसने ढले हुए धातु का समुद्र भी बनाया, जो किनारे से किनारे तक दस हाथ था, गोलाकार था,

और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ थी, और उसकी परिधि तीस हाथ थी।

<sup>३</sup> इसके नीचे बैल के आकार की आकृतियाँ थीं जो इसे घेरे हुए थीं,

एक हाथ में दस, पूरे समुद्र को घेरे हुए, बैल दो पंक्तियों में ढाले गए थे जब इसे ढाला गया था।

<sup>४</sup> यह बारह बैलों पर खड़ा था:

तीन उत्तर की ओर, तीन पश्चिम की ओर, तीन दक्षिण की ओर और तीन पूर्व की ओर, और समुद्र उनके ऊपर रखा गया था, और उनकी सभी पिछली टाँगें अंदर की ओर मुड़ी हुई थीं।

<sup>५</sup> यह एक हाथ की चौड़ाई का था,

और इसका किनारा प्याले के किनारे की तरह क्रमुदिनी के फूल की तरह बनाया गया था, यह तीन हजार बाथ समा सकता था।

<sup>६</sup> उसने दस बेसिन भी बनाए जिनमें धोने के लिए था,

और उसने पाँच दाईं और पाँच बाईं और रखे होमबलि की वस्तुओं को धोने के लिए परंतु समुद्र याजकों के धोने के लिए था।

<sup>७</sup> तब उसने दस सोने के दीपस्तंभ उनके विनिर्देशों के अनुसार बनाए,

और उन्हें मंदिर में रखा, पाँच दाईं और पाँच बाईं और।

<sup>८</sup> उसने दस मेजें भी बनाई

और उन्हें मंदिर में रखा, पाँच दाईं और और पाँच बाईं और। और उसने सौ सोने के कटोरे बनाए।

<sup>९</sup> तब उसने याजकों के आँगन, और बड़ा आँगन और आँगन के लिए द्वार बनाए,

और उसने उनके द्वारों को कांसी से मढ़ा।

<sup>१०</sup> उसने समुद्र को घर के दाईं और दक्षिण-पूर्व की ओर रखा।

<sup>११</sup> ह्राम ने बालियाँ, फावड़े, और कटोरे भी बनाए।

इस प्रकार ह्राम ने राजा सुलेमान के लिए प्रयोग्यकर के घर में जो काम किया था उसे पूरा किया।

<sup>१२</sup> दो स्तंभ, कटोरे और स्तंभों के शीर्ष पर दो राजधानियाँ और दो जालियाँ जो स्तंभों के शीर्ष पर कटोरे को ढकने के लिए थीं,

<sup>१३</sup> और दो जालियों के लिए चार सौ अनार— प्रत्येक जाली के लिए दो पंक्तियाँ अनार की, स्तंभों के शीर्ष पर कटोरे को ढकने के लिए।

<sup>१४</sup> उसने स्टैंड भी बनाए और उसने स्टैंड पर बेसिन बनाए,

## 2 इतिहास

<sup>15</sup> और एक समुद्र बारह बैलों के नीचे।

<sup>16</sup> बाल्तियाँ, फावड़े, कांटे, और सभी उपकरण हूराम्  
अबी ने चमकदार कांसे से बनाए राजा सुलैमान के  
लिए प्रभु के घर के लिए।

<sup>17</sup> जॉर्डन के मैदान में राजा ने उन्हें मिट्टी की भूमि में  
ढाला

सुकोत और ज़ेरेदा के नीचे।

<sup>18</sup> इस प्रकार सुलैमान ने इन सभी उपकरणों को बड़ी  
मात्रा में बनाया,

क्योंकि कांसे का वजन निधारित नहीं किया जा सकता  
था।

<sup>19</sup> सुलैमान ने परमेश्वर के घर में जो चीजें थीं उन्हें भी  
बनाया:

सोने की वेदी, मेजें जिन पर उपस्थिति की रोटी थीं,

<sup>20</sup> शुद्ध सोने के दीपस्तंभ, अंतरिक पवित्र स्थान के  
सामने जलने के लिए विष्टि के अनुसार

<sup>21</sup> फूल, दीपक, और सोने की चिमटी, सबसे शुद्ध सोने  
की;

<sup>22</sup> और बुझाने वाले, कटोरे, चम्मच, और आग के पैन  
शुद्ध सोने के, और घर का प्रवेश द्वार उसका  
अंतरिक द्वार परम पवित्र स्थान के लिए और घर के  
द्वार अर्थात् मुख्य कक्ष के, सोने के।

**5** इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिए जो  
काम किया था, वह पूरा हो गया। और सुलैमान ने उन  
वस्तुओं को लाया जो उसके पिता दाऊद ने समर्पित की  
थीं—चाँदी, सोना, और सब बर्टन— और उन्हें परमेश्वर  
के भवन के खाजानों में रखा।

<sup>2</sup> तब सुलैमान ने इसाएल के प्राचीनों को यरूशलेम में  
इकट्ठा किया और सब गोत्रों के प्रधानों को, इसाएलियों  
के पितरों के घरानों के नेताओं को, यहोवा की वाचा के  
सन्दूक को दाऊद के नगर से, जो सिय्योन है, लाने के  
लिए बुलाया।

<sup>3</sup> इसाएल के सब लोग राजा के सामने पर्व के समय, जो  
सातवें महीने में होता है, इकट्ठा हुए।

<sup>4</sup> तब इसाएल के सब प्राचीन आए, और लेवियों ने  
सन्दूक को उठाया।

<sup>5</sup> वे सन्दूक, मिलापवाला तम्बू, और तम्बू में जो सब  
पवित्र बर्टन थे, उन्हें ले आए; लेवीय याजकों ने उन्हें  
उठाया।

<sup>6</sup> और राजा सुलैमान और इसाएल की सारी मण्डली जो  
उसके साथ सन्दूक के सामने इकट्ठा हुई थी, इतनी भेड़-  
बकरियाँ और बैल बलिदान कर रहे थे कि उनकी गिनती  
या संख्या नहीं की जा सकती थी।

<sup>7</sup> तब याजकों ने यहोवा की वाचा के सन्दूक को उसके  
स्थान पर रखा, भवन के भीतरी पवित्रस्थान में, परम  
पवित्र स्थान में, करुणों के पंखों के नीचे।

<sup>8</sup> क्योंकि करुणों ने सन्दूक के स्थान पर अपने पंख  
फैलाए थे, ताकि करुणों ने सन्दूक और उसके ढंडों को  
ढक लिया।

<sup>9</sup> परन्तु ढंडे इतने लम्बे थे कि सन्दूक के ढंडों के सिरे  
भीतरी पवित्रस्थान के सामने से दिखाई देते थे, परन्तु  
बाहर से नहीं देखे जा सकते थे; और वे आज तक वहीं  
हैं।

<sup>10</sup> सन्दूक में कुछ भी नहीं था सिवाय उन दो पट्टिकाओं  
के जो मूसा ने होरेब में रखी थीं, जहाँ यहोवा ने  
इसाएलियों के साथ वाचा बाँधी थी, जब वे मिस्र से बाहर  
आए थे।

<sup>11</sup> जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए (क्योंकि जो भी  
याजक उपस्थित थे उन्होंने अपने आप को पवित्र किया  
था, विभागों की परवाह किए बिना),

<sup>12</sup> और सब लेवीय गायक, आसाप, हेमान, यदूतून, और  
उनके पुत्र और भाई, महीन मलमल में वस्त पहने हुए,  
झांझा, बीणा, और सारंगी लिए हुए, वे वेदी के पूर्व की  
ओर खड़े थे, और उनके साथ एक सौ बीस याजक  
तुरहियाँ बजा रहे थे—

<sup>13</sup> जब तुरही बजाने वाले और गायक एक स्वर में यहोवा  
की स्तुति और महिमा करने के लिए सुने जाने लगे, और

## 2 इतिहास

जब उन्होंने अपनी आवाज उठाई, तुरहियों, झांझों और  
अन्य संगीत वाद्ययंत्रों के साथ, और जब उन्होंने यहोवा  
की स्तुति की, यह कहते हुए,

“वह सचमुच भला है क्योंकि उसकी दया सदा के लिए  
है”

तब यहोवा का भवन बादल से भर गया,

<sup>1</sup> ताकि याजक उस बादल के कारण सेवा करने के  
लिए खड़े नहीं हो सके, क्योंकि यहोवा की महिमा  
परमेश्वर के भवन को भर गई थी।

**6** तब सुलैमान ने कहा, “यहोवा ने कहा है कि वह घने  
बादल में वास करेगा।

<sup>2</sup> मैंने तेरे लिए एक ऊँचा घर बनाया है, और एक स्थान  
तेरे वास के लिए सदा के लिए।”

<sup>3</sup> तब राजा ने मुढ़कर इसाएल की सारी सभा को  
आशीर्वाद दिया, जबकि इसाएल की सारी सभा खड़ी  
थी।

<sup>4</sup> उसने कहा, “धन्य है यहोवा, इसाएल का परमेश्वर,  
जिसने अपने मुख से मेरे पिता दाऊद से कहा, और  
अपने हाथों से उसे पूरा किया, यह कहते हुए,

<sup>5</sup> जिस दिन से मैंने अपनी प्रजा को मिस्त्र देश से  
निकाला, मैंने इसाएल के सब गोत्रों में से किसी नगर को  
नहीं चुना कि वहाँ एक घर बनाया जाए ताकि मेरा नाम  
वहाँ हो, और न मैंने अपने लोगों इसाएल पर किसी  
मनुष्य को प्रधान चुना;

<sup>6</sup> परन्तु मैंने येरूशलैम को चुना ताकि मेरा नाम वहाँ हो,  
और मैंने दाऊद को चुना कि वह मेरे लोगों इसाएल पर  
हो।”

<sup>7</sup> अब यह मेरे पिता दाऊद के मन में था कि यहोवा के  
नाम के लिए एक घर बनाया जाए, जो इसाएल का  
परमेश्वर है।

<sup>8</sup> परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, ‘क्योंकि तेरे  
मन में मेरे नाम के लिए एक घर बनाने की इच्छा थी, तूने  
अच्छा किया कि तेरे मन में यह था।

<sup>9</sup> फिर भी, तू घर नहीं बनाएगा, परन्तु तेरा पुत्र जो तुझसे  
उत्पन्न होगा, वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।’

<sup>10</sup> अब यहोवा ने अपने वचन को पूरा किया जो उसने  
कहा था; क्योंकि मैं अपने पिता दाऊद के स्मान पर उठ  
खड़ा हुआ हूँ और इसाएल के सिंहासन पर बैठा हूँ, जैसा  
कि यहोवा ने वादा किया था, और मैंने यहोवा के नाम के  
लिए घर बनाया है, जो इसाएल का परमेश्वर है।

<sup>11</sup> और वहाँ मैंने सन्दूक रखा है, जिसमें यहोवा की वाचा  
है, जो उसने इसाएल के पुत्रों के साथ की थी।”

<sup>12</sup> तब वह यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ इसाएल  
की सारी सभा की उपस्थिति में और अपने हाथ फैलाए।

<sup>13</sup> क्योंकि सुलैमान ने एक कांस्य का मंच बनाया था, जो  
पाँच हाथ लंबा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा था,  
और उसे आँगन के बीच में रखा था; और वह उस पर  
खड़ा हुआ, फिर अपने घुटनों पर ज़ुका इसाएल की  
सारी सभा की उपस्थिति में, और अपने हाथ आकाश की  
ओर फैलाए।

<sup>14</sup> उसने कहा, “हे यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, आकाश  
में या पृथ्वी पर तेरे समान कोइ देवता नहीं है, जो अपने  
सेवकों के प्रति अपनी वाचा और अपनी विश्वास्योग्यता  
को बनाए रखता है, जो पूरे मन से तेरे सामने चलते हैं—

<sup>15</sup> तूने अपने सेवक, मेरे पिता दाऊद के साथ वह रखा है  
जो तूने उससे वादा किया था; तूने अपने मुख से कहा  
और अपने हाथ से उसे पूरा किया, जैसा कि आज है।

<sup>16</sup> अब, हे यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, अपने सेवक, मेरे  
पिता दाऊद के लिए वह रख, जो तूने उससे वादा किया  
था, यह कहते हुए, ‘तू इसाएल के सिंहासन पर बैठने के  
लिए एक मनुष्य की कमी नहीं करेगा, यदि केवल तेरे  
पुत्र अपने मार्ग का ध्यान रखें, मेरी व्यवस्था में चलने के  
लिए जैसे तू मेरे सामने चला है।’

<sup>17</sup> अब, हे यहोवा, इसाएल के परमेश्वर, अपने वचन को  
जो तूने अपने सेवक दाऊद से कहा है, पूरा कर।

<sup>18</sup> परन्तु क्या परमेश्वर वास्तव में पृथ्वी पर मनुष्यों के  
साथ वास करेगा? देख, आकाश और आकाशों का  
आकाश तुझे समाहित नहीं कर सकता; तो यह घर जो  
मैंने बनाया है, कितना कम!

## 2 इतिहास

<sup>19</sup> फिर भी, अपने सेवक की प्रार्थना और उसकी विनती की ओर ध्यान दे, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, उस पुकार और प्रार्थना को सुन जो तेरा सेवक तेरे सामने करता है,

<sup>20</sup> ताकि तेरी अँखें इस घर की ओर दिन और रात खुली रहें, उस स्थान की ओर जिसे तूने कहा है कि तू अपना नाम वहाँ रखेगा, उस प्रार्थना को सुनने के लिए जो तेरा सेवक इस स्थान की ओर करेगा।

<sup>21</sup> और अपने सेवक और अपने लोगों इसाएल की विनती को सुन, जब वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें; अपने निवास स्थान से, स्वर्ग से सुन, सुन और क्षमा कर।

<sup>22</sup> यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है और उसे शपथ लेने की आवश्यकता होती है, और वह आकर इस घर में तेरी वेदी के सामने शपथ लेता है,

<sup>23</sup> तो स्वर्ग से सुन और कार्य कर, और अपने सेवकों का न्याय कर, दुष्ट को उसकी अपीची चाल पर उसके सिर पर लाकर दंडित कर, और धर्मी को उसके धर्म के अनुसार न्याय देकर न्यायसंगत ठहराना।

<sup>24</sup> यदि तेरे लोग इसाएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण किसी शत्रु के सामने पराजित होते हैं, और वे लौटकर तेरे नाम को स्वीकार करते हैं, और इस घर में प्रार्थना और विनती करते हैं,

<sup>25</sup> तो स्वर्ग से सुन और अपने लोगों इसाएल के पाप को क्षमा कर, और उन्हें उस देश में वापस ले आ जो तूने उन्हें और उनके पितरों को दिया है।

<sup>26</sup> जब आकाश बंद हो जाए और वर्षा न हो क्योंकि उन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है, और वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को स्वीकार करें, और जब तू उन्हें कष्ट दे तो अपने पाप से फिरें,

<sup>27</sup> तो स्वर्ग में सुन और अपने सेवकों और अपने लोगों इसाएल के पाप को क्षमा कर, वास्तव में, उन्हें वह अच्छा मार्ग सिखा जिसमें उन्हें चलना चाहिए; और अपने देश में वर्षा भेज जो तूने अपनी प्रजा को विरासत के रूप में दिया है।

<sup>28</sup> यदि देश में अकाल हो, यदि कोई महामारी हो, यदि कोई झुलसा या फूंदी हो, टिढ़ी या टिड़ा हो, यदि शत्रु उनके नगरों में उन्हें धेरे, जो भी महामारी या बीमारी हो,

<sup>29</sup> जो भी प्रार्थना या विनती कोई करे, या तेरे सभी लोग इसाएल करें, प्रत्येक अपनी अपनी विपत्ति और अपनी अपनी पीड़ा को जानते हुए, और इस घर की ओर अपने हाथ फैलाते हुए,

<sup>30</sup> तो स्वर्ग से अपने निवास स्थान से सुन, और क्षमा कर, और प्रत्येक को उसके सभी मार्गों के अनुसार प्रतिफल दे, जिसका हृदय तू जानता है— क्योंकि केवल तू ही मनुष्यों के पुत्रों के हृदयों को जानता है—

<sup>31</sup> ताकि वे तुझसे डरें, तेरे मार्गों में चलें जब तक वे उस देश में जीवित रहें जो तूने हमारे पितरों को दिया है।

<sup>32</sup> इसके अलावा उस विदेशी के विषय में जो तेरे लोगों इसाएल का नहीं है, परन्तु तेरे महान नाम के कारण दूर देश से आता है, और तेरे शक्तिशाली हाथ और तेरी फैती हुई भूजा के कारण— जब वे इस घर की ओर प्रार्थना करते हैं,

<sup>33</sup> तो स्वर्ग से, अपने निवास स्थान से सुन, और उस सब के अनुसार कर जो विदेशी तुझसे माँगता है, ताकि पृथ्वी के सभी लोग तेरा नाम जानें, और तुझसे डरें जैसे तेरे लोग इसाएल करते हैं, और यह जानें कि यह घर जो मैंने बनाया है, तेरे नाम से पुकारा जाता है।

<sup>34</sup> जब तेरे लोग अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने के लिए जाते हैं, जिस मार्ग से तू उन्हें भेजे, और वे उस नगर की ओर तेरी प्रार्थना करते हैं जिसे तूने चुना है, और उस घर की ओर जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है,

<sup>35</sup> तो स्वर्ग से उनकी प्रार्थना और उनकी विनती सुन, और उनके कारण को बनाए रख।

<sup>36</sup> जब वे तेरे विरुद्ध पाप करते हैं (क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो पाप न करे) और तू उनसे क्रोधित होकर उन्हें शत्रु के हाथ में सौंप दे, ताकि वे उन्हें दूर या निकट देश में बंधुआई में ले जाएँ,

<sup>37</sup> यदि वे उस देश में जहाँ वे बंधुआई में ले जाए गए हैं, इसे मन में ले, और उस देश में तुझसे विनती करें जहाँ वे बंधुआई में ले जाए गए हैं, यह कहते हुए, 'हमने पाप किया है, हमने गलत किया है और दुष्टा की है;

<sup>38</sup> यदि वे पूरे मन और पूरे प्राण से तेरी ओर लौटें उस बंधुआई के देश में जहाँ वे बंधुआई में ले जाए गए हैं,

## 2 इतिहास

और उस देश की ओर प्रार्थना करें जिसे तूने उनके पितरों को दिया है, और उस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और उस घर की ओर जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है,

<sup>39</sup> तो स्वर्ग से, अपने निवास स्थान से उनकी प्रार्थना और उनकी विनती सुन, और उनके कारण को बनाए रख, और अपने लोगों को क्षमा कर जो तेरे विरुद्ध पाप कर चुके हैं।

<sup>40</sup> अब, मेरे परमेश्वर, कृपया, तेरी आँखें खुली रहें और तेरे कान इस स्थान में की गई प्रार्थना की ओर ध्यान दें।

<sup>41</sup> अब हे यहोवा परमेश्वर, उठ और अपने विश्राम स्थान पर आ, तू और तेरी सामर्थ्य की सन्दूक; तेरे याजक, हे यहोवा परमेश्वर, उद्धार से वसित हों, और तेरे भक्त भले में आनन्दित हों।

<sup>42</sup> हे यहोवा परमेश्वर, अपने अभिषिक्त के मुख को न फेर, अपने सेवक दाऊद के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को याद कर।

**7** जब सुलैमान ने प्रार्थना समाप्त की, तो स्वर्ग से आग उतरी और होमबलि और बलिदानों को भस्म कर दिया, और यहोवा की महिमा ने उस भवन को भर दिया।

<sup>2</sup> और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश नहीं कर सके क्योंकि यहोवा की महिमा ने यहोवा के भवन को भर दिया था।

<sup>3</sup> सभी इस्राएल के पुत्रों ने देखा कि आग नीचे उतरी और यहोवा की महिमा उस भवन पर है, तो वे फर्श पर अपने चेहरे के बल झुक गए, और उन्होंने यहोवा की आराधना की और उसकी स्तुति की, कहते हुए,

"वह निश्चय ही अच्छा है, क्योंकि उसकी दया सदा की है!"

<sup>4</sup> तब राजा और सभी लोगों ने यहोवा के सामने बलिदान चढ़ाया।

<sup>5</sup> राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें बलिदान में चढ़ाई। इस प्रकार राजा और सभी लोगों ने परमेश्वर के भवन को समर्पित किया।

<sup>6</sup> याजक अपनी-अपनी जगह पर खड़े थे, और लेवी भी, यहोवा के संगीत वाद्ययंत्रों के साथ जो राजा दाऊद ने यहोवा की स्तुति करने के लिए बनाए थे— 'क्योंकि उसकी दया सदा की है'— जब भी वह उनके माध्यम से स्तुति करता, तब याजक दूसरी ओर तुरहियां बजाते थे, और सभी इस्राएल खड़े रहते थे।

<sup>7</sup> तब सुलैमान ने यहोवा के भवन के सामने के आंगन के मध्य भाग को पवित्र किया, क्योंकि उसने वहां होमबलि और मेलबलि की चर्बी चढ़ाई, क्योंकि कांस्य की वेदी जो सुलैमान ने बनाई थी, वह होमबलि, अन्नबलि और चर्बी को समेटने में सक्षम नहीं थी।

<sup>8</sup> इस प्रकार सुलैमान ने उस समय सात दिनों तक पर्व मनाया, और उसके साथ सभी इस्राएल, लेबो-हमात से लेकर मिस्र की नदी तक की एक बहुत बड़ी सभा।

<sup>9</sup> और आठवें दिन उन्होंने एक उत्सव सभा की, क्योंकि उन्होंने वेदी के समर्पण का उत्सव सात दिनों तक मनाया, और पर्व सात दिनों तक।

<sup>10</sup> फिर सातवें महीने के तेईसवें दिन, उसने लोगों को उनके तंबुओं की ओर भेज दिया, हर्षित और मन में प्रसन्न क्योंकि यहोवा ने दाऊद, सुलैमान, और अपनी प्रजा इस्राएल के प्रति जो भलाई दिखाई थी।

<sup>11</sup> इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के भवन और राजा के महल को समाप्त किया, और उसने जो कुछ भी योजना बनाई थी, वह यहोवा के भवन और अपने महल में सफलतापूर्वक पूरा किया।

<sup>12</sup> तब यहोवा रात में सुलैमान के पास प्रकट हुआ और उससे कहा, "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और इस स्थान को अपने लिए बलिदान के घर के रूप में चुना है।

<sup>13</sup> यदि मैं आकाश को बंद कर दूँ ताकि वर्षा न हो, या यदि मैं टिढ़ियों को देश को खाने का आदेश दूँ, या यदि मैं अपनी प्रजा के बीच महामारी भेजूँ,

<sup>14</sup> और मेरी प्रजा जो मेरे नाम से उपकारे जाते हैं, अपने आप को नम्र करें, और प्रार्थना करें और मेरा मुख खोजें, और अपनी दुष्ट चातों से फिरें, तो मैं स्वर्ग से सुन्दरा, और उनके पाप को क्षमा करूँगा और उनके देश को चंगा करूँगा।

## 2 इतिहास

<sup>15</sup> अब मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे कान इस स्थान में की गई प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

<sup>16</sup> क्योंकि अब मैंने इस घर को चुना और पवित्र किया है ताकि मेरा नाम वहाँ सदा के लिए रहे, और मेरी आँखें और मेरा हृदय वहाँ हमेशा रहेंगे।

<sup>17</sup> जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, यदि तुम मेरे सामने तैरें ही चलोगे जैसे तुम्हारे पिता दाऊद चले, और जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी है उसके अनुसार करोगे, और मेरी विधियों और मेरे नियमों का पालन करोगे,

<sup>18</sup> तो मैं तुम्हारे राजसिंहासन को स्थापित करूँगा जैसा मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से बाचा की थी, कहते हुए, 'तुम्हारे पास इसाएल में शासक बनने के लिए कोई पुरुष नहीं होगा।'

<sup>19</sup> परंतु यदि तुम फिर जाओ और मेरी विधियों और मेरी आज्ञाओं को छोड़ दो जो मैंने तुम्हारे सामने रखी हैं, और जाकर अन्य देवताओं की सेवा करो और उनकी पूजा करो,

<sup>20</sup> तो मैं तुम्हें उस देश से उखाड़ दूँगा जो मैंने तुम्हें दिया है, और इस घर को जिसे मैंने अपने नाम के लिए पवित्र किया है मैं अपनी चट्ठी से बाहर कर दूँगा, और मैं इसे सभी लोगों के बीच एक कहावत और उपहास का विषय बना दूँगा।

<sup>21</sup> जहाँ तक इस घर का सवाल है, जो ऊँचा किया गया था, हर कोई जो इसके पास से गुजरेगा, चकित होगा और कहगी, यहोवा ने इस देश और इस घर के साथ ये बातें क्यों की?

<sup>22</sup> और वे कहेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया, उनके पितरों के परमेश्वर को जो उन्हें मिस्र देश से बाहर लाया था, और उन्होंने अन्य देवताओं को अपनाया और उनकी पूजा की और उनकी सेवा की; इसलिए उसने उन पर यह सारी विपत्ति लाई।"

**8** अब यह बीस वर्षों के अंत में हुआ जिसमें सुलैमान ने यहोवा के भवन और अपने घर का निर्माण किया था,

<sup>2</sup> कि उसने उन नगरों का निर्माण किया जो हूराम ने उसे दिए थे, और वहाँ इसाएल के पुत्रों को बसाया।

<sup>3</sup> तब सुलैमान हमात-सोबा गया और उसे जीत लिया।

<sup>4</sup> उसने जंगल में तथार का निर्माण किया और सभी भंडार नगरों का जो उसने हमात में बनाए थे।

<sup>5</sup> उसने ऊपरी बेत-होरोन और निचली बेत-होरोन का भी निर्माण किया, जो दीवारों, फाटकों और बारों से सुसज्जित नगर थे;

<sup>6</sup> और बालात और सभी भंडार नगरों का जो सुलैमान के पास थे, और उसके रथों के नगरों और उसके घुड़सवारों के नगरों का, और जो कुछ भी सुलैमान ने यस्तश्लेम, लेबानोन, और अपने शासन के अधीन सभी भूमि में बनाने की इच्छा की।

<sup>7</sup> सभी लोग जो हितियों, एमोरियों, परिजियों, हिवियों, और यबूसियों में से बचे थे, जो इसाएल के नहीं थे—

<sup>8</sup> उनके वंशजों में से जो उनके बाद भूमि में बचे थे, जिन्हें इसाएल के पुत्रों ने नष्ट नहीं किया था—सुलैमान ने उन पर आज तक जबरन श्रम लगाया।

<sup>9</sup> परंतु सुलैमान ने इसाएल के पुत्रों को अपने कार्य के लिए दास नहीं बनाया; वे युद्ध के पुरुष, उसके मुख्य सेनापति, उसके अधिकारी, और उसके रथों और उसके घुड़सवारों के सेनापति थे।

<sup>10</sup> ये राजा सुलैमान के मुख्य अधिकारी थे, दो सौ पचास जो लोगों पर शासन करते थे।

<sup>11</sup> तब सुलैमान ने फिरैन की बेटी को दाऊद के नगर से उस घर में लाया जो उसने उसके लिए बनाया था, क्योंकि उसने कहा, "मेरी पत्नी इसाएल के राजा दाऊद के घर में नहीं रहेगी, क्योंकि वे स्थान पवित्र हैं जहाँ यहोवा की वाचा का सन्दूक प्रवेश कर चुका है।"

<sup>12</sup> तब सुलैमान ने यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाए, जो उसने यहोवा की बेदी पर चढ़ाए थे जो उसने बरामदे के सामने बनाई थी;

<sup>13</sup> और उसने ऐसा प्रतिदिन के नियम के अनुसार किया, उन्हें मूसा की आज्ञा के अनुसार सब्बों, नए चाँदों, और वर्ष में तीन बार नियुक्त पर्वों पर चढ़ाया: अखमीरी रोटी का पर्व, सप्ताहों का पर्व, और झोपड़ियों का पर्व।

## 2 इतिहास

<sup>14</sup> अब अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार, उसने याजकों के विभागों को उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया, और लेवियों को उनके स्तुति और याजकों के सामने सेवा करने के कर्तव्यों के लिए प्रतिदिन के नियम के अनुसार, और प्रत्येक फाटक पर द्वारपालों के उनके विभागों के अनुसार; क्योंकि यह दाऊद, परमेश्वर के मनुष्य की आज्ञा थी।

<sup>15</sup> और उन्होंने राजा की आज्ञा से याजकों और लेवियों के लिए किसी भी सामरों में, या भंडारों के संबंध में विचलन नहीं किया।

<sup>16</sup> इसलिए सुलैमान का सारा कार्य यहोवा के भवन की नींव के दिन से पूरा किया गया, और जब तक यह समाप्त नहीं हुआ। इसलिए यहोवा का भवन पूरा हुआ।

<sup>17</sup> तब सुलैमान एजियोन-गेबर और एलोत को समुद्र तट पर एदोम की भूमि में गया।

<sup>18</sup> और ह्रासम ने अपने सेवकों के हाथ से उसे जहाज भेजे, और सेवक जो समुद्र को जानते थे। और वे सुलैमान के सेवकों के साथ ओफिर गए, और वहाँ से चार सौ पचास किकर सोना लिया, और उसे राजा सुलैमान के पास लाए।

**१** जब शबा की रानी ने सुलैमान की प्रसिद्धि सुनी, तो वह सुलैमान की परीक्षा तोने के लिए यरूशलेम आई। वह बहुत बड़े दल के साथ आई, जिसमें ऊंठ मसाले, बहुत सारा सोना और बहुमूल्य पत्थर ले जा रहे थे। जब वह सुलैमान के पास आई, तो उसने उससे अपने मन की सारी बातें कहीं।

<sup>२</sup> सुलैमान ने उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दिए; सुलैमान से कुछ भी छिपा नहीं था जो उसने उसे समझाया नहीं।

<sup>३</sup> जब शबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धि, और उसके द्वारा बनाए गए घर को देखा,

<sup>४</sup> उसकी मेज पर भीजन, उसके सेवकों की बैठक, उसके मनियों की सेवा और उनकी पोशाक, उसके प्याले भरने वालों और उनकी पोशाक, और वह सीढ़ी जिससे वह यहोवा के घर में जाता था, तो वह स्तब्ध रह गई।

<sup>५</sup> तब उसने राजा से कहा, "जो रिपोर्ट मैंने अपने देश में तुम्हारे शब्दों और तुम्हारी बुद्धि के बारे में सुनी थी, वह सच थी।

<sup>६</sup> परंतु मैंने उस रिपोर्ट पर विश्वास नहीं किया जब तक कि मैं नहीं आई और मेरी आँखों ने इसे नहीं देखा। और देखो, तुम्हारी बुद्धि की महानता का आधा भी मुझे नहीं बताया गया था! तुमने उस रिपोर्ट से बढ़कर किया जो मैंने सुनी थी।

<sup>७</sup> तुम्हारे लोग कितने धन्य हैं, तुम्हारे ये सेवक कितने धन्य हैं जो निरंतर तुम्हारे सामने खड़े रहते हैं और तुम्हारी बुद्धि सुनते हैं।

<sup>८</sup> यहोवा तुम्हारा परमेश्वर धन्य है जिसने तुम्हें प्रसन्नता पाई, तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए राजा के रूप में अपने सिंहासन पर बैठाया; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर इसाएल से प्रेम करता है, उम्हें सदा के लिए स्थिर करने के लिए, उसने तुम्हें उनके ऊपर राजा बनाया, न्याय और धर्म का पालन करने के लिए।"

<sup>९</sup> तब उसने राजा को एक सौ बीस किकर सोना, और बहुत बड़ी मात्रा में मसाले और बहुमूल्य पत्थर दिए। फिर कभी ऐसे मसाले नहीं आए, जैसे शबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिए थे।

<sup>१०</sup> और ह्रासम के सेवक और सुलैमान के सेवक, जो ओफिर से सोना लाए थे, उन्होंने भी अल्गम वृक्ष और बहुमूल्य पत्थर लाए।

<sup>११</sup> अल्गम वृक्षों से राजा ने यहोवा के घर और राजा के महल के लिए सीढ़ियों बनाई, और गायकों के लिए वीणा और सारंगी; और यहूदा के देश में पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा गया था।

<sup>१२</sup> राजा सुलैमान ने शबा की रानी को उसकी सारी इच्छाएँ दीं, जो कुछ उसने माँगा, उसके अलावा जो वह राजा के लिए लाई थी। तब वह अपने सेवकों के साथ अपने देश को लौट गई।

<sup>१३</sup> अब एक वर्ष में सुलैमान के पास जो सोना आता था उसका वजन 666 किकर था,

## 2 इतिहास

<sup>14</sup> व्यापारियों और सौदागरों के अलावा; और अरब के सभी राजा और देश के राज्यपाल सुलैमान के पास सोना और चाँदी लाते थे।

<sup>15</sup> राजा सुलैमान ने पीटे हुए सोने के दो सौ बड़े ढाल बनाए, प्रत्येक बड़े ढाल पर छह सौ शेकेल पीटा हुआ सोना लगाया।

<sup>16</sup> उसने पीटे हुए सोने के तीन सौ ढाल बनाए, प्रत्येक ढाल पर तीन सौ शेकेल सोना लगाया; और राजा ने उन्हें लबानोन के वन के घर में रखा।

<sup>17</sup> राजा ने हाथी दाँत का एक बड़ा सिंहासन भी बनाया और उसे शुद्ध सोने से मढ़वाया।

<sup>18</sup> सिंहासन तक छह सीढ़ियाँ थीं और सिंहासन से जुड़ा हुआ एक सोने का पायदान था, और सीट के प्रत्येक ओर बाँहें थीं, और बाँहों के पास दो सिंह खड़े थे।

<sup>19</sup> बारह सिंह वहाँ छह सीढ़ियों पर एक ओर और दूसरी ओर खड़े थे; किसी अन्य राज्य के लिए ऐसा कुछ नहीं बनाया गया था।

<sup>20</sup> राजा सुलैमान के सभी पीने के बर्तन सोने के थे, और लबानोन के वन के घर के सभी बर्तन शुद्ध सोने के थे; सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मूल्य नहीं था।

<sup>21</sup> क्योंकि राजा के जहाज़ ह्राम के सेवकों के साथ तरशीश जाते थे; हर तीन साल में तरशीश के जहाज़ सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बंदर और मोर लाते थे।

<sup>22</sup> इस प्रकार राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सभी राजाओं से महान हो गया।

<sup>23</sup> और पृथ्वी के सभी राजा सुलैमान की उपस्थिति की खोज कर रहे थे, उसकी बुद्धि को सुनने के लिए जो परमेश्वर ने उसके हृदय में रखी थी।

<sup>24</sup> वे प्रत्येक व्यक्ति अपने उपहार लाते थे: चाँदी और सोने के लेख, वस्त्र, हथियार, मसाले, घोड़े, और खच्चर, वर्ष दर वर्ष।

<sup>25</sup> अब सुलैमान के पास चार हजार घोड़ों और रथों के लिए अस्तबल थे, और बारह हजार घुड़सवार थे; और

उसने उन्हें रथ नगरों में और राजा के साथ यरूशलैम में रखा।

<sup>26</sup> और वह यूफ्रेट्स नदी से लेकर पलिशियों के देश तक, और मिस्र की सीमा तक सभी राजाओं पर शासन करता था।

<sup>27</sup> राजा ने यरूशलैम में चाँदी को पत्थरों के समान सामान्य बना दिया, और उसने देवदार को निचले प्रदेश में गूलर के पेड़ों के समान प्रचुर मात्रा में बना दिया।

<sup>28</sup> और वे सुलैमान के लिए मिस्र और सभी देशों से घोड़े लाते थे।

<sup>29</sup> अब सुलैमान के शेष कार्य, आरंभ से अंत तक, क्या वे नबी नाथान के अभिलेखों में, और शीतोनी अहीयाह की भवित्वाणी में, और यारोबाम नबात के पुत्र के बारे में दर्शक इद्दों के दर्शन में नहीं लिखे हैं?

<sup>30</sup> सुलैमान ने यरूशलैम में पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया।

<sup>31</sup> और सुलैमान अपने पितरों के साथ लेट गया, और उन्हें उसके पिता दाऊद के नगर में दफनाया गया; और उसका पुत्र रहबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

**10** तब रहबियाम शेकेम गया, क्योंकि समस्त इस्राएल शेकेम आया था ताकि उसे राजा बनाए।

<sup>2</sup> जब यारोबाम, नबात का पुत्र, ने यह सुना (क्योंकि वह मिस्र में था जहाँ वह राजा सुलैमान के समाने से भाग गया था), तो यारोबाम मिस्र से लौट आया।

<sup>3</sup> इसलिए उन्होंने संदेश भेजा और उसे बुलाया। जब यारोबाम और समस्त इस्राएल आए, तो उन्होंने रहबियाम से कहा,

<sup>4</sup> "आपके पिता ने हमारा जूआ कठिन बना दिया; अब इसलिए, आपके पिता द्वारा लगाए गए कठिन श्रम और भारी जूआ को हल्का करें, और हम आपकी सेवा करेंगे।"

<sup>5</sup> लेकिन उसने उनसे कहा, "तीन दिनों में फिर से मेरे पास आओ।" इसलिए लोग चले गए।

## 2 इतिहास

<sup>६</sup> तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्गों से परामर्श किया जिन्होंने उसके पिता सुलैमान की सेवा की थी जब वह जीवित थे, यह कहते हुए, "आप मुझे इस लोगों को कैसे उत्तर देने की सलाह देते हैं?"

<sup>७</sup> उन्होंने उससे कहा, "यदि आप इस लोगों के प्रति दयालु होंगे और उन्हें प्रसन्न करेंगे और उनसे मधुर वचन बोलेंगे, तो वे हमेशा आपके सेवक रहेंगे।"

<sup>८</sup> लेकिन उसने उन बुजुर्गों की सलाह को छोड़ दिया जो उन्होंने उसे दी थी, और उन युवकों से परामर्श किया जो उसके साथ बढ़े हुए थे और उसकी सेवा करते थे।

<sup>९</sup> तो उसने उनसे कहा, "आप क्या सलाह देते हैं, कि हम इस लोगों को क्या उत्तर दें जिन्होंने मुझसे कहा, 'उस जूआ को हल्का करें जो आपके पिता ने हम पर रखा था'?"

<sup>१०</sup> तब उन युवकों ने जो उसके साथ बढ़े हुए थे, उससे कहा, "यह वही है जो आपको उन लोगों से कहना चाहिए जिन्होंने आपसे कहा, 'आपके पिता ने हमारा जूआ भारी बना दिया, लेकिन आप इसे हमारे लिए हल्का करें।' आप उनसे कहें, 'मेरी छोटी उंगली मेरे पिता की कमर से मोटी है।'

<sup>११</sup> अब, मेरे पिता ने आपको भारी जूआ दिया, लेकिन मैं आपके जूआ में और जोड़ द्वागा; मेरे पिता ने आपको कोडों से अनुशासित किया, लेकिन मैं आपको बिच्छुओं से अनुशासित करूँगा।"

<sup>१२</sup> तो यारोबाम और समस्त लोग तीसरे दिन रहूबियाम के पास आए, जैसा कि राजा ने निर्देश दिया था, यह कहते हुए, "तीसरे दिन मेरे पास लौट आओ।"

<sup>१३</sup> और राजा ने उन्हें कठोरता से उत्तर दिया, और राजा रहूबियाम ने बुजुर्गों की सलाह को छोड़ दिया।

<sup>१४</sup> उसने उनसे युवकों की सलाह के अनुसार कहा, "मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी बना दिया, लेकिन मैं उसमें और जोड़ द्वागा; मेरे पिता ने तुम्हें कोडों से अनुशासित किया, लेकिन मैं तुम्हें बिच्छुओं से अनुशासित करूँगा।"

<sup>१५</sup> इसलिए राजा ने लोगों की नहीं सुनी, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से एक घटना थी ताकि प्रभु अपने

वचन को स्थापित करें, जो उसने शीलोनी अहिंसाह के माध्यम से यारोबाम, नबात के पुत्र, से कहा था।

<sup>१६</sup> जब समस्त इस्साएल ने देखा कि राजा ने उनकी नहीं सुनी, तो लोगों ने राजा को उत्तर दिया, यह कहते हुए,

"हमारा दाऊद में क्या हिस्सा है? यिशे के पुत्र में हमारी काई विरासत नहीं है। हे इस्साएल, अपने अपने तंबुओं में जाओ। अब अपने घर की देखभाल करो, हे दाऊद!"

इसलिए समस्त इस्साएल अपने तंबुओं में चला गया।

<sup>१७</sup> लेकिन जो इस्साएल के पुत्र यहूदा के नगरों में रहते थे, रहूबियाम उन पर राज्य करता रहा।

<sup>१८</sup> तब राजा रहूबियाम ने हदोरेम को भेजा, जो जबरन श्रम का प्रभारी था, और इस्साएल के पुत्रों ने उसे पथरों से मारकर मार डाला। और राजा रहूबियाम अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम भाग गया।

<sup>१९</sup> इसलिए इस्साएल आज तक दाऊद के घराने के विरुद्ध विद्रोह में है।

**११** जब रहूबियाम यरूशलेम आया, तो उसने यहूदा और बिन्यामीन के घराने के 1,80,000 चुने हुए योद्धाओं को इकट्ठा किया, जो इस्साएल के विरुद्ध लड़ने के लिए और राज्य को रहूबियाम को वापस लाने के लिए थे।

<sup>२</sup> परन्तु यहोवा का वचन शमायाह, जो परमेश्वर का मनुष्य था, के पास आया, यह कहते हुए,

<sup>३</sup> "सुलैमान के पुत्र रहूबियाम, यहूदा के राजा, और यहूदा और बिन्यामीन में समस्त इस्साएल से कहो,

<sup>४</sup> यहोवा यह कहता है: तुम न तो ऊपर जाओगे और न ही अपने रिशेदारों के विरुद्ध लड़ोगें; हर आदमी अपने घर लौट जाए, क्योंकि यह मामला मुझसे है।" इसलिए उन्होंने यहोवा के वचनों को सुना और यारोबाम के विरुद्ध जाने से लौट आए।

<sup>५</sup> रहूबियाम यरूशलेम में रहा और यहूदा में रक्षा के लिए नगर बनाए।

<sup>६</sup> उसने बेतलेहम, एताम, तकोआ,

## 2 इतिहास

<sup>7</sup> वेत-सूर, सोको, अदुल्लाम,

<sup>8</sup> गथ, मरेशा, ज़िफ़,

<sup>9</sup> अदोरेम, लाकीश, अजेका,

<sup>10</sup> सोरा, अय्यालोन, और हेब्रोन, जो यहूदा और बिन्यामीन में गढ़वाले नगर हैं, बनाए।

<sup>11</sup> उसने गढ़ों को भी मजबूत किया और उनमें अधिकारी और भोजन, तेल, और दाखमधू की आपूर्ति रखी।

<sup>12</sup> उसने हर नगर में ढालें और भाले रखे और उन्हें बहुत मजबूत किया। इसलिए उसने यहूदा और बिन्यामीन को अपने अधीन रखा।

<sup>13</sup> और जो याजक और लेवी थे, वे सब इस्राएल में अपने अपने प्रदेशों से उसके साथ खड़े हुए।

<sup>14</sup> क्योंकि लेवियों ने अपने चरागाह भूमि और अपनी संपत्ति छोड़ दी और यहूदा और यरूशलेम में आए, क्योंकि धारोबाम और उसके पुत्रों ने उन्हें यहोवा के याजक के रूप में सेवा करने से बाहर कर दिया था।

<sup>15</sup> उसने अपने लिए ऊँचे स्थानों के लिए, बकरी के राशपर्सों और बछड़ों के लिए, जिन्हें उसने बनाया था, याजक नियुक्त किए।

<sup>16</sup> इस्राएल के सभी गोत्रों में से जो यहोवा इस्राएल के परमेश्वर की खोज में अपने हृदय को लगाते थे, वे यरूशलेम आए, अपने पूर्जों के परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान करने के लिए।

<sup>17</sup> उन्होंने यहूदा के राज्य को मजबूत किया और सुलैमान के पुत्र रहूबियाम का तीन वर्षों तक समर्थन किया, क्योंकि वे तीन वर्षों तक दाऊद और सुलैमान के मार्ग में चरे।

<sup>18</sup> फिर रहूबियाम ने महलत को, जो दाऊद के पुत्र यरीमात की पुत्री और यिशै के पुत्र एलीआब की पुत्री अबीहैल थी, अपनी पत्नी के रूप में लिया।

<sup>19</sup> उसने उसे पुत्र उत्पन्न किए: यहूश, शमर्याह, और ज़ाहम।

<sup>20</sup> उसके बाद उसने माका को, जो अबशालोम की पुत्री थी, लिया, और उसने उसे अबियाह, अतौ, ज़ीजा, और शोलोमीत उत्पन्न किए।

<sup>21</sup> रहूबियाम ने अबशालोम की पुत्री माका को अपनी अन्य सभी पतियों और उपपतियों से अधिक प्रेम किया, क्योंकि उसने अठारह पतियाँ और साठ उपपतियाँ तीन, और अट्टाइस पुत्र और साठ पुत्रियाँ उत्पन्न कीं।

<sup>22</sup> रहूबियाम ने माका के पुत्र अबियाह को उसके भाइयों में प्रधान और नेता नियुक्त किया, क्योंकि वह उसे राजा बनाने का इरादा रखता था।

<sup>23</sup> उसने बुद्धिमानी से कार्य किया और अपने कुछ पुत्रों को यहूदा और बिन्यामीन के सभी क्षेत्रों में, सभी गढ़वाले नगरों में वितरित किया। और उसने उन्हें प्रयुक्त मात्रा में प्रावधान दिए और उनके लिए कई पतियों की खोज की।

**12** जब रहूबियाम का राज्य स्थापित और शक्तिशाली हो गया, तब उसने और उसके साथ समस्त इस्राएल ने प्रभु की व्यवस्था को त्याग दिया।

<sup>2</sup> और यह रहूबियाम के राज्य के पाँचवें वर्ष में हुआ, क्योंकि उन्होंने प्रभु के प्रति विश्वासघात किया था, मिस्र का राजा शिशक यरूशलेम के विरुद्ध चढ़ आया।

<sup>3</sup> वह 1,200 रथों, 60,000 घुड़सवारों, और अनगिनत लोगों के साथ मिस्र से आया: लूबियों, सुखियों, और इथियोपियाईयों के साथ।

<sup>4</sup> उसने यहूदा के गढ़वाले नगरों को जीत लिया और यरूशलेम तक आ पहुँचा।

<sup>5</sup> तब शमायाह भविष्यद्वक्ता रहूबियाम और यहूदा के नेताओं के पास आया, जो शिशक के कारण यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे, और उसने उनसे कहा, “प्रभु यह कहता है: ‘तुमने मुझे त्याग दिया है, इसलिए मैंने भी तुम्हें शिशक के हाथ में छोड़ दिया है।’”

<sup>6</sup> इस पर इस्राएल के नेताओं और राजा ने स्वयं को दीन किया और कहा, “प्रभु धर्म है।”

<sup>7</sup> जब प्रभु ने देखा कि उन्होंने स्वयं को दीन किया है, तो प्रभु का वचन शमायाह के पास आया, यह कहते हुए, “उन्होंने स्वयं को दीन किया है, इसलिए मैं उन्हें नष्ट नहीं

## 2 इतिहास

करुंगा; और मैं उहें थोड़ी मुक्ति दूंगा, और मेरी क्रोध यरूशलेम पर शिशक के माध्यम से नहीं बरसेगा।

<sup>8</sup> परंतु वे उसके दास बनेंगे, ताकि वे मेरे सेवा और देशों के राज्यों की सेवा के बीच का अंतर जान सकें।

<sup>9</sup> इसलिए मिस का राजा शिशक यरूशलेम के विरुद्ध चढ़ आया, और उसने प्रभु के घर के खजाने और राजा के घर के खजाने ले लिए। उसने सब कुछ ले लिया। उसने वे सोने की ढालें भी ले लीं जो सुलैमान ने बनाई थीं।

<sup>10</sup> तब राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर पीतल की ढाले बनवाई और उहें उन रक्षकों के अधिकारियों की देखरेख में सौंप दिया जो राजा के घर के प्रवेश द्वार की रक्षा करते थे।

<sup>11</sup> और जब भी राजा प्रभु के घर में प्रवेश करता, रक्षक आते और उहें रक्षकों के कमरे में वापस ले जाते।

<sup>12</sup> और जब उसने स्वयं को दीन किया, तो प्रभु का क्रोध उससे दूर हो गया, ताकि उसे पूरी तरह से नष्ट न करें; और यहूदा में भी स्थिति अच्छी थी।

<sup>13</sup> इस प्रकार राजा रहूबियाम यरूशलेम में शक्तिशाली हुआ और राज्य किया। अब रहूबियाम जब राजा बना था तब वह इकतालीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में सत्रह वर्षों तक राज्य किया, वह नगर जिसे प्रभु ने इसाएल के सभी गोत्रों में से अपने नाम को वहाँ रखने के लिए चुना था। और उसकी माता का नाम नामा था, जो अम्मोन की थी।

<sup>14</sup> उसने बुराई की क्योंकि उसने अपना हृदय प्रभु की खोज में नहीं लगाया।

<sup>15</sup> अब रहूबियाम के कार्य, पहले से लेकर अंतिम तक, क्या वे शमायाह भविष्यद्वक्ता और इदी दृष्टि के अभिलेखों में वंशावली के अनुसार नहीं लिखे गए हैं? और रहूबियाम और यारोबियाम के बीच निरंतर युद्ध होते रहे।

<sup>16</sup> और रहूबियाम अपने पितरों के साथ सो गया और दाऊद के नगर में दफनाया गया; और उसका पुत्र अबियाह उसके स्थान पर राजा बना।

**13** राजा यारोबाम के अठारहवें वर्ष में, अबियाह यहूदा का राजा बना।

<sup>2</sup> उसने यरूशलेम में तीन वर्ष तक राज्य किया; और उसकी माता का नाम मीकायाह था, जो गिबा के उत्तरीएल की पुत्री थी। और अबियाह और यारोबाम के बीच युद्ध हुआ।

<sup>3</sup> अबियाह ने चार लाख चुने हुए वीर योद्धाओं की सेना के साथ युद्ध आरंभ किया, जबकि यारोबाम ने उसके विरुद्ध आठ लाख चुने हुए वीर योद्धाओं के साथ युद्ध की तैयारी की।

<sup>4</sup> तब अबियाह एप्रैम के पहाड़ी देश में स्थित ज़ेमराईम पर्वत पर खड़ा हुआ और कहा, “यारोबाम और समस्त इसाएल, मेरी बात सुनो:

<sup>5</sup> क्या तुम नहीं जानते कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने दाऊद और उसके पुत्रों को नमक की बाचा के द्वारा इसाएल पर सदा के लिए शासन दिया?

<sup>6</sup> किर भी, नबात का पुत्र यारोबाम, जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का सेवक था, अपने स्वामी के विरुद्ध विद्रोह कर उठा,

<sup>7</sup> और निकम्मे लोग, दुष्ट लोग उसके पास इकट्ठे हो गए, जो सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के लिए बहुत शक्तिशाली साबित हुए, जब वह युवा और डरपोक था और उनके विरुद्ध अपनी स्थिति नहीं बना सका।

<sup>8</sup> तो अब तुम दाऊद के पुत्रों के माध्यम से यहोवा के राज्य के विरुद्ध खड़े होने का इरादा रखते हो, जबकि तुम एक बड़ी भीड़ हो और तुम्हारे पास सोने के बछड़े हैं जिन्हें यारोबाम ने तुम्हारे लिए देवता बनाया है।

<sup>9</sup> क्या तुमने यहोवा के याजकों, हारून के पुत्रों और लेवियों को बाहर नहीं निकाला, और अपने लिए उन देशों के लोगों की तरह याजक बना लिए? जो कोई एक बैल और सात मेढ़े लेकर अपने को समर्पित करने आता है, वह भी उन देवताओं का याजक बन सकता है जो देवता नहीं हैं।

<sup>10</sup> लेकिन हमारे लिए, यहोवा हमारा परमेश्वर है, और हमने उसे नहीं छोड़ा है। हारून के पुत्र यहोवा की सेवा

## 2 इतिहास

याजक के रूप में कर रहे हैं, और लेवी अपने काम पर हैं।

<sup>11</sup> हर सुबह और शाम वे यहोवा के लिए होमबलि और सुधाधित धूप जलाते हैं, और शुद्ध मेज पर रोटी रखी जाती है, और स्वर्ण दीपत्तम् अपनी दीपों के साथ हर शाम जलने के लिए तैयार है; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा द्वारा दी गई जिम्मेदारी को निभाते हैं, लेकिन तुमने उसे छोड़ दिया है।

<sup>12</sup> अब देखो, परमेश्वर हमारे सिर पर है, और उसके याजक तुम्हारे विरुद्ध चेतावनी देने के लिए संकेत तुरहिया लिए हुए हैं। इसाएल के पुत्रों, अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध युद्ध मत करो, क्योंकि तुम सफल नहीं होगे।"

<sup>13</sup> लेकिन यारोबाम ने पीछे से आने के लिए एक घात लगाई, ताकि इसाएल यहूदा के सामने और घात उनके पीछे हो।

<sup>14</sup> जब यहूदा ने मुड़कर देखा, तो देखो, वे आगे और पीछे से आक्रमण किए गए; इसलिए उन्होंने यहोवा को पुकारा, और याजकों ने तुरहियां बजाईं।

<sup>15</sup> तब यहूदा के पुरुषों ने युद्ध का नारा लगाया, और जब यहूदा के पुरुषों ने युद्ध का नारा लगाया, तो परमेश्वर ने अबियाह और यहूदा के सामने यारोबाम और समस्त इसाएल को हरा दिया।

<sup>16</sup> इसलिए इसाएल के पुत्र यहूदा के सामने से भाग गए, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया।

<sup>17</sup> अबियाह और उसके लोगों ने उन्हें बड़ी मार से पराजित किया, ताकि इसाएल के पांच लाख चुने हुए पुरुष मारे गए।

<sup>18</sup> इसलिए उस समय इसाएल के पुत्र दब गए, और यहूदा के पुरुषों ने विजय प्राप्त की क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया।

<sup>19</sup> अबियाह ने यारोबाम का पांछा किया और उससे नगरों को कब्जा कर लिया: बेताएल उसके गांवों के साथ, येशाना उसके गांवों के साथ, और एगोन उसके गांवों के साथ।

<sup>20</sup> यारोबाम अबियाह के दिनों में फिर से शक्ति प्राप्त नहीं कर सका; और यहोवा ने उसे मारा और वह मर गया।

<sup>21</sup> लेकिन अबियाह शक्तिशाली बन गया; और उसने अपने लिए चौदह पतियाँ लीं और बाईंस पुत्रों और सोलह पुत्रियों को जन्म दिया।

<sup>22</sup> अब अबियाह के बाकी कार्य, उसके तरीके और उसके शब्द, भविष्यद्वक्ता इदों की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

**14** अभियाह अपने पितरों के संग सो गया, और उन्हें दाकुद के नगर में दफनाया गया; और उसके स्थान पर उसका पुत्र आसा राजा बना। उसके दिनों में दस वर्षों तक देश में शांति रही।

<sup>2</sup> आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और सही किया,

<sup>3</sup> क्योंकि उसने विदेशी वेदियों और ऊँचे स्थानों को हटा दिया, स्मारक पत्थरों को तोड़ डाला, और अशेरों को काट डाला,

<sup>4</sup> और यहूदा को अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज करने और व्यवस्था और आज्ञा का पालन करने की आज्ञा दी।

<sup>5</sup> उसने यहूदा के सभी नगरों से ऊँचे स्थानों और धूप वेदियों को भी हटा दिया। और उसके अधीन राज्य में शांति थी।

<sup>6</sup> उसने यहूदा में गढ़वाले नगर बनाए, क्योंकि देश में शांति थी, और उन वर्षों में कोई उससे युद्ध नहीं कर रहा था, क्योंकि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था।

<sup>7</sup> उसने यहूदा से कहा, "आओ, हम इन नगरों को बनाएं और उन्हें दीवारों और मीनारों, फाटकों और किंवाड़ों से घेरें। यह देश अभी भी हमारा है क्योंकि हमने अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है; हमने उसकी खोज की है, और उसने हमें चारों ओर से विश्राम दिया है।" इसलिए उन्होंने निर्माण किया और समृद्ध हुए।

<sup>8</sup> अब आसा के पास यहूदा से 300,000 सैनिक थे, जो बड़े ढाल और भाले धारण करते थे, और बिन्यामीन से

## 2 इतिहास

280,000 थे, जो ढाल धारण करते और धनुष खींचते थे; वे सभी वीर योद्धा थे।

<sup>०</sup> अब इथियोपियाई ज़ेरह उनके खिलाफ एक लाख सैनिकों और तीन सौ रथों की सेना लेकर निकला, और वह मारेशा तक आगा।

<sup>१०</sup> तो आसा उससे मिलने के लिए निकला, और उन्होंने मारेशा में ज़ेफाथा की घाटी में युद्ध की तैयारी की।

<sup>११</sup> तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा को पुकारा और कहा, “हे यहोवा, आपके अलावा कोई नहीं है जो शक्तिशाली और निर्बल के बीच युद्ध में सहायता कर सके; इसलिए हमारी सहायता करें, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, क्योंकि हम आप पर भरोसा करते हैं, और आपके नाम पर इस भीड़ के खिलाफ आए हैं। हे यहोवा, आप हमारे परमेश्वर हैं; कोई मनुष्य आपके खिलाफ प्रबल न हो।”

<sup>१२</sup> तो यहोवा ने आसा और यहदा के सामने इथियोपियाई को पराजित किया, और इथियोपियाई भाग गए।

<sup>१३</sup> आसा और उसके साथ के लोग उनका पीछा करते हुए गेरार तक गए; और इनसे सारे इथियोपियाई मारे गए कि उनमें से कोई जीवित नहीं बचा, क्योंकि वे यहोवा और उसकी सेना के सामने टूट गए थे। और उन्होंने बहुत बड़ी मात्रा में लूट ले ली।

<sup>१४</sup> उन्होंने गेरार के आसपास के सभी नगरों को नष्ट कर दिया, क्योंकि यहोवा का भय उन पर छा गया था; और उन्होंने सभी नगरों को लूटा, क्योंकि उनमें बहुत लूट थी।

<sup>१५</sup> उन्होंने उन लोगों को भी घातक रूप से मारा जो शृणुन के मालिक थे, और बड़ी संख्या में भेड़ और ऊँट ले गए। फिर वे यस्तशलेम लौट आए।

**15** अब ओदेद के पुत्र अजर्याह पर परमेश्वर की आत्मा आई,

<sup>२</sup> और वह आसा से मिलने गया और उससे कहा, “मुझे सुनो, आसा, और सब यहूदा और बिन्यामीन: जब तुम उसके साथ होते हो, तब यहोवा तुम्हारे साथ होता है। और यदि तुम उसे खोजोगे, तो वह तुम्हें मिलने देगा; परन्तु यदि तुम उसे छोड़ दोगे, तो वह तुम्हें छोड़ देगा।

<sup>३</sup> क्योंकि बहुत दिनों तक इसाएल सच्चे परमेश्वर के बिना, और बिना किसी उपदेशक याजक के, और बिना व्यवस्था के रहा।

<sup>४</sup> परन्तु अपनी विपत्ति में उन्होंने इसाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरकर उसे खोजा, और उसने उन्हें मिलने दिया।

<sup>५</sup> उन दिनों में बाहर जाने वाले या भीतर आने वाले के लिए कोई शांति नहीं थी, क्योंकि बहुत से उपद्रवों ने देश के सब निवासियों को पीड़ित किया।

<sup>६</sup> राष्ट्र राष्ट्र से, और नगर नगर से टकराया, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें हर प्रकार की विपत्ति से धेर दिया।

<sup>७</sup> परन्तु तुम, दृढ़ रहो और साहस न खोओ, क्योंकि तुम्हारे काम का प्रतिफल है।”

<sup>८</sup> अब जब आसा ने ये बातें और भविष्यद्वक्ता ओदेद के पुत्र अजर्याह की भविष्यवाणी सुनी, तो उसने साहस पाया और यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश से और उन नगरों से जो उसने एप्रैम के पहाड़ी देश में जीते थे, घृणित मूर्तियों को हटा दिया। फिर उसने यहोवा की वेदी को पुनःस्थापित किया जो यहोवा के आँगन के सामने थी।

<sup>९</sup> और उसने सब यहूदा और बिन्यामीन को, और एप्रैम, मनश्शे, और शिमोन के उन लोगों को जो उनके साथ रहते थे, इकट्ठा किया, क्योंकि जब उन्होंने देखा कि यहोवा उसका परमेश्वर उसके साथ है, तो बहुत से इसाएल से उसके पास चले आए।

<sup>१०</sup> इसलिए वे आसा के राज्य के पंद्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में यस्तशलेम में इकट्ठे हुए।

<sup>११</sup> उन्होंने उस दिन यहोवा को सात सौ बैल और सात हजार भेड़ें बालिदान कीं, जो वे लूट में लाए थे।

<sup>१२</sup> उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को अपने सारे हृदय और प्राण से खोजने के लिए वाचा में प्रवेश किया;

<sup>१३</sup> और जो कोई इसाएल के परमेश्वर यहोवा को न खोजे, वह चाहे छोटा हो या बड़ा, पुरुष हो या स्त्री, उसे मार डाला जाए।

## 2 इतिहास

<sup>14</sup> इसके अलावा, उन्होंने यहोवा के प्रति ऊँचे स्वर में, जयजयकार के साथ, तुरहियों और नरसिंगों के साथ शपथ ली।

<sup>15</sup> सभी यहूदा ने इस शपथ के कारण आनन्द किया, क्योंकि उन्होंने पूरे हृदय से शपथ ली थी और उसे पूरी लगन से खोजा था, और उसने उन्हें मिलने दिया। इसलिए यहोवा ने उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया।

<sup>16</sup> उसने राजा आसा की माता माका को भी रानी माता के पद से हटा दिया, क्योंकि उसने एक भयानक मूर्ति अशोरा के रूप में बनाई थी, और आसा ने उसकी भयानक मूर्ति को काट डाला, उसे कुचल दिया, और किंद्रोन की घाटी में जला दिया।

<sup>17</sup> परन्तु ऊँचे स्थान इस्साएल से नहीं हटाए गए; तौभी, आसा का हृदय उसके सारे दिनों में पूरी तरह से समर्पित था।

<sup>18</sup> और उसने अपने पिता की पवित्र वस्तुएँ और अपनी पवित्र वस्तुएँ: चाँदी, सोना, और बर्तन, परमेश्वर के घर में लाया।

<sup>19</sup> और आसा के राज्य के पैतीसवें वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हुआ।

**16** आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में, इस्साएल के राजा बाशा यहूदा के विरुद्ध आया और रामाह को किलेबंद किया, ताकि कोई भी यहूदा के राजा आसा के पास न जा सके और न ही आ सके।

<sup>2</sup> तब आसा ने यहोवा के भवन और राजा के भवन के खजानों से चांदी और सोना निकाला, और उन्हें दमिश्क में रहने वाले अराम के राजा बेन-हदद के पास भेजा, यह कहते हुए,

<sup>3</sup> "तेरे और मेरे बीच में एक संधि है, जैसे मेरे पिता और तेरे पिता के बीच में थी। देख, मैंने तुझे चांदी और सोना भेजा है; जा, इस्साएल के राजा बाशा के साथ अपनी संधि तोड़ दे ताकि वह मुझसे हट जाए!"

<sup>4</sup> इसलिए बेन-हदद ने राजा आसा की बात सुनी और अपने सेनापतियों को इस्साएल के नगरों के विरुद्ध भेजा, और उन्होंने इयोन, दान, अबेल-मैम, और नप्ताली के सभी भंडार नगरों पर प्रहार किया।

<sup>5</sup> जब बाशा ने इसके बारे में सुना, तो उसने रामाह को किलेबंद करना बंद कर दिया और अपना काम छोड़ दिया।

<sup>6</sup> तब राजा आसा ने सारे यहूदा को बुलाया, और उन्होंने रामाह के पत्तरों और लकड़ी को ले लिया, जिनसे बाशा निर्माण कर रहा था, और उनसे उसने गेबा और मिस्पा को किलेबंद किया।

<sup>7</sup> उसी समय हनानी दर्शी यहूदा के राजा आसा के पास आया और उससे कहा, "क्योंकि तूने अराम के राजा पर भरोसा किया है और अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं किया है, इसलिए अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है।"

<sup>8</sup> क्या कूशी और लूबियों की सेना बहुत बड़ी नहीं थी, जिनके पास बहुत से रथ और घुड़सवार थे? फिर भी क्योंकि तूने यहोवा पर भरोसा किया, उसने उन्हें तेरे हाथ में कर दिया।

<sup>9</sup> क्योंकि यहोवा की आंखें सारी पृथ्वी पर धूमती हैं, ताकि वह उन लोगों का दृढ़ता से समर्पन कर सके जिनका हृदय पूरी तरह से उसका है। तूने इसमें मूर्खता की है; वास्तव में, अब से तुझे युद्ध होगे।"

<sup>10</sup> तब आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और उसे जेल में डाल दिया, क्योंकि वह इस बात से उस पर क्रोधित था। और आसा ने उसी समय कुछ लोगों पर अत्याचार किया।

<sup>11</sup> अब, आसा के पहले से लेकर अंतिम तक के कार्य, देखो, वे यहूदा और इस्साएल के राजाओं की पुस्तक में लिखे गए हैं।

<sup>12</sup> अपने राज्य के उनतालीसवें वर्ष में, आसा के पैरों में रोग हो गया। उसका रोग गंभीर था, फिर भी अपने रोग में भी उसने यहोवा की खोज नहीं की, बल्कि चिकित्सकों की।

<sup>13</sup> इसलिए आसा अपने पितरों के साथ लेटा। वह अपने राज्य के इकतालीसवें वर्ष में मर गया।

<sup>14</sup> उसे उसके अपने मकबरे में दफनाया गया जिसे उसने अपने लिए दाऊद के नगर में खुदवाया था, और उसे विश्राम स्थल पर रखा जिसे उसने विभिन्न प्रकार के

## 2 इतिहास

मसालों से भरा था जो इत्र बनाने वाले की कला से मिश्रित थे; और उन्होंने उसके लिए बहुत बड़ी अग्रिजलाई।

**17** उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोशापात राजा बना, और उसने इसाएल पर अपनी शक्ति को सिद्ध किया।

<sup>2</sup> उसने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सैनिकों को रखा, और यहूदा के देश में और ऐप्रेम के उन नगरों में, जिन्हें उसके पिता आसा ने जीता था, छावनियाँ बिठाईं।

<sup>3</sup> और यहोवा यहोशापात के साथ था क्योंकि उसने अपने पिता दाऊद के पहले दिनों के उदाहरण का अनुसरण किया और बालों की खोज नहीं की,

<sup>4</sup> परंतु अपने पिता के परमेश्वर की खोज की, उसकी आज्ञाओं का पालन किया, और इसाएल के समान काम नहीं किया।

<sup>5</sup> इसलिए यहोवा ने राज्य को उसके नियंत्रण में स्थापित किया, और सब यहूदा ने यहोशापात को भेट दी, और उसके पास बड़ी धन-सम्पत्ति और सम्मान था।

<sup>6</sup> और उसने यहोवा के मार्गों में बड़ा गर्व किया, और फिर से यहूदा से ऊँचे स्थानों और अशेषों को हटा दिया।

<sup>7</sup> फिर अपने राज्य के तीसरे वर्ष में उसने अपने अधिकारियों, बैन-हैल, ओबियाह, जकर्याह, नतनएल, और मीकायाह को यहूदा के नगरों में शिक्षा देने के लिए भेजा;

<sup>8</sup> और उनके साथ लेवी, शमायाह, नतन्याह, जबियाह, असाहेल, शेमिरामोत, यहोनातान, अदोनियाह, तोबियाह, और तोब-अदोनियाह—लेवी; और उनके साथ एलीशामा और यहोराम, याजक।

<sup>9</sup> और उन्होंने यहूदा में शिक्षा दी, और उनके पास यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक थी; और वे यहूदा के सब नगरों में गए और लोगों के बीच शिक्षा दी।

<sup>10</sup> अब यहोवा का भय यहूदा के चारों ओर के सब देशों के राज्यों पर था, ताकि उन्होंने यहोशापात के विरुद्ध युद्ध नहीं किया।

<sup>11</sup> और कुछ पलिश्ती यहोशापात के लिए भेट और चाँदी लाए। अरबों ने भी उसे झूंड, सात हजार सात सौ मेंढे और सात हजार सात सौ बकरे लाए।

<sup>12</sup> इसलिए यहोशापात और अधिक महान होता गया, और उसने यहूदा में गढ़ और भंडार नगर बनाए।

<sup>13</sup> उसके पास यहूदा के नगरों में बड़ी आपूर्तियाँ थीं, और यरूशलेम में योद्धा, वीर पुरुष थे।

<sup>14</sup> यह उनकी गिनती थी उनके पितरों के घरानों के अनुसार:

यहूदा के हजारों के सेनापति अद्राह सेनापति, और उसके साथ 300,000 वीर योद्धा;

<sup>15</sup> और उसके बगल में यहोनान सेनापति, और उसके साथ 280,000;

<sup>16</sup> और उसके बगल में अम्याह जिक्री का पुत्र, जो यहोवा के लिए स्वेच्छा से आगा, और उसके साथ 200,000 वीर योद्धा;

<sup>17</sup> और बिन्यामीन के एल्याद, एक वीर योद्धा, और उसके साथ 200,000 धनुष और ढाल से सुसज्जित;

<sup>18</sup> और उसके बगल में यहोजाबाद, और उसके साथ 180,000 युद्ध के लिए सुसज्जित।

<sup>19</sup> ये वे हैं जिन्होंने राजा की सेवा की, उन लोगों के अलावा जिन्हें राजा ने यहूदा के गढ़वाले नगरों में रखा था।

**18** अब यहोशापात के पास बहुत धन और सम्मान था; और उसने अहाब के साथ विवाह द्वारा संबंध स्थापित किया।

<sup>2</sup> कुछ वर्षों बाद वह सामरिया में अहाब के पास गया। और अहाब ने उसके और उसके साथ आए लोगों के लिए बहुत से भेड़-बकरियों और बैलों का वध किया, और उसे रामोत-गिलाद के विरुद्ध जाने के लिए प्रेरित किया।

<sup>3</sup> इसाएल के राजा अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से कहा, “क्या तुम मेरे साथ रामोत-गिलाद के विरुद्ध

## 2 इतिहास

जाओगे?" और उसने उससे कहा, "मैं तुम्हारे समान हूँ, और मेरे लोग तुम्हारे लोगों के समान हैं, और हम युद्ध में तुम्हारे साथ रहेंगे।"

<sup>4</sup> हालांकि, यहोशापात ने इसाएल के राजा से कहा, "कृपया पहले यहोवा का वचन मर्गों।"

<sup>5</sup> इसलिए इसाएल के राजा ने नबियों को, चार सौ पुरुषों को, इकट्ठा किया और उनसे कहा, "क्या हम रामोत-गिलाद के विरुद्ध युद्ध करने जाएं, या मैं रुक जाऊं?" और उन्होंने कहा, "जाओ, क्योंकि परमेश्वर इसे राजा के हाथ में दे देगा!"

<sup>6</sup> परन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या यहाँ यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिससे हम उससे पूछ सकें?"

<sup>7</sup> तब इसाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "अब भी एक व्यक्ति है जिससे हम यहोवा से पूछ सकते हैं, परन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ, क्योंकि वह मेरे विषय में कभी कुछ अच्छा भविष्यवाणी नहीं करता, केवल बुरा ही करता है। वह इमला का पुत्र मीकायाह है।" परन्तु यहोशापात ने कहा, "राजा ऐसा न कहें।"

<sup>8</sup> तब इसाएल के राजा ने एक अधिकारी को बुलाया और कहा, "इमला के पुत्र मीकायाह को शीघ्र लाओ।"

<sup>9</sup> अब इसाएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, अपने वस्त्रों में सजे हुए, और वे सामरिया के द्वारा के प्रवेश पर खलिहान में बैठे थे; और सभी नबी उनके सामने भविष्यवाणी कर रहे थे।

<sup>10</sup> तब केनाना के पुत्र सिदकियाह ने अपने लिए लाहे के रींग बनाए और कहा, "यहोवा यह कहता है: 'इनसे तुम अरामियों को तब तक मारोगे जब तक वे नष्ट न हो जाएं।'"

<sup>11</sup> सभी नबी भी इसी प्रकार भविष्यवाणी कर रहे थे, कह रहे थे, "रामोत-गिलाद पर चढ़ाई करो और सफल होओ, क्योंकि यहोवा इसे राजा के हाथ में दे देगा।"

<sup>12</sup> तब जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था, उसने उससे कहा, "देखो, नबियों के वचन राजा के लिए सर्वसमर्पित से अनुकूल हैं। इसलिए कृपया तुम्हारा वचन भी उनमें से एक के समान हो, और अनुकूल बोलो।"

<sup>13</sup> परन्तु मीकायाह ने कहा, "जैसे यहोवा जीवित है, जो कुछ मेरा परमेश्वर कहेगा, मैं वही बोलूंगा।"

<sup>14</sup> जब वह राजा के पास आया, तो राजा ने उससे कहा, "मीकायाह, क्या हम रामोत-गिलाद के विरुद्ध युद्ध करने जाएं, या मैं रुक जाऊं?" उसने कहा, "चढ़ाई करो और सफल होओ, क्योंकि वे तुम्हारे हाथ में दे दिए जाएंगे!"

<sup>15</sup> तब राजा ने उससे कहा, "मैं तुम्हें कितनी बार शपथ दिलाऊं कि तुम यहोवा के नाम में मुझे केवल सत्य ही बताओ?"

<sup>16</sup> इसलिए उसने कहा, "मैंने देखा कि इसाएल के सभी लोग पहाड़ों पर बिखरे हुए हैं, जैसे बिना चरवाह की भेड़ें; और यहोवा ने कहा, 'इनका कोई स्वामी नहीं है।' उनमें से प्रयेक को शांति से अपने घर लौट जाना चाहिए।"

<sup>17</sup> तब इसाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वह मेरे विषय में कुछ भी अच्छा भविष्यवाणी नहीं करेगा, केवल बुरा ही करेगा?"

<sup>18</sup> मीकायाह ने कहा, "इसलिए, यहोवा का वचन सुनो। मैंने यहोवा को उसके सिंहासन पर बैठे हुए देखा, और रक्षण की सभी सेना उसके दाहिने ओर बाएँ खड़ी थी।

<sup>19</sup> और यहोवा ने कहा, 'कौन इसाएल के राजा अहाब को प्रेरित करेगा कि वह रामोत-गिलाद पर चढ़ाई करे और वहाँ गिर जाए?' और एक ने यह कहा, जबकि दूसरे ने वह कहा।

<sup>20</sup> तब एक आत्मा आगे आया और यहोवा के सामने खड़ा हुआ और कहा, "मैं उसे प्रेरित करूँगा।" और यहोवा ने उससे कहा, "कैसे?"

<sup>21</sup> उसने कहा, "मैं जाऊंगा और उसके सभी नबियों के मुख में एक धोखेबाज आत्मा बनूंगा।" तब उसने कहा, 'तुम उसे प्रेरित करोगे, और तुम सफल भी होओगे। जाओ और ऐसा करो।'

<sup>22</sup> अब तो देखो, यहोवा ने तुम्हारे इन नबियों के मुख में एक धोखेबाज आत्मा डाल दी है; क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध विपत्ति की घोषणा की है।"

## 2 इतिहास

<sup>23</sup> तब केनाना के पुत्र सिदकियाह ने आकर मीकायाह के गाल पर थप्पड़ मारा और कहा, “यहोवा की आमा मुझसे होकर तुझसे बोलने के लिए कैसे चली गई?”

<sup>24</sup> मीकायाह ने कहा, “देखो, तुम उस दिन देखोगे जब तुम एक कमरे से दूसरे कमरे में छिपने के लिए जाओगे।”

<sup>25</sup> तब इसाएल के राजा ने कहा, “मीकायाह को लेकर नगर के राज्यपाल आमोन और राजा के पुत्र योआश के पास लौटाओ,

<sup>26</sup> और कहो, ‘राजा यह कहता है: “इस आदमी को जेल में डाल दो, और जब तक मैं सुरक्षित लौट न आऊं, उसे केवल रोटी और पानी ही दो।”’<sup>26</sup>

<sup>27</sup> परन्तु मीकायाह ने कहा, “यदि तुम वास्तव में सुरक्षित लौट आए, तो यहोवा ने मुझसे नहीं कहा है।” और उसने कहा, “सुनो, हे सब लोगों!”

<sup>28</sup> इसलिए इसाएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात रामोत-गिलाद के विरुद्ध चढ़ाई करने गए।

<sup>29</sup> और इसाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “मैं भेष बदलकर युद्ध में जाऊंगा, परन्तु तुम अपने राजसी वस्त्र पहनो।” इसलिए इसाएल के राजा ने भेष बदला, और वे युद्ध में गए।

<sup>30</sup> अब अराम के राजा ने अपने रथों के सेनापतियों को आज्ञा दी थी, “किसी छोटे या बड़े से युद्ध न करो, केवल इसाएल के राजा से ही।”

<sup>31</sup> इसलिए जब रथों के सेनापतियों ने यहोशापात को देखा, तो उन्होंने कहा, “यह इसाएल का राजा है।” और वे उसके विरुद्ध लड़ने के लिए मुड़े, परन्तु यहोशापात ने पुकारा, और यहोवा ने उसकी सहायता की, और परमेश्वर ने उन्हें उससे हटा दिया।

<sup>32</sup> जब रथों के सेनापतियों ने देखा कि वह इसाएल का राजा नहीं है, तो वे उसका पीछा करने से लौट गए।

<sup>33</sup> अब एक व्यक्ति ने संयोग से अपना धनुष खींचा और इसाएल के राजा को कवच के जोड़ में मारा। इसलिए उसने रथ के चालक से कहा, “मुझों और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो, क्योंकि मैं बुरी तरह घायल हूँ।”

<sup>34</sup> उस दिन युद्ध जारी रहा, और इसाएल के राजा ने अरामियों के विरुद्ध अपने रथ में खड़े होकर खुद को संभाले रखा; और सूर्यस्त के समय उसकी मृत्यु हो गई।

**19** फिर यहोशापात, यहूदा का राजा, यस्तशलेम में अपने घर सुरक्षित लौट आया।

<sup>2</sup> और हनानी का पुत्र यहू, जो एक दर्शी था, उससे मिलने के लिए बाहर आया और राजा यहोशापात से कहा, “क्या तुम्हें दुष्टों की सहायता करनी चाहिए और उन लोगों से प्रेम करना चाहिए जो यहोवा से धृणा करते हैं, और इस प्रकार यहोवा से अपने ऊपर कोध लाना चाहिए?

<sup>3</sup> परन्तु तुम में कुछ अच्छा है, क्योंकि तुमने देश से अशोरा के खंभों को हटा दिया है, और तुमने परमेश्वर की खोज करने के लिए अपना मन लगाया है।

<sup>4</sup> इसलिए यहोशापात यस्तशलेम में रहा, और वह फिर से बेरीबा से लेकर एपैम के पहाड़ी देश तक लोगों के बीच गया, और उन्हें उनके पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर लौटाया।

<sup>5</sup> उसने यहूदा के सभी किलेबंद नगरों में, नगर-नगर में न्यायाधीशों को नियुक्त किया।

<sup>6</sup> उसने न्यायाधीशों से कहा, “जो तुम कर रहे हो उस पर ध्यान दो, क्योंकि तुम मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि यहोवा के लिए न्याय करते हों, जो तुम्हारे साथ है जब तुम न्याय करते हो।

<sup>7</sup> अब, यहोवा का भय तुम पर हो; जो तुम करते हो उसमें सावधान रहो, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा के साथ कोई अन्याय नहीं है, न पक्षपात, न रिश्वत लेना।”

<sup>8</sup> यस्तशलेम में यहोशापात ने कुछ लेखियों, याजकों, और इसाएल के पितरों के घरानों के मुखियों को नियुक्त किया, यहोवा के न्याय के लिए और यस्तशलेम के निवासियों के बीच विवादों का न्याय करने के लिए।

<sup>9</sup> फिर उसने उन्हें आज्ञा दी, “यहोवा के भय में, विश्वासयोग्यता और पूरे मन से यह करो।

<sup>10</sup> जब भी कोई विवाद तुम्हारे पास तुम्हारे भाइयों से आए जो उनके नगरों में रहते हैं, रक्त और रक्त के बीच,

## 2 इतिहास

व्यवस्था और आज्ञा, विधियों और न्याय के बीच, तो तुम उन्हें चेतावनी दो ताकि वे यहोवा के सामने दोषी न हों, और तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर क्रोध न आए। यह वही है जो तुम करोगे, और तुम दोषी नहीं होगे।

<sup>11</sup> और देखो, अमर्याह महायजक तुम्हारे ऊपर यहोवा से संबंधित सभी मामलों में होगा, और इसाएल का पुत्र जबदियाह, यहूदा के घर का शासक, राजा से संबंधित सभी मामलों में होगा। लेकि भी तुम्हारे सामने अधिकारी होंगे। दृढ़ता से कार्य करो, और यहोवा सीधे लोगों के साथ हो।”

**20** इसके बाद मोआब के पुत्र और अम्मोन के पुत्र, कुछ मेरुनियों के साथ, यहोशापात के खिलाफ युद्ध करने आए।

<sup>2</sup> तब कुछ लोग यहोशापात के पास आकर कहने लगे, “एक बड़ी भीड़ समुद्र के पार, अराम से, आपके खिलाफ आ रही है; और देखो, वे हज़ाज़ोन-तामार (जो ऐंटी) में हैं।”

<sup>3</sup> यहोशापात डर गया और उसने प्रभु की खोज करने का ध्यान लगाया; और उसने पूरे यहूदा में उपवास की घोषणा की।

<sup>4</sup> इसलिए यहूदा के लोग प्रभु से सहायता मांगने के लिए इकट्ठा हुए; वे प्रभु की खोज करने के लिए यहूदा के सभी शहरों से भी आए।

<sup>5</sup> तब यहोशापात यहूदा और यरूशलेम की सभा में, प्रभु के घर के नए अंगन के सामने खड़ा हुआ,

<sup>6</sup> और उसने कहा, “हे हमारे पितरों के परमेश्वर, क्या आप स्वर्ग में परमेश्वर नहीं हैं? और क्या आप सभी राष्ट्रों के राज्यों के शासक नहीं हैं? शक्ति और सामर्थ्य आपके हाथ में हैं ताकि कोई भी आपके खिलाफ खड़ा नहीं हो सकता।

<sup>7</sup> क्या आपने, हमारे परमेश्वर, इस देश के निवासियों को अपने लोगों इसाएल के सामने से नहीं निकाला, और इसे अपने मित्र अब्राहम के वंशजों को सदा के लिए नहीं दिया?

<sup>8</sup> उन्होंने इसमें निवास किया है, और आपके नाम के लिए इसमें एक पवित्र स्थान बनाया है, यह कहते हुए,

<sup>9</sup> यदि हमारे ऊपर विपत्ति आती है, तलवार या न्याय, या महामारी या अकाल, तो हम इस घर के सामने और आपके सामने खड़े होंगे (व्यांकि आपका नाम इस घर में है), और आपनी विपत्ति में आपसे प्रार्थना करेंगे, और आप सुनेंगे और हमें बचाएंगे।

<sup>10</sup> अब देखो, अम्मोन, मोआब, और सेर्ईर के पर्वत के पुत्र, जिन्हें आपने इसाएल को मिस्स देश से निकलते समय आक्रमण करने नहीं दिया (व्यांकि उन्होंने उनसे मुंह मोड़ लिया और उन्हें नष्ट नहीं किया),

<sup>11</sup> देखो, वे हमें आपके दिए हुए उत्तराधिकार से निकालने के लिए आ रहे हैं।

<sup>12</sup> हे हमारे परमेश्वर, क्या आप उनका न्याय नहीं करेंगे? क्योंकि हम इस बड़ी भीड़ के सामने असहाय हैं जो हमारे खिलाफ आ रही है; और हम नहीं जानते कि क्या करें, लेकिन हमारी अँखें आप पर हैं।”

<sup>13</sup> सभी यहूदा प्रभु के सामने खड़े थे, उनके शिशु, उनकी पत्नियाँ, और उनके बच्चे।

<sup>14</sup> तब सभा के बीच में यहज़ीएल पर, जो जकर्याह का पुत्र था, बनायाह का पुत्र, येर्ईएल का पुत्र, मत्तन्याह का पुत्र, आसाप के पुत्रों में से लेकि था, प्रभु की आत्मा आई;

<sup>15</sup> और उसने कहा, “सुनो, हे यहूदा और यरूशलेम के निवासी, और राजा यहोशापातः यह तुम्हें प्रभु कहता है: इस बड़ी भीड़ के कारण न डरो और न घबराओ, क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं बल्कि परमेश्वर का है।

<sup>16</sup> कल, उनके खिलाफ उत्तर जाओ। देखो, वे ज़िज़ की चढ़ाई से आएंगे, और तुम उन्हें यरूएल के जंगल के सामने घाटी के अंत में पाओगे।

<sup>17</sup> तुम्हें इस युद्ध में लड़ने की आवश्यकता नहीं है; अपनी स्थिति लो, खड़े रहो और यहूदा और यरूशलेम के लिए प्रभु की मुक्ति देखो। डरो मत और न घबराओ; कल, उनके सामने जाओ, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ है।”

<sup>18</sup> यहोशापात ने अपना चेहरा जमीन पर झुका दिया, और सभी यहूदा और यरूशलेम के निवासी प्रभु के सामने गिर पड़े, प्रभु की आराधना करते हुए।

## 2 इतिहास

<sup>19</sup> कोहाथियों और कोरहियों के पुत्रों में से लेतियों ने खड़े होकर इसाएल के परमेश्वर प्रभु की बहुत ऊँची आवाज में स्तुति की।

<sup>20</sup> वे सुबह जल्दी उठकर तकोआ के जंगल में गए; और जब वे बाहर गए, यहोशापात खड़ा हुआ और कहा, "मुझे सुनो, हे यहूदा और यरूशलेम के निवारी! अपने परमेश्वर प्रभु पर विश्वास करो और तुम स्थिर रहोगे। उसके भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करो, और सफल हो जाओ।"

<sup>21</sup> जब उसने लोगों से परामर्श किया, तो उसने उन लोगों को नियुक्त किया जो प्रभु की स्तुति करते थे और जो पवित्र वस्त्रों में उसकी प्रशंसा करते थे, जैसे वे सेना के सामने जाते थे और कहते थे,

"प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी विश्वासयोग्यता सदा के लिए है।"

<sup>22</sup> जब उन्होंने गाना और स्तुति करना शुरू किया, तो प्रभु ने अम्मोन, मोआब, और सेईर के पर्वत के पुत्रों के खिलाफ घात लगाई, जो यहूदा के खिलाफ आए थे; इसलिए वे मारे गए।

<sup>23</sup> क्योंकि अम्मोन और मोआब के पुत्र सेईर के पर्वत के निवासियों के खिलाफ उठ खड़े हुए, उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दिया; और जब उन्होंने सेईर के निवासियों के साथ समात कर दिया, तो उन्होंने एक-दूसरे को नष्ट करने में मदद की।

<sup>24</sup> जब यहूदा जंगल की चौकी पर आया, उन्होंने भीड़ की ओर मुङ्कर देखा, और देखो, वहाँ जमीन पर लाशें पड़ी थीं, और कोई नहीं बचा था।

<sup>25</sup> जब यहोशापात और उसके लोग लूट लेने आए, तो उन्होंने उनके बीच बहुत कुछ पाया, जिसमें सामान, वस्त्र, और मूल्यवान चीजें शामिल थीं जिन्हें उन्होंने अपने लिए लिया, जितना वे ले जा सकते थे उससे अधिक। और वे तीन दिनों तक लूट लेते रहे क्योंकि वहाँ बहुत कुछ था।

<sup>26</sup> फिर चौथे दिन वे बेरकाह की घाटी में इकट्ठे हुए, क्योंकि वहाँ उन्होंने प्रभु की स्तुति की। इसलिए उन्होंने उस स्थान का नाम "बेरकाह की घाटी" रखा जो आज तक है।

<sup>27</sup> यहोशापात के नेतृत्व में यहूदा और यरूशलेम के सभी लोग लौटे, अपने शत्रुओं पर विजय पाने के कारण यरूशलेम में खुशी के साथ लौटे।

<sup>28</sup> वे वीणा, सारंगी, और तुरही के साथ यरूशलेम आए, प्रभु के घर में।

<sup>29</sup> और जब उन्होंने सुना कि प्रभु ने इसाएल के शत्रुओं के खिलाफ युद्ध किया है, तो सभी देशों के राज्यों पर परमेश्वर का भय छा गया।

<sup>30</sup> इसलिए यहोशापात का राज्य शांति में था, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसे चारों ओर से विश्राम दिया।

<sup>31</sup> अब यहोशापात यहूदा पर राज्य करता था। जब वह राजा बना, तब वह पैतीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की पुत्री थी।

<sup>32</sup> वह अपने पिता आसा के मार्ग पर चला और उससे विचलित नहीं हुआ, प्रभु की दृष्टि में जो सही था वही किया।

<sup>33</sup> केवल, ऊँचे स्थान नहीं हटाए गए; लोगों ने अभी तक अपने पितरों के परमेश्वर की ओर अपने दिल नहीं लगाए थे।

<sup>34</sup> अब यहोशापात के शेष कार्य, पहले से लेकर अंतिम तक, देखो, वे हनानी के पुत्र यहू के इतिहास में लिखे गए हैं, जो इसाएल के राजाओं की पुस्तक में दर्ज हैं।

<sup>35</sup> इसके बाद यहोशापात यहूदा के राजा ने इसाएल के राजा अहज्याह के साथ गठबंधन किया, और उन्होंने एज़ियन-गेबर में जहाज बनाए।

<sup>36</sup> इसलिए उसने उसके साथ तरशीश जाने के लिए जहाज बनाने का गठबंधन किया, और उन्होंने एज़ियन-गेबर में जहाज बनाए।

<sup>37</sup> तब मारेशा के दोदावहु के पुत्र एलीएज़र ने यहोशापात के खिलाफ भविष्यवाणी की, कहा, "क्योंकि आपने अहज्याह के साथ गठबंधन किया है, प्रभु ने आपके कार्यों को नष्ट कर दिया है।" इसलिए जहाज टूट गए और तरशीश नहीं जा सके।

## 2 इतिहास

**21** फिर यहोशापात अपने पितरों के संग सो गया और उसे दाऊदपुर में अपने पितरों के साथ दफनाया गया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोराम राजा बना।

<sup>2</sup> उसके भाई थे, यहोशापात के पुत्र: अजर्याहि, यहिएल, जकर्याहि, अजर्याहू, मीकाएल, और शेफट्याह; ये सब इसाएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे।

<sup>3</sup> उनके पिता ने उन्हें बहुत से चांदी, सोने, और मूल्यवान वस्तों के उपहार दिए, और यहूदा में गढ़वाले नगर दिए, परंतु राज्य यहोराम को दिया क्योंकि वह ज्येष्ठ था।

<sup>4</sup> अब जब यहोराम ने अपने पिता का राज्य सभाला और अपनी शक्ति बढ़ाई, तब उसने अपनी तलवार से अपने सभी भाइयों को और इसाएल के कुछ नेताओं को भी मार डाला।

<sup>5</sup> यहोराम जब राजा बना, तब वह बत्तीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य किया।

<sup>6</sup> उसने इसाएल के राजाओं के मार्ग पर चला, जैसे अहाब के घराने ने किया था (क्योंकि अहाब की बेटी उसकी पत्नी थी), और उसने यहोवा की वट्टि में बुरा किया।

<sup>7</sup> फिर भी यहोवा दाऊद के घराने को नष्ट करने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि उसने दाऊद के साथ वाचा की थी, और उसने उसे और उसके पुत्रों को सदा के लिए एक दीपक देने का वादा किया था।

<sup>8</sup> उसके दिनों में एदोम यहूदा के अधीनता से विद्रोह कर गया, और अपने ऊपर एक राजा बना लिया।

<sup>9</sup> तब यहोराम अपने सेनापतियों और सभी रथों के साथ पार गया, और वह रात में उठकर एदोमियों को मारा जो उसे और रथों के सेनापतियों को धेर हुए थे।

<sup>10</sup> इस प्रकार एदोम आज तक यहूदा के विरुद्ध विद्रोह करता रहा। फिर उसी समय लित्रा भी उसकी अधीनता से विद्रोह कर गया, क्योंकि उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था।

<sup>11</sup> इसके अलावा, उसने यहूदा के पहाड़ों में ऊँचे स्थान बनाए, और यरूशलेम के निवासियों को वेश्यावृत्ति करने के लिए प्रेरित किया, और यहूदा को भटका दिया।

<sup>12</sup> तब एलियाह भविष्यद्वक्ता से उसे एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था, 'यह तुम्हारे पिता दाऊद के परमेश्वर यहोवा का वचन है: क्योंकि तुमने अपने पिता यहोशापात के मार्गों और यहूदा के राजा आसा के मार्गों पर नहीं चर्ते,

<sup>13</sup> बल्कि इसाएल के राजाओं के मार्ग पर चले हो, और यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को वेश्यावृत्ति करने के लिए प्रेरित किया जैसे अहाब के घराने ने किया, और तुमने अपने भाइयों को भी मार डाला, जो तुमसे बेहतर थे, अपने ही परिवार के,

<sup>14</sup> देखो, यहोवा तुम्हारे लोगों, तुम्हारे पुत्रों, तुम्हारी पतियों, और तुम्हारी सभी संपत्ति पर एक बड़ी विपत्ति लाने वाला है;

<sup>15</sup> और तुम अपनी आंतों की बीमारी से बड़ी पीड़ा में रहोगे, जब तक कि तुम्हारी आंतों बीमारी के कारण दिन-प्रतिदिन बाहर नहीं निकल जाएंगी।"

<sup>16</sup> तब यहोवा ने यहोराम के विरुद्ध परिस्थितियों और अरबों की आत्मा को उभारा जो कूशियों के पास रहते थे;

<sup>17</sup> और वे यहूदा पर चढ़ आए, उसे आक्रमण किया, और राजा के घर में पाई जाने वाली सभी संपत्ति को, उसके पुत्रों और उसकी पतियों के साथ ले गए, ताकि उसके पास केवल यहोआहाज, उसके पुत्रों में सबसे छोटा, बचा रहे।

<sup>18</sup> तो इन सब के बाद, यहोवा ने उसे उसकी आंतों में एक लाइलाज बीमारी से मारा।

<sup>19</sup> अब समय के साथ, दो वर्षों के अंत में, उसकी आंते उसकी बीमारी के कारण बाहर निकल गई और वह बड़ी पीड़ा में मर गया। और उसके लोगों ने उसके लिए उसके पितरों की आग जैसी कोई आग नहीं जलाई।

<sup>20</sup> वह जब राजा बना, तब बत्तीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य किया; और वह बिना

## 2 इतिहास

किसी की खेद के चला गया। और उन्होंने उसे दाऊदपुर में दफनाया, परंतु राजाओं की कब्रों में नहीं।

**22** तब यरूशलेम के निवासियों ने यहोराम के सबसे छोटे पुत्र अहज्याह को राजा बनाया, क्योंकि अरबों के साथ आए दल ने शिविर में उसके सभी बड़े पुत्रों को मार डाला था। इस प्रकार यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राजा बना।

<sup>2</sup> अहज्याह बाईस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में एक वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम अतल्याह था, जो ओधी की पौत्री थी।

<sup>3</sup> वह अहाब के घराने के मार्गों पर चला, क्योंकि उसकी माता उसे दुष्टा करने के लिए सलाह देती थी।

<sup>4</sup> और उसने यहोवा की दृष्टि में अहाब के घराने के समान बुराइ की, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के बाद वे उसके विनाश के लिए उसके सलाहकार थे।

<sup>5</sup> उसने उनकी सलाह का पालन किया, और इसाएल के राजा अहाब के पुत्र यहोराम के साथ अराम के राजा हज्जाएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिए रामोत-गिलाद गया। लेकिन अरामियों ने योराम को घायल कर दिया।

<sup>6</sup> और वह यित्रेल में अपने घावों को चंगा कराने के लिए लौटा, जो उन्होंने रामाह में उस पर लगाए थे, जब उसने अराम के राजा हज्जाएल के विरुद्ध युद्ध किया था। और यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह यित्रेल में अहाब के पुत्र योराम को देखने गया, क्योंकि वह बीमार था।

<sup>7</sup> अब अहज्याह का पतन परमेश्वर की ओर से था, क्योंकि वह योराम के पास गया। जब वह आया, तो वह निमशी के पुत्र यह के साथ बाहर गया, जिसे यहोवा ने अहाब के घराने को नष्ट करने के लिए अभिषिक्त किया था।

<sup>8</sup> और ऐसा हुआ कि जब यह अहाब के घराने पर न्याय कर रहा था, तो उसने यहूदा के नेताओं और अहज्याह के भाइयों के पुत्रों को पाया जो अहज्याह की सेवा कर रहे थे, और उसने उन्हें मार डाला।

<sup>9</sup> तब उसने अहज्याह को खोजा, और उन्होंने उसे सामरिया में छिपा हुआ पाया। वे उसे यह के पास लाए, उसे मार डाला, और उसे दफनाया, क्योंकि उन्होंने कहा, "वह यहोशापात का पुत्र है, जिसने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया।" इसलिए अहज्याह के घराने में कोई नहीं बचा जो राज्य की शक्ति को बनाए रख सके।

<sup>10</sup> अब जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि उसका पुत्र मर गया है, तो उसने यहूदा के घराने के सभी राजकुमारों को नष्ट कर दिया।

<sup>11</sup> लेकिन राजा की पुत्री यहोशबेअत ने अहज्याह के पुत्र योआश को लिया और उसे राजा के पुत्रों के बीच से चुरा लिया जिन्हें मारा जा रहा था, और उस और उसकी धाय को शयनकक्ष में रखा। इस प्रकार यहोशबेअत, राजा यहोराम की पुत्री और यहोयादा याजक की पत्नी (क्योंकि वह अहज्याह की बहन थी), ने उसे अतल्याह से छिपा दिया ताकि वह उसे न मार सके।

<sup>12</sup> और वह छह वर्षों तक उनके साथ परमेश्वर के घर में छिपा रहा, जबकि अतल्याह देश पर शासन कर रही थी।

**23** अब यहोयादा ने सातवें वर्ष में अपने आप को ढढ़ किया, और उसने सेकड़ों के कपानों को लिया: अज्याह, येरोहम का पुत्र, ईश्माएल, यहोहानान का पुत्र, अज्याह, ओबेद का पुत्र, मासेयाह, अदायाह का पुत्र, और एलीशाफात, जिक्र का पुत्र, और उन्होंने उसके साथ एक बाचा बाँधी।

<sup>2</sup> वे यहूदा भर में गए और यहूदा के सभी नगरों से लौटियों को इकट्ठा किया, और इसाएल के पिताओं के घरानों के प्रधानों को, और वे यरूशलेम आए।

<sup>3</sup> तब सारी सभा ने परमेश्वर के घर में राजा के साथ एक बाचा बाँधी। और यहोयादा ने उनसे कहा, "देखो, राजा का पुत्र राज्य करेगा, जैसा कि यहोवा ने दाऊद के पुत्रों के विषय में कहा है।"

<sup>4</sup> यह वह बात है जो तुम करोगे: तुम में से एक तिहाई, जो सब्त के दिन आने वाले याजक और लेवी हैं, फाटक के पहरेदार होंगे,

## 2 इतिहास

<sup>५</sup> और एक तिहाई राजा के घर पर, और एक तिहाई नींव के फाटक पर; और सब लोग यहोवा के घर के अँगनों में रहेंगे।

<sup>६</sup> परन्तु कोई भी यहोवा के घर में प्रवेश न करे सिवाय याजकों और सेना करने वाले लेवियों के; वे प्रवेश कर सकते हैं, क्योंकि वे पवित्र हैं। और सब लोग यहोवा की पहरेदारी करेंगे।

<sup>७</sup> और लेवी राजा को घर लेंगे, हर आदमी अपने हाथ में हथियार लेकर; और जो कोई घर में प्रवेश करेगा उसे मार डाला जाएगा। और जब राजा अंदर आए और जब वह बाहर जाए, तब तुम उसके साथ रहोगे।"

<sup>८</sup> इसलिए लेवियों और सभी यहूदा ने वह सब कुछ किया जो यहोयादा याजक ने आज्ञा दी थी। और उन्होंने अपने उन लोगों को लिया जो सब्ल के दिन आने वाले थे, उनके साथ जो सब्ल के दिन बाहर जाने वाले थे, क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी भी विभाग को नहीं हटाया।

<sup>९</sup> तब यहोयादा याजक ने सैकड़ों के कप्तानों को भाले और बड़े और छोटे ढालें दिए जो राजा दाऊद के थे, जो परमेश्वर के घर में थे।

<sup>१०</sup> उसने सब लोगों को तैनात किया, हर आदमी अपने हाथ में हथियार लेकर, घर के दाहिने ओर से लेकर घर के बाएँ और तक, वेदी के पास और घर के पास, राजा के चारों ओर।

<sup>११</sup> तब उन्होंने राजा के पुत्र को बाहर लाया और उसे मुकुट पहनाया, और उसे साक्षी दी, और उसे राजा बनाया। और यहोयादा और उसके पुत्रों ने उसे अभिषेक किया और कहा, "राजा की जय हो!"

<sup>१२</sup> जब अत्तल्याह ने लोगों के दौड़ने और राजा की स्तुति करने की आवाज सुनी, वह यहोवा के घर में लोगों के पास आई।

<sup>१३</sup> और उसने देखा, और देखा, राजा अपने स्तंभ के पास प्रवेश द्वार पर खड़ा था, और कप्तान और तुरही बजाने वाले राजा के पास थे। और देश के सभी लोग आनन्दित हो रहे थे और तुरही बजा रहे थे, गायक संगीत वाद्ययंत्रों के साथ स्तुति कर रहे थे। तब अत्तल्याह ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "षड्पंत्र! षड्पंत्र!"

<sup>१४</sup> तब यहोयादा याजक ने उन सैकड़ों के कप्तानों को बाहर लाया जिहें सेना पर नियुक्त किया गया था और उनसे कहा, "उसे पवित्रों के बीच से बाहर ले जाओ; और जो कोई उसके पीछे चले उसे तलवार से मार डाला जाए।" क्योंकि याजक ने कहा, "उसे यहोवा के घर में मार डाला नहीं जाए।"

<sup>१५</sup> इसलिए उन्होंने उसे पकड़ लिया, और जब वह राजा के घर के घोड़े के फाटक के प्रवेश द्वार पर पहुँची, तो उन्होंने उसे वहाँ मार डाला।

<sup>१६</sup> तब यहोयादा ने अपने और सब लोगों और राजा के बीच एक वाचा बाँधी, कि वे यहोवा के लोग होंगे।

<sup>१७</sup> और सब लोग बाल के घर गए और उसे गिरा दिया, और उन्होंने उसकी वेदियों और उसकी मूर्तियों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और उन्होंने बाल के याजक मत्तान को वेदियों के सामने मार डाला।

<sup>१८</sup> इसके अलावा, यहोयादा ने यहोवा के घर की देखभाल लेवी याजकों के हाथ में दी, जिहें दाऊद ने यहोवा के घर पर नियुक्त किया था, यहोवा के होमबलि चढ़ाने के लिए, जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है—दाऊद के आदेश के अनुसार आनन्द और गायन के साथ।

<sup>१९</sup> उसने यहोवा के घर के फाटकों पर पहरेदार तैनात किए, ताकि कोई भी व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से अशुद्ध हो, प्रवेश न कर सके।

<sup>२०</sup> उसने सैकड़ों के कप्तानों, कुलीनों, लोगों के शासकों, और देश के सभी लोगों को लिया, और राजा को यहोवा के घर से नीचे लाया, और वे ऊपरी फाटक से राजा के घर आए, और उन्होंने राजा को राजगद्दी पर बिठाया।

<sup>२१</sup> इसलिए देश के सभी लोग आनन्दित हुए और नगर शांत हो गया। क्योंकि उन्होंने अत्तल्याह को तलवार से मार डाला था।

**२२** योआश योआश जब राजा बना, तब वह सात वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य किया; और उसकी माता का नाम बेरेशबा की जिब्बा था।

<sup>२३</sup> योआश ने यहोयादा याजक के सब दिनों में वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था।

## 2 इतिहास

<sup>३</sup> यहोयादा ने उसके लिए दो पत्रियाँ लीं, और उसने पुत्रों और पुत्रियों को जन्म दिया।

<sup>४</sup> इसके बाद योआश ने यहोवा के भवन को सुधारने का निश्चय किया।

<sup>५</sup> उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, “यहूदा के नगरों में जाकर सब इसाएल से वार्षिक रूप से अपने परमेश्वर के भवन की मरम्मत के लिए धन इकट्ठा करो, और तुम इस काम को शीघ्रता से करो।” परन्तु लेवियों ने शीघ्रता से काम नहीं किया।

<sup>६</sup> तब राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलाया और उससे कहा, “तुमने लेवियों को यहूदा और यरूशलेम से वह चंदा लाने के लिए क्यों नहीं कहा जो यहोवा के दास मूसा ने गवाही के तम्बू के लिए ठहराया था?”

<sup>७</sup> क्योंकि दृष्ट अत्तल्याह के पुत्रों ने परमेश्वर के भवन में घुसपैठ की थी, और यहाँ तक कि यहोवा के भवन की पवित्र वस्तुओं का उपयोग बालों के लिए किया था।

<sup>८</sup> तब राजा ने आज्ञा दी, और उन्होंने एक संदूक बनाया और उसे यहोवा के भवन के द्वार के बाहर रखा।

<sup>९</sup> और उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में यह घोषणा की कि यहोवा के लिए वह चंदा लाएं जो परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इसाएल पर लगाया था।

<sup>१०</sup> सभी अधिकारी और सभी लोग आनन्दित हुए और अपनी भेटें लाए और उन्हें संदूक में डाल दिया जब तक कि वे समाप्त नहीं हो गए।

<sup>११</sup> जब भी संदूक को लेवियों द्वारा राजा के अधिकारी के पास लाया जाता था, और जब वे देखते थे कि वहाँ बहुत सारा धन है, तब राजा का लेखक और महायाजक का अधिकारी आते और संदूक को खाली कर देते, फिर उसे ले जाकर उसकी जगह पर रख देते। वे यह प्रतिदिन करते थे, और बहुत सारा धन इकट्ठा करते थे।

<sup>१२</sup> राजा और यहोयादा ने उसे उन लोगों को दिया जो यहोवा के भवन की सेवा का काम करते थे। और उन्होंने यहोवा के भवन को सुधारने के लिए राजमिस्त्री और बद्री को किराए पर लिया, और लोहे और कांसे के कारीगरों को भी यहोवा के भवन की मरम्मत के लिए।

<sup>१३</sup> इस प्रकार काम करने वाले श्रमिकों ने परिश्रम किया, और उनके हाथों में सुधार का काम प्रगति पर था, और उन्होंने परमेश्वर के भवन को उसकी विशेषताओं के अनुसार पुनःस्थापित किया, और उसे मजबूत किया।

<sup>१४</sup> जब वे समाप्त हो गए, तो उन्होंने शेष धन को राजा और यहोयादा के सामने लाया, और उसे यहोवा के भवन के लिए बर्तन बना दिया गया—सेवा के लिए और हीमबलि के लिए बर्तन, और सोने और चांदी के बर्तन। और उन्होंने यहोवा के भवन में यहोयादा के सब दिनों में निरंतर हीमबलि लचार्हा।

<sup>१५</sup> परन्तु यहोयादा वृद्ध हो गया और मरा, और वह दीर्घियु होकर मरा; उसकी मृत्यु के समय वह १३० वर्ष का था।

<sup>१६</sup> और उन्होंने उसे दाऊद के नगर में राजाओं के बीच दफनाया, क्योंकि उसने इसाएल में और परमेश्वर और उसके भवन के लिए अच्छा किया था।

<sup>१७</sup> परन्तु यहोयादा की मृत्यु के बाद, यहूदा के अधिकारी राजा के पास आए और उसे झुककर प्रणाम किया, और राजा ने उनकी बात सुनी।

<sup>१८</sup> उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के भवन को छोड़ दिया, और अशेरियों और मूर्तियों की सेवा की; इसलिए उनके इस अपराध के कारण यहूदा और यरूशलेम पर क्रोध आया।

<sup>१९</sup> फिर भी उसने उन्हें यहोवा की ओर लौटाने के लिए भविष्यद्वकाओं को भेजा; यद्यपि उन्होंने उनके विरुद्ध गवाही दी, उन्होंने नहीं सुनी।

<sup>२०</sup> तब परमेश्वर की आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जर्कार्याह पर आई; और वह लोगों के ऊपर खड़ा हुआ और उनसे कहा, “यह परमेश्वर ने कहा है: ‘तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों तोड़ते हो और सफल नहीं होते? क्योंकि तुमने यहोवा को छोड़ दिया है, उसने भी तुम्हें छोड़ दिया है।’”

<sup>२१</sup> इसलिए उन्होंने उसके विरुद्ध बछर्यंत्र किया, और राजा के आदेश पर उन्होंने उसे यहोवा के भवन के अंगन में पथरों से मार डाला।

## 2 इतिहास

<sup>22</sup> इसलिए राजा योआश ने वह कृपा याद नहीं की जो उसके पिता यहोयादा ने उसे दिखाई थी, बल्कि उसने उसके पुत्र को मार डाला। और जब वह मर रहा था, उसने कहा, “यहोवा देखे और बदला ले!”

<sup>23</sup> अब वर्ष के मोड़ पर यह हुआ कि अरामियों की सेना योआश के विरुद्ध आई, और वे यहूदा और यरूशलेम में आए, लोगों के अधिकारियों को लोगों के बीच से नष्ट कर दिया, और उनकी सारी लूट दमिश्क के राजा के पास भेज दी।

<sup>24</sup> वास्तव में, अरामियों की सेना थोड़े से लोगों के साथ आई; फिर भी यहोवा ने उन्हें बहुत बड़ी सेना सौंप दी, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने योआश पर न्याय किया।

<sup>25</sup> जब उन्होंने उसे छोड़ दिया—क्योंकि उन्होंने उसे बहुत बीमार छोड़ दिया था—उसके अपने सेवकों ने यहोयादा याजक के पुत्र के रक्त के कारण उसके विरुद्ध घड़यंत्र किया, और उन्होंने उसे उसके बिस्तर पर मार डाला। इसलिए वह मरा, और उन्होंने उसे दाऊद के नगर में दफनाया, परन्तु उन्होंने उस राजाओं के कब्रों में नहीं दफनाया।

<sup>26</sup> अब ये वे हैं जिन्होंने उसके विरुद्ध घड़यंत्र किया: शिमाथ की अम्मोनिस की पुत्री जबद, और शिग्रीथ की मोआबिस की पुत्री यहोजाबाद।

<sup>27</sup> उसके पुत्रों के विषय में, उसके विरुद्ध अनेक भविष्यवाणियाँ, और परमेश्वर के भवन की पुनःस्थापना, देखो, वे राजाओं की पुस्तक के ग्रंथ में लिखी हैं। तब उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राजा बना।

**25** अमस्याह जब राजा बना, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में उन्नीस वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम यहोअद्वान था, जो यरूशलेम की थी।

<sup>2</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, परन्तु पूरे मन से नहीं।

<sup>3</sup> जब राज्य उसके हाथ में दढ़ हो गया, तब उसने उन सेवकों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मारा था।

<sup>4</sup> परन्तु उसने उनके पुत्रों को नहीं मारा, परन्तु वही किया जो मूसा की पुस्तक में व्यवस्था के अनुसार लिखा है, जिसे यहोवा ने आज्ञा दी थी, “पिता पुत्रों के कारण न मारे जाएं, और न पुत्र पिता के कारण मारे जाएं, परन्तु हर एक अपने पाप के कारण मरेगा।”

<sup>5</sup> इसके अलावा, अमस्याह ने यहूदा को इकट्ठा किया और उन्हें उनके पितरों के घरानों के अनुसार हजारों और सैकड़ों के प्रधानों के अधीन नियुक्त किया, और उसने बीस वर्ष और उससे ऊपर के लोगों की गिनती की, और उन्हें 300,000 चुने हुए पुरुष पाया, जो युद्ध करने और भाला और ढाल संभालने में सक्षम थे।

<sup>6</sup> उसने इसाएल से एक लाख वीर योद्धाओं को सौ किकर चांदी के लिए भी किराए पर लिया।

<sup>7</sup> परन्तु एक परमेश्वर का जन उसके पास आया और कहा, “हे राजा, इसाएल की सेना को अपने साथ न जाने दे, क्योंकि यहोवा इसाएल के साथ नहीं है, न ही एप्रैम के किसी भी पुत्र के साथ।

<sup>8</sup> परन्तु यदि तू जाएगा, तो कर, युद्ध के लिए बलवान हो—फिर भी परमेश्वर तुझे शत्रु के सामने गिरा देगा, क्योंकि परमेश्वर के पास सहायता करने और गिराने की शक्ति है।”

<sup>9</sup> अमस्याह ने परमेश्वर के जन से कहा, “परन्तु उन सौ किकर के बारे में हम क्या करें जो मैंने इसाएल की सेना को दिए हैं?” और परमेश्वर के जन ने उत्तर दिया, “यहोवा के पास इससे अधिक देने के लिए बहुत कुछ है।”

<sup>10</sup> तब अमस्याह ने उन सैनिकों को वापस भेज दिया जो एप्रैम से उसके पास आए थे, घर जाने के लिए; इसलिए उनका क्रोध यहूदा के खिलाफ भड़क उठा, और वे भयंकर क्रोध में घर लौट गए।

<sup>11</sup> अब अमस्याह ने अपनी हिम्मत जुटाई और अपनी प्रजा को बाहर ले गया, और वह नमक की घाटी में गया और सेर्हेर के पुत्रों को मारा, उनमें से 10,000 को।

<sup>12</sup> यहूदा के पुत्रों ने भी 10,000 को जीवित पकड़ लिया और उन्हें चट्टान की चोटी पर ले गए, और उन्हें चट्टान की चोटी से नीचे फेंक दिया ताकि वे सब टुकड़े-टुकड़े हो गए।

## 2 इतिहास

<sup>13</sup> परन्तु वे सैनिक जिन्हें अमस्याह ने वापस भेज दिया था, जो उसके साथ युद्ध में नहीं गए थे, उन्होंने सामरिया से लेकर बेथ-होरोन तक यहूदा के नगरों पर धावा बोला, और उनमें से 3,000 को मारा और बहुत सा लूट लिया।

<sup>14</sup> अब जब अमस्याह एदोमियों को मारने के बाद लौटा, तो वह सेईर के पुत्रों के देवताओं को लाया, उन्हें अपने देवता के रूप में स्थापित किया, उनके सामने झुका, और उन्हें धूप ढार्हा।

<sup>15</sup> तब यहोवा का क्रोध अमस्याह के खिलाफ भड़क उठा, और उसने उसके पास एक नबी भेजा जिसने उससे कहा, “तूने उन लोगों के देवताओं को क्यों खोजा जिन्होंने अपने ही लोगों को तुम्हारे हाथ से नहीं बचाया?”

<sup>16</sup> जब वह उससे बात कर रहा था, राजा ने कहा, “क्या हमने तुझे राजकीय सलाहकार कियुक्त किया है? रुक! क्यों तुझे मारा जाए?” तब नबी रुक गया और कहा, “तुझे पता है कि परमेश्वर ने तुझे नष्ट करने की योजना बनाई है, क्योंकि तूने यह किया है और मेरी सलाह नहीं मानी।”

<sup>17</sup> तब यहूदा के राजा अमस्याह ने सलाह की और योआश के पुत्र, यहू के पुत्र, इसाएल के राजा योआश को संदेश भेजा, “आओ, हम एक-दूसरे का सामना करें।”

<sup>18</sup> परन्तु इसाएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को उत्तर भेजा, “लेबानोन में जो कांटेदार ज्ञाड़ी थी उसने लेबानोन में जो देवदार था उसे संदेश भेजा, ‘अपनी बेटी को मेरे पुत्र के साथ विवाह में दे।’ परन्तु लेबानोन में एक जंगली जानवर आया और कांटेदार ज्ञाड़ी को रींद दिया।

<sup>19</sup> तूने कहा, “देख, तूने एदोम को हरा दिया।” और तेरा हृदय गर्व में भर गया है। अब घर पर रह, क्यों तू संकट को उकसाता है ताकि तू यहां तक कि तू गिर जाए, और तेरे साथ यहूदा भी?”

<sup>20</sup> परन्तु अमस्याह नहीं सुना, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से था, ताकि वह उन्हें सौंप दे, क्योंकि उन्होंने एदोम के देवताओं को खोजा था।

<sup>21</sup> इसलिए इसाएल के राजा योआश ऊपर गया, और वह और यहूदा के राजा अमस्याह बेथ-शेमेश में, जो यहूदा का है, एक-दूसरे का सामना किया।

<sup>22</sup> और यहूदा इसाएल से हार गया, और वे भाग गए, हर आदमी अपने तंबू में।

<sup>23</sup> तब इसाएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को पकड़ लिया, जो योआश का पुत्र था, योआहाज का पुत्र, बेथ-शेमेश में, और उसे यरूशलेम ले आया, और यरूशलेम की दीवार को एप्रेम के फाटक से लेकर कोने के फाटक तक, 400 हाथ, गिरा दिया।

<sup>24</sup> और उसने सारा सोना, चांदी, और सब बर्तन जो ओबेद-एदोम के साथ परमेश्वर के घर में पाए गए, और राजा के घर के खजाने, बंधकों के साथ, लिया और सामरिया लौट गया।

<sup>25</sup> और यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह, इसाएल के राजा योआहाज के पुत्र योआश की मृत्यु के बाद पंद्रह वर्ष तक जीवित रहा।

<sup>26</sup> अब अमस्याह के बाकी काम, पहले से लेकर आखिरी तक, देखो, क्या वे यहूदा और इसाएल के राजाओं की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

<sup>27</sup> जब से अमस्याह ने यहोवा का अनुसरण करना छोड़ दिया, उन्होंने यरूशलेम में उसके खिलाफ साजिश रची, और वह लाकीश भाग गया; परन्तु उन्होंने उसके पीछे लाकीश में आदमी भेजा, और उन्होंने उसे वहां मार डाला।

<sup>28</sup> तब वे उसे घोड़ों पर लाए और उसे यहूदा के नगर में उसके पितरों के साथ दफननाया।

**26** यहूदा के सब लोगों ने उज्जिय्याह को, जो सोलह वर्ष का था, लिया और उसके पिता अमस्याह के स्थान पर उसे राजा बनाया।

<sup>2</sup> उसने एलोथ को बनाया और उसके पिता के साथ सो जाने के बाद यहूदा को पुनः स्थापित किया।

<sup>3</sup> उज्जिय्याह सोलह वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य किया; और उसकी माता का नाम यरूशलेम की यकोल्याह था।

<sup>4</sup> उसने वह किया जो यहोवा की वृष्टि में सही था, जैसा उसके पिता अमस्याह ने किया था।

## 2 इतिहास

<sup>५</sup> उसने जकर्याह के दिनों में परमेश्वर की खोज जारी रखी, जो परमेश्वर के दर्शन के माध्यम से समझ रखता था; और जब तक उसने यहोवा की खोज की, परमेश्वर ने उसे सफल बनाया।

<sup>६</sup> वह बाहर गया और पलिशियों के विरुद्ध लड़ा और गत की दीवार, यद्रेह की दीवार, और अशदोद की दीवार को तोड़ दिया; और उसने अशदोद के क्षेत्र में और पलिशियों के बीच नगर बनाए।

<sup>७</sup> परमेश्वर ने उसे पलिशियों के विरुद्ध, और गुरबाल में रहने वाले अरबों और मेउनियों के विरुद्ध सहायता की।

<sup>८</sup> अम्मोनी भी उज्जियाह को कर देने लगे, और उसकी प्रसिद्धि मिस्र की सीमा तक फैल गई, क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली हो गया।

<sup>९</sup> इसके अलावा, उज्जियाह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, घाटी के फाटक, और कोने के बटेस पर मीनारें बनाई, और उन्हें मजबूत किया।

<sup>१०</sup> उसने जंगल में मीनारें बनाई और कई कुएं खोदे, क्योंकि उसके पास बहुत पशुधन था, दोनों निचले क्षेत्र और मैदान में। उसके पास पहाड़ी देश और उपजाऊ क्षेत्रों में किसान और दाख की बारी के रखवाले भी थे, क्योंकि उसे भूमि से प्रेम था।

<sup>११</sup> इसके अलावा, उज्जियाह के पास युद्ध के लिए तैयार एक सेना थी, जो उनके गिनती के अनुसार विभाजनों में युद्ध में प्रवेश करती थी, जैसा कि लेखक येहैला और अधिकारी मासेपाह द्वारा हन्न्याह के निर्देशन में दर्ज किया गया था, जो राजा के अधिकारियों में से एक था।

<sup>१२</sup> वीर योद्धाओं के घरों के मुखियाओं की कुल संख्या 2,600 थी।

<sup>१३</sup> उनके निर्देशन में 307,500 की एक विशिष्ट सेना थी, जो राजा की सहायता के लिए दुम्मन के विरुद्ध महान शक्ति के साथ युद्ध कर सकती थी।

<sup>१४</sup> इसके अलावा, उज्जियाह ने पूरी सेना के लिए ढालें, भाले, हेलमेट, शरीर के कवच, धनुष, और गोफन के पथर तैयार किए।

<sup>१५</sup> उसने यरूशलेम में मीनारों और कोनों पर तीर और बड़े पथर फेंकने के लिए कुशलतापूर्वक डिज़ाइन किए गए उपकरण बनाए। और उसकी प्रसिद्धि दूर तक फैल गई, क्योंकि उसे अद्भुत रूप से सहायता मिली जब तक वह शक्तिशाली नहीं हो गया।

<sup>१६</sup> लेकिन जब वह शक्तिशाली हो गया, तो उसका हृदय अभिमानी हो गया, जिससे उसने ब्रह्म आवरण किया, और वह अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति विश्वासघाती हो गया, क्योंकि वह धूप की वेदी पर धूप जलाने के लिए यहोवा के मंदिर में प्रवेश किया।

<sup>१७</sup> तब अजर्याह याजक उसके पीछे प्रवेश किया, और उसके साथ यहोवा के अस्ती याजक, वीर पुरुष थे।

<sup>१८</sup> उन्होंने उज्जियाह राजा का विरोध किया और उससे कहा, “उज्जियाह, यहोवा के लिए धूप जलाना तुम्हारा काम नहीं है, बल्कि याजकों का है, जो हारून के पुत्र हैं और धूप जलाने के लिए अधिकृत हैं। पवित्रस्थान से बाहर जाओ, क्योंकि तुम विश्वासघाती हो गए हो और तुम्हें यहोवा परमेश्वर से कोई सम्मान नहीं मिलेगा।”

<sup>१९</sup> लेकिन उज्जियाह, धूप जलाने के लिए धूपदान हाथ में लिए हुए, क्रांपित हो गया; और जब वह याजकों पर क्रांपित था, तो उसके माथे पर कोढ़ फूट पड़ा, यहोवा के घर में याजकों के सामने, धूप की वेदी के पास।

<sup>२०</sup> अजर्याह महायाजक और सभी याजकों ने उसकी ओर देखा, और देखो, वह अपने माथे पर कोढ़ी था; और उन्होंने उसे वहां से जल्दी बाहर निकाला, और वह स्वयं भी जल्दी से बाहर निकल गया, क्योंकि यहोवा ने उसे मारा था।

<sup>२१</sup> राजा उज्जियाह अपनी मृत्यु के दिन तक कोढ़ी था; और वह एक अलग घर में रहता था, कोढ़ी होने के कारण, क्योंकि वह यहोवा के घर से काट दिया गया था। और उसका पुत्र योथाम राजा के घर का प्रभारी था, देश के लोगों का च्याय करता था।

<sup>२२</sup> अब उज्जियाह के शेष कार्य, पहले से लेकर अंतिम तक, आमोज का पुत्र यशायाह नबी ने लिखा है।

<sup>२३</sup> इसलिए उज्जियाह अपने पितरों के साथ सो गया, और उन्हें राजाओं के कब्र के क्षेत्र में उनके पितरों के

## 2 इतिहास

साथ दफनाया गया, क्योंकि उन्होंने कहा, “वह कोढ़ी है!” और उसके पुत्र योथाम उसके स्थान पर राजा बना।

**27** योताम जब राजा बना, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम येरूशा था, जो सादोक की बेटी थी।

<sup>2</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में की था, जैसा उसके पिता उजिय्याह ने किया था; तथापि, उसने यहोवा के मंदिर में प्रवेश नहीं किया। परन्तु लोग भ्रष्ट आचरण करते रहे।

<sup>3</sup> उसने यहोवा के भवन का ऊपरी फाटक बनाया, और उसने ओपेल की दीवार का विस्तारपूर्वक निर्माण किया।

<sup>4</sup> इसके अलावा, उसने यहूदा के पहाड़ी देश में नगर बनाए, और उसने जंगलों में गढ़ और मीनारें बनाई।

<sup>5</sup> उसने अम्मोनियों के राजा के साथ युद्ध किया और उन पर विजय प्राप्त की। और अम्मोनियों ने उसे उस वर्ष में खो किकार चांदी, दस हजार कोर गेहूं, और दस हजार जौ दिया। अम्मोनियों ने उसे यह राशि दूसरे और तीसरे वर्ष में भी दी।

<sup>6</sup> इस प्रकार योताम शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने अपने मार्गों को अपने परमेश्वर यहोवा के सामने व्यवस्थित किया।

<sup>7</sup> अब योताम के शेष कार्य, और उसके सभी युद्ध और उसका आचरण, देखो, वे इस्राएल और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

<sup>8</sup> वह पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया।

<sup>9</sup> और योताम अपने पितरों के साथ लेट गया, और उन्हें दाऊद के नगर में दफनाया गया; और उसके पुत्र आहाज ने उसके स्थान पर राज्य किया।

**28** आहाज जब राजा बना, तब वह बीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया; और उसने वह नहीं किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था।

<sup>2</sup> इसके बजाय, उसने इस्राएल के राजाओं के मार्गों पर चला, और उसने बाल देवताओं के लिए ढली हुई धातु की मूर्तियाँ बनाई।

<sup>3</sup> इसके अलावा, उसने बेन-हित्रोम की घाटी में धूप जलाई, और अपने पुत्रों को आग में जलाया, उन जातियों के धृणित कार्यों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राएल के पुत्रों के सामने से निकाल दिया था।

<sup>4</sup> उसने ऊँचे स्थानों पर, पहाड़ियों पर, और हर हरे पेड़ के नीचे बलिदान चढ़ाया और धूप जलाई।

<sup>5</sup> इसलिए यहोवा उसके परमेश्वर ने उसे अराम के राजा के हाथ में सौंप दिया; और उन्होंने उसे हराया और उसके बहुत से लोगों को बंदी बनाकर दमिश्क ले गए। और उसे इस्राएल के राजा के हाथ में भी सौंप दिया गया, जिसने उसे भारी हार दी।

<sup>6</sup> क्योंकि रेमल्याह के पुत्र पेकह ने एक ही दिन में यहूदा में एक लाख बीस हजार वीर पुरुषों को मार डाला, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया था।

<sup>7</sup> और एप्रैम के एक वीर पुरुष जिक्रि ने राजा के पुत्र मासेयाह, घर के प्रधान अजरिकाम, और राजा के दूसरे एल्काना को मार डाला।

<sup>8</sup> और इस्राएल के पुत्रों ने अपने भाइयों के दो लाख स्त्री, पुत्र, और पुत्रियों को बंदी बना लिया; और उनसे बहुत सा लूट लिया और लूट को सामरिया ले आए।

<sup>9</sup> परन्तु वहाँ यहोवा का एक नबी था, जिसका नाम ओदेद था; और वह सामरिया आने वाली सेना से मिलने गया, और उनसे कहा, “देखो, क्योंकि यहोवा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, यहूदा से क्रोधित था, उसने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है, और तुमने उन्हें एक क्रोध में मार डाला है जो स्वर्ग तक पहुँच गया है।

<sup>10</sup> और अब तुम कह रहे हो कि तुम यहूदा और यरूशलेम के पुत्रों को अपने लिए दास और दासियाँ बनाने के लिए लाने जा रहे हो? देखो, क्या तुम भी यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के सामने दोषी नहीं हो?

## 2 इतिहास

<sup>12</sup> अब मेरी सुनो और अपने भाइयों से लिए गए बंदियों को लौटाओ, क्योंकि यहोवा का जलता हुआ क्रोध तुम्हारे विरुद्ध है।"

<sup>13</sup> तब एप्रैम के पुत्रों के कुछ नेताओं—योहनान के पुत्र अर्जयाह, मेशिल्लमोत के पुत्र बेरेक्याह, शल्लूम के पुत्र यहिज्क्याह, और हदलाई के पुत्र अमासा—उन लोगों के विरुद्ध उठे जो युद्ध से आ रहे थे,

<sup>14</sup> और उनसे कहा, "तुम्हें यहाँ बंदियों को नहीं लाना चाहिए, क्योंकि तुम यहोवा के विरुद्ध हमारे पाप और दोष को बढ़ाने का प्रस्ताव कर रहे हो; क्योंकि हमारा दौष बड़ा है, और यहोवा का जलता हुआ क्रोध इसाएल के विरुद्ध है।"

<sup>15</sup> इसलिए सशस्त्र पुरुषों ने बंदियों और लूट को अधिकारियों और सारी सभा के सामने छोड़ दिया।

<sup>16</sup> तब नाम से निर्विष्ट पुरुष उठे और बंदियों को लिया, और उन्होंने लूट से उनके सभी नग्न लोगों को वस्त्र पहनाए, उन्हें कपड़े और जूते दिए, उन्हें खिलाया और पानी पिलाया, उन्हें तेल से अभिषेक किया, उनके सभी दुर्बल लोगों को गाथों पर चढ़ाया, और उन्हें यरीहों, खजूर के पेढ़ों के नगर, में उनके भाइयों के पास पहुँचाया। तब वे सामरिया लौट आए।

<sup>17</sup> उस समय राजा आहाज ने अश्शूर के राजाओं के पास सहायता के लिए संदेश भेजा।

<sup>18</sup> क्योंकि एदोमियों ने फिर आकर यहूदा पर आक्रमण किया, और बंदी बना लिए।

<sup>19</sup> क्योंकि यहोवा ने इसाएल के राजा आहाज के कारण यहूदा को दीन किया, क्योंकि उसने यहूदा में अनुशासन की कमी उत्पन्न की, और यहोवा के प्रति बहुत अविश्वासी था।

<sup>20</sup> इसलिए अश्शूर के राजा तिगलत-पिलनेसेर ने उसके विरुद्ध आकर उसे पीड़ा दी बजाय उसे मजबूत करने के।

<sup>21</sup> हालांकि आहाज ने यहोवा के घर से, राजा के घर से और अधिकारियों से एक हिस्सा लिया, और उसे अश्शूर के राजा को दिया, इससे उसे कोई सहायता नहीं मिली।

<sup>22</sup> अब अपने संकट के समय में, यही राजा आहाज यहोवा के प्रति और भी अधिक अविश्वासी हो गया।

<sup>23</sup> क्योंकि उसने दमिश्क के देवताओं को बलिदान चढ़ाया जिन्होंने उसे हराया था, और कहा, "क्योंकि अराम के राजाओं के देवताओं ने उनकी सहायता की, मैं उन्हें बलिदान चढ़ाऊँगा ताकि वे मेरी सहायता करें।" परन्तु वे उसके और सारे इसाएल के पतन का कारण बने।

<sup>24</sup> इसके अलावा, जब आहाज ने परमेश्वर के घर के बर्तनों को इकट्ठा किया, तो उसने परमेश्वर के घर के बर्तनों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और उसने यहोवा के घर के द्वार बंद कर दिए, और यरूशलेम के हर काने में अपने लिए वेदियाँ बनाईं।

<sup>25</sup> यहूदा के हर नगर में उसने अन्य देवताओं को धूप जलाने के लिए ऊँचे स्थान बनाए, और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का क्रोधित किया।

<sup>26</sup> अब उसके बाकी कार्य और उसके सभी मार्ग, पहले से लेकर अतिम तक, देखो, वे यहूदा और इसाएल के राजाओं की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

<sup>27</sup> इसलिए आहाज अपने पितरों के साथ लेटा, और उन्हें यरूशलेम में नगर में दफनाया गया, क्योंकि उन्हें इसाएल के राजाओं की कब्रों में नहीं लाया गया; और उसके स्थान पर उसका पुत्र हिजकियाह राजा बना।

**29** हेज़ेकियाह पचीस वर्ष की आयु में राजा बना, और उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम अबियाह था, जो ज़कर्याह की पुत्री थी। <sup>2</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था।

<sup>3</sup> अपने राज्य के पहले वर्ष के पहले महीने में, उसने यहोवा के भवन के द्वार खोले और उनकी मरम्मत की।

## 2 इतिहास

<sup>4</sup> उसने याजकों और लेवियों को बुलाया और उन्हें पूर्व की ओर के सार्वजनिक चौक में इकट्ठा किया। <sup>5</sup> फिर उसने उनसे कहा, “मेरी सुनो, हे लेवियों! अब अपने आप को पवित्र करो, और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो, और पवित्र स्थान से अशुद्धता को बाहर निकालो। <sup>6</sup> क्योंकि हमारे पितर विश्वसघाती हो गए हैं और उन्होंने हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया है, और उसे छोड़ दिया है और यहोवा के निवास स्थान से अपना मुख मोड़ लिया है, और अपनी पीठ फेर ली है। <sup>7</sup> उन्होंने बरामदे के द्वारा भी बंद कर दिये हैं और दीपकों को बुझा दिया है, और इसाएल के परमेश्वर के लिए पवित्र स्थान में धूप नहीं जलाइ है और न ही होमबलि चढ़ाइ है। <sup>8</sup> इसलिए यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलैम पर था, और उसने उन्हें आंतक, भय, और उपहास का विषय बना दिया है, जैसा कि तुम अपनी आँखों से देख रहे हो। <sup>9</sup> देखो, हमारे पितर तलवार से गिर गए हैं, और हमारे पुत्र, हमारी बेटियाँ, और हमारी पातियाँ इस कारण से बंदी हो गई हैं। <sup>10</sup> अब मेरे मन में यह है कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा के साथ एक वाचा करूँ, ताकि उसका जलात हुआ क्रोध हमसे दूर हो जाए। <sup>11</sup> मेरे पुत्रों, अब लापरवाही मत करो, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपने सामने खड़े होने, उसकी सेवा करने, और उसके सेवक बनने और धूप जलाने के लिए चुना है।”

<sup>12</sup> तब लेवी उठे: अमासै के पुत्र महत और अजर्यह के पुत्र योल कोहायियों के पुत्रों में से, और मरारी के पुत्रों में से, अब्दी के पुत्र किश और यहलेले के पुत्र अजर्यह, और गरंशोनियों में से, जिम्मा के पुत्र योआह और योआह के पुत्र एदेन<sup>13</sup> और एलीज़ाफ़ान के पुत्रों में से, शिग्गी और यैईएल, और आसाप के पुत्रों में से, ज़कर्यह और मत्याह,<sup>14</sup> और हेमान के पुत्रों में से, यहिएल और शिमी, और यद्वृत्न के पुत्रों में से, शमायाह और उज्जीएल।

<sup>15</sup> उन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा किया, अपने आप को पवित्र किया, और यहोवा के भवन को शुद्ध करने के लिए राजा की आशा के अनुसार यहोवा के भवन के अंदर के भाग में शुद्ध पाया, उसे यहोवा के भवन के आँगन में बाहर लाए। फिर लेवियों ने उसे लिया और किंद्रोन घाटी में बाहर ले गए। <sup>17</sup> उन्होंने पहले महीने के पहले दिन पवित्रीकरण शुरू किया, और महीने के आठवें दिन वे यहोवा के बरामदे में प्रवेश किए। फिर उन्होंने यहोवा

के भवन को आठ दिनों में पवित्र किया और पहले महीने के सोलहवें दिन समाप्त किया।

<sup>18</sup> फिर वे राजा हेज़ेकियाह के पास गए और कहा, “हमने यहोवा के पूरे भवन को शुद्ध कर दिया है, होमबलि की बेटी को उसके सभी उपकरणों के साथ, और उपस्थिति की रोटी की मेज को उसके सभी उपकरणों के साथ। <sup>19</sup> इसके अलावा, वे सभी उपकरण जिन्हें राजा आहाज ने अपने राज्य के दैरान अपनी विश्वसघात में त्याग दिया था, हमने तैयार कर लिया है और पवित्र कर दिया है; और देखो, वे यहोवा की बेटी के सामने हैं।”

<sup>20</sup> तब राजा हेज़ेकियाह ने जल्दी उठकर नगर के प्रधानों को इकट्ठा किया और यहोवा के भवन में गए। <sup>21</sup> उन्होंने राज्य, पवित्रस्थान, और यहूदा के लिए पापबलि के रूप में सात बैल, सात मेड़, सात भड़े के बच्चे, और सात बकरे लाए। और उसने याजकों, हारून के पुत्रों को उन्हें यहोवा की बेटी पर चढ़ाने का आदेश दिया। <sup>22</sup> इसलिए उन्होंने बैलों को वध किया, और याजकों ने रक्त लिया और उसे बेटी पर छिड़का। उन्होंने मेड़ों को भी वध किया और रक्त को बेटी पर छिड़का; फिर उन्होंने भड़े के बच्चों को वध किया और रक्त को बेटी पर छिड़का। <sup>23</sup> फिर उन्होंने पापबलि के बकरों को राजा और सभा के सामने लाया, और उन्होंने उन पर अपने हाथ रखे। <sup>24</sup> और याजकों ने उन्हें वध किया और उनके रक्त से बेटी को शुद्ध किया, ताकि पूरे इसाएल के लिए प्रायश्चित्त किया जा सके, क्योंकि राजा ने होमबलि और पापबलि का आदेश पूरे इसाएल के लिए दिया था।

<sup>25</sup> फिर उसने लेवियों को यहोवा के भवन में झांझ, वीणा, और सारंगी के साथ नियुक्त किया, दाऊद और राजा के दर्शन गाद और नवी नातान के आदेश के अनुसार; क्योंकि यह आदेश यहोवा के द्वारा उसके नवियों के माध्यम से था। <sup>26</sup> और लेवी दाऊद के संगीत वाद्ययत्रों के साथ खड़े थे, और याजक तुरहियों के साथ।

<sup>27</sup> फिर हेज़ेकियाह ने बेटी पर होमबलि चढ़ाने का आदेश दिया। और जब होमबलि शुरू हुई, तो यहोवा के लिए गीत भी तुरहियों के साथ शुरू हुआ, जो इसाएल के राजा दाऊद के वाद्ययत्रों के साथ था। <sup>28</sup> इसलिए पूरी सभा ने उपासना की, और गायकों ने गाया, और तुरहियाँ बजाइः यह सब तब तक चलता रहा जब तक होमबलि समाप्त नहीं हो गई।

## 2 इतिहास

<sup>29</sup> अब होमबलियों के समाप्त होने पर, राजा और उसके साथ उपस्थित सभी लोग झुककर उपासना करने लगे।

<sup>30</sup> इसके अलावा, राजा हेज़ेकियाह और अधिकारियों ने लेवियों को दाऊद और दर्शनी आसाप के शब्दों के साथ यहोवा की स्तुति करने का आदेश दिया। इसलिए उन्होंने अनन्द के साथ स्तुति की, और झुककर उपासना की।

<sup>31</sup> फिर हेज़ेकियाह ने उत्तर दिया और कहा, "अब जब तुमने अपने आप को यहोवा के लिए पवित्र किया है, तो पास आओ और यहोवा के भवन में बलिदान और धन्यवाद अर्पण लाओ।" इसलिए सभा ने बलिदान और धन्यवाद अर्पण लाए, और सभी जो इच्छुक थे उन्होंने होमबलि चढ़ाई।

<sup>32</sup> सभा द्वारा लाए गए होमबलियों की संख्या सत्तर बैल, सौ मेढ़े, और दो सौ भेड़ के बच्चे थीं; ये सभी यहोवा के लिए होमबलि के लिए थे। <sup>33</sup> और पवित्र किए गए बलिदान छः सौ बैल और तीन हजार भेड़ थे। <sup>34</sup> लेकिन याजक बहुत कम थे, इसलिए वे सभी होमबलियों की खाल नहीं उत्तर सकते थे; इसलिए उनके भाइयों लेवियों ने तब तक उनकी सहायता की जब तक काम पूरा नहीं हुआ और जब तक याजकों ने अपने आप को पवित्र नहीं कर लिया। क्योंकि लेवी याजकों की तुलना में अपने आप को पवित्र करने में अधिक सकेत थे। <sup>35</sup> वहाँ भी कई होमबलियों थीं शांति बलिदानों की चर्चा और होमबलियों के लिए पेय अर्पण के साथ।

इस प्रकार यहोवा के भवन की सेवा फिर से स्थापित की गई। <sup>36</sup> तब हेज़ेकियाह और सभी लोग उस बात पर आनन्दित हुए जो परमेश्वर ने लोगों के लिए तैयार की थी, क्योंकि यह बात अचानक घटित हुई थी।

**30** अब हिज़कियाह ने सारे इसाएल और यहूदा को संदेश भेजा, और उसने एप्रैम और मनश्शे को भी पत्र लिखे, उन्हें यरूशलेम में यहोवा के घर आने का निमंत्रण दिया, कि वे इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिए फसह मनाएं। <sup>2</sup> क्योंकि राजा और उसके अधिकारी और यरूशलेम की सारी सभा ने दूसरे महीने में फसह मनाने का निर्णय लिया था, <sup>3</sup> क्योंकि वे उस समय इसे नहीं मना सके थे, क्योंकि पर्याप्त याजक अपने को पवित्र नहीं कर पाए थे, और लोग यरूशलेम में इकट्ठे नहीं हुए थे। <sup>4</sup> यह निर्णय राजा और सारी सभा की वृष्टि में सही था। <sup>5</sup> इसलिए उन्होंने एक आदेश जारी किया कि सारे इसाएल में, बेरशेबा से लेकर दान तक, एक घोषणा प्रसारित की जाए, कि वे यरूशलेम में इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिए फसह मनाने आएं। क्योंकि

उन्होंने इसे बड़ी संख्या में नहीं मनाया था जैसा कि निर्धारित था।

<sup>6</sup> दूत इसाएल और यहूदा में राजा और उसके अधिकारियों के हाथ से पत्र लेकर गए, यहाँ तक कि राजा की आशा के अनुसार कह रहे थे, "इसाएल के पुत्रों, अब्राहम, इसाहाक, और इसाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लौट आओ, ताकि वह उन लोगों की ओर लौटे जो बचे हैं, जो अश्शू के राजाओं के हाथ से बच निकले हैं।

<sup>7</sup> अपने पितरों और भाइयों के समान न बगे, जो अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के प्रति विश्वासघाती थे, जिससे वह उन्हें भय का विषय बना दिया, जैसा कि तुम देखते हो। <sup>8</sup> अब अपनी गर्दन को अपने पितरों के समान कठोर न बनाओ, बल्कि यहोवा के प्रति समर्पित हो जाओ और उसके पवित्रस्थान में प्रवेश करो जिसे उसने सदा के लिए पवित्र किया है, और अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करो, ताकि उसकी जलती हुई क्रोध तुमसे दूर हो जाए। <sup>9</sup> क्योंकि यदि तुम यहोवा की ओर लौट आओ, तो तुम्हारे भाइ और तुम्हारे पुत्र उन लोगों के सामने दूर आएंगे। <sup>10</sup> क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी ओर लौट आओगे तो वह तुमसे अपना मुख नहीं मोड़ेगा।"

<sup>11</sup> इसलिए दूत एप्रैम और मनश्शे के देश के नगर-नगर से होकर जबुलून तक गए, परंतु उन्होंने उनका उपहास किया और उन्हें ठड़ों में उड़ाया। <sup>12</sup> फिर भी, आशेर, मनश्शे, और जबुलून के कुछ लोग अपने को नम्र करके यरूशलेम आए। <sup>13</sup> यहूदा पर भी परमेश्वर का हाथ था कि उन्हें एक मन दिया जाए कि वे राजा और अधिकारियों द्वारा यहोवा के वरचन के अनुसार आज्ञा का पालन करें।

<sup>14</sup> अब बहुत से लोग यरूशलेम में दूसरे महीने में अख्यारी रोटी के पर्व को मनाने के लिए इकट्ठे हुए, एक बहुत बड़ी सभा। <sup>15</sup> उन्होंने उठकर यरूशलेम में जो वेदियों थीं उन्हें हटा दिया; उन्होंने सारी धूप वेदियों भी हटा दीं और उन्हें किंद्रेन की घाटी में फेंक दिया।

<sup>16</sup> फिर उन्होंने दूसरे महीने के चौदहवें दिन फसह के मेमों का बलिदान किया। और याजक और लेवी अपने को लजित महसूस कर रहे थे, और उन्होंने अपने को पवित्र किया, और यहोवा के घर में होमबलि चढ़ाया। <sup>17</sup> उन्होंने परमेश्वर के मनुष्य मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने स्थानों पर खड़े होकर अपनी जगह ली; याजकों ने लेवियों के हाथ से प्राप्त रक्त को छिड़का। <sup>18</sup> क्योंकि

## 2 इतिहास

सभा में बहुत से लोग थे जिन्होंने अपने को पवित्र नहीं किया था, लेवी उन सभी के लिए फसह के मेमनों का बलिदान करने के लिए उत्तरदायी थे जो अशुद्ध थे, ताकि वे उन्हें यहोवा के लिए पवित्र कर सकें।<sup>18</sup> क्योंकि लोगों की एक बड़ी संख्या, एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार, और जबुलून से, ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, फिर भी उन्होंने फसह खाया जैसा कि लिखा गया था। क्योंकि हिजकियाह ने उनके लिए प्रार्थना की, कहा, “मला यहोवा क्षमा करे”<sup>19</sup> हर उस व्यक्ति को जो अपने हृदय को परमेश्वर की खोज करने के लिए तैयार करता है, अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज करता है, हालांकि पवित्रस्थान की शुद्धिकरण नियमों के अनुसार नहीं।<sup>20</sup> इसलिए यहोवा ने हिजकियाह की सुनी और लोगों को चंगा किया।

<sup>21</sup> जो इस्साएल के पुत्र यरूशलेम में उपस्थित थे उन्होंने अखमीरी रोटी के पर्व को सात दिनों तक बड़ी खुशी के साथ मनाया, और लेवी और याजक यहोवा की स्तुति करते रहे दिन-प्रतिदिन यहोवा के लिए ऊँचे स्वर में वाद्ययंत्र बजाते रहे।

<sup>22</sup> फिर हिजकियाह ने उन सभी लेवियों को उत्साहित किया जिन्होंने यहोवा की बातों में अच्छी समझ दिखाई। इसलिए उन्होंने नियत सात दिनों तक खाया, मेलबलि चढ़ाए और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का ध्यायावाद किया।

<sup>23</sup> फिर सारी सभा ने पर्व को और सात दिनों तक मनाने का निर्णय लिया, इसलिए उन्होंने सात दिनों तक खुशी के साथ मनाया।<sup>24</sup> क्योंकि यहूदा के राजा हिजकियाह ने सभा के लिए एक हजार बैल और सात हजार भेड़ें दीं, और बहुत से याजक अपने को पवित्र कर चुके थे।<sup>25</sup> सारी यहूदा की सभा ने आनंद किया, याजकों और लेवियों के साथ और सारी सभा जो इस्साएल से आई थी, दोनों वे अजननी जो इस्साएल के देश से आए थे और वे जो यहूदा में रहते थे।<sup>26</sup> इसलिए यरूशलेम में बड़ी खुशी थी, क्योंकि सुलैमान दाऊद के पुत्र, इस्साएल के राजा के दिनों से यरूशलेम में ऐसा कुछ नहीं हुआ था।<sup>27</sup> फिर लेवी याजक खड़े हुए और लोगों को आशीर्वाद दिया; और उनकी आवाज सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र निवास स्थान, स्वर्ग में पहुँची।

**31** अब जब यह सब समाप्त हो गया, तो उपस्थित समस्त इस्साएल यहूदा के नगरों में गए, स्मारक पत्तरों

को टुकड़ों में तोड़ दिया, अशेरीम को काट डाला, और ऊँचे स्थानों और वेदियों को यहूदा और बिन्यामीन के साथ-साथ एप्रैम और मनश्शे में भी पूरी तरह से गिरा दिया। तब इसाएल के सभी पुत्र अपने-अपने नगरों में लौट गए, प्रत्येक अपनी संपत्ति में।

<sup>2</sup> और हिजकियाह ने याजकों और लेवियों के विभागों को उनकी सेवाओं के अनुसार नियुक्त किया, याजकों और लेवियों दोनों को होमबलि और मेलबलि के लिए, प्रभु के शिविर के द्वारों में सेवा करने और ध्यायावाद देने और स्तुति करने के लिए।<sup>3</sup> उसने होमबलियों के लिए अपने सामान का राजा का हिस्सा भी नियुक्त किया, अर्थात् सुबह और शाम की होमबलि के लिए, और सब्बों के लिए होमबलि, नए चाँद के लिए, और नियत पर्वों के लिए जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है।<sup>4</sup> उसने यरूशलेम में रहने वाले लोगों को याजकों और लेवियों को उनका हिस्सा देने के लिए भी कहा, ताकि वे प्रभु की व्यवस्था के प्रति समर्पित हो सकें।<sup>5</sup> जैसे ही आदेश फैला, इस्साएल के पुत्रों ने अपने अनाज, नई दाखमधु, तेल, शहद के पहले फल उदारता से प्रदान किए, और खेत की सभी उपज का, और उन्होंने सब कुछ का दशमांश प्रचुर मात्रा में लाया।<sup>6</sup> यहूदा के नगरों में रहने वाले इस्साएल और यहूदा के पुत्रों ने भी बैल और भेड़ का दशमांश लाया, और पवित्र उपहारों का दशमांश जो उनके परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र किए गए थे, और उन्हें ढेरों में रखा।<sup>7</sup> तीसरे महीने उन्होंने ढेर बनाना शुरू किया, और सातवें महीने तक उन्हें समाप्त कर दिया।<sup>8</sup> जब हिजकियाह और शासक आए और ढेरों को देखा, तो उन्होंने प्रभु और उसके लोगों इस्साएल को आशीर्वाद दिया।

<sup>9</sup> तब हिजकियाह ने याजकों और लेवियों से ढेरों के बारे में पूछा।<sup>10</sup> सादोक के घर के प्रधान याजक अजर्याह ने उससे कहा, “जब से प्रभु के घर में योगदान लाना शुरू हुआ है, हमारे पास खाने के लिए पर्याप्त है और बहुत कुछ बचा है, क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को आशीर्वाद दिया है, और यह बड़ी मात्रा बची हुई है।”

<sup>11</sup> तब हिजकियाह ने उन्हें प्रभु के घर में कमरे तैयार करने का आदेश दिया, और उन्होंने उन्हे तैयार किया।

<sup>12</sup> उन्होंने विश्वासपूर्वक योगदान, दशमांश, और पवित्र वस्तुएँ लाईं, और कोनन्याह लेवी अधिकारी उनके ऊपर प्रभारी था, और उसका भाई शिमी दूसरा था।<sup>13</sup> यहिएल, अज़जियाह, नहथ, असाहेल, यरीमोत, योजाबाद, एलीएल, इस्माकियाह, महथ, और बनायाह कोनन्याह और उसके भाई शिमी के अधीनस्थ थे, जिन्हें

## 2 इतिहास

राजा हिजकिय्याह ने नियुक्त किया था, और अजर्याह परमेश्वर के घर का प्रधान अधिकारी था।

<sup>14</sup> कोरे, इम्प्राह का पुत्र लेवी, पूर्वी द्वार का रक्षक, स्त्रैचिक्क भेटों के प्रभारी था, प्रभु के लिए पोगदान और सबसे पवित्र वस्तुओं का वितरण करने के लिए।<sup>15</sup> उसके अधीनस्थ थे ऐदेन, मिन्यामीन, येशुआ, शामायाह, अमर्याह, और शेकन्याह याजकों के नगरों में, अपने भाइयों को उनके विभागों के अनुसार, चाहे बड़े हों या छोटे, विश्वासपूर्वक भाग वितरित करने के लिए।

<sup>16</sup> उनकी वंशावली की सूची की परवाह किए बिना, तीस वर्ष और उससे ऊपर के पुरुषों को— जो भी प्रभु के घर में अपनी दैनिक जिम्मेदारियों के लिए प्रवेश करता था— उनके कार्य के लिए उनके कर्तव्यों के अनुसार;<sup>17</sup> और याजकों की वंशावली की सूची उनके पितरों के घरानों के अनुसार, और लेवियों की बीस वर्ष और उससे ऊपर की उम्र के अनुसार, उनके कर्तव्यों और उनके विभागों के अनुसार;<sup>18</sup> और उनके सभी छोटे बच्चों, उनकी पतियों उनके पुत्रों और उनकी पुत्रियों की वंशावली की सूची, पूरी सभा के लिए— क्योंकि उन्होंने पवित्रता में विश्वासपूर्वक स्वयं को पवित्र किया था।

<sup>19</sup> अहरोन के पुत्रों के लिए भी, याजक, जो अपने नगरों के चरागाह भूमि में थे, या प्रत्येक नगर में, ऐसे लोग थे जिहें नाम से नियुक्त किया गया था, प्रत्येक याजक के पुरुष और प्रत्येक वंशावली में दर्ज लेवी को भाग वितरित करने के लिए।

<sup>20</sup> यह वही है जो हिजकिय्याह ने यहूदा भर में किया; और उसने जो कुछ भी किया वह प्रभु अपने परमेश्वर के सामने अच्छा, सही, और सत्य था।<sup>21</sup> प्रभु के घर की सेवा में उसने जो भी कार्य शुरू किया, व्यवस्था और आज्ञा में, अपने परमेश्वर की खोज करते हुए, उसने पूरे दिल से किया और सफल हुआ।

**32** इन विश्वासयोगी कार्यों के बाद, अश्शूर के राजा सेनहेरिब ने आकर यहूदा पर आक्रमण किया, और गढ़वाले नगरों के विरुद्ध डेरा डाला, और उन पर अधिकार करने का इरादा किया।<sup>2</sup> जब हिजकिय्याह ने देखा कि सेनहेरिब आ गया है और वह यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने का इरादा रखता है,<sup>3</sup> तो उसने अपने अधिकारियों और योद्धाओं के साथ यह निर्णय लिया कि वे नगर के बाहर के स्रोतों के जल को रोक दें, और उन्होंने उसकी सहायता की।<sup>4</sup> इसलिए बहुत से लोग इकट्ठे हुए और सभी स्रोतों और उस धारा को रोक दिया

जो क्षेत्र के माध्यम से बहती थी, यह कहते हुए, "अश्शूर के राजा क्यों आएं और प्रवृत्त जल पाएं?"<sup>5</sup> और उसने साहस किया और उस दीवार को फिर से बनाया जो टूट गई थी, और उस पर बुर्ज खड़े किए, और एक और बाहरी दीवार बनाई और दाऊद के नगर में मिलों को ढ़ढ़े किया, और बड़ी संख्या में हथियार और ढालें बनाई।

<sup>6</sup> उसने लोगों पर सैन्य अधिकारियों को नियुक्त किया और उन्हें नगर के फाटक के चौक में इकट्ठा किया, और उन्हें उत्साहपूर्वक कहा, <sup>7</sup> "मजबूत और साहसी बगो, अश्शूर के राजा से या उसके साथ की सारी भीड़ से मत डरो और न घबराओ; क्योंकि जो हमारे साथ है वह उससे बड़ा है जो उसके साथ है।"<sup>8</sup> उसके पास केवल मांस की भुजा है, लेकिन हमारे साथ हमारा परमेश्वर यहोवा है, हमारी सहायता करने और हमारी लड़ाइयाँ लड़ने के लिए।<sup>9</sup> और लोगों ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के शब्दों पर भरोसा किया।

<sup>10</sup> इसके बाद, अश्शूर के राजा सेनहेरिब ने अपने सेवकों को यरूशलेम भेजा जब वह लाकीश को अपने सभी बलों के साथ घेरे हुए था, यहूदा के राजा हिजकिय्याह और यरूशलेम में सभी यहूदा के विरुद्ध, यह कहते हुए,

<sup>11</sup> "यह अश्शूर के राजा सेनहेरिब कहता है: 'तुम किस पर भरोसा कर रहे हो, कि तुम यरूशलेम में घेरे में रहे हो ही हो?'<sup>11</sup> क्या हिजकिय्याह तुम्हें भूख और प्यास से मरने के लिए नहीं बहका रहा है, यह कहते हुए, 'हमारा परमेश्वर यहोवा हमें अश्शूर के राजा के हाथ से बचाएगा'?<sup>12</sup> क्या वही हिजकिय्याह ने उसके ऊँचे स्थानों और उसकी वेदियों को नहीं हटा दिया, और यहूदा और यरूशलेम से कहा, 'तुम एक वेदी के सामने पूजा करोगे, और उस पर धूप जलाओगे'?

<sup>13</sup> क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे पिताओं ने सभी देशों के लोगों के साथ क्या किया है? क्या देशों के देवता अपने देश को मेरे हाथ से बचाने में सक्षम थे?<sup>14</sup> उन सभी देशों के देवताओं में से कौन था जिसे मेरे पिताओं ने पूरी तरह से नह कर दिया जो अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका, कि तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचा सके?<sup>15</sup> अब, हिजकिय्याह तुम्हें धोखा न दे या इस तरह से तुम्हें गुमराह न करे, और उस पर विश्वास न करो, क्योंकि किसी भी देश या राज्य का कोई देवता अपने लोगों को मेरे हाथ से या मेरे पिताओं के हाथ से बचाने में सक्षम नहीं था। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें मेरे हाथ से कैसे बचाएगा?"

## 2 इतिहास

<sup>16</sup> उसके सेवकों ने यहोवा परमेश्वर और उसके सेवक हिजकियाह के विरुद्ध और भी बातें कहीं। <sup>17</sup> उसने इसाएल के परमेश्वर यहोवा को ताना देने के लिए पत्र भी लिखे, और उसके विरुद्ध यह कहते हुए, "जैसे देशों के देवताओं ने अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचाया, वैसे ही हिजकियाह का परमेश्वर अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचाएगा।" <sup>18</sup> उन्होंने यहूदा की भाषा में यरूशलेम के लोगों को जो दीवार पर थे, उन्हें डारने और आतंकित करने के लिए ऊँची आवाज़ में पुकारा, ताकि वे नगर को ले सकें। <sup>19</sup> उन्होंने यरूशलेम के परमेश्वर के बारे में पृथ्वी के लोगों के देवताओं की तरह बात की, जो मनुष्यों के हाथों का काम थे।

<sup>20</sup> लेकिन राजा हिजकियाह और आमोज के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह ने इस बारे में प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर पुकारा। <sup>21</sup> और यहोवा ने एक दूत भेजा जिसने अश्शूर के राजा के शिविर में हर शक्तिशाली योद्धा, सेनापति और अधिकारी का नाश कर दिया। इसलिए वह अपने देश में लज्जित होकर लौट गया। और जब वह अपने देवता के मंदिर में प्रवेश किया, तो उसके अपने कुछ पुत्रों ने उसे वहाँ तलवार से मार डाला।

<sup>22</sup> इसलिए यहोवा ने हिजकियाह और यरूशलेम के निवासियों को अश्शूर के राजा सेनेहरिब के हाथ से बचाया, और सभी अन्य लोगों के हाथ से, और उन्हें हर और से मार्गदर्शन किया। <sup>23</sup> और बहुत से लोग यरूशलेम में यहोवा के लिए उपहार और यहूदा के राजा हिजकियाह के लिए मूल्यवान वस्तुएं ला रहे थे, ताकि वह उसके बाद सभी राष्ट्रों की दृष्टि में महान हो गया।

<sup>24</sup> उन दिनों में हिजकियाह घाटक रूप से बीमार हो गया; और उसने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने उससे बात की और उसे एक चिन्ह दिया। <sup>25</sup> लेकिन हिजकियाह ने प्राप्त लाभ के लिए कोई प्रतिफल नहीं दिया, क्योंकि उसका हृदय गर्वित था; इसलिए उस पर और यहूदा और यरूशलेम पर क्रोध आया। <sup>26</sup> हालांकि, हिजकियाह ने अपने हृदय के गर्व को नम्र किया, वह और यरूशलेम के निवासी दोनों, ताकि हिजकियाह के दिनों में यहोवा का क्रोध उन पर न आए।

<sup>27</sup> अब हिजकियाह के पास अपार धन और सम्मान था; और उसने अपने लिए चांदी, सोना, कीमती पत्तर, मसाले, ढालें, और सभी प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं के भंडार बनाए। <sup>28</sup> अनाज, दारमद्धु और तेल के उत्पादन के लिए भी भंडार, सभी प्रकार के मवेशियों के लिए

बाढ़े, और झुंडों के लिए भेड़शालाएं। <sup>29</sup> उसने अपने लिए नगर भी बनाए, और बहुतायत में झुंड और पशुधन प्राप्त किया, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत बड़ी संपत्ति दी थी। <sup>30</sup> यह हिजकियाह था जिसने गिहोन के जल के ऊपरी निकास को रोका और उन्हें दाऊद के नगर के पश्चिमी ओर मोड़ दिया। और हिजकियाह ने जो कुछ भी किया उसमें सफल हुआ। <sup>31</sup> यहाँ तक कि बाबुल के शासकों के दूतों के मामले में, जो उस अद्भुत घटना के बारे में पूछताछ करने के लिए उसके पास भेजे गए थे, परमेश्वर ने उसे अकेला छोड़ दिया केवल उसे परखने के लिए, ताकि वह उसके हृदय की सारी बातें जान सके।

<sup>32</sup> अब हिजकियाह के शेष कार्य और उसकी भक्ति के कार्य, देखो, वे आमोज के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह की दृष्टि में लिखे गए हैं, यहूदा और इसाएल के राजाओं की पुस्तक में। <sup>33</sup> इसलिए हिजकियाह अपने पितरों के साथ लेट गया, और उन्हें दाऊद के पुत्रों की कब्रों के ऊपरी भाग में दफननाया गया; और उसकी मृत्यु पर सभी यहूदा और यरूशलेम के निवासियों ने उसे सम्मानित किया। और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राजा बना।

**33** मनश्शे बारह वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य किया। <sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, उन जातियों के धृणित कार्यों के अनुसार जिनको यहोवा ने इसाएल के पुत्रों के सामने से निकाल दिया था। <sup>3</sup> क्योंकि उसने ऊँचे स्थानों को फिर से बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकियाह ने तोड़ दिया था; उसने बातों के लिए वेदियाँ खड़ी कीं और अशेषों को बनाया, और उसने आकाशीय ज्योतियों की उपासना की और उनकी सेवा की। <sup>4</sup> उसने यहोवा के भवन में वेदियाँ बनाई, जिसके विषय में यहोवा ने कहा था, 'मेरा नाम यरूशलेम में सदा रहेगा।' <sup>5</sup> उसने यहोवा के भवन के दो आँगनों में सभी आकाशीय ज्योतियों के लिए वेदियाँ बनाई। <sup>6</sup> उसने अपने पुत्रों को बेन-हिन्नोम की घाटी में आग में से निकाला; और उसने जादू-टोना किया, भविष्याणी की, टोना-टोटोका किया, और माध्यमों और आत्माओं से संपर्क किया। उसने यहोवा की दृष्टि में बड़ा बुरा किया, उसे क्रोधित किया।

<sup>7</sup> फिर उसने उस मूर्ति की खुदी हुई प्रतिमा को जो उसने बनाई थी, परमेश्वर के भवन में रखा, जिसके विषय में परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुत्र सूलैमान से कहा था, 'इस भवन और यरूशलेम में, जिसे मैंने इसाएल के सभी गोत्रों में से चुना है, मैं अपना नाम सदा के लिए

## 2 इतिहास

रखँगा; <sup>८</sup> और मैं इसाएल के पाँव को उस भूमि से नहीं हटाऊँगा जिसे मैंने तुम्हारे पितरों के लिए नियुक्त किया है। यदि वे केवल वही सब करने में सावधान रहेंगे जो मैंने उहें मूसा के द्वारा दी गई सारी व्यवस्था, विधियों और नियमों के अनुसार आज्ञा दी है।<sup>९</sup> इस प्रकार मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को उन जातियों से भी अधिक बुरा करने के लिए बहकाया जिन्हें यहोवा ने इसाएल के पुत्रों के सामने से नष्ट कर दिया था।

<sup>१०</sup> इसलिए यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बात की, पर उहोंने ध्यान नहीं दिया। <sup>११</sup> इसलिए यहोवा ने अश्शूर के राजा की सेना के सेनापतियों को उनके विरुद्ध लाया, और उन्होंने मनश्शे को काँटों से पकड़ा, उसे कांथ की जंजीरों से बाँधा, और उसे बाबुल ले गए। <sup>१२</sup> जब वह संकट में था, उसने अपने परमेश्वर यहोवा को प्रसन्न किया और अपने पितरों के परमेश्वर के समान बहुत दीन हुआ। <sup>१३</sup> जब उसने उससे प्रार्थना की, तो वह उसकी विनती से प्रभावित हुआ और उसकी प्रार्थना सुनी, और उसे यरूशलेम में उसके राज्य में वापस लाया। तब मनश्शे ने जाना कि यहोवा ही परमेश्वर है।

<sup>१४</sup> इसके बाद उसने गिहोन के पश्चिमी ओर दाऊद के नगर की बाहरी दीवार बनाई, घाटी में, यहाँ तक कि मछली द्वार के प्रवेश द्वार तक; और उसने अपेल को घेर लिया और उसे बहुत ऊँचा बनाया। फिर उसने यहूदा के सभी गढ़वाले नगरों में सेना के सेनापतियों को रखा। <sup>१५</sup> उसने यहोवा के भवन से विदेशी देवताओं और मूर्तियों को हटा दिया, और उन सभी वेदियों को जो उसने यहोवा के भवन के पर्वत पर और यरूशलेम में बनाई थीं, और उहें नगर के बाहर फेंक दिया। <sup>१६</sup> उसने यहोवा की वेदी को स्थापित किया और उस पर मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाए; और उसने यहूदा को इसाएल के परमेश्वर यहोवा की सेवा करने की आज्ञा दी। <sup>१७</sup> फिर भी, लोग ऊँचे स्थानों पर बलि चढ़ाते रहे, यद्यपि केवल अपने परमेश्वर यहोवा को लिए।

<sup>१८</sup> अब मनश्शे के बाकी कार्य, यहाँ तक कि उसके परमेश्वर से की गई प्रार्थना, और उन दर्शियों के वचन जिन्होंने यहोवा इसाएल के परमेश्वर के नाम में उससे बात की, देखो, वे इसाएल के राजाओं के अभिलेखों में हैं। <sup>१९</sup> उसकी प्रार्थना भी और कैसे परमेश्वर उसके प्रभावित हुआ, और उसके सभी पाप, उसकी अविश्वसिता, और वे स्थान जहाँ उसने ऊँचे स्थान बनाए और अशेषों और खुदी हुई मूर्तियों को खड़ा किया, इससे पहले कि वह दीन हुआ, देखो, वे होजाई के अभिलेखों में लिखे हैं। <sup>२०</sup> इस प्रकार मनश्शे अपने पितरों के साथ लेट

गया, और उसे उसके घर में दफनाया गया, और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा बना।

<sup>२१</sup> आमोन बाईस वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य किया। <sup>२२</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसे उसके पिता मनश्शे ने किया था। और आमोन ने उन सभी खुदी हुई मूर्तियों को बलि चढ़ाया जिन्हें उसके पिता मनश्शे ने बनाया था, और उनकी सेवा की। <sup>२३</sup> इसके अलावा, उसने अपने पिता मनश्शे के समान यहोवा के समान दीन नहीं हुआ, बल्कि आमोन ने अपनी दोष को बढ़ाया। <sup>२४</sup> अंत में उसके सेवकों ने उसके विरुद्ध बड़वांत्र रचा और उसे उसके घर में मार डाला। <sup>२५</sup> परंतु देश के लोगों ने राजा आमोन के विरुद्ध बड़वांत्र करने वालों को मार डाला, और देश के लोगों ने उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

**३४** योषियाह आठ वर्ष का था जब वह राजा बना, और उसने यरूशलेम में इकट्ठीस वर्ष तक राज्य किया।

<sup>२</sup> उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, और अपने पिता दाऊद की राहें पर चला, और दाहिनी या बाई ओर नहीं मुड़ा।

<sup>३</sup> क्योंकि अपने राज्य के आठवें वर्ष में, जब वह अभी युवा था, उसने अपने पिता दाऊद के परमेश्वर को खोजने का आरंभ किया; और बारहवें वर्ष में उसने यहूदा और यरूशलेम को ऊँचे स्थानों, अशेरियों, खुदी हुई मूर्तियों, और ढली हुई धातु की मूर्तियों से शुद्ध करना शुरू किया। <sup>४</sup> उहोंने उसके समान बालों की वेदियों को गिरा दिया, और उसने उन पर ऊँची धूप की वेदियों को काट डाला। उसने अशेरियों, खुदी हुई मूर्तियों, और ढली हुई धातु की मूर्तियों को चूर्ण में बदल दिया, और उहें उन लोगों की कब्रों पर बिखर दिया जिन्होंने उनके लिए बलिदान किया था। <sup>५</sup> फिर उसने उनके वेदियों पर याजकों की हड्डियों को जलाया और यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया। <sup>६</sup> और मनश्शे, एप्रैम, शिमोन के नगरों में, यहाँ तक कि नपाती तक, उनके चारों ओर के खड़हरों में, <sup>७</sup> उसने वेदियों को भी गिरा दिया और अशेरियों और खुदी हुई मूर्तियों को चूर्ण में बदल दिया, और उसने पूरे इसाएल की भूमि में धूप की वेदियों को काट डाला। फिर वह यरूशलेम लौट आया।

<sup>८</sup> अब अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में, जब उसने भूमि और घर को शुद्ध कर दिया था, उसने शापान, अजल्याह के पुत्र, मासेयाह नगर के राज्यपाल, और योआह,

## 2 इतिहास

योआहाज के पुत्र, लेखाकार को यहोवा अपने परमेश्वर के घर की मरम्मत के लिए भेजा।

१ वे हित्किय्याह महायाजक के पास आए और उस धन को सौंप दिया जो परमेश्वर के घर में लाया गया था, जो लेवियों द्वारपालों ने मनश्चे और एग्रैम से, और इसाएल के सभी बचे हुए लोगों से, और यहूदा और बिन्यामीन और यरूशलैम के निवासियों से इकट्ठा किया था।<sup>10</sup> फिर उन्होंने इसे यहोवा के घर के निरीक्षण करने वाले कामगारों के हाथों में दे दिया, और जो कामगार यहोवा के घर में काम कर रहे थे, उन्होंने इसे घर की मरम्मत और सुधार के लिए उपयोग किया।<sup>11</sup> उन्होंने इसे कारीगरों और निर्माताओं को खुदी हुई पथर और जोड़ने के लिए लकड़ी खरीदने के लिए दिया और उन इमारतों के लिए बीम बनाने के लिए दिया, जिन्हें यहूदा के राजाओं ने जीर्ण-जीर्ण होने दिया था।

<sup>12</sup> पुरुषों ने उनके ऊपर निरीक्षण करने वाले फोरमैन के साथ विश्वासपूर्क काम किया: याहृ और ओबदाह, मरारी के पुरुषों के लेवी, और जकर्पैह और मशुल्लाम कोहाथियों के पुरुषों के; और लेवी—सभी जो संगीत वायायंत्रों में निपुण थे।<sup>13</sup> वे बोझ उठाने वालों के भी प्रभारी थे और कामगारों की नौकरी से नौकरी तक निगरानी करते थे; और कुछ लेवी लेखक, अधिकारी, और द्वारपाल थे।

<sup>14</sup> जब वे उस धन को बाहर ला रहे थे जो यहोवा के घर में लाया गया था, हित्किय्याह याजक ने मूसा द्वारा दिए गए यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पाई।<sup>15</sup> हित्किय्याह ने शापान लेखक से कहा, “मैंने यहोवा के घर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है।” और हित्किय्याह ने पुस्तक शापान को दी।

<sup>16</sup> फिर शापान ने पुस्तक राजा के पास लाई और राजा को और भी सूचना दी, “जो कुछ आपके सेवकों को सौंपा गया था, वे कर रहे हैं।”<sup>17</sup> उन्होंने यहोवा के घर में पाया गया धन भी खाली कर दिया है, और इसे निरीक्षकों और कामगारों के हाथों में सौंप दिया है।<sup>18</sup> इसके अलावा, शापान लेखक ने राजा से कहा, “हित्किय्याह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है।” और शापान ने राजा के सामने से उसे पढ़ा।

<sup>19</sup> जब राजा ने व्यवस्था के शब्द सुने, तो उसने अपने वस्त फाड़ दिए।<sup>20</sup> फिर राजा ने हित्किय्याह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकाह के पुत्र अब्दोन, शापान लेखक, और असायाह राजा के सेवक को आज्ञा दी,<sup>21</sup> “जाओ,

मेरे लिए और इसाएल और यहूदा में बचे हुए लोगों के लिए यहोवा से पूछो, उस पुस्तक के शब्दों के बारे में जो पाई गई है, क्योंकि यहोवा का क्रोध जो हम पर उंडेला गया है, महान है, क्योंकि हमारे पिताओं ने यहोवा के वचन का पालन नहीं किया, इस पुस्तक में लिखी सभी बातों को करने के लिए।”

<sup>22</sup> इसलिए हित्किय्याह और जिन्हें राजा ने कहा था, वे हुल्दा भविष्यवक्ती के पास गए, जो तोख़थ के पुत्र शल्तूम की पत्नी थी, हस्त के पुत्र, वस्तों की रखवाली करने वाला (अब वह यरूशलैम के दूसरे भाग में रहती थी), और उन्होंने उससे इस बारे में बात की।

<sup>23</sup> उसने उनसे कहा, “यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का वचन है: उस व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है,<sup>24</sup> यह यहोवा का वचन है: देखो, मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर बुराई लाने जा रहा हूँ, सभी श्राप जो उस पुस्तक में लिखे गए हैं जिसे उन्होंने यहूदा के राजा के सामने पढ़ा है,<sup>25</sup> क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया है और अन्य देवताओं को धूप जलाया है, ताकि वे अपने हाथों के सभी कार्यों से मुझे क्रोधित करें: इसलिए मेरा क्रोध इस स्थान पर उंडेला जाएगा, और यह बुझाया नहीं जाएगा।”<sup>26</sup> तेकिन यहूदा के राजा के लिए जिसने तुम्हें यहोवा से पूछें तो वे लिए भेजा, यह तुम उससे कहोगे: “यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा का वचन है जो तुमने सुना है:<sup>27</sup> क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल था और जब तुमने इस स्थान और इसके निवासियों के खिलाफ उसके वचन सुने, और क्योंकि तुमने मेरे सामने अपने आप को नम्र किया, अपने वस्त फाड़े, और मेरे सामने रोए, मैंने सचमुच तुम्हें सुना है.” यहोवा कहता है।<sup>28</sup> देखो, मैं तुम्हें तुम्हारे पितरों के पास इकट्ठा करूँगा, और तुम शांति से अपनी कब्र में इकट्ठे किए जाओगे, और तुम्हारी आँखें उस सभी बुराई को नहीं देखेंगी जो मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर लाने जा रहा हूँ।”<sup>29</sup> इसलिए वे राजा के पास वापस शब्द लाए।

<sup>29</sup> फिर राजा ने शब्द भेजा और यहूदा और यरूशलैम के सभी पुरुषियों को इकट्ठा किया।<sup>30</sup> राजा यहोवा के घर गया, और यहूदा के सभी पुरुष, यरूशलैम के निवासी, याजक, लेवी, और सभी लोग छोटे से लेकर बड़े तक; और उसने उनकी सुनवाई में वह सब पढ़ा जो यहोवा के घर में पाई गई वाचा की पुस्तक में लिखा था।

<sup>31</sup> फिर राजा अपनी जगह खड़ा हुआ और यहोवा के सामने एक वाचा की, कि वह यहोवा के पीछे चेता, और उसकी आज्ञाओं, उसकी गवाहियों, और उसकी विधियों को अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से

## 2 इतिहास

मानेगा, उस वाचा के शब्दों को पूरा करने के लिए जो इस पुस्तक में लिखे गए हैं।

<sup>32</sup> इसके अलावा, उसने यरूशलेम और बिन्यामीन में उपस्थित सभी को उसके साथ खड़ा किया। इसलिए यरूशलेम के निवासियों ने अपने पितरों के परमेश्वर, परमेश्वर की वाचा के अनुसार कार्य किया।

<sup>33</sup> योशियाह ने इसाएल के पुत्रों की सभी भूमि से सभी घृणित वस्तों को हटा दिया, और इसाएल में उपस्थित सभी को यहोवा उनके परमेश्वर की सेवा करने के लिए बनाया। अपने जीवनकाल के दौरान उह्वोने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करने से नहीं हटे।

**35** तब योशियाह ने यरूशलेम में यहोवा के लिए फसह मनाया, और उह्वोने पहले महीने के चौदहवें दिन फसह के पशुओं का वध किया। <sup>2</sup> उसने याजकों को उनके कर्तव्यों पर नियुक्त किया और उन्हें यहोवा के घर की सेवा में प्रोत्साहित किया। <sup>3</sup> उसने उन लेवियों से भी कहा जो समस्त इसाएल को शिक्षा देते थे और जो यहोवा के लिए पवित्र थे, “पवित्र सन्दूक को उस घर में रखो जिसे दाऊद के पुत्र सुलैमान, इसाएल के राजा ने बनाया था; यह अब तुम्हरे कंधों पर बोझ नहीं रहेगा। अब अपने परमेश्वर यहोवा और उसके लोगों इसाएल की सेवा करो।” <sup>4</sup> अपने पितरों के घरानों के अनुसार अपनी अपनी विभागों में तैयार हो जाओ, जैसा कि इसाएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान के लेख में लिखा है।

<sup>5</sup> इसके अलावा, अपने देशवासियों के पितरों के घरानों के अनुसार पवित्र स्थान में खड़े रहो, और लेवियों के अनुसार, एक पिता के घराने की विभाग के अनुसार। <sup>6</sup> अब फसह के पशुओं का वध करो, अपने आप को पवित्र करो, और अपने देशवासियों के लिए यहोवा के वचन को मूसा के हाथ से पूरा करने के लिए तैयार करो।”

<sup>7</sup> योशियाह ने लोगों के पुत्रों को फसह के बलिदानों के लिए भेड़ों और बकरियों के झूँड दिए, उन सबके लिए जो उपस्थित थे, संख्या में 30,000, साथ ही 3,000 बैल; ये राजा की संपत्ति से थे।

<sup>8</sup> उसके अधिकारियों में भी लोगों, याजकों, और लेवियों को रखेंगा से भेट दी। हित्कियाह, जकर्याह, और यहीएल, परमेश्वर के घर के अधिकारियों ने याजकों को फसह के बलिदानों के लिए 2,600 भेड़ों से, और 300

बैलों से दिया। <sup>9</sup> कोनन्याह, शमायाह और नतनएल उसके भाई, और हशब्याह, यहीएल, और योजबाद, लेवियों के नेताओं ने लेवियों के लिए फसह के बलिदानों के लिए 5,000 भेड़ों से, और 500 बैलों से प्रदान किया।

<sup>10</sup> इस प्रकार सेवा तैयार की गई, और याजक अपनी स्थिति पर खड़े हुए, और लेवी अपने विभागों के अनुसार राजा के आदेश के अनुसार। <sup>11</sup> उह्वोने फसह के पशुओं का वध किया, और जब याजकों ने उनके हाथ से प्राप्त रक्त का छिड़काव किया, लेवियों ने पशुओं की खाल उतारी। <sup>12</sup> तब उह्वोने होमबलियों को हटा दिया ताकि वे उह्वें लोगों के पुत्रों के पितरों के घरानों की विभागों को दे सकें, यहोवा के सामने प्रतुत करने के लिए, जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है। उह्वोने यह बैलों के साथ भी किया। <sup>13</sup> इस प्रकार उह्वोने फसह के पशुओं को नियम के अनुसार आग पर भुना, और पवित्र वस्तुओं को बर्तनों, कढ़ाँगों, और पैन में उबाला, और उह्वें जल्दी से लोगों के सभी पुत्रों को पहुँचाया। <sup>14</sup> इसके बाद उह्वोने अपने लिए और याजकों के लिए तैयार किया, क्योंकि याजक, हारून के पुत्र, होमबलियों और चर्बी को रात तक चढ़ाते रहे। इसलिए लेवियों ने अपने लिए और याजकों के लिए, हारून के पुत्रों के लिए तैयार किया।

<sup>15</sup> गायक, आसाप के पुत्र, अपनी स्थिति पर थे, जैसा कि दाऊद के आदेश के अनुसार, आसाप, हेमान, और यदूतून राजा के दृष्टि; और द्वारपाल प्रत्येक द्वार पर थे। उह्वें अपनी सेवा छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उनके देशवासी लेवियों ने उनके लिए तैयार किया।

<sup>16</sup> इस प्रकार उस दिन यहोवा की सारी सेवा फसह मनाने के लिए तैयार की गई, और होमबलियों को यहोवा की बेटी पर चढ़ाने के लिए राजा योशियाह के आदेश के अनुसार। <sup>17</sup> और इसाएल के पुत्र जो उस समय उपस्थित थे, उह्वोने फसह मनाया, और सात दिन के लिए अखमीरी रोटी का पर्व। <sup>18</sup> इसाएल में शमूएल भविष्यद्वक्ता के दिनों से ऐसा फसह नहीं मनाया गया था; और न ही इसाएल के किसी राजा ने ऐसा फसह मनाया जैसा योशियाह ने याजकों, लेवियों, सभी यहूदा और इसाएल के उपस्थित लोगों के साथ, और यरूशलेम के निवासियों के साथ मनाया। <sup>19</sup> योशियाह के राज्य के अठारहवें वर्ष में यह फसह मनाया गया।

<sup>20</sup> इन सब के बाद, जब योशियाह ने मंदिर को व्यवस्थित कर दिया, मिस्र के राजा नेको युद्ध करने के

## 2 इतिहास

लिए फरात नदी के कारकेमिश पर आया, और योशिय्याह उससे लड़ने के लिए निकला।<sup>21</sup> परंतु नेको ने उसके पास दूत भेजकर कहा, “हमारा एक दूसरे से क्या काम है, यहूदा के राजा? मैं आज तुम्हारे विरुद्ध नहीं आ रहा हूँ, बल्कि उस घर के विरुद्ध हूँ जिससे मैं युद्ध कर रहा हूँ; और परमेश्वर ने मुझे जल्दी करने के लिए कहा है। अपने भले के लिए परमेश्वर से मत उलझो जो मेरे साथ है, ताकि वह तुम्हें नष्ट न करे।”

<sup>22</sup> फिर भी, योशिय्याह उससे नहीं हटा, बल्कि उससे लड़ने के लिए भेष बदल लिया; और उसने नेको के मुँह से परमेश्वर के वचनों को नहीं सुना, बल्कि मेंगिदो के मैदान में उससे लड़ाई करने के लिए आया।

<sup>23</sup> और धनुर्धारीयों ने राजा योशिय्याह को मारा, और राजा ने अपने सेवकों से कहा, “मुझे ले चलो, क्योंकि मैं गंभीर रूप से घायल हूँ।”<sup>24</sup> इसलिए उसके सेवकों ने उसे रथ से निकालकर उसके द्वारेर रथ में ले जाया, और उसे यरूशलेम ते आए जहाँ वह मरा और अपने पितरों की कब्रों में दफनाया गया। और समस्त यहूदा और यरूशलेम ने योशिय्याह के लिए शोक किया।

<sup>25</sup> तब यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिए शोकीत गाया। और सभी पुरुष और महिला गायक आज तक योशिय्याह के बारे में अपने शोकीतों में बोलते हैं। और उन्होंने इसे इसाएल में एक प्रथा बना दिया; देखो, वे विलाप में लिखे गए हैं।

<sup>26</sup> अब योशिय्याह के बाकी कार्य और उसकी भक्ति के कार्य जो यहोवा की व्यवस्था में लिखे गए हैं,

<sup>27</sup> और उसके कार्य, पहले से लेकर अंतिम तक, देखो, वे इसाएल और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में लिखे गए हैं।

**36** तब देश के लोगों ने योआहाज को, जो योशिय्याह का पुत्र था, पकड़कर उसके पिता के स्थान पर यरूशलेम में राजा बना दिया।

<sup>2</sup> योआहाज जब राजा हुआ, तब वह तेईस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में तीन महीने तक राज्य किया।<sup>3</sup> तब मिस्र के राजा ने उसे यरूशलेम में पदच्युत कर दिया और देश पर सौ किक्कार चाँदी और एक किक्कार सोने का ढंड लगाया।<sup>4</sup> मिस्र के राजा ने उसके भाई एल्याकिम को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया, और उसका नाम बदलकर यहोयाकिम कर

दिया। परंतु नकोह ने उसके भाई योआहाज को पकड़कर मिस्र ले गया।

<sup>5</sup> यहोयाकिम जब राजा हुआ, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में यारह वर्ष तक राज्य किया। और उसने अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।<sup>6</sup> बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसके विरुद्ध चढ़ाई की और उसे कांस्य की जंजीरों में बाँधकर बाबुल ले जाने का विचार किया।<sup>7</sup> नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र भी बाबुल में ले जाकर, उन्हें अपने मंदिर में रखा।

<sup>8</sup> अब यहोयाकिम के बाकी काम और उसने जो धृणि कार्य किए, और जो उसके विरुद्ध पापा गया, देखो, वे इसाएल और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में लिखे हैं। और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राजा हुआ।

<sup>9</sup> यहोयाकीन जब राजा हुआ, तब वह आठ वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में तीन महीने और दस दिन तक राज्य किया। और उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।<sup>10</sup> वर्ष के अंत में राजा नबूकदनेस्सर ने उसे बाबुल ले जाने का अदेश दिया, यहोवा के भवन के बहुमूल्य पात्रों के साथ, और उसने उसके संबंधी सिदकियाह को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया।

<sup>11</sup> सिदकियाह जब राजा हुआ, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में यारह वर्ष तक राज्य किया।<sup>12</sup> उसने अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; उसने यहोवा के भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के सामने अपने को नम्र नहीं किया।<sup>13</sup> उसने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध भी विद्रोह किया, जिसने उसे परमेश्वर की शाप्त दिलाई थी। परंतु उसने अपनी गर्दन कठोर कर ली और इसाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लौटने से इनकार कर दिया।<sup>14</sup> इसके अलावा, याजकों के सभी अधिकारी और लोग बहुत ही अविश्वसी हो गए, राष्ट्रों की सभी धृणि बातों का अनुसरण करते हुए; और उन्होंने यहोवा के उपहास किया जिसे उसने यरूशलेम में पवित्र किया था।

<sup>15</sup> और उनके पितरों के परमेश्वर यहोवा ने अपने दूतों के द्वारा बार-बार उन्हें चेतावनी दी, क्योंकि उसे अपनी प्रजा और अपने निवासस्थान पर दया थी; <sup>16</sup> परंतु उन्होंने परमेश्वर के दूतों का उपहास किया, उसके वचनों को तुच्छ जाना, और उसके भविष्यद्वक्ताओं का अपमान किया, यहाँ तक कि यहोवा का क्रोध उसकी प्रजा पर

## 2 इतिहास

भड़क उठा, और कोई उपाय न रहा।<sup>17</sup> इसलिए उसने उनके विशुद्ध कसादियों के राजा को भेजा, जिसने उनके जवानों को उनके पवित्र स्थान में तलवार से मार डाला, और जवान या कुँवारी, बूढ़े या दुर्बल पर कोई दया नहीं की; उसने उन्हें सबको उसके हाथ में सौंप दिया।<sup>18</sup> परमेश्वर के घर के सभी पात्र, बड़े और छोटे, और यहोवा के घर के खजाने, और राजा और उसके अधिकारियों के खजाने, वह सब बाबूल ले गया।<sup>19</sup> तब उन्होंने परमेश्वर के घर को जला दिया और यरूशलैम की दीवार को गिरा दिया, और उसके सभी महलों को आग से जला दिया, और उसके सभी बहुमूल्य वस्त्रों को नष्ट कर दिया।

<sup>20</sup> जो तलवार से बच गए थे, उन्हें उसने बाबूल में निवासित कर दिया; और वे उसके और उसके पुत्रों के सेवक बने रहे जब तक कि फारस का राज्य स्थापित नहीं हुआ,<sup>21</sup> यिर्मयाह के मुँह से यहोवा के वचन को पूरा करने के लिए, जब तक कि देश ने अपने विश्रामदिवसों का आनंद नहीं लिया। उसकी उजाड़ के सभी दिनों में उसने विश्राम किया जब तक कि सत्तर वर्ष पूरे नहीं हुए।

<sup>22</sup> अब फारस के राजा कुसू के पहले वर्ष में— यिर्मयाह के मुँह से यहोवा के वचन को पूरा करने के लिए— यहोवा ने फारस के राजा कुसू की आत्मा को प्रेरित किया, ताकि उसने अपने राज्य में एक घोषणा भेजी, और इसे लिखित रूप में भी रखा, यह कहते हुए,<sup>23</sup> “यह फारस के राजा कुसू कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने मुझे पृथ्वी के सभी राज्यों को दिया है, और उसने मुझे यहूदा में यरूशलैम में उसके लिए एक घर बनाने के लिए नियुक्त किया है। तुम में से जो कोई उसकी प्रजा में से है, उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ हो, और वह वहाँ जाए!”

## एज्ञा

**१** फारस के राजा कुसू के पहले वर्ष में, यहोवा के वचन को यिर्माह के मुख से पूरा करने के लिए, यहोवा ने फारस के राजा कुसू की आत्मा को उभारा, ताकि उसने अपने राज्य भर में एक घोषणा भेजी, और इसे लिखित रूप में भी रखा, कहते हुए,

<sup>२</sup> “यह फारस के राजा कुसू का कहना है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने मुझे पृथ्वी के सभी राज्यों को दिया है, और उसने मुझे यहूदा में यरूशलेम में उसके लिए एक घर बनाने के लिए नियुक्त किया है। <sup>३</sup> तुम मैं से जो कोई भी उसके सभी लोगों में से है, उसका परमेश्वर उसके साथ हो! यरूशलेम को जाओ, जो यहूदा में है, और इसाएल के परमेश्वर यहोवा के घर का पुनर्निर्माण करो; वह परमेश्वर है जो यरूशलेम में है। <sup>४</sup> और हर जीवित व्यक्ति, चाहे वह जहाँ भी रहता हो, उस स्थान के लोगों द्वारा चाँदी और सोने, उपकरण और मवेशियों के साथ समर्थित किया जाएगा, साथ ही एक स्वैच्छिक भेट के साथ जो यरूशलेम में परमेश्वर के घर के लिए है।”<sup>१०</sup>

<sup>५</sup> तब यहूदा और बिन्यामीन के पिताओं के घरों के प्रधान, और याजक और लेवी, हर वह व्यक्ति जिसकी आत्मा को परमेश्वर ने उभारा था, यरूशलेम में यहोवा के घर का पुनर्निर्माण करने के लिए उठ खड़े हुए। <sup>६</sup> और उनके चारों और के सभी लोगों ने उन्हें चाँदी, सोने, उपकरण, मवेशियों और मूल्यवान वस्तुओं के साथ प्रोत्साहित किया, उन सभी चीजों के अलावा जो स्वैच्छिक भेट के रूप में दी गई।

<sup>७</sup> राजा कुसू ने भी यहोवा के घर के वस्तों को बाहर निकाला, जिहें नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से ले जाकर अपने देवताओं के घर में रखा था; <sup>८</sup> और फारस के राजा कुसू ने उन्हें मिश्रादाथ कोषाधक्ष के हाथों से बाहर लाया, और उसने उन्हें यहूदा के नेता शेशबज्जर को गिना दिया।

<sup>९</sup> अब यह उनकी संख्या थी:

तीस सोने की थालियाँ, एक हजार चाँदी की थालियाँ<sup>११</sup> उनतीस प्रतिलिपियों, <sup>१०</sup> तीस सोने के कटोरे, ४१० चाँदी के कटोरे द्वारे प्रकार के, एक हजार अन्य वस्तु।

<sup>११</sup> सभी सोने और चाँदी के वस्तों की कुल संख्या 5,400 थी। शेशबज्जर ने उन सभी को निर्वासितों के साथ ले लिया जो बाबुल से यरूशलेम गए थे।

**२** अब ये वे प्रांत के लोग हैं जो निर्वासन की बंधुआई से बाहर आए, जिहें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने बाबुल में निर्वासित किया था, और जो यरूशलेम और यहूदा में लौट आए, प्रत्येक अपने नगर को। <sup>२</sup> ये जरूबाबेत, येशू, नहेमायाह, सरायाह, रीलायाह, मोट्कै, बिलशान, मिस्पर, बिगवै, रहूम, और बानाह के साथ आए। इसाएल के लोगों के पुरुषों की संख्या:

<sup>३</sup> परोश के पुत्र, २,१७२; <sup>४</sup> शोफत्याह के पुत्र, ३७२; <sup>५</sup> अरह के पुत्र, ७७५; <sup>६</sup> पहथ मोआब के पुत्र जो येशू और योआब के वंशज थे, २,८१२; <sup>७</sup> एलाम के पुत्र, १,२५४; <sup>८</sup> जरू के पुत्र, ९४५; <sup>९</sup> जकै के पुत्र, ७६०; <sup>१०</sup> बानी के पुत्र, ६४२; <sup>११</sup> बेबाई के पुत्र, ६२३; <sup>१२</sup> अज्गाद के पुत्र, १,२२२; <sup>१३</sup> अदोनिकाम के पुत्र, ६६६; <sup>१४</sup> बिगवै के पुत्र, २,०५६; <sup>१५</sup> अदीन के पुत्र, ४५४; <sup>१६</sup> अतिर के पुत्र, हिजकियाह के वंशज, ९८; <sup>१७</sup> बेजाई के पुत्र, ३२३; <sup>१८</sup> योरा के पुत्र, ११२; <sup>१९</sup> हाश्याम के पुत्र, २२३; <sup>२०</sup> गिब्बार के पुत्र, ९५;

<sup>२१</sup> बेतलहेम के लोग, १२३; <sup>२२</sup> नेतोफा के लोग, ५६; <sup>२३</sup> अनातोत के लोग, १२८; <sup>२४</sup> अज्गामेथ के पुत्र, ४२; <sup>२५</sup> किर्यथ अरिम, केफिरा, और बीरोथ के पुत्र, ७४३; <sup>२६</sup> रामाह और गेबा के पुत्र, ६२१; <sup>२७</sup> मिकमास के लोग, १२२; <sup>२८</sup> बेथेल और ऐ के लोग, २२३; <sup>२९</sup> नेबो के पुत्र, ५२; <sup>३०</sup> मगबिश के पुत्र, १५६; <sup>३१</sup> दूसरे एलाम के पुत्र, १,२५४; <sup>३२</sup> हारिम के पुत्र, ३२०; <sup>३३</sup> लेड, हरीद, और ओनो के पुत्र, ७२५; <sup>३४</sup> यरीहो के लोग, ३४५; <sup>३५</sup> सेनाह के पुत्र, ३,६३०।

<sup>३६</sup> याजक: येशू के घराने के यदायाह के पुत्र, ९७३;

<sup>३७</sup> इम्रेर के पुत्र, १,०५२; <sup>३८</sup> पश्हूर के पुत्र, १,२४७; <sup>३९</sup> हारिम के पुत्र, १,०१७।

<sup>४०</sup> लेवीय: येशू और कदमीएल के पुत्र, होदव्याह के वंशज, ७४। <sup>४१</sup> यायक: आसाप के पुत्र, १२८। <sup>४२</sup> द्वारापालों के पुत्र:

शल्लूम के पुत्र, अतर के पुत्र, तत्मोन के पुत्र, अकूब के पुत्र, हीता के पुत्र, शोबाई के पुत्र, कुल १३९।

<sup>४३</sup> मंदिर के सेवक:

जिहा के पुत्र, हसुफा के पुत्र, तब्बाओथ के पुत्र, <sup>४४</sup> केरोस के पुत्र, सिआहा के पुत्र, पादोन के पुत्र, <sup>४५</sup>

# एज्ञा

लेबनाह के पुत्र हगाबा के पुत्र, अकूब के पुत्र,<sup>46</sup> हगाब के पुत्र शम्लै के पुत्र, हानान के पुत्र<sup>47</sup> गिद्देल के पुत्र, गाहर के पुत्र तैया के पुत्र<sup>48</sup> रेजिन के पुत्र, नेकौदा के पुत्र, गज्जाम के पुत्र<sup>49</sup> उज्जा के पुत्र पासह के पुत्र, बेसाई के पुत्र<sup>50</sup> अस्त्राह के पुत्र मेतनिम के पुत्र नेफिसिम के पुत्र<sup>51</sup> बक्कुबुक के पुत्र, हकूफा के पुत्र हरहर के पुत्र<sup>52</sup> बजलूथ के पुत्र मेहिदा के पुत्र हषा के पुत्र<sup>53</sup> बरकोस के पुत्र सिसोरा के पुत्र तेमह के पुत्र<sup>54</sup> नेजिया के पुत्र, हतीफा के पुत्र।

<sup>55</sup> सुलैमान के सेवकों के पुत्रः सोतै के पुत्र, हस्सोफेरथ के पुत्र, परूदा के पुत्र,

<sup>56</sup> जाअला के पुत्र, दरकोन के पुत्र, गिद्देल के पुत्र,<sup>57</sup> शेफत्याह के पुत्र, हत्तील के पुत्र, पोकेरेथ-हज्जेलाइम के पुत्र, अमी के पुत्र।

<sup>58</sup> सभी मंदिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के पुत्र कुल 392।

<sup>59</sup> अब ये वे लोग थे जो तेल-मेला, तेल-हरशा, केरूब, अड्डान, और इम्मर से आए थे, लेकिन वे अपने पूर्वजों के घरानों या उनके वंशजों के लिए प्रमाण देने में सक्षम नहीं थे, कि वे इसाएल के थे: <sup>60</sup> देलायाह के पुत्र, तोवियाह के पुत्र, नेकौदा के पुत्र, 652। <sup>61</sup> याजकों के पुत्रों में से:

हबायाह के पुत्र, हव्कोज के पुत्र, बरजिल्लै के पुत्र—जिन्होंने गिलाद के बरजिल्लै की पुत्रियों में से एक को पत्नी के रूप में लिया, और उनका नाम उनके नाम पर रखा गया।

<sup>62</sup> इन लोगों ने अपने पूर्वजों के पंजीकरण में खोज की, लेकिन वे नहीं मिले; इसलिए उन्हें अशुद्ध माना गया और याजकाई पद से बाहर कर दिया गया। <sup>63</sup> राज्यपाल ने उनसे कहा कि वे पवित्रतम वस्तुओं में से न खाएं जब तक कि एक याजक उरीम और धुम्मिम के साथ खड़ा न हो।

<sup>64</sup> संपूर्ण सभा की कुल संख्या 42,360 थी, <sup>65</sup> उनके पुरुष और महिला सेवकों के अलावा, जिनकी संख्या 7,337 थी; और उनके पास 200 गाने वाले पुरुष और महिलाएं थीं। <sup>66</sup> उनके घोड़े 736, उनके खच्चर 245,

<sup>67</sup> उनके ऊंट 435, और उनके गधे 6,720।

<sup>68</sup> अब कुछ पिताओं के घरानों के प्रमुख, जब वे यरूशलेम में प्रभु के घर पहुंचे, उन्होंने परमेश्वर के घर के लिए अपनी इच्छा से भेट दी ताकि उसे उसकी नींव पर पुनः स्थापित किया जा सके। <sup>69</sup> अपनी क्षमता के अनुसार उन्होंने काम के लिए खजाने में दिया: 61,000 सोने की द्राचा, 5,000 चांदी की मीनस, और 100 याजकीय वस्त्र।

<sup>70</sup> अब याजक, लेवीय, कुछ लोग, गायक, द्वारपाल, और मंदिर के सेवक अपने-अपने नगरों में बसे, और सभी इसाएल अपने नगरों में।

**3** जब सातवाँ महीना आया, और इसाएल के पुत्र नगरों में थे, तो लोग एक व्यक्ति के रूप में यरूशलेम में इकट्ठा हुए। <sup>2</sup> तब योसादाक के पुत्र येशूआ और उनके भाई याजक, और शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और उनके भाई, उठे और इसाएल के परमेश्वर की वेदी का निर्माण किया ताकि उस पर होमबलि चढ़ा सकें, जैसा कि परमेश्वर के मनुष्य मूरा की व्यवस्था में लिखा है। <sup>3</sup> इसलिए उन्होंने वेदी को उसकी नींव पर स्थापित किया, क्योंकि वे देश के लोगों से डरते थे; और उन्होंने उस पर प्रभु को होमबलि चढ़ाई, सुबह और शाम की होमबलि। <sup>4</sup> और उन्होंने झोपड़ियों के पर्व को मनाया, जैसा कि लिखा है, और प्रतिदिन की आवश्यकता के अनुसार, निश्चित संख्या में होमबलि चढ़ाई। <sup>5</sup> और उसके बाद लगातार होमबलि चढ़ाई गई, नए चाँद के लिए और प्रभु के सभी नियुक्त पर्वों के लिए जो पवित्र किए गए थे, और उन सभी से जिन्होंने प्रभु को स्वेच्छा से बलि चढ़ाई। <sup>6</sup> सातवें महीने के पहले दिन से उन्होंने प्रभु को होमबलि चढ़ाना शुरू किया, परंतु प्रभु के मंदिर की नींव नहीं रखी गई थी।

<sup>7</sup> तब उन्होंने राजमिस्त्रियों और बदईयों को पैसे दिए, और सिदोनियों और तीरियों को भोजन, पेय, और तेल दिया, ताकि वे लेबनान से जोपा के समुद्र तक देवदार की बाकड़ी ला सकें, उनकी अनुमति के अनुसार जो उन्हें फारस के राजा काइरस से मिली थी।

<sup>8</sup> अब उनके यरूशलेम में परमेश्वर के घर में आने के दूसरे वर्ष में, दूसरे महीने में, शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशूआ, और उनके बाकी भाई याजक और लेवी, और सभी जो बंदीगृह से यरूशलेम आए थे, काम शुरू किया और बीस वर्ष और उससे ऊपर के लिए नियुक्त किया। <sup>9</sup> तब येशूआ अपने पुत्रों और भाईयों के साथ, कदमीएल और उनके पुत्रों, यहूदा

# एज्ञा

के पुत्रों और हेनादाद के पुत्रों के साथ, उनके पुत्रों और भाइयों के लेवियों के साथ खड़े हुए, जो परमेश्वर के घर में काम करने वालों की देखरेख करते थे।

<sup>10</sup> अब जब निर्माणकर्ताओं ने प्रभु के मंदिर की नींव रखी, तो याजक अपने वस्त्रों में तुरहियों के साथ खड़े हुए, और लेवी, आसप के पुत्र, झांझ के साथ, इसाएल के राजा दाऊद के निर्देशों के अनुसार प्रभु की स्तुति करने के लिए। <sup>11</sup> और उन्होंने गाया, प्रभु की स्तुति और ध्यावाद देते हुए कहा, “क्योंकि वह अच्छा है, क्योंकि उसकी दया इसाएल पर सदा के लिए है।” और जब उन्होंने प्रभु की स्तुति की क्योंकि प्रभु के घर की नींव रखी गई थी, तो सभी लोग बड़ी आवाज में चिल्लाए। <sup>12</sup> फिर भी कई याजक और लेवी और पिताओं के घरानों के प्रधान, वृद्ध पुरुष जिन्होंने पहले मंदिर को देखा था, जब इस घर की नींव उनकी आँखों के सामने रखी गई, तो ऊँची आवाज में रो, जबकि कई खुशी की चिल्लाहट की आवाज को लोगों के रोने की आवाज से अलग न कर सके; क्योंकि लोग ऊँची आवाज में चिल्ला रहे थे, और आवाज दूर तक सुनी गई।

**4** अब जब यहूदा और बिन्यामीन के शत्रुओं ने सुना कि निर्वासन के लोग इसाएल के प्रभु परमेश्वर के लिए एक मंदिर बना रहे हैं,<sup>2</sup> तो वे जरूब्रबेल और पिताओं के घरानों के मुखियाओं के पास आए और उनसे कहा, “हमें आपके साथ बनाने दीजिए, क्योंकि हम भी आपकी तरह आपके परमेश्वर की खोज करते हैं; और हम अस्तूर के राजा एसर्हिदोन के दिनों से, जिसने हमें यहाँ लाया, उसके लिए बलिदान चढ़ाते रहे हैं।”

<sup>3</sup> परन्तु जरूब्रबेल और येशुआ और इसाएल के पिताओं के घरानों के बाकी मुखियाओं ने उनसे कहा, “हमारे परमेश्वर के लिए घर बनाने में तुम्हारा हमसे कोई संबंध नहीं है; परन्तु हम स्वयं इसाएल के प्रभु परमेश्वर के लिए मिलकर बनाएंगे, जैसा कि फारस के राजा कुसु ने हमें आज्ञा दी है।”

<sup>4</sup> तब देश के लोगों ने यहूदा के लोगों को हतोत्साहित किया और उन्हें निर्माण से डाराया,<sup>5</sup> और उनके विरुद्ध सलाहकारों को नियुक्त किया ताकि उनके योजना को विफल कर सकें, फारस के राजा कुसु के सभी दिनों में, यहाँ तक कि फारस के राजा दायरिवेश के शासनकाल तक।

<sup>6</sup> अब अहश्वेरोश के शासनकाल में, उसके शासन के आरंभ में, उन्होंने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों के विरुद्ध एक आरोप लिखा।

<sup>7</sup> और अर्तक्षत्र के दिनों में, बिशलाम, मिथ्रदात, तबेल और उनके बाकी सहयोगियों ने फारस के राजा अर्तक्षत्र को लिखा; और पत्र का पाठ अरामी में लिखा गया और अरामी से अनुवादित किया गया।

<sup>8</sup> रहूम सेनापति और शिमशै लेखक ने यरूशलेम के विरुद्ध राजा अर्तक्षत्र को एक पत्र लिखा, इस प्रकार—

<sup>9</sup> तब रहूम सेनापति और शिमशै लेखक और उनके बाकी सहयोगियों ने लिखा, न्यायार्थीशों और छोटे राज्यपालों, अधिकारियों, सचिवों, ऐरक के पुरुषों, बाबुलियों, सूसा के पुरुषों (अर्थात् एलामियों),<sup>10</sup> और उन बाकी राष्ट्रों को जिन्हें महान और सम्मानीय ओस्मप्पर ने निर्वासित किया और सामरिया के नगर में बसाया, और यूफ्रेट्स नदी के पार के बाकी क्षेत्र में। और अब—

<sup>11</sup> यह उस पत्र की प्रति है जो उन्होंने उसे भेजी: “राजा अर्तक्षत्र को: आपके सेवक, यूफ्रेट्स के पार के क्षेत्र के पुरुष, और अब—

<sup>12</sup> राजा को यह जात हो, कि जो यहूदी आपके पास से आए हैं, वे हमारे पास यरूशलेम में आए हैं; वे विद्रोही और दुष्ट नगर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं और दीवारों को पूरा कर रहे हैं और नींव को सुधार रहे हैं।

<sup>13</sup> अब राजा को यह जात हो, कि यदि वह नगर पुनर्निर्मित किया गया और दीवारें पूरी की गईं, तो वे कर, सीमा शुल्क कर, या टोल नहीं देंगे, और यह राजाओं की आय के लिए हानिकारक होगा। <sup>14</sup> अब क्योंकि हम महल की सेवा में हैं, और यह हमारे लिए राजा की अपमान देखना उचित नहीं है, इस कारण हमने सूचना भेजी और राजा को सूचित किया है, <sup>15</sup> ताकि आपके पूर्वजों के अभिलेख पुस्तकों में खोज की जा सके। और आप अभिलेख पुस्तकों में खोजेंगे और जानेंगे कि वह नगर एक विद्रोही नगर है, और राजाओं और प्रांतों के लिए हानिकारक है, और उन्होंने उसमें पूर्व दिनों में विद्रोह किया है, इसीलिए वह नगर नष्ट कर दिया गया था। <sup>16</sup> हम राजा को सूचित कर रहे हैं कि, यदि वह नगर पुनर्निर्मित किया गया और दीवारें पूरी की गईं, तो आपके पास यूफ्रेट्स के पार के प्रातं में कोई अधिकार नहीं रहेगा।”

## एज्ञा

<sup>17</sup> तब राजा ने उत्तर भेजा: “रहम सेनापति को, शिमशै लेखक को, और उनके बाकी सहयोगियों को जो सामरिया में रहते हैं, और यूफ्रेट्स के पार के बाकी क्षेत्र में: शांति। और अब—

<sup>18</sup> जो पत्र आपने हमें भेजा है, वह अनुवादित किया गया और मेरे सामने पढ़ा गया है। <sup>19</sup> और मेरे द्वारा एक आदेश जारी किया गया है, और खोज की गई है, और यह पाया गया है कि वह नगर पूर्व दिनों में राजा औं के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है, कि उसमें विद्रोह और विद्रोह किए गए हैं, <sup>20</sup> कि शक्तिशाली राजा औं ने यरूशलेम पर शासन किया है, यूफ्रेट्स के पार के सभी प्रांतों पर शासन करते हुए, और उन्हें कर, सीमा शुल्क कर, और टोल दिया गया था। <sup>21</sup> अब एक आदेश जारी करें कि इन लोगों को काम करने से रोका जाए, ताकि यह नगर पुनर्निर्मित न हो जब तक कि मेरे द्वारा एक आदेश जारी न किया जाए। <sup>22</sup> इस मामले की उपेक्षा न करने के लिए सावधान रहें। राजा औं के लिए हानि क्यों बढ़े?

<sup>23</sup> तब, जैसे ही राजा अर्तक्षत्र के पत्र की प्रति रहम, शिमशै लेखक, और उनके सहयोगियों के सामने पढ़ी गई, वे जल्दी से यहूदियों के पास यरूशलेम गए और उन्हें सेन्य बल द्वारा रोक दिया।

<sup>24</sup> तब यरूशलेम में परमेश्वर के घर का काम बंद हो गया, और यह फारस के राजा दायरिश के शासनकाल के दूसरे वर्ष तक रुका रहा।

**5** जब भविष्यद्वक्ता, हाँगौ भविष्यद्वक्ता और इदो के पुनर्जकर्याने यहूदा और यरूशलेम में यहूदियों से भविष्यवाणी की उनके ऊपर इसाएल के परमेश्वर के नाम से, <sup>2</sup> तब शालतीएल के पुनर्जब्बाबेल और योसादक के पुनर्येशूआ उठे और यरूशलेम में परमेश्वर के भवन का पुनर्निर्माण करने लगे; और परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता उनके साथ थे, उनका समर्थन कर रहे थे।

<sup>3</sup> उसी समय, तत्त्वै, जो यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांत के राज्यपाल थे, और शेतर-बोजैन और उनके सहयोगी उनके पास आए और उनसे इस प्रकार बोले: “किसने तुम्हें इस मंदिर का पुनर्निर्माण करने और इस संरचना को पूरा करने का आदेश दिया?” <sup>4</sup> तब हमने उन्हें उन लोगों के नाम बताए जो इस भवन का पुनर्निर्माण कर रहे थे। <sup>5</sup> परंतु उनके परमेश्वर की दृष्टि यहूदियों के पुरानियों पर थी, और उन्होंने उन्हें नहीं रोका जब तक कि दायरिश को एक रिपोर्ट नहीं भेजी गई, और इसके बारे में एक लिखित उत्तर वापस नहीं आया।

<sup>6</sup> यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जो तत्त्वै, जो यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांत के राज्यपाल थे, और शेतर-बोजैन और उनके सहयोगियों, जो यूफ्रेट्स के पार के अधिकारी थे, ने राजा दायरिश को भेजा। <sup>7</sup> उन्होंने उसे एक रिपोर्ट भेजी जिसमें इस प्रकार लिखा था: ‘राजा दायरिश के लिए: सभी शांति।

<sup>8</sup> राजा को यह ज्ञात हो कि हम यहूदा के प्रांत में गए हैं, महान परमेश्वर के घर में, जो बड़े पत्थरों से बनाया जा रहा है, और दीवारों में लकड़ी लगाई जा रही है, और यह कार्य लगन से किया जा रहा है और उनके हाथों में प्रगति कर रहा है।

<sup>9</sup> तब हमने उन पुरानियों से पूछा, और उनसे इस प्रकार कहा: किसने तुम्हें इस मंदिर का पुनर्निर्माण करने और इस संरचना को पूरा करने का आदेश दिया? <sup>10</sup> हमने उनसे उनके नाम भी पूछे, ताकि हम आपको सूचित कर सकें, और ताकि हम उन पुरुषों के नाम लिख सकें जो उनके नेता थे।

<sup>11</sup> और यह उत्तर उन्होंने हमें दिया: हम स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के सेवक हैं, और उस मंदिर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं जो कई वर्षों पहले बनाया गया था, जिसे इसाएल के एक महान राजा ने बनाया और पूरा किया था। <sup>12</sup> परंतु क्योंकि हमारे पिता औं ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोधित किया, उन्होंने उन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर, जो एक चल्दी था, के हाथ में सौंप दिया, जिसने इस मंदिर को नष्ट कर दिया और लोगों को बाबुल ले गया।

<sup>13</sup> हालांकि, बाबुल के राजा क्युरस के पहले वर्ष में, राजा क्युरस ने इस परमेश्वर के घर का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया। <sup>14</sup> साथ ही परमेश्वर के घर के सोने और चांदी के बर्नन, जो नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मंदिर से लिए थे और बाबुल के मंदिर में लाए थे, इन्हें राजा क्युरस ने बाबुल के मंदिर से लिया, और इन्हें शेषबज्जर नामक व्यक्ति को दिया, जिसे उन्होंने राज्यपाल नियुक्त किया था। <sup>15</sup> और उन्होंने उससे कहा, “इन बर्ननों को ले जाओ, और इन्हें यरूशलेम के मंदिर में ले जाओ, और परमेश्वर का घर अपनी जगह पर पुनर्निर्मित हो।”

<sup>16</sup> तब वह शेषबज्जर आया और यरूशलेम में परमेश्वर के घर की नींव रखी; और तब से अब तक यह निर्माणाधीन है, और यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

## एज्ञा

<sup>17</sup> और अब, यदि राजा को यह अच्छा लगे, तो राजा के खजाने के घर में, जो बाबुल मैं है, खोज की जाए कि क्या राजा क्यूरस ने यरूशलेम में इस परमेश्वर के घर का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया था; और राजा हमें इस मामले के बारे में अपना निर्णय भेजें।"

**6** तब राजा दारा ने एक आज्ञा जारी की, और बाबुल में जहाँ खजाने रखे जाते थे, वहाँ के अभिलेखों में खोज की गई। <sup>2</sup> और एक स्क्रॉल एकबाताना में मिला, जो मीडिया प्रात के लिए था, और उसमें इस प्रकार लिखा था: "स्मरणपत्र—<sup>3</sup> राजा काइरस के पहले वर्ष में, काइरस राजा ने एक आज्ञा जारी की: यरूशलेम में परमेश्वर के घर के विषय में, उस घर को, जहाँ बलिदान चढ़ाए जाते हैं, पुनः निर्मित किया जाए, और उसकी नींव को बनाए रखा जाए, उसकी ऊँचाई साठ हाथ हो; <sup>4</sup> बड़ी-बड़ी पर्सरों की तीन परतों और एक लकड़ी की परत के साथ। और खर्च राजा के खजाने से दिया जाए। <sup>5</sup> साथ ही, परमेश्वर के घर के सोने और चांदी के बर्बन, जो नकूदनेस्सर ने

यरूशलेम के मंदिर से लेकर बाबुल लाए थे, वापस किए जाएं और यरूशलेम के मंदिर में उनके स्थानों पर लाए जाएं; और उन्हें परमेश्वर के घर में रखा जाए।"

<sup>6</sup> अब इसलिए, तत्त्व, यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांत के राज्यपाल, शेथर-बोज्जन, और आपके सहयोगी, उस प्रांत के अधिकारी, वहाँ से दूर रहें। <sup>7</sup> परमेश्वर के घर के उस कार्य को अकेला छोड़ दें; यहूदियों के राज्यपाल और यहूदियों के बुजुर्ग उस परमेश्वर के घर को उसकी जगह पर पुनः निर्मित करें।

<sup>8</sup> इसके अलावा, मैं यहूदियों के इन बुजुर्गों के लिए परमेश्वर के उस घर के पुनर्निर्माण में क्या करना है, इस पर एक आज्ञा जारी करता हूँ: पूरा खर्च इन लोगों को राजा के खजाने से यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांतों के करों से दिया जाए, और वह बिना किसी रुकावट के हो। <sup>9</sup> और जो कुछ भी आवश्यक हो—स्वर्ग के परमेश्वर के लिए होमबलि के लिए बैल, मेडे, और भेड़ के बच्चे, गेहूं, नमक, दारखम्थू, और अभिषेक का तेल, जैसा कि यरूशलेम के याजक मार्गों— उन्हें प्रतिदिन बिना किसी कमी के दिया जाए, <sup>10</sup> ताकि वे स्वर्ग के परमेश्वर की स्त्रीकार्य बलिदान चढ़ा सकें और राजा और उसके पुत्रों के जीवन के लिए प्रार्थना कर सकें।

<sup>11</sup> और मैंने यह आज्ञा जारी की है कि जो कोई इस आज्ञा का उल्लंघन करता है, उसके घर से एक लकड़ी खींची जाए और उस पर लटका दिया जाए, और

उसके घर को इस कारण से कूड़े का ढेर बना दिया जाए। <sup>12</sup> और वह परमेश्वर जिसने अपना नाम वहाँ निवास करने के लिए रखा है, किसी भी राजा या लोगों को जो इसे बदलने का प्रयास करता है, ताकि यरूशलेम में परमेश्वर के उस घर को नष्ट कर सके, उसे उलट दे। मैं, दारा, ने यह आज्ञा जारी की है: इसे पूरी तत्परता से पूरा किया जाए!"

<sup>13</sup> तब तब तत्त्व, यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांत के राज्यपाल, शेथर-बोज्जन और उनके सहयोगियों ने राजा दारा द्वारा भेजे गए आदेश को पूरी तत्परता से पूरा किया। <sup>14</sup> और यहूदियों के बुजुर्ग हाग्गे भविष्यद्वक्ता और इद्वे के पुत्र जकर्याह की विष्ववाणी के माध्यम से निर्माण में सफल हुए। और उन्होंने इसाएल के परमेश्वर की आज्ञा और काइरस, दारा, और फारस के राजा अर्तक्षत्र की आज्ञा के अनुसार निर्माण पूरा किया। <sup>15</sup> यह मंदिर अदार महीने के तीसरे दिन पूरा हुआ; यह राजा दारा के शासन के छठे वर्ष का था।

<sup>16</sup> और इसाएल के पुत्रों, याजकों, लेवियों, और बाकी निर्वासितों ने परमेश्वर के इस घर की समर्पण को आनंद के साथ मनाया। <sup>17</sup> उन्होंने परमेश्वर के इस मंदिर की समर्पण के लिए सौ बैल, दो सौ मेडे, चार सौ भेड़ के बच्चे, और पूरे इसाएल के लिए पापबलि के रूप में बारह नर बकरे, इसाएल के गोत्रों की संख्या के अनुसार, चढ़ाए। <sup>18</sup> तब उन्होंने याजकों को उनके विभागों में और लेवियों को उनकी सेवाओं में यरूशलेम में परमेश्वर की सेवा के लिए नियुक्त किया, जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है।

<sup>19</sup> निर्वासितों ने पहले महीने के बौद्धवें दिन फस हनाया। <sup>20</sup> क्योंकि याजकों और लेवियों ने एक साथ अपने आप को शुद्ध किया था; वे सभी शुद्ध थे। इसलिए उन्होंने सभी निर्वासितों के लिए, अपने भाईयों याजकों के लिए और अपने लिए फसह का मेमना वध किया। <sup>21</sup> तब इसाएल के पुत्र जो निर्वासन से लौटे थे, और वे सभी जिन्होंने भूमि की जातियों की अशुद्धता से अपने आप को अलग किया था, इसाएल के परमेश्वर यहोवा की खोज करने के लिए, उन्होंने फसह खाया। <sup>22</sup> और उन्होंने बिना खमीर की रोटी का पर्व सात दिनों तक आनंद के साथ मनाया, क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनंदित किया था, और अश्शूर के राजा के हृदय को उनकी ओर मोड़ दिया था ताकि वे परमेश्वर के घर के कार्य में उन्हें प्रोत्साहित कर सकें, इसाएल के परमेश्वर।

## एज्ञा

**7** इन घटनाओं के बाद, फारस के राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में, एज्ञा, जो सरायाह का पुत्र था, जो अजर्याह का पुत्र था, जो हिलकिय्याह का पुत्र था, आया।<sup>2</sup> जो शल्लूम का पुत्र था, जो सादोक का पुत्र था, जो अहीतूब का पुत्र था।<sup>3</sup> जो अमर्याह का पुत्र था, जो अजर्याह का पुत्र था, जो मरायोथ का पुत्र था।<sup>4</sup> जो जरद्याह का पुत्र था, जो उज्जी का पुत्र था, जो बुकी का पुत्र था।<sup>5</sup> जो अबीशू का पुत्र था, जो फिनहास का पुत्र था, जो एलीआजर का पुत्र था, जो प्रधान याजक हारून का पुत्र था।<sup>6</sup> यह एज्ञा बाबुल से आया, और वह मूरा की व्यवस्था में निपुण शास्त्री था, जो इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी; और राजा ने उसे सब कुछ दिया जो उसने माँगा क्योंकि उसके परमेश्वर यहोवा का हाथ उस पर था।<sup>7</sup> इसाएल के कुछ पुत्र, याजक, लेवी, गायक, द्वारपाल, और मंदिर सेवक राजा अर्तक्षत्र के सातवें वर्ष में यरूशलेम को गए।<sup>8</sup> और एज्ञा यरूशलेम में पाँचवें महीने में आया, जो राजा के सातवें वर्ष में था।

<sup>9</sup> क्योंकि पहले महीने के पहले दिन उसने बाबुल से याका शुरू की; और पाँचवें महीने के पहले दिन वह यरूशलेम पहुँचा, क्योंकि उसके परमेश्वर का अच्छा हाथ उस पर था।<sup>10</sup> क्योंकि एज्ञा ने अपने हृदय को यहोवा की व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए, और उसे पालन करने के लिए, और इसाएल में उसकी विधियों और नियमों को सिखाने के लिए तैयार किया था।

<sup>11</sup> अब यह उस आदेश की प्रति है जो राजा अर्तक्षत्र ने एज्ञा याजक को दी थी, जो यहोवा की आज्ञाओं और इसाएल के लिए उसकी विधियों के शब्दों में निपुण शास्त्री था:

<sup>12</sup> “अर्तक्षत्र, राजाओं का राजा, स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के शास्त्री एज्ञा याजक को: संपूर्ण शांति। और अब—

<sup>13</sup> मैंने एक आदेश जारी किया है कि इसाएल के किसी भी लोगों में से, और उनके याजकों और लेवियों में से जो मेरे राज्य में हैं और यरूशलेम जाने के इच्छुक हैं, वे आपके साथ जा सकते हैं।<sup>14</sup> क्योंकि आप राजा और उसके सात सलाहकारों की ओर से भेजे गए हैं यहूदा और यरूशलेम के बारे में आपके परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार जाँच करने के लिए जो आपके हाथ में है,<sup>15</sup> और चांदी और सोना लाने के लिए जो राजा और उसके सलाहकारों ने स्वेच्छा से इसाएल के परमेश्वर को अर्पित किया है, जिसका निवास यरूशलेम में है,<sup>16</sup> उस सारी चांदी और सोने के साथ जो आपको बाबुल के पूरे प्रांत

में मिले, लोगों और याजकों की स्वैच्छिक भेट के साथ, जो अपने परमेश्वर के घर के लिए यरूशलेम में स्वेच्छा से अर्पित करते हैं,<sup>17</sup> इस पैसे से, इसलिए, आपको सावधानीपूर्वक बैत, मेढ़े, और भेड़ के बच्चे खरीदने चाहिए, उनके अन्न भेट और उनके पेय भेट के साथ, और उन्हें अपने परमेश्वर के घर की वेदी पर चढ़ाना चाहिए जो यरूशलेम में है।

<sup>18</sup> और जो कुछ आपको और आपके भाइयों को चांदी और सोने के शेष के साथ करना अच्छा लगे, उसे अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करें।<sup>19</sup> इसके अलावा जो बर्तन आपके परमेश्वर के घर की सेवा के लिए दिए गए हैं, उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के सामने पूरा कर दें।<sup>20</sup> और आपके परमेश्वर के घर की बाकी जरूरतों के लिए, जिनके लिए आपको अवसर मिल सकता है, उन्हें शाही खजाने से प्रदान करें।

<sup>21</sup> मैं, राजा अर्तक्षत्र, यूफ्रेट्स नदी के पार के प्रांतों में सभी खजांची को एक अदेश जारी करता हूँ, कि जो कुछ भी स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के शास्त्री एज्ञा याजक आपसे माँगे, उसे सावधानीपूर्वक किया जाए,<sup>22</sup> सौ किकर चांदी तक, सौ कोर गेहूँ, सौ बाथ दाखमधु, सौ बाथ तेल, और आवश्यकता के अनुसार नमक।<sup>23</sup> जो कुछ स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा आदेशित किया गया है, उसे स्वर्ग के परमेश्वर के घर के लिए उत्साह के साथ किया जाए, ताकि राजा और उसके पुत्रों के राज्य के खिलाफ क्रोध न हो।<sup>24</sup> हम आपको यह भी सूचित करते हैं कि किसी भी याजक, लेवी, गायक, द्वारपाल, मंदिर सेवक, या इस परमेश्वर के घर के अन्य सेवकों पर कर, कराधान, या शुल्क लगाना अनुमति नहीं है।

<sup>25</sup> और आप, एज्ञा, अपने परमेश्वर की बुद्धि के अनुसार जो आपके हाथ में है, यायाधीशों और यायाधीशों को नियुक्त करें ताकि वे यूफ्रेट्स के पार के प्रांत में सभी लोगों का न्याय कर सकें, जो आपके परमेश्वर की विधियों को जानते हैं; और जो उन्हें नहीं जानते, उन्हें आप सिखाएँ।<sup>26</sup> और जो कोई आपके परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था का पालन नहीं करता, उस पर सख्ती से न्याय किया जाए, चाहे वह मृत्यु हो, निर्वसन हो, सपत्नि की जब्ती हो, या कारावास हो।”

<sup>27</sup> धन्य हो यहोवा, हमारे पितरों का परमेश्वर, जिसने राजा के हृदय में ऐसी बात डाली है, कि यरूशलेम में यहोवा के घर को महिमा दे,<sup>28</sup> और मुझे राजा, उसके सलाहकारों, और सभी राजा के शक्तिशाली अधिकारियों के सामने अनुग्रह दिया है। इसलिए मैं अपने परमेश्वर

## एज्ञा

यहोवा के हाथ के अनुसार मजबूत हुआ, और मैंने इसाएल से प्रमुख पुरुषों को अपने साथ जाने के लिए इकट्ठा किया।

**8** अब ये उनके पिताओं के घरानों के प्रधान और उन लोगों की वंशवाली सूची है जो राजा अर्थक्षत्र के शासनकाल में मेरे साथ बाबुल से ऊपर आएः

<sup>2</sup> फीनेहास के पुत्रों में से, गेर्शोम; इतामार के पुत्रों में से, दानियेल; दानिद के पुत्रों में से, हत्तूश; <sup>3</sup> शकन्याह के पुत्रों में से जो परोश के पुत्र थे, जकर्याह, और उसके साथ 150 पुरुष जो वंशवाली में सूचीबद्ध थे; <sup>4</sup> पाहथ-मोआब के पुत्रों में से, एलिहोएनाय जेरहाह का पुत्र, और उसके साथ 200 पुरुष; <sup>5</sup> जातू के पुत्रों में से, शकन्याह, यहजीएल का पुत्र, और उसके साथ 300 पुरुष; <sup>6</sup> और आदिन के पुत्रों में से, एबेद योहानाथ का पुत्र, और उसके साथ 50 पुरुष; <sup>7</sup> और एलाम के पुत्रों में से, यशायाह अतल्याह का पुत्र, और उसके साथ 70 पुरुष; <sup>8</sup> और शेफत्याह के पुत्रों में से, जबद्याह मीकाएल का पुत्र, और उसके साथ 80 पुरुष; <sup>9</sup> योआब के पुत्रों में से, ओबद्याह यहिएल का पुत्र, और उसके साथ 218 पुरुष; <sup>10</sup> और बानी के पुत्रों में से, श्लोमिय योसिफ्याह का पुत्र, और उसके साथ 160 पुरुष; <sup>11</sup> और बेबाई के पुत्रों में से, जकर्याह बेबाई का पुत्र, और उसके साथ 28 पुरुष; <sup>12</sup> और अजगद के पुत्रों में से, योहानान हक्कतान का पुत्र, और उसके साथ 110 पुरुष; <sup>13</sup> और अदोनिकाम के पुत्रों में से, जो अतिम थे, ये उनके नाम हैं: एलीफेलेट, येर्हेल, और शमायाह, और उनके साथ 60 पुरुष; <sup>14</sup> और बिगवे के पुत्रों में से, ऊथै और जब्बूद, और उनके साथ 70 पुरुष।

<sup>15</sup> अब मैंने उन्हें अहवा की नदी के पास इकट्ठा किया, जहां हम तीन दिन तक डेरा डाले रहे; और मैंने लोगों और याजकों को देखा, और वहां कोई लेवी नहीं पाया। <sup>16</sup> इसलिए मैंने एलीपेजेर, एरियल, शमायाह, एलनाथन, यारीब, एलनाथन, नाथन, जकर्याह, और मशुल्लाम, प्रमुख पुरुषों को बुलाया, और योयारीब और एलनाथन को, जो शिक्षक थे। <sup>17</sup> और मैंने उन्हें कासिफिया के स्थान पर प्रमुख व्यक्ति इद्दो के पास भेजा, और मैंने उन्हें बताया कि इद्दो और उसके भाइयों, मंदिर के सेवकों से, जो कासिफिया के स्थान पर थे, क्या कहना है, कि वे हमारे लिए हमारे परमेश्वर के घर के लिए सेवक लाएँ। <sup>18</sup> और हमारे परमेश्वर के अच्छे हाथ के अनुसार, उन्होंने हमें एक समझदार व्यक्ति लाकर दिया जो महीनी के पुत्रों में से था, जो लेवी का पुत्र था, जो इसाएल का पुत्र था, अर्थात् शेरब्याह और उसके पुत्र और भाई, अठारह

पुरुष; <sup>19</sup> और हशब्याह और यशायाह मरारी के पुत्रों में से, उसके भाई और उनके पुत्र, बीस पुरुष; <sup>20</sup> और 220 मंदिर सेवक, जिन्हें दाऊद और नेताओं ने लेवियों की सेवा के लिए नियुक्त किया था; उनमें से सभी को नाम से निर्दिष्ट किया गया था।

<sup>21</sup> तब मैंने अहवा की नदी पर उपवास की घोषणा की, ताकि हम अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करें और उससे हमारे लिए, हमारे बच्चों के लिए, और हमारी सभी संपत्ति के लिए सुरक्षित यात्रा मार्गों। <sup>22</sup> क्योंकि मुझे राजा से रैनिकों और घुड़सवारों की मांग करने में शर्म आई कि वे हमें रास्ते में दुश्मन से बचाएं, क्योंकि हमने राजा से कहा था, “हमारे परमेश्वर का हाथ उन सभी के लिए अनुकूल है जो उसे खोजते हैं, लेकिन उसकी शक्ति और उसका क्रोध उन सभी के खिलाफ है जो उसे छोड़ देते हैं।” <sup>23</sup> इसलिए हमने उपवास किया और इस मामले में अपने परमेश्वर को खोजा, और उसने हमारी प्रार्थना सुनी।

<sup>24</sup> तब मैंने बारह प्रमुख याजकों को चुना: शेरब्याह, हशब्याह, और उनके साथ उनके दस भाई; <sup>25</sup> और मैंने उन्हें चांदी, सोना, और बर्तन तौले, जो हमारे परमेश्वर के घर के लिए भेंट थे, जो राजा, उसके सलाहकार, उसके अधिकारी, और सभी इसाएलियों ने जो उपस्थित थे, दिए थे। <sup>26</sup> इसलिए मैंने उनके हाथों में 650 किकर चांदी, और चांदी के बर्तन जिनका मूल्य 100 किकर था, और 100 सोने के किकर, <sup>27</sup> और 20 सोने के कटोरे जिनका मूल्य एक हजार दारिक था, और दो दो बर्तन अच्छे चमकदार कटोरे के, जो सोने के समान कीमती थे।

<sup>28</sup> तब मैंने उनसे कहा, “तुम प्रभु के लिए पवित्र हो, और बर्तन पवित्र हैं, और चांदी और सोना तुम्हारे पिताओं के परमेश्वर के लिए एक स्वैच्छिक भेट है।” <sup>29</sup> उन्हें देखो और तब तक रखो जब तक तुम उन्हें यरूशलेम में प्रमुख याजकों, लेवियों, और इसाएल के पिताओं के घरानों के प्रमुखों के सामने तौल न लो, प्रभु के घर के कक्षों में। <sup>30</sup> इसलिए याजकों और लेवियों ने तौली हुई चांदी, सोना, और बर्तन संभाले, उन्हें हमारे परमेश्वर के घर यरूशलेम ले जाने के लिए।

<sup>31</sup> तब हम पहले महीने के बारहवें दिन अहवा की नदी से यरूशलेम जाने के लिए यात्रा पर निकले; और हमारे परमेश्वर का हाथ हमारे ऊपर था, और उसने हमें रास्ते में दुश्मन के हाथ से और धातों से बचाया। <sup>32</sup> इसलिए हम यरूशलेम पहुंचे और वहां तीन दिन तक रहे।

## एज्ञा

<sup>33</sup> और चौथे दिन चांदी, सोना, और बर्टन तौले गए हमारे परमेश्वर के घर में, उरियाह के पुत्र मेरेमोत याजक के हाथ में, और उसके साथ फीनेहास का पुत्र एलीएजेर था, और उनके साथ लेवी योसाबाद येशुआ का पुत्र और नोदयाह बिश्वुई का पुत्र थे। <sup>34</sup> सब कुछ गिना और तौला गया, और उस समय सभी वजन दर्ज किए गए।

<sup>35</sup> जो निर्वासित बंधन से आए थे उन्होंने इसाएल के परमेश्वर को होमबलि चढ़ाईः सभी इसाएल के लिए बाहर बैल, छियानवे मेडे, सत्तर-सात भेड़ें, बाहर बकरे पापबलि के रूप में— सभी प्रभु के लिए होमबलि के रूप में। <sup>36</sup> तब उन्होंने राजा के आदेशों को राजा के अधीनस्थों और यूकूटस के पार के प्रातों के राज्यपालों को सौंप दिया, और उन्होंने लोगों और परमेश्वर के घर का समर्थन किया।

**९** अब जब ये बातें पूरी हो गईं, नेताओं ने मेरे पास आकर कहा, “इसाएल के लोग, याजक और लेवी लोग अपने आपको देश के लोगों से अलग नहीं कर पाए हैं, उनके धृणित कार्यों के अनुसार—कनानी, हिती, परिज्जी, यद्बूली, अमोनी, मोआबी, मिस्री और एमोरी। <sup>2</sup> क्योंकि उन्होंने उनकी कुछ बेटियों को अपने और अपने पुत्रों के लिए परियाँ बना लिया है, ताकि पवित्र वंश देश के लोगों के साथ मिल जाए; वास्तव में, नेताओं और अधिकारियों के हाथ इस अविश्वास में सबसे आगे रहे हैं।”

<sup>३</sup> जब मैंने इस बात के बारे में सुना, तो मैंने अपने वस्त और अपनी चोगा काढ़ डाली, और अपने सिर और दाढ़ी के कुछ बाल उत्साह लिए, और स्तब्ध होकर बैठ गया। <sup>४</sup> तब इसाएल के परमेश्वर के वचनों से कांपने वाले सभी लोग निर्वासितों की अविश्वास के कारण मेरे पास इकट्ठा हुए, और मैं संध्या के भेंट तक स्तब्ध बैठा रहा।

<sup>५</sup> परंतु संध्या के भेंट के समय मैं अपनी विनम्रता से उठा, यहाँ तक कि मेरे वस्त और मेरी चोगा फटी हुई थी, और मैं अपने घुटनों पर झुक गया और अपने हाथों को अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाया; <sup>६</sup> और मैंने कहा,

“हे मेरे परमेश्वर, मैं शर्मिदा और लज्जित हूँ कि मैं अपना मुख तुझ पर उठाऊँ, मेरे परमेश्वर, क्योंकि हमारे पाप हमारे सिर से ऊपर उठ गए हैं, और हमारा अपराध आकाश तक बढ़ गया है। <sup>७</sup> हमारे पितरों के दिनों से लेकर आज तक हम बड़े अपराध में रहे हैं, और हमारे पापों के कारण हम, हमारे राजा और हमारे याजक देश के राजाओं के हाथों में सौंप दिए गए हैं, तलवार, बंदीगृह, लूट और खुली लज्जा के लिए, जैसा कि आज है।

<sup>८</sup> परंतु अब थोड़ी देर के लिए हमारे परमेश्वर यहोवा से अनुग्रह प्राप्त हुआ है, कि हमें एक बचा हुआ अवशेष छोड़ दे और हमें उसके पवित्र स्थान में एक कील दे, ताकि हमारा परमेश्वर हमारी आँखों को प्रकाशित करे और हमारी दासता में हमें थोड़ी राहत दे। <sup>९</sup> क्योंकि हम दास हैं, फिर भी हमारी दासता में हमारे परमेश्वर ने हमें नहीं छोड़ा है, बल्कि फारस के राजाओं की दृष्टि में हम पर कृपा की है, ताकि हमें पुनर्जीवित करे, हमारे परमेश्वर के घर को उठाए, उसके खंडहरों को बहाल करे, और हमें यहूदा और यरूशलैम में एक दीवार दे।

<sup>१०</sup> और अब, हमारे परमेश्वर, हम इसके बाद क्या कहें? क्योंकि हमने तेरी आज्ञाओं को छोड़ दिया है, <sup>११</sup> जो तूने अपने सेवकों भविष्यद्वक्ताओं द्वारा आज्ञा दी है, यह कहते हुए, जिस देश में तुम प्रवेश करेन जा रहे हो उसे प्राप्त करने के लिए वह एक अशुद्ध देश है देश के लोगों की अशुद्धता के साथ, उनके धृणित कार्यों के साथ जो इसे एक छाँसे से दूसरे छाँसे तक भर दिया है, और उनकी अशुद्धता के साथ। <sup>१२</sup> इसलिए अब अपनी बेटियों को उनके पुत्रों को न दो, न उनकी बेटियों को अपने पुत्रों के लिए लो, और कभी भी उनकी शांति या उनकी समृद्धि की खोज न करो, ताकि तुम मजबूत हो और देश की अच्छी चीजें खाओ, और इसे अपने पुत्रों के लिए सदा के लिए एक विरासत के रूप में छोड़ दो।”

<sup>१३</sup> और हमारे बुरे कर्मों और हमारे बड़े अपराध के कारण जो कुछ हम पर आया है, चूँकि तू हमारे परमेश्वर ने हमें हमारे अपराध से अधिक छोड़ दिया है, और हमें एक बचा हुआ अवशेष दिया है, <sup>१४</sup> क्या हम पिर से तेरी आज्ञाओं को ठोड़े और उन लोगों के साथ विवाह करेंगे जो इन धृणित कार्यों को करते हैं? क्या तू हम पर इतना ग्रोधित नहीं होगा कि हमें नष्ट कर दे, जब तक कि कोई अवशेष न बचे और न कोई बच सके? <sup>१५</sup> इसाएल के परमेश्वर यहोवा, तू धर्मी है, क्योंकि हम एक बचा हुआ अवशेष के रूप में बचे हैं, जैसा कि आज है। देख, हम तेरे सामने अपने अपराध में हैं, क्योंकि इस कारण से कोई भी तेरे सामने खड़ा नहीं हो सकता।”

**१०** जब एज्ञा प्रार्थना कर रहा था और अंगीकार कर रहा था, रो रहा था और परमेश्वर के घर के सामने दंडवत कर रहा था, तब इसाएल से पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की एक बहुत बड़ी सभा उसके पास इकट्ठी हुई; क्योंकि लोग कड़वे आंसू बहा रहे थे। <sup>२</sup> और शोकन्याह, जो यहिएल का पुत्र और एलाम के पुत्रों में से एक था, ने एज्ञा से कहा, “हमने अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासघात किया है, और देश के लोगों से विदेशी स्त्रियों

## एज्ञा

से विवाह किया है; फिर भी अब इसाएल के लिए आशा है।<sup>3</sup> तो अब आओ, हम अपने परमेश्वर के साथ एक वाचा करें कि हम सभी पतियों और उनके बच्चों को भेज देंगे, मेरे प्रापु की ओर हमारे परमेश्वर की आज्ञा से कांपने वालों की सलाह के अनुसार; और यह व्यवस्था के अनुसार किया जाए।<sup>4</sup> उठो! क्योंकि यह मामला तुम्हारी जिम्मेदारी है, लेकिन हम तुम्हारे साथ रहेंगे; साहसी बनो और कार्य करो।"

<sup>5</sup> तब एज्ञा ने खड़े होकर प्रमुख याजकों, लेवियों और समस्त इसाएल से शपथ दिलावाई कि वे इस प्रस्ताव के अनुसार कार्य करेंगे; सो उन्होंने शपथ ली।<sup>6</sup> तब एज्ञा परमेश्वर के घर के सामने से उठकर यहोहाना के पुत्र एलियाशिव के कक्ष में गया। हालांकि वह वहाँ गया, उसने न तो रोटी खाई और न ही पानी पिया, क्योंकि वह निर्वासितों की विश्वासघात के कारण शोक कर रहा था।

<sup>7</sup> सो उन्होंने यहूदा और यरूशलैम में सभी निर्वासितों को यह घोषणा की कि वे यरूशलैम में इकट्ठा हों,<sup>8</sup> और जो कोई तीन दिनों के भीतर नेताओं और बुजुर्गों की सलाह के अनुसार नहीं आएगा, उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाएगी और वह स्वयं निर्वासितों की सभा से बाहर कर दिया जाएगा।

<sup>9</sup> सो यहूदा और बिन्यामीन के सभी पुरुष तीन दिनों के भीतर यरूशलैम में इकट्ठे हुए। यह महीने का नौवा महीना था और महीने का बीसवां दिन था, और सभी लोग परमेश्वर के घर के सामने खुले चौक में बैठे थे, इस मामले और भारी बारिश के कारण कांपते हुए।<sup>10</sup> तब याजक एज्ञा खड़ा हुआ और उनसे कहा, "तुमने विश्वासघात किया है और विदेशी पतियों से विवाह किया है, इसाएल के अपराध को बढ़ाते हुए।<sup>11</sup> तो अब, अपने पूर्वों के परमेश्वर यहोवा के सामने अंगीकार करो और उसकी इच्छा पूरी करो; और देश के लोगों और विदेशी पतियों से अलग हो जाओ।"

<sup>12</sup> तब सारी सभा ने ऊँची आवाज में उत्तर दिया, "पह हमारा कर्तव्य है कि हम ठीक वरी करें जो आपने कहा है।<sup>13</sup> हालांकि, बहुत से लोग हैं, और यह बारिश का मौसम है, और हम खुले में खड़े नहीं हो सकते; और यह कार्य एक या दो दिनों में नहीं किया जा सकता, क्योंकि हमने इस मामले में बहुत अधिक अपराध किया है।<sup>14</sup> हमार नेता पूरी सभा का प्रतिनिधित्व करें, और हमारे नगरों में जिन्होंने विदेशी पतियों से विवाह किया है, वे निर्धारित समय पर आएं, प्रत्येक नगर के बुजुर्गों और न्यायाधीशों के साथ, जब तक कि इस मामले के कारण

हमारे परमेश्वर का प्रचंड क्रोध हमसे दूर न हो जाए।"<sup>15</sup> केवल योनाथान, जो असाहेल का पुत्र था, और याहजियाह, जो तिकाह का पुत्र था, इसका विरोध करते थे, मेशुल्लाम और शब्बेताई लेवी उनके समर्थन में थे।

<sup>16</sup> लेकिन निर्वासितों ने ऐसा किया। और याजक एज्ञा ने उनके पूर्वों के प्रत्येक परिवार के प्रमुख पुरुषों का चयन किया, उनमें से सभी नाम से। सो उन्होंने इस मामले की जांच करने के लिए दसवें महीने के पहले दिन को बुलाया।<sup>17</sup> और उन्होंने पहले महीने के पहले दिन तक उन सभी पुरुषों की जांच पूरी कर ली जिन्होंने विदेशी पतियों से विवाह किया था।

<sup>18</sup> अब याजकों के पुरों में से जिन्होंने विदेशी पतियों से विवाह किया था, ये पाए गए: येशूआ के पुत्र योसादक और उनके भाई: मासेयाह, एलीएजर, यारीब, और गेलत्याह।<sup>19</sup> उन्होंने अपनी पतियों को भेजने का वचन दिया, और दोषी होने के कारण, उन्होंने अपने अपराध के लिए झुंड का एक मेढ़ा बढ़ाया।<sup>20</sup> और इमरिं के पुत्रों में से: हनानी और जेबदियाह;<sup>21</sup> और हारिम के पुत्रों में से: मासेयाह, एलियाह, शेमायाह, यहिएल, और उज्जियाह;<sup>22</sup> और पाशहूर के पुत्रों में से: एलियोपै, मासेयाह, इशमाएल, नतनएल, योजबाद, और एलासाह।<sup>23</sup> और लेवियों में से: योजबाद, शिमी, केलायाह (अर्थात केलिता), पेतहायाह, यहूदा, और एलीएजर।<sup>24</sup> गायकों में से: एलियाशिब, और द्वारपालों में से: शल्लूम, तेलम, और ऊरी।<sup>25</sup> और इसाएल में से: परोष के पुत्रों में से: रमायाह, इज्जियाह, मल्कियाह, मिजामिन, एलीएजर, मल्कियाह, और बनायाह;<sup>26</sup> और एलाम के पुत्रों में से: मतन्याह, जकर्याह, यहिएल, अब्दी, येरेमोत, और एलियाह;<sup>27</sup> और जातू के पुत्रों में से: एलियोपै, एलियाशिब, मतन्याह, येरेमोत, जबाद, और अजीजा;<sup>28</sup> और बेवाई के पुत्रों में से: यहोहानान, हनन्याह, जब्बै, और अथलै;<sup>29</sup> और बानी के पुत्रों में से: मेशुल्लाम, मलूक, अदायाह, याशूब, शाल, और येरेमोत;<sup>30</sup> और पहथ-मोआब के पुत्रों में से: अदना, केलाल, बनायाह, मासेयाह, मतन्याह, बेजलेल, बिकूर्ह, और मनश्वे;<sup>31</sup> और हारिम के पुत्रों में से: एलीएजर, इश्शयाह, मल्कियाह, शेमायाह, शिमोन,<sup>32</sup> बिन्यामीन, मलूक, और शेमर्याह;<sup>33</sup> हाशूम के पुत्रों में से: मतनै, मतत्ताह, जबाद, एलीफेलेट, येरेमे, मनश्वे, और शिमी;<sup>34</sup> बानी के पुत्रों में से: मादे, अग्नाम, ऊएल,<sup>35</sup> बनायाह, बेदायाह, केलुही,<sup>36</sup> वनायाह, मरेमोत, एलियाशिब,<sup>37</sup> मतन्याह, मतनै, और यासू,<sup>38</sup> और बानी, और बिकूर्ह, शिमी,<sup>39</sup> और शालेयाह और नाथान और अदायाह,<sup>40</sup> मकनदेबाई, शशै, शरै,<sup>41</sup> अजरएल, शलेयाह, शेमर्याह,<sup>42</sup> शल्लूम, अमर्याह, और

## एज्ञा

यूसुफ।<sup>43</sup> नेबो के पुत्रों में से: येर्झेल, मतित्याह, जबाद,  
जेबिना, यद्वे, योएल, और बनायाह।

<sup>44</sup> इन सभी ने विदेशी पत्रियों से विवाह किया था, और  
उनमें से कुछ की पत्रियों से बच्चे भी थे।

## नहेमायाह

**१** हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। अब ऐसा हुआ कि विसलव महीने में, बीसवें वर्ष में, जब मैं सूसा, गढ़ में था, <sup>२</sup> कि हननी, मेरे भाइयों में से एक, और कुछ लोग यहूदा से आए; और मैंने उनसे उन यहूदियों के बारे में पूछा जो बच गए थे, जो बंधुआई से बच गए थे, और यरूशलेम के बारे में। <sup>३</sup> और उन्होंने मुझसे कहा, "जो लोग प्रांत में बंधुआई से बच गए हैं, वे बड़ी विपत्ति और अपमान में हैं, और यरूशलेम की दीवार टूटी हुई है और उसके फाटक आग से जल गए हैं।"

<sup>४</sup> अब जब मैंने ये बातें सुनीं, तो मैं बैठ गया और रोया, और कई दिनों तक शोक मनाया; और मैं खर्च के परमेश्वर के सामने उपवास और प्रार्थना कर रहा था। <sup>५</sup> और मैंने कहा, "यदि खर्च के परमेश्वर, महान और भयानक परमेश्वर, जो अपने प्रेम करने वालों और अपनी आज्ञाओं का पालन करने वालों के लिए अपनी वाचा और दया को बनाए रखता है: <sup>६</sup> अब आपकी कान ध्यान दें और आपकी अँखें खुली रहें, ताकि आप अपने सेवक की प्रार्थना सुन सकें जो मैं अब आपके सामने कर रहा हूँ, दिन और रात, आपके सेवक इसाएल के पुत्रों के लिए, उन पापों को स्वीकार करते हुए जो हमने आपके खिलाफ किए हैं— मैं और मेरे पिता का घराना पापी हैं। <sup>७</sup> हमने आपके खिलाफ बहुत भ्रष्टाचार किया है, और आपकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों का पालन नहीं किया जो आपने अपने सेवक मूसा को दिए थे।

<sup>८</sup> कृपया, उस वचन को याद करें जो आपने अपने सेवक मूसा को कहा था, "यदि तुम अविश्वसी हो, तो मैं तुम्हें लोगों के बीच बिखर द्वांग;" <sup>९</sup> लेकिन यदि तुम मेरी और लौट आओ और मेरी आज्ञाओं का पालन करो और उन्हें करो, तो चाहे तुम्हें से जो बिखरे हुए हों वे आकाश के सबसे दूरस्थ भाग में हों, मैं उन्हें वहाँ से इकट्ठा करूँगा और उन्हें उस स्थान पर लाऊँगा जिसे मैंने चुना है कि मेरा नाम वहाँ निवास करे। <sup>१०</sup> वे आपके सेवक और आपके लोग हैं जिन्हें आपने अपनी महान शक्ति और अपने मजबूत हाथ से छुड़ाया है। <sup>११</sup> कृपया, प्रभु, अपने सेवक की प्रार्थना पर ध्यान दें, और उन सेवकों की प्रार्थना पर जो आपके नाम का आदर करने में प्रसन्न होते हैं, और कृपया आज अपने सेवक को सफल बनाएं और इस व्यक्ति के सामने उसे दया प्रदान करें।" अब मैं राजा का प्याला भरने वाला था।

**२** और ऐसा हुआ कि निसान महीने में, राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष में, जब उसके सामने दाखमधु था, तो मैंने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। अब तक मैं उसके सामने उदास नहीं हुआ था। <sup>२</sup> तब राजा ने मुझसे कहा,

"तेरा चेहरा उदास क्यों है, जबकि तू बीमार नहीं है? यह तो हृदय की उदासी है।" तब मैं बहुत डर गया। <sup>३</sup> और मैंने राजा से कहा, "राजा सदा जीवित रहे। मेरा चेहरा उदास क्यों न हो, जब नगर, मेरे पूर्वजों की कब्रों का स्थान, उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से नष्ट हो गए हैं?" <sup>४</sup> तब राजा ने मुझसे कहा, "तू क्या मांग रहा है?" तब मैंने खर्च के परमेश्वर से प्रार्थना की। <sup>५</sup> और मैंने राजा से कहा, "यदि राजा को प्रसन्नता हो, और यदि आपके दासों को आपके सामने अनुग्रह मिला हो, तो मैं यह मांग करता हूँ कि आप मुझे यहूदा भेजें, मेरे पूर्वजों की कब्रों के नगर में, ताकि मैं उसे फिर से बना सकूँ।" <sup>६</sup> तब राजा ने मुझसे कहा, रानी उसके पास बैठी थी, "तेरी यात्रा कितनी लंबी होगी, और तू कब लौटाया?" इसलिए राजा को मुझे भेजने में प्रसन्नता हुई, और मैंने उसे एक निश्चित समय बताया। <sup>७</sup> और मैंने राजा से कहा, "यदि राजा को प्रसन्नता हो, तो मुझे पत्र दिए जाएं नदी के परे के प्रांतों के राज्यपालों के लिए, ताकि मैं यहूदा तक जाने की अनुमति दें, <sup>८</sup> और आसप के लिए एक पत्र, जो राजा के बन का रखवाता है, कि वह मुझे किले के फाटकों के लिए लकड़ी दें, जो मंदिर के पास है, नगर की दीवार के लिए, और उस घर के लिए जहाँ मैं जाऊँगा।" और राजा ने मुझे उन्हें दिया क्योंकि मेरे परमेश्वर का अच्छा हाथ मुझ पर था।

<sup>९</sup> तब मैं नदी के परे के प्रांतों के राज्यपालों के पास गया और उन्हें राजा के पत्र दिए। अब राजा ने मेरे साथ सेना के अधिकारी और घुड़सवार भेजे थे। <sup>१०</sup> जब होरोनीत संबलत और अमोनी अधिकारी तोबियाह ने इसके बारे में सुना, तो उन्हें बहुत अप्रसन्नता हुई कि कोई इसाएल के पुत्रों की भलाई के लिए आया है।

<sup>११</sup> इसलिए मैं यरूशलेम आया और वहाँ तीन दिन दिन रहा।

<sup>१२</sup> फिर मैं रात को उठा, मैं और कुछ लोग मेरे साथ थे। मैंने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के लिए मेरे हृदय में क्या ढाला था, और मेरे साथ कोई जानवर नहीं था सिवाय उस पर जिस पर जानवर था।

<sup>१३</sup> इसलिए मैं रात को घाटी के फाटक से डैगरन के झरने की दिशा में और गोबर के फाटक तक गया, और मैं यरूशलेम की दीवारों का निरीक्षण कर रहा था जो टूट गई थीं और उसके फाटक जो आग से नष्ट हो गए थे। <sup>१४</sup> फिर मैं फव्वारे के फाटक और राजा के तालाब तक गया, परंतु वहाँ मेरे जानवर के लिए कोई स्थान नहीं था।

<sup>१५</sup> इसलिए मैं रात को नाले के पास से ऊपर गया और दीवार का निरीक्षण किया। फिर मैं फिर से घाटी के फाटक में प्रवेश किया और लौट आया। <sup>१६</sup> अधिकारियों को नहीं पता था कि मैं कहाँ गया था क्या कर रहा था,

## नहेमायाह

और न ही मैंने यहूदियों, याजकों, कुलीनों, अधिकारियों, या बाकी लोगों को बताया था जो काम कर रहे थे।

<sup>17</sup> तब मैंने उनसे कहा, "तुम देख रहे हो कि हम किस बुरी स्थिति में हैं, कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक आग से जल गए हैं। आओ, हम यरूशलेम की दीवार को फिर से बनाएं, ताकि हम अब और अपमानित न हों।"<sup>18</sup> और मैंने उन्हें बताया कि मेरे परमेश्वर का हाथ मुझ पर कैसे अनुग्रहकारी था, और राजा के उन शब्दों के बारे में भी जो उसने मुझसे कहे थे। तब उन्होंने कहा, "आओ, हम उठें और निर्माण करें।" इसलिए उन्होंने अच्छे काम के लिए अपने हाथों को मजबूत किया।

<sup>19</sup> परंतु जब होरोनीत संबलत, अमोनी अधिकारी तौबियाह, और अरबी गेशम ने इसे सुना, तो उन्होंने हमारा मजाक उड़ाया और हमें तुच्छ समझा और कहा, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम राजा के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हो?"<sup>20</sup> इसलिए मैंने उन्हें उत्तर दिया और उनसे कहा, "सर्व का परमेश्वर हमें सफल बनाएगा; इसलिए हम उसके सेवक उठेंगे और निर्माण करेंगे, परंतु तुम्हारा यरूशलेम में कोई हिस्सा, अधिकार, या स्वाक नहीं है।"

**3** तब महायाजक एलियाशिब और उनके भाई याजकों ने भेड़ फाटक का निर्माण किया; उन्होंने इसे पवित्र किया और इसके दरवाजे स्थापित किए। उन्होंने इसे सी के मीनार और हननेल के मीनार तक पवित्र किया।<sup>21</sup> उनके बगल में यरीहो के लोगों ने निर्माण किया, और उनके बगल में इम्री के पुत्र ज़क्कूर ने निर्माण किया।<sup>22</sup> अब हसेनाह के पुत्रोंने मछली फाटक का निर्माण किया; उन्होंने इसकी बीमों को रखा और इसके दरवाजों को उसके बोल्ट और बार के साथ स्थापित किया।<sup>23</sup> उनके बगल में उरियाह के पुत्र, हक्कोज के पुत्र मेरिमोथ ने मरम्मत की। उनके बगल में बेरेकियाह के पुत्र, मेशोजाबेल के पुत्र मेशुल्लाम ने मरम्मत की। उनके बगल में बाना के पुत्र सादेक ने भी मरम्मत की।<sup>24</sup> इसके अलावा, उनके बगल में तकोआ के लोगों ने मरम्मत की, लेकिन उनके कुलीनों ने अपने स्वामियों के कार्य का समर्थन नहीं किया।<sup>25</sup> अब पासेह के पुत्र योयादा और बेसोदेया के पुत्र मेशुल्लाम ने पुराने फाटक की मरम्मत की; उन्होंने इसकी बीमों को रखा और इसके दरवाजों को उसके बोल्ट और बार के साथ स्थापित किया।<sup>26</sup> उनके बगल में गिबोन के लोगों ने भी मरम्मत की, जो नदी के पार प्रांत के राज्यपाल के

आधिकारिक स्थान के लिए थी।<sup>27</sup> उनके बगल में हरहैया के पुत्र उज्जीएल, सुनारों में से, ने मरम्मत की। और उनके बगल में हनयाह, सुर्वाधित वरत्तों में से एक, ने मरम्मत की। और उन्होंने यरूशलेम को चौड़ी दीवार तक बहाल किया।<sup>28</sup> उनके बगल में हूर के पुत्र रपायाह, यरूशलेम के आधे जिले के अधिकारी, ने मरम्मत की।<sup>29</sup> उनके बगल में हरुमाफ के पुत्र यदायाह ने अपने घर के सामने मरम्मत की। और उनके बगल में हशबन्याह के पुत्र हतूश ने मरम्मत की।<sup>30</sup> हरिम के पुत्र मल्कियाह और पथ्थ-मोआब के पुत्र हश्शूब ने एक और खंड की मरम्मत की और भट्टियों के मीनार की।<sup>31</sup> उनके बगल में हलोहेश के पुत्र शल्लूम, यरूशलेम के आधे जिले के अधिकारी, ने मरम्मत की, वह और उसकी बेटियाँ।<sup>32</sup> हनून और ज्ञानोआ के निवासियों ने घाटी फाटक की मरम्मत की; उन्होंने इसे बनाया और इसके दरवाजों को उसके बोल्ट और बार के साथ स्थापित किया, और दीवार के एक हजार हाथियों को मलिन फाटक तक।<sup>33</sup> और मल्कियाह, रेकाब के पुत्र, बेथ-हक्केरम के जिले के अधिकारी, ने मलिन फाटक की मरम्मत की; उसने इसे बनाया और इसके दरवाजों को उसके बोल्ट और बार के साथ स्थापित किया।<sup>34</sup> और शल्लून, कोल-हीजेह के पुत्र, मिजापा के जिले के अधिकारी, ने फव्वारा फाटक की मरम्मत की; उसने इसे बनाया, इसे ढका, और इसके दरवाजों को उसके बोल्ट और बार के साथ स्थापित किया, और शेलह के कुंड की दीवार को राजा के बरीचे तक, जहाँ से दाऊद के नगर से नीचे उतरते हैं।<sup>35</sup> उसके बाद, अज़बुक के पुत्र नहेमायाह, बेथ-ज़ज़र के आधे जिले के अधिकारी, ने मरम्मत की दाऊद के कब्रों के सामने के बिंदु तक, और कृत्रिम कुंड और शक्तिशाली पुरुषों के घर तक।<sup>36</sup> उसके बाद लैवियों ने बानी के पुत्र रहम के अधीन मरम्मत की। उनके बगल में हशबन्याह, केइलाह के आधे जिले के अधिकारी, ने अपने जिले के लिए मरम्मत की।<sup>37</sup> उसके बाद उनके भाइयों ने हेनदाद के पुत्र बिरुई के अधीन मरम्मत की, केइलाह के दूसरे आधे जिले के अधिकारी।<sup>38</sup> और उनके बगल में येशुआ के पुत्र एजर, मिजापा के अधिकारी, ने एक और खंड की मरम्मत की हथियारशाला के कोण के सामने।<sup>39</sup> उसके बाद ज़ब्बाइ के पुत्र बारूख ने जोश के साथ एक और खंड की मरम्मत की कोण से लेकर महायाजक एलियाशिब के घर के द्वार तक।<sup>40</sup> उसके बाद उरियाह के पुत्र, हक्कोज के पुत्र मेरिमोथ ने एक और खंड की मरम्मत की, एलियाशिब के घर के द्वार से उसके घर के अंत तक।<sup>41</sup> और उसके बाद याजकों ने, आसपास के क्षेत्र के लोगों ने, मरम्मत की।<sup>42</sup> उनके बाद बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घर के सामने मरम्मत की। उनके बाद

## नहेमायाह

मआसियाह के पुत्र, अनन्याह के पुत्र अजर्याह ने अपने घर के बगल में मरम्मत की।<sup>24</sup> उसके बाद हेनदाद के पुत्र बिन्हुई ने एक और खंड की मरम्मत की, अजर्याह के घर से लेकर कोण और कोने तक।<sup>25</sup> उज्जी के पुत्र पलाल ने कोण के सामने और मीनार की मरम्मत की जो राजा के ऊपरी घर से निकली है, जो गार्ड के आँगन के पास है। उसके बाद परोश के पुत्र पेदायाह ने मरम्मत की।<sup>26</sup> अब ओफेल में रहने वाले मंदिर के सेवकों ने मरम्मत की पानी फाटक के सामने पूर्व की ओर और निकली हुई मीनार तक।<sup>27</sup> उनके बाद तकोआ के लोगों ने एक और खंड की मरम्मत की बड़ी निकली हुई मीनार के सामने और ओफेल की दीवार तक।<sup>28</sup> घोड़ा फाटक के ऊपर याजकों ने मरम्मत की, प्रयेक ने अपने घर के सामने।<sup>29</sup> उनके बाद इम्मर के पुत्र सादोक ने अपने घर के सामने मरम्मत की। और उनके बाद शेकन्याह के पुत्र शमायाह, पूर्वी फाटक के रक्षक, ने मरम्मत की।<sup>30</sup> उसके बाद शलेमियाह के पुत्र हनन्याह, और ज़लाफ के छोड़े पुत्र हनून ने एक और खंड की मरम्मत की। उसके बाद बेरिक्याह के पुत्र मेशुल्लाम ने अपने कार्टर के सामने मरम्मत की।<sup>31</sup> उसके बाद सुनारों में से एक मल्कियाह ने मंदिर के सेवकों के घर तक और व्यापारियों के, निरीक्षण फाटक के सामने, और कोने के ऊपरी कमरे तक मरम्मत की।<sup>32</sup> और कोने के ऊपरी कमरे और भेड़ फाटक के बीच, सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की।

**4** अब ऐसा हुआ कि जब सनबल्लत ने सुना कि हम दीवार का पुनर्निर्माण कर रहे हैं, तो वह क्रोधित और बहुत गुस्से में आ गया, और उसने यूदीयों का उपहास किया।<sup>2</sup> और उसने अपने भाइयों और सामरिया की सेना के सामने कहा, "ये कमज़ोर यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या वे इसे अपने लिए पुनःस्थापित करेंगे? क्या वे बलिदान चढ़ा सकते हैं? क्या वे इसे एक दिन में समाप्त कर सकते हैं?" क्या वे जले हुए मलबे के ढेरों से पत्थरों को पुनर्जीवित कर सकते हैं?"<sup>3</sup> अब तोबियाह अम्मोनी उसके पास था, और उसने कहा, "जो कुछ वे बना रहे हैं—यदि एक लोमधी उस पर कूदे, तो वह उनकी पथर की दीवार को गिरा देगा!"

<sup>4</sup> हे हमारे परमेश्वर, सुन कि हम कैसे तिरस्कृत हो रहे हैं! उनकी निदा उनके अपने सिर पर लौटाओ, और उन्हें बंदीगृह की भूमि में लूट के रूप में दे दो।<sup>5</sup> उनके अपराध को न छिपाओ, और उनके पाप को अपने सामने से मिटने न दो, क्योंकि उन्होंने निर्माणकर्ताओं को हतोत्साहित किया है।<sup>6</sup> इसलिए हमने दीवार का निर्माण

किया, और पूरी दीवार आधी ऊँचाई तक जुड़ गई, क्योंकि लोगों के पास काम करने का दिल था।

<sup>7</sup> अब जब सनबल्लत, तोबियाह, अरब, अम्मोनी और अशदोदी यह सुनते हैं कि यरूशलेम की दीवारों की मरम्मत जारी है, और दरारें बंद होने लगीं, तो वे बहुत क्रोधित हुए।<sup>8</sup> इसलिए वे सभी यरूशलेम के खिलाफ लड़ने और उसमें भ्रम उत्पन्न करने के लिए मिलकर साजिश करने लगे।<sup>9</sup> लेकिन हमने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके कारण हमने दिन और रात उनके खिलाफ पहरा लगाया।

<sup>10</sup> और यहूदा ने कहा, "भार उठाने वालों की ताकत घट रही है, पिर भी बहुत सारा मलबा है; और हम स्वयं दीवार का पुनर्निर्माण करने में सक्षम नहीं हैं।"<sup>11</sup> और हमारे दुश्मनों ने कहा, "वे तब तक नहीं जानेंगे या देखेंगे जब तक हम उनके बीच आकर उन्हें मार न दें, और काम को रोक न दें।"<sup>12</sup> अब ऐसा हुआ जब उनके पास रहने वाले यहूदी आए, उन्होंने हमें दस बार बताया, "वे हर उस जगह से हमारे खिलाफ आएंगे जहाँ आप मुड़ सकते हैं।"

<sup>13</sup> इसलिए मैंने दीवार के पीछे के सबसे निचले हिस्सों में, खुले स्थानों में, लोगों को परिवारों के अनुसार उनकी तलवरों, भालों और धनुषों के साथ तैनात किया।<sup>14</sup> जब मैंने उनका डर देखा, तो मैंने कुलीनों, अधिकारियों और बाकी लोगों से कहा, "उनसे मत डरो; उस प्रभु को याद करो जो महान और भयानक है, और अपने भाइयों, अपने बेटों, अपनी बेटियों, अपनी पत्रियों और अपने घरों के लिए लड़ो।"

<sup>15</sup> अब जब हमारे दुश्मनों ने सुना कि यह हमें ज्ञात हो गया है, और कि परमेश्वर ने उनकी योजना को विफल कर दिया है, तब हम सभी दीवार पर लौट आए, प्रत्येक अपने काम पर।

<sup>16</sup> उस दिन से, मेरे आधी सेवक काम करते रहे, जबकि बाकी आधे भाले, ढाल, धनुष और कवच पकड़े रहे; और कपातान यहूदा के पूरे घर के पीछे थे।<sup>17</sup> जो लोग दीवार का पुनर्निर्माण कर रहे थे और जो भार उठा रहे थे उन्होंने एक हाथ से काम किया और दूसरे हाथ से हथियार पकड़ा।<sup>18</sup> निर्माणकर्ताओं के लिए, प्रत्येक ने अपनी तलवर को अपनी कमर पर बांध रखा था जब वह निर्माण कर रहा था, जबकि तुरही बजाने वाला मेरे पास खड़ा था।

## नहेमायाह

<sup>19</sup> और मैंने कुतीनों, अधिकारियों और बाकी लोगों से कहा, "काम बड़ा और विस्तृत है, और हम दीवार पर एक-दूसरे से दूर हैं। <sup>20</sup> जिस भी स्थान पर आप तुरही की आवाज सुनें, वहाँ हमारे पास इकट्ठा हो जाएं। हमारा परमेश्वर हमारे लिए लड़ेगा।"

<sup>21</sup> इसलिए हमने काम जारी रखा, उनके आधे भाले पकड़े हुए थे जब तक तारि नहीं निकल आए। <sup>22</sup> उस समय मैंने लोगों से भी कहा, "हर आदमी अपने सेवक के साथ यरूशलेम के अंदर रात बिताए ताकि वे रात को हमारे लिए पहरेदार बन सकें और दिन में श्रमिक।" <sup>23</sup> इसलिए न तो मैंने, न मेरे भाइयों ने, न मेरे पीछे चलने वाले पहरेदारों ने, हम में से किसी ने भी अपने कपड़े नहीं उतारे; प्रत्येक ने अपने दाहिने हाथ में अपना हथियार रखा।

**5** अब लोगों और उनकी पतियों की अपने यहूदी भाइयों के खिलाफ बड़ी पुकार थी। <sup>2</sup> क्योंकि कुछ लोग कह रहे थे, "हम, हमारे बेटे और हमारी बेटियाँ बहुत हैं, इसलिए हमें अनजाज लेने दो, ताकि हम खा सकें और जीवित रह सकें।" <sup>3</sup> कुछ अन्य लोग कह रहे थे, "हम अपने खेतों, अपने अंगूर के बागों, और अपने घरों को गिरवी रख रहे हैं ताकि हम अकाल के कारण अनाज प्राप्त कर सकें।"

<sup>4</sup> और कुछ लोग कह रहे थे, "हमने अपने खेतों और अंगूर के बागों पर राजा के कर के लिए पैसा उधार लिया है। <sup>5</sup> अब हमारा मांस हमारे भाइयों के मांस के समान है, हमारे बच्चे उनके बच्चों के समान हैं। फिर भी देखो, हम अपने बेटों और बेटियों को दास बनाने के लिए मजबूर कर रहे हैं, और हमारी कुछ बेटियाँ पहले से ही बंधन में हैं, और हमारे पास उन्हें छुड़ाने की शक्ति नहीं है क्योंकि हमारे खेत और अंगूर के बाग दूसरों के हैं।"

<sup>6</sup> तब जब मैंने उनकी पुकार और ये शब्द सुने, तो मैं बहुत क्रोधित हुआ। <sup>7</sup> इसलिए मैंने इसे अपने दिल में विचार किया और रईसों और अधिकारियों से विवाद किया, और उनसे कहा, "तुम अपने भाई से ब्याज ले रहे हो!" इसलिए, मैंने उनके खिलाफ एक बड़ी सभा बुलाई। <sup>8</sup> और मैंने उनसे कहा, "हमने अपनी क्षमता के अनुसार उन यहूदी भाइयों को छुड़ाया है जो राष्ट्रों को बेचे गए थे; अब क्या तुम अपने भाइयों को बेचोगे ताकि वे हमें बेचे जा सकें?" तब वे चुप हो गए और कुछ कहने के लिए शब्द नहीं पा सके।

<sup>9</sup> इसलिए मैंने कहा, "जो काम तुम कर रहे हो वह अच्छा नहीं है। क्या तुम्हें हमारे परमेश्वर का भय मानकर नहीं चलना चाहिए क्योंकि हमारे शत्रु राष्ट्रों की निदा है? <sup>10</sup> और इसी प्रकार मैं, मेरे भाई, और मेरे सेवक उन्हें पैसा और अनाज उधार दे रहे हैं। कृपया, इस ब्याज को रोक दें। <sup>11</sup> कृपया आज ही उनके खेत, उनके अंगूर के बाग, उनके जैतून के बाग, और उनके घर उन्हें वापस कर दें, साथ ही पैसे और अनाज, नई दाखरस, और तेल का सौवां हिस्सा जो आप उनसे ले रहे हैं।" <sup>12</sup> तब उन्होंने कहा, "हम इसे वापस करेंगे और उनसे कुछ नहीं लेंगे; हम ठीक वही करेंगे जैसा आप कहते हैं।" इसलिए मैंने याजकों को बुलाया और उन्हें इस वचन के अनुसार शपथ दिलाई। <sup>13</sup> मैंने अपने वस्त्र के सामने के हिस्से को भी झाड़ा और कहा, "इस प्रकार परमेश्वर हर व्यक्ति को उसके घर और उसकी संपत्ति से झाड़ देगा जो इस वचन को नहीं रखता; इस प्रकार वह झाड़ा और खाती किया जाएगा।" और सारी सभा ने कहा, "आमीन," और उन्होंने प्रभु की स्तुति की। तब लोगों ने इस वचन के अनुसार किया।

<sup>14</sup> इसके अलावा, जिस दिन से मैं यहूदा के देश में उनका राज्यपाल नियुक्त हुआ, बीसवें वर्ष से लेकर राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष तक, बारह वर्षों तक, न तो मैंने और न ही मेरे भाइयों ने राज्यपाल के भोजन भर्ते को खाया। <sup>15</sup> लेकिन मुझसे पहले के राज्यपालों ने लोगों पर भारी बोझ डाला, और उनसे रोटी और दाखरस के अलावा चालीस शेकेल चाँदी ती। यहाँ तक कि उनके सेवक भी लोगों पर हावी थे। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता था। <sup>16</sup> मैंने भी इस दीवार के काम में खुद को लगाया; हमने कोई भूमि नहीं खरीदी, और मेरे सभी सेवक वहाँ काम के लिए इकट्ठे थे।

<sup>17</sup> इसके अलावा, मेरी मेज पर डेढ़ सौ यहूदी और अधिकारी थे, उनके अलावा जो हमारे पास आए थे हमारे चारों ओर के राष्ट्रों से। <sup>18</sup> अब जो प्रत्येक दिन के लिए तैयार किया गया था वह एक बैल और छह चुने हुए भेड़ थे, मेरे लिए पक्षी भी तैयार किए गए थे, और दस दिन में एक बार सभी प्रकार की दाखरस प्रचुर मात्रा में। फिर भी इन सब के लिए, मैंने राज्यपाल के भोजन भर्ते की मांग नहीं की, क्योंकि इस लोगों पर जबरन श्रम भारी था। <sup>19</sup> मुझे याद रखना, मेरे परमेश्वर, भलाई के लिए, उसके अनुसार जो मैंने इस लोगों के लिए किया है।

**6** जब यह समाचार सनबल्लत, तो बियाह, अरबी गेशेम और हमारे शेष शत्रुओं को मिला कि मैंने दीवार

## नहेमायाह

को पुनः निर्मित कर लिया है, और उसमें कोई दरार नहीं बची है, हालांकि उस समय मैंने द्वारों में दरवाजे नहीं लगाए थे, २ तब सनबल्लत और गेशों ने मुझे एक संदेश भेजा, "आओ, हम ओनों के मैदान में केफिरीम में मिलें।"

लेकिन वे मुझे नुकसान पहुंचाने की योजना बना रहे थे।

<sup>३</sup> इसलिए मैंने उनके पास दूत भेजे, कहकर, "मैं एक महान कार्य कर रहा हूँ और नीचे नहीं आ सकता। काम करों रुके जब मैं इसे छोड़कर आपके पास आऊँ?" <sup>४</sup> और उन्होंने इसी प्रकार चार बार मुझे संदेश भेजे, और मैंने उन्हें उसी तरह उत्तर दिया।

<sup>५</sup> तब सनबल्लत ने अपने सेवक को मेरे पास उसी प्रकार पांचवीं बार भेजा उसके हाथ में एक खुला पत्र था। <sup>६</sup> उसमें लिखा था: "यह राष्ट्रों के बीच में सुना गया है, और गश्मु कहता है, कि तुम और यहूदी विद्रोह करने की योजना बना रहे हो; इसलिए तुम दीवार का पुनर्निर्माण कर रहे हो। और तुम उनके राजा बनने वाले हो, इन रिपोर्टों के अनुसार।" <sup>७</sup> तुमने यरूशलेम में तुम्हारे बारे में धोषणा करने के लिए भविष्यवक्ताओं को भी नियुक्त किया है, यहूदा में एक राजा है। और अब यह राजा को इन रिपोर्टों के अनुसार बताया जाएगा। तो अब, आओ, हम मिलकर विचार करें।"

<sup>८</sup> तब मैंने उसे एक संदेश भेजा, कहकर, "जो बातें तुम कह रहे हो, उनमें से कुछ भी नहीं हुआ है, बल्कि तुम उन्हें अपने मन में गढ़ रहे हो।" <sup>९</sup> क्योंकि वे सब हमें डराने की कांशिश कर रहे थे, सोचते हुए, "वे काम से होतोसाहित हो जाएंगे, और यह पूरा नहीं होगा।" लेकिन अब, हे भगवान, मेरे हाथों को मजबूत कर।

<sup>१०</sup> जब मैं शमायाह के घर में गया, जो देलायाह का पुत्र था, मेहेताबेल का पुत्र था, जो घर में बंद था, उसने कहा, "आओ, हम परमेश्वर के घर में मिलें, मंदिर के अंदर, और मंदिर के दरवाजों को बंद कर दें, क्योंकि वे तुम्हें मारने आ रहे हैं, और वे रात में तुम्हें मारने आ रहे हैं।"

<sup>११</sup> लेकिन मैंने कहा, "क्या मेरे जैसा आदमी भागेगा? और मेरे जैसा कौन है जो अपनी जान बचाने के लिए मंदिर में जाएगा? मैं अंदर नहीं जाऊँगा।" <sup>१२</sup> तब मैंने समझा कि परमेश्वर ने उसे नहीं भेजा था, बल्कि उसने मेरे खिलाफ यह भविष्यवाणी इसलिए की थी क्योंकि तौबियाह और सनबल्लत ने उसे किराए पर लिया था। <sup>१३</sup> उसे इस कारण से किराए पर लिया गया था: कि मैं डर जाऊँ और उसी के अनुसार कार्य करूँ और पाप करूँ, ताकि वे मेरे खिलाफ एक बुरा रिपोर्ट प्राप्त कर

सकें जिससे मुझे अपमानित किया जा सके। <sup>१४</sup> हे मेरे परमेश्वर, तौबियाह और सनबल्लत को उनके इन कार्यों के अनुसार याद कर, और नोहदियाह भविष्यवक्ता और शेष भविष्यवक्ताओं को भी जो मुझे डराने की कोशिश कर रहे थे।

<sup>१५</sup> इस प्रकार दीवार एशूल महीने के पच्चीसवें दिन, बाबन दिनों में पूरी हुई। <sup>१६</sup> जब हमारे सभी शरुओं ने इसके बारे में सुना, और हमारे चारों ओर के सभी राष्ट्रों ने इसे देखा, तो वे आत्मविश्वास खो बैठे; क्योंकि उन्होंने पहचाना कि यह कार्य हमारे परमेश्वर की सहायता से पूरा हुआ है।

<sup>१७</sup> उन दिनों में यहूदा के कई रईसों के पत्र तौबियाह के पास गए, और तौबियाह के पत्र उनके पास आए। <sup>१८</sup> क्योंकि यहूदा में कई लोग उससे शापथ द्वारा बंधे थे, क्योंकि वह अराह के पुत्र शेकन्याह का दामाद था, और उसका पुत्र यहूहानान ने बरकियाह के पुत्र मशुलाम की बेटी से विवाह किया था। <sup>१९</sup> इसके अलावा, वे मेरे सामने उसकी अच्छी बातों की चर्चा करते थे और मेरे शब्दों को उसे बताते थे। तब तौबियाह ने मुझे डराने के लिए पत्र भेजे।

**७** अब जब दीवार का पुनर्निर्माण हो गया और मैंने दरवाजे स्थापित कर दिए, और द्वारपाल, गायक, और लेदी नियुक्त किए गए, <sup>२</sup> मैंने अपने भाई हनानी और गढ़ के सेनापति हन्याह को यरूशलेम का प्रभारी बनाया, क्योंकि वह एक विश्वासयोग्य व्यक्ति था और बहुतों से अधिक परमेश्वर से डरता था। <sup>३</sup> तब मैंने उनसे कहा, "यरूशलेम के द्वार तब तक न खोले जाएं जब तक सूर्य गर्म न हो जाए, और जब वे पहरा दे रहे हों, तो उन्हें दरवाजे बंद करके बंद कर देना चाहिए।" इसके अलावा, यरूशलेम के निवासियों में से पहरेदार नियुक्त करें, प्रत्येक अपनी जगह पर, और प्रत्येक अपने घर के सामने।"

<sup>४</sup> अब शहर बड़ा और विस्तृत था, लेकिन उसमें लोग कम थे, और धरों का पुनर्निर्माण नहीं हुआ था। <sup>५</sup> तब मेरे परमेश्वर ने मेरे हृदय में यह डाला कि मैं कुलीनों, अधिकारियों और लोगों को वंशावली के अनुसार पंजीकृत करूँ। तब मैंने उन लोगों की वंशावली की पुस्तक पाई जो पहले आए थे, और मैंने उसमें लिखा पाया: <sup>६</sup> ये प्रांत के लोग हैं जो निर्वासन की बंधुआई से आए थे जिन्हें बाबुल के राजा नबुकनेज़र ने निर्वासन में ले लिया था, और जो यरूशलेम और यहूदा में लौट आए, प्रत्येक अपने नगर में, <sup>७</sup> जो जरूब्बाबेल, येशुआ,

## नहेमायाह

नहेमायाह, अजर्याह, रआम्याह, नहमानी, मोदकै,  
बिलशान, मिस्पेरेथ, बिगवै, नहूम, और बानाह के साथ  
आए थे। इसाएल के लोगों की संख्या:

<sup>१०</sup> परोश के पुत्र, 2,172 /<sup>१०</sup> शेफट्याह के पुत्र, 372 /  
<sup>१०</sup> अरह के पुत्र, 652 /<sup>११</sup> यहत-मोआर के पुत्र  
येशुआ और योआब के पुत्रों में से, 2,818 /<sup>१२</sup> एलाम  
के पुत्र, 1,254 /<sup>१३</sup> जरू के पुत्र, 845 /<sup>१४</sup> जवकै के  
पुत्र, 760 /<sup>१५</sup> बैश्वई के पुत्र, 648 /<sup>१६</sup> बैबाई के पुत्र  
628 /<sup>१७</sup> अज्ञाद के पुत्र, 2,322 /<sup>१८</sup> अदोनिकाम के  
पुत्र, 667 /<sup>१९</sup> बिगवै के पुत्र, 2,067 /<sup>२०</sup> अदीन के  
पुत्र, 655 /<sup>२१</sup> अतेर के पुत्र, हिजकियाह के, 98 /<sup>२२</sup>  
हाश्यम के पुत्र, 328 /<sup>२३</sup> बैज्ञाई के पुत्र, 324 /<sup>२४</sup>  
हरीफ के पुत्र, 112 /<sup>२५</sup> गिबोन के पुत्र, 95 /

<sup>२६</sup> बेतलेहम और नेतोफा के लोग, 188 /<sup>२७</sup> अनातोत  
के लोग, 128 /<sup>२८</sup> बैथ-अज्ञावेत के लोग, 42 /<sup>२९</sup>  
किर्यत-यारीम, चंपीरा, और बएरोत के लोग, 743 /<sup>३०</sup>  
रामा और गेबा के लोग, 621 /<sup>३१</sup> मिकमास के लोग,  
122 /<sup>३२</sup> बैथेल और ऐ के लोग, 123 /<sup>३३</sup> अन्य नेबो  
के लोग, 52 /<sup>३४</sup> अन्य एलाम के पुत्र, 1,254 /<sup>३५</sup>  
हारिम के पुत्र, 320 /<sup>३६</sup> यरीहो के पुत्र, 345 /<sup>३७</sup> लोद  
हवीद, और ओनो के पुत्र, 721 /<sup>३८</sup> सेनाह के पुत्र,  
3,930 /

<sup>३९</sup> याजकः

यदायाह के पुत्र, येशुआ के घराने के, 973 /<sup>४०</sup> इम्मेर  
के पुत्र, 1,052 /<sup>४१</sup> पशहर के पुत्र, 1,247 /<sup>४२</sup> हारिम  
के पुत्र, 1,017 /

<sup>४३</sup> लेवीः

येशुआ के पुत्र, कदमीएल के, होदेवा के पुत्रों में से  
74 /

<sup>४४</sup> गायकः

आसफ के पुत्र, 148 /

<sup>४५</sup> द्वारपालः

शल्लूम के पुत्र, अतेर के पुत्र, तल्मोन के पुत्र, अक्कूब  
के पुत्र, हतीता के पुत्र, शोबाई के पुत्र, 138 /

<sup>४६</sup> मंदिर के सेवकः जिहा के पुत्र, हसूपा के पुत्र,  
तब्बा-ओथ के पुत्र,

<sup>४७</sup> केरोस के पुत्र, सिया के पुत्र, पादोन के पुत्र,<sup>४८</sup>  
लेबाना के पुत्र, हगाबा के पुत्र, शलमाई के पुत्र,<sup>४९</sup>  
हानन के पुत्र, गिद्देल के पुत्र, गाहर के पुत्र,<sup>५०</sup> रआया  
के पुत्र, रेजिन के पुत्र, नेकूदा के पुत्र,<sup>५१</sup> गज्जाम के पुत्र,  
उज्जा के पुत्र, पासेह के पुत्र,<sup>५२</sup> बेसाई के पुत्र, मेतिम  
के पुत्र, नेफुशीसिम के पुत्र,<sup>५३</sup> बकबुक के पुत्र, हकूफा  
के पुत्र, हरहर के पुत्र,<sup>५४</sup> बज्जिति के पुत्र, मेहिदा के  
पुत्र, हर्शा के पुत्र,<sup>५५</sup> बरकोस के पुत्र, सिसेरा के पुत्र,  
तेमा के पुत्र,<sup>५६</sup> नेजिया के पुत्र, हतीफा के पुत्र।

<sup>५७</sup> सुलैमान के सेवकों के पुत्रः सोताई के पुत्र, सोफेरेथ के  
पुत्र, पेरिदा के पुत्र,<sup>५८</sup> याला के पुत्र, दरकीन के पुत्र,  
गिद्देल के पुत्र,<sup>५९</sup> शेफट्याह के पुत्र, हतील के पुत्र,  
पोकेरेथ-हज्जाबाइम के पुत्र, अमोन के पुत्र,<sup>६०</sup> सभी  
मंदिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के पुत्र 392  
थे।

<sup>६१</sup> ये वे लोग थे जो तेल-मेला, तेल-हर्शा, केरूब, अडोन,  
और इम्मेर से आए थे; लेकिन वे अपने पितरों के घरानों  
या अपनी संतानों के लिए प्रमाण नहीं दे सके, कि वे  
इसाएल के थे:<sup>६२</sup> देलायाह के पुत्र, तोबियाह के पुत्र,  
नेकूदा के पुत्र, 642।<sup>६३</sup> याजकों में से: होबायाह के पुत्र,  
हकोज़ के पुत्र, बरजिल्लै के पुत्र—जिसने गिलाद के  
बरजिल्लै की बेटियों में से एक से विवाह किया था, और  
वह उनके नाम से पुकारा गया।

<sup>६४</sup> इन लोगों ने अपनी प्रविष्टियों को वंशावली अभिलेखों  
में खोजा, लेकिन वे नहीं पाए गए; इसलिए उन्हें अशुद्ध  
माना गया और याजकाई से बाहर रखा गया।<sup>६५</sup> और  
राज्यपाल ने उनसे कहा कि वे पवित्रतम वस्तुओं में से न  
खाएं जब तक कि एक याजक उरीम और थुम्मिम के  
साथ न उठे।

<sup>६६</sup> पूरी सभा की संख्या 42,360 थी,<sup>६७</sup> इसके अलावा  
उनके पुरुष दास और महिला दास, जिनकी संख्या  
7,337 थी; और उनके पास 245 पुरुष और महिला  
गायक थे।<sup>६८</sup> उनके घोड़े 736, उनके खच्चर 245,<sup>६९</sup>  
उनके ऊंट 435, उनके गधे 6,720।

<sup>७०</sup> कुछ पितरों के घरानों के प्रमुखों ने कार्य के लिए  
दिया। राज्यपाल ने खजाने में एक हजार सोने के द्राच्मा,  
पचास कटोरे, और 530 याजकों के वस्त दिए।<sup>७१</sup> और  
कुछ पितरों के घरानों के प्रमुखों ने कार्य के लिए खजाने

## नहेमायाह

में बीस हजार सोने के द्राच्चा और 2,200 चांदी के मीनस दिए।<sup>72</sup> बाकी लोगों ने जो दिया वह बीस हजार सोने के द्राच्चा, 2,000 चांदी के मीनस, और 67 याजकों के वस्त थे।<sup>73</sup> इस प्रकार याजक, लेती, द्वारपाल, गायक, कुछ लोग, मंदिर के सेवक, और सभी इसाएल अपने नगरों में बस गए। और जब सातवां महीना आया, तो इसाएल के पुत्र अपने नगरों में थे।

**8** और सब लोग जल फाटक के सामने के चौक में एक मन होकर इकट्ठे हुए, और उन्होंने एत्रा लेखक से कहा कि वह मूसा की व्यवस्था की पुस्तक लाए, जिसे यहोवा ने इसाएल को आज्ञा दी थी।<sup>2</sup> तब एत्रा याजक ने व्यवस्था को पुरुषों, स्त्रियों, और उन सबके सामने जो समझ सकते थे, सातवें महीने के पहले दिन सभा के सामने लाया।<sup>3</sup> और उसने जल फाटक के सामने के चौक में से, प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक, पुरुषों और स्त्रियों के सामने, जो समझ सकते थे, पढ़ा; और सब लोग व्यवस्था की पुस्तक पर ध्यान देते रहे।

<sup>4</sup> एत्रा लेखक एक लकड़ी के मंच पर खड़ा था जो उन्होंने इसी उद्देश्य के लिए बनाया था। और उसके दाहिने हाथ पर मतिथ्याह, शेमा, अनायाह, उरियाह, हिल्कियाह, और मासेयाह खड़े थे; और उसके बाएँ हाथ पर पेदायाह, मिशाएल, मतिक्याह, हाश्यूम, हाशबदाना, जकर्याह, और मशुल्लाम खड़े थे।<sup>5</sup> एत्रा ने सब लोगों के सामने पुस्तक खोली, क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर खड़ा था; और जब उसने इसे खोला, तो सब लोग खड़े हो गए।<sup>6</sup> तब एत्रा ने यहोवा, महान परमेश्वर को आशीर्वाद दिया। और सब लोगों ने उत्तर दिया, "आमीन, आमीन!" अपने हाथ उठाते हुए; फिर वे झुक गए और अपने मुख को भूमि पर रखकर यहोवा की आराधना की।<sup>7</sup> ये�शुआ, बानी, शेरब्याह, यामीन, अक्बूब, शब्ल्यथाई, होदियाह, मारेयाह, केलिता, अर्जयाह, योजबाद, हानान, पेलायाह—लेतीय—लोगों को व्यवस्था समझाते रहे, जबकि लोग अपनी जगह पर खड़े रहे।<sup>8</sup> और उन्होंने पुस्तक से, परमेश्वर की व्यवस्था से पढ़ा, अर्थ समझाने के लिए ताकि वे पढ़ी हौं को समझ सकें।

<sup>9</sup> तब नहेमायाह, जो राज्यपाल था, और एत्रा याजक और लेखक, और लेतीय जो लोगों की शिक्षा देते थे, सब लोगों से कहा, "यह दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र है, शोक मत करो या मत रोओ।"<sup>1</sup> क्योंकि सब लोग व्यवस्था के शब्दों को सुनकर रो रहे थे।<sup>10</sup> तब उसने उनसे कहा, "जाओ, चिकना खाओ, मीठा पियो, और उन लोगों को हिस्सा भेजो जिनके पास कुछ तैयार नहीं है; क्योंकि यह दिन हमारे प्रभु के लिए पवित्र है। शोक मत

करो, क्योंकि यहोवा की प्रसन्नता तुम्हारी शक्ति है।"<sup>11</sup> इसलिए लेतीय ने सब लोगों को शांत किया, कहकर, "शांत रहो, क्योंकि यह दिन पवित्र है; शोक मत करो।"<sup>12</sup> तब सब लोग खाने, पीने, हिस्सा भेजने, और एक महान पर्व मनाने के लिए चले गए, क्योंकि उन्होंने उन शब्दों को समझा जो उन्हें बताए गए थे।

<sup>13</sup> फिर दूसरे दिन, सब लोगों के पिताओं के घरों के प्रमुख, याजक और लेतीय, एत्रा लेखक के पास इकट्ठे हुए ताकि वे व्यवस्था के शब्दों में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें।<sup>14</sup> और उन्होंने व्यवस्था में लिखा पाया कि यहोवा ने मूसा के माध्यम से आज्ञा दी थी कि इसाएल के पुरुषों को सातवें महीने के पर्व के दौरान झोपड़ियों में रहना चाहिए।<sup>15</sup> इसलिए उन्होंने सब अपने नगरों और यरूशलेम में एक घोषणा की और प्रचार किया, "पहाड़ियों पर जाओ, और जैतून की शाखाएं, जंगली जैतून की शाखाएं, मर्जल की शाखाएं, खेजूर की शाखाएं, और अन्य पत्तेदार वृक्षों की शाखाएं लाओ, झोपड़ियाँ बनाने के लिए, जैसा कि लिखा है।"<sup>16</sup> इसलिए लोग बाहर गए और उन्हें लाए और अपने लिए झोपड़ियाँ बनाई, प्रयोक ने अपनी छत पर, और अपने आँगनों में, और परमेश्वर के घर के आँगनों में, और जल फाटक के चौक में और एप्रीम के फाटक के चौक में।<sup>17</sup> जो लोग बंधुआई से लौटे थे, उनकी पूरी सभा ने झोपड़ियाँ बनाई और उनमें रहे। इसाएल के पुरुषों ने नून के पुत्र यहोशू के दिनों से उस दिन तक ऐसा नहीं किया था। और बहुत आनंद मनाया गया।<sup>18</sup> और उसने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से प्रतिदिन पढ़ा, पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक। और उन्होंने सात दिनों तक पर्व मनाया, और आठवें दिन विधान के अनुसार एक गंभीर सभा थी।

**9** अब इस महीने के चौबीसवें दिन इसाएल के पुत्र उपवास के साथ इकट्ठे हुए, टाट औड़े और अपने ऊपर मिट्टी डाले हुए।<sup>2</sup> और इसाएल के वंशजों ने अपने आप को सभी विदेशियों से अलग कर लिया, और वे खड़े होकर अपने पापों और अपने पिताओं के अपराधों को स्वीकार करते लगे।<sup>3</sup> जब वे अपनी जगहों पर खड़े थे, तो उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक से दिन के चौथे हिस्से के लिए पढ़ा; और दूसरे चौथे हिस्से के लिए उन्होंने स्वीकार किया और अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना की।<sup>4</sup> तब येशुआ, बानी, कदमीएल, शेब्याह, बुन्नी, शेरब्याह, बानी, और केनानी लेतीयों के मंच पर खड़े हुए, और अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँची आवाज में पुकारा।<sup>5</sup> तब लेती, येशुआ, कदमीएल, बानी, हशब्याह, शेरब्याह, होदियाह, शेब्याह, और पेत्याह ने कहा, "उठो, अपने परमेश्वर

## नहेमायाह

यहोवा को सदा सर्वदा के लिए आशीर्वाद दो! तेरा महिमामय नाम आशीर्वादित हो और सभी आशीर्वाद और स्तुति से ऊपर उठाया जाए।<sup>6</sup> तू अकेला यहोवा है। तूने आकाश को बनाया, आकाश के आकाश को उनके सभी प्रकाशों के साथ, पृथ्वी और जो कुछ उस पर है, समुद्र और जो कुछ उनमें है। तू उहाँसे सभी को जीवन देता है, और स्वर्गीय प्रकाश तुझसे झुकते हैं।

<sup>7</sup> तू यहोवा परमेश्वर है, जिसने अब्राम को चुना और उसे कसरियों के ऊपर से बाहर लाया, और उसे अब्राहम नाम दिया।<sup>8</sup> तूने उसके हृदय को अपने सामने विश्वासयोग्य पाया, और उसके साथ एक बाचा बाँधी कि तू उसे करनानी, हिती और एमोरी, परिज्जी, यबूसी, और गिरागारी की भूमि देगा—उसके वंशजों को देने के लिए। और तूने अपने वचन को पूरा किया, क्योंकि तू धर्मी है।

<sup>9</sup> तूने मिस्र में हमारे पिताओं की पीड़ा देखी, और लाल समुद्र के पास उनकी पुकार सुनी।<sup>10</sup> तब तूने फिरौन के विरुद्ध विहृ और घमत्कार किए, उसके सभी सेवकों और उसकी भूमि के सभी लोगों के विरुद्ध; क्योंकि तू जानता था कि उहाँने उनके प्रति घमंड से व्यवहार किया, और तूने अपने लिए एक नाम बनाया जैसा कि आज तक है।<sup>11</sup> तूने उनके सामने समुद्र को विभाजित किया, ताकि वे सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से पार हो सकें; और तूने उनके पीछा करने वालों को गहराई में फेंक दिया, जैसे पथर को उफनते जल में।<sup>12</sup> और तूने दिन में बादल के स्तंभ से उनका मार्गदर्शन किया, और रात में अधि के स्तंभ से ताकि उहाँसे वह मार्ग दिखा सके जिस पर उहाँ जाना था।

<sup>13</sup> तब तू सैनी पर्वत पर उतरा, और स्वर्ग से उनके साथ बोला; तूने उहाँसे न्यायपूर्ण विधियाँ और सच्ची व्यवस्थाएँ दी, अच्छे नियम और आज्ञाएँ।<sup>14</sup> इसलिए तूने उहाँ अपना पवित्र सब्त ज्ञात कराया, और उहाँ आज्ञाएँ, नियम, और व्यवस्था दी अपने सेवक मूसा के माध्यम से।<sup>15</sup> तूने उहाँसे स्वर्ग से भूके के लिए राटी दी, तूने उहाँसे यास के लिए चट्टान से पानी दिया, और तूने उहाँसे बात्या कि वे प्रवेश करें और उस भूमि का अधिकार लें जिसे देने की तूने शपथ खाई थी।

<sup>16</sup> परंतु वे, हमारे पिताओं ने घमंड से व्यवहार किया; वे ही ही हो गए और तेरी आज्ञाओं को नहीं सुना।<sup>17</sup> उहाँने सुनने से इनकार कर दिया, और तेरे अद्भुत कार्यों को नहीं याद किया जो तूने उनके बीच किए; इसलिए वे हठी हो गए और एक नेता नियुक्त किया जाकि वे मिस्र में

अपनी दासता में लौट सकें। परंतु तू क्षमा करने वाला परमेश्वर है, दयातु और करुणामय, क्रोध में थीमा और दया में प्रचुर, और तूने उहाँसे नहीं छोड़ा।<sup>18</sup> यहाँ तक कि जब उहाँने अपने लिए ढले हुए थातु का बछड़ा बनाया और कहा, ‘यह तेरा परमेश्वर है जो तुझे मिस्र से ऊपर लाया;’ और महान मिंदा की,

<sup>19</sup> तूने, अपनी महान करुणा में, उहाँ जंगल में नहीं छोड़ा; दिन में बादल का स्तंभ उहाँ नहीं छोड़ा, उनके मार्गदर्शन के लिए, और न ही रात में अप्रि का स्तंभ, उहाँसे वह मार्ग दिखाने के लिए जिस पर उहाँ जाना था।

<sup>20</sup> तूने उहाँसे खिखाने के लिए अपनी अच्छी आत्मा दी, तूने उनके मृँह से अपना मन्त्र नहीं रोका, और तूने उहाँसे यास के लिए पानी दिया।<sup>21</sup> वास्तव में, चालीस वर्षों तक तूने उहाँ जंगल में प्रदान किया और वे किसी चीज़ की कमी नहीं थी; उनके कपड़े नहीं धिसे, न ही उनके पैर सूजे।

<sup>22</sup> तूने उहाँसे राज्य और लोग भी दिए, और उहाँसे सीमा के रूप में बाँटा। इसलिए उहाँने हेशबोन के राजा सीहोन की भूमि का अधिकार लिया, और बाशान के राजा ओग की भूमि का।<sup>23</sup> तूने उनके पुत्रों को आकाश के तारों के समान अनेक बनाया, और तूने उहाँ उस भूमि में लाया जिसे तूने उनके पिताओं से कहा था कि वे प्रवेश करें और अधिकार लें।<sup>24</sup> इसलिए उनके पुत्रों ने प्रवेश किया और भूमि का अधिकार लिया। और तूने उनके सामने भूमि के निवासियों को, कनानियों को, और उनके हाथ में उनके राजा और भूमि के लोगों को दिया, ताकि वे उनके साथ जैसा चाहें वैसा कर सकें।<sup>25</sup> उहाँने किलाबद शहरों और उपजाऊ भूमि को कब्जा किया। उहाँने हर अच्छी चीज़ से भरे घरों का अधिकार लिया, काटे हुए जलाशयों, दाख की बारियों, जैतून के बागों, और बहुतायत में फलदार वृक्षों का। इसलिए उहाँने खाया, तूप हुए, और मोटे हो गए, और तेरी महान भलाई में आनंदित हुए।

<sup>26</sup> परंतु वे अवज्ञाकारी हो गए और तेरे विरुद्ध विद्रोह किया, और तेरी व्यवस्था को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और तेरे नदियों की मार डाला जिह्वोंने उहाँ चेतावनी दी थी कि वे तेरी ओर लौटें, और उहाँने महान मिंदा की।<sup>27</sup> इसलिए तूने उहाँ उनके उत्तीड़कों के हाथ में सौंप दिया जिह्वोंने उहाँ सताया, परंतु जब उहाँने अपनी विपत्ति के समय तुझसे पुकारा, तूने स्वर्ग से सुना, और अपनी महान करुणा में तूने उहाँ उद्धरकर्ता दिए जिह्वोंने उहाँ उनके उत्तीड़कों के हाथ से बचाया।

## नहेमायाह

<sup>28</sup> परंतु जैसे ही उन्हें विश्राम मिला, उन्होंने फिर से तेरे सामने बुराई की; इसलिए तूने उन्हें उनके शशुओं के हाथ में छोड़ दिया, ताकि वे उन पर शासन करें। जब उन्होंने फिर से तुझसे पुकारा, तूने स्वर्ण से सुना, और कई बार तूने अपनी करुणा के अनुसार उन्हें बचाया।

<sup>29</sup> और तूने उन्हें चेतावनी दी ताकि वे तेरी व्यवस्था की ओर लौटें। फिर भी उन्होंने घमंड से व्यवहार किया और तेरी आज्ञाओं को नहीं सुना परंतु तेरी विधियों के विरुद्ध पाप किया, जिनके अनुसार यदि कई उनका पालन करता है तो वह जीवित रहेगा। और उन्होंने हठी कंधा मोड़ा, अपनी गर्दन कड़ी की, और नहीं सुना। <sup>30</sup> हालाँकि, तूने उनके साथ कई वर्षों तक धैर्य बनाए रखा, और अपने नवियों के माध्यम से अपनी आमा द्वारा उन्हें चेतावनी दी, फिर भी उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इसलिए तूने उन्हें भूमि के लोगों के हाथ में सौंप दिया। <sup>31</sup> फिर भी, अपनी महान करुणा में तूने उनका अंत नहीं किया या उन्हें नहीं छोड़ा, क्योंकि तू दयातु और करुणामय परमेश्वर है।

<sup>32</sup> अब फिर, हमारे परमेश्वर, महान, शक्तिशाली, और भयानक परमेश्वर, जो वाचा और विश्वास को बनाए रखता है, तू सभी कठिनाई को तुच्छ न समझ, जो हम पर, हमारे राजाओं, हमारे नेताओं, हमारे याजकों, हमारे नवियों, हमारे पिताओं, और तेरे सभी लोगों पर आई है, असीरिया के राजाओं के दिनों से लेकर आज तक। <sup>33</sup> तू हमारे साथ जो कुछ भी हुआ है उसमें धर्मी है, क्योंकि तूने विश्वासयोग्यता से व्यवहार किया है, परंतु हमने दुष्टा की है। <sup>34</sup> क्योंकि हमारे राजा, हमारे नेता, हमारे याजक, और हमारे पिताओं ने तेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया या तेरी आज्ञाओं और तेरी गवाहियों पर ध्यान नहीं दिया जिनसे तूने उन्हें चेतावनी दी थी। <sup>35</sup> परंतु वे, अपने राज्य में, तेरी महान भलाई के साथ जो तूने उन्हें दी, उस विस्तृत और समृद्ध भूमि के साथ जो तूने उनके सामने रखी, उन्होंने तेरा सेवा नहीं किया या अपने बुरे कर्मों से नहीं फिरे।

<sup>36</sup> देख, हम आज दास हैं, और उस भूमि में जिसे तूने हमारे पिताओं को उसके फल और उसकी उपज का खाने के लिए दी, देख, हम उसमें दास हैं। <sup>37</sup> और उसकी प्रतुर उपज उन राजाओं के लिए है जिन्हें तूने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी इच्छा के अनुसार शासन करते हैं, इसलिए हम बड़ी विपति में हैं।

<sup>38</sup> अब इस सब के कारण, हम एक लिखित समझौता कर रहे हैं; और उस मुहरबंद दस्तावेज पर हमारे नेताओं, हमारे लेवियों, और हमारे याजकों के नाम हैं।

**10** अब मुहरबंद दस्तावेज पर इन लोगों के नाम ऐ: हक्कलियाह का पुत्र, राज्यपाल नहेमायाह, और जिदाकियाह,

<sup>2</sup> सरायाह, अजर्याह, यिमर्याह <sup>3</sup> पश्शाहर, अमर्याह, मल्कियाह, <sup>4</sup> हरूशा, शेबन्याह, मलूक, <sup>5</sup> हरिम, मेरिमोत, ओबद्याह, <sup>6</sup> दानियेल, गिन्तेन, बार्स्क, <sup>7</sup> मशुल्लाम, अबियाह, मिजामिन, <sup>8</sup> मआज्याह, बिलगै और शेमायाह। ये याजक थे।

<sup>9</sup> और लेवीय:

अजन्याह का पुत्र येशुआ, हेनादाद के पुत्रों में से बिनुर्झ कदमीएल, <sup>10</sup> और उनके भाई शेबन्याह, होदियाह, केलिता, पेलायाह, हानान, <sup>11</sup> मीक, रहोब, हशब्याह, <sup>12</sup> ज़क़रूर, शेबन्याह, शेबन्याह, <sup>13</sup> होदियाह, बानी, बेनिनु।

<sup>14</sup> लोगों के नेता:

परोशा, पाहत-मोआब, एलाम, ज़त्तू, बानी, <sup>15</sup> बुन्नी, अजगाद, बेबाई, <sup>16</sup> अदोनियाह, बिगै, अदीन, <sup>17</sup> अतेर, हिजकियाह, अज्जुर, <sup>18</sup> होदियाह, हश्शम, बेजै, <sup>19</sup> हरिफ, अनातोत, नबाई, <sup>20</sup> मगापियाश, मशुल्लाम, हेज़ीर, <sup>21</sup> मेशेज़बेल, सादोक, यदुआ, <sup>22</sup> पेलत्याह, हानान, अनायाह, <sup>23</sup> होशेआ, हनन्याह, हश्शूब, <sup>24</sup> हल्लोहेश, पिल्हा, शोबेक, <sup>25</sup> रहम, हशबनाह, मआसियाह, <sup>26</sup> अहीयाह, हानान, अनान, <sup>27</sup> मलूक, हरिम, बानाह।

<sup>28</sup> अब बाकी लोग, याजक, लेवीय, द्वारपाल, गायक, मंदिर सेवक, और वे सभी जिन्होंने देश के लोगों से अपने आप को परमेश्वर की व्यवस्था के लिए अलग कर लिया था, उनकी पत्रियाँ, उनके पुत्र और पुत्रियाँ, वे सभी जिनके पास जान और समझ पी, <sup>29</sup> अपने रिश्तेदारों और उनके कुलीनों के साथ शामिल हो रहे हैं, और अपने ऊपर एक शाप और एक शपथ ले रहे हैं कि वे परमेश्वर की व्यवस्था में चलेंगे, जो मूसा, परमेश्वर के सेवक, के द्वारा दी गई थी, और हमारे प्रभु परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे, और उसकी विधियाँ और उसके नियमों का पालन करेंगे;

## नहेमायाह

<sup>३०</sup> और हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को नहीं देंगे और न ही उनके बेटों के लिए उनकी बेटियों को देंगे।

<sup>३१</sup> देश के लोग जो सब्त के दिन बेचने के लिए सामान या कोई अनाज लाते हैं, हम उनसे सब्त या किसी पवित्र दिन पर नहीं खरीदेंगे; और हम सातवें वर्ष की फसल और हर ऋण की वसूली को छोड़ देंगे।

<sup>३२</sup> हमने अपने आप को यह वार्षिक रूप से एक तिहाई शेकेल का योगदान करने का दायित्व भी लिया जो हमारे परमेश्वर के घर की सेवा के लिए है: <sup>३३</sup> प्रस्तर रोटी के लिए, निरंतर अनाज की भेट के लिए, निरंतर होमबलि के लिए, सब्तों के लिए, नए चंद्रमाओं के लिए, नियत समयों के लिए, पवित्र भेटों के लिए, और इसाएल के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए पाप भेटों के लिए, और हमारे परमेश्वर के घर के सभी कार्यों के लिए।

<sup>३४</sup> इसी प्रकार हमने याजकों, लेवीयों, और लोगों के बीच लकड़ी की आपूर्ति के लिए चिठ्ठियाँ डारी, ताकि इसे हमारे परमेश्वर के घर में वार्षिक रूप से लाया जा सके, नियत समयों पर, हमारे परमेश्वर के वेदी पर जलाने के लिए, जैसा कि व्यवस्था में लिखा है;

<sup>३५</sup> और ताकि वे हमारे भूमि की पहली उपज और हर पेढ़ के पहले फल को वार्षिक रूप से प्रभु के घर में लाएं, <sup>३६</sup> और हमारे पुत्रों और हमारी पशुधन की पहली संतान को हमारे परमेश्वर के घर में लाएं, जैसा कि व्यवस्था में लिखा है, और हमारे द्वंद्वों और हमारे पशुओं की पहली संतान उन याजकों के पास लाएं जो हमारे परमेश्वर के घर में सेवा करते हैं।

<sup>३७</sup> हम अपनी आटे की पहली उपज, अपने योगदान, हर पेढ़ के फल, नए दाखमधु, और तेल को याजकों के पास लाएंगे जो हमारे परमेश्वर के घर के कक्षों में हैं, और हमारे भूमि की दशमांश को लेवीयों के पास लाएंगे, क्योंकि लेवीय ही सभी ग्रामीण नगरों में दशमांश प्राप्त करते हैं। <sup>३८</sup> और जब लेवीय दशमांश प्राप्त करते हैं, तो हारून का पुत्र याजक लेवीयों के साथ होगा, और लेवीय दशमांश का दसवां हिस्सा हमारे परमेश्वर के घर में, भंडार के कक्षों में लाएंगे। <sup>३९</sup> क्योंकि इसाएल के पुत्र और लेवी के पुत्र अनाज का योगदान, नया दाखमधु, और तेल को कक्षों में लाएंगे; वहाँ पवित्रस्थान के बर्तन, सेवा करने वाले याजक, द्वारपाल, और गायक हैं।

इसलिए हम अपने परमेश्वर के घर की उपेक्षा नहीं करेंगे।

**११** अब लोगों के नेता यस्तुशलेम में रहते थे, परंतु बाकी लोग लौट डालकर हर दस में से एक को यस्तुशलेम, पवित्र नगर में रहने के लिए लाते थे, जबकि नौ-दसवें अन्य नगरों में रहते थे। <sup>२</sup> और लोगों ने उन सभी पुरुषों को आशीर्वाद दिया जिन्होंने यस्तुशलेम में रहने के लिए स्वेच्छा से सेवा की।

<sup>३</sup> अब ये वे प्रांतों के प्रमुख हैं जो यस्तुशलेम में रहते थे, परंतु यहूदा के नगरों में प्रत्येक अपने अपने संपत्ति पर अपने नगरों में रहते थे— इस्माएली, याजक, लेवी, मदिर सेवक, और सुवैमान के सेवकों के वंशज। <sup>४</sup> यहूदा के कुछ पुत्र और बिन्यामीन के कुछ पुत्र यस्तुशलेम में रहते थे।

यहूदा के पुत्रों में से:

अतायाह, उजिज्याह का पुत्र, जकर्याह का पुत्र अमर्याह का पुत्र, शैफट्याह का पुत्र, महललएल का पुत्र, पेरेज़ के पुत्रों में से, <sup>५</sup> और मासेयाह, ब्रूक का पुत्र, कॉल-होजेह का पुत्र, हज़्याह का पुत्र, अदायाह का पुत्र, योयारिब का पुत्र, जकर्याह का पुत्र, शीलोन का पुत्र, <sup>६</sup> पेरेज़ के सभी पुत्र जो यस्तुशलेम में रहते थे, ४६८ सक्षम पुरुष थे।

७ अब ये बिन्यामीन के पुत्र हैं:

सलू, मशुल्लाम का पुत्र, योएद का पुत्र, पेदायाह का पुत्र, कोलायाह का पुत्र, मासेयाह का पुत्र, इथीएल का पुत्र, यशायाह का पुत्र, <sup>८</sup> और उसके बाद गब्बै और सलै, ९२८। <sup>९</sup> जोल, जिक्री का पुत्र, उनका निरीक्षक था, और यहूदा, हस्सेनूआह का पुत्र, नगर पर दूसरा अधिकारी था।

<sup>१०</sup> याजकों में से: योयारिब का पुत्र यदायाह, याकिन, <sup>११</sup> सेरायाह, हिलिक्याह का पुत्र, मशुल्लाम का पुत्र, सादोक का पुत्र, मरायोत का पुत्र, अहितूब का पुत्र, परमेश्वर के घर का नेता, <sup>१२</sup> और उनके संबंधी जो मंदिर का कार्य करते थे, ८२२; और अदायाह, येरोहम का पुत्र, पेलायाह का पुत्र, अम्मी का पुत्र, जकर्याह का पुत्र, पशहूर का पुत्र, मलिक्याह का पुत्र, <sup>१३</sup> और उनके संबंधी, पिताओं के घरों के प्रमुख, २४२; और अमश्सै, अजरेल का पुत्र, अहृजै का पुत्र, मशिल्लोमेता का पुत्र, इम्मेर का पुत्र, <sup>१४</sup> और उनके संबंधी, वीर योद्धा, १२८। और उनके निरीक्षक जब्बीएल, हग्मेदोलिम का पुत्र था।

## नहेमायाह

<sup>15</sup> अब लेवियों में से: शमायाह, हशशूब का पुत्र,  
अत्रीकाम का पुत्र, हशब्याह का पुत्र, बुननी का पुत्र;<sup>16</sup>  
और शब्बेथ और योजाबाद, लेवियों के नेताओं में से, जो  
परमेश्वर के घर के बाहरी कार्य के प्रभारी थे;<sup>17</sup> और  
मतन्याह, मीका का पुत्र, जब्दी का पुत्र, आसाफ का पुत्र,  
जो प्रार्थना में धन्यवाद देने का नेतृत्व करता था, और  
बकबुक्याह, उसके संबंधियों में दूसरा; और अब्दा,  
शम्मूआ का पुत्र, गालाल का पुत्र, येदूतून का पुत्र।<sup>18</sup>  
पवित्र नगर में सभी लेवी 284 थे।

<sup>19</sup> फाटकपाल भी: अक्कूब, तलमोन, और उनके संबंधी  
जो फाटकों पर पहरा देते थे, 172।

<sup>20</sup> इसाएल के बाकी लोग, याजक, और लेवी सभी यहूदा  
के नगरों में थे, प्रत्येक अपनी अपनी विरासत पर।

<sup>21</sup> परंतु मंदिर के सेवक ओपेल में रहते थे, और ज़ीहा  
और गिशा मंदिर के सेवकों के प्रभारी थे।

<sup>22</sup> अब यस्तशलेम में लेवियों का निरीक्षक उज्जी, बानी  
का पुत्र, हशब्याह का पुत्र, मतन्याह का पुत्र, मीका का  
पुत्र, आसाफ के पुत्रों में से था, जो परमेश्वर के घर की  
सेवा के लिए गायक थे।<sup>23</sup> क्योंकि उनके विषय में राजा  
की आज्ञा थी, और गायकों के लिए प्रतिदिन की शाही  
व्यवस्था थी।

<sup>24</sup> और पैथह्याह, मेशेज़बेल का पुत्र, यहूदा के पुत्र ज़ेरह  
के वंशज, लोगों के विषय में हर मामले के लिए राजा का  
प्रतिनिधि था।

<sup>25</sup> अब गांवों के साथ उनके खेतों के लिए, यहूदा के कुछ  
पुत्र किर्याथ-अरबा और उसके नगरों में, दिबोन और  
उसके नगरों में, येकब्ज़ील और उसके गांवों में रहते थे,  
<sup>26</sup> और येशूआ, मोलादाह, और बेथ-प्लेट में,<sup>27</sup> और  
हजार-शूआल, बेर्शबा और उसके नगरों में,<sup>28</sup> और  
ज़िकलाग, मकोनाह और उसके नगरों में,<sup>29</sup> और एन-  
रिम्मोन, ज़ोरा, और यर्मूत में,<sup>30</sup> ज़ानोआह, अदुल्लाम  
और उनके गांवों में, लाकीश और उसके खेतों में,  
अज़ेकाह और उसके नगरों में। इस प्रकार वे बेर्शबा से  
लेकर हिन्नोम की घाटी तक बसे थे।

<sup>31</sup> बिन्यामीन के पुत्र भी गेबा से आगे रहते थे, मिकमाश,  
अय्या, बेथेल और उसके नगरों में,<sup>32</sup> अनातोत, नोब,  
अनन्याह,<sup>33</sup> हज़ोर, रामाह, गितैम,<sup>34</sup> हदीद, ज़ेबोईम,  
नबालात,<sup>35</sup> लोड, और ओनो, कारीगरों की घाटी।

<sup>36</sup> और यहूदा में लेवियों के कुछ विभाग बिन्यामीन के  
थे।

**12** अब ये वे याजक और लेवी थे जो शालतीएल के  
पुत्र जरूब्बाबेल और येशूआ के साथ आए थे: सेरेयाह,  
पिर्मयाह, एत्रा,<sup>2</sup> अमर्याह, मलूक, हत्तूश,<sup>3</sup> शकन्याह,  
रहूम, मेरिमोत,<sup>4</sup> इद्दो, गिन्नेतोइ,<sup>5</sup> अबियाह,<sup>6</sup> मियामिन,  
मादियाह, बिलाह,<sup>6</sup> शमायाह और योयारीब, यदायाह,  
<sup>7</sup> सल्लू, अमोक, हिल्कियाह और यदायाह। ये येशूआ  
के दिनों में याजकों के प्रधान और उनके भाई थे।

<sup>8</sup> और लेवी थे: येशूआ, बिक्रूइ, कदमीएल, शेरब्याह,  
यहूदा, और मतन्याह, जो धन्यवाद के गाँतों का नेतृत्व  
करते थे, वह और उनके भाई।<sup>9</sup> बकबुक्याह और उन्नी,  
उनके भाई, अपनी-अपनी पक्षियों में उनके सामने खड़े  
थे।

<sup>10</sup> अब येशूआ ने योयाकीम को उत्पन्न किया, और  
योयाकीम ने एलियाशिब को उत्पन्न किया, और  
एलियाशिब ने योयादा को उत्पन्न किया,<sup>11</sup> और योयादा  
ने योनातान को उत्पन्न किया, और योनातान ने यदूदूआ  
को उत्पन्न किया।<sup>12</sup> अब योयाकीम के दिनों में, याजक,  
पिताओं के घरानों के प्रधान थे: सेरेयाह का, मेरायाह;  
पिर्मयाह का, हन्याह;<sup>13</sup> एत्रा का, मशुल्लाम; अमर्याह  
का, यहोहानान;<sup>14</sup> मलूकी का, योनातान; शेबन्याह का,  
योसेफ;<sup>15</sup> हरिम का, अद्रा; मरायोथ का, हेल्कै;<sup>16</sup> इद्दो  
का, ज़कर्याह; गिन्नेतोन का, मशुल्लाम;<sup>17</sup> अबियाह का,  
जिक्रि; मिन्यामिन का, मोदियाह का, पिल्तै;<sup>18</sup> बिलाह  
का, शम्मूआ; शमायाह का, यहोहानान,<sup>19</sup> और योयारीब  
का, मत्तनै; यदायाह का, उज्जी;<sup>20</sup> सल्लै का, कल्लै;  
अमोक का, एबर;<sup>21</sup> हिल्कियाह का, हशब्याह, यदायाह  
का, नतनएल।

<sup>22</sup> लेवियों के विषय में, एलियाशिब, योयादा, योहानान,  
और यदूदूआ के दिनों में, पिताओं के घरानों के प्रधानों  
को दर्ज किया गया, और याजकों को भी, दारा फारसी  
के शासनकाल तक।<sup>23</sup> लेवी के पुत्रों, पिताओं के घरानों  
के प्रधानों को इतिहास की पुस्तक में दर्ज किया गया  
योहानान के दिनों तक, जो एलियाशिब का पुत्र था।<sup>24</sup>  
लेवियों के प्रधान थे: हशब्याह, शेरब्याह, और येशूआ  
कदमीएल का पुत्र, उनके भाई उनके सामने थे, प्रशंसा  
और धन्यवाद देने के लिए, जैसा कि दाऊद, परमेश्वर के  
व्यक्ति, द्वारा निर्धारित किया गया था, पंक्ति के अनुसार  
पंक्ति।

## नहेमायाह

<sup>25</sup> मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तत्योन, और अक्कूब द्वारपाल थे, द्वारों के भंडास्युहों पर पहरा देते थे। <sup>26</sup> ये योगाकीम के दिनों में सेवा करते थे, जो येशूआ का पुत्र था, योसादाक का पुत्र, और नहेमायाह के राज्यपाल और एत्रा याजक और लेखक के दिनों में।

<sup>27</sup> अब यरूशलेम की दीवार के समर्पण के समय, उन्होंने सभी स्थानों से लेवियों को बुलाया, उन्हें यरूशलेम लाने के लिए ताकि वे समर्पण को अनंद के साथ मना सकें, धन्यवाद के भजनों और गीतों के साथ, झाँझ, वीणा, और सारंगी के साथ। <sup>28</sup> इसलिए गायक के पुत्र यरूशलेम के आसपास के क्षेत्र से इकट्ठे हुए, और नेतोफाती के गांवों से, <sup>29</sup> बेत-गिलागाल से, और उनके खेतों से गेबा और अजमावेत में, क्योंकि गायकों ने यरूशलेम के आसपास अपने लिए गांव बनाए थे। <sup>30</sup> याजकों और लेवियों ने अपने आप को शुद्ध किया; उन्होंने लोगों, द्वारों, और दीवार को भी शुद्ध किया।

<sup>31</sup> फिर मैंने यहूदा के नेताओं को दीवार के ऊपर बुलाया, और मैंने दो महान गायकों को नियुक्त किया, पहला दीवार के ऊपर दाहिनी ओर मलिन द्वार की ओर बढ़ रहा था। <sup>32</sup> होशायाह और यहूदा के आधे नेता उनके पीछे चले, <sup>33</sup> अजर्याह, एत्रा, मशुल्लाम के साथ, <sup>34</sup> यहूदा, बिन्यामिन, शमायाह, यिर्याह, <sup>35</sup> और याजकों के कुछ पुत्र तुरहियों के साथ; और जकर्याह योनातान का पुत्र, शमायाह का पुत्र, मत्तन्याह का पुत्र, मीकायाह का पुत्र, जक्कूर का पुत्र, आसाप का पुत्र, <sup>36</sup> और उनके संबंधी, शमायाह, अजरएल, मिलैल, गिलैलै, माई, नतनाएल, यहूदा, और हनानी, दाऊद, परमेश्वर के व्यक्ति के संगीत वाद्ययों के साथ। और एत्रा लेखक उनके सामने चला। <sup>37</sup> फव्वारे के द्वार पर वे दाऊद के घर के ऊपर दीवार की सीढ़ियों से होते हुए सीधे ऊपर गए, दाऊद के घर के ऊपर, पूर्व की ओर जल द्वार तक।

<sup>38</sup> दूसरा गायक बाईं ओर बढ़ा, जबकि मैं दीवार पर अधे लोगों के साथ उनके पीछे चला, भट्टियों के मीनार के ऊपर, चौड़ी दीवार तक, <sup>39</sup> और एप्रैम के द्वार के ऊपर, पुराने द्वार के पास, मछली के द्वार के पास, हननेल के मीनार, और सौ के मीनार के पास, भेड़ के द्वार तक; और वे प्रहरी के द्वार पर रुके।

<sup>40</sup> फिर दोनों गायकों ने परमेश्वर के घर में अपनी स्थिति ली। मैं और मेरे साथ आधे अधिकारी भी, <sup>41</sup> और याजक: एलियाकीम, मासेयाह, मियामिन, मीकायाह, एलियोएनाई, जकर्याह, और हनन्याह तुरहियों के साथ, <sup>42</sup> और मासेयाह, शमायाह, एलेआजर, उज्जी,

यहौहनान, मल्कियाह, एलाम, और एज़र। और गायकों ने जोर से गाया, उनके निरीक्षक यिज्ज्याह के साथ। <sup>43</sup> उस दिन उन्होंने बड़े बलिदान चढ़ाए और आनन्दित हुए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें महान आनंद दिया था; यहां तक कि स्त्रियाँ और बच्चे भी आनन्दित हुए, ताकि यरूशलेम का आनंद दूर तक सुना गया।

<sup>44</sup> उस दिन भंडार के कक्षों पर पुरुषों को भी नियुक्त किया गया, योगदान, पहिलोठे फल, और दशमांश के लिए, उन्हें शहरों के खेतों से इकट्ठा करने के लिए, जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवियों के लिए आवश्यक थे; क्योंकि यहूदा उन याजकों और लेवियों पर आनन्दित हुआ जो सेवा करते थे। <sup>45</sup> क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर की सेवा और शुद्धिकरण की सेवा की, गायकों और द्वारपालों के साथ, दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार। <sup>46</sup> क्योंकि दाऊद और आसाप के दिनों में, प्राचीन काल में, गायकों के नेता थे, और परमेश्वर के लिए स्तुति के गीत और धन्यवाद के भजन थे। <sup>47</sup> इसलिए जरूब्राबेल और नहेमायाह के दिनों में समस्त इस्राएल ने गायकों और द्वारपालों को उनके दिन के अनुसार भाग दिया, और लेवियों के लिए पवित्र भाग अलग किया, और लेवियों ने हारून के पुत्रों के लिए पवित्र भाग अलग किया।

### 13

उस दिन उन्होंने मूसा की पुस्तक से लोगों के सामने पढ़ा; और उसमें लिखा पाया गया कि कोई भी अम्मोनी या मोआबी कभी भी परमेश्वर की सभा में प्रवेश नहीं करेगा, <sup>2</sup> क्योंकि उन्होंने इस्राएल के पुत्रों का रोटी और पानी से स्वागत नहीं किया, बल्कि उनके विरुद्ध बालाम को श्राप देने के लिए नियुक्त किया। हालाँकि, हमारे परमेश्वर ने उस श्राप को आशीर्वाद में बदल दिया। <sup>3</sup> तो जब उन्होंने व्यवस्था सुनी, तो उन्होंने इस्राएल से सभी विदेशियों को बाहर कर दिया।

<sup>4</sup> अब इससे पहले, एल्याशिब याजक, जो हमारे परमेश्वर के घर के कक्षों के ऊपर नियुक्त था, तो बियाह से संबंधित था, <sup>5</sup> उसने उसके लिए एक बड़ा कमरा तैयार किया था, जहाँ पहले अनाज की भेंट, लोबान, उपकरण, और लेवियों, गायकों, और द्वारपालों के लिए निर्धारित अनाज, दाखमधू, और तेल के दशमांश रखे जाते थे, और याजकों के लिए योगदान।

<sup>6</sup> लेकिन इस समय के दौरान मैं यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि बाबुल के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में मैं राजा के पास गया था। कुछ समय बाद, मैंने राजा से छुट्टी का अनुरोध किया, <sup>7</sup> और मैं यरूशलेम आया और

## नहेमायाह

देखा कि एत्याशिब ने तोबियाह के लिए जो बुराई की थी, उसके लिए परमेश्वर के घर के आंगनों में एक कमरा तैयार करके।<sup>१०</sup> यह मुझे बहुत अप्रसन्न लगा, इसलिए मैंने तोबियाह के घर के सभी सामान कमरे से बाहर फेंक दिए।<sup>११</sup> फिर मैंने एक आदेश दिया, और उन्होंने कमरों को शुद्ध किया; और मैंने परमेश्वर के घर के उपकरणों को अनाज की भेंट और लोबान के साथ वहाँ वापस रखा।

<sup>१०</sup> मैंने यह भी पाया कि तेवियों के हिस्से उन्हें नहीं दिए गए थे, जिससे लेटी और गायक जो सेवा करते थे, अपने-अपने खेतों में चले गए थे।<sup>११</sup> तो मैंने अधिकारियों को फटकारा और कहा, "परमेश्वर का घर क्यों उपेक्षित है?" फिर मैंने उन्हें इकट्ठा किया और उन्हें उनके पदों पर स्थापित किया।

<sup>१२</sup> तब यहूदा ने अनाज, दाखमधू, और तेल का दशमांश भंडारों में लाया।<sup>१३</sup> और मैंने भंडारों के ऊपर कोषाध्यक्ष नियुक्त किए; शलेय्याह याजक, जादोक लेखक, और लेखियों में से पेदायाह, और उनके अलावा हनान, जक्कूर का पुत्र, मतन्याह का पुत्र, क्योंकि उन्हें विश्वासयोग्य माना जाता था, और उनके कर्तव्य थे कि वे अपने भाईयों को वितरित करें।

<sup>१४</sup> मुझे इसके लिए याद रखना, मेरे परमेश्वर, और मेरे वकादार कर्मों को मिटाना नहीं जो मैंने अपने परमेश्वर के घर और उसकी सेवाओं के लिए किए हैं।

<sup>१५</sup> उन दिनों में मैंने यहूदा में देखा कि लोग सब्त के दिन अंगूर के रस के कुंडों में अंगूर रौंद रहे थे, और अनाज की बोरियाँ लाकर गधों पर लाद रहे थे, साथ ही दाखमधू, अंगूर, अंजीर, और सभी प्रकार के बोझ, और सब्त के दिन यरूशलैम में ला रहे थे। इसलिए मैंने उन्हें उस दिन चेतावनी दी जब वे भोजन बेच रहे थे।<sup>१६</sup> तिरुस के लोग भी वहाँ रह रहे थे जो मछली और सभी प्रकार के माल का आयात करते थे, और सब्त के दिन यहूदा के पुत्रों को और यरूशलैम में बचते थे।<sup>१७</sup> तब मैंने यहूदा के रईसों को फटकारा और उनसे कहा, "यह क्या बुरा काम है जो आप कर रहे हैं? सब्त के दिन को अपवित्र करके?<sup>१८</sup> क्या आपके पिताओं ने ऐसा नहीं किया, जिससे हमारे परमेश्वर ने हम पर और इस शहर पर सारी आपदा लाई? फिर भी आप इसाएल पर क्रोध बढ़ा रहे हैं सब्त को अपवित्र करके!"

<sup>१९</sup> तो ऐसा हुआ कि जैसे ही सब्त से पहले यरूशलैम के द्वारों पर अंधेरा हुआ, मैंने आदेश दिया कि दरवाजे बंद

कर दिए जाएं, और उन्हें सब्त के बाद तक न खोला जाए। फिर मैंने अपने कुछ सेवकों को द्वारों पर तैनात किया ताकि सब्त के दिन कोई बोझ न आए।<sup>२०</sup> एक या दो बार व्यापारी और हर प्रकार के माल के विक्रेता यरूशलैम के बाहर रात बिताते थे।<sup>२१</sup> तब मैंने उन्हें चेतावनी दी और उनसे कहा, "आप दीवार के सामने रात क्यों बिता रहे हैं? यदि आप फिर ऐसा करेंगे, तो मैं आपके खिलाफ बल का उपयोग करूँगा!" उस समय से वे सब्त के दिन नहीं आए।<sup>२२</sup> और मैंने लेवियों को आदेश दिया कि वे स्वयं को शुद्ध करें और द्वारापातों के रूप में आएं, ताकि सब्त के दिन को पवित्र करें। इसके लिए भी मुझे याद रखना, मेरे परमेश्वर, और अपनी विश्वासयोग्यता की महानता के अनुसार मुझ पर दया करना।

<sup>२३</sup> उन दिनों में मैंने यह भी देखा कि यहूदियों ने अशदोद, अम्मोन, और मोआब की स्थियों से विवाह किया था।<sup>२४</sup> जहाँ तक उनके बच्चों का सवाल है, अधे अशदोद की भाषा बोलते थे, और उनमें से कोई भी यहूदा की भाषा बोलने में सक्षम नहीं था, बल्कि केवल अपनी जाति की भाषा।<sup>२५</sup> तो मैंने उनसे ज़िङड़ा किया और उन्हें शाप दिया, उनमें से कुछ को मारा और उनके बाल खींचे, और उन्हें परमेश्वर की शापथ दिलाइ, "आप अपनी बेटियों को उनके पुत्रों को नहीं देंगे, और न ही उनकी बेटियों को अपने पुत्रों के लिए या अपने लिए लेंगे।"<sup>२६</sup> क्या इसाएल के राजा सुलैमान ने इन बातों के संबंध में पाप नहीं किया था? फिर भी कई राष्ट्रों में ऐसा कोई राजा नहीं था जैसा वह था, और वह अपने परमेश्वर द्वारा प्रिय था, और परमेश्वर ने उसे पूरे इसाएल का राजा बनाया; फिर भी, विदेशी स्थियों ने उसे भी पाप करने के लिए प्रेरित किया।<sup>२७</sup> तो क्या हम सुनेंगे कि आप हम सब बड़ा बुरा काम कर रहे हैं, हमारे परमेश्वर के प्रति विश्वासघात करके, विदेशी स्थियों से विवाह करके?"

<sup>२८</sup> यहाँ तक कि उच्च याजक एत्याशिब के पुत्र योहादा के एक पुत्र, संबलत होरोनी का दामाद था, इसलिए मैंने उसे अपने से दूर कर दिया।

<sup>२९</sup> उन्हें याद रखना, मेरे परमेश्वर, क्योंकि उन्होंने याजकत्व और याजकत्व और लेवियों की वाचा को अपवित्र किया है।

<sup>३०</sup> तो मैंने उन्हें सभी विदेशी चीजों से शुद्ध किया, और याजकों और लेवियों को उनके कार्यों के लिए नियुक्त किया,<sup>३१</sup> और मैंने नियुक्त समय पर लकड़ी की आपूर्ति

## नहेमायाह

की व्यवस्था की, और पहले फलों के लिए। मुझे याद  
रखना, मेरे परमेश्वर, भलाई के लिए।

## एस्ट्रेर

**1** अब यह आहासूएरस के दिनों में हुआ, वही आहासूएरस जो भारत से कृश तक 127 प्रांतों पर राज्य करता था, <sup>2</sup> उन दिनों में जब राजा आहासूएरस अपने शाही सिंहासन पर बैठा था, जो सूसा के गढ़ में था, <sup>3</sup> अपने राज्य के तीसरे वर्ष में, उसने अपने सभी अधिकारियों और सेवकों के लिए एक भोज आयोजित किया, फारस और मादै की सेना, उसके प्रांतों के कुलीन और अधिकारी उसके सामने उपस्थित थे।

<sup>4</sup> उसने अपने शाही वैभव की संपत्ति और अपनी महान महिमा की शोभा को कई दिनों तक प्रदर्शित किया, कुल 180 दिनों तक। <sup>5</sup> जब ये दिन पूरे हो गए, तो राजा ने सूसा के गढ़ में उपस्थित सभी लोगों के लिए एक भोज आयोजित किया, सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, राजा के महल के बगीचे के आंगन में सात दिनों तक चलने वाला भोज। <sup>6</sup> वहाँ सफेद और बैंगनी महीन लिनन के पर्दे थे, जो चांदी की छड़ों पर बंधे हुए थे और संगमरमर के खंभे, और सोने और चांदी के सोफे, जो पौर्फिरी, संगमरमर, मोती, और कीमती पत्तरों के मौजेक फर्श पर थे। <sup>7</sup> सोने के विभिन्न डिजाइनों के बर्तनों में पेय परोसे गए, और शाही शराब राजा की उदारता के अनुपात में प्रचुर मात्रा में थी। <sup>8</sup> पेय का आयोजन कानून के अनुसार किया गया था: कोई बाध्यता नहीं थी, क्योंकि राजा ने अपने घर के प्रत्येक अधिकारी को आदेश दिया था कि वह प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाओं के अनुसार करे।

<sup>9</sup> रानी वश्ती ने भी राजा आहासूएरस के महल में महिलाओं के लिए एक भोज आयोजित किया।

<sup>10</sup> सातवें दिन, जब राजा का हृदय शराब से प्रसन्न था, तो उसने मेहूमान, बिज्ञा, हरबोना, बिध्या, अबगथा, ज़ेथर, और कारक्स को आदेश दिया, जो राजा आहासूएरस की उपस्थिति में सेवा करते थे, <sup>11</sup> कि वे रानी वश्ती को शाही मुकुट के साथ राजा के सामने लाएँ, ताकि उसकी सुंदरता को लोगों और अधिकारियों के सामने प्रदर्शित किया जा सके, क्योंकि वह दिखने में सुंदर थी। <sup>12</sup> लेकिन रानी वश्ती ने खोजों द्वारा दिए गए राजा के आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। इसलिए राजा बहुत क्रोधित हो गया, और उसका क्रोध उसके भीतर जल उठा।

<sup>13</sup> तब राजा ने उन बुद्धिमानों से कहा जो समय को समझते थे— क्योंकि यह राजा की प्रथा थी कि वह उन सभी से बात करे जो कानून और न्याय को जानते थे <sup>14</sup>

और जो उसके निकट थे: कार्षना, शेथर, अद्वाथा, तरशीश, मेरेस, मार्सना, और मेमूकान, फारस और मादै के सात अधिकारी जो राजा की उपस्थिति में पहुँच सकते थे और राज्य में पहले स्थान पर बैठे थे—

<sup>15</sup> “कानून के अनुसार, रानी वश्ती के साथ क्या किया जाना चाहिए, क्योंकि उसने खोजों द्वारा दिए गए राजा आहासूएरस के आदेश का पालन नहीं किया?”

<sup>16</sup> तब मेमूकान ने राजा और अधिकारियों की उपस्थिति में कहा, ‘रानी वश्ती ने न केवल राजा के प्रति गलत किया है, बल्कि सभी अधिकारियों और सभी लोगों के प्रति भी जो राजा आहासूएरस के सभी प्रांतों में हैं।’ <sup>17</sup> क्योंकि रानी का आचरण सभी महिलाओं को ज्ञात हो जाएगा, ताकि वे अपने पतियों को अपनी आँखों में तुच्छ समझें, कहते हुए, ‘राजा आहासूएरस ने रानी वश्ती को अपनी उपस्थिति में लाने का आदेश दिया, लेकिन वह नहीं आई।’ <sup>18</sup> और आज ही फारस और मादै के अधिकारियों की पतियाँ जिन्होंने रानी के आचरण के बारे में सुना है, उसी तरह से सभी राजा के अधिकारियों से बात करेंगी, और वहाँ बहुत तिरस्कार और क्रोध होगा।

<sup>19</sup> यदि यह राजा को प्रसन्न करता है, तो उसके द्वारा एक शाही आदेश जारी किया जाए और इसे फारस और मादै के कानूनों में लिखा जाए ताकि इसे निरस्त न किया जा सके, कि वश्ती राजा आहासूएरस की उपस्थिति में न आए, और राजा उसकी शाही स्थिति किसी और को दे जो उससे अधिक योग्य हो। <sup>20</sup> तब राजा का आदेश जो वह जारी करेगा, उसके राज्य में सुना जाएगा, जो बहुत बड़ा है, और सभी महिलाएँ अपने पतियों का सम्मान करेंगी, बड़े और छोटे समान रूप से।”

<sup>21</sup> अब यह बात राजा और अधिकारियों को प्रसन्न हुई, और राजा ने मेमूकान के प्रस्ताव के अनुसार किया। <sup>22</sup> इसलिए उसने राजा के सभी प्रांतों में पत्र भेजे, प्रत्येक प्रांत को उसकी लिपि के अनुसार और प्रत्येक लोगों को उनकी भाषा के अनुसार, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर का सासक हो और अपनी जाति की भाषा में बोले।

**2** इन बातों के बाद, जब राजा अहशारेश का क्रोध शांत हो गया, तो उसने वश्ती को और जो उसने किया था, और उसके बारे में जो निर्णय लिया गया था, उसे याद किया। <sup>23</sup> तब राजा के सेवक जो उसकी सेवा करते थे, बोले, ‘राजा के लिए सुंदर युवा कन्याओं की खोज की जाए, <sup>24</sup> और राजा अपने राज्य के सभी प्रांतों में

## एस्टर

अधिकारी नियुक्त करें, और वे सभी सुंदर युवा कन्याओं को शूशन के गढ़ में लाएं, हरम में, हेगई के संरक्षण में, जो राजा का खोजा हुआ है और महिलाओं का प्रभारी है; और उन्हें उनके सौंदर्य प्रसाधन दिए जाएं।<sup>4</sup> तब वह युवा स्त्री जो राजा को प्रसन्न करे, वशी के स्थान पर रानी बने।<sup>5</sup> और यह बात राजा को अच्छी लगी, और उसने ऐसा ही किया।

<sup>5</sup> शूशन के गढ़ में एक यहूदी था जिसका नाम मोर्दैक था, जो याईर का पुत्र, शिपी का पुत्र, किश का पुत्र, बिन्यामीन वंशी था,<sup>6</sup> जो यरूशलेम से निवासित हुए थे, जिन्हें बाबुल के साथ बंदी बना लिया गया था, जो यहूदा के राजा यहोयाकिन के साथ निवासित हुए थे, जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने निवासित किया था।<sup>7</sup> वह हदस्सा का संरक्षक था, जो एस्टर है, उसकी चाचा की बेटी, क्योंकि उसके पास न पिता था न माता। अब वह युवा स्त्री काया और रूप में सुंदर थी, और जब उसके पिता और माता की मृत्यु हो गई, तो मोर्दैक ने उसे अपनी बेटी के रूप में लिया।

<sup>8</sup> तो ऐसा हुआ, जब राजा की आज्ञा और आदेश सुने गए, और कई युवा स्त्रीयाँ शूशन के गढ़ में हेगई के संरक्षण में इकट्ठी की गईं, कि एस्टर को राजा के महल में हेगई के संरक्षण में लिया गया, जो महिलाओं का प्रभारी था।<sup>9</sup> अब वह युवा स्त्री उसे प्रसन्न करती थी और उसने उसके साथ अनुग्रह पाया। इसलिए उसने जलदी से उसे सौंदर्य प्रसाधन और भोजन प्रदान किया, उसे राजा के महल से सात चुनी हुई सेविकाएँ दीं, और उसे और उसकी सेविकाओं को हरम में सबसे अच्छे स्थान पर स्थानांतरित कर दिया।<sup>10</sup> एस्टर ने अपने लोगों या अपनी वंशावली का खुलासा नहीं किया, क्योंकि मोर्दैक ने उसे उन्हें प्रकट न करने की आज्ञा दी थी।<sup>11</sup> और हर दिन मोर्दैक हरम के आंगन के सामने बलता था यह जानने के लिए कि एस्टर कैसी है और उसके साथ क्या हो रहा है।

<sup>12</sup> अब जब प्रत्येक युवा स्त्री की बारी राजा अहशवेरोश के पास जाने की आई, महिलाओं के लिए नियमों के तहत उसके बारह महीनों के अंत के बाद— क्योंकि उनके सौंदर्यकरण के दिन इस प्रकार पूरे हुए: छह महीने मिर्क के तेल के साथ और छह महीने मसालों और महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधनों के साथ—<sup>13</sup> तब युवा स्त्री इस प्रकार राजा के पास जाती थी: जो कुछ भी वह चाहती थी, उसे हरम से राजा के महल में ले जाने के लिए दिया जाता था।<sup>14</sup> शाम को वह जाती, और सुबह वह दूसरे हरम में लौटती, शाशगाज़ के संरक्षण में, जो

राजा का खोजा हुआ है और रखेलों का प्रभारी है। वह राजा के पास तब तक नहीं लौटती जब तक कि राजा उसमें प्रसन्न न हो और उसे नाम से बुलाया न जाए।

<sup>15</sup> अब जब एस्टेर की बारी आई, जो अबिहैल की बेटी थी, जो मोर्दैक के चाचा थे, जिन्होंने उसे अपनी बेटी के रूप में लिया था, राजा के पास जाने की, तो उसने कुछ भी नहीं मांगा सिवाय इसके कि हेगई, जो राजा का खोजा हुआ था और महिलाओं का प्रभारी था, ने सलाह दी। और एस्टेर ने उन सभी की आँखों में अनुग्रह पाया जिन्होंने उसे देखा।<sup>16</sup> इसलिए एस्टेर को राजा अहशवेरोश के पास ले जाया गया, उसके शाही महल में दसवें महीने (जो तेकेट का महीना है) उसके साथ सासन के सातवें वर्ष में।<sup>17</sup> और राजा ने एस्टेर को सभी अन्य महिलाओं से अधिक प्रेम किया, और उसने उसके साथ सभी कन्याओं से अधिक अनुग्रह और कृपा पाई, इसलिए उसने उसके सिर पर शाही मुकुट रखा और उसे वशी के स्थान पर रानी बनाया।<sup>18</sup> तब बारा जन ने एक बड़ा भोज दिया, एस्टेर का भोज, अपने सभी अधिकारियों और सेवकों के लिए। उसने प्रांतों के लिए एक अवकाश भी बनाया और राजा की उदारता के अनुसार उपहार दिए।

<sup>19</sup> अब जब कन्याओं को दूसरी बार इकट्ठा किया गया, तब मोर्दैक राजा के द्वार पर बैठा था।<sup>20</sup> एस्टेर ने अभी भी अपनी वंशावली या अपने लोगों का खुलासा नहीं किया था, जैसा कि मोर्दैक ने उसे निर्देश दिया था; क्योंकि एस्टेर मोर्दैक के निर्देशों का पालन करती थी जैसे उसने उसके संरक्षण में किया था।

<sup>21</sup> उन दिनों में, जब मोर्दैक राजा के द्वार पर बैठा था, बिगाथान और तेरश, दो राजा के खोजे हुए द्वारपालों में से, क्रोधित हो गए और राजा अहशवेरोश पर हाथ डालने की योजना बनाई।<sup>22</sup> तोकिन यह साजिश मोर्दैक को पता चली, और उसने रानी एस्टेर को सूचित किया, और एस्टेर ने राजा को मोर्दैक के नाम से बताया।<sup>23</sup> तब जब इस मामले की जाँच की गई और यह सत्य पाया गया, तो उन्हें दोनों को लकड़ी के गलों पर लटका दिया गया; और इसे राजा की उपस्थिति में इतिहास की पुस्तक में लिखा गया।

**3** इन घटनाओं के बाद राजा अहशवेरोश ने हामान को बढ़ावा दिया, जो हम्मदाथा का पुत्र और अगांवी था, और उसे ऊंचा किया और उसके अधिकार को उन सभी अधिकारियों पर स्थापित किया जो उसके साथ थे।

<sup>2</sup> राजा के द्वार पर उपस्थित सभी राजा के सेवक हामान

## एस्टेर

के सामने झुकते और उसे प्रणाम करते थे, क्योंकि राजा ने उसके बारे में ऐसा ही आदेश दिया था। परंतु मोर्दके न तो झुकता था और न ही प्रणाम करता था।

<sup>३</sup> तब राजा के द्वार पर उपस्थित राजा के सेवकों ने मोर्दके से कहा "तुम राजा के आदेश का उल्लंघन कर्यों कर रहे हो?" <sup>४</sup> अब ऐसा हुआ कि जब वे प्रतिदिन उससे बात करते थे और वह उनकी नहीं सुनता था, तो उन्होंने हामान को सूचित किया, कि देखें कि क्या मोर्दके का कारण ठहरता है; क्योंकि उसने उन्हें बताया था कि वह यहूदी है।

<sup>५</sup> जब हामान ने देखा कि मोर्दके न तो उसके सामने झुकता है और न ही प्रणाम करता है, तो हामान क्रध से भर गया। <sup>६</sup> परंतु उसने केवल मोर्दके पर हमला करना अपने लिए तुच्छ समझा, क्योंकि उन्हें बताया गया था कि मोर्दके के लोग कौन हैं, इसलिए हामान ने सभी यहूदियों को नष्ट करने की ओजना बनाई, जो मोर्दके के लोग थे, जो अहशवेरोश के पूरे राज्य में थे।

<sup>७</sup> पहले महीने (जो निसान का महीना है), राजा अहशवेरोश के बारहवें वर्ष में, पूर्-अर्थात् चिट्ठी—हामान के सामने डाली गई, दिन-प्रतिदिन और महीने-प्रतिमाह, जब तक कि बारहवां महीना (जो अदार का महीना है) नहीं आया।

<sup>८</sup> तब हामान ने राजा अहशवेरोश से कहा, "आपके राज्य के सभी प्रांतों में एक विशेष लोग फैले हुए और बिखरे हुए हैं; उनके नियम सभी अथ लोगों से पिछ़े हैं और वे राजा के नियमों का पालन नहीं करते, इसलिए राजा के हित में नहीं है कि उन्हें रहने दिया जाए। <sup>९</sup> यदि राजा को अच्छा लगे, तो यह आदेश दिया जाए कि उन्हें समाप्त कर दिया जाए, और मैं दस द्वजारा किकर चांदी उनके हाथ में ढंगा जो राजा के काम को अंजाम देंगे, जो राजा के खजाने में जमा की जाएगी।"

<sup>१०</sup> तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाली और हामान को दे दी, जो हम्मदाथा का पुत्र और अगामी था, जो यहूदियों का शत्रु था। <sup>११</sup> और राजा ने हामान से कहा, "चांदी तुम्हारी है, और लोग भी, तुम उनके साथ जैसा चाहो वैसा करो।"

<sup>१२</sup> तब राजा के लेखक पहले महीने के तेरहवें दिन बुलाए गए, और जैसा हामान ने आदेश दिया था, वैसे ही लिखा गया राजा के प्रांतों के शासकों, प्रत्येक प्रांत के राज्यपालों, और प्रत्येक लोगों के अधिकारियों को—

प्रत्येक प्रांत के लेखक के अनुसार और प्रत्येक लोगों की भाषा के अनुसार, राजा अहशवेरोश के नाम से लिखा गया और राजा की अंगूठी से सील किया गया। <sup>१३</sup>

पत्रवाहकों के द्वारा सभी राजा के प्रांतों में पत्र भेजे गए कि सभी यहूदियों को, छोटे और बड़े, महिलाओं और बच्चों को, एक ही दिन में— बारहवें महीने के तेरहवें दिन (जो अदार का महीना है)— नष्ट, मार, और समाप्त कर दिया जाए, और उनकी संपत्ति लूट ली जाए। <sup>१४</sup> इस आदेश की एक प्रति, जो प्रत्येक प्रांत में कानून के रूप में जारी की जानी थी, सभी लोगों को प्रकाशित की गई ताकि वे इस दिन के लिए तैयार रहें।

<sup>१५</sup> पत्रवाहक राजा के आदेश से शीघ्रता से निकले, और आदेश शूशन के गढ़ में जारी किया गया; और जब राजा और हामान बैठकर पी रहे थे, तब शूशन नगर में भ्रम की स्थिति थी।

**४** जब मोर्दके ने उन सब बातों के विषय में सुना जो ही चुकी थी, तो उसने अपने वस्त्र फाड़े, टाट और राख ओढ़ ली, और नगर के बीच में जाकर ऊँचे और कड़वे स्वर में रोने लगा। <sup>२</sup> और वह राजा के द्वार तक आया, क्योंकि कोई भी व्यक्ति टाट ओढ़कर राजा के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता था। <sup>३</sup> हर प्रांत में जहाँ भी राजा की आज्ञा और उसका आदेश पहुँचा, यहूदियों में बड़ा शोक था, उपवास, रोना और विलाप करना, और बहुत से लोग टाट और राख पर लेट गए।

<sup>४</sup> तब एस्टेर की दासियाँ और उसके खोजे उसके पास आकर उसे सूनना दी, और रानी को बड़ा भय हुआ। और उसने मोर्दके को वस्त्र भेजे ताकि वह अपना टाट उतार दे, पर उसने उन्हें स्वीकार नहीं किया। <sup>५</sup> तब एस्टेर ने हताक को, जो राजा के खोजों में से था और जिसे राजा ने उसकी सेवा में नियुक्त किया था, बुलाया और उसे मोर्दके के पास भेजा कि वह जाने कि यह क्या है और क्यों हो रहा है।

<sup>६</sup> तो हताक नगर के चौक में राजा के द्वार के सामने मोर्दके के पास गया। <sup>७</sup> मोर्दके ने उसे सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था, और वह धनराशि भी बताइ जो हामान ने यहूदियों के विनाश के लिए राजा के खजाने में देने की प्रतिज्ञा की थी। <sup>८</sup> उसने उसे वह आज्ञा-पत्र भी दिया जो शूशन में उनके विनाश के लिए जारी किया गया था, ताकि वह एस्टेर को दिखाए और उसे सूचित करे, और उसे राजा के पास जाकर दया की याचना करने और अपनी प्रजा के लिए प्रार्थना करने का आदेश दे।

## एस्टर

<sup>९</sup> तो हताक वापस आकर मोर्दैके के शब्द एस्टर को सुनाए। <sup>१०</sup> तब एस्टर ने हताक से कहा और उसे मोर्दैके को उत्तर देने का आदेश दिया: <sup>११</sup> “राजा के सभी सेवक और राजा के प्रांतों के लोग जानते हैं कि कोई भी पुरुष या स्त्री जो बिना बुलाए राजा के अंतरिक आँगन में जाता है, उसके लिए केवल एक ही नियम है: कि उसे मृत्यु दंड दिया जाए, जब तक कि राजा उसे सुनहरे राजदंड को न बढ़ाए ताकि वह जीवित रह सके। और मुझे इन तीस दिनों से राजा के पास आने के लिए नहीं बुलाया गया है।”

<sup>१२</sup> और उन्होंने एस्टर के शब्द मोर्दैके को सुनाए। <sup>१३</sup> तब मोर्दैके ने उन्हें एस्टर को उत्तर देने के लिए कहा, “यह मत सोचो कि तुम राजा के महल में होकर अन्य सभी यहूदियों से अधिक बच जाओगी।” <sup>१४</sup> क्योंकि यदि तुम इस समय चुप रहोगी, तो यहूदियों के लिए कहीं और से राहत और उद्धार आएगा, और तुम और तुम्हारे पिता का घर नष्ट हो जाएगा। और कौन जानता है कि तुमने ऐसे समय के लिए ही रानी का पद प्राप्त किया है?”

<sup>१५</sup> तब एस्टर ने उन्हें मोर्दैके को उत्तर देने के लिए कहा: <sup>१६</sup> “जाओ, शशन में पाए जाने वाले सभी यहूदियों को इकट्ठा करो, और मेरे लिए उपवास करो; तीन दिन, रात या दिन कुछ न खाओ और न पियो। मैं और मेरी दासियां भी इसी प्रकार उपवास करेंगी। और तब मैं राजा के पास जाऊँगी, जो कि कानून के अनुसार नहीं है; और यदि मैं नष्ट हो जाऊँ, तो नष्ट हो जाऊँ।” <sup>१७</sup> तो मोर्दैके चला गया और जीसा एस्टर ने उसे आदेश दिया था, उसने वैसा ही किया।

**५** अब तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एस्टर ने अपने शाही वस्त्र पहने और राजा के महल के अंतरिक आँगन में खड़ी हो गई, राजा के कक्षों के सामने, और राजा अपने शाही सिंहासन पर सिंहासन कक्ष में बैठा था, महल के प्रवेश द्वार के सामने। <sup>२</sup> जब राजा ने आँगन में खड़ी रानी एस्टर को देखा, तो उसने उसकी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त किया; और राजा ने एस्टर की ओर अपने हाथ में सोने का राजदंड बढ़ाया। इसलिए एस्टर ने आगे बढ़कर राजदंड के शीर्ष को छू लिया।

<sup>३</sup> तब राजा ने उससे कहा, “तुझे क्या परेशान कर रहा है, रानी एस्टर? और तेरी क्या याचना है? यहां तक कि आधा राज्य भी तुझे दिया जाएगा।”

<sup>४</sup> एस्टर ने कहा, “यदि राजा को अच्छा लगे, तो राजा और हामान आज उस भोज में आएं जो मैंने उनके लिए तैयार किया है।” <sup>५</sup> तब राजा ने कहा,

“हामान को शीघ्र लाओ ताकि हम एस्टर की इच्छा के अनुसार करें।” इसलिए राजा और हामान उस भोज में आए जो एस्टर ने तैयार किया था। <sup>६</sup> जब वे भोज में अपनी मदिरा पी रहे थे, राजा ने एस्टर से कहा, “तेरी क्या याचना है? क्योंकि वह तुझे दी जाएगी। और तेरी क्या इच्छा है? यहां तक कि आधा राज्य भी किया जाएगा।”

<sup>७</sup> इसलिए एस्टर ने उत्तर दिया और कहा, <sup>८</sup> “यदि मैंने राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाया है, और यदि राजा को मेरी याचना पूरी करने और मेरी इच्छा पूरी करने में अच्छा लगे, तो राजा और हामान उस भोज में आएं जो मैं उनके लिए तैयार करूँगी, और कल मैं राजा के कहे अनुसार करूँगी।”

<sup>९</sup> तब हामान उस दिन हर्षित और प्रसन्न मन से बाहर गया; परंतु जब हामान ने राजा के द्वार पर मोर्दैके को देखा, और वह उसके सामने खड़ा नहीं हुआ या कांप नहीं रहा, तो हामान मोर्दैके के प्रति क्रोध से भर गया। <sup>१०</sup> परंतु हामान ने स्वयं को नियंत्रित किया और अपने घर चला गया।

और उसने अपने मित्रों और अपनी पत्नी जेरेश को बुलाया। <sup>११</sup> तब हामान ने उन्हें अपनी धन-सम्पत्ति की महिमा के बारे में बताया, और अपने पुत्रों की संख्या के बारे में, और हर उस अवसर के बारे में जब राजा ने उसे सम्मानित किया था और कैसे उसने उसे राजा के अधिकारियों और सेवकों से ऊपर पदोन्नत किया था। <sup>१२</sup> हामान ने यह भी कहा, “यहां तक कि रानी एस्टर ने भी राजा के साथ भोज में आने के लिए केवल मुझे ही बुलाया था जो उसने तैयार किया था; और कल भी मैं उसके द्वारा राजा के साथ आमंत्रित हूँ।” <sup>१३</sup> फिर भी यह सब मुझे संतुष्ट नहीं करता हर बार जब मैं राजा के द्वार पर बैठे यहूदी मोर्दैके को देखता हूँ।”

<sup>१४</sup> तब उसकी पत्नी जेरेश और उसके सभी मित्रों ने उससे कहा, “पचास हाथ ऊँचा लकड़ी का फांसी का तख्ता बनवाओ, और सुबह राजा से मोर्दैके को उस पर लटकाने के लिए कहो; फिर राजा के साथ खुशी से भोज में जाओ।” और यह सलाह हामान को अच्छी लगी, इसलिए उसने फांसी का तख्ता बनवाया।

## एस्टर

**6** उस रात राजा को नीद नहीं आई, इसलिए उसने आदेश दिया कि अभिलेखों की पुस्तक, इतिहास की पुस्तक लाई जाए, और उन्हें राजा के सामने पढ़ा गया।<sup>2</sup> और यह लिखा पाया गया कि मोर्दके ने बिगथाना और तेरश के बारे में सूचना दी थी, जो राजा के दो खोजे थे और दरवाजे के रक्षक थे, कि उन्होंने राजा अहशवेरोश पर हाथ डालने का प्रयास किया था।

<sup>3</sup> तब राजा ने कहा, “मोर्दके के लिए इसके बदले में क्या सम्मान या प्रतिष्ठा दी गई है?” और राजा के सेवकों ने जो उसकी सेवा कर रहे थे कहा, “उसके लिए कुछ नहीं किया गया है।”

<sup>4</sup> तब राजा ने कहा, “आंगन में कौन है?” अब हामान राजा के महल के बाहरी आंगन में आया था ताकि राजा से मोर्दके को फांसी पर लटकाने के बारे में बात कर सके जो उसने उसके लिए तैयार किया था।<sup>5</sup> तब राजा के सेवकों ने उससे कहा, “देखो, हामान आंगन में खड़ा है!” और राजा ने कहा, “उसे अंदर आने दो।”

<sup>6</sup> तो हामान अंदर आया, और राजा ने उससे कहा, “उस व्यक्ति के लिए क्या किया जाना चाहिए जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है?”

और हामान ने अपने मन में कहा, “राजा मुझसे अधिक किसे सम्मानित करना चाहेगा?”<sup>7</sup> इसलिए हामान ने राजा से कहा, “उस व्यक्ति के लिए जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है,<sup>8</sup> उसे एक शाही वस्त्र लाने जिसे राजा ने पहना है, और वह घोड़ा जिस पर राजा सवार हुआ है, और जिसके सिर पर शाही मुकुट रखा गया है;<sup>9</sup> और वस्त्र और घोड़ा राजा के सबसे प्रतिष्ठित अधिकारियों में से एक को सौंप दें, और उन्हें उस व्यक्ति को वस्त्र पहनाएं जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है, और उसे शहर के चौराहे पर घोड़े पर सवार कराएं, और उसके सामने धोषणा करें, यह उस व्यक्ति के लिए किया जाएगा जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है।”

<sup>10</sup> तब राजा ने हामान से कहा, “जल्दी करो, जैसा तुमने कहा है वैसा ही वस्त्र और घोड़ा ले लो, और यहूदी मोर्दके के लिए ऐसा करो, जो राजा के द्वार पर बैठा है; तुमने जो कुछ कहा है उसमें से कुछ भी करने में असफल न हो।”

<sup>11</sup> तो हामान ने वस्त्र और घोड़ा लिया, और मोर्दके को वस्त्र पहनाया, और उसे शहर के चौराहे पर घोड़े पर सवार कराया, और उसके सामने धोषणा की, “यह उस

व्यक्ति के लिए किया जाएगा जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है।”

<sup>12</sup> फिर मोर्दके राजा के द्वार पर लौट आया। लेकिन हामान अपने घर जल्दी से चला गया, शोक में, अपने सिर को ढके हुए।<sup>13</sup> हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सभी मित्रों को वह सब बताया जो उसके साथ हुआ था।

तब उसके बुद्धिमान पुरुषों और उसकी पत्नी जेरेश ने उससे कहा, “यदि मोर्दके, जिसके सामने तुम गिरने लगे हो, यहूदी वंश का है, तो तुम उसके ऊपर विजय प्राप्त नहीं करोगे, बल्कि निश्चित रूप से उसके सामने गिरोगे।”<sup>14</sup> जब वे उससे बात कर ही रहे थे, तब राजा के खोजे आए और जल्दी से हामान को ले गए उस भोज में जो एस्टर ने तैयार किया था।

**7** अब राजा और हामान एस्टेर रानी के साथ दाखमधु पीने आए।<sup>2</sup> और राजा ने दूसरे दिन भी एस्टेर से कहा जब वे भोज में दाखमधु पी रहे थे, “तुम्हारी याचिका क्या है, रानी एस्टेर? यह तुम्हें दी जाएगी। और तुम्हारी विनीती क्या है? यहां तक कि आधा राज्य भी, यह किया जाएगा।”

तब रानी एस्टेर ने उत्तर दिया, “यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त कर चुकी हूं, हे राजा, और यदि यह राजा को प्रसन्न करता है, तो मेरी याचिका के रूप में मेरा जीवन मुझे दिया जाए, और मेरी प्रजा मेरी विनीती के रूप में;<sup>4</sup> क्योंकि हमें बेचा गया है, मैं और मेरी प्रजा, नष्ट होने, मारे जाने, और समाप्त होने के लिए। अब यह हमें केवल दासों के रूप में बेचा गया होता, पुरुष और महिलाएं, तो मैं चुप रहती, क्योंकि यह संकट राजा की परेशानी के बाबर नहीं होता।”

<sup>5</sup> तब राजा अहशवेरोश ने रानी एस्टेर से पूछा, “वह कौन है, और कहाँ है, जो ऐसा करने का साहस करेगा?”<sup>6</sup> और एस्टेर ने कहा, “एक शत्रु और दुश्मन यह दृष्ट हामान है।” तब हामान राजा और रानी के सामने भयभीत हो गया।<sup>7</sup> राजा अपने क्रोध में दाखमधु पीने से उठकर महल के बगीचे में चला गया; परंतु हामान रानी एस्टेर से अपने जीवन की भीख मांगने के लिए रुका, क्योंकि उसने देखा कि राजा ने उसके खिलाफ हानि का निर्णय लिया है।

<sup>8</sup> अब जब राजा महल के बगीचे से उस स्थान पर लौट आया जहाँ वे दाखमधु पी रहे थे, हामान उस सोफे पर

## एस्टर

गिर रहा था जहां एस्टर थी। तो राजा ने कहा, "क्या वह रानी पर मेरे घर में भी आक्रमण करेगा?" जैसे ही यह शब्द राजा के मुंह से निकला, उन्होंने हामान का चेहरा ढक दिया।

<sup>१</sup> तब हर्बोना, जो राजा के सामने खड़े हुए खोजों में से एक था, ने कहा, "वास्तव में, देखो, हामान के घर पर लकड़ी का फांसी का फंदा पचास हाथ ऊचा झड़ा है, जो हामान ने मोर्दके के लिए बनाया था, जिसने राजा के पक्ष में अच्छा बोला था!"

और राजा ने कहा, "उसे उसी पर लटका दो।"<sup>१०</sup> इसलिए उन्होंने हामान को उसी फांसी के फंदे पर लटका दिया जो उसने मोर्दके के लिए तैयार किया था, और राजा का क्रोध शांत हो गया।

**८** उसी दिन राजा अहशवेरोश ने यहूदियों के शत्रु हामान का घर रानी एस्टर को दे दिया; और मोर्दके राजा के सामने आया, क्योंकि एस्टर ने प्रकट किया था कि वह उसके लिए क्या है।<sup>१</sup> और राजा ने अपनी अंगूठी उतार ली, जो उसने हामान से तो ली थी, और उसे मोर्दके को दे दिया। और एस्टर ने मोर्दके को हामान के घर का अधिकारी बना दिया।

<sup>३</sup> तब एस्टर ने फिर राजा से बात की, उसके पैरों पर गिर पड़ी, रोई, और उससे विनती की कि वह अगागी हामान की बुरी योजना को रद्द कर दे, और उसकी साजिश को जो उसने यहूदियों के खिलाफ रची थी।<sup>४</sup> और राजा ने एस्टर की ओर सुनहरी राजदंड बढ़ाया। इसलिए एस्टर उठी और राजा के सामने खड़ी हो गई।

<sup>५</sup> तब उसने कहा, "यदि राजा को अच्छा लगे, और यदि मैंने उसके सामने अनुग्रह पाया है, और यह बात राजा को उचित लगे, और मैं उसकी दृष्टि में प्रसन्न हूँ, तो हामान, हमेदाता के पुत्र अगागी, द्वारा रचित पत्रों को रद्द करने के लिए लिखा जाए, जो उसने यहूदियों को नष्ट करने के लिए लिखा था जो सभी राजा के प्रांतों में हैं।<sup>६</sup> क्योंकि मैं कैसे सह सकती हूँ कि मेरे लोगों पर आने वाली विपत्ति को देखूँ? और मैं कैसे सह सकती हूँ कि मेरे संबंधियों के विनाश को देखूँ?"

<sup>७</sup> इसलिए राजा अहशवेरोश ने रानी एस्टर और यहूदी मोर्दके से कहा, "देखो, मैंने हामान का घर एस्टर को दे दिया है, और उसे लकड़ी के फांसी पर लटका दिया गया है क्योंकि उसने यहूदियों के खिलाफ अपने हाथ बढ़ाए थे।<sup>८</sup> अब तुम स्वयं राजा के नाम से यहूदियों के

संबंध में लिखो, जैसा तुम्हें अच्छा लगे, और इसे राजा की अंगूठी से सील कर दो; क्योंकि एक फरमान जो राजा के नाम से लिखा गया है और राजा की अंगूठी से सील किया गया है वह रद्द नहीं किया जा सकता।"

<sup>९</sup> इसलिए राजा के लेखक उस समय बुलाए गए, तीसरे महीने (जो सिवान का महीना है), तेर्सव दिन; और यह सब कुछ लिखा गया जैसा मोर्दके ने आदेश दिया था यहूदियों, क्षत्रियों, राज्यपालों, और प्रांतों के अधिकारियों के लिए भारत में लेकर कृष्ण तक, कुल 127 प्रांतों के लिए, हर प्रांत के अनुसार उसकी लिपि में, और हर लोगों के अनुसार उनकी भाषा में, साथ ही यहूदियों के लिए उनकी लिपि और उनकी भाषा में।<sup>१०</sup> उसने राजा अहशवेरोश के नाम से लिखा और राजा की अंगूठी से सील कर दिया, और घुड़सवारों द्वारा पथ भेजे, जो शाही घोड़ों पर सवार थे, दौड़ने वाली घोड़ियों की संतान।

<sup>११</sup> उनमें राजा ने यहूदियों को हर एक नगर में अधिकार दिया कि वे इकट्ठे हों और अपनी जान की रक्षा करें, किसी भी लोगों या प्रांत की पूरी सेना को नष्ट करने, मारने, और समाप्त करने के लिए जो उन पर हमला करने जा रहे थे, बच्चों और महिलाओं सहित, और उनकी तूट को तूटने के लिए,<sup>१२</sup> राजा अहशवेरोश के सभी प्रांतों में एक ही दिन, बारहवें महीने के तेरहवें दिन (जो अदार का महीना है)।<sup>१३</sup> हर एक प्रांत में कानून के रूप में जारी किए जाने वाले आदेश की एक प्रति सभी लोगों को प्रकाशित की गई, ताकि यहूदी इस दिन के लिए अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए तैयार हों।

<sup>१४</sup> घुड़सवार, शाही घोड़ों पर सवार, जल्दी से बाहर गए, राजा के आदेश से प्रेरित होकर, और आदेश शूशन के गढ़ में जारी किया गया।

<sup>१५</sup> तब मोर्दके राजा की उपस्थिति से बाहर आया बैंगनी और सफेद रंग के शाही वस्त्र में, सोने का बड़ा मुकुट और महीन लिनन और बैंगनी का वस्त्र पहने; और शूशन नगर ने जयकार की ओर आनन्दित हुआ।<sup>१६</sup> यहूदियों के लिए वहां प्रकाश, आनन्द, खुशी, और सम्मान था।<sup>१७</sup> हर एक प्रांत और हर एक नगर में, जहां भी राजा का आदेश और उसका फरमान पहुँचा, वहां यहूदियों के लिए आनन्द और खुशी, भोज और छुट्टी थी। और देश के कई लोगों ने यहूदी बनना स्वीकार किया, क्योंकि यहूदियों का भय उन पर छा गया था।

**९** अब बारहवें महीने (जो अदार महीना है), तेरहवें दिन जब राजा की आज्ञा और आदेश को पूरा किया

## एस्टर

जाना था, उस दिन जब यहूदियों के शत्रु उन पर अधिकार पाने की आशा कर रहे थे, तो विपरीत हुआ, ताकि यहूदी स्वयं उन लोगों पर हाती हो गए जो उनसे घृणा करते थे।<sup>2</sup> यहूदी अपने नगरों में राजा अहशवेरोष के सभी प्रांतों में इकट्ठे हुए उन पर हमला करने के लिए जो उन्हें नुकसान पहुंचाना चाहते थे; और कोई भी उनके सामने खड़ा नहीं हो सका, क्योंकि सभी लोगों पर उनका भय छा गया था।<sup>3</sup> यहां तक कि सभी प्रांतों के

अधिकारी, शासक, राज्यपाल, और जो राजा के कार्यों को संभालते थे, यहूदियों की मदद करते थे, क्योंकि मोर्दैक का भय उन पर छा गया था।<sup>4</sup> क्योंकि मोर्दैके राजा के महल में महान था, और उसकी प्रसिद्धि सभी प्रांतों में फैल गई; क्योंकि मोर्दैके नामक व्यक्ति महान और महानंदर होता गया।

<sup>5</sup> इसलिए यहूदियों ने अपनी तलवार से अपने सभी शत्रुओं को मारा, मार डाला और नष्ट कर दिया; और उन्होंने उन लोगों के साथ जैसा चाहा वैसा किया जो उनसे घृणा करते थे।<sup>6</sup> शूशन के गढ़ में यहूदियों ने पांच सौ पुरुषों को मार डाला और नष्ट कर दिया,<sup>7</sup> और उन्होंने परशंदता, दलफोन, अस्पता को मारा,<sup>8</sup> पोरेथा, अदल्या, अरिदाथा,<sup>9</sup> परमशता, अरिरै, अरिदै, और वैज्ञाथा,<sup>10</sup> हामान के दस पुत्रों को, जो हम्मदाथा का पुत्र और यहूदियों का शत्रु था; लेकिन उन्होंने लूट पर हाथ नहीं डाला।

<sup>11</sup> उस दिन शूशन के गढ़ में मारे गए लोगों की संख्या राजा को बताई गई।<sup>12</sup> और राजा ने रानी एस्त्रेर से कहा, “यहूदियों ने शूशन के गढ़ में पांच सौ पुरुषों और हामान के दस पुत्रों को मार डाला और नष्ट कर दिया; फिर उन्होंने राजा के बाकी प्रांतों में क्या किया होगा! अब तुम्हारी क्या मांग है? यह तुम्हें दी जाएगी। और तुम्हारी और क्या इच्छा है? यह भी पूरी की जाएगी।”

<sup>13</sup> तब एस्त्रेर ने कहा, “यदि राजा को अच्छा लगे, तो शूशन में यहूदियों को कल भी वही करने की अनुमति दी जाए जो उन्होंने आज किया है, और हामान के दस पुत्रों को फांसी पर लटकाया जाए।”<sup>14</sup> इसलिए राजा ने आदेश दिया कि ऐसा किया जाए, और शूशन में एक आदेश जारी किया गया, और उन्होंने हामान के दस पुत्रों को फांसी पर लटकाया।<sup>15</sup> शूशन में यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन फिर से इकट्ठा होकर, शूशन में तीन सौ पुरुषों को मार डाला, लेकिन उन्होंने लूट पर हाथ नहीं डाला।

<sup>16</sup> अब राजा के प्रांतों में बाकी यहूदियों ने इकट्ठा होकर, अपने जीवन की रक्षा करने और अपने शत्रुओं से छुटकारा पाने के लिए, और उन्होंने उन लोगों में से पचहत्तर हजार को मार डाला जो उनसे घृणा करते थे; लेकिन उन्होंने लूट पर हाथ नहीं डाला।<sup>17</sup> यह अदार महीने के तेरहवें दिन किया गया, और चौदहवें दिन उन्होंने विश्राम किया और इसे भोज और आनंद का दिन बनाया।

<sup>18</sup> लेकिन शूशन में यहूदियों ने उनी महीने के तेरहवें और चौदहवें दिन इकट्ठा होकर, पंद्रहवें दिन विश्राम किया, और इसे भोज और आनंद का दिन बनाया।

<sup>19</sup> इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के यहूदी, जो ग्रामीण नगरों में रहते हैं, अदार महीने के चौदहवें दिन को आनंद और भोज का अवकाश मानते हैं और एक-दूसरे को भोजन के हिस्से भेजते हैं।

<sup>20</sup> तब मोर्दैक ने इन घटनाओं को दर्ज किया, और उसने राजा अहशवेरोष के सभी प्रांतों में सभी यहूदियों को पत्र भेजे, चाहे वे निकट हों या दूर,<sup>21</sup> उहें अदार महीने के चौदहवें दिन और उसी महीने के पंद्रहवें दिन, वार्षिक रूप से मनाने के लिए बाथू करते हुए,<sup>22</sup> क्योंकि उन दिनों यहूदियों ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाया, और यह महीना उनके लिए शोक से खुशी में और विलाप से अवकाश में बदल गया; कि वे उन्हें भोज और आनंद के दिन बनाएं, और एक-दूसरे को भोजन के हिस्से और गरीबों को उपहार भेजें।

<sup>23</sup> इसलिए यहूदियों ने जो कुछ उन्होंने शुरू किया था उसे अपनाया, और जो मोर्दैक ने उन्हें लिखा था।<sup>24</sup> क्योंकि हामान, हम्मदाथा का पुत्र अगागी, सभी यहूदियों का शत्रु, ने यहूदियों को नष्ट करने की योजना बनाई थी, और उहें नष्ट करने और नष्ट करने के लिए पूर (अर्थात्, लॉट) डाला था।<sup>25</sup> लेकिन जब यह राजा के ध्यान में आया, तो उसने पत्र द्वारा आदेश दिया कि उसकी दुष्ट योजना जो उसने यहूदियों के खिलाफ बनाई थी वापस उसके अपने सिर पर लौट आए, और वह और उसके पुत्रों को फांसी पर लटकाया जाए।<sup>26</sup> इसलिए उन्होंने इन दिनों को पूरिम कहा, पूर के नाम पर। और इस पत्र में दिए गए निर्देशों के कारण, जो उन्होंने इस संबंध में देखा और जो उनके साथ हुआ,<sup>27</sup> यहूदियों ने अपने लिए एक प्रथा स्थापित की, अपने वंशजों के लिए और सभी के लिए जो उनके साथ जुड़ते हैं, ताकि वे इन दो दिनों को प्रत्येक वर्ष, उनके नियम और उनके निर्धारित समय के अनुसार मनाना न भूलें।<sup>28</sup> इसलिए इन दिनों

## एस्टर

को याद किया जाना और मनाया जाना था हर पीढ़ी, हर परिवार, हर प्रांत, और हर नगर में; और ये पूरिम के दिन यहूदियों के बीच उपेक्षित नहीं होने चाहिए, और न ही उनके वंशजों से उनकी स्मृति मिटनी चाहिए।

<sup>29</sup> तब रानी एस्टर, अबीहैल की पुत्री, यहूदी मोर्दैके के साथ, पूरिम के बारे में इस दूसरे पत्र की पुष्टि करने के लिए पूर्ण अधिकार के साथ लिखा। <sup>30</sup> उसने सभी यहूदियों को पत्र भेजे, अहशवेरोस के राज्य के 127 प्रांतों में, शासि और सत्य के शब्द, <sup>31</sup> इन पूरिम के दिनों को उनके निर्धारित समय पर स्थापित करने के लिए, जैसा कि यहूदी मोर्दैके और रानी एस्टर ने उनके लिए स्थापित किया था, और जैसा कि उन्होंने अपने लिए और अपने वंशजों के लिए स्थापित किया था उनके उपवास और उनके विलाप के समय के लिए निर्देशों के साथ। <sup>32</sup> एस्टर की आज्ञा ने पूरिम के लिए इन प्रथाओं को स्थापित किया, और इसे पुस्तक में लिखा गया।

**10** अब राजा अहशवेरोस ने देश और समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों पर कर लगाया। <sup>2</sup> और उसके अधिकार और शक्ति की सभी उपलब्धियाँ, और मोर्दैकी महानता का पूरा विवरण जिस पर राजा ने उसे पदोन्नत किया था, क्या वे मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं? <sup>3</sup> क्योंकि यहूदी मोर्दैके राजा अहशवेरोस के बाद दूसरे स्थान पर था, और यहूदियों में महान था, और अपने अनेक संबंधियों के बीच प्रिय था, वह जो अपनी प्रजा की भलाई चाहता था और जो अपनी पूरी जाति के कल्याण के लिए बोलता था।

## अथूब

**1** उज्ज देश में एक व्यक्ति था जिसका नाम अथूब था; और वह व्यक्ति निर्दोष, सीधा, परमेश्वर से डरने वाला और बुराई से दूर रहने वाला था।<sup>2</sup> उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ थीं।<sup>3</sup> उसकी संपत्ति में 7,000 भेड़ें, 3,000 ऊँट, 500 जोड़ी बैल, 500 गधी, और बहुत सारे सेवक थे; और वह व्यक्ति पूर्व के सभी लोगों में सबसे महान था।

<sup>4</sup> उसके बेटे अपने-अपने दिन पर अपने घर में भोज किया करते थे, और वे अपने तीन बहनों को खाने-पीने के लिए बुलाते थे।<sup>5</sup> जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तो अथूब उरुँग बुलाकर पवित्र करता, सुबह जल्दी उठकर उनके सभी के लिए होमबलि चढ़ाता; क्योंकि अथूब कहता, "शायद मेरे बेटों ने पाप किया हो और अपने दिल में परमेश्वर को शाप दिया हो।" इस प्रकार अथूब लगातार करता था।

<sup>6</sup> अब एक दिन परमेश्वर के पुत्र प्रभु के सामने उपस्थित होने आए, और शैतान भी उनके बीच आया।<sup>7</sup> प्रभु ने शैतान से कहा, "तू कहाँ से आया है?"

तब शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया और कहा, "धरती पर इधर-उधर घूमते और टहलते हुए।"<sup>8</sup> प्रभु ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अथूब पर ध्यान दिया है? धरती पर उसके सामान कोई नहीं है, वह निर्दोष और सीधा है, परमेश्वर से डरता है और बुराई से दूर रहता है।"

<sup>9</sup> तब शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया और कहा, "क्या अथूब बिना किसी कारण के परमेश्वर से डरता है?<sup>10</sup> क्या तूने उसके और उसके घर के चारों ओर और उसके सब कुछ के चारों ओर बाढ़ नहीं बनाई है? तूने उसके हाथों के काम को आशीर्वाद दिया है, और उसकी संपत्ति देश में बढ़ गई है।"<sup>11</sup> परंतु अब तू अपना हाथ बढ़ा और उसके सब कुछ को छू, वह निश्चित रूप से तुझे तेरा मुँह पर शाप देगा।"

<sup>12</sup> तब प्रभु ने शैतान से कहा, "देख, उसका सब कुछ तेरे अधिकार में है, केवल उस पर हाथ न डालना।" तो शैतान प्रभु की उपस्थिति से चला गया।

<sup>13</sup> अब जिस दिन उसके बेटे और उसकी बेटियाँ उसके बड़े भाई के घर में खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे थे,<sup>14</sup> एक दूत अथूब के पास आया और कहा, "बैल हल जोत रहे थे और गर्थी उनके पास चर रही थीं,"<sup>15</sup> और

सबाईयों ने हमला किया और उरुँग ले गए। उरुँग तलवार की धार से सेवकों को भी मार डाला, और मैं अकेला बचकर तुझे बताने आया हूँ।"

<sup>16</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, तो एक और आया और कहा, "परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और भेड़ों और सेवकों को जला दिया और उरुँग भस्त कर दिया, और मैं अकेला बचकर तुझे बताने आया हूँ।"

<sup>17</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, तो एक और आया और कहा, "कल्दियों ने तीन दल बनाए, ऊँटों पर धावा बोला और उरुँग ले गए, और तलवार की धार से सेवकों को मार डाला, और मैं अकेला बचकर तुझे बताने आया हूँ।"

<sup>18</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, तो एक और आया और कहा, "तेरे बेटे और तेरी बेटियाँ खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे थे अपने बड़े भाई के घर में,"<sup>19</sup> और देखो, जंगल के पार से एक बड़ी हवा आई और घर के चारों कोनों पर टकराई, और वह युक्तों पर गिर गया और वे मर गए, और मैं अकेला बचकर तुझे बताने आया हूँ।"

<sup>20</sup> तब अथूब उठ खड़ा हुआ, उसने अपना वस्त्र फाड़ा, और अपना सिर मुंदाया; पिर वह भूमि पर गिरा और उपासना की।<sup>21</sup> और उसने कहा,

"नंगा मैं अपनी माँ के गर्भ से आया, और नंगा ही वहाँ लौट जाऊँगा। प्रभु ने दिया और प्रभु ने ले लिया। प्रभु के नाम की स्तुति हो।"

<sup>22</sup> इन सब के बावजूद, अथूब ने पाप नहीं किया, न ही उसने परमेश्वर को दोष दिया।

**2** फिर एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के पुत्र यहोवा के सामने उपस्थित होने आए, और शैतान भी उनके बीच यहोवा के सामने उपस्थित होने आया।<sup>2</sup> यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ से आया है?"

तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, "पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते हुए और उस पर चलने-फिरने से।"

<sup>3</sup> यहोवा ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे दास अथूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं है, वह निर्दोष और सीधा है, परमेश्वर का भय मानता है

## अथ्यूब

और बुराई से दूर रहता है। और वह अब भी अपनी सच्चाई पर दृढ़ बना हुआ है, हालांकि तूने मुझे उसके विरुद्ध उक्साया कि उसे बिना कारण नष्ट करूँ।"

<sup>4</sup> शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, "त्वचा के बदले त्वयि। वास्तव में, मनुष्य अपने जीवन के लिए सब कुछ दे देता।" <sup>5</sup> हालांकि, अब अपना हाथ बढ़ा और उसकी हड्डी और उसके मास को क्षृः वह तुझे तेरे मुँह पर शाप देगा!"

<sup>6</sup> तब यहोवा ने शैतान से कहा, "देख, वह तेरे हाथ में है, केवल उसके जीवन को बचाए रखना।"

<sup>7</sup> तब शैतान यहोवा की उपस्थिति से बाहर गया और अथ्यूब को उसके पैर के तलवे से लेकर सिर के शीर्ष तक भयंकर फोड़ों से मारा। <sup>8</sup> और अथ्यूब ने एक टूटी हुई मिट्टी का टुकड़ा लिया ताकि वह खुद को खुजा सके जब वह राख में बैठा था।

<sup>9</sup> तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, "क्या तू अब भी अपनी सच्चाई पर दृढ़ बना हुआ है? परमेश्वर को शाप दे और मर जाए!"

<sup>10</sup> पर उसने उससे कहा, "तू मूर्ख स्त्रियों की तरह बोल रही है। क्या हम वास्तव में परमेश्वर से अच्छा स्तीकार करेंगे लेकिन विपत्ति नहीं?" इन सबके बावजूद, अथ्यूब ने अपने होंठों से पाप नहीं किया।

<sup>11</sup> अब जब अथ्यूब के तीन मित्रों ने सुना कि उस पर यह सारी विपत्ति आ पड़ी है, तो वे, प्रयत्ने के अनने स्थान से आए—तेमान का एलीफज, शूही का बिल्दर, और नामाती का सोपर। और उन्होंने उसके साथ सहानुभूति रखने और उसे सांत्वना देने के लिए एक साथ नियुक्ति की। <sup>12</sup> जब उन्होंने दूर से देखा, तो वे उसे पहचान नहीं सके; और उन्होंने अपनी आवाजें उठाई और रोए। और उनमें से प्रत्येक ने अपना वस्त फाढ़ा, और उन्होंने अपने सिर पर आकाश की ओर धूल फेंकी। <sup>13</sup> तब वे सात दिन और सात रातें उसके साथ भूमि पर बैठे और किसी ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका दर्द बहुत बड़ा था।

**3** इसके बाद अथ्यूब ने अपना मुँह खोला और अपने जन्म के दिन को शाप दिया। <sup>2</sup> और अथ्यूब ने कहा,

<sup>3</sup> "वह दिन नष्ट हो जाए जिस दिन मैं जन्मा था, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'एक लड़का गर्भ में आया है।' <sup>4</sup> वह दिन अधकारमय हो जाए ऊपर का परमेश्वर उसकी चिता न करे, न ही उस पर प्रकाश चमके। <sup>5</sup> अंधकार और काली छाया उसे अपना ले, एक बादल उस पर बसे दिन की काली छाया उसे भयभीत करे। <sup>6</sup> उस रात के लिए अंधकार उसे पकड़ ले, वह वर्ष के दिनों में अनंदित न हो, वह महीनों की संख्या में न आए। <sup>7</sup> देखो, वह रात बाँझ हो जाए उसमें कोई आनंदमय जयकार न हो।" <sup>8</sup> वे लोग उसे शाप दें जो दिन को शाप देते हैं, जो लैविथान को जगाने के लिए तैयार हैं। <sup>9</sup> उसकी साँझ के तारे अधकारमय हो जाएं, वह प्रकाश की प्रतीक्षा करे पर उसे न पाए, और वह भीर का उदय न देखे। <sup>10</sup> क्योंकि उसने मेरी माँ के गर्भ का द्वारा बंद नहीं किया, या मेरी आँखों से संकट को नहीं छिपाया।

<sup>11</sup> मैं जन्मते ही क्यों नहीं मर गया, गर्भ से निकलकर क्यों नहीं चला गया? <sup>12</sup> क्यों घुटने थे मुझे ग्रहण करने के लिए, और स्तन, कि मैं द्रूष्य पी सकूः? <sup>13</sup> क्योंकि अब मैं लेट जाता और शांत रहता, मैं सोता, तब मैं विश्राम मैं होता, <sup>14</sup> पृथक्की के राजाओं और मत्रियों के साथ, जिन्होंने अपने लिए खंडहरों का पुनर्निर्माण किया, <sup>15</sup> या उन शासकों के साथ जिनके पास सोना था, जो अपने घरों को चांदी से भरते थे। <sup>16</sup> या जैसे एक छिपा हुआ गर्भात, मैं अस्तित्व में नहीं होता, जैसे शिशु जिन्होंने कभी प्रकाश नहीं देखा। <sup>17</sup> वहां दुश्म क्रोध करना बंद कर देते हैं, और वहां थके हुए विश्राम में होते हैं। <sup>18</sup> कैदी एक साथ आराम में होते हैं वे कार्यकर्ता की आवाज नहीं सुनते। <sup>19</sup> वहां छोटे और बड़े दोनों होते हैं, और दास अपने स्वामी से मुक्त होता है।

<sup>20</sup> क्यों एक दुखी आमा को प्रकाश दिया जाता है, और जीवन करवे आमा को, <sup>21</sup> जो मृत्यु की लालसा करते हैं, पर वह नहीं मिलती, और जो छिपे खजानों से अधिक उसे छोड़ते हैं, <sup>22</sup> जो अत्यधिक आनंदित होते हैं, वे कब्र मिलने पर खुश होते हैं। <sup>23</sup> क्यों एक व्यक्ति को प्रकाश दिया जाता है जिसकी राह छिपी है, और जिसे परमेश्वर ने बंद कर दिया है? <sup>24</sup> क्योंकि मेरी कराह मेरे भोजन के दृश्य पर आती है, और मेरी चीखे पानी की तरह बहती है। <sup>25</sup> क्योंकि जो मैं डरता था वह मुझ पर आता है, और जो मैं आशंका करता था वह मुझसे मिलता है। <sup>26</sup> मैं न तो आराम मैं हूँ, न ही शांत हूँ, और मैं विश्राम में नहीं हूँ, पर अशांति आती है।"

## अथूब

**4** तब तेमानी एलीफ़ज ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> “यदि कोई तुम्हारे साथ एक शब्द कहे, तो क्या तुम अधीर हो जाओगे? पर कौन बोलने से रुक सकता है?

<sup>3</sup> देखो तुमने बहुतों को शिक्षा दी है, और तुमने कमज़ोर हाथों को मजबूत किया है।<sup>4</sup> तुम्हारे शब्दों ने ठोकर खाने वालों को खड़ा किया है, और तुमने कमज़ोर घुटनों को मजबूत किया है।<sup>5</sup> पर अब यह तुम्हारे पास आता है, और तुम अधीर हो जाते हो।<sup>6</sup> क्या परमेश्वर का भय तुम्हारा विश्वास नहीं है, और तुम्हारे मार्गों की सच्चाई तुम्हारी आशा नहीं है?

<sup>7</sup> “अब याद करो, कौन निर्दोष होकर नष्ट हुआ है? या कहाँ सीधे लोग नष्ट हुए हैं?<sup>8</sup> जैसा मैंने देखा है, वे जो बुराई की जुटाई करते हैं और जो संकट बोते हैं, वे उसे काटते हैं।<sup>9</sup> परमेश्वर की सास से वे नष्ट हो जाते हैं, और उसकी क्रोध की फूँक से वे समाप्त हो जाते हैं।<sup>10</sup> सिंह की गर्जना और भयकर सिंह की आवाज, और युगा सिंहों के दांत टूट जाते हैं।<sup>11</sup> शिकार की कमी के कारण सिंह मर जाता है, और सिंहनी के शावक बिखर जाते हैं।

<sup>12</sup> “अब एक शब्द मुझे गुप्त रूप से लाया गया, और मेरे कान ने उसकी फुसफुसाहट सुनी।<sup>13</sup> रात के दर्शन से उत्तम अशांत विचारों के बीच, जब गहरी नींद लोगों पर आती है,<sup>14</sup> भय मुझ पर आया, और कापने लगा, और मेरी सारी हँड़ियाँ हिल गई।<sup>15</sup> तब एक आत्मा मेरे चूहरे के पास से उजरा, मेरे शरीर के बाल खड़े हो गए।<sup>16</sup> वह स्थिर खड़ा था, पर मैं उसकी आकृति को पहचान नहीं सका; मेरी आँखों के सामने एक रूप था, वहाँ मौन था, फिर मैंने एक आवाज सुनी।<sup>17</sup> क्या मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी हो सकता है? क्या मनुष्य अपने सुषिकर्ता के सामने शुद्ध हो सकता है?<sup>18</sup> वह अपने सेवकों पर भी विश्वास नहीं करता, और वह अपने सर्वद्वितों को भी त्रुटि का दोषी ठहराता है।<sup>19</sup> तो किनते अधिक वे जो मिट्टी के धरों में रहते हैं, जिनकी नींव धूल में है, जो पत्तों से पहले कुचले जाते हैं,<sup>20</sup> सुबह और शाम के बीच वे टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं, बिना ध्यान दिए, वे सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं।<sup>21</sup> क्या उनकी तम्भ की रस्सी उनके भीतर से नहीं खीची जाती? वे मर जाते हैं, फिर भी बिना ज्ञान के।”

**5** “अब पुकारो, क्या कोई तुम्हें उत्तर देगा? और तुम किस पवित्र जन की ओर मुड़ोगे?<sup>2</sup> क्योंकि क्रोध मूर्ख को मार डालता है, और इर्ष्या भोले को मृत्यु की ओर

ले जाती है।<sup>3</sup> मैंने पूर्ख को जड़ पकड़ते देखा है, और मैंने तुरंत उसके घर को शाप दिया।<sup>4</sup> उसके पुत्र सुरक्षा से द्वार हैं, वे फाटक में भी दबाए जाते हैं, और कोई उद्धारकर्ता नहीं है।<sup>5</sup> भूखे उसकी फसल को खा जाते हैं और कांटों से भी उसे ले जाते हैं, और योजनाकार उनकी संपत्ति के पीछे हाँफत है।<sup>6</sup> क्योंकि विपत्ति धूल से नहीं आती, न ही संकट धूमि से उगता है,<sup>7</sup> परंतु मनुष्य संकट के लिए उत्तम होता है, जैसे विगारियाँ ऊपर की ओर उड़ती हैं।

<sup>8</sup> “फिर भी, मैं परमेश्वर की खोज करूँगा, और मैं परमेश्वर से अपनी प्रार्थना करूँगा।<sup>9</sup> जो महान और अगम्य कार्य करता है, अनगिनत वर्मलकार करता है।<sup>10</sup> वह पूरी पर वर्षा देता है, और खेतों पर जल भेजता है,<sup>11</sup> ताकि वह नींवों को ऊँचा करे, और शोक करने वाले सुरक्षा में उठाए जाएं।<sup>12</sup> वह चालाकों की योजनाओं को विफल करता है, ताकि उनके हाथ सफलता प्राप्त न कर सकें।<sup>13</sup> वह बुद्धिमानों को उनकी अपनी चुरुराई से पकड़ता है, और चालाकों की सलाह जल्दी ही विफल हो जाती है।<sup>14</sup> दिन में वे अंधकार का सामना करते हैं, और दोपहर में रात की तरह टटोलते हैं।<sup>15</sup> परंतु वह उनके मुख की तलवार से बचाता है, और गरीब को बलवान के हाथ से बचाता है।<sup>16</sup> इसलिए असहाय को आशा है, और अन्याय अपना मुँह बंद कर लेता है।

<sup>17</sup> “देखो, वह व्यक्ति धन्य है जिसे परमेश्वर अनुशासित करता है, इसलिए सर्वशक्तिमान की अनुशासन को अस्तीकार मत करो।<sup>18</sup> क्योंकि वह पीड़ा देता है, और राहत भी देता है, वह धाव करता है, और उसके हाथ भी चंगा करते हैं।<sup>19</sup> वह तुम्हें छ नहीं सँकरी।<sup>20</sup> काला में वह तुम्हें मृत्यु से छुड़ाएगा, और युद्ध में, तलवार की शक्ति से।<sup>21</sup> तुम जीभ की मार से छिपे रहोगे, और जब हिंसा आएगी तो तुम नहीं डरोगे।<sup>22</sup> तुम हिंसा और भूख से रहने वाली जानवरों से नहीं डरोगे।<sup>23</sup> क्योंकि तुम खेत के पत्तरों के साथ संस्थि में रहोगे, और खेत के जानवर तुम्हारे साथ शांति में रहेंगे।<sup>24</sup> तुम जानोगे कि तुम्हारा तंबू सुरक्षित है, क्योंकि तुम अपने घर का दौरा करोगे और कुछ भी गायब नहीं पाओगे।<sup>25</sup> तुम यह भी जानोगे कि तुम्हारे वर्श बहुत होंगे, और तुम्हारी संतति पृथ्वी की धास के समान होगी।<sup>26</sup> तुम परिषक आयु में कब्र में जाओगे, जैसे अपने समय में अनाज का ढेर लगाया जाता है।<sup>27</sup> देखो, हमने इसे जाचा है, और ऐसा ही है, इसे सुनो, और स्वयं के लिए जानो।”

## अथूब

**6** तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> “अहा, यदि मेरी पीड़ा को वास्तव में तौला जाता और मेरे संकट के साथ तराजू में रखा जाता <sup>3</sup> क्योंकि तब यह समुद्र की रेत से भी भारी होता, इसलिए मेरे शब्द जल्दगाजी में कहे गए हैं। <sup>4</sup> क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे भीतर हैं उनका विष मेरी आत्मा पीती है, परमेश्वर के भय मेरे विरुद्ध खड़े हैं। <sup>5</sup> क्या जगली गधा हरी घास पर चिलाता है, या बैल अपने चारों पर रंभता है? <sup>6</sup> क्या बिना नमक के बेस्ताद चीज़ खार्ह जा सकती है, या मल्लों के रस में खाद है? <sup>7</sup> मेरी आत्मा उन्हें छूने से इंकार करती है, वे मेरे लिए धृणास्पद भोजन के समान हैं।

<sup>8</sup> अहा, यदि मेरी याचना पूरी हो जाए, और परमेश्वर मुझे वह दे जो मैं चाहता हूँ। कशः परमेश्वर मुझे कुचलने के लिए तैयार होता, कि वह अपना हाथ छोड़कर मुझे काट डालता। <sup>10</sup> लेकिन यह अभी भी मेरी सांत्वना है, और मैं बिना दया के दर्द में आनंदित हूँ कि मैंने पवित्र का शब्द नहीं नकारा है।

<sup>11</sup> मेरी ताकत क्या है, कि मैं प्रतीक्षा करूँ? और मेरा अंत क्या है, कि मैं सहन करूँ? <sup>12</sup> क्या मेरी ताकत पत्थरों की ताकत है, या मेरा शरीर कांस्य का है? <sup>13</sup> क्या यह है कि मेरे भीतर कोई सहायता नहीं है, और सफलता मुझसे दूर हो गई है?

<sup>14</sup> निराश व्यक्ति के लिए उसके मित्र से दया होनी चाहिए, ताकि वह सर्वशक्तिमान के भय को न छोड़े।

<sup>15</sup> मेरे भाइयों ने थोखेबाजी की है जैसे एक बादी, जैसे वादियों की धाराएँ जो सूख जाती हैं। <sup>16</sup> जो बर्फ के कारण अंधकारमय हैं, और जिनमें बर्फ पिछलती है।

<sup>17</sup> जब वे सूखे जाती हैं, तो गायब हो जाती हैं, जब गर्म होती है, तो वे अपनी जगह से गायब हो जाती हैं। <sup>18</sup> उनके मार्ग की राहें धूमती हैं, वे कुछ नहीं में चली जाती हैं और नष्ट हो जाती है। <sup>19</sup> तेस के कारबा ने देखा, शेबा के यात्री उनकी आशा करते थे। <sup>20</sup> वे लजित हुए, क्योंकि उन्होंने विश्वास किया था, वे वहाँ आए और अपमानित हुए। <sup>21</sup> वास्तव में, अब तुम भी ऐसे हो गए हो; तुम भय देखते हो और डरते हो। <sup>22</sup> क्या मैंने कहा, ‘मुझे कुछ दो: या, ‘अपने धन से मेरे लिए रिश्त दो।’ <sup>23</sup> या, ‘मुझे शरु के हाथ से बचाओ; या, ‘मुझे उत्तीर्णकों के हाथ से छुड़ाओ?’

<sup>24</sup> मुझे सिखाओ, और मैं चुप रहूँगा, और मुझे दिखाओ कि मैंने कैसे गलती की है। <sup>25</sup> ईमानदार शब्द कितने

पीड़ादायक होते हैं, लेकिन तुम्हारी दलील क्या साक्षित करती है? <sup>26</sup> क्या तुम मेरे शब्दों को फटकारने का इरादा रखते हो, निराश व्यक्ति के शब्द, जो हवा के समान हैं? <sup>27</sup> तुम अनाथों के लिए भी चिढ़ियाँ डालोगे, और अपने मित्र के लिए सौदा करोगे।

<sup>28</sup> अब कृपया मेरी ओर देखो, और देखो कि क्या मैं तुम्हारे सामने झूठ बोलता हूँ। <sup>29</sup> कृपया मुझ जाओ, अन्याय न हो, मुझ जाओ, मेरी धार्मिकता अभी भी बरकरार है। <sup>30</sup> क्या मेरी जीवन पर अन्याय है? क्या मेरी स्वादेशिय आपदा को नहीं पहचान सकती?

**7** <sup>31</sup> क्या मनुष्य को पृथ्वी पर श्रम करने के लिए मज़बूर नहीं किया जाता, और क्या उसके दिन मज़बूर के दिनों के समान नहीं होते? <sup>2</sup> जैसे दास छाया के लिए तरसता है, और जैसे मज़बूर अपनी मज़बूरी के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करता है, <sup>3</sup> वैसे ही मुझे व्यर्थ के महीने दिए गए हैं, और गर्व में लिए परेशानी से भरी हुई हैं। <sup>4</sup> जब मैं लेटता हूँ तो कहता हूँ, ‘मैं कब उट्टूँगा?’ लेकिन रात चलती रहती है, और मैं लगातार सुबह तक करबटें बदलता रहता हूँ। <sup>5</sup> मेरा शरीर कीड़े और मिट्टी की पपड़ी से ढका हुआ है, मेरी त्वचा कठोर हो जाती है और रिसती है।

<sup>6</sup> मेरे दिन बुनकर की करधा से भी तेज हैं, और वे बिना आशा के समाप्त हो जाते हैं। <sup>7</sup> याद रखो कि मेरा जीवन एक सांस है, मेरी औँखें फिर से भलाई नहीं देखेंगी। <sup>8</sup> जो मुझे देखता है उसकी औँखें मुझ पर अब और नहीं इकट्ठी, आपकी औँखें मुझ पर होगी, लेकिन मैं अस्तित्व में नहीं रहूँगा। <sup>9</sup> बादल गायब हो जाता है, और वह चला जाता है, वैसे ही जीशोल में उतरता है वह चापस नहीं आता। <sup>10</sup> वह फिर से अपने धर नहीं लौटेगा, और न ही उसकी जगह उसे और पहचानेगी।

<sup>11</sup> इसलिए मैं अपने मुँह को नहीं रोकूँगा, मैं अपनी आत्मा की पीड़ा में बोलूँगा, मैं अपनी आत्मा की कड़वाहट में शिकायत करूँगा। <sup>12</sup> क्या मैं समुद्र हूँ, या समुद्री दानव, कि अपने मुझ पर पहरा बिठा रखा है? <sup>13</sup> यदि मैं कहता हूँ, ‘मेरा बिस्तर मुझे सांत्वना देगा, मेरी खाट मेरी शिकायत को कम करेगा,’ <sup>14</sup> तब आप मुझे सपनों से डराते हैं, और मुझे दर्शन से आतंकित करते हैं, <sup>15</sup> ताकि मेरी आत्मा धूटन को चुने, मेरे दर्द के बजाय मुस्तु को। <sup>16</sup> मैं नष्ट हो जाता हूँ, मैं हमेशा के लिए नहीं जीऊँगा। मुझे अकेला छोड़ दी क्योंकि मेरे दिन के बीच एक सांस हैं।

## अथूब

<sup>17</sup> मनुष्य क्या है कि आप उसे ऊँचा उठाते हैं, और कि आप उसके बारे में चिंतित हैं<sup>18</sup> कि आप उसे हर सुबह जाँचते हैं और हर पल उसे परखते हैं<sup>19</sup> क्या आप कभी मुझसे नजर नहीं हटाएँगे, और न ही मुझे अकेला छोड़ेंगे जब तक कि मैं अपनी लार निगल न दूँ<sup>20</sup> क्या मैंने पाप किया है मैंने आपके लिए क्या किया है मानव जाति के प्रहरी? आपने मुझे अपने लक्ष्य के रूप में क्यों रखा है ताकि मैं अपने लिए बोझ बन जाऊँ<sup>21</sup> किस आप मेरी गलतियों को क्यों नहीं माफ करते और मेरा दोष क्यों नहीं दूर करते? क्योंकि अब मैं धूल में लेट जाऊँगा, और आप मुझे खोजेंगे, तोकिन मैं नहीं रहूँगा।

### 8 तब शूही बिल्दद ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "तुम कब तक ये बातें कहोगे, और तुम्हारे मुँह के शब्द प्रचंड वायु के समान होंगे? <sup>3</sup> क्या परमेश्वर न्याय को विकृत करता है? या सर्वशक्तिमान सही को विकृत करता है?<sup>4</sup> यदि तुम्हारे पुत्रों ने उसके विरुद्ध पाप किया, तो उसने उन्हें उनके अपराध की शक्ति के हवाले कर दिया।<sup>5</sup> यदि तुम परमेश्वर की खोज करोगे और सर्वशक्तिमान की दया के लिए प्रार्थना करोगे,<sup>6</sup> यदि तुम शुद्ध और सीधा हो, तो निश्चय ही वह तुम्हारे लिए उठ खड़ा होगा और तुम्हारे उचित निवास को पुनःस्थापित करेगा।<sup>7</sup> यद्यपि तुम्हारी शुरुआत नगण्य थी, फिर भी तुम्हारा अंत बहुत बढ़ेगा।

<sup>8</sup> "कृपया पिछले पीढ़ियों से पूछो, और उनके पूर्वजों के निष्कर्षों पर चिनार करो।<sup>9</sup> क्योंकि हम केवल कल के हैं और कुछ नहीं जानते, क्योंकि पूर्वी पर हमारे दिन एक छाया के समान है।<sup>10</sup> क्या वह तुम्हें नहीं सिखाएँगे और बताएँगे, और अपनी बुद्धि से शब्द निकालेंगे?<sup>11</sup> क्या पापीस बिना दलदल के ऊँचा हो सकता है? क्या सरकंडे बिना पानी के बढ़ सकते हैं?<sup>12</sup> जब यह अभी हरा होता है और काटा नहीं गया होता, फिर भी यह किसी अन्य पैथे से पहले मुरझा जाता है।<sup>13</sup> ऐसे ही उन सब के मार्ग हैं जो परमेश्वर को धूल जाते हैं और अधर्मी की आशा नष्ट हो जाएगी,<sup>14</sup> जिनका विभूत्स कमजोर है, और जिनका भरोसा मकड़ी के जाले पर है।<sup>15</sup> वह अपने घर पर झुकता है, पर यह खड़ा नहीं होता, वह इसे पकड़ता है, पर यह स्थिर नहीं रहता।<sup>16</sup> वह सूर्य के सामने फलता-फूलता है, और उसकी शाखाएँ उसके बगीचे में फैल जाती हैं।<sup>17</sup> उसकी जड़ें चट्टान के ढेर के चारों ओर लिपट जाती हैं, वह पत्थरों के घर को पकड़ लेता है।<sup>18</sup> यदि उसे उसके स्थान से हटा दिया जाए, तो यह उसे इनकार करेगा, कहेगा,

'मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा।'<sup>19</sup> देखो, यह उसके मार्ग की खुशी है, और धूल से अन्य लोग अंकुरित होंगे।

<sup>20</sup> देखो, परमेश्वर किसी ईमानदार व्यक्ति को अस्वीकार नहीं करेगा, और न ही वह दुष्टों का समर्थन करेगा।<sup>21</sup> वह तुम्हारे मुँह को हँसी से भर देगा, और तुम्हारे हाँठों को आनंदमय जयकार से।<sup>22</sup> जो तुमसे धृणा करते हैं वे लज्जा से वसित होंगे, और दुष्टों का तंत्र अब नहीं रहेगा।"

### 9 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "सचमुच मैं जानता हूँ कि यह ऐसा ही है, परन्तु मनुष्य परमेश्वर के सामने कैसे सही हो सकता है?<sup>3</sup> यदि कोई उससे विवाद करना चाहे, वह हजार बार में एक बार भी उत्तर नहीं दे सकता।<sup>4</sup> जो हृदय में बुद्धिमान और शक्ति में पराक्रमी है, किसने उसका विरोध किया और बिना क्षति के बचा रहा? <sup>5</sup> वही है जो पहाड़ों को हटाता है, और वे नहीं जानते कैसे, जब वह अपने क्रोध में उन्हें उलट देता है।<sup>6</sup> वह पृथ्वी को उसके स्थान से हिला देता है, और उसके स्तंभ कांपते हैं।<sup>7</sup> वह सूर्य को आदेश देता है कि वह न चमके, और तारों पर मुहर लगा देता है।<sup>8</sup> वह अकेला आकाश को फैलाता है, और समुद्र की लहरों पर चलता है।<sup>9</sup> उसने भालू ओरायन, और ल्योयडस बनाए, और दक्षिण के नक्षत्रों को।<sup>10</sup> वह महान और अगम्य कार्य करता है, अनगिनत चमत्कार।<sup>11</sup> यदि वह मेरे पास से युजरता, तो मैं उसे नहीं देखता; यदि वह वहीं लेता, तो कौन उसे रोक सकता है? कौन उससे कह सकता है 'तू व्या कर रहा है'?<sup>12</sup> परमेश्वर अपने क्रोध को वापस नहीं लेगा, उसके नीचे राहब के सहायक कांपते हैं।

<sup>14</sup> तब मैं उसे कैसे उत्तर दूँ और उसके सामने अपने शब्द कैसे बुरूँ<sup>15</sup> क्योंकि यदि मैं सही भी होता, तो मैं उत्तर नहीं दे सकता, मुझे अपने न्यायाधीश की दया की याचना करनी पड़ती।<sup>16</sup> यदि मैं पुकारता और वह मुझे उत्तर देता, तो मैं विश्वास नहीं कर सकता कि वह मेरी आवाज सुन रहा है।<sup>17</sup> क्योंकि वह मुझे त्रूपान से चोट पहुँचाता है और बिना कारण मेरे घाव बढ़ाता है।<sup>18</sup> वह मुझे साँस लेने की अनुमति नहीं देता, बल्कि मुझे कड़वाहट से भर देता है।<sup>19</sup> यदि यह शक्ति की बात है, तो देखो, वह शक्तिशाली है, और यदि यह न्याय की बात है, तो कौन उसे बुला सकता है?<sup>20</sup> यद्यपि मैं धर्मी हूँ, मेरा मुँह मुझे दोषी ठहराएगा, यद्यपि मैं निर्दोष हूँ, वह मुझे दोषी ठहराएगा।

## अथूब

<sup>21</sup> मैं निर्दोष हूँ मैं अपने आप पर ध्यान नहीं देता, मैं अपने जीवन को अस्वीकार करता हूँ।<sup>22</sup> यह सब एक ही है, इसलिए मैं कहता हूँ, 'वह निर्दोष और दुष्ट दोनों को नष्ट करता है।'<sup>23</sup> यदि कोड़ा अचानक मारता है, वह निर्दोष के निराशा का मजाक उड़ाता है।<sup>24</sup> पृथ्वी दुष्टों के हाथ में सौंपी जाती है, वह उसके न्यायाधीशों के चेहरे ढक देता है। यदि यह वह नहीं है, तो कौन है?

<sup>25</sup> अब मेरे दिन धारक से भी तोहँ हैं, वे भाग जाते हैं, वे कोई अच्छा नहीं देखते।<sup>26</sup> वे सरकंडे की नातों की तरह किसल जाते हैं, जैसे एक चील अपने शिकार पर झपटा मारती है।<sup>27</sup> यद्यपि मैं कहता हूँ, 'मैं अपनी शिकायत भूल जाऊँगा, मैं अपना चेहरा ठीक करूँगा और प्रसरण रहँगा।'<sup>28</sup> मैं अपने सभी दर्द से डरता हूँ, मैं जानता हूँ कि तू मुझे निर्दोष नहीं ठहराएगा।<sup>29</sup> मैं दोषी हूँ, फिर मैं व्यर्थ में परिश्रम करूँगँ।<sup>30</sup> यदि मैं अपने आप को बर्फ से धोता, और अपने हाथों को क्षार से साफ करता,<sup>31</sup> फिर भी तू मुझे गड़े में डाल देगा, और मेरे अपने कंपड़े मुझसे घृणा करेंगे।

<sup>32</sup> क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, जैसा मैं हूँ कि मैं उसे उत्तर दे सकूँ— कि हम एक साथ न्यायालय में जा सकें।<sup>33</sup> हमारे बीच कोई मध्यस्थ नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रख सके।<sup>34</sup> उसे अपनी छड़ी मुझसे हटा लेने दे, और उसका भय मुझे आतिकित न करे।<sup>35</sup> तब मैं बोलूँगा और उससे नहीं डरूँगा, परन्तु मैं अपने आप में ऐसा नहीं हूँ।

**10** "मेरी आत्मा मेरे जीवन से घृणा करती है, मैं अपनी शिकायत स्वतंत्र रूप से व्यक्त करूँगा।"<sup>2</sup> मैं परमेश्वर से कहूँगा, 'मुझे दोषी मत ठहराओ, मुझे बताओ कि क्या तू मुझसे क्यों विवाद करता है।'<sup>3</sup> क्या यह तेरे लिए सही है कि तू वास्तव में उत्तीर्ण करे, अपने हाथों के काम को अस्वीकार करे, और दुष्टों की योजना पर अनुग्रहपूर्वक छिलूँ डाले?<sup>4</sup> क्या तेरी आँखें मांस की हैं, या तू वैसे देखता है जैसे मनुष्य देखता है?<sup>5</sup> क्या तेरे दिन मनुष्य के दिनों के समान हैं, या तेरे वर्ष मनुष्य के वर्ष के समान हैं?<sup>6</sup> कि तू मेरे दोष की खोज करे और मेरे पाप के पीछे लगे?<sup>7</sup> तेरे ज्ञान के अनुसार मैं वास्तव में निर्दोष हूँ, फिर भी मुझे तेरे हाथ से बचाने वाला कोई नहीं है।

<sup>8</sup> 'तेरे हाथों ने मुझे पूरी तरह से गढ़ा और बनाया, फिर भी क्या तू मुझे नष्ट करेगा?' याद कर कि तूने मुझे मिट्टी के समान बनाया, और क्या तू मुझे फिर से धूल

में बदल देगा?<sup>10</sup> क्या तूने मुझे द्रुध की तरह नहीं उड़ला, और पनीर की तरह जमा दिया?<sup>11</sup> मुझे लचा और मांस से ढका, और हड्डियों और नसों से बुन दिया?<sup>12</sup> तूने मुझे जीवन और दया दी है, और तेरी देखभाल ने मेरी आत्मा को सुरक्षित रखा है।

<sup>13</sup> फिर भी ये बातें तूने अपने हृदय में छिपा रखी हैं, मैं जानता हूँ कि यह तेरे भीतर है।<sup>14</sup> यदि मैं पाप करूँ, तो तू मुझ पर ध्यान देगा, और मुझे मेरे दोष से मुक्त नहीं करेगा।<sup>15</sup> यदि मैं दुष्ट हूँ, तो मुझ पर हाया पर यदि मैं धर्मी हूँ, तो मैं अपना सिर उठाने का साहस नहीं कर सकता। मैं लजा से भरा हूँ, और अपनी दुर्दशा से अवगत हूँ।<sup>16</sup> यदि मेरा सिर ऊँचा उठे, तो तू मुझे शेर की तरह शिकार करेगा, और फिर से मुझ पर अपनी शक्ति दिखाएगा।<sup>17</sup> तू अपने गवाहों को मेरे विरुद्ध नवीनीकृत करता है और मुझ पर अपना क्रोध बढ़ाता है, कठिनाई के बाद कठिनाई मुझ पर आती है।

<sup>18</sup> फिर तूने मुझे गर्भ से क्यों निकाला? काश मैं मर गया होता, और किसी ने मुझे नहीं देखा होता।<sup>19</sup> मैं ऐसा होता जैसे मैं कभी नहीं था, गर्भ से कब्र तक लाया गया।<sup>20</sup> क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? रुक, मुझे अकेला छोड़ दे, ताकि मुझे थोड़ी खुशी मिल सके।<sup>21</sup> इससे पहले कि मैं जाऊँ— और मैं लौट नहीं सकूँगा— अंधकार और गहरे छाया की भूमि में<sup>22</sup> पूर्ण अंधकार की भूमि, जैसे स्वयं अंधकार, गहरे छाया की बिना व्यवस्था के, और यह अंधकार की तरह चमकता है।"

**11** तब नामाती सोपर ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "क्या शब्दों की भीड़ बिना उत्तर के रह जाएगी, और क्या बातीनी व्यक्ति निर्दोष ठहराया जाएगा?"<sup>3</sup> क्या तुम्हारे घंटं लोगों को चुप करा देंगे? और क्या तुम उपहास करोगे और कोई तुम्हें डाटेगा नहीं?<sup>4</sup> क्योंकि तुमने कहा है, 'मेरी शिक्षा शुद्ध है, और मैं अपकी दृष्टि में निर्दोष हूँ।'<sup>5</sup> पर यदि केवल परमेश्वर बाले, और अपने होठ तुम्हारे विरुद्ध खोले,<sup>6</sup> और तुम्हें बुद्धि के रहस्य दिखाए, क्योंकि सच्ची बुद्धि के दो पहलू होते हैं। तब जान लो कि परमेश्वर तुम्हारे दोष का कुछ हिस्सा भूल जाता है।

<sup>7</sup> 'क्या तुम परमेश्वर की गहराइयों को खोज सकते हो? क्या तुम सर्वशक्तिमान की सीमाओं को खोज सकते हो?'<sup>8</sup> तेरे आकाश के समान ऊँचे हैं— तुम क्या कर सकते हो? शिओल से भी गहरे— तुम क्या जान सकते

## अथूब

हो? <sup>१</sup> इसका माप पृथ्वी से लंबा है और समुद्र से चौड़ा है।

<sup>१०</sup> यदि वह गुजरता है या लोगों को पकड़ता है, या उन्हें इकट्ठा करता है, तो कौन उसे वापस कर सकता है? <sup>११</sup> क्योंकि वह झूले लोगों को जानता है, और अन्याय को बिना जाँचे देखता है? <sup>१२</sup> एक मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान हो जाएगा जब एक जंगली गधा मनुष्य के रूप में जन्म लेगा।

<sup>१३</sup> "यदि तुम अपने हृदय को सही दिशा में लगाओ और अपने हाथ उसकी ओर फैलाओ <sup>१४</sup> यदि तुम्हारे हाथ में कोई गलत काम है, तो उसे दूर कर दो, और अपने तंबुओं में द्वेष को न रहने दो; <sup>१५</sup> तब, वास्तव में तुम बिना नैतिक दोष के अपना चेहरा उठाए सकते हो, और तुम दृढ़ता से स्थापित हो जाओगे और भयभीत नहीं होगी। <sup>१६</sup> क्योंकि तुम अपनी परेशानी को भूल जाओगे, जैसे बहते पानी की तरह, तुम उसे याद करोगे। <sup>१७</sup> तुम्हारा जीवन दोपहर से भी उज्ज्वल होगा; अंधकार सुबह के समान होगा। <sup>१८</sup> तब तुम विश्वास करोगे, क्योंकि आशा है, और तुम चारों ओर देखोगे और सुरक्षित रूप से विश्राम करोगे। <sup>१९</sup> तुम लेटोगे और कोई तुम्हें परेशान नहीं करेगा, और बहुत से लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। <sup>२०</sup> परंतु दूषों की अँखें विफल हो जाएंगी, और उनके लिए कोई बचाव नहीं होगा, और उनकी आशा केवल अंतिम सांस लेने की होगी।"

## 12 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>२</sup> "निश्चय ही तुम लोग ही प्रजा हो, और तुम्हारे साथ ही बुद्धि मर जाएगी। <sup>३</sup> परन्तु मेरे पास भी तुम्हारी तरह बुद्धि है, मैं तुमसे कम नहीं हूँ। और कौन ऐसी बातें नहीं जानता?

<sup>४</sup> मैं अपने मित्रों के लिए एक हंसी का पात्र हूँ, वह जिसने परमेश्वर को पुकारा और उसने उसे उत्तर दिया, धर्मी और निर्दोष मनुष्य एक हंसी का पात्र है। <sup>५</sup> जो आराम में है वह विपत्ति को तुच्छ समझता है, जैसे कि वह उन लोगों के लिए तैयार है जिनके पैर फिसलते हैं। <sup>६</sup> विघ्वंसकों के तम्बू फलते-फूलते हैं, और जो परमेश्वर को उकसाते हैं वे सुरक्षित हैं, जिन्हें परमेश्वर उनकी शक्ति में लाता है।

<sup>७</sup> "परन्तु जानवरों से पूछो, और वे तुम्हें सिखाएंगे; और आकाश के पक्षियों से, और वे तुम्हें बताएंगे। <sup>८</sup> या पृथ्वी से बात करो, और वह तुम्हें सिखाएंगी, और समुद्र की

मछलियों से पूछो, और वे तुम्हें बताएंगी। <sup>९</sup> इन सब में से कौन नहीं जानता कि यहोवा का हाथ यह सब कर चुका है, <sup>१०</sup> जिसके हाथ में हर जीवित प्राणी का जीवन है, और समस्त मानवजाति की श्वास है? <sup>११</sup> क्या कान शब्दों को परखता नहीं, जैसे तातु अपने भोजन का स्वाद लेता है? <sup>१२</sup> वृद्धों के पास बुद्धि होती है, और दीघर्यि में समझ होती है।

<sup>१३</sup> उसके पास बुद्धि और शक्ति हैं, उसके पास परामर्श और समझ है। <sup>१४</sup> देखो, वह गिरा देता है, और उसे फिर से नहीं बनाया जा सकता, वह किसी को बंद कर देता है, और कोई उसे नहीं खोल सकता। <sup>१५</sup> देखो, वह जल को रोकता है, और वे सूख जाते हैं, और वह उन्हें भेजता है, और वे पुरी को भर देते हैं। <sup>१६</sup> उसके पास शक्ति और सुदृढ़ बुद्धि है। जो भटकता है और जो भटकता है, दोनों उसके हैं। <sup>१७</sup> वह सलाहकारों को नंगे पैर चलाता है, और न्यायाधीशों को मूर्ख बनाता है। <sup>१८</sup> वह राजाओं के बंधनों को ढीला करता है, और उनकी कमर पर पटा बाधता है। <sup>१९</sup> वह याजकों को नंगे पैर चलाता है, और सुरक्षित लोगों को उलट देता है। <sup>२०</sup> वह विश्वसनीय लोगों से वाणी छीन लेता है, और वृद्धों की समझ को हटा देता है। <sup>२१</sup> वह कुत्तों पर तिरस्कार उड़ेलता है, और शक्तिशालियों की कमर को ढीला करता है। <sup>२२</sup> वह अंधकार से रहस्यों को प्रकट करता है, और गहरे अंधकार को प्रकाश में लाता है। <sup>२३</sup> वह जातियों को महान बनाता है, फिर उन्हें नष्ट कर देता है, वह जातियों को बढ़ाता है, फिर उन्हें दूर ले जाता है। <sup>२४</sup> वह पृथ्वी के लोगों के नेताओं से बुद्धि छीन लेता है, और उन्हें बिना रास्ते के बंजर भूमि में भटकाता है। <sup>२५</sup> वे अंधकार में बिना प्रकाश के टटोलते हैं, और वह उन्हें नशे में धृत व्यक्ति की तरह लड़खड़ाता है।

**13** "देखो, मेरी आँखों ने यह सब देखा है, मेरे कानों ने इसे सुना और समझा है। <sup>१</sup> जो तुम जानते हो, वह मैं भी जानता हूँ, मैं तुमसे कमतर नहीं हूँ। <sup>२</sup> परन्तु मैं सर्वशक्तिमान से बात करना चाहता हूँ, और मैं परमेश्वर से तर्क करना चाहता हूँ। <sup>३</sup> लेकिन तुम मुझे झूठ से लिपत करते हो; तुम सब व्यर्थ के विकित्सक हो। <sup>४</sup> काश तुम पूरी तरह से मौन रहते, और यही तुम्हारी बुद्धिमानी होती। <sup>५</sup> कृपया मेरी दलील सुनो, और मेरे हाथों के विवादों को सुनो। <sup>६</sup> क्या तुम परमेश्वर के लिए अन्यायपूर्वक बोलोगे, और उसके लिए छल से बोलोगे? <sup>७</sup> क्या तुम उसके लिए पक्षपात करोगे? <sup>८</sup> जब वह तुम्हारी परीक्षा लेगा तो क्या यह ठीक रहेगा? या तुम उसे

## अथूब

धोखा दोगे जैसे कोई मनुष्य को धोखा देता है? <sup>10</sup> वह निश्चित रूप से तुम्हें दंड देगा यदि तुम गुप्त रूप से पक्षपात दिखा ओगे। <sup>11</sup> क्या उसकी महिमा तुम्हें भयभीत नहीं करेगी, और उसका डर तुम पर नहीं गिरेगा? <sup>12</sup> तुम्हारे स्मरणीय कथन राख के कहावतें हैं तुम्हारी रक्षा मिट्री की रक्षा है।

<sup>13</sup> "मेरे सामने मैन रहो ताकि मैं बोल सकूँ, फिर मुझ पर जो कुछ भी आना है, वह आए। <sup>14</sup> मैं अपने मांस को अपने दातों में क्यों लूँ और अपने जीवन को अपने हाथों में क्यों रखूँ? <sup>15</sup> यद्यपि वह मुझे मार डाले, फिर भी मैं उस पर आशा रखूँगा। फिर भी मैं उसके सामने अपनी राहों का तर्क करूँगा। <sup>16</sup> यह भी मेरी मुक्ति होगी, क्योंकि एक अधर्मी व्यक्ति उसकी उपस्थिति में नहीं आ सकता। <sup>17</sup> मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो, और मेरी धोषणा को अपने कानों में भर लो। <sup>18</sup> देखो अब, मैंने अपना मामला तैयार कर लिया है; मुझे पता है कि मैं निर्देश ठहरूँगा। <sup>19</sup> कौन मेरे साथ विगद करेगा? क्योंकि तब मैं मैन रहूँगा और मर जाऊँगा।

<sup>20</sup> "केवल दो बातें मुझसे मत करो, तब मैं तुम्हारे चेहरे से नहीं छिपूँगा: <sup>21</sup> अपना हाथ मुझसे हटा लो, और मुझे तुम्हारे डर से भयभीत न होने दो। <sup>22</sup> तब बुलाओ, और मैं उत्तर द्वांगा; या मुझे बोलने दो, फिर मुझे उत्तर दो। <sup>23</sup> मेरे दोषपूर्ण कर्य और पाप किनते हैं? मुझे मेरी गलतियाँ और मेरे पाप बताओ। <sup>24</sup> तुम अपना चेहरा क्यों छिपाते हों और मुझे अपना शरु मानते हों? <sup>25</sup> क्या तुम एक लिखे हुए पते को डराओगे? या सूखी भूसी का पीछा करोगे? <sup>26</sup> क्योंकि तुम मेरे छिलाफ कढ़वी बाते लिखते हों और मुझे मेरी जगनी के दोष का वारिस बनाते हों? <sup>27</sup> तुम मेरे पैरों को बेंडियों में डालते हों और मेरी सभी राहों को देखते हों; तुम मेरे पैरों के तलवों के लिए एक सीमा निर्धारित करते हों? <sup>28</sup> जबकि मैं सँडे हुए चीज़ की तरह सड़ रहा हूँ, जैसे कीड़ा खाया हुआ वस्त्र।

**14** "मनुष्य, जो स्त्री से जन्मा है, वह अत्यायु और संकटों से भरा है। <sup>2</sup> वह फूल की तरह निकलता है और मुरझा जाता है, वह छाया की तरह भागता है और ठहरता नहीं है। <sup>3</sup> तू भी अपनी अँखें उस पर खोलता है और उसे अपने साथ न्याय में लाता है। <sup>4</sup> अशुद्ध से शुद्ध कौन बना सकता है? कोई नहीं! <sup>5</sup> क्योंकि उसके दिन निश्चित हैं, उसके महीनों की संख्या तेरे पास है और तूने उसकी सीमाएँ निर्धारित की हैं ताकि वह उन्हें पार न कर सके। <sup>6</sup> उससे मुँह मोड़ ले ताकि वह

विश्राम कर सके, जब तक वह अपने दिन को एक मजदूर की तरह पूरा न कर ले।

<sup>7</sup> "क्योंकि तुम्ह के लिए आशा है, यदि वह काटा जाए तो वह फिर से अंकुरित होगा, और उसकी शाखाएँ असफल नहीं होंगी। <sup>8</sup> यद्यपि उसकी जड़ भूमि में पुरानी हो जाए और उसका ढूँढ़ सूखी मिट्टी में मर जाए, <sup>9</sup> जल की गंध से वह हरा-भरा होगा और पौधे की तरह अंकुर उत्पन्न करेगा। <sup>10</sup> पर मनुष्य मर जाता है और लेटा रहता है, व्यक्ति गुजर जाता है और वह कहाँ है? <sup>11</sup> जैसे समुद्र से जल वाष्पित हो जाता है, और नदी सूखकर सूखी हो जाती है, <sup>12</sup> वैसे ही मनुष्य लेट जाता है और उठता नहीं है। जब तक आकाश विद्यमान नहीं रहता, वह जागा नहीं और न ही अपनी नीद से जगाया जाएगा।

<sup>13</sup> "ओह कि तू मुझे शिओल में छिपा दे, कि तू मुझे तब तक छिपा दे जब तक तेरा क्रोध तुझ पर लौट न आए कि तू मेरे लिए एक सीमा निर्धारित करे और मुझे याद करो। <sup>14</sup> यदि मनुष्य मर जाए, तो क्या वह फिर से जीवित होगा? मेरे संघर्ष के सभी दिनों में मैं प्रतीक्षा करूँगा जब तक मेरी राहत नहीं आ जाती। <sup>15</sup> तू बुलाएगा, और मैं तुझे उत्तर द्वांगा दूँगा तू अपने हाथों के काम के लिए तरसेगा। <sup>16</sup> क्योंकि अब तू मेरे कदमों की गिनती करता है, तू मेरे पाप को नहीं देखता। <sup>17</sup> मेरी गलतियाँ एक थैली में सील कर दी गई हैं, और तू मेरे अपराध को ढक देता है।

<sup>18</sup> "परन्तु एक पर्वत गिरकर टूट जाता है, और एक चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाती है। <sup>19</sup> जल पथरों को घिस देता है, उसकी धाराएँ पृथ्वी की धूल को बहा ले जाती हैं, इसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को नष्ट कर देता है। <sup>20</sup> तू उसे सदा के लिए पराजित करता है और वह चला जाता है, तू उसकी आकृति बदल देता है और उसे भेज देता है। <sup>21</sup> उसके पुत्र समान प्राप्त करते हैं, पर वह नहीं जानता, या वे तुच्छ हो जाते हैं, और वह इसे नहीं देखता। <sup>22</sup> फिर भी, उसका शरीर दर्द महसूस करता है, और उसकी आत्मा उस पर शोक करती है।"

**15** तब तेमानी एलीफ़ज़ ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "क्या एक बुद्धिमान व्यक्ति वायु से भरे ज्ञान का उत्तर देगा, और अपने आप को पूर्वी वायु से भर लेगा? <sup>3</sup> क्या वह व्यर्थ की बातों से विवाद करेगा, या ऐसे शब्दों से जो लाभ नहीं देते? <sup>4</sup> वास्तव में, तुम श्रद्धा को द्वार कर

## अथूब

देते हों, और परमेश्वर के सामने ध्यान को बाधित करते हों।<sup>5</sup> क्योंकि तुम्हारा अपराध तुम्हारे मुँह को सिखाता है, और तुम चालाकी की भाषा चुनते हों।<sup>6</sup> तुम्हारा अपना मुँह तुम्हें दोषी ठहराता है, न कि मैं, और तुम्हारे अपने होंठ तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देते हैं।

<sup>7</sup> क्या तुम पहले व्यक्ति थे जो जन्मे, या पाहिड़ियों से पहले उत्पन्न हुए? <sup>8</sup> क्या तुम्हें परमेश्वर की गुप्त सलाह सुनी है, और बुद्धि को अपने तक सिमित कर लिया है? <sup>9</sup> तुम क्या जानते हों जो हम नहीं जानते? तुम क्या समझते हों जो हम नहीं समझते? <sup>10</sup> हमारे बीच दोनों, वृद्ध और बृद्धे हैं, तुम्हारे पिता से भी बड़े। <sup>11</sup> क्या परमेश्वर की सांख्यनाएँ तुम्हारे लिए बहुत कम हैं, या तुम्हारे साथ कोगता से बोले गए शब्द? <sup>12</sup> क्यों तुम्हारा हृदय तुम्हें द्वारा ले जाता है, और क्यों तुम्हारी अँखें झपकती हैं? <sup>13</sup> कि तुम अपनी आत्मा को परमेश्वर के विरुद्ध मोड़ते हों, और अपने मुँह से ऐसे शब्द उत्पन्न करते हों?

<sup>14</sup> मनुष्य क्या है, कि वह शुद्ध होगा, या स्त्री से जन्मा हुआ, कि वह धर्मी होगा? <sup>15</sup> देखो, वह अपने पवित्र जनों पर भी विश्वास नहीं करता, और सर्व भी उसकी दृष्टि में शुद्ध नहीं हैं; <sup>16</sup> तो कितना कम वह जो धृषित और भ्रष्ट है, एक व्यक्ति जो अन्याय को पानी की तरह पीता है!

<sup>17</sup> "मैं तुम्हें बताऊँगा, मेरी सुनी, और जो मैंने देखा है उसे भी धृषित करौँगा," <sup>18</sup> जो बुद्धिमान लोगों ने बताया है, और अपने पिताओं से नहीं छिपाया है, <sup>19</sup> जिन्हें अकेले धूमि दी गई थी, और जिनके बीच कोई परदेशी नहीं युजरा। <sup>20</sup> दुष्य व्यक्ति अपने सभी दिनों में पीड़ा में तड़पता है, और निर्दीची के लिए वर्षों की संख्या सुरक्षित है। <sup>21</sup> उसके कानों में आंतक की ध्वनियाँ हैं, जब वह शाति में होता है, तो विनाशक उस पर आ पड़ता है। <sup>22</sup> वह विश्वास नहीं करता कि वह अंधकार से लौटेगा, और वह तलवार के लिए नियत है। <sup>23</sup> वह भोजन के लिए भटकता है, कहता है, 'यह कहाँ है?' वह जानता है कि अंधकार का दिन निकट है। <sup>24</sup> संकट और पीड़ा उसे भयभीत करते हैं, वे उसे एक राजा की तरह जो हमले के लिए तैयार है, पराजित करते हैं। <sup>25</sup> क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध अपने हाथ को बढ़ाया है, और सर्वशक्तिमान के प्रति अभिमानी है। <sup>26</sup> वह अपने विशाल ढाल के साथ उस पर तेजी से दौड़ता है।

<sup>27</sup> क्योंकि उसने अपने चेहरे को चर्बी से ढक लिया है, और अपनी जांघों पर चर्बी डाल ली है। <sup>28</sup> उसने उजाड़ नगरों में निवास किया है, ऐसे घरों में जिहें कोई नहीं बसाएगा, जो खंडहर बनने के लिए नियत हैं। <sup>29</sup> वह धनी नहीं होगा, न ही उसकी संपत्ति स्थायी होगी, न ही उनकी संपत्ति धूमि पर फैलेगी। <sup>30</sup> वह अंधकार से नहीं बचेगा, जबला उसकी शाखा को सूखा देगी, और वह उसकी मुँह की सांस से चला जाएगा। <sup>31</sup> उसे शून्यता पर विश्वास नहीं करना चाहिए, अपने आप को धोखा देना, क्योंकि शून्यता उसकी प्रतिफल होगी। <sup>32</sup> यह उसके समय से पहले पूरी होगी, और उसकी ताड़ की शाखा हरी नहीं होगी। <sup>33</sup> वह अपनी अध्यकी अंगूर को बेल की तरह गिरा देगा, और अपने फूल को जैतून के पेड़ की तरह गिरा देगा। <sup>34</sup> क्योंकि अर्धमी का साफूर बाँझ है, और आग भ्रष्ट के तंबुओं को भस्म कर देती है। <sup>35</sup> वे हानि की कल्पना करते हैं और बुराई को जन्म देते हैं, और उनका गर्भ धोखे की तैयारी करता है।

## 16 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "मैंने ऐसी बहुत सी बातें सुनी हैं, तुम सब दुखदायक सांख्यनादाता हो। <sup>3</sup> क्या वायवीय शब्दों का कोई अंत नहीं है? या तुम्हें क्या उकसाता है कि तुम उत्तर देते हो? <sup>4</sup> मैं भी तुम्हारी तरह बोल सकता था, यदि तुम्हारा प्राण मेरी जगह होता। मैं तुम्हारे विरुद्ध शब्द बना सकता था और तुम पर सिर हिला सकता था। <sup>5</sup> मैं अपने मुँह से तुम्हें बल दे सकता था, और मेरे होंठों की सांख्यना तुम्हारे दुख को कम कर सकती थी। <sup>6</sup> यदि मैं बोलता हूँ, तो मेरा दुख कम नहीं होता, और यदि मैं रुकता हूँ, तो कौन सा दुख मुझे छोड़ता है?

<sup>7</sup> परन्तु अब उसने मुझे थका दिया है, तुमने मेरे सारे सम्भव को नष्ट कर दिया है। <sup>8</sup> तुमने मुझे सूखा दिया है, यह एक गवाह बन गया है, और मेरी दुबली काया मेरे विरुद्ध उठ सज्जी होती है, यह मेरे चेहरे पर गवाही देती है। <sup>9</sup> उसका क्रोध मुझे फ़ाड़ चुका है और मुझे शिकार बना चुका है, उसने मुझे पर धूरता है। <sup>10</sup> उन्होंने अपने मुँह से मुझे धेर लिया है, उन्होंने तिरकार से मेरे गाल पर थप्पड़ मारा है, उन्होंने मेरे विरुद्ध सेना बनाई है। <sup>11</sup> परमेश्वर मुझे अपराधियों के हाथ में सौंपता है, और मुझे दुष्टों के हाथों में फेंकता है। <sup>12</sup> मैं भैंस में था, परन्तु उसने मुझे दूर-दूर कर दिया, और उसने मुझे गर्दन से पकड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, उसने मुझे अपने लक्ष्य के रूप में भी स्थापित किया है। <sup>13</sup> उसके तीर

## अथूब

मुझे धेर लेते हैं। वह बिना दया के मेरी किडनी को भेदता है वह मेरी पित्त को भूमि पर उड़ेलता है।<sup>14</sup> वह मुझ पर एक के बाद एक दरार डालता है वह योद्धा की तरह मुझ पर दौड़ता है।

<sup>15</sup> मैंने अपनी त्वचा पर टाट सी लिया है और अपनी सींग को धूल में धकेल दिया है।<sup>16</sup> मेरा चेहरा रोने से लाल हो गया है और मेरी पलकों पर गहरी अंधकार है।<sup>17</sup> यद्यपि मेरे हाथों में कोई हिसा नहीं है और मेरी प्रार्थना शुद्ध है।

<sup>18</sup> "हे पृथ्वी, मेरे रक्त को मत ढाँप, और मेरी पुकार के लिए कोई विश्राम स्थान न हो।"<sup>19</sup> अब भी देखो, मेरा गवह सर्ग में है और मेरा वकील ऊँचाई पर है।<sup>20</sup> मेरे मित्र उपहास करते हैं मेरी आँख परमेश्वर के लिए रोती है।<sup>21</sup> ओह कि कोई मनुष्य परमेश्वर के साथ विवाद करे जैसे कोई अपने पड़ोसी के साथ करता है।

<sup>22</sup> क्योंकि जब कुछ वर्ष बीत जाएँगे, मैं उस मार्ग पर जाऊँगा जहाँ से लौटना नहीं है।

**17** "मेरी आत्मा टूट गई है, मेरे दिन बुझ गए हैं कब्र मेरे लिए तैयार है।"<sup>2</sup> निष्ठित रूप से ठट्ठा करने वाले मेरे साथ हैं और मेरी आँख उनकी उत्तेजना पर टिकी है।

<sup>3</sup> कृपया मेरे लिए अपने साथ एक प्रतिज्ञा रखें कौन है जो मेरा जमानतदार होगा? <sup>4</sup> क्योंकि आपने उनके दिल को समझ से द्वारा रखा है इसलिए आप उन्हें ऊँचा नहीं उठाएंगे।<sup>5</sup> जो मित्रों के खिलाफ लूट के हिस्से के लिए सूचना देता है उसके बच्चों की आँखें नष्ट हो जाएँगी।

<sup>6</sup> लेकिन उसने मुझे लोगों के बीच एक कहावत बना दिया है और मैं वह हूँ जिस पर लोग थूकते हैं।<sup>7</sup> मेरी आँख भी दुःख के कारण अभिव्यक्तिहीन हो गई है और मेरे शरीर के सभी अंग छाया के समान हैं।<sup>8</sup> सीधे लोग इस पर चकित होंगे और निर्दोष व्यक्ति अधर्म के खिलाफ खुद को उत्तेजित करेगा।<sup>9</sup> फिर भी धर्मी अपने मार्ग पर स्थिर रहेगा और जिसके हाथ साफ हैं वह और अधिक मजबूत होता जाएगा।

<sup>10</sup> लेकिन अब आप सब किर से आओ, क्योंकि मैं आप में से किसी में भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं पाता।<sup>11</sup> मेरे दिन बीत गए हैं, मेरी योजनाएँ टूट गई हैं, मेरे दिल की इच्छाएँ।<sup>12</sup> वे रात को दिन में बदल देते हैं, कहते

हुए 'प्रकाश निकट है' अंधकार की उपस्थिति में।<sup>13</sup> यदि मैं शिओल को अपने घर के रूप में आशा करता हूँ मैं अंधकार में अपना बिस्तर बनाता हूँ।<sup>14</sup> मैं कब्र को पुकारता हूँ तुम मेरे पिता हो; कीड़े को 'मेरी माँ' और मेरी बहन।<sup>15</sup> तब मेरी आशा कहाँ है? और कौन मेरी आशा को देखता है? <sup>16</sup> क्या यह मेरे साथ शिओल में नीचे जाएंगे? क्या हम साथ में धूल में नीचे जाएंगे?

## 18 तब शूही बिल्दद ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "तुम कब तक शब्दों की खोज करोगे? समझ दिखाओ, किर हम बात कर सकते हैं।"<sup>3</sup> क्यों हमें पशुओं के समान समझा जाता है तुम्हारी दृष्टि में मूर्ख क्यों हैं?<sup>4</sup> तुम जो क्रोध में अपने आप को चीरते हो— क्या तुम्हारे कारण पृथ्वी को त्याग दिया जाना चाहिए या चट्टान को उसकी जगह से हटा दिया जाना चाहिए?

<sup>5</sup> वास्तव में दुष्ट का प्रकाश बुझ जाता है और उसकी आग की लौ कोई प्रकाश नहीं देती।<sup>6</sup> उसके तंबू में प्रकाश अंधकारमय हो जाता है और उसके ऊपर उसका दीपक बुझ जाता है।<sup>7</sup> उसकी सजीव चाल धीमी हो जाती है और उसकी अपनी योजना उसे नीचे गिरा देती है।<sup>8</sup> क्योंकि वह अपने ही पैरों से जाल में फंस जाता है और जाल की जाली पर कदम रखता है।<sup>9</sup> एक फंदा उसे ऐसी से पकड़ लेता है और एक जाल उस पर बंद हो जाता है।<sup>10</sup> उसके लिए भूमि में एक फंदा छुपा होता है और उसके मार्ग पर एक जाल।<sup>11</sup> चारों ओर भय उसे डराते हैं और हर कदम पर उसका पीछा करते हैं।<sup>12</sup> उसकी शक्ति भूली होती है और आपदा उसके बगल में तैयार होती है।<sup>13</sup> यह उसकी त्वचा के हिस्सों को खा जाती है, मृत्यु का पहलौठा उसकी अंगों को खा जाता है।<sup>14</sup> उसे उसके तंबू की सुरक्षा से खींच लिया जाता है और भय के राजा के पास ले जाया जाता है।<sup>15</sup> उसके तंबू में कुछ भी नहीं रहता उसके घर पर गंधक बिखेरा जाता है।<sup>16</sup> उसकी जड़ें नीचे से सूख जाती हैं और उसकी शाखा ऊपर से मुरझा जाती है।<sup>17</sup> पृथ्वी से उसकी सूति मिट जाती है और उसका कोई नाम बाहर नहीं होता।<sup>18</sup> उसे प्रकाश से अंधकार में धकेल दिया जाता है और बसी हुर्दू दुनिया से खदेड़ दिया जाता है।<sup>19</sup> उसके लोगों में उसकी कोई संतान या वंशज नहीं है और न ही उसके निवास स्थान पर कोई उत्तराधिकारी।<sup>20</sup> पश्चिम के लोग उसकी दशा से चकित होते हैं और पूर्व के लोग भय से ग्रस्त होते हैं।

<sup>21</sup> वास्तव में ये दुष्टों के निवास स्थान हैं और यह उसका स्थान है जो परमेश्वर को नहीं जानता।"

## अथूब

### 19 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "तुम कब तक मुझे सताते रहोगे और शब्दों से मुझे कुचलते रहोगे? <sup>3</sup> इन दस बार तुमने मेरा अपमान किया है, तुम मुझे गलत सवित करने में शर्मिंदा नहीं होते। <sup>4</sup> यदि मैंने सचमुच गलत किया है, तो मेरी गलती मेरे साथ रहती है। <sup>5</sup> यदि वास्तव में तुम अपने को मेरे विरुद्ध ऊँचा उठाते हों और मेरे अपमान को मुझे पर सवित करते हों, <sup>6</sup> तो जान लो कि परमेश्वर ने मुझे गलत किया है और अपने जाल से मुझे घेर लिया है।

<sup>7</sup> देखो, मैं चिलाता हूँ 'हिंसा' पर मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता, मैं सहायता के लिए पुकारता हूँ पर न्याय नहीं होता। <sup>8</sup> उसने मेरा मार्ग अवरुद्ध कर दिया है ताकि मैं आगे न बढ़ सकूँ और उसने मेरे रसों पर अंधकार डाल दिया है। <sup>9</sup> उसने मेरी प्रतिष्ठा मुझसे छीन ली है और मेरे सिर से मुकुट हटा दिया है। <sup>10</sup> वह मुझे हर ओर से तोड़ता है, और मैं चला गया हूँ उसने मेरी आशा को पेढ़ की तरह उखाङ़ फेंका है। <sup>11</sup> उसने भी अपने क्रोध को मेरे विरुद्ध भड़काया है और वह मुझे अपना शत्रु मानता है। <sup>12</sup> उसकी सेनाएँ एक साथ आती हैं और मेरे विरुद्ध अपना मार्ग बनाती हैं और मेरे तंबू के चारों ओर डेरा डालती हैं।

<sup>13</sup> उसने मेरे भाइयों को मुझसे दूर कर दिया है और मेरे परिचय मुझसे पूरी तरह मुह मोड़ चुकी है। <sup>14</sup> मेरे रिशेदार असफल हो गए हैं, और मेरे करीबी मित्र मुझे भूल गए हैं। <sup>15</sup> जो मेरे घर में रहते हैं और मेरी दासी मुझे अजनकी मानते हैं। मैं उनकी दृष्टि में परदेशी हूँ। <sup>16</sup> मैं अपने सेवक को बुलाता हूँ पर वह उत्तर नहीं देता। मुझे अपने मुँह से उसे विनती करनी पड़ती है। <sup>17</sup> मेरी सांस मेरी पली के लिए अप्रिय है, और मैं अपने भाइयों के लिए धूणायद हूँ। <sup>18</sup> यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी मुझे तुच्छ समझते हैं, मैं खड़ा होता हूँ और वे मेरे विरुद्ध बोलते हैं। <sup>19</sup> मेरे सभी साथी मुझे धूणा करते हैं, और जिहें मैं प्यार करता हूँ वे मेरे विरुद्ध हो गए हैं। <sup>20</sup> मेरी हड्डी मेरी ल्वा और मास से शिपकी हुई है, और मैं केवल अपने दाँतों की ल्वा से बचा हूँ।

<sup>21</sup> "मुझ पर दया करो, मुझ पर दया करो, मेरे मित्रों क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा है। <sup>22</sup> तुम मुझे परमेश्वर की तरह क्यों सताते हो, और मेरे मास से संतुष्ट नहीं होते?

<sup>23</sup> "ओह कि मेरे शब्द लिखे जाते ओह कि वे एक पुस्तक में दर्ज होते <sup>24</sup> कि लोहे की कलम और सीसे से वे चट्टान में हमेशा के लिए खोदे जाते <sup>25</sup> किर भी मेरे लिए मैं जानता हूँ कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है, और अंत में, वह पृथ्वी पर खड़ा होगा। <sup>26</sup> यहाँ तक कि मेरी ल्वा नष्ट होने के बाद भी, किर भी अपने मास से मैं परमेश्वर को देखूँगा <sup>27</sup> जिसे मैं अपनी ओर से देखूँगा, और जिसे मेरी आँखें देखेंगी, और कोई नहीं। मेरा हृदय मेरे भीतर सुरक्षा रहा है।

<sup>28</sup> "यदि तुम कहते हो 'हम उसे कैसे सताएँ?' और 'हम उसके विरुद्ध किस बहाने का मामला छूँढ़ सकते हैं?' <sup>29</sup> तो तलवार से स्वयं डरे, क्योंकि क्रोध तलवार की सजा लाता है, ताकि तुम जान सको कि न्याय है।"

### 20 तब नामाती सोपर ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "इसलिए मेरे अशांत विवार मुझे उत्तर देने के लिए प्रेरित करते हैं, यहाँ तक कि मेरे अंदर की बेवेनी के कारण। <sup>3</sup> मैंने उस फटकार को सुना जो मुझे अपमानित करती है, और मेरी समझ की आत्मा मुझे उत्तर देने के लिए प्रेरित करती है।

<sup>4</sup> क्या तुम प्राचीन काल से यह जानते हो, जब से मृत्यु का पृथ्वी पर स्थापना हुई? <sup>5</sup> कि दुष्टों की विजय थोड़े समय की होती है, और अधीमों की खुशी क्षणिक होती है। <sup>6</sup> यद्यपि उसका अहकार आकाश तक पहुँचता है, और उसका सिर बादलों को छूता है। <sup>7</sup> वह अपने मूल की तरह सदा के लिए नष्ट हो जाता है, जिन्होंने उसे देखा है वे कहते, 'वह कहाँ है?' <sup>8</sup> वह एक स्वप्न की तरह उड़ जाता है, और वे उसे नहीं पा सकते वह रात के दर्शन की तरह गायब हो जाता है। <sup>9</sup> जिसने उसे देखा, वह अब उसे नहीं देखता, और उसकी जगह उसे अब नहीं देखती। <sup>10</sup> उसके पुरु गरीबों का पक्ष लेते हैं, और उसके हाथ उसकी संपत्ति लौटाते हैं। <sup>11</sup> उसकी हड्डियाँ युवा शक्ति से भरी होती हैं, लेकिन वह उसके साथ थूल में लेट जाती है।

<sup>12</sup> यद्यपि बुराई उसके मूँह में मीठी लगती है और वह इसे अपनी जीभ के नीचे छिपाता है। <sup>13</sup> यद्यपि वह इसे चाहता है और इसे जाने नहीं देता, बल्कि इसे अपने मूँह में रखता है। <sup>14</sup> किर भी उसके पेट में उसका भोजन बदल जाता है उसके भीतर नागों का विष बन जाता है। <sup>15</sup> वह धन को निगलता है, लेकिन उसे उगल देगा, परमेश्वर उसे उसके पेट से बाहर निकाल देगा। <sup>16</sup> वह नागों का विष चूसता है, एक वाइपर की जीभ

## अथूब

उसे मार देती है।<sup>17</sup> वह धाराओं को नहीं देखता, शहद और दही से बहती नदियाँ।<sup>18</sup> वह जो प्राप्त करता है उसे लौटाता है और उसे निगल नहीं सकता; उसके व्यापार की संपत्ति के लिए वह उनका आनंद भी नहीं ले सकता।<sup>19</sup> क्योंकि उसने गरीबों को दबाया और उपेक्षित किया है, उसने एक घर छीन लिया जिसे उसने नहीं बनाया।

<sup>20</sup> क्योंकि उसने अपने भीतर कोई शांति नहीं जानी, वह अपनी इच्छाओं में से कुछ भी नहीं रखता।<sup>21</sup> उसके लिए कुछ भी खाने को नहीं बचता, इसलिए उसकी समृद्धि स्थायी नहीं होती।<sup>22</sup> उसकी अधिकता की पूर्णता में वह संकुचित होगा, जो भी पीड़ित होता है उसका हाथ उसके खिलाफ आएगा।<sup>23</sup> जब वह अपने पेट को भरता है, परमेश्वर उस पर अपनी भयंकर क्रोध भेजता है और जब वह खा रहा होता है तब उस पर बरसता है।<sup>24</sup> वह लोहे के हथियार से भाग सकता है, लैंकिन कांस्य धूष उसे भेद देगा।<sup>25</sup> यह खींचा जाता है और उसकी पीठ से बाहर आता है, यहां तक कि उसकी जिगर से चमकता बिंदु भय उस पर आ जाते हैं।<sup>26</sup> उसकी संपत्ति के लिए पूर्ण अंधकार सुरक्षित है, एक आग जो फूंकी नहीं गई उसे भस्म कर देगी, यह उसके तंबू में बचे हुए को भस्म कर देगी।<sup>27</sup> आकाश उसकी दोष को प्रकट करेगा, और पूर्खी उसके खिलाफ उठेगी।<sup>28</sup> उसके घर की वृद्धि गायब हो जाएगी, उसके संपत्ति उसके क्रोध के दिन बह जाएगी।<sup>29</sup> यह एक दुष्ट व्यक्ति का विस्ता है जो परमेश्वर से है, वह विरासत जो परमेश्वर ने उसे दी है।"

## 21 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "मेरी बात ध्यान से सुनो, और इसे अपनी सांत्वना का तरीका मानो।<sup>3</sup> मेरे साथ सहन करो, और मैं बोलूंगा, फिर जब मैंने बोल लिया, तो तुम उपहास कर सकते हो।"

<sup>4</sup> मेरे लिए, क्या मेरी शिकायत किसी मनुष्य से है? या मुझे अधीर क्यों नहीं होना चाहिए?<sup>5</sup> मेरी ओर देखो, और चकित हो जाओ, और अपना हाथ अपने मुँह पर रखो।<sup>6</sup> जब मैं याद करता हूँ तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ, और भय मेरे शरीर को पकड़ लेता है।<sup>7</sup> दुष्ट लोग अब भी क्यों जीते हैं, बूढ़े होते हैं, और बुत शक्तिशाली भी बन जाते हैं?<sup>8</sup> उनके वंशज उनके सामने उनके दृष्टि में बने रहते हैं, और उनकी संतान उनकी आँखों के सामने,<sup>9</sup> उनके घर भय से सुरक्षित हैं, और परमेश्वर की छड़ी उन पर नहीं है।<sup>10</sup> उसका

बैल बिना विफलता के संग करता है, उसकी गाय बछड़ा देती है और गर्भित नहीं करती।<sup>11</sup> वे अपने लड़कों को झुंड की तरह बाहर भेजते हैं, और उनके बच्चे कूदते हैं।<sup>12</sup> वे डफ और वीणा पर गाते हैं, और बांसुरी की ध्वनि पर आनंदित होते हैं।<sup>13</sup> वे अपने दिन समृद्धि में बिताते हैं, और अचानक वे शिओल में चले जाते हैं।<sup>14</sup> फिर भी वे परमेश्वर से कहते हैं, 'हमसे दूर हो जाओ।' हम आपके मार्गों का ज्ञान नहीं चाहते।<sup>15</sup> सर्वशक्तिमान कौन है, कि हम उसकी सेवा करें, और हम उससे विनती करें तो हमें क्या लाभ होगा?<sup>16</sup> देखो, उनकी समृद्धि उनके हाथ में नहीं है, दुष्टों की सलाह मुझसे दूर है।

<sup>17</sup> कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता है, या क्या उनकी विपत्ति उन पर आती है? क्या परमेश्वर अपने क्रोध में विनाश का भाग देता है?<sup>18</sup> क्या वे हवा के सामने तिनके की तरह हैं, और भूसी की तरह जिसे तूफान उड़ा ले जाता है?<sup>19</sup> तुम कहते हो, 'परमेश्वर मनुष्य के अपराध को उसके पुत्रों के लिए संचित करता है।' परमेश्वर उसे चुका दे ताकि वह जान सके।<sup>20</sup> उसके अपनी आँखें उसके विनाश को देखें, और वह सर्वशक्तिमान के क्रोध का पान करें।<sup>21</sup> क्योंकि उसे अपने बाद अपने धराने की क्या चिंता है, जब उसके महीनों की संखा समाप्त हो चुकी है।

<sup>22</sup> क्या कोई परमेश्वर को ज्ञान सिखा सकता है, क्योंकि वह उच्च स्थानों पर न्याय करता है?<sup>23</sup> एक अपनी पूरी शक्ति में मरता है, पूरी तरह से निर्बध और आराम से;<sup>24</sup> उसकी कमर चर्ची से भरी है, और उसकी हड्डियों का मजा ताजा है।<sup>25</sup> जबकि दूसरा कड़वे मन से मरता है, कभी कुछ अच्छा नहीं खत्ता।<sup>26</sup> वे दोनों धूल में लेट जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढक लेते हैं।

<sup>27</sup> देखो, मैं तुम्हारे विचारों को जानता हूँ, और उन योजनाओं को जिनसे तुम मुझे गलत साबित करना चाहते हो।<sup>28</sup> क्योंकि तुम कहते हो, 'कहाँ है उस कुलीन का घर, और कहाँ है तंत्र दुष्टों के निवास स्थान?'<sup>29</sup> क्या तुमने यात्रियों से नहीं पूछा, और क्या तुम उनकी गवाही की जाँच नहीं करते?<sup>30</sup> कि बुरे व्यक्ति को विपत्ति के दिन बछा जाता है, वे क्रोध के दिन से दूर ले जाए जाते हैं।<sup>31</sup> कौन उसके कार्यों का सामना करता है, और कौन उसे उसके किए का प्रतिफल देता है?<sup>32</sup> जब उसे कब्र में ले जाया जाता है, लोग उसकी कब्र की रखवाली करते हैं।<sup>33</sup> घाटी की मिट्टी उसे धीरे-धीरे ढक लेगी, इसके अलावा, सभी

## अथूब

मानवजाति उसके पीछे चलती है जबकि अनगिनत  
अच्युत उसके पहले जाते हैं।

<sup>34</sup> तो तुम मुझे खाली सांत्वना कैसे दे सकते हो?  
क्योंकि तुम्हारे उत्तर झूठ से भरे रहते हैं।"

## 22 तब तेमानी एलीफ़ज़ ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "क्या एक बलवान व्यक्ति परमेश्वर के लिए उपयोगी  
हो सकता है या एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने लिए  
लाभकारी हो सकता है?" <sup>3</sup> क्या सर्वशक्तिमान को यह  
प्रसन्नता होती है यदि तुम धर्मी हो, या यदि तुम अपने  
मार्ग निर्देश बनाते हो तो उसे कहें लाभ होता है?

<sup>4</sup> क्या यह तुम्हारे श्रद्धा के कारण है कि वह तुम्हें  
दंडित करता है, कि वह तुम्हारे प्रिरुद्ध न्याय करता है?  
<sup>5</sup> क्या तुम्हारी दृष्टा प्रचुर नहीं है, और क्या तुम्हारे  
अपराधों का कोई अंत नहीं है? <sup>6</sup> क्योंकि तुमने बिना  
कारण अपने भाइयों से गिरीकी ली है, और लोगों को  
नग्न कर दिया है? <sup>7</sup> तुमने थके हए को पानी नहीं दिया,  
और खूँखों से रोटी छीन ली है। <sup>8</sup> लेकिन पृथ्वी  
शक्तिशाली व्यक्ति की है, और जो सम्मानीय है वह  
उस पर रहता है। <sup>9</sup> तुमने विधायों को खाली भेज  
दिया है, और अनाथों की शक्ति को कुचल दिया है। <sup>10</sup>  
इसलिए जाल तुम्हें धेर लेते हैं, और अचानक भय तुम्हें  
डराता है, <sup>11</sup> या अधकार, ताकि तुम देख न सको, और  
जल की बाढ़ तुम्हें ढक लेती है।

<sup>12</sup> क्या परमेश्वर सर्वग की ऊँचाई में नहीं है? दूर के  
तरारों को देखो, वे कितने ऊँचे हैं। <sup>13</sup> तुम कहते हो,  
'परमेश्वर क्या जानता है?' क्या वह घने अंधकार के  
माध्यम से न्याय कर सकता है? <sup>14</sup> बादल उसके लिए  
ठिप्पने का स्थान है, ताकि वह देख न सके, और वह  
सर्व के ऊँचाद पर चलता है। <sup>15</sup> क्या तुम प्राचीन मार्ग  
पर चलते रहोगे जिस पर दुष्ट लोग चले हैं? <sup>16</sup> जिन्हें  
उनके समय से पहले हटा दिया गया, जिनकी नीव  
नदी द्वारा बहा दी गई? <sup>17</sup> उन्होंने परमेश्वर से कहा,  
'हमसे दूर हो जाओ!' और 'सर्वशक्तिमान हमारे लिए  
क्या कर सकता है?' <sup>18</sup> फिर भी उसने उनके धरों को  
अच्छी चीजों से भर दिया, लेकिन दुष्टों की योजना  
मुझसे दूर है। <sup>19</sup> धर्मी देखते हैं और प्रसन्न होते हैं, और  
निर्देश उनका उपहास करते हैं कहते हुए। <sup>20</sup> 'सचमुच  
हमारे शत्रु समाप्त हो गए हैं, और आग ने उनकी  
प्रचुरता को भस्म कर दिया है।'

<sup>21</sup> "उसके साथ मेल करो, और शांति में रहो, इससे  
तुम्हारे पास भलाई आएगी।" <sup>22</sup> कृपया उसके मुख से  
शिक्षा प्राप्त करो, और उसके वरचानों को अपने हृदय में  
रखो। <sup>23</sup> यदि तुम सर्वशक्तिमान के पास लौट आओगे,  
तो तुम पुनःस्थापित हो जाओगे; यदि तुम अपने तंबू से  
अन्याय को दूर करोगे, <sup>24</sup> और अपने सोने को धूल में  
डालोगे, और ओफिर के सोने को नदियों के पत्तरों के  
बीच रखोगे, <sup>25</sup> तब सर्वशक्तिमान तुम्हारा सोना होगा  
और तुम्हारे लिए प्रबुर चाँदी। <sup>26</sup> क्योंकि तब तुम  
सर्वशक्तिमान में आनंद लोगे, और परमेश्वर की ओर  
अपना मुख उठाओगे। <sup>27</sup> तुम उससे प्रार्थना करोगे,  
और वह तुम्हें सुनेगा, और तुम अपनी मन्त्रतें पूरी  
करोगे। <sup>28</sup> तुम भी कुछ निर्णय करोगे, और वह तुम्हारे  
लिए स्थापित होगा, और तुम्हारे मार्गों पर प्रकाश  
चमकेगा। <sup>29</sup> जब तुम नीचे गिराए जाओगे, तो तुम  
आमृतिश्वास से बोलोगे, और वह नग्न व्यक्ति को  
बचाएगा। <sup>30</sup> वह उसे बचाएगा जो निर्देश नहीं है, और  
वह तुम्हारे हाथों की परिवर्ता के कारण बचाया  
जाएगा।"

## 23 तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "आज भी मेरी शिकायत विद्रोह है, उसकी हाथ की  
भारीपन मेरे कराहने के बावजूद है।" <sup>3</sup> काश मैं जान  
पाता कि उसे कैसे पाऊं, ताकि मैं उसके निवास स्थान  
में जा सकूँ। <sup>4</sup> मैं उसके सामने अपनी बात प्रस्तुत  
करता और अपने मुँह को तर्कों से भर देता। <sup>5</sup> मैं उन  
शब्दों को सीखता जो वह उत्तर देता, और समझता कि  
वह मुझसे क्या कहेगा। <sup>6</sup> क्या वह अपनी शक्ति की  
महानता से मुझसे विवाद करेगा? नहीं, वह निश्चित  
रूप से मेरी ओर ध्यान देगा। <sup>7</sup> वहां सीधे लोग उसके  
साथ तर्क करेंगे, और मैं अपने न्यायाधीश से सदा के  
लिए मुक्त हो जाऊंगा।"

<sup>8</sup> देखो, मैं आगे जाता हूँ लेकिन वह वहां नहीं है, और  
पीछे, लेकिन मैं उसे नहीं देख सकता। <sup>9</sup> जब वह बाईं  
ओर कार्य करता है, मैं उसे नहीं देख सकता, वह दाईं  
ओर मुड़ता है, लेकिन मैं उसे नहीं देख सकता। <sup>10</sup>  
लेकिन वह जानता है कि मैं किस रास्ते पर चलता हूँ,  
जब वह मुझे परख लेगा, तो मैं सोने के समान बाहर  
आऊंगा। <sup>11</sup> मेरे पैर ने उसके मार्ग को पकड़े रखा है,  
मैंने उसके मार्ग को रखा है और अलग नहीं हुआ। <sup>12</sup>  
मैंने उसके हाठों की आँख का उल्लंघन नहीं किया है,  
मैंने उसके मुँह के शब्दों को अपने आवश्यक भोजन  
से अधिक संजोया है।"

# अथूब

<sup>13</sup> लेकिन वह अद्वितीय है, और कौन उसे मोड़ सकता है? जो कुछ उसकी आत्मा चाहती है, वह करता है।<sup>14</sup> क्योंकि वह मेरे लिए जो नियत है उसे पूरा करता है, और ऐसी कई नियतियाँ उसके पास हैं।<sup>15</sup> इसलिए मैं उसकी उपस्थिति में भयभीत होऊंगा, जब मैं इस पर विचार करता हूँ, तो मैं उससे डरता हूँ।<sup>16</sup> यह परमेश्वर है जिसने मेरे हृदय को म्लान किया है, और सर्वशक्तिमान जिसने मुझे भयभीत किया है।<sup>17</sup> लेकिन मैं अंधकार से न नहीं हुआ हूँ, न ही उस धने अंधकार से जो मुझे ढकता है।

**24** "सर्वशक्तिमान द्वारा समय क्यों नहीं सचित होते, और जो उसे जानते हैं, वे उसके दिन क्यों नहीं देखते?"<sup>2</sup> लोग सिमा चिनों को हटाते हैं, वे सुन्दरों को पकड़ते और खा जाते हैं।<sup>3</sup> वे अनाथों के गधों को भगा ले जाते हैं, वे विधवा के बैल को गिरवी रख लेते हैं।<sup>4</sup> वे जरूरतमंदों को सङ्क से धकेल देते हैं देश के गरीबों को एक साथ छिपने के लिए मजबूर किया जाता है।<sup>5</sup> देखो, जैसे जंगल में जंगली गधे वे अपने काम में भोजन के लिए बाहर जाते हैं, जैसे रेगिस्तान में अपने बच्चों के लिए रोटी।<sup>6</sup> वे खेत में अपना चारा काटते हैं और दुष्टों की दाखिली से बीनते हैं।<sup>7</sup> वे बिना वस्त के नग रात बिताते हैं, और ठंड के खिलाफ कोई आवरण नहीं होता।<sup>8</sup> वे पहाड़ की बारिश से भीगे होते हैं, और आश्रय की कमी के कारण छहान को गले लगाते हैं।<sup>9</sup> अन्य लोग एक अनाथ को स्तन से छीन लेते हैं, और गरीब के खिलाफ उसे गिरवी रखते हैं।<sup>10</sup> वे गरीबों को बिना वस्त के नग धूमने के लिए मजबूर करते हैं, और भ्रूँसों से पूलों को छीन लेते हैं।<sup>11</sup> दीवारों के भीतर वे तेल का उत्पादन करते हैं, वे अंगूर के रस को रीढ़ते हैं लेकिन प्यासे रहते हैं।<sup>12</sup> शहर से लोग कराहते हैं, और धायल आमाएँ चिलाती हैं, फिर भी परमेश्वर अपराध की ओर ध्यान नहीं देता।

<sup>13</sup> अन्य लोग उन लोगों के साथ रहे हैं जो प्रकाश के खिलाफ विद्रोह करते हैं, वे इसके मार्गों को नहीं जानना चाहते, और इसके पथों में नहीं रहते।<sup>14</sup> हत्यारा भीर में उठता है, वह गरीब और जरूरतमंद को मारता है, और रात में वह चोर की तरह होता है।<sup>15</sup> व्यभिचारी की ओरें सांझ के लिए देखती हैं, कहती है, 'कोई अंख मुझे नहीं देखोगी।' और वह अपना चेहरा छुपाता है।<sup>16</sup> अधेरे में वे घरों में घुसते हैं, वे दिन में शुद्ध को बंद कर लेते हैं, वे प्रकाश को नहीं जानते।<sup>17</sup> क्योंकि सुबह उसके लिए गहरे अंधकार के समान है, क्योंकि वह गहरे अंधकार के आतंक से परिचित है।

<sup>18</sup> वे पानी की सतह पर नगाण्य होते हैं, उनकी भूमि पर शाप है। वे दाखबारी की ओर नहीं मुड़ते।<sup>19</sup> सूखा और गर्मी बर्फ के पानी को खा जाते हैं, वैसे ही शिओल उन लोगों को खा जाता है जिन्होंने पाप किया है।<sup>20</sup> एक माँ उसे भूल जाएगी, कीड़ा उस पर मिठास से खाता है। वह अब याद नहीं किया जाता। और दुष्टा एक पेड़ की तरह टूट जाती है।<sup>21</sup> वह बांझ स्त्री के साथ अस्याय करता है, और विधवा के लिए कोई भला नहीं करता।<sup>22</sup> लेकिन वह अपनी शक्ति से मजबूत को छीच लेता है, वह उठता है, लेकिन किसी को जीवन का आश्वासन नहीं होता।<sup>23</sup> वह उर्हुं सुरक्षा प्रदान करता है, और वे समर्थित होते हैं, और उसकी आखें उनके मार्गों पर होती हैं।<sup>24</sup> वे थोड़ी देर के लिए ऊंचे होते हैं, फिर वे चरे जाते हैं, इसके अलावा, उर्हुं नीचे लाया जाता है, जैसे सब कुछ इकट्ठा किया जाता है; यहां तक कि अनाज के सिर की तरह उर्हुं काट दिया जाता है।

<sup>25</sup> अब यदि ऐसा नहीं है, तो कौन मुझे झूठा साकित कर सकता है, और मेरी वाणी को व्यर्थ बना सकता है?"

**25** तब शूही बिल्दद ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "प्रभुता और भय उसी के हैं जो अपनी ऊँचाईयों में शाति बनाता है।<sup>3</sup> क्या उसकी सेनाओं की कोई संख्या है? और किस पर उसकी ज्योति नहीं चमकती?<sup>4</sup> फिर मनुष्य कैसे परमेश्वर के साथ धर्मी हो सकता है? या स्त्री से जन्मा हुआ कोई कैसे शुद्ध हो सकता है?<sup>5</sup> यदि चंद्रमा में भी चमक नहीं है और तारे भी उसकी दृष्टि में शुद्ध नहीं हैं,<sup>6</sup> तो मनुष्य, जो कीड़ा है, और मनुष्य का पुत्र, जो कृमि है, कितना कम?"

**26** तब अथूब ने उत्तर दिया,

<sup>2</sup> "तुमने निर्बल की कैसी सहायता की है, तुमने बलहीन भुजा को बचा लिया है।<sup>3</sup> तुमने बिना ज्ञान वाले को कैसी सलाह दी है, तुमने कितनी अधिक उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान की है।<sup>4</sup> तुमने किसीसे बाते की है? और किसकी आत्मा ने तुम्हारे माध्यम से प्रकट की है?

<sup>5</sup> मृत आमाएँ काँपती हैं जल के नीचे और उनके निवासियों के साथ।<sup>6</sup> शिओल उसके समाने नग वाले और अब्दानें का कोई आवरण नहीं है।<sup>7</sup> वह उत्तर को खाली स्थान पर फैलाता है, और पृथ्वी को कुछ नहीं पर लटकाता है।<sup>8</sup> वह अपने बादलों में जल को

## अथूब

लपेटा है, और बादल उनके नीचे नहीं फटता।<sup>10</sup> वह पूर्णिमा के मुख को ढकता है और अपने बादल को उस पर फैलाता है।<sup>11</sup> उसने जल के सतह पर एक वृत्त अंकित किया है प्रकाश और अंधकार की सीमा पर।<sup>12</sup> स्वर्ग के स्तंभ काँपते हैं और उसकी डाँट पर चकित होते हैं।<sup>13</sup> अपनी शक्ति से उसने समुद्र को शांत किया, और अपनी समझ से उसने रहब को छूर किया।<sup>14</sup> उसकी भ्रास से आकाश सफ़ होते हैं। उसके हाथ ने भागते हुए सर्प को भेद दिया है।

<sup>14</sup> देखो, ये उसके मार्गों के केवल किनारे हैं, और हम उसकी कितनी मंद ध्वनि सुनते हैं! परंतु उसकी प्रबल गर्जना को कौन समझ सकता है?

**27** तब अथूब ने फिर से अपनी बात को उठाया और कहा,

<sup>2</sup> “जैसे परमेश्वर जीवित है, जिसने मेरा अधिकार छीन लिया है, और सर्वशक्तिमान, जिसने मेरी आत्मा को कड़वा कर दिया है,<sup>3</sup> जब तक मेरे भीतर जीवन है, और परमेश्वर की सांस मेरी नासिका में है,<sup>4</sup> मेरे होठ अन्याय नहीं बोलेंगे।<sup>5</sup> मुझसे यह न हो कि मैं तुम्हें सही ठहराऊँ; जब तक मैं मर नहीं जाऊँ, मैं अपनी सत्यनिष्ठा नहीं छोड़ूँगा।<sup>6</sup> मैंने अपनी धार्मिकता को पकड़े रखा है और उसे नहीं छोड़ूँगा। मेरा हृदय मेरे किसी भी दिन को धिक्कारता नहीं है।

<sup>7</sup> मेरा शत्रु दुष्टों के समान हो, और मेरा विरोधी अन्यायी के समान हो।<sup>8</sup> क्योंकि जब वह जीवन का अंत करता है, तो अधर्मी की आशा क्या है, जब परमेश्वर उसकी पुकार सुनेगा जब संकट उस पर आता है?<sup>9</sup> क्या वह सर्वशक्तिमान में प्रसन्न होगा? क्या वह हर समय परमेश्वर को पुकारेगा?

<sup>11</sup> मैं तुम्हें परमेश्वर की शक्ति में शिक्षा द्वागा; जो सर्वशक्तिमान के साथ है, उसे मैं नहीं छिपाऊँगा।<sup>12</sup> देखो तुम सबने इसे देखा है, फिर तुम खाली बकवास करों करते हो?

<sup>13</sup> यह दुष्ट व्यक्ति का परमेश्वर से हिस्सा है, और वह विरासत जो अत्याचारी सर्वशक्तिमान से प्राप्त करते हैं।

<sup>14</sup> यद्यपि उसके पुत्र अनेक हैं, वे तलवार के लिए नियत हैं और उसके दंशज रोटी से संतुष्ट नहीं होंगे।

<sup>15</sup> उसके बचे हुए लोग महामारी के कारण दफन होंगे;

और उनकी विधवाएँ रो नहीं पाएंगी।<sup>16</sup> यद्यपि वह चांदी को धूल के समान ढेर कर लेता है, और वस्त्रों को मिट्टी के समान तैयार करता है,<sup>17</sup> वह इसे तैयार कर सकता है, परन्तु धर्मी इसे पहनेंगे, और निर्दोष चांदी को बांटेंगे।<sup>18</sup> उसने अपने घर को मकड़ी के जाल के समान बनाया है, या एक झोपड़ी जो चौकीदार ने बनाई है।<sup>19</sup> वह धनी होकर लेटा है, परन्तु फिर कभी नहीं वह अपनी आँखें खोलता है, और वह अब नहीं है।<sup>20</sup> भय उसे बाढ़ की तरह पकड़ लेता है, एक तूफान उसे रात में दुरा ले जाता है।<sup>21</sup> पूर्वी हवा उसे उड़ा ले जाता है, और वह चला जाता है, क्योंकि यह उसे उसकी जगह से उड़ा देती है।<sup>22</sup> क्योंकि यह उस पर बिना दया के फेंकेगा, वह निष्ठित रूप से उसकी शक्ति से भागने की कोशिश करेगा।<sup>23</sup> लोग उस पर ताती बजाएंगे, और अपनी जगहों से उस पर सीटी बजाएंगे।

**28** “निष्ठित रूप से चांदी के लिए एक खुदान है और सोने को शुद्ध करने का स्थान है।<sup>2</sup> लोहा धूल से निकाला जाता है, और तबा चट्टान से पिघलाया जाता है।<sup>3</sup> मनुष्य अंधकार का अंत करता है, और वह दूर तक खोजता है चट्टान को अंधेरे और गहरे छाया में।<sup>4</sup> वह निवास स्थान से दूर एक गड्ढा खोदता है, पैर द्वारा भूला दिया गया; वे लोगों से दूर लटकते और झूलते हैं।<sup>5</sup> पृथी, इससे भूजन आता है, और इसके नीचे आग की तरह उलट-पलट होती है।<sup>6</sup> इसकी चट्टानें नीलम का सोत हैं, और इसकी धूल में सोना होता है।<sup>7</sup> उस मार्ग को कोई शिकारी पक्षी नहीं जानता, न ही बाज की आँखें न उसे देखा है।<sup>8</sup> गर्विले जानवर उस पर नहीं चले, न ही सिंह ने उस पर कदम रखा।<sup>9</sup> वह अपनी हाथ को चकमक पर रखता है, वह पहाड़ों को उनकी जड़ से उलट देता है।<sup>10</sup> वह चट्टानों के बीच नहरें बनाता है, और उसकी आँखें किसी भी कीमती चीज़ को देखती हैं।<sup>11</sup> वह धाराओं को बहने से रोकता है, और जो छिपा था उसे प्रकाश में लाता है।

<sup>12</sup> “लोकिन बुद्धि कहाँ पाई जा सकती है? और समझ का स्थान कहाँ है?”<sup>13</sup> मानवजाति इसकी कीमत नहीं जानती, न ही यह जीवितों की भूमि में पाई जाती है।<sup>14</sup> महासागर की गहराई कहती है, ‘यह मुझमें नहीं है; और समुद्र कहता है, ‘यह मेरे पास नहीं है।’<sup>15</sup> शुद्ध सोना इसके बदले में नहीं दिया जा सकता, न ही चांदी को इसकी कीमत के रूप में तोला जा सकता है।<sup>16</sup> इसे ओफीर के सोने में नहीं मापा जा सकता, कीमती ओनेक्स या नीलम में।<sup>17</sup> सोना या कांच इसे बराबर नहीं कर सकते, न ही इसे उत्तम सोने के समान के

## अथूब

लिए बदला जा सकता है।<sup>18</sup> मूर्गा और क्रिस्टल का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए, और बुद्धि की प्राप्ति मोटियों से अधिक मूल्यवान है।<sup>19</sup> कृश का पुखराज इसे बराबर नहीं कर सकता, न ही इसे शुद्ध सोने में मापा जा सकता है।

<sup>20</sup> "तो फिर बुद्धि कहाँ से आती है? और समझ का स्थान कहाँ है?"<sup>21</sup> यह हर जीवित प्राणी की अँखों से छिपी हुई है, और आकाश के पश्चियों से छिपी हुई है।<sup>22</sup> अबद्वय और मृत्यु कहते हैं, 'हमने इसके बारे में एक रिपोर्ट सुनी है।'<sup>23</sup> परमेश्वर इसकी राह को समझता है, और वह इसके स्थान को जानता है।<sup>24</sup> क्योंकि वह पूर्वी के छोरों को देखता है, वह आकाश के नीचे सब कुछ देखता है।<sup>25</sup> जब उसने हवा को वजन दिया, और पानी को माप से आंका,<sup>26</sup> जब उसने वर्षा के लिए एक सीमा बनाई, और बिजली के लिए एक मार्ग,<sup>27</sup> तब उसने इसे देखा और घोषित किया, उसने इसे स्पापित किया और इसकी खाओ भी की।<sup>28</sup> और मानवजाति से उसने कहा, 'देखो, प्रभु का भय ही बुद्धि है, और बुराई से दूर रहना समझ है।'

## 29 तब अथूब ने फिर अपनी बात उठाई और कहा,

<sup>2</sup> "अहा, कि मैं उन बीते महीनों के समान होता, जैसे उन दिनों में जब परमेश्वर मेरी देखभाल करता था।"<sup>3</sup> जब उसका दीपक मेरे सिर पर चमकता था, और उसके प्रकाश से मैं अंधकार में चलता था,<sup>4</sup> जैसे मैं अपनी जगानी के दिनों में था, जब परमेश्वर की सुरक्षा मेरे तंतु पर थी;<sup>5</sup> जब सर्वशक्तिमान मेरे साथ था, और मेरे बच्चे मेरे चारों ओर थे;<sup>6</sup> जब मेरे कदम मरखन में स्थान करते थे, और चटान मेरे लिए तेल की धाराएँ बहाती थी।

<sup>7</sup> जब मैं नगर के द्वार पर जाता था, जब मैं सार्वजनिक चौक में अपनी सीट लेता था,<sup>8</sup> जबान लोग मुझे देखकर छिप जाते थे, और बूढ़े लोग उठकर खड़े हो जाते थे;<sup>9</sup> नेता बात करना बदं कर देते थे और अपने हाथ अपने मुँह पर रख लेते थे;<sup>10</sup> कुलीनों की आवाजें शांत हो जाती थीं, और उनकी जीभें उनके तालू से चिपक जाती थीं।<sup>11</sup> क्योंकि जब किसी कान ने सुना, तो उसने मुझे धन्य कहा, और जब किसी अँखें ने देखा, तो उसने मेरी गवाही दी,<sup>12</sup> क्योंकि मैंने उस गरीब को बचाया जो मदद के लिए रोता था, और उस अनाथ को जो बिना सहायक के था।<sup>13</sup> जो मरने वाला था, उसकी आशीर्वद मुझ पर आई, और मैंने विधवा

के हृदय को आनंद से गाने पर मजबूर किया।<sup>14</sup> मैंने धर्म को धारण किया, और उसने मुझे वसित किया; मेरी न्यायिता एक वस्त और एक पट्टी के समान थी।<sup>15</sup> मैं अंधों के लिए आँखें था, और लंगड़ों के लिए पैर था।<sup>16</sup> मैं ज़रूरतमंदों के लिए पिता था, और मैंने उस मामले की जांच की जिसे मैं नहीं जानता था।<sup>17</sup> मैंने दुरुपी के जबड़े तोड़े, और शिकार को उसके दाँतों से छुड़ाया।

<sup>18</sup> तब मैंने सोचा, 'मैं अपने परिवार के साथ मर्णगा, और मैं अपने दिनों को रेत के समान बढ़ाऊँगा।'<sup>19</sup> मेरी जड़ें जल तक फैलती हैं, और ओस मेरी शाखाओं पर सारी रात रहती है।<sup>20</sup> मेरी महिमा मेरे साथ सदा नई रहती है, और मेरी धनुष मेरे हाथ में नई होती है।

<sup>21</sup> वे मेरी सुनते और प्रतीक्षा करते थे, और मेरी सलाह के लिए उपर रहते थे;<sup>22</sup> मेरे शब्दों के बाद वे फिर नहीं बोलते थे, और मेरी वाणी उन पर गिरती थी।<sup>23</sup> वे मेरी प्रतीक्षा करते थे जैसे वर्ष की, और अपने मुँह को देर से होने वाली वर्ष के लिए खोलते थे।<sup>24</sup> जब वे विभास नहीं करते थे तो मैं उन पर मुस्कराता था, और वे मेरे चेहरे के प्रकाश को अप्रसन्नता से नहीं देखते थे।<sup>25</sup> मैंने उनके लिए एक मार्ग बुना और मूर्ख के रूप में बैठा, और सेना के बीच एक राजा के रूप में जीवन व्यतीत किया, जैसे कि शोक करने वालों को सांत्वना देने वाला।

<sup>26</sup> **30** "परन्तु अब जो मुझसे छोटे हैं, वे मुझ पर हसते हैं, जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़ों के कुत्तों के साथ रखने के योग्य भी नहीं समझता था।"<sup>2</sup> वास्तव में, उनके हाथों की शक्ति का मुझे क्या लाभ था? उनमें से ताकत समाप्त हो गई थी।<sup>3</sup> गरीबी और धूख से वे ढुबले हो गए हैं— वे जो रात में सूखी भूमि को उजाड़ और वीरान में चबाते हैं,<sup>4</sup> जो झाड़ियों के पास नमक की जड़ी-बूटियाँ तोड़ते हैं, और जिनका भोजन झाड़ के पौधे की जड़ है।<sup>5</sup> उन्हें समाज से बाहर कर दिया जाता है, लोग उनके खिलाफ चारों की तरह चिल्लाते हैं,<sup>6</sup> ताकि वे भयानक घाटियों में बसे, पूर्वी और चटानों की गुफाओं में।<sup>7</sup> झाड़ियों के बीच वे चिल्लाते हैं, खर-पतवार के नीचे वे इकट्ठे होते हैं।<sup>8</sup> मूर्खों के पुत्र, यहाँ तक कि नामहीनों के पुत्र, उन्हें देश से बाहर कर दिया गया है।

<sup>9</sup> और अब मैं उनका उपहास बन गया हूँ, और मैं उनके लिए एक कहावत बन गया हूँ।<sup>10</sup> वे मुझसे धृता करते हैं और मुझसे दूर रहते हैं, और वे मेरे चेहरे पर

## अथूब

थूकने से नहीं रुकते।<sup>11</sup> क्योंकि उसने अपनी धनुष की डोरी खोल दी है और मुझे पीड़ा दी है उन्होंने मेरी उपस्थिति में संयम छोड़ दिया है।<sup>12</sup> दाहिने हाथ पर उनकी संतानि उठती है वे मेरे पैरों को धकेलते हैं और मेरे खिलाफ अपने विनाश के मार्ग बनाते हैं।<sup>13</sup> वे मेरे मार्ग को तोड़ते हैं, वे मेरे विनाश से लाभ उठाते हैं कोई उन्हें नहीं रोकता।<sup>14</sup> जैसे एक चौड़ी दररास से वे आते हैं तूफान के बीच वे लुढ़कते हैं।<sup>15</sup> अचानक आतंक मेरे खिलाफ हो जाते हैं वे मेरी प्रतिष्ठा का पीछा करते हैं जैसे हवा, और मेरी समुद्रिक बादल की तरह गुजर गई है।

<sup>16</sup> और अब मेरी आत्मा मेरे भीतर उंडेल दी गई है दुख के दिन मुझ पर आ गए हैं।<sup>17</sup> रात में यह मेरी हड्डियों को भीतर से चीरता है और मेरी पीड़ा का आराम नहीं होता।<sup>18</sup> एक बड़ी शक्ति से मेरा वस्त्र विकृत हो जाता है यह मुझे मेरे कोट के काँतर की तरह लाभदाता है।<sup>19</sup> उसने मुझे कीचड़ में फेंक दिया है और मैं धूल और राख के समान हो गया हूँ।

<sup>20</sup> मैं तुझसे सहायता के लिए पुकारता हूँ, परन्तु तू मुझे उत्तर नहीं देता, मैं खड़ा होता हूँ और तू अपना ध्यान मेरे खिलाफ करता है।<sup>21</sup> तू मुझ पर कूर हो गया है अपनी शक्ति के साथ तू मेरा पीछा करता है।<sup>22</sup> तू मुझे हवा में उठाता है और उस पर सवारी करता है, और तू मुझे तूफान में बिखरता है।<sup>23</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे मृत्यु के पास ले जाएगा, और सभी जीवितों के मिलने के घर में।

<sup>24</sup> फिर भी क्या कोई खंडहर के ढेर में हाथ नहीं बढ़ाता, या अपनी आपदा में सहायता के लिए नहीं पुकारता? <sup>25</sup> क्या मैंने उस व्यक्ति के लिए नहीं रोया जिसकी जीवन कठिन है, क्या मेरी आत्मा जरूरतमंद के लिए दुखी नहीं हुई? <sup>26</sup> जब मैंने भलाई की आशा की, तो बुराई आँदू जब मैंने प्रकाशकी प्रतीक्षा की, तो अंधकार आया।<sup>27</sup> मेरे अंतरिक अंग उथल-पुथल में हैं और कभी स्थिर नहीं होते, दुख के दिन मेरे सामने हैं।<sup>28</sup> मैं बिना सांत्वना के शोक करता हूँ, मैं सभा में खड़ा होता हूँ और सहायता के लिए पुकारता हूँ।<sup>29</sup> मैं सिपारों का भाई बन गया हूँ, और सुतुरमुर्गों का साथी।<sup>30</sup> मेरी त्वचा मुझ पर काली पड़ गई है, और मेरी हड्डियाँ खुलार से जल रही हैं।<sup>31</sup> इसलिए मेरी कीणा शोक में बदल गई है और मेरी बांसुरी उन लोगों की आवाज में जो रोते हैं।

**31** “मैंने अपनी आँखों के साथ एक वाचा की है फिर मैं एक कुंवारी को कैसे देख सकता हूँ?<sup>2</sup> और ऊपर से परमेश्वर का भाग क्या है या ऊँचाई से सर्वशक्तिमान की विरासत क्या है?<sup>3</sup> क्या यह अन्यायियों के लिए विपत्ति नहीं है और जो अन्याय करते हैं उनके लिए दुर्भाग्य नहीं है?<sup>4</sup> क्या वह मेरी राहों को नहीं देखता, और मेरे सभी कदमों की गिनती नहीं करता?

<sup>5</sup> यदि मैंने धोखे के साथ चला है और मेरा पैर छल के पीछे दौड़ा है,<sup>6</sup> तो वह मुझे सही तराजू में लौटे, और परमेश्वर मेरी सच्चाई को जान ले।<sup>7</sup> यदि मेरा कदम रास्ते से मुड़ गया है, या मेरा हृदय मेरी आँखों के चला है, या मेरे हाथों पर कोई दाग लगा है,<sup>8</sup> तो मैं बोँच और कोई और खाए, और मेरी फसल उखाड़ दी जाए।

<sup>9</sup> यदि मेरा हृदय किसी स्त्री से मोहित हुआ है, या मैंने अपने पड़ोसी के दरवाजे पर घाट लगाई है,<sup>10</sup> तो मेरी पत्नी किसी और के लिए पीसे, और अन्य लोग उसके ऊपर झूँकें।<sup>11</sup> क्योंकि यह एक कामुक अपराध होगा, इसके अलावा, यह न्यायाधीशों द्वारा दंडनीय अपराध होगा।<sup>12</sup> क्योंकि यह एक आग होगी जो अबहेन तक भ्रम कर देगी, और मेरी सारी वृद्धि को उखाड़ देगी।

<sup>13</sup> यदि मैंने अपने पुरुष या महिला दासों के दावे को अस्वीकार कर दिया है जब उन्होंने मेरे खिलाफ शिकायत दर्ज की,<sup>14</sup> तो जब परमेश्वर उठेगा तो मैं क्या कर सकता हूँ? और जब वह मुझे उत्तरदायी ठहराएगा, तो मैं उसे कैसे उत्तर दूँगा?<sup>15</sup> क्या जिसने मुझे गर्भ में बनाया, उसने उसे नहीं बनाया, और एक ही ने हमें गर्भ में उत्पन्न किया?

<sup>16</sup> यदि मैंने गरीबों को उनकी इच्छा से वंचित रखा, या विधान की आँखों को विफल किया है,<sup>17</sup> या मैंने अकेले ही अपना टुकड़ा खाया, और अनाथ के उसे साझा नहीं किया।<sup>18</sup> (परंतु अपनी युवावस्था से वह मेरे साथ पिता के समान बड़ा हुआ, और अपनी माँ के गर्भ से मैंने उसे मार्गदर्शन किया),<sup>19</sup> यदि मैंने किसी को वस्त्र के अभाव में नष्ट होते देखा, या किसी जरूरतमंद व्यक्ति को बिना चोरे के,<sup>20</sup> यदि उसकी कमर ने मुझे धन्यवाद नहीं दिया, या वह मेरी भेड़ों की ऊन से गर्भ नहीं हुआ,<sup>21</sup> यदि मैंने अनाथ के खिलाफ अपना हाथ उठाया, क्योंकि मैंने देखा कि मुझे फाटक पर समर्थन मिला है,<sup>22</sup> तो मेरा कंधा अपने सॉकेट से गिर जाए और मेरी बांह कोहनी से टूट जाए।<sup>23</sup> क्योंकि परमेश्वर

## अथ्यूब

की विपत्ति मेरे लिए डरावनी है, और उसकी महिमा के कारण मैं कुछ नहीं कर सकता।

<sup>24</sup> यदि मैंने सोने में अपना विश्वास रखा है, और उत्तम सोने को अपनी आशा कहा है,<sup>25</sup> यदि मैंने अपनी बड़ी संपत्ति के कारण गर्व किया है, और क्योंकि मेरे हाथ ने इतना कुछ प्राप्त किया है,<sup>26</sup> यदि मैंने सूर्य को देखा जब वह चमकता था या चंद्रमा को उसकी शोभा में चलते हुए,<sup>27</sup> और मेरा हृदय गुप्त रूप से मोहित हुआ, और मेरे मुँह से एक चुम्बन फैला,<sup>28</sup> तो वह भी एक अपराध होता जो न्याय के लिए पुकारता, क्योंकि मैंने ऊपर के परमेश्वर का इनकार किया होता।

<sup>29</sup> क्या मैंने अपने शत्रु के दुर्भाय पर आनंदित हुआ है, या जब उसे बुराहि मिली तो सुख हुआ हूँ?<sup>30</sup> नहीं, मैंने अपने मुँह को पाप करने की अनुमति नहीं दी उसके जीवन के लिए शाप मारकर।<sup>31</sup> क्या मेरे तबू के लोगों ने नहीं कहा, 'कोई है जो उसके मास से संतुष्ट नहीं हुआ?'<sup>32</sup> अजनकी ने बाहर रात नहीं बिताई, क्योंकि मैंने यात्री के लिए अपने दरवाजे खोले।<sup>33</sup> क्या मैंने आदम की तरह अपनी गलियों को छापाया है, अपनी दोष को अपनी छाती में छापाकर,<sup>34</sup> क्योंकि मैंने बड़ी भीड़ से डरकर, और परिवारों की अवमानना से भयभीत होकर, चुप रहकर बाहर नहीं गया?

<sup>35</sup> ओह, कि मेरे पास कोई होता जो मुझे सुनता! यहाँ मेरा हस्ताक्षर है, सर्वशक्तिमान मुझे उत्तर दो! और वह आरोप जो मेरे विरोधी ने लिखा है,<sup>36</sup> मैं निश्चित रूप से उसे अपने कंधे पर ले जाऊँगा, मैं उसे अपने ऊपर मुकुट की तरह बौधं लूँगा।<sup>37</sup> मैं उसे अपने कदमों की संख्या बताऊँगा, एक राजकुमार की तरह, मैं उसके पास जाऊँगा।

<sup>38</sup> यदि मेरी भूमि मेरे खिलाफ चिल्लाती है, और उसकी लकड़िए एक साथ रोती हैं,<sup>39</sup> यदि मैंने उसके फल बिना पैसे के खाए, या उसके मालिकों को उनकी जान से हाथ धोना पड़ा,<sup>40</sup> तो गौँह के बदले काटेदार झाड़ी उगे, और जी के बदले बदबूदार खरपतवार।<sup>41</sup> अथ्यूब के शब्द समाप्त हुए।

**32** तब इन तीनों पुरुषों ने अथ्यूब को उत्तर देना बंद कर दिया, क्योंकि वह अपनी ही विट्ठि में धर्मी था।<sup>2</sup> परन्तु एलीहू, जो बुज़ी बारकेल का पुत्र और राम के परिवार का था, का क्रोध भड़क उठा; उसका क्रोध अथ्यूब पर इसलिए भड़क उठा क्योंकि उसने अपने को परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया।<sup>3</sup> और उसका क्रोध

उसके तीन मित्रों पर भी भड़क उठा क्योंकि उन्होंने कोई उत्तर नहीं पाया, फिर भी अथ्यूब को दोषी ठहराया।<sup>4</sup> अब एलीहू ने अथ्यूब से बोलने के लिए प्रतीक्षा की क्योंकि वे आयु में उससे बड़े थे।<sup>5</sup> परन्तु जब एलीहू ने देखा कि इन तीनों पुरुषों के मुख में कोई उत्तर नहीं है, तो उसका क्रोध भड़क उठा।

<sup>6</sup> तब बुज़ी बारकेल के पुत्र एलीहू ने कहा,

"मैं उम्र में छोटा हूँ और आप लोग बुद्ध हैं, इसलिए मैं संकोच करता था और आपको अपनी राय बताने से डरता था।"<sup>7</sup> मैंने सोचा कि आयु बोतनी चाहिए।<sup>8</sup> परन्तु यह मनुष्य में एक आत्मा है, और सर्वशक्तिमान की शक्ष उन्हें समझ देती है।<sup>9</sup> वर्षों में प्रवृत्तता वाले बुद्धिमान नहीं हो सकते, न ही बुजुर्ग न्याय को समझ सकते हैं।

<sup>10</sup> इसलिए मैं कहता हूँ, 'मेरी सुनो, मैं भी अपनी राय बताऊँगा।'<sup>11</sup> देखो, मैंने आपके शब्दों की प्रतीक्षा की, मैंने आपके तर्कों को सुना, जब आप सोच रहे थे कि क्या कहना है।<sup>12</sup> मैंने भी आप पर ध्यान दिया, परन्तु देखो, कोई भी अथ्यूब का खंडन नहीं कर सका, न ही आप में से किसी ने उसके शब्दों का उत्तर दिया।<sup>13</sup> इसलिए यह मत कहो, 'हमने बुद्धि पाई है परमेश्वर उसे पराजित करेगा, मनुष्य नहीं।'<sup>14</sup> परन्तु उसने अपने शब्द मेरे विरुद्ध प्रस्तुत नहीं किए, न ही मैं आपके तर्कों से उसे उत्तर द्वांगा।

<sup>15</sup> वे हत्याकृष्ण हैं, वे अब उत्तर नहीं देते, शब्दों ने उन्हें छोड़ दिया है।<sup>16</sup> क्या मुझे प्रतीक्षा करनी चाहिए, क्योंकि वे नहीं बोल रहे हैं, क्योंकि वे स्थिर खड़े हैं और अब उत्तर नहीं देते?<sup>17</sup> मैं भी अपने उत्तरों का दिस्सा ढूँगा, मैं भी अपनी राय बताऊँगा।<sup>18</sup> क्योंकि मैं शब्दों से भरा हूँ, मेरे भीतर की आत्मा मुझे प्रेरित करती है।<sup>19</sup> देखो, मेरा पेट बिना बेंट की गई दाखरस की तरह है, नए मटकों की तरह यह फटने वाला है।<sup>20</sup> मुझे बोलने दो ताकि मुझे राहत मिले, मुझे अपने हौठ खोलने दो और उत्तर देने दो।<sup>21</sup> मुझे किसी के प्रति पक्षपात न करने दो, न ही किसी मनुष्य की चापलूसी करने दो।<sup>22</sup> क्योंकि मैं चापलूसी करना नहीं जानता, अन्यथा मेरा निर्माता मुझे शीघ्र ही हता देगा।

**33** "फिर भी, कृपया मेरी बात सुनो, अथ्यूब, और मेरे सभी शब्दों को सुनो।"<sup>2</sup> देखो अब, मैं अपना मुँह खोलता हूँ, मेरे मुँह में मेरी जीभ बोलती है।<sup>3</sup> मेरे शब्द मेरे हृदय की सचाई से हैं, और मेरे हौठ ज्ञान को

## अथ्यूब

ईमानदारी से बोलते हैं।<sup>4</sup> परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस मुझे जीवन देती है।<sup>5</sup> यदि तुम कर सको तो मुझे खंडन करो, मेरे सामने खड़े हो जाओ, अपनी स्थिति लो।<sup>6</sup> देखो, मैं तुम्हारी तरह परमेश्वर का हूँ, मैं भी मिट्टी से बना हूँ।<sup>7</sup> देखो, मेरा भय तुम्हें आतंकित नहीं करेगा, और न ही मेरा दबाव तुम पर भारी पड़ेगा।

<sup>8</sup> “निष्ठित रूप से तुमने मेरी सुनवाई में कहा है, और मैंने तुम्हारे शब्दों की व्यापनी सुनी है।<sup>9</sup> मैं शुद्ध हूँ बिना किसी अपराध के, मैं निर्दोष हूँ और मुझमें कोई दोष नहीं है।<sup>10</sup> देखो, वह मेरे खिलाफ बहाने बनाता है, वह मुझे अपना शत्रु मानता है।<sup>11</sup> वह मेरे पैरों को बेड़ियों में डालता है, वह मेरी सभी राहों को देखता है।”

<sup>12</sup> “देखो, मैं तुम्हें उत्तर देता हूँ, तुम इसमें सही नहीं हो, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के लिए है।<sup>13</sup> तुम उसके खिलाफ क्यों शिकायत करते हो कि वह अपने सभी कार्यों का हिसाब नहीं देता? <sup>14</sup> वास्तव में परमेश्वर एक बार बोलता है, या दो बार, फिर भी कोई इसे नहीं देखता।<sup>15</sup> एक चर्प में रात की एक घटि में, जब गहरी नींद लोगों पर आती है, जब वे अपने बिस्तरों पर सोते हैं,<sup>16</sup> तब वह लोगों के कान खोलता है, और उन्हें चेतावनियों से ध्यायीत करता है,<sup>17</sup> ताकि वह व्यक्ति को अपराध से दूर कर सके, और मनुष्य को गर्व से बचा सके;<sup>18</sup> वह उसकी आत्मा को गड्ढे से बचाता है, और उसके जीवन को भाले से नष्ट होने से।

<sup>19</sup> एक व्यक्ति को उसके बिस्तर पर दर्द से भी डांटा जाता है, और उसकी हड्डियों में लगातार कण से<sup>20</sup> ताकि उसका जीवन रोटी से धृणा करे, और उसकी आत्मा उस भोजन से जिसे वह चाहती है।<sup>21</sup> उसका मांस छापे से क्षीण हो जाता है, और उसकी हड्डियाँ, जो नहीं देखी गई थीं बाहर निकलती हैं।<sup>22</sup> तब उसकी आत्मा गड्ढे के निकट आती है, और उसका जीवन उन लोगों के पास जो मृत्यु लाते हैं।<sup>23</sup> यदि उसके लिए कोई मध्यस्थ दूर हो, हजार में से एक, व्यक्ति को उसके लिए सही बात याद दिलाना चाहा,<sup>24</sup> और वह उस पर कृपा करता है, और कहता है, ‘उसे गड्ढे में जाने से बचाओ, मैंने एक फिरोती पाई है।’<sup>25</sup> उसका मांस युवावस्था से भी ताजा हो जाए उसे उसकी युवावस्था के दिनों में लौटने दो।<sup>26</sup> तब वह परमेश्वर से प्रार्थना करेगा, और वह उसे स्वीकार करेगा, ताकि वह उसके चेहरे को खुशी से देख सके, और वह उस व्यक्ति को उसकी धार्मिकता बहाल करेगा।<sup>27</sup> वह लोगों से गाएगा और कहेगा, ‘मैंने पाप किया है और

जो सही है उसे विकृत किया है, और यह मेरे लिए उचित नहीं था।<sup>28</sup> उसने मेरी आत्मा को गड्ढे में जाने से छुड़ाया है, और मेरा जीवन प्रकाश देखेगा।

<sup>29</sup> “देखो, परमेश्वर मनुष्य के लिए ये सभी बातें दो या तीन बार करता है,<sup>30</sup> ताकि उसकी आत्मा को गड्ढे से वापस लाया जा सके, ताकि वह जीवन के प्रकाश से प्रकाशित हो सके।

<sup>31</sup> व्यान दो, अथ्यूब, मेरी सुनो, चुप रहो, और मुझे बोलने दो।<sup>32</sup> फिर यदि तुम्हारे पास कुछ कहने के लिए है तो मुझे उत्तर दो; बोलो, क्योंकि मैं तुम्हें सही ठहराना चाहता हूँ।<sup>33</sup> यदि नहीं तो मेरी सुनो, चुप रहो, और मैं तुम्हें ज्ञान सिखाऊँगा।”

## 34 फिर एलीहू ने कहा,

<sup>2</sup> “मेरे शब्द सुनो, हे बुद्धिमान लोगों, और मेरी बात सुनो, हे समझदार लोगों।<sup>3</sup> क्योंकि कान शब्दों की परीक्षा करता है जैसे तात्त्व भोजन का स्वाद लेता है।<sup>4</sup> हम अपने लिए जो सही है उसे चुनें, हम अपने बीच जो अच्छा है उसे समझें।

<sup>5</sup> क्योंकि अथ्यूब ने कहा है, ‘मैं धर्मी हूँ परन्तु परमेश्वर ने मेरा अधिकार छीन लिया है।’<sup>6</sup> क्या मैं अपने अधिकार के बारे में झूठ लोकूं मेरा धार असाध्य है, यद्यपि मैं निर्दोष हूँ।<sup>7</sup> कौन मनुष्य अथ्यूब के समान है जो उपहास को पानी की तरह पीता है?<sup>8</sup> जो अन्याय करने वालों के साथ संगति करता है, और दुल लोगों के साथ चलता है?<sup>9</sup> क्योंकि उसने कहा है, ‘मनुष्य के लिए कोई लाभ नहीं है जब वह परमेश्वर से प्रसन्न होता है।’

<sup>10</sup> “इसलिए, मेरी सुनो, हे समझदार लोगों। परमेश्वर से बुराई करना द्वारा हो, और सर्वशक्तिमान से अन्याय करना द्वारा हो।<sup>11</sup> क्योंकि वह व्यक्ति को उसके काम के अनुसार प्रतिफल देता है और मनुष्य के व्यवहार के अनुसार घटनाओं को होने देता है।<sup>12</sup> निश्चय ही, परमेश्वर अन्याय नहीं करेगा, और सर्वशक्तिमान न्याय को विकृत नहीं करेगा।<sup>13</sup> किसने उसे पृथ्वी पर अधिकार दिया और किसने उसे सारी दुनिया पर जिम्मेदारी सौंपी? <sup>14</sup> यदि वह ऐसा करने का निश्चय करे, यदि वह अपनी आत्मा और अपनी भ्राता को अपने पास इकट्ठा कर ले,<sup>15</sup> तो सब प्राणी एक साथ नष्ट हो जाएंगे, और मानव जाति धूल में लौट आएगी।

## अथूब

<sup>16</sup> “परन्तु यदि तुम्हारे पास समझ है, तो इसे सुनो; मेरे शब्दों की ध्वनि सुनो।”<sup>17</sup> क्या वह जो न्याय से घृणा करता है शासन करेगा? और क्या तुम धर्म शक्तिशाली को दोषी ठहराओगे,<sup>18</sup> जो राजा से कहता है ‘तू निकम्मा है’ और रईसों से ‘तुम दुष्ट हो’?<sup>19</sup> जो प्रमुखों के प्रति पक्षपात नहीं करता, और न ही धनी को गरीब से अधिक मानता है, क्योंकि वे सब उसके हाथों की कृति हैं?<sup>20</sup> एक क्षण में वे मर जाते हैं, और आधी रात को लोग हिल जाते हैं और चले जाते हैं, और शक्तिशाली बिना किसी हाथ के हटा दिए जाते हैं।

<sup>21</sup> क्योंकि उसकी वाणि मनुष्य के मार्ग पर है, और वह उसके सभी कदम देखता है।<sup>22</sup> कोई अंधकार या गहरी छाया नहीं है जहाँ अन्याय करने वाले छिप सकें।<sup>23</sup> क्योंकि उसे किसी व्यक्ति पर और विचार करने की आवश्यकता नहीं है, कि वह परमेश्वर के सामने न्याय में जाए।<sup>24</sup> वह शक्तिशाली को बिना जाँच के तोड़ता है, और दूसरों को उनकी जगह पर स्थापित करता है।<sup>25</sup> इसलिए वह उनके कार्यों को जानता है, और वह रात में उर्द्धे उलट देता है, और वे कुचले जाते हैं।<sup>26</sup> वह उर्द्धे दुष्टों की तरह मारता है सार्वजनिक स्थान पर,<sup>27</sup> क्योंकि उन्होंने उसका अनुसरण करना छोड़ दिया, और उसकी किसी भी राह की परवाह नहीं की;<sup>28</sup> ताकि उन्होंने गरीबों की पुकार को उसके पास पहुँचाया, और उसने पीड़ितों की पुकार सुनी।<sup>29</sup> जब वह ऊपर रहता है, तो कौन उसे दोषी ठहरा सकता है? और जब वह अपना मुख छिपाता है, तो कौन उसे देख सकता है, अर्थात् एक राष्ट्र और एक व्यक्ति के संबंध में—<sup>30</sup> ताकि अधर्मी लोग शासन न करें, और न ही लोगों के लिए कंदे बनें।

<sup>31</sup> “क्या किसी ने परमेश्वर से कहा है, ‘मैंने दंड सहा है मैं अब और अपराध नहीं करूँगा?’<sup>32</sup> मुझे सिखा जाओ मैं नहीं देखता; यदि मैंने गलत किया है, तो मैं फिर से नहीं करूँगा?”<sup>33</sup> क्या परमेश्वर तुम्हारी शर्तों पर प्रतिफल देगा, क्योंकि तुमने इसे अस्वीकार कर दिया है? क्योंकि तुम्हें चुनना चाहिए, न कि मुझे इसलिए जो तुम जनते हो उसे घोषित करो।

<sup>34</sup> समझदार लोग मुझसे कहेंगे, और जो बुद्धिमान व्यक्ति मुझे सुनता है,<sup>35</sup> ‘अथूब बिना ज्ञान के बोलता है, और उसके शब्द बिना बुद्धि के हैं।’<sup>36</sup> काश अथूब को सीमा तक परखा जाता, क्योंकि वह दुष्टों की तरह उत्तर देता है।<sup>37</sup> क्योंकि वह अपने पाम में विद्रोह जोड़ता है, वह हमारे बीच ताली बजाता है, और परमेश्वर के विरुद्ध अपने शब्दों को बढ़ाता है।”

**35** तब एलीहू ने आगे कहा,

२ “क्या तुम सोचते हो कि यह न्याय के अनुसार है? क्या तुम कहते हो ‘मेरी धार्मिकता परमेश्वर से अधिक है?’<sup>३</sup> क्योंकि तुम कहते हो, ‘इससे तुम्हें क्या लाभ होगा? मुझे क्या लाभ होगा, यदि मैंने पाप किया होता तो उससे अधिक?’

४ मैं तुम्हें उत्तर दूंगा, और तुम्हारे मित्रों को भी।<sup>५</sup> आकाश की ओर देखो और देखो, और बादलों की ओर देखो—वे तुमसे ऊँचे हैं।<sup>६</sup> यदि तुमने पाप किया है, तो तुम उसके विरुद्ध क्या करते हो? और यदि तुम्हारे अपराध बहुत हैं, तो तुम उसे क्या करते हो?<sup>७</sup> यदि तुम धर्मी हो, तो तुम उसे क्या देते हो, या वह तुम्हारे हाथ से क्या प्राप्त करता है?<sup>८</sup> तुम्हारी दुष्टता तुम्हारे जैसे मनुष्य के लिए है, और तुम्हारी धार्मिकता मनुष्य के पुत्र के लिए है।

९ अत्याचार की बहुतायत के कारण वे चिल्लाते हैं, वे शक्तिशाली की भुजा के कारण सहायता के लिए पुकारते हैं।<sup>१०</sup> परन्तु कोई नहीं कहता, ‘मेरा सुषिकर्ता परमेश्वर कहाँ है, जो रात में गीत देता है।’<sup>११</sup> जो हमें पृथ्वी के पश्चिमों से अधिक सिखाता है और आकाश के पश्चिमों से अधिक बुद्धिमान बनाता है,<sup>१२</sup> वहाँ वे चिल्लाते हैं, परन्तु वह उत्तर नहीं देता दृष्ट लोगों के अभियान के कारण।<sup>१३</sup> परमेश्वर निश्चित रूप से एक खाली पुकार को नहीं सुनेगा, और न ही सर्वशक्तिमान उसे मानेगा।<sup>१४</sup> जब तुम कहते हो कि तुम उसे नहीं देखते, तो तुम्हारा मायला उसके सामने है, तुम्हें उसके लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए।<sup>१५</sup> परन्तु अब क्योंकि उसने क्रोध में दंड नहीं दिया, और न ही अहंकार को स्वीकार किया,<sup>१६</sup> फिर भी अथूब अपने मुँह को खाली शब्दों से खोलता है, और ज्ञान के बिना अपने शब्दों को बढ़ाता है।

**36** तब एलीहू ने फिर से कहा,

२ “थोड़ा ठहरो, और मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि परमेश्वर की ओर से कहने के लिए अभी और भी बातें हैं।”<sup>३</sup> मैं अपनी ज्ञान को द्वार से लाऊँगा, और अपने निर्माता की धार्मिकता का वर्णन करूँगा।<sup>४</sup> क्योंकि वास्तव में मेरे शब्द ज्ञाते नहीं हैं, ज्ञान में सिद्ध व्यक्ति तुम्हारे साथ है।

५ देखो, परमेश्वर सामर्थी है पर किसी को नहीं ठुकराता, वह समझ की शक्ति में महान है।<sup>६</sup> वह दुष्टों को जीवित नहीं रखता, पर पीड़ितों को न्याय देता है।

## अथूब

वह धर्मियों से अपनी दृष्टि नहीं हटाता, पर सिंहासन पर राजाओं के साथ उन्हें सदा के लिए बैठाता है, और वे उनका होते हैं।<sup>8</sup> और यदि वे बोडियों में बंधे होते हैं, और दुख के जाल में फँसे होते हैं,<sup>9</sup> तब वह उन्हें उनके कार्य और उनके अपराधों को बताता है, कि वे अहंकारी रहे हैं।<sup>10</sup> वह उनकी कानों को शिक्षा के लिए खोलता है, और आदेश देता है कि वे अन्याय से लौट आए।<sup>11</sup> यदि वे सुनते हैं और उसकी सेवा करते हैं, तो वे अपने दिन समृद्धि में समाप्त करेंगे, और अपने वर्ष आनंद में।<sup>12</sup> पर यदि वे नहीं सुनते, तो वे तलवार से नष्ट हो जाएंगे, और बिना ज्ञान के मर जाएंगे।

<sup>13</sup> पर जो हृदय में अधर्मी होते हैं वे क्रोध इकट्ठा करते हैं, वे सहायता के लिए नहीं पुकारते जब वह उन्हें बाँधता है।<sup>14</sup> वे युवावस्था में मर जाते हैं, और उनका जीवन पापी स्त्रियों के बीच समाप्त होता है।<sup>15</sup> वह पीड़ितों को उनके दुख में बचाता है, और उनके कानों को उत्पीड़न के समय खोलता है।

<sup>16</sup> तब वास्तव में उसने तुम्हें संकट के मुँह से दूर खींचा, इसके बजाय, एक विस्तृत स्थान जहाँ कोई बाधा नहीं है, और जो तुम्हारी मेज पर रखा गया था वह समृद्धि से भरा था।<sup>17</sup> पर तुम दुखों के न्याय से भरे थे, न्याय और धर्म तुम्हें पकड़ लेते हैं।<sup>18</sup> सावधान रहो कि क्रोध तुम्हें उपहास की ओर न ले जाए, और फिरौती की महानता तुम्हें विचलित न करो।<sup>19</sup> क्या तुम्हारी सहायता के लिए पुकार तुम्हें संकट से बचाएगी, या तुम्हारी शक्ति के सभी प्रयास? <sup>20</sup> रात की इच्छा मत करो, जब लोग अपनी जगहों से गायब हो जाते हैं।<sup>21</sup> सावधान रहो, बुराई की ओर न मुड़ो, क्योंकि तुमने इसे दुख से बेहतर समझा।

<sup>22</sup> देखो, परमेश्वर अपनी शक्ति में महान है उसके जैसा शिक्षक कौन है?<sup>23</sup> किसने उसे उसकी राह नियुक्त की, और किसने कहा, 'तुमने गलत किया है?' <sup>24</sup> याद रखो कि तुम्हें उसके कार्य को ऊँचा करना है, जिसके बारे में लोगों ने गाया है।<sup>25</sup> सभी लोगों ने इसे देखा है, मानवजाति इसे दूर से देखती है।<sup>26</sup> देखो, परमेश्वर महान है, और हम उसे नहीं जानते उसके वर्षों की संख्या अज्ञेय है।

<sup>27</sup> क्योंकि वह जल की झुंडों को खींचता है, वे उसके आकाशीय धारा से वर्षा करते हैं,<sup>28</sup> जिसे बादल बरसाते हैं, वे मानवजाति पर प्रचुर मात्रा में टपकते हैं।<sup>29</sup> क्या कोई बादलों के फैलाव को समझ सकता है,

उसके छत्र से गङ्गाझाहट को?<sup>30</sup> देखो, वह अपने चारों ओर बिजली फैलाता है, और समुद्र की गहराई को ढकता है।<sup>31</sup> उनके द्वारा वह लोगों का न्याय करता है वह प्रचुर मात्रा में भोजन देता है।<sup>32</sup> वह अपने हाथों को बिजली से ढकता है, और इसे लक्ष्य पर मारने का आदेश देता है।<sup>33</sup> उसकी गर्जना उसकी उपस्थिति को घोषित करती है, पशु भी, जो आने वाला है, उसके बारे में बताते हैं।

**37** "इस पर भी मेरा हृदय कांपता है, और अपनी जगह से उछलता है।<sup>2</sup> उसकी आवाज की गङ्गाझाहट को द्यान से सुनो, और उसके मुख से निकलने वाली गर्जना को।<sup>3</sup> वह इसे सारे आकाश की नीचे छोड़ देता है, और उसकी बिजली पृथ्वी के छोर तक जाती है।<sup>4</sup> इसके बाद, एक आवाज गर्जती है, वह अपनी महिमामयी आवाज के साथ गङ्गाझाता है, और जब उसकी आवाज सुनी जाती है तो वह बिजली को नहीं रोकता।<sup>5</sup> परमेश्वर अपनी आवाज के साथ अद्भुत रूप से गङ्गाझाता है, महान कार्य करता है जिन्हें हम नहीं समझ सकते।<sup>6</sup> क्योंकि वह बर्फ से कहता है, 'पृथ्वी पर गिरा' और सूसलथार बारिश से 'मजबूत हो।'

<sup>7</sup> वह हर व्यक्ति के हाथ को सील कर देता है, ताकि सभी लोग उसके कार्य को जान सकें।<sup>8</sup> तब पशु अपने मांद में चला जाता है, और अपनी गुफा में रहता है।<sup>9</sup> दक्षिण से त्रुफान आता है, और उत्तर से ठंडा।<sup>10</sup> परमेश्वर की सांस से बर्फ बनती है, और जल का विस्तार जम जाता है।<sup>11</sup> वह बादलों को नमी से भर देता है, वह अपनी बिजली के बादल को फैलाता है।<sup>12</sup> यह दिशा बदलता है, उसकी मार्गदर्शन से धूमता है, ताकि यह वही करे जो वह इसे आदेश देता है बसी हुई पृथ्वी के चेहरे पर।<sup>13</sup> क्या हुआ सुधार के लिए या उसकी दुनिया के लिए या दया के लिए वह इसे धृति करता है।

<sup>14</sup> "इस पर ध्यान दो, अथूब, खड़े हो और परमेश्वर के आश्र्यों पर विचार करो।<sup>15</sup> क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर उन्हें कैसे स्थापित करता है, और अपनी बिजली के बादल की चमक कैसे बनाता है?<sup>16</sup> क्या तुम बादलों के मंडराने को समझते हो, उस एक के आश्र्यों को जो ज्ञान में परिपूर्ण है,<sup>17</sup> तुम्हारे वस्त जो गर्म होते हैं, जब दक्षिणी हवा के कारण भूमि स्थिर होती है?<sup>18</sup> क्या तुम उसके साथ आकाश को फैला सकते हो, एक ढली हुई धातु के दरपण की तरह मजबूत?

## अथूब

<sup>19</sup> "हमें सिखाओ कि हम उससे क्या कहें हम अंधकार के कारण अपनी बात प्रस्तुत नहीं कर सकते।<sup>20</sup> क्या उसे बताया जाएगा कि मैं बोलूंगा? या क्या कोई व्यक्ति कहे कि वह निगल लिया जाएगा?<sup>21</sup> अब लोग उस प्रकाश को नहीं देखते जो आकाश में चमकदार है लेकिन हवा ने उहों पार कर साफ कर दिया है।<sup>22</sup> उत्तर से सुनहरी चमक आती है परमेश्वर के चारों ओर भयानक महिमा है।<sup>23</sup> सर्वशक्तिमान— हम उसे नहीं पा सकते वह शक्ति में महान है, और वह न्याय और प्रबुर धर्मिका का उल्लंघन नहीं करेगा।<sup>24</sup> इसलिए लोग उससे डरते हैं वह किसी भी हृदय के ज्ञानी को नहीं मानता।"

## 38 तब यहोवा ने बंवंडर से अथूब को उत्तर दिया और कहा,

<sup>2</sup> "यह कौन है जो बिना ज्ञान के शब्दों से मेरी योजना को अंधकारमय करता है?<sup>3</sup> अब अपनी कमर कसो जैसे एक पुरुष और मैं तुमसे प्रश्न करूंगा, और तुम मुझे सूचित करो।

<sup>4</sup> जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली, तब तुम कहाँ थे? मुझे बताओ, यदि तुम्हें समझ है,<sup>5</sup> किसने इसकी माप निर्धारित की? क्योंकि तुम जानते हो। या किसने उस पर मापने की रेखा खींची?<sup>6</sup> इसकी नींवें किस पर धर्सी हुई है? या किसने इसका कोना पथर रखा?<sup>7</sup> जब प्रातःकाल के तारे एक साथ गते थे और परमेश्वर के सभी पुत्र आनंद से जयजयकार करते थे?

<sup>8</sup> या किसने समुद्र को द्वारों से बंद किया जब यह गम्फ से बाहर निकला, फूटकर बाहर आया?<sup>9</sup> जब मैंने इसे बादल का वस्त्र बनाया और घने अंधकार को इसकी लपेट बना दिया,<sup>10</sup> और मैंने उस पर सीमाएँ लगाई और एक कुँड़ी और द्वार स्थापित किए<sup>11</sup> और मैंने कहा: तुम यहाँ तक आओगे, पर आगे नहीं, और यहाँ तुम्हारी गर्वली लहरे रुकेगी?

<sup>12</sup> क्या तुमने कभी अपने जीवन में प्रातःकाल को आदेश दिया है, और भोर को उसकी जगह जानते दी है?<sup>13</sup> ताकि यह पृथ्वी के छोरों को पकड़ ले, और दुष्ट उससे झटक दिए जाए?<sup>14</sup> यह मुहर के नीचे मिट्ठी की तरह बदल जाता है, और वे वस्त्र की तरह बाहर खड़े होते हैं।<sup>15</sup> उनका प्रकाश दुणि से रोक लिया जाता है, और उठी हुई भुजा टूट जाती है।

<sup>16</sup> क्या तुम समुद्र के स्रोतों में गए हो, और महासागर की गहराई में चले हो?<sup>17</sup> क्या मूल्य के द्वारा तुम्हारे लिए प्रकट हुए हैं, और क्या तुमने गहरे अंधकार के द्वारा देखे हैं?<sup>18</sup> क्या तुमने पृथ्वी के विस्तार को समझा है? मुझे बताओ, यदि तुम यह सब जानते हो।

<sup>19</sup> प्रकाश के निवास का मारा कहाँ है? और अंधकार, इसका स्थान कहाँ है,<sup>20</sup> कि तुम इसे उसकी सीमा तक ले जाओ और इसके घर के मारा को पहचानो?<sup>21</sup> तुम जानते हो, क्योंकि तुम तब जन्म थे, और तुम्हारे दिनों की संख्या बढ़ी है।

<sup>22</sup> क्या तुमने हिम के भंडारों में प्रवेश किया है, और क्या तुमने ओले के भंडार देखे हैं?<sup>23</sup> जिहाँ मैंने संकट के समय के लिए रखा है, युद्ध और लड़ाई के दिन के लिए?<sup>24</sup> वह मारा कहाँ है जहाँ प्रकाश विभाजित होता है, और पूर्वी हवा पृथ्वी पर बिखरे दी जाती है?<sup>25</sup> किसने बाढ़ के लिए एक वैनल विभाजित किया, और बिजली के लिए एक मारा,<sup>26</sup> एक निर्जन भूमि पर वर्षा लाने के लिए, एक रोगिस्तान पर जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है?<sup>27</sup> बबटि और उजाड़ भूमि को संयुक्त करने के लिए, और धास के बीजों को अंकुरित करने के लिए?<sup>28</sup> क्या वर्षा का कोई पिता है? या ओस की दुंदों का जनक कौन है?<sup>29</sup> किसके गर्भ से बर्फ आई है? और सर्व की पाला किसने जन्म दिया है?<sup>30</sup> पानी पर्यावर की तरह कठोर हो जाता है, और गहरे का सतह जम जाता है।

<sup>31</sup> क्या तुम प्लेयहस के बंधनों को बाँध सकते हो, या ओरियन की रस्सियों को खोल सकते हो?<sup>32</sup> क्या तुम एक नक्त्र को उसके मौसम में बाहर ला सकते हो, और भातू को उसके उपग्रहों के साथ मार्गदर्शन कर सकते हो?<sup>33</sup> क्या तुम आकाश के नियमों को जानते हो, या क्या तुम उनके शासन को पृथ्वी पर स्थापित करते हो?

<sup>34</sup> क्या तुम बादलों से अपनी आवाज उठा सकते हो, ताकि जल की प्रबुरता तुम्हें ढक ले?<sup>35</sup> क्या तुम बिजली के चमक भेज सकते हो, ताकि वे जाएं और तुमसे कहाँ यहाँ हम हैं?<sup>36</sup> किसने अंतरतम में बुद्धि रखी है, या मन को समझ दी है?<sup>37</sup> कौन बुद्धि से बादलों की गिनती कर सकता है, और सर्व के जल के बर्तनों को उंडेल सकता है,<sup>38</sup> जब धूल एक द्रव्यमान में कठोर हो जाती है और मिट्ठी की ढेले एक साथ चिपक जाते हैं?

## अथूब

<sup>39</sup> क्या तुम शेरनी के लिए शिकार कर सकते हो, या युवा शेरों की भूख को संतुष्ट कर सकते हो? <sup>40</sup> जब वे अपनी छिपें की जगहों में दुबके होते हैं, और अपनी मांद में घात लगाकर लेटे होते हैं<sup>41</sup> कौन कौरे के लिए भोजन तैयार करता है, जब उसके बच्चे परमेश्वर को पुकारते हैं, और बिना भोजन के इधर-उधर भटकते हैं?

**39** “क्या तुम जानते हो कि पहाड़ी बकरियाँ कब जन्म देती हैं? क्या तुम हिरण के बछड़ों के जन्म को देखते हो? <sup>2</sup> क्या तुम उनके पूरे होने वाले महीनों को गिन सकते हो, या क्या तुम जानते हो कि वे कब जन्म देती हैं? <sup>3</sup> वे घुटनों के बल बैठती हैं, अपने बच्चों को जन्म देती हैं, वे अपनी प्रसव पीड़ा से छुटकारा पाती हैं। <sup>4</sup> उनकी संतानें बलवान हो जाती हैं, वे खुले मैदान में बढ़ती हैं, वे छोड़ देती हैं और उनके पास वापस नहीं लौटती।

<sup>5</sup> किसने जंगली गधे को स्वतंत्र छोड़ा? और किसने तेज गधे के बंधनों को खोला, <sup>6</sup> जिसे मैंने जंगल को घर के रूप में दिया, और नमक भूमि को उसके निवास स्थान के रूप में? <sup>7</sup> वह शहर के कोलाहल पर हंसता है, वह काम करने वाले की चिल्लाहट नहीं सुनता। <sup>8</sup> वह अपने चरागाह के लिए पहाड़ों की खोज करता है, और हर हरी चीज की तलाश करता है।

<sup>9</sup> क्या जंगली बैल तुम्हारी सेवा करने को तैयार होगा, या क्या वह तुम्हारे चारा खाने की जगह पर रात बिताएगा? <sup>10</sup> क्या तुम जंगली बैल को रसियों से खींचकर हल में बांध सकते हो, या क्या वह तुम्हारे पीछे धारियों को जोगेगा? <sup>11</sup> क्या तुम उस पर भरोसा करोगे क्योंकि उसकी शक्ति महान है, और अपनी मेहनत उसे सौंप दोगे? <sup>12</sup> क्या तुम उस पर विश्वास करोगे कि वह तुम्हारा अनाज लौटाएगा, और उसे तुम्हारे खलिहान से इकट्ठा करेगा?

<sup>13</sup> “शुतुरुर्गुर्के के पंख खुशी से फड़फड़ाते हैं, प्रेम के पंख और पंखों के साथ, <sup>14</sup> क्योंकि वह अपने अंडों को धरती पर छोड़ देती है, और उहाँ पूल में गर्भ करती है, <sup>15</sup> और वह भूल जाती है कि कोई पैर उन्हें कुचल सकता है, या काई जंगली जानवर उहें रोंद सकता है। <sup>16</sup> वह अपने बच्चों के साथ निर्दयता से व्यवहार करती है, जैसे वे उसके नहीं हैं, यद्यपि उसकी मेहनत व्यर्थ है, वह चिंतित नहीं होती। <sup>17</sup> क्योंकि परमेश्वर ने उसे बुद्धि भूलने दी है, और उसे समझ का हिस्सा नहीं दिया। <sup>18</sup>

जब वह ऊँचाई पर दौड़ती है, वह घोड़े और उसके सवार पर हंसती है।

<sup>19</sup> “क्या तुम घोड़े को उसकी शक्ति देते हो? क्या तुम उसकी गर्दन को अयाल से ढकते हो? <sup>20</sup> क्या तुम उसे टिड्डियों की तरह कूदाते हो? उसकी भय पुफकार डरानी है। <sup>21</sup> वह घाटी में खुरों से खोदता है, और अपनी शक्ति में आनंदित होता है, वह युद्ध से मिलने के लिए बाहर जाता है। <sup>22</sup> वह भय पर हंसता है और निराश नहीं होता, और वह तलवार से पीछे नहीं हटता। <sup>23</sup> तरकश उसके खिलाफ छड़खड़ाता है, चमकती भाला और भाला। <sup>24</sup> वह गर्जना और क्रोध के साथ भूमि पर दौड़ता है, और वह तुरही की आवाज पर स्थिर नहीं रहता। <sup>25</sup> जब भी तुरही बजती है, वह कहता है ‘आहा’। और वह दूर से युद्ध को महसूस करता है, और सेनापतियों की गड़ग़ाहात और युद्ध का क्रंदन।

<sup>26</sup> “क्या तुम्हारी समझ से बाज़ उड़ान भरता है, दक्षिण की ओर अपने पंख फैलाते हुए? <sup>27</sup> क्या तुम्हारे आदेश पर गरुड़ ऊँचा उड़ता है, और ऊँचाई पर अपना घोंसला बनाता है? <sup>28</sup> वह चट्टान पर और रात बिताता है, चट्टानी चट्टान पर एक अप्राप्य स्थान। <sup>29</sup> वहाँ से वह भोजन का पता लगाता है, उसकी अँखें उसे दूर से देखती हैं। <sup>30</sup> उसके बच्चे भी लालच से खून चाटते हैं, और जहाँ मारे गए हैं, वहाँ वह होता है।”

**40** तब यहोवा ने अथूब को उत्तर दिया,

<sup>2</sup> “क्या दोष द्वंदने वाला सर्वशक्तिमान से विवाद करेगा? जो परमेश्वर को डंटता है, वह उत्तर दे।”

<sup>3</sup> तब अथूब ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा,

<sup>4</sup> “देखो, मैं तुच्छ हूँ, मैं तुझसे क्या उत्तर द्वेष मैं अपने मुँह पर हाथ रखता हूँ। <sup>5</sup> मैंने एक बार बोला है, और मैं उत्तर नहीं द्वांगा; या दो बार, और मैं और कुछ नहीं जोड़ूँगा।”

<sup>6</sup> तब यहोवा ने बवंडर से अथूब को उत्तर दिया और कहा,

<sup>7</sup> “अब अपनी कमर को पुरुष की तरह कस ले, मैं तुझसे प्रश्न करूँगा, और तू मुझे सिखा। <sup>8</sup> क्या तू सचमुच मेरे न्याय को निरस्त करेगा? क्या तू मुझे दोषी

## अथूब

ठहराएगा ताकि तू धर्मी ठहरे? <sup>९</sup> या क्या तेरे पास  
परमेश्वर के समान भुजा है, और क्या तू उसकी आवाज  
के समान गर्जन कर सकता है?

<sup>१०</sup> "अपने आप को गर्व और गरिमा से सजित कर,  
और समान और महिमा से वस्त्र धारण कर।<sup>११</sup>  
अपनी प्रचंड क्रोध को छोड़ दे, और हर एक  
अभिमानी को देख, और उसे नम्र कर।<sup>१२</sup> हर एक  
अभिमानी को देख, और उसे नम्र कर, और दुष्टों को  
वहीं कुचल दे जहाँ वे खड़े हैं।<sup>१३</sup> उन्हें धूल में छिपा दे,  
उन्हें छिपे खान में बंद कर दे।<sup>१४</sup> तब मैं भी तुझसे  
स्वीकार करूँगा, कि तेरा अपना दाहिना हाथ तुझे बचा  
सकता है।"

<sup>१५</sup> "देख, बेहेमोथ, जिसे मैंने तेरे समान बनाया, वह बैल  
की तरह धास खाता है।<sup>१६</sup> देख, उसकी शक्ति उसकी  
जायों में है, और उसकी शक्ति उसके पेट की  
मांसपेशियों में है।<sup>१७</sup> वह अपनी पृष्ठ को देवदार की  
तरह मोड़ता है, उसकी जायों की नसें एक साथ बंधी  
हैं।<sup>१८</sup> उसकी हड्डियाँ पीतल की नलियों की तरह हैं  
उसके अंग लोहे की छड़ों की तरह हैं।<sup>१९</sup> वह परमेश्वर  
के मार्गों में पहला है, उसका निर्माण अपनी तलवार  
उसके पास लाए।<sup>२०</sup> वास्तव में पहाड़ उसे भोजन देते  
हैं, और मैदान के सभी जानवर वहाँ खेलते हैं।<sup>२१</sup> वह  
कमल के पौधों के नीचे लेटता है, सरकंडों और  
दलदल की छिपी जगह में।<sup>२२</sup> कमल के पौधे उसे  
छाया देते हैं, धारा के लिलों उसे धेर लेते हैं।<sup>२३</sup> यदि  
कोई नदी उफनती है, तो वह भयभीत नहीं होता, वह  
निश्चित रहता है, चाहे यरदान उसकी मुँह तक पहुँच  
जाए।<sup>२४</sup> क्या कोई उसे पकड़ सकता है जब वह  
सतर्क हो, क्या कोई उसके नाक में काटे डाल सकता  
है?"

**41** "क्या तुम मछली पकड़ने वाले कांटे से  
लिव्यातान को खींच सकते हो, और रस्सी से उसकी  
जीभ को दबा सकते हो?<sup>२</sup> क्या तुम उसकी नाक में  
रस्सी डाल सकते हो? और उसके जबड़े में कांटा डाल  
सकते हो?<sup>३</sup> क्या वह तुमसे बहुत विनती करेगा, या  
वह तुमसे कोमल शब्द बोलेगा?<sup>४</sup> क्या वह तुम्हारे साथ  
वाचा करेगा? क्या तुम उसे सदा के लिए सेवक बना  
लोगे?<sup>५</sup> क्या तुम उसके साथ पक्षी की तरह खेलोगे, या  
अपनी कन्याओं के लिए उसे बांधोगे?<sup>६</sup> क्या व्यापारी  
उसके लिए मोलभाव करेंगे? क्या वे उसे व्यापारियों में  
बांट देंगे?<sup>७</sup> क्या तुम उसके चमड़े को भालों से भर  
सकते हो, या उसके सिर को मछली पकड़ने वाले  
भालों से?<sup>८</sup> उस पर हाथ रखो! युद्ध को याद करो, तुम

इसे फिर नहीं करोगो! देखो, तुम्हारी आशा झूठी है,  
क्या तुम उसकी दृष्टि से भी गिर जाओगे?<sup>९</sup> कोई  
इतना निरान नहीं है कि उसे हिला सके, फिर कौन है  
जो मेरे सामने खड़ा हो सके?<sup>११</sup> किसने मुझे दिया है  
कि मैं उसे उकाऊँ? जो कुछ भी पूरे आकाश के नीचे  
है वह मेरा है।"

<sup>१२</sup> "मैं उसकी अंगों के बारे में चुप नहीं रहूँगा, या  
उसकी महान शक्ति, या उसकी सुंदर आकृति।<sup>१३</sup>  
कौन उसकी बाहरी आवरण को उतार सकता है?  
कौन उसकी दोहरी कवच को छेद सकता है?<sup>१४</sup> कौन  
उसके चेहरे के दरवाजे खोल सकता है? उसके दांतों  
के चारों ओर आतंक है।<sup>१५</sup> उसकी मजबूत तराजू  
उसकी गर्व है, जैसे एक कर्सी हुई सीत के साथ बंद।

<sup>१६</sup> एक दूसरे के इतने करीब है कि उनके बीच धारा भी  
नहीं जा सकती।<sup>१७</sup> वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, वे एक  
दूसरे को पकड़ते हैं और अलग नहीं हो सकते।<sup>१८</sup>  
उसकी छाँक से प्रकाश चमकता है, और उसकी अँखें  
सुबह की अँखों की तरह हैं।<sup>१९</sup> उसके मुँह से जलती  
हुई मशाले निकलती हैं, आग की विगराहीयाँ बाहर  
कूदती हैं।<sup>२०</sup> उसकी नासिका से धुआं निकलता है  
जैसे उबलते बर्नन और जलती हुई सरकंडे से।<sup>२१</sup>  
उसकी सांस कोयलों को प्रज्वलित करती है, और  
उसके मुँह से एक ज्वाला निकलती है।<sup>२२</sup> उसकी  
गर्दन में शक्ति निवास करती है, और उसके सामने  
भय छलांग लगाता है।<sup>२३</sup> उसके मांस की तहें एक  
साथ जुड़ी हुई हैं, उस पर दृढ़ और अचल।<sup>२४</sup> उसका  
हृदय पत्थर की तरह दृढ़ है, और निचले चक्की के  
पत्थर की तरह दृढ़ है।<sup>२५</sup> जब वह उठता है, तो  
शक्तिशाली डर जाते हैं, दुर्घटना के कारण वे भ्रमित  
हो जाते हैं।<sup>२६</sup> जो तलवार उसे छोटी है वह सफल नहीं  
होती, न ही भाला, तीर, या भाला।<sup>२७</sup> वह लोहे को  
तिनके की तरह मानता है, कारों को सड़े हुए लकड़ी  
की तरह।<sup>२८</sup> तीर उसे भागने पर मजबूत नहीं कर  
सकते, गुलते के पत्थर उसके लिए भूसे में बदल जाते  
हैं।<sup>२९</sup> डंडे भूसे की तरह माने जाते हैं, वह भाते की  
खड़खड़ाहट पर हंसता है।<sup>३०</sup> उसके निचले भाग तेज  
टुकड़ों की तरह हैं, वह कीचड़ पर एक श्रेष्ठंग स्लेज  
की तरह फैलता है।<sup>३१</sup> वह गहराई को बर्तन की तरह  
उबलता है, वह समुद्र को मरहम के जार की तरह  
बनाता है।<sup>३२</sup> उसके पीछे वह एक चमकदार निशान  
छोड़ता है, कोई गहराई को सफेद बालों वाला  
समझेगा।<sup>३३</sup> पृथ्वी पर उसके जैसा कुछ नहीं है, एक  
बिना भय के बनाया गया।<sup>३४</sup> वह हर ऊँचे पर दृष्टि  
डालता है, वह सभी गर्व के पुत्रों का राजा है!"

## अथूब

**42** तब अथूब ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा,

<sup>2</sup> "मैं जानता हूँ कि आप सब कुछ कर सकते हैं, और कोई योजना आपके लिए असंभव नहीं है।<sup>3</sup> 'यह कौन है जो बिना ज्ञान के सलाह छिपाता है?' इसलिए मैंने वह घोषित किया जो मैं नहीं समझता था, मेरे लिए बहुत अद्भुत बातें, जिन्हें मैं नहीं जानता।<sup>4</sup> 'कृपया सुनें, और मैं बोरुणा, मैं आपसे पूछूँगा, और आप मुझे निर्देश दें।'<sup>5</sup> मैंने आपके बारे में कानों से सुना था, लेकिन अब मेरी आँखें आपको देखती हैं।<sup>6</sup> इसलिए मैं वापस लेता हूँ, और मैं धूल और राख पर बैठकर पश्चात्याप करता हूँ।"

<sup>7</sup> अब यहोवा ने अथूब से ये बातें कहने के बाद, यहोवा ने तेमानी एलीपज से कहा, "मेरा क्रोध तुम्हारे और तुम्हारे दो मित्रों के खिलाफ भड़क गया है, क्योंकि तुमने मेरे बारे में वह नहीं कहा जो विश्वसनीय है, जैसा कि मेरे सेवक अथूब ने कहा है।<sup>8</sup> अब इसलिए, अपने लिए सात बैल और सात मेढ़े लो, और मेरे सेवक अथूब के पास जाओ, और अपने लिए होमबलि चढ़ाओ, और मेरा सेवक अथूब तुम्हारे साथ वैसा न करूँ जैसा तुम्हारी मूर्खता के योग्य है, क्योंकि तुमने मेरे बारे में वह नहीं कहा जो विश्वसनीय है, जैसा कि मेरे सेवक अथूब ने कहा है।"<sup>9</sup> तो तेमानी एलीपज, शही बिलदद, और नामाती सोफर गए और उन्होंने वही किया जैसा यहोवा ने उन्हें बताया था; और यहोवा ने अथूब को स्त्रीकार किया।

<sup>10</sup> यहोवा ने अथूब की संपत्ति को भी बहाल किया जब उसने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, और यहोवा ने अथूब के पास जो कुछ था उसे दुगाना कर दिया।<sup>11</sup> तब उसके सभी भाई, सभी बहनें, और सभी जिन्होंने उसे पहले जाना था, उसके पास आए, और उन्होंने उसके घर में उसके साथ रोटी खाई, और उन्होंने उसके साथ सहानुभूति जताई और उसे उन सभी विपत्तियों के लिए सांत्वना दी जो यहोवा ने उस पर लाइ थीं। और हर एक ने उसे एक टुकड़ा पैसा और एक सोने की अंगूठी दी।

<sup>12</sup> और यहोवा ने अथूब के अंतिम दिनों को उसके प्रारंभ से अधिक आशीर्वाद दिया। और उसके पास चौदह हजार भेड़ें, छह हजार ऊँट, एक हजार जोड़ी बैल, और एक हजार मादा गधे थे।<sup>13</sup> उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी थीं।<sup>14</sup> और उसने पहली का नाम यमीमा, दूसरी का केजिया, और तीसरी का केरेन-हप्पूक रखा।<sup>15</sup> सारी भूमि में अथूब की बेटियों जैसी सुंदर

स्त्रियाँ नहीं पाई गईं; और उनके पिता ने उन्हें उनके भाइयों के बीच में उत्तराधिकार दिया।

<sup>16</sup> इसके बाद, अथूब ने 140 वर्ष जीवित रहे, और अपने पुत्रों और अपने पोतों को, चार पीढ़ियों तक देखा।

<sup>17</sup> और अथूब मरे, एक वृद्ध और दीर्घायु व्यक्ति।

# भजन संहिता

**1** धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की युक्ति में नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता है। न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में भेठता है।<sup>2</sup> परन्तु उसकी प्रसन्नता यहोवा की व्यवस्था में है, और वह उसकी व्यवस्था पर दिन रात ध्यान करता है।<sup>3</sup> वह उस वृक्ष के समान होगा जो जलधाराओं के किनारे लगाया गया है, जो अपने समय पर फल देता है, और जिसके पते मुरझाते नहीं, और जो कुछ हव करता है, उसमें सफल होता है।

<sup>4</sup> दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे तो उस भूसी के समान होते हैं, जिसे पवन उड़ा ले जाता है।<sup>5</sup> इसलिए दुष्ट लोग न्याय में स्थिर नहीं रहते, न पापी धर्मियों की सभा में।

<sup>6</sup> क्योंकि यहोवा धर्मियों के मार्ग को जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नष्ट हो जाएगा।

**2** राष्ट्र क्यों अशांत हैं, और लोग व्यर्थ में बज़ंत्र रच रहे हैं? <sup>2</sup> पृथ्वी के राजा खड़े होते हैं, और शासक मिलकर यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध बज़ंत्र रचते हैं, कहते हैं<sup>3</sup> "आओ, हम उनकी बेड़ियों को तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों को हमसे दूर फेंक दें।"

<sup>4</sup> जो स्वर्ग में विराजमान है, वह हंसता है, प्रभु उनका उपहास करता है।<sup>5</sup> तब वह अपने क्रोध में उनसे बोलेगा, और अपने रोष में उन्हें आतंकित करेगा, कहते हुए<sup>6</sup> "परन्तु मैंने अपने राजा को सियोन, अपने पवित्र पर्वत पर स्थापित किया है।"

<sup>7</sup> मैं यहोवा की आज्ञा का प्रचार करूँगा:

उसने मुझसे कहा, "तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है।<sup>8</sup> मुझसे मांग, और मैं निश्चय ही राष्ट्र को तेरी विरासत के रूप में द्वांगा, और पृथ्वी के छोर तेरे अधिकार में।<sup>9</sup> तू उन्हें लोहे की छड़ी से तोड़ेगा, तू उन्हें कुम्हार के बर्नन की तरह चूर-चूर करेगा।"

<sup>10</sup> अब है राजाजों, समझदारी से काम ल; हे पृथ्वी के न्यायीशों, शिक्षा ग्रहण करो।<sup>11</sup> यहोवा की सेवा श्रद्धा के साथ करो, और कांपते हुए आनंदित हो।<sup>12</sup> पुत्र को चूमो, ताकि वह क्रोधित न हो और तुम मार्ग में नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध शीघ्र भड़क सकता है। धन्य हैं वे सब जो उसमें शरण लेते हैं।

## 3

दाऊद का एक भजन, जब वह अपने पुत्र अबशालोम से भाग रहा था।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मेरे शत्रु कैसे बढ़ गए हैं, बहुत से लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं।<sup>2</sup> बहुत से लोग मेरी आज्ञा के बारे में कह रहे हैं, "उसके लिए परमेश्वर में कोई उद्धार नहीं है।"<sup>3</sup> सेला

<sup>3</sup> परन्तु आप, हे प्रभु, मेरे चारों ओर एक ढाल हैं, मेरी महिमा, और वह जो मेरा सिर ऊँचा करते हैं।<sup>4</sup> मैं अपनी आवाज से प्रभु को पुकार रहा था, और उन्होंने अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर दिया। सेला

<sup>5</sup> मैं लैट गया और सो गया, मैं जाग उठा, क्योंकि प्रभु मुझे संभालते हैं।<sup>6</sup> मैं उन दस हजार लोगों से नहीं डरँगा जो मेरे चारों ओर मेरे विरुद्ध खड़े हो गए हैं।

<sup>7</sup> उठो, हे प्रभु मुझे बचाओ, मेरे परमेश्वरा क्योंकि आपने मेरे सभी शत्रुओं को गाल पर मारा है, आपने दुष्टों के दाँत तोड़ दिए हैं।

<sup>8</sup> उद्धार प्रभु का है, आपकी आशीष आपके लोगों पर हो। सेला

## 4

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाद्य यंत्रों पर।

दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> जब मैं पुकासँ, तो मेरी सुन, हे मेरी धार्मिकता के परमेश्वरा तूने संकट में मुझे राहत दी है, मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन।

<sup>2</sup> हे मनुष्यों के पुत्रों, कब तक मेरी महिमा को अपमान में बदलाओ, कब तक तुम व्यर्थता से प्रेम करोगे और झूठ की खोज करोगे? सेला<sup>3</sup> परन्तु जान लो कि यहोवा ने भक्त व्यक्ति को अपने लिए अलग कर लिया है, जब मैं उसे पुकारता हूँ, तो यहोवा सुनता है।

<sup>4</sup> कांपो, और पाप मत करो, अपने बिस्तर पर अपने हृदय में ध्यान करो, और शांत रहो। सेला<sup>5</sup> धार्मिकता के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर भरोसा रखो।

# भजन संहिता

<sup>६</sup> बहुत से लोग कह रहे हैं, "हमें कौन कुछ अच्छा दिखाएगा?" है यहोवा, अपने मुख का प्रकाश हम पर उठाओ<sup>७</sup> तू मेरे हृदय में आनंद भर दिया है, जब उनके अनाज और नई दाढ़मधु की बहुतायत होती है, उससे अधिक।

<sup>८</sup> मैं शांति में लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा, क्योंकि केवल तू ही है यहोवा, मुझे सुरक्षित निवास कराता है।

## ५

### संगीत निर्देशक के लिए; बांसुरी के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> मेरे वर्चों को सुन, है प्रभु, मेरी आहों पर ध्यान दे।  
मेरी सहायता के लिए मेरी पुकार की ध्वनि सुन, मेरे राजा और मेरे परमेश्वर, क्योंकि मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ।

<sup>३</sup> सुबह के समय है प्रभु तू मेरी आवज्ज सुनेगा, सुबह के समय मैं तुझसे अपनी प्रार्थना प्रस्तुत करूँगा और प्रतीक्षा करूँगा।<sup>४</sup> क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर नहीं है जो दुष्टा में आनंद लेता है, कोई भी बुराई तेरे साथ नहीं रह सकती।<sup>५</sup> घमडी तेरी आँखों के सामने खड़े नहीं हो सकते, तू उन सभी से धृणा करता है जो अन्याय करते हैं।<sup>६</sup> तू उन लोगों को नष्ट कर देता है जो झूठ बोलते हैं, प्रभु रक्तपात और छल के व्यक्ति से धृणा करता है।<sup>७</sup> परन्तु मैं तेरी प्रुर दया के कारण तेरे घर में प्रवेश करूँगा, तेरे पवित्र मंदिर में मैं तुझसे अद्वा में जुँकूँगा।

<sup>८</sup> है प्रभु, मुझे अपनी धार्मिकता में मेरे शत्रुओं के कारण मार्ग दिखा, मेरे सामने अपना मार्ग सीधा कर।<sup>९</sup> क्योंकि उनके मुँह में कुछ भी विक्षमीय नहीं है, उनका आंतरिक भाग स्वयं विनाश है। उनका गाला एक खुली कब्र है, वे अपनी जीभ से चापलूनी करते हैं।<sup>१०</sup> उर्हे दोषी ठहराओ, है परमेश्वर, उनकी अपनी युक्तियों से उर्हें गिरा दो उनके कई अपराधों के कारण, उर्हे बाहर निकाल दो, क्योंकि वे तेरे विरुद्ध विद्रोही हैं।<sup>११</sup> परन्तु वे सब आनंदित हों, जो तुझ में शरण लेते हैं, सदा के लिए आनंद से गाण् और तू उर्हे शरण दे, कि जो तेरे नाम से प्रेम करते हैं वे तुझ में आनंदित हों।

<sup>१२</sup> क्योंकि तू धर्मी व्यक्ति को आशीर्वद देता है, है प्रभु तू उसे एक ढाल की तरह अनुग्रह से धेरता है।

## ६

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाद्य यंत्रों के साथ, आठ तार वाले वीणा पर। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> है प्रभु, अपने क्रोध में मुझे ताड़ना न दे, न ही अपने रोष में मुझे अनुशासित कर।<sup>२</sup> मुझ पर अनुग्रह कर, है प्रभु, क्योंकि मैं दुर्बल हूँ, मुझे वंगा कर, है प्रभु, क्योंकि मेरी हाइयों भयभीत हैं।<sup>३</sup> और मेरी आत्मा अत्यधिक भयभीत है, परन्तु तू है प्रभु—कब तक?

<sup>४</sup> लौट आ, है प्रभु, मेरी आत्मा को बचा ले, मुझे अपनी दया के कारण बचा।<sup>५</sup> क्योंकि मैं तू में तेरा कोई स्वरण नहीं है, शिशोल में कौन तेरा गुणातुगाद करेगा?

<sup>६</sup> मैं अपनी आहों से थक गया हूँ, हर रात मैं अपने बिस्तर को तैरता हूँ, मैं अपने अँसुओं से अपनी खात को भिगोता हूँ।<sup>७</sup> मेरी आँख दुःख से क्षीण हो गई है, यह मेरे सभी शत्रुओं के कारण बुद्ध हो गई है।

<sup>८</sup> मुझसे दूर हो जाओ, तुम सब जो अन्याय का अभ्यास करते हो, क्योंकि प्रभु ने मेरे रोने की ध्वनि सुनी है।<sup>९</sup> प्रभु ने मेरी विनती सुनी है, प्रभु मेरी प्रार्थना स्वीकार करता है।<sup>१०</sup> मेरे सभी शत्रु लज्जित और अत्यधिक भयभीत होंगे, वे पीछे मुड़ोंगे, वे अचानक लज्जित होंगे।

## ७

दाऊद का एक शिगायोन, जो उसने यहोवा के लिए गाया, बेन्यामिनी कूश के विषय में।

<sup>१</sup> है मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तुझ में शरण ली है, मुझे उन सब से बचा ले जो मेरा पीछा करते हैं, और मुझे छुड़ा ले।<sup>२</sup> नहीं तो वह सिंह की तरह मेरी आत्मा को फांड डालेगा, मुझे घसीट ले जाएगा, जबकि कोई बचाने वाला नहीं होगा।

<sup>३</sup> है मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैंने यह किया है, यदि मेरे हाथों में अन्याय है।<sup>४</sup> यदि मैंने अपने मित्र के साथ भुका किया है, या बिना कारण अपने शत्रु को लूटा है,<sup>५</sup> तो शत्रु मेरी आत्मा का पीछा करे और उसे पकड़ ले और वह मेरी जीवन को भूमि पर रौद दे और मेरी महिमा को धूल में मिला दे। सेला

# भजन संहिता

<sup>६</sup> हे यहोवा, अपने क्रोध में उठ खड़े हो, मेरे शत्रुओं के क्रोध के विरुद्ध उठ खड़े हो, और मेरे लिए जाग उठ; तूने न्याय का आदेश दिया है।<sup>७</sup> लोगों की सभा तुझे घेरे और तू उसके ऊपर ऊँचाई पर लौट आ।<sup>८</sup> यहोवा लोगों का न्याय करता है वे यहोवा, मेरी धार्मिकता और मेरी सच्चाई के अनुसार मेरा न्याय कर।<sup>९</sup> दुष्टों की बुराई का अंत हो, परन्तु धर्मियों को स्थिर कर क्योंकि धर्मी परमेश्वर हृदयों और मनों की परीक्षा करता है।

<sup>10</sup> मेरी ढाल परमेश्वर के साथ है, जो सीधे हृदय वालों को बचाता है।<sup>११</sup> परमेश्वर धर्मी न्यायी है, और एक ऐसा परमेश्वर है जो हर दिन क्रोध दिखाता है।<sup>१२</sup> यदि कोई पश्चाताप नहीं करता तो वह अपनी तलवार को तेज करेगा उसने अपनी धनुष को झुकाया है और निशाना साधा है।<sup>१३</sup> उसने अपने लिए घातक हथियार भी तैयार किए हैं वह अपने तीरों को अग्नि के बाण बनाता है।

<sup>14</sup> देखो, एक दुष्ट व्यक्ति अन्याय से गम्भीरती है, और वह हानि की कल्पना करता है और झूँठ को जन्म देता है।<sup>१५</sup> उसने एक गड्ढा खोदा और उसे खोखला किया, और उसी गड्ढे में गिर गया जो उसने बनाया था।<sup>१६</sup> उसकी हानि उसके अपने सिर पर लौट आएगी, और उसकी हिंसा उसके अपने सिर के ऊपर उतरेगी।

<sup>17</sup> मैं यहोवा का धन्यवाद करूँगा उसकी धार्मिकता के अनुसार और परमप्रधान यहोवा के नाम की स्तुति करूँगा।

## 8

### संगीत निर्देशक के लिए; गितीत पर। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु हमारे प्रभु पृथ्वी पर तेरा नाम कितना महान है, तूने अपनी महिमा आकाश के ऊपर प्रकट की है।<sup>२</sup> बालकों और द्रुध पीते बच्चों के मुख से तूने सामर्थ की स्थापना की है अपने शत्रुओं के कारण, ताकि तू शत्रु और प्रतिशोधी को शांत कर सके।<sup>३</sup> जब मैं तेरे आकाश को देखता हूँ तेरे उँगलियों का काम, चाँद और तारे, जिन्हें तूने स्थापित किया है,<sup>४</sup> मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, और मनुष्य का पुत्र कि तू उसकी चिंता करता है?

<sup>५</sup> फिर भी तूने उसे परमेश्वर से थोड़ा ही नीचा बनाया है, और उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाया है।

<sup>६</sup> तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है तूने सब कुछ उसके पैरों के नीचे रखा है,<sup>७</sup> सब भेड़-बकरियाँ और बैल, और मैदान के पशु भी;<sup>८</sup> आकाश के पक्षी, और समुद्र की मछलियाँ जो भी समुद्र के मार्गों से गुजरता है।

<sup>९</sup> हे प्रभु हमारे प्रभु पृथ्वी पर तेरा नाम कितना महान है।

## 9

### संगीत निर्देशक के लिए; मुथ-लब्बेन पर। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> मैं पूरे मन से यहोवा का धन्यवाद करूँगा, मैं तेरे सब अद्भुत कार्यों का वर्णन करूँगा।<sup>२</sup> मैं तुझ में आनंदित और उल्लसित होऊँगा, हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम की स्तुति करूँगा।

<sup>३</sup> जब मेरे शत्रु पीछे हटते हैं वे तेरे सामने ठोकर खाकर नष्ट हो जाते हैं।<sup>४</sup> क्योंकि तूने मेरे न्यायपूर्ण कारण को बनाए रखा है, तूने सिंहासन पर बैठकर न्यायपूर्वक निर्णय किया है।<sup>५</sup> तूने जातियों को डांटा है, तूने दुष्टों का नाश किया है, तूने उनके नाम को सदा-सर्वदा के लिए मिटा दिया है।<sup>६</sup> शत्रु का अंत अनंत खंडहरों में हो गया है, और तूने नगरों को उखाड़ फेंका है, उनकी स्मृति भी मिट गई है।

<sup>७</sup> परन्तु यहोवा सदा के लिए राजा के रूप में बैठता है उसने न्याय के लिए अपना सिंहासन स्थापित किया है,

<sup>८</sup> और वह धर्म में संसार का न्याय करेगा, वह लोगों के लिए निष्पक्षता से न्याय करेगा।<sup>९</sup> यहोवा भी पीड़ितों के लिए एक गढ़ होगा, संकट के समय में एक गढ़ होगा;

<sup>१०</sup> और जो तेरे नाम को जानते हैं वे तुझ पर भरोसा रखें, क्योंकि तू यहोवा, उन लोगों को नहीं छोड़ता जो तुझे द्वंद्वते हैं।

<sup>११</sup> सिद्धोन में निवास करने वाले यहोवा की स्तुति करो, लोगों के बीच उसके कार्यों का प्रचार करो।<sup>१२</sup> क्योंकि जो रक्त की मांग करता है वह उन्हें याद करता है, वह पीड़ितों की पुकार को नहीं भूलता।

<sup>१३</sup> मुझ पर अनुग्रह कर, यहोवा, जो मुझसे धृणा करते हैं उनके द्वारा मेरी पीड़ा को देख, तू जो मुझे मृत्यु के

## भजन संहिता

द्वारा से उठाता है।<sup>14</sup> ताकि मैं तेरी सारी स्तुतियों का वर्णन कर सकूँ, कि सियोन की पुरी के द्वारों में मैं तेरी मुक्ति में आनंदित हो सकूँ।

<sup>15</sup> जातियाँ उस गड़े में गिर गई हैं जो उन्होंने बनाया था, जिस जाल को उन्होंने छुपाया था, उसमें उनका अपना पैर फ़स गया है।<sup>16</sup> यहोवा ने अपने आप को प्रकट किया है, उसने न्याय किया है। एक दुष्ट अपने ही हाथों के काम में फ़स गया है। हिमायोन सेला<sup>17</sup> दुष्ट शिखोल में लौटे, वे सभी जातियाँ जो परमेश्वर को भूल जाती हैं।<sup>18</sup> क्योंकि दरिद्र हमेशा के लिए नहीं भुलाया जाएगा, न ही पीड़ितों की आशा सदा के लिए नहीं होगी।

<sup>19</sup> उठ, यहोवा, मनुष्य को प्रबल न होने दे; तेरे सामने जातियों का न्याय हो।<sup>20</sup> उन्हें भय में डाल, यहोवा, जातियों को जानने दे कि वे केवल मनुष्य हैं। सेला

**10** हे प्रभु तू दूर व्यों खड़ा है? संकट के समय तू अपने आप को व्यों छिपा लेता है?

<sup>2</sup> अभिमान में दुष्ट लोग दरिद्रों का पीछा करते हैं उन्हें उन्हीं की योजनाओं में फ़सने दे जो उन्होंने रखी हैं।<sup>3</sup> क्योंकि दुष्ट अपनी आत्मा की इच्छा पर धमंड करता है, और लालची व्यक्ति प्रभु को श्राप देता है और अनादर दिखाता है।<sup>4</sup> दुष्ट, अपने अभिमान में उसे नहीं खोजता। उसकी सभी योजनाओं में कोई परमेश्वर नहीं है।<sup>5</sup> उसके मार्ग हमेशा सफल होते हैं, फिर भी तेरे न्याय जँचे हैं। उसकी दृष्टि से बाहर अपने सभी शरुओं के लिए, वह उनका उपहास करता है।<sup>6</sup> वह अपने आप से कहता है, “मैं कभी नहीं हिलूँग़, पीढ़ियों तक मैं विपति में नहीं पड़ूँगा।”

<sup>7</sup> उसका मुँह श्राप, छल, और उत्पीड़न से भरा है, उसकी जीभ के नीचे हानि और अन्याय है।<sup>8</sup> वह गाँवों के छिपे स्थानों में बैठता है, वह निर्दोषों को गुप्त स्थानों में मारता है, उसकी आँखें दुर्भायशाली पर गुप्त रूप से नजर रखती हैं।<sup>9</sup> वह अपने मांद में शेर की तरह गुप्त रूप से छिपा रहता है, वह दरिद्र को पकड़ने के लिए छिपा रहता है, वह दरिद्र को पकड़ता है जब वह उसे अपने जाल में खीचता है।<sup>10</sup> वह झुकता है, वह झुक जाता है, और दुर्भायशाली उसके शक्तिशाली लोगों द्वारा गिर जाते हैं।<sup>11</sup> वह अपने आप से कहता है, “परमेश्वर ने भुला दिया है उसने अपना चेहरा छिपा लिया है, वह इसे कभी नहीं देखेगा।”

<sup>12</sup> उठ, हे प्रभु हे परमेश्वर, अपना हाथ उठा। नम्रों को मत भूल।<sup>13</sup> दुष्ट ने परमेश्वर का अनादर क्यों किया है? उसने अपने आप से कहा है, “तू हिसाब नहीं माँगोगा।”

<sup>14</sup> दुष्ट इसे देखा है, क्योंकि दुष्ट नहीं और उत्तेजना को अपने हाथ में लेने के लिए देखा है। दुर्भायशाली अपने आप को तृष्ण पर छोड़ता है, तू अनाथ का सहायक रहा है।<sup>15</sup> दुष्ट और कुकमीं की भुजा तोड़ दे, उसकी दुष्टता को खोज जब तक तू उसे न पाए।

<sup>16</sup> प्रभु सदा सर्वदा के लिए राजा है, राष्ट्र उसकी भूमि से नष्ट हो गए हैं।<sup>17</sup> हे प्रभु, दुष्ट नम्रों की इच्छा सुनी है तू उनके हृदय को मजबूत करेगा, तू अपना कान ध्यान देगा।<sup>18</sup> अनाथ और उत्पीड़ित को न्याय दिलाने के लिए, ताकि पृथ्वी के मनुष्य अब और आतंक न फैलाएँ।

## 11

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मैं यहोवा में शरण लेता हूँ तुम मेरी आत्मा से कैसे कह सकते हो, “एक्षी की तरह अपने पर्वत पर उड़ जाओ।<sup>2</sup> क्योंकि देखो, दुष्ट धनुष को झुकाते हैं उन्होंने डोरी पर तीर चढ़ा रखा है ताकि अंधकार में सीधे दिल वालों पर चलाएँ।<sup>3</sup> यदि नीर नष्ट हो जाएं तो धर्मी क्या कर सकते हैं?”

<sup>4</sup> यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है, यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है, उसकी आँखें देखती हैं, उसकी पलकें मानवजाति के पुत्रों को परखती हैं।<sup>5</sup> यहोवा धर्मियों और दुष्टों को परखता है, और उसकी आत्मा उस से घृणा करती है जो हिंसा से प्रेम करता है।<sup>6</sup> वह दुष्टों पर आग के अंगारे बरसाएगा, आग और गंधक और जलती हुई हवा उनके प्याले का हिस्सा होगी।

<sup>7</sup> क्योंकि यहोवा धर्मी है, वह धार्मिकता से प्रेम करता है, सीधे लोग उसका मुख देखते।

## 12

संगीत निर्देशक के लिए; आठ तारों वाले वीणा पर। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे प्रभु सहायता कर, क्योंकि भक्त व्यक्ति का अंत हो गया है, क्योंकि विश्वासयोग मनुष्यों के पुत्रों से गायब हो गए हैं।<sup>2</sup> वे एक-दूसरे से झूठ बोलते हैं वे चिकनी बातों और दोहरे मन से बोलते हैं।

## भजन संहिता

<sup>३</sup> प्रभु सभी चिकनी बातों को काट दे, वह जीभ जो बड़ी बातें बोलती है, <sup>४</sup> जिहोने कहा है, "हम अपनी जीभ से विजय प्राप्त करेगे; हमारे होठ हमारे अपने हैं हमारे ऊपर कौन प्रभु है?"

<sup>५</sup> "गरीबों की तबाही के कारण जरूरतमंदों की कराह के कारण, अब मैं उटूंगा," प्रभु कहते हैं, "मैं उसे उस सुरक्षा में रखूंगा जिसकी वह लालसा करता है"

<sup>६</sup> प्रभु के बचन शुद्ध बचन हैं, जैसे भूमि पर भट्टी में शुद्ध की गई चांदी, सात बार छानी गई।<sup>७</sup> आप प्रभु उहने सुरक्षित रखेंगे, आप उसे इस पीढ़ी से सदा के लिए बचाएंगे।<sup>८</sup> दृष्ट हर तरफ इठलाते हैं, जब मनुष्यों के पुत्रों में नीचता को ऊंचा किया जाता है।

## 13

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु कब तक? क्या तू मुझे सदा के लिए भूल जाएगा? कब तक तू अपना मुख मुझसे छिपाए रहेगा?

<sup>२</sup> कब तक मैं अपनी आत्मा में निंता महसूस करता रहूँगा, दिन भर अपने हृदय में दुख के साथ? कब तक मेरा शत्रु मुश्त पर ऊँचा रहेगा?

<sup>३</sup> हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे: मेरी आँखों को प्रकाशित कर, नहीं तो मैं मृत्यु की नींद सो जाऊँगा,<sup>४</sup> और मेरा शत्रु कहेगा, "मैंने उसे हरा दिया है"<sup>५</sup> और जब मैं डगमगाऊँगा तो मेरे विरोधी आनंदित होंगे।

<sup>६</sup> परन्तु मैंने तेरी विश्वासयोग्यता पर भरोसा किया है, मेरा हृदय तेरे उद्घार में आनंदित होगा।<sup>७</sup> मैं यहोवा के लिए गाऊँगा, क्योंकि उसने मेरी देखभाल की है।

## 14

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर नहीं है!" वे भ्रष्ट हो गए हैं, उन्होंने घृणित कार्य किए हैं, कोई भी अच्छा नहीं करता।

<sup>२</sup> यहोवा ने स्वर्ग से मनुष्यों के पुत्रों पर दृष्ट डाली यह देखने के लिए कि क्या कोई समझदार है, जो परमेश्वर की खोज करता है।<sup>३</sup> वे सब के सब भटक गए हैं, वे

मिलकर भ्रष्ट हो गए हैं, कोई भी अच्छा नहीं करता, एक भी नहीं।

<sup>४</sup> क्या सब अन्याय के काम करने वाले नहीं जानते, जो मेरी प्रजा को वैसे ही खाते हैं जैसे रोटी खाते हैं, और यहोवा को नहीं पुकारते?

<sup>५</sup> वहाँ वे बहुत डर में हैं, क्योंकि परमेश्वर धर्मी पीढ़ी के साथ है।<sup>६</sup> तुम गरीब की योजना को लजित करोगे, परन्तु यहोवा उसका शरणस्थान है।

<sup>७</sup> अहा, कि इसाएल की उद्धार सिद्धोन से आए जब यहोवा अपनी प्रजा की दशा को बहाल करेगा, तब याकूब आनंदित होंगा, इसाएल प्रसन्न होंगा।

## 15

दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु कौन तेरे तम्बू में निवास कर सकता है? कौन तेरे पवित्र पर्वत पर बस सकता है?

<sup>२</sup> जो निष्कपटता से चलता है, धर्म का आचरण करता है, और अपने हृदय में सत्य बोलता है।<sup>३</sup> वह अपनी जीभ से निंदा नहीं करता, न अपने पड़ोसी के साथ बुराई करता है, न अपने मित्र पर लज्जा लाता है।<sup>४</sup> उसकी दृष्टि में एक तुच्छ व्यक्ति तुच्छ है, परन्तु वह उन लोगों का सम्मान करता है जो प्रभु का भय मानते हैं, वह अपनी हानि के लिए शपथ लेता है, और बदलता नहीं है।<sup>५</sup> वह अपने धन को व्याज पर नहीं देता, न निर्दोष के विरुद्ध रिक्षत लेता है।

जो ये बातें करता है वह कभी नहीं डगमगाएगा।

## 16

दाऊद का एक मिख्याम।

<sup>१</sup> हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तुझ में शरण लेता हूँ।

<sup>२</sup> मैंने यहोवा से कहा, "तू मेरा प्रभु है, तेरे सिवा मेरा कोई भला नहीं है!"<sup>३</sup> पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं, वे ही महिमावान हैं, मेरी सारी प्रसन्नता उनमें है।<sup>४</sup> जो लोग दूसरे देवता को अपनाते हैं उनकी पीड़ाँ बढ़ जाएंगी,

# भजन संहिता

मैं उनके रक्त के पेय अर्पण नहीं करूँगा, और न ही उनके नाम अपने होठों पर लूँगा।

<sup>५</sup> यहोवा मेरी संपत्ति और मेरे प्याले का भाग है तू मेरी भगवत्तेखा को संभालता है।<sup>६</sup> माप की रेखाएँ मेरे लिए सुखद स्थानों में गिरी हैं वास्तव में मेरी संपत्ति मेरे लिए सुंदर है।<sup>७</sup> मैं यहोवा को धन्य कहूँगा जिसने मुझे परामर्श दिया है वास्तव में रात में मेरा मन मुझे शिक्षा देता है।<sup>८</sup> मैंने यहोवा को निरंतर अपने समान रखा है क्योंकि वह मेरे दाहिने हाथ पर है, मैं डगमगाऊँगा नहीं।

<sup>९</sup> इसलिए मेरा हृदय प्रसर है और मेरी महिमा आंदोलन होती है मेरा शरीर भी सुरक्षित रहेगा।<sup>१०</sup> क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में नहीं छोड़गा, तू अपने पवित्र जन को सड़ने नहीं देगा।<sup>११</sup> तू मुझे जीवन का मार्ग बताएगा, तेरे सम्मुख पूर्णता का आनंद है, तेरे दाहिने हाथ में सदा के लिए सुख है।

## 17

### दाऊद की प्रार्थना।

<sup>१</sup> हे प्रभु! एक न्यायपूर्ण कारण सुन, मेरी पुकार पर ध्यान दें, मेरी प्रार्थना सुन, जो कपटी होठों से नहीं है।<sup>२</sup> मेरा न्याय तेरे सामने से आए, तेरी आँखें सत्यनिष्ठा से देखें।

<sup>३</sup> तूने मेरे हृदय की परीक्षा की है तूने रात में मुझे देखा है, तूने मुझे जांचा और कुछ नहीं पाया, मेरा इरादा अपने मुँह से अपराध करने का नहीं है।<sup>४</sup> मनुष्यों के कामों के विषय में तेरे होठों के वरन के द्वारा मैंने हिंसक मार्गों से बचा है।<sup>५</sup> मेरे कदम तेरे मार्गों पर स्थिर रहे हैं। मेरे पैर नहीं फिसलते।

<sup>६</sup> मैंने तुझे पुकारा है क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा, हे परमेश्वर, अपनी कान मेरी ओर झुका, मेरी जात सुन।<sup>७</sup> अपनी अद्भुत विद्वासयोग्यता दिखा, तू जो अपने दाहिने हाथ से शरण लेने वालों को बचाता है उनसे जो उनके विरुद्ध उठते हैं।<sup>८</sup> मुझे आँख की पुतली के समान रख अपनी पंखों की छाया में मुझे छिपा।<sup>९</sup> दुष्टों से जो मुझसे हिंसा करते हैं, मेरे प्राणघातक शत्रु जो मुझे घेरते हैं।

<sup>१०</sup> उन्होंने अपने कठोर हृदय बंद कर लिए हैं, अपने मुँह से वे गर्व से बोलते हैं।<sup>११</sup> उन्होंने अब हमारे कदमों

को धेर लिया है उन्होंने हमें भूमि पर गिराने के लिए अपनी आँखें लगाई हैं।<sup>१२</sup> वह सिंह के समान है जो फाड़ने के लिए उत्सुक है, और एक जवान सिंह के समान जो गुप्त स्थानों में घात लगाता है।

<sup>१३</sup> उठ हे प्रभु! उसका सामना कर उसे झुका दें अपनी तलवार से मेरी आत्मा को दुश्य से बचा।<sup>१४</sup> लोगों से, तेरे हाथ से हे प्रभु! इस संसार के लोगों से, जिनका भाग इस जीवन में है, और जिनका पेट तू अपने खाजाने से भरता है, वे बच्चों से संतुष्ट हैं, और अपनी संपत्ति अपने बच्चों को छोड़ देते हैं।

<sup>१५</sup> परन्तु मैं तो तेरे मुख को धर्म में देखूँगा, जब मैं जागूँगा, तो तेरे स्वरूप से संतुष्ट रहूँगा।

## 18

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन, जो यहोवा का दास था, जिसने यहोवा से यह गीत उस दिन कहा जब यहोवा ने उसे उसके सभी शत्रुओं के हाथ से और शातुल के हाथ से बचाया। और उसने कहा:

<sup>१</sup> हे यहोवा, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ तू मेरी शक्ति है।<sup>२</sup> यहोवा मेरी वृद्धान, मेरा गढ़ और मेरा उद्धारकर्ता है, मेरा परमेश्वर, मेरी शरणस्थली वृद्धान है, मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सीधा, मेरा ऊँचा गढ़।

<sup>३</sup> मैं यहोवा को पुकारता हूँ, जो स्तुति के योग्य है, और मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाता हूँ।<sup>४</sup> मृत्यु की रसियाँ मुझे धेर रही थीं, और विनाश की बढ़ें मुझे भयभीत कर रही थीं।<sup>५</sup> शियोल की रसियाँ मुझे धेरे थीं, मृत्यु के फंदे मेरे सामने थे।

<sup>६</sup> मेरी संकट में मैंने यहोवा को पुकारा, और अपने परमेश्वर से सहायता के लिए चिल्लाया; उसने अपने मंदिर से मेरी आवाज़ सुनी, और मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पहुँची।<sup>७</sup> तब पृथी हिल गई और काँप उठी, और पर्वतों की नींव काँप रही थीं और हिल रही थीं, क्योंकि वह क्रोधित था।<sup>८</sup> उसके नधनों से धुआँ उठ रहा था, और उसके मुँह से आग निकल रही थीं, कोयले जल रहे थे।<sup>९</sup> उसने आकाश को झुकाया और नींवे आया और उसके पैरों की नींवे घना अंधकार था।<sup>१०</sup> वह एक करूँब पर सवार होकर उड़ा, और वह पवन के पंखों पर तेज़ी से चला।<sup>११</sup> उसने अंधकार को अपनी छिपने की जगह बनाया,

## भजन संहिता

अपने चारों ओर का मंडप, जल का अंधकार, आकाश के धने बादल।<sup>12</sup> उसके सामने की चमक से उसके यहोवा ने भी आकाश में गरज की, और परमप्रधान ने अपनी आवाज उठाई, ओले और आग के कोयले।<sup>13</sup> उसने अपने तीर छोड़े और उन्हें तितर-बितर कर दिया, और बिजली की चमक के साथ उहँसे भगाया।<sup>14</sup> तब जल के मार्ग दिखाई दिए और पृथी की नींव प्रकट हुई तेरी डाँट से, है यहोवा, तेरे नथुनों की साँस के झोंके से।

<sup>16</sup> उसने ऊँचाई से भेजा, उसने मुझे लिया; उसने मुझे गहरे जल से बाहर निकाला।<sup>17</sup> उसने मुझे मेरे शक्तिशाली शत्रु से बचाया, और उन लोगों से जो मुझसे घृणा करते थे, क्योंकि वे मुझसे बहुत शक्तिशाली थे।<sup>18</sup> उन्होंने मेरे संकट के दिन मुझसे सामना किया, लेकिन यहोवा मेरा सहारा था।<sup>19</sup> उसने मुझे एक खुले स्पान पर भी भी आया, उसने मुझे बचाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था।

<sup>20</sup> यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार पुरस्कृत किया, मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे प्रतिफल दिया।<sup>21</sup> क्योंकि मैंने यहोवा के मार्गों को रखा है, और अपने परमेश्वर के विरुद्ध दृष्टा नहीं की है।<sup>22</sup> क्योंकि उसके सभी निर्णय मेरे सामने थे, और मैंने उसकी विधियों को अपने से दूर नहीं किया।<sup>23</sup> मैं उसके साथ निर्देश था, और मैंने अपने आप को अपने अपराध से बचाया।<sup>24</sup> इसलिए यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार प्रतिफल दिया, उसकी दृष्टि में मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार।

<sup>25</sup> विश्वासयोग्य के साथ तू अपने को विश्वासयोग्य दिखाता है, निर्देश के साथ तू अपने को निर्देश दिखाता है।<sup>26</sup> शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता है, और तेरे के साथ तू अपने को चतुर दिखाता है।<sup>27</sup> क्योंकि तू पीछित लोगों को बचाता है, लेकिन धमंडी अँखों को नीचा करता है।<sup>28</sup> क्योंकि तू मेरे दीपक को जलाता है, यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे अंधकार को प्रकाशित करता है।<sup>29</sup> क्योंकि तेरे द्वारा मैं योद्धाओं की टुकड़ी पर दौड़ सकता हूँ, और मेरे परमेश्वर के द्वारा मैं दीवार पर चढ़ सकता हूँ।

<sup>30</sup> परमेश्वर के विषय में, उसका मार्ग निर्देश है, यहोवा का वचन परखा हुआ है, वह उन सबका ढाल है जो उसमें शरण लेते हैं।<sup>31</sup> क्योंकि यहोवा को छोड़कर और कौन परमेश्वर है? और हमारे परमेश्वर को

छोड़कर और कौन चट्ठान है,<sup>32</sup> वही परमेश्वर जो मुझे शक्ति से धेरता है, और मेरे मार्ग को निर्देश बनाता है?<sup>33</sup> वह मेरे पैरों को हरिण के पैरों के समान बनाता है, और मुझे मेरे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।<sup>34</sup> वह मेरे हाथों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करता है, ताकि मेरी भुजाएँ पीतल की धूरुष को मोड़ सकें।<sup>35</sup> तूने मुझे अपने उद्धार की ढाल भी दी है, और तेरा दाहिना हाथ मुझे संभालता है, और तेरी कोमलता मुझे महान बनाती है।<sup>36</sup> तू मेरे नीचे मेरे कदमों को बढ़ाता है, और मेरे पैर नहीं फिसलता।

<sup>37</sup> मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया, और मैं तब तक नहीं लौटा जब तक वे नष्ट नहीं हो गए।<sup>38</sup> मैंने उन्हें दूर-दूर कर दिया, ताकि वे उठ न सकें, वे मेरे पैरों के नीचे गिर गए।<sup>39</sup> क्योंकि तूने मुझे युद्ध के लिए शक्ति से धेर लिया है, तूने मेरे अधीन कर दिया जो मेरे विरुद्ध उठे थे।<sup>40</sup> तूने मेरे शत्रुओं को मेरी पीठ दिखा दी, और मैंने उन लोगों को गृह कर दिया जो मुझसे घृणा करते थे।<sup>41</sup> उन्होंने सहायता के लिए पुकारा, लेकिन कोई बचाने वाला नहीं था, उन्होंने यहोवा को पुकारा, लेकिन उसने उन्हें उत्तर नहीं दिया।<sup>42</sup> तब मैंने उन्हें हवा के समाने धूल के समान पीस डाला, मैंने उन्हें सड़कों की कीचड़ के समान बाहर फेंक दिया।<sup>43</sup> तूने मुझे लोगों के विवादों से बचाया, तूने मुझे राष्ट्रों का प्राधान बनाया, एक ऐसा लोग जिसे मैंने नहीं जाना, मेरी सेवा करते हैं।<sup>44</sup> जैसे ही वे सुनते हैं, वे मेरी आज्ञा का पालन करते हैं, विदेशी लोग मेरी आज्ञा का पालन करने का दिखागा करते हैं।<sup>45</sup> विदेशी लोग दिल हार जाते हैं, और अपने किलों से कॉप्टे हुए बाहर आते हैं।

<sup>46</sup> यहोवा जीवित है, और धन्य है मेरी चट्ठान, और मेरे उद्धार के परमेश्वर की महिमा हो।<sup>47</sup> वही परमेश्वर जो मेरे लिए प्रतिशोध करता है, और लोगों को मेरे अधीन करता है।<sup>48</sup> वह मुझे मेरे शत्रुओं से बचाता है, तू वास्तव में मुझे उन लोगों से ऊपर उठाता है जो मेरे विरुद्ध उठते हैं, तू मुझे एक हिंसक व्यक्ति से बचाता है।<sup>49</sup> इसलिए मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, हे यहोवा, राष्ट्रों के बीच, और मैं तेरे नाम की स्तुति गाऊँगा।

<sup>50</sup> वह अपने राजा को महान उद्धार देता है, और अपने अभियक्षित के प्रति विश्वासयोग्यता दिखाता है, दाऊद और उसके वंशजों के लिए सदा के लिए।

# भजन संहिता

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है।  
 और उनका विस्तार उसके हाथों के कार्य को प्रकट  
 करता है।<sup>2</sup> दिन से दिन वाणी उँड़लता है, और रात से  
 रात ज्ञान प्रकट करती है।<sup>3</sup> न तो कोई वाणी है, न  
 कोई शब्द, उनकी आवाज नहीं सुनी जाती।<sup>4</sup> उनकी  
 रेखा सारी पृथ्वी पर फैल गई है, और उनके शब्द  
 संसार के छोर तक। उनमें उसने सूर्य के लिए एक  
 ताकूर रखा है,<sup>5</sup> जो अपने कक्ष में निकलने वाले द्वातःके  
 समान है, यह अपने मार्ग पर दौँड़ने के लिए एक  
 शक्तिशाली व्यक्ति के समान आनंदित होता है।<sup>6</sup>  
 इसका उदय आकाश के एक छोर से है, और इसका  
 चक्र दूसरे छोर तक, और इसकी गर्मी से कुछ भी  
 छिपा नहीं है।

<sup>7</sup> यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है, आत्मा को पुनःस्थापित  
 करती है, यहोवा की साक्षी निश्चित है, सरल को  
 बुद्धिमान बनाती है।<sup>8</sup> यहोवा की उपदेश सही है,  
 हृदय को आनंदित करते हैं, यहोवा की आज्ञा शुद्ध है,  
 अँखों को प्रकाशित करती है।<sup>9</sup> यहोवा का भय शुद्ध  
 है, सदा के लिए स्थायी है, यहोवा के निर्णय सत्य हैं, वे  
 सब मिलकर धर्मी हैं।

<sup>10</sup> वे सोने से अधिक वांछनीय हैं हाँ, बहुत शुद्ध सोने  
 से भी, और मधु और मधुकोश के टपकने से भी भीठे  
 हैं।<sup>11</sup> इसके अलावा, आपका सेवक उनसे वेतवनी  
 प्राप्त करता है, उन्हें मानने में बड़ा प्रतिफल है।<sup>12</sup>  
 कौन अपनी त्रिलोयों को समझ सकता है? मुझे छिपे हुए  
 दोषों से मुक्त कर।<sup>13</sup> अपने सेवक को घमडी पापों से  
 भी द्वारा रख, उन्हें मुझ पर शासन न करने दें, तब मैं  
 निर्दोष रहूँगा, और बड़े अपराध से निर्दोष रहूँगा।

<sup>14</sup> मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान आपकी  
 दृष्टि में स्वीकार्य हो, हे प्रभु, मेरी चट्ठान और मेरे  
 उद्धारकर्ता।

## 20

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> संकट के दिन यहोवा तुम्हें उत्तर दे, याकूब के  
 परमेश्वर का नाम तुम्हारी रक्षा करो।<sup>2</sup> वह तुम्हें  
 पवित्रस्थान से सहायता भेजे, और सियोन से तुम्हारा  
 सहारा बनो।<sup>3</sup> वह तुम्हारे सब अन्नबलियों को सारण  
 करे और तुम्हारे होमबलि को स्वीकार करे। सेला।<sup>4</sup> वह

तुम्हारे हृदय की इच्छा पूरी करे और तुम्हारी सारी  
 योजनाओं को सफल करे।

<sup>5</sup> हम तुम्हारी विजय पर आनन्द से गाएँगे, और अपने  
 परमेश्वर के नाम में अपने ध्वज फहराएँगे।

यहोवा तुम्हारी सब याविकाएँ पूरी करे।

<sup>6</sup> अब मैं जानता हूँ कि यहोवा अपने अधिकृत को  
 बचाता है, वह अपने पवित्र स्वर्ग से उसे उत्तर देगा  
 अपनी दाविनी हाथ की उद्धार करने वाली शक्ति के  
 साथ।<sup>7</sup> कोई रथों की प्रशंसा करता है और कोई घोड़ों  
 की परन्तु हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की  
 प्रशंसा करेंगे।<sup>8</sup> वे झुक गए और गिर गए, परन्तु हम  
 उठ खड़े हुए और सीधे खड़े हैं।<sup>9</sup> हे यहोवा, उद्धार  
 कर राजा हमें उस दिन उत्तर दे जब हम पुकारें।

## 21

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे प्रभु, राजा तेरी शक्ति में आनंदित होगा, और वह  
 तेरे उद्धार में अत्यन्त आनंदित होगा।

<sup>2</sup> तूने उसके हृदय की इच्छा पूरी की है, और उसके  
 होठों की याचना को नहीं रोका है। सेला।<sup>3</sup> क्योंकि तू  
 उसे उत्तम वस्तुओं की आशीर्णों से मिलता है, तूने  
 उसके सिर पर शुद्ध सोने का मुकुट रखा है।<sup>4</sup> उसने  
 तुम्हारे जीवन मांगा, तूने उसे दिया, युग्म-युग के लिए  
 दीघीय।<sup>5</sup> तेरे उद्धार के द्वारा उसकी महिमा महान है,  
 तूने उस पर वैभव और महिमा रखी है।<sup>6</sup> क्योंकि तू  
 उसे सदा के लिए अत्यधिक आशीर्णित करता है, तू  
 उसे अपनी उपस्थिति के आनन्द से आनंदित करता  
 है।<sup>7</sup> क्योंकि राजा प्रभु पर भरोसा करता है, और  
 परमप्रधान की विश्वासयोग्यता के कारण वह नहीं  
 डगमगाएगा।

<sup>8</sup> तेरा हाथ तेरे सभी शतुर्जों को ढूँढ निकालेगा, तेरा  
 दाहिना हाथ उन लोगों को ढूँढ निकालेगा जो तुम्हसे  
 बैर रखते हैं।<sup>9</sup> तू उन्हें अपने क्रोध के समय अग्रिमय  
 भट्टी के समान बना देगा, प्रभु अपने क्रोध में उन्हें  
 निगल जाएगा, और आग उन्हें भस्म कर देगी।<sup>10</sup> तू  
 उनके वंशजों को पृथ्वी से समाप्त कर देगा, और  
 उनके बच्चों को मुरुज्जों के बीच से।<sup>11</sup> यद्यपि उन्होंने  
 तेरे विरुद्ध बुराई की योजना बनाई और षड्यंत्र रचा, वे  
 सफल नहीं होंगे।<sup>12</sup> क्योंकि तू उन्हें पीछे मुड़ने पर

# भजन संहिता

मजबूर करेगा, तू अपनी धनुर्विद्या से उनके चेहरों पर  
निशाना लगाएगा।

<sup>13</sup> हे प्रभु अपनी शक्ति में ऊँचे उठ, हम तेरी सामर्थ्य  
का गान करेंगे और स्तुति करेंगे।

## 22

संगीत निर्देशक के लिए; अय्येलेथ हशशाहर पर।  
दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़  
दिया है? मेरी सहायता से दूर हैं मेरे कराहने के शब्द।  
<sup>2</sup> हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन में पुकारता हूँ परन्तु तू उत्तर  
नहीं देता, और रात में भी, पर मुझे विश्राम नहीं  
मिलता।

<sup>3</sup> किर भी तू पवित्र है तू इसाएल की स्तुतियों पर  
विराजमान है।<sup>4</sup> तुझ पर हमारे पिताओं ने भरोसा  
किया, उन्होंने भरोसा किया और तूने उन्हें छुड़ाया।<sup>5</sup>  
उन्होंने तुझ से प्रार्थना की और वे सुरक्षित हो गए तुझ  
पर उन्होंने भरोसा किया और निराश नहीं हुए।

<sup>6</sup> परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ और मनुष्य नहीं, मनुष्यों का  
अपमान और लोगों द्वारा तिरस्कृत।<sup>7</sup> जो कोई मुझे  
देखता है, वे मेरा उपहास करते हैं, वे मुँह बिड़ाते हैं,  
सिर छिलाते हैं, कहते हैं,<sup>8</sup> "उसे यहोना के हवाले कर  
दो, वही उसे बचाएगा, वही उसे छुड़ाएगा, क्योंकि वह  
उसमें प्रसन्न है।"

<sup>9</sup> किर भी तू वही है जिसने मुझे गर्भ से बाहर लाया,  
तूने मुझे मेरी माँ की छाती पर भरोसा करना सिखाया।  
<sup>10</sup> जन्म से मैं तुझ पर निर्भर था, मेरी माँ के गर्भ से तू  
मेरा परमेश्वर है।

<sup>11</sup> मुझसे दूर मत हो, क्योंकि संकट निकट है, क्योंकि  
कोई सहायक नहीं है।

<sup>12</sup> बहुत से बैल मुझे धेरे हुए हैं, बाशान के बलवान बैल  
मुझे धेर चुके हैं।<sup>13</sup> वे मुझ पर अपना मुँह खोलते हैं,  
जैसे कोई गरजता हुआ और चीरता हुआ सिंह।<sup>14</sup> मैं  
जल की तरह बह गया हूँ, और मेरी सारी हड्डियाँ  
उखड़ गई हैं, मेरा हृदय मोम के समान है, यह मेरे  
भीतर पिघल गया है।<sup>15</sup> मेरी शक्ति मुद्भांड के टुकड़े  
के समान सूख गई है, और मेरी जीभ मेरे जबड़ों से

चिपक गई है, और तू मुझे मृत्यु की धूल में लिटा देता  
है।

<sup>16</sup> क्योंकि कुत्तों ने मुझे धेर लिया है, दुष्टों की मंडली ने  
मुझे धेर लिया है, उहोंने मेरे हाथ और मेरे पैर छेद  
दिए हैं।<sup>17</sup> मैं अपनी सारी हड्डियाँ गिन सकता हूँ। वे  
मुझे देखते हैं, वे मुझे धूरते हैं,<sup>18</sup> वे मेरे बक्स आपस में  
बाँटते हैं, और मेरे कपड़ों पर यिटियाँ डालते हैं।

<sup>19</sup> परन्तु दू हे यहोना, द्वार मत हो, तू जो मेरी सहायता  
है, मेरी सहायता के लिए जल्दी कर।<sup>20</sup> मेरी आत्मा को  
तलवार से बचा, मेरे एकमात्र जीवन को कुत्ते की  
शक्ति से।<sup>21</sup> मुझे सिंह के मुँह से बचा, जंगली बैलों के  
सींगों से तून मुझे उत्तर दिया।

<sup>22</sup> मैं तेरे नाम की धोषणा अपने भाइयों को करूँगा;  
सभा के बीच में मैं तेरा गुणगान करूँगा।<sup>23</sup> हे यहोना  
से डरने वालों उसकी स्तुति करो, हे याकूब की संतान,  
उसकी महिमा करो, और हे इसाएल की संतान, उससे  
भयभीत रहो।<sup>24</sup> क्योंकि उसने दुखी की दुर्दशा को  
तुच्छ नहीं जाना और न ही उससे धूणा की, और न ही  
उसने अपना मुख उससे छिपाया, पर जब उसने उससे  
सहायता के लिए पुकारा, तो उसने सुना।

<sup>25</sup> तुझ से मेरी स्तुति महान सभा में आती है, मैं अपनी  
प्रतिज्ञाएँ उन लोगों के सामने पूरी करूँगा जो उससे  
डरते हैं।<sup>26</sup> दुखी खाएँगे और तुम होगे, जो उसे  
खोजते हैं वे यहोना की स्तुति करेंगे। तुम्हारा हृदय  
सदा जीवित रहे।

<sup>27</sup> पृथ्वी के सभी छोर यहोना को याद करेंगे और  
उसकी ओर लौटेंगे, और सभी जातियों के परिवार तेरे  
सामने आराधना करेंगे।<sup>28</sup> क्योंकि राज्य यहोना का है  
और वह राष्ट्रों पर शासन करता है।

<sup>29</sup> पृथ्वी के सभी समृद्ध लोग खाएँगे और आराधना  
करेंगे, सभी जो धूल में जाते हैं उसके सामने बुटने  
टेकेंगे, यहाँ तक कि वह भी जो अपनी आत्मा को  
जीवित नहीं रख सकता।<sup>30</sup> एक पीढ़ी उसकी सेवा  
करेगी, यह आने वाली पीढ़ी को यहोना के बारे में  
बताया जाएगा।<sup>31</sup> वे आँखें और उसकी धार्मिकता की  
धोषणा करेंगे उन लोगों को जो जन्म लेंगे, कि उसने  
इसे पूरा किया है।

## 23

# भजन संहिता

## दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे किसी वस्तु की घटी न होगी।<sup>२</sup> वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठता है वह मुझे शांत जल के पास ले जाता है।<sup>३</sup> वह मेरे प्राण को बहाल करता है वह अपने नाम के निमित्त मुझे धर्म के मार्गों में ले चलता है।<sup>४</sup> यद्यपि मैं सृजन की छाया की तराई में होकर चर्तू तौभी मैं किसी विषय से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है; तेरी छड़ी और तेरी लाठी, वे मुझे शांति देती हैं।

<sup>५</sup> तू मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज बिछाता है तूने मेरे सिर पर तेल मला है मेरा कटोरा उमड़ रहा है।<sup>६</sup> निश्चय ही भलाई और दधा जीवन भर मेरे साथ साथ चलेंगी और मैं यहोवा के भवन में सदा वास करूँगा।

## 24

## दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> पूर्वी और जो कुछ उसमें है, वह यहोवा का है, जगत और उसके निवासी भी उसी के हैं।<sup>२</sup> क्योंकि उसने समुद्रों पर उसकी नींव डाली और नदियों पर उसे स्थिर किया।

<sup>३</sup> कौन यहोवा के पर्वत पर चढ़ सकता है? और कौन उसके पवित्र स्थान में खड़ा हो सकता है?<sup>४</sup> जिसके हाथ निर्देश हैं और जिसका हृदय शुद्ध है, जिसने अपनी आत्मा को कपट की और नहीं उठाया और झूँठी शपथ नहीं खाई।

<sup>५</sup> वह यहोवा से आशीर्वद पाएगा और अपने उद्धार के परमेश्वर से धर्म प्राप्त करेगा।<sup>६</sup> यही वह पीढ़ी है जो उसे खोजती है, जो तेरे मुख का दर्शन चाहती है—याकूब। सेलाह

<sup>७</sup> हे फाटकों, अपने सिर उठाओ, और हे प्राचीन द्वारों, उठ जाओ, कि महिमा का राजा प्रवेश कर सको।<sup>८</sup> यह महिमा का राजा कौन है? यहोवा, जो बलवान और पराक्रमी है, युद्ध में पराक्रमी यहोवा।<sup>९</sup> हे फाटकों, अपने सिर उठाओ, और हे प्राचीन द्वारों, उठ जाओ, कि महिमा का राजा प्रवेश कर सको।<sup>१०</sup> यह महिमा का राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही महिमा का राजा है। सेलाह

## दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु मैं अपनी आत्मा को तेरे पास उठाता हूँ।

<sup>२</sup> मेरे परमेश्वर, मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ मुझे लजित न होने दे, मेरे शत्रु मुझ पर आनंदित न हो।<sup>३</sup> वास्तव में, जो तेरा इंतजार करते हैं वे लजित नहीं होंगे, जो बिना कारण विश्वासघात करते हैं वे लजित होंगे।

<sup>४</sup> हे प्रभु मुझे अपने मार्गों को जानने दे, मुझे अपनी राहें सिखा।<sup>५</sup> मुझे अपनी सच्चाई में ले चल और सिखा, क्योंकि तू मेरे उद्धार का परमेश्वर है मैं तेरा दिन भर इंतजार करता हूँ।<sup>६</sup> हे प्रभु अपनी करुणा और अपनी विश्वासयोग्यता को याद कर, क्योंकि वे प्राचीन काल से हैं।<sup>७</sup> मेरी जीवनी के पापों या मेरे अपराधों को याद न कर, अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार मुझे याद कर, हे प्रभु अपनी भलाई के लिए।

<sup>८</sup> प्रभु भला और धर्मी है इसलिए वह पापियों को मार्ग में निर्देश देता है।<sup>९</sup> वह नम्रों को न्याय में ले चलता है और वह नम्रों को अपनी राह सिखाता है।<sup>१०</sup> प्रभु की सभी राहें विश्वासयोग्यता और सच्चाई हैं उन लोगों के लिए जो उसके बाचा और उसकी गवाही का पालन करते हैं।<sup>११</sup> अपने नाम के लिए हे प्रभु, मेरे अपराध को क्षमा कर, क्योंकि यह बड़ा है।

<sup>१२</sup> कौन है वह व्यक्ति जो प्रभु से डरता है? वह उसे उस मार्ग में निर्देश देगा जिसे वह बुना चाहिए।<sup>१३</sup> उसकी आत्मा समृद्धि में निवास करेगी, और उसके वंशज भूमि का उत्तराधिकार करेंगे।<sup>१४</sup> प्रभु का रहस्य उन लोगों के लिए है जो उससे डरते हैं, और वह उन्हें अपनी बाचा को जानने देगा।<sup>१५</sup> मेरी आँखें निरंतर प्रभु की ओर लगी रहती हैं, क्योंकि वह मेरे पैरों को जाल से बचाएगा।

<sup>१६</sup> मेरी ओर मुड़ और मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं अकेला और पीड़ित हूँ।<sup>१७</sup> मेरे हृदय की परेशानियाँ बढ़ गई हैं, मुझे मेरी संकटों से बाहर निकाल।<sup>१८</sup> मेरी दुर्दशा और मेरी परेशानी को देख, और मेरे सभी पापों को क्षमा कर।<sup>१९</sup> मेरे शत्रुओं को देख, क्योंकि वे बहुत हैं, और वे मुझसे हिंसक धूपा करते हैं।

<sup>२०</sup> मेरी आत्मा की रक्षा कर और मुझे बचा, मुझे लजित न होने दे, क्योंकि मैं तुझ में शरण लेता हूँ।<sup>२१</sup> सच्चाई और धर्म मुझे सुरक्षित रखें, क्योंकि मैं तेरा

## 25

# भजन संहिता

इंतजार करता हूँ<sup>22</sup> इस्साएल को छुड़ा हे परमेश्वर  
उसकी सभी संकटों से।

## 26

### दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे प्रभु मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं अपनी खारई में  
चला हूँ, और मैं बिना डगमगाए प्राप्त पर भरोसा करता  
हूँ<sup>2</sup> हे प्रभु मुझे जाच और परख ले, मेरे मन और मेरे  
हृदय को शुद्ध कर।<sup>3</sup> क्योंकि तेरी भलाई मेरी आँखों  
के सामने है, और मैं तेरी सच्चाई में चला हूँ।

<sup>4</sup> मैं कृपटी लोगों के साथ नहीं बैठता, और न ही मैं  
ढाँगियों के साथ जाता हूँ<sup>5</sup> मैं दुष्टों की सभा से घृणा  
करता हूँ, और मैं दुष्टों के साथ नहीं बैठता।<sup>6</sup> मैं  
निर्दर्शिता में अपने हाथ धोऊँगा, और मैं तेरे वेदी के  
चारों ओर घूर्णौगा, हे प्रभु<sup>7</sup> ताकि मैं धन्यवाद की  
आवाज के साथ प्रवार कर सकूँ और तेरे सभी अद्भुत  
कार्यों की धोषणा कर सकूँ।

<sup>8</sup> हे प्रभु मुझे तेरे धर का निवास स्थान प्रिय है, और  
वह स्थान जहाँ तेरी महिमा निवास करती है।<sup>9</sup> मेरे  
प्राण को पापियों के साथ न ले जा, और न ही मेरी  
जीवन को रक्तपात करने वालों के साथ,<sup>10</sup> जिनके  
हाथों में दुष्ट योजना है, और जिनके दाहिने हाथ रिष्ठत  
से भरे हैं।<sup>11</sup> परन्तु मैं अपनी खारई में चरूँगा, मुझे  
छुड़ा ले, और मुझ पर अनुग्रह कर।

<sup>12</sup> मेरा पाँच समतल भूमि पर खड़ा है, मैं सभाओं में  
प्रभु को आशीर्वद द्वाँगा।

<sup>4</sup> एक बात मैंने यहोवा से मांगी है, जिसे मैं खोजूँगा, कि  
मैं अपने जीवन के सभी दिनों में यहोवा के घर में  
निवास करूँ, यहोवा की सुंदरता को निहारूँ और  
उसके मंदिर में ध्यान करूँ।<sup>5</sup> क्योंकि संकट के दिन  
वह मुझे अपने मण्डप में छिपाएगा, वह मुझे अपने  
तम्बू के गुप्त स्थान में छिपाएगा, वह मुझे एक चट्टान  
पर ऊँचा उठाएगा।

<sup>6</sup> और अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊपर  
उठेगा, और मैं उसके तम्बू में जयजयकार के साथ  
बलिदान चढ़ाऊँगा, मैं गांड़गा, हूँ मैं यहोवा की स्तुति  
करूँगा।

<sup>7</sup> हे यहोवा, जब मैं अपनी आवाज से पुकारूँ, तो सुन,  
और मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दो।<sup>8</sup> जब  
तूने कहा, “मेरा मुख देखा,” तो मेरे हृदय ने तुझसे  
कहा, “मैं तेरा मुख देखूँगा, हे यहोवा!”<sup>9</sup> अपना मुख  
मुझसे न छिपा, अपने दास को क्रोध में दूर न कर, तू  
मेरी सहायता रहा है, मुझे न छोड़, न त्याग, मेरे उद्धार  
के परमेश्वर।<sup>10</sup> क्योंकि मेरे पिता और मेरी माता ने मुझे  
त्याग दिया है, परन्तु यहोवा मुझे अपनाएगा।<sup>11</sup> हे  
यहोवा, मुझे अपनी राह सिखा, और मेरे शत्रुओं के  
कारण मुझे समतल मार्ग पर ले चल।<sup>12</sup> मुझे मेरे  
शत्रुओं की इच्छा के हवाले न कर, क्योंकि जूठे साक्षी  
मेरे विरुद्ध उठे हैं, और हिंसक लोग हिंसा की सांस  
लेते हैं।

<sup>13</sup> मैं निश्चय ही विश्वास करता था कि मैं जीवितों की  
भूमि में यहोवा की भलाई देखूँगा।<sup>14</sup> यहोवा की  
प्रतीक्षा करो, दृढ़ रहो और तुम्हारा हृदय साहस करो,  
हूँ यहोवा की प्रतीक्षा करो।

## 28

### दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> यहोवा मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है, मुझे किससे  
डरना चाहिए? यहोवा मेरे जीवन का रक्षा है, मुझे  
किससे भयभीत होना चाहिए?

<sup>2</sup> जब कुकर्म मुझ पर मेरी देह को भक्षण करने के  
लिए आए, मेरे विरोधी और मेरे शत्रु वे ठोकर खाकर  
गिर पड़े।<sup>3</sup> यदि एक सेना मेरे विरुद्ध डेरा डाले, मेरा  
हृदय नहीं डरेगा; यदि युद्ध मेरे विरुद्ध उठे, इसके  
बावजूद मैं अन्विष्वास में रहूँगा।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मैं तुझे पुकारता हूँ, मेरी चट्टान, मुझसे बहरा  
मत हो, क्योंकि यदि तू मुझसे चुप रहेगा, तो मैं उन  
लोगों के समान हो जाऊँगा जो गहुँ में उतरते हैं।<sup>2</sup>  
जब मैं तुझसे सहायता के लिए रोता हूँ, जब मैं अपने  
हाथ तेरे वाचित्र मंदिर की ओर उठाता हूँ, तो मेरी  
विनती की ध्वनि सुन।

<sup>3</sup> मुझे दुष्टों के साथ मत खीच ले और उन लोगों के  
साथ जो अन्याय का अभ्यास करते हैं, जो अपने  
पड़ोसियों से शांति की बात करते हैं, जबकि उनके

# भजन संहिता

दिल में बुराई है।<sup>4</sup> उनके काम के अनुसार उन्हें वापस दे और उनके कार्यों की बुराई के अनुसार उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें वापस दे उन्हें उनकी देयता का प्रतिफल दे।

<sup>5</sup> क्योंकि वे प्रभु के कार्यों का ध्यान नहीं रखते और न ही उसके हाथों के कार्यों का, वह उन्हें गिरा देगा और उन्हें नहीं बनाएगा।

<sup>6</sup> प्रभु की जय हो, क्योंकि उसने मेरी विनती की ध्वनि सुनी है।<sup>7</sup> प्रभु मेरी शक्ति और मेरी ढाल है मेरा हृदय उस पर विश्वास करता है और मुझे सहायता मिलती है, इसलिए मेरा हृदय विजय प्राप्त करता है, और मैं अपने गीत से उसकी स्तुति करूँगा।<sup>8</sup> प्रभु उनकी शक्ति है और वह अपने अधिष्ठित के लिए उद्घार का शरणरथ्यान है।<sup>9</sup> अपनी प्रजा को बचा और अपनी विरासत को आशीर्वाद दे, उनका भी चरवाहा बन और उन्हें सदा के लिए उठा ले।

## 29

### दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे पराक्रमी पुत्रों, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो, यहोवा की महिमा को मानो।<sup>2</sup> यहोवा के नाम की महिमा को मानो; पवित्र दैभव में यहोवा की आराधना करो।

<sup>3</sup> यहोवा की वाणी जल पर है, महिमा का परमेश्वर गर्जता है, यहोवा बहुत से जलों पर है।<sup>4</sup> यहोवा की वाणी सामर्थ्यवान है, यहोवा की वाणी महिमामयी है।<sup>5</sup> यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ती है, हाँ, यहोवा लबानोन के देवदारों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।<sup>6</sup> वह लबानोन को बछड़े के समान कुदाता है, और सिरयोन को युवा जंगली बैल के समान।<sup>7</sup> यहोवा की वाणी अप्नी की लपटों को विभाजित करती है।<sup>8</sup> यहोवा की वाणी जंगल को हिला देती है, यहोवा का देश के जंगल को हिला देता है।<sup>9</sup> यहोवा की वाणी हिरण्यों को जन्म देती है और जंगलों को नंगा कर देती है, और उसके मन्दिर में सब कुछ कहता है, "महिमा!"<sup>10</sup> यहोवा बाढ़ के समय राजा के रूप में बैठा था, हाँ, यहोवा सदा के लिए राजा के रूप में बैठता है।<sup>11</sup> यहोवा अपनी प्रजा को सामर्थ्य देगा, यहोवा अपनी प्रजा को शांति से आशीर्वाद देगा।

## 30

एक भजन; घर के समर्पण पर एक गीत। दाऊद का भजन।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मैं तुझे ऊँचा उठाऊँगा, क्योंकि तूने मुझे उठाया है, और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्दित नहीं होने दिया।<sup>2</sup> हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तुझसे सहायता के लिए पुकारा, और तूने मुझे चंगा किया।<sup>3</sup> हे प्रभु, तूने मेरी आमा को अधोलोक से ऊपर उठाया है, तूने मुझे जीवित रखा है, ताकि मैं गड़े में न जाऊँ।

<sup>4</sup> हे उसके भक्तों, प्रभु की स्तुति करो, और उसके पवित्रता के स्मरण की प्रशंसा करो।<sup>5</sup> क्योंकि उसका क्रोध केवल एक क्षण के लिए है, उसकी कृपा जीवन भर के लिए है, रात को रोना हो सकता है, परन्तु सुबह आनन्द का जयकार होता है।

<sup>6</sup> अब मेरे लिए मैंने अपनी समृद्धि में कहा, "मैं कभी नहीं हिलूँगा।"<sup>7</sup> हे प्रभु, तेरी कृपा से तूने मेरे पर्वत को ढढ़ बनाया है, तूने अपना मुख छिपा लिया, मैं व्याकुल हो गया।

<sup>8</sup> हे प्रभु, मैंने तुझसे पुकारा, और मैंने प्रभु से विनती की।<sup>9</sup> "मेरे रक्त में क्या लाभ है, यदि मैं गड़े में चला जाऊँ? क्या धूल तेरा गुणगान करेगी? क्या यह तेरी विश्वासयोग्यता की घोषणा करेगी?"<sup>10</sup> सुन, हे प्रभु, और मुझ पर अनुग्रह कर, हे प्रभु, मेरा सहायक बन।"

<sup>11</sup> तूने मेरे विलाप को मेरे लिए नुस्खे में बदल दिया है तूने मेरे टाट को खोल दिया और मुझे आनन्द से धेर लिया है,<sup>12</sup> ताकि मेरी आमा तेरा गुणगान करे और मैंन न रहे। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा सदा ध्यावद करूँगा।

## 31

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मैंने तुझ में शरण ली है, मुझे कभी लज्जित न होने देना।<sup>2</sup> अपनी धार्मिकता में मुझे बचा लो।<sup>3</sup> अपनी कान मेरी और झुकाए, मुझे शीघ्रता से बचा लो, मेरे लिए एक शक्तिशाली बटान बन, मुझे बचाने के लिए एक किला।<sup>4</sup> क्योंकि तू मेरी बटान और मेरा गढ़ है, अपने नाम के खातिर तू मुझे नेतृत्व करेगा और मार्गदर्शन करेगा।<sup>5</sup> तू मुझे उस जाल से बाहर निकालेगा जो उन्होंने मेरे लिए गुप्त रूप से बिछाया है, क्योंकि तू

# भजन संहिता

मेरी शक्ति है।<sup>5</sup> मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूँ तूने मुझे छुड़ाया है हे सत्य के परमेश्वर।

<sup>6</sup> मैं उन लोगों से घृणा करता हूँ जो व्यर्थ मूर्तियों को समर्पित होते हैं, परन्तु मैं प्रभु पर विश्वास करता हूँ।<sup>7</sup> मैं तेरे अनुग्रह में आनंदित और प्रसन्न रहूँगा, क्योंकि तूने मेरी दुर्दशा देखी है तूने मेरी आत्मा की समस्याओं को जाना है,<sup>8</sup> और तूने मुझे शत्रु के हाथ में नहीं सौंपा, तूने मेरे पाँव को एक बड़े स्थान में रखा है।

<sup>9</sup> मुझ पर अनुग्रह कर हे प्रभु क्योंकि मैं संकट में हूँ मेरे आँख से मेरी आँखें मेरी आत्मा और मेरा शरीर भी नष्ट हो गए हैं।<sup>10</sup> क्योंकि मेरा जीवन दुःख में बीत गया है और मेरे रथ आह भरने में मेरी शक्ति मेरे अपराध के कारण क्षीण हो गई है, और मेरा शरीर नष्ट हो गया है।<sup>11</sup> मेरे सभी विरोधियों के कारण, मैं अपमानित हो गया हूँ विशेषकर मेरे पड़ोसियों के लिए, और मेरे परिवर्तियों के लिए डर का कारण, जो मुझे सङ्क कर में देखते हैं, मुझसे भागते हैं।<sup>12</sup> मैं एक मेरे हुए व्यक्ति की तरह भूला दिया गया हूँ मन से बाहर, मैं एक दूरी हुई बर्तन की तरह हूँ।<sup>13</sup> क्योंकि मैंने बहुतों की फुसफुसाहट सुनी है, "हर तरफ आतंक।" जब तेरे खिलाफ बड़वर रचते हैं, उन्होंने मेरी जान लेने की योजना बनाई।

<sup>14</sup> परन्तु मैं मैं तुझ पर विश्वास करता हूँ हे प्रभु, मैं कहता हूँ, "तू मेरा परमेश्वर है।"<sup>15</sup> मेरे समय तेरे हाथ में है, मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से और जो मुझे सताते हैं उनसे बचा लो।<sup>16</sup> अपने दास पर अपना मुख चमका, अपनी विश्वासयोग्यता में मुझे बचा लो।<sup>17</sup> हे प्रभु, मुझे लजित होने दे, क्योंकि मैं तुझे पुकारता हूँ, दुष्टों को लजित होने दे, उहें शिओल में मौन रहने दे।<sup>18</sup> झूठ बोलने वाले होठों को चुप करा दे, जो धर्मियों के खिलाफ गर्व से और अवमानना से बोलते हैं।

<sup>19</sup> तेरी भलाई कितनी महान है, जो तूने उन लोगों के लिए संचित की है जो तुझसे दरते हैं, जो तूने उन लोगों के लिए किया है जो तुझ में शरण लेते हैं, मानवजाति के पुत्रों के सामने।<sup>20</sup> तू उहें अपनी उपस्थिति के गुप्त स्थान में मानवजाति की बड़याँ से छिपा देता है, तू उहें जीभों के संघर्ष से एक आश्रय में गुप्त रूप से रखता है।

<sup>21</sup> प्रभु धन्य है, क्योंकि उसने एक धिरे हुए नगर में मुझ पर अपनी अद्भुत विश्वासयोग्यता दिखाई है।<sup>22</sup> जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने अपनी घबराहट में कहा, "मैं

तेरी आँखों से कट गया हूँ" किर भी तूने मेरी प्रार्थनाओं की ध्वनि सुनी जब मैंने तुझसे सहायता के लिए पुकारा।

<sup>23</sup> प्रभु से प्रेम करो, उसके सभी भक्तों प्रभु विश्वासयोग्य की रक्षा करता है परन्तु जो घमंड से कार्य करता है उसे पूरी तरह से प्रतिफल देता है।<sup>24</sup> मजबूत बनो और तुम्हारा हृदय साहस करो, तुम सब जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हो।

## 32

### दाऊद का भजन। एक मास्किल।

<sup>1</sup> धन्य है वह व्यक्ति जिसका अपराध क्षमा किया गया है, जिसका पाप ढका गया है।<sup>2</sup> धन्य है वह व्यक्ति जिसकी दोष प्रभु नहीं गिनता, और जिसकी आत्मा में कपट नहीं है।

<sup>3</sup> जब मैंने अपने पाप के बारे में चुप्पी साधी, तो मेरा शरीर क्षीण हो गया मेरे दिन भर की कराह के कारण।

<sup>4</sup> क्योंकि दिन अौर रात तेरी हाथ मुझ पर भारी थी, मेरी ताजगी ग्रीष्मकाल की सूखी गर्मी के समान नष्ट हो गई। सेला

<sup>5</sup> मैंने तुझसे अपने पाप को स्वीकार किया, और मैंने अपनी दोष नहीं छिपाई, मैंने कहा "मैं अपने अपराधों को प्रभु के सामने स्वीकार करूँगा; और तूने मेरे पाप की दोष को क्षमा कर दिया। सेला

<sup>6</sup> इसलिए, हर धर्मात्मा व्यक्ति तुझसे प्रार्थना करे जब तू मिल सके, निष्ठ्य ही महान जलप्रवाह में, वे उसे नहीं पहुँचेंगे। तू मेरी छिपने की जगह है, तू मुझे संकट से बचाता है, तू मुझे उद्धार के गीतों से धेरता है। सेला

<sup>8</sup> मैं तुझे शिक्षा द्वांगा और उस मार्ग में चलाऊंगा जिस पर तुझे जाना चाहिए, मैं तुझे अपनी आँखों से सलाह द्वांगा।<sup>9</sup> घोड़े या खच्चर के समान न हो, जिनमें समझ नहीं होती, जिनकी लगाम और लगाम से उहें नियन्त्रित किया जाता है, अन्यथा वे तेरे पास नहीं आएंगे।<sup>10</sup> दुष्टों की पीड़ाएं बहुत होती हैं, परन्तु जो प्रभु पर भरोसा करता है, उसे भलाई धेरे रहती है।

<sup>11</sup> प्रभु में आनंदित हो और हर्षित हो, हे धर्मात्माओं, और जयजयकार करो, तुम सब जो हृदय में सीधे हो।

## भजन संहिता

**33** हे धर्मियों, यहोवा में आनन्द से गाओं, सीधे लोगों के लिए स्तुति करना शोभा देता है।<sup>2</sup> वीणा के साथ यहोवा का धन्यवाद करो, दस तारों वाले सारंगी के साथ उसकी स्तुति गाओ।<sup>3</sup> उसके लिए एक नया गीत गाओ, खुशी के नारे के साथ कुशलता से बजाओ।

<sup>4</sup> क्योंकि यहोवा का वचन सही है, और उसके सभी कार्य विश्वासयोग्यता से किए जाते हैं।<sup>5</sup> वह धर्म और न्याय से प्रेम करता है, पृथ्वी यहोवा की भलाई से भरी है।

<sup>6</sup> यहोवा के वचन से आकाश बनाए गए, और उसके मुख की श्वास से उनके सभी प्रकाश।<sup>7</sup> वह समुद्र के जल को एक ढेर के रूप में इकट्ठा करता है, वह गहराइयों को भंडारों में रखता है।<sup>8</sup> सारी पृथ्वी यहोवा से डेरे, संसार के सभी निवासी उसके प्रति श्रद्धा से छढ़े हों।<sup>9</sup> क्योंकि उसने कहा, और वह हो गया, उसने आज्ञा दी, और वह स्थिर रहा।

<sup>10</sup> यहोवा राष्ट्रों की योजना को निरस्त करता है, वह लोगों की योजनाओं को विफल करता है।<sup>11</sup> यहोवा की योजना सदा के लिए स्थिर रहती है, उसके हृदय की योजनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक।

<sup>12</sup> धन्य है वह राष्ट्र जिसका परमेश्वर यहोवा है, वह लोग जिन्हें उसने अपनी विरासत के लिए दुना है।<sup>13</sup> यहोवा सर्वग्र से देखता है, वह सभी मुश्यों के पुत्रों को देखता है।<sup>14</sup> अपने निवास स्थान से वह देखता है पृथ्वी के सभी निवासियों पर।<sup>15</sup> वह जो सभी के हृदयों को गढ़ता है, वह जो उनके सभी कार्यों को समझता है।

<sup>16</sup> राजा एक शक्तिशाली सेना से नहीं बचता, एक योद्धा महान शक्ति से नहीं बचाया जाता।<sup>17</sup> विजय के लिए घोड़ा एक झूटी आशा है, न ही यह अपनी महान शक्ति से किसी को बचाता है।<sup>18</sup> देखो, यहोवा की वृष्टि उन पर है जो उससे डरते हैं, उन पर जो उसकी विश्वासयोग्यता की प्रतीक्षा करते हैं।<sup>19</sup> उनकी आत्मा को मृत्यु से बचाने के लिए और अकाल में उन्हें जीवित रखने के लिए।

<sup>20</sup> हमारी आत्मा यहोवा की प्रतीक्षा करती है, वह हमारी सहायता और हमारी ढाल है।<sup>21</sup> क्योंकि हमारा हृदय उसमें आनन्दित होता है, क्योंकि हम उसके पवित्र नाम पर भरोसा करते हैं।<sup>22</sup> हे यहोवा, तेरी कृपा हम पर बनी रहे, जैसे हमने तेरी प्रतीक्षा की है।

## 34

दाउद का एक भजन, जब उसने अवीमेलेक के सामने पागल होने का नाटक किया, जिसने उसे भगा दिया और वह चला गया।

<sup>1</sup> मैं हर समय यहोवा को धन्य कहूँगा, उसकी स्तुति निरंतर मेरे मुंह में रहेगी।<sup>2</sup> मेरी आत्मा यहोवा में धमण्ड करेगी नम लोग इसे सुनकर आनन्दित होंगे।<sup>3</sup> मेरे साथ यहोवा की महिमा करो, और हम उसके नाम की एक साथ स्तुति करें।

<sup>4</sup> मैंने यहोवा को खोजा और उसने मुझे उत्तर दिया, और मुझे मेरे सभी भय से छुड़ाया।<sup>5</sup> उन्होंने उसकी ओर देखा और वे उज्ज्वल हो गए, और उनके चेहरे कभी लज्जित नहीं होंगे।<sup>6</sup> इस दरिए ने पुकारा, और यहोवा ने उसे सुना, और उसे उसकी सभी विपत्तियों से बचाया।<sup>7</sup> यहोवा का द्रूत उनके चाहों और डेरा डाले रहता है जो उससे डरते हैं, और उन्हें बचाता है।

<sup>8</sup> स्वाद लो और देखो कि यहोवा भला है, किंतु नाम धन्य है वह व्यक्ति जो उसमें शरण लेता है।<sup>9</sup> यहोवा का भय माना है, उसके पवित्र जर्ने, क्योंकि जो उससे डरते हैं उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती।<sup>10</sup> जगान सिंह भूखे रहते हैं और भूख से पीड़ित होते हैं, परन्तु जो यहोवा को खोजते हैं उन्हें किसी भली वस्तु की कमी नहीं होती।<sup>11</sup> आओ, हे बच्चों, मेरी सुनो, मैं तुम्हें यहोवा का भय सिखाऊँगा।<sup>12</sup> वह कौन व्यक्ति है जो जीवन की इच्छा करता है और अच्छे दिन देखना चाहता है।<sup>13</sup> अपनी जीभ को बुराई से बचाओ और अपने हाथों को छल बोलने से।<sup>14</sup> बुराई से दूर हो जाओ और भलाई करो, शांति की खोज करो और उसका पीछा करो।

<sup>15</sup> यहोवा की अँखें धर्मियों की ओर हैं, और उसके कान उनकी सहायता की पुकार की ओर।<sup>16</sup> यहोवा का मुख बुराई करने वालों के विरुद्ध है, ताकि वह पृथ्वी से उनकी स्तुति को मिटा दे।

<sup>17</sup> धर्मी पुकारते हैं, और यहोवा सुनता है और उन्हें उनकी सभी विपत्तियों से बचाता है।<sup>18</sup> यहोवा दूटे मन वालों के निकट है और उन लोगों को बचाता है जिनकी आत्मा कुचली हुई है।

# भजन संहिता

<sup>19</sup> धर्मियों की विपत्तियाँ बहुत होती हैं परन्तु यहोवा  
उसे उन सब से बचाता है।<sup>20</sup> वह उसकी सभी हड्डियों  
की रक्षा करता है, उनमें से एक भी नहीं टूटती।

<sup>21</sup> बुराई दुष्टों को मृत्यु के घाट उतार देगी, और जो  
धर्मियों से बैर रखते हैं वे अपने अपराध के लिए  
भुगताएँ।<sup>22</sup> यहोवा अपने सेवकों की आत्माओं को  
छुड़ाता है, और जो उसमें शरण लेते हैं उनमें से कोई  
भी अपने अपराध के लिए नहीं भुगतेगा।

## 35

### दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे यहोवा, मेरे साथ झगड़ने वालों से झग़ु़, मेरे  
विरुद्ध लड़ने वालों से लड़।<sup>2</sup> ढाल और कवच की  
थाम ले, और मेरी सहायता के लिए उठ खड़ा हो।<sup>3</sup>  
भाला और युद्ध-कुलाहाई भी खींच ले, मेरे पीछा करने  
वालों से मिलने के लिए मेरी आत्मा से कह, "मैं तेरा  
उद्धार हूँ!"

<sup>4</sup> जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे लजित और अपमानित  
होंगे, जो मेरे विरुद्ध बुराई की योजना बनाते हैं, वे पीछे  
हटें और अपमानित होंगे।<sup>5</sup> वे वायु के समाने भूसी के  
समान हों, यहोवा का द्रूत उन्हें आगे बढ़ाता रहे।  
उनकी राह अधीरी और फिसलन भरी हो, यहोवा का  
द्रूत उनका पीछा करता रहे।

<sup>7</sup> क्योंकि उन्होंने बिना कारण मेरे लिए जाल बिछाया,  
बिना कारण उन्होंने मेरी आत्मा के लिए गड्ढा खोदा।<sup>8</sup>  
विनाश उस पर आ पड़े जब वह अनजान हो, और जो  
जाल उसने बिछाया है वह उसे कपड़ ले, वह उसी  
विनाश में गिर पड़े।<sup>9</sup> और मेरी आत्मा यहोवा में  
आनन्दित होगी, वह उसके उद्धार में आनन्दित होगी।  
<sup>10</sup> मेरी सारी हड्डियाँ कहेगी, "हे यहोवा, तेरे समान कौन  
है, जो पीड़ित को उसके से अधिक बलवान से बचाता  
है, और पीड़ित और गरीब को उससे जो उसे लूटता  
है?"

<sup>11</sup> दुष्ट साक्षी उठ खड़े होते हैं, वे मुझसे ऐसी बातें  
पूछते हैं जिन्हें मैं नहीं जानता।<sup>12</sup> वे मुझे भलाइ के  
बदले बुराई देते हैं, मेरी आत्मा के शोक के लिए।<sup>13</sup>  
परन्तु मैं जब वे बीमार थे, मेरा वस्त टाट का था, मैंने  
उपवास से अपनी आत्मा को नम्र किया, परन्तु मेरी  
प्रार्थना मेरे पास लौटती रही।<sup>14</sup> मैं ऐसे चलता था जैसे  
वह मेरा मित्र या भाई हो, मैं शोक में झुका रहता था,

जैसे कोई माँ के लिए शोक करता है।<sup>15</sup> परन्तु मेरी  
ठोकर पर वे आनन्दित हुए और इकट्ठे हो गए जिन  
पीड़ितों को मैं नहीं जानता था, वे मेरे विरुद्ध इकट्ठे हो  
गए उन्होंने बिना रुके मेरी निंदा की।<sup>16</sup> जैसे नास्तिक  
भोज में ठट्ठा करते हैं, वे मुझ पर दाँत पीसते थे।

<sup>17</sup> हे यहोवा, तू कब तक देखता रहेगा? मेरी आत्मा को  
उनके विनाश से बचा, मेरी एकमात्र जीवन को सिंहों  
से।<sup>18</sup> मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा, मैं  
शक्तिशाली लोगों की बीच तेरा युणगान करूँगा।<sup>19</sup> जो  
अनुचित रूप से मेरे शरु हैं उन्हें मुझ पर आनन्दित न  
होने दे, न ही उन्हें जो बिना कारण मुझसे घुणा करते  
हैं, दुष्टा से आँख मारने दे।<sup>20</sup> क्योंकि वे शाति की  
बात नहीं करते, परन्तु वे देश में शांत लोगों के विरुद्ध  
धोखेबाज बातें गढ़ते हैं।<sup>21</sup> उन्होंने मेरे विरुद्ध अपना  
मुँह चौड़ा किया, उन्होंने कहा, "अहा, अहा हमारी  
आँखों ने इसे देखा है!"

<sup>22</sup> तूने इसे देखा है, हे यहोवा, चुप न रह, हे यहोवा,  
मुझसे दूर न हो।<sup>23</sup> अपने को जागृत कर, और मेरे  
अधिकार के लिए उठ खड़ा हो और मेरे कारण के  
लिए, मेरे परमेश्वर और मेरे प्रभु।<sup>24</sup> हे यहोवा मेरे  
परमेश्वर, अपनी धार्मिकता के अनुसार मेरा न्याय कर,  
और उन्हें मुझ पर आनन्दित न होने दे।

<sup>25</sup> उन्हें अपने हृदय में न कहने दे, "अहा, हमारी  
इच्छा!" उन्हें यह न कहने दे, "हमने उसे निगल लिया  
है!"<sup>26</sup> जो मेरे संकट पर आनन्दित होते हैं, वे लजित  
और पूरी तरह अपमानित हों, जो मुझ पर ऊँचा उठते  
हैं, वे लज्जा और अपमान से वसित होंगे।<sup>27</sup> जो मेरी  
निर्दोषता में प्रसन्न होते हैं, वे आनन्दित हों और हर्षित  
हों, और वे निरंतर कहें, "यहोवा की महिमा हो, जो  
अपने सेवक की समृद्धि में प्रसन्न होता है!"

<sup>28</sup> और मेरी जीभ तेरी धार्मिकता की घोषणा करेगी  
और तेरा युणगान दिन भर करती रहेगी।

## 36

### संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद की एक भजन, जो यहोवा का सेवक है।

<sup>1</sup> अर्थात् उसके हृदय में दुष्ट से बातें करता है, उसकी  
आँखों के समाने परमेश्वर का भय नहीं है।

# भजन संहिता

<sup>२</sup> क्योंकि वह अपनी आँखों में अपनी चापलूसी करता है अपने अपराध और शृणा की खोज के संबंध में।<sup>३</sup> उसके मुँह के शब्द दुष्टा और धोखा हैं, उसने बुद्धिमान होना और अच्छा करना छोड़ दिया है।<sup>४</sup> वह अपने बिस्तर पर दुष्टा की योजना बनाता है, वह अपने आप को एक ऐसे मार्ग पर लगाता है जो अच्छा नहीं है, वह बुराई को अस्वीकार नहीं करता।

<sup>५</sup> हे यहोवा, तेरी दया आकाश तक फैली हुई है, तेरी विश्वासयोग्यता आकाश तक पहुँची है।<sup>६</sup> तेरी धार्मिकता परमेश्वर के पहाड़ों के समान है, तेरे न्याय गहरे सागर के समान हैं। हे यहोवा, तू मनुष्य और पशुओं की रक्षा करता है।<sup>७</sup> हे परमेश्वर, तेरी दया कितनी अनमोल है, और मनुष्य के पुत्र तेरे पंखों की छाया में शरण लेते हैं।<sup>८</sup> वे तेरे घर की प्रचुरता से तृप्त होते हैं, और तू उन्हें अपनी प्रसन्नता की नदी से पीने की अनुमति देता है।<sup>९</sup> क्योंकि तुझ में जीवन का स्रोत है, तेरे प्रकाश में हम प्रकाश देखते हैं।

<sup>१०</sup> जो तुझे जानते हैं उन पर अपनी दया बढ़ा, और अपने हृदय के सीधे लोगों पर अपनी धार्मिकता।<sup>११</sup> अभिमान का पाँव मुझ पर न आए, और दुष्टों का हाथ मुझे द्वारा न करे।<sup>१२</sup> वहाँ अर्थम् करने वाले गिर गए हैं, वे नीचे धकेल दिए गए हैं और उठ नहीं सकते।

## ३७

### दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> दुष्टों के कारण परेशान मत हो, कुकमियों से ईर्ष्या मत करो।<sup>२</sup> क्योंकि वे धास की तरह जल्दी मुरझा जाएंगे, और हरे पौधों की तरह सड़ जाएंगे।

<sup>३</sup> यहोवा पर भरोसा रखो और भला करो, देश में निवास करो और विश्वासयोग्यता का पालन करो।<sup>४</sup> यहोवा में अनंद लो, और वह तुम्हारे हृदय की इच्छाओं को पूरा करेगा।

<sup>५</sup> अपनी राह यहोवा को सौंप दो, उस पर भी भरोसा रखो, और वह इसे पूरा करेगा।<sup>६</sup> वह तुम्हारी धार्मिकता को प्रकाश की तरह प्रकट करेगा, और तुम्हारे न्याय को दोपहर की तरह।

<sup>७</sup> यहोवा में विश्राम करो और धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करो, उस व्यक्ति के कारण परेशान मत हो जो अपनी

राह में सफल होता है, उस व्यक्ति के कारण जो दुष्ट योजनाएं बनाता है।

<sup>८</sup> क्रोध से दूर हो जाओ और क्रोध को त्याग दो। परेशान मत हो, यह केवल दुष्टा की ओर ले जाता है।

<sup>९</sup> क्योंकि दुष्टों का नाश होगा, परन्तु जो यहोवा की प्रतीक्षा करते हैं, वे देश के अधिकारी होंगे।

<sup>१०</sup> थोड़ी देर और दुष्ट व्यक्ति नहीं रहेगा, और तुम उसकी जाह को ध्यान से देखोगे और वह वहाँ नहीं होगा।<sup>११</sup> परन्तु नम्र लोग देश के अधिकारी होंगे, और वे प्रचुर समृद्धि में आनंदित होंगे।

<sup>१२</sup> दुष्ट धर्मी के विरुद्ध षड्यंत्र रचता है, और उस पर अपने दात पीसता है।<sup>१३</sup> यहोवा उस पर हंसता है, क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आ रहा है।

<sup>१४</sup> दुष्टों ने तलवार खींची है और अपनी धनुष को झुका लिया है पीड़ित और जरूरतमंद को गिराने के लिए उन लोगों को मारने के लिए जो आवरण में सीधे हैं।<sup>१५</sup> उनकी तलवार उनके अपने हृदय में प्रवेश करेगी, और उनके धनुष टूट जाएंगे।

<sup>१६</sup> धर्मी की थोड़ी संपत्ति कई दुष्टों की प्रचुरता से बेहतर है।<sup>१७</sup> क्योंकि दुष्टों की भुजाएं टूट जाएंगी, परन्तु यहोवा धर्मियों को संभालता है।

<sup>१८</sup> यहोवा निर्दोषों के दिनों को जानता है, और उनकी विवासन सदा के लिए होगी।<sup>१९</sup> वे बुरे समय में लजित नहीं होंगे, और अकाल के दिनों में वे प्रचुरता में रहेंगे।

<sup>२०</sup> परन्तु दुष्ट नाश हो जाएंगे, और यहोवा के शत्रु चरागाहों की महिमा की तरह होंगे, वे गायब हो जाएंगे—धुएं की तरह वे गायब हो जाएंगे।

<sup>२१</sup> दुष्ट उथार लेता है और वापस नहीं करता, परन्तु धर्मी उदार है और देता है।<sup>२२</sup> क्योंकि जो उसके द्वारा अस्वीकारित हैं वे देश के अधिकारी होंगे, परन्तु जो उसके द्वारा शापित हैं वे नाश होंगे।

<sup>२३</sup> मनुष्य के कदम यहोवा द्वारा स्थापित किए जाते हैं, और वह उसकी राह में प्रसन्न होता है।<sup>२४</sup> जब वह गिरता है, तो वह नीचे नहीं गिराया जाएगा, क्योंकि यहोवा वह है जो उसका हाथ थामता है।

## भजन संहिता

<sup>25</sup> मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ, किर भी मैंने धर्मी को त्यागा दुआ नहीं देखा और न ही उसके वंशजों को रोटी के लिए भीख मांगते हुए।<sup>26</sup> वह दिन भर उदार है और उधार देता है, और उसके वंशज आशीर्वद हैं।

<sup>27</sup> बुराई से मुड़ो और भला करो, ताकि तुम सदा के लिए निवास कर सको।<sup>28</sup> क्योंकि यहोवा न्याय से प्रेम करता है और अपने भक्तों को नहीं छोड़ता।

वे सदा के लिए सुरक्षित हैं, परन्तु दुष्टों के वंशज नाश होंगे।<sup>29</sup> धर्मी देश के अधिकारी होंगे और उसमें सदा के लिए निवास करेंगे।

<sup>30</sup> धर्मी का मुख ज्ञान की बातें करता है, और उसकी जीभ न्याय की बातें करती है।<sup>31</sup> उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में है, उसके कदम नहीं फिसलते।

<sup>32</sup> दुष्ट धर्मी पर नजर रखता है और उसे मारने की कोशिश करता है।<sup>33</sup> यहोवा उसे उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा और न ही उसे दोषी ठहराए जाने पर उसे दोषी ठहराएगा।

<sup>34</sup> यहोवा की प्रतीक्षा करो और उसकी राह पर चलो, और वह तुम्हें देश का अधिकारी बनाएगा; जब दुष्ट नाश होंगे, तुम इसे देखोगे।

<sup>35</sup> मैंने एक दुष्ट हिंसक व्यक्ति को देखा है जो अपनी मूल मिट्टी में एक हरे-भरे पेड़ की तरह फैल रहा है।<sup>36</sup> किर वह चला गया, और देखो, वह नहीं रहा; मैंने उसे खोजा, परन्तु वह नहीं मिला।

<sup>37</sup> निर्दोष को देखो, और सीधे को देखो; क्योंकि शांति के व्यक्ति का भविष्य होगा।<sup>38</sup> परन्तु कुकर्मी पूरी तरह से नाश हो जाएंगे दुष्टों का भविष्य नाश होगा।

<sup>39</sup> परन्तु धर्मियों का उद्धर यहोवा से है, संकट के समय में वह उनकी शक्ति है।<sup>40</sup> यहोवा उनकी सहायता करता है और उन्हें बचाता है, वह उन्हें दुष्टों से बचाता है और उन्हें बचाता है, क्योंकि वे उसमें शरण लेते हैं।

<sup>1</sup> हे प्रभु, अपने क्रोध में मुझे ताङ्ना न दे, और अपनी जलती हुई क्रोध में मुझे दंड न दे।<sup>2</sup> क्योंकि तेरे तीर मुझ में गहरे धंस गए हैं, और तेरा हाथ मुझ पर भारी हो गया है।<sup>3</sup> तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कोई स्वस्थ स्थान नहीं है, मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कोई स्वस्थ नहीं है।<sup>4</sup> क्योंकि मेरे अपराध मेरे सिर के ऊपर से गुरज गए हैं, वे भारी बोझ की तरह मुझ पर अधिक भार ढालते हैं।

<sup>5</sup> मेरे घार सड़ते और फूटते हैं मेरी मूर्खता के कारण।

<sup>6</sup> मैं द्वृक गया हूँ और बहुत द्वाका हुआ हूँ, मैं दूरे दिन शोक में चलता हूँ।<sup>7</sup> क्योंकि मेरे पक्ष जलन से भरे हुए हैं, और मेरे शरीर में कोई स्वस्थ स्थान नहीं है।<sup>8</sup> मैं बोहोश और बुरी तरह से कुचला दुआ महसूस करता हूँ, मैं अपने हृदय की उत्तेजना के कारण करहता हूँ।

<sup>9</sup> हे प्रभु, मेरी सारी इच्छा तेरे सामने है, और मेरी आहें तुझसे छिपी नहीं हैं।<sup>10</sup> मेरा हृदय धड़कता है, मेरी शक्ति मुझसे छूट गई है, और मेरी अंखों की ज्योति भी मुझसे चली गई है।<sup>11</sup> मेरे प्रियजन और मेरे मित्र मेरी विपति से दूर खड़े हैं, और मेरे संबंधी दूर खड़े हैं।

<sup>12</sup> जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे मेरे लिए जाल बिछाते हैं, और जो मुझे हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे विनाश की बातें करते हैं, और दिन भर छल की योजना बनाते हैं।

<sup>13</sup> परन्तु मैं जैसे बहरा व्यक्ति हूँ नहीं सुनता, और मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो नहीं बोल सकता, जो अपना मुँह नहीं खोलता।<sup>14</sup> हाँ, मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो नहीं सुनता, और जिसका मुँह में कोई तर्क नहीं है।<sup>15</sup> क्योंकि मैं तेरा इंतजार करता हूँ हे प्रभु, तू उत्तर देगा, हे प्रभु मेरे परमेश्वर।<sup>16</sup> क्योंकि मैंने कहा, "वे मुझ पर आनंदित न हों, जो जब मेरा पैर फिसलाता है, मुझ पर गर्व करते हैं।"

<sup>17</sup> क्योंकि मैं गिरने के लिए तैयार हूँ, और मेरा दुःख निरंतर मेरे सामने है।<sup>18</sup> क्योंकि मैं अपनी दोष स्वीकार करता हूँ, मैं अपने पाप के कारण गिरा से भरा हूँ।<sup>19</sup> परन्तु मेरे शत्रु बलवान और शक्तिशाली हैं, और जो मुझे अन्यायपूर्ण रूप से धूमा करते हैं, वे बहुत हैं।<sup>20</sup> और जो बुराई के लिए भलाई का प्रतिफल देते हैं, वे मेरे विरोधी बन जाते हैं, क्योंकि मैं जो अच्छा है उसका अनुसरण करता हूँ।

<sup>21</sup> मुझे मत छोड़, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो।<sup>22</sup> मेरी सहायता के लिए जल्दी आ, हे प्रभु, मेरी मुक्ति।

## 38

दाउद का एक भजन, स्मरण के लिए।

# भजन संहिता

## 39

संगीत निर्देशक के लिए, यदूतून के लिए। दाऊद  
का एक भजन।

<sup>1</sup> मैंने कहा, “मैं अपनी चालों पर ध्यान रखूँगा ताकि मैं  
अपनी जीभ से पाप न करूँ, मैं अपने मुँह पर पहरा  
द्वागा जैसे कि एक लगाम के साथ जब दुष्ट मेरे सामने  
हौं।<sup>2</sup> मैं मूँक और तुप था, मैंने अच्छे से भी परहेज  
किया, और मेरा दर्द बढ़ गया।<sup>3</sup> मेरा हृदय मेरे भीतर  
गम था, जब मैं ध्यान कर रहा था तो आग जल उठी  
तब मैंने अपनी जीभ से कहा:

<sup>4</sup> “प्रभु मुझे मेरा अंत जानने दे, और मेरे दिनों की  
सीमा क्या है, मुझे जानने दे कि मैं कितना क्षणिक हूँ।<sup>5</sup>  
देख, तूने मेरे दिनों को हथेली की चौड़ाई के समान  
बनाया है, और मेरी आयु तेरी दृष्टि में कुछ भी नहीं है,  
निश्चय ही समस्त मानवता खड़ी दुई एक मात्र सास है।  
सेलाह

<sup>6</sup> निश्चय ही हर व्यक्ति एक क्षणिक छाया के समान  
चलता है, वे निश्चय ही कुछ नहीं के लिए शोर मचाते हैं,  
वह धन इकट्ठा करता है और नहीं जानता कि कौन  
उन्हें बटोरेगा।

<sup>7</sup> और अब प्रभु मैं किसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ, मेरी  
आशा तुझ में है।<sup>8</sup> मुझे मेरी सभी गलतियों से बचा,  
मुर्खों के लिए मुझे उपहास का पात्र न बना।<sup>9</sup> मैं मूँक  
हो गया हूँ, मैं अपना मुँह नहीं खोलता, क्योंकि यह तू है  
जिसने यह किया है।<sup>10</sup> अपनी विपत्ति मुझसे दूर कर  
तेरे हाथ के विरोध के कारण मैं समाप्त हो गया हूँ।<sup>11</sup>  
डांट के साथ तू व्यक्ति को गलतियों के लिए दंड देता  
है, तू कीड़े की तरह उसके कीमती चीजों को नष्ट कर  
देता है, निश्चय ही समस्त मानवता एक मात्र सास है।  
सेलाह

<sup>12</sup> मेरी प्रार्थना सुन, प्रभु, और मेरी सहायता के लिए  
रोने की आवाज सुन, मेरे असुअँ पर तुप न रह,  
क्योंकि मैं तेरे साथ एक अजनबी हूँ एक अस्थायी  
निवासी जैसे मेरे सभी पूर्वज।<sup>13</sup> अपनी दृष्टि मुझसे  
हटा ले, ताकि मैं फिर से प्रसन्न हो सकूँ इससे पहले कि  
मैं चला जाऊँ और फिर न रहूँ।

## 40

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मैं यहोवा की बाट जोहता रहूँ, और उसने मेरी ओर  
झुक्कर मेरी पुकार सुनी।<sup>2</sup> उसने मुझे विनाश के गहरे  
से, कीचड़ से बाहर निकाला, और उसने मेरे पांव  
चटान पर रखे, मेरे कदमों को दृढ़ किया।<sup>3</sup> उसने मेरे  
मुँह में एक नया गीत रखा, हमारे परमेश्वर की स्तुति  
का गीत, बहुत लोग देखेंगे और डरेंगे, और यहोवा पर  
भरोसा करेंगे।

<sup>4</sup> धन्य है हर मनुष्य जिसने यहोवा को अपना भरोसा  
बनाया है, और अभिमानी की ओर नहीं मुड़ा, न ही  
झूक में लिप्त होने वालों की ओर।<sup>5</sup> हे मेरे परमेश्वर  
यहोवा, तेरे द्वारा किए गए आकर्षक रूप बहुत हैं, और  
हमारे प्रति तेरे विचास तेरे समान कोई नहीं है। यदि मैं  
उनका वर्णन करूँ और उनके बारे में बोलूँ तो वे  
गिनने में बहुत अधिक होंगे।

<sup>6</sup> तूने बलिदान और अन्नबलि की इच्छा नहीं की, तूने  
मेरे कान खोले हैं, तूने होमबलि और पापबलि की मांग  
नहीं की।<sup>7</sup> तब मैंने कहा, “देख, मैं आया हूँ, पुस्तक के  
पत्र में मेरे विषय में लिखा है।<sup>8</sup> हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी  
इच्छा पूरी करने में प्रसन्न हूँ तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में  
है।”

<sup>9</sup> मैंने बड़ी सभा में धर्म की शुभ सूचना सुनाई है, देख,  
मैं अपने हाँठों को नहीं रोकूँगा, हे यहोवा, तू जानता है।  
<sup>10</sup> मैंने तेरे धर्म को अपने हृदय में नहीं छिपाया, मैंने  
तेरी विश्वासयोग्यता और तेरे उद्धार का प्रचार किया है,  
मैंने बड़ी सभा में तेरी दया और तेरे सत्य को नहीं  
छिपाया।

<sup>11</sup> हे यहोवा, तू मुझसे अपनी करुणा को नहीं रोकेगा,  
तेरी दया और तेरा सत्य निरंतर मेरी रक्षा करेंगे।<sup>12</sup>  
क्योंकि अनगिनत बुराइयों ने मुझे धर लिया है, मेरे  
अपराधों ने मुझे पकड़ लिया है, इसलिये मैं देख नहीं  
सकता, वे मेरे सिर के बालों से अधिक हैं, और मेरा  
हृदय मुझसे हार गया है।<sup>13</sup> हे यहोवा, कृपया मुझे बचा  
ले, हे यहोवा, मेरी सहायता के लिए शीघ्रता कर।

<sup>14</sup> जो मेरे प्राण को नष्ट करने के लिए खोजते हैं, वे सब  
लजित और अपमानित हों, जो मेरी हानि में आनंदित  
होते हैं, वे सब पीछे हटें और अपमानित हों।<sup>15</sup> जो  
लोग मुझसे कहते हैं, “आहा, आहा!” वे अपनी लज्जा  
के कारण चकित हों।<sup>16</sup> जो तुझे खोजते हैं, वे सब तुझ  
में आनंदित और प्रसन्न हों, जो तेरे उद्धार से प्रेम करते  
हैं, वे निरंतर कहें, “यहोवा महान हो।”

# भजन संहिता

<sup>17</sup> परन्तु मैं दुखी और दरिद्र हूँ यहोवा मेरी सुधि ले। तू मेरी सहायता और मेरा उद्धारक है हे मेरे परमेश्वर विलंब न कर।

## 41

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> धन्य है वह जो असहाय की चिंता करता है, प्रभु उसे संकट के दिन बचाएगा। <sup>2</sup> प्रभु उसकी रक्षा करेगा और उसे जीवित रखेगा, और वह पृथु पर धन्य कहलाएगा और उसे उसके शत्रुओं की इच्छा के हवाले न करें। <sup>3</sup> प्रभु उसे उसके रोगशय्या पर संभलेगा, उसकी बीमारी में आप उसे स्वास्थ्य में बहाल करेंगे।

<sup>4</sup> जहाँ तक मेरी बात है, मैंने कहा, "प्रभु मुझ पर कृपा करें, मेरी आत्मा को चंगा करें, क्योंकि मैंने आपके विरुद्ध पाप किया है।" <sup>5</sup> मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध भुरा बोलते हैं "वह कब मरेगा, और उसका माम कब मिटेगा?" <sup>6</sup> और जब वह मुझे देखने आता है, तो वह खानी शब्द बोलता है उसका हृदय अपने आप में दृष्टा इकट्ठा करता है, जब वह बाहर जाता है, तो वह इसे बताता है।

<sup>7</sup> जो सभी मुझसे घुणा करते हैं, मेरे विरुद्ध फुसफुसाते हैं वे मेरे विरुद्ध बजांत्र रखते हैं कहते हैं: <sup>8</sup> "उस पर एक दृष्ट चीज़ डाली गई है, ताकि जब वह लेटे तो वह किर से न उठे।" <sup>9</sup> यहाँ तक कि मेरा करीबी मित्र जिस पर मैंने भरोसा किया, जिसने मेरी रोटी खाई, उसने मेरे विरुद्ध अपनी एड़ी उठाई है।

<sup>10</sup> लोकिन आप, प्रभु मुझ पर कृपा करें और मुझे उठाएं ताकि मैं उन्हें प्रतिफल दे सकूँ। <sup>11</sup> इससे मैं जानता हूँ कि आप मुझसे प्रसन्न हैं, क्योंकि मेरा शत्रु मेरे ऊपर विजय की जयकार नहीं करता। <sup>12</sup> जहाँ तक मेरी बात है आप मेरी सत्यनिष्ठा में मुझे संभालते हैं और आप मुझे अपने सामने सदा के लिए रखते हैं।

<sup>13</sup> धन्य है प्रभु इसाएल का परमेश्वर, सदा से सदा तक। आमीन और आमीन।

## 42

संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का एक मास्किल।

<sup>1</sup> जैसे हिरण यानी की धाराओं के लिए हाँफता है, वैसे ही मेरी आत्मा तेरे लिए हाँफती है, हे परमेश्वर। <sup>2</sup> मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए जीवित परमेश्वर के लिए आसा है, मैं कब आऊंगा और परमेश्वर के सामने प्रकट होऊंगा? <sup>3</sup> मेरे आँखूँ दिन-रात मेरा भोजन रहे हैं, जबकि वे मुझसे दिन भर कहते हैं "तेरा परमेश्वर कहाँ है?" <sup>4</sup> मैं इन बातों को याद करता हूँ और अपनी आत्मा को अपने भीतर उड़ेलता हूँ। क्योंकि मैं भीड़ के साथ जाता था और उन्हें परमेश्वर के घर तक ले जाता था, आनन्द और धन्यवाद की आवाज़ के साथ, एक उत्सव मनाती दुई भीड़ के साथ।

<sup>5</sup> हे मेरी आत्मा, तू निराश क्यों है? और तू मेरे भीतर ढेचैन क्यों है? परमेश्वर की प्रतीक्षा कर, क्योंकि मैं फिर से उसकी सुरुति करूंगा उसकी उपस्थिति की सहायता के लिए मेरा परमेश्वर।

<sup>6</sup> मेरी आत्मा मेरे भीतर निराश है, इसलिए मैं तुझे यरदान की भूमि से याद करता हूँ और हर्मान की चौटियों से, मिजार पर्वत से। <sup>7</sup> गहरे से गहरा तेरी जलप्रापातों की ध्वनि पर युकराता है तेरी सभी लहरें और तरंगें मुझ पर से गुज़र गई हैं।

<sup>8</sup> प्रभु दिन में अपनी भलाई भजेगा, और उसकी गीत रात में मेरे साथ होगी, मेरे जीवन के परमेश्वर के लिए एक प्रार्थना।

<sup>9</sup> मैं अपने बहान परमेश्वर से कहूँगा, "तूने मुझे क्यों भुला दिया है? मैं शत्रु के उत्पीड़न के कारण शोकित होकर क्यों चलता हूँ?" <sup>10</sup> जैसे मेरी हाँड़ियों का टूटना, मेरे विरोधी मुझे ताना देते हैं, जबकि वे मुझसे दिन भर कहते हैं "तेरा परमेश्वर कहाँ है?"

<sup>11</sup> हे मेरी आत्मा, तू निराश क्यों है? और तू मेरे भीतर ढेचैन क्यों है? परमेश्वर की प्रतीक्षा कर, क्योंकि मैं फिर से उसकी सुरुति करूंगा उसकी उपस्थिति की सहायता के लिए मेरा परमेश्वर।

**43** हे परमेश्वर, मेरा न्याय कर, और अधर्मी जाति के विरुद्ध मेरा मुकदमा लड़, मुझे छल और अन्याय करने वाले व्यक्ति से बचा। <sup>2</sup> क्योंकि तू मेरा शरणस्थान का परमेश्वर है, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? मैं शत्रु के अत्याचार के कारण क्यों शोक करता हुआ फिरता हूँ?

<sup>3</sup> अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई भेज, वे मुझे मार्ग दिखाएँ, वे मुझे तेरे पावित्र पर्वत पर ले जाएँ और तेरे निवास स्थानों तक पहुँचाएँ। <sup>4</sup> तब मैं परमेश्वर की बेदी

# भजन संहिता

के पास जाऊँगा, अपने अत्यधिक आनंद के परमेश्वर  
के पास, और मैं वीरा पर तेरा गुणगान करूँगा, हे  
परमेश्वर, मेरे परमेश्वर।

<sup>५</sup> हे मेरी आमा, तू क्यों निराश है और तू मुझमें क्यों  
व्याकुल है परमेश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर से  
उसकी सुती करूँगा उसके उपस्थिति की सहायता  
के लिए मेरे परमेश्वर।

## 44

संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का  
मस्किल।

<sup>१</sup> हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना है हमारे  
पिताओं ने हमें बताया है वह कार्य जो आपने उनके  
दिनों में किया, प्राचीन दिनों में<sup>२</sup> आपने अपने हाथ से  
जातियों को बाहर निकाला, फिर आपने उन्हें बसाया,  
आपने लोगों को कष्ट दिया, फिर आपने उन्हें खतंत्र  
कर दिया।<sup>३</sup> क्योंकि अपनी तलवार से उन्होंने भूमि को  
प्राप्त नहीं किया, और न ही उनकी भुजा ने उन्हें  
बचाया, परन्तु आपका दाहिना हाथ और आपकी भुजा  
और आपके उपस्थिति का प्रकाश, क्योंकि आपने उन्हें  
अनुग्रह किया।

<sup>४</sup> आप मेरे राजा हैं हे परमेश्वर, याकूब के लिए विजय  
की आज्ञा दो।<sup>५</sup> आपके द्वारा हम अपने शत्रुओं को  
पीछे धकेलेंगे, आपके नाम के द्वारा हम उन पर चढ़ाइ  
करेंगे जो हमारे विरुद्ध उठते हैं।<sup>६</sup> क्योंकि मैं अपनी  
धनुष पर भरोसा नहीं करूँगा, और न ही मेरी तलवार  
मुझे बचाएगी।<sup>७</sup> परन्तु आपने हमें हमारे शत्रुओं से  
बचाया है, और आपने हमारे धूणा करने वालों को  
लजित किया है।<sup>८</sup> परमेश्वर में हम दिन भर धमंड  
करते हैं, और हम आपके नाम का सदा धन्यवाद  
करेंगे। सेला

<sup>९</sup> फिर भी आपने हमें अपवीकार किया और अपमानित  
किया, और हमारी सेनाओं के साथ बाहर नहीं जाते।

<sup>१०</sup> आप हमें शत्रु से पीछे हटने के लिए मजबूर करते  
हैं, और जो हमसे धूणा करते हैं उन्होंने हमारे सामान  
को लूट लिया है।<sup>११</sup> आप हमें खाने के लिए भेड़ों की  
तरह सौंप देते हैं, और हमें जातियों में बिखरे दिया है।

<sup>१२</sup> आप अपने लोगों को सस्ते में बेचते हैं, और उनकी  
बिक्री से लाभ नहीं उठाया है।

<sup>१३</sup> आप हमें हमारे पड़ोसियों के लिए अपमान का  
कारण बनाते हैं, हमारे चारों ओर के लोगों के लिए  
उपहास और तिरस्कार का।<sup>१४</sup> आप हमें जातियों में  
एक कहावत बनाते हैं लोगों के बीच हंसी का पात्र।<sup>१५</sup>  
दिन भर मेरी अपमान मेरे सामने है, और मैं अपनी  
लज्जा से ढका हूँ।<sup>१६</sup> उस व्यक्ति की आवाज के  
कारण जो ताना मारता और निंदा करता है, शत्रु और  
प्रतिशोधी के कारण।

<sup>१७</sup> यह सब हम पर आया है, परन्तु हमने आपको नहीं  
भुलाया है, और हमने आपकी वाचा के साथ  
विश्वासघात नहीं किया है।<sup>१८</sup> हमारा हृदय पीछे नहीं  
हटा है, और हमारे कदम आपकी राह से नहीं हटे हैं।  
<sup>१९</sup> फिर भी आपने हमें गीदड़ों के स्थान पर कुचल  
दिया है, और हमें गहरे अंधकार से ढक दिया है।

<sup>२०</sup> यदि हम अपने परमेश्वर के नाम को भूल गए होते  
या किसी पराए देवता की ओर अपने हाथ बढ़ाए होते,

<sup>२१</sup> क्या परमेश्वर इसे नहीं जानता? क्योंकि वह हृदय के  
रहस्यों को जानता है।<sup>२२</sup> परन्तु आपके कारण हम  
दिन भर मारे जाते हैं, हमें वध के लिए भेड़ों के समान  
गिना जाता है।

<sup>२३</sup> जागो, हे प्रभु आप क्यों सोते हैं? उठो, हमें सदा के  
लिए अस्तीकार न करो।<sup>२४</sup> आप अपना मुख क्यों  
छिपाते हैं और हमारे क्लेश और उत्पीड़न को भूल  
जाते हैं?

<sup>२५</sup> क्योंकि हमारी आमा धूल में गिर गई है, हमारे  
शरीर पुर्वी से चिपके कुए हैं।<sup>२६</sup> उठो, हमारी सहायता  
करो, और अपनी दया के कारण हमें छुड़ाओ।

## 45

संगीत निर्देशक के लिए; शोशान्त्रिम के अनुसार।  
कोरह के पुत्रों का एक मस्किल। प्रेम का एक गीत।

<sup>१</sup> मेरा हृदय एक अच्छे विषय से प्रेरित है, मैं अपने पद्ध  
राजा को समर्पित करता हूँ, मेरी जीम एक कुशल  
लेखक की कलम है।

<sup>२</sup> आप मानवजाति के पुत्रों में सबसे सुंदर हैं, आपके  
होठों पर अनुग्रह उड़ेला गया है, इसलिए परमेश्वर ने  
आपको सदा के लिए आशीर्वद दिया है।

# भजन संहिता

<sup>३</sup> अपनी जांध पर अपनी तलवार बांधो, हे शक्तिशाली,  
अपनी शोभा और महिमा में<sup>४</sup> और अपनी महिमा में  
विजयी होकर सवारी करो, सत्य, विनग्रता और धर्म के  
कारण् तुम्हारा दाहिना हाथ तुहं अद्भुत बारें  
सिखाए।<sup>५</sup> आपके तीर तीक्ष्ण हैं लोग आपके अधीन  
गिरते हैं, आपके तीर राजा के शुश्रुओं के हृदय में हैं।<sup>६</sup>  
आपका सिंहासन, हे परमेश्वर, सदा और सदा के लिए  
है, आपके राज्य का राजदंड न्याय का राजदंड है।<sup>७</sup>  
आपने धर्म से प्रेम किया और अधर्म से धृणा की;  
इसलिए परमेश्वर, आपका परमेश्वर, ने आपको

अभिषेक किया है आपके साथियों से ऊपर आनंद के  
तेल से।<sup>८</sup> आपके सभी वस्त गंधरव, एलो और  
कासिया से सुर्खित हैं हाथी दांत के महलों से तार  
वाले वायरंपत्रों ने आपको आनंदित किया है।<sup>९</sup> राजाओं  
की पुत्रियाँ आपकी कुलीन महिलाओं में हैं, आपके  
दाहिने हाथ पर ओफिर के सोने से रानी खड़ी हैं।

<sup>10</sup> सुनो, बेटों, देखो और अपना कान लगाओ! अपने  
लोगों और अपने पिता के घर को भूल जाओ;<sup>११</sup> तब  
राजा आपकी सुंदरता की इच्छा करेगा। क्योंकि वह  
आपका प्रभु है उसके आगे झुको।<sup>१२</sup> टायर की पुत्री  
एक उपहार के साथ आएगी, लोगों में धनी आपके  
अनुग्रह की खोज करेगी।<sup>१३</sup> राजा की पुत्री भीतर से  
पूरी तरह से गौरवशाली है उसके वस्त लोगों से बुने  
हुए हैं।<sup>१४</sup> वह रंगीन वस्तों में राजा के पास लाई  
जाएगी, कुंवारी उसकी संगिनियाँ जो उसका अनुसरण  
करती हैं, आपके पास लाई जाएँगी।<sup>१५</sup> वे आनंद और  
उल्लास के साथ लाई जाएँगी, वे राजा के महल में  
प्रवेश करेंगी।

<sup>16</sup> आपके पिताओं के स्थान पर आपके पुत्र होंगे, आप  
उन्हें पृथ्वी के सभी राजकुमार बनाएँगे।

<sup>17</sup> मैं आपके नाम को सभी पीढ़ियों में स्मरणीय  
बनाऊँगा, इसलिए लोग आपको सदा और सदा के  
लिए स्तुति करेंगे।

## 46

संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का भजन,  
आलामीत पर। एक गीत।

<sup>१</sup> परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है संकट में  
अति सहज सहायता।<sup>२</sup> इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे  
पृथ्वी हिल जाए और पहाड़ समुद्र के हृदय में गिरे

<sup>३</sup> चाहे उसके जल गरजे और फैन उठाएं चाहे  
पहाड़ उसकी गर्जना से कायें। सेला

<sup>४</sup> एक नदी है जिसकी धाराएँ परमेश्वर के नगर को  
आनंदित करती हैं, परमप्रधान के पवित्र निवास स्थान।<sup>५</sup>  
परमेश्वर उसके बीच में है, वह नहीं हिलेगी परमेश्वर  
भीर होते ही उसकी सहायता करेगा।<sup>६</sup> जातियाँ हल्ला  
मचाती हैं राज्य डगमगाते हैं, उसने अपनी वाणी  
उठाई पृथ्वी कांप उठायी।

<sup>७</sup> सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है, याकूब का परमेश्वर  
हमारा दृढ़ गढ़ है। सेला

<sup>८</sup> आओ, यहोवा के कार्यों को देखो, जिसने पृथ्वी पर  
भयानक घटनाएँ की हैं।<sup>९</sup> वह युद्धों को पृथ्वी के अंत  
तक समाप्त करता है, वह ध्युष को तोड़ता है और  
भाले को दो दुकड़े करता है, वह रथों को आग से  
जलाता है।<sup>१०</sup> <sup>११</sup> संघर्ष करना बंद करो और जानो कि मैं  
परमेश्वर हूँ, मैं जातियों के बीच महान किया जाऊँगा,  
मैं पृथ्वी पर महान किया जाऊँगा।

<sup>११</sup> सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है, याकूब का  
परमेश्वर हमारा दृढ़ गढ़ है। सेला

## 47

संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का भजन।

<sup>१</sup> हे सभी लोगों, ताली बजाओ, परमेश्वर के लिए आनंद  
की ध्वनि के साथ जयकार करो।

<sup>२</sup> क्योंकि परमप्रधान यहोवा भय योग्य है, वह सारी  
पृथ्वी का महान राजा है।<sup>३</sup> वह लोगों को हमारे अधीन  
कर देता है और जातियों को हमारे पैरों के नीचे।<sup>४</sup> वह  
हमारे लिए हमारी विरासत ढुनता है, याकूब का गौरव  
जिसे वह प्रेम करता है। सेला

<sup>५</sup> परमेश्वर जयकार के साथ ऊपर चढ़ा है, यहोवा  
तुरही की ध्वनि के साथ।<sup>६</sup> परमेश्वर की स्तुति करो,  
स्तुति करो, हमारे राजा की स्तुति करो, स्तुति करो।<sup>७</sup>  
क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का राजा है, बुद्धि के भजन  
के साथ स्तुति करो।

<sup>८</sup> परमेश्वर जातियों पर शासन करता है, परमेश्वर अपने  
पवित्र सिंहासन पर बैठता है।<sup>९</sup> लोगों के राजकुमार  
इकट्ठे हुए हैं अब्राहम के परमेश्वर के लोगों के रूप में,

# भजन संहिता

क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर की हैं वह अत्यधिक महिमान्वित है।

## 48

### एक गीत; कोरह के पुत्रों का भजन।

<sup>1</sup> यहोवा महान है, और हमारे परमेश्वर के नगर में उसके पवित्र पर्वत पर अत्यंत स्तुति के योग्य है।

<sup>2</sup> ऊँचाई में सुंदर सारी पृथ्वी का आनंद, सुदूर उत्तर में सिय्योन पर्वत है, महान राजा का नगर।<sup>3</sup> उसके महलों में परमेश्वर ने अपने आप को एक गढ़ के रूप में प्रकट किया है।

<sup>4</sup> क्योंकि देखो, राजा आए वे एक साथ वहाँ से गुजरे।

<sup>5</sup> उठोने इसे देखो, और वे चकित हो गए, वे भयभीत हों गए वे जल्दी में भाग गए।<sup>6</sup> वहाँ उर्हे घबराहट ने पकड़ लिया, प्रसरण पीड़ा की तरह।<sup>7</sup> पूर्वी हवा के साथ तू तर्शीश के जहाजों को तोड़ देता है।

<sup>8</sup> जैसे हमने सुना था, वैसे ही हमने देखा है सेनाओं के यहोवा के नगर में, हमारे परमेश्वर के नगर में, परमेश्वर उसे सदा के लिए स्थापित करेगा। सेला

<sup>9</sup> हमने तेरी दया पर विचार किया है, हे परमेश्वर, तेरे मंदिर के बीच में।<sup>10</sup> जैसा तेरा नाम है, हे परमेश्वर वैसी ही तेरी स्तुति पृथ्वी के छोर तक है, तेरा दाखिना हाथ धर्म से भरा है।<sup>11</sup> सिय्योन पर्वत आनंदित होगा, यहूदा की पुत्रियाँ आनंदित होंगी तेरे न्यायों के कारण।

<sup>12</sup> सिय्योन के चारों ओर घूमों और उसे धेर लों उसके युमर्टों को गिरो।<sup>13</sup> उसकी प्राचीरों पर विचार करो, उसके महलों से होकर जाओ, ताकि तुम इसे आगली पीढ़ी को बता सको।<sup>14</sup> क्योंकि ऐसा ही परमेश्वर है, हमारा परमेश्वर सदा और सदा के लिए वह हमें मृत्यु तक ले चलेगा।

## 49

### संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का एक भजन।

<sup>1</sup> हे सब लोगों, इसे सुनो, हे संसार के सब निवासियों, ध्यान दो, <sup>2</sup> चाहे नीच हों या उच्च, धनी और गरीब सब मिलकर।<sup>3</sup> मेरा मुँह बुद्धि की बातें करेगा, और मेरे

हृदय का ध्यान समझ की बातें करेगा।<sup>4</sup> मैं अपनी कानों को एक कहावत की ओर झुकाऊँगा, मैं अपनी पहेली को बीणा पर व्यक्त करूँगा।

<sup>5</sup> विपुति के दिनों में मैं क्यों डरूँ, जब मेरे शत्रुओं का दोष मुझे धेरे रहता है<sup>6</sup> जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा करते हैं और अपनी धन-समृद्धि पर धमण्ड करते हैं?<sup>7</sup> कोई भी किसी भी तरह से दूसरे को छुड़ा नहीं सकता, और न ही उसके लिए परमेश्वर को फिरती दे सकता है<sup>8</sup> क्योंकि उसकी आत्मा का उद्धार अनमोल है, और उसे सदा के लिए इसे सोचना बंद कर देना चाहिए।<sup>9</sup> ताकि वह सदा जीवित रहे, और सड़न न देखे।<sup>10</sup> क्योंकि वह देखता है कि बुद्धिमान भी मर जाते हैं, मूर्ख और अज्ञानी समान रूप से नष्ट हो जाते हैं और अपनी सम्पत्ति दूसरों को छोड़ जाते हैं।<sup>11</sup> उनका आंतरिक विचार है कि उनके घर सदा के लिए हैं और उनकी निवास स्थल पीढ़ी दर पीढ़ी, उन्होंने अपनी भूमि को अपने नामों से नामित किया है।

<sup>12</sup> लैकिन मनुष्य अपनी शोभा में स्थिर नहीं रहेगा, वह उन पशुओं के समान है जो नष्ट हो जाते हैं।

<sup>13</sup> यह उन लोगों का मार्ग है जो मूर्ख हैं, और उनके बाद जो उनके शब्दों को स्वीकार करते हैं। सेला<sup>14</sup> भेड़ों की तरह वे शिशोल में गिर जाते हैं, मृत्यु उनका चरवाहा होगी, और सीधे लोग सुबह में उन पर शासन करंगे, और उनका रूप शिशोल के लिए होगा ताकि उनके पास कोई ऊँचा घर न हो।<sup>15</sup> लैकिन परमेश्वर मेरी आत्मा को शिशोल की शक्ति से छुड़ाएगा, क्योंकि वह मुझे ग्रहण करेगा। सेला<sup>16</sup> जब कोई व्यक्ति धनी हो जाता है तो मत डरना, जब उसके घर की शोभा बढ़ती है।<sup>17</sup> क्योंकि जब वह मरता है, तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उसकी सम्पत्ति उसके पीछे नहीं जाएगी।<sup>18</sup> यद्यपि जब वह जीवित रहता है तो वह स्वयं की प्रशंसा करता है— और यद्यपि लोग आपकी प्रशंसा करते हैं जब आप अपने लिए अच्छा करते हैं—<sup>19</sup> वह अपने पूर्वजों की पीढ़ी में जाएगा, वे कभी प्रकाश नहीं देखेंगे।

<sup>20</sup> मनुष्य, अपनी शोभा में फिर भी बिना समझ के, उन पशुओं के समान है जो नष्ट हो जाते हैं।

## 50

### आसाप का एक भजन।

# भजन संहिता

<sup>1</sup> शक्तिमान् परमेश्वर् यहोवा ने कहा है, और पृथ्वी को बुलाया है, सूर्य के उदय से लेकर उसके अस्त होने तक।<sup>2</sup> सियोन से, जो सौदर्य की पूर्णता है, परमेश्वर ने चमक दिखाई है।<sup>3</sup> हमारा परमेश्वर आए और मौन न रहे, उसके आगे आग भस्म करती है, और उसके चारों ओर एक प्रबंध अंधी चल रही है।<sup>4</sup> वह आकाश को ऊपर बुलाता है, और पृथ्वी को कि वह अपनी प्रजा का न्याय करे<sup>5</sup> मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होने बलिदान के द्वारा मुझसे वाचा बाधी है।<sup>6</sup> और आकाश उसकी धार्मिकता की घोषणा करते हैं, क्योंकि परमेश्वर स्वयं न्यायी है। सेलाह

<sup>7</sup> “सुनो, मेरी प्रजा, और मैं बोलूँगा, इसाएल, मैं तुम्हारे विरुद्ध साक्षी द्वाग़, मैं परमेश्वर हूँ, तुम्हारा परमेश्वर।<sup>8</sup> मैं तुम्हें तुम्हारे बलिदानों के लिए नहीं डांटता, और तुम्हारे होमबलि निरंतर मेरे सामने हैं।<sup>9</sup> मैं तुम्हारे घर से बैल नहीं लूंगा, न ही तुम्हारे बाड़े से बकरों को।<sup>10</sup> क्योंकि जंगल के हर पशु मेरे हैं, हजारों पहाड़ियों पर चरने वाले पशु।<sup>11</sup> मैं पहाड़ों के हर पक्षी को जानता हूँ, और मैदान में जो कुछ चलता है वह मेरा है।<sup>12</sup> यदि मैं भूखा होता तो मैं तुमसे नहीं कहता, क्योंकि संसार मेरा है, और जो कुछ उसमें है।<sup>13</sup> क्या मैं बैलों का मांस खाऊं या बकरों का खून पीऊं?

<sup>14</sup> परमेश्वर को धन्यवाद का बलिदान चढ़ाओ और परमप्रधान को अपनी मत्रते पूरी करो।<sup>15</sup> संकट के दिन मुझसे प्रार्थना करो, मैं तुम्हें बचाऊंगा, और तुम मेरी महिमा करोगे।

<sup>16</sup> परंतु दुष्टों से परमेश्वर कहता है,

“तुम्हें मेरे विधियों की चर्चा करने का क्या अधिकार है और मेरे वाचा को अपने मुंह में लेने का? <sup>17</sup> क्योंकि तुम स्वयं अनुसासन से छूणा करते हो, और मेरे वचनों को अपने पीछे फेंक देते हो।<sup>18</sup> जब तुम चोर को देखते हों तो उसके साथ मित्रता करते हो, और व्यधिचारियों के साथ संगति करते हो।<sup>19</sup> तुम अपनी जीभ को बुराई में ढीला छोड़ देते हो, और तुम्हारी जीभ धोखे को बांधती है।<sup>20</sup> तुम बैठकर अपने भाई के विरुद्ध बोलते हों तुम अपनी ही माता के पुत्र की निदा करते हो।<sup>21</sup> ये बातें तुमने कीं और मैं मौन रहा, तुमने सोचा कि मैं तुम्हारे जैसा ही हूँ, मैं तुम्हें डांटूँगा और तुम्हारे सामने मामला पेश करूँगा।

<sup>22</sup> अब इसे ध्यान में रखो, तुम जो परमेश्वर को भूल जाते हो, नहीं तो मैं तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दूँगा, और

तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।<sup>23</sup> जो धन्यवाद का बलिदान चढ़ाता है वह मेरी महिमा करता है, और जो अपनी राह सही करता है, उसे मैं परमेश्वर का उद्धार दिखाऊंगा।”

## 51

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन, जब नवी नातान उसके पास आए, उसके बाद जब वह बतशेबा के पास गया था।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, अपनी दया के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर, अपनी करुणा की महानता के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।<sup>2</sup> मुझे मेरी दीप से पूरी तरह थो दे और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर।

<sup>3</sup> क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरंतर मेरे सामने है।<sup>4</sup> मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है और तेरी दृष्टि में बुरा किया है, ताकि जब तू जोले तो तू धर्मी ठहरे और जब तू न्याय करे तो निर्दोष ठहरे।<sup>5</sup> देख, मैं दोष में उत्पन्न हुआ था और पाप में मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया।<sup>6</sup> देख, तू अंतरिक सत्य की इच्छा करता है, और गुप्त में तू मुझे जान सिखाएगा।

<sup>7</sup> मुझे जूफा से शुद्ध कर, और मैं स्वच्छ हो जाऊँगा, मुझे थो, और मैं बर्फ से भी अधिक उज्ज्वल हो जाऊँगा।<sup>8</sup> मुझे आनंद और प्रसन्नता सुनने दे, जिन हड्डियों को तूने तोड़ा है वे आनंदित हों।<sup>9</sup> मेरे पापों से अपना सुख छिपा ले और मेरे सभी दोषों को मिटा दे।

<sup>10</sup> हे परमेश्वर, मुझमें एक शुद्ध हृदय बना, और मुझमें एक दृढ़ आत्मा को नवीनीकृत करा।<sup>11</sup> मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न कर, और अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे न ले।<sup>12</sup> मुझे अपनी उद्धार की सुखी लौटाए और मुझे एक इच्छुक आत्मा के साथ बनाए रख।

<sup>13</sup> तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊँगा, और यापी तेरी ओर लौट आएँगे।<sup>14</sup> रक्तपात के दोष से मुझे बचा हे परमेश्वर, मेरे उद्धार के परमेश्वर, तब मेरी जीभ तेरी धार्मिकता का आनंद से गान करोगी।<sup>15</sup> हे प्रभु, मेरे होंठे खोल, ताकि मेरा मुँह तेरी सुन्ति का प्रचार कर सके।<sup>16</sup> क्योंकि तू बलिदान में प्रसन्न नहीं होता, अन्यथा मैं इसे देता, तू होमबलि में प्रसन्न नहीं होता।<sup>17</sup> परमेश्वर के बलिदान एक टूटे हुए आत्मा हैं।

## भजन संहिता

एक टूटा और पश्चातापी हृदय, हे परमेश्वर, तू तुच्छ नहीं करेगा।

<sup>18</sup> अपनी कृपा से सिय्योन के लिए भला कर्  
यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करा।<sup>19</sup> तब तू धर्मी  
बलिदानों में प्रसन्न होगा, होमबलि और संपूर्ण होमबलि  
में तब तेरी रेती पर बैल ढाँग जाएँगा।

## 52

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक मस्किल,  
जब एदोमी दोषा ने आकर शाऊल को बताया,  
और उससे कहा, "दाऊद अहिमेलक के घर आया  
है।"

<sup>1</sup> हे शक्तिशाली मनुष्य, तू बुराई में क्यों धमंड करता  
है? परमेश्वर की विश्वासयोग्यता दिन भर बनी रहती है।  
<sup>2</sup> तेरी जीम विनाश की योजना बनाती है, जैसे एक तेज  
उत्सर्ग तू छल का काम करने वाला है।<sup>3</sup> तू बुराई को  
भलाई से अधिक प्रेम करता है, इूठ को सही बोलने से  
अधिक। सेला<sup>4</sup> तू उन सभी शब्दों को प्रेम करता है  
जो निगल जाते हैं, तू छलपूर्ण जीभ।

<sup>5</sup> परन्तु परमेश्वर तुझे सदा के लिए तोड़ देगा, वह तुझे  
उठाकर तेरे तम्बू से बाहर फेंक देगा, और तुझे  
जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा। सेला<sup>6</sup> धर्मी देखेंगे  
और डरेंगे, और वे उस पर हँसेंगे, कहते हुए,<sup>7</sup> "देखो,  
वह मनुष्य जिसने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं  
बनाया, परन्तु अपनी सम्पत्ति की प्रवृत्ता पर भरोसा  
किया, और अपनी ही विनाश में शरण ली।"

<sup>8</sup> परन्तु जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं परमेश्वर के घर में  
हरे जैतन के पैढ़ के समान हूँ, मैं सदा और सदा के  
लिए परमेश्वर की विश्वासयोग्यता में भरोसा करता हूँ।<sup>9</sup>  
मैं तुझे सदा के लिए स्तुति करूँगा, क्योंकि तूने यह  
किया है, और मैं तेरे नाम की प्रतीक्षा करूँगा, क्योंकि  
यह अच्छा है, तेरे भक्तों की उपस्थिति में।

## 53

संगीत निर्देशक के लिए; महलत के अनुसार।  
दाऊद का मस्किल।

<sup>1</sup> मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर नहीं है।"  
वे भ्रष्ट हो गए हैं और धृषित अन्याय किया है, कोई भी  
भला नहीं करता।

<sup>2</sup> परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों के पुत्रों पर दृष्टि डाली है  
यह देखने के लिए कि क्या कोई समझदार है, जो  
परमेश्वर की खोज करता है।<sup>3</sup> उनमें से हर एक ने मुँह  
मोड़ लिया है, वे सब मिलकर भ्रष्ट हो गए हैं, कोई भी  
भला नहीं करता, एक भी नहीं।

<sup>4</sup> क्या अन्याय के कर्मियों को कोई जान नहीं है, जो  
मेरी प्रजा को इस प्रकार खाते हैं जैसे रोटी खाते हैं,  
और जिन्होंने परमेश्वर को नहीं युकारा?<sup>5</sup> वे वहाँ बहुत  
ठर में थे, जहाँ कोई ठर नहीं था, क्योंकि परमेश्वर ने  
उनके हाजियों को बिखेर दिया जो आपके लिए उपकार  
डेरा डाले दुए थे, आपने उन्हें लजित किया, क्योंकि  
परमेश्वर ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था।

<sup>6</sup> आह, कि इसाएल की मुक्ति सिय्योन से आए। जब  
परमेश्वर अपनी प्रजा की संपत्ति को पुनःस्थापित  
करेगा, याकूब आनंदित होगा, इसाएल प्रसान होगा।

## 54

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाद्ययंत्रों पर।  
दाऊद का एक मस्किल, जब जीफियों ने आकर  
शाऊल से कहा, "क्या दाऊद हमारे बीच छिपा नहीं  
है?"

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, अपने नाम से मुझे बचा, और अपनी  
शक्ति से मेरा न्याय कर।<sup>2</sup> हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना  
सुन, मेरे मुख के वरनों को सुन।

<sup>3</sup> क्योंकि अजनबी मेरे तिरुद्ध उठ सख्ते हुए हैं, और  
हिस्क लोग मेरे प्राण के खाजी हैं, उन्होंने परमेश्वर को  
अपने सामने नहीं रखा। सेला

<sup>4</sup> देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है, प्रभु मेरी आत्मा का  
सहारा है।

<sup>5</sup> वह मेरी शत्रुओं को बुराई का प्रतिफल देगा, अपनी  
विश्वासयोग्यता में उन्हें नष्ट करा।

<sup>6</sup> मैं खेच्छा से तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा, हे प्रभु, मैं तेरे  
नाम की स्तुति करूँगा, क्योंकि यह अच्छा है।<sup>7</sup> क्योंकि  
उसने मुझे सब संकटों से बचाया है, और मेरी आँख ने  
मेरे शत्रुओं पर संतोषपूर्वक दृष्टि डाली है।

## 55

# भजन संहिता

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाच्य यंत्रों पर।  
दाऊद का एक मस्किल।

<sup>1</sup> मेरी प्रार्थना सुन, हे परमेश्वर, और मेरी विनती से अपने आप को न छिपा। <sup>2</sup> मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर के मैं अपनी शिकायत में बेचैन हूँ और अत्यधिक विचलित हूँ, <sup>3</sup> शृङ्खला की आवाज़ के कारण, दुष्टों के दबाव के कारण, क्योंकि वे मुझ पर संकट लाते हैं और क्रोध में मुझसे द्वेष रखते हैं।

<sup>4</sup> मेरा हृदय मेरे भीतर व्याकुल है, और मृत्यु के भय मुझ पर आ पड़े हैं। <sup>5</sup> भय और कांपना मुझ पर आ पड़ा है, और भयावहता ने मुझे अभिभूत कर दिया है। <sup>6</sup> मैंने कहा, “अहा, यदि मेरे पास कबूतर के समान पंख होती तो मैं उड़कर विश्राम पाता।” देखो, मैं दूर भाग जाता, और जंगल में रात बिताता। सेलाह! <sup>7</sup> मैं तृफानी हवा और भारी अधीं से बचने के लिए अपने शरण स्थान की ओर जल्दी करता।”

<sup>8</sup> उठें धृष्टिकर, हे प्रभु, उनकी भाषाओं को विभाजित कर, क्योंकि मैंने नगर में हिंसा और कलह देखी है। <sup>9</sup> दिन और रात वे उसकी दीवारों पर घूमते रहते हैं, और उसके बीच में बुराई और हानि है। <sup>10</sup> उसके बीच में विनाश है, उत्तीर्ण और धोखा उसकी सड़कों से नहीं हटते।

<sup>12</sup> क्योंकि वह कोई शत्रु नहीं है जो मुझे ताना देता है, तब मैं सह सकता था, न वह कोई है जो मुझसे धृणा करता है जिसने अपने को मेरे विरुद्ध ऊँचा किया है, तब मैं उससे छिप सकता था। <sup>13</sup> परन्तु यह तुम हो, एक व्यक्ति जो मेरा समान है, मेरा साथी और मेरा विश्वासपात्र। <sup>14</sup> हम जो साथ में मधुर संगति करते हैं, इश्वर के घर में भीड़ के बीच चलते हैं।

<sup>15</sup> मृत्यु छल से उन पर आ पड़े, वे जीवित शिंओल में उत्तर जाएं, क्योंकि उनके निवास में उनके बीच में बुराई है।

<sup>16</sup> जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं परमेश्वर को पुकारूँगा, और प्रभु मुझे बचाएगा। <sup>17</sup> संध्या और प्रातः और दोपहर को, मैं शिकायत और विलाप करूँगा, और वह मेरी आवाज सुनेगा। <sup>18</sup> वह मुझे शानी में छुड़ाएगा मेरे विरुद्ध युद्ध से, क्योंकि वे बहुत हैं जो मुझ पर आक्रमक हैं। <sup>19</sup> परमेश्वर सुनेगा और उठें अपमानित करेगा— यहाँ तक कि वह जो प्राचीन काल से

सिंहासन पर बैठा है— क्योंकि वे नहीं बदलते, और परमेश्वर से नहीं डरते।

<sup>20</sup> उसने उनके विरुद्ध अपने हाथ बढ़ाए हैं जो उसके साथ शांति में थे, उसने अपनी वाचा का उल्लंघन किया है। <sup>21</sup> उसकी वाची मक्खन से भी चिकिता थी, परन्तु उसका हृदय युद्ध था, उसके वचन तेल से भी कोमल थे, किर मी वे खींची हुई तलवारे थीं।

<sup>22</sup> अपना बोझ प्रभु पर डाल दे और वह तुझे संभालेगा, वह धृणियों को कभी भी हिलने नहीं देगा। <sup>23</sup> परन्तु तू हे परमेश्वर, उठें विनाश के गड्ढे में उतार देगा, रक्तपात और धोखे के लोग अपने आधे दिन भी नहीं जींगे। परन्तु मैं तुझ पर विश्वास रखूँगा।

## 56

संगीत निर्देशक के लिए; योनाथ एलेम रहोकीम के अनुसार। दाऊद का एक मिख्ताम, जब पलिशितयों ने उसे गत में पकड़ लिया था।

<sup>1</sup> मुझ पर कृपा कर, हे परमेश्वर, क्योंकि एक मनुष्य ने मुझे कुचल दिया है, वह दिन भर मुझसे लड़ता है और मुझे दबाता है। <sup>2</sup> मेरे शत्रुओं ने दिन भर मुझे कुचल दिया है, क्योंकि वे बहुत से हैं जो गर्व से मेरे खिलाफ लड़ते हैं।

<sup>3</sup> जब मैं डरता हूँ तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा। <sup>4</sup> परमेश्वर मैं जिसका वचन मैं स्वति करता हूँ, परमेश्वर मैं मैंने अपना भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा। साधारण मनुष्य मेरे साथ क्या कर सकते हैं?

<sup>5</sup> दिन भर वे मेरे शब्दों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, उनके सभी विचार मेरे खिलाफ बुराई के लिए हैं। <sup>6</sup> वे हमला करते हैं, वे घात लगाते हैं, वे मेरे कदमों को देखते हैं, जैसे उहोंने मेरी जान लेने के लिए इंतजार किया है। <sup>7</sup> उनकी दुष्टा के कारण, क्या उनके लिए कोई बच निकलने का मार्ग होगा? क्रोध में लोगों को गिरा दे, हे परमेश्वर।

<sup>8</sup> दूने मेरी पीड़ाओं का हिसाब रखा है, मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रखा। क्या वे तेरी पुस्तक में नहीं हैं? तब मेरे शत्रु उस दिन पीछे हट जाएंगे जब मैं पुकारूँगा, यह मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मेरे लिए है।

## भजन संहिता

<sup>१०</sup> परमेश्वर में जिसका वचन मैं स्तुति करता हूँ प्रभु मैं  
जिसका वचन मैं स्तुति करता हूँ<sup>११</sup> परमेश्वर मैं मैंने  
अपना भरोसा रखा है मैं नहीं डरूंगा। मनुष्य मेरे साथ  
क्या कर सकते हैं?

<sup>१२</sup> तेरी प्रतिज्ञाएँ मुझ पर बधी हुई हैं हे परमेश्वर मैं तुझे  
ध्यवाद के बलिदान चढ़ाऊंगा।<sup>१३</sup> क्योंकि तूने मेरी  
आमा को मृत्यु से बचाया है वास्तव मैं मेरे पाँव को  
ठोकर खाने से ताकि मैं परमेश्वर के सामने चल सकूँ  
जीवितों के प्रकाश में।

## 57

संगीत निर्देशक के लिए; अल-तशेष पर सेट।  
दाऊद का मिख्ताम, जब वह शाऊल से गुफा में  
भागा।

<sup>१</sup> मुझ पर अनुग्रह कर हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह  
कर क्योंकि मेरी आमा तुझ में शरण लेती है और तेरे  
पंखों की छाया मैं मैं शरण लूंगा जब तक विनाश पार  
नहीं हो जाता।

<sup>२</sup> मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा। उस परमेश्वर  
को जो मेरे लिए सब कुछ पूरा करता है।<sup>३</sup> वह स्वर्ग में  
भेजाया और मुझे बचाएगा, वह उसे डांटा है जो मुझ  
पर आक्रमण करता है। परमेश्वर अपनी कृपा और  
अपनी सच्चाई भेजेगा।

<sup>४</sup> मेरी आमा सिंहों के बीच है मुझे उन लोगों के बीच  
लेटा पड़ता है जो निगल जाते हैं मानव जाति के पुत्रों  
के बीच जिनके दांत भाले और तीर हैं और उनकी  
जीभ एक तीखी तलवार है।

<sup>५</sup> हे परमेश्वर, आकाश से ऊपर उठे रहो तेरी महिमा  
सारी पृथ्वी से ऊपर हो।

<sup>०</sup> उहोंने मेरे कदमों के लिए जाल बिछाया है मेरी  
आमा झुक गई है उहोंने मेरे सामने एक गड्ढा खोदा  
है वे स्वयं उसके बीच में गिर गए हैं। सेला

<sup>७</sup> मेरा हृदय स्थिर है हे परमेश्वर मेरा हृदय स्थिर है मैं  
गाऊंगा हाँ, मैं स्तुति करूंगा<sup>८</sup> जाग, मेरी महिमा।  
जाग, वीरा और सारंगी मैं भोर को जगाऊंगा।

<sup>९</sup> मैं तुझे हे प्रभु लोगों के बीच मैं स्तुति करूंगा, मैं  
राष्ट्रों के बीच तेरा गुणगान करूंगा।<sup>१०</sup> क्योंकि तेरी

दया आकाश तक महान है और तेरी सच्चाई बादलों  
तक।

<sup>११</sup> हे परमेश्वर आकाश से ऊपर उठे रहो तेरी महिमा  
सारी पृथ्वी से ऊपर हो।

## 58

संगीत निर्देशक के लिए; अल-तशेष पर सेट।  
दाऊद का मिख्ताम।

<sup>१</sup> क्या तुम सचमुच धर्म की बात करते हो हे देवताओं  
क्या तुम मनुष्यों के पुत्रों का न्याय निष्पक्षता से करते  
हो? <sup>२</sup> नहीं तुम अपने हृदय में अन्याय का अभ्यास  
करते हो पृथ्वी पर तुम अपने हाथों की हिसाके लिए  
मार्ग साफ करते हो।

<sup>३</sup> दुष्ट गर्भ से ही भटक जाते हैं ये जो झूठ बोलते हैं  
जन्म से ही भटक जाते हैं।<sup>४</sup> उनके पास साँच के विष  
के समान विष है जैसे बहरा नाग जो अपने कान बंद  
कर लेता है <sup>५</sup> ताकि वह मंत्रियों की आवाज़ न सुने, या  
कुशल जादूगर का मंत्र न सुने।

<sup>६</sup> हे परमेश्वर, उनके मुँह में उनके दाँत तोड़ डाल, हे  
प्रभु युवा सिंहों के दाँत तोड़ डाल।<sup>७</sup> वे ऐसे बह जाएं  
जैसे पानी जो बह जाता है जब वह अपने तीर चलाए  
तो वे बिना सिर के तीर बन जाएँ।<sup>८</sup> वे ऐसे हो जाएं जैसे  
घोंसा जो कीचड़ में चलता है जैसे स्त्री का गर्भपात जो  
कभी सूर्य को नहीं देखता।

<sup>९</sup> इससे पहले कि तुम्हारे बर्तन काँटों की आग को  
महसूस करें वह उन्हें बवंडर के साथ उड़ा देगा, हरे  
और जलते हुए दानों की।<sup>१०</sup> धर्मी प्रतिशोध को  
देखकर आनन्दित होगा, वह दुष्टों के रक्त में अपने पैर  
धोएगा।<sup>११</sup> और लोग कहेंगे “निश्चित रूप से धर्मियों के  
लिए एक प्रतिफल है निश्चित रूप से एक परमेश्वर है  
जो पृथ्वी पर न्याय करता है।”

## 59

संगीत निर्देशक के लिए; अल-तशहेथ के अनुसार।  
दाऊद का मिख्ताम, जब शाऊल से पुरुषों को भेजा  
और उन्होंने उसे मारने के लिए घर की निगरानी  
की।

## भजन संहिता

60

संगीत निर्देशक के लिए; शूशन एटुथ के अनुसार।

दाऊद का एक मिख्ताम, सिखाने के लिए; जब उसने अराम-नहरैम और अराम-जोबा से युद्ध किया, और योआब लौटकर नमक की घाटी में एदोम के बारह हजार को मारा।

<sup>1</sup> हे मेरे परमेश्वर, मुझे मेरे शत्रुओं से बचा ले मुझे ऊँचाई पर सुरक्षित स्थान पर रख, उन लोगों से दूर जो मेरे विरुद्ध उठते हैं।<sup>2</sup> मुझे उन लोगों से बचा ले जो अन्याय करते हैं, और मुझे खून बहाने वाले लोगों से बचा ले।

<sup>3</sup> देखो, उहाँने मेरे जीवन के लिए धार लगाई है, उग्र पुरुष मुझ पर आक्रमण करते हैं, न मेरे किसी अपराध के लिए, न मेरे पाप के लिए हे प्रभु<sup>4</sup> मेरे किसी दोष के बिना, वे दौड़ते हैं और मेरे विरुद्ध खड़े होते हैं। अपनी सहायता के लिए जागृत हो, और देखो! <sup>5</sup> हे सेनाओं के परमेश्वर, इसाएल के परमेश्वर, सभी राष्ट्रों को दंड देने के लिए जागृत हो, किसी की विभूतिसंधाती को अनुग्रह न दे जो अन्याय में लिप्त है। सेला

<sup>6</sup> वे संध्या को लौटते हैं, कुत्ते की तरह चिल्लाते हैं, और नगर के चारों ओर घूमते हैं।<sup>7</sup> देखो, वे अपने मुँह से उगलते हैं, उनकी ओरों में तलवारें हैं, क्योंकि वे कहते हैं, "कौन सुनता है?"<sup>8</sup> परन्तु तू हे प्रभु, उन पर हँसता है, तू सभी राष्ट्रों का उपहास करता है।

<sup>9</sup> उसकी शक्ति के कारण मैं तेरा इंतजार करूँगा, क्योंकि परमेश्वर मेरा शरणस्थान है।<sup>10</sup> मेरा परमेश्वर अपनी विभूतिसंधाता में मुझसे मिलेगा, परमेश्वर मुझे मेरे शत्रुओं पर विजय दिलाएगा।

<sup>11</sup> उहाँने मत मार, नहीं तो मेरी प्रजा भूल जाएगी, अपनी शक्ति से उहाँने तिरत-बितर कर, और नीचे गिरा, हे प्रभु, हमारी ढाला।<sup>12</sup> उनके मुँह के पाप और उनके ओरों के शब्दों के कारण, वे अपने अभिमान में फँस जाएँ, और उन साथों और झूठों के कारण जो वे कहते हैं।<sup>13</sup> उहाँ क्रोध में नष्ट कर, उहाँ नष्ट कर ताकि वे और न रहें, ताकि लोग जान सकें कि परमेश्वर याकूब में राज्य करता है, पृथ्वी के छोर तक। सेला

<sup>14</sup> वे संध्या को लौटते हैं, कुत्ते की तरह चिल्लाते हैं, और नगर के चारों ओर घूमते हैं।<sup>15</sup> वे भोजन के लिए भटकते हैं, और यदि संतुष्ट नहीं होते तो बड़बड़ते हैं।<sup>16</sup> परन्तु मैं तेरी शक्ति का गीत गाऊँगा, हाँ, मैं प्रातःकाल में तेरी दया का आनंदपूर्वक गाऊँगा, क्योंकि तू मेरा शरणस्थान रहा है और मेरे संकट के दिन में शरण का स्थान।

<sup>17</sup> मेरी शक्ति, मैं तेरा गुणगान करूँगा, क्योंकि परमेश्वर मेरा शरणस्थान है, वह परमेश्वर जो मुझे दया दिखाता है।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, तूने हमें त्याग दिया है। तूने हमें तोड़ दिया है, तू क्रोधित हआ है, हमें पुनःस्थापित कर।<sup>2</sup> तूने भूमि को हिला दिया है, तूने उसे फ़ाड़ दिया है, इसके दरारों को भर दे, क्योंकि यह डगमगा रही है।<sup>3</sup> तूने अपनी प्रजा को कठिनाई का अनुभव कराया है, तूने हमें ऐसा दाखमधु पिलाया है जो हमें लड़खड़ाता है।<sup>4</sup> तूने उन लोगों को एक ध्वज दिया है जो तुझसे उरते हैं, ताकि वह सत्य के कारण प्रदर्शित हो सके। सेला

<sup>5</sup> ताकि तेरे प्रियजन बचाए जा सकें, अपने दाहिने हाथ से बचा, और हमें उत्तर दो।<sup>6</sup> परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है, "मैं विजय प्राप्त करूँगा, मैं शेकेम को विभाजित करूँगा, और सुक्कोत की घाटी को मारूँगा।"<sup>7</sup> गिलाद मेरा है, और मनश्वे मेरा है, एप्रैम भी मेरे सिर का हेलेमट है, यहूदा मेरी राजदंड है।<sup>8</sup> मोआब मेरा धोने का कटोरा है, मैं एदोम पर अपनी चप्पल केरूँगा, जोर से चिल्लाओ, परिशत, मेरे कारण।"

<sup>9</sup> कौन मुझे गढ़वाले नगर में ले जाएगा? कौन मुझे एदोम तक ले जाएगा?<sup>10</sup> क्या तूने स्वयं हमें त्याग नहीं दिया है, हे परमेश्वर? और क्या तू हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाएगा, हे परमेश्वर?<sup>11</sup> शत्रु के विरुद्ध हमें सहायता दे, क्योंकि मनुष्य द्वारा बचाव व्यर्थ है।<sup>12</sup> परमेश्वर के माध्यम से हम वीरता से कार्य करेंगे, और वही हमारे शत्रुओं को कुचल देगा।

61

संगीत निर्देशक के लिए; एक तार वाले वाद्य यंत्र पर। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मेरी पुकार सुन, हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।

<sup>2</sup> पृथ्वी के छोर से मैं तुझसे उपकारता हूँ जब मेरा हृदय कमज़ोर होता है, मुझे उस बहान की ओर ले चल जो मुझसे ऊँची है।<sup>3</sup> क्योंकि तू मेरे लिए शरणस्थान रहा है, शत्रु के विरुद्ध एक मङ्गबृत गुम्बद।

# भजन संहिता

<sup>४</sup> मुझे सदा के लिए तेरे तम्बू में वास करने दे, मुझे तेरे पंखों की छाया में शरण लेने दे। सेला<sup>५</sup> क्योंकि तूने मेरी प्रतिज्ञाएँ सुनी हैं हे परमेश्वर, तूने मुझे उन लोगों की विरासत दी है जो तेरे नाम का भय मानते हैं।

<sup>६</sup> तू राजा के जीवन को लंबा करेगा, उसके रथों को पीढ़ियों के समान बना देगा।<sup>७</sup> वह सदा परमेश्वर के सामने जीवित रहेगा, दया और सत्य को नियुक्त कर कि वे उसकी रक्षा करें।

<sup>८</sup> इसलिए मैं सदा तेरे नाम की स्तुति गाऊँगा, ताकि मैं प्रतिदिन अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी कर सकूँ।

## 62

संगीत निर्देशक के लिए; यद्धूतून के अनुसार।

दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> मेरी आत्मा केवल परमेश्वर के लिए मौन रहती है; मेरी मुक्ति उसी से आती है।<sup>२</sup> वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी मुक्ति है, मेरा ग़ढ़, मैं बहुत अधिक नहीं डगमगाऊँगा।

<sup>३</sup> तुम कब तक एक व्यक्ति पर हमला करोगे, कि तुम सब उसे मार डालो, जैसे एक झुकी हुई दीवार, जैसे एक डगमगाती बाड़।<sup>४</sup> उन्होंने केवल उसे उसके ऊँचे स्थान से गिराने की योजना बनाई है, वे झुठ में आनंद लेते हैं वे अपने मुँह से अशीर्वद देते हैं, परन्तु भीतर से वे शाप देते हैं। सेला

<sup>५</sup> मेरी आत्मा, केवल परमेश्वर के लिए मौन रहो, क्योंकि मेरी आशा उसी से है।<sup>६</sup> वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी मुक्ति है, मेरा शरणस्थान, मैं नहीं डगमगाऊँगा।<sup>७</sup> मेरी मुक्ति और मेरी महिमा परमेश्वर पर निर्भर है, मेरी शक्ति की चट्टान, मेरा शरणस्थान परमेश्वर में है।<sup>८</sup> सभी समय में उस पर भरोसा रखो, हे लोगों उसके सामने अपने दिलों को उंडेलो, परमेश्वर हमारे लिए एक शरणस्थान है। सेला

<sup>९</sup> निम्न स्तर के लोग केवल सांस हैं, और उच्च स्तर के लोग झुठ हैं, तराजू में वे ऊपर जाते हैं। साथ में वे सांस से भी हल्के हैं।<sup>१०</sup> उत्पीड़न पर भरोसा मत करो, और डैकैती पर व्यर्थ भरोसा मत करो, यदि धन बढ़ता है, तो उस पर अपना दिल मत लगाओ।

<sup>११</sup> परमेश्वर ने एक बार कहा है, मैंने यह दो बार सुना है: कि शक्ति परमेश्वर की है।<sup>१२</sup> और विश्वासयोग्यता आपकी है, प्रभु क्योंकि आप व्यक्ति को उसके काम के अनुसार प्रतिफल देते हैं।

## 63

दाऊद का भजन, जब वह यहूदा के जंगल में था।

<sup>१</sup> हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तेरा ध्यान करूँगा; मेरी आत्मा तेरे लिए ध्यासा है, मेरा शरीर तेरे लिए तरसता है, एक सूखी और धकी हुई भूमि में जहाँ पानी नहीं है।

<sup>२</sup> इस प्रकार मैंने तुझे पवित्र स्थान में देखा है तेरी शक्ति और महिमा को देखने के लिए।<sup>३</sup> क्योंकि तेरा अनुग्रह जीवन से उत्तम है, मेरे होठ तेरा गुण गारंगा।<sup>४</sup> इसलिए जब तक मैं जीवित रहूँगा, तुझे ध्य करूँगा, मैं तेरे नाम में अपने हाथ उठाऊँगा।<sup>५</sup> मेरी आत्मा चिकनाई और चिकनाई से संतुष्ट है, और मेरा मुँह आनन्दित होंठों से स्तुति करता है।

<sup>६</sup> जब मैं अपने विस्तर पर तुझे स्मरण करता हूँ, मैं रात की पहरों में तेरा ध्यान करता हूँ,<sup>७</sup> क्योंकि तू मेरी सहायता रहा है, और तेरे पंखों की छाया में मैं अनन्द से गाता हूँ।<sup>८</sup> मेरी आत्मा तुझसे लिपटी रहती है, तेरा दाहिना हाथ मुझे थामे रहता है।

<sup>९</sup> परन्तु जो मेरे प्राण को नष्ट करने के लिए खोजते हैं वे पृथ्वी की गहराइयों में जाएंगे।<sup>१०</sup> वे तलवार की शक्ति के हवाले कर दिए जाएंगे, वे लोमड़ियों का शिकार बनेंगे।<sup>११</sup> परन्तु राजा परमेश्वर में आनन्द होगा, जो कोई उसके द्वारा शपथ लाता है, वह गर्व करेगा, क्योंकि जो झुठ बोलते हैं उनके मुँह बंद कर दिए जाएंगे।

## 64

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे परमेश्वर, मेरी शिकायत में मेरी आवाज़ सुन, शत्रु के भय से मेरी जान की रक्षा कर।

<sup>२</sup> मुझे कुर्कमियों की गुप्त चर्चा से छिपा ले, अन्याय के कर्मियों की अशांति से बचा लो।<sup>३</sup> जिह्वोंने अपनी जीभ को तलवार की तरह तेज किया है। उन्होंने कड़वे

# भजन संहिता

वचन को अपने तीरों के रूप में लक्षित किया है।<sup>4</sup> निर्दोष पर छिपकर निशाना साधने के लिए अचानक वे उस पर निशाना साधते हैं, और डरते नहीं हैं।

<sup>5</sup> वे अपने लिए एक बुरी योजना को दृढ़ करते हैं, वे गुप्त रूप से जाल बिछाने की बात करते हैं, वे कहते हैं "कौन उहैं देख सकता है?"<sup>6</sup> वे अन्याय की योजना बनाते हैं, कहते हैं "हम एक अच्छी तरह से सोचीं। समझी योजना के साथ तैयार हैं, क्योंकि व्यक्ति का आंतरिक विचार और हृदय गहरे होते हैं।

<sup>7</sup> लेकिन परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा, अचानक वे धायल हो जाएंगे।<sup>8</sup> इसलिए वे उसे ठोकर खिलाएंगे; उनकी अपनी जीभ उनके खिलाफ है, जो भी उन्हें देखेग, वह सिर हिलाएगा।<sup>9</sup> तब सभी लोग डरेंगे, और वे परमेश्वर के कार्य की घोषणा करेंगे, और विचार करेंगे कि उसने क्या किया है।

<sup>10</sup> धर्मी व्यक्ति प्रभु में आनंदित होगा और उसमें शरण लेगा, और सभी सीधे हृदय वाले गर्व करेंगे।

## 65

### संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन। एक गीत।

<sup>1</sup> तेरे सामने मौन रहेगा, और सियोन में स्तुति होगी, हे परमेश्वर, और प्रतिज्ञा तेरे लिए पूरी होगी।<sup>2</sup> हे प्रार्थना सुनने वाले, तेरे पास सब मनुष्य आते हैं।<sup>3</sup> अपराध मुझ पर हारी हो जाते हैं हमारे अपराधों के लिए, तू उन्हें क्षमा करता है।<sup>4</sup> धन्य है वह जिसे तू चुनता है और अपने पास आने की अनुमति देता है, वह तेरे आँगनों में निवास करेगा। हम तेरे धर की भलाई से तृप्त होंगे, तेरे पवित्र मंदिर की।

<sup>5</sup> अद्भुत कार्यों द्वारा तू हमें धर्म में उत्तर देता है, हमारे उद्धार के परमेश्वर, तू जो पृथ्वी के सभी छोरों और सबसे द्वार समुद्र का विश्वास है,<sup>6</sup> जो अपनी शक्ति से पहाड़ों को स्थापित करता है, जो सामर्थ्य से धिरा हुआ है,<sup>7</sup> जो समुद्रों के गर्जन को शांत करता है, उनकी लहरों का गर्जन, और राशों की अशांति।<sup>8</sup> जो पृथ्वी के छोरों पर रहते हैं, वे तेरे चिन्हों से विस्तृत होते हैं, तू सूर्योदय और सूर्योस्त को आनंद से विलाता है।

<sup>9</sup> तू पृथ्वी का दौरा करता है और उसे भरपूर करता है, तू उसे बहुत समृद्ध करता है, परमेश्वर की धारा जल से

मरी है, तू उनके अनाज की तैयारी करता है, क्योंकि इसी प्रकार तू पृथ्वी की तैयारी करता है।<sup>10</sup> तू उसकी नालियों को भरपूर पानी देता है, तू उसकी धारियों को समतल करता है, तू उसे वर्ष से नरम करता है, तू उसकी वृद्धि को आशीर्वद देता है।<sup>11</sup> तूने वर्ष को अपनी भलाई से मुक्तिट किया है, और तेरे मार्गों में समृद्धि टपकती है।<sup>12</sup> जंगल के चरागाह टपकते हैं, और पहाड़ियाँ आनंद से धिरी हैं।<sup>13</sup> मैदान झुंडों से वसित हैं, और घाड़ियाँ आनंद से ढकी हैं, वे आनंद से विलाते हैं, हाँ, वे गाते हैं।

## 66

### संगीत निर्देशक के लिए। एक गीत। एक भजन।

<sup>1</sup> हे सारी पृथ्वी, परमेश्वर के लिए आनंद से जयजयकार करो।<sup>2</sup> उसके नाम की महिमा का गीत गाओ, उसकी स्तुति को महिमामय बनाओ।<sup>3</sup> परमेश्वर से कहो, "तेरे काम कितने अद्भुत हैं, तेरी शक्ति की महानता के कारण तेरे शत्रु तेरा पालन करने का दिखावा करेंगे।"<sup>4</sup> सारी पृथ्वी तेरा उपासना करेगी, और तेरी स्तुति का गीत गाएगी, वे तेरे नाम की स्तुति का गीत गाएगी।<sup>5</sup> सलाह

<sup>5</sup> आओ और परमेश्वर के कामों को देखो, जो मनुष्यों के पुत्रों के प्रति अपने कार्यों में अद्भुत है।<sup>6</sup> उसने समृद्ध को सूखी भूमि में बदल दिया, वे नदी को पैदल पार कर गए हम वहाँ उसमें आनंदित हो।<sup>7</sup> वह अपनी शक्ति से सदा के लिए शासन करता है, उसकी आँखें रात्रों पर निराराती रखती हैं, विश्रेष्ठी स्वयं को ऊँचा नहीं कर सकेंगे। सलाह

<sup>8</sup> हमारे परमेश्वर को आशीर्वद दो, हे लोगो, और उसकी स्तुति को दूर-दूर तक सुनाओ।<sup>9</sup> जो हमें जीवन में बनाए रखता है, और हमारे पाँव को फिसलने नहीं देता।<sup>10</sup> क्योंकि तूने हमें परखा है, परमेश्वर, तूने हमें उस तरह शुद्ध किया जैसे चाँदी को शुद्ध किया जाता है।<sup>11</sup> तूने हमें जाल में डाला, तूने हम पर एक भारी बोझ डाला।<sup>12</sup> तूने मनुष्यों को हमारे सिर पर चढ़ाया, हम आग और पानी से होकर गए। किर भी तूने हमें प्रबुरता के स्थान पर निकाला।

<sup>13</sup> मैं तेरे धर में होमबलि लेकर आँखँग, मैं तुझसे अपनी मत्रतें पूरी करूँगा,<sup>14</sup> जो मेरे होंठों ने कही थीं और मेरे मुँह ने बोली थीं जब मैं संकट में था।<sup>15</sup> मैं

# भजन संहिता

तुझे मोटे पशुओं की होमबलि चढ़ाऊँगा, मेड़ों के ध्रुँ  
के साथ, मैं बैलों और बकरों की भेट चढ़ाऊँगा। सेलाह

<sup>16</sup> आओ और सुनो, हे सभी जो परमेश्वर से डरते हैं  
और मैं तुहँसे बताऊँगा कि उसने मेरे प्राण के लिए क्या  
किया है।<sup>17</sup> मैंने अपने मुँह से उससे प्रार्थना की और  
मेरी जीव से उसकी महिमा की।<sup>18</sup> यदि मैं अपने  
हृदय में अधर्म को मारूँ तो प्रभु नहीं सुनेगा;<sup>19</sup> परंतु  
परमेश्वर ने सुना है, उसने मेरी प्रार्थना की ध्वनि पर  
ध्यान दिया है।<sup>20</sup> धन्य है परमेश्वर, जिसने मेरी प्रार्थना  
को नहीं ढुकराया, और न ही अपनी कृपा मुझसे दूर  
की।

## 67

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाद्य यंत्रों के  
साथ। एक भजन। एक गीत।

<sup>1</sup> परमेश्वर हम पर कृपा करें और हमें आशीर्वद दें  
और अपना मुख हम पर चमकाए— सेलाह<sup>2</sup> ताकि  
पृथ्वी पर तेरा मार्ग जाना जाए तेरी मुक्ति सब राष्ट्रों में।

<sup>3</sup> हे परमेश्वर, लोग तेरा गुणगान करें, सब लोग तेरा  
गुणगान करें।<sup>4</sup> राष्ट्र आनन्दित हों और जयजयकर  
करें, क्योंकि तू लोगों का न्याय निष्पक्षता से करेगा और  
पृथ्वी पर गाढ़ों का मार्गदर्शन करेगा। सेलाह<sup>5</sup> हे  
परमेश्वर, लोग तेरा गुणगान करें, सब लोग तेरा गुणगान  
करें।

<sup>6</sup> पृथ्वी ने अपनी उपज दी है, परमेश्वर, हमारा परमेश्वर  
हमें आशीर्वद देता है।<sup>7</sup> परमेश्वर हमें आशीर्वद देता  
है, ताकि पृथ्वी के सभी छोर उससे डरें।

## 68

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।  
एक गीत।

<sup>1</sup> परमेश्वर उठ खड़ा होता है, उसके शत्रु तितर-बितर  
हो जाते हैं, और जो उससे धूरा करते हैं, वे उसके  
सामने से भाग जाते हैं।<sup>2</sup> जैसे धुओं उड़ाया जाता है,  
वैसे ही तू उहैं उड़ा देता है, जैसे मोम आग के सामने  
पिघलता है, वैसे ही दुष्परमेश्वर के सामने नष्ट हो जाते  
हैं।<sup>3</sup> परन्तु धर्मी आनन्दित होते हैं, वे परमेश्वर के  
सामने हर्षित होते हैं, हाँ, वे आनन्द के साथ हर्षित होते  
हैं।

<sup>4</sup> परमेश्वर के लिए गाओ, उसके नाम की स्तुति करो,  
उसे ऊँचा करो जो मरुभूमियों के माध्यम से सवारी  
करता है, जिसका नाम यहोवा है, और उसके सामने  
उल्लासित हो।<sup>5</sup> अनाथों का पिता और विधाओं का  
न्यायी, परमेश्वर अपने पवित्र निवास में है।<sup>6</sup> परमेश्वर  
अकेले के लिए घर बनाता है, वह बंदियों को समुद्रि में  
ले जाता है, केवल विद्रोही सूखी भूमि में रहते हैं।

<sup>7</sup> हे परमेश्वर, जब तु अपने लोगों के आगे चला, जब तु  
मरुभूमि से होकर चला, सेला<sup>8</sup> पृथ्वी कांप उठी,  
आकाश भी परमेश्वर की उपस्थिति में वर्षा करने लगा,  
सीनै स्वर्यं परमेश्वर की उपस्थिति में कांप उठा, जो  
इसाएल का परमेश्वर है।<sup>9</sup> तूने बहुत वर्षा की, हे  
परमेश्वर, तूने अपनी विरासत की पुष्टि की जब वह सूख  
गई थी।<sup>10</sup> तेरी प्रजा उसमें बस गई, अपनी कृपा में  
तूने गरीबों के लिए प्रबंध किया, हे परमेश्वर।

<sup>11</sup> प्रभु आजा देता है, शुभ समाचार सुनाने वाली स्तिथि<sup>11</sup>  
एक बड़ी सेना है।<sup>12</sup> “सेनाओं के राजा भाग जाते हैं, वे  
भाग जाते हैं, और जो घर पर रहती है वह लूट  
बांटीगी।”<sup>13</sup> जब तुम भेड़ों के बाढ़ों के बीच लेटते हों,  
तुम चाँदी से ढे के कूतूहल के पंखों के समान हो, और  
उसके पंख चमकदार सोने के।<sup>14</sup> जब सर्वशक्तिमान  
ने वहाँ के राजा और अपने निवास के लिए चाहा है,  
में बर्फ गिर रही थी।

<sup>15</sup> बाशान का पर्वत परमेश्वर का पर्वत है, बाशान का  
पर्वत अनेक शिखरों वाला पर्वत है।<sup>16</sup> तुम क्यों इर्ष्या  
करते हो, हैं अनेक शिखरों वाले पर्वत, उस पर्वत पर  
जिसे परमेश्वर ने अपने निवास के लिए चाहा है?  
वास्तव में, यहोवा वहाँ सदा के लिए निवास करेगा।<sup>17</sup>  
परमेश्वर के रथ असंख्य हैं, हजारों पर हजारों, यहोवा  
उनके बीच है जैसे सनै मैं पवित्रता मैं।<sup>18</sup> तू ऊँचाई  
पर चढ़ गया है, तूने अपने बंदियों को बंदी बना लिया  
है, तूने लोगों के बीच उपहार प्राप्त किए हैं, वहाँ तक  
कि विद्रोहियों के बीच भी, कि वहाँ प्रभु परमेश्वर का  
निवास हो।

<sup>19</sup> धन्य है यहोवा, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है,  
वह परमेश्वर जो हमारी मुक्ति है। सेला<sup>20</sup> परमेश्वर  
हमारे लिए मुक्ति का परमेश्वर है, और मृत्यु से बचने के  
मार्ग प्रभु परमेश्वर के हैं।<sup>21</sup> परमेश्वर निष्ठित रूप से  
अपने शत्रुओं के सिर को दूर करेगा, उसके जो अपने  
अपराध में घृणता है, उसके बालों वाले सिर को।<sup>22</sup>  
प्रभु ने कहा, “मैं उहैं बाशान से वापस लाऊँगा। मैं  
उहैं समुद्र की गहराई से वापस लाऊँगा,”<sup>23</sup> ताकि तेरा

# भजन संहिता

पैर उन्हें रक्त में चूर कर सके, और तेरे कुत्तों की जीभ  
तेरे शत्रुओं से अपना हिस्सा पा सके।”

<sup>24</sup> उन्होंने तेरी यात्रा देखी है, हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर  
मेरे राजा की यात्रा पवित्र स्थान में।<sup>25</sup> गायक आगे बढ़े,  
उनके बाद संगीतकार युवतियों के बीच में जो डफ  
बजा रही थी।<sup>26</sup> सभाओं में परमेश्वर की स्तुति करो, हे  
प्रभु, तुम जो इसाएल के स्रोत से हो।<sup>27</sup> बिन्यामीन्  
सबसे छोटा, वहाँ है, उनका शासन करता है, यहूदा के  
नेता उनके समूह में, जबूलून के नेता, नवाती के नेता।

<sup>28</sup> तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारी शक्ति की आज्ञा दी है  
अपने को शक्तिशाली दिखाओ, हे परमेश्वर, तू जो  
हमारे पक्ष में कार्य करता है।<sup>29</sup> वर्षशलेम में तेरे  
मंदिर के कारण राजा तुझे उपहार लाएँगे।<sup>30</sup> सरकंडों  
में जानवरों को फटकार, लोगों के बछड़ों के साथ बैलों  
के हुँड़ को, चाँदी के टुकड़ों को पैरों तले रौंदें हुए।  
उसने उन लोगों को तितर-बितर कर दिया है जो युद्ध  
में आनंदित होते हैं।<sup>31</sup> मिस से उपहार लाए जाएँगे,  
कृषा शीघ्र ही अपने हाथ परमेश्वर की ओर कैलाएगा।

<sup>32</sup> पृथी के राज्यों, परमेश्वर के लिए गाओ, प्रभु की  
स्तुति करो, सेला।<sup>33</sup> उसके लिए जो उच्चतम स्वर्गों पर  
सवारी करता है जो प्राचीन काल से हैं, देखो, वह  
अपनी आवाज से बोलता है, एक शक्तिशाली आगज।  
<sup>34</sup> परमेश्वर को सामर्थ्य दो, उसकी महिमा इसाएल पर  
है, और उसकी शक्ति आकाश में है।<sup>35</sup> हे परमेश्वर, तू  
अपने पवित्र स्थान से अद्भुत है। इसाएल का परमेश्वर  
स्वयं लोगों को शक्ति और सामर्थ्य देता है। परमेश्वर  
धन्य है।

## 69

संगीत निर्देशक के लिए; शोशन्निम के अनुसार।  
दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, मुझे बचा ले, व्योंगि जल ने मेरे प्राण को  
संकट में डाल दिया है।<sup>2</sup> मैं गहरे कीचड़ में डूब गया  
हूँ, और कोई ठोस स्थान नहीं है, मैं गहरे जल में आ  
गया हूँ, और बाद मुझे बहा ले जाती है।<sup>3</sup> मैं रोते-रोते  
थक गया हूँ, मेरा गला सूख गया है, जब मैं अपने  
परमेश्वर की प्रतीक्षा करता हूँ, मेरी आँखें थक जाती हैं।

<sup>4</sup> जो बिना कारण मुझसे बैर रखते हैं, वे मेरे सिर के  
बालों से भी अधिक हैं, जो मुझे नष्ट करना चाहते हैं, वे  
शक्तिशाली हैं, जो झूठ के साथ मेरा विरोध करते हैं,  
जो मैंने नहीं चुराया, उसे मुझे लौटाना पड़ता है।

<sup>5</sup> हे परमेश्वर, तू मेरी मूर्खता को जानता है, और मेरा  
अपराध तुझसे छिपा नहीं है।

<sup>6</sup> जो तेरा इंतजार करते हैं, वे मेरे कारण लजित न हों,  
सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, जो तुझे खोजते हैं, वे मेरे  
कारण अपमानित न हों, इसाएल के परमेश्वर,<sup>7</sup> व्योंगि  
तेरे कारण मैंने अपमान सहा है, अपमान ने मेरे चैरहे  
को ढक लिया है।<sup>8</sup> मैं अपने भाइयों से पराया हो गया  
हूँ, और अपनी माँ के पुत्रों के लिए अजनबी हो गया हूँ।<sup>9</sup>  
व्योंगि के तेरे घर के लिए उत्ताह ने मुझे खा लिया है,  
और जो तेरा अपमान करते हैं उनके ताने मुझ पर पड़े  
हैं।<sup>10</sup> जब मैंने उपवास के साथ अपने प्राण में रोया,  
यह मेरे लिए अपमान बन गया।<sup>11</sup> जब मैंने टाट को  
अपना वर्त बनाया, मैं उनके लिए एक कहावत बन  
गया।<sup>12</sup> जो फाटक में बैठते हैं वे मेरे बारे में बात  
करते हैं, और जो नित्य मद्यपान करते हैं उनके द्वारा  
मेरे बारे में उपहास के गीत गाए जाते हैं।

<sup>13</sup> परन्तु मैं, मेरी प्रार्थना तुझसे है, हे प्रभु, एक स्वीकार्य  
समय पर, हे परमेश्वर, तेरी दया की महानता में, अपनी  
उद्धार की सच्चाई के साथ मुझे उत्तर दे।<sup>14</sup> मुझे  
कीचड़ से बचा ले और मुझे डबने न दे, जो मुझसे बैर  
रखते हैं उनसे और जल की गहराई से मुझे बचा ले।<sup>15</sup>  
जल की बाद मुझे न बहा ले जाए और न गहराई मुझे  
निगल ले, और न गङ्गा अपना मुँह मुझ पर बंद करे।

<sup>16</sup> मुझे उत्तर दे, हे प्रभु, व्योंगि तेरी दया भली है, तेरी  
करुणा की महानता के अनुसार, मेरी ओर मुँह,<sup>17</sup>  
और अपने दास से अपना मुख न लिया, व्योंगि मैं  
संकट में हूँ, मुझे शीघ्र उत्तर दे।<sup>18</sup> मेरे प्राण के पास  
आ और इसे छुड़ा ले, मेरे शत्रुओं के कारण मुझ मुक्त  
कर।

<sup>19</sup> तू मेरे अपमान, मेरी लज्जा और मेरे अपमान को  
जानता है, मेरे सभी शत्रु तुझसे परिवित हैं।<sup>20</sup> अपमान  
ने मेरे हृदय को तोड़ दिया है, और मैं बहुत बीमार हूँ।  
और मैंने हानुभूति की प्रतीक्षा की, परन्तु कोई नहीं  
था, और सांत्वना देने वालों की परन्तु मैंने कोई नहीं  
पाया।<sup>21</sup> उन्होंने मेरे भोजन में भी कड़वा जड़ी-बूटी  
दी, और मेरी यास के लिए उन्होंने मुझे सिरका पीने  
को दिया।

<sup>22</sup> उनकी मेज उनके सामने एक फंदा बन जाए और  
जब वे शांति में हों, तो वह एक जाल बन जाए।<sup>23</sup>  
उनकी आँखें धूंधली हो जाएं ताकि वे देख न सकें, और  
उनके कूलहे लगातार हिलते रहें।<sup>24</sup> उन पर अपना

## भजन संहिता

क्रोध उंडेल दे, और तेरा जलता हुआ क्रोध उहें पकड़ ले।<sup>25</sup> उनकी छावनी उजाड़ हो जाए उनके तंबुओं में कोई न रहे।<sup>26</sup> क्योंकि उहोंने उसका पीछा किया जिसे तुने स्वयं मारा, और वे उन लोगों के दर्द की बात करते हैं जिहें तुने धायल किया है।<sup>27</sup> उनके अपराध में और जोड़ दे, और वे तेरी धार्मिकता में न आए।<sup>28</sup> उहें जीवन की पुस्तक से मिटा दे, और उहें धर्मियों के साथ दर्ज न किया जाए।

<sup>29</sup> परन्तु मैं दुखी और पीड़ित हूँ, तेरा उद्धार हे परमेश्वर, मुझे सुरक्षित ऊँचाई पर स्थापित करे।

<sup>30</sup> मैं गीत के साथ परमेश्वर के नाम की स्तुति करूँगा, और धन्यवाद के साथ उसे ऊँचा करूँगा।<sup>31</sup> और यह बैल से भी अधिक प्रभु को प्रसन्न करेगा या सींग और खुर वाले बैल से।<sup>32</sup> नम्र ने इसे देखा और आनन्दित हुए हे परमेश्वर को खोजने वालों, तुम्हारे हृदय जीवित रहें।<sup>33</sup> क्योंकि प्रभु दरिद्रों की सुनता है, और कैदियों को तुच्छ नहीं करता।

<sup>34</sup> आकाश और पृथ्वी उसकी स्तुति करें, समुद्र और उनमें जो कुछ चलता है।<sup>35</sup> क्योंकि परमेश्वर सिखोन का उद्धार करेगा और यहूदा के नगरों का निर्माण करेगा, ताकि वे वहाँ निवास करें और उसे प्राप्त करें।<sup>36</sup> उसके दासों के वंशज उसे विरासत में लेंगे, और जो उसके नाम से प्रेम करते हैं वे उसमें निवास करेंगे।

## 70

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन; स्मरण के लिए।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, मुझे बचाने के लिए जल्दी करो, हे प्रभु मेरी सहायता के लिए जल्दी करो।

<sup>2</sup> जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे लजित और अपमानित हों जो मेरी हानि में आनंदित होते हैं, वे पीछे हटें और अपमानित हों।<sup>3</sup> जो कहते हैं “आहा, आहा” वे अपनी लज्जा के कारण पीछे हटें।<sup>4</sup> जो तुझको खोजते हैं, वे आनंदित और मग्न हों, और जो तेरी उद्धार को प्रेम करते हैं, वे सदा कहें “परमेश्वर को महिमा हो।”

<sup>5</sup> परन्तु मैं दुखी और दरिद्र हूँ, हे परमेश्वर, मेरे पास जल्दी आओ तू मेरी सहायता और मेरा उद्धारकर्ता है, हे प्रभु विलंब न कर।

**71** हे प्रभु, मैंने तुझमें शरण ली है, मुझे कभी लजित न होने दे।<sup>2</sup> अपनी धार्मिकता में मुझे बचा और छुड़ा ले, मेरी और कान लगा और मेरी सहायता कर।<sup>3</sup> मेरे लिए एक निवास की चट्ठान बन जा, जहाँ मैं निरंतर आ सकूँ तूने मुझे बचाने की आज्ञा दी है, क्योंकि तू मेरी चट्ठान और मेरा गढ़ है।<sup>4</sup> हे मेरे परमेश्वर, मुझे दुष्टों के हाथ से बचा, अन्यायी और निर्दयी के पकड़ से।

<sup>5</sup> क्योंकि तू मेरी आशा है, हे प्रभु परमेश्वर, तू मेरी जगानी से मेरा विश्वास है।<sup>6</sup> मैं जन्म से तुझ पर निर्भर रहा हूँ, तू वही है जिसने मुझे मेरी माँ के गर्भ से निकाला, मेरी स्तुति निरंतर तेरी है।<sup>7</sup> मैं बहतों के लिए एक अद्भुत बन गया हूँ, क्योंकि तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है।<sup>8</sup> मेरा मुँह तेरी स्तुति से भरा है और तेरी महिमा से दिन भर।

<sup>9</sup> मेरी दुद्धारवस्था के समय मुझे न त्याग, जब मेरी शक्ति घट जाए तब मुझे न छोड़।<sup>10</sup> क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध बोलते हैं, और जो मेरे प्राण की धात में हैं वे आपस में सम्मति करते हैं,<sup>11</sup> कहते हैं “परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है, उसका पीछा करो और उसे पकड़ लो, क्योंकि उसे बचाने वाला कोई नहीं है।”<sup>12</sup> हे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो, हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिए शीघ्र आ।<sup>13</sup> जो मेरे प्राण के शत्रु हैं वे लजित और नष्ट हों, जो मुझे हानि पहुँचाना चाहते हैं वे अपमान और अपमान से ढके जाएँ।

<sup>14</sup> परन्तु मैं निरंतर प्रतीक्षा करूँगा, और तुझे और अधिक और अधिक स्तुति करूँगा।

<sup>15</sup> मेरा मुँह तेरी धार्मिकता का वर्णन करेगा और तेरे उद्धार का दिन भर, क्योंकि मैं लेखन की कला नहीं जानता।<sup>16</sup> मैं प्रभु परमेश्वर के शक्तिशाली कार्यों के साथ आऊँगा, मैं तेरी धार्मिकता का उल्लेख करूँगा, केवल तेरी।<sup>17</sup> हे परमेश्वर, तूने मुझे मेरी जगानी से सिखाया है, और मैं अब भी तेरे अद्भुत कार्यों का वर्णन करता हूँ।<sup>18</sup> और जब मैं बूढ़ा और क्षेत्र हो जाऊँ, हे परमेश्वर, मुझे न छोड़, जब तक मैं इस पीढ़ी को तेरी शक्ति का वर्णन न कर दूँ, तेरी शक्ति का उन सब को जो आने वाले हैं।

<sup>19</sup> क्योंकि तेरी धार्मिकता, हे परमेश्वर, आकाश तक पहुँचती है, तू जिसने महान कार्य किए हैं, हे परमेश्वर तेरे समान कौन है?<sup>20</sup> तू जिसने मुझे अनेक कष्ट और संकट दिखाए हैं मुझे किर से जीवित करेगा, और मुझे

# भजन संहिता

पृथ्वी की गहराई से फिर से ऊपर उठाएगा।<sup>21</sup> तू मेरी महानता को बढ़ा सकता है और मेरी ओर मुड़कर मुझे सांत्वना दे सकता है।

<sup>22</sup> मैं भी तुझे वीणा के साथ स्तुति करूँगा और तेरी सच्चाई है मेरे परमेश्वर मैं तुझे सारंगी के साथ स्तुति करूँगा, है इसाएल के पवित्र।<sup>23</sup> जब मैं तुझे स्तुति गाऊँगा तो मेरे हौठ आनंद से खिलाएगे, और मेरी आत्मा जिसे तूने छुड़ाया है।<sup>24</sup> मेरी जीभ भी दिन भर तेरी धार्मिकता का वर्णन करेगी, क्योंकि वे लजित हैं, वे अपमानित हैं जो मेरी हानि चाहते हैं।

## 72

### सुलैमान का एक भजन।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, राजा को अपने न्याय दे, और राजा के पुत्र को अपनी धार्मिकता दे।<sup>2</sup> वह तेरे लोगों का न्याय धर्म के साथ करे, और तेरे दुखियों का न्याय न्याय के साथ करे।

<sup>3</sup> पहाड़ लोगों के लिए शांति लाएं और पहाड़ियाँ, धर्म के साथ।<sup>4</sup> वह लोगों के दुखियों को न्याय दिलाए जरूरतमंदों के बच्चों को बचाए, और अत्याचारी को कुचल दे।<sup>5</sup> जब तक सूर्य चमकता है, वे तुझसे डरें, और जब तक चंद्रमा चमकता है, सभी पीढ़ियों तक।<sup>6</sup> वह कटी हुई धास पर वर्षा की तरह उतरे, जैसे वर्षा जो धरती की सींचती है।<sup>7</sup> उसके दिनों में धर्म फलें फूलें और शांति की प्रचुरता हो जब तक चंद्रमा नहीं रहे।

<sup>8</sup> वह समुद्र से समुद्र तक शासन करे, और यूफ्रेट्स नदी से पृथ्वी के छोर तक।<sup>9</sup> मरुभूमि के खानाबदोश उसके सामने झुकें, और उसके शत्रु भूल चाटें।<sup>10</sup> तरशीश और द्वीपों के राजा उपहार लाएं, शोबा और सबा के राजा भेट चढ़ाएं।<sup>11</sup> और सभी राजा उसके सामने झुकें, सभी राष्ट्र उसकी सेवा करें।

<sup>12</sup> क्योंकि वह जरूरतमंद को बचाएगा जब वह सहायता के लिए पुकारेगा, दुखी को भी, और उसे जिसकी कोई सहायता नहीं है।<sup>13</sup> वह गरीब और जरूरतमंद पर दया करेगा, और वह जरूरतमंदों के जीवन को बचाएगा।<sup>14</sup> वह उनके जीवन को अत्याचार और हिंसा से बचाएगा, और उनका खून उसकी दृष्टि में मूल्यवान होगा।

<sup>15</sup> तो वह जीवित रहे, और शेषा का सोना उसे दिया जाए, और वे उसके लिए निरंतर प्रार्थना करें वे उसे पूरे दिन आशीर्वद दें।<sup>16</sup> पृथ्वी पर पहाड़ों के शीर्ष पर अनाज की भरपूरता हो, इसका फल लेबनान के देवदारों की तरह लहराए, और शहर के लोग पृथ्वी की वनस्पति की तरह फलें फूर्ते।<sup>17</sup> उसका नाम सदा के लिए बना रहे, जब तक सूर्य चमकता है, उसका नाम बढ़े;

और लोग उसके द्वारा स्वयं को आशीर्वद दें, सभी राष्ट्र उसे धन्य कहें।

<sup>18</sup> धन्य है प्रभु परमेश्वर, इसाएल का परमेश्वर, जो अकेला अद्भुत कार्य करता है।<sup>19</sup> और उसका महिमामय नाम सदा के लिए धन्य हो, और पूरी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए। आमीन और आमीन।

<sup>20</sup> पिंशे के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएँ समाप्त हुईं।

## 73

### आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> तैश्य ही परमेश्वर इसाएल के लिए भला है, उन लोगों के लिए जो हृदय में शुद्ध हैं।

<sup>2</sup> परंतु मेरे लिए, मेरे पैर फिसलने के करीब थे, मेरे कदम लगभग फिसल गए थे।<sup>3</sup> क्योंकि मैं अभिमानियों से इर्ष्या करता था जब मैंने दृष्टों की समृद्धि देखी।

<sup>4</sup> क्योंकि उनकी मृत्यु में कोई पीड़ा नहीं है, और उनका पेट मोरा है।<sup>5</sup> वे अब लोगों की तरह संकट में नहीं हैं, और न ही वे बाकी मानवजाति के साथ पीड़ित होते हैं।<sup>6</sup> इसलिए अभिमान उनका हार है, हिंसा का वस्त तरह ढकता है।<sup>7</sup> उनकी ओरें मोटाई से उभरती हैं, उनके हृदय की कल्पनाएँ उमड़ती हैं।<sup>8</sup> वे उपहास करते हैं और अत्याचार की बात करते हैं, वे ऊँचाई से बोलते हैं।<sup>9</sup> उन्होंने अपने मुँह को स्वर्ण के विरुद्ध लगाया है, और उनकी जीभ पृथ्वी पर परेड करती है।<sup>10</sup> इसलिए उनके लोग यहाँ लौटते हैं, और प्रचुर जल उनसे पिया जाता है।<sup>11</sup> वे कहते हैं, “परमेश्वर कैसे जानता है? और क्या परमप्रधान के पास ज्ञान है?”

<sup>12</sup> देखो, ये दुष्ट हैं, और हमेशा आराम में उन्होंने धन में वृद्धि की है।

# भजन संहिता

<sup>13</sup> निश्चय ही व्यर्थ में मैंने अपने हृदय को शुद्ध रखा  
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया;<sup>14</sup> क्योंकि मैं  
पूरे दिन पीड़ित रहा, और हर सुबह दंडित किया गया।

<sup>15</sup> यदि मैंने कहा होता, “मैं इस तरह बोलूँगा” देखो, मैं  
तेरे बच्चों की पीढ़ी को धोखा देता।<sup>16</sup> जब मैंने इसे  
समझने का विचार किया, यह मेरी वाष्णि में कष्टायक  
था।<sup>17</sup> जब तक मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश  
नहीं किया, तब मैंने उनका अंत समझा।

<sup>18</sup> तू वास्तव में उन्हें किसलन भरी भूमि पर रखता है,  
तू तेरे विनाश में गिरा दिया।<sup>19</sup> वे कैसे एक क्षण में  
नष्ट हो जाते हैं वे अचानक आतंक से पूरी तरह से  
बहा दिए जाते हैं।<sup>20</sup> जैसे कोई जागने पर सपना  
देखता है, प्रभु जब तू जागोगा, तू उनकी छवि को तुच्छ  
समझेगा।

<sup>21</sup> जब मेरा हृदय कड़वा था और मैं भीतर से छेदा  
गया था,<sup>22</sup> तब मैं सूखे और अज्ञानी था, मैं तेरे सामने  
एक पशु के समान था।

<sup>23</sup> फिर भी मैं निरंतर तेरे साथ हूँ तूने मेरे दाहिने हाथ  
को पकड़ लिया है।<sup>24</sup> तू अपनी योग्याना से मेरी  
अगुवाई करेगा, और बाद में सूझे महिला में ग्रहण  
करेगा।<sup>25</sup> सर्वा में मेरे पास तेरे सिवा कौन है? और तेरे  
साथ, मैं पृथ्वी पर कुछ नहीं बाहता।<sup>26</sup> मेरा शरीर और  
मेरा हृदय भले ही विफल हो जाए, परंतु परमेश्वर मेरे  
हृदय की शक्ति और मेरा भाग सदा के लिए है।

<sup>27</sup> क्योंकि, देखो, जो तुझसे द्वार है वे नष्ट हो जाएंगे, तूने  
उन सभी को नष्ट कर दिया है जो तुझसे विश्वासघात  
करते हैं।<sup>28</sup> परंतु मेरे लिए परमेश्वर का निकट होना  
अच्छा है, मैंने प्रभु परमेश्वर को अपनी शरण ल्ना लिया  
है, ताकि मैं तेरे सभी कार्योंका वर्णन कर सकूँ।

## 74

### आसाप का एक मास्किल।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, तूने हमें सदा के लिए क्यों त्याग दिया है?  
तेरे चरागाह की भेड़ों के विश्वद तेरा क्रोध क्यों धधक  
रहा है?<sup>2</sup> अपनी मण्डली को स्मरण कर, जिसे तूने  
प्राचीन काल में खीरीदा, जिसे तूने अपनी विरासत के  
गोत्र के रूप में छुड़ाया, और इस माठंट सियोन को,  
जहाँ तू निवास करता है।<sup>3</sup> अपूरणीय छंडहरों की ओर

कदम बढ़ा, शत्रु ने पवित्र स्थान में सब कुछ नष्ट कर  
दिया है।

<sup>4</sup> तेरे विरोधियों ने तेरे सभा स्थान के बीच में गरजना  
किया है, उन्होंने अपने चिह्नों को चिह्नों के रूप में  
स्थापित किया है।<sup>5</sup> ऐसा लगता है जैसे कोई पेंडों के  
जंगल में कुल्हाड़ी लेकर आता है।<sup>6</sup> और अब वे  
उसकी सारी नवकाशीदार कारीगारी को कुल्हाड़ी और  
हथौड़ों से तोड़ रहे हैं।<sup>7</sup> उन्होंने तेरे पवित्र स्थान को  
जला दिया है, उन्होंने तेरे नाम के निवास स्थान को  
अपवित्र कर दिया है।<sup>8</sup> उन्होंने अपने हृदय में कहा,  
“आओ, हम उन्हें पूरी तरह से अधीन कर लें।” उन्होंने  
देश में परमेश्वर के सभी सभा स्थानों को जला दिया है।

<sup>9</sup> हम अपने चिन्ह नहीं देखते, अब कोई भविष्यवक्ता  
नहीं है, न ही हमारे बीच कोई है जो जानता है कि कब  
तक।<sup>10</sup> हे परमेश्वर, शत्रु कब तक तुझे ताने देगा? क्या  
शत्रु तेरे नाम का अनादर सदा के लिए करेगा?<sup>11</sup> तू  
अपना हाथ, यहाँ तक कि अपना दाहिना हाथ क्यों  
खींचता है? उसे अपनी छाती से निकाल और उन्हें नष्ट  
कर दे।

<sup>12</sup> फिर भी परमेश्वर मेरा राजा है जो प्राचीन काल से है,  
जो पृथ्वी के बीच में उद्धार के कार्य करता है।

<sup>13</sup> तूने अपनी शक्ति से समुद्र को विभाजित किया, तूने  
जल में समुद्री राक्षसों के सिर तोड़े।<sup>14</sup> तूने लेविथन के  
सिरों को कुचल दिया, तूने उसे जंगल के जीवों के लिए  
भोजन के रूप में दिया।<sup>15</sup> तूने सोते और धाराएँ फोड़  
दी, तूने सौदे बहने वाली नदियों को सुखा दिया।<sup>16</sup>  
दिन तेरा है, रात भी तेरी है, तूने प्रकाश और सूर्य को  
तैयार किया है।<sup>17</sup> तूने पृथ्वी की सभी सीमाओं को  
स्थापित किया है, तूने ग्रीष्म और शीत ऋतु को बनाया  
है।

<sup>18</sup> हे प्रभु, इसे स्मरण कर, कि शत्रु ने तुझे ताना दिया  
है, और सूखे लोगों ने तेरे नाम का अनादर किया है।<sup>19</sup>  
अपनी फाक्खा की आमा को जंगली जानवर को न दें,  
अपने पीड़ितों के जीवन को सदा के लिए न भूल।<sup>20</sup>  
वाचा पर विचार कर, क्योंकि देश के अधिरे स्थान हिस्सा  
के अड्डों से भरे हैं।<sup>21</sup> पीड़ित अपमानित होकर न  
लौटे, पीड़ित और जरूरतमंद तेरे नाम की स्तुति करें।<sup>22</sup>  
उठ, हे परमेश्वर, और अपनी ही बात का व्याय कर,  
स्मरण कर कि सूखे व्यक्ति तुझे दिन भर ताना देता है।<sup>23</sup>  
अपने शत्रुओं की आवाज को न भूल, जो तेरे विरुद्ध  
उठते हैं, उनका कोलाहल जो निरंतर बढ़ता रहता है।

## भजन संहिता

### 75

संगीत निर्देशक के लिए; अल-तरीय पर सेट।  
आसाप का एक भजन, एक गीत।

<sup>1</sup> हम तेरा धन्यवाद करते हैं, हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, क्योंकि तेरा नाम निकट है, लोग तेरे अद्भुत कार्यों का वर्णन करते हैं।

<sup>2</sup> "जब मैं एक नियत समय चुनता हूँ, तो मैं ही न्याय करता हूँ निष्पक्षता से।<sup>3</sup> पृथ्वी और उस पर रहने वाले सभी कांपते हैं, मैंने ही उसके स्तरों को ढक्का से स्थापित किया है। सेला<sup>4</sup> मैंने धमंडी से कहा, 'धमंड मत करो' और दुश्मों से 'अपना सींग ऊँचा मत करो'<sup>5</sup> अपना सींग ऊँचा मत करो, अभिमान से मत बोलो!"

<sup>6</sup> क्योंकि न तो पूर्व से, न पश्चिम से, न ही मरुस्थल से उत्रती आती है,<sup>7</sup> परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को नीचे करता है और दूसरे को ऊँचा उठाता है।<sup>8</sup> क्योंकि प्रभु के हाथ में एक प्याला है, और दाखरस ज्ञागदार है यह अच्छी तरह से मिलाया गया है, और वह उसमें से उंडेलता है निश्चय ही पृथ्वी के सभी दुश्मों को उसके तलछट को पीना और पीना होगा।

<sup>9</sup> परन्तु मैं तो इसे सदा के लिए घोषित करूँगा, मैं याकूब के परमेश्वर की स्तुति गाऊँगा।<sup>10</sup> और वह दुश्मों के सभी सींगों को काट डालेगा, परन्तु धर्मियों के सींग ऊँचे किए जाएंगे।

### 76

संगीत निर्देशक के लिए; तार वाले वाद्य यंत्रों पर।  
आसाप का एक भजन, एक गीत।

<sup>1</sup> यहूदा में परमेश्वर का ज्ञान है उसका नाम इसाएल में महान है।<sup>2</sup> उसकी मण्डली शालेम में है, उसका निवास स्थान भी सिव्योन में है।<sup>3</sup> वहीं उसने जलते हुए तीरों को तोड़ा, ढाल, तलवार, और युद्ध के हथियारों को। सेला

<sup>4</sup> तू दीतिमान है, शिकार से भरे पहाड़ों से भी अधिक भव्य।<sup>5</sup> दृढ़-हृदय वाले लूट लिए गए, वे नीट में ढ्रब गए, और योद्धाओं में से कोई भी अपने हाथों का उपयोग नहीं कर सका।<sup>6</sup> याकूब के परमेश्वर की डांट पर, सवार और धोड़ा दोनों मृत नीट में गिर गए।

<sup>7</sup> तू वास्तव में तू ही भयभीत करने योग्य है, और तेरे क्रोधित होने पर कौन तेरे सामने खड़ा हो सकता है?<sup>8</sup> तूने स्वर्ग से न्याय सुनाया, पृथ्वी ने भयभीत होकर शाति धारण की।<sup>9</sup> जब परमेश्वर न्याय के लिए उठा, पृथ्वी के सब नम्ब लोगों को बचाने के लिए। सेला<sup>10</sup> क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरा युग्मान करेगा, तू अपने चारों ओर क्रोध के अवशेष से घिरेगा।

<sup>11</sup> अपने परमेश्वर यहोवा से मन्त्रतेर करो और उन्हें पूरा करो, उसके चारों ओर के सभी लोग उसे जो भयभीत करने योग्य है, उपहार लाए।<sup>12</sup> वह राजकुमारों की आत्मा को काट डालेगा, वह पृथ्वी के राजाओं द्वारा भयभीत है।

### 77

संगीत निर्देशक के लिए; पद्मतून के अनुसार।  
आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> मेरी आवाज परमेश्वर तक पहुँचती है, और मैं ऊँचे स्वर में पुकारूँगा, मेरी आवाज परमेश्वर तक पहुँचती है, और वह मेरी सुनेगा।<sup>2</sup> मेरी विपाति के दिन मैंने प्रभु की खोज की, रात में मेरा हाथ बिना थके फैलता रहा, मेरी आत्मा को सांत्ना नहीं मिली।

<sup>3</sup> जब मैं परमेश्वर को स्मरण करता हूँ, तब मैं बेचैन हो जाता हूँ, जब मैं आ भरता हूँ, तब मेरी आत्मा दुर्बल हो जाती है। सेला<sup>4</sup> तूने मेरी पलकों को खुला रखा है, मैं इतना परेशान हूँ कि बोल नहीं सकता।<sup>5</sup> मैंने पुराने दिनों पर विचार किया है, बहुत पहले के वर्षों पर।<sup>6</sup> मैं रात में अपने गीत को स्मरण करूँगा, मैं अपने हृदय से ध्यान करूँगा, और मेरी आत्मा विचार करेगी।

<sup>7</sup> क्या प्रभु सदा के लिए अस्वीकार कर देगा? और क्या वह फिर कभी कृपातु नहीं होगा?<sup>8</sup> क्या उसकी कृपा सदा के लिए समाप्त हो गई है? क्या उसकी प्रतिज्ञा सदा के लिए समाप्त हो गई है?<sup>9</sup> क्या परमेश्वर ने अनुग्रह करना भूल गया है, या उसने क्रोध में अपनी करुणा को वापस ले लिया है? सेला

<sup>10</sup> तब मैंने कहा, 'यह मेरा दुख है कि परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है।'<sup>11</sup> मैं प्रभु के कार्यों को स्मरण करूँगा, निश्चय ही मैं तेरे प्राचीन अद्भुत कार्यों को स्मरण करूँगा।<sup>12</sup> मैं तेरे सभी कार्यों पर ध्यान करूँगा, और तेरे कार्यों पर धन्यवाद के साथ विचार करूँगा।

# भजन संहिता

<sup>13</sup> हे परमेश्वर, तेरा मार्ग पवित्र है, हमारे परमेश्वर के समान महान कौन सा देवता है? <sup>14</sup> तू वह परमेश्वर है जो अद्भुत कार्य करता है, तूने अपनी शक्ति को लोगों के बीच प्रकट किया है। <sup>15</sup> तूने अपनी शक्ति से अपने लोगों को छुड़ाया है, याकूब और यूसुफ के पुत्रों को। सेला

<sup>16</sup> जल ने तुझे देखा, हे परमेश्वर, जल ने तुझे देखा, वे व्याकुल हो गए, महासागर की गहराइयाँ भी कौपं गईं। <sup>17</sup> बादलों ने जल बरसाया, आकाश गूँज उठा, तेरे बाण यहाँ वहाँ चमके। <sup>18</sup> तेरी गर्जना का शब्द बरेंदर में था, बिजली ने संसार को प्रकाशित कर दिया, पृथ्वी का पैंग गई और हिल गई। <sup>19</sup> तेरा मार्ग समुद्र में था, और तेरे पथ प्रबल जल में थे, और तेरे पदचिन्ह जात नहीं थे। <sup>20</sup> तूने मूसा और हारून के हाथ से अपनी प्रजा को झुंड की तरह चलाया।

## 78

### आसाप का एक मस्किल।

<sup>1</sup> हे मेरी प्रजा, मेरी शिक्षा को सुनो; मेरे मुख के वचनों पर कान लगाओ। <sup>2</sup> मैं अपने मुख को छष्टांत में खोदूँग, मैं प्राचीन पहेलियाँ बताऊंगा, <sup>3</sup> जिन्हें हमने सुना और जाना है, और हमारे पिताओं ने हमें बताया है। <sup>4</sup> हम उहाँे उनके बच्चों से नहीं छिपाएंगे, परन्तु हम आने वाली पीढ़ी को यहोंगा कीं तुरियाँ, और उसकी सामर्थ्य और उसके अद्भुत कार्य जो उसने किए हैं, बताएंगे।

<sup>5</sup> क्योंकि उसने याकूब में एक साक्षी ठहराया, और इसाएल में एक व्यवस्था नियुक्त की, जिसे उसने हमारे पिताओं को आज्ञा दी कि वे उहाँे अपने बच्चों को सिखाएं। <sup>6</sup> ताकि आने वाली पीढ़ी, जो अभी उत्पन्न नहीं हुई है, जान सके, और वे उठकर अपने बच्चों को बताएँ, <sup>7</sup> ताकि वे परमेश्वर पर अपना विश्वास रखें और परमेश्वर के कार्यों को न भूलें, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करें। <sup>8</sup> और अपने पिताओं के समान न हों, एक हठी और विश्रोही पीढ़ी, एक पीढ़ी जिसने अपना हृदय तैयार नहीं किया, और जिसकी आत्मा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग नहीं थी।

<sup>9</sup> एप्पैम के पुत्र धनुषधारी तीरदाज थे, फिर भी वे युद्ध के दिन पीछे हट गए। <sup>10</sup> उहाँने परमेश्वर की वाच का पालन नहीं किया और उसकी व्यवस्था में चलने से इनकार कर दिया। <sup>11</sup> उहाँने उसके कार्यों को भुला-

दिया और उसके चमत्कारों को जो उसने उहाँने दिखाए थे। <sup>12</sup> उसने उनके पिताओं के सामने अद्भुत कार्य किए मिस देश में सोआन के मैदान में।

<sup>13</sup> उसने समुद्र को विभाजित किया और उहाँने पार कराया, और उसने जल को ढेर की तरह छड़ा कर दिया। <sup>14</sup> फिर उसने उहाँने दिन में बादल के साथ, और सारी रात अपि के प्रकाश के साथ मार्गदर्शन किया। <sup>15</sup> उसने जंगल में चट्टानों को फाड़ा और उहाँने समुद्र की गहराइयों की तरह बहुतायत से पीने के तिए दिया। <sup>16</sup> उसने चट्टान से धाराएँ निकालीं और नदियों की तरह जल बहाया।

[भजन संहिता 78 का शेष भाग 72 पदों तक जारी है; इसकी लंबाई के कारण, क्या आप चाहते हैं कि मैं को अब Markdown में जारी रखूँ या यहाँ रुक्कर अपाले संदेश में पद 17 से शुरू करूँ?]

<sup>17</sup> फिर भी वे उसके विरुद्ध पाप करते रहे, और मरभूमि में परमप्रधान के विरुद्ध विद्रोह करते रहे। <sup>18</sup> और उहाँने अपने हृदय में परमेश्वर की परीक्षा ली अपनी इच्छा के अनुसार भोजन माँगकर। <sup>19</sup> फिर उहाँने परमेश्वर के विरुद्ध बातें कहीं उहाँने कहा, "क्या परमेश्वर जंगल में मेज तैयार कर सकता है?" <sup>20</sup> देखो, उसने चट्टान को मारा ताकि जल फूट निकला, और धाराएँ बह निकलीं, क्या वह रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपनी प्रजा के लिए मांस प्रदान करेगा?"

<sup>21</sup> इसलिए यहोंगा ने सुना और क्रोध से भर गया, और याकूब के विरुद्ध अपि भड़क उठी, और इसाएल के विरुद्ध भी क्रोध बढ़ा, <sup>22</sup> क्योंकि उहाँने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया और उसकी मुक्ति पर भरोसा नहीं किया। <sup>23</sup> फिर भी उसने ऊपर के बादलों को आज्ञा दी और स्वर्ग के द्वार खोले; <sup>24</sup> उसने उन पर खाने के लिए मस्त्रा बरसाया, और उहाँने स्वर्ग का भोजन दिया। <sup>25</sup> मनुष्य ने स्वर्गद्वारों की रोटी खाई, उसने उहाँने भरपूर भोजन भेजा।

<sup>26</sup> उसने आकाश में पूर्वी पवन को चलाया और अपनी शक्ति से दक्षिणी पवन को निर्देशित किया। <sup>27</sup> जब उसने उन पर धूत की तरह मांस बरसाया, यहाँ तक कि समुद्र की रेत की तरह पंखों वाले पक्षी <sup>28</sup> उसने उहाँने उनके शिविर के बीच गिराया, उनके निवास स्थानों के चारों ओर। <sup>29</sup> इसलिए उहाँने खाया और तृप्त हो गए, और उसने उनकी लालसा को संतुष्ट किया। <sup>30</sup> फिर भी उनकी लालसा पूरी होने से पहले,

## भजन संहिता

जब उनका भोजन उनके मुँह में था,<sup>31</sup> परमेश्वर का क्रोध उनके विरुद्ध भड़क उठा और उसने उनके कुछ सबसे बलवानों को मार डाला, और इसाएल के दुने हुए पुरुषों को दबा दिया।

<sup>32</sup> इन सबके बावजूद उन्होंने फिर भी पाप किया और उसके अद्युत्तम कार्यों पर विश्वास नहीं किया।<sup>33</sup> इसलिए उसने उनके दिनों को व्यर्थता में समाप्त किया, और उनके वर्षों को अचानक भय में।<sup>34</sup> जब उसने उहँमारा, तब उन्होंने उसे खोजा, और वे लौट आए और परमेश्वर को पूरी लगन से खोजा,<sup>35</sup> और उन्होंने स्मरण किया कि परमेश्वर उनकी चट्टान था, और परमप्रधान परमेश्वर उनका उद्घारकर्ता।

<sup>36</sup> परन्तु उन्होंने अपने मुँह से उसकी चापलूसी की और अपनी जीभ से उससे झूठ बोला।<sup>37</sup> क्योंकि उनका हड्डय उसके प्रति स्पिर नहीं था, और वे उसकी वाचा में विश्वासप्रयोग नहीं थे।<sup>38</sup> परन्तु वह दयालु होकर, उनके अपराध को क्षमा करता रहा और उहँ नष्ट नहीं किया; और उसने अक्सर अपने क्रोध को रोका और अपनी पूरी जलन को नहीं भड़काया।<sup>39</sup> इसलिए उसने स्मरण किया कि वे केवल मांस थे, एक वायु जो गुजर जाती है और लौटती नहीं।

<sup>40</sup> कितनी बार उन्होंने जंगल में उसके विरुद्ध विद्रोह किया और मस्भूमि में उसे दुखी किया।<sup>41</sup> बार-बार उन्होंने परमेश्वर की परीक्षा ली, और इसाएल के पवित्र को दुखी किया।<sup>42</sup> उन्होंने उसकी शक्ति को याद नहीं किया, जिस दिन उसने उहँ शत्रु से छुड़ाया।<sup>43</sup> जब उसने मिस में अपने चिन्ह दिखाए और सोआन के मैदान में अपने चमत्कार किए

<sup>44</sup> और उनकी नदियों को रक्त में बदल दिया, और उनकी धाराओं को ताकि वे पी न सकें।<sup>45</sup> उसने उनके बीच मक्खियों के झुंड भेजे जो उहँ खा गए, और मैंदंक जो उहँ नष्ट कर गए।<sup>46</sup> उसने उनकी फसलों को टिक्कियों को दिया और उनके श्रम के फल को फसल खाने वाले कीट को।<sup>47</sup> उसने उनके दाखलताओं को ओलों से नष्ट कर दिया और उनके गूलर के पेड़ों को पाले से।<sup>48</sup> उसने उनके पशुओं को ओलों के हवाले कर दिया, और उनके झुंडों को बिजली की बोल्टों के हवाले कर दिया।

<sup>49</sup> उसने उन पर अपनी जलती हुई क्रोध भेजा, क्रोध और आक्रोश और संकट विनाशकारी स्वर्गद्वारों का एक दल।<sup>50</sup> उसने अपने क्रोध के लिए एक मार्ग

बनाया, उसने उनकी आत्माओं को मृत्यु से नहीं बचाया, बल्कि उनके जीवन को महामारी के हवाले कर दिया,<sup>51</sup> और मिस में सब पहलौठों को मारा, हम के तंतुओं में उनकी शक्ति और श्रेष्ठता के पहले और सर्वोत्तम की।

<sup>52</sup> परन्तु उसने अपनी प्रजा को भेड़ों की तरह बाहर निकाला, और उहँ जंगल में झुंड की तरह मार्गदर्शन किया;<sup>53</sup> उसने उहँ सुरक्षित रूप से मार्गदर्शन किया, ताकि वे न ढैंगे, परन्तु सुपुरद्र ने उनके शत्रुओं को निगल लिया।<sup>54</sup> इसलिए उसने उहँ अपने पवित्र देश में लाया, इस पहाड़ी देश में जिसे उसके दाहिने हाथ ने प्राप्त किया था।<sup>55</sup> उसने उनके सामने से जातियों को भी निकाल दिया, और उहँ माप के अनुसार एक विरासत के रूप में विभाजित किया, और इसाएल के गोत्रों को उनके तंतुओं में बसाया।

<sup>56</sup> फिर भी उन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा ली और विद्रोह किया और उसकी साक्षियों का पालन नहीं किया;<sup>57</sup> परन्तु अपने पिता-ओं की तरह पीछे हट गए और विश्वासघात से काम किया, वे एक विश्वासघाती धृतुष की तरह मुड़ गए।<sup>58</sup> क्योंकि उन्होंने अपनी ऊँची जगहों से उसे क्रोधित किया और अपनी खुदी हुई शूरीयों से उसे ईर्ष्या दिलाई।<sup>59</sup> जब परमेश्वर ने उहँ सुना, तो वह क्रोध से भर गया और उसने इसाएल को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया;

<sup>60</sup> ताकि उसने शीलों में निवास स्थान को छोड़ दिया, वह तंतु जिसे उसने लोगों के बीच खड़ा किया था,<sup>61</sup> और अपनी शक्ति को बंदीगृह में दे दिया, और अपनी महिमा को शत्रु के हाथ में दे दिया।<sup>62</sup> उसने अपनी प्रजा को तलवार के हवाले कर दिया, और अपनी विरासत पर क्रोध से भर गया।<sup>63</sup> अग्नि ने उसके जवानों को भस्म कर दिया, और उसकी क्रुमारियों के विवाह गीत नहीं हुए।<sup>64</sup> उसके याजक तलवार से गिर गए, और उसकी विधवाएँ रो नहीं सकीं।

<sup>65</sup> तब प्रभु नीद से जागा, जैसे शराब से पराजित योद्धा।<sup>66</sup> उसने अपने शत्रुओं को पीछे धक्कल दिया, उसने उन पर एक सदा का अपमान लगाया।<sup>67</sup> उसने यूसुफ के तंतु को भी अस्वीकार कर दिया, और एग्रैम के गोत्र को नहीं चुना।<sup>68</sup> परन्तु यहूदा के गोत्र को चुना, सिय्योन पर्वत जिसे उसने प्रेम किया।

<sup>69</sup> और उसने अपने पवित्रस्थान को ऊँचाइयों की तरह बनाया, जैसे पृथ्वी जिसे उसने सदा के लिए स्थापित

# भजन संहिता

किया है।<sup>70</sup> उसने अपने सेवक दाऊद को भी छुना, और उसे भेड़शालाओं से लिया;<sup>71</sup> द्रुध पिलाने वाली भेड़ों की देखभाल से उसे लाया ताकि याकूब उसकी प्रजा की चरवाही करे और इसाएल उसकी विरासत की।<sup>72</sup> इसलिए उसने अपने हृदय की सच्चाई के अनुसार उनकी चरवाही की, और अपने कुशल हाथों से उनका मार्गदर्शन किया।

## 79

### आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर अन्यजातियों ने तेरी संपत्ति पर आक्रमण किया है उन्होंने तेरे पवित्र मंदिर को अपवित्र किया है; उन्होंने यरूशलैम को खंडहर बना दिया है।<sup>2</sup> उन्होंने तेरे सेवकों की मृत देहों को आकाश के पक्षियों के लिए भोजन बना दिया है, तेरे भक्तों के मास को पूर्वी के पश्चुओं के लिए।<sup>3</sup> उन्होंने उनका रक्त यरूशलैम के चारों ओर जल की तरह बहाया है, और उन्हें दफनाने वाला कोई नहीं था।<sup>4</sup> हम अपने पड़ोसियों के सामने अपमानित हो गए हैं, हमारे चारों ओर के लोगों के लिए हँसी और उपहास का विषय बन गए हैं।

<sup>5</sup> कब तक, हे यहोवा? क्या तू सदा के लिए क्रोधित रहेगा? क्या तेरी जलन आग की तरह जलती रहेगी?<sup>6</sup> उन जातियों पर अपना क्रोध उड़ले दे जो तुझे नहीं जानतीं और उन राज्यों पर जो तेरे नाम का आह्वान नहीं करते।<sup>7</sup> क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया है और उसके निवास स्थान को उजाड़ दिया है।

<sup>8</sup> हमारे पूर्वजों के अपराधों के लिए हमें उत्तरदायी न ठहराओं, तेरी दया शीघ्र ही हमसे मिलने आए, क्योंकि हम बहुत ही दीन हो गए हैं।<sup>9</sup> हमारी सहायता कर, हे हमारे उद्धार के परमेश्वर, तेरे नाम की महिमा के लिए और हमें बचा और हमारे पापों को क्षमा कर, तेरे नाम के खातिर।<sup>10</sup> अन्यजातियाँ क्यों कहें, "उनका परमेश्वर कहाँ है?"

तेरे सेवकों के बहाए गए रक्त का प्रतिशोध हमारे सामने अन्यजातियों में प्रकट हो।<sup>11</sup> बंदी की कराहट तेरे सामने आए, तेरी महान शक्ति के अनुसार उन्हें जीवित रख जो मरने के लिए अभिशप्त हैं।<sup>12</sup> और हमारे पड़ोसियों को सात गुना अधिक लौटाकर दे उनके उपहास को, जिससे उन्होंने तेरा उपहास किया है, हे यहोवा।

<sup>13</sup> इसलिए हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ें सदा तेरा धन्यवाद करेंगे; हम सभी पीढ़ियों को तेरी स्तुति सुनाएंगे।

## 80

### संगीत निर्देशक के लिए; शोशान्निम, एट्थ पर सेट। आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> हे इसाएल के चरवाहे, सुन, जो युसुफ को हूँड की तरह ले चलता है तू जो करूबों के ऊपर विराजमान है, चमक उठा<sup>2</sup> एष्म, बिन्यामीन, और मनश्शे के सामने अपनी शक्ति जागृत कर, और हमें बचाने के लिए आ।

<sup>3</sup> हे परमेश्वर, हमें पुनःस्थापित कर और अपना मुख हम पर चमका, और हम बच जाएंगे।

<sup>4</sup> सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तू अपनी प्रजा की प्रार्थना से कब तक क्रोधित रहेगा? <sup>5</sup> तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई है, और तूने उन्हें आँसुओं से भरपूर पिलाया है।<sup>6</sup> तूने हमें हमारे पड़ोसियों के लिए विवाद का विषय बना दिया है, और हमारे शत्रु आपस में हँसी उड़ाते हैं।

<sup>7</sup> सेनाओं के परमेश्वर, हमें पुनःस्थापित कर और अपना मुख हम पर चमका, और हम बच जाएंगे।

<sup>8</sup> तूने मिस्र से एक बेल हटाई, तूने जातियों को निकाल दिया और उसे लगाया।<sup>9</sup> तूने उसके आगे भूमि को साफ किया, और उसने गहरी जड़ पकड़ी और देश को भर दिया।<sup>10</sup> पवित्र उसकी छाया से ढके थे, और परमेश्वर के देवदार उसकी शाखाओं से।<sup>11</sup> वह अपनी शाखाओं को समुद्र तक फैला रही थी और उसकी कांपें फरात नदी तक।

<sup>12</sup> तूने उसकी दीवारें क्यों तोड़ दीं, ताकि जो भी उस रास्ते से गुजरता है उसका फल तोड़ ले।<sup>13</sup> जंगल का सूअर उसे खा जाता है, और जो कुछ मैदान में चलता है वह उस पर चरता है।<sup>14</sup> सेनाओं के परमेश्वर, कृपया लौट आ, स्वर्ग से नीचे देख और देख, और इस बेल की देखभाल कर।<sup>15</sup> वह कौपल जिसे तेरे दाहिने हाथ ने लगाया है, और उस पुत्र की जिसे तूने अपने लिए बलवान किया है।

# भजन संहिता

<sup>16</sup> वह आग से जला दी गई है, वह काट दी गई है, वे तेरे मुख की फटकार से नष्ट हो जाते हैं।<sup>17</sup> तेरा हाथ तेरे दाहिने हाथ के मनुष्य पर हो, उस मनुष्य के पुत्र पर जिसे तुमें अपने लिए बलवान किया है।<sup>18</sup> तब हम तुझसे फिर नहीं हटेंगे, हमें पुनर्जीवित कर, और हम तेरा नाम पृथकरों।

<sup>19</sup> सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमें पुनःस्थापित कर, अपना मुख हम पर चमका, और हम बच जाएंगे।

## 81

### संगीत निर्देशक के लिए; गीतीत पर। आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> हमारे बल के परमेश्वर के लिए आनन्द से गाओ; याकूब के परमेश्वर के लिए उल्लासपूर्वक जयजयकार करो।<sup>2</sup> एक गीत उठाओ डफली बजाओ, मधुर वीणा और सारंगी के साथ।<sup>3</sup> नए चाँद के दिन तुरही फूँको, पूर्णिमा के दिन, हमारे पर्व के समय।<sup>4</sup> क्योंकि यह इसाएल के लिए एक विधि है, याकूब के परमेश्वर की एक व्यवस्था।<sup>5</sup> उसने इसे धूसुफ में एक गवाही के रूप में स्थापित किया, जब वह मिस देश में गया;

मैंने एक भाषा सुनी जिसे मैं नहीं जानता था:

<sup>6</sup> "मैंने उसके कंधे से बोझ हटा दिया, उसके हाथ टोकरी से मुक्त हो गए।" तुमने संकट में पुकारा और मैंने तुम्हें बचाया, मैंने गरज के छिपे स्थान से तुम्हें उत्तर दिया, मैंने तुम्हें मरीबा के जल पर परखा। सेला<sup>8</sup> सुनो, मेरे लोग, और मैं तुम्हें चेतावनी द्वांग, इसाएल, यदि तुम मेरी सुनोगे। तुम्हारे बींक कोई पराया देवता नहीं होगा, और न ही तुम किसी विदेशी देवता की पूजा करोगे।<sup>10</sup> मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस देश से बाहर लाया, अपना मुँह चौड़ा खोलो और मैं उसे भर द्वांग।

<sup>11</sup> परन्तु मेरे लोगों ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी, और इसाएल ने मेरी आज्ञा नहीं मानी।<sup>12</sup> इसलिए मैंने उन्हें उनके हृदय की हठधर्मिता के हवाले कर दिया, कि वे अपनी योजनाओं के अनुसार चलें।

<sup>13</sup> ओह, कि मेरे लोग मेरी सुनते, कि इसाएल मेरी राहों पर चलता।<sup>14</sup> मैं शीघ्र ही उनके शत्रुओं को दबा देता और उनके विरोधियों के विरुद्ध अपना हाथ फेरता।<sup>15</sup> जो यहोवा से धूणा करते हैं वे उसके प्रति आज्ञाकारी

होने का दिखावा करते, और उनका दंडकाल सदा के लिए होता।<sup>16</sup> परन्तु मैं तुम्हें उत्तम गेहूँ से खिलाता, और चट्टान से शहद के साथ तुम्हें तृप्त करता।"

## 82

### आसाप का एक भजन।

<sup>1</sup> परमेश्वर अपनी सभा में खड़ा होता है, वह देवताओं के बीच न्याय करता है।

<sup>2</sup> तुम कब तक अन्यायपूर्वक न्याय करोगे और दुष्टों का पक्ष लोगे? सेला<sup>3</sup> निर्बल और अनाथ का न्याय करो, पीड़ित और दरिद्र को न्याय दो।<sup>4</sup> निर्बल और दरिद्र को बचाओ, उन्हें दुष्टों के हाथ से छुड़ाओ।

<sup>5</sup> वे न तो जानते हैं और न ही समझते हैं, वे अंधकार में चलते हैं, पृथ्वी की सभी नींव हिल गई हैं।

<sup>6</sup> मैंने कहा, "तुम देवता हो, और तुम सब परमप्रधान के पुत्र हो।"<sup>7</sup> फिर भी तुम मनुष्यों की तरह मरोगे, और एक राजकुमार की तरह मिरागो।

<sup>8</sup> उठो, हे परमेश्वर, पृथ्वी का न्याय करो, क्योंकि सभी राष्ट्र तुम्हारे अधिकार में हैं।

## 83

### आसाप का गीत, एक भजन।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, चुप मत रहो, मौन मत रहो और, हे परमेश्वर, स्थिर मत रहो।<sup>2</sup> क्योंकि देखो, तेरे शत्रु कोलाहल कर रहे हैं, और जो तुझसे बैर रखते हैं, वे सिर उठा रहे हैं।<sup>3</sup> वे तेरे लोगों के विरुद्ध चतुर योजनाएँ बनाते हैं, और तेरे प्रियजनों के विरुद्ध मिलकर घड़यन्त्र रचते हैं।<sup>4</sup> वे कहते हैं "आओ, हम उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मिटा दें, ताकि इसाएल का नाम फिर से याद न किया जाए।"

<sup>5</sup> क्योंकि उन्होंने एक मन से मिलकर घड़यन्त्र रचा है, वे तेरे विरुद्ध एक वाचा करते हैं।<sup>6</sup> एदोम के तंत्र और इस्माएली, मोआब और हगरी,<sup>7</sup> गबाल, अम्मोन, और अमालेक, पलिश्ती और सोर के निवासी<sup>8</sup> अश्शूर भी उनके साथ जुड़ गया है, वे लूट के बच्चों की सहायता बन गए हैं। सेला

# भजन संहिता

<sup>०</sup> उनके साथ ऐसा ही कर जैसा मिद्यान के साथ किया,  
जैसा सिसेरा और याबीन के साथ किया किषेन नदी  
पर, <sup>१०</sup> जो एन्दोर में नष्ट हो गए, जो भूमि के लिए खाद  
बन गए। <sup>११</sup> उनके प्रथाओं को ओरेक और जेब के  
समान बना, और उनके सब नेताओं को जेबा और  
सलमूना के समान बना। <sup>१२</sup> जिहुनैं कहा, “आओ, हम  
अपने लिए परमेश्वर के चरागाहों को प्राप्त कर लें।”

<sup>१३</sup> हे मेरे परमेश्वर, उन्हें घृमती धूल के समान बना, हवा  
के समाने भूसी के समान। <sup>१४</sup> जैसे आग जंगल को  
जलाती है, और जैसे ज्वाला पहाड़ों को जलाती है, <sup>१५</sup>  
वैसे ही तू अपनी प्रचंड अंधी से उनका पीछा कर,  
और अपने तृफान से उन्हें भयमित कर। <sup>१६</sup> उनके  
चेहरे को अपमान से भर दे, ताकि वे तेरा नाम खोजें, हे  
प्रभु।

<sup>१७</sup> वे सदा के लिए लज्जित और विस्त्रित हों, और वे  
अपमानित होकर नष्ट हों जाएँ। <sup>१८</sup> ताकि वे जाने कि  
केवल तू ही, जिसका नाम यहोवा है, सारी वृत्थी पर  
परमप्रधान है।

## 84

संगीत निर्देशक के लिए; गितीत पर। कोरह के पुत्रों  
का एक भजन।

<sup>१</sup> हे सेनाओं के प्रभु, आपके निवास स्थान कितने सुन्दर  
हैं। <sup>२</sup> मेरी आत्मा ने प्रभु के अंगनों के लिए लालसा की  
और यहां तक कि तरस गई, मेरा हृदय और मेरा  
शरीर जीवित परमेश्वर के लिए आनंद से गाते हैं। <sup>३</sup>  
पक्षी ने भी एक धर पाया है, और अबाबील ने अपने  
लिए एक घोंसला बनाया है, जहां वह अपने बच्चों को  
रख सके हैं सेनाओं के प्रभु, मेरे राजा और मेरे  
परमेश्वर, आपके वेदियाँ। <sup>४</sup> धन्य हैं वे जो आपके धर में  
वास करते हैं, वे सदा आपकी सुति करते हैं। सेला

<sup>५</sup> धन्य है वह व्यक्ति जिसकी शक्ति आप में है, जिसके  
हृदय में सियोन के मार्ग हैं। बाका की धाटी से  
गुरजरते हुए वे इसे एक झरना बना देते हैं, प्रारम्भिक  
वर्षा भी इसे आशीर्वदों से ढक देती है। <sup>७</sup> वे शक्ति से  
शक्ति की ओर बढ़ते हैं, उनमें से हर एक सियोन में  
परमेश्वर के समान प्रकट होता है।

<sup>८</sup> हे सेनाओं के परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन, सुनो, याकूब  
के परमेश्वर। सेला। हमारे ढाल को देखो, हे परमेश्वर  
और अपने अभिषिक्त के मुख को देखो।

<sup>१०</sup> क्योंकि आपके अंगनों में एक दिन कहीं और के  
हजार दिनों से बहतर है। मैं अपने परमेश्वर के धर की  
दहलीज पर खड़ा होना पसंद करूँगा बजाय दुष्टा के  
तंबुओं में रहने के। <sup>११</sup> क्योंकि प्रभु परमेश्वर सूर्य और  
दाल हैं, प्रभु अनुग्रह और महिमा देते हैं, वह उन लोगों  
से कोई अच्छी वस्तु नहीं रोकते जो ईमानदारी से चलते  
हैं।

<sup>१२</sup> हे सेनाओं के प्रभु, धन्य है वह व्यक्ति जो आप पर  
भरोसा करता है।

## 85

संगीत निर्देशक के लिए। कोरह के पुत्रों का भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु, तूने अपने देश पर अनुग्रह किया, तूने याकूब  
की दशा को सुधारा। <sup>२</sup> तूने अपनी प्रजा के अपराध को  
क्षमा किया, तूने उनके सारे यात्रों को ढक दिया। सेला।  
<sup>३</sup> तूने अपने सारे क्रोध को दूर कर दिया, तूने अपनी  
जलती हुई क्रोध को हटा लिया।

<sup>४</sup> हे हमारे उद्धार के परमेश्वर, हमें पुनःस्थापित कर  
और हम पर अपनी नाराजगी को समाप्त कर। <sup>५</sup> क्या  
तू सदा के लिए हमसे क्रोधित रहेगा? क्या तू अपनी  
क्रोध को फीढ़ी दर फीढ़ी बढ़ाए रखेगा? <sup>६</sup> क्या तू हमें  
फिर से जीवन नहीं देगा, ताकि तेरी प्रजा तुझ में  
आनंदित हो सके? <sup>७</sup> हे प्रभु, हमें अपनी दया दिखा,  
और हमें अपना उद्धार प्रदान कर।

<sup>८</sup> मैं सुनूंगा कि परमेश्वर, प्रभु क्या कहेगा, क्योंकि वह  
अपनी प्रजा से, अपने भक्तों से शांति की बात करेगा,  
और वे मूर्खता की ओर न लौटें। <sup>९</sup> निश्चय ही उसका  
उद्धार उन लोगों के निकट है जो उससे डरते हैं, ताकि  
महिमा हमारे देश में वास करे।

<sup>१०</sup> दया और सत्य एक साथ मिले हैं, धर्म और शांति ने  
एक-दूसरे को दूसरा है। <sup>११</sup> सल्ल वृक्षी से अंकुरित होता  
है, और धर्म स्वर्ग से नीचे देखता है। <sup>१२</sup> वास्तव में, प्रभु  
वही देगा जो अच्छा है, और हमारी भूमि अपनी उपज  
देगी। <sup>१३</sup> धर्म उसके आगे चलेगा और उसके कदमों  
को एक मार्ग में बदल देगा।

## 86

दाऊद की प्रार्थना।

## भजन संहिता

<sup>१</sup> हे प्रभु अपना कान मेरी ओर मुझे उत्तर दो क्योंकि मैं दुखी और दरिद्र हूँ<sup>२</sup> मेरी आत्मा की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूँ हे मेरे परमेश्वर, अपने दास को बचा जो तुझ पर भरोसा करता है।<sup>३</sup> मुझ पर अनुग्रह कर, हे प्रभु क्योंकि मैं दिन भर तुझे पुकारता हूँ<sup>४</sup> अपने दास की आत्मा को आनंदित कर, क्योंकि हे प्रभु मैं अपनी आत्मा को तेरे पास उठाता हूँ।

<sup>५</sup> क्योंकि तू हे प्रभु भला है, और क्षमा करने के लिए तैयार है, और उन सब पर दया करने में प्रभुरु हैं जो तुझे पुकारते हैं।<sup>६</sup> हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी विनती की धनि पर ध्यान दो<sup>७</sup> मेरी विषति के दिन मैं तुझे पुकारूँगा, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा।

<sup>८</sup> तेरे समान कोई नहीं है, हे प्रभु देवताओं में न तेरे कार्यों के समान कोई कार्य है।<sup>९</sup> सब राष्ट्र जिन्हें तूने बनाया है, वे आपें और तेरे सामने दण्डवत करेंगे, हे प्रभु और वे तेरे नाम की महिमा करेंगे।<sup>१०</sup> क्योंकि तू महान है, और अद्भुत कार्य करता है, कैवल तू ही परमेश्वर है।

<sup>११</sup> हे प्रभु मुझे अपनी राह सिखा, मैं तेरी सच्चाई में चरूँगा मेरे हृदय को एक कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूँ।<sup>१२</sup> मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, अपने सारे हृदय से, और मैं तेरे नाम की महिमा सदा करूँगा।<sup>१३</sup> क्योंकि मुझ पर तेरी दया महान है, और तूने मेरी आत्मा को शिओल की गहराई से बचाया है।

<sup>१४</sup> हे परमेश्वर, अभिमानी लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, और हिंसक लोगों की टोली ने मेरे प्राणों की खोज की है, और उहोंने तुझे अपने सामने नहीं रखा है।<sup>१५</sup> पंतु तू हे प्रभु दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर है, क्यों मैं धीमा और दया और सच्चाई में प्रवृत्ता।<sup>१६</sup> मेरी ओर मुझ, और मुझ पर अनुग्रह कर, अपने दास को अपनी शक्ति प्रदान कर, और अपनी दासी के पुत्र को बचा।<sup>१७</sup> मुझे भलाई का एक चिन्ह दिखा, कि जो मुझसे धृष्णा करते हैं, वे इसे देखें और लज्जत हों, क्योंकि तू हे प्रभु ने मेरी सहायता की है और मुझ सांत्वना दी है।

## 87

कोरह के पुत्रों का एक भजन। एक गीत।

<sup>१</sup> उसकी नींव पवित्र पर्वतों में है।<sup>२</sup> यहोवा सियोन के फटकों से प्रेम करता है याकूब के सभी अन्य निवास स्थानों से अधिक।

<sup>३</sup> तेरे विषय में महिमामय बातें कही जाती हैं, हे परमेश्वर के नगर। सेला<sup>४</sup> मैं राहब और बाबुल का उल्लेख करूँगा उन लोगों में जो मुझे जानते हैं देखो, पलिशत और सोर कूश के साथ। 'यह वहाँ जन्मा था।'<sup>५</sup> परन्तु सियोन के विषय में कहा जाएगा, 'यह और वह उसमें जन्म थे,' और पदमप्रधान स्वर्य उसे स्थापित करेगा।<sup>६</sup> यहोवा जब लोगों का पंजीकरण करेगा, तब गिनाएँ। 'यह वहाँ जन्मा था।' सेला<sup>७</sup> तब जो गाते हैं और जो बाँसुरी बजाते हैं, वे कहेंगे 'मेरे सभी आनन्द के साथे तुझ में हैं।'

## 88

एक गीत। कोरह के पुत्रों का एक भजन। संगीत निर्देशक के लिए; महलत लेअनोत के अनुसार।  
हेमान एश्राही का एक मस्किल।

<sup>१</sup> हे प्रभु मेरे उद्धर के परमेश्वर, मैं दिन में और रात में तेरे सामने पुकारता हूँ।<sup>२</sup> मेरी प्रार्थना तेरे सामने पहुँचे, मेरे रोने की ओर अपना कान लगा।

<sup>३</sup> क्योंकि मेरी आत्मा ने बहुत कष्ट सहा है, और मेरा जीवन शिओल के निकट पहुँच गया है।<sup>४</sup> मैं उन लोगों में गिना जाता हूँ जो गड़े मैं उत्तरते हैं, मैं एक ऐसे व्यक्ति के समान हो गया हूँ जिसके पास शक्ति नहीं है।

<sup>५</sup> मृतकों के बीच छोड़ दिया गया, जैसे वे मारे गए जो कब्र में पड़े हैं, जिन्हें तू अब और याद नहीं करता, और वे तेरे हाथ से कट गए हैं।

<sup>६</sup> तूने मुझे सबसे निचले गड़े में रखा है, अधेरे स्थानों में गहराइयों में।<sup>७</sup> तेरा क्रोध मुझ पर ठहरा है, और तूने मुझे अपनी सभी लहरों से पीड़ित किया है। सेला<sup>८</sup> तूने मेरे पाँचियों को मुझसे दूर कर दिया है, तूने मुझे उनके लिए धृष्णास्पद बना दिया है, मैं बंद हूँ और बाहर नहीं जा सकता।<sup>९</sup> मेरी आँख दुख के कारण क्षीण हो गई है।

मैं हर दिन तुझे पुकारता हूँ हे प्रभु मैंने अपने हाथ तुझ तक फैलाए हैं।<sup>१०</sup> क्या तू मृतकों के लिए चमत्कार करेगा? या क्या मृतामार्द उठकर तेरा गुणगान करेगी? सेला<sup>११</sup> क्या तेरी दया कब्र में धोषित की जाएगी, तेरी विश्वासयोग्यता अबद्वैन में।<sup>१२</sup> क्या तेरे चमत्कार

# भजन संहिता

अंधकार में ज्ञात होंगे? और तेरी धार्मिकता विस्मृति की भूमि में?

<sup>13</sup> परन्तु मैं हे प्रभु तुझसे सहायता के लिए पुकारता हूँ<sup>14</sup> और प्रातःकाल में मेरी प्रार्थना तेरे सामने आती है।  
<sup>14</sup> हे प्रभु तू मेरी आन्ता को क्यों अस्तीकार करता है?  
तू मुझसे अपना मुख क्यों छिपाता है?

<sup>15</sup> मैं अपनी जवानी से ही दुखी था और मरने के करीब था मैं तेरे आतंक सहता हूँ<sup>16</sup> मैं थक गया हूँ<sup>17</sup> तेरा जलता हुआ क्रोध मुझ पर से गुजर चुका है तेरे आतंक ने मुझे नष्ट कर दिया है।<sup>17</sup> उन्होंने मुझे पूरे दिन पानी की तरह घेर लिया है उन्होंने मुझे पूरी तरह से धेर लिया है।<sup>18</sup> तूने प्रेमी और मित्र को मुझसे दूर कर दिया है, मेरे परिचित अंधकार में हैं।

## 89

### एजराही एथान की एक मस्किल।

<sup>1</sup> मैं सदा के लिए यहोवा की दया का गीत गाऊँगा।  
अपने मुख से मैं तेरी विश्वासयोग्यता को सभी पीढ़ियों में प्रकट करूँगा।<sup>2</sup> क्योंकि मैंने कहा है, "दया सदा के लिए स्थापित होगी; वर्षा में तू अपनी विश्वासयोग्यता को स्थापित करेगा।"<sup>3</sup> "मैंने अपने चुने हुए के साथ एक बाचा की है, मैंने अपने सेवक दाकुद को पाया है, अपने पवित्र तेल से मैंने उसे अभिषेक किया है।<sup>21</sup> जिसके साथ मेरा हाथ स्थिर रहेगा, मेरा हाथ भी उसे बल देगा।<sup>22</sup> श्रुति उसे खोखा नहीं देगे, न ही दृष्टि का पुत्र उसे पीड़ा देगा।<sup>23</sup> परन्तु मैं उसके विरोधियों को उसके सामने कुचल द्वागा, और जो उसके बैर रखते हैं उन्हें मारूँगा।<sup>24</sup> मेरी विश्वासयोग्यता और मेरी दया उसके साथ होगी, और मेरे नाम में उसका सींग ऊँचा होगा।<sup>25</sup> मैं उसके हाथ को समुद्र पर रखूँगा, और उसकी दाहिनी हाथ को नदियों पर।<sup>26</sup> वह मुझसे कहेगा, "तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर, और मेरी उद्धार की चूटान।"<sup>27</sup> मैं उसे अपना पहिलोठां बनाऊँगा, पूर्वी के राजाओं में सबसे ऊँचा।

<sup>5</sup> स्वर्ग तेरे अद्भुत कार्यों की स्तुति करेगा, हे यहोवा, तेरी विश्वासयोग्यता भी पवित्र लोगों की सभा में<sup>6</sup> क्योंकि आकाश में कौन यहोवा के तुल्य है?  
शक्तिशाली पुत्रों में से कौन यहोवा के समान है,<sup>7</sup> एक परमेश्वर जो पवित्र लोगों की परिषद में अत्यधिक भयभीत है, और उन सभी से अद्भुत है जो उसके चारों ओर है।<sup>8</sup> सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तेरे समान कौन है, शक्तिशाली प्रभु? तेरी विश्वासयोग्यता भी तुझे धेरे रहती है।

<sup>9</sup> तू समुद्र की लहरों पर शासन करता है, जब उसकी लहरें उठती हैं, तू उन्हें शांत करता है।<sup>10</sup> तूने स्वयं रहाब को मारे गए के समान कुचल दिया, तूने अपने शक्तिशाली हाथ से अपने शत्रुओं को तितर-बितर कर दिया।<sup>11</sup> आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है, संसार और जो कुछ उसमें है, तूने उन्हें स्थापित किया है।<sup>12</sup> उत्तर

और दक्षिण, तूने उन्हें रचा है, ताबोर और हर्मोन तेरे नाम पर आनंद से जयजयकार करते हैं।<sup>13</sup> तेरा हाथ शक्तिशाली है, तेरा दाहिना हाथ ऊँचा है।

<sup>14</sup> धर्म और न्याय तेरे सिंहासन की नींव हैं दया और सत्य तेरे आगे चलते हैं।<sup>15</sup> धन्य हैं वे लोग जो आनंद की धनि को जानते हैं, हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं।<sup>16</sup> तेरे नाम में वे दिन भर आनंदित रहते हैं, और तेरी धार्मिकता से वे ऊँचे होते हैं।<sup>17</sup> क्योंकि तू उनकी शक्ति की महिमा है, और तेरे अनुग्रह से हमारा सींग ऊँचा होता है।<sup>18</sup> क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की है, और हमारा राजा इसाएल के पवित्र का है।

<sup>19</sup> एक बार तूने अपने भक्तों को दर्शन में कहा, "मैंने एक शक्तिशाली को सहायता दी है, मैंने लोगों में से एक चुने हुए को ऊँचा किया है।"<sup>20</sup> मैंने अपने सेवक दाकुद को पाया है, अपने पवित्र तेल से मैंने उसे अभिषेक किया है।<sup>21</sup> जिसके साथ मेरा हाथ स्थिर रहेगा, मेरा हाथ भी उसे बल देगा।<sup>22</sup> श्रुति उसे खोखा नहीं देगे, न ही दृष्टि का पुत्र उसे पीड़ा देगा।<sup>23</sup> परन्तु मैं उसके विरोधियों को उसके सामने कुचल द्वागा, और जो उसके बैर रखते हैं उन्हें मारूँगा।<sup>24</sup> मेरी विश्वासयोग्यता और मेरी दया उसके साथ होगी, और मेरे नाम में उसका सींग ऊँचा होगा।<sup>25</sup> मैं उसके हाथ को समुद्र पर रखूँगा, और उसकी दाहिनी हाथ को नदियों पर।<sup>26</sup> वह मुझसे कहेगा, "तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर, और मेरी उद्धार की चूटान।"<sup>27</sup> मैं उसे अपना पहिलोठां बनाऊँगा, पूर्वी के राजाओं में सबसे ऊँचा।<sup>28</sup> मैं उसके लिए अपनी दया को सदा बनाए रखूँगा, और मेरी बाचा उसके लिए स्थिर रहेगी।<sup>29</sup> इसलिए मैं उसके वंश को सदा के लिए स्थिर करूँगा, और उसके सिंहासन को आकाश के दिनों के समान।

<sup>30</sup> यदि उसके पुत्र मेरी व्यक्तस्था को छोड़ दें और मेरे नियमों पर न चलें<sup>31</sup> यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें और मेरे आदेशों का पालन न करें<sup>32</sup> तब मैं उनके अपराध को छड़ी से दंड द्वागा, और उनकी दोष को विपत्तियों से।<sup>33</sup> परन्तु मैं उससे अपनी दया नहीं हटाऊँगा, न ही अपनी विश्वासयोग्यता में झूठ बोलूगा।<sup>34</sup> मैं अपनी बाचा को नहीं तोड़ूगा, न ही अपने होंठों से निकले हुए को बदलूगा।<sup>35</sup> मैंने अपनी पवित्रता की शपथ खाइ है, मैं दाकुद से झूठ नहीं बोलूगा।<sup>36</sup> उसका वंश सदा के लिए स्थिर रहेगा, और उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य के समान।<sup>37</sup> वह सदा के

# भजन संहिता

लिए चंद्रमा के समान स्थिर रहेगा, और आकाश में  
एक साक्षी विश्वासयोग्य है।<sup>38</sup> सेला

<sup>38</sup> परन्तु तूने अस्वीकार कर दिया है और तिरस्कृत  
किया है, तूने अपने अभिषिक्त के विरुद्ध क्रोध से भर  
गया है।<sup>39</sup> तूने अपने सेवक की गवाको अस्वीकार  
कर दिया है, तूने उसके मुकुट को धूल में अपवित्र कर  
दिया है।<sup>40</sup> तूने उसकी सभी दीवारों को तोड़ दिया है,  
तूने उसके गढ़ों को खंडहर बना दिया है।<sup>41</sup> सभी जो  
रास्ते से ऊजरते हैं उसे लूटते हैं, वह अपने पड़ोसियों  
के लिए एक अपमान बन गया है।<sup>42</sup> तूने उसके  
विरोधियों के दाहिने हाथ को ऊँचा किया है, तूने उसके  
सभी शत्रुओं को आनंदित किया है।<sup>43</sup> तूने उसकी  
तलवार की धार को भी पीछे कर दिया है, और उसे  
युद्ध में खड़ा नहीं किया है।<sup>44</sup> तूने उसकी शोभा का  
अंत कर दिया है और उसके सिंहासन को भूमि पर  
गिरा दिया है।<sup>45</sup> तूने उसकी जवानी के दिनों को छोटा  
कर दिया है, तूने उसे लज्जा से ढक दिया है। सेला

<sup>46</sup> कब तक, हे यहोवा? क्या तू सदा के लिए छिपा  
रहेगा? क्या तेरा क्रोध आग की तरह जलता रहेगा?<sup>47</sup>  
मेरे जीवनकाल को याद कर, क्योंकि तूने मनुष्यों के  
पुत्रों को किस व्यर्थता के लिए रचा है।<sup>48</sup> कौन मनुष्य  
जीवित रह सकता है और मृत्यु को नहीं देख सकता?  
क्या वह अपनी आत्मा को शिजोल की शक्ति से बचा  
सकता है? सेला<sup>49</sup> तेरे पूर्व के दया के कार्य कहाँ हैं हे  
यहोवा, जो तूने अपनी विश्वासयोग्यता में दाऊद से  
शपथ खाई थी?<sup>50</sup> याद कर, हे यहोवा, अपने सेवकों  
के विरुद्ध अपमान के सामैं अपने हृदय में सभी अनेक  
लोगों के अपमान को सहता हूँ,<sup>51</sup> जिनसे तेरे शत्रुओं ने  
अपमान किया है, हे यहोवा, जिनसे उन्होंने तेरे  
अभिषिक्त के पदचिन्हों का अपमान किया है।

<sup>52</sup> यहोवा की सदा स्तुति हो आमीन और आमीन।

## १०

मूसा की प्रार्थना, जो परमेश्वर का जन था।

<sup>1</sup> प्रभु, तू पीढ़ी दर पीढ़ी हमारा निवास स्थान रहा है।<sup>2</sup>  
इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए या तूने पृथ्वी और  
संसार को रचा, अनादि से अनंत तक, तू ही परमेश्वर  
है।

<sup>3</sup> तू मनुष्यों को फिर मिट्टी में लौटा देता है और कहता  
है, “लौट आओ, हे मनुष्यों के पुत्रों।”<sup>4</sup> क्योंकि तेरी दृष्टि

में हजार वर्ष जैसे कल का दिन जो बीत गया, या रात  
का एक पहर।<sup>5</sup> तू उन्हें बाढ़ की तरह बहा ले जाता है,  
वे सो जाते हैं। सुबह को वे नए उगे हुए घास के समान  
होते हैं।<sup>6</sup> सुबह को वह फलती-फूलती है और नई  
होती है, शाम को वह मुझा जाती है और सूखे जाती है।

<sup>7</sup> क्योंकि हम तेरे क्रोध से नष्ट हो गए हैं, और तेरे रोष  
से हम भयभीत हुए हैं।<sup>8</sup> तूने हमारे अपराधों को अपने  
सामने रखा है, हमारे छिपे हुए पापों को अपनी  
उपायिक्ति के प्रकाश में।<sup>9</sup> क्योंकि हमारे सब दिन तेरे  
क्रोध में समाप्त हो गए हैं, हमने अपने वर्ष एक आह  
की तरह समाप्त किए हैं।<sup>10</sup> हमारे जीवन के दिन  
सतर वर्ष के होते हैं, और यदि सामर्थ्य हो, तो अस्सी  
वर्ष के, फिर भी उनका गर्व केवल कष्ट और दुःख है,  
क्योंकि वह शीघ्र बीत जाता है, और हम उड़ जाते हैं।<sup>11</sup>  
तेरे क्रोध की शक्ति को कौन समझ सकता है और  
हमें हमारे दिन गिनना सिखा, कि हम तुझे बुद्धि का  
हृदय प्रस्तुत कर सकें।

<sup>13</sup> लौट आ, हे प्रभु, यह कब तक होगा? और अपने  
दासों पर दया कर।<sup>14</sup> सुबह को अपनी करुणा से हमें  
तृप्त कर, कि हम अपने सब दिनों में आनंदित और  
हर्षित हों।<sup>15</sup> हमें उतने ही दिनों तक आनंदित कर,  
जितने तूने हमें दुःख दिया है, और उन वर्षों में जिनमें  
हमने बुराई देखी है।<sup>16</sup> तेरे काम तेरे दासों पर प्रकट  
हों और तेरी महिमा उनके बच्चों पर।

<sup>17</sup> हमारे परमेश्वर का अनुग्रह हम पर बना रहे, और  
हमारे हाथों के काम को हमारे लिए स्थिर कर— हाँ,  
हमारे हाथों के काम को स्थिर कर।

**११** जो परमप्रधान की आड़ में बैठा है वह  
सर्वशक्तिमान की छाया में निवास करेगा।<sup>2</sup> मैं यहोवा  
से कहूँगा, “मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़, मेरा  
परमेश्वर, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ।”

<sup>3</sup> क्योंकि वही तुझे बहेलिये के जाल से और घातक  
महामारी से बचाता है।<sup>4</sup> वह तुझे अपने पंखों से ढाँक  
लेगा, और तू उसके पंखों के नीचे शरण लेगा, उसकी  
सच्चाई तेरी ढाल और दीवार है।<sup>5</sup> तू न रात के भय से  
डरेगा, न उस तीर से जो दिन में उड़ता है।<sup>6</sup> न उस  
महामारी से जो अंधकार में चलती है, न उस विनाश से  
जो दोपहर में उजाइता है।<sup>7</sup> तेरे पास हजार गिर  
सकते हैं और तेरे दाहिने हाथ पर दस हजार परन्तु

# भजन संहिता

वह तुझ तक नहीं पहुँचेगा।<sup>१०</sup> तू केवल अपनी आँखों से देखेगा और दृष्टि के प्रतिशोध को देखेगा।

<sup>०</sup> क्योंकि तूने यहोवा को, जो मेरा शरणस्थान है, परमप्रधान को अपना निवास स्थान बनाया है।<sup>१०</sup> तुझ पर कोई विपत्ति नहीं आएगी, और न कोई महामारी तेरे तबू के पास आएगी।<sup>११</sup> क्योंकि वह अपने स्वर्गद्वारों को तेरे विषय में आज्ञा देगा, कि वे तेरी सारी राहों में तेरा रक्षण करें।<sup>१२</sup> वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे, ताकि तेरा पाव पवर से न टकराए।<sup>१३</sup> तू सिंह और नाग पर चलेगा, तू जगन सिंह और सर्प को रौदेगा।

<sup>१४</sup> "क्योंकि उसने मुझसे प्रेम किया है, मैं उसे बचाऊँगा, मैं उसे ऊँचे स्थान पर स्थिर करूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जाना है।<sup>१५</sup> वह मुझसे प्रार्थना करेगा, और मैं उसे उत्तर दूँगा, मैं संकट में उसके साथ रहूँगा, मैं उसे छुड़ाऊँगा और उसका सम्मान करूँगा।<sup>१६</sup> मैं उसे दीघरी से तृप्त करूँगा, और उसे अपना उद्घार दिखाऊँगा।"

## १२

### एक भजन, विश्राम दिन के लिए एक गीत।

<sup>१</sup> यहोवा का धन्यवाद करना अच्छा है और हे परमप्रधान, तेरे नाम की स्तुति गान्।<sup>२</sup> प्रातःकाल में तेरी करुणा की धोषणा करना और रात में तेरी विश्वासयोग्यता की,<sup>३</sup> दस तारों वाले वीणा और वीणा के साथ, मधुर संगीत के साथ।

<sup>४</sup> क्योंकि हे यहोवा, तूने जो किया है उससे तूने मुझे आनंदित किया है, मैं तेरे हाथों के कार्यों पर आनंद से गाऊँगा।<sup>५</sup> हे यहोवा, तेरे कार्य कितने महान हैं! तेरे विचार बहुत गहरे हैं।<sup>६</sup> एक मूर्ख व्यक्ति को कोई ज्ञान नहीं होता, न ही एक मूर्ख व्यक्ति इसे समझता है।<sup>७</sup> जब दृष्टि धास की तरह उगते हैं और जो अन्याय करते हैं वे फलते फूलते हैं, तो यह केवल इसलिए होता है कि वे सदा के लिए नष्ट हो जाएं।

<sup>८</sup> परंतु दू हे यहोवा, सदा के लिए ऊँचा है।

<sup>९</sup> क्योंकि देख, तेरे शत्रु हे यहोवा, देख, तेरे शत्रु नष्ट हो जाएंगे, जो अन्याय करते हैं वे सब तितर-बितर हो जाएंगे।<sup>१०</sup> परंतु तूने मेरे सींग को जंगली बैल के समान ऊँचा किया है, मैं ताजे तेल से अभिषिक्त हुआ हूँ।<sup>११</sup>

और मेरी आँख ने मेरे शत्रुओं को देखा है, मेरे कान उन कुकर्मियों के बारे में सुनते हैं जो मेरे विरुद्ध उठते हैं।

<sup>१२</sup> धर्मी व्यक्ति खजूर के पेड़ की तरह फलता-फूलता रहेगा, वह लेबनान के देवदार की तरह बढ़ेगा।<sup>१३</sup> यहोवा के घर में लगाए गए वे हमारे परमेश्वर के आँगनों में फलते-फूलते रहेंगे।<sup>१४</sup> वे वृद्धावस्था में भी फल देंगे वे रस से भरे और बहुत हरे-भरे होंगे।<sup>१५</sup> यह धोषित करने के लिए कि यहोवा सीधा है, वह मेरी चट्ठान है, और उसमें कोई कपट नहीं है।

**१६** **१३** यहोवा राज्य करता है, वह महिमा से वस्तु धारण करता है, यहोवा ने शक्ति से अपने आप को वस्तु धारण किया और धेर लिया है। वास्तव में संसार ढट्ठता से स्थापित है, वह नहीं हिलेगा।<sup>१२</sup> तेरा सिंहासन प्राचीन काल से स्थापित है, तू अनादि काल से है।

<sup>३</sup> बाढ़ों ने उठाया है, हे यहोवा, बाढ़ों ने अपनी आवाज उठाई है, बाढ़ों अपनी गर्जन लहरें उठाती हैं।<sup>४</sup> अनेक जलधाराओं की ध्वनि से अधिक, समुद्र के प्रबल तरंगों से अधिक, ऊँचाई पर यहोवा शक्तिशाली है।

<sup>५</sup> तेरी गवाहियाँ पूरी तरह से पुष्टी की गई हैं, पवित्रता तेरे धर को शोभायमान करती है, हे यहोवा, सदा के लिए।

**१४** **१४** हे प्रतिशोध के परमेश्वर, प्रतिशोध के परमेश्वर, प्रकट हो<sup>२</sup> उठो, हे पृथ्वी के व्याधीश, धमंडी को प्रतिफल दो।<sup>३</sup> कब तक, हे प्रभु दृष्ट—कब तक दृष्ट विजयी होंगे?

<sup>४</sup> वे शब्दों की बाढ़ बहाते हैं, धमंड से बोलते हैं, अन्याय करने वाले सब धमंड करते हैं।<sup>५</sup> वे तेरे लोगों को कुचलते हैं, हे प्रभु, और तेरी विरासत को पीड़ा देते हैं।<sup>६</sup> वे विधवा और परदेशी को मार डालते हैं, और अनाथों की हत्या करते हैं।<sup>७</sup> वे कहते हैं, "प्रभु नहीं देखता, न ही याकूब का परमेश्वर ध्यान देता है!"

<sup>८</sup> ध्यान दो हे मूर्ख लोगों में से मूर्खों और कब समझोगे, हे नासमझों! जिसने कान लगाया, क्या वह नहीं सुनता? जिसने आँख बनाई, क्या वह नहीं देखता?

<sup>१०</sup> जो शरों को अनुशासित करता है, क्या वह नहीं डाटेगा, जो मनुष्यों को ज्ञान दिखाता है?<sup>११</sup> प्रभु मनुष्यों के विचारों को जानता है, कि वे केवल एक सांस हैं।

## भजन संहिता

<sup>12</sup> धन्य है वह मनुष्य जिसे तू अनुशासित करता है, हे प्रभु और जिसे तू अपनी व्यक्ति से सिखाता है<sup>13</sup> ताकि तू उसे संकट के दिनों से राहत दे सके, जब तक कि दुष्टों के लिए गङ्गा न खोदा जाए।<sup>14</sup> क्योंकि प्रभु अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, न ही अपनी विरासत को त्यागेगा।<sup>15</sup> क्योंकि न्याय फिर से धर्ममय होगा, और सभी सीधे दिल वाले उसका अनुसरण करेंगे।

<sup>16</sup> कौन मेरे लिए दुष्टों के खिलाफ खड़ा होगा? कौन मेरे लिए अन्याय करने वालों के खिलाफ खड़ा होगा?

<sup>17</sup> यदि प्रभु मेरी सहायता न करता, तो मेरी आत्मा शीघ्र ही मौन की भूमि में वास करती।<sup>18</sup> यदि मैं कहूँ “मेरा दैर किसल गया है” तो तेरी दया, हे प्रभु, मुझे संभालोगी।<sup>19</sup> जब मेरी चिंताएँ मेरे भीतर बढ़ती हैं, तो तेरा सांत्वना मेरी आत्मा को आनंदित करती है।

<sup>20</sup> क्या विनाश का सिंहासन तुझसे जुड़ा हो सकता है, जो आदेश द्वारा शारात रचता है?<sup>21</sup> वे धर्मी के जीवन के खिलाफ एकजुट होते हैं और निर्दोष को मृत्यु की सजा देते हैं।<sup>22</sup> परंतु प्रभु मेरा शरणस्थान रहा है, और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की बृहत है।<sup>23</sup> उसने उनकी अन्याय को उन पर वापस लाया है, और वह उन्हें उनके बुराई में नष्ट करेगा; प्रभु हमारा परमेश्वर उन्हें नष्ट करेगा।

**95** आओ, हम यहोवा के लिए अनन्द से गाएँ हम अपनी उद्धार की बृहतान के लिए उल्लास से जयजयकार करें।<sup>2</sup> हम उसके सामने धन्यवाद के गीतों में उल्लास से जयजयकार करें।

<sup>3</sup> क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है और सब देवताओं से ऊपर महान राजा है,<sup>4</sup> जिसके हाथ में पृथ्वी की गहराइयाँ हैं, पर्वतों की चोटियाँ भी उसकी हैं;<sup>5</sup> समुद्र उसका है, क्योंकि उसी ने उसे बनाया, और उसकी ही हाथों ने सखी भूमि का निर्माण किया।

<sup>6</sup> आओ, हम उपासना करें और दूरों, हम अपने निर्माता यहोवा के सामने घुटने टेकें।<sup>7</sup> क्योंकि वही हमारा ईश्वर है, और हम उसके चरागाह के लोग और उसके हाथ की भेड़ें हैं।

आज, यदि तुम उसकी आवाज सुनो,<sup>8</sup> तो अपने हृदय को मरीज़ के सामने कठोर मत करो, जैसे जगल में मस्सा के दिन हुआ था,<sup>9</sup> जब तुम्हारे पिताओं ने मुझे परखा, उहोने मुझे परखा, यद्यपि उहोने मेरे कार्य

देखे थे।<sup>10</sup> चालीस वर्षों तक मैंने उस पीढ़ी से घृणा की, और कहा कि वे हृदय में भटकने वाले लोग हैं और वे मेरे मार्गों को नहीं जानते।<sup>11</sup> इसलिए मैंने अपने क्रोध में शपथ ली, वे निश्चित रूप से मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।

**96** प्रभु के लिए एक नया गीत गाओँ, प्रभु के लिए गाओँ है सारी पृथ्वी।<sup>2</sup> प्रभु के लिए गाओँ, उसके नाम को आशीर्वद दो; उसके उद्धार की शुभ सूचना दिन प्रतिदिन सुनाओ।<sup>3</sup> राष्ट्रों के बीच उसकी महिमा का वर्णन करो, सभी लोगों के बीच उसके अद्युत कार्यों का।

<sup>4</sup> क्योंकि प्रभु महान है, और अत्यधिक स्तुति के योग्य है, वह सभी देवताओं से अधिक भय योग्य है।<sup>5</sup> क्योंकि सभी लोगों के देवता मूर्तियाँ हैं, परन्तु प्रभु ने आकाशों को बनाया।<sup>6</sup> उसके सामने वैभव और महिमा हैं, उसके पवित्रस्थान में शक्ति और सुंदरता हैं।

<sup>7</sup> प्रभु को अर्पण करो, हे लोगों के परिवारों प्रभु को महिमा और शक्ति अर्पण करो।<sup>8</sup> प्रभु के नाम की महिमा अर्पण करो, एक भेट लाओ और उसके आँगनों में प्रवेश करो।<sup>9</sup> पवित्र स्तरों में प्रभु की आगाधना करो, उसके सामने कांप उठो, हे सारी पृथ्वी।<sup>10</sup> राष्ट्रों के बीच कहो, “प्रभु राज्य करता है, वासन में संसार ढूँढ़ता से साधित है, वह नहीं हिलेगा, वह लोगों का न्याय निष्पक्षता से करेगा।”

<sup>11</sup> आकाश अनन्दित हो, और पृथ्वी हृषित हो, समुद्र गरज उठे, और जो कुछ उसमें है<sup>12</sup> मैदान उल्लासित हो, और जो कुछ उसमें है तब वन के सभी वृक्ष आनन्द से गाएँ।<sup>13</sup> प्रभु के सामने, क्योंकि वह आ रहा है, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने आ रहा है। वह संसार का न्याय धर्म में करेगा, और लोगों का अपनी विश्वासयोग्यता में।

**97** यहोवा राज्य करता है, पृथ्वी आनन्दित हो, बहुत से द्वीप आनन्दित हों।<sup>12</sup> बादल और धोर अंधकार उसके चारों ओर हैं, धर्म और न्याय उसके सिंहासन की नींव हैं।<sup>13</sup> उसके आगे आग चलती है और उसके चारों ओर उसके शत्रुओं को भस्म कर देती है।<sup>4</sup> उसकी बिजली ने संसार को प्रकाशित कर दिया, पृथ्वी ने इसे देखा और कांप उठी।<sup>5</sup> पहाड़ यहोवा की उपस्थिति में मोम की तरह पिघल गए समरूप पृथ्वी के यहोवा की उपस्थिति में।<sup>6</sup> आकाश उसकी धार्मिकता

# भजन संहिता

की घोषणा करता है, और सभी लोगों ने उसकी महिमा देखी है।

<sup>7</sup> वे सब लज्जित हों जो खुदी हुई मूर्तियों की सेवा करते हैं, जो मूर्तियों में घमंड करते हैं, उसकी आराधना कर, है सब देवताओं।

<sup>8</sup> सियोन ने यह सुना और आनन्दित हुआ, और यहौवा की पुत्रियों ने आनन्द मनाया आपके नायों के कारण, है यहौवा।<sup>9</sup> क्योंकि आप समस्त पृथ्बी के ऊपर यहौवा परमप्रधान हैं आप सब देवताओं से बहुत ऊंचे हैं।<sup>10</sup> बुराई से धूणा करो है यहौवा से प्रेम करने वालों, जो उसके भक्तों की आत्माओं की रक्षा करता है, वह उन्हें दुर्शिंह के हाथ से बचाता है।<sup>11</sup> धर्मियों के लिए प्रकाश बोया गया है, और सीधे हृदय वालों के लिए आनन्द।<sup>12</sup> यहौवा में आनन्दित हो, है धर्मियों, और उसके पवित्र नाम की प्रशंसा करो।

## 98

### एक भजन।

<sup>1</sup> प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने अद्भुत काम किए हैं, उसकी दाहिनी हाथ और उसकी पवित्र भुजा ने उसके लिए विजय प्राप्त की है।

<sup>2</sup> प्रभु ने अपनी मुक्ति प्रकट की है, उसने राष्ट्रों के सामने अपनी धार्मिकता प्रकट की है।<sup>3</sup> उसने इसाएल के घराने के प्रति अपनी दया और अपनी विश्वासयोग्यता को याद किया है, पृथ्बी के सभी छोरों ने हमारे परमेश्वर की मुक्ति देखी है।

<sup>4</sup> हे सारी पृथ्बी! प्रभु के लिए आनन्द से जयजयकार करो, खुश रहो और आनन्द से गाओ और सुन्तुत करो।

<sup>5</sup> वीणा के साथ प्रभु की सुन्तुत करो, वीणा और मधुर ध्वनि के साथ।<sup>6</sup> तुराहियों और नरसिंग की ध्वनि के साथ राजा, प्रभु के सामने आनन्द से जयजयकार करो।

<sup>7</sup> समुद्र और उसकी सारी सामग्री गरज उठे, संसार और उसमें निवास करने वाले सभी।<sup>8</sup> नदियाँ ताली बजाएं, पर्वत मिलकर आनन्द से गाएं, प्रभु के सामने, क्योंकि वह पृथ्बी का न्याय करने आ रहा है, वह संसार का न्याय धर्म के साथ करेगा, और लोगों का न्याय निष्पक्षता के साथ करेगा।

**99** यहौवा राज्य करता है लोग कांप उठते हैं, वह कर्स्लों के ऊपर सिंहासन पर विजामान है, पृथ्बी

कांपती है।<sup>1</sup> यहौवा सियोन में महान है, और वह सब लोगों के ऊपर महान है।<sup>2</sup> वे आपके महान और भयानक नाम की स्तुति करें, वह पवित्र है।

<sup>4</sup> राजा की शक्ति न्याय से प्रेम करती है, आपने निष्पक्षता स्थापित की है, आपने याकूब में न्याय और धर्म का पालन किया है।<sup>5</sup> हमारे परमेश्वर यहौवा को ऊँचा करो और उसके चरणों की चौकी पर आराधना करो, वह पवित्र है।

<sup>6</sup> प्रूसा और हारून उसके याजकों में थे, और शम्पूएल उन लोगों में था जिन्होंने उसके नाम को पुकारा, उन्होंने यहौवा को पुकारा और उसने उन्हें उत्तर दिया।<sup>7</sup> उसने बादल के स्तंभ में उनसे बात की, उन्होंने उसकी गवायियों का पालन किया और वह विधि जो उसने उन्हें दी।

<sup>8</sup> हमारे परमेश्वर यहौवा, आपने उन्हें उत्तर दिया, आप उनके लिए एक क्षमाशील परमेश्वर थे, फिर भी उनके बुरे कर्मों के बदला लेने वाले थे।<sup>9</sup> हमारे परमेश्वर यहौवा को ऊँचा करो और उसकी पवित्र पहाड़ी पर आराधना करो, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहौवा पवित्र है।

## 100

### धन्यवाद का भजन।

<sup>1</sup> हे सारी पृथ्बी के लोगों, यहौवा के लिए जयजयकार करो।<sup>2</sup> यहौवा की सेवा आनन्द के साथ करो, उसके सामने उल्लास के साथ आओ।<sup>3</sup> यह जान लो कि यहौवा ही परमेश्वर है उसी ने हमें बनाया है, और हम रखय ने नहीं, हम उसके लोग और उसकी चाराई की भेंटे हैं।<sup>4</sup> उसके फाटकों में धन्यवाद के साथ प्रवेश करो, और उसके आँगनों में स्तुति के साथ। उसका धन्यवाद करो, उसके नाम को धन्य कहो।<sup>5</sup> क्योंकि यहौवा भला है, उसकी दया सदा की है, और उसकी विश्वासयोग्यता पीढ़ी-पीढ़ी तक है।

## 101

### दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मैं करूणा और न्याय का गीत गाऊँगा, हे प्रभु मैं तेरी स्तुति करूँगा।<sup>2</sup> मैं निर्दोष मार्ग पर ध्यानपूर्वक चलूँगा। तू कब मेरे पास आएगा?

## भजन संहिता

मैं अपने घर में अपने हृदय की सच्चाई के साथ  
चरूँगा।<sup>3</sup> मैं अपनी आँखों के सामने कोई व्यर्थ रसु  
नहीं रखूँगा।

मैं उन लोगों के कामों से छुणा करता हूँ जो भटक जाते  
हैं वह मुझसे चिपके नहीं रहेंगे।<sup>4</sup> एक विकृत हृदय  
मुझसे दूर रहेगा, मैं कोई बुराई नहीं जानूँगा।

<sup>5</sup> जो कोई अपने पड़ोसी की गुप्त रूप से निंदा करता  
है, मैं उसे समाप्त कर दूँगा, जो धमंडी दृष्टि और  
अहंकारी हृदय बाला है, उसे मैं सहन नहीं करूँगा।

<sup>6</sup> मेरी आँखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर होंगी, कि वे  
मेरे साथ निवास करें, जो निर्दोष मार्ग में चलता है वही  
मेरी सेवा करेगा।

<sup>7</sup> जो छल करता है वह मेरे घर में नहीं रहेगा, जो झूठ  
बोलता है वह मेरे सामने अपनी स्थिति बनाए नहीं  
रखेगा।

<sup>8</sup> हर सुबह मैं देश के सभी दुष्टों को नष्ट कर दूँगा,  
ताकि प्रभु के नगर से उन सभी को समाप्त कर दूँ जो  
अन्याय करते हैं।

## 102

एक प्रार्थना पीड़ित की जब वह कमजोर होता है  
और अपनी शिकायत प्रभु के सामने उंडेलता है।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुना और मेरी सहायता के लिए  
मेरी पुकार तेरे पास पहुँचै।<sup>2</sup> मेरी विपत्ति के दिन  
अपना मुख मुझसे न छिपा, अपना कान मेरी ओर  
दूका, जिस दिन मैं पुकारूँ, शिष्ठि मुशी उत्तर दे।

<sup>3</sup> क्योंकि मेरे दिन थुएँ में समाप्त हो गए हैं, और मेरी  
हड्डियाँ खूबहे की तरह जल गई हैं।<sup>4</sup> मेरा हृदय धास  
की तरह मारा गया है और मुरझा गया है, बास्तव में  
अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ।<sup>5</sup> मेरी कराह की  
आगाज के कारण मेरी हड्डियाँ मेरे मांस से चिपकी हैं।  
<sup>6</sup> मैं जंगल के पेलिकन के समान ही गया हूँ, मैं

खंडहरों के उल्लू के समान ही गया हूँ।<sup>7</sup> मैं जागता  
रहता हूँ, मैं छत पर अकेले पक्षी के समान ही गया हूँ।  
<sup>8</sup> मेरे शून्य दिन भर मेरा उपहास करते हैं, जो मेरा  
मजाक उड़ाते हैं, वे मेरे नाम को शाप के रूप में  
उपयोग करते हैं।<sup>9</sup> क्योंकि मैंने राख को रोटी की तरह  
खाया है, और अपने पेय को रोते हुए मिलाया है।<sup>10</sup>

तेरे क्रोध और तेरे रोष के कारण, क्योंकि तूने मुझे  
उठाकर फेंक दिया है।<sup>11</sup> मेरे दिन लम्बी छाया की  
तरह हैं, और मैं धास की तरह मुरझा गया हूँ।

<sup>12</sup> परन्तु तू हे प्रभु, सदा बना रहता है, और तेरा नाम  
पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।<sup>13</sup> तू उठेगा और सिद्धोन  
पर दया करेगा, क्योंकि उसके पाति अनुग्रह करने का  
समय आ गया है, क्योंकि निधारित समय आ गया है।

<sup>14</sup> निश्चय ही तेरे सेवक उसकी पथरों में प्रसन्न होते हैं,  
और उसकी धूल पर दया करते हैं।<sup>15</sup> इसलिए ग्रष्ट  
प्रभु के नाम से दरेंगे, और पृथ्वी के सभी राजा तेरी  
महिमा से।<sup>16</sup> क्योंकि प्रभु ने सिद्धोन का निर्माण किया  
है, वह अपनी महिमा में प्रकट हुआ है।<sup>17</sup> उसने दरिद्र  
की प्रार्थना पर ध्यान दिया है, और उनकी प्रार्थना का  
तिरस्कार नहीं किया।

<sup>18</sup> यह आने वाली पीढ़ी के लिए लिखा जाएगा, ताकि  
एक लोग जो अभी तक नहीं बनाए गए हैं, प्रभु की  
स्तुति करें।<sup>19</sup> क्योंकि उसने अपनी पवित्र ऊँचाई से  
नीचे देखा, स्वर्ग से प्रभु ने पृथ्वी पर दृष्टि दाली,<sup>20</sup> कैदी  
की कराह सुनने के लिए उन लोगों को सुकृत करने के  
लिए जो मृत्यु के लिए अभिशप्त थे।<sup>21</sup> ताकि लोग  
सिद्धोन में प्रभु के नाम की चर्चा करें, और यरूशलेम  
में उसकी स्तुति करें।<sup>22</sup> जब लोग इकट्ठे होते हैं, और  
राज्य प्रभु की सेवा करने के लिए।

<sup>23</sup> उसने मार्ग में मेरी शक्ति को समाप्त कर दिया है,  
उसने मेरे दिन घटा दिए हैं।<sup>24</sup> मैं कहता हूँ, “मेरे  
परमेश्वर, मुझे मेरे दियों के बीच में न ले जा, तेरे वर्ष  
सभी पीढ़ियों में हैं।”<sup>25</sup> समय पूर्व तूने पृथ्वी की स्थापना  
की, और आकाश तेरे हाथों का कार्य है।<sup>26</sup> वे भी नष्ट  
हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा, वे सब वस्त की तरह  
पुराने हो जाएँगे, वस्त की तरह तू उन्हें बदल देगा और  
वे चले जाएँगे।<sup>27</sup> परन्तु तू वही है, और तेरे वर्ष कभी  
समाप्त नहीं होंगे।<sup>28</sup> तेरे सेवकों की संतान जी रहेगी,  
और उनकी संतति तेरे सामने स्थिर रहेगी।

## 103

दाऊद का भजन।

<sup>1</sup> हे मेरे प्राण, यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ मुझ  
में है, उसके पवित्र नाम को धन्य कह।<sup>2</sup> हे मेरे प्राण,  
यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी भी उपकार  
को न भूल।<sup>3</sup> जो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता है, जो  
तेरे सब रोगों को चंगा करता है,<sup>4</sup> जो तेरे जीवन को

## भजन संहिता

गड्डे से छुड़ाता है, जो तुझे अनुग्रह और दया से  
मुकुटित करता है,<sup>५</sup> जो तेरे वर्षों को अच्छी वस्तुओं से  
तृप्त करता है, ताकि तेरी जवानी उकाब के समान नई  
हो जाती है।

<sup>६</sup> यहोवा धर्म के काम करता है और सब पीड़ितों के  
लिए न्याय करता है।

<sup>७</sup> उसने मूसा को अपने मार्गों का ज्ञान कराया, इसाएल  
के पुरुषों को अपने कामों का।<sup>८</sup> यहोवा दगालु और  
अनुग्रहकारी है, क्रोध करने में थीमा और करुणा में  
बड़ा है।<sup>९</sup> वह सदा हमारे साथ विवाद नहीं करेगा,  
और न ही वह अपना क्रोध सदा बनाए रखेगा।<sup>१०</sup>  
उसने हमारे पापों के अनुसार हमारे साथ व्याहार नहीं  
किया, और न ही हमारे अधर्म के अनुसार हमें  
प्रतिफल दिया।<sup>११</sup> क्योंकि जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा  
है, वैसे ही उसकी करुणा उन पर महान है जो उससे  
डरते हैं।<sup>१२</sup> जैसे पूरब पश्चिम से दूर है, वैसे ही उसने  
हमारे अपराधों को हमसे दूर कर दिया है।

<sup>१३</sup> जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे  
ही यहोवा उन पर दया करता है जो उससे डरते हैं।<sup>१४</sup>  
क्योंकि वह स्वयं हमारी बनावट को जानता है, वह  
स्मरण रखता है कि हम केवल धूल हैं।<sup>१५</sup> मनुष्य के  
लिए उसके दिन धास के समान होते हैं जैसे मैदान  
का फूल, वैसे ही वह फूल-फला होता है।<sup>१६</sup> जब उस  
पर हवा बहती है, तो वह नहीं रहता, और उसका  
स्थान उसे फिर नहीं जानता।<sup>१७</sup> परन्तु यहोवा की  
करुणा सदा से सदा तक है उन पर जो उससे डरते हैं,  
और उसकी धार्मिकता बच्चों के बच्चों पर है,<sup>१८</sup> उन  
पर जो उसकी वाचा को मानते हैं और उसकी  
आज्ञाओं को स्मरण रखते हैं, ताकि उन्हें पूरा करें।

<sup>१९</sup> यहोवा ने अपने सिंहासन को स्वर्ग में स्थापित किया  
है, और उसका राज्य सब पर शासन करता है।

<sup>२०</sup> हे यहोवा के स्वर्गद्वारों, उसे धन्य कहो, जो बल में  
शक्तिशाली हैं, जो उसके वचन को पूरा करते हैं,  
उसके वचन की आवाज का पालन करते हैं।<sup>२१</sup> हे  
यहोवा की सारी सेनाओं, उसे धन्य कहो तुम जो  
उसकी सेवा करते हो, उसकी इच्छा को पूरा करते हो।<sup>२२</sup>  
हे यहोवा के सब कामों, उसे धन्य कहो, उसकी  
प्रभुता के सब स्थानों में हे मेरे प्राण, यहोवा को धन्य  
कह।

**104** हे मेरे प्राण, यहोवा की स्तुति करा है मेरे  
परमेश्वर यहोवा, तू अत्यंत महान है, तू महिमा और  
वैभव से आच्छादित है,

<sup>२</sup> तू अपने आप को प्रकाश से वसित करता है जैसे  
एक चादर से आकाश को तम्बू के पर्दे की तरह  
फैलाता है।<sup>३</sup> वह अपने ऊपरी कक्षों की बीमों को जल  
में स्थापित करता है, वह बादलों को अपना रथ बनाता  
है, वह पवन के पंखों पर चलता है।<sup>४</sup> वह पवनों को  
अपना द्रूत बनाता है, धधकती आग को अपना सेवक  
बनाता है।

<sup>५</sup> उसने पृथ्वी को उसकी नींवों पर स्थापित किया,  
ताकि वह सदा सर्वदा न डामगाए।<sup>६</sup> तूने उसे गहरे  
जल से वसित किया जैसे एक वर्त से, जल पर्वतों के  
ऊपर छड़ा था।<sup>७</sup> तेरी डांट पर वे भाग गए, तेरी गर्जना  
की ध्वनि पर वे जल्दी से चले गए।<sup>८</sup> पर्वत उठे, घाटियाँ  
नीचे धस्तीं उस स्थान पर जिसे तूने उनके लिए स्थापित  
किया।<sup>९</sup> तूने एक सीमा निर्धारित की ताकि वे उसे पार  
न करें, ताकि वे फिर से पृथ्वी को न ढें।

<sup>१०</sup> वह घाटियों में झारने भेजता है, वे पर्वतों के बीच  
बहते हैं,<sup>११</sup> वे मैदान के हर पश्च को पानी पिलाते हैं,  
जंगली गधे अपनी प्यास बुझाते हैं।<sup>१२</sup> उनके पास  
आकाश के पक्षी निवास करते हैं, वे शाखाओं के बीच  
अपनी आवाज उठाते हैं।<sup>१३</sup> वह अपने ऊपरी कक्षों से  
पर्वतों की चित्ता है, पृथ्वी उसके कार्यों के फल से  
संतुष्ट होती है।<sup>१४</sup> वह पशुओं के लिए धास उगाता है,  
और मनुष्य के श्रम के लिए वनस्पति, ताकि वे पृथ्वी से  
भोजन उत्पन्न कर सकें,<sup>१५</sup> और दाखमधु जो मनुष्य के  
हृदय को प्रसन्न करता है, ताकि वह अपने देहरे को  
तेल से चमकाए, और भोजन, जो मनुष्य के हृदय को  
चिर करता है।<sup>१६</sup> यहोवा के दृक्ष अपनी भरपूर मात्रा  
में पीते हैं, लेबनान के देवदार, जिसने उसने लगाया,<sup>१७</sup>  
जहाँ पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं, और सारस, जिसका  
घर उनिपर के पेड़ हैं।<sup>१८</sup> ऊँचे पर्वत जंगली बकरियों  
के लिए हैं, चट्टाने शिलाखड़ों के लिए आश्रय हैं।

<sup>१९</sup> उसने ऋतुओं के लिए चंद्रमा बनाया, सूर्य अपनी  
अस्त होने की जगह जानता है।<sup>२०</sup> तू अंधकार नियुक्त  
करता है और यह रात हो जाती है, जिसमें जंगल के  
सभी पश्च पूमते हैं।<sup>२१</sup> युवा सिंह अपने शिकार के लिए  
गर्जते हैं, और अपना भोजन परमेश्वर से मांगते हैं।<sup>२२</sup>  
जब सूर्य उगता है, वे हट जाते हैं, और अपनी गुफाओं  
में लैट जाते हैं।<sup>२३</sup> मनुष्य अपने काम पर जाता है और  
शाम तक अपने श्रम में लगा रहता है।

# भजन संहिता

<sup>24</sup> हे यहोवा, तेरे कार्य कितने अधिक हैं तूने उन्हें  
बुद्धिमानी से बनाया है पृथ्वी तेरी संपत्ति से भरी है।<sup>25</sup>  
यह समुद्र है महान और विस्तृत, जिसमें असंख्य द्वृंड  
हैं छोटे और बड़े दोनों प्रकार के जीव।<sup>26</sup> वहाँ जहाज  
चलते हैं और लेविथान जिसे दूने उसमें खेलने के लिए  
बनाया है।

<sup>27</sup> वे सब तुझसे प्रतीक्षा करते हैं कि तू उन्हें उनके  
समय पर भोजन दे।<sup>28</sup> तू उन्हें देता है वे उसे इकट्ठा  
करते हैं तू अपना हाथ लोता है वे अच्छे से संगृष्ट  
होते हैं।<sup>29</sup> तू अपना मुख छिपाता है, वे भयभीत होते  
हैं तू उनकी सांस लेता है वे नष्ट हो जाते हैं और  
अपनी धूल में लौट जाते हैं।<sup>30</sup> तू अपनी आत्मा भेजता  
है वे सुजित होते हैं और तू धरती के चेहरे को नया  
करता है।

<sup>31</sup> यहोवा की महिमा सदा बनी रहे, यहोवा अपने कार्यों  
में आनंदित हो।<sup>32</sup> वह पृथ्वी को देखता है और यह  
कांप उठती है वह पर्वतों को छूता है और वे धुआँ  
छोड़ते हैं।

<sup>33</sup> मैं यहोवा के लिए गाऊंगा जब तक मैं जीवित रहूँ मैं  
अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा जब तक मैं असित्त  
मैं हूँ।<sup>34</sup> मेरी स्तुति उसे प्रसन्न करे जहाँ तक मेरा  
संबंध है, मैं यहोवा में आनंदित रहूँगा।<sup>35</sup> पापी पृथ्वी  
से हट जाएँ और दुष्ट अब न रहो है मेरे प्राण, यहोवा  
की स्तुति करा यहोवा की स्तुति करो।

**105** यहोवा का धन्यवाद करो उसके नाम को  
पुकारो उसके कार्यों को लोगों के बीच प्रकट करो।<sup>2</sup>  
उसके लिए गाओ, उसकी स्तुति करो उसके सभी  
अद्भुत कार्यों का वर्णन करो।<sup>3</sup> उसके पवित्र नाम में  
गर्व करो जो यहोवा को खोजते हैं उनके हृदय  
आनंदित हों।<sup>4</sup> यहोवा और उसकी शक्ति को खोजो,  
उसके मुख का सदा अनुसरण करो।

<sup>5</sup> उसके अद्भुत कार्यों को याद करो जो उसने किए  
हैं उसके चमत्कार और उसके मुख से निकले न्याय  
को।<sup>6</sup> उसके सेवक अब्राहम के बंशज, याकूब के पुत्र,  
उसके चुने हुए लोग।<sup>7</sup> वही यहोवा हमारा परमेश्वर है,  
उसके न्याय सारे पृथ्वी पर है।

<sup>8</sup> उसने अपने वचन को सदा के लिए स्मरण किया है,  
वह वचन जो उसने हजार पीढ़ियों तक के लिए दिया  
था।<sup>9</sup> वह वचन जो उसने अब्राहम के साथ की, और  
उसका शपथ इसहाक के लिए।<sup>10</sup> किंतु उसने इसे

याकूब के लिए एक नियम के रूप में स्थापित किया,  
इसाएल के लिए एक सदा की वाचा के रूप में<sup>11</sup>  
कहा, "मैं तुम्हें कनान देश द्वंगा तुम्हारी विरासत के  
हिस्से के रूप में।"

<sup>12</sup> जब वे संचाला में थोड़े थे बहुत कम और उसमें  
अजनकी थे,<sup>13</sup> और वे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में घूमते  
रहे एक राज्य से दूसरे लोगों के बीच,<sup>14</sup> उसने किसी  
को उन्हें सताने की अनुमति नहीं दी, और उनके लिए  
राजा औं को डाटा, कहा,<sup>15</sup> "मेरे अभियिक्तों को मत  
छूओं और मेरे भविष्यद्वक्ताओं को कोई हानि मत  
पहुँचाओ।"

<sup>16</sup> और उसने देश पर अकाल बुलाया, उसने रोटी का  
पूरा सहारा तोड़ दिया।<sup>17</sup> उसने उनके आगे एक  
व्यक्ति को भेजा, यूसुफ, जिसे दास के रूप में बेचा  
गया था।<sup>18</sup> उन्होंने उसके पैरों को बेड़ियों से जकड़ा,  
वह स्वयं लोहे में डाल दिया गया;<sup>19</sup> जब तक उसका  
वचन पूरा नहीं हुआ, यहोवा का वचन उसे सुख करता  
रहा।<sup>20</sup> राजा ने भेजा और उसे रिहा किया, लोगों के  
शासक ने उसे मुक्त कर दिया।<sup>21</sup> उसने उसे अपने  
घर का स्वामी बनाया, और अपनी सारी संपत्ति का  
शासक,<sup>22</sup> ताकि वह अपनी इच्छा से उसके शासकों  
को बंदी बना सके, और अपने बृद्धों को ज्ञान सिखा  
सके।

<sup>23</sup> इसाएल भी मिस्र में आया, याकूब हाम के देश में  
रहा।<sup>24</sup> और उसने अपनी प्रजा को बहुत फलदायी  
बनाया, और उन्हें उनके शून्यों से अधिक शक्तिशाली  
बनाया।<sup>25</sup> उसने उनके हृदय को अपनी प्रजा से बुणा  
करने के लिए मोड़ा, अपने सेवकों के साथ चालाकी से  
व्यवहार करने के लिए।<sup>26</sup> उसने अपने सेवक मूसा  
को भेजा, और हारून को जिसे उसने बुना था।<sup>27</sup>  
उन्होंने उनके बीच उसके अद्भुत कार्य किए और  
हाम के देश में चमत्कार किए।<sup>28</sup> उसने अंधकार भेजा  
और अंधेरा कर दिया, और उन्होंने उसके वर्चनों के  
विरुद्ध विद्रोह नहीं किया।<sup>29</sup> उसने उनके जल को  
रक्त में बदल दिया, और उनकी मछलियों को मरवा  
दिया।<sup>30</sup> उनके देश में मेंढक भर गए यहाँ तक कि  
उनके राजा औं के कक्षी में भी।<sup>31</sup> उसने कहा, और  
मक्खियों का झूंड आया, और उनके सारे प्रदेश में जूँ।  
<sup>32</sup> उसने उन्हें वर्षा के लिए ओले दिए और उनके देश  
में जलती हुई आग।<sup>33</sup> उसने उनके अंगूर के बागों  
और उनके अंजीर के पेंड़ों को भी मारा, और उनके  
प्रदेश के पेंड़ों को तोड़ दिया।<sup>34</sup> उसने कहा, और  
टिक्कियाँ आईं और गिनती से बाहर रेंगने वाली टिक्कियाँ,

# भजन संहिता

<sup>35</sup> और उन्होंने उनके देश की सारी वनस्पति खा ली, और उनके भूमि के फल को खा लिया।<sup>36</sup> उसने उनके देश के सभी पहलौठों को भी घाटक रूप से मारा, उनकी सारी शक्ति के पहले फल को।<sup>37</sup> फिर उसने इसाएलियों को चाँदी और सोने के साथ बाहर निकाला, और उसके गोत्रों में कई भी ठोकर नहीं छाई।<sup>38</sup> जब वे चले गए तो मिस्र प्रसन्न हुआ, क्योंकि उनका भय मिसियों पर छा गया था।

<sup>39</sup> उसने एक बादल को आचादन के रूप में कैलाया, और रात में प्रकाश देने के लिए आग।<sup>40</sup> उन्होंने माँगा, और उसने बटेर भेजी, और उन्हें स्वर्ग की रोटी से तृप्त किया।<sup>41</sup> उसने छहान को खोला और जल बह निकला; यह सूखी जगहों में नदी की तरह बहा।

<sup>42</sup> क्योंकि उसने अपने पवित्र वचन को स्मरण किया अपने सेवक अब्राहम के साथ,<sup>43</sup> और उसने अपनी प्रजा को आनंद के साथ बाहर निकाला, अपने चुने हुए लोगों को हरिष्ठ जयकार के साथ।<sup>44</sup> और उसने उन्हें राष्ट्रों की भूमि दी, और उन्होंने लोगों की मेहनत का उत्तराधिकार लिया।<sup>45</sup> ताकि वे उसकी विधियों का पालन करें और उसकी विधियों का पालन करें। यहोवा की स्तुति करो।

## 106 प्रभु की स्तुति करो

प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, क्योंकि उसकी दया सदा की है।

<sup>2</sup> कौन प्रभु के पराक्रमी कार्यों का वर्णन कर सकता है, या उसकी सारी स्तुति का प्रचार कर सकता है? <sup>3</sup> धन्य हैं वे जो न्याय को बनाए रखते हैं, जो हर समय धर्म का पालन करते हैं।

<sup>4</sup> हे प्रभु, अपनी प्रजा की ओर अपने अनुग्रह में मुझे याद कर, अपनी उद्धार के साथ मुझे दर्शन दे, <sup>5</sup> ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की समृद्धि देख सकूँ, कि मैं तेरे जाति के आनंद में अनंदित हो सकूँ, कि मैं तेरे उत्तराधिकार के साथ गर्व कर सकूँ।

<sup>6</sup> हमने अपने पूर्वजों की तरह पाप किया है, हम भटक गए हैं, हमने दुष्टता की है।<sup>7</sup> मिस्र में हमारे पूर्वजों ने तेरे अद्भुत कार्यों को नहीं समझा, उन्होंने तेरी प्रचुर दयाओं को याद नहीं किया, बल्कि समुद्र के किनारे, लाल समुद्र पर विद्रोह किया।<sup>8</sup> फिर भी, उसने अपने नाम के लिए उन्हें बचाया, ताकि वह अपनी शक्ति को

प्रकट कर सके।<sup>9</sup> उसने लाल समुद्र को डांटा और वह सूख गया, और उसने उन्हें शक्तिशाली जल के माध्यम से, जैसे जंगल में ले जाया।<sup>10</sup> उसने उन्हें उस व्यक्ति के हाथ से बचाया जो उनसे घुणा करता था, और उन्हें शत्रु के हाथ से छुड़ाया।<sup>11</sup> जल ने उनके विरोधियों को ढक लिया, उनमें से एक भी नहीं बचा।<sup>12</sup> तब उन्होंने उसके वचनों पर विश्वास किया, उन्होंने उसकी स्तुति गाई।

<sup>13</sup> उन्होंने शीघ्र ही उसके कार्यों को भुला दिया, उन्होंने उसकी योजना की प्रतीक्षा नहीं की,<sup>14</sup> बल्कि जंगल में लालव से भर गए, और रेसिस्तान में परमेश्वर की परीक्षा ली।<sup>15</sup> इसलिए उसने उनकी याचना को पूरा किया, लेकिन उनके बीच एक विनाशकारी रोग भेजा।

<sup>16</sup> जब वे शिविर में मूसा से इर्ष्या करने लगे, और हारून से, जो प्रभु का पवित्र था,<sup>17</sup> पृथक्षी खुल गई और दातान को निगल गई,<sup>18</sup> और अबीराम की संगति को ढक लिया।<sup>19</sup> और उनकी संगति में आग भड़क उठी, ज्वाला ने दुष्टों को भस्म कर दिया।<sup>20</sup> उन्होंने होरेब पर एक बछड़ा बनाया, और एक ढली हुई धातु की मूर्ति की पूजा की।<sup>21</sup> इसलिए उन्होंने अपनी महिमा को घास खाने वाले बैल की मूर्ति के लिए बदल दिया।<sup>22</sup> उन्होंने अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भुला दिया, जिसने मिस्र में महान कार्य किए थे,<sup>23</sup> हाम के देश में अद्भुत कार्य और लाल समुद्र के किनारे भयानक कार्य।<sup>24</sup> इसलिए उसने कहा कि वह उन्हें नष्ट कर देगा, यदि मूसा, उसका चुना हुआ, उसके सामने खड़ा न होता, ताकि उसकी क्रांति को नष्ट करने से रोक सके।

<sup>24</sup> तब उन्होंने सुखद भूमि को अस्वीकार कर दिया, उन्होंने उसके वचन पर विश्वास नहीं किया,<sup>25</sup> बल्कि अपने तंबुजों में बड़बड़ाए, उन्होंने प्रभु की आवाज़ नहीं सुनी।<sup>26</sup> इसलिए उसने उनके लिए शपथ ली कि वह उन्हें जंगल में गिरा देगा,<sup>27</sup> और वह उनके वंशजों को राष्ट्रों के बीच गिरा देगा, और उन्हें देशों में विचरे देगा।

<sup>28</sup> उन्होंने पौर के बाल का अनुसरण किया, और मूरकों को अर्पित बलिदानों को खाया।<sup>29</sup> इसलिए उन्होंने अपने कार्यों से उसे क्रोधित किया, और उनके बीच एक महामारी फैल गई।<sup>30</sup> तब फिनहास खड़ा हुआ और हस्तक्षेप किया, और इसलिए महामारी को रोक दिया गया।<sup>31</sup> और यह उसके लिए धर्म के रूप में गिना गया, आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए।<sup>32</sup>

## भजन संहिता

उन्होंने मरीबा के जल पर भी उसे क्रोधित किया,  
इसलिए मूसा के लिए उनके कारण बुरा हुआः<sup>33</sup>  
क्योंकि वे उसकी आत्मा के खिलाफ विद्रोही थे, उसने  
अपने हाँठों से जल्दबाजी में बात की।

<sup>34</sup> उन्होंने उन लोगों को नष्ट नहीं किया जैसा कि प्रभु  
ने उन्हें आदेश दिया था,<sup>35</sup> बल्कि उन्होंने राष्ट्रों के साथ  
मिलकर उनके आचरण को सीधा,<sup>36</sup> और उनके  
मूर्तियों की सेवा की, जो उनके लिए एक फंदा बन  
गई<sup>37</sup> उन्होंने अपने बेटों और बेटियों को दुष्टामाओं  
के लिए भी बलिदान किया,<sup>38</sup> और निर्दोष रक्त  
बहाया उनके बेटों और बेटियों का रक्त, जिन्हें उन्होंने  
कनान की मूर्तियों को बलिदान किया, और भूमि रक्त  
से अपवित्र हो गई।<sup>39</sup> इसलिए वे अपने आचरण में  
अशुद्ध हो गए और अपने कर्मों में अविश्वासी हो गए।

<sup>40</sup> इसलिए प्रभु का क्रोध उसकी प्रजा के खिलाफ  
भड़क उठा, और उसने अपनी विरासत से घृणा की।  
<sup>41</sup> इसलिए उसने उन्हें राष्ट्रों के हाथ में सौंप दिया, और  
जो उनसे घृणा करते थे, वे उन पर शासन करने लगे।  
<sup>42</sup> उनके शत्रुओं ने भी उन्हें दबाया, और वे उनकी  
शक्ति के अधीन हो गए।<sup>43</sup> कई बार उसने उन्हें  
बचाया, वे हालांकि, अपनी योजना में विद्रोही थे, और  
वे अपने अपराध में फूट गए।<sup>44</sup> फिर भी, उसने उनकी  
संकट को देखा जब उसने उनकी पुकार सुनी<sup>45</sup> और  
उसने उनके लिए अपनी वाचा को याद किया, और  
अपनी महान दया के अनुसार पश्चात्पाप किया।<sup>46</sup>  
उसने उन्हें उनके सभी बंदी बनाने वालों के सामने  
दया का पात्र भी बनाया।

<sup>47</sup> हमें बचा, हे हमारे परमेश्वर, और हमें राष्ट्रों से इकट्ठा  
कर, ताकि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद कर सकें  
और तेरी स्तुति में महिमा कर सकें।

<sup>48</sup> धन्य है प्रभु इसाएल का परमेश्वर, अनंत काल से  
अनंत काल तक। और सभी लोग कहेंगे, "आमीन!"  
प्रभु की सुनित करो।

**107** यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह  
भला है; क्योंकि उसकी प्रेम अनंत है।

<sup>2</sup> जो यहोवा के द्वारा छुड़ाए गए हैं, वे ऐसा कहें, जिन्हें  
उसने शत्रु के हाथ से छुड़ाया है<sup>3</sup> और उन्हें देशों से  
इकट्ठा किया, पूरब से और पश्चिम से, उत्तर से और  
दक्षिण से।

<sup>4</sup> वे जंगल में एक निर्जन प्रदेश में भटकते रहे, वे एक  
बसे हुए नगर का मार्ग नहीं पाए।<sup>5</sup> वे भूखे और प्यासे  
थे, उनकी आत्मा उनके भीतर कमज़ोर हो गई।<sup>6</sup> तब  
उन्होंने अपनी विपत्ति में यहोवा की दोहाई दी; उसने  
उन्हें उनकी कठिनाइयों से छुड़ाया।<sup>7</sup> उसने उन्हें सिधे  
मार्ग पर चलाया, ताकि वे एक बसे हुए नगर में जा  
सकें।<sup>8</sup> वे यहोवा का धन्यवाद करें उसकी दया के  
लिए और मनुष्यों के पुत्रों के लिए उसके अद्भुत  
कामों के लिए।<sup>9</sup> क्योंकि उसने यासे आत्मा को तृप्त  
किया, और भूखे आत्मा को अच्छी वस्तुओं से भर  
दिया।

<sup>10</sup> कुछ लोग अंधकार और मृत्यु की छाया में रहते थे  
दुख और जंगीरों में बंदी थे,<sup>11</sup> क्योंकि उन्होंने परमेश्वर  
के वचनों के खिलाफ विद्रोह किया था और परमप्रधान  
की सलाह को ठुकरा दिया था।<sup>12</sup> इसलिए उसने  
उनके दिल को श्रम से नम्र किया, वे ठोकर खा गए  
और कोई मदर करने वाला नहीं था।<sup>13</sup> तब उन्होंने  
अपनी विपत्ति में यहोवा की दोहाई दी; उसने उन्हें  
उनकी कठिनाइयों से बचाया।<sup>14</sup> उसने उन्हें अंधकार  
और मृत्यु की छाया से बाहर निकाला और उनके  
बंधनों को तोड़ दिया।<sup>15</sup> वे यहोवा का धन्यवाद करें  
उसकी दया के लिए और मनुष्यों के पुत्रों के लिए  
उसके अद्भुत कामों के लिए।<sup>16</sup> क्योंकि उसने कांसे  
के द्वारों को तोड़ दिया, और लोहे की सलाखों को काट  
दिया।

<sup>17</sup> मूर्ख, अपने विद्रोही मार्ग के कारण, और अपनी  
दोस्री कर्मों के कारण, पीड़ित हुए।<sup>18</sup> उनकी आत्मा  
सभी प्रकार के भोजन से घृणा करती थी, और वे मृत्यु  
के द्वारा के करीब आ गए।<sup>19</sup> तब उन्होंने अपनी विपत्ति  
में यहोवा की दोहाई दी; उसने उन्हें उनकी कठिनाइयों  
से बचाया।<sup>20</sup> उसने अपना वचन भेजा और उन्हें चंगा  
किया, और उन्हें उनके विनाश से बचाया।<sup>21</sup> वे यहोवा  
का धन्यवाद करें उसकी दया के लिए, और मनुष्यों के  
पुत्रों के लिए उसके अद्भुत कामों के लिए।<sup>22</sup> वे  
धन्यवाद के बलिदान भी चढ़ाएं, और उसके कार्यों का  
आनंदित गान के साथ वर्णन करें।

<sup>23</sup> जो लोग जहाँगों में समुद्र में उतरते हैं, जो महान  
जल पर व्यापार करते हैं,<sup>24</sup> उन्होंने यहोवा के कार्य  
देखे हैं, और गहरे मैं उसके अद्भुत काम।<sup>25</sup> क्योंकि  
उसने बोला और एक त्रफानी हवा उठाई, जिसने  
समुद्र की तहरों को ऊंचा किया।<sup>26</sup> वे आकाश तक  
उठे, गहराई में गए, उनकी आत्मा उनके संकट में  
पिघल गई।<sup>27</sup> वे एक नशे में व्यक्ति की तरह

## भजन संहिता

लङ्घखड़ाए और डगमगाए और उनकी बुद्धि समाप्त हो गई।<sup>28</sup> तब उन्होंने अपनी विषति में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उन्हें उनकी कठिनाइयों से बाहर निकाला।<sup>29</sup> उसने टूफान को शांत किया, ताकि समुद्र की लहरें शांत हो गई।<sup>30</sup> तब वे खुश हुए क्योंकि वे शांत थे, इसलिए उसने उन्हें उनके इच्छित बंदरगाह तक पहुंचाया।<sup>31</sup> वे यहोवा का धन्यवाद करें उसकी दिया के लिए, और मनुष्यों के पुत्रों के लिए उसके अद्भुत कामों के लिए।<sup>32</sup> वे उसे लोगों की सभा में भी ऊंचा करें, और बुजुर्गों की सीट पर उसकी प्रशंसा करें।

<sup>33</sup> वह नदियों को जंगल में बदल देता है, और जल के स्रोतों को सूखी भूमि में<sup>34</sup> एक उपजाऊ भूमि को नमक के अपशिष्ट में उन लोगों की दुष्टता के कारण जो उसमें रहते हैं।<sup>35</sup> वह जंगल को जल के तालाब में बदल देता है, और सूखी भूमि को जल के स्रोतों में<sup>36</sup> और उसने भूखों को वहाँ बसाया, ताकि वे एक बसे हुए नार की स्थापना कर सकें,<sup>37</sup> और खेत बोएं और दाख की बारियां लगाएं, और एक उपजाऊ फसल इकट्ठा करें।<sup>38</sup> वह उन्हें आशीर्वाद देता है और वे बहुत बढ़ जाते हैं, और वह उनके मरीशियों को कम नहीं होने देता।

<sup>39</sup> जब वे कम और नीच हो जाते हैं उत्तीर्ण, दुख और शोक के कारण।<sup>40</sup> वह महान लोगों पर तिरस्कार उड़ेलता है और उन्हें एक बिना रास्ते के बंजर भूमि में भटकने देता है।<sup>41</sup> लेकिन वह ज्ञातरमंदों को सुरक्षित ऊंचाई पर रखता है, और उनके परिवारों को एक झुंझुक की तरह बनाता है।<sup>42</sup> धर्मी इसे देखते हैं और खुश होते हैं, लेकिन सभी अन्याय अपना मुंह बंद कर लेता है।

<sup>43</sup> कौन बुद्धिमान है? वह इन बातों पर ध्यान दे, और यहोवा की दिया पर विचार करे।

## 108

एक गीत। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्त्रिय है, मैं गाऊंगा, मैं अपनी आत्मा के साथ भी स्तुति करूंगा।<sup>2</sup> वीणा और सारंगी जागो, मैं भोर को जगाऊंगा।<sup>3</sup> मैं जातियों के बीच तुझे धन्यवाद द्वंगा, हे प्रभु और मैं राष्ट्रों के बीच तेरी स्तुति करूंगा।<sup>4</sup> क्योंकि तेरी दिया आकाश से ऊपर महान है, और तेरी सच्चाई आकाश तक पहुँचती है।<sup>5</sup> हे

परमेश्वर, आकाश से ऊपर ऊँचे हो, और तेरी महिमा सारी पूर्खी के ऊपर हो।

<sup>6</sup> ताकि तेरे प्रियजन बचाए जा सकें, अपने दाहिने हाथ से बचा और मुझे उत्तर दो। परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है, "मैं विजय प्राप्त करूंगा, मैं शेकेम को विमाजित करूंगा, और सुकूत की धारी को मारूंगा।<sup>8</sup> गिलाद मेरा है, मनश्च मेरा है, एप्रैम भी मेरे सिर की टीपी है, यहूदा मेरा राजदंड है।<sup>9</sup> मोआब मेरा धोने का कटारा है, मैं एदाम पर अपनी चप्पल फेरूंगा, मैं पलिशत देश पर ऊँचे स्वर में चिल्लाऊंगा।"

<sup>10</sup> कौन मुझे गढ़वाले नगर में ले जाएगा? कौन मुझे एदाम तक पहुंचाएगा?<sup>11</sup> क्या दूने स्वर्य हमें नहीं ठुकराया है, हे परमेश्वर? और क्या तू हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाएगा?<sup>12</sup> शत्रु के विरुद्ध हमें सहायता दे, क्योंकि मनुष्य द्वारा बचाव व्यर्थ है।<sup>13</sup> परमेश्वर के द्वारा हम वीरता से काम करेंगे, और वही हमारे शत्रुओं को कुचल देगा।

## 109

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मेरी स्तुति के परमेश्वर, मौन न रहो।<sup>2</sup> क्योंकि उन्होंने मेरे विरुद्ध दुष्ट और कपटी मुख खोला है, उन्होंने मेरे विरुद्ध झूठी जीभ से बातें की हैं।<sup>3</sup> उन्होंने मुझे धूणा के शब्दों से धेर लिया है, और बिना कारण मेरे विरुद्ध युद्ध किया है।<sup>4</sup> मेरे प्रेम के बदले में वे मेरे अभियोगी बन गए हैं, परन्तु मैं प्रार्थना मैं हूँ।<sup>5</sup> इसलिये उन्होंने मेरे भत्ते के बदले बुराई की है, और मेरे प्रेम के बदले धूणा की है।

<sup>6</sup> उसके ऊपर एक दुष्ट व्यक्ति को नियुक्त कर, और एक अभियोगी उसके दाहिने हाथ पर छड़ा हो।<sup>7</sup> जब उसका न्याय किया जाए, तो वह दोषी ठहरे, और उसकी ग्राधना पाप बन जाए।<sup>8</sup> उसके दिन थोड़े हों, उसका पद कोई और ले ले।<sup>9</sup> उसके बच्चे इधर-उधर भटकें और भीख मारें, और वे अपने उजड़े घरों से दूर भोजन की खोज करें।<sup>11</sup> लेनदार उसकी सारी संपत्ति ले ले, और अजनबी उसके श्रम के फल को लूट लें।<sup>12</sup> कोई उस पर दया न करे, न ही कोई उसके अनाथ बच्चों पर कृपा करे।<sup>13</sup> उसकी संतति का नाश हो, उनकी नाम आने वाली पीढ़ी में पिटा दिया जाए।<sup>14</sup> उसके पिताओं का अपराध यहोवा के सामने स्फरण

# भजन संहिता

किया जाए और उसकी माता का पाप मिटाया न  
जाए।<sup>15</sup> वे यहोवा के सामने सदा रहें ताकि वह पुर्खी  
से उनकी स्तुति को मिटा दे।

<sup>16</sup> क्योंकि उसने दया दिखाने को स्मरण नहीं किया,  
परन्तु दीन और दरिद्र व्यक्ति का पीछा किया, और  
हृदय के निराश को मार डालने के लिए।<sup>17</sup> उसने श्राप  
को भी प्रेम किया, इसलिए वह उस पर आया; और  
उसने आशीर्वद में प्रसन्नता नहीं पाई, इसलिए वह  
उससे दूर रहा।<sup>18</sup> उसने श्राप को अपने वस्त्र के  
समान पहना, और वह उसके शरीर में जल के समान  
प्रवेश कर गया, और उसके हाथियों में तेल के समान।  
<sup>19</sup> वह उसके लिए उस वस्त्र के समान हो, जिसे वह  
अपने को ढकता है, और उस पट्टे के समान हो, जिसे  
वह अपने चारों ओर लगातार पहनता है।<sup>20</sup> यह मेरे  
अभियोगियों का यहोवा से प्रतिफल हो, और उन लोगों  
का, जो मेरी आत्मा के विश्वद्वं बुरा बोलते हैं।

<sup>21</sup> परन्तु दू परमेश्वर, यहोवा, अपने नाम के कारण  
मुझ पर कृपा कर, क्योंकि तेरी दया भली है, मुझे बचा  
ले।<sup>22</sup> क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ, और मेरा हृदय मेरे  
भीतर धायल है।<sup>23</sup> मैं छाया के समान जा रहा हूँ जब  
वह लंबी होती है, मैं टिह्ही के समान हिलाया गया हूँ।  
<sup>24</sup> मेरे घुटने उपवास के कारण कमजोर हो गए हैं  
और मेरा मांस दुबला हो गया है, बिना चर्चे के।<sup>25</sup> मैं  
भी उनके लिए अपमान का कारण बन गया हूँ, जब के  
मुझे देखते हैं, तो वे अपना सिर हिलाते हैं।

<sup>26</sup> हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर, अपनी  
दया के अनुसार मुझे बचा ले।<sup>27</sup> और वे जान लें कि  
यह तेरा हाथ है दू यहोवा, ने यह किया है।<sup>28</sup> वे श्राप  
देंगे, परन्तु दू आशीर्वद देगा; जब वे उठेंगे, तो वे  
लजित होंगे, परन्तु तेरा दास आनन्दित होगा।<sup>29</sup> मेरे  
अभियोगी अपमान से वस्तित हों, और वे अपनी लज्जा  
से अपने को ढक लें जैसे एक चोपा।

<sup>30</sup> मैं अपने मुख से यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा,  
और मैं बहुतों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।<sup>31</sup>  
क्योंकि वह दरिद्र के दाहिने हाथ पर खड़ा है, उससे उन  
लोगों से बचाने के लिए जो उसकी आत्मा का न्याय  
करते हैं।

## 110

दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> यहोवा मेरे प्रभु से कहता है, "मेरे दाहिने बैठ जब  
तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की चौकी न बना  
दूँ।"

<sup>2</sup> यहोवा सिव्योन से तेरे शक्तिशाली राजदण्ड को  
फैलाएगा, कहते हुए "अपने शत्रुओं के बीच में शासन  
करा।"<sup>3</sup> तेरे लोग तेरी शक्ति के दिन स्वेच्छा से संवा  
करेंगे, पवित्र वैभव में, भूर की कोख से, तेरी जवानी  
तेरे लिए औस के समान है।

<sup>4</sup> यहोवा ने शपथ ली है और वह अपने मन को नहीं  
बदलेगा, "दू सदा के लिए याजक है मेल्कीसेदेक की  
व्यवस्था के अनुसार।"

<sup>5</sup> यहोवा तेरे दाहिने है, वह अपने क्रोध के दिन राजाओं  
को चूर-चूर करेगा।<sup>6</sup> वह जातियों के बीच न्याय  
करेगा, वह उन्हें शरों से भर देगा, वह एक विस्तृत देश  
के मुख्य पुरुषों को चूर-चूर करेगा।<sup>7</sup> वह मार्ग के  
किनारे से नाले से पिएगा, इसलिए वह अपना सिर  
ऊँचा करेगा।

**111** प्रभु की स्तुति करो, मैं पूरे हृदय से प्रभु  
का धन्यवाद करूँगा, धर्मियों की संगति और सभा में।

<sup>2</sup> प्रभु के कार्य महान हैं, वे सभी के द्वारा अध्यन किए  
जाते हैं जो उनमें अनंद लेते हैं।<sup>3</sup> उसकी कृति वैभव  
और महिमा से भरी है, और उसकी धार्मिकता सदा के  
लिए बनी रहती है।<sup>4</sup> उसने अपने अद्भुत कार्यों को  
स्मरणीय बनाया है, प्रभु अनुग्रहकारी और दयालु है।<sup>5</sup>  
उसने उन लोगों को भोजन दिया है जो उससे डरते हैं,  
वह अपने वाचा को सदा स्वरण रखेगा।

<sup>6</sup> उसने अपने लोगों को अपने कार्यों की शक्ति ज्ञात  
कराई है, उर्द्धे राष्ट्रों की विरासत देने में।<sup>7</sup> उसके हाथों  
के कार्य सत्य और न्याय हैं, उसकी सभी विधियाँ  
विश्वासयोग्य हैं।<sup>8</sup> वे सदा के लिए स्थिर हैं, वे सत्य और  
धर्म में किए जाते हैं।<sup>9</sup> उसने अपने लोगों के लिए  
उद्धार भेजा है, उसने अपनी वाचा को सदा के लिए  
ठहराया है, उसका नाम पवित्र और भ्यानक है।

<sup>10</sup> प्रभु का भय ज्ञान का आरंभ है, उसकी आज्ञाओं का  
पालन करने वाले सभी लोग अच्छी समझ रखते हैं,  
उसकी स्तुति सदा बनी रहती है।

## भजन संहिता

**112** प्रभु की स्तुति करो धन्य है वह व्यक्ति जो प्रभु का भय मानता है, जो उसकी आज्ञाओं में अत्यधिक प्रसन्न होता है।

<sup>2</sup> उसके वंशज पृथ्वी पर पराक्रमी होंगे, धर्मियों की पीढ़ी धन्य होगी।<sup>3</sup> उसके घर में धन और वैभव होंगे और उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी।<sup>4</sup> धर्मियों के लिए अंधकार में प्रकाश चमकता है, वह अनुग्रहकारी, दयालु और धार्मिक है।<sup>5</sup> वह व्यक्ति जो अनुग्रहकारी है और उधार देता है, उसके लिए सब कुछ अच्छा है, वह न्याय में अपनी बात को बनाए रखेगा।

<sup>6</sup> क्योंकि वह कभी नहीं डगमगाएगा, धर्मी सदा के लिए स्मरण किए जाएंगे।<sup>7</sup> वह बुरी खबर से नहीं डरेगा, उसका हृदय स्थिर है, प्रभु पर भरोसा रखता है।<sup>8</sup> उसका हृदय दृढ़ है, वह नहीं डरेगा, बल्कि अपने शत्रुओं पर संतोषपूर्वक दृष्टि डालेगा।<sup>9</sup> उसने निर्धनों को खत्तत्र रूप से दिया है, उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी, उसका सींग सम्मान में ऊँचा होगा।

<sup>10</sup> दृष्टि इसे देखेंगे और क्रोधित होंगे, वह अपने दात फीसेंगे और गल जाएंगे, दुष्टों की इच्छा नष्ट हो जाएगी।

**113** प्रभु की स्तुति करो

प्रभु के सेवकों स्तुति करो, प्रभु के नाम की स्तुति करो।<sup>2</sup> प्रभु के नाम की महिमा हो अब से लेकर सदा तक।<sup>3</sup> सूर्य के उदय से लेकर उसके अस्त होने तक, प्रभु के नाम की स्तुति की जानी चाहिए।

<sup>4</sup> प्रभु सब राष्ट्रों से ऊँचा है, उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है।<sup>5</sup> हमारे परमेश्वर प्रभु के समान कौन है, जो उच्च सिंहासन पर विराजमान है।<sup>6</sup> जो अपने आप को नम्र करता है स्वर्ग और पृथ्वी की चीजों को देखने के लिए?

<sup>7</sup> वह गरीब को धूल से उठाता है, वह जरूरतमंद को कूड़े के ढेर से उठाता है,<sup>8</sup> उन्हें कुलीनों के साथ बैठाने के लिए अपनी प्रजा के कुलीनों के साथ।<sup>9</sup> वह बांझ स्त्री को घर में रहने देता है बच्चों की आनंदित माँ के रूप में। प्रभु की स्तुति करो।

**114** जब इस्साएल मिस्र से निकला, याकूब का घराना विदेशी भाषा बोलने वालों के बीच से निकला,<sup>2</sup>

यहूदा उसका पवित्र स्थान बन गया, इस्साएल उसका राज्य।

<sup>3</sup> समुद्र ने देखा और भाग गया, यरदन पीछे मुड़ गया।

<sup>4</sup> पहाड़ मेंढों की तरह कूदने लगे, पहाड़ियाँ, मेमनों की तरह।

<sup>5</sup> हे समुद्र, तुझे क्या हुआ कि तू भाग गया?<sup>6</sup> हे यरदन, तुझे क्या हुआ कि तू पीछे मुड़ गया?<sup>6</sup> हे पहाड़ों, तुम मेंढों की तरह क्यों कूदने लगे हे पहाड़ियों, तुम मेमनों की तरह क्यों कूदने लगी?

<sup>7</sup> हे पृथ्वी, प्रभु के सामने कांप, याकूब के परमेश्वर के सामने<sup>8</sup> जिसने चट्ठान को जलाशय में बदल दिया, चक्रमक पत्तर को जल के सोते में।

**115** हे प्रभु, हमारे लिए नहीं, हमारे लिए नहीं परंतु अपने नाम की महिमा कर, अपनी दया और अपनी सच्चाई के कारण।

<sup>2</sup> जातियाँ क्यों कहें, "फिर उनका परमेश्वर कहाँ है?"<sup>3</sup> परंतु हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है, वह जो कुछ चाहता है, वही करता है।<sup>4</sup> उनके मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, मरुष्ठों के हाथों का काम।<sup>5</sup> उनके पूँछ हैं, पर वे बोल नहीं सकते, उनकी आँखें हैं, पर वे देख नहीं सकते,<sup>6</sup> उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकते, उनकी नाक हैं, पर वे सूँघ नहीं सकते,<sup>7</sup> उनके हाथ हैं, पर वे महसूस नहीं कर सकते, उनके पैर हैं, पर वे चल नहीं सकते, वे अपने गते से आवाज नहीं निकल सकते।<sup>8</sup> जो उन्हें बनाते हैं, वे उनके जैसे हो जाएँगे, हर कोई जो उन पर भरोसा करता है।

<sup>9</sup> इस्साएल, प्रभु पर भरोसा रख, वह उनकी सहायता और उनकी ढाल है।<sup>10</sup> हारून के घराने प्रभु पर भरोसा रख, वह उनकी सहायता और उनकी ढाल है।<sup>11</sup> तुम जो प्रभु का भय मानते हो, प्रभु पर भरोसा रखो, वह उनकी सहायता और उनकी ढाल है।

<sup>12</sup> प्रभु ने हमारी सुधि ली है, वह हमें आशीर्वद देगा। वह इस्साएल के घराने को आशीर्वद देगा, वह हारून के घराने को आशीर्वद देगा।<sup>13</sup> वह उन लोगों को आशीर्वद देगा जो प्रभु का भय मानते हैं, छोटे और बड़े दोनों को।

## भजन संहिता

<sup>14</sup> प्रभु तुम्हें बढ़ाए तुम और तुफारे बच्चे।<sup>15</sup> तुम प्रभु से आशीर्वदि प्राप्त करो, जो स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माता है।

<sup>16</sup> स्वर्ग प्रभु का स्वर्ग है, परंतु पृथ्वी उसने मनुष्यों के पुत्रों को दी है।<sup>17</sup> मरे हुए प्रभु की स्तुति नहीं करते, न ही वे जो मौन में चले जाते हैं।<sup>18</sup> परंतु हम प्रभु की स्तुति करेंगे इस समय से और सदा के लिए। प्रभु की स्तुति करो।

**116** मैं यहोवा से प्रेम करता हूँ, क्योंकि वह मेरी आजाज़ और मेरी विनती सुनता है।<sup>2</sup> क्योंकि उसने अपनी कान मेरी और ज़ुकालिया है, इसलिए जब तक मैं जीवित रहूँगा, मैं उसे पुकारता रहूँगा।

<sup>3</sup> मृत्यु के फंदे मुझे धेरे हुए थे और अधोलोक के भय मुझ पर आ गए, मुझे संकट और दुःख मिला।<sup>4</sup> तब मैंने यहोवा के नाम को पुकारा: "कृपया, हे यहोवा, मेरी जान बचा ले।"

<sup>5</sup> यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है, हाँ, हमारा परमेश्वर दर्शाता है।<sup>6</sup> यहोवा भोले-भाले लोगों की रक्षा करता है, मैं नीचा हो गया था, और उसने मुझे बचा लिया।

<sup>7</sup> हे मेरी आत्मा, अपने विश्राम में लैट आ, क्योंकि यहोवा ने तुम्हा पर उदारता की है।<sup>8</sup> क्योंकि तूने मेरी आत्मा को मृत्यु से बचा लिया है, मेरी आँखों को अँसुओं से मेरे पैरों को ठोकर खाने से।<sup>9</sup> मैं यहोवा के सामने चलूँगा जीवितों की भूमि में।

<sup>10</sup> मैंने विध्वास किया जब मैंने कहा, "मैं बहुत पीड़ित हूँ!"<sup>11</sup> मैंने अपनी घबराहट में कहा, "सभी लोग झूठे हैं!"

<sup>12</sup> मैं यहोवा को क्या द्वृं उसके सभी लाभों के लिए जो उसने मुझे दिए हैं।

<sup>13</sup> मैं उद्धार का प्याला उठाऊँगा, और यहोवा के नाम को पुकारूँगा।<sup>14</sup> मैं यहोवा से किए गए अपने व्रतों को पूरा करूँगा उसके सभी लोगों के सामने।

<sup>15</sup> यहोवा की छाँ में मूल्यवान है उसके मक्तों की मृत्यु।<sup>16</sup> हे यहोवा, मैं सचमुच तेरा दास हूँ, मैं तेरा दास हूँ, तेरी दासी का पुत्र, तूने मेरे बंधनों को छोल दिया है।

<sup>17</sup> मैं तुम्हे धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊँगा, और यहोवा के नाम को पुकारूँगा।<sup>18</sup> मैं यहोवा से किए गए अपने व्रतों को पूरा करूँगा उसके सभी लोगों के सामने,<sup>19</sup> यहोवा के घर के आँगनों में तेरे बीच, यरूशलाम। यहोवा की स्तुति करो।

**117** हे सब राष्ट्रों यहोवा की स्तुति करो; हे सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो।<sup>2</sup> क्योंकि हम पर उसकी करुणा महान है, और यहोवा की सच्चाई सदा स्थिर रहती है।

यहोवा की स्तुति करो।

**118** यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, क्योंकि उसकी दया सदा की है।

<sup>2</sup> इसाएल कहे "उसकी दया सदा की है।"<sup>3</sup> हारून का धराना कहे "उसकी दया सदा की है।"<sup>4</sup> जो यहोवा से डरते हैं, वे कहें "उसकी दया सदा की है।"

<sup>5</sup> मेरी विपत्ति में मैंने यहोवा को पुकारा, यहोवा ने मुझे उत्तर दिया और मुझे एक खुले स्थान में रखा।<sup>6</sup> यहोवा मेरे पक्ष में है, मैं नहीं डरूँगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?<sup>7</sup> यहोवा मेरे सहायक के रूप में मेरे साथ है, इसलिए मैं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करूँगा।

<sup>8</sup> यहोवा में शरण लेना मनुष्य पर भरोसा करने से अच्छा है।<sup>9</sup> यहोवा में शरण लेना ईर्ष्यों पर भरोसा करने से अच्छा है।<sup>10</sup> सब राष्ट्रों ने मुझे धेर लिया, यहोवा के नाम में मैं उन्हें अवश्य ही परास्त करूँगा।

<sup>11</sup> उन्होंने मुझे धेर लिया, हाँ, उन्होंने मुझे धेर लिया, यहोवा के नाम में मैं उन्हें अवश्य ही परास्त करूँगा।

<sup>12</sup> उन्होंने मुझे मधुमक्खियों की तरह धेर लिया, वे काटों की आग की तरह बुझ गए, यहोवा के नाम में मैं उन्हें अवश्य ही परास्त करूँगा।<sup>13</sup> तुमने मुझे जोर से धक्का दिया ताकि मैं गिर जाऊँ, लेकिन यहोवा ने मेरी सहायता की।<sup>14</sup> यहोवा मेरा बल और गीत है, और वह मेरा उद्धार बन गया है।

<sup>15</sup> धर्मियों के तंबुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि है, यहोवा का दाहिना हाथ वीरता से काम करता है।<sup>16</sup> यहोवा का दाहिना हाथ ऊँचा है, यहोवा का दाहिना हाथ वीरता से काम करता है।<sup>17</sup> मैं नहीं मरूँगा, बल्कि जीवित रहूँगा, और यहोवा के कार्यों का वर्णन करूँगा।<sup>18</sup> यहोवा ने मुझे कठोरता से अनुशासित किया है, लेकिन उसने मुझे मृत्यु के हवाले

# भजन संहिता

नहीं किया।<sup>19</sup> धर्म के द्वार मेरे लिए खोलो; मैं उनके माध्यम से प्रवेश करूँगा, मैं यहोवा का धन्यवाद करूँगा।<sup>20</sup> यह यहोवा का द्वार है; धर्मी इसके माध्यम से प्रवेश करेंगे।<sup>21</sup> मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, क्योंकि तूने मुझे उत्तर दिया है, और तू मेरा उद्भाव बन गया है।

<sup>22</sup> वह पत्थर जिसे राजमित्रियों ने ठुकरा दिया था मुख्य कोने का पत्थर बन गया है।<sup>23</sup> यह यहोवा की ओर से हुआ है, यह हमारी आँखों में अद्भुत है।<sup>24</sup> यह वही दिन है जिसे यहोवा ने बनाया है, हम इसमें आनंदित हों और प्रसन्न हों।

<sup>25</sup> कृपया, हे यहोवा, हमें बचा ले, कृपया, हे यहोवा, समृद्धि भेज।

<sup>26</sup> धन्य है वह जो यहोवा के नाम में आता है, हमने तुझे यहोवा के घर से आशीर्वद दिया है।<sup>27</sup> यहोवा परमेश्वर है, और उसने हमें प्रकाश दिया है, उत्सव की बतिं को वेदी के सींगों से रस्सियों से बाँधो।

<sup>28</sup> तू मेरा परमेश्वर है, और मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे ऊँचा उठाता हूँ।

<sup>29</sup> यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, क्योंकि उसकी दया सदा की है।

## 119

### ॥ अलिफ़ ॥

<sup>1</sup> धन्य हैं वे जिनका मार्ग निर्देष है, जो प्रभु की व्यवस्था में चलते हैं।<sup>2</sup> धन्य हैं वे जो उसकी गवाहियों का पालन करते हैं, और पूरे दिल से उसे खोजते हैं।<sup>3</sup> वे भी अन्याय नहीं करते, वे उसकी राहों में चलते हैं।<sup>4</sup> अपने अपनी विधियों को ठहराया है, कि हम उन्हें ध्यानपूर्वक रखें।<sup>5</sup> ओह कि मेरे मार्ग स्थापित हों आपकी विधियों को रखने के लिए।<sup>6</sup> तब मैं लज्जित नहीं होऊँगा जब मैं आपकी सभी आज्ञाओं को देखूँगा।<sup>7</sup> मैं आपके धर्मी निर्णयों को सीखते समय सीधे दिल से आपको धन्यवाद दूँगा।<sup>8</sup> मैं आपकी विधियों का पालन करूँगा, मुझे पूरी तरह से न छोड़ो।

### ॥ बेथ ॥

<sup>9</sup> एक युवा व्यक्ति अपने मार्ग को शुद्ध कैसे रख सकता है? आपके वचन के अनुसार उसे रखकर।<sup>10</sup>

मैंने पूरे दिल से आपको खोजा है, मुझे आपकी आज्ञाओं से भटकने न दें।<sup>11</sup> मैंने आपके वचन को अपने दिल में संजोया है, ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ।<sup>12</sup> धन्य हैं आप, प्रभु, मुझे अपनी विधियाँ सिखाएं।<sup>13</sup> मैंने अपने होठों से बताया है आपके मुख की सभी विधियों का।<sup>14</sup> मैंने आपकी गवाहियों के मार्ग में आनंदित किया है, जैसे कि सभी धन में।<sup>15</sup> मैं आपकी विधियों पर ध्यान करूँगा और आपकी राहों का ध्यान रखूँगा।<sup>16</sup> मैं आपकी विधियों में प्रसन्न रहूँगा, मैं आपके वचन को नहीं भूलूँगा।

### ॥ गिमेल ॥

<sup>17</sup> अपने सेवक के साथ उदारता से व्यवहार करें ताकि मैं जीवित रहूँ और आपके वचन का पालन करूँ।<sup>18</sup> मेरी आँखें खोलें कि मैं देख सकूँ आपकी व्यवस्था से अद्भुत बतें।<sup>19</sup> मैं पूर्वी पर एक अजनबी हूँ, अपनी आज्ञाओं को मुझसे न छिपाएं।<sup>20</sup> मेरी आत्मा आपकी विधियों के लिए हर समय लालसा से कुचल गई है।<sup>21</sup> आप अहंकारी, शापित को फटकारते हैं, जो आपकी आज्ञाओं से भटकते हैं।<sup>22</sup> मुझसे अपमान और इस्कार दूर करें, क्योंकि मैं आपकी गवाहियों का पालन करता हूँ।<sup>23</sup> यद्यपि शासक बैठकर मेरे विरुद्ध बोलते हैं, आपका सेवक आपकी विधियों पर ध्यान करता है।<sup>24</sup> आपकी गवाहियाँ भी मेरी प्रसन्नता हैं, वे मेरे सलाहकार हैं।

### ॥ दारेथ ॥

<sup>25</sup> मेरी आत्मा भूल से चिपकी हुई है, अपने वचन के अनुसार मुझे पुनर्जीवित करें।<sup>26</sup> मैंने अपने मार्गों के बारे में बताया है, और अपने मुझे उत्तर दिया है, मुझे अपनी विधियाँ सिखाएं।<sup>27</sup> मुझे अपनी विधियों के मार्ग को समझाने दें, ताकि मैं आपके अद्भुत कार्यों पर ध्यान कर सकूँ।<sup>28</sup> मेरा मन शोक के कारण रोता है, अपने वचन के अनुसार मुझे मजबूत करें।<sup>29</sup> जूठे मार्ग को मुझसे दूर करें, और कृपापूर्वक मुझे अपनी व्यवस्था प्रदान करें।<sup>30</sup> मैंने विश्वासयोगी मार्ग को चुना है, मैंने आपके निर्णयों को अपने सामने रखा है।<sup>31</sup> मैं आपकी गवाहियों से चिपका हूँ, प्रभु, मुझे लज्जित न करें।<sup>32</sup> मैं आपकी आज्ञाओं के मार्ग पर दौड़ूँगा, क्योंकि आप मेरे दिल को विस्तृत करेगे।

### ॥ न है ॥

<sup>33</sup> मुझे अपनी विधियों का मार्ग सिखाएं, प्रभु, और मैं अंत तक उसका पालन करूँगा।<sup>34</sup> मुझे समझ दें,

# भजन संहिता

ताकि मैं आपकी व्यवस्था का पालन कर सकूँ और पूरे दिल से उसे रख सकूँ।<sup>35</sup> मुझे आपकी आज्ञाओं के मार्ग पर चलाएं क्योंकि मैं उसमें प्रसन्न हूँ।<sup>36</sup> मेरा दिल आपकी गवाहियों की ओर झुकाएं और ब्रेइमान लाभ की ओर नहीं।<sup>37</sup> मेरी अँखों को व्यर्थ की चीजों से दूर करें और मुझे आपके मार्गों में पुनर्जीवित करें।<sup>38</sup> अपने सेवक के लिए अपने वचन को स्थापित करें जैसा कि आपके प्रति अद्वा उत्सव करता है।<sup>39</sup> मेरी वह लज्जा दूर करें जिससे मैं डरता हूँ, क्योंकि आपके निर्णय अच्छे हैं।<sup>40</sup> देखो, मैं आपकी विधियों के लिए लालायित हूँ, मुझे अपनी धार्मिकता के माध्यम से पुनर्जीवित करें।

## १ वाच

<sup>41</sup> आपकी कृपा मुझ पर भी आए प्रभु, आपके वचन के अनुसार आपका उद्घार,<sup>42</sup> ताकि मेरे पास ताने मारने वाले के लिए उत्तर हो, क्योंकि मैं आपके वचन पर विश्वास करता हूँ।<sup>43</sup> और सत्य के वचन को पूरी तरह से मेरे मुँह से न लें, क्योंकि मैं आपके निर्णयों की प्रतीक्षा करता हूँ।<sup>44</sup> इसलिए मैं आपकी व्यवस्था का लगातार पालन करूँगा, सदा और सदा के लिए।<sup>45</sup> और मैं खत्मतः मैं चतुरंगा, क्योंकि मैं आपकी विधियों को खो जाता हूँ।<sup>46</sup> मैं आपकी गवाहियों को राजाओं के सामने भी बोलूंगा, और लजित नहीं होऊँगा।<sup>47</sup> मैं आपकी आज्ञाओं में प्रसन्न रहूँगा, जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ।<sup>48</sup> और मैं आपके आदेशों की ओर अपने हाथ उठाऊँगा, जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ और मैं आपकी विधियों पर ध्यान करूँगा।

## १ ज्ञायिन

<sup>49</sup> अपने सेवक के लिए वचन को याद करें, जिसमें अपने मुझे आशा दी है।<sup>50</sup> यह मेरी विपत्ति में मेरी सांत्वना है, कि आपके वचन ने मुझे पुनर्जीवित किया है।<sup>51</sup> अहंकारी मुझे पूरी तरह से उपहास करते हैं, फिर भी मैं आपकी व्यवस्था से नहीं भटकता।<sup>52</sup> मैंने आपके पुराने निर्णयों को याद किया है, प्रभु और स्वयं को सांत्वना दी है।<sup>53</sup> दुष्टों के कारण जलती हुई क्रोध ने मुझे पकड़ लिया है, जो आपकी व्यवस्था को छोड़ देते हैं।<sup>54</sup> आपकी विधियाँ मेरे गीत रही हैं मेरे तीरथयात्रा के घर में।<sup>55</sup> प्रभु, मैं रात में आपके नाम को याद करता हूँ, और आपकी व्यवस्था का पालन करता हूँ।<sup>56</sup> यह मेरा हो गया है, कि मैं आपकी विधियों का पालन करता हूँ।

## १ हेथ

<sup>57</sup> प्रभु मेरा भाग है, मैंने आपके वचनों का पालन करने का वचन दिया है।<sup>58</sup> मैंने पूरे दिल से आपकी कृपा मार्गी है, अपने वचन के अनुसार मुझ पर कृपा करें।<sup>59</sup> मैंने अपने मार्गों पर विचार किया और अपने पाँव आपकी गवाहियों की ओर मोड़े।<sup>60</sup> मैंने जलदी की ओर देरी नहीं की आपकी आज्ञाओं का पालन करने में।<sup>61</sup> दुष्टों के जाल ने मुझे घेर लिया है, लेकिन मैंने आपकी व्यवस्था को नहीं भुलाया।<sup>62</sup> मैं आधी रात को उठकर आपको ध्यावाद देता हूँ आपके धर्मीनिर्णयों के कारण।<sup>63</sup> मैं उन सभी का साथी हूँ जो आपसे डरते हैं, और जो आपकी विधियों का पालन करते हैं।<sup>64</sup> पृथ्वी आपकी दया से भरी है, प्रभु, मुझे अपनी विधियाँ सिखाएं।

## ४ टेथ

<sup>65</sup> आपने अपने सेवक के साथ अच्छा व्यवहार किया है, प्रभु आपके वचन के अनुसार।<sup>66</sup> मुझे अच्छी समझ और ज्ञान सिखाएं, क्योंकि मैं आपकी आज्ञाओं में विश्वास करता हूँ।<sup>67</sup> इससे पहले कि मैं पीड़ित होता, मैं भटक गया था, लेकिन अब मैं आपके वचन का पालन करता हूँ।<sup>68</sup> आप अच्छे हैं और अच्छा करते हैं, मुझे अपनी विधियाँ सिखाएं।<sup>69</sup> अहंकारियों ने मेरे विरुद्ध झूठ गढ़ा है, प्रेरित दिल से मैं आपकी विधियों का पालन करूँगा।<sup>70</sup> उनका दिल मोटे की तरह असंवेदनशील है, लेकिन मैं आपकी व्यवस्था में प्रसन्न हूँ।<sup>71</sup> मेरे लिए अच्छा है कि मैं पीड़ित हुआ, ताकि मैं आपकी विधियाँ सीख सकूँ।<sup>72</sup> आपके मुख की व्यवस्था मेरे लिए बेहतर है हजारों सोने और चांदी के टुकड़ों से।

## १ योध

<sup>73</sup> आपके हाथों ने मुझे बनाया और गढ़ा है, मुझे समझ दें, ताकि मैं आपकी आज्ञाओं को सीख सकूँ।<sup>74</sup> जो आपसे डरते हैं वे मुझे देखें और प्रसन्न हों, क्योंकि मैं आपके वचन की प्रतीक्षा करता हूँ।<sup>75</sup> मैं जानता हूँ, प्रभु कि आपके निर्णय धर्मी हैं, और आपने मुझे विश्वासयोग्यता में पीड़ित किया है।<sup>76</sup> आपकी कृपा मुझे सांत्वना दे, आपके सेवक के लिए आपके वचन के अनुसार।<sup>77</sup> आपकी करुणा मुझ पर आए ताकि मैं जीवित रह सकूँ, क्योंकि आपकी व्यवस्था मेरी प्रसन्नता है।<sup>78</sup> अहंकारी लजित हों, क्योंकि वे मुझे झूठ के साथ गलत करते हैं, लेकिन मैं आपकी विधियों पर ध्यान करूँगा।<sup>79</sup> जो आपसे डरते हैं वे मेरी ओर मुड़ें, और जो आपकी गवाहियों को जानते हैं।<sup>80</sup> मेरा दिल

# भजन संहिता

आपकी विधियों में निर्दोष हो, ताकि मैं लजित न होऊँ।

## २ काफ़

<sup>८१</sup> मेरी आज्ञा आपके उद्धार के लिए तड़पती हैं मैं आपके वचन की प्रतीक्षा करता हूँ<sup>८२</sup> मेरी अँखें आपके वचन के लिए लालसा से विफल हो जाती हैं, जबकि मैं कहता हूँ "आप मुझे कब सत्त्वां देगे?"<sup>८३</sup> यद्यपि मैं थुरंग में एक मशक की तरह हो गया हूँ<sup>८४</sup> मैं आपकी विधियों को नहीं भूलता।<sup>८५</sup> आपके सेवक के कितने दिन हैं? आप उन पर कब न्याय करेंगे जो मुझे सताते हैं?<sup>८६</sup> अहंकारियों ने मेरे लिए गहे खो दें हैं लोग जो आपकी व्यवस्था के अनुसार नहीं हैं।<sup>८७</sup> आपकी सभी आज्ञाएँ विभासयोग्य हैं, उन्होंने मुझे झूठ के साथ सताया है, मेरी मदद करें।<sup>८८</sup> उन्होंने मुझे लगभग पृथी पर नष्ट कर दिया, लेकिन मैंने आपकी विधियों को नहीं छोड़ा।<sup>८९</sup> अपनी दया के अनुसार मुझे पुनर्जीवित करें ताकि मैं आपके मुख की गवाही को रख सकूँ।

## ५ लामेध

<sup>९०</sup> सदा के लिए प्रभु आपका वचन स्वर्ग में स्थिर है।<sup>९१</sup> आपकी विभासयोग्यता धीरियों तक बनी रहती है, आपने पृथी को स्थापित किया, और यह स्थिर है।<sup>९२</sup> वे आज आपके विधियों के अनुसार स्थिर हैं, क्योंकि सभी चीजें आपके सेवक हैं।<sup>९३</sup> यदि आपकी व्यवस्था मेरी प्रसन्नता नहीं होती, तो मैं अपनी विपत्ति में नष्ट हो जाता।<sup>९४</sup> मैं आपकी विधियों को कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि उनके द्वारा आपने मुझे पुनर्जीवित किया है।<sup>९५</sup> मैं आपका हूँ मुझे बचाएँ, क्योंकि मैंने आपकी विधियों को खो दी है।<sup>९६</sup> दुष्ट मुझे नष्ट करने के लिए प्रतीक्षा करते हैं, मैं आपकी गवाहियों पर ध्यानपूर्वक विचार करूँगा।<sup>९७</sup> मैंने सभी पूर्णता की सीमा देखी है, आपकी आज्ञा अत्यधिक व्यापक है।

## ६ मेम

<sup>९८</sup> मैं आपकी व्यवस्था से कितना प्रेम करता हूँ, यह मेरा दिन भर का ध्यान है।<sup>९९</sup> आपकी आज्ञाएँ मुझे मेरे शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान बनाती हैं, क्योंकि वे सदा मेरी हैं।<sup>१००</sup> मेरे पास अपने सभी शिक्षकों से अधिक अंतर्दृष्टि है, क्योंकि आपकी गवाहियाँ मेरा ध्यान हैं।<sup>१०१</sup> मैं वृद्धों से अधिक समझता हूँ, क्योंकि मैंने आपकी विधियों का पालन किया है।<sup>१०२</sup> मैंने अपने पाँव को हर बुरे मार्ग से रोका है, ताकि मैं आपके वचन का पालन कर सकूँ।<sup>१०३</sup> मैंने आपके निर्णयों से मुँह नहीं मोड़ा है,

क्योंकि आपने स्वयं मुझे सिखाया है।<sup>१०४</sup> आपके वचन मेरे स्वाद में कितने मीठे हैं! हाँ, मेरे मुँह में शहद से भी मीठे।<sup>१०५</sup> आपकी विधियों से मुझे समझ मिलती है, इसलिए मैं हर झूठे मार्ग से घृणा करता हूँ।

## ६ नून

<sup>१०६</sup> आपका वचन मेरे पाँव के लिए दीपक है और मेरे मार्ग के लिए प्रकाश है।<sup>१०७</sup> मैंने शपथ ली है और मैं इसे पुष्टि करूँगा, कि मैं आपके धर्मी निर्णयों का पालन करूँगा।<sup>१०८</sup> मैं अत्यधिक पीड़ित हूँ, मुझे पुनर्जीवित करें, प्रभु! आपके वचन के अनुसार।<sup>१०९</sup> कृपया मेरे मुँह के सौचिक अपण को स्वीकार करें, प्रभु! और मुझे अपने निर्णय सिखाएं।<sup>११०</sup> मेरा जीवन लगातार मेरे हाथ में है, फिर भी मैं आपकी व्यवस्था को नहीं भूलता।<sup>१११</sup> दुष्टों ने मेरे लिए जाल बिछाया है, फिर भी मैं आपकी विधियों से नहीं भटका।<sup>११२</sup> मैंने आपकी गवाहियों को सदा के लिए विरासत में लिया है, क्योंकि वे मेरे दिल की प्रसन्नता हैं।<sup>११३</sup> मैंने अपने दिल को आपकी विधियों का पालन करने के लिए झूका दिया है, सदा के लिए, यहाँ तक कि अंत तक।

## ७ सामेख

<sup>११४</sup> मैं दोहरे मन वाले लोगों से घृणा करता हूँ, लेकिन मैं आपकी व्यवस्था से प्रेम करता हूँ।<sup>११५</sup> आप मेरी छिपने की जगह और मेरी ढाल हैं, मैं आपके वचन की प्रतीक्षा करता हूँ।<sup>११६</sup> मुझे छोड़ दो हैं दुष्टों, ताकि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर सकूँ।<sup>११७</sup> मुझे आपके वचन के अनुसार बनाए रखें, ताकि मैं जीवित रह सकूँ, और मेरी आशा से मुझे लजित न करें।<sup>११८</sup> मुझे बनाए रखें, ताकि मैं सुरक्षित रह सकूँ, कि मैं आपकी विधियों का लगातार ध्यान रख सकूँ।<sup>११९</sup> आपने उन सभी को अस्वीकार कर दिया है जो आपकी विधियों से भटकते हैं, क्योंकि उनकी धोखाधड़ी बेकार है।<sup>१२०</sup> आपने पृथी के सभी दुष्टों को अशुद्धियों की तरह हटा दिया है, इसलिए मैं आपकी गवाहियों से प्रेम करता हूँ।<sup>१२१</sup> मेरा मांस आपके डर से कांपता है, और मैं आपके निर्णयों से डरता हूँ।

## ८ आयिन

<sup>१२२</sup> मैंने न्याय और धर्म का पालन किया है, मुझे मेरे उत्पीड़कों के लिए न छोड़ें।<sup>१२३</sup> अपने सेवक के लिए अच्छे के लिए गारंटर बनें, अहंकारियों को मुझे उत्पीड़ित न करने दें।<sup>१२४</sup> मेरी अँखें आपके उद्धार के लिए लालसा से विफल हो जाती हैं, और आपके धर्मी

## भजन संहिता

वचन के लिए।<sup>124</sup> अपने सेवक के साथ अपनी दया के अनुसार व्यवहार करें, और मुझे अपनी विधियाँ सिखाएँ।<sup>125</sup> मैं आपका सेवक हूँ मुझे समझ दें ताकि मैं आपकी गवाहियों को जान सकूँ।<sup>126</sup> यह प्रभु के कार्य करने का समय है, क्योंकि उन्होंने आपकी व्यवस्था को तोड़ा है।<sup>127</sup> इसलिए मैं आपकी आज्ञाओं से प्रेम करता हूँ सोने से अधिक, हाँ शुद्ध सोने से भी अधिक।<sup>128</sup> इसलिए मैं हर चीज के बारे में आपकी विधियों का ध्यानपूर्वक पालन करता हूँ मैं हर ज्ञाते सार्व से धृणा करता हूँ।

५ पे

<sup>129</sup> आपकी गवाहियाँ अद्भुत हैं, इसलिए मेरी आत्मा उनका पालन करती है।<sup>130</sup> आपके वचनों का उद्घाटन प्रकाश देता है, यह सरल को समझ देता है।<sup>131</sup> मैंने अपना मुँह चूड़ा खोला और हाँफने लगा, क्योंकि मैं आपकी आज्ञाओं के लिए लालाचित था।<sup>132</sup> मेरी ओर सुर्खें और मुझ पर कृपा करें जैसा कि आपके नाम से प्रेम करने वालों के लिए सही है।<sup>133</sup> मेरे कदमों को आपके वचन में स्थापित करें और किसी भी गलत काम को मुश्श पर अधिकार न करने दें।<sup>134</sup> मुझे मनुष्य के उत्पीड़न से मुक्त करें, ताकि मैं आपकी विधियों का पालन कर सकूँ।<sup>135</sup> अपने सेवक पर अपना चेहरा चमकाएं, और मुझे अपनी विधियाँ सिखाएँ।<sup>136</sup> मेरी आँखों से जलधारा बहती है, क्योंकि वे आपकी व्यवस्था का पालन नहीं करते।

६ सादे

<sup>137</sup> आप धर्म हैं प्रभु, और आपके निर्णय सही हैं।<sup>138</sup> अपने अपनी गवाहियों को धर्म में आदेश दिया है और महान विश्वासयोग्यता में।<sup>139</sup> मेरी उत्सुकता ने मुझे खा लिया है, क्योंकि मेरे शरु आपके वचनों को भूल गए हैं।<sup>140</sup> आपका वचन बहुत शुद्ध है, इसलिए आपका सेवक उससे प्रेम करता है।<sup>141</sup> मैं नगण्य और तिरस्कृत हूँ, किर भी मैं आपकी विधियों को नहीं भूलता।<sup>142</sup> आपकी धर्मिकता एक शाश्वत धर्मिकता है, और आपकी व्यवस्था सत्य है।<sup>143</sup> संकट और पीड़ा ने मुझे पा लिया है, किर भी आपकी आज्ञाएँ मेरी प्रसन्नता है।<sup>144</sup> आपकी गवाहियाँ सदा के लिए धर्म हैं, मुझे समझ दें ताकि मैं जीवित रह सकूँ।

७ क्रोफ़

<sup>145</sup> मैंने पूरे दिल से पुकार, मुझे उत्तर दें प्रभु, मैं आपकी विधियों का पालन करूँगा।<sup>146</sup> मैंने आपको

पुकारा, मुझे बचाएँ, और मैं आपकी गवाहियों का पालन करूँगा।<sup>147</sup> मैं भूर से पहले उठता हूँ और सहायता के लिए पुकारता हूँ, मैं आपके वचनों की प्रतीक्षा करता हूँ।<sup>148</sup> मेरी आँखें रात की पहरेदारी की प्रतीक्षा करती हैं, ताकि मैं आपके वचन पर ध्यान कर सकूँ।<sup>149</sup> अपनी दया के अनुसार मेरी आज्ञा सुनें मुझे पुनर्जीवित करें, प्रभु, आपके निर्णयों के अनुसार।<sup>150</sup> जो दुष्टा का अनुसरण करते हैं वे पास आते हैं, वे आपकी व्यवस्था से दूर हैं।<sup>151</sup> किर भी आप पास हैं, प्रभु, और आपकी सभी आज्ञाएँ सत्य हैं।<sup>152</sup> पुरानी बातों से मैंने आपकी गवाहियों से जाना है, कि आपने उन्हें सदा के लिए स्थापित किया है।

८ रेखा

<sup>153</sup> मेरी पीड़ा को देखें और मुझे बचाएँ, क्योंकि मैं आपकी व्यवस्था को नहीं भूलता।<sup>154</sup> मेरा मामला लड़े और मुझे छुड़ाएं मुझे आपके वचन के अनुसार पुनर्जीवित करें।<sup>155</sup> उद्धार दुष्टों से दूर है, क्योंकि वे आपकी विधियों को नहीं खोजते।<sup>156</sup> आपकी दया महान है, प्रभु, मुझे आपके निर्णयों के अनुसार पुनर्जीवित करें।<sup>157</sup> मेरे सताने वाले और मेरे शरु बहुत हैं, किर भी मैं आपकी गवाहियों से नहीं भटकता।<sup>158</sup> मैं विश्वासयोग्यताओं को देखता हूँ और उनसे धृणा करता हूँ, क्योंकि वे आपके वचन का पालन नहीं करते।<sup>159</sup> विचार करें कि मैं आपकी विधियों से कितना प्रेम करता हूँ मुझे पुनर्जीवित करें, प्रभु, आपकी दया के अनुसार।<sup>160</sup> आपके वचन का योग सत्य है, और आपके सभी धर्मी निर्णय शाश्वत हैं।

९ सीन और शिन

<sup>161</sup> राजकुमार मुझे बिना कारण सताते हैं, लेकिन मेरा दिल आपके वचनों से विस्तृत होता है।<sup>162</sup> मैं आपके वचन पर आनन्दित होता हूँ जैसे कोई बड़ा लूट पाता है।<sup>163</sup> मैं ज्ञूत और धोखे से धृणा करता हूँ लेकिन मैं आपकी व्यवस्था से प्रेम करता हूँ।<sup>164</sup> मैं दिन में सात बार आपकी प्रशंसा करता हूँ आपके धर्मी निर्णयों के कारण।<sup>165</sup> जो आपकी व्यवस्था से प्रेम करते हैं उन्हें बड़ी शांति है, और कुछ भी उन्हें ठोकर नहीं देता।<sup>166</sup> मैं आपके उद्धार की आशा करता हूँ प्रभु, और आपकी आज्ञाओं का पालन करता हूँ।<sup>167</sup> मेरी आत्मा आपकी गवाहियों का पालन करती है, और मैं उनसे अत्यधिक प्रेम करता हूँ।<sup>168</sup> मैं आपकी विधियों और आपकी गवाहियों का पालन करता हूँ क्योंकि मेरे सभी मार्ग आपके सामने हैं।

१० तत्त्व

## भजन संहिता

<sup>169</sup> मेरी पुकार आपके सामने आए प्रभु मुझे आपके वचन के अनुसार समझ दें।<sup>170</sup> मेरी विनती आपके सामने आए मुझे आपके वचन के अनुसार बचाएं।<sup>171</sup> मेरे हॉठ प्रशंसा उड़ेले क्योंकि आप मुझे अपनी विधियाँ सिखाते हैं।<sup>172</sup> मेरी जीभ आपके वचन का गीत गाए क्योंकि आपकी सभी आज्ञाएँ धर्म हैं।<sup>173</sup> आपकी हाथ मेरी सहायता के लिए तैयार हो, क्योंकि मैंने आपकी विधियों को चुना है।<sup>174</sup> मैं आपके उद्घास के लिए लालायित हूँ, प्रभु और आपकी व्यवस्था मेरी प्रसन्नता है।<sup>175</sup> मेरी आसा जीवित रहे ताकि वह आपकी प्रशंसा कर सके, और आपकी विधियाँ मेरी सहायता करें।<sup>176</sup> मैं एक खोई हुई भेड़ की तरह भटक गया हूँ, अपने सेवक को छोड़े, क्योंकि मैं आपकी आज्ञाओं को नहीं भूलता।

## 120

### आरोहण के गीत।

<sup>1</sup> मेरी विपत्ति मैं मैंने यहोवा को पुकारा, और उसने मेरी सुन ली।<sup>2</sup> हे यहोवा, मेरे प्राण को झूठे हॉठों से बचा, धोखेबाज जीभ से।

<sup>3</sup> वह तुझसे क्या करेगा, और तुझसे और क्या करेगा, हे धोखेबाज जीभ! <sup>4</sup> योद्धा के तीखे तीर झाड़ के पेड़ की जलती हुई कोयले के साथ।

<sup>5</sup> हाय मुझ पर, क्योंकि मैं मेशक में निवास करता हूँ, क्योंकि मैंने केदार के तंबुओं में निवास किया है।<sup>6</sup> बहुत समय से मेरे प्राण ने उन लोगों के साथ निवास किया है जो शांति से बैर रखते हैं।<sup>7</sup> मैं शांति का पक्षधर हूँ, पर जब मैं बोलता हूँ वे युद्ध के लिए तैयार होते हैं।

## 121

### आरोहण का एक गीत।

<sup>1</sup> मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर उठाऊँगा, मेरी सहायता कहाँ से आएगी?<sup>2</sup> मेरी सहायता यहोवा से आती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया।

<sup>3</sup> वह तेरे पैर को फिसलने नहीं देगा, जो तुझे देखता है वह न तो उंधेगा।<sup>4</sup> देखो, जो इसाएल की रक्षा करता है वह न उंधेगा और न सोएगा।

<sup>5</sup> यहोवा तेरा रक्षक है, यहोवा तेरे दाहिने हाथ पर तेरा छाया है।<sup>6</sup> दिन में सूर्य तुझ पर न लगेगा, न रात में चंद्रमा।

<sup>7</sup> यहोवा तुझे सब बुराई से बचाएगा, वह तेरी आत्मा की रक्षा करेगा।<sup>8</sup> यहोवा तेरे बाहर जाने और भीतर आने की रक्षा करेगा अब से लेकर सदा तक।

## 122

### आरोहण गीत। दाऊद का।

<sup>1</sup> जब उर्होंने मुझसे कहा, "आओ, हम प्रभु के घर चलें" तो मैं आनन्दित हुआ।<sup>2</sup> हमारे पांव खड़े हैं तेरे द्वारों के भीतर, हे यरूशलेम,

<sup>3</sup> यरूशलेम, जो बसा है एक नगर के रूप में जो एक साथ तुड़ा हुआ है।<sup>4</sup> जहाँ पर जातियाँ चढ़ाई जाती हैं प्रभु की जातियाँ— इसाएल के लिए एक विधि— प्रभु के नाम का धन्यवाद करने के लिए।<sup>5</sup> क्योंकि वहाँ न्याय के सिंहासन रखे गए, दाऊद के घर के सिंहासन।

<sup>6</sup> यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करो— "जो तुझसे प्रेम करते हैं वे सुरक्षित रहें।"<sup>7</sup> तेरी दीवारों के भीतर शांति हो, और तेरे महलों के भीतर समृद्धि हो।<sup>8</sup> मेरे भाइयों और मेरे मित्रों के कारण, अब मैं कूँगा, "तेरे भीतर शांति हो।"<sup>9</sup> हमारे परमेश्वर के घर के कारण, मैं तेरी भलाई की खोज करूँगा।

## 123

### आरोहण के गीत।

<sup>1</sup> मैं ने अपनी आँखें तेरी ओर उठाई हैं, हे स्वर्ग में विराजमान।<sup>2</sup> देखो, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामी के हाथ की ओर होती हैं, जैसे दासी की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर होती हैं, वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर लगी रहती हैं, जब तक कि वह हम पर अनुग्रह न करे।

<sup>3</sup> हे यहोवा, हम पर अनुग्रह कर, हम पर अनुग्रह कर, क्योंकि हम ने बहुत अधिक तिरस्कार सहा है।<sup>4</sup> हमारी आत्मा ने बहुत अधिक सहा है उन लोगों के उपहास का जो चैन मैं हूँ, और धमंडी लोगों के तिरस्कार का।

## भजन संहिता

### 124

आरोहण का गीत। दाऊद का।

<sup>१</sup> “यदि यहोवा हमारे पक्ष में न होता” अब इसाएल कहे, <sup>२</sup> “यदि यहोवा हमारे पक्ष में न होता जब लोग हमारे विश्वद्व उठ खड़े हुए, <sup>३</sup> तब वे हमें जीवित ही निगल जाते, जब उनका क्रोध हमारे विश्वद्व भड़क उठा, <sup>४</sup> तब जल हमारे ऊपर से बह जाता धारा हमारे प्राण पर से बह जाता”

<sup>५</sup> यहोवा धन्य है जिसने हमें उनके दांतों से फाड़े जाने के लिए नहीं दिया। <sup>६</sup> हमारा प्राण शिकारी के जाल से चिड़िया के समान बच निकला है जाल टूट गया है और हम बच निकले हैं। <sup>७</sup> हमारी सहायता यहोवा के नाम में है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया।

### 125

आरोहण के गीत।

<sup>१</sup> जो यहोवा पर भरोसा करते हैं वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो हिल नहीं सकता परन्तु सदा बना रहता है। <sup>२</sup> जैसे यरूशलैम के चारों ओर पर्वत हैं, वैसे ही यहोवा अपने लोगों के चारों ओर है अब से लेकर सदा तक।

<sup>३</sup> क्योंकि दुष्टा का राजदण्ड धर्मियों की भूमि पर नहीं रहे गा, ताकि धर्मी अपने हाथ छुराई करने के लिए न बढ़ाएँ।

<sup>४</sup> हे यहोवा, भलाई कर उन लोगों के साथ जो भले हैं, और उनके साथ जो अपने हृदय में सीधे हैं। <sup>५</sup> परन्तु जो लोग अपनी टेढ़ी राहों की ओर मुड़ जाते हैं, यहोवा उन्हें अन्याय करने वालों के साथ ले जाएगा। इसाएल पर शांति हो।

### 126

आरोहण के गीत।

<sup>१</sup> जब यहोवा सिय्योन के बंधुओं को लौटा लाया, तब हम स्वप्न देखने वालों के समान थे। <sup>२</sup> तब हमारा मुँह हँसी से भर गया और हमारी जीभ ज्यज्यकार से तब अन्यजातियों में कहा गया, “यहोवा ने उनके लिए बड़े

काम किए हैं।” <sup>३</sup> यहोवा ने हमारे लिए बड़े काम किए हैं, हम आनंदित हैं।

<sup>४</sup> हे यहोवा, हमारी दशा को फिर से सुधार जैसे दक्षिण की धाराएँ। <sup>५</sup> जो आँखू बहाते हुए बोते हैं, वे ज्यज्यकार करते हुए काटेंगे। जो बीज की थेली लिए रोते हुए इधर-उधर जाता है, वह निश्चय ही ज्यज्यकार के साथ लौटेगा, अपनी पूलियाँ साथ लाते हुए।

### 127

आरोहण के गीत। सुलैमान का।

<sup>१</sup> यदि यहोवा घर न बनाए तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ है, यदि यहोवा नगर की रक्षा न करे तो पहरेदार का जागते रहना व्यर्थ है। <sup>२</sup> तुम्हारा भोर को उठाना, देर रात तक जागते रहना, दुखदायी परिश्रम की रोटी खाना व्यर्थ है, क्योंकि वह अपने प्रिय को नींद में भी देता है।

<sup>३</sup> देखो, बच्चे यहोवा की देन हैं गर्भ का फल एक प्रतिफल है। <sup>४</sup> योद्धा के हाथ में तीरों के समान् तेरे ही जगानी के बच्चे होते हैं। <sup>५</sup> धन्य है वह व्यक्ति जिसकी तरकश उनसे भरी हुई है, वे लजित नहीं होंगे जब वे अपने शत्रुओं से फाटक पर बात करेंगे।

### 128

आरोहण के गीत।

धन्य है वह प्रत्येक व्यक्ति जो यहोवा का भय मानता है, जो उसकी राहों में चलता है। <sup>२</sup> तू अपने हाथों की मेहनत का फल खाएगा, तू सुखी रहेगा, और तेरे लिए सब कुछ अच्छा होगा। <sup>३</sup> तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलदायी बेल के समान होगी, तेरे बच्चे जैतून के पौधों के समान तेरी मेज के चारों ओर होंगे। <sup>४</sup> देखो, ऐसा ही वह व्यक्ति जो यहोवा का भय मानता है, धन्य होगा।

<sup>५</sup> यहोवा तुझे सिय्योन से आशीर्वाद दे, और तू अपने जीवन के सभी दिनों में यरूशलैम की समृद्धि देखो। <sup>६</sup> वास्तव में, तू अपने बच्चों के बच्चों को देखो। इसाएल पर शांति हो।

### 129

आरोहण के गीत।

## भजन संहिता

<sup>1</sup> "कई बार उन्होंने मेरे बचपन से ही मुझ पर हमला किया।" इसाएल कहे <sup>2</sup> "कई बार उन्होंने मेरे बचपन से ही मुझ पर हमला किया; फिर भी वे मुझ पर विजय प्राप्त नहीं कर सके।<sup>3</sup> हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर हल चलाया; उन्होंने अपनी लकड़ीं लंबी कर दी।"<sup>4</sup> यहोवा धर्मी है, उसने दुष्टों की रसियों को काट दिया है।

<sup>5</sup> जो सियोन से बैर रखते हैं, वे सब लजित हों और पिछे हटें<sup>6</sup> ते छातों पर उगाने वाले घास के समान हों, जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है,<sup>7</sup> जिससे काटने वाला अपना हाथ नहीं भरता, न ही पूलों का बंधन करने वाला अपनी बाहें<sup>8</sup> और न ही जो लोग वहाँ से गुजरते हैं, कहते हैं 'यहोवा की आशीष तुम पर हो हम तुम्हें यहोवा के नाम में आशीर्वद देते हैं।'

## 130

### आरोहण के गीत।

<sup>1</sup> गहराइयों से मैंने तुझसे प्रार्थना की है, हे प्रभु!<sup>2</sup> हे प्रभु, मेरी आवाज सुना तेरे कान मेरी विनती की ध्वनि पर ध्यान दें।

<sup>3</sup> यदि तू हे प्रभु अपराधों का लेखा रखे, तो, हे प्रभु कौन खड़ा रह सकता है?<sup>4</sup> परंतु तेरे पास क्षमा है ताकि तेरा भय माना जाए।

<sup>5</sup> मैं प्रभु की प्रतीक्षा करता हूँ, मेरी आत्मा प्रतीक्षा करती है, और मैं उसके बचन की प्रतीक्षा करता हूँ<sup>6</sup> मेरी आत्मा प्रभु की आशा में प्रतीक्षा करती है पहरेदारों से भी अधिक सुबह के लिए हाँ, पहरेदारों से भी अधिक सुबह के लिए।

<sup>7</sup> इसाएल, प्रभु की प्रतीक्षा कर, क्योंकि प्रभु के साथ दया है, और उसके साथ प्रचुर मुक्ति है।<sup>8</sup> और वह इसाएल को उसके सभी अपराधों से छुड़ाएगा।

## 131

### आरोहण के गीत। दाऊद का।

<sup>1</sup> हे प्रभु, मेरा हृदय अभिमानी नहीं है, न ही मेरी आँखें घमण्ड से भरी हैं, न ही मैं बड़े मालों में पड़ता हूँ, या उन बातों में जो मेरे लिए बहुत कठिन हैं।<sup>2</sup> निश्चय ही मैंने अपनी आत्मा को शांत और स्थिर कर लिया है,

जैसे द्रुथ छुड़ाया हुआ बच्चा अपनी माँ के पास आराम करता है, मेरे भीतर मेरी आत्मा द्रुथ छुड़ाए हुए बच्चे के समान है।

<sup>3</sup> हे इसाएल, प्रभु की प्रतीक्षा करो अब से और सदा के लिए।

## 132

### आरोहण के गीत।

<sup>1</sup> हे प्रभु, दाऊद के लिए स्मरण कर, उसकी सारी पीड़ि।

<sup>2</sup> उसने प्रभु से कैसे शपथ ती और याकूब के शक्तिमान से प्रतिज्ञा की।<sup>3</sup> मैं निश्चित रूप से अपने घर में प्रवेश नहीं करूँगा, और न ही अपने बिस्तर पर लेटूँगा;<sup>4</sup> मैं अपनी आँखों को नींद नहीं ढूँगा, न ही अपनी पलकों को झपकाएँ;<sup>5</sup> जब तक मैं प्रभु के लिए एक स्थान नहीं ढूँढ़ लेता, याकूब के शक्तिमान के लिए एक निवास स्थान।"

<sup>6</sup> देखो, हमने इसके बारे में इफ्राता में सुना, हमने इसे यार के खेत में पाया।<sup>7</sup> चलो उसके निवास स्थान में चलें, उसके पादपीठ पर आराधना करें।<sup>8</sup> उठो, हे प्रभु, अपने विश्राम स्थान पर आप और आपकी शक्ति की संतुलन।<sup>9</sup> आपके याजक धर्म के वस्त्र पहनें, और आपके भक्त आनन्द से गाएं।

<sup>10</sup> अपने सेवक दाऊद के खातिर, अपने अभिषिक्त के मुख को न करें।

<sup>11</sup> प्रभु ने दाऊद से शपथ ली है एक सत्य जिससे वह पीछे नहीं हटेगा: "मैं तुम्हारे सिंहासन पर बैठाऊँगा तुम्हारे शरीर के फल में से एक।"<sup>12</sup> यदि तुम्हारे पुत्र मेरी बाचा का पालन करेंगे और मेरी गवाही जो मैं उन्हें सिखाऊँगा, उनके पुत्र भी सदा के लिए तुम्हारे सिंहासन पर बैठेंगे।"

<sup>13</sup> क्योंकि प्रभु ने सियोन को चुना है, उसने इसे अपने निवास स्थान के रूप में चाहा है।<sup>14</sup> "यह मेरा विश्राम स्थान सदा के लिए है, यहाँ मैं निवास करूँगा, क्योंकि मैंने इसे चाहा है।"<sup>15</sup> मैं उसकी भीजन को प्रवरुत्ता से आशीर्वाद ढूँगा; मैं उसकी जरूरतमंदों को रोटी से संतुष्ट करूँगा।<sup>16</sup> मैं उसके याजकों को भी उद्धार के

# भजन संहिता

वस्त धनाऊंगा, और उसके भक्त ऊँचे स्वर में  
आनन्द से गाएंगे।

<sup>17</sup> मैं वहाँ दाऊद के सींग को फूटने दूंगा; मैंने अपने  
अधिषिक्त के लिए एक दीपक तैयार किया है।<sup>18</sup> मैं  
उसके शत्रुओं को लज्जा के वस्त धनाऊंगा, परंतु उस  
पर उसका मुकुट चमकेगा॥

## 133

आरोहण के गीत। दाऊद का।

<sup>1</sup> देखो, यह कितना अच्छा और कितना मनोहर है जब  
भाई एकता में साथ रहते हैं।

<sup>2</sup> यह उस बहुमूल्य तेल के समान है जो सिर पर डाला  
जाता है, जो दाढ़ी पर बहता है, हारून की दाढ़ी पर,  
और उसके वस्तों के किनारों तक पहुँचता है।<sup>3</sup> यह  
हर्मोन की ओस के समान है जो सियोन के पहाड़ों पर  
उतरती है क्योंकि वहीं यहोवा ने आशीर्वाद की आज्ञा  
दी—सदा के लिए जीवन।

## 134

आरोहण के गीत।

<sup>1</sup> देखो, यहोवा को धन्य कहो हे यहोवा को सब सेवकों  
जो यहोवा के भवन में रात को सेवा करते हो।<sup>2</sup> अपने  
हाथों को पवित्र स्थान की ओर उठाओ और यहोवा को  
धन्य कहो।

<sup>3</sup> यहोवा तुझे सियोन से आशीर्वाद दे, वहीं जिसने  
आकाश और पृथ्वी को बनाया।

**135** प्रभु की स्तुति करो प्रभु के नाम की स्तुति  
करो उसकी स्तुति करो, हे प्रभु के सेवकों,<sup>2</sup> तुम जो  
प्रभु के घर में खड़े हो, हमारे परमेश्वर के घर के  
आँगनों में।

<sup>3</sup> प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि प्रभु भला है उसके नाम  
की स्तुति करो, क्योंकि वह मनोहर है।<sup>4</sup> क्योंकि प्रभु ने  
याकूब को अपने लिए चुना है, इसाएल को अपनी  
विशेष संपत्ति के रूप में।

<sup>5</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु महान है, और हमारा  
प्रभु सब देवताओं से ऊपर है।<sup>6</sup> जो कुछ प्रभु चाहता

है, वह करता है, स्वर्ग में और पृथ्वी पर, समुद्रों में और  
सभी महासागरों की गहराइयों में।<sup>7</sup> वह पृथ्वी के छोर  
से बादलों को उठाता है, जो वर्षा के लिए बिजली  
बनाता है, जो अपनी भंडारण्हों से हवा लाता है।

<sup>8</sup> उसने मिस के पहिलौठों को मारा, मनुष्य और पशु  
दोनों को।<sup>9</sup> उसने तुहारे बीम, मिस में चिरह और  
चमत्कार भेजे, फिरौन और उसके सभी सेवकों के  
विरुद्ध।<sup>10</sup> उसने कई राष्ट्रों को मारा और शक्तिशाली  
राजाओं को मृत्यु दी।<sup>11</sup> एमारी के राजा सिहोन्, और  
बाशान के राजा ओग, और कनान के सभी राज्य,<sup>12</sup>  
और उसने उनकी भूमि को एक विरासत के रूप में  
दिया, अपनी प्रजा इसाएल के लिए एक विरासत।

<sup>13</sup> हे प्रभु तेरा नाम सदा के लिए है, हे प्रभु तेरा स्मरण  
सभी पीढ़ियों में है।<sup>14</sup> क्योंकि प्रभु अपनी प्रजा का  
न्याय करेगा और अपने सेवकों पर दगा करेगा।

<sup>15</sup> राष्ट्रों की मूर्तियाँ चाँदी और सोना हैं मानव हाथों का  
कार्य।<sup>16</sup> उनके मुँह हैं, पर वे बोलते नहीं उनकी आँखें  
हैं, पर वे देखते नहीं।<sup>17</sup> उनके कान हैं, पर वे सुनते  
नहीं, और उनके मुँह में कोई श्वास नहीं है।<sup>18</sup> जो उन्हें  
बनाते हैं वे उनके समान हो जाएँगे, हर कोई जो उन  
पर भरोसा करता है।

<sup>19</sup> इसाएल के धराने, प्रभु की स्तुति करो, हारून के  
धराने, प्रभु की स्तुति करो;<sup>20</sup> लेवी के धराने, प्रभु की  
स्तुति करो, तुम जो प्रभु का भय मानते हो, प्राप्तु की  
स्तुति करो।<sup>21</sup> सियोन से प्राप्तु धन्य हो, जो धरूशलेम  
में गास करता है। प्रभु की स्तुति करो।

**136** यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह  
भला है उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>2</sup>  
देवताओं के परमेश्वर का धन्यवाद करो, उसकी  
प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>3</sup> प्रभुओं के प्रभु  
का धन्यवाद करो, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी  
रहती है।

<sup>4</sup> उसी को धन्यवाद दो जो अकेला महान चमत्कार  
करता है, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>5</sup>  
उसी को धन्यवाद दो जिसने कुशलता से आकाश  
बनाए, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>6</sup>  
उसी को धन्यवाद दो जिसने जल के ऊपर पूर्णी को  
फैलाया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>7</sup>  
उसी को धन्यवाद दो जिसने महान ज्योतिर्यां बनाई,  
उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>8</sup> दिन में

## भजन संहिता

सूर्य को शासन करने के लिए उसकी प्रेमपूर्ण करुणा  
सदा बनी रहती है।<sup>9</sup> रात में चंद्रमा और तारों को  
शासन करने के लिए उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा  
बनी रहती है।

<sup>10</sup> उसी को धन्यवाद दो जिसने मिसियों के पहलौठों

को मारा, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>11</sup>

<sup>11</sup> और इसाएल को उनके बीच से बाहर निकाला,  
उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>12</sup> बलवान  
हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के साथ, उसकी प्रेमपूर्ण  
करुणा सदा बनी रहती है।

<sup>13</sup> उसी को धन्यवाद दो जिसने लाल समुद्र को भागों में  
विभाजित किया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी  
रहती है।<sup>14</sup> और इसाएल को उसके बीच से ले गया,  
उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>15</sup> परन्तु  
उसने फ़िरैन और उसकी सेना को लाल समुद्र में  
उलट दिया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती  
है।

<sup>16</sup> उसी को धन्यवाद दो जिसने अपने लोगों को जंगल  
में ले जाया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

<sup>17</sup> उसी को धन्यवाद दो जिसने महान राजाओं को  
मारा, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>18</sup>  
और शक्तिशाली राजाओं को मृत्यु दी, उसकी प्रेमपूर्ण  
करुणा सदा बनी रहती है।<sup>19</sup> एमोरी के राजा सीहोन  
को, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>20</sup> और  
बाशान के राजा ओग को, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा  
बनी रहती है।<sup>21</sup> और उनकी भूमि को एक विरासत  
के रूप में दिया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी  
रहती है।<sup>22</sup> अपने सेवक इसाएल के लिए एक  
विरासत के रूप में, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी  
रहती है।

<sup>23</sup> जिसने हमारी दीनता में हमें स्मरण किया, उसकी  
प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।<sup>24</sup> और हमारे  
शत्रुओं से हमें छुड़ाया, उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा  
बनी रहती है।<sup>25</sup> जो सभी प्राणियों को भोजन देता है,  
उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

<sup>26</sup> स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो, उसकी प्रेमपूर्ण  
करुणा सदा बनी रहती है।

**137** बाबुल की नदियों के किनारे, वहाँ हम बैठ  
गए और सोने लगे, जब हमने सियोन को याद किया।<sup>2</sup>

उसके बीच की विलो वृक्षों पर हमने अपनी वीणाएँ  
टांग दीं।<sup>3</sup> क्योंकि वहाँ हमारे बंदी बनाने वालों ने  
हमसे गीत मांगे, और हमारे सताने वालों ने कहा,  
“हमारे लिए सियोन के गीतों में से एक गाओ।”

<sup>4</sup> हम प्रभु का गीत कैसे गा सकते हैं एक विदेशी भूमि  
में? <sup>5</sup> यदि मैं तुझे भूल जाऊँ, यरूशलैम, तो मेरा  
दाहिना हाथ अपनी कला भूल जाए।<sup>6</sup> मेरी जीभ मेरे  
मुँह की छत से विपक्ष जाए यदि मैं तुझे याद न करूँ,  
यदि मैं यरूशलैम को अपनी मुख्य सुशी से ऊपर न  
उठाऊँ।

<sup>7</sup> हे प्रभु एदोम के पुत्रों के विरुद्ध याद कर यरूशलैम  
के दिन को जिहोने कहा, “उसे उजाड़ दो, उसे  
उजाड़ दो उसकी नींव तक!”<sup>8</sup> बाबुल की बेटी, तू जो  
तबाह हुई धन्य होगा वह जो तुझे प्रतिफल देगा उसी  
प्रतिफल के साथ जो तूने हमें दिया है।<sup>9</sup> धन्य होगा वह  
जो तेरे बच्चों को पकड़कर चट्ठान पर पटक देगा।

## 138

दाऊद का एक भजन।

<sup>1</sup> मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूँगा, मैं देवताओं के  
सामने तेरा युग्मागान करूँगा।<sup>2</sup> मैं तेरे पवित्र मंदिर की  
ओर झुँकूँगा और तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा तेरी  
दया और तेरी सत्यता के लिए क्योंकि तूने अपने वरन  
को अपने नाम के अनुसार महान बनाया है।<sup>3</sup> जिस  
दिन मैंने पुकारा, तूने मुझे उत्तर दिया, तूने मेरे आत्मा  
में बल के साथ मुझे साहसी बनाया।

<sup>4</sup> पृथ्वी के सभी राजा तेरा धन्यवाद करेंगे, हे प्रभु जब  
तेरे मुख के वरचन सुनेंगे।<sup>5</sup> और वे यहोवा के मार्गों  
का गीत गाएंगे, क्योंकि यहोवा की महिमा महान है।

<sup>6</sup> क्योंकि यहोवा ऊँचा है, फिर भी वह दीनों की ओर  
ध्यान देता है, परन्तु घमण्डियों को वह दूर से जानता  
है।<sup>7</sup> यद्यपि मैं संकट के बीच चलता हूँ, तू मुझे जीवित  
करोगा, तू अपने हाथ से मेरे शत्रुओं के क्रोध के विरुद्ध  
हाथ बढ़ाएगा, और तेरा दाहिना हाथ मुझे बचाएगा।<sup>8</sup>  
यहोवा मेरे विषय को पूरा करेगा, हे प्रभु तेरी दया सदा  
की है, अपने हाथों के कार्यों को न छोड़।

## 139

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

## भजन संहिता

<sup>१</sup> हे प्रभु तूने मुझे जांचा और मुझे जाना है।<sup>२</sup> जब मैं बैठता हूँ और जब मैं उठता हूँ तू जानता है तू दूर से मेरे विचार को समझता है।<sup>३</sup> तू मेरे मार्ग और मेरे लेटने को जांचता है, और मेरे सभी मार्गों से परिचित है।<sup>४</sup> मेरे जीभ पर कोई शब्द आने से पहले ही, देख हे प्रभु तू उसे सब जानता है।<sup>५</sup> तूने मुझे पीछे और आगे से धेर लिया है और मुझ पर अपना हाथ रखा है।<sup>६</sup> ऐसा ज्ञान मेरे लिए बहुत अद्भुत है यह बहुत ऊँचा है मैं इसे समझ नहीं सकता।

<sup>७</sup> मैं तेरे आत्मा से कहाँ जा सकता हूँ? या तेरी उपस्थिति से कहाँ भाग सकता हूँ?<sup>८</sup> यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ जाऊँ, तू वहाँ हैं यदि मैं शिखों में बिस्तर बनाऊँ, देख तू वहाँ है।<sup>९</sup> यदि मैं भोके के पंख ले लूँ और समुद्र के सबसे दूर भाग में निवास करूँ,<sup>१०</sup> वहाँ भी तेरा हाथ मुझे मार्गदर्शन करेगा, और तेरा दाहिना हाथ मुझे धरेगा।<sup>११</sup> यदि मैं कहूँ "निष्ठित रूप से अधिकार मुझे धरे लेगा, और मेरे चारों ओर की रोशनी रात बन जाएगा,"<sup>१२</sup> अधिकार भी तेरे लिए अधिकारमय नहीं है, और रात दिन के समान उज्ज्वल है। अधिकार और प्रकाश तेरे लिए समान हैं।

<sup>१३</sup> क्योंकि तूने मेरे अंतःकरण के भागों को रचा, तूने मुझे मेरी माता के गर्भ में बुना।<sup>१४</sup> मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, क्योंकि मैं भयनक और अद्भुत रूप से बनाया गया हूँ अद्भुत हैं तेरे कार्य, और मेरी आत्मा इसे भली-भांति जानती है।<sup>१५</sup> मेरा ढांचा तुझसे छिपा नहीं था जब मैं गुप्त में बनाया गया, और पुरुषी की गहराइयों में कुशलता से रचा गया।<sup>१६</sup> तेरी अँखों ने मेरे बिना आकार के पदार्थों को देखा, और तेरी पुस्तक में लिखे गए थे मेरे लिए नियुक्त सभी दिन, जब उनमें से एक भी नहीं था।<sup>१७</sup> हे भगवान्, मेरे लिए तेरे विचार किराने पूर्ववान हैं उनकी गणना किरनी विशाल है।<sup>१८</sup> यदि मैं उन्हें गिनूँ तो वे रेत से भी अधिक होंगे। जब मैं जागता हूँ मैं अब भी तेरे साथ हूँ।

<sup>१९</sup> काश तू दुष्टों को मार डालता, हे भगवान्, मुझसे दूर हो जाओ। तुम रक्तपात के लोग।<sup>२०</sup> क्योंकि वे तेरे विरुद्ध दुष्टों से बोलते हैं, और तेरे शत्रु तेरे नाम का व्यर्थ प्रयोग करते हैं।<sup>२१</sup> क्या मैं उन लोगों से घृणा नहीं करता जो तुझसे घृणा करते हैं, हे प्रभु? और क्या मैं उन लोगों से घृणा नहीं करता जो तेरे विरुद्ध उठते हैं?

<sup>२२</sup> मैं उनसे अत्यधिक घृणा करता हूँ, वे मेरे शत्रु बन गए हैं।<sup>२३</sup> मुझे जांच, हे भगवान्, और मेरे हृदय को जान, मुझे परख और मेरी चिंताजनक विचारों को जान,

<sup>२४</sup> और देख कि मुझमें कोई दुखदायी मार्ग है या नहीं, और मुझे अनन्त मार्ग में ले चल।

## 140

संगीत निर्देशक के लिए। दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु मुझे दुष्ट लोगों से बचा, मुझे हिंसक पुरुषों से सुरक्षित रख।<sup>२</sup> जो अपने हृदय में बुरी बातें सोचते हैं, वे निरंतर युद्ध मड़काते हैं।<sup>३</sup> वे अपनी जीव को सर्प की तरह तेज करते हैं; उनके हौंठों के नीचे विषधर का विष है। सेला

<sup>४</sup> हे प्रभु मुझे दुष्टों के हाथों से बचा, मुझे हिंसक पुरुषों से सुरक्षित रख जो मेरे कदमों को फिसलाने का इरादा रखते हैं।<sup>५</sup> अधिमानी ने मेरे लिए जाल और फंदे छिपाए हैं, उन्होंने मार्ग के किनारे जाल फैलाया है, उन्होंने मेरे लिए फंदे लगाए हैं। सेला

<sup>६</sup> मैंने प्रभु से कहा, "तू मेरा परमेश्वर है हे प्रभु मेरी विनीती की धनि सुन!"<sup>७</sup> परमेश्वर, प्रभु मेरी उद्धार की शक्ति, तूने युद्ध के दिन मेरे सिर को ढक रखा है।<sup>८</sup> हे प्रभु दुष्टों की इच्छाओं को पूरा न कर, उनकी बुरी योजनाओं को सफल न होने दे, ताकि वे ऊँचे न हों। सेला

<sup>९</sup> जो मेरे चारों ओर हैं, उनके सिर के लिए उनकी हौंठों की हानि उन्हें ढक ले।<sup>१०</sup> उन पर जलते अंगरे गिरे, उन्हें आग में डाला जाए, गहरे गहरे में से जहाँ से वे उठ न सकें।<sup>११</sup> एक निंदक पृथी पर स्थिर न रहे, बुराई एक हिंसक व्यक्ति का विनाश करने के लिए उसका पीछा करे।

<sup>१२</sup> मैं जानता हूँ कि प्रभु पीड़ितों का कारण बनाए रखेगा, और गरीबों के लिए न्याय करेगा।<sup>१३</sup> निश्चय ही धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करेंगे, सीधे तेरे उपस्थिति में निवास करेंगे।

## 141

दाऊद का एक भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु मैं तुझसे पुकारता हूँ जल्दी से मेरे पास आ। जब मैं तुझे पुकारूँ, तो मेरी आजाज सुन।<sup>२</sup> मेरी प्रार्थना तेरे सामने धूप के समान मानी जाए, मेरे हाथ उठाना सांध्य बलिदान के समान हो।

## भजन संहिता

<sup>३</sup> हे प्रभु मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होठों के द्वार पर निगरानी रख। <sup>४</sup> मेरे हृदय को किसी बुरी बात की ओर न झुकने दे, अधर्म के काम करने के लिए उन लोगों के साथ जो बुराई करते हैं, और मैं उनके स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद न लूँ।

<sup>५</sup> धर्मी मुझे मारे, यह कृपा है, वह मुझे डॉटे, यह सिर के लिए तेल है, मेरा सिर इसे अस्तीकार नहीं करेगा, क्योंकि मेरी प्रार्थना अब भी उनके बुरे कामों के विरुद्ध है।

<sup>६</sup> उनके न्यायाधीश चट्टान के किनारे गिराए जाते हैं और वे मेरे शब्द सुनेंगे, क्योंकि वे सुखद हैं। <sup>७</sup> जैसे कोई भूमि को जोता और खोलता है, वैसे ही हमारी हड्डियाँ शिंशोल के मुख पर बिखरी हुई हैं।

<sup>८</sup> क्योंकि मेरी आँखें तुझ पर लगी हैं, हे परमेश्वर प्रभु, मैं तुझ में शरण लेता हूँ, मेरी आत्मा को असुराक्षित न छोड़। <sup>९</sup> मुझे उस जाल से बचा जो उन्होंने मेरे लिए बिछाया है, और उन लोगों के फंदों से जो बुराई करते हैं। <sup>१०</sup> दृष्ट अपने ही जाल में लिए जबकि मैं सुराक्षित निकल जाऊँ।

## 142

दाउद का मास्किल। जब वह गुफा में था। एक प्रार्थना।

<sup>१</sup> मैं अपनी आवाज से यहोवा को पुकारता हूँ, मैं अपनी आवाज से यहोवा से दया की विनती करता हूँ। <sup>२</sup> मैं अपनी शिकायत उसके सामने उंडेलता हूँ, मैं अपनी परेशानी उसके सामने प्रकट करता हूँ।

<sup>३</sup> जब मेरी आत्मा मुझमें कमजोर महसूस करती है, तब तू मेरी राह जानता है। जिस मार्ग पर मैं चलता हूँ उन्होंने मेरे लिए एक जाल छिपा रखा है। <sup>४</sup> दाहिनी ओर देखो और देखो, क्योंकि कोई भी मेरा ध्यान नहीं करता। मेरे लिए कोई बचाव नहीं है, कोई भी मेरी आत्मा की परवाह नहीं करता।

<sup>५</sup> मैंने तुझसे, यहोवा, पुकारा, मैंने कहा, "तू मेरा शरणस्थान है, जीवितों की भूमि मैं मेरा भाग है।

<sup>६</sup> मेरी पुकार पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत नीचे लाया गया हूँ, मुझे मेरे सताने वालों से बचा, क्योंकि वे मेरे लिए बहुत शक्तिशाली हैं। <sup>७</sup> मेरी आत्मा को कैद से

बाहर लाओ, ताकि मैं तेरे नाम का धन्यवाद कर सकूँ, धर्मी मुझे घेरे रहेंगे, क्योंकि तू मेरी देखभाल करेगा।<sup>८</sup>

## 143

दाउद का भजन।

<sup>१</sup> हे प्रभु मेरी प्रार्थना सुन, मेरी विनती पर ध्यान दे! अपनी विश्वासयोग्यता और धर्म में मुझे उत्तर दो। <sup>२</sup> और अपने दास के साथ न्याय में प्रवेश न कर, क्योंकि तेरी दृष्टि में कोई जीवित व्यक्ति धर्मी नहीं है। <sup>३</sup> क्योंकि शत्रु ने मेरे प्राण का पीछा किया है, उसने मेरे जीवन को भूमि पर कुचल दिया है, उसने मुझे अंधेरे स्थानों में बसाया है, जैसे वे जो लंबे समय से मर चुके हैं। <sup>४</sup> इसलिए मेरी आत्मा मेरे भीतर कमजोर महसूस करती है, मेरा हृदय मेरे भीतर भयभीत है। <sup>५</sup> मैं पुराने दिनों को याद करता हूँ, मैं तेरे सभी कार्यों पर ध्यान करता हूँ, मैं तेरे हाथों के काम पर विचार करता हूँ। <sup>६</sup> मैं अपने हाथ तुझ तक फैलाता हूँ, मेरी आत्मा तेरे लिए तरसती है, जैसे एक धकी हुई भूमि। सेला

<sup>७</sup> हे प्रभु मुझे शीघ्र उत्तर दे, मेरी आत्मा असफल हो रही है, मुझसे अपना मुख न छिपा, नहीं तो मैं उन लोगों के समान हो जाऊँगा जो गड़े में उत्तर जाते हैं। <sup>८</sup> मुझे सुबह में तेरी दया सुनने दे, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ, मुझे वह मार्ग सिखा जिसमें मुझे चलना चाहिए, क्योंकि मैं अपनी आत्मा को तुझ तक उठाता हूँ। <sup>९</sup> हे प्रभु मुझे मेरे शत्रुओं से बचा, मैं तुझ में शरण लेता हूँ। <sup>१०</sup> मुझे तेरी इच्छा पूरी करना सिखा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है, तेरी अच्छी आत्मा मुझे समतल भूमि पर ले चले।

<sup>११</sup> तेरे नाम के लिए, हे प्रभु मुझे पुनर्जीवित कर। अपनी धर्म में मेरी आत्मा को संकट से बाहर निकाल। <sup>१२</sup> और अपनी दया में, मेरे शत्रुओं को समाप्त कर, और उन सभी को नष्ट कर जो मेरी आत्मा को पीड़ित करते हैं, क्योंकि मैं तेरा दास हूँ।

## 144

दाउद का एक भजन।

<sup>१</sup> धन्य है यहोवा, मेरी चट्टान, जो मेरे हाथों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करता है, और मेरी उंगलियों को लडाई के लिए। <sup>२</sup> मेरी विश्वासयोग्यता और मेरा गढ़, मेरी मजबूत जगह और मेरा उद्धारकर्ता, मेरी ढाल और वह

# भजन संहिता

जिसमें मैं शरण लेता हूँ, जो मेरे लोगों को मेरे अधीन करता है।

<sup>३</sup> हे प्रभु मनुष्य क्या है, कि तू उसकी देखभाल करता है? या मनुष्य का पुत्र कि तू उसकी सोचता है? <sup>४</sup> मनुष्य सांस के समान है, उसके दिन एक छाया के समान बीत जाते हैं।

<sup>५</sup> हे प्रभु अपने आकाश को झुका और नीचे आ वर्षतों को छू कि ते भुज उठाएं। <sup>६</sup> बिजली चमका और उर्हें तिरत-बितर कर, अपने तीर भेज और उर्हें भ्रमित कर। <sup>७</sup> ऊपर से अपने हाथ से पहुँच मुझे बचा और महान जल से बचा, विदेशियों के हाथ से <sup>८</sup> जिनके मुँह धोखा बोलते हैं, और जिनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।

<sup>९</sup> हे परमेश्वर, मैं तुझे एक नया गीत गाऊँगा, दस तारों वाले दीवा पर मैं तुझे स्तुति गाऊँगा, <sup>१०</sup> जो राजाओं को उद्धार देता है, जो अपने सेवक दाऊद को बुरी तलवार से बचाता है। <sup>११</sup> मुझे बचा और विदेशियों के हाथ से बचा, जिनके मुँह धोखा बोलते हैं, और जिनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।

<sup>१२</sup> हमारे पुत्र अपनी जवानी में बढ़ते पौधों के समान हों, और हमारी बोटियाँ महलों के लिए गढ़े गए कोने के खंभों के समान हों। <sup>१३</sup> हमारे भंडार भरे हों, हर प्रकार की उपज प्रदान करते हों, हमारे झुंड हजारों और हमारे खेतों में दस हजारों की संख्या में हों, <sup>१४</sup> हमारी गायें बिना किसी दुर्घटना और बिना किसी हानि के प्रजनन करें, हमारी गलियों में कोई शोर न हो। <sup>१५</sup> धन्य हैं वे लोग जो इस प्रकार स्थित हैं, धन्य हैं वे लोग जिनका परमेश्वर यहोवा है।

## 145

### दाऊद की स्तुति का भजन।

<sup>१</sup> हे मेरे परमेश्वर, राजा, मैं तुझे ऊँचा करूँगा, और मैं तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहूँगा। <sup>२</sup> मैं प्रतिदिन तुझे धन्य कहूँगा, और तेरे नाम की सदा सर्वदा स्तुति करूँगा।

<sup>३</sup> यहोवा महान है, और अत्यंत स्तुति के योग्य है, और उसकी महानता अगम्य है। <sup>४</sup> एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कार्यों की स्तुति करेगी, और तेरे पराक्रमी कार्यों का वर्णन करेगी। <sup>५</sup> तेरी महिमा की शोभा पर और तेरे

अद्भुत कार्यों पर मैं ध्यान करूँगा। <sup>६</sup> लोग तेरे भयानक कार्यों की शक्ति की चर्चा करेंगे, और मैं तेरी महानता का वर्णन करूँगा। <sup>७</sup> वे तेरी अत्यधिक भलाई की स्तुति में बोलेंगे, और तेरी धार्मिकता की जयजयकार करेंगे।

<sup>८</sup> यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, क्रोध करने में धीमा और बड़ी करूणा वाला है।

<sup>९</sup> यहोवा सब पर भला है, और उसकी दया उसके सब कार्यों पर है। <sup>१०</sup> हे यहोवा, तेरे सब कार्य तेरा धन्यवाद करेंगे, और तेरे भक्त तुझे धन्य कहेंगे। <sup>११</sup> वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरी शक्ति की बात करेंगे। <sup>१२</sup> ताकि मनुष्यों के पुत्रों को तेरे पराक्रमी कार्यों का ज्ञान हो, और तेरे राज्य की महिमा की शोभा का। <sup>१३</sup> तेरा राज्य सदा का राज्य है, और तेरा प्रभुत्व पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर रहता है।

यहोवा अपने सब वर्चनों में विश्वासयोग्य है और अपने सब कार्यों में विश्वासयोग्य है। <sup>१४</sup> यहोवा सब गिरने वालों को संभालता है, और सब दुक्हों को उठाता है। <sup>१५</sup> सब की आँखें तुश्शे पर लाली रहती हैं, और तू उर्हें समय पर भोजन देता है। <sup>१६</sup> तू अपना हाथ खोलता है और सब जीवों की इच्छा को तृप्त करता है।

<sup>१७</sup> यहोवा अपने सब मार्गों में धर्मी है, और अपने सब कार्यों में कृपालु है। <sup>१८</sup> यहोवा सब के निकट है जो उसे पुकारते हैं, जो उसे सच्चाई में पुकारते हैं। <sup>१९</sup> वह उन लोगों की इच्छा पूरी करेगा जो उससे डरते हैं, वह उनकी सहायता की पुकार सुनेगा और उर्हें बचाएगा। <sup>२०</sup> यहोवा सब को जो उससे प्रेम करते हैं, सुरक्षित रखता है, परन्तु वह सब दुष्टों को नष्ट कर देगा।

<sup>२१</sup> मेरा मुँह यहोवा की स्तुति बोलेगा, और सब प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहेंगे।

**146** प्रभु की स्तुति करो हे मेरी आत्मा प्रभु की स्तुति करो। <sup>२</sup> जब तक मैं जीवित हूँ, मैं प्रभु की स्तुति करूँगा। जब तक मैं अस्तित्व में हूँ, मैं अपने परमेश्वर की स्तुति गाऊँगा। <sup>३</sup> रुद्धों पर भरोसा न करो, नाशगान मनुष्य पर, जिसमें कोई उद्धार नहीं है।

<sup>४</sup> उसकी आत्मा निकल जाती है, वह पृथ्वी पर लौट जाता है, उसी दिन उसके सारे विचार नष्ट हो जाते हैं।

<sup>५</sup> धन्य है वह जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, जिसकी आशा उसके परमेश्वर यहोवा पर है।

# भजन संहिता

<sup>६</sup> जिसने आकाश और पृथ्वी बनाई, समुद्र और जो कुछ उनमें है, जो सदा विश्वसयोग्य रहता है,<sup>७</sup> जो पीड़ितों के लिए न्याय करता है, जो भूखों को भोजन देता है। प्रभु बदियों को मुक्त करता है,<sup>८</sup> प्रभु अंधों की अँखें खोलता है, प्रभु ज्ञाके हुए लोगों को उठाता है, प्रभु धर्मियों से प्रेम करता है।<sup>९</sup> प्रभु परदेशियों की रक्षा करता है, वह अनाथों और विधवाओं का समर्थन करता है, परंतु वह दुष्टों के मार्ग को उलट देता है।

<sup>10</sup> प्रभु सदा के लिए राज्य करेगा, सिय्योन् तेरा परमेश्वर, पीढ़ी दर पीढ़ी। प्रभु की स्तुति करो।

**147** प्रभु की स्तुति करो क्योंकि हमारे परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है, क्योंकि यह सुखदायक है और स्तुति सुंदर है।

<sup>२</sup> यहोवा यस्तश्तेम को बनाता है, वह इसाएल के निवासियों को इकट्ठा करता है।<sup>३</sup> वह दूटे दिल वालों को चंगा करता है और उनके धावों को बांधता है।<sup>४</sup> वह तारों की संख्या गिनता है, वह उन सबको नाम देता है।<sup>५</sup> हमारा प्रभु महान है, और शक्ति में प्रदूर है उसकी समझ अनंत है।<sup>६</sup> यहोवा पीड़ितों का समर्थन करता है, वह दुष्टों को धरती पर गिरा देता है।

<sup>७</sup> धन्यवाद के साथ यहोवा के लिए गाओ, वीणा पर हमारे परमेश्वर की स्तुति करो।

<sup>८</sup> जो आकाश को बादलों से ढकता है, जो पृथ्वी के लिए वर्षा प्रदान करता है, जो पहाड़ों पर धास उगाता है।<sup>९</sup> वह जानवरों को उनका भोजन देता है, और उन युवा कौवों को जो पुकारते हैं।

<sup>१०</sup> वह धोड़े की शक्ति में आनंद नहीं लेता, वह मनुष्य के पैरों में प्रसक्त नहीं पाता।<sup>११</sup> यहोवा उन लोगों को पसंद करता है जो उससे डरते हैं, जो उसकी दया की प्रतीक्षा करते हैं।

<sup>१२</sup> यस्तश्तेम, यहोवा की स्तुति करो सिय्योन्, अपने परमेश्वर की स्तुति करो।

<sup>१३</sup> क्योंकि उसने तुम्हारे फाटकों की सलाखों को मजबूत किया है, उसने तुम्हारे पुत्रों को तुम्हारे बीच आशीर्वद दिया है।<sup>१४</sup> वह तुम्हारी सीमाओं में शांति बनाता है, वह तुम्हें उत्तम गेंद से संतुष्ट करता है।

<sup>१५</sup> वह अपनी आज्ञा पृथ्वी पर भेजता है, उसका वचन बहुत तेजी से चलता है।<sup>१६</sup> वह ऊन की तरह बर्फ देता है, वह राख की तरह पाला बिखेरता है।<sup>१७</sup> वह अपने बर्फ के टुकड़े फेंकता है, उसके ठंड के सामने कौन खाड़ा हो सकता है?<sup>१८</sup> वह अपना वचन भेजता है और उन्हें पिघला देता है, वह अपनी हवा चलाता है, और जल बहने लगते हैं।

<sup>१९</sup> वह अपने वचन याकूब को घोषित करता है, अपनी विधियों और अपने न्यायों को इसाएल को।<sup>२०</sup> उसने किसी अन्य राष्ट्र के साथ इस तरह व्यवहार नहीं किया है, और उसके न्यायों के बारे में उन्होंने उन्हें नहीं जाना। प्रभु की स्तुति करो।

**148** प्रभु की स्तुति करो। आकाश से प्रभु की स्तुति करो, ऊँचाई में उसकी स्तुति करो।<sup>१</sup> उसकी स्तुति करो, उसके सब स्वर्गद्वारों, उसकी स्तुति करो, उसके सब स्वर्गीय सेनाओं।<sup>२</sup> उसकी स्तुति करो, सूर्य और चंद्रमा, उसकी स्तुति करो, सब प्रकाशमान तारो।<sup>४</sup> उसकी स्तुति करो, सर्वोच्च आकाश, और वे जल जो आकाश के ऊपर हैं।

<sup>५</sup> वे प्रभु के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसने आज्ञा दी, और वे सुनित हुए।<sup>६</sup> उसने उन्हें सदा के लिए स्थिर किया है, उसने एक नियम बनाया है, और वह नहीं टलेगा।

<sup>७</sup> पृथ्वी से प्रभु की स्तुति करो, समुद्री जीव और सब महासागर की गहराइयाँ।<sup>८</sup> अग्नि और आत्म, हिम और बादल, त्रूपानी वायु, उसकी बाणी का पालन करती हुई।<sup>९</sup> पर्वत और सब पहाड़ियाँ, फलदार वृक्ष और सब देवदार,<sup>१०</sup> पशु और सब मवेशी, रंगने वाले जीव और पंख वाले पक्षी;<sup>११</sup> पृथ्वी के राजा और सब लोग; शासक और पृथ्वी के सब न्यायाधीश,<sup>१२</sup> जवान और कुमारियाँ, बूढ़े और बच्चे।

<sup>१३</sup> वे प्रभु के नाम की स्तुति करें, क्योंकि केवल उसका नाम महान है, उसकी महिने पृथ्वी और आकाश से ऊपर है।<sup>१४</sup> और उसने अपने लोगों के लिए एक सींग उठाया है, उसके सब भक्तों के लिए स्तुति इसाएल के पुत्रों के लिए जो उसके निकट के लोग हैं। प्रभु की स्तुति करो।

**149** प्रभु की स्तुति करो। प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ, और उसके भक्तों की सभा में उसकी स्तुति करो।<sup>१</sup> इसाएल अपने सृष्टिकर्ता में आनंदित हो,

## भजन संहिता

सियोन के पुत्र अपने राजा में आनन्दित हों।<sup>३</sup> वे नृत्य के साथ उसके नाम की स्तुति करें वे डफ और वीणा के साथ उसकी स्तुति करें।<sup>४</sup> क्योंकि प्रभु अपने लोगों में प्रसन्न होता है वह नम्रों को उद्धार से सुशोभित करेगा।<sup>५</sup> भक्तजन महिमा में उल्लसित होंगे, वे अपने बिस्तरों पर आनन्द के गीत गाएंगे।

<sup>६</sup> उनके मुख में परमेश्वर की उच्च स्तुति होगी, और उनके हाथों में दोधारी तलवार होगी,<sup>७</sup> जातियों पर प्रतिशोध लेने के लिए और लोगों पर दंड देने के लिए  
<sup>८</sup> उनके राजाओं को जंजीरों से बांधने के लिए और उनके प्रतिष्ठित जनों को लाहे की बेड़ियों से<sup>९</sup> उनके खिलाफ लिखित न्याय को पूरा करने के लिए। यह सम्मान उसके सभी भक्तों के लिए है। प्रभु की स्तुति करो!

**150** प्रभु की स्तुति करो उसके पवित्र स्थान में परमेश्वर की स्तुति करो उसकी शक्तिशाली आकाशमंडल में उसकी स्तुति करो।<sup>१२</sup> उसके शक्तिशाली कार्यों के लिए उसकी स्तुति करो; उसकी महान उत्कृष्टता के अनुसार उसकी स्तुति करो।<sup>३</sup> तुरही की ध्वनि के साथ उसकी स्तुति करो; वीणा और सारंगी के साथ उसकी स्तुति करो।<sup>४</sup> डफ और नृत्य के साथ उसकी स्तुति करो; तार वाले वाद्य यंत्र और बांसुरी के साथ उसकी स्तुति करो।<sup>५</sup> ऊँचे झांझ के साथ उसकी स्तुति करो; गूंजते झांझ के साथ उसकी स्तुति करो।<sup>६</sup> सब कुछ जिसमें सांस है, प्रभु की स्तुति करो। प्रभु की स्तुति करो।

## नीतिवचन

**1** दाऊद के पुत्र, इस्माएल के राजा सुलैमान के नीतिवचनः<sup>2</sup> बुद्धि और शिक्षा को जानने के लिए, समझ के वचनों को समझने के लिए,<sup>3</sup> सदाचार, न्याय और सत्यनिष्ठा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए;<sup>4</sup> भोले-भाले को चतुराई देने के लिए, युवाओं को ज्ञान और विवेक देने के लिए।<sup>5</sup> एक बुद्धिमान व्यक्ति सुनेगा और शिक्षा में बुद्धि करेगा, और समझदार व्यक्ति बुद्धिमानी की सलाह प्राप्त करेगा,<sup>6</sup> एक नीतिवचन और कहावत को समझने के लिए, बुद्धिमानों के शब्द और उनकी पहेलियाँ।<sup>7</sup> प्रभु का भय ज्ञान का आरंभ है; मूर्ख बुद्धि और शिक्षा से घृणा करते हैं।

<sup>8</sup> सुगो, मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा को, और अपनी माता की शिक्षा को न छोड़ो;<sup>9</sup> क्योंकि वे तुम्हारे सिर के लिए एक सुंदर माला हैं और तुम्हारी गर्दन के लिए हार।

<sup>10</sup> मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे लुभाएं, तो सहमति न देना।<sup>11</sup> यदि वे कहें, “हमारे साथ चल,

हम रक्त के लिए धात लगाएंगे, हम निर्दोष को बिना कारण धात करेंगे;

<sup>12</sup> हम उन्हें शिओल की तरह जीवित निगल लेंगे,

पूर्ण जैसे वे जो गहरे में उत्तरते हैं;

<sup>13</sup> हम सभी प्रकार की मूल्यवान वस्तुएं पाएंगे,

हम अपने घरों को लूट से भरेंगे;

<sup>14</sup> हमारे साथ अपनी भाग्य डाल,

हम सबके पास एक ही धन की थैली होगी।”

<sup>15</sup> मेरे पुत्र, उनके मार्ग पर मत चल, अपने पांव को उनके रास्ते से दूर रखो।<sup>16</sup> क्योंकि उनके पांव बुराई की ओर दौड़ते हैं, और वे शीघ्रता से रखत बहाते हैं।<sup>17</sup> वास्तव में, किसी भी पक्षी की दृष्टि में जाल फैलाना व्यर्थ है; <sup>18</sup> परंतु वे अपने ही रक्त के लिए धात लगाते हैं, वे अपनी ही जान के लिए धात करते हैं।<sup>19</sup> ऐसे ही सभी के मार्ग हैं जो अन्यायपूर्ण लाभ कमाते हैं; यह उन लोगों की जान ले लेता है जो इसे प्राप्त करते हैं।

<sup>20</sup> बुद्धि सङ्क पर चिल्लाती है, वह सार्वजनिक चौक में अपनी आवाज उठाती है;<sup>21</sup> शोरगुल वाली सङ्कों के

सिर पर वह पुकारती है, नगर के द्वारों के प्रवेश पर वह अपने वचन धोषित करती है:<sup>22</sup> “कब तक, हे भोले, तुम सरल विचारों से प्रेम करोगे?

और कब तक उपहास करने वाले अपने उपहास में आनंद लेंगे, और मूर्ख ज्ञान से घृणा करेंगे?

<sup>23</sup> मेरी फटकार की ओर मुड़ो,

देखो, मैं तुम पर अपनी आत्मा उंडेतूंगा, मैं तुम्हें अपने शब्द ज्ञात कराऊंगा।

<sup>24</sup> क्योंकि मैंने बुलाया और तुमने इंकार किया, मैंने अपना हाथ बढ़ाया और किसी ने ध्यान नहीं दिया;<sup>25</sup> और तुमने मेरी सारी सलाह की उपेक्षा की, और मेरी फटकार को नहीं चाहा;<sup>26</sup> मैं भी तुम्हारी विपत्ति पर हँसूंगा; जब तुम्हारा भय आएगा, मैं उपहास करूंगा,

<sup>27</sup> जब तुम्हारा भय तूफान की तरह आएगा, और तुम्हारी विपत्ति बैंडर की तरह आएगी, जब संकट और पीड़ा तुम पर आएंगा।<sup>28</sup> तब वे मुझे पुकारेंगे, पर मैं उत्तर नहीं दूंगा; वे मुझे पूरी लाग से खोजेंगे पर मुझे नहीं पाएंगे,<sup>29</sup> क्योंकि उन्होंने ज्ञान से घृणा की, और प्रभु के भय को नहीं चुना।<sup>30</sup> उन्होंने मेरी सलाह को स्वीकार नहीं किया, उन्होंने मेरी सारी फटकार का तिरस्कार किया।<sup>31</sup> इसलिए वे अपनी ही राह के फल खाएंगे, और अपनी ही योजनाओं से भर जाएंगे।<sup>32</sup> क्योंकि भोलेपन का मुड़ना उन्हें मार डालेगा, और मूर्खों की आत्मसंतोषिति उन्हें नष्ट कर देगी।<sup>33</sup> परंतु जो कोई मेरी सुनता है वह सुरक्षित रहेगा, और बुराई के भय से निर्विन्दित रहेगा।

**2** मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचनों को ग्रहण करेगा और मेरी आज्ञाओं को अपने भीतर संजोएगा,<sup>2</sup> तो तू बुद्धि की ओर अपना कान लगाएगा, और समझ की ओर अपना हृदय झुकाएगा;<sup>3</sup> क्योंकि यदि तू विवेक के लिए पुकारेगा, और समझ के लिए अपनी आवाज उठाएगा;<sup>4</sup> यदि तू उसे चाँदी की तरह खोजेगा और उसे छिपे हुए खजानों की तरह ढंगेगा;<sup>5</sup> तब तू योहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान पाएगा।<sup>6</sup> क्योंकि योहोवा बुद्धि देता है; उसके मुख से ज्ञान और समझ निकलती है।<sup>7</sup> वह सीधे लोगों के लिए ढाल है जो सत्यनिष्ठा में चलते हैं,<sup>8</sup> न्याय के मार्गों की रक्षा करता है, और अपने विश्वासयोग्य लोगों के मार्ग की देखभाल करता है।

## नीतिवचन

<sup>९</sup> तब तू धर्म, न्याय, और सत्यनिष्ठा और हर अच्छे मार्ग को समझेगा। <sup>१०</sup> क्योंकि बुद्धि तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तेरी आत्मा के लिए सुखद होगा; <sup>११</sup> विवेक तेरा ध्यान रखेगा, समझ तेरा रक्षण करेगी,

<sup>१२</sup> तुझे बुराई के मार्ग से बचाने के लिए, उस व्यक्ति से जो विकृत बातें बोलता है; <sup>१३</sup> उनसे जो सीधेपन के मार्गों को छोड़ देते हैं और अधिकार के मार्गों में चलते हैं; <sup>१४</sup> जो बुराई करने में आनंद लेते हैं और बुराई की विकृति में खुशी मनाते हैं; <sup>१५</sup> जिनके मार्ग देढ़े हैं, और जो अपनी चाल में कपटी हैं;

<sup>१६</sup> तुझे पराई स्त्री से बचाने के लिए, उस विदेशी स्त्री से जो अपनी बातों से चापलूसी करती है, <sup>१७</sup> जो अपनी जावनी के साथी को छोड़ देती है और अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है; <sup>१८</sup> क्योंकि उसका घर मृत्यु की ओर झुकता है, और उसके पथ मृतकों की ओर ले जाते हैं; <sup>१९</sup> जो कोई उसके पास जाता है, वह लौटकर नहीं आता, और न ही वे जीवन के मार्गों तक पहुँचते हैं।

<sup>२०</sup> इसलिए तू, अच्छे लोगों के मार्ग में चलेगा और धर्मियों के पथों पर बना रहेगा। <sup>२१</sup> क्योंकि सीधे लोग भूमि में निवास करेंगे, और निर्दोष उसमें बने रहेंगे; <sup>२२</sup> परंतु दुष्ट भूमि से काट दिए जाएंगे, और विश्वासघाती उसमें से उखाड़ दिए जाएंगे।

**३** मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को मत भूलना, बल्कि अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को बनाए रखना; <sup>२३</sup> क्योंकि वे तुम्हें दीर्घायु और जीवन के वर्ष और शारी प्रदान करेंगे। <sup>२४</sup> दयालुता और सत्य को अपने से दूर न जाने दो; उन्हें अपनी गर्दन के चारों ओर बांध लो,

उन्हें अपने हृदय की पट्टी पर लिख लो।

<sup>४</sup> तब तुम परमेश्वर और मनुष्य की दृष्टि में अनुग्रह और अच्छी प्रतिष्ठा पाओगे। <sup>५</sup> अपने सम्पूर्ण हृदय से यहोवा पर भरोसा रखो, और अपनी समझ पर निर्भर मत रहो।

<sup>६</sup> अपनी सब राहों में उसे मायता दो, और वह तुम्हारे मार्गों को सीधा करेगा। <sup>७</sup> अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत बनो; यहोवा का भय मानो और बुराई से दूर रहो। <sup>८</sup> यह तुम्हारे शरीर के लिए स्वास्थ्य होगा और तुम्हारी हड्डियों के लिए ताजगी। <sup>९</sup> अपनी सम्पत्ति से यहोवा का आदर करो और अपनी सारी उपज के पहले फल से; <sup>१०</sup> तब तुम्हारे खलिहन भरपूर होंगे और तुम्हारे कुंड नए दाखमधु से भर जाएंगे।

<sup>११</sup> मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा को अस्वीकार मत करो और उसकी डांट से घुणा मत करो, <sup>१२</sup> क्योंकि जिसे यहोवा प्रेम करता है, उसे वह अनुशासित करता है,

जैसे एक पिता अपने प्रिय पुत्र को सुधारता है।

<sup>१३</sup> धन्य है वह व्यक्ति जो बुद्धि प्राप्त करता है, और वह जो समझ प्राप्त करता है। <sup>१४</sup> क्योंकि उसका लाभ चांदी के लाभ से बेहतर है, और उसका लाभ उत्तम सोने से बेहतर है। <sup>१५</sup> वह रतों से अधिक मूल्यवान है, और तुम्हारी कोई भी इच्छा उसके साथ तुलना नहीं कर सकती। <sup>१६</sup> उसके दाहिने हाथ में दीर्घायु है;

उसके बाएं हाथ में धन और सम्मान है।

<sup>१७</sup> उसके मार्ग सुखदायक है,

और उसके सभी पथ शांति के हैं।

<sup>१८</sup> वह जीवन का वृक्ष है उन लोगों के लिए जो उसे पकड़ते हैं, और वे लोग सुखी होते हैं जो उसे थामे रहते हैं।

<sup>१९</sup> यहोवा ने पृथ्वी की स्थापना बुद्धि से की, उसने समझ से आकाश की स्थापना की। <sup>२०</sup> उसके ज्ञान से गहरे टूट गए, और आकाश औस से टपकते हैं।

<sup>२१</sup> मेरे पुत्र, उन्हें अपनी दृष्टि से गायब मत होने दो; सही बुद्धि और विवेक बनाए रखो, <sup>२२</sup> तब वे तुम्हारी आत्मा के लिए जीवन होंगे और तुम्हारी गर्दन के लिए अलंकरण।

<sup>२३</sup> तब तुम अपने मार्ग में सुरक्षित चलोगे, और तुम्हारा पैर नहीं फिसलेगा। <sup>२४</sup> जब तुम लेटोगे, तो तुम नहीं डरोगे; जब तुम लेटोगे, तो तुम्हारी नींद मीठी होगी। <sup>२५</sup> अचानक खतरे से मत डरो, और न ही दुष्टों की विपत्ति से जब वह आए; <sup>२६</sup> क्योंकि यहोवा तुम्हारा आत्मविश्वास होगा, और वह तुम्हारे पैर को फसने से बचाएगा।

<sup>२७</sup> उनसे भलाई को मत रोको जिनके लिए वह है, जब वह करने की तुम्हारी शक्ति में हो। <sup>२८</sup> अपने पड़ोसी से मत कहो, "जाओ, और वापस आओ,

और कल मैं इसे दूँगा," जब वह तुम्हारे पास हो।

<sup>२९</sup> अपने पड़ोसी के विरुद्ध बुराई की योजना मत बनाओ, जब वह तुम्हारे पास सुरक्षित रहता है। <sup>३०</sup> बिना

## नीतिवचन

कारण के किसी व्यक्ति से विवाद मत करो, यदि उसने तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है।<sup>31</sup> हिंसक व्यक्ति से ईर्ष्या मत करो, और उसके किसी भी मार्ग को मत छोडो।<sup>32</sup> क्योंकि कपटी व्यक्ति यहोवा के लिए धृणास्पद है, परन्तु वह सिंधि लोगों के साथ घनिष्ठ होता है।<sup>33</sup> यहोवा का शाप दुष्टों के घर पर है, परन्तु वह धर्मियों के निवास को आशीर्वद देता है।<sup>34</sup> यद्यपि वह उपहास करने वालों का उपहास करता है, वह विनयों को अनुग्रह देता है।<sup>35</sup> बुद्धिमान सम्मान का उत्तराधिकारी होगा, परन्तु मूर्ख अपमान को बढ़ावा देते हैं।

**4** पुत्रों, पिता की शिक्षा सुनो, ध्यान दो ताकि तुम समझ प्राप्त कर सको; <sup>2</sup> क्योंकि मैं तुम्हें अच्छी शिक्षा देता हूँ; मेरी शिक्षा को मत छोड़ो।<sup>3</sup> जब मैं अपने पिता का पुत्र था, अपनी माता की वृद्धि में कोमल और एकमात्र पुत्र,<sup>4</sup> उहोंने मुझे सिखाया और मुझसे कहा,

“तुम्हारा हृदय मेरे वचनों को पकड़ ले, मेरी आज्ञाओं का पालन करो और जीवित रहो।

<sup>5</sup> बुद्धि प्राप्त करो! समझ प्राप्त करो! मेरे वचनों को न भूलो और न ही उनसे मूँह मोड़ो।<sup>6</sup> उसे मत छोड़ो, और वह तुम्हारी रक्षा करेगी; उसे प्रेम करो, और वह तुम्हारी देखभाल करेगी।<sup>7</sup> बुद्धि की शुरुआत है: बुद्धि प्राप्त करो; और जो कुछ तुम प्राप्त करो, उसके साथ समझ प्राप्त करो।<sup>8</sup> उसे ऊँचा उठाओ, और वह तुम्हें ऊँचा उठाएगी; यदि तुम उसे गले लगाओगे, तो वह तुम्हें सम्मानित करेगी।<sup>9</sup> वह तुम्हारे सिर पर अनुग्रह की माला रखेगी, वह तुम्हें सुंदरता का मुकुट प्रदान करेगी।”

<sup>10</sup> सुनो, मेरे पुत्र, और मेरे वचनों को स्वीकार करो, और तुम्हारे जीवन के वर्ष अधिक होंगे।<sup>11</sup> मैंने तुम्हें बुद्धि के मार्ग में निर्दिशित किया है; मैंने तुम्हें सिंधि रसों में चलाया है।<sup>12</sup> जब तुम चलोगे, तुम्हारे कदम बाधित नहीं होंगे; और यदि तुम दौड़ोगे, तो तुम ठोकर नहीं खाओगे।<sup>13</sup> शिक्षा को पकड़ लो; उसे मत छोड़ो। उसकी रक्षा करो, क्योंकि वह तुम्हारा जीवन है।<sup>14</sup> दुष्टों के मार्ग में प्रवेश मत करो, और बुरे लोगों के रास्ते पर आगे मत बढ़ो।<sup>15</sup> उसे टालो, उसके पास से मत गुज़रो; उससे दूर हो जाओ और आगे बढ़ो।<sup>16</sup> क्योंकि वे तब तक नहीं सो सकते जब तक वे बुरा न कर लें; और वे तब तक नींद से बंचित रहते हैं जब तक वे किसी को ठोकर न खिला दें।<sup>17</sup> क्योंकि वे दुष्टा की रोटी खाते हैं, और हिंसा की शराब पीते हैं।

<sup>18</sup> परन्तु धर्मियों का मार्ग भोर के प्रकाश के समान है, जो पूर्ण दिन तक अधिकाधिक चमकता है।<sup>19</sup> दुष्टों का मार्ग अंधकार के समान है; वे नहीं जानते कि वे किस पर ठोकर खाते हैं।

<sup>20</sup> मेरे पुत्र, मेरे वचनों पर ध्यान दो: अपने कान मेरी बातों की ओर लगाओ।<sup>21</sup> उहें अपनी दृष्टि से दूर मत होने दो; उहें अपने हृदय के बीच में रखो।<sup>22</sup> क्योंकि वे उहें पाने वालों के लिए जीवन हैं, और उनके समस्त शरीर के लिए आरोग्य है।<sup>23</sup> अपने हृदय की पूरी सतर्कता के साथ रक्षा करो, क्योंकि उससे जीवन के सोत निकलते हैं।<sup>24</sup> धोखेबाज मूँह को अपने से दूर करो, और कपटी वाणी को अपने से दूर रखो।<sup>25</sup> तुम्हारी आँखें सिंधि आगे देखें, और तुम्हारी दृष्टि सिंधि सामने स्थिर रहें।<sup>26</sup> अपने पैरों के मार्ग को देखो, और तुम्हारे सभी रास्ते स्थिर होंगे।<sup>27</sup> दाँद या बाँद मत मुड़ो; अपने पैर को बुराई से दूर रखो।

**5** मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि पर ध्यान दो, मेरी समझ की ओर अपना कान लगाओ,<sup>2</sup> ताकि तुम विवेक बनाए रख सको, और तुम्हारे हौंठ ज्ञान के अनुसार चलें।<sup>3</sup> क्योंकि पराई स्त्री के हौंठ मध्य की तरह टपकते हैं, और उसकी वाणी तेल से भी चिकनी होती है,<sup>4</sup> परंतु अंत में वह नागदौना के समान कङ्कङी होती है, दो धार वाली तलवार की तरह तीखी होती है।<sup>5</sup> उसके पैर मूस्तु की ओर जाते हैं, उसके कदम शिओल के रास्ते पर चलते हैं।<sup>6</sup> वह जीवन के मार्ग पर ध्यान नहीं देती; उसके रास्ते अस्थिर हैं, वह इसे नहीं जानती।

<sup>7</sup> अब, हे मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो, और मेरे मुख के वचनों से दूर मत हो।<sup>8</sup> अपने मार्ग को उससे दूर रखो, और उसके घर के द्वार के पास मत जाओ।<sup>9</sup> कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी प्रतिष्ठा दूसरों को दे दो, और अपने वर्ष निर्दीशी को;<sup>10</sup> कहीं ऐसा न हो कि परदेशी तुम्हारी शक्ति से भर जाए, और तुम्हारी मेहनत परदेशी के घर चली जाए;<sup>11</sup> और तुम अपने अंतिम समय में कराहो, जब तुम्हारा मांस और तुम्हारा शरीर नष्ट हो जाए;<sup>12</sup> और तुम कहो, “मैंने शिक्षा से कैसे धृणा की? और मेरे हृदय ने ताड़ना को ठुकरा दिया।<sup>13</sup> मैंने अपने शिक्षकों की आवाज नहीं सुनी, और न ही अपने प्रशिक्षकों की ओर कान लगाया।<sup>14</sup> मैं लगभग पूरी तरह से नष्ट हो गया था सभा और मंडली के बीच।”

<sup>15</sup> अपने ही कुएं का पानी पियो और अपने ही कुंड का ताजा पानी।<sup>16</sup> क्या तुम्हारे झरने बाहर बिखर जाएं, सङ्कों पर जल की धाराएं?<sup>17</sup> वे केवल तुम्हारे ही हों और तुम्हारे साथ परदेशियों के लिए नहीं।<sup>18</sup> तुम्हारा

## नीतिवचन

स्रोत आशीषित हो, और अपनी जवानी की पत्ती में  
आनंदित रहो।<sup>19</sup> जैसे एक प्रेममयी हिरण्यी और एक  
सुंदर पहाड़ी बकरी,

उसके स्तन तुम्हें हर समय तृप्त करें उसके प्रेम में  
सदा मग्न रहो।

<sup>20</sup> हे मेरे पुत्र, तुम क्यों पराइ स्त्री के साथ मग्न रहो और  
परदेशी के गले लगो?

<sup>21</sup> क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोका की आँखों के सामने हैं,  
और वह उसके सभी पथों को देखता है।<sup>22</sup> उसकी  
अपनी बुराइयाँ दृष्ट को फँसाएंगी, और वह अपने पाप  
की रस्सियाँ से बंधा रहेगा।<sup>23</sup> वह शिक्षा के अभाव में  
मरेगा, और अपनी मूर्खता की महानता में वह भटक  
जाएगा।

**6** मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी के लिए जमानतदार  
बन गया है, यदि तूने किसी अजनबी के लिए हाथ  
मिलाया है,<sup>2</sup> तो तू अपने मुँह की बातों से फँस गया है, तू  
अपने मुँह की बातों से पकड़ा गया है।<sup>3</sup> तो अब, मेरे  
पुत्र, ऐसा कर और अपने आप को बचा: क्योंकि तू अपने  
पड़ोसी के हाथ में आ गया है,

जा, अपने आप को दीन कर, और अपने पड़ोसी से  
विनती कर।

<sup>4</sup> अपनी आँखों को नींद न दे या अपनी पलकों को  
झपकी न दे;<sup>5</sup> अपने आप को शिकारी के हाथ से हिरण  
की तरह बचा,

और पक्षी की तरह फँसाने वाले के हाथ से।

<sup>6</sup> चीटी के पास जा, हे आलसी, उसके मार्गों को देख  
और बुद्धिमान बन,<sup>7</sup> जिसके पास न कोई प्रधान,  
अधिकारी, या शासक है,<sup>8</sup> वह गर्भियों में अपना भोजन  
तैयार करती है और कटाई में अपनी सामग्री इकट्ठा  
करती है।<sup>9</sup> तू कब तक लेटा रहेगा, हे आलसी? तू,  
अपनी नींद से कब उठेगा?<sup>10</sup> “थोड़ी नींद, थोड़ी झपकी,

थोड़ा हाथों को विश्राम के लिए मोड़ना—

<sup>11</sup> तब तेरी गरीबी एक यात्री की तरह आ जाएगी, और  
तेरी आवश्यकता एक सशस्त्र व्यक्ति की तरह।

<sup>12</sup> एक बेकार व्यक्ति, एक दुष्ट मनुष्य, वह है जो विकृत  
मुँह से चलता है,<sup>13</sup> जो अपनी आँखों से इशारा करता है,  
अपने पैरों से संकेत करता है, अपनी उंगलियों से इशारा  
करता है;<sup>14</sup> जो अपने हृदय में विकृति के साथ निरंतर  
बुराई की योजना बनाता है,

जो झगड़ा फैलाता है।

<sup>15</sup> इसलिए उसकी विपत्ति अचानक आ जाएगी; तुरंत वह  
टूट जाएगा और कोई उपचार नहीं होगा।

<sup>16</sup> छह चीजें हैं जिन्हें यहोवा धृणा करता है, हाँ, सात जो  
उसके लिए धृणास्पद हैं:

<sup>17</sup> घमंटी आँखें झूठी जीभ, और निर्दोष रक्त बहाने  
वाले हाथ,<sup>18</sup> एक हृदय जो दुष्ट योजनाएँ बनाता है,  
बुराई की ओर तेजी से दौड़ने वाले पैर,<sup>19</sup> एक झुठा  
गवाह जो झुठ बोलता है, और जो भाइयों के बीच  
झगड़ा फैलाता है।

<sup>20</sup> मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन कर, और  
अपनी माता की शिक्षा को नज़रअंदाज़ा न कर;<sup>21</sup> उहें  
निरंतर अपने हृदय पर बँध ले; उहें अपनी गर्दन के  
चारों ओर बँध ले।<sup>22</sup> जब तू चलेगा, वे तुझे मार्दार्दन  
करेंगे; जब तू सोएगा, वे तेरा पहरा देंगे;

और जब तू जागेगा, वे तुझसे बात करेंगे।

<sup>23</sup> क्योंकि आज्ञा एक दीपक है और शिक्षा एक प्रकाश  
है; और अनुशासन के लिए फटकार जीवन का मार्ग हैं

<sup>24</sup> तुझे दुष्ट स्त्री से बचाने के लिए, विदेशी स्त्री की  
विकानी जीभ से।<sup>25</sup> उसकी सुंदरता को अपने हृदय में न  
चाह, और उसकी पलकों से तुझे न फँसने दे।

<sup>26</sup> क्योंकि एक वेश्या के कारण कोई रोटी के टुकड़े तक  
गिर जाता है, और व्यभिचारिणी एक कीमती जीवन का  
शिकार करती है।<sup>27</sup> क्या कोई अपनी गोद में आग ले  
सकता है और उसके कपड़े न जलें?<sup>28</sup> क्या कोई  
गर्म कोयलों पर चल सकता है और उसके पैर न झूलसें।  
<sup>29</sup> ऐसा ही वह है जो अपने पड़ोसी की पत्ती के पास  
जाता है; जो कोई उसे छूता है वह दंड से नहीं बचेगा।

<sup>30</sup> लोग चोर को तुच्छ नहीं समझते यदि वह चोरी करता  
है जब वह भूखा होता है तो अपनी भूख मिटाने के लिए;

<sup>31</sup> पर जब वह पकड़ा जाता है, तो उसे सात गुना चुकाना

## नीतिवचन

पड़ता है; उसे अपने घर की सारी संपत्ति देनी पड़ती है।<sup>1</sup> <sup>32</sup> जो कोई स्त्री के साथ व्यभिचार करता है वह समझ से रहित है; जो ऐसा करता है वह अपनी आत्मा को नष्ट करता है।<sup>33</sup> वह घाव और अपमान सहन करेगा, और उसकी लज्जा मिटाई नहीं जाएगी।

<sup>34</sup> क्योंकि इर्ष्या एक व्यक्ति को क्रोधित करती है, और वह प्रतिशोध के दिन नहीं बछोगा।<sup>35</sup> वह कोई मुआवजा स्वीकार नहीं करेगा, और न ही तैयार होगा, भर्ते ही तू बड़ा उपहार दे।

**7** मेरे पुत्र, मेरे वचनों को मान, और मेरी आज्ञाओं को अपने भीतर संजो कर रख।<sup>2</sup> मेरी आज्ञाओं को मान और जीवित रह, और मेरी शिक्षा को अपनी आँख की पुतली के समान रख।<sup>3</sup> उहें अपनी उंगलियों पर बाँध ले; उहें अपने हृदय की पट्टिका पर लिख।<sup>4</sup> बुद्धि से कह, "तू मेरी बहन है," और समझ को अपना घनिष्ठ मित्र बना;<sup>5</sup> ताकि वे तुझे पराई स्त्री से बचा सके, उस विदेशी स्त्री से जो अपनी बातों से तुभारी है।

<sup>6</sup> क्योंकि मेरे घर की खिड़की से मैंने अपनी जाली के माध्यम से बाहर देखा,<sup>7</sup> और मैंने भोले लोगों में देखा, और युवाओं में पहचाना

एक युवक जो समझ से रहित था

<sup>8</sup> जो उसके कोने के पास वाली गली से गुजर रहा था, और वह उसके घर की ओर जा रहा था,<sup>9</sup> गोधूलि में, संथा में, रात के बीच और अंधकार में।

<sup>10</sup> और देखो, एक स्त्री उससे मिलने आती है, वेश्या के वस्त्र पहने और चालाक दिल की।<sup>11</sup> वह शोरगुल करने वाली और विद्रोही है, उसके पैरे घर में नहीं रहते;<sup>12</sup> वह अब गलियों में है, अब सार्वजनिक चौकों में,

और हर कोने पर घाट लगाती है।

<sup>13</sup> तो वह उसे पकड़ लेती है और उसे चूमती है, और निर्लज्ज चेहरे से उससे कहती है:

<sup>14</sup> <sup>15</sup> "मुझे शांति बलिदान चढ़ाना था; आज मैंने अपनी मप्रत्येक पूरी की है।" इसलिए मैं तुझसे मिलने आई हूँ,  
तेरी उपस्थिति को उत्सुकता से खोजने, और मैंने तुझे पा लिया है।<sup>16</sup> मैंने अपने बिस्तर को आवरणों से सजाया है, मिस के रंगीन लिनन से।<sup>17</sup> मैंने अपने बिस्तर पर

गंधरस, एलो और दालचीनी छिड़की है।<sup>18</sup> आ, हम सुबह तक प्रेम का आनंद लें; हम आलिंगन से आनंदित हों।<sup>19</sup> क्योंकि मेरा पति घर पर नहीं है, वह लंबी यात्रा पर गया है;<sup>20</sup> वह अपने साथ धन की थैली ले गया है, पूर्णिमा के समय वह घर आएगा।"

<sup>21</sup> अपनी अनेक प्रलोभनों से वह उसे लुभाती है; अपनी चापलूपी भरी बातों से वह उसे फ़साती है।<sup>22</sup> अचानक वह उसके पीछे चलता है, जैसे बैल वध के लिए जाता है,

या जैसे कोई मूर्ख के अनुशासन के लिए बंधनों में जाता है।

<sup>23</sup> जब तक एक तीर उसके जिगर को छेद नहीं देता;

जैसे एक पक्षी जाल की ओर जल्दी करता है, वह नहीं जानता कि यह उसकी जान ले लेगा।

<sup>24</sup> अब इसलिए, मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरे मुख के वचनों पर ध्यान दो।<sup>25</sup> तेरा हृदय उसकी राहों की ओर न मुड़े, उसके पथों में न भटके।<sup>26</sup> क्योंकि उसने बहुतों को गिराया है, और उसके द्वारा मारे गए अनगिनत हैं।<sup>27</sup> उसका घर अधोलोक का मार्ग है, मृत्यु के कक्षों की ओर उतरता है।

**8** क्या बुद्धि नहीं पुकारती, और समझ अपनी आवाज नहीं उठाती?<sup>2</sup> मार्ग के किनारे ऊँचाई पर, जहाँ रास्ते मिलते हैं, वह खड़ी होती है;<sup>3</sup> फाटकों के पास, नगर के प्रवेश द्वार पर, दरवाजों के प्रवेश पर, वह पुकारती है:<sup>4</sup> "हे लोगों, मैं तुम्हें पुकारती हूँ, और मेरी आवाज मानवाजाति के लिए है।"<sup>5</sup> हे भोले लोगों, समझदारी को समझो; और हे मूर्खों, बुद्धि को समझो।<sup>6</sup> सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूँगी; और मेरे हाँठों का उद्घाटन सही बातें प्रकट करेगा।<sup>7</sup> क्योंकि मेरा मूँह सत्य बोलेगा; और दुष्टा मेरे हौंठों के लिए धृणास्पद है।<sup>8</sup> मेरे मूँह के सभी शब्द धर्म में हैं; उनमें कुछ भी टेढ़ा या विकृत नहीं है।<sup>9</sup> वे सब सीधे हैं उसके लिए जो समझता है, और सही हैं उनके लिए जो ज्ञान पाते हैं।<sup>10</sup> मेरी शिक्षा को स्वीकार करो और चाँदी को नहीं, और ज्ञान को उत्तम सोने से भी अधिक।<sup>11</sup> क्योंकि बुद्धि रत्नों से उत्तम है, और सभी इच्छित वस्तुएँ उसकी तुलना नहीं कर सकतीं।

<sup>12</sup> मैं, बुद्धि, समझदारी के साथ निवास करती हूँ, और मैं ज्ञान और विवेक पाती हूँ।<sup>13</sup> प्रभु का भय बुराई से धृणा करना है; अभिमान, अहंकार, बुराई का मार्ग,

## नीतिवचन

और विकृत मुँह, मैं धूणा करती हूँ।

<sup>14</sup> सलाह मेरी है और सुदृढ़ बुद्धि; मैं समझ हूँ, शक्ति मेरी है। <sup>15</sup> मेरे द्वारा राजा राज्य करते हैं, और शासक न्याय का आदेश देते हैं। <sup>16</sup> मेरे द्वारा प्रधान और श्रेष्ठ जन शासन करते हैं, सभी जो सही निर्णय लेते हैं। <sup>17</sup> मैं उन लोगों से प्रेम करती हूँ जो मुझसे प्रेम करते हैं, और जो मुझे लगन से खोते हैं वे मुझे पाएँगे। <sup>18</sup> धन और सम्मान मेरे साथ हैं, स्थायी समृद्धि और धर्म। <sup>19</sup> मेरे फल सोने से भी उत्तम हैं, यहाँ तक कि शुद्ध सोने से, और मेरी उपज उत्तम चाँदी से भी अधिक है। <sup>20</sup> मैं धर्म के मार्ग में चलती हूँ, न्याय के पथों के मध्य में, <sup>21</sup> उनको धन देने के लिए जो मुझसे प्रेम करते हैं, कि मैं उनके खजानों को भर सकूँ।

<sup>22</sup> प्रभु ने मुझे अपने मार्ग की शुरुआत में बनाया, अपने प्राचीन कार्यों से पहले। <sup>23</sup> अनादिकाल से मैं स्थापित थी, प्रारंभ से, पृथ्वी के प्राचीन समय से। <sup>24</sup> जब महासागर की गहराई नहीं थी, मैं उत्पन्न हुई, जब जल के स्रोत प्रचुर नहीं थे। <sup>25</sup> पहाड़ों के स्थापित होने से पहले, पहाड़ियों से पहले, मैं उत्पन्न हुई; <sup>26</sup> जब उसने पृथ्वी और मैदान नहीं बनाए थे, और न ही संसार की पहली धूल। <sup>27</sup> जब उसने आकाश की स्थापना की, मैं वहाँ थी; जब उसने गहरे के चेहरे पर एक वृत्त अंकित किया, <sup>28</sup> जब उसने ऊपर के आकाश को ढाढ़ किया, जब गहरे के स्रोत स्थिर हो गए, <sup>29</sup> जब उसने समुद्र के लिए एक सीमा निर्धारित की ताकि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन न करे,

जब उसने पृथ्वी की नींव को चिह्नित किया,

<sup>30</sup> तब मैं उसके पास थी, एक कुशल कारीगर के रूप में, और मैं उसकी दैनिक प्रसन्नता थी,

उसके सामने सदा आनंदित रहती, <sup>31</sup> संसार में उसकी पृथ्वी में आनंदित रहती, और मानवजाति के पुत्रों में मेरी प्रसन्नता थी।

<sup>32</sup> अब, हे पुत्रों, मेरी सुनो, क्योंकि वे धन्य हैं जो मेरे मार्गों को रखते हैं। <sup>33</sup> शिक्षा को सुनो और बुद्धिमान बनो, और इसे उपेक्षित न करो। <sup>34</sup> धन्य है वह व्यक्ति जो मेरी सुनता है, प्रतिदिन मेरे फाटकों पर देखता है,

मेरे द्वारा पर प्रतीक्षा करता है।

<sup>35</sup> क्योंकि जो मुझे पाता है वह जीवन पाता है और प्रभु से अनुग्रह प्राप्त करता है। <sup>36</sup> परंतु जो मुझसे पाप करता है वह स्वयं को हानि पहुँचाता है; सभी जो मुझसे धृणा करते हैं वे मृत्यु से प्रेम करते हैं।

**९** बुद्धि ने अपना घर बनाया है, उसने अपने सात संभव तराशे हैं; <sup>२</sup> उसने अपना भोजन तैयार किया है, उसने अपनी दाखरस मिलाई है;

उसने अपनी मेज भी लगाई है।

<sup>३</sup> उसने अपनी दासियों को भेजा है, वह नगर के ऊँचे स्थानों से पुकारती है: <sup>४</sup> "जो कोई भोला है, वह यहाँ मृड़ जाए!" जो समझ की कमी रखते हैं, उनसे वह कहती है,

<sup>५</sup> "आओ, मेरे भोजन को खाओ और उस दाखरस को पियो जो मैंने मिलाई है।" <sup>६</sup> अपनी मूर्खता को छोड़ दो और जीवित रहो, और समझ के मार्ग में आगे बढ़ो।"

<sup>७</sup> जो ठट्ठा करने वाले को सुधारता है, वह अपने लिए अपमान पाता है, और जो दृष्ट को डॉट्टा है, वह अपने लिए अपशब्द पाता है। <sup>८</sup> ठट्ठा करने वाले को मत डॉट्टो, नहीं तो वह तुमसे बैर करेगा;

बुद्धिमान को डॉटो और वह तुमसे प्रेम करेगा।

<sup>९</sup> बुद्धिमान को शिक्षा दो और वह और भी बुद्धिमान बनेगा;

धर्मी को सिखाओ और वह सीखने में वृद्धि करेगा।

<sup>10</sup> प्रभु का भय बुद्धि का आरंभ है, और पवित्र का ज्ञान समझ है। <sup>11</sup> क्योंकि मेरे द्वारा तुम्हारे दिन बढ़ोंगे, और तुम्हारे जीवन के वर्ष बढ़ाए जाएंगे। <sup>12</sup> यदि तुम बुद्धिमान हो, तो अपने लिए बुद्धिमान हो, और यदि तुम ठट्ठा करते हो, तो अकेले ही उसके लिए भुगतोगे।

<sup>13</sup> मूर्खता की स्त्री शोरगुल करती है, वह भोली है और कुछ नहीं जानती। <sup>14</sup> वह अपने घर के द्वार पर बैठती है, नगर के ऊँचे स्थानों पर एक सीट पर, <sup>15</sup> उन लोगों की बुलाती है जो वहाँ से गुजरते हैं, जो अपनी राहें सीधी कर रहे हैं। <sup>16</sup> "जो कोई भोला है, वह यहाँ मृड़ जाए!" जो समझ की कमी रखते हैं, उनसे वह कहती है, <sup>17</sup> "चोरी का पानी मीठा होता है, और छिपका खाया हुआ रोटी स्वादिष्ट होती है।" <sup>18</sup> पर वह नहीं जानता कि वहाँ मृतक हैं, कि उसके अतिथि शिंओल की गहराइयों में हैं।

## नीतिवचन

**10** सुलैमान के नीतिवचन। बुद्धिमान पुत्र पिता को अनंदित करता है, परंतु मूर्ख पुत्र अपनी माता के लिए दुख का कारण होता है।<sup>2</sup> अन्याय से प्राप्त लाभ कोई लाभ नहीं देते, परंतु धर्म मृत्यु से बचाता है।<sup>3</sup> प्रभु धर्मियों को भूखा नहीं रखने देगा, परंतु वह दुष्टों की लालसा को ठुकरा देगा।<sup>4</sup> जो आलसी हाथ से काम करता है वह गरीब होता है, परंतु परिश्रमी का हाथ उसे धनी बनाता है।<sup>5</sup> जो ग्रीष्म में इकट्ठा करता है वह बुद्धिमान पुत्र है, परंतु जो फसल के समय सोता है वह लज्जाजनक पुत्र है।<sup>6</sup> धर्मियों के सिर पर आशीर्वद होते हैं, परंतु दुष्टों का मुख हिंसा को छुपाता है।<sup>7</sup> धर्मियों की सृष्टि धन्य होती है, परंतु दुष्टों का नाम सङ् जाता है।<sup>8</sup> बुद्धिमान हृदय आज्ञाओं को स्तीकार करता है, परंतु बकवादी मूर्ख नष्ट हो जाएगा।<sup>9</sup> जो ईमानदारी से चलता है वह सुरक्षित चलता है, परंतु जो अपनी राहों को विकृत करता है वह पकड़ा जाएगा।<sup>10</sup> जो आंख मारता है वह परेशानी का कारण बनता है, और बकवादी मूर्ख नष्ट हो जाएगा।<sup>11</sup> धर्मियों का मुख जीवन का सोत है, परंतु दुष्टों का मुख हिंसा को छुपाता है।<sup>12</sup> घुणा झगड़े को उकसाती है, परंतु प्रेम सभी अपराधों को ढक देता है।<sup>13</sup> समझदार के हौठों पर बुद्धि पाई जाती है, परंतु जो समझ नहीं रखता उसके पीठ पर छाँटी होती है।<sup>14</sup> बुद्धिमान लोग ज्ञान को संचित करते हैं, परंतु मूर्ख का मुख विनाश को पास लाता है।<sup>15</sup> धनी व्यक्ति की संपत्ति उसकी मज़बूत नगरी है, गरीबों का विनाश उनकी गरीबी है।<sup>16</sup> धर्मियों की मजदूरी जीवन है, दुष्टों की आय दंड है।<sup>17</sup> जो अनुशासन को मानता है वह जीवन के मार्ग पर है, परंतु जो सुधार को अनेदेखा करता है वह भटक जाता है।<sup>18</sup> जो घुणा को छुपाता है उसके होंठ झूठे होते हैं, और जो निदा फैलाता है वह मूर्ख है।<sup>19</sup> जब बहुत से शब्द होते हैं तो गलतियाँ अनिवार्य होती हैं, परंतु जो अपने होंठों को रोकता है वह बुद्धिमान होता है।<sup>20</sup> धर्मियों की जीभ उत्तम चांदी के समान है, दुष्टों का हृदय थोड़ा मल्यवान है।<sup>21</sup> धर्मियों के होंठ बहुतों को पोषण देते हैं, परंतु मूर्ख समझ की कमी के कारण मर जाते हैं।<sup>22</sup> प्रभु का आशीर्वद ही धन्य करता है, और वह उसमें कोई दुख नहीं जोड़ता।<sup>23</sup> दुष्टा में संलग्न होना मूर्ख के लिए खेल के समान है, और समझदार व्यक्ति के लिए बुद्धि भी।<sup>24</sup> जो दुष्ट डरता है वह उस पर आएगा, परंतु धर्मियों की इच्छा पूरी होगी।<sup>25</sup> जब बर्वंडर गुजरता है, तो दुष्ट नहीं रहता, परंतु धर्मियों की नींव सदा के लिए होती है।<sup>26</sup> जैसे दांतों के लिए सिरका और आंखों के लिए धुआं, वैसे ही आलसी उन लोगों के लिए होता है जो उसे भेजते हैं।<sup>27</sup> प्रभु का भय जीवन को लंबा करता है, परंतु दुष्टों के वर्ष घट जाते हैं।<sup>28</sup> धर्मियों की आशा आनंद है, परंतु दुष्टों की अपेक्षा नष्ट हो जाती है।<sup>29</sup> प्रभु का मार्ग सीधे

लोगों के लिए एक गढ़ है, परंतु अन्याय करने वालों के लिए विनाश।<sup>30</sup> धर्मी कभी नहीं हिलेंगे, परंतु दुष्ट भूमि में नहीं रहेंगे।<sup>31</sup> धर्मियों का मुख बुद्धि से बहता है, परंतु विकृत जीभ काट दी जाएगी।<sup>32</sup> धर्मियों के होंठ जानते हैं कि क्या स्वीकार्य है, परंतु दुष्टों का मुख विकृत होता है।

**11** झूठा तराजू यहोवा के लिए धृणास्पद है, परंतु सही वजन उसकी प्रसन्नता है।<sup>1</sup> जब घंटंड आता है, तब अपमान भी आता है, परंतु नग्राता के साथ बुद्धि होती है।<sup>2</sup> सच्चे लोगों की ईमानदारी उन्हें मार्गदर्शन करेगी, परंतु विश्वासघाती की कुटिलता उन्हें नष्ट कर देगी।<sup>3</sup> क्रोध के दिन धन लाभ नहीं देता, परंतु धर्म मृत्यु से बचाता है।<sup>4</sup> निर्दोष की धार्मिकता उसका मार्ग सुगम करेगी, परंतु दुष्ट अपनी दृष्टि से गिर जाएगा।<sup>5</sup> सच्चे लोगों की धार्मिकता उन्हें बचाएगी, परंतु विश्वासघाती अपनी लालच में फंस जाएंगे।<sup>6</sup> जब दुष्ट व्यक्ति मरता है, उसकी आशा नष्ट हो जाती है, और शक्ति की अपेक्षा भी नष्ट हो जाती है।<sup>7</sup> धर्मी व्यक्ति संकट से बच जाता है, परंतु दुष्ट उसकी जगह ले लेता है।<sup>8</sup> अपने मुँह से अधर्मी व्यक्ति अपने पड़ोसी को नष्ट करता है, परंतु जान के द्वारा धर्मी बचाया जाएगा।<sup>9</sup> जब धर्मी समृद्ध होते हैं, तब नगर आनंदित होता है, और जब दुष्ट नष्ट होते हैं, तब हर्षधनि होती है।<sup>10</sup> सच्चे लोगों के आशीर्वद से नगर उन्नत होता है, परंतु दुष्टों के मुँह से वह गिर जाता है।<sup>12</sup> जो अपने पड़ोसी का तिरस्कार करता है, उसमें समझ की कमी है, परंतु समझदार व्यक्ति चुप रहता है।<sup>13</sup> जो चुगली करता है, वह बात को छिपा लेता है।<sup>14</sup> जहाँ मार्गदर्शन नहीं होता, वहाँ लोग गिर जाते हैं, परंतु सलाहकारों की अधिकता में विजय होती है।<sup>15</sup> जो अजनबी के लिए जमानत देता है, वह कष्ट उठाएगा, परंतु जो जमानत देने से घुणा करता है, वह सुरक्षित है।<sup>16</sup> दयालु स्त्री समान प्राप्त करती है, और निर्देशी पुरुष धन प्राप्त करते हैं।<sup>17</sup> दयालु व्यक्ति अपने ऊपर भला करता है, परंतु निर्देशी व्यक्ति अपने ऊपर विपत्ति लाता है।<sup>18</sup> दुष्ट व्यक्ति धोखाधड़ी की मजदूरी कराता है, परंतु जो धर्म बोता है, उसे सच्चा प्रतिफल मिलता है।<sup>19</sup> जो धर्म में ढह रहता है, वह जीवन प्राप्त करता है, परंतु जो बुराई का पीछा करता है, वह अपनी मृत्यु लाता है।<sup>20</sup> कुटिल हृदय वाले यहोवा के लिए धृणास्पद हैं, परंतु जो निर्दोष हैं, वे उसकी प्रसन्नता हैं।<sup>21</sup> निश्चित जाने, दुष्ट व्यक्ति दंड से नहीं बचेगा, परंतु धर्मियों की संतान बचाई जाएगी।<sup>22</sup> जैसे सूअर की नाक में सोने की आगूठी, वैसे ही सुंदर स्त्री जो विवेकहीन है।<sup>23</sup> धर्मियों की इच्छा केवल भलाई होती है, परंतु दुष्टों की अपेक्षा क्रोध है।<sup>24</sup>

## नीतिवचन

कोई बिखेरता है, फिर भी अधिक बढ़ता है, और कोई जो उचित रूप से देना चाहिए, उसे रोकता है, और यह केवल अभाव में परिणत होता है।<sup>25</sup> उदार व्यक्ति समृद्ध होगा, और जो दूसरों को बहुत पानी देता है, उसे स्वयं भी पेय मिलेगा।<sup>26</sup> जो अनाज रोकता है, लोग उसे शाप देंगे, परंतु जो उसे बेचता है, उसके सिर पर आशीर्वाद होगा।<sup>27</sup> जो बलाई को लगान से खोजता है, वह कृपा खोजता है, परंतु जो बुराई खोजता है, बुराई उसके पास आएगी।<sup>28</sup> जो अपनी दीलत पर भरोसा करता है, वह गिर जाएगा, परंतु धर्मी हरे पते की तरह फले-फले जाएगा।<sup>29</sup> जो अपने घर पर विपत्ति लाता है, वह हवा का वारिस होगा, और मूर्ख समझदार के सेवक होंगे।<sup>30</sup> धर्मियों का फल जीवन का वृक्ष है, और जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीतता है।<sup>31</sup> यदि धर्मियों को पृथ्वी पर प्रतिफल मिलेगा, तो दुष्ट और पापी को कितना अधिक!

**12** जो अनुशासन से प्रेम करता है, वह ज्ञान से प्रेम करता है, परन्तु जो सुधार से घृणा करता है, वह मूर्ख है।<sup>2</sup> एक अच्छा व्यक्ति यहोवा से अनुग्रह प्राप्त करेगा, परन्तु जो बुराई की योजना बनाता है, उसे वह दोषी ठहराएगा।<sup>3</sup> दुष्टा से कोई व्यक्ति स्थिर नहीं होगा, परन्तु धर्मियों की जड़ नहीं हिलेगी।<sup>4</sup> एक उत्तम पत्नी अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो उसे लज्जित करती है, वह उसकी हड्डियों में सड़न के समान है।<sup>5</sup> धर्मियों के विचार न्यायसंगत होते हैं, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छलपूर्ण होती हैं।<sup>6</sup> दुष्टों के शब्द रक्त के लिए घात लगाते हैं, परन्तु सीधे लोगों का मुख उन्हें बचा लेगा।<sup>7</sup> दुष्टों का नाश हो जाता है और वे नहीं रहते, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहेगा।<sup>8</sup> व्यक्ति की प्रशंसा उसकी समझ के अनुसार होती है, परन्तु विकृत मन वाला तुच्छ समझा जाता है।<sup>9</sup> वह व्यक्ति जो हल्का समझा जाता है और उसके पास एक सेवक है, उससे अच्छा है जो स्वयं को सम्मान देता है और रोती से विचित है।<sup>10</sup> धर्मी व्यक्ति अपने पशु के जीवन का ध्यान रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी कूर होती है।<sup>11</sup> जो अपनी भूमि पर काम करता है, उसके पास बहुत रोटी होती है, परन्तु जो व्यर्थ की चीजों का पीछा करता है, उसमें समझ की कमी होती है।<sup>12</sup> दुष्ट व्यक्ति बुरे लोगों की लूट की इच्छा करता है, परन्तु धर्मियों की जड़ फल देती है।<sup>13</sup> दुष्ट व्यक्ति अपने होंठों के अपराध में फंस जाता है, परन्तु धर्मी संकट से बच निकलता है।<sup>14</sup> व्यक्ति अपने शब्दों के फल से अच्छे से संतुष्ट होगा, और व्यक्ति के हाथों के कार्य उसे लौटाए जाएंगे।<sup>15</sup> मूर्ख की दृष्टि में उसकी अपनी राह सही होती है, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति सलाह सुनता है।<sup>16</sup> मूर्ख का क्रोध तुरंत प्रकट होता है, परन्तु विवेकी व्यक्ति अपमान को छिपा लेता है।<sup>17</sup> जो सत्य को प्रकट करता है, वह

सही बात कहता है, परन्तु झूठा साक्षी छल बोलता है।<sup>18</sup> ऐसा होता है जो तलवार की चोटों की तरह उतावलेपन से बोलता है, परन्तु बुद्धिमान की जीभ चंगा करती है।<sup>19</sup> सत्यवादी हॉठ सदा के लिए स्थिर रहेंगे, परन्तु झूठी जीभ केवल एक क्षण के लिए होती है।<sup>20</sup> जो बुराई की योजना बनाते हैं, उनके हृदय में छल होता है, परन्तु शांति के परामर्शदाता अनन्दित होते हैं।<sup>21</sup> धर्मियों को कोई हानि नहीं होती, परन्तु दुष्ट संकट से भरे रहते हैं।<sup>22</sup> झूठे हॉठ यहोवा के लिए घृणास्पद हैं, परन्तु जो विश्वासयोग्य होते हैं, वे उसकी प्रसन्नता हैं।<sup>23</sup> विवेकी व्यक्ति ज्ञान को छिपा लेता है, परन्तु मूर्खों का हृदय मूर्खता को प्रकट करता है।<sup>24</sup> परिश्रमी का हाथ शासन करेगा, परन्तु आलसी को जबरन श्रम करना पड़ेगा।<sup>25</sup> व्यक्ति के हृदय में विचार उसे नीचे गिरा देती है, परन्तु एक अच्छा शब्द उसे प्रसन्न करता है।<sup>26</sup> धर्मी व्यक्ति अपने पड़ोसी का मार्गदर्शक होता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग उन्हें भटका देता है।<sup>27</sup> आलसी व्यक्ति अपने शिकार को नहीं भूता, परन्तु व्यक्ति की कीमती संपत्ति उसकी परिश्रमशीलता है।<sup>28</sup> धर्म के मार्ग में जीवन है, और उसकी राह में मृत्यु नहीं है।

**13** बुद्धिमान पुत्र अपने पिता की शिक्षा को स्वीकार करता है, परंतु उपहास करने वाला डांट को नहीं सुनता।<sup>2</sup> मनुष्य के मुख के फल से उसे भलाई मिलती है, परंतु विश्वासघाती की इच्छा हिंसा है।<sup>3</sup> जो अपने मुख की रक्षा करता है वह अपने जीवन की रक्षा करता है; जो अपने होंठों को खुला छोड़ देता है वह विनाश को प्राप्त होता है।<sup>4</sup> आलसी की आत्मा चाहती है और कुछ नहीं पाती, परंतु परिश्रमी की आत्मा समृद्ध होती है।<sup>5</sup> धर्मी व्यक्ति झूठे कथन से घृणा करता है, परंतु दुष्ट व्यक्ति घृणास्पद और लज्जाजनक कार्य करता है।<sup>6</sup> धर्मिता उस व्यक्ति की रक्षा करती है जिसका मार्ग निर्देश है, परंतु दुष्टा पापी को विनाश की ओर ले जाती है।<sup>7</sup> कोई धनी होने का दिखावा करता है परंतु उसके पास कुछ नहीं होता; कोई गरीब होने का दिखावा करता है परंतु उसके पास बड़ी संपत्ति होती है।<sup>8</sup> मनुष्य के जीवन का मूल्य उसकी संपत्ति है, परंतु गरीब को कोई डांट नहीं सुनाई देती।<sup>9</sup> धर्मियों का प्रकाश आनंदित करता है, परंतु दुष्टों का दीपक बुझ जाता है।<sup>10</sup> अहंकार के कारण केवल झगड़ा होता है, परंतु जो सलाह स्वीकार करते हैं उनके पास बुद्धि होती है।<sup>11</sup> जो संपत्ति बिना मेहनत के प्राप्त होती है वह घटती जाती है, परंतु जो श्रम से एकत्र करता है वह उसे बढ़ाता है।<sup>12</sup> आशा का विलंबित होना हृदय को बीमार करता है, परंतु इच्छा की पूर्ति जीवन का वृक्ष है।<sup>13</sup> जो वचन का तिरस्कार करता है वह उसका ऋणी होता है, परंतु जो आज्ञा का भय मानता है उसे प्रतिफल

## नीतिवचन

मिलता है।<sup>14</sup> बुद्धिमानों की शिक्षा जीवन का स्रोत है, मृत्यु के फंदों से बचाने के लिए।<sup>15</sup> अच्छी समझ अनुप्रह उत्पन्न करती है, परंतु विश्वासघाती का मार्ग कठिन होता है।<sup>16</sup> हर विवेकशील व्यक्ति ज्ञान के साथ कार्य करता है, परंतु मूर्ख अपनी मूर्खता दिखाता है।<sup>17</sup> दृष्ट दूष्ट मुसीबत में पड़ता है, परंतु विश्वासयोग्य दूष चंगाई लाता है।<sup>18</sup> जो अनुशासन की उपेक्षा करता है उसे गरीबी और लज्जा मिलती है, परंतु जो डांट को स्वीकार करता है उसे सम्मान मिलता है।<sup>19</sup> इच्छा की पूर्ति आत्मा के लिए मधुर होती है, परंतु मूर्खों के लिए बुराई से मुड़ना घृणास्पद होता है।<sup>20</sup> जो बुद्धिमानों के साथ चलता है वह बुद्धिमान होगा, परंतु मूर्खों का साथी हानि उठाएगा।<sup>21</sup> दुर्भाग्य पापियों का पीछा करता है, परंतु धर्मियों को सम्मुद्दि का प्रतिफल मिलेगा।<sup>22</sup> अच्छा व्यक्ति अपनी संतानों के लिए विरासत छोड़ता है, और पापी की संपत्ति धर्मियों के लिए संचित होती है।<sup>23</sup> गरीब की परती भूमि में भरपूर भोजन होता है, परंतु अन्यथा से वह नष्ट हो जाता है।<sup>24</sup> जो अनुशासन को रोकता है वह अपने पुत्र से घृणा करता है, परंतु जो उससे प्रेम करता है वह उसे लगन से अनुशासित करता है।<sup>25</sup> धर्मी के पास अपनी भूख को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त होता है, परंतु दृष्ट का पेट आवश्यकता में होता है।

**14** बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, परन्तु मूर्ख उसे अपने ही हाथों से गिरा देती है।<sup>2</sup> जो सीधाई में चलता है वह योगा का भय मानता है, परन्तु जो अपने मार्गों में कपटी है वह उसे तुच्छ जानता है।<sup>3</sup> मूर्ख के मुख में उसके पीठ के लिए छाँटी होती है, परन्तु बुद्धिमानों के होंठ उहें सुरक्षित रखते हैं।<sup>4</sup> जहां बैल नहीं होते, वहां नांद साफ रहती है, परन्तु बैल की शक्ति से बहुत आय होती है।<sup>5</sup> विश्वासयोग्य साक्षी झूठ नहीं बोलेगा, परन्तु झूठा साक्षी झूठ बोलता है।<sup>6</sup> ठड़ा करने वाला ज्ञान ढंगाता है और नहीं पाता, परन्तु समझने वाले के लिए ज्ञान सरल होता है।<sup>7</sup> मूर्ख की उपस्थिति छोड़ दो, अन्यथा तुम ज्ञान के शब्दों को नहीं समझ पाओगे।<sup>8</sup> समझदार की बुद्धि अपने मार्ग को समझने में है, परन्तु मूर्खों की मूर्खता धोखा है।<sup>9</sup> मूर्ख अपराध का मजाक उड़ाते हैं, परन्तु सीधे लोगों के बीच सद्भवना होती है।<sup>10</sup> हृदय अपनी कङ्गवाहट को जानता है, और एक अजनबी उसकी खुशी में भागीदार नहीं होता।<sup>11</sup> दुष्टों का घर नष्ट हो जाएगा, परन्तु सीधे लोगों का तंत्र फलेगा-फूलेगा।<sup>12</sup> ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सही लगता है, परन्तु उसका अंत मृत्यु का मार्ग है।<sup>13</sup> हरी में भी हृदय दुखी हो सकता है, और खुशी का अंत शोक हो सकता है।<sup>14</sup> विचलित हृदय वाला अपनी ही राहों से संतुष्ट होगा, परन्तु एक अच्छा व्यक्ति अपने से संतुष्ट होगा।<sup>15</sup> भोला

व्यक्ति हर बात पर विश्वास करता है, परन्तु समझदार व्यक्ति अपने कदमों पर विचार करता है।<sup>16</sup> बुद्धिमान व्यक्ति सावधान रहता है और बुराई से दूर रहता है, परन्तु मूर्ख घमंडी और लापरवाह होता है।<sup>17</sup> जल्दी गुस्सा करने वाला मूर्खता से काम करता है, और दृष्ट योजनाओं वाला व्यक्ति धृणित होता है।<sup>18</sup> भोले लोग मूर्खता का उत्तराधिकार करते हैं, परन्तु समझदार ज्ञान का मुकुट धारण करते हैं।<sup>19</sup> दृष्ट अच्छे के सामने झुकेंगे, और दृष्ट धर्मियों के द्वार पर।<sup>20</sup> गरीब को उसका पड़ोसी भी घृणा करता है, परन्तु धनी को प्रेम करने वाले बहुत होते हैं।<sup>21</sup> जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है वह आप करता है, परन्तु जो जरूरतमंदों पर दया करता है वह धन्य होता है।<sup>22</sup> क्या वे लोग जो बुराई की योजना बनाते हैं, भटक नहीं जाते? परन्तु जो भलाई की योजना बनाते हैं, उनके लिए दया और सत्य होता है।<sup>23</sup> सभी परिश्रम में लाभ होता है, परन्तु केवल बात करने से गरीबी आती है।<sup>24</sup> बुद्धिमानों का मुकुट उनकी संपत्ति है, परन्तु मूर्खों की मूर्खता केवल मूर्खता है।<sup>25</sup> सच्चा साक्षी जीवन बचाता है, परन्तु जो झूठ बोलता है वह धोखेबाज होता है।<sup>26</sup> यहोवा का भय मानने में दृढ़ विश्वास होता है, और उसके बच्चे शरण पाएंगे।<sup>27</sup> यहोवा का भय जीवन का स्रोत है, जिससे मृत्यु के जाल से बचा जा सकता है।<sup>28</sup> बहुत से लोगों में राजा की महिमा होती है, परन्तु लोगों की कमी में राजकुमार का विनाश होता है।<sup>29</sup> जो धीरे गुस्सा करता है वह बड़ा समझदार होता है, परन्तु जो जल्दी गुस्सा करता है वह मूर्खता को बढ़ावा देता है।<sup>30</sup> सांत हृदय शरीर के लिए जीवन है, परन्तु ईर्षा हड्डियों के लिए सड़न है।<sup>31</sup> जो गरीबों को दबाता है वह अपने निर्माता का अपमान करता है, परन्तु जो जरूरतमंदों पर दया करता है वह उसे सम्मान देता है।<sup>32</sup> दृष्ट अपने ही अपराध से गिर जाता है, परन्तु धर्मी के पास मृत्यु के समय शरण होती है।<sup>33</sup> बुद्धि समझदार के हृदय में विश्वास करती है, परन्तु मूर्खों की भीतर यह प्रकट होती है।<sup>34</sup> धर्म एक राष्ट्र को ऊंचा उठाता है, परन्तु धारा किसी भी लोगों के लिए अपमान है।<sup>35</sup> राजा की कृपा उस सेवक की ओर होती है जो बुद्धिमानी से काम करता है, परन्तु उसका क्रोध उस पर होता है जो लज्जाजनक कार्य करता है।

**15** कोमल उत्तर क्रोध को दूर करता है, परन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।<sup>2</sup> बुद्धिमान की जीभ ज्ञान को सुखद बनाती है, परन्तु मूर्खों का मुख मूर्खता उगलता है।<sup>3</sup> प्रभु की आँखें हर स्थान पर हैं, बहुरे और अच्छे पर दृष्टि रखती हैं।<sup>4</sup> शातिपूर्ण जी जीवन का वृक्ष है, परन्तु उसमें विकृति आत्मा को कुचल देती है।<sup>5</sup> मूर्ख अपने पिता की अनुशासन को अस्वीकार करता

## नीतिवचन

है, परंतु जो डांट को मानता है वह समझदार है।<sup>6</sup> धर्मी के घर में बड़ी संपत्ति होती है, परंतु दुष्टों की आय में परेशानी होती है।<sup>7</sup> बुद्धिमान के होंठ ज्ञान फैलाते हैं, परंतु मूर्खों के हृदय ऐसे नहीं होते।<sup>8</sup> दुष्टों का बलिदान प्रभु के लिए धृणास्पद है, परंतु सीधे लोगों की प्रार्थना उसकी प्रसन्नता है।<sup>9</sup> दुष्टों का मार्ग प्रभु के लिए धृणास्पद है, परंतु वह उसे प्रेम करता है जो धर्म का अनुसरण करता है।<sup>10</sup> जो मार्ग छोड़ता है उसके लिए कठोर अनुशासन है; जो सुधार से धृणा करता है वह मरेगा।<sup>11</sup> शिओल और अबद्धन प्रभु के सामने खुले हैं, तो मनुष्यों के हृदय कितने अधिक!<sup>12</sup> हँसी उड़ाने वाला उसे नहीं प्रेम करता जो उसे डांटता है; वह बुद्धिमानों के पास नहीं जाएगा।<sup>13</sup> प्रसन्न हृदय चेहरा प्रसन्न करता है, परंतु जब हृदय उदास होता है, आसा टूट जाता है।<sup>14</sup> बुद्धिमान की बुद्धि ज्ञान की खोज करती है, परंतु मूर्खों का मुख मूर्खता पर निर्भर करता है।<sup>15</sup> दुखी के सभी दिन बुरे होते हैं, परंतु प्रसन्न हृदय के पास निरंतर भोज होता है।<sup>16</sup> प्रभु के भय के साथ थोड़ा होना बड़े खाजने के साथ अशांति से बेहतर है।<sup>17</sup> जहाँ प्रेम है वहाँ सज्जियों की एक धारी बेहतर है बनाम धृणा के साथ परोसा गया मीठा बैल।<sup>18</sup> गर्म स्वभाव वाला व्यक्ति झागड़ा भड़काता है, परंतु जो धीरे क्रोधित होता है वह विवाद को शांत करता है।<sup>19</sup> आलसी का मार्ग कॉटों की बाड़ के समान है, परंतु सीधे लोगों का मार्ग राजमार्ग है।<sup>20</sup> बुद्धिमान पुत्र पिता को प्रसन्न करता है, परंतु मूर्ख व्यक्ति अपनी माता का अपमान करता है।<sup>21</sup> मूर्खता उस व्यक्ति के लिए आनंद है जो समझ से रहित है, परंतु समझदार व्यक्ति सीधा चलता है।<sup>22</sup> बिना परामर्श के योजनाएँ विफल होती हैं, परंतु अनेक सलाहकारों के साथ वे सफल होती हैं।<sup>23</sup> उचित उत्तर में व्यक्ति को आनंद होता है, और समय पर कहा गया शब्द कितना सुखद होता है।<sup>24</sup> जीवन का मार्ग बुद्धिमानों के लिए ऊपर की ओर ले जाता है, ताकि वह नीचे के शिओल से दूर रह सके।<sup>25</sup> प्रभु धर्मदी के घर को गिरा देगा, परंतु वह विधवा की सीमा को स्थिर करेगा।<sup>26</sup> दुष्ट योजनाएँ प्रभु के लिए धृणास्पद हैं, परंतु सुखद वचन शुद्ध है।<sup>27</sup> जो अवैध लाभ प्राप्त करता है वह अपने ही घर को परेशान करता है, परंतु जो रिश्वत से धृणा करता है वह जीवित रहेगा।<sup>28</sup> धर्मी का हृदय उत्तर देने के लिए विचार करता है, परंतु दुष्टों का मुख बुरी बातें उगलता है।<sup>29</sup> प्रभु दुष्टों से दूर है, परंतु वह धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।<sup>30</sup> उज्ज्वल आँखें हृदय को प्रसन्न करती हैं; अच्छी खबर हिँड़ियों को मजबूत करती है।<sup>31</sup> जो जीवनदायी डांट को सुनता है वह बुद्धिमानों के बीच रहेगा।<sup>32</sup> जो अनुशासन की उपेक्षा करता है वह स्वयं से धृणा करता है, परंतु जो डांट सुनता है वह समझ प्राप्त

करता है।<sup>33</sup> प्रभु का भय ज्ञान के लिए शिक्षा है, और सम्मान से पहले विनम्रता आती है।

**16** मनुष्य के मन की योजनाएँ उसी की होती हैं, परन्तु जीभ का उत्तर यहोवा की ओर से होता है।<sup>2</sup> मनुष्य की सब चालें उसकी दृष्टि में शुद्ध होती है, परन्तु यहोवा मन के भावों को तौलता है।<sup>3</sup> अपने कर्मों को यहोवा पर छोड़ दें, तब तेरी योजनाएँ स्पर्ष रहेंगी।<sup>4</sup> यहोवा ने सब कुछ अपनी ही योजना के अनुसार बनाया है, यहाँ तक कि दुष्ट की विपत्ति के दिन के लिए धृणास्पद है, निश्चय ही वह दण्ड से नहीं बचेगा।<sup>5</sup> दया और सच्चाई से अधर्म का प्रायश्चित्त होता है, और यहोवा का भय मानने से मनुष्य बुराई से बचता है।<sup>6</sup> जब किसी मनुष्य की चालें यहोवा को भाती हैं, तब वह उसके शरुआओं को भी उसके साथ शान्ति में कर देता है।<sup>8</sup> धर्म के साथ थोड़ा होना अन्याय के साथ बड़ी आय से अच्छा है।<sup>9</sup> मनुष्य का मन अपनी चाल की योजना बनाता है, परन्तु यहोवा उसके कदमों का निर्देशन करता है।

<sup>10</sup> राजा के होंठों पर दिव्य निर्णय होता है; उसका मुँह न्याय में भूल नहीं करता।<sup>11</sup> सही तराजू और बाट यहोवा के हैं, थैली के सब वजन उसी के हैं।<sup>12</sup> राजाओं के लिए दृष्टा करना धृणास्पद है, क्योंकि सिंहासन धर्म पर स्थिर रहता है।<sup>13</sup> धर्मी होंठ राजाओं के लिए प्रसन्नता का कारण होते हैं, और जो ठीक बोलता है वह प्रिय होता है।<sup>14</sup> राजा का क्रोध मृत्यु के दूतों के समान होता है, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति उसे शांत कर देता है।<sup>15</sup> राजा के मुख के प्रकाश में जीवन होता है, और उसकी कृपा वसंत की वर्षा के बादल के समान होती है।

<sup>16</sup> सोना पाने से बुद्धि प्राप्त करना कितना अच्छा है! और समझ प्राप्त करना चाँदी से अधिक चुना जाना है।<sup>17</sup> सज्जनों का मार्ग बुराई से दूर रहना है; जो अपनी चाल पर ध्यान देता है वह अपने जीवन की रक्षा करता है।<sup>18</sup> धमण्ड विनाश से पहले होता है, और गर्वित आत्मा ठोकर खाने से पहले।<sup>19</sup> नग्न होकर दीनों के साथ रहना अच्छा है बजाय धमण्डियों के साथ लूट बाँटने के।<sup>20</sup> जो वचन पर ध्यान देता है वह भलाई पाता है, और जो यहोवा पर भरोसा करता है वह धन्य होता है।<sup>21</sup> जो हृदय में बुद्धिमान है उसे समझदार कहा जाएगा, और मीठे वचन से प्रभावशीलता बढ़ती है।<sup>22</sup> समझ उन लोगों के लिए जीवन का सोत है जिनके पास यह है, परन्तु मूर्खों का अनुशासन मूर्खता है।<sup>23</sup> बुद्धिमान का हृदय उसके मुँह को निर्देश देता है और उसके होंठों में प्रभावशीलता जोड़ता है।<sup>24</sup> सुखद वचन मधुकोष के

## नीतिवचन

समान होते हैं, आत्मा के लिए मधुर और हँडियों के लिए अरोग्यकारी।

<sup>25</sup> ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक लगता है, परन्तु उसका अंत मृत्यु का मार्ग है। <sup>26</sup> मजदूर की भूख उसके लिए काम करती है, क्योंकि उसकी भूख उसे आगे बढ़ाती है। <sup>27</sup> निष्फल व्यक्ति बुराई खोदता है, और उसकी वाणी जलती हुई आग के समान होती है। <sup>28</sup> विकृत व्यक्ति झगड़ा फैलाता है, और चुगलखोर घनिष्ठ मित्रों को अलग कर देता है। <sup>29</sup> हिंसक व्यक्ति अपने पड़ोसी को फुसलाता है और उसे ऐसे मार्ग में ले जाता है जो अच्छा नहीं है। <sup>30</sup> जो अपनी आँखें मिचकाता है वह विकृत बातों करने की खोजना बनाता है; जो अपने हौंठों को दबाता है वह बुराई को पूरा करता है। <sup>31</sup> सफेद बाल महिमा का मुकुट होते हैं; यह धर्म के मार्ग में पाया जाता है। <sup>32</sup> जो क्रोध में भीमा होता है वह वीर से अच्छा है, और जो अपनी आत्मा पर शासन करता है वह नार को जीतने वाले से बेहतर है। <sup>33</sup> चिट्ठी गोद में डाली जाती है, परन्तु उसका हर निर्णय यहोवा की ओर से होता है।

**17** सूखी रोटी और उसके साथ शांति उस घर से बेहतर है जो झगड़े से भरा हुआ है। <sup>2</sup> जो सेवक बुद्धिमानी से काम करता है, वह उस पुत्र पर शासन करेगा जो लज्जाजनक कार्य करता है, और भाइयों के बीच विरासत में भाग लेगा। <sup>3</sup> चांदी के लिए गलाने का बर्तन और सोने के लिए भूंठी होती है, परन्तु यहोवा हृदयों की परीक्षा करता है। <sup>4</sup> दुष्ट व्यक्ति बुरी बातों को सुनता है; झूटा व्यक्ति विनाशकारी जीभ पर ध्यान देता है। <sup>5</sup> जो गरीब का उपहास करता है, वह अपने सृष्टिकर्ता का अपमान करता है; जो विपत्ति पर हँसता है, वह दंडित नहीं होगा। <sup>6</sup> पोते-पोतियाँ वृद्धों का मुकुट हैं, और पुत्रों की महिमा उनके पिता हैं। <sup>7</sup> उत्तम वाणी मूर्ख के लिए उपयुक्त नहीं है, तो फिर झूटी बारें शासक के लिए कैसे हो सकती हैं? <sup>8</sup> धूस उसके मालिक की आँखों में आकर्षण है; जहाँ वी वह मुड़ता है, वह सफल होता है। <sup>9</sup> जो अपराध को छिपाता है, वह प्रेम की खोज करता है, परन्तु जो बात को दोहराता है, वह घनिष्ठ मित्रों को अलग कर देता है। <sup>10</sup> समझदार व्यक्ति पर डांत का गहरा प्रभाव पड़ता है बजाय मूर्ख पर सौ बार मारने के। <sup>11</sup> विद्रोही व्यक्ति केवल बुराई की खोज करता है; इसलिए उसके विरुद्ध एक निर्देशी दूत भेजा जाएगा। <sup>12</sup> व्यक्ति को अपने बच्चों से विचित भालू से मिलाना चाहिए, बजाय मूर्ख के उसकी मूर्खता में। <sup>13</sup> जो भलाई के बदले बुराई करता है, उसके घर से बुराई नहीं जाएगी। <sup>14</sup> झगड़े की शुरुआत पानी छोड़ने के समान है, इसलिए विवाद को उसके फूटने से पहले छोड़ दो। <sup>15</sup> जो दुष्ट

को निर्दोष ठहराता है, और जो धर्मी को दोषी ठहराता है, दोनों ही यहोवा के लिए धूम स्पद हैं। <sup>16</sup> मूर्ख के हाथ में बुद्धि खरीदने के लिए धन क्यों है, जबकि उसके पास समझ नहीं है? <sup>17</sup> मित्र हर समय प्रेम करता है, और भाई संकट के लिए जन्म लेता है। <sup>18</sup> जो व्यक्ति समझ की कमी रखता है, वह हाथ मिलाता है और अपने पड़ोसी के सामने जमानत देता है। <sup>19</sup> जो व्यक्ति बुराई से प्रेम करता है, वह झगड़े से प्रेम करता है; जो अपने द्वार को ऊँचा करता है, वह विनाश की खोज करता है। <sup>20</sup> जिसका हृदय टेढ़ा है, उसे कोई लालई नहीं मिलती, और जो विकृत जीभ वाला है, वह मुसीबत में पड़ता है। <sup>21</sup> जो मूर्ख को जन्म देता है, वह अपने दुःख के लिए करता है, और मूर्ख का पिता आनंदित नहीं होता। <sup>22</sup> प्रसन्न हृदय अच्छी औषधि है, परन्तु दूटी हुई आत्मा हँडियों को सुखा देती है। <sup>23</sup> दुष्ट व्यक्ति गोद से धूस लेता है न्याय के मार्गों को विकृत करने के लिए। <sup>24</sup> बुद्धि समझदार व्यक्ति की उपस्थिति में होती है, परन्तु मूर्ख की आँखें पृथी के छोर पर होती हैं। <sup>25</sup> मूर्ख पृथी अपने पिता के लिए दुःख है, और उसके लिए कड़वाहट है जिसने उसे जन्म दिया। <sup>26</sup> धर्मी को दंड देना भी अच्छा नहीं है, और न ही उनके सीधेपन के लिए कुलीनों को मारना। <sup>27</sup> जो अपने शब्दों को संयमित करता है, उसके पास ज्ञान है, और जो शांत आत्मा वाला है, वह समझदार व्यक्ति है। <sup>28</sup> यहाँ तक कि मूर्ख भी, जब वह चुप रहता है, बुद्धिमान माना जाता है; जब वह अपने हौंठ बंद करता है, तो उसे समझदार समझा जाता है।

**18** जो व्यक्ति अपने आप को अलग करता है, वह अपनी ही इच्छा को खोजता है; वह सब सही ज्ञान के विरुद्ध झगड़ा लेता है। <sup>2</sup> मूर्ख समझ में आनंद नहीं लेता, बल्कि केवल अपनी ही बुद्धि को प्रकट करने में। <sup>3</sup> जब एक दुष्ट व्यक्ति आता है, तो तिरस्कार भी आता है, और अपमान के साथ अपयश आता है। <sup>4</sup> व्यक्ति के मुख के शब्द गहरे जल के समान होते हैं;

ज्ञान का स्रोत एक उफनती हुई धारा है।

<sup>5</sup> दुष्ट के पक्ष में पक्षपात करना अच्छा नहीं है, और न ही न्याय में धर्मी को दबाना। <sup>6</sup> मूर्ख के हौंठ झगड़ा लाते हैं, और उसका मुख मार खाने के लिए आमंत्रण देता है। <sup>7</sup> मूर्ख का मुख उसका विनाश है, और उसके हौंठ उसकी आत्मा का फंडा है। <sup>8</sup> निंदा करने वाले के शब्द स्वादिष्ट दुकङ्गों के समान होते हैं,

और वे शरीर के अंदरूनी भागों में उत्तर जाते हैं।

## नीतिवचन

९ जो अपने काम में आलसी है वह उस व्यक्ति का भाई है जो नाश करता है।<sup>10</sup> प्रभु का नाम एक मजबूत गढ़ है, धर्मी उसमें दौड़ता है और सुरक्षित रहता है।<sup>11</sup> धनी व्यक्ति की संपत्ति उसकी मजबूत नगरी है, और उसकी अपनी कल्पना में एक ऊँची दीवार के समान।<sup>12</sup> विनाश से पहले व्यक्ति का हृदय घमंडी होता है, परन्तु नम्रता सम्मान से पहले होती है।<sup>13</sup> जो व्यक्ति सुनने से पहले उत्तर देता है, वह उसके लिए मूर्खता और अपमान है।<sup>14</sup> व्यक्ति की आत्मा उसकी बीमारी को सह सकती है, परन्तु टूटी हुई आत्मा को कौन सह सकता है? <sup>15</sup>

विवेकशील का मन ज्ञान प्राप्त करता है, और बुद्धिमान का कान ज्ञान की खोज करता है।<sup>16</sup> व्यक्ति का उपहार उसके लिए स्थान बनाता है और उसे महान लोगों के समाने लाता है।<sup>17</sup> जो पहले अपनी बात रखता है, वह सही लगता है, जब तक कि कोई और आकर उसकी जांच नहीं करता।<sup>18</sup> चिठ्ठी डालना झगड़ों का अंत करता है, और शक्तिशाली लोगों के बीच निर्णय करता है।<sup>19</sup> जो भाई अपमानित होता है, वह एक मजबूत नारी से भी कठिन होता है, और झगड़े दुर्गे के बारों के समान होते हैं।<sup>20</sup> व्यक्ति के मुख के फल से उसका पेट संतुष्ट होगा; वह अपने होठों के उत्पाद से संतुष्ट होगा।<sup>21</sup> जीवन और मृत्यु जीभ की शक्ति में है, और जो इसे प्यार करते हैं, वे इसके फल खाएंगे।<sup>22</sup> जो पती पाता है, वह एक अच्छी वस्तु पाता है और प्रभु से अनुग्रह प्राप्त करता है।<sup>23</sup> गरीब व्यक्ति दया की याचना करता है, परन्तु धनी व्यक्ति कठोरता से उत्तर देता है।<sup>24</sup> बहुत अधिक मित्र रखने वाला व्यक्ति नाश की ओर जाता है, परन्तु एक मित्र होता है जो भाई से भी अधिक निकट रहता है।

**19** जो निर्धन अपनी सिध्धाई में चलता है, वह उस मूर्ख से अच्छा है जो टेढ़ी बातें करता है।<sup>1</sup> ज्ञान के बिना इच्छा अच्छी नहीं होती, और जो अपने कदमों को जल्दी करता है, वह गलती करता है।<sup>2</sup> मनुष्य की मूर्खता उसकी राह को बिगाड़ देती है, और उसका हृदय यहोवा के विरुद्ध क्रोधित होता है।<sup>4</sup> धन बहुत से मित्र जोड़ता है, परन्तु निर्धन अपने मित्र से अलग हो जाता है।<sup>5</sup> झूठा साक्षी दण्ड से नहीं बचेगा, और जो झूठ बोलता है वह नहीं बच सकेगा।<sup>6</sup> बहुत से लोग उदार व्यक्ति की कृपा चाहते हैं, और जो उपहार देता है, हर व्यक्ति उसका मित्र होता है।<sup>7</sup> निर्धन के सभी भाई उससे घृणा करते हैं; तो उसके मित्र उससे निकटी अधिक दूरी बनाएंगे।

वह उनसे शब्दों के साथ पीछा करता है, पर वे चले जाते हैं।

<sup>8</sup> जो बुद्धि प्राप्त करता है वह अपनी आत्मा से प्रेम करता है; जो समझ को बनाए रखता है वह भलाई पाएगा।<sup>9</sup> झूठा साक्षी दण्ड से नहीं बचेगा, और जो झूठ बोलता है वह नष्ट हो जाएगा।<sup>10</sup> मूर्ख के लिए विलासिता उपयुक्त नहीं है; तो राजकुमारों पर दास का शासन करना कितना अधिक अनुचित है।<sup>11</sup> मनुष्य की समझ उसे कोध में धीमा बनाती है, और अपराध को अनदेखा करना उसकी महिमा है।<sup>12</sup> राजा का क्रोध सिंह की गर्जना के समान है, परन्तु उसकी कृपा धास पर ओस के समान है।<sup>13</sup> मूर्ख पुत्र अपने पिता का विनाश है, और पत्नी के झगड़े निरंतर टपकते रहते हैं।<sup>14</sup> घर और धन पिता से विरासत में मिलते हैं, परन्तु समझदार पत्नी यहोवा की ओर से होती है।<sup>15</sup> आलस्य मनुष्य को गहरी नींद में डाल देता है, और आलसी व्यक्ति भूख से पीड़ित होगा।<sup>16</sup> जो आज्ञा का पालन करता है वह अपनी आत्मा की रक्षा करता है, परन्तु जो आचरण में लापरवाह होता है वह मरेगा।<sup>17</sup> जो निर्धन पर दया करता है वह यहोवा को उधार देता है, और वह उसके अच्छे काम का प्रतिफल देगा।<sup>18</sup> अपने पुत्र को अनुशासित करो जब तक आशा है, और उसकी मृत्यु की इच्छा मत करो।<sup>19</sup> बहुत क्रोधी व्यक्ति को दण्ड भुगतना पड़ेगा; यदि तुम उसे बचा ऑगे, तो तुम्हें फिर से करना पड़ेगा।<sup>20</sup> सलाह सुनो और अनुशासन स्वीकार करो, ताकि तुम भविष्य में बुद्धिमान बनो।<sup>21</sup> मनुष्य के हृदय में बहुत सी योजनाएँ होती हैं, परन्तु यहोवा की योजना ही स्थिर रहती है।<sup>22</sup> मनुष्य में जो वांछनीय है वह उसकी दयालुता है, और झूठे से निर्धन होना बेहतर है।<sup>23</sup> यहोवा का भय जीवन की ओर ले जाता है, ताकि मनुष्य संतोषपूर्क सो सके, बुराई से अछूता।<sup>24</sup> आलसी व्यक्ति अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु उसे अपने मुँह तक भी नहीं लाता।<sup>25</sup> ठट्ठा करने वाले को मारो, और भोला चतुर हो जाएगा, परन्तु समझ वाले को डांटो, और वह ज्ञान प्राप्त करेगा।<sup>26</sup> जो अपने पिता पर आक्रमण करता है और अपनी माता को बाहर निकालता है वह लज्जाजनक और अपमानजनक पुत्र है।<sup>27</sup> अनुशासन सुनना बंद करो, मेरे पुत्र, और तुम ज्ञान के शब्दों से भटक जाओगे।<sup>28</sup> निर्धक साक्षी चायप का उपहास करता है, और दुष्ट का मुँह बुराई को निगल जाता है।<sup>29</sup> ठट्ठा करने वालों के लिए न्याय तैयार हैं, और मूर्खों की पीठ के लिए मार।

**20** दाखमधु ठट्ठा करने वाला है, मदिरा झगड़ालू है, और जो कोई इससे मतवाला होता है, वह बुद्धिमान नहीं है।<sup>2</sup> राजा का भय सिंह की गर्जना के समान है; जो उसे उकसाता है, वह अपने प्राण खो देता है।<sup>3</sup> झगड़े से बचना व्यक्ति के लिए सम्मान की बात है, परन्तु कोई भी मूर्ख झगड़ा करेगा।<sup>4</sup> आलसी व्यक्ति शरद ऋतु के बाद

## नीतिवचन

हल नहीं चलाता, इसलिए वह फसल के समय भीख मांगता है और उसके पास कुछ नहीं होता।<sup>5</sup> व्यक्ति के हृदय में योजना गहरे पानी के समान है, परंतु समझदार व्यक्ति उसे बाहर निकालता है।<sup>6</sup> बहुत से लोग अपनी निष्ठा की धोषणा करते हैं, परंतु एक विश्वसनीय व्यक्ति कौन पा सकता है?<sup>7</sup> जो धर्मी व्यक्ति अपनी सत्यनिष्ठा में चलता है—उसके बाद उसके पुत्र कितने धर्य हैं?<sup>8</sup> जो राजा न्याय के सिंहासन पर बैठता है वह अपनी आँखों से सब बुराई को तिर-बितर कर देता है।<sup>9</sup> कौन कह सकता है, “मैंने अपने हृदय को शुद्ध कर लिया है, मैं अपने पाप से शुद्ध हूँ?”<sup>10</sup> विभिन्न वजन और विभिन्न माप, दोनों ही यहोवा के लिए घृणास्पद हैं।<sup>11</sup> यह उसके कार्यों से है कि एक लड़का स्वर्य की अलग करता है, यदि उसका आचरण शुद्ध और सही है।<sup>12</sup> सुनने वाला कान और देखने वाली आँख, यहोवा ने दोनों को बनाया है।<sup>13</sup> नींद से प्रेम मत करो, नहीं तो तुम गरीब हो जाओगे; अपनी आँखें खोलो, और तुम भोजन से संतुष्ट हो जाओगे।<sup>14</sup> “बुरा, बुरा,” खरीदार कहता है, परंतु जब वह अपने रास्ते जाता है, तब वह डिंग मराता है।<sup>15</sup> यहाँ सोना है, और रत्नों की प्रचुरता है; परंतु ज्ञान के होठ एक अनमोल वस्तु है।<sup>16</sup> उसका वरत ले लो जब वह किसी अजनबी के लिए जपान देता है; और विदेशियों के लिए, उसे गिरवी रखो।<sup>17</sup> झूट से प्राप्त रोटी व्यक्ति को मीठी लगती है, परंतु बाद में उसका मुँह कंकड़ से भर जाएगा।<sup>18</sup> परामर्श द्वारा योजनाएँ तैयार करो, और समझदारी से मार्गदर्शन प्राप्त कर युद्ध करो।<sup>19</sup> जो व्यक्ति चुगली करता है वह रहस्य प्रकट करता है; इसलिए गपशप करने वाले के साथ संगति मत करो।<sup>20</sup> जो अपने पिता या अपनी माता को शाप देता है, उसका दीपक अंधकार के समय बुझ जाएगा।<sup>21</sup> जो विरासत जीवन में बहुत जल्दी प्राप्त होती है वह अंत में आशीषित नहीं होगी।<sup>22</sup> मत कहो, “मैं बुराई का प्रतिकार करूँगा”; यहोवा की प्रतीक्षा करो, और वह तुम्हें बचाएगा।<sup>23</sup> विभिन्न वजन यहोवा के लिए घृणास्पद हैं, और खींचेबाज तराजू अच्छा नहीं है।<sup>24</sup> व्यक्ति के कदम यहोवा द्वारा निर्धारित होते हैं, किर कोई अपने मार्ग को कैसे समझ सकता है?<sup>25</sup> यह एक जात है कि व्यक्ति जल्दबाजी में कहे, “यह पवित्र है!” और प्रतिज्ञाओं के बाद, पूछताछ करो।<sup>26</sup> एक बुद्धिमान राजा दुष्टों को तिर-बितर करता है, और उनके ऊपर श्रेसिंग पहिया चलाता है।<sup>27</sup> व्यक्ति की आत्मा यहोवा का दीपक है, जो उसके अस्तित्व के सभी आंतरिक भागों की खोज करता है।<sup>28</sup> निष्ठा और सत्य राजा की रक्षा करते हैं, और वह अपनी सिंहासन को धर्म से बनाए रखता है।<sup>29</sup> युवकों की महिमा उनकी शक्ति है, और वृद्धों का सम्मान उनके सफेद बाल हैं।<sup>30</sup>

घाव देने वाली पटियाँ बुराई को दूर करती हैं, और जो प्रहर भीतर तक पहुँचते हैं।

**21** राजा का हृदय यहोवा के हाथ में जल की नालियों के समान है; वह इसे जहाँ चाहे मोड़ देता है।<sup>2</sup> हर व्यक्ति की चाल उसकी अपनी दृष्टि में सही होती है, परंतु यहोवा हृदयों की जाँच करता है।<sup>3</sup> धर्म और न्याय करना यहोवा को बलिदान से अधिक प्रिय है।<sup>4</sup> अभिमानी आँखें और गर्वित हृदय—दुष्टों का दीपक—पाप है।<sup>5</sup> परिश्रमी की योजनाएँ निश्चय ही लाभ की ओर ले जाती हैं, परंतु जो कोई जल्दी में होता है वह दरिद्रता में पड़ता है।<sup>6</sup> झूठी जीभ से धन का अर्जन क्षणिक वाष्प है, मृत्यु का पीछा करना है।<sup>7</sup> दुष्टों की हिंसा उन्हें खींच ले जाएगी, क्योंकि वे न्याय के साथ कार्य करने से इनकार करते हैं।<sup>8</sup> दोषी व्यक्ति का मार्ग टेढ़ा होता है, परंतु जो शुद्ध है, उसका आचरण सीधा होता है।<sup>9</sup> छत के कोने में रहना अच्छा है बजाय एक झगड़ालू स्त्री के साथ घर साझा करने के।<sup>10</sup> दुष्ट की आत्मा बुराई की इच्छा करती है; उसका पड़ोसी उसकी दृष्टि में कोई कृपा नहीं पाता।<sup>11</sup> जब ठट्ठा करने वाला दंडित होता है, तो भोला व्यक्ति बुद्धिमान बनता है; परंतु जब बुद्धिमान को शिक्षा दी जाती है, तो वह ज्ञान प्राप्त करता है।<sup>12</sup> धर्मी व्यक्ति दुष्टों के घर पर विचार करता है, वह दुष्टों को नाश करता है।<sup>13</sup> जो व्यक्ति गरीब की पुकार को अनुसना करता है वह स्वर्य पुकारेगा, और उसे उत्तर नहीं मिलेगा।<sup>14</sup> गुप्त में दिया गया उपहार क्रोध को शांत करता है, और छाती में दी गई रिश्तत, प्रबल क्रोध को।<sup>15</sup> न्याय का पालन करना धर्मियों के लिए आनंद है, परंतु जो अन्याय करते हैं उनके लिए आतंक है।<sup>16</sup> जो व्यक्ति समझ के मार्ग से भटक जाता है वह मुक्तों की सभा में विश्राम करेगा।<sup>17</sup> जो व्यक्ति सुख से प्रेम करता है वह गरीब हो जाएगा; जो व्यक्ति दाखमधू और तेल से प्रेम करता है वह धनी नहीं होगा।<sup>18</sup> दुष्ट धर्मियों के लिए फिरौती है, और विश्वासघाती सीधे के स्थान पर।<sup>19</sup> मरुभूमि में रहना अच्छा है बजाय एक झगड़ालू और विवादास्पद स्त्री के साथ।<sup>20</sup> बुद्धिमान के घर में बहुमूल्य खजाना और तेल है, परंतु मूर्ख व्यक्ति उसे निगल जाता है।<sup>21</sup> जो व्यक्ति धर्म और निष्ठा का अनुसरण करता है वह जीवन, धर्म और सम्मान पाता है।<sup>22</sup> बुद्धिमान व्यक्ति शक्तिशाली के नगर पर चढ़ाई करता है और उस गढ़ को गिरा देता है जिसमें वे विश्वास करते हैं।<sup>23</sup> जो व्यक्ति अपने मुँह और अपनी जीभ की रक्षा करता है वह अपनी आत्मा को संकटों से बचाता है।<sup>24</sup> अभिमानी, घमंडी, “ठट्ठा करने वाला” उसके नाम हैं, जो अहंकार से कार्य करता है।<sup>25</sup> आलसी की इच्छा उसे मृत्यु की ओर ले जाती है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इनकार

## नीतिवचन

करते हैं, <sup>26</sup> सारा दिन वह लालसा करता रहता है, परन्तु धर्मी देता है और पीछे नहीं हटता। <sup>27</sup> दुष्ट का बलिदान घृणास्पद है, और कितना अधिक जब वह इसे बुरी मंशा से लाता है! <sup>28</sup> झूठा साक्षी नष्ट हो जाएगा, परन्तु जो व्यक्ति सुनता है वह सदा बोलेगा। <sup>29</sup> दुष्ट व्यक्ति निर्भक चेहरा दिखाता है, परन्तु जो सीधा है, वह अपने मार्ग को सुनिश्चित करता है। <sup>30</sup> कोई भी बुद्धि, कोई भी समझ, और कोई भी योजना यहोवा के विरुद्ध नहीं है। <sup>31</sup> घोड़ा युद्ध के दिन के लिए तैयार किया जाता है, परन्तु विजय यहोवा की होती है।

**22** अच्छा नाम बड़ी संपत्ति से अधिक चाहने योग्य है; अनुग्रह चाँदी और सोने से बेहतर है। <sup>2</sup> धनी और गरीब का एक सामाय बंधन है, प्रभु उन सबका निर्माता है। <sup>3</sup> बुद्धिमान व्यक्ति बुराई को देखता है और छिप जाता है, परन्तु भले लोग आगे बढ़ते हैं और दंडित होते हैं। <sup>4</sup> विनम्रता और प्रभु का भय का प्रतिफल धन, सम्मान, और जीवन है। <sup>5</sup> कट्टि और फंदे विकृत के मार्ग में हैं, जो स्वर्य की रक्षा करता है वह उनसे दूर रहेगा। <sup>6</sup> बच्चे को उसी मार्ग में प्रशिक्षित करो जिसमें उसे जाना चाहिए, वह बुढ़ा होने पर भी उसे नहीं छोड़ेगा। <sup>7</sup> धनी गरीब पर शासन करता है, और उधार लेने वाला उधार देने वाले का दास बन जाता है। <sup>8</sup> जो अन्याय बोता है वह विपत्ति काटेगा, और उसके क्रोध की छड़ी नष्ट हो जाएगी। <sup>9</sup> जो उदार है वह आशीर्वादित होगा, क्योंकि वह गरीबों को अपनी रोटी में से कुछ देता है। <sup>10</sup> ठंडबाज को बाहर निकालो, और विवाद भी बाहर जाएगा; यहाँ तक कि झगड़ा और अपमान भी समाप्त हो जाएगा। <sup>11</sup> जो हृदय की पवित्रता से प्रेम करता है और जिसकी वाणी कृपालु है, राजा उसका मित्र होता है। <sup>12</sup> प्रभु की अँखें ज्ञान की रक्षा करती हैं, परंतु वह विश्वासघाती व्यक्ति के शब्दों को उलट देता है। <sup>13</sup> आत्मी कहता है, "बाहर एक शेर है, मैं सड़कों में मारा जाऊँगा!" <sup>14</sup> व्यभिचारणी स्त्री का मुँह गहरा गड्ढा है, जो प्रभु के द्वारा शापित है वह उसमें गिरेगा। <sup>15</sup> मूर्खता बच्चे के हृदय में बंधी रहती है, अनुशासन की छड़ी उसे उससे दूर करेगी। <sup>16</sup> जो गरीबों को दबाता है अपने लिए अधिक पाने के लिए, या धनी को देता है, वह केवल गरीबी में आएगा।

<sup>17</sup> अपना कान लगाओ और बुद्धिमानों के शब्द सुनो, और अपने हृदय को मेरे ज्ञान पर लगाओ; <sup>18</sup> क्योंकि यह सुखद होगा यदि तुम उहाँ अपने भीतर रखो, ताकि वे तुम्हारे होठों पर तैयार रहें। <sup>19</sup> ताकि तुम्हारा विश्वास प्रभु में हो, मैंने आज तुम्हें सिखाया है, वास्तव में। <sup>20</sup> क्या मैंने तुम्हें उत्तम बातें नहीं लिखी हैं सलाह और ज्ञान की, <sup>21</sup>

ताकि तुम सत्य के शब्दों की निश्चितता जान सको, ताकि तुम उसे सही उत्तर दे सको जिसने तुम्हें भेजा है?

<sup>22</sup> गरीब को मत लूटो क्योंकि वह गरीब है, और द्वार पर जरूरतमंद को मत कुचलो; <sup>23</sup> क्योंकि प्रभु उनका मामला लड़ेगा और जो उहाँ लूटते हैं उनका जीवन ले लेगा।

<sup>24</sup> क्रोधी व्यक्ति के साथ मित्रता मत करो, या उग्र ख्वभाव वाले व्यक्ति के साथ मत जाओ, <sup>25</sup> अन्यथा तुम उसके मार्ग सीखोगे और अपने लिए एक फंदा पाओगे।

<sup>26</sup> उनमें मत रहो जो प्रतिज्ञा देते हैं, उनमें जो क्रण के लिए जमानत देते हैं। <sup>27</sup> यदि तुम्हारे पास चुकाने के लिए कुछ नहीं है, तो तुम्हारा बिस्तर तुम्हारे नीचे से क्यों लिया जाए?

<sup>28</sup> प्राचीन सीमा को मत हटाओ जो तुम्हारे पिताओं ने स्थापित की है।

<sup>29</sup> क्या तुमने किसी व्यक्ति को उसके काम में कुशल देखा है? वह राजाओं के सामने खड़ा होगा; वह अस्पष्ट लोगों के सामने नहीं खड़ा होगा।

**23** जब तुम किसी शासक के साथ भोजन करने बैठो, तो ध्यान से देखो कि तुम्हारे सामने क्या है, <sup>2</sup> और अपने गले पर छुरी रखो यदि तुम बहुत भूख वाले व्यक्ति हो। <sup>3</sup> उसके स्वादिष्ट व्यंजनों की इच्छा मत करो, क्योंकि यह धोखे का भोजन है।

<sup>4</sup> धन अर्जित करने के लिए स्वर्य को धकाओ मत; इस पर ध्यान देना बंद करो। <sup>5</sup> जब तुम अपनी अँखें उस पर लगाते हो, तो वह चला जाता है। क्योंकि धन निश्चित रूप से अपने लिए पंख बना लेता है जैसे एक गरुड़ आकाश की ओर उड़ता है।

<sup>6</sup> स्वार्थी व्यक्ति की रोटी मत खाओ, और न ही उसके स्वादिष्ट व्यंजनों की इच्छा करो; <sup>7</sup> क्योंकि जैसा वह अपने भीतर सोचता है, वैसा ही वह है। "खाओ और पियो!" वह तुमसे कहता है, परंतु उसका हृदय तुम्हारे साथ नहीं है।

<sup>8</sup> तुम उस ग्रास को उगल दोगे जो तुमने खाया है और तुम्हारे मधुर शब्द व्यर्थ हो जाएंगे।

<sup>9</sup> मूर्ख के कानों में मत बोलो, क्योंकि वह तुम्हारे शब्दों की बुद्धि का तिरस्कार करेगा।

## नीतिवचन

<sup>10</sup> प्राचीन सीमा को मत हटाओ या अनाथों के खेतों में  
मत जाओ; <sup>11</sup> क्योंकि उनका उद्धारकर्ता शक्तिशाली है,  
वह तुम्हारे विरुद्ध उनका मामला लड़ेगा।

<sup>12</sup> अपने हृदय को अनुशासन में लगाओ और अपने  
कानों को ज्ञान के शब्दों में।

<sup>13</sup> बच्चे से अनुशासन को मत रोको; यदि तुम उसे छड़ी  
से मारोगे, तो वह नहीं मरेगा। <sup>14</sup> तुम उसे छड़ी से मारोगे  
और उसकी आमा को अधोलोक से बचाओगे।

<sup>15</sup> मेरे पुत्र, यदि तुम्हारा हृदय बुद्धिमान है, तो मेरा हृदय  
भी आनंदित होगा; <sup>16</sup> और मेरी अंतरात्मा प्रसन्न होगी  
जब तुम्हारे हाँठ सही बात बोलेंगे।

<sup>17</sup> तुम्हारा हृदय पापियों से ईर्ष्या न करे, परंतु सदैव प्रभु  
के भय में रहो। <sup>18</sup> निश्चित रूप से एक भविष्य है, और  
तुम्हारी आशा नहीं कठेगी।

<sup>19</sup> सुनो, मेरे पुत्र, और बुद्धिमान बनो, और अपने हृदय  
को मार्ग में निर्देशित करो। <sup>20</sup> मद्यपान करने वालों के  
साथ मत रहो, या मास के भोगियों के साथ; <sup>21</sup> क्योंकि  
मद्यपान करने वाला और भोगी गरीबी में आएंगे, और  
आलस्य व्यक्ति को विठड़ों में लपेट देगा।

<sup>22</sup> अपने पिता की सुनो, जिसने तुम्हें जन्म दिया, और  
अपनी माँ का तिरस्कार मत करो जब वह वृद्ध हो। <sup>23</sup>  
सत्य खरीदो, और उसे मत बेचो, बुद्धि, शिक्षा, और  
समझ प्राप्त करो। <sup>24</sup> धर्मी का पिता अत्यधिक आनंदित  
होगा, और जो बुद्धिमान पुत्र को जन्म देता है वह उसमें  
प्रसन्न होगा। <sup>25</sup> तुम्हारा पिता और तुम्हारी माँ आनंदित  
हों, और वह प्रसन्न हो जो तुम्हें जन्म देती है।

<sup>26</sup> मुझे अपना हृदय दो, मेरे पुत्र, और तुम्हारी आँखें मेरे  
मार्ग में आनंदित हों। <sup>27</sup> क्योंकि एक वेश्या गहरा गङ्गा  
है, और एक पराई स्त्री संकीर्ण कुआँ है। <sup>28</sup> निश्चित रूप  
से वह एक डाकू की तरह घात लगाती है, और  
मानवजाति में विश्वासघातियों को बढ़ाती है।

<sup>29</sup> किसके पास दुःख है? किसके पास शोक है? किसके  
पास झगड़े हैं? किसके पास शिकायतें हैं? किसके पास  
बिना कारण के घाव हैं? किसके पास लाल आँखें हैं? <sup>30</sup>  
जो लोग मद्य पर देर तक रहते हैं, जो मिथ्रित मद्य का  
स्वाद लेने जाते हैं। <sup>31</sup> मद्य को मत देखो जब वह लाल  
हो, जब वह प्याते में चमकता है, जब वह आसानी से

नीचे जाता है, <sup>32</sup> अंत में वह साँप की तरह काटता है,  
और विषधर की तरह डंक मारता है। <sup>33</sup> तुम्हारी आँखें  
अजीब चीजें देखेंगी, और तुम्हारा मन विकृत बातें  
बोलेगा। <sup>34</sup> और तुम समुद्र के बीच में लेटने वाले के  
समान होगे, या मस्तूल के शीर्ष पर लेटने वाले के  
समान। <sup>35</sup> “उन्होंने मुझे मारा, पर मैं बीमार नहीं हुआ;  
उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझे पता नहीं चला। मैं कब  
जागूँगा? मैं एक और पेय की खोज करूँगा।”

**24** दुष्ट लोगों से ईर्ष्या मत करो, और उनके साथ  
रहने की इच्छा मत करो; <sup>2</sup> क्योंकि उनके दिल हिंसा की  
योजना बनाते हैं, और उनके हाँठ मुसीबत की बातें  
करते हैं।

<sup>3</sup> बुद्धि से एक घर बनता है, और समझ से वह स्थापित  
होता है, <sup>4</sup> और ज्ञान से कमरे भरे जाते हैं सभी कीमती  
और सुखद संपत्ति से।

<sup>5</sup> एक बुद्धिमान व्यक्ति शक्तिशाली होता है, और ज्ञान  
का व्यक्ति शक्ति बढ़ाता है। <sup>6</sup> क्योंकि बुद्धिमान  
मार्गदर्शन से तुम युद्ध करोगे, और सलाहकारों की  
बहुतायत में विजय होती है।

<sup>7</sup> बुद्धि मूर्ख के लिए बहुत ऊँची है, वह द्वार पर अपना  
मुँह नहीं खोता।

<sup>8</sup> जो बुराई करने की योजना बनाता है, तोग उसे  
चालबाज़ कहेंगे। <sup>9</sup> मूर्खता की योजना पाप है, और ठट्ठा  
करने वाला लोगों के लिए घृणास्पद है।

<sup>10</sup> यदि तुम संकट के दिन साहस की कमी दिखाते हो,  
तो तुम्हारी शक्ति कमज़ोर है। <sup>11</sup> उनको बचाओ जो मृत्यु  
की ओर ले जाए जा रहे हैं, और जो वध के लिए  
लड़छड़ा रहे हैं, उन्हें रोक लो। <sup>12</sup> यदि तुम कहो, “देखो,  
हमें यह नहीं पता था,” क्या वह नहीं समझेगा जो दिलों  
को तौलता है? और क्या वह नहीं जानता जो तुम्हारी  
आमा की देखभाल करता है? और क्या वह व्यक्ति को  
उसके काम के अनुसार प्रतिफल नहीं देगा?

<sup>13</sup> मेरे पुत्र, शहद खाओ, क्योंकि यह अच्छा है, हाँ, छत्ते  
का शहद तुम्हारे स्वाद के लिए मीठा है; <sup>14</sup> जान लो कि  
तुम्हारी आमा के लिए भी बुद्धि वैसी ही है; यदि तुम इसे  
पाते हो, तो तुम्हारा भविष्य होगा, और तुम्हारी आशा  
नहीं कठेगी।

## नीतिवचन

<sup>१५</sup> हे दुष्ट व्यक्ति, धर्मी के घर के विरुद्ध घात मत लगाओ; उसके विश्राम स्थान को नष्ट मत करो;<sup>१६</sup> क्योंकि धर्मी व्यक्ति सात बार गिरता है और फिर उठ खड़ा होता है, परंतु दुष्ट आपदा के समय ठोकर खाता है।

<sup>१७</sup> जब तुम्हारा शत्रु गिरे, तो अनन्दित मत हो, और जब वह ठोकर खाए, तो तुम्हारा हृदय प्रसन्न न हो;<sup>१८</sup> अन्यथा यहोवा देखेंगा और अप्रसन्न होगा, और अपनी क्रोध उसे से हटा लेगा।

<sup>१९</sup> दुष्टों के कारण चिंता मत करो या दुष्टों से ईर्ष्या मत करो;<sup>२०</sup> क्योंकि दुष्ट व्यक्ति के लिए काई भविष्य नहीं होगा; दुष्टों का दीप बुझ जाएगा।

<sup>२१</sup> मेरे पुत्र, यहोवा और राजा का भय मानो; विभिन्न विचारों वाले लोगों के साथ सम्मिलित मत हो;<sup>२२</sup> क्योंकि उनकी विपत्ति अचानक उठेगी, और कौन जानता है कि दोनों से कैसी बर्बादी आ सकती है?

<sup>२३</sup> ये भी बुद्धिमानों के कहने हैं: न्याय में पक्षपात दिखाना अच्छा नहीं है।<sup>२४</sup> जो दुष्ट से कहता है, “तुम धर्मी हो,” लोग उसे शाप देंगे, राष्ट्र उसे तिरस्कार करेंगे;<sup>२५</sup> परंतु जो दुष्ट को डाँटें हैं, उनके लिए प्रसन्नता होगी, और उन पर एक अच्छी आशीर्वाद आएगी।<sup>२६</sup> वह होंठों की चूमता है जो सही उत्तर देता है।<sup>२७</sup> अपना काम बाहर तैयार करो, और खेत में अपने लिए इसे तैयार करो; फिर उसके बाद अपना घर बनाओ।<sup>२८</sup> अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना कारण गवाह मत बनो, और अपने होंठों से धोखा मत दो।<sup>२९</sup> मत कहो, “मैं उसे वही करूँगा जैसा उसने मुझे किया है”; मैं व्यक्ति को उसके काम के अनुसार प्रतिफल द्दूँगा।”

<sup>३०</sup> मैं एक आलसी के खेत के पास से गुजरा, और समझ की कमी वाले व्यक्ति की दाख की बारी के पास से,<sup>३१</sup> और देखो, यह पूरी तरह से खरपतवार से उग आया था; उसकी सतह बिच्छू बूटी से ढकी थी, और उसकी पथर की दीवार गिर गई थी।<sup>३२</sup> जब मैंने देखा, तो मैंने इस पर विचार किया; मैंने देखा, और शिक्षा प्राप्त की:<sup>३३</sup> “थोड़ी नींद, थोड़ी झपकी, थोड़ा हाथों की विश्राम के लिए मोड़ना,”<sup>३४</sup> तब तुम्हारी गरीबी एक यात्री की तरह आएगी, और तुम्हारी आवश्यकता एक सशस्त्र व्यक्ति की तरह।

**२५** ये भी सुलैमान के नीतिवचन हैं, जिन्हें यहूदा के राजा हिजकियाह के लोगों ने लिखा।<sup>२</sup> परमेश्वर की

महिमा किसी बात को छिपाने में है, परन्तु राजाओं की महिमा उसे खोज निकालने में है।<sup>३</sup> जैसे आकाश की ऊँचाई और पृथ्वी की गहराई, वैसे ही राजाओं के हृदय अगम्य हैं।<sup>४</sup> चाँदी से मैल को हटा दो, और सुनार के लिए सामग्री तैयार हो जाएगी;<sup>५</sup> राजा के सामने से दुष्ट को हटा दो, और उसका सिंहासन धर्म में स्थिर होगा।<sup>६</sup> राजा के सामने धमंड न करो, और महान लोगों के स्थान पर खड़े न हो;<sup>७</sup> क्योंकि यह कहना बेहतर है, “यहाँ ऊपर आओ”; बल्याय इसके कि तुम्हें उस राजकुमार के सामने नीचे रखा जाए जिसे तुम्हारी अँखों ने देखा है।

<sup>८</sup> जल्दी से अपने मामले को तर्क करने के लिए बाहर मत जाओ; अन्यथा, अंत में तुम क्या करोगे, जब तुम्हारा पड़ोसी तुम्हें अपमानित करेगा?<sup>९</sup> अपने पड़ोसी के साथ अपने मामले को तर्क करो, और दूसरे के रहस्य को प्रकट मत करो,<sup>१०</sup> ताकि जो इसे सुने वह तुम्हें लजित न करे, और तुम्हारे बारे में बुरी रिपोर्ट न हो।<sup>११</sup> जैसे चाँदी के सेंटीम्स में सोने के सेब उसी प्रकार उचित समय पर बोला गया शब्द होता है।<sup>१२</sup> जैसे सोने की अगूठी और उत्तम सोने के आभूषण उसी प्रकार एक बुद्धिमान सुधारक सुनने वाले कान के लिए होता है।<sup>१३</sup> जैसे फसल के समय में बर्फ की ठंडक वैसे ही एक विश्वासयोग्य संदेशवाहक अपने भेजने वालों के लिए होता है, क्योंकि वह अपने स्वामियों की आत्मा को ताजा करता है।<sup>१४</sup> जैसे बिना बारिश के बादल और हवा वैसे ही वह व्यक्ति होता है जो झट्ठे उपहारों का धमंड करता है।<sup>१५</sup> धैर्य के माध्यम से एक शासक को मनाया जा सकता है, और एक कोमल जीभ हड्डी को तोड़ देती है।<sup>१६</sup> क्या तुम्हें शहद मिला है? केवल उतना ही स्थाओं जितना तुम्हें चाहिए, ताकि तुम इसे अधिक मात्रा में लेकर उगाल न दो।<sup>१७</sup> तुम्हारा पैर अपने पड़ोसी के घर में कम ही रहे, अन्यथा वह तुमसे ऊब जाएगा और तुमसे घृणा करेगा।

<sup>१८</sup> जैसे एक गदा, तलवार, और तीखा तीर वैसे ही वह व्यक्ति होता है जो अपने पड़ोसी के खिलाफ झूटी गवाही देता है।<sup>१९</sup> जैसे एक खराब ढाँचे और अस्थिर पैर वैसे ही विश्वासघाती व्यक्ति पर संकट के समय में भरोसा होता है।<sup>२०</sup> जैसे ठंडे दिन में वस्त्र उतारना, या सूड़े पर सिरका डालना, वैसे ही वह होता है जो दुखी हृदय के लिए गीत गाता है।<sup>२१</sup> यदि तुम्हारा शत्रु भूखा हो, तो उसे खाने के लिए भीजन दो; और यदि वह प्यासा हो, तो उसे पीने के लिए पानी दो;<sup>२२</sup> क्योंकि तुम उसके सिर पर जलते अंगारों का ढेर लगा ओगे, और यहोवा तुम्हें प्रतिफल देगा।<sup>२३</sup> उत्तर की हवा वर्षा लाती है, और चुगलखोर जीभ, क्रोधित चेहरा।<sup>२४</sup> छत के कोने में रहना

## नीतिवचन

बेहतर है बजाय इसके कि एक विवादास्पद स्त्री के साथ घर साझा करना।<sup>25</sup> जैसे थकी हुई आमा के लिए ठंडा पानी, वैसे ही दूर देश से अच्छी खबर होती है।<sup>26</sup> जैसे रौदी हुई धारा और प्रदूषित कुआँ वैसे ही वह धर्म व्यक्ति होता है जो दुष्टों के सामने झुक जाता है।<sup>27</sup> अधिक शहद खाना अच्छा नहीं है, और न ही अपनी महिमा की खोज करना महिमा है।<sup>28</sup> जैसे एक शहर जो तोड़ा गया है और बिना दीवारों के है वैसे ही वह व्यक्ति होता है जिसका अपनी आमा पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

**26** जैसे गर्भ में बर्फ और फसल के समय में वर्षा, वैसे ही मूर्ख के लिए समान उपयुक्त नहीं है।<sup>2</sup> जैसे चिड़िया उड़ती है, जैसे निगल उड़ता है, वैसे ही बिना कारण की शाप स्थिर नहीं होती।<sup>3</sup> घोड़े के लिए चाबुक, गधे के लिए लगाम, और मूर्खों की पीठ के लिए डंडा होता है।<sup>4</sup> मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर मत दो, अन्यथा तुम भी उसके समान हो जाओगे।<sup>5</sup> मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दो, ताकि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न बने।<sup>6</sup> जो मूर्ख के हाथ से संदेश भेजता है, वह अपने ही पैर काटता है और हिंसा पीता है।<sup>7</sup> जैसे लंगड़े के लिए बेकार पैर, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन।<sup>8</sup> जैसे कोई पथर को गुलेल में बांधता है, वैसे ही मूर्ख को समान देना होता है।<sup>9</sup> जैसे भारी शराबी के हाथ में कँटा चुभता है, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन।<sup>10</sup> जैसे एक तीरदांज जो सभी को घायल करता है, वैसे ही वह जो मूर्खों या राहगीरों को काम पर रखता है।<sup>11</sup> जैसे कुत्ता अपनी उल्ली की ओर लौटता है, वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दोहराता है।<sup>12</sup> क्या तुमने देखा है कि कोई व्यक्ति अपनी दृष्टि में बुद्धिमान है? उसके लिए मूर्ख से भी अधिक आशा है।

<sup>13</sup> आलसी कहता है, “सङ्कट पर शेर है! जनता के चौक में शेर है!”<sup>14</sup> जैसे दरवाजा अपनी कुँडियों पर धूमता है, वैसे ही आलसी अपने बिस्तर पर।<sup>15</sup> आलसी अपनी हाथ को थाली में डालता है; वह उसे फिर से अपने मुँह तक लाने से थक जाता है।<sup>16</sup> आलसी अपनी दृष्टि में सात विवेकपूर्ण उत्तर देने वालों से भी अधिक बुद्धिमान है।

<sup>17</sup> जैसे कोई कुत्ते के कान पकड़ता है, वैसे ही वह राहगीर जो अपने से संबंधित नहीं झगड़े में पड़ता है।<sup>18</sup> जैसे एक पागल जो जलते तीर और मृत्यु चलाता है,<sup>19</sup> वैसे ही वह व्यक्ति जो अपने पड़ोसी की धोखा देता है, और कहता है, “क्या मैं मजाक नहीं कर रहा था?”<sup>20</sup> जहाँ लकड़ी नहीं होती, वहाँ आग बुझ जाती है, और

जहाँ चुगलखोर नहीं होता, वहाँ झगड़ा शांत हो जाता है।<sup>21</sup> जैसे गर्भ अंगरों के लिए कोयला और आग के लिए लकड़ी, वैसे ही झगड़ालू व्यक्ति झगड़ा भड़काता है।<sup>22</sup> चुगलखोर के शब्द स्वादिष्ट टुकड़ों जैसे होते हैं, और वे शरीर के अंदरूनी भागों में जाते हैं।<sup>23</sup> जैसे मिट्टी के बर्तन पर चाँदी की परत वैसे ही जलते होंठ और दृष्टि हृदय।<sup>24</sup> जो धृणा करता है वह अपने होंठों से उसे छुपाता है, परंतु वह अपने हृदय में छल रखता है।<sup>25</sup> जब वह कृपा से बोलता है, तो उस पर विश्वास मत करो, क्योंकि उसके हृदय में सात धृणाएँ हैं।<sup>26</sup> यद्यपि उसकी धृणा छल से ढकी होती है, उसकी दुष्टा सभा में प्रकट होगी।<sup>27</sup> जो गङ्गा खोदता है, वह उसमें रिंगा, और जो पत्थर लुढ़कता है, वह उस पर लौट आएगा।<sup>28</sup> झूठी जीभ उन लोगों से धृणा करती है जिन्हें वह कुचलती है, और आपलूस मुँह विनाश का कारण बनता है।

**27** कल के विषय में घमंड न कर, क्योंकि तू नहीं जानता कि एक दिन क्या लाएगा।<sup>2</sup> तेरी प्रशंसा काई और करे, न कि तेरा अपना मुँह, कोई पराया, न कि तेरे अपने होंठ।<sup>3</sup> पत्थर भारी है और रेत भी भारी है, परन्तु मूर्ख का उकासान इन दोनों से भी भारी है।<sup>4</sup> क्रोध भयंकर है और गुस्सा बाढ़ के समान है, परन्तु जलन के सामने कौन ठहर सकता है?<sup>5</sup> खुली फटकार अच्छी है उस प्रेम से जो छिपा हुआ है।<sup>6</sup> मित्र के घाव विश्वासयोग्य होते हैं, परन्तु शत्रु के चुंबन धोखेबाज होते हैं।<sup>7</sup> संतुष्ट व्यक्ति शहद को तुच्छ जानता है, परन्तु भूखे व्यक्ति के लिए कोई भी कड़वी वस्तु मीठी होती है।<sup>8</sup> जैसे एक पक्षी अपने धोंसों से भटकता है, वैसे ही एक व्यक्ति जो अपने घर से भटकता है।<sup>9</sup> तेल और इत्र हृदय को प्रसन्न करते हैं, और मित्र की मिठास उसकी सलाह से आती है।<sup>10</sup> अपने मित्र या अपने पिता के मित्रों को न छोड़, और अपने विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जा; निकट का पढ़ोरी अच्छा है दूर के भाईसे।

<sup>11</sup> मेरे पुत्र, बुद्धिमान बन और मेरे हृदय को प्रसन्न कर, ताकि मैं उसका उत्तर दे सकूँ जो मुझे ताना देता है।<sup>12</sup> समझदार व्यक्ति बुराई को देखता है और छिप जाता है, भोले लोग आगे बढ़ते हैं और दंड पाते हैं।<sup>13</sup> जब वह किसी पराए के लिए जमानत देता है, तो उसका वस्त्र ले लो; और विदेशी स्त्री के लिए, उसे बंधक रखो।<sup>14</sup> जो व्यक्ति अपने मित्र को ऊँची आवाज में सुबह-सुबह आशीर्वद देता है, वह उसके लिए शाप माना जाएगा।<sup>15</sup> लगातार टपकती हुई बारिश के दिन और झगड़ालू स्त्री एक समान हैं,<sup>16</sup> जो उसे रोकता है वह हवा की रोकता है, और अपने दाहिने हाथ से तेल पकड़ता है।

## नीतिवचन

<sup>17</sup> लोहा लोहे को तेज करता है, वैसे ही एक व्यक्ति दूसरे को तेज करता है। <sup>18</sup> जो अंजीर के पेड़ की देखभाल करता है वह उसका फल खाएगा, और जो अपने स्वामी की देखभाल करता है वह सम्मानित होगा। <sup>19</sup> जैसे पानी में चेहरा चेहरे को प्रतिबिंबित करता है, वैसे ही व्यक्ति का हृदय व्यक्ति को प्रतिबिंबित करता है। <sup>20</sup> शियोल और अबादेन कभी संतुष्ट नहीं होते, न ही मनुष्य की अँखें कभी संतुष्ट होती हैं। <sup>21</sup> चाँदी के लिए कूसिबल और सोने के लिए भट्ठी होती है, और व्यक्ति उसकी प्रशंसा से प्रशंसा जाता है। <sup>22</sup> यदि तू मूर्ख की ओरुखी में मूसल के साथ कूटे, तो भी उसकी मूर्खता उससे नहीं जाएगी।

<sup>23</sup> अपनी झुंड की स्थिति को भली-भौंति जान, और अपनी भेड़ों पर ध्यान दें; <sup>24</sup> क्योंकि धन सदा नहीं रहता, और न ही मुकुट पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है। <sup>25</sup> जब घास गायब हो जाती है, नई वृद्धि दिखाई देती है, और पहाड़ों की जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी की जाती हैं, <sup>26</sup> तो मैमने तेरं वस्त के लिए होंगे, और बकरियाँ खेत की कीमत लाएंगी, <sup>27</sup> और तेरे भोजन के लिए पर्याप्त बकरियों का दूध होगा, तेरे घराने के भोजन के लिए, और तेरे सेवकों के भरण-पोषण के लिए।

**28** दुष्ट बिना किसी के पीछा करने पर भी भाग जाते हैं, परन्तु धर्मी सिंह के समान निर्भीक होते हैं। <sup>2</sup> देश के अपाराध के कारण उसके प्रधान बहुत होते हैं, परन्तु समझ और ज्ञान वाला व्यक्ति उसे स्थिर रखता है। <sup>3</sup> गरीब व्यक्ति जो असहायों पर अस्याचार करता है वह उस तेज़ बारिश के समान है जो अन्न नहीं छोड़ती। <sup>4</sup> जो लोग व्यवस्था को तायग देते हैं वे दुष्टों की प्रशंसा करते हैं, परन्तु जो व्यवस्था का पालन करते हैं वे उनसे संघर्ष करते हैं। <sup>5</sup> दुष्ट लोग न्याय को नहीं समझते, परन्तु जो यहावा को खोजते हैं वे सब कुछ समझते हैं। <sup>6</sup> वह गरीब व्यक्ति जो अपनी सत्यता में चलता है उस व्यक्ति से बेहतर है जो टेढ़ा है, भले ही वह धनी हो। <sup>7</sup> जो व्यवस्था का पालन करता है वह विकेशील पुत्र है, परन्तु जो भोगियों का साथी है वह अपने पिता को अप्यानित करता है। <sup>8</sup> जो व्याज और सूद से अपनी संपत्ति बढ़ाता है वह उसे गरीबों पर कृपा करने वाले के लिए इकट्ठा करता है। <sup>9</sup> जो व्यवस्था को सुनने से अपना कान फेर लेता है, उसकी प्रार्थना भी घृणास्पद है। <sup>10</sup> जो धर्मियों को बुरे मार्ग में भटकाता है वह अपने ही गड्ढे में गिरेगा, परन्तु निर्दोष लोग अच्छा प्राप्त करेंगे।

<sup>11</sup> धनी व्यक्ति अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होता है, परन्तु गरीब जो समझ रखता है वह उसे देख लेता है। <sup>12</sup> जब

धर्मी विजयी होते हैं, तो बड़ी महिमा होती है, परन्तु जब दुष्ट उठते हैं, लोग छिप जाते हैं। <sup>13</sup> जो अपने अपराधों को छुपाता है वह सफल नहीं होगा, परन्तु जो उहें स्वीकार करता और त्यागता है वह दया पाएगा। <sup>14</sup> धन्य है वह व्यक्ति जो सदा भयभीत रहता है, परन्तु जो अपने हृदय को कठोर करता है वह विपत्ति में पड़ेगा। <sup>15</sup> जैसे गरजता हुआ सिंह और दौड़ता हुआ भालू गरीब लोगों पर दुष्ट शासक होता है। <sup>16</sup> जो नेता समझ में कमी रखता है वह बड़ा अत्याचारी होता है, परन्तु जो अन्यायपूर्ण लाभ से घृणा करता है वह अपने दिन बढ़ाएगा। <sup>17</sup> जो मानव रक्त के दोष से बोझिल होता है वह मृत्यु तक भगोड़ा रहेगा; कोई उसका समर्थन न करे।

<sup>18</sup> जो निर्दोषता से चलता है वह बचाया जाएगा, परन्तु जो टेढ़ा है वह अचानक गिर जाएगा। <sup>19</sup> जो अपनी भूमि पर काम करता है उसके पास बहुत अन्न होगा, परन्तु जो वर्यां चीजों का पीछा करता है उसके पास बहुत गरीबी होगी। <sup>20</sup> विश्वासी व्यक्ति आशीर्वदों से भरपूर होगा, परन्तु जो धनी होने की जल्दी करता है वह दिलत नहीं होगा। <sup>21</sup> पक्षपात दिखाना अच्छा नहीं है, क्योंकि रोटी के एक टुकड़े के लिए व्यक्ति गलत करेगा। <sup>22</sup> बुरी दृष्टि वाला व्यक्ति धन की जल्दी करता है और नहीं जानता कि गरीबी उस पर आ जाएगी। <sup>23</sup> जो व्यक्ति को डांटता है वह बाद में अधिक कृपा पाएगा उसकी तुलना में जो जीभ से चापतूरी करता है। <sup>24</sup> जो अपने पिता या अपनी माता को लुटाता है और कहता है, "यह पाप नहीं है," वह नाश करने वाले का साथी है। <sup>25</sup> अहंकारी व्यक्ति झगड़ा उत्पन्न करता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा करता है वह सफल होगा। <sup>26</sup> जो अपने हृदय पर भरोसा करता है वह मूर्ख है, परन्तु जो बुद्धिमानी से चलता है वह बचाया जाएगा। <sup>27</sup> जो गरीबों को देता है उसे कभी कमी नहीं होगी, परन्तु जो अपनी आखे बंद करता है उस पर कई शाप होंगे। <sup>28</sup> जब दुष्ट उठते हैं, लोग छिप जाते हैं, परन्तु जब वे नष्ट होते हैं, धर्मी बढ़ते हैं।

**29** जो व्यक्ति बार-बार डांटा जाता है और फिर भी हठी बना रहता है, वह अचानक बिना उपचार के टूट जाएगा। <sup>2</sup> जब धर्मी बढ़ते हैं, तो लोग आनंदित होते हैं, परन्तु जब कोई दुष्ट शासन करता है, लोग कराहते हैं। <sup>3</sup> जो व्यक्ति ज्ञान से प्रेम करता है, वह अपने पिता को प्रसन्न करता है, परन्तु जो वेश्याओं के साथ संगति करता है, वह अपनी सम्पत्ति नष्ट करता है। <sup>4</sup> एक राजा न्याय द्वारा भूमि को स्थिरता प्रदान करता है, परन्तु जो इश्वर व्यक्ति अपने पड़ोसी की चापलूसी करता है, वह उसके कदमों

## नीतिवचन

के लिए जाल बिछा रहा है।<sup>6</sup> दुष्ट व्यक्ति अपने अपराध द्वारा फंस जाता है, परन्तु धर्मी गाता और आनन्दित होता है।<sup>7</sup> धर्मी व्यक्ति गरीबों के अधिकारों को जानता है; दुष्ट ऐसे ज्ञान को नहीं समझता।<sup>8</sup> ठट्ठा करने वाले नगर को आग में झोक देते हैं, परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को दूर करते हैं।<sup>9</sup> जब एक बुद्धिमान व्यक्ति का मूर्ख व्यक्ति के साथ विवाद होता है, तो वहाँ हल्ला और उपहास होता है, परन्तु कोई समाधान नहीं होता।<sup>10</sup> रक्षपात करने वाले निर्दोष से धृणा करते हैं, परन्तु सीधे लोग उसके जीवन की चिंता करते हैं।<sup>11</sup> मूर्ख अपने क्रोध को पूरी तरह से प्रकट करता है, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति उसे रोकता है।

<sup>12</sup> यदि कोई शासक झूठ पर ध्यान देता है, तो उसके सभी मंत्री दुष्ट बन जाते हैं।<sup>13</sup> गरीब और अत्याचारी में यह समानता है: प्रभु दोनों की जाँचों को प्रकाश देता है।

<sup>14</sup> यदि कोई राजा गरीबों का सत्य से न्याय करता है, तो उसका सिंहासन सदा के लिए स्थिर रहेगा।

<sup>15</sup> छड़ी और डांट ज्ञान देती है, परन्तु जो बच्चा अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है, वह अपनी माँ को लजित करता है।<sup>16</sup> जब दुष्ट बढ़ते हैं, तो अपराध बढ़ता है; परन्तु धर्मी उनके पतन को देखें।<sup>17</sup> अपने पुत्र को सुधारो, और वह तुम्हें आराम देगा; वह तुम्हारी आत्मा को भी प्रसन्न करेगा।<sup>18</sup> जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग अनियंत्रित हो जाते हैं, परन्तु जो व्यवस्था का पालन करता है, वह सुखी होता है।<sup>19</sup> एक दास केवल शब्दों से नहीं सुधारा जाएगा; क्योंकि वह समझता है, फिर भी उत्तर नहीं देगा।<sup>20</sup> क्या तुमने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो अपने शब्दों में जल्दबाजी करता है? उसके लिए मूर्ख से भी अधिक आशा है।<sup>21</sup> जो अपने दास को बचपन से लाड़ करता है, वह अंत में उसे पुत्र पाएगा।

<sup>22</sup> क्रोधित व्यक्ति झगड़ा उत्पन्न करता है, और उग्र रुद्धाव वाला व्यक्ति अपराध में बढ़ता है।<sup>23</sup> व्यक्ति का अहंकार उसे नीचे लाएगा, परन्तु विनम्र आत्मा समान प्राप्त करेगी।<sup>24</sup> जो चोर के साथ साझेदारी करता है, वह अपने ही जीवन से धृणा करता है; वह शपथ को सुनता है, परन्तु कुछ नहीं कहता।<sup>25</sup> मनुष्य का भय जाल लाता है, परन्तु जो प्रभु पर विश्वास करता है, वह सुरक्षित रहेगा।<sup>26</sup> बहुत से लोग शासक की कृपा चाहते हैं, परन्तु व्यक्ति के लिए न्याय प्रभु से आता है।<sup>27</sup> अन्यायी व्यक्ति धर्मियों के लिए धृणास्पद है, और जो मार्ग में सीधा है, वह दुष्टों के लिए धृणास्पद है।

**30** याकेह के पुत्र आग्रू के वचन, उद्घोषणा। वह व्यक्ति इतिएल, इतिएल और उकाल से कहता है: <sup>2</sup> मैं किसी भी व्यक्ति से अधिक मूर्ख हूँ और मेरे पास मनुष्य

की समझ नहीं है,<sup>3</sup> न तो मैंने ज्ञान सीखा है, न ही मेरे पास पवित्र का ज्ञान है।<sup>4</sup> कौन स्वर्ग में चढ़ा और उत्तरा है? किसने अपनी मुट्ठी में पवन को इकट्ठा किया है? किसने पृथ्वी के सभी छोरों को स्यापित किया है? उसका नाम क्या है, पा उसके पुत्र का नाम क्या है? निश्चित रूप से आप जानते हैं!<sup>5</sup> परमेश्वर का हर एक वचन शुद्ध है; वह उन लोगों के लिए ढाल है जो उसमें शरण लेते हैं।<sup>6</sup> उसके वचनों में कुछ भी न जोड़ें, अन्यथा वह आपको डॉटेंगा, और आप झूठे साबित होंगे।

<sup>7</sup> मैंने आपसे दो बातें मांगी हैं, मेरे मरने से पहले उन्हें मुझसे न छीनें: <sup>8</sup> छल और झूठ को मुझसे दूर रखें, मुझे न गरीबी दें, न धन, मुझे मेरे हिस्से का भोजन दें, <sup>9</sup> ताकि मैं भरपूर होकर आपको नकार न दूं और कहूँ, “प्रभु कौन है?” और ताकि मैं गरीब होकर चोरी न करूँ, और अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र न करूँ।<sup>10</sup> किसी दास की उसके स्वामी से निन्दा न करें, अन्यथा वह आपको शाप देगा और आप दोषी ठहरेंगे।

<sup>11</sup> एक पीढ़ी है जो अपने पिता को शाप देती है और अपनी माता को आशीर्वाद नहीं देती।<sup>12</sup> एक पीढ़ी है जो अपनी ही दृष्टि में शुद्ध है, फिर भी अपनी गंदंगी से नहीं धूली है।<sup>13</sup> एक पीढ़ी है—कैसी घमंडी है उनकी आँखें! और उनके पलकें अंडंकार में उठी हुई हैं।<sup>14</sup> एक पीढ़ी है जिनके दांत तलवारों जैसे हैं और उनके जबड़े के दांत चाकुओं जैसे हैं, गरीबों को पृथ्वी से निगलने के लिए और मनुष्यों में से जरूरतमंदों को।

<sup>15</sup> जोंक की दो बेटियाँ हैं: “दे,” “दे!” तीन बीजें हैं जो संतुष्ट नहीं होती, चार जो नहीं कहतीं, “पर्याप्तः”:<sup>16</sup> शिओल, बांझ गर्भ, पानी से कभी संतुष्ट न होने वाली पृथ्वी, और आग जो कभी नहीं कहतीं, “पर्याप्ता!”<sup>17</sup> वह आँख जो पिता का मजाक उड़ाती है और माता की आज्ञाकारिता का तिरस्कार करती है, घाटी के कौतै उसे निकाल लेंगे, और युवा गिर्द उसे खा जाएंगे।

<sup>18</sup> तीन चीजें हैं जो मेरे लिए बहुत अद्भुत हैं, चार जो मैं नहीं समझता:<sup>19</sup> आकाश में उकाब का मार्ग, चट्टान पर साँप का मार्ग, समुद्र के बीच में जहाज का मार्ग, और एक पुरुष का मार्ग एक युवती के साथ।<sup>20</sup> यह व्यभिचारिणी स्त्री का मार्ग है: वह खाती है और अपना मुँह पोछती है, और कहती है, “मैंने कुछ गलत नहीं किया।”

## नीतिवचन

<sup>21</sup> तीन चीजों के नीचे पृथ्वी कांपती है, और चार के नीचे, वह सहन नहीं कर सकती: <sup>22</sup> एक दास के नीचे जब वह राजा बनता है, और एक मूर्ख के नीचे जब वह भोजन से संतुष्ट होता है, <sup>23</sup> एक अप्रेमी स्त्री के नीचे जब उसे पति मिलता है, और एक दासी के नीचे जब वह अपनी स्वामिनी को हटाती है।

<sup>24</sup> चार चीजें हैं जो पृथ्वी पर छोटी हैं, लेकिन वे अत्यधिक बुद्धिमान हैं: <sup>25</sup> चीटियाँ एक मजबूत लोग नहीं हैं, फिर भी वे गर्भियों में अपना भोजन तैयार करती हैं, <sup>26</sup> शैल-खगरोश एक शक्तिशाली लोग नहीं हैं, फिर भी वे चट्ठानों में अपने घर बनाते हैं; <sup>27</sup> टिड़ियों का कोई राजा नहीं होता, फिर भी वे सभी पंक्तियों में बाहर निकलते हैं, <sup>28</sup> छिपकली जिसे आप हाथों से पकड़ सकते हैं, फिर भी वह राजाओं के महलों में होती है।

<sup>29</sup> तीन चीजें हैं जो अपने चलने में भव्य हैं, चार जो अपने चलने में भव्य हैं: <sup>30</sup> सिंह, जो पशुओं में शक्तिशाली है और किसी भी चीज़ से पीछे नहीं हटता, <sup>31</sup> घंट में चलने वाला सुर्या, नर बकरी भी, और एक राजा जब उसकी सेना उसके साथ होती है।

<sup>32</sup> यदि आपने स्वयं को ऊँचा उठाने में मूर्खता की है या यदि आपने बुराई की योजना बनाई है, तो अपने मुँह पर हाथ रखें। <sup>33</sup> क्योंकि दूध को मथने से मक्खन बनता है, और नाक को दबाने से खून निकलता है; तो क्रोध को दबाने से झगड़ा उत्पन्न होता है।

**31** राजा लेमूएल के वचन, वह शिक्षा जो उसकी माता ने उसे दी: <sup>2</sup> क्या, मेरे पुत्र? और क्या, मेरे गर्भ का पुत्र? और क्या, मेरे प्रतिज्ञा का पुत्र? <sup>3</sup> अपनी शक्ति स्त्रियों को न दो, और न अपने मार्ग उन चीजों को जो राजाओं को नाश करती हैं। <sup>4</sup> यह राजाओं के लिए नहीं है लेमूएल, यह राजाओं के लिए नहीं है कि वे दाखमधु पिण्ये, और न शासकों के लिए कि वे मदिरा की इच्छा करें, <sup>5</sup> ताकि वे पीकर आदेशों को न भूलें, और सब अभावग्रस्तों के अधिकारों को विकृत न करें। <sup>6</sup> मदिरा उसे दो जो नाश होने वाला है, और दाखमधु उसे जिसका जीवन कड़वा है। <sup>7</sup> उसे पीने दो और अपनी दरिद्रता को भूलने दो, और अपनी विपत्ति को फिर कभी याद न करने दो।

<sup>8</sup> उन लोगों के लिए अपना मुँह खोलो जो बोल नहीं सकते, सभी दुर्भायशाली लोगों के अधिकारों के लिए। <sup>9</sup> अपना मुँह खोलो, न्यायपूर्वक निर्णय करो, और गरीबों और जरूरतमंदों के अधिकारों की रक्षा करो।

<sup>10</sup> एक उत्तम पत्नी, उसे कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य रत्नों से भी अधिक है। <sup>11</sup> उसके पति का हृदय उस पर विश्वास करता है, और उसे लाभ की कोई कमी नहीं होगी। <sup>12</sup> वह उसके लिए भलाई करती है और बुराई नहीं अपने जीवन के सभी दिनों में। <sup>13</sup> वह ऊन और लिनन ढूँढ़ती है, और अपने हाथों से आनंदपूर्वक काम करती है। <sup>14</sup> वह व्यापारी जहाजों के समान है, वह दूर से अपना भोजन लाती है। <sup>15</sup> वह रात रहते उठ जाती है और अपने घराने को भोजन देती है, और अपनी दासियों को हिस्सा। <sup>16</sup> वह एक खेत का विचार करती है और उसे खेरीदती है; अपने कमाई से वह एक दाख की बारी लगाती है। <sup>17</sup> वह अपनी कमरों को शक्ति से घेरती है और अपने भुजाओं को बलवान बनाती है। <sup>18</sup> वह समझती है कि उसका लाभ अच्छा है, उसका दीपक रात में नहीं बुझता। <sup>19</sup> वह अपनी हाथों को तकरी पर फैलाती है, और उसकी हथेलियाँ चर्चा पकड़ती हैं। <sup>20</sup> वह गरीबों के लिए अपना हाथ बढ़ाती है, और जरूरतमंदों के लिए अपने हाथ फैलाती है। <sup>21</sup> वह अपने घराने के लिए हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घराने के सभी लोग लाल वस्त्रों में लिपटे हैं। <sup>22</sup> वह अपने लिए आवरण बनाती है; उसके वस्त्र उत्तम लिनन और बैंगनी हैं। <sup>23</sup> उसका पति फाटकों में जाना जाता है, जब वह देश के बुजु़गों के बीच बैठता है। <sup>24</sup> वह लिनन वस्त्र बनाती है और उन्हें बेचती है, और व्यापारियों को कमरबंद देती है। <sup>25</sup> शक्ति और गरिमा उसके वस्त्र हैं, और वह भविष्य पर मुखुराती है। <sup>26</sup> वह बुद्धि में अपना मुँह खोलती है, और उसकी जीभ पर दया की शिक्षा है। <sup>27</sup> वह अपने घराने की गतिविधियों पर ध्यान देती है, और आलस्य की रोटी नहीं खाती। <sup>28</sup> उसके बच्चे उठकर उसे आशीर्वाद देते हैं; उसका पति भी, और वह उसकी प्रशंसा करता है, कहता है। <sup>29</sup> “कई बेटियों ने श्रेष्ठता प्राप्त की है, परंतु तुम सब से श्रेष्ठ हो।” <sup>30</sup> मोहकता धोखा है और सुदरता व्यर्थ है, परंतु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी। <sup>31</sup> उसे उसके हाथों का फल दो, और उसके कार्य उसे फाटकों में प्रशंसा दें।

## सभोपदेशक

**1** येरूशलैम में राजा, दाऊद के पुत्र, उपदेशक के वचन।<sup>2</sup> "व्यर्थ की व्यर्थता," उपदेशक कहता है, "व्यर्थ की व्यर्थता! सब कुछ व्यर्थ है।"<sup>3</sup> मनुष्य को उसके सारे परिश्रम से क्या लाभ है जो वह सूर्य के नीचे करता है?<sup>4</sup> एक पीढ़ी जाती है और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सदा बनी रहती है<sup>5</sup> सूर्य उगता है और सूर्य अस्त होता है; और अपनी जाग ही ओर दौड़ता है, फिर से उगता है।<sup>6</sup> दक्षिण की ओर बहती हुई, फिर उत्तर की ओर मुड़ती हुई, हवा धूमती रहती है; और अपनी प्रक्रिमा में हवा लौटती है।<sup>7</sup> सभी नदियाँ समुद्र में बहती हैं, वहीं वे फिर से बहती हैं।<sup>8</sup> सभी बातें थकाने वाली हैं; कोई भी इसे बता नहीं सकता। अँख देखने से संतुष्ट नहीं होती, और कान सुनने से नहीं भरता।<sup>9</sup> जो हुआ है वही होगा, और जो किया गया है वही किया जाएगा। इसलिए सूर्य के नीचे कुछ भी नया नहीं है।<sup>10</sup> क्या ऐसा कुछ है जिसके बारे में कोई कहे, "देखो, यह नया है?" यह पहले से ही युगों से अस्तित्व में है जो हमारे पहले थे।<sup>11</sup> पहले की बातों की कोई स्मृति नहीं है, और जो बाद में होंगी उनकी भी कोई स्मृति नहीं होगी, उनके बीच जो बाद में आएंगे।

<sup>12</sup> मैं, उपदेशक, येरूशलैम में इसाएल पर राजा रहा हूँ।<sup>13</sup> और मैंने अपने मन को लगाया कि बुद्धि से खोजूँ और जार्जूँ उन सब बातों को जो आकाश के नीचे की जाती हैं। यह एक दुखदायी कार्य है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के पुत्रों को दिया है कि वे इससे पीड़ित हों।<sup>14</sup> मैंने उन सभी कार्यों को देखा है जो सूर्य के नीचे किए गए हैं, और देखो, सब कुछ व्यर्थ है और हवा को पकड़ने जैसा है।<sup>15</sup> जो टेढ़ा है उसे सीधा नहीं किया जा सकता, और जो कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।<sup>16</sup> मैंने अपने मन से कहा, "देखो, मैंने बुद्धि को बढ़ाया और बढ़ाया है उन सभी से अधिक जो मुझसे पहले येरूशलैम में थे; और मेरे मन ने बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत देखी है।"<sup>17</sup> और मैंने अपने मन को लगाया कि बुद्धि को जानूँ और पागलपन और मूर्खता को जानूँ मैंने समझा कि यह भी हवा को पकड़ने जैसा है।<sup>18</sup> क्योंकि बहुत अधिक बुद्धि में बहुत अधिक दुःख है; और ज्ञान बढ़ाने से पीड़ा भी बढ़ती है।

**2** मैंने अपने मन से कहा, "आओ अब, मैं तुम्हें सुख से परखूँगा। तो अपने आप का आनंद लो।" और देखो, यह भी व्यर्थ था।<sup>2</sup> मैंने हँसी के बारे में कहा, "यह पागलपन है," और सुख के बारे में, "यह क्या प्राप्त करता है?"<sup>3</sup> मैंने अपने मन से यह जानने की काशिश की कि कैसे मैं अपने शरीर को शराब से ताजा करूँ— जबकि मेरा मन

मुझे बुद्धिमानी से मार्गदर्शन कर रहा था— और कैसे मूर्खता को पकड़ूँ, जब तक कि मैं यह न देख सकूँ कि मनुष्यों के पुत्रों के लिए उनके जीवन के कुछ वर्षों के दौरान आकाश के नीचे क्या अच्छा है।<sup>4</sup> मैंने अपने कार्यों को बढ़ाया; मैंने अपने लिए घर बनाए, मैंने अपने लिए दाख की बारियाँ लगाई,<sup>5</sup> मैंने अपने लिए बाग और उद्यान बनाए, और उनमें हर प्रकार के फलदार वृक्ष लगाए;<sup>6</sup> मैंने अपने लिए जलाशय बनाए जिनसे बढ़ते हुए वर्क्षों के जंगल को सींच सकूँ।<sup>7</sup> मैंने चुरुष और महिला दास खरीदे, और मेरे घर में दास पैदा हुए। मेरे पास येरूशलैम में मुझसे पहले के सभी लोगों से बड़े झुंड और मवेशी थे।<sup>8</sup> मैंने अपने लिए चार्दी और सोना भी इकट्ठा किया, और राजाओं और प्रांतों का खजाना; मैंने अपने लिए पुरुष और महिला गायक प्रदान किए और मनुष्यों के सुख—कई उपत्यकियाँ।<sup>9</sup> तब मैं महान बन गया और येरूशलैम में मुझसे पहले के सभी लोगों से अधिक बढ़ गया। मेरी बुद्धि भी मेरे साथ रही।<sup>10</sup> मेरी आँखों ने जो कुछ चाहा, मैंने उन्हें नहीं रोका। मैंने अपने हृदय को किसी भी सुख से नहीं रोका, क्योंकि मेरा हृदय मेरे सभी श्रम के कारण प्रसन्न था, और यह मेरे सभी श्रम का प्रतिफल था।<sup>11</sup> तो मैंने अपने हाथों से किए गए सभी कार्यों पर विचार किया और जिस श्रम को मैंने किया था, और देखो, सब कुछ व्यर्थ और हवा के पीछे छोड़ना था, और सूर्य के नीचे कोई लाभ नहीं था।

<sup>12</sup> तो मैंने बुद्धि, पागलपन, और मूर्खता पर विचार करने के लिए मुड़ा; क्योंकि राजा के बाद आने वाला व्यक्ति क्या करेगा, सिवाय इसके कि जो पहले से किया जा चुका है?<sup>13</sup> और मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से श्रेष्ठ है जैसे प्रकाश अंधकार से श्रेष्ठ है।<sup>14</sup> बुद्धिमान व्यक्ति की आँखें उसके सिर में होती हैं, पर मूर्ख अंधकार में चलता है। और फिर भी मैं जानता हूँ कि दोनों के लिए एक ही भाष्य होता है।<sup>15</sup> तब मैंने अपने मन से कहा, "जैसा मूर्ख का भाष्य है, वैसा ही मेरा भी होगा।" तो मैंने अत्यधिक बुद्धिमान क्यों बना?" तो मैंने अपने मन से कहा, "यह भी व्यर्थ है!"<sup>16</sup> क्योंकि बुद्धिमान का कोई स्थायी स्मरण नहीं है, न ही मूर्ख का, क्योंकि आने वाले दिनों में सब कुछ जल्द ही भूला दिया जाएगा। और कैसे बुद्धिमान और मूर्ख समान रूप से मरते हैं!<sup>17</sup> तो मैंने जीवन से घृणा की, क्योंकि सूर्य के नीचे किए गए कार्य मेरे लिए दुखदायक थे; क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और हवा के पीछे छोड़ना है।

<sup>18</sup> तो मैंने अपने सभी श्रम के फल से धृणा की जिसके लिए मैंने सूर्य के नीचे श्रम किया था, क्योंकि मुझे इसे उस व्यक्ति के लिए छोड़ना होगा जो मेरे बाद आएगा।

## सभोपदेशक

<sup>19</sup> और कौन जानता है कि वह बुद्धिमान होगा या मूर्ख? फिर भी वह मेरे सभी श्रम के फल पर अधिकार करेगा जिसके लिए मैंने सूर्य के नीचे बुद्धिमानी से कार्य किया है। यह भी व्यर्थ है। <sup>20</sup> तो मैंने मुड़कर अपने हृदय को निराश के लिए छोड़ दिया उन सभी श्रम के लिए जिसके लिए मैंने सूर्य के नीचे श्रम किया था। <sup>21</sup> जब कोई व्यक्ति बुद्धि, ज्ञान, और कौशल से श्रम करता है, तब वह अपनी विरासत उसे देता है जिसने इसके लिए श्रम नहीं किया। यह भी व्यर्थ है और एक बड़ा बुराई है। <sup>22</sup> क्योंकि एक व्यक्ति को उसके सभी श्रम में क्या मिलता है और उसके प्रयास में जिसके लिए वह सूर्य के नीचे श्रम करता है? <sup>23</sup> क्योंकि उसके सभी दिनों में उसका कार्य पीड़ादायक और बोझिल होता है; यहाँ तक कि रात में उसका मन विश्राम नहीं करता। यह भी व्यर्थ है।

<sup>24</sup> एक व्यक्ति के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए और पिए और अपने श्रम का आनंद ले। यह भी मैंने देखा है, कि यह परमेश्वर के हाथ से है। <sup>25</sup> क्योंकि उसके बिना कौन खा सकता है और कौन आनंद ले सकता है? <sup>26</sup> क्योंकि जो व्यक्ति उसकी दृष्टि में अच्छा है उसे उसने बुद्धि, ज्ञान, और आनंद दिया है, जबकि पापी को उसने इकट्ठा करने और संग्रह करने का कार्य दिया है ताकि वह उसे दे जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है। यह भी व्यर्थ है और हवा के पीछे डौड़ा है।

**3** हर एक चीज के लिए एक नियत समय होता है। और आकाश के नीचे हर कार्य के लिए एक समय होता है—<sup>2</sup> जन्म लेने का समय और मरने का समय; रोपने का समय और जो रोपा गया है उसे उखाड़ने का समय। <sup>3</sup> मरने का समय और चंगा करने का समय; तोड़ने का समय और बनाने का समय। <sup>4</sup> रोने का समय और हँसने का समय; शोक करने का समय और नाचने का समय। <sup>5</sup> पथर फेंकने का समय और पथर बटोरने का समय; गले लगाने का समय और गले लगाने से बचने का समय। <sup>6</sup> खोजने का समय और खोया मानकर छोड़ देने का समय; रखने का समय और फेंक देने का समय। <sup>7</sup> फाढ़ने का समय और सिने का समय; चुप रहने का समय और बोलने का समय। <sup>8</sup> प्रेम करने का समय और घृणा करने का समय; युद्ध का समय और शांति का समय।

<sup>9</sup> काम करने वाले के लिए क्या लाभ है उसमें जिसमें वह श्रम करता है? <sup>10</sup> मैंने वह कार्य देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के पुत्रों को दिया है जिससे वे अपने आप को व्यस्त रहें। <sup>11</sup> उसने हर चीज़ को उसके समय में सुंदर

बनाया है। उसने उनके हृदय में अनंतता भी रखी है, फिर भी कोई भी उस कार्य को नहीं जान सकता जो परमेश्वर ने किया है आरंभ से अंत तक। <sup>12</sup> मैं जानता हूँ कि उनके लिए इससे अच्छा कुछ नहीं है कि वे अपने जीवनकाल में आनंदित हों और भला करें; <sup>13</sup> इसके अलावा, हर व्यक्ति जो खाता और पीता है अपने श्रम में अच्छा देखता है— यह परमेश्वर का उपहार है।

<sup>14</sup> मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा रहेगा; उसमें कुछ जोड़ने के लिए नहीं है और उसमें से कुछ घटाने के लिए नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा काम किया है, ताकि लोग उससे डरें। <sup>15</sup> जो है, वह पहले ही हो चुका है, और जो होगा, वह पहले ही हो चुका है; और परमेश्वर उस चीज़ की खोज करता है जो बीत चुकी है।

<sup>16</sup> इसके अलावा, मैंने सूर्य के नीचे देखा है कि न्याय के स्थान पर दुष्टा है, और धर्म के स्थान पर दुष्टा है। <sup>17</sup> मैंने अपने आप से कहा, “परमेश्वर धर्मी और दुष्ट का न्याय करेगा,” क्योंकि हर कार्य और हर काम के लिए एक समय है। <sup>18</sup> मैंने मनुष्यों के पुत्रों के बारे में अपने आप से कहा, “परमेश्वर उन्हें परख रहा है ताकि वे देखें कि वे जानवर हैं, वे अपने आप में।” <sup>19</sup> क्योंकि मनुष्यों के पुत्रों का भाग्य और जानवरों का भाग्य समान है। जैसे एक मरता है, वैसे ही दूसरा मरता है; वास्तव में, उनमें सभी का एक ही श्वास है, इसलिए मनुष्य का जानवर पर कोई लाभ नहीं है, क्योंकि सब व्यर्थ है। <sup>20</sup> सभी एक ही स्थान पर जाते हैं। सभी धूल से आए हैं और सभी धूल में लौट जाते हैं। <sup>21</sup> कौन जानता है कि मनुष्यों के पुत्रों की आत्मा ऊपर की ओर उठती है और जानवर की आत्मा पृथ्वी की ओर नीचे जाती है? <sup>22</sup> इसलिए मैंने देखा कि इससे बेहतर कुछ नहीं है कि व्यक्ति अपने कार्यों में आनंदित हो, क्योंकि वही उसका भाग्य है। क्योंकि कौन उसे यह देखने के लिए लाएगा कि उसके बाद क्या होगा?

**4** तब मैंने फिर से उन सभी अत्याचारों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जा रहे थे। और देखो, मैंने उत्तीर्णितों के आँसू देखे और पाया कि उनके पास उन्हें सांत्वना देने वाला कोई नहीं था; और उनके उत्तीर्णिकों की ओर शक्ति थी, पर उनके पास उन्हें सांत्वना देने वाला कोई नहीं था। <sup>2</sup> इसलिए मैंने उन मृतकों को बधाई दी जो पहले से ही मर चुके हैं, उन जीवितों से अधिक जो अभी भी जीवित हैं। <sup>3</sup> परंतु उन दोनों से बेहतर वह है जो कभी अस्तित्व में नहीं आया, जिसने कभी वह बुराई नहीं देखी जो सूर्य के नीचे की जाती है।

## सभोपदेशक

<sup>४</sup> मैंने देखा है कि हर श्रम और हर कौशल जो किया जाता है वह व्यक्ति और उसके पड़ोसी के बीच प्रतिद्वंद्विता का परिणाम है। यह भी व्यर्थता है और वायु का पीछा करना है। <sup>५</sup> मूर्ख अपने हाथ मोड़ लेता है और अपनी ही देह को खाता है। <sup>६</sup> विश्राम से भरा एक हाथ बेहतर है दो मुझी श्रम और वायु का पीछा करने से।

<sup>७</sup> तब मैंने फिर से सूर्य के नीचे की व्यर्थता को देखा। <sup>८</sup> वहाँ एक व्यक्ति था जिसके पास कोई आश्रित नहीं था, न तो कोई पुत्र था और न कोई भाई, फिर भी उसके सभी श्रम का कोई अंत नहीं था। वास्तव में, उसकी आँखें धन से संतुष्ट नहीं थीं, और उसने कभी नहीं पूछा, "और मैं किसके लिए श्रम करता हूँ और अपने आप को सुख से चंचित करता हूँ?" यह भी व्यर्थता है, और यह एक दुखद कार्य है।

<sup>९</sup> दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उनके श्रम के लिए अच्छा प्रतिफल होता है। <sup>१०</sup> क्योंकि यदि उनमें से कोई एक गिरता है, तो दूसरा अपने साथी को उठा लेगा। परंतु उस पर विपत्ति है जो गिरता है जब उसे उठाने के लिए कोई दूसरा नहीं होता। <sup>११</sup> इसके अलावा, यदि दो साथ लेते हैं तो वे गर्म रहते हैं, परंतु अकेला कैसे गर्म रह सकता है? <sup>१२</sup> और यदि कोई अकेले को पराजित कर सकता है, दो उसका प्रतिरोध कर सकते हैं। तीन धारों की रस्सी जल्दी नहीं टूटती।

<sup>१३</sup> एक गरीब परंतु बुद्धिमान युवक एक बूढ़े और मूर्ख राजा से बेहतर है जो अब निर्देश प्राप्त करना नहीं जानता। <sup>१४</sup> क्योंकि वह अपने राज्य में गरीब पैदा हुआ था। <sup>१५</sup> मैंने उन सभी जीवितों को देखा है जो सूर्य के नीचे चलते हैं दूसरे युक्त की ओर जाते हैं जो उसकी जगह लेता है। <sup>१६</sup> उन सभी लोगों का कोई अंत नहीं है, उन सभी का जो उनके पहले थे, और यहाँ तक कि जो बाद में आते हैं वे भी उससे खुश नहीं होंगे; क्योंकि यह भी व्यर्थता है और वायु का पीछा करना है।

**५** जब तू परमेश्वर के घर जाए, तो अपने कदमों की रक्षा कर, और मूर्खों की बलि चढ़ाने की अपेक्षा सुनने के लिए आगे बढ़, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे बुराई कर रहे हैं। <sup>२</sup> अपने मुँह से जल्दी न कर, और न ही अपने विचार में उतावलापन कर कि परमेश्वर के सामने कोई बात उठाए। क्योंकि परमेश्वर सर्वग में है और तू पृथ्वी पर; इसलिए तेरे शब्द थोड़े हों। <sup>३</sup> क्योंकि सपना बहुत परिश्रम से आता है, और मूर्ख की आवाज बहुत शब्दों से। <sup>४</sup> जब तू परमेश्वर से मन्त्र माने, तो उसे चुकाने में देर

न कर; क्योंकि वह मूर्खों में प्रसन्न नहीं होता। जो तू मन्त्र माने, उसे चुका। <sup>५</sup> यह बेहतर है कि तू मन्त्र न माने, बजाय इसके कि मन्त्र माने और न चुका। <sup>६</sup> अपने भाषण को पाप करने का कारण न बना, और परमेश्वर के दृत के सामने यह न कह कि यह गलती थी। क्यों परमेश्वर तेरी आवाज से क्रोधित हो और तेरे हाथों के काम को नष्ट कर दे? <sup>७</sup> क्योंकि बहुत सपनों और बहुत शब्दों में व्यर्थता है। बल्कि, परमेश्वर का भय मान।

<sup>८</sup> यदि तू प्रांत में गरीबों पर अत्याचार और न्याय और धर्म की उपेक्षा देखे, तो इस दश्य से चौंक मत; क्योंकि एक अधिकारी दूसरे अधिकारी पर नज़र रखता है, और उनके ऊपर उच्च अधिकारी होते हैं। <sup>९</sup> अखिरकार, एक राजा जो खेत की खेती करता है, भूमि के लिए लाभकारी होता है।

<sup>१०</sup> जो धन से प्रेम करता है वह धन से संतुष्ट नहीं होगा, और जो बहुतायत से प्रेम करता है वह उसकी आय से संतुष्ट नहीं होगा। यह भी व्यर्थता है। <sup>११</sup> जब अच्छी चीज़ें बढ़ती हैं, तो उन्हें उपभोग करने वाले भी बढ़ते हैं। तो उनके मालिकों के लिए क्या लाभ है, सिवाय इसके कि वे देखें? <sup>१२</sup> मजदूर की नींद भीठी होती है, चाहे वह थोड़ा खाए या बहुत; परंतु धनी का भरा पेट उसे सोने नहीं देता।

<sup>१३</sup> यह एक गंभीर बुराई है जो मैंने सूर्य के नीचे देखी है: धन का उनके मालिक द्वारा उनके नुकसान के लिए संवित होना। <sup>१४</sup> जब वह धन खराब व्यापार के कारण खो गया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, तब उसके पास उसे सहारा देने के लिए कुछ नहीं था। <sup>१५</sup> जैसे वह अपनी माँ के गर्भ से नन्हा आया, वैसे ही वह लौट जाएगा। वह अपने श्रम के फल से कुछ भी नहीं ले जाएगा जो वह अपने हाथ में ले जा सके। <sup>१६</sup> यह भी एक गंभीर बुराई है—जैसे व्यक्ति पैदा होता है, वैसे ही वह मरेगा। तो फिर उसके लिए क्या लाभ है जो हवा के लिए श्रम करता है?

<sup>१७</sup> अपनी सारी ज़िंदगी वह अंधकार में खाता है, बड़ी दूँझलाहट, बीमारी, और क्रोध के साथ।

<sup>१८</sup> यहाँ जो मैंने देखा है वह अच्छा और उपयुक्त है: खाना, पीना, और अपने श्रम में आनंद लेना जिसमें वह सूर्य के नीचे अपने जीवन के कुछ वर्षों में श्रम करता है जो परमेश्वर ने उसे दिया है; क्योंकि यह उसका प्रतिफल है। <sup>१९</sup> इसके अलावा, हर व्यक्ति के लिए जिसे परमेश्वर ने धन और संपत्ति दी है, उसने उसे उनसे खाने और अपना प्रतिफल प्राप्त करने की शक्ति भी दी है और अपने श्रम में आनंद लेने की; यह परमेश्वर का उपहार

## सभोपदेशक

है।<sup>20</sup> क्योंकि वह अपने जीवन के दिनों को अक्सर याद नहीं करेगा, क्योंकि परमेश्वर उसे उसके हृदय की सुधी में व्यस्त रखता है।

**6** सूर्य के नीचे मैंने एक बुराई देखी है, और यह मनुष्यों के बीच प्रचलित है:<sup>2</sup> एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने धन, संपत्ति, और सम्मान दिया है, ताकि उसकी आत्मा को उसकी सभी इच्छाओं में से कुछ भी कमी न हो; फिर भी परमेश्वर ने उसे उनका आनंद लेने की शक्ति नहीं दी, बल्कि एक अजनबी उनका आनंद लेता है। यह व्यर्थता और एक गंभीर पीड़ा है।<sup>3</sup> यदि कोई व्यक्ति सौ बच्चों का पिता बनता है और कई वर्षों तक जीवित रहता है, चाहे वे कितने भी हों, परंतु उसकी आत्मा अच्छी चीजों से संतुष्ट नहीं होती, और उसे उचित दफन भी नहीं मिलता, तो मैं कहता हूँ, गर्भपात उससे बेहतर है।<sup>4</sup> क्योंकि यह व्यर्थता में आता है और अंधकार में चला जाता है, और इसका नाम अंधकार में छिपा रहता है।<sup>5</sup> इसने न तो सूर्य को देखा है और न ही कुछ जाना है, पिर भी यह उससे बेहतर है।<sup>6</sup> यहां तक कि यदि वह व्यक्ति दो बार हजार वर्षों तक जीवित रहता है और अच्छी चीजों का आनंद नहीं लेता— क्या सभी एक ही स्थान पर नहीं जाते?

<sup>7</sup> सभी व्यक्ति की मेहनत उसके मुख के लिए होती है, फिर भी उसकी भूख संतुष्ट नहीं होती।<sup>7</sup> बुद्धिमान व्यक्ति का मूर्ख पर क्या लाभ है? गरीब व्यक्ति के पास क्या है, यह जानने के लिए कि जीवितों के सामने कैसे चलना है?<sup>8</sup> जो अँखें देखती हैं वह आत्मा की इच्छाओं से बेहतर है। यह भी व्यर्थता और हवा के पीछे ढौँढ़ना है।

<sup>10</sup> जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसका नाम पहले ही रखा जा चुका है, और यह ज्ञात है कि मनुष्य क्या है; क्योंकि वह उससे विवाद नहीं कर सकता जो उससे अधिक शक्तिशाली है।<sup>11</sup> क्योंकि कई शब्द हैं जो व्यर्थता को बढ़ाते हैं। फिर व्यक्ति के लिए क्या लाभ है?<sup>12</sup> क्योंकि कौन जानता है कि व्याकृति के जीवनकाल में उसके लिए क्या अच्छा है, उसके व्यर्थ जीवन के कुछ वर्षों के दौरान? वह उहाँ एक छाया की तरह बिताएगा। क्योंकि कौन व्यक्ति को बता सकता है कि उसके बाद सूर्य के नीचे क्या होगा?

**7** अच्छा नाम उत्तम सुगंध से बेहतर है, और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से बेहतर है।<sup>2</sup> शोक के घर में जाना भोज के घर में जाने से बेहतर है, क्योंकि यह हर व्यक्ति का अंत है, और जीवित इसे दिल से लेता है।<sup>3</sup> दुःख हंसी

से बेहतर है, क्योंकि जब चेहरा उदास होता है, तब हृदय प्रसन्न हो सकता है।<sup>4</sup> बुद्धिमान का मन शोक के घर में होता है, जबकि मूर्खों का मन आनंद के घर में होता है।

<sup>5</sup> बुद्धिमान व्यक्ति की डांट सुनना बेहतर है मूर्खों के गीत सुनने से।<sup>6</sup> क्योंकि जैसे काटों की झनझनाहट बर्तन के नीचे होती है, वैसे ही मूर्ख की हंसी होती है; और यह भी व्यर्थता है।<sup>7</sup> क्योंकि उत्तीड़न बुद्धिमान व्यक्ति को मूर्ख बनाता है, और रिश्वत हृदय को भष्ट करती है।<sup>8</sup> किसी बात का अंत उसके आरंभ से बेहतर है; आत्मा की धेर्यता आत्मा के गर्व से बेहतर है।<sup>9</sup> अपने आत्मा में ग्रोथित होने के लिए उत्सुक न हो, क्योंकि ग्रोथ मूर्खों के हृदय में रहता है।<sup>10</sup> यह न कहो, "पहले के दिन इनसे बेहतर क्यों थे?" क्योंकि यह बुद्धिमानी से नहीं है कि तुम इसके बारे में पूछते हो।

<sup>11</sup> बुद्धि के साथ एक विरासत अच्छी है और उन लोगों के लिए लाभकारी है जो सूर्य को देखते हैं।<sup>12</sup> क्योंकि बुद्धि सुरक्षा है जैसे धन सुरक्षा है, लेकिन ज्ञान का लाभ यह है कि बुद्धि अपने धारकों को जीवित रखती है।<sup>13</sup> परमेश्वर के कार्य पर विचार करो, क्योंकि कौन उसे सीधा कर सकता है जिसे उसने टेढ़ा किया है?<sup>14</sup> समृद्धि के दिन खुश रहो, लेकिन विपत्ति के दिन विचार करो; परमेश्वर ने एक को भी बनाया है और दूसरे को भी, ताकि कोई भी उसके बाद आने वाली बातों को न जान सके।

<sup>15</sup> मैंने अपनी व्यर्थता के जीवनकाल में सब कुछ देखा है; एक धर्मी व्यक्ति है जो अपनी धार्मिकता में नष्ट हो जाता है, और एक दुष्ट व्यक्ति है जो अपनी दुष्टता में अपनी आयु बढ़ाता है।<sup>16</sup> अत्यधिक धर्मी न बनो, और अत्यधिक बुद्धिमान न बनो। तुम क्यों अपने आप को नष्ट करोगे?<sup>17</sup> अत्यधिक दुष्ट न बनो, और मूर्ख न बनो। तुम क्यों अपने समय से पहले मरोगे?<sup>18</sup> यह अच्छा है कि तुम एक बात को पकड़ो और दूसरे को न छोड़ो; क्योंकि जो परमेश्वर से डरत है वह दोनों के साथ बाहर आता है।<sup>19</sup> बुद्धि एक बुद्धिमान व्यक्ति को दस शासकों से अधिक शक्ति देती है जो एक शहर में हैं।<sup>20</sup> वास्तव में, पृथ्वी पर कोई धर्मी व्यक्ति नहीं है जो हमेशा अच्छा करता हो और कभी पाप न करता हो।

<sup>21</sup> सभी शब्दों को गंभीरता से न लो जो बोले जाते हैं, ताकि तुम अपने सेवक को तुहाँ शाप देते हुए न सुनो।<sup>22</sup> क्योंकि तुमने भी यह महसूस किया है कि तुमने भी कई बार दूसरों को शाप दिया है।

## सभोपदेशक

२३ मैंने यह सब बुद्धि के साथ परखा, और मैंने कहा, "मैं बुद्धिमान बनना," लेकिन बुद्धि मुझसे दूर थी।<sup>24</sup> जो हुआ है वह दूर और बहुत रहस्यमय है। कौन इसे खोज सकता है? <sup>25</sup> मैंने अपने मन को जानने, जांचने और बुद्धि और एक स्पष्टीकरण की खोज करने के लिए निर्देशित किया, और मुर्खता की बुराई और पागलपन की मूर्खता को जानने के लिए। <sup>26</sup> और मैंने मृत्यु से अधिक कड़वा पाया उस स्त्री को जिसका हृदय जाल और जाल है, जिसके हाथ जंजीर हैं। जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है वह उससे बच जाएगा, लेकिन पापी उसके द्वारा पकड़ा जाएगा। <sup>27</sup> "देखो, मैंने यह खोजा है," प्रचारक कहता है, "एक बात को दूसरी से जोड़कर एक स्पष्टीकरण खोजने के लिए, <sup>28</sup> जिसे मैं अभी भी खोज रहा हूँ लेकिन नहीं पाया। मैंने एक हजार में एक पुरुष पाया है, लेकिन मैंने इन सभी में एक स्त्री नहीं पाई है। <sup>29</sup> देखो, मैंने केवल यह पाया है, कि परमेश्वर ने लोगों को सीधा बनाया, लेकिन उन्होंने कई योजनाएं खोजी हैं।"

**८** बुद्धिमान व्यक्ति के समान कौन है और कौन किसी बात की व्याख्या जानता है? व्यक्ति की बुद्धि उसके चेहरे को प्रकाशित करती है और उसके कठोर चेहरे को उज्ज्वल बनाती है। <sup>2</sup> मैं कहता हूँ, "राजा की आज्ञा का पालन करो क्योंकि यह परमेश्वर के सामने शपथ के कारण है।" <sup>3</sup> उसके पास से जल्दी मत जाओ। बुरे मामले में शामिल मत हो, क्योंकि वह जो चाहेगा वही करेगा।" <sup>4</sup> क्योंकि राजा का वचन प्रबल होता है, कौन उससे कहेगा, "तू क्या कर रहा है?" <sup>5</sup> जो कोई शाही आज्ञा का पालन करता है उसे कोई कष्ट नहीं होता, क्योंकि बुद्धिमान हृदय उचित समय और प्रक्रिया को जानता है। <sup>6</sup> क्योंकि हर आनंद के लिए एक उचित समय और प्रक्रिया होती है, हालांकि व्यक्ति का कष्ट उस पर भारी होता है। <sup>7</sup> यदि कोई नहीं जानता कि क्या होगा, तो कौन उसे बता सकता है कि यह कब होगा? <sup>8</sup> किसी के पास हवा पर अधिकार नहीं है कि वह हवा को रोक सके, और न ही मृत्यु के दिन पर अधिकार है; और युद्ध के समय में कोई छुट्टी नहीं होती, और बुराई उन लोगों को नहीं बचाएगी जो इसे करते हैं।

<sup>9</sup> यह सब मैंने देखा है, और अपने मन को हर उस काम पर लगाया है जो सूर्य के नीचे किया गया है, उस समय जब एक व्यक्ति ने दूसरे पर अधिकार किया है उसके नुकसान के लिए। <sup>10</sup> तब मैंने दुष्टों को दफन होते देखा है, जो पवित्र स्थान से अंदर-बाहर जाते थे, और वे शीघ्र ही उस नगर में भूला दिए जाते हैं जहाँ उन्होंने ऐसे काम किए थे। यह भी व्यर्था है। <sup>11</sup> क्योंकि बुरे काम के खिलाफ सजा जल्दी नहीं दी जाती, इसलिए मनुष्यों के

पुत्रों के दिलों में बुराई करने की पूरी इच्छा होती है। <sup>12</sup> हालांकि एक पापी सौ बार बुराई करता है और अपनी आयु बढ़ा सकता है, फिर भी मैं जानता हूँ कि यह उनके लिए अच्छा होगा जो परमेश्वर का भय मानते हैं, जो उसे खुलेआम डरते हैं। <sup>13</sup> परंतु यह दुष्टों के लिए अच्छा नहीं होगा, और वह अपनी आयु छाया की तरह नहीं बढ़ाएगा, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता।

<sup>14</sup> यह एक व्यर्था है जो पृथ्वी पर की जाती है, अर्थात्, ऐसे धर्मी लोग हैं जिनके साथ दुष्टों के कर्मों के अनुसार होता है। और दूसरी ओर, ऐसे बुरे लोग हैं जिनके साथ धर्मियों के कर्मों के अनुसार होता है। मैं कहता हूँ कि यह भी व्यर्था है। <sup>15</sup> इसलिए मैंने आनंद की प्रशंसा की, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिए कुछ भी अच्छा नहीं है सिवाय खाने, पीने और आनंदित होने के, और यह उसके श्रम में उसके साथ रहेगा उसके जीवन के दिनों में जो परमेश्वर ने उसे सूर्य के नीचे दिए हैं।

<sup>16</sup> जब मैंने अपने हृदय को ज्ञान जानने के लिए समर्पित किया और उस व्यापार को देखने के लिए जो पृथ्वी पर किया गया है — हालांकि कोई दिन या रात को कभी सोता नहीं है — <sup>17</sup> और मैंने परमेश्वर के हर काम को देखा, मैंने निर्क्षण निकाला कि मनुष्य उस काम को नहीं खोज सकता जो सूर्य के नीचे किया गया है। हालांकि एक व्यक्ति परिश्रम करते हुए उसे खोजने की कोशिश करता है, वह उसे नहीं पा सकता; और यदि बुद्धिमान व्यक्ति दावा करता है कि वह जानता है, तो भी वह उसे खोज नहीं सकता।

**९** क्योंकि मैंने इन सब बातों को अपने हृदय में लिया और इसे समझाया, कि धर्मी लोग, बुद्धिमान लोग, और उनके कर्म परमेश्वर के हाथ में हैं। लोग नहीं जानते कि उन्हें प्रेम मिलेगा या धूणा; कुछ भी उनका इंतजार कर सकता है। <sup>2</sup> यह सबके लिए समान है: धर्मी और दुष्ट के लिए एक ही भाया है; अच्छे, शुद्ध और अशुद्ध के लिए; जो बलिदान चढ़ाता है और जो बलिदान नहीं चढ़ाता। जैसे अच्छा व्यक्ति है, वैसे ही पापी है; जो शपथ लेता है वह उसी तरह है जैसे जो शपथ लेने से डरता है। <sup>3</sup> यह एक बुराई है जो सूर्य के नीचे सभी चीजों में की जाती है, कि सबके लिए एक ही भाया है। इसके अलावा, लोगों के हृदय बुराई से भरे होते हैं, और उनके जीवन भर उनके हृदय में पागलपन होता है। इसके बाद वे मृतकों के पास जाते हैं। <sup>4</sup> क्योंकि जो सभी जीवितों से जुड़ा है, उसके लिए आशा है; क्योंकि जीवित कृत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है। <sup>5</sup> क्योंकि जीवित जानते हैं कि वे मरेंगे; परंतु मृत कुछ नहीं जानते, और न ही उनके पास अब

## सभोपदेशक

कोई पुरस्कार है, क्योंकि उनकी सृष्टि भुला दी गई है।<sup>6</sup> वास्तव में उनका प्रेम, उनकी धृणा, और उनका उत्साह पहले ही नष्ट हो चुका है, और वे अब सूर्य के नीचे की किसी भी चीज़ में हिस्सा नहीं लेंगे।

<sup>7</sup> तो जाओ, अपनी रोटी खुशी से खाओ, और अपने दिल को प्रसन्न करके अपनी दाखरस पियो; क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही तुम्हारे कार्यों को स्वीकार कर लिया है।<sup>8</sup> देखो कि तुम्हारे वस्त्र हमेशा सफेद हों, और तुम्हारे सिर पर तेल की कमी न हो।<sup>9</sup> उस पर्वी के साथ जीवन का आनंद लो जिसे तुम प्रेम करते हो, अपनी व्यर्थ जीवन के सभी दिनों में जो उसने तुम्हें सूर्य के नीचे दी है, तुम्हारी व्यर्थता के सभी दिनों में; क्योंकि यह तुम्हारा जीवन में पुरस्कार है और तुम्हारे कार्य में जिसमें तुमने सूर्य के नीचे परिश्रम किया है।<sup>10</sup> जो कुछ तुम्हारा हाथ करने के लिए पाता है, उसे अपनी पूरी शक्ति से करो; क्योंकि शिंगोल में, जहां तुम जा रहे हो, न कोई गतिविधि है, न योजना, न ज्ञान, न बुद्धि।

<sup>11</sup> मैंने फिर से सूर्य के नीचे देखा कि दौड़ तेज़ के लिए नहीं है, न योद्धाओं के लिए युद्ध, न बुद्धिमानों के लिए रोटी, न विवेकशीलों के लिए धन, न योग्य लोगों के लिए अनुग्रह; क्योंकि समय और संयोग सबको पकड़ लेते हैं।

<sup>12</sup> इसके अलावा, कोई नहीं जानता कि उसका समय कब आएगा; जैसे मछलियाँ धोखेबाज़ जाल में फँसती हैं, और पक्षी फंदे में फँसते हैं, वैसे ही मानवजाति के पुत्र एक बुरे समय में फँस जाते हैं जब वह अचानक उन पर आता है।

<sup>13</sup> यह भी मैंने सूर्य के नीचे बुद्धि के रूप में देखा, और यह मुझे प्रभावित किया: <sup>14</sup> एक छोटा शहर वहा जा जिसमें कुछ ही लोग थे, और एक महान राजा ने उस पर आक्रमण किया, उसे धेर लिया, और उसके खिलाफ बड़े घेराबंदी के काम बनाए।<sup>15</sup> परंतु उसमें एक गरीब

बुद्धिमान व्यक्ति पाया गया, और उसने अपनी बुद्धि से शहर को बचाया। फिर भी उस गरीब व्यक्ति को कोई याद नहीं करता।<sup>16</sup> इसलिए मैंने कहा, ‘बुद्धि शक्ति से बेहतर है।’ परंतु गरीब की बुद्धि को तुच्छ समझा जाता है, और उसके शब्दों को अनदेखा किया जाता है।<sup>17</sup> शांत में सुने गए बुद्धिमानों के शब्द मूर्खों के बीच एक शासक के विलाने से बेहतर हैं।<sup>18</sup> बुद्धि युद्ध के हाथियारों से बेहतर है, परंतु एक पापी बहुत अच्छे को नष्ट कर देता है।

**10** मरे हुए मक्खियाँ इत्र बनाने वाले के तेल को खराब कर देती हैं, इसलिए थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और

सम्मान से अधिक प्रभावशाली होती है।<sup>2</sup> बुद्धिमान व्यक्ति का हृदय उसे दाहिनी ओर ले जाता है, परंतु मूर्ख व्यक्ति का हृदय उसे बाईं ओर ले जाता है।<sup>3</sup> यहाँ तक कि जब मूर्ख सड़क पर चलता है, तो उसकी समझ की कमी होती है, और वह सबको दिखाता है कि वह मूर्ख है।<sup>4</sup> यदि शासक का क्रोध तुम पर उठे, तो अपनी स्थिति को मत छोड़ो, क्योंकि संयम बड़े अपराधों को शांत कर देता है।

<sup>5</sup> एक बुराई है जिसे मैंने सूर्य के नीचे देखा है, जैसे कि शासक से निकली हुई गलती—<sup>6</sup> मूर्खता को कई उच्च स्थानों पर रखा जाता है जबकि धनी लोग विनम्र स्थानों पर बैठते हैं।<sup>7</sup> मैंने देखा है कि दास धोड़ों पर सवार होते हैं और राजकुमार दासों की तरह जमीन पर चलते हैं।

<sup>8</sup> जो कोई गड्ढा खोदता है, वह उसमें गिर सकता है, और दीवार तोड़ने वाला साँप द्वारा काटा जा सकता है।<sup>9</sup> जो पस्तर काटता है, वह उनसे चोटिल हो सकता है, और जो लकड़ी चीरता है, वह उनसे खतरे में पड़ सकता है।<sup>10</sup> यदि कुल्हाड़ी कुंद हो और वह उसकी धार को तेज न करे, तो उसे अधिक ताकत लगानी पड़ेगी। बुद्धि का लाभ सफलता लाने में है।<sup>11</sup> यदि साँप मंत्रमुग्ध होने से पहले काट ले, तो मंत्रमुग्ध करने वाले को कोई लाभ नहीं होता।

<sup>12</sup> बुद्धिमान व्यक्ति के मुख से निकले शब्द कृपा से भरे होते हैं, परंतु मूर्ख के होठ उसे ही खा जाते हैं;<sup>13</sup> उसकी बातों की शुरुआत मूर्खता होती है, और उसका अंत बुरी पागलपन होता है।<sup>14</sup> फिर भी मूर्ख शब्दों को बढ़ाता है। कोई नहीं जानता कि क्या होगा, और कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या आएगा?<sup>15</sup> मूर्ख की मेहनत उसे इतना थका देती है कि वह यह भी नहीं जानता कि शहर कैसे जाना है।

<sup>16</sup> हाय उस देश पर, जिसका राजा एक लड़का है, और जिसके राजकुमार सुबह ही भोज करते हैं।<sup>17</sup> धन्य है वह देश, जिसका राजा कुलीनता का है, और जिसके राजकुमार उचित समय पर खाते हैं— ताकत के लिए, और न कि मदहोशी के लिए।<sup>18</sup> अत्यधिक आलस्य के कारण छत के कढ़ियाँ दूँक जाती हैं, और आलस्य के कारण घर टपकता है।<sup>19</sup> लोग आनंद के लिए भोजन तैयार करते हैं, दाखमधु जीवन को आनंदमय बनाता है, और धन हर चीज़ का उत्तर है।<sup>20</sup> इसके अलावा, अपने शयनकक्ष में राजा को शाप मत दो, और अपनी सोने की कोठरी में धनी व्यक्ति को शाप मत दो, क्योंकि आकाश

## सभोपदेशक

का एक पक्षी धनि को ले जा सकता है, और पंखों वाला प्राणी उस बात की सूचना दे सकता है।

**11** अपनी रोटी को जल के ऊपर डाल दो, क्योंकि बहुत दिनों के बाद तुम उसे पाओगे।<sup>2</sup> अपने भाग को सात या आठ में बैट दो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि पृथ्वी पर कौन सी विपत्ति आ सकती है।<sup>3</sup> यदि बादल भरे हों, तो वे पृथ्वी पर वर्षा करते हैं; और चाहे वृक्ष दक्षिण की ओर गिरे या उत्तर की ओर, जहाँ वृक्ष गिरे, वही वह पड़ा रहता है।<sup>4</sup> जो वायु को देखता रहता है, वह बीज नहीं बोएगा, और जो बादलों को देखता रहता है, वह फसल नहीं काटेगा।<sup>5</sup> जैसे तुम वायु के मार्ग को नहीं जानते, और न गर्भवती स्त्री के गर्भ में हड्डियों के बनने को, वैसे ही तुम परमेश्वर की गतिविधियों को नहीं जानते जो सब कुछ करता है।<sup>6</sup> प्रातःकाल में अपना बीज बो, और संतुष्ट तक आलसी मत बनो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि कौन सा सफल होगा, या दोनों समान रूप से अच्छे होंगे।

<sup>7</sup> प्रकाश सुखद है, और सूर्य को देखना आँखों के लिए अच्छा है।<sup>8</sup> वास्तव में, यदि कोई व्यक्ति कई वर्षों तक जीवित रहता है, तो वह उन सभी में आनंद करे, परंतु अध्कार के दिनों को याद रखे, क्योंकि वे बहुत होंगे। जो कुछ आने वाला है वह व्यर्थता है।<sup>9</sup> हे जवान, अपनी युवावस्था में आनंदित हो, और अपने हृदय को अपनी युवावस्था के दिनों में सुखी रहने दे। और अपने हृदय के मार्गों और अपनी आँखों की इच्छाओं का अनुसरण कर। फिर भी जान ले कि परमेश्वर इन सब बातों के लिए तुझे न्याय में लाएगा।<sup>10</sup> इसलिए अपने हृदय से दुःख को दूर कर, और अपने शरीर से पीड़ा को हटा दे, क्योंकि बाल्यावस्था और जीवन का उल्कर्ष क्षणिक है।

**12** अपनी जवानी के दिनों में अपने सुषिकर्ता को स्मरण करो, इससे पहले कि बुरे दिन आएं और वे वर्ष निकट आएं जब तुम कहोगे, "मुझे उनमें कोई आनंद नहीं है";<sup>2</sup> इससे पहले कि सूर्य, प्रकाश, चंद्रमा और तारे अध्कारमय हो जाएं, और बारिश के बाद बादल लौट आएं;<sup>3</sup> उस दिन जब घर के पहरेदार काँपेंगे, और बलवान पुरुष झुकेंगे, पीसने वाले खड़े होंगे क्योंकि वे कम हैं, और जो खिड़कियों से देखते हैं वे धूंधला जाएंगे;<sup>4</sup> और जब सङ्क के दरवाजे बंद हो जाएंगे क्योंकि पीसने की चक्की की आवाज कम हो गई है, और कोई पक्षी की आवाज पर उठेगा, और गीत की सभी बेटियाँ धीर-धीरे गाएंगी।<sup>5</sup> इसके अलावा, लोग ऊँची जगह से और सङ्क पर होने वाले डर से डरते हैं, बादाम का पेड़ फूलता है, टिड़ा अपने आप को घसीटता

है, और केपर बेरी बेअसर है। क्योंकि मनुष्य अपने शाश्वत घर की ओर जाता है जबकि शोक करने वाले सङ्क पर घूमते हैं।<sup>6</sup> अपने सुषिकर्ता को स्मरण करो इससे पहले कि चांदी की डोरी टूट जाए और सुनहरा कटोरा टूट जाए, घड़ा झरने पर टूट जाए और कुंगे पर पहिया टूट जाए;<sup>7</sup> तब धूल पृथ्वी पर लौट जाएगी जैसे वह थी, और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाएगी जिसने उसे दिया था।

<sup>8</sup> "व्यर्थ की व्यर्थता," उपदेशक कहता है, "सब कुछ व्यर्थ है!"

<sup>9</sup> बुद्धिमान होने के अलावा, उपदेशक ने लोगों को ज्ञान भी सिखाया; और उसने विचार किया, खोजा, और कई नीतिवचनों को व्यवस्थित किया।<sup>10</sup> उपदेशक ने मनोहर शब्दों को खोजने और सत्य के शब्दों को सही ढंग से लिखने का प्रयास किया।<sup>11</sup> बुद्धिमानों के शब्द उकसाने की छिड़ियों के समान होते हैं, और संग्रह के स्वामी अच्छी तरह से जड़े हुए कीलों के समान होते हैं, वे एक ही चरवाहे द्वारा दिए गए हैं।<sup>12</sup> लेकिन इसके अलावा, मेरे पुत्र, सावधान रहो: कई पुस्तकों का लेखन अनंत है, और अत्यधिक अध्ययन शरीर को थका देता है।

<sup>13</sup> निष्कर्ष, जब सब कुछ सुना जा चुका है, यह है: परमेश्वर का भय मानो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो, क्योंकि यह हर व्यक्ति पर लागू होता है।<sup>14</sup> क्योंकि परमेश्वर हर कार्य को न्याय के लिए लाएगा, हर उस चीज़ को जो छिपी हुई है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी।

## श्रेष्ठगीत

**1** श्रेष्ठ गीत, जो सुलैमान का है।

<sup>2</sup> वह मुझे अपने मुँह के चुम्बनों से चूमे! क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है। <sup>3</sup> तेरे तेलों की सुर्यांध मनोहर है, तेरा नाम शुद्ध तेल के समान है; इसलिए युवतियाँ तुझसे प्रेम करती हैं। <sup>4</sup> मुझे अपने पीछे खींच ले और हम दौड़ें। राजा ने मुझे अपने कक्ष में ले लिया है। हम तुझ में आनंदित होंगे और प्रसन्न होंगे; हम तेरे प्रेम की प्रशंसा दाखमधु से अधिक करेंगे। उचित ही वे तुझसे प्रेम करते हैं।

<sup>5</sup> मैं काली और सुंदर हूँ, हे यरूशलेम की पुत्रियों, केदार के तम्बुओं के समान, सुलैमान के परदों के समान। <sup>6</sup> मुझे मत देखो क्योंकि मैं काली हूँ, क्योंकि सूर्य ने मुझे तपा दिया है। मेरी माँ के पुत्र मुझसे क्रोधित थे; उहोंने मुझे अंगूर के बांगों की देखभाल करने वाली बना दिया, पर मैंने अपने अंगूर के बाग की देखभाल नहीं की।

<sup>7</sup> मुझे बता, हे मेरे प्राणप्रिय, तू अपनी भेड़ों को कहाँ चराता है, दोपहर में उहें कहाँ विश्राम देता है? क्योंकि मैं तेरे साथियों की भेड़ों के पास धूंधल ओढ़ने वाली के समान क्यों रहूँ?

<sup>8</sup> यदि तू स्वयं नहीं जानती, हे स्त्रियों में सबसे सुंदर, तो भेड़ों के पदाचिन्हों पर चल, और चरवाहों के तम्बुओं के पास अपने बकरी के बच्चों को चरा। <sup>9</sup> मेरे प्रिय, तू मेरे लिए किरौन के रथों में मेरी घोड़ी के समान है। <sup>10</sup> तेरे गाल आभूषणों से शोभायमान हैं, तेरी गर्दन मोतियों की माला से। <sup>11</sup> हम तेरे लिए सोने के आभूषण बनाएंगे चाँदी के मोतियों के साथ।

<sup>12</sup> जब राजा अपनी मेज पर था, मेरी सुर्यांधित वस्तु ने अपनी सुर्यांध छोड़ी। <sup>13</sup> मेरा प्रिय मेरे लिए गंधरस की थैली के समान है जो रात भर मेरे स्तनों के बीच रहती है। <sup>14</sup> मेरा प्रिय मेरे लिए हिना के फूलों का गुच्छा है एंगटी के अंगूर के बांगों में।

<sup>15</sup> तू कितनी सुंदर है, मेरी प्रियतमा, तू कितनी सुंदर है! तेरी आँखें कबूतरों के समान हैं। <sup>16</sup> तू कितना सुंदर है, मेरे प्रिय, और कितना मनोहर! वास्तव में, हमारा पतंग हरा-भरा है। <sup>17</sup> हमारे घर की बीम देवदार की हैं, हमारी छतें सर्सु की।

**2** मैं शारोन का गुलाब हूँ, घाटियों की कुमुदिनी। <sup>2</sup> काँटों के बीच कुमुदिनी के समान, वैसी ही मेरी प्रियतमा युवतियों के बीच है।

<sup>3</sup> जंगल के वृक्षों के बीच सेब के पेड़ के समान, वैसे ही मेरा प्रियतम युवकों के बीच है। उसकी छाया में बड़ी प्रसन्नता से बैठ गई, और उसका फल मेरे स्वाद के लिए मीठा था। <sup>4</sup> वह मुझे अपने भोज के घर में लाया, और उसका ध्वज मेरे ऊपर प्रेम है। <sup>5</sup> किशमिश के केक से मुझे ताज़ी दो, सेब से मुझे संभालो, क्योंकि मैं प्रेम में बीमार हूँ। <sup>6</sup> उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे है, और उसका दायाँ हाथ मुझे गले लगाता है।

<sup>7</sup> मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, हे यरूशलेम की पुत्रियों, हरिणियों या मैदान की हिरणियों की शापथ लेकर, कि तुम प्रेम को न जगाओ और न उकसाओ जब तक कि वह स्वर्य न चाहें।

<sup>8</sup> मेरे प्रिय की आवाज़! देखो, वह आ रहा है, पहाड़ों पर कूदता हुआ, पहाड़ियों पर फुदकता हुआ! <sup>9</sup> मेरा प्रिय हरिण या जवान हिरण के समान है। देखो, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है, वह खिड़कियों से झांक रहा है, वह जाली से देख रहा है।

<sup>10</sup> मेरे प्रिय ने उत्तर दिया और मुझसे कहा, “उठो, मेरी प्रियतमा, मेरी सुंदरी, और मेरे साथ चलो। <sup>11</sup> क्योंकि देखो, शीत क्रतु बीत गई है, वर्षा समाप्त हो गई और चली गई। <sup>12</sup> देश में फूल प्रकट हो गए हैं, लताओं की छंटाई का समय आ गया है, और हमारे देश में कपोत की आवाज़ सुनी गई है। <sup>13</sup> अंजीर का पेढ़ अपना फल पक चुका है, और फूलों में लताओं ने सुर्यांध फैलाई है। उठो, मेरी प्रियतमा, मेरी सुंदरी, और मेरे साथ चलो!”

<sup>14</sup> मेरी कबूतर, चट्टान की दरारों में, पहाड़ी मार्ग की छिपी जगह में, मुझे तुम्हारा रूप देखने दो, मुझे तुम्हारी आवाज़ सुनने दो; क्योंकि तुम्हारी आवाज़ मधुर है, और तुम्हारा रूप सुंदर है।

<sup>15</sup> हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ो, छोटी लोमड़ियाँ जो अंगूर के बांगों को नष्ट कर रही हैं, जबकि हमारे अंगूर के बांग फूलों में हैं।

<sup>16</sup> मेरा प्रिय मेरा है, और मैं उसकी हूँ; वह कुमुदिनियों के बीच अपनी भेड़ें चराता है। <sup>17</sup> दिन की ठंडक तक जब छायाएँ भाग जाती हैं, मुझे, मेरे प्रिय, और हरिण के

## श्रेष्ठगीत

समान बनो या बेतर के पहाड़ों पर जवान हिरण के समान।

**3** मेरे बिस्तर पर रात-रात भर मैंने उसे खोजा जिससे मेरी आत्मा प्रेम करती है; मैंने उसे खोजा, पर पाया नहीं।  
² अब मुझे उठना होगा और नगर में घमना होगा;  
सड़कों और सार्वजनिक चौकों में। मुझे उसे खोजना होगा जिससे मेरी आत्मा प्रेम करती है।<sup>1</sup> मैंने उसे खोजा, पर पाया नहीं।<sup>3</sup> नगर में पहरा देने वाले मुझे मिले, और मैंने कहा, “व्या आपने उसे देखा जिससे मेरी आत्मा प्रेम करती है?”<sup>4</sup> मुश्किल से ही मैं उनसे अलग हुआ था जब मैंने उसे पाया और उसे जाने नहीं दिया जब तक कि मैं उसे अपनी माँ के घर नहीं ले आया, और उस कमरे में नहीं लाया जिसने मुझे गर्भ धारण किया।

<sup>5</sup> मैं तुम्हें शपथ दिलाती हूँ, हे यरूशलेम की पुत्रियों, हारिणों या मैलान की हिरणियों की कसम, कि तुम प्रेम को न जगाओ या न उकसाओ जब तक वह स्वयं न चाहे।

६ यह क्या है जो जंगल से उठ रहा है धूएँ के खंभों की तरह, गंधरस और लोबान से सुगंधित, व्यापारी के सभी सुगंधित चूर्णों के साथ? <sup>7</sup> देखो, यह सुलैमान की यात्रा करने वाली गाड़ी है; साठ योद्धा उसके चारों ओर, इसाएल के योद्धाओं में से। <sup>८</sup> वे सभी तलवार चलाने वाले हैं, युद्ध में निपुण; प्रत्येक के पास उसकी तलवार उसकी कमर पर है, रात के भय से रक्षा करते हुए। <sup>९</sup> राजा सुलैमान ने अपने लिए एक पालकी बनाई लेबनान की लकड़ी से। <sup>१०</sup> उसने इसके खंभे चाँदी के बनाए, उसकी पीठ सोने की, और उसकी सीट बैंगनी कपड़े की, इसके अंदरूनी भाग को यरूशलेम की पुत्रियों ने प्रेमपूर्क सजाया।

<sup>11</sup> बाहर जाओ, हे सिय्योन की पुत्रियों, और राजा सुलैमान को मुकुट के साथ देखो जिससे उसकी माँ ने उसे मुकुट पहनाया है उसके विवाह के दिन, और उसके हृदय के आनंद के दिन।

**4** तू कितनी सुंदर है, मेरी प्रिये, तू कितनी सुंदर है! तेरी आँखें तेरे धूंधट के पीछे कबूतरों की तरह हैं; तेरे बाल गिलाद पर्वत से उतरते हुए बकरियों के झुंड की तरह हैं।<sup>2</sup> तेरे दांत उन भेड़ों के झुंड की तरह हैं जो अभी-अभी कतर कर आई हैं, जो धूलाई से होकर आई हैं, जिनमें से प्रत्येक के जुड़वा हैं, और उनमें से एक भी अपनी संतान नहीं खोई है।<sup>3</sup> तेरे हौठ लाल धागे की

तरह हैं, और तेरा मुंह सुंदर है। तेरे कपोल तेरे धूंधट के पीछे अनार के टुकड़े की तरह हैं।<sup>4</sup> तेरी गर्दन दाऊद के मीनार की तरह है, जो पथरों की परतों से बनी है, जिस पर हजारों ढाल लटके हुए हैं, सभी योद्धाओं की गोल ढालें।<sup>5</sup> तेरे दोनों स्तन दो हिरण के बच्चे की तरह हैं, गजल के जुड़वा, जो कुमुदिनियों के बीच चरते हैं।

<sup>6</sup> दिन के ठंडे होने तक, जब छायाएं भाग जाएंगी, मैं अपने मार्ग पर लोबान के पर्वत और गंधरस की पहाड़ी पर जाऊंगा।<sup>7</sup> तू पूरी तरह से सुंदर है, मेरी प्रिये, और तुझमें कोई दोष नहीं है।

<sup>8</sup> मेरे साथ लेबनान से आ, मेरी दुल्हन, मेरे साथ लेबनान से आ। अमाना की चोटी से नीचे आ, सेनिर और हर्मोन की चोटी से, सिंहों की गुफाओं से, तेंदुओं के पहाड़ों से।<sup>९</sup> तूने मेरा हृदय मोह लिया है, मेरी बहन, मेरी दुल्हन; तूने मेरी आँखों की एक झलक से मेरा हृदय मोह लिया है, तेरे हार की एक लड़ी से।<sup>१०</sup> तेरा प्रेम कितना आनंददायक है, मेरी बहन, मेरी दुल्हन! तेरा प्रेम दाखमधु से कितना उत्तम है, और तेरे तेलों की सुगंध सभी प्रकार के बाम के तेलों से उत्तम है।<sup>११</sup> तेरे हौठ मधु टपकाते हैं, मेरी दुल्हन; तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध है, और तेरे वस्तों की सुगंध लेबनान की सुगंध के समान है।<sup>१२</sup> एक बंद बारीचा है मेरी बहन, मेरी दुल्हन, एक बंद कुआं, एक सील किया हुआ सोता।<sup>१३</sup> तेरी शाखाएं अनारों की बारीचा हैं स्वादिष्ट फलों के साथ, मेंहदी और जटामांसी के पौधे,<sup>१४</sup> जटामांसी और केसर, सुगंधित बैत और दालचीनी, सभी लोबान के वृक्षों के साथ, गंधरस और अगर, सभी उत्तम बाम के तेलों के साथ।<sup>१५</sup> तू एक बगीचे का सोता है, ताजे पानी का कुआं, और लेबनान से बहती धाराएं।

<sup>१६</sup> जाग, उत्तर की हवा, और आ, दक्षिण की हवा; मेरे बगीचे को सुगंध से भर दे, इसके बाम के तेल बहने दे। मेरा प्रिय अपने बगीचे में आए और इसके स्वादिष्ट फलों को खाए।

**5** मैं अपने बगीचे में आ गया हूँ, मेरी बहन, मेरी दुल्हन; मैंने अपनी गंधरस और बलसान इकट्ठा कर लिया है। मैंने अपना मधुकोष और अपना शहद खा लिया है; मैंने अपनी दाखमधु और अपना दूध पी लिया है। खाओ, मित्रों, पियो और प्रेम में मतवाले हो जाओ।

<sup>2</sup> मैं सो रही थी, पर मेरा हृदय जाग रहा था। एक आवाज़! मेरा प्रिय दरवाज़ा खटखटा रहा था: ‘मेरे लिए दरवाज़ा खोलो, मेरी बहन, मेरी प्रियतमा, मेरी कबूतर,

## प्रेष्ठगीत

मेरी निर्दोष! क्योंकि मेरा सिर ओस से भीगा है, मेरे बाल रात की नमी से भीगे हैं।<sup>३</sup> मैंने अपनी अंगरखा उतार दी है, मैं इसे फिर से कैसे पहन सकती हूँ? मैंने अपने पैर धो लिए हैं, मैं उन्हें फिर से गंदा कैसे कर सकती हूँ?<sup>४</sup> मेरे प्रिय ने अपना हाथ द्वार के छेद से बढ़ाया, और मेरे मन में उसके लिए प्रेम उमड़ आया।<sup>५</sup> मैं अपने प्रिय के लिए दरवाजा खोलने उठी; और मेरे हाथ गंधरस से टपक रहे थे, और मेरी उंगलियाँ गंधरस की बूँदों से, कुँडी के हैंडल पर।<sup>६</sup> मैंने अपने प्रिय के लिए दरवाजा खोला, पर मेरा प्रिय मुँड गया और चला गया। जब वह चला गया तो मेरी आत्मा विफल हो गई। मैंने उसे खोजा पर नहीं पाया; मैंने उसे पुकारा पर उसने मुझे उत्तर नहीं दिया।<sup>७</sup> नगर में पहरा देने वाले मुझे मिले, उन्होंने मुझे मारा और पायल कर दिया; दीवारों के रक्काओं ने मेरी चादर मुझसे छीन ली।<sup>८</sup> मैं तुमसे विनती करती हूँ, हे यरूशलेम की बेटियों, यदि तुम मेरे प्रिय को पाओ, तो उसे क्या बताओगी? कि मैं प्रेम में बीमार हूँ।

<sup>९</sup> तुम्हारा प्रिय कैसा है, हे स्त्रियों में सबसे सुंदर? तुम्हारा प्रिय कैसा है, कि तुम हमें विनती करती हो?

<sup>१०</sup> मेरा प्रिय चमकदार और लालिमा लिए हुए है, दस हजार में सबसे उत्कृष्ट।<sup>११</sup> उसका सिर सोने जैसा है, शुद्ध सोना; उसके बाल खजूर के गुच्छों जैसे हैं और कौवे जैसे काले हैं।<sup>१२</sup> उसकी आँखें जलधाराओं के पास कबूतरों जैसी हैं, दूध में नहाई हुई, और अपनी जगह पर बैठी हुई।<sup>१३</sup> उसके गाल बलसान के बगीचे की क्यारियों जैसे हैं, सुगंधित जड़ी-बूटियों के किनारे; उसके हौंठ कुमुदिनी जैसे हैं गंधरस की बूँदों से टपकते हुए।<sup>१४</sup> उसके हाथ सोने की छड़े हैं जो पुरुराज से जड़ी हुई हैं; उसका पेट तराशा हुआ हाथी दांत है जो नीलम से जड़ा हुआ है।<sup>१५</sup> उसकी टाँगें संगमरमर के खंभे हैं जो शुद्ध सोने के आधार पर खड़े हैं, उसकी आकृति लेबनान जैसी है, देवदारों जैसी उत्कृष्ट।<sup>१६</sup> उसका मुँह मिठास से भरा है। और वह पूरी तरह से मनोहर है। यह मेरा प्रिय है और यह मेरा मित्र है, हे यरूशलेम की बेटियों।

**६** तेरा प्रियतम कहाँ चला गया, हे स्त्रियों में सबसे सुंदर? तेरा प्रियतम कहाँ मुँड गया है, कि हम तेरे साथ उसे खोजें?

<sup>२</sup> मेरा प्रियतम अपने बाग में गया है, बत्सम की क्यारियों में, अपने झुँड को चराने के लिए बागों में और कुमुदिनियों इकट्ठा करने के लिए।<sup>३</sup> मैं अपने प्रियतम की हूँ और मेरा प्रियतम मेरा है, वह जो कुमुदिनियों के बीच अपने झुँड को चराता है।

<sup>४</sup> तू तिर्जा की तरह सुन्दर है, मेरी प्रिये, यरूशलेम की तरह मनोहर, ध्वजों वाली सेना की तरह भयानक।<sup>५</sup> अपनी आँखें मुझसे फेर ले, क्योंकि उहोंने मुझे भ्रमित कर दिया है; तेरे बाल गिलाद से उत्तरी हुई बकरियों के झुँड के समान हैं।<sup>६</sup> तेरे दाँत धूलकर आई हुई भेड़ों के झुँड के समान हैं, जो जुड़वाँ बच्चे देती हैं, और उनमें से एक भी अपनी संतान नहीं खोता।<sup>७</sup> तेरी कनपटियों तेरे धूंधट के पीछे अनार के टुकड़े के समान हैं।<sup>८</sup> साठ रानियाँ और अस्सी रखेते हैं, और अनगिनत कुमारियाँ;<sup>९</sup> पर मेरी कबूल, मेरी निर्दोष एक ही है: वह अपनी माँ की अकेली बेटी है; वह उसे जन्म देने वाली की शुद्ध संतान है। युवतियों ने उसे देखा और धन्य कहा, रानियों और रखेलों ने भी, और उसकी प्रशंसा की, कहते हुए,

<sup>१०</sup> “यह कौन है जो सुबह की तरह दिखती है, पूर्णिमा की तरह सुन्दर, सूरज की तरह शुद्ध, ध्वजों वाली सेना की तरह भयानक?”

<sup>११</sup> मैं अखरोट के बाग में गया घाटी के फूलों को देखने, यह देखने कि बेल में कली लगी है या नहीं या अनार के फूल खिले हैं या नहीं।<sup>१२</sup> इससे पहले कि मैं जान पाता, मेरी आत्मा ने मुझे मेरे कुलीन लोगों के रथों के बीच रख दिया।

<sup>१३</sup> लौट आ, लौट आ, हे शुलमी; लौट आ, लौट आ, ताकि हम तुझे देख सकें। तुम शुलमी को क्यों देखना चाहते हो, जैसे दो सेनाओं के नृप को?

**७** तेरे पाँव जूतियों में कितने सुन्दर हैं, हे राजकुमारी की बेटी! तेरे नितम्बों की गोलाई गहनों के समान है, जो किसी कलाकार के हाथों का काम है।<sup>२</sup> तेरी नाभि गोल प्याले के समान है जिसमें मिश्रित दाखमधु की कमी नहीं होती; तेरा पेट गेहूँ के ढेर के समान है जो कुमुदिनियों से घिरा हुआ है।<sup>३</sup> तेरे दोनों स्तन दो जुड़वाँ हरिणों के समान हैं, जो हरिणी के बच्चे हैं।<sup>४</sup> तेरी गर्दन हाथी दाँत के मीनार के समान है, तेरी आँखें हेशबोन के तालाबों के समान हैं जो बध-रब्बीम के फाटक के पास हैं।<sup>५</sup> तेरी नाक लेबानों के मीनार के समान है, जो दमिशक की ओर मुख किए हुए है।<sup>६</sup> तेरा सिर तुझे करमल के समान मुकुट पहनता है, और तेरे सिर के बहते बाल बैगनी धागों के समान हैं; राजा तेरी लटों से मोहित है।<sup>७</sup> तू कितनी सुन्दर और कितनी मनोहरता है, मेरी प्रियतमा, अपनी सारी मनोहरताओं के साथ!<sup>८</sup> तेरी कद-काठी खजूर के पेड़ के समान है, और तेरे स्तन उसके गुच्छों के समान हैं।<sup>९</sup> मैंने कहा, “मैं खजूर के पेड़ पर चढ़ूँगा, मैं उसके फलों की डालियों को पकड़ूँगा।” अरे, तेरे स्तन

## षेषगीत

दाखलताओं के गुच्छों के समान हों, और तेरी साँसों की सुर्यांध सेबों के समान हो, <sup>९</sup> और तेरा मुँह उत्तम दाखमधु के समान हो!”<sup>१०</sup> यह मेरे प्रिय के लिए सहजता से नीचे उत्तरता है, उनके होंठों के बीच से थीरे-थीरे बहता है जो सो जाते हैं।

<sup>१०</sup> मैं अनन्त प्रिय की हूँ, और उसकी इच्छा मेरी ओर है। <sup>११</sup> आ, मेरे प्रिय, हम गाँवों में चलें, हम रात को गाँवों में बिताएँ। <sup>१२</sup> हम जलदी उठें और दाख की बारियों में चलें; देखें कि क्या दाखलता में कटी लगी है और उसकी कलियाँ खिली हैं, और क्या अनार के फूल खिले हैं। वहाँ मैं तुझे अपना प्रेम दूँगी। <sup>१३</sup> मंडराके सुर्यांध टें रहे हैं; और हमारे दरवाजों पर सभी उत्तम फल हैं, नए और पुराने, जो मैंने तेरे लिए, मेरे प्रिय, संजोए हैं।

**८** अहा, काश तुम मेरे भाई के समान होते, जो मेरी माँ की छाती से दूध पीते थे। यदि मैं तुम्हें बाहर पाती, तो तुम्हें चूमती; काई भी मुझे तिरस्कार नहीं करता। <sup>१</sup> मैं तुम्हें ले चलती और तुम्हें अपनी माँ के घर ले आती, जो मुझे सिखाया करती थी; मैं तुम्हें मसालेदार दाखमधु पीने को देती अपने अनारों के रस से। <sup>३</sup> उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे है, और उसका दायां हाथ मुझे आलिंगन करता है।

<sup>४</sup> मैं तुम्हें शापथ दिलाती हूँ, हे यस्तशेम की बेटियों, प्रेम को न जगाओ और न उकसाओ जब तक वह स्वर्यं न चाहे।

<sup>५</sup> यह कौन है जो जंगल से ऊपर आ रही है अपने प्रिय पर झुकी हुई? “सेब के पेड़ के नीचे मैंने तुम्हें जगाया; वहीं तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म दिया, वहीं वह प्रसव पीड़ा में थी और तुम्हें जन्म दिया। <sup>६</sup> मुझे अपने हृदय पर मुहर के समान रखो, अपने हाथ पर मुहर के समान। क्योंकि प्रेम मृत्यु के समान प्रबल है, ईर्ष्ण अयोलोक के समान कठोर है; इसके ज्वाले अग्नि की ज्वालाएँ हैं, यहोवा की ज्वाला। <sup>७</sup> बहुत से जल प्रेम को बुझा नहीं सकते, न ही नदियाँ उसे बहा सकती हैं; यदि काई प्रेम के लिए अपने घर की सारी संपत्ति दे दे, तो वह पूरी तरह से तिरस्कृत होगी।

<sup>८</sup> हमारी एक छोटी बहन है, और उसकी छातियाँ नहीं हैं; हम अपनी बहन के लिए क्या करें उस दिन जब उसकी बात चलेगी? <sup>९</sup> यदि वह दीवार है, तो हम उस पर चाँदी की मीनार बनाएँगे; पर यदि वह द्वार है, तो हम उसे देवदार की लकड़ी से बंद कर देंगे।

<sup>१०</sup> मैं दीवार थी, और मेरी छातियाँ मीनारों के समान थीं; तब मैं उसकी आँखों में ऐसी हो गई जो शाति पाती है।

<sup>११</sup> सुलैमान की बाल-हामोन में एक दाख की बारी थी; उसने दाख की बारी को रखवातों को सौंप दिया। प्रत्येक को उसके फल के लिए एक हजार चाँदी के सिक्के देने थे। <sup>१२</sup> मेरी अपनी दाख की बारी मेरे अधिकार में है; एक हजार सिक्के तुम्हारे लिए हैं, सुलैमान, और दो सौ उन लोगों के लिए जो उसके फल की देखभाल करते हैं।

<sup>१३</sup> तुम जो बागों में बैठी हो, मेरे साथी तुम्हारी आवाज़ सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं— मुझे सुनाओ! <sup>१४</sup> जलदी करो, मेरे प्रिय, और हरिण या युवा हिरण के समान हो मसालों के पहाड़ों पर।

## यशायाह

**1** आमोज के पुत्र यशायाह का दर्शन, जो उसने यहूदा और यरूशलेम के विषय में देखा, जब उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकियाह यहूदा के राजा थे।<sup>2</sup> हे स्वर्ग, सुनो, और हे पृथ्वी, कान लगा; क्योंकि यहोवा ने कहा है: “बेटे जिहें मैंने पाला और बड़ा किया, पर उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है।”<sup>3</sup> बैल अपने मालिक को जानता है, और गधा अपने स्वामी की चरनी को, परन्तु इसाएल नहीं जानता, मेरे लोग नहीं समझते।<sup>4</sup> हाय, पापी राष्ट्र, दोष से दबे हुए लोग, दुश्मों की संतान, बिगड़े हुए बेटा! उन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, उन्होंने इसाएल के पवित्र को तुच्छ जाना है, उन्होंने उससे मुँह मोड़ लिया है।<sup>5</sup> तुम फिर कहाँ मार जाओगे, जब तुम अपने विद्रोह में बने रहते हो? सारा सिर बीमार है, और सारा दिल दुर्बल है।<sup>6</sup> पैर के तलवे से लोकर सिर तक उसमें कुछ भी स्वस्थ नहीं है, केवल चोटें, घाव, और कच्चे घाव, जो न तो दबाए गए हैं, न बैंधे हुए हैं, न तेल से नरम किए गए हैं।<sup>7</sup> तुम्हारा देश उजाड़ हो गया है, तुम्हारे नगर आग से जल गए हैं; तुम्हारे खेत—अजनबी उहें तुम्हारे सामने खा रहे हैं; यह उजाड़ है, जैसे अजनबियों द्वारा उलट दिया गया हो।<sup>8</sup> और सियोन की बेटी एक दाख की बारी में मचान की तरह छोड़ दी गई है, एक खीरे के खेत में रखवाले की झोपड़ी की तरह, एक नगर जो निरासी में है।<sup>9</sup> यदि सेनाओं के यहोवा ने हमें कुछ बचे हुए न छोड़ होते, तो हम सदोम के समान हो जाते, हम गमरा के समान हो जाते।<sup>10</sup> यहोवा का वचन सुनो, हे सदोम के शासकों; हमारे परमेश्वर की शिक्षा सुनो, हे गमरा के लोग।<sup>11</sup> “मैं तुम्हारे अनेक बलिदानों से मुझे क्या?” यहोवा कहता है। “मैं मेढ़ों के होमबलियों से और याते हुए पशुओं की चर्बी से तंग आ गया हूँ; और मैं बैलों, भेड़ों, या बकरों के खून में कोई प्रसन्नता नहीं लेता।”<sup>12</sup> जब तुम मेरे नामने प्रकट होने के लिए आते हो, तो कौन तुमसे मेरे अँगों को रौंदेने की माँग करता है?<sup>13</sup> अपनी वृक्ष मेंटें लाना बंद करो, धूप मेरे लिए धृणस्पद है। नया चाँद और सब्त, सभा की घोषणा— मैं अधर्म और उसस्व सभा को सहन नहीं कर सकता।<sup>14</sup> मैं तुम्हारे नए चाँद के त्योहारों और तुम्हारी नियत पर्वों से धृणा करता हूँ, वे मेरे लिए बोंच बन गए हैं; मैं उन्हें सहन करने से धक गया हूँ।<sup>15</sup> इसलिए जब तुम प्रार्थना में अपने हाथ फैलाते हो, मैं अपनी आँखें तुमसे छिपाऊँगा; हाँ, भले ही तुम बहुत प्रार्थनाएँ करो, मैं नहीं सुनूँगा। तुम्हारे हाथ खून से भरे हुए हैं।<sup>16</sup> अपने आप को धोओ, अपने आप को शुद्ध करो; मेरे दृष्टि से अपने कर्मों को बुराई को दूर करो। बुराई करना बंद करो,<sup>17</sup> अच्छा करना सीखो; न्याय की खोज करो, अत्याचारी को डॉँटो, अनाथ के लिए न्याय प्राप्त करो, विधावा के मामले की पैरवी करो।<sup>18</sup> “अब आओ, और हम तुम्हारे मामले

पर विचार करें,” यहोवा कहता है, “यद्यपि तुम्हारे पाप लाल रंग के हैं, वे बर्फ के समान सफेद हो जाएँगे; यद्यपि वे गहरे लाल हैं, वे ऊन के समान होंगे।”<sup>19</sup> यदि तुम तैयार और आज्ञाकारी हो, तो तुम देश की उत्तम चीज़ें खाओगे;<sup>20</sup> परन्तु यदि तुम इनकारा करते हो और विद्रोह करते हो, तो तुम तलवार से भस्म हो जाओगे।”<sup>21</sup> क्योंकि यहोवा के मुख ने यह कहा है।<sup>22</sup> कैसे विश्वासयोग नगर वेश्या बन गया, जो न्याय से भरा हुआ था! धर्मिकता उसमें निवास करती थी, पर अब हत्यारे।<sup>23</sup> तुम्हारी चाँदी कचरा बन गई है, तुम्हारा पेय जल से पतता हो गया है।<sup>24</sup> तुम्हारे शासक विद्रोही हैं और चोरों के साथी हैं; हर कोई इक्षित से प्रेम करता है और उपहारों के पीछे दौड़ता है। वे अनाथ के लिए न्याय प्राप्त नहीं करते, और न ही विधावा का मामला उनके सामने आता है।<sup>25</sup> इसलिए सेनाओं का यहोवा, इसाएल का शक्तिशाली, धोषित करता है, “आह, मैं अपने विरोधियों से रहत पाऊँगा, और अपने शत्रुओं से बदल लूँगा।”<sup>26</sup> मैं अपना हाथ तुम्हारे विरुद्ध भी उठाऊँगा, और तुम्हारी अशुद्धियों को साबुन से धो दूँगा, और तुम्हारी सारी मैल को हटा दूँगा।<sup>27</sup> फिर मैं तुम्हारे न्यायाधीशों को पहले के समान बहाल करूँगा, और तुम्हारे सलाहकारों को अंरंभ में जैसा था वैसा कर दूँगा; उसके बाद तुम्हें धर्म का नगर कहा जाएगा, एक विश्वासयोग नगर।”<sup>28</sup> सियोन न्याय के साथ छुड़ाया जाएगा, और उसके पक्षातप करने वाले धर्म के साथ।<sup>29</sup> परन्तु दुष्ट और पापी एक साथ टूट जाएँगे, और जो यहोवा को त्यागते हैं उनका अंत हो जाएगा।<sup>30</sup> क्योंकि तुम उन बलूतों से लजित होगे जिन्हें तुमने चाहा है, और उन बागों से शर्मिदा होगे जिन्हें तुमने चुना है।<sup>31</sup> क्योंकि तुम उस बलूत के समान होगे जिसकी पत्ती मुरझा जाती है, या उस बाग के समान जो बिना पानी का है।<sup>32</sup> मजबूत व्यक्ति चिंगारी बन जाएगा, उसका काम भी एक चिंगारी। इसलिए वे दोनों एक साथ जलेंगे और उन्हें बुझाने वाला कोई नहीं होगा।

**2** आमोज के पुत्र यशायाह को यह वचन यहूदा और यरूशलेम के विषय में दिखाइ दिया।<sup>2</sup> अब यह होगा कि अंतिम दिनों में प्रभु के घर का पर्वत सब पर्वतों के ऊपर स्थिर किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से ऊँचा उठेगा; और सब राष्ट्र उसकी ओर बहेंगे।<sup>3</sup> और बहुत से लोग आएंगे और कहेंगे, “आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चढ़ें, याकूब के परमेश्वर के घर में जाएं; ताकि वह हमें अपनी राहों के विषय में सिखाए, और हम उसकी पर्याप्ति में चर्चा करें।”<sup>4</sup> क्योंकि व्यवस्था सियोन से निकलेंगी और प्रभु का वचन यरूशलेम से।<sup>5</sup> और वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा, और बहुत से लोगों के लिए मध्यस्थता करेगा; और वे अपनी तलवारों को हल के फाल में बदल देंगे,

## यशायाह

और अपने भातों को छंटाई के चाकुओं में। राष्ट्र राष्ट्र के खिलाफ तलवार नहीं उठाएगा, और वे फिर कभी युद्ध नहीं सीखेंगे।<sup>5</sup> आओ, याकूब के घराने, और हम प्रभु की ज्योति में चलें।

<sup>6</sup> क्योंकि तूने अपने लोगों याकूब के घराने को छोड़ दिया है, क्योंकि वे पूर्व से आने वाले प्रभावों से भरे हुए हैं, और वे पलिशितयों की तरह भविष्यतवक्ता हैं, वे विदेशियों के बच्चों के साथ सौदे भी करते हैं।<sup>7</sup> उनका देश चांदी और सोने से भी भर गया है, और उनके खजानों का कोई अंत नहीं है; उनका देश घोड़ों से भी भर गया है, और उनके रथों का कोई अंत नहीं है।<sup>8</sup> उनका देश मूर्तियों से भी भर गया है, वे अपने हाथों के काम की पूजा करते हैं, जो उनके उंगलियों ने बनाया है।<sup>9</sup> इसलिए साधारण व्यक्ति को नीचा किया गया है, और महत्वपूर्ण व्यक्ति को नीचे लाया गया है, परंतु उन्हें क्षमा मत करो।<sup>10</sup> चट्टानी स्थान में प्रवेश करो और धूल में छिप जाओ प्रभु के भय से और उसकी महिमा की शोभा से।<sup>11</sup> मानवता की गर्वित दृष्टि को नीचा किया जाएगा, और लोगों का अहंकार नम्र किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊँचा किया जाएगा।<sup>12</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु का एक दिन होगा हर एक के खिलाफ जो घमंडी और अहंकारी है, और हर एक के खिलाफ जो ऊँचा उठाया गया है, ताकि वह नीचा किया जा सके।<sup>13</sup> और यह लेबनान के सभी ऊँचे और ऊँचे देवदारों के खिलाफ होगा, बाशान के सभी बल्टों के खिलाफ,<sup>14</sup> सभी ऊँचे पर्वतों के खिलाफ, सभी ऊँची उठी हुई पहाड़ियों के खिलाफ,<sup>15</sup> हर एक ऊँचे मीनार के खिलाफ, हर एक दृढ़ दीवार के खिलाफ,<sup>16</sup> तर्सीश के सभी जहजों के खिलाफ, और सभी मनोहर जहाजों के खिलाफ।<sup>17</sup> और मानवता का गर्व नम्र किया जाएगा, और लोगों का अहंकार नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊँचा किया जाएगा,<sup>18</sup> और मूर्तियाँ पूरी तरह से गायब हो जाएंगी।

<sup>19</sup> लोग चट्टानों की गुफाओं में जाएंगे और धरती के छिप्पों में प्रभु के भय से दूर और उसकी महिमा की शोभा से, जब वह पृथ्वी को भयभीत करने के लिए उठेगा।<sup>20</sup> उस दिन लोग तिलचट्टों और चमगादङ्गों को फेंक देंगे अपने चांदी की मूर्तियों और सोने की मूर्तियों को, जो उन्होंने अपने लिए पूजा करने के लिए बनाई थीं,<sup>21</sup> ताकि चट्टानों की दरारों और चट्टानों की दरारों में जाएं, प्रभु के भय से दूर और उसकी महिमा की शोभा से, जब वह पृथ्वी को भयभीत करने के लिए उठेगा।<sup>22</sup> उस व्यक्ति का ध्यान न दो, जिसकी जीवन की सांस

उसकी नासिका में है, क्योंकि उसे क्यों प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए?

**3** देखो, सेनाओं का प्रभु यहोवा यरूशलेम और यहूदा से सहारा और समर्घन दोनों को हटा देगा, पूरी रोटी की आपूर्ति, और पूरी पानी की आपूर्ति;<sup>2</sup> वीर पुरुष और योद्धा, न्यायी और नबी, भविष्यतवक्ता और वृद्ध,<sup>3</sup> पचास का सेनापति और प्रतिष्ठित व्यक्ति, सलाहकार और कुशल कारीगर, और निपुण जादूगर।<sup>4</sup> और मैं केवल लड़कों को उनके नेता बनाऊंगा, और शासरी बच्चे उन पर शासन करेंगे,<sup>5</sup> और लोग उत्तीर्णित होंगे, प्रत्येक एक दूसरे से, और प्रत्येक अपने पड़ोसी से; युवा वृद्ध पर आक्रमण करेगा, और निम्न सम्माननीय के विरुद्ध।<sup>6</sup> जब एक व्यक्ति अपने भाई को अपने पिता के घर में पकड़ लेगा, कहता हुआ, "तुम्हारे पास एक चोगा है, तुम हमारे शासक बनो, और ये खंडहर तुम्हारे अधिकार के अधीन होंगे,"<sup>7</sup> उस दिन वह विरोध करेगा, कहता हुआ, "मैं तुम्हारा विकित्सक नहीं बनूंगा, क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न चोगा; तुम मुझे लोगों का शासक नियुक्त न करो।"<sup>8</sup> क्योंकि यरूशलेम ठोकर खा चुका है और यहूदा गिर चुका है, क्योंकि उनकी वापी और उनके कार्य प्रभु के विरुद्ध हैं, उसकी महिमामय उपस्थिति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए।<sup>9</sup> उनके चेहरों की अभिव्यक्ति उनके विरुद्ध गवाही देती है, और वे अपने पाप को सदोम की तरह प्रकट करते हैं; वे इसे छिपाते भी नहीं हैं। उन पर हाय, क्योंकि उन्होंने अपने ऊपर बुराई लाई है।<sup>10</sup> धर्मी से कहो कि उनके लिए सब कुछ अच्छा होगा, क्योंकि वे अपने कार्यों का फल खाएंगे।<sup>11</sup> दुष्प पर हाय! उसके लिए सब कुछ बुरा होगा, क्योंकि जो वह योग्य है वह उसके साथ किया जाएगा।<sup>12</sup> मेरे लोगों उनके उत्तीर्णक उन पर हिंसा करते हैं, और महिलाएं उन पर शासन करती हैं। मेरे लोगों जो तुम्हें मार्गदर्शन करते हैं वे तुम्हें भटकाते हैं और तुम्हारे मार्गों की दिशा को भ्रमित करते हैं।

<sup>13</sup> प्रभु विवाद करने के लिए उठता है, और लोगों का न्याय करने के लिए खड़ा होता है।<sup>14</sup> प्रभु अपने लोगों के बुजुर्गों और नेताओं के साथ न्याय में प्रवेश करता है, "यह तुम हो जिन्होंने दाख की बारी को खा लिया है; गरीबों से चुराई गई वस्तुएं तुम्हारे घरों में हैं।"<sup>15</sup> तुम मेरे लोगों को कुचलने का क्या मतलब रखते हों और गरीबों के चेहरे को दबाते हों?" सेनाओं का प्रभु यहोवा कहता है।

<sup>16</sup> इसके अलावा, प्रभु ने कहा, "क्योंकि सिय्योन की बैठियाँ घमंडी हैं और सिर ऊँचा करके और आकर्षक आँखों से चलती हैं, और छोटे कदमों के साथ चलती हैं

## यशायाह

और अपने पैरों पर पायल बजाती हैं,<sup>17</sup> इसलिए प्रभु सियोन की बेटियों की खोपड़ी को धारों से प्रभावित करेगा, और प्रभु उनके गुप्त माथे को प्रकट करेगा।"<sup>18</sup> उस दिन प्रभु उनकी पायल, हेडबैंड, अर्धचंद्र आभूषण की सुंदरता को हटा देगा,<sup>19</sup> जूलते हुए कान की बालियाँ, कंगन, घूंघट,<sup>20</sup> हेडडेस, टखने की जंजीरें, कमरबंद, इत्र के डिब्बे, ताबीज़,<sup>21</sup> अंगूठियाँ, नथ,<sup>22</sup> उत्सव के वस्त्र, बाहरी वस्त्र, शॉल, पर्स,<sup>23</sup> पपीरस के वस्त्र, अंतर्वस्त्र, हेडबैंड, और घूंघट।<sup>24</sup> अब यह होगा कि बाम के तेल के बजाय दुर्गंधि होगी; कमरबंद के बजाय रससी, अच्छी तरह से सेट बालों के बजाय उखाड़ हुआ खोपड़ी; अच्छे कपड़ों के बजाय टाटा का वस्त्र; और सुंदरता के बजाय ब्रांडिंग।<sup>25</sup> तुम्हारे पुरुष तलवार से गिरेंगे और तुम्हारे वीर युद्ध में।<sup>26</sup> और उसके द्वारा विलाप और शोक करेंगे, और वह धरती पर निर्जन बैठी रहेगी।

**4** उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़ लेंगी और कहेंगी, “हम अपनी रोटी खाएँगी और अपने वस्त्र पहनेंगी, बस हमें अपने नाम से पुकारा जाए; हमारी लज्जा दूर करो।”

<sup>2</sup> उस दिन यहोवा की शाखा सुंदर और महिमामय होगी, और पृथी का फल इसाएल के बचे हुए लोगों का गर्व और शोभा होगा।<sup>3</sup> और यह होगा कि जो सियोन में बचा रहेगा और यरूशलेम में पीछे रह जाएगा, वह पवित्र कहलाएगा— हर वह व्यक्ति जो यरूशलेम में जीवन के लिए दर्ज किया गया है।<sup>4</sup> जब यहोवा सियोन की पुरियों की गंदीयों को धो देगा और यरूशलेम के बीच से उसके रक्तपात को शुद्ध करेगा, न्याय की आत्मा और जलने की आत्मा के द्वारा,<sup>5</sup> तब यहोवा सियोन पर्वत के पूरे क्षेत्र पर और उसकी सभाओं पर दिन में बादल और धूमों बनाएगा, और रात में जलती हुई आग की चमक; क्योंकि सारी महिमा के ऊपर एक छत्र होगा।<sup>6</sup> और वहाँ एक आश्रय होगा जो दिन में गर्मी से छाया देगा, और तूफान और बारिश से शरण और सुरक्षा प्रदान करेगा।

**5** अब मैं अपने प्रिय के लिए गाउँगा अपने प्रिय के दाख की बारी के विषय में एक गीत। मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी एक उपजाऊ पहाड़ी पर।<sup>7</sup> उसने उसके चारों ओर खोदा, पथरों को साफ किया, और उत्तम बेले लगाई। उसने उसके बीच में एक मीनार बनाई, और उसमें एक अंगूर का रस निकालने का कुंड भी खोदा; फिर उसने अच्छे अंगूरों की आशा की, परंतु उसने केवल बेकार अंगूर उत्पन्न किए।<sup>8</sup> “और अब, हे

यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगों, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो।<sup>9</sup> मेरी दाख की बारी के लिए और क्या करना बाकी था जो मैंने उसमें नहीं किया? व्याँ, जब मैंने अच्छे अंगूरों की आशा की, तो उसने बेकार अंगूर उत्पन्न किए? <sup>10</sup> तो अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं अपनी दाख की बारी के साथ क्या करने जा रहा हूँ: मैं उसकी बाड़ हटाऊँगा और वह नष्ट हो जाएगी; मैं उसकी दीवार गिरा दूँगा और वह रौंदी जाएगी।<sup>11</sup> मैं उसे उजाड़ दूँगा; वह न तो छाँटी जाएगी और न ही खोदी जाएगी, परंतु उसमें बाड़ियाँ और काँटे उगा आएंगे। मैं बादलों को भी आदेश दूँगा कि उस पर वर्षा न करो।<sup>12</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु की दाख की बारी इसाएल का धराना है, और यहूदा के लोग उसकी प्रिय पौध हैं। तो उसने न्याय की प्रतीक्षा की, परंतु देखो, वहाँ खून-खराबा था; धार्मिकता की प्रतीक्षा की, परंतु देखो, सहायता के लिए पुकार थी।

<sup>8</sup> हाय उन पर जो घर से घर जोड़ते हैं, और खेत से खेत मिलाते हैं, जब तक कि कोई स्थान नहीं बचता, ताकि तुम भूमि के बीच में अकेले रहो।<sup>9</sup> मेरे कानों में सेनाओं के प्रभु ने शपथ खाई है, “कई घर निश्चित रूप से उजाड़ हो जाएँगे, यहाँ तक कि बड़े और सुंदर भी, बिना निवासियों के।<sup>10</sup> क्योंकि दस एक दी की दाख की बारी केवल एक बाथ शराब ही उत्पन्न करेगी, और एक होमर बीज केवल एक एफा अनाज ही उत्पन्न करेगा।”

<sup>11</sup> हाय उन पर जो सुबह जल्दी उठते हैं ताकि वे मादक पेय का पीछा कर सकें, जो देर रात तक जागते रहते हैं ताकि शराब उहें उत्तेजित करे।<sup>12</sup> उनकी दावतें वीआ॒ और सारंगी, डफली और बासुरी, और शराब के साथ होती हैं, परंतु वे प्रभु के कार्यों पर ध्यान नहीं देते, और न ही वे उसके हाथों के कामों पर विचार करते हैं।<sup>13</sup> इसलिए मेरी प्रजा ज्ञान के अभिन्न में निवासन में चली जाती है; और उनकी श्रेष्ठता भूख से मर रही है, और उनकी भीड़ न्यास से तड़प रही है।<sup>14</sup> इसलिए शिओल ने अपना गला बढ़ा लिया है और अपनी मुँह को माप से परे खोल दिया है, और यरूशलेम की शोभा, उसकी भीड़, उसकी शोरगुल भरी खुशी, और उसके भीतर के उल्लासमय उसमें उतर जाते हैं।<sup>15</sup> तो साधारण व्यक्ति को नम्र किया जाएगा और महत्वपूर्ण व्यक्ति को नीचा किया जाएगा, घमडी की अँखें भी नीची की जाएँगी।<sup>16</sup> परंतु सेनाओं का प्रभु न्याय में महान होगा, और पवित्र परमेश्वर धार्मिकता में अपने आप को पवित्र दिखाएगा।<sup>17</sup> तब मैंने अपनी चरागाह में चरेंगे, और परदेशी धनवानों के खंडहरों में खाएँगे।

## यशायाह

<sup>18</sup> हाय उन पर जो धोखे की रस्सियों से अधर्म को खींचते हैं, और पाप को जैसे गाड़ी की रस्सियों से; <sup>19</sup> जो कहते हैं, “उसे जलदी करो, उसे अपना काम शीघ्रता से करने दो, ताकि हम उसे देख सकें; और इसाएल के पवित्र की योजना निकट आए और पूरी हो, ताकि हम उसे जान सकें।” <sup>20</sup> हाय उन पर जो बुराई को भलाई कहते हैं, और भलाई को बुराई; जो अंधकार को प्रकाश के स्थान पर रखते हैं और प्रकाश को अंधकार के स्थान पर; जो कड़वे को मीठे के स्थान पर रखते हैं और मीठे को कड़वे के स्थान पर। <sup>21</sup> हाय उन पर जो अपनी ही अँखों में बुद्धिमान हैं और अपनी ही दृष्टि में चुतुर। <sup>22</sup> हाय उन पर जो शाराब पीने में वीर हैं, और मादक पेय मिलाने में पराक्रमी पुरुष हैं, <sup>23</sup> जो दुष्ट की रिश्वत के लिए निर्दृष्ट ठहराते हैं, और जो सही लोगों के अधिकार छीन लेते हैं। <sup>24</sup> इसलिए, जैसे आग की जीभ भूसे को खा जाती है और सूखी घास ज्वाला में गिर जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़न जैसी हो जाएगी; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के प्रभु की व्यवस्था को अस्तीकार कर दिया है, और इसाएल के पवित्र के वर्चन को त्याग दिया है। <sup>25</sup> इस कारण से प्रभु का क्रोध उसकी प्रजा के विरुद्ध भड़क उठा है, और उसने उनके विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाया और उहाँ मरा। और पहाड़ कींग पए, और उनकी लाशें सड़कों के बीच कूड़े की तरह पड़ी रहीं। इन सब के बावजूद, उसका क्रोध नहीं मुड़ा है, परंतु उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है। <sup>26</sup> वह दूर देश के लिए एक झंडा भी उठाएगा, और पृथ्वी के छोर से उसके लिए सीटी बजाएगा; और देखो, वह तेजी से आएगा। <sup>27</sup> उसमें कोई थका हुआ नहीं है और न ही कोई ठोकर खाता है, कोई न तो ज्ञपकी लेता है और न ही सोता है; न ही उसकी कमर का पट्टा खुला है न ही उसकी चप्पल का फीता टूटा है। <sup>28</sup> उसके तीर तेज हैं और उसकी सभी धनुष खिंचे हुए हैं; उसके धोड़ों के खुर चक्रमक पत्तर जैसे हैं, और उसकी रथों के पहिए टूफानी हवा जैसे। <sup>29</sup> उसका गर्जन शेरनी की तरह है, और वह जवान शेरों की तरह गरजता है; वह शिकार को पकड़ता है और उसे ले जाता है, और उसे बचाने वाला कोई नहीं होता। <sup>30</sup> और वह उस दिन समुद्र के गर्जन की तरह उसके विरुद्ध गरजेगा। यदि कोई भूमि की ओर देखो, तो देखो, वहाँ अंधकार और संकट है; यहाँ तक कि प्रकाश उसके बादलों से अंधकारमय हो जाता है।

**6** राजा उज्जियाह की मृत्यु के वर्ष में मैने प्रभु को एक सिंहासन पर बैठे हुए देखा, जो ऊँचा और महान था, और उसके वर्स वाला एरा मंदिर को भर रहा था। <sup>2</sup> सराफिम उसके ऊपर खड़े थे, प्रत्येक के छह पंख थे: दो

से प्रत्येक ने अपना मुख ढका, दो से अपने पाँव ढके, और दो से उड़ रहे थे। <sup>3</sup> और एक ने दूसरे को पुकार कर कहा, “पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी है।” <sup>4</sup> और जो पुकार रहा था उसकी आवाज से चौखटों की नीव हिल गई, और मंदिर धूँसे भर गया। <sup>5</sup> तब मैने कहा, “हाय मुझ पर, क्योंकि मैं नष्ट हो गया हूँ! क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ; क्योंकि मैने सेनाओं के प्रभु, राजा को देखा है।” <sup>6</sup> तब सराफिम में से एक मेरे पास उड़कर आया, उसके हाथ में जलता हुआ कोयला था, जिसे उसने विमटे से वेदी से लिया था। <sup>7</sup> उसने मेरे मुँह को छुआ और कहा, “देख, यह तेरे होंठों को छ गया है, और तेरा दोष दूर हो गया है और तेरे पाप का प्रायश्चित हो गया है।” <sup>8</sup> तब मैने प्रभु की आवाज़ सुनी, कहते हुए, “मैं किसे भेजूँ, और हमारे लिए कौन जाएगा?” तब मैने कहा, “मैं यहाँ हूँ। मुझे भेजो।” <sup>9</sup> और उसने कहा, “जाओ, और इन लोगों से कहो: ‘सुनते रहो, परन्तु समझो मत; और देखते रहो, परन्तु ज्ञान प्राप्त मत करो।’” <sup>10</sup> इन लोगों के हृदय को असंवेदनशील बना दो, उनके कानों को सुस्त, और उनकी अँखों को अंधा, ताकि वे अपनी अँखों से न देखें, अपने कानों से न सुनें, अपने हृदय से न समझें, और लौटकर चंगे न हों।” <sup>11</sup> तब मैने कहा, “प्रभु, कब तक?” और उसने उत्तर दिया, “जब तक नगर उजाड़ और बिना निवासियों के न हो जाएँ, घर बिना लोगों के न हो जाएँ, और भूमि पूरी तरह से उजाड़ न हो जाए।” <sup>12</sup> प्रभु ने लोगों को पूरी तरह से हटा दिया है, और भूमि के बीच में बहुत से स्थान छोड़ दिए गए हैं। <sup>13</sup> फिर भी उसमें दसवाँ भाग रहेगा, और वह फिर से जलने के लिए तैयार होगा, जैसे एक तेराबिंध या एक ओक जिसका ढूँठ काटे जाने पर भी बचा रहता है; पवित्र बीज उसका ढूँठ है।”

**7** अब आहाज के दिनों में, जो योथाम का पुत्र और यहूदा का राजा उज्जियाह का पुत्र था, ऐसा हुआ कि अराम के राजा रसीन और इसाएल के राजा रेम्ल्याह के पुत्र पेकह ने यरूशलेम पर आक्रमण करने के लिए चढ़ाई की, परन्तु वे उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सके।

<sup>2</sup> जब दाऊद के धराने को यह सूचना मिली, “अरामी लोग इक्कैम में डेरा डाले हुए हैं,” तो उसका और उसके लोगों का दिल वैसे ही कांप उठा जैसे जंगल के पेड़ हवा से कांपते हैं। <sup>3</sup> तब यहोवा ने यशायाह से कहा, “अब तू और तेरा पुत्र शेआर-याशूब उपरी जलाशय के नाले के अंत में, धोबी के मेदान की सड़क पर, आहाज से मिलें जाओ, <sup>4</sup> और उससे कहो, ‘सावधान रहो और शांत रहो, मत डरो और इन दो धूम्रपान करने वाली लकड़ियों के ढूँठों के कारण, अर्थात् रसीन और अराम की उग्र क्रोध

## यशायाह

के कारण, और रेमल्याह के पुत्र के कारण, हृदयहीन मत बनो।<sup>5</sup> क्योंकि अराम और रेमल्याह के पुत्र के साथ मिलकर तुम्हारे विरुद्ध बुराई की योजना बनाई है, यह कहते हुए,<sup>6</sup> “आओ, हम यहूदा पर चढ़ाइ करें और उसे आतंकित करें, और उसके बीच में एक दरार बनाएं, और ताबेल के पुत्र को उसके बीच राजा नियुक्त करें,”<sup>7</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: “यह न तो ठहरेगा और न ही पूरा होगा।<sup>8</sup> क्योंकि अराम का सिर दमिश्क है, और दमिश्क का सिर रसीन है (पैसठ वर्षों के भीतर इफ्रेम टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, ताकि वह अब एक जाति न रहे),<sup>9</sup> और इफ्रेम का सिर सामरिया है, और सामरिया का सिर रेमल्याह का पुत्र है। यदि तुम विश्वास नहीं करोगे, तो निश्चय ही तुम स्थिर नहीं रहोगे!”<sup>10</sup> तब यहोवा ने आहाज से फिर कहा, “अपने लिए यहोवा अपने परमेश्वर से एक चिन्ह मांग; चाहे वह अधीलोक जितना गहरा हो या स्वर्ग जितना ऊँचा।”<sup>11</sup> परन्तु आहाज ने कहा, “मैं नहीं मांगूंगा, और न ही मैं यहोवा की परीक्षा करूँगा।”<sup>12</sup> तब उसने कहा, “अब सुनो, दाऊद के घराने! क्या यह तुम्हारे लिए मनुष्यों की सहनशीलता को आजमाना एक तुच्छ बात है, कि तुम मेरे परमेश्वर की सहनशीलता को भी आजमाओगे? ”<sup>13</sup> इसलिए यहोवा स्वर्ग तुम्हें एक चिन्ह देगा: देखो, एक कुँवारी गम्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।<sup>14</sup> वह दहीं और शहद खाएगा जब वह बुराई को अस्वीकार करने और भलाई को चुनने के लिए पर्याप्त जान जाएगा।<sup>15</sup> क्योंकि इससे पहले कि लड़का बुराई को अस्वीकार करने और भलाई को चुनने के लिए पर्याप्त जान पाए, वह भूमि जिसके दो राजा औं से तुम डरते हो, स्थाग दी जाएगी।

<sup>17</sup> यहोवा तुम पर, तुम्हारे लोगों पर, और तुम्हारे पिता के घर पर ऐसे दिन लाएगा जो उस दिन से नहीं आए जब से इफ्रेम यहूदा से अलग हुआ था—असुर का राजा।<sup>16</sup> उस दिन यहोवा मिस की नदियों के सबसे दूरस्थ भाग में रहने वाली मक्खी के लिए और अश्शूर के देश में रहने वाली मधुमक्खी के लिए सीटी बजाएगा।<sup>17</sup> वे सब आकर खट्टी घाटियों में, चट्टानों की दरारों में, सभी कांटोंदर झाड़ियों पर, और सभी जल स्रोतों पर बसेंगे।<sup>20</sup> उस दिन यहोवा एक उस्तरे से, जो यूफ्रेट्स नदी के पार के क्षेत्रों से किराए पर लिया गया है (अर्थात्, अश्शूर के राजा से), सिर और पैरों के बालों को मुंडेगा, और यह दाढ़ी को भी हटा देगा।<sup>21</sup> उस दिन एक व्यक्ति एक बछिया और दो भेड़ें जीवित रख सकता है;<sup>22</sup> और दूध की अधिकता के कारण वह दही खाएगा, क्योंकि जो कोई भी भूमि में बचा रहेगा वह दही और शहद खाएगा।<sup>23</sup> और उस दिन ऐसा होगा कि हर वह स्थान जहाँ हजार

बेलें थीं, जो हजार शेकेल चाँदी के मूल्य की थीं, काटे और झाड़ियाँ बन जाएँगी।<sup>24</sup> लोग धनुष और तीर लेकर वहाँ आएंगे, क्योंकि सारी भूमि काटे और झाड़ियों से भर जाएगी।<sup>25</sup> जहाँ तक उन सभी पहाड़ियों का सवाल है जिहें कभी कुदाल से जोता जाता था, तुम कांटों और झाड़ियों के डर से वहाँ नहीं जाओगे; परन्तु वे बैतों के चरने और भेड़ों के रौंदने का स्थान बन जाएँगी।

**8** फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “अपने लिए एक बड़ी पट्टी ले और उस पर साधारण अक्षरों में लिख: महेर-शालाल-हाश-बज़;<sup>2</sup> और मैं अपनी ओर से गवाही के लिए विश्वासयोग्य साक्षियों को लूंगा, उरियाह याजक और जेबेरेक्या के पुत्र जकर्या ह।”<sup>3</sup> तब मैं भविष्यद्वक्ती के पास गया, और उसने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया। फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “उसका नाम महेर-शालाल-हाश-बज रखो;<sup>4</sup> क्योंकि इससे पहले कि वह लड़का ‘मेरे पिता’ या ‘मेरी माता’ पुकारना सीखे, दमिश्क की संपत्ति और सामरिया की लूट अश्शूर के राजा के सामने ले जाई जाएगी।”

<sup>5</sup> फिर यहोवा ने मुझसे आगे कहा, <sup>6</sup> “क्योंकि इन लोगों ने शीलोह के धीरे बहने वाले जल को अस्वीकार कर दिया है, और रेजिन और रेमल्याह के पुत्र में आनंदित होते हैं, <sup>7</sup> अब इसलिए, देखो, यहोवा उन पर यूफ्रेट्स के प्रबल और प्रचुर जल को लाने वाला है, अर्पित अश्शूर के राजा और उसकी सारी महिमा; और यह अपनी सभी नहरों पर चढ़ेगा और अपने सभी किनारों को पार करेगा।<sup>8</sup> फिर यह यहूदा में बह जाएगा, यह भर जाएगा और पार करेगा, यह गर्दन तक पहुँच जाएगा; और इसके पंखों का फैलाव तुम्हारे देश की चौड़ाई की भर देगा, इम्मानुएल।<sup>9</sup> तोड़ दिए जा ओ, हे लोगों, और चूर-चूर हो जाओ; और सुनो, पृथ्वी के सभी दूरस्थ स्थानों। तैयार हो जाओ, फिर भी चूर-चूर हो जाओ; तैयार हो जाओ, फिर भी चूर-चूर हो जाओ।<sup>10</sup> योजना बनाओ, परंतु यह स्थिर नहीं रहेगा, क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।”

<sup>11</sup> क्योंकि यहोवा ने मुझसे बड़ी शक्ति के साथ बात की और मुझे इस लोगों के मार्ग पर न चलने की शिक्षा दी, यह कहते हुए,<sup>12</sup> “तुम यह न कहो, ‘यह एक पञ्चयत्र है’। उन सभी बातों के बारे में जो यह लोग पञ्चयत्र कहते हैं, और तुम उस से न डरना जिससे वे डरते हैं और न ही उससे भयभीत होना।<sup>13</sup> वह सेनाओं का योहोवा है जिसे तुम पवित्र मानो। और वही तुम्हारा भय होगा, और वही तुम्हारा डर होगा।<sup>14</sup> तब वह एक पवित्र स्थान बन जाएगा; परंतु इस्साएल के दोनों घरानों के लिए, ठोकर

## यशायाह

का पत्थर और ठेस का चट्टान, और यस्तुशतेम के निवासियों के लिए एक फंदा और जाल।<sup>15</sup> कई लोग उन पर ठोकर खाएंगे, तब वे गिरेंगे और टूटेंगे; वे फंस जाएंगे और पकड़े जाएंगे।"

<sup>16</sup> गवाही को बोध दो, मेरी शिष्यों के बीच व्यवस्था को सील कर दो।<sup>17</sup> और मैं यहोवा की प्रतीक्षा करूँगा जो याकूब के घराने से अपना मुख छिपा रहा है; मैं उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा करूँगा।<sup>18</sup> देखो, मैं और वे बच्चे जिन्हें यहोवा ने मुझे दिया है, इस्पाल में सेनाओं के यहोवा से चिन्ह और चमत्कार के लिए हैं, जो सियोन पर्वत पर निवास करता है।

<sup>19</sup> जब वे तुमसे कहें, "माध्यमें और आत्माओं से परामर्श करो जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं," क्या लोगों को अपने परमेश्वर से परामर्श नहीं करना चाहिए? क्या उन्हें जीवितों के लिए मृतकों से परामर्श करना चाहिए?<sup>20</sup> व्यवस्था और गवाही के लिए! यदि वे इस वचन के अनुसार नहीं बोलते, तो इसका कारण यह है कि उनके पास कोई सुबह नहीं है।<sup>21</sup> वे भूमि से होकर उदास और भूखे जुरेंगे, और यह होगा कि जब वे भूखे होंगे, तो वे क्रोधित हो जाएंगे और अपने राजा और अपने परमेश्वर को ऊपर की ओर देखते हुए शाप देंगे।<sup>22</sup> तब वे पृथ्वी की ओर देखेंगे, और देखो, संकट और अंधकार, पीड़ा की उदासी; और वे अंधकार में भगा दिए जाएंगे।

**९** परन्तु उसके लिए जो संकट में थी, अब और अंधकार नहीं होगा; पहले के समय में उसने जब्लून की भूमि और नाताली की भूमि का तिरस्कार किया, परन्तु बाद में वह सम्मुद्र के मार्ग से, यरदन के पार, अन्यजातियों की गलील को महिमान्वित करेगा।<sup>1</sup> जो लोग अंधकार में चलते हैं वे एक बड़ा प्रकाश देखेंगे; जो लोग अंधेरी भूमि में रहते हैं, उन पर प्रकाश चमकेगा।<sup>2</sup> तू राष्ट्र को बढ़ाएगा, तू उनकी आनन्द को बढ़ाएगा; वे तेरे सामने आनन्दित होंगे जैसे फसल के समय का आनन्द, जैसे लोग लूट बांटते समय आनन्दित होते हैं।<sup>3</sup> क्योंकि तू उनके बोझ के जुए और उनके कंधों पर के डंडे को तोड़ेंगा, उनके उत्तीर्ण की छड़ी को जैसे मिद्यान की लड़ाई में।<sup>4</sup> क्योंकि युद्ध के गर्जन में हर एक योद्धा का जूता, और रक्त में लिपटा हुआ वरस्त जलने के लिए होगा, आग के ईंधन के लिए।<sup>5</sup> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमारे लिए एक पुत्र दिया जाएगा; और शासन उसकी कंधों पर होगा; और उसका नाम अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता, शान्ति का राजकुमार कहलाएगा।<sup>7</sup> उसके शासन की वृद्धि और शान्ति का कोई अंत नहीं होगा दाऊद के

सिंहासन पर और उसके राज्य पर, उसे न्याय और धर्म के साथ स्थापित करने और बनाए रखने के लिए उस समय से और सदैव के लिए। सेनाओं के प्रभु की उत्सुकता इसे पूरा करेगी।

<sup>8</sup> प्रभु याकूब के विरुद्ध एक संदेश भेजता है, और यह इस्पाल पर गिरता है।<sup>9</sup> और सभी लोग इसे जानते हैं, अर्थात्, ऐप्रैम और सामरिया के निवासी, अभिमान और हृदय की घमण्ड में कहते हैं: <sup>10</sup> "ईंटि पिर गई हैं, परन्तु हम विकेन पायरो से पुनः निर्माण करेंगे; गूलर के वृक्ष काट दिए गए हैं, परन्तु हम उन्हें देवदार से बदल देंगे।"

<sup>11</sup> इसलिए प्रभु रेजिन के विरोधियों को उनके विरुद्ध उठाता है और उनके शत्रुओं को उकसाता है,<sup>12</sup> पूर्व में अरामी और पश्चिम में पलिश्टी; और वे इस्पाल को बड़े मुंह से निगल जाते हैं। इन सबके बावजूद, उसका क्रोध नहीं मुड़ता, और उसका हाथ अब भी फैला हुआ है।<sup>13</sup> फिर भी लोग उसके पास नहीं लौटते जिसने उन्हें मारा, और न ही सेनाओं के प्रभु को खोजते हैं।<sup>14</sup> इसलिए प्रभु इस्पाल से सिर और पूँछ काट देता है, एक ही दिन में खजूर की शाखा और सरकंडा।<sup>15</sup> सिर वृद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति है, और झूठ सिखाने वाला नबी पूँछ है।

<sup>16</sup> क्योंकि जो लोग इस लोगों का मार्गदर्शन करते हैं वे उन्हें भटका रहे हैं; और जो उनके द्वारा मार्गदर्शित होते हैं वे भ्रमित हैं।<sup>17</sup> इसलिए प्रभु उनके जवानों पर प्रसान्न नहीं होता, और न ही उनके अनाथों या विधवाओं पर दया करता है; क्योंकि उनमें से हर एक अधर्मी और दुष्टाचारी है, और हर एक मुख मूर्खता बोलता है। इन सबके बावजूद, उसका क्रोध नहीं मुड़ता, और उसका हाथ अब भी फैला हुआ है।<sup>18</sup> क्योंकि दुष्टता आग की तरह जलती है; यह ज्ञाड़ियों और कांटों को खा जाती है; यह जंगल की ज्ञाड़ियों को भी जलाती है, और वे धूएं के स्तंभ में ऊपर उठते हैं।<sup>19</sup> सेनाओं के प्रभु के क्रोध से भूमि जल गई है, और लोग आग के ईंधन के समान हैं, कोई अपने भाई को नहीं बचाता।<sup>20</sup> वे दाहिने हाथ से काटते हैं परन्तु फिर भी भूखे रहते हैं, और वे बाएं हाथ से खाते हैं, परन्तु संतुष्ट नहीं होते; उनमें से प्रत्येक अपनी ही भूजा का मास खाता है।<sup>21</sup> मनश्शे ऐप्रैम को खा जाता है, और ऐप्रैम मनश्शे को, और वे मिलकर यहूदा के विरुद्ध हैं। इन सबके बावजूद, उसका क्रोध नहीं मुड़ता, और उसका हाथ अब भी फैला हुआ है।

**१०** उन पर हाथ जो अन्यायपूर्ण विधियों को बनाते हैं और उन पर जो हानिकारक निषियों को लगातार लिखते हैं,<sup>2</sup> ताकि वे जरूरतमंदों को न्याय से वंचित कर सकें और मेरे लोगों में से गरीबों के अधिकार छीन सकें, ताकि विधवाएँ उनकी लूट बन सकें, और वे अनाथों को

## यशायाह

लूट सके।<sup>3</sup> अब तुम दंड के दिन क्या करोगे, और उस विनाश के दिन जो दूर से आएगा? तुम किसके पास सहायता के लिए जाओगे? और अपनी संपत्ति कहाँ छोड़ोगे? <sup>4</sup> कुछ नहीं बचता सिवाय बंदियों के बीच ज्ञुकने के या मारे गए लोगों के बीच गिरने के। इन सबके बावजूद, उसका क्रोध नहीं मुड़ता, और उसका हाथ अब भी फैला हुआ है।

<sup>5</sup> असीरिया पर हाथ, मेरे क्रोध का दंड और जिसके हाथ में मेरा क्रोध है, <sup>6</sup> मैं उसे एक अधर्मी राष्ट्र के खिलाफ भेजता हूँ और उसे अपने क्रोध के लोगों के खिलाफ नियुक्त करता हूँ लूट पकड़ने और लूटने के लिए, और उहें सड़कों में बीचड़ की तरह रौदरों के लिए। <sup>7</sup> किर भी यह ऐसा नहीं चाहता, और न ही यह अपने दिल में ऐसा योजना बनाता है, बल्कि इसका उद्देश्य नष्ट करना है और कई राष्ट्रों को समाप्त करना है। <sup>8</sup> क्योंकि यह कहता है, “क्या मेरे अधिकारी सब राजा नहीं हैं? <sup>9</sup> क्या कलनों करकेमिश के समान नहीं है, या हमात अपराध के समान नहीं है, या सामरिया दमिश्क के समान नहीं है? <sup>10</sup> जैसे मेरी हाथ मूर्तियों के राज्यों तक पहुँची है, जिनकी खुदी हुई मूर्तियाँ यरूशलैम और सामरिया से बढ़ी थीं, <sup>11</sup> क्या मैं यरूशलैम और उसकी मूर्तियों के साथ वैसा ही नहीं करूँगा जैसा मैंने सामरिया और उसकी मूर्तियों के साथ किया?” <sup>12</sup> इसलिए जब प्रभु ने माउंट सियोन और यरूशलैम पर अपना सारा काम पूरा कर लिया होगा, तो वह कहेगा, “मैं असीरिया के राजा के घंटमंडी दिल के फल और उसकी आँखों के घंटमंड को दंड ढूँगा।” <sup>13</sup> क्योंकि उसने कहा है, “मेरे हाथ की शक्ति और मेरी बुद्धि से मैंने यह किया, क्योंकि मुझे समझ है; और मैंने लोगों की सीमाओं को हटा दिया और उनके खाजानों को लूट लिया, और एक शक्तिशाली व्यक्ति की तरह मैंने उनके निवासियों को नीचे शिरा दिया, <sup>14</sup> और मेरी हाथ लोगों की संपत्ति तक एक धोसले की तरह पहुँची, और जैसे कोई परित्यक्त अंडों को इकट्ठा करता है, मैंने सारी पृथक्की को इकट्ठा किया। और कोई भी ऐसा नहीं था जिसने अपने पंख फड़फड़ाए, या अपनी चोच खोली, या चहरहाणा।” <sup>15</sup> क्या कुल्हाड़ी अपने काटने वाले पर घंटमंड करेगी? क्या आरी अपने चलाने वाले पर गर्व करेगी? यह ऐसा होगा जैसे एक डंडा उसे उठाने वालों को चलाए, या जैसे एक छड़ी उसे उठाए जो लकड़ी नहीं है। <sup>16</sup> इसलिए सेनाओं के भगवान, प्रभु, उसके मौटे लोगों में एक नाशक रोग भेजेंगे; और उसकी महिमा के नीचे एक आग जलेगी जैसे जलती हुई ज्वाला। <sup>17</sup> और इसाएल का प्रकाश एक आग बन जाएगा और उसका पवित्र एक ज्वाला, और यह एक ही दिन में उसके कांटों और झाड़ियों को जलाएगा और भस्स

करेगा। <sup>18</sup> और वह उसके बन की महिमा और उसके फलदार बरीचे को, दोनों आत्मा और शरीर को नष्ट कर देगा, और यह ऐसा होगा जैसे कोई बीमार व्यक्ति क्षीण हो जाता है। <sup>19</sup> और उसके बन के बाकी पेड़ इतने कम संख्या में होंगे कि एक बच्चा उन्हें लिख सकेगा।

<sup>20</sup> अब उस दिन इसाएल के अवशेष, और याकूब के घराने के जो बच गए हैं, वे कभी भी उसे भरोसा नहीं करेंगे जिसने उहें मारा, बल्कि वे सच्चे तौर पर इसाएल के पवित्र पर भरोसा करेंगे। <sup>21</sup> एक अवशेष लौटेगा, याकूब का अवशेष, शक्तिशाली भगवान के पास। <sup>22</sup> क्योंकि यद्यपि तेरे लोग, इसाएल, समुद्र की रेत के समान हो सकते हैं, उनमें से केवल एक अवशेष लौटेगा; एक विनाश निर्धारित है, जो धर्म के साथ बह रहा है। <sup>23</sup> क्योंकि एक पूर्ण विनाश, जो निर्धारित है, सेनाओं के प्रभु भगवान भूमि के बीच में पूरा करेंगे। <sup>24</sup> इसलिए सेनाओं के प्रभु भगवान यह कहते हैं: “मेरे लोग, तुम जो सियोन में निवास करते हो, उस असीरियन से मत डरो जो तुम पर डंडा मारता है और तुम्हारे खिलाफ अपनी छड़ी उठाता है, जैसे मिसियों ने किया था।” <sup>25</sup> क्योंकि थोड़े ही समय में मेरा क्रोध तुम पर समाप्त हो जाएगा, और मेरा क्रोध उनकी विनाश की ओर निर्देशित होगा।” <sup>26</sup> सेनाओं का प्रभु उसके खिलाफ एक चाबुक चलाएगा जैसे ओरेब की चट्टान पर मिद्यान के वध के समय; और उसकी छड़ी समुद्र पर होगी, और वह इसे उठाएगा जैसे उसने मिस्र में किया था। <sup>27</sup> तो उस दिन ऐसा होगा, कि उसका बोझ तुम्हारे कंधों से हटा दिया जाएगा और उसका जुआ तुम्हारी गर्दन से, और जुआ मोटाई के कारण टूट जाएगा। <sup>28</sup> वह आयाथ के खिलाफ आया है, वह मिश्रोन से गुजर चुका है; मिखामा में उसने अपना सामान रखा है। <sup>29</sup> वे दर्रे से गुजर गए हैं, कहते हुए, “गेबा हमारी रात की छावनी होगी।” रामाह भयभीत है, और शाऊल की गिरेब भाग गई है। <sup>30</sup> अपनी आवाज से जोर से रोओ, गल्लिम की बेटी! लैशाह और दुखी अनातोत पर ध्यान दो! <sup>31</sup> मदमेना भाग गई है। गेबिम के निवासी शरण की तलाश में हैं। <sup>32</sup> फिर भी आज वह नोब में रुकेगा; वह सियोन की बेटी के पर्वत पर, यरूशलैम की पहाड़ी पर अपनी मूर्ती हिलाता है। <sup>33</sup> देखो, सेनाओं के भगवान, प्रभु, भयनक शक्ति से शाखाओं को काटने जा रहा है; ऊँचे लोग काट दिए जाएंगे, और ऊँचे लोग नीचा किए जाएंगे। <sup>34</sup> वह लोहे की कुल्हाड़ी से बन की झाड़ियों को काट देगा, और लेबनान शक्तिशाली के द्वारा गिर जाएगा।

**11** तब पिशै के तने से एक अंकुर फूटेगा, और उसकी जड़ों से एक शाखा फल लाएगा। <sup>2</sup> यहोवा की

## यशायाह

आत्मा उस पर ठहरेगी, बुद्धि और समझ की आत्मा, सलाह और शक्ति की आत्मा, ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा।<sup>3</sup> और वह यहोवा के भय में आनंदित होगा, और वह अपनी अँखों से जो देखता है उससे न्याय नहीं करेगा, और न अपने कानों से जो सुनता है उससे निर्णय करेगा;<sup>4</sup> परन्तु वह धर्म के साथ गरीबों का न्याय करेगा, और पृथी के नग्न लोगों के लिए निष्पक्षता से निर्णय करेगा; और वह अपने मुँह की छड़ी से पृथी को मारेगा, और अपने हौंठों की सांस से दुष्टों को नष्ट करेगा।<sup>5</sup> और धर्म उसकी कमर का पट्टा होगा, और विश्वासयोग्यता उसकी कमर का पट्टा होगी।<sup>6</sup> और भैंडिया मेमने के साथ होगा, और तेंदुआ बकरी के बच्चे के साथ लेटेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और मोटा बैल एक साथ होंगे; और एक छोटा लङ्का उर्वे ले चलेगा।<sup>7</sup> गाय और भालू भी चरेंगे, उनके बच्चे एक साथ लेटेंगे, और सिंह बैल की तरह भूसा खाएगा।<sup>8</sup> दूध पीता बच्चा नाग के बिल के पास खेरेगा, और दूध छुड़ाया हुआ बच्चा विषधर के बिल में हाथ डालगा।<sup>9</sup> वे मेरे पवित्र पर्वत पर न तो नुकसान करेंगे और न ही नाश करेंगे, क्योंकि पृथी यहोवा के ज्ञान से भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भरा होता है।

<sup>10</sup> तब उस दिन जातियाँ पिशै की जड़ की ओर लैटेंगी, जो लोगों के लिए एक संकेत के रूप में खड़ा होगा; और उसका विश्वाम स्थान महिमामय होगा।<sup>11</sup> तब उस दिन ऐसा होगा कि यहोवा फिर से अपने हाथ से दूसरी बार अपने लोगों के बचे हुए को जो बचेंगे, असीरिया, मिस्र, पठरोस, कूश, लाम, शिनार, हमात, और समुद्र के द्वीपों से वापस लाएगा।<sup>12</sup> और वह राश्ट्रों के लिए एक ध्वज उठाएगा, और इसाएल के निवासितों को इकट्ठा करेगा, और यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथी के चारों कोनों से इकट्ठा करेगा।<sup>13</sup> तब एप्रैम की ईर्ष्या दूर हो जाएगी, और जो यहूदा को सताते हैं वे समाप्त हो जाएंगे; एप्रैम यहूदा से ईर्ष्या नहीं करेगा, और यहूदा पूरी तरह से मिस्र के समुद्र की जीभ को नष्ट कर देगा; और वह अपनी जलती हुई हवा से फरात नदी पर हाथ लहराएगा, और उसे सात धाराओं में विभाजित करेगा और लोग सूखी भूमि पर चलेंगे।<sup>14</sup> और असीरिया से एक राजमार्ग होगा उसके लोगों के बचे हुए के लिए जो बचेंगे, जैसे इसाएल के लिए था उस दिन जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे।

**12** तब तुम उस दिन कहोगे, “मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, हे प्रभु, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित था, तेरा क्रोध दूर हो गया है, और तूने मुझे सांत्वना दी है।<sup>1</sup> देखो, परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं विश्वास करूँगा और नहीं डरूँगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरी शक्ति और गीत है, और वह मेरा उद्धार बन गया है।”<sup>2</sup> और तुम आनंद के साथ जल खींचोगे उद्धार के सोतों से।<sup>4</sup> और उस दिन तुम कहोगे, “प्रभु का धन्यवाद करो, उसके नाम को पुकारो। उसके कार्यों को लोगों के बीच प्रकट करो; उहें याद दिलाओ कि उसका नाम महान है।”<sup>5</sup> गीत में प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि उसने महिमामय कार्य किए हैं; यह सारी पृथी पर ज्ञात हो।<sup>6</sup> आनंदित हो और जयजयकार करो, हे सिय्योन के निवासी, क्योंकि तेरे बीच में इसाएल का पवित्र महान है।

**13** बाबुल के विषय में भविष्यवाणी जो आमोज के पुत्र यशायाह ने देखी।<sup>1</sup> एक नंगे पहाड़ पर ध्वज उठाओ, उनसे अपनी आवाज ऊँची करो, हाथ हिलाओ कि वे रईसों के द्वारों में प्रवेश करें।<sup>2</sup> मैंने अपने पवित्र लोगों को आज्ञा दी है, मैंने अपने क्रोध के लिए अपने योद्धाओं को बुलाया है, जो मेरी महिमा में आनंदित होते हैं।<sup>4</sup> पहाड़ों पर कोलाहल की ध्वनि, जैसे बहुत से लोगों की! राज्यों की गर्जन की ध्वनि, राष्ट्रों का एकत्र होना!

सेनाओं का प्रभु युद्ध के लिए सेना को इकट्ठा कर रहा है।<sup>5</sup> वे एक दूर देश से आ रहे हैं, दूरस्थ क्षितिजों से, प्रभु और उसके क्रोध के उपकरण, पूरे देश को नष्ट करने के लिए।<sup>6</sup> विलाप करो, क्योंकि प्रभु का दिन निकट है! यह सर्वशक्तिमान से विनाश के रूप में आएगा।<sup>7</sup> इसलिए सब हाथ ढीले पड़ जाएंगे, और हर मानव हृदय पिघल जाएगा।<sup>8</sup> वे भयभीत होंगे, दर्द और पीड़ा उर्वे पकड़ लेंगी; वे प्रसव पीढ़ा में स्त्री की तरह मरोड़ खाएंगे, वे एक-दूसरे को विषय से देखेंगे, उनके चेहरे जलते हुए होंगे।<sup>9</sup> देखो, प्रभु का दिन आ रहा है, निर्दीयी, क्रोध और जलती हुई क्रोध के साथ, देश को उजाड़ बनाने के लिए; और वह उसके पापियों को उससे नष्ट कर देगा।<sup>10</sup>

क्योंकि आकाश के तारे और उनके नक्षत्र अपनी रोशनी नहीं देंगे; सूर्य जब उदय होगा तो अंधकारमय होगा, और चंद्रमा अपनी रोशनी नहीं देगा।<sup>11</sup> इसलिए मैं संसार को उसकी बुराई के लिए दंड ढूँगा और दुष्टों को उनके अपराधों के लिए; मैं घमंडी के अहंकार का अंत करूँगा और निर्दीयी की घमंड को नीचा करूँगा।<sup>12</sup> मैं मनुष्य को शुद्ध सोने से भी दुर्लभ बना दूँगा और मानव जाति को ओफीर के सोने से भी।<sup>13</sup> इसलिए मैं आकाश को कांपाऊँगा, और पृथी को उसके स्थान से हिला दूँगा सेनाओं के प्रभु के क्रोध के दिन उसके जलते हुए क्रोध में।<sup>14</sup> और यह होगा कि, जैसे एक शिकार की गई

## यशायाह

हिरण, या जैसे भेड़े जिनका कोई इकट्ठा करने वाला नहीं है, हर कोई अपनी प्रजा की ओर मुड़ेगा, और हर कोई अपने देश की ओर भागेगा।<sup>15</sup> जो कोई पाया जाएगा वह भेद दिया जाएगा, और जो कोई पकड़ा जाएगा वह तलवार से गिर जाएगा।<sup>16</sup> उनके छोटे बच्चे भी उनकी आँखों के समाने टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे; उनके घर लूटे जाएंगे और उनकी पतियाँ बलाकार की जाएंगी।<sup>17</sup> देखो, मैं मादियों को उनके खिलाफ उकसाऊंगा, जो चांदी का मूल्य नहीं देंगे और न सोने में आनंद लेंगे।<sup>18</sup> और उनकी धनुषे जवानों को काट डालेंगी, वे गर्भ के फल पर भी दया नहीं करेंगे, और उनकी आँखे बच्चों पर भी दया नहीं करेंगी।<sup>19</sup> और बाबुल, राज्यों की शोभा, कल्दियों के गर्व की महिमा, जैसे जब परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को नष्ट किया था।<sup>20</sup> यह कभी भी आबाद नहीं होगा या पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं बसा जाएगा; न अरब वहाँ अपना तंबू लगाएगा, न चरवाहे वहाँ अपनी भेड़ों को लेटने देंगे।<sup>21</sup> परंतु मरुस्थल के जीव वहाँ लेटेंगे, और उनके घर उल्लुओं से भरे होंगे; शतुरमुर्ग भी वहाँ रहेंगे, और झारी बकरियाँ वहाँ कूदेंगी।<sup>22</sup> लकड़बग्धे उनके किलेदार टाकरों में चींखेंगे और गीदड़ उनके शानदार महलों में। उसका भाग्यशाली समय भी जल्द ही आएगा, और उसके दिन लंबे नहीं होंगे।

**14** जब प्रभु याकूब पर दया करेंगे और फिर से इसाएल को चुनेंगे, वह उन्हें उनकी अपनी भूमि पर बसाएंगे। तब अजनबी उनके साथ जुड़ेंगे और याकूब के घराने से मिल जाएंगे।<sup>2</sup> लोग उन्हें साथ ले जाएंगे और उन्हें उनके स्थान पर लाएंगे, और इसाएल का घराना उन्हें प्रभु की भूमि में एक विरासत के रूप में प्राप्त करेगा पुरुष और महिला सेवकों के रूप में, और वे अपने बंदी बनाने वालों को बंदी बनाएंगे और अपने उत्तीर्णों पर शासन करेंगे।<sup>3</sup> और यह उस दिन होगा जब प्रभु तुम्हें तुम्हारे दर्द और उथल-पुथल से विश्राम देंगे और कठोर सेवा से जिसमें तुम दास बनाए गए थे,<sup>4</sup> कि तुम बाबुल के राजा के विरुद्ध यह उपहास करेंगे, और कहोंगे, “कैसे उत्तीर्णक का अंत हो गया, और कैसे आक्रमण का अंत हो गया!”<sup>5</sup> प्रभु ने दुष्टों की छड़ी को तोड़ दिया है, शासकों के राजदंड को,<sup>6</sup> जो लोगों को क्रोध में बिना रुके मारता था, जो राष्ट्रों को क्रोध में बिना रोक-टोक के उत्तीर्णन के साथ वश में करता था।<sup>7</sup> सारी पृथ्वी विश्राम में है और शांत है; वे आनंद के जयकारे में फूट पड़ते हैं।<sup>8</sup> यहाँ तक कि जुनिपर के पेड़ भी तुम्हारे ऊपर आनंदित होते हैं, और लेबनान के देवदार, कहते हैं, ‘जब से तुम नीचे गिराए गए हो, कोई लकड़हारा हमारे खिलाफ नहीं आता।’<sup>9</sup> नीचे शिओल

तुम्हारे बारे में उत्साहित है, तुमसे मिलने के लिए जब तुम आओगे; यह तुम्हारे लिए मृतकों की आसाओं को उत्तेजित करता है, पृथ्वी के सभी नेताओं को; यह सभी राष्ट्रों के राजाओं को उनके सिंहासनों से उठाता है।<sup>10</sup> वे सब उत्तर देंगे और तुमसे कहेंगे, यहाँ तक कि तुम भी हमारे जैसे कमज़ोर हो गए हो, तुम हमारे जैसे हो गए हो।<sup>11</sup> तुम्हारा गर्भ और तुम्हारी वीणाओं का संगीत शिओल में नीचे लाया गया है; कीड़े तुम्हारे नीचे तुम्हारा बिस्तर बन गए हैं और कीड़े तुम्हारी ओढ़िनी हैं।<sup>12</sup> तुम स्वर्ग से कैसे गिर गए हो, तुम जो राष्ट्रों को पराजित करते थे!<sup>13</sup> परन्तु तुमने अपने हृदय में कहा, मैं स्वर्ग पर चढ़ जाऊंगा; मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारों से ऊपर उठाऊंगा, और मैं सभा के पर्वत पर बैठँगा उत्तर के दूरस्थ भागों में।<sup>14</sup> मैं बादलों की ऊंचाइयों से ऊपर चढ़ जाऊंगा; मैं अपने आप को परमप्रधान के समान बनाऊंगा।<sup>15</sup> फिर भी तुम शिओल में नीचे लाए जाओगे, गड्ढे की गहरायायों में।<sup>16</sup> जो तुहें देखेंगे वे तुहें धूरेंगे, वे ध्यान से तुम्हें देखेंगे, कहते हुए, ‘क्या यह वही व्यक्ति है जिसने पृथ्वी को कांपाया, जिसने राज्यों को हिला दिया,<sup>17</sup> जिसने संसार को जंगल जैसा बना दिया और उसके नगरों को नष्ट कर दिया, जिसने अपने बंदियों को घर जाने की अनुमति नहीं दी?’<sup>18</sup> सभी राष्ट्रों के राजा महिमा में लेटे हैं, प्रत्येक अपने-अपने मकबरे में।<sup>19</sup> परन्तु तुम अपने मकबरे से बाहर फेंके गए हो जैसे एक अस्वीकृत शाखा, उन मारे गए लोगों के साथ कपड़े पहने हुए जो तलवार से छेदे गए हैं, जो गड्ढे के पथरों तक नीचे जाते हैं जैसे एक रौदा हुआ शव।<sup>20</sup> तुम उन्हें दफन में शामिल नहीं होगे, क्योंकि तुमने अपने देश को नष्ट कर दिया है, तुमने अपने लोगों को मार डाला है। दुष्टों के वंशजों का फिर कभी उल्लेख न हो।<sup>21</sup> उसके पुत्रों के लिए वध का स्थान तैयार करो उनके पिताओं के अपराध के कारण। उन्हें पृथ्वी का अधिकार नहीं लेना चाहिए और दुनिया की सतह को नगरों से भरना नहीं चाहिए।<sup>22</sup> “मैं उनके विरुद्ध उट्टांगा,” सेनाओं के प्रभु ने कहा, “और बाबुल का नाम और बचे हुए, वंशज और संतानों को समाप्त कर द्वागा,” प्रभु ने कहा।<sup>23</sup> “मैं इसे काटेदार जानवरों और जल के दलदल के लिए एक संपत्ति बना द्वांगा, और मैं इसे विनाश के झाड़ से साफ कर द्वांगा,” सेनाओं के प्रभु ने कहा।

<sup>24</sup> सेनाओं के प्रभु ने शपथ ली है, कहते हुए, “निश्चित रूप से, जैसा मैंने इरादा किया है, वैसा ही हुआ है, और जैसा मैंने योजना बनाई है, वैसा ही होगा,

<sup>25</sup> असीरिया को मेरी भूमि में तोड़ने के लिए, और मैं उसे अपने पहाड़ों पर कुचल दूंगा। तब उसका जूआ उनसे हटा

## यशायाह

दिया जाएगा, और उसका बोझ उनके कंधे से हटा दिया जाएगा।<sup>26</sup> यह पूरी पृथ्वी के खिलाफ बनाई गई योजना है, और यह वह हथ है जो सभी राष्ट्रों के खिलाफ फैला हुआ है।<sup>27</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु ने योजना बनाई है, और कौन इसे विफल कर सकता है? और उसके फैले हुए हथ के बारे में, कौन इसे वापस मोड़ सकता है?"

<sup>28</sup> उस वर्ष जब राजा आहाज की मृत्यु हुई, यह घोषणा आईः<sup>29</sup> "फिलिस्तिया, तुम सब, आनन्दित मत हो, क्योंकि वह छड़ी जो तुम्हें मारी गई थी, टूट गई है; क्योंकि सांप की जड़ से एक विषधर निकलेगा, और उसका फल एक पंखों वाला सांप होगा।<sup>30</sup> जो सबसे असहाय है वे खाएंगे, और गरीब सुरक्षा में लेटे जाएंगे; परन्तु मैं तुम्हारी जड़ को अकाल से मार डालूंगा, और यह तुम्हारे बचे हुए को मार डालेगा।<sup>31</sup> रोओ, हे फाटक; चिल्लाओ, हे नगर; पिघल जाओ, फिलिस्तिया, तुम सब! क्योंकि धूमों उत्तर से आता है, और उसकी पंक्तियों में कोई पिछड़ने वाला नहीं है।<sup>32</sup> फिर राष्ट्र के दूरों को क्या उत्तर दिया जाएगा? कि प्रभु ने सियोन की स्थापना की है, और उसके लोगों के गरीब उसमें शरण लेंगे।"

**15** मोआब के विषय में घोषणा: निश्चित रूप से एक रात में मोआब का आर नष्ट और बर्बाद हो गया; निश्चित रूप से एक रात में मोआब का कीर नष्ट और बर्बाद हो गया।<sup>2</sup> वे मंदिर और दीवान, ऊँचे स्थानों पर रोने के लिए गए हैं। मोआब नेबो और मेदेबा पर विलाप करता है; हर किसी का सिर गंजा है और हर दाढ़ी कटी हुई है।<sup>3</sup> उनकी गलियों में उन्होंने टाट पहाना है; उनकी छतों पर और उनके सार्वजनिक चौकों में हर कोई विलाप कर रहा है, अँसुओं में डब्बा हुआ।<sup>4</sup> हेशबोन और एसेले भी चिल्लाते हैं, उनकी आवाज यहज तक सुनी जाती है; इसलिए मोआब के सशस्त्र पुरुष अलाम में चिल्लाते हैं; उसकी आमा उसके भीतर कापती है।<sup>5</sup> मेरा हृदय मोआब के लिए चिल्लाता है; जो लोग सो आर और एलाथ-शेलीशियाह की ओर भागते हैं, क्योंकि वे तुहीथ की चढ़ाई पर रोते हुए जाते हैं; वास्तव में, होरोनैम के रास्ते पर वे अपनी गिरावट पर संकट की पुकार उठाते हैं।<sup>6</sup> क्योंकि निमरीम के जल निर्जन हो गए हैं। वास्तव में, घास सूख गई है, नई वृद्धि मर गई है, कोई हरियाली नहीं है।<sup>7</sup> इसलिए जो संपत्ति उन्होंने प्राप्त की है और संचित की है वे अरबिम की धारा के ऊपर ले जाते हैं।<sup>8</sup> क्योंकि संकट की पुकार मोआब के क्षेत्र के चारों ओर गई है, उसका विलाप एसेल मतक और उसका विलाप बीर-एलीम तक जाता है।<sup>9</sup> क्योंकि दिमोन के जल रक्त से भरे हुए हैं; निश्चित रूप से मैं दिमोन पर और

विपत्तियाँ लाँड़गा, मोआब के भगोड़ों पर और देश के अवशेषों पर एक सिंह।

**16** देश के शासक को भेंट का मेन्ना भेजो, सेला से जंगल के मार्ग द्वारा सियोन की पुत्री के पर्वत तक।<sup>2</sup> तब, उड़ते पंक्षियों या बिखरे हुए घोसलों की तरह, मोआब की पुत्रियाँ अन्तर्न के घाटों पर होंगी।<sup>3</sup> "हमें सलाह दो, एक निर्णय लो; दोपहर के समय रात की तरह अपनी छाया डालो; निवासितों को छिपाओ, भगोड़ों को प्रकट मत करो।<sup>4</sup> मोआब के निवासित तुहारे साथ रहें; उन्हें विनाशक से छिपने का स्थान दो।"<sup>5</sup> क्योंकि अत्याचारी का अंत हो गया है, विनाश समाप्त हो गया है, अत्याचारी देश से हटा दिए गए हैं।<sup>6</sup> एक सिंहासन विश्वास में स्थापित होगा, और एक न्यायाधीश दाऊद के तम्बू में विश्वासयोग्यता से बैठेगा; इसके अलावा, वह न्याय की खोज करेगा, और धार्मिकता में तत्पर होगा।<sup>7</sup> हमने मोआब के गर्व के बारे में सुना है—अत्यधिक गर्व—यहाँ तक कि उसकी अहंकार, गर्व, और क्रोध; उसके व्यर्थ घंटं झटं हैं।<sup>8</sup> इसलिए मोआब विलाप करेगा; मोआब का हार एक व्यक्ति विलाप करेगा। तुम किर-हेरेसेथ के किशमिश के केक के लिए विलाप करोगे जैसे कि जो पूरी तरह से आहत हैं।<sup>9</sup> क्योंकि हेशबोन के खेत मुरझा गए हैं, सिब्बा की बेलें भी; राष्ट्रों के प्रभुओं ने इसकी उत्तम गुच्छों को रौद डाला है जो याजेर तक पहुँचे और रेशिस्तानों में भटक गए; इसके बेले फैल गईं और समुद्र को पार कर गईं।<sup>10</sup> इसलिए मैं याजेर के लिए, सिब्बा की बेल के लिए कड़वे अँसू बहाउँगा; मैं तुम्हें अपने अँसुओं से भिंगो ढूँगा, हेशबोन और एलेतेह; क्योंकि तुम्हारे ग्रीष्मकालीन फलों और तुम्हारी फसल पर चिल्लाहट समाप्त हो गई है।<sup>11</sup> उपजाऊ क्षेत्र से आनंद और खुशी हटा दी गई है; अंगू के बागों में भी कोई खुशी की पुकार या उल्लासमय चिल्लाहट नहीं होगी, कोई दबाने वाला अंगू को दबाएगा नहीं, क्योंकि मैंने चिल्लाहट को समाप्त कर दिया है।<sup>12</sup> इसलिए मेरा अंतरिक मन मोआब के लिए वीणा की तरह विलाप करता है, और मेरा हृदय किर-हेरेसेथ के लिए।<sup>13</sup> इसलिए जब मोआब अपने को प्रस्तुत करेगा, जब वह अपने ऊँचे स्थान पर थक जाएगा और अपने मंदिर में प्रार्थना करने आएगा, तब वह सफल नहीं होगा।<sup>14</sup> यह वह वचन है जो यहोवा ने पहले मोआब के बारे में कहा था।<sup>15</sup> परन्तु अब यहोवा कहता है, "तीन वर्षों के भीतर, जैसे कि एक किराए के मजदूर उहाँ गिनेगा, मोआब की महिमा अपनी बड़ी जनसंख्या के साथ तुच्छ हो जाएगी, और अवशेष बहुत छाटे और महत्वहीन होगे।"

## यशायाह

**17** दमिश्क के विषय में घोषणा: “देखो, दमिश्क नगर नहीं रहेगा और यह एक गिरा हुआ खंडहर बन जाएगा।<sup>2</sup> अरोएर के नगर छोड़ दिए गए हैं, वे झूँडों के लिए होंगे, और वे बिना भय के लेटेंगे।<sup>3</sup> एप्रैम से किला गायब हो जाएगा, और दमिश्क से प्रभुता और अराम के अवशेष; वे इसाएल के पुत्रों की महिमा के समान होंगे।” सेनाओं के प्रभु ने कहा।<sup>4</sup> अब उस दिन याकूब की महिमा म्लान हो जाएगी, और उसके शरीर की मोटाई पतली हो जाएगी।<sup>5</sup> यह उस फसल काटने वाले के समान होगा जो खड़ी फसल को इकट्ठा करता है, जैसे उसकी बांध बालियों को काटती है, या यह उस के समान होगा जो रेफाईम की घाटी में बालियों को चुनता है।<sup>6</sup> फिर भी उसमें कुछ अवशेष रहेंगे जैसे जैतून के पेढ़ को ज्ञाइने पर, दो या तीन जैतून सबसे ऊपरी शाखाओं पर,” इसाएल के परमेश्वर, यहोवा ने कहा।<sup>7</sup> उस दिन मनुष्य अपने निर्माता की ओर ध्यान देगा, और उसकी आँखें इसाएल के पवित्री की ओर देखेंगी।<sup>8</sup> और वह वेदियों की ओर ध्यान नहीं देगा, जो उसके हाथों का कार्य हैं, और न ही वह उन चीजों की ओर देखेगा जो उसकी उंगलियों ने बनाई हैं, न ही अशेरों या धूप की वेदियों की ओर।<sup>9</sup> उस दिन उनके मज़बूत नगर जगल में छोड़े गए स्थानों के समान होंगे, या उन शाखाओं के समान जो इसाएल के पुत्रों के सामने छोड़ दी गई थीं; और भूमि एक उजाड़ बन जाएगी।<sup>10</sup> क्योंकि तुमने अपने उद्धार के परमेश्वर को भुला दिया है और अपने शरण की चट्टान को याद नहीं किया। इसलिए तुम मनोहर पौथ लगाते हो और उहाँे एक अजनबी देवता की बेलों से सजाते हो।<sup>11</sup> जिस दिन तुम इसे लगाते हो तुम इसे सावधानी से धेरते हो, और सुबह तुम अपने बीज को खिलने के लिए लाते हो; फिर भी फसल भाग जाएगी रोग और असाध्य पीड़ा के दिन।<sup>12</sup> अरे, बहुत से लोगों का कोलाहल जो समुद्रों के गर्जन के समान गर्जते हैं, और राष्ट्रों का गड़गड़ाहट जो शक्तिशाली जल के गर्जन के समान दीड़ते हैं।<sup>13</sup> राष्ट्र बहुत से जल के गर्जन के समान गड़गड़ते हैं, परन्तु वह उहाँे डांटेगा और वे दूर भाग जाएंगे, और पहाड़ों पर धरन के सामने भूमि के समान खड़े जाएंगे, या अधी के सामने घूमते हुए धूत के समान।<sup>14</sup> संध्या समय, देखो, आतक है! सुबह से पहले वे चले गए हैं। यह उन लोगों का भाग होगा जो हमें लूटते हैं, और उन लोगों की किस्मत जो हमें लूटते हैं।

**18** हाय, पंखों की फड़फ़ाहट वाली भूमि जो कूश की निदियों के पार स्थित है,<sup>2</sup> जो समुद्र के द्वारा दूर भेजती है, यहाँ तक कि जल के सतह पर पपीरस के जहाजों में। जाओ, तेज दूरों, एक ऊँचे और विकने राष्ट्र

के पास, एक ऐसे लोगों के पास जो दूर-दूर तक भयभीत हैं, एक शक्तिशाली और अत्याचारी राष्ट्र, जिसकी भूमि को नदियाँ विभाजित करती हैं।<sup>3</sup> हे संसार के सभी निवासी और पृथ्वी पर रहने वाले, जैसे ही पहाड़ों पर एक झंडा उठाया जाता है, आप उसे देखेंगे, और जैसे ही तुरही बजाई जाती है, आप उसे सुनेंगे।<sup>4</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु ने मुझसे कहा है: “मैं अपने निवास स्थान से चुपचाप देखेंगा धूप में चमकदार गर्मी की तरह, कटाई की गर्मी में ओस के बादल की तरह।”<sup>5</sup> क्योंकि कटाई से पहले, जैसे ही कली खिलती है और फूल पकने वाले अंगूर बन जाते हैं, वह छंटाई के चाकुओं से टहनियों को काट देगा और फैलती शाखाओं को हटा देगा, वह उहाँे साफ कर देगा।<sup>6</sup> वे पहाड़ों के शिकारी पक्षियों के लिए छोड़ दिए जाएंगे, और पृथ्वी के सभी जानवर कटाई के समय उन पर रहेंगे।<sup>7</sup> उस समय सेनाओं के प्रभु के लिए एक भेट लाई जाएगी एक ऊँचे और चिकने लोंगों से, एक ऐसे लोगों से जो दूर-दूर तक भयभीत हैं, एक शक्तिशाली और अत्याचारी राष्ट्र, जिसकी भूमि को नदियाँ विभाजित करती हैं— सेनाओं के प्रभु के नाम के स्थान पर, माउंट सियोन पर।

**19** मिस्र के विषय में भविष्यवाणी: देखो, प्रभु एक तेज़ बादल पर सवार होकर मिस्र आने वाला है; मिस्र के मूर्तियाँ उसके सामने कांपेंगी, और मिसियों का हवदय उनके भीतर पिघल जाएगा।<sup>2</sup> “इसलिए मैं मिसियों को मिसियों के खिलाफ भड़काऊंगा; और वे लड़ेंगे, हर एक अपने भाई के खिलाफ और हर एक अपने पड़ोसी के खिलाफ, नगर नगर के खिलाफ, और राज्य राज्य के खिलाफ।<sup>3</sup> तब मिसियों की आत्मा उनके भीतर निराश हो जाएगी; और मैं उनकी योजना को भ्रमित कर दूंगा, ताकि वे मूर्तियों और मृतकों की आत्माओं की ओर, और माध्यमों और आत्माओं की ओर मुड़ें।<sup>4</sup> मैं मिसियों को एक निर्देशी स्वामी के हाथों सौंप दूंगा, और एक शक्तिशाली राजा उन पर शासन करेगा,” सेनाओं के प्रभु परमेश्वर ने कहा।<sup>5</sup> समुद्र का जल सूख जाएगा, और नदी सूखी और निर्जल हो जाएगी।<sup>6</sup> नहाँे दुर्वाध छोड़ेंगी, मिस्र की धाराएँ पतली हो जाएंगी और सूख जाएंगी; सरकंडे और नरकट सड़ जाएंगे।<sup>7</sup> नील के किनारे के सरकंडे, नील के किनारे और नील के किनारे के सभी खेत सूख जाएंगे, उड़ जाएंगे, और नहीं रहेंगे।<sup>8</sup> और मछुआरे शोक करेंगे, और जो नील में बसी डालते हैं वे विलाप करेंगे, और जो जल पर जाल फैलाते हैं वे घट जाएंगे।<sup>9</sup> इसके अलावा, कंधी किए गए सन से बने लिनान के निर्माता और सफेद कपड़े के बुनकर पूरी

## यशायाह

तरह से निराश होंगे।<sup>10</sup> और मिस्र के स्तंभ टूट जाएंगे; सभी किराए के मजदूर आत्मा में दुखी होंगे।<sup>11</sup> जो आन के अधिकारी मात्र मूर्ख हैं; फिरौन के सबसे बुद्धिमान सलाहकारों की सलाह मूर्खतापूर्ण हो गई है। आप फिरौन से कैसे कह सकते हैं, “मैं बुद्धिमानों का पुत्र हूं, प्राचीन राजाओं का पुत्र हूं?”<sup>12</sup> फिर आपके बुद्धिमान लोग कहाँ हैं? कृपया उन्हें आपको बताने दें, और उन्हें समझने दें कि सेनाओं के प्रभु ने मिस्र के खिलाफ क्या योजना बनाई है।<sup>13</sup> जो आन के अधिकारी मूर्खतापूर्ण कार्य कर चुके हैं, मैमिक्स के अधिकारी भ्रमित हैं; उसकी जनजातियों के नेताओं ने मिस्र को गुमराह किया है।<sup>14</sup> प्रभु ने उसके भीतर भ्रम की आत्मा मिलाई है; उन्होंने मिस्र को उसके सभी कार्यों में गुमराह किया है, जैसे एक शराबी व्यक्ति अपनी उल्ली में लड़खड़ाता है।<sup>15</sup> मिस्र के लिए कोई काम नहीं होगा जो उसका सिर या पूँछ, उसकी ताढ़ की शाखा या सरकंडा कर सके।

<sup>16</sup> उस दिन मिस्री महिलाएं बन जाएंगी, और वे कांपेंगे और बहुत डरेंगे क्योंकि सेनाओं के प्रभु के हाथ के हिलने के कारण, जो वह उनके ऊपर हिलाने वाला है।<sup>17</sup> और यहदा की भूमि मिस्र के लिए आतंक बन जाएगी; जिस किसी की भी इसका उत्तरेख किया जाएगा वह इससे डर जाएगा, क्योंकि सेनाओं के प्रभु की योजना जो वह उनके खिलाफ बना रहा है।<sup>18</sup> उस दिन मिस्र की भूमि में पाँच नगर कनान की भाषा बोलेंगे और सेनाओं के प्रभु के प्रति निष्ठा की शपथ लेंगे; एक को विनाश का नगर कहा जाएगा।<sup>19</sup> उस दिन मिस्र की भूमि के बीच में प्रभु के लिए एक वेदी होगी, और उसकी सीमा के पास प्रभु के लिए एक स्मारक पत्थर होगा।<sup>20</sup> और यह मिस्र की भूमि में सेनाओं के प्रभु के लिए एक चिह्न होगा और गवाह बन जाएगा; क्योंकि वे उत्तीर्णकों के कारण प्रभु को पुकारेंगे, और वह उन्हें एक उद्धारकर्ता और एक वैष्णव भजेगा, और वह उन्हें बचाएगा।<sup>21</sup> इसलिए प्रभु मिस्र को अपने आप को प्रकट करेगा, और मिस्री उस दिन प्रभु को जानेंगे। वे बलिदान और भेंट के साथ पूजा करेंगे, और प्रभु से व्रत करेंगे और उन्हें पूरा करेंगे।<sup>22</sup> प्रभु मिस्र को मारेगा, मारते हुए लेकिन चंगा करते हुए; इसलिए वे प्रभु की ओर लौटेंगे, और वह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा और उन्हें चंगा करेगा।<sup>23</sup> उस दिन मिस्र से अशूर तक एक सङ्क क होगी, और अशूरी मिस्र में आएंगे, और मिस्री अशूर में, और मिस्री अशूरी के साथ पूजा करेंगे।<sup>24</sup> उस दिन इसाएल मिस्र और अशूर के साथ तीसरा पक्ष होगा, पृथ्वी के मध्य में एक आशीर्वाद,<sup>25</sup> जिसे सेनाओं के प्रभु ने आशीर्वाद दिया है, कहते हुए, “आशीर्वादित है मिस्र मेरे लोग, और अशूर मेरे हाथों का कार्य, और इसाएल मेरी विरासत।”

**20** उस वर्ष जब सेनापति अशदोद आया, जब अश्शूर के राजा सरगोन ने उसे भेजा और उसने अशदोद के विरुद्ध युद्ध किया और उसे जीत लिया,<sup>2</sup> उसी समय यहोवा ने आमोज के पुत्र यशायाह के द्वारा कहा, “जाओ और अपनी कमर से टाट का वस्त्र उतार दो, और अपने पैरों से जूते उतार दो।”<sup>3</sup> और उसने ऐसा ही किया, नग्न और नंगे पैर चलने लगा।<sup>4</sup> तब यहोवा ने कहा, “जैसे मेरे सेवक यशायाह ने तीन वर्षों तक मिस्र और कूश के विरुद्ध एक चिन्ह और चेतावनी के रूप में नग्न और नंगे पैर चलकर दिखाया है,<sup>4</sup> वैसे ही अश्शूर का राजा मिस्र के बंदियों और कूश के निवासितों को, जवान और बूढ़े, नग्न और नंगे पैर, बिना ढके निंतबों के साथ ले जाएगा, मिस्र की लज्जा के लिए।<sup>5</sup> तब वे कूश पर अपनी आशा और मिस्र पर अपने गर्व के कारण लज्जित होंगे।<sup>6</sup> इसलिए इस तटर्वती प्रदेश के निवासी उस दिन कहेंगे, ‘देखो, यही हमारी आशा है, जहाँ हम अश्शूर के राजा से बचने के लिए सहायता के लिए भागे थे; और हम स्वयं कैसे बच सकते हैं?’

**21** समुद्र के जंगल के विषय में घोषणा: जैसे नेव में आधी चलती है, यह जंगल से, एक भयानक देश से आता है।<sup>7</sup> मुझे एक कठोर दर्शन दिखाया गया है; धोखेबाज अब भी धोखा देता है, और विनाशक अब भी नाश करता है। ऊपर जाओ, एलाम, धेराबंदी करो, मीडिया; मैंने उसके कारण होने वाले सभी कराहों का अंत कर दिया है।<sup>8</sup> इसी कारण मेरी कर्मणे पीड़ा से भरी हैं; दर्द ने मुझे जकड़ लिया है जैसे प्रसव पीड़ा में महिला को होता है। मैं इतना भ्रमित हूँ कि सुन नहीं सकता, इतना भयभीत हूँ कि देख नहीं सकता।<sup>9</sup> मेरा मन चकरा रहा है, भय ने मुझे धेर लिया है; जिस संधा की मैं लालसा करता था, वह मेरे लिए काँपने में बदल गई है।<sup>10</sup> मैं वे मेज लगाते हैं, कपड़ा बिछाते हैं, खाते हैं, पीते हैं; “उठो, सेनापतियों, ढालों को तेल लागाओ!”<sup>11</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु ने मुझसे कहा: “जाओ, पहरेदार को तैनात करो, उसे जो देखता है उसकी रिपोर्ट करने दो।”<sup>12</sup> जब वह सवारों को देखे, जोड़े में घुड़सवार, गायों की कतार, ऊटों की कतार, उसे ध्यानपूर्वक देखना चाहिए, बहुत ध्यानपूर्क।<sup>13</sup> तब पहरेदार ने पुकारा, “प्रभु, मैं दिन भर निरंतर प्रहरीदर्ग पर खड़ा रहता हूँ, और मैं हर रात अपने पहरे की जगह पर तैनात रहता हूँ।<sup>14</sup> अब देखो, यहाँ सवारों की एक टुकड़ी आ रही है, जोड़े में घुड़सवार।”<sup>15</sup> और एक ने कहा, “गिर गई, गिर गई बाबुल; और उसके देवताओं की सभी मूर्तियाँ भूमि पर चूर-चूर हो गई हैं।”<sup>16</sup> मेरे दबे हुए लोग, और मेरे पीड़ित खलिहान के लोग! जो मैंने सेनाओं के प्रभु, इसाएल के परमेश्वर से सुना है, मैं तुम्हें बताता हूँ।

## यशायाह

<sup>11</sup> एदोम के विषय में घोषणा: कोई मुझे सेईर से पुकारता रहता है, “पहरेदार, रात कितनी बीत गई है? पहरेदार, रात कितनी बीत गई है?” <sup>12</sup> पहरेदार कहता है, “सुबह आती है परंतु रात भी। यदि तुम पूछना चाहो, पूछो; फिर से आओ।”

<sup>13</sup> अरब के बारे में घोषणा: अरब के जंगलों में तुम रात बिताओगे, देदानियों के काफिले। <sup>14</sup> यासे के लिए पानी लाओ, तेमा की धूमि के निवासी: भग्नाड़ों से रोटी मिलो। <sup>15</sup> क्योंकि वे तलवारों से भग गए हैं, खींची हुई तलवार से, और द्वाके हुए धनुष से, और युद्ध के दबाव से। <sup>16</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु ने मुझसे कहा: “एक वर्ष में, जैसा कि एक किराए का मजदूर गिनता है, केदार की सारी शोभा समाप्त हो जाएगी; <sup>17</sup> और केदार के पुरों के धनुर्धारियों की संख्या का शेष, योद्धा, कम होंगे; क्योंकि इसाले के प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है।”

**22** दृष्टि की घाटी के विषय में उद्घोषणा: अब तुम्हें व्या हुआ है, कि तुम सब छतों पर चढ़ गए हो? <sup>2</sup> तुम जो शोरगुल से भरे हुए थे, तुम अशांत नगर, तुम अनन्दित नगर; तुम्हारे मरे हुए तलवार से नहीं मरे गए, न ही वे युद्ध में मरे। <sup>3</sup> तुम्हारे सभी शासक एक साथ भाग गए हैं, और बिना धनुष के पकड़ लिए गए हैं; तुम में से जो भी पाया गया है, उसे एक साथ बंदी बना लिया गया है, हालांकि वे दूर भाग गए थे। <sup>4</sup> इसलिए मैं कहता हूँ, “मुझसे अपनी अँखें हटा लो, मुझे कड़वे अँसू बहाने दो, मेरे लोगों की बेटी के निवास के बारे में मुझे सांत्वना मत दो।” <sup>5</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु परमेश्वर के पास घबराहट, अधीनता, और भ्रम का दिन है दृष्टि की घाटी में, दीवारों का टूटाना और पहाड़ की ओर रोना। <sup>6</sup> लालम ने तरकश उठाया, रसों, पैदल सेना, और घुड़सवारों के साथ; और कीर ने ढाल को उजागर किया। <sup>7</sup> तब तुम्हारी उत्तम घायियाँ रसों से भर गईं और घुड़सवारों ने द्वारा पर स्थान लिया। <sup>8</sup> और उसने यहदा की रक्षा हटा दी। उस दिन तुमने वन के घर के हथियारों पर निर्भर किया, <sup>9</sup> और तुमने देखा कि breaches दाऊद के नगर की दीवार में बहुत थे; और तुमने निचले तालाब के जल को इकट्ठा किया। <sup>10</sup> तब तुमने यस्थलेम के घरों को गिना और दीवार को मजबूत करने के लिए घरों को तोड़ दिया। <sup>11</sup> और तुमने दो दीवारों के बीच एक जलाशय बनाया पुराने तालाब के जल के लिए। लेकिन तुमने उस पर निर्भर नहीं किया जिसने इसे बनाया, न ही तुमने उस पर विचार किया जिसने इसे बहुत घले योजना बनाई थी। <sup>12</sup> इसलिए उस दिन सेनाओं के प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें रोने, विलाप करने के लिए बुलाया, सिर मुंदवाने और टाट पहनने के लिए। <sup>13</sup> इसके बजाय, वहाँ आनंद और

उल्लास है, पशुओं का वध और भेड़ों का वध, मांस खाना और शराब पीना: “आओ खाएँ और पिएँ, क्योंकि कल हम मर सकते हैं।” <sup>14</sup> लेकिन सेनाओं के प्रभु ने मुझ पर प्रकट किया: “निश्चित रूप से यह अपराध तुम्हें माफ नहीं किया जाएगा जब तक तुम मर नहीं जाते,” सेनाओं के प्रभु परमेश्वर कहते हैं।

<sup>15</sup> यह वही है जो सेनाओं के प्रभु परमेश्वर कहते हैं: “इस प्रबंधक के पास जाओ, शेबना के पास जो शाही घराने का प्रभारी है, <sup>16</sup> तुम्हारा यहाँ व्या अधिकार है, और तुम्हारा यहाँ कौन है, कि तुमने अपने लिए यहाँ एक कब्र काटी है, तुम जो ऊँचाई पर एक कब्र काटते हो, तुम जो चट्ठान में अपने लिए विश्राम स्थान बनाते हो?” <sup>17</sup> देखो, प्रभु तुम्हें जोर से फेंकने वाले हैं, तुम बलवान व्यक्ति। और वह तुम्हें दृढ़ता से पकड़ने वाले हैं <sup>18</sup> और तुम्हें गेद की तरह कसकर लपेटने वाले हैं, एक विशाल देश में ले जाया जाएगा; वहाँ तुम मरोगे, और वहाँ तुम्हारे भव्य रथ होंगे, तुम्हारे स्थामी के घर का अपमान। <sup>19</sup> और मैं तुम्हारे पद से हटा दूँगा, और तुम्हें तुम्हारे स्थान से खोंच लिया जाएगा। <sup>20</sup> फिर उस दिन मैं अपने सेवक एलियाकिम को हिल्कियाह के पुत्र को बुलाऊँगा, <sup>21</sup> और मैं उसे तुम्हारी चोगा पहनाऊँगा, और तुम्हारी कमरबंद को उसके चारों ओर कसकर बाँधूँगा, मैं उसे तुम्हारी अधिकार सौंप दूँगा; और वह यरूशलेम के निवासियों और यहदा के घर का पिता बन जाएगा। <sup>22</sup> फिर मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कंधे पर रखूँगा; जब वह खोलेगा, तो कोई बंद नहीं करेगा, जब वह बंद करेगा, तो कोई नहीं खोलेगा। <sup>23</sup> मैं उसे एक दृढ़ स्थान में कील की तरह ठोकँगा, और वह अपने पिता के घर की महिमा का सिंहासन बन जाएगा। <sup>24</sup> तो वे उस पर अपने पिता के घर की सारी महिमा लटकाएँगे, संतान और वंशज, सभी छोटे से छोटे बर्तन, कटोरों से लेकर सभी जार तक। <sup>25</sup> उस दिन, सेनाओं के प्रभु कहते हैं, “दृढ़ स्थान में ठोकी गई कील ढीली हो जाएगी; वह टूट जाएगी और गिर जाएगी, और उस पर लटका हुआ बोझ काट दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु ने कहा है।”

**23** सूर के विषय में उद्घोषणा: रोओ, हे तरशीश के जहाजो, क्योंकि सूर नष्ट हो गया है, बिना घर या बंदरगाह के; यह उहैं कुप्रस देश से बताया गया है। <sup>2</sup> मौन रहो, हे तटवासी, हे सिदोन के व्यापारी; तुम्हारे दूत समुद्र पार गए <sup>3</sup> और कई जलों पर थे। नील का अनाज, नदी की फसल उसकी आय थी; और वह राणी का बाजार थी। <sup>4</sup> सिदोन, लज्जित हो, क्योंकि समुद्र बोलता है, समुद्र का गढ़ कहता है, “मैंने न तो श्रम किया है और न ही जन्म दिया है, मैंने न तो जवान पुरुषों को पाला है

## यशायाह

और न ही कुमारियों को बढ़ाया है।<sup>५</sup> जब यह समाचार मिस्स तक पहुंचेगा, वे सूर के समाचार पर पीड़ा में होंगे।<sup>६</sup> तरशीश को पार करो; रोओ, हे तटवासी।<sup>७</sup> क्या यह तुम्हारा आनंदित नगर है, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल से है, जिसके पाँव उसे दूर-दूर के स्थानों पर उपनिवेश बनाने ले जाते थे?<sup>८</sup> किसने सूर के खिलाफ यह योजना बनाई, जो मुकुट प्रदान करता है, जिसके व्यापारी राजकुमार थे, जिसके व्यापारी पृथ्वी के सम्मानित थे?<sup>९</sup> सेनाओं के प्रभु ने इसे योजना बनाई है, सभी सुंदरता के गर्व को अपवित्र करने के लिए, पृथ्वी के सभी सम्मानित लोगों को अपमानित करने के लिए।<sup>१०</sup> अपनी भूमि पर नील की तरह फैल जाओ, हे तरशीश की बेटी, अब कोई रोक नहीं है।<sup>११</sup> उसने समुद्र पर अपना हाथ फैलाया है, उसने राजों को कांपाया है; प्रभु ने कनान के विषय में आदेश दिया है उसके गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए।<sup>१२</sup> उसने कहा है, “तुम्हें अब और आनंदित नहीं होना चाहिए, हे सिदोन की कुचली हुई कुँवरी बेटी। उठो, कुप्रस को पार करो; वहाँ भी तुम्हें विश्राम नहीं मिलाया।”<sup>१३</sup> देखो, यह कल्दी देश है—यह वह लोग हैं जो नहीं थे। असीरिया ने इसे रम्लस्थितीय जीवों के लिए आवंटित किया; उन्होंने अपने धेराबंदी के टावर खड़े किए, उन्होंने इसके महलों को लूटा, उन्होंने इसे खंडहर बना दिया।<sup>१४</sup> रोओ, हे तरशीश के जहाजो, क्योंकि तुम्हारा गढ़ नष्ट हो गया है।

<sup>१५</sup> अब उस दिन सूर सतर वर्षों के लिए एक राजा के दिनों की तरह भूला दिया जाएगा। सतर वर्षों के अंत में सूर के साथ वैसा ही होगा जैसा वेश्या के गीत में होता है: अपना वीणा ले लो, नगर में घूमो, हे भूली हुई वेश्या; तारों को कुशलता से बजाओ, कई गीत गाओ, ताकि तुम्हें याद किया जा सके।<sup>१६</sup> और यह सतर वर्षों के अंत में होगा कि प्रभु सूर की सुधि लेंगे। तब वह अपनी वेश्या की कमाई में लौटी और पृथ्वी के सभी राजों के साथ वेश्यावृत्ति करेगी।<sup>१७</sup> उसकी आय और उसकी वेश्या की कमाई प्रभु के लिए अलग रखी जाएगी; यह न तो संचित की जाएगी और न ही बचाई जाएगी, बल्कि उसकी आय प्रभु की उपस्थिति में रहने वालों के लिए पर्याप्त भोजन और उत्तम वस्त्र बन जाएगी।

**24** देखो, प्रभु पृथ्वी को उजाड़ता है, उसे नष्ट करता है, उसकी सतह को मरोड़ता है, और उसके निवासियों को बिखरता है।<sup>१</sup> और लोग याजक के समान होंगे, सेवक अपने स्वामी के समान, दासी अपनी स्वामिनी के समान, खरीदार विक्रेता के समान, उधार देने वाला उधार लेने वाले के समान, लेनदार देनदार के समान।<sup>२</sup> पृथ्वी पूरी तरह से उजाड़ दी जाएगी और पूरी तरह से

लूटी जाएगी, क्योंकि प्रभु ने यह वचन कहा है।<sup>३</sup> पृथ्वी सूख जाती है और टूट जाती है, मुख्य भूमि सूख जाती है और टूट जाती है, पृथ्वी के लोगों के ऊँचे लोग घट जाते हैं।<sup>४</sup> पृथ्वी भी उसके निवासियों द्वारा अपवित्र की गई है, क्योंकि उन्होंने कानूनों का उल्लंघन किया, विधियों को बदल दिया, और अनन्त वाचा को तोड़ दिया।<sup>५</sup> इसलिए, एक शाप पृथ्वी को खा जाता है, और जो लोग उस पर रहते हैं वे अपने अपराध के लिए पीड़ित होते हैं।

इसलिए, पृथ्वी के निवासियों की सख्ता घट जाती है, और कुछ लोग ही बचे रहते हैं।<sup>६</sup> नई दाखरस विलाप करती है, बेल सूख जाती है, सभी आनंदित हृदय वाले आह भरते हैं।<sup>७</sup> डफली की खुशी समाप्त हो जाती है, उत्सव मनाने वालों का शोर रुक जाता है, वीणा की खुशी समाप्त हो जाती है।<sup>८</sup> वे गीत के साथ दाखरस नहीं पीते; मादक पेय उन लोगों के लिए कड़वा होता है जो इसे पीते हैं।<sup>९</sup> अराजकता का नगर टूट जाता है; हर घर बंद हो जाता है ताकि कोई प्रवेश न कर सके।<sup>१०</sup> सड़कों में दाखरस के लिए एक क्रंदन है; सभी आनंद उदासी में बदल जाता है, पृथ्वी की खुशी निर्वासित हो जाती है।<sup>११</sup> नगर में उजाड़पन बचा है, और द्वार खंडहर में टूट गया है।<sup>१२</sup> क्योंकि ऐसा होगा कि पृथ्वी की बीच में लोगों के बीच, जैसे जैतून के पेड़ को हिलाने पर, जैसे अंगूर की फसल के बाद बचा हुआ होता है।<sup>१३</sup> वे अपनी आवाज़ उठाते हैं, वे सुखी से चिल्लाते हैं, वे पश्चिम से प्रभु की महिमा के बारे में पुकारते हैं।<sup>१४</sup> इसलिए पूर्ण में प्रभु की महिमा करो, समुद्र के तटों पर इसाएल के परमेश्वर, प्रभु के नाम की महिमा करो।<sup>१५</sup> पृथ्वी के छोर से हम गीत सुनते हैं: “धर्मी की महिमा,” लेकिन मैं कहता हूँ, ‘हाय मुझ पर! हाय मुझ पर! ओ, विश्वासघातियों की विश्वासघाति विश्वासघात और धीखा प्रबल होते हैं।’<sup>१६</sup> भय, गङ्गा, और फंदा तुम्हारा सामना करते हैं, हे पृथ्वी के निवासी।<sup>१७</sup> तब ऐसा होगा कि जो भय की आवाज से भागेगा वह गङ्गे में गिर जाएगा, और जो गङ्गे से बाहर निकलेगा वह फंदे में फंस जाएगा; क्योंकि ऊपर की खिड़कियाँ खुली हैं, और पृथ्वी की नींव हिलती है।<sup>१८</sup> पृथ्वी टूट जाती है, पृथ्वी फट जाती है, पृथ्वी हिंसक रूप से हिलती है।<sup>१९</sup> २० पृथ्वी भारी शराबी की तरह कांपती है और झोपड़ी की तरह डगमगाती है, क्योंकि उसका अपराध उस पर भारी है, और वह गिरेगी, फिर कभी नहीं उठेगी।<sup>२१</sup> तो उत्तर दिन ऐसा होगा, कि प्रभु ऊँचाई पर स्वर्ण के विद्रोही स्वर्गदूतों को और पृथ्वी पर पृथ्वी के राजाओं को दंडित करेगा।<sup>२२</sup> उन्हें कैदियों की तरह एक कालकोठरी में इकट्ठा किया जाएगा, और जेल में बंद किया जाएगा; और कई दिनों के बाद उन्हें दंडित किया जाएगा।<sup>२३</sup> तब चंद्रमा लज्जित होगा और सूर्य लज्जित होगा, क्योंकि सेनाओं का प्रभु सियोन पर्वत पर और

## यशायाह

यरूशलेम में राज्य करेगा, और उसकी महिमा उसके प्राचीनों के सामने होगी।

**25** हे प्रभु, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे ऊँचा उठाऊँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तूने अद्भुत काम किए हैं, योजनाएँ जो बहुत पहले बनाई गई थीं, पूर्ण विश्वासयोग्यता के साथ।<sup>2</sup> क्योंकि तूने एक नगर को ढेर में बदल दिया है, एक किलेबंद नगर को खंडहर में; विदेशियों का महल अब नगर नहीं है, वह कभी पुनर्जीवित नहीं होगा।<sup>3</sup> इसलिए एक शक्तिशाली लोग तुझे महिमा देगे; निर्देशी राष्ट्रों के नगर तेरा आदर करेंगे।<sup>4</sup> क्योंकि तू असहाय के लिए एक दृढ़ गढ़, तू तृप्तन से शरण, गर्भ से छाया रहा है; क्योंकि निर्देशी की सांस दीवार के खिलाफ बरिश की तरह है।<sup>5</sup> सूखी भूमि में गर्मी की तरह, तू विदेशियों के कोलाहल को शांत करता है; बादल की छाया से गर्मी की तरह, निर्देशी का गीत मौन हो जाता है।<sup>6</sup> अब सेनाओं का प्रभु इस पर्वत पर सभी लोगों के लिए एक भव्य भोज तैयार करेगा, पुरानी दाखरस का भोज, गूदे के साथ उत्तम टुकड़े, और परिष्कृत पुरानी दाखरस।<sup>7</sup> और इस पर्वत पर वह उस आवरण को नष्ट करेगा जो सभी लोगों पर है, वह आवरण जो सभी राष्ट्रों पर फैला हुआ है।<sup>8</sup> वह सदा के लिए मत्स्य को निगल जाएगा, और प्रभु परमेश्वर सभी चेहरों से अङ्गुष्ठ पोछ देगा, और वह अपने लोगों की अपमान को सारी पृथ्वी से हटा देगा; क्योंकि प्रभु ने कहा है।<sup>9</sup> और उस दिन कहा जाएगा, “देखो, यह हमारा परमेश्वर है जिसके लिए हमने प्रतीक्षा की, कि वह हमें बचाए। यह वही प्रभु है जिसके लिए हमने प्रतीक्षा की; आओ हम उसकी मुक्ति में आनन्दित और प्रसन्न हों।”<sup>10</sup> क्योंकि प्रभु का हाथ इस पर्वत पर विश्राम करेगा, और मोआब अपनी जगह पर कुचला जाएगा जैसे खाद के ढेर में पानी में तिनका कुचला जाता है।<sup>11</sup> और वह उसके बीच में अपने हाथ फैलाता है, परन्तु प्रभु उसके गर्व को उसके हाथों की चालाकी के साथ नीचा करेगा।<sup>12</sup> तेरी दीवारों के अभेद किलेबंदी को वह नीचे लाएगा, नीचा करेगा, और भूमि पर, यहाँ तक कि धूल में डाल देगा।

**26** उस दिन यह गीत यहूदा देश में गाया जाएगा: “हमारे पास एक सशक्त नगर है; वह सुरक्षा के लिए दीवारें और प्राचीर स्थापित करता है।<sup>1</sup> द्वार खोला, ताकि धर्मी राष्ट्र प्रवेश कर सके, वह जो विश्वासयोग्य बना रहता है।<sup>2</sup> आप स्थिर मन वाले को पूर्ण शांति में रखेंगे, क्योंकि वह आप पर विश्वास करता है।<sup>3</sup> सदैव के लिए प्रभु पर भरोसा रखो, क्योंकि प्रभु परमेश्वर में, हमारे पास एक

अनंतकालीन चट्टान है।<sup>4</sup> क्योंकि उसने ऊँचे पर बसने वालों को, उस ऊँचे नगर को नीचा कर दिया है, वह उसे धूल में डाल देता है।<sup>5</sup> पैर उसे रौंद देंगे, गरीबों के पैर, असहायों के कदम।<sup>6</sup> धर्मियों का मार्ग सरल है, आप धर्मियों का पथ समतल करते हैं।<sup>7</sup> वास्तव में, आपके न्याय के मार्ग का अनुसरण करते हुए, प्रभु हमने आपकी उत्सुकता से प्रतीक्षा की है; आपका नाम, और आपकी स्मृति, हमारी आत्माओं की इच्छा है।<sup>8</sup> रात में मेरी आत्मा आपकी लालसा करती है, वास्तव में, मेरे भीतर की आत्मा आपको पूरी लगन से खोजती है; क्योंकि जब पृथ्वी आपके न्यायों का अनुभव करती है, तब संसार के निवासी धर्म को सीखते हैं।<sup>9</sup> यद्यपि दुष्ट व्यक्ति को दिया दिखाई जाती है, वह धर्म को नहीं सीखता; वह धर्म की भूमि में अन्याय करता है, और प्रभु की महिमा को नहीं समझता।<sup>10</sup> प्रभु, आपका हाथ उठा हुआ है, फिर भी वे इस नहीं देखते। वे आपकी प्रजा के प्रति आपके उसाह को देखते हैं; और लजित होंगे; वास्तव में, आग आपके शत्रुओं को भस्म कर देगी।<sup>11</sup> प्रभु, आप हमारे लिए शांति स्थापित करेंगे, क्योंकि आपने हमारे लिए हमारे सभी कार्य किए हैं।<sup>12</sup> प्रभु, हमारे परमेश्वर, आपके अलावा अन्य स्वामी हम पर शासन कर चुके हैं; परंतु केवल आपके माथम से हम आपके नाम की स्वीकार करते हैं।<sup>13</sup> मृतक जीवित नहीं होगे, मृतामाँ नहीं उठेंगी; इसलिए आपने उन्हें दंडित और नष्ट कर दिया है, और आपने उनकी सारी स्मृति को समाप्त कर दिया है।<sup>14</sup> आपने राष्ट्र को बढ़ाया है, प्रभु, आपने राष्ट्र को बढ़ाया है, आप महिमान्वित हैं; आपने देश की सभी सीमाओं को विस्तारित किया है।<sup>15</sup> प्रभु, उन्होंने संकट में आपको खोजा; वे केवल एक प्रार्थना फुसफुसा सकते थे, आपकी अनुशासन उन पर थी।<sup>16</sup> जैसे गर्भवती स्त्री प्रसव के समय के निकट पहुँचती है, वह मरोड़ती है और अपनी प्रसव पीड़ा में चिल्लाती है, वैसे ही हम आपके समाने थे, प्रभु।<sup>17</sup> हम गर्भवती थे, हम प्रसव पीड़ा में मरोड़ते थे, हमने केवल बायु को जन्म दिया। हम पृथ्वी के लिए उद्धार प्राप्त नहीं कर सके, और न ही संसार के निवासी उत्पन्न हुए।<sup>18</sup> आपके मृतक जीवित होंगे; उनकी लाशें उठेंगी। आप जो धूल में लेटे हैं, जागो और आनंद से चिल्लाओ, क्योंकि आपकी ओस भोर की ओस के समान है, और पृथ्वी मृतामाँओं को जन्म देगी।<sup>19</sup> आओ, मेरी प्रजा, अपने कमरों में प्रवेश करो और अपने पीछे के दरवाजे बंद कर लो; थोड़ी देर के लिए छिप जाओ जब तक कि क्रोध समाप्त न हो जाए।<sup>20</sup> क्योंकि देखो, प्रभु अपनी जगह से बाहर आने वाले हैं पृथ्वी के निवासियों को उनके अपराधों के लिए दंड देने

## यशायाह

के लिए; और पृथ्वी अपने रक्तपात को प्रकट करेगी और अपने मारे गए लोगों को अब और नहीं छिपाएगी।

**27** उस दिन यहोवा अपनी कठोर, बड़ी और शक्तिशाली तलवार से भागने वाले सर्प लेव्यातान को दंड देगा, यहां तक कि लेव्यातान, उस मरोड़ने वाले सर्प को, और वह उस अजगर को मार डालेगा जो समुद्र में रहता है।<sup>1</sup> उस दिन, “सुंदर दाख की बारी, इसका गीत गाओ!“<sup>2</sup> मैं, यहोवा, उसका रक्षक हूँ, मैं हर पल उसे शीतिया हूँ। ताकि कोई उसे नुकसान न पहुँचाए, मैं दिन-रात उसकी रक्षा करता हूँ।<sup>3</sup> मुझे कोई क्रोध नहीं है। यदि कोई मुझे युद्ध में काटे और ज़ाड़ियाँ दे, तो मैं उन पर पाँव रखूँगा, मैं उन्हें पूरी तरह जला दूँगा।<sup>4</sup> या उसे मेरी सुरक्षा पर निर्भर रहने दो, उसे मुझसे शांति कर लेने दो, उसे मुझसे शांति कर लेने दो।<sup>5</sup> आने वाले दिनों में याकूब जड़ पकड़ेगा, इसाएल फूल और अंकुरित होगा, और वे दुनिया की सतह को फल से भर देंगे।<sup>6</sup> क्या उसने उन्हें वैसे ही मारा है जैसे उसने उन्हें मारा है जो उन्हें मारते हैं? या जैसे उसके मारे गए लोगों का वध हुआ है, क्या उनका वध हुआ है?<sup>7</sup> तूने उन्हें निवासित करके, उन्हें दूर करके उनसे विवाद किया। उसने अपनी प्रचंड हवा से उन्हें पूर्ण हवा के दिन में निकाल दिया है।<sup>8</sup> इसलिए इस कारण याकूब का अपराध क्षमा किया जाएगा; और यह उसके पाप की क्षमा का पूरा मूल्य होगा: जब वह सभी वेदी के पत्तरों को चूर्णित चाक के पत्तरों के समान बना देगा; जब अशेरीम और धूप की वेदियाँ नहीं खड़ी रहेंगी।<sup>9</sup> क्योंकि वृद्ध नगर अलग-थलग है, एक घर जो निर्जन और रेगिस्तान के समान छोड़ दिया गया है; वहाँ बछड़ा चर जाएगा, और वहाँ वह लेट जाएगा और उसकी शास्त्राओं पर चरेगा।<sup>10</sup> जब उसकी शाखाएँ सूखी होंगी, वे टूट जाएँगी, महिलाएँ आँगीं और उनसे आग जलाएँगी, क्योंकि वे समझ के लोग नहीं हैं। इसलिए उनका निमता उन पर दया नहीं करेगा, और उनका सृजनहार उन पर अनुग्रह नहीं करेगा।<sup>11</sup> उस दिन यहोवा यूफ्रेट्स की बहती धारा से लेकर मिस की नदी तक मारेगा, और तुम एक-एक करके इकट्ठे किए जाओगे, इसाएल के पुतों।<sup>12</sup> उस दिन एक बड़ा तुरही पूँका जाएगा, और जो अश्वर के देश में नष्ट हो रहे हैं और जो मिस के देश में बिखरे हुए हैं वे आँगे और यरूशलेम में पवित्र पर्वत पर यहोवा की उपासना करेंगे।

**28** अफ्रेम के आदतन शराबियों के गर्वीले मुकुट पर हाय, और उसकी महिमामयी सुंदरता के मुरझाए फूल पर, जो उपजाऊ घाटी के सिर पर है उन लोगों की जो शराब से पराजित हो गए हैं!<sup>1</sup> देखो, प्रभु के पास एक

शक्तिशाली और बलवान एजेंट है, ओलों की आंधी की तरह, विनाशकारी तूफान की तरह, मजबूत बाढ़ के पानी की तरह, उसने इसे अपने हाथ से धरती पर फेंक दिया है।<sup>2</sup> अफ्रेम के आदतन शराबियों का गर्वीला मुकुट पैरों तले रौदा जाएगा।<sup>3</sup> और उसकी महिमामयी सुंदरता का मुरझाया फूल, जो उपजाऊ घाटी के सिर पर है, गर्मी से पहले की पहली पकी अंजीर की तरह होगा, जिसे कोई देखता है, और जैसे ही वह उसके हाथ में होता है, वह उसे निगल लेता है।<sup>4</sup> उस दिन सेनाओं का प्रभु एक सुंदर मुकुट बन जाएगा और अपने लोगों के अवशेष के लिए एक महिमामयी माला;<sup>5</sup> जो न्याय में बैठता है उसके लिए न्याय की आत्मा, उनके लिए ताकत जो द्वारा पर आक्रमण को रोकते हैं।<sup>6</sup> और ये भी शराब से डगमगाते हैं और नशीले पेय से लड़खड़ाते हैं: याजक और भविष्यद्वक्ता नशीले पेय से डगमगाते हैं, वे शराब से भ्रमित हैं, वे नशीले पेय से लड़खड़ाते हैं; वे दर्शन करते समय डगमगाते हैं, वे न्याय करते समय लड़खड़ाते हैं।<sup>7</sup> क्योंकि सभी में गंदे उल्टी से भरी हैं, बिना एक भी साफ जगह के।<sup>8</sup> वह किसे ज्ञान सिखाएगा, और किसे वह सदेश समझाएगा? जो अभी धूध से छुड़ाए गए हैं? जो स्तन से हटाए गए हैं?<sup>9</sup> क्योंकि वह कहता है, “आदेश पर आदेश, आदेश पर आदेश, पवित्र पर पवित्र, पवित्र पर पवित्र, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।”<sup>10</sup> वास्तव में, वह इस लोगों से हक्कातो होंठों और विदेशी भाषा के माध्यम से बोलेगा,<sup>11</sup> जिसने उनसे कहा, “यहाँ विश्राम है, थके हुए को विश्राम दो,” और, “यहाँ विश्राम है。” लेकिन वे नहीं सुनेंगे।<sup>12</sup> इसलिए उनके लिए प्रभु का वचन होगा, “आदेश पर आदेश, आदेश पर आदेश, पवित्र पर पवित्र, पवित्र पर पवित्र, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ,” ताकि वे पीछे की ओर जा सकें, टूटें, फंसें, और बंदी बना लिए जाएं।<sup>13</sup> इसलिए, प्रभु का वचन सुनो, हे उपहास करने वालों, जो यरूशलेम में इस लोगों पर शासन करते हैं,<sup>14</sup> क्योंकि तुमने कहा है, “हमने मृत्यु के साथ एक बाचा की है, और शिओल के साथ हमने एक समझौता किया है। जब बाढ़ का प्रवाह आएगा, तो वह हमें नहीं छू पाएगा, क्योंकि हमने झूठ को अपनी शरण बना लिया है और धोखे से छिप गए हैं।”<sup>15</sup> इसलिए यह वही है जो प्रभु ईश्वर कहता है: “देखो, मैं सियोन में एक पत्तर रख रहा हूँ, एक परखा हुआ पत्तर, एक कीमती कीने का पत्तर नींव के लिए, दृढ़ता से रखा गया। जो उसमें विश्वास करेगा वह परेशान नहीं होगा।”<sup>16</sup> मैं न्याय को मानने की रेखा बनाऊंगा और धार्मिकता को स्तर; तब ओले झूठ की शरण को बहा देंगे, और पानी गुप्त स्थान को भर देगा।<sup>17</sup> तुम्हारी मृत्यु के साथ की बाचा रद्द कर दी जाएगी, और शिओल के साथ तुम्हारा समझौता नहीं रहेगा; जब बाढ़ का प्रवाह आएगा, तब

## यशायाह

तुम उसके पैरों तले रौदे जाओगे।<sup>10</sup> जितनी बार यह आएगा, यह तुम्हें पकड़ लेगा; सुबह के बाद सुबह यह आएगा, दिन या रात के किसी भी समय, और यह समझने के लिए पूर्ण आतंक होगा कि इसका क्या मतलब है।<sup>11</sup> बिस्तर इतना छोटा है कि उस पर फैल नहीं सकते, और कंबल इतना छोटा है कि उसमें लपेटा नहीं जा सकता।<sup>12</sup> क्योंकि प्रभु पेराजिम पर्वत पर उठेगा, वह गिबोन की घाटी में उत्तेजित होगा, अपना कार्य करने के लिए, अपना असामान्य कार्य, और अपना काम करने के लिए, अपना असाधारण काम।<sup>13</sup> और अब उपहास करने वालों की तरह आगे न बढ़ो, अन्यथा तुम्हारी बैडिंगों और मजबूत हो जाएगी; क्योंकि मैंने सेनाओं के प्रभु ईश्वर से पूरी पृथीवी पर निर्णयिक विनाश के बारे में सुना है।<sup>14</sup> सुगो और मेरी आवाज़ सुगो, ध्यान दो और मेरे शब्द सुनो।<sup>15</sup> क्या किसान बीज बोने के लिए लगातार हल चलाता है? क्या वह लगातार अपनी भूमि को पलटता और तोड़ता है?<sup>16</sup> क्या वह उसकी सतह को समतल नहीं करता और सौफ़ बोता है और जीरा छिड़कता है और गेहूं को पंकियों में लगाता है, जौ को उसकी जगह पर और राई को उसके क्षेत्र में?<sup>17</sup> क्योंकि उसका ईश्वर उसे सही तरीके से निर्देश देता और सिखाता है।<sup>18</sup> क्योंकि सौफ़ की थेसिंग स्लीज से नहीं पीटा जाता, और न ही जीरे पर गाढ़ी का पहिया चलाया जाता है; बल्कि सौफ़ को छड़ी से पीटा जाता है, और जीरे को डंडे से।<sup>19</sup> रोटी के लिए अनाज को कुचला जाता है, वास्तव में, वह इसे हमेशा के लिए नहीं पीसता। क्योंकि उसकी गाढ़ी का पहिया और उसके धोड़े अंततः इसे नुकसान पहुंचाते हैं, वह इसे लंबे समय तक नहीं पीसता।<sup>20</sup> यह भी सेनाओं के प्रभु से आता है, जिसने अपनी सलाह को अद्भुत और अपनी बुद्धि को महान बनाया है।

**29** हाय, एरियल, एरियल, वह शहर जहाँ दाऊद ने डेरा डाला था! वर्ष पर वर्ष जोड़ी, अपने लोहारों को समय पर मनाओ।<sup>2</sup> मैं एरियल पर संकट लाऊँगा, और वह शोक और विलाप करेगी, और वह मैंने लिए एरियल के समान होगी।<sup>3</sup> मैं तुम्हारे खिलाफ डेरा डालूँगा, तुम्हें घेर लूँगा, और तुम्हारे खिलाफ घेराबंदी के काम स्थापित करूँगा, और तुम्हारे खिलाफ युद्ध के मीनार उठाऊँगा।<sup>4</sup> तब तुम नीचे लाए जाओगे, तुम पृथी से बोलोगे, और तुम्हारी वाणी धूल से फुसफुसाएगी; तुम्हारी आवाज़ ज़मीन से आत्मा के समान होगी, और तुम्हारी वाणी धूल से फुसफुसाएगी।<sup>5</sup> परन्तु तुहारे शुरुओं की भीड़ महीन धूल के समान हो जाएगी, और निर्दियी लोगों की भीड़ भूसी के समान हो जाएगी जो उड़ जाती है; और यह तुरंत, अचानक होगा।<sup>6</sup> सेनाओं के प्रभु से तुम्हें गर्जन

और भूकंप और तेज़ आवाज़ के साथ दंडित किया जाएगा, बर्वंडर और तूफान और भस्म करने वाली अग्नि की ज्वाला के साथ।<sup>7</sup> और सभी राष्ट्रों की भीड़ जो एरियल के खिलाफ युद्ध करती है, यहाँ तक कि सभी जो उसके और उसके गढ़ के खिलाफ युद्ध करते हैं, और जो उसे संकट में डालते हैं, वे एक स्वप्न के समान होंगे, रात की एक दृष्टि के समान।<sup>8</sup> यह ऐसा होगा जैसे कोई भूखा व्यक्ति स्वप्न देखता है—और देखो, वह खा रहा है; परन्तु जब वह जागता है, तो उसकी भूख संतुष्ट नहीं होती। या जैसे कोई प्यासा व्यक्ति स्वप्न देखता है—और देखो, वह पी रहा है; परन्तु जब वह जागता है, तो देखो, वह बेहोश है और उसकी प्यास बुझी नहीं है। ऐसे ही सभी राष्ट्रों की भीड़ होगी जो सियोन पर्वत के खिलाफ युद्ध करती है।<sup>9</sup> विलंब करो और प्रतीक्षा करो, अपने आप को अंधा करो और अंधे हो जाओ; वे नशे में होते हैं, परन्तु दाखमधु से नहीं, वे लड़खड़ते हैं, परन्तु मादक पेय से नहीं।<sup>10</sup> क्योंकि प्रभु ने तुम पर राहीं नींद की आत्मा उड़ेल दी है, उसने तुम्हारी आँखें बंद कर दी हैं—भविष्यत्काजों की; और उसने तुम्हारे सिर ढक दिए हैं—दर्शियों के।<sup>11</sup> संपूर्ण दर्शन तुहारे लिए एक मुहरबंद पुस्तक के शब्दों के समान होगा, जो, जब वे इसे एक साक्षर व्यक्ति को देते हैं, कहते हैं, “कृपया इसे पढ़ो,” वह कहेगा, “मैं नहीं कर सकता, क्योंकि यह मुहरबंद है।”<sup>12</sup> तब पुस्तक एक निरक्षर व्यक्ति को दी जाएगी, कहते हुए, “कृपया इसे पढ़ो!” और वह कहेगा, “मैं पढ़ नहीं सकता।”<sup>13</sup> तब प्रभु ने कहा, “क्योंकि ये लोग मुझसे अपने शब्दों के साथ पास आते हैं और अपने होठों से मेरा समान करते हैं, परन्तु उनका हृदय मुझसे दूर है, और उनके लिए मेरी श्रद्धा यांत्रिक रूप से सीखी गई परंपरा है,<sup>14</sup> इसलिए देखो, मैं फिर से इस लोगों के साथ अद्भुत रूप से व्यवहार करूँगा, अद्भुत रूप से अद्मुतु; और उनके बुद्धिमान लोगों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी, और उनके समझादार लोगों की समझ छिप जाएगी।”<sup>15</sup> हाय उन पर जो अपनी योजनाओं को प्रभु से गहराई से छिपाते हैं, और जिनके काम अंधेरे में किए जाते हैं, और वे कहते हैं, “कौन हमें देखता है?” या “कौन हमें जानता है?”<sup>16</sup> तुम चीजों की उल्टा कर देते हो! क्या कुम्हार को मिट्टी के समान माना जाएगा, कि जो बनाया गया है वह अपने निर्माता से कहे, “उसने मुझे नहीं बनाया”; या जो आकार दिया गया है वह उसे कहे जिसने उसे आकार दिया, “उसे कोई समझ नहीं है?”<sup>17</sup> क्या यह अभी थोड़ी देर नहीं है जब तक कि लेबनान एक उपजाऊ क्षेत्र में नहीं बदल जाएगा, और उपजाऊ क्षेत्र को जंगल के समान नहीं माना जाएगा।<sup>18</sup> उस दिन बहरे एक पुस्तक के शब्द सुनेंगे, और उनकी उदासी और अंधकार से अंधों की आँखें देखेंगी।<sup>19</sup> दुखी लोग

## यशायाह

भी प्रभु में अपनी सुधीरी बद्धाएंगे, और मानव जाति के ज़रूरतमंद इसाएल के पवित्र में आनन्दित होंगे।<sup>20</sup> क्योंकि निर्दीयी का अंत होगा और उपहास करने वाला समाप्त होगा, वास्तव में सभी जो बुराई करने का इरादा रखते हैं समाप्त हो जाएंगे;<sup>21</sup> जो एक व्यक्ति को एक शब्द से दोषी ठहराते हैं, और द्वार पर मध्यस्थ के लिए जाल बिछाते हैं, और सही व्यक्ति को अर्थीन तर्कों से धोखा देते हैं।<sup>22</sup> इसलिए यह वही है जो प्रभु, जिसने अब्राहम को छुड़ाया, याकूब के घर के बारे में कहता है: “याकूब अब लजित नहीं होगा, न ही उसका चेहरा पीला होगा;”<sup>23</sup> परन्तु जब वह अपने बच्चों को देखा, मेरे हाथों का काम, उसके बीच में, वे मेरे नाम को पवित्र करेंगे; वास्तव में, वे याकूब के पवित्र को पवित्र करेंगे, और इसाएल के परमेश्वर का भय मारेंगे।<sup>24</sup> जो मन में गलती करते हैं वे सत्य जानेंगे, और जो आलोचना करते हैं वे शिक्षा स्वीकार करेंगे।”

**30** “हाय विद्रोही बच्चों पर,” प्रभु कहता है, “जो एक योजना बनाते हैं, परन्तु मेरी नहीं, और एक गठबंधन करते हैं, परन्तु मेरी आत्मा के अनुसार नहीं, पाप पर पाप जोड़ने के लिए;<sup>2</sup> जो मिस की ओर जाते हैं मेरी सलाह के बिना, फिरैन की सुरक्षा में शरण लेने के लिए, और मिस की छाया में आश्रय पाने के लिए!<sup>3</sup> इसलिए फिरैन की सुरक्षा तुम्हारी लज्जा होगी, और मिस की छाया में आश्रय, तुम्हारी अपमान।<sup>4</sup> क्योंकि उनके अधिकारी सोअन में हैं और उनके राजदूत हानेस में पहुँचते हैं।<sup>5</sup> हर कोई उन लोगों के कारण लजित होगा जो उन्हें लाभ नहीं देते, जो न तो सहायता करते हैं और न ही लाभ देते हैं, बल्कि लज्जा और अपमान का स्रोत हैं।<sup>6</sup> नेगेव के पश्शाऊं के बारे में घोषणा: कष्ट और पीड़ा की भूमि के माध्यम से, जहाँ से शेरनी और शेर, विषधर और उड़ने वाले सर्प आते हैं, वे अपनी संपत्ति युगा गांधों की पीठ पर ले जाते हैं, और अपने खजाने ऊंटों के कूबड़ पर, उन लोगों के पास जो उन्हें लाभ नहीं देंगे;<sup>7</sup> यहाँ तक कि मिस, जिसकी सहायता व्यर्थ और खाली है। इसलिए, मैंने उसे कहा है “राहब जो नष्ट हो गया है!”

<sup>8</sup> अब जाओ, इसे उनकी उपस्थिति में एक पट्टिका पर लिखो और इसे एक स्कॉल पर अकित करो, कि यह आने वाले समय में हमेशा के लिए एक गवाह के रूप में काम करे।<sup>9</sup> क्योंकि यह एक विद्रोही लोग हैं, झुठे पुर, पुर जो सुनेने से इकार करते हैं प्रभु की शिक्षा को;<sup>10</sup> जो दर्शकों से कहते हैं, “तुम दर्शन मत देखो”; और भविष्यवक्ताओं से, “तुम हमें सत्य की भविष्यवाणी मत करो। हमें सुखद शब्द बोलो, भ्रम की भविष्यवाणी करो।

<sup>11</sup> रास्ते से हट जाओ, मार्ग से अलग हो जाओ, हमारे

सामने इसाएल के पवित्र के बारे में बोलना बंद करो!”<sup>12</sup> इसलिए इसाएल के पवित्र का यह कहना है: “चूंकि तुमने इस वचन को अस्वीकार कर दिया है और उत्तीर्ण और कपट में भरोसा किया है, और उन पर निर्भर हो गए हो,<sup>13</sup> इसलिए यह अपराध तुम्हारे लिए होगा जैसे गिरने के लिए तैयार एक दरार, एक ऊँची दीवार में एक उभार, जिसका पतन अचानक एक क्षण में होता है,<sup>14</sup> जिसका पतन कुम्हार के बर्तन के टूटने जैसा है, इतनी निर्दयता से टूटा है कि उसके टुकड़ों में से एक टुकड़ा भी नहीं मिलाया अग्रि को चूहे से लेने के लिए या जल को कुएँ से निकालने के लिए।”

<sup>15</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु ईश्वर, इसाएल के पवित्र ने कहा है: “पश्चात्याप और विश्राम में तुम बचाए जाओगे, शांति और विश्वास में तुम्हारी शक्ति है।” परंतु तुम तैयार नहीं हो,<sup>16</sup> और तुमने कहा, “नहीं, क्योंकि हम घोड़ों पर भागोगे।” इसलिए तुम भागोगे! “और हम तेज घोड़ों पर सवारी करेंगे।” इसलिए जो तुम्हारा पीछा करेंगे वे तेज होंगे।<sup>17</sup> एक हजार एक व्यक्ति के भय से भागोगे; तुम पाँच के भय से सभी भागोगे, जब तक कि तुम एक पर्वत की चोटी पर एक संकेत स्तंभ की तरह नहीं रह जाओगे, और एक पहाड़ी पर एक ध्वज की तरह।

<sup>18</sup> इसलिए प्रभु तुम पर अनुग्रह करने के लिए तरसता है, और इसलिए वह ऊँचाई पर प्रतीक्षा करता है कि तुम पर दया करो। क्योंकि प्रभु न्याय का ईश्वर है; वे सभी धन्य हैं जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं।<sup>19</sup> क्योंकि तुम, सियोन के लोग, यरूशलैम में निवासी, अब और नहीं रोओगे। वह निश्चित रूप से तुम्हारी पुकार की ध्वनि पर अनुग्रह करेगा; जब वह इसे सुनेगा, वह तुम्हें उत्तर देगा।<sup>20</sup> यद्यपि प्रभु ने तुम्हें अभाव की रोटी और उत्तीर्ण का जल दिया है, वह, तुम्हारा शिक्षक, अब अपने आप को छिपाएगा नहीं, बल्कि तुम्हारी आँखें तुम्हारे शिक्षक को देखेंगी।<sup>21</sup> और तुम्हारों का जन तुम्हारे पीछे एक शब्द सुनेंगे, कहते हुए, “यह मार्ग है, इसमें चलो,” जब भी तुम दाँए या बाँध मुड़ो।<sup>22</sup> और तुम अपनी खुदी ही मूर्तियों को जो चाँदी से मढ़ी हैं, अपवित्र करेगे, और अपनी ढली हुई धातु की मूर्तियों को जो सोने से मढ़ी हैं। तुम उन्हें एक गंदी वस्तु के रूप में फेंक दोगे, और उनसे कहोगे, “दूर हो जाओ!”<sup>23</sup> तब वह तुम्हें तुम्हारे बीज के लिए वर्षा देगा जिसे तुम भूमि में बोआओगे, और भूमि की उपज से रोटी, और यह समृद्ध और प्रसुर होगी; उस दिन तुम्हारे पश्च एक विशाल चरागाह में चरेंगे।<sup>24</sup> इसके अलावा बैल और गधे जो भूमि पर काम करते हैं, मसालेदार चारा खाएँगे, जो फावड़े और कांटे से फेंका गया है।<sup>25</sup> और हर ऊँचे पर्वत और हर ऊँची पहाड़ी पर जल की धाराएँ

## यशायाह

बहेंगी महान वध के दिन, जब गगनचुंबी इमारतें गिरेंगी।<sup>26</sup> और पूर्णिमा का प्रकाश सूर्य के प्रकाश के समान होगा, और सूर्य का प्रकाश सात गुणा अधिक चमकदार होगा, सात दिनों के प्रकाश के समान, उस दिन जब प्रभु अपने लोगों के टूटे हुए को बाँध देगा और उस धाव को चंगा करेगा जो उसने लगाया है।

<sup>27</sup> देखो, प्रभु का नाम एक दूर स्थान से आता है; उसका क्रोध जल रहा है और धृउँ से घना है; उसके हौंठ क्रोध से भरे हैं, और उसकी जीभ एक भस्म करने वाली अधिक के समान है;<sup>28</sup> उसकी सांस एक उफनती हुई नदी के समान है, जो गर्दन तक पहुँचती है, राष्ट्रों को एक छलनी में हिलाने के लिए, और लोगों के जबड़ों में वह लगाम डालने के लिए जो उन्हें भटकाती है।<sup>29</sup> तुम्हारे पास गीत होंगे जैसे रात में जब तुम पर्व मनाते हो, और हृदय की प्रसन्नता जैसे जब कोई बांसुरी की ध्वनि पर चलता है, प्रभु के पर्वत पर जाने के लिए, इसाएल की चट्ठान के पास।<sup>30</sup> और प्रभु अपनी अधिकारी की आवाज को सुनाएगा, और अपनी भुजा के उत्तरने को भयंकर क्रोध में दिखाएगा, और भस्म करने वाली आग की ज्वाला में बादल फटने, वर्षा और ओलों में।<sup>31</sup> क्योंकि प्रभु की आवाज पर, अश्शूर भयभीत होगा जब वह छड़ी से प्रहार करेगा।<sup>32</sup> और हर प्रहार की छड़ी की सजा जो प्रभु उस पर लगाएगा तबले और वीणा की धून के साथ होगी; और युद्धों में, हथियारों को लहराते हुए, वह उनसे लड़ेगा।<sup>33</sup> क्योंकि तोफें लंबे समय से तैयार हैं, वास्तव में, यह राजा के लिए तैयार किया गया है। उसने इसे गहरा और बड़ा बनाया है, लकड़ी की प्रचुरता के साथ एक चिता; प्रभु की सांस, गंधक की धारा के समान, इसे आग लगाती है।

**31** उन पर हाय जो सहायता के लिए मिस्त्रों को जाते हैं, और घोड़ों पर भरोसा करते हैं, और रथों पर विश्वास करते हैं क्योंकि वे बहुत हैं, और धूइसवारों पर क्योंकि वे बहुत शक्तिशाली हैं, परं वे इसाएल के पवित्र पर दृष्टि नहीं करते, न ही यहोवा को खोजते हैं! <sup>2</sup> फिर भी वह भी बुद्धिमान है और विप्रिति लाएगा, और अपने वर्चनों को वापस नहीं लेता, परंतु वह कुकर्मियों के घर के विरुद्ध उठेगा, और अन्याय के काम करने वालों की सहायता के विरुद्ध।<sup>3</sup> अब मिस्री मनुष्य हैं और परमेश्वर नहीं, और उनके घोड़े मास हैं आत्मा नहीं। इसलिए यहोवा अपना हाथ बढ़ाएगा, और जो सहायता करता है वह ठोकर खाएगा, और जिसे सहायता दी जाती है वह गिरेगा, और वे सब एक साथ समाप्त हो जाएंगे।<sup>4</sup> क्योंकि यह वही है जो यहोवा मुझसे कहता है: “जैसे शेर या जवान शेर अपने शिकार पर गरजता है, जिसके

विरुद्ध चरवाहों का एक दल बुलाया जाता है, और वह उनकी आवाज से न तो डरेगा और न ही उनके शीर से विचलित होगा, वैसे ही सेनाओं का यहोवा सियोन पर्वत और उसकी पहाड़ी पर युद्ध करने के लिए उतरेगा।”<sup>5</sup> उड़ते पक्षियों की तरह सेनाओं का यहोवा यरूशलैम की रक्षा करेगा। वह उसकी रक्षा करेगा और उसे बचाएगा; वह उसे पार करेगा और उसे बचाएगा।<sup>6</sup> उसकी ओर लौट आओ जिसके विरुद्ध तुम अत्यधिक हठी हो गए हो, है इसाएल के पुत्रों।<sup>7</sup> क्योंकि उस दिन हर व्यक्ति अपनी चांदी की मूर्तियाँ और अपनी सोने की मूर्तियों को त्याग देगा, जो तुम्हारे हाथों ने तुम्हरे लिए पाप के रूप में बनाई हैं।<sup>8</sup> और अशूरी मनुष्य के द्वारा नहीं, बल्कि एक तलवार से गिरेगा, और एक तलवार जो मनुष्य की नहीं है उसे खा जाएगी। इसलिए वह तलवार से नहीं बचेगा, और उसके जवान लोग जबरन मज़दूर बन जाएंगे।<sup>9</sup> और उसकी चट्ठान भय के कारण चली जाएगी, और उसके अधिकारी ध्वज से भयभीत होंगे,” यहोवा की घोषणा है, जिसकी आग सियोन में है और जिसकी भट्टी यरूशलैम में है।

**32** देखो, एक राजा धर्मपूर्वक राज्य करेगा, और अधिकारी न्यायपूर्वक शासन करेंगे।<sup>2</sup> हर एक व्यक्ति हवा से अश्रु के समान होगा और तूफान से बचाव के समान, सूखी भूमि में जलधाराओं के समान, थके हुए देश में एक विशाल चट्ठान की छाया के समान।<sup>3</sup> तब देखने वालों की आँखें अंधी नहीं होंगी, और सुनने वालों के कान सुनेंगे।<sup>4</sup> जल्दबाजी करने वाले का मन सत्य को समझेगा, और हकलाने वाले की जीभ स्पष्ट बोलने के लिए जल्दी करेगा।<sup>5</sup> मूर्ख को अब महान नहीं कहा जाएगा, और दृष्टि को उदार नहीं कहा जाएगा।<sup>6</sup> क्योंकि मूर्ख बकवास बोलता है, और उसका हृदय दुष्टा की ओर झुकता है: अर्धम का अभ्यास करने और प्रभु के विरुद्ध गलती बोलने के लिए, भूखे व्यक्ति को असंतुष्ट रखने के लिए और प्यासे से पेय को रोकने के लिए।<sup>7</sup> जहाँ तक दृष्टि की बात है, उसके हथियार दुर्हृत हैं, वह दुष्ट योजनाएँ बनाता है झूठ के साथ गरीबों को नष्ट करने के लिए, हालाँकि जरूरतामंद व्यक्ति सही बात बोलता है।<sup>8</sup> लेकिन महान व्यक्ति महान योजनाएँ बनाता है, और महान योजनाओं के द्वारा वह खड़ा रहता है।

<sup>9</sup> उठो, हे स्त्रियों, जो आराम में हों, और मेरी आवाज सुनो; मेरे शब्द को सुनो, हे निश्चित बेटियों।<sup>10</sup> एक वर्ष और कुछ दिनों के भीतर तुम परेशान हो जाओगी, हे निश्चित स्त्रियों; क्योंकि अंगूर की फसल समाप्त हो गई है, और फल की कटाई नहीं आएगी।<sup>11</sup> काँपो, हे स्त्रियों, जो आराम में हों; परेशान हो जाओ, हे निश्चित बेटियों;

## यशायाह

अपने कमर पर टाट पहनकर, कपड़े उतार दो, <sup>12</sup>  
सुखद खेते और फलदायी दाखलताओं के लिए अपनी  
छाती पीटो, <sup>13</sup> मेरे लोगों की भूमि के लिए जिसमें काँटे  
और झाड़ियाँ उगेंगी, वास्तव में, सभी आनंदमय घरों  
और उल्लासमय नगर के लिए। <sup>14</sup> क्योंकि महल छोड़  
दिया गया है, जनसंख्या बाला नगर त्याग दिया गया है।  
पहाड़ी और प्रहरीदुर्ग हमेशा के लिए गुफाएँ बन गए हैं,  
जंगली गधों के लिए आनंद, झुंझुंके के लिए चरागाह, <sup>15</sup>  
जब तक कि आसा हम पर ऊपर से उड़ेली नहीं जाती,  
और जगल उपजाऊ क्षेत्र बन जाता है, और उपजाऊ  
क्षेत्र को बन के रूप में माना जाता है। <sup>16</sup> तब न्याय जंगल  
में निवास करेगा, और धर्म उपजाऊ क्षेत्र में रहेगा। <sup>17</sup>  
और धर्म का कार्य शांति होगा, और धर्म की सेवा, सदा  
के लिए शांति और विश्वास। <sup>18</sup> तब मेरे लोग शांतिपूर्ण  
निवास में रहेंगे, सुरक्षित आवासों में, और अविचल  
विश्राम खलां में; <sup>19</sup> और यह ओले के रूप में होगा जब  
वन गिर जाएगा, और नगर पूरी तरह से नीचा कर दिया  
जाएगा। <sup>20</sup> तुम कितने धन्य होगे, जो सभी जल के पास  
बौद्ध हो, जो बैल और गधे को स्वतंत्र रूप से चरने देते  
हो।

**33** हे नाश करने वाले, तुझ पर हाय! जबकि तुझे  
नाश नहीं किया गया; और वह जो विश्वासघात करता है,  
जबकि दूसरों ने उसके साथ विश्वासघात नहीं किया।  
जैसे ही तुम नाश करना समाप्त करोगे, तुम नाश कर  
दिए जाओगे; जैसे ही तुम विश्वासघात करना बंद करोगे,  
दूसरे तुम्हारे साथ विश्वासघात करोगे। <sup>2</sup> प्रभु, हम पर  
अनुग्रह कर: हमने तेरा इंतजार किया है। हर सुबह  
उनकी शक्ति बन, हमारे संकट के समय में भी हमारी  
मुक्ति। <sup>3</sup> गर्जन की आवाज पर, लोग भाग जाते हैं, तेरे  
उठने पर, राष्ट्र बिखर जाते हैं। <sup>4</sup> तेरी लूट इकट्ठी की  
जाती है जैसे केटरपिलर इकट्ठा करते हैं; टिक्कियों की  
धीङ की तरह, लोग उस पर धावा बोलते हैं। <sup>5</sup> प्रभु  
महान है, क्योंकि वह ऊँचाई पर निवास करता है, उसने  
सियोन की न्याय और धर्म से भर दिया है। <sup>6</sup> और वह  
तुम्हारे समय की स्थिरता होगा, मुक्ति, बुद्धि और ज्ञान  
की संपत्ति, प्रभु का भय उसका खजाना है। <sup>7</sup> देखो,  
उनके बहादुर लोग सङ्कों पर चिल्लते हैं, शांति के दृत  
कड़वे आँख बहाते हैं। <sup>8</sup> राजमार्ग सुनसान हैं, यात्री बंद  
हो गया है, उसने वाचा तोड़ दी है, उसने नारों का  
तिरस्कार किया है, उसका मानवजाति के प्रति कोई  
सम्मान नहीं है। <sup>9</sup> भूमि शोक करती है और नष्ट हो जाती  
है, लेबनान लजित है और मुराशा जाता है; शरीन  
मरुस्थल के मैदान की तरह है, और बाशान और कर्मेल  
अपनी पत्तियाँ खो देते हैं। <sup>10</sup> "अब मैं उठूंगा," प्रभु कहता  
है, "अब मैं महान बनूंगा, अब मैं ऊँचा उठूंगा।" <sup>11</sup> तुमने

भूमी को गर्भ में धारण किया है, तुम भूसे को जन्म दोगे;  
मेरी सांस तुम्हें आग की तरह भस्म कर देगी। <sup>12</sup> लोग  
चूंके की तरह जलाए जाएंगे, जैसे काटे गए काटे आग में  
जलाए जाते हैं। <sup>13</sup> तुम जो दूर हो, सुनो मैंने क्या किया है;  
और तुम जो पास हो, मेरी शक्ति को स्वीकार करो।" <sup>14</sup> सियोन के पापी भयभीत हैं; अर्थम् कांप उठे हैं। "हम  
में से कौन भस्म करने वाली आग के साथ रह सकता है?  
हम में से कौन अनंत जलन के साथ रह सकता है?" <sup>15</sup> वह जो धर्मपूर्वक चलता है और ईमानदारी से बोलता है,  
वह जो अन्यायपूर्ण लाभ को अस्वीकार करता है, और  
अपने हाथों को हिलाता है ताकि वे रिश्ता न लें; वह जो  
रक्तपात के बारे में सुनने से अपने कान बंद कर लेता है,  
और बुराई देखने से अपनी आँखें बंद कर लेता है; <sup>16</sup> वह  
ऊँचाइयों पर निवास करेगा, उसकी शरण अंजेय चट्टान  
होगी; उसकी रोटी उसे दी जाएगी, उसका पानी निश्चित  
होगा। <sup>17</sup> तुम्हारी आँखें राजा को उसकी सुंदरता में  
देखेंगी; वे एक दूरस्थ भूमि को देखेंगे। <sup>18</sup> तुम्हारा हृदय  
आतंक पर ध्यान करेगा: "गिनने वाला कहाँ है? तौलने  
वाला कहाँ है? गिनने वाला टावर कहाँ है?" <sup>19</sup> तुम अब  
एक भयंकर लोगों को नहीं देखेंगे, ऐसे लोगों को  
जिनकी भाषा कोई नहीं समझता, एक हकलाने वाली  
जीभ जिसे कोई नहीं समझता। <sup>20</sup> सियोन की देखो,  
हमारे नियुक्त पर्वों का नगर; तुम्हारी आँखें यरूशलैम  
को देखेंगी, एक शांतिपूर्ण बस्ती, एक तंबू जिसे नहीं  
खीचा जाएगा; इसके खूटे कभी नहीं निकाले जाएंगे, और  
न ही इसकी कोई रस्सी फाड़ी जाएगी। <sup>21</sup> परन्तु वहाँ  
महान प्रभु हमारा लिए होंगे नदियों और चौड़े नहरों का  
स्थान जिस पर कोई चप्पू वाली नाव नहीं जाएगी, और  
जिस पर कोई शक्तिशाली जहाज नहीं गुजरेगा— <sup>22</sup>  
क्योंकि प्रभु हमारा न्यायालीश है, प्रभु हमारा विधिवक्ता  
है, प्रभु हमारा राजा है; वह हमें बचाएगा— <sup>23</sup> तुम्हारी  
पाल ढीली है; यह अपने मस्तूत के आधार को ढट्टा से  
नहीं पकड़ सकता, और न ही पाल को फैला सकता है।  
फिर प्रचुर लूट का शिकार विभाजित किया जाएगा; जो  
लंगड़ा है वह लूट ले जाएगा। <sup>24</sup> और कोई निवासी नहीं  
कहेगा, "मैं बीमार हूँ"; वहाँ रहने वाले लोग अपने  
अपराधों से क्षमा किए जाएंगे।

**34** हे राष्ट्रों, सुनने के लिए पास आओ; और सुनो, हे  
लोगों! धरती और जो कुछ उसमें है, वह सुने, और संसार  
और जो कुछ उससे उत्पन्न होता है, वह भी सुनो। <sup>2</sup>  
क्योंकि योहवा का कोध सभी राष्ट्रों पर है, और उसकी  
क्रोध सभी उनकी सेनाओं पर है। उसने उन्हें पूरी तरह  
से नष्ट कर दिया है, उसने उन्हें वध के लिए सौंप दिया  
है। <sup>3</sup> इसलिए उनके मारे गए लोग बाहर फेंक दिए  
जाएंगे, और उनकी लाशें बदबू देंगी, और पहाड़ उनके

## यशायाह

खून से भीग जाएंगे।<sup>4</sup> और सभी आकाशीय प्रकाश मिट जाएंगे, और आकाश एक स्क्रॉल की तरह लपेटा जाएगा; सभी उसके प्रकाश भी मुरझा जाएंगे जैसे बेल से पत्ता मुरझाता है, या जैसे अंजीर के पेड़ से मुरझाता है।<sup>5</sup> क्योंकि मेरी तलवार ने स्वर्ग में अपनी भरपाई कर ली है; देखो, यह एदोम पर न्याय के लिए उत्तरेगा, और उन लोगों पर जिन्हें मैंने विनाश के लिए नियुक्त किया है।<sup>6</sup> यहोवा की तलवार खून से भरी हुई है, यह चर्चे से ढकी हुई है, भेड़ के बच्चों और बकरों के खून से, मेंढों की किंडनी की चर्ची से। क्योंकि यहोवा का बोसरा में बिलिदान है, और एदोम की भूमि में एक बड़ी वध है।<sup>7</sup> जंगली बैल भी उनके साथ गिरेंगे, और युवा बैल मजबूत लोगों के साथ; इसलिए उनकी भूमि खून से भीग जाएगी, और उनकी धूल चर्ची से चिकनी हो जाएगी।<sup>8</sup> क्योंकि यहोवा का प्रतिशोध का दिन है, सियोन के कारण के लिए प्रतिशोध का वर्ष।<sup>9</sup> उसकी धाराएँ पिघले हुए गंधक में बदल जाएंगी, और उसकी ढीती धरती गंधक में, और उसकी भूमि जलती हुई गंधक बन जाएगी।<sup>10</sup> यह रात या दिन बुझाई नहीं जाएगी; उसका खुआं सदा के लिए उठेगा। पीढ़ी दर पीढ़ी यह उजाड़ रहेगा; कोई भी उसमें सदा के लिए नहीं गुजरेगा।<sup>11</sup> लेकिन पेलिकन और कंटेंदर चूहा इसे अपने अधिकार में लेंगे, और उलू और कौआ इसमें निवास करेंगे; और वह इसके ऊपर उजाड़ की रेखा और खालीपन की माप की रस्सी खींचेगा।<sup>12</sup> इसके कुलीन—वहाँ कोई नहीं है जिसे वे राजा धोषित कर सकें—और इसके सभी अधिकारी कुछ नहीं होंगे।<sup>13</sup> इसके किलेबंद टावरों में कांटे उग आएंगे, इसके किलेबंद शहरों में खरपतवार और कांटे; यह गीढ़ों का अड्डा और शत्रुरम्भों का निवास स्थान भी होगा।<sup>14</sup> मरुस्थल के प्राणी भेड़ियों से मिलेंगे, और बकरी अपनी जाति को बुलाएंगी। हाँ, रात की जीव वहाँ बसेगा और अपने लिए विश्राम स्थान पाएगा।<sup>15</sup> वृक्ष का साप वहाँ अपना धोसता बनाएगा और अड़े देगा, और वह उह्ये सेयंगा और अपनी सुरक्षा में इकट्ठा करेगा। हाँ, बाज वहाँ इकट्ठे होंगे, हर एक अपनी जाति के साथ।<sup>16</sup> यहोवा की पुस्तक से खोजों, और पढ़ों: इनमें से कोई भी गायब नहीं होगा; कोई भी अपनी जोड़ी से वधित नहीं होगा। क्योंकि उसके मुख ने आज्ञा दी है, और उसकी आत्मा ने उर्वें इकट्ठा किया है।<sup>17</sup> उसने उनके लिए भाग्य डाला है, और उसके हाथ ने माप की रस्सी से इसे उह्ये बांटा है। वे इसे सदा के लिए अपने अधिकार में लेंगे; पीढ़ी दर पीढ़ी वे इसमें निवास करेंगे।

**35** जंगल और मरुभूमि आनंदित होंगे, और मरुभूमि खुशी से चिल्लाएगी और फूल उठेगी; जैसे केसर 2 यह प्रचुर मात्रा में फूल उठेगा और खुशी और

उल्लास के साथ आनंदित होगा। लेबनान की महिमा इसे दी जाएगी, कर्मल और शेरोन की महिमा। वे प्रभु की महिमा, हमारे परमेश्वर की महिमा देखेंगे।<sup>3</sup> थके हुए को मजबूत करो, और दुर्बल को शक्तिशाली बनाओ।<sup>4</sup> चिंतित हृदय वालों से कहो, “साहस रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा परमेश्वर प्रतिशोध के साथ आएगा; परमेश्वर का प्रतिफल आएगा, परन्तु वह तुह्ये बचाएगा।”<sup>5</sup> तब अंधों की आंखें खोती जाएंगी, और बहरे के कान खुल जाएंगे।<sup>6</sup> तब लंगड़े हिरण की तरह कूदेंगे, और जो बोल नहीं सकते उनकी जीभ खुशी से चिल्लाएगी। क्योंकि जंगल में जल फूट पड़ेगा, और मरुभूमि में नदियाँ।<sup>7</sup> झुलसी हुई भूमि तालाब बन जाएगी और यासी भूमि जल के सोते; सियारों के निवास स्थान में, उनके विश्राम स्थल में, घास सरकंडे और नकट बन जाएगी।<sup>8</sup> वहाँ एक राजमार्ग होगा, एक सड़क, और इसे पवित्रता का राजमार्ग कहा जाएगा। अशुद्ध उस पर यात्रा नहीं करेंगे, परन्तु यह उसके लिए होगा जो मार्ग पर चलता है, और मूर्ख उस पर नहीं भटकेंगे।<sup>9</sup> वहाँ कोई सिंह नहीं होगा, और न ही कोई विंसक पशु उस पर चढ़ेगा; वे वहाँ नहीं पाए जाएंगे। परन्तु छुड़ाए हुए वहाँ चलेंगे, 10 और प्रभु के छुड़ाए हुए लौट आएंगे और जयजयकार के साथ सियान में आएंगे, और उनके सिर पर सदा की खुशी होगी। वे आनंद और खुशी पाएंगे, और शोक और आहं दूर हो जाएंगी।

**36** अब राजा हिजकियाह के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सेनहेरिक ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई की और उह्ये जीत लिया।<sup>2</sup> और अश्शूर के राजा ने लाकीश से रबशाके को यरूशलेम में राजा हिजकियाह के पास एक बड़ी सेना के साथ भेजा। और वह ऊपरी जलाशय की नाली के पास, धोबी के मैदान के मार्ग पर खड़ा हुआ।<sup>3</sup> तब हिलकियाह का पुत्र एलियाकिम, जो धर का अधिकारी था, शबना जो लेखक था, और आसाप का पुत्र योआह, जो सचिव था, उसके पास आए।<sup>4</sup> तब रबशाके ने उनसे कहा, “अब हिजकियाह से कहो, ‘यह महान राजा, अश्शूर का राजा कहता है: “यह विश्वास क्या है जो तुम्हारे पास है?”<sup>5</sup> मैं कहता हूँ: युद्ध के लिए तुम्हारी योजना और शक्ति केवल खोखले शब्द हैं।”<sup>6</sup> अब तुमने किस पर भरोसा किया है, कि तुमने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है?<sup>7</sup> देखो, तुमने इस टूटे हुए सरकंडे, मिस के सहारे पर भरोसा किया है, जो यदि कोई मनुष्य उस पर झुके, तो वह उसके हाथ में धुक्कर उसे छेद देगा; फिरोन, मिस का राजा, उन सबके लिए ऐसा ही है जो उस पर भरोसा करते हैं।<sup>8</sup> पर यदि तुम मुझसे कहो, ‘हमने अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया है,’ क्या वह वही नहीं

## यशायाह

है जिसके ऊँचे स्थानों और वेदियों को हिजकियाह ने हटा दिया है, और यहूदा और यरूशलेम से कहा है, ‘तुम इस वेदी के सामने पूजा करोगे?’<sup>8</sup> अब फिर, मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के साथ एक शर्त लगाओ, और मैं तुम्हें दो हजार धोड़े द्वृंगा, यदि तुम अपनी ओर से उन पर सवार चढ़ा सको।<sup>9</sup> तब तुम मेरे स्वामी के सेवकों में से सबसे छोटे अधिकारी को भी कैसे पीछे हटा सकते हो, और रथों और घुड़सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा करते हो?<sup>10</sup> क्या मैं बिना यहौवा की स्तीकृति के इस देश पर चढ़ाई करने और इसे नष्ट करने आया हूँ? यहौवा ने मुझसे कहा, ‘इस देश पर चढ़ाई कर और इसे नष्ट कर!’<sup>11</sup> तब एलियाकिम और शबना और योआह ने रबशाके से कहा, ‘अब अपने सेवकों से अरामी में बात करो, क्योंकि हम उसे समझते हैं, और हमारे साथ यहूदी भाषा में बात न करो, जो दीवार पर बैठे लोगों के सुनने में आए।’<sup>12</sup> पर रबशाके ने कहा, ‘क्या मेरे स्वामी ने मुझे केवल तुम्हारे स्वामी और तुम्हारे पास ये शब्द कहने के लिए भेजा है, और उन लोगों के पास नहीं जो दीवार पर बैठे हैं, जो तुम्हारे साथ अपनी ही माल और मूल खाने और पीने के लिए अभिशप्त हैं?’<sup>13</sup> तब रबशाके खड़ा हुआ और यहूदी भाषा में ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा, ‘महान राजा, अश्शूर के राजा के शब्दों को सुनो।’<sup>14</sup> राजा यह कहता है: ‘हिजकियाह तुम्हें धोखा न दे, क्योंकि वह तुम्हें बचाने में सक्षम नहीं होगा;’<sup>15</sup> और हिजकियाह तुम्हें यहौवा पर भरोसा करने के लिए प्रेरित न करे, यह कहकर, ‘यहौवा निश्चित रूप से हमें बचाएगा; यह नगर अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं सौंपा जाएगा।’<sup>16</sup> हिजकियाह की बात न सुनो, क्योंकि अश्शूर का राजा यह कहता है: ‘मेरे साथ शांति बनाओ और मेरे पास आओ, और अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के पेढ़ का फल साओ, और अपनी-अपनी हौदी का पानी पियो,’<sup>17</sup> जब तक मैं आकर तुम्हें तुम्हारे देश के समान एक देश में न ले जाऊँ, अनाज और नई दाखमधु का देश, रोटी और दाख की बारी का देश।<sup>18</sup> पर सावधान रहो कि हिजकियाह तुम्हें यह कहकर गुमराह न करे, ‘यहौवा हमें बचाएगा।’ क्या राष्ट्रों के देवताओं में से किसी ने अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाया है?<sup>19</sup> हमात और अर्पद के देवता कहाँ हैं? सेफरवैम के देवता कहाँ हैं? और कब उन्होंने मेरे हाथ से सामरिया को बचाया है?<sup>20</sup> इन देशों के सभी देवताओं में से किसने अपने देश की मेरे हाथ से बचाया है, कि यहौवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाए?'

<sup>21</sup> पर वे चुप रहे और उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया; क्योंकि राजा की आज्ञा थी, ‘उसे उत्तर न दो।’<sup>22</sup> तब हिलकियाह का पुत्र एलियाकिम, जो घर का अधिकारी था, शबना जो लेखक था, और आसाप का पुत्र योआह,

जो सचिव था, हिजकियाह के पास अपने वस्त्र फाड़कर आए, और उन्होंने उसे रबशाके के शब्दों की सूचना दी।

**37** जब राजा हिजकियाह ने यह सुना, तो उसने अपने वस्त्र फाड़े, टाट ओढ़ लिया, और यहौवा के भवन में गया।<sup>2</sup> तब उसने एलियाकिम को, जो घर का प्रबंधक था, शबना लेखक को, और याजकों के पुरनियों को टाट ओढ़े हुए, आमोज के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह के पास भेजा।<sup>3</sup> और उन्होंने उससे कहा, ‘हिजकियाह यह कहता है, यह दिन संकट, ताइना, और अपमान का दिन है, क्योंकि बच्चे जन्म के समय पर आ गए हैं, और उन्हें जन्म देने की शक्ति नहीं है।’<sup>4</sup> शायद तुम्हारा परमेश्वर यहौवा रबशाके के शब्दों को सुनेगा, जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर को अपमानित करने के लिए भेजा है, और उन शब्दों का बदला लेगा जो तुम्हारा परमेश्वर यहौवा ने सुने हैं। इसलिए, उस बचे हुए के लिए प्रार्थना करो जो बचा है।’<sup>5</sup> इसलिए राजा हिजकियाह के सेवक यशायाह के पास आए।<sup>6</sup> और यशायाह ने उससे कहा, ‘तुम अपने स्वामी से यह कहो: “यहौवा यह कहता है: “उन शब्दों के कारण मत डरो जो तुमने सुने हैं, जिनसे अश्शूर के राजा के सेवकों ने मुझे निंदा की है।” देखो, मैं उसमें एक आत्मा डालूंगा, ताकि वह समाचार सुने और अपने देश लौट जाए। और मैं उसे उसके अपने देश में तलवार से गिरवा दूँगा।’<sup>7</sup> तब रबशाके लौट आया और उसने पाया कि अश्शूर का राजा लिङ्गा के विरुद्ध लड़ रहा है, क्योंकि उसने सुना था कि वह लाकीसे से हट गया है।<sup>8</sup> और उसने कुश के राजा तिर्हाका के बारे में यह कहते सुना, ‘वह तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिए निकला है।’ जब उसने यह सुना, तो उसने हिजकियाह के पास दूत भेज, यह कहते हुए,<sup>10</sup> ‘यह यहूदा के राजा हिजकियाह से कहो: “तुम्हारा परमेश्वर, जिस पर तुम भरोसा करते हो, तुम्हें यह कहकर धोखा न दे, “यरूशलेम को अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं सौंपा जाएगा।”’<sup>11</sup> देखो, तुमने सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सभी देशों के साथ क्या किया है, उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। तो क्या तुम बच जाओगे? क्या उन जातियों के देवताओं में उन्हें बचाया, जिन्हें मेरे पिताओं ने नष्ट कर दिया? गोजान, हारान, रेसफ, और तिलसार में रहने वाले अदन के पुत्र?<sup>13</sup> हमात का राजा, अर्पद का राजा, और सेफरवैम के नगर का राजा, हेन और इव्वा कहाँ हैं?’<sup>14</sup> तब हिजकियाह ने दूतों के हाथ से पत्र लिया और उसे पढ़ा, और वह यहौवा के भवन में गया और उसे यहौवा के सामने फैला दिया।<sup>15</sup> हिजकियाह ने यहौवा से प्रार्थना की, यह कहते हुए,<sup>16</sup> ‘सेनाओं के यहौवा, इसाएल के परमेश्वर, जो करुणों के ऊपर विराजमान है, तू ही

## यशायाह

अकेला पृथ्वी के सभी राज्यों का परमेश्वर है। तूने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।<sup>17</sup> हे यहोवा, अपना कान झुका और सुन; हे यहोवा, अपनी आँखें खोल और देख; और उन सभी शब्दों को सुन, जो सन्नहेरीब ने जीवित परमेश्वर को अपमानित करने के लिए भेजे हैं।<sup>18</sup> सचमुच, हे यहोवा, अश्शूर के राजाओं ने सभी देशों और उनकी भूमि को नष्ट कर दिया है,<sup>19</sup> और उनके देवताओं को आग में डाल दिया है, क्योंकि वे देवता नहीं थे बल्कि केवल मानव हाथों का काम थे, लकड़ी और पत्थर। इसलिए उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया।<sup>20</sup> तेकिन अब, हे यहोवा, हमारे परमेश्वर, हमें उसके हाथ से बचा, ताकि पृथ्वी के सभी राज्य जानें कि केवल तू ही, यहोवा, परमेश्वर है।<sup>21</sup> तब आमोज के पुत्र यशायाह ने हिजकियाह को संदेश भेजा, यह कहते हुए, “यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, यह कहता है: क्योंकि तुमने अश्शूर के राजा सन्नहेरीब के बारे में मुझसे प्रार्थना की है,<sup>22</sup> यह वह वचन है जो यहोवा ने उसके विरुद्ध कहा है: ‘उसने उन्हें पर तिरस्कार किया और उन्हें उत्तरास किया, सियोन की कुँवरी बेटी; उसने तेरे पीछे सिर हिलाया, यरूशलैम की बेटी।’<sup>23</sup> तूने किसका अपमान किया और किसकी निर्दा की? और किसके विरुद्ध तूने अपनी आवाज उठाई और घंटें से अपनी आँखें उठाई?<sup>24</sup> इसाएल के पवित्र के विरुद्ध! तूने अपने सेवकों के माध्यम से यहोवा का अपमान किया, और तूने कहा, ‘मेरे अनेक रथों के साथ मैं पहाड़ों की ऊँचाइयों पर चढ़ा, लेबनान के दूरस्थ भागों तक; और मैंने उसके ऊँचे देवदारों और उसके चुने हुए देवदारों को काट डाला। और मैं उसकी सबसे ऊँची चोटी, उसके घंटे जंगल तक जाऊँगा।’<sup>25</sup> मैंने कुएँ खोदे और पानी पिया, और अपने पैरों के तलवें से मिस्र की सभी धाराओं को सुखा दिया।<sup>26</sup> क्या तूने नहीं सुना? बहुत पहले मैंने इसे किया, प्राचीन काल से मैंने इसे योजना बनाई। अब मैंने इसे पूरा किया, कि तू किंबेबद नगरों को खंडहरों के ढेरों में बदल दे।<sup>27</sup> इसलिए उनके निवासी शक्तिहीन थे, वे टूट गए और लज्जित हुए। वे खेत की वनस्पति और हरी घास के समान थे, छोते पर की घास के समान जो बढ़ने से पहले ही झुलस जाती है।<sup>28</sup> लेकिन मैं तेरे बैठने, तेरे बाहर जाने और तेरे आने को जानता हूँ, और मुझ पर तेरे क्रोध को भी।<sup>29</sup> क्योंकि तूने मुझ पर क्रोध किया है, और तेरे घंटें ने मेरे कानों तक पहुँच गया है, मैं तेरी नाक में अपनी हुक डालूँगा और तेरे हाँठों में अपनी लगान डालूँगा, और तुझे उसी मार्फ से वापस ले जाऊँगा जिससे तू आया था।<sup>30</sup> तब यह तेरे लिए चिन्ह होगा: तू इस वर्ष वही खाएगा जो अपने आप उगता है, दूसरे वर्ष वही जो उससे उगता है, लौकिन तीसरे वर्ष बो, काट, दाख की बारियाँ लगा, और उनका फल खा।<sup>31</sup> यहूदा के घर का

बचा हुआ अवशेष फिर से नीचे जड़ पकड़ेगा और ऊपर फल उत्पन्न करेगा।<sup>32</sup> क्योंकि यरूशलैम से एक अवशेष निकलेगा, और सियोन परवत से बचे हुए। सेनाओं के यहोवा का उत्साह इसे पूरा करेगा।”<sup>33</sup> इसलिए, यहोवा अश्शूर के राजा के बारे में यह कहता है: “वह इस नगर में नहीं आएगा, न वहाँ एक तीर चलाएगा; और न वह उसके सामने एक ढाल लेकर आएगा, न उसके खिलाफ एक आक्रमण ढेर लगाएगा।”<sup>34</sup> जिस मार्फ से वह आया, उसी से वह लौट जाएगा, और वह इस नगर में नहीं आएगा।” यहोवा की घोषणा है।<sup>35</sup> क्योंकि मैं अपने नाम के लिए और अपने सेवक दाऊद के लिए इस नगर की रक्षा करूँगा और इसे बचाऊँगा।”<sup>36</sup> तब यहोवा का दून निकला और अश्शूरियों की छावी में 185,000 की मारा; और जब लोग सुबह जल्दी उठे, तो देखो, सभी मृत शरीर।<sup>37</sup> इसलिए अश्शूर का राजा सन्नहेरीब चला गया और घर लौट आया, और नीनवे में रहा।<sup>38</sup> ऐसा हुआ कि जब वह अपने देवता निस्तोक के घर में पूजा कर रहा था, तो उसके पुत्र अद्रमेतेक और शेरेजर ने उसे तलवार से मार डाला; और वे अरारात देश में भाग गए। और उसका पुत्र एसहद्दोन उसके स्थान पर राजा बना।

**38** उन दिनों हिजकियाह गंभीर रूप से बीमार हो गया। और आमोज के पुत्र भविष्यवक्ता यशायाह उसके पास आए और उससे कहा, “यहोवा यह कहता है: ‘अपने घर को व्यवस्थित कर लो, क्योंकि तुम मरने वाले हो और जीवित नहीं रहोगे।’”<sup>2</sup> तब हिजकियाह ने दीवार की ओर अपना चेहरा मोड़ा और यहोवा से प्रार्थना की,<sup>3</sup> और कहा, “कृपया, प्रभु, बस याद करें कि मैंने आपके सामने पूरे दिल से और सच्चाई में कैसे चला हूँ, और आपकी दृष्टि में जो अच्छा है वह किया है।”<sup>4</sup> और हिजकियाह ने बहुत रोया।<sup>5</sup> तब यहोवा का वचन यशायाह के पास आया, कहता हुआ, “मैं जाओ और हिजकियाह से कहो, यह तुम्हारे पिता दाऊद के परमेश्वर यहोवा का वचन है: ‘मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है, मैंने तुम्हारे आँसू देखे हैं, देखो, मैं तुम्हारी आयु में पंद्रह वर्ष और जोड़ द्वांगा।’”<sup>6</sup> और मैं तुम्हें और इस नगर को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा, और मैं इस नगर की रक्षा करूँगा।”<sup>7</sup> और यह तुम्हारे लिए यहोवा की ओर से चिन्ह होगा, कि यहोवा इस वचन को पूरा करेगा जो उसने कहा है।<sup>8</sup> देखो, मैं सीढ़ियों पर छाया का, जो आहाज़ की सीढ़ियों पर सूर्य के साथ नीचे गई है, दस कदम पीछे कर द्वांगा।”<sup>9</sup> सो सूर्य की छाया सीढ़ियों पर दस कदम पीछे चली गई जिस पर वह नीचे गई थी।

## यशायाह

<sup>०</sup> यह यहूदा के राजा हिजकियाह का लेख है, उसकी बीमारी और स्वस्थ होने के बाद: <sup>१०</sup> मैंने कहा, “मेरे जीवन के मध्य में मुझे शिओल के द्वारों में प्रवेश करना है; मुझे मेरे वर्षों के विश्राम से वंचित कर दिया गया है।” <sup>११</sup> मैंने कहा, “मैं यहोवा को नहीं देखूँगा, जीवितों की भूमि में यहोवा को; मैं अब संसार के निवासियों के बीच मानवजाति को नहीं देखूँगा।” <sup>१२</sup> मेरा निवास स्थान एक चरवाहे के तंबू की तरह मुझसे खींचकर हटा दिया गया है; मैंने अपने जीवन को बुनकर की तरह लपेट लिया। वह मुझे करधे से काट देता है; दिन से रात तक आप मेरा अंत कर देते हैं। <sup>१३</sup> मैंने सुबह तक अपनी आत्मा को संयमित किया। एक शेर की तरह—वह मेरी सभी हाथियों को तोड़ देता है; दिन से रात तक आप मेरा अंत कर देते हैं। <sup>१४</sup> एक निगल की तरह, एक सरासर की तरह, मैंने चहवहाया; मैंने एक कबूतर की तरह विलाप किया; मेरी आँखें ऊँचाइयों की ओर लालसा से देखती हैं; प्रभु, मैं पीड़ित हूँ, मेरी सुरक्षा बनें। <sup>१५</sup> मैं क्या कहूँ? क्योंकि उसने मुझसे बात की है, और उसने स्वयं इसे किया है; मैं अपनी आत्मा की कड़वाहट के कारण अपने सभी वर्षों में चुपचाप चलूँगा। <sup>१६</sup> प्रभु, इन्हीं चीजों से लोग जीते हैं, और इनमें ही मेरी आत्मा का जीवन है; मुझे स्वास्थ्य प्रदान करें और मुझे जीवित रहने दें। <sup>१७</sup> देखो, मेरी अपनी भलाई के लिए मुझे बड़ी कड़वाहट थी; परंतु आपने मेरी आत्मा को शून्यता के गड्ढे से बचा दिया है, क्योंकि आपने मेरे सभी पापों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है। <sup>१८</sup> क्योंकि शिओल आपको धन्यवाद नहीं दे सकता, मर्यू आपकी प्रशंसा नहीं कर सकती; जो गड्ढे में जाते हैं वे आपकी विश्वासयोग्यता की आशा नहीं कर सकते। <sup>१९</sup> यह जीवित हैं जो आज की तरह आपको धन्यवाद देते हैं; एक पिता अपने पुत्रों को आपकी विश्वासयोग्यता के बारे में बताता है। <sup>२०</sup> प्रभु मुझे निश्चित रूप से बचाएगा; इसलिए हम अपने जीवन के सभी दिनों में यहोवा के घर में तार वाले वाद्ययंत्रों पर मेरे गीत बजाएँगे।” <sup>२१</sup> अब यशायाह ने कहा था, “उन्हें अंजीरों का एक केक लें और उसे फोड़े पर लगाएँ, ताकि वह ठीक हो सके।” <sup>२२</sup> तब हिजकियाह ने कहा था, “क्या विन्ह है कि मैं यहोवा के घर में जाऊँगा?”

**३९** उसी समय बाबुल के राजा बालदान के पुत्र मरोदक-बालदान ने हिजकियाह के पास पत्र और उपहार भेजा, क्योंकि उसने सुना था कि वह बीमार था और स्वस्थ हो गया है। <sup>२</sup> और हिजकियाह प्रसन्न हुआ, और उसने उन्हें अपना सारा खजाना घर दिखाया, चांदी, सोना, बाम का तेल, सुगंधित तेल, उसका पूरा शस्त्रागार, और जो कुछ उसके खजानों में पाया गया था। उसके घर में, और उसके पूरे राज्य में, ऐसा कुछ भी नहीं था जो

हिजकियाह ने उन्हें न दिखाया हो। <sup>३</sup> तब भविष्यवक्ता यशायाह राजा हिजकियाह के पास आया और उससे कहा, “इन लोगों ने क्या कहा, और वे कहाँ से तुम्हारे पास आए?” और हिजकियाह ने कहा, “वे मेरे पास एक दूर देश से आए हैं, बाबुल से।” <sup>४</sup> उसने फिर कहा, “उन्होंने तुम्हारे घर में क्या देखा?” तो हिजकियाह ने उत्तर दिया, “उन्होंने मेरे घर में सब कुछ देखा है; मेरे खजानों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैंने उन्हें न दिखाया हो।” <sup>५</sup> तब यशायाह ने हिजकियाह से कहा, “सेनाओं के प्रभु का वचन सुनो: <sup>६</sup> देखो, वे दिन आ रहे हैं जब तुम्हारे घर में सब कुछ, और जो तुम्हारे पिताओं ने आज तक संचित किया है, बाबुल ले जाया जाएगा; कुछ भी नहीं बचेगा; प्रभु कहते हैं।” <sup>७</sup> और तुम्हारे कुछ पुत्र जो तुमसे उत्तर द्वारा, जिन्हें तुम जन्म दिगे, ले जाए जाएंगे, और वे बाबुल के राजा के महल में अधिकारी बन जाएंगे।” <sup>८</sup> तब हिजकियाह ने यशायाह से कहा, “प्रभु का वचन जो आपने कहा है वह अच्छा है।” क्योंकि उसने सोचा, “मेरे दिनों में शांति और सत्य होगा।”

**४०** “सांत्वना दो, सांत्वना दो मेरे लोगों को,” तुम्हारा परमेश्वर कहता है। <sup>१</sup> “परूशलेम से कोमलता से बोलो; और उसे पुकारो कि उसकी लड़ाई समाप्त हो गई है, उसका अपराध हटा दिया गया है, कि उसने यहोवा के हाथ से अपने सभी पापों के लिए द्वा प्राप्त किया है।” <sup>२</sup> एक पुकारने वाले की आवाज़, “जंगल में यहोवा के लिए मार्ग साफ करो, मरुभूमि में हमारे परमेश्वर के लिए एक राजमार्ग सीधी बनाओ।” <sup>३</sup> हर घाटी को ऊँचा किया जाए, और हर पर्वत और पहाड़ी को नीचा किया जाए; और ऊबड़-खाबड़ भूमि समतल हो जाए, और ऊबड़-खाबड़ स्थल एक चौड़ी घाटी बन जाए; <sup>४</sup> तब यहोवा की महिमा प्रकट होगी, और सभी लोग इसे एक साथ देखेंगे; क्योंकि यहोवा के मुख ने यह बोला है।” <sup>५</sup> एक आवाज़ कहती है, “पुकारो!” तब उसने उत्तर दिया, “मैं क्या पुकारूँ?” सभी मनुष्य घास के समान हैं, और उनकी सारी शोभा मैदान के फूल के समान है। <sup>६</sup> घास सूख जाती है, फूल मुरझा जाता है, जब यहोवा की सांस उस पर बहती है; लोग गास्त्र में घास हैं। <sup>७</sup> घास सूख जाती है, फूल मुरझा जाता है, परंतु हमारे परमेश्वर का वचन सदा के लिए स्थिर रहता है। <sup>८</sup> एक ऊँचे पर्वत पर चढ़ो, सियोन, शुभ समाचार का संदेशवाहक, अपनी आवाज को जोर से उठाओ, यरूशलेम, शुभ समाचार का संदेशवाहक; इसे उठाओ, मत डरो। यहूदा के नगरों से कहो, “यहाँ तुम्हारा परमेश्वर है!” <sup>९</sup> देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ्य के साथ आएंगा, उसकी भुजा उसके लिए शासन करेगी। देखो, उसका प्रतिफल उसके साथ है, और उसका पुरस्कार उसके आगे है। <sup>१०</sup> एक चरवाहे की तरह वह अपनी भेड़ों

## यशायाह

की देखभाल करेगा, अपनी भुजा में वह मेमनों को  
इकट्ठा करेगा और उन्हें अपने वस्त्र की तह में ले चलेगा;  
वह दृथ पिलाने वाली भेड़ों को धरि-धरि ले चलेगा।

<sup>12</sup> किसने अपने हाथ की खोखली में जल को मापा है,  
और अपनी हथेती से आकाश को नापा है, और धरती  
की धूल को माप से गिना है, और तराजू में पहाड़ों को  
तौला है, और तराजू के पलड़ों में पहाड़ियों को? <sup>13</sup>  
किसने यहोवा की आत्मा को निर्देशित किया है, या  
उसके सलाहकार के रूप में उसे सूचित किया है? <sup>14</sup>  
उसने किससे परामर्श किया, और किसने उसे समझ  
दी? और किसने उसे न्याय के मार्ग में सिखाया, और  
उसे ज्ञान सिखाया, और उसे समझ के मार्ग की  
जानकारी दी? <sup>15</sup> देखो, राष्ट्र एक बाली से गिरने वाली  
बूंद के समान हैं, और तराजू पर धूल के कण के समान  
माने जाते हैं; देखो, वह द्वीपों को महीन धूल के समान  
उठाता है। <sup>16</sup> यहाँ तक कि लेबनान जानने के लिए  
पर्याप्त नहीं है, और न ही उसके पश्च यहोवालि के लिए  
पर्याप्त हैं। <sup>17</sup> सभी राष्ट्र उसके समाने कुछ भी नहीं हैं, वे  
उसके द्वारा कुछ भी नहीं और अर्थहीन माने जाते हैं।

<sup>18</sup> फिर तुम परमेश्वर की तुलना किससे करोगे? या तुम  
किस छवि से उसकी तुलना करोगे? <sup>19</sup> मूर्ति के लिए,  
एक कारीगर उसे ढालता है, एक सुनार उसे सोने से  
मढ़ता है, और एक चाँदीकार चाँदी की जंजीर बनाता है।  
<sup>20</sup> जो इस प्रकार की भेंट के लिए अत्यंत गरीब है वह  
एक ऐसा पेड़ चुनता है जो सड़ता नहीं है; वह अपने लिए  
एक कुशल कारीगर की खोज करता है ताकि एक मूर्ति  
तैयार करे जो नहीं डगमगाए। <sup>21</sup> क्या तुम नहीं जानते?  
क्या तुमने नहीं सुना? क्या यह तुम्हें आरंभ से नहीं  
बताया गया है? क्या तुमने पृथ्वी की नींव से नहीं समझा?  
<sup>22</sup> वह जो पृथ्वी के वृत्त के ऊपर बैठता है, और उसके  
निवासी टिड़ियों के समान हैं, जो आकाश को पर्दे के  
समान फैलाता है और उन्हें निवास के लिए तंबू के  
समान फैलाता है। <sup>23</sup> वह जो शासकों को कुछ नहीं  
करता है, जो पृथ्वी के न्यायाधीशों को अर्थहीन बनाता  
है। <sup>24</sup> वे मुश्किल से लगाए गए हैं, मुश्किल से बोए गए  
हैं, मुश्किल से उनकी जड़ें धरती में जमी हैं, परंतु वह  
उन पर फूंक मारता है, और वे सूख जाते हैं, और तूफान  
उन्हें भूसे के समान उड़ा ले जाता है।

<sup>25</sup> “फिर तुम मेरी तुलना किससे करोगे, कि मैं उसके  
समान होऊँ?” पवित्र एक कहता है। <sup>26</sup> अपनी आँखें  
ऊँचाई पर उठाओ और देखो किसने इन तारों को  
बनाया है, वह जो उनकी भीड़ को संख्या से बाहर लाता  
है, वह उन्हें सभी को नाम से बुलाता है; उसकी शक्ति

की महानता और उसकी शक्ति की ताकत के कारण,  
उनमें से एक भी नहीं खोता। <sup>27</sup> तुम क्यों कहते हो,  
याकूब, और तुम क्यों कहते हो, इसाएल, “मेरा मार्ग  
यहोवा से छिपा है, और मेरे परमेश्वर की दृष्टि से मेरा  
न्याय बच निकलता है”? <sup>28</sup> क्या तुम नहीं जानते? क्या  
तुमने नहीं सुना? सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यहोवा, पृथ्वी  
के छोरों का सृष्टिकर्ता थकता नहीं है और न ही थकावट  
में आता है। उसकी समझ अगाय है। <sup>29</sup> वह थके हुए को  
शक्ति देता है, और जो सामर्थ्यहीन है उसे शक्ति बढ़ाता  
है। <sup>30</sup> यद्यपि युवक थक जाते हैं और थकावट में आते हैं,  
और बलवान जवान बुरी तरह ठोकर खाते हैं, <sup>31</sup> फिर भी  
जो यहोवा की प्रतीका करते हैं वे नई शक्ति प्राप्त करेंगे;  
वे उकाबों के समान पंखों के साथ ऊँचे उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे  
और थकेंगे नहीं, वे चरोंगे और थकावट में नहीं आएंगे।

**41** “मेरी बात सुनो, हे तटवर्ती प्रदेशों, और लोग नई  
शक्ति प्राप्त करें; उन्हें आगे आने दो, फिर उन्हें बोलने  
दो; हम न्याय के लिए एक साथ आएं।” <sup>2</sup> किसने पूर्व से  
एक को उठाया जिसे वह अपनी धार्मिकता में अपने  
चरणों में बुलाता है? वह राष्ट्रों को उसके हवाले कर देता  
है और राजाओं को वश में कर लेता है। वह उन्हें अपनी  
तलवार से धूल के समान बनाता है, अपनी धनुष से  
उड़ने वाले भूसे के समान। <sup>3</sup> वह उनका पीछा करता है,  
शांति से आगे बढ़ता है, एक ऐसे मार्ग से जो उसने पहले  
नहीं देखा था। <sup>4</sup> किसने इसे किया और पूरा किया, शुरू  
से पीढ़ियों को बुलाया? मैं, यहोवा, पहला हूँ, और अंतिम  
के साथ—मैं वही हूँ।” <sup>5</sup> तटवर्ती प्रदेशों ने देखा और डर  
गए; पृथ्वी के छोर कांप उठे; वे पास आए और आ गए।  
<sup>6</sup> प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी की सहायता करता है  
और अपने भई से कहता है, “मजबूत रहो।” <sup>7</sup> इस  
प्रकार कारीगर धातु गलाने वाले को प्रोत्साहित करता है,  
और जो हथौड़े से धातु को चिकना करता है, वह उसे  
प्रोत्साहित करता है जो निहाई पर पीटता है, सॉलरिंग  
के बारे में कहते हुए, “यह अच्छा है”; और वह इसे कीलों  
से कसता है, ताकि वह डगमगाए नहीं।

<sup>8</sup> “परन्तु तू, इसाएल, मेरा सेवक, याकूब जिसे मैंने चुना  
है, मेरे मित्र अब्राहम का वंशज, <sup>9</sup> तू जिसे मैंने पृथ्वी के  
छोरों से लिया है, और इसके सुदूर भागों से बुलाया है  
और तुझसे कहा, ‘तू मेरा सेवक है, मैंने तुझे चुना है और  
तुझे अस्वीकार नहीं किया है।’ <sup>10</sup> मत डर, क्योंकि मैं तेरे  
साथ हूँ, मत डर, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तुझे बल  
दूंगा, मैं तुझे सहायता भी करूँगा, मैं तुझे अपनी धार्मिक  
दाहिनी हाथ से भी थामे रहूँगा।” <sup>11</sup> देख, वे सब जो तुझ  
पर क्रोधित हैं, लजित और अपमानित होंगे; जो तुझसे  
झाड़ते हैं वे कुछ नहीं होंगे और नष्ट हो जाएंगे। <sup>12</sup> तू

## यशायाह

उन लोगों को खोजेगा जो तुझसे झागड़ते हैं, परन्तु उन्हें नहीं पाएगा; जो तुझसे युद्ध करते हैं वे कुछ नहीं होंगे, जैसे कि अस्तित्वहीन।<sup>13</sup> क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तेरा दाहिना हाथ पकड़ता है, जो तुझसे कहता है, ‘मत डर, मैं तुझे सहायता करूँगा।’<sup>14</sup> मत डर, हे कीड़ा याकूब, हे इसाएल के लोग; मैं तुझे सहायता करूँगा,” यहोवा कहता है, “और तेरा उद्धरकर्ता इसाएल का पवित्र है।<sup>15</sup> देख, मैंने तुझे एक नया, तेज़ दातेदार स्लीज बनाया है; तू पहाड़ों को गाहगा और उन्हें चूर्ण करेगा, और पहाड़ियों को भूसे के समान बना देगा।<sup>16</sup> तू उन्हें फटकारेगा, और हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी, और एक तेज हवा उन्हें खिखोर देगी; परन्तु तू यहोवा मैं आनन्दित होगा, तू इसाएल के पवित्र मैं गर्व करेगा।<sup>17</sup> गरीब और जस्तरतमंट पानी की खोज कर रहे हैं, परन्तु कुछ नहीं है, और उनकी जीभ प्यास से सूख रही है, मैं, यहोवा, स्वयं उन्हें उत्तर दूंगा, इसाएल का परमेश्वर होकर मैं उन्हें नहीं छोड़ूँगा।<sup>18</sup> मैं ऊँचे स्थानों पर नदियाँ खोतूँगा, और घाटियों के बीच मैं सोते, मैं जंगल को जल का तालाब बना दूंगा और सूखी भूमि को जल के सोते।<sup>19</sup> मैं जंगल में देवदार लगाऊँगा, अकासिया, मर्टल, और जैतून का पेढ़, मैं रेगिस्तान में जुनिपर लगाऊँगा, बैंक्स ट्री और सरू के साथ,<sup>20</sup> ताकि वे देख सकें और पहचान सकें, और विचार कर सकें और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें, कि यहोवा का हाथ ने यह किया है, और इसाएल के पवित्र ने इसे रचा है।

<sup>21</sup> “अपना मामला प्रस्तुत करो,” यहोवा कहता है। “अपना प्रमाण लाओ,” याकूब का राजा कहता है।<sup>22</sup> उन्हें आगे लाओ और हमें बताओ कि क्या होने वाला है; पहले की घटनाओं के लिए, बताओ कि वे क्या थीं, ताकि हम उन पर विचार कर सकें और उनके परिणाम को जान सकें। या हमें बताओ कि क्या आ रहा है;<sup>23</sup> उन चीजों की घोषणा करो जो बाद में अने वाली हैं, ताकि हम जान सकें कि तुम देवता हो; वास्तव में, अच्छा या बुरा करो, कि हम डौँ और एक साथ भयभीत हों।<sup>24</sup> देखो, तुम कुछ भी नहीं से कम हो, और तुम्हारा काम कुछ भी नहीं से कम है; जो तुम्हें बुनता है वह एक घृणास्पद है।<sup>25</sup> मैंने उत्तर से एक को गति में रखा है, और वह आ गया है; सूर्योदय से वह मेरे नाम पर पुकारेगा; और वह अधिकारियों पर ऐसे आएगा जैसे कि गारा पर, जैसे कुम्हार मिट्ठी को रौदता है।<sup>26</sup> किसने इसे शुरू से घोषित किया, ताकि हम जान सकें, या पहले के समय से, ताकि हम कह सकें, “वह सही था?” कोई भी नहीं था जिसने घोषणा की, कोई भी नहीं था जिसने घोषणा की, कोई भी नहीं था जिसने

घोषणा की, कोई भी नहीं था जिसने तुम्हारे शब्द सुने।<sup>27</sup> पहले मैंने सियोन से कहा, “देखो, वे यहाँ हैं।” और

यरूशलैम को मैं शुभ समाचार का संदेशवाहक प्रदान करूँगा।<sup>28</sup> परन्तु जब मैं देखता हूँ, तो कोई नहीं है, और उनके बीच में कोई सलाहकार नहीं है, जो, यदि मैं पूछूँ, उत्तर दे सकता है।<sup>29</sup> देखो, वे सब ज्ञाते हैं; उनके काम कुछ नहीं हैं, उनकी ढली हुई धातु की मूर्तियाँ हवा और शून्यता हैं।

**42** देखो, मेरा सेवक, जिसे मैं संभालता हूँ; मेरा चुना हुआ, जिसमें मेरी आत्मा प्रसन्न होती है। मैंने अपनी आत्मा उस पर डाली है, वह राष्ट्र के लिए न्याय लाएगा।<sup>2</sup> वह न तो चिल्लाएगा, न अपनी आवाज़ ऊँची करेगा, न ही अपनी आवाज़ को सङ्क कर सुनाएगा।<sup>3</sup> वह टूटे हुए नरकट को नहीं तोड़ेगा, और धूँधती जलती हुई बाती को नहीं बुझाएगा, वह विश्वसपूर्वक न्याय लाएगा।<sup>4</sup> वह न तो निराश होगा और न ही कुचला जाएगा जब तक वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित न कर दे; और द्वीप उसके नियम की प्रतीक्षा करेंगे।<sup>5</sup> यह वही परमेश्वर यहोवा कहता है, जिसने आकाश को बनाया और उन्हें फैलाया, जिसने पृथ्वी और उसकी संतानों को फैलाया, जो उस पर लोगों को सांस देता है और जो उस पर चलते हैं उन्हें आत्मा देता है;<sup>6</sup> मैं यहोवा हूँ, मैंने तुझे धर्म में बुलाया है, मैं तुझे हाथ से पकड़कर देखभाल करूँगा, और मैं तुझे लोगों के लिए एक बाचा के रूप में नियुक्त करूँगा, राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश के रूप में,<sup>7</sup> अंधों की अँखें खोलने के लिए, कैदियों को कालकोठरी से बाहर लाने के लिए और जो अंधकार में रहते हैं उन्हें जेल से बाहर लाने के लिए।<sup>8</sup> मैं यहोवा हूँ, यही मेरा नाम है; मैं अपनी महिमा किसी और को नहीं दूंगा, न ही अपनी स्तुति मूर्तियों को।<sup>9</sup> देखो, पूर्व की बातें हो चुकी हैं, अब मैं नई बातें घोषित करता हूँ। उनके अंकुरित होने से पहले मैं उन्हें तुम्हें बताता हूँ।”

<sup>10</sup> यहोवा के लिए एक नया गीत गायो, पृथ्वी के अंत से उसकी स्तुति गाओ! तुम जो समुद्र में जाते हो, और जो कुछ उसमें है, तुम द्वीप और जो उनमें रहते हैं।<sup>11</sup> जंगल और उसके नगर अपनी आवाज़ उठाएँ, वे बस्तियाँ जिनमें केदार निवास करता है। सेला के निवासी ऊँचे स्वर में गाएँ, वे पर्वतों की घोटियों से आनंद के लिए चिल्लाएँ।<sup>12</sup> वे यहोवा को महिमा दें और द्वीपों में उसकी स्तुति घोषित करें।<sup>13</sup> यहोवा योद्धा की तरह बाहर जाएगा, वह युद्ध के आदमी की तरह अपनी उत्तेजना जगाएगा। वह चिल्लाएगा, वास्तव में, वह युद्ध का नारा उठाएगा। वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा।<sup>14</sup> “मैंने लंबे समय तक चुप्पी साथी है, मैं स्थिर रहा और अपने आप को रोका। अब मैं प्रसव पीड़ा में महिला की तरह कराहूँगा, मैं हांफूंगा और सांस लूँगा।<sup>15</sup> मैं पर्वतों

## यशायाह

और पहाड़ियों को उजाड़ दूंगा, और उनकी सारी वनस्पति को सुखा दूंगा; मैं नदियों को द्वीपों में बदल दूंगा और तालाबों को सुखा दूंगा।<sup>16</sup> मैं अंधेरों को उस मार्ग पर ले जाऊंगा जिसे वे नहीं जानते, उन रास्तों पर जिहें वे नहीं जानते मैं उहमें मार्ग दिखाऊंगा। मैं उनके सामने अंधकार को प्रकाश में बदल दूंगा और असमान भूमि को समतल मैदान में। ये वे चीजें हैं जो मैं करूँगा, और मैं उहमें अधूरा नहीं छोड़ूँगा।<sup>17</sup> वे पीछे हटेंगे और पूरी तरह से शर्मिदा होंगे, जो मूर्तियों पर भरोसा करते हैं, जो ढली हुई धारु की छवियों से कहते हैं, "तुम हमारे देवता हो।"

१८ सुनो, तुम बहरे! और देखो, तुम अंधे हो, ताकि तुम देख सको।<sup>19</sup> मेरे सेवक के अलावा और कौन अंधा है, या मेरे द्वृत के समान बहरे whom मैं भेजता हूँ? जो मेरे साथ शाति में है हमें उसके समान कौन इतना अंधा है, या यहोवा के सेवक के समान अंधा है?<sup>20</sup> तुमने बहुत सी बातें देखीं, परंतु तुम उहमें याद नहीं रखते; तुम्हारे कान खुले हैं, परंतु कोई नहीं सुनता।<sup>21</sup> यहोवा प्रसन्न था, अपनी धार्मिकता के लिए, विधि को महान और गौरवशाली बनाने के लिए।<sup>22</sup> परंतु यह एक लूटे गए और लूटे गए लोग हैं, उनमें से सभी गुफाओं में फंसे हुए हैं, या जेलों में छिपे हुए हैं। वे लूट बन गए हैं, कोई उहमें बचाने वाला नहीं है, और लूट, कोई यह कहने वाला नहीं है। "उहमें वापस दो!"<sup>23</sup> तुममें से कौन इसे सुनेगा? कौन ध्यान देगा और आने वाले समय में सुनेगा?<sup>24</sup> किसने याकूब को लूट के लिए और इसाएल को नुटोरों के हाथों सौंप दिया? क्या यहोवा नहीं था, जिसके विरुद्ध हमने पाप किया, और जिनके मार्गों में वे चलने को तैयार नहीं थे, और जिनकी विधि का उहमें पालन नहीं किया?<sup>25</sup> इसलिए उसने उस पर अपने क्रोध की गर्मी और युद्ध की तीव्रता उडेल दी; और यह उसे चारों ओर से जलाता है, फिर भी उसने इसे नहीं पहचाना; और यह उसे जलाता है, परंतु उसने ध्यान नहीं दिया।

**43** परन्तु अब, यहोवा जो तुम्हारा सृष्टिकर्ता है, याकूब, और जिसने तुहमें रचा है, इसाएल, यह कहता है: "मत डरो, क्योंकि मैंने तुहमें छुड़ा लिया है; मैंने तुम्हें नाम लेकर बुलाया है; तुम मेरे हो।"<sup>2</sup> जब तुम जल के बीच से होकर जाओगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा; और जब नदियों के बीच से होकर जाओगे, वे तुम्हें डुबा नहीं सकेंगी। जब तुम आग के बीच से होकर चलोगे, तो तुम्हें जलन नहीं होगी, और न ही ज्वाला तुम्हें जला सकेगी।<sup>3</sup> क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, इसाएल का पवित्र, तुम्हारा उद्धारकर्ता; मैंने मिस को तुम्हारी फिरौती के रूप में दिया है, कूश और सबा को तुम्हारे बदले में दिया है।<sup>4</sup>

क्योंकि तुम मेरी दृष्टि में अनमोल हो, क्योंकि तुम आदरनीय हो और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मैं तुम्हारे स्थान पर अन्य लोगों को दृঁगा और तुम्हारे जीवन के बदले में अन्य जातियों को दृঁगा।<sup>5</sup> मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; मैं तुम्हारी संतानों को पूर्व से लाऊँगा, और पश्चिम से तुम्हें इकट्ठा करूँगा।<sup>6</sup> मैं उत्तर से कहाँगा, "उहमें छोड़ दो।" और दक्षिण से, "उहमें मत रोको।" मेरे पुत्रों को दूर से लाओ और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी के छोर से लाओ,<sup>7</sup> हर एक जो मेरे नाम से बुलाया गया है, और जिसे मैंने अपनी महिमा के लिए रचा है, जिसे मैंने रचा और बनाया है।"

८ उन लोगों को बाहर लाओ जो अंधे हैं, यद्यपि उनके पास आँखें हैं, और उन लोगों को जो बहरे हैं, यद्यपि उनके पास कान हैं।<sup>9</sup> सभी जातियाँ इकट्ठी हो गई हैं ताकि लोग इकट्ठे हो सकें। उनमें से कौन यह घोषित कर सकता है और हमें पूर्व की बातें सुना सकता है? उहमें अपने गवाह प्रस्तुत करने दो ताकि वे सही ठहर सकें, या उहमें सुनने दो और कहें, "यह सत्य है।"<sup>10</sup> "तुम मेरे गवाह हो," यहोवा कहता है, "और मेरे सेवक जिसे मैंने चुना है, ताकि तुम जानो और मुझ पर विश्वास करो और समझो कि मैं वही हूँ।" मेरे पहले कोई परमेश्वर नहीं बना, और मेरे बाद कोई नहीं होगा।<sup>11</sup> मैं, केवल मैं, यहोवा हूँ, और मेरे अलावा कोई उद्धारकर्ता नहीं है।<sup>12</sup> मैंने ही घोषित किया और बचाया और प्रचार किया, और तुम्हारे बीच कोई अजनबी देवता नहीं था; इसलिए तुम मेरे गवाह हो," यहोवा कहता है, "और मैं परमेश्वर हूँ।"<sup>13</sup> यहाँ तक कि अनंत काल से मैं वही हूँ, और कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके; मैं कार्य करता हूँ, और कौन इसे पलट सकता है?"

१४ यह तुम्हारा छुड़ाने वाला यहोवा, इसाएल का पवित्र कहता है: "तुम्हारे लिए मैंने बाबुल की भेजा है, और उहमें भगोड़ों के रूप में नीचे लाऊँगा, यहाँ तक कि कसदियों को, उन जहाजों में जिन पर वे आनंदित होते हैं।"<sup>15</sup> मैं यहोवा हूँ, तुम्हारा पवित्र, इसाएल का सृष्टिकर्ता, तुम्हारा राजा।<sup>16</sup> यह यहोवा कहता है, वह जो समुद्र के बीच से मार्ग बनाता है और प्रबल जल के बीच से पथ बनाता है, <sup>17</sup> जो रथ और घोड़े को बाहर लाता है, सेना और शक्तिशाली व्यक्ति को (वे एक साथ लेटेंगे और फिर नहीं उठेंगे; वे बुझ गए हैं और बर्ती की तरह बुझ गए हैं);<sup>18</sup> "पूर्व की बातों को याद मत करो, और न ही बीती बातों पर ध्यान दो।"<sup>19</sup> देखो, मैं कुछ नया करने जा रहा हूँ, अब यह प्रकट होगा; क्या तुम इसे नहीं देखोगे? मैं जंगल में भी एक मार्ग बनाऊँगा, मरुस्थल में नदियाँ।<sup>20</sup> मैदान के जानवर मेरी महिमा करेंगे, गीदड़ और

## यशायाह

शुतुरमूर्ग, क्योंकि मैंने जंगल में जल दिया है और  
मरुस्थल में नदियाँ, ताकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा को  
पानी पिलाऊँ।<sup>21</sup> वे लोग जिन्हें मैंने अपने लिए रचा हैं  
मेरी स्तुति करेंगे।

<sup>22</sup> फिर भी तुमने मुझ पर नहीं पुकारा, याकूब; परन्तु तुम  
मुझसे थक गए हो, इसाएल।<sup>23</sup> तुमने मेरे लिए अपने  
होमबलियों के भेड़ नहीं लाए, और न ही अपने बलिदानों  
से मेरा आदर किया। मैंने तुम्हें भेटों से बोझिल नहीं  
किया, और न ही धूप से तुम्हें थकाया है।<sup>24</sup> तुमने मेरे  
लिए धन से मीठा गन्ना नहीं खरीदा, और न ही अपने  
बलिदानों की चर्बी से मुझे संतुष्ट किया। बल्कि, तुमने  
मुझे अपने पापों से बोझिल किया है, तुमने अपनी  
बुराइयों से मुझे थकाया है।<sup>25</sup> मैं, केवल मैं, वही हूँ जो  
तुम्हारी बुराइयों को अपने कारण से मिटा देता हूँ, और  
मैं तुम्हारे पापों को याद नहीं करूँगा।<sup>26</sup> मुझसे  
न्यायालय में मिलो, चलो हम अपना मामला साथ में तर्क  
करें; अपना कारण प्रस्तुत करो, ताकि तुम सही ठहर  
सको।<sup>27</sup> तुम्हारे पहले पूर्वज ने पाप किया, और तुम्हारे  
प्रवक्ता मेरे विरुद्ध विद्रोह कर कुके हैं।<sup>28</sup> इसलिए मैं  
पवित्र स्थान के अधिकारियों को अपवित्र कर दूँगा, और  
याकूब को विनाश के लिए और इसाएल को अपमान के  
लिए सौंप दूँगा।

**44** “पर अब सुनो, याकूब, मेरे सेवक, और इसाएल,  
जिसे मैंने चुना है।<sup>2</sup> यहोवा जो तुम्हें बनाता है और गर्भ से  
तुम्हारा आकार देता है, जो तुम्हारी सहायता करेगा, यह  
कहता है: ‘उरो मत, याकूब मेरे सेवक, और येशुरून,  
जिसे मैंने चुना है।<sup>3</sup> क्योंकि मैं यासे देश पर जल  
उडेलूँगा और सूखी भूमि पर नदियों, मैं अपनी आत्मा  
तुम्हारी संतान पर उडेलूँगा, और अपनी आशीष तुम्हारे  
वंश पर;<sup>4</sup> और वे धास के बीच उगेंगे जैसे जल के धारे  
के पास के पौपलर।”<sup>5</sup> यह कहेगा, मैं यहोवा का हूँ;  
और वह याकूब के नाम से पुकारेगा; और दूसरा अपने  
हाथ पर लिखेगा, ‘यहोवा का है’; और इसाएल के नाम  
का आदर करेगा।

<sup>6</sup> यहोवा, इसाएल का राजा और उसका उद्घारकर्ता,  
सेनाओं का यहोवा, यह कहता है: ‘मैं पहला और मैं  
अंतिम हूँ, और मेरे अलावा कोई ईश्वर नहीं है।<sup>7</sup> मेरे  
समान कौन है? उसे धोषणा करने दो और उसे प्रकट  
करने दो; और मुझे चुनौती देने दो मेरे प्राचीन राष्ट्र की  
स्थापना से। फिर उन्हें आने वाली बातों की धोषणा करने  
दो और जो घटनाएं होने वाली हैं उन्हें बताने दो।<sup>8</sup> काँपों  
मत और न डरें; क्या मैंने तुम्हें पहले से नहीं बताया और  
घोषित किया है? और तुम मेरे साक्षी हो। क्या मेरे

अलावा कोई ईश्वर है, या कोई और चट्टान है? मुझे कोई  
नहीं पता।”<sup>9</sup>

<sup>10</sup> जो मूर्ति बनाते हैं वे सब व्यर्थ हैं, और उनकी कीमती  
चीजें कोई लाभ नहीं देतीं; यहाँ तक कि उनके अपने  
साक्षी देखने वा जानने में असफल होते हैं, ताकि वे  
लजित हों।<sup>11</sup> किसने एक ईश्वर को गढ़ा या एक मूर्ति  
को ढाला जो कोई लाभ नहीं देती? <sup>12</sup> देखो, उसके सभी  
साथी लजित होंगे, क्योंकि कारीगर स्वयं मनुष्य हैं। उन्हें  
सब इकट्ठा होने दो, उन्हें खड़े होने दो, उन्हें काँपने दो,  
उन्हें एक साथ लजित होने दो।<sup>13</sup> लोहार लोहे का  
ओजार बनाता है और कोयले पर काम करता है, उसे  
हथौड़ों से गढ़ता है, और अपनी मजबूत भुजा से काम  
करता है। वह भूखा भी होता है और उसकी शक्ति  
घटती है; वह पानी नहीं पीता और थक जाता है।<sup>14</sup> लकड़ी का  
कारीगर मापने की रेखा खींचता है, वह उसे  
लाल चाक से रेखांकित करता है। वह उसे विमानों से  
काम करता है और उसे कम्पास से रेखांकित करता है,  
और उसे मनुष्य के रूप जैसा बनाता है, मानव जाति की  
सुंदरता की तरह, ताकि वह घर में बैठ सके।<sup>15</sup> अपने  
लिए देवदार काटने के लिए, वह एक सरू या ओक भी  
लेता है और उसे जंगल के पेढ़ों के बीच अपने लिए  
उगाता है। वह एक देवदार लगाता है, और बारिश उसे  
बढ़ाती है।<sup>16</sup> फिर वह किसी व्यक्ति के जलाने के लिए  
कुछ बन जाता है, इसलिए वह उनमें से एक को लेता है  
और अपने आप को गर्म करता है; वह रोटी पकाने के  
लिए आग भी बनाता है। वह एक ईश्वर भी बनाता है और  
उसकी पूजा करता है; वह उसे एक तराशी हुई मूर्ति  
बनाता है और उसके समाने झुकता है।<sup>17</sup> उसका आधा  
वह आग में जलाता है, इस आधे पर वह मांस खाता है  
जैसा कि वह भुना हुआ मांस भूनता है और संतुष्ट होता  
है। वह अपने आप को गर्म भी करता है और कहता है,  
“आह! मैं गर्म हूँ, मैंने आग देखी है।”<sup>18</sup> लेकिन बाकी का  
वह एक ईश्वर, अपनी तराशी हुई मूर्ति बनाता है। वह  
उसके सामने झुकता है और उसकी जूँग करता है; वह  
उससे प्रार्थना भी करता है और कहता है, “मुझे बचाओ,  
क्योंकि तुम मेरे ईश्वर हो।”<sup>19</sup> वे नहीं जानते, न ही वे  
समझते हैं, क्योंकि उसने उनकी आँखों पर ऐसा मल  
दिया है कि वे देख नहीं सकते, और उनके दिलों पर  
ताकि वे कोई अंतर्दृष्टि न रखें।<sup>20</sup> कोई याद नहीं करता,  
न ही कोई ज्ञान या समझ है यह कहने के लिए, “मैंने  
इसका आधा आग में जलाया है और इसके कोयलों पर  
रोटी भी पकाई है। मैं मास भूनता हूँ और खाता हूँ।” फिर  
मैं बाकी को एक घृणित वस्तु बनाता हूँ, मैं लकड़ी के  
एक टुकड़े के सामने झुकता हूँ।”<sup>21</sup> वह राख पर निर्भर  
करता है, एक धोखा खाया हुआ दिल उसे गुमराह करता

## यशायाह

है। और वह अपने आप को नहीं बचा सकता, न ही कह सकता है, “क्या मेरे दाहिने हाथ में झुठ नहीं है?”

<sup>21</sup> इन बातों को याद करो, याकूब, और इसाएल, क्योंकि तुम मेरे सेवक हो; मैंने तुझे बनाया है, तुम मेरे सेवक हो, इसाएल, तुम मेरे द्वारा नहीं भुलाए जाओगे। <sup>22</sup> मैंने तुम्हारे अपराधों को एक घंटे बादल की तरह मिटा दिया है और तुम्हारे पापों को एक भारी कुहासे की तरह। मेरे पास लौट आओ, क्योंकि मैंने तुम्हारा उद्धार किया है। <sup>23</sup> आनंद से चिल्लाओ, हे आकाश, क्योंकि यहोवा ने यह किया है। आनंद से चिल्लाओ, हे पृथ्वी के निचले हिस्सों, जुबिलेशन के साथ चिल्लाओ, हे पहाड़ों, जंगल, और हर घेरे उसमें क्योंकि यहोवा ने याकूब का उद्धार किया है, और इसाएल में वह अपनी महिमा दिखाता है।

<sup>24</sup> यहोवा, जो तुम्हारा उद्धारकर्ता है, यह कहता है, और वह जिसने गर्भ से तुम्हारा आकार दिया: “मैं, यहोवा, सभी चीजों का निर्माता हूँ, स्वयं आकाश को फैलाता हूँ और अकेले पृथ्वी को फैलाता हूँ, <sup>25</sup> भविष्यवक्ताओं के संकेतों को विफल करता हूँ, भाग्य बताने वालों को मूर्ख बनाता हूँ; बुद्धिमानों को पीछे हटने के लिए मजबूर करता हूँ और उनकी जान को हास्यास्पद बनाता हूँ, <sup>26</sup> अपने सेवक के वरच की पुष्टि करता हूँ और अपने दूतों के उद्देश्य को पूरा करता हूँ। यह मैं हूँ जो यरूशलेम के बारे में कहता हूँ, ‘वह बसी रहेगी’! और यहूदा के नगरों के बारे में, वे फिर से बनाए जाएँगे, और मैं उसके खंडहरों को फिर से उठाऊँगा। <sup>27</sup> मैं वही हूँ जो समुद्र की गहराई से कहता हूँ, ‘सूख जाओ!’ और मैं तुम्हारी नदियों को सुखा दूँगा। <sup>28</sup> यह मैं हूँ जो साइरस के बारे में कहता हूँ, ‘वह मेरा चरवाहा है, और वह मेरी सभी इच्छाओं को पूरा करेगा’; और वह यरूशलेम के बारे में कहता है, ‘वह बनाई जाएगी’, और मंदिर के बारे में, ‘तुम्हारी नींव रखी जाएगी।’”

**45** यहोवा अपने अभिषिक्त कुसू से यह कहता है, जिसे मैंने दाहिने हाथ से पकड़ा है, राष्ट्रों को उसके सामने झुकाने के लिए और राजाओं की कमर से युद्ध के हीथियार खोलने के लिए; उसके सामने द्वारा खोलने के लिए ताकि फाटक बंद न हों: <sup>2</sup> “मैं तेरे आगे चलूँगा और ऊबड़-खाबड़ स्थानों को समतल कर दूँगा; मैं कांस्य के द्वारों को तोड़ दूँगा और उनके लोहे की सलाखों को काट दूँगा। <sup>3</sup> मैं तुझे अंधकार के खाजने दूँगा और गुप्त स्थानों की छिपी ढुँढ़ दौलत, ताकि तू जान सके कि मैं हूँ हूँ यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, जो तुझे तेरे नाम से बुलाता है। <sup>4</sup> मेरे दास याकूब के लिए, और मेरे चुने हुए इसाएल के लिए, मैंने तुझे तेरे नाम से बुलाया है; मैंने तुझे

सम्मान का पद दिया है यद्यपि तू मुझे नहीं जानता। <sup>5</sup> मैं यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं है, मेरे सिवा कोई परमेश्वर नहीं है। मैं तुझे सशक्त करूँगा, यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, <sup>6</sup> ताकि लोग सूर्योदय से सूर्यास्त तक जान सकें कि मेरे सिवा कोई नहीं है। मैं यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं है, <sup>7</sup> जो प्रकाश को बनाता और अंधकार को रचता है, कल्याण का कारण बनाता और विपत्ति को उत्पन्न करता है, मैं यहोवा हूँ जो ये सब करता हूँ। <sup>8</sup> हे आकाश, ऊपर से टपक, और बादल धर्म की वर्षा करें; पृथ्वी खुल जाए और उद्धार फल लाए, और उसके साथ धर्म अंकुरित हो। मैं, यहोवा, ने इसे रचा है।

<sup>9</sup> हाय उस पर जो अपने निर्माता से जिङड़ता है—मिट्टी के बर्तन के टुकड़ों में से एक! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, “तू क्या कर रहा है?” या जो चीज़ तू बना रहा है कहेगी, “उसके हाथ नहीं हैं”? <sup>10</sup> हाय उस पर जो पिता से कहता है, “तू क्या जन्म दे रहा है?” या स्त्री से, “तू क्या जन्म दे रही है?” <sup>11</sup> यहोवा, इसाएल का पावित्र और उसका निर्माता, यह कहता है: “मेरे पुत्रों के विषय में आने वाली बातों के बारे में मुझसे पूछो, और तुम मेरे हाथों के काम को मुझ पर छोड़ दो। <sup>12</sup> मैंने ही पृथ्वी बनाई है, और उस पर मानवजाति को रचा है। मैंने अपने हाथों से आकाश को फैलाया है, और उनके सभी प्रकाशों को मैंने ठहराया है। <sup>13</sup> मैंने उसे धर्म में उठाया है, और मैं उसकी सभी राहों को समतल कर द्वांगा। वह मेरा नगर बनाएगा और मेरे निर्वासितों को स्वतंत्र करेगा, बिना किसी भुगतान या इनाम के, “सेनाओं का यहोवा कहता है।

<sup>14</sup> यहोवा यह कहता है: “मिस के उत्पाद और कूस के माल और सबाई लोग, लंबे लोग, तेरे पास आएंगे और तेरे होंगे; वे तेरे पीछे चलेंगे, वे जंजीरों में आएंगे और तेरे सामने झुकेंगे, वे तुझसे विनती करेंगे; निश्चित रूप से परमेश्वर तेरे साथ है, और कोई दूसरा नहीं है, कोई अन्य परमेश्वर नहीं।” <sup>15</sup> सचमुच, तू एक ऐसा परमेश्वर है जो स्वयं को छिपाता है, इसाएल का परमेश्वर, उद्धारकर्ता! <sup>16</sup> वे सभी लज्जित और अपमानित होंगे; मूर्तियों के निर्माता एक साथ अपमान में चले जाएंगे। <sup>17</sup> इसाएल यहोवा द्वारा उद्धार पाया है सदैव के उद्धार के साथ; तुम कभी लज्जित या अपमानित नहीं होगे सभी युग्मों तक। <sup>18</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है, जिसने पृथ्वी को आकार दिया और उसे बनाया, उसे रसायित किया और उसे एक निजन स्थान के रूप में नहीं बनाया, बल्कि उसे निवास के लिए आकार दिया: “मैं यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं है। <sup>19</sup> मैंने गुप्त में नहीं बोला, किसी अंधकारमय देश में; मैंने

## यशायाह

याकूब के वंश से नहीं कहा, 'मुझे एक निर्जन स्थान में खोजो; मैं, यहोवा, धर्म की बातें बोलता हूँ, सही बातें घोषित करता हूँ।'

<sup>20</sup> अपने आप को इकट्ठा करो और आओ; आओ, तुम राष्ट्रों के बचे हुए लोग। उनके पास कोई ज्ञान नहीं है, जो अपनी लकड़ी की मूर्ति को लेकर चरते हैं और एक ऐसे देवता से प्रार्थना करते हैं जो बचा नहीं सकता।<sup>21</sup> धोषणा करो और अपनी बात प्रस्तुत करो; वास्तव में, उठें परामर्श करने दो। किसने इसे प्राचीन काल से घोषित किया है? किसने इसे लंबे समय से बताया है? क्या यह मैं यहोवा, नहीं हूँ? और मेरे सिवा कोई अन्य परमेश्वर नहीं है, एक धर्म परमेश्वर और उद्धारकर्ता; मेरे सिवा कोई नहीं है।<sup>22</sup> मैंने पास आओ और उद्धार पाओ, पृथ्वी की सभी छोर, क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ, और कोई दूसरा नहीं है।<sup>23</sup> मैंने स्वयं से शपथ ली है; मेरे मुँह से धर्म में वचन निकला है और वह वापस नहीं लौटेगा, कि मैंने सामने हर घुटना झुकेगा, हर जीभ शपथ लेगी।<sup>24</sup> वे मेरे बारे में कहेंगे, 'केवल यहोवा में धर्म और शक्ति है।' लोग उसके पास आएंगे, और जो लोग उससे क्रोधित थे वे लज्जित होंगे।<sup>25</sup> यहोवा मैं इसाएल के सभी वंशज धर्मकृत होंगे और गर्व करेंगे।'

**46** बेल झुक गया है, नबो झुक गया है; उनकी मूर्तियां पशुओं और मवेशियों को सौंप दी गई हैं। जो चीजें तुम उठाते हो वे बोझिल हैं, थके हुए पशु के लिए एक भार।<sup>2</sup> वे झुक गए हैं, वे एक साथ झुक गए हैं; वे बोझ को बचा नहीं सके, बल्कि स्वयं बंदी बन गए हैं।<sup>3</sup> मुझे सुनो, याकूब के घराने, और इसाएल के घराने के सभी बचे हुए लोग, तुम जिन्हें मैंने जन्म से उठाया है और गर्भ से उठाया है, <sup>4</sup> यहाँ तक कि तुम्हारी वृद्धावस्था में मैं वही रहूँगा, और तुम्हारे बाल सफेद होने तक मैं तुम्हें उठाऊँगा! मैंने यह किया है, और मैं तुम्हें उठाऊँगा; मैं तुम्हें उठाऊँगा और मैं तुम्हें बचाऊँगा।<sup>5</sup> तुम मुझे किसके समान ठहराओगे और मुझे बराबर करोगे, और मुझसे तुलना करोगे, कि हम समान हो जाएँ।<sup>6</sup> जो लोग थैली से सोना किनालते हैं और तराजू पर चाँदी तैलते हैं, एक सुनार को किरणे पर लेते हैं, और वह उसे एक देवता बना देता है; वे उसे प्रणाम करते हैं, वे उसकी पूजा भी करते हैं।<sup>7</sup> वे उसे कंधे पर उठाते हैं, ले जाते हैं, और उसे उसकी जाह पर रखते हैं, और वह वहीं खड़ा रहता है। वह अपनी जगह से नहीं हिलता। यद्यपि कोई उसे पुकारे, वह उत्तर नहीं दे सकता; वह उसे उसकी विपत्ति से नहीं बचा सकता।<sup>8</sup> इसको स्मरण करो, और आश्वस्त रहो; इसे मन में लाओ, हे अपराधियों।<sup>9</sup> पुराने समय की बातों को याद करो, क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ,

और कोई दूसरा नहीं है, मैं ही परमेश्वर हूँ, और मेरे समान कोई नहीं है,<sup>10</sup> जो अंत को आरंभ से घोषित करता हूँ, और प्राचीन काल से ऐसी बातें जो अभी नहीं हुई हैं, कहता हूँ, मेरी योजना स्थापित होगी, और मैं अपनी सारी प्रसन्नता पूरी करूँगा;<sup>11</sup> पूर्व से एक शिकारी पक्षी को बुलाना, मेरे उद्देश्य के व्यक्ति को एक दूर देश से। सचमुच मैंने कहा है; सचमुच मैं इसे पूरा करूँगा। मैंने योजना बनाई है, मैं निश्चित रूप से इसे करूँगा।<sup>12</sup> मुझे सुनो, तुम हठीले मन वाले, जो धर्म से दूर हो।<sup>13</sup> मैं अपनी धार्मिकता को निकट लाता हूँ, यह दूर नहीं है; और मेरी मुक्ति विलंबित नहीं होगी। और मैं सियोन में उद्धार दूँगा, और इसाएल के लिए अपनी महिमा।

**47** नीचे आओ और धूल में बैठो, बाबुल की कन्या; सिंहासन के बिना ज़मीन पर बैठो, कसदियों की बेटी। क्योंकि अब तुम्हें कोमल और नाजुक नहीं कहा जाएगा।<sup>2</sup> चक्की ले लो और आटा पीसो। अपनी धूघट हटाओ, स्कर्ट उतारो, पैर को उजागर करो, नदियों को पार करो।<sup>3</sup> तुम्हारी नग्रता उजागर होगी, तुम्हारी लज्जा भी प्रकट होगी; मैं प्रतिशोध लूँगा और किसी को नहीं छोड़ूँगा।<sup>4</sup> हमारा उद्धारकर्ता, सेनाओं का प्रभु उसका नाम है, इसाएल का पवित्र।<sup>5</sup> शांत बैठो, और अंधकार में जाओ, कसदियों की बेटी; क्योंकि अब तुम्हें राज्य की रानी नहीं कहा जाएगा।<sup>6</sup> मैं अपनी प्रजा से क्रोधित था, मैंने अपनी विरासत को अपवित्र किया, और मैंने उन्हें तुम्हारे हवाले कर दिया। तुमने उन पर दया नहीं दिखाई, बुजुर्गों पर तुमने अपना जुआ बहुत भारी किया।<sup>7</sup> फिर भी तुमने कहा, मैं हमेशा के लिए रानी रहूँगी। इन बातों पर तुमने विचार नहीं किया और न ही उनके परिणाम को याद रखा।<sup>8</sup> अब, सुनो, ऐ विलासित में रहने वाली, जो सुरक्षित रहती है, जो अपने दिल में कहती है, मैं हूँ, और मेरे अलावा कोई नहीं है। मैं विधवा नहीं बैठूँगी, और न ही बच्चों की हानि जानूँगी।<sup>9</sup> लैकिन ये दो बातें एक ही दिन में अचानक तुम्हारे ऊपर आ जाएँगी: बच्चों की हानि और विधवापन। वे तुम्हारे ऊपर पूरी माप में आएंगे तुम्हारे कई जादू-टोनों के बावजूद, तुम्हारे मंत्रों की बड़ी शक्ति के बावजूद।<sup>10</sup> तुमने अपनी दुष्टा में सुरक्षित महसूस किया और कहा, 'कोई मुझे नहीं देखता; तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारा ज्ञान, उहोंने तुम्हें भटका दिया है; क्योंकि तुमने अपने दिल में कहा, मैं हूँ, और मेरे अलावा कोई नहीं है।'<sup>11</sup> लैकिन बुराई तुम्हारे ऊपर आएँगी जिसे तुम दूर करने के लिए नहीं जानोगे; और विपत्ति तुम्हारे ऊपर गिरेगी जिसके बारे में तुम नहीं जानते तुम्हारे ऊपर अचानक आ जाएगा।<sup>12</sup>

## यशायाह

अब अपने मंत्रों में डटे रहो और अपने कई जादू-टोनों में जिनमें तुमने अपनी युवावस्था से मेहनत की है; शायद तुम लाभ उठा सको, शायद तुम भय उत्पन्न कर सको।

<sup>13</sup> तुम अपनी कई सलाहों से थक गए हो; अब उन्हें खड़े होने दो और तुम्हें बचाएं, वे जो आकाश का अध्ययन करते हैं, जो तारों को निहारते हैं, जो नए चंद्रमाओं से भविष्यवाणी करते हैं महीने दर महीने तुम्हारे साथ क्या होगा। <sup>14</sup> देखो, वे भूसे की तरह हो गए हैं, आग उन्हें जलाती है, वे अपने आप को ज्वाला की शक्ति से नहीं बचा सकते; वहां कोई कोयला नहीं होगा जिससे गर्मी ली जा सके और न ही आग जिसके सामने बैठा जा सके! <sup>15</sup> तो वे तुम्हारे लिए ऐसे हो गए हैं जिनके साथ तुमने मेहनत की, जिन्होंने तुम्हारे साथ तुम्हारी युवावस्था से व्यापार किया; प्रथेक अपनी ही राह में भटक गया है, तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं है।

**48** यह सुनो, हे याकूब के घराने, तुम जो इसाएल कहलाते हो और यहूदा के जल से आए हो, जो यहोवा के नाम की शापथ खाते हो और इसाएल के परमेश्वर को बुलाते हो, परंतु न तो सत्य में और न ही धार्मिकता में। <sup>2</sup> क्योंकि वे अपने आप को पवित्र नगर के नाम से पुकारते हैं, और इसाएल के परमेश्वर पर भरोसा करते हैं; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है। <sup>3</sup> मैंने प्राचीन बातों को बहुत पहले घोषित किया, और वे मेरे मुख से निकलीं, और मैंने उन्हें प्रचारित किया। अचानक मैंने कार्य किया, और वे पूरी हो गईं। <sup>4</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम हठी हो, और तुम्हारी गर्दन लोहे की नस है और तुम्हारा माथा पीतल का है, <sup>5</sup> इसलिए मैंने उन्हें तुम्हें बहुत पहले घोषित किया, उनके होने से पहले मैंने उन्हें तुम्हें बताया, ताकि तुम यह न कहो, मेरे मूर्ति ने उन्हें किया है, और मेरी खुटी हुई मूर्ति और मेरी ढली हुई धातु की मूर्ति ने उन्हें आदेश दिया है। <sup>6</sup> तुमने सुना है; यह सब देखो। और तुम, क्या तुम इसे घोषित नहीं करोगी? मैं तुम्हें इस समय से नई बातें बताता हूँ, छिपी हुई बातें जिन्हें तुमने नहीं जाना है। <sup>7</sup> वे अब बनाई गई हैं और बहुत पहले नहीं; और आज से पहले तुमने उन्हें नहीं सुना, ताकि तुम यह न कहो, देखो, मैं उन्हें जानता था। <sup>8</sup> तुमने नहीं सुना, तुमने नहीं जाना। यहाँ तक कि बहुत पहले से तुम्हारा कान खुला नहीं था, क्योंकि मैं जानता था कि तुम बहुत विश्वासघाती व्यवहार करोगे; और तुम जन्म से विद्रोही कहलाए हो। <sup>9</sup> मेरे नाम के खातिर मैं अपने क्रोध को विलंबित करता हूँ, और अपनी स्तुति के लिए मैं इसे तुम्हारे लिए रोकता हूँ, ताकि तुम्हें काट न डालूँ। <sup>10</sup> देखो, मैंने तुम्हें सुदूर किया है, परंतु चाँदी की तरह नहीं; मैंने तुम्हें कष्ट की भट्टी में परखा है। <sup>11</sup> मेरे अपने खातिर, मेरे अपने खातिर, मैं कार्य करूँगा; क्योंकि मेरा नाम कैसे

अपवित्र हो सकता है? और अपनी महिमा मैं किसी और को नहीं द्वारा।

<sup>12</sup> मुझे सुनो, हे याकूब, इसाएल जिसे मैंने बुलाया; मैं वही हूँ, मैं पहला हूँ, मैं अंतिम भी हूँ। <sup>13</sup> निश्चित रूप से मेरे हाथ ने पृथ्वी की नींव डाली, और मेरे दाहिने हाथ ने आकाश को फैलाया; जब मैं उन्हें बुलाता हूँ, वे एक साथ खड़े होते हैं। <sup>14</sup> सभी इकट्ठा हो जाओ, और सुनो! उनमें से किसने इन बातों की घोषणा की? यहोवा उसे प्रेम करता है, वह बाबुल के खिलाफ उसकी अच्छी इच्छा को पूरा करेगा, और उसकी भुजा कसदियों के खिलाफ होगी। <sup>15</sup> मैं, हाँ, मैंने ही बोला है, वास्तव में मैंने उसे बुलाया है, मैंने उसे लाया है, और वह अपने मार्गों को सफल बनाएगा। <sup>16</sup> मेरे पास आओ, यह सुनो: शुरुआत से मैंने गुरु रूप से नहीं बोला, जब से यह हुआ, मैं वहाँ था। और अब यहोवा परमेश्वर ने मुझे और उसकी आत्मा को भेजा है।

<sup>17</sup> यहोवा यह कहता है, वह जो तुम्हारा उद्धारकर्ता है, इसाएल का पवित्र: "मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें लाभ सिखाता है, जो तुम्हें उस मार्ग में ते जाता है जिसमें तुम्हें जाना चाहिए।" <sup>18</sup> यदि तुमने मेरे आदेशों पर ध्यान दिया होता! तो तुम्हारी भलाई नदी की तरह होती, और तुम्हारी धार्मिकता समूद्र की लहरों की तरह। <sup>19</sup> तुम्हारी संतान रेत की तरह होती, और तुम्हारे वंश उसके कणों की तरह; उनका नाम मेरे सामने से न तो मिटाया जाता और न ही नष्ट किया जाता।" <sup>20</sup> बाबुल से बाहर जाओ, कसदियों से भागो! आनंदमय यज्यकर की ध्वनि के साथ घोषित करो, इसे पृथ्वी के अंत तक भेजो; कहो, "यहोवा ने अपने सेवक याकूब को छुड़ा लिया है।" <sup>21</sup> जब वह उन्हें रेगिस्तानों से ले गया, तो उन्हें घास नहीं लगी। उसने उनके लिए चट्टान से पानी बहाया; उसने चट्टान को फाड़ा और पानी फूट पड़ा। <sup>22</sup> "दुष्टों के लिए कोई शांति नहीं है," यहोवा कहता है।

**49** हे द्वीपों, मेरी सुनो, और दूर के लोगों, ध्यान दो। प्रभु ने मुझे गर्भ से बुलाया; मेरी माता के गर्भ से उसने मेरा नाम रखा। <sup>2</sup> उसने मेरे मुख को तेज तलवार की तरह बनाया, अपने हाथ की छाया में उसने मुझे छिपा लिया; और उसने मुझे एक नुकीला तीर भी बनाया, अपने तरकश में उसने मुझे छिपा रखा। <sup>3</sup> उसने मुझसे कहा, "तू मेरा सेवक है, इसाएल, जिसमें मैं अपनी महिमा दिखाऊंगा।" <sup>4</sup> पर मैंने कहा, "मैंने व्यर्थ परिश्रम किया है, मैंने अपनी शक्ति को कुछ भी नहीं और व्यर्थ के लिए खर्च किया है; फिर भी, मेरे लिए न्याय प्रभु के

## यशायाह

साथ है, और मेरा प्रतिफल मेरे परमेश्वर के साथ है।”<sup>5</sup> और अब प्रभु, जिसने मुझे गर्भ से अपना सेवक बनने के लिए बनाया है, याकूब को अपने पास वापस लाने के लिए, ताकि इसाएल उसके पास इकट्ठा हो सके (क्योंकि मैं प्रभु की वृष्टि में सम्मानित हूँ, और मेरा परमेश्वर मेरी शक्ति है),<sup>6</sup> वह कहता है, “यह बहुत छोटी बात है कि तू मेरा सेवक हो याकूब के गोत्रों को उठाने और इसाएल के संरक्षित लोगों को पुनः स्थापित करने के लिए; मैं तुझे राष्ट्रों का प्रकाश भी बनाऊंगा ताकि मेरी मुक्ति पृथ्वी के छोर तक पहुँच सके।”<sup>7</sup> यह वही है जो प्रभु, इसाएल का उद्धारकर्ता और उसका पवित्र, तिरस्कृत व्यक्ति से कहता है, राष्ट्र द्वारा घृणित व्यक्ति से, शासकों के सेवक से: “राजा देखेंगे और उठ खड़े होंगे, राजकुमार भी चूंकेंगे, प्रभु के कारण जो विश्वस्योग्य है, इसाएल का पवित्र जिसने तुझे चुना है।”

८ यह वही है जो प्रभु कहता है: “एक अनुकूल समय पर मैंने तुझे उत्तर दिया, और उद्धार के दिन मैंने तुझे सहायता दी; और मैं तुझ पर ध्यान रखूँगा और तुझे लोगों के लिए एक वाचा बनाऊंगा, भूमि को पुनः स्थापित करने के लिए, उजाड़ विरासत की भूमि को विरासत में देने के लिए;<sup>९</sup> बंधुओं से कहने के लिए, ‘मुक्त हो जाओ,’ अंधकार में रहने वालों से, ‘अपने आप को दिखाओ।’ वे सदङों के किनारे भोजन करेंगे, और उनके चरागाह सभी ऊंचे स्थानों पर होंगे।<sup>१०</sup> वे न खुँगें और न प्यासेंगे, न ही जलती हुई धूप या सूर्य उह्वें में रोगेंगे; क्योंकि जो उन पर दया करता है वह उह्वें ले जाएगा, और उह्वें जल के स्रोतों की ओर मार्गदर्शन करेगा।<sup>११</sup> मैं अपने सभी पहाड़ों को सड़क बना दूंगा, और मेरी राजमार्गों ऊँची होंगी।<sup>१२</sup> देखो, ये दूर से आएंगे; और देखो, ये उत्तर और पश्चिम से आएंगे, और ये असवान की भूमि से।”<sup>१३</sup> आनंद से चिल्लाओ, हे आकाश! और खुश हो, हे पृथ्वी!

आनंदमय चिल्लाहट में फूट पड़ो, हे पहाड़ो! क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को सांत्वना दी है और अपने पीड़ितों पर दया करेगा।

१४ परन्तु सियान ने कहा, “प्रभु ने मुझे छोड़ दिया है, और प्रभु ने मुझे भुला दिया है।”<sup>१५</sup> क्या कोई स्त्री अपने दूध पीते बच्चे को भूल सकती है और अपने गर्भ के पुत्र पर दया नहीं कर सकती? भले ही ये भूल जाएं, मैं तुझे नहीं भूलूँगा।<sup>१६</sup> देखो, मैंने तुझे अपनी हथेलियों पर अंकित कर लिया है; तेरी दीवारें निरंतर मेरे सामने हैं।<sup>१७</sup> तेरे निर्माता जलदी करेंगे; तेरे विध्वंसक और नाशक तुझे छोड़ देंगे।<sup>१८</sup> अपनी आँखें उठाकर चारों ओर देखें; वे सब इकट्ठे होते हैं, वे तेरे पास आते हैं। जैसा कि मैं जीवित हूँ, प्रभु की घोषणा है, “तू निश्चित रूप से उन्हें

सभी गहरों की तरह पहन लेगी और उन्हें दुल्हन की तरह बांध लेगी।<sup>१९</sup> क्योंकि तेरे खंडहर और उजाड़ स्थान और तेरी नष्ट भूमि— अब निश्चित रूप से निवासियों के लिए बहुत तंग होगी, और जो तुझे निगल गए थे वे दूर होंगे।<sup>२०</sup> जो बच्चे तुने खो दिए थे वे फिर तेरे कानों में कहेंगे, यह स्थान मेरे लिए बहुत तंग है; मेरे लिए जगह बनाओ ताकि मैं यहाँ रह सकूँ।<sup>२१</sup> तब तु अपने दिल में कहेंगी, ‘इनका पिता कौन है, क्योंकि मैं अपने बच्चों से विचित हूँ और बच्चे नहीं हो सकते, और मैं निर्वासित और भटकने वाली हूँ?’ और इनका पालन-पोषण किसने किया? देख, मैं अकेली रह गई थीं; ये कहाँ से आए हैं?”<sup>२२</sup> यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है: “देख, मैं राष्ट्रों की ओर अपना हाथ उठाऊंगा और लोगों के लिए अपनी व्यक्ति स्थापित करूँगा; और वे तेरे पुत्रों को अपनी बाहों में लाएंगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कंधों पर उठाएंगे।<sup>२३</sup> राजा तेरे संरक्षक होंगे, और उनकी राजकुमारियाँ तेरी धर्यों। वे तेरे सामने अपने चेहरों के साथ चूंकेंगे और तेरे पैरों की धूल चाटेंगे; और तू जान जाएगी कि मैं प्रभु हूँ; जो मुझ पर आशा रखते हैं वे लज्जित नहीं होंगे।<sup>२४</sup> क्या कोई शक्तिशाली व्यक्ति से शिकार लिया जा सकता है, या अत्याचारी के बंदी भी छुड़ाए जा सकता है? <sup>२५</sup> वास्तव में, यह वही है जो प्रभु कहता है: “यहाँ तक कि एक शक्तिशाली व्यक्ति के बंदी भी छुड़ाए जा सकते हैं, और अत्याचारी के शिकार को छुड़ाया जा सकता है; क्योंकि मैं उस से संघर्ष करूँगा जो तुझ से संघर्ष करता है, और मैं तेरे पुत्रों को बचाऊंगा।<sup>२६</sup> मैं तेरे उत्तीर्णों को उनका अपना मांस खाने दूंगा, और वे अपनी ही रक्त से मदिरा की तरह मतवाले हो जाएंगे; और सभी मांस जानेंगे कि मैं, प्रभु, तेरा उद्धारकर्ता हूँ और तेरा उद्धारकर्ता, याकूब का शक्तिशाली।”

**५०** प्रभु यह कहता है: “तलाक का प्रमाणपत्र कहाँ है जिससे मैंने तुम्हारी माँ को विदा किया? या मैंने तुम्हें अपने किस क्रणदाता को बेचा? देखो, तुम्हें तुहरे अपराधों के कारण बेचा गया, और तुम्हारी माँ को तुहरे गलत कार्यों के कारण विदा किया गया।<sup>१</sup> जब मैं आया, तो कोई क्यों नहीं था? जब मैंने पुकारा, तो कोई उत्तर देने वाला क्यों नहीं था? क्या मेरा हाथ इतना छोटा है कि छुड़ा नहीं सकता? या मेरे पास बचाने की शक्ति नहीं है? देखो, मैं अपनी डांट से समुद्र को सुखा देता हूँ, मैं नदियों को जंगल में बदल देता हूँ; उनकी मछलियाँ पानी की कमी के कारण सड़ जाती हैं, और प्यास से मर जाती हैं।<sup>२</sup> मैं आकाश को अंधकार से ढक देता हूँ, और उनके आवरण को टाट बना देता हूँ।”<sup>३</sup> प्रभु परमेश्वर ने मुझे चेलों की जीभ दी है, ताकि मैं थके हुए को एक शब्द से

## यशायाह

सहारा दे सकूँ। वह मुझे सुबह-प्रभात जगाता है, वह मुझे चेले की तरह सुनने के लिए जगाता है।<sup>५</sup> प्रभु परमेश्वर ने मेरा कान खोला है, और मैं अवज्ञाकारी नहीं था, और न ही मैंने पीछे मुड़कर देखा।<sup>६</sup> मैंने अपनी पीठ उन लोगों को दी जो मुझे मारते हैं, और अपनी गालें उन लोगों को दी जो मेरी दाढ़ी खीचते हैं; मैंने अपमान और धूक से अपना चेहरा नहीं छिपाया।<sup>७</sup> क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करता है, इसलिए मैं अपमानित नहीं हूँ;

इसलिए, मैंने अपना चेहरा पक्षर की तरह कठोर बना लिया है, और मुझे पता है कि मैं लजित नहीं होऊँगा।<sup>८</sup> वह जो मुझे व्याप दिलाता है, निकट है; कौन मुझसे विवाद करेगा? आओ, हम एक-दूसरे के सामने खड़े हों; किसके पास मेरे खिलाफ मामला है? उसे मेरे पास आने दो।<sup>९</sup> देखो, प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करता है; कौन है जो मुझे दोषी ठहराता है? देखो, वे सब एक वस्त की तरह घिस जाएंगे; एक कीड़ा उर्वे खा जाएगा।<sup>१०</sup> तुम में से कौन है जो प्रभु का भय मानता है, जो उसके सेवक की आवज़ का पालन करता है, जो अंधकार में चलता है और उसके पास कोई प्रकाश नहीं है? उसे प्रभु के नाम पर विश्वास करना चाहिए और अपने परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए।<sup>११</sup> देखो, तुम सब जो आग जलाते हो, जो जलती हुई तीरों से अपने को धेरते हो, अपनी आग के प्रकाश में चलो और उन तीरों के बीच चलो जिन्हें तुमने जलाया है। यह तुम्हें मेरे हाथ से मिलेगा: तुम पीड़ा में लेटोग।

**51** “मेरी सुनो, तुम जो धर्म का पीछा करते हो, जो यहोवा को खोजते हो: उस चट्टान की ओर देखो जिससे तुम काटे गए थे, और उस खटान की ओर जिससे तुम खोदे गए थे।<sup>१</sup> अपने पिता अब्राहम की ओर देखो और सारा की ओर जिसने तुम्हें पीड़ा में जन्म दिया; जब वह अकेला था तब मैंने उसे बुलाया, तब वह मैंने उसे आशीर्वाद दिया और उसे बढ़ाया।”<sup>२</sup> वास्तव में, यहोवा सियोन को सांत्वना देगा; वह उसके सभी खंडहरों को सांत्वना देगा। और वह उसके जंगल को अदन के समान बनाएगा, और उसके मरुस्थल को यहोवा के बगीचे के समान। उसमें आनंद और प्रसन्नता पाई जाएगी, ध्यावाद और संगीत की ध्वनि।<sup>३</sup> “मेरे लोगों, मेरी ओर ध्यान दो, और मेरी बात सुनो, मेरी जाति; क्योंकि मुझसे एक व्यवस्था निकलेगी, और मैं अपनी व्याप को लोगों की ज्योति के रूप में लाऊंगा।<sup>४</sup> मेरा धर्म निकट है, मेरी मुक्ति बाहर जा चुकी है, और मेरी भुजाएँ लोगों का व्याप करेंगी; द्वीप मेरे लिए प्रतीक्षा करेंगे, और वे मेरी भुजा की प्रतीक्षा करेंगे।<sup>५</sup> अपनी आँखें आकाश की ओर उठाओ, और नीचे की पृथ्वी को देखो; क्योंकि आकाश धुएँ की तरह गायब हो जाएगा, और पृथ्वी वस्त की तरह घिस जाएगी,

और उसके निवासी उसी तरह मर जाएंगे। परन्तु मेरी मुक्ति सदा के लिए होगी, और मेरा धर्म असफल नहीं होगा।<sup>६</sup> मेरी सुनो, तुम जो धर्म को जानते हो, एक लोग जिनके हृदय में मेरी व्यवस्था है; लोगों की तानों से मत डरो, और उनकी गालियों से मत घबराओ।<sup>७</sup> क्योंकि कीड़ा उर्वे वस्त की तरह खा जाएगा, और कीड़ उर्वे उन की तरह खा जाएगा। परन्तु मेरा धर्म सदा के लिए होगा, और मेरी मुक्ति सभी पीढ़ियों के लिए।”

९ जागो, जागो, शक्ति धारण करो, यहोवा की भुजा!! पुराने दिनों की तरह जागो, बहुत पहले की पीढ़ियों की तरह। क्या यह तुम नहीं थे जिन्होंने राहब को टुकड़े-टुकड़े किया, जिसने अजगर को छेदा?<sup>१०</sup> क्या यह तुम नहीं थे जिन्होंने समुद्र को सुखाया, महान गहराई के जल को; जिन्होंने समुद्र की गहराई को एक मार्ग बनाया ताकि छुड़ाए हुए पार कर सकें?<sup>११</sup> और यहोवा के छुड़ाए हुए लौट आएंगे और सियोन में आनंदमय जयकार के साथ आएंगे, और उनके सिर पर सदा का आनंद होगा। वे आनंद और प्रसन्नता प्राप्त करेंगे, और दुःख और आह भरना दूर हो जाएगा।

१२ “मैं, मैं ही वह हूँ जो तुम्हें सांत्वना देता हूँ। तुम कौन हो कि तुम नश्वर मनुष्य से डरते हो, और मनुष्य के पुत्र से जो घास के समान है, <sup>१३</sup> कि तुमने अपने निर्माता यहोवा को भूला दिया है, जिसने आकाश को फैलाया और पृथ्वी की नींव डाली, कि तुम दिन भर लगातार डरते हो दमनकारी के क्रोध के कारण, जैसे वह नष्ट करने के लिए तैयार होता है? परन्तु दमनकारी का क्रोध कहाँ है?

१४ निर्वासन जल्द ही रिहा होगा, और कालकीठी में नहीं मरेगा, और न ही उसकी रोटी की कमी होगी।<sup>१५</sup> क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो समुद्र को हिलाता है और उसकी लारें गर्जना करती हैं— सेनाओं का यहोवा उसका नाम है।<sup>१६</sup> मैंने तुम्हारे मूँह में अपने वक्त डाले हैं और तुम्हें अपनी हाथ की छाया से ढक लिया है, आकाश को स्थापित करने के लिए, पृथ्वी की नींव डालने के लिए, और सियोन से कहने के लिए, ‘तुम मेरे लोग हो।’”

१७ जागो, जागो, उठो, यरूशलेम, तुमने यहोवा के हाथ से उसके क्रोध का प्याला पिया है; तुमने कंपकंपाने का प्याला अंत तक पिया है।<sup>१८</sup> उसके सभी पुत्रों में से कोई नहीं है जो उसे मार्गदर्शन करे, और न ही उसके सभी पुत्रों में से कोई है जो उसका हाथ पकड़े।<sup>१९</sup> ये दो बातें तुम्हारे साथ हुई हैं; कौन तुम्हारे लिए शोक करेगा? विनाश और विध्वंस, अकाल और तलवार; मैं तुम्हें कैसे सांत्वना दूँ?<sup>२०</sup> तुम्हारे पुत्र बेहोश हो गए हैं, वे हर गली के सिर पर असहाय पड़े हैं, जाल में फँसे हिरण के समान,

## यशायाह

यहोवा के क्रोध से भरे हुए, तुम्हारे परमेश्वर की फटकार से।

<sup>21</sup> इसलिए, इसे सुनो, तुम पीड़ित, जो नश में हो, परन्तु दाखमधु से नहीं: <sup>22</sup> यह तुम्हारा प्रभु, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर जो अपने लोगों के लिए लड़ता है, कहता है: “देखो, मैंने तुम्हारे हाथ से कपकपाने का प्याला ले लिया है, मेरे क्रोध का प्याला; तुम इसे फिर कभी नहीं पियोगे। <sup>23</sup> मैं इसे तुम्हें सताने वालों के हाथ में ढंगा, जिन्होंने तुमसे कहा, ‘लेट जाओ ताकि हम तुम्हारे ऊपर चल सकें।’ तुमने अपनी पीठ को जमीन के समान बना दिया, और सड़क के समान उन लोगों के लिए जो उस पर चलते हैं।”

**52** जागो, जागो, अपनी शक्ति से परिधान करो, सियोन; अपने सुंदर वरस्तों से परिधान करो, यरूशलेम, पवित्र नगर; क्योंकि अशुद्ध और अपवित्र अब तुम में प्रवेश नहीं करेंगे। <sup>2</sup> धूल से अपने आप को जाझो, उठ खड़ी हो, बंदी यरूशलेम; अपने गते की जंजीरों से अपने आप को मुक्त करो, बंदी सियोन की पुत्री। <sup>3</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: “तुम बिना मूल्य के बेचे गए थे, और तुम बिना धन के छुड़ाए जाओगे।” <sup>4</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: “मेरे लोग पहले मिस में निवास करने के लिए गए थे, फिर अशुद्धियों ने उन्हें बिना कारण सताया।” <sup>5</sup> और अब, मेरे पास यहाँ क्या है? यहोवा कहता है, “देखते हुए कि मेरे लोग बिना कारण ले जाए गए हैं?” फिर से यहोवा कहता है, “जो उन पर शासन करते हैं वे चिल्लाते हैं, और मेरा नाम दिन भर अपमानित होता है।” <sup>6</sup> इसलिए मेरे लोग मेरे नाम को जानेंगे; इसलिए उस दिन वे जानेंगे कि मैं वही हूँ जो कहता है, यहाँ मैं हूँ।” <sup>7</sup> पहाड़ों पर कितने सुंदर हैं उसके पाँव जो शुभ समाचार लाता है, जो शांति की धोषणा करता है और खुशी का शुभ समाचार लाता है, जो उद्धार की धोषणा करता है, और सियोन से कहता है, “तेरा परमेश्वर राज्य करता है!” <sup>8</sup> तेरे पहरेदारों की आवाज़! वे अपनी आवाज़ उठाते हैं, वे मिलकर आनंद से चिल्लाते हैं; क्योंकि वे अपनी आँखों से देखेंगे जब यहोवा सियोन को पुनःस्पापित करेगा। <sup>9</sup> आनंदित हो, मिलकर आनंद से चिल्लाओ, यरूशलेम के खंडहर; क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों को सांत्वना दी है, उसने यरूशलेम को छुड़ाया है। <sup>10</sup> यहोवा ने अपनी पवित्र भुजा को सभी छाँसे देख सकते हमारे परमेश्वर का उद्धार। <sup>11</sup> प्रस्थान करो, प्रस्थान करो, वहाँ से बाहर निकलो, जो अशुद्ध है उसे मत छुओ; उसके बीच से बाहर निकलो, अपने आप को शुद्ध करो, तुम जो यहोवा के पात्रों को ले

जाते हो। <sup>12</sup> परन्तु तुम जल्दी में बाहर नहीं जाओगे, न ही तुम भगोड़ों की तरह जाओगे; क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे चलेगा, और इसाएल का परमेश्वर तुम्हारा पीछे का रक्षक होगा।

<sup>13</sup> देखो, मेरा सेवक सफल होगा, वह ऊँचा और उठाया जाएगा, और बहुत महिमान्वित होगा। <sup>14</sup> जैसे बहुत से लोग तुम पर आश्वर्यकित हुए, मेरे लोग, जैसे ही उसका रूप मनुष्य से परे बिगड़ा हुआ था, और उसका स्वरूप मनुष्यों के पुत्रों से परे था। <sup>15</sup> इस प्रकार वह बहुत सी जातियों पर छिड़केगा, राजा उसके कारण अपने मुँह बंद कर देंगे; क्योंकि जो उन्हें नहीं बताया गया था, वे देखेंगे, और जो उन्होंने नहीं सुना था, वे समझेंगे।

**53** हमारी बात पर किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है? <sup>2</sup> क्योंकि वह उसके सामने एक कोमल अंकुर की तरह बढ़ा, और सूखी भूमि से जड़ की तरह; उसमें कोई सुंदरता या महिमा नहीं थी कि हम उसे देखें, न ही कोई ऐसा रूप कि हम उसमें प्रसन्न हों। <sup>3</sup> वह मनुष्यों द्वारा तिरस्कृत और त्याग गया, दुखों का व्यक्ति और रोगों से परिचित; और जैसे लोग उससे मुँह छिपाते हैं, वह तिरस्कृत था, और हमने उसका कोई आदर नहीं किया। <sup>4</sup> फिर भी, यह हमारी बीमारियाँ थीं जिन्हें उसने स्वयं उठाया, और हमारे दुख जिन्हें उसने सहन किया; फिर भी हमने सोचा कि वह मारा गया है, ईश्वर द्वारा पीड़ित और अपमानित। <sup>5</sup> परन्तु वह हमारे अपराधों के लिए छेदा गया, हमारी बुराइयों के लिए कुचला गया; हमारी शांति के लिए दंड उस पर था, और उसकी चोटों से हम चोरी हो गए। <sup>6</sup> हम सब भेड़ों की तरह भटक गए हैं, हम में से हर एक ने अपनी राह ली है; परन्तु यहोवा ने हम सबकी बुराई उस पर ढाल दी है। <sup>7</sup> वह अत्याचार और पीड़ा सहता रहा, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला; जैसे वध के लिए ले जाया जाने वाला मेमना, और जैसे अपनी ऊन कतरने वालों के सामने मौन भेड़, जैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला। <sup>8</sup> अत्याचार और न्याय से उरे ले जाया गया; और उसकी पीढ़ी के लिए, किसने सोचा कि वह जीवितों की भूमि से काटा गया मेरे लोगों के अपराध के लिए, जिनके लिए यह आघात था? <sup>9</sup> और उसकी कब्र दुष्टों के साथ ठहराइ गई, फिर भी वह अपनी मृत्यु में एक धनी व्यक्ति के साथ था, क्योंकि उसने कोई हिंसा नहीं की, और न ही उसके मुँह में कोई छल था। <sup>10</sup> परन्तु यहोवा ने उसे कुचलना चाहा, उसे दुःख देना; यदि वह अपने को अपराध बत्ति के रूप में अर्पित करता है, वह अपनी संतान को देखेगा, वह अपने दिन बढ़ाएगा, और यहोवा की इच्छा उसके हाथ में सफल होगी। <sup>11</sup> उसकी आत्मा

## यशायाह

की पीड़ा के परिणामस्वरूप, वह इसे देखेगा और संतुष्ट होगा; उसके ज्ञान से धर्मी, मेरा सेवक, बहुतों को धर्मी ठहराएगा, क्योंकि वह उनकी बुराइयों को उठाएगा।<sup>11</sup> इसलिए, मैं उसे महान लोगों के साथ एक भाग द्वांगा, और वह शक्तिशालियों के साथ तूट को बाँटेगा, क्योंकि उसने अपनी जान मृत्यु तक उंडेल दी, और अपराधियों के साथ गिना गया; फिर भी उसने बहुतों के पाप को उठाया, और अपराधियों के लिए मध्यस्थता की।

**54** हे बाँध, तू जो जन्म नहीं देती, जयजयकार कर; उल्लासपूर्वक जयजयकार कर और ऊँचे स्वर में चिल्ला, तू जो प्रसव पीड़ा में नहीं रही; क्योंकि उजाड़ की संतानें विवाहित स्त्री की संतानों से अधिक होंगी। प्रभु कहता है।<sup>2</sup> “अपने तंबू की जगह को बड़ा कह; अपने निवास के पर्दों को फैलाओ, उन्हें मत रोको; अपनी रसियों को लंबा करो और अपने खूंटों को मजबूत करो।<sup>3</sup> क्योंकि तू दाँए और बाँए फैल जाएगी। और तेरी संतानें जातियों का अधिकार करेंगी और उजाड़ नगरों को फिर से बसाएंगी।”<sup>4</sup> मत डर, क्योंकि तुझे लजित नहीं होना पड़ेगा; और अपमानित मत हो, क्योंकि तुझे अपमानित नहीं किया जाएगा; बल्कि तू अपनी युवावस्था की लज्जा को भूल जाएगी, और अपनी विधवा अवस्था के अपमान को फिर से याद नहीं करेगी।<sup>5</sup> क्योंकि तेरा पति तेरा निर्माता है, जिसका नाम सेनाओं का प्रभु है; और तेरा उद्घारकर्ता इसाएल का पवित्र है, जो सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहलाता है।<sup>6</sup> क्योंकि प्रभु ने तुझे बुलाया है, जैसे एक परिष्कृत और आत्मा में दुखी पती, यहाँ तक कि एक की युवावस्था की पती जब वह अस्वीकृत होती है।<sup>7</sup> तेरा परमेश्वर कहता है।<sup>8</sup> “थोड़े समय के लिए मैंने तुझे छोड़ दिया, परंतु बड़ी करुणा के साथ मैं तुझे इकट्ठा करूँगा।”<sup>9</sup> क्रोध के उफान में मैंने एक क्षण के लिए तुझसे अपना मुख छिपा लिया, परंतु अनंत अनुग्रह के साथ मैं तुझ पर दया करूँगा,” तेरा उद्घारकर्ता प्रभु कहता है।<sup>10</sup> क्योंकि यह मेरे लिए नूह के दिनों के समान है, जब मैंने शपथ ली थी कि नूह के जल फिर से पृथ्वी पर बाढ़ नहीं लाएंगे; इस प्रकार मैंने शपथ ली है कि मैं तुझ पर क्रोधित नहीं होऊंगा और न ही तुझे ठांट्ठांगा।<sup>11</sup> क्योंकि पहाड़ हट सकते हैं और पहाड़ियाँ हिल सकती हैं, परंतु मेरी अनुग्रह तुझसे नहीं हटेगी, और न ही मेरी शांति की वाचा हिलेगी,” प्रभु कहता है जो तुझ पर दया करता है।

<sup>11</sup> “हे पीड़ित, तूफान से धिरी, और सांत्वना से रहित, देख, मैं तेरे पत्थरों को सुरमा में स्थापित करूँगा, और तेरी नींवों की नीलम से बनाऊंगा।<sup>12</sup> इसके अलावा, मैं तेरी प्राचीरों को माणिक से बनाऊंगा, और तेरे द्वारों को

क्रिस्टल से, और तेरी सारी दीवारों को बहुमूल्य पत्थरों से।<sup>13</sup> तेरे सभी पुत्र प्रभु के द्वारा सिखाए जाएंगे; और तेरे पुत्रों की भलाई महान होगी।<sup>14</sup> धर्म में तू स्थापित होगी; तू उत्पीड़न से दूर होगी, क्योंकि तू नहीं डरेगी; और आतंक से, क्योंकि वह तेरे पास नहीं आएगा।<sup>15</sup> यदि कोई तुझ पर उत्त्रासे हमला करता है, तो वह मुझसे नहीं होगा। जो कोई तुझ पर हमला करेगा वह तेरे कारण गिर जाएगा।<sup>16</sup> देख, मैंने स्वयं उस लोहार को बनाया है जो कोयले की आग पर फूंक मारता है और उसके काम के लिए एक हथियार बनाता है; और मैंने विनाश करने वाले को विनाश करने के लिए बनाया है।<sup>17</sup> कोई भी हथियार जो तेरे विरुद्ध बनाया गया है सफल नहीं होगा; और हर जीभ जो तुझे न्याय में दोषी ठहराती है, तू उसे दोषी ठहराएगी। यह प्रभु के सेवकों की विरासत है, और उनकी धार्मिकता मुझसे है,” प्रभु घोषित करता है।

**55** “हे सब प्यासे लोगों, जल के पास आओ; और तुम जिनके पास धन नहीं है, आओ, खारीदो और खाओ। आओ, बिना धन और बिना मूल्य के दाखमृ और दूध खरीदो।<sup>1</sup> तुम उस वस्तु के लिए धन क्यों खर्च करते हो जो रोटी नहीं है, और उस वस्तु के लिए अपनी मजदूरी क्यों खर्च करते हो जो तृप्त नहीं करती? मेरी बात ध्यान से सुनो, और वह खाओ जो अच्छा है, और अपनी आत्मा को समद्विमें आनंदित करो।<sup>2</sup> अपना कान मेरी ओर लगाओ और मेरे पास आओ। सुनो, ताकि तुम जीवित रहो; और मैं तुम्हारे साथ एक सदा का वाचा करूँगा, जो दाऊद को दिखाए गए विश्वासयोग दया के अनुसार है।<sup>3</sup> देखो, मैंने उसे लोगों के लिए एक साक्षी बनाया है, लोगों के लिए एक नेता और सेनापति।<sup>5</sup> देखो, तुम एक ऐसे राष्ट्र को बुलाओगे जिसे तुम नहीं जानते, और एक ऐसा राष्ट्र जो तुम्हें नहीं जानता, वह तुम्हारे पास दोड़ागा, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहीता, इसाएल के पवित्र के कारण; क्योंकि उसने तुम्हें महिमा दी है।<sup>6</sup> जब तक यहोवा मिल सकता है, उसे खोजो; जब तक वह निकट है, उसे पुकारो।<sup>7</sup> दुष्ट अपनी राह को छोड़ दे, और अधर्मी व्यक्ति अपने विचारों को; और वह योधा की ओर लौट आए, और वह उस पर दया करेगा, और हमारे परमेश्वर की ओर, क्योंकि वह भरपूर क्षमा करेगा।<sup>8</sup> “क्योंकि मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं, और न ही तुम्हारी राहें मेरी राहें हैं,” यहोवा कहता है।<sup>9</sup> “क्योंकि जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा है, वैसे ही मेरी राहें तुम्हारी राहों से ऊँची हैं और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊँचे हैं।<sup>10</sup> क्योंकि जैसे वर्षा और दिव्य आकाश से नीचे आते हैं, और बिना पृथ्वी की सीधे वहाँ नहीं लौटते और उसे उपजाऊ और अंकुरित करने के लिए नहीं बनाते, और

## यशायाह

बोने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी प्रदान करते हैं;<sup>11</sup> वैसे ही मेरा चरन जो मेरे मुँह से निकलता है; वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा, बिना उस कार्य को पूरा किए जो मैं चाहता हूँ, और बिना उस उद्देश्य में सफल हुए जिसके लिए मैंने उसे भेजा है।<sup>12</sup> क्योंकि तुम आनंद के साथ बाहर जाओगे और शांति में ले जाओगे; पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे सामने आनंद के नारे लगाएंगे, और मैदान के सब वृक्ष अपने हाथ ताली बजाएंगे।<sup>13</sup> कैंटिंटार झाड़ी के स्थान पर देवदार का पेड़ उगेगा, और डंक मारने वाले बिछू के स्थान पर मर्टल का पेड़ उगेगा; और यह यहोवा के लिए एक स्मारक होगा, एक सदा का विन्ह जो समाप्त नहीं होगा।"

**56** यहोवा यह कहता है: "याय की रक्षा करो और धर्म का पालन करो, क्योंकि मेरी मुक्ति आने वाली है और मेरी धार्मिकता प्रकट होने वाली है।"<sup>2</sup> धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा करता है, और वह मनुष्य का पुत्र जो इसे थामे रहता है; जो सब्ज का पालन करता है और उसे अपवित्र नहीं करता, और अपने हाथ को किसी बुराई से दूर रखता है!"<sup>3</sup> वह परदेशी जो यहोवा से जुड़ गया है, यह न कहे, "यहोवा मुझे अपने लोगों से अवश्य ही अलग कर देगा!" और न ही खोजा कहे, "देखो, मैं तो सूखा वृक्ष हूँ!"<sup>4</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: "उन खोजों के लिए जो मेरे सब्जों का पालन करते हैं, और जो मुझे प्रसन्न करने वाली बातें चुनते हैं, और मेरे वाचा को ढटा से थामे रहते हैं, मैं मॉन्हें अपने घर में और अपनी दीवारों के भीतर एक स्मारक और एक नाम दूँगा जो पुत्रों और पुत्रियों से बेहतर होगा; मैं उन्हें एक शाश्वत नाम दूँगा जो समाप्त नहीं होगा।"<sup>5</sup> वे परदेशी भी जो यहोवा से जुड़ते हैं, उसकी सेवा करने और यहोवा के नाम से प्रेम करने के लिए, उसके सेवक बनने के लिए, हर वह जो सब्ज का पालन करता है ताकि उसे अपवित्र न करे, और मेरे वाचा को ढटा से थामे रहता है; <sup>6</sup> मैं उन्हें अपने पवित्र पर्वत पर लाऊँगा, और उन्हें अपने प्राथना के घर में आनंदित करूँगा। उनकी होमबलियाँ और उनके बलिदान मेरे वेदी पर स्वीकार्य होंगी; क्योंकि मेरा घर सभी लोगों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा!"<sup>7</sup> प्रभु यहोवा, जो इसाएल के बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करता है, यह धोषित करता है: "मैं उनके साथ औरों को भी इकट्ठा करूँगा, उनके साथ जो पहले से ही इकट्ठा हैं।"

<sup>9</sup> हे मैदान के सभी जानवरों, हे जंगल के सभी जानवरों, आओ खाने के लिए! <sup>10</sup> उसके परदेशी अंधे हैं, वे सभी कुछ नहीं जानते। वे सभी गूँगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते, स्वप्न देखने वाले जो लेटे रहते हैं, जो सोना पसंद

करते हैं,<sup>11</sup> और कुत्ते लालची हैं, वे कभी संतुष्ट नहीं होते। और वे चरवाहे हैं जिनमें समझ नहीं है, वे सभी अपने अपने मार्ग की ओर मुड़ गए हैं, हर कोई अपने अन्यायपूर्ण लाभ के लिए, बिना अपवाद के। <sup>12</sup> "आओ," वे कहते हैं, "हम दाखमधु लें, और मादक पेय का भरपूर सेवन करें; और कल आज जैसा होगा, बल्कि उससे भी अधिक।"

**57** धर्मी व्यक्ति नष्ट हो जाता है, और कोई इसे दिल से नहीं लेता; और भक्त लोग उठा लिए जाते हैं, जबकि कोई समझता नहीं है। क्योंकि धर्मी व्यक्ति बुराई से दूर कर लिया जाता है,<sup>2</sup> वह शांति में प्रवेश करता है; वे अपने बिस्तरों में विश्राम करते हैं, हर एक जो अपनी सीधी राह में चला।<sup>3</sup> परन्तु तुम, यहाँ आओ, हे जादूगरनी के पुत्रों, व्यभिचारी और वेश्या की संतान।<sup>4</sup> तुम किसका उपहास कर रहे हो? किसके विरुद्ध तुम अपना मुँह चौड़ा करते हो और अपनी जीभ निकालते हो? क्या तुम विद्रोह के बच्चे नहीं हो, छल की संतान,<sup>5</sup> जो बलूत के वृक्षों के बीच अपने आप को उत्तेजित करते हो, हर हरे-भरे पेड़ के नीचे, जो घाटियों में बच्चों का वध करते हो, चट्टानों की दरारों के नीचे?<sup>6</sup> घाटी के चिकने पत्थरों के बीच तुम्हारा भाग है—वे तुम्हारा हिस्सा हैं। तुमने उनके लिए पेय भेट उड़ेली है, तुमने अन्न भेट चढ़ाई है। क्या मैं इन बातों का उत्तर दूँ?<sup>7</sup> एक ऊँचे और ऊँचे पर्वत पर तुमने अपना बिस्तर लगाया है। तुम वहाँ बलिदान चढ़ाने के लिए भी गए।<sup>8</sup> और दरवाजे और चौकट के पीछे तुमने अपनी निशानी लगाई है: वास्तव में, मुझसे दूर होकर, तुमने अपने आप को नग्र किया है, और ऊपर जाकर अपना बिस्तर चौड़ा किया है। और तुमने उनके साथ एक समझौता किया है, तुमने उनके बिस्तर को पसंद किया है, तुमने उनकी मदानगी को देखा है।<sup>9</sup> तुम तेल लेकर राजा के पास गए हो और अपनी सुआधियों को बढ़ाया है, तुमने अपने दूरों की दूर भेजा है और उन्हें शिओल तक जाने दिया है।<sup>10</sup> तुम अपनी लंबी यात्रा से थक गए थे, फिर भी तुमने नहीं कहा, "यह निराशाजनक है!" तुमने नई शक्ति पाई, इसलिए तुम कमज़ोर नहीं हुए।<sup>11</sup> तुम किससे प्रिंति और भयभीत थे, जब तुमने झूँठ बोला और मुझे याद नहीं किया और न ही मुझे विवार दिया? क्या मैं बहुत समय तक चुप नहीं रहा, ताकि तुम मुझसे न डर सको? <sup>12</sup> मैं तुम्हारी धार्मिकता और तुम्हारे कर्मों की घोषणा करूँगा, लेकिन वे तुम्हें लाभ नहीं देंगे।<sup>13</sup> जब तुम पुकारोगे, तो तुम्हारा मूर्तियों का संग्रह तुम्हें बचाए। लेकिन हवा उन्हें सभी को उड़ा ले जाएगी, और एक सांस उन्हें दूर ले जाएगी। लेकिन जो मुझमें शरण लेता है

## यशायाह

वह भूमि का उत्तराधिकारी होगा और मेरे पवित्र पर्वत का अधिकारी होगा।”

<sup>14</sup> और कहा जाएगा, “निर्माण करो, निर्माण करो, मार्ग तैयार करो, मेरे लोगों के मार्ग से हर बाधा को हटा दो।” <sup>15</sup> क्योंकि यह वही है जो उच्च और महान है जो सदा जीवित रहता है, जिसका नाम पवित्र है, कहता है: “मैं एक उच्च और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ, और साथ ही विनम्र और दीन आत्मा के साथ ताकि दीन आत्मा को पुनर्जीवित कर सकूँ और दीन के हृदय को पुनर्जीवित कर सकूँ।” <sup>16</sup> क्योंकि मैं सदा विवाद नहीं करूँगा, और न ही मैं हमेशा क्रोधित रहूँगा; क्योंकि आत्मा मेरे सामने कमजोर हो जाएगी, और उन लोगों की सांस जिहें मैं बनाया है। <sup>17</sup> उसके अन्यायपूर्ण लाभ के अपराध के कारण मैं क्रोधित हुआ और उसे मारा; मैंने अपना चेहरा छिपा लिया और क्रोधित हुआ, और वह अपने हृदय के मार्ग में भटकता रहा। <sup>18</sup> मैंने उसके मार्ग देखे हैं, लेकिन मैं उसे चंगा करूँगा, मैं उसे नेतृत्व करूँगा और उसे और उसके शोक करने वालों को सांत्वना द्वारा, <sup>19</sup> होठों की स्तुति को उत्पन्न करते हुए। शांति, शांति उसे जो दूर है और उसे जो निकट है,” प्रभु कहता है, “और मैं उसे चंगा करूँगा।” <sup>20</sup> लेकिन दुष्ट समुद्र की तरह हैं, क्योंकि यह शांत नहीं हो सकता, और इसके जल कवरा और कीचड़ उछालते हैं। <sup>21</sup> “दुष्टों के लिए कोई शांति नहीं है,” मेरे परमेश्वर ने कहा।

**58** जोर से पुकारो, पीछे मत हटो; अपनी आवाज तुरही की तरह उठाओ, और मेरे लोगों को उनके अपराध बताओ, और याकूब के घर को उनके पापों का पता दो। <sup>2</sup> किर भी वे दिन-प्रतिदिन मुझे खोजते हैं और मेरी राहों को जानने में आनंदित होते हैं, जैसे एक राष्ट्र जिसने धर्म का पालन किया है और अपने परमेश्वर की विधियों को नहीं छोड़ा है। वे मुद्दासे यायपूर्ण निर्णय मांगते हैं, वे परमेश्वर की निकटता में आनंदित होते हैं। <sup>3</sup> हमने उपवास किया और तूरे नहीं देखा? हमने अपने आप को नम्र किया और तून ध्यान नहीं दिया? देखो, तुम्हारे उपवास के दिन तुम अपनी इच्छा पूरी करते हो, और अपने सभी कामगारों को दबाते हो। <sup>4</sup> देखो, तुम विवाद और झगड़े के लिए उपवास करते हो, और दुष्ट मुट्ठी से मारने के लिए। तुम आज की तरह उपवास नहीं करते ताकि तुम्हारी आवाज़ ऊपर सुनी जाए। <sup>5</sup> क्या यह ऐसा उपवास है जिसे मैं चुनता हूँ, एक दिन जब व्यक्ति अपने आप को नम्र करे? क्या यह सिर को सरकड़े की तरह झुकाने के लिए है और बोरी और राख को बिस्तर की तरह फैलाने के लिए है? क्या तुम इसे उपवास कहोगे, यहाँ तक कि यहोवा के लिए एक स्वीकार्य दिन?

<sup>6</sup> क्या यह वह उपवास नहीं है जिसे मैं चुनता हूँ: दुष्टा के बंधनों को खोलना, जुए की रस्सियों को खोलना, और पीड़ितों को स्वतंत्र करना, और हर जुए को तोड़ना है? <sup>7</sup> क्या यह भूखों के साथ अपनी रोटी नहीं तोड़ना है और बेघर गरीबों को घर में लाना; जब तुम नम्र को देखो, तो उसे ढकना; और अपने ही शरीर से छिपाना नहीं? <sup>8</sup> तब तुम्हारा प्रकाश भोर की तरह फूटेगा, और तुम्हारा स्वास्थ्य शीघ्रता से बढ़ेगा; और तुम्हारी धार्मिकता तुम्हारे आगे चलेगी; यहोवा की महिमा तुम्हारी पीछे की रक्षा करेगी। <sup>9</sup> तब तुम पुकारोगे, और यहोवा उत्तर देगा; तुम सहायता के लिए पुकारोगे, और वह कहेगा, “मैं यहाँ हूँ।” यदि तुम अपने बीच से जुए को हटा दोगे, उंगली दिखाने और दुष्टा बोलने को, <sup>10</sup> और यदि तुम भूखों को अपनी आत्मा अपर्ित करोगे, और पीड़ितों की आवश्यकता को संतुष्ट करोगे, तब तुम्हारा प्रकाश अंधकार में उदय होगा, और तुम्हारा अंधकार दोपहर की तरह होगा। <sup>11</sup> और यहोवा तुम्हें निरंतर मार्गदर्शन करेगा, और तुम्हारी इच्छा को सूखे स्थानों में संतुष्ट करेगा, और तुम्हारी हिँड़ियों को शक्ति देगा; और तुम एक सिंचित बांधीचे की तरह होगे, और एक जल के सोते की तरह जिसके जल कभी नहीं सूखते। <sup>12</sup> तुम्हारे बीच से लोग प्राचीन खंडहरों का पुनर्निर्माण करेंगे; तुम पुरानी नीवों को उठाओगे; और तुम्हें दरारों का मरम्मत करने वाला कहा जाएगा, उन गलियों का पुनर्स्थापक जहाँ निवास किया जाए। <sup>13</sup> यदि, सब्ल के कारण, तुम अपने पैर को रोकते हो मेरे पवित्र दिन पर अपनी इच्छा करने से, और सब्ल को आनंद करते हो, और यहोवा के पवित्र दिन को सम्मानीय, और इसे सम्मानित करते हो, अपनी राहों से हटकर, अपनी इच्छा खोजने से और अपने शब्द बोलने से, <sup>14</sup> तब तुम यहोवा में आनंदित होगे, और मैं तुम्हें पूर्वी की ऊँचाइयों पर सवारी कराऊँगा; और मैं तुम्हें तुम्हारे पिता याकूब की विरासत से खिलाऊँगा, क्योंकि यहोवा के मुख ने यह कहा है।

**59** देखो, यहोवा का हाथ इतना छोटा नहीं है कि वह बचा न सके; और न ही उसका कान इतना मंद है कि वह सुन न सके। <sup>2</sup> परन्तु तुम्हारे अपराधों ने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के बीच में एक विभाजन कर दिया है, और तुम्हारे पापों ने उसका मुख तुमसे छिपा लिया है ताकि वह न सुने। <sup>3</sup> क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से लिप्त हैं, और तुम्हारी ऊँगलियाँ अपराध से; तुम्हारे होंठोंने छल बोला है, तुम्हारी जीभ दुष्टा बड़बड़ाती है। <sup>4</sup> कोई भी धर्मपूर्वक मुकदमा नहीं करता, और कोई भी ईमानदारी से निवेदन नहीं करता। वे भ्रम में विश्वास करते हैं और झूठ बोलते हैं, वे संकट की कल्पना करते हैं और आपदा को जन्म देते हैं। <sup>5</sup> वे विषैले साँप के अडे सेते हैं और

## यशायाह

मकड़ी का जाल बुनते हैं, जो उनके अंडों को खाता है वह मर जाता है, और जो कुचला जाता है, उससे एक साँप निकलता है।<sup>6</sup> उनके जाल वस्त्र नहीं बरेंगे, और न ही वे अपने कार्यों से स्वयं को ढकेंगे; उनके कार्य अपराध के कार्य हैं, और उनके हाथों में हिंसा का कार्य है।<sup>7</sup> उनके पैर बुराई की ओर डौड़ते हैं, और वे निरोष खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं; उनके विचार अपराध के विचार हैं, विनाश और विनाश उनके मार्गों में हैं।<sup>8</sup> वे शांति का मार्ग नहीं जानते, और उनके पापों में कोई चायान नहीं है; उन्होंने अपने मार्गों की टेढ़ा कर दिया है, जो उन पर चलता है वह शांति नहीं जानता।

<sup>9</sup> इसलिए न्याय हमसे दूर है, और धर्म हमें नहीं पकड़ता; हम प्रकाश की आशा करते हैं, परन्तु हम अंधकार हैं, चमक के लिए, परन्तु हम अंधकार में चलते हैं।<sup>10</sup> हम अंधों की तरह दीवार को टटोलते हैं, हम उन लोगों की तरह टटोलते हैं जिनकी आँखें नहीं हैं। हम दोपहर में भी ऐसे ठोकर खाते हैं जैसे सांझा में, स्वस्य लोगों के बीच, हम मृतकों के समान हैं।<sup>11</sup> हम सब भालूओं की तरह गरजते हैं, और कबूलों की तरह दुखी होकर कराहते हैं; हम न्याय की आशा करते हैं, परन्तु कोई नहीं है; उद्धर के लिए, परन्तु वह हमसे दूर है।<sup>12</sup> क्योंकि हमारे अपराध अपके सामने बढ़ गए हैं, और हमारे पापों ने हमारे विरुद्ध गवाही दी है; क्योंकि हमारे अपराध हमारे साथ है, और हम अपने अपराधों को जानते हैं;<sup>13</sup> यहोवा का अपमान करना और उसे अस्वीकार करना, और हमारे परमेश्वर से दूर होना, अत्याचार और विद्रोह बोलना, हृदय से झूठे शब्दों की कल्पना और उच्चारण करना।<sup>14</sup> न्याय पीछे हट गया है, और धर्म दूर खड़ा है; क्योंकि सत्य सङ्क में ठोकर खाता है, और सच्चाई प्रवेश नहीं कर सकती।<sup>15</sup> सत्य की कमी है, और जो बुराई से दूर होता है वह स्वयं को शिकार बनाता है। अब यहोवा ने देखा, और यह उसकी दृष्टि में अप्रसन्न था कि कोई न्याय नहीं था।<sup>16</sup> और उसने देखा कि कोई मध्यस्थ नहीं था; तब उसकी अपनी भूजा ने उसे उद्धार दिलाया, और उसकी धार्मिकता ने उसे संभाला।<sup>17</sup> उसने धर्म को कवच की तरह पहना, और अपने सिर पर उद्धार का टोप रखा; और उसने प्रतिशोध के वस्त्र को वस्त्र के रूप में पहना और उत्साह के साथ अपने आप को चादर में लपेट लिया।<sup>18</sup> उनके कार्यों के अनुसार, वह प्रतिफल देगा; अपने विरोधियों पर क्रोध, अपने शत्रुओं पर प्रतिशोध, समुद्र तटों पर वह प्रतिशोध करेगा।<sup>19</sup> इसलिए वे पश्चिम से यहोवा के नाम का भय करेंगे, और सूर्य के उदय से उसकी महिमा का; क्योंकि वह एक बहती धारा की तरह आएगा जिसे यहोवा की

वायु चलाती है।<sup>20</sup> "एक उद्धारकर्ता सिय्योन में आएगा, और याकूब में उन लोगों के पास जो अपराध से फिरते हैं," यहोवा कहता है।<sup>21</sup> "मेरे लिए, यह उनका मेरे साथ वाचा है," यहोवा कहता है: "मेरी आत्मा जो तुम पर है, और मेरे शब्द जो मैंने तुम्हारे मुख में डाले हैं, वे तुम्हारे मुख से नहीं हटेंगे, न ही तुम्हारी संतान के मुख से, न ही तुम्हारी संतान की संतान के मुख से," यहोवा कहता है, "अब से और सदा के लिए।"

## 60 उठो, चमको; क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया

है, और यहोवा की महिमा तुम पर उदय हुई है।<sup>2</sup> क्योंकि देखो, अंधकार पृथ्वी को ढक लेगा और घोर अंधकार लोगों को; परन्तु यहोवा तुम पर उदय होगा और उसकी महिमा तुम पर प्रकट होगी।<sup>3</sup> जातियां तुम्हारे प्रकाश की ओर आएंगी, और राजा तुम्हारे उदय की चमक की ओर।<sup>4</sup> अपनी आँखें चारों ओर उठाओ और देखो: वे सब इकट्ठे होते हैं, वे तुम्हारे पास आते हैं। तुम्हारे पुत्र दूर से आएंगे, और तुम्हारी पुत्रियां कूल्हे पर लाई जाएंगी।<sup>5</sup> तब तुम देखोगे और चमकोगे, और तुम्हारा हृदय कांपेगा और आनंदित होगा, क्योंकि समुद्र की समृद्धि तुम्हारी ओर मुड़ जाएगी, राष्ट्रों की संपत्ति तुम्हारे पास आएगी।<sup>6</sup> ऊँटों की भीड़ तुम्हें ढक लेगी, मिद्यान और एका के युवा ऊँट; सब शबा से आएंगे; वे सोना और लोबान लाएंगे, और यहोवा की स्तुतियों का शुभ समाचार सुनाएंगे।<sup>7</sup> केदार की सब भेड़ें तुम्हारे पास इकट्ठी होंगी, नेबायोत के मेढ़े तुम्हारी सेवा करेंगे; वे मेरी वेदी पर स्तीकृति के साथ चढ़ेंगे, और मैं अपने महिमामय धर को महिमा दूंगा।<sup>8</sup> ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़ते हैं और खिड़कियों की ओर कबूलों की तरह?<sup>9</sup> निश्चित रूप से तटीय प्रदेश मेरी प्रतीक्षा करेंगे; और तरशीश के जहाज पहले आएंगे, तुम्हारे पुत्रों को दूर से लाने के लिए, उनके साथ उनकी चाँदी और सोना, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के नाम के लिए और इसाएल के पवित्रि के लिए क्योंकि उसने तुम्हें महिमा दी है।<sup>10</sup> विदेशी तुम्हारी दीवारें बनाएंगे, और उनके राजा तुम्हारी सेवा करेंगे; क्योंकि मेरे क्रोध में मैंने तुम्हें मारा, और मेरी कृपा में मैंने तुम पर दया की है।<sup>11</sup> तुम्हारे फाटक सदा खुले रहेंगे; वे दिन या रात बंद नहीं होंगे, ताकि लोग तुम्हारे पास राष्ट्रों की संपत्ति ला सकें, उनके राजा जुलूस में लाए जाएं।<sup>12</sup> क्योंकि जो कोई राष्ट्र और राज्य तुम्हारी सेवा नहीं करेगा वह नष्ट हो जाएगा, और राष्ट्र पूरी तरह से बर्बाद हो जाएंगे।<sup>13</sup> लेबनान की महिमा तुम्हारे पास आएगी, जुनिपर, एत्म वृक्ष, और देवदार एक साथ, मेरे पवित्र स्थान को सुंदर बनाने के लिए, और मैं अपने पैरों के स्थान को महिमामय बनाऊंगा।<sup>14</sup> जो तुम्हें सताते थे उनके पुत्र तुम्हारे पास झुककर आएंगे, और जो तुम्हें

## यशायाह

तुच्छ समझते थे वे तुम्हारे पैरों के तलवे पर द्युकेंगे; और वे तुहँसे यहोवा का नगर कहेंगे, इसाएल के पवित्र का सियोन।<sup>15</sup> जहाँ तुम त्यागे गए और धृष्टित थे और कोई तुम्हारे पास से नहीं गुजरता था, मैं तुहँसे सदा के लिए गर्व का विषय बनाऊंगा, पीढ़ी से पीढ़ी तक का आनंद।<sup>16</sup> तुम राश्ट्रों का दृध पियोगे, और राजाओं के स्तन का दृध पियोगे; तब तुम जानोगे कि मैं, यहोवा, तुम्हारा

उद्धारकर्ता हूँ और तुम्हारा छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिशाली।<sup>17</sup> पीतल के बदले मैं सोना लाऊंगा, और लोहे के बदले चैंदी लाऊंगा, और लकड़ी के बदले पीतल, और पट्टरों के बदले लोहा। और मैं शांति को तुम्हारे प्रशासक बनाऊंगा, और धार्मिकता को तुम्हारे निरीक्षक।<sup>18</sup> तुम्हारे देश में फिर से हिंसा नहीं सुनी जाएगी, न तुम्हारी सीमाओं के भीतर विनाश या विघ्वंस; परन्तु तुम अपनी दीवारों को उद्धार करोगे, और अपने फाटकों को स्तुति।<sup>19</sup> अब दिन में तुम्हारे लिए सूर्य प्रकाश नहीं देगा, न चंद्रमा तुहँसे चमक के लिए प्रकाश देगा; परन्तु तुम्हारे पास यहोवा सदा का प्रकाश होगा, और तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी महिमा।<sup>20</sup> तुम्हारा सूर्य फिर से अस्त नहीं होगा, न तुम्हारा चंद्रमा घटेगा; क्योंकि तुम्हारे पास यहोवा सदा का प्रकाश होगा, और तुम्हारे शोक के दिन समाप्त हो जाएगे।<sup>21</sup> तब तुम्हारे सब लोग धर्मी होंगे; वे सदा के लिए भूमि के अधिकारी होंगे, मेरे रोपण की शाखा, मेरे हाथों का कार्य, कि मैं महिमावित होऊँ।<sup>22</sup> सबसे छोटा एक हजार हो जाएगा, और सबसे छोटा एक शक्तिशाली राष्ट्र। मैं, यहोवा, इसे उसके समय में शीघ्रता से लाऊंगा।

**61** प्रभु परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने मुझे अभिषिक्त किया है नन्हे लोगों को शुभ समाचार सुनाने के लिए; उसने मुझे भेजा है टूटे दिलों को बाँधने के लिए, बदियों को रिहाई की धोषणा करने के लिए और कैदियों को खत्मता देने के लिए, २ यहोवा के अनुकूल वर्ष की धोषणा करने के लिए और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन की; सभी शोक करने वालों को सोन्तना देने के लिए, ३ सियोन में शोक करने वालों को देने के लिए, उत्तरे राख के बदले माला देने के लिए, शोक के बदले अनंद का तेल, उदास आत्मा के बदले स्तुति का वस्त्र। ताकि वे धार्मिकता के बलूत कहे जाएँ, यहोवा की रोपाई, कि वह महिमा पाए।<sup>4</sup> तब वे प्राचीन खंडहरों का पुनर्निर्माण करेंगे, वे पूर्व की बलादियों को उठाएँगे; और वे उजड़े हुए नगरों की मरम्मत करेंगे, कई पीढ़ियों की बर्बादियों की।<sup>5</sup> अजननी खड़े होकर तुम्हारे ढुँडों को चराएंगे, और विदेशी तुम्हारे किसान और दाख की बारी के रखवाले होंगे।<sup>6</sup> परन्तु तुम यहोवा का याजक कहलाओगे; तुहँसे हमारे परमेश्वर के सेवक कहा जाएगा।

तुम राश्ट्रों की संपत्ति खाओगे, और उनकी समृद्धि में गर्व करोगे।<sup>7</sup> तुम्हारी लज्जा के बदले तुहँसे दुगना हिस्सा मिलेगा, और अपमान के बदले वे अपनी हिस्सेदारी पर आनंद से चिल्लाएँगे। इसलिए वे अपने देश में दुगना हिस्सा प्राप्त करेंगे, उनकी अनंतकालीन खुशी होगी।<sup>8</sup> क्योंकि मैं, यहोवा, न्याय से प्रेम करता हूँ, मैं होमबलि में चोरी से धृणा करता हूँ; और मैं विश्वासपूर्वक उत्तरे उनका प्रतिफल द्वागा, और उनके साथ एक अनंतकालीन वाचा बनाऊंगा।<sup>9</sup> तब उनके वंशज राश्ट्रों में जाने जाएंगे, और उनकी संतति लोगों में। जो कोई उत्तरे देखा गव हउ उत्तरे पहचानेगा क्योंकि वे वही वंशज हैं जिन्हें यहोवा ने आशीर्वाद दिया है।<sup>10</sup> मैं यहोवा में अत्यधिक अनंदित होऊँगा, मेरी आत्मा मेरे परमेश्वर में प्रसन्न होगी; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्रों से पहना दिया है, उसने मुझे धार्मिकता के वस्त्र से लपेट दिया है, जैसे दूल्हा पगड़ी पहनता है, और जैसे दुल्हन अपने गहनों से सजती है।<sup>11</sup> क्योंकि जैसे पूर्वी अपनी अंकुरित चीजें उत्पन्न करती है, और जैसे एक बगीचा उसमें बोई गई चीजों को उगाने देता है, वैसे ही प्रभु परमेश्वर धार्मिकता और स्तुति को सभी राश्ट्रों के सामने उगाएगा।

**62** सियोन के कारण मैं चुप नहीं रहूँगा, और यरूशलेम के कारण मैं शांत नहीं रहूँगा, जब तक उसकी धार्मिकता उजियाले की तरह न चमके, और उसकी मुक्ति जलती हुई मशाल की तरह न हो।<sup>2</sup> जातियाँ तेरी धार्मिकता को देखेंगी, और सब राजा तेरी महिमा को; और तुझे एक नए नाम से पुकारा जाएगा जो यहोवा के मुख से निर्धारित होगा।<sup>3</sup> तू यहोवा के हाथ में शोभा का मुकुट होगी, और तेरे परमेश्वर के हाथ में राजसी पटका।<sup>4</sup> तुझे अब "त्यागी हुई" नहीं कहा जाएगा, और तेरे देश को अब "उजाड़" नहीं कहा जाएगा; बल्कि तुझे "मुझे उसमें प्रसन्नता है" कहा जाएगा, और तेरे देश को "विवाहित"; क्योंकि यहोवा तुझ में प्रसन्न है, और तेरा देश उसके साथ विवाह करेगा।<sup>5</sup> जैसे एक जवान पुरुष एक कुँगवारी से विवाह करता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुश्श से विवाह करेंगे; और जैसे दूल्हा दुल्हन पर आनंद करता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तुश्श पर आनंद करेगा।<sup>6</sup> तेरी दीवारों पर, यरूशलेम, मैंने पहरेदार नियुक्त किए हैं; वे दिन-रात कभी चुप नहीं रहेंगे। तुम जो यहोवा का नाम लेते हो, अपने लिए विश्राम न लो;<sup>7</sup> और उसे विश्राम न दो जब तक वह स्थापित न करे और यरूशलेम को पृथ्वी पर प्रशंसा का विषय न बना दे।<sup>8</sup> यहोवा ने अपनी दाहिनी भुजा और अपनी शक्तिशाली भुजा की शपथ खाई है: "मैं फिर कभी तेरे अनाज को तेरे शत्रुओं के भोजन के लिए नहीं ढूँगा, और न ही परदेशी तेरी नई दाखमधु को पैद़एंगे जिसके लिए तूने परिश्रम किया है!"<sup>9</sup>

## यशायाह

परन्तु जो उसे काटेंगे वे उसे खाएँगे और यहोवा की स्तुति करेंगे, और जो उसे इकट्ठा करेंगे वे मेरे पवित्रस्थान के आँगनों में उसे पीएँगे।<sup>10</sup> दरवाजों से होकर जाओ, लोगों के लिए रास्ता साफ करो! सड़क को बनाओ, सड़क को बनाओ, पत्तरों को हटा दो, लोगों के ऊपर एक झंडा उठाओ।<sup>11</sup> देखो, यहोवा ने पृथ्वी के अंत तक धोषणा की है: सियोन की बेटी से कहो, “देखो, तेरी मुक्ति आ रही है, देखो, उसका प्रतिफल उसके साथ है, और उसका प्रतिदान उसके समान है।”<sup>12</sup> और उन्हें “पवित्र लोग, यहोवा के द्वारा छुड़ाए गए” कहा जाएगा; और तुझे “खोजी गई, एक नगरी जो नहीं छोड़ी गई” कहा जाएगा।

**63** यह कौन है जो एदोम से आता है, बोजरा से चमकदार वस्त्रों में, यह वह है जो अपने वस्त्रों में महिमान्वित है, अपनी शक्ति की महनता में आगे बढ़ता है? “यह मैं हूँ, जो धार्मिकता में बोलता हूँ, उद्धार करने में सामर्थी।”<sup>2</sup> तरे वस्त्र लाल क्यों हैं, और तरे वस्त्र उस जैसे क्यों हैं जो अगूर के रसकुँड में रौदा है? <sup>3</sup> मैंने अकेले ही अंगूर के रसकुँड को रौदा है, और लोगों में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैंने उन्हें अपने क्रोध में रौदा, और अपने रोष में उन्हें कुचला; और उनके रक्त की बूँदें मेरे वस्त्रों पर छिड़क गई, और मैंने अपने सभी वस्त्रों को दागदार कर दिया।<sup>4</sup> क्योंकि प्रतिशोध का दिन मेरे हृदय में था, और मेरे उद्धार का वर्ष आ गया है।<sup>5</sup> मैंने देखा, पर सहायता करने वाला कोई नहीं था, और मैं चकित था, और कोई सहारा देने वाला नहीं था; इसलिए मेरी अपनी भुजा ने मुझे उद्धार दिया, और मेरे क्रोध ने मुझे संभाला।<sup>6</sup> मैंने अपने क्रोध में लोगों को रौदा और अपने रोष से उन्हें मतवाला किया, और मैंने उनके रक्त को पृथ्वी पर बहा दिया।<sup>7</sup>

<sup>7</sup> मैं यहोवा की दया का उल्लेख करूँगा, और यहोवा की स्तुति करूँगा, उन सभी के अनुसार जो यहोवा ने हमें दिया है, और इसाएल के घराने की ओर उसकी महान खलाई, जो उसने अपनी करुणा के अनुसार उन्हें दी है और अपनी दया की प्रवृत्ताके अनुसार।<sup>8</sup> क्योंकि उसने कहा, “निश्चित रूप से वे मेरे लोग हैं, पुत्र जो कपट नहीं करेंगे।” इसलिए वह उनका उद्धारकर्ता बन गया।<sup>9</sup> उनकी सारी पीड़ा में वह पीड़ित था, और उसकी उपस्थिति का दूत उन्हें बचा लिया; अपने प्रेम और अपनी दया में उसने उन्हें छुड़ाया, और उसने उन्हें उठाया और पुराने दिनों में उन्हें ले चला।<sup>10</sup> परन्तु उन्होंने विद्रोह किया और उसकी पवित्र आत्मा को दुखी किया; इसलिए उसने स्वयं को उनका शत्रु बना लिया, वह उनके विरुद्ध लड़ा।<sup>11</sup> तब उसके लोगों ने पुराने

दिनों को, मूसा के दिनों को स्मरण किया: वह कहाँ है जिसने उन्हें समुद्र से बाहर लाया, अपनी भेड़ों के चरवाहों के साथ? वह कहाँ है जिसने उनकी मध्य में अपनी पवित्र आत्मा रखी,<sup>12</sup> जिसने अपनी महिमामयी भुजा को मूसा के दालिने हाथ पर चलाया, जिसने उनके सामने जल को विभाजित किया ताकि अपने लिए एक शाश्वत नाम बना सके,<sup>13</sup> जिसने उन्हें गहराईयों से पार कराया? जैसे जंगल में घोड़ा, वे नहीं ठोकर खाए;<sup>14</sup> जैसे घाटी में उतरने वाली गायें, यहोवा की आत्मा ने उन्हें विश्राम दिया। इस प्रकार तूने अपने लोगों का नेतृत्व किया, अपने लिए एक महिमामयी नाम बनाने के लिए।

<sup>15</sup> स्वर्ग से नीचे देख और अपनी पवित्र और महिमामयी ऊँची निवास से देख; तेरा उत्थाह और तेरे सामर्थ्य के कार्य कहाँ हैं? तेरे हृदय की उत्तेजनाएँ और तेरी करुणा मुझ पर रोक दी गई हैं।<sup>16</sup> क्योंकि तू हमारा पिता है, यद्यपि अब्राहम हमें नहीं जानता और इसाएल हमें नहीं पहचानता। तू यहोवा, हमारा पिता है, प्राचीन काल से हमारा उद्धारकर्ता तेरा नाम है।<sup>17</sup> हे यहोवा, तू क्यों हमें अपनी राहों से भटकाता है और तुझसे डरने से हमारे हृदय को कठीर करता है? अपने सेवकों के लिए लौट आ, तेरी विरासत की जनजातियों के लिए।<sup>18</sup> तेरे पवित्र लोगों ने थोड़े समय के लिए तेरे पवित्र स्थान का अधिकार किया, हमारे विरोधियों ने उसे रौद डाला है।<sup>19</sup> हम उन लोगों के समान हो गए हैं जिन पर तूने कभी शासन नहीं किया, उनके समान जो तेरे नाम से नहीं बुलाए गए।

**64** अरे, कि आप आकाश को फाढ़कर नीचे उतरें, कि पहाड़ आपके उपस्थित होने पर कांप उठें—<sup>2</sup> जैसे आग झाङ-झंखाड़ को जलाती है, जैसे आग पानी को उबालती है— ताकि आप अपने विरोधियों को अपना नाम जार कराएं, ताकि राष्ट्र आपके उपस्थित होने पर कांप उठें।<sup>3</sup> जब आपने अद्भुत कार्य किए जिन्हें हम नहीं जानते थे, आप नीचे उतरे, पहाड़ आपके उपस्थित होने पर कांप उठे।<sup>4</sup> क्योंकि प्राचीन काल से उन्होंने न तो सुना है और न ही कानों से समझा है, और न ही किसी ने आप के अलावा कोई और ईश्वर देखा है, जो उसके लिए कार्य करता है जो उसकी प्रतीक्षा करता है।<sup>5</sup> आप उससे मिलते हैं जो धर्म में आनंदित होता है, जो आपके मार्गों में आपको याद करता है। देखो, आप ग्रोधित थे, क्योंकि हमने पाप किया, हमने लंबे समय तक अपने पापों में बने रहे; फिर भी क्या हम बचेंगे?<sup>6</sup> क्योंकि हम सब एक अशुद्ध व्यक्ति के समान हो गए हैं, और हमारी सारी धार्मिकता के कार्य एक गंदे वस्त्र के समान हैं; और हम सब एक पत्ते की तरह मुरझा जाते हैं,

## यशायाह

और हमारी बुराइयाँ, जैसे हवा, हमें उड़ा ले जाती हैं।<sup>7</sup> कोई नहीं है जो आपके नाम को पुकारता है, जो आपको पकड़ने के लिए स्वयं को उत्तेजित करता है; क्योंकि आपने हमसे अपना मुख छिपा लिया है और हमें हमारी बुराइयों की शक्ति के अधीन कर दिया है।<sup>8</sup> परंतु अब, प्रभु, आप हमारे पिता हैं; हम मिट्टी हैं, और आप हमारे कुम्हार हैं, और हम सब आपके हाथ की कृति हैं।<sup>9</sup> अत्यधिक क्रोधित न हों, प्रभु, और न ही हमेशा के लिए बुराई को याद रखें। दोखेएं, कृपया देखें, हम सब आपके लोग हैं।<sup>10</sup> आपके पवित्र नगर एक जंगल बन गए हैं, सिथ्योन एक जंगल बन गया है, येरूशलैम एक उजाड़ बन गया है।<sup>11</sup> हमारा पवित्र और सुंदर धर, जहाँ हमारे पिताओं ने आपकी स्तुति की, आग से जल गया है; और हमारी सारी कीमती चीजें खंडहर हो गई हैं।<sup>12</sup> क्या आप इन बातों पर स्वयं को रोकेंगे, प्रभु? क्या आप चुप रहेंगे और हमें अत्यधिक पीड़ा देंगे?

**65** “मैंने अपने आपको उन लोगों के द्वारा खोजे जाने की अनुमति दी जो मुझसे नहीं पूछते थे; मैंने अपने आपको उन लोगों के द्वारा पाए जाने की अनुमति दी जो मुझे नहीं खोजते थे। मैंने कहा, ‘यहाँ मैं हूँ, यहाँ मैं हूँ’। उस राष्ट्र से जो मेरे नाम को नहीं पुकारता था।<sup>1</sup> मैंने अपने हाथों को दिन भर एक विप्रोली लोगों की ओर फैलाया, जो उस मार्ग पर चलते हैं जो अच्छा नहीं है, अपनी ही सोच का अनुसरण करते हुए,<sup>2</sup> एक ऐसा लोग जो निरंतर मेरे सामने मुझे उकसाते हैं, बागों में बलिदान चढ़ाते हैं और इंटों पर धूप जलाते हैं;<sup>4</sup> जो कड़ों के बीच बैठते हैं और गुप्त स्थानों में रात बिताते हैं; जो सूर का मांस खाते हैं, और उनके बर्तनों में अशुद्ध मांस का शोरबा होता है।<sup>5</sup> जो कहते हैं, ‘अपने आप को दूर रखो, मेरे पास मत आओ,’ क्योंकि मैं तुमसे पवित्र हूँ। ये मेरे नधुनों में धूआँ हैं, एक आग जो दिन भर जलती रहती है।<sup>6</sup> देखो, यह मेरे सामने रिखा है, मैं चुप नहीं रहूँगा, बल्कि मैं प्रतिफल रूँगा, मैं उनके गोद में प्रतिफल रूँगा,<sup>7</sup> तुम्हारे अपने अपराध और तुम्हारे पिताओं के अपराध दोनों को,” प्रभु कहता है।“क्योंकि उन्होंने पहाड़ों पर धूप जलाई और पलाड़ियों पर मेरा अपमान किया, इसलिए मैं उनके पूर्व कार्यों को उनके गोद में मापूँगा।”

<sup>8</sup> यह वही है जो प्रभु कहता है: “जैसे कि नए दाखरस का गुच्छा मैं पाया जाता है, और कोई कहता है, ‘इसे नष्ट मत करो, क्योंकि इसमें लाभ है,’ वैसे ही मैं अपने सेवकों के लिए कार्य करूँगा, ताकि मैं उन सभी को नष्ट न करूँ।<sup>9</sup> मैं याकूब से वंशज उत्पन्न करूँगा, और यहूदा से अपने पहाड़ों का वारिस; मेरे चुने हुए इसे विरासत में लेंगे, और मेरे सेवक वहाँ रहेंगे।<sup>10</sup> शारोन भेड़ों के लिए

चरागाह भूमि होगी, और आखोर की घाटी झुंडों के लिए विश्राम स्थान, उन लोगों के लिए जो मुझे खोजते हैं।<sup>11</sup> परन्तु तुम जो प्रभु को छोड़ देते हो, जो मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य के लिए मेज सजाते हो, और नियति के लिए मिश्रित दाखरस का घड़ा भरते हो,<sup>12</sup> मैं तुम्हें तलवार के लिए नियत करूँगा, और तुम सब वध के लिए ज़ुक जाओगे। क्योंकि मैंने बुलाया, परन्तु तुमने उत्तर नहीं दिया; मैंने कहा, परन्तु तुमने नहीं सुना। इसके बजाय, तुमने मेरी दृष्टि में बुरा किया और वह चुना जिसमें मुझे प्रसन्नता नहीं थी।”

<sup>13</sup> इसलिए, यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है: “देखो, मेरे सेवक खाएँगे, परन्तु तुम भूखे रहोगे। देखो, मेरे सेवक पीएँगे, परन्तु तुम घासे रहोगे। देखो, मेरे सेवक आनन्दित होंगे, परन्तु तुम लजित होंगे।<sup>14</sup> देखो, मेरे सेवक हर्षित हृदय से जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम भारी हृदय से रोओगे, और तुम टूटे हुए आमा से विलाप करेंगे।<sup>15</sup> तुम अपने नाम को मेरे चुने हुए लोगों के लिए शाप के रूप में छोड़ दोगे, और प्रभु परमेश्वर तुम्हें मृत्यु देगा। परन्तु मेरे सेवकों को एक और नाम से बुलाया जाएगा।<sup>16</sup> क्योंकि जो पृथ्वी पर आशीर्वादित होगा वह सत्य के परमेश्वर के द्वारा आशीर्वादित होगा; और जो पृथ्वी पर शपथ लेगा वह सत्य के परमेश्वर के द्वारा शपथ लेगा; क्योंकि पूर्व की परेशानियाँ भुला दी गई हैं, और क्योंकि वे मेरी दृष्टि से छिपी हैं।

<sup>17</sup> “क्योंकि देखो, मैं नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि करता हूँ; और पूर्व की बातें न तो याद की जाएँगी और न ही मन में आएँगी।<sup>18</sup> परन्तु जो मैं सृजन करता हूँ उसमें सदा के लिए आनन्दित और हर्षित रहोंगे; क्योंकि देखो, मैं येरूशलैम को हर्ष के लिए सृजन करता हूँ और उसके लोगों को प्रसन्नता के लिए।<sup>19</sup> मैं येरूशलैम में भी हर्षित रहूँगा और अपने लोगों में आनन्दित रहूँगा; और उसमें अब और न तो रोने की आवाज सुनी जाएगी और न ही रोने की धन्वन्ति।<sup>20</sup> अब उसमें कोई शिशु नहीं होगा जो केवल कुछ दिन जीता है, या कोई वृद्ध व्यक्ति जो अपने दिन पूरे नहीं करता; क्योंकि युवा सौ वर्ष की आयु में मरेगा, और जो सौ वर्ष की आयु तक नहीं पहुँचता वह शापित माना जाएगा।<sup>21</sup> वे धर बनाएँगे और उनमें निवास करेंगे; वे अंगू के बाग भी लगाएँगे और उनके फल खाएँगे।<sup>22</sup> वे नहीं बनाएँगे और कोई और निवास करेगा, वे नहीं लगाएँगे और कोई और खाएगा; क्योंकि जैसे एक वृक्ष का जीवनकाल होता है, वैसे ही मेरे लोगों के दिन होंगे, और मेरे चुने हुए अपने हाथों के कार्य का पूरा आनंद लेंगे।<sup>23</sup> वे व्यर्थ परिश्रम नहीं करेंगे, या आपदा के लिए बच्चों को जन्म नहीं देंगे; क्योंकि वे उन

## यशायाह

लोगों के वंशज हैं जिन्हें प्रभु ने आशीर्वादित किया है, और उनके वंशज उनके साथ।<sup>24</sup> यह भी होगा कि उनके बुलाने से पहले, मैं उत्तर दूँगा; जब वे अभी भी बोल रहे होंगे, मैं सुनूँगा।<sup>25</sup> भेड़िया और मेमना एक साथ चरेंगे, और सिंह बैल की तरह भूसा खाएगा; और साँप का भोजन मिट्ठी होगा। वे मेरे पवित्र पर्वत पर कोई बुराई नहीं करेंगे और न ही हानि पहुँचाएँगे,” प्रभु कहता है।

**66** यहोवा यों कहता है: “स्वर्ग मेरा सिंहासन है और पृथ्वी मेरे पाँवों की चौकी है। पिर तुम मेरे लिए कौन सा घर बना सकते हो? और कहाँ है वह स्थान जहाँ मैं विश्राम कर सकूँ? <sup>2</sup> क्योंकि मेरे हाथ ने इन सब चीजों को बनाया है, इसलिए ये सब चीजें अस्तित्व में आईं,” यहोवा की घोषणा है। “पर मैं इस पर दृष्टि करूँगा, उस पर जो विनम्र और आमा मैं पश्चातपी है, और जो मेरे वन से काँपता है।<sup>3</sup> परन्तु जो बैल का बलिदान करता है वह उस व्यक्ति के समान है जो मनुष्य को मारता है; जो मेरने का बलिदान करता है वह उस व्यक्ति के समान है जो कुत्ते की गर्दन तोड़ता है; जो अन्न बलिदान चढ़ाता है वह उस व्यक्ति के समान है जो सूअर का रक्त चढ़ाता है; जो धूप जलाता है वह उस व्यक्ति के समान है जो मूर्ति को आशीर्वाद देता है। जैसा उन्होंने अपने मार्ग चुने हैं, और उनकी आत्माएँ उनकी धृषित वस्तुओं में प्रसन्न होती हैं, <sup>4</sup> इसलिए मैं उनके दंड चुनूँगा और उन पर वह लाऊँगा जिससे वे डरते हैं। क्योंकि मैंने बुलाया, पर किसी ने उत्तर नहीं दिया; मैंने बोला, पर उन्होंने नहीं सुना। इसके बजाय, उन्होंने मेरी दृष्टि में बुरा किया और वह चुना जिसमें मुझे प्रसन्नता नहीं थी।”

५ यहोवा का वन सुनो, तुम जो उसके वन से काँपते हो: “तुम्हारे भाई जो तुमसे धृणा करते हैं, जो मेरे नाम के कारण तुम्हें बाहर निकालते हैं, उन्होंने कहा, ‘यहोवा की महिमा हो, ताकि हम तुम्हारी खुशी देख सकें।’ परन्तु वे लजित होंगे।<sup>6</sup> नगर से एक कोलाहल की आवाज़, मंदिर से एक आवाज़, यहोवा की आवाज़ जो अपने शरुओं को प्रतिशोध दे रही है।<sup>7</sup> जन्म पीड़ा से पहले, उसने जन्म दिया; उसके दर्द आने से पहले, उसने एक लड़के को जन्म दिया।<sup>8</sup> किसने ऐसी चीजें देखी हैं? क्या एक दिन में एक देश का जन्म हो सकता है? क्या एक बार मैं एक राष्ट्र को जन्म दिया जा सकता है? जैसे ही सियोन को प्रसव पीड़ा हुई, उसने अपने पुत्रों को जन्म दिया।<sup>9</sup> क्या मैं जन्म के बिंदु तक लाऊँगा पर जन्म नहीं दूँगा?” यहोवा कहता है। “या क्या मैं जो जन्म देता हूँ गर्भ को बंद कर दूँगा?” तुम्हारा परमेश्वर कहता है।

<sup>10</sup> यरूशलेम के साथ आनन्दित हो और उसके लिए हर्षित हो, तुम सब जो उससे प्रेम करते हो; उसके साथ अत्यधिक प्रसन्न हो, तुम सब जो उसके लिए विलाप करते हो,<sup>11</sup> ताकि तुम उसके सांत्वना देने वाले स्तनों से दूध पी सको और संतुष्ट हो सको, ताकि तुम उसके भरपूर स्तनों से पूरी तरह पी सको और प्रसन्न हो सको।<sup>12</sup> क्योंकि यहोवा यों कहता है: “देखो, मैं उसकी ओर शांति को नदी की तरह बढ़ाऊँगा, और राष्ट्रों की महिमा को एक उफनती धारा की तरह; और तुम दूध पियोगे, तुम कल्पे पर उठाए जाओगे और घटनों पर झुलाए जाओगे।<sup>13</sup> जैसे एक माँ अपने बच्चे को सांत्वना देती है, वैसे ही मैं तुम्हें सांत्वना दूँगा; और तुम यरूशलेम में सांत्वना पाओगे।”<sup>14</sup> तब तुम इसे देखोगे, और तुम्हारा हृदय प्रसन्न होगा, और तुम्हारी हृदियाँ नई धास की तरह फलेंगी; और यहोवा का हाथ उसके सेवकों पर प्रकट होगा, परन्तु वह अपने शत्रुओं पर क्रोधित होगा।

<sup>15</sup> क्योंकि देखो, यहोवा आग में आएगा, और उसके रथ बंडर की तरह, अपने क्रोध को क्रोध के साथ प्रकट करने के लिए, और अपनी फटकार को अग्नि की लपटों के साथ।<sup>16</sup> क्योंकि यहोवा आग के द्वारा न्याय करेगा और अपनी ललाचर से मानवता पर, और यहोवा द्वारा मारे गए बहुत होंगे।<sup>17</sup> “जो लोग अपने आप को पवित्र और शुद्ध करते हैं बारों में जाने के लिए, मध्य में एक का अनुसरण करते हुए, जो सूअर का मांस, धृषित वस्तुएँ, और चूहे खाते हैं, वे सभी समाप्त हो जाएँगे,” यहोवा की घोषणा है।

<sup>18</sup> “क्योंकि मैं उनके कार्यों और उनके विचारों को जानता हूँ; समय आ रहा है सभी राष्ट्रों और भाषाओं को इकट्ठा करने का। और वे आऐंगे और मेरी महिमा देखेंगे।<sup>19</sup> और मैं उनके बीच एक विन्द रखूँगा और उनसे बचे हुए लोगों को राष्ट्रों में भेजूँगा। तरशीरा, पूरा, लुद, मेशेक, त्वाल, और यावान; दूर के तरीं तक जिह्वोंने न तो मेरी प्रसिद्धि सुनी है और न ही मेरी महिमा देखी है। और वे राष्ट्रों में मेरी महिमा की घोषणा करेंगे।<sup>20</sup> तब वे तुम्हारे सभी देशवासियों को सभी राष्ट्रों से एक अन्न बलिदान के रूप में यहोवा के पास लाएँ, घोड़ों पर, रथों में, पालकियों में, खच्चरों पर, और ऊँटों पर, मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम में,” यहोवा कहता है, “जैसे इसाएल के पुत्र अपने अन्न बलिदान को एक सच्च पात्र में यहोवा के घर में लाते हैं।<sup>21</sup> मैं उनमें से कुछ को याजक और लेती भी बनाऊँगा,” यहोवा कहता है।<sup>22</sup> “जैसे नए आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाता हूँ, मेरे सामने स्थिर रहेंगे,” यहोवा की घोषणा है, “वैसे ही तुम्हारे वंशज और तुम्हारा नाम स्थिर रहेगा।<sup>23</sup> और यह होगा

## यशायाह

कि नए चाँद से नए चाँद तक और सब्त से सब्त तक,  
सारी मानवता मेरे सामने झुकेगी," यहोवा कहता है।<sup>24</sup>  
"तब वे बाहर जाकर उन लोगों की लाशों को देखेंगे  
जिन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है। क्योंकि उनका  
कीड़ा नहीं मरेगा और उनकी आग बुझाई नहीं जाएगी;  
और वे सारी मानवता के लिए धृणास्पद होंगे।"

## पिरमयाह

**1** हित्कियाह के पुत्र पिरमयाह के वचन, जो अनातोथ में, बिन्यामीन के देश में, याजकों में से एक था।<sup>2</sup> जिसके पास यहोवा का वचन यहूदा के राजा आमोन के पुत्र योशियाह के दिनों में, उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में आया।<sup>3</sup> यह योशियाह के पुत्र यहूदा के राजा

यहोयाकीम के दिनों में भी आया, और योशियाह के पुत्र यहूदा के राजा सिदकियाह के खारहवें वर्ष के अंत तक, जब यरूशलेम निवासिन में चला गया, पांचवें महीने तक।

<sup>4</sup> अब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>5</sup> “मैंने तुझे गर्भ में रचने से पहले ही जन लिया, और तेरे जन्म से पहले ही मैंने तुझे पवित्र कर दिया; मैंने तुझे जातियों के लिए नवी ठहराया है।”<sup>6</sup> तब मैंने कहा, “हे प्रभु यहोवा! देख, मैं बोलना नहीं जानता, क्योंकि मैं युवा हूँ।”<sup>7</sup> परन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, “यह मत कह, मैं युवा हूँ; क्योंकि जहाँ कहीं मैं तुझे भेजूँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा हूँ, तू वही बोलेगा।”<sup>8</sup> उनसे मत डर, क्योंकि मैं तुझे बचाने के लिए तेरे साथ हूँ।<sup>9</sup> यहोवा की यह वाणी है।<sup>10</sup> तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे मुँह को कूआ, और यहोवा ने मुझसे कहा, “देख, मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं।”<sup>11</sup> देख, मैंने आज तुझे जातियों और राज्यों के ऊपर नियुक्त किया है,

उखाड़ने और गिराने के लिए, नष्ट करने और उलटने के लिए, बनाने और लगाने के लिए।<sup>12</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, “पिरमयाह, तू क्या देखता है?” और मैंने कहा, “मैं बादाम के पेड़ की एक शाखा देखता हूँ।”<sup>13</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, “तूने अच्छा देखा है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए देख रहा हूँ।”<sup>14</sup> और यहोवा का वचन दूसरी बार मेरे पास आया, यह कहते हुए, “तू क्या देखता है?” और मैंने कहा, “मैं एक उबलता हुआ बर्तन देखता हूँ, जो उत्तर की ओर से झुका हुआ है।”<sup>15</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, “उत्तर से इस देश के सब निवासियों पर विपत्ति टूट पड़ेगी।”<sup>16</sup> क्योंकि देख, मैं उत्तर के राज्यों के सब परिवारों को बुला रहा हूँ।<sup>17</sup> यहोवा की यह वाणी है: “और वे आएंगे और यरूशलेम के फाटकों के प्रवेश द्वार पर अपना-अपना सिंहासन स्थापित करेंगे, और उसके बारों और की सब दीवारों के विरुद्ध, और यहूदा के सब नारों के विरुद्ध।”<sup>18</sup> और मैं उनके विरुद्ध अपने न्यायों की घोषित करूँगा उनकी सारी दुष्टा के कारण, क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया और अन्य देवताओं को बलिदान चढ़ाया, और अपने ही हाथों के कामों की पूजा की।<sup>19</sup> अब, अपनी कमर कस और उठ, और उनसे वह सब बोल जो मैं तुझे आज्ञा देता हूँ। उनसे मत डर, नहीं तो मैं तुझे उनके सामने भयभीत कर दूंगा।<sup>20</sup> अब देख, मैंने आज तुझे एक वृद्ध नगर के समान बनाया है, और लोहे के खंभे और कांस्य की दीवारों के समान पूरे देश के

विरुद्ध, यहूदा के राजाओं, उसके नेताओं, उसके याजकों, और देश के लोगों के विरुद्ध।<sup>21</sup> और वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने के लिए तेरे साथ हूँ।” यहोवा की यह वाणी है।

**2** अब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, “जाओ और यस्शलेम के कानों में प्रचार करो, यह कहते हुए, यहोवा यह कहता है: मैं तुम्हारी जवानी की भवित्व को याद करता हूँ, तुम्हारे प्रेम को जब तुम एक दुल्हन थीं, तुम्हारा मेरे पीछे जंगल में चलना, एक ऐसी भूमि के माध्यम से जो बोई नहीं गई थी।”<sup>22</sup> इसाएल यहोवा के लिए पवित्र था, उसकी फसल का पहला। जो कोई इसे खाता था वह दोषी ही जाता था; उन पर बुराई आई, यहोवा की घोषणा है।<sup>23</sup> याकूब के घराने का वचन सुनो, और इसाएल के घराने के सभी परिवारों का।<sup>24</sup> यहोवा यह कहता है: “तुम्हारे पिताओं ने मुझसे क्या अन्याय पाया, कि वे मुझसे दूर चले गए और व्यर्थता के पीछे चले और खाली ही गए? उन्होंने नहीं कहा, यहोवा कहाँ है जो हमें मिस्र देश से उत्पर लाया, जो हमें जंगल में ले गया, रेगिस्तानों और गङ्गों की भूमि के माध्यम से, सूखे और गहरे अंधकार की भूमि के माध्यम से, एक ऐसी भूमि जिसमें कोई नहीं गुजरा और जहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहता था?”<sup>25</sup> मैं तुम्हें उपजाऊ भूमि में लाया उसके फल और उसकी अच्छी चीज़े खाने के लिए। लेकिन तुम आए और मेरी भूमि को अपवित्र किया, और मेरी विरासत को एक पृथग बना दिया।<sup>26</sup> याजकों ने नहीं कहा, “यहोवा कहाँ है?” और जो व्यक्ता को संभालते थे उन्होंने मुझे नहीं जाना; शासक भी मेरे खिलाफ विद्रोह कर गए, और भविष्यद्वक्ताओं ने बाल के द्वारा भविष्यावाणी की और उन चीजों के पीछे चले जो किसी लाभ की नहीं थीं।<sup>27</sup> इसलिए मैं अब भी तुम्हारे साथ विवाद करूँगा, यहोवा की घोषणा है, “और मैं तुम्हारे पुत्रों के पुत्रों के साथ विवाद करूँगा।”<sup>28</sup> कित्तीम के तरों पर जाओ और देखो, और केदार को भेजो और ध्यान से देखो, और देखो क्या ऐसा कुछ हुआ है।<sup>29</sup> क्या किसी राष्ट्र ने अपने देवताओं को बदला है, हालांकि वे देवता नहीं थे? लेकिन मेरे लोगों ने अपनी महिमा को उसके लिए बदल दिया जो किसी लाभ का नहीं है।<sup>30</sup> इस पर चकित हो जाओ, हे आकाश, और कांप उठो, बहुत ही उजाड़ हो जाओ,” यहोवा की घोषणा है।<sup>31</sup> “क्योंकि मेरे लोगों ने दो बुराइयाँ की हैं: उन्होंने मुझे छोड़ दिया है, जीवित जल का स्रोत, अपने लिए हौद खोदने के लिए, टूटे हुए हौद जो पानी नहीं रखते।”<sup>32</sup> क्या इसाएल एक दास है? या वह घर में जन्मा सेवक है? वह लूट क्यों बन गया है?<sup>33</sup> युवा सिंहों ने उस पर गर्जना की है, उन्होंने जोर से गर्जना की है। और उन्होंने उसकी भूमि

## पर्मयाह

को उजाड़ बना दिया है; उसके नगर नष्ट हो गए हैं, बिना निवासी के।<sup>16</sup> मेम्फिस और ताहपनेस के लोग भी तुम्हारे सिर का मुकुट मुंडा दिया है।<sup>17</sup> क्या तुमने यह अपने आप नहीं किया अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़कर जब वह तुम्हें मार्ग में ले गया? <sup>18</sup> लेकिन अब, तुम मिस के मार्ग पर क्या कर रहे हो, नील के जल पीने के लिए? या तुम अश्शूर के मार्ग पर क्या कर रहे हो, फरात के जल पीने के लिए? <sup>19</sup> तुम्हारी अपनी दुष्टता तुम्हें दंड देगी, और तुम्हारी अविश्वास तुम्हें फटकारेगी; इसलिए जान लो और देखो कि यह बुरा और कड़वा है तुम्हारे लिए अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ना, और मेरा भय तुममें नहीं है"; सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की धोषणा है।<sup>20</sup> "क्योंकि बहुत पहले मैंने तुम्हारा जूआ तोड़ा और तुम्हारे बंधन फाड़ दिए; लेकिन तुमने कहा, 'मैं सेवा नहीं करूँगा!' क्योंकि हर ऊँची पाहाड़ी पर और हर हरी-भरी वृक्ष के नीचे तुम एक वेश्या के रूप में लेट गए हो।<sup>21</sup> फिर भी मैंने तुम्हें एक चुनी हुई बेल के रूप में लगाया, एक पूरी तरह से विश्वसायोग्य बीज। फिर तुमने अपने आप को मेरे सामने एक विदेशी बेल की पतित शाखाओं में कैसे बदल लिया? <sup>22</sup> यद्यपि तुम अपने आप को सोडा से थोंथो हो और बहुत साबुन का उपयोग करते हो, तुम्हारे अपराध का दाग मेरे सामने है," परमेश्वर यहोवा की धोषणा है।<sup>23</sup> "तुम कैसे कह सकते हो, मैं अपवित्र नहीं हूँ, मैं बालों के पिछे नहीं गया हूँ?" घाटी में अपने मार्ग को देखो! जान लो तुमने क्या किया है तुम एक तेज युवा ऊँटी हो जो बिना उद्देश्य के दौड़ रही है,<sup>24</sup> एक जंगली गधी जो जंगल की आदी है, जो अपनी कामुकता में हवा का सूंघती है। मिलने के मौसम में कौन उस दूर कर सकत है? जो कोई उसे खोजेगा वह थकेगा नहीं; उसके महीने में वे उसे पाएंगे।<sup>25</sup> अपने पैरों को नंगे हाने से बचाओ, और अपने गले को प्यास से। लेकिन तुमने कहा, यह निराशाजनक है! नहीं! क्योंकि मैंने परायां से प्रेम किया है, और मैं उनके पीछे चलूँगा।<sup>26</sup> जैसे चोर को पकड़े जाने पर शर्म आती है, वैसे ही इसाएल के घराने को शर्म आती है; वे, उनके राजा, उनके नेता, और उनके याजक और उनके भविष्यद्वक्ता,<sup>27</sup> जो एक पेड़ से कहते हैं, "तुम मेरे पिता हो"; और एक पत्थर से, "तुमने मुझे जन्म दिया।" क्योंकि उन्होंने मुझसे पीठ मोड़ ली है, और अपना चेहरा नहीं; लेकिन उनके संकट के समय वे कहेंगे, "उठो और हमें बचाओ!"<sup>28</sup> लेकिन तुम्हारे देवता कहाँ हैं जो तुमने अपने लिए बनाए? उन्हें उनने दो, यदि वे तुम्हें बचा सकते हैं तुम्हारे संकट के समय में; क्योंकि तुम्हारे देवता तुम्हारे नगरों के समान हैं, यहूदा।<sup>29</sup> तुम मुझसे क्यों विवाद करते हो? तुम सबने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है," यहोवा की धोषणा है।<sup>30</sup> "व्यर्थ में मैंने तुम्हारे पुत्रों को

मारा; उन्होंने अनुशासन को स्वीकार नहीं किया। तुम्हारी तलवार ने तुम्हारे भविष्यद्वक्ताओं को खा लिया है जैसे एक विनाशकारी सिंह।<sup>31</sup> तुम पीढ़ी, यहोवा के वचन को देखो। क्या मैं इसाएल के लिए एक जंगल रहा हूँ, या गहरे अंधकार की भूमि? मेरे लोग क्यों कहते हैं, हम स्वतंत्र हैं धूमसे के लिए; हम अब तुम्हारे पास नहीं आएंगे?<sup>32</sup> क्या एक कुमारी अपनी आधूषण भूल सकती है, या एक दुल्हन अपनी पोशाक? फिर भी मेरे लोग मुझे भूल गए हैं असंख्य दिनों तक।<sup>33</sup> तुम अपने मार्ग को कितना अच्छी तरह से तैयार करते हो प्रेम की खोज करने के लिए। इसलिए यहाँ तक कि दुष्ट स्त्रियाँ भी तुमने अपने मार्ग सिखाए हैं।<sup>34</sup> तुम्हारे कपड़ों पर भी पाया जाता है निर्दोष गरीबों का रक्त; तुमने उन्हें चोरी करते हुए नहीं पाया। लेकिन इन सब वीजों के बावजूद,<sup>35</sup> तुमने कहा, मैं निर्दोष हूँ; निश्चित रूप से उसका क्रोध मुझसे दूर हो गया है। देखो, मैं तुम्हारे साथ न्याय में प्रवेश करूँगा क्योंकि तुम कहते हो, मैंने पाप नहीं किया।<sup>36</sup> तुम इन्हाँ क्यों धूमते हो अपने मार्ग को बदलते हुए? इसके अलावा, तुम मिस से शर्मिदा हो जाओगे जैसे तुम अश्शूर से शर्मिदा हुए थे।<sup>37</sup> इस स्थान से भी तुम बाहर जाओगे अपने सिर पर हाथ रखकर; क्योंकि यहोवा ने उन लोगों को अस्वीकार कर दिया है जिन पर तुम भरोसा करते हो, और तुम उनके साथ सफल नहीं होगे।

**3** परमेश्वर कहते हैं, "यदि कोई पति अपनी पती को तलाक दे देता है और वह उससे अलग होकर किसी अन्य पुरुष की ही जाती है, क्या वह फिर से उसके पास लौटेगा? क्या वह भूमि पूरी तरह से अपवित्र नहीं होगी? परन्तु तुम अनेक प्रेमियों के साथ वेश्या हो; फिर भी तुम मेरे पास लौटती हो," प्रभु की यह वाणी है।<sup>2</sup> "अपनी अँखें ऊँचे स्थानों की ओर उठाओ और देखो; तुम कहाँ अपवित्र नहीं हुई हो? तुम उनके लिए मार्गीं पर बैठी थीं जैसे मरुभूमि में कोई अरबी, और तुमने अपनी वेश्यावृति और अपनी दुष्टता से एक भूमि की अपवित्र कर दिया है।<sup>3</sup> इसलिए वर्षा रोक दी गई है, और वसंत की वर्षा नहीं हुई है। फिर भी तुम्हारे माथे पर वेश्या का चिन्ह है; तुम लज्जित होने से इनकार करती हो।<sup>4</sup> क्या तुमने अभी-अभी मुझे नहीं पुकारा, मेरे पिता, तुम मेरे युवावस्था के मित्र हो? <sup>5</sup> क्या वह सदा क्रोधित रहेगा? क्या वह अत तक क्रोधित रहेगा? देखो, तुमने कहा है, और तुमने बुरे काम किए हैं, और तुमने अपनी इच्छा पूरी की है।"<sup>6</sup>

<sup>6</sup> तब प्रभु ने मुझसे राजा योशियाह के दिनों में कहा, "क्या तुमने देखा कि विश्वासघाती इसाएल ने क्या किया?

## पिर्मयाह

वह हर ऊँचे पहाड़ पर और हर हरे पेड़ के नीचे गई,  
और वहाँ वेश्या बनी।<sup>7</sup> और मैंने सोचा, इन सब कामों  
के बाद, वह मेरे पास लौटेगी। परन्तु वह नहीं लौटी, और  
उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा ने इसे देखा।<sup>8</sup> और मैंने  
देखा कि विश्वासघाती इस्साएल के सभी व्यभिचारों के  
लिए, मैंने उसे दूर भेज दिया और उसे तलाक का  
प्रमाणपत्र दिया, फिर भी उसकी विश्वासघाती बहन  
यहूदा ने नहीं ढूँडी; परन्तु वह भी वेश्या बन गई।<sup>9</sup> और  
उसकी वेश्यायाति की लापरवाही के कारण, उसने भूमि  
को अपवित्र कर दिया और परसरों और पेड़ों के साथ  
व्यभिचार किया।<sup>10</sup> फिर भी इन सब के बावजूद,  
उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा ने पूरे दिल से मेरे पास  
नहीं लौटी, बल्कि छल से।<sup>11</sup> प्रभु की यह वाणी है।<sup>12</sup> और  
प्रभु ने मुझसे कहा, "विश्वासघाती इस्साएल ने अपनी  
विश्वासघाती बहन यहूदा से अधिक धर्मी सिद्ध किया है।<sup>13</sup>  
उत्तर की ओर जाकर इन शब्दों की घोषणा करो,  
और कहो, लौट आओ, विश्वासघाती इस्साएल, प्रभु की  
यह वाणी है, मैं तुम पर क्रोधित नहीं रहूँगा।" क्योंकि मैं  
अनुग्रहकारी हूँ, प्रभु की यह वाणी है, मैं सदा क्रोधित  
नहीं रहूँगा।<sup>14</sup> केवल अपनी गलती को स्वीकार करो,  
कि तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह किया  
है और हर हरे पेड़ के नीचे अजनबियों को अपनी कृपा  
दी है, और तुमने मेरी आवाज़ नहीं सुनी। प्रभु की यह  
वाणी है।<sup>15</sup> लौट आओ, तुम विश्वासघाती पुत्रों। प्रभु की  
यह वाणी है, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, और मैं तुम्हें  
एक नगर से और दो परिवार से लूँगा, और तुम्हें सिय्योन  
में लाऊँगा।<sup>16</sup> तब मैं तुम्हें अपने हृदय के अनुसार  
चरवाए दूँगा, जो तुम्हें ज्ञान और समझ देंगे।<sup>17</sup> और उन  
दिनों में जब तुम देश में बढ़ोगे और फलवंत होगे, प्रभु  
की यह वाणी है, वे अब नहीं कहेंगे, प्रभु की वाचा का  
सन्दूक।<sup>18</sup> और यह मन में नहीं आएगा, न वे इसे याद  
करेंगे, न इसे याद करेंगे, न इसे फिर से बनाया जाएगा।  
उस समय वे यरूशलेम को प्रभु का सिंहासन कहेंगे,  
और सभी राष्ट्र उसके पास इकट्ठा होंगे, यरूशलेम में,  
प्रभु के नाम के लिए; और वे अब अपने बुरे दिलों की  
हठधर्मिता के अनुसार नहीं चलेंगे।<sup>19</sup> उन दिनों में यहूदा  
का घर इस्साएल के घर के साथ चलेगा, और वे उत्तर की  
भूमि से एक साथ आएंगे उस भूमि में जो मैंने तुम्हारे  
पितरों को विरासत के रूप में दी थी।

<sup>19</sup> "तब मैंने कहा, मैं तुम्हें अपने पुत्रों के बीच कैसे  
स्थापित करूँ, और तुम्हें एक सुखद भूमि दूँ, राष्ट्रों की  
सबसे सुदूर विरासत।" और मैंने कहा, तुम मुझे पुकारोगे,  
मेरे पिता, और मेरे पिछे चलने से नहीं हटोगे।<sup>20</sup>  
हालांकि, जैसे एक स्त्री विश्वासघात से अपने प्रेमी को  
छोड़ देती है, वैसे ही तुमने मुझसे विश्वासघात किया है,

इस्साएल के घर," प्रभु की यह वाणी है।<sup>21</sup> एक आवाज  
ऊँचे स्थानों पर सुनी जाती है, इस्साएल के पुत्रों का रोना  
और विनती करना। क्योंकि उन्होंने अपनी राह को  
विकृत कर दिया है, उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को  
भूला दिया है।<sup>22</sup> "लौट आओ, तुम विश्वासघाती पुत्रों, मैं  
तुम्हारी विश्वासघात को चंगा करूँगा।" "देखो, हम तुम्हारे  
पास आते हैं, क्योंकि तुम हमारे परमेश्वर यहोवा हो।"<sup>23</sup>  
सचमुच, पहाड़ धोखा है, पहाड़ों पर एक शोरायुल भरी  
भीड़, सचमुच हमारे परमेश्वर यहोवा में इस्साएल की  
मुक्ति है।<sup>24</sup> परन्तु लज्जाजनक वस्तु ने हमारे पितरों के  
श्रम को हमारी युवावस्था से खा लिया है, उनकी भेड़-  
बकरियाँ और उनके बूँड़, उनके पुत्र और उनकी  
पुत्रियाँ।<sup>25</sup> आओ हम अपनी लज्जा में लेट जाएँ, और  
हमारी अपमान हमें ढक दें; क्योंकि हमने अपने परमेश्वर  
यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, हम और हमारे पितरों ने,  
हमारी युवावस्था से लेकर आज तक। और हमने अपने  
परमेश्वर यहोवा की आवाज नहीं सुनी।"

**4** "यदि तुम लौट आओगे, इस्साएल," प्रभु की घोषणा  
है, "तो मेरे पास लौट आओ। और यदि तुम मेरे सामने से  
अपनी धृषित वस्तुओं को दूर करोगे, और डगमगाओगे  
नहीं,<sup>2</sup> और तुम कसम खाओगे, 'जैसे प्रभु जीवित है,'  
सत्य में, न्याय में, और धर्म में; तब राष्ट्र अपने आपको  
उसमें आशीर्वाद देंगे, और उसमें वे गर्व करेंगे।"<sup>3</sup>  
क्योंकि यह वही है जो प्रभु यहूदा के पुरुषों और  
यरूशलेम से कहता है: "अपनी अनुपजाऊ भूमि को  
तोड़ो, और कांटों के बीच मत बोआओ।"<sup>4</sup> प्रभु के लिए  
अपने आप को खतना करो और अपने हृदय की खाल  
को हटा दो, यहूदा के पुरुषों और यरूशलेम के  
निवासियों, ताकि मेरा क्रोध आग की तरह न फैले और  
उसे बुझाने वाला कोई न हो, तुम्हारे कर्मों की बुराई के  
कारण।<sup>5</sup> यहूदा में घोषणा करो और यरूशलेम में  
प्रचार करो, और कहो: "देश में तुम्हीं फूँकों; जोर से  
पुकारो और कहो, इकट्ठा हो जाओ, और चलो किलेबंद  
शहरों में चलें।"<sup>6</sup> सिय्योन की ओर एक झंडा उठाओ!  
शरण लो, स्थिर मत खड़े रहो, क्योंकि मैं उत्तर से बुराई  
ला रहा हूँ, और महान विनाश।<sup>7</sup> एक सिंह अपनी जाङी  
से निकल आया है, और राष्ट्रों का विनाशक निकल पड़ा  
है; वह अपनी जगह से बाहर आया है तुम्हारी भूमि को  
बर्बाद करने के लिए। तुम्हारे शहर खंडहर हो जाएंगे,  
बिना किसी निवासी के।<sup>8</sup> इसके लिए, टाट पहन लो,  
शोक करो और विलाप करो; क्योंकि प्रभु का भयंकर  
क्रोध हमसे दूर नहीं हुआ है।<sup>9</sup> "और उस दिन ऐसा  
होगा," प्रभु की घोषणा है, "कि राजा का हृदय और  
अधिकारियों का हृदय विफल हो जाएगा; और याजक  
विस्ति होंगे और भविष्यद्वक्ता चकित होंगे।"<sup>10</sup> तब मैंने

## पर्मयाह

कहा, "ओह, प्रभु भगवान! निश्चय ही आपने इस लोगों और यरूशलेम को पूरी तरह से धोखा दिया है, यह कहते हुए, 'तुम्हें शांति मिलेगी'; फिर भी तलावर गले को छूती है।"<sup>11</sup> उस समय इस लोगों और यरूशलेम से कहा जाएगा, "जंगल की नंगी ऊँचाइयों से एक जलती हई हवा मेरे लोगों की बेटी की दिशा में— न छानने के लिए और न शुद्ध करने के लिए,<sup>12</sup> इससे भी अधिक शक्तिशाली हवा—मेरे आदेश पर आएगी; अब मैं उनके खिलाफ निर्णय भी सुनाऊंगा।<sup>13</sup> देखो, वह बादलों की तरह ऊपर जाता है, और उसके रथ बरंदर की तरह है; उसके धोड़े उकाब से भी तेज हैं। हाय हम पर, क्योंकि हम बर्बाद हो गए हैं!"<sup>14</sup> अपने हृदय को बुराई से थोंको, यरूशलेम, ताकि तुम बच सको। तुम्हारे दुष्ट विचार कब तक तुम्हें बसे रहेंगे? <sup>15</sup> क्योंकि एक आवाज दान से धोषणा करती है, और ऐप्रैम पर्वत से दुष्टा की धोषणा करती है।<sup>16</sup> "राष्ट्रों को चेतावनी दो: देखो, यरूशलेम पर धोषणा करो, दूर देश से पहरेदार आ रहे हैं, और वे यहूदा के शहरों के खिलाफ अपनी आवाज उठाते हैं।"<sup>17</sup> जैसे खेत के पहरेदार वे उसके चारों ओर हैं, क्योंकि उसने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है," प्रभु की धोषणा है।<sup>18</sup> "तुम्हारे मार्ग और तुम्हारे कर्म तुम पर ये बातें लाए हैं। यह तुम्हारी बुराई है। कितनी कड़वी! यह तुम्हारे हृदय को छू गई है!"

<sup>19</sup> मेरी आत्मा, मेरी आत्मा! मैं पीड़ा में हूँ। ओह, मेरा हृदय! मेरा हृदय मुझमें धड़क रहा है: मैं चूप नहीं हर सकता, क्योंकि तुमने सुना है, मेरी आत्मा, तुरही की आवाज, युद्ध का अलार्म।<sup>20</sup> आपदा पर आपदा की धोषणा की जाती है, क्योंकि पूरी भूमि बर्बाद हो गई है; अचानक मेरे तंबू बर्बाद हो गए हैं, मेरे पर्दे एक पल में।<sup>21</sup> कब तक मुझे झंडा देखना होगा और तुरही की आवाज़ सुननी होगी? <sup>22</sup> "क्योंकि मेरे लोग मूर्ख हैं, वे मुझे नहीं जानते; वे मूर्ख बच्चे हैं और उनमें कोई समझ नहीं है। वे बुराई करने में कुशल हैं, परंतु वे भलाई करना नहीं जानते।"<sup>23</sup> मैंने पृथकी की ओर देखा, और देखो, यह निराकार और श्रूय थी; और आकाश की ओर, और उनमें कोई प्रकाश नहीं था।<sup>24</sup> मैंने पर्वतों की ओर देखा, और देखो, वे कांप रहे थे, और सभी पहाड़ियाँ आगे-पीछे हिल रही थीं।<sup>25</sup> मैंने देखा, और देखो, वहाँ कोई मानव नहीं था, और आकाश के सभी पक्षी उड़ गए थे।<sup>26</sup> मैंने देखा, और देखो, उपजाऊ भूमि एक जंगल थी, और उसके सभी शहर खंडहर हो गए थे प्रभु के समाने, उसके भयकर क्रोध के सामने।<sup>27</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु कहता है: "पूरी भूमि एक उजाड होगी, फिर भी मैं पूरी तरह से विनाश नहीं करूँगा।"<sup>28</sup> इसके लिए पृथकी शोक करेगी, और ऊपर के आकाश अंधकारमय हो

जाएंगे, क्योंकि मैंने कहा है, मैंने उद्देश्य किया है, और मैं अपना मन नहीं बदलूँगा, न ही उससे पीछे हटूँगा।"<sup>29</sup> घुड़सवार और तीरंदाज की आवाज़ पर हर शहर भगता है; वे ज्ञाड़ियों में जाते हैं और चट्ठानों के बीच चढ़ते हैं; हर शहर छोड़ दिया गया है, और उनमें कोई नहीं रहता।<sup>30</sup> और तुम, उजाड एक, तुम क्या करोगे? यद्यपि तुम लाल वस्त पहनते हो, यद्यपि तुम सोने के आभूषणों से सजते हो, यद्यपि तुम अपनी आँखों को श्रृंगार से बढ़ाते हो, व्यर्थ में तुम अपने आप को सुंदर बनाते हो। तुम्हारे प्रेमी तुम्हें तुच्छ समझते हैं, वे तुम्हारा जीवन चाहते हैं।<sup>31</sup> क्योंकि मैंने एक स्त्री की तरह चिल्लाहट सुनी है, जैसे पहली संतान को जन्म देने वाली की पीड़ा, सियोन की बेटी की चिल्लाहट जो सांस के लिए हाँफ रही है। वह अपने हाथ फैलाती है, कहती है, "हाय मुझ पर, क्योंकि मैं हत्यारों के सामने मूर्छित हो रही हूँ।"

**5** यरूशलेम की गलियों में इधर-उधर धूमों, और अब देखो और ध्यान दो, और उसके खुले चौकों में खोजो, यदि तुम एक व्यक्ति पा सकते हो, यदि कोई है जो न्याय करता है, जो ईमानदारी की खोज करता है, तो मैं उसे क्षमा कर दूँगा।<sup>2</sup> और यद्यपि वे कहते हैं, "जैसे प्रभु जीवित है," वे निश्चित रूप से झूटी शापथ लेते हैं।<sup>3</sup> प्रभु क्या आपकी आँखें ईमानदारी की खोज नहीं करती? आपने उहें मारा है, पर वे कमज़ोर नहीं हुए; आपने उहें खा लिया है, पर वे कमज़ोर नहीं हुए; आपने उहें खानकार कर दिया। उन्होंने अपने चेहरे को चट्ठान से बी कठोर बना लिया है; उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया है।<sup>4</sup> तब मैंने कहा, "वे केवल गरीब हैं, वे मूर्ख हैं; क्योंकि वे प्रभु का मार्ग नहीं जानते और न ही अपने परमेश्वर की विधि।"<sup>5</sup> मैं महान लोगों के पास जाऊँगा, और उनसे बात करूँगा, क्योंकि वे प्रभु का मार्ग जानते हैं और अपने परमेश्वर की विधि।<sup>6</sup> परंतु उन्होंने भी एक साथ जुए की तोड़ दिया है और बंधों की तोड़ दिया है।<sup>7</sup> इसलिए जंगल का एक शेर उहें मार डालेगा, मरुभूमि का एक भेड़िया उन्हें नष्ट कर देगा, एक तेंदुआ उनके शहरों की निगरानी कर रहा है। जो कोई उनमें से बाहर जाएगा वह टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा, क्योंकि उनकी गलतियाँ बहुत हैं, उनकी धर्मत्याग की संख्या अधिक है।<sup>8</sup> मैं तुम्हें क्यों क्षमा करूँ? तुम्हारे पुत्रों ने मुझे छोड़ दिया है और उन लोगों की शापथ ली है जो देवता नहीं हैं। जब मैंने उहें पूरी तरह से खिलाया, उन्होंने व्याख्याचर लिया और वेश्या के घर में रुके।<sup>9</sup> वे अच्छी तरह से खिलाए गए कामुक घोड़े थे, प्रलेय अपने पड़ोसी की पत्नी के लिए हिनहिनाता था।<sup>10</sup> क्या मैं इन चीजों के लिए उहें दंडित नहीं करूँगा?" प्रभु की धोषणा है, "और क्या मैं अपने आप से बदला नहीं लूँगा ऐसी एक

## पिरमयाह

जाति पर? <sup>10</sup> उसकी बेल की पंक्तियों के बीच जाओ और नष्ट करो, परंतु पूरी तरह से नष्ट मत करो; उसकी शाखाओं को छीन लो, क्योंकि वे प्रभु की नहीं हैं। <sup>11</sup> क्योंकि इसाएल का घराना और यहूदा का घराना मेरे साथ बहुत विश्वासघात से व्यवहार कर चुके हैं," प्रभु की घोषणा है। <sup>12</sup> उहोंने प्रभु के बारे में झूट बोला है और कहा है, "यह वह नहीं है; हम पर कोई दुर्भाग्य नहीं आएगा, न ही हम तलवार या अकाल देखेंगे।" <sup>13</sup>

भविष्यद्वाक्ता हवा के समान हैं, और उनमें वचन नहीं है। तो यह उनके साथ किया जाएगा।" <sup>14</sup> इसलिए, यह वही है जो सेनाओं का परमेश्वर, प्रभु कहता है: "क्योंकि तुमने यह वचन बोला है, देखो, मैं तुम्हारे मुंह में अपने वचनों को आग बना रहा हूँ, और यह लोग लकड़ी हैं, और यह उन्हें खा जाएगा।" <sup>15</sup> देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ एक राष्ट्र ला रहा हूँ दूर से, इसाएल का घराना," प्रभु की घोषणा है। "यह एक स्थायी राष्ट्र है, यह एक प्राचीन राष्ट्र है, एक राष्ट्र जिसकी भाषा तुम नहीं जानते, न ही तुम समझ सकते हो कि वे क्या कहते हैं।" <sup>16</sup> उनका तरकार एक खुली कब्र के समान है, उनमें से सभी योद्धा हैं। <sup>17</sup> वे तुम्हारी फसल और तुम्हारा भोजन खा जाएंगे; वे तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को खा जाएंगे; वे तुम्हारी भेड़ों और तुम्हारी गायों को खा जाएंगे; वे तुम्हारी बेलों और तुम्हारी अंजीर के पेड़ों को खा जाएंगे; वे तुम्हारे किलेबंद शहरों को तलवार से नष्ट कर देंगे जिन पर तुम भरोसा करते हो। <sup>18</sup> फिर भी उन दिनों में भी," प्रभु की घोषणा है, "मैं तुम्हें पूरी तरह से नष्ट नहीं करूँगा।" <sup>19</sup> और यह तब होगा जब लोग कहेंगे, "प्रभु हमारे परमेश्वर ने हमसे ये सब बातें क्यों की हैं?" तब तुम उनसे कहोगे, जैसे तुमने मुझे छोड़ दिया है और अपनी भूमि में विदेशी देवताओं की सेवा की है, वैसे ही तुम एक ऐसी भूमि में अजनबियों की सेवा करागे जो तुम्हारी नहीं है।"

<sup>20</sup> यह याकूब के धर में घोषित करो और यहूदा में इसे घोषित करो, कहते हुए, <sup>21</sup> 'अब यह सुगे, तुम मूर्ख और संवेदनहीन लोग, जिनकी अँखें हैं पर वे नहीं देखते, जिनके कान हैं पर वे नहीं सुनते।' <sup>22</sup> क्या तुम मुझसे नहीं डरते? प्रभु की घोषणा है। क्या तुम मेरे सामने नहीं कांपते? क्योंकि मैंने समृद्ध के लिए रेत को एक सीमा के रूप में रखा है, एक अनन्त सीमा, और यह उसे पार नहीं करेगा। यद्यपि लहरें उछलती हैं, वे सफल नहीं हो सकतीं; यद्यपि वे गर्जना करती हैं, वे उसे पार नहीं कर सकतीं। <sup>23</sup> परंतु इस लोगों का हठीला और विद्रोही हृदय है; उहोंने मुड़कर अलग हो गए हैं। <sup>24</sup> वे अपने हृदय में नहीं कहते, आओ अब हम अपने परमेश्वर प्रभु का भय मानें, जो अपने समय पर वर्षा देता है, दोनों शरद ऋतु की वर्षा और वर्संत की वर्षा, जो हमारे लिए

फसल के नियुक्त सप्ताहों को बनाए रखता है।" <sup>25</sup> तुम्हारी गलतियों में इन्हें दूर कर दिया है, और तुम्हारे पापों ने तुमसे अच्छा रोक रखा है। <sup>26</sup> क्योंकि मेरे लोगों में दुष्ट लोग पाए जाते हैं, वे फाउलरों की तरह इंतजार में रहते हैं, वे जाल बिछाते हैं, वे लोगों को पकड़ते हैं। <sup>27</sup> पक्षियों से भेर पिंजरे की तरह, उनके घर छल से भेर हैं; इसलिए वे महान और धनी हो गए हैं। <sup>28</sup> वे मोते हैं, वे चमकदार हैं, वे दुष्टता के कार्यों में भी उत्कृष्ट हैं, वे मामले की पैरवी नहीं करते, अनाथ के मामले की, ताकि वे सफल हो सकें; और वे गरीबों के अधिकारों की रक्षा नहीं करते। <sup>29</sup> क्या मैं इन चीजों के लिए उन्हें दंडित नहीं करूँगा? प्रभु की घोषणा है, 'क्या मैं अपने आप से बदला नहीं लूंगा ऐसी एक जाति पर?' <sup>30</sup> एक भयानक और भयंकर बात देश में ढूँढ़ है। <sup>31</sup> भविष्यद्वाक्ता जूठी भविष्यवाणी करते हैं, और याजक अपनी ही सत्ता से शासन करते हैं, और मेरे लोग इसे तरह पसंद करते हैं! परंतु अंत में तुम क्या करोगे?

**6** "सुरक्षा के लिए भागो, हे बिन्यामीन के पुत्रों, यरूशलैम के बीच से! अब तकोआ में तुरही फैंको और बेथ-हक्केरेम पर चेतावनी संकेत उठाओ; क्योंकि उत्तर से बुराई देख रही है, और एक बड़ी विनाशकारी घटना।" <sup>2</sup> सुंदर और कोमल, सियोन की पुरी, मैं उसे नष्ट कर दूँगा। <sup>3</sup> चरवाह और उनके ढुँड उसके पास आएंगे, वे उसके चारों ओर अपने तंबु खोड़ करेंगे, वे प्रयोक अपने थान पर चराइ करेंगे। <sup>4</sup> उसके खिलाफ युद्ध की तैयारी करो; उठो, और दोपहर में हमला करें। हम पर हाय, क्योंकि दिन ढल रहा है, शाम की छायाएँ लंबी हो रही हैं। <sup>5</sup> उठो, और रात में हमला करें और उसके महलों को नष्ट कर दें।" <sup>6</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु यह कहते हैं: "उसके पेड़ों को काट डालो और यरूशलैम के खिलाफ एक हमलावर ढलान बनाओ। यह वह नगर है जिसे दहित किया जाएगा, जिसके बीच में केवल उत्तीर्ण है।" <sup>7</sup> जैसे एक कुआँ अपने पानी को ताजा रखता है, वैसे ही वह अपनी दुष्टता को ताज़ा रखती है। उसमें हिंसा और विनाश की आवाज सुनाई देती है; रोग और धाव लगातार मेरे सामने हैं। <sup>8</sup> चेतावनी लो, यरूशलैम, अन्यथा मैं तुमसे विमुख हो जाऊंगा, और तुम्हें एक उजाड़, निर्जन भूमि बना दूँगा।" <sup>9</sup> यह सेनाओं के प्रभु का वचन है: "वे इसाएल के अवशेष को अंगूर की तरह पूरी तरह से चुन लेंगे; फिर से अपनी हाथ को अंगूर चुनने वाले की तरह डालियों पर चलाओ।" <sup>10</sup> मैं किससे बात करूँ और चेतावनी दूँ, कि वे सुन सकें? देखो, प्रभु का वचन उनके लिए एक फटकार बन गया है, वे उसमें कोई आनंद नहीं लेते। <sup>11</sup> परंतु मैं प्रभु के क्रोध से भरा

## पर्मियाह

हुआ हूँ, मैं इसे रोकते-रोकते थक गया हूँ। "इसे सड़क पर बच्चों पर उडेल दो और युवकों के समूह पर; क्योंकि पति और पती दोनों पकड़े जाएंगे, बूढ़े और बहुत बूढ़े।<sup>12</sup> उनके घर दूसरों को सौंप दिए जाएंगे, उनके खेत और उनकी पलियाँ भी; क्योंकि मैं अपना हाथ बद्धाऊंगा देश के निवासियों के खिलाफ़," प्रभु की घोषणा है।<sup>13</sup> "क्योंकि उनमें से सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर कोई लाभ के लिए लालची है; और भविष्यवक्ता से लेकर याजक तक, हर कोई झूठ बोलता है।<sup>14</sup> उन्होंने मेरे लोगों की टूटन को सतही रूप से ठीक किया है, कहते हैं, 'शांति, शांति,' परन्तु कोई शांति नहीं है।<sup>15</sup> क्या वे उस धृषित कार्य के कारण लजित हुए जो उन्होंने किया था? वे बिल्कुल भी लजित नहीं हुए, और वे लजित होना नहीं जानते थे; इसलिए वे गिरने वालों के बीच गिरेंगे; जब मैं उन्हें दंड ढांगा, वे गिर जाएंगे," प्रभु कहते हैं।<sup>16</sup> यह प्रभु का वचन है: "मार्गों पर खड़े होकर देखो, और प्राचीन मार्गों के लिए पूछो, जहाँ अच्छा मार्ग है, और उसमें चलो; तब तुम अपनी आसानी के लिए विश्राम स्थान पाओगे। परन्तु उन्होंने कहा, 'हम उसमें नहीं चलेंगे।'<sup>17</sup> और मैंने तुम्हारे उपर परहेरेदार नियुक्त किए, कहते हए, 'तुरही की धनि सुनो!' परन्तु उन्होंने कहा, 'हम नहीं सुनों।'<sup>18</sup> इसलिए सुनो, हे राष्ट्र!, और जानो, हे सभा, जो उनके बीच है।<sup>19</sup> सुनो, हे पृथ्वी: देखो, मैं इस लोगों पर विपत्ति ला रहा हूँ, उनकी योजनाओं का फल, क्योंकि उन्होंने मेरे वर्चों को नहीं सुना, और मेरी व्यवस्था को भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया है।<sup>20</sup> क्योंकि मेरे पास शबा से लोबान क्यों आता है, और दूर देश से भीठी गत्रा? तुम्हारी होमबलियाँ स्वीकार्य नहीं हैं, और तुम्हारे बलिदान मझे प्रसरण नहीं करते।"<sup>21</sup> इसलिए, यह प्रभु का वचन है: "देखो, मैं इस लोगों के सामने ठोकरें रख रहा हूँ" और वे उनके खिलाफ़ ठोकर खाएंगे, पिता और पुत्र एक साथ; पड़ोसी और मित्र नष्ट हो जाएंगे।<sup>22</sup> यह प्रभु का वचन है: "देखो, एक लोग उत्तर देश से आ रहे हैं, और एक महान राष्ट्र पृथ्वी के दूरस्थ भागों से उत्तेजित होगा।<sup>23</sup> वे धनुष और भाला पकड़ते हैं, वे क्रूर हैं और दया नहीं करते, उनकी आवाज़ समुद्र की तरह गरजती है, और वे घोटा पर सवार होते हैं, युद्ध के लिए एक व्यक्ति की तरह पंक्तिबद्ध तुम्हारे खिलाफ़, हे सिय्योन की पुरी!"<sup>24</sup> हमने इसकी रिपोर्ट सुनी है, हमारे हाथ ढीरे पढ़ गए हैं; कष्ट ने हमें जकड़ लिया है, जैसे एक स्त्री को प्रसव पीड़ा होती है।<sup>25</sup> खेत में मत जाओ, और सड़क पर मत चलो; क्योंकि शत्रु के पास तलवार है, हर और आतंक है।<sup>26</sup> मेरे लोगों की पुरी, टाट पहन लो और राख मैं लोटो; एकमात्र पुरु के लिए शोक करो, एक अत्यंत कड़वा शोक, क्योंकि अचानक विनाशक हम पर आ जाएगा।<sup>27</sup> "मैंने तुम्हें अपने लोगों

के बीच एक परीक्षक और जांचकर्ता बनाया है, ताकि तुम जान सको और उनके मार्ग की परीक्षा कर सको।"<sup>28</sup> वे सभी हठीले विद्रोही हैं, निंदा करने वाले के रूप में घूमते हैं; वे कांस्य और लाहे के हैं, वे सभी भ्रष्ट हैं।<sup>29</sup> धौकनी जोर से फूँकती है, सीसा आग से पिघल जाता है; व्यर्थ में शुद्धिकरण चलता रहता है, परन्तु दृष्ट अलग नहीं होते।<sup>30</sup> उन्हें अस्वीकार की गई चाँदी कहा जाता है, क्योंकि प्रभु ने उन्हें अस्वीकार कर दिया है।

**7** यह वह वचन है जो यहोवा की ओर से पिरमियाह के पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "यहोवा के भवन के फाटक पर खड़े हो जाओ और वहाँ यह वचन सुनाओ, और करो, यहोवा का वचन सुनो, हे यहदा के सब लोग, जो इन फाटकों से यहोवा की आराधना करने के लिए प्रवेश करते हो!"<sup>3</sup> यह सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है: "अपने मार्मों और अपने कामों को सुधारो, और मैं तुम्हें इस स्थान में रहने दूँगा।"<sup>4</sup> छलपूर्ण वचनों पर भरोसा मत करो, यह कहते हुए, यह यहोवा का मन्दिर है, यह यहोवा का मन्दिर है, यह यहोवा का मन्दिर है।<sup>5</sup> यदि तुम सचमुच अपने मार्गों और अपने कामों को सुधारोगे, यदि तुम सचमुच व्यक्ति और उसके पड़ोसी के बीच न्याय का पालन करोगे,<sup>6</sup> यदि तुम परदेशी, अनाथ, या विधवा पर अत्याचार नहीं करोगे, और इस स्थान में निर्दोष रक्त नहीं बहाओगे, और अपने विनाश के लिए अन्य देवताओं का अनुसरण नहीं करोगे,<sup>7</sup> तब मैं तुम्हें इस स्थान में रहने दूँगा, उस भूमि में जो मैंने तुम्हारे पितरों को सदा-सर्वदा के लिए दी थी।<sup>8</sup> देखो, तुम व्यर्थ में छलपूर्ण वचनों पर भरोसा कर रहे हो।<sup>9</sup> क्या तुम चोरी करोगे, हत्या करोगे, व्यभिचार करोगे, झूठी शाप्त खाओगे, बाल को बलिदान चढ़ाओगे, और उन अन्य देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें तुम्हें तुमने नहीं जाना,<sup>10</sup> फिर आकर मेरे सामने इस धर में खड़े होगे, जो मेरे नाम से कहलाता है, और कहोगे, "हम बच गए!" ताकि तुम ये सब धृषित काम कर सको?<sup>11</sup> क्या यह धर, जो मेरे नाम से कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में चोरों की गुफा बन गया है? देखो, मैंने स्वर्य इसे देखा है।" यहोवा की यह वाणी है।<sup>12</sup> "पर अब शीलों में मेरे स्थान पर जाओ, जहाँ मैंने पहले अपने नाम की निवास कराया था, और देखो कि मैंने अपने इसाएल लोगों की दुष्टता के कारण उसके साथ क्या किए हैं," यहोवा की यह वाणी है, "और मैंने तुम्हें बार-बार बात की, पर तुमने नहीं सुना, और मैंने तुम्हें बुलाया पर तुमने उत्तर नहीं दिया,"<sup>14</sup> इसलिए मैं उस धर के साथ, जो मेरे नाम से कहलाता है, जिसमें तुम भरोसा कराया था, और उस स्थान के साथ, जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया था, वही करूँगा

## पर्मयाह

जो मैंने शीलो के साथ किया।<sup>15</sup> मैं तुम्हें अपनी दृष्टि से बाहर फेंक दूँगा, जैसे मैंने तुम्हारे सब भाइयों को फेंक दिया, ऐप्रैम के सब रंशजों को।

<sup>16</sup> "जहाँ तक तुम्हारी बात है, इस लोगों के लिए प्रार्थना मत करो, और उनके लिए रोना या प्रार्थना मत करो, और मुझसे मध्यस्पता मत करो; क्योंकि मैं तुम्हें नहीं सुनता।<sup>17</sup> क्या तुम नहीं देखते कि वे यहूदा के नगरों और यरूशलैम की सड़कों में क्या कर रहे हैं?<sup>18</sup> वह लकड़ी इकट्ठा करते हैं, पिता आग जलाते हैं, और महिलाएँ आठ मूँहती हैं ताकि सर्व की रानी के लिए केक बना सकें; और वे अन्य देवताओं को पेय अर्पण करते हैं ताकि वे मुझे क्रोधित कर सकें।<sup>19</sup> क्या वे मुझे क्रोधित करते हैं?" यहोवा की यह वाणी है। "क्या यह उनके लिए नहीं है, उनके अपने अपमान के लिए?"<sup>20</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "देखो, मेरा क्रोध और मेरी जलन इस स्थान पर उंडेती जाएगी, मनुष्य और पशु पर, और खेतों के पेड़ों और भूमि के फल पर; और यह जलेगा और बुझाया नहीं जाएगा।"

<sup>21</sup> यह सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है: "अपने होमबलियों को अपने बलिदानों में जोड़ो और मांस खाओ।<sup>22</sup> क्योंकि मैंने तुम्हारे पितरों से बात नहीं की, और न ही उन्हें उस दिन आदेश दिया जब मैंने उन्हें मिस्र की भूमि से बाहर निकाला, होमबलियों और बलिदानों के विषय में।<sup>23</sup> परन्तु मैंने उह्ये यह आजा दी, मेरी आवाज का पालन करो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा, और तुम मेरे लोग बनोगे; और तुम उस सब मार्ग में चलोगे जो मैं तुम्हें आजा देता हूँ, ताकि तुम्हारा भला हो।"<sup>24</sup> फिर भी उन्होंने नहीं सुना और न ही अपने कान लगाए, बल्कि अपनी सलाह के अनुसार और अपनी दुष्ट हृदय की हठ में चले, और वे पाठें की ओर गए और आगे नहीं बढ़े।<sup>25</sup> जिस दिन से तुम्हारे पितर मिस्र की भूमि से बाहर आए, उस दिन से लेकर आज तक, मैंने अपने सब सेवक भविष्यद्वक्ताओं को तुम्हारे पास भेजा है, प्रतिदिन जल्दी उठकर और उन्हें भेजा है।<sup>26</sup> फिर भी उन्होंने मेरी नहीं सुनी और न ही अपने कान लगाए, बल्कि अपनी गर्दन को कठोर किया; उन्होंने अपने पितरों से अधिक बुराई की।<sup>27</sup> "तुम उह्ये ये सब वचन कहोगे, पर वे तुम्हारी नहीं सुनेंगे; और तुम उह्ये बुलाओगे, पर वे तुम्हें उत्तर नहीं देंगे।"<sup>28</sup> और तुम उनसे कहोगे, यह वह राष्ट्र है जिसने अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज का पालन नहीं किया और न ही अनुशासन स्त्रीकार किया; सत्य नष्ट हो गया है और उनके मुँह से हटा दिया गया है।<sup>29</sup> अपने बाल काटो और फेंक दो, और ऊँचे स्थानों पर शोक का गीत गाओ; क्योंकि यहोवा

ने अपने क्रोध की पीढ़ी को अस्वीकार कर दिया है और ताग दिया है।'

<sup>30</sup> क्योंकि यहूदा के पुत्रों ने मेरी दृष्टि में वह किया है जो बुरा है, यहोवा की यह वाणी है। "उन्होंने अपने धृषित वस्तुओं को उस घर में रखा है जो मेरे नाम से कहलाता है, ताकि उसे अपवित्र करे।<sup>31</sup> उन्होंने तोफेत के ऊँचे स्थान बनाए हैं, जो बैन-हित्रोम की घाटी में है, ताकि अपने पुत्रों और पुत्रियों को आग में जलाएँ, जिसकी मैंने आज्ञा नहीं दी, और न ही यह मेरे मन में आया।<sup>32</sup> इसलिए, देखो, दिन आ रहे हैं," यहोवा की यह वाणी है, "जब इसे तोपत या बैन-हित्रोम की घाटी नहीं कहा जाएगा, बल्कि वध की घाटी; क्योंकि वे तोफेत में दफनाएँगे क्योंकि और कोई स्थान नहीं होगा।"<sup>33</sup> इस लोगों की मृत देह आकाश के पक्षियों और पृथी के पशुओं के लिए आहार बनेगी, और कोई उन्हें डराएगा नहीं।<sup>34</sup> तब वे मैं यहूदा के नगरों और यरूशलैम की सड़कों से आनंद की आवाज़ और खुशी की आवाज़, दूर्लभ की आवाज़ और दुल्हन की आवाज़ को समाप्त कर दूँगा; क्योंकि यह भूमि खंडहर का स्थान बन जाएगी।

**8** "उस समय," यहोवा की घोषणा है, "वे यहूदा के राजाओं की हड्डियों को बाहर निकालेंगे, उसके नेताओं की हड्डियों को, याजकों की हड्डियों को, भविष्यवक्ताओं की हड्डियों को, और यरूशलैम के निवासियों की हड्डियों को उनकी कब्जों से।<sup>2</sup> वे उन्हें सुर्य, चंद्रमा और सभी आकाशीय ज्योतियों के सामने फैला देंगे, जिनसे उन्होंने प्रेम किया, सेवा की, अनुसरण किया, परामर्श लिया, और पूजा की। वे न तो इकट्ठे किए जाएंगे और न ही दफनाए जाएंगे; वे भूमि की सतह पर गोबर के समान होंगे।<sup>3</sup> और मृत्यु को जीवन से अधिक चुना जाएगा इस दुष्ट परिवार के सभी अवशेषों द्वारा, जो उन सभी स्थानों में रहते हैं जहाँ मैंने उन्हें भेजा है," सेनाओं के यहोवा की घोषणा है।

<sup>4</sup> "तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा यह कहता है: क्या लोग गिरते हैं और उठते नहीं हैं? क्या कोई मुड़ता है और पश्चात्ताप नहीं करता?'<sup>5</sup> फिर यह लोग, यरूशलैम, लगातार अविश्वास में क्यों मुड़ गए हैं? वे धोखे को पकड़े रहते हैं, वे लौटने से इनकार करते हैं।<sup>6</sup> मैंने सुना और ध्यान दिया, उन्होंने जो कहा वह सही नहीं था; किसी ने अपनी दुष्टता का पश्चात्ताप नहीं किया, कहते हुए, "मैंने क्या किया?" हर कोई अपनी राह पर मुड़ गया, जैसे युद्ध में दौड़ता हुआ घोड़ा।<sup>7</sup> यहाँ तक कि आकाश में सारस अपने मौसम को जानता है; और कबूतर, निगल, और

## पिरमयाह

सारस अपनी प्रवास के समय को बनाए रखते हैं। परंतु मेरे लोग यहोवा के विधान को नहीं जानते।<sup>8</sup> तुम कैसे कह सकते हो, 'हम बुद्धिमान हैं, और यहोवा की व्यवस्था हमारे साथ है?' परंतु देखो, लेखकों की इसी कलम इसे झूठ बना दिया है।<sup>9</sup> बुद्धिमान लोग लजित हैं, वे हत्रभ और पकड़े गए हैं; देखो, उन्होंने यहोवा के वचन को अखीकार कर दिया है, तो उनके पास किस प्रकार की बुद्धि है? <sup>10</sup> इसलिए मैं उनकी परियों को दूसरों को दूंगा, उनके खेतों को नए मालिकों को; क्योंकि सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर कोई लाभ के लिए लालची है; भविष्यवक्ता से लेकर याजक तक, हर कोई धोखा देता है।<sup>11</sup> उन्होंने मेरी प्रजा की बेटी की टूटन को सतही रूप से तीक किया है, कहते हुए, 'शांति, शांति; परंतु कोई शांति नहीं है।'<sup>12</sup> क्या वे उस घटित कार्य के कारण लजित थे जो उन्होंने किया था? वे बिल्कुल भी लजित नहीं थे, और उन्हें लजित होना नहीं आता था; इसलिए वे गिरने वालों के बीच गिरेंगे; उनकी सजा के समय वे गिरेंगे, "यहोवा कहता है।"<sup>13</sup> मैं निश्चित रूप से उन्हें छी लूंगा," यहोवा की घोषणा है। "बेल पर कोई अंगूर नहीं होगा, और अंजीर के पेड़ पर कोई अंजीर नहीं होगा, और पत्ता मुरझा जाएगा; और जो मैंने उन्हें दिया है वह चला जाएगा।"

<sup>14</sup> हम क्यों बैठे हैं? इकट्ठा हो, और चलो गढ़वाले नगरों में चलें और वहाँ नाश हो जाएं, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमें नाश किया है और हमें विषाक्त पानी पीने के लिए दिया है, क्योंकि हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।<sup>15</sup> हमने शांति की प्रतीक्षा की, परंतु कोई खलाई नहीं आई; चिकित्सा के समय की प्रतीक्षा की, परंतु देखो, आतका।<sup>16</sup> दान से उसके धोड़ों की हिनहिनाहट सुनी जाती है; उसके धोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज़ पर पूरी भूमि कांपती है; क्योंकि वे आते हैं और भूमि और उसकी पूर्णता को निगल जाते हैं, नार और उसके निवासी।<sup>17</sup> "क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध सांप भेज रहा हूँ, ऐसे सांप जिनके लिए कोई मंत्र नहीं है, और वे तुम्हें काटेंगे," यहोवा की घोषणा है।

<sup>18</sup> मेरा दुःख असाध्य है; मेरा हृदय मेरे भीतर मुरझा गया है।<sup>19</sup> देखो, मेरी प्रजा की बेटी की एक दूरस्थ भूमि से पुकार की आवाज़: "क्या यहोवा सियोन में नहीं है? क्या उसका राजा उसके भीतर नहीं है?" "उन्होंने मुझे अपनी खुदी हुई मूर्तियों से, विदेशी देवताओं से क्यों उत्तेजित किया?"<sup>20</sup> "फसल बीत गई, ग्रीष्म समाप्त हो गया, और हम उद्धार नहीं पाए।"<sup>21</sup> मैं अपनी प्रजा की बेटी की टूटन से टूट गया हूँ। मैं शोक करता हूँ, निराशा ने मुझे पकड़ लिया है।<sup>22</sup> क्या गिलाद में कोई मरहम नहीं है?

क्या वहाँ कोई चिकित्सक नहीं है? फिर मेरी प्रजा की बेटी की चिकित्सा क्यों नहीं बहाल हुई?

<sup>9</sup> हे कि मेरा सिर जलधारा होता, और मेरी आँखें अँसुओं का सोता होतीं, कि मैं दिन-रात अपने लोगों की बेटी के मारे गए लोगों के लिए रो सकूँ।<sup>2</sup> हे कि मुझे जंगल में यात्रियों के लिए एक निवास स्थान होता, कि मैं अपने लोगों को छोड़कर उनसे दूर जा सकूँ। क्योंकि वे सब व्यधिवारी हैं, धीरेबाज लोगों की मंडली है।<sup>3</sup> "वे अपनी जीभ की नष्टुप की तरह मोड़ते हैं; इच्छा और सत्य नहीं देश में प्रबल होते हैं; क्योंकि वे बुराई से बुराई की ओर बढ़ते हैं, और वे मुझे नहीं जानते," प्रभु की घोषणा है।<sup>4</sup> "हर कोई अपने पड़ोसी से सावधान रहे, और किसी भाई पर विश्वास न कर; क्योंकि हर भाई पूरी तरह से धोखा देता है, और हर पड़ोसी निंदा करने वाला होता है।<sup>5</sup> हर कोई अपने पड़ोसी को धोखा देता है और सत्य नहीं बोलता। उन्होंने अपनी जीभ को झूठ बोलने के लिए सिखाया है, वे खुद को गलत काम करने में थका देते हैं।<sup>6</sup> तुम्हारा निवास धोखे के बीच है; धोखे के माध्यम से वे मुझे जानने से इंकार करते हैं," प्रभु की घोषणा है।<sup>7</sup> इसलिए सेनाओं के प्रभु कहते हैं: "देखो, मैं उन्हें शुद्ध करूंगा और उनकी परीक्षा लूंगा; क्योंकि मेरी लोगों की बेटी के कारण मैं और क्या कर सकता हूँ?"<sup>8</sup> उनकी जीभ एक घातक तीर है; यह धोखा बोलती है; अपने मुँह से कोई अपने पड़ोसी से शांति की बात करता है, लेकिन अंदर से वह उसके लिए घात लगाता है।<sup>9</sup> क्या मैं इन चीजों के लिए उन्हें दंडित नहीं करूँगा?" प्रभु की घोषणा है, "क्या मैं ऐसे राष्ट्र से अपने आप को प्रतिशोध नहीं लूँगा?"<sup>10</sup> मैं पाहाड़ों के लिए विलाप और रोना उठाऊंगा, और जंगल के चरागाहों के लिए शोक का गीत, क्योंकि वे उजाड़ दिए गए हैं ताकि कोई वहाँ से न गुजरे, और पशुओं की आवाज़ नहीं सुनी जाती; आकाश के पक्षी और जननदर भग गए हैं, वे चले गए हैं।<sup>11</sup> "और मैं यरूशलेम को खंडहरों का ढेर बना दूंगा, गीदड़ों का अड्डा; और मैं यहूदा के नगरों को उजाड़ बना दूंगा, बिना निवासियों के!"

<sup>12</sup> कौन बुद्धिमान व्यक्ति है जो इसे समझ सके? और वह कौन है जिसे प्रभु का मुँह बोला है, कि वह इसे घोषित कर सके? क्यों देश बर्बाद हो गया है, रेगिस्तान की तरह उजाड़ हो गया है, ताकि कोई वहाँ से न गुजरे?<sup>13</sup> और प्रभु ने कहा, "क्योंकि उन्होंने मेरी व्यवस्था को छोड़ दिया है जो मैंने उनके सामने रखी, और मेरी आवाज़ का पालन नहीं किया और न ही उसके अनुसरण चले,<sup>14</sup> बल्कि अपने हृदय की हठधर्मिता का अनुसरण किया और बालों का, जैसा उनके पिताओं ने उन्हें

## पिरमयाह

सिखाया,"<sup>15</sup> इसलिए सेनाओं के प्रभु, इसाएल के परमेश्वर कहते हैं: "देखो, मैं इस लोगों को कड़वा भोजन खिलाऊंगा, और उन्हें विषाक्त पानी पिलाऊंगा।"<sup>16</sup> मैं उन्हें उन राष्ट्रों में भी बिखेर दूंगा, जिन्हें न तो उन्होंने और न ही उनके पिताओं ने जाना है; और मैं उनके पीछे तलवार भेजूंगा जब तक कि मैं उनका अंत न कर दूँ।"

<sup>17</sup> यह सेनाओं के प्रभु कहते हैं: "विचार करो और शोक करने वाली महिलाओं को बुलाओ, कि वे आएः और कुशल महिलाओं को भेजो, कि वे आएः"<sup>18</sup> उन्हें जल्दी करो और हमारे लिए शोक उठाएः, ताकि हमारी आँखें अँसू बहाएँ, और हमारी पलकों से पानी बहे।<sup>19</sup> क्योंकि सियोन से विलाप की आवाज सुनाई देती है: हम कितने तबाह हो गए हैं! हम बहुत शर्मिदा हैं, क्योंकि हमने देश को छोड़ दिया है, क्योंकि उन्होंने हमारे घरों को गिरा दिया है।"<sup>20</sup> अब प्रभु का वचन सुनो, हे महिलाओं, और अपने कान से उसके मुँह का वचन प्राप्त करो; अपनी बेटियों को शोक सिखाओ, और हर कोई अपनी पड़ोसी को शोक का गीत सिखाए।<sup>21</sup> क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों से प्रवेश कर चुकी है, यह हमारे महलों में प्रवेश कर चुकी है, बच्चों को गलियों से समाप्त करने के लिए, युवकों को सार्वजनिक चौकों से।<sup>22</sup> बोलो, "यह प्रभु कहता है: 'लोगों की लाशें खुले मैदान में खाद की तरह गिरेंगी, और फसल के बाद के बंडल की तरह, लेकिन कोई उन्हें इकट्ठा नहीं करेगा।'"<sup>23</sup>

<sup>23</sup> यह प्रभु कहता है: "कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपनी बुद्धि पर गर्व न करे, न ही कोई शक्तिशाली व्यक्ति अपनी शक्ति पर गर्व करे, न ही कोई धनी व्यक्ति अपनी धन पर गर्व करे;<sup>24</sup> लेकिन जो गर्व करता है, वह इस पर गर्व करे, कि वह मुझे समझता और जानता है, कि मैं वह प्रभु हूँ जो पृथ्वी पर दया, याय और धर्म का पालन करता है; क्योंकि मैं इन वीजों में प्रसन्न होता हूँ, प्रभु की घोषणा है।"<sup>25</sup> "देखो, दिन आ रहे हैं," प्रभु की घोषणा है, "जब मैं सभी का दंड दूंगा जो खतना किए हुए हैं और फिर भी खतना नहीं किए हुए हैं—<sup>26</sup> मिस, यहुदा, एदोम, अमोन के पुत्र, मोआब, और सभी जो रोगिस्तान में रहते हैं और अपने मंदिरों के बाल कारते हैं; क्योंकि सभी राष्ट्र खतना नहीं किए हुए हैं, और इसाएल का पूरा घराना हृदय से खतना नहीं किया हुआ है।"

**10** हे इसाएल के घराने, वह वचन सुनो जो यहोवा तुमसे कहता है।<sup>2</sup> यहोवा यों कहता है: "जातियों के मार्ग को मत सिखो, और आकाश के चिह्नों से मत डरो, यद्यपि जातियाँ उनसे डरती हैं;<sup>3</sup> क्योंकि लोगों की रीति-रिवाज व्यर्थ हैं; क्योंकि यह जंगल से काटी गई लकड़ी

है, जो एक कारीगर के हाथों का काम है जो काटने के औजार से बनता है।<sup>4</sup> वे इसे चांदी और सोने से सजाते हैं; वे इसे कीलों और हयोड़ों से जकड़ते हैं ताकि यह न डगमगाए।<sup>5</sup> वे खीरे के खेत में एक बिजुका के समान हैं, और वे बोल नहीं सकते; उन्हें उठाकर ले जाना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकते! उनसे मत डरो, क्योंकि वे कोई हानि नहीं कर सकते, और न ही वे कोई भला कर सकते हैं।"<sup>6</sup> हे यहोवा, तेरे समान कोई नहीं है; तू महान है, और तेरा नाम सामर्थ्य में महान है।<sup>7</sup> हे जातियों के राजा, तुझसे कौन नहीं डेरगा? वास्तव में यह तेरा हक है! क्योंकि सभी जातियों के बुद्धिमानों में और उनके सभी राजों में, तेरे समान कोई नहीं है।<sup>8</sup> परंतु वे सब के सब मूर्ख और नासमझ हैं, मूर्खियों की शिक्षा केवल लकड़ी है।<sup>9</sup> तारशीश से लाई गई चांदी, और ऊफाज से सोना, कारीगर का काम और सुनाने के हाथों का काम; उनके वस्त्र बैंगनी और लाल हैं; वे सब कुशल लोगों का काम हैं।<sup>10</sup> परंतु यहोवा सच्चा परमेश्वर है; वह जीवित परमेश्वर और अनंतकाल का राजा है। उसके क्रोध में पृथ्वी कांपती है, और जातियाँ उसके क्रोध को सहन नहीं कर सकतीं।<sup>11</sup> तुम उनसे यह कहो: "वे देवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी नहीं बनाए पृथ्वी से और आकाश के नीचे से नह छो जाएंगे।"<sup>12</sup> वह वहीं है जिसने अपनी सामर्थ्य से पृथ्वी बनाई, जिसने अपनी बुद्धि से संसार को स्थिर किया; और अपनी समझ से उसने आकाश को फैलाया।<sup>13</sup> जब वह अपनी आवाज निकालता है, तो आकाश में जल की गर्जना होती है, और वह पृथ्वी के छोर से बादलों को उठाता है; वह वर्षा के लिए बिजली बनाता है, और अपनी भंडार से हवा निकालता है।<sup>14</sup> हर व्यक्ति मूर्ख है, ज्ञान से रहित; हर सुनार अपनी मूर्खियों से लजित होता है, क्योंकि उसकी ढाली हुई धातु की मूर्खियाँ धोखा देती हैं, और उनमें कोई प्राण नहीं है।<sup>15</sup> वे व्यर्थ हैं, उपहास का काम हैं; उनकी सजा के समय वे नष्ट हो जाएंगे।<sup>16</sup> याकूब का भाग इनसे भिन्न है, क्योंकि वही सब कुछ का निर्माता है, और इसाएल उसकी विरासत का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है।

<sup>17</sup> अपनी गढ़री को ज़मीन से उठालो, हे धेरांदी में रहने वाले।<sup>18</sup> क्योंकि यहोवा यों कहता है: "देखो, मैं इस समय देश के निवासियों को बाहर फेंक रहा हूँ, और मैं उन्हें संकट में डालूँगा, ताकि वे पाए जाएं।"<sup>19</sup> हाय मुझ पर, मेरी चाट के कराण! मेरी धाव असाथ है। परंतु मैंने कहा, "यह निश्चित रूप से एक बीमारी है, और मुझे इसे सहना होगा।"<sup>20</sup> मेरा तंबू नष्ट हो गया है, और मेरी सभी रस्सियाँ टूट गई हैं; मेरे पुत्र मुझसे चले गए हैं और अब नहीं हैं। कोई नहीं है जो फिर से मेरा तंबू फैलाए या मेरे पर्दे लगाए।<sup>21</sup> क्योंकि चरवाहे मूर्ख हो गए हैं और

## पिर्मयाह

उन्होंने यहोवा की खोज नहीं की। इसलिए वे सफल नहीं हुए, और उनकी सारी भेड़ें बिखर गई हैं।<sup>22</sup> एक रिपोर्ट की आवाज़। देखो, यह आ रही है— उत्तर की भूमि से एक बड़ा गर्जन— यहूदा के नगरों को उजाड़ने के लिए, गोदड़ों का निवास स्थान बनाने के लिए।

23 मुझे पता है, हे यहोवा, कि मनुष्य का मार्ग उसके अपने में नहीं है, और न ही यह चलने वाले मनुष्य में है कि वह अपने कदमों को निर्देशित करे।<sup>24</sup> मुझे सुधार, हे यहोवा, परन्तु न्याय के साथ, तेरे क्रीध के साथ नहीं, नहीं तो तू मुझे नष्ट कर देगा।<sup>25</sup> अपना क्रीध उन जातियों पर उंडेल दे जो तुझे नहीं जानतीं, और उन परिवारों पर जो तेरे नाम का आहान नहीं करते; क्योंकि उन्होंने याकूब को खा लिया है; उन्होंने उसे खा लिया और भस्म कर दिया है, और उसके निवास को उजाड़ दिया है।

**11** यह यहोवा का वचन है जो पिर्मयाह के पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "इस वाचा के शब्दों को सुनो, और यहूदा के लोगों और यरूशलैम के निवासियों से कहो;"<sup>3</sup> और उनसे कहो, यह इसाएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: "शापित है वह व्यक्ति जो इस वाचा के शब्दों को नहीं सुनता, <sup>4</sup> जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को उस दिन आज्ञा दी थी जब मैं उन्हें मिस्र देश से, लोहे की भट्टी से बाहर लाया, यह कहते हुए, मेरी आवाज़ सुनो, और जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ उसके अनुसार करो; तब तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"<sup>5</sup> ताकि उस शपथ को पूरा कर सकूँ जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, उन्हें दूध और मधु की धाराओं वाली भूमि देने के लिए, जैसा कि आज है।<sup>6</sup> तब मैंने उत्तर दिया और कहा, "आमीन, यहोवा!"<sup>6</sup> और यहोवा ने मुझसे कहा, "यहूदा के नगरों में और यरूशलैम की सड़कों में इन सभी शब्दों का प्रचार करो, यह कहते हुए, 'इस वाचा के शब्दों को सुनो और उन्हें करो।'<sup>7</sup> क्योंकि मैंने तुम्हारे पूर्वजों को उस दिन गंभीरता से चेतावनी दी थी जब मैंने उन्हें मिस्र देश से बाहर लाया, यहाँ तक कि आज तक, उन्हें बार-बार चेतावनी देते हुए, यह कहते हुए, "मेरी आवाज़ सुनो!"<sup>8</sup> फिर भी उन्होंने नहीं सुना और न ही अपने कान लगाए, बल्कि अपने बुरे हृदय की हठधर्मिता में चले। इसलिए मैंने उन पर इस वाचा के सभी शब्द लाए, जिन्हें मैंने उन्हें करने की आज्ञा दी थी, परंतु उन्होंने नहीं किया!"<sup>9</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, "यहूदा के लोगों और यरूशलैम के निवासियों के बीच एक षड्यंत्र पाया गया है।<sup>10</sup> उन्होंने अपने पूर्वजों की बुराइयों की ओर लौट गए हैं जिन्होंने मेरे शब्दों को सुनने से इनकार कर दिया, और उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण

किया है ताकि उनकी सेवा कर सकें। इसाएल के घराने और यहूदा के घराने ने मेरी वाचा तोड़ी है जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी।"<sup>11</sup> इसलिए यह यहोवा कहता है: "देखो, मैं उन पर आपदा ला रहा हूँ जिससे वे बच नहीं सकेंगे; हालांकि वे मुझसे प्रार्थना करेंगे, मैं उनकी नहीं सुनूँगा।<sup>12</sup> तब यहूदा के नगरों और यरूशलैम के निवासियों के देवताओं के पास जाकर प्रार्थना करेंगे जिनके लिए वे धूप जलाते हैं, लेकिन वे उन्हें उनकी आपदा के समय बिल्कुल भी नहीं बचा सकेंगे।<sup>13</sup> क्योंकि तुम्हारे देवता तुम्हारे नगरों के जितने हैं, यहूदा; और यरूशलैम की सड़कों के जितने हैं, उत्तर वही वेदी तुमने उस लज्जाजनक वस्तु के लिए स्थापित की हैं— बाले के लिए धूप जलाने की वेदी।<sup>14</sup> "तो तुम्हारे लिए, इस लोगों के लिए प्रार्थना मत करो, न उनके लिए कोई पुकार या प्रार्थना उठाओ; क्योंकि जब वे अपनी आपदा के कारण मुझसे पुकारेंगे, तो मैं नहीं सुनूँगा।<sup>15</sup> मेरे घर में मेरे प्रिय का क्या अधिकार है, जब उसने कई धृषित काम किए हैं? क्या बलिदान का मांस तुम्हारी आपदा को दूर कर सकता है, ताकि तुम आनन्दित हो सको?"<sup>16</sup> यहोवा ने तुम्हें "एक हरी जैतून का पेढ़, फल और रूप में सुंदर" नाम दिया; एक महान कौलाहल की आवाज़ के साथ उसने उसमें आग लगा दी है, और उसकी शाखाएँ बेकार हो गई हैं।<sup>17</sup> सेनाओं के यहोवा, जिसने तुम्हें लगाया, ने तुम्हारे विरुद्ध बुराई की घोषणा की है इसाएल के घराने और यहूदा के घराने की बुराई के कारण, जो उन्होंने बाले को बलिदान चढ़ाकर मुझे उकसाने के लिए की है।

<sup>18</sup> इसके अलावा, यहोवा ने मुझे यह ज्ञात कराया और मैंने इसे जाना; तब आपने मुझे उनके काम दिखाए।<sup>19</sup> लेकिन मैं एक कोमल मेमने की तरह था जिसे वध के लिए ले जाया जाता है; और मुझे नहीं पता था कि उन्होंने मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचा है, यह कहते हुए, "आओ, पेढ़ को उसके फल के साथ नष्ट कर दें, और उसे जीवितों की भूमि से काट दें, ताकि उसका नाम अब याद न किया जाए।"<sup>20</sup> लेकिन, सेनाओं के यहोवा, जो न्यायपूर्वक न्याय करता है, जो भानाओं और हृदय को परखता है, मुझे उन पर अपनी प्रतिशोध देखने दे, क्योंकि मैंने अपनी बात आपके सामने सौंपी है।<sup>21</sup> इसलिए यह यहोवा कहता है अनातोत के लोगों के बारे में, जो तुम्हारी जन के पीछे पड़े हैं, यह कहते हुए, "मुझ यहोवा के नाम में भविष्यद्वाणी मत करो, ताकि तुम हमारे हाथ से न मरो"—<sup>22</sup> इसलिए, सेनाओं के यहोवा यह कहता है: "देखो, मैं उन्हें दंड देने जा रहा हूँ! युवा पुरुष तलवार से मरेंगे, उनके पुत्र और पुत्रियाँ अकाल से मरेंगे;<sup>23</sup> और उनके लिए कोई अवशेष नहीं बचेगा,

## यिर्मयाह

क्योंकि मैं अनातोत के लोगों पर आपदा लाऊँगा—  
उनके दंड का वर्ष।”

**12** हे प्रभु, जब मैं आपसे अपनी बात करता हूँ तब आप धर्मी हैं; फिर भी मैं आपसे न्याय के विषय में चर्चा करना चाहता हूँ: दुष्टों का मार्ग क्यों सफल होता है? जो लोग विश्वासघात करते हैं, वे क्यों सुखी हैं? २ आपने उन्हें लगाया है, उन्होंने जड़ पकड़ ली है; वे बढ़े हैं, उन्होंने फल भी उत्पन्न किया है। वे आपके हौंठों के निकट हैं परंतु उनके मन से दूर हैं। ३ परंतु आप मुझे जानते हैं, हे प्रभु! आप मुझे देखते हैं और मेरे हृदय के आपके प्रति दृष्टिकोण की परीक्षा करते हैं। उन्हें वध के लिए भेड़ों की तरह खींच लाओ, और उन्हें वध के दिन के लिए उलग कर दो। ४ भूमि कब तक शोक करेगी, और देश की वनस्पति कब तक सुखेगी? उनमें रहने वालों की दुष्टा के कारण, जानवर और पक्षी छीन लिए गए हैं, क्योंकि लोगों ने कहा है, “वह हमारी अंतिम स्थिति नहीं देखेगा।” ५ यदि तुम पैदल चलने वालों के साथ दौड़े हो और उन्होंने तुम्हें थका दिया है, तो तुम घोड़ों के साथ कैसे प्रतिस्पर्धा करोगे? यदि तुम शांति के देश में गिर जाते हो, तो यरदन के झाड़ियों में तुम क्या करोगे? ६ क्योंकि तुम्हारे भाई और तुम्हारे पिता का घाराना भी, उन्होंने भी तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है, उन्होंने तुम्हारे पीछे जोर से पुकारा है। उन पर विश्वास मत करो, चाहे वे तुम्हें अच्छी बातें कहें।”

<sup>7</sup> “मैंने अपने घर को त्याग दिया है, मैंने अपनी विरासत को छोड़ दिया है; मैंने अपनी आत्मा के प्रिय को उसके शत्रुओं के हवाले कर दिया है। ८ मेरी विरासत मेरे लिए जंगल के शेर के समान हो गई है; उसने मेरे खिलाफ गर्जना की है, इसलिए मैं उससे धूणा करने लगा हूँ। ९ क्या मेरी विरासत मेरे लिए एक वित्तीदार शिकारी पक्षी है? क्या शिकारी पक्षी उसके चारों ओर है? जाओ, सामी मैदान के जानवरों को इकट्ठा करो, उन्हें खाने के लिए लाओ।” १० कई चरवाहों ने मेरी दाख की बारी को नष्ट कर दिया है, उन्होंने मेरे खेत को रोट दिया है; उन्होंने मेरे मनोहर खेत को उजाड़ा हुआ जंगल बना दिया है।” ११ यह उजाड़ा गया है, उजाड़ा हुआ, यह मेरे सामने शोक करता है; पूरी भूमि उजाड़ा गई है, क्योंकि कोई इसे दिल से नहीं लेता।” १२ जंगल की सभी ऊँची जगहों पर विनाशक आ गए हैं, क्योंकि प्रभु की तलवार भूमि के एक छोर से दूसरे छोर तक खा रही है, किसी के लिए कोई शांति नहीं है।” १३ उन्होंने गेहूँ बोया है परंतु काँटे काटे हैं, उन्होंने बिना लाभ के अपने को थका दिया है। तो अपनी उपज पर लज्जित हो जाओ प्रभु के प्रचंड क्रोध के कारण।”

<sup>14</sup> यह वही है जो प्रभु मेरे सभी दुष्ट पड़ोसियों के विषय में कहते हैं जो मेरी प्रजा इसाएल की विरासत को हानि पहुँचाते हैं: “देखो, मैं उन्हें उनकी भूमि से निकालें जा रहा हूँ, और मैं यहूदा के घर को उनके बीच से निकाल दूँगा।” १५ और यह होगा कि, जब मैं उन्हें निकाल दूँगा, तो मैं फिर से उन पर दया करूँगा; और मैं उन्हें वापस लाऊँगा, प्रयेक को उसकी विरासत और प्रयेक को उसकी भूमि में।” १६ तब, यदि वे वास्तव में मेरी प्रजा के मार्गों को सीधेंगे, मेरे नाम की शपथ लेने के लिए, जैसे प्रभु जीवित है; जैसे उन्होंने मेरी प्रजा को बाल की शपथ दिलाई, वे मेरी प्रजा के बीच में बनाए जाएँगे।” १७ परंतु यदि वे नहीं सुनेंगे, तो मैं उस राष्ट्र को निकाल दूँगा, उखाड़ दूँगा और नष्ट कर दूँगा,” प्रभु की घोषणा है।

**13** यहोवा ने मुझसे कहा: “जाकर अपने लिए एक सूती कमरबंद खरीदो और उसे अपनी कमर बांध लो, परन्तु उसे पानी में मत डालो।” २ तो मैंने यहोवा के वचन के अनुसार कमरबंद खरीदा, और उसे अपनी कमर पर बांध लिया। ३ फिर यहोवा का वचन दूसरी बार मुझसे आया, यह कहते हुए, “उस कमरबंद को ले लो जो तुमने खरीदा है, जो तुम्हारी कमर पर है, और अब फरात नदी के पास जाओ और उसे चट्टान की दरार में छुपा दो।” ५ तो मैं गया और उसे फरात नदी के पास छुपा दिया, जैसा कि यहोवा ने मुझे आज्ञा दी थी।” ६ कई दिनों के बाद यहोवा ने मुझसे कहा, “उठो, फरात नदी के पास जाओ और वहां से उस कमरबंद को ले आओ जिसे मैंने तुम्हें वहां छुपाने की आज्ञा दी थी।” ७ फिर मैं फरात नदी के पास गया और उस स्थान से कमरबंद को खोदकर निकाला जहां मैंने उसे छुपाया था; और देखो, वह कमरबंद नष्ट हो गया था, वह पूरी तरह से बेकार हो गया था। ८ फिर यहोवा का वचन मुझसे आया, यह कहते हुए, “यहोवा यह कहता है: ‘उसी प्रकार मैं यहूदा का गर्व और यरूशलेम का महान गर्व नष्ट कर दूँगा।’” ९ यह दुष्ट लोग, जो मेरे वचनों को सुनने से इनकार करते हैं, जो अपने हृदय की हठ में चलते हैं और अन्य देवताओं का अनुसरण करते हैं ताकि उनकी सेवा करें और उन्हें प्रणाम करें, उन्हें इस कमरबंद की तरह होने दो, जो पूरी तरह से बेकार है।” ११ क्योंकि जैसे कमरबंद आदमी की कमर से चिपका रहता है, वैसे ही मैंने इसाएल के पूरे घराने और यहूदा के पूरे घराने को मुझसे चिपकने के लिए बनाया; यहोवा की घोषणा है, ‘ताकि वे मेरे लोग बनें, यश के लिए, स्तुति के लिए, और महिमा के लिए; परन्तु उन्होंने नहीं सुना।’

<sup>12</sup> “इसलिए तुम उन्हें यह वचन कहो: ‘यहोवा, इसाएल का परमेश्वर यह कहता है: “हर घड़ा दाखमधु से भरा

## यिर्मयाह

जाएगा।”<sup>13</sup> और जब वे तुमसे कहें, ‘क्या हम नहीं जानते कि हर घड़ा दाखमधु से भरा जाएगा?’<sup>13</sup> तब उनसे कहो, ‘यहोवा यह कहता है: “देखो, मैं इस भूमि के सभी निवासियों को—जो दाऊद के सिंहासन पर बैठते हैं, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं, और यरूशलेम के सभी निवासियों को—मदहोश कर दूंगा।’<sup>14</sup> फिर मैं उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ तोड़ दूंगा, पिटा और पुत्रों को एक साथ,’ यहोवा की घोषणा है। “मैं न तो दया करूंगा, न ही चिंतित होऊंगा, न ही उन्हें नष्ट करने से रोकने के लिए कोई दया करूंगा।”<sup>15</sup> सुनो और ध्यान दो, अभिमानी मत बनो, क्योंकि यहोवा ने कहा है।<sup>16</sup> अपने परमेश्वर यहोवा को महिमा दी इससे पहले कि वह अंधकार लाए और इससे पहले कि तुम्हरे पैर धूंधले पहाड़ों पर ठोकर खाएं, और जब तुम प्रकाश की आशा कर रहे हो वह उसे गहरे अंधकार में बदल दे, और उसे उदासी में बदल दे।<sup>17</sup> परन्तु यदि तुम इसे नहीं सुनोगे, तो मेरा मन ऐसे गर्व के लिए उपर में रोएगा; और मेरी आंखें अंसु बहाएंगी और बहेंगी क्योंकि यहोवा की भेड़-बकरियां बंदी बना ली गई हैं।

<sup>18</sup> राजा और रानी माता से कहो, “एक नीची जगह पर बैठो, क्योंकि तुम्हारा सुंदर मुकुट तुम्हारे सिर से उत्तर गया है।”<sup>19</sup> नेगेव के नगर बंद हो गए हैं, और उन्हें खोलने वाला कोई नहीं है; सारा यहूदा निर्वासन में चला गया है, पूरी तरह से निर्वासन में चला गया है।<sup>20</sup> अपनी आंखें उठाओ और देखो जो उत्तर से आ रहे हैं। वह झुंड कहां है जो तुम्हें दिया गया था, तुम्हारी सुंदर भेड़-बकरियां? <sup>21</sup> तुम क्या कहोगे जब वह तुम्हारे ऊपर नियुक्त करेगा— और तुमने स्वयं उन्हें सिखाया था— पूर्व साथी तुम्हारे ऊपर प्रधान बनें? क्या प्रसव पीड़ा तुम्हें नहीं पकड़ लेगी, जैसे प्रसव में स्त्री को होती है? <sup>22</sup> यदि तुम अपने हृदय में कहो, “ये बातें मेरे साथ क्यों हुईं?” तुम्हारे अपराध की विशालता के कारण तुम्हारे कपड़े उतार दिए गए हैं और तुम्हारी एड़ियो हिंसा से पीड़ित हुई हैं।<sup>23</sup> क्या इथियोपियाई अपनी त्वचा बदल सकता है, या तेंदुआ अपने धब्बे? तब तुम भी भला कर सकते हो जो बुराई करने के आदी हो।<sup>24</sup> इसलिए मैं उन्हें उड़ते भूसे की तरह बिखेर दूंगा रेगिस्तान की हवा में।<sup>25</sup> यह तुम्हारा भाग है, तुम्हारे लिए मापी गई माप मेरे द्वारा,” यहोवा की घोषणा है, “क्योंकि तुमने मुझे भुला दिया है और झूठ पर भरोसा किया है।<sup>26</sup> इसलिए मैंने स्वयं तुम्हारे कपड़े तुम्हारे चेहरे पर से उतार दिए हैं, ताकि तुम्हारी लज्जा देखी जा सके।<sup>27</sup> तुम्हारी व्यभिचार और तुम्हारी कामुक हिनहिनाहट, तुम्हारी वेश्यावृत्ति का भयानक पाप मैदान में पहाड़ियों पर, मैंने तुम्हारी धृणित

बातें देखी हैं। तुम पर हाय, यरूशलेम! तुम कब तक अशुद्ध रहोगे?”

**14** वह जो यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया सूखे के विषय में: <sup>2</sup> “यहूदा विलाप करता है, और उसके फाटक दुर्बल हो गए हैं, वे शोक में भूमि पर बैठते हैं, और यरूशलेम की पुकार ऊपर उठी है।<sup>3</sup> उनके रईसों ने अपने सेवकों को पानी के लिए भेजा है; वे कुंडों पर गए और पानी नहीं पाया। वे अपने बर्तन खाली लौट आए, वे लज्जित और अपमानित हुए हैं, और उन्होंने अपने सिर ढक लिए हैं, <sup>4</sup> क्योंकि भूमि फटी हुई है। किसान लज्जित हुए हैं, उन्होंने अपने सिर ढक लिए हैं।<sup>5</sup> क्योंकि मैदान की हिरण्यी ने भी अपने बच्चे को जन्म दिया और छोड़ दिया, क्योंकि कोई धास नहीं है।<sup>6</sup> जंगली गधे नगे ऊँचाईयों पर खड़े हैं, वे सियारों की तरह हवा के लिए हाँफते हैं, उनकी आँखें विफल हो गई हैं क्योंकि कोई वनस्पति नहीं है।<sup>7</sup> हालांकि हमारे अपराध हमारे विरुद्ध गवाही देते हैं, हे प्रभु, अपने नाम के स्वातिर कार्य करें। हमारे धर्मस्थान वास्तव में बहुत हुए हैं, हमने आपके विरुद्ध पाप किया है।<sup>8</sup> इसाएल की आशा, कठिनाई के समय में उसका उद्धारकर्ता, आप देश में एक अजनबी की तरह क्यों हैं, या एक यात्री की तरह जिसने रात के लिए अपना तंबू गाड़ा है?<sup>9</sup> आप एक उलझन में व्यक्ति की तरह क्यों हैं, एक योद्धा की तरह जो बचा नहीं सकता? फिर भी आप हमारे बीच में हैं, हे प्रभु, और हम आपके नाम से पुकारे जाते हैं; हमें न छोड़ें।<sup>10</sup> यह वही है जो यहोवा इस लोगों से कहता है: “वे भटकने से बहुत प्रेम करते हैं; उन्होंने अपने पाँवों को नहीं रोका। इसलिए यहोवा उन्हें स्वीकार नहीं करता; अब वह उनकी दोष को याद करेगा और उनके पापों को दंड देगा।”

<sup>11</sup> इसलिए यहोवा ने मुझसे कहा, “इस लोगों के लिए अच्छे परिणाम की प्रार्थना मत करो।”<sup>12</sup> जब वे उपवास करते हैं, तो मैं उनकी पुकार नहीं सुनूँगा; और जब वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाते हैं, तो मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूँगा। बल्कि, मैं उन्हें तलावर, अकाल और महामारी से समाप्त कर दूँगा।”<sup>13</sup> पर मैंने कहा, “हे प्रभु यहोवा! देखिए, भविष्यवक्ता उन्हें कह रहे हैं, ‘तुम तलावर नहीं देखोगे और न ही तुम्हें अकाल होगा, बल्कि मैं इस स्थान में तुम्हें स्थायी शांति दूँगा।’”<sup>14</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, “भविष्यवक्ता मेरे नाम में झूटी भविष्यवाणी कर रहे हैं। मैंने न तो उन्हें भेजा है, न ही उन्हें आज्ञा दी है, न ही उनसे बात की है, वे तुम्हें झूटी दृष्टि, भविष्यवाणी, व्यर्थता, और अपने मन की खोखाधड़ी की भविष्यवाणी कर रहे हैं।<sup>15</sup> इसलिए यह वही है जो

## पर्मयाह

यहोवा उन भविष्यवक्ताओं के विषय में कहता है जो मेरे नाम में भविष्यवाणी कर रहे हैं, हालाँकि मैंने उन्हें नहीं भेजा—फिर भी वे कहते रहते हैं, “इस देश में कोई तलवार या अकाल नहीं होगा”: तलवार और अकाल से वे भविष्यवक्ता अपनी समाप्ति को प्राप्त करेंगे! <sup>16</sup> वे लोग भी जिनके लिए वे भविष्यवाणी कर रहे हैं, यरूशलेम की सड़कों पर अकाल और तलवार के कारण फेंक दिए जाएँगे, और उन्हें दफनाने वाला कोई नहीं होगा—न तो उन्हें, न उनकी पतियों को, न उनके बेटों को, न उनकी बेटियों को। क्वांटिक मैं उन पर उनकी अपनी दुष्टता उंडेल दुङ्गा। <sup>17</sup> तुम उनसे यह वचन कहोगे: “मेरी आँखों से आँसू रात और दिन बहते रहें, और वे न रुकें; क्योंकि मेरी प्रजा की चुंवरी बेटी एक शक्तिशाली आधात से कुचली गई है, एक गंभीर संक्रमित धाव के साथ।” <sup>18</sup> यदि मैं मैदान में जाता हूँ, देखो, तलवार से मारे गए! या यदि मैं नगर में प्रवेश करता हूँ, देखो, अकाल से रोगग्रस्त! क्योंकि दोनों भविष्यवक्ता और याजक उस देश में घूमते हैं जिसे वे नहीं जानते।”

<sup>19</sup> क्या आपने यहूदा को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया है? या आपने सियोन से भृगा की है? आपने हमें ऐसा क्यों मारा कि हमारे लिए कोई चंगा नहीं है? हमने शांति की प्रतीक्षा की, लेकिन कुछ अच्छा नहीं आया; और चंगाई के समय के लिए, लेकिन देखो, आतंक! <sup>20</sup> हम अपनी दुष्टता जानते हैं, हे प्रभु, हमारे पिताओं का दोष, क्योंकि हमने आपके विरुद्ध पाप किया है। <sup>21</sup> हमें अपने नाम के खातिर उच्छ न करें; अपने महिमा के सिंहासन को अपमानित न करें। याद करें और हमारे साथ अपनी वाचा को रद्द न करें। <sup>22</sup> क्या राष्ट्रों के देवताओं में से कोई वर्षा देता है? या क्या आकाश वर्षा कर सकता है? क्या यह आप नहीं हैं, हे हमारे परमेश्वर यहोवा? इसलिए हम आप में आशा रखते हैं, क्योंकि आपने ही ये सब चीजें की हैं।

**15** तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यदि मूसा और शमूएल भी मेरे सामने खड़े होते, तो भी मेरा मन इस प्रजा के साथ नहीं होता; उन्हें मेरे सामने से दूर भेज दो, और उन्हें जाने दो!” <sup>2</sup> और यदि वे तुमसे कहें, ‘‘हम कहाँ जाएँ?’’ तो तुम उन्हें बताना, “यहोवा यह कहता है: ‘‘जो मृत्यु के लिए ठहराए गए हैं, वे मृत्यु को जाएँ; और जो तलवार के लिए ठहराए गए हैं, वे तलवार को जाएँ; और जो अकाल के लिए ठहराए गए हैं, वे अकाल को जाएँ; और जो बंधुआई के लिए ठहराए गए हैं, वे बंधुआई को जाएँ।’’ <sup>3</sup> और मैं उनके ऊपर चार प्रकार की विपत्तियाँ नियुक्त करूँगा,” यहोवा की यह धोषणा है: “मारने के लिए तलवार, घसीटने के लिए कुत्ते, आकाश के पक्षी

और पृथ्वी के पश्चु खाने और नष्ट करने के लिए। <sup>4</sup> मैं उन्हें पृथ्वी के सभी राज्यों के लिए आतंक का विषय बना दूँगा मनश्शे के कारण, जो हिजकियाह का पुत्र था, यहूदा का राजा, उसने यरूशलेम में जो किया उसके कारण। <sup>5</sup> वास्तव में, कौन तुम पर दया करेगा, या कौन तुम्हारी खाली के बरे में पूछें के लिए मुद्देहा? <sup>6</sup> तुमने मुझे त्याग दिया है, ”यहोवा की यह धोषणा है, “तुम लगातार पीछे जाते रहते हो।” इसलिए मैं अपना हाथ तुम्हारे विरुद्ध बढ़ाऊँगा और उन्हें नष्ट कर दूँगा; मैं क्षमा करते-करते थक गया हूँ। <sup>7</sup> मैं उन्हें भूमि के द्वारा पर फटकनी से छाँट दूँगा, मैं उन्हें उनके बच्चों से वंचित कर दूँगा, मैं अपनी प्रजा को नष्ट कर दूँगा; उन्होंने अपनी राहों से पश्चात्याप नहीं किया। <sup>8</sup> उनकी विधावैँ मेरे सामने समुद्र की रेत से अधिक हो जाएँगी; मैं उनके विरुद्ध, एक युवा पुरुष की माता के विरुद्ध, दोपहर में एक विध्वंसक लाऊँगा; मैं अचानक उस पर विपत्ति और आतंक लाऊँगा। <sup>9</sup> जिसने सात पुत्रों को जन्म दिया वह मुरझा गई है; उसकी साँस कठिनाई से चल रही है। उसका सूर्य दिन में ही अस्त हो गया है; वह लज्जित और अपमानित हुई है। मैं उनके बचे हुए लोगों को तलवार के हवाले कर दूँगा उनके शत्रुओं के सामने,” यहोवा की यह धोषणा है।

<sup>10</sup> हाय मुझ पर, मेरी माँ, कि तुमने मुझे जन्म दिया एक झगड़ातू और विवाद करने वाले व्यक्ति के रूप में पूरे देश के लिए! मैंने न तो उधार दिया है, न ही लोगों ने मुझे उधार दिया है, फिर भी हर कोई मुझे श्राप देता है। <sup>11</sup> यहोवा ने कहा, “निश्चित रूप से मैं तुम्हें अच्छे उद्देश्यों के लिए मुक्त करूँगा; निश्चित रूप से मैं तुम्हारे लिए मध्यस्था करूँगा आपदा के समय और संकट के समय शत्रु के साथ।” <sup>12</sup> क्या कोई लोहे को तोड़ सकता है, उत्तर से लोहे को, क्या कांसे को? <sup>13</sup> तुम्हारी संपत्ति और तुम्हारे खजाने मैं बिना मूल्य के लूट के रूप में दूँगा, तुम्हारे सभी पापों के लिए और तुम्हारी सभी सीमाओं के भीतर। <sup>14</sup> तब मैं उन्हें तुम्हारे शत्रुओं की सेवा करने के लिए बनाऊँगा एक ऐसे देश में जिसे तुम नहीं जानते; क्योंकि मेरे क्रोध में आग भड़क गई है, यह तुम पर जलेगी।”

<sup>15</sup> तुम जानते हो, प्रभु; मुझे याद करो, मुझ पर ध्यान दो, और मेरे सताने वालों पर मेरे लिए प्रतिशोध लो। अपने धैर्य के कारण मुझे दूर न करो; जान लो कि तुम्हारे कारण मैं अपमान सहता हूँ। <sup>16</sup> तुम्हारे वचन मिले और मैंने उन्हें खा लिया, और तुम्हारे वचन मेरे लिए आनंद और मेरे हृदय की प्रसन्नता बन गए; क्योंकि मैं तुम्हारे नाम से पुकारा गया हूँ, सेनाओं के प्रभु परमेश्वर। <sup>17</sup> मैं

## पर्मयाह

उत्सव मनाने वालों की मंडली में नहीं बैठा। तुम्हारे हाथ के कारण मैं अकेला बैठा, क्योंकि तुमने मुझे क्रोध से भर दिया।<sup>18</sup> क्यों मेरा दर्द अनंत हो गया है और मेरा धाव असाध्य, ठीक होने से इनकार करता है? क्या तुम वास्तव में मेरे लिए एक धोखेबाज धारा की तरह होगे जिसका पानी अविश्वसनीय है?<sup>19</sup> इसलिए, यहोवा यह कहता है: “यदि तुम लौट आओ, तो मैं तुम्हें पुनःस्थापित करूँगा— तुम मेरे सामने खड़े रहोगे; और यदि तुम मूल्यवान का बेकार से अलग करोगे, तो तुम मेरे प्रवक्ता बनोगे। वे, अपनी ओर से, तुम्हारी ओर मुड़ सकते हैं, लेकिन तुम्हें उनकी ओर नहीं मुड़ना चाहिए।<sup>20</sup> तब मैं तुम्हें इस प्रजा के लिए कांसी की एक ढढ़ दीवार बनाऊंगा; और यद्यपि वे तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, वे तुम पर विजय नहीं पायेंगे; क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम्हें बचाने के लिए और तुम्हें छुड़ाने के लिए,” यहोवा की यह घोषणा है।<sup>21</sup> “इसलिए मैं तुम्हें दुश्यों के हाथ से छुड़ाऊंगा, और मैं तुम्हें हिंसक लोगों की पकड़ से छुड़ाऊंगा।”

**16** यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,  
<sup>2</sup> “तू अपने लिए पती न लेना, और न इस स्थान में पुत्र या पुत्रियाँ उत्पन्न करना।”<sup>3</sup> क्योंकि यहोवा इस स्थान में उत्पन्न होने वाले पुत्रों और पुत्रियों के विषय में, और उनकी माताओं के विषय में जो उर्वें जन्म देती हैं, और उनके पिताओं के विषय में जो इस भूमि में उर्वें जन्म देते हैं, यह कहता है:<sup>4</sup> “वे घातक बीमारियों से मरेंगे; उनका शोक नहीं किया जाएगा और न ही उर्वे दफनाया जाएगा। वे भूमि की सतह पर खाद के समान होंगे, और तलवार और अकाल से समाप्त हो जायेंगे, और उनके मृत शरीर आकाश के पक्षियों और पृथी के जननवरों के लिए भोजन बन जाएंगे।”<sup>5</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: “शोक के घर में प्रवेश न करना, न उनके लिए शोक करना या दुखी होना; क्योंकि मैंने इस प्रजा से अपनी शांति हटा ली है,” यहोवा की घोषणा है, “मेरी कृपा और करुणा।”<sup>6</sup> इस भूमि में बड़े और छोटे दोनों मरेंगे; उर्वे दफनाया नहीं जाएगा, न ही कोई उनके लिए शोक करेगा, या उनके लिए अपने शरीर पर कटौती करेगा या अपने सिर मुंडाएगा।<sup>7</sup> लोग उनके लिए शोक में रोती नहीं तोड़ेंगे, मृतकों के लिए किसी को सांत्वना देने के लिए; न ही उर्वे सांत्वना का प्याला देंगे किसी के पिता या माता के लिए।<sup>8</sup> इसके अलावा, तू भोज के घर में न जाना, उनके साथ बैठकर खाने और पीने के लिए।<sup>9</sup> क्योंकि यहोवा सेनाओं का परमेश्वर, इसाएल का परमेश्वर कहता है: “देख, मैं इस स्थान से, तुम्हारी आँखों के सामने और तुम्हारे समय में, आनंद की आवाज़ और खुशी की आवाज़, दूर्लह की आवाज़ और दुल्हन की

आवाज़ को समाप्त कर दूंगा।<sup>10</sup> अब जब तुम इन सभी शब्दों को इस प्रजा से कहोगे और वे तुमसे कहेंगे, यहोवा ने हमारे खिलाफ यह महान आपदा क्वाँ घोषित की है? हमारा क्या अपराध है, और हमने यहोवा हमारे परमेश्वर के खिलाफ कौन सा पाप किया है?<sup>11</sup> तब तुम उर्वें कहना, यह इसलिए है क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे त्याग दिया है, यहोवा की घोषणा है, और उर्वोंने अन्य देवताओं का अनुसरण किया, उनकी सेवा की, और उनके सामने ज़ुके। लेकिन उर्वोंने मुझे त्याग दिया है, और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया है।<sup>12</sup> तुमने भी अपने पूर्वजों से अधिक बुराई की है, क्योंकि देखो, तुममें से प्रत्येक अपने बुरे हृदय की हठधर्मिता का अनुसरण कर रहा है, बिना मेरी बात सुने।<sup>13</sup> इसलिए मैं तुम्हें इस भूमि से उस भूमि में फेंक दूंगा जिसे तुम नहीं जानते, न तुम और न तुम्हारे पूर्वज; और वहाँ तुम दिन और रात अन्य देवताओं की सेवा करोगे, क्योंकि मैं तुम्हें कोई कृपा नहीं दूंगा।”

<sup>14</sup> इसलिए देखो, दिन आ रहे हैं, यहोवा की घोषणा है, “जब यह नहीं कहा जाएगा, जैसे यहोवा जीवित है, जिसने इसाएल के पुत्रों को मिस्र की भूमि से बाहर लाया,”<sup>15</sup> बल्कि, “जैसे यहोवा जीवित है, जिसने इसाएल के पुत्रों को उत्तर की भूमि से और उन सभी देशों से लाया जाहौं उसने उर्वें निर्वासित किया था।” क्योंकि मैं उर्वें उनकी अपनी भूमि में पुनःस्थापित करूँगा जो मैंने उनके पूर्वजों को दी थी।<sup>16</sup> देखो, मैं कई मछुआरों को भेजने जा रहा हूँ। यहोवा की घोषणा है, “और वे उनके लिए मछली पकड़ेंगे; और उसके बाद मैं कई शिकारी भेजूंगा, और वे हर पर्वत और हर पहाड़ी से, और चट्टानों की दरारों से उर्वें शिकार करेंगे।”<sup>17</sup> क्योंकि मेरी आँखें उनके सभी मार्गों पर हैं, वे मेरे चेहरे से छिपे नहीं हैं, और न ही उनका अपराध मेरी आँखों से छुपा है।<sup>18</sup> मैं पहले उनके अपराध और उनके पाप के लिए उर्वे दुगाना प्रतिफल दूंगा, क्योंकि उर्वोंने मेरी भूमि को अपवित्र किया है; उर्वोंने मेरी विरासत को उनके घृणित मूर्तियों के शरों और उनके घृणित वस्तुओं से भर दिया है।<sup>19</sup> हे यहोवा, मेरी शक्ति और मेरी दृढ़ गढ़, और संकट के दिन में मेरी शरण, तुम्हारे पास राष्ट्र आएंगे पृथी के छोर से और कहेंगे, “हमारे पूर्वजों ने केवल ज़ुठ, निरर्थकता, और कोई लाभ नहीं की चीजें विरासत में पाई है।”<sup>20</sup> क्या कोई व्यक्ति अपने लिए देवता बना सकता है? लेकिन वे देवता नहीं हैं।<sup>21</sup> “इसलिए देखो, मैं उर्वें जानें जा रहा हूँ— इस बार मैं उर्वें जानें दूंगा मेरी शक्ति और मेरी महिमा; और वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।”

## पिर्मयाह

**17** यहूदा का पाप लोहे की लेखनी से लिखा गया है; हीरी की नोक से उनके हृदय की पटिका पर खोदा गया है। और उनकी वेदियों के सींगों पर भी,<sup>2</sup> जैसे वे अपने बच्चों को याद करते हैं, वैसे ही वे अपनी वेदियों और अपने अशेरों को याद करते हैं हरे पेड़ों के नीचे ऊँचे पहाड़ों पर।<sup>3</sup> मेरे देश के पहाड़, मैं तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारे सभी खजानों को लूट के रूप में सौंप दूँगा, तुहारी ऊँची जगानों को तुहारी सीमा में पाप के लिए।<sup>4</sup> और तुम अपनी विरासत का, जो मैंने तुम्हें दी थी, अपने आप छोड़ दोगे; और मैं तुम्हें तुम्हारे शुरुओं की सेवा करने के लिए बनाऊँगा एक ऐसे देश में जिसे तुम नहीं जानते; क्योंकि तुमने मेरी क्रोध की आग को भड़काया है जो सदा जलती रहेगी।

<sup>5</sup> यहोवा यह कहता है: “शापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा करता है और शरीर को अपनी शक्ति बनाता है, और जिसका हृदय यहोवा से दूर हो जाता है।<sup>6</sup> क्योंकि वह जंगल की ज़ाड़ी के समान होगा, और जब समुद्रि आणी तब नहीं देखेगा, परन्तु निर्जन भूमि में पथरीली बंजर भूमि में बसेगा, एक नमक की भूमि जो बरी नहीं है।<sup>7</sup> ध्यन्य है वह मनुष्य जो यहोवा पर भरोसा करता है, और जिसका भरोसा यहोवा है।<sup>8</sup> क्योंकि वह उस वृक्ष के समान होगा जो जल के पास लगाया गया है जो अपनी जड़ों को धारा के पास फैलाता है, और जब गर्मी आती है तब नहीं डरता; परन्तु उसके पते हरे रहेंगे, और वह सूखे के रूप में चिंतित नहीं होगा, और न ही फल देना बंद करेगा।

<sup>9</sup> हृदय सब से अधिक कपटी होता है और अत्यंत बीमार, कौन इसे समझ सकता है?<sup>10</sup> मैं, यहोवा, हृदय की खोज करता हूँ, मैं मन की परीक्षा करता हूँ, हर व्यक्ति को उसके मार्गों के अनुसार देने के लिए, उसके कर्मों के परिणामों के अनुसार।<sup>11</sup> जैसे तीतर अडे सेतो हैं जो उसने नहीं दिए, वैसे ही वह व्यक्ति है जो अन्यथा से धन कमाता है; उसके दिनों के मध्य में यह उसे छोड़ देगा, और अंत में वह मूर्ख होगा।<sup>12</sup> उच्च स्थान पर एक महिमा का सिंहासन अंरंभ से हमारे पवित्र स्थान का स्थान है।<sup>13</sup> हे यहोवा, इसाएल की आशा, जो तुझे छोड़ देते हैं वे लजित होंगे। जो पृथ्वी पर दूर हो जाते हैं उनका नाम लिखा जाएगा, क्योंकि उहोंने यहोवा को छोड़ दिया है, जीवित जल का स्रोत।

<sup>14</sup> मुझे चंगा कर, हे यहोवा, और मैं चंगा हो जाऊँगा; मुझे बचा, और मैं बच जाऊँगा, क्योंकि तू ही मेरी स्तुति है।<sup>15</sup> देख, वे मुझसे कहते रहते हैं, “यहोवा का वचन कहाँ है? अब वह आ जाए!”<sup>16</sup> परन्तु जहाँ तक मेरी बात है, मैंने

तेरे पीछे चरवाहा बनने से जल्दी नहीं की, और न ही मैंने विनाशकारी दिन की लालसा की; तु स्वयं जानता है कि मेरे हौंठों की वाणी तेरे सामने थी।<sup>17</sup> मुझे आतंकित न कर; तु विपत्ति के दिन मैं मेरी शरण है।<sup>18</sup> जो मुझे सताते हैं वे लजित हों, परन्तु मैं लजित न होऊँ; वे निराश हों, परन्तु मैं निराश न होऊँ। उन पर विपत्ति का दिन लाओ, और उहें दुगुनी विनाश से कुचल दो!

<sup>19</sup> यहोवा ने मुझसे कहा: “जाओ और सार्वजनिक द्वारा पर खड़े हो, जहाँ से यहूदा के राजा आते और जाते हैं, और यरूशलेम के सभी द्वारों पर भी;<sup>20</sup> और उनसे कहो, ‘यहोवा का वचन सुनो, हे यहूदा के राजा, सभी यहूदा, और यरूशलेम के सभी निवासी जो इन द्वारों से आते हैं।’<sup>21</sup> यहोवा यह कहता है: “अपने लिए ध्यान रखो, और विश्राम दिन पर कोई बोझ न उठाओ या यरूशलेम के द्वारों से कुछ भी न लाओ।”<sup>22</sup> तुम अपने घरों से विश्राम दिन पर कोई बोझ न लाओ और न कोई काम करो, परन्तु विश्राम दिन को पवित्र मानो, जैसा मैंने तुम्हारे पूर्वजों को आज्ञा दी थी।<sup>23</sup> फिर भी उहोंने न सुना और न अपने कानों को झुकाया, परन्तु अपनी गर्दनें कढ़ी कर लीं ताकि न सुने और न अनुशासन स्वीकार करें।<sup>24</sup> परन्तु यह होगा, यदि तुम मेरी ओर ध्यान दोगे, यहोवा कहता है, “इस नगर के द्वारों से विश्राम दिन पर कोई बोझ न लाओ, परन्तु विश्राम दिन को पवित्र मानो और उस पर कोई काम न करो,<sup>25</sup> तब राजा और अधिकारी इस नगर के द्वारों में प्रवेश करेंगे, डाऊद के सिंहासन पर बैठते हुए, रथों और घोड़ों पर सवार होते हुए, वे और उनके अधिकारी, यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी, और यह नगर सदा के लिए बसा रहगा।”<sup>26</sup> वे यहूदा के नगरों से और यरूशलेम के आस-पास के क्षेत्रों से आएंगे, बिन्यामीन के देश से, नीचले देश से, पहाड़ी देश से, और नेगेव से, होमबलि, बलिदान, अन्नबलि, और धूप लाते हुए, और यहोवा के घर में धन्यवाद के बलिदान लाते हुए।<sup>27</sup> परन्तु यदि तुम मेरी बात न सुनो कि विश्राम दिन को पवित्र मानो विश्राम दिन पर कोई बोझ न उठाओ और यरूशलेम के द्वारों से न आओ, तब मैं उसके द्वारों में आग भड़काऊँगा, और यह यरूशलेम के महलों को भस्म कर देगी और वह बुझाई नहीं जाएगी।”

**18** यहोवा का यह वचन पिर्मयाह के पास आया, कहता है, “उठो और कुम्हार के घर जाओ, और वहाँ मैं तुम्हें अपने वचन सुनाऊँगा।”<sup>3</sup> तब मैं कुम्हार के घर गया, और वह चाक पर कुछ बना रहा था।<sup>4</sup> परन्तु जो बर्तन वह मिट्टी से बना रहा था, वह कुम्हार के हाथ में बिगड़ गया; इसलिए उसने उसे फिर से एक और बर्तन

## यिर्मयाह

बना दिया, जैसा कि कुम्हार को अच्छा लगा।<sup>5</sup> तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, कहता है, <sup>6</sup> “क्या मैं, इसाएल के घराने, तुम्हारे साथ ऐसा नहीं कर सकता जैसा यह कुम्हार करता है?” यहोवा की यह वाणी है। “देखो, जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्ठी होती है, वैसे ही तुम मेरे हाथ में हो, इसाएल के घराने।”<sup>7</sup> कभी-कभी मैं किसी राष्ट्र या राज्य के विषय में यह कहता हूँ कि उसे उखाड़ द्दूँ गिरा द्दूँ या नष्ट कर द्दूँ,<sup>8</sup> यदि वह राष्ट्र जिसके विरुद्ध मैंने कहा है, अपनी बुराई से फिर जाए, तो मैं उस विपत्ति से पछताऊंगा जो मैं उस पर लाने की योजना बना रहा था।<sup>9</sup> या कभी-कभी मैं किसी राष्ट्र या राज्य के विषय में यह कहता हूँ कि उसे बनाऊँ या लागाऊँ;<sup>10</sup> यदि वह मेरी दृष्टि में बुरा करे और मेरी आवाज़ का पालन न करे, तो मैं उस भलाई से पछताऊंगा जिससे मैंने उसे आशीर्वाद देने का बादा किया था।

<sup>11</sup> “तो अब, यहूदा के पुरुषों और यस्तश्लेम के निवासियों से कहो, यह यहोवा का वचन है: देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक विपत्ति की योजना बना रहा हूँ और तुम्हारे विरुद्ध एक योजना बना रहा हूँ। ओह, तुम मेरे से हर एक अपनी बुरी राह से फिर जाओ, और अपने मार्ग और अपने काम सुधारो।”<sup>12</sup> परन्तु वे कहेंगे, “यह निराशाजनक है! क्योंकि हम अपनी योजनाओं का पालन करेंगे, और हम में से हर एक अपने बुरे हृदय की हठथर्मिता के अनुसार कार्य करेगा।”<sup>13</sup> इसलिए यहोवा यह कहता है: ‘अब राष्ट्रों के बीच पूछो: किसने ऐसा कुछ सुना है? इसाएल की कुमारी ने एक अत्यंत भयानक काम किया है।’<sup>14</sup> क्या लेबान की बर्क खुले देश की चट्टान को छोड़ देती है? या क्या विदेशी भूमि से बहने वाला ठंडा पानी कभी सूखा जाता है?<sup>15</sup> क्योंकि मेरे लोगों ने मुझे भुला दिया है, वे व्यर्थ देवताओं को धूप जलाते हैं और वे अपनी राहों में ठोकर खा गए हैं, प्राचीन मार्गों में, ऐसे पर्याएँ पर चलने के लिए, जो राजमार्ग नहीं हैं।<sup>16</sup> अपनी भूमि को उजाड़ बनाने के लिए, एक स्थायी फटकार का विषय: जो कोई भी इसके पास से गुजरेगा वह चकित होगा और अपना सिर हिलाएगा।<sup>17</sup> पूर्वी हवा की तरह मैं उहें शून्य के सामने बिखरे ढंगा; मैं उन्हें अपनी पीठ दिखाऊंगा और अपना मुख नहीं उनके विपत्ति के दिन।”<sup>18</sup>

<sup>18</sup> तब उन्होंने कहा, “आओ, हम यिर्मयाह के विरुद्ध योजनाएँ बनाएं। निश्चित रूप से कानून याजक से नहीं खोएगा, न ही सलाह ज्ञानी से, न ही दिव्य वचन भविष्यवक्ता से। आओ, हम अपनी जीभ से उसे मारें, और उसके किसी भी वचन पर ध्यान न दें।”<sup>19</sup> मुझे ध्यान दो, हे यहोवा, और मेरे विरेधियों की आवाज़ सुनो!

<sup>20</sup> क्या भलाई का बदला बुराई से दिया जाना चाहिए? फिर भी उन्होंने मेरे लिए एक गड्ढा खोदा है। याद करो कि मैं तुम्हारे सामने खड़ा था उनकी ओर से भलाई की बात करने के लिए, ताकि तुम्हारा क्रोध उनसे दूर हो सके।<sup>21</sup> इसलिए, उनके बच्चों को अकाल में दे दो और उन्हें तलवार की शक्ति में सौंप दो; और उनकी पतियाँ निःसंतान और विधाव हो जाएं। उनके पुरुष भी मारे जाएं, उनके जवान युद्ध में तलवार से मारे जाएं।<sup>22</sup> उनके घरों से एक चीलार सुनाई दे, जब तुम अचानक उन पर हमलावर लाओ; क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए एक गड्ढा खोदा है और मेरे पैरों के लिए जाल लगाए हैं।<sup>23</sup> परन्तु तुम, हे यहोवा, जानते हो मेरे विरुद्ध उनकी सभी घातक योजनाएँ, उनकी बुराई को क्षमा न करो या उनकी पाप को अपनी दृष्टि से मिटाओ। परन्तु वे तुम्हारे सामने गिर जाएं; उनसे अपने क्रोध के समय में निपटो!

**19** यहोवा यों कहता है: “जाओ और कुम्हार के मिट्ठी के बर्तन को खरीदो, और लोगों के कुछ बुजुर्गों और कुछ वशिष्य याजकों को साथ ले लो।”<sup>2</sup> फिर बर्तन फोड़ने के फाटक के प्रवेश द्वार के पास बैन-हित्रोम की घाटी में जाओ, और वहाँ वे वचन सुनाओ जो मैं तुम्हें बताऊँगा,<sup>3</sup> और कहो, “यहोवा का वचन सुनो, हे यहूदा के राजाओं और यस्तश्लेम के निवासियों: यहोवा सेनाओं का, इसाएल का परमेश्वर यों कहता है: “देखो, मैं इस स्थान पर एक विपत्ति लाने जा रहा हूँ, जिससे सुनने वाले हर एक के कान झनझना उठेंगे।”<sup>4</sup> क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया है और इस स्थान को पराया बना दिया है, और यहाँ दूसरे देवताओं के लिए बलिदान जलाए हैं जिहें न तो उन्होंने, न उनके पूर्वजों ने, और न यहूदा के राजाओं ने कभी जाना था, और उन्होंने इस स्थान को निर्दोषों के खन से भर दिया है,<sup>5</sup> और उन्होंने बाल के ऊँचे स्थान बनाए हैं ताकि अपने पुत्रों को बाल के लिए अप्रि में होमबलि के रूप में जलाएँ, ऐसी बात जो मैंने कभी न तो आज्ञा दी, न कही, और न ही मेरे मन में कभी आई।<sup>6</sup> इसलिए, देखो, दिन आ रहे हैं, “यहोवा की यह घोषणा है, “जब इस स्थान को न तो तोफेत और न ही बैन-हित्रोम की घाटी कहा जाएगा, बल्कि वध की घाटी कहा जाएगा।”<sup>7</sup> और मैं इस स्थान में यहूदा और यस्तश्लेम की योजनाओं को विफल कर द्दूँगा, और मैं उन्हें उनके शत्रुओं के सामने तलवार से गिरा द्दूँगा और उन लोगों के हाथों से जो उनके प्राणों के खोजी हैं, और मैं उनके मृत शरीरों को आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के पशुओं के लिए भोजन बना द्दूँगा।<sup>8</sup> मैं इस नार को उजाड़ और फटकार का कारण बना द्दूँगा; जो कोई इसके पास से गुजरेगा, वह इसके सभी विपत्तियों के कारण चकित होगा और फटकार करेगा।<sup>9</sup> और मैं उन्हें

## यिर्मयाह

उनके पुत्रों का मांस और उनकी पुत्रियों का मांस खाने पर मजबूर कर दूँगा, और वे एक-दूसरे का मांस खाएँगे उस घेराबंदी और संकट में जिसमें उनके शत्रु और उनके प्राणों के खोजी उहें संकट में डालेंगे।<sup>10</sup> <sup>11</sup> फिर तुम उस बर्तन को उन लोगों के सामने तोड़ देना जो तुम्हरे साथ आए हैं,<sup>11</sup> और उनसे कहो, "यहोवा सेनाओं का यह कहना है: 'मैं इस लोगों और इस नगर को उसी प्रकार तोड़ दूँगा जैसे कोई कुम्हार का बर्तन तोड़ता है, जो फिर से उपयोग में नहीं लाया जा सकता; और वे तोफेत में अपने मृतकों को दफनाएँगे, क्योंकि दफनाने के लिए काई और स्थान नहीं होगा।<sup>12</sup> मैं इस स्थान और इसके निवासियों के साथ ऐसा ही व्यवहार करूँगा,'"

यहोवा की यह धोषणा है, "ताकि इस नगर को तोफेत के समान बना दूँ।"<sup>13</sup> और यस्त्वालेम के घर और यहूदा के राजाओं के घर तोफेत के स्थान के समान अपवित्र हो जाएँगे, क्योंकि उन सभी घरों की छतों पर उन्होंने सभी आकाशीय ज्योतियों के लिए बलिदान जलाए और अच्य देवताओं के लिए पेणे अर्पण किए।<sup>14</sup> <sup>15</sup> फिर यिर्मयाह तोफेत से लौट आया, जहाँ यहोवा ने उसे भविष्यवाणी करने के लिए भेजा था; और वह यहोवा के भवन के अँगन में खड़ा हुआ और सभी लोगों से कहा, <sup>15</sup> "यहोवा सेनाओं का, इसाएल का परमेश्वर यों कहता है: 'देखो, मैं इस नगर और इसके सभी नगरों पर वह पूरी विपत्ति लाने जा रहा हूँ जो मैंने इसके विरुद्ध धोषित की है, क्योंकि उन्होंने अपनी गर्दनें कठोर कर ली हैं ताकि मेरे चरनों को न सुनें।'"

**20** जब इम्मेर का पुत्र, याजक पश्शहूर, जो यहोवा के भवन में प्रधान अधिकारी था, ने यिर्मयाह को ये बातें भविष्यवाणी करते सुना,<sup>2</sup> तो पश्शहूर ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को पिटवाया और उसे ऊपरी बिन्यामीन फाटक पर, जो यहोवा के भवन के पास था, बेड़ियों में डाल दिया।<sup>3</sup> फिर अगले दिन पश्शहूर ने यिर्मयाह को बेड़ियों से छुड़ाया। और यिर्मयाह ने उससे कहा, "यहोवा ने तेरा नाम पश्शहूर नहीं, बल्कि मगोर-मिस्सिबिक रखा है।<sup>4</sup> क्योंकि यहोवा यों कहता है: 'देख, मैं तुझे और तेरे सभी मित्रों को आंतक का विषय बना दूँगा; और जब तेरी अँखें देख रही होंगी, तब वे अपने शत्रुओं की ललवार से गिरेंगे। और मैं समस्त यहूदा को बाबुल के राजा के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उहें बाबुल में निवासन में ले जाएगा और तलवार से मार डालेगा।<sup>5</sup> मैं इस नगर की सारी सम्पत्ति, उसकी सारी उपज और उसकी सारी मूल्यवान वस्तुओं, और यहूदा के राजाओं के सभी खजाने उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूँगा; और वे उहें लूट लेंगे, ले जाएंगे, और बाबुल में ले जाएंगे।<sup>6</sup> और तू पश्शहूर, और तेरे घर में रहने वाले सभी लोग बंदी बनकर जाएंगे;

और तू बाबुल में प्रवेश करेगा, और वहीं मरेगा और वहीं दफनाया जाएगा, तू और तेरे सभी मित्र जिनको तूने झूठी भविष्यवाणी की है।<sup>7</sup>

<sup>7</sup> तूने मुझे मनाया, हे यहोवा, और मैं मान गया; तूने मुझ पर विजय प्राप्त की और सफल हुआ। मैं दिन भर उपहास का पात्र बन गया हूँ, हर कोई मुझ पर हँसता है।

<sup>8</sup> क्योंकि जब भी मैं बोलता हूँ, मैं जोर से रोता हूँ, मैं हिसा और विनाश की धोषणा करता हूँ, क्योंकि मेरे लिए यहोवा का वचन दिन भर उपहास और तिरस्कार का कारण बन गया है।<sup>9</sup> परन्तु यदि मैं कहूँ, "मैं उसे याद नहीं करूँगा या उसके नाम में और नहीं बोलूँगा," तो मेरे हृदय में यह जलती हुई आग की तरह बन जाता है जो मेरी हँसियों में बंद है; और मैं इसे सहन नहीं कर सकता।<sup>10</sup> क्योंकि मैंने कई लोगों की फुसफुसाहट सुनी है, "चारों ओर आंतक। उसे दोषी ठहराओ; हाँ, चलो उसे दोषी ठहराएँ।" मेरे सभी विश्वासपात्र मित्र, मेरे पतन की प्रतीक्षा करते हुए कहते हैं: "शायद वह मनाया जाएगा, ताकि हम उस पर विजय प्राप्त करें और उससे बदला लें।"<sup>11</sup> परन्तु यहोवा मेरे साथ एक शक्तिशाली पोद्धारी की तरह है; इसलिए मेरे उत्तीर्णक ठोकर खाएंगे और सफल नहीं होंगे। वे बहुत लजित होंगे, क्योंकि वे असफल हुए हैं; एक अनन्त अपमान भुलाया नहीं जाएगा।<sup>12</sup> फिर भी, सेनाओं के यहोवा, जो धर्मियों की परीक्षा करता है, जो मन और हृदय को देखता है; मुझे उन पर तेरा प्रतिशोध देखने दे, क्योंकि मैंने अपनी वाद-विवाद तुझ पर छोड़ी है।<sup>13</sup> यहोवा की सुन्ति करो, यहोवा की प्रशंसा करो! क्योंकि उसने दरिद्र की आमा को दुर्शि के हाथ से बचाया है।

<sup>14</sup> शापित हो वह दिन जब मैं जन्मा था। वह दिन जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया, धन्य न हो।<sup>15</sup> शापित हो वह व्यक्ति जिसने यह समाचार मेरे पिता को दिया, कहकर, "तुम्हरे लिए एक पुत्र जन्मा है।" और उसे बहुत खुश किया।<sup>16</sup> परन्तु वह व्यक्ति उन नगरों के समान हो जिन्हें यहोवा ने बिना दया के नष्ट कर दिया, और वह सुबह में चिल्लाहट सुने और दोपहर में चेतानी की आवाज।<sup>17</sup> क्योंकि उसने मुझे जन्म से पहले नहीं मारा, ताकि मेरी माँ मेरी कब्र होती, और उसका गर्भ सदा के लिए गर्भवती रहता।<sup>18</sup> मैं गर्भ से क्यों बाहर आया, दुःख और पीड़ा देखने के लिए, ताकि मेरे दिन लजा में बितें?

**21** वह वचन जो यिर्मयाह के पास यहोवा की ओर से आया, जब राजा सिदकियाह ने मल्कियाह के पुत्र पश्शहूर और याजक सप्त्याह, मासेयाह के पुत्र को

## पिरमयाह

उसके पास यह कहने के लिए भेजा, <sup>2</sup> "हमारी ओर से यहोवा से पूछो, क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है; शायद यहोवा हमारे साथ अपने सभी अद्भुत कार्यों के अनुसार व्यवहार करेगा, ताकि शत्रु हमसे हट जाए।" <sup>3</sup> परन्तु पिरमयाह ने उनसे कहा, "तुम सिदकियाह से यह कहो: <sup>4</sup> 'यह इसाएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: "देखो, मैं युद्ध के उन हथियारों को वापस कर दँगा जो तुम्हारे हाथ में हैं, जिनसे तुम बाबुल के राजा और कसदियों के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों जो दीवार के बाहर तुम्हें धेर हुए हैं, और मैं उन्हें इस नगर के बीच में इकट्ठा करूँगा।" <sup>5</sup> तब मैं स्वयं तुम्हारे विरुद्ध एक बढ़े हुए हाथ और एक शक्तिशाली भुजा के साथ युद्ध करूँगा, क्रोध, रोष, और महान आक्रोश के साथ। <sup>6</sup> मैं इस नगर के निवासियों को भी मारूँगा, वारे वे लोग हों या पशु; वे एक बड़ी महामारी से मरेंगे। <sup>7</sup> तब उसके बाद," यहोवा की यह घोषणा है, "मैं यहूदा के राजा सिदकियाह, उसके सेवकों, और लोगों को—जो इस नगर में महामारी, तलवार, और अकाल से बचेंगे—बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में दे दँगा, और उनके शत्रुओं के हाथ में और उन लोगों के हाथ में जो उनके प्राण की खोज में हैं, और वह उन्हें तलवार की धार से मारेगा। वह उन्हें न तो बछंगा, न दया करेगा, न करुणा करेगा।"<sup>8</sup>

<sup>9</sup> "और तुम इस लोगों से कहो, यह यहोवा कहता है: "देखो, मैं तुम्हारे सामने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग रख रहा हूँ।" <sup>10</sup> जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, अकाल, या महामारी से मरेगा; परन्तु जो कोई बाहर जाकर तुम्हें धेर हुए कसदियों के सामने आत्मसमर्पण करेगा वह जीवित रहेगा, और वह अपनी जान को लूट के रूप में पाएगा। <sup>11</sup> क्योंकि मैंने इस नगर के विरुद्ध अपना मुख बुराई के लिए और भलाई के लिए नहीं किया है," यहोवा की यह घोषणा है। "वह बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा जाएगा और वह इसे आग से जला देगा।"<sup>12</sup>

<sup>13</sup> "फिर यहूदा के राजा के घराने से कहो: यहोवा का वचन सुनो, <sup>14</sup> दाऊद के घराने, यह यहोवा कहता है: हर सुबह न्याय करो, और जो लूट लिया गया है उसे उसके उत्तरीड़क की शक्ति से बचाओ, ताकि मेरा क्रोध आग की तरह न फैल जाए और बिना बुझाए जलात रहे, उनके कर्मों की बुराई के कारण।" <sup>15</sup> "देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, हे घाटी के निवासी, तुम चट्टानी मैदान," यहोवा की यह घोषणा है, "तुम जो कहते हों, 'हमारे विरुद्ध कौन उत्तरेगा? या कौन हमारे निवासों में प्रवेश करेगा?' <sup>16</sup> परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारे कर्मों के परिणाम के अनुसार दंड

दूँगा," यहोवा की यह घोषणा है, "और मैं उसके वन में आग लगाऊँगा और यह उसके चारों ओर सब कुछ भस्म कर देगा।"<sup>17</sup>

**22** यहोवा यह कहता है: "यहूदा के राजा के घर जाओ, और वहाँ यह वचन कहो, <sup>2</sup> और कहो, 'यहोवा का वचन सुनो, हे यहूदा के राजा, जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है—तुम, तुम्हारे सेवक, और तुम्हारे लोग जो इन द्वारों में प्रवेश करते हैं।' <sup>3</sup> यहोवा यह कहता है: "न्याय और धर्म करो, और उन लोगों को बचाओ जिन्हें उनके उत्तरीड़क की शक्ति से लूटा गया है। परदेशी, अनाथ, या विधाव के साथ दुर्व्यवहार या हिंसा मत करो, और इस स्थान में निर्दोष रक्त मत बहाओ।" <sup>4</sup> क्योंकि यदि तुम सचमुच इस आदेश का पालन करोगे, तो इस घर के द्वारों में राजा प्रवेश करोगे, जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेंगे, रथों और घोड़ों पर सवार होकर, वे और उनके सेवक और उनके लोग। <sup>5</sup> परन्तु यदि तुम इन वचनों का पालन नहीं करोगे, तो मैं अपनी शपथ खाता हूँ, "यहोवा की यह घोषणा है, "कि यह घर खंडहर बन जाएगा।"<sup>6</sup> <sup>7</sup> क्योंकि यहोवा यहूदा के राजा के घर के विषय में यह कहता है: "तुम मेरे लिए गिलाद के समान हो, लेबानोन की चोटी के समान; फिर भी मैं तुम्हें निश्चय ही जंगल के समान बना दूँगा, ऐसे नगरों के समान जो बसे नहीं हैं।" <sup>8</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे विरुद्ध विधेयकों को तैयार करूँगा, प्रत्येक अपने हथियारों के साथ; और वे तुम्हारे उत्तम देवदारों को काट डालेंगे और उन्हें आग में डाल देंगे। <sup>9</sup> कई राष्ट्र इस नगर के पास से गुजरेंगे; और वे एक-दूसरे से कहेंगे, यहोवा ने इस महान नगर के साथ ऐसा क्यों किया? <sup>10</sup> तब वे उत्तर देंगे, क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को स्वाग दिया और अन्य देवताओं के आगे झुककर उनकी सेवा की।"<sup>11</sup> <sup>12</sup> मरे हुए के लिए मत रोओ और न उसके लिए विलाप करो, परन्तु उसके लिए गहराई से रोओ जो चला गया है, क्योंकि वह कभी लौटकर नहीं आएगा और न अपनी जन्मभूमि को फिर देखेगा।

<sup>13</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है शल्लूम के विषय में, योशियाह का पुत्र, यहूदा का राजा, जो अपने पिता योशियाह के स्थान पर राजा बना, जो इस स्थान से बाहर गया: "वह कभी वहाँ नहीं लौटेगा; <sup>14</sup> परन्तु जिस स्थान पर उसे निवासन में ले जाया गया, वहाँ वह मरेगा, और वह इस भूमि को फिर कभी नहीं देखेगा।" <sup>15</sup> हाय उस पर जो अपने घर को बिना धर्म के बनाता है, और अपनी ऊपरी कोठरियों को बिना न्याय के, जो अपने पढ़ोसी की सेवाओं का उपयोग बिना वेतन के करता है और उसे उसकी मजदूरी नहीं देता, <sup>16</sup> जो कहता है, मैं

## पर्मयाह

अपने लिए एक बड़ा घर बनाऊँगा विस्तृत ऊपरी कोठरियों के साथ, और उसकी खिड़कियाँ काढ़ूँगा, उसे देवदार से पैनल करूँगा और उसे चमकदार लाल रंग से रंगूँगा।<sup>15</sup> क्या तुम देवदार में प्रतिस्पर्धा करके राजा बन जाते हो? क्या तुम्हरे पिता ने नहीं खाया और पिया और न्याय और धर्म किया? तब उसके लिए सब कुछ अच्छा हुआ।<sup>16</sup> उसने पीड़ित और गरीब के मामले की पैरवी की, तब उसके लिए सब कुछ अच्छा हुआ। क्या यही मुझे जानेवा का अर्थ नहीं है?" यहोवा की यह घोषणा है।<sup>17</sup> "परन्तु तुम्हारी अर्थों और तुम्हारा हृदय केवल अपनी बेईमान लाभ के लिए हैं, और निर्दोष रक्त बहाने के लिए, और उत्पीड़न और शोषण करने के लिए।"<sup>18</sup> इसलिए यहोवा यह कहता है योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के विषय में, यहूदा का राजा: "वे उसके लिए विलाप नहीं करेंगे: 'ओह, मेरे भाई!' या, 'ओह, बहना!' वे उसके लिए विलाप नहीं करेंगे: 'ओह, स्वामी के लिए!' या, 'ओह, उसकी शोभा!'<sup>19</sup> वह गंधे की कब्र के साथ दफनाया जाएगा, घसीटकर बाहर फेंका जाएगा यरूशलेम के द्वारों से परे।<sup>20</sup> लेबानोन पर चढ़ो और चिल्लाओ, और बाशान में अपनी आवाज उठाओ; अबारिम से भी चिल्लाओ, क्योंकि तुम्हारे सभी प्रेमी कुचल दिए गए हैं।<sup>21</sup> मैंने तुम्हरे मुस्कृद्धि में तुमसे बात की, परन्तु तुमने कहा, "मैं नहीं सूर्यो!" यह तुम्हारी युवावस्था से तुम्हारा अभ्यास रहा है, कि तुमने मेरी आवाज का पालन नहीं किया।<sup>22</sup> हवा तुम्हरे सभी चरवाहों को उड़ा दे जाएगी, और तुम्हारे प्रेमी निर्वासन में चले जाएँगे; तब तुम निश्चित रूप से शर्मिदा और अपमानित हो जाओगे अपनी सारी दुष्टता के कारण।<sup>23</sup> तुम जो लेबानोन में रहते हो, देवदारों में बसे हुए, जब तुम्हरे ऊपर पीड़ा आएगी, तो तुम कैसे कराहोगे, जैसे प्रसव पीड़ा में रस्ती!

<sup>24</sup> "जैसे मैं जीवित हूँ," यहोवा की यह घोषणा है, "यद्यपि कोन्याह योशियाह का पुत्र यहूदा का राजा मेरी दाहिनी हाथ की अंगूठी के समान होता, फिर भी मैं तुम्हें खींच सूँगा;<sup>25</sup> और मैं तुम्हें उन लोगों के हाथ में सौंप दूँगा जो तुम्हरे जीवन की खोज में हैं, हाँ, उन लोगों के हाथ में जिसने तुम डरते हो, नबूकदनेस्सर बाबूल के राजा और कसदियों के हाथ में।<sup>26</sup> मैं तुम्हें और तुम्हारी माँ को जिसने तुम्हें जन्म दिया एक अन्य देश में फेंक दूँगा जहाँ तुम पैदा नहीं हुए थे, और वहाँ तुम मरोग।<sup>27</sup> परन्तु जिस भूमि की ओर वे लौटेंगे की लालसा रखते हैं, वे उसमें नहीं लौटेंगे।<sup>28</sup> क्या यह व्यक्ति कोन्याह एक तुच्छ, टूटा हुआ बर्तन है? या क्या वह एक अवाळनीय पात्र है? क्यों उसे और उसके वंशजों को बाहर फेंका गया और एक ऐसी भूमि में डाला गया जिसे उन्होंने नहीं जाना था?<sup>29</sup> हे

भूमि, भूमि, भूमि, यहोवा का वचन सुनो!<sup>30</sup> यह यहोवा कहता है: "इस व्यक्ति को निःसंतान लिखो, एक व्यक्ति जो अपने दिनों में सफल नहीं होगा; क्योंकि उसके वंशजों में से कोई भी सफल नहीं होगा दाऊद के सिंहासन पर बैठकर या यहूदा में फिर से शासन करने वाला।"

**23** "हाय उन चरवाहों पर जो मेरी चरागाह की भेड़ों को नष्ट कर रहे हैं और तितर-बितर कर रहे हैं!" यहोवा की यह वाणी है।<sup>1</sup> इसलिए इसाएल का परमेश्वर यहोवा उन चरवाहों के विषय में जो मेरी प्रजा की देखभाल कर रहे हैं, यह कहता है: "तुमने मेरी भेड़ों को तितर-बितर कर दिया और उन्हें भगा दिया, और उनके विषय में चिंता नहीं की; देखो, मैं तुम्हरे बुरे कामों के लिए तुम्हें जवाबदेह ठहराऊँगा," यहोवा की यह वाणी है।<sup>2</sup> "तब मैं स्वयं अपनी भेड़ों के बचे हुए को उन सभी देशों से इकट्ठा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें भगा दिया है, और उन्हें उनकी चरागाह में वापस लाऊँगा, और वे फलवन्त और बढ़ोंगे।<sup>3</sup> मैं उनके ऊपर चरवाहों को उठाऊँगा और वे उनकी देखभाल करेंगे; और वे अब और डरेंगे नहीं, न ही आत्कित होंगे, और न ही कोई गायब होगा," यहोवा की यह वाणी है।<sup>4</sup> "देखो, वे दिन आ रहे हैं," यहोवा की यह वाणी है, "जब मैं दाऊद के लिए एक धर्मी शाश्वा को उठाऊँगा; और वह राजा के रूप में राज्य करेगा और बुद्धिमानी से कार्य करेगा, और देश में न्याय और धर्म करेगा।<sup>5</sup> उसके दिनों में यहूदा बाचाया जाएगा, और इसाएल सुरक्षित रहेगा; और यह उसका नाम होगा जिससे वह पुकारा जाएगा: 'यहोवा हमारी धार्मिकता।'<sup>6</sup> इसलिए देखो, वे दिन आ रहे हैं," यहोवा की यह वाणी है, "जब वे अब वह नहीं कहेंगे, जैसे यहोवा जीवित है, जिसने इसाएल के पुत्रों को मिस्र देश से बाहर लाया,"<sup>7</sup> बत्कि, जैसे यहोवा जीवित है, जिसने इसाएल के घराने के वंशजों को उत्तर देश और उन सभी देशों से वापस लाया जहाँ मैंने उन्हें भगा दिया था। तब वे अपनी भूमि पर निवास करेंगे।"<sup>8</sup>

<sup>9</sup> भविष्यद्वक्ताओं के विषय में: मेरा हृदय मेरे भीतर टूट गया है, मेरी सारी हड्डियाँ काँप रही हैं; मैं एक नशे में आदमी की तरह ही गया हूँ, यहाँ तक कि एक आदमी की तरह जो दाखमधु से पराजित हो गया है, यहोवा के कारण और उसके पवित्र वचनों के कारण।<sup>10</sup> क्योंकि देश व्यधिचारियों से भर गया है, देश शाप के कारण विलाप कर रहा है। जंगल की चरागाहें सूखे गई हैं। उनका मार्ग बुरा है और उनकी शक्ति सही नहीं है।<sup>11</sup> "क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों अपवित्र हैं; यहाँ तक कि मेरे घर में मैंने उनकी दुष्टता पाई है," यहोवा की

## पिर्मयाह

यह वाणी है।<sup>12</sup> "इसलिए उनका मार्ग उनके लिए फिसलन भरे पर्थों के समान होगा, वे अंधकार में भगा दिए जाएंगे और उसमें गिर जाएंगे; क्योंकि मैं उन पर विपत्ति लाऊंगा, उनके दण्ड का वर्ष," यहोवा की यह वाणी है।<sup>13</sup> "इसके अलावा, मैंने सामरिया के भविष्यद्वक्ताओं में एक अपमानजनक बात देखी: उन्होंने बाल के द्वारा भविष्यद्वाणी की और मेरी प्रजा इसाएल को भटका दिया।"<sup>14</sup> येरूशलम के भविष्यद्वक्ताओं में भी मैंने एक भयानक बात देखी: व्यभिचार करना और झूठ में चलना; और वे दुष्टों के हाथों को मजबूत करते हैं, ताकि कोई अपनी दुष्टता से न फिरे। वे सब मेरे लिए सदोम के समान हो गए हैं, और उसके निवासी गमोरा के समान।<sup>15</sup> इसलिए यह सेनाओं के यहोवा का वचन भविष्यद्वक्ताओं के विषय में है: "देखो, मैं उन्हें नागदौना खिलाऊंगा और उन्हें विवैला जल पिलाऊंगा, क्योंकि येरूशलम के भविष्यद्वक्ताओं से सारा देश प्रदूषित हो गया है!"

<sup>16</sup> यह सेनाओं के यहोवा का वचन है: "उन भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को न सुनो जो तुम्हारे लिए भविष्यद्वाणी कर रहे हैं। वे तुम्हें व्यर्था में ते जा रहे हैं, वे अपनी कल्पना की दृष्टि बताते हैं, यहोवा के मुख से नहीं।"<sup>17</sup> वे उन लोगों से कहते रहते हैं जो मूझसे धूणा करते हैं, "यहोवा ने कहा है, "तुम्हें शांति मिलेगी"; और हर एक के लिए जो अपने हृदय की हठ में चलता है, वे कहते हैं, तुम पर विपत्ति नहीं आएगी।"<sup>18</sup> परन्तु कौन यहोवा की सभा में खड़ा हुआ है, कि वह उसका वचन देखे और सुनें? किसने उसके वचन पर ध्यान दिया और उसे सुना? <sup>19</sup> देखो, यहोवा का तूफान क्रोध में निकल गया है, यहाँ तक कि एक धूमने वाला तूफान; यह दुष्टों के सिर पर धूमेगा।<sup>20</sup> यहोवा का क्रोध वापस नहीं लौटेगा जब तक वह अपने हृदय के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर लेता। अंतिम दिनों में तुम इसे स्पष्ट रूप से समझेगे।<sup>21</sup> मैंने इन भविष्यद्वक्ताओं को नहीं भेजा, परन्तु वे दौड़। मैंने उनसे नहीं कहा, परन्तु उन्होंने भविष्यद्वाणी की।<sup>22</sup> परन्तु यदि वे मेरी सभा में खड़े होते, तो वे मेरी प्रजा को मेरे वचन सुनाते, और उन्हें उनकी बुरी राह से और उनके बुरे कामों से वापस ले आते।

<sup>23</sup> "क्या मैं निकट का परमेश्वर हूँ" यहोवा की यह वाणी है, "और दूर का परमेश्वर नहीं?"<sup>24</sup> क्या कोई व्यक्ति छिपने के स्थानों में छिप सकता है कि मैं उसे न देख सकूँ?" यहोवा की यह वाणी है। "क्या मैं आकाश और पृथ्वी को नहीं भरता?" यहोवा की यह वाणी है।<sup>25</sup> "मैंने उन भविष्यद्वक्ताओं को सुना है जो मेरे नाम में झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, कहते हैं, मैंने एक सपना देखा,"<sup>26</sup> कब तक? क्या उन भविष्यद्वक्ताओं के हृदय में कुछ है जो झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, ये अपने हृदय के धोखे के भविष्यद्वक्ता,<sup>27</sup> जो मेरे लोगों को उनके सपनों के द्वारा मेरा नाम भूलाने का इरादा रखते हैं जो वे एक-दूसरे को सुनाते हैं, जैसे उनके पिताओं ने बाल के कारण मेरा नाम भूला दिया।<sup>28</sup> जिस भविष्यद्वक्ता के पास एक सपना है वह अपना सपना सुनाए, परन्तु जिसके पास मेरा वचन है वह मेरा वचन सत्यता से बोता। क्या भूसे का अनाज से कोई संबंध है?" यहोवा की यह वाणी है।<sup>29</sup> "क्या मेरा वचन आग के समान नहीं है?" यहोवा की यह वाणी है, "और एक हथौड़े के समान जो चट्ठान को चूर-चूर कर देता है?"<sup>30</sup> इसलिए देखो, मैं उन भविष्यद्वक्ताओं के विरुद्ध हूँ," यहोवा की यह वाणी है, "जो एक-दूसरे से मेरे वचन चुराते हैं।"<sup>31</sup> देखो, मैं उन भविष्यद्वक्ताओं के विरुद्ध हूँ," यहोवा की यह वाणी है, "जो अपनी जीभ का उपयोग करते हैं और कहते हैं, "यहोवा की यह वाणी है!"<sup>32</sup> देखो, मैं उन लोगों के विरुद्ध हूँ जिन्होंने झूठे सपने देखे हैं," यहोवा की यह वाणी है, "और उन्हें सुनाया और मेरे लोगों को उनके झूठ और लापवाह घंटड के द्वारा गुमराह किया; फिर भी मैंने उन्हें नहीं भेजा और न ही उन्हें आदेश दिया, न ही वे इस लोगों को कोई लाभ प्रदान करते हैं," यहोवा की यह वाणी है।

<sup>33</sup> "अब जब यह लोग, या भविष्यद्वक्ता, या याजक तुमसे पूछें, कहते हैं, "यहोवा का क्या वचन है?" तब तुम उन्से कहोगे, "क्या वचन?" यहोवा की यह वाणी है, "मैं तुम्हें त्याग दूंगा।"<sup>34</sup> तब भविष्यद्वक्ता या याजक या लोग जो कहते हैं, "यहोवा का वचन," मैं उस व्यक्ति और उसके घराने पर दण्ड लाऊंगा।<sup>35</sup> यह वही है जो तुम्हें से प्रत्येक अपने पड़ोसी और अपने भाई से कहेगा: "यहोवा ने क्या उत्तर दिया?" या, "यहोवा ने क्या कहा?"<sup>36</sup> परन्तु तुम यहोवा के वचन का फिर से उल्लेख नहीं करोगे, क्योंकि हर व्यक्ति का अपना वचन वचन बन जाएगा, और तुमने जीवित परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा, हमारे परमेश्वर के वचनों को विकृत कर दिया है।<sup>37</sup> यह वही है जो तुम उस भविष्यद्वक्ता से कहोगे: "यहोवा ने तुम्हें क्या उत्तर दिया?" और, "यहोवा ने क्या कहा?"<sup>38</sup> परन्तु जब से तुम कहते हो, यहोवा का वचन, इसलिए, यह वही है जो यहोवा कहता है: "क्योंकि तुमने यह शब्द कहा है, "यहोवा का वचन," हालाँकि मैंने तुमसे यह न कहने के लिए कहा था, "यहोवा का वचन,"<sup>39</sup> इसलिए, देखो, मैं तुम्हें निश्चित रूप से भूल जाऊंगा और तुम्हें अपनी उपस्थिति से फेंक द्वारा, तुम और वह नगर जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे पिताओं को दिया था।<sup>40</sup> और मैं तुम

## यिर्मयाह

पर एक अनन्त अपमान और एक अनन्त अपमान लगाऊंगा जो भुलाया नहीं जाएगा।"

**24** जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा के राजा यहोवाकीम के पुत्र यकोन्याह और यहूदा के अधिकारियों को कारीगरों और लोहारों के साथ यरूशलेम से निवासिन में ले जाकर बाबेल में लाया, तब यहोवा ने मुझे दिखाया: देखो, यहोवा के मंदिर के सामने दो टोकरी अंजीर रखी हुई हैं।<sup>2</sup> एक टोकरी में बहुत अच्छे अंजीर थे, जैसे पहले पके हुए अंजीर, और दूसरी टोकरी में बहुत खराब अंजीर थे, जो सड़ने के कारण खाने योग्य नहीं थे।<sup>3</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?" और मैंने कहा, "अंजीर—अच्छे अंजीर, बहुत अच्छे; और खराब वाले, बहुत खराब, इनने खराब कि उहाँ स्थाया नहीं जा सकता।"<sup>4</sup> तब यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए, "यह इसाएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: जैसे थे अच्छे अंजीर हैं, वैसे ही मैं यहूदा के निवासियों को, जिन्हें मैंने इस स्थान से कसदियों के देश में भेजा है, अच्छा मानूंगा।<sup>5</sup> क्योंकि मैं अपनी दृष्टि उन पर अच्छे के लिए लगाऊंगा, और मैं उन्हें इस देश में वापस लाऊंगा; और मैं उन्हें बनाऊंगा और नष्ट नहीं करूंगा, और मैं उन्हें लगाऊंगा और उखाड़ नहीं फेंकूंगा।<sup>6</sup> और मैं उन्हें ऐसा हृदय दंगा कि वे मुझे जानें, कि मैं यहोवा हूं; और वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, क्योंकि वे अपने पूरे हृदय से मेरी ओर लाईटेंगे।<sup>7</sup> परंतु जैसे खराब अंजीर, जो सड़ने के कारण खाने योग्य नहीं हैं—वास्तव में, यहोवा कहता है— वैसे ही मैं यहूदा के राजा सिदिकियाह, उसके अधिकारियों, और यरूशलेम के बचे हुए लोगों को, जो इस देश में रहते हैं और जो मिस के देश में रहते हैं, छोड़ द्वांगा।<sup>8</sup> मैं उन्हें पृथ्वी के सभी राजों में आतक और बुराई का विषय बना द्वांगा, एक निंदा और एक कहावत, एक ताना और एक शाप उन सभी स्थानों में जहाँ मैं उन्हें तितर-बितर करूंगा।<sup>9</sup> और मैं उन पर तलवार, अकाल, और महामारी भेजूंगा जब तक कि वे उस देश से समाप्त नहीं हो जाते जो मैंने उन्हें और उनके पितरों को दिया था।"<sup>10</sup>

**25** यह यहोवा का वचन है जो यहूदा के सभी लोगों के बारे में यिर्मयाह के पास आया, यहोवाकीम के चौथे वर्ष में, जो योशियाह का पुत्र और यहूदा का राजा था (जो बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का पहला वर्ष था),<sup>2</sup> नवी यिर्मयाह ने यहूदा के सभी लोगों और यरूशलेम के सभी निवासियों से कहा, <sup>3</sup> "अम्मोन के पुत्र योशियाह के तेरहवें वर्ष से लेकर आज तक, ये तेईस वर्ष हो गए हैं, यहोवा का वचन मेरे पास आया है, और मैंने तुमसे बार-

बार कहा है, पर तुमने नहीं सुना।<sup>4</sup> और यहोवा ने अपने सभी सेवकों, नबियों को तुम्हारे पास बार-बार भेजा है, पर तुमने नहीं सुना और न ही सुनने के लिए अपने कान झुकाए,<sup>5</sup> कहते हुए, 'अब हर कोई अपनी बुरी राह से और अपने बुरे कर्मों से फिर जाओ, और उस भूमि पर निवास करो जिसे यहोवा ने तुहाँ और तुम्हारे पूर्वजों को सदा के लिए दी है;<sup>6</sup> और अन्य देवताओं के पीछे न चलो कि उनकी सेवा करो और उहाँ पूजा, और अपने हाथों के काम से मुझे क्रोधित न करो, और मैं तुहाँ कोई हानि नहीं पहुँचाऊंगा।'<sup>7</sup> फिर भी तुमने मेरी नहीं सुनी," यहोवा की घोषणा है, "ताकि तुम अपने हाथों के काम से मुझे क्रोधित करो और अपनी ही हानि करो।<sup>8</sup> इसलिए सेनाओं का यहोवा कहता है: 'क्योंकि तुमने मेरे वर्चनों का पालन नहीं किया,<sup>9</sup> देखो, मैं उत्तर के सभी परिवारों को भेजूँगा; यहोवा की घोषणा है, 'और मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को, अपने सेवक को, भेजूँगा और उहाँ इस भूमि और उसके निवासियों के विरुद्ध लाउँगा, और इन सभी आस-पास की जातियों के विरुद्ध; और मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा और उहाँ भय और फटकार का विषय बना दूँगा, और एक सदा का उजाड़ बना दूँगा।<sup>10</sup> इसके अलावा, मैं उनसे आनंद की आवाज और खुशी की आवाज, दूर्ल्ह की आवाज और दुर्ल्हन की आवाज, चक्की के पथरों की ध्वनि और दीपक की रोशनी को समाप्त कर दूँगा।<sup>11</sup> यह पूरी भूमि खंडहर और भय का स्थान बन जाएगी, और ये जातियाँ बाबुल के राजा की सेवा करेंगी सत्तर वर्षों तक।<sup>12</sup> फिर जब सत्तर वर्ष पूरे हो जाएँगे, तब मैं बाबुल के राजा और उस राष्ट्र को उनके अपराधों के लिए दंड दूँगा; यहोवा की घोषणा है, 'और कसदियों की भूमि को; और मैं इसे एक सदा का उजाड़ बना दूँगा।<sup>13</sup> मैं उस भूमि पर अपने सभी वर्चनों को लाउँगा जो मैंने उसके विरुद्ध बोले हैं, इस पुस्तक में लिखी सभी बातें, जो यिर्मयाह ने सभी जातियों के विरुद्ध भविष्यवाणी की है।<sup>14</sup> (क्योंकि कई जातियाँ और महान राजा उहाँ दास बनाएँगे, यहाँ तक कि उन्हें, और मैं उन्हें उनके कर्मों के अनुसार और उनके हाथों के काम के अनुसार प्रतिफल दूँगा।)"

<sup>15</sup> क्योंकि यह इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझसे कहा: "मेरे हाथ से क्रोध की दाखमधु का यह प्याला ले लो और उन सभी जातियों को जिसे मैं तुम्हें भेजता हूँ, उसे पिलाओ।"<sup>16</sup> तब वे पीँगे और लड़खड़ाएँगे और पागल हो जाएँगे क्योंकि तलवार जो मैं उनके बीच भेजूँगा।<sup>17</sup> तो मैंने यहोवा के हाथ से प्याला लिया और उन सभी जातियों को पिलाया जिन्हें यहोवा ने मुझे भेजा था;<sup>18</sup> यरूशलेम और यहूदा के नगरों को, और उसके राजाओं और उसके अधिकारियों को, उहाँ खंडहर, भय

## यिर्मयाह

का विषय, फटकार और शाप बनाने के लिए, जैसा कि आज है; <sup>19</sup> मिस्र के राजा फिरौन को, उसके सेवकों को, उसके अधिकारियों को, और उसके सभी लोगों को; <sup>20</sup> और सभी विदेशी लोगों को, उज़ की भूमि के सभी राजाओं को (अशेकतोन, गाजा, एक्ट्रोन, और अशदोद के अवशेष); <sup>21</sup> एदोम, मोआब, और अमोन के पुत्रों को; <sup>22</sup> और सोर के सभी राजाओं को, सिदेन के सभी राजाओं को, और समुद्र के पार के तटों के राजाओं को; <sup>23</sup> और ददान, तेम, बूज़, और उन सभी की जो अपने बालों के कोनों को काटते हैं; <sup>24</sup> और अरब के सभी राजाओं को और रेगिस्तान में रहने वाले विदेशी लोगों के सभी राजाओं को; <sup>25</sup> और जिम्मी के सभी राजाओं को, एलाम के सभी राजाओं को, और मादै के सभी राजाओं को; <sup>26</sup> और उत्तर के सभी राजाओं को, निकट और दूर, एक के बाद एक; और धरती के सभी राज्यों को जो धरती के चेहरे पर हैं; और शेषक का राजा उनके बाद पिण्डा। <sup>27</sup> “तुम उर्वे कहोगे, यह सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: ‘पियो, मतवाले हो जाओ, उट्टी करो, गिरो, और फिर न उठो’ क्योंकि तलवार जो मैं तुम्हारे बीच भेजने जा रहा हूँ।” <sup>28</sup> और यदि वे तुम्हारे हाथ से प्याला लेने से इकार करें, तो तुम उनसे कहोगे, “यह सेनाओं का यहोवा कहता है: ‘तुम अवश्य पियोगे।’” <sup>29</sup> क्योंकि देखो, मैं इस नगर पर विपत्ति लाना शुरू कर रहा हूँ जौ मेरे नाम से पुकारा जाता है, और क्या तुम पूरी तरह से दंड से मुक्त रहोगे? तुम दंड से मुक्त नहीं रहोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सभी निवासियों के विरुद्ध तलवार बुला रहा हूँ,” सेनाओं का यहोवा कहता है। <sup>30</sup> अब तुम इन सभी वर्चनों को उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करो और उनसे कहो, यहोवा ऊँचाई से गरजेगा और अपने पवित्र निवास से अपनी आवाज उठाएगा; वह अपनी भेड़ के विरुद्ध जोर से गरजेगा। वह अंगूर रौदेने वालों की तरह चिल्लाएगा, पृथ्वी के सभी निवासियों के विरुद्ध। <sup>31</sup> एक शोर पृथ्वी के अंत तक पहुँच गया है, क्योंकि यहोवा का राण्डे के साथ विवाद है। वह मानवता के साथ न्याय में प्रवेश कर रहा है; दूरी के लिए, उसने उर्वे तलवार के हवाले कर दिया है; यहोवा की धोणा है। <sup>32</sup> यह सेनाओं का यहोवा कहता है: “देखो, बुराई राष्ट्र से राष्ट्र की ओर जा रही है, और एक महान् तूफान पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों से उठ रहा है।” <sup>33</sup> उस दिन यहोवा द्वारा मरे गए लोग पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक होंगे। वे न शोक मनाए जाएँगे, न एकत्र किए जाएँगे, न दफनाए जाएँगे; वे भूमि की सतह पर खाद के समान होंगे। <sup>34</sup> हे चरवाहों, रोओं और चिल्लाओं; धूल में लोटो, हे झुंड के मालिकों, क्योंकि तुम्हारे वध और तुम्हारे बिखार के दिन आ गए हैं, और तुम एक कीमती बर्तन

की तरह गिरोगे। <sup>35</sup> चरवाहों से भागने का मार्ग समाप्त हो जाएगा, और झुंड के मालिकों से बचने का मार्ग। <sup>36</sup> चरवाहों की चिल्लाहट की आवाज़ सुनो, और झुंड के मालिकों की विलाप! क्योंकि यहोवा उनकी चराई को नष्ट कर रहा है, <sup>37</sup> और शांतिपूर्ण चराई के स्थान बर्बाद हो गए हैं यहोवा के भयंकर क्रोध के कारण। <sup>38</sup> वह अपने छिपने के स्थान से शेर की तरह निकल आया है; क्योंकि उनकी भूमि उजाड़ बन गई है अत्याचारी की तलवार के कारण, और उसके भयंकर क्रोध के कारण।

**26** यहूदा के राजा योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के राज्य के प्रारंभ में यह वचन यहोवा की ओर से आया: <sup>2</sup> “यहोवा यह कहता है: यहोवा के भवन के आँगन में खड़े हो जाओ, और यहूदा के सभी नगरों से आए हुए लोगों से, जो यहोवा के भवन में पूजा करने आए हैं, उन सभी वर्चनों को कहो जो मैंने तुम्हें कहने की आज्ञा दी है। एक भी शब्द मत छोड़ना।” <sup>3</sup> शायद वे सुनें और हर कोई अपनी बुरी राह से लौट आए, ताकि मैं उस विपत्ति से पीछे हट सकूँ जिसे मैं उनके बुरे कामों के कारण उन पर लाने की योजना बना रहा हूँ।” <sup>4</sup> और तुम उनसे कहो, यहोवा यह कहता है: “यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे, मेरी विधि पर चलने के लिए जो मैंने तुम्हरे सामने रखी है, <sup>5</sup> मेरे सेवकों भविष्यद्वक्ताओं के वर्चनों को सुनने के लिए, जिन्हें मैं बार-बार तुम्हारे पास भेजता रहा हूँ, पर तुमने नहीं सुना; <sup>6</sup> तो मैं इस घर को शीलों के समान कर दूँगा, और इस नगर को पृथ्वी की सभी जातियों के लिए शाप बना दूँगा।” <sup>7</sup> याजकों और भविष्यद्वक्ताओं और सभी लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह को ये वचन कहते हुए सुना। <sup>8</sup> जब यिर्मयाह ने वह सब कुछ कह लिया जो यहोवा ने उसे सभी लोगों से कहने की आज्ञा दी थी, तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं और सभी लोगों ने उसे पकड़ लिया और कहा, “तुझे मरना चाहिए।” <sup>9</sup> तूने यहोवा के नाम में यह क्यों भविष्यद्वाणी की है कि यह घर शीलों के समान होगा, और यह नगर निर्जन होकर उजाड़ होगा?” <sup>10</sup> और सभी लोग यहोवा के भवन में यिर्मयाह के चारों ओर इकट्ठा हो गए। <sup>11</sup> जब यहूदा के अधिकारियों ने ये बातें सुनीं, तो वे राजा के घर से यहोवा के भवन में आए और यहोवा के भवन के नए फाटक के प्रवेश द्वार पर बैठे। <sup>12</sup> तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने अधिकारियों और सभी लोगों से कहा, “इस व्यक्ति के लिए मृत्यु की सजा! क्योंकि उसने इस नगर के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की है, जैसा कि तुमने अपनी ही कानों से सुना है!”

<sup>12</sup> तब यिर्मयाह ने सभी अधिकारियों और सभी लोगों से कहा, “यहोवा ने मुझे इस घर और इस नगर के विरुद्ध

## पर्मयाह

भविष्यद्वाणी करने के लिए भेजा है, वे सभी वचन जो तुमने सुने हैं।<sup>13</sup> अब इसलिए, अपनी राहों और अपने कामों को सुधारो और अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ का पालन करो; और यहोवा उस विपत्ति से पीछे हट जाएगा जिसे उसने तुम्हारे विरुद्ध घोषित किया है।<sup>14</sup> परन्तु जहाँ तक मेरा सवाल है, देखो, मैं तुम्हारे हाथों में हाँ तुम्हारी दृष्टि में जो अच्छा और सही है, वह मेरे साथ करो।<sup>15</sup> केवल यह निश्चित जान लो कि यदि तुम मुझे मार डालते हों, तो तुम अपने ऊपर, इस नगर पर और इसके निवासियों पर निर्दोष रक्त लाओगे; क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम ये सभी वचन सुनो।<sup>16</sup> तब अधिकारियों और सभी लोगों ने याजकों और भविष्यद्वक्ताओं से कहा, “इस व्यक्ति के लिए कोई मृत्यु की सजा नहीं! क्योंकि उसने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम में हमरे कहा है।”<sup>17</sup> तब देश के कुछ प्राचीन उठे और सभी लोगों की सभा से कहा,<sup>18</sup> “मोरशेत का मीकाह यहूदा के राजा हिजकियाह के दिनों में भविष्यद्वाणी करता था, और उसने यहूदा के सभी लोगों से कहा, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है: सिय्योन खेत के समान जोता जाएगा, और यरूशलैम खंडहर ही जाएगा, और घर का पर्वत जगल के ऊँचे स्थानों के समान होगा।’<sup>19</sup> क्या यहूदा के राजा हिजकियाह और सभी यहूदा ने उसे मार डाला? क्या उसने यहोवा का भय नहीं माना और यहोवा की कृपा के लिए प्रार्थना नहीं की, और यहोवा ने उस विपत्ति से पीछे हट गया जिसे उसने उनके विरुद्ध घोषित किया था? परन्तु हम अपने विरुद्ध एक बड़ा दुरा कर रहे हैं!”

<sup>20</sup> वास्तव में, एक व्यक्ति और भी था जिसने यहोवा के नाम में भविष्यद्वाणी की, किरीयत-यारीम का शामयाह का पुत्र उरियाह; और उसने इस नगर और इस देश के विरुद्ध पर्मयाह के सभी वचनों के समान भविष्यद्वाणी की।<sup>21</sup> जब राजा यहोयाकीम और उसके सभी योद्धाओं और सभी अधिकारियों ने उसके वचनों को सुना, तो राजा ने उसे मार डालने की कोशिश की; परन्तु उरियाह ने इसके बारे में सुना, और वह डर गया, और भागकर मिस्र चला गया।<sup>22</sup> तब राजा यहोयाकीम ने मिस्र में लोगों को भेजा: अखबोर के पुत्र एलनाथान और कुछ लोग उसके साथ मिस्र गए।<sup>23</sup> और वे उरियाह को मिस्र से लाए और उसे राजा यहोयाकीम के पास ले आए, जिसने उसे तलवार से मार डाला और उसके मृत शरीर को आम लोगों की कब्र में फेंक दिया।<sup>24</sup> परन्तु शापन के पुत्र अहीकाम का हाथ पर्मयाह के साथ था, ताकि उसे लोगों के हाथों में न सौंपा जाए कि उसे मार डाला जाए।

**27** यहूदा के राजा योशियाह के पुत्र सिदकियाह के राज्य के आरम्भ में यह वचन यहोवा की ओर से पर्मयाह के पास आया—<sup>2</sup> यहोवा ने मुझसे कहा: “अपने लिए बंधन और ज्ञाए बनाओ और उन्हें अपनी गर्दन पर डालो,<sup>3</sup> और एदोम, मोआब, अम्मोन के पुत्रों, सोर और सिदोन के राजाओं के पास संदेश भेजो, जो यरूशलैम में यहूदा के राजा सिदकियाह के पास आते हैं।”<sup>4</sup> उनके स्वामियों की ओर से उन्हें यह आज्ञा दी, सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर यह कहता है: “यह तुम अपने स्वामियों से कहो: <sup>5</sup> ‘मैंने पृथी, मानवजाति, और पृथी के चेत्रे पर जो पशु है, उन्हें अपनी महान शक्ति और अपने फैले हुए हाथ से बनाया है, और मैं उसे उसी को ढूँगा जो मैंने दृष्टि में प्रसन्न है।’<sup>6</sup> और अब मैंने इन सभी देशों को बाबुल के राजा नबूकदनेसर, मेरे सेवक के हाथ में सौंप दिया है, और मैंने उसे मैदान के जंगली जानवर भी दिए हैं ताकि वे उसकी सेवा करें।”<sup>7</sup> सभी राष्ट्र उसकी, उसके पुत्र की, और उसके पोते की सेवा करेंगे जब तक कि उसके अपने देश का समय नहीं आ जाता; तब कई राष्ट्र और महान राजा उसे अपना सेवक बनाएंगे।<sup>8</sup> परन्तु वह राष्ट्र या राज्य जो उसकी, बाबुल के राजा नबूकदनेसर की सेवा नहीं करेगा, और बाबुल के राजा के जुए के नीचे अपनी गर्दन नहीं डालेगा, मैं उस राष्ट्र को तलवार, अकाल, और महामारी से दण्ड ढूँगा,” यहोवा की यह वाणी है, “जब तक कि मैं उसे उसके हाथ से समाप्त नहीं कर दूँ।”<sup>9</sup> इसलिए अपने भविष्यद्वक्ताओं, अपने ज्योतिषियों, अपने स्वप्रदर्शनों, अपने भविष्यवक्ताओं, या अपने जात्यारों की बात न सुनो जो तुमसे कहते हैं, ‘तुम बाबुल के राजा की सेवा नहीं करोगे।’<sup>10</sup> क्योंकि वे तुम्हें झूटी भविष्यवाणी कर रहे हैं ताकि तुम्हें तुम्हरे देश से दूर कर दें; और मैं तुम्हें भगा ढूँगा और तुम नष्ट हो जाओगे।<sup>11</sup> परन्तु वह राष्ट्र जो अपनी गर्दन बाबुल के राजा के जुए के नीचे डालकर उसकी सेवा करेगा, मैं उसे उसके देश में रहने दूँगा,” यहोवा की यह वाणी है, “और वे उसे जोतेंगे और उसमें रहेंगे।”<sup>12</sup>

<sup>12</sup> मैंने यहूदा के राजा सिदकियाह से भी इन सभी शब्दों के अनुसार कहा, “अपनी गर्दन बाबुल के राजा के जुए के नीचे डालो और उसकी और उसकी प्रजा की सेवा करो, और जीवित रहो।”<sup>13</sup> तुम और तुम्हारी प्रजा क्यों तलवार, अकाल, और महामारी से मरें, जैसा कि यहोवा ने उस राष्ट्र से कहा है जो बाबुल के राजा की सेवा नहीं करेगा?<sup>14</sup> इसलिए उन भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों को न सुनो जो तुमसे कहते हैं, ‘तुम बाबुल के राजा की सेवा नहीं करोगे; क्योंकि वे तुम्हें झूटी भविष्यवाणी कर रहे हैं;

<sup>15</sup> क्योंकि मैंने उन्हें नहीं भेजा है,’ यहोवा की यह

## यिर्मयाह

वाणी है, “परन्तु वे मेरे नाम में झूटी भविष्यवाणी कर रहे हैं, ताकि मैं तुम्हें भगा दूँ और तुम नष्ट हो जाओ, तुम और वे भविष्यद्वक्ता जो तुम्हें भविष्यवाणी करते हैं।”

<sup>16</sup> तब मैंने याजकों और सभी लोगों से कहा, “यहोवा यह कहता है: ‘उन भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों को न सुनो जो तुमसे भविष्यवाणी करते हैं, “देखो, यहोवा के घर के सामान अब शीघ्र ही बाबुल से वापस लाए जाएंगे”; क्योंकि वे तुम्हें झूठी भविष्यवाणी कर रहे हैं। <sup>17</sup> उनकी बात न सुनो; बाबुल के राजा की सेवा करो और जीवित रहो! यह नगर क्यों खंडहर बन जाए? <sup>18</sup> परन्तु यदि वे भविष्यद्वक्ता हैं, और यदि यहोवा का वचन उनके साथ है, तो अब वे सेनाओं के यहोवा से प्रार्थना करें, ताकि यहोवा के घर में, यहूदा के राजा के घर में, और यरूशलेम में जो सामान बचा है, वह बाबुल न जाए। <sup>19</sup> क्योंकि सेनाओं का यहोवा उन खंभों, समुद्र, स्टैंड, और इस नगर में बचे हुए सामान के बारे में यह कहता है, <sup>20</sup> जो बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने नहीं लिया जब उसने यहोवाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को यरूशलेम से बाबुल निर्वासित किया, साथ ही यहूदा और यरूशलेम के सभी कुलीनों को— <sup>21</sup> हाँ, सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, यहोवा के घर में बचे हुए सामान के बारे में यह कहता है, और यहूदा के राजा के घर में और यरूशलेम में: <sup>22</sup> ‘उन्हें बाबुल ले जाया जाएगा, और वे वहाँ रहेंगे जब तक कि मैं उनकी सुधि नहीं लूँगा,’ यहोवा की यह वाणी है। ‘तब मैं उन्हें वापस लाऊँगा और उन्हें इस स्थान पर पुनःस्थापित करूँगा।’”

**28** उसी वर्ष में, यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के प्रारंभ में, चौथे वर्ष में, पाँचवें महीने में, भविष्यद्वक्ता हनन्याह, जो अज्जूर का पुत्र था और गिबोन से था, ने मुझसे यहोवा के भवन में याजकों और सभी लोगों की उपस्थिति में कहा, <sup>2</sup> ‘सेनाओं के यहोवा, इसाएल के परमेश्वर का यह वचन है: मैंने बाबुल के राजा का जूआ तोड़ दिया है। <sup>3</sup> दो वर्षों के भीतर मैं इस स्थान पर यहोवा के भवन के सभी पात्रों को वापस लाने जा रहा हूँ, जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस स्थान से लेकर बाबुल में ले गया था। <sup>4</sup> मैं यहोवा की घोषणा करता हूँ कि मैं यहोवाकीम के पुत्र यहोनिय्याह, यहूदा के राजा, और यहूदा के सभी निर्वासितों को जो बाबुल गए थे, इस स्थान पर वापस लाऊँगा, क्योंकि मैं बाबुल के राजा का जूआ तोड़ दूँगा।’” <sup>5</sup> तब भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने यहोवा के घर में यहोवा के घर के बारे में यह कहते हुए, “देखो, मैं तुम्हें पृथ्वी के चेहरे से हटा दूँगा। इस वर्ष तुम मर जाओगे, क्योंकि तुमने यहोवा के विरुद्ध झूठ बोला है।” <sup>6</sup> <sup>17</sup> तो भविष्यद्वक्ता हनन्याह उसी वर्ष, सातवें महीने में तर गया।

आपने भविष्यवाणी की है, कि यहोवा के भवन के पात्रों और बाबुल से सभी निर्वासितों को इस स्थान पर वापस लाए। <sup>7</sup> फिर भी अब यह वचन सुनो जिसे मैं बोलने जा रहा हूँ ताकि तुम और सभी लोग इसे सुन सकें। <sup>8</sup> जो भविष्यद्वक्ता मुझसे पहले और तुमसे पहले प्राचीन काल से आए थे, उन्होंने भी कई देशों और महान राज्यों के खिलाफ युद्ध, अपदा, और महामारी के बारे में भविष्यवाणी की थी। <sup>9</sup> जहाँ तक उस भविष्यद्वक्ता का सवाल है जो शांति की भविष्यवाणी करता है, जब उस भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा होता है, तब वह भविष्यद्वक्ता जाना जाएगा कि यहोवा ने वास्तव में उसे भेजा है। <sup>10</sup> तब भविष्यद्वक्ता हनन्याह ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह की गर्दन से जूआ लिया और उसे तोड़ दिया। <sup>11</sup> और हनन्याह ने सभी लोगों की उपस्थिति में कहा, “यहोवा का यह वचन है: मैं दो वर्षों के भीतर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का जूआ सभी राष्ट्रों की गर्दन से तोड़ दूँगा।” <sup>12</sup> तब भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह अपने मार्ग पर चला गया। <sup>13</sup> परन्तु यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया, जब भविष्यद्वक्ता हनन्याह ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह की गर्दन से जूआ तोड़ दिया था, यह कहते हुए, <sup>14</sup> “हनन्याह से कहने के लिए जाओ, यहोवा का यह वचन है: ‘तुमने लकड़ी के जूँओं को तोड़ दिया है, परन्तु उनकी जगह लोहे के जूँओं को बना दिया है।’” <sup>15</sup> क्योंकि सेनाओं के यहोवा, इसाएल के परमेश्वर का यह वचन है: “मैंने इन सभी राष्ट्रों की गर्दन पर लोहे का जूआ रखा है, ताकि वे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करें; और वे उसकी सेवा करेंगे। और मैंने उसे मैदान के पश्चि भी दिए हैं।” <sup>16</sup> <sup>17</sup> तब भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने भविष्यद्वक्ता हनन्याह से कहा, “अब सुनो, हनन्याह: यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा है, और तुमने इस लोगों को झूठ पर विश्वास दियागा है।” <sup>18</sup> इसलिए, यहोवा का यह वचन है: “देखो, मैं तुम्हें पृथ्वी के चेहरे से हटा दूँगा। इस वर्ष तुम मर जाओगे, क्योंकि तुमने यहोवा के विरुद्ध झूठ बोला है।”

## यिर्मयाह

हुए,<sup>4</sup> "इस्साएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है उन सभी निवासितों के लिए जिहैं मैने यरूशलेम से बाबुल निवासित किया हैः<sup>5</sup> घर बनाओ और उनमें रहो; और बाग लगाओ और उनकी उपज खाओ।<sup>6</sup> पती लो और पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न करो, और अपने पुत्रों के लिए पतियाँ लो और अपनी पुत्रियों को पतियों को दो, ताकि वे पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न करें; और वहाँ संख्या में बढ़ो और घटो नहीं।<sup>7</sup> उस नगर की समृद्धि की खोज करो जहाँ मैने तुहैं निर्वासित किया है, और उसके लिए यहोवा से प्रार्थना करो; क्योंकि उसकी समृद्धि में तुम्हारी समृद्धि होगी।<sup>8</sup> क्योंकि इस्साएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है: "तुम्हरे बीच के निवायों और भविष्यवक्ताओं को तुम्हें धोखा न देने दो, और तुम्हारे सपनों की व्याख्या पर ध्यान न दो जो तुम देखते हो।"<sup>9</sup> क्योंकि वे मेरे नाम में तुम्हें झूठी भविष्यवाणी करते हैं, मैने उन्हें नहीं भेजा," यहोवा की यह वाणी है।<sup>10</sup> क्योंकि यहोवा का यह वचन है: "जब बाबुल के लिए सतर वर्ष पूरे हो जाएंगे, तब मैं तुम्हें देखने आऊंगा और तुम्हारे लिए अपने अच्छे वचन को पूरा करूंगा, तुम्हें इस स्थान पर वापस लाने के लिए।<sup>11</sup> क्योंकि मैं उन योजनाओं को जानता हूँ जो मैने तुहरे लिए बनाई हैं," यहोवा की यह वाणी है, "समृद्धि की योजनाएँ और आपदा की नहीं, तुम्हें भविष्य और आशा देने के लिए।<sup>12</sup> तब तुम मुझ पर पुकारोगे और मेरे पास आकर प्रार्थना करोगे, और मैं तुम्हारी सुनूंगा।<sup>13</sup> और तुम मुझे खोजोगे और मुझे पाओगे जब तुम पूरे दिल से मेरी खोज करोगे।<sup>14</sup> मैं तुम्हें अपने द्वारा मिलने द्वागा," यहोवा की यह वाणी है, "और मैं तुम्हारी संपत्ति को बहाल करूंगा और तुम्हें सभी राष्ट्रों और सभी स्थानों से इकट्ठा करूंगा जहाँ मैने तुहैं भेजा है," यहोवा की यह वाणी है, "और मैं तुम्हें उस स्थान पर वापस लाऊंगा जहाँ से मैने तुम्हें निर्वासित किया था।"

<sup>15</sup> क्योंकि तुमने कहा है, यहोवा ने हमारे लिए बाबुल में निवायों को उठाया है—<sup>16</sup> क्योंकि यहोवा का यह वचन है उस राजा के बारे में जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है, और उन सभी लोगों के बारे में जो इस नगर में रहते हैं हैं तुम्हारे भाई जो तुम्हारे साथ निवासिन में नहीं गए—<sup>17</sup> यह सेनाओं के यहोवा का वचन है: देखो, मैं उन पर तलवार, अकाल, और महामारी भेज रहा हूँ, और मैं उन्हें सड़े हुए अंजीरों की तरह बनाऊंगा जो इतने खराब हैं कि खाए नहीं जा सकते।<sup>18</sup> और मैं उन्हें तलवार, अकाल, और महामारी के साथ पीछा करूंगा; और मैं उन्हें पृथी के सभी राज्यों के लिए आतक का विषय बनाऊंगा, एक शाप और आतक का विषय, सीटी बजाने और अपमान का विषय उन सभी राष्ट्रों में जहाँ मैने उन्हें

भेजा है,<sup>19</sup> क्योंकि उन्होंने मेरे शब्दों को नहीं सुना,' यहोवा की यह वाणी है, 'जो मैने बार-बार अपने सेवकों निवायों के द्वारा उन्हे भेजे; पर तुमने भी नहीं सुना;' यहोवा की यह वाणी है।<sup>20</sup> इसलिए, यहोवा का वचन सुनो, सभी निर्वासितों जिहैं मैने यरूशलेम से बाबुल भेजा है।<sup>21</sup> यह इस्साएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का वचन है अहाब कोलायाह के पुत्र के बारे में, और सिद्धकियाह मासेयाह के पुत्र के बारे में, जो मेरे नाम में तुम्हें झूठी भविष्यवाणी करते रहे हैं: देखो, मैं उन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में देने जा रहा हूँ, और वह उन्हें तुम्हारी अँखों के सामने मार डालेगा।<sup>22</sup> और यहूदा के सभी निर्वासितों के द्वारा बाबुल में उनके लिए एक शाप का उपयोग किया जाएगा, यह कहते हुए, "यहोवा तुहैं सिद्धकियाह और अहाब की तरह बनाए, जिहैं बाबुल के राजा ने आग में भून दिया,"<sup>23</sup> क्योंकि उन्होंने इस्साएल में मूर्खता से काम किया है, और अपने पड़ोसियों की परिवारों के साथ व्यभिचार किया है, और मेरे नाम में झूठी बातें कही हैं, जो मैने उन्हें नहीं आज्ञा दीं। और मैं वह हूँ जो जानता हूँ, और एक गवाह हूँ; यहोवा की यह वाणी है।"

<sup>24</sup> अब तुम शेमायाह नहेलामी से कहोगे, <sup>25</sup> "यह सेनाओं के यहोवा, इस्साएल के परमेश्वर का वचन है: 'क्योंकि तुमने अपने नाम में यरूशलेम में सभी लोगों को पत्र भेजे हैं, याजक जफन्याह मासेयाह के पुत्र को, और सभी याजकों को, यह कहते हुए,<sup>26</sup> "यहोवा ने तुम्हें यहोयादा याजक के स्थान पर याजक बनाया है, यहोवा के घर का निरीक्षक बनने के लिए हर पापल व्यक्ति के लिए जो भविष्यवाणी करता है, उसे बेंडियों और लोहे के कॉलर में डालने के लिए।<sup>27</sup> तो अब, तुमने अनातोथ के यिर्मयाह को क्यों नहीं फटकारा जो तुम्हें भविष्यवाणी करता है?<sup>28</sup> क्योंकि उसने हामें बाबुल में संदेश भेजा है, यह कहते हुए, निर्वासन लंबा होगा; घर बनाओ और उनमें रहो, और बाग लगाओ और उनके फल खाओ।"<sup>29</sup> अब याजक जफन्याह ने यह पत्र यिर्मयाह नबी के सुनने में पढ़ा।<sup>30</sup> तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया, यह कहते हुए,<sup>31</sup> "सभी निर्वासितों को संदेश भेजो, यह कहते हुए, "यह शेमायाह नहेलामी के बारे में यहोवा का वचन है: 'क्योंकि शेमायाह ने तुम्हें भविष्यवाणी की है, हालांकि मैने उसे नहीं भेजा, और उसने तुम्हें झूठ पर विश्वास दिलाया है।"<sup>32</sup> इसलिए, यह यहोवा का वचन है: "देखो, मैं शेमायाह नहेलामी और उसके वंशजों को दंड देने जा रहा हूँ; उसके पास इस लोगों में कोई जीवित नहीं रहेगा, और वह उस भलाई को नहीं देखेगा जो मैं अपने लोगों के लिए करने जा रहा

## पर्मयाह

हूँ<sup>१५</sup> यहोवा की यह वाणी है, "क्योंकि उसने यहोवा के खिलाफ झूठ बोला है।"

**30** पिर्मयाह के पास यहोवा का यह वचन आया, कहता है, <sup>२</sup> "यह इसाएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: 'सभी वचन जो मैंने तुमसे कहे हैं, उन्हें एक पुस्तक में लिखो।' <sup>३</sup> क्योंकि देखो, वे दिन आ रहे हैं; यहोवा की घोषणा है, 'जब मैं अपने लोगों इसाएल और यहूदा की दशा को बहाल करूँगा।' यहोवा कहता है, मैं उन्हें उस भूमि में वापस लाऊंगा जो मैंने उनके पूर्वजों को दी थी, और वे उसका अधिकार प्राप्त करेंगे।" <sup>४</sup> अब ये वे वचन हैं जो यहोवा ने इसाएल और यहूदा के विषय में कहे: <sup>५</sup> "क्योंकि यहोवा कहता है: 'हमने कांपने की आवाज सुनी है डर की, और कोई शांति नहीं है।' <sup>६</sup> अब पूछो, और देखो क्या कोई पुरुष जन्म दे सकता है। मैं क्यों देखता हूँ कि हर पुरुष अपने हाथों को कमर पर रखे हुए है, जैसे प्रसव पीड़ा में स्त्री? और क्यों सभी चेहरे पीले पड़ गए हैं? <sup>७</sup> हाय, वह दिन महान है, उसके जैसा कोई नहीं है; और यह याकूब की विपत्ति का समय है, फिर भी वह उससे बच जाएगा। <sup>८</sup> उस दिन ऐसा होगा, 'सेनाओं के यहोवा की घोषणा है, कि मैं उनके गले से उसका जुआ तोड़ दूँगा और उनके बंधनों को फाड़ दूँगा; और परदेशी अब उन्हें अपने दास नहीं बनाएंगे।' <sup>९</sup> परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे, और अपने राजा दाऊद की, जिसे मैं उनके लिए उठाऊंगा।

<sup>10</sup> 'इसलिए मत डर, मेरे सेवक याकूब,' यहोवा की घोषणा है, 'और न ही निराश हो, इसाएल; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें दूर से बचाने जा रहा हूँ, और तुम्हारे वंशजों को उनकी बंधुआई की भूमि से। याकूब लौटेगा और शांति में रहेगा, बिना चिंता के, और कोई उसे डरा नहीं सकेगा।' <sup>11</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यहोवा की घोषणा है, 'तुम्हें बचाने के लिए; क्योंकि मैं उन सभी शरूँओं को पूरी तरह से नष्ट करूँगा।' परन्तु मैं तुम्हें ठीक से अनुशासित करूँगा और किसी भी तरह से तुम्हें बिना डंड के नहीं छोड़ूँगा।'

<sup>12</sup> "क्योंकि यहोवा कहता है: 'तुम्हारी चोट लाइलाज है, और तुम्हारी चोट गंभीर है।' <sup>13</sup> तुम्हारे मामले की पैरवी करने वाला कोई नहीं है, तुम्हारे घाव के लिए कोई उपचार नहीं है, तुम्हारे लिए कोई सुधार नहीं है।" <sup>14</sup> तुम्हारे सभी प्रेमी तुम्हें भूल गए हैं, वे तुम्हारी खोज नहीं करते; क्योंकि मैंने तुम्हें शत्रु की चोट से घायल किया है, एक निर्दर्शी की सजा से, क्योंकि तुम्हारी बुराई बहुत है और तुम्हारे पाप अनेक हैं।" <sup>15</sup> तुम अपनी चोट के बारे में

क्यों चिल्लाते हो? तुम्हारा दर्द लाइलाज है। क्योंकि तुम्हारी बुराई बहुत है और तुम्हारे पाप अनेक हैं, मैंने ये बातें तुम्हारे साथ की हैं।" <sup>16</sup> इसलिए, जो तुम्हें निगलते हैं, वे सभी निगल लिए जाएंगे; और तुम्हारे सभी विरोधी, उनमें से हर एक, बंधुआई में जाएंगे; और जो तुम्हें लुटते हैं, वे लुट बन जाएंगे, और जो तुम्हें लुटते हैं, मैं उन्हें लुट में बदल दूँगा।" <sup>17</sup> क्योंकि मैं तुम्हें स्वास्थ्य बहाल करूँगा और तुम्हारे घावों को चांगा करूँगा; यहोवा की घोषणा है, 'क्योंकि उहोंने तुम्हें एक बहिष्कृत कहा है, यह कहते हुए: "यह सियान है; कोई उसकी परवाह नहीं करता।"'

<sup>18</sup> "यह यहोवा कहता है: 'देखो, मैं याकूब के तंबुओं की दशा को बहाल करूँगा और उसके निवासों पर दया करूँगा; और नगर उसके खंडहरों पर फिर से बनाया जाएगा, और महल अपनी उचित जगह पर खड़ा होगा।' <sup>19</sup> उनसे धन्यवाद का गीत आएगा और उत्सव मनाने वालों की आवाजें; और मैं उन्हें बढ़ाऊंगा और वे कम नहीं होंगे; मैं उन्हें सम्मान दूँगा और वे महत्वहीन नहीं होंगे।" <sup>20</sup> उनके बच्चे भी पहले की तरह होंगे, और उनकी मंडली मेरे सामने स्थापित होंगी; और मैं उनके सभी उत्तीर्णों को दंड दूँगा।" <sup>21</sup> उनका नेता उन्हीं में से होगा, और उनका शासक उनके बीच से आएगा; और मैं उसे निकट लाऊंगा और वह मेरे पास आएगा; क्योंकि कौन अपनी जान जोखिम में डालकर मेरे पास आएगा? यहोवा की घोषणा है।" <sup>22</sup> 'और तुम मेरे लोग होंगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।'

<sup>23</sup> देखो, यहोवा का तूफान क्रोध में निकला है, एक भयकर तूफान; यह दुष्टों के सिर पर घूमेगा।" <sup>24</sup> यहोवा का प्रवर्च क्रोध वापस नहीं लौटेगा जब तक वह अपने हृदय के इरादे को पूरा नहीं कर लेता। अंतिम दिनों में तुम इसे समझोगे।

**31** "उस समय," यहोवा कहता है, "मैं इसाएल के सभी परिवारों का परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।" <sup>२</sup> यहोवा यह कहता है: "जो लोग तलवार से बच गए उहोंने जंगल में अनुदृढ़ पाया— इसाएल, जब वह अपनी विश्रामस्थली खोजने गया।" <sup>३</sup> यहोवा ने उसे बहुत पहले दर्शन दिया, वह कहते हुए, "मैंने तुमसे अनन्त प्रेम किया है; इसलिए मैंने तुम्हें दया से खींचा है।" <sup>४</sup> मैं तुम्हें फिर से बनाऊंगा और तुम फिर से बनोगे, इसाएल की कुँवारी! तुम फिर से अपनी डफली उठाओगी और अनन्दितों के नृत्य में जाओगी।" <sup>५</sup> फिर से तुम सामरिया की पहाड़ियों पर दाख की बारियां लगाएगी; बागवान लगाएगे और फल का आनंद लेंगे।" <sup>६</sup> क्योंकि वह दिन आएगा जब एप्रैल की पहाड़ियों पर प्रहरी पुकारेंगे, उठो, और

## पर्मयाह

सियोन को चलें, हमारे परमेश्वर यहोवा के पास!"<sup>7</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: "याकूब के लिए ऊँचे स्वर में आनंद से गाओ, और राष्ट्रों के प्रधान के साथ आनंदित हो; घोषणा करो, सुन्ति करो, और कहो, हे यहोवा, अपने लोगों को बचा, इसाएल के अवशेषों को!"<sup>8</sup> देखो, मैं उन्हें उत्तर देश से ला रहा हूँ, और मैं उन्हें पर्वी के दूरस्थ भागों से इकट्ठा करूँगा, उनमें वे भी हैं जो अंधे हैं और जो लंगड़े हैं, गर्भवती स्त्री और वह जो प्रसव में है, साथ में; वे यहाँ एक महान सभा के रूप में लौटेंगे।<sup>9</sup> वे रोते हुए आएंगे, और विनती करके मैं उन्हें लांडगा; मैं उन्हें जल की धाराओं के पास ले जाऊँगा, एक सीधा मार्ग जिस पर वे नहीं ठोकर खाएंगे; क्योंकि मैं इसाएल का पिता हूँ, और ऐप्रैम मेरा पहिलौठा है।"<sup>10</sup>

<sup>10</sup> यहोवा का वचन सुनो, हे राष्ट्रों, और इसे दूर के द्वीपों में घोषित करो, और कहो, "जिसने इसाएल को तितर-बितर किया वह उसे इकट्ठा करेगा, और वह उसे ऐसे रखेगा जैसे एक चरवाहा अपने छुंड को रखता है।"<sup>11</sup> क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और उसे उस व्यक्ति के हाथ से बचाया है जो उससे अधिक शक्तिशाली था।<sup>12</sup> वे सियोन की ऊँचाई पर आकर आनंद से चिल्लाएंगे, और वे यहोवा की समृद्धि पर चमकेंगे— अनाज, नई दाखरस, तेल, और झूंड और पशुओं की संतानों पर; और उनका जीवन एक सिंचित बीचे के समान होगा, और वे फिर कभी दुर्बल नहीं होंगे।<sup>13</sup> तब कुँवारी नृत्य में आनंदित होगी, और जबान और बूढ़े साथ में; क्योंकि मैं उनके शोक को आनंद में बदल दूँगा और उन्हें सांत्वना दूँगा और उन्हें दुःख के बदले आनंद दूँगा।<sup>14</sup> मैं याजकों की आत्मा को प्रचुरता से ताजा करूँगा, और मेरे लोग मेरी भलाई से संतुष्ट होंगे; "यहोवा कहता है।"<sup>15</sup> यहोवा यह कहता है: "रामाह में एक आवाज सुनी जा रही है, विलाप और कडवा रोना। राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है, वह अपने बच्चों के लिए सांत्वना पाने से इंकार करती है, क्योंकि वे अब नहीं हैं।"<sup>16</sup> यहोवा यह कहता है: "अपने रोने से अपनी आवाज को रोक लो और अपनी आँखों को अँसुओं से; क्योंकि तुम्हारा काम पुरस्कृत होगा।" यहोवा कहता है, "और वे शत्रु के देश से लौट आएंगे।<sup>17</sup> तुम्हरे भविष्य के लिए आशा है," यहोवा कहता है, "और तुम्हरे बच्चे अपनी भूमि में लौट आएंगे।<sup>18</sup> मैंने निश्चित रूप से ऐप्रैम को विलाप करते सुना है, तुमने मुझे अनुशासित किया, और मैं सुधारा गया, जैसे एक अनप्रशिक्षित बछड़ा; मुझे वापस लाओ ताकि मैं पुनःस्थापित हो सकूँ, क्योंकि तुम मेरे परमेश्वर यहोवा हो।<sup>19</sup> क्योंकि पीछे मुड़ने के बाद, मैंने पक्षाताप किया; और निर्देशित होने के बाद, मैंने अपनी जांघ पर थप्पड़ मारा; मैं शर्मिदा था

और अपमानित भी क्योंकि मैंने अपनी जवानी की लज्जा को सहा।<sup>20</sup> क्या ऐप्रैम मेरा प्रिय पुत्र है? क्या वह एक आनंददायक बच्चा है? वास्तव में, जितनी बार मैंने उसके खिलाफ बोला है, मैं उसे अभी भी याद करता हूँ: इसलिए मेरा दिल उसके लिए तड़पता है; मैं निश्चित रूप से उस पर दया करूँगा।" यहोवा कहता है।<sup>21</sup> अपने लिए मार्ग चिन्ह स्थापित करो, अपने लिए संकेत चिह्न स्थापित करो; राजमार्ग पर ध्यान दो, जिस मार्ग से तुम गए थे। लौट आओ, हे इसाएल की कुँवारी, अनें इन नगरों में लौट आओ।<sup>22</sup> तुम कब तक भटकती रहोगी, हे विश्वासघाती पुरी? क्योंकि यहोवा ने पृथ्वी पर एक नई चीज बनाई है: एक स्त्री एक पुरुष को आश्रय देगी।<sup>23</sup> यह इसाएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का वचन है: "फिर से वे यहूदा के देश और उसके नारों में यह वचन करेंगे, जब मैं उनकी समृद्धि को बहाल करूँगा, यहोवा तुम्हें आशीर्वद दे, हे धर्म का स्थान, हे पवित्र पहाड़ी!"<sup>24</sup> यहूदा और उसके सभी नगर उसमें एक साथ निवास करेंगे: किसान और वे जो झुंडों के साथ यात्रा करते हैं।<sup>25</sup> क्योंकि मैं थकी हुई आत्मा को बहुत जल दूँगा, और हर दुर्बल आत्मा को ताजा करूँगा।<sup>26</sup> इस पर मैं जाग उठा और देखा, और मेरी नींद मुझे सुखद लगी।

<sup>27</sup> "देखो, दिन आ रहे हैं," यहोवा कहता है, "जब मैं इसाएल के घर और यहूदा के घर को मनुष्यों के बीज और पशुओं के बीज से बोंडगा।<sup>28</sup> और जैसे मैंने उन्हें उखाड़ने, गिराने, नष्ट करने, नाश करने और विपत्ति लाने के लिए देखा है, वैसे ही मैं उन्हें बनाने और लगाने के लिए देखूँगा।" यहोवा कहता है।<sup>29</sup> "उन दिनों में वे अब नहीं कहेंगे, पिताओं ने खट्टे अंगूर खाए हैं, लेकिन बच्चों के दांत कुँद हो गए हैं।"<sup>30</sup> परंतु हर कोई अपनी ही गलतियों के लिए मरेगा; जो कोई खट्टे अंगूर खाएगा, उसके अपने दांत कुँद हो जाएगा।

<sup>31</sup> "देखो, दिन आ रहे हैं," यहोवा कहता है, "जब मैं इसाएल के घर और यहूदा के घर के साथ एक नई वाचा करूँगा,<sup>32</sup> उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पिताओं के साथ की थी जिस दिन मैंने उन्हें मिस्र देश से बाहर लाने के लिए उनके हाथ से पकड़ा था, मेरी वाचा जिसे उन्होंने तोड़ दिया, हालांकि मैं उनके लिए एक पति था," यहोवा कहता है।<sup>33</sup> "क्योंकि यह वह वाचा है जो मैं इसाएल के घर के साथ करूँगा उन दिनों के बाद," यहोवा कहता है: "मैं अपनी व्यवस्था उनके भीतर रखूँगा और इसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।<sup>34</sup> वे फिर से नहीं सिखाएंगे, हर एक अपने पड़ोसी को और हर एक अपने भाई को, यह कहते हुए, 'यहोवा को जानो,' क्योंकि वे

## पर्मयाह

सभी मुझे जानेगे, उनमें से सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक," यहोवा कहता है, "क्योंकि मैं उनकी गलियों को क्षमा करूँगा, और उनके पाप को मैं अब याद नहीं करूँगा।"

<sup>35</sup> यह यहोवा का वचन है, वह जो दिन में प्रकाश के लिए सूर्य देता है, और रात में प्रकाश के लिए चंद्रमा और तारों की निश्चित व्यवस्था, जो समुद्र की उत्तेजित करता है ताकि उसकी लहरें गरजे— सेनाओं का यहोवा उसका नाम है: <sup>36</sup> "पदि यह निश्चित व्यवस्था मुझसे हट जाए," यहोवा कहता है, "तब इसाएल के वंशज भी मेरे सामने एक राष्ट्र होना बंद कर देंगे।" <sup>37</sup> यह यहोवा का वचन है: "पदि ऊपर के आकाश को मापा जा सके और नीचे की पृथ्वी की नींव को सोजा जा सके, तब मैं भी इसाएल के सभी वंशजों को उनके द्वारा किए गए सब कुछ के लिए अस्वीकार कर दूँगा," यहोवा कहता है। <sup>38</sup> "देखो, दिन आ रहे हैं," यहोवा कहता है, "जब नगर यहोवा के लिए फिर से बनाया जाएगा हननेल के मीनार से कोने के फाटक तक।" <sup>39</sup> मापने की रेखा आगे बढ़ेगी सीधे गरेब की पहाड़ी तक; फिर वह गोआह की ओर मुड़ेगी। <sup>40</sup> और मृत शरीरों और राख की पूरी धारी, और सभी खेत किंद्रीन की धारा तक, पूर्व की ओर घोड़े के फाटक के कोने तक, यहोवा के लिए पवित्र होंगे; यह फिर कभी उखाड़ा या गिराया नहीं जाएगा।"

**32** यह यहोवा का वचन है जो यहूदा के राजा सिदिक्याह के दसवें वर्ष में पर्मयाह के पास आया, जो नबूकदनेस्सर के अठारहवें वर्ष में था। <sup>2</sup> उस समय बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम को धेर हुए थी, और भविष्यद्वक्ता पर्मयाह यहूदा के राजा के घर के पहरे के आँगन में बंदी था, <sup>3</sup> क्योंकि यहूदा के राजा सिदिक्याह ने उसे बंदी बनाया था, यह कहते हुए, "तू क्यों भविष्यवाही करता है, यह कहते हुए, यहोवा यह कहता है: "देखो, मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में देने जा रहा हूँ, और वह इसे ले लेगा;" <sup>4</sup> और यहूदा का राजा सिदिक्याह कसदियों के हाथ से नहीं बचेगा, बल्कि वह निश्चित रूप से बाबुल के राजा के हाथ में सैंपा जाएगा, और वह उसके साथ आमे-सामने बात करेगा और उसे आँखों से देखेगा; <sup>5</sup> और वह सिदिक्याह को बाबुल ले जाएगा, और वह वहाँ रहेगा जब तक मैं उसे देखूँगा," यहोवा की यह घोषणा है। "पदि तुम कसदियों के खिलाफ लड़ोगे, तो तुम सफल नहीं होगे?" <sup>6</sup> और पर्मयाह ने कहा, "यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>7</sup> "देखो, शल्लूम का पुत्र हनमेल, तुम्हारा चाचा, तुम्हरे पास आ रहा है, यह कहते हुए, "मेरे खेत को अनातोत में अपने लिए खरीद लो, क्योंकि तुम्हारे

पास इसे छुड़ाने का अधिकार है।" <sup>8</sup> फिर मेरे चर्चेरे भाई हनमेल मेरे पास पहरे के आँगन में यहोवा के वचन के अनुसार आया, और मुझसे कहा, "कृपया मेरे खेत को खरीद लो, जो अनातोत में है, जो बिन्यामीन के देश में है; क्योंकि तुम्हारे पास अधिकार है और छुड़ाने का अधिकार तुम्हारा है, इसे अपने लिए खरीद लो।" तब मुझे पता चला कि यह यहोवा का वचन था। <sup>9</sup> और मैंने अनातोत में यो खेत था उसे अपने चर्चेरे भाई हनमेल से खरीदा, और उसके लिए चाँदी तौली, सत्रह शेकेल चाँदी। <sup>10</sup> और मैंने विलेख पर हस्ताक्षर किए और उसे सील किया, और गवाहों को बुलाया, और तराजू पर चाँदी तौली। <sup>11</sup> फिर मैंने खरीद के विलेख को लिया, दोनों सील की हुई प्रति जिसमें शर्तें और नियम थे और खुली प्रति; <sup>12</sup> और मैंने खरीद का विलेख बारूक को नेरियाह के पुत्र, महसियाह के पुत्र के सामने दिया, मेरे चर्चेरे भाई हनमेल के सामने और उन गवाहों के सामने जिह्वोंने खरीद के विलेख पर हस्ताक्षर किए थे, उन सभी यहूदियों के सामने जो पहरे के आँगन में बैठे थे। <sup>13</sup> और मैंने बारूक का उनकी उपस्थिति में आदेश दिया, यह कहते हुए, <sup>14</sup> "यह सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: इन विलेखों को ले लो, इस सील की हुई खरीद के विलेख और इस खुले विलेख को, और उन्हें एक मिठी के बर्टन में रख दो ताकि वे लंबे समय तक सुरक्षित रहें।" <sup>15</sup> क्योंकि यह सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: "इस देश में फिर से घर, खेत, और दाख की बारियाँ खरीदी जाएँगी।"

<sup>16</sup> जब मैंने नेरियाह के पुत्र बारूक का खरीद का विलेख दिया, तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की, यह कहते हुए, <sup>17</sup> "आह, प्रभु यहोवा! देखो, आपने अपनी महान शक्ति और अपने फैले हुए हाथ से सर्वा और पूर्वी बनाई हैं! आपके लिए कुछ भी कठिन नहीं है, <sup>18</sup> जो हजारों पर दया दिखाते हैं, लेकिन पिताओं के अपराध को उनके बच्चों पर चुकाते हैं, महान और शक्तिशाली परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा उसका नाम है, <sup>19</sup> परामर्श में महान और कार्य में शक्तिशाली, जिसकी आँखें मानव जाति के सभी मार्गों पर खुली हैं, हर एक को उसके मार्गों के अनुसार और उसके कर्मों के फल के अनुसार देते हैं; <sup>20</sup> जिसने मिस देश में चिह्न और चमत्कार किए हैं, और आज तक, इसाएल में और मानव जाति के बीच; और आपने अपने लिए एक नाम बनाया है, जैसा कि आज है। <sup>21</sup> आपने अपने लोगों इसाएल को मिस देश से चिह्नों और चमत्कारों के साथ, और एक मजबूत हाथ और एक फैले हुए हाथ के साथ, और महान आतक के साथ बाहर निकाला; <sup>22</sup> और आपने उन्हें यह देश दिया, जिसे आपने उनके पूर्वजों को देने की शपथ ली थी, दूध और शहद

## यिर्मयाह

की धारा बहने वाला देश।<sup>23</sup> वे उसमें आए और उसका अधिकार लिया, लेकिन उन्होंने आपकी आवाज़ नहीं सुनी और न ही आपकी व्यवस्था में चले; उन्होंने कुछ भी नहीं किया जो आपने उन्हें करने का आदेश दिया था; इसलिए आपने उन पर यह सारी विपत्ति लाई है।<sup>24</sup> देखो, आक्रमण की ढलानें नगर तक पहुँच गई हैं, और नगर उन कसदियों के हाथ में सौंपा गया है जो इसके खिलाफ लड़ रहे हैं, तलवार, अकाल, और महामारी के कारण; और जो आपने कहा था वह पूरा हुआ है; और देखो, आप इसे देखते हैं।<sup>25</sup> फिर भी आपने मुझसे कहा है, प्रभु यहोवा, ‘अपने लिए पैसे से खेत खरीद लो और गवाहों को बुलाओ—हालांकि नगर कसदियों को दिया गया है।’

26 तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया, यह कहते हुए,<sup>27</sup> “देखो, मैं प्रभु हूँ, सभी प्राणियों का परमेश्वर; क्या मेरे लिए कुछ भी कठिन है?”<sup>28</sup> इसलिए यहोवा यह कहता है: “देखो, मैं इस नगर को कसदियों के हाथ में और बाबुल के राजा नबुकदनेसर के हाथ में देने जा रहा हूँ, और वह इसे ले लेगा।<sup>29</sup> और कसदी जो इस नगर के खिलाफ लड़ रहे हैं, उसमें प्रवेश करेंगे और इस नगर को आग से जला देंगे, उन घरों के साथ जहाँ लोगों ने बाल को अपने छतों पर धूप दी और अन्य देवताओं को पेय अर्पण किया ताकि मुझे क्रोधित करें।<sup>30</sup> क्योंकि इसाएल के पुत्र और यहूदा के पुत्र मेरी दृष्टि में केवल बुराई कर रहे हैं जब से ये युवा हैं; क्योंकि इसाएल के पुत्र केवल अपने हाथों के काम से मुझे क्रोधित कर रहे हैं” यहोवा की यह घोषणा है।<sup>31</sup> “आस्तव में यह नगर मेरे लिए मेरे क्रोध और मेरे रोष का कारण रहा है जब से उन्होंने इसे बनाया है, यहाँ तक कि आज तक, ताकि मैं इसे अपनी दृष्टि से हटा दूँ,<sup>32</sup> क्योंकि इसाएल के पुत्रों और यहूदा के पुत्रों की सारी बुराई के कारण जो उन्होंने मुझे क्रोधित करने के लिए की है—वे, उनके राजा, उनके नेता, उनके याजक, उनके भविष्यद्वक्ता, यहूदा के पुरुष, और यरूशलेम के निवासी।<sup>33</sup> उन्होंने अपनी पीठ मेरी ओर की है और अपना चेहरा नहीं; हालांकि मैंने उन्हें सिखाया, बार-बार सिखाया, वे अनुशासन को स्वीकार करने के लिए नहीं सुनते थे।<sup>34</sup> लेकिन उन्होंने अपने धृणित वस्त्र उस घर में रखे जो मेरे नाम से कहलाता है, उसे अपवित्र करने के लिए।<sup>35</sup> और उन्होंने बेन-हित्राम की घाटी में बाल के ऊँचे स्थान बनाए, अपने पुत्रों और पुत्रियों को मोलेक को अर्पण करने के लिए, जिसका मैंने उन्हें आदेश नहीं दिया था, न ही यह मेरे मन में आया था कि वे यह धृणित कार्य करें, यहूदा को पाप में डालने के लिए।

<sup>36</sup> अब इसलिए, यहोवा, इसाएल का परमेश्वर इस नगर के बारे में कहता है, “यह तलवार, अकाल, और महामारी के द्वारा बाबुल के राजा को सौंपा गया है”;<sup>37</sup> देखो, मैं उन्हें उन सभी देशों से इकट्ठा करने जा रहा हूँ जहाँ मैंने उन्हें अपने क्रोध, अपने रोष, और महान आक्रोश में भेजा था; और मैं उन्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा और उन्हें सुरक्षित रूप से बसाऊँगा।<sup>38</sup> वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा;<sup>39</sup> और मैं उन्हें एक हृदय और एक मार्ग दूँगा, ताकि वे हमेशा मुझसे दरै, उनके अपने भले के लिए और उनके बाद उनके बच्चों के भले के लिए।<sup>40</sup> मैं उनके साथ एक अनन्त वाचा करूँगा कि मैं उनसे दूर नहीं होऊँगा, उन्हें भला करने के लिए; और मैं उनके हृदय में अपने भय को रखूँगा ताकि वे मुझसे दूर न हो।<sup>41</sup> मैं उनके भले के लिए उन पर प्रसन्न होऊँगा, और उन्हें इस देश में अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा के साथ विश्वासपूरक लगाऊँगा।<sup>42</sup> क्योंकि यहोवा कहता है: “जैसे मैं इस लोगों पर यह महान विपत्ति लाई हूँ, वैसे ही मैं उन पर वह सब भला लाऊँगा जो मैं उन्हें वादा कर रहा हूँ।<sup>43</sup> और इस देश में खेत खरीदे जाएँगे जिसके बारे में आप कह रहे हैं, “यह एक उजाहा है, बिना मनुष्य या पशु के; इसे कसदियों को सौंप दिया गया है।”<sup>44</sup> खेत पैसे से खरीदे जाएँगे और विलेखों पर हस्ताक्षर किए जाएँगे और सील किए जाएँगे, और गवाह बुलाए जाएँगे, बिन्यामीन के देश में, यरूशलेम के आसपास के क्षेत्रों में, यहूदा के नगरों में, पहाड़ी देश के नगरों में, निवास देश के नगरों में, और नेगेव के नगरों में; क्योंकि मैं उनके भाग्य को बहाल करूँगा; यहोवा की यह घोषणा है।”

**33** फिर यहोवा का वचन दूसरी बार यिर्मयाह के पास आया, जब वह अभी भी पहरे के आँगन में बंद था, यह कहते हुए,<sup>2</sup> “यहोवा जो पृथ्वी का निमिता है, जिसने उसे स्थिर करने के लिए आकार दिया, यहोवा उसका नाम है, यह कहता है: <sup>3</sup> मुझे पुकारो और मैं तुम्हें उत्तर दूँगा, और मैं तुम्हें महान और शक्तिशाली बातें बताऊँगा, जिन्हें तुम नहीं जानते।”<sup>4</sup> क्योंकि यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, इस नगर के घरों के विषय में और यहूदा के राजा-ओं के घरों के विषय में जो हमला करने वाले ढालों और तलवार के विरुद्ध रक्षा के लिए मिरा दिए गए हैं, यह कहता है: <sup>5</sup> “जब वे कसदियों से लड़ने के लिए आ रहे हैं और उन्हें उन लोगों की लाशों से भरने के लिए जिन्हें मैंने अपने क्रोध और रोष में मारा है, और मैंने उनके सारे दुष्टाने के कारण इस नगर से अपना मुख छिपा लिया है।”<sup>6</sup> देखो, मैं इसे स्वास्थ्य और चंगाई लाने वाला हूँ, और मैं उन्हें चंगा करूँगा; और मैं उन्हें शांति और सत्य की प्रचुरता प्रकट करूँगा।<sup>7</sup> मैं यहूदा की

## यिर्मयाह

समृद्धि और इसाएल की समृद्धि को पुनःस्थापित करूँगा, और उन्हें फिर से उसी प्रकार बनाऊँगा जैसे वे पहले थे।<sup>०</sup> और मैं उन्हें उनके सभी पापों की दोष से शुद्ध करूँगा जो उन्होंने मेरे विरुद्ध किए हैं, और मैं उनके सभी विद्रोह के पापों को क्षमा करूँगा।<sup>१</sup> यह मेरे लिए पृथी की सभी जातियों के सामने आनंद, स्तुति, और महिमा का नाम होगा, जो उन सभी भलाईयों को सुनेंगे जो मैं उनके लिए करता हूँ, और वे भयभीत और कांपेंगे उन सभी भलाईयों और शांति के कारण जो मैं इसके लिए करता हूँ।

<sup>१०</sup> "यहोवा यह कहता है: फिर से इस स्थान में सुना जाएगा, जिसके बारे में तुम कहते हो, 'यह बर्बाद है, बिना मनुष्य और बिना पशु के,' अर्थात् यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में जो उजाड़ है, बिना मनुष्य, बिना निवासी, और बिना पशु के,<sup>११</sup> आनंद की आवाज़ और हर्ष की आवाज़, दूल्हे की आवाज़ और दुल्हन की आवाज़, उनकी आवाज़ जो कहते हैं, 'सेनाओं के यहोवा का ध्यन्यवाद करो, क्योंकि यहोवा भला है, क्योंकि उसकी दया सदा की है'— और उन लोगों की जो यहोवा के घर में ध्यन्यवाद अपैण लाते हैं। क्योंकि मैं इस भूमि की समृद्धि को पुनःस्थापित करूँगा जैसे वे पहले थे, यहोवा कहता है।<sup>१२</sup> "सेनाओं का यहोवा यह कहता है: फिर से इस स्थान में, जो बर्बाद है, बिना मनुष्य या पशु के, और इसके सभी नगरों में, चरवाहों के लिए उनकी भेड़ों को आराम देने का स्थान होगा।<sup>१३</sup> पहाड़ी देश के नगरों में, निचले देश के नगरों में, नेगेव के नगरों में, बिन्यामिन की भूमि में, यरूशलेम के आसपास के क्षेत्रों में, और यहूदा के नगरों में, भेड़े फिर से उन लोगों के हाथों की नीचे से गुजरेंगी जो उन्हें गिनते हैं, यहोवा कहता है।

<sup>१४</sup> देखो, दिन आ रहे हैं, यहोवा घोषित करता है, 'जब मैं उस अच्छे वचन को पूरा करूँगा जो मैंने इसाएल के घर और यहूदा के घर के विषय में कहा है।<sup>१५</sup> उन दिनों और उस समय में मैं दाऊद की एक धर्मी शाखा को अंकुरित करूँगा; और वह पृथी पर चाय और धर्म का पालन करेगा।<sup>१६</sup> उन दिनों यहूदा बच जाएगा और यरूशलेम सुरक्षित रहेगा; और यह वह नाम होगा जिससे वह पुकारा जाएगा: "यहोवा हमारी धार्मिकता है।"<sup>१७</sup> क्योंकि यहोवा यह कहता है: 'दाऊद के घर में इसाएल के सिंहासन पर बैठने के लिए एक व्यक्ति की कमी नहीं होगी;<sup>१८</sup> और लेवीय पुरोहितों के सामने मेरे लिए हो मूरबलि चढ़ाने, अनाज की भेट जलाने, और निरंतर बलिदान तैयार करने के लिए एक व्यक्ति की कमी नहीं होगी।'<sup>१९</sup> और यहोवा का वचन यिर्मयाह के

पास आया, यह कहते हुए,<sup>२०</sup> "यहोवा यह कहता है: 'यदि तुम मेरे दिन के लिए वाचा और मेरी रात के लिए वाचा को तोड़ सकते हो, ताकि दिन और रात अपने नियत समय पर न हों,<sup>२१</sup> तब मेरी वाचा मेरे सेवक दाऊद के साथ भी तोड़ी जा सकती है, ताकि उसके सिंहासन पर शासन करने के लिए उसका कोई पुत्र न हो, और मेरी वाचा लेवीय पुरोहितों के साथ, मेरे सेवकों के साथ।<sup>२२</sup> जैसे स्वर्गीय ज्योतियों को गिना नहीं जा सकता और सम्मुद्र की रेत को मापा नहीं जा सकता, वैसे ही मैं अपने सेवक दाऊद की संतानों और लेवियों को जो मेरी सेवा करते हैं, बढ़ाऊँगा।'"

<sup>२३</sup> और यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया, यह कहते हुए,<sup>२४</sup> "क्या तुम नहीं देखते कि ये लोग क्या कह रहे हैं, दो प्रवार जिन्हें यहोवा ने चुना था, उसने उन्हें अस्वीकार कर दिया है? इसलिए वे मेरे लोगों को तुच्छ समझते हैं, जैसे वे उनके दृष्टिकोण में अब एक राष्ट्र नहीं हैं।<sup>२५</sup> यहोवा यह कहता है: 'यदि मेरे दिन और रात के लिए वाचा स्वर नहीं रहती, और यदि मैंने स्वर्ग और पृथी के निश्चित पैटर्न को स्थापित नहीं किया है,<sup>२६</sup> तब मैं याकूब और मेरे सेवक दाऊद की संतानों को भी अस्वीकार कर दूँगा, ताकि उसकी संतानों से अब्राहम, इस्हाक, और याकूब की संतानों पर शासन करने के लिए शासक न लं। लेकिन मैं उनकी समृद्धि को पुनःस्थापित करूँगा और उन पर दया करूँगा।'"

**३४** वह वचन जो यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास आया, जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उसकी सारी सेना, और पृथी के सब राज्य जो उसके अधिकार में थे, और सब लोग, यरूशलेम और उसकी सब नगरों के विरुद्ध लड़ रहे थे, यह कहते हुए,<sup>२</sup>

"इसाएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: जाकर यहूदा के राजा सिदकियाह से कहो, यहोवा यों कहता है: देखो, मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में देने जा रहा हूँ, और वह इसे आग से जला देगा।<sup>३</sup> और तुम उसके हाथ से नहीं बचोगे, क्योंकि तुम निश्चय ही पकड़े जाओगे और उसके हाथ में सौंप दिए जाओगे; और तुम बाबुल के राजा को अँखों से आँखें मिलाकर देखोगे, और वह तुमसे आमने-सामने बात करेगा, और तुम बाबुल जाओगे।"<sup>४</sup> फिर भी यहोवा का वचन सुनो, हे यहूदा के राजा सिदकियाह: "यहोवा तुम्हारे विषय में यों कहता है: 'तुम तलवार से नहीं मरोगे;<sup>५</sup> तुम शांति से मरोगे; और जैसे तुम्हारे पूर्वजों के लिए, जो तुमसे पहले के राजा थे, सुगंध जलाया गया था, वैसे ही तुम्हारे लिए भी सुगंध जलाया जाएगा; और वे तुम्हारे लिए विलाप करेंगे, यह कहते हुए, "अरे, स्वामी!" क्योंकि मैंने वचन

## यिर्मयाह

कहा है," यहोवा की यह घोषणा है।<sup>6</sup> तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने ये सब वचन यहूदा के राजा सिदकियाह से यरूशलेम में कहे।<sup>7</sup> जब बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम और यहूदा के शेष नगरों के विरुद्ध लड़ रही थी, अर्थात् लाकीश और अजेका; क्योंकि वे अकेले यहूदा के नगरों में से गढ़वाले नगर बचे थे।<sup>8</sup> वह वचन जो यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास आया, जब राजा सिदकियाह ने यरूशलेम के सब लोगों के साथ एक वाचा की, उन्हें स्वतंत्रता घोषित करने के लिए:<sup>9</sup> कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दास और अपनी दासी, एक इब्रानी पुरुष या एक इब्रानी स्त्री को स्वतंत्र कर दे, ताकि कोई भी उन्हें बंधन में न रखे, एक यहूदी अपने भाई की।<sup>10</sup> और सब अधिकारी और सब लोग जिन्होंने वाचा में प्रवेश किया था, ने सुना कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दास और अपनी दासी को स्वतंत्र कर दे, ताकि कोई भी उन्हें अब और बंधन में न रखें; इसलिए उन्होंने आज्ञा मानी और उन्हें स्वतंत्र कर दिया।<sup>11</sup> परंतु बाद में वे मुझे और उन दासों और दासियों को वापस ले लिया जिन्हें उन्होंने स्वतंत्र किया था, और उन्हें दासों के रूप में अधीनता में ले आए।<sup>12</sup> तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास यहोवा की ओर से आया, यह कहते हुए,<sup>13</sup> "इसाएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ उस दिन एक वाचा की थी जब मैंने उन्हें पिस्त देश से, दासता के घर से बाहर निकाला था, यह कहते हुए,<sup>14</sup> "सात वर्षों के अंत में तुममें से प्रत्येक अपने इब्रानी भाई को स्वतंत्र कर दे जो तुम्हें बेचा गया है और तुम्हारी सेवा में छह वर्ष तक रहा है; तुम उसे अपने से स्वतंत्र कर दो।"<sup>15</sup> परंतु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी आज्ञा नहीं मानी और न ही मेरी ओर कान लगाया।<sup>16</sup> हालांकि हाल ही में तुमने मुङ्डकर मेरी दृष्टि में जो सही है वह किया, प्रत्येक ने अपने पड़ोसी को स्वतंत्रता घोषित की, और तुमने मेरे सामने उस घर में एक वाचा की जो मेरे नाम से पुकारा जाता है।<sup>17</sup> फिर भी तुमने मुङ्डकर मेरे नाम को अविन किया, और प्रत्येक ने अपने दास और अपनी दासी को वापस ले लिया जिन्हें तुमने उनकी इच्छा के अनुसार स्वतंत्र किया था, और उन्हें अपने दासों के रूप में अधीनता में ले आए।<sup>18</sup> इसलिए यहोवा यों कहता है: "तुमने मेरे आज्ञा का पालन नहीं किया कि प्रत्येक अपने भाई और अपने पड़ोसी को स्वतंत्रता घोषित करे। देखो, मैं तुम्हें स्वतंत्रता घोषित कर रहा हूँ।" यहोवा की यह घोषणा है, "तलवर, महामारी, और अकाल के लिए; और मैं तुम्हें पूर्वी के सभी राज्यों के लिए आतंक का विषय बना दूँगा।"<sup>19</sup> मैं उन लोगों को दूँगा जिन्होंने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है, जिन्होंने मेरी उपस्थिति में की गई वाचा के शब्दों को पूरा नहीं किया, जब उन्होंने बछले को दो भागों में काटा और उसके भागों के बीच से

गुजरे—<sup>20</sup> यहूदा के अधिकारी और यरूशलेम के अधिकारी, दरबार के अधिकारी और याजक, और देश के सभी लोग जो बछले के भागों के बीच से गुजरे—<sup>21</sup> मैं उन्हें उनके शत्रुओं और उनके जीवन के खोजियों के हाथ में सौंप दूँगा। और उनके मृत शरीर आकाश के पक्षियों और पूर्वी के पशुओं के लिए भोजन बनेंगे।<sup>22</sup> यहूदा के राजा सिदकियाह और उसके अधिकारियों को भी मैं उनके शत्रुओं और उनके जीवन के खोजियों के हाथ में सौंप दूँगा, और बाबुल के राजा की सेना के हाथ में जो तुम्से ठट्ठ गई है।<sup>23</sup> देखो, मैं आज्ञा देने जा रहा हूँ," यहोवा की यह घोषणा है, "और मैं उहें इस नगर में वापस लाऊँगा; और वे इसके विरुद्ध लड़ेंगे और इसे लेंगे और इसे आग से जला देंगे; और मैं यहूदा के नगरों को बिना निवासियों के उजाड़ बना दूँगा।"

**35** यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास यहूदा के राजा योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के दिनों में आया: <sup>2</sup> "रेखाबी लोगों के घराने के पास जाओ और उनसे बात करो, और उन्हें यहोवा के घर में, एक कोठरी में ले आओ, और उन्हें दाखमधु पीने के लिए दो।"<sup>3</sup> तब मैं याजान्याह को, जो यिर्मयाह का पुत्र और हबजिन्याह का पोता था, और उसके भाइयों और उसके सब पुत्रों को, और रेखाबी लोगों के पूरे घराने को ले आया, <sup>4</sup> और मैं उन्हें यहोवा के घर में, हनान के पुत्र इगदल्याह की कोठरी में ले आया, जो परमेश्वर का मनुष्य था, जो प्रधानों की कोठरी के पास थी, और शल्लुम के पुत्र मासेयाह की कोठरी के ऊपर थी, जो द्वारपाल था।<sup>5</sup> तब मैंने रेखाबी लोगों के घराने के पुरुषों के सामने दाखमधु से भरे प्याले और सुराही रखी, और उनसे कहा, "दाखमधु पियो!"<sup>6</sup> परन्तु उन्होंने कहा, "हम दाखमधु नहीं पियेंगे, क्योंकि रेखाब के पुत्र योनादाब, हमारे पिता ने हमें यह आज्ञा दी थी, 'तुम और तुम्हारे पुत्र कभी भी दाखमधु नहीं पियेंगे।"<sup>7</sup> तुम न तो घर बनाओगे, न बीज बोएगे, न दाख की बारी लगाओगे और न उसका स्वामी बनोगे; परन्तु तुम तंबुओं में ही अपने सब दिन रहोगे, ताकि तुम उस देश में बहुत दिन तक जीवित रह सको जहां तुम रहते हो।"<sup>8</sup> हमने रेखाब के पुत्र योनादाब, हमारे पिता की आवाज का पालन किया है, जो उसने हमें आज्ञा दी थी, कि हम अपने सब दिनों में, हम, हमारी परियाँ, हमारे पुत्र, या हमारी पुत्रियाँ, दाखमधु न पिएं,<sup>9</sup> और न अपने लिए घर बनाएं जिसमें हम रहें; और न हमारे पास दाख की बारी, खेत या बीज हो।<sup>10</sup> हम के बीच तंबुओं में रहे हैं, और अपने पिता योनादाब की सभी आज्ञाओं का पालन किया है।<sup>11</sup> परन्तु जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की, तो हमने कहा, 'आओ, हम कसदियों

## पिर्मयाह

की सेना और अरामियों की सेना से दूर यरूशलेम चलें।' इसलिए हम यरूशलेम में रहते हैं।'

<sup>12</sup> तब यहोवा का वचन पिर्मयाह के पास आया: <sup>13</sup> 'सेनाओं के यहोवा, इसाएल के परमेश्वर का यह वचन है: यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों से कहो, "क्या तुम मेरी बातों को सुनकर शिक्षा नहीं लोगे?" यहोवा की यह वाणी है। <sup>14</sup> रेखाब के पुत्र योनादाब के शब्द, जो उसने अपने पुत्रों को दाखमधु न पीने की आज्ञा दी थी, मान लिए गए हैं, और वे आज तक दाखमधु नहीं पीते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। परन्तु मैंने तुमसे बार-बार कहा है, फिर भी तुमने मेरी नहीं सुनी। <sup>15</sup> मैंने अपने सब दासों, भविष्यद्वक्ताओं को भी तुम्हारे पास बार-बार भेजा है, यह कहते हुए: 'अब हर व्यक्ति अपनी बुरी चाल से फिर जाए और अपने काम सुधार ले, और अन्य देवताओं के पीछे न चले कि उनकी पूजा करें। तब तुम उस देश में रहोगे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया है।' परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी और न मेरी और ध्यान दिया। <sup>16</sup> वास्तव में, रेखाब के पुत्र योनादाब के पुत्रों ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया है, जो उसने उन्हें दी थी, परन्तु इस लोगों ने मेरी नहीं सुनी।' <sup>17</sup> इसलिए सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: 'देखो, मैं यहूदा पर और यरूशलेम के सब निवासियों पर वह सब विपत्ति लाने जा रहा हूँ, जो मैंने उनके विरुद्ध कही है, क्योंकि मैंने उनसे कहा था परन्तु उन्होंने नहीं सुना, और मैंने उन्हें बुलाया परन्तु उन्होंने उत्तर नहीं दिया।' <sup>18</sup> तब पिर्मयाह ने रेखाबी लोगों के घराने से कहा, 'सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर यह कहता है: 'क्योंकि तुमने अपने पिता योनादाब की आज्ञा का पालन किया है, और उसकी सब आज्ञाओं को माना है और उसके अनुसार किया है जो उसने तुम्हें आज्ञा दी थी, <sup>19</sup> इसलिए सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: 'रेखाब के पुत्र योनादाब के वंश में कोई व्यक्ति सदा मेरे सामने खड़ा रहने से नहीं चूकेगा।'''

**36** अब यहोयाकीम के चौथे वर्ष में, जोशियाह के पुत्र और यहूदा के राजा थे, यह वचन यहोवा की ओर से पिर्मयाह के पास आया: <sup>2</sup> 'एक पुस्तक ले और उस पर वे सब वचन लिख जो मैंने तुझसे इसाएल, यहूदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं, जिस दिन से मैंने तुझसे बात की, जोशियाह के दिनों से लेकर आज तक।' <sup>3</sup> शायद यहूदा का घराना उन सब विपत्तियों को सुने जो मैं उन पर लाने की योजना बना रहा हूँ, ताकि हर व्यक्ति अपनी बुरी राह से फिर जाए; तब मैं उनकी बुराइ और उनके पाप को क्षमा कर दूँगा।' <sup>4</sup> तब पिर्मयाह ने

नेरियाह के पुत्र बारूक को बुलाया, और बारूक ने पिर्मयाह के कहने पर यहोवा के सब वचन एक पुस्तक पर लिखे जो उसने उससे कहे थे। <sup>5</sup> और पिर्मयाह ने बारूक को आज्ञा दी, 'मैं प्रतिबंधित हूँ, मैं यहोवा के घर में नहीं जा सकता।' <sup>6</sup> इसलिए तू जाकर उस पुस्तक से पढ़, जिसे तूने मेरे कहने पर लिखा है, यहोवा के वचन लोगों को यहोवा के घर में उपवास के दिन सुनाना। और तू यहूदा के उन सब लोगों को भी सुनाना जो अपने नगरों से आए हैं। <sup>7</sup> शायद उनकी विनती यहोवा के सामने आए, और हर व्यक्ति अपनी बुरी राह से फिर जाए, क्योंकि यहोवा ने इस प्रजा के विरुद्ध जो क्रोध और रोष घोषित किया है, वह महान है।' <sup>8</sup> इसलिए नेरियाह के पुत्र बारूक ने वह सब किया जो पिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उसे आज्ञा दी थी, और यहोवा के वचन यहोवा के घर में पुस्तक से पढ़े। <sup>9</sup> अब यहोयाकीम के पाँचवें वर्ष में, जोशियाह के पुत्र और यहूदा के राजा थे, नवं महीने में, यरूशलेम में और यहूदा के नगरों से यरूशलेम में आए हुए सब लोगों न यहोवा के सामने उपवास की घोषणा की। <sup>10</sup> तब बारूक ने यहोवा के घर में पिर्मयाह के वचन पुस्तक से पढ़े, शापान के पुत्र शापान के पुत्र गमार्याह के कक्ष में, ऊपरी आँगन में, यहोवा के घर के नए फटक के प्रवेश पर, सब लोगों के सामने।

<sup>11</sup> अब जब मीकायाह, गमार्याह के पुत्र, शापान के पुत्र, ने पुस्तक से यहोवा के सब वचन सुने, <sup>12</sup> वह राजा के घर में, लेखक के कक्ष में गया। और देखो, सब अधिकारी वहाँ बैठे थे—लेखक एलीशामा, शेमायाह के पुत्र दलायाह, अखबोर के पुत्र एलनाथन, शापान के पुत्र गमार्याह, हनन्याह के पुत्र जिदकियाह, और सब अन्य अधिकारी। <sup>13</sup> और मीकायाह ने उन्हें वे सब वचन सुनाए जो उसने सुने थे जब बारूक ने लोगों के सामने पुस्तक से पढ़। <sup>14</sup> तब सब अधिकारियों ने यहूदी, नत्याह के पुत्र, शलोम्याह के पुत्र, कृशी के पुत्र, को बारूक के पास भेजा, 'उस पुस्तक को ले आओ जिसे तुमने लोगों के सामने पढ़ा और आओ।' इसलिए नेरियाह के पुत्र बारूक ने पुस्तक अपने हाथ में ली और उनके पास आया। <sup>15</sup> और उन्होंने उससे कहा, 'कृपया बैठो और इसे हमें पढ़कर सुनाओ।' इसलिए बारूक ने उन्हें पढ़कर सुनाया। <sup>16</sup> जब उन्होंने सब वचन सुने, वे डर से एक-दूसरे की ओर मुड़े और बारूक से कहा, 'हम अवश्य ही इन सब वचनों को राजा को सुनाएंगे।' <sup>17</sup> और उन्होंने बारूक से पूछा, 'कृपया हमें बताओ, तुमने ये सब वचन कैसे लिखे? क्या यह उसके कहने पर था?' <sup>18</sup> तब बारूक ने उनसे कहा, 'उसने मुझे ये सब वचन कहे, और मैंने उन्हें स्थानी से पुस्तक पर लिखा।' <sup>19</sup> तब

## पिर्मयाह

अधिकारियों ने बारूक से कहा, "जाओ, अपने आप को छुपाओ, तुम और पिर्मयाह, और किसी को न बताओ कि तुम कहाँ हो।"

<sup>20</sup> इसलिए वे राजा के पास आँगन में गए, लेकिन उन्होंने पुस्तक को लेखक एलीशामा के कक्ष में रख दिया; और उन्होंने राजा को सब वचन सुनाए। <sup>21</sup> तब राजा ने यहूदी को पुस्तक लाने के लिए भेजा, और उसने उसे लेखक एलीशामा के कक्ष से लिया। और यहूदी ने उसे राजा को और उन सब अधिकारियों को पढ़कर सुनाया जो राजा के पास खड़े थे। <sup>22</sup> अब राजा शीतकालीन घर में बैठा था, नवं महीने में, और उसके सामने अंगीठी में आग जल रही थी। <sup>23</sup> जब यहूदी ने तीन या चार स्तंभ पढ़े, राजा ने उसे लेखक के चारू से काट दिया और उसे अंगीठी की आग में फेंक दिया, जब तक कि पूरी पुस्तक अंगीठी की आग में जल न गई। <sup>24</sup> फिर भी राजा और उसके सब सेवक जिन्होंने ये सब वचन सुने, डर से नहीं कांपे, न ही उन्होंने अपने वस्त्र फाढ़े। <sup>25</sup> हालांकि एलनाथन, दलायाह, और गमार्याह ने राजा से पुस्तक को न जाने की विनती की, उसने उनकी नहीं सुनी। <sup>26</sup> और राजा ने राजा के पुत्र येरहमेएल, अजरियाह के पुत्र सरायाह, और अबदीएल के पुत्र शलेम्याह को बारूक लेखक और पिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ने का आदेश दिया, लेकिन यहोवा ने उन्हें छुपा दिया।

<sup>27</sup> तब यहोवा का वचन पिर्मयाह के पास आया, जब राजा ने पुस्तक को जला दिया और वे वचन जो बारूक ने पिर्मयाह के कहने पर लिखे थे, कहा, <sup>28</sup> "फिर से एक और पुस्तक ले और उस पर वे सब पूर्व वचन लिख जो पहली पुस्तक पर थे, जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने जला दिया। <sup>29</sup> और यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में तू कहेगा, यहोवा यह कहता है: 'तुमने इस पुस्तक को जला दिया है, यह कहते हुए, तुमने क्यों लिखा है कि बाबुल का राजा अवश्य ही आएगा और इस देश को नष्ट करेगा और मनुष्यों और पशुओं को इससे गायब कर देगा?' <sup>30</sup> इसलिए यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यह कहता है: 'उसके पास दाऊद के सिंहासन पर बैठने के लिए कोई नहीं होगा, और उसका मृत शरीर दिन की गर्मी और रात की ठंड में फेंका जाएगा। <sup>31</sup> मैं उसे, उसके बंशजों को, और उसके सेवकों को उनके अपराध के लिए दंड दूंगा, और मैं उन पर और यरूशलैम के निवासियों पर और यहूदा के लोगों पर वे सब विपत्तियाँ लाउंगा जो मैंने उन्हें घोषित की हैं— लेकिन उन्होंने नहीं सुनी।"<sup>32</sup> <sup>33</sup> तब पिर्मयाह ने एक और पुस्तक ली और उसे नेरियाह के पुत्र बारूक लेखक को दी, और उसने पिर्मयाह के कहने पर उस पर वे सब

वचन लिखे जो यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दिए थे; और उनमें कई समान वचन जोड़े गए।

**37** अब योशियाह का पुत्र सिदकियाह, जिसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश में राजा बनाया था, यहोयाकीम के पुत्र कोय्याह के स्थान पर राज्य करने लगा। <sup>2</sup> परन्तु न तो उसने, न उसके सेवकों ने, और न देश के लोगों ने उन वचनों को सुना जो यहोवा ने पिर्मयाह नबी के द्वारा कहे थे। <sup>3</sup> तथापि राजा सिदकियाह ने शलेम्याह के पुत्र यहूकल और याजक मासेयाह के पुत्र सपन्याह को पिर्मयाह नबी के पास वह कहकर भेजा, "हमारे परमेश्वर यहोवा से हमारे लिए प्रार्थना करो।" <sup>4</sup> अब पिर्मयाह अभी भी लोगों के बीच आ-जा रहा था, क्योंकि उन्होंने उसे अभी तक जेल में नहीं डाला था। <sup>5</sup> इस बीच, फिरैन की सेना मिस्र से निकल चुकी थी; और जब कसदियों ने, जो यरूशलैम का धेराव कर रहे थे, उनके बारे में सुना, तो वे यरूशलैम से हट गए। <sup>6</sup> तब यहोवा का वचन पिर्मयाह नबी के पास आया, यह कहते हुए, <sup>7</sup> "इसाएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: 'यहूदा के राजा से, जिसने तुम्हें मुझसे पूछने के लिए भेजा है, तुम यह कहो: देखो, फिरैन की सेना, जो तुम्हारी सहायता के लिए निकली है, अपने देश मिस्र को लौट जाएगी।' <sup>8</sup> तब कसदी लौट आएंगे और इस नगर से लड़ेंगे, और इसे पकड़ लेंगे और आग से जला देंगे।" <sup>9</sup> यहोवा यों कहता है: 'अपने आप को धोखा मत दो, यह कहते हुए, "कसदी अवश्य ही हमसे चले जाएंगे," क्योंकि वे नहीं जाएंगे।' <sup>10</sup> यहाँ तक कि यदि तुमने उन सब कसदियों की सेना को हरा भी दिया, जो तुम्हारे विरुद्ध लड़ रहे हैं, और उनमें केवल धायल व्यक्ति ही बचे हों, तो भी वे प्रत्येक व्यक्ति अपने तंबू में उठ खड़े होंगे, और इस नगर को आग से जला देंगे।" <sup>11</sup> अब ऐसा हुआ कि जब कसदियों की सेना फिरैन की सेना के कारण यरूशलैम से हट गई, <sup>12</sup> तब पिर्मयाह यरूशलैम से बिन्यामीन के देश में कुछ संपत्ति लेने के लिए चला गया। <sup>13</sup> जब वह बिन्यामीन के फाटक पर था, तो पहरेदारों के एक कपान जिसका नाम इरियाह था, शलेम्याह का पुत्र, हनन्याह का पुत्र, वहाँ था; और उसने पिर्मयाह नबी को गिरफ्तार कर लिया, यह कहते हुए, "तुम कसदियों के पास जा रहे हो।" <sup>14</sup> परन्तु पिर्मयाह ने कहा, "यह झूठ है। मैं कसदियों के पास नहीं जा रहा हूँ।" फिर भी उसने उसकी बात नहीं सुनी; इसलिए इरियाह ने पिर्मयाह को गिरफ्तार कर लिया और उसे अधिकारियों के पास ले गया। <sup>15</sup> और अधिकारी पिर्मयाह पर क्रोधित हुए और उसे पीटा, और उसे योनातान लेखक के घर में कैद कर दिया, जिसे उन्होंने जेल बना दिया था। <sup>16</sup> क्योंकि पिर्मयाह गहरे गड़े

## यिर्मयाह

में, अर्थात् गुम्बदाकार कोठरी में आ गया था; और यिर्मयाह वहाँ कई दिन तक रहा।<sup>17</sup> अब राजा सिद्धिक्याह ने भेजकर उसे बाहर निकाला; और अपने महल में राजा ने गुप्त रूप से उससे पूछा और कहा, “क्या यहोवा की ओर से कोई वचन है?” और यिर्मयाह ने कहा, “है!” फिर उसने कहा, “तुम बाबुल के राजा के हाथ में सौंप दिए जाओगे।”<sup>18</sup> इसके अलावा, यिर्मयाह ने राजा सिद्धिक्याह से कहा, “मैंने तुम्हारे विरुद्ध, या तुम्हारे सेवकों के विरुद्ध, या इस प्रजा के विरुद्ध किस प्रकार पाप किया है, कि तुमने मुझे जेल में डाल दिया है?”<sup>19</sup> तब तुम्हारे भविष्यद्वक्ता कहाँ हैं, जिन्होंने तुमसे भविष्यवाणी की थी, यह कहते हुए, ‘बाबुल का राजा तुम्हारे विरुद्ध या इस देश के विरुद्ध नहीं आएगा?’<sup>20</sup> परन्तु अब, कृपया सुनो, हे मेरे प्रभु राजा! कृपया मेरी विनती तुम्हारे सामने आए, और मुझे योनानातन लेखक के घर में वापस न भेजो, ताकि मैं वहाँ न मर जाऊँ।”<sup>21</sup> तब राजा सिद्धिक्याह ने आज्ञा दी, और उन्होंने यिर्मयाह को पहरेदारों के आंगन में रखा, और उसे बेकर्सी की गली से प्रतिदिन एक रोटी दी, जब तक कि नगर में सारी रोटी समाप्त नहीं हो गई। इसलिए यिर्मयाह पहरेदारों के आंगन में रहा।

**38** अब शैफतियाह मतान का पुत्र, गदल्याह पश्चात् का पुत्र, युक्त शलोमियाह का पुत्र, और पश्चात् मल्कियाह का पुत्र, उन शब्दों को सुन रहे थे जो यिर्मयाह सभी लोगों से कह रहा था, <sup>2</sup> “यह वही है जो यहोवा कहता है: ‘जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, अकाल, या महामारी से मरेगा; परन्तु जो कोई कसादियों के पास जाएगा वह जीवित रहेगा, और अपनी जान को लूट के समान पाएगा, और जीवित रहेगा।”<sup>3</sup> यह वही है जो यहोवा कहता है: यह नगर निश्चित रूप से बाबुल के राजा की सेना के हाथों में सौंप दिया जाएगा, और वह इसे पकड़ लेगा।”<sup>4</sup> तब अधिकारियों ने राजा से कहा, “कृपया इस व्यक्ति को मार डालें, क्योंकि वह व्यक्ति इन लोगों की भलाई नहीं, बल्कि उनकी हानि चाहता है।”<sup>5</sup> इसलिए राजा सिद्धिक्याह ने कहा, “देखो, वह तुम्हारे हाथों में है; क्योंकि राजा तुम्हारे विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।”<sup>6</sup> इसलिए उन्होंने यिर्मयाह को लिया और उसे मल्कियाह राजा के पुत्र के कुएं में डाल दिया, जो प्रहरी के आंगन में था; और उन्होंने यिर्मयाह को रस्सियों से नीचे उतारा। अब उस कुएं में पानी नहीं था, केवल कीचड़ था, और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया।<sup>7</sup> परन्तु एबेद-मलेक कूशी, जो राजा के घर में एक हिजड़ा था, ने सुना कि उन्होंने यिर्मयाह को कुएं में डाल दिया है। अब

राजा बिन्यामीन के फाटक पर बैठा था;<sup>8</sup> और एबेद-मलेक राजा के घर से बाहर आया और राजा से कहने लगा, <sup>9</sup> “मेरे प्रभु राजा, इन लोगों ने जो कुछ भी यिर्मयाह नबी के साथ किया है वह दुष्टता है, जिसे उन्होंने कुएं में डाल दिया है; वह वहाँ भूख से मर जाएगा, क्योंकि नगर में और रोटी नहीं है।”<sup>10</sup> तब राजा ने एबेद-मलेक कूशी को आज्ञा दी, “यहाँ से अपने अधिकार में तीस आदमियों को ले जाओ और यिर्मयाह नबी को कुएं से निकाल लाओ, इससे पहले कि वह मर जाए।”<sup>11</sup> इसलिए एबेद-मलेक ने अपने अधिकार में आदमियों को लिया और राजा के घर में भंडार कक्ष के नीचे एक स्थान पर गया, और वहाँ से पुराने विथड़े और पुराने कपड़े लिए, और उन्हें रस्सियों से कुएं में यिर्मयाह के पास नीचे उतारा।<sup>12</sup> तब एबेद-मलेक कूशी ने यिर्मयाह से कहा, “अब इन पुराने विथड़ों और कपड़ों को अपनी बगल के नीचे रस्सियों के नीचे रखो”; और यिर्मयाह ने यिर्मयाह को रस्सियों से खींचकर बाहर निकाला और उसे कुएं से बाहर उठाया, और यिर्मयाह प्रहरी के आंगन में रहा।<sup>13</sup> तब राजा सिद्धिक्याह ने यिर्मयाह नबी को यहोवा के घर के तीसरे प्रवेश द्वार पर बुलाया; और राजा ने यिर्मयाह से कहा, “मैं तुमसे कुछ पूछने जा रहा हूँ; मुझसे कुछ भी मत छुपाओ।”<sup>14</sup> तब यिर्मयाह ने सिद्धिक्याह से कहा, “यदि मैं तुम्हें बताऊँ, तो क्या तुम मुझे निश्चित रूप से मार नहीं डालोगे? और यदि मैं मूर्खों से लाला हूँ, तो तुम मेरी बात नहीं सुनोगे।”<sup>15</sup> परन्तु राजा सिद्धिक्याह ने यिर्मयाह से गुप्त रूप से शपथ खाई, “जैसे यहोवा जीवित है, जिसने हमें यह जीवन दिया है, मैं तुम्हें मार नहीं डालूँगा, और न ही तुम्हें उन लोगों के हाथ में ढूँगा जो तुम्हारी जान चाहते हैं।”<sup>17</sup> तब यिर्मयाह ने सिद्धिक्याह से कहा, “यह वही है जो सेनाओं का परमेश्वर, इसाएल का परमेश्वर कहता है: यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण करोगे, तो तुम जीवित रहोगे, यह नगर आग से नहीं जलाया जाएगा, और तुम और तुम्हारा परिवार बच जाएगा।”<sup>18</sup> परन्तु यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करोगे, तो यह नगर कसरियों के हाथ में सौंप दिया जाएगा, और वे इसे आग से जला देंगे, और तुम उनके हाथ से नहीं बच सकोगे।”<sup>19</sup> तब राजा सिद्धिक्याह ने यिर्मयाह से कहा, “मैं उन यहूदियों से डरता हूँ जो कसरियों के पास चले गए हैं, क्योंकि वे मुझे उनके हाथ में दे सकते हैं, और वे मुझे अपमानित करेंगे।”<sup>20</sup> परन्तु यिर्मयाह ने कहा, “वे तुम्हें उनके हाथ में नहीं देंगे। कृपया यहोवा की वाणी का पालन करो जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, ताकि तुम्हारे लिए भला हो और तुम जीवित रहो।”<sup>21</sup> परन्तु यादे तुम आत्मसमर्पण करने से इंकार करते रहोगे, तो यह वही

## पर्मयाह

वचन है जो यहोवा ने मुझे दिखाया है।<sup>22</sup> देखो, यहदा के राजा के महल में बची हुई सभी स्त्रियाँ बाबुल के राजा के अधिकारियों के पास लाई जाएँगी, और वे स्त्रियाँ कहेंगी, “तुम्हारे विश्वासी मित्रों ने तुम्हें थोखा दिया और तुम पर विजय प्राप्त की; जब तुम्हारे पैर कीचड़ में धंसे थे, वे पीछे हट गए।”<sup>23</sup> वे तुम्हारी सभी पतियों और तुम्हारे पुत्रों को भी कसदियों के पास ले जाएँगे, और तुम स्वयं उनके हाथ से नहीं बच सकोगे, बल्कि बाबुल के राजा के हाथ से पकड़े जाओगे, और यह नार आग से जलाया जाएगा।”<sup>24</sup> तब सिदकियाह ने पर्मयाह से कहा, “इन शब्दों के बारे में किसी को न बताना, और तुम मरणे नहीं।”<sup>25</sup> परन्तु यदि अधिकारी सुनें कि मैंने तुमसे बात की है और वे तुमसे आकर कहें, “हमें अब बताओ कि तुमने राजा से क्या कहा, और राजा ने तुमसे क्या कहा; इसे हमसे मत छुपाओ, और हम तुम्हें मार नहीं डारेंगे।”<sup>26</sup> तो तुम उनसे कहना, मैं राजा के सामने अपनी प्रार्थना कर रहा था, कि मुझे योनानाम के घर में लौटने के लिए न कहें ताकि मैं वहाँ मर जाऊं।”<sup>27</sup> तब सभी अधिकारी पर्मयाह के पास आए और उससे पूछताछ की, और उसने उन्हें उन सभी शब्दों के अनुसार बताया जो राजा ने ज्ञानी थीं; इसलिए उन्होंने उससे बात करना बंद कर दिया, क्योंकि बातचीत नहीं सुनी गई थी।<sup>28</sup> इसलिए पर्मयाह प्रहरी के अंगन में रहा जब तक कि यस्तशलेम पर कब्जा नहीं हो गया।

**39** अब जब यहूदा के राजा सिदकियाह के नौवे वर्ष में, दसवें महीने में, बाबुल के राजा नबूज़रदनेस्सर और उसकी सारी सेना यस्तशलेम पर आक्रमण करने आए और उसे धेर लिया;<sup>2</sup> सिदकियाह के घ्यारहवें वर्ष में, चौथे महीने में, महीने के नौवें दिन, नगर की दीवार तोड़ी गई।<sup>3</sup> तब बाबुल के राजा के सभी अधिकारी आए और मध्य द्वार पर बैठ गए: नेगल-शेरेज़र रब-मग, सम्पाद-नेतृ, सररोकिम रब-सरिस, नेतृ-शेरेज़र रब-मग, और बाबुल के राजा के सभी अन्य अधिकारी।<sup>4</sup> जब यहूदा के राजा सिदकियाह और सभी योद्धाओं ने उन्हें देखा, तो वे रात में राजा के बगीचे के रास्ते से दो दीवारों के बीच के द्वार से नगर छोड़कर भाग गए; और वे अराबा की ओर चले गए।<sup>5</sup> लेकिन कसदियों की सेना ने उनका पीछा किया और यरीहो के मैदानों में सिदकियाह को पकड़ लिया; और उन्होंने उसे पकड़कर हमात देश के रिब्ला में बाबुल के राजा नबूज़रदनेस्सर के पास ले आए, और उसने उस पर निर्णय सुनाया।<sup>6</sup> तब बाबुल के राजा ने रिब्ला में सिदकियाह के पुत्रों को उसकी अँखों के सामने मार डाला; बाबुल के राजा ने यहूदा के सभी नेताओं को भी मार डाला।<sup>7</sup> फिर उसने सिदकियाह की अँखों को

अंधा कर दिया और उसे कांस्य के बेंडियों में बाँधकर बाबुल ले गया।<sup>8</sup> कसदियों ने राजा के महल और लोगों के घरों को आग से जला दिया, और उन्होंने यस्तशलेम की दीवारों को गिरा दिया।<sup>9</sup> तब अंगरक्षकों के कप्तान नबूज़रदन ने नगर में बचे हुए लोगों को, जो उसके पास चले गए थे और बाकी बचे लोगों को, बाबुल में निवासन में ले गया।<sup>10</sup> लेकिन कुछ सबसे गरीब लोग, जिनके पास कुछ नहीं था, अंगरक्षकों के कप्तान नबूज़रदन ने यहूदा देश में छोड़ दिया, और उन्हें उस समय दाख की बारियां और खेत दिए।

**11** अब बाबुल के राजा नबूज़रदनेस्सर ने अंगरक्षकों के कप्तान नबूज़रदन के माध्यम से पर्मयाह के बारे में आदेश दिया, कहा, **12** “उसे ले जाओ और उसकी देखभाल करो, और उसे कोई हानि न पहुँचाओ, बल्कि उसके कहे अनुसार उसके लिए करो।”<sup>13</sup> तो अंगरक्षकों के कप्तान नबूज़रदन, रब-सरिस नबूश़ज़बान, रब-मग नेगल-शेरेज़र, और बाबुल के राजा के सभी प्रमुख अधिकारी<sup>14</sup> ने संदेश भेजा और पर्मयाह को प्रहरी के अँगन से बाहर ले आए; और उन्होंने उसे आहिकाम के पुत्र गदल्याह के हाथ में सौंप दिया, शापन के पुत्र, ताकि वह उसे धर ले जाए। तो वह लोगों के बीच में रहा।

**15** अब यहोवा का वचन पर्मयाह के पास आया था जब वह प्रहरी के अँगन में बंद था, कहा, **16** “इथियोपियाई एबेद-मेलक से जाकर कहो, ‘यह इसाएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का वचन है: ‘देखो, मैं इस नगर पर विपत्ति लाने वाला हूँ, समृद्धि नहीं; और वे उस दिन तुम्हारे सामने घटित होंगी।’”<sup>17</sup> लेकिन मैं उस दिन तुम्हें बचाऊँगा,” यहोवा की घोषणा है, “और तुम उन लोगों के हाथ में नहीं दिये जाओगे जिनसे तुम डरते हो।”<sup>18</sup> क्योंकि मैं निश्चित रूप से तुम्हें बचाऊँगा, और तुम तलवार से नहीं गिरोगे, बल्कि तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिए लूट के समान होगा, क्योंकि तुमने मुझ पर भरोसा किया है,” यहोवा की घोषणा है।”<sup>19</sup>

**40** यह वचन जो पर्मयाह के पास प्रभु की ओर से आया, जब नबूज़रदान, अंगरक्षकों का प्रधान, ने उसे रामाह से रिहा किया, जब उसने उसे यस्तशलेम और यहूदा के उन सभी निवासितों के साथ जीजीरों में बाँध लिया था, जिन्हें बाबुल ले जाया जा रहा था।<sup>2</sup> अब अंगरक्षकों के प्रधान ने पर्मयाह को लिया और उससे कहा, “प्रभु तुम्हारे परमेश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध इस विपत्ति की घोषणा की है;<sup>3</sup> और प्रभु ने इसे पूरा किया और जैसा उसने कहा था वैसा ही किया। क्योंकि तुम लोगों ने प्रभु के विरुद्ध पाप किया और उसकी आवाज़

## पिरमयाह

नहीं सुनी, इसलिए यह बात तुम पर आई है।<sup>4</sup> परंतु अब, देखो, मैं आज तुम्हें उन जंजीरों से मुक्त कर रहा हूँ जो तुम्हारे हाथों पर हैं। यदि तुम्हें मेरे साथ बाबुल चलना अच्छा लगता है, तो चलो, और मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा; परंतु यदि तुम्हें मेरे साथ बाबुल चलना अच्छा नहीं लगता, तो कोई बात नहीं। देखो, पूरा देश तुम्हारे सामने है; जहाँ भी तुम्हें अच्छा और सही लगे, वहाँ जाओ।<sup>5</sup> चूंकि पिरमयाह वापस नहीं जा रहा था, नक्काशरदान ने उससे कहा, “अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास लौटा जाओ, जो शापान का पुत्र है, जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरों पर नियुक्त किया है, और उसके साथ लोगों के बीच रहो; या जहाँ भी तुम्हें सही लगे, वहाँ जाओ।” तो अंगरक्षकों के प्रधान ने उसे रसद और एक उपहार दिया, और उसे जाने दिया।<sup>6</sup> तब पिरमयाह मिजापाह में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास गया, और उन लोगों के बीच रहा जो देश में बचे थे।<sup>7</sup> अब सभी सेनापतियों ने, जो मैदान में थे, वे और उनके लोग, सुना कि बाबुल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश पर नियुक्त किया है, और उसने उसे उन पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का प्रभारी बनाया है, जो देश के सबसे गरीब थे और जिन्हें बाबुल नहीं ले जाया गया था।<sup>8</sup> तो वे मिजापाह में गदल्याह के पास आए— नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह के पुत्र योहानान और योनातान, त-ह्वमेत का पुत्र सरायाह, और एफाई के पुत्र, नेतोपाती, और माकाती का पुत्र यजन्याह—वे और उनके लोग।<sup>9</sup> तब अहीकाम का पुत्र गदल्याह, शापान का पुत्र, ने उनसे और उनके लोगों से शपथ खाई, “कसदियों की सेवा करने से मत डरो, देश में रहो और बाबुल के राजा की सेवा करो, और तुम्हारे लिए अच्छा होगा।<sup>10</sup> जहाँ तक मेरा सवाल है, देखो, मैं मिजापाह में रहूँगा ताकि तुम्हारे लिए उन कसदियों के सामने खड़ा रहूँ जो हमारे पास आते हैं; परंतु जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, दाखमधु ग्रीष्मकालीन फल, और तेल इकट्ठा करो, और उन्हें अपने बर्तनों में संग्रहित करो, और अपने उन नगरों में रहो जिन्हें तुमने ले लिया है।”<sup>11</sup> इसी प्रकार, सभी यहूदी जो मोआब में और अम्मोन के पुत्रों के बीच, एदोम में और सभी अन्य देशों में थे, उन्होंने सुना कि बाबुल के राजा ने यहूदा के लिए एक अवशेष छोड़ा है, और उसने उनके ऊपर अहीकाम के पुत्र गदल्याह को नियुक्त किया है।<sup>12</sup> तब सभी यहूदी उन सभी स्थानों से लौट आए जहाँ वे बिखरे हुए थे और यहूदा के देश में, मिजापाह में गदल्याह के पास आए, और दाखमधु और ग्रीष्मकालीन फल बड़ी मात्रा में इकट्ठा किया।<sup>13</sup> अब कारेह का पुत्र योहानान और सभी सेनापतियों ने, जो मैदान में थे, मिजापाह में गदल्याह के पास आए,<sup>14</sup> और उससे कहा, “क्या तुम जानते हो कि

अम्मोन के पुत्रों का राजा बालिस ने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुम्हारी जान लेने के लिए भेजा है?” परंतु अहीकाम का पुत्र गदल्याह ने उन पर विश्वास नहीं किया।<sup>15</sup> तब कारेह का पुत्र योहानान ने मिजापाह में गदल्याह से गुप्त रूप से कहा, “मुझे जाने दो और नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालूँ, और कोई नहीं जान पाएगा! क्योंकि वह तुम्हारी जान क्यों ले, ताकि सभी यहूदी जो तुम्हारे पास इकट्ठे हुए हैं, बिखर जाएं, और यहूदा का अवशेष नष्ट हो जाए?”<sup>16</sup> परंतु अहीकाम का पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, “यह काम मत करो, क्योंकि तुम इश्माएल के बारे में झूठ बोल रहे हो।”

**41** सातवें महीने में, नतन्याह का पुत्र, एलीशामा का पुत्र, जो राजवंश का था और राजा के मुख्य अधिकारियों में से एक था, दस आदमियों के साथ मिजापा में अहिकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। जब वे मिजापा में एक साथ रोटी खा रहे थे,<sup>2</sup> तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल और उसके साथ के दस आदमियों ने उठकर अहिकाम के पुत्र गदल्याह को तलवार से मार डाला, जिसे बाबुल के राजा ने देश पर नियुक्त किया था।<sup>3</sup> इश्माएल ने मिजापा में गदल्याह के साथ सभी यहूदियों को और वहाँ पाए गए कसदियों को, जो योद्धा थे, भी मार डाला।<sup>4</sup> अब ऐसा हुआ कि गदल्याह की हत्या के अगाहे दिन, जब तक किसी को इसके बारे में पता नहीं था,<sup>5</sup> तब शेखेम, शीलो, और सामरिया से अस्सी आदमी आए, जिनकी दाढ़ी मुंडाई हुई थी, कपड़े फटे हुए थे, और शरीर पर धाव थे, जो अनाज की भेट और धूप लेकर यहूदा के घर में चढ़ाने आए थे।<sup>6</sup> तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल मिजापा से उनसे मिलने के लिए निकला, चलते हुए रो रहा था, और जब वह उनसे मिला, तो उसने उनसे कहा, “अहिकाम के पुत्र गदल्याह के पास आओ!”<sup>7</sup> फिर जिसे ही वे शहर के अंदर आए, नतन्याह का पुत्र इश्माएल और उसके साथ के आदमियों ने उन्हें मार डाला और उन्हें कुएँ में फेंक दिया।<sup>8</sup> लेकिन उनमें से दस आदमियों ने इश्माएल से कहा, “हमें मत मारो, क्योंकि हमने खेत में गेहूँ, जौ, तेल, और शहद के भंडार छिपा रखे हैं।” इसलिए उसने उन्हें उनके साथियों के साथ नहीं मारा।<sup>9</sup> अब वह कुआँ जिसमें इश्माएल ने उन सभी आदमियों की लाशें फेंकी थीं जिन्हें उसने गदल्याह के कारण मारा था— वह वही था जिसे राजा आसा ने इश्माएल के राजा बाशा के कारण बनवाया था— नतन्याह का पुत्र इश्माएल ने उसे मृतकों से भर दिया।<sup>10</sup> फिर इश्माएल ने मिजापा में बचे हुए सभी लोगों को बंदी बना लिया, राजा की बेटियों और मिजापा में बचे हुए सभी लोगों को, जिन्हें अंगरक्षक के

## पर्मयाह

कप्तान नबूजरदान ने अहिकाम के पुत्र गदल्याह की देखरेख में रखा था; और नतन्याह का पुत्र इश्माएल उन्हें लेकर अमोन के पुत्रों के पास जाने के लिए निकल पड़ा।

<sup>11</sup> लेकिन करेआह का पुत्र योहानान और उसके साथ के सभी सेनापति नतन्याह के पुत्र इश्माएल द्वारा किए गए सभी भुरे कामों के बारे में सुन चुके थे। <sup>12</sup> इसलिए उन्होंने सभी आदमियों को लिया और नतन्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने के लिए गए, और उन्होंने उसे गिर्बोन के बड़े तालाब के पास पाया। <sup>13</sup> अब जैसे ही इश्माएल के साथ के सभी लोगों ने करेआह के पुत्र योहानान और उसके साथ के सेनापतियों को देखा, वे प्रसन्न हुए। <sup>14</sup> इसलिए मिजापा से बंदी बनाए गए सभी लोग मुड़कर वापस आए, और करेआह के पुत्र योहानान के पास गए। <sup>15</sup> लेकिन नतन्याह का पुत्र इश्माएल योहानान से आठ आदमियों के साथ भाग गया और अमोन के पुत्रों के पास चला गया। <sup>16</sup> फिर करेआह का पुत्र योहानान और उसके साथ के सभी सेनापति मिजापा से उन सभी बचे हुए लोगों को ले गए जिन्हें उसने नतन्याह के पुत्र इश्माएल से बचाया था, जब उसने अहिकाम के पुत्र गदल्याह को मार डाला था— वे लोग जो सैनिक थे, महिलाएं, बच्चे, और खोजे, जिन्हें बह गिर्बोन से वापस लाया था। <sup>17</sup> और वे गेरूत किम्हाम में गए, जो बैथलेम के पास है, ताकि मिस्र में प्रवेश कर सकें। <sup>18</sup> क्योंकि वे कसदियों से डरते थे; क्योंकि नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने अहिकाम के पुत्र गदल्याह को मार डाला था, जिसे बाबुल के राजा ने देश पर नियुक्त किया था।

**42** तब सब सेनापतियों, योहानान, करेह का पुत्र, यज्ञनीयाह, होशायाह का पुत्र, और सब लोग, छोटे से लेकर बड़े तक, पास आए। <sup>2</sup> और पिर्मयाह नबी से कहा, “कृपया हमारी विनती आपके सामने आए, और हमारे लिए अपने परमेश्वर यहोवा को से प्रार्थना करें, इस बचे हुए लोगों के लिए—क्योंकि हम में से बहुतों में से केवल कुछ ही बचे हैं, जैसे कि अब आपकी आँखें हमें देख रही हैं—<sup>3</sup> कि आपके परमेश्वर यहोवा हमें वह मार्ग बताएं जिसमें हमें चलाना चाहिए, और वह कार्य जो हमें करना चाहिए।” <sup>4</sup> तब पिर्मयाह नबी ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें सुना है; देखो, मैं तुम्हारे शब्दों के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करने जा रहा हूँ; और मैं तुम्हें वह सब वचन बताऊँगा जो यहोवा तुम्हें उत्तर देगा। मैं तुमसे एक भी वचन नहीं छिपाऊँगा।” <sup>5</sup> तब उन्होंने पिर्मयाह से कहा, “यदि हम उस पूरे संदेश के अनुसार कार्य नहीं करते जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे द्वारा हमें भेजता है, तो यहोवा हमारे विरुद्ध सच्चा और विश्वासयोग्य साक्षी हो।” <sup>6</sup> चाहे वह अच्छा हो या बुरा, हम

अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज सुनेंगे, जिसके पास हम तुम्हें भेज रहे हैं, ताकि जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज सुनें, तो हमारे लिए सब कुछ अच्छा हो।” <sup>7</sup> अब दस दिन के अंत में यहोवा का वचन पिर्मयाह के पास आया। <sup>8</sup> तब उसने योहानान, करेह का पुत्र, और उसके साथ के सब सेनापतियों, और छोटे से लेकर बड़े तक सब लोगों को बुलाया, <sup>9</sup> और उनसे कहा, “यह वही है जो यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है, जिसके पास तुमने अपनी विनती प्रस्तुत करने के लिए मुझे भेजा।” <sup>10</sup> यदि तुम वास्तव में इस देश से रहोगे, तो मैं तुम्हें बनाऊँगा और नष्ट नहीं करूँगा, और मैं तुम्हें लगाऊँगा और उखाड़ नहीं ढूँगा; क्योंकि मैं उस आपदा से पछाड़ऊँगा जो मैंने तुम पर डाली है। <sup>11</sup> बाबुल के राजा से मत डरो, जिसपे तुम अब डरते हो; उससे मत डरो, यहोवा की घोषणा है, ‘क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम्हें बचाने और उसके हाथ से छुड़ाने के लिए।’ <sup>12</sup> मैं तुम्हें दया भी दिखाऊँगा, ताकि वह तुम पर दारा करे और तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि पर लैटाए।” <sup>13</sup> परंतु यदि तुम कहोगे, ‘हम इस देश में नहीं रहेंगे,’ ताकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज न सुनो, <sup>14</sup> कहते हुए, ‘नहीं, बल्कि हम मिस्र देश में जाएँगे, जहाँ हम युद्ध नहीं देखेंगे, न तुम्हीं की आवाज सुनेंगे, न रोटी के लिए भूखे होंगे, और हम वहाँ रहेंगे,’ <sup>15</sup> तो उस मामले में, यहोवा का वचन सुनो, यहूदा के बचे हुए लोग: यह वही है जो सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है: ‘यदि तुम वास्तव में मिस्र में प्रवेश करने और वहाँ निवास करने का मन बना लेते हो, <sup>16</sup> तो वह तलवार, जिससे तुम डरते हो, मिस्र देश में तुम्हें पकड़ लेगी; और वह अकाल, जिसके बारे में तुम चिंतित हो, मिस्र में तुम्हारे पीछे-पीछे आएगा, और तुम वहाँ मरोगे।’ <sup>17</sup> तो वे सब लोग जो मिस्र में निवास करने का मन बना लेते हैं, तलवार, अकाल, और महामारी से मरेंगे; और उनके पास कोई बचने वाला या आपदा से बचने वाला नहीं होगा जो मैं उन पर लाने वाला हूँ।” <sup>18</sup> क्योंकि यह वही है जो सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर, कहता है: “जैसे मेरा क्रौध और रोष यरूशलेम के निवासियों पर उड़ेला गया है, वैसे ही मेरा रोष तुम पर उंडेला जाएगा जब तुम मिस्र में प्रवेश करोगे। और तुम एक शाप, एक भयावहता, एक अपशब्द, और एक अपमान बन जाओगे; और तुम इस स्थान को फिर कभी नहीं देखोगे।” <sup>19</sup> यहोवा ने तुमसे कहा है, यहूदा के बचे हुए लोग, “मिस्र मत जाओ!” तुम स्पष्ट रूप से समझते हो कि आज मैंने तुम्हारे विरुद्ध साक्ष दिया है। <sup>20</sup> क्योंकि तुमने केवल अपने आप को धोखा दिया है; यह तुम ही हो जिसने मुझे अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेजा, कहते हुए, “हमारे लिए हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना

## पिरम्याह

करो, और जो कुछ भी हमारे परमेश्वर यहोवा कहे, हमें बताओ, और हम उसे करेंगे।”<sup>21</sup> तो मैंने आज तुम्हें बताया है, लेकिन तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ का पालन नहीं किया है, या कुछ भी नहीं जो उसने मुझे तुम्हें बताने के लिए भेजा है।<sup>22</sup> इसलिए अब तुम स्थृत रूप से समझोगे कि तुम तलवार, अकाल, और महामारी से मरेगे, उस स्थान में जहाँ तुम निवास करने की इच्छा रखते हो।

**43** परन्तु जैसे ही पिरम्याह, जिसे उनके परमेश्वर यहोवा ने भेजा था, ने सब लोगों को यहोवा उनके परमेश्वर के सब वचन—यानी ये सब वचन—बताने समाप्त किए।<sup>2</sup> होशायाह के पुत्र अर्जयाह और करेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषों ने पिरम्याह से कहा, “तू इूठ बोल रहा है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह कहने के लिए नहीं भेजा कि, ‘तुम मिस में बसने के लिए न जाओ’;<sup>3</sup> परन्तु नेरियाह का पुत्र बास्क तुझे हमारे विरुद्ध भड़कता है, ताकि हमें कसदियों के हाथ में सौंप दे, जिससे वे हमें मार डालें या बाबुल में निर्वासित कर दें।”<sup>4</sup> इसलिए करेह के पुत्र योहानान और सब सेनापतियों और सब लोगों ने यहोवा की आवाज़ का पालन नहीं किया कि यहूदा देश में रहें।<sup>5</sup> इसके बजाय, करेह के पुत्र योहानान और सब सेनापतियों ने यहूदा के समस्त बचे हुए लोगों को ले लिया जो उन सब राष्ट्रों से लौट आए थे जहाँ वे तितर-बित हो गए थे, ताकि यहूदा देश में बस सकें—<sup>6</sup> पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे, राजा की बेटियाँ, और हर व्यक्ति जिसे अंगरक्षक के कप्तान न बुझरदान ने अहिकाम के पुत्र गदत्याह के साथ छोड़ा था, शाफान के पुत्र—पिरम्याह नबी और नेरियाह के पुत्र बास्क के साथ—<sup>7</sup> और वे मिस देश में प्रवेश कर गए (व्यक्ति उन्होंने यहोवा की आवाज़ का पालन नहीं किया), और ताहपनेहेस तक गए।<sup>8</sup> फिर ताहपनेहेस में पिरम्याह के पास यहोवा का वचन आया, यह कहते हुए, “अपने हाथों में कुछ बड़े पत्थर ले और उन्हें ताहपनेहेस में फ़िरौन के महल के प्रवेश द्वार पर ईंट की छत में यहूदियों की दृष्टि में छुपा दे;”<sup>9</sup> और उनसे कह, “यह इसाल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा का वचन है: ‘देख, मैं अपने सेवक बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को भेजने और लाने जा रहा हूँ, और मैं उसका सिंहासन उन पथरों पर स्थापित करूँगा जिन्हें मैंने छुपाया है; और वह उनके ऊपर अपनी छत्रछाया फैलाएगा।’<sup>11</sup> वह आएगा और मिस देश को मरेगा; जो मृत्यु के लिए हैं उन्हें मृत्यु के लिए सौंपा जाएगा, जो बधुआई के लिए हैं उन्हें बधुआई के लिए, और जो तलवार के लिए हैं उन्हें तलवार के लिए।”<sup>12</sup> और मैं मिस के देवताओं के मंदिरों में आग लगाऊंगा, और वह उन्हें जलाएगा और उन्हें

बंदी बना लेगा। इस प्रकार वह मिस देश को ऐसे लपेटेगा जैसे एक चरवाहा अपने वस्त को लपेटता है, और वह वहाँ से सुरक्षित निकल जाएगा।<sup>13</sup> वह मिस देश में स्थित हेलीओपोलिस के स्मारक पथरों को भी टुकड़े-टुकड़े कर देगा; और वह मिस के देवताओं के मंदिरों को आग से जला देगा।”<sup>14</sup>

**44** यह वचन पिरम्याह के पास उन सभी यहूदियों के लिए आया जो मिस देश में रहते थे, जो मिम्दील, तहपहेस, मैनिक्स, और पथरोस देश में रहते थे, यह कहते हुए, <sup>2</sup> “यह सेनाओं के प्रभु, इसाल के परमेश्वर का वचन है: ‘तुमने स्वयं देखा है कि मैंने यरूशलेम और यहूदा के सभी नगरों पर कैसी विपत्ति लाई है; और देखो, वे आज के दिन खंडहर में हैं, और उनमें कोई नहीं रहता, <sup>3</sup> उनकी दुष्टता के कारण जो उन्होंने मुझे क्रोधित करने के लिए की, अन्य देवताओं को बलिदान चढ़ाने और उनकी सेवा करने के द्वारा जिन्हें उन्होंने नहीं जाना था, न ही तुमने, न तुम्हारे पिताओं ने। <sup>4</sup> फिर भी मैंने तुम्हारे पास अपने सभी सेवक भविष्यद्वक्ताओं को बार-बार भेजा, यह कहते हुए, “ओह, इस धृणित कार्य को मात करो जिसे मैं धृणा करता हूँ”<sup>5</sup> पर उन्होंने न तो सुना और न ही अपने कानों को झुकाया कि वे अपनी दुष्टता से फिरें, ताकि वे अन्य देवताओं को बलिदान न ढाएं।<sup>6</sup> इसलिए मेरा क्रोध और मेरा रोष यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में उमड़ पड़ा और जल गया, इसलिए वे खंडहर और उजाड़ बन गए हैं, जैसा कि आज के दिन है।<sup>7</sup> अब फिर, यह सेनाओं के प्रभु, इसाल के परमेश्वर का वचन है: ‘तुम अपने आप को इतना बड़ा नुकसान क्यों पहुँचा रहे हो, अपने आप से पुरुष और स्त्री, बालक और शिशु को यहूदा से समाप्त करने के लिए, ताकि तुम अपने आप को बिना अवशेष के छोड़ दो, <sup>8</sup> मूँझे अपने हाथों के कार्यों से क्रोधित करने के लिए, मिस देश में अन्य देवताओं को बलिदान चढ़ाने के द्वारा जहाँ तुम निवास करने के लिए प्रवेश कर रहे हो, ताकि तुम समाप्त हो जाओ और पृथ्वी की सभी जातियों के बीच एक शाप और अपशब्द का विषय बन जाओ? <sup>9</sup> क्या तुमने अपने पिताओं की दुष्टता, अपनी स्वयं की दुष्टता, और अपनी पतियों की दुष्टता को भुला दिया है, जो उन्होंने यहूदा देश में और यरूशलेम की सड़कों में की थी? <sup>10</sup> फिर भी वे आज तक पश्चात्तापी नहीं हुए हैं, न ही उन्होंने भय किया है, न ही मेरी व्यवस्था या मेरी विधियों में चरे हैं, जो मैंने तुम्हारे और तुम्हारे पिताओं के सामने रखी थीं।”

## पर्मियाह

<sup>11</sup> इसलिए यह सेनाओं के प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर का वचन है: देखो, मैं तुम्हारे ऊपर विपत्ति लाने के लिए उद्ध संकल्पित हूँ, ताकि यहूदा को समाप्त कर दूँ।<sup>12</sup> और मैं यहूदा के अवशेष को हटा दूंगा जिन्होंने मिस्र देश में निवास करने के लिए जाने का मन बना लिया है, और वे सभी मिस्र देश में अपनी समाप्ति को प्राप्त करेंगे; वे तलवार से गिरेंगे और अकाल से अपनी समाप्ति को प्राप्त करेंगे। छोटे और बड़े दोनों तलवार और अकाल से मरेंगे; और वे एक शाप, डरावनी वस्तु, अपशब्द, और अपमान बन जाएंगे।<sup>13</sup> और मैं मिस्र देश में रहने वालों को उद्ध दूंगा, जैसा कि मैंने यरूशलेम को तलवार, अकाल, और महामारी से उद्ध दिया है।<sup>14</sup> इसलिए यहूदा के अवशेष में से कोई भी नहीं बचेगा या बचकर नहीं निकलेगा जो मिस्र देश में निवास करने के लिए गए हैं, और फिर यहूदा देश में लौटने के लिए तरस रहे हैं जहाँ वे निवास करना चाहते हैं; क्योंकि कोई भी नहीं लौटेगा सिवाय कुछ शरणार्थियों के।<sup>15</sup>

<sup>15</sup> तब सभी पुरुष जो जानते थे कि उनकी पतियाँ अन्य देवताओं को बलिदान चढ़ा रही थीं, साथ ही सभी महिलाएँ जो पास खड़ी थीं, एक बड़ी सभा, जिसमें सभी लोग शामिल थे जो मिस्र देश में पथरोस में रहते थे, पिरमियाह को उत्तर देते हुए कहने लगे, <sup>16</sup> “जहाँ तक उस संदेश का सवाल है जो तुमने हमें प्रभु के नाम में कहा है, हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे।”<sup>17</sup> पर हम निश्चित रूप से हर उस शब्द को पूरा करेंगे जो हमारे मुँह से निकला है, स्वर्ग की रानी को बलिदान चढ़ाने और उसे पेय अर्पण करने के द्वारा, जैसा कि हमने स्वयं, हमारे पिताओं, हमारे राजाओं, और हमारे अधिकारियों ने यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में किया था; क्योंकि तब हमारे पास बहुत भोजन था और हम सुखी थे और हमने कोई विपत्ति नहीं देखी।<sup>18</sup> पर जब से हमने सर्वा की रानी को बलिदान चढ़ाना और उसे पेय अर्पण करना बंद कर दिया, तब से हमने सब कुछ खो दिया है और तलवार और अकाल से हमारी समाप्ति हो गई है।<sup>19</sup> “और,” महिलाओं ने कहा, “जब हम सर्वा की रानी को बलिदान चढ़ा रहे थे और उसे पेय अर्पण कर रहे थे, क्या यह हमारे पतियों के बिना था कि हमने उसके लिए बलिदान की रोटियाँ उसकी छिपी में बनाईं, और उसे पेय अर्पण किया?”<sup>20</sup>

<sup>20</sup> तब पिरमियाह ने सभी लोगों से कहा, पुरुषों और महिलाओं से—यहाँ तक कि उन सभी लोगों से जो उसे ऐसा उत्तर दे रहे थे—कहते हुए,<sup>21</sup> “जहाँ तक उन धूम्रित बलिदानों का सवाल है जो तुमने यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में जलाए, तुम, तुम्हारे पिताओं,

तुम्हारे राजाओं, तुम्हारे अधिकारियों, और देश के लोगों ने—क्या प्रभु ने उन्हें याद नहीं किया, और क्या यह सब उसकी स्मृति में नहीं आया? <sup>22</sup> इसलिए प्रभु अब इसे सहन नहीं कर सका, तुम्हारे कर्मों की बुराई के कारण, तुम्हारे द्वारा किए गए धृणित कार्यों के कारण; इस प्रकार तुम्हारा देश खंडहर, डरावनी वस्तु, शाप, और बिना निवासी के बन गया है, जैसा कि आज के दिन है।<sup>23</sup> चूंकि तुमने बलिदान जलाए हैं और प्रभु के विरुद्ध पाप किया है और न तो प्रभु की आवाज का पालन किया है और न ही उसकी व्यवस्था, उसकी विधियों, या उसकी गवाहियों में चले हों, इसलिए यह विपत्ति तुम्हारे ऊपर आई है, जैसा कि आज के दिन है।<sup>24</sup> तब पिरमियाह ने सभी लोगों से कहा, जिसमें सभी महिलाएँ भी शामिल थीं, “प्रभु का वचन सुनो, हे यहूदा के सभी लोग जो मिस्र देश में हों।”<sup>25</sup> यह सेनाओं के प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर का वचन है: “जहाँ तक तुम्हारा और तुम्हारी पतियों का सवाल है, तुमने अपने मुँह से कहा है और अपने हाथों से इसे पूरा किया है, ‘हम निश्चित रूप से अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे जो हमने की हैं, स्वर्ग की रानी को बलिदान चढ़ाने और उसे पेय अर्पण करने के लिए।’” आगे बढ़ा, अपनी प्रतिज्ञाओं की पुष्टि करो, और निश्चित रूप से अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो।<sup>26</sup> फिर भी, प्रभु का वचन सुनो, हे यहूदा के सभी लोग जो मिस्र देश में रहते हैं: “देखो, मैंने अपने महान नाम की शपथ ली है; प्रभु कहते हैं, कि मेरा नाम फिर कभी मिस्र देश में यहूदा के किसी व्यक्ति के मुँह से नहीं लिया जाएगा, यह कहते हुए, ‘जैसे प्रभु परमेश्वर जीति है।’”<sup>27</sup> देखो, मैं उनके लिए बुराई के लिए और अच्छे के लिए नहीं देख रहा हूँ, और मिस्र देश में रहने वाले यहूदा के सभी लोग तलवार या अकाल से अपनी समाप्ति को प्राप्त करेंगे जब तक कि वे समाप्त नहीं हो जाते।<sup>28</sup> जो तलवार से बच जाएंगे वे मिस्र देश से यहूदा देश में थोड़ी संख्या में लौटेंगे। तब यहूदा के सभी अवशेष जो मिस्र देश में निवास करने के लिए गए हैं, जानेंगे कि किसका वचन स्थिर रहेगा, मेरा या उनका।<sup>29</sup> और यह तुम्हारे लिए संकेत होगा; प्रभु कहते हैं, कि मैं इस स्थान में तुम्हें दंड देने जा रहा हूँ, ताकि तुम जान सको कि मेरे शब्द निश्चित रूप से तुम्हारे खिलाफ खड़े होंगे।<sup>30</sup> यह प्रभु का वचन है: देखो, मैं मिस्र के राजा फिरैन होफ्रा को उसके शत्रुओं के हाथ में सौंपेंगे जा रहा हूँ, उनके हाथ में जो उसके जीवन की खोज कर रहे हैं, जैसा कि मैंने यहूदा के राजा सिदाक्याह को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंपा, उसके शत्रु जो उसके जीवन की खोज कर रहे थे।”

## यिर्मयाह

**45** यह वह संदेश है जो यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने नेरियाह के पुत्र बारूक से कहा, जब उसने यिर्मयाह के आदेश पर इन शब्दों को एक पुस्तक में लिखा, यहूदा के राजा योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के चौथे वर्ष में, कहा:

<sup>2</sup> “इसाएल का परमेश्वर यहोवा तुमसे, बारूक, यह कहता है: <sup>3</sup> ‘तुमने कहा, “हाय, मझ पर विपत्ति है! क्योंकि यहोवा ने मेरे दुख में और भी दुख जोड़ दिया है, मैं अपनी कराह के कारण थक गया हूँ और मुझे विश्राम नहीं मिला।’” <sup>4</sup> तुम उसे यह कहो: यहोवा यह कहता है: “देखो, जो मैंने बनाया है उसे मैं नष्ट करने जा रहा हूँ, और जो मैंने लगाया है उसे उखाड़ने जा रहा हूँ, यानी, पूरे देश को।” <sup>5</sup> परन्तु तुम्हारे लिए, क्या तुम अपने लिए महान चीज़ें खोज रहे हो? उन्हें मत खोजो; क्योंकि देखो, मैं सभी प्राणियों पर विपत्ति लाने जा रहा हूँ, यहोवा की घोषणा है, ‘परन्तु मैं तुम्हारी जान को उन सभी स्थानों में लूट के रूप में ढूँगा जहाँ तुम जा सकते हो।’”

**46** यह वह वचन है जो यिर्मयाह नबी के पास राष्ट्रों के विषय में यहोवा की ओर से आया। <sup>2</sup> मिस के लिए, फिरौन नको मिस के राजा की सेना के विषय में, जो यूफ्रेट्स नदी के किनारे कारकेमिश में थी, जिसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा के राजा योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के चौथे वर्ष में पराजित किया: <sup>3</sup> “ढाल और बकलर को तैयार करो, और युद्ध के लिए आगे बढ़ो! घोड़ों को जृताओ, और घुड़सवारों पर चढ़ो! अपनी स्थिति हेलमेट पहनकर लो! भालों को चमकाओ, कवच पहन लो!” <sup>5</sup> “मैंने यह क्यों देखा? वे भयभीत हैं, वे पीछे भट्ठे रहे हैं, और उनके योद्धा कुचले गए हैं और बिना पीछे देखे जल्दी में भाग रहे हैं; हर तरफ आतंक है!” यहोवा की यह घोषणा है। <sup>6</sup> तेज दौड़ने वाला न भागे, न योद्धा बच सके! उत्तर में यूफ्रेट्स नदी के किनारे वे ठोकर खाकर गिर गए हैं। <sup>7</sup> यह कोन है जो नील नदी की तरह उठता है, उन नदियों की तरह जिनके जल उमड़ते हैं? <sup>8</sup> मिस नील नदी की तरह उठता है, और उन नदियों की तरह जिनके जल उमड़ते हैं; और उसने कहा है, “मैं उट्टांगा और उस देश को ढक लूँगा; मैं नगर और उसके निवासियों को नष्ट कर दूँगा।” <sup>9</sup> ऊपर जाओ, हे घोड़ों, और तेजी से चलाओ, हे रथों, ताकि योद्धा बाहर जा सकें; कूश और पूत, जो ढाल संभालते हैं, और लुटी, जो धनुष संभालते और मोड़ते हैं। <sup>10</sup> क्योंकि वह दिन सेनाओं के प्रभु यहोवा का है, प्रतिशोध का दिन, ताकि वह अपने शत्रुओं से प्रतिशोध ले सके; और तलवार खाएगी और संतुष्ट होगी, और उनके रक्त से भरभूर पीएगी; क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा के लिए एक वध होगा, उत्तर में यूफ्रेट्स नदी के किनारे। <sup>11</sup> गिलाद पर जाओ और मरहम प्राप्त करो, हे मिस की कुँवारी बेटी!

व्यर्थ में तुमने उपचार बढ़ाए हैं, तुम्हारे लिए कोई चंगा नहीं है। <sup>12</sup> राष्ट्रों ने तुम्हारी अपमान की बात सुनी है, और तुम्हारी विलाहट ने पृथ्वी को भर दिया है। क्योंकि एक योद्धा दूसरे पर ठोकर खा गया है, और वे दोनों एक साथ गिर गए हैं।

<sup>13</sup> यह वह संदेश है जो यहोवा ने यिर्मयाह नबी से बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के मिस की भूमि पर आक्रमण करने के बारे में कहा: <sup>14</sup> “मिस में घोषणा करो और मिदाल में प्रचार करो, मेम्फिस और तहपनेश में भी प्रचार करो, कहो, ‘अपनी स्थिति लो और तैयार हो जाओ, क्योंकि तलवार ने तुम्हारे चारों ओर के लोगों को खा लिया है।’” <sup>15</sup> तुम्हारे शक्तिशाली योद्धों काट दिए गए हैं? वे खड़े नहीं होते क्योंकि यहोवा ने उन्हें दूर कर दिया है। <sup>16</sup> वे बार-बार ठोकर खा चुके हैं, वास्तव में, वे एक-दूसरे के खिलाफ गिर गए हैं। फिर उन्होंने कहा, उठो, और चलो अपने लोगों और अपनी मातृभूमि की ओर, उत्तीर्णकी तलवार से दूर।” <sup>17</sup> उन्होंने वहाँ विलाया, मिस का राजा फिरौन के बल एक बड़ी आवाज है; उसने नियुक्त समय को जाने दिया है। <sup>18</sup> जैसा कि मैं जीवित हूँ, राजा की घोषणा है, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, “निश्चित रूप से एक आएगा जो ताबोर के समान है पहाड़ों के बीच, या समुद्र के किनारे कार्मल के समान।” <sup>19</sup> निर्वासन के लिए अपना सामान तैयार करो, मिस में रहने वाली बेटी, क्योंकि मेम्फिस एक उजाड़ बन जाएगा; यह नष्ट हो जाएगा और निर्जन रहेगा। <sup>20</sup> मिस एक सुंदर बछिया है, लेकिन उत्तर से एक घोड़ा मक्खी आ रही है— यह आ रही है। <sup>21</sup> उसके बीच में उसके भाड़े के लोग भी मोटे बछड़ों के समान हैं, क्योंकि वे भी पीछे भट्ठे गए हैं और एक साथ भग गए हैं, वे अपनी जमीन पर खड़े नहीं हुए। क्योंकि उनके विनाश का दिन उन पर आ गया है, उनकी सजा का समय। <sup>22</sup> उसकी आवाज एक सांप की तरह चलती है; क्योंकि वे एक सेना की तरह आगे बढ़ते हैं और लकड़हरे की तरह कुल्हाड़ियों के साथ उसके पास आते हैं। <sup>23</sup> “उन्होंने उसके जंगल को काट डाला है,” यहोवा की घोषणा है; “निश्चित रूप से यह अब और नहीं मिलेगा, हालांकि वे टिड्डियों से अधिक हैं और बिना संख्या के हैं।” <sup>24</sup> मिस की बेटी को लज्जित किया गया है, उत्तर के लोगों की शक्ति के अधीन कर दिया गया है।”

<sup>25</sup> सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर कहता है: “देखो, मैं थेब्स के आमोन, फिरौन, मिस के साथ उसके देवताओं और उसके राजाओं को ढंड देने जा रहा हूँ, वास्तव में, फिरौन और उन पर जो उस पर भरोसा करते हैं।” <sup>26</sup> मैं उन्हें उन लोगों के हाथ में ढूँसा जो उनके जीवन की तलाश कर रहे हैं, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और

## पर्मयाह

उसके सेवकों के हाथ में। बाद में, हालांकि, यह पुराने दिनों की तरह बसा रहेगा," यहोवा की घोषणा है।<sup>27</sup> "लैकिन तुम, मेरे सेवक याकूब, मत डरो, न ही भयभीत हो, इसाएल! क्योंकि, देखो, मैं तुम्हें दूर से बचाने जा रहा हूं, और तुम्हारे वंशजों को उनकी बंधुआई की भूमि से; और याकूब लैटेगा और निश्चिंत रहेगा और सुरक्षित रहेगा, कोई उसे डराने वाला नहीं होगा।"<sup>28</sup> मेरे सेवक याकूब, मत डरो," यहोवा की घोषणा है, "क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं। क्योंकि मैं उन सभी राष्ट्रों का पूर्ण विनाश कर दूंगा जहां मैंने तुम्हें भेजा है, फिर भी मैं तुम्हारा पूर्ण विनाश नहीं करूँगा; लैकिन मैं तुम्हें उचित रूप से अनुशासित करूँगा और किसी भी तरह से तुम्हें बिना दंड के नहीं छोड़ूँगा।"

**47** यहोवा का वचन जो पर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पलिशितयों के विषय में आया, जब फिरैन ने गाजा पर आक्रमण किया था।<sup>2</sup> सेनाओं के यहोवा यों कहता है: "देखो, उत्तर से जल उमड़ रहे हैं – वे एक बाढ़ के समान बढ़ेंगे, और भूमि और उसकी सारी भरपूरता को भर देंगे; नगर और उसमें रहने वाले नीचे उत्तर जाएंगे; उस दिन योद्धा चिल्लाएंगे।<sup>3</sup> ढाल और कवच की आवाज, युद्ध के नारे की आवाज! क्योंकि यहोवा पलिशितयों की भूमि को नष्ट कर रहा है और तटों के निवासियों का सफाया कर रहा है।<sup>4</sup> गाजा पर गंजापन आ गया है; अशकेलोन पूरी तरह से काट दिया गया है; औरेम और गाजा लजित होंगे; उन्होंने अपना विश्वास खो दिया है; राजा और उसके राजकुमार एक साथ चले गए हैं।<sup>5</sup> हे तटभूमि के अवशेष, तुम कब तक अपने को काटोगे? यहोवा ने तुम्हें बनाया है; वह तुम्हें कठोरता से दंड देगा, और तुम्हें स्वास्थ्य में बहाल करेगा।<sup>6</sup> क्योंकि सेनाओं का यहोवा कहता है: "देखो, तटभूमि पर विपत्ति आ रही है – पलिशितयों पर – और महान विनाश।<sup>7</sup> गाजा पर गंजापन आ गया है, अशकेलोन पूरी तरह से काट दिया गया है; औरेम और गाजा लजित हैं, वे एक साथ बंदी बना लिए गए हैं।"

**48** मोआब के विषय में सेनाओं के प्रभु, इसाएल के परमेश्वर, यह कहता है: "नेबो पर हाय, क्योंकि वह नष्ट हो गया है! कियतिम को लजित किया गया और कब्जा कर लिया गया; ऊँचा गढ़ लजित और चूर-चूर हो गया है।<sup>1</sup> मोआब के लिए अब कोई प्रशंसा नहीं है; हेशबोन में उन्होंने उसके खिलाफ विपत्ति की योजना बनाई है: 'आओ, और उसे एक राष्ट्र होने से समाप्त कर दें!' तुम भी, मदमेन, चुप हो जाओगे; तलवार तुम्हारा पीछा करेगी।<sup>3</sup> होरोनैम से एक चिल्लाहट की आवाज़, विनाश और बड़ी तबाही!<sup>4</sup> मोआब टूट गया है; उसके छोटे

बच्चों ने संकट की पुकार की है।<sup>5</sup> क्योंकि वे तुहित की चढ़ाई पर निरंतर रोते हुए चढ़ेंगे; क्योंकि होरोनैम के अवरोहण पर उन्होंने विनाश की पीड़ा की पुकार सुनी है।<sup>6</sup> भागो, अपनी जान बचाओ, ताकि तुम जंगल में एक जुनिपर के समान हो जाओ।<sup>7</sup> क्योंकि तुम्हारे अपने कामों और खजानों पर विश्वास के कारण, तुम भी पकड़े जाओगे; और केमोश निर्वासन में जाएगा अपने याजकों और नेताओं के साथ।<sup>8</sup> हर नगर में एक विनाशक आएगा, ताकि कोई नगर न बचे; घाटी भी नष्ट हो जाएगी, और पठार नष्ट हो जाएगा, जैसा कि प्रभु ने कहा है।<sup>9</sup> मोआब पर नमक डालो, क्योंकि वह नष्ट हो जाएगी; उसके नगर उजाड़ स्थान बन जाएंगे, उनमें कोई निवासी नहीं होगा।<sup>10</sup> शापित है वह जो प्रभु का काम छल से करता है, और शापित है वह जो अपनी तलवार को रक्त से रोकता है।<sup>11</sup> मोआब अपने युवावस्था से ही आराम में है; वह भी अपनी तलछट पर अडिगा है, और उसे बर्तन से बर्तन में नहीं उड़ेला गया है, और न ही वह निवासन में गया है। इसलिए उसका स्वाद उसमें बना हुआ है, और उसकी गंध नहीं बदली है।<sup>12</sup> इसलिए देखो, दिन आ रहे हैं, "प्रभु कहता है, "जब मैं उसके पास बर्तन उड़ेलने वालों को भेजूँगा, और वे उसे उड़ेलों, और वे उसके बर्तनों को खाली करेंगे और उसके जारों को चूर-चूर करेंगे।<sup>13</sup> और मोआब केमोश के कारण लजित होगा, जैसे इमाएल का घर बेतेल के कारण लजित हुआ, उनका विश्वास।<sup>14</sup> तुम कैसे कह सकते हो, हम योद्धा हैं, और युद्ध के लिए वीर पुरुष?<sup>15</sup> मोआब नष्ट हो गया है, और लोग उसके नगरों में चले गए हैं; और उसके चुने हुए जवान भी वथ के लिए नीचे चले गए हैं," राजा कहता है, जिसका नाम सेनाओं का प्रभु है।<sup>16</sup> "मोआब की विपत्ति शीघ्र ही आएगी, और उसकी आपदा जल्दी ही आ गई है।<sup>17</sup> उसके लिए शोक करो, तुम सब जो उसके चारों ओर रखते हो, यहाँ तक कि तुम सब जो उसके नाम को जानते हो; कहो, कैसे शक्तिशाली राजदंड टूट गया है, वैभव की छड़ी!"<sup>18</sup> अपने वैभव से नीचे आओ, और सूखी भूमि पर बैठो, दिलोन की बेटी की निवासी; क्योंकि मोआब का विनाशक तुम्हारे खिलाफ आया है, उसने तुम्हारे गांडों को नष्ट कर दिया है।<sup>19</sup> सङ्क के पास खड़े रहो और देखो, अरोएर की निवासी; भागने वाले आदमी और बचने वाली महिला से पूछो, और कहो, 'क्या हुआ है?'<sup>20</sup> मोआब को लजित किया गया है, क्योंकि वह चूर-चूर हो गया है। विलाप करो और चिल्लाओ; अरनोन के द्वारा घोषणा करो कि मोआब नष्ट हो गया है।<sup>21</sup> न्याय भी मैदान पर आया है – होलोन, यहजा, और मेफात के खिलाफ,<sup>22</sup> दिलोन, नेबो, और बैथ-दिलोन के खिलाफ,<sup>23</sup> कियतिम, बैथ-गामुल, और बैथ-मोन के खिलाफ,<sup>24</sup>

## पिरमयाह

केरियथ, बोसरा, और मोआब देश के सभी नगरों के खिलाफ, दूर और पास।<sup>25</sup> मोआब का सींग काट दिया गया है, और उसकी भुजा तोड़ी गई है," प्रभु कहता है।<sup>26</sup> "उसे नशे में करो, क्योंकि वह प्रभु के प्रति अभिमानी हो गया है; इसलिए मोआब अपनी उत्ती में लोटेगा, और वह भी हंसी का पात्र बनेगा।<sup>27</sup> अब क्या इसाएल तुम्हारे लिए हंसी का पात्र नहीं था? या क्या वह चोरों में पकड़ा गया था? क्योंकि जब भी तुम उसके बारे में बोलते हो तो तुम तिरस्कार में अपना सिर हिलाते हो।<sup>28</sup> नगरों को छाड़ दो और चट्ठानों के बीच में रहो, मोआब के निवासी, और उस कबूतर के समान हो जाओ जो खाइ के मुँह से पर धोसला बनाता है।<sup>29</sup> हमने मोआब के गर्व के बारे में सुना है—वह बहुत गर्वित है—उसके अंहकार, उसके गर्व, उसके अभिमान, और उसकी आत्म-प्रर्शसन के बारे में।<sup>30</sup> मैं उसके क्रोध को जानता हूँ," प्रभु कहता है, "लेकिन यह व्यर्थ है; उसके निष्फल घमंड ने कुछ नहीं किया है।<sup>31</sup> इसलिए मैं मोआब के लिए विलाप करूँगा, संपूर्ण मोआब के लिए मैं चिल्लाऊँगा, मैं किर-हेरेस के लोगों के लिए विलाप करूँगा।<sup>32</sup> जाजेर के विलाप से अधिक मैं तुम्हारे लिए विलाप करूँगा, सिबमा की बेल! तुम्हारी शाखाएँ समुद्र के पार चली गईं, वे जाजेर के समुद्र तक पहुँच गईं; विनाशक ने तुम्हारे ग्रीष्म फल और तुम्हारी अंगूर की फसल पर आक्रमण किया है।<sup>33</sup> इसलिए अनंद और उल्लास हटा दिए गए हैं उपजाऊ क्षेत्र से, यहाँ तक कि मोआब की भूमि से। और मैंने दाखमधु को दाखमधु के कुँडों से समाप्त कर दिया है; कोई उन्हें चिल्लाते हुए नहीं रौदेगा, चिल्लाहट चिल्लाहट नहीं होगी।<sup>34</sup> हेशबोन से लेकर एलोहे तक, यहजा तक उन्होंने अपनी आवाज उठाई है, जो आर से लेकर होरेनैम और एलाथ-शोलीशियाह तक; क्योंकि निम्रीम के जल भी उजाड़ हो जाएंगे।<sup>35</sup> मैं मोआब से समाप्त कर दूँगा," प्रभु कहता है, "वह जो ऊँचे स्थान पर बलिदान चढ़ाता है और वह जो अपने देवताओं की धूप जालाता है।<sup>36</sup> इसलिए मेरा हृदय मोआब के लिए बासुरी की तरह विलाप करता है; मेरा हृदय भी किर-हेरेस के लोगों के लिए बासुरी की तरह विलाप करता है; इसलिए उन्होंने जो प्रचुरता उत्पन्न की थी, उसे खो दिया है।<sup>37</sup> क्योंकि हर सिर गंजा है और हर दाढ़ी कटी हुई है; सभी हाथों पर कटाव हैं और कमर पर टाट है।<sup>38</sup> मोआब की सभी छतों पर और उसके सार्वजनिक चौकों में हर कोई शोक कर रहा है, क्योंकि मैंने मोआब को एक अवांछनीय बर्तन की तरह तोड़ दिया है," प्रभु कहता है।<sup>39</sup> "कैसे वह चूर-चूर हो गया है, कैसे उन्होंने विलाप किया है! कैसे मोआब ने अपनी पीठ मोड़ ली है—वह लिज्जित है! इसलिए मोआब हंसी का पात्र बनेगा और उसके चारों ओर के सभी लोगों के लिए आतक का

विषय बनेगा।"<sup>40</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु कहता है: "देखो, एक व्यक्ति चील की तरह तेजी से उड़ान भेरेगा और मोआब के खिलाफ अपने पंख फैलाएगा।<sup>41</sup> केरियथ पर कब्जा कर लिया गया है, और गढ़ों को जब्त कर लिया गया है; इसलिए उस दिन मोआब के योद्धाओं के दिल एक प्रसव पीड़ा में महिला के दिल के समान होंगे।<sup>42</sup> मोआब एक लोग होने से नष्ट हो जाएगा, क्योंकि वह प्रभु के प्रति अभिमानी हो गया है।<sup>43</sup> आतंक, गड्ढा, और जाल तुम्हारे ऊपर आ रहे हैं, मोआब के निवासी," प्रभु कहता है।<sup>44</sup> "जो आतंक से भागता है वह गड्ढे में गिरेगा, और जो गड्ढे से ऊपर चढ़ता है वह जाल में फंस जाएगा; क्योंकि मैं उसके ऊपर, मोआब पर लाऊंगा, उनके दंड का वर्ष," प्रभु कहता है।<sup>45</sup> "हेशबोन की छाया में शराबीर्धि बिना शक्ति के खड़े हैं; क्योंकि हेशबोन से एक आग निकली है, और सीहोन के मध्य से एक ज्वाला, और उसने मोआब के माथे को और ऊँचे उत्सव मनाने वालों के सिर को भस्म कर दिया है।<sup>46</sup> हाय तुम पर, मोआब! केमोश के लोग नष्ट हो गए हैं; क्योंकि तुम्हारे बेटे बंदीगृह में ले जाए गए हैं, और तुम्हारी बेटियाँ बंदीगृह में।<sup>47</sup> फिर भी मैं मोआब की संपत्ति को अंतिम दिनों में बहाल करूँगा," प्रभु कहता है। यहाँ तक मोआब का न्याय है।

**49** अम्मोन के पुत्रों के विषय में। यहोवा यों कहता है: "क्या इसाएल के कोई पुत्र नहीं हैं? या उसके कोई वारिस नहीं हैं? फिर मल्काम ने गाद पर अधिकार क्यों कर लिया है, और उसके लोग उसकी नगरियों में बस गए हैं?"<sup>2</sup> इसलिए देखो, वे दिन आ रहे हैं," यहोवा की यह घोषणा है, "जब मैं अम्मोन के पुत्रों की रब्बा के विरुद्ध युद्ध का कोलाहल सुनाऊंगा; और वह एक उजाड़ ढेर बन जाएगी, और उसके नगर आग में जल जाएंगे। तब इसाएल अपने अधिकारकर्ताओं पर अधिकार करेगा," यहोवा की यह घोषणा है।<sup>3</sup> "दे हेशबोन, विलाप कर, क्योंकि अई नष्ट हो गया है! रब्बा की बेटियों, चिल्लाओं, टाट औंडों और शोक करो, और दीवारों के भीतर सूझो; क्योंकि मल्काम निवासन में जाएगा अपने याजकों और अपने नेताओं के साथ।<sup>4</sup> तू घाटियों में क्यों घमंड करती है, तेरी बहती हुई घाटी, तू पथप्रधार बेटी जो अपने खजानों पर भरोसा करती है, कहती है, कौन मेरे विरुद्ध आ सकता है?"<sup>5</sup> देखो, मैं तुझ पर आतंक लाने वाला हूँ," सेनाओं के यहोवा परमेश्वर की यह घोषणा है, "तेरे चारों और से; और तू एक के बाद एक खदेड़ी जाएगी, और कोई भी भगोड़ों को इकट्ठा करने वाला नहीं होगा।<sup>6</sup> परंतु बाद में मैं अम्मोन के पुत्रों की स्थिति को पुनःस्थापित करूँगा," यहोवा की यह घोषणा है।

## यिर्मयाह

<sup>७</sup> एदोम के विषय में। सेनाओं के यहोवा यों कहता है: "क्या तेमान में अब कोई बुद्धि नहीं रही? क्या समझदारों की अच्छी सलाह खो गई है? क्या उनकी बुद्धि क्षीण हो गई है?"<sup>८</sup> भागो, लौट जाओ, गहराई में निवास करो, हे देदान के निवासी, क्योंकि मैं एसाव की विपत्ति उस पर लाने वाला हूँ जब मैं उसे दंड ढूँगा।<sup>९</sup> यदि अंगर बीनने वाले तेरे पास आएं, तो क्या वे कुछ अवशेष नहीं छोड़ेंगे? यदि चोर रात में आएं, तो वे केवल उतना ही नष्ट करेंगे जितना उर्वं चाहिए।<sup>१०</sup> परंतु मैंने एसाव को नग्र कर दिया है, मैंने उसके छिपने के शान्तों को उजागर कर दिया है ताकि वह अपने आप को छिपा न सके; उसके वंशज उसके रिश्तेदारों के साथ नष्ट हो गए हैं और उसके पड़ोसी, और वह अब अस्तित्व में नहीं है।<sup>११</sup> अपने अनाथों को पीछे छोड़ दे, मैं उन्हें जीवित रखूँगा; और अपनी विधाओं को मुझ पर भरोसा करने दे।"<sup>१२</sup> क्योंकि यहोवा यों कहता है: "देखो, जिन्हें प्याला बनाने की सजा नहीं थी, वे अवश्य ही उसे पीएंगे, तो क्या तू वह है जो पूरी तरह से दंडित नहीं होगा? तू बिना दंड के नहीं रहेगा, परंतु तू अवश्य ही उसे पीएगा।<sup>१३</sup> क्योंकि मैंने अपने आप से शपथ खाइ है," यहोवा की यह घोषणा है, "कि बोस्ता एक भय का विषय बन जाएगा, एक अपमान, एक उजाड़ और एक शाप; और उसके सभी नगर सदा के लिए खंडहर बन जाएंगे!"<sup>१४</sup> मैंने यहोवा से एक संदेश सुना है, और एक दूत राष्ट्रों के बीच भेजा जा रहा है, कहता है, "अपने आप को इकट्ठा करो और उसके विरुद्ध आओ, और युद्ध के लिए उठो।"<sup>१५</sup> क्योंकि देखो, मैंने तुझे राष्ट्रों में छोटा बना दिया है, लोगों में तुच्छ।<sup>१६</sup> तेरे आतंक के कारण, तेरे हृदय के अंहकार ने तुझे थोखा दिया है, तु जो चट्टान की दरारों में निवास करता है, जो पहाड़ी की ऊँचाई पर कब्जा करता है। यद्यपि तू अपना घोंसला चील के समान ऊँचा बनाता है, मैं तुझे वहाँ से नीचे लाऊँगा।" यहोवा की यह घोषणा है।<sup>१७</sup> "एदोम एक भय का विषय बन जाएगा; जो कोई उसके पास से गुजरेगा वह चकित होगा और उसकी सभी चोटों पर सीटी बजाएगा।<sup>१८</sup> सदोम और अमोरा के साथ उसके पड़ोसियों के विनाश के समान," यहोवा कहता है, "कोई वहाँ नहीं रहेगा, और न ही कोई मनुष्य उसमें निवास करेगा।<sup>१९</sup> देखो, एक व्यक्ति यरदन के झाड़ियों से एक शेर के समान आएगा हमेशा पानी वाले चरागाह के विरुद्ध; क्योंकि एक पल में मैं उहाँ वहाँ से भगा ढूँगा, और जिसे चुना जाएगा मैं उस पर नियुक्त करूँगा। क्योंकि कौन मेरे समान है, और कौन मुझे अदालत में बुलाएगा? और फिर कौन वह चरवाहा है जो मेरे विरुद्ध खड़ा हो सकता है?"<sup>२०</sup> इसलिए यहोवा की योजना सुनो जो उसने एदोम के विरुद्ध बनाई है, और उसकी रणनीतियाँ जो उसने तेमान के निवासियों के विरुद्ध

बनाई हैं: निश्चित रूप से वे उहाँ खींच ले जाएंगे, झुंड के छोटे बच्चे; निश्चित रूप से वह उनके कारण उनके चरागाह को उजाड़ बना देगा।<sup>२१</sup> उनके पतन के शोर से पृथ्वी कांप उठी है। एक चिल्लाहट है! इसका शोर लाल सागर तक सुना गया है।<sup>२२</sup> देखो, वह चील के समान चढ़ेगा और झापटेगा, और अपने पंख बोसा के विरुद्ध फैलाएगा; और उस दिन एदोम के योद्धाओं के हृदय जम देने वाली स्त्री के हृदय के समान होंगे।

<sup>२३</sup> दमिश्क के विषय में: "हमात और अर्पद लजित हैं, क्योंकि उन्होंने बुरी खबर सुनी है; वे निराश हैं। समुद्र पर चिंता है, यह शांत नहीं हो सकता।<sup>२४</sup> दमिश्क असहाय हो गया है; वह भागने के लिए मुड़ गई है, और आतंक ने उसे पकड़ लिया है; कष्ट और प्रसव पीड़ा ने उसे जाकड़ लिया है जैसे एक जन्म देने वाली स्त्री।<sup>२५</sup> कैसे प्रशंसा का नगर नहीं छोड़ा गया, मेरे आनंद का नगर।<sup>२६</sup> इसलिए, उसके जवान उसके सङ्कों में गिरेंगे, और उस दिन के सभी योद्धा नष्ट हो जाएंगे," सेनाओं के यहोवा की यह घोषणा है।<sup>२७</sup> "मैं दमिश्क की दीवार पर आग लगाऊँगा, और यह बेन-हदद के किले को भस्म कर देगी।"

<sup>२८</sup> केदार और हाज़ोर के राज्यों के विषय में, जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेसर ने पराजित किया। यहोवा यों कहता है: "उठो, केदार पर चढ़ाई करो और पूर्व के लोगों को नष्ट करो।<sup>२९</sup> वे उनके तंबू और उनके झुंड ले जाएंगे; वे अपने लिए उनके तंबू के पर्दे ले जाएंगे, उनकी सारी संपत्ति और उनके ऊंट, और वे एक-दूसरे को पुकारेंगे, चारों ओर आतंक।<sup>३०</sup> भागो, जल्दी से भागो। गहराई में निवास करो, हे हाज़ोर के निवासी," यहोवा की यह घोषणा है; "क्योंकि बाबुल के राजा नबूकदनेसर ने तुम्हारे विरुद्ध एक योजना बनाई है।<sup>३१</sup> उठो, उस राष्ट्र के विरुद्ध चढ़ाई करो जो निश्चित है, जो सुरक्षित रहता है," यहोवा की यह घोषणा है। "उसके पास न तो द्वार हैं और न ही बार; वे अकेले रहते हैं।<sup>३२</sup> उनके ऊंट लूट बन जाएंगे, और उनकी बहुत सारी पशुधन लूट के लिए, और मैं उनके बालों के कोनों को काटने वालों को सभी दिशाओं में बिखेर ढूँगा; और मैं उनकी विपत्ति चारों ओर से लाऊँगा," यहोवा की यह घोषणा है।<sup>३३</sup> "हाज़ोर सियारों का निवास बन जाएगा, सदा के लिए एक उजाड़; कोई वहाँ नहीं रहेगा, और न ही कोई मनुष्य उसमें निवास करेगा।"

<sup>३४</sup> यह यहोवा का वचन है जो यिर्मयाह भविष्यवक्ता के पास एलाम के विषय में आया, यहूदा के राजा

## पर्मयाह

सिद्धिकियाह के राज्य के प्रारंभ में, कहता है: <sup>35</sup> "सेनाओं के यहोवा यों कहता है: 'देखो, मैं एलाम की धनुष को तोड़ने वाला हूँ, उनकी शक्ति का सर्वश्रेष्ठ।' <sup>36</sup> मैं एलाम पर चारों दिशाओं से चारों हवाएं लाऊंगा, और उहें इन सभी हवाओं में बिखरे दूंगा; और कोई ऐसा राष्ट्र नहीं होगा जहाँ एलाम के बिखरे हुए शरणार्थी नहीं जाएंगे।" <sup>37</sup> इसलिए मैं एलाम को उनके शव्वाओं के समाने और उनके जीवन की खोज करने वालों के समाने चकनाचूर कर दूंगा; और मैं उन पर विपत्ति लाऊंगा, मेरा भयंकर क्रोध; यहोवा की यह घोषणा है, 'और मैं उनके पीछे तलवार भेजूंगा जब तक कि मैं उन्हें समाप्त न कर दूँ।' <sup>38</sup> तब मैं एलाम में अपना सिंहासन स्थापित करूंगा और वहाँ से राजा और अधिकारियों को समाप्त कर दूंगा।" यहोवा की यह घोषणा है। <sup>39</sup> "परंतु अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं एलाम की स्थिति को पुनःस्थापित करूंगा," यहोवा की यह घोषणा है।

**50** वह वचन जो यहोवा ने बाबुल के विषय में, कसदियों के देश के विषय में, पर्मयाह नबी के द्वारा कहा: 2 "जातियों के बीच घोषणा करो और प्रचार करो। इसे प्रचार करो और एक ध्वज उठाओ, इसे छुपाओ मत। कहो, 'बाबुल पर विजय प्राप्त हुई है, बेल को लजित किया गया है, मर्दक को तोड़ा गया है; उसकी मूर्तियाँ लजित हुई हैं, उसके देवता टूट गए हैं।'" <sup>3</sup> क्योंकि एक राष्ट्र उसके विरुद्ध उत्तर से आया है; वह उसकी भूमि को भय का विषय बना देगा, और उसमें कोई निवासी नहीं रहेगा। मनुष और पशु दोनों भटक गए हैं, वे चले गए हैं" <sup>4</sup> "उन दिनों और उस समय," यहोवा की घोषणा है, "इसाएल के पुत्र आएंगे, वे और यहूदा के पुत्र भी; वे रोते हुए चलेंगे, और यहोवा अपने परमेश्वर को खोजेंगे।" <sup>5</sup> वे सियोन का मार्ग पूँछेंगे, अपना मुख उसकी ओर मोड़ते हुए; वे आएंगे ताकि वे यहोवा के साथ एक अनन्त वाचा में मिल सकें जो भुलाया नहीं जाएगा।" <sup>6</sup> "मेरे लोग खोई हुई भेड़ें बन गए हैं; उनके चरवाहों ने उन्हें भटका दिया है। उन्होंने उन्हें पहाड़ों पर मोड़ दिया है; वे पहाड़ से पहाड़ी पर चले गए हैं, उन्होंने अपने विश्राम स्थान को भुला दिया है।" जो भी उन्हें मिला, उसने उन्हें खा लिया; और उनके विरोधियों ने कहा, "हम दोषी नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है जो धर्म का विश्राम स्थान है, यहोवा, उनके पिताओं की आशा।" <sup>8</sup> बाबुल के बीच से दूर चले जाओ, और कसदियों के देश से बाहर निकल जाओ; झुंड के मुखिया के रूप में नर बकरों के समान बनो। <sup>9</sup> क्योंकि देखो, मैं बाबुल के विरुद्ध उत्तरी देश से महान राष्ट्रों की एक टुकड़ी को उकसाऊंगा और लाऊंगा, और वे उसके विरुद्ध अपनी लड़ाई की पंक्तियाँ खड़ी करेंगे; वहाँ से

वह बंदी बना ली जाएगी। उनके तीर एक कुशल योद्धा के समान होंगे जो खाली हाथ नहीं लौटता। <sup>10</sup> कसदिया लूट का विषय बनेगा; जो कोई उसे लूटेगा, उसे पर्याप्त मिलेगा," यहोवा की घोषणा है। <sup>11</sup> "क्योंकि तुम खुश हो, क्योंकि तुम आनंदित हो, तुम जो मेरी विरासत को लूटते हो, क्योंकि तुम थ्रेसिंग गाय के समान कुदाते हो और मजबूत घोड़ों के समान हिनडिनाते हो, <sup>12</sup> तुहारी माता अत्यधिक लजित होगी, वह जिसने तुहें जन्म दिया है, अपमानित होगी। देखो, वह राष्ट्रों में सबसे छोटी होगी, एक जंगल, एक सूखी भूमि, और एक मरुस्थल।" <sup>13</sup> यहोवा के ग्रोध के कारण वह बसी नहीं जाएगी, परन्तु वह पूरी तरह से उजाड़ हो जाएगी; जो कोई बाबुल से गुजरेगा, वह चकित होगा और उसकी सभी चोटों के कारण सीढ़ी बजाएगा। <sup>14</sup> हर तरफ से बाबुल के विरुद्ध युद्ध में खड़े हो जाओ, तुम सब जो धूषकों को मोड़ते हो; उस पर तीर चलाओ, अपने तीरों को मत बछो, क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। <sup>15</sup> हर तरफ से उसके विरुद्ध अपनी युद्ध की पुकार उठाओ। उसने आत्मसमर्पण कर दिया है, उसकी मीनारें गिर गई हैं, उसकी दीवारें खींच ली गई हैं, क्योंकि यह यहोवा का प्रतिशोध है: उस पर प्रतिशोध लो; जैसा उसने दूसरों के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ करो। <sup>16</sup> बाबुल से बोने वाले को समाप्त करो और फसल के समय हंसिया चलाने वाले को; तलवार के दबाव से, उनमें से प्रत्येक अपने लोगों की ओर लौट जाएगा और उनमें से प्रत्येक अपने देश की ओर भाग जाएगा। <sup>17</sup> इसाएल एक बिखरी हुई भेड़ है, शेरों ने उसे भगा दिया है। पहला जिसने उसे खा लिया था, वह अश्वर का राजा था, और यह अंतिम जिसने उसकी हड्डियों को तोड़ा है बाबुल का राजा नबूकदनेसर है। <sup>18</sup> इसलिए यहोवा सेनाओं का परमेश्वर, इसाएल का परमेश्वर कहता है: "देखो, मैं बाबुल के राजा और उसके देश को दंड दूंगा, जैसा मैंने अश्वर के राजा को दंड दिया था।" <sup>19</sup> और मैं इसाएल को उसकी चाराई में वापस लाऊंगा, और वह करमेल और बाशान में चराई करेगा, और उसका मन एप्रैम और गिलाद के पहाड़ी देश में संतुष्ट होगा। <sup>20</sup> उन दिनों और उस समय, "यहोवा की घोषणा है, 'इसाएल के अपराध की खोज की जाएगी, परन्तु कोई नहीं मिलेगा, और यहूदा के पापों की खोज की जाएगी, परन्तु वे नहीं मिलेंगे; क्योंकि मैं उन लोगों को क्षमा करूंगा जिन्हें मैं अवशेष के स्तर पर छोड़ दूंगा।'" <sup>21</sup> "मेराधाइम के देश के विरुद्ध, उसके विरुद्ध चढ़ाई करो, और एकोद के निवासियों के विरुद्ध। उन्हें तलवार से मारो और पूरी तरह से नष्ट कर दो," यहोवा की घोषणा है, "और जो कुछ मैं तुम्हें आदेश दिया है, वह सब करो।" <sup>22</sup> देश में युद्ध का शोर है, और बड़ी विनाश। <sup>23</sup> कैसे पूरी पृथ्वी

## पिरमयाह

का हौड़ा काट दिया गया और तोड़ा गया! कैसे बाबुल राश्ने के बीच भय का विषय बन गया है! <sup>24</sup> मैंने तुम्हारे लिए एक जाल बिछाया और तुम भी पकड़े गए, बाबुल, जबकि तुम स्वयं अनजान थे; तुम पाए गए और पकड़े भी गए, क्योंकि तुमने यहोवा के साथ संघर्ष किया है।" <sup>25</sup> यहोवा ने अपनी शस्त्रागार खोती है और अपने क्रोध के हथियार बाहर निकाले हैं, क्योंकि यह यहोवा सेनाओं के परमेश्वर का कार्य है कसदियों के देश में। <sup>26</sup> उसके पास दूर के सीमा से आओ; उसके खलिहान खोलो, उसे अनजान के ढेरों की तरह ढेर करो और उसे पूरी तरह से नष्ट कर दो, उसके लिए कुछ भी न छोड़ा जाए। <sup>27</sup> उसके सभी युवा बैलों को तलवार से मारो; उन्हें वध के लिए नीचे जाने दो! उन पर हाय, क्योंकि उनका दिन आ गया है, उनकी सजा का समय। <sup>28</sup> बाबुल के देश से भगोड़ों और शरणार्थियों की आवाज है, सियोन में यहोवा हमारे परमेश्वर का प्रतिशोध घोषित करने के लिए, उसके मंदिर के लिए प्रतिशोध। <sup>29</sup> बाबुल के विरुद्ध बहुतों को बुलाओ, वे सब जो धनुकों को मोड़ते हैं: उसके चारों ओर डेरा डालो, कोई बचने न पाए। उसके काम के अनुसार उसे चुकाओ; उसके सभी कार्यों के अनुसार उसके साथ वैसा ही करो; क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध अहंकार किया है, इसाएल के पवित्र के विरुद्ध। <sup>30</sup> इसलिए उसके युवा लोग उसकी गलियों में गिरेंगे, और उसके सभी योद्धा उस दिन नष्ट हो जाएंगे," यहोवा की घोषणा है। <sup>31</sup> "देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, तुम अहंकारी," यहोवा सेनाओं के परमेश्वर की घोषणा है, "क्योंकि तुम्हारा दिन आ गया है, जिस समय मैं तुम्हें दंड द्वारा।" <sup>32</sup> अहंकारी ठोकर खाएगा और गिर जाएगा और उसे उठाने वाला कोई नहीं होगा; और मैं उसकी नारियों में आग लगा दूंगा, और यह उसके सभी आस-पास को भस्म कर देगी।" <sup>33</sup> यह यहोवा सेनाओं का कहना है: "इसाएल के पुत्र उत्तीर्णि हैं, और यहदा के पुत्र भी; और जिन्होंने उन्हें बंटी बनाया है, उन्होंने उन्हें ढूढ़ा से पकड़ा है, उन्होंने उन्हें छोड़ने से इनकार कर दिया है।" <sup>34</sup> उनका उद्धारकर्ता शक्तिशाली है, यहोवा सेनाओं उसका नाम है; वह उनके मामले को जोरदार तरीके से प्रस्तुत करेगा ताकि वह उनके देश को विश्राम दे सके, परन्तु बाबुल के निवासियों को अशांति। <sup>35</sup> कसदियों के विरुद्ध तलवार," यहोवा की घोषणा है, "और बाबुल के निवासियों के विरुद्ध, और उसके अधिकारियों और उसके बुद्धिमानों के विरुद्ध।" <sup>36</sup> तलवार भविष्यवाणी करने वाले पुरोहितों के विरुद्ध, और वे मूर्ख बन जाएंगे! तलवार उसके योद्धाओं के विरुद्ध, और वे टूट जाएंगे। <sup>37</sup> तलवार उसके घोड़ों, उसके रथों के विरुद्ध, और उसके बीच के सभी विदेशियों के विरुद्ध, और वे स्त्रियाँ बन जाएंगे! तलवार उसके खजानों

के विरुद्ध, और वे लूट लिए जाएंगे। <sup>38</sup> उसके जल पर सूखा, और वे सूख जाएंगे! क्योंकि यह भूर्तियों का देश है, और वे अपनी भयानक छवियों के कारण पागल हो जाते हैं। <sup>39</sup> इसलिए वहाँ रेगिस्तानी जीव और गीदड़ रहेंगे, शुतुरमुर्ग भी उसमें रहेंगे, और यह फिर कभी नहीं बसा जाएगा या पीढ़ी दर पीढ़ी उसमें नहीं रहा जाएगा। <sup>40</sup> जैसे परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को उनके पड़ोसियों के साथ उलट दिया, यहोवा की घोषणा है, "कोई भी वहाँ नहीं रहेगा, और न ही कोई मानव उसमें बसेगा।" <sup>41</sup> देखो, एक लोग उत्तर से आ रहे हैं, और एक महान राष्ट्र और कई राजा पृथ्वी के दूरस्थ भागों से उकसाए जाएंगे। <sup>42</sup> वे अपने धनुष और भाला पकड़ते हैं, वे निर्दिष्टी हैं और दया नहीं करते। उनकी आवाज सम्रुद्ध की तरह गरजती है; और वे घोड़ों पर सवार होते हैं, युद्ध के लिए एक आदमी की तरह खड़े होते हैं तुम्हारे विरुद्ध, बाबुल की बेटी। <sup>43</sup> बाबुल के राजा ने उनके बारे में रिपोर्ट सुनी है, और उसके हाथ लटक गए हैं; उस पर संकट ने पकड़ लिया है, जैसे एक स्त्री को प्रसव पीड़ा होती है। <sup>44</sup> देखो, एक सिंह की तरह यरदन के झाड़ियों से हमेशा जलयुक्त चरागाह की ओर आएगा; क्षण भर में मैं उन्हें वहाँ से भगा दूंगा, और जिसे चुना जाएगा, उसे मैं उस पर नियुक्त करूँगा। क्योंकि कौन मेरे समान है, और कौन मुझे अदालत में बुलाएगा? और फिर कौन सा चरवाहा है जो मेरे विरुद्ध खड़ा हो सकता है?" <sup>45</sup> इसलिए यहोवा की योजना सुनो जो उसने बाबुल के विरुद्ध बनाई है, और उसकी रणनीतियाँ जो उसने कसदियों के देश के विरुद्ध बनाई हैं: निश्चित रूप से वे उन्हें खींच लेंगे, झुंड के छोटे बच्चे; निश्चित रूप से वह उनके कारण उनके चरागाह को उजाड़ देगा। <sup>46</sup> चिल्लाहट पर, "बाबुल पर विजय प्राप्त हुई है!" पृथ्वी कांपती है, और राश्नों के बीच एक चीख सुनाई देती है।

## पर्मयाह

जिनकी पूर्व की महिमा नष्ट हो गई है— बोलो, और कहो, “युवा पुरुष सङ्कारों में मरे गए हैं, और उनके वस्त्र लज्जा में छोड़ दिए गए हैं।”<sup>6</sup> “उसके खिलाफ युद्ध के लिए तैयार हो जाओ! जो भी हल चलाता है, वह वापस लौटे और पूरी कवच में पास हो जाए।”<sup>7</sup> “क्यों सबसे अच्छे वस्त्र पहनते हो, प्रतिष्ठित होने की कोशिश करते हो? जो धनुष संभालते हैं, अपनी हेलमेट पहन लो! तलवार को मत बख्तों; तीरों को मत रोको! एक राष्ट्र उत्तर से आ रहा है, और एक महान राजा पृथी के दूरस्थ भागों से उठेगा।”<sup>8</sup> उसने अपनी आज्ञा के तूबू गाड़ दिए हैं, अपनी सभा ख्यालों को ढक दिया है, वह उसके ऊपर चढ़ गया है, और उसके युवा पुरुष उसकी सङ्कारों में गिर गए हैं।<sup>9</sup> “हे शक्तिशाली धनुष टूट जाएगा, और जो भाग रहे हैं वे धायल होकर चलेंगे, क्योंकि यहोवा ने बाबुल के खिलाफ एक न्याय की योजना बनाई है, चाल्दियों की भूमि को नष्ट करने के लिए; और भूमि एक उजाड़ वस्तु बन जाएगी, बिना निवासी के।”<sup>10</sup> हे तुम जो कई जलों के पास रहते हो, खजानों में समृद्ध, तुम्हारा अंत आ गया है, तुम्हारे विनाश का माप।<sup>11</sup> “सेनाओं के यहोवा ने स्वयं की शपथ ली है: ‘निश्चित रूप से, मैं तुम्हें टिड़ियों की तरह लोगों से भर दूंगा, और इतनी बड़ी भीड़ से कि उनकी आवाज तुम्हें चकित कर देंगी।’<sup>12</sup> तुम खाओगे, संतुष्ट हो जाओगे, और अपने परमेश्वर यहोवा की स्तुति करोगे, क्योंकि उसने तुम्हें तुम्हारे दिल की इच्छा दी है। वह तुम्हारे क्षेत्र को बढ़ाता है, और तुम्हारे नाम की महिमा के लिए तुम्हें स्वतंत्रता देता है।”<sup>13</sup> “क्योंकि यहोवा कहता है, ‘देखो, मैं तुम्हारे कारण की रक्षा करूंगा और तुम्हारे लिए प्रतिशोध लूंगा।’ मैं उसके समुद्र को सुखा दूंगा और उसके झरनों को सुखा बना दूंगा।”<sup>14</sup> “और बाबुल एक ढेर बन जाएगा, गीदड़ों का निवास स्थान, एक उजाड़।”<sup>15</sup> जैसे गांव जो बस नहीं है, एक सूखी भूमि और रेगिस्तान।<sup>16</sup> “मैं उन लोगों को बाहर निकाल दूंगा जो उसकी शक्ति में आनंदित होते हैं, और उसकी प्रजा मूर्खता से दब जाएगी; उसके अधिकारी और उसके ज्ञानी मूर्ख बन जाएंगे।”<sup>17</sup> तब मैं उसके ऊपर विदेशियों को स्थापित करूंगा, और दृष्टि उसके बीच में होगी; मैं उनकी बुराई का अंत करूंगा, और उनके पीतों की आवाज अब नहीं सुनी जाएगी।<sup>18</sup> मैं बाबुल को हेजहँग के लिए एक संपत्ति बना दूंगा, और जल के तालाब, मैं उसे विनाश के झाड़ से साफ करूंगा; सेनाओं के यहोवा की धोषणा है।<sup>19</sup> “समुद्र बाबुल पर चढ़ आया है; वह उसकी गर्जन भरी लहरों से ढक गई है।”<sup>20</sup> “उसके बीच से बाहर निकलो, मेरे लोगों और हर कोई अपने जीवन को यहोवा के भयकर क्रोध से बचाए।”<sup>21</sup> “बाबुल की दीवारों पर एक ध्वज उठाओ! रक्षक को मजबूत करो, चौकीदार को रखो, दूत भेजो, रुको मत! घोड़ों को

आगे बढ़ाओ, घोड़ों पर चढ़ो! शक्तिशाली को इकट्ठा करो!”<sup>22</sup> “धनुधर्मियों को भेजो! जलदी करो और उसके चारों ओर अपने आप को स्थापित करो; एक को भी भागने मत दो! उसके काम के अनुसार उसे चुकाओ; उसके साथ ठीक वैसा ही करो जैसा उसने किया है।”<sup>23</sup> “उसकी फैली हुई भूमि की सांस काट दो; यहोवा उसकी अधिर्मिता को उसे लौटाए।”<sup>24</sup> “मैं उसके पुत्रों और पुत्रियों को हर दिशा के लोगों में बिखेर दूंगा; मैं बाबुल को दूंगा दिल की बीमारी, दुखों और विलापों का।”<sup>25</sup> “मैं तुम्हारे खिलाफ हूँ, हे विनाशकारी पर्वत, जो सारी पृथी को नष्ट करता है,” यहोवा कहता है, “और मैं तुम्हारे खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊंगा, और तुम्हें चट्ठानों से नीचे गिराऊंगा, और तुम्हें एक जला हुआ पर्वत बना दूंगा।”<sup>26</sup> तब कोई पथर तुमसे स्मारक के लिए नहीं लिया जाएगा, और न ही तुम फिर से उठाए जाओगे, क्योंकि मैं बाबुल को सदा के लिए एक उजाड़ बना दूंगा।”<sup>27</sup> “भूमि मैं एक ध्वज उठाओ: लोगों के बीच तुरही बजाओ! राष्ट्रों को उसके खिलाफ युद्ध के लिए तैयार करो। उसके खिलाफ राज्यों को बुलाओ, अरामियों, गेबालियों, अम्मोनियों, और मोअबियों को, उसके खिलाफ, वोल्बेथ और धम्मुज के लोगों को, उसके खिलाफ, सभी भूमि के चेहरे के राष्ट्रों को।”<sup>28</sup> “हाँ, अरारात, मिनी, और अश्केनाज के राज्यों को उसके खिलाफ इकट्ठा करो; उसके खिलाफ धनुधर्मियों को नियुक्त करो; उसे नष्ट करने का आदेश दो! घोड़ों को भेजो, उन्हें गति में लाओ! योद्धाओं, ऊपर जाओ, और अपनी लज्जा से लिपट जाओ!”,<sup>29</sup> “यहोवा ने मादियों के राजाओं की आत्मा को उठाया है, वे एक दूरस्थ भूमि से आए हैं, और मैं उन्हें उसके खिलाफ चलाऊंगा; कोई चाँदी की परवाह नहीं करेगा, न ही सोने में आनंद लेगा।”<sup>30</sup> उनके धनुष युवा पुरुषों को मार डालेंगे; वे गर्भ के फल पर दया नहीं करेंगे; उनकी आँखें बच्चों पर दया नहीं करेंगी।<sup>31</sup> “और बाबुल एक ढेर बन जाएगा, एक उजाड़ भूमि में, राष्ट्रों के लिए एक शिकार और एक पहेली।”<sup>32</sup> समुद्र बाबुल पर चढ़ आया है, वह उसकी गर्जन भरी लहरों से ढक गई है।<sup>33</sup> “उसके नगर एक उजाड़ बन गए हैं, एक सूखी भूमि और रेगिस्तान, एक भूमि जिसमें कोई नहीं बसता, और न ही कोई मानव जाति उसमें से गुजरता है।”<sup>34</sup> “और मैं बाबुल में बैल को दंड दूंगा, और मैं मर्दुक की खुदी हुई मूर्ति और मूर्तिपूजक पुरीहितों को बाहर निकालूंगा, उनके साथ जो उन्हें उसी समय पूजा करते हैं, कि वे मूर्खता और एक कज्जा किया गया शिकार बन जाएं।”<sup>35</sup> “हे तुम जो कई जलों के पास रहते हो, खजानों में समृद्ध, तुम्हारा अंत आ गया है, तुम्हारे विनाश का माप।”<sup>36</sup> “यहोवा ने कहा है: ‘निश्चित रूप से, मैं तुम्हें लोगों से भर दूंगा जो सेनाओं से टिड़ियों, और वे तुम्हारे खिलाफ युद्ध की एक आवाज उठाएंगे।”<sup>37</sup>

## यिर्मयाह

"वे तुम्हरे खिलाफ एक आवाज़ उठाएंगे, जैसे कोई पहाड़ों पर धमकी भरी युद्ध की पुकार उठाता है; क्योंकि यहोवा ने तुम्हें ले लिया है और तुम्हें अपने तीर की आवाज़ से परेशान किया है।<sup>38</sup> "लेकिन उसके युवा पुरुष उसकी सड़कों में गिरेंगे, और उसके सभी योद्धा उस दिन नष्ट हो जाएंगे; यहोवा की घोषणा है।<sup>39</sup> "देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ हूँ, हे अभिमानी! सेनाओं के यहोवा परमेश्वर की घोषणा है, "क्योंकि तुम्हारा दिन आ गया है, वह समय जब मैं तुम्हें दंड ढांगा।<sup>40</sup> अभिमानी ठोकर खाएगा और गिरेगा कोई उसे उठाने वाला नहीं होगा, और मैं उसके नगरों में आग लगाऊगा, और वे जल जाएंगे।<sup>41</sup> ""मैं प्रतिशोध लाऊगा; मैं दया नहीं करूँगा; और उनकी अपनी आँखें फासी की सजा पर शैतानी चमक देखेंगी।"<sup>42</sup> "अपने आप को बाबुल के चारों ओर हर तरफ स्थापित करो, जो भी धनुष को मोटाहा है, उस पर तीर खालो; अपने तीरों को मत बखोरो! क्योंकि उसने यहोवा के खिलाफ पाप किया है।<sup>43</sup> "देखो, यहोवा उसके खिलाफ उन लोगों को लाता है जो उत्तर की हवा की तरह उठते हैं; और वे उसे तृफान की तरह भगा देंगे।<sup>44</sup> ऊँचे फाटक और कांस्य की सलाखें तोड़ी जाएंगी! राजा और राजकुमार वहाँ लज्जा में बैठेंगे; वे अपने आप को बंद कर लेंगे और दीवारों पर चढ़ेंगे, लेकिन मैं उनकी तुड़ियों में आग लगाऊगा, और वह उहें भस्म कर देगी।"<sup>45</sup> ""उसके बीच से बाहर निकलो, मेरे लोग! हर कोई अपने जीवन को यहोवा के भयंकर ग्रोध से बचाए।<sup>46</sup> "अपना कान लगाओ और मेरे पास आओ; सुनो, और तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा।<sup>47</sup> देखो, मैं बाबुल के खिलाफ उठाने और लाने जा रहा हूँ उत्तर की भूमि से महान राष्ट्रों की एक सभा—<sup>48</sup> वे उसके खिलाफ अपना शिविर स्थापित करेंगे; वे दीवार और रेप बनाएंगे, और भूमि से उस पर तीर चलाएंगे।<sup>49</sup> वे एक धरेबंदी रैप उठाएंगे, वे एक दीवार बनाएंगे, वे उसके फाटकों के माध्यम से जाएंगे, जैसे लोग एक शहर में घुसते हैं।<sup>50</sup> लेकिन वे पकड़े जाएंगे, उनका तीर वापस नहीं होगा, और धनुष की दोरी टूट जाएगी, क्योंकि यहोवा प्रतिफल का परमेश्वर है; वह पूरी तरह से चुकाएगा।<sup>51</sup> "देखो, मैं उनके खिलाफ उठा रहा हूँ मादी, जिन्हें चाँदी की परवाह नहीं है; जहाँ तक सोने की बात है, उहें इसमें कोई आनंद नहीं है।<sup>52</sup> उनके धनुष युवा पुरुषों को मार डालेंगे; वे गर्भ के फल पर दया नहीं करेंगे; उनकी आँखें बच्चों पर दया नहीं करेंगी।<sup>53</sup> "और बाबुल एक देर बन जाएगा, रेगिस्तान में, एक सूखी भूमि और एक जंगल, एक भूमि जिसमें कोई आदमी नहीं रहता या गुजरता है।<sup>54</sup> "मैं बाबुल और चाल्दियों के सभी निवासियों को उनकी सारी बुराई के लिए जो उहोंने सिव्यान में तुम्हारी दृष्टि में की है, यहोवा की

घोषणा है।<sup>55</sup> तुम जो चाल्दियों की तलवार से बच गए हो, उहें बसाने के लिए जहाज पर सवार हो जाओ, और अपने वस्त्र को धरती में दफनाओ, उसे उत्तीर्णक के चेहरे से छुपाओ।<sup>56</sup> क्योंकि यहोवा ने एक दिन नियुक्त किया है प्रतिशोध का—वह बाबुल पर क्रोधित है, और उसके मारे गए लोगों की शक्ति उसके बीच में गिर जाएगी।<sup>57</sup> और सारी पृथ्वी उसके पतन की आवाज पर कांप उठेगी, एक खिलाहट की आवाज पर, एक गर्जन की आवाज पर; "क्योंकि उसकी आवाज सुमद की तरह गूँज रही है, क्योंकि उसने सिव्यान के खिलाफ बोलते हुए ड्रैगन की तरह बोला है, धमकियाँ फैकते हुए, जोर से अपनी आवाज उठाते हुए।<sup>58</sup> इसलिए यहोवा के मारे गए लोग उस दिन गिरेंगे पृथ्वी के एक छोर से दूसरे तक; वे शोकित नहीं होंगे, न ही इकट्ठे किए जाएंगे, न ही दफनाए जाएंगे; वे जमीन पर खाद होंगे।<sup>59</sup> "इसके अलावा, वह शब्द जो यिर्मयाह नबी ने सेरायाह, नेरियाह के पुत्र, महसियाह के पुत्र को आदेश दिया, जब वह यहूदा के राजा सिदकियाह के साथ उसके शासन के चौथे वर्ष में बाबुल गया था:<sup>60</sup> क्योंकि यहोवा ने यिर्मयाह से कहा: "एक बड़ा स्कॉल लो और उस पर वे सभी शब्द लिखो जो मैंने बाबुल के खिलाफ और सभी राष्ट्रों के खिलाफ बोले हैं, जिस दिन से मैंने उनके बारे में पहली बार बोला था, यहाँ तक कि आज तक।"<sup>61</sup> इसके अलावा, इसे एक पथर से बाँधो और इसे यूफ्रेट्स नदी में फेंक दो,<sup>62</sup> और कहो, "इस प्रकार बाबुल ढ्रूब जाएगा और फिर नहीं उठेगा, उस आपदा के कारण जो मैं उस पर ला रहा हूँ। और यदि वे तुमसे पूछें, तुमने ऐसा क्यों किया? तो तुम उनसे कहोगे, 'क्योंकि यहोवा ने यह कहा है और इन बातों को करने का वादा किया है।'<sup>63</sup> "और जब तुम इस स्कॉल को पढ़ना समाप्त कर लो, तो इसे एक पथर से बाँधो और इसे यूफ्रेट्स नदी में फेंक दो,<sup>64</sup> और कहो, इस प्रकार बाबुल ढ्रूब जाएगा और फिर नहीं उठेगा उस आपदा के कारण जो मैं उस पर ला रहा हूँ।" यहोवा की घोषणा है।

**52** सिदकियाह जब राजा बना, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य किया। और उसकी माता का नाम हामूतल था, जो लिङ्गा के यिर्मयाह की पुत्री थी।<sup>2</sup> उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, जैसा यहोयाकीम ने किया था।<sup>3</sup> यहोवा के क्रोध के कारण यह यरूशलेम और यहूदा में हुआ, जब तक उसने उहें अपनी उपस्थिति से बाहर नहीं कर दिया। और सिदकियाह ने बाबुल के राजा के विरुद्ध विद्रोह किया।<sup>4</sup> अब उसके राज्य के नवें वर्ष में, दसवें महीने के दसवें दिन, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर, वह और उसकी सारी सेना, यरूशलेम के विरुद्ध आए, और

## पिरमयाह

उसके चारों ओर छावनी डाली, और उसके चारों ओर घेराबंदी की दीवार बनाई।<sup>5</sup> इस प्रकार शहर राजा सिद्धियाह के ग्यारहवें वर्ष तक घेरे में रहा।<sup>6</sup> चौथे महीने के नौवें दिन, शहर में अकाल इतना भयंकर हो गया कि देश के लोगों के लिए कोई भोजन नहीं था।<sup>7</sup> तब शहर में सेंध लाग्नी गई, और सभी योद्धा रात में शहर छोड़कर दो दीवारों के बीच के फाटक से निकल गए, जो राजा के बांधी के पास था, हालांकि कसदी लोग शहर के चारों ओर थे; और वे अराबा के रास्ते से चले गए।<sup>8</sup> लेकिन कसदी सेना ने राजा का पीछा किया और यरीहो के मैदानों में सिद्धियाह को पकड़ लिया, और उसकी सारी सेना उससे छिन्न-भिन्न हो गई।<sup>9</sup> तब उन्होंने राजा को पकड़ लिया और उसे हामात के देश में रिल्ला में बाबुल के राजा के पास ले गए, और उसने उस पर निर्णय सुनाया।<sup>10</sup> और बाबुल के राजा ने सिद्धियाह के पुत्रों को उसकी आंखों के सामने मार डाला, और उसने रिल्ला में यहूदा के सभी नेताओं को भी मार डाला।<sup>11</sup> फिर उसने सिद्धियाह की आंखों को अंधा कर दिया; और बाबुल के राजा ने उसे कांस्य बैंडियों में बांध दिया और उसे बाबुल ले गया, और उसे उसकी मृत्यु के दिन तक जेल में रखा।

<sup>12</sup> अब पांचवें महीने के दसवें दिन, जो बाबुल के राजा नबूज़रदान के उन्नीसवें वर्ष का था, नबूज़रदान, जो बाबुल के राजा की सेवा में था, यरूशलेम आया।<sup>13</sup> और उसने यहोवा के घर, राजा के घर, और यरूशलेम के सभी घरों को जला दिया; यहां तक कि हर बड़े घर को आग से जला दिया।<sup>14</sup> इस प्रकार सभी कसदी सेना, जो गार्ड के कप्तान के साथ थी, ने यरूशलेम के चारों ओर की सभी दीवारों को तोड़ दिया।<sup>15</sup> तब नबूज़रदान गार्ड के कप्तान ने कुछ सबसे गरीब लोगों को निर्वासन में ले लिया, शहर में बचे हुए लोगों को, जो बाबुल के राजा के पास चले गए थे, और शीष कारिगरों को।<sup>16</sup> लेकिन नबूज़रदान गार्ड के कप्तान ने देश के कुछ सबसे गरीब लोगों को अंगूष्ठ के बागों की देखभाल करने और किसान बनने के लिए छोड़ दिया।<sup>17</sup> अब कसदियों ने यहोवा के घर में कांस्य के खंभों को तोड़ दिया, और खड़े और कांस्य समुद्र को जो यहोवा के घर में थे, और उनके सभी कांस्य को बाबुल ले गए।<sup>18</sup> उन्होंने बर्तन, फावड़े, बुझाने वाले, कटोरे, चम्मच, और सभी कांस्य के बर्तन भी ले लिए जो मंदिर की सेवा में उपयोग किए जाते थे।<sup>19</sup> गार्ड के कप्तान ने बेसिन, अग्निपान, कटोरे, बर्तन, दीपस्तंभ, चम्मच, और प्लाई भी ले लिए, जो उत्तम सोने और उत्तम चाँदी की थे।<sup>20</sup> दो खंभे, एक समुद्र, और समुद्र की चाँदी बारह कांस्य बैल, जिन्हें राजा सुलैमान ने यहोवा के घर के लिए बनाया था— इन सभी बर्तनों का

कांस्य वजन से परे था।<sup>21</sup> जहां तक खंभों की बात है, प्रत्येक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी, और वह बारह हाथ परिधि में था और चार अंगुल मोटा था, और खोखला था।<sup>22</sup> अब उस पर एक कांस्य शीर्ष था; और प्रत्येक शीर्ष की ऊंचाई पांच हाथ थी, उस पर जाली का काम और अनार चारों ओर थे, सभी कांस्य के बने हुए थे। और दूसरा खंभा भी इन्हीं के समान था, जिसमें अनार भी थे।<sup>23</sup> पक्षों पर छियानवे अनार थे; सभी अनार जाली के चारों ओर सौ थे।

<sup>24</sup> तब गार्ड के कप्तान ने सरायाह महायाजक को ले लिया, जेफ्न्याह द्वारे याजक को, और तीन द्वारपालों को।<sup>25</sup> उसने शहर से एक अधिकारी को भी लिया जो योद्धाओं का निरीक्षक था, राजा के सलाहकारों में से सात लोगों को जो शहर में पाए गए थे, सेना के कमांडर के लेखक को जो देश के लोगों को बुलाता था, और देश के साथ लोगों को जो शहर के बीच में पाए गए थे।<sup>26</sup> नबूज़रदान गार्ड के कप्तान ने उन्हें लिया और उन्हें रिल्ला में बाबुल के राजा के पास ले गया।<sup>27</sup> तब बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हामात के देश में रिल्ला में उन्हें मार डाला। इस प्रकार यहूदा को उसके देश से निर्वासन में ले जाया गया।

<sup>28</sup> ये वे लोग हैं जिन्हें नबूकदनेस्सर ने निर्वासन में ले लिया: सातवें वर्ष में, 3,023 यहूदी;<sup>29</sup> नबूकदनेस्सर के अठारहवें वर्ष में, यरूशलेम के 832 लोग,<sup>30</sup> नबूकदनेस्सर के तीर्थसवें वर्ष में, नबूज़रदान गार्ड के कप्तान ने 745 यहूदियों को निर्वासन में ले लिया। कुल मिलाकर 4,600 लोग थे।

<sup>31</sup> अब यह यहोवाकिन यहूदा के राजा के निर्वासन के सैंतीसवें वर्ष में हुआ, बारहवें महीने में, महीने के पच्चीसवें दिन, कि बाबुल के राजा एवल-मेरोदक ने, अपने राज्य के पहले वर्ष में, यहोवाकिन यहूदा के राजा पर कृपा दिखाई और उसे जेल से बाहर निकाला।<sup>32</sup> फिर उसने उससे दयालुता से बात की और बाबुल में उसके साथ रहने वाले राजाओं के सिंहासनों से ऊपर उसका सिंहासन स्थापित किया।<sup>33</sup> इस प्रकार यहोवाकिन ने अपने जेल के कपड़े बदल दिए, और अपने जीवन के सभी दिनों में नियमित रूप से राजा की उपस्थिति में भोजन किया।<sup>34</sup> और उसके भत्ते के लिए, बाबुल के राजा द्वारा उसे नियमित भत्ता दिया गया, उसके जीवन के सभी दिनों तक प्रतिदिन का हिस्सा, उसकी मृत्यु के दिन तक।

## विलापगीत

**1** कैसे अकेली बेटी है वह नगरी जो लोगों से भरी हुई थी! वह विधवा के समान हो गई है, वह जो जातियों के बीच महान थी! वह जो प्रांतों के बीच राजकुमारी थी वह अब बंधुआ मजदूर बन गई है! <sup>2</sup> वह रात में कड़वे आँसू बहाती है, और उसके आँसू उसके गालों पर हैं; उसके प्रेमियों में से कोई भी उसे सांत्वना देने वाला नहीं है। उसके सभी मित्रों ने उसके साथ विश्वासघात किया है; वे उसके शत्रु बन गए हैं। <sup>3</sup> यहूदा दुःख और बड़ी दासता के अधीन निर्वासन में चला गया है; वह जातियों के बीच निवास करती है, पर उसे कोई विश्राम नहीं मिला है। जो भी उसका पीछा करते हैं, उन्होंने उसे कष्ट के बीच पकड़ लिया है। <sup>4</sup> सिय्योन की सङ्केतों के शोक में हैं क्योंकि कोई भी नियत पर्वों में नहीं आता। उसके सभी द्वारा उजाड़ हैं; उसके याजक कराह रहे हैं, उसकी कुमारियाँ दुखी हैं, और वह स्वयं कड़वे दुःख में है। <sup>5</sup> उसके विरोधी उसके स्वामी बन गए हैं, उसके शत्रु समृद्ध हो गए हैं; क्योंकि प्रभु ने उसके अपराधों की बहुतायत के कारण उसे दुःख दिया है। उसके छोटे बच्चे शत्रु के सामने बंदी बनकर चले गए हैं। <sup>6</sup> सिय्योन की बेटी से उसकी सारी महिमा चली गई है। उसके नेता हिरण के समान हो गए हैं जिन्हें कोई चरागाह नहीं मिला है, और वे बिना शक्ति के पीछा करने वाले के समने भग गए हैं। <sup>7</sup> उसके दुःख और बेघर होने के दिनों में यशूशलेम अपनी सारी कीमती वस्तुओं को याद करती है जो उसके पास पुराने दिनों से थीं, जब उसके लोग शत्रु के हाथ में गिर गए, और कोई उसकी मदद नहीं करता था। विरोधियों ने उसे देखा, उन्होंने उसकी बर्बादी पर उपहास किया। <sup>8</sup> यशूशलेम ने बहुत पाप किया, इसलिए वह उपहास का विषय बन गई है। जो भी उसे सम्मान देते थे, वे उसे तुच्छ समझते हैं क्योंकि उन्होंने उसकी नग्रता देखी है; वह स्वयं भी कराहती है और मूँढ़ फेर लेती है। <sup>9</sup> उसकी अशुद्धता उसके कपड़ों में है; उसने अपने भविष्य का विचार नहीं किया। इसलिए वह आश्वर्यजनक रूप से गिर गई है; उसके पास कोई सांत्वना देने वाला नहीं है। “देखो, प्रभु, मेरा दुःख, क्योंकि शत्रु ने स्वयं को सम्मानित किया है!” <sup>10</sup> विरोधी ने अपना हाथ उसकी सभी कीमती वस्तुओं पर फैला दिया है, क्योंकि उसने देखा है कि जातियाँ उसके पवित्र स्थान में प्रवेश कर गई हैं, जिन्हें आपने आज्ञा दी थी कि वे आपकी सभा में प्रवेश न करें। <sup>11</sup> उसके सभी लोग कराहते हैं रोटी की खोज में; उन्होंने अपने कीमती वस्त्र भोजन के लिए दे दिए हैं ताकि वे अपनी जान बचा सकें। “देखो, प्रभु, और देखो, क्योंकि मैं तुच्छ समझी गई हूँ!”

<sup>12</sup> क्या यह उन सभी के लिए कुछ नहीं है जो इस मार्ग से गुजरते हैं? देखो और देखो कि क्या मेरे दुःख के

समान कोई दुःख है, जो मुझे दिया गया, जो प्रभु ने अपने प्रचंड क्रोध के दिन मुझ पर डाला। <sup>13</sup> ऊँचाई से उसने मेरी हड्डियों में आग भेजी, और उसने उन पर विजय प्राप्त की। उसने मेरे पैरों के लिए जाल बिछाया; उसने मुझे पीछे हटा दिया। उसने मुझे उजाड़ बना दिया, दिन भर कमज़ोर। <sup>14</sup> मेरे अपराधों का जुआ बंधा हुआ है; उसके हाथ से वे एक साथ बुने गए हैं। वे मेरी गर्दन पर आ गए हैं, उसने मेरी शक्ति को बिकल कर दिया है। प्रभु ने मुझे उन लोगों के हाथ में सौंप दिया है जिनके खिलाफ मैं खड़ा नहीं हो सकता। <sup>15</sup> प्रभु मेरे बीच के सभी बलवान पुरुषों को अस्तीकार कर दिया है, उसने मेरे खिलाफ एक नियत समय बुलाया है मेरे जवानों को कुचलने के लिए। प्रभु ने यहूदा की कुंवारी बेटी को मदिरा के कुंठ के समान रौद्र डाला है। <sup>16</sup> इन बातों के लिए मैं रोती हूँ, मेरी आँखों से पानी बहता है, क्योंकि मुझसे दूर है एक सांत्वना देने वाला, जो मेरी आत्मा को बहाल करे। मेरे बच्चे उजाड़ हो गए हैं क्योंकि शत्रु ने विजय प्राप्त की है। <sup>17</sup> सिय्योन अपने हाथ फैलाती है; कोई उसे सांत्वना देने वाला नहीं है। प्रभु ने याकूब के बारे में आज्ञा दी है कि उसके चारों ओर के लोग उसके विरोधी हों; यशूशलेम उनके बीच एक गंदी वस्तु बन गई है। <sup>18</sup> “प्रभु धर्मी है, क्योंकि मैंने उसकी आज्ञा के खिलाफ विद्रोह किया है; अब सुनो, सभी लोग, और मेरे दुःख को देखो: मेरी कुमारियाँ और मेरे जवान बंदी बनकर चले गए हैं।” <sup>19</sup> मैंने अपने प्रेमियों को पुकारा, पर उन्होंने मुझे धोखा दिया; मेरे याजक और मेरे पुरुषिये नगर में नष्ट हो गए जब वे अपने लिए भीजन खोज रहे थे ताकि वे अपनी जान बचा सकें। <sup>20</sup> देखो, प्रभु, क्योंकि मैं संकट में हूँ, मेरी आत्मा बहुत परेशान है, मेरा हृदय मेरे भीतर उत्तर गया है, क्योंकि मैंने बहुत विद्रोह किया है। सङ्क में तलवार विधवा करती है; घर में यह मुस्तू के समान है। <sup>21</sup> उन्होंने सुना कि मैं कराह रही हूँ, कोई मुझे सांत्वना देने वाला नहीं है। मेरे सभी शस्त्रों ने मेरी विपत्ति सुनी है, वे आनन्दित होते हैं कि आपने यह किया है। ओह, कि आप वह दिन लाएँ जो आपने घोषित किया है, ताकि वे मेरे समान हो जाएँ। <sup>22</sup> उनकी सारी दुष्टा आपके समान आ जाएँ, और उनके साथ वैसा ही करें जैसा आपने मेरे साथ किया है मेरे सभी अपराधों के लिए; क्योंकि मेरी कराह बहुत हैं, और मेरा हृदय कमज़ोर है।”

**2** कैसे प्रभु ने सिय्योन की बेटी को अपने क्रोध में बादल से ढक दिया है! उसने स्वर्ग से पूर्वी पर इस्साएल की महिमा को फैक दिया है, और अपने पादपीठ को याद नहीं किया अपने क्रोध के दिन। <sup>2</sup> प्रभु ने नाश किया; उसने नहीं छोड़ा याकूब के सभी निवास स्थानों

## विलापगीत

को। अपने क्रोध में उसने यहूदा की बेटी के किलों को गिरा दिया है; उन्हें भूमि पर गिरा दिया है; उसने राज्य और उसके नेताओं को अपवित्र किया है।<sup>3</sup> भयंकर क्रोध में उसने इसाएल की सारी शक्ति को काट दिया है; उसने अपने दाहिने हाथ को शत्रु के सामने से हटा लिया है। उसने याकूब में जलती हुई आग की तरह चारों ओर सब कुछ भय्य कर दिया है।<sup>4</sup> उसने अपने धनुष को शत्रु की तरह मोड़ा है; उसने अपने दाहिने हाथ को विरोधी की तरह रखा है और आँखों को प्रिय सभी को मारा डाला है; सियोन की बेटी के तंबू में, उसने अपनी क्रोध की आग की तरह उंडेल दिया है।<sup>5</sup> प्रभु शत्रु की तरह हो गया है; उसने इसाएल को निगल लिया है। उसने उसके सभी महलों को निगल लिया है, उसने उसके किलों को नष्ट कर दिया है, और यहूदा की बेटी में महान शोक करा हउ उत्पन्न की है।<sup>6</sup> उसने अपने तंबू को एक बगीचे की झोपड़ी की तरह हिस्कर रूप से व्यवहार किया है; उसने अपनी नियुक्त सभा ख्यल को नष्ट कर दिया है। प्रभु ने सियोन में नियुक्त लोहारों और सब्ब को भुला दिया है, और उसने राजा और याजक को अपने क्रोध की नाराजगी में तुक्छ जाना है।<sup>7</sup> प्रभु ने अपनी वेदी को अस्त्वीकार कर दिया है, उसने अपने पवित्र ख्यान को त्याग दिया है; उसने उसके महलों की दीवारों को शत्रु के हाथ में सौंप दिया है। उन्होंने प्रभु के घर में शोर मचाया है जैसे किसी नियुक्त लोहार के दिन।<sup>8</sup> प्रभु ने निश्चय किया सियोन की बेटी की दीवार को नष्ट करने का। उसने एक मापने की रेखा खींची है, उसने नष्ट करने से अपने हाथ को नहीं रोका है; उसने परकोटे और दीवार को शोकित किया है, वे एक साथ दुर्बल हो गए हैं।<sup>9</sup> उसके फाटक भूमि पर मैं धंस गए हैं, उसने उसके बारों को नष्ट और तोड़ दिया है। उसका राजा और उसके नेता राष्ट्रों में हैं; व्यस्था अब नहीं है। इसके अलावा, उसके भविष्यद्वक्ता प्रभु से दर्शन नहीं पाते।<sup>10</sup> सियोन की बेटी के बुजुर्ग भूमि पर बैठते हैं, वे मौन हैं। उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली है, उन्होंने टाट पहन लिया है; यरूशलेम की कुमारियाँ अपने सिर को भूमि पर झुका लिया है।<sup>11</sup> मेरी आँखें आँसुओं के कारण थक गई हैं, मेरी आत्मा अल्पत व्याकुल है, मेरा हृदय भूमि पर उंडेल दिया गया है मेरे लोगों की बेटी के विनाश के कारण, जब छोटे बच्चे और शिशु नगर की सड़कों में दुर्बल हो जाते हैं।<sup>12</sup> वे अपनी माताओं से कहते हैं, "अनाज और दाखमधु कहाँ है?" जैसे वे घायल व्यक्ति की तरह नगर की सड़कों में मूर्छित होते हैं, जैसे उनकी जीवन शक्ति उनकी माताओं की गोद में उंडेल दी जाती है।

13 मैं तुम्हें कैसे उपदेश दूँ? तुम्हारी तुलना किससे करूँ, यरूशलेम की बेटी? तुम्हारी तुलना किससे करूँ जैसे मैं तुम्हें सांत्वना दूँ, सियोन की कुमारिका बेटी? क्योंकि तुम्हारा विनाश समुद्र के समान विशाल है; कौन तुम्हें चंगा कर सकता है?<sup>14</sup> तुम्हारे भविष्यद्वक्ताओं ने तुम्हारे लिए निरर्थक और भास्मक दर्शन देखे हैं; और उन्होंने तुम्हारी गलतियों को प्रकट नहीं किया तुम्हें बंधन से छुड़ाने के लिए, बल्कि उन्होंने तुम्हारे लिए निरर्थक और भास्मक घोषणाएँ देखी हैं।<sup>15</sup> सभी जो मार्ग से गुजरते हैं तुम पर उपहास में ताली बजाते हैं, वे फुफकारते हैं और अपने सिर हिलाते हैं यरूशलेम की बेटी पर, कहते हैं, "क्या यह वही नगर है जिसके बारे में उन्होंने कहा, 'सौदर्य में परिपूर्ण, सारी पृथ्वी का आनंद'?"<sup>16</sup> तुम्हारे सभी शत्रुओं ने तुम्हारे विरुद्ध अपने मुँह खोते हैं, वे फुफकारते हैं और अपने दाँत पीसते हैं। वे कहते हैं, "हमने उसे निगल लिया है! यह निश्चित रूप से वह दिन है जिसका हम इंतजार कर रहे थे; हमने इसे प्राप्त किया है, हमने इसे देखा है!"<sup>17</sup> प्रभु ने वही किया जो उसने ठान लिया था; उसने अपना वचन पूरा किया जो उसने पुराने दिनों से आदेश दिया था। उसने बिना छोड़ तोड़ दिया है, और उसने तुम्हारे ऊपर शत्रु को आनन्दित किया है; उसने तुम्हारे विरोधियों की शक्ति को ऊँचा किया है।<sup>18</sup> उनका हृदय प्रभु की ओर पुकारता है: "सियोन की बेटी की दीवार, अपने आँसुओं को दिन और रात नदी की तरह बहने दो; अपने आप को कोई राहत मत दो, अपनी आँखों को विश्राम मत दो।"<sup>19</sup> रात में उठो, जोर से रोओ रात्रि पहरों की शुरुआत में; अपना हृदय जल की तरह उंडेल दो प्रभु की उपस्थिति में; अपने हाथों को उसकी ओर उठाओ अपने छोटे बच्चों के जीवन के लिए जो भूख के कारण दुर्बल हैं हर गली के सिर पर।<sup>20</sup> देखो, प्रभु, और देखो! तुमने किसके साथ इतनी कठोरता से व्यवहार किया है? क्या स्त्रियाँ अपने ही बच्चों को खाएँ, उन बच्चों को जिन्हें उन्होंने पाला है? क्या याजक और भविष्यद्वक्ता मारे जाएँ प्रभु के पवित्र ख्यान में?<sup>21</sup> युवा और दुद्ध सड़कों में भूमि पर पढ़े हैं; मेरी कुमारियाँ और मेरे युवा पुरुष तलवार से गिर गए हैं। तुमने उन्हें अपने क्रोध के दिन मारा है, तुमने बिना दया के उनका वध किया है।<sup>22</sup> तुमने जैसे किसी नियुक्त लोहार के दिन में चारों ओर के आतंक को बुलाया है; और कोई नहीं बचा या भागा प्रभु के क्रोध के दिन। जिन्हें मैंने जन्म दिया और पाला, मेरे शत्रु ने उन्हें नष्ट कर दिया।

**3** मैं वह मनुष्य हूँ जिसने कलेश देखा है उसके क्रोध की छड़ी के कारण।<sup>2</sup> उसने मुझे चलाया और अंधकार में चलाया प्रकाश में नहीं।<sup>3</sup> वास्तव में, उसने अपना हाथ

## विलापगीत

मेरे विरुद्ध किया है दिन भर बार-बार।<sup>4</sup> उसने मेरे मांस और मेरी तचा को घिस दिया है, उसने मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है।<sup>5</sup> उसने मुझे धेलिया और मुझे धेर लिया कड़वाहट और कठिनाइ के साथ।<sup>6</sup> उसने मुझे अंधेरे श्यानों में रहने दिया है, जैसे वे जो तब्दे समय से मृत हैं।<sup>7</sup> उसने मुझे इस प्रकार बंद कर दिया है कि मैं बाहर नहीं जा सकता; उसने मेरी जंजीर को भारी बना दिया है।<sup>8</sup> यहाँ तक कि जब मैं चिल्लाता हूँ और मदद के लिए पुकारता हूँ, वह मेरी प्रार्थना को बंद कर देता है।<sup>9</sup> उसने मेरे रसानों को काटे हुए पत्तर से अवरुद्ध कर दिया है; उसने मेरे मार्गों को मोड़ दिया है।<sup>10</sup> वह मेरे लिए एक भालू के समान है जो धात में बैठा है, एक शेर के समान जो छिपा हुआ है।<sup>11</sup> उसने मेरे मार्गों को मोड़ दिया और मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया; उसने मुझे उजाड़ बना दिया है।<sup>12</sup> उसने अपनी धनुष को मोड़ा और मुझे तीर के लिए लक्ष्य बनाया।<sup>13</sup> उसने अपने तरकश के तीरों को मेरे अंतिक्रिक भागों में प्रवेश कराया।<sup>14</sup> मैं अपने सभी लोगों के लिए हंसी का पात्र बन गया हूँ, उनके उपहास का गीत दिन भर।<sup>15</sup> उसने मुझे कड़वाहट से भर दिया है, उसने मुझे नागदौन से मतवाला कर दिया है।<sup>16</sup> उसने मेरे दाँतों को कंकड़ से तोड़ दिया है, उसने मुझे धूल में झुकाया है।<sup>17</sup> मेरी आत्मा को शांति से बाहर कर दिया गया है, मैंने खुशी को भला दिया है।<sup>18</sup> इसलिए मैं कहता हूँ, “मेरी ताकत खत्म हो गई है, और प्रभु से मेरी आशा भी।”

<sup>19</sup> मेरे दुख और मेरी बेघरता को याद करो, नागदौन और कड़वाहट।<sup>20</sup> मेरी आत्मा निश्चित रूप से याद करती है, और मेरे भीतर झुक जाती है।<sup>21</sup> मैं इसे अपने मन में याद करता हूँ, इसलिए मैं आशा के साथ प्रतीक्षा करता हूँ।<sup>22</sup> प्रभु की दया के कार्य वास्तव में समाप्त नहीं होते, क्योंकि उसकी करुणाएँ असफल नहीं होतीं।<sup>23</sup> वे हर सुबह नई होती हैं, महान हैं आपकी विश्वासयोग्यता।<sup>24</sup> “प्रभु मेरा भाग है,” मेरी आत्मा कहती है, “इसलिए मैं उसकी प्रतीक्षा करता हूँ।”<sup>25</sup> प्रभु उनके लिए अच्छा है जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं, उस व्यक्ति के लिए जो उसे खोजता है।<sup>26</sup> यह अच्छा है कि वह चुपचाप प्रतीक्षा करे प्रभु की मुक्ति के लिए।<sup>27</sup> यह मनुष्य के लिए अच्छा है कि वह अपनी जवानी में जुए को सहन करे।<sup>28</sup> उसे अकेले बैठने दो और चुप रहो, क्योंकि उसने इसे उस पर रखा है।<sup>29</sup> उसे अपने मुँह को धूल में डालने दो, शायद वहाँ आशा हो।<sup>30</sup> उसे अपने गाल को माने वाले को देने दो, उसे अपमान से भरने दो।<sup>31</sup> क्योंकि प्रभु हमेशा के लिए अस्तीकार नहीं करेगा,<sup>32</sup> क्योंकि प्रभु हमेशा के लिए अस्तीकार नहीं करेगा अपनी प्रेरुत दया के अनुपात में।<sup>33</sup> क्योंकि वह

मनुष्यों के बच्चों को स्वेच्छा से दुःख नहीं देता या पीड़ा नहीं देता।<sup>34</sup> पैरों के नीचे कुचलने के लिए देश के सभी बंदियों को,<sup>35</sup> किसी व्यक्ति को न्याय से वंचित करने के लिए सर्वोच्च के सामने,<sup>36</sup> किसी के मुकदमे में धोखा देने के लिए— इन बातों को प्रभु स्वीकार नहीं करता।<sup>37</sup> कौन है जो बोलता है और यह होता है, जब तक कि प्रभु ने इसे आदेश नहीं दिया है?<sup>38</sup> क्या यह सर्वोच्च के मुँह से नहीं है कि दोनों विपत्ति और भलाई आती हैं?<sup>39</sup> क्यों कोई जीवित व्यक्ति शिकायत करे, कोई मनुष्य, अपने पापों के दंड के कारण?

<sup>40</sup> आओ, हम अपनी राहों की जाँच करें और खोजें, और प्रभु की ओर लौटें।<sup>41</sup> हम अपने हृदय और हाथों को स्वर्ग में परमेश्वर की ओर उठाएँ;<sup>42</sup> हमने गतत किया है और विद्रोह किया है; आपने क्षमा नहीं किया।<sup>43</sup> आपने अपने आप को क्रोध से ढक लिया है और हमारा पीछा किया है; आपने मारा है और नहीं छोड़ा।<sup>44</sup> आपने अपने आप को एक बादल से ढक लिया है ताकि कोई प्रार्थना पार न हो सके।<sup>45</sup> आपने हमें केवल कवरा और कूड़ा बना दिया है लोगों के बीच में।<sup>46</sup> हमारे सभी शत्रुओं ने हमारे विरुद्ध अपने मुँह खोते हैं।<sup>47</sup> आतंक और गड़ा हम पर आ गए हैं, विनाश और विध्वंस;<sup>48</sup> मेरी आँखें मेरी प्रजाएँ की बेटी के विनाश के कारण जल की धाराओं से बढ़ रही हैं।<sup>49</sup> मेरी आँखें निरंतर बह रही हैं, बिना रुके,<sup>50</sup> जब तक कि प्रभु नीचे नहीं देखता और स्वर्ग से नहीं देखता।<sup>51</sup> मेरी आँखें मेरी आत्मा को पीड़ा देती हैं मेरे शहर की सभी बेटियों के कारण।<sup>52</sup> मेरे शत्रुओं ने बिना कारण मुझे पक्षी की तरह शिकार किया;<sup>53</sup> उहोंने मुझे गड्ढे में चुप करा दिया और मुझ पर पत्तर रख दिया।<sup>54</sup> पानी मेरे सिर पर बह गया; मैंने कहा, “मैं कट गया हूँ।”<sup>55</sup> मैंने आपके नाम को पुकारा, प्रभु, सबसे निचले गड्ढे से।<sup>56</sup> आपने मेरी आवाज सुनी है, “मेरी राहत के लिए मेरी यादिया से अपना कान न छिपाएँ, मेरी मदर की पुकार से।”<sup>57</sup> आप उस दिन पास आए जब मैंने आपको पुकारा; आपने कहा, “डरो मत।”<sup>58</sup> प्रभु, आपने मेरी आत्मा के कारण की पैरवी की है; आपने मेरा जीवन छुड़ाया है।<sup>59</sup> प्रभु, आपने मेरा उत्तीर्ण देखा है; मेरे मामले का न्याय करें।<sup>60</sup> आपने उनकी सारी प्रतिशोध देखी है, मेरे विरुद्ध उनकी सारी योजनाएँ।<sup>61</sup> आपने उनकी निदा सुनी है, प्रभु, मेरे विरुद्ध उनकी सारी योजनाएँ।<sup>62</sup> जो मेरे विरुद्ध उठते हैं उनके हौंठ, और उनकी फुसफुसाहट मेरे विरुद्ध दिन भर।<sup>63</sup> उनके बैठने और उठने को देखो; मैं उनका उपहास का गीत हूँ।<sup>64</sup> आप उहें प्रतिफल देंगे, प्रभु, उनके हाथों के काम के अनुसार।<sup>65</sup> आप उहें हृदय की सुस्ती देंगे, आपकी शाप उन पर होगी।<sup>66</sup> आप उहें

## विलापगीत

क्रोध में पीछा करेंगे और उन्हें समाप्त करेंगे प्रभु के आकाश के नीचे से।

**4** कैसे सोना अंधकारमय हो गया है, कैसे शुद्ध सोना बदल गया है! पवित्र पथर हर गली के कोने पर बिखरे पड़े हैं।<sup>2</sup> सियोन के कीमती पुत्र, जो उत्तम सोने के बराबर थे, कैसे उन्हें मिट्टी के बर्तन समझा गया है, जो कुम्हार के हाथों का काम है।<sup>3</sup> यहाँ तक कि गीढ़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं; पर मेरी प्रजा की बेटी निर्दीपी ही गई है, जैसे जंगल में शुतुरपुरी।<sup>4</sup> दूध पीते बच्चे की जीभ प्यास के कारण उसके मुँह की छत से चिपक जाती है; छोटे बच्चे रोटी मांगते हैं, पर कोई उन्हें नहीं देता।<sup>5</sup> जो लोग स्वादिष्ट भोजन खाते थे ते सड़कों पर उजाड़ हो गए हैं, जो बैंगनी वस्त्रों में पले थे वे राख के ढेरों का गले लगाते हैं।<sup>6</sup> मेरी प्रजा की बेटी का अपराध सदोम के पाप से भी बड़ा है, जो एक क्षण में नष्ट हो गया, और किसी ने उसकी ओर हाथ नहीं बढ़ाया।<sup>7</sup> उसके पवित्र लोग बर्फ से भी अधिक शुद्ध थे, वे दूध से भी अधिक सफेद थे; उनके शरीर मूंगा से भी अधिक लाल थे, उनका रूप लैपिस लाजुली के समान था।<sup>8</sup> उनकी उपस्थिति कालिख से भी अधिक काली ही गई है, वे सङ्कों में पहचाने नहीं जाते, उनकी त्वचा उनकी हड्डियों पर सिकुड़ गई है, यह सूखी ही गई है, यह लकड़ी के समान ही गई है।<sup>9</sup> जो तलवार से मारे गए वे उन लोगों से बेहतर हैं जो भूख से मरते हैं; क्योंकि वे नष्ट हो जाते हैं, खेत की उपज की कमी के कारण पीड़ित होते हैं।<sup>10</sup> दयालु महिलाओं के हाथों ने अपने ही बच्चों को उबाल दिया; वे उनके लिए भोजन बन गए मेरी प्रजा की बेटी के विनाश के कारण।<sup>11</sup> प्रभु ने अपना क्रोध प्रकट किया है, उसने अपना भयंकर क्रोध उंडेल दिया है; और उसने सियोन में आग जलाई है, जिसने उसकी नींव को भस्म कर दिया है।<sup>12</sup> पृथ्वी के राजाओं ने विश्वास नहीं किया, न ही दुनिया के किसी निवारी ने, कि विरोधी और शत्रु ये रूलशलेम के द्वारों में प्रवेश करेंगे।<sup>13</sup> उसके नबियों के पापों के कारण और उसके याजकों के अपराधों के कारण, जिन्होंने उसके बीच में धर्मी का रक्त बहाया है,<sup>14</sup> वे अंधे होकर सङ्कों पर भटकते हैं; वे रक्त से अपवित्र हो गए हैं ताकि कोई उनके वस्त्रों को छू न सके।<sup>15</sup> "दूर रहो, दूर रहो, मत छुओ!" क्योंकि वे भाग गए और भटक गए; लोगों ने राष्ट्रों के बीच कहा, "वे हमारे साथ निवास नहीं करेंगे!"<sup>16</sup> प्रभु की उपस्थिति ने उन्हें तितर-बितर कर दिया है, वह उन्हें देखना जारी नहीं रखेगा; उन्होंने याजकों का सम्मान नहीं किया, उन्होंने बुजुर्गों का पक्ष नहीं लिया।<sup>17</sup> फिर भी हमारी आँखें विफल हो गईं, व्यर्थ में मदद की तलाश करते हुए;

हमारी देखभाल में हमने देखा एक राष्ट्र के लिए जो बचा नहीं सकता था।<sup>18</sup> उन्होंने हमारे कदमों का शिकार किया ताकि हम अपनी सङ्कों पर चल न सकें; हमारा अंत निकट आ गया, हमारे दिन समाप्त हो गए, क्योंकि हमारा अंत आ गया था।<sup>19</sup> हमारे पीछा करने वाले आकाश के उकाबों से भी तेज थे; उन्होंने हमें पहाड़ों पर पीछा किया, उन्होंने जंगल में हमारे लिए घात लागाई।<sup>20</sup> हमारी नासिका का श्वास, प्रभु का अभिषिक्त, उनके गँड़ों में पकड़ा गया, जिनके बोरे में हमने कहा था, "उसकी छाया में हम राष्ट्रों के बीच निवास करेंगे!"<sup>21</sup> खुश हो और आनंदित हो, एदोम की बेटी, जो उज़ की भूमि में रहती है; परन्तु प्याला तुम्हारे पास भी आएगा, तुम नशी में हो जाओगी और अपने आप को प्रकट करोगी।<sup>22</sup> तुम्हरे अपराध का दंड पूरा हो गया है, सियोन की बेटी; वह तुम्हें अब और निर्वासित नहीं करेगा। परन्तु वह तुम्हारे अपराध का दंड देगा, एदोम की बेटी; वह तुम्हारे पापों को प्रकट करेगा।

**5** हे प्रभु, स्मरण कर कि हमारे साथ क्या हुआ है; देख, और हमारी अपमानजनक स्थिति को देख।<sup>2</sup> हमारी विरासत परा लोगों को सौंप दी गई है, हमारे घर विदेशियों को।<sup>3</sup> हम अनाथ हो गए हैं, जिनका कोई पिता नहीं है, हमारी माताँ विधवाओं के समान हैं।<sup>4</sup> हमें अपने पीने के पानी के लिए भुगतान करना पड़ता है, हमारी लकड़ी हमें मूल्य पर मिलती है।<sup>5</sup> हमारे पीछा करने वाले हमारी गर्दन पर हैं; हम थक चुके हैं, हमें कोई विश्राम नहीं मिलता।<sup>6</sup> हमने मिस और अशूर के सामने झुकाकर पर्याप्त रोटी प्राप्त की है।<sup>7</sup> हमारे पिताओं ने पाप किया, और अब वे नहीं रहे; उनकी सजा हमने भुगती है।<sup>8</sup> दास हम पर शासन करते हैं; उनके हाथ से हमें बचाने वाला कोई नहीं है।<sup>9</sup> हम अपने जीवन के जो खिम पर रोटी प्राप्त करते हैं जंगल की तलवार के कारण।<sup>10</sup> हमारी त्वचा भट्टी के समान गर्म हो गई है अकाल की जलती हुई गर्मी के कारण।<sup>11</sup> उन्होंने सियोन की स्तिंखों का अपमान किया, यहूदा के नगरों की कुमारियों का।<sup>12</sup> नेताओं को उनके हाथों से लटकाया गया; बुजुर्गों का सम्मान नहीं किया गया।<sup>13</sup> युवक चक्की के पथरों पर काम करते थे, और युवक लकड़ी के भार के नीचे लड़खड़ाते थे।<sup>14</sup> बुजुर्ग द्वारा से चले गए हैं, युवक अपनी संगीत से।<sup>15</sup> हमारे हृदय की खुशी समाप्त हो गई है; हमारा नृत्य शोक में बदल गया है।<sup>16</sup> मुकुट हमारे सिर से गिर गया है, हाय हम पर, क्योंकि हमने पाप किया है।<sup>17</sup> इसी कारण हमारा हृदय कमज़ोर हो गया है, इन बातों के कारण हमारी आँखें धूंधली हो गई हैं।<sup>18</sup> सियोन पर्वत के कारण जो उजाड़ पड़ा है, उसमें लोमड़ियाँ धूमती हैं।<sup>19</sup> तू, हे प्रभु, सदा के

## विलापगीत

लिए शासन करता है, तेरा सिंहासन पीढ़ी से पीढ़ी तक  
है।<sup>20</sup> तू हमें सदा के लिए क्यों भूल जाता है? तू हमें  
इतने लंबे समय तक क्यों छोड़ देता है?<sup>21</sup> हमें अपनी  
ओर लौटा, हे प्रभु, ताकि हम लौट सकें; हमारे दिनों को  
पहले के समान नवीनीकृत कर,<sup>22</sup> जब तक तूने हमें पूरी  
तरह से अस्वीकार नहीं किया है और हम पर अत्यधिक  
क्रोधित नहीं हुआ है।

## यहेजकेल

**1** अब यह तीसवें वर्ष में, चौथे महीने के पाँचवें दिन की बात है, जब मैं केबार नदी के किनारे निर्वासितों के बीच था, आकाश खुल गया और मैंने परमेश्वर के दर्शन देखे।<sup>2</sup> महीने के पाँचवें दिन—राजा यहोयाकीन के निर्वासन के पाँचवें वर्ष में—<sup>3</sup> प्रभु का वचन विशेष रूप से यहेजकेल याजक, बुज्जी के पुर के पास आया, जो केबार नदी के किनारे कसदियों की भूमि में था; और वहाँ प्रभु का हाथ उस पर आया।<sup>4</sup> जब मैंने देखा, तो देखो, उत्तर से एक तूफानी हवा आ रही थी, एक बड़ा बादल जिसमें लगातार आग चमक रही थी और उसके चारों ओर एक उज्ज्वल प्रकाश था, और उसके मध्य में आग के बीच में कुछ चमकते धातु जैसा था।<sup>5</sup> और उसके भीतर चार जीवित प्राणियों के समान आकृतियाँ थीं। और उनका यह रूप था: उनका मानव रूप था।<sup>6</sup> उनमें से प्रत्येक के चार चेहरे और चार पंख थे।<sup>7</sup> उनकी टाँगीं सीधी थीं, और उनके पैर बछड़के के खुर जैसे थे, और वे चमकते पीतल की तरह चमक रहे थे।<sup>8</sup> उनके पंखों के नीचे उनके चारों ओर मानव हाथ थे। उनके चारों के चेहरे और पंखों के बारे में,<sup>9</sup> उनके पंख एक-दूसरे को छूते थे; जब वे चलते थे तो उनके चेहरे नहीं मुड़ते थे, प्रत्येक सीधे आगे बढ़ता था।<sup>10</sup> उनके चेहरों के रूप के बारे में, प्रत्येक के पास मनुष्य का चेहरा था; सभी चार के पास दाईं और सिंह का चेहरा था, बाईं और बैल का चेहरा था, और सभी चार के पास उकाब का चेहरा था।<sup>11</sup> ऐसे थे उनके चेहरे। उनके पंख ऊपर की ओर फैले हुए थे; प्रत्येक के दो पंख दूसरे प्राणी को छू रहे थे, और दो उनके शरीर की ढक रहे थे।<sup>12</sup> और प्रत्येक सीधे आगे बढ़ता था; जहाँ भी आत्मा जाने वाली थी, वे जाते थे, बिना मुड़े चलते थे।<sup>13</sup> जीवित प्राणियों के बीच में कुछ ऐसा था जो जलते कोयलों की आग जैसा दिखता था, जैसे मशातें जीवित प्राणियों के बीच आगे-पीछे चल रही हों। आग उज्ज्वल थी, और आग से बिजली चमक रही थी।<sup>14</sup> और जीवित प्राणी बिजली की चमक की तरह आगे-पीछे डौड़ते थे।<sup>15</sup> अब जब मैंने जीवित प्राणियों को देखा, तो देखो, प्रत्येक जीवित प्राणी के बाल में पृथ्वी पर एक पहिया था, उनके चारों के लिए।<sup>16</sup> पहियों की उपस्थिति और उनकी कारीगरी बेरिल की चमक जैसी थी, और उन सभी चारों का एक ही रूप था। उनकी उपस्थिति और कारीगरी ऐसी थी जैसे एक पहिया दूसरे के भीतर हो।<sup>17</sup> जब भी वे चलते थे, वे अपने चारों दिशाओं में जाते थे बिना मुड़े चलते थे।<sup>18</sup> उनके रिस्स ऊँचे और भयानक थे, और उन सभी चारों के रिस्स चारों ओर आँखों से भरे हुए थे।<sup>19</sup> जब भी जीवित प्राणी चलते थे, पहिए उनके साथ चलते थे। और जब भी जीवित प्राणी पृथ्वी से उठते थे, पहिए भी उठते थे।<sup>20</sup> जहाँ भी आत्मा जाने वाली थी, वे उस दिशा में जाते थे, और पहिए

उनके साथ उठते थे; क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा पहियों में थी।<sup>21</sup> जब जीवित प्राणी चलते थे, पहिए चलते थे; जब प्राणी स्थिर रहते थे, पहिए स्थिर रहते थे; और जब वे पृथ्वी से उठते थे, पहिए भी उठते थे, क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा पहियों में थी।<sup>22</sup> अब जीवित प्राणियों के सिरों के ऊपर कुछ ऐसा था जैसे एक विस्तार, जैसे क्रिस्टल की भयानक चमक, उनके सिरों के ऊपर फैला हुआ।<sup>23</sup> विस्तार के नीचे उनके पंख सीधे फैले हुए थे, एक दूसरे की ओर; प्रत्येक के पास दो पंख थे जो उसके शरीर को एक ओर और दूसरी ओर ढक रहे थे।<sup>24</sup> मैंने उनके पंखों की आवाज़ भी सुनी, जैसे वे गए, जैसे प्रबुर जल की आवाज़, जैसे सर्वशक्तिमान की आवाज़, एक कोलाहल की आवाज़ जैसे सेना के शिविर की आवाज़, जब भी वे स्थिर रहते थे, वे अपने पंख गिरा देते थे।<sup>25</sup> और एक आवाज़ विस्तार के ऊपर से आई जो उनके सिरों के ऊपर थी; जब भी वे स्थिर रहते थे, वे अपने पंख गिरा देते थे।<sup>26</sup> अब विस्तार के ऊपर जो उनके सिरों के ऊपर था, वहाँ कुछ ऐसा था जो सिंहासन जैसा था, लैपिस लाजुली के रूप में; और जो सिंहासन जैसा था, उसके ऊपर ऊँचाई में, एक आकृति थी जो मनुष्य के रूप में दिखती थी।<sup>27</sup> तब मैंने कुछ ऐसा देखा जैसे चमकती धातु, जैसे उसके भीतर चारों ओर आग की उपस्थिति, उसकी कमर के रूप से ऊपर; और उसकी कमर के रूप से नीचे मैंने कुछ ऐसा देखा जैसे आग, और उसके चारों ओर एक चमक थी।<sup>28</sup> जैसे वर्षा के दिन बादलों में इंद्रधनुष की उपस्थिति होती है, जैसे ही उसके चारों ओर की चमक की उपस्थिति थी। ऐसा था प्रभु की महिमा की समानता की उपस्थिति। और जब मैंने इसे देखा, तो मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा और एक आवाज़ सुनी जो बोल रही थी।

**2** फिर उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, और मैं तुमसे बात करूँगा।"<sup>2</sup> जब वह मुझसे बात कर रहा था, आत्मा ने मुझसे प्रवेश किया और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया; और मैंने उसे मुझसे बात करते हुए सुना।<sup>3</sup> फिर उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इसाएल के पुत्रों के पास भेज रहा हूँ, उन विद्रोही लोगों के पास जिन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है; वे और उनके पिता आज तक मेरे विरुद्ध विद्रोह करते आए हैं।<sup>4</sup> इसालिए मैं तुम्हें उनके पास भेज रहा हूँ, जो हीटी और जिद्दी बच्चे हैं, और तुम उनसे कहोगे, यहोगा परमेश्वर यह कहता है।"<sup>5</sup> उनके लिए, चाहे वे सुनें या न सुनें—क्योंकि वे एक विद्रोही घर हैं—वे जान लेंगे कि उनके बीच एक नबी रहा है।<sup>6</sup> परन्तु तुम, मनुष्य के पुत्र, उनसे मत डरो और उनकी बातों से मत

## यहेजकेल

डरो, यद्यपि तुम्हारे साथ काटे और बबूल हैं और तुम बिच्छुओं पर बैठते हो; उनकी बातों से मत डरो और उनके चेहरों से मत घबराओ, क्योंकि वे एक विद्रोही घर हैं।<sup>7</sup> परन्तु तुम उन्हें मेरे वचन सुनाओ, चाहे वे सुनें या न सुनें, क्योंकि वे विद्रोही हैं।<sup>8</sup> अब तुम, मनुष्य के पुत्र, जो मैं तुमसे कह रहा हूँ उसे सुनो: उस विद्रोही घर के समान विद्रोही मत बनो। अपना मुँह खोलो और जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ उसे खाओ।<sup>9</sup> फिर मैंने देखा, और देखो, मेरे पास एक हाथ बढ़ाया गया; और देखो, उसमें एक पुस्तक थी।<sup>10</sup> जब उसने उसे मेरे समान फैलाया, तो वह आगे और पीछे लिखी हुई थी; और उस पर विलाप, कराह, और हाय के गीत लिखे हुए थे।

**3** फिर उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, जो कुछ तुम पाते हो उसे खाओ; इस पुस्तक को खाओ, और जाओ, इसाएल के घराने से बात करो।"<sup>11</sup> तब मैंने अपना मुँह खोला, और उसने मुझे यह पुस्तक खिलाई।<sup>12</sup> और उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, इसाएल के घराने के पास जाओ और मेरे वचन उनसे कहो।<sup>13</sup> क्योंकि तुम्हें किसी अज्ञात भाषा या कठिन भाषा के लोगों के पास नहीं भेजा जा रहा है, बल्कि इसाएल के घराने के पास,<sup>14</sup> किसी अज्ञात भाषा या कठिन भाषा के बहुत से लोगों के पास नहीं, जिनके शब्द तुम नहीं समझ सकते। निश्चय ही, यदि मैंने तुम्हें उनके पास भेजा होता, तो वे तुम्हारी सुनते।<sup>15</sup> परन्तु इसाएल का घराना तुम्हारी सुनने को तैयार नहीं होगा, क्योंकि वे मेरी सुनने को तैयार नहीं हैं; इसाएल का पूरा घराना हठी और जिद्दी है।<sup>16</sup> देखो, मैंने तुम्हारा चेहरा उनके चेहरों के समान कठोर और तुम्हारा माथा उनके माथों के समान कठोर बना दिया है।<sup>17</sup> पवर से भी कठोर मैंने तुम्हारा माथा बना दिया है। उनसे मत डरो और उनके सामने मत घबराओ, क्योंकि वे एक विद्रोही घराना है।<sup>18</sup> इसके अलावा, उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे सभी वचनों को अपने हृदय में ले लो जो मैं तुम्हें कहूँगा और ध्यान से सुनो।<sup>19</sup> निवासितों के पास जाओ, अपनी प्रजा के पुत्रों के पास, और उनसे बात करो और उन्हें कहो, चाहे वे सुनें या न सुनें, यहोवा परमेश्वर यह कहता है।<sup>20</sup> तब आत्मा ने मुझे उठाया, और मैंने अपने पीछे एक महान गर्जन की आवाज़ सुनी: "यहोवा की महिमा उसके स्थान में ध्या है!"<sup>21</sup> और मैंने जीवित प्राणियों के पंखों की आवाज़ सुनी जो एक-दूसरे को छू रहे थे, और उनके बगल में पहियों की आवाज़, एक महान गर्जन की आवाज़।<sup>22</sup> तब आत्मा ने मुझे उठाया

और मुझे दूर ले गया; और मैं अपने आत्मा की क्रोध में कड़वाहट में गया, और यहोवा का हाथ मुझ पर ढढ था।<sup>23</sup> तब मैं निवासितों के पास आया जो केबार नदी के पास तेल-अबीब में रहते थे, और मैं वहाँ सात दिन तक बैठा जहाँ वे रहते थे, उनके बीच में स्तम्भ।<sup>24</sup> अब सात दिन के अंत में यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>25</sup> "मनुष्य के पुत्र, मैंने तुम्हें इसाएल के घराने के लिए एक चौकीदार नियुक्त किया है। जब भी तुम मेरे मुँह से कोई वचन सुनो, उन्हें मेरी ओर से चेतावनी दो।<sup>26</sup> जब मैं दृष्ट से कहूँ, 'तुम निश्चित रूप से मरोगे,' और तुम उसे चेतावनी देते या दृष्ट को उसकी दृष्टाता से चेतावनी देने के लिए नहीं बोलते ताकि वह जीवित रहे, वह दृष्ट व्यक्ति अपनी दृष्टाता के लिए मरेगा, परन्तु मैं उसके खून की माँग तुम्हारे हाथ से करूँगा।<sup>27</sup> हालांकि, यदि तुमने दृष्ट को चेतावनी दी और वह अपनी दृष्टाता से या अपनी दृष्ट मार्ग से नहीं मुड़ता, वह अपनी दृष्टाता के लिए मरेगा, परन्तु तुमने अपने आप को बचा लिया है।<sup>28</sup> फिर, जब एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता से मुँहकर पाप करता है, और मैं उसके समाने एक बाधा रखता हूँ, वह मरेगा; क्योंकि तुमने उसे चेतावनी नहीं दी, वह अपने पाप में मरेगा, और उसकी धार्मिकता के कार्य याद नहीं किए जाएंगे, परन्तु मैं उसके खून की माँग तुम्हारे हाथ से करूँगा।<sup>29</sup> हालांकि, यदि तुमने धर्मी व्यक्ति को चेतावनी दी ताकि धर्मी पाप न करे, और वह पाप नहीं करता, तो वह निश्चित रूप से जीवित रहेगा क्योंकि उसने चेतावनी ली; और तुमने अपने आप को बचा लिया है।<sup>30</sup> यहोवा का हाथ मुझ पर वहाँ था, और उसने मुझसे कहा, "उठो, मैदान में जाओ, और वहाँ मैं तुमसे बात करूँगा।"<sup>31</sup> तब मैं उठा और मैदान में गया; और देखो, यहोवा की महिमा वहाँ खड़ी थी, जैसे कि मैंने केबार नदी के पास देखा था, और मैं अपने चेहरे पर गर पड़ा।<sup>32</sup> परन्तु आत्मा ने मुझमें प्रवेश किया और मुझे मेरे पैरों पर छड़ा कर दिया, और उसने मुझसे बात की ओर मुझसे कहा, "जाओ, अपने घर के अंदर बंद हो जाओ।"<sup>33</sup> अब तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, वे तुम्हारे ऊपर रसियाँ डालेंगे और तुम्हें उनसे बाँध देंगे ताकि तुम उनके बीच बाहर न जा सको।<sup>34</sup> इसके अलावा, मैं तुम्हारी जीध को तुम्हारे मुँह की छत से चिपका दूँगा ताकि तुम मृक हो जाओ और उन्हें डाँटने वाले न बनो, क्योंकि वे एक विद्रोही घराना हैं।<sup>35</sup> परन्तु जब मैं तुमसे बात करूँगा, मैं तुम्हारा मुँह खोलूँगा और तुम उनसे कहोगे, यहोवा परमेश्वर यह कहता है। जो सुनता है, उसे सुनता दो; और जो इंकार करता है, उसे इंकार करने दो; क्योंकि वे एक विद्रोही घराना हैं।"

## यहेजकेल

**4** “अब तू हे मनुष्य के पुत्र, एक ईंट ले, उसे अपने सामने रख और उस पर एक नगर, यरूशलेम, खुदाई कर।<sup>2</sup> फिर उसके विरुद्ध धेरा डाल, एक धेराबंदी की दीवार बना, एक चढ़ाई का मार्ग ऊँचा कर, छावनियाँ लगा, और उसके चारों ओर आक्रमण करने वाले यंत्र स्थापित कर।<sup>3</sup> फिर अपने लिए एक लोहे की धाती ले और उसे अपने और नगर के बीच लोहे की दीवार के रूप में खड़ा कर, और अपने मुख को उसकी ओर कर ताकि वह धेरे में हो और उसे धेर लो। यह इसाएल के घराने के लिए एक चिह्न है।<sup>4</sup> फिर अपने बाँध पहलू पर लेट जा और इसाएल के घराने के अपराध को उस पर रख। जितने दिन तू उस पर लेटा रहोगा, तू उनका अपराध उठाएगा।<sup>5</sup> क्योंकि मैंने तुझे उनके अपराध के वर्णों के अनुसार दिन दिया है, ३९० दिन, इसलिए तू इसाएल के घराने का अपराध उठाएगा।<sup>6</sup> जब तू इन्हें पूछा कर ले, तो दूसरी बार लेट जा, परंतु अपने दाँध पहलू पर और यहदा के घराने का अपराध उठाए। मैंने इसे तुझे चालीस दिन के लिए दिया है, एक दिन एक वर्ष के लिए।<sup>7</sup> फिर तू अपने मुख को यरूशलेम की धेराबंदी की ओर कर और अपनी भुजा को उघाड़ कर भविष्यवाणी कर।<sup>8</sup> अब देख, मैं तुझ पर रसियाँ डालूँगा ताकि तू एक पहलू से दूसरे पहलू की ओर न मुड़ सके जब तक कि तू अपनी धेराबंदी के दिन पूरे न कर ले।<sup>9</sup> परंतु तू गैँहूँ, जौ, सेम, मसूर, बाजारा, और जई ले, उन्हें एक बर्तन में डाल और अपने लिए रोटी बना; तू उसे अपने पहलू पर लेते हुए दिनों के अनुसार खाएगा, ३९० दिन।<sup>10</sup> तेरा भोजन जो तू खाएगा, वह बीस शेकेल प्रतिदिन के वजन का होगा; तू उसे समय-समय पर खाएगा।<sup>11</sup> तू पानी भी माप कर पीएगा, एक हिन का छठा हिस्सा; तू उसे समय-समय पर पीएगा।<sup>12</sup> इसे जौ की रोटी के रूप में खा, इसे उनके सामने मानव मल के ऊपर पकाते हुए।<sup>13</sup> तब यहोवा ने कहा, “इस प्रकार इसाएल के पुरु अपवित्र रोटी उन जातियों के बीच खाएँगे जहाँ मैं उन्हें निर्विसित करूँगा।”<sup>14</sup> परंतु मैंने कहा, “आह, प्रभु यहोवा! देख, मैं कभी अपवित्र नहीं हुआ; मेरी जगानी से लेकर अब तक मैंने कभी वह नहीं खाया जो अपने आप मर गया हो या जानकरों द्वारा फाड़ा गया हो, और न ही कोई अपवित्र मांस मेरे मुँह में गया है।”<sup>15</sup> तब उसने मुझसे कहा, “देख, मैं तुझे मानव मल के स्थान पर गाय का गोबर ढूँगा जिस पर तू अपनी रोटी तैयार करोगा।”<sup>16</sup> इसके अलावा, उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के पुरु, देख, मैं यरूशलेम में रोटी का साहारा तोड़ने जा रहा हूँ, और वे रोटी को वजन से और चिंता के साथ खाएँगे, और पानी को माप कर और भय के साथ पीएँगे,<sup>17</sup> क्योंकि रोटी और पानी की कमी होगी; और वे

एक-दूसरे से भयभीत होंगे और अपने अपराध में गल जाएंगे।

**5** “और तू हे मनुष्य के पुरु, एक तेज तलवार ले: उसे नाई के उस्तरे के समान ले और अपने सिर और दाढ़ी पर फेर। फिर तौलने के लिए तराजू ले और बालों को बांट दे।<sup>2</sup> उनमें से एक तिहाई को तू नगर के बीच में आग में जला देना, जब धेराबंदी के दिन पूरे हो जाएँ। फिर एक तिहाई को तलवार से नगर के चारों ओर मारना, और एक तिहाई को हवा में बिखेरे देना; और मैं उनके पीछे तलवार खींचूँगा।<sup>3</sup> उनमें से कुछ बाल भी ले और उन्हें अपने बस्त के किनारों में बांध ले।<sup>4</sup> उनमें से कुछ को फिर से ले और आग में डालकर जला दे; उससे एक आग पूरे इसाएल के घराने में फैल जाएगी।<sup>5</sup> प्रभु यहोवा यों कहता है: यह यरूशलेम है। मैंने उसे राष्ट्रों के बीच में रखा है, उसके चारों ओर भूमि है।<sup>6</sup> परंतु उसने मेरी विधियों के विरुद्ध उन राष्ट्रों से भी अधिक विद्रोह किया है, और मेरी विधियों के विरुद्ध उन राष्ट्रों से भी अधिक, जो उसके चारों ओर हैं; क्योंकि उन्होंने मेरी विधियों को अस्वीकार कर दिया है और मेरी विधियों पर नहीं चले हैं।<sup>7</sup> इसलिए, प्रभु यहोवा यों कहता है: क्योंकि तुम्हारे चारों के राष्ट्रों से अधिक तुम्हारे बीच अशांति है और तुम मेरी विधियों पर नहीं चले हो और न ही मेरी विधियों का पालन किया है, न ही तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्रों की विधियों का पालन किया है।<sup>8</sup> इसलिए, प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, मैं स्वयं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, और मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँगा राष्ट्रों की दृष्टि में।<sup>9</sup> और तुम्हारी सभी धृषित बातों के कारण, मैं तुम्हारे बीच ऐसा करूँगा जैसा मैंने कभी नहीं किया, और न ही कभी फिर करूँगा।<sup>10</sup> इसलिए, तुम्हारे बीच पिता अपने पुत्रों को खाएंगे, और पुरु अपने पिताओं को खाएंगे; क्योंकि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँगा और तुम्हारे सभी अवशेषों को हर दिशा में बिखेर दूँगा।<sup>11</sup> इसलिए जैसा मैं जीवित हूँ, प्रभु यहोवा कहता है, “क्योंकि तुमने मेरे अपवित्रस्थान को अपनी सभी मूर्तियों और अपनी सभी धृषित बातों से अपवित्र किया है, मैं भी पीछे हर जाऊँगा, और मेरी आँखें दया नहीं करेंगी और मैं नहीं छोड़ूँगा।<sup>12</sup> तुम मैं से एक तिहाई लोग महामारी से मरेंगे या तुम्हारे बीच अकाल से नष्ट हो जाएंगे, एक तिहाई तुम्हारे चारों ओर तलवार से गिरेंगे, और एक तिहाई को मैं हर दिशा में बिखेर दूँगा, और मैं उनके पीछे तलवार खींचूँगा।<sup>13</sup> इस प्रकार मेरी क्रोध समाप्त होगी और मैं अपनी जलन को उन पर संषुष्ट करूँगा, और मैं शांत हो जाऊँगा; तब वे जानेंगे कि मैंने, प्रभु ने, अपनी जलन में कहा है, जब मैंने उन पर अपनी जलन समाप्त की है।<sup>14</sup> इसके अलावा, मैं तुम्हें एक स्वंदहर और अपमान बनाऊँगा तुम्हारे चारों

## यहेजकेल

ओर के राष्ट्रों के बीच, उन सभी की वृष्टि में जो वर्हाँ से गुजरते हैं।<sup>15</sup> इसलिए यह एक अपमान, एक निदा, एक चेतावनी, और एक भयावहता होनी तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्रों के लिए जब मैं तुम्हारे विरुद्ध क्रोध, जलन, और उग्र फटकार में न्याय करूँगा। मैंने, प्रभु ने, कहा है।<sup>16</sup> जब मैं तुम्हारे विरुद्ध विनाश के लिए घातक अकाल के तीर भेजूँगा, जिन्हें मैं तुम्हें नष्ट करने के लिए भेजूँगा, तब मैं तुम्हारे ऊपर अकाल को और बढ़ाऊँगा और तुम्हारे रोटी के सहारे को तोड़ दूँगा।<sup>17</sup> इसके अलावा, मैं तुम्हारे ऊपर अकाल और जगती जानवर भेजूँगा, और वे तुम्हारे बच्चों को छीन लौंगे; महामारी और रक्तपात भी तुम्हारे बीच से गुजरेंगे, और मैं तुम्हारे ऊपर तलवार लाऊँगा। मैंने, प्रभु ने, कहा है।<sup>18</sup>

**6** और यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> “मनुष्य के पुत्र, अपना मुख इसाएल के पहाड़ों की ओर कर, और उनके विरुद्ध भविष्यावाणी कर।<sup>3</sup> और कह, इसाएल के पहाड़ों, यहोवा परमेश्वर का वचन सुनो! यहोवा परमेश्वर पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों और तराहियों से यह कहता है: देखो, मैं स्वयं तुम पर तलवार लाने वाला हूँ, और मैं तुम्हारे ऊचे स्थानों को नष्ट कर दूँगा।<sup>4</sup> तब तुम्हारे वेदी उजाड़ हो जाएँगी और तुम्हारे धूप की वेदी टूट जाएँगी, और मैं तुम्हारे मरे हुओं को तुम्हारे मूर्तियों के सामने गिरा दूँगा।<sup>5</sup> मैं इसाएल के पुत्रों की लाशें उनके मूर्तियों के सामने डाल दूँगा, और तुम्हारी हँड़ियों को तुम्हारी वेदियों के चारों ओर बिखेर दूँगा।<sup>6</sup> तुम्हारे सभी निवास स्थानों में, नगर उजाड़ हो जाएँगे और ऊचे स्थान उजाड़ हो जाएँगे, ताकि तुम्हारी वेदियाँ उजाड़ और वीरान हो जाएँ, तुम्हारी मर्तियाँ टूट जाएँ और समाप्त हो जाएँ, तुम्हारी धूप की वेदियाँ काट दी जाएँ, और तुम्हारे काम मिटा दिए जाएँ।

7 तुम्हारे बीच मेरे हुए मिरेंगे, और तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।<sup>8</sup> हालांकि, मैं एक अवश्य छोड़ दूँगा, क्योंकि जब तुम देशों में बिखेर दिए जाओगे, तब तुम्हारे बीच कुछ लोग तलवार से बच जाएँगे।<sup>9</sup> तब जो लोग बच जाएँगे, वे उन देशों में मुझे याद करेंगे जहाँ उन्हें बंदी बनाकर ले जाया गया है, कि कैसे उनके व्यभिचारी दिलों ने मुझसे मुँह मोड़ लिया और उनकी अँखों ने उनके मूर्तियों के साथ व्यभिचार किया; और वे अपने ही वृष्टि में अपने किए गए बुरे कामों के लिए, अपनी सभी घृणित बातों के लिए, स्वयं से घृणा करेंगे।<sup>10</sup> तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, मैंने व्यर्थ नहीं कहा कि मैं उन पर यह विपत्ति लाऊँगा।”

<sup>11</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: “ताली बजाओ, पैर पटको, और कहो, ‘हाय, इसाएल के घर के सभी बुरे घृणित कार्यों के कारण, जो तलवार, अकाल और महामारी से मिरेंगे।<sup>12</sup> जो दूर है वह महामारी से मरेगा, जो पास है वह तलवार से गिरेगा, और जो बचा रहेगा और छोड़ दिया जाएगा वह अकाल से मरेगा। इसलिए मैं उन पर अपना क्रोध खर्च करूँगा।<sup>13</sup> तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ, जब उनके मेरे हुए उनके मूर्तियों के बीच उनकी वेदियों के चारों ओर होंगे, हर ऊँची पहाड़ी पर, सभी पहाड़ों की चोटियों पर, हर हरे पेड़ के नीचे, और हर पतेदार बलूत के नीचे - वे स्थान जहाँ उन्होंने अपने सभी मूर्तियों को सुआधित धूप ढाईँ।<sup>14</sup> इसलिए मैं उनके सभी निवास स्थानों में अपना हाथ उनके विरुद्ध फैलाऊँगा और देश को अधिक उजाड़ और बर्बाद कर दूँगा, दिवला की ओर के जंगल से भी अधिक; और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

**7** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, उसने कहा,<sup>2</sup> “और तू हे मनुष्य के पुत्र, इसाएल की भूमि से कह, ‘अंत! चारों कोनों पर अंत आ रहा है।’<sup>3</sup> अब अंत तेरे ऊपर है, और मैं अपना क्रोध तुझ पर भेजूँगा; मैं तेरा न्याय तेरे मार्गों के अनुसार करूँगा और तेरे सब घृणित कर्मों को तुझ पर लाऊँगा।<sup>4</sup> क्योंकि मेरी अंख तुझ पर ददा नहीं करेगी, न ही मैं तुझे बख्शूँगा, परन्तु मैं तेरे मार्गों को तुझ पर लाऊँगा, और तेरे घृणित कर्म तेरे बीच होंगे; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।<sup>5</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: एक विपत्ति, एक अनोखी विपत्ति, देखो, यह आ रही है।<sup>6</sup> अंत आ रहा है; अंत आ चुका है। यह तेरे विरुद्ध जाग उठा है; देखो, यह आ चुका है।<sup>7</sup> विनाश तुझ पर आ गया है, हे भूमि के निवासी। समय आ गया है, दिन निकट है—पहाड़ों पर हर्षित जयकार की बजाय आतक।<sup>8</sup> अब मैं शीघ्र ही तुझ पर अपना क्रोध उडेलूँगा और तुझ पर अपना क्रोध समाप्त करूँगा; मैं तेरा न्याय तेरे मार्गों के अनुसार करूँगा और तेरे सब घृणित कर्म तुझ पर लाऊँगा।<sup>9</sup> मेरी अंख तुझ पर ददा नहीं करेगी, न ही मैं तुझे बख्शूँगा; मैं तेरा प्रतिफल तेरे मार्गों के अनुसार दंगा, जबकि तेरे घृणित कर्म तेरे बीच हैं; तब तू जान लेगा कि मैं, यहोवा, तुझे मार रहा हूँ।<sup>10</sup> देखो, वह दिन! देखो, यह आ रहा है! तेरा विनाश बाहर निकल चुका है; छड़ी ने अंकुरित किया है, अहंकार ने फूल खिलाया है।<sup>11</sup> हिंसा ने दुष्टता की छड़ी में वृद्धि की है। उनमें से कोई भी नहीं बचेगा, न उनके लोग, न उनकी संपत्ति, न उनमें से कुछ भी महत्वपूर्ण।<sup>12</sup> समय आ गया है, दिन आ गया है। न तो खरीदने वाला आनंदित हो और न बेचने वाला शोक करे, क्योंकि उनके सभी समूहों के विरुद्ध क्रोध है।<sup>13</sup> वास्तव में, बेचने वाला जो बेचा

## यहेजकेल

गया था उसे वापस नहीं पाएगा जब तक वे दोनों जीवित हैं, क्योंकि उनके सभी समूहों के संबंध में दृष्टि निरस्त नहीं होगी, और कोई भी अपने अपराध के कारण अपनी जान नहीं बचा सकेगा।<sup>14</sup> उहोंने तुरही पूँकी और सब कुछ तैयार किया, परन्तु कोई युद्ध के लिए नहीं जा रहा है, क्योंकि मेरे क्रोध उनके सभी समूहों के विरुद्ध है।<sup>15</sup> बाहर तलवार है, और भीतर महामारी और अकाल। जो मैदान में होगा वह तलवार से मरेगा; और जो नगर में होगा, उसे अकाल और महामारी खा जाएगी।<sup>16</sup> यहाँ तक कि जब उनके बचे हुए लोग बच निकलेंगे, वे घासांटियों के कबूलों की तरह पहाड़ी पर होंगे, सभी अपने अपने अपराध पर विलाप करेंगे।<sup>17</sup> सभी हाथ ढीले हो जाएंगे, और सभी पुरुने पानी से भीग जाएंगे।<sup>18</sup> वे टाट पहरोंगे, और आंतर उह ढक लेंगा; और सभी चेहरों पर लज्जा होगी और उनके सभी सिर गंजे होंगे।<sup>19</sup> वे अपनी चांदी को सड़कों में फेंक देंगे, और उनका सोना एक घृणास्पद वस्तु बन जाएगा। उनका चांदी और सोना उन्हें यहेवा के क्रोध के दिन बचा नहीं सकेंगा। वे अपनी भूख नहीं मिटा सकेंगे और न ही अपने पेट भर सकेंगे, क्योंकि उनका अपराध ठोकर का कारण बन गया है।<sup>20</sup> उहोंने उसकी आभूषणों की सुदरता को गर्व में बदल दिया, और उहोंने इसके साथ अपने घृणित कर्मों और मूर्तियों की छवियाँ बनाई; इसलिए, उसने इसे उनके लिए एक घृणास्पद वस्तु बना दिया है।<sup>21</sup> मैं इसे विदेशियों को लूट के रूप में और पृथ्वी के दुष्टों को लूट के रूप में सौंप दूंगा, और वे इसे अपवित्र करेंगे।<sup>22</sup> मैं भी उनसे अपना मुख फेर लूंगा, और वे मेरे गुप्त स्थान को अपवित्र करेंगे; तब अपराधी उसमें प्रवेश करेंगे और उसे अपवित्र करेंगे।<sup>23</sup> जंजीर तैयार करो, क्योंकि भूमि खून के अपराधों से भरी है, और नार हिंसा से भरा है।<sup>24</sup> इसलिए, मैं सबसे बुरी जितियों को लाऊंगा, और वे उनके घरों पर अधिकार कर लैंगे। मैं भी बलवानों के गर्व का अंत कर दूंगा, और उनके पवित्र स्थान अपवित्र किए जाएंगे।<sup>25</sup> जब पीड़ा आएगी, वे शाति की खोज करेंगे, परन्तु कोई नहीं मिलेगी।<sup>26</sup> विपत्ति पर विपत्ति आएगी, और अफवाह पर अफवाह आएगी; तब वे एक नींव से दृष्टि की खोज करेंगे, परन्तु याजक से व्यवस्था खो जाएगी और बुजुर्गों से परामर्श।<sup>27</sup> राजा शोक करेगा, राजकुमार भय से वस्त फहनेगा, और भूमि के लोगों के हाथ कापेंगे। उनके आचरण के अनुसार मैं उनके साथ व्यवहार करूँगा, और उनके अपने निर्णयों के अनुसार मैं उनका न्याय करूँगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोंवा हूँ।

**8** छठे वर्ष में, छठे महीने के पाँचवें दिन, ऐसा हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था और यहां के प्राचीन मेरे

सामने बैठे थे, और वहाँ प्रभु परमेश्वर का हाथ मुझ पर आया।<sup>2</sup> तब मैंने देखा, और देखो, एक मानव के समान एक आकृति; उसकी कमर के नीचे आग का रूप था, और उसकी कमर के ऊपर चमक का रूप था, जैसे चमकदार धातु।<sup>3</sup> और उसने एक हाथ का रूप बढ़ाया और मेरे सिर की एक लट से मुझे पकड़ लिया, और आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच उठा लिया और मुझे परमेश्वर के दर्शन में यशस्वित ले गया, उस अंतरिक द्वार के प्रवेश पर जो उत्तर की ओर है, जहाँ ईर्ष्या की मूर्ति का स्थान था, जो ईर्ष्या को उत्तेजित करता है।<sup>4</sup> और देखो, इसाएल के परमेश्वर की महिमा वहाँ थी, जैसा रूप मैंने मैदान में देखा था।<sup>5</sup> तब उसने मुझसे कहा, "मनुष के पुत्र, अब अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाओ।"<sup>6</sup> इसलिए मैंने अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाई, और देखो, वेदी के द्वार के उत्तर में यह ईर्ष्या की मूर्ति प्रवेश पर थी।<sup>7</sup> और उसने मुझसे कहा, "मनुष के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि वे क्या कर रहे हैं, वे बड़े घृणित कार्य जो इसाएल का घर यहाँ कर रहा है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊँ? लेकिन फिर भी तुम और भी बड़े घृणित कार्य देखोगे।"<sup>8</sup> फिर उसने मुझे आँगन के प्रवेश पर लाया, और जब मैंने देखा, तो देखो, दीवार में एक छेद था।<sup>9</sup> और उसने मुझसे कहा, "मनुष के पुत्र, अब दीवार में खुदाई करो।"<sup>10</sup> इसलिए मैंने दीवार में खुदाई की, और देखो, एक प्रवेश द्वार था।<sup>11</sup> और उसने मुझसे कहा, "अंदर जाओ और देखो कि वे यहाँ कितने दुष्ट, घृणित कार्य कर रहे हैं।"<sup>12</sup> इसलिए मैं अंदर गया और देखा, और देखो, हर प्रकार के रेंगने वाले जीव और जानवर और इसाएल के घर की घृणित मूर्तियाँ दीवार पर चारों ओर खुदी हुई थीं।<sup>13</sup> और उनके सामने इसाएल के घर के सतर प्राचीन खड़े थे, और शाफान का पुत्र याजा न्याह उनके बीच खड़ा था, प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में उसकी धूपदानी थी, और धूप के बादल की सुगंध उठ रही थी।<sup>14</sup> तब उसने मुझसे कहा, "मनुष के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इसाएल के घर के प्राचीन अंधेरे में क्या कर रहे हैं, प्रत्येक अपने खुदे हुए चित्रों के कमरे में? क्योंकि वे कहते हैं, 'प्रभु हमें नहीं देखता; प्रभु ने इस देश को छोड़ दिया है।'"<sup>15</sup> और उसने मुझसे कहा, "तुम और भी बड़े घृणित कार्य देखोगे जो वे कर रहे हैं।"<sup>16</sup> फिर उसने मुझे प्रभु के घर के द्वार के प्रवेश पर लाया जो उत्तर की ओर था; और देखो, वहाँ महिलाएँ तमूज के लिए रो रही थीं।<sup>17</sup> और उसने मुझसे कहा, "क्या तुम यह देखते हो, मनुष के पुत्र?" फिर भी तुम इनसे भी बड़े घृणित कार्य देखोगे।<sup>18</sup> फिर उसने मुझे प्रभु के घर के आंतरिक आँगन में लाया; और देखो, प्रभु के मंदिर के प्रवेश पर, बरामदे और वेदी के बीच, लगभग पचीस व्यक्ति थे जिनकी पीठ प्रभु के मंदिर की

## यहेजकेल

ओर थी और उनके बेहरे पूर्व की ओर थे; और वे पूर्व की ओर सर्व की ओर दूक रहे थे।<sup>17</sup> और उसने मुझसे कहा, “क्या तुम यह देखते हो, मनुष्य के पुत्र? क्या यह यहदा के घर के लिए यहाँ किए गए धृणित कार्यों को करना एक छोटी बात है, कि उन्होंने देश को हिसा से भर दिया है और मुझे बार-बार उत्तेजित किया है? देखो, वे अपनी नाक पर टहनी रख रहे हैं।<sup>18</sup> इसलिए, मैं वास्तव में उनके साथ कोथ में व्यवहार करूँगा; मेरी अँखें कोई दया नहीं करेगी, न ही मैं उन्हें छोड़ूँगा, और यद्यपि वे मेरे कानों में जोर से चिल्लाएँगे, फिर भी मैं उनकी नहीं सुनूँगा।”

**९** फिर उसने मेरे सुनने में ऊँची आवाज में पुकारा, “शहर के विनाशकों को आगे आओ, प्रत्येक अपने हाथ में विनाश का हथियार लेकर!”<sup>2</sup> और देखो, छह आदमी उत्तर की ओर मुख किए हुए ऊपरी फाटक की दिशा से आए, प्रत्येक अपने हाथ में तोड़ने वाला हथियार लेकर; और उनमें से एक आदमी था जो सूती वस्त्र पहने हुए था और उसकी कमर पर एक लेखक की किट थी। और वे आए और कांस्य वेदी के पास खड़े हो गए।<sup>3</sup> तब इसाएल के परमेश्वर की महिमा उस करूब से उठकर मंदिर की दहलीज पर चर्ती गई, जिस पर वह थी। और उसने सूती वस्त्र पहने हुए आदमी को पुकारा, जिसकी कमर पर लेखक की किट थी।<sup>4</sup> और प्रभु ने उससे कहा, “शहर के बीच से, यरूशलेम के बीच से जाओ, और उन लोगों के माथे पर एक निशान लगाओ जो उसमें की जा रही सभी धृणित बातों पर कराते और आह भरते हैं।”<sup>5</sup> परंतु दूसरों से उसने मेरे सुनने में कहा, “उसके पीछे शहर में जाओ और मारो; तुम्हारी अँख दया न करे और न ही छोड़ो।”<sup>6</sup> बूढ़े, जवान, जवान स्त्रियाँ, छोटे बच्चे, और स्त्रियाँ, सभी को पूरी तरह से मार डालो, परंतु किसी भी व्यक्ति को न छुओ जिस पर निशान है, और तुम मेरे पवित्र रूप से शुरू करोगे।”<sup>7</sup> तो उन्होंने मंदिर के सामने के पुरनियों से शुरू किया।<sup>8</sup> फिर उसने उनसे कहा, “मंदिर को अपवित्र करो और अँगनों को मारे गए लोगों से भर दो। बाहर जाओ।”<sup>9</sup> तो वे बाहर गए और शहर के लोगों को मारा।<sup>10</sup> जो वे लोगों को मार रहे थे और मैं अकेला बचा था, मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा और रोकर कहा, “हे प्रभु परमेश्वर! क्या तू यरूशलेम पर अपना क्रोध उड़ेलकर इसाएल के पूरे अवशेष को नष्ट करने जा रहा है?”<sup>11</sup> तब उसने मुझसे कहा, “इसाएल और यहदा के घर का अपराध अत्यधिक बड़ा है, और भूमि खन से भरी है, और शहर विकृति से भरा है; क्योंकि वे कहते हैं, ‘प्रभु ने इस भूमि को छोड़ दिया है, और प्रभु नहीं देखता।’<sup>12</sup> परंतु मेरे लिए, मेरी अँख दया नहीं करेगी और न ही मैं छोड़ूँगा, बल्कि मैं

उनके आचरण को उनके सिर पर लाऊँगा।”<sup>13</sup> तब देखो, सूती वस्त्र पहने हुए आदमी, जिसकी कमर पर लेखक की किट थी, ने रिपोर्ट की, कहा, “मैंने ठीक वैसे ही किया जैसा आपने मुझे आज्ञा दी थी।”

**१०** तब मैंने देखा, और देखो, करूबों के सिरों के ऊपर जो आकाश था, उसमें नीलम पत्थर के समान कुछ दिखाई दिया, जो दिखने में एक सिंहासन के समान था, उनके ऊपर प्रकट हुआ।<sup>2</sup> और उसने सूती वस्त्र पहने हुए व्यक्ति से कहा, “करूबों के नीचे धूमते पहियों के बीच में प्रवेश करो और करूबों के बीच से अग्नि के अंगारों को अपने हाथों में भर लो, और उन्हें गर पर बिखेर दो।” और वह मेरी दृष्टि में प्रवेश कर गया।<sup>3</sup> अब करूब मंदिर के दाहिनी ओर खड़े थे जब वह व्यक्ति अंदर गया, और बादल ने आंतरिक आंगन को भर दिया।<sup>4</sup> तब यहोवा की महिमा करूब से उठकर मंदिर की देहली तक गई, और मंदिर बादल से भर गया, और आंगन यहोवा की महिमा की चमक से भर गया।<sup>5</sup> इसके अलावा, करूबों के पंखों की आवाज बाहरी आंगन तक सुनी गई, जैसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज जब वह बोलता है।<sup>6</sup> जब उसने सूती वस्त्र पहने व्यक्ति को आदेश दिया, “धूमते पहियों के बीच से, करूबों के बीच से अग्नि ले लो,” वह अंदर गया और एक पहिए के पास खड़ा हो गया।<sup>7</sup> तब करूब ने करूबों के बीच से अपनी हाथ करूबों के बीच की अग्नि की ओर बढ़ाई, कुछ लिया और उसे सूती वस्त्र पहने व्यक्ति के हाथों में डाल दिया। उसने उसे लिया और बाहर चला गया।<sup>8</sup> करूबों के पंखों के नीचे मानव हाथ का आकार दिखाई दिया।<sup>9</sup> तब मैंने देखा, और देखो, चार पहिए करूबों के पास थे, प्रत्येक करूब के पास एक पहिया था; और पहियों का रूप तारसीश पत्थर की चमक के समान था।<sup>10</sup> उनके रूप के लिए, उन चारों का एक ही आकार था, जैसे एक पहिया दूसरे पहिए के भीतर हो।<sup>11</sup> जब वे चलते थे, तो वे अपने चारों दिशाओं में बिना मुड़े चलते थे; बल्कि वे उस दिशा का अनुसरण करते थे जिस दिशा में सिर था, बिना मुड़े चलते थे।<sup>12</sup> और उनका पूरा शरीर, उनकी पीठ, हाथ, पंख, और पहिए चारों ओर से अँखों से ढके हुए थे, जो उन चारों के पहियों से संबंधित थे।<sup>13</sup> मेरी सुनवाई में पहियों को धूमते पहिए कहा गया।<sup>14</sup> और प्रत्येक के चार चेहरे थे। पहला चेहरा करूब का चेहरा था, दूसरा मनुष्य का चेहरा, तीसरा सिंह का चेहरा, और चौथा गरुड़ का चेहरा।<sup>15</sup> तब करूब उठ गए। वे वही जीवित प्राणी थे जिन्हें मैंने केबार नदी के पास देखा था।<sup>16</sup> अब जब करूब चलते थे, पहिए उनके पास चलते थे; और जब करूब अपने पंख उठाकर भूमि से ऊपर उठते थे, तो

## यहेजकेल

पहिए उनके पास से नहीं मुड़ते थे।<sup>17</sup> जब करूब स्थिर रहते थे, पहिए स्थिर रहते थे; और जब वे उठते थे, पहिए उनके साथ उठते थे, क्योंकि जीवित प्राणियों की आत्मा उनमें थी।<sup>18</sup> तब यहोवा की महिमा मंदिर की देहली से निकलकर करूबों के ऊपर खड़ी हो गई।<sup>19</sup> जब करूब चले गए, उन्होंने अपने पंख उठाए और मेरी दृष्टि में भूमि से ऊपर उठे, उनके पास पहिए थे; और वे यहोवा के घर के पूर्वी द्वार के प्रवेश द्वार पर खड़े हो गए, और इसाएल के परमेश्वर की महिमा उनके ऊपर मंडराई।<sup>20</sup> ये वहीं जीवित प्राणी थे जिन्हें मैंने केबार नदी के नीचे इसाएल के परमेश्वर के नीचे देखा था, इसलिए मैं जानता था कि वे करूब थे।<sup>21</sup> प्रत्येक के चार चेहरे थे और प्रत्येक के चार पंख थे, और उनके पंखों के नीचे मानव हाथों की आकृति थी।<sup>22</sup> उनके चेहरों की आकृति के लिए, वे वहीं चेहरे थे जिनकी उपस्थिति मैंने केबार नदी के पास देखी थी। प्रत्येक सीधा आगे बढ़ा।

**11** तब आत्मा ने मुझे उठाया और मुझे यहोवा के घर के पूर्वी द्वार पर ले आया, जो पूर्वी की ओर मुख किए हुए था। और देखो, द्वार के प्रवेश पर पच्चीस पुरुष खड़े थे, और उनमें मैंने अज्ञूर के पुत्र याज्ञन्याह और बनायाह के पुत्र पेलत्याह को देखा, जो लोगों के नेता थे।<sup>2</sup> उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, ये वे लोग हैं जो इस नगर में बुराई की योजना बनाते हैं और बुरी सलाह देते हैं।<sup>3</sup> जो कहते हैं, 'घर बनाने का समय निकट नहीं है। यह नगर हांडी है और हम मांस हैं।'<sup>4</sup> इसलिये, उनके विरुद्ध भविष्यवाणी कर, मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी कर।"<sup>5</sup> तब यहोवा की आत्मा मुझ पर आई, और उसने मुझसे कहा, "कह, यहोवा यह कहता है: इसाएल के घराने, तुम ऐसा कहते हो, क्योंकि मैं तुम्हारे विचारों को जानता हूँ।"<sup>6</sup> तुमने इस नगर में अपने मारे गए लोगों को बढ़ा दिया है, और तुमने इसकी गतियों को मरे हुओं से भर दिया है।<sup>7</sup> इसलिये, प्रभु यहोवा यह कहता है: 'तुम्हरे मारे गए लोग जिन्हें तुमने इसके बीच रखा है, वे मांस हैं, और यह नगर हांडी है; परन्तु मैं तुम्हें इससे बाहर निकालूँगा।'<sup>8</sup> तुमने तलवार से डर रखा है; इसलिए मैं तुम पर तलवार लाऊँगा; प्रभु यहोवा की यह धोषणा है।<sup>9</sup> और मैं तुम्हें नगर से बाहर निकालूँगा और तुम्हें परदेशियों के हाथों में सौंप दूँगा, और तुम्हारे विरुद्ध न्याय करूँगा।<sup>10</sup> तुम तलवार से गिरोगे। मैं तुम्हारा न्याय इसाएल की सीमा पर करूँगा; ताकि तुम जानो कि मैं यहोवा हूँ।<sup>11</sup> यह नगर तुम्हारे लिए हांडी नहीं होगा, न ही तुम इसके बीच मांस होगे; मैं तुम्हारा न्याय इसाएल की सीमा पर करूँगा।<sup>12</sup> ताकि तुम जानो कि मैं यहोवा हूँ, क्योंकि तुमने मेरी विधियों में नहीं चले न ही मेरे नियमों का पालन किया, बल्कि अपने चारों ओर की

जातियों के नियमों के अनुसार आचरण किया है।"<sup>13</sup> अब ऐसा हुआ कि जब मैं भविष्यवाणी कर रहा था, तब बनायाह का पुत्र पेलत्याह मर गया। तब मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर में चिल्लाकर कहा, 'हे प्रभु यहोवा! क्या तू इसाएल के बचे हुए लोगों का पूर्ण विनाश करेगा?'<sup>14</sup> तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>15</sup> "मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे भाई, तुम्हारे रिश्तेदार, तुम्हारे साथी निर्वासित, और इसाएल का पूरा घराना, ये वे लोग हैं जिनसे यरूशलेम के निवासियों ने कहा है, यहोवा से दूर रहो; यह भूमि हमें विरासत में दी गई है।"<sup>16</sup> इसलिये कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: यद्यपि मैंने उहें जातियों के बीच दूर कर दिया था, और यद्यपि मैंने उहें देशों में बिखेर दिया था, फिर भी मैं उनके लिए उन देशों में थोड़ी देर के लिए एक पवित्र स्थान था जहाँ वे गए थे।<sup>17</sup> इसलिये कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं तुम्हें लोगों के बीच से इकट्ठा करूँगा और उन देशों से इकट्ठा करूँगा जहाँ तुम बिखेर हुए हो, और मैं तुम्हें इसाएल की भूमि दूँगा।<sup>18</sup> जब वे वहाँ आएंगे, तो वे उसकी सभी धृष्टिंत वस्तुओं और उसकी सभी धृणाओं को हटा देंगे।<sup>19</sup> और मैं उहें एक हृदय दूँगा, और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूँगा। और मैं उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकाल दूँगा और उहें मांस का हृदय दूँगा,<sup>20</sup> ताकि वे मेरी विधियों में चलें और मेरे नियमों का पालन करें और उहें करें। तब वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।<sup>21</sup> परन्तु जिनके हृदय उनकी धृष्टिंत वस्तुओं और धृणाओं के पीछे चले जाते हैं, मैं उनके आचरण को उनके सिर पर लाऊँगा।<sup>22</sup> प्रभु यहोवा की यह धोषणा है।<sup>23</sup> तब करूबों ने अपने पंख उठाए, उनके पास पहिए थे, और इसाएल के परमेश्वर की महिमा उनके ऊपर मंडरा रही थी।<sup>24</sup> और आत्मा ने मुझे उठाया और मुझसे दूर हो गया।<sup>25</sup> तब मैंने निर्वासितों को वे सब बातें बताईं जो यहोवा ने मुझे दिखाई थीं।

**12** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, तू विद्रोही घराने के बीच में रहता है, जिनकी अँखें देखन के लिए हैं पर वे नहीं सुनते; क्योंकि वे विद्रोही घराना हैं।"<sup>3</sup> इसलिए, हे मनुष्य के पुत्र, तू अपने लिए निर्वासन के लिए सामान तैयार कर, और उनके सामने दूसरे स्थान पर निर्वासन में जा। अपने स्थान से उनके सामने दूसरे स्थान पर निर्वासन में जा। शायद वे समझें,

## यहेजकेल

यद्यपि वे विद्रोही घराना हैं।<sup>4</sup> दिन में अपने सामान को उनके सामने बाहर निकाल, जैसे निर्वासन के लिए सामान होता है। फिर तू शाम को उनके सामने बाहर जा, जैसे निर्वासन में जाने वाले जाते हैं।<sup>5</sup> दीवार में उनके सामने एक छेद खोद और उसके द्वारा बाहर जा।<sup>6</sup> उनके सामने अपने कंधे पर सामान लाद और अंधेरे में बाहर ले जा। अपना चेहरा ढक ले ताकि तू भूमि को न देख सके, क्योंकि मैंने तुझे इसाएल के घराने के लिए एक चिन्ह ठहराया है।<sup>7</sup> तो मैंने जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी वैसा ही किया। मैंने दिन में अपने सामान को निर्वासन के सामान के रूप में बाहर निकाला। फिर शाम को मैंने अपने हाथों से दीवार में छेद खोदा। मैं अंधेरे में बाहर गया और उनके सामने अपने कंधे पर सामान ले गया।<sup>8</sup> सुबह में यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>9</sup> "मनुष्य के पुत्र, क्या इसाएल के घराने, विद्रोही घराने ने तुझसे नहीं कहा, 'तू क्या कर रहा है?'<sup>10</sup> उनसे कह, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: यह धोषणा यरूशलेम के राजकुमार और इसाएल के पूरे घराने के लिए है जो उसमें है।"<sup>11</sup> कह, मैं तुम्हारे लिए एक चिन्ह हूँ। जैसे मैंने किया है, वैसे ही उनके साथ किया जाएगा; वे निर्वासन में, बंदीगृह में जाएंगे।<sup>12</sup> जो राजकुमार उनके बीच में है वह अंधेरे में अपने कंधे पर सामान लादेगा और बाहर जाएगा। वे दीवार में छेद खोदेंगे ताकि उसे बाहर ला सके। वह अपना चेहरा ढकेगा ताकि वह अपनी आँखों से भूमि को न देख सके।<sup>13</sup> मैं भी उस पर अपना जाल फैलाऊँगा, और वह मेरे जाल में फँस जाएगा। और मैं उसे बाबुल, कसदियों की भूमि में ले जाऊँगा; फिर भी वह उसे नहीं देखेगा, यद्यपि वह वहाँ मरेगा।<sup>14</sup> और मैं उसके चारों ओर के सभी लोगों, उसके सहायकों और उसकी सभी सेनाओं को हर दिशा में बिखेर दूँगा; और मैं उनके पीछे तलवार खींचूँगा।<sup>15</sup> तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ जब मैं उन्हें जातियों में बिखेर दूँगा और देशों में तिरार-बिरार कर दूँगा।<sup>16</sup> परन्तु मैं उनमें से कुछ को तलवार, अकाल और महामारी से बचाऊँगा ताकि वे उन सभी धृणाओं को उन जातियों में बता सकें जहाँ वे जाते हैं, और जान सकें कि मैं यहोवा हूँ।<sup>17</sup> इसके अलावा, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>18</sup> "मनुष्य के पुत्र, अपने रोटी को कांपते हुए खा, और अपने पानी को थरथराते और चिंता के साथ पी।"<sup>19</sup> फिर देश के लोगों से कह, यहोवा परमेश्वर इसाएल की भूमि में यरूशलेम के निवासियों के बारे में यह कहता है: वे अपनी रोटी को चिंता के साथ खाएँगे और अपने पानी को भय के साथ पीएँगे, क्योंकि उनकी भूमि उसकी पूर्णता से वंचित हो जाएगी उन सभी की हिंसा के कारण जो उसमें रहते हैं।<sup>20</sup> बसी हुई नगरियाँ उजाड़ दी जाएँगी, और भूमि एक

वीरान हो जाएगी। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"<sup>21</sup> फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>22</sup> "मनुष्य के पुत्र, यह इसाएल की भूमि के बारे में यह कहावत क्या है, दिन लंबे हैं, और हर दर्शन असफल होता है?"<sup>23</sup> इसलिए उनसे कह, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: मैं इस कहावत को समाप्त कर दूँगा, और वे इसे अब इसाएल में कहावत के रूप में उपयोग नहीं करेंगे।<sup>24</sup> परन्तु उनसे कह, दिन आ रहे हैं जब हर दर्शन पूरा होगा।<sup>25</sup> क्योंकि इसाएल के घराने में अब कोई झूठा दर्शन या चापलूसी करने वाला भविष्यवाणी नहीं होगा।<sup>26</sup> क्योंकि मैं, यहोवा, बोलूँगा, और जो भी वचन मैं बोलूँगा वह पूरा होगा। यह अब और विलंबित नहीं होगा, क्योंकि तुम्हारे दिनों में, हे विद्रोही घराने, मैं वरचन बोलूँगा और उसे पूरा करूँगा।<sup>27</sup> यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।"<sup>28</sup> इसके अलावा, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>29</sup> "मनुष्य के पुत्र, देख, इसाएल का घराना कह रहा है, जो दर्शन वह देखता है वह बहुत वर्षों के लिए है, और वह दूर के समय की भविष्यवाणी करता है।"<sup>30</sup> इसलिए उनसे कह, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: मेरे किसी भी वचन में अब और विलंब नहीं होगा। जो भी वचन मैं बोलूँगा वह पूरा होगा; यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।"

**13** तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, इसाएल के भविष्यद्वक्ताओं के विरुद्ध भविष्यवाणी कर, जो भविष्यवाणी करते हैं, और उन लोगों से कह जो अपने हृदय से भविष्यवाणी करते हैं, यहोवा का वचन सुनो: <sup>3</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: उन मूर्ख भविष्यद्वक्ताओं पर हाय जो अपनी आत्मा का अनुसरण करते हैं और कुछ नहीं देखते।<sup>4</sup> इसाएल, तुम्हारे भविष्यद्वक्ता खंडहरों में लोमधियों के समान हो गए हैं।<sup>5</sup> तुम दरारों में नहीं गए, और न ही इसाएल के घर के चारों ओर दीवार बनाई कि यहोवा के दिन युद्ध में खड़ा रह सके।<sup>6</sup> वे धोखा और झूठी भविष्यवाणी देखते हैं, वे जो कहते हैं, 'यहोवा कहता है,' जब यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा; फिर भी वे अपने वचन की पुष्टि की आशा करते हैं।<sup>7</sup> क्या तुमने झूठी दृष्टि नहीं देखी और झूठी भविष्यवाणी नहीं की जब तुमने कहा, 'यहोवा कहता है,' लेकिन यह मैं नहीं हूँ जिसने बोला है?"<sup>8</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि तुमने धोखा बोला है और झूठ देखा है, इसलिए देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ," यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।<sup>9</sup> "इसलिए मेरा हाथ उन भविष्यद्वक्ताओं के विरुद्ध होगा जो झूठी दृष्टि देखते हैं और झूठी भविष्यवाणी करते हैं। उनका मेरी प्रजा की सभा में कोई स्थान नहीं होगा, न ही वे इसाएल के घर की सूची में लिखे जाएंगे, न ही वे इसाएल की भूमि में

## यहेजकेल

प्रवेश करेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा परमेश्वर हूँ।<sup>10</sup> यह निश्चित रूप से इसलिए है क्योंकि उन्होंने मेरी प्रजा को यह कहकर गुमराह किया है, 'शांति!' जब कोई शांति नहीं है। और जब कोई दीवार बनाता है, देखो, वे उसे सफेदी से पोते देते हैं;<sup>11</sup> तो उन लोगों से कहो जो इसे सफेदी से पोते हैं कि यह गिर जाएगी। एक बाढ़ का पानी आएगा, और तुम, अोले गिरेंगे, और एक हिंसक हवा फूटेगी।<sup>12</sup> देखो, जब दीवार गिर गई है, तो क्या तुमसे नहीं पूछा जाएगा, 'वह प्लास्टर कहाँ है जिसे तुमने इसे पोता था?'<sup>13</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'मैं अपनी क्रोध में एक हिंसक हवा फूटने दूंगा। मेरे क्रोध में बाढ़ का पानी भी होगा और अोले क्रोध में इसे नष्ट करने के लिए।'<sup>14</sup> इसलिए मैं उस दीवार को गिरा दूंगा जिसे तुमने सफेदी से पोता था और इसे जमीन पर गिरा दूंगा, ताकि उसकी नींव प्रकट हो। जब यह गिरेंगे, तुम उसके बीच में नष्ट हो जाओगे; और तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।<sup>15</sup> इसलिए मैं अपनी क्रोध को दीवार पर और उन पर जो इसे सफेदी से पोतते हैं, खर्च कर रुग्णा, और मैं तुमसे कहूँगा, 'दीवार चली गई और उसके पोतने वाले चले गए,'<sup>16</sup> उन इसाएल के भविष्यद्वक्ताओं के साथ जो यशस्वातम के लिए भविष्यवाणी करते हैं और उसके लिए शांति की दृष्टि देखते हैं जब कोई शांति नहीं है, 'यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।'<sup>17</sup> 'अब तुम, मनुष्य के पुत्र, अपनी प्रजा की बेटियों के विरुद्ध अपना मुख सेट करो जो अपनी कल्पना से भविष्यवाणी करती हैं।' उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करो<sup>18</sup> और कहो, 'यहोवा परमेश्वर यह कहता है: उन स्त्रियों पर हाय जो सभी कलाई पर जादू के बैंड सिलती हैं और हर कद के लोगों के सिर के लिए धूंपट बनाती हैं ताकि जीवन को फंसाएँ।' क्या तुम मेरी प्रजा के जीवन को फंसाओगे, लेकिन अपने जीवन को बचाओगे?<sup>19</sup> और मुझी भर जो और रोटी के टुकड़ों के लिए, तुम मेरी प्रजा के बीच मुझे अपवित्र करते हो ताकि उन आत्माओं को मार डालो जिन्हें मरना नहीं चाहिए, और उन आत्माओं को जीवित रखो जिन्हें जीवित नहीं रहना चाहिए, मेरी प्रजा से झूठ बोलकर जो झूठ सुनती है।<sup>20</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'देखो, मैं तुम्हरे जादू के बैंड के विरुद्ध हूँ जिसे तुम जीवन को पक्षियों के समान फंसाते हो, और मैं उहाँसे तुम्हारी बाहों से फाड़ दूंगा; और मैं जीवन को जाने दूंगा, वह जीवन जिसे तुम पक्षियों के समान फंसाते हो।'<sup>21</sup> मैं तुम्हरे धूंपट भी फाड़ दूंगा और अपनी प्रजा को तुम्हरे हाथों से बचाऊंगा, ताकि वे अब तुम्हरे प्रभाव में न रहें। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।<sup>22</sup> क्योंकि तुमने धर्मी को झूठ से निराश किया जब मैंने उसे दुःख नहीं दिया, और दुष्ट के हाथों को मजबूत किया ताकि वह अपनी बुरी राह से

न फिरे और जीवित रहे,<sup>23</sup> इसलिए, तुम स्त्रियाँ अब झूटी दृष्टियाँ नहीं देखोगी और न ही भविष्यवाणी करोगी, और मैं अपनी प्रजा को तुम्हरे हाथों से बचाऊंगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

**14** तब इसाएल के कुछ पुरनिए मेरे पास आए और मेरे सामने बैठ गए।<sup>2</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>3</sup> 'मनुष्य के पुत्र, इन लोगों ने अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित कर ली हैं और अपनी बुराई का ठोकर उनके चेहरे के सामने रख दिया है। क्या मुझे उनसे परामर्श लेना चाहिए?'<sup>4</sup> इसलिए उनसे बात करो और उहाँसे बताओ, 'यहोवा परमेश्वर यह कहता है: इसाएल के घर का कोई भी व्यक्ति जो अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित करता है, अपनी बुराई का ठोकर अपने चेहरे के सामने रखता है, और फिर भविष्यद्वक्ता के पास आता है, मैं, यहोवा, उसके मूर्तियों की भीड़ के अनुसार उसे उत्तर दंगा,<sup>5</sup> ताकि मैं इसाएल के घर के हृदय को पकड़ सकूँ, जिन्होंने अपनी सारी मूर्तियों के कारण मुझसे मुँह मोड़ लिया है।'<sup>6</sup> इसलिए इसाएल के घर से कहो, 'यहोवा परमेश्वर यह कहता है: पश्चाताप करो और अपनी मूर्तियों से दूर हो जाओ, और अपनी सभी धृणित वस्तुओं से मुँह मोड़ लो।'<sup>7</sup> क्योंकि इसाएल के घर का कोई भी व्यक्ति या इसाएल में निवास करने वाले परदेशी जो मुझसे अलग हो जाता है, अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित करता है, अपनी बुराई का ठोकर अपने चेहरे के सामने रखता है, और फिर भविष्यद्वक्ता के पास मुझसे पूछने के लिए आता है, मैं, यहोवा, उसे उत्तर दंगा।<sup>8</sup> मैं उस व्यक्ति के खिलाफ अपना चेहरा करूँगा और उसे एक चिन्ह और एक कहावत बना दूंगा, और उसे अपनी प्रजा में से हटा दूंगा। ताकि तुम जानो कि मैं यहोवा हूँ।<sup>9</sup> तेकिन यदि भविष्यद्वक्ता धोखा खाता है और एक शब्द बोलता है, तो वह मैं, यहोवा, हूँ जिसने उस भविष्यद्वक्ता की धोखा दिया है, और मैं उसके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊंगा और उसे अपनी प्रजा इसाएल में से हटा दूंगा।<sup>10</sup> वे अपनी अपराध की सजा सहेंगे; जैसा कि पूछने वाले की अपराध है, वैसे ही भविष्यद्वक्ता की अपराध होगी,<sup>11</sup> ताकि इसाएल का घर मुझसे फिर न भटके और अपनी सभी अपराधों से अपने आप को अपवित्र न करे। ताकि वे मेरी प्रजा हों, और मैं उनका परमेश्वर बनूँ। यहोवा परमेश्वर कहता है।"<sup>12</sup> तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>13</sup> 'मनुष्य के पुत्र, यदि कोई देश मुझसे विश्वासघात करके पाप करता है, और मैं उसके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाता हूँ, उसकी रोटी की आपूर्ति तोड़ता हूँ, उसके खिलाफ अकाल भेजता हूँ, और उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को हटा देता हूँ,'<sup>14</sup> भले ही ये तीन पुरुष, नूह,

## यहेजकेल

दानिय्येल, और अन्यूब उसमें हों, अपनी धार्मिकता के द्वारा वे केवल अपने आप को ही बचा सकते हैं। "यहोवा परमेश्वर कहता है।"<sup>15</sup> "यदि मैं जंगली जानवरों को उस देश में से गुजरने के लिए कारण बनाऊं और वे उसे उजाड़ दें, और वह निर्जन हो जाए ताकि कोई भी उसके माध्यम से न गुजर सके जानवरों के कारण,"<sup>16</sup> भले ही ये तीन पुरुष उसमें हों, जैसा कि मैं जीवित हूँ।" यहोवा परमेश्वर कहता है, "वे अपने पुत्रों या पुत्रियों को नहीं बचा सकते। केवल वे ही बचेंगे, लेकिन देश उजाड़ होगा।"<sup>17</sup> या यदि मैं उस देश पर तलवार लाऊं और कहूँ, "देश के माध्यम से तलवार गुजरने दो।" और उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को हटा दूँ,<sup>18</sup> भले ही ये तीन पुरुष उसमें हों, जैसा कि मैं जीवित हूँ," यहोवा परमेश्वर कहता है, "वे अपने पुत्रों या पुत्रियों को नहीं बचा सकते, केवल वे ही बचेंगे।"<sup>19</sup> या यदि मैं उस देश के खिलाफ महामारी भेजूं और उसमें अपने क्रोध को करत में उड़ेल दूँ ताकि उसमें से मनुष्य और पशु को हटा दूँ,<sup>20</sup> भले ही नृह, दानिय्येल, और अन्यूब उसमें हों, जैसा कि मैं जीवित हूँ," यहोवा परमेश्वर कहता है, "वे अपने पुत्र या पुत्री को नहीं बचा सकते। वे केवल अपनी धार्मिकता के द्वारा अपने आप को ही बचा सकते हैं।"<sup>21</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "जब मैं अपने चार कठोर न्याय यरूशलेम के खिलाफ भेजता हूँ—तलवार, अकाल, जंगली जानवर, और महामारी—ताकि उसमें से मनुष्य और पशु को हटा दूँ तब क्या होगा!"<sup>22</sup> फिर भी, देखो, उसमें बचे हुए लोग होंगे जो बाहर लाए जाएंगे, दोनों पुत्र और पुत्रियाँ। देखो, वे तुम्हारे पास आएंगे, और तुम उनके आचरण और कार्यों को देखोगे; तब तुम उस विपत्ति के लिए सांत्वना पाओगे जो मैंने यरूशलेम के खिलाफ लाई है, उन सभी के लिए जो मैंने उस पर लाई है।<sup>23</sup> तब वे तुम्हें सांत्वना देंगे जब तुम उनके आचरण और कार्यों को देखोगे, और तुम जानोगे कि मैंने जो कुछ भी किया है वह व्यर्थ नहीं किया है," यहोवा परमेश्वर कहता है।

**15** तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, जंगल के पेड़ों के बीच बेल की लकड़ी अच्य लकड़ी से कैसे बेहतर है?"<sup>3</sup> क्या उससे कोई चीज़ बनाने के लिए लकड़ी ली जा सकती है, या क्या लोग उससे कोई खूंटी ले सकते हैं जिस पर कोई वस्तु लटकाई जा सके?<sup>4</sup> यदि उसे ईंधन के लिए आग में डाल दिया गया है, और आग ने उसके दोनों सिरों को खा लिया है और उसका मध्य भाग जल गया है, तो क्या यह किसी काम का है? <sup>5</sup> देखो, जब यह अखंड है, तब भी इससे कुछ नहीं बनाया जाता; तो कितना काम, जब आग ने इसे खा लिया है और यह जल गया है, तब भी इससे कुछ बनाया जा सकता है! <sup>6</sup> इसलिए, यहोवा

परमेश्वर यह कहता है: 'जैसे जंगल के पेड़ों के बीच बेल की लकड़ी, जिसे मैंने ईंधन के लिए आग को दिया है, वैसे ही मैंने यरूशलेम के निवासियों को सौंप दिया है,'<sup>7</sup> और मैं अपना मुख उनके विरुद्ध करूँगा। यद्यपि वे आग से बाहर आए हैं, फिर भी आग उन्हें खा जाएगी। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैं अपना मुख उनके विरुद्ध करूँगा।<sup>8</sup> इसलिए मैं इस भूमि को उजाड़ कर दूँगा, क्योंकि उन्होंने विश्वासघात किया है," यहोवा परमेश्वर की घोषणा है।

**16** तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम को उसके धृणित कर्मों से अवगत कराओ।"<sup>3</sup> और कहो, यहोवा परमेश्वर यरूशलेम से यह कहता है: 'तुम्हारी उत्पत्ति और तुम्हारा जन्म कनारा माता देश से है, तुम्हारा पिता एमोरी था और तुम्हारी माता हीती थी।'<sup>4</sup> जहां तक तुम्हारे जन्म का सवाल है, जिस दिन तुम पैदा हुए थे, तुम्हारी नाल नहीं काटी गई थी, न ही तुम्हें सफाई के लिए पानी से धोया गया था; तुम्हें न नमक से रागड़ा गया था और न कपड़ों में लपेटा गया था।<sup>5</sup> कोई भी अंख तुम पर दया से नहीं देखी कि तुम्हारे लिए ये काम कर सके; बल्कि, तुम्हें खुले मैदान में फेंक दिया गया, क्योंकि तुम्हें जन्म के दिन धृणा की गई थी।<sup>6</sup> जब मैं तुम्हारे पास से गुजरा और तुम्हें तुम्हारे खून में तड़पते देखा, तो मैंने तुमसे कहा जब तुम अपने खून में थे, 'जीवित रहो!' हाँ, मैंने तुमसे कहा जब तुम अपने खून में थे, 'जीवित रहो!'<sup>7</sup> मैंने तुम्हें मैदान के पौधों की तरह प्रचुर मात्रा में बनाया। फिर तुम बड़े हुए, ऊँचे हुए, और अच्छे आभूषणों के लिए उत्तम तक पहुँच गए; तुम्हारे स्तन विकसित हो गए और तुम्हारे बाल बढ़ गए। फिर भी तुम नग्न और नग्नी थे।<sup>8</sup> फिर मैं तुम्हारे पास से गुजरा और तुम्हें देखा, और देखो, तुम प्रेम के समय में थे, इसलिए मैंने अपना वस्त्र तुम्हारे ऊपर फैलाया और तुम्हारी नग्नता को ढाका। मैंने तुमसे शाश्पथ ली और तुम्हारे साथ एक वाचा में प्रवेश किया।" यहोवा परमेश्वर कहता है, "तुम मेरे हो गए।"<sup>9</sup> तब मैंने तुम्हें पानी से स्नान कराया, तुम्हारे खून को तुमसे धोया, और तुम्हें तेल से अभिषेक किया।<sup>10</sup> मैंने तुम्हें कढाईदार कपड़े पहनाए और तुम्हारे पैरों में उत्तम चमड़े के सैंडल डाले; मैंने तुम्हें उत्तम मलमल से लपेटा और रेशम से ढाका।<sup>11</sup> मैंने तुम्हें आभूषणों से सजाया, तुम्हारी कलाईयों में कंगन डाले, और तुम्हारी गर्दन में हार पहनाया।<sup>12</sup> मैंने तुम्हारी नाक में अंगूष्ठी, तुम्हारे कानों में बालियाँ, और तुम्हारे सिर पर सुंदर मुकुट भी रखा।<sup>13</sup> इस प्रकार तुम सोने और चांदी से सजित थी, और तुम्हारे कपड़े उत्तम मलमल, रेशम, और कढाईदार कपड़े थे। तुमने उत्तम आटा, शहद, और तेल खाया; इसलिए तुम अत्यधिक

## यहेजकेल

सुंदर हो गई और राजसी बन गई।<sup>14</sup> तब तुम्हारी प्रसिद्धि तुम्हारी सुंदरता के कारण राष्ट्रों में फैल गई, क्योंकि यह मेरी शोभा के कारण पूर्ण थी, जो मैंने तुम पर डाली," यहोवा परमेश्वर कहता है।<sup>15</sup> "लेकिन तुमने अपनी सुंदरता पर भरोसा किया और अपनी प्रसिद्धि का उपयोग वेश्या बनने के लिए किया। तुमने अपने अश्लील कर्मों को हर राहगीर पर उंडेल दिया जिसे यह बुधा सकता था।<sup>16</sup> तुमने अपने कुछ कपड़े लिए, अपने लिए विभिन्न रंगों की ऊँची जगहें बनाईं, और उन पर वेश्यावृत्ति की, जो नहीं होनी चाहिए और न ही कभी होनी चाहिए।<sup>17</sup> तुमने अपने सुंदर आभूषण भी लिए जो मेरे सोने और चांदी से बने थे, जो मैंने तुम्हें दिए थे, और अपने लिए पुरुष मूर्तियाँ बनाई ताकि तुम उनके साथ वेश्यावृत्ति कर सको।<sup>18</sup> फिर तुमने अपने कढ़ाइदार कपड़े लिए और उन्हें ढक दिया, और उनके सामने मेरा तेल और मेरी धूप चढ़ाई।<sup>19</sup> इसके अलावा, मेरी रोटी जो मैंने तुम्हें खिलाया, तुमने उनके सामने एक सुखद सुगंध के रूप में चढ़ाया; ऐसा हुआ," यहोवा परमेश्वर कहता है।<sup>20</sup> "इसके अलावा, तुमने अपने पुरुषों और पुरियों को जिन्हें तुमने मेरे लिए जन्म दिया था, मूर्तियों के लिए बलिदान कर दिया ताकि वे खाए जाएं। क्या तुम्हारे अश्लील कर्म पर्याप्त नहीं थे?"<sup>21</sup> तुमने मेरे बच्चों को मार डाला और उन्हें आग में से गुजार कर मूर्तियों के लिए चढ़ाया।<sup>22</sup> और तुम्हारे सभी धृषित कर्मों और वेश्यावृत्ति के अलावा, तुमने अपने युवावस्था के दिनों को याद नहीं किया, जब तुम नम्र और नंगे थे और अपने खुन में तड़प रहे थे।<sup>23</sup> फिर तुम्हारी सारी दुष्टता के बाद (हाय, हाय तुम्हारे लिए! यहोवा परमेश्वर कहता है),<sup>24</sup> तुमने अपने लिए एक मंदिर बनाया और हर सार्वजनिक चौक में एक ऊँची जगह बनाई।<sup>25</sup> तुमने हर गली के शुरू में अपनी ऊँची जगहें बनाईं और अपनी सुंदरता को धृषित बना दिया; और तुमने हर राहगीर के लिए अपने पैरों को फैलाया ताकि तुम अपने अश्लील कर्मों को बढ़ा सको।<sup>26</sup> तुमने अपने कामुक पड़ासियों मिसियों के साथ भी वेश्यावृत्ति की, और मुझे क्रोधित करने के लिए अपने अश्लील कर्मों को बढ़ाया।<sup>27</sup> इसलिए, देखो, मैंने तुम्हारे खिलाफ आपना हाथ बढ़ाया और तुम्हारे भोजन की आपूर्ति को घटा दिया, और मैंने तुम्हें उन लोगों की इच्छा के लिए सौंप दिया जो तुमसे धृणा करते हैं, पलिशितयों की बेटियाँ, जो तुम्हारे अश्लील आचरण से शर्मिंदा हैं।<sup>28</sup> तुमने अस्सीरियों के साथ भी वेश्यावृत्ति की क्योंकि तुम संतुष्ट नहीं थीं; तुमने उनके साथ वेश्यावृत्ति की और फिर भी संतुष्ट नहीं हुई।<sup>29</sup> तुमने व्यापारियों के देश, कलदिया के साथ अपने अश्लील कर्मों को बढ़ाया, और फिर भी इससे भी तुम संतुष्ट नहीं हुई।<sup>30</sup> "तुम्हारा हृदय

कितना दुखी है," यहोवा परमेश्वर कहता है, "जब तुम ये सब काम करती हो, एक बेशर्म वेश्या के कार्य।<sup>31</sup> जब तुमने हर गली के शुरू में अपना मंदिर बनाया और हर सार्वजनिक चौक में अपनी ऊँची जगह बनाई, फिर भी तुम वेश्या जैसी नहीं थीं, क्योंकि तुमने भूगतान को तुच्छ समझा।<sup>32</sup> तुम व्यभिचारिणी पती हो, जो अपने पते के बजाय अजनबियों को लेती हो।<sup>33</sup> पुरुष सभी वेश्याओं को उपहार देते हैं, लेकिन तुम अपने सभी प्रेमियों को अपने उपहार देती हो ताकि उन्हें हर दिशा से तुम्हारे पास आने के लिए रिश्वत दे सको।<sup>34</sup> इसलिए तुम अपने अश्लील कर्मों में उन स्त्रियों से भिन्न हो, क्योंकि कोई भी तुम्हारी तरह वेश्या नहीं बनता, क्योंकि तुम भूगतान देती हो और तुम्हें कोई भूगतान नहीं दिया जाता; इसलिए तुम विपरित हो।"<sup>35</sup> इसलिए, वेश्या, यहोवा का वचन सुनो।<sup>36</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि तुम्हारी अश्लीलता उंडेली गई और तुम्हारी नग्रता तुम्हारे अश्लील कर्मों के माध्यम से तुम्हारे प्रेमियों के साथ और तुम्हारी सभी धृषित मूर्तियों के साथ प्रकट की गई, और क्योंकि तुम्हारे बच्चों के खून के कारण जो तुमने उन्हें दिए,<sup>37</sup> इसलिए, देखो, मैं तुम्हारे सभी प्रेमियों को जिन्हें तुमने प्रसन्न किया, सभी जिन्हें तुमने प्रेम किया और सभी जिन्हें तुमने धृणा कीं, उन्हें हर दिशा से तुम्हारे खिलाफ इकट्ठा करूँगा और तुम्हारी नग्रता को उनके सामने प्रकट करूँगा ताकि वे तुम्हारी सारी नग्रता देख सकें।<sup>38</sup> इसलिए मैं तुम्हारा न्याय करूँगा जैसे उन स्त्रियों का न्याय किया जाता है जो व्यभिचार करती हैं या खन बहाती हैं, और मैं तुम पर क्रोध और ईर्ष्या का खन लाऊंगा।<sup>39</sup> मैं तुम्हें उनके हवाते भी कर द्वांगा, और वे तुम्हारे मंदिरों को गिरा देंगे, तुम्हारी ऊँची जगहों को धस्त कर देंगे, तुम्हारे कपड़े उतार देंगे, तुम्हारे सुंदर आभूषण ले लेंगे, और तुम्हें नम्र और नंगी छोड़ देंगे।<sup>40</sup> वे तुम्हारे खिलाफ एक भीड़ को उकसाएंगे, और वे तुम्हें परशरवाह करेंगे और अपनी तलवारों से तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।<sup>41</sup> वे तुम्हारे घरों की आग से जला देंगे और तुम्हारे खिलाफ कई स्त्रियों के सामने न्याय करेंगे। तब मैं तुम्हारे अश्लील कर्मों का अंत कर द्वांगा, और तुम अपने प्रेमियों को अब और भूगतान नहीं करोगी।<sup>42</sup> इसलिए मैं तुम्हारे खिलाफ अपने क्रोध को संतुष्ट करूँगा, और मेरी ईर्ष्या तुम्हें छोड़ देगी; मैं शांत हो जाऊंगा और अब और क्रोधित नहीं रहूँगा।<sup>43</sup> क्योंकि तुमने अपने युवावस्था के दिनों को याद नहीं किया और इन सभी बीजों से मुझे क्रोधित किया, देखो, मैं बदले में तुम्हारे आचरण को तुम्हारे अपने सिर पर लाऊंगा," यहोवा परमेश्वर कहता है, "ताकि तुम इस घोर पाप को अपने सभी अन्य धृषित कर्मों के अलावा न करो।<sup>44</sup> देखो, जो भी कहावतें कहता है, वह तुम्हारे खिलाफ यह

## यहेजकेल

कहावत कहेगा, 'जैसी माँ, वैसी बेटी।'<sup>45</sup> तुम अपनी माँ की बेटी हो, जिसने अपने पति और बच्चों से घृणा की। तुम अपनी बहनों की बहन भी हो, जिन्होंने अपने पतियों और बच्चों से घृणा की। तुम्हारी माँ हिती थी और तुम्हारा पिता एमोरी।<sup>46</sup> अब तुम्हारी बड़ी बहन सामरिया है, जो तुम्हारे उत्तर में अपनी बेटियों के साथ रहती है; और तुम्हारी छोटी बहन, जो तुम्हारे दक्षिण में रहती है, सदोम है अपनी बेटियों के साथ।<sup>47</sup> फिर भी तुमने केवल उनके मार्गों में नहीं चलीं या उनके घृणित कर्म नहीं किए; लेकिन, जैसे कि वह बहुत कम था, तुमने अपने सभी आचरण में उनसे अधिक भ्रष्ट आचरण किया।<sup>48</sup> जैसा कि मैं जीवित हूँ,<sup>49</sup> यहोवा परमेश्वर कहता है, "सदोम, तुम्हारी बहन, और उसकी बेटियों ने वैसा नहीं किया जैसा तुम और तुम्हारी बेटियों ने किया है।"<sup>50</sup> देखो, यह तुम्हारी बहन सदोम का अपराध था: अहंकार, प्रचुर भोजन, और लापरवाह आराम उसका और उसकी बेटियों का था; फिर भी उसने गरीबों और जरूरतमंदों की मदद नहीं की।<sup>51</sup> इसलिए मैंने उन्हें हटा दिया जब मैंने इसे देखा।<sup>52</sup> इसके अलावा, सामरिया ने तुम्हारे पापों का आधा भी नहीं किया है, क्योंकि तुमने अपने घृणित कर्मों को उनसे अधिक बढ़ा दिया है। इसलिए तुमने अपने सभी घृणित कर्मों के द्वारा अपनी बहनों को धर्मी बना दिया है जो तुमने किए हैं।<sup>53</sup> इसके अलावा, अपनी लज्जा सही, क्योंकि तुमने अपनी बहनों के लिए न्याय को अनुकूल बना दिया है। क्योंकि तुम्हारे पापों के कारण जिसमें तुमने उनसे अधिक घृणित कर्म किए, वे तुमसे अधिक धर्मी हैं। इसलिए लजित भी हो, और अपनी लज्जा सही, क्योंकि तुमने अपनी बहनों को धर्मी बना दिया है।<sup>54</sup> फिर भी, मैं उनकी बंधुआई को बहाल करूँगा, सदोम और उसकी बेटियों की बंधुआई, सामरिया और उसकी बेटियों की बंधुआई, और उनके साथ तुम्हारी अपनी बंधुआई,<sup>55</sup> ताकि तुम अपनी लज्जा सही और उन सभी के लिए लजित हो जो तुमने किया है जब तुम उनके लिए सत्त्वाना बनोगे।<sup>56</sup> तुम्हारी बहनें, सदोम अपनी बेटियों के साथ और सामरिया अपनी बेटियों के साथ, अपनी पूर्व स्थिति में लौट आएंगी, और तुम अपनी बेटियों के साथ अपनी पूर्व स्थिति में लौट आओगी।<sup>57</sup> जहां तक तुम्हारी बहन सदोम का सवाल है, क्या वह तुम्हारे मुंह से उस दिन में नहीं कही गई थी जब तुम गर्व में थीं,<sup>58</sup> इससे पहले कि तुम्हारी दुष्टता का पर्दाफाश हुआ? इसलिए अब तुम आराम की बेटियों और उसके चारों ओर की सभी को लिए, और पलिस्तियों की बेटियों के लिए—तुम्हारे चारों ओर की सभी जो तुमसे घृणा करती हैं, एक लज्जा बन गई हो।<sup>59</sup> तुमने अपने घोर पाप और घृणित कर्मों की सजा भुगती है।" यहोवा

कहता है।<sup>60</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "मैं भी तुम्हारे साथ वैसा ही करूँगा जैसा तुमने किया है, तुम जिन्होंने वाचा को तोड़कर शपथ का तिरस्कार किया है।<sup>61</sup> फिर भी, मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा को तुम्हारे युवावस्था के दिनों में याद करूँगा, और मैं तुम्हारे साथ एक अनन्त वाचा स्थापित करूँगा।<sup>62</sup> तब तुम अपने मार्गों को याद करोगी और लजित होगी जब तुम अपनी बहनों को प्राप्त करोगी, अपनी बड़ी और अपनी छोटी; और मैं उन्हें तुम्हारे पुत्रियों के रूप में दूंगा, लेकिन तुम्हारी वाचा के कारण नहीं।<sup>63</sup> इसलिए मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करूँगा, और तुम जानोगी कि मैं यहोवा हूँ, ताकि तुम याद करो और लजित हो, और अपनी लज्जा के कारण फिर कभी अपना मुंह न खोलो, जब मैंने तुम्हें उन सभी के लिए क्षमा कर दिया जो तुमने किया है," यहोवा परमेश्वर कहता है।

**17** तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, इसाएल के घराने से एक पहेली पूछो और एक दृष्टांत प्रस्तुत करो, ३ और कहो, 'प्रभु यहोवा यह कहता है: 'एक बड़ा उकाब, बड़े पंखों वाला, लंबे पंखों वाला, और कई रंगों के पूर्ण पंखों वाला लेबानोन आया और देवदार के शीर्ष को ले लिया।<sup>4</sup> उसने उसकी सबसे ऊँची शाखा को तोड़ लिया और व्यापारियों की भूमि में ते गया; उसने इसे व्यापारियों के नगर में रखा।<sup>5</sup> उसने भूमि के कुछ बीज भी लिए और उसे उपजाऊ मिट्टी में बोया। उसने इसे प्रचुर जल के पास रखा; उसने इसे एक विलो की तरह लगाया।<sup>6</sup> तब यह अंकुरित हुआ और एक नीची, फैलने वाली बेल बन गई जिसकी शाखाएँ उसकी ओर मुड़ी हुई थीं, परन्तु उसकी जड़ें उसकी नीचे रहीं। इसलिए यह एक बेल बन गई और शाखाएँ उत्पन्न करे, फल लाए, और एक शानदार बेल बने।"<sup>7</sup> कहो, प्रभु यहोवा यह कहता है: "क्या यह फल-फूल सकेगी? क्या वह इसकी जड़ों को नहीं उखाड़ेगा और इसके फल को नहीं काटेगा ताकि यह मुरझा जाए? और न तो बड़ी शक्ति से और न ही बहुत से लोगों द्वारा इसे फिर से इसकी जड़ों से उठाया जा सकता है।<sup>10</sup> हालांकि यह बोई गई है, क्या यह फल-फूल सकेगी? क्या यह पूरी तरह से मुरझा नहीं जाएगी जब पूर्ण हवा इसे लगेगी? यह उन बिस्तरों पर मुरझा जाएगी जहाँ यह

## यहेजकेल

उगी थी।<sup>11</sup> इसके अलावा, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>12</sup> "अब विद्रोही धराने से कहो, 'क्या तुम नहीं जानते कि ये बातें क्या अर्थ रखती हैं?' कहो, देखो, बाबुल का राजा यरूशलेम आया, उसके राजा और नेताओं को ले गया, और उन्हें बाबुल में अपने पास ले गया।<sup>13</sup> उसने राजवंश के एक व्यक्ति को लिया और उसके साथ एक वाचा की, उसे शापथ दिलाई। उसने देश के शक्तिशाली लोगों को भी हटा दिया,<sup>14</sup> ताकि राज्य नम्र हो, अपने आप को ऊँचा न करे, परन्तु उसकी वाचा को बनाए रखे ताकि यह जारी रह सके।<sup>15</sup> परन्तु उसने मिस के पास अपने दूरों को भेजकर उसके विरुद्ध विद्रोह किया ताकि वे उसे खोड़े और बहुत सी सेना दें। क्या वह सफल होगा? क्या वह जो ऐसा करता है बच सकेगा? क्या वह वास्तव में वाचा को तोड़कर भी बच सकता है?<sup>16</sup> जैसा कि मैं जीवित हूँ, प्रभु यहोवा कहता है, 'वह बाबुल में मरेगा, उस राजा के स्थान पर जिसने उसे सिंहासन पर बैठाया, जिसकी शापथ उसने तुच्छ समझी और जिसकी वाचा उसने तोड़ी।<sup>17</sup> फिरैन अपनी शक्तिशाली सेना और बड़ी संगति के साथ युद्ध में उसकी मदद नहीं करेगा, जब ढलानें डाली जाएंगी और धराबंदी की दीवारें बनाई जाएंगी ताकि कई जीवन समाप्त हो जाए।<sup>18</sup> अब उसने वाचा को तोड़कर शापथ का तिरस्कार किया, और देखो, उसने प्रतिज्ञा में अपना हाथ दिया, फिर भी ये सब काम किए—वह नहीं बचेगा।"<sup>19</sup> इसलिए, यह प्रभु यहोवा कहता है: "जैसा कि मैं जीवित हूँ, निश्चित रूप से मेरी शापथ जिसे उसने तुच्छ समझा और मेरी वाचा जिसे उसने तोड़ा, मैं उसे उसके सिर पर लाऊंगा।<sup>20</sup> मैं उसके ऊपर अपना जाल फैलाऊंगा, और वह मेरे जाल में फँस जाएगा। तब मैं उसे बाबुल ले जाऊंगा और वहां उसके साथ उसके खिलाफ की गई विश्वासघात के संबंध में न्याय करूंगा।<sup>21</sup> उसकी सभी सेना के सभी चुने हुए लोग तलवार से गिरेंगे, और ऊँचे हुए हर दिया में बिखर जाएंगे; और तुम जानेंगे कि मैं, यहोवा, ने यह कहा है।"<sup>22</sup> यह प्रभु यहोवा कहता है: "मैं भी देवदार के ऊँचे शीर्ष से एक शाखा लूंगा और उसे लगाऊंगा; मैं उसकी सबसे ऊँची शाखाओं में से एक को माल शाखा को तोड़कर एक ऊँचे और ऊँचे पर्वत पर लगाऊंगा।<sup>23</sup> इसाएल के ऊँचे पर्वत पर मैं इसे लगाऊंगा, ताकि यह शाखाएँ उत्पन्न करे और फल लाए और एक शानदार देवदार बने। और हर प्रकार के पक्षी इसके नीचे बसेरा करेंगे; वे इसकी शाखाओं की छाया में बसेरा करेंगे।<sup>24</sup> मैदान के सभी पेड़ जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, मैं ऊँचे पेड़ को नीचे लाता हूँ, नीचे पेड़ को ऊँचा करता हूँ, हरे पेड़ को सूखा करता हूँ, और सूखे पेड़ को हरा-भरा करता हूँ। मैं यहोवा हूँ, मैंने कहा है, और मैं इसे पूरा करूँगा।"

**18** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "तुम इसाएल की भूमि के विषय में यह कहावत क्यों कहते हो, पिता खट्टे अग्रस खाते हैं, परन्तु बच्चों के दाँत खट्टे हो जाते हैं?<sup>3</sup> जैसा मैं जीवित हूँ," प्रभु यहोवा कहता है, "तुम इस कहावत को इसाएल में अब और नहीं कहोगे।<sup>4</sup> देखो, सब प्राण मेरे हैं; पिता का प्राण और पुत्र का प्राण भी मेरा है। जो प्राण पाप करता है, वही मरेगा।<sup>5</sup> परन्तु यदि कोई मनुष्य धर्मी है और न्याय और धर्म का पालन करता है,<sup>6</sup> यदि वह पर्वतों पर स्थित वेदियों पर नहीं खाता या इसाएल के घर के मूर्तियों की ओर अपनी आँखें नहीं उठाता, या अपने पड़ोसी की पत्नी को अशुद्ध नहीं करता या मासिक धर्म के समय स्त्री के पास नहीं जाता—<sup>7</sup> और यदि वह किसी पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु ऋणी को उसकी प्रतिज्ञा लौटाता है, चोरी नहीं करता, परन्तु भूखे को अपनी रोटी देता है और नगर को वस्त पहनाता है,<sup>8</sup> यदि वह ब्याज पर धन नहीं देता या बढ़ोत्तरी नहीं लेता, यदि वह अन्याय से अपने हाथ को रोकता है और लोगों के बीच सच्चा न्याय करता है,<sup>9</sup> यदि वह मेरी विधियों में चलता है और मेरी विधियों का पालन करता है ताकि विश्वासघात बना रहे—वह धर्मी है और अवश्य जीवित रहेगा," प्रभु यहोवा कहता है।<sup>10</sup> "फिर भी, उसका एक हिसक पुत्र हो सकता है जो खून बहाता है और इन बातों में से किसी को अपने भाई के साथ करता है,<sup>11</sup> यद्यपि उसने स्वयं इनमें से कोई भी काम नहीं किया—वह पर्वतों पर स्थित वेदियों पर खाता है, अपने पड़ोसी की पत्नी को अशुद्ध करता है,<sup>12</sup> गरीब और जरूरतमंद पर अत्याचार करता है, चोरी करता है, प्रतिज्ञा नहीं लौटाता, मूर्तियों की ओर अपनी आँखें उठाता है, और धृणित काम करता है,<sup>13</sup> ब्याज पर धन देता है और बढ़ोत्तरी लेता है—क्या वह जीवित रहेगा? वह जीवित नहीं रहेगा! उसने ये सभी धृणित काम किए हैं, वह अवश्य मारा जाएगा; उसका खून उसके ऊपर होगा।<sup>14</sup> "अब देखो, उसका एक पुत्र है जो अपने पिता के सभी पापों को देखता है जो उसने किए हैं, और उन्हें देखकर, वैसा नहीं करता।<sup>15</sup> वह पर्वतों पर स्थित वेदियों पर नहीं खाता, इसाएल के घर की मूर्तियों की ओर अपनी आँखें नहीं उठाता, या अपने पड़ोसी की पत्नी को अशुद्ध नहीं करता,<sup>16</sup> या किसी पर अत्याचार नहीं करता, या जो प्रतिज्ञा सुरक्षा के रूप में दी गई है उसे नहीं रखता, या चोरी नहीं करता, परन्तु वह भूखे को अपनी रोटी देता है और नगर को वस्त पहनाता है,<sup>17</sup> वह गरीब से अपने हाथ को रोकता है, ब्याज या बढ़ोत्तरी नहीं लेता, परन्तु मेरी विधियों का पालन करता है और मेरी विधियों में चलता है—वह अपने पिता के अपराध के कारण नहीं मरेगा, वह अवश्य जीवित रहेगा।<sup>18</sup> जहाँ तक उसके पिता का सवाल है, क्योंकि उसने जबरन

## यहेजकेल

वसूली की, अपने भाई को लूटा, और अपनी प्रजा के बीच जो अच्छा नहीं है वह किया, देखो, वह अपने अपराध के कारण मरेगा।<sup>19</sup> “फिर भी तुम कहते हो, पुत्र का पिता के अपराध का दंड क्यों नहीं भुगतेगा?

चाहिए? जब पुत्र ने न्याय और धर्म का पालन किया है, मेरी सभी विधियों का पालन किया है और उन्हें किया है, वह अवश्य जीवित रहेगा।<sup>20</sup> जो व्यक्ति पाप करता है वह मरेगा। पुत्र पिता के अपराध का दंड नहीं भुगतेगा, न ही पिता पुत्र के अपराध का दंड भुगतेगा; धर्मी की धार्मिकता उस पर होगी, और दुष्ट की दुष्टता उस पर होगी।<sup>21</sup> “परन्तु यदि दुष्ट व्यक्ति अपने सभी पापों से जो उसने किए हैं, फिर जाता है और मेरी सभी विधियों का पालन करता है और न्याय और धर्म का पालन करता है, वह अवश्य जीवित रहेगा, वह नहीं मरेगा।<sup>22</sup> उसके द्वारा किए गए सभी अपराधों को उसके खिलाफ याद नहीं किया जाएगा; क्योंकि उसने जो धार्मिकता की है, उसके कारण वह जीवित रहेगा।<sup>23</sup> क्या मुझे दुष्ट की मृत्यु में कोई आनंद है? प्रभु यहोवा कहता है, “बल्कि वह अपनी राहों से फिर जाए और जीवित रहे?”<sup>24</sup> परन्तु जब एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता से फिर जाता है, अन्याय करता है, और उन सभी धृष्टिगत कार्यों को करता है जो एक दुष्ट व्यक्ति करता है, क्या वह जीवित रहेगा? उसके द्वारा किए गए सभी धार्मिक कार्यों को याद नहीं किया जाएगा; उसके विश्वासघात और उसके द्वारा किए गए पाप के कारण, वह मरेगा।<sup>25</sup> “फिर भी तुम कहते हो, प्रभु का मार्ग सही नहीं है।” अब सुनो, इसाएल के घराने! क्या मेरा मार्ग सही नहीं है? क्या यह तुम्हारे मार्ग नहीं है जो सही नहीं है?<sup>26</sup> जब एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता से फिर जाता है और अन्याय करता है, और उसके कारण मर जाता है, तो वह अपने द्वारा किए गए अन्याय के कारण मरता है।<sup>27</sup> परन्तु जब एक दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता से फिर जाता है जो उसने की है और न्याय और धर्म का पालन करता है, वह अपने जीवन को बचाएगा।<sup>28</sup> क्योंकि उसने विचार किया और अपने द्वारा किए गए सभी अपराधों से फिर गया, वह अवश्य जीवित रहेगा; वह नहीं मरेगा।<sup>29</sup> परन्तु इसाएल का घराना कहता है, “प्रभु का मार्ग सही नहीं है!” क्या मेरे मार्ग सही नहीं हैं जो सही नहीं है?<sup>30</sup> “इसलिए मैं तुम्हारा न्याय करूँगा, इसाएल का घराना, प्रयेक को उसके आचरण के अनुसार,” प्रभु यहोवा कहता है। “पश्चाताप करो और अपने सभी अपराधों से फिर जाओ, ताकि गलत काम तुम्हारे लिए ठोकर का कारण न बने।<sup>31</sup> अपने द्वारा किए गए सभी अपराधों को अपने से दूर केंद्रों और अपने लिए एक नया हृदय और एक नई आत्मा बनाओ! क्योंकि तुम क्यों मरोगे, इसाएल का

घराना? <sup>32</sup> क्योंकि मुझे किसी की मृत्यु में कोई आनंद नहीं है जो मरता है.” प्रभु यहोवा कहता है। “इसलिए, पश्चाताप करो और जीवित रहो!”

**19** “तू इसाएल के नेताओं के लिए विलाप का गीत गा।<sup>2</sup> और कह, ‘तेरी माता क्या थी? सिंहों के बीच एक सिंही। वह जवान सिंहों के बीच लेटी, उसने अपने शावकों को पाला।<sup>3</sup> जब उसने अपने एक शावक को बड़ा किया, वह जवान सिंह बन गया, और उसने अपने शिकार को फाड़ना सीखा; उसने लोगों को खा लिया।<sup>4</sup> तब राष्ट्रों ने उसके बारे में सुना; वह उनके जाल में फंस गया, और वे उसे हुकों के साथ मिस्र देश में ले गए।<sup>5</sup> जब उसने देखा कि वह व्यर्थ प्रतीक्षा कर रही है, कि उसकी आशा खो गई है, उसने अपने एक और शावक को लिया और उसे जवान सिंह बन दिया।<sup>6</sup> और वह सिंहों के बीच घूमता रहा, वह जवान सिंह बन गया; उसने अपने शिकार को फाड़ना सीखा, उसने लोगों को खा लिया।<sup>7</sup> उसने उनके महलों को नष्ट कर दिया और उनके नगरों को उजाड़ दिया; और भूमि और उसकी भरपूरता उसके गर्जन की आवाज से भयभीत हो गई।<sup>8</sup> तब राष्ट्रों ने उसके खिलाफ चारों ओर से अपने प्रांतों से आक्रमण किया, और उन्होंने उसके ऊपर अपना जाल फैलाया; वह उनके जाल में फंस गया।<sup>9</sup> उन्होंने उसे हुकों के साथ लकड़ी के कॉर्लर में डाल दिया और उसे बाबूल के राजा के पास ले गए; उन्होंने उसे शिकार के जालों में लाया ताकि उसकी आवाज इसाएल के पहाड़ों पर फिर न सुनी जाए।<sup>10</sup> तेरी माता तेरे दाख की बारी में एक बेल के समान थी, जो जल के पास लगाई गई थी; वह फलदायी और शाखाओं से भरी हुई थी क्योंकि जल प्रचुर मात्रा में था।<sup>11</sup> और उसमें मजबूत शाखाएँ भी जो शासकों के राजदंड के लिए उपयुक्त थीं, और उसकी ऊँचाई बादलों से ऊपर उठी हुई थी ताकि उसकी ऊँचाई उसके शाखाओं के समूह के साथ देखी जा सके।<sup>12</sup> परन्तु वह क्रीध में उखाड़ दी गई; उसे भूमि पर गिरा दिया गया, और पूर्वी हवा ने उसके फल को सुखा दिया। उसकी मजबूत शाखा को तोड़ दिया गया ताकि वह मुरझा गई; आग ने उसे भस्म कर दिया।<sup>13</sup> और अब वह जंगल में, एक सूखी और प्यासी भूमि में लगाई गई है।<sup>14</sup> और उसकी शाखा से आग निकल गई है; उसने उसकी अंकुर और फल को भस्म कर दिया है, ताकि उसमें कोई मजबूत शाखा न रहे, एक राजदंड के रूप में शासन करने के लिए।<sup>15</sup> यह एक विलाप का गीत है, और यह विलाप बन गया है।

**20** अब सातवें वर्ष, पांचवें महीने में, महीने के दसवें दिन, इसाएल के प्राचीनों में से कुछ लोग यहोवा से पूछते

## यहेजकेल

आए, और वे मेरे सामने बैठे।<sup>2</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>3</sup> "मनुष्य के पुत्र, इसाएल के प्राचीनों से कहो, प्रभु यहोवा यह कहता है: क्या तुम मुझसे पूछने आए हो? जैसा मैं जीवित हूँ, प्रभु यहोवा कहता है, मैं निश्चित रूप से तुम्हारे द्वारा पूछे जाने के लिए नहीं हूँ।"<sup>4</sup> क्या तुम उनका न्याय करोगे, क्या तुम उनका न्याय करोगे, मनुष्य के पुत्र? उन्हें उनके पिताओं के घृणित कार्यों का ज्ञान कराओ।<sup>5</sup> और उनसे कहो, "प्रभु यहोवा यह कहता है: जिस दिन मैंने इसाएल को चुना और याकूब के धराने के बंशजों से शापथ ली और मिस्र देश में उन्हें अपने बारे में बताया, जब मैंने उनसे शापथ ली, यह कहते हुए, "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"<sup>6</sup> उस दिन मैंने उनसे शापथ ली, उन्हें मिस्र देश से निकालकर एक ऐसे देश में ले जाने के लिए, जिसे मैंने उनके लिए चुना था, दूध और मधु की धाराओं से बहने वाला, जो सभी देशों की घृणित वस्तुओं को फेंक दो, और मिस्र के मूर्तियों से अपने आप को अशुद्ध मत करो: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"<sup>7</sup> लेकिन उन्होंने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया और मेरी सुनने को तैयार नहीं थे; उन्होंने से किसी ने भी अपनी आँखों की घृणित वस्तुओं को नहीं फेंका, न ही उन्होंने मिस्र के मूर्तियों को छोड़ा। तब मैंने अपने क्रोध को उन पर उंडेलने का निश्चय किया, मिस्र देश के बीच में अपने क्रोध को उन पर समाप्त करने के लिए।<sup>8</sup> लेकिन मैंने अपने नाम के खातिर ऐसा किया, कि वह उन जातियों की आँखों में अपवित्र न हो, जिनके बीच वे रहते थे, जिनके सामने मैंने उन्हें मिस्र देश से निकालकर अपने बारे में बताया।<sup>9</sup> इसलिए मैंने उन्हें मिस्र देश से निकालकर जंगल में ले आया।<sup>10</sup> और मैंने उन्हें अपनी विधियाँ दीं और उन्हें अपने नियमों की जानकारी दी, जिन्हें यदि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो वह उनके द्वारा जीवित रहेगा।<sup>11</sup> मैंने उन्हें अपने विश्रामदिन भी दिए, ताकि वे मेरे और उनके बीच एक चिर हों, ताकि वे जान सकें कि मैं यहोवा हूँ जो उन्हें अपवित्र करता हूँ।<sup>12</sup> लेकिन इसाएल के धराने से जंगल में मेरे विरुद्ध विद्रोह किया। उन्होंने मेरी विधियों में नहीं चले, और उन्होंने मेरे नियमों को अस्वीकार कर दिया, जिन्हें यदि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो वह उनके द्वारा जीवित रहेगा; और उन्होंने मेरे विश्रामदिनों को बहुत अपवित्र किया। तब मैंने जंगल में उन पर अपने क्रोध को उंडेलने का निश्चय किया, उन्हें नष्ट करने के लिए।<sup>13</sup> लेकिन मैंने अपने नाम के खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन जातियों की दृष्टि में अपवित्र न हो, जिनके सामने मैंने उन्हें निकालकर अपने बारे में बताया।<sup>14</sup> मैंने जंगल में उनसे शापथ ली कि मैं उन्हें उत्तम बालंगा, और उन्हें देशों में फैला दूँगा,<sup>15</sup> क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों का पालन नहीं किया, बल्कि मेरे विधियों को अस्वीकार कर दिया और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया, और उनकी आँखें उनके पिताओं के मूर्तियों पर थीं।<sup>16</sup> मैंने उन्हें ऐसे विधियाँ भी दीं जो अच्छी नहीं थीं, और ऐसे नियम जिनके द्वारा वे जीवित नहीं रह सकते थे;<sup>17</sup> और मैंने उन्हें उनके उपहारों के कारण अशुद्ध ठाराया, क्योंकि उन्होंने अपने सब पहलौठों को आग में से गुजारा, ताकि मैं उन्हें उजाड़ दूँ, ताकि वे जान सकें कि मैं यहोवा हूँ।<sup>18</sup> इसलिए, मनुष्य के पुत्र, इसाएल के धराने से कहो, प्रभु यहोवा यह कहता है, फिर भी, इस में तुम्हारे पिताओं ने मेरे प्रति अविश्वास करके मेरी निंदा की है।<sup>19</sup> जब मैंने उन्हें उस देश में लाया, जिसे मैंने उन्हें देने की शपथ ली थी, उन्होंने हर ऊँची पहाड़ी और हर हरी-भरी वृक्ष को देखा, और वहाँ उहोंने अपने चढ़ावे की उत्तेजना प्रस्तुत की। वहाँ भी उहोंने अपनी सुगंधित धूप और अपने पेय चढ़ावे डाले।<sup>20</sup> तब मैंने उनसे कहा, "वह ऊँचा स्थान क्या है जहाँ तुम जाते हो?" इसलिए उसका नाम आज तक बामा कहलाता है।<sup>21</sup> इसलिए इसाएल के धराने से

दूध और मधु की धाराओं से बहने वाला, जो सभी देशों की महिमा है,<sup>22</sup> क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों को अस्वीकार किया, और मेरी विधियों में नहीं चले; उन्होंने मेरे विश्रामदिनों को भी अपवित्र किया, क्योंकि उनका हृदय लगातार उनके मूर्तियों के पीछे चलता रहा।<sup>23</sup> फिर भी मेरी आँखें उत्तेज नष्ट करने के बजाय उहोंने बछां दिया, और मैंने जंगल में उनकी विनाश नहीं की।<sup>24</sup> इसके बजाय, मैंने जंगल में उनके बच्चों से कहा, "अपने पिताओं की विधियों में मत चलो और उनके नियमों का पालन मत करो और उनके मूर्तियों से अपने आप को अशुद्ध मत करो।<sup>25</sup> मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; मेरी विधियों में चलो और मेरे नियमों का पालन करो और उनका अनुसरण करो।<sup>26</sup> मेरे विश्रामदिनों को पवित्र करो, और वे मैं और तुम्हारे बीच एक चिर होंगे, ताकि तुम जान सको कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"<sup>27</sup> लेकिन बच्चों ने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया; उन्होंने मेरी विधियों में नहीं चले, न ही वे मेरे नियमों का पालन करने में सावधान थे, जिनका यादि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो वह उनके द्वारा जीवित रहेगा; उन्होंने मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया। इसलिए मैंने जंगल में उन पर अपने क्रोध को उंडेलने का निश्चय किया, उन्हें नष्ट करने के लिए।<sup>28</sup> लेकिन मैंने जंगल में उन पर अपने नाम के खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन जातियों की दृष्टि में अपवित्र न हो, जिनके सामने मैंने उन्हें निकालकर अपने बारे में बताया।<sup>29</sup> तब मैंने उनसे कहा, "वह ऊँचा स्थान क्या है जहाँ तुम जाते हो?" इसलिए उसका नाम आज तक बामा कहलाता है।<sup>30</sup> इसलिए इसाएल के धराने से

## यहेजकेल

कहो, 'प्रभु यहोवा यह कहता है: क्या तुम अपने पिताओं के मार्ग में चलकर अपने आप को अपवित्र करोगे और उनके धृणित वस्तुओं के पीछे व्यधिचार करोगे?' <sup>31</sup> जब तुम अपने उपहार चढ़ाते हो, जब तुम अपने पुत्रों को आग में से गुजारते हो, तुम अपने आप को आज तक अपने सब मूर्तियों से अपवित्र कर रहे हो। और क्या मैं तुम्हारे द्वारा पूछे जाने के लिए हूँ, इसाएल के घराने? जैसा मैं जीवित हूँ; 'प्रभु यहोवा कहता है, मैं निश्चित रूप से तुम्हारे द्वारा पूछे जाने के लिए नहीं हूँ'। <sup>32</sup> और जो तुम्हारे मन में आता है वह निश्चित रूप से नहीं होगा, जब तुम कहते हो: 'हम जातियों के समान होंगे, देशों के परिवारों के समान, लकड़ी और पत्थर की सेवा करते हुए।' <sup>33</sup> जैसा मैं जीवित हूँ; 'प्रभु यहोवा कहता है, 'एक शक्तिशाली हाथ और एक विस्तारित भुजा और उंडेला हुआ क्रोध के साथ, मैं निश्चित रूप से तुम्हारे ऊपर राजा बनूँगा।' <sup>34</sup> मैं तुम्हें लोगों से बाहर निकालूँगा और तुम्हें उन देशों से इकट्ठा करूँगा जहाँ तुम बिखरे हुए हो, एक शक्तिशाली हाथ और एक विस्तारित भुजा और उंडेला हुआ क्रोध के साथ, <sup>35</sup> और मैं तुम्हें लोगों के जंगल में लाऊँगा, और वहाँ मैं तुम्हारे साथ अमने-समने न्याय करूँगा।' <sup>36</sup> जैसा कि मैंने मिस्र देश के जंगल में तुम्हारे पिताओं के साथ न्याय किया, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ न्याय करूँगा; 'प्रभु यहोवा कहता है।' <sup>37</sup> मैं तुम्हें छड़ी के नीचे से गुजारूँगा, और मैं तुम्हें वाचा के बंधन में लाऊँगा; <sup>38</sup> और मैं तुम्हारे बीच से विद्रोहियों और जो मेरे विरुद्ध विद्रोह करते हैं, उन्हें निकाल दूँगा; मैं उन्हें उस देश से बाहर लाऊँगा जहाँ वे रहते हैं, लेकिन वे इसाएल के देश में प्रवेश नहीं करेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।' <sup>39</sup> जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, इसाएल के घराने; 'प्रभु यहोवा यह कहता है: 'जाओ, तुम में से हर एक अपने मूर्तियों की सेवा करो; लेकिन बाद में तुम निश्चित रूप से मेरी सुनोगे, और मेरे पवित्र नाम को अपने उपहारों और अपने मूर्तियों के साथ अपवित्र नहीं करोगे।' <sup>40</sup> क्योंकि मेरे पवित्र पर्वत पर, इसाएल के ऊँचे पर्वत पर, 'प्रभु यहोवा कहता है, 'वहाँ इसाएल का पूरा घराना, सभी, मझे देश में सेवा करेंगे; वहाँ मैं उन्हें स्वीकार करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारे चढ़ावे और तुम्हारे उपहारों में से उत्तम को, तुम्हारे सभी पवित्र वस्तुओं के साथ, माँगूँगा।' <sup>41</sup> एक सुर्याधित धूप के रूप में मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा, जब मैं तुम्हें लोगों से बाहर निकालूँगा और तुम्हें उन देशों से इकट्ठा करूँगा जहाँ तुम बिखरे हुए हो; और मैं तुम्हारे बीच में अपने आप को पवित्र दिखाऊँगा, जातियों की दृष्टि में।' <sup>42</sup> और तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ जब मैं तुम्हें इसाएल के देश में लाऊँगा, उस देश में जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने की शपथ ली थी। <sup>43</sup> वहाँ तुम अपने मार्गों और अपने सभी कार्यों को याद

करोगे जिनसे तुमने अपने आप को अपवित्र किया है; और तुम अपने आप को अपनी दृष्टि में धूमा करोगे उन सभी बुरे कार्यों के लिए जो तुमने किए हैं। <sup>44</sup> तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैंने तुम्हारे साथ अपने नाम के खातिर व्यवहार किया, न कि तुम्हारे बुरे मार्गों के अनुसार या तुम्हारे भृष्ट कार्यों के अनुसार, इसाएल के घराने; 'प्रभु यहोवा कहता है।' <sup>45</sup> अब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>46</sup> 'मनुष्य के पुत्र, अपना मुख दक्षिण की ओर कर, दक्षिण के विरुद्ध प्रवार कर, और नेगेव के मैदान के जंगल के विरुद्ध भविष्यवाणी कर, <sup>47</sup> और नेगेव के जंगल से कहो, यहोवा का वचन सुनो: 'प्रभु यहोवा यह कहता है: 'देखो, मैं तुम में आग जलाने जा रहा हूँ, और यह तुम्हारे हर होपेड को, साथ ही हर सूखे पेड़ को भस्म कर देगा; जलती हुई ज्वाला बुझाई नहीं जाएगी, और दक्षिण से उत्तर तक की पूरी सतह इससे सुलस जाएगी।' <sup>48</sup> और सभी मनुष्य देखेंगे कि मैंने, यहोवा ने इसे जलाया है; यह बुझाई नहीं जाएगी।' <sup>49</sup> तब मैंने कहा, 'हे प्रभु यहोवा! वे मेरे बारे में कह रहे हैं, 'क्या वह केवल दृष्टिंतों में नहीं बोल रहा है?''

**21** और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, यरूशलाम की ओर अपना मुख कर, और पवित्र स्थानों के विरुद्ध बोल, और इसाएल की भूमि के विरुद्ध भविष्यवाणी कर; <sup>3</sup> और इसाएल की भूमि से कह, 'यहोवा यह कहता है: देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, और मैं अपनी तलवार म्यान से खींचूँगा और तुम्हारे बीच से धर्मी और अर्थमी दोनों को काट डालूँगा।' <sup>4</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे बीच से धर्मी और अर्थमी दोनों को काट डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार म्यान से निकलकर दक्षिण से उत्तर तक सब प्राणियों के विरुद्ध जाएगी। <sup>5</sup> ताकि सब मनुष्य जान लें कि मैं, यहोवा, ने अपनी तलवार म्यान से खींची है। यह फिर से म्यान में नहीं जाएगी।' <sup>6</sup> जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मनुष्य के पुत्र, दृष्टि में कराहो। <sup>7</sup> और जब वे तुम्हारे कहें, 'तुम क्यों कराह रहे हो?' तो तुम कहो, 'उस समाचार के कारण जो आ रहा है; और हर दिल पिघल जाएगा, सब हाथ कमज़ोर हो जाएँगे, हर आत्मा बेहोश हो जाएगी, और सब घुटने पानी से भीग जाएँगे। देखो, यह आ रहा है और यह घटित होगा,' यह प्रभु यहोवा की घोषणा है।' <sup>8</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>9</sup> 'मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करो और कहो, 'यहोवा यह कहता है:

कहो, 'एक तलवार, एक तलवार तेज और चमकाई गई है।' <sup>10</sup> वह करने के लिए तेज की गई बिजली की तरह चमकने के लिए चमकाई गई।'

## यहेजकेल

या हम आनन्दित हैं, मेरे पुत्र का राजदंड हर पेड़ को  
ठुकरा रहा है?

<sup>11</sup> इसे चमकाने के लिए दिया गया है, हाथ में पकड़ने  
के लिए। तलवार तेज और चमकाई गई है, हत्यारे के  
हाथ में डालने के लिए।<sup>12</sup> खिलाओ और विलाप करो  
मनुष्य के पुत्र, क्योंकि यह मेरी प्रजा के विरुद्ध है, यह  
इसाएल के सभी नेताओं के विरुद्ध है। वे तलवार के  
हवाले कर दिए गए हैं मेरी प्रजा के साथ, इसलिए  
अपनी जाँध पर प्रहर करो।

<sup>13</sup> क्योंकि एक परीक्षा है—क्या होगा यदि तलवार जिसे  
राजदंड तुच्छ समझता है, जारी रहता है? यह प्रभु  
यहोवा की धोषणा है।

<sup>14</sup> “इसलिए, मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी करो और  
अपने हाथों को एक साथ ताली बजाओ; और तलवार  
को दीर्घी कर दो तीसरी बार, मारे गए लोगों के लिए  
तलवार। यह महान वध के लिए तलवार है जो उन्हें  
धेरती है।<sup>15</sup> ताकि उनके दिल पिघल जाएँ और कई  
गिर जाएँ उनके सभी फाटकों पर, मैंने चमकती  
तलवार दी है। औह, यह बिजली की तरह प्रहर करने  
के लिए बनाई गई है, यह वध के लिए तेज की गई है।

<sup>16</sup> अपने आप को तेज दिखाओ, दाएँ जाओ; अपने  
आप को सेट करो बाएँ जाओ, जहाँ भी तुम्हारी धार  
नियुक्त है।<sup>17</sup> मैं भी अपने हाथों को एक साथ ताली  
बजाऊँगा, और मैं अपने क्रोध को संतुष्ट करूँगा; मैं  
यहोवा, ने कहा है।”

<sup>18</sup> यहोवा का वचन मेरे पास फिर से आया, यह कहते  
हुए, <sup>19</sup> “अब तुम, मनुष्य के पुत्र, बाबुल के राजा की  
तलवार के आने के लिए दो रास्ते बनाओ; दोनों एक ही  
भूमि से आएँगे। एक संकेत पोस्ट बनाओ, इसे शहर के  
रास्ते के सिर पर रखो।<sup>20</sup> तुम अमोन के पुत्रों के रब्बा  
के लिए तलवार के आने का एक रास्ता चिह्नित करोगे,  
और यहदा के लिए, किलेबंद यस्तशलेम में।<sup>21</sup> क्योंकि  
बाबुल का राजा सङ्क के चौराहे पर, दो रास्तों के सिर  
पर, भविष्यवाणी करने के लिए खड़ा है, वह तीर हिलाता  
है, वह धरेलू मूर्तियों से परामर्श करता है, वह यकृत को  
देखता है।<sup>22</sup> उसके दाहिने हाथ में भविष्यवाणी आई,  
यस्तशलेम; तो इन वाले मेंहों को सेट करने के लिए, वध  
के लिए मुँह खोलने के लिए युद्ध का नारा उठाने के  
लिए, फाटकों के खिलाफ तोड़ने वाले मेंहों को सेट  
करने के लिए, एक धेराबंदी रैप को डालने के लिए, एक  
दीवार बनाने के लिए।<sup>23</sup> और यह उनके लिए उनकी  
ऑँखों में एक झूठी भविष्यवाणी की तरह होगा; उन्होंने

गंभीर शपथ खाई है। लेकिन वह उनकी दोष को स्मरण  
में लाता है, ताकि वे पकड़े जाएँ।<sup>24</sup> इसलिए, यह प्रभु  
यहोवा कहता है: ‘क्योंकि तुमने अपनी दोष को स्मरण में  
लाया है, जिसमें तुम्हारे अपराध प्रकट हो गए हैं ताकि  
तुम्हारे पाप तुम्हारे सभी कार्यों में देखे जाएँ—क्योंकि तुम  
स्मरण में आए हो, तुम हाथ से पकड़े जाओगे।’<sup>25</sup> और  
तुम, ओ मारे गए, दृष्टि, इसाएल के राजकुमार, जिसका  
दिन आ गया है, अंत के दंड के समय में,<sup>26</sup> यह प्रभु  
यहोवा कहता है: ‘पापड़ी को हटा दो और मुकुट को  
उतार दो; कुछ भी वैसा नहीं रहेगा जैसा था। नीच को  
ऊँचा करो और ऊँचे को नीचा करो।’<sup>27</sup> एक विनाश,  
एक विनाश, एक विनाश मैं इसे बनाऊँगा। यह तब तक  
नहीं होगा जब तक वह नहीं आता जिसका अधिकार है,  
और मैं इसे उसे ढूँगा।<sup>28</sup> और तुम, मनुष्य के पुत्र,  
भविष्यवाणी करो और कहो, ‘यह प्रभु यहोवा अमोन के  
पुत्रों और उनकी निंदा के विषय में कहता है।’ कहो:

‘एक तलवार, एक तलवार खींची गई है, वध के लिए  
तेज की गई है, भस्म करने के लिए बिजली की तरह  
चमकने के लिए—<sup>29</sup> जब वे तुम्हारे लिए झूठे दर्शन  
देखते हैं, जब वे तुम्हारे लिए झूठी भविष्यवाणी करते  
हैं— तुम्हें गले पर रखने के लिए दृष्टि जो मारे गए हैं  
जिनका दिन आ गया है, अंत के दंड के समय में।

<sup>30</sup> इसे स्यान में लौटाओ। जहाँ तुम बनाए गए थे,  
तुम्हारी उत्तरि की भूमि में, मैं तुम्हारा न्याय करूँगा।  
<sup>31</sup> मैं तुम पर अपनी क्रोध उंडेलूँगा; मैं अपने क्रोध की  
आग से तुम पर फूँकूँगा, और मैं तुम्हें निरदीयी लोगों के  
हवाले कर दूँगा, विनाश में कुशल।<sup>32</sup> तुम आग के  
लिए ईधन बनाओ, तुम्हारा खून भूमि के बीच में होगा।  
तुम्हें यद नहीं किया जाएगा, क्योंकि मैंने, यहोवा, ने  
कहा है।’

**22** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते  
हुए,<sup>2</sup> “और तू, हे मनुष्य के पुत्र, क्या तू न्याय करेगा, क्या  
तू उस खुनी नगर का न्याय करेगा? फिर उसके धृणित  
कार्यों को उसे दिखा दो।<sup>3</sup> और तू कहेगा, यहोवा  
परमेश्वर यह कहता है: एक नगर जो अपने बीच में खून  
बहाता है, ताकि उसका समय आ जाए, और जो मूर्तियाँ  
बनाता है ताकि वह अपने आप को अशुद्ध कर सके!<sup>4</sup>  
तू उस खून के कारण दोषी हो गया है जो तूने बहाया है,  
और उन मूर्तियों के कारण अशुद्ध हो गया है जो तूने  
बनाई हैं। इसलिए तूने अपने दिनों को निकट ला दिया है  
और अपने वर्षों में आ गया है, इसलिए मैंने तुझे जातियों  
के लिए अपमान और सभी देशों के लिए उपहास बना  
दिया है।<sup>5</sup> जो तेरे पास हैं और जो तुझसे दूर हैं, वे तुझे

## यहेजकेल

उपहास करेंगे, तू जो बदनाम है, अशांति से भरा हुआ।<sup>6</sup> देख, इसाएल के नेता, प्रत्येक अपनी शक्ति के अनुसार, तेरे बीच में खून बहाने के लिए रहे हैं।<sup>7</sup> उन्होंने तेरे बीच में पिता और माता का अपमान किया है। उन्होंने तेरे बीच में परदेशी को दबाया है, अनाथ और विधवा को अन्याय किया है।<sup>8</sup> तूने मेरी पवित्र वस्तुओं का तिरस्कार किया है और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया है।<sup>9</sup> तेरे बीच में निंदक पुरुष खून बहाने के लिए रहे हैं, और तेरे बीच में उन्होंने पर्वतों पर भोजन किया है। तेरे बीच में उन्होंने अश्रीलता की है।<sup>10</sup> उन्होंने तेरे बीच में अपने पिता की नग्नता को प्रकट किया है; उन्होंने उस स्त्री का अपमान किया है जो अपनी मासिक अशुद्धता में अशुद्ध है।<sup>11</sup> एक ने अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ घृणित काम किया है, दूसरे ने अपनी बड़ू की अश्रीलता से अपवित्र किया है, और तेरे बीच में एक ने अपनी बहन, अपने पिता की बेटी का अपमान किया है।<sup>12</sup> उन्होंने तेरे बीच में रिश्ता ली है खून बहाने के लिए; तूने ब्याज और लाभ लिया है, और तूने अपने पड़ोसियों को दबाकर चोट पहुंचाई है, और तूने मुझे भुल दिया है,<sup>13</sup> यहोवा परमेश्वर की यह घोषणा है। अब देख, मैं अपने हाथ से तेरे लाभ पर प्रहार करता हूँ जो दूरों कमाया है और तेरे बीच में खून बहाया है।<sup>14</sup> क्या तेरा हृदय सहन कर सकता है, या तेरे हाथ मजबूत रह सकते हैं उन दिनों में जब मैं तुझसे निपँगँगा? मैं, यहोवा, ने कहा है और मैं कार्य करूँगा।<sup>15</sup> मैं तुझे जातियों में खिखें दूंगा और तुझे देशों में फैलाऊंगा, और मैं तेरी अशुद्धता को तुझसे दूर करूँगा।<sup>16</sup> और तु जातियों की दृष्टि में अपने आप को अपवित्र करेगा, और तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।<sup>17</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>18</sup> 'हे मनुष्य के पुत्र, इसाएल का धर मेरे लिए कचरा बन गया है; वे सभी कांस्य, टिन, लोहा, और सीसा भट्टी में हैं; वे चांदी की मैल हैं।<sup>19</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'क्योंकि तुम सभी कचरा बन गए हो, देखो, मैं तुम्हें यरूशलेम के बीच में इकट्ठा करने जा रहा हूँ।'<sup>20</sup> जैसे वे चांदी, कांस्य, लोहा, सीसा, और टिन को भट्टी में इकट्ठा करते हैं ताकि उस पर आग फूंककर उसे पिघलाया जा सके, वैसे ही मैं तुम्हें अपने क्रोध और अपने रोष में इकट्ठा करूँगा, और मैं तुम्हें वहां रखकर पिघलाऊंगा।<sup>21</sup> मैं तुम्हें इकट्ठा करूँगा और अपने रोष की आग से तुम पर पूँक मारूँगा, और तुम उसके बीच में पिघल जाओगे।<sup>22</sup> जैसे चांदी भट्टी में पिघलती है, वैसे ही तुम उसके बीच में पिघल जाओगे; और तुम जान लोगे कि मैं, यहोवा, ने तुम पर अपना रोष उड़ेला है।<sup>23</sup> और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>24</sup> 'हे मनुष्य के पुत्र, उससे कह, 'तू एक भूमि है जो न तो साफ है और न ही क्रोध के दिन में उस पर वर्षा हुई है।'

<sup>25</sup> उसके बीच में उसके भविष्यद्वक्ताओं की साजिश है जैसे शिकार को फाड़ने वाला गरजता हुआ सिंह। उन्होंने जीवों को निगल लिया है, खजाना और कीमती वस्तुएं ली हैं, और उसके बीच में कई विधवाएं बना दी हैं।<sup>26</sup> उसके याजकों ने मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है; उन्होंने पवित्र और साधारण के बीच कोई भेद नहीं किया है, और उन्होंने अशुद्ध और शुद्ध के बीच का अंतर नहीं सिखाया है; और उन्होंने मेरे विश्रामदिनों से अपनी आँखें छिपाई हैं, और मैं उनके बीच अपवित्र हो गया हूँ।<sup>27</sup> उसके नेता उसके भीतर शिकार को फाड़ने वाले भैंडियों की तरह हैं, खून बहाने और जीवों को नष्ट करने के लिए ताकि बैईमान लाभ कमा सकें।<sup>28</sup> और उसके भविष्यद्वक्ताओं ने उनके लिए झूठी घटियाँ देखी हैं और झूठी भविष्याणियाँ की हैं, यह कहते हुए, 'यह यहोवा वरमेश्वर कहता है; जब यहोवा ने नहीं कहा है।' 29 भूमि के लोगों ने अत्याचार किया है और डकैती की है, और उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के साथ अन्याय किया है और परदेशी को बिना न्याय के दबाया है।<sup>30</sup> मैंने उनके बीच में एक व्यक्ति की खोज की जो दीवार को बनाए रखे और मेरे सामने भूमि के लिए अंतर में खड़ा हो ताकि मैं उसे नष्ट न करूँ; परंतु मुझे कोई नहीं मिला।<sup>31</sup> इसलिए मैंने उन पर अपना क्रोध उंडेल दिया है; मैंने उन्हें अपने रोष की आग से भस्म कर दिया है; मैंने उनके मार्ग को उनके सिर पर लाया है," यहोवा परमेश्वर की यह घोषणा है।

## 23

फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, दो स्त्रियाँ थीं, जो एक ही माता की पुत्रियाँ थीं;<sup>3</sup> और उन्होंने मिस्र में वेश्यावृति की। उन्होंने अपनी जावानी में वेश्यावृति की; वहाँ उनके स्तन दबाए गए, और वहाँ उनकी कुवारी स्तन छुए गए।<sup>4</sup> उनके नाम थे ओहोला बड़ी और उसकी बहन ओहोलीबा। और वे मेरी हो गईं और उन्होंने पुत्रों और पुत्रियों को जन्म दिया। और उनके नामों के अनुसार, शोमरोन ओहोला है, और यरूशलेम ओहोलीबा है।<sup>5</sup> अब ओहोला ने वेश्यावृति की जबकि वह मेरी थी; और उसने अपने प्रेमियों के पीछे लालसा की, अपने पड़ोसियों अशूरीयों के पीछे,<sup>6</sup> जो बैंगनी वस्त्र पहने थे, राज्यपाल और अधिकारी, सभी मनोहर जवान, घोड़ों पर सवार।<sup>7</sup> इसलिए उसने अपनी अश्रील प्रथाएँ उन पर बरसाईं, जो सभी अश्शरीयों में से श्रेष्ठ थे; और जिनके पीछे उसने लालसा की, उसने अपने आप को उनके सभी मूर्तियों के साथ अपवित्र किया।<sup>8</sup> उसने मिस्र से अपनी अश्रील प्रथाएँ नहीं छोड़ीं, क्योंकि उसकी जवानी में उन्होंने

## यहेजकेल

उसके साथ सोया था, और उन्होंने उसके कुंवारी शरीर को छुआ और उस पर अपनी लालसा उड़े दी।<sup>9</sup> इसलिए, मैंने उसे उसके प्रेमियों के हाथों में सौंप दिया, अश्शूरियों के लिए, जिनके पीछे उसने लालसा की थी।<sup>10</sup> उन्होंने उसकी नग्रता को उजागर किया; उन्होंने उसके पुत्रों और उसकी पुत्रियों को ले लिया, परन्तु उन्होंने उसे ललवार से मार डाला। इसलिए वह स्त्रियों के बीच चर्चा का विषय बन गई, और उन्होंने उसके विरुद्ध निर्णय सुनाया।<sup>11</sup> अब उसकी बहन ओहोलीबा ने यह देखा, फिर भी वह अपनी लालसा में उससे अधिक भ्रष्ट थी, और उसकी अश्लील प्रथाएँ उसकी बहन की वेश्यावृत्ति से अधिक थीं।<sup>12</sup> उसने अश्शूरियों के पीछे लालसा की, राज्यपाल और अधिकारी, उसके पढ़ोसी, भव्य वस्त्र पहने, घोड़ों पर सवार, सभी मनोहर जवान।<sup>13</sup> और मैंने देखा कि उसने अपने आप को अपवित्र किया था; उन्होंने दोनों ने एक ही मार्ग अपनाया था।<sup>14</sup> इसलिए उसने अपनी अश्लील प्रथाएँ बढ़ाई। और उसने दीवार पर खुद हुए पुरुषों को देखा, चेल्दियों की छवियाँ, चमकीले लाल रंग में खींची गई,<sup>15</sup> जो अपनी कमर के चारों ओर बेल्ट पहने थे, उनके सिर पर बहते हुए पांची के साथ, सभी अधिकारी जैसे दिखते थे, जैसे बाबुल के चेल्ली, उनके जन्म की भूमि।<sup>16</sup> जब उसने उन्हें देखा, तो उसने उनके पीछे लालसा की और चेल्दिया में उनके पास दूत भेजे।<sup>17</sup> फिर बाबुल के लोग उसके प्रेम के बिस्तर में आए और अपनी लालसा से उसे अपवित्र किया; और जब वह उनसे अपवित्र हो गई, तो उसने उनसे धूणा में मुँह मोड़ लिया।<sup>18</sup> उसने अपनी वेश्यावृत्ति को उजागर किया और अपनी नग्रता को प्रकट किया; तब मैंने उससे धूणा में मुँह मोड़ लिया, जैसे मैंने उसकी बहन से धूणा में मुँह मोड़ लिया था।<sup>19</sup> फिर भी उसने अपनी अश्लील प्रथाएँ बढ़ाई, अपनी जवानी के दिनों को याद करते हुए, जब उसने मिस के देश में वेश्यावृत्ति की थी।<sup>20</sup> उसने अपने प्रेमियों के पीछे लालसा की, जिनका मास गधों के मास के समान है, और जिनका साव घोड़ों के साव के समान है।<sup>21</sup> इसलिए तुम अपनी जवानी की दुष्टता के लिए लालायित हो, जब मिसियों ने तुम्हारे स्तरों को छुआ क्योंकि तुम्हारी जवानी के स्तर थे।<sup>22</sup> इसलिए, हो ओहोलीबा, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: ‘देखो, मैं तुम्हारे प्रेमियों को तुम्हारे विरुद्ध उकसाऊँगा, जिनसे तुमने धूणा में मुँह मोड़ लिया, और मैं उन्हें हर दिशा से तुम्हारे विरुद्ध लाऊँगा;’<sup>23</sup> बाबुल के लोग और सभी चेल्ली, पेकोद, शोआ, और कोआ, और सभी अश्शूरी उनके साथ, सभी मनोहर जवान, राज्यपाल और अधिकारी, अधिकारी और प्रसिद्ध पुरुष, सभी घोड़ों पर सवार।<sup>24</sup> वे तुम्हारे विरुद्ध हथियारें, रथों, और गाड़ियों के साथ आएँगे, और

लोगों की एक टुकड़ी के साथ; वे तुम्हारे चारों ओर बड़ी और छोटी ढालों और हेलमेटों के साथ खड़े होंगे; और मैं उन्हें न्याय सौंप दूँगा, और वे तुम्हारा न्याय अपनी रीति के अनुसार करेंगे।<sup>25</sup> मैं अपनी जलन तुम्हारे विरुद्ध श्वापित करूँगा, ताकि वे तुम्हारे साथ क्रोध में व्यवहार करें। वे तुम्हारी नाक और तुम्हारे कान काट देंगे; और तुम्हारे बचे हुए ललवार से गिरेंगे। वे तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को ले जाएँगे, और तुम्हारे बचे हुए आग से भस्म हो जाएँगे।<sup>26</sup> वे तुम्हारे कपड़े भी उतार देंगे और तुम्हारे सुंदर आभूषण ले लेंगे।<sup>27</sup> इसलिए मैं तुम्हारी अश्लील आचरण और तुम्हारी वेश्यावृत्ति को मिस के देश से समाप्त कर दूँगा, ताकि तुम उनकी ओर आँखें न उठाओं और न ही मिस को याद करो।<sup>28</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: ‘देखो, मैं तुम्हें उन लोगों के हाथ में सौंपें जा रहा हूँ जिन्हें तुम धूणा करते हो, जिनसे तुमने धूणा में मुँह मोड़ लिया।’<sup>29</sup> वे तुम्हारे साथ धूणा में व्यवहार करेंगे, तुम्हारी सारी संपत्ति ले लेंगे, और तुम्हें नग्न और नंगा छोड़ देंगे। तुम्हारे अश्लील आचरण की लजा प्रकट होगी, तुम्हारी अश्लील प्रथा और तुम्हारी वेश्यावृत्ति।<sup>30</sup> ये बातें तुम्हारे साथ इसलिए की जाएँगी क्योंकि तुमने राष्ट्रों के साथ वेश्यावृत्ति की है, क्योंकि तुमने उनके मूर्तीयों के साथ अपने आप को अपवित्र किया है।<sup>31</sup> तुमने अपनी बहन के मार्ग में चली हो; इसलिए मैं उसका याला तुम्हारे हाथ में दूँगा।<sup>32</sup> यह यहोवा परमेश्वर कहता है:

‘तुम अपनी बहन का याला पियोगे, जो गहरा और चौड़ा है। यह तुम्हें हँसी और उपहास का विषय बनाएगा, इसमें बहुत कुछ है।’<sup>33</sup> तुम नशे और शोक से भर जाओगे, भय और विनाश का याला, तुम्हारी बहन शोमरेन का याला।<sup>34</sup> तुम इसे पियोगे और इसे खाली कर दोगे, फिर इसके टुकड़ों को बचाओगे और अपने स्तरों को फाड़ोगे;

क्योंकि मैंने कहा है: ‘यहोवा परमेश्वर कहता है।’<sup>35</sup> इसलिए, यह यहोवा परमेश्वर कहता है: क्योंकि तुमने मुझे भूला दिया है और मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है, तुम भी अपने अश्लील आचरण और अपनी वेश्यावृत्ति के लिए दंड सहोगे।’<sup>36</sup> इसके अलावा, यहोवा ने मुझसे कहा, ‘मनुष्य के पुत्र, क्या तुम ओहोलीबा और ओहोलीबा का न्याय करोगी? फिर उन्हें उनके धूणित कर्मों के बारे में बताओ।’<sup>37</sup> क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है, और उनके हाथों पर खून है। उन्होंने अपने मूर्तीयों के साथ व्यभिचार किया है और यहाँ तक कि अपने बच्चों को, जिन्हें उन्होंने मुझे जन्म दिया था, उन्हें आग में उनके लिए भोजन के रूप में गुजारा है।<sup>38</sup> फिर,

## यहेजकेल

उन्होंने यह मुझसे किया है। उन्होंने मेरे पवित्र स्थान को उसी दिन अपवित्र किया है और मेरे विश्वामिदिनों का अपमान किया है।<sup>39</sup> क्योंकि जब उन्होंने अपने बच्चों को अपने मूर्तियों के लिए बलिदान किया, तो उसी दिन मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश किया ताकि उसे अपवित्र करें; और देखो, यह उन्होंने मेरे घर के भीतर किया।<sup>40</sup> इसके अलावा, उन्होंने उन पुरुषों के लिए भेजा जो दूर से आए थे, जिनके लिए एक दूत भेजा गया था; और देखो, वे आए—जिनके लिए तुमने सान किया, अपनी आँखें रंगी, और अपने आप को आभूषणों से सजाया;<sup>41</sup> और तुम एक शानदार सौफे पर बैठी थी जिसके सामने एक मेज सजी थी, जिस पर तुमने मेरी धूप और मेरा तेल रखा था।<sup>42</sup> और उसके साथ एक निश्चिन्त भीड़ की आवाज थी; और जंगल से शराबी लोग साधारण पुरुषों के साथ लाए गए। और उन्होंने स्थियों की कलाइयों पर कंगन डाले और उनके सिर पर सुंदर मुकुट रखे।<sup>43</sup> तब मैंने उस पर कहा जो व्यभिचार से थक गई थी, क्या अब वे उसके साथ व्यभिचार करेंगे जब वह ऐसी है?<sup>44</sup> परन्तु वे उसके पास गए जैसे वे एक वेश्या के पास जाते हैं; इसलिए वे ओहोला और ओहोलीबा के पास गए, जो अश्लील स्थियाँ थीं।<sup>45</sup> परन्तु वे, धर्मी पुरुष, उनका न्याय व्यभिचारिणियों के न्याय के साथ करेंगे और उन स्थियों के न्याय के साथ करेंगे जिन्होंने खून बहाया है, क्योंकि वे व्यभिचारिणियाँ हैं, और उनके हाथों पर खून है।<sup>46</sup> क्योंकि यह यहोवा परमेश्वर कहता है: 'उनके विरुद्ध एक भीड़ लाओ और उन्हें आंतक और लूट के हवातों कर दो।'<sup>47</sup> भीड़ उन्हें पत्थरों से मारेगी और अपनी तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर देगी; वे उनके पुत्रों और उनकी पुत्रियों को मार डालेंगे और उनके घरों को आग से जला देंगे।<sup>48</sup> इसलिए मैं देश से अश्लील आचरण को समाप्त कर दूँगा, ताकि सभी स्थियाँ चेतावनी लें और तुम्हरे जैसे अश्लील कार्य न करें।<sup>49</sup> तुम्हारे अश्लील आचरण को तुम्हारे ऊपर वापस लाया जाएगा, और तुम अपनी मूर्तिपूजा के लिए दंड सहोगे; तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा परमेश्वर हूँ॥

**24** अब प्रभु का वचन मुझ पर आया, नवेर वर्ष में, दसवें महीने में, महीने के दसवें दिन, यह कहते हुए,<sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, दिन का नाम लिखो, इसी दिन का। बाबुल के राजा ने यरूशलेम पर इसी दिन धेरा डाला है।<sup>3</sup> विरोधी धरान को एक वृष्टांत प्रस्तुत करो और उनसे कहो, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

हांडी को चढ़ाओ, उसे चढ़ाओ और उसमें पानी भी डालो;<sup>4</sup> उसमें टुकड़े डालो, हर अच्छा टुकड़ा, जांघ और कंधा, इसे उत्तम हङ्गियों से भर दो।<sup>5</sup> झुंझु में से

उत्तम को लो, और हांडी के नीचे लकड़ी भी लगाओ। इसे अच्छी तरह उबालो। उसकी हङ्गियों को भी उसमें उबालो।

६ इसलिए, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

'हाय, खूनी नगर, वह हांडी जिसमें जंग है, और जिसकी जंग उसमें से नहीं निकली है। टुकड़े-टुकड़ा निकालो, बिना किसी चुनाव के।<sup>7</sup> क्योंकि उसका खून उसके बीच में है, उसने उसे नंगे चट्ठान पर रखा है उसने उसे जमीन पर नहीं डाला ताकि उसे धूल से ढक सके।<sup>8</sup> ताकि यह क्रोध को उत्पन्न करे और प्रतिशोध ले, मैंने उसका खून नंगे चट्ठान पर रखा है, ताकि वह ढका न जाए।'

९ इसलिए, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

'हाय, खूनी नगर, मैं भी ढेर को बड़ा करूँगा।<sup>10</sup> लकड़ी पर लकड़ी डालो, आग जलाओ, मांस को अच्छी तरह उबालो, मसाले मिलाओ और हङ्गियों को जलने दो।<sup>11</sup> फिर इसे खाली कोयलों पर रखो ताकि यह गर्म हो और इसका पीतल चमके, और उसकी गंदगी उसमें पिंछले उसकी जंग खाइ जाए।<sup>12</sup> उसने मुझे श्रम से थका दिया है, फिर भी उसकी बड़ी जंग उसमें नहीं गई है, उसकी जंग आग से नहीं जाएगी।

१३ तुम्हारी गंदगी में अश्लीलता है। क्योंकि मैं तुम्हें शुद्ध करता, फिर भी तुम शुद्ध नहीं थे, तुम अपनी गंदगी से फिर से शुद्ध नहीं होगे जब तक कि मैं अपने क्रोध को तुम पर संतुष्ट न कर दूँ।<sup>14</sup> मैं, प्रभु, ने कहा है; यह आ रहा है, और मैं कार्य करूँगा। मैं नहीं रुकूँगा, और मैं दया नहीं करूँगा, और मैं खेद नहीं करूँगा। तुम्हारे मार्गों और तुम्हारे कर्मों के अनुसार, मैं तुम्हारा न्याय करूँगा; प्रभु यहोवा कहता है।<sup>15</sup> और प्रभु का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए, <sup>16</sup> "मनुष्य के पुत्र, देखो, मैं तुम्हारी आँखों की इच्छा को एक घातक प्रहार से लेने वाला हूँ; परन्तु तुम शोक मत करना, और तुम रोना मत, और तुम्हारे अँसू नहीं आएंगे।<sup>17</sup> चुपचाप कराहो; मेरे हुओं के लिए शोक मत करो। अपनी पगड़ी बांधो और अपनी चप्पले पहनो, और अपनी मूँछें मत ढको, और शोक करने वालों की रोटी मत खाओ।"<sup>18</sup> तो मैंने सुबह लोगों से बात की, और शाम को मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई। और सुबह मैंने जैसा आदेश दिया गया था, वैसा ही किया।<sup>19</sup> और लोगों ने मुझसे कहा, "क्या तुम हमें नहीं बताओगे कि ये बातें हमारे लिए क्या अर्थ रखती हैं, जो तुम कर रहे हो?"<sup>20</sup> तो मैंने उनसे कहा, "प्रभु का वचन

## यहेजकेल

मुझ पर आया, यह कहते हुए, <sup>21</sup> 'इसाएल के घराने से कहो: "यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को अपवित्र करने वाला हूँ, तुम्हारी शक्ति का गर्व, तुम्हारी आँखों की इच्छा और तुम्हारी आत्मा का आनंद; और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ जिन्हें तुमने पीछे छोड़ दिया है, तलवार से मिरेंगे।' <sup>22</sup> और तुम वही करोगे जैसा मैंने किया है: तुम अपनी मूँछें नहीं ढकोगे, और शोक करने वालों की रोटी नहीं खाओगे।' <sup>23</sup> तुम्हारी पाड़ियाँ तुम्हारे सिर पर होंगी और तुम्हारी चप्पलें तुम्हारे पैरों पर। तुम शोक नहीं करोगे, और तुम रोतोगे नहीं, परन्तु तुम अपने दोषी कर्मों में सड़ जाओगे, और तुम एक-दूसरे से कराहोगे।' <sup>24</sup> तो यहेजकेल तुम्हारे लिए एक विन्ह होगा; तुम वही करोगे जैसा उसने किया है। जब यह आएगा, तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ।' <sup>25</sup> 'और तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, क्या यह उस दिन नहीं होगा जब मैं उनसे उनकी गढ़ी हुई जगह, उनके बैभव का आनंद, उनकी आँखों की इच्छा और उनकी आत्मा की लालसा, और उनके बेटे और उनकी बेटियाँ भी ले लूँगा, <sup>26</sup> कि उस दिन जो बच जाएगा वह तुम्हारे पास तुम्हारे कानों के लिए सूचना लेकर आएगा? <sup>27</sup> उस दिन तुम्हारा मुँह उस बचने वाले के लिए खोला जाएगा, और तुम बोलोगे और अब चुप नहीं रहोगे। तो तुम उनके लिए एक विन्ह होगे, और वे जानेंगे कि मैं प्रभु हूँ।'

**25** और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, अपना मुख अमोन के पुत्रों की ओर कर और उनके विरुद्ध भविष्यवाणी कर, <sup>3</sup> और अमोन के पुत्रों से कह, यहोवा परमेश्वर का वचन सुनो! यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि तुमने कहा, 'आहा!' मेरे पवित्रस्थान के विरुद्ध जब वह अपवित्र किया गया, और इसाएल की भूमि के विरुद्ध जब वह उजाड़ हो गई, और यहूदा के घराने के विरुद्ध जब वे निर्वासन में गए, <sup>4</sup> इसलिए, देखो, मैं तुम्हें पूरब के लोगों को एक संपत्ति के रूप में देने जा रहा हूँ, और वे तुम्हारे बीच अपने शिविर स्थापित करेंगे और तुम्हारे बीच अपने निवास बनाएंगे; वे तुम्हारे फल खाएंगे और तुम्हारा दृथ पीएंगे।' <sup>5</sup> मैं रब्बा को ऊंटों के लिए चरागाह और अमोन के पुत्रों को झूँड़ों के लिए विश्राम स्थान बनाऊंगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।' <sup>6</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि तुमने अपने हाथ ताली बजाई और अपने पैर ठोके और इसाएल की भूमि के विरुद्ध अपनी आत्मा की सारी द्वेष के साथ आनंदित हुए, <sup>7</sup> इसलिए, देखो, मैंने तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाया है और तुम्हें जातियों के लिए लूट के रूप में दूंगा। और मैं तुम्हें लोगों से समाप्त कर दूंगा और तुम्हें भूमि से मिटा

दूंगा। मैं तुम्हें नष्ट कर दूंगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।'

<sup>8</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि मोआब और सेईर कहते हैं, देखो, यहोवा का घराना सभी जातियों के समान है।" <sup>9</sup> इसलिए, देखो, मैं मोआब की पार्श्व को खोलें जा रहा हूँ, उसके नगरों से, उसके सीमांतों पर स्थित नगरों से, भूमि की महिमा, बेथ-येशिमोत, बाल-मेओन, और किर्याताइम, <sup>10</sup> और मैं इसे पूरब के पुत्रों को एक संपत्ति के रूप में दूंगा, अमोन के पुत्रों के साथ, ताकि अमोन के पुत्रों को जातियों में स्मरण न किया जाए। <sup>11</sup> इसलिए मैं मोआब पर न्याय करूँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

<sup>12</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि एदोम ने यहूदा के घराने के विरुद्ध प्रतिशोध लिया है, और बड़ा अपराध किया है, और उनके विरुद्ध प्रतिशोध लिया है," <sup>13</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "मैं भी एदोम के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और उससे मनुष्यों और पशुओं को समाप्त कर दूंगा। और मैं इसे एक उजाड़ भूमि बनाऊंगा; तेमान से लेकर ददान तक वे तलवार से गिरेंगे।" <sup>14</sup> और मैं एदोम पर अपने लोगों इसाएल के हाथ से अपना प्रतिशोध दूंगा। इसलिए, वे एदोम में मेरे क्रोध और मेरे रोष के अनुसार कार्य करेंगे; तब वे मेरे प्रतिशोध को जानेंगे।" यहोवा परमेश्वर कहता है।

<sup>15</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि पलिश्ती ने प्रतिशोध में कार्य किया है और अपनी आत्मा की द्वेष के साथ अनन्त शत्रुगा के साथ नष्ट करने के लिए प्रतिशोध लिया है।" <sup>16</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "देखो, मैं पलिश्ती के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने जा रहा हूँ और केरेथियों को समाप्त कर दूंगा, और मैं समुद्र तट के अवशेष को नष्ट कर दूंगा।" <sup>17</sup> इसलिए मैं उन पर महान प्रतिशोध करूँगा क्रोधित फटकारों के साथ; और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैं उन पर अपना प्रतिशोध दूंगा।"

**26** न्यारहवें वर्ष में, महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, क्योंकि सोर ने यरूशलेम के बारे में कहा है, 'आहा! लोगों का द्वार टूट गया है; यह मेरे लिए खुल गया है।' मैं भर जाऊंगा, अब जब वह उजाड़ दी गई है।' <sup>3</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ हूँ, सोर, और मैं तुम्हारे खिलाफ कई राष्ट्रों को लाऊँगा, जैसे समुद्र अपनी लहरें लाता है।" <sup>4</sup> वे सोर की दीवारों को नष्ट करेंगे और उसके मीनारों को गिरा देंगे; और मैं

## यहेजकेल

उसके मलबे को उससे हटा दूँगा और उसे एक नंगी चट्टान बना दूँगा।<sup>5</sup> वह समुद्र के बीच जाल फैलाने का स्थान होगी, क्योंकि मैंने कहा है; यहोवा परमेश्वर कहता है। और वह राष्ट्रों के लिए लूट बन जाएगी।<sup>6</sup> उसकी बेटियाँ जो मुख्य भूमि पर हैं, तलवार से मारी जाएँगी, और वे जानेगे कि मैं यहोवा हूँ।<sup>7</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "देखो, मैं उत्तर से सरके खिलाफ बाबुल के राजा नबूकदनेसर को लाने जा रहा हूँ, राजाओं का राजा, घोड़ों, रथों, घुड़सवारों और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ।<sup>8</sup> वह तुम्हारी बेटियों को मुख्य भूमि पर तलवार से मारेगा; और वह तुम्हारे खिलाफ एक धेराबंदी की दीवार बनाएगा, और तुम्हारे खिलाफ एक टीला खड़ा करेगा, और तुम्हारे खिलाफ एक बड़ा ढाल उठाएगा।<sup>9</sup> वह अपनी बैटरिंग रेस्पैस के प्रहार को तुम्हारी दीवारों के खिलाफ निर्देशित करेगा, और वह अपनी कुल्हाड़ियों से तुम्हारी मीनारों को गिरा देगा।<sup>10</sup> उसके घोड़ों की भीड़ का कारण, उनकी धूल तुहें ढक लेगी, जब वह तुम्हारे द्वारों में प्रवेश करेगा, जैसे लोग एक breached शहर में प्रवेश करते हैं, तब घुड़सवारों, पहियों, और रथों की आवाज से तुम्हारी दीवारें हिलेंगी।<sup>11</sup> अपने घोड़ों के खुरों से वह तुम्हारी सभी गलियों को रोट देगा। वह तुम्हारे लोगों को तलवार से मारेगा, और तुम्हारे मजबूत स्तंभ जमीन पर मिरेंगे।<sup>12</sup> वे तुम्हारी दौलत ले लेंगे और तुम्हारे व्यापार को लूट बना देंगे, तुम्हारी दीवारों को गिरा देंगे और तुम्हारे सुंदर घरों को नष्ट कर देंगे, और तुम्हारे परतों, तुम्हारी लकड़ियों, और तुम्हारे मलबे को पानी में फेंक देंगे।<sup>13</sup> इसलिए मैं तुम्हारे गीतों की ध्वनि को समाप्त कर दूँगा, और तुम्हारी वीणाओं की ध्वनि अब नहीं सुनी जाएगी।<sup>14</sup> मैं तुहें एक नंगी चट्टान बना दूँगा; तुम जाल फैलाने का स्थान बनोगा। तुम फिर से नहीं बनोगे, क्योंकि मैंने, यहोवा ने कहा है," यहोवा परमेश्वर कहता है।<sup>15</sup> यह यहोवा परमेश्वर सोर से कहता है: "क्या तटवर्ती भूमि तुम्हारे पतन की ध्वनि से नहीं कांपेगी जब धायल कराहेंगे, जब तुम्हारे बीच वध होगा?"<sup>16</sup> तब समुद्र के सभी राजकुमार अपने सिंहासनों से उतरेंगे, अपने वस्त्र उतार देंगे, और अपनी कढाईदार वस्त्रों को उतार देंगे। वे कांपते हुए कपड़े पहेंगे, वे जमीन पर बैठेंगे, लगातार कांपेंगे, और तुम पर चकित होंगे।<sup>17</sup> और वे तुम्हारे ऊपर शोकगीत उठाएँगे और तुमसे कहेंगे,

'तुम कैसे नष्ट हो गए तुम बसे हुए समुद्र से प्रसिद्ध शहर, जो समुद्र पर शक्तिशाली था, वह और उसके निवासी, जिन्होंने उसके सभी निवासियों पर आतक डाला।'<sup>18</sup> अब तटवर्ती भूमि कांपेगी तुम्हारे पतन के

दिन हाँ समुद्र के तटवर्ती भूमि तुम्हारे गुजरने पर भयभीत होगी।"

<sup>19</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "जब मैं तुम्हें एक उजाड़ शहर बनाऊँगा, जैसे वे शहर जो बसे नहीं हैं, जब मैं तुम्हारे ऊपर गहराइ लाऊँगा और महान जल तुम्हें ढकेंगे, <sup>20</sup> तब मैं तुहें उन लोगों के साथ गड़े में ले जाऊँगा, जो गड़े में जाते हैं, प्राचीन लोगों के साथ, और मैं तुहें पृथ्वी के निचले हिस्सों में रहने दूँगा, जैसे प्राचीन खंडहर, उन लोगों के साथ जो गड़े में जाते हैं, किंतु तुम बसे नहीं रहो। लेकिन मैं जीवितों की भूमि में महिमा स्थापित करूँगा।<sup>21</sup> मैं तुहें भय का विषय बना दूँगा, और तुम अब अस्तित्व में नहीं रहेगे। यद्यपि तुम्हारी खोज की जाएगी, तुम फिर कभी नहीं पाई जाओगा," यहोवा परमेश्वर कहता है।

**27** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> "और तू हे मनुष्य के पुत्र, सोर के लिए शोकगीत गा;<sup>3</sup> और सोर से कह, जो समुद्र के प्रवेश द्वार पर बसा है, जो कई द्वीपों के लोगों का व्यापारी है, प्रभु यहोवा यह कहता है:

"तू सोर ने कहा है 'मैं सुंदरता में पूर्ण हूँ।'<sup>4</sup> तेरी सीमाएँ समुद्र के हृदय में हैं; तेरे निर्माताओं ने तेरी सुंदरता को पूर्ण किया है।<sup>5</sup> उन्होंने तेरी सारी लकड़ी सेनिर के देवदार से बनाई है, उन्होंने तेरे लिए एक मस्तूल बनाने के लिए लेबनान से एक देवदार लिया है।<sup>6</sup> बाशान के बलूत से उन्होंने तेरे ढेक को सायप्रस के द्वीपों से बक्सबुड़ के साथ सजाया है।<sup>7</sup> तेरी पाल मिस्र के महीन कढाईदार मलमल से बनाई गई थी ताकि वह तेरा ध्वनि बन सके, तेरी छाया वायलेट और बैगनी थी एलशा के द्वीपों से।<sup>8</sup> सिदेन और अरवाद के निवासी तेरे नाविक थे, तेरे बुद्धिमान लोग, सोर, तेरे साथ थे वे तेरे नाविक थे।<sup>9</sup> गबाल के बुजुर्ग और उसके बुद्धिमान लोग तेरे साथ थे तेरे जोड़ की मरम्मत करते हुए समुद्र के सभी जहाज और उनके नाविक तेरे साथ तेरे व्यापार में सोदा करने के लिए थे।<sup>10</sup> फारस, लुद, और पूरत तेरी सेना में, तेरे योद्धा थे। उन्होंने तुझमें ढाल और हेलमेट लटकाए, उन्होंने तुझे शोभा दी।<sup>11</sup> अरवाद के पुत्र तेरी सेना के साथ तेरी दीवारों पर चारों ओर थे, और गम्मादीम तेरे युद्धदों में थे। उन्होंने तेरी दीवारों पर चारों ओर अपनी ढालें लटकाए। उन्होंने तेरी सुंदरता को पूर्ण किया।

## यहेजकेल

<sup>12</sup> तर्शीश तेरे ग्राहक थे क्योंकि सभी प्रकार की संपत्ति की प्रचुरता थी; चांदी, लोहा, टिन, और सीसा के साथ उन्होंने तेरे व्यापार का भुगतान किया। <sup>13</sup> जावान, तुबाल, और मेशेक, वे तेरे व्यापारी थे; मानव जीवन और कांस्य के बर्तन के साथ उन्होंने तेरे व्यापार का भुगतान किया। <sup>14</sup> बेत-तोगर्मा से उन्होंने तेरे व्यापार के लिए घोड़े, युद्ध के घोड़े, और खचर दिए। <sup>15</sup> देदन के पुत्र तेरे व्यापारी थे। कई द्वीप तेरे बाजार थे; हाथीदांत के दांत और आबनूस वे तेरे भुगतान के रूप में लाए। <sup>16</sup> अराम तेरे ग्राहक थे क्योंकि तेरे माल की प्रचुरता थी; उन्होंने तेरे व्यापार का भुगतान पन्ना, बैंगानी, कढाईदार काम, महीन मलमल, मूंगा, और माणिक के साथ किया। <sup>17</sup> यहूदा और इस्साएल की भूमि, वे तेरे व्यापारी थे; उन्होंने मिनिथ का गेहूं, केक, शहद, तेल, और बाम तेरे व्यापार के लिए दिया। <sup>18</sup> दमिश्क तेरे ग्राहक थे क्योंकि तेरे माल की प्रचुरता थी, सभी प्रकार की संपत्ति की प्रचुरता के कारण, हेलबोन की मदिरा और सफेद ऊन के साथ। <sup>19</sup> देदन और जावान ने उजाल से तेरे व्यापार का भुगतान किया; लोहे के काम, कासिया, और मीठी गन्ना तेरे व्यापार में थे। <sup>20</sup> देदन ने तेरे साथ सवारी के लिए काठी के कपड़े में व्यापार किया। <sup>21</sup> अरब और केटार के सभी राजकुमार, वे तेरे ग्राहक थे भेड़ के बच्चे, मेड़े, और बकरियों के लिए; इन के लिए वे तेरे ग्राहक थे। <sup>22</sup> शेबा और रामा के व्यापारी, उन्होंने तेरे साथ व्यापार किया; उन्होंने तेरे व्यापार का भुगतान सभी प्रकार के मसालों के सबसे अच्छे और सभी प्रकार के कीमती पत्तरों और सोने के साथ किया। <sup>23</sup> हरान, कनेह, एदेन, शेबा के व्यापारी, अश्शूर, और चिलमद ने तेरे साथ व्यापार किया। <sup>24</sup> उन्होंने तेरे साथ उत्तम वस्तों में, नीले और कढाईदार काम के कपड़ों में, और कई रंगों के कालीनों में, और कसकर लिपटे रस्सियों में व्यापार किया, जो तेरे व्यापार में थे।

<sup>25</sup> तर्शीश के जहाज तेरे व्यापार के बाहक थे। और तू समुद्र के हृदय में भरा और बहुत गौरवशाली था। <sup>26</sup> तेरे नाविक तुझे महान जल में ले गए हैं पूर्वी हवा ने तुझे तोड़ दिया है समुद्र के हृदय में। <sup>27</sup> तेरी संपत्ति, तेरे सामान, तेरे व्यापार, तेरे नाविक और तेरे मल्लाह, तेरे जोड़ की मरम्मत करने वाले, तेरे व्यापार के सौदागर, और तेरे सभी योद्धा जो तुझमें हैं, तेरे बीच के सभी दल के साथ, तेरे पतन के दिन समुद्र के हृदय में गिर जाएंगे। <sup>28</sup> तेरे नाविकों की चिल्लाहट की आवाज पर चरागाह की भूमि हिल जाएगी। <sup>29</sup> और सभी जो चूपू सभालते हैं मल्लाह और समुद्र के सभी नाविक अपने जहाजों से उतरेंगे, वे भूमि पर खड़े होंगे। <sup>30</sup> और वे तेरे ऊपर अपनी आवाज सुनाएंगे और कड़वे रोएंगे। वे

अपने सिर पर धूल फेंकेंगे, वे राख में लौटेंगे। <sup>31</sup> वे तेरे लिए अपने सिर मुंडाएंगे और टाट पहनेंगे, और वे तेरे लिए आत्मा की कड़वाहट में कड़वे विलाप के साथ रोएंगे। <sup>32</sup> इसके अलावा, अपने विलाप में वे तेरे लिए शोकगीत उठाएंगे और तेरे ऊपर विलाप करेंगे। कौन सोर के समान है, उसके समान जो समुद्र के बीच मौन है? <sup>33</sup> जब तेरा व्यापार समुद्र से बाहर गया, तूने कई लोगों को संतुष्ट किया, तेरी संपत्ति और तेरे व्यापार की प्रचुरता के साथ तूने पृथ्वी के राजाओं को समृद्ध किया। <sup>34</sup> अब जब तू समुद्र द्वारा टूट गया है जल की गहराई में, तेरा व्यापार और तेरी सारी संगति तेरे बीच गिर गई है। <sup>35</sup> सभी द्वीपों के निवासी तुझ पर चकित हैं, और उनके राजा भयानक रूप से डरते हैं, वे चेहरे से परेशान हैं। <sup>36</sup> लोगों के बीच के व्यापारी तुझ पर सीटी बजाते हैं, तू भयभीत हो गया है, और तू हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा।"

**28** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, सोर के नेता से कहो, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'क्योंकि तेरा हृदय अहंकारी हो गया है और तूने कहा है,

'मैं एक देवता हूँ, मैं समुद्र के बीच देवताओं की गही पर बैठा हूँ' फिर भी तू एक मनुष्य है और देवता नहीं, यद्यपि तूने अपने हृदय को देवता के हृदय के समान बना लिया है। <sup>3</sup> देख, तू दानियोल से भी अधिक बुद्धिमान है कोई रहस्य तुझसे छिपा नहीं है। <sup>4</sup> अपनी बुद्धि और समझ से तूने अपने लिए धन-संपत्ति प्राप्त की है और सोने और चांदी को अपने खजानों में इकट्ठा किया है। <sup>5</sup> अपनी महान बुद्धि और व्यापार से तूने अपनी संपत्ति बढ़ाई है, और तेरे धन के कारण तेरा हृदय अहंकारी हो गया है—

६ इसलिए यहोवा परमेश्वर यह कहता है:

'क्योंकि तूने अपने हृदय को देवता के हृदय के समान बना लिया है, <sup>7</sup> इसलिए देख, मैं तुझ पर परदेशियों को लांउंगा, सबसे निर्देशी जातियों को। और वे अपनी तलवारें खींचेंगे तेरी बुद्धि की शोभा के विरुद्ध और तेरी महिमा को अपवित्र करेंगे। <sup>8</sup> वे तुझे गड्ढे में गिरा देंगे, और तू समुद्र के बीच मारे गए लोगों की मृत्यु मरेगा। <sup>9</sup> क्या तू अब भी कहेगा, "मैं एक देवता हूँ" उस व्यक्ति के सामने जो तुझे मारता है, यद्यपि तू एक मनुष्य है और देवता नहीं, उन लोगों के हाथों में जो तुझे घायल करते हैं? <sup>10</sup> तू परदेशियों के हाथ से खतना रहितों की मृत्यु मरेगा,

## यहेजकेल

क्योंकि मैंने कहा है!" यहोवा परमेश्वर की यह घोषणा है।  
 11 फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,  
 12 "मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा पर शोकीत उठाओ  
 और उससे कहो, यहोवा परमेश्वर यह कहता है:

"तू पृथिवी की मुहर था, बुद्धि से परिपूर्ण और सुंदरता  
 में सिद्धा।<sup>13</sup> तू एदन में था, परमेश्वर की वाटिका में हर  
 एक कीमती पत्तर तेरा आच्छादन था: माणिक,  
 पुखराज, और हीरा, बेरिल, सुलैमानी, और जैस्पर  
 नीलम, फिरोजा, और पत्ता, और सोना तेरी सजावट  
 और ज़दार्क का काम तुझे में था। जिस दिन तू सूजा  
 गया वे तैयार किए गए थे।<sup>14</sup> तू अभिषिक्त करूँगा था  
 जो ढकता था, और मैंने तुझे वहाँ रखा। तू परमेश्वर के  
 पवित्र पर्वत पर था, तू अग्नि के पथरों के बीच चलता  
 था।<sup>15</sup> तू अपनी चाल में निर्दोष था जिस दिन तू सूजा  
 गया जब तक तुझे में अधर्म न पाया गया।<sup>16</sup> तेरे  
 व्यापार की प्रुरता के कारण तू अंतरिक रूप से  
 हिंसा से भर गया, और तूने पाप किया। इसलिए मैंने  
 तुझे अपवित्र के रूप में परमेश्वर के पर्वत से निकाल  
 दिया। और मैंने तुझे नष्ट कर दिया, तू ढकने वाला  
 करूँगा, अग्नि के पथरों के बीच से।<sup>17</sup> तेरे हृदय पर तेरी  
 सुंदरता के कारण अहकार किया तूने अपनी बुद्धि को  
 अपनी महिमा के कारण भ्रष्ट कर दिया। मैंने तुझे पृथिवी  
 पर फेंक दिया, मैंने तुझे राजाओं के सामने रखा, कि वे  
 तुझे देखें।<sup>18</sup> तेरे अपराधों की बुत्तायत के कारण, तेरे  
 व्यापार के अधर्म के कारण, तूने अपने पवित्र स्थानों  
 को अपवित्र कर दिया। इसलिए मैंने तुझे में से आग  
 उत्पन्न की, उसने तुझे भस्म कर दिया, और मैंने तुझे  
 पृथिवी पर राख बना दिया उन सब की आँखों में जो तुझे  
 देखते हैं।<sup>19</sup> जो सब तुझे जानते हैं लोगों में तुझे पर  
 चकित हैं, तू भयभीत हो गया है और तू सदा के लिए  
 समाप्त हो जाएगा।"

20 और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,  
 21 "मनुष्य के पुत्र, सिदोन की ओर अपना मुख कर,  
 उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर<sup>22</sup> और कह, यहोवा  
 परमेश्वर यह कहता है:

"देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, सिदोन, और मैं तेरे बीच महिमा  
 प्राप्त करूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ जब मैं  
 उसके विरुद्ध न्याय करूँगा, और मैं उसके माध्यम से  
 अपने आप को पवित्र दिखाऊँगा।<sup>23</sup> क्योंकि मैं उस  
 पर महामारी भेजूँगा और उसके गलियों में रक्त  
 बहाऊँगा, और उसके बीच में धायल गिरेंगे उसके  
 चारों ओर से तलवार से, तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

<sup>24</sup> और इसाएल के घराने के लिए कोई दर्दनाक कांटा  
 या चुभने वाला कांटा नहीं होगा उन चारों ओर के लोगों  
 में से जो उहें तुच्छ जानते हैं; तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा  
 परमेश्वर हूँ।"<sup>25</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "जब मैं  
 इसाएल के घराने को उन लोगों में से इकट्ठा करूँगा  
 जिनके बीच वे तितर-बित्तर हो गए हैं, और मैं राशें के  
 सामने उनके बीच अपने आप को पवित्र दिखाऊँगा, तब  
 वे अपनी उस भूमि में बसेंगे जो मैंने अपने दास याकूब  
 को दी थी।<sup>26</sup> और वे उसमें सुरक्षित रहेंगे, और वे घर  
 बनाएंगे, दाख की बारी लगाएंगे, और सुरक्षित रहेंगे जब  
 मैं उन सब पर न्याय करूँगा जो उनके चारों ओर से  
 उनका अपमान करते हैं। तब वे जानेंगे कि मैं उनका  
 परमेश्वर यहोवा हूँ।""

**29** दसवें वर्ष में, दसवें महीने में, महीने के बारहवें  
 दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup>  
 "मनुष्य के पुत्र, अपना मुख फिरैन, मिस के राजा की  
 ओर कर, और उसके और समस्त मिस के विरुद्ध  
 भविष्यद्वाणी कर।<sup>3</sup> बोल और कह, यहोवा परमेश्वर यह  
 कहता है:

"देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, फिरैन, मिस का राजा, वह  
 महान राक्षस जो अपनी नहरों के बीच लेटा है, जिसने  
 कहा, 'मेरी नील मेरी है, और मैंने इसे स्वयं बनाया है।'  
<sup>4</sup> मैं तेरे जबडों में काँटे डालूँगा और तेरी नहरों की  
 मछलियों को तेरे तराजू से चिपका दूँगा। और मैं तुझे  
 तेरी नहरों के बीच से निकाल लाऊँगा, और तेरी नहरों  
 की सारी मछलियाँ तेरे तराजू से चिपकी रहेंगी।<sup>5</sup> मैं  
 तुझे जगल में छोड़ दूँगा, तुझे और तेरी नहरों की सारी  
 मछलियों को तु खुले मैदान में गिर जाएगा, तुझे न  
 उठाया जाएगा और न दफनाया जाएगा। मैंने तुझे  
 पृथिवी के पशुओं और आकाश के पक्षियों के लिए  
 भोजन के रूप में दिया है।

6 तब मिस के सभी निवासी जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ,  
 क्योंकि वे इसाएल के घर के लिए केवल एक सरकड़े  
 की छड़ी रहे हैं।<sup>7</sup> जब उहोंने तुझे हाथ से पकड़ा, तू टूट  
 गया और उनके सभी हाथों को फाड़ दिया; और जब  
 उहोंने तुझे पर भरोसा किया, तू टूट गया और उनकी  
 सभी कमरे हिला दी।<sup>8</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर यह  
 कहता है: "देख, मैं तुझे पर तलवार लाने जा रहा हूँ, और  
 मैं तुझसे मनुष्य और पशु का नाश कर दूँगा।<sup>9</sup> मिस की  
 भूमि उजाड़ और बर्बाद हो जाएगी। तब वे जानेंगे कि मैं  
 यहोवा हूँ। क्योंकि तुने कहा, 'नील मेरी है, और मैंने इसे  
 बनाया है।'<sup>10</sup> इसलिए, देख, मैं तेरे और तेरी नहरों के  
 विरुद्ध हूँ, और मैं मिस की भूमि को पूर्णतः उजाड़ और

## यहेजकेल

बर्वद कर दूँगा, मिदोल से स्पेन तक, यहाँ तक कि कूश की सीमा तक।<sup>11</sup> कोई मानव पाँव उस पर नहीं चलेगा, और कोई पशु पाँव उस पर नहीं चलेगा, और यह चालीस वर्षों तक निर्जन रहेगा।<sup>12</sup> इसलिए मैं मिस की भूमि को उजाड़ कर दूँगा, उजड़ी हुई भूमियों के बीच। और उसके नगर, उन नगरों के बीच जो खंडहर में हैं, चालीस वर्षों तक उजाड़ रहेंगे; और मैं मिसियों को राष्ट्रों के बीच बिखर दूँगा और उन्हें देशों के बीच तितर-बितर कर दूँगा।<sup>13</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "चालीस वर्षों के अंत में मैं मिसियों को उन लोगों के बीच से इकट्ठा करूँगा जिनके बीच वे तितर-बितर हो गए थे।"<sup>14</sup> और मैं मिस की समृद्धि को बहाल करूँगा और उन्हें पथरोस की भूमि में, उनकी उत्पत्ति की भूमि में वापस लाऊँगा, और वहाँ वे एक नीच राज्य होंगे।<sup>15</sup> यह राज्यों में सबसे नीच होगा, और यह फिर से राष्ट्रों के ऊपर नहीं उठेगा। और मैं उन्हें इतना छोटा कर दूँगा कि वे राष्ट्रों पर स्पसन नहीं करेंगे।<sup>16</sup> और यह फिर कभी इसाएल के घर की आशा नहीं बनेगा, मिस की और मुझने के उनके अपराध को याद दिलाने के लिए। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा परमेश्वर हूँ॥<sup>17</sup> 17 अब सताईसवें वर्ष में, पहले महीने में, महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>18</sup> "मनुष्य के पुत्र, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपने सेना को सोर के विरुद्ध कड़ी मेहनत करवाई; हर सिर गंजा हो गया और हर कंधा धिस गया। लेकिन उसे और उसकी सेना को सोर से उनके श्रम के लिए कोई मजदूरी नहीं मिली जो उन्होंने उसके खिलाफ किया था।"<sup>19</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "देख, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस की भूमि देने जा रहा हूँ। और वह उसकी समृद्धि को ले जाएगा और उसकी लूट को पकड़ लेगा और उसकी लूट को छीन लेगा; और यह उसकी सेना के लिए मजदूरी होगी।"<sup>20</sup> मैंने उसे मिस की भूमि उसके श्रम के लिए मुआवजे के रूप में दिया है, क्योंकि उहोने मेरे लिए कार्य किया, "यहोवा परमेश्वर कहता है।"<sup>21</sup> "उस दिन मैं इसाएल के घर के लिए एक सींग उगाऊँगा, और मैं तुम्हारा मुँह उनके बीच खोलूँगा; तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

**30** फिर यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी कर और कह, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

विलाप करो, "हाय उस दिन पर।"<sup>3</sup> क्योंकि वह दिन निकत है, वास्तव में, यहोवा का दिन निकत है, यह बादलों का दिन होगा, राष्ट्रों के लिए संकट का समय।  
<sup>4</sup> मिस पर तलवार आएगी, और कूश में कांप उठेगा,

जब मिस में मारे गए गिरेंगे, वे उसकी संपत्ति ले जाएंगे, और उसकी नींवें गिराइ जाएंगी।

<sup>5</sup> कूश, पूत, लूट, सब अरब, लिबिया, और उस देश के लोग जो संधि में हैं, तलवार से उनके साथ गिरेंगे।<sup>6</sup> यह वही है जो यहोवा कहता है:

"वास्तव में, जो मिस का समर्थन करते हैं वे गिरेंगे, और उसकी शक्ति का गर्व गिर जाएगा; मिदोल से स्पेन तक वे उसके भीतर तलवार से गिरेंगे; प्रभु यहोवा की घोषणा है।"<sup>7</sup> "वे उजाड़ भूमि के बीच में उजाड़ हो जाएंगे, और उसके नगर नष्ट हुए नगरों के बीच में होंगे।"<sup>8</sup> और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैं मिस में आग लगाऊँगा और उसके सभी सहायक टूट जाएंगे।

<sup>9</sup> उस दिन मेरे द्वारा भेजे गए दूत जहाजों में से निकलेंगे और निश्चित कूश को डराएंगे, और उन पर मिस के दिन की तरह कांप आ जाएगा; क्योंकि देखो, यह आ रहा है!"  
<sup>10</sup> यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

"मैं भी मिस की भीड़ को समाप्त कर दूँगा बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ से।"<sup>11</sup> वह और उसके साथ उसकी प्रजा, राष्ट्रों में सबसे निरदीर्घी, भूमि को नष्ट करने के लिए लाए जाएंगे और वे मिस के खिलाफ अपनी तलवारें छींवेंगे और भूमि को मारे गए से भर देंगे।<sup>12</sup> इसके अलावा, मैं नहरों को सूखा दूँगा और भूमि को दूष लोगों के हाथों में ढेव दूँगा। और मैं भूमि को उजाड़ बना दूँगा, और जो कुछ उसमें है अजननियों के हाथ से-

मैं, यहोवा, ने कहा है।"<sup>13</sup> यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है:

"मैं भी मूर्तियों को नष्ट कर दूँगा और मैट्फिस से मूर्तियों को समाप्त कर दूँगा। और मिस की भूमि में अब कोई राजकुमार नहीं होगा, और मैं मिस की भूमि में भय डाल दूँगा।"<sup>14</sup> इसलिए मैं पठरोस को उजाड़ बना दूँगा, जोन में आग लगाऊँगा, और थेब्स पर न्याय करूँगा।<sup>15</sup> मैं अपने क्रिओं को सीन पर उंडेल दूँगा, मिस के गढ़ पर, मैं थेब्स की भीड़ को भी समाप्त कर दूँगा।<sup>16</sup> मैं मिस में आग लगाऊँगा, सीन पीड़ा में तड़पण, थेब्स को तोड़ा जाएगा, और मैट्फिस को प्रतिदिन संकट होगा।<sup>17</sup> अनें और पी देस्य के युवा तलवार से गिरेंगे, और महिलाएं बंदी बन जाएंगी।<sup>18</sup> तहपनेहस में दिन अंधकारमय होगा जब मैं वहाँ मिस का जुआ तोड़ दूँगा। तब उसकी शक्ति का गर्व समाप्त

## यहेजकेल

हो जाएगा, एक बादल उसे ढक लेगा, और उसकी बेटियाँ बंदी बन जाएंगी।<sup>19</sup> इसलिए मैं मिस्त्र पर न्याय करूँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

<sup>20</sup> अब ग्यारहवें वर्ष में, पहले महीने में, महीने के सातवें दिन, यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>21</sup> "मनुष्य के पुत्र, मैंने मिस्त्र के राजा फिरौन की भुजा तोड़ दी है; और देखो, उसे ठीक करने के लिए पट्टी नहीं बाधी गई है, न ही उसे पट्टी से लपेटा गया है ताकि वह तलवार चलाने के लिए मजबूत हो सके।"<sup>22</sup> इसलिए यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है: "देखो, मैं मिस्त्र के राजा फिरौन के खिलाफ़ हूँ, और उसकी भुजाओं को तोड़ दूंगा, दोनों मजबूत और टूटी हुई; और मैं उसकी तलवार को उसके हाथ से पिरा दूँगा।"<sup>23</sup> मैं मिस्त्रों को राष्ट्रों के बीच में बिखेर दूंगा और उन्हें भूमि के बीच में तिरत-बितर कर दूंगा।<sup>24</sup> क्योंकि मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को मजबूत करूँगा और अपनी तलवार को उसके हाथ में रखूँगा; और मैं फिरौन की भुजाओं को तोड़ दूंगा, ताकि वह उसके सामने धायल व्यक्ति की तरह कराहे।<sup>25</sup> इसलिए मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को मजबूत करूँगा, लेकिन फिरौन की भुजाएं गिर जाएंगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैं अपनी तलवार बाबुल के राजा के हाथ में रखूँगा और वह उसे मिस्त्र की भूमि के खिलाफ़ बढ़ाएगा।<sup>26</sup> जब मैं मिस्त्रों को राष्ट्रों के बीच में बिखेर दूंगा और उन्हें भूमि के बीच में तिरत-बितर कर दूंगा, तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

**31** अब ग्यारहवें वर्ष में, तीसरे महीने में, महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्रों के बीच, उन लोगों के साथ जो गड्ढे में जाते हैं।"<sup>3</sup> यह यहोवा परमेश्वर कहता है: "जिस दिन वह शिओल में गया, मैंने शोक मनाया। मैंने उसके ऊपर गहराई की बंद कर दिया और उसकी नदियों को रोक दिया, और महान जल को रोक दिया गया। और मैंने लबानोन को उसके लिए शोकित किया, और मैदान के सभी पेड़ उसके कारण मुरझा गए।"<sup>16</sup> मैंने उसके पतन की आवाज़ पर राष्ट्रों को हिला दिया जब मैंने उन लोगों के साथ शिओल में भेजा जो गड्ढे में जाते हैं। और अदन के सभी अच्छी तरह से पानी वाले पेड़, लबानोन के सबसे अच्छे और श्रेष्ठ, पृथ्वी के नीचे सांत्वना प्राप्त करते थे।<sup>17</sup> वे भी उसके साथ शिओल में गए, उन लोगों के पास जो तलवार से मारे गए थे; और वे जो उसकी शक्ति थे राष्ट्रों के बीच उसकी छाया में रहते थे।<sup>18</sup> तुम अदन के पेड़ों में से किसके समान महिमा और महानता में हो? फिर भी तुम अदन के पेड़ों के साथ पृथ्वी के नीचे लाए जाओगे; तुम खतनारहितों के बीच लेते रहोगे, उन लोगों के साथ जो तलवार से मारे गए थे। यह फिरौन

महानता में सुंदर था, अपनी शाखाओं की लंबाई में क्योंकि उसकी जड़ें बहुत से जल तक फैली थीं।<sup>8</sup> परमेश्वर के बगीचे के देवदार उससे मेल नहीं खा सकते थे, और विमान के पेड़ उसकी डालियों की तुलना नहीं कर सकते थे, और जुनिपर उसके शाखाओं की तुलना नहीं कर सकते थे, और विमान के पेड़ उसकी सुंदरता की तुलना नहीं कर सकता था।<sup>9</sup> मैंने उसे उसकी शाखाओं की बहुलता के साथ सुंदर बनाया, और अदन के सभी पेड़, जो परमेश्वर के बगीचे में थे, उससे इर्ष्या करते थे।

<sup>10</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: "क्योंकि वह कद में ऊँचा है और उसकी चोटी बादलों के बीच है, और उसका हार्दय उसकी ऊँचाई में अधिमानी है,<sup>11</sup> इसलिए मैं उसे राष्ट्रों के एक शासक के हाथ में सौंप दूँगा; वह उसे पूरी तरह से निपटाएगा। उसकी दुष्टता के अनुसार मैंने उसे दूर कर दिया है।<sup>12</sup> राष्ट्रों के विदेशी अत्याचारी ने उसे काट डाला और छोड़ दिया; उसकी शाखाएँ पांडुङों पर और सभी घाटियों में गिर गईं, और उसकी डालियाँ भूमि की सभी खड़ों में टूट गईं; और पृथ्वी के सभी लोग उसकी छाया से नीचे उतर गए और उसे छोड़ दिया।<sup>13</sup> आकाश के सभी पक्षी उसकी गिरी हुई लकड़ी पर बसे होंगे, और मैदान के सभी जानवर उसकी गिरी हुई डालियों पर विश्राम करेंगे,<sup>14</sup> ताकि जल के पास के सभी पेड़ अपनी ऊँचाई में ऊँचे न हों, न ही अपनी चोटी बादलों के बीच रखे, न ही कोई अच्छी तरह से पानी वाले शक्तिशाली उनसे ऊँचे खड़े हों। क्योंकि वे सभी मस्तु के लिए सौंप दिए गए हैं, पृथ्वी के नीचे, मनुष्यों के पुत्रों के बीच, उन लोगों के साथ जो गड्ढे में जाते हैं।"<sup>15</sup> यह यहोवा परमेश्वर कहता है: "जिस दिन वह शिओल में गया, मैंने शोक मनाया। मैंने उसके ऊपर गहराई की बंद कर दिया और उसकी नदियों को रोक दिया, और महान जल को रोक दिया गया। और मैंने लबानोन को उसके लिए शोकित किया, और मैदान के सभी पेड़ उसके कारण मुरझा गए।<sup>16</sup> मैंने उसके पतन की आवाज़ पर राष्ट्रों को हिला दिया जब मैंने उन लोगों के साथ शिओल में भेजा जो गड्ढे में जाते हैं। और अदन के सभी अच्छी तरह से पानी वाले पेड़, लबानोन के सबसे अच्छे और श्रेष्ठ, पृथ्वी के नीचे सांत्वना प्राप्त करते थे।<sup>17</sup> वे भी उसके साथ शिओल में गए, उन लोगों के पास जो तलवार से मारे गए थे; और वे जो उसकी शक्ति थे राष्ट्रों के बीच उसकी छाया में रहते थे।<sup>18</sup> तुम अदन के पेड़ों में से किसके समान महिमा और महानता में हो? फिर भी तुम अदन के पेड़ों के साथ पृथ्वी के नीचे लाए जाओगे; तुम खतनारहितों के बीच लेते रहोगे, उन लोगों के साथ जो तलवार से मारे गए थे। यह फिरौन

## यहेजकेल

और उसकी सारी सेना है!"<sup>11</sup> यहोवा परमेश्वर की घोषणा है।"

**32** अब बारहवें वर्ष में, बारहवें महीने में, महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फिरैन के लिए शोकगीत गाओ, और उससे कहो,

'दूने अपने आप को जातियों के युवा सिंह के समान समझा, किर भी तु समुद्र के राक्षस के समान है और तू अपनी नदियों में फूट पड़ा और अपने पैरों से जल को गंदा कर दिया और उनकी नदियों को दृष्टित कर दिया।'

<sup>3</sup> यहोवा परमेश्वर यह कहता है:

"अब मैं तुझ पर अपना जाल फैलाऊंगा बहुत से लोगों की एक टुकड़ी के साथ, और वे तुझे मेरे जाल में उठा लेंगे।<sup>4</sup> और मैं तुझे भूमि पर छोड़ दूँगा, मैं तुझे खुले मैदान में फेंक दूँगा, और मैं आकाश के सभी पक्षियों को तुझ पर बसाऊंगा, और मैं पृथ्वी के सभी जनवरों को तुझसे संतुष्ट करूँगा।<sup>5</sup> और मैं तेरे मांस को पहाड़ों पर डाल दूँगा और तेरे कर्चरे से घाटियों को भर दूँगा।<sup>6</sup> मैं तेरे रक्त के बहाव से भूमि को पीने दूँगा पहाड़ों तक, और घाटियाँ तुझसे भर जाएंगी।<sup>7</sup> और जब मैं तुझे बुझा दूँगा, मैं आकाश को ढक दूँगा और उनके तारों को अंधकारमय कर दूँगा, मैं सूर्य को बादल से ढक दूँगा, और चंद्रमा अपनी रोशनी नहीं देगा।<sup>8</sup> आकाश के सभी चमकते प्रकाश मैं तुझ पर अंधकार कर दूँगा और तेरी भूमि पर अंधकार डाल दूँगा।" यहोवा परमेश्वर की घोषणा है।<sup>9</sup> "मैं कई लोगों के दिलों को परेशान करूँगा जब मैं तेरी विनाश को जातियों में लाऊंगा, उन देशों में जिन्हें तू नहीं जाना।<sup>10</sup> और मैं कई लोगों को तुझसे ध्यभीत करूँगा, और उनके राजा तुझसे ध्यानक डरेंगे जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चलाऊंगा, और वे हर पल कायेंगे, हर व्यक्ति अपने जीवन के लिए तेरे पतन के दिन।"

<sup>11</sup> क्योंकि यहोवा परमेश्वर यह कहता है:

"बाबुल के राजा की तलवार तुझ पर आएगी।<sup>12</sup> योद्धाओं की तलवारों से मैं तेरी भीड़ को गिरा दूँगा, वे सभी जातियों में निरदी हैं, और वे मिस्र के गर्व को नष्ट कर देंगे, और उसकी सारी भीड़ नष्ट हो जाएगी।<sup>13</sup> मैं उसकी सारी गायों को भी बहुत से जल के पास से समाप्त कर दूँगा, और मनुष्य का पैर उन्हें फिर से गंदा

नहीं करेगा, न ही जानवरों के खुर उन्हें गंदा करेंगे।<sup>14</sup> तब मैं उनके जल को रियर कर दूँगा और उनकी नदियों को तेल की तरह बहने दूँगा, यहोवा परमेश्वर की घोषणा है।<sup>15</sup> "जब मैं मिस्र की भूमि को उजाड़ बनाऊंगा, और भूमि को उसके भरन वाले से रहित कर दूँगा, जब मैं उसमें रहने वालों को मारूँगा, तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

<sup>16</sup> यह एक शोकगीत है, और वे इसे गाएंगे। जातियों की बेटियाँ इसे गाएंगी। वे मिस्र के लिए और उसकी सारी भीड़ के लिए शोक करेंगी।" यहोवा परमेश्वर की घोषणा है।<sup>17</sup> बारहवें वर्ष में, महीने के पंद्रहवें दिन, यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>18</sup> "मनुष्य के पुत्र, मिस्र की भीड़ के लिए शोक करो, और उसे और महान जातियों की बेटियों को गड्ढे में जाने वालों के साथ अशोलाक में ले जाओ।<sup>19</sup> तु सुंदरता में किससे बढ़कर है? नीचे जा और खतनारहितों के साथ अपनी शय्या बना।<sup>20</sup> वे तलवार से मारे गए लोगों के बीच गिरेंगे। तलवार दी गई है, उसे और उसकी सारी भीड़ को खींच ले जाओ।<sup>21</sup> शोआले के बीच से शक्तिशाली लोग उसके और उसके सहायकों के बारे में कहेंगे: वे नीचे चले गए हैं, वे शांत हैं, खतनारहित, तलवार से मारे गए।<sup>22</sup> असीरिया वहाँ है अपनी सारी संगति के साथ; उसकी कब्रें उसके चारों ओर हैं। वे सभी तलवार से मारे गए हैं,<sup>23</sup> जिनकी कब्रें गड्ढे के सबसे दूरस्थ भागों में स्थापित हैं, और उसकी संगति उसकी कब्र के चारों ओर है। वे सभी मारे गए, तलवार से गिरे, जिन्होंने जीवितों की भूमि में आतंक फैलाया।<sup>24</sup> एलाम वहाँ है अपनी सारी भीड़ के साथ अपनी कब्र के चारों ओर, वे सभी मारे गए, तलवार से गिरे, जो पृथ्वी के निचले भागों में खतनारहित गए, जिन्होंने जीवितों की भूमि में अपना आतंक फैलाया, और गड्ढे में जाने वालों के साथ अपनी अपमान सहा।<sup>25</sup> उन्होंने उसके लिए मारे गए लोगों के बीच एक शय्या बनाई है उसकी सारी भीड़ के साथ। उसकी कब्रें उसके चारों ओर हैं। वे सभी खतनारहित, तलवार से मारे गए (हालांकि उन्होंने जीवितों की भूमि में अपना आतंक फैलाया), और उन्होंने गड्ढे में जाने वालों के साथ अपनी अपमान सहा। वे मारे गए लोगों के बीच रखे गए।<sup>26</sup> मेशेक, तुबाल, और उनकी सारी भीड़ वहाँ हैं; उनकी कब्रें उनके चारों ओर हैं। वे सभी तलवार से मारे गए, खतनारहित, हालांकि उन्होंने जीवितों की भूमि में अपना आतंक फैलाया।<sup>27</sup> न ही वे खतनारहित गिरे हुए योद्धाओं के पास लेटे हैं जो अपने युद्ध के हथियारों के साथ शोआले में गए, और जिनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी गईं, परंतु उनके अपराध के लिए दंड उनके हड्डियों पर था, हालांकि योद्धाओं का आतंक जीवितों की

## यहेजकेल

भूमि में था।<sup>28</sup> परंतु खतनारहितों के बीच तू टूट जाएगा और तलवार से मारे गए लोगों के साथ लेट जाएगा।<sup>29</sup> वहाँ एदोम भी है, उसके राजा और उसके सभी नेता, जो अपनी शक्ति के बावजूद तलवार से मारे गए लोगों के साथ रखे गए हैं; वे खतनारहितों के साथ लेंगे और गढ़े में जाने वालों के साथ।<sup>30</sup> वहाँ उत्तर के सभी प्रधान भी हैं, और सभी सिदोनियन, जो अपनी शक्ति के आतंक के बावजूद, शर्म में मारे गए लोगों के साथ नीचे चले गए। इसलिए वे तलवार से मारे गए लोगों के साथ खतनारहित लेट गए, और गढ़े में जाने वालों के साथ अपनी अपमान सहा।<sup>31</sup> इन सबको फिरौन देखेंगा, और वह अपनी सारी भीड़ के लिए तलवार से मारे गए लोगों के लिए सांत्वना पाएगा, फिरौन और उसकी सारी सेना, "यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।"<sup>32</sup> "हालांकि मैंने उसे जीवितों की भूमि में आतंक फैलाया, फिर भी उसे खतनारहितों के बीच लेटने के लिए बनाया जाएगा तलवार से मारे गए लोगों के साथ—फिरौन और उसकी सारी भीड़," यहोवा परमेश्वर की धोषणा है।

**33** और यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, अपनी प्रजा के पुत्रों से बात करो और उनसे कहो, 'यदि मैं किसी देश पर तलवार लाऊँ, और उस देश के लोग अपने में से एक व्यक्ति को लेकर उसे अपना प्रहरी बनाएँ,<sup>3</sup> और वह उस देश पर आती हुई तलवार को देखे और तुरही बजाए और लोगों को चेतावनी दे,<sup>4</sup> तो कोई व्यक्ति जो तुरही की आवाज सुनता है पर चेतावनी नहीं लेता, और तलवार आकर उसे ले जाती है, उसका खून उसके अपने सिर पर होगा।<sup>5</sup> उसने तुरही की आवाज सुनी पर चेतावनी नहीं ली; उसका खून उसके अपने ऊपर होगा। लेकिन यदि उसने चेतावनी ली होती, तो वह अपनी जान बचा लेता।<sup>6</sup> पर यदि प्रहरी तलवार को आते हुए देखता है और तुरही नहीं बजाता, और लोग चेतावनी नहीं पाते, और तलवार आकर उनमें से किसी को ले जाती है, तो वह अपने अपराध के लिए से जाया जाएगा; पर मैं उसके खून की मांग प्रहरी के हाथ से करूँगा।"<sup>7</sup> "अब तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, मैंने तुरही इसाएल के घराने के लिए प्रहरी नियुक्त किया है; इसलिए तुम मेरे मुख से एक संदेश सुनोगे और उहरें मेरी ओर से चेतावनी दोगे।<sup>8</sup> जब मैं दुष्ट से कहता हूँ, तुम निश्चित रूप से मरोगे,<sup>9</sup> और तुम दुष्ट को उसके मार्ग के बारे में चेतावनी नहीं देते, तो वह दुष्ट व्यक्ति अपने अपराध के लिए मरेगा, पर मैं उसके खून की मांग तुम्हारे हाथ से करूँगा।<sup>10</sup> लेकिन यदि तुम अपनी ओर से एक दुष्ट व्यक्ति को उसके मार्ग से मुड़ने की चेतावनी देते हो और वह अपने मार्ग से नहीं मुड़ता, तो वह अपने अपराध के लिए मरेगा, पर तुमने अपनी

जान बचा ली है।<sup>11</sup> "अब तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, इसाएल के घराने से कहो, 'यह वही है जो तुमने कहा है: "निश्चित रूप से हमारे अपराध और हमारे पाप हम पर हैं, और हम उनमें सँड रहे हैं; तब हम कैसे जीवित रह सकते हैं?"<sup>12</sup> उनसे कहो, 'जैसा मैं जीवित हूँ।' प्रभु यहोवा कहता है, मुझे दुष्ट की मत्य में कोई प्रसन्नता नहीं है, बल्कि यह कि दुष्ट अपने मार्ग से मुड़कर जीवित रहे। लौट आओ, लौट आओ अपनी बुरी राहों से! तब तुम क्यों मरोगे, इसाएल के घराने?"<sup>13</sup> "अब तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, अपनी प्रजा से कहो, 'धर्मी की धार्मिकता उसे उसके अपराध के दिन नहीं बचाएगी, और दुष्ट की दुष्टता के लिए वह उस दिन नहीं ठोकर खाएगा जब वह अपनी दुष्टता से मुड़ता है; जबकि एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता से उस दिन जीवित नहीं रहेगा जब वह पाप करता है।'<sup>14</sup> जब मैं धर्मी से कहता हूँ कि वह निश्चित रूप से जीवित रहेगा, और वह अपनी धार्मिकता पर भरोसा करता है और अन्याय करता है, तो उसकी कोई भी धार्मिक क्रियाएँ याद नहीं की जाएंगी; बल्कि उसी अन्याय के लिए जो उसने किया है, वह मरेगा।<sup>15</sup> लेकिन जब मैं दुष्ट से कहता हूँ, 'तुम निश्चित रूप से मरोगे,' और वह अपने पाप से मुड़ता है और न्याय और धार्मिकता का पालन करता है,<sup>16</sup> यदि एक दुष्ट व्यक्ति एक प्रतिकालीनांतरा है, जो उसने लूट में लिया है उसे चुकाता है, उन विधियों के अनुसार चलता है जो जीवन सुनिश्चित करती है बिना अन्याय किए, वह निश्चित रूप से जीवित रहेगा।<sup>17</sup> फिर भी तुम्हारी प्रजा कहती है, प्रभु का मार्ग सही नहीं है,<sup>18</sup> जबकि यह उनका अपना मार्ग है जो सही नहीं है।<sup>19</sup> जब एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता से मुड़ता है और अन्याय करता है, तो वह उसमें मरेगा।<sup>20</sup> लेकिन जब एक दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता से मुड़ता है और न्याय और धार्मिकता का पालन करता है, तो वह उनके द्वारा जीवित रहेगा।<sup>21</sup> फिर भी तुम कहते हो, 'प्रभु का मार्ग सही नहीं है।' मैं तुमने से प्रत्येक का न्याय उसके मार्गों के अनुसार करूँगा, इसाएल के घराने!"<sup>22</sup> अब हमारे निर्वासन के बाहरवै वर्ष में, दसवें महीने के पांचवें दिन, यरूशलेम से शरणार्थी मेरे पास आए, यह कहते हुए, "नगर को ले लिया गया है!"<sup>23</sup> अब यहोवा का हाथ मुझ पर शाम को था, शरणार्थियों के आने से पहले। और उसने मेरे मुख को उस समय खोला जब वे सुबह मेरे पास आए; इसलिए मेरा मुख खुल गया, और मैं अब मूक नहीं था।<sup>24</sup> 23 तब यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए, "मनुष्य के पुत्र, जो इसाएल की भूमि में इन खंडहरों में

## यहेजकेल

रहते हैं, वे कह रहे हैं, 'अब्राहम अकेला था, फिर भी उसने भूमि को प्राप्त किया; इसलिए हम जो बहुत हैं, हमें भूमि एक संपत्ति के रूप में दी गई है।'<sup>25</sup> इसलिए उनसे कहो, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है: 'तुम रक्त के साथ मांस खाते हो, अपनी आँखें अपने मूर्तियों की ओर उठाते हो जैसे तुम रक्त बहाते हो।' क्या तब तुम्हें भूमि प्राप्त करनी चाहिए? <sup>26</sup> तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो, तुम धृणित काम करते हो, और तुममें से प्रयोग अपने पड़ोसी की पत्नी को अपवित्र करता है। क्या तब तुम्हें भूमि प्राप्त करनी चाहिए? <sup>27</sup> तुम उहें यह कहो: 'यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है: 'जैसा मैं जीवित हूँ, जो खंडहरों में हैं वे निश्चित रूप से तलवार से गिरेंगे, और जो खुले मैदान में हैं उन्हें मैं जानवरों को खाने के लिए ढांगा, और जो गढ़ों और गुफाओं में हैं वे लेणे से मरेंगे।' <sup>28</sup> और मैं भूमि को एक उजाड़ और बर्बादी में बदल दूँगा, और उसकी शक्ति का गर्व समाप्त हो जाएगा; और इसाएल के पहाड़ उजाड़ हो जाएंगे, जिनमें से कोई नहीं गुरुरेगा। <sup>29</sup> तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैं भूमि को एक उजाड़ और बर्बादी में बदल दूँगा उनके द्वारा किए गए सभी धृणित कामों के कारण।'<sup>30</sup> 'लोकिन तुम्हारे लिए, मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे साथी नागरिक जो दीवारों के पास और घरों के दरवाजों पर तुम्हारे बारे में बात करते हैं, एक-दूसरे से कहते हैं, 'आओ अब और सुनो कि प्रभु से आने वाला संदेश क्या है।'<sup>31</sup> और वे तुम्हारे पास आते हैं जैसे लोग आते हैं, और तुम्हारे सामने बैठते हैं जैसे मेरे लोग और तुम्हारे शब्द सुनते हैं, लेकिन वे उहें पालन नहीं करते, क्योंकि वे अपने मुँह से कामुक इच्छाओं को व्यक्त करते हैं, और उनका दिल उनके अवैध लाभ का अनुसरण करता है।<sup>32</sup> देखो, तुम उनके लिए एक प्रेम गीत की तरह हो जिसमें एक सुंदर आवाज वाला व्यक्ति होता है और जो एक वायांत्र पर अच्छी तरह से बजाता है, क्योंकि वे तुम्हारे शब्द सुनते हैं लेकिन उहें पालन नहीं करता।<sup>33</sup> तो जब यह आता है—देखो, यह आ रहा है—तब वे जानेंगे कि उनके बीच एक नबी था।'

**34** तब यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, <sup>2</sup> 'मनुष्य के पुत्र, इसाएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यवाणी कर। उन चरवाहों से कह, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'इसाएल के चरवाहों पर हाय जो स्वयं को खिला रहे हैं! क्या चरवाहों को झुंड को नहीं खिलाना चाहिए? <sup>3</sup> तुम मोटी भेड़ का मांस खाते हो और उन से अपने को बस्त पहनते हो, तुम मोटी भेड़ों को मारते हो, परंतु झुंड को नहीं खिलाते।' <sup>4</sup> जो बीमार हैं उहें तुमने बल नहीं दिया, जो रोगी हैं उहें तुमने चंगा नहीं किया, जो टूटी हुई हैं उहें तुमने बांधा नहीं, जो बिखरी हुई हैं

उन्हें तुमने लौटाया नहीं, और जो खो गई हैं उहें तुमने खोजा नहीं; परंतु तुमने बल और हिंसा से उन पर प्रभुत्व किया। <sup>5</sup> और वे चरवाहे की कमी के कारण बिखर गए, और वे मैदान के हर जानवर के लिए भोजन बन गए और हर ऊँची पहाड़ी पर भटक गया; मेरा झुंड पृथ्वी की सारी सतह पर बिखर गया, और कोई नहीं था जो उहें खोजे या उनके लिए खोज करे।'<sup>6</sup> <sup>7</sup> इसलिए, हे चरवाहों, यहोवा का वचन सुनो: <sup>8</sup> 'जैसा कि मैं जीवित हूँ, <sup>9</sup> यहोवा परमेश्वर कहता है, 'निश्चित रूप से क्योंकि मेरा झुंड लूट बन गया है, मेरा झुंड सभी मैदान के जानवरों के लिए भोजन बन गया है और मेरे झुंड को नहीं खोजा, बल्कि चरवाहों ने स्वयं को खिलाया और मेरे झुंड को नहीं खिलाया।'<sup>10</sup> इसलिए, हे चरवाहों, यहोवा का वचन सुनो: <sup>11</sup> 'यह यहोवा परमेश्वर कहता है: 'देखो, मैं चरवाहों के विरुद्ध हूँ, और मैं उनसे अपनी भेड़ों की मांग करूँगा और उहें भेड़ों की देखभाल करने से रोकूँगा। इसलिए चरवाहे अब स्वयं को नहीं खिलाएंगे, बल्कि मैं अपने झुंड को उनके मुँह से बचाऊँगा, ताकि वे उनके लिए भोजन न बनें।'<sup>11</sup> क्योंकि यह यहोवा परमेश्वर कहता है: 'देखो, मैं स्वयं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा और उनकी देखभाल करूँगा।'<sup>12</sup> जैसे एक चरवाहा अपने बिखरे हुए झुंड के बीच में होता है, वैसे ही मैं अपनी भेड़ों की देखभाल करूँगा और उहें उन सभी स्थानों से बचाऊँगा जहाँ वे एक बादल और अंधेरे दिन पर बिखर गए थे।<sup>13</sup> और मैं उहें लोगों से बाहर लाऊँगा और उहें देशों से इकट्ठा करूँगा और उहें उनकी अपनी भूमि में लाऊँगा; और मैं उहें इसाएल के पहाड़ों पर, नदियों के किनारे, और भूमि के सभी बसे हुए स्थानों में खिलाऊँगा।<sup>14</sup> मैं उहें एक अच्छे चरागाह में खिलाऊँगा, और उनका चराई स्थान इसाएल के ऊँचे पहाड़ों पर होगा। वहाँ वे एक अच्छे चराई स्थान में लैटेंगे और इसाएल के पहाड़ों पर समृद्ध चरागाह में खिलेंगे।<sup>15</sup> मैं स्वयं अपने झुंड को खिलाऊँगा, और मैं स्वयं उहें विश्राम के लिए ले जाऊँगा, यहोवा परमेश्वर कहता है।<sup>16</sup> 'मैं खोए हुए को सोंज़गा, बिखरे हुए को वापस लाऊँगा, दूरे हुए को बांधूँगा, और बीमार को बल दूँगा; परंतु मोटे और मजबूत को मैं समाप्त कर दूँगा।'<sup>17</sup> जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे झुंड, यहोवा परमेश्वर यह कहता है: 'देखो, मैं एक भेड़ और दूसरी भेड़ के बीच, मेड़ों और बकरों के बीच न्याय करने जा रहा हूँ।'<sup>18</sup> क्या यह तुम्हारे लिए बहुत कम है कि तुम अच्छे चरागाह में चरते हो, कि तुम अपने पैरों से बाकी चरवाहों को रोंदते हो? या कि तुम साफ पानी पीते हो, कि तुम अपने पैरों से बाकी की गंदा करते हो? <sup>19</sup> परंतु

## यहेजकेल

जहाँ तक मेरे झुंड का सवाल है, उहें वही खाना चाहिए जो तुम अपने पैरों से रौदते हो और वही पानी पीना चाहिए जो तुम अपने पैरों से गंदा करते हो!''<sup>20</sup> इसलिए, यहोवा परमेश्वर उहें यह कहता है: 'देखो, मैं स्वयं मौटी भेड़ और दुबली भेड़ के बीच स्याय करने जा रहा हूँ.<sup>21</sup> क्योंकि तुम अपनी बगल और कंधे से धक्का देते हो, और अपनी सींगों से सभी कमज़ोरों को मारते हो जब तक कि तुम उहें बाहर न बिखेर दो,<sup>22</sup> इसलिए, मैं अपने झुंड को बचाऊंगा, और वे अब लूट नहीं होंगे; और मैं एक भेड़ और दूसरी भेड़ के बीच स्याय करूँगा।<sup>23</sup> तब मैं उनके ऊपर एक चरवाहा नियुक्त करूँगा, मेरा सेवक दाऊद, और वह उहें खिलाएगा; वह स्वयं उहें खिलाएगा और उनका चरवाहा होगा।<sup>24</sup> और मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर होऊंगा, और मेरा सेवक दाऊद उनके बीच राजकुमार होगा; मैं, यहोवा, ने यह कहा है।<sup>25</sup> और मैं उनके साथ शांति की वाचा करूँगा और भूमि से हानिकारक जानवरों को हटा दूँगा, ताकि वे जंगल में सुरक्षित रूप से रहें और जंगल में सो सकें।<sup>26</sup> और मैं उहें और अपने पहाड़ के चारों ओर के स्थानों को आशीर्वाद बनाऊंगा। और मैं उनके मौसम में वर्षा कराऊंगा; वे आशीर्वाद की वर्षा होंगी।<sup>27</sup> इसके अलावा, मैदान का पेढ़ अपना फल देगा, और पृथ्वी अपनी उपज देगी, और वे अपनी भूमि पर सुरक्षित होंगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ, जब मैंने उनके जुए की सलाखों को तोड़ दिया और उहें उन लोगों के हाथ से बचाया जिहोन्हें उहें गुलाम बनाया था।<sup>28</sup> और वे अब राष्ट्रों द्वारा लूटे नहीं जाएंगे, और पृथ्वी के जानवर उहें नहीं खाएंगे; परंतु वे सुरक्षित रूप से रहेंगे, और कोई उहें डराएगा नहीं।<sup>29</sup> और मैं उनके लिए एक प्रसिद्ध पौधारोपण स्थान स्थापित करूँगा, और वे अब भूमि में अकाल के शिकार नहीं होंगे, और वे अब राष्ट्रों के अपमान को सहन नहीं करेंगे।<sup>30</sup> तब वे जानेंगे कि मैं, यहोवा उनका परमेश्वर, उनके साथ हूँ, और वे, इसाएल का धर, मेरे लोग हैं," यहोवा परमेश्वर कहता है।<sup>31</sup> "जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे झुंड, मेरे चरागाह की भेड़ें, तुम मानव हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ," यहोवा परमेश्वर कहता है।

**35** फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, अपना मुख सेईर पर्वत की ओर कर और उसके विरुद्ध भविष्यावाणी कर,<sup>3</sup> और उससे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: 'देखो, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, सेईर पर्वत, और मैं अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाऊंगा।' और तुझे उजाड़ और बर्बाद कर दूँगा।<sup>4</sup> मैं तेरे नगरों को खंडहर बना दूँगा, और तु उजाड़ हो जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।<sup>5</sup> क्योंकि तूने सदा से शत्रुता रखी है और इसाएल के पुत्रों को तलवार के हवाले कर

दिया उनकी विपत्ति के समय, अंतिम दंड के समय,"<sup>6</sup> इसलिए, जैसा मैं जीवित हूँ," प्रभु यहोवा कहता है, "मैं निश्चित रूप से तुझे रक्तपात के लिए अभिशप्त कर दूँगा, और रक्तपात तेरा पीछा करेगा; चूंकि तूने रक्तपात से घुणा नहीं की, इसलिए रक्तपात तेरा पीछा करेगा।<sup>7</sup> इसलिए मैं सेईर पर्वत को उजाड़ और बर्बाद कर दूँगा, और उसमें से अनेजाने वाले को समाप्त कर दूँगा।<sup>8</sup> मैं उसके पहाड़ों को उसके मारे गए लोगों से भर दूँगा; तेरी पहाड़ियों पर, तेरी घाटियों में, और तेरी सभी नदियों में तलवार से मारे गए लोग गिरेंगे।<sup>9</sup> मैं तुझे सदा के लिए उजाड़ कर दूँगा, और तेरे नगर बसे नहीं रहेंगे। तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।<sup>10</sup> क्योंकि तूने कहा, ये दो राष्ट्र और ये दो देश मेरे होंगे, और हम उहें प्राप्त करेंगे; जबकि यहोवा वहाँ था,<sup>11</sup> इसलिए, जैसा मैं जीवित हूँ," प्रभु यहोवा कहता है, "मैं तुझसे तेरे क्रोध और तेरी इर्ष्या के अनुसार व्यवहार करूँगा जो तूने उनके प्रति अपनी घुणा के कारण दिखाई। इसलिए जब मैं तुझ पर स्याय करूँगा, तब मैं अपने को उनके बीच प्रकट करूँगा।<sup>12</sup> तब तू जान लेगा कि मैं, यहोवा, ने तेरे सभी तिरस्करारूप शब्दों को सुना है जो तूने इसाएल के पहाड़ों के विरुद्ध कहे हैं, यह कहते हुए, 'वे उजाड़ हो गए हैं; उहें हमें भोजन के रूप में दिया गया है।'<sup>13</sup> और तूने अपने मुँह से मेरे विरुद्ध घंटड से बातें की हैं और मेरे विरुद्ध अपने शब्दों को बढ़ाया है; मैंने स्वयं इसे सुना है।"<sup>14</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "जैसे सारी पृथ्वी आनन्दित होती है, मैं तुझे उजाड़ कर दूँगा।<sup>15</sup> जैसे तू इसाएल के धराने की विरासत पर आनन्दित हुआ क्योंकि वह उजाड़ था, वैसे ही मैं तुझ पर वही करूँगा। तू उजाड़ हो जाएगा, सेईर पर्वत, और सारा एदोम, सबका सब। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

**36** अब तू हे मनुष्य के पुत्र, इसाएल के पर्वतों से भविष्यावाणी कर और कह, 'इसाएल के पर्वतों, प्रभु का वचन सुनो।'<sup>2</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "चूंकि शत्रु ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है, 'आह! शाश्वत ऊँचाइयाँ हमारी सम्पत्ति बन गई हैं,'<sup>3</sup> इसलिए, भविष्यावाणी कर और कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: 'अच्छे कारण से उहेंने तुम्हें उजाड़ दिया और हर तरफ से तुहें कुचल दिया, ताकि तुम बाकी राष्ट्रों की सम्पत्ति बन जाओ, और तुम उन लोगों की बातों और निदा में उठाए गए हो।'<sup>4</sup> इसलिए, इसाएल के पर्वतों, प्रभु यहोवा का वचन सुनो: प्रभु यहोवा यह पर्वतों, पहाड़ियों, घाटियों, वाटियों, उजाड़ खड़हरों, और छोड़े गए नगरों से कहता है, जो चारों ओर के बाकी राष्ट्रों के लिए लूट और निदा का लक्ष्य बन गए हैं—<sup>5</sup> इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है: "निश्चित रूप से मेरी जलन की आग में मैंने बाकी राष्ट्रों

## यहेजकेल

के विरुद्ध और एदोम के सभी लोगों के विरुद्ध बोला है, जिहोने मेरे देश को सम्पत्ति के रूप में अपने लिए अपनाया, पूर्ण हर्ष और आत्मा की तिरस्कार के साथ, इसे तृट के लिए निकालने के लिए।<sup>6</sup> इसलिए, इसाएल की भूमि के विषय में भविष्यवाची कर और पर्वतों, पहाड़ियों, घाटियों, और वादियों से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: "देखो, मैंने अपनी जलन और अपने क्रोध में बोला है क्योंकि तुमने राष्ट्रों की अपमान सहा है।"<sup>7</sup> इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है: "मैंने शपथ खाई है कि जो राष्ट्र तुम्हारे चारों ओर है वे निश्चित रूप से अपने अपमान सहेंगे।"<sup>8</sup> परन्तु तुम, इसाएल के पर्वतों, तुम अपनी शाखाएँ बढ़ाओगे और मेरे लोगों इसाएल के लिए फल लाओगे; क्योंकि वे आने वाले हैं।<sup>9</sup> क्योंकि, देखो, मैं तुम्हारे लिए हूँ, और मैं तुम्हारी और लौट्टांगा, और तुम खेती किए जाओगे और बोए जाओगे।<sup>10</sup> और मैं तुम पर लोगों को बढ़ाऊंगा, इसाएल का समस्त धर, सब; और नगर बसे होंगे, और खंडहर फिर से बनाए जाएंगे।<sup>11</sup> मैं तुम पर लोगों और पशुओं को बढ़ाऊंगा, और वे बढ़ोगे और फलेंगे; और मैं तुम्हें पहले की तरह बसाऊंगा, और तुम्हारे साथ पहले से बेहतर व्यवहार करूंगा। तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ।<sup>12</sup> हाँ, मैं लोगों को—मेरे लोग इसाएल—तुम पर चलाऊंगा और तुम्हें अधिकार में लूंगा, ताकि तुम उनकी विरासत बन जाओ और फिर कभी उहें बच्चों से वर्चित न करो।<sup>13</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "क्योंकि वे तुमसे कहते हैं, 'तुम लोगों का भक्षक हो और अपनी जाति को बच्चों से वर्चित कर चुके हो।'<sup>14</sup> इसलिए तुम अब और लोगों को नहीं खा ओगे और अब और अपनी जाति को बच्चों से वर्चित नहीं करोगे," प्रभु यहोवा की यह घोषणा है।<sup>15</sup> मैं तुम्हें अब और राष्ट्रों से अपमान नहीं सुनें दूंगा, न ही तुम अपनी जाति को अब और ठोकर खिलाओगे; प्रभु यहोवा की यह घोषणा है।<sup>16</sup> तब प्रभु का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>17</sup> "हे मनुष्य के पुत्र, जब इसाएल का धर अपनी भूमि में रह रहा था, उहोनें अपनी चाल और अपने कर्मों से उसे अशुद्ध किया; मेरे सामने उनकी चाल एक अशुद्ध स्त्री की अशुद्धता के समान थी।"<sup>18</sup> इसलिए मैंने उन पर अपना क्रोध उंडेता, उस रक्त के लिए जो उहोनें भूमि पर बहाया था, क्योंकि उहोनें उसे अपनी मूर्तियों से अशुद्ध किया था।<sup>19</sup> मैंने उहें राष्ट्रों के बीच भी बिखेर दिया, और वे देशों में फैल गए। उनके चाल और उनके कर्मों के अनुसार मैंने उनका न्याय किया।<sup>20</sup> जब वे उन राष्ट्रों में आए जहाँ वे गए, उहोनें मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया, क्योंकि उनके बारे में कहा गया, ये प्रभु के लोग हैं, फिर भी उहोनें उसकी भूमि छोड़ दी।<sup>21</sup> परन्तु मुझे अपने पवित्र नाम की चिंता थी, जिसे इसाएल

के घर ने उन राष्ट्रों में अपवित्र किया था जहाँ वे गए थे।<sup>22</sup> इसलिए इसाएल के घर से कहो, 'प्रभु यहोवा यह कहता है: "यह तुम्हारे कारण नहीं है, इसाएल के घर, कि मैं कार्य करने जा रहा हूँ, बल्कि मेरे पवित्र नाम के कारण, जिसे तुमने उन राष्ट्रों में अपवित्र किया है जहाँ तुम गए थे।"<sup>23</sup> और मैं अपने महान नाम की पवित्रता को पुनः स्पापित करूंगा जिसे उन राष्ट्रों में अपवित्र किया गया है, जिसे तुमने उनके बीच अपवित्र किया है। तब राष्ट्र जानेंगे कि मैं प्रभु हूँ' प्रभु यहोवा की यह घोषणा है, "जब मैं तुम्हारे बीच उनके सामने अपने को पवित्र साबित करूंगा।"<sup>24</sup> क्योंकि मैं तुम्हें राष्ट्रों से लौंगा, और तुम्हें सभी देशों से इकट्ठा करूंगा; और मैं तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि में लाऊंगा।<sup>25</sup> तब मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूंगा, और तुम स्वच्छ हो जाओगे; मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और तुम्हारी सभी मूर्तियों से शुद्ध करूंगा।<sup>26</sup> इसके अलावा, मैं तुम्हें एक नया हृदय दंगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा डालूंगा; और मैं तुम्हारे मांस से पर्यावर का हृदय निकाल दंगा और तुम्हें मांस का हृदय दंगा।<sup>27</sup> और मैं तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा डालूंगा और यह सुनिश्चित करूंगा कि तुम मेरी विधियों में चलो, और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहो।<sup>28</sup> और तुम उस भूमि में निवास करोगे जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दी थी; इसलिए तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा।<sup>29</sup> इसके अलावा, मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता से बचाऊंगा; और मैं अनाज के लिए बुलाऊंगा और उसे बढ़ाऊंगा, और मैं तुम पर अकाल नहीं लाऊंगा।<sup>30</sup> मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज को भी बढ़ाऊंगा, ताकि तुम फिर से राष्ट्रों के बीच अकाल की अपमान न सहो।<sup>31</sup> तब तुम अपनी बुरी चाल और अपने कर्मों को जो अच्छे नहीं थे, याद करोगे, और तुम अपनी दृष्टि में अपनी बुराईयों और अपनी घृणाओं के लिए स्वर्यं से घृणा करोगे।<sup>32</sup> मैं यह तुम्हारे कारण नहीं कर रहा हूँ, प्रभु यहोवा की यह घोषणा है; "तुम्हें यह जात हो। अपनी चाल के लिए लजित और अपमानित हो, इसाएल का धर!"<sup>33</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "जिस दिन मैं तुम्हें तुम्हारी सारी दोष से शुद्ध करूंगा, मैं नारों को आबाद करूंगा, और खंडहर फिर से बनाए जाएंगे।"<sup>34</sup> उजाड़ भूमि को खेती की जाएगी, बजाय इसके कि वह उन सभी की दृष्टि में उजाड़ हो जो वहाँ से गुजरते हैं।<sup>35</sup> और वे कहेंगे, यह उजाड़ भूमि अदन की बाग जैसी हो गई है, और बबाद, उजाड़, और खंडहर नगर किलेबंद और बसे हुए हैं।<sup>36</sup> तब जो राष्ट्र तुम्हारे चारों ओर बचे हैं, वे जानेंगे कि मैं, प्रभु, ने खंडहर स्थानों को फिर से बनाया है और जो उजाड़ था उसे लगाया है, मैं, प्रभु, ने यह कहा है, और मैं इसे करूंगा।<sup>37</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "मैं इसाएल के घर को यह

## यहेजकेल

मुझसे मांगने दूंगा: मैं उनके लोगों को एक झुंड की तरह बढ़ाऊंगा।<sup>38</sup> बलिदानों के लिए झुंड की तरह, युक्तशलेम में उसके नियत पर्वों के दौरान के झुंड की तरह, वैसे ही बर्बाद नगर लोगों के झुंड से भर जाएंगे। तब वे जानेंगे कि मैं प्रभु हूँ॥

**37** प्रभु का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे प्रभु की आत्मा के द्वारा बाहर ले जाकर एक घाटी के बीच में बिठा दिया; और वह हड्डियों से भरी हुई थी।<sup>2</sup> उसने मुझे उनके चारों ओर से होकर चलाया, और देखो, घाटी की सतह पर बहुत सारी हड्डियाँ थीं; और देखो, वे बहुत सूखी हुई थीं।<sup>3</sup> तब उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या ये हड्डियाँ जीवित हो सकती हैं?" और मैंने उत्तर दिया, "हे प्रभु यहोवा, तू ही जानता है!"<sup>4</sup> फिर उसने मुझसे कहा, "इन हड्डियों पर भविष्यवाणी कर और उनसे कह, हे सूखी हड्डियों, प्रभु का वचन सुनो।"<sup>5</sup> प्रभु यहोवा इन हड्डियों से यह कहता है: "देखो, मैं तुम्हारे भीतर श्वास डालूँगा ताकि तुम जीवित हो जाओ।"<sup>6</sup> और मैं तुम्हारे ऊपर नसे चढ़ाऊँगा, तुम पर मांस उगाऊँगा, तुम्हें चमड़ी से ढक दूँगा, और तुम्हारे भीतर श्वास डालूँगा ताकि तुम जीवित हो जाओ; और तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ॥<sup>7</sup> तो मैंने जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी, वैसा ही भविष्यवाणी की; और जैसे ही मैंने भविष्यवाणी की, एक आवाज़ हुई, और देखो, एक खड़खड़ाहट हुई; और हड्डियाँ एक-दूसरे से जुड़ गईं, हड्डी अपनी हड्डी से।<sup>8</sup> और मैंने देखो, और देखो, उन पर नसें थीं, और मांस उग आया और चमड़ी ने उन्हें ढक लिया; परंतु उनमें श्वास नहीं थी।<sup>9</sup> तब उसने मुझसे कहा, "श्वास पर भविष्यवाणी कर, भविष्यवाणी कर, हे मनुष्य के पुत्र, और श्वास से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: 'चारों दिशाओं से आ, हे श्वास, और इन मरे गए लोगों पर फूँक ताकि वे जीवित हो जाएँ।'"<sup>10</sup> तो मैंने जैसा उसने मुझे आज्ञा दी थी, वैसा ही भविष्यवाणी की, और श्वास उनमें प्रवेश कर गई, और वे जीवित हो गए और अपने पैरों पर खड़े हो गए, एक अत्यधिक बड़ी सेना।<sup>11</sup> तब उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, ये हड्डियाँ इसाएल का पूरा घराना हैं। देखो, वे कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ सुख गई हैं और हमारी आशा नष्ट हो गई है। हम पूरी तरह से कट गए हैं।'<sup>12</sup> इसलिए उनसे भविष्यवाणी कर और कह, 'प्रभु यहोवा यह कहता है: 'देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से बाहर लाऊँगा, मेरे लोगों; और मैं तुम्हें इसाएल की भूमि में लाऊँगा।'<sup>13</sup> तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ, जब मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से बाहर लाऊँगा, मेरे लोगों।<sup>14</sup> और मैं अपनी आत्मा तुम्हारी भीतर डालूँगा, और तुम जीवित हो जाओगे, और मैं तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि पर स्थापित

करूँगा। तब तुम जानोगे कि मैंने, प्रभु ने, यह कहा और किया है," प्रभु कहता है।"<sup>15</sup> प्रभु का चरन फिर से मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>16</sup> "और तू हे मनुष्य के पुत्र, अपने लिए एक लकड़ी ले और उस पर लिख, यहूदा और इसाएल के पुत्रों के लिए, उसके साथी; फिर दूसरी लकड़ी ले और उस पर लिख, यूसुफ के लिए, एप्रैम की लकड़ी और इसाएल के पूरे घराने के लिए, उसके साथी।"<sup>17</sup> फिर उहाँ एक-दूसरे के साथ एक लकड़ी में जोड़ दे, ताकि वे तेरे हाथ में एक हो जाएँ।<sup>18</sup> और जब तेरे लोग तुम्हसे कहें, 'क्या तू हमें नहीं बताएगा कि इसका क्या मतलब है?'<sup>19</sup> तो उनसे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: "देखो, मैं यूसुफ की लकड़ी को, जो एप्रैम के हाथ में है, और इसाएल के गोत्रों को, उसके साथियों को लूँगा; और मैं उहाँ यहूदा की लकड़ी के साथ जोड़ दूँगा, और वे मेरी हाथ में एक लकड़ी बन जाएँगे।"<sup>20</sup> वे लकड़ियाँ जिन पर तू लिखता है, उनकी आँखों के सामने तेरे हाथ में होंगी।<sup>21</sup> और उनसे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: "देखो, मैं इसाएल के पुत्रों को उन राष्ट्रों में से लूँगा जहाँ वे गए हैं, और मैं उहाँ हर ओर से इकट्ठा करूँगा और उहाँ उनकी अपनी भूमि में लाऊँगा;<sup>22</sup> और मैं उहाँ इसाएल की भूमि में, पहाड़ों पर एक राष्ट्र बनाऊँगा; और एक राजा उन सब पर राजा होगा। और वे अब दो राष्ट्र नहीं रहेंगे, और अब दो राज्यों में विभाजित नहीं होंगे।<sup>23</sup> वे अब अपने मूर्तियों से, या अपने धृणित वस्तुओं से, या अपने किसी अपराध से अपवित्र नहीं होंगे। परंतु मैं उहाँ उनके सभी निवास स्थानों से बचाऊँगा जहाँ उन्होंने पाप किया है, और उन्हें शुद्ध करूँगा। और वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।<sup>24</sup> और मेरा सेवक दाऊद उन पर राजा होगा, और उन सबका एक चरवाहा होगा। और वे मेरी विधियों में चलेंगे, और मेरी विधियों का पालन करेंगे और उनका अनुसरण करेंगे।<sup>25</sup> और वे उस भूमि में निवास करेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दी थी, जिसमें तुम्हारे पिताओं ने निवास किया था; और वे उसमें निवास करेंगे, वे, उनके पुत्र, और उनके पुत्रों के पुत्र, सदा के लिए। और मेरा सेवक दाऊद सदा के लिए उनका नेता होगा।<sup>26</sup> और मैं उनके साथ शांति की वाचा करूँगा; यह उनके साथ एक सदा की वाचा होगी। और मैं उहाँ स्थापित करूँगा और उनकी संख्या बढ़ाऊँगा, और अपना पवित्र स्थान उनके बीच में सदा के लिए स्थापित करूँगा।<sup>27</sup> मेरा निवास स्थान भी उनके बीच में होगा; और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे।<sup>28</sup> और राष्ट्र जानेंगे कि मैं प्रभु हूँ जो इसाएल को पवित्र करता हूँ, जब मेरा पवित्र स्थान उनके बीच में सदा के लिए होगा।"

## यहेजकेल

**38** और यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "मनुष्य के पुत्र, अपने मुख को मागोग के देश के गोग की ओर कर, जो मषेक और तृबाल का प्रधान राजकुमार है, और उसके विरुद्ध भविष्यवाणी कर,"<sup>3</sup> और कह, "प्रभु यहोवा यह कहता है: 'देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ गोग, मषेक और तृबाल का प्रधान राजकुमार';<sup>4</sup> इसलिए मैं तुझे घुमा दूँगा, तेरे जबड़ों में काँट डालूँगा, और तुझे तेरी सारी सेना, घोड़े और घुड़सवारों के साथ बाहर लाऊँगा, जो सब के सब भव्य वस्तु पहने होंगे, एक बड़ी सेना ढाल और बकतर के साथ, सब तलवारें लिए हुए;<sup>5</sup> फारस, कूश, और पूर्व उनके साथ, सब के सब बकतर और टोप के साथ;<sup>6</sup> गोमेर अपनी सारी सेना के साथ; उत्तर के दूरस्थ भागों से बैतौ-तोगरमा अपनी सारी सेना के साथ—बहुत से लोग तेरे साथ।<sup>7</sup> तैयार रहो, और तैयार रहो, तुम और तुम्हारे चारों ओर इकट्ठे हुए सब लोग, और उनके लिए एक रक्षक बनो।<sup>8</sup> बहुत दिनों के बाद तुम्हें बुलाया जाएगा; अंतिम वर्षों में तुम उस देश में आओगे जो तलवार से बहाल किया गया है, जिसके निवासियों को कई राष्ट्रों से इकट्ठा किया गया है, जो इस्पाल के पहाड़ों पर रहते हैं, जो लगातार खंडहर बने रहे, लेकिन उसके लोग राष्ट्रों से लाए गए हैं, और वे सब के सब सुरक्षित रूप से रह रहे हैं।<sup>9</sup> और तुम ऊपर आओगे, तुम तूफान की तरह आओगे; तुम और तुम्हारी सारी सेना, और बहुत से लोग तुम्हारे साथ, भूमि को बादल की तरह ढक लोगों।"<sup>10</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "उस दिन ऐसा होगा कि तुम्हारे मन में विचार आएंगे और तुम एक बुरी योजना बनाएंगे,<sup>11</sup> और तुम कहोगे, मैं बिना दीवारों वाले गांवों के देश पर चढ़ाई करूँगा। मैं उन पर चढ़ाई करूँगा जो विश्राम में हैं, सुरक्षित रूप से रह रहे हैं, सब के सब बिना दीवारों के रह रहे हैं और जिनके पास कोई बार या फाटक नहीं है,<sup>12</sup> लूट लेने और माल छीनने के लिए, अपने हाथ को उन बर्बाद स्थानों के खिलाफ उठाने के लिए जो अब बसे हुए हैं, और उन लोगों के खिलाफ जो राष्ट्रों से इकट्ठा किए गए हैं, जिन्होंने पशुधन और संपत्ति प्राप्त की है, जो दुनिया के केंद्र में रहते हैं।"<sup>13</sup> शेबा और ददान और तरशीश के व्यापारी अपनी सारी बस्तियों के साथ तुम्से कहेंगे, "क्या तुम लूट लेने आए हो? क्या तुमने अपनी सेना को माल छीनने के लिए इकट्ठा किया है, चांदी और सोना ले जाने के लिए, पशुधन और संपत्ति लेने के लिए, बड़ी लूट लेने के लिए?"<sup>14</sup> "इसलिए, मनुष्य के पुत्र, भविष्यवाणी कर और गोग से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: 'उस दिन, जब मेरे लोग इस्पाल सुरक्षित रूप से रह रहे होंगे, क्या तुम इसे नहीं जानोगे?'<sup>15</sup> तुम अपने स्थान से उत्तर के दूरस्थ भागों से आओगे, तुम और तुम्हारे साथ बहुत से लोग, सब के सब घोड़ों पर सवार, एक बड़ी सेना और

एक शक्तिशाली सेना;<sup>16</sup> और तुम मेरे लोगों इस्पाल के खिलाफ बादल की तरह भूमि को ढकने के लिए आओगे। अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं तुम्हें अपनी भूमि के खिलाफ लाऊँगा, ताकि राष्ट्र मुझे जान सकें जब मैं तुम्हारे माध्यम से अपने आप को उनके सामने पवित्र दिखाऊँ, गोग।"<sup>17</sup> प्रभु यहोवा यह कहता है: "क्या तुम वही हो जिसके बारे में मैंने पूर्व दिनों में अपने इस्पाल के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से बात की थी, जिन्होंने उन दिनों में कई वर्षों तक भविष्यवाणी की थी कि मैं तुम्हें उनके खिलाफ लाऊँगा?<sup>18</sup> लेकिन उस दिन, जिस दिन गोग इस्पाल की भूमि के खिलाफ आएगा; प्रभु यहोवा कहता है, "मेरा क्रोध मेरे रोश में उठेगा।"<sup>19</sup> मेरी जलन और मेरी धक्कती हुई क्रोध में मैं धोषणा करता हूँ कि उस दिन इस्पाल की भूमि में निश्चित रूप से एक बड़ा भूकंप होगा।<sup>20</sup> समुद्र की मछलियाँ, आकाश के पक्षी, मैदान के जानवर, धरती पर रेंगने वाले सभी मानवजाति मेरे उपर्युक्ति में कांपेंगे; पहाड़ गिर जाएंगे, खड़ी पथ ढह जाएंगे, और हर दीवार जमीन पर गिर जाएंगी।<sup>21</sup> और मैं अपनी सारी पहाड़ियों पर उसके खिलाफ तलवार बुलाऊँगा; प्रभु यहोवा कहता है। हर आदमी की तलवार उसके भाई के खिलाफ होगी।<sup>22</sup> महामारी और रक्त के साथ मैं उसके साथ न्याय करूँगा; और मैं उस पर, उसकी सेना पर, और उसके साथ बहुत से लोगों पर मूसलधार बारिश, ओले के पत्थर, आग, और गंधक बरसाऊँगा।<sup>23</sup> इसलिए मैं अपने आप को महान साबित करूँगा, अपने आप को पवित्र दिखाऊँगा, और अपने आप को कई राष्ट्रों की दृष्टि में प्रकट करूँगा; और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

**39** "और तू हे मनुष्य के पुत्र, गोग के विरुद्ध भविष्यवाणी कर और कह, 'प्रभु यहोवा यह कहता है: देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, हे गोग, मेषेक और तृबाल का प्रधान राजकुमार,'<sup>2</sup> और मैं तुझे घुमा दूँगा, तुझे आग बढ़ाऊँगा, तुझे उत्तर के सबसे दूर के भागों से उठाऊँगा, और तुझे इस्पाल के पहाड़ों के विरुद्ध लाऊँगा।<sup>3</sup> तब मैं तेरी धनुष को तेरे बाँह हाथ से गिरा दूँगा।<sup>4</sup> तू इस्पाल के पहाड़ों पर गिरेगा, तू और तेरे सब दल और वे लोग जो तेरे साथ हैं; मैं तुझे हर प्रकार के शिकारी पक्षियों और मैदान के पशुओं के लिए भोजन के रूप में दूँगा।<sup>5</sup> तू खुले मैदान में गिरेगा; क्योंकि यह मैं हूँ जिसने यह कहा है," प्रभु यहोवा की यह वाणी है।<sup>6</sup> "और मैं मागोग पर और तरत्वर्ती स्थानों में सुरक्षित रहने वालों पर आग भेजूँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"<sup>7</sup> और मैं अपने पवित्र नाम को अपने लोगों इस्पाल के बीच में प्रकट करूँगा,

## यहेजकेल

और मैं अपने पवित्र नाम को फिर अपवित्र नहीं होने दूँगा। तब जातियाँ जानेगी कि मैं यहोवा हूँ, इसाएल में पवित्र।<sup>8</sup> देखो, यह आ रहा है और यह किया जाएगा," प्रभु यहोवा की यह वाणी है। "यह वही दिन है जिसके विषय में मैंने कहा है।<sup>9</sup> तब इसाएल के नगरों के निवासी बाहर निकलेंगे और हथियारों से आग जलाएँगे और उन्हें जलाएँगे, दोनों ढालें और बकलार, धनुष और तीर, युद्ध के डडे और भाले, और सात वर्षों तक वे उनसे आग जलाएँगे।<sup>10</sup> वे न तो खेत से लकड़ी लेंगे और न ही जंगलों से ईंधन इकट्ठा करेंगे, क्योंकि वे हथियारों से आग जलाएँगे। और वे उन लोगों से लूट लेंगे जिन्होंने उनसे लूट लिया था और उन लोगों से लूट लेंगे जिन्होंने उन्हें लूटा था," प्रभु यहोवा की यह वाणी है।<sup>11</sup> "और उस दिन मैं गोग को इसाएल में एक दफन खान दूँगा, समुद्र के पूर्व में गुजरने वालों की घाटी में, और यह गुजरने वालों को रोक देगा। इसलिए वे गोग को वहाँ उसकी सारी सेना के साथ दफन करेंगे, और वे इसे हामोन-गोग की घाटी कहेंगे।<sup>12</sup> सात महीने तक इसाएल का घर उन्हें दफन करेगा ताकि भूमि को शुद्ध किया जा सके।<sup>13</sup> और भूमि के सभी लोग उन्हें दफन करेंगे; और यह उनके लिए एक सारक होगा जिस दिन मैं अपनी महिमा में प्रकट होऊँगा," प्रभु यहोवा की यह वाणी है।<sup>14</sup> "और वे पूर्णकालिक आधार पर पुरुषों को नियुक्त करेंगे जो भूमि में गुजरने वालों को दफन करेंगे, जो भूमि की सतह पर छोड़े गए हैं, ताकि इसे शुद्ध किया जा सके। सात महीने के अंत में वे खोज करेंगे।<sup>15</sup> जैसे-जैसे वे भूमि में गुजरते हैं और कोई मानव हड्डी देखता है, वह उसके पास एक चिन्ह लगाएगा जब तक कि दफन करने वाले उसे हामोन-गोग की घाटी में दफन न कर दें।<sup>16</sup> और यहाँ तक कि नगर का नाम हामोनाह होगा। इसलिए वे भूमि को शुद्ध करेंगे।"<sup>17</sup> "जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे मनुष्य के पुत्र, प्रभु यहोवा यह कहता है: हर प्रकार के पक्षी और मैदान के हर पशु से कह, 'इकट्ठा हो और आओ, हर दिशा से मेरे बलिदान के लिए इकट्ठा हो, जिसे मैं तुम्हारे लिए इसाएल के पहाड़ों पर एक महान बलिदान के रूप में करने जा रहा हूँ, ताकि तुम मांस खा सकों और रक्त पी सको।<sup>18</sup> तुम योद्धाओं का मांस खाओगे और पृथी के नेताओं का कर्तव्य पियोगे, जैसे वे मेंढे, भड़के के बच्चे, बकरे और बैल हों, ये सब बाशान के मोटे पशु हैं।<sup>19</sup> इसलिए तुम तब तक चर्ची खाओगे जब तक तुम मतवाले न हो जाओ, मेरे बलिदान से जो मैंने तुम्हारे लिए बलिदान किया है।<sup>20</sup> तुम मेरे पर घोड़ों और रथियों के साथ, योद्धाओं और सभी युद्ध के पुरुषों के साथ अपनी तृप्ति करोगे," प्रभु यहोवा की यह वाणी है।<sup>21</sup> "और मैं अपनी महिमा को जातियों के बीच में रखूँगा;

और सभी जातियाँ मेरा न्याय देखेंगी जो मैंने किया है, और मेरा हाथ जो मैंने उन पर रखा है।<sup>22</sup> और इसाएल का घर जान लेगा कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूँ, उस दिन से आगे।<sup>23</sup> जातियाँ जानेगी कि इसाएल का घर उनके अपराधों के कारण निर्वासन में गया, क्योंकि वे मुझसे बेवफाई कर रहे थे, और मैंने अपना मुख उनसे छिपा लिया; इसलिए मैंने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दिया, और वे सब तलवार से गिर गए।<sup>24</sup> उनकी अशुद्धता और उनके अपराधों के अनुसार मैंने उनसे व्यवहार किया, और मैंने अपना मुख उनसे छिपा लिया।"<sup>25</sup> इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है: "अब मैं याकूब की समृद्धि को पुनःस्थापित करूँगा और इसाएल के पूरे घर पर दया करूँगा; और मैं अपने पवित्र नाम के लिए ईर्ष्या करूँगा।<sup>26</sup> वे अपनी लज्जा और अपनी सारी विश्वासघात को भूल जाएँगे जो उन्होंने मैं विरुद्ध की थी, जब वे अपनी भूमि पर सुरक्षित रहेंगे और कोई उन्हें डराने वाला नहीं होगा।<sup>27</sup> जब मैं उन्हें लोगों से वापस लाऊँगा और उन्हें उनके शत्रुओं की भूमि से इकट्ठा करूँगा, तब वे मैं अपने आप को उनके माध्यम से कई जातियों की दृष्टि में पवित्र दिखाऊँगा।<sup>28</sup> तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूँ, क्योंकि मैंने उन्हें जातियों के बीच निर्वासन में भेजा और फिर उन्हें उनकी अपनी भूमि में इकट्ठा किया; और मैं उनमें से किसी की भी वहाँ नहीं छोड़ूँगा।<sup>29</sup> मैं उनसे अपना मुख अब और नहीं छिपाऊँगा, क्योंकि मैंने इसाएल के घर पर अपनी आत्मा उंडेल दी है," प्रभु यहोवा की यह वाणी है।

**40** हमारे निर्वासन के पचीसवें वर्ष में, वर्ष के आरंभ में, महीने के दसवें दिन, जब नगर को लिया गया था उसके चौदहवें वर्ष में, उसी दिन यहोवा का हाथ मुझ पर था और उसने मुझे वहाँ लाया।<sup>2</sup> ईश्वर के दर्शन में उसने मुझे इसाएल की भूमि में लाया और मुझे एक बहुत ऊँचे पर्वत पर खड़ा किया, और उसके दक्षिण की ओर एक नगर जैसा ढाँचा था।<sup>3</sup> तो उसने मुझे वहाँ लाया; और देखो, वहाँ एक पुरुष था जिसकी उपस्थिति कांस्य के समान थी, उसके हाथ में सन का धागा और एक मापने की छड़ी थी; और वह द्वारा पर खड़ा था।<sup>4</sup> और उस पुरुष ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, अपनी आँखों से देखो, अपने कानों से सुनो, और सब पर ध्यान दो जो मैं तुम्हें दिखाने जा रहा हूँ; क्योंकि तुम्हें यहाँ इसलिए लाया गया है ताकि मैं इसे तुम्हें दिखा सकूँ। इसाएल के घराने को वह सब बताओ जो तुम देखते हो।"<sup>5</sup> और देखो, मंदिर के बाहर चारों ओर एक दीवार थी, और उस पुरुष के हाथ में छह हाथ की मापने की छड़ी थी, जिसमें से प्रत्येक हाथ एक हाथ और एक हथेली का था। तो उसने दीवार की मोताई मापी, एक

## यहेजकेल

छड़ी; और ऊँचाई, एक छड़ी।<sup>6</sup> फिर वह उस द्वार पर आया जो पूर्व की ओर था, उसके सीढ़ियों पर चढ़ा, और द्वार की चौखट को मापा, एक छड़ी की चौड़ाई; और दूसरी चौखट एक छड़ी की चौड़ाई थी।<sup>7</sup> रक्षक कक्ष एक छड़ी लंबा और एक छड़ी चौड़ा था, और रक्षक कक्षों के बीच पाँच हाथ थे; और द्वार की चौखट जो द्वार के बरामदे के पास अंदर की ओर थी, एक छड़ी थी।<sup>8</sup> फिर उसने द्वार के बरामदे को अंदर की ओर मापा, एक छड़ी।<sup>9</sup> उसने द्वार के बरामदे को मापा, आठ हाथ, और उसके स्तंभ दो हाथ। द्वार का बरामदा अंदर की ओर था।<sup>10</sup> और पूर्व की ओर के द्वार के रक्षक कक्षों की संखा प्रत्येक ओर तीन थीं; तीनों की माप समान थी, और स्तंभ भी प्रत्येक ओर समान थे।<sup>11</sup> और उसने द्वार के उद्यान की चौड़ाई मापी, दस हाथ, और द्वार की लंबाई, तेरह हाथ।<sup>12</sup> प्रत्येक ओर रक्षक कक्षों के सामने एक हाथ चौड़ी एक अवरोध दीवार थी; और रक्षक कक्ष प्रत्येक ओर छह हाथ वर्गाकार थे।<sup>13</sup> उसने एक रक्षक कक्ष की छत से दूसरे की छत तक द्वार की चौड़ाई मापी, एक दरवाजे से विपरीत दरवाजे तक पच्चीस हाथ।<sup>14</sup> उसने स्तंभों को साठ हाथ ऊँचा बनाया; द्वार आँगन के स्तंभ तक चारों ओर फैला हुआ था।<sup>15</sup> प्रवेश द्वार के सामने से लेकर द्वार के अंदरूनी बरामदे के सामने तक पचास हाथ थे।<sup>16</sup> और रक्षक कक्षों की ओर देखने वाली खिड़कियाँ थीं, और उनके स्तंभों की ओर भी द्वार के अंदर चारों ओर, और इसी प्रकार बरामदों के लिए थी। और अंदर चारों ओर खिड़कियाँ थीं; और प्रत्येक स्तंभ पर खजूर के पेड़ की सजावट थी।<sup>17</sup> फिर उसने मुझे बाहरी आँगन में लाया, और देखो, वहाँ कक्ष और एक पथर का फर्श था जो आँगन के चारों ओर बना था; तीस कक्ष फर्श की ओर मुख किए हुए थे।<sup>18</sup> फर्श, अर्थात्, निचला फर्श, द्वारों के किनारे पर था, जो द्वारों की लंबाई के अनुरूप था।<sup>19</sup> फिर उसने निचले द्वार के सामने से लेकर अंदरूनी आँगन के बाहरी हिस्से के सामने तक की चौड़ाई मापी, पूर्व और उत्तर में सी हाथ।<sup>20</sup> बाहरी आँगन के द्वार के लिए जो उत्तर की ओर था, उसने उसकी लंबाई और चौड़ाई मापी।<sup>21</sup> उसके प्रत्येक ओर तीन रक्षक कक्ष थे, और उसके स्तंभ और उसके बरामदे पहले द्वार के समान माप के थे; उसकी लंबाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>22</sup> उसकी खिड़कियाँ, उसके बरामदे, और उसके खजूर के पेड़ की सजावट पूर्व की ओर के द्वार के समान माप की थी; और इसे सात सीढ़ियों द्वारा पहुँचा जाता था, और उसका बरामदा उनके सामने था।<sup>23</sup> और अंदरूनी आँगन का एक द्वार उत्तर के द्वार के सामने था और पूर्व के द्वार के सामने थी; और उसने द्वार से द्वार तक सी हाथ मापे।<sup>24</sup> फिर उसने मुझे दक्षिण की ओर उसके स्तंभों पर खजूर के पेड़ की सजावट थी, एक प्रत्येक ओर।<sup>25</sup> अंदरूनी आँगन में दक्षिण की ओर एक द्वार था; और उसने दक्षिण की ओर द्वार से द्वार तक सी हाथ मापे।<sup>26</sup> फिर उसने सात सीढ़ियाँ ऊपर जाती थीं, और उसके बरामदे उनके सामने थे; और उसके स्तंभों पर खजूर के पेड़ की सजावट थी, एक प्रत्येक ओर।<sup>27</sup> अंदरूनी आँगन में दक्षिण की ओर एक द्वार था; और उसने दक्षिण की ओर द्वार से द्वार तक सी हाथ मापे।<sup>28</sup> फिर उसने मुझे दक्षिण द्वार को उन्हीं मापों के अनुसार मापा।<sup>29</sup> उसके रक्षक कक्ष भी, उसके स्तंभ, और उसके बरामदे उन्हीं मापों के अनुसार थे। और द्वार और उसके बरामदों में चारों ओर खिड़कियाँ थीं; वह पचास हाथ लंबा और पच्चीस हाथ चौड़ा था।<sup>30</sup> चारों ओर बरामदे थे, पच्चीस हाथ तबे और पाँच हाथ चौड़े।<sup>31</sup> उसके बरामदे बाहरी आँगन की ओर थे; और उसके स्तंभों पर खजूर के पेड़ की सजावट थी, और आठ सीढ़ियाँ उसके ऊपर जाती थीं।<sup>32</sup> और उसने मुझे पूर्व की ओर अंदरूनी आँगन में लाया। और उसने द्वार को उन्हीं मापों के अनुसार मापा।<sup>33</sup> उसके रक्षक कक्ष भी, उसके स्तंभ, और उसके बरामदे उन्हीं मापों के अनुसार थे। और द्वार और उसके बरामदों में चारों ओर खिड़कियाँ थीं; वह पचास हाथ लंबा और पच्चीस हाथ चौड़ा था।<sup>34</sup> उसके बरामदे बाहरी आँगन की ओर थे; और उसके स्तंभों पर खजूर के पेड़ की सजावट थी, प्रत्येक ओर, और आठ सीढ़ियाँ उसके ऊपर जाती थीं।<sup>35</sup> फिर उसने मुझे उत्तर द्वार पर लाया; और उसने उसे उन्हीं मापों के अनुसार मापा,<sup>36</sup> उसके रक्षक कक्ष, उसके स्तंभ, और उसके बरामदे। और द्वार में चारों ओर खिड़कियाँ थीं; लंबाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>37</sup> उसके स्तंभ बाहरी आँगन की ओर थे; और उसके स्तंभों पर खजूर के पेड़ की सजावट थी, प्रत्येक ओर, और आठ सीढ़ियाँ उसके ऊपर जाती थीं।<sup>38</sup> एक कक्ष जिसका द्वार द्वारों के स्तंभों के पास था; वहाँ वे होमबलि को धोते थे।<sup>39</sup> द्वार के बरामदे में प्रत्येक ओर दो मेजें थीं, जिन पर होमबलि, पापबलि, और अपराधबलि का वध किया जाता था।<sup>40</sup> बाहर की ओर, जैसे कोई उत्तर द्वार के प्रवेश द्वार की ओर जाता था, दो मेजें थीं; और द्वार के बरामदे के दूसरी ओर दो मेजें थीं।<sup>41</sup> प्रत्येक ओर चार मेजें द्वार के पास थीं; आठ मेजें जिन पर वे बलिदान का वध करते थे।<sup>42</sup> होमबलि के लिए चार मेजें कटे हुए पथर की थीं, डेढ़ हाथ लंबी, डेढ़ हाथ चौड़ी, और एक हाथ ऊँची, जिन पर वे उपकरण रखते थे जिनसे वे होमबलि और बलिदान का वध करते थे।<sup>43</sup> और दोहरी हुक, एक हथेली लंबाई में, घर के चारों ओर

## यहेजकेल

लगाए गए थे; और मेजों पर बलिदान का मांस था।<sup>44</sup> बाहर से अंदरूनी द्वार तक गायक के लिए आँगन में कक्ष थे, जिनमें से एक उत्तर द्वार के पास था, दक्षिण की ओर मुख किए हुए, और एक दक्षिण द्वार के पास था, उत्तर की ओर मुख किए हुए।<sup>45</sup> और उसने मुझसे कहा, "यह कक्ष जो दक्षिण की ओर है, उन याजकों के लिए है जो मंदिर के लिए जिम्मेदार हैं";<sup>46</sup> परंतु जो कक्ष उत्तर की ओर है वह उन याजकों के लिए है जो वेदी के लिए जिम्मेदार हैं। वे सादोक के पुत्र हैं, जो लेवी के पुत्रों में से यहोवा के निकट सेवा करने के लिए आते हैं।<sup>47</sup> उसने आँगन को मापा, एक पूर्ण वर्ग, सौ हाथ लंबा और सौ हाथ चौड़ा; और वेदी मंदिर के सामने थी।<sup>48</sup> फिर उसने मुझे मंदिर के बरामदे पर लाया, और उसने बरामदे के प्रत्येक स्तंभ को मापा, प्रत्येक ओर पाँच हाथ; और द्वार की चौड़ाई चौदह हाथ थी, और द्वार की दीवारें प्रत्येक ओर तीन हाथ थीं।<sup>49</sup> बरामदे की लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ थी; और सीढ़ी के पास जिससे वह चढ़ा जाता था, स्तंभ थे जो स्तंभों से संबंधित थे, एक प्रत्येक ओर।

**41** फिर वह मुझे मुख्य कक्ष में ले गया और पार्श्व स्तंभों को मापा; प्रत्येक ओर पार्श्व स्तंभ की चौड़ाई छह हाथ थी।<sup>2</sup> प्रवेश द्वार की चौड़ाई दस हाथ थी, और प्रवेश द्वार के किनारे प्रत्येक ओर पाँच हाथ थे। और उसने मुख्य कक्ष की लंबाई चालीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ मापी।<sup>3</sup> फिर वह अंदर गया और द्वार के प्रत्येक पार्श्व स्तंभ को मापा, दो हाथ, और द्वार को, छह हाथ ऊँचा; और द्वार की चौड़ाई, सात हाथ।<sup>4</sup> और उसने इसकी लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ मापी, मुख्य कक्ष के सामने; और उसने मुझसे कहा, "यह परम पवित्र स्थान है।"<sup>5</sup> फिर उसने मंदिर की दीवार को मापा, छह हाथ; और पार्श्व कक्षों की चौड़ाई चार हाथ, मंदिर के चारों ओर हर ओर।<sup>6</sup> पार्श्व कक्ष तीन मंजिलों में थे, एक के ऊपर एक, और प्रत्येक मंजिल में तीस; और वे मंदिर की दीवार के चारों ओर थे जो पार्श्व कक्षों के लिए थी, ताकि वे स्वयं मंदिर की दीवार द्वारा समर्थित न हों।<sup>7</sup> पार्श्व कक्ष चारों ओर से चौड़े होते गए, क्योंकि मंदिर के चारों ओर की संरचना मंदिर के चारों ओर चरणों द्वारा ऊपर की ओर जाती थी; इसलिए मंदिर की चौड़ाई बढ़ती गई जब यह ऊपर की ओर गया। और इस प्रकार सबसे निचली मंजिल से दूसरी मंजिल के रास्ते शीर्ष मंजिल तक जाया जाता था।<sup>8</sup> मैंने यह भी देखा कि घर के चारों ओर एक ऊँचा मंच था; पार्श्व कक्षों की नींव की ऊँचाई छ हाथ लंबी हाथ की एक पूरी छड़ी थी।<sup>9</sup> पार्श्व कक्षों की बाहरी दीवार की मोटाई पाँच हाथ थी। लेकिन मंदिर के पार्श्व कक्षों के बीच की खुली जगह<sup>10</sup> और बाहरी

कक्षों की चौड़ाई बीस हाथ थी, मंदिर के चारों ओर हर ओर।<sup>11</sup> खुली जगह की ओर पार्श्व कक्षों के द्वारों में एक द्वार उत्तर की ओर और दूसरा द्वार दक्षिण की ओर था; और खुली जगह की चौड़ाई चारों ओर पाँच हाथ थी।<sup>12</sup> वह भवन जो अलग क्षेत्र के सामने पश्चिम की ओर था, उसकी चौड़ाई सत्तर हाथ थी; और भवन की दीवार की मोटाई चारों ओर पाँच हाथ थी, और इसकी लंबाई नब्बे हाथ थी।<sup>13</sup> फिर उसने मंदिर को मापा, सौ हाथ लंबा। अलग क्षेत्र के साथ भवन और इसकी दीवारें भी सौ हाथ लंबी थीं।<sup>14</sup> मंदिर के सामने की चौड़ाई और पूर्व की ओर के अलग क्षेत्रों की कुल चौड़ाई सौ हाथ थी।<sup>15</sup> फिर उसने अलग क्षेत्र के सामने भवन की लंबाई मापी, जिसके दोनों ओर एक गैलरी थी, सौ हाथ, साथ ही अंतरिक मंदिर और आँगन के बरामदे।<sup>16</sup> दहलीज, जालीदार खिड़कियाँ, और तीन मंजिलों की गैलरी, दहलीज के पवित्री, चारों ओर लकड़ी से पैनल की गई थीं, और जमीन से खिड़कियों तक (लेकिन खिड़कियाँ ढकी हुई थीं),<sup>17</sup> प्रवेश द्वार के ऊपर और आंतरिक घर पर, और बाहर, और चारों ओर की सभी दीवारों पर, अंदर और बाहर, माप द्वारा।<sup>18</sup> यह करुबों और खजूर के पेड़ों से साजाया गया था; एक खजूर का पेड़ करुब और करुब के बीच था, और प्रत्येक करुब के दो चेहरे थे;<sup>19</sup> एक मानव चेहरा एक और खजूर के पेड़ की ओर और एक सिंह का चेहरा दूसरी ओर खजूर के पेड़ की ओर। वे पूरे घर में चारों ओर खुदे हुए थे।<sup>20</sup> जमीन से प्रवेश द्वार के ऊपर तक करुब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, साथ ही मुख्य कक्ष की दीवार पर भी।<sup>21</sup> मुख्य कक्ष के द्वार चौकोर थे; और परम पवित्र स्थान के सामने कुछ ऐसा था जो 22 लकड़ी की वेदी के समान था, तीन हाथ ऊँची और दो हाथ लंबी; इसके कोने, इसका आधार, और इसके किनारे लकड़ी के थे। और उसने मुझसे कहा, "यह वह मेज है जो प्रभु के सामने है।"<sup>23</sup> मुख्य कक्ष और पवित्र स्थान में प्रत्येक के पास एक डबल दरवाजा था।<sup>24</sup> प्रत्येक दरवाजे के लिए दो पत्ते और दूसरे के लिए दो पत्ते।<sup>25</sup> मुख्य कक्ष के दरवाजों पर भी दीवारों पर खुदे हुए करुब और खजूर के पेड़ थे; और बाहर के बरामदे के सामने लकड़ी का एक छत्र था।<sup>26</sup> बरामदे की पार्श्व दीवारों पर एक और दूसरी ओर जालीदार खिड़कियाँ और खजूर के पेड़ थे; इस प्रकार मंदिर के पार्श्व कक्षों की व्यवस्था की गई थी।

**42** तब वह मुझे बाहरी आँगन में उत्तर की ओर ले गया; और वह मुझे उस कक्ष में ले गया जो आँगन के सामने और उत्तर की ओर इमारत के सामने था।<sup>2</sup> लंबाई के साथ, जो सौ हाथ थी, उत्तर द्वार था, चौड़ाई

## यहेजकेल

पचास हाथ थी।<sup>3</sup> बीस हाथ के विपरीत जो आंतरिक अँगन से संबंधित था, और फर्श के विपरीत जो बाहरी अँगन से संबंधित था, तीन मंजिलों में गैलरी गैलरी के अनुरूप थी।<sup>4</sup> और कक्षों के सामने एक आंतरिक मार्ग था जो दस हाथ चौड़ा था, और सौ हाथ का एक रास्ता था; और उनके दरवाजे उत्तर की ओर थे।<sup>5</sup> अब ऊपरी कक्ष छोटे थे, क्योंकि गैलरी ने उनसे अधिक स्थान लिया था, निचले और मध्य वाले की तुलना में।<sup>6</sup> क्योंकि वे तीन मंजिलों में थे और उनके पास आँगनों के स्तंभों की तरह कोई स्तम्भ नहीं थे; इस कारण से ऊपरी कक्ष जमीन से अधिक पीछे हटे हुए थे, निचले और मध्य वाले की तुलना में।<sup>7</sup> बाहरी दीवार के लिए जो कक्षों के किनारे पर थी, बाहरी आँगन की ओर कक्षों का सामना करते हुए, इसकी लंबाई पचास हाथ थी।<sup>8</sup> क्योंकि बाहरी आँगन में जो कक्ष थे उनकी लंबाई पचास हाथ थी; और देखो, मंदिर का सामना करने वालों की लंबाई सौ हाथ थी।<sup>9</sup> और इन कक्षों के नीचे पूर्व की ओर प्रवेश द्वारा था, जैसे कर्कों बाहरी आँगन से उनमें प्रवेश करता है।<sup>10</sup> आँगन की दीवार की मोटाई में पूर्व की ओर, अलग क्षेत्र का सामना करते हुए और इमारत का सामना करते हुए, कक्ष थे।<sup>11</sup> और उनके सामने एक मार्ग था जो उत्तर की ओर के कक्षों के सामना था, लंबाई और चौड़ाई में सामान थीं, और उनके दरवाजों के साथ।<sup>12</sup> दक्षिण की ओर के कक्षों के दरवाजों के अनुरूप, मार्ग के सिर पर एक दरवाजा था, मार्ग के सामने की दीवार के अनुरूप पूर्व की ओर, जैसे कोई उनमें प्रवेश करता है।<sup>13</sup> तब उनसे मुझसे कहा, ‘उत्तर के कक्ष और दक्षिण के कक्ष जो अलग क्षेत्र के विपरीत हैं, वे पवित्र कक्ष हैं जहाँ प्रभु के निकट रहने वाले याजक सबसे पवित्र वस्तुएँ खाएँगे। वहाँ वे सबसे पवित्र वस्तुएँ रखेंगे—अनाज की भेंट, पाप की भेंट, और दौष की भेंट—क्योंकि यह स्थान पवित्र है।’<sup>14</sup> जब याजक प्रवेश करते हैं, तब वे पवित्र स्थान से बिना अपने वस्त्रों को, जिनमें वे पवित्र कक्षों में सेवा करते हैं, उत्तर बिना बाहरी आँगन में नहीं जाएँगे; क्योंकि ये वस्त्र पवित्र हैं। वे अन्य वस्त्र पहनेंगे जब वे लोगों के क्षेत्र के पास पहुँचेंगे।’<sup>15</sup> अब जब उसने आंतरिक घर का माप पूरा कर लिया, तो वह मुझे उस द्वार के रास्ते बाहर ले गया जो पूर्व की ओर था और चारों ओर उसका माप लिया।<sup>16</sup> उसने पूर्व की ओर माप की छड़ी से मापा: माप की छड़ी से पाँच सौ हाथ।<sup>17</sup> उसने उत्तर की ओर माप: माप की छड़ी से पाँच सौ हाथ।<sup>18</sup> उसने दक्षिण की ओर मापा: माप की छड़ी से पाँच सौ हाथ।<sup>19</sup> वह पश्चिम की ओर मुड़ा और माप की छड़ी से पाँच सौ हाथ मापा।<sup>20</sup> उसने चारों ओर उसका माप लिया। इसके चारों ओर एक दीवार थी,

लंबाई पाँच सौ हाथ और चौड़ाई पाँच सौ हाथ, पवित्र और अपवित्र के बीच विभाजन करने के लिए।

**43** फिर उसने मुझे फाटक की ओर, उस फाटक की ओर जो पूर्व की ओर है, ले गया;<sup>2</sup> और देखो, इसाएल के परमेश्वर की महिमा पूर्व दिशा से आ रही थी। और उसकी आवाज़ बहुत से जलों की ध्वनि के समान थी; और उसकी महिमा से पृथ्वी चमक उठी।<sup>3</sup> और यह उस दर्शन के समान था जो मैंने देखा था, जैसे वह दर्शन जो मैंने देखा था जब वह नगर को नष्ट करने आया था। और वे दर्शन उस दर्शन के समान थे जो मैंने केबार नदी के किनारे देखा था; और मैं अपने चेहरे पर गिर पड़ा।<sup>4</sup> और यहोवा की महिमा उस फाटक के मार्ग से घर में आई जो पूर्व की ओर है।<sup>5</sup> और आमा ने मुझे उठाया और मुझे आंतरिक आँगन में ले आया; और देखो, यहोवा की महिमा ने घर को भर दिया।<sup>6</sup> फिर मैंने उसे घर से मुझसे बोलते हुए सुना, जबकि एक आदमी मेरे पास खड़ा था।<sup>7</sup> और उसने मुझसे कहा, ‘मनुष्य के पुत्र, यह मेरे सिंहासन का स्थान है और मेरे पैरों के तलवों का स्थान है, जहाँ मैं इसाएल के पुत्रों के बीच सदा के लिए निवास करूँगा। और इसाएल का धराना अब मेरे पवित्र नाम को अपवित्र नहीं करेगा, न वे और न उनके राजा, अपनी वेश्यावृत्ति और उनके राजा की लाशों द्वारा जब वे मरते हैं,<sup>8</sup> मेरी दहलीज के पास अपनी दहलीज और मेरे दरवाजे के पास अपना दरवाजा रखकर, केवल मेरे और उनके बीच दीवार के साथ। और उन्होंने मेरे पवित्र नाम को उनके धृणित कार्यों द्वारा अपवित्र किया है जो उन्होंने किए हैं। इसलिए मैंने अपने क्रोध में उन्हें भस्म कर दिया है।<sup>9</sup> अब उन्हें अपनी वेश्यावृत्ति और अपने राजा की लाशों को मुझसे दूर हटा देना चाहिए; और मैं उनके बीच सदा के लिए निवास करूँगा।<sup>10</sup> जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मनुष्य के पुत्र, इसाएल के धराने को मंदिर के बारे में स्वित करो, ताकि वे अपनी दीपिता पर शर्मिदा हों और वे योजना को मारें।<sup>11</sup> और यदि वे उन सभी चीजों से शर्मिदा हैं जो उन्होंने की हैं, तो उन्हें घर की डिजाइन, उसकी योजना, उसके निकास, उसके प्रवेश द्वार, उसकी सभी डिजाइन, उसकी सभी विधियाँ, और उसकी सभी कानूनों को ज्ञात कराओ। और इसे उनकी दृष्टि में लिखो, ताकि वे उसकी पूरी डिजाइन और उसकी सभी विधियों का पालन करें और उन्हें करें।<sup>12</sup> यह घर का कानून है: उसके चारों ओर का पूरा क्षेत्र पर्वत के शीर्ष पर सबसे पवित्र होगा। देखो, यह घर का कानून है।<sup>13</sup> “और ये वेदी के माप हैं हाथ की लंबाई एक हथेली की चौड़ाई होती है: आधार एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ होगी, और उसके किनारे पर चारों ओर एक दीवार थी,

## यहेजकेल

होगी; और यह वेदी के आधार की ऊँचाई होगी।<sup>14</sup> और जमीन पर आधार से निचली पट्टी तक दो हाथ होंगे, और चौड़ाई एक हाथ होगी; और छोटी पट्टी से बड़ी पट्टी तक चार हाथ होंगे, और चौड़ाई एक हाथ होगी।<sup>15</sup> वेदी का चूल्हा चार हाथ होगा; और वेदी के चूल्हे से ऊपर की ओर चार सींग निकलेंगे।<sup>16</sup> अब वेदी का चूल्हा बारह हाथ लंबा और बारह चौड़ा होगा, उसके चारों ओर चौकोर।<sup>17</sup> पट्टी उसके चारों ओर चौदह हाथ लंबी और चौदह चौड़ी होगी, उसके चारों ओर आधा हाथ की सीमा होगी, और उसका आधार चारों ओर एक हाथ होगा; और उसकी सीढ़ियाँ पूर्व की ओर होंगी।<sup>18</sup> और उसने मुझसे कहा, “मनुष्य के पुत्र, यह वही है जो प्रभु यहोवा कहता है: ये वेदी के लिए विधियाँ हैं जिस दिन इसे बनाया जाता है, उस पर होमबलि चढ़ावे और उस पर रक्त छिड़कने के लिए।<sup>19</sup> तुम लेवी के याजकों को जो सादोक के वंशजों में से हैं, जो मेरी सेवा करने के लिए मेरे पास आते हैं, प्रभु यहोवा कहता है, ‘एक बैल पापबलि के रूप में देना।<sup>20</sup> और तुम उसके कुछ रक्त को लेकर उसके चार सींगों पर, पट्टी के चार कोनों पर, और चारों ओर की सीमा पर लगाओ; ताकि तुम उसे शुद्ध कर सको और उसके लिए प्रायिक्ति कर सको।<sup>21</sup> तुम पापबलि के रूप में बैल की भी ले लो, और उसे घर के निर्दिष्ट स्थान पर, पवित्र स्थान के बाहर जलाया जाएगा।<sup>22</sup> और दूसरे दिन तुम एक बकरी बिना दोष के पापबलि के रूप में चढ़ाओगे, और वे वेदी को पाप से शुद्ध करेंगे जैसे उन्होंने बैल से शुद्ध किया था।<sup>23</sup> जब तुम इसे शुद्ध कर चुके हो, तो तुम एक बैल बिना दोष के और एक मेदा बिना दोष के सुंदर से चढ़ाओगे।<sup>24</sup> तुम उहें यहोवा के सामने चढ़ाओगे, और याजक उन पर नमक छिड़केंगे, और वे उहें यहोवा के लिए होमबलि के रूप में चढ़ाएंगे।<sup>25</sup> सात दिन तक तुम प्रतिदिन एक बकरी पापबलि के रूप में तैयार करेंगे; वे एक बैल और एक मेदा झुंड से, बिना दोष के भी तैयार करेंगे।<sup>26</sup> सात दिन तक वे वेदी के लिए प्रायिक्ति करेंगे और उसे शुद्ध करेंगे; और वे उसे पवित्र करेंगे।<sup>27</sup> और जब वे दिन पूरे कर लेंगे, तो आठवें दिन और उसके बाद, याजक तुहारी होमबलि और तुहारी शांति बिल वेदी पर चढ़ाएंगे; और मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा; प्रभु यहोवा कहता है।”

**44** फिर वह मुझे पवित्रस्थान के बाहरी फाटक के रास्ते से ले आया, जो पूर्व की ओर है; और वह बंद था।<sup>2</sup> और प्रभु ने मुझसे कहा, “यह फाटक बंद रहेगा; इसे नहीं खोला जाएगा, और कोई भी इसके द्वारा प्रवेश नहीं करेगा, क्योंकि इसाएल के प्रभु परमेश्वर ने इसके द्वारा प्रवेश किया है, इसलिए यह बंद रहेगा।”<sup>3</sup> राजकुमार के

लिए, वह प्रभु के सामने रोटी खाने के लिए उसमें राजकुमार के रूप में बैठेगा; वह फाटक के बरामदे के रास्ते से प्रवेश करेगा और उसी रास्ते से बाहर जाएगा।”<sup>4</sup> फिर वह मुझे उत्तर के फाटक के रास्ते से घर के सामने ले आया; और मैंने देखा, और देखो, प्रभु की महिमा ने प्रभु के घर को भर दिया, और मैं अपने चेहरे पर गिर पड़ा।<sup>5</sup> और प्रभु ने मुझसे कहा, “मनुष्य के पुत्र, ध्यान दो, अपनी आँखों से देखो और अपने कानों से सुनो जो कुछ मैं तुमसे प्रभु के घर की सारी विधियाँ और उसके सभी नियमों के बारे में कहता हूँ, और घर के प्रवेश द्वार पर ध्यान दो, पवित्रस्थान के सभी नियाकों के साथ।<sup>6</sup> विद्रोही घर, इसाएल के घर से कहो, ‘यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है: ‘इसाएल के घर, तुहारी सारी धृणित बातों का अब अंत हो।’<sup>7</sup> जब तुमने विदेशियों को, जो हृदय में और शरीर में खतना नहीं किए गए थे, मेरे पवित्रस्थान में लाकर उसे अपवित्र किया—मेरा घर। जब तुमने मेरा भोजन, चर्बी और रक्त अर्पित किया, और उन्होंने मेरा वाचा तोड़ा—यह तुहारी सारी धृणित बातों के अलावा।<sup>8</sup> और तुमने मेरे पवित्र वस्तुओं की जिम्मेदारी स्वयं नहीं ली, बल्कि तुमने विदेशियों को मेरे पवित्रस्थान की जिम्मेदारी लेने के लिए नियुक्त किया।”<sup>9</sup> यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है: “कोई भी विदेशी जो हृदय में और शरीर में खतना नहीं किया गया है, मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश नहीं करेगा, और न ही कोई विदेशी जो इसाएल के पुरों में से है।<sup>10</sup> लेकिन लेवी के लोग जो मुझसे दूर चले गए जब इसाएल भटक गया, जो मुझसे भटक गए अपने मूर्तियों का अनुसरण करते हुए, वे अपने अपराध का परिणाम भुगतेंगे।<sup>11</sup> फिर भी वे मेरे पवित्रस्थान में सेवक होंगे, घर के फाटकों पर निगरानी रखते हुए और घर में सेवा करते हुए; वे होमबलि और लोगों के लिए बलिदान का वध करेंगे, और वे उनकी सेवा करने के लिए उनके सामने उनकी सेवा की ओर इसाएल के घर के लिए गलत काम का ठोकर बन गए, इसलिए मैंने उनके खिलाफ शपथ ली है।<sup>12</sup> प्रभु परमेश्वर कहता है, “कि वे अपने अपराध का परिणाम भुगतेंगे।<sup>13</sup> और वे मेरे पास नहीं आएंगे कि मेरे लिए याजक के रूप में सेवा करें, न ही मेरे किसी पवित्र वस्तुओं के पास आएंगे, जो सबसे पवित्र हैं; लेकिन वे अपनी शर्म और अपनी धृणित बातों का सहेंगे जो उन्होंने की हैं।<sup>14</sup> फिर भी मैं उहें घर की जिम्मेदारी लेने के लिए नियुक्त करूँगा, उसकी सारी सेवा के लिए और उसमें जो कुछ किया जाएगा उसके लिए।<sup>15</sup> लेकिन लेवी के याजक, सादोक के पुत्र, जिन्होंने मेरे पवित्रस्थान की जिम्मेदारी ली जब इसाएल के पुत्र मुझसे भटक गए, मेरे पास आएंगे कि मेरी सेवा करें, और वे मेरे सामने खड़े होंगे

## यहेजकेल

कि मुझे चर्बी और रक्त अर्पित करें,” प्रभु परमेश्वर कहता है।<sup>16</sup> “वे मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश करेंगे; वे मेरी मेज के पास आएंगे कि मेरी सेवा करें और मेरे प्रति अपनी ड्यूटी पूरी करें।<sup>17</sup> और जब वे आंतरिक अंगन के फाटकों में प्रवेश करेंगे, तो वे सूती वस्त्र पहनेंगे; और उन उनके ऊपर नहीं होगा जब वे आंतरिक अंगन के फाटकों में और घर में सेवा कर रहे होंगे।<sup>18</sup> सूती पगड़ियाँ उनके सिर पर होंगी, और सूती अंतर्वस्त्र उनकी कमर पर होंगे; वे कुछ भी नहीं पहनेंगे जो उन्हें पर्सीना दिलाए।<sup>19</sup> जब वे बाहरी अंगन में, बाहरी अंगन में लोगों के पास जाएंगे, तो वे अपने वस्त्र उतार देंगे जिसमें वे सेवा कर रहे थे और उन्हें पवित्र कक्षों में छोड़ देंगे, फिर वे अन्य वस्त्र पहनेंगे ताकि वे अपने वस्त्रों के साथ लोगों को पवित्रता न दें।<sup>20</sup> वे अपने नहीं मुँड़वाएंगे, फिर भी वे अपने बालों को बिना काटे नहीं बढ़ने देंगे; वे केवल अपने सिर के बालों को काटेंगे।<sup>21</sup> और जब वे आंतरिक अंगन में प्रवेश करेंगे तो कोई भी याजक शराब नहीं पिएगा।<sup>22</sup> और वे किसी विधा या तत्त्वाक्षरदा महिला से विवाह नहीं करेंगे, बल्कि इसाएल के घर की संतानों में से कुंवरी लड़कियों से विवाह करेंगे, या किसी याजक की विधा से।<sup>23</sup> इसके अलावा, वे मेरे लोगों को पवित्र और सामान्य के बीच का अंतर सिखाएंगे, और उन्हें अशुद्ध और शुद्ध के बीच भेद करना सिखाएंगे।<sup>24</sup> किसी विवाह में वे न्याय करने के लिए खड़े होंगे; वे इसे मेरे नियमों के अनुसार न्याय करेंगे। वे मेरी सभी नियुक्त पर्वों में मेरे नियमों और मेरी विधियों का पालन करेंगे, और मेरे सञ्चाय को पवित्र करेंगे।<sup>25</sup> वे किसी मृत व्यक्ति के पास नहीं जाएंगे कि स्वयं को अपवित्र करें; हालांकि, वे अपने पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई, या बहन के लिए जो पति नहीं रही है, स्वयं को अपवित्र कर सकते हैं।<sup>26</sup> और जब वह शुद्ध हो जाएगा, उसके लिए सात दिन बीतेंगे।<sup>27</sup> जिस दिन वह पवित्रस्थान में, आंतरिक अंगन में सेवा करने के लिए जाएगा, वह अपने पापबलि को अर्पित करेगा,” प्रभु परमेश्वर कहता है।<sup>28</sup> “और उनके लिए एक विरासत के बारे में यह होगा: मैं उनकी विरासत हूँ। और तुम उन्हें इसाएल में कोई संपत्ति नहीं दोगे—मैं उनकी संपत्ति हूँ।<sup>29</sup> वे अनाज का अर्पण, पाद का अर्पण, और दोष का अर्पण खाएंगे; और इसाएल में हर समर्पित वस्तु उनकी होगी।<sup>30</sup> सभी प्रकार के पहले फलों का पहला और सभी प्रकार के योगदान का हर प्रकार का योगदान याजकों के लिए होगा; और तुम याजक को अपने आटे का पहला हिस्सा दोगे ताकि तुम्हारे घर पर आशीर्वाद ठहरे।<sup>31</sup> याजक कोई भी पक्षी या पशु नहीं खाएंगे जो स्वाभाविक मृत्यु से मरा हो या टुकड़े-टुकड़े किया गया हो।

**45** “जब तुम भूमि को विरासत के लिए भागों में बाँटोगे, तो तुम प्रभु के लिए एक अर्पण चढ़ाओगे, भूमि का एक पवित्र भाग; लंबाई पच्चीस हजार हाथ और चौड़ाई दस हजार हाथ होगी। यह चारों ओर अपनी सभी सीमाओं के भीतर पवित्र होगा।<sup>2</sup> इसमें से मंदिर के लिए एक वर्गाकार खूँड़ होगा, पाँच सौ हाथ बाय पाँच सौ हाथ, और इसके चारों ओर पवास हाथ की खुली जगह होगी।<sup>3</sup> इस क्षेत्र से तुम पच्चीस हजार हाथ की लंबाई और दस हजार हाथ की चौड़ाई मापोगे; और इसमें मंदिर होगा, परम पवित्र स्थान।<sup>4</sup> यह भूमि का पवित्र भाग होगा; यह याजकों के लिए होगा, जो मंदिर के सेवक हैं, जो प्रभु की सेवा करने के लिए निकट आते हैं, और यह उनके घरों के लिए एक स्थान और मंदिर के लिए एक पवित्र स्थान होगा।<sup>5</sup> एक क्षेत्र पच्चीस हजार हाथ लंबा और दस हजार हाथ चौड़ा लेवियों के लिए भी होगा, जो घर के सेवक हैं, उनके निवास के लिए शहर।<sup>6</sup> और तुम शहर की संपत्ति पाँच हजार हाथ चौड़ी और पच्चीस हजार हाथ लंबी दोगे, पवित्र भाग के अर्पण के साथ; यह पूरे इसाएल के घर के लिए होगा।<sup>7</sup> और राजकुमार के पास पवित्र अर्पण और शहर की संपत्ति के दोनों ओर भूमि होगी, पवित्र अर्पण और शहर की संपत्ति के साथ, पश्चिम की ओर और पश्चिम की ओर और पूर्व की ओर पूर्व की ओर, लंबाई में एक जनजातीय भाग के समान, पश्चिमी सीमा से पूर्वी सीमा तक।<sup>8</sup> यह इसाएल में उसकी संपत्ति के लिए भूमि होगी; इसलिए मेरे राजकुमार अब मेरे लोगों पर अत्याचार नहीं करेंगे, बल्कि वे भूमि के शेष भाग को इसाएल के घर को उनकी जनजातियों के अनुसार देंगे।”<sup>9</sup> “प्रभु यहोवा कहता है: ‘बस, इसाएल के राजकुमारों! हिस्सा और विनाश को दूर करो, और न्याय और धर्म का अभ्यास करो। मेरे लोगों की बेदखली बंद करो,’ प्रभु यहोवा की घोषणा है।<sup>10</sup> ‘तुम्हारे पास सटीक तराजू, स्टीटक एफा, और सटीक बत होनी चाहिए।<sup>11</sup> एफा और बत समान मात्रा के होंगे, ताकि बत एक होमर का दसवां हिस्सा हो, और एफा एक होमर का दसवां हिस्सा हो; उनका मानक होमर के अनुसार होगा।<sup>12</sup> और शेकेल बीस गेरा का होगा, बीस शेकेल, पच्चीस शेकेल, और पंद्रह शेकेल तुम्हारा मनेह होगा।<sup>13</sup> यह वह अर्पण है जो तुम चढ़ाओगे: गेहूं के प्रत्येक होमर से एक एफा का छठा हिस्सा, और जो के प्रत्येक होमर से एक एफा का छठा हिस्सा;<sup>14</sup> और तेल का निर्धारित भाग (अर्थात्, तेल का बत), प्रत्येक कोर से एक बत का दसवां हिस्सा (जो दस बत है, या एक होमर-क्योंकि दस बत एक होमर है);<sup>15</sup> और इसाएल के जल स्रोतों से प्रत्येक दो सौ के छुंड से एक भेड़—अनाज अर्पण के लिए, होमबलि के लिए, और शांति अर्पण के लिए, उनके लिए प्रायश्चित्त करने के

## यहेजकेल

लिए,” प्रभु यहोवा की घोषणा है।<sup>16</sup> “भूमि के सभी लोग इस अर्पण को इसाएल में राजकुमार के लिए देंगे।”<sup>17</sup> और यह राजकुमार की जिम्मेदारी होगी कि वह होमबलि, अनाज अर्पण, और पेय अर्पण प्रदान करें, पर्वों पर, नए चाँद पर, और सब्कों पर, इसाएल के घर के सभी निधिरित पर्वों पर; वह पाप अर्पण, अनाज अर्पण, होमबलि, और शांति अर्पण प्रदान करेगा, इसाएल के घर के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए।”<sup>18</sup> “प्रभु यहोवा कहता है: ‘पहले महीने में, महीने के पहले दिन, तुम एक बिना दोष के बैल लोगे और मंदिर को शुद्ध करोगे।’”<sup>19</sup> और याजक पाप अर्पण के कुछ रक्त को लेकर घर के द्वारों पर, वेदी के चबूतरे के चारों कोनों पर, और आंतरिक अँगों के फाटक के खंभों पर लगाएगा।<sup>20</sup> और तुम महीने के सातवें दिन यह उन सभी के लिए करोगे जो अनजाने में या अज्ञानता से पाप करते हैं; इसलिए तुम घर के लिए प्रायश्चित्त करोगे।<sup>21</sup> पहले महीने में, महीने के चौदहवें दिन, तुम्हारे पास फसह होगा, सात दिन का पर्व; बिना खमीर की रोटी खाई जाएगी।<sup>22</sup> उस दिन राजकुमार अपने लिए और भूमि के सभी लोगों के लिए एक बैल पाप अर्पण के रूप में प्रदान करेगा।<sup>23</sup> और पर्व के सात दिनों के दौरान वह प्रभु के लिए होमबलि के रूप में सात बैल और सात बिना दोष के मेढ़े प्रतिदिन सात दिनों के लिए, और प्रतिदिन एक बकरा पाप अर्पण के रूप में प्रदान करेगा।<sup>24</sup> और वह एक बैल के साथ एक एफा, एक मेढ़े के साथ एक एफा, और एक एफा के साथ एक हिन तेल अनाज अर्पण के रूप में प्रदान करेगा।<sup>25</sup> सातवें महीने में, महीने के पंद्रहवें दिन, पर्व पर, वह पाप अर्पण, होमबलि, अनाज अर्पण, और तेल के लिए सात दिनों के लिए इसी प्रकार प्रदान करेगा।”

**46** प्रभु परमेश्वर यह कहता है: “पूर्व की ओर मुख करने वाले आंतरिक अँगों का फाटक छह कामकाजी दिनों के लिए बंद रहेगा; लेकिन यह सब्का के दिन और नए चाँद के दिन खोला जाएगा।”<sup>2</sup> राजकुमार बाहर से फाटक के ब्रामदे के रास्ते प्रवेश करेगा और फाटक के खंभे के पास खड़ा होगा। तब याजक उसकी होमबलि और शांति बलि चढ़ाएंगे, और वह फाटक की दहलीज पर आराधना करेगा और फिर बाहर जाएगा। लेकिन फाटक शाम तक बंद नहीं किया जाएगा।<sup>3</sup> देश के लोग भी सब्कों और नए चाँद के दिनों में प्रभु के समने उस फाटक के प्रवेश द्वार पर आराधना करेंगे।<sup>4</sup> होमबलि जो राजकुमार सब्के के दिन प्रभु को चढ़ाएगा, वह बिना दोष के छह मेमने और बिना दोष का एक मेढ़ा होगा;<sup>5</sup> और अनाज की भेट मेढ़े के साथ एक एफा होगी, और मेमनों के साथ अनाज की भेट उसकी इच्छा के अनुसार, जितना वह दे सके, और एक एफा के साथ एक हिन तेल

होगा।<sup>6</sup> नए चाँद के दिन वह बिना दोष का एक बैल, छह मेमने, और एक मेढ़ा, सभी बिना दोष के चढ़ाएगा।<sup>7</sup> और वह अनाज की भेट, बैल के साथ एक एफा और मेढ़े के साथ एक एफा, और मेमनों के साथ जितना वह दे सके, और एक एफा के साथ एक हिन तेल देगा।<sup>8</sup> जब राजकुमार प्रवेश करेगा, वह फाटक के ब्रामदे के रास्ते से प्रवेश करेगा और उसी रास्ते से बाहर जाएगा।<sup>9</sup> लेकिन जब देश के लोग प्रभु के सामने नियत पर्वों में आएंगे, जो उत्तर फाटक के रास्ते से प्रवेश करेगा वह दक्षिण फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा, और जो दक्षिण फाटक के रास्ते से प्रवेश करेगा वह उत्तर फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा। कोई भी उसी फाटक के रास्ते से वापस नहीं जाएगा, जिससे वह प्रवेश किया था, बल्कि सीधे बाहर जाएगा।<sup>10</sup> और राजकुमार उनके बीच होगा जब वे प्रवेश करेंगे; जब वे बाहर जाएंगे, वह बाहर जाएगा।<sup>11</sup> पर्वों और नियत पर्वों में अनाज की भेट बैल के साथ एक एफा और मेढ़े के साथ एक एफा होगी, और मेमनों के साथ जितना कोई दे सके, और एक एफा के साथ एक हिन तेल होगा।<sup>12</sup> जब राजकुमार स्वेच्छा से होमबलि या शांति बलि स्वेच्छा से प्रभु को चढ़ाएगा, तो पूर्व की ओर मुख करने वाला फाटक उसके लिए खोला जाएगा। और वह अपनी होमबलि और शांति बलि सब्के के दिन की तरह चढ़ाएगा। फिर वह बाहर जाएगा, और उसके बाहर जाने के बाद फाटक बंद कर दिया जाएगा।<sup>13</sup> और तुम एक वर्ष का बिना दोष का मेमना प्रभु को प्रतिदिन होमबलि के रूप में चढ़ाओगे; सुबह-सुबह तुम इसे चढ़ाओगे।<sup>14</sup> तुम इसके साथ सुबह-सुबह अनाज की भेट भी चढ़ाओगे, एक एफा का छठा भाग और एक हिन का तिहाई भाग तेल महीन आटे को गीला करने के लिए, प्रभु को एक अनंत नियम द्वारा अनाज की भेट।<sup>15</sup> इस प्रकार वे मेमना, अनाज की भेट, और तेल प्रतिदिन एक निरंतर होमबलि के रूप में चढ़ाएंगे।<sup>16</sup> प्रभु परमेश्वर यह कहता है: “दि राजकुमार अपनी संपत्ति से किसी भी पुत्र को उपहार देता है, तो वह उसके पुत्रों का होगा; यह उनकी संपत्ति से उत्तराधिकार द्वारा होगी।”<sup>17</sup> लेकिन यदि वह अपनी संपत्ति से किसी सेवक को उपहार देता है, तो वह उसे मुक्ति के वर्ष तक रहेगा, फिर वह राजकुमार के पास लौट आएगा। उसकी संपत्ति केवल उसके पुत्रों की होगी; यह उनकी होगी।<sup>18</sup> और राजकुमार लोगों की संपत्ति को जबरदस्ती नहीं लेगा, ताकि उन्हें उनकी संपत्ति से बाहर न निकाला जाए; वह अपने पुत्रों को अपनी संपत्ति से उत्तराधिकार देगा, ताकि मेरे लोग उनकी संपत्ति से बिखेरे न जाएं।”<sup>19</sup> फिर वह मुझे प्रवेश द्वार से, जो फाटक के किनारे पर था, याजकों के पवित्र कक्षों में ले गया, जो उत्तर की ओर मुख करते थे; और देखो, एक स्थान पश्चिम की ओर

## यहेजकेल

सबसे पीछे था।<sup>20</sup> और उसने मुझसे कहा, “यह वह स्थान है जहाँ याजक अपराध बति और पाप बलि को उबालेंगे, और जहाँ वे अनाज की भेट को बेक करेंगे, ताकि वे उहं बाहरी आंगन में न ले जाएं और लोगों को पवित्रता न दें।”<sup>21</sup> फिर वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया और मुझे आंगन के चारों कोनों में ले गया; और देखो, आंगन के हर कोने में एक छोटा आंगन था।<sup>22</sup> आंगन के चारों कोनों में बंद आंगन थे, चालीस हाथ लंबे और तीस चौड़े; ये चारों कोनों में माप में समान थे।<sup>23</sup> और उनके अंदर चारों ओर पश्चर की एक पंक्ति थी, और पश्चर की पंक्तियों के नीचे चारों ओर पकाने के स्थान बने हुए थे।<sup>24</sup> फिर उसने मुझसे कहा, “ये वे पकाने के स्थान हैं जहाँ घर के सेवक लोगों के बलिदानों को उबालेंगे।”

**47** फिर उसने मुझे घर के द्वार पर वापस लाया; और देखो, घर की चौखट के नीचे से पूर्व की ओर पानी बह रहा था, क्योंकि घर पूर्व की ओर था। और पानी घर के दाहिने ओर से, वेदी के दक्षिण से बह रहा था।<sup>2</sup> और उसने मुझे उत्तर द्वार के रास्ते बाहर निकाला और मुझे बाहर की ओर पूर्व की ओर मुख किए हुए द्वार के रास्ते बाहर के द्वार तक ले गया। और देखो, दक्षिण की ओर से पानी टपक रहा था।<sup>3</sup> जब वह आदमी पूर्व की ओर एक मापने की रेखा लेकर निकाला, तो उसने एक हजार हाथ मापे, और उसने मुझे पानी के माध्यम से ले जाया, पानी टखनों तक पहुँच रहा था।<sup>4</sup> फिर उसने एक हजार मापे और मुझे पानी के माध्यम से ले जाया, पानी धृटनों तक पहुँच रहा था। फिर उसने एक हजार मापे और मुझे पानी के माध्यम से ले जाया, पानी कमर तक पहुँच रहा था।<sup>5</sup> फिर उसने एक हजार मापे, और यह एक नदी थी जिसे मैं पार नहीं कर सकता था, क्योंकि पानी बढ़ गया था, तेरने के लिए पर्याप्त पानी, एक नदी जिसे पार नहीं किया जा सकता था।<sup>6</sup> और उसने मुझसे कहा, “क्या तुमने यह देखा, हे मनुष्य के पुरु? फिर उसने मुझे नदी के किनारे पर वापस लाया।<sup>7</sup> अब जब मैं लौटा, तो देखो, नदी के किनारे पर एक ओर और दूसरी ओर बहुत सारे पेड़ थे।<sup>8</sup> फिर उसने मुझसे कहा, “ये जल पूर्व क्षेत्र की ओर जाते हैं और अराबा में नीचे जाते हैं; फिर वे समुद्र की ओर समुद्र का जल मीठा हो जाता है।<sup>9</sup> और यह होगा कि हर जीवित प्राणी जो हर उस स्थान पर झुँड में जाता है जहाँ नदी जाती है, जीवित रहेगा। और वहाँ बहुत सारी मछलियाँ होंगी, क्योंकि ये जल वहाँ जाते हैं और अन्य मीठे हो जाते हैं; इसलिए जहाँ भी नदी जाती है, सब कुछ जीवित रहेगा।<sup>10</sup> और यह होगा कि मछुआरे उसके किनारे पर खड़े होंगे; एन-गेदी से एन-एलैम तक जाल फैलाने का स्थान होगा। उनकी मछलियाँ कई प्रकार की

होंगी, जैसे महान समुद्र की मछलियाँ, बहुत सारी।<sup>11</sup> परन्तु उसके दलदल और दलली भूमि मीठे नहीं होंगे; वे नमक के लिए छोड़ दिए जाएंगे।<sup>12</sup> और नदी के किनारे पर, एक ओर और दूसरी ओर, खाने के लिए हर प्रकार के पेड़ उगेंगे। उनके पत्ते नहीं मुरझाएंगे, और उनके फल असफल नहीं होंगे। वे हर महीने फल देंगे क्योंकि उनका पानी पवित्रस्थान से बहता है, और उनके फल खाने के लिए और उनके पत्ते चंगाई के लिए होंगे।”<sup>13</sup> यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है: “यह वह सीमा होगी जिसके द्वारा तुम इसाएल के बाहर गोत्रों के बीच भूमि को विरासत के लिए विभाजित करोगे: यूसुफ के दो भाग होंगे।<sup>14</sup> तुम इसे विरासत के लिए विभाजित करोगे, प्रत्येक एक दूसरे के साथ समान रूप से; क्योंकि मैंने तुम्हारे पूर्वों को इसे देने की शरण ली थी, और यह भूमि तुम्हें विरासत के रूप में मिलेगी।<sup>15</sup> यह भूमि की सीमा होगी: उत्तर की ओर, महान समुद्र से हेतलोन के रास्ते, जेदाद के प्रवेश द्वार तक;<sup>16</sup> हमात, बेरोथा, सिल्वै, जो दमिश्क की सीमा और हमात की सीमा के बीच है: हाजर-हत्तिकोन, जो हौरान की सीमा के पास है।<sup>17</sup> सीमा समुद्र से हाजर-एनान तक दमिश्क की सीमा पर फैलेगी, और उत्तर में हमात की सीमा है। यह उत्तर की ओर है।<sup>18</sup> पूर्व की ओर, हौरान, दमिश्क, गिलाद, और इसाएल की भूमि के बीच, यरदन होगी; उत्तर की सीमा से पूर्वी समुद्र तक तुम मापोगे। यह पूर्व की ओर है।<sup>19</sup> दक्षिण की ओर दक्षिण की ओर तामार से लेकर मरिबथ-कादेश के जल तक, मिस्र की धारा तक और महान समुद्र तक होगी। यह दक्षिण की ओर दक्षिण की ओर है।<sup>20</sup> पश्चिम की ओर महान समुद्र होगा, दक्षिण की सीमा से लेकर लेबो-हमात के विपरीत एक बिंदु तक। यह पश्चिम की ओर है।<sup>21</sup> इसलिए तुम इस भूमि को इसाएल के गोत्रों के अनुसार अपने बीच विभाजित करोगे।<sup>22</sup> और तुम इसे अपने लिए और उन विदेशियों के लिए जो तुम्हारे बीच निवास करते हैं, जो तुम्हारे बीच पुत्रों को जन्म देते हैं, के लिए विरासत के रूप में लॉट द्वारा विभाजित करोगे। और वे तुम्हारे लिए इसाएल के पुत्रों में जन्मे हुए के समान होंगी; उन्हें इसाएल के गोत्रों के बीच तुम्हारे साथ एक विरासत दी जाएगी।<sup>23</sup> और जिस गोत्र में विदेशी निवास करता है, वहाँ तुम उसे उसकी विरासत दोगे,” प्रभु परमेश्वर कहता है।

**48** “अब ये गोत्रों के नाम हैं: उत्तरी छोर से, हेतलोन के मार्ग के पास से लेकर लेबो-हमात तक, हजार-एनान तक दमिश्क की सीमा पर, उत्तर की ओर हमात के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, दान, एक भाग।<sup>2</sup> दान की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, आशेर, एक भाग।<sup>3</sup> आशेर की भूमि के पास, पूर्व की

## यहेजकेल

ओर से पश्चिम की ओर, नपताली, एक भाग।<sup>4</sup> नपताली की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, मनश्शो, एक भाग।<sup>5</sup> मनश्शो की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, एप्रैम, एक भाग।<sup>6</sup> एप्रैम की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, रूबेन, एक भाग।<sup>7</sup> रूबेन की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, यहूदा, एक भाग।<sup>8</sup> यहूदा की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, वह भाग होगा जिसे तुम अलग करोगे, पच्चीस हजार हाथ चौड़ाई में, और लंबाई में एक भाग के समान पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर; और पवित्र स्थान उसके बीच में होगा।<sup>9</sup> वह भाग जिसे तुम प्रभु के लिए अलग करोगे, पच्चीस हजार हाथ लंबाई में और दस हजार चौड़ाई में, पश्चिम की ओर दस हजार चौड़ाई में, और दक्षिण की ओर पच्चीस हजार लंबाई में; और प्रभु का पवित्र स्थान उसके बीच में होगा।<sup>10</sup> यह उन याजकों के लिए होगा जो सादोक के पुत्रों में से पवित्र किए गए हैं, जिन्होंने मेरी आज्ञा का पालन किया, जिन्होंने भटकने पर इसाएल के पुत्रों की तरह भटकने नहीं किया जैसे लेवीय भटके।<sup>11</sup> यह भूमि के भाग से एक विशेष भाग होगा, एक अत्यंत पवित्र भाग, लेवीयों की भूमि के पास।<sup>12</sup> याजकों की भूमि के पास, लेवीयों के पास पच्चीस हजार हाथ लंबाई में और दस हजार चौड़ाई में होगी; पूरी लंबाई पच्चीस हजार हाथ और चौड़ाई दस हजार होगी।<sup>13</sup> इसके अलावा, वे इसे न बेचेंगे, न बदलेंगे, और न ही इस तुने हुए भूमि के भाग को स्थानांतरित करेंगे; क्योंकि यह प्रभु के लिए पवित्र है।<sup>14</sup> शेष, पांच हजार हाथ चौड़ाई में और पच्चीस हजार लंबाई में, नगर के सामान्य उपयोग के लिए होगा, घरों और खुले स्थानों के लिए; और नगर उसके बीच में होगा।<sup>15</sup> और ये उसकी मार्पें होंगी: उत्तर की ओर, चार हजार पांच सौ हाथ; दक्षिण की ओर, चार हजार पांच सौ हाथ; और पश्चिम की ओर, चार हजार पांच सौ।<sup>16</sup> नगर के खुले स्थान होंगे: उत्तर की ओर दो सौ पचास हाथ, दक्षिण की ओर दो सौ पचास, पूर्व की ओर दो सौ पचास, और पश्चिम की ओर दो सौ पचास।<sup>17</sup> पवित्र भाग के पास की लंबाई का शेष पूर्व की ओर दस हजार हाथ और पश्चिम की ओर दस हजार होगा; और यह पवित्र भाग के पास होगा। और इसकी उपज उन लोगों के लिए भोजन होगी जो नगर की सेवा करते हैं।<sup>18</sup> और नगर के कार्यकर्ता, इसाएल के सभी गोत्रों से, इसे खेती करेंगे।<sup>19</sup> पूरा भाग पच्चीस हजार बाई पच्चीस हजार हाथ होगा; तुम पवित्र भाग को अलग करोगे, एक वर्ग, नगर की संपत्ति के साथ।<sup>20</sup> शेष राजकुमार के लिए होगा, पवित्र

भाग और नगर की संपत्ति के एक ओर और दूसरी ओर, पूर्व सीमा की ओर पच्चीस हजार हाथ के भाग के पास और पश्चिम की ओर पच्चीस हजार के पास, भागों के साथ। यह राजकुमार के लिए होगा। और पवित्र भाग और घर का पवित्र स्थान उसके बीच में होगा।<sup>21</sup> लेवीयों की संपत्ति और नगर की संपत्ति को छोड़कर, जो राजकुमार के स्वामित्व के बीच में हैं, यहूदा की भूमि और बिन्यामीन की भूमि के बीच की सब कुछ राजकुमार के लिए होगी।<sup>22</sup> बाकी गोत्रों के लिए: पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, बिन्यामीन, एक भाग।<sup>23</sup> बिन्यामीन की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, शिमोन, एक भाग।<sup>24</sup> शिमोन की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, इस्साकार, एक भाग।<sup>25</sup> इस्साकार की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, जबुलून, एक भाग।<sup>26</sup> जबुलून की भूमि के पास, पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर, गाद, एक भाग।<sup>27</sup> और गाद की भूमि के पास दक्षिण की ओर, सीमा तामार से लेकर मरीबथ-कादेश के जल तक, मिस की धारा तक, और महान समुद्र तक होगी।<sup>28</sup> यह वह भूमि है जिसे तुम इसाएल के गोत्रों के बीच विरासत के लिए चिट्ठी डालकर बाटोगे, और ये उनके भाग हैं," प्रभु यहूवा की घोषणा है।<sup>29</sup> ये नगर के निकास हैं: उत्तर की ओर, माप के अनुसार चार हजार पांच सौ हाथ,<sup>30</sup> नगर के द्वार होंगे, इसाएल के गोत्रों के नाम पर: उत्तर की ओर तीन द्वार: रूबेन का द्वार, यहूदा का द्वार, और लेवी का द्वार।<sup>31</sup> और पूर्व की ओर, चार हजार पांच सौ हाथ, तीन द्वार होंगे: यसुफ का द्वार, बिन्यामीन का द्वार, और दान का द्वार।<sup>32</sup> दक्षिण की ओर, माप के अनुसार चार हजार पांच सौ हाथ, तीन द्वार होंगे: शिमोन का द्वार, इस्साकार का द्वार, और जबुलून का द्वार।<sup>33</sup> पश्चिम की ओर, चार हजार हाथ, तीन द्वार होंगे: गाद का द्वार, आशेर का द्वार, और अनपताली का द्वार।<sup>34</sup> नगर की परिधि अठारह हजार हाथ होगी; और उस दिन से नगर का नाम होगा, "प्रभु वहाँ है।"

## दानियेल

**१** यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में, बाबुल के राजा नब्बूकदनेस्सर ने यरूशलैम पर चढ़ाई की और उसे घेर लिया।<sup>२</sup> और प्रभु ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को उसके हाथ में सौंप दिया, साथ ही परमेश्वर के घर के कुछ बर्तन भी; और वह उहें शिनार देश में अपने देवता के घर ले गया, और बर्तनों को अपने देवता के खजाने में रखा।<sup>३</sup> तब राजा ने अपने अधिकारियों के प्रधान अशेपेनाज़ को इसाएल के कुछ पुत्रों को लाने के लिए कहा, जिनमें कुछ शाही परिवार और कुलीन भी शामिल थे, <sup>४</sup> ऐसे युवक जिनमें कोई दोष न हो, जो सुंदर दिखते हों, हर प्रकार की विशेषज्ञता में शिक्षा के लिए उपयुक्त हों, समझ और ज्ञान में निपुण हों, और जिनमें राजा के दरबार में सेवा करने की क्षमता हो; और उसने अशेपेनाज़ को उहें कसदियों की साहित्य और भाषा सिखाने का आदेश दिया।<sup>५</sup> राजा ने उनके लिए अपने चुने हुए भोजन और उस दाखमधु से जो वह पीता था, दैनिक राशन भी निर्धारित किया, और आदेश दिया कि उहें तीन वर्षों तक शिक्षित किया जाए, जिसके अंत में उहें राजा को व्यक्तिगत सेवा में प्रवेश करना था।<sup>६</sup> अब यहूदा के पुत्रों में से दानियेल, हन्न्याह, मीशाएल, और अजर्याह थे।<sup>७</sup> तब अधिकारियों के प्रधान ने उहें नए नाम दिए; और दानियेल को बेलत्सस्सर, हन्न्याह को शद्रक, मीशाएल को मेशक, और अजर्याह को अबिद-नेगो नाम दिया।<sup>८</sup> परन्तु दानियेल ने ठान लिया कि वह राजा के चुने हुए भोजन या उस दाखमधु से जो वह पीता था, अपने को अशुद्ध नहीं करेगा; इसलिए उसने अधिकारियों के प्रधान से अनुमति मांगी कि वह अपने को अशुद्ध न करे।<sup>९</sup> अब परमेश्वर ने दानियेल को अधिकारियों के प्रधान की छटि में अनुग्रह और करुणा प्रदान की।<sup>१०</sup> और अधिकारियों के प्रधान ने दानियेल से कहा, “मुझे अपने प्रभु राजा का डर है, जिसने तुम्हारा भोजन और पेय निर्धारित किया है;

क्योंकि वह क्यों तुम्हारे चेहरे को तुहारी आयु के युवकों की तुलना में दुबला देखे? तब तुम मुझे राजा के सामने दौड़ी ठहराओगे।”<sup>११</sup> परन्तु दानियेल ने उस निरीक्षक के कहा जिसे अधिकारियों के प्रधान ने दानियेल, हन्न्याह, मीशाएल, और अजर्याह पर नियुक्त किया था, <sup>१२</sup> “कृपया अपने सेवकों को दस दिनों के लिए परीक्षण में डालें, और हमें खाने के लिए कुछ सज्जियाँ और पीने के लिए पानी दें।”<sup>१३</sup> तब हमारे चेहरे की उपस्थिति को आपके सामने देखा जाए, और उन युवकों की उपस्थिति को जो राजा के चुने हुए भोजन को खा रहे हैं; और अपने सेवकों के साथ जो आप देखते हैं उसके अनुसार व्यवहार करें।<sup>१४</sup> तो उसने इस मामले में उनकी बात सुनी, और उहें दस दिनों के लिए परीक्षण में डाल दिया।<sup>१५</sup> और दस दिनों के अंत में उनकी उपस्थिति बेहतर दिखी और वे

उन सभी युवकों की तुलना में मोटे थे जो राजा के चुने हुए भोजन को खा रहे थे।<sup>१६</sup> तो निरीक्षक ने उनके चुने हुए भोजन और पीने के लिए दाखमधु को रोकना जारी रखा, और उहें सज्जियाँ देता रहा।<sup>१७</sup> और इन चार युवकों के लिए, परमेश्वर ने उहें हर प्रकार की साहित्य और विशेषज्ञता में ज्ञान और बुद्धिमत्ता दी; दानियेल ने तो हर प्रकार के दर्शन और स्वप्नों को भी समझा।<sup>१८</sup> तब उन दिनों के अंत में जिन्हें राजा ने उहें प्रस्तुत करने के लिए निर्दिष्ट किया था, अधिकारियों के प्रधान ने उहें नब्बूकदनेस्सर के समाने प्रस्तुत किया।<sup>१९</sup> और राजा ने उनसे बात की, और उनमें से कोई भी दानियेल, हन्न्याह, मीशाएल, और अजर्याह के समान नहीं पाया गया; इसलिए वे राजा की व्यक्तिगत सेवा में प्रवेश कर गए।<sup>२०</sup> हर प्रकार की विशेषज्ञता और समझ के मामले में जिसके बारे में राजा ने उनसे परामर्श किया, उसने उहें अपने राज्य के सभी जात्यार पुराहितों और जात्यारों से दस गुना बेहतर पाया।<sup>२१</sup> और दानियेल कुसुर राजा के पहले वर्ष तक बने रहे।

**२** अब नब्बूकदनेस्सर के राज्य के दूसरे वर्ष में, नब्बूकदनेस्सर ने स्वप्न देखे; और उसकी आत्मा व्याकुल हो गई और उसकी नींद उड़ गई।<sup>२</sup> तब राजा ने ज्योतिषियों, जादूगारों, टोनेवालों और कस्तियों को बुलाने का आदेश दिया ताकि वे राजा को उसके स्वप्न बताएं। सो वे आए और राजा के समझने के लिए व्याकुल है।<sup>३</sup> और राजा ने उनसे कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है, और मेरी आत्मा उस स्वप्न को समझने के लिए व्याकुल है।”<sup>४</sup> तब कस्तियों ने अरामी में राजा से कहा: “हे राजा, सदा जीवित रहो! अपने सेवकों को स्वप्न बताओ, और हम उसका अर्थ बताएंगे।”<sup>५</sup> राजा ने कस्तियों को उत्तर दिया, “मेरा आदेश दृढ़ है: यदि तुम मुझे स्वप्न और उसका अर्थ नहीं बताओगे, तो तुम मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा और तुम्हारे घरों को कड़े का ढेर बना दिया जाएगा।”<sup>६</sup> परन्तु यदि तुम स्वप्न और उसका अर्थ बताओगे, तो तुम मुझसे उपहार, इनाम और बड़ा सम्मान प्राप्त करोगे; इसलिए मुझे स्वप्न और उसका अर्थ बताएंगे।”<sup>७</sup> तुम्हें दूसरी बार उत्तर दिया और कहा, “राजा अपने सेवकों को स्वप्न बताए, और हम उसका अर्थ बताएंगे।”<sup>८</sup> राजा ने उत्तर दिया, “मुझे निश्चित रूप से पता है कि तुम समय प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हो, क्योंकि तुमने समझ लिया है कि मेरा आदेश दृढ़ है, कि यदि तुम मुझे स्वप्न नहीं बताओगे, तो तुम्हारे लिए केवल एक ही आदेश है। क्योंकि तुमने मेरे सामने झूठी और ब्रह्म बातें बोलने की सहमति की है जब तक कि स्थिति न बदल जाए; इसलिए मुझे स्वप्न बताओ, ताकि मैं जान सकूं कि तुम मुझे उसका अर्थ बता सकते हो।”<sup>९</sup>

## दानियेल

कस्तियों ने राजा को उत्तर दिया और कहा, "धरती पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो राजा को यह बात बता सके, क्योंकि किसी भी महान राजा या शासक ने कभी किसी ज्योतिषी, जादूगार, या कस्ती से ऐसी बात नहीं पूछी है।<sup>11</sup> इसके अलावा, जो बात राजा मांगता है वह कठिन है, और इसे राजा को बताने वाला कोई और नहीं है सिवाय देवताओं के, जिनका निवास स्थान नश्वर शरीर के साथ नहीं है।"<sup>12</sup> इस कारण से, राजा क्रोधित और अत्यंत क्रोधित हो गया, और उसने बाबुल के सभी ज्ञानी पुरुषों को मार डालने का आदेश दिया।<sup>13</sup> सो यह आदेश दिया गया कि ज्ञानी पुरुषों को मारा जाए; और वे दानियेल और उसके मित्रों को मारने के लिए ढूँढ़े लगे।<sup>14</sup> तब दानियेल ने विवेक को और समझदारी के साथ अर्योंक से उत्तर दिया, जो राजा के अंगरक्षक का कप्तान था, जो बाबुल के ज्ञानी पुरुषों को मारने के लिए निकला था;<sup>15</sup> उसने अर्योंक से, जो राजा का अधिकारी था, कहा, "राजा का आदेश इतना कठोर क्यों है?" तब अर्योंक ने दानियेल को यह बात बताई।<sup>16</sup> सो दानियेल राजा के पास गया और उससे समय की याचना की, ताकि वह राजा को अर्थ बता सके।<sup>17</sup> तब दानियेल अपने घर गया और अपने मित्रों, हनवाह, मीराशएल, और अजर्याह को यह बात बताई,<sup>18</sup> ताकि वे स्वर्ग के परमेश्वर से इस रहस्य के बारे में दया की याचना करें, ताकि दानियेल और उसके मित्र बाबुल के अन्य ज्ञानी पुरुषों के साथ न मारे जाएं।<sup>19</sup> तब वह रहस्य दानियेल को रात के दर्शन में प्रकट हुआ। तब दानियेल ने स्वर्ग के परमेश्वर को आशीर्वाद दिया;<sup>20</sup> दानियेल ने कहा,

"परमेश्वर का नाम सदा और सदा के लिए धन्य हो क्योंकि बुद्धि और शक्ति उसी की है।<sup>21</sup> वही समय और काल को बदलता है, वह राजाओं को हटाता और राजाओं को स्थापित करता है; वह बुद्धिमानों को बुद्धि देता है, और समझदारों को ज्ञान देता है।"<sup>22</sup> वही गहरे और छिपे हुए जीजों को प्रकट करता है, वह जनता है कि अधिकार में क्या है, और प्रकाश उसके साथ वास करता है।<sup>23</sup> तुझे मेरे पितरों के परमेश्वर, मैं धन्यवाद और स्तुति करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है; अब तूने मुझे वह भी प्रकट किया है जो हमने तुझसे याचना की थी, क्योंकि तूने हमें राजा का मामला प्रकट किया है!"

<sup>24</sup> इसलिए दानियेल अर्योंक के पास गया, जिसे राजा ने बाबुल के ज्ञानी पुरुषों को मारने के लिए नियुक्त किया था। वह गया और उससे कहा, "बाबुल के ज्ञानी पुरुषों को मत मारो! मुझे राजा के सामने ले चलो, और मैं राजा को अर्थ बताऊंगा।"<sup>25</sup> तब अर्योंक ने दानियेल को

शीघ्रता से राजा के सामने लाया और उससे कहा, "मैंने यहूदा के निर्वासितों में से एक व्यक्ति पाया है जो राजा को अर्थ बता सकता है!"<sup>26</sup> राजा ने दानियेल से कहा, जिसका नाम बेल्तशस्सर था, "क्या तुम मुझे वह स्वप्न और उसका अर्थ बता सकते हो जो मैंने देखा है?"<sup>27</sup> दानियेल ने राजा के सामने उत्तर दिया और कहा, "जिस रहस्य के बारे में राजा ने पूछा है, उसे न तो ज्ञानी पुरुष, न जादूगार, न ज्योतिषी, न भविष्यवक्ता राजा को बता सकते हैं।"<sup>28</sup> हालांकि, स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो रहस्यों को प्रकट करता है, और उसने राजा नबूक दनेस्सर को यह प्रकट किया है कि भविष्य में क्या होगा। यह आपका स्वप्न था और आपके मन में आपके बिस्तर पर जो दर्शन थे;<sup>29</sup> आपके लिए है राजा, आपके बिस्तर पर आपके विवार भविष्य में क्या होगा इस पर कैंट्रिट थे; और जो रहस्यों को प्रकट करता है उसने आपको यह प्रकट किया है कि क्या होगा।<sup>30</sup> परन्तु मेरे लिए, यह रहस्य मुझे इसलिए प्रकट नहीं किया गया है कि मुझमें कोई विशेष बुद्धि है, बल्कि इसलिए कि राजा को अर्थ बताया जाए, और ताकि आप अपने मन के विचारों को समझ सकें।<sup>31</sup> आप, हे राजा, देख रहे थे, और देखो, एक महान मूर्ति थी; वह मूर्ति, जो बड़ी और असाधारण चमकदार थी, आपके सामने खड़ी थी, और उसकी उपस्थिति भयानक थी।<sup>32</sup> उस मूर्ति का सिर उत्तम सोने का था, उसकी छाती और भुजाएं चांदी की थीं, उसका पेट और जांधें पीतल की थीं,<sup>33</sup> उसकी टांगें लोहे की थीं, और उसके पैर कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के थे।<sup>34</sup> आप देखते रहे जब तक कि एक पश्यर बिना हाथों के तोड़ा गया, और उसने मूर्ति के लोहे और मिट्टी के पैरों पर प्रहार किया, और उन्हें चूर कर दिया।<sup>35</sup> तब लोहे, मिट्टी, पीतल, चांदी, और सोने को एक ही समय में टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, और वे ग्रीष्मकालीन श्रेसिंग पल्लोर की भूसी की तरह हो गए; और हवा ने उन्हें उड़ा दिया ताकि उनका कोई निशान न मिला। परन्तु वह पश्यर जिसने मूर्ति को मारा वह एक बड़ा पहाड़ बन गया और पूरी पृथ्वी की भर दिया।<sup>36</sup> "यह स्वप्न था; अब हम इसका अर्थ राजा के सामने बताएंगे।"<sup>37</sup> आप, हे राजा, राजा जी के राजा हैं, जिसे स्वर्ग के परमेश्वर ने राज्य, शक्ति, सामर्थ्य, और सम्मान दिया है;<sup>38</sup> और जहां कहीं भी मानव जाति के पुत्र रहते हैं, या मैदान के जानवर, या आकाश के पक्षी, उसने उन्हें आपके हाथ में सौंप दिया है और आपको उन सब पर शासक बनाया है। आप सोने का सिर हैं।<sup>39</sup> और आपके बाद एक और राज्य उठागा जो आपसे निम्र होगा, फिर एक और तीसरा राज्य पीतल का होगा, जो पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा।<sup>40</sup> तब एक चौथा राज्य होगा जो लोहे के समान मजबूत होगा; जैसे लोहे सब कुछ चूर कर देता है और तोड़ता है, वैसे

## दानियेल

ही यह लोहे के समान सब कुछ चूर कर देगा और तोड़ेगा।<sup>41</sup> और जैसे आपने देखा कि पैर और अंगुलियाँ कुछ कुम्हार की मिट्टी की ओर कुछ लोहे की थीं, यह एक विभाजित राज्य होगा; परन्तु इसमें लोहे की कुछ कठोरता होगी, जैसे आपने देखा कि लोहे को साधारण मिट्टी के साथ मिलाया गया है।<sup>42</sup> और जैसे पैरों की अंगुलियाँ कुछ लोहे की ओर कुछ भाग मजबूत होगा और कुछ भाग नाजुक होगा।<sup>43</sup> जिसमें आपने देखा कि लोहे को साधारण मिट्टी के साथ मिलाया गया है, वे मानव जाति के बीच में एक-दूसरे के साथ मिलेंगे; परन्तु वे एक-दूसरे से विपक्षेण नहीं, जैसे लोहे का मिट्टी के साथ मेल नहीं होता।<sup>44</sup> और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा, और वह राज्य किसी अन्य लोगों के लिए नहीं छोड़ा जाएगा; यह उन सभी राज्यों को चूर कर देगा और समाप्त कर देगा, परन्तु यह स्वयं सदा के लिए स्थायी रहेगा।<sup>45</sup> जैसे आपने देखा कि एक पत्तर बिना हाथों के पहाड़ से तोड़ा गया, और उसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चांदी, और सोने को चूर कर दिया, महान परमेश्वर ने राजा को यह प्रकट किया है कि भविष्य में क्या होगा; इसलिए स्वप्न निश्चित है और इसका अर्थ विश्वसनीय है।<sup>46</sup> तब राजा नबूकदनेस्सर अपने चेहरे पर गिर पड़ा और दानियेल को विनम्र सम्मान दिया, और उसे एक भेट और धूप प्रस्तुत करने का आदेश दिया।<sup>47</sup> राजा ने दानियेल से कहा, “तुम्हारा परमेश्वर वास्तव में देवताओं का परमेश्वर और राजाओं का प्रभु और रहस्यों का प्रकट करने वाला है, क्योंकि तुम इस रहस्य को प्रकट करने में सक्षम हो।”<sup>48</sup> तब राजा ने दानियेल को पदोन्नत किया और उसे कई महान उपहार दिए, और उसने उसे बाबुल के पूरे प्रांत का शासक और बाबुल के सभी जानी पुरुषों का प्रधान अधिकारी बनाया।<sup>49</sup> और दानियेल ने राजा से एक याचना की, और उसने शद्रक, मेशक, और अबेदनों को बाबुल के प्रांत के प्रशासन पर नियुक्त किया, जबकि दानियेल राजा के दरबार में था।

**3** नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूर्ति बनवाई, जिसकी ऊँचाई साठ हाथ और चौड़ाई छः हाथ थी; उसने उसे बाबुल के प्रांत के दुरा मैदान में खड़ा किया।<sup>2</sup> तब नबूकदनेस्सर राजा ने प्रांतों के अधिपतियों, हाकिमों, और राज्यपालों, मंत्रियों, कोषाध्यक्षों, च्यायाधीशों, मजिस्ट्रेटों, और प्रांतों के सभी प्रशासकों को बुलाने के लिए सदेश भेजा, ताकि वे उस मूर्ति के समर्पण में आएं जिसे नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ा किया था।<sup>3</sup> तब प्रांतों के अधिपति, हाकिम, और राज्यपाल, मंत्री, कोषाध्यक्ष, च्यायाधीश, मजिस्ट्रेट, और प्रांतों के सभी

प्रशासक उस मूर्ति के समर्पण के लिए इकट्ठे हुए जिसे नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ा किया था; और वे उस मूर्ति के सामने खड़े हुए जिसे नबूकदनेस्सर ने खड़ा किया था।<sup>4</sup> तब एक हरकारा ऊँचे स्वर में बोला: “तुम्हें आज्ञा दी जाती है, हे लोगों, राष्ट्रों, और सभी भाषाओं के जनों,<sup>5</sup> कि जैसे ही तुम नरसिंगा, बांसुरी, वीणा, त्रिकोण, सारंगी, बैगपाइप, और सभी प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनो, तुम गिरकर उस सोने की मूर्ति की पूजा करो जिसे नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ा किया है।<sup>6</sup> परन्तु जो कोई गिरकर पूजा नहीं करेगा, उसे तुरंत जलती हुई आग की भट्टी के बीच में डाल दिया जाएगा।<sup>7</sup> इसलिए जैसे ही सभी लोगों ने नरसिंगा, बांसुरी, वीणा, त्रिकोण, सारंगी, बैगपाइप, और सभी प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनी, सभी लोग, राष्ट्र, और सभी भाषाओं के जन गिरकर उस सोने की मूर्ति की पूजा करने लगे जिसे नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ा किया था।<sup>8</sup> इसी कारण उस समय कुछ कसरदी लोग आग आए और यहूदियों के विरुद्ध आरोप लगाए।<sup>9</sup> उन्होंने बोलना शुरू किया और नबूकदनेस्सर राजा से कहा: “हे राजा, तू सदा जीवित रह।<sup>10</sup> हे राजा, तूने यह आज्ञा दी है कि जो कोई नरसिंगा, बांसुरी, वीणा, त्रिकोण, सारंगी, और बैगपाइप, और सभी प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुने, वह गिरकर उस सोने की मूर्ति की पूजा करे।<sup>11</sup> परन्तु जो कोई गिरकर पूजा नहीं करेगा, उसे जलती हुई आग की भट्टी के बीच में डाल दिया जाएगा।<sup>12</sup> कुछ यहूदी हैं जिन्हें तूने बाबुल के प्रांत के प्रशासन पर नियुक्त किया है, अर्थात् शद्रक, मेशक, और अबेदनगो। इन पुरुषों ने, हे राजा, तेरी अवहेलना की है; वे न तो तेरे देवताओं की सेवा करते हैं, और न ही उस सोने की मूर्ति की पूजा करते हैं जिसे तूने खड़ा किया है।<sup>13</sup> तब नबूकदनेस्सर क्रोध और गुस्से में आकर शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को लाने का आदेश दिया; तब इन पुरुषों को राजा के सामने लाया गया।<sup>14</sup> नबूकदनेस्सर ने बोलना शुरू किया और उनसे कहा, “क्या यह सत्य है, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो, कि तुम मेरे देवताओं की सेवा नहीं करते और न ही उस सोने की मूर्ति की पूजा करते हो जिसे मैंने खड़ा किया है?”<sup>15</sup> अब, यदि तुम तैयार हो, जैसे ही तुम नरसिंगा, बांसुरी, वीणा, त्रिकोण, सारंगी, बैगपाइप, और सभी प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनो, गिरकर उस मूर्ति की पूजा करो जिसे मैंने बनाया है, तो ठीक है। परन्तु यदि तुम पूजा नहीं करोगे, तो तुम्हें तुरंत जलती हुई आग की भट्टी के बीच में डाल दिया जाएगा; और कौन सा देवता है जो तुम्हें मेरे हाथों से बचा सके?”<sup>16</sup> शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने राजा को उत्तर दिया, “नबूकदनेस्सर, हमें इस विषय में तुझे उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है।<sup>17</sup> यदि ऐसा हो, तो हमारा परमेश्वर जिसकी हम सेवा

## दानियेल

करते हैं, हमें जलती हुई आग की भट्टी से बचाने में सक्षम है; और वह हमें तेरे हाथ से बचाएगा, हे राजा।<sup>18</sup> परन्तु यदि वह ऐसा नहीं करता, तो हे राजा, यह तुझे जात हो कि हम तेरे देवताओं की सेवा नहीं करेगे और न ही उस सोने की मूर्ति की पूजा करेगे जिसे तुमें खड़ा किया है।<sup>19</sup> तब नबूकदनेस्सर क्रोध से भर गया, और उसका चेहरा शद्रक, मेशक, और अबेदनगों की ओर बदल गया। उसने भट्टी को सामान्य से सात गुना अधिक गर्म करने का आदेश दिया।<sup>20</sup> और उसने अपनी सेना के कुछ वीर योद्धाओं को आदेश दिया कि वे शद्रक, मेशक, और अबेदनगों को बांधकर जलती हुई आग की भट्टी में डाल दें।<sup>21</sup> तब इन पुरुषों को उनकी पतलून, कौटी, टोपी, और अन्य कपड़ों में बांधकर जलती हुई आग की भट्टी के बीच में डाल दिया गया।<sup>22</sup> इस कारण, क्योंकि राजा की आज्ञा कठोर थी और भट्टी को अत्यधिक गर्म किया गया था, आग की लपटों ने उन पुरुषों को मार डाला जो शद्रक, मेशक, और अबेदनगों को ऊपर ले गए थे।<sup>23</sup> परन्तु ये तीन पुरुष, शद्रक, मेशक, और अबेदनगों, अभी भी बंधे हुए जलती हुई आग की भट्टी के बीच में गिर गए।<sup>24</sup> तब नबूकदनेस्सर राजा चकित हुआ और जल्दी से खड़ा हो गया; उसने अपने मंत्रियों से कहा, “क्या हमने तीन पुरुषों को बंधा हुआ आग के बीच में नहीं डाला?” उन्होंने राजा को उत्तर दिया, “बिल्कुल, हे राजा।”<sup>25</sup> उसने उत्तर दिया, “देखो! मैं चार पुरुषों को देखता हूँ जो बंधे हुए नहीं हैं और आग के बीच में बिना हानि के चल रहे हैं, और चौथे का रूप देवताओं के पुत्र के समान है!”<sup>26</sup> तब नबूकदनेस्सर जलती हुई आग की भट्टी के द्वारा के पास आया; उसने कहा, “शद्रक, मेशक, और अबेदनगों, तुम परमप्रधान परमेश्वर के सेवक हो, बाहर आओ और यहाँ आओ!” तब शद्रक, मेशक, और अबेदनगों आग के बीच से बाहर आए।<sup>27</sup> प्रांतों के अधिपति, हाकिम, राज्यपाल, और राजा के मंत्रियों ने इकट्ठा होकर देखा कि आग का इन पुरुषों के शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, न ही उनके सिर के बाल जले, न ही उनकी पतलून को कोई नुकसान हुआ, और न ही आग की गंध उन पर आई।<sup>28</sup> नबूकदनेस्सर ने उत्तर दिया और कहा, “शद्रक, मेशक, और अबेदनगों के परमेश्वर की स्तुति हो, जिसने अपने द्वाते को भेजा और अपने सेवकों को बचाया जिन्होंने उसमें विश्वास रखा, राजा की आज्ञा का उल्लंघन किया, और अपने शरीर को समर्पित किया ताकि वे किसी भी देवता की सेवा या पूजा न करें सिवाय अपने परमेश्वर के।<sup>29</sup> इसलिए मैं यह आज्ञा देता हूँ कि जो कोई भी व्यक्ति, राष्ट्र, या किसी भी भाषा का जन शद्रक, मेशक, और अबेदनगों के परमेश्वर के विरुद्ध कुछ भी अपमानजनक कहेगा, उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया

जाएगा और उनके घरों को कूड़े का ढेर बना दिया जाएगा, क्योंकि ऐसा कोई अन्य देवता नहीं है जो इस प्रकार बचा सके।”<sup>30</sup> तब राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनगों को बाबुल के प्रांत में समृद्ध किया।

**4** राजा नबूकदनेस्सर, सभी लोगों, जातियों, और सभी भाषाओं के निवासियों को जो पूरी पृथ्वी पर रहते हैं: “तुम्हारी शांति महान हो।”<sup>2</sup> मुझे यह अच्छा लगा कि मैं उन विन्हों और चमकारों की धोषणा करूँ जो परमप्रधान परमेश्वर ने मेरे लिए किए हैं।<sup>3</sup> उसके चिन्ह कितने महान हैं और उसके चमकार कितने शक्तिशाली हैं! उसका राज्य एक अनन्तकालीन राज्य है, और उसका शासन पीढ़ी से पीढ़ी तक है।<sup>4</sup> मैं, नबूकदनेस्सर, अपने घर में आराम से था और अपने महल में समृद्ध था।<sup>5</sup> मैंने एक सपना देखा और वह मुझे भयभीत कर गया; और ये कल्पनाएँ जब मैं अपने बिस्तर पर लेटा था और मेरे मन में जो दृश्य थे, वे मुझे लगातार चिंतित करते रहे।<sup>6</sup> इसलिए मैंने बाबुल के सभी जानी पुरुषों को मेरे सामने लाने का आदेश दिया, ताकि वे मुझे सपने का अर्थ बता सकें।<sup>7</sup> तब ज्योतिषी, जांगूर, कलदई और भविष्यवक्ता आए और मैंने उन्हें सपना बताया, लेकिन वे मुझे उसका अर्थ नहीं बता सके।<sup>8</sup> लेकिन अंततः दानियेल मेरे सामने आया, जिसका नाम मेरे देवता के नाम पर बैल्तशस्सर है, और जिसमें पवित्र देवताओं की आत्मा है; और मैंने उसे सपना बताया, कहा, “बैल्तशस्सर, ज्योतिषियों के प्रधान, क्योंकि मैं जानता हूँ कि पवित्र देवताओं की आत्मा तुझमें है और कोई रहस्य तुझे भयित नहीं करता, मुझे मेरे सपने के दृश्य बता, जो मैंने देखा है, और उसका अर्थ भी।”<sup>10</sup> अब ये मेरे मन में दृश्य थे जब मैं अपने बिस्तर पर लेटा था: मैं देख रहा था, और देखो, पृथ्वी के बीच में एक वृक्ष था और उसकी ऊँचाई महान थी।<sup>11</sup> वृक्ष बड़ा हुआ और शक्तिशाली बन गया और उसकी ऊँचाई अकाश तक पहुँच गई, और वह पूरी पृथ्वी के अंत तक दिखाई देता था।<sup>12</sup> उसकी पत्तियाँ सुंदर थीं और उसका फल प्रमुख मात्रा में था, और उसमें सभी के लिए भोजन था। मैदान के जानवर उसके नीचे छाया पाते थे, और आकाश के पक्षी उससे भोजन पाते थे।<sup>13</sup> मैं अपने बिस्तर पर लेटे हुए अपने मन में दृश्य देख रहा था, और देखो, एक स्वर्गद्वार, एक पवित्र व्याक्ति, स्वर्ग से उत्तरा।<sup>14</sup> उसने ऊँचे स्तर में चिल्लाकर कहा: ‘वृक्ष को काट डालो और उसकी शाखाएँ काट दो, उसकी पत्तियाँ झाड़ दो और उसका फल बिखेरो दो; जानवर उसके नीचे से भाग जाएँ और पक्षी उसकी शाखाओं से।’<sup>15</sup> फिर भी उसकी जड़ के साथ टूँठ को भूमि में छोड़ दो, लेकिन उसके चारों

## दानियेल

और लोहे और कांसे का बंधन हो मैदान की नई घास में; और उसे स्वर्ग की ओस से भीगने दो, और उसे पृथ्वी के घास में जानवरों के साथ साझा करने दो।<sup>16</sup> उसका मन मनुष्य का न रहकर जानवर का मन हो जाए, और सात काल उसके ऊपर से गुजरें।<sup>17</sup> यह निर्णय स्वर्गद्वारों के आदेश से है, और यह निर्णय पवित्र लोगों की आज्ञा है, ताकि जीवित लोग जान सकें कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है, और वह जिसे चाहता है उसे देता है और सबसे नीच व्यक्ति को उस पर नियुक्त करता है।<sup>18</sup> यह वह सप्ताह है जो मैने, राजा न बूकदनेस्सर, देखा है। अब तुम, बेल्टशस्सर, मुझे इसका अर्थ बताओ, क्योंकि मेरे राज्य के कोई भी जानी पुरुष मुझे इसका अर्थ नहीं बता सकते, लेकिन तुम सक्षम हो, क्योंकि पवित्र देवताओं की आमा तुम्हें है।"<sup>19</sup> तब दानियेल, जिसका नाम बेल्टशस्सर है, कुछ समय के लिए स्तर्व्य हो गया क्योंकि उसके विचार उसे चिंतित कर रहे थे। राजा ने उत्तर दिया और कहा, "बेल्टशस्सर, सप्ताह या उसका अर्थ तुम्हें चिंतित न कर।" बेल्टशस्सर ने उत्तर दिया, "मेरे प्रभु, यदि केवल सप्ताह उन लोगों पर लागू होता जो आपसे धृणा करते हैं, और उसका अर्थ आपके विरोधियों पर होता।"<sup>20</sup> वह वृक्ष जो आपने देखा, जो बड़ा हुआ और शक्तिशाली बन गया, जिसकी ऊँचाई आकाश तक पहुँच गई और जो पूरी पृथ्वी पर दिखाई देता था,<sup>21</sup> और जिसकी पत्तियाँ सुंदर थीं और उसका फल प्रचुर मात्रा में था, और जिसमें सभी के लिए भोजन था, जिसके नीचे मैदान के जानवर रहते थे, और जिसकी शाखाओं में आकाश के पक्षी बसे थे—<sup>22</sup> वह आप हैं, हे राजा, क्योंकि आप महान और शक्तिशाली बन गए हैं, और आपकी महिमा महान हो गई है और आकाश तक पहुँच गई है, और आपका शासन पृथ्वी के अंत तक है।<sup>23</sup> और इस बात में कि राजा ने एक स्वर्गद्वार, एक पवित्र व्यक्ति, को स्वर्ग से उत्तरो हुए देखा और कहा, "वृक्ष को काट डालो और उसे नष्ट कर दो; पिछे भी उसकी जड़ के साथ ढूँढ़ को भूमि में छोड़ दो, लेकिन उसके चारों ओर लोहे और कांसे का बंधन हो मैदान की नई घास में; और उसे स्वर्ग की ओस से भीगने दो, और उसे मैदान के जानवरों के साथ साझा करने दो जब तक कि सात काल उसके ऊपर से न गुजरें"—<sup>24</sup> यह अर्थ है, हे राजा, और यह परमप्रधान का आदेश है, जो मेरे प्रभु राजा पर आया है:<sup>25</sup> कि आप मनुष्यों से दूर कर दिए जाएंगे, और आपका निवास स्थान मैदान के जानवरों के साथ होगा, और आपको गायों की तरह घास खाने के लिए दी जाएंगी, और स्वर्ग की ओस से भीगने दिया जाएगा; और सात काल आपके ऊपर से गुजरेंगे जब तक आप यह न पहचान लें कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य पर शासन

करता है, और जिसे वह चाहता है उसे देता है।<sup>26</sup> और इस बात में कि वृक्ष की जड़ के साथ ढूँढ़ को छोड़ने का आदेश दिया गया था, आपका राज्य आपके लिए तब तक बना रहेगा जब तक आप यह न पहचान लें कि स्वर्ग शासन करता है।<sup>27</sup> इसलिए, हे राजा, मेरी सलाह आपको प्रसान्न करें: अपनी पापों को धर्म के कार्यों से और अपनी गलतियों को गरीबों पर दया दिखाकर मिटा दें, ताकि आपकी समृद्धि लंबी हो सके।"<sup>28</sup> यह सब राजा न बूकदनेस्सर पर घटित हुआ।<sup>29</sup> बारह महीने बाद वह बाबुल के शाही महल की छत पर चल रहा था।<sup>30</sup> राजा बोलने लगा और कहने लगा, "क्या यह महान बाबुल नहीं है, जिसे मैने अपनी शक्ति के बल पर और अपनी महिमा के सम्मान के लिए एक शाही निवास के रूप में बनाया है?"<sup>31</sup> जब तक यह शब्द राजा के मुँह में ही था, स्वर्ग से एक आवाज आई, "राजा न बूकदनेस्सर, तुम्हें यह घोषित किया जाता है: तुम्हारी संप्रभुता तुमसे हटा ली गई है,"<sup>32</sup> और तुम मनुष्यों से दूर कर दिए जाओगे, और तुम्हारा निवास स्थान मैदान के जानवरों के साथ होगा। तुम्हें गायों की तरह घास खाने के लिए दी जाएगी, और सात काल तुम्हारे ऊपर से गुजरेंगे जब तक तुम यह न पहचान लो कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है और जिसे वह चाहता है उसे देता है।"<sup>33</sup> तुरंत न बूकदनेस्सर के बारे में यह शब्द पूरा हुआ; और वह मनुष्यों से दूर कर दिया गया और गायों की तरह घास खाने लगा, और उसका शरीर स्वर्ग की ओस से भीग गया जब तक कि उसके बाल चील के पंखों की तरह बढ़ नहीं गए और उसके नाखून पक्षियों के पंजों की तरह नहीं हो गए।<sup>34</sup> लेकिन उस अवधि के अंत में, मैने न बूकदनेस्सर, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और मेरी समझ लौट आई, और मैने परमप्रधान को आशीर्वाद दिया और उसकी स्तुति और सम्मान किया जो सदा के लिए जीवित है; क्योंकि उसका शासन अनन्तकालीन शासन है, और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है।<sup>35</sup> पृथ्वी के सभी निवासी कोई महत्व नहीं रखते, लेकिन वह स्वर्ग की सेना के बीच और पृथ्वी के निवासियों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार करता है, और कोई भी उसके हाथ को रोक नहीं सकता या उससे कह नहीं सकता, 'तुमने क्या किया है?'<sup>36</sup> उसी समय मेरी समझ लौट आई। और मेरे राज्य के सम्मान के लिए मेरी महिमा और वैभव मुझे पुनःस्थापित किए गए, और मेरे उच्च अधिकारी और मेरे रईस मुझे खोजने लगे; इसलिए मैं अपनी संप्रभुता में पुनःस्थापित हुआ, और मुझमें अद्वितीय महानता जोड़ी गई।<sup>37</sup> अब मैं, न बूकदनेस्सर, स्वर्ग के राजा की स्तुति, प्रशंसा और सम्मान करता हूँ, क्योंकि उसके सभी कार्य सत्य हैं और

## दानियेल

उसके मार्ग न्यायसंगत हैं, और वह उन लोगों को विनम्र करने में सक्षम है जो गर्व में चलते हैं।

**5** बेलशज्जर राजा ने अपने एक हजार रईसों के लिए एक बड़ा भोज आयोजित किया, और वह एक हजार के सामने शराब पी रहा था।<sup>2</sup> जब वह शराब का स्वाद ले रहा था, बेलशज्जर ने आदेश दिया कि सोने और चांदी के बर्टन लाए जाएं जिन्हें उसके पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मंदिर से लिया था, ताकि राजा, उसके रईस, उसकी पत्रियाँ, और उसकी रखेतियाँ उनसे पी सकें।<sup>3</sup> फिर वे सोने के बर्टन लाए गए जो यरूशलेम में परमेश्वर के घर से लिए गए थे; और राजा और उसके रईस, उसकी पत्रियाँ, और उसकी रखेतियाँ उनसे पीने लगी।<sup>4</sup> उन्होंने शराब पी और सोने, चांदी, पीतल, लोह, लकड़ी, और पत्तर के देवताओं की स्तुति की।<sup>5</sup> उसी क्षण एक मानव हाथ की उंगलियाँ प्रकट हुईं और राजा के महल की दीवार पर दीपक के सामने पलस्तर पर लिखने लगीं, और राजा ने उस हाथ की पीठ देखी जिसने लिखा।<sup>6</sup> तब राजा का चेहरा पीला पड़ गया और उसके विचारों ने उसे चिंतित कर दिया, और उसकी कमर की गांठे ढीली हो गईं और उसके धूने एक-दूसरे से टकराने लगे।<sup>7</sup> राजा ने जोर से पुकार कर ज्योतिषियों, कल्दियों, और भविष्यवक्ताओं को बुलाने के लिए कहा। राजा ने बोलना शुरू किया और बाबुल के बुद्धिमानों से कहा, “जो कोई इस लेख को पढ़ सकता है और इसका अर्थ मुझे समझा सकता है, उसे बैंगनी वस्त्र पहनाया जाएगा, उसके गले में सोने की माला होगी, और राज्य में तीसरे शासक के रूप में अधिकार प्राप्त होगा।”<sup>8</sup> तब राजा के सभी बुद्धिमान लोग आए, लेकिन वे लेख को पढ़ नहीं सके और न ही इसका अर्थ राजा को समझा सके।<sup>9</sup> तब राजा बेलशज्जर बहुत चिंतित हो गया, उसका चेहरा और भी अधिक पीला हो गया, और उसके रईस उलझन में पड़ गए।<sup>10</sup> रानी भोज कक्ष में आई क्योंकि राजा और उसके रईसों के शब्दों के कारण; रानी ने बोलना शुरू किया और कहा, “हे राजा, सदैव जीवित रहो! तुम्हारे विचार तुम्हें चिंतित न करें और न ही तुम्हारा चेहरा पीला हो।”<sup>11</sup> तुम्हारे राज्य में एक व्यक्ति है जिसमें पवित्र देवताओं की आत्मा है; और तुम्हारे पिता के दिनों में, उसमें देवताओं की तरह प्रकाश, अंतर्दृष्टि, और ज्ञान पाया गया था। और राजा नबूकदनेस्सर, तुम्हारे पिता—राजा, तुम्हारे पिता—ने उसे ज्योतिषियों, जादूगरों, कल्दियों, और भविष्यवक्ताओं का प्रधान नियुक्त किया।<sup>12</sup> यह इसलिए था क्योंकि इस दानियेल में एक असाधारण आत्मा, ज्ञान, और अंतर्दृष्टि, सपनों की व्याख्या, पहेलियों का स्पष्टीकरण, और कठिन समस्याओं का समाधान पाया गया था, जिसे राजा ने

बेलशज्जर नाम दिया था। अब दानियेल को बुलाया जाए और वह व्याख्या बताएगा।”<sup>13</sup> तब दानियेल को राजा के सामने लाया गया। राजा ने बोलना शुरू किया और दानियेल से कहा, “क्या तुम वही दानियेल हो जो यहूदा के निर्वासितों में से एक हो, जिसे मेरे पिता राजा यहूदा से लाए थे?”<sup>14</sup> अब मैंने तुम्हारे बारे में सुना है कि देवताओं की आत्मा तुममें है, और तुममें प्रकाश, अंतर्दृष्टि, और असाधारण ज्ञान पाया गया है।<sup>15</sup> अभी-अभी बुद्धिमान लोग और जादूगर मेरे सामने लाए गए थे ताकि इस लेख को पढ़ सके और इसका अर्थ मुझे समझा सकते हो, तो तुम्हें बैंगनी वस्त्र पहनाया जाएगा, तुम्हारे गले में सोने की माला होगी, और राज्य में तीसरे शासक के रूप में अधिकार प्राप्त होगा।”<sup>16</sup> तब दानियेल ने उत्तर दिया और राजा से कहा, “अपने उपहार अपने पास रखो या अपने पुरस्कार किसी और को दे दो; हालांकि, मैं राजा को लेख पढ़कर सुनाऊंगा और इसका अर्थ समझाऊंगा।”<sup>17</sup> हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तुम्हारे पिता नबूकदनेस्सर को प्रभुता, वैभव, सम्मान, और महिमा दी।<sup>18</sup> अब क्योंकि उसने उसे वैष्व दिया, सभी लोग, राष्ट्र, और सभी भाषाओं की जनसंख्या उसके सामने कांपती और डरती थी; जिसे वह चाहता था, उसे मार डालता था, और जिसे वह चाहता था, उसे जीवित रखता था; और जिसे वह चाहता था, उसे ऊँचा करता था, और जिसे वह चाहता था, उसे नीचा करता था।<sup>19</sup> लेकिन जब उसका हृदय अभिमानी हो गया और उसकी आत्मा इतनी घंटंडी हो गई कि उसने घंटंड किया, तो उसे उसके राज सिंहासन से हटा दिया गया, और उसकी गरिमा उससे छीन ली गई।<sup>20</sup> उसे मानव जाति से भी दूर कर दिया गया, और उसका हृदय पशुओं की तरह बना दिया गया, और उसका निवास जंगली गधों के साथ था। उसे गायों की तरह घास खाने के लिए दी गई, और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा गया जब तक कि उसने यह नहीं पहचाना कि परमप्रधान परमेश्वर मानव जाति के राज्य पर शासक है, और वह जिसे चाहे उस पर अधिकार देता है।<sup>21</sup> फिर भी तुम, उसके पुत्र बेलशज्जर, ने अपना हृदय नग्न नहीं किया, यद्यपि तुमने यह सब जान लिया था,<sup>22</sup> लेकिन तुमने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध अपने आप को ऊँचा किया है; और उन्होंने उसके घर के बर्टन तुम्हारे सामने लाए हैं, और तुम और तुम्हारे रईस, तुम्हारी पत्रियाँ, और तुम्हारी रखेतियाँ उनसे शराब पी रहे हैं; और तुमने चांदी और सोने,

## दानियेल

पीतल, लोहे, लकड़ी, और पत्थर के देवताओं की स्तुति की है, जो न देखते हैं, न सुनते हैं, न समझते हैं। लेकिन परमेश्वर, जिसके हाथ में तुम्हारा जीवन और सभी मार्ग हैं, तुमने उसकी महिमा नहीं की।<sup>24</sup> तब वह हाथ उससे भेजा गया और यह लेख लिखा गया।<sup>25</sup> अब यह वह लेख है जो लिखा गया था: 'मैंने, मैंने, तेकेल, उपरसीन।'<sup>26</sup> यह संदेश की व्याख्या है: 'मैंने—परमेश्वर ने तुम्हारे राज्य की गिनती की है और उसका अंत कर दिया है।'<sup>27</sup> 'तेकेल—तुम्हें तराजू पर तौला गया और कम पाया गया।'<sup>28</sup> 'पेरस—तुम्हारा राज्य विभाजित किया गया और मादी और फारसियों को दिया गया।'<sup>29</sup> तब बेलशजर ने आदेश दिया, और उन्होंने दानियेल को बैंगनी वस्त्र पहनाया और उसके गले में सोने की माला डाली, और उसके बारे में पोषणा की कि अब उसे राज्य में तीसरे शासक के रूप में अधिकार प्राप्त है।<sup>30</sup> उसी रात बेलशजर कल्दी राजा मारा गया।<sup>31</sup> तो दायरिश मादी ने राज्य प्राप्त किया जब वह लगभग बासठ वर्ष का था।

**6** दारा को यह अच्छा लगा कि वह राज्य के ऊपर

120 अधिपति नियुक्त करे, जो पूरे राज्य के प्रभारी हैं।<sup>2</sup> और उनके ऊपर तीन आयुक्त (जिनमें से एक दानियेल था), ताकि अधिपति उनके प्रति उत्तरदायी हों, और राजा को कोई हानि न हो।<sup>3</sup> तब यह दानियेल आयुक्तों और अधिपतियों के बीच खुद को विशिष्ट बनाने लगा क्योंकि उसमें एक असाधारण आत्मा थी, और राजा उसे पूरे राज्य के ऊपर नियुक्त करने का इरादा रखता था।<sup>4</sup> तब आयुक्तों और अधिपतियों ने दानियेल के खिलाफ सरकारी मामलों के संबंध में आरोप का आधार खोजने की कोशिश की; लेकिन वे कोई आरोप का आधार या भ्रष्टाचार का प्रमाण नहीं पा सके, क्योंकि वह विश्वसनीय था, और उसमें कोई लापरवाही या भ्रष्टाचार नहीं पाया गया।<sup>5</sup> तब इन लोगों ने कहा, "हम इस दानियेल के खिलाफ कोई आरोप का आधार नहीं पाएंगे जब तक कि हम उसके परमेश्वर के नियम के संबंध में न पाएं।"<sup>6</sup> तब ये आयुक्त और अधिपति राजा के पास सहमति से आए और उससे इस प्रकार बोले: 'राजा दारा, सदा जीवित रहो।' राज्य के सभी आयुक्त, प्रीफेक्ट और अधिपति, सलाहकार और राज्यपालों ने मिलकर सलाह की है कि राजा को एक नियम स्थापित करना चाहिए और एक आदेश लागू करना चाहिए कि जो कोई भी तीस दिनों के लिए आप, हे राजा, के अलावा किसी देवता या व्यक्ति से याचना करता है, उसे शेरों की मांद में फेंक दिया जाएगा।<sup>8</sup> अब, हे राजा, आदेश को स्थापित करें और दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करें, ताकि इसे बदला न जा सके, मेदियों और फारसियों के कानून के अनुसार, जिसे रद्द नहीं किया जा सकता।<sup>9</sup> तब राजा

दारा ने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए, अर्थात्, आदेश पर।

10 अब जब दानियेल ने सीखा कि दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए गए हैं, तो वह अपने घर में गया (अब उसकी छत के कमरे में यरूशलैम की ओर खिड़कियाँ खुती थीं); और वह अपने घुटनों पर दिन में तीन बार झुकाता रहा, प्रार्थना करता और अपने परमेश्वर के सामने स्तुति करता, जैसा कि वह पहले करता था।<sup>11</sup> तब ये लोग सहमति से आए और दानियेल को प्रार्थना करते और अपने परमेश्वर के सामने कृपा की याचना करते हुए पाया।<sup>12</sup> फिर वे आए और राजा के सामने राजा के आदेश के बारे में बोले: 'क्या आपने यह आदेश पर हस्ताक्षर नहीं किया था कि जो कोई भी तीस दिनों के लिए आप, हे राजा, के अलावा किसी देवता या व्यक्ति से याचना करता है, उसे शेरों की मांद में फेंक दिया जाएगा?' राजा ने उत्तर दिया, "यह कथन सत्य है, मेदियों और फारसियों के कानून के अनुसार, जिसे रद्द नहीं किया जा सकता।"<sup>13</sup> तब उन्होंने उत्तर दिया और राजा के सामने कहा, "दानियेल, जो धूहूदा के निर्वासितों में से एक है, आपकी, हे राजा, या आपके द्वारा हस्ताक्षरित आदेश की परवाह नहीं करता, बल्कि वह दिन में तीन बार अपनी प्रार्थना करता रहता है।"<sup>14</sup> तब, जैसे ही राजा ने यह कथन सुना, वह गहरे चिंतित हुआ, और दानियेल को बचाने के लिए अपने मन को लगाया; और सूर्योस्त तक वह उसे बचाने के लिए प्रयास करता रहा।<sup>15</sup> तब ये लोग सहमति से राजा के पास आए और राजा से कहा, "हे राजा, यह मान्यता प्राप्त करें कि यह मेदियों और फारसियों का कानून है कि राजा द्वारा स्थापित कोई भी आदेश या नियम बदला नहीं जा सकता।"<sup>16</sup> तब राजा ने आदेश दिया, और दानियेल को लाया गया और शेरों की मांद में फेंक दिया गया। राजा ने दानियेल से कहा, "आपका परमेश्वर, जिसकी आप निरंतर सेवा करते हैं, स्वयं आपको बचाएगा।"<sup>17</sup> और एक पसर लाया गया और मांद के मुंह पर रखा गया, और राजा ने इसे अपनी अंगूठी और अपने कुलीनों की अंगूठियों से सील कर दिया, ताकि दानियेल के बारे में कुछ भी न बदला जा सके।<sup>18</sup> तब राजा अपने महल में गया और रात भर उपयास करता रहा, और उसके सामने कोई मग्नोरेजन नहीं लाया गया; और उसकी नींद उससे दूर हो गई।<sup>19</sup> तब राजा भोर में, दिन के टूटने पर उठा, और जल्दी से शेरों की मांद की ओर गया।<sup>20</sup> जब वह मांद के पास दानियेल के पास आया, तो उसने चिंतित आवाज में पुकारा। राजा ने बोलना शुरू किया और दानियेल से कहा, "दानियेल, जीवित परमेश्वर के सेवक, क्या आपका परमेश्वर, जिसकी आप निरंतर सेवा करते हैं, आपको शेरों से बचाने में सक्षम था?"<sup>21</sup> तब दानियेल ने राजा से कहा, "हे राजा, सदा जीवित रहो!"<sup>22</sup> मेरे परमेश्वर ने

## दानियेल

अपने दूत को भेजा और शेरों के मुँह बंद कर दिए, और उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुंचाई, क्योंकि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और आपके प्रति भी, हे राजा, मैंने कोई अपराध नहीं किया।<sup>23</sup> तब राजा बहुत प्रसन्न हुआ और दानियेल को मांद से बाहर लाने का आदेश दिया। इसलिए दानियेल को मांद से बाहर लाया गया, और उस पर कोई चोट नहीं पाई गई, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर पर विश्वास किया था।<sup>24</sup> तब राजा ने आदेश दिया, और उन लोगों को लाया गया जिन्होंने दानियेल के खिलाफ दुर्व्विवाह से अरोप लगाया था, और उन्हें, उनके बच्चों और उनकी पतियों को शेरों की मांद में फेंक दिया गया; और वे मांद के तल तक नहीं पहुंचे थे कि शेरों ने उन पर हावी होकर उनकी सारी हड्डियाँ तोड़ दी।<sup>25</sup> तब राजा दारा ने सभी लोगों, राष्ट्रों और सभी भाषाओं की जनसंख्या को लिखा जो पूरे देश में रह रहे थे: “आपकी शांति महान हो।<sup>26</sup> मैं एक आदेश जारी करता हूँ कि मेरे राज्य के सभी क्षेत्र में लोग दानियेल के परमेश्वर के सामने कांपें और डरें;

क्योंकि वह जीवित परमेश्वर है और सदा के लिए स्थायी है, और उसका राज्य वह है जो नष्ट नहीं होगा, और उसका प्रभुत्व सदा के लिए होगा।<sup>27</sup> वह बचाता है, बचाता है, और सर्व और पृथ्वी पर चिंह और चमत्कार करता है, वही जिसने दानियेल को शेरों की शक्ति से भी बचाया है।<sup>28</sup>

इस प्रकार यह दानियेल दारा के शासनकाल में, और फारसी कुसूर के शासनकाल में सफल रहा।

**7** बाबूल के राजा बेलशज्जर के पहले वर्ष में, दानियेल ने अपने बिस्तर पर लेटे हुए एक स्वप्न और दर्शन देखे; तब उसने स्वप्न को लिखा और उसका सारांश बताया।<sup>2</sup> दानियेल ने कहा, “मैं रात के दर्शन में देख रहा था, और देखो, आकाश की चारों हवाएँ बड़े समुद्र को उत्तेजित कर रही थीं।<sup>3</sup> और चार बड़े पशु समुद्र से निकल रहे थे, जो एक-दूसरे से भिन्न थे।<sup>4</sup> पहला एक सिंह के समान था, परन्तु उसके पास एक उकाब के पंख थे। मैं देखता रहा जब तक उसके पंख उत्खाड़े नहीं गए, और वह भूमि से उठा लिया गया और मनुष्य की तरह दो पैरों पर खड़ा किया गया; और उसे एक मानव मन दिया गया।<sup>5</sup> और देखो, दूसरा पशु, एक भालू के समान। और वह एक और उठा हुआ था, और उसके मुँह में उसके दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं; और उसे कहा गया, ‘उठ, बहुत मांस खा।’<sup>6</sup> इसके बाद मैं देखता रहा, और देखो, एक और, एक चीते के समान, जिसके पीठ पर पक्षी के चार पंख थे। उस पशु के भी

चार सिर थे, और उसे अधिकार दिया गया।<sup>7</sup> इसके बाद मैं रात के दर्शन में देखता रहा, और देखो, एक चौथा पशु, भयानक, डरावना, और अस्यत शक्तिशाश्वी; और उसके बड़े लोहे के दांत थे। उसने खाया और कुचला, और शेष को अपने पैरों से रौद डाला; और वह उन सभी पशुओं से भिन्न था जो उसके पहले थे, और उसके दस सींग थे।<sup>8</sup> जब मैं उन सींगों के बारे में सोच रहा था, तो देखो, एक और सींग, एक छोटा सा, उनके बीच से उग आया, और उसके पहले के तीन सींग उसके सामने उत्थाड़े गए; और देखो, इस सींग की आँखें मानव आँखों के समान थीं, और एक मुँह जो घमंड से बोल रहा था।<sup>9</sup> मैं देखता रहा

जब तक सिंहासन स्थापित नहीं किए गए, और प्राचीन काल के व्यक्ति ने अपना स्थान नहीं लिया; उसका वस्त्र बर्फ के समान सफेद था, और उसके सिर के बाल शुद्ध ऊन के समान थे। उसका सिंहासन अग्रि की लापटों से लड़ रहा था, उसके पाहिए जलती हुई आग थे।<sup>10</sup> आग की एक नदी बह रही थी और उसके सामने से निकल रही थी; हजारों हजार उसकी सेवा कर रहे थे, और लाखों लाख उसके सामने खड़े थे; न्यायालय ढैठा, और पुस्तकें खोली गईं।

<sup>11</sup> तब मैं घमंड भरे शब्दों की आवाज के कारण देखता रहा जो वह सींग बोल रहा था; मैं देखता रहा जब तक वह पशु मारा नहीं गया, और उसका शरीर नष्ट नहीं किया गया और जलती हुई आग में नहीं डाला गया।<sup>12</sup> बाकी पशुओं के लिए, उनका अधिकार छीन लिया गया, परन्तु उत्थे एक निष्ठित समय के लिए जीवन का विस्तार दिया गया।<sup>13</sup> मैं रात के दर्शन में देखता रहा, और देखो, स्वर्ण के बादलों के साथ मनुष्य के पुत्र के समान एक आ रहा था, और वह प्राचीन काल के व्यक्ति के पास आया और उसके सामने प्रस्तुत किया गया।<sup>14</sup> और उसे अधिकार दिया गया, समान और एक राज्य, ताकि सभी लोग, जातियाँ, और सभी भाषाओं के लोग उसकी सेवा करें। उसका अधिकार एक शाश्वत अधिकार है जो कभी नहीं जाएगा; और उसका राज्य एक है जो कभी नष्ट नहीं होगा।<sup>15</sup> मेरे लिए, दानियेल, मेरी आत्मा मेरे भीतर व्याकुल थी, और मेरे मन के दर्शन मुझे लगातार चिंतित कर रहे थे।<sup>16</sup> मैं उन में से एक के पास गया जो खड़े थे और उससे इन सब का सही अर्थ पूछने लगा। तब उसने मुझे बताया और इन बातों की व्याख्या मुझ पर प्रकट की:<sup>17</sup> ये बड़े पशु, जो संखा में चार हैं, चार राजा हैं जो पृथ्वी से उठेंगे।<sup>18</sup> परन्तु परमप्रधान के संत राज्य प्राप्त करेंगे और राज्य का अधिकार सदा के लिए, युगों के लिए ले लेंगे।<sup>19</sup> तब मैं चौथे पशु का सही अर्थ जानना

## दानियेल

चाहता था, जो सभी अन्य से भिन्न था, अत्यंत भयानक, उसके लोहे के दांत और कांस्य के पंजे थे, और जिसने खाया, कुचला, और शेष को अपने पैरों से रौंद डाला,<sup>20</sup> और उसके सिर पर जो दस सींग थे, और वह दूसरा सींग जो उग आया और जिसके सामने तीन गिर गए, अर्थात् वह सींग जिसमें आँखें और एक मुँह था जो बड़े घंटंद से बोल रहा था, और जो अपने साथियों से बड़ा दिखाई देता था।<sup>21</sup> मैं देखता रहा, और वह सींग संतों के साथ युद्ध कर रहा था और उन पर विजय प्राप्त कर रहा था,<sup>22</sup> जब तक प्राचीन काल के व्यक्ति नहीं आया और परमप्रधान के संतों के पक्ष में न्याय नहीं किया गया, और वह समय नहीं आया जब संतों ने राज्य का अधिकार प्राप्त किया।<sup>23</sup> “यह वही है जो उसने कहा: ‘चौथी पशु पृथ्वी पर एक चौथी राज्य होगा, जो सभी अन्य राज्यों से भिन्न होगा, और वह पूरी पृथ्वी की खा जाएगा और उसे रैंदिगा और कुचलेगा।’<sup>24</sup> और उन दस सींगों के लिए, इस राज्य से दस राजा उठेंगे; और उनके बाद एक और उठेगा, और वह पहले के तीन राजाओं को विनम्र करेगा।<sup>25</sup> और वह परमप्रधान के विरुद्ध बोलेगा और परमप्रधान के संतों को थकाएगा, और वह समय और कानून को बदलने का इरादा करेगा; और वे उसे एक समय, समयों, और आधे समय के लिए सौंपे जाएंगे।<sup>26</sup> परन्तु न्यायालय न्याय के लिए बैठेगा, और उसका अधिकार छीन लिया जाएगा, और उसे सदा के लिए नष्ट और नष्ट कर दिया जाएगा।<sup>27</sup> तब संप्रभुता, अधिकार, और स्वर्ग की नीचे के सभी राज्यों की महानता परमप्रधान के संतों के लोगों को दी जाएगी; उसका राज्य एक शाश्वत राज्य होगा, और सभी साम्राज्य उसकी सेवा करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।<sup>28</sup> इस बिंदु पर मामला समाप्त हुआ। मेरे लिए, दानियेल, मेरे विचार मुझे बहुत चिंतित कर रहे थे और मेरा चेहरा पीला पड़ गया, परन्तु मैंने इस मामले को अपने तक ही रखा।

**8** बेलशज्जर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष में, मुझे, दानियेल को, एक दर्शन दिखाई दिया, जो कि पहले दिखाई दिए दर्शन के बाद का था।<sup>2</sup> मैंने दर्शन में देखा, और जब मैं देख रहा था, तो मैं सूसा के गढ़ में था, जो एलाम प्रांत में है; और मैंने दर्शन में देखा और मैं स्वयं उलई नहर के पास था।<sup>3</sup> तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, एक मेढ़ा जिसके दो सींग थे, नहर के सामने खड़ा था। अब दोनों सींग लंबे थे, लेकिन एक दूसरे से लंबा था, और लंबा वाला बाट में उगा।<sup>4</sup> मैंने मेढ़े को पश्चिम की ओर, उत्तर की ओर, और दक्षिण की ओर धक्का देते हुए देखा, और कोई अन्य पशु उसके सामने खड़ा नहीं ही सका, न ही कोई उसकी शक्ति से बचाने वाला था, परन्तु उसने जैसा चाहा वैसा किया और

स्वयं को महान बनाया।<sup>5</sup> जब मैं देख रहा था, तो देखो, एक बकरा पश्चिम से पूरे पृथ्वी के सतह पर बिना जमीन को छुए आ रहा था; और बकरे की आँखों के बीच एक प्रमुख सींग था।<sup>6</sup> वह उस मेढ़े के पास आया जिसके दो सींग थे, जिसे मैंने नहर के सामने खड़ा देखा था, और अपनी प्रबल क्रोध में उस पर झपट पड़ा।<sup>7</sup> और मैंने उसे मेढ़े के पास आते देखा, और वह उस पर क्रोधित था; और उसने मेढ़े को मारा और उसके दो सींगों को तोड़ दिया, और मेढ़े में उसे सहन करने की शक्ति नहीं थी। इसलिए उसने उसे जमीन पर गिरा दिया और उसे रौंद डाला, और मेढ़े को उसकी शक्ति से बचाने वाला कोई नहीं था।<sup>8</sup> तब बकरा अत्यधिक महान बन गया। परन्तु जब वह शक्तिशाली हो गया, तो बड़ा सींग टूट गया; और उसके स्थान पर चार प्रमुख सींग स्वर्ग की चार दिशाओं की ओर उग आए।<sup>9</sup> और उनमें से एक से एक छोटा सींग निकला जो दक्षिण की ओर, पूर्व की ओर, और सुरुद देश की ओर अत्यधिक महान हो गया।<sup>10</sup> यह स्वर्गीय ज्योतियों तक बढ़ गया, और कुछ ज्योतियों, अर्थात् कुछ तारों को उसने पृथ्वी पर गिरा दिया, और उहाँ ही रौंद डाला।<sup>11</sup> यह यहाँ तक कि सेना के सेनापति के समान बनने के लिए स्वयं को ऊँचा किया; और उसने उससे नियमित बलिदान को हटा दिया, और उसके पवित्रस्थान का स्थान नष्ट कर दिया गया।<sup>12</sup> और एक अपराध के कारण सेना को सींग के साथ नियमित बलिदान के साथ दिया जाएगा; और यह सत्य को जमीन पर गिरा देगा और जैसा चाहेगा वैसा करेगा और सफल होगा।<sup>13</sup> तब मैंने एक पवित्र व्यक्ति को बोलते हुए सुना, और दूसरे पवित्र व्यक्ति ने उस विशेष व्यक्ति से जो बोल रहा था कहा, “यह दर्शन नियमित बलिदान के बारे में कितने समय तक लागू होगा, जबकि अपराध भयावहा उत्पन्न करता है, ताकि पवित्रस्थान और सेना दोनों को रौंदा जा सके?”<sup>14</sup> और उसने मुझसे कहा, “2,300 संध्याओं और प्रातःकालों के लिए; तब पवित्रस्थान को ठीक से बहाल किया जाएगा।”<sup>15</sup> जब मैंने दानियेल ने, दर्शन देखा, तो मैंने इसे समझने की कोशिश की; और देखो, मेरे सामने एक व्यक्ति के समान दिखाई देने वाला खड़ा था।<sup>16</sup> और मैंने उलई के किनारों के बीच एक व्यक्ति की आवाज सुनी, और उसने पुकार कर कहा, “गैब्रियल, इस व्यक्ति को दर्शन समझाओ!”<sup>17</sup> तो वह मेरे खड़े होने के स्थान के पास आया, और जब वह आया तो मैं डर गया और अपने चेहरे के बल पर पड़ा; और उसने मुझसे कहा, “मनुष्य के पुत्र, समझो कि यह दर्शन अंत समय के बारे में है।”<sup>18</sup> अब जब वह मुझसे बात कर रहा था, तो मैं जमीन पर अपने चेहरे के साथ बैहोश था; लेकिन उसने मुझे छुआ और मुझे मेरी जगह पर खड़ा कर दिया।<sup>19</sup> और उसने कहा, “देखो, मैं तुम्हें

## दानियेल

बताने जा रहा हूँ कि क्रोध के अंतिम समय में क्या होगा, क्योंकि यह अंत के नियत समय से संबंधित है।<sup>20</sup> वह मेढ़ा जिसे तुमने दो सींगों के साथ देखा, मादै और फारस के राजा हैं।<sup>21</sup> वह बालदार बकरा यूनान का राज्य है, और उसकी आँखों के बीच का बड़ा सींग पहला राजा है।<sup>22</sup> टूटा हुआ सींग और उसके स्थान पर उगे चार सींग चार राज्य हैं जो उसकी जाति से खड़े होंगे, हालांकि उसकी शक्ति के साथ नहीं।<sup>23</sup> और उनके शासन के अंतिम समय में, जब अपराधी अपना कोर्स पूरा कर चुके होंगे, एक राजा उठेगा, जो धूंध और चालाकी में निपुण होगा।<sup>24</sup> और उसकी शक्ति प्रबल होगी, परन्तु अपनी शक्ति से नहीं, और वह अत्यधिक रूप से नष्ट करेगा और सफल होगा और जैसा चाहेगा वैसा करेगा; वह शक्तिशाली पुरुषों और पवित्र लोगों को नष्ट करेगा।<sup>25</sup> और अपनी समझ के माध्यम से वह अपनी प्रभाव से धूंधे को सफल बनाएगा; और वह अपने मन में स्वयं को महान बनाएगा, और वह बहुतों को नष्ट करेगा जबकि वे निश्चिंत होंगे। वह राजा औं के राजकुमार का भी विरोध करेगा, परन्तु वह बिना मानव एजेंसी के टूट जाएगा।<sup>26</sup> और संध्याओं और प्रातःकालों का दर्शन जो बताया गया है वह सत्य है, परन्तु तुहारे लिए, दर्शन को गुप्त रखो, क्योंकि यह भविष्य के कई दिनों से संबंधित है।<sup>27</sup> तब मैं, दानियेल, कई दिनों तक थका हुआ और बीमार था। फिर मैं उठ खड़ा हुआ और राजा के काम में लगा रहा; परन्तु मैं दर्शन से किंतु था, और इसे समझाने वाला कोई नहीं था।

**9** अहशवेरोश के पुत्र दारा के पहले वर्ष में, जो मादी वंश का था और जिसे कसदियों के राज्य पर राजा बनाया गया था—<sup>2</sup> उसके राज्य के पहले वर्ष में, मैने, दानियेल ने, यहोवा के वचन के अनुसार, भविष्यद्वक्ता यिर्माह को प्रकट किए गए वर्षों की संख्या को पुस्तकों में देखा, अर्थात् यरूशलैम की उजड़ी हुई दशा के पौरे होने के लिए सतर वर्ष।<sup>3</sup> इसलिए मैंने अपने प्रभु परमेश्वर की ओर ध्यान दिया, प्रार्थना और विनती के द्वारा, उपवास, टाट और राख के साथ उसे खोजने के लिए।<sup>4</sup> मैंने अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की और अंगीकार किया, और कहा, “हाय, प्रभु, महान और भयानक परमेश्वर, जो अपनी वाचा और विश्वासयोग्यता को उन लोगों के लिए बनाए रखता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं,<sup>5</sup> हमने पाप किया है, हमने गलत किया है, और दुष्टा से काम किया है और विद्रोह किया है, यहां तक कि आपकी आज्ञाओं और विधियों से मुख मोड़ लिया है।<sup>6</sup> इसके अलावा, हमने आपके सेवक भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनी, जिन्होंने आपके नाम में हमारे राजाओं, हमारे

नेताओं, हमारे पिताओं, और देश के सभी लोगों से बात की।<sup>7</sup> धर्म आपके पास है, प्रभु, परन्तु हमारे पास खुला अपमान है, जैसा कि आज है—यहदा के पुरुषों, यरूशलैम के निवासियों और समस्त इसाएल के लिए, जो निकट हैं और जो दूर हैं उन सब देशों में जहाँ आपने उन्हें उनके विश्वासघाती कर्मों के कारण भेजा है जो उन्होंने आपके विरुद्ध किए हैं।<sup>8</sup> खुला अपमान हमारे पास है, प्रभु, हमारे राजाओं, हमारे नेताओं, और हमारे पिताओं के लिए, क्योंकि हमने आपके विरुद्ध पाप किया है।<sup>9</sup> हमारे प्रभु परमेश्वर के पास करुणा और क्षमा है, क्योंकि हमने उसके विरुद्ध विद्रोह किया है;<sup>10</sup> और हमने अपने प्रभु परमेश्वर की आवाज़ का पालन नहीं किया, उसकी शिक्षाओं में चलने के लिए जो उसने अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हमारे सामने रखी।<sup>11</sup> वास्तव में, समस्त इसाएल ने आपकी व्यवस्था का उल्लंघन किया है और मुंह मोड़ लिया है, आपकी आवाज़ का पालन नहीं किया; इसलिए शाप हम पर आ गया है, साथ ही वह शपथ जो मूसा की व्यवस्था में लिखी है, जो परमेश्वर का सेवक है, क्योंकि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है।<sup>12</sup> इसलिए उसने अपने शब्दों की पुष्टि की है जो उसने हमारे विरुद्ध और हमारे शासकों के विरुद्ध बोले थे, जिन्होंने हम पर शासन किया, हम पर बड़ी आपदा लाने के लिए; क्योंकि समस्त आकाश के नीचे ऐसा कुछ नहीं किया गया जैसा यरूशलैम में किया गया।<sup>13</sup> जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, यह सब आपदा हम पर आई है; फिर भी हमने अपने प्रभु परमेश्वर की कृपा नहीं मांगी, अपने गलत कामों से मुंह मोड़कर और आपकी सच्चाई पर ध्यान देकर।<sup>14</sup> इसलिए प्रभु ने आपदा को संचित रखा और हम पर लाया, क्योंकि हमारे प्रभु परमेश्वर अपने सभी कर्मों के संबंध में धर्मी हैं जो उसने किए हैं, परन्तु हमने उसकी आवाज़ का पालन नहीं किया।<sup>15</sup> और अब, हमारे प्रभु परमेश्वर, जिसने अपनी प्रजा को मिस्र देश से एक शक्तिशाली हाथ के साथ बाहर निकाला, और अपने लिए एक नाम बनाया, जैसा कि आज है—हमने पाप किया है, हमने दुष्टा की है।<sup>16</sup> प्रभु, अपनी सभी धर्मी कियाओं के अनुसार, अब अपने क्रोध और अपने प्रक्रोप को यरूशलैम, अपने पवित्र पर्वत से हटा ले; क्योंकि हमारे पापों और हमारे पिताओं के गलत कामों के कारण, यरूशलैम और आपकी प्रजा हमारे चारों ओर के सभी लोगों के लिए उपहास का विषय बन गए हैं।<sup>17</sup> तो अब, हमारे परमेश्वर, अपने सेवक की प्रार्थना और उसकी विनती सुनें, और अपने लिए, प्रभु, अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपना मुख चमकाएं।<sup>18</sup> मेरे परमेश्वर, अपना कान झुकाएं और सुनें! अपनी आँखें खोलें और हमारे उजाड़ और उस नगर को देखें जो

## दानियेल

आपके नाम से पुकारा जाता है। क्योंकि हम अपनी विनती आपके सामने अपनी किसी भी योग्यता के आधार पर प्रस्तुत कर रहे हैं।<sup>19</sup> प्रभु, सुन! प्रभु, क्षमा कर! प्रभु, सुन और कार्य कर। अपने लिए, मेरे परमेश्वर, विलंब न कर, क्योंकि आपकी प्रजा आपके नाम से पुकारे जाते हैं।<sup>20</sup> जब मैं अभी भी बोल रहा था और प्रार्थना कर रहा था, और अपने पाप और अपनी प्रजा इसाएल के पाप का अंगीकार कर रहा था, और अपने परमेश्वर के पवित्र पर्वत के लिए अपनी विनती प्रस्तुत कर रहा था,<sup>21</sup> जब मैं अभी भी प्रार्थना में बोल रहा था, तब वह व्यक्ति गेड़ियल, जिसे मैंने पहले दर्शन में देखा था, मेरी अत्यधिक धकान में संथा के समय मेरे पास आया।<sup>22</sup> और उसने मुझे निर्देश दिया और मुझसे बात की और कहा, “दानियेल, मैं अब तुम्हें समझ के साथ अंतर्दृष्टि देने आया हूँ।<sup>23</sup> तुम्हारी विनती की शुरूआत में ही आज्ञा जारी की गई थी, और मैं तुम्हें बताने आया हूँ, क्योंकि तुम अत्यधिक समानित हो; इसलिए संदेश पर ध्यान दो और दर्शन की समझ प्राप्त करो।<sup>24</sup> सत्तर सप्ताह तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे पवित्र नार के लिए निर्धारित किए गए हैं, अपराध को समाप्त करने के लिए, पाप का अंत करने के लिए, दोष के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए, अनंत धर्म को लाने के लिए, दर्शन और भविष्यवाणी को सील करने के लिए, और परम पवित्र स्थान का अभिषेक करने के लिए।<sup>25</sup> इसलिए तुम्हें जानना और समझना चाहिए कि यरूशलेम को पुनः स्थापित और पुनःनिर्माण करने के लिए आज्ञा जारी करने से लेकर मसीह राजकुमार तक, सात सप्ताह और बासठ सप्ताह होंगे; यह फिर से बनाया जाएगा, सड़कों और खाई के साथ, यहाँ तक कि संकट के समय में।<sup>26</sup> फिर बासठ सप्ताह के बाद, मसीह काट दिया जाएगा और कुछ नहीं रहेगा, और अने वाले राजकुमार की प्रजा नार और पवित्रस्थान को नष्ट कर देंगी। और इसका अंत बाढ़ के साथ आएगा; अंत तक युद्ध होगा; उजाड़ने की बातें निश्चित हैं।<sup>27</sup> और वह बहुतों के साथ एक सप्ताह के लिए वाचा की पुष्टि करेगा, परन्तु सप्ताह के मध्य में वह बलिदान और अन्नबलि को रोक देगा; और धूणाओं के पंख पर वह आएगा जो उजाड़ता है, जब तक कि एक पूर्ण विनाश, जो निर्धारित है, उस पर नहीं आ जाता जो उजाड़ता है।”

**10** फारस के राजा कुसू के तीसरे वर्ष में, एक संदेश दानियेल को प्रकट हुआ, जिसका नाम बेलत्शस्सर रखा गया था; और संदेश सच्चा था और एक महान संघर्ष का था, लेकिन उसने संदेश को समझा और दर्शन की समझ प्राप्त की।<sup>2</sup> उन दिनों में, मैं, दानियेल,

तीन पूरे सप्ताह तक शोक में रहा।<sup>3</sup> मैंने कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया, न ही मांस या दाखमधु मेरे मुंह में गया, न ही मैंने कोई तेल लगाया जब तक कि पूरे तीन सप्ताह पूरे नहीं हो गए।<sup>4</sup> पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं महान नदी के किनारे था, जो कि टिगरिस है,<sup>5</sup> मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, एक व्यक्ति था जो मलमल के वस्त्र में लिपटा हुआ था, जिसकी कमर पर उफाज का शुद्ध सोने का पट्टा था।<sup>6</sup> उसका शरीर भी पुखराज के समान था, उसका चेहरा बिजली के समान था, उसकी आँखें जलती हुई मशालों के समान थीं, उसके हाथ और पैर चमकदार पीतल के समान थे, और उसके शब्दों की ध्वनि एक भीड़ की ध्वनि के समान थी।<sup>7</sup> अब मैं, दानियेल, अकेला इस दर्शन को देखा, जबकि जो लोग मेरे साथ थे उन्होंने दर्शन नहीं देखा; फिर भी, उन पर एक बड़ा भय छा गया, और वे छिपेने के लिए भाग गए।<sup>8</sup> इसलिए मैं अकेला रह गया और इस महान दर्शन को देखा; फिर भी मुझमें कोई शक्ति नहीं बची, क्योंकि मेरा रंग मृतक के समान हो गया, और मुझमें कोई शक्ति नहीं रही।<sup>9</sup> लेकिन मैंने उसके शब्दों की ध्वनि सुनी; और जैसे ही मैंने उसके शब्दों की ध्वनि सुनी, मैं अपने चेहरे के बल गहरी नींद में पिर गया, मेरा चेहरा भूमि की ओर था।<sup>10</sup> तब देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ और मुझे मेरे हाथों और घुटनों पर ढिला दिया।<sup>11</sup> और उसने मुझसे कहा, “दानियेल, तुम जो प्रिय हो, उन शब्दों को समझो जो मैं तुम्हें बताने वाला हूँ और अपनी जगह पर खड़े हो जाओ, क्योंकि अब मैं तुम्हारे पास भेजा गया हूँ।”<sup>12</sup> और जब उसने मुझसे यह शब्द कहा, तो मैं कांपता हुआ खड़ा हो गया।<sup>13</sup> तब उसने मुझसे कहा, “दोरो मत, दानियेल, क्योंकि जिस पहले दिन से तुमने इसे समझने के लिए अपना दिल लगाया और अपने परमेश्वर के सामने नप्रता दिखाई, तुम्हारे शब्द सुने गए, और मैं तुम्हारे शब्दों के उत्तर में आया हूँ।”<sup>14</sup> लेकिन फारस के राज्य के राजकुमार ने इक्कीस दिनों तक मेरा विरोध किया; तब देखो, मीकाएल, प्रमुख राजकुमारों में से एक, मेरी मदद करने आया, क्योंकि मैं फारस के राजाओं के साथ वहाँ छोड़ दिया गया था।<sup>15</sup> अब मैं तुम्हें यह समझाने के लिए आया हूँ कि तुम्हारे लोगों के साथ बाद के दिनों में क्या होगा, क्योंकि दर्शन अभी भी भविष्य के दिनों से संबंधित है।<sup>16</sup> जब उसने मुझसे इन शब्दों के अनुसार बात की, तो मैंने अपना चेहरा भूमि की ओर कर लिया और मैं मूँ कर दिया।<sup>17</sup> और देखो, एक जो मानव के समान था, उसने मेरे हौंठों को छुआ; तब मैंने अपना मुँह खोला और बात की, और उससे कहा जो मेरे सामने खड़ा था, “मेरे प्रभु, दर्शन के कारण मुझ पर पीड़ा आ गई है, और मुझमें कोई शक्ति नहीं रही।”<sup>18</sup> क्योंकि मेरे प्रभु का ऐसा

## दानिय्येल

सेवक मेरे प्रभु से कैसे बात कर सकता है? मेरे लिए, अभी मुझमें कोई शक्ति नहीं बची है, न ही मुझमें कोई शक्ति बचा है।<sup>18</sup> तब जो मानव के समान दिखता था, उसने मुझे फिर से छुआ और मुझे शक्ति दी।<sup>19</sup> और उसने कहा, 'तुम जो प्रिय हो, डरो मत। शांति तुम्हारे साथ हो; साहस लो और साहसी बनो।' अब जैसे ही उसने मुझसे बात की, मैं शक्तिशाली महसूस करने लगा और कहा, 'मेरे प्रभु बाले, क्योंकि अपने मुझे शक्ति दी है।'<sup>20</sup> तब उसने कहा, 'क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे पास क्यों आया हूँ? लेकिन अब मैं फारस के राजकुमार के खिलाफ लड़ने के लिए लौट जाऊँगा; इसलिए मैं जा रहा हूँ, और देखो, यूनान का राजकुमार आने वाला है।'<sup>21</sup> हालांकि, मैं तुम्हें सत्य के लेखन में दर्ज क्या है, यह बताऊँगा। फिर भी इन शक्तियों के खिलाफ मेरे साथ दृढ़ता से खड़ा होने वाला कोई नहीं है सिवाय तुम्हारे राजकुमार मीकाएल के।

**11** मादी दारा के पहले वर्ष में, मैं उसे सशक्त करने और उसकी रक्षा के लिए खड़ा हुआ।<sup>2</sup> अब मैं तुम्हें सत्य बताऊँगा। देखो, फारस में तीन और राजा उठेंगे। फिर चौथा राजा उन सब से अधिक धन प्राप्त करेगा; और जैसे ही वह अपने धन के माध्यम से शक्तिशाली हो जाएगा, वह यूनान के राज्य के खिलाफ पूरे साम्राज्य को उकसाएगा।<sup>3</sup> और एक शक्तिशाली राजा उठेगा, और वह बड़ी सत्ता के साथ शासन करेगा और अपनी इच्छा के अनुसार करेगा।<sup>4</sup> लेकिन जैसे ही वह उठेगा, उसका राज्य टूट जाएगा और चार दिशाओं में बांट दिया जाएगा, हालांकि उसके अपने वंशजों को नहीं, न ही उसके अधिकार के अनुसार जो उसने चलाया, क्योंकि उसका राज्य उखाड़ा जाएगा और दूसरों को दिया जाएगा।<sup>5</sup> फिर दक्षिण का राजा शक्तिशाली होगा, उसके एक राजकुमार के साथ जो उस पर प्रभुत्व प्राप्त करेगा और शासन करेगा, उसका राज्य वास्तव में एक बड़ा राज्य होगा।<sup>6</sup> कुछ वर्षों बाद वे एक संघ करेंगे, और दक्षिण के राजा की बेटी उत्तर के राजा के पास एक समझौता करने आएगी। लेकिन वह अपनी शक्ति की स्थिति को नहीं बनाए रखेगी, न ही वह अपनी शक्ति के साथ रहेगा; बल्कि वह अपने समर्थकों और अपने पिता और उस समय के उसके समर्थक के साथ छोड़ दी जाएगी।<sup>7</sup> लेकिन उसके वंशजों में से एक उसकी जगह उठेगा, और वह उनकी सेना के खिलाफ आएगा और उत्तर के राजा के किलों में प्रवेश करेगा, और वह उनसे निपटेगा और विजय प्राप्त करेगा।<sup>8</sup> और वह उनके देवताओं को मिस में बंदी बनाकर ले जाएगा, उनके ढाले हुए धातु की मूर्तियों और उनके चांदी और सोने के कीमती बर्तनों के साथ; और कुछ वर्षों तक वह

उत्तर के राजा से दूर रहेगा।<sup>9</sup> फिर बाद में वह दक्षिण के राजा के क्षेत्र में प्रवेश करेगा, लेकिन अपने देश लौट जाएगा।<sup>10</sup> और उसके पुत्र बड़ी सेनाओं की भीड़ को जुटाएंगे और इकट्ठा करेंगे; और उनमें से एक लगातार आता रहेगा और बह जाएगा और पार करेगा, ताकि वह अपने किले तक युद्ध जारी रख सके।<sup>11</sup> और दक्षिण का राजा क्रोधित होगा और उत्तर के राजा के साथ लड़ाई करेगा। फिर बाद वाला एक बड़ी भीड़ उठाएगा, लेकिन वह भीड़ पूर्व के हाथ में सौंप दी जाएगी।<sup>12</sup> जब भीड़ हटा दी जाएगी, उसका हृदय घमंडी होगा, और वह हजारों को गिरा देगा; फिर भी वह सफल नहीं होगा।<sup>13</sup> क्योंकि उत्तर का राजा फिर से पहले से बड़ी भीड़ उठाएगा, और कुछ वर्षों के अंतराल के बाद वह एक बड़ी सेना और प्रचुर आपूर्ति के साथ आगे बढ़ेगा।<sup>14</sup> अब उन दिनों में कई लोग दक्षिण के राजा के खिलाफ उठेंगे; तुम्हारे लोगों में से हिसक लोग भी दर्शन को पूरा करने के लिए उठेंगे, लेकिन वे गिर जाएंगे।<sup>15</sup> फिर उत्तर का राजा आएगा, एक घेराबंदी का ढेर लगाएगा, और एक अच्छी तरह से किलेबंद शहर पर कब्जा करेगा; और दक्षिण की सेनाएं अपनी जमीन पर खड़ी नहीं होंगी, यहां तक कि उनके सबसे अच्छे सैनिक भी नहीं, क्योंकि खड़े होने की कोई ताकत नहीं होगी।<sup>16</sup> लेकिन जो उसके खिलाफ आएगा वह अपनी इच्छा के अनुसार करेगा, और कोई भी उसका सामना नहीं कर सकेगा; वह कुछ समय के लिए सुंदर भूमि में भी रहेगा, उसके हाथ में विनाश के साथ।<sup>17</sup> और वह अपने पूरे राज्य की शक्ति के साथ आने का संकल्प करेगा, उसके साथ एक शांति प्रस्ताव लाएगा जिसे वह लागू करेगा; वह उसे महिलाओं की बेटी भी देगा ताकि उसे बर्बाद कर सके। लेकिन वह उसके लिए खड़ी नहीं होगी और न ही उसके पक्ष में होगी।<sup>18</sup> फिर वह तटर्तवी क्षेत्रों की ओर अपना मुख मोड़ेगा और कई को कब्जा करेगा। लेकिन एक सेनापति उसके खिलाफ उसकी उपहास को रोक देगा; इसके अलावा, वह उसके उपहास का बदला लेगा।<sup>19</sup> इसलिए वह अपने देश के किलों की ओर अपना मुख मोड़ेगा, लेकिन वह ठोकर खाएगा और गिरेगा और नहीं मिलेगा।<sup>20</sup> फिर उसकी जगह एक उठेगा जो अपने राज्य के रत के माध्यम से एक उत्तीर्णक को गुजरने देगा; फिर भी कुछ दिनों के भीतर वह टूट जाएगा, न क्रोध में और न ही युद्ध में।<sup>21</sup> और उसकी जगह एक धृणित व्यक्ति उठेगा, जिस पर राजत की महिमा नहीं दी गई है, लेकिन वह शांति के समय में आएगा और चालाकी से राज्य को पकड़ लेगा।<sup>22</sup> बढ़ती हुई सेनाएं उसके सामने बह जाएंगी और टूट जाएंगी, और साथ ही वाचा का राजकुमार भी।<sup>23</sup> और उसके साथ एक संघ के बाद वह धोखा देगा, और वह ऊपर

## दानियेल

जाएगा और थोड़े से लोगों की सेना के साथ शक्ति प्राप्त करेगा।<sup>24</sup> शांति के समय में वह राज्य के सबसे धनी हिस्सों में प्रवेश करेगा, और वह अपने पिताओं और पूर्वजों ने जो नहीं किया वह करेगा: वह लूट, माल और संपत्ति को उनके बीच बांटेगा, और किलों के खिलाफ योजनाएं बनाएगा, लेकिन केवल कुछ समय के लिए।<sup>25</sup>

और वह दक्षिण के राजा के खिलाफ एक बड़ी सेना के साथ अपनी ताकत और साहस को उकसाएगा; इसलिए दक्षिण का राजा एक और भी बड़ी और बहुत

शक्तिशाली सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार होगा, लेकिन वह खड़ा नहीं होगा, क्योंकि उसके खिलाफ योजनाएं बनाई जाएंगी।<sup>26</sup> और जो उसके चुने हुए भोजन खाते हैं वे उसे नष्ट कर देंगे, और उसकी सेना बह जाएगी, लेकिन कई मारे जाएंगे।<sup>27</sup> दोनों राजाओं के लिए, उनके हृदय बुराई पर केंद्रित होंगे, और वे एक ही मेज पर एक दूसरे से झूट बोलेंगे; लेकिन यह सफल नहीं होगा, क्योंकि अंत अभी भी निर्धारित समय पर आना है।<sup>28</sup> फिर वह अपने देश में बहुत लूट के साथ लौटेगा; लेकिन उसका हृदय पवित्र वाचा के खिलाफ होगा, और वह कार्रवाई करेगा और फिर अपने देश लौटेगा।<sup>29</sup> निर्धारित समय पर वह लौटेगा और दक्षिण में प्रवेश करेगा, लेकिन इस बार यह पहले की तरह नहीं होगा।<sup>30</sup> क्योंकि कितिम के जहाज उसके खिलाफ आएंगे, इसलिए वह निराश होगा और लौटेगा और पवित्र वाचा पर क्रोधित होगा और कार्रवाई करेगा; इसलिए वह लौटेगा और उन लोगों के प्रति समान दिखाएगा जो पवित्र वाचा को छोड़ देते हैं।<sup>31</sup> उसकी ओर से सेनाएं उठेंगी, पवित्र स्थान के किले को अपवित्र करेंगी, नियमित बलिदान को समाप्त करेंगी, और वे उजाड़ने वाली धृणा को स्थापित करेंगी।<sup>32</sup> और चिकनी बातों से वह वाचा के प्रति दुष्टा करने वालों को अधर्म की ओर मोड़ेगा, लेकिन जो लोग अपने परमेश्वर को जानते हैं वे मजबूत होंगे और कार्रवाई करेंगे।<sup>33</sup> और जो लोग लोगों में समझ रखते हैं वे बहुतों को समझ देंगे; फिर भी वे तलवार और आग से, बंदीपूर्ण और लूट से कई दिनों तक गिरेंगे।<sup>34</sup> अब जब वे गिरेंगे तो उन्हें थोड़ी मदद दी जाएगी, और कई लोग कपट में उनके साथ जुड़ेंगे।<sup>35</sup>

और जो लोग समझ रखते हैं उनमें से कुछ गिरेंगे, उन्हें परिष्कृत करने, शुद्ध करने और उन्हें अंत समय तक शुद्ध करने के लिए; क्योंकि यह अभी भी निर्धारित समय पर आना है।<sup>36</sup> तब राजा अपनी इच्छा के अनुसार करेगा, और वह अपने आप को ऊंचा करेगा और हर देवता के खिलाफ घमंड करेगा, और देवताओं के परमेश्वर के खिलाफ भयानक बातें बोलेगा; और वह सफल होगा जब तक कि क्रोध समाप्त नहीं हो जाता, क्योंकि जो निर्धारित किया गया है वह किया जाएगा।<sup>37</sup>

और वह अपने पिताओं के देवताओं के लिए कोई सम्मान नहीं दिखाएगा या महिलाओं की इच्छा के लिए, न ही वह किसी अन्य देवता के लिए सम्मान दिखाएगा; क्योंकि वह उन सब के खिलाफ घमंड करेगा।<sup>38</sup> लेकिन इसके बजाय वह कितों के देवता का सम्मान करेगा, एक ऐसा देवता जिसे उसके पिताओं ने नहीं जाना; वह उसे सोने, चांदी, कीमती पत्तरों और खजानों से सम्मान देगा।<sup>39</sup> और वह एक विदेशी देवता की मदद से सबसे मजबूत किलों के खिलाफ कार्रवाई करेगा; वह उन लोगों को बड़ा सम्मान देगा जो उसे मान्यता देते हैं और उन्हें बहुतों पर शासक बनाएगा, और एक कीमत पर भूमि बांटेगा।<sup>40</sup> अंत समय में दक्षिण का राजा उसके साथ युद्ध करेगा, और उत्तर का राजा उसके खिलाफ रथों, पुढ़सवारों, और कई जहाजों के साथ तृफान करेगा; और वह देशों में प्रवेश करेगा, उन्हें बहा देगा, और पार करेगा।<sup>41</sup> वह सुंदर भूमि में भी प्रवेश करेगा, और कई देश गिरेंगे; लेकिन ये उसके हाथ से बच जाएंगे: एदेम, मोआब, और अमोन के पुत्रों में से प्रमुख।<sup>42</sup> फिर वह अन्य देशों के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाएगा, और मिस्र की भूमि नहीं बचेगी।<sup>43</sup> लेकिन वह सोने और चांदी के छिपे हुए खजानों पर और मिस्र की सभी कीमती चीजों पर नियंत्रण प्राप्त करेगा; और लीबीयाई और इथियोपियाई उसके पीछे चलेंगे।<sup>44</sup> लेकिन पूर्व और उत्तर से अफवाहें उसे आंतकित करेंगी, और वह बड़ी क्रोध के साथ बाहर जाएगा और बहुतों का उम्मूलन और विनाश करेगा।<sup>45</sup> और वह अपने शाही मंडप के तंबुओं को समुद्रों और सुंदर पवित्र पर्वत के बीच खड़ा करेगा; फिर भी वह अपने अंत तक पहुंचेगा, और कोई उसकी मदद नहीं करेगा।

**12** उस समय मीकाएल, जो तुम्हारी प्रजा के पुत्रों की रक्षा करने वाला महान राजकुमार है, उठ खड़ा होगा। और ऐसा संकट का समय होगा जैसा कि कभी नहीं हुआ जब से कोई राष्ट्र हुआ था उस समय तक; और उस समय तुम्हारी प्रजा, हर कोई जिसका नाम पुस्तक में लिखा पाया जाएगा, बचा लिया जाएगा।<sup>2</sup> और जो लोग भूमि की धूल में सो रहे हैं उनमें से बहुत से जाग उठेंगे, कुछ अनन्त जीवन के लिए, परन्तु अन्य लोग अपमान और अनन्त तिरस्कार के लिए।<sup>3</sup> और जिनके पास समझ है वे आकाश के विस्तार की चमक की तरह चमकेंगे, और जो बहुतों को धार्मिकता की ओर ले जाते हैं, वे सितारों की तरह सदा-सर्वदा चमकेंगे।<sup>4</sup> परन्तु तुम, दानियेल, इन शब्दों को गुज़ रखो और पुस्तक को अंत समय तक के लिए सील कर दो; बहुत से लोग इधर-उधर भटकेंगे, और ज्ञान बढ़ेगा।”<sup>5</sup> तब मैंने, दानियेल ने देखा, और देखो, दो अन्य लोग खड़े थे, एक धारा के इस

## दानिय्येल

किनारे पर और दूसरा धारा के उस किनारे पर।<sup>6</sup> और किसी ने उस व्यक्ति से कहा जो लिनन वस्त्र पहने हुए था, जो धारा के जल के ऊपर था, “इन अद्भुत घटनाओं के अंत तक कितना समय होगा?”<sup>7</sup> और मैंने उस व्यक्ति को सुना जो लिनन वस्त्र पहने हुए था, जो धारा के जल के ऊपर था, जब उसने अपना दाहिना हाथ और बायां हाथ आकाश की ओर उठाया, और उस पर शपथ खाई जो सदा जीवित रहता है कि यह एक समय, समय और आधे समय के लिए होगा; और जैसे ही वे पतिन्न लोगों की शक्ति को तोड़ने का काम पूरा करेंगे, ये सभी घटनाएं पूरी हो जाएंगी।<sup>8</sup> परन्तु मैंने सुना, परन्तु समझा नहीं, इसलिए मैंने कहा, “मेरे प्रभु, इन घटनाओं का परिणाम क्या होगा?”<sup>9</sup> और उसने कहा, “अपने मार्ग पर जाओ, दानिय्येल, क्योंकि ये शब्द गुप्त रखे जाएंगे और अंत समय तक के लिए सील किए जाएंगे।<sup>10</sup> बहुत से लोग शुद्ध, स्वच्छ और परिष्कृत किए जाएंगे, परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता करेंगे; और कोई भी दुश्य नहीं समझेगा, परन्तु जिनके पास समझ है वे समझेंगे।<sup>11</sup> और उस समय से जब नियमित बलिदान को समाप्त कर दिया जाएगा और उजाड़ने वाली धृणास्पद वस्तु स्थापित की जाएगी, 1,290 दिन होंगे।<sup>12</sup> धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है और 1,335 दिनों तक पहुंचता है।<sup>13</sup> परन्तु तुम, अपने मार्ग पर अंत तक जाओ; तब तुम विश्राम करोगे और युग के अंत में अपने निर्धारित भाग के लिए उठोगे।”

## होशे

**१** यहोवा का वचन जो बेरी के पुत्र होशे के पास आया, यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकियाह के दिनों में, और इसाएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों मेंः<sup>२</sup> जब यहोवा ने पहली बार होशे के द्वारा बात की, तो यहोवा ने होशे से कहा, “जाओ, अपने लिए एक वेश्या स्त्री को पती के रूप में ले लो और वेश्यावृत्ति के बच्चे पैदा करो; क्योंकि यह देश यहोवा को छोड़कर खुल्लमखुल्ला वेश्यावृत्ति कर रहा है।”<sup>३</sup> इसलिए वह गया और दिल्लैम की बेटी गोमेर को लिया, और उसने गर्भ धारण किया और उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ।<sup>४</sup> और यहोवा ने उससे कहा, “उसका नाम यिज्रेल रखो; क्योंकि थोड़े ही समय में, मैं यिज्रेल के खून के लिए यह के घर को दंड ढूंगा, और मैं इसाएल के घर के राज्य का अंत कर ढूंगा।”<sup>५</sup> उस दिन, मैं यिज्रेल की घाटी में इसाएल की धनुष को तोड़ ढूंगा।”<sup>६</sup> फिर उसने फिर से गर्भ धारण किया और एक बेटी को जन्म दिया। और यहोवा ने उससे कहा, “उसका नाम लो-रुहामा रखो, क्योंकि मैं अब इसाएल के घर पर दया नहीं करूँगा, कि मैं उन्हें कभी क्षमा करूँ।”<sup>७</sup> परन्तु मैं यहूदा के घर पर दया करूँगा और उहें उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा बचाऊँगा, और उहें धनुष, तलवार, युद्ध, धोड़ों, या घुड़सवारों के द्वारा नहीं बचाऊँगा।”<sup>८</sup> जब उसने लो-रुहामा को दूध छुड़ाया, तो उसने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया।<sup>९</sup> और यहोवा ने कहा, “उसका नाम लो-अम्मी रखो, क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर नहीं हूँ।”<sup>१०</sup> तौमी इसाएल के पुत्रों की संखा समुद्र की रेत के समान होगी, जिसे मापा या गिना नहीं जा सकता; और उस स्थान पर जहां उन्हें कहा जाता है, “तुम मेरे लोग नहीं हो,” उहें कहा जाएगा, “तुम जीवित परमेश्वर के पुत्र हो।”<sup>११</sup> और यहूदा के पुत्र और इसाएल के पुत्र एक साथ इकट्ठे होंगे, और वे अपने लिए एक नेता नियुक्त करेंगे, और वे देश से ऊपर जाएंगे, क्योंकि यिज्रेल का दिन महान होगा।

**२** अपने भाइयों से कहो, “अम्मी,” और अपनी बहनों से, “रुहामा।”

<sup>२</sup> अपनी माता से वाद-विवाद करो, वाद-विवाद करो— क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं है, और मैं उसका पति नहीं हूँ— ताकि वह अपने बेहरे से अपनी वेश्यावृत्ति हटा दे और अपने स्तनों के बीच से अपने व्यभिचार को हटा दे;<sup>३</sup> नहीं तो मैं उसे नग कर ढूंगा और उसे उसी दिन की तरह प्रकट कर ढूंगा जिस दिन वह पैदा हुई थी। मैं उसे जगल की तरह बना ढूंगा, उसे मरुभूमि की तरह बना ढूंगा, और प्यास से उसे मार डालूंगा।<sup>४</sup> मैं उसके बच्चों पर भी दया नहीं करूँगा, क्योंकि वे वेश्यावृत्ति के

बच्चे हैं।<sup>५</sup> क्योंकि उनकी माता ने वेश्यावृत्ति की है, जिसने उहें गर्भ धारण किया उसने शर्मनाक काम किया है। क्योंकि उसने कहा, “मैं अपने प्रेमियों के पीछे जाऊँगा, जो मुझे मेरी रोटी और मेरा पानी देते हैं, मेरी ऊन और मेरा लिनन, मेरा तेल और मेरी पेय।”<sup>६</sup> इसलिए देखो, मैं उसके मारा को कांटों से अवरुद्ध करूँगा, और मैं उसके खिलाफ एक पथर की दीवार बनाऊँगा ताकि वह अपने राते न पा सके।<sup>७</sup> और वह अपने प्रेमियों का पीछा करेगी, लेकिन वह उहें नहीं पाएगी, और वह उहें खोजेगी, लेकिन वह उहें नहीं पाएगी। तब वह कहेगी, “मैं अपने पहले पति के पास वापस जाऊँगी, क्योंकि तब मेरे लिए अब से बेहतर था।”<sup>८</sup> फिर भी वह नहीं जानती कि यह मैं था, जिसने उसे अनाज नई दाख मदिरा, और तेल दिया, और उस पर चांदी और सोना बरसाया, जिसे उहें बाल के लिए उपयोग किया।<sup>९</sup> इसलिए मैं अपनी फसल के समय में अपना अनाज वापस ले लूंगा और अपने मौसम में अपनी नई दाख मदिरा मैं उसकी माता को ढकने के लिए दी गई मेरी ऊन और लिनन भी ले लूंगा।<sup>१०</sup> और अब मैं उसकी अश्लीलता को उसके प्रेमियों की दृष्टि में प्रकट करूँगा, और कोई भी उसे मेरे हाथ से नहीं बचाएगा।<sup>११</sup> मैं उसकी सारी खुशी को भी समाप्त कर ढूंगा, उसके पर्व उसके नए चंद्रमा, उसके सब्ज, और उसके सभी नियुक्त लोहार।<sup>१२</sup> और मैं उसकी बेलों और अंजीर के पेड़ों को नष्ट कर ढूंगा, जिनके बारे में उसने कहा, “वे मेरी मजदूरी हैं जो मेरे प्रेमियों ने मुझे दी है।” और मैं उहें एक जंगल में बदल ढूंगा, और मैदान के जानवर उहें खा जाएंगे।<sup>१३</sup> और मैं उसे बालों के दिनों के लिए दंड ढूंगा जब वह उहें बलिदान चढ़ाती थी, और अपनी नाक की अंगूठी और आभूषण पहनती थी, और अपने प्रेमियों का पीछा करती थी, ताकि वह मुझे भूल जाए।<sup>१४</sup> प्रभु ने कहा।<sup>१५</sup> “इसलिए देखो, मैं उसे मनाने जा रहा हूँ उसे जंगल में ले जाऊँगा, और उससे कोमलता से बात करूँगा।”<sup>१६</sup> तब मैं उसे वहां से उसकी दाख की बारी ढूंगा, और आकोर की धाती को आशा का द्वारा बनाऊँगा। और वह वहां उसी तरह प्रतिक्रिया करेगी जैसे उसके युवावस्था के दिनों में जैसे उस दिन जब वह मिस्र की भूमि से ऊपर गई थी।<sup>१७</sup> और उस दिन ऐसा होगा, “प्रभु ने कहा, ‘कि तुम मुझे मेरे पति कहोगे और मुझे मेरे बाल नहीं कहोगे।’”<sup>१८</sup> क्योंकि मैं उसके मुंह से बालों के नाम हटा ढूंगा, ताकि वे अब उनके नाम से नहीं बुलाए जाएंगे।<sup>१९</sup> उस दिन मैं उनके लिए एक वाचा भी बनाऊँगा मैदान के जानवरों के साथ, आकाश के पक्षियों के साथ, और जमीन के रंगने वाले जीवों के साथ। और मैं धनुष, तलवार, और युद्ध को

## होशे

भूमि से समाप्त कर द्वंगा, और उन्हें सुरक्षा में लेटने द्वंगा।<sup>19</sup> मैं तुम्हें हमेशा के लिए अपने साथ विवाह करूँगा; हाँ, मैं तुम्हें अपने साथ धर्म और न्याय में कृपा और करुणा में विवाह करूँगा,<sup>20</sup> और मैं तुम्हें विश्वास में अपने साथ विवाह करूँगा। तब तुम प्रभु को जानोगो।<sup>21</sup> और उस दिन ऐसा होगा कि मैं उत्तर द्वंगा" प्रभु ने कहा। "मैं आकाश को उत्तर द्वंगा, और वे पृथ्वी को उत्तर देंगे,<sup>22</sup> और पृथ्वी अनाज नई दाढ़ मरिदा, और तेत को उत्तर देंगी, और वे यिशेल को उत्तर देंगे।<sup>23</sup> मैं उसे अपने लिए भूमि में बोकेंगा। मैं उस पर भी दया करूँगा जिस पर दया नहीं की गई थी, और मैं उन लोगों से कहूँगा जो मेरे लोग नहीं थे; 'तुम मेरे लोग हो!' और वे कहेंगे, 'तुम मेरे परमेश्वर हो'!"

**3** फिर यहोवा ने मुझसे कहा, "फिर से जाओ, उस स्त्री से प्रेम करो जिसे उसका पति प्रेम करता है, फिर भी वह व्यभिचार कर रही है, जैसे यहोवा इसाएल के पुत्रों से प्रेम करता है, यद्यपि वे अन्य देवताओं की ओर मुड़ते हैं और किशमिश के केक से प्रेम करते हैं।"<sup>2</sup> इसलिए मैंने उसे अपने लिए पंद्रह शेरकल चांदी और एक होमर और एक लेतेख जो के लिए खरीदा।<sup>3</sup> फिर मैंने उससे कहा, "तुम मेरे साथ कई दिनों तक रहोगी। तुम व्यभिचार नहीं करोगी, और न ही तुम्हारे पास कोई और पुरुष होगा; इसलिए मैं भी तुम्हारे प्रति ऐसा ही रहूँगा।"<sup>4</sup> क्योंकि इसाएल के पुत्र कई दिनों तक बिना राजा या नेता के, बिना बलिदान या स्मारक पथर के, और बिना एपोद या घर के देवताओं के रहेंगे।<sup>5</sup> बाद मैं इसाएल के पुत्र लैटेंगे और अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को खोजेंगे; और वे अतिम दिनों में यहोवा और उसकी भलाई के लिए कांपते हुए आएंगे।

**4** हे इसाएल के पुत्रों यहोवा के वचन को सुनो, क्योंकि यहोवा का इस देश के निवासियों के विशुद्ध मामला है, क्योंकि देश में न तो विश्वास है, न भक्ति, और न ही परमेश्वर का ज्ञान है।<sup>6</sup> शपथ लेना, इनकार करना, हत्या, चोरी, और व्यभिचार है। वे हिंसा का प्रयोग करते हैं, जिससे खून का सूखन से पीछा होता है।<sup>7</sup> इसलिए देश शोक करता है, और उसमें रहने वाले सभी लोग दुर्बल हो जाते हैं मैदान के जानवरों और आकाश के पक्षियों के साथ, और यहां तक कि समुद्र की मछलियों भी गायब हो जाती है।<sup>8</sup> फिर भी कोई दोष न लगाए और कोई फटकार न क्षे, क्योंकि तुम्हारे लोग उन लोगों के समान हैं जो याजक से झगड़ते हैं।<sup>9</sup> इसलिए तुम दिन में ठोकर खाओगे, और भविष्यवक्ता भी रात में तुम्हारे साथ ठोकर खाएगा, और मैं तुम्हारी माता को नष्ट कर द्वंगा।<sup>10</sup> मेरे लोग ज्ञान के अभाव में

नष्ट हो जाते हैं। चूंकि तुमने ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है, मैं भी तुम्हें अपने याजक होने से अस्वीकार करूँगा। चूंकि तुमने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूला दिया है, मैं भी तुम्हारे बच्चों को भूल जाऊँगा।<sup>11</sup> जितना अधिक वे बढ़े, उतना ही उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया, मैं उनकी महिमा को लज्जा में बदल द्वंगा।<sup>12</sup> वे मेरे लोगों के पाप पर भोजन करते हैं और उनकी बुराई की लालसा करते हैं।<sup>13</sup> और यह होगा, जैसे लोग, जैसे ही याजक, इसलिए मैं उनके मार्गों के लिए उन्हें दंड द्वंगा और उनके कर्मों का प्रतिफल द्वंगा।<sup>14</sup> वे खाएंगे, परंतु तपत नहीं होंगे; वे व्यभिचार करेंगे, परंतु बढ़ेंगे नहीं, क्योंकि उन्होंने यहोवा की ओर ध्यान देना बंद कर दिया है।<sup>15</sup> व्यभिचार दाखमधु और नया दाखमधु समझ को छीन लेते हैं।<sup>16</sup> मेरे लोग अपनी लकड़ी की सूर्ति से परामर्श करते हैं, और उनका भविष्यवक्ता डंडा उन्हें सूचित करता है, क्योंकि व्यभिचार की आत्मा उन्हें भटकाती है, और वे अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हो गए हैं।<sup>17</sup> वे पहाड़ों की चोटियों पर बलिदान चढ़ाते हैं और पहाड़ियों पर धूप जलाते हैं, बलूत, चिड़चिड़ा, और तरपण की नीचे, क्योंकि उनकी छाया सुखद होती है। इसलिए तुम्हारी बेटियों व्यभिचार करती हैं, और तुम्हारी बहुँई व्यभिचार करती हैं।<sup>18</sup> मैं तुम्हारी बेटियों को उनके व्यभिचार के लिए दंड नहीं द्वंगा, न तुम्हारी बहुओं को उनके व्यभिचार के लिए क्योंकि पुरुष स्वयं वेश्याओं के साथ चले जाते हैं और मदिर की वेश्याओं के साथ बलिदान चढ़ाते हैं, इसलिए बिना समझ के लोग नष्ट हो जाते हैं।<sup>19</sup> यद्यपि तुम् इसाएल, वेश्यावृति करते हो, यहदा को दोषी न होने दो। गिलगाल को मत जाओ, और बेथ आवेन को मत जाओ, और यह न कहो, "जैसे यहोवा जीवित है।"<sup>20</sup> क्योंकि इसाएल हठी है एक हठी गाय की तरह क्या अब यहोवा उन्हें एक बड़े मैदान में भेद के बचे की तरह चराएगा।<sup>21</sup> एप्रैम मौर्यों के साथ मिल गया है, उसे अकेला छोड़ दो।<sup>22</sup> उनकी शराब समाप्त हो गई है, वे लगातार व्यभिचार करते हैं, उनके शासक लज्जा से प्रेम करते हैं।<sup>23</sup> हवा उन्हें अपने पंसों में लपेट लेती है, और वे अपने बलिदानों के कारण लज्जित होंगे।

**5** यह सुनो, हे याजकों सुनो, इसाएल के घराने ध्यान दो, राजा के घराने। क्योंकि याय तुम्हारे लिए है, क्योंकि तुम मिस्पा में जाल हो गए हो और ताबोर पर फैलाया हुआ जाल।<sup>24</sup> विद्रोही गहराई में भ्रष्टाचार में चले गए हैं, पर मैं उन सबको अनुशासन द्वंगा।<sup>25</sup> मैं एप्रैम को जानता हूँ, और इसाएल मुझसे छिपा नहीं है, क्योंकि अब, एप्रैम, तुमने व्यभिचार किया है, इसाएल

## होशे

ने स्वयं को अशुद्ध कर लिया है।<sup>4</sup> उनके कर्म उन्हें अनुमति नहीं देगी कि वे अपने परमेश्वर के पास लौटें। क्योंकि उनके भीतर व्यभिचार की आत्मा है, और वे यहोवा को नहीं जानते।<sup>5</sup> इसके अलावा इसाएल का गर्व उसके खिलाफ गवाही देता है, और इसाएल और एप्रैम अपनी दोष में ठोकर खाते हैं, यहूदा भी उनके साथ ठोकर खा गया है।<sup>6</sup> वे अपनी भड़ों और झुंडों के साथ यहोवा को खोजने जाएंगे, पर वे उसे नहीं पाएंगे; वह उनसे दूर हो गया है।<sup>7</sup> उन्होंने यहोवा के विश्वद्वि विश्वासघात किया है, क्योंकि उन्होंने अवैध बच्चों को जन्म दिया है। अब नया चाँद उन्हें उनके देश के साथ निगल जाएगा।<sup>8</sup> गिरेआ में नरसिंगा झूँको, रामा हैं तुरही। बैथू अवेन में चेतावनी दी “तुम्हारे पीछे, बिन्यामीन”<sup>9</sup> एप्रैम फटकार के दिन उजाड़ हो जाएगा। इसाएल के गोत्रों में मैं निश्चित बात को प्रकट करता हूँ।<sup>10</sup> यहूदा के नेता उन लोगों के समान हो गए हैं जो सीमा को हटाते हैं उन पर मैं अपना क्रोध जल की तरह उंडेल दूंगा।<sup>11</sup> एप्रैम दबाया गया है, न्याय में कुचला गया है, क्योंकि उसने मनुष्य की आज्ञा का पालन करने का निश्चय किया था।<sup>12</sup> इसलिए मैं एप्रैम के लिए किंडे के समान हूँ, और यहूदा के घर के लिए सङ्गन के समान हूँ।<sup>13</sup> जब एप्रैम ने अपनी बीमारी देखी और यहूदा ने अपनी चोट तब एप्रैम अश्वर के पास गया और राजा यारेब के पास सदेश भेजा। पर वह तुम्हें चंगा करने में असमर्थ है, या तुम्हारी चोट को ठीक करने में।<sup>14</sup> क्योंकि मैं एप्रैम के लिए सिंह के समान हूँ और यहूदा के घर के लिए युवा सिंह के समान। मैं हाँ मैं टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और चला जाऊंगा, मैं उठा ले जाऊंगा, और कई बचने वाला नहीं होगा।<sup>15</sup> मैं चला जाऊंगा और अपने स्थान पर लौटूंगा जब तक वे अपनी दोष मानकर मेरे मुख को न खोजें, अपनी विपत्ति में वे मुझे उत्सुकता से खोजेंगे।

**6** “अओ, हम यहोवा के पास लौट चलें। क्योंकि उसने हमें फाड़ा है, पर वह हमें बंगा करेगा। उसने हमें घायल किया है, पर वह हमारी पट्टी बाँधेगा।<sup>2</sup> वह दो दिन के बाद हमें जीवित करेगा, तीसरे दिन वह हमें उठाएगा, ताकि हम उसके सामने रहें।<sup>3</sup> इसलिए आओ, हम यहोवा को जानें, और जानने के लिए प्रयास करें। उसका आना भोर के समान निश्चित है, और वह हमारे पास वर्षा के समान आएगा, जैसे वसंत की वर्षा जो पृथ्वी को सीचती है।<sup>4</sup> हे एप्रैम, मैं तुझसे क्या करूँ? हे यहूदा, मैं तुझसे क्या करूँ?

क्योंकि तुम्हारी निष्ठा सुबह के बादल के समान है, और ओस के समान जो जल्दी चली जाती है।<sup>5</sup> इसलिए मैंने भविष्यद्वक्ता ओं के द्वारा उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया

है, मैंने अपने मुख के वरचों से उन्हें मारा है, और तुम्हारे ऊपर के न्याय उस प्रकाश के समान हैं जो आगे बढ़ता है।<sup>6</sup> क्योंकि मैं बलिदान से अधिक निष्ठा चाहता हूँ, और होमबलियों से अधिक परमेश्वर का ज्ञान।<sup>7</sup> परंतु आदम के समान उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया है, वहाँ उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है।<sup>8</sup> गिलाद अपराधियों का नगर है, जो खून के निशानों से भरा है।<sup>9</sup> और जैसे लुटेरे व्यक्ति की घाट में बैठते हैं, वैसे ही याजकों का एक दल शेकेम की ओर जाने वाले मार्ग पर हत्या करता है, निष्ठय ही उन्होंने एक कुकर्म किया है।<sup>10</sup> इसाएल के घर मैं मैंने एक भयंकर बात देखी है, एप्रैम की व्यभिचारिता वहाँ है, इसाएल ने अपने आप को अपवित्र कर लिया है।<sup>11</sup> यहूदा, तेरे लिए भी एक फसल नियुक्त है, जब मैं अपनी प्रजा की समृद्धि को बहाल करूँगा।

**7** जब मैं इसाएल को चंगा करना चाहता था, तो एप्रैम का अपराध प्रकट हो गया और सामारिया के बुरे कर्म भी, क्योंकि वे छल करते हैं, चोर भीतर घुसता है, लुटेरों का दल बाहर हमला करता है,<sup>2</sup> और वे अपने दिल में पह नहीं सोचते कि मैं उनकी सारी दुष्टता को याद रखता हूँ। अब उनके कर्म उनके चारों ओर हैं, वे मेरे सामने हैं।<sup>3</sup> अपनी दुष्टता से वे राजा को प्रसन्न करते हैं, और अधिकारियों को अपनी झूठ से।<sup>4</sup> वे सब व्यभिचारी हैं, जैसे बेकरी द्वारा गरम किया जुआ ओवन, जो आठा गूँथने से लेकर खमीर उठने तक आग को हिलाना बंद कर देता है।<sup>5</sup> हमारे राजा के दिन पर, अधिकारी शराब की गर्मी से बीमार हो गए उसने उपहास करने वालों की ओर अपना हाथ बढ़ाया,<sup>6</sup> क्योंकि उनके दिल ओवन के समान हैं जब वे अपनी साजिश के पास आते हैं, उनका क्रोध सारी रात धक्कता है, सुबह में यह जलती हुई आग की तरह जलता है।<sup>7</sup> वे सब ओवन की तरह गर्म हैं, और वे अपने शासकों को खा जाते हैं, उनके सभी राजा गिर चुके हैं। उनमें से कोई भी मुझ पर नहीं पुकारता।<sup>8</sup> एप्रैम ने अपने आप को लोगों के साथ मिला लिया है, एप्रैम एक उलटा न किया जुआ चपटी रोटी बन गया है।<sup>9</sup> अजनबी उसकी ताकत को खा जाते हैं, फिर भी वह इसे नहीं जानता, उसके ऊपर सफेद बाल भी छिड़के हुए हैं, फिर भी वह इसे नहीं जानता।<sup>10</sup> यद्यपि इसाएल का गर्व उसके खिलाफ गवाही देता है, फिर भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं लौटे, न ही उन्होंने उसे खोजा, इस सब के बावजूद।<sup>11</sup> इसलिए एप्रैम एक भौती कबूतर के समान हो गया है, बिना समझ के, वे मिस्र को बुलाते हैं, वे अश्वर को जाते हैं।<sup>12</sup> जब वे जाते हैं, मैं उन पर अपना जाल फैलाऊंगा, मैं

## होशे

उन्हें आकाश के पक्षियों की तरह नीचे लाऊंगा। मैं उन्हें उनकी सभा की खबर के अनुसार अनुशासित करूँगा।<sup>13</sup> उन पर हाय, क्योंकि वे मुझसे भटक गए हैं विनाश उनका है, क्योंकि उन्होंने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है। मैं उन्हें छुड़ाना चाहता था, लेकिन उन्होंने मेरे खिलाफ झूठ बोला है।<sup>14</sup> और वे अपने दिल से मुझ पर नहीं पुकारते जब वे अपने बिस्तरों पर विलाप करते हैं; अनाज और नई दाखमधु के लिए वे इकट्ठे होते हैं, वे मुझसे दूर हो जाते हैं।<sup>15</sup> यद्यपि मैंने उन्हें प्रश्नाशित किया और उनके हाथों को मजबूत किया, किर भी वे मेरे खिलाफ बुराई की योजना बनाते हैं।<sup>16</sup> वे मुझते हैं, लेकिन उपर की ओर नहीं, वे एक धोखेबाज धनुष के समान हैं, उनके अधिकारी तलवार से गिरेंगे उनकी जीम की धृष्टा के कारण। यह मिस की भूमि में उनकी उपहास होगी।

**8** अपनी तुरही को अपने होंठों पर रखो जैसे एक गरुङ, दुश्मन प्रभु के घर के खिलाफ आता है, क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है और मेरी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह किया है।<sup>2</sup> वे मुझसे पुकारते हैं "हे मेरे परमेश्वर, हम इसाएल के लोग तुझे जानते हैं।"<sup>3</sup> इसाएल ने अच्छे को ढुकरा दिया है, दुश्मन उसका पीछा करागा।<sup>4</sup> उन्होंने राजा स्थापित किए परंतु मुझसे नहीं, उन्होंने अधिकारियों को नियुक्त किया, पर मैं उन्हें नहीं जानता था। उन्होंने अपनी चांदी और सोने से अपने लिए मूर्तियाँ बनाई हैं, ताकि वे नष्ट हो जाएं।<sup>5</sup> उसने तेरे बछड़े को ढुकरा दिया है, सामरिया, यह कहते हुए "मेरा क्रोध उनके खिलाफ भड़क रहा है" वे कब तक निर्देषिता में असमर्थ रहेंगे? <sup>6</sup> क्योंकि यह भी इसाएल से आया है। एक कारीगर ने इसे बनाया है, इसलिए यह परमेश्वर नहीं है, निश्चित रूप से सामरिया का बछड़ा ढुकड़े-ढुकड़े हो जाएगा।<sup>7</sup> क्योंकि वे हाता बाते हैं और वे बवंडरा काटते हैं। खड़ा अनाज बिना दानों का है, यह कोई अनाज नहीं देता। यहि यह देता, तो अजनकी इसे निगल जाते।<sup>8</sup> इसाएल निगल लिया गया है, वे अब राष्ट्रों के बीच हैं जैसे एक बर्तन जिसमें कोई अनंद नहीं लेता।<sup>9</sup> क्योंकि वे अश्वर के पास चले गए हैं जैसे एक जंगली गधा अकेला एप्रैम ने प्रेमियों के लिए शुल्क दिया है।<sup>10</sup> यद्यपि वे राष्ट्रों के बीच सहयोगी किराए पर लेते हैं, मैं अब उन्हें इकट्ठा करूँगा, और वे घटने लगेंगे अधिकारियों के राजा के बोझ के कारण।<sup>11</sup> चूंकि एप्रैम ने पाप के लिए वेदियों को बढ़ाया है, वे उसके लिए पाप करने की वेदियों बन गई हैं।<sup>12</sup> यद्यपि मैंने उसके लिए अपनी व्यवस्था के दस हजार उपदेश लिखे, उन्हें एक अजीब चीज के रूप में माना जाता है।

<sup>13</sup> मेरे बलिदान उपहारों के लिए, वे मांस की बलि देते हैं और खाते हैं, परंतु प्रभु उन्हें स्वीकार नहीं करता। अब वह उनकी दोष को याद करेगा और उनके पापों के लिए उन्हें दंड देगा, वे मिस लौट जाएंगे।<sup>14</sup> क्योंकि इसाएल ने अपने निर्माता को भूला दिया है और महल बनाए हैं, और यहूदा ने किलेबंद शहरों को बढ़ाया है, परंतु मैं उसके शहरों पर आग भेजूँगा, और यह उसके गढ़ों को भ्रस्म कर देगा।

**9** इसाएल, अच्य राष्ट्रों की तरह अनांदित मत हो। क्योंकि उम्म अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हो गए हैं; उम्मने हर खलिहान पर वेश्या की कमाई को घ्यार किया है।<sup>1</sup> खलिहान और अंगूर का रस उन्हें भोजन नहीं देंगे, और नई दाखमधु उन्हें धोखा देगी।<sup>2</sup> वे यहोवा की भूमि में नहीं रहेंगे, परन्तु एप्रैम मिस को लौट जाएगा, और अश्वर में वे अशुद्ध भोजन खाएंगे।<sup>3</sup> वे यहोवा के लिए दाखमधु की अर्ध नहीं चढ़ाएंगे, न ही उनके बलिदान उसे प्रसन्न करेंगे। उनकी रोटी शोक करने वालों की रोटी के समान होगी, जो कोई उसे खाएगा वह अशुद्ध हो जाएगा, क्योंकि उनकी रोटी केरल उनके लिए होगी, यह यहोवा के घर में प्रवेश नहीं करेगी।<sup>4</sup> नियुक्त पर्व के दिन और यहोवा के पर्व के दिन तुम क्या करोगे?<sup>5</sup> देखो, वे विनाश के कारण भाग जाएंगे, मिस उन्हें ले जाएगा, मेफिस उन्हें दफनाएगा। उनके चांदी के खजाने पर ज्ञाड़ियाँ अधिकार कर लेंगी; उनके तंबुओं में काटे होंगे।<sup>6</sup> दण्ड के दिन आ गए हैं, प्रतिवादों के दिन आ गए हैं, इसाएल को यह जन लेना चाहिए। नबी को मूर्ख समझा जाता है, प्रेरित व्यक्ति को पागल, तुम्हारी बुरी करतूतों के कारण, और तुम्हारी शत्रुग्न के कारण।<sup>8</sup> एप्रैम मेरे परमेश्वर के साथ एक प्रहरी था, एक नबी, फिर भी उसके सभी मार्गों में पक्षी पकड़ने वाले का जाल है, और उसके परमेश्वर के घर में कैरत शत्रुता है।<sup>9</sup> वे धृष्टा की गहराइयों तक चले गए हैं, गिना के दिनों की तरह, वह उनके अपराध को याद करेगा, वह उनके पापों का दण्ड देगा।<sup>10</sup> मैंने इसाएल को जंगल में अंगूरों की तरह पाया, मैंने तुहरे पूर्वजों को अंजीर के पेंड के पहले फल के रूप में देखा। परन्तु वे बाल पोर के पास आए और लज्जा में समर्पित हो गए, और वे उसी के समान धृष्टि हो गए जिसे वे घ्यार करते थे।

<sup>11</sup> एप्रैम के लिए, उनकी महिमा पक्षी की तरह उड़ जाएगी— न जन्म, न गम्भीरता, और न गम्भीराना।<sup>12</sup> यद्यपि वे अपने बच्चों को पालते हैं, फिर भी मैं उन्हें तब तक शोकित करूँगा जब तक कि कोई न बचे। जब मैं उसके विदा हो जाऊंगा तो उन पर हाय।<sup>13</sup> एप्रैम, जैसा मैंने देखा है, सोर की तरह चरागाह में

## होशे

लगाया गया है परन्तु एप्रेम अपने बच्चों को वध के लिए लाएगा।<sup>14</sup> उन्हें दें, हे यहोवा—तू क्या देगा? उन्हें गम्भीर करने वाला गर्भ और सूखे स्तन दे।<sup>15</sup> उनका सारा बुराई गिलगाल में है; वास्तव में, मैं वहाँ उनसे धृणा करने लगा उनके कुकमीं की दुष्टता के कारण मैं उन्हें अपने घर से बाहर निकाल दूंगा मैं अब उन्हें प्यार नहीं करूँगा; उनके सभी नेता विद्रोही हैं।<sup>16</sup> एप्रेम मारा गया है उनकी जड़ सूखे गई है, वे कोई फल नहीं देंगे। यद्यपि वे जन्म देते हैं, मैं उनके गर्भ के प्रियजनों को मारा डालूगा।<sup>17</sup> मेरा परमेश्वर उन्हें अस्तीकार कर देगा क्योंकि उन्होंने उसकी नहीं सुनी, और वे राष्ट्रों के बीच भटकने वाले होंगे।

**10** इसाएल एक हरी-भरी बेल है; वह अपने लिए फल उत्पन्न करता है। जितना अधिक उसका फल, उतने अधिक वेदी उसने बनाई जितनी समृद्ध उसकी भूमि, उतने ही अच्छे उसने स्मारक पत्तर बनाए।<sup>2</sup> उनका हृदय कपटी है, अब उन्हें अपने अपराध के लिए भुगतना होगा। प्रभु उनकी वेदियों को तोड़ देगा और उनके स्मारक पत्तरों को नष्ट कर देगा।<sup>3</sup> अब निश्चित रूप से वे कहेंगे, “हमारा कोई राजा नहीं है, क्योंकि हम प्रभु का आदर नहीं करते। राजा के लिए वह हमारे लिए क्या कर सकता है?”<sup>4</sup> वे केवल शब्द बोलते हैं व्यर्थ की शपथों के साथ वे बाचा करते हैं, और न्याय खेत की क्यारियों में जहरीली धास की तरह उत्तरा है।<sup>5</sup> सामरिया के निवासी डरेंगे बेथ-अवेन के बछड़े के लिए। वास्तव में उसके लोग उसके लिए विलाप करेंगे, और उसके मूर्तिपूजक याजक भी, जो उसके ऊपर और उसकी महिमा पर आनंदित होते थे, क्योंकि यह उससे दूर हो गया है।<sup>6</sup> वह वस्तु रूप अश्शूर को लाइ जाएगी राजा यारेब को उपहार के रूप में एप्रेम को लज्जा से पकड़ लिया जाएगा, और इसाएल अपनी योजना पर लज्जित होगा।<sup>7</sup> सामरिया और उसकी राजा नष्ट हो जाएंगे, जैसे पानी की सतह पर एक टहनी।<sup>8</sup> अवेन के उच्च स्थान, इसाएल का पाप, नष्ट हो जाएगा; उनके वेदियों पर काटे और झाड़ियाँ उगेंगी। तब वे पहाड़ों से कहेंगे, “हम पर गिरो” और पहाड़ियों से, “हम पर गिरो”। गिबेआ के दिनों से तुमने पाप किया है, इसाएल, वहाँ पे खड़े हैं क्या अन्याय के पुत्रों के खिलाफ लड़ाई गिबेआ में उन्हें नहीं पकड़ लेगी।<sup>10</sup> जब यह मेरी इच्छा होगी, मैं उन्हें अनुशासित करूँगा, और लोग उनके खिलाफ इकट्ठे होंगे जब वे अपनी दोहरी अपराध के लिए बंधे होंगे।<sup>11</sup> एप्रेम एक प्रशिक्षित बछिया है जो श्रेष्ठिं करना पसंद करती है, और मैंने उसके सुंदर गर्दन को पार किया, मैं एप्रेम को जुए में जोड़ूँगा, यहूदा हल चलाएगा।

याकूब अपने लिए जुताई करेगा।<sup>12</sup> अपने लिए धर्म में बोआ, दया के अनुसार फसल काटो, अपनी अनजुती भूमि को तोड़ो, क्योंकि यह प्रभु को खोजने का समय है जब तक वह आकर तुम पर धर्म की वर्षा न करे।<sup>13</sup> तुमने दुष्टता बोई है, तुमने अन्याय की फसल काटी है, तुमने झूँठ के फल खाए हैं। क्योंकि तुमने अपने मार्ग पर अपने अनेक योद्धाओं पर भरोसा किया है,<sup>14</sup> तुम्हारे लोगों में एक कोलाहल उठेगा, और तुम्हारे सभी किले नष्ट हो जाएंगे, जैसे शलमान ने बैथ अरबेल को युद्ध के दिन नष्ट कर दिया, जब माताओं को उनके बच्चों के साथ टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था।<sup>15</sup> इसलिए यह तुम्हारे साथ बैथेल में होगा तुम्हारी बड़ी दुष्टता के कारण, भीर में इसाएल का राजा पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।

**11** जब इसाएल जवान था, तब मैं ने उससे प्रेम किया, और मिस्स से मैंने अपने पुत्र को बुलाया।<sup>2</sup> जितना अधिक उन्होंने उन्हें बुलाया, उतना ही वे उनसे दूर चले गए, वे बाल देवताओं के लिए बलिदान करते रहे और मूरियों को धूप जलाते रहे।<sup>3</sup> किर भी मैं ही था जिसने इफ्रेम को चलना सिखाया, मैंने उन्हें अपनी बाहों में उठाया; लेकिन वे नहीं जानते थे कि मैंने उन्हें चंगा किया।<sup>4</sup> मैंने उन्हें मनुष्य की रसियों से खोचा, प्रेम की डोरियों से, और मैं उनके लिए ऐसा बन गया जो उनके बजड़ों से जुआ उठाता है, और मैं झुककर उन्हें खिलाता था।<sup>5</sup> वे मिस्स के देश में नहीं लौटेंगे, लेकिन अश्शूर—वह उनका राजा होगा क्योंकि उन्होंने मेरी ओर लौटने से इनकार कर दिया।<sup>6</sup> और तलवार उनके नगरों के विरुद्ध धूमेगी, और उनके भविष्यतव्या पुरोहितों को नष्ट कर देगी, और उनकी युक्तियों के कारण उन्हें निगल जाएगी।<sup>7</sup> इसलिए मेरी प्रजा मुझसे दूर जाने के लिए दृढ़ है। यद्यपि वे उन्हें उच्च स्थान पर बुलाते हैं, किंतु भी उसे महिमा नहीं देता।<sup>8</sup> हे इफ्रेम, मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँ? हे इसाएल, मैं तुम्हें कैसे समर्पित कर दूँ? मैं तुम्हें अदमा के समान कैसे बना दूँ? मैं तुम्हें जबोईम के समान कैसे कर दूँ? मेरा हृदय मेरे भीतर उलट गया है, मेरी सारी करुणाएं जल उठी हैं।<sup>9</sup> मैं अपने प्रचंड क्रोध को पूरा नहीं करूँगा, मैं इफ्रेम को फिर से नष्ट नहीं करूँगा। क्योंकि मैं ईश्वर हूँ और मनुष्य नहीं, तुम्हारे बीच का परिवर्त, और मैं क्रोध में नहीं आऊँगा।<sup>10</sup> वे यहोगा के पीछे चलेंगे, वह सिंह की तरह गरजेगा, वास्तव में वह गरजेगा, और उसके पुत्र पश्चिम से कापते हुए आएंगे।<sup>11</sup> वे मिस्स से क्षेत्रों की तरह कापते हुए आएंगे, और अश्शूर के देश से कबूतरों की तरह, और मैं उन्हें उनके घरों में बसाऊँगा, यहोवा की यह वाणी है।<sup>12</sup>

## होशे

इक्रैम मुझे झूठ से धेरता है, और इसाएल का घर छल से यहदा भी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही है, यहाँ तक कि उस पवित्र के विरुद्ध जो विश्वासयोग्य है।

**12** एप्रैम गायु पर निर्भर करता है, और पूर्वी गायु का लगातार पीछा करता है वह झूठ और हिंसा को बढ़ाता है। इसके अलावा, वे अश्वर के साथ एक वाचा करते हैं, और तेल मिस को लाया जाता है।<sup>2</sup> प्रभु का यहदा के साथ भी विवाद है, और वह याकूब को उसके मार्गों के अनुसार दंड देगा। वह उसके कर्मों के अनुसार उसे प्रतीकल देगा।<sup>3</sup> गर्भ में उसने अपने भार्ह की एड़ी पकड़ी, और अपनी परिपक्तता में उसने परमेश्वर के साथ संघर्ष किया।<sup>4</sup> हाँ उसने स्वर्गद्वित के साथ कुर्सी की ओर विजयी हुआ। उसने रोकर उसकी कृपा मांगी। उसने उसे बेतेल में पाया, और वहाँ उसने हमसे बात की<sup>5</sup> अर्थात् सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, प्रभु उसका नाम है।<sup>6</sup> इसलिए तुम, अपने परमेश्वर के पास लौट आओ, दया और न्याय बनाए रखो, और अपने परमेश्वर की निरंतर प्रतीक्षा करो।<sup>7</sup> एक व्यापारी, जिसके हाथों में धूखाखड़ी के तराजू हैं, शोषण करना पसंद करता है।<sup>8</sup> और एप्रैम ने कहा, “मैं निश्चित रूप से धनी हो गया हूँ, मैंने अपने लिए संपत्ति पाई है, मेरे सभी श्रमों में वे मुझमें कोई गलत काम नहीं पायेंगे, जो पाप होगा।”<sup>9</sup> परन्तु मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो मिस देश से तुम्हारा परमेश्वर रहा है, मैं तुम्हें फिर से तबुओं में बसाऊंगा, जैसे नियत पर्व के दिनों में।<sup>10</sup> मैंने भविष्यद्वक्ताओं से भी बात की है, और मैंने कई दर्शन प्रदान किए हैं, और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से मैंने दृष्टियाँ में बात की।<sup>11</sup> क्या गिलाल में अन्याय है?

निश्चित रूप से वे बेकार हैं। गिलाल में वे बैल बलिदान करते हैं, हाँ उनकी वेठियाँ पत्तरों के ढेर के समान हैं खेत की क्यारियों के किनारों।<sup>12</sup> अब याकूब अराम के प्रदेश में भाग गया, और इसाएल ने पत्नी के लिए काम किया, और पत्नी के लिए उसने भेड़ें चराई।<sup>13</sup> परन्तु एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा ने इसाएल को मिस से ऊपर लाया, और एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा वह सुरक्षित रहा।<sup>14</sup> एप्रैम ने परमेश्वर को कहा कि वह अपने अपराध के लिए कोई वातानुकारी नहीं कर सकता, और उसका सोता सूख जाएगा, और उसका झरना सूख जाएगा, यह उसके खाजाने के हार कीमती वस्तु को लूट लेगी।<sup>15</sup> सामरिया अपने अपराध के लिए दंड भोगेगी, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है। वे तलवार से गिरें, उनके बच्चे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर दी जाएँगी।

**13** जब एप्रैम ने बात की, तो डर था। उसने इसाएल में अपने को ऊँचा किया, परन्तु वह बाल के द्वारा दोषी ठहरा और नाश हो गया।<sup>2</sup> और अब वे अधिक से अधिक पाप करते हैं, और अपने लिए ढली हर्दी धारा की मूर्तियाँ बनाते हैं, उनकी चाँदी से कुशलता

से बनाई गई मूर्तियाँ, वे सब कारीगरों का काम हैं। वे उनके बारे में कहते हैं, “जो लोग बलिदान करते हैं, वे बछड़ों को चूमो”<sup>3</sup> इसलिए वे सुबह की धूध के समान होंगे और ओस के समान जो शीघ्र ही गायब हो जाती है, जैसे भूसे के समान जो खलिहान से उड़ाया जाता है, और चिमनी से निकलने वाले धूएं के समान।<sup>4</sup> फिर भी मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ मिस देश से, और तुम्हें मेरे सिवाय किसी और देवता को नहीं जाना था क्योंकि मेरे सिवाय कोई उद्धरकर्ता नहीं है।<sup>5</sup> मैंने जगत में तुम्हारी देखभाल की, सूखे के देश में<sup>6</sup> जैसे ही उन्हें चरागाह मिला, वे संतुष्ट हो गए, और संतुष्ट होकर उनका हृदय गर्वित हो गया, इसलिए उन्होंने मुझे भुला दिया।<sup>7</sup> इसलिए मैं उनके लिए सिंह के समान हो जाऊंगा तेदुए के समान मैं मार्ग के किनारे देखूँगा।<sup>8</sup> मैं उनसे उस रीछनी के समान मिर्तुँगा जिससे उसके बच्चे छीन लिए गए हैं, और मैं उनकी छाती फांड़ द्वांगा। मैं उन्हें वहाँ सिंही के समान निगल जाऊंगा, जैसे कोई जंगली जानकर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देगा।<sup>9</sup> यह तुम्हारा नाश है, इसाएल, कि तुम मेरे विरुद्ध हो, अपनी साहायता के विरुद्ध।<sup>10</sup> तब तुम्हारा राजा कहाँ है, कि वह तुम्हें तुम्हारे सब नागरों में बचा सके, और तुम्हारे न्यायाधीश जिनके बारे में तुमने कहा, “मुझे राजा और नेता दो?”<sup>11</sup> मैंने अपने क्रोध में तुम्हें राजा दिया, और अपने रोध में उसे हटा दिया।<sup>12</sup> एप्रैम का अपराध लपेटा गया है, उसका पाप संचित है।<sup>13</sup> वह ऐसा पुत्र है जिसमें बुद्धि की कमी है, क्योंकि जब जन्म का समय होता है, तब वह विलंब करता है।<sup>14</sup> क्या मैं उन्हें मृत्यु से मुक्त करूँ? मृत्यु तेरे काटै कहाँ है? शिओल, तेरा डंक कहाँ है? मेरी छाँसि से दया छिपी रहेगी।<sup>15</sup> यद्यपि वह नकर्तों के बीच फलता-फूलता है, एक पूर्वी हवा आएगी, जंगल से उठने वाली यहोवा की हवा, और उसका सोता सूख जाएगा, और उसका झरना सूख जाएगा, यह उसके खाजाने के हार कीमती वस्तु को लूट लेगी।<sup>16</sup> सामरिया अपने अपराध के लिए दंड भोगेगी, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है। वे तलवार से गिरें, उनके बच्चे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर दी जाएँगी।

**14** हे इसाएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, क्योंकि तुम अपने अपराध के कारण ठोकर खा चुके हो।<sup>2</sup> अपने साथ वचन लेकर यहोवा के पास लौट आओ। उससे कहो, “हमारे सारे अपराध क्षमा कर, और हमें अनुग्रहपूर्वक ग्रहण कर, ताकि हम अपने होठों का फल चढ़ा सकें।<sup>3</sup> अश्वर हमें उद्धार

## होशे

नहीं कर सकता, हम धोड़ें पर निभर नहीं होंगे, न ही  
हम अपने हाथों के काम को 'हमारा देवता' कहेंगे।  
क्योंकि तुझ में अनाथ को दया मिलती है॥<sup>4</sup> मैं उनकी  
विश्वासयोग्यता को पुनःस्थापित करूँगा, मैं उहें बिना  
रोक-ठोक के प्रेम करूँगा, क्योंकि मेरा क्रोध उनसे दूर  
हो गया है॥<sup>5</sup> मैं इसाएल के लिए सुबह की ओस के  
समान होऊँगा, वह सोसनों के समान फूलेगा, और  
लेबनान के देवदारों के समान जड़ें जमाएगा॥<sup>6</sup> उसकी  
शाखाएँ फैलेंगी, और उसकी शोभा जैतून के वृक्ष के  
समान होगी, और उसकी सुर्खं लेबनान के देवदारों के  
समान होगी॥<sup>7</sup> जो उसके छाया में निवास करते हैं वे  
फिर से अनाज उपजाएंगे, और वे दाखलता के समान  
फूले फूलेंगे। उसकी प्रसिद्धि लेबनान की दाखलता के  
समान होगी॥<sup>8</sup> हे एत्रेम् शूर्तियों के साथ मेरा और क्या  
काम है? यह मैं हूँ जिसने तुम्हें उत्तर दिया और तुम्हारी  
देखभाल की। मैं एक हरे-भरे जुनिपर के समान हूँ,  
मुझसे तुम्हारा फल आता है॥<sup>9</sup> जो बुद्धिमान है, उसे  
इन बातों को जानने दो जो समझदार है, उसे इन्हें  
पहचानने दो। क्योंकि यहोंवा के मार्ग सीधे हैं, और  
धर्मी उनमें चलेंगे, परंतु कुकर्मी उनमें ठोकर खाएंगे।

# योएल

**1** पेटूएल के पुत्र योएल के पास यहोवा का जो वचन आया:

<sup>2</sup> हे प्राचीनों, यह सुनो, और हे देश के सब निवासियों, ध्यान दो। क्या तुम्हारे दिनों में, या तुम्हारे पितरों के दिनों में ऐसा कुछ हुआ है? <sup>3</sup> इसे अपने पुत्रों को बताओ, और तुम्हारे पुत्र अपने पुत्रों को बताएं, और उनके पुत्र अगली पीढ़ी को। <sup>4</sup> जो कुछ बचाने वाले टिक्के ने छोड़ा, उसे झुंड के टिक्के ने खा लिया, और जो कुछ झुंड के टिक्के ने छोड़ा, उसे रेंगने वाले टिक्के ने खा लिया। और जो कुछ रेंगने वाले टिक्के ने छोड़ा, उसे छीनने वाले टिक्के ने खा लिया। <sup>5</sup> यागो, हे भारी शराब पीने वालों, और रोओ, विलाप करो, हे सब दाखरस पीने वालों, क्योंकि मीठी दाखरस तुम्हारे सूखे से छीन ली गई है। <sup>6</sup> क्योंकि एक राष्ट्र ने मेरे देश पर आक्रमण किया है, शक्तिशाली और अनगिनत, उसके दांत सिंह के दांत हैं, और उसके पास शेरनी के तुकीले दांत हैं। <sup>7</sup> उसने मेरी बेल को उजाड़ दिया है, और मेरे अंजीर के पेड़ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। उसने उहाँ नंगा कर फेंक दिया है, उनकी शाखाएँ सफेद हो गई हैं। <sup>8</sup> एक कुँगरी की तरह विलाप करो जो टाट पहने हुए हैं अपने योवन के दूल्हे के लिए। <sup>9</sup> अनाज का भेट और पेय भेट यहोवा के घर से काट दी गई है। याजक विलाप करते हैं, यहोवा के सेवक। <sup>10</sup> खेत नष्ट हो गया है, भूमि विलाप करती है, क्योंकि अनाज नष्ट हो गया है, नई दाखरस सूख गई है, ताजा तेल विफल हो गया है। <sup>11</sup> लजित हो, हे किसानो, विलाप करो, हे अंगूर के बाग के रखागालों गोहँ और जौ के लिए, क्योंकि खेत की फसल नष्ट हो गई है। <sup>12</sup> बेल सूख गई है, और अंजीर का पेड़ भी, खेत के सब पेड़ सूख गए हैं। वास्तव में, अनांद सूख गया है मानवजाति के पुत्रों से। <sup>13</sup> टाट पहन लो और विलाप करो, हे याजक!, विलाप करो, हे वेदी के सेवकों आओ, टाट में रात बिताओ; मेरे परमेश्वर के सेवकों, क्योंकि अनाज का भेट और पेय भेट तुम्हारे परमेश्वर के घर से रोक दी गई है। <sup>14</sup> एक उपवास को पवित्र करो, एक गंभीर सभा की घोषणा करो, प्राचीनों को इकट्ठा करो और देश के सब निवासियों को अपने परमेश्वर यहोवा के घर में, और यहोवा की ओर पुकारो। <sup>15</sup> उस दिन के लिए हाया क्योंकि यहोवा का दिन निकट है, और यह सर्वशक्तिमान से विनाश के रूप में आएगा। <sup>16</sup> क्या हमारे अंखों के सामने भोजन नहीं काट दिया गया है, और हमारे परमेश्वर के घर से अनांद और उल्लास? <sup>17</sup> बीज अपनी मिट्टी के नीचे सूख गए हैं, भट्ठार सूने पड़े हैं, गोदाम टूट गए हैं, क्योंकि अनाज सूख गया है। <sup>18</sup>

जानवर कैसे कराहते हैं, मवेशियों के झुंड इधर-उधर भटकते हैं क्योंकि उनके लिए कोई चरागाह नहीं है, भेड़ों के झुंड भी पीड़ित हैं। <sup>19</sup> हे यहोवा, मैं तुझसे पुकारता हूँ क्योंकि आग ने जंगल के चरागाहों को भस्म कर दिया है, और ज्वाला ने खेत के सभी पेड़ों को जला दिया है। <sup>20</sup> यहाँ तक कि मैदान के जानवर भी तुझसे हांफते हैं, क्योंकि जल की धाराएँ सूख गई हैं, और आग ने जंगल के चरागाहों को भस्म कर दिया है।

**2** सियोन में नरसिंगा झूँको, और मेरे पवित्र पर्वत पर चेतावनी दी देश के सब निवासी कांप उठें, क्योंकि यहोवा का दिन आ रहा है, निश्चय ही वह निकट है। <sup>2</sup> अंधकार और उदासी का दिन बादलों और धने अंधकार का दिन। जैसे पहाड़ों पर भीर फैलती है, वैसे ही एक महान और शक्तिशाली लोग हैं, उनके जैसा कुछ भी कभी नहीं हुआ है, और उन ही उसके बाद फिर कभी होगा कई पीढ़ियों के बर्षों तक। <sup>3</sup> उनके सामने आग भस्म करती है, और उनके पीछे एक ज्वाला निगल जाती है। उनके सामने भूमि अदन की वाटिका के समान है, परंतु उनके पीछे एक उजाड़ जंगल है, और कुछ भी उनसे नहीं बचता। <sup>4</sup> उनका रूप घोड़ों के समान है, और जैसे ऊद्धर के घोड़े दौड़ते हैं, वैसे ही वे दौड़ते हैं। <sup>5</sup> रथों के शीर के साथ वे पहाड़ों की चीटियों पर कूदते हैं, जैसे आग की लपटों का चटकना जो धूंठ के भस्म करती है, जैसे एक शक्तिशाली लोग ऊद्धर के लिए तैयार होते हैं। <sup>6</sup> उनके सामने लोग पीड़ा में हैं, सब चेहरों का रंग उड़ जाता है। <sup>7</sup> वे योद्धाओं की तरह दौड़ते हैं, वे सीनिकों की तरह दीवार पर चढ़ते हैं, और उनमें से प्रत्येक पक्षित में चलता है, और वे अपनी राह नहीं खोते। <sup>8</sup> वे एक-दूसरे को नहीं धक्कलते, उनमें से हर योद्धा अपनी राह पर चलता है, जब वे रक्षा को भदते हैं, वे अपनी पक्षियों नहीं तोड़ते। <sup>9</sup> वे नगर पर आक्रमण करते हैं, वे दीवार पर दौड़ते हैं, वे धराँ में चढ़ जाते हैं, वे छिड़कियों के माध्यम से चोरी की तरह प्रवेश करते हैं। <sup>10</sup> उनके सामने पृथ्वी कांपती है, आकाश कांपता है, सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो जाते हैं, और तरे अपनी चमक खो देते हैं। <sup>11</sup> यहोवा अपनी सेना के सामने अपनी आवाज उठाता है, उसका शिविर वास्तव में बहुत महान है, क्योंकि वह शक्तिशाली है जो उसके वचन को पूरा करता है। यहोवा का दिन वास्तव में महान और बहुत भयानक है, और कौन इसे सह सकता है?

<sup>12</sup> फिर भी अब, यहोवा कहता है, “अपने पूरे हृदय से मेरी ओर लौट आओ, और उपवास, राने, और शोक के साथ। <sup>13</sup> और अपने हृदय को फाढ़ो न कि केवल

# योएल

अपने वस्तों को।”<sup>14</sup> अब अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, क्योंकि वह अनुग्रहकारी और दयालु है, क्रोध में धीमा, दया में प्रवृत्त और विपत्ति से पछताता है।<sup>14</sup> कौन जानता है, वह लौट सकता है और पछता सकता है, और अपने पीछे एक आशीर्वद छोड़ सकता है, यहाँ तक कि एक अन्न भेट और एक पेय भेट तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए।<sup>15</sup> सियोन में नरसिंगा फूँके, एक उपवास को पवित्र करो, एक गंभीर सभा की घोषणा करो,<sup>16</sup> लोगों को इकट्ठा करो, सभा को पवित्र करो, बुजुर्गों को इकट्ठा करो, बच्चों और दृढ़ पीते शिशुओं को इकट्ठा करो। द्वाहा अपने कमरे से बाहर आए और दुल्हन अपनी दुल्हन कक्ष से बाहर आए।<sup>17</sup> याजक, यहोवा के सेवक, बरामदे और वेदी के बीच रोंगे और कहें, “अपने लोगों पर दया करो, यहोवा, और अपनी विरासत को अपमान न बनाओ, ताकि राष्ट्र उनके ऊपर हंसी न उड़ाए। लोगों में से क्यों कहें, ‘उनका परमेश्वर कहाँ है?’”

<sup>18</sup> तब यहोवा अपनी भूमि के लिए उत्सुक होगा, और अपने लोगों पर दया करेगा।<sup>19</sup> यहोवा अपने लोगों से कहेगा,

“देखो, मैं तुम्हें अनाज, नई दाखमधु, और तेल भेज रहा हूँ, और तुम उनसे पूरी तरह संतुष्ट हो जाओगे; और मैं तुम्हें राशों के बीच अपमान नहीं बनाऊंगा।<sup>20</sup> परंतु मैं उत्तरी सेना को तुमसे दूर कर दूंगा, और उसे एक सूखी और उजाड़ भूमि में भाग दूंगा, उसकी अग्रिम सेना को पूर्वी सुमुद्र में, और उसकी पिछली सेना को पश्चिमी सुमुद्र में। और उसकी दुर्धिंशु ऊपर उठाएगी और उसकी गंध बदौल करेगी, क्योंकि उसने महान कार्य किए हैं।<sup>21</sup> मत डरो, भूमि अनन्दित हो और खुश हो, क्योंकि यहोवा ने महान कार्य किए हैं।<sup>22</sup> मत डरो, मैदान के जानवरों क्योंकि जांगल की चरागाहें हरी हो गई हैं, क्योंकि पेड़ ने अपना फल उत्पन्न किया है, अंजीर का पेड़ और बेल ने पूरी तरह उपज दी है।<sup>23</sup> तो आनन्दित हो, सियोन के पुत्रों और अपने परमेश्वर यहोवा में प्रसन्न हो, क्योंकि उसने तुम्हारे लिए प्रारंभिक वर्षा को तुम्हारी धार्मिकता के लिए दिया है, और उसने तुम्हारे लिए वर्षा लाई है, प्रारंभिक और उत्तराकालीन वर्षा जैसा पहले था।<sup>24</sup> खलिहान अनाज से भर जाएंगे, और कुँड नई दाखमधु और तेल से उफ़नेंगे।<sup>25</sup> “तब मैं तुम्हें उन वर्षों के लिए क्षतिपूर्ति करूँगा जो टिड़ियों के झुंड ने खा लिए हैं—रेंगने वाली टिड़ी, छीलने वाली टिड़ी, और चबाने वाली टिड़ी—मेरी महान सेना जिसे मैंने तुम्हारे बीच भेजा।<sup>26</sup> तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत कुछ होगा और तुम संतुष्ट हो जाओगे, और तुम

अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे, जिसने तुम्हारे साथ अद्भुत काम किए हैं तब मेरे लोग कभी लजित नहीं होंगे।<sup>27</sup> तब तुम जानोगे कि मैं इसाएल के बीच मैं हूँ, और कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ और कोई दूसरा नहीं है। और मेरे लोग कभी लजित नहीं होंगे।<sup>28</sup> “इसके बाद ऐसा होगा कि मैं अपनी आमा को सभी मानवाति पर उंडेलूँगा, और तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जगन लोग दर्शन देखेंगे।<sup>29</sup> और यहाँ तक कि दासों और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपनी आमा उंडेलूँगा।<sup>30</sup> मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमकार देखाऊंगा, रक्त आग, और धूँध के स्तरभ।<sup>31</sup> सूर्य अंधकार में बदल जाएगा, और चंद्रमा रक्त में इससे पहले कि यहोवा का महान और भयानक दिन आए।<sup>32</sup> और ऐसा होगा कि हर कोई जो यहोवा के नाम को पुकारेगा, वह जाएगा, क्योंकि सियोन पर्वत और यरूशलेम में वे होंगे जो बच निकलेंगे, जैसा कि यहोवा ने कहा है, यहाँ तक कि उन बचे हुए लोगों में से जिन्हें यहोवा बुलाता है।

**3** देखो, उन दिनों और उसी समय में, जब मैं यहूदा और यरूशलेम की समृद्धि को पुनःस्थापित करूँगा,<sup>2</sup> मैं सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करूँगा और उन्हें यहोवापात की धारी में ले जाऊंगा। तब मैं वहाँ उनके साथ अपने लोगों और अपनी संपत्ति, इसाएल, जिनको उन्होंने राष्ट्रों में विचुरा दिया है, और उन्होंने मेरी भूमि को बांट दिया है, के लिए न्याय करूँगा।<sup>3</sup> उन्होंने मेरे लोगों के लिए चिड़ियाँ डाली हैं, एक लड़की को वेश्या के लिए बदला है, और एक लड़की को शराब के लिए बेच दिया ताकि वे पी सकें।

<sup>4</sup> इसके अलावा, तुम मेरे लिए क्या हो, सोर, सिदोन, और पलिशी के सभी क्षेत्र? क्या तुम मुझे प्रतिशोध के साथ चुका रहे हो? लेकिन यदि तुम मेरे खिलाफ प्रतिशोध कर रहे हो, तो मैं तुम्हारा प्रतिशोध शीघ्र और तुरंत तुम्हारे सिर पर लौटाऊंगा।<sup>5</sup> क्योंकि तुमने मेरा चांदी और मेरा सोना लिया है, मेरे कीमती खजानों को अपने मंदिरों में ले गए हो,<sup>6</sup> और यहूदा और यरूशलेम के पुत्रों को यूनानियों को बेच दिया है ताकि उन्हें उनकी भूमि से दूर ले जाया जा सके,<sup>7</sup> देखो, मैं उन्हें उस स्थान से उठाऊंगा जहाँ तुमने उन्हें बेचा है, और तुम्हारा प्रतिशोध तुम्हारे सिर पर लौटाऊंगा।<sup>8</sup> मैं तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को भी यहूदा के पुत्रों के हाँओं में बेच दूंगा, और वे उन्हें सबाईयों को बेच देंगे, एक दूर देश के लिए,” क्योंकि यहोवा ने कहा है।

## योएल

९ राष्ट्रों के बीच यह घोषणा करों पवित्र युद्ध के लिए तैयार हो जाओ; योद्धाओं को उकसाओ; सभी सौनिकों को आगे आने दो, उन्हें ऊपर आने दो! <sup>१०</sup> अपने हल के फालों को तलवारों में बदलो, और अपनी छंटाई की हँसियों को भालों में कमजोर करो, “मैं योद्धा हूँ” <sup>११</sup> जल्दी करो और आओ सभी आस-पास के राष्ट्रों, और वहाँ इकट्ठा हो जाओ। नीचे लाओ, प्रभु अपने योद्धाओं को! <sup>१२</sup> राष्ट्रों को जाग्रत होने दो और यहोशापात की घाटी में आओ, क्योंकि वहाँ मैं बैठकर न्याय करूँगा सभी आस-पास के राष्ट्रों का। <sup>१३</sup> दरांती डालो, क्योंकि फसल पक चुकी है। आओ अग्रोरों को रोंदो, क्योंकि दाख की हौट भरी हुई है, हौटें भर गई हैं, क्योंकि उनकी दुष्टता बड़ी है। <sup>१४</sup> भीड़, भीड़ निर्णय की घाटी में, क्योंकि यहोवा का दिन निर्णय की घाटी में निकट है। <sup>१५</sup> सूर्य और चंद्रमा अंधेरे हो गए हैं, और सितारों ने अपनी चमक छो दी है। <sup>१६</sup> यहोवा सिय्योन से गरजता है, और यरूशलेम से अपनी आवाज निकालता है और आकाश और पृथ्वी कांते हैं। लेकिन यहोवा अपने लोगों के लिए एक शरणस्थान है, और इसाएल के पुत्रों के लिए एक गढ़ है। <sup>१७</sup> तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ जो सिय्योन पर, मेरे पवित्र पवत पर निवास करता हूँ। इसलिए यरूशलेम पवित्र होगा, और अजनबी फिर कभी उसमें से नहीं गुजरेगा। <sup>१८</sup> और उस दिन पहाड़ मीठी दाखरस से टपकेंगे, पहाड़ियाँ दूध से बहेंगी, और यहूदा की सभी धाराएँ जल से बहेंगी, और यहोवा के घर से एक झरना निकलेगा और शितीम की घाटी को सिंचेगा। <sup>१९</sup> मिस्र एक उजाड स्थान बन जाएगा, और एदोम एक उजाड जंगल बन जाएगा, क्योंकि यहदा के पुत्रों पर किए गए हिंसा के कारण, जिनकी भूमि में उन्होंने निर्दोष रक्त बहाया है। <sup>२०</sup> लेकिन यहूदा सदा के लिए बसा रहेगा, और यरूशलेम पीढ़ी दर पीढ़ी। <sup>२१</sup> और मैं उनके रक्त का प्रतिशोध लूँगा जिसे मैंने नहीं लिया है,

क्योंकि यहोवा सिय्योन में निवास करता है।

# आमोस

**१** टेकोआ के चरवाहों में से आमोस के वचन, जो उसने यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में और इसाएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में इसाएल के विषय में दर्शन में देखे, भूकंप से दो वर्ष पहले।<sup>2</sup> और उसने कहा,

"यहोवा सिल्लोन से गरजता है, और यरूशलेम से अपनी बाणी सुनाता है और चरवाहों की चराइ की जगहें विलाप करती हैं, और कर्मल की चोटी सूख जाती है।"

<sup>3</sup> यहोवा यों कहता है:

"दमिश्क के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसकी सजा को नहीं टालूँगा, क्योंकि उन्होंने गिलाद को लोहे की स्तीवीजों से रौदा।"<sup>4</sup> इसलिए मैं हेजाएल के घर पर आग भेजूँगा, और यह बैन-हदद के गढ़ों को भस्म कर देगी।<sup>5</sup> मैं दमिश्क के फाटक की सलाख को भी तोड़ दूंगा, और अवेन की घाटी से निवासी को समाप्त कर दूंगा, और बेथ एदेन से राजदंड धारण करने वाले को, इसलिए अराम के लोग कीर में निवासिन में जाएंगे।" यहोवा कहता है।

<sup>6</sup> यहोवा यों कहता है:

"गाज़ा के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसकी सजा को नहीं टालूँगा, क्योंकि उन्होंने पूरे जनसंघा को निवासिन में ले जाकर एदोम को सौंप दिया।" इसलिए मैं गाज़ा की दीवार पर आग भेजूँगा, और यह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी, और उसके गढ़ों को भस्म कर देगी।<sup>7</sup> मैं अशदोद से हर निवासी को समाप्त कर दूंगा, और अश्कलोन से राजदंड धारण करने वाले को मैं एकेन पर अपनी शक्ति भी छोड़ दूंगा, और पलिशियों का अवशेष नष्ट हो जाएगा," यहोवा परमेश्वर कहता है।

<sup>8</sup> यहोवा यों कहता है:

"सूर के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसकी सजा को नहीं टालूँगा, क्योंकि उन्होंने पूरे जनसंघा को एदोम को सौंप दिया और भाइचरों की वाच को याद नहीं किया।"<sup>9</sup> इसलिए मैं सूर की दीवार पर आग भेजूँगा, और यह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी।"

<sup>11</sup> यहोवा यों कहता है:

"एदोम के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसकी सजा को नहीं टालूँगा, क्योंकि उसने अपने भाई का पीछा तलवार से किया, और उसकी दया को दबा दिया; उसका क्रोध भी लगातार फाड़ता रहा, और उसने अपनी क्रोध को सदा बनाए रखा।"<sup>12</sup> इसलिए मैं तेमान पर आग भेजूँगा, और यह बोसा के गढ़ों को भस्म कर देगी।"

<sup>13</sup> यहोवा यों कहता है:

"अम्मोन के पुत्रों के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसकी सजा को नहीं टालूँगा, क्योंकि उन्होंने गिलाद की गर्भवती महिलाओं को फाड़ डाला ताकि अपनी सीमाओं को बढ़ा सके।"<sup>14</sup> इसलिए मैं रब्बा की दीवार पर आग लगाऊँगा, और यह उसके गढ़ों को भस्म कर देगी, युद्ध के दिन युद्ध के नारों के बीच, और तूफान के दिन के तूफान में।<sup>15</sup> उनका राजा निवासिन में जाएगा, वह और उसके राजकुमार एक साथ" यहोवा कहता है।

**२** यहोवा यों कहता है:

"मोआब के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसका दंड नहीं हटाऊँगा, क्योंकि उसने एदोम के राजा की हड्डियों को चूने में जलाया।"<sup>2</sup> "इसलिए मैं मोआब पर आग भेजूँगा, और यह केरियोत के गढ़ों को भस्म कर देगी, और मोआब घबराहट के बीच मरेगा, युद्ध के नारों और तुरही की आवाज के साथ।"<sup>3</sup> मैं उसके बीच से न्यायाधीश को भी हटा दूंगा और उसके साथ उसके सभी नेताओं को मार डालूँगा।" यहोवा कहता है।

<sup>4</sup> यहोवा यों कहता है:

"यहूदा के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसका दंड नहीं हटाऊँगा, क्योंकि उन्होंने यहोवा की व्यवस्था को ठुकरा दिया, और उसकी विधियों का पालन नहीं किया; उनकी झूठी बातें उन्हें भटका चुकी हैं, जिनका उनके पिताओं ने अनुसरण किया।"<sup>5</sup> "इसलिए मैं यहूदा पर आग भेजूँगा, और यह यरूशलेम के गढ़ों को भस्म कर देगी।"

<sup>6</sup> यहोवा यों कहता है:

## आमोस

"इस्साएल के तीन अपराधों के कारण, और चार के कारण, मैं उसका दंड नहीं हटाऊंगा, क्योंकि वे धर्मियों को पैसे के लिए बेचते हैं, और जरूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों के लिए।"<sup>7</sup> "वे जो गरीबों के सिर को धरती की धूल में रौंदते हैं और पीड़ितों को रास्ते से बाहर धकेलते हैं, एक आदमी और उसका पिता एक ही लड़की के साथ संबंध रखते हैं, ताकि मेरे पवित्र नाम का अपमान हो।"<sup>8</sup> "और वे हर वेदी के पास गिरवी रखे गए वस्त्रों पर लेटते हैं, और अपने परमेश्वर के घर में उन लोगों की शराब पीते हैं जिन पर जुर्माना लगाया गया है।"<sup>9</sup> "फिर भी यह मैं ही था जिसने एमोरी को उनके समाने नष्ट कर दिया, यद्यपि उसकी ऊँचाई देवदारों की ऊँचाई के समान थी, और वह बलूत के पेड़ों की तरह मजबूत था, मैंने उसके ऊपर के फल और नीचे की जड़ों को भी नष्ट कर दिया।"<sup>10</sup> "और यह मैं ही था जिसने तुम्हें मिस देश से ऊपर लाया, और चालीस वर्षों तक जंगल में तुम्हारा नेतृत्व किया, ताकि तुम एमोरी के देश का अधिकार ले सको।"<sup>11</sup> "तब मैंने तुम्हारे कुछ पुत्रों को नवी बनने के लिए उठाया, और तुम्हारे कुछ जवानों को नाजीर बनने के लिए। क्या यह ऐसा नहीं है, है इस्साएल के पुत्रों?" यहोवा धोषित करता है।<sup>12</sup> "लैकिन तुमने नाजीरों को शराब पीने के लिए मजबूर किया, और नवियों को आदेश दिया, कहकर 'तुम भविष्यवाणी नहीं करोगे।'"<sup>13</sup> "देखो, मैं तुम्हारे नीचे की भूमि में एक खाइ बना रहा हूँ, जैसे एक गाड़ी जब वह पूलों से भरी होती है तो खाइ बनाती है।"<sup>14</sup> "तेज़ दौड़ने वाले का बच निकलना असफल होगा, और मजबूत अपनी शक्ति को नहीं बढ़ाएगा, न ही योद्धा अपनी जान बचा सकेगा।"<sup>15</sup> "जो धनुष पकड़ता है वह अपनी जगह पर नहीं खड़ा रहेगा, तेज़ दौड़ने वाला नहीं बच सकेगा, न ही धोड़े पर सवार अपनी जान बचा सकेगा।"<sup>16</sup> "यहाँ तक कि योद्धाओं में सबसे बहादुर उस दिन नग होकर भगेगा," यहोवा धोषित करता है।

**3** हे इस्साएल के पुत्रों, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है, उस पूरे परिवार के विरुद्ध जिसे उसने मिस देश से निकाला:

<sup>2</sup> "पृथ्वी के सभी परिवारों में से केवल तुम्हें ही मैंने जाना है, इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारे सभी अपराधों के लिए दंड ढांगा।"<sup>3</sup> क्या दो लोग एक साथ चलते हैं जब तक वे मिलने के लिए सहमत न हों? <sup>4</sup> क्या जंगल में शेर बिना शिकार के गर्जता है? क्या उत्तर शेर अपनी मांद से बिना कुछ पकड़े गरजता है? <sup>5</sup> क्या कोई पक्षी बिना जाल के ज़मीन पर फ़सता है? क्या जाल बिना कुछ

पकड़े ज़मीन से उछलता है? <sup>6</sup> यदि किसी नगर में तुरही झूँकी जाए, तो क्या लोग नहीं कांपेंगे? यदि किसी नगर में विपत्ति आए, तो क्या यहोवा ने उसे नहीं लाया? <sup>7</sup> निश्चय ही प्रभु यहोवा कुछ नहीं करता जब तक वह अपनी गुप्त योजना अपने सेवकों भविष्यद्वक्ताओं को प्रकट न कर दे।<sup>8</sup> शेर ने जर्ना की है, कौन नहीं डरेगा? प्रभु यहोवा ने बोला है, कौन भविष्यवाणी करने से रुक सकता है? <sup>9</sup> अशदोद के गढ़ों पर और मिस देश के गढ़ों पर धोषणा करो, और कहो, "शमरोन के पहाड़ों पर इकट्ठा हो जाओ, और उसके भीतर की बड़ी घबराहट को देखो और उसके बीच के अत्यावारों को देखो।"<sup>10</sup> पर वे नहीं जानते कि सही कैसे करना है, यहोवा कहता है, "वे जो अपने गढ़ों में हिंसा और विनाश को संवित करते हैं।"

<sup>11</sup> इसलिए, यहोवा भगवान यह कहता है:

"एक शत्रु जो भूमि को धेरता है, तुम्हारे किलेबदी को तुमसे छीन लेगा, और तुम्हारे गढ़ लूट लिए जाएंगे।"

<sup>12</sup> यह यहोवा कहता है:

"जैसे चरवाहा शेर के मुँह से दो पैर या एक कान का टुकड़ा बचाता है, वैसे ही शमरोन में रहने वाले इस्साएल के पुत्र बचाए जाएंगे— बिस्तर के कोने और सीफे के कवर के साथ।"

<sup>13</sup> सुनो और याकूब के घराने के विरुद्ध गवाही दो, "सेनाओं के परमेश्वर यहोवा कहते हैं।"

<sup>14</sup> "जिस दिन मैं इस्साएल के अपराधों को दंड ढांगा, मैं बेतेल की देदियों को भी दंड ढांगा, वेदी के सींग काट दिए जाएंगे, और वे ज़मीन पर गिर जाएंगे।"<sup>15</sup> मैं शीतकालीन घर को श्रीष्टकालीन घर के साथ भी माऱनगा, हाथी दांत के घर भी नष्ट हो जाएंगे, और बड़े घर समाप्त हो जाएंगे, यहोवा कहता है।

**4** हे बाशान की गायों, जो सामरिया के पहाड़ पर हो, यह वचन सुनो, जो गरीबों को दबाती हो, जो जरूरतमंदों को कुचलती हो, जो अपने पतियों से कहती हो, "अब लाओ, ताकि हम पी सकें।"<sup>2</sup> प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्रता की शाश्य खाइ है, "देखो, तुम्हारे ऊपर दिन आ रहे हैं जब वे तुम्हें मासं के हुकों से ले जाएंगे, और तुम्हारे अतिम को मछली के हुकों से ले जाएंगे, और तुम्हारे अतिम को मछली के हुकों से ले जाएंगे।"<sup>3</sup> तुम दीवारों में दरारों से बाहर जा ओगी, प्रत्येक सीधी अपनी ओर, और तुम हार्मोन में फ़ेकी जा ओगी।

## आमोस

प्रभु की घोषणा है।<sup>4</sup> "बेताल में प्रवेश करो और गलत करो, गिलगाल में गलतियाँ बढ़ाओ हर सुबह अपने बलिदान लाओ, हर तीन दिन में अपनी दशमांश।"<sup>5</sup>

खमीर से भी धन्यवाद का बलिदान चढ़ाओ, और स्वैच्छिक बलिदान की घोषणा करो उहें ज्ञात करो।

क्योंकि तुम ऐसा करना पसंद करते हो, है इसाएल के पुत्रों" प्रभु परमेश्वर की घोषणा है।<sup>6</sup> "लेकिन मैंने तुहें भी तुहारे सभी नगरों में दांतों की सफाई दी, और

तुहारे सभी स्थानों में रोटी की कमी, फिर भी तुम मेरी और नहीं लौटे" प्रभु की घोषणा है।<sup>7</sup> "इसके अलावा, मैंने तुमसे वर्षा को रोका जबकि फसल के लिए अभी तीन महीने बाकी थे। तब मैं एक नगर पर वर्षा भेजता, और दूसरे नगर पर वर्षा नहीं भेजता, एक भाग पर

वर्षा होती, जबकि जिस भाग पर वर्षा नहीं होती वह सूख जाता।<sup>8</sup> इसलिए दो या तीन नगर पानी पीने के लिए दूसरे नगर में लड़खड़ाते लेकिन संतुष्ट नहीं होते

फिर भी तुम मेरी और नहीं लौटे" प्रभु की घोषणा है।<sup>9</sup> "मैंने तुम्हें ज़ुलसाने वाली हवा और फूँकूदी से मारा,

कैटरपिलर तुहारे कई बगीचों और अंगूर के बागों, अंजीर के पेड़ों और जैतून के पेड़ों को खा रहा था,

फिर भी तुम मेरी और नहीं लौटे" प्रभु की घोषणा है।<sup>10</sup>

"मैंने मिस्र की तरह तुहारे बींब महामारी भेजी, मैंने तुहारे जवानों को तलवार से मारा, तुहारे कब्जे वाले घोड़ों के साथ, और मैंने तुहारे शिविर की दुर्गथ को तुहारी नासिका में उठने दिया; फिर भी तुम मेरी और नहीं लौटे" प्रभु की घोषणा है।<sup>11</sup> "मैंने तुहें उलट दिया जैसे परमेश्वर ने सदोम और गमोरा को उलट दिया, और तुम आग से निकाले गए लकड़ी के टकड़े की तरह थे, फिर भी तुम मेरी और नहीं लौटे" प्रभु की घोषणा है।<sup>12</sup> "इसलिए मैं तुहारे साथ ऐसा करूँगा, इसाएल, क्योंकि मैं तुहारे साथ ऐसा करूँगा, अपने परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार हो जाओ, इसाएल।"

<sup>13</sup> क्योंकि देखो, वह जो पहाड़ों को बनाता है और हवा को रचता है, और व्यक्ति को उसके विचारों की घोषणा करता है, वह जो भौंकों अंधकार में बदलता है और पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलता है, सेनाओं का प्रभु परमेश्वर उसका नाम है।

**5** इस वचन को सुनो जिसे मैं तुहारे लिए एक शोकगीत के रूप में उठा रहा हूँ, इसाएल के घराने:

<sup>2</sup> "वह गिर गई है, वह फिर नहीं उठेगी— कुंवारी इसाएल। वह अपनी भूमि पर अनदेखी पड़ी है, उसे उठाने वाला कोई नहीं है।"

<sup>3</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु परमेश्वर कहता है:

"वह नगर जो एक हज़ार की ताकत के साथ बाहर जाता है उसमें सौ बचेंगे, और जो सौ की ताकत के साथ बाहर जाता है उसमें दस इसाएल के घराने के लिए बचेंगे।"

<sup>4</sup> क्योंकि यह वही है जो प्रभु इसाएल के घराने से कहता है:

"मुझे खोजो ताकि तुम जीवित रह सको।"<sup>5</sup> लेकिन बेतेल की ओर मत जाओ, और गिलगाल में मत आओ, न ही बर्बेबा को पार करो, क्योंकि गिलगाल अवश्य ही बंदीगृह में जाएगा, और बेतेल कुछ नहीं रहेगा।<sup>6</sup> प्रभु को खोजो ताकि तुम जीवित रह सको, नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग की तरह दूट पड़ेगा, और उसे कोई बुझाने वाला नहीं होगा बेतेल के लिए<sup>7</sup> जो न्याय को नागदीना बना देते हैं, और धर्म को धरती पर फेंक देते हैं।<sup>8</sup> वह जिसने ख्यालाइस और ओरियन को बनाया, और गहरे अंधकार को सुबह में बदलता है, जो दिन को रात में भी अंधकारमय करता है, जो समुद्र के जल को बुलाता है और उन्हें पृथ्वी की सतह पर उठेलता है, प्रभु उसका नाम है।<sup>9</sup> वही है जो विनाश को बलवान पर चमकाता है, ताकि विनाश किले पर आ जाए।<sup>10</sup> वे उस व्यक्ति से धृणा करते हैं जो फाटक में फटकारता है, और वे उस व्यक्ति को उच्छ समझते हैं जो सत्या से बोलता है।<sup>11</sup> इसलिए क्योंकि तुम गरीबों पर भारी किराया लगाते हो और उनसे अनाज का कर लेते हो, यद्यपि तुमने तराशे हुए पक्षरों के घर बनाए हैं, फिर भी तुम उनमें नहीं रहोगे, तुमसे सुंदर अंगूर के बाग लगाए हैं, फिर भी तुम उनकी दाढ़रस नहीं पियोगे।<sup>12</sup> क्योंकि मैं जनता हूँ कि तुहारे अपराध अनेक हैं और तुहारे पाप बड़े हैं, तुम जो धर्मियों के प्रति शतुरापूर्ण हो और रिक्षत स्वीकार करते हो, और फाटक पर गरीबों को याय से दूर कर देते हो।<sup>13</sup> इसलिए ऐसे समय में समझदार व्यक्ति तुप रहता है, क्योंकि यह बुरा समय है।<sup>14</sup> भलाई की खोज करो और बुराई की नहीं, ताकि तुम जीवित रह सको, और इसलिए सेनाओं का परमेश्वर तुहारे साथ हो सकता है, जैसा कि तुमने कहा है<sup>15</sup> बुराई से धृणा करो, भलाई से प्रेम करो, और फाटक में न्याय स्थापित करो। शायद सेनाओं का परमेश्वर यूसुफ के अवशेष पर अनुग्रह करेगा।

<sup>16</sup> इसलिए यह वही है जो सेनाओं का प्रभु परमेश्वर कहता है,

# आमोस

प्रभु कहता है। "सभी सार्वजनिक चौकों में शोक है और सभी गलियों में वे कहते हैं, 'ओह नहीं ओह नहीं' वे किसान को भी शोक के लिए बुलाते हैं और पेशेवर शोककर्ताओं को शोक की विधियों के लिए बुलाते हैं।<sup>17</sup> और सभी अंगूर के बागों में शोक है तुम्हारे बीच से होकर युजरुंगा॥" प्रभु कहता है।<sup>18</sup> तुम पर हाय जो प्रभु के दिन की ललसा करते हो प्रभु का दिन तुम्हारे लिए किस उद्देश्य से होगा? यह अंधकार होगा और प्रकाश नहीं।<sup>19</sup> जैसे जब कोई व्यक्ति शेर से भगाता है और एक भालू उससे मिलता है, या वह घर जाता है, दीवार के सहारे हाथ लगाता है और एक साँप उसे काट लेता है।<sup>20</sup> क्या प्रभु का दिन प्रकाश के बजाय अंधकार नहीं होगा, यहाँ तक कि बिना किसी चमक के धूधथापन?<sup>21</sup> मैं तुम्हारे पर्वत से धूणा करता हूँ मैं उह्नें अस्वीकार करता हूँ और मैं तुम्हारी उत्तर सभाओं में प्रसन्न नहीं होता।<sup>22</sup> यद्यपि तुम मुझे होमबलि और अनाज की भेट ढाते हो मैं उह्नें स्त्रीकर नहीं करूंगा। और मैं तुम्हारे मोटे बैलों की शांति भेटों को भी नहीं देखूंगा।<sup>23</sup> मुझसे तुम्हारे गीतों का शेर द्वारा करो: मैं तुम्हारी वीणाओं की धनि भी नहीं सुनूंगा।<sup>24</sup> परंतु न्याय को जलधारा की तरह बहने दो, और धर्म को सदेव बहने वाली धारा की तरह।<sup>25</sup> क्या तुमने जंगल में चालीस वर्षों तक मुझे बलिदान और अनाज की भेटें बढ़ाई थीं, इसाएल के घराने?<sup>26</sup> तुमने अपने राजा सिक्त और कियून्, अपनी मूर्तियों को भी साथ ले लिया तुम्हारे देवताओं का तारा जिसे तुमने अपने लिए बनाया था।<sup>27</sup> इसलिए मैं तुम्हें दमिशक से परे निर्वासन में भेज द्वागा॥ सेनाओं का परमेश्वर जिसका नाम है, प्रभु कहता है।

**6** हाय उन पर जो सियोन में निश्चिंत हैं, और जो सामरिया के पर्वत पर सुरक्षित महसूस करते हैं, उन प्रमुख राष्ट्रों के विशिष्ट पुरुषों पर, जिनके पास इसाएल का घर आता है।<sup>1</sup> कलनेह जाकर देखो और वहाँ से हमात महान तक जाओ, फिर पलाशियों के गाथ तक नीचे जाओ। क्या वे इन राज्यों से बेहतर हैं, या उनका क्षेत्रफल तुमसे बड़ा है? क्या तुम विपति के दिन को टालते हो, और हिंसा के स्थान को निकट लाना चाहते हो?<sup>2</sup> जो हाथी दाँत के पलंगों पर लेटे रहते हैं, और अपने सोफों पर आराम करते हैं और झुंड से मैमने खाते हैं, और मोटे बछड़ों के बीच से बछड़े खाते हैं,<sup>3</sup> जो वीणा की धनि पर ताल्कालिक गीत बनाते हैं, और दाऊद की तरह अपने लिए गीत रचते हैं,<sup>4</sup> जो पवित्र कटारों से दाखलमु पीते हैं, जबकि वे उत्तम तेलों से अपने को अभिषेक करते हैं, फिर भी उह्नोंने यूसुफ के पतन पर शोक नहीं किया।<sup>5</sup> इसलिए अब वे

निवासियों के प्रमुख के रूप में निर्वासन में जाएंगे, और जो आराम से रहते हैं उनकी मौज मस्ती समाप्त हो जाएगी।

**8** प्रभु परमेश्वर ने स्वयं की शपथ खाई है, सेनाओं के प्रभु परमेश्वर ने धोषणा की है:

"मैं याकूब के अंहंकार से धृणा करता हूँ और उसकी गढ़ियों से नफरत करता हूँ, इसलिए मैं नगर और उसकी सभी सामग्री को सीधे द्वंगा॥"

**9** और ऐसा होगा कि यदि एक घर में दस पुरुष बचे हैं, तो वे मर जाएंगे।<sup>10</sup> फिर किसी का चाचा, या उसका दफनाने वाला, उसे घर से उसकी हड्डियों को उठाकर बाहर ले जाएगा, और वह घर के अंदर वाले से कहेगा, "क्या तुम्हारे साथ कोई और है?" और वह कहेगा, "कोई नहीं।" तब वह उत्तर देगा, "चुप रहो! क्योंकि प्रभु के नाम का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए।"

**11** क्योंकि देखो प्रभु आदेश देने जा रहा है कि बड़ा घर टुकड़ों में तोड़ दिया जाए और छोटा घर मलबे में।

**12** क्या घोड़े चहानों पर दौड़ते हैं? या कोई उह्नें बैलों से जोतता है? फिर भी तुमने न्याय को विष में बदल दिया है, और धर्म के फल को नागदीना में,<sup>13</sup> तुम जो लो दबार में अनन्दित होते हो, और कहते हो, "क्या हमने अपनी शक्ति से करनेम को अपने लिए नहीं लिया?"<sup>14</sup> क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक राष्ट्र को उठाने जा रहा हूँ, इसाएल का घर॥ सेनाओं के प्रभु परमेश्वर की धोषणा है, "और वे हमात के प्रवेश से लेकर अराबा की धारा तक तुम्हें दबाएंगे।"

**7** यह वही है जो प्रभु परमेश्वर ने मुझे दिखाया, और देखो, वह टिङ्गियों का झुंड बना रहा था जब वसंत की फसल उगने लगी—और देखो, वसंत की फसल राजा की कटाई के बाद थी।<sup>2</sup> और ऐसा हुआ, जब उह्नोंने भूमि की वनस्पति को खाना समाप्त कर लिया, तब मैंने कहा, "हे प्रभु परमेश्वर, कृपया क्षमा करो! याकूब कैसे खड़ा रह सकता है? क्योंकि वह छोटा है!"<sup>3</sup> प्रभु ने कहा।<sup>4</sup> यह वही है जो प्रभु परमेश्वर ने मुझे दिखाया, और देखो, प्रभु परमेश्वर ने आग के द्वारा उनसे विवाद करने के लिए बुलाया, और उसने महान गहराई को भस्म कर दिया और खेत की भूमि को भस्म करने लगा।<sup>5</sup> तब मैंने कहा, "हे प्रभु परमेश्वर, कृपया रोको! याकूब कैसे खड़ा रह सकता है? क्योंकि वह छोटा है!"<sup>6</sup> प्रभु ने इस पर विचार किया। "यह भी नहीं होगा," प्रभु परमेश्वर ने कहा।<sup>7</sup> यह

## आमोस

वही है जो उसने मुझे दिखाया, और देखो, प्रभु एक खड़ी दीवार के पास खड़े थे, उनके हाथ में एक तौलनी डोरी थी।<sup>८</sup> और प्रभु ने मुझसे कहा, “तुम क्या देखते हो, आमोस?” और मैंने कहा, “एक तौलनी डोरी।” तब प्रभु ने कहा, “देखो, मैं अपनी प्रजा इसाएल के बीच में एक तौलनी डोरी रखने जा रहा हूँ। मैं उन्हें अब और नहीं बछूँगा।

<sup>९</sup> इस्हाक के ऊँचे स्थान उजाड़ हो जाएगे, और इसाएल के पवित्रस्थान छंडहर हो जाएगा। तब मैं यारोबाम के घराने के विरुद्ध तलवार उठाऊँगा।

<sup>10</sup> तब आमजियाह, बेतेल के याजक ने इसाएल के राजा यारोबाम को संदेश भेजा, “आमोस ने इसाएल के घराने के बीच आपके विरुद्ध साजिश की है, देश उसके सभी शब्दों को सहन नहीं कर सकता।<sup>11</sup> क्योंकि आमोस यह कहता है:

‘यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और इसाएल निश्चित रूप से अपनी भूमि से निवासन में जाएगा।’

<sup>12</sup> तब आमजियाह ने आमोस से कहा, “जाओ, तुम देखने वाले, यहां की भूमि में भाग जाओ, और वहाँ रोटी खाओ, और वहाँ अपनी भविष्यवाणी करो! <sup>13</sup> परन्तु बेतेल में अब और भविष्यवाणी न करो, क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और एक शाही निवास है।” <sup>14</sup> तब आमोस ने आमजियाह को उत्तर दिया, “मैं न तो नबी हूँ, न नबी का पुत्र; क्योंकि मैं एक चरवाहा और गूतर के अंजीर का उगाने वाला हूँ। <sup>15</sup> परन्तु प्रभु ने मुझे झुड़ के पीछे से लिया, और प्रभु ने मुझसे कहा, ‘मेरी प्रजा इसाएल के पास जाकर भविष्यवाणी करो।’ <sup>16</sup> इसलिए अब प्रभु का वचन सुनो: तुम कह रहे हो,

‘तुम इसाएल के विरुद्ध भविष्यवाणी न करो, और इस्हाक के घराने के विरुद्ध न बोलो।’

<sup>17</sup> इसलिए, यह वही है जो प्रभु कहता है:

‘तुम्हारी पत्नी नगर में वेश्या बनेगी, तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तलवार से गिरेंगे, तुम्हारी भूमि नापने की डोरी से बाँटी जाएगी, और तुम स्वयं अशुद्ध भूमि पर मरोगे। इसके अलावा, इसाएल निश्चित रूप से अपनी भूमि से निवासन में जाएगा।’

**८** यह वही है जो प्रभु परमेश्वर ने मुझे दिखाया, और देखो, वहाँ एक टोकरी में ग्रीष्मकालीन फल थे।<sup>२</sup> और उसने कहा, “तुम क्या देखता हो, आमोस?” और मैंने कहा, “एक टोकरी में ग्रीष्मकालीन फल।” तब प्रभु ने मुझसे कहा, “मेरे लोगों इसाएल के लिए अंत आ गया है। मैं उन्हें अब और नहीं छोड़ूँगा।<sup>३</sup> महल के गीत उस दिन विलाप में बदल जाएंगे,” प्रभु परमेश्वर की यह घोषणा है। “लाशें बहुत होंगी; हर जगह वे उन्हें चुपचाप बाहर फेंक देंगे।”

<sup>४</sup> यह सुनो, तुम जो गरीबों को कुचलते हो, देश के विनम्र लोगों का अंत करने के लिए

<sup>५</sup> कहते हुए,

“नया चाँद कब खत्त होगा, ताकि हम अनाज बेच सकें, और सब्त को हम गेहूँ का बाजार खोल सकें, एपा को छोटा और शेरेल को बड़ा करने के लिए और बैर्मान तराजू से धीखा देने के लिए<sup>६</sup> ताकि हम असहायों को पैसे के लिए खरीद सकें, और जरूरतमंदों को एक जोड़ी चपल के लिए, और हम गेहूँ की खराबी को बेच सकें?”

<sup>७</sup> प्रभु ने याकूब के गर्व की शपथ ली है, “वास्तव में, मैं उनके किसी भी कार्य को कभी नहीं भूलूँगा।

<sup>८</sup> इसके कारण, क्या भूमि नहीं कांपेगी, और उसमें रहने वाला हर व्यक्ति शोक नहीं करेगा? वास्तव में, यह सब नील की तरह उठेगा, और यह उछाला जाएगा और मिस की नील की तरह घट जाएगा।

<sup>९</sup> और उस दिन ऐसा होगा,“ प्रभु परमेश्वर की यह घोषणा है,

“कि मैं दोपहर में सूर्य को अस्त कर द्वाँगा, और दिन के उजाले में पृथ्वी को अंधेरा कर द्वाँगा।<sup>१०</sup> तब मैं तुम्हारे त्योहारों को शोक में बदल द्वाँगा, और तुम्हारे सभी गीतों को विलाप में, और मैं सबके कपर पर टाट बाँध द्वाँगा, और हर सिर पर गंजापन लाऊँगा। और मैं इसे एकमात्र पुत्र के शोक के समय की तरह बना द्वाँगा और इसका अंत एक कड़वे दिन की तरह होगा।<sup>११</sup> देखो, दिन आ रहे हैं, प्रभु परमेश्वर की यह घोषणा है, “जब मैं देश पर अकाल भेजूँगा, न रोटी का अकाल, न पानी की घास, बल्कि प्रभु के वचन सुनने के लिए।<sup>१२</sup> और लोग समुद्र से समुद्र तक डगमगाएँगे, और उत्तर

आमोस

से पूर्व तक, वे प्रभु के वचन को खोजने के लिए घूमेंगे, लेकिन वे उसे नहीं पाएँगे।

<sup>13</sup> उस दिन

सुंदर कुँवारी लड़कियाँ और जवान लोग प्यास से बेहोश हो जाएँगे।<sup>14</sup> जो सामरिया के अपराध की शपथ लेते हैं, जो कहते हैं, 'तेरे देवता की शपथ दान, और 'बेरशीबा के मार्ग की शपथ,' वे गिरेंगे और किर कभी नहीं उठेंगे।'

**9** मैंने प्रभु को वेदी के पास खड़ा देखा, और उसने कहा-

“स्तंभों के शीर्षों पर प्रहार करो ताकि चौखटें हिल  
जाएँ और उन्हें सबक सिरों पर तोड़ दो। किर मैं बाकी  
को तलवार से मार द्वागा। उनके पास कोई भगोड़ा नहीं  
होगा जो भाग सके, न ही कोई बचा दुआ जो बच सके।”  
2 चाहे वे शिंओल में गहराई तक खोदें, वहां से मेरा  
हाथ उन्हें ले लागा; और चाहे वे सर्वग पर चढ़ें, वहां से मैं  
उन्हें नीचे लाऊंगा। 3 चाहे वे कर्मल की चोटी पर छिप  
जाएँ, मैं उन्हें वहां से ढूँढ़कर ले आऊंगा; और चाहे वे  
मेरी दृष्टि से समुद्र के तल में छिप जाएँ, मैं वहां से सर्व  
को आदेश द्वागा, और वह उन्हें काटोगा।<sup>4</sup> और चाहे वे  
अपने शत्रुओं के सामने बंदी बनकर जाएँ, वहां से मैं  
तलवार को आदेश द्वागा और वह उन्हें मारेगी, और मैं  
अपनी दृष्टि उनके खिलाफ बुराई के लिए लगाऊंगा। न  
कि अच्छे के लिए।<sup>5</sup> और सेनाओं के प्रभु परमेश्वर,  
वही जो भूमि को छूता है ताकि वह काये, और उसमें  
रहने वाले सब शोक करें, और वह सब नील की तरह  
उठता है और मिस की नील की तरह घटाता है।<sup>6</sup> वही  
जो अपने ऊपरी कक्षों को सर्व में बनाता है और पृथ्वी  
पर अपनी गुप्तद को स्थापित करता है, वही जो समुद्र  
के जल को बुलाता है और उन्हें पृथ्वी के मुख पर  
उड़ेलता है, प्रभु उसका नाम है।<sup>7</sup> “क्या तुम मेरे लिए  
इयथोपिया के पुत्रों के समान नहीं हो है इसाएल के  
पुत्रों?” प्रभु कहता है। “क्या मैंने इसाएल को मिस देश  
से नहीं निकाला, और पलिशियों को कफ्तर से और  
अरामियों को कर से? देखो, प्रभु परमेश्वर की आँखें  
पापी राज्य पर हैं और मैं उसे पृथ्वी के मुख से मिटा  
द्वागा, किर भी मैं याकूब के घर को पूरी तरह से नष्ट  
नहीं करूँगा।” प्रभु कहता है।<sup>8</sup> “क्योंकि देखो, मैं  
आदेश दे रहा हूँ, और मैं इसाएल के घर को सब राष्ट्रों  
के बीच हिला द्वागा जैसे अनाज को छलनी में हिलाया  
जाता है, लेकिन कोई कंकड़ जमीन पर नहीं गिरेगा।<sup>9</sup>  
10 मैं सब लोगों के पापी तलवार से मरेंगे, जो कहते

हैं 'विपत्ति हमें नहीं पकड़ पाएगी या सामना नहीं करेगी।'

<sup>11</sup> उस दिन मैं दाऊद की गिरी हुई छावनी को उठाऊंगा,

और उसकी दारों को बंद करूँगा, मैं उसके खंडहरों को भी उठाऊँगा और उसे पुराने दिनों की तरह पुनर्विमण करूँगा;<sup>12</sup> ताकि वे एदोम के बचे हुए हिस्से पर अधिकार कर सकें और सब राष्ट्रों पर जो मेरे नाम से पुकारे जाते हैं प्रभु कहता है जो यह करता है।

<sup>13</sup> "देखो, दिन आ रहे हैं," प्रभु कहता है,

"जब हल चलाने वाला काटने वाले को पकड़ लेगा,  
और अंगूर रीढ़ने वाला बीज बोने वाले को पकड़ लेगा;  
जब पहाड़ मीठी दाखरस से टपकेंगे, और सब  
पहाड़ियाँ अलग हो जाएंगी।<sup>14</sup> मैं अपने लोगों इसाएल  
की समृद्धि को भी बहाल करूँगा, और वे उजड़े हुए  
शहरों को फिर से बनाएंगे और उनमें बसेंगे; वे दाख  
की बारिया भी लगाएंगे और उनकी दाखरस पीएंगे,  
और बाग लगाएंगे और उनके फल खाएंगे।<sup>15</sup> मैं उन्हें  
उनकी भूमि पर भी लगाऊंगा, और वे फिर कभी  
अपनी भूमि से उखाड़े नहीं जाएंगे जो मैंने उहाँ दी है।"

प्रभ तम्हारे परमेश्वर ने कहा।

## ओबद्याह

**1** ओबद्याह का दर्शन। यह वह है जो प्रभु परमेश्वर एदोम के विषय में कहता है—

हमने प्रभु से एक रिपोर्ट सुनी है, और एक द्वृत राष्ट्रों के बीच भेजा गया है यह कहते हुए "उठो, और चलो उसके खिलाफ युद्ध के लिए—<sup>2</sup> "देखो, मैं तुम्हें राष्ट्रों में छोटा बना दूंगा, तुम बहुत रुच समझे जाओगे।<sup>3</sup> तुम्हारे हृदय का अहंकार तुम्हें धोखा दे गया है, तुम जो चट्ठान की दरारों में रहते हो, अपने निवास स्थान की ऊँचाई में जो अपने हृदय में कहते हो, 'कोन मुझे पृथ्वी पर लाएगा?'<sup>4</sup> यद्यपि तुम अपना धोसला उकाब की तरह ऊँचा बनाओ, यद्यपि तुम उसे तारों के बीच स्थापित करो, वहाँ से मैं तुम्हें नीचे लाऊंगा।"<sup>5</sup> प्रभु धोषित करता है।<sup>6</sup> "यदि चोर तुम्हारे पास आए, यदि रात के लुटेरे— औह, तुम कैसे नहीं हो जाओगे— क्या वे केवल तब तक नहीं तुराएंगे जब तक कि उनके पास पर्याप्त न हो? यदि अंगूर बीनने वाले तुम्हारे पास आए क्या वे कुछ बचे हुए नहीं छोड़ेंगे? औह, कैसे एसाव की खोज की जाएगी, और उसके छिपे हुए खजाने लुटे जाएंगे? सभी लोग जो तुम्हारे साथ संधि में हैं तुम्हें सीमा तक भेज देंगे और जो लोग तुम्हारे साथ शांति में हैं वे तुम्हें धोखा देंगे और तुम पर विजय प्राप्त करेंगे। जो तुम्हारी रोटी खाते हैं वे तुम्हारे लिए घात लगाएंगे। (उसमें कोई समझ नहीं है।)<sup>8</sup> क्या मैं उस दिन, प्रभु धोषित करता है "एदोम से बुद्धिमान लोगों को समाप्त नहीं करूंगा, और एसाव के पर्वत से समझ को?"<sup>9</sup> तब तुम्हारे योद्धा भयभीत होंगे, तेमान, ताकि हर कोई समाप्त हो जाए एसाव के पर्वत से हत्या द्वारा।<sup>10</sup> तुम्हारे भाई याकूब के प्रति हिसा के कारण, लज्जा तुम्हें ढक लेगी और तुम सदा के लिए समाप्त हो जाओगे।<sup>11</sup> जिस दिन तुम अलग खड़े थे, जिस दिन अजनबियों ने उसकी संपत्ति ली, और विदेशियों ने उसके द्वारा में प्रवेश किया और यरूशलेम के लिए चिड़ियाँ डालीं— तुम भी उनमें से एक थे।<sup>12</sup> अपने भाई के दिन पर हर्षित मत हो, उसके दुर्भाग्य के दिन। और यहां के पुत्रों पर आनन्दित मत हो उनके विनाश के दिन। हाँ तुम, उनके दुःख पर हर्षित मत हो उनके आपदा के दिन। और उनकी संपत्ति को लूटो मत उनके आपदा के दिन।<sup>14</sup> चौराहे पर खड़े मत हो उनके बचे हुए को समाप्त करने के लिए, और उनके शरणार्थियों को मत सौंपो उनके संकट के दिन।<sup>15</sup> क्योंकि प्रभु का दिन निकट है सभी राष्ट्रों के लिए जैसा तुमने किया है, वैसा ही तुम्हारे साथ किया जाएगा। तुम्हारे कार्य तुम्हारे अपने सिर पर लौटेंगे।<sup>16</sup> क्योंकि

जैसे तुमने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, सभी राष्ट्र लगातार पियेंगे। वे पियेंगे और निगल जाएंगे, और ऐसे बन जाएंगे जैसे वे कभी अस्तित्व में नहीं थे।<sup>17</sup> परन्तु सियोन पर्वत पर वे होंगे जो बच जाएंगे, और यह पवित्र होगा। और याकूब का घर अधिकार करेगा उनकी संपत्तियों का।<sup>18</sup> तब याकूब का घर अग्री होगा, और यूसुफ का घर ज्वाला, परन्तु एसाव का घर भूसा होगा। और वे उन्हें आग में डाल देंगे और भस्स कर देंगे, ताकि कोई भी बचे न एसाव के घर का।<sup>19</sup> क्योंकि प्रभु ने कहा है।<sup>20</sup> तब नेतृत्व के लोग एसाव के पर्वत का अधिकार करेंगे, और शोफेला के लोग पालिस्ती मैदान का, वे इफ्रैम के क्षेत्र और सामरिया के क्षेत्र का भी अधिकार करेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का अधिकार करेगा।<sup>21</sup> और इस सेना के निवासित इसाएल के पुत्र, जो कनानियों के बीच सारफत तक हैं, और यरूशलेम के निवासित जो सेफारद में हैं नेतृत्व के नगरों का अधिकार करेंगे।<sup>22</sup> उद्धारकर्ता सियोन पर्वत पर चढ़ेंगे एसाव के पर्वत का न्याय करने के लिए और राज्य प्रभु का होगा।

# योना

**1** अमितै के पुत्र योना के पास यहोवा का यह वचन आया,

<sup>2</sup> "उठ नीनवे, उस बड़े नगर में जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर, क्योंकि उनकी दुष्टता मेरे सामने आ गई है।"

<sup>3</sup> परन्तु योना यहोवा के सामने से तरशीश को भागने के लिए उठा। वह याफा की गया, और एक जहाज पाया जो तरशीश जा रहा था। उसने किराया तुकाया और उसमें चढ़ गया ताकि वह यहोवा के सामने से तरशीश जा सके। <sup>4</sup> परन्तु यहोवा ने समुद्र पर एक बड़ी आंधी भेजी, और समुद्र पर एक बड़ा तूफान आया जिससे जहाज टूटने वाला था। <sup>5</sup> तब नाविक डर गए, और हर एक व्यक्ति अपने देवता को पुकारने लगा, और उन्होंने जहाज में जो माल था उस समुद्र में फेंक दिया ताकि वह हल्का हो सके। परन्तु योना जहाज के पृष्ठ भाग में नीचे चला गया था, लेट गया और गहरी नींद में सो गया। <sup>6</sup> तब कप्तान उसके पास आया और कहा,

"तू कैसे सो सकता है? उठ, अपने देवता को पुकारा शायद तेरा देवता हमारे बारे में चिंतित हो, ताकि हम नष्ट न हों।"

<sup>7</sup> और हर एक व्यक्ति ने अपने साथी से कहा,

"आओ, हम चिट्ठियाँ डालें ताकि हम जान सकें कि यह विपत्ति किसके कारण हम पर आई है।" सो उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं, और चिट्ठी योना पर पड़ी।

<sup>8</sup> तब उन्होंने उससे कहा,

"हमें बता, अब यह विपत्ति किसके कारण हम पर आई है? तेरा व्यवसाय क्या है, और तू कहाँ से आया है? तेरा देश क्या है, और तू किस जाति का हो?"

<sup>9</sup> उसने उनसे कहा,

"मैं एक हिक्कू हूँ, और मैं स्वर्ग के यहोवा परमेश्वर से डरता हूँ, जिसने समुद्र और सूखी भूमि बनाई।"

<sup>10</sup> तब वे लोग अत्यंत डर गए, और उन्होंने उससे कहा,

"तूने यह कैसे किया?"

क्योंकि वे लोग जानते थे कि वह यहोवा के सामने से भाग रहा था, क्योंकि उसने उन्हें बताया था। <sup>11</sup> तब उन्होंने उससे कहा,

"हम तुझसे क्या करें ताकि समुद्र हमारे लिए शांत हो जाए?"

क्योंकि समुद्र और भी अधिक तूफानी होता जा रहा था। <sup>12</sup> और उसने उनसे कहा,

"मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र तुम्हारे लिए शांत हो जाएगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे कारण यह बड़ा तूफान तुम पर आया है।"

<sup>13</sup> फिर भी, लोग जमीन पर लौटने के लिए जी-जान से खेने लगे, परन्तु वे नहीं कर सके, क्योंकि समुद्र उनके विरुद्ध और भी तूफानी होता जा रहा था। <sup>14</sup> तब उन्होंने यहोवा को पुकार कर कहा,

"हम तुझसे विनती करते हैं, हे यहोवा, इस व्यक्ति के जीवन के कारण हमें नष्ट न कर, और निर्देश रक्त का दोष हम पर न लगा, क्योंकि तू हे यहोवा, जैसा तुझे अच्छा लगा दैसा ही किया है।"

<sup>15</sup> सो उन्होंने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया, और समुद्र का क्रोध शांत हो गया। <sup>16</sup> तब वे लोग यहोवा से अस्वंत डर गए, और उन्होंने यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाया और मन्त्रों मारी। <sup>17</sup> और यहोवा ने एक बड़ी मछली को योना को निगलने के लिए नियुक्त किया, और योना तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा।

**2** तब योना ने मछली के पेट से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की,<sup>2</sup> और उसने कहा,

"मैंने अपनी संकट में यहोवा को पुकारा, और उसने मेरी सुन ली। मैंने शिओल की गहराई से सहायता के लिए पुकारा, आपने मेरी आवाज सुनी।<sup>3</sup> क्योंकि आपने मुझे गहरे में फेंक दिया, समुद्र के हृदय में, और धारा मेरे चारों और बह गई। आपकी सारी लहरें और तरों मुझ पर से गुजर गई।<sup>4</sup> तब मैंने कहा, 'मैं आपकी हाथ से बाहर कर दिया गया हूँ' किर भी, मैं आपकी पवित्र मंदिर की ओर किर से देखूँगा।<sup>5</sup> पानी ने मुझे मृत्यु के कगार तक धेर लिया। गहराई मेरे चारों और बह गई, समुद्री शैवाल मेरे सिर के चारों ओर लिपट गया।<sup>6</sup> मैं पहाड़ों की जड़ों तक उतर गया।

## योना

पृथ्वी अपने बारों के साथ हमेशा के लिए मेरे चारों ओर  
थी, लेकिन आपने मेरे जीवन को गह्रे से ऊपर उठा  
लिया, हे मेरे परमेश्वर यहोवा।<sup>7</sup> जब मैं बेहोश हो रहा  
था, मैंने यहोवा को याद किया, और मेरी प्रार्थना  
आपके पास पहुँची आपके पवित्र मंदिर में।<sup>8</sup> जो व्यर्थ  
मूर्तियों के अनुयायी हैं वे अपनी विश्वासयोग्यता को  
त्याग देते हैं<sup>9</sup> लेकिन मैं आपको बलिदान छढ़ाऊँगा  
धन्यवाद की आवाज के साथ। जो मैंने वचन दिया है  
उसे मैं पूरा करूँगा। उद्धार यहोवा से है।"

<sup>10</sup> तब यहोवा ने मछली को आज्ञा दी, और उसने योना  
को सूखी भूमि पर उगल दिया।

**3** अब यहोवा का वचन दूसरी बार योना के पास<sup>11</sup>  
आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> "उठो, नीनवे, उस महान नगर में  
जाओ, और उसे वह संदेश सुनाओ जो मैं तुम्हें बताने जा  
रहा हूँ।"<sup>3</sup> तो योना उठकर यहोवा के वचन के अनुसार  
नीनवे गया। अब नीनवे एक अत्यंत बड़ा नगर था, तीन  
दिन की यात्रा का।<sup>4</sup> फिर योना ने नगर में एक दिन की  
यात्रा शुरू की; और उसने पुकार कर कहा, "चालीस  
दिन और, नीनवे उलट दिया जाएगा।"<sup>5</sup> तब नीनवे के  
लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया; और उन्होंने उपवास  
की घोषणा की और टाट पहन लिया, उनके सबसे बड़े  
से लेकर सबसे छोटे तक।<sup>6</sup> जब यह वचन नीनवे के  
राजा तक पहुँचा, तो वह अपने सिंहासन से उठ खड़ा  
हुआ, उसने अपनी चादर उतार दी, टाट पहन लिया,  
और धूल में बैठ गया।<sup>7</sup> और उसने एक घोषणा जारी  
की, और यह कहा, "नीनवे में, राजा और उसके रईसों के  
आदेश से: कोई व्यक्ति, पशु, झुँड, या रेवड़ कुछ भी न  
चले। वे न खाएँ और न पानी पिएँ।"<sup>8</sup> परंतु प्रत्येक व्यक्ति  
और पशु टाट से ढके जाएँ, और लोग परमेश्वर को जोर  
से पुकारें, और वे अपने बुरे मार्ग से फिरें, और उनके  
हाथों में जो हिंसा है उससे भी।<sup>9</sup> कौन जानता है,  
परमेश्वर फिर सकता है और दया कर सकता है, और  
अपनी जलती हुई क्रोध से फिर सकता है ताकि हम नष्ट  
न हों।"<sup>10</sup> जब परमेश्वर ने उनके कार्य देखे, कि वे अपने  
बुरे मार्ग से फिर गए, तब परमेश्वर ने उस विपत्ति से दया  
की जो उसने उन पर लाने की घोषणा की थी। इसलिए  
उसने ऐसा नहीं किया।

**4** परंतु योना को यह बहुत बुरा लगा, और वह  
क्रोधित हो गया।<sup>2</sup> तब उसने यहोवा से प्रार्थना की और  
कहा, "हे यहोवा, क्या यह वही नहीं था जो मैंने अपने देश  
में रहते हुए कहा था? इसलिए मैंने पहले ही तरशीश को  
भागने का निर्णय किया था, क्योंकि मैं जानता था कि  
आप एक दयालु और करुणामय परमेश्वर हैं, क्रोध करने

में थीमे और दया में प्रचुर, और आप विपत्ति से पीछे  
हटने वाले हैं।<sup>3</sup> इसलिए अब, हे यहोवा, कृपया मेरा  
जीवन मुझसे ले लो, क्योंकि मेरे लिए मृत्यु जीवन से  
बेहतर है।"<sup>4</sup> परंतु यहोवा ने कहा, "क्या तुम्हारे पास  
क्रोधित होने का कोई अच्छा कारण है?"<sup>5</sup> तब योना  
नगर से बाहर चला गया और उसके पूर्व में बैठ गया।  
वहां उसने अपने लिए एक आश्रय बनाया और उसके  
नीचे छाया में बैठ गया, ताकि देख सके कि नगर में क्या  
होगा।<sup>6</sup> इसलिए यहोवा परमेश्वर ने एक पौधे को नियुक्त  
किया, और वह योना के ऊपर छाया देने के लिए उगा  
आया, ताकि उसकी असुविधा को दूर किया जा सके।  
और योना उस पौधे के कारण अल्पतं प्रसन्न हुआ।<sup>7</sup>  
परंतु परमेश्वर ने एक कीड़े को नियुक्त किया, जब  
अगले दिन भौंड हुई, और उसने पौधे पर आक्रमण किया  
और वह मुरझा गया।<sup>8</sup> और जब सूर्य उगा, परमेश्वर ने  
एक जलती हुई पूर्वी हवा को नियुक्त किया, और सूर्य  
योना के सिर पर इस प्रकार प्रहर करने लगा कि वह  
बेहोश हो गया, और उसने अपनी आमा से मरने की  
प्रार्थना की, यह कहते हुए, "मृत्यु मेरे लिए जीवन से  
बेहतर है।"<sup>9</sup> परंतु परमेश्वर ने योना से कहा, "क्या तुम्हारे  
पास पौधे के बारे में क्रोधित होने का कोई अच्छा कारण  
है?" और उसने कहा, "मेरे पास क्रोधित होने का अच्छा  
कारण है, यहां तक कि मृत्यु तक!"<sup>10</sup> तब यहोवा ने  
कहा, "तुमने उस पौधे पर दया की जिसके लिए तुमने  
कोई मेहनत नहीं की, और जिसे तुमने उगाया नहीं, जो  
रातोरात उग आया और रातोरात नष्ट हो गया।<sup>11</sup> क्या  
मूझे नीनवे, उस महान नगर पर दया नहीं करनी चाहिए,  
जिसमें 120,000 से अधिक लोग हैं जो अपने दाएं और  
बाएं हाथ के बीच का अंतर नहीं जानते, और साथ ही  
कई जानवर भी?"

## मीका

**१** यह यहोवा का वचन है जो मोरेश्वत के मीका के पास यहूदा के राजा योताम, आहाज, और हिजकियाह के दिनों में आया, जिसे उसने सामरिया और यरूशलेम के विषय में देखा।

२ हे सब लोग, सुनो धृथी और जो कुछ उसमें है, ध्यान से सुनो, और प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध साक्षी हो, अपने पवित्र महिला से प्रभु<sup>३</sup> क्योंकि देखो, प्रभु अपनी जगह से बाहर आ रहा है। वह नीचे आएगा और पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलेगा।<sup>४</sup> पहाड़ उसके नीचे पिघल जाएगे, और घाटियाँ आग के सामने गोम की तरह फट जाएगी। जिसे पानी ढालन पर बहात है।<sup>५</sup> यह सब याकूब के अपराधों के कारण है और इसाएल के घराने के पापों के कारण। याकूब का अपराध क्या है? क्या वह सामरिया नहीं है? यहूदा का ऊँचा स्थान क्या है? क्या वह यरूशलेम नहीं है?<sup>६</sup> इसलिए मैं सामरिया को खुले मैदान में खंडहरों का ढेर बना द्वांगा दाख की बारी के लिए स्थान। और मैं उसके पापों को घाटी में फेंक द्वांग, और उसकी नींव को उजाड़ द्वांग।<sup>७</sup> उसकी सभी मूर्तियाँ तोड़ी जाएंगी, उसकी सारी कमाई आग में जला दी जाएगी, और उसकी सभी प्रतिमाएँ मैं वीरान कर द्वांग। क्योंकि उसने उन्हें वेश्या की कमाई से इकट्ठा किया, और वे वेश्या की कमाई में लौट जाएंगी।<sup>८</sup> इस कारण मुझे शोक करना और विलाप करना पड़ेगा, मुझे सियारों की तरह शोक करना पड़ेगा, और शुतुरमुग्गों की तरह विलाप करना पड़ेगा।<sup>९</sup> क्योंकि उसकी चोटें लाइलाज हैं, क्योंकि यह यहूदा तक पहुँच गई है, यह मेरे लोगों के द्वार तक पहुँच गई है, यहाँ तक कि यरूशलेम तक।<sup>१०</sup> गथ में इसका उल्लेख न करो, बिल्कुल भी मत रोओ। बेथ-ले-अफ्राह में धूल में लौटो।<sup>११</sup> अपने रास्ते पर जाओ, शाफीर के निवासी, शर्मनाक नग्रता में। जाआनान का निवासी नहीं बचता। बेथ-एज्जेल का शोक: "वह तुम्हारा सहारा तुमसे ले लेगा।"<sup>१२</sup> क्योंकि मारोथ का निवासी अच्छे की प्रतीक्षा करता है, परन्तु विपत्ति प्रभु से यरूशलेम के द्वार तक आ गई है।<sup>१३</sup> धोड़ों की जोड़ी को रथ में जीतो हे लाकीश के निवासी— वह पाप का आरंभ था सियोन की बेटी के लिए— क्योंकि तुम मैं इसाएल के विद्रोही कार्य पाए गए।<sup>१४</sup> इसलिए तुम विदाइ उपहार दोगे मोरेश्वत-गथ के लिए अखजीब के घर इसाएल के राजाओं के लिए धोखा बन जाएंगे।<sup>१५</sup> इसके अलावा, मैं तुम पर लाऊँगा जो अधिकार लेता है, हे मरेश के निवासी। इसाएल की महिमा अदुल्लाम में प्रवेश करेगी।<sup>१६</sup> अपने सिर को गंजा कर लो, अपने बाल काट लो, अपनी प्रिय संतानों के लिए अपने गंजेपन

को गरुड़ की तरह बढ़ाओ, क्योंकि वे तुमसे निवासिन में चले जाएंगे।

**२** हाय उन पर जो बुराई की योजना बनाते हैं, जो अपने बिस्तरों पर बुराई का अभ्यास करते हैं। जब सुबह होती है वे इसे करते हैं क्योंकि यह उनके हाथों की शक्ति में है।<sup>१</sup> वे खेतों की लालासा करते हैं और फिर उन्हें छिन लेते हैं, और घरों को, और उन्हें ले लेते हैं, वे एक आदमी और उसके घर का शोषण करते हैं, एक व्यक्ति और उसकी विरासत का।<sup>२</sup> इसलिए यह वही है जो प्रभु कहता है: "देखो, मैं इस परिवार के खिलाफ एक आपदा की योजना बना रहा हूँ" जिससे आप अपनी गर्दनें नहीं हटा सकते और आप घमंड के साथ नहीं चलेंगे, क्योंकि यह एक बुरा समय होगा।<sup>३</sup> उस दिन वे आपके खिलाफ एक उपहास का गीत उठाएंगे और शोक का एक गीत कहेंगे, हम पूरी तरह से नष्ट हो गए हैं। वह मेरे लोगों के हिस्से का आदान-प्रदान करता है, वह इसे मुझसे कैसे हटा देता है। वह हमारे खेतों को विद्रोही को बांटता है।<sup>४</sup> इसलिए आपके पास कोई नहीं होगा जो भूमि को लौट द्वारा बांटे प्रभु की सभा में।<sup>५</sup> 'भविष्यवाणी मत करो' वे भविष्यवाणी करते हैं। लोकिन अगर वे इन चीजों के बारे में भविष्यवाणी नहीं करते अपमान वापस नहीं लौटाएगा।<sup>६</sup> क्या यह कहा जा रहा है, याकूब के घर "क्या प्रभु की आत्मा अधीर है? क्या ये उसके कार्य हैं?" क्या मेरे शब्द अच्छा नहीं करते उसके लिए जो सही चलता है?<sup>७</sup> हाल ही में मेरे लोग एक दुश्मन के रूप में उठे हैं— आप बस्त से चोगा उतार लेते हैं अनजान राहगीरों से युद्ध से लौटे लोगों से।<sup>८</sup> आप मेरे लोगों की महिलाओं को उनके सुखद धरों से निकाल देते हैं। उनके बच्चों से आप मेरी शोभा लेते हैं हमेशा के लिए।<sup>९</sup> उठो और जाओ, क्योंकि यह विश्राम का स्थान नहीं है उस अशुद्धता के कारण जो विनाश लाती है, एक दर्दनाक विनाश।<sup>१०</sup> यदि कोई हवा और झूठ के पीछे चलकर झूठ बोलता और कहता "मैं तुम्हें शराब और मदिरा के बारे में भविष्यवाणी करूँगा," वह इस लोगों के लिए एक भविष्यवक्ता बन जाएगा।<sup>११</sup> मैं निश्चित रूप से तुम सबको इकट्ठा करूँगा, याकूब, मैं निश्चित रूप से इसाएल के अवशेष को इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें बड़े मैं भेड़ों की तरह इकट्ठा करूँगा, उनके चरागाह के बीच में झुंड की तरह वे लोगों से शोरायुल करेंगे।<sup>१२</sup> जो तोड़ता है वह उनके सामने ऊपर जाता है, वे तोड़ते हैं, फाटक से गुजरते हैं, और उससे बाहर जाते हैं। इसलिए उनका राजा उनके सामने से गुजरता है, और प्रभु उनके सिर पर।

## मीका

**३** और मैंने कहा, "अब सुनो, हे याकूब के प्रापुखों, और इसाएल के घराने के शासकों। क्या तुम्हारे लिए न्याय को जानना उचित नहीं है? तुम जो भलाई से धृणा करते हो और बुराई से प्रेम करते हो जो उनकी खाल को उनसे उतार लेते हो और उनकी हड्डियों से उनका मांस छीन लेते हों<sup>३</sup> जो मेरी प्रजा का मांस खाते हैं, उनकी खाल उनसे उतार लेते हैं। उनकी हड्डियों को कुचल देते हैं, और उन्हें बर्तन के लिए काट देते हैं और कड़ाही में मांस की तरह डाल देते हैं।"<sup>४</sup> तब वे यहोवा की ओर पुकारेंगे, परन्तु वह उन्हें उत्तर नहीं देगा। बल्कि, वह उस समय उनसे अपना मुख छिपा लेगा क्योंकि उन्होंने बुरे कर्म किए हैं।<sup>५</sup> यहोवा उन भविष्यवक्ताओं के विषय में यह कहता है जो मेरी प्रजा को भटकाते हैं: जब उनके पास खाने के लिए कुछ होता है, वे कहते हैं "शांति" परन्तु जो उनके मुंह में कुछ नहीं डालता, उसके विरुद्ध वे पवित्र युद्ध की धृषणा करते हैं।<sup>६</sup> इसलिए तुम्हारे लिए रात होगी— दृष्टि के बिना, और तुम्हारे लिए अंधकार होगा— भविष्यवाणी के बिना। सूरज भविष्यवक्ताओं पर अस्त होगा, और दिन उनके ऊपर अंधकारमय हो जाएगा।

<sup>७</sup> देखने वाले लजित होंगे, और भविष्यवक्ता लजित होंगे। वास्तव में, वे सब अपने मुंह ढक लेंगे क्योंकि परमेश्वर से कोई उत्तर नहीं है।<sup>८</sup> दूसरी ओर मैं शक्ति से परिपूर्ण हूँ— यहोवा की आत्मा से— और न्याय और साहस से याकूब को उसकी गलतियों का ऐलान करने के लिए और इसाएल को उसके पाप का।<sup>९</sup> अब सुनो, हे याकूब के घराने के प्रमुखों और इसाएल के घराने के शासकों, जो न्याय से धृणा करते हैं और जो कुछ सीधा है उसे मरोड़ते हैं।<sup>१०</sup> जो सिय्योन को रक्तपात से बनाते हैं और यरूशलेम को दुष्टा से।<sup>११</sup> उसके नेता रिक्ष्ट के लिए न्याय करते हैं, उसके याजक वेतन के लिए शिक्षा देते हैं, और उसके भविष्यवक्ता पैसे के लिए भविष्यवाणी करते हैं। फिर भी वे यहोवा पर निर्भर रहते हैं, कहते हैं "क्या यहोवा हमारे बीच नहीं है? विष्टि हम पर नहीं आएगी!"<sup>१२</sup> इसलिए, तुम्हारे कारण सिय्योन खेत की तरह जोता जाएगा, यरूशलेम खंडहरों का देर बन जाएगा, और मानिर का पर्वत जंगल के ऊँचे स्थानों के समान हो जाएगा।

**४** और यह अंतिम दिनों में होगा

कि यहोवा के घर का पर्वत पहाड़ों के प्रधान के रूप में स्थापित होगा। यह पहाड़ियों से ऊपर उठेगा, और लोग उसकी ओर बहेंगे।

<sup>२</sup> और कई राष्ट्र आएंगे और कहेंगे,

"आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़ें और याकूब के परमेश्वर के घर में जाएं, ताकि वह हमें अपनी राहों के बारे में सिखाए, और हम उसकी पथों में चलें।"<sup>३</sup> क्योंकि सिय्योन से व्यवस्था निकलेगी, और यरूशलेम से यहोवा का वचन।<sup>४</sup> और वह कई लोगों के बीच न्याय करेगा और शक्तिशाली दूरस्थ राष्ट्रों के लिए निर्णय देगा। तब वे अपनी तलवरों को हल के फाल में बदल देंगे, और अपने भालों को छंटाई के हुक में राष्ट्र राष्ट्र के खिलाफ तरवार नहीं उताएगा, और फिर कभी युद्ध के लिए प्रशिक्षण नहीं लेंगे।<sup>५</sup> बल्कि, वे में से प्रत्येक अपनी बैल के नीचे बैठेगा और अपनी अंजीर के पेड़ के नीचे, बिना किरी के जो उन्हें डराए, क्योंकि सेनाओं के यहोवा के मुख ने यह कहा है।<sup>६</sup> यद्यपि सभी लोग चलते हैं, प्रत्येक अपने देवता के नाम में हमारे लिए हम चलेंगे, परमेश्वर यहोवा के नाम में सदा सर्वदा।

६ "उस दिन," यहोवा कहता है,

"मैं लंगड़ाने वालों को इकट्ठा करूँगा और बिखरे हुए को इकट्ठा करूँगा, जिन्हें मैंने पीड़ित किया है।"<sup>७</sup> मैं लंगड़ाने वालों को एक अवशेष बनाऊँगा, और जो भटके हैं उन्हें एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाऊँगा, और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत पर राज्य करेगा अब से और सदा के लिए।<sup>८</sup> तुम्हारे लिए, झुंड की मीनार, सिय्योन की बेटी की पीड़ा, तुम्हारे पास आएगा— हाँ, पूर्व का राज्य आएगा, यरूशलेम की बेटी का राज्य।<sup>९</sup> अब, तुम जोर से क्यों रोते हो? क्या तुम्हारे बीच कोई राजा नहीं है, क्या तुम्हारा सलाहकार मर गया है, कि पीड़ा ने तुम्हें प्रसव की पीड़ा की तरह पकड़ लिया है?<sup>१०</sup> मरो और चिल्लाओ, सिय्योन की बेटी, प्रसव की पीड़ा की तरह, क्योंकि अब तुम नगर से बाहर जाओगे, मैदान में रहो, और बाबुल जाओ। वहाँ तुम बचाए जाओगे, वहाँ यहोवा तुम्हें छुड़ाएगा तुम्हारे शरुओं के हाथ से।<sup>११</sup> और अब कई राष्ट्र तुम्हारे खिलाफ इकट्ठे हुए हैं जो कहते हैं, "उसे अपवित्र होने दो, और हमारी आँखें सिय्योन पर गर्व करो।"<sup>१२</sup> लेकिन वे यहोवा के विचार नहीं जानते, और वे उसकी योजना को नहीं समझते, क्योंकि उसने उन्हें खलिहान के लिए गढ़ों की तरह इकट्ठा किया है।<sup>१३</sup> उठो और गहाई करो, सिय्योन की बटी, क्योंकि मैं तुम्हारे सींग को लाहे का बनाऊँगा, और मैं तुम्हारे खुरों को कांस्य का बनाऊँगा, ताकि तुम कई लोगों को चूर कर सको, और उनके अन्यायपूर्ण लाभ को यहोवा को समर्पित करो, और उनकी संपत्ति को पूरे पृथ्वी के यहोवा को।

## मीका

**5** अब, हे सेनाओं की पुनी, अपने आप को सेनाओं में इकट्ठा करो; उन्होंने हमारे विरुद्ध घेरा डाल दिया है; वे इसाएल के न्यायाधीश को छँड़ी से गाल पर मारें।

<sup>2</sup> "परन्तु हे बेतलेहम एप्राथा यहोवा के कुलों में से बहुत छोटा, तुझ में से एक मेरे लिए इसाएल में शासन करने के लिए आएगा। उसके आने के समय बहुत पहले से हैं, अनादि काल के दिनों से।"<sup>3</sup> इसलिए वह उन्हें तब तक छोड़ देगा जब तक कि वह जो प्रसव में है, जन्म न दे। तब उसके बचे हुए भाई इसाएल के पुत्रों के पास लौट आएंगे।<sup>4</sup> और वह उठाया और अपने झूँड की चरवाही करेगा यहोवा की शक्ति में अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा में। और वे बने रहेंगे,

व्योकि उस समय वह महान होगा पृथ्वी के छोर तक।<sup>5</sup> और वही हमारी शासि होगा। जब अश्वर हमारे देश पर आक्रमण करेगा, जब वह हमारे गढ़ों को रैंदेगा, तब हम उसके विरुद्ध उठाएंगे सात चरवाहे और आठ लोगों के नेता।<sup>6</sup> और वे अश्वर के देश की तलवार से चरवाही करेंगे, नियोद के देश के प्रवेश द्वारों पर, और वह हमें अश्वर से बचाएंगा जब वह हमारे देश पर आक्रमण करेगा और हमारे क्षेत्र को रैंदेगा।<sup>7</sup> तब याकूब का अवशेष बहुत से लोगों के बीच होगा यहोवा की ओस के समान, बनस्पति पर वर्षा के समान जो मनुष्य की प्रतीक्षा नहीं करती और न ही मानवजाति के लिए विलंब करती है।<sup>8</sup> याकूब का अवशेष जातियों के बीच होगा, बहुत से लोगों के बीच जगल के जानवरों के बीच सिंह के समान, भेड़ों के झूँड के बीच जगन सिंह के समान जो, यदि वह गुजरता है, रैंदता और फाढ़ता है, और कोई बचाने वाला नहीं होता।<sup>9</sup> तुम्हारा हाथ तुम्हारे विरोधियों के विरुद्ध उठा रहेगा, और तुम्हारे सभी शत्रु नष्ट हो जाएंगे।

<sup>10</sup> "और उस दिन ऐसा होगा," यहोवा की घोषणा है,

"कि मैं तुम्हारे बीच से तुम्हारे घोड़ों को नष्ट कर द्वांगा और तुम्हारे खोंकों को नष्ट कर द्वांगा।<sup>11</sup> मैं तुम्हारे देश के नगरों को भी नष्ट कर द्वांगा और तुम्हारे सभी गढ़ों को गिरा द्वांगा।<sup>12</sup> मैं तुम्हारे हाथ से जादू टोना नष्ट कर द्वांगा, और तुम्हारे पास कोई भविष्यतवक्ता नहीं रहेगा।<sup>13</sup> मैं तुम्हारी खुटी हुई मूर्तियों को और तुम्हारे स्यारक पश्चरों को तुम्हारे बीच से नष्ट कर द्वांगा, ताकि तुम अब और अपने हाथों के काम के आगे न झुको।<sup>14</sup> मैं तुम्हारे बीच से तुम्हारे अशेरीम को उखाड़ द्वांगा और तुम्हारे नगरों को नष्ट कर द्वांगा।<sup>15</sup> और मैं क्रोध और रोष में उन जातियों पर प्रतिशोध लूंगा जिन्होंने आज्ञा नहीं मानी।"

**6** अब सुनो कि प्रभु क्या कह रहा है:

"उठो, अपना मामला पहाड़ों के सामने रखो, और पहाड़ियों को अपनी आवाज सुनाओ।"<sup>2</sup> "सुनो हे पहाड़ों, प्रभु के अभियोग को, और पृथ्वी की स्थायी नींव, व्योकि प्रभु का अपने लोगों के खिलाफ मामला है, और वह इसाएल के साथ विवाद करेगा।"<sup>3</sup> "मेरे लोगों, मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है, और मैंने तुम्हें कैसे बदला है? मुझे उत्तर दो।"<sup>4</sup> "वास्तव में, मैंने तुम्हें मिसिं देश से ऊपर उठाया, मैंने तुम्हें दसता के घर से छुड़ाया, और मैंने तुम्हारे आगे पूसा, हारनून, और मरियम को भेजा।"<sup>5</sup> "मेरे लोगों, अब याद करो कि मोआब के राजा बालाक ने क्या योजना बनाई, और ओर का पुत्र बिलाम ने उसे क्या उत्तर दिया, और शितिम से गिलगाल तक क्या हुआ, ताकि तुम प्रभु के धर्ममय कार्यों को जान सको।"<sup>6</sup> "मैं प्रभु के पास किसके साथ आऊं और उच्च परमेश्वर के सामने झुकूं? क्या मैं उसके पास होमगलियों के साथ आऊं, एक वर्ष के बछड़ों के साथ?"<sup>7</sup> "क्या प्रभु हजारों में से प्रसन्न होता है, दस हजार तेल की नदियों में क्या मैं अपनी पहली संतान को अपनी गलतियों के लिए ढूँ अपनी आत्मा के पाप के लिए अपने शरीर का फल?"<sup>8</sup> "उसने तुम्हें बताया है, हे मनुष्य, कि क्या अच्छा है, और प्रभु तुमसे क्या चाहता है सिवाय न्याय करने के, दया से प्रेम करने के, और अपने परमेश्वर के साथ नग्राता से चलने के?"<sup>9</sup> "प्रभु की आवाज नगर को पुकारें— और तुम्हारे नाम का भय मानना समझदारी है।" सुनो हे गत्र। किसने इसके समय को निधरित किया है?<sup>10</sup> "क्या अब भी दुश्ष घर में कोई व्यक्ति है, दृष्टाने के खजाने के साथ, और एक छोटा माप जो शापित है?"<sup>11</sup> "क्या मैं बैरेमान तराजू को सही ठहरा सकता हूँ, और धोखेबाज वजन की धेतौं को?"<sup>12</sup> "क्योंकि नगर के धनी लोग हिंगा से भरे हैं, उसके निवासी झूँट बोलते हैं, और उनकी जीभ उनके मुँह में धोखेबाज है!"<sup>13</sup> "इसलिए मैं तुम्हें बीमार कर द्वांगा, तुम्हें मारकर गिरा द्वांगा, तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें उजाड़ बना द्वांगा।"<sup>14</sup> "तुम खाओगे, पर संतुल नहीं होगे, और तुम्हारी गंदगी तुम्हारे बीच में होगी। तुम कीमती चीजों को सुरक्षित रखने की कोशिश करोगे, पर तुम सब कुछ नहीं बचा पाओगे, और जो तुम बचाओगे, उसे मैं तलवार को सौंप द्वांगा।"<sup>15</sup> "तुम बोअंगे, पर फसल नहीं काटोगे। तुम जैतून का तेल निकालोगे, पर अपने आप को तेल से अधिक नहीं करोगे, और अंगूर रैंदोगे, पर दाखमु नहीं पियोगे।"<sup>16</sup> "ओपी की विधियाँ और अहाब के घर के हर काम का पालन किया जाता है, और तुम उनकी योजनाओं

## मीका

पर चलते हो। इसलिए मैं तुम्हें विनाश के लिए छोड़ द्वागा, और तुम्हारे निवासियों को उपहास के लिए, और तुम मेरे लोगों की ताने सहोगे।<sup>1</sup>

**7** हाय मुझ परा क्योंकि मैं ग्रीष्म ऋतु के फलों की कटाई के समान हूँ अंगूर की फसल के अवशेषों के समान खाने के लिए अंगूर का गुच्छा नहीं है, और न ही एक पका दुआ अंजीर जिसे मैं चाहता हूँ।<sup>2</sup> भक्त व्यक्ति देश से नहीं हो गया है, और मनुष्यों में कोई भी सीधी नहीं है। वे सभी खून बहाने की ताक में रहते हैं, प्रत्येक अपने साथी का जाल से शिकार करता है।<sup>3</sup> बुराई के लिए दोनों हाथ इसे अच्छी तरह से करते हैं। नेता रिश्वत मांगता है, न्यायाधीश भी, और महान व्यक्ति अपनी आत्मा की इच्छा व्यक्त करता है— इस प्रकार वे इसे मिलकर रखते हैं।<sup>4</sup> उनमें से सबसे अच्छा कांटेदार झाड़ी के समान है, सबसे सीधा कांटेदार बाढ़ के समान है। जिस दिन आप अपने पहरदारों को नियुक्त करते हैं, आपका दंड आ रहा है। तब उनकी उलझन होगी। पड़ोसी पर विश्वास न करो, करीबी मिस्र पर भरोसा न करो। अपने मुँह के द्वारों की रक्षा करो उससे जो तुम्हारी बाहों में लेटी है।

<sup>5</sup> क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता है, बटी अपनी माँ के विरुद्ध उठ खड़ी होती है, बह अपनी सास के विरुद्ध, व्यक्ति के शत्रु उसके अपने घर के लोग होते हैं।<sup>6</sup> परन्तु मैं, मैं प्राप्त की प्रतीक्षा करूँगा, मैं अपने उद्धार के परमेश्वर की प्रतीक्षा करूँगा। मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।<sup>7</sup> मुझ पर हर्षित मत हो, मेरे शत्रु। यद्यपि मैं गिर जाऊँ, मैं उट्ठाऊँ, यद्यपि मैं अंधकार में रहूँ, प्रभु मेरे लिए प्रकाश है।<sup>8</sup> मैं प्रभु के क्रोध को सहृंगा

क्योंकि मैंने उसके विरुद्ध धारप किया है, जब तक वह मेरा मामला नहीं सुनता और मेरे लिए न्याय नहीं करता। वह मुझे प्रकाश में लाएगा, और मैं उसकी धर्मिकता को देखूँगा।<sup>10</sup> तब मेरा शत्रु देखेगा, और लज्जा उसे ढकेगी जिसने मुझसे कहा, "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?" मेरी आँखें उसे देखेंगी; उस समय वह सड़कों की कीचड़ के समान रौदी जाएगी।<sup>11</sup> यह तुम्हारी दीवारों के निमणि का दिन होगा। उस दिन तुम्हारी सीमा विस्तृत होगी।<sup>12</sup> यह वह दिन होगा जब लोग तुम्हारे पास आएंगे अशूर और मिस्र के नगरों से, मिस से लेकर यूफ्रेट्स तक, समुद्र से समुद्र तक और पर्वत से पर्वत तक।<sup>13</sup> और धूर्वी उसके निवासियों के कारण उजाड़ हो जाएगी, उनके कर्मों के फल के कारण।<sup>14</sup> अपनी छड़ी से अपनी प्रजा की चराहाई करो, अपनी संपत्ति की भेड़ बकरियों की जो अकेले जंगल में रहती हैं, एक उपजाऊ क्षेत्र के बीच में। उन्हें बाशान और गिलाद में चरने दो जैसे पुराने दिनों में।<sup>15</sup>

जैसे उन दिनों में जब तुम मिस देश से निकले थे, मैं तुम्हें चमलकार दिखाऊंगा।<sup>16</sup> राष्ट्र देखेंगे और लजित होंगे अपनी सारी शक्ति के कारण। वे अपने मुँह पर हाथ रखेंगे, उनके कान बहारे हो जाएंगे।<sup>17</sup> वे साँप की तरह धूल चारेंगे पृथ्वी के सरीसुपों की तरह। वे अपने किलों से कांपते हुए बाहर आएंगे, हमारे परमेश्वर यहोगा के पास वे डरते हुए आएंगे, और वे तुमसे डरेंगे।<sup>18</sup> कौन है तुम्हारे जैसा परमेश्वर, जो अपराधों के क्षमा करता है और अपनी संपत्ति के अवशेष के विद्रोही कार्य को छोड़ देता है? वह अपना क्रोध सदा के लिए नहीं रखता, क्योंकि वह दया में प्रसन्न होता है।<sup>19</sup> वह फिर से हम पर दया करेगा, वह हमारे अपराधों को पैरों तले रौदेगा। हाँ, तुम उनके सभी पापों को समुद्र की गहराइयों में डाल दोगे।<sup>20</sup> तुम याकूब को सत्य दोगे और अब्राहम को अनुग्रह, जो तुमने हमारे पूर्वजों से पुराने दिनों में शपथ खाई थी।

## नहम

**१** निनवेह का उद्घोष। नहम एलकोषी की दृष्टि की पुस्तक।

<sup>२</sup> यहोवा एक जलनशील और प्रतिशोथ लेने वाला परमेश्वर है, यहोवा प्रतिशोथ लेने वाला और क्रोधी है। यहोवा अपने विरोधियों से प्रतिशोथ लेता है, और वह अपने शत्रुओं के लिए क्रोध को संचित रखता है।<sup>३</sup> यहोवा क्रोध में श्रीमा और सामर्थ में महान है, और यहोवा दोषियों को किसी भी प्रकार से निर्दोष नहीं छोड़ेगा। औंधी और टूफान में उसकी राह है, और बादल उसके पैरों के नीचे की धूल है।<sup>४</sup> वह समुद्र को डॉटता है और उसे सुखा देता है, वह सभी नदियों को सुखा देता है। बाशन और कर्मल मुरझा जाते हैं, लेबनान के फूल मुरझा जाते हैं।<sup>५</sup> पहाड़ उसके कारण कांपते हैं, और पहाड़ियाँ टूट जाती हैं। वास्तव में यूथी उसकी उपस्थिति से हिल जाती है, संसार और उसके सभी निवासी।<sup>६</sup> कौन उसके क्रोध के सामने खड़ा हो सकता है? कौन उसके जलते क्रोध को सह सकता है? उसका क्रोध आग की तरह बहता है, और चट्ठानें उसके द्वारा टूट जाती हैं।<sup>७</sup> यहोवा अच्छा है, संकट के दिन में एक दृढ़ गद्द, और वह उन्हें जानता है जो उसमें शरण लेते हैं।<sup>८</sup> लेकिन एक बाढ़ के साथ वह उसकी जगह का पूरा अंत कर देगा, और अपने शत्रुओं को अंधकार में धकेल देगा।<sup>९</sup> जो कुछ भी तुम यहोवा के विरुद्ध योजना बनाते हो, वह उसका पूरा अंत कर देगा। संकट दोबारा नहीं उठेगा।<sup>१०</sup> उलझे हुए कांठों की तरह, और जैसे जो जो अपने पेय से मदहोश होते हैं, वे भ्रम हो जाते हैं जैसे पूरी तरह से सूखी हुई भूसी।<sup>११</sup> तुमसे निकला है एक जो यहोवा के विरुद्ध बुराई की योजना बनाता है, एक दुष्ट सलाहकार।

<sup>१२</sup> यहोवा यह कहता है:

"यद्यपि वे पूरी ताकत में हैं और वे बहुत हैं, किर भी, वे काट दिए जाएंगे और चले जाएंगे। यद्यपि मैंने तुम्हें पीड़ा दी है, मैं अब तुम्हें और नहीं पीड़ा द्वंगा।"<sup>१३</sup> इसलिए अब, मैं उसका जुआ तुमसे तोड़ द्वंगा, और तुम्हारे बंधनों को फाड़ द्वंगा।<sup>१४</sup> यहोवा ने तुम्हारे बारे में एक आज्ञा जारी की है: "तुम्हारा नाम अब और नहीं चलेगा। मैं तुम्हारे देवताओं के घर से तराशी हुई मूर्ति और ढली हुई धतु की मूर्ति को हटा द्वंगा। मैं तुम्हारी कब्र तैयार करूंगा, क्योंकि तुम तुम्हें हो।"<sup>१५</sup> देखो, पहाड़ों पर उसके पैर जो शुभ समाचार लाता है, जो शांति की धोषणा करता है। अपने पर्य मनाओ, यहोवा, अपनी मन्त्रते पूरी करो। क्योंकि दुष्ट अब किर कभी

तुम्हारे बीच से नहीं गुजरेगा, वह पूरी तरह से समाप्त हो गया है।

**२** जो तिनर-बितर करता है, वह तेरे विरुद्ध आ गया है। गढ़ की रक्षा कर, मार्ग की चौकसी कर, अपनी कमर कस, अपनी सारी शक्ति जुटा।<sup>२</sup> क्योंकि यहोवा याकूब की शोभा को इसाएल की शोभा के समान बहाल करेगा, यद्यपि नाश करने वालों ने उर्हे उजाड़ दिया है और उनकी दाखलताओं को नष्ट कर दिया है।

<sup>३</sup> उसके योद्धाओं की ढालें लाल रंग में रंगी हुई हैं, योद्धा लाल वस्त धनने हुए हैं, रथों को चमकदार इस्पात से सजाया गया है जब वह चलने के लिए तैयार होता है, और देवदार के भाले लहराए जाते हैं।<sup>४</sup> रथ सड़कों पर पागलों की तरह दौड़ते हैं, वे साराजनिक चौकों में तेजी से भागते हैं, उनका रूप मशालों जैसा है, वे बिजली की चमक की तरह इधर-उधर दौड़ते हैं।

<sup>५</sup> वह अपने रईसों को याद करता है, वे अपनी चाल में ठोकर खाते हैं, वे उसकी दीवार की ओर जल्दी करते हैं, और ढाल तैयार की जाती है।<sup>६</sup> नदियों के द्वारा खोते गए हैं, और महल दिलता है।<sup>७</sup> यह तय हो गया है, वह नम्र कर दी गई है, उसे ले जाया गया है, और उसकी दासियाँ कूबूतरों की आवाज़ की तरह कराह रही हैं, अपनी छातियों को पीट रही हैं।<sup>८</sup> यद्यपि नीनवे अपने दिनों में जलाशय के समान थी अब वे भाग रहे हैं।

"रुको, रुको," पर कोई वापस नहीं मुड़ता।<sup>९</sup> चांदी तूटे, सोना लूटो, क्योंकि खाजों का कोई अंत नहीं है— हर प्रकार की मनोहर वस्तुओं से संपत्ति।<sup>१०</sup> वह खाली हो गई है, हाँ वह उजाड़ और बबदि हो गई है। दिल पिघल रहे हैं और धूटने कांप रहे हैं, सभी कमरों कांप रही हैं, सभी चेहरे पीले पड़ गए हैं।<sup>११</sup> सिंहों की मांद कहाँ है और युवा सिंहों का चरागाह, जहाँ सिंह, सिंहनी, और सिंह के बच्चे धूपते थे, बिना किसी के उर्हे परेशन किए? <sup>१२</sup> सिंह ने अपने बच्चों के लिए पर्याप्त फट्टा, अपनी सिंहनियों के लिए पर्याप्त मारा, और अपने मांदों को शिकार से भर दिया और अपनी युगाओं को फाड़ हुए मांस से भर दिया।<sup>१३</sup> "देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ," सेनाओं के यहोवा की यह धोषणा है। "मैं उसके रथों को धूरे में जला द्वंगा, एक तलवार तुम्हारे युवा सिंहों को निगल जाएगी; मैं तुम्हारे शिकार को देश से समाप्त कर द्वंगा, और अब तुम्हारे दूतों की आवाज नहीं सुनी जाएगी।"

**३** हाय उस खूनी नगर पर, जो पूरी तरह से झूठ और लूट से भरा है, उसका शिकार कभी नहीं छोड़ता।<sup>२</sup> कोड़े की आवाज, पहिये की गजना की आवाज, दौड़ते हुए घोड़े और कूदते हुए रथ।<sup>३</sup>

## नहम

घुड़सवारों का हमला, तलवारें चमक रही हैं भाले  
चमक रहे हैं बहुत से मारे गए लाशों का ढेर, और मृत  
शरीरों का कोई अंत नहीं— वे मृत शरीरों पर ठोकर  
खाते हैं<sup>4</sup> सब उस देश्या के अनेक व्यभिचार के  
कारण, आकर्षक, जादू-टोने की मालकिन, जो अपने  
व्यभिचार से राष्ट्रों को बेचती है, और अपने जादू-टोने  
से परिवर्तों को<sup>5</sup> “देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ” सेनाओं  
के प्रभु की घोषणा है “और मैं तुम्हारी स्कर्ट को तुम्हारे  
चेहरे पर उठा द्वृगा, और तुम्हारी नगता को राष्ट्रों के  
सामने प्रकट करूँगा, और तुम्हारी लज्जा को राज्यों के  
सामने।<sup>6</sup> मैं तुम पर गंदारी फेंकूँगा और तुम्हें बेकार  
घोषित करूँगा, और तुम्हें एक तमाशा बना द्वृगा।<sup>7</sup>  
और यह होगा कि जो भी तुम्हें देखेगा वह तुमसे द्रुर  
भागेगा और कहेगा “निनवे बबाद हो गई है, कौन  
उसके प्रति सहानुभूति दिखाएगा” मैं तुम्हारे लिए  
सांत्वना देने वालों को कहाँ खोजूँ<sup>8</sup> क्या तुम नो-  
अमोन से बेहतर हो, जो नील की नहरों के पास स्थित  
थी जल से धिरी हुर्द, जिसकी किलेबंदी समुद्र थी,  
जिसकी दीवार समुद्र से बनी थी<sup>9</sup> कूश उसकी शक्ति  
थी, और मिस्र भी बिना सीमा के। पूरत और लुबिम  
उसके सहायकों में थे।<sup>10</sup> फिर भी वह निवासित हो  
गई, वह बदीगृह में चली गई, उसके छाटे बच्चों को भी  
हर गली के सिर पर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया;  
उन्होंने उसके सम्मानित पुरुषों के लिए विट्टियों डालीं,  
और उसके सभी महान पुरुष बेड़ियों में बांध दिए गए।  
<sup>11</sup> तुम भी नशे में हो जाओगे, तुम छिप जाओगे। तुम  
भी शत्रु से शरण खोजोगे।<sup>12</sup> तुम्हारे सभी किले पके  
हुए अंजीर के पेड़ हैं— जब हिलाए जाते हैं, तो वे खाने  
वाले के मुँह में गिर जाते हैं।<sup>13</sup> देखो, तुम्हारे लोग  
तुम्हारे बीच में महिलाएँ हैं तुम्हारे देश के द्वारा तुम्हारे  
शत्रुओं के लिए चौड़े खुले हैं, आग तुम्हारे द्वारा की  
सलाखों को खा जाती है।<sup>14</sup> अपने लिए धेराबंदी के  
लिए पानी खींचो। अपनी किलेबंदी की मजबूत करो  
मिट्टी में जाऊ और गारे को रीटो। ईट के सांचे को  
पकड़ो।<sup>15</sup> वहाँ आग तुम्हें खा जाएगी, तलवार तुम्हें  
काट डालेगी, यह तुम्हें टिड़ी की तरह खा जाएगी।  
अपने आप को रंगने वाले टिड़े की तरह बढ़ाओ, अपने  
आप को प्रवासी टिड़े की तरह बढ़ाओ।<sup>16</sup> तुमने अपने  
व्यापारियों को अकाश के तारों से अधिक बना दिया  
है— रंगने वाला टिड़ा अपनी खात छोड़ता है और उड़  
जाता है।<sup>17</sup> तुम्हारे दरबारी टिड़ों की तरह हैं तुम्हारे  
अधिकारी टिड़ों के झुंड की तरह हैं जो ठंडे दिन में  
पथर की दीवरों में डेरा डालते हैं— सूरज उगता है,  
और वे भाग जाते हैं, और जहाँ वे हैं वह स्थान जात  
नहीं है।<sup>18</sup> तुम्हारे चरवाहे सो रहे हैं, अश्वर के राजा,  
तुम्हारे रईस लेटे हुए हैं। तुम्हारे लोग पहाड़ों पर बिखरे

हुए हैं, और उन्हें इकट्ठा करने वाला कोई नहीं है।<sup>19</sup>  
तुम्हारे पतन के लिए कोई राहत नहीं है तुम्हारी चोट  
लाइलाज है। जो भी तुम्हारे बारे में सुनेगा वह तुम्हारे  
ऊपर ताली बजाएगा, क्योंकि किस पर तुम्हारी बुराई  
लगातार नहीं गुजरी है?

## हबकूक

**1** वह उद्घोषणा जो हबकूक नबी ने देखी:

<sup>2</sup> हे प्रभु मैं कब तक सहायता के लिए पुकारता रहूँ  
और तू नहीं सुनता? मैं तुझसे "हिंसा" कहकर  
चिल्लाता हूँ, फिर भी तू उद्धार नहीं करता।<sup>3</sup> तू मुझे  
विपति क्यों दिखाता है, और मुझे दरिद्रता क्यों दिखाता  
है? हाँ विनाश और हिंसा मेरे सामने हैं, ज़माना होता है  
और विवाद उठता है।<sup>4</sup> इसलिए व्यवस्था की उपेक्षा  
की जाती है, और न्याय कभी नहीं होता। क्योंकि दुष्ट  
धर्मियों को धर लेते हैं इसलिए न्याय भ्रष्टिहोकर  
आता है।<sup>5</sup> "जातियों के बीच देखो, देखो भयभीत हो  
जाओ। स्तब्ध हो जाओ।" क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक  
कार्य कर रहा हूँ— यदि तुम्हें बताया जाए तो भी तुम  
विश्वास नहीं करोगे। देखो, मैं कसदियों को उठा रहा  
हूँ, वह भयानक और उतावला लोगों जो पृथकी पर सूमते  
हैं उन निवास स्थानों को लेने के लिए जो उनके नहीं  
हैं।<sup>7</sup> वे भयानक और भयभीत करने वाले हैं, उनका  
न्याय और अधिकार स्वयं से उत्पन्न होता है।<sup>8</sup> उनके  
घोड़े तेंदुओं से तेज हैं, और संध्या के भेड़ियों से भी  
तेज। उनके छुड़सवार दौड़ते हैं, उनके छुड़सवार दूर  
से आते हैं, वे उकाब की तरह उड़ते हैं जो शिकार  
करने के लिए झपटता है।<sup>9</sup> वे सभी हिंसा के लिए आते  
हैं। उनके घेरे का चुंड आगे बढ़ता है। वे रेत की  
तरह बंदियों को इकट्ठा करते हैं।<sup>10</sup> वे राजाओं का  
मजाक उड़ाते हैं, और प्रतिष्ठित लोग उनके लिए हीरी  
का पात्र होते हैं। वे हर गढ़ का मजाक उड़ाते हैं, फिर  
मिट्टी का ढेर लगाकर उसे पकड़ लेते हैं।<sup>11</sup> फिर वे  
हवा की तरह उड़ते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। परंतु वे  
दोषी ठहराए जाएं, जिनकी शक्ति उनका देवता है।<sup>12</sup>

<sup>12</sup> क्या तू अनादि काल से नहीं है हे प्रभु मेरे परमेश्वर  
मेरे पवित्र हम नहीं मरेंगे। तू हे प्रभु तू हमें न्याय देने  
के लिए नियुक्त किया है, और तू हे चृष्टान, ने उन्हें दंड  
देने के लिए ठहराया है।<sup>13</sup> तेरी आँखें ऊराई की देखने  
के लिए बहुत शुद्ध हैं, और तू हानि को अनुकूल दृष्टि से  
नहीं देख सकता। तू क्यों अनुकूल दृष्टि से देखता है  
उन पर जो विश्वसघात करते हैं, जब दुष्ट उन लोगों  
को निगल जाते हैं जो उनसे अधिक धर्मी हैं, तू तू क्यों  
मैंन रहता है?<sup>14</sup> तूने लोगों को समुद्र की मछलियों की  
तरह क्यों बनाया, जैसे रेंगने वाले जीव जिनका कोई  
शासक नहीं है?<sup>15</sup> कसदी लोग उन्हें सबको काटे से  
ऊपर लाते हैं, अपने जाल से खीच ले जाते हैं, और  
अपने मछली पकड़ने के जाल में इकट्ठा करते हैं।  
इसलिए वे आनंदित होते हैं और खुश होते हैं।<sup>16</sup>  
इसलिए वे अपने जाल को बलिदान चढ़ाते हैं और  
अपने मछली पकड़ने के जाल को धूप चढ़ाते हैं।  
क्योंकि इन चीजों के कारण उनकी पकड़ बड़ी होती

है, और उनका भोजन प्रचुर होता है।<sup>17</sup> क्या वे  
इसलिए अपना जाल खाली करेंगे, और बिना दया के  
राष्ट्रों को लगातार मारते रहेंगे?

**2** मैं अपनी चौकी पर खड़ा रहूँगा और प्रहरी मीनार  
पर अपने को स्थापित करूँगा, और मैं देखता रहूँगा  
कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे फटकारा  
जाएगा तो मैं कैसे उत्तर दूँगा।

**2** तब यहोंवा ने मुझसे कहा,

"दृष्टि को लिख लो और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट रूप  
से अंकित करो, ताकि जो इसे पढ़े वह दौड़ सके।<sup>3</sup>  
क्योंकि दृष्टि अपी भी नियत समय के लिए है, यह लक्ष्य  
की ओर तेजी से बढ़ रही है और यह असफल नहीं  
होगी। यदि यह विलंब करे, तो इसके लिए प्रतीक्षा  
करो, क्योंकि यह निष्ठित रूप से आएगी, यह अधिक  
देर तक नहीं रुकेगी।<sup>4</sup> "देखो, जो अभिमानी है,  
उसकी आत्मा उसके भीतर सही नहीं है, परन्तु धर्मी  
अपने विश्वास से जीवित रहेगा।<sup>5</sup> इसके अलावा, शराब  
एक अहंकारी व्यक्ति को धीखा देती है, ताकि वह  
अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर सके। वह अपनी भूख  
को शियोल की तरह बढ़ाता है, और वह मूत्र के  
समान है, कभी संतुष्ट नहीं होता। वह सभी राष्ट्रों को  
अपने पास इकट्ठा करता है और सभी लोगों को अपने  
पास एकत्र करता है।

**6** क्या ये सब उसके विरुद्ध उपहास का गीत नहीं  
उठाएंगे,

यहां तक कि उसके विरुद्ध कहावत और संकेत  
कहेंगे, 'हाय उस पर जो जो उसका नहीं है उसे बढ़ाता  
है— कब तक— और अपने को ऋणों से समृद्ध करता  
है।'<sup>7</sup> क्या तुम्हारे लेनदार अचानक नहीं उठेंगे, और जो  
तुमसे चूल करते हैं वे जागेंगे। वास्तव में, तुम उनके  
लिए लूट बन जाओगे।<sup>8</sup> क्योंकि तुमने बहुत से राष्ट्रों  
को लूटा है बाकी सभी लोग तुम्हें लूटेंगे— क्योंकि  
मानव रक्तपात और भूमि पर की गई हिंसा के कारण,  
नगर और उसके सभी निवासियों के लिए।<sup>9</sup> हाय उस  
पर जो अपने घर के लिए बुरे लाभ कमाता है, ताकि  
वह अपने धोसले को ऊँचा रख सके, आपदा के हाथ  
से बचने के लिए।<sup>10</sup> तुमने अपने घर के लिए एक  
शर्मनाक योजना बनाई है बहुत से लोगों को समाप्त  
करके, इसलिए तुम अपने आप के विरुद्ध पाप कर रहे  
हो।<sup>11</sup> क्योंकि पत्थर दीवार से चिल्लाएगा, और कड़ी  
ढाँचे से उत्तर देगी।<sup>12</sup> हाय उस पर जो रक्तपात से

## हबकूक

नगर बनाता है, और हिंसा से नगर की स्थापना करता है।<sup>13</sup> क्या यह सेनाओं के प्रभु से नहीं है कि लोग केवल आग के लिए परिश्रम करते हैं, और राष्ट्र व्यर्थ के लिए थक जाते हैं? <sup>14</sup> क्योंकि पृथ्वी भर जाएगी यहोवा की महिमा के ज्ञान से, जैसे समुद्र को जल ढकता है। <sup>15</sup> हाय उस पर जो अपने पड़ोसी को पीने के लिए देता है, तुम जो उसमें अपना विष मिलाते हो, यहां तक कि अपने पड़ोसियों को नशे में करने के लिए ताकि उनकी नम्रता देख सको। <sup>16</sup> तुम अपमान से भर जाओगे न कि सम्मान से। पीओ, तुम स्वर्य, और अपनी नम्रता प्रकट करो। यहोवा के दाहिने हाथ का प्याला तुम्हारे पास आएगा, और तुम्हारी महिमा पर पूर्ण अपमान आएगा। <sup>17</sup> क्योंकि लेबनान पर की गई हिस्सा तुम्हें अभिषूत करेगा, और उसके जानवरों की तबाही जिससे तुमने उठाएं आतंकित किया, मानव रक्तपात और भूमि पर की गई हिस्सा के कारण, नगर और उसके सभी निवासियों के लिए। <sup>18</sup> एक खुदी हुई मूर्ति का क्या लाभ जब उसका निर्माता उसे खुदता है, एक ढली हुई ध्रुत की मूर्ति झूठ का शिक्षक? क्योंकि उसका निर्माता अपनी ही कारीगरी पर विश्वास करता है जब वह बिना बोलने वाली मूर्तियाँ बनाता है। <sup>19</sup> हाय उस पर जो लकड़ी के टुकड़े से कहता है, 'जाग!' एक मूर्क पत्तर से 'उठ!' क्या वह तुम्हारा शिक्षक है? देखो, यह सोने और चांदी से मढ़ा हुआ है, फिर भी इसके भीतर बिल्कुल भी सांस नहीं है। <sup>20</sup> परन्तु यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है। सारी पृथ्वी उसके सामने मौन रहे।"

### ३ शिगियोनोत के अनुसार भविष्यद्वक्ता हबकूक की प्रार्थना।

<sup>2</sup> हे प्रभु, मैंने आपके विषय में सुना है, और मैं भयभीत हुआ। हे प्रभु, वरण के बीच अपने कार्य को पुनर्जीवित करें, वर्षों के बीच इसे प्रकट करें। क्रोध में दग्ध को याद करें। <sup>3</sup> परमेश्वर तेमान से आता है, और पवित्र एक माहंट पारान से। सेला। उसका वैभव आकाश को ढक लेता है, और पृथ्वी उसकी स्तुति से भर जाती है। <sup>4</sup> उसकी चमक सूर्य के प्रकाश के समान है, उसके हाथ से किरणें चमकती हैं, और वहीं उसकी शक्ति का छिपाव है। <sup>5</sup> उसके आगे महायारी जाती है, और उसके पीछे लगा आता है। <sup>6</sup> वह खड़ा हुआ और पृथ्वी को हिला दिया, उसने देखा और राष्ट्रों को चौका दिया। हाँ, अनंतकालीन पर्वत टूट गए, प्राचीन पहाड़ियाँ ढह गईं। उसके मार्ग अनंतकालीन हैं। <sup>7</sup> मैंने कुशान के तंबुओं को संकट में देखा, मिद्यान की भूमि के तंबू के पर्दे कांप रहे थे। <sup>8</sup> क्या प्रभु नदियों के खिलाफ क्रोधित थे, या क्या आपकी क्रोध नदियों के खिलाफ था, या

क्या आपका क्रोध समुद्र के खिलाफ था, कि आपने अपने धोड़ों पर सवारी की, उद्धार के रथों पर? <sup>9</sup> आपका धूषु प्रकट हुआ, अनुशासन की छड़े शपथ ली गई। सेला। आपने नदियों से पृथ्वी को विभाजित किया। <sup>10</sup> पहाड़ों ने आपको देखा और कांप उठे; जल की वर्षा बह गई। गहराइ ने अपनी आवज उठाई। उसने अपने हाथ ऊँचे उठाए। <sup>11</sup> सूर्य और चंद्रमा अपनी जगहों पर खड़े थे, वे आपके तीरों की रोशनी में चले गए। आपके चमकते भासे की चमक में। <sup>12</sup> क्रोध में अपने पृथ्वी पर मार्ग किया, क्रोध में अपने राष्ट्रों को रौदा। <sup>13</sup> आपने अपने लोगों के उद्धार के लिए आगे बढ़े, अपने अभिषिक्त के उद्धार के लिए। आपने बुराइ के घर के सिर को तोड़ा उसे पैर से गर्दन तक उजागर करने के लिए। सेला। <sup>14</sup> आपने अपने ही तीरों से उसके नेताओं के सिर को छेदा। वे हमें बिखेरने के लिए तूफान में आए, उनका अहंकार उन लोगों के समान था जो गुप्त रूप से पीड़ितों को निगल जाते हैं। <sup>15</sup> आपने अपने धोड़ों के साथ समुद्र पर रौदा, कई जल के फोम पर। <sup>16</sup> मैंने सुना, और मेरे अंदरूनी हिस्से कांप उठे; आवाज़ पर, मेरे हौंठ कांप उठे। क्षय मेरी हड्डियों में प्रवेश करता है, और मैं अपनी जगह पर कापता हूँ। क्योंकि मुझे संकट के दिन की चुपचाप प्रतीक्षा करनी चाहिए, उन लोगों के लिए जो हम पर हमला करेगा। <sup>17</sup> भले ही अंजीर का पेड़ न फूले, और बेलों पर कोई फल न हो, अगर जैतून की उपज असफल हो, और खेत कोई भोजन न दें, भले ही भेड़ें बाड़े से गायब हो जाएं, और अस्तबल में कोई मवेशी न हो, <sup>18</sup> फिर भी मैं प्रभु में विजय प्राप्त करूँगा। <sup>19</sup> प्रभु परमेश्वर मेरी शक्ति है, और उसने मेरे पैरों को हिरण के पैरों की तरह बनाया है, और मुझे मेरे ऊँचे स्थानों पर चलाया है।

गायन निर्देशक के लिए, मेरे तार वाले वाद्ययंत्रों पर।

## सपन्याह

**१** यह यहोवा का वचन है जो सपन्याह के पास आया, जो कूर्शी का पुत्र, गदल्याह का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, हिजकियाह का पुत्र था, यहूदा के राजा अमोन के पुत्र योशियाह के दिनों मेंः

“मैं पृथी के मुख से सब वस्तुओं को पूरी तरह से हटा दूँगा,” यहोवा की यह वाणी है।<sup>३</sup> मैं मनुष्य और पशु जीवन को हटा दूँगा, मैं आकाश के पक्षियों को और समुद्र की मछलियों को हटा दूँगा, और खंडहरों को दुर्णि के साथ और मैं पृथी के मुख से मानवजाति को समाप्त कर दूँगा।” यहोवा की यह वाणी है।<sup>४</sup>

“इसलिए मैं यहूदा के विरुद्ध और यरूशलैम के सभी निवासियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा। और मैं इस स्थान से बात के अवशेषों को समाप्त कर दूँगा, मूर्तिपूजक याजकों के नाम याजकों के साथ<sup>५</sup> और जो लोग घर की छतों पर स्वर्गर्थी ज्योतियों को प्रणाम करते हैं, और जो लोग यहोवा की शपथ लेते हैं, परन्तु मिलकोम की भी शपथ लेते हैं,<sup>६</sup> और जो लोग यहोवा का अनुसरण करने से पीछे हट गए हैं, और जिज्ञाने यहोवा को न तो खोजा है और न ही उसकी पृछताछ की है।<sup>७</sup> यहोवा परमेश्वर के सम्मने मौन रहा। क्योंकि यहोवा का दिन निकट है, क्योंकि यहोवा ने एक

बलिदान तैयार किया है, उसने अपने महमानों को पवित्र किया है।<sup>९</sup> “तब यहोवा के बलिदान के दिन ऐसा होगा कि मैं राजकुमारों, राजा के बुत्रों को दंड दूँगा, और उन सभी को जो विदेशी वस्त्र पहनते हैं।<sup>१०</sup> और उस दिन मैं उन सभी को दंड दूँगा जो मंदिर की दहरीज पर कूदते हैं, जो अपने स्वामी के घर को हिंसा और धोखे से भरते हैं।<sup>११</sup> और उस दिन<sup>१२</sup> यहोवा की यह वाणी है, ‘मछली द्वार से एक चिलाहट की आवाज होगी, दूसरे क्लार्टर से लिलाप, और पहाड़ियों से एक जोरदार ध्वनि।<sup>१३</sup> लिलाप करो हे मोटरि के निवासी, क्योंकि कनान के सभी लोग नष्ट हो जाएंगे, सभी जो चांदी तीलते हैं समाप्त कर दिए जाएंगे।<sup>१४</sup> और उस समय ऐसा होगा कि मैं यरूशलैम को

दीपकों से खोजूँगा, और मैं उन लोगों को दंड दूँगा जो आत्मा में स्त्रि हैं, जो अपने दिल में कहते हैं, ‘यहोवा न तो अच्छा करेगा और न ही बुरा।’<sup>१५</sup> उनकी संपत्ति लूट बन जाएगी और उनके घर उजाड़ हो जाएंगे; हां, वे घर बनाएंगे पर उनमें निवास नहीं करेंगे, और दाख की बारियां लगाएंगे पर उनकी दाखमध्य नहीं पीएंगे।<sup>१६</sup> यहोवा का महान दिन निकट है, निकट और बहुत शीघ्र आ रहा है, सुनो, यहोवा का दिन। उसमें योद्धा कङ्गवहट से चिल्लाता है।<sup>१७</sup> वह दिन क्रोध का दिन है, संकट और क्लेश का दिन, विनाश और उजाड़ का दिन, अंधकार और उदासी का दिन, बादलों और घने

अंधकार का दिन,<sup>१८</sup> तुरही और युद्ध की पुकार का दिन गढ़गले नगरों के विरुद्ध और ऊंचे कोने के बुर्जों के विरुद्ध।<sup>१९</sup> मैं मानवजाति पर संकट लाऊंगा ताकि वे अधों की तरह चलें, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, और उनका रक्त धूल की तरह बहाया जाएगा, और उनका मांस गोबर की तरह।<sup>२०</sup> न तो उनकी चांदी और न ही उनका सोना उहें यहोवा के क्रोध के दिन बचा सकेगा, और सारी पृथी उसकी जलन की आग से भस्म हो जाएगी। क्योंकि वह एक पूर्ण अंत करेगा, वास्तव में एक भयानक अंत, पृथी के सभी निवासियों का।

**२** अपने आप को इकट्ठा करो हां, मिलकर आओ, हे लज्जा रहित राष्ट्र।<sup>२१</sup> इससे पहले कि आदेश प्रभावी हो— दिन भूसे की तरह बीत जाए— इससे पहले कि प्रभु का जलता हुआ क्रोध तुम पर आ जाए इससे पहले कि प्रभु के क्रोध का दिन तुम पर आ जाए।<sup>२२</sup> प्रभु को खोजो, हे पृथी के सभी नम्र लोग जिज्ञाने उसकी विधियों का पालन किया है, धर्म की खोज करो, नम्रता की खोज करो। शायद तुम प्रभु के क्रोध के दिन छिपे रहो।

४ क्योंकि गाजा छोड़ दिया जाएगा, और अश्कलोन उजाड़ हो जाएगा, अशदादेप को दोपहर में बाहर निकाल दिया जाएगा, और एकोन उखाड़ फेंका जाएगा।<sup>२३</sup> समुद्र तट के निवासियों पर हाय, केरेथियों की जाति प्रभु का वचन तुम्हारे खिलाफ है, कनान, पलिशियों की भूमि, और मैं तुम्हें समाप्त कर दूँगा ताकि कोई निवासी न रहे।<sup>२४</sup> इसलिए समुद्र तट चराई की जगह बन जाएगा, चरवाहों के लिए चरागाह और झुंडों के लिए बाढ़।<sup>२५</sup> और तट यहूदा के घर के बचे हुए लोगों के लिए होगा, वे वहां दूँद चलाएंगे, अश्कलोन के घरों में वे शाम को लेटेंगे, क्योंकि उनकी परमेश्वर प्रभु उनकी देखभाल करेंगे और उनकी समृद्धि को बहाल करेंगे।

८ “मैंने मोआब की ताने सुनी हैं और अम्मोन के पुत्रों की अपमानजनक बातें, जिनसे उन्होंने मेरी प्रजा का अपमान किया है और उनके क्षेत्र के खिलाफ घमंड किया है।<sup>२६</sup> इसलिए, जैसा कि मैं जीवित हूँ, सेनाओं के प्रभु कहते हैं, इस्साएल के परमेश्वर, “मोआब निश्चित रूप से सदोम के समान होगा, और अम्मोन के पुत्र गोमोरा के समान— एक स्थान जो खरपतवारों और नमक की खानों से भरा होगा, और एक स्थानी उजाड़। मेरी प्रजा के बचे हुए लोग उन्हें लूटेंगे, और मेरी जाति के शेष लोग उन्हें विरासत में लेंगे।<sup>२७</sup> यह

## सपन्याह

उन्हें उनके अहंकार के बदले में मिलेगा, क्योंकि  
उन्होंने सेनाओं की प्रभु की प्रजा का अपमान किया है  
और घमंड किया है।<sup>11</sup> प्रभु उनके लिए भयानक होंगे  
क्योंकि वह पृथ्वी के सभी देवताओं को घाटा देंगे, और  
सभी राष्ट्रों के समुद्र तट उनके सामने झुकेंगे, हर कोई  
अपनी जगह से।

<sup>12</sup> "तुम भी कूशियों, मेरी तलवार से मारे जाओगे।"

<sup>13</sup> और वह उत्तर की ओर अपना हाथ बढ़ाएंगे और  
अश्शूर को समाप्त करेंगे, और वह नीनेवे को उजाड़  
बना देंगे, मरुस्थल की तरह सूखा।<sup>14</sup> उसके बीच में  
झुंड लेंगे, सभी जानवर जो झुंड में घूमते हैं, दोनों  
पेलिकन और हेजहांग उसके स्तरों के शीर्ष पर रात  
बिताएंगे, खिड़की में पक्षी गाएंगे, विनाश दहलीज पर  
होगा, क्योंकि उसने देवदार के काम को उजागर  
किया है।<sup>15</sup> यह है वह घमंडी शहर जो सुरक्षित रूप  
से निवास करता है, जो अपने दिल में कहता है, "मैं हूं  
और मेरे अलावा कोई नहीं हूं" वह कैसे उजाज हो गई  
है, जानवरों के लिए विश्राम स्थान। हर कोई जो उसके  
पास से गुजरता है सीटी बजाएगा और तिरस्कार में  
अपना हाथ हिलाएगा।

**3** हाय उस पर जो विद्रोही और अशुद्ध है,  
अत्याचारी नगर।<sup>2</sup> उसने किसी की आवाज नहीं सुनी,  
उसने कोई अनुशासन स्वीकार नहीं किया। उसने  
यहोवा पर विश्वास नहीं किया, उसने अपने परमेश्वर का  
अनुसरण नहीं किया।<sup>3</sup> उसके अधिकारी उसके भीतर  
गरजते हुए सिंह हैं, उसके न्यायालिंग संघा के भेड़िये  
हैं वे सुबह के लिए कुछ नहीं छोड़ते।<sup>4</sup> उसके नवीं  
अभिमानी, विश्वासघाती पुरुष हैं उसके याजकों ने  
पवित्र स्थान को अपवित्र किया है, उन्होंने व्यवस्था का  
उल्लंघन किया है।<sup>5</sup> यहोवा उसके बीच में धर्मी है, वह  
कोई अन्याय नहीं करेगा। हर सुबह वह अपनी न्याय  
को प्रकाश में लाता है, वह असफल नहीं होता। परंतु  
अन्यायी को लज्जा का कोई ज्ञान नहीं है।

<sup>6</sup> "मैंने जातियों को नष्ट कर दिया है, उनके कोने के  
मीनारें भीरान हैं। मैंने उनकी सङ्कोचों को उजाड़ दिया  
है, कोई भी वहां से नहीं गुजरता, उनके नगर उजाड़  
हो गए हैं, बिना किसी व्यक्ति के, बिना किसी निवासी  
के।"<sup>7</sup> मैंने कहा, "तुम निश्चित रूप से मुझसे डरोगे, तुम  
अनुशासन स्वीकार करोगे। ताकि उसका निवास  
स्थान नष्ट न हो उन सभी बातों के अनुसारी जो मैंने  
उसके लिए नियुक्त की है। इसके बजाय, वे अपने  
सभी कार्यों को भ्रष्ट करने के लिए उत्सुक थे।"

इसलिए मुझसे प्रतीक्षा करो," यहोवा कहता है, "उस  
दिन के लिए जब मैं गवाह के रूप में उटूंगा। वास्तव  
में, मेरा निर्णय है कि मैं जातियों को इकट्ठा करूं,  
राज्यों को एकत्र करूं, उन पर अपनी क्रोध भरी  
नाराजी उंडेल दूं, अपनी जलती हुई क्रोध क्योंकि  
सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी।

<sup>9</sup> तब मैं लोगों को शुद्ध होऊं दूंगा, ताकि वे सभी यहोवा  
के नाम को युकरें, उसे कंधे से कंधा मिलाकर सेवा  
करें।<sup>10</sup> कूश की नदियों के पार से मेरे उपासक, मेरे  
बिखरे हुए लोगों की बेटी, मेरे भेट लाएंगे।<sup>11</sup> उस दिन  
तुम कोई लज्जा महसूस नहीं करोगे उन सभी कार्यों के  
कारण जिनसे तुमने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है,  
क्योंकि तब मैं तुम्हारे बीच से उन लोगों को हटा दूंगा  
जो गर्व में जश मनाते हैं, और तुम फिर कभी मेरे पवित्र  
पर्वत पर अभिमानी नहीं होगो।<sup>12</sup> लेकिन मैं तुम्हारे  
बीच छोड़ दूंगा एक विनम्र और निम्र लोग, और वे  
यहोवा के नाम में शरण लेंगे।<sup>13</sup> इसाएल के बचे हुए  
लोग कोई गलत काम नहीं करेंगे न ही झुट बोलेंगे, न  
ही उनके मुंह में कोई कपटी जीभ होगी, क्योंकि वे  
चरोंगे और लटेंगे बिना किसी के डराने के।"<sup>14</sup>

जयजयकार करो, सिय्योन की बेटी! विजय का  
जयकार करो, इसाएल! अपने पूरे हृदय से आनंदित  
हो और विजय का जयकार करो, यरूशलेम की बेटी।<sup>15</sup>

यहोवा ने तुम्हारे खिलाफ अपने निर्णय हाटा दिए हैं,  
उसने तुम्हारे दुश्मनों को द्रव कर दिया है। इसाएल का  
राजा, यहोवा, तुम्हारे बीच में है, तुम अब और विपत्ति  
से नहीं डरोगे।<sup>16</sup> उस दिन यरूशलेम से कहा जाएगा,  
"डरो मत, सिय्योन, अपने हाथों की ढीला मत होने दो।

<sup>17</sup> तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे बीच में है, एक  
विजयी योद्धा। वह तुम्हारे ऊपर आनंद से जयजयकार  
करेगा, वह अपने प्रेम में शात रहेगा, वह तुम्हारे ऊपर  
जयजयकार के साथ आनंद करेगा।<sup>18</sup> मैं उन लोगों  
को इकट्ठा करूंगा जो नियुक्त पर्वतों के बारे में शोक  
करते हैं— वे तुम्हारे पास से आए हैं, सिय्योन, निर्वसन  
की लज्जा उन पर एक बोझ है।<sup>19</sup> देखो, मैं उस समय  
तुम्हारे सभी उत्तीकरणों से निपटने जा रहा हूं मैं उन  
लोगों को बचाऊंगा जो लंगड़े हैं और बिखरे हुए को  
इकट्ठा करूंगा, और मैं उनकी लज्जा को प्रशंसा और  
प्रसिद्धि में बदल दूंगा सारी पृथ्वी पर।<sup>20</sup> उस समय में  
तुम्हें लाऊंगा, यहां तक कि उस समय जब मैं तुम्हें  
इकट्ठा करूंगा, वास्तव में, मैं तुम्हें प्रसिद्ध और प्रशंसा  
का पात्र बनाऊंगा सारी पृथ्वी के लोगों के बीच, जब मैं  
तुम्हारे भाग्य को तुम्हारी आँखों के सामने पुनर्स्थापित  
करूंगा" यहोवा कहता है।

## हागै

**1** राजा दायविश के दूसरे वर्ष के छठे महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन भविष्यवक्ता हागै के द्वारा यहूदा के राज्यपाल शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और महायाजक यहोजादक के पुत्र यहोशू के पास आया, यह कहते हुए,

<sup>2</sup> "सेनाओं का यहोवा यह कहता है 'यह लोग कहते हैं, 'समय नहीं आया है, यहोवा के घर के पुनर्निर्माण का समय नहीं आया है'"

<sup>3</sup> तब यहोवा का वचन हागै भविष्यवक्ता के द्वारा आया, यह कहते हुए,

<sup>4</sup> "क्या यह समय है कि तुम अपने पैनल वाले धरां में रहो, जबकि यह घर उजाड़ पड़ा है" <sup>5</sup> अब सेनाओं का यहोवा यह कहता है "अपने मार्गों पर ध्यान दो" <sup>6</sup> तुमने बहुत बोया लेकिन थोड़ा ही काटा, तुम खाते हो पर तुमने नहीं होती तुम पीते हो, पर नशा नहीं होता, तुम कपड़े पहनते हो, पर कोई गर्म नहीं होता, और जो कमाता है, वह अपनी कमाई को छिद्रित ऐली में रखता है" <sup>7</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है "अपने मार्गों पर ध्यान दो" <sup>8</sup> पहाड़ों पर जाओ, लकड़ी लाओ, और मंदिर का पुनर्निर्माण करो, ताकि मैं इससे प्रसन्न होऊं और सम्मानित होऊं" यहोवा कहता है <sup>9</sup> "तुम एक महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू करते हो, पर देखो यह थोड़ा ही होता है, जब तुम इसे घर लाते हो, मैं इसे उड़ा देता हूँ" क्यों? सेनाओं का यहोवा कहता है। "क्योंकि मेरा घर उजाड़ पड़ा है, जबकि तुम में से प्रत्यक्ष अपने घर कीं और दौड़ता है" <sup>10</sup> इसलिए तुम्हारी वजह से आकाश ने अपनी ओस को रोक लिया है, और पृथ्वी ने अपनी उपज को रोक लिया है। <sup>11</sup> और मैंने भूमि पर, पहाड़ों पर, अनाज पर, नए दाखमधु पर, तेल पर, जो भूमि उत्पन्न करती है, मनुष्य पर, पशुओं पर, और तुम्हारे हाथों की मेहनत के सभी उत्पादों पर सूखा बुलाया है।"

<sup>12</sup> तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल, और यहोजादक के पुत्र यहोशू, महायाजक, और सभी बचे हुए लोगों ने अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज का पालन किया, और हागै भविष्यवक्ता के वचनों का पालन किया, जैसे कि उनके परमेश्वर यहोवा ने उन्हें भेजा था। और लोगों ने यहोवा के प्रति श्रद्धा दिखाई। <sup>13</sup> तब यहोवा के दूत हागै ने यहोवा के आदेश पर लोगों से कहा,

"मैं तुम्हारे साथ हूँ यहोवा कहता है"

<sup>14</sup> इसलिए यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल, यहूदा के राज्यपाल, और यहोजादक के पुत्र यहोशू, महायाजक, और सभी बचे हुए लोगों की आत्मा को प्रेरित किया। और वे आए और सेनाओं के यहोवा, अपने परमेश्वर के घर पर काम किया, <sup>15</sup> राजा दायविश के दूसरे वर्ष के छठे महीने के चौबीसवें दिन।

**2** सातवें महीने के इक्कीसवें दिन, यहोवा का वचन हागै भविष्यद्वक्ता के द्वारा आया, कहता है,

<sup>2</sup> "अब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल से, जो यहूदा का राज्यपाल है, और यहोजादक के पुत्र यहोशू से, जो महायाजक है, और लोगों के शेष बचे हुए से कहो, <sup>3</sup> 'तुम में से कौन है जिसने इस मंदिर को उसकी पूर्व महिमा में देखा है? और अब तुम इसे कैसे देखते हो? क्या यह तुम्हें तुलना में कुछ भी नहीं लगता?' <sup>4</sup> लेकिन अब हिम्मत रखो, जरुब्बाबेल, यहोवा की धोषणा है, 'हिम्मत रखो, यहोशू, यहोजादक के पुत्र, महायाजक, और तुम सब देश के लोग, हिम्मत रखो, यहोवा की धोषणा है,' और काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, सेनाओं के यहोवा की धोषणा है।" <sup>5</sup> "जैसा कि वह वचन जो मैंने तुमसे किया जब तुम मिस से बाहर आए थे, मेरी आत्मा तुम्हारे बीच में बनी रहती है, मत डरो" <sup>6</sup> क्योंकि सेनाओं के यहोवा यह कहता है "थोड़े समय में, मैं आकाश और पृथ्वी को हिलाने जा रहा हूँ, समुद्र और सूखी भूमि को भी।" और मैं सभी राष्ट्रों को हिला दूँगा, और वे सभी राष्ट्रों की संपत्ति के साथ आएंगे, और मैं इस घर को महिमा से भर दूँगा" सेनाओं के यहोवा की धोषणा है।" <sup>7</sup> "चाँदी मेरी है और सोना मेरा है," सेनाओं के यहोवा की धोषणा है।" <sup>8</sup> "इस घर की बाद की महिमा पूर्व की तुलना में अधिक होगी" सेनाओं के यहोवा की धोषणा है, "और इस स्थान में मैं साति दूँगा" सेनाओं के यहोवा की धोषणा है।"

<sup>10</sup> नौवें महीने के चौबीसवें दिन, दायविश के दूसरे वर्ष में, यहोवा का वचन हागै भविष्यद्वक्ता के पास आया, कहता है,

<sup>11</sup> "यह सेनाओं के यहोवा का कहना है 'अब याजकों से एक निर्यात के लिए पूछो' <sup>12</sup> यदि कोई अपने वस्त के मोड़ में पवित्र मांस ले जाता है, और इस मोड़ से रोटी, पकाया हुआ भोजन, दाखरस, तेल, या कोई अन्य भोजन हुआ है, क्या वह पवित्र हो जाएगा?" और याजकों ने उत्तर दिया, "नहीं!"

<sup>13</sup> तब हागै ने कहा,

## हागै

"यदि कोई जो शर से अशुद्ध है, इनमें से किसी को क्षता है, क्या वह अशुद्ध हो जाएगा?" और याजकों ने उत्तर दिया, "वह अशुद्ध हो जाएगा।"

<sup>14</sup> तब हागै ने उत्तर दिया और कहा,

"यह लोग भी ऐसे ही हैं। और यह राष्ट्र मेरे सामने भी ऐसा ही है। यहोवा की घोषणा है, 'और उनके हाथों का हर काम ऐसा ही है, और जो वे वहाँ अपर्ित करते हैं वह अशुद्ध है।'<sup>15</sup> लेकिन अब इस दिन से आगे विचार करो। इससे पहले कि यहोवा के मंदिर में एक पत्थर दूसरे पर रखा गया था,<sup>16</sup> उस समय से जब कोई बीस माप के अनाज के ढेर के पास आता था, तो केवल दस होते थे, और जब कोई दाखिरस के कुँड में पचास माप लेने आता था, तो केवल बीस होते थे।<sup>17</sup> मैंने तुम्हें जलती हुई हवा, फ़ूँटी, और ओले से मारा तुम्हारे हाथों के सभी कामों में, किर भी तुम मेरी और नहीं लौटे; यहोवा की घोषणा है।<sup>18</sup> 'इस दिन से आगे विचार करो, नींवें महीने के चौबीसवें दिन से, जिस दिन यहोवा के मंदिर की नींव रखी गई थी, विचार करो।<sup>19</sup> क्या बीज अभी भी खलिहान में है? यहाँ तक कि दाखलता, अंजीर का पेड़, अनार, और जैतून का पेड़— उसने फल नहीं दिया है। किर भी इस दिन से मैं तुम्हें आशीर्वाद द्वाँगा।"

<sup>20</sup> फिर यहोवा का वचन महीने के चौबीसवें दिन दूसरी बार हागै के पास आया, कहता है,

<sup>21</sup> "यहूदा के राज्यपाल जरूब्बाबेल से कहो, 'मैं आकाश और पृथ्वी को हिलाने जा रहा हूँ।'<sup>22</sup> और मैं राज्यों के सिंहासनों को उलट द्वाँगा और राष्ट्रों के राज्यों की शक्ति को नष्ट कर द्वाँगा, और मैं रथों और उनके सवारों को उलट द्वाँगा, और धोड़े और उनके सवार नीचे गिरेंगे, हर एक दूसरे की तलवार से।<sup>23</sup> 'उस दिन,' सेनाओं के यहोवा की घोषणा है, 'मैं तुम्हें तूँगा, जरूब्बाबेल, शालतीएल के पुत्र, मेरे सेवक, यहोवा की घोषणा है, 'और मैं तुम्हें एक मुहर की अंगूठी की तरह बनाऊँगा, क्योंकि मैंने तुम्हें तुना है, सेनाओं के यहोवा की घोषणा है।'

## जकर्याहि

**१** दायरिंश के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में, यहोवा का वचन भविष्यवक्ता जकर्याहि, बरेखाह के पुत्र, इदो के पुत्र के पास आया: <sup>२</sup> "यहोवा तुम्हारे पितरों से बहुत क्रोधित था। <sup>३</sup> इसलिए उनसे कहो, 'सेनाओं के यहोवा का यह वचन है: 'मेरे पास लौट आओ,' सेनाओं के यहोवा की यह घोषणा है, 'और मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगा,' सेनाओं के यहोवा का यह वचन है।" <sup>४</sup> अपने पितरों के समान न बनो, जिनसे पूर्व के भविष्यवक्ताओं ने प्रवार किया, कहते हुए: 'सेनाओं के यहोवा का यह वचन है: 'अब अपनी बुरी चालों और अपने बुरे कर्मों से लौट आओ।'" परंतु उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी और न ही मेरी ओर ध्यान दिया; यहोवा की यह घोषणा है। <sup>५</sup> 'तुम्हारे पितर—वे कहाँ हैं? और भविष्यवक्ता—क्या वे सदा जीवित रहते हैं?' <sup>६</sup> परंतु क्या मेरे वचन और मेरी विधियाँ, जिन्हें मैंने अपने दास भविष्यवक्ताओं को आज्ञा दी, तुम्हारे पितरों पर नहीं आईः तब उन्होंने पश्चाताप किया और कहा, "जैसा सेनाओं के यहोवा ने हमारे चाल-चलन और कर्मों के अनुसार हमारे साथ करने का निश्चय किया था, वैसा ही उसने हमारे साथ किया है।" <sup>७</sup> ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन, जो शबत का महीना है, दायरिंश के दूसरे वर्ष में, यहोवा का वचन भविष्यवक्ता जकर्याहि, बरेखाह के पुत्र, इदो के पुत्र के पास आया: <sup>८</sup> मैंने रात में देखा, और देखो, एक आदमी लाल घोड़े पर सवार था, और वह मर्टल के पेंडों के बीच खड़ा था जो घाटी में थे, उसके पीछे लाल, धूसर, और सफेद घोड़े थे। <sup>९</sup> तब मैंने कहा, "ये क्या हैं, मेरे प्रभु?" और जो स्वर्गद्वार मुझसे बात कर रहा था, उसने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि ये क्या हैं।" <sup>१०</sup> और जो आदमी मर्टल के पेंडों के बीच खड़ा था, उसने उत्तर दिया और कहा, "ये वे हैं जिन्हें यहोवा ने पृथ्वी का गश्त करने के लिए भेजा है।" <sup>११</sup> तो उन्होंने उस स्वर्गद्वार को उत्तर दिया जो मर्टल के पेंडों के बीच खड़ा था और कहा, "हमने पृथ्वी का गश्त किया है, और देखो, सारी पृथ्वी शांत और स्थिर है।" <sup>१२</sup> तब यहोवा के स्वर्गद्वार ने कहा, "सेनाओं के यहोवा, कब तक अप यरूशलेम और यहूदा के नगरों पर दया नहीं करेंगे, जिन पर आप सत्तर वर्षों से क्रोधित हैं?" <sup>१३</sup> और यहोवा ने उस स्वर्गद्वार को जो मुझसे बात कर रहा था, कृपा के वचन, सांत्वना के वचन दिए। <sup>१४</sup> तो जो स्वर्गद्वार मुझसे बात कर रहा था, उसने मुझसे कहा, "घोषणा करो, कहते हुए, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है: 'मैं यरूशलेम और सियोन के लिए अत्यधिक ईर्ष्या करता हूँ।' <sup>१५</sup> परंतु मैं उन राष्ट्रों से बहुत क्रोधित हूँ जो निश्चित हैं; क्योंकि जब मैं डो़ा क्रोधित था, उन्होंने विपत्ति को बढ़ाया।" <sup>१६</sup> इसलिए यहोवा यह कहता है: "मैं यरूशलेम पर दया के साथ लौटूंगा; मेरा घर उसमें बनाया जाएगा," सेनाओं के यहोवा की यह घोषणा है,

"और यरूशलेम पर एक मापने की रेखा सीधी जाएगी।"<sup>१७</sup> फिर से घोषणा करो, कहते हुए, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है: "मेरे नगर फिर से समृद्धि से भर जाएंगे, और यहोवा फिर से सियोन को सांत्वना देगा और फिर से यरूशलेम को चुनेगा।"<sup>१८</sup> तब मैंने अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, चार सींग थे। <sup>१९</sup> तो मैंने उस स्वर्गद्वार से कहा जो मुझसे बात कर रहा था, "ये क्या हैं?" और उसने मुझसे कहा, "ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदा, इस्राएल, और यरूशलेम को तितर-बितर किया है।"<sup>२०</sup> तब यहोवा ने मुझे चार कारीगर दिखाए। <sup>२१</sup> और मैंने कहा, "ये क्या करने आए हैं?" और उसने कहा, "ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदा को तितर-बितर किया ताकि कोई अपना सिर न उठा सके; परंतु ये कारीगर उन्हें डाराने आए हैं, उन राष्ट्रों के सींगों को गिराने के लिए जिन्होंने यहूदा की भूमि के खिलाफ अपने सींग उठाए हैं ताकि उसे तितर-बितर कर सके।"

**२** तब मैंने अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, एक आदमी अपने हाथ में मापने की डारी लिए हुए था। <sup>२</sup> तब मैंने कहा, "तू कहाँ जा रहा है?" और उसने मुझसे कहा, "यरूशलेम को मापने, यह देखने के लिए कि यह कितना चौड़ा और कितना लंबा है।"<sup>३</sup> और देखो, वह स्वर्गद्वार जो मुझसे बात कर रहा था, बाहर जा रहा था, और एक और स्वर्गद्वार उससे मिलने के लिए बाहर आ रहा था। <sup>४</sup> और उसने उससे कहा, "दौड़ो, उस युवक से कहो, यरूशलेम खुले देश के रूप में बसी होगी क्योंकि उसके भीतर लोगों और मवेशियों की भीड़ होगी।"<sup>५</sup> क्योंकि मैं प्रभु धोषित करता है, 'उसके चारों ओर अप्री की दीवार बनांगा, और मैं उसके बीच में महिमा बनांगा।'<sup>६</sup> "उत्तर देश से भागो," प्रभु धोषित करता है, "क्योंकि मैंने तुम्हें आकाश की चारों दिशाओं की तरह बिखेर दिया है," प्रभु धोषित करता है। <sup>७</sup> "भागो, सियोन, तुम जो बाबुल की बेटी के साथ रह रहे हो।"<sup>८</sup> क्योंकि सेनाओं के प्रभु यह कहते हैं: "महिमा के बाद उसने मुझे उन राष्ट्रों के विरुद्ध भेजा है जो तुम्हें लूटते हैं, क्योंकि जो तुम्हें छूता है, वह उसकी आँख की पुतली की छूता है।"<sup>९</sup> क्योंकि देखो, मैं उन पर अपना हाथ लहराऊंगा ताकि वे अपने दासों के लिए लूट बन जाएं। तब तुम जानोगे कि सेनाओं के प्रभु ने मुझे भेजा है। <sup>१०</sup> आनंद से खिलाओ और खुश होओ, सियोन की बेटी; क्योंकि देखो, मैं आ रहा हूँ और मैं तुम्हारे बीच निवास करूँगा, और तुम जानोगे कि सेनाओं के प्रभु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। <sup>११</sup> और प्रभु यहूदा को पवित्र भूमि में अपनी संपत्ति के रूप में प्राप्त करेगा, और फिर से

## जकयहि

यरूशलेम को चुनेगा।<sup>13</sup> सभी मानवजाति, प्रभु के सामने मौन रहो; क्योंकि वह अपने पवित्र निवास से जाग उठा है।"

**३** फिर उसने मुझे यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के सामने खड़ा दिखाया, और शैतान उसके दाहिने खड़ा होकर उस पर दोष लगा रहा था।<sup>2</sup> और यहोवा ने शैतान से कहा, "यहोवा तुझे डॉटि, शैतान! वास्तव में, यहोवा जिसने यरूशलेम को चुना है, तुझे डॉटि!" क्या यह आग से निकाली गई लकड़ी नहीं है? <sup>3</sup> अब यहोशू मैले वस्त्र पहने हुए दूत के सामने खड़ा था।<sup>4</sup> और उसने उन लोगों से कहा जो उसके सामने खड़े थे, "उसके मैले वस्त्र उतार दो।" फिर उसने उससे कहा, "देख, मैंने तेरा दोष तुझसे दूर कर दिया है और तुझे उस्तव के वस्त्र पहनाऊंगा।"<sup>5</sup> तब मैंने कहा, "उसके सिर पर एक स्वच्छ पटका रखो।"<sup>6</sup> तो उहँने उसके सिर पर पर स्वच्छ पटका रखा और उसे वस्त्र पहनाए, जबकि यहोवा का दूत पास खड़ा था।<sup>6</sup> और यहोवा के दूत ने यहोशू को चेतावनी दी, कहा, "यह सेनाओं के यहोवा का वचन है: 'यदि तू मेरी राहीं पर चले और मेरी सेवा करे, तो तू मेरे घर का शासन करेगा और मेरे आँगनों की देखरेख करेगा, और मैं तुझे यहाँ खड़े लोगों के बीच स्वतंत्र प्रवेश द्वारा।'<sup>7</sup> अब सुनो, यहोशू महायाजक, तुम और तुहँरे सामने भैठे तुम्हारे साथी—वास्तव में वे लोग एक प्रतीक हैं, क्योंकि देखो, वह पथर जो मैंने यहोशू के सामने रखा है—उस एक पथर पर सात आँखें हैं। देखो, मैं उस पर एक लेख खुदाने जा रहा हूँ,<sup>8</sup> सेनाओं के यहोवा की घोषणा है, 'और मैं उस देश का दोष एक ही दिन में हटा दूँगा।'<sup>9</sup> उस दिन, सेनाओं के यहोवा की घोषणा है, 'तुम मैं से हर एक अपने पड़ोसी को अपनी बेल और अंजीर के पेड़ के नीचे बैठने के लिए आमंत्रित करेगा।'

**४** तब वह स्वर्गदूत जो मुझसे बात कर रहा था, लौट आया और मुझे जागाया, जैसे कोई व्यक्ति अपनी नींद से जागता है।<sup>2</sup> और उसने मुझसे कहा, "तुम क्या देखते हो?" और मैंने कहा, "मैं देखता हूँ, और देखो, एक सोने का दीवट है, जिसके ऊपर एक कटोरा है, और उसके ऊपर सात दीपक हैं, और उन दीपकों के लिए सात नलियाँ हैं जो उसके ऊपर हैं;<sup>3</sup> और उसके पास दो जैतून के पेड़ हैं, एक कटोरे के दाहिनी ओर और दूसरा उसकी बाईं ओर।"<sup>4</sup> तब मैंने उत्तर दिया और उस स्वर्गदूत से कहा जो मुझसे बात कर रहा था, "ये क्या हैं, मेरे प्रभु?"<sup>5</sup> तब उस स्वर्गदूत ने जो मुझसे बात कर रहा था, उत्तर दिया और मुझसे कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि ये क्या हैं?" और मैंने कहा, "नहीं, मेरे प्रभु!"<sup>6</sup> तब

उसने मुझसे कहा, "यह ज़रूबाबेल के लिए यहोवा का वचन है, जो कहता है, न बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरी आत्मा से; सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"<sup>7</sup> तू कौन है, हे महान पर्वत? ज़रूबाबेल के सामने तू मैदान बन जाएगा, और वह शीर्ष पथर को निकालेगा, और लोग चिल्लाएंगे, "अनुग्रह, अनुग्रह उस पर!"<sup>8</sup> फिर यहोवा का वचन मुझसे आया, यह कहते हुए,<sup>9</sup> "ज़रूबाबेल के हाथों ने इस घर की नींव रखी है, और उसके हाथ इसे पूरा करेंगे। तब तुम जानागे कि सेनाओं के यहोवा मेरुझे तुम्हारे पास भेजा है।"<sup>10</sup> क्योंकि किसने छोटे दिनों का तिरस्कार किया है? परन्तु ये सात तब आनन्दित होंगे जब वे ज़रूबाबेल के हाथ में नापने की ढोरी देखेंगे—ये यहोवा की आँखें हैं जो सारी पृथ्वी पर धूमरी हैं।"<sup>11</sup> तब मैंने उत्तर दिया और उसपरे कहा, "ये दो जैतून के पेड़ क्या हैं जो दीवट के दाहिनी ओर और उसकी बाईं ओर हैं?"<sup>12</sup> और मैंने दूसरी बार उत्तर दिया और उससे कहा, "ये दो जैतून की शाखाएँ क्या हैं जो दो सोने की नलियों के पास हैं, जो अपने आप से सोने को तेल निकालती हैं?"<sup>13</sup> तब उसने मुझसे कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि ये क्या हैं?" और मैंने कहा, "नहीं, मेरे प्रभु!"<sup>14</sup> तब उसने कहा, "ये दो अभिषिक्त हैं, जो सारी पृथ्वी के प्रभु के पास खड़े हैं।"

**५** तब मैंने फिर अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, एक उड़ती हुई पुस्तक थी।<sup>2</sup> और उसने मुझसे कहा, "तुम क्या देखते हो?" और मैंने कहा, "मैं एक उड़ती हुई पुस्तक देखता हूँ; इसकी लंबाई बीस हाथ और और चौड़ाई दस हाथ है।"<sup>3</sup> तब उसने मुझसे कहा, "यह वह शाप है जो पूरे देश के ऊपर जा रहा है; हर वह व्यक्ति जो चौरी करता है, उसे एक तरफ लिखे अनुसार हटा दिया जाएगा, और हर वह व्यक्ति जो झूटी शपथ खाता है, उसे दूसरी तरफ लिखे अनुसार हटा दिया जाएगा।"<sup>4</sup> और इसे बाहर भेजोगा। सेनाओं के प्रभु ने घोषणा की, "और यह चौर के घर में प्रवेश करेगा और उस व्यक्ति के घर में जो मेरे नाम से झूटी शपथ खाता है; और यह उस घर में रात बिताएगा और उसे नष्ट कर देगा, उसकी लकड़ी और पथरों के साथ।"<sup>5</sup> तब वह स्वर्गदूत जो मुझसे बात कर रहा था, बाहर गया और मुझसे कहा, "अब अपनी आँखें उठाओ और देखो कि यह क्या है जो बाहर जा रहा है।"<sup>6</sup> और मैंने कहा, "यह क्या है?" तब उसने कहा, "यह एप है जो बाहर जा रहा है।"<sup>7</sup> उसने यह भी कहा, "यह उनकी उपस्थिति है पूरे देश में!"<sup>8</sup> (और देखो, एक सीसा का ढक्कन उठाया गया); और यह एक स्त्री है जो एपा के अंदर बैठी है।"<sup>9</sup> तब उसने कहा, "यह दुष्टता है!" और उसने उसे एपा के बीच में धकेल दिया और उसके मुँह पर सीसा का वजन

## जकयाहि

डाल दिया।<sup>9</sup> तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, दो स्त्रियाँ पंखों में हवा के साथ बाहर आ रही थीं; और उनके पंख सारस के पंखों की तरह थे, और उन्होंने एपा को पृथ्वी और आकाश के बीच उठा लिया।<sup>10</sup> तब मैंने उस स्वर्गदूत से कहा जो मुझसे बात कर रहा था, “वे एपा को कहाँ हैं जा रही हैं?”<sup>11</sup> तब उसने मुझसे कहा, “उसके लिए शिनार देश में एक मन्दिर बनाने के लिए; और जब यह तैयार हो जाएगा, तो उसे वहाँ उसके अपने आधार पर स्थापित किया जाएगा।”

**6** अब मैंने फिर अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, चार रथ दो पहाड़ों के बीच से निकल रहे थे; और वे पहाड़ पीतल के पहाड़ थे।<sup>2</sup> पहले रथ के साथ लाल घोड़े थे, दूसरे रथ के साथ काले घोड़े थे,<sup>3</sup> तीसरे रथ के साथ सफेद घोड़े थे, और चौथे रथ के साथ बलवान चित्तीदार घोड़े थे।<sup>4</sup> तब मैंने उत्तर दिया और उस स्वर्गदूत से कहा जो मुझसे बात कर रहा था, “ये क्या हैं, मेरे प्रभु?”<sup>5</sup> स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “ये स्वर्ण की चार आसानी हैं, जो पृथ्वी के समस्त प्रभु के सामने खड़ी होकर निकल रही हैं, <sup>6</sup> जिनमें से एक के साथ काले घोड़े उत्तर देश की ओर जा रहे हैं, और सफेद घोड़े उनके पीछे जाते हैं, जबकि चित्तीदार घोड़े दक्षिण देश की ओर जाते हैं।”<sup>7</sup> जब बलवान घोड़े निकले, तो वे पृथ्वी की गश्त करने के लिए उत्सुक थे। और उसने कहा, “जाओ, पृथ्वी की गश्त करो!” तो उन्होंने पृथ्वी की गश्त की।<sup>8</sup> तब उसने मुझे पुकारा और मुझसे कहा, “देखो, जो उत्तर देश की ओर जा रहे हैं, उन्होंने उत्तर देश में मेरे क्रोध को शांत किया है।”<sup>9</sup> तब यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए,<sup>10</sup> “निर्वासितों से, हैल्ये, तोबियाह, और यदायाह से एक भेट लो; और उसी दिन जाओ और जफन्याह के पुत्र योशियाह के घर में प्रवेश करो, जहाँ वे बाबुल से आए हैं।”<sup>11</sup> और चांदी और सोना लो, एक भव्य मुकुट बनाओ, और उसे यहोजादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रखो।<sup>12</sup> फिर उससे कहा, “यह सेनाओं का यहोवा कहता है: ‘देखो, एक मनुष्य है जिसका नाम शाखा है, क्योंकि वह जहाँ है वहाँ से पूटेगा; और वह यहोवा के मन्दिर का निर्माण करेगा।’<sup>13</sup> हाँ, वही यहोवा के मन्दिर का निर्माण करेगा, और वही आदर धारण करेगा और अपने सिंहासन पर बैठेगा और शासन करेगा। इस प्रकार वह अपने सिंहासन पर याजक होगा, और शांति की सलाह दोनों पदों के बीच होगी।”<sup>14</sup> अब वह मुकुट यहोवा के मन्दिर में हैलेम, तोबियाह, यदायाह, और हेन, जफन्याह के पुत्र के लिए एक स्मारक बन जाएगा।<sup>15</sup> जो दूर है वे आकर यहोवा के मन्दिर का निर्माण करेंगे।” तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और यह

तब होगा जब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी तरह से आज्ञा मानोगे।

**7** अब दारा राजा के चौथे वर्ष में, नवे महीने के चौथे दिन, जो कि किसलेव है, यहोवा का वचन जकयाहि के पास आया।<sup>2</sup> अब बेतेल नगर ने शारेजर और रोगम-मरोक और उनके लोगों को यहोवा की कृपा प्राप्त करने के लिए भेजा,<sup>3</sup> सेनाओं के यहोवा के घर के याजकों और भविष्यद्वक्ताओं से बात करते हुए कहा, “क्या मैं पांचवें महीने में रोंडे और उपवास करूं, जैसा कि मैंने इन कई वर्षों से किया है?”<sup>4</sup> तब सेनाओं के यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए,<sup>5</sup> “सभी देश के लोगों और याजकों से कहो, ‘जब तुमने इन सत्तर वर्षों में पांचवें महीने में उपवास और शोक किया, तो क्या वास्तव में मेरे लिए उपवास किया था?’<sup>6</sup> और जब तुम खाते और पीते हो, तो क्या तुम अपने लिए नहीं खाते और अपने लिए नहीं पीते? <sup>7</sup> क्या ये वही शब्द नहीं हैं जो यहोवा ने पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रचारित किया थे, जब यस्तशलेम और उसके चारों और के नगर बसे हुए और निश्चिन्त थे, और नेगेव और पहाड़ी क्षेत्र बसे हुए थे?”<sup>8</sup>

<sup>8</sup> तब यहोवा का वचन जकयाहि के पास आया, यह कहते हुए,<sup>9</sup> “यह सेनाओं के यहोवा ने कहा है: ‘स्वाच्छन्याय करो और दया और करुणा का अभ्यास करो, प्रत्येक अपने भाई के प्रति;<sup>10</sup> और विध्वा या अनाथ, परदेशी या गरीब पर अत्याचार न करो; और एक दूसरे के विरुद्ध अपने हृदय में बुराइ की योजना न बनाओ।’<sup>11</sup> परंतु उन्होंने ध्यान देने से इंकार कर दिया, और एक हठीता कंधा शुमाया और सुनने से अपने कान बंद कर लिए।<sup>12</sup> उन्होंने अपने हृदय को भी हीरे जैसा कठोर बना लिया, ताकि वे व्यवस्था और उन शब्दों को न सुन सकें जो सेनाओं के यहोवा ने अपने आत्मा द्वारा पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से भेजे थे; इसलिए सेनाओं के यहोवा से बड़ा क्रोध आया।<sup>13</sup> और जैसे उसने पुकारा और उन्होंने नहीं सुना, वैसे ही उन्होंने पुकारा और मैंने नहीं सुना,” सेनाओं के यहोवा ने कहा,<sup>14</sup> “परंतु मैंने उन्हें एक तृफानी हवा के साथ उन सभी राष्ट्रों के बीच बिखेर दिया जिन्हें वे नहीं जानते थे। इसलिए उनके पीछे भूमि उजाड़ हो गई ताकि कोई आगे-पीछे न जा सके, क्योंकि उन्होंने सुखद भूमि को उजाड़ बना दिया।”

**8** तब सेनाओं के यहोवा का वचन आया, यह कहते हुए,<sup>2</sup> “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: मैं सियोन के लिए अत्यंत जलन करता हूँ, हाँ, बड़े क्रोध के साथ मैं उसके लिए जलन करता हूँ।”<sup>3</sup> यहोवा यह कहता है: मैं सियोन में लौटकर यस्तशलेम के बीच निवास करूंगा। तब यस्तशलेम को सत्य का नगर कहा जाएगा, और

## जकयहि

सेनाओं के यहोवा के पर्वत को पवित्र पर्वत कहा जाएगा।<sup>4</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है: यरुशलेम के सार्वजनिक चौकों में फिर से बुढ़े पुरुष और बूढ़ी महिलाएं बैठेंगी, प्रस्तुक व्यक्ति अपने हाथ में अपनी लाठी लिए हुए उम्र के कारण।<sup>5</sup> और नगर के सार्वजनिक चौक लड़कों और लड़कियों से भर जाएंगे जो उसके चौकों में खेलेंगे।<sup>6</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “यदि उन दिनों में इस लोगों के अवशेष की दृष्टि में यह बहुत कठिन है, तो क्या यह मेरी दृष्टि में भी बहुत कठिन होगा? सेनाओं का यहोवा यह धोषित करता है।<sup>7</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “देखो, मैं अपने लोगों को पूरब के देश और पश्चिम के देश से बचाने जा रहा हूँ,<sup>8</sup> और मैं उन्हें वापस लाऊंगा, और वे यरुशलेम के बीच निवास करेंगे, और वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनके परमेश्वर बनूंगा सत्य और धर्म में।<sup>9</sup>

सेनाओं का यहोवा यह कहता है: ‘तुम्हारे हाथ मजबूत हों, तुम जो इन दिनों में इन शब्दों को भविष्यद्वक्ताओं के मुख से सुन रहे हो, जिहोने उस दिन कहा जब सेनाओं के यहोवा के घर की नींव रखी गई थी, मंदिर का निर्माण करने के लिए।<sup>10</sup> क्योंकि उन दिनों से पहले न तो मनुष्य के लिए मजदूरी थी और न ही पशु के लिए मजदूरी। और जो बाहर गया या अंदर आया, उसके लिए शत्रु के कारण कोई शांति नहीं थी, और मैंने सभी लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ भेजा।<sup>11</sup> लेकिन अब मैं इस लोगों के अवशेष के साथ पूर्व दिनों की तरह व्यवहार नहीं करूँगा; सेनाओं का यहोवा धोषित करता है।<sup>12</sup> क्योंकि बीच के लिए शांति होगी: लता अपना फल देगी, भूमि अपनी उपज देगी, और आकाश अपनी ओस देगा; और मैं इन सभी को इस लोगों के अवशेष के लिए एक विरासत के रूप में दूंगा।<sup>13</sup> और ऐसा होगा कि जैसे तुम जातियों के बीच एक शाप थे, यहूदा के घर और इसाइल के घर, वैसे ही मैं तुम्हें बचाऊंगा कि तुम एक आशीर्वाद बनो। डरो मत, तुम्हारे हाथ मजबूत हों।<sup>14</sup> क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है: ‘जैसे मैंने निश्चय किया था कि जब तुम्हारे पिताओं ने मुझे क्रियित किया; सेनाओं का यहोवा कहता है, ‘और मैंने नहीं छोड़ा,<sup>15</sup> वैसे ही मैंने इन दिनों में यरुशलेम और यहूदा के घर के लिए भला करने का निश्चय किया है। डरो मत!<sup>16</sup> ये वे बातें हैं जो तुम करोगे: एक-दूसरे से सत्य बोलो; अपने द्वारों पर शांति के लिए सत्य और न्याय के साथ न्याय करो।<sup>17</sup> और तुम्हें से कोई भी अपने हृदय में एक-दूसरे के खिलाफ भुराई न करो, और चूटी शापथ से प्रेम न करो; क्योंकि ये सभी बातें मैं धृणा करता हूँ।<sup>18</sup> यहोवा धोषित करता है।<sup>19</sup> तब सेनाओं के यहोवा का वचन मैंने पास आया, यह कहते हुए,<sup>20</sup> “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: ‘चौथे, पांचवें, सातवें, और दसवें महीने का

उपवास यहूदा के घर के लिए आनंद, उल्लास और हर्षित पर्व बन जाएगा; इसलिए सत्य और शांति से प्रेम करो।<sup>21</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है: यह फिर भी होगा कि लोग आएंगे, यहाँ तक कि कई नगरों के निवासी भी।<sup>22</sup> एक के निवासी दूसरे के पास जाएंगे, कहते हुए, “आओ, हम तुरंत यहोवा की कृपा के लिए विनती करने चलें, और सेनाओं के यहोवा को खोजें; मैं भी जाऊंगा।”<sup>23</sup> तो कई लोग और शक्तिशाली राष्ट्र सेनाओं के यहोवा को यरुशलेम में खोजने आएंगे, और यहोवा की कृपा के लिए विनती करेंगे।<sup>24</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है: ‘उन दिनों में सभी राष्ट्रों के दस लोग एक यहूदी के वस्त्र को पकड़ेंगे, कहते हुए, “हमें तुम्हारे साथ चलने दो, क्योंकि हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।”<sup>25</sup>

## ९ घोषणा

यहोवा का वचन हद्राक के देश के विरुद्ध है, और दमिश्क उसकी विश्वाम् स्थली है— क्योंकि मनुष्यों की औँखें विशेष रूप से इसाइल के सभी गोत्रों की, यहोवा की ओर लगी हैं—<sup>2</sup> और हमात भी, जो उसके साथ सटा खुआ है, सोर और सिदेन, क्योंकि वे बहुत बुद्धिमान हैं।<sup>3</sup> क्योंकि सोर ने अपने लिए एक गढ़ बनाया, और चाँदी को धूल के समान, और सोने को सड़कों की कीचड़ के समान ढेर कर लिया।<sup>4</sup> देखो, यहोवा उसे बेदखल करेगा और उसकी संपत्ति को समुद्र में फेंक देगा, और वह आग से भ्रम्य हो जाएगा।<sup>5</sup> अश्कलोन इसे देखेगा और डर जाएगा। गाजा भी बहुत पीड़ा में तड़पेगा, एकोन भी, क्योंकि उसकी आशा नष्ट हो गई है। और गाजा से राजा नष्ट हो जाएगा, और अश्कलोन में कोई निवास नहीं करेगा।<sup>6</sup> और अशदोद में मिश्रित धूल के लोग निवास करेंगे, और मैं उनके मुँह से उनका रक्त हटा द्वागा और उनके दाँतों के बीच से उनकी धृणित वस्तुएँ। तब वे भी हमारे परमेश्वर के लिए एक अवशेष होंगे, और यहूदा के एक कबीले के समान होंगे, और एकोन वजूही के समान होगा।<sup>7</sup> परन्तु मैं अपनी सेना के कारण अपने घर के चारों ओर डरा डालूँगा, जो आने जाने वाले के कारण, और कोई उत्तीर्णक अब उनके ऊपर से नहीं गुजरेगा, क्योंकि अब मैंने अपनी औँखों से देखा है।<sup>8</sup> सिय्योन की बेटी, अस्यन्त आनंदित हो। यरुशलेम की बेटी, जयजयकार करा! देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है, वह धर्मी है और उद्धार से संप्रभ है, विनम्र है, और गधे पर सवार है, यहाँ तक कि गधी के बच्चे पर।<sup>9</sup> और मैं एप्रेम से रथ को समाप्त कर द्वागा और

## जकयहि

यरूशलैम से घोड़े को; और युद्ध का धनुष समाप्त हो जाएगा। और वह राष्ट्रों से शांति की बात करेगा; और उसका राज्य समुद्र से समुद्र तक होगा, और यूफ्रेट्स नदी से पृथ्वी के छोर तक।<sup>11</sup> और तुम्हारे लिए भी, मेरे तुम्हारे साथ किए गए वाचा के रक्त के कारण, मैंने तुम्हारे बंदियों को जलहीन गड्ढे से मुक्त कर दिया है।<sup>12</sup> इदू स्थान पर लैट आओ, तुम जो आशा के बंदी हो; आज ही मैं घोषणा कर रहा हूँ कि मैं तुम्हें दोगुना लौटाऊंगा।<sup>13</sup> क्योंकि मैं यहूदा को अपने धनुष के रूप में मोड़गा, मैं एप्रैल से धनुष को भरूंगा; और मैं सियोन के तुम्हारे पुत्रों को यूनान के पुत्रों के विरुद्ध उकसाऊंगा; और मैं तुम्हें योद्धा की तलवार के समान बनाऊंगा।<sup>14</sup> तब यहोवा उनके ऊपर प्रकट होगा, और उसका तीर बिजी की तरह जाएगा, और यहोवा परमेश्वर तुरही पूँछेगा, और दक्षिण की तूफानी हवाओं में मार्च करेगा।<sup>15</sup> सेनाओं का यहोवा उनकी रक्षा करेगा। और वे गोकन के पथरों को खाएंगे और रैंडोंगे; और वे शराब की तरह पीएंगे और शोर करेंगे; और वे बलिदान के कटोरे की तरह भर जाएंगे, वेदी के कोनों की तरह भीगे हुए।<sup>16</sup> और उनके परमेश्वर यहोवा उस दिन उन्हें बचाएगा अपनी प्रजा की भेड़ के रूप में; क्योंकि वे मुकुट के बहुलूल रत्नों के समान हैं; उसकी भूमि पर चमकते हुए।<sup>17</sup> क्योंकि उसकी भलाई कितनी महान है, और उसकी सुंदरता कितनी महान है। अनाज जवानों को फलने फूलने देगा, और नई दाखरस कन्याओं को।

**10** वसंत की वर्षा के समय प्रभु से वर्षा मांगो—  
प्रभु जो तूफानी हवाएं बनाता है; और वह उन्हें वर्षा की बैछोंदें देगा, प्रत्येक व्यक्ति के खेत में वनस्पति।<sup>1</sup> क्योंकि तेराफिम धोखा देते हैं, और भविष्यवक्ता भ्रम देखते हैं और इसे सपने बताते हैं, वे वर्ष्य में सांकना देते हैं। इसलिए लग भेड़ों की तरह भटकते हैं, वे पीड़ित होते हैं; क्योंकि कोई चरवाहा नहीं है।<sup>2</sup> मेरे क्रोध ने चरवाहों के विरुद्ध भटक उठी है, और मैं नर बकरों को दड़ फ्रांगा; क्योंकि सेनाओं के प्रभु ने अपनी भेड़ बकरियों, यहूदा के घराने को देखा है, और उन्हें युद्ध में अपने भव्य घोड़े की तरह बनाएगा।<sup>3</sup> उनसे कोने का पथर आएगा उनसे तंबू की खूंखी उनसे युद्ध का धनुष, उनसे हर अत्याचारी, सभी एक साथ।<sup>4</sup> और वे योद्धाओं की तरह होंगे, युद्ध में सङ्कोचों की कीचड़ में दुश्मन को रौंदेंगे, और वे लड़ेंगे, क्योंकि प्रभु उनके साथ होगा; और घोड़ों पर सवार लोग लजित होंगे।<sup>5</sup> और मैं यहूदा के घराने को मजबूत करूंगा, और मैं उन्हें वापस लाऊंगा, क्योंकि मैंने उन पर दया की है, और वे

ऐसे होंगे जैसे मैंने उन्हें अस्वीकार नहीं किया था, क्योंकि मैं उनका परमेश्वर प्राप्त हूँ और मैं उन्हें उत्तर द्वंगा।<sup>6</sup> और एप्रैल योद्धा की तरह होगा, और उनका हवदय दाखमधु से प्रसन्न होगा; वास्तव में उनके बच्चे इसे देखेंगे और प्रसन्न होंगे, उनका हवदय प्रभु में आनन्दित होगा।<sup>7</sup> मैं उन्हें सीटी बजाकर इकट्ठा करूंगा, क्योंकि मैंने उन्हें छुड़ाया है, और वे पहले के समान अधिक होंगे।<sup>8</sup> जब मैं उन्हें लोगों के बीच बिखरे द्वंगा, वे दूर देशों में मुझे याद करेंगे, और वे अपने बच्चों के साथ जीवित रहेंगे और वापस आएंगे।<sup>9</sup> मैं उन्हें मिस्र देश से वापस लाऊंगा और उन्हें अश्शूर से इकट्ठा करूंगा; और मैं उन्हें गिलाद और लेबनान की भूमि में लाऊंगा जब तक कि उनके लिए काई स्थान न मिले।<sup>10</sup> और वे संकट के समुद्र से युजरेंगे, और वह समुद्र की लहरों को मारेगा ताकि नील की सभी गहराइयाँ सूख जाएं और अश्शूर का गर्व नीचे लाया जाएगा, और मिस्र का राजदंड चला जाएगा।<sup>11</sup> और मैं उन्हें प्रभु में मजबूत करूंगा, और वे उसके नाम में चलेंगे; प्रभु की घोषणा है।

**11** अपने द्वार खोलो, लेबनान, ताकि आग तुम्हारे देवदारों को भ्रम कर दे।<sup>12</sup> विलाप करो, जुनिपर, क्योंकि देवदार गिर गया है, क्योंकि शानदार वृक्ष नष्ट हो गए हैं विलाप करो बाशान के ओक, क्योंकि अभेद्य रन गिर गया है।<sup>13</sup> चरवाहों के विलाप की आवाज़ है, क्योंकि उनकी मात्रिमा नष्ट हो गई है; युवा शेरों के गरजने की आवाज़ है, क्योंकि यरदन की शान बर्बाद हो गई है।

**4** यह मेरे परमेश्वर यहोवा का वचन है: “उस झुंड को चराओ जो वध के लिए नियत है।<sup>1</sup> जो उन्हें खीरदते हैं, वे उन्हें मार देते हैं और बिना दंड के चले जाते हैं, और जो उन्हें बेचते हैं, वे कहते हैं, ‘धर्य है यहोवा, क्योंकि मैं धनी हो गया हूँ।’ और उनके अपने चरवाहे उन्हें नहीं बचाते।<sup>2</sup> क्योंकि मैं अब देश के निवासियों को नहीं बचाऊंगा,” यहोवा की घोषणा है।<sup>3</sup> “परन्तु देखो, मैं लोगों को उनके पढ़ोसी के हाथ में और उनके राजा के हाथ में सौंप द्वांगा; और वे देश को कुचल देंगे, और मैं उन्हें उनके हाथ से नहीं बचाऊंगा।”<sup>4</sup> इसलिए मैंने उस झुंड को चराया जो वध के लिए नियत था, अर्पण झुंड के पीड़ितों को। और मैंने अपने लिए दो लाठियाँ लीं: एक का नाम मैंने कृपा रखा, और दूसरी का नाम मैंने एकता रखा। इसलिए मैंने झुंड को चराया।<sup>5</sup> तब मैंने एक महीने में तीन चरवाहों को हटा दिया, क्योंकि मेरी आत्मा उनसे अधीर थी, और उनकी आत्मा भी मुझसे बह गई थी।<sup>6</sup> तब मैंने कहा, “मैं तुम्हें नहीं चराऊंगा। जो मरने

## जकर्याहि

वाला है, उसे मरने दो, और जो नष्ट होने वाला है, उसे नष्ट होने दो; और जो बचे हैं, वे एक-दूसरे का मांस खाएँ।<sup>10</sup> और मैंने अपनी लाठी कृपा को लिया और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, ताकि मेरी वह वाचा टूट जाए जो मैंने सभी लोगों के साथ की थी।<sup>11</sup> इसलिए वह उस दिन टूट गई, और इसलिए झुंड के पीड़ितों ने जो मुझे देख रखे थे, समझ लिया कि यह यहोवा का वचन था।<sup>12</sup> और मैंने उनसे कहा, “यदि यह तुम्हारी दृष्टि में अच्छा है, तो मुझे मेरी मजदूरी दो; परन्तु यदि नहीं, तो कोई बात नहीं।” इसलिए उन्होंने मेरी मजदूरी के रूप में तीस चाँदी के सिक्के तौले।<sup>13</sup> तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इसे कुक्खार को फेंक दो, वह मूल्यवान मूल्य जिस पर उन्होंने मुझे मूल्यवान समझा।” इसलिए मैंने तीस चाँदी के सिक्के लिए और उन्हें यहोवा के घर में कुक्खार को फेंक दिया।<sup>14</sup> तब मैंने अपनी दूसरी लाठी एकता को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, ताकि यहूदा और इस्राएल के बीच भाईचारे को तोड़ दूँ।<sup>15</sup> और यहोवा ने मुझसे कहा, “अपने लिए फिर से एक मूर्ख चरवाहे का उपकरण ले लो।”<sup>16</sup> क्योंकि देखो, मैं देश में एक चरवाहे को उठाने जा रहा हूँ जो नष्ट होने वालों की परवाह नहीं करेगा, बिखरे हुए को नहीं ढूढ़ेगा, टूटे हुए को नहीं चंगा करेगा, या खड़े रहने वाले को नहीं बनाए रखेगा, परन्तु मोटे भेड़ों का मांस खा जाएगा और उनके खुरों को फाड़ देगा।

<sup>17</sup> थिकाकार है उस बेकार चरवाहे पर जो झुंड को छोड़ देता है एक तलवार उसकी भूजा पर होगी और उसकी दाहिनी आँख पर उसकी भूजा पूरी तरह से सूख जाएगी, और उसकी दाहिनी आँख अंधी हो जाएगी।”

**12** इस्राएल के विषय में यहोवा के वचन की धोषणा: यहोवा, जो आकाश को फैलाता है, पृथ्वी की नींव डालता है, और मनुष्य के भीतर आत्मा को बनाता है, यह कहता है: <sup>2</sup> “देखो, मैं यरूशलेम को चारों ओर की जातियों के लिए एक ऐसा प्याला बनाने जा रहा हूँ जो उन्हें लड़खड़ाएगा; और जब यरूशलेम की धेराबंदी होगी, तो यह यहूदा के खिलाफ भी होगी।”<sup>3</sup> और उस दिन ऐसा होगा कि मैं यरूशलेम को सब जातियों के लिए एक भारी पतर बना दूँगा; जो कोई उसे उठाएगा, वह स्वयं को गंभीर रूप से घायल करेगा। और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके खिलाफ इकट्ठा होंगी।<sup>4</sup> उस दिन, “यहोवा कहता है, “मैं हर घोड़े को भ्रम में डाल दूँगा और उसके सवार को पागल कर दूँगा। परन्तु मैं यहूदा के घर पर दृष्टि रखूँगा, जबकि मैं लोगों के हर घोड़े को अंधा कर दूँगा।”<sup>5</sup> तब यहूदा के कुल अपने हृदय में कहेंगे,

यरूशलेम के निवासी हमारे लिए सेनाओं के यहोवा, उनके परमेश्वर के द्वारा एक मज़बूत सहारा है।<sup>6</sup> उस दिन मैं यहूदा के कुलों को लकड़ी के टुकड़ों के बीच एक अग्निपात्र के समान और पूर्तों के बीच एक जलती हुई मशाल के समान बना दूँगा, इस प्रकार वे दाँए और बाँए चारों ओर की जातियों को भस्म कर देंगे, जबकि यरूशलेम के निवासी फिर से यरूशलेम में अपनी जगहों पर निवास करेंगे।<sup>7</sup> यहोवा पहले यहूदा के तंबुओं को बचाएगा, ताकि दाऊद के घर की महिमा और यरूशलेम के निवासियों की महिमा यहूदा से अधिक न हो।<sup>8</sup> उस दिन यहोवा यरूशलेम के निवासियों की रक्षा करेगा, और जो उनमें से दुर्बल होगा वह उस दिन दाऊद के समान होगा, और दाऊद का घर परमेश्वर के समान होगा, उनके समान यहोवा के द्रूत के समान।<sup>9</sup> और उस दिन मैं उन सभी जातियों को नष्ट करने की खोज करूँगा जो यरूशलेम के खिलाफ आती हैं।<sup>10</sup> और मैं दाऊद के घर पर और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह करना चाहता हूँ और वे उन्होंने बेथा है; और वे उसके लिए विलाप करेंगे, जैसे कोई अपने एकमात्र पुत्र के लिए विलाप करता है, और वे उसके लिए कड़वा और सूखा जाएंगे, जैसे कोई अपने पहलोंठे के लिए कड़वा विलाप करता है।<sup>11</sup> उस दिन यरूशलेम में विलाप बड़ा होगा, जैसे मेगिद्दो के मैदान में हद्दिमीन का विलाप।<sup>12</sup> और देश विलाप करेगा, हर परिवार अपने आप में: दाऊद के घर का परिवार अपने आप में, और उनकी पत्नियाँ अपने आप में; नाथान के घर का परिवार अपने आप में, और उनकी पत्नियाँ अपने आप में;<sup>13</sup> लेवी के घर का परिवार अपने आप में, और उनकी पत्नियाँ अपने आप में; शिमी के घर का परिवार अपने आप में, और उनकी पत्नियाँ अपने आप में; सभी परिवार जो बचे हैं, हर परिवार अपने आप में, और उनकी पत्नियाँ अपने आप में।

**13** उस दिन दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिए एक सोता खोला जाएगा, पाप और अशुद्धता के लिए।<sup>2</sup> “और उस दिन ऐसा होगा,” सेनाओं के प्रधु की धोषणा है, “कि मैं देश से मूर्तियों के नाम मिटा दूँगा, और वे अब स्मरण नहीं किए जाएंगे।” और मैं देश से भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्मा को भी हटा दूँगा।<sup>3</sup> और यदि कोई अब भी भविष्यवाणी करता है, तो उसके पिता और माता जिन्होंने उसे जन्म दिया है, उससे कहेंगे, तू जीवित नहीं रहेगा, क्योंकि तूने प्रभु के नाम में झूठ बोला है; और उसके पिता और माता जिन्होंने उसे जन्म दिया है, जब वह भविष्यवाणी करेगा, उसे छेद देंगे।<sup>4</sup> यह भी होगा कि उस दिन भविष्यद्वक्ता अपनी दृष्टि से लज्जित होंगे जब वे भविष्यवाणी करेंगे, और वे

## जकयहि

धोखा देने के लिए उनी वस्त्र नहीं पहनेंगे; <sup>५</sup> पर वह कहेगा, मैं भविष्यद्वक्ता नहीं हूँ, मैं भूमि का खेती करने वाला हूँ, क्योंकि एक आदमी ने मुझे मेरी युवावस्था में दास के रूप में बेचा था। <sup>६</sup> और कोई उससे कहेगा, तेरे बाहों के बीच ये घाव कैसे हैं? तब वह कहेगा, वे घाव जो मुझे मेरे मित्रों के घर में लगे।

<sup>७</sup> "जाग, तलवार, मेरे चरवाहे के विरुद्ध, और उस मनुष्य के विरुद्ध, मेरे साथी" सेनाओं के प्रभु की धोखणा है। "चरवाहे पर प्रहरा कर और भड़ें तिरत बितर हो जाएंगी; और मैं अपने हाथ को छोड़े लोगों के विरुद्ध फेरूंगा। <sup>८</sup> और यह पूरे देश में होगा। प्रभु की धोखणा है, "कि उसमें से दो भाग काट दिए जाएंगे और नए हों जाएंगे, परन्तु तीसरा भाग उसमें बचा रहेगा।" और मैं तीसरे भाग को आग के माध्यम से लाऊंगा, उहें चाँदी की तरह शुद्ध करूंगा, और उहें सोने की तरह परखूंगा। वे मेरे नाम को पुकारेंगे, और मैं उहें उत्तर द्वांगा, मैं कहूंगा, 'वे मेरे लोग हैं,' और वे कहेंगे, 'प्रभु मेरा परमेश्वर है।'

**14** देखो, यहोवा के लिए एक दिन आ रहा है जब तुम्हरे द्वारा लिए गए लूट को तुम्हारे बीच बांटा जाएगा। <sup>१</sup> क्योंकि मैं यरूशलेम के खिलाफ युद्ध के लिए सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करूंगा, और नगर लिया जाएगा, घर लूट जाएंगे, स्त्रियाँ बलाकार की जाएंगी। और आधा नार निर्वासन में जाएगा, लेकिन बाकी लोग नगर से समाप्त नहीं होंगे। <sup>३</sup> तब यहोवा उन राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध करेगा, जैसे वह युद्ध के दिन लड़ता है। <sup>४</sup> उस दिन उसके पैर जैतून के पर्वत पर खड़े होंगे, जो यरूशलेम के पूर्व में हैं; और जैतून का पर्वत अपने मध्य से पूर्व से पश्चिम तक विभाजित होगा, जिससे एक बहुत बड़ी घाटी बनेगी। पर्वत का आधा भाग उत्तर की ओर और दूसरा आधा दक्षिण की ओर चलेगा। <sup>५</sup> और तुम मेरी पर्वतों की घाटी से भागोगे, क्योंकि पर्वतों की घाटी अजेल तक पहुँचेगी। हाँ, तुम वैसे ही भागोगे जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में भूकंप से भागे थे। तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और उसके साथ सभी पावित्र लोग होंगे। <sup>६</sup> उस दिन कोई प्रकाश नहीं होगा; <sup>७</sup> क्योंकि यह एक प्रकाशमान वस्तुएं मंद हो जाएगी। <sup>८</sup> क्योंकि यह एक अनोखा दिन होगा जो यहोवा को ज्ञात है, न दिन होगा न रात, लेकिन संध्या समय में प्रकाश होगा। <sup>९</sup> और उस दिन जीवित जल यरूशलेम से बहकर निकलेगा, उनमें से आधा पूर्वी समुद्र की ओर और आधा पश्चिमी समुद्र की ओर; यह गर्मी में भी होगा और सर्दी में भी। <sup>१०</sup> और यहोवा सारी पृथ्वी पर राजा होगा; उस दिन यहोवा अकेला होगा, और उसका नाम अकेला होगा। <sup>११</sup> सारी

भूमि गेबा से लेकर यरूशलेम के दक्षिण में रिमोन तक एक मैदान में बदल जाएगी; लेकिन यरूशलेम उठेगा और अपनी जगह पर बना रहेगा बिन्यामिन के द्वार से लेकर पहले द्वार के स्थान तक, कोने के द्वार तक, और हननेल के मीनार से लेकर राजा के अंगूर के रस के स्थान तक। <sup>१२</sup> लोग उसमें निवास करेंगे, और अब कोई शाप नहीं होगा, क्योंकि यरूशलेम सुरक्षा में निवास करेगा। <sup>१३</sup> अब यह वह विपत्ति होगी जिससे यहोवा उन सभी लोगों को मारेगा जिहोने यरूशलेम के खिलाफ युद्ध किया है: उनका मास उनके पैरों पर खड़े रहते हुए सड़ जाएगा, और उनकी आँखें उनके गड्ढों में सड़ जाएंगी, और उनकी जीभ उनके मुँह में सड़ जाएंगी। <sup>१४</sup> उस दिन यह होगा कि यहोवा की ओर से एक बड़ी घबराहट उन पर पड़ेगी, और वे एक-दूसरे का हाथ पकड़ेंगे, और एक का हाथ दूसरे के हाथ के खिलाफ उठेगा। <sup>१५</sup> यहूदा भी यरूशलेम में युद्ध करेगा; और सभी आस-पास के राष्ट्रों की संपत्ति इकट्ठी की जाएगी, सोना, चाँदी, और वस्त्र बड़ी मात्रा में। <sup>१६</sup> और इसी विपत्ति की तरह घोड़े, खच्चर, ऊँट, गधे, और सभी पशुओं पर विपत्ति होगी जो उन शिविरों में होंगे। <sup>१७</sup> तब यह होगा कि जो भी यरूशलेम के खिलाफ गए सभी राष्ट्रों में से बचेंगे वे वर्ष-प्रतिवर्ष राजा की, सेनाओं के यहोवा की आराधना करने के लिए जाएंगे, और झोपड़ियों के पर्व का उत्सव मनाएंगे। <sup>१८</sup> और यह होगा कि पृथ्वी के जिन परिवारों में से कोई यरूशलेम नहीं जाएगा राजा की, सेनाओं के यहोवा की आराधना करने के लिए, उन पर वर्षा नहीं होगी। <sup>१९</sup> और यदि मिस्र का परिवार नहीं जाता या प्रवेश नहीं करता, तो उन पर कोई वर्षा नहीं होगी; यह वही विपत्ति होगी जिससे यहोवा उन राष्ट्रों को मारेगा जो झोपड़ियों के पर्व का उत्सव मनाने नहीं जाते। <sup>२०</sup> यह मिस्र की सजा होगी, और उन सभी राष्ट्रों की सजा होगी जो झोपड़ियों के पर्व का उत्सव मनाने नहीं जाते। <sup>२१</sup> उस दिन घोड़ों की घटियों पर लिखा होगा, "यहोवा के लिए पवित्र।" और यहोवा के घर में पकाने के बर्तन वेदी के सामने के कटीरों की तरह होंगे। <sup>२२</sup> यरूशलेम और यहूदा में हर पकाने का बर्तन सेनाओं के यहोवा के लिए पवित्र होगा, और सभी बलिदान करने वाले आएंगे और उनमें से लेंगे और उनमें उबालेंगे। और उस दिन सेनाओं के यहोवा के घर में कोई कनानी नहीं होगा।

## मलाकी

**1** मलाकी के माध्यम से इसाएल के लिए प्रभु के वचन की घोषणा:<sup>2</sup> "मैंने तुमसे प्रेम किया है" प्रभु कहते हैं। परन्तु तुम कहते हों, "आपने हमसे कैसे प्रेम किया?" "क्या एसाव याकूब का भाई नहीं था?" प्रभु पौष्टि करते हैं। "फिर भी मैंने याकूब से प्रेम किया है";<sup>3</sup> परन्तु मैंने एसाव से धूणा की है, और मैंने उसके पहाड़ों को उजाड़ दिया है और उसकी विरासत को जंगल के सियारों को दे दिया है।"<sup>4</sup> यद्यपि एदोम कहता है, "हम पराजित हो गए हैं, परन्तु हम लौटेंगे और खंडहरों को फिर से बनाएंगे"; यह वही है जो सेनाओं के प्रभु कहते हैं: "वे चाहे निर्माण करें, परन्तु मैं उसे गिरा दूंगा; और लोग उन्हें दुश्ता का क्षेत्र कहेंगे, और वे लोग जिनसे प्रभु सदा के लिए क्रोधित हैं।"<sup>5</sup> और तुम्हारी आँखें इसे देखेंगी, और तुम कहोगे, "इसाएल की सीमा से परे प्रभु की महिमा हो!"<sup>6</sup> <sup>7</sup> "एक पुत्र अपने पिता का आदर करता है, और एक सेवक अपने स्वामी का। फिर यदि मैं पिता हूँ, तो मेरा आदर कहाँ है? और यदि मैं स्वामी हूँ, तो मेरा सम्मान कहाँ है?" सेनाओं के प्रभु तुमसे, उन याजकों से कहते हैं जो मेरे नाम का तिरस्कार करते हैं। परन्तु तुम कहते हों, "हमने आपके नाम का तिरस्कार कैसे किया?" <sup>7</sup> तुम मेरे वेदी पर अशुद्ध भोजन प्रस्तुत कर रहे हों। परन्तु तुम कहते हों, "हमने आपको कैसे अशुद्ध किया?" इसमें कि तुम कहते हों, प्रभु की मेज का तिरस्कार किया जाना चाहिए।<sup>8</sup> और जब तुम बलिदान के लिए एक अंथे पशु को प्रस्तुत करते हों, तो क्या यह बुरा नहीं है? और जब तुम एक लंगडे या बीमार पशु को प्रस्तुत करते हों, तो क्या यह बुरा नहीं है? इसे अपने राज्यपाल की अपित करो! क्या वह तुमसे प्रसन्न होगा, या वह तुम्हें कृपा से स्त्रीकार करेगा?" सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>9</sup> "परन्तु अब, सचमुच परमेश्वर की कृपा को लिए प्रार्थना करो, ताकि वह हम पर दयालु हो। तुम्हारी ओर से ऐसी भेट के साथ, क्या वह तुम्हें से किसी को कृपा से स्त्रीकार करेगा?" सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>10</sup> "यदि केवल तुम में से कोई एक द्वारा बंद कर दे, ताकि तुम मेरी वेदी पर व्यंग्य अग्नि न जलाइ। मैं तुमसे प्रसन्न नहीं हूँ," सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "और न ही मैं तुम्हारे हाथ से भेट स्त्रीकार करूँगा।"<sup>11</sup> क्योंकि सूर्य के उदय से लेकर उसके अस्त होने तक, मेरा नाम जातियों में महान होगा, और हर स्थान पर मेरे नाम के लिए धूप चढ़ाई जाएगी, और एक शुद्ध अन्न भेट; क्योंकि मेरा नाम जातियों में महान होगा," सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>12</sup> "परन्तु तुम इसे अपवित्र कर रहे हो यह कहकर, प्रभु की मेज अपवित्र है, और इसके फल के लिए, इसका भोजन तिरस्कृत होना चाहिए।"<sup>13</sup> तुम यह भी कहते हों, देखो, यह कितना कष्टदायक है! और तुम इसे तिरस्कार से देखते हों, "सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "और तुम जो चोरी से लिया गया था, और जो

लंगड़ा या बीमार है, उसे लाते हों; तो तुम भेट लाते हो! क्या मैं उसे तुम्हारे हाथ से स्वीकार करूँ?" प्रभु कहते हैं।<sup>14</sup> "परन्तु शापित हो वह धोखेबाज जो अपनी भेड़-बकरियों में एक नर पशु रखता है और उसे प्रतिज्ञा करता है, परन्तु प्रभु को एक दोषपूर्ण पशु की बलि देता है। क्योंकि मैं एक महान राजा हूँ," सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "और मेरा नाम जातियों में भयभीत है।"

**2** "और अब, यह आज्ञा तुम्हारे लिए है, हे याजकों।<sup>1</sup> यदि तुम नहीं सुनोगे, और यदि तुम मेरे नाम का आदर करने के लिए इसे दिल से नहीं लोगे," सेनाओं के यहोवा कहते हैं, "तो मैं तुम पर शाप भेजूँगा, और मैं तुम्हारी आशीषों को शाप दूंगा; और वास्तव में, मैंने उन्हें पहले ही शाप दिया है, क्योंकि तुम इसे दिल से नहीं ले रहे हो।"<sup>2</sup> <sup>3</sup> देखो, मैं तुम्हारी संतानों को डांटें जा रहा हूँ, और मैं तुम्हारे चेहरों पर तुम्हारे पर्वों की गंदगी फैलाऊँगा; और तुम उसके साथ ले जाए जाओगे।<sup>4</sup> तब तुम जानोगे कि मैंने यह आज्ञा तुम्हें भेजी है, ताकि मेरा वाचा लैवी के साथ बनी रहे। सेनाओं के यहोवा कहते हैं।<sup>5</sup> "मेरी वाचा उसके साथ जीवन और शांति की थी, और मैंने उन्हें उसे आदर के रूप में दिया; इसलिए उसने मेरा आदर किया और मेरे नाम से भयभीत हुआ।"<sup>6</sup> सच्चा उपदेश उसके मुख में था और उसके हौंठों पर अन्याय नहीं पाया गया; वह मेरे साथ शांति और सीधेपन में चला, और उसने बहुतों को बुराई से वापस मोड़ा।<sup>7</sup> क्योंकि याजक के हौंठों को ज्ञान बनाए रखना चाहिए, और लोगों को उसके मुख से उपदेश प्राप्त करना चाहिए; क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है।<sup>8</sup> परन्तु तुमने मार्ग से भटक गए हो; तुमने उपदेश के द्वारा बहुतों को ठोकर खिलाई है; तुमने लैवी की वाचा का उल्लंघन किया है,<sup>9</sup> सेनाओं के यहोवा कहते हैं।<sup>10</sup> "इसलिए मैंने भी तुम्हें सब लोगों के सामने तुच्छ और निम्न प्रतिष्ठा का बना दिया है, क्योंकि तुम मेरी राहों का पालन नहीं कर रहे हो।" बल्कि उपदेश में पक्षपात कर रहे हो।<sup>11</sup> क्या हम सबका एक पिता नहीं है? क्या एक ही परमेश्वर ने हमें नहीं बनाया? फिर हम क्यों विश्वासघात करते हैं, एक त्रूपसे के विरुद्ध ताकि हमारे पिताओं की वाचा का अपमान हो?<sup>12</sup> यहूदा ने विश्वासघात किया है, और इसाएल और यरूशलैम में एक धूषित कार्य किया गया है; क्योंकि यहूदा ने यहोवा के पवित्र स्थान का अपमान किया है, जिसे वह प्रेम करता है, और एक विदेशी देवता की बेटी से विवाह किया है।<sup>13</sup> जो मनुष्य यह करता है, उसके लिए यहोवा याकूब के तंबुओं से हर जागरूक और उत्तर देने वाले को, या जो सेनाओं के यहोवा को भेट चढ़ाता है, समाप्त कर दे।<sup>14</sup> और यह एक और बात है जो तुम करते हों: तुम यहोवा की वेदी को आँसुओं से ढक देते हों, रोने

## मलाकी

और आह भरने के साथ, क्योंकि वह अब तुम्हारे हाथ से भेट को ध्यान नहीं देता या उसे अनुग्रह से स्वीकार नहीं करता।<sup>14</sup> फिर भी तुम कहते हो, "किस कारण?" क्योंकि यहोवा तुम्हारे और तुम्हारी युवावस्था की पत्ती के बीच साक्षी रहा है, जिसके विरुद्ध तुमने विश्वासघात किया है। हाताँकि वह तुम्हारी विवाह साथी और तुम्हारी वाचा की पत्ती है।<sup>15</sup> परन्तु जिसने आत्मा का अवशेष रखा है, उसने ऐसा नहीं किया। और क्यों एक? वह एक धर्मी सतान चाहता था। इसलिए अपनी आत्मा के प्रति सावधान रहो, और देखो कि तुम में से कोई भी अपनी युवावस्था की पत्ती के विरुद्ध विश्वासघात न करो।<sup>16</sup> "क्योंकि मैं तलाक से घृणा करता हूँ," इसाले का परमेश्वर यहोवा कहता है, "और जो अपने वस्त को हिंसा से ढकता है," सेनाओं के यहोवा कहता है। "इसलिए अपनी आत्मा के प्रति सावधान रहो, कि तुम विश्वासघात न करो।"<sup>17</sup> तुमने अपने शब्दों से यहोवा को थका दिया है। फिर भी तुम कहते हो, "हमने उसे कैसे थका दिया?" इसमें कि तुम कहते हो, "जो कोई बुराई करता है वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा है, और वह उनमें प्रसन्न होता है," या, "न्याय का परमेश्वर कहाँ है?"

**3** "देखो, मैं अपना दूत भेज रहा हूँ, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा। और प्रभु, जिसे तुम खो रहे हो, अचानक अपने मंदिर में आएगा; और वाचा का दूत, जिसमें तुम आनंद लेते हो, देखो, वह आ रहा है," सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>2</sup> परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकता है? और जब वह प्रकट होगा, तो कौन खड़ा रह सकता है? क्योंकि वह शुद्ध करनेवाले की आग और धोबी के साबुन के समान है।<sup>3</sup> और वह चांदी के गलाने और शुद्ध करनेवाले के समान बैठेगा, और वह लेवी के पुत्रों को शुद्ध करेगा और उन्हें सोने और चांदी के समान परस्पर करेगा, ताकि वे धर्म में यहोवा के लिए भेट चढ़ा सकें।<sup>4</sup> तब यहूदा और यरूशलैम की भेट यहोवा को प्रसन्न करेगी जैसे पुराने दिनों में और जैसे पूर्व वर्षों में।<sup>5</sup> "तब मैं न्याय के लिए तुम्हारे पास आऊँगा, और मैं जागूरां, अधिकारियों, झूठी शपथ खानेवालों, मजदूरी में मजदूरों को डबनेवालों, विधाया और अनाथ को सतानेवालों, और परदेशी को न्याय से विनाश करनेवालों के विरुद्ध शीघ्र साक्षी दूँगा, और जो मुझसे नहीं डरते," सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>6</sup> "क्योंकि मैं, यहोवा, नहीं बदलता; इसलिए तुम, याकूब के पुत्रों, समाप्त नहीं हुए हो।"<sup>7</sup> तुम्हारे पितरों के दिनों से तुम मेरी विधियों से भटक गए हो और उन्हें नहीं माना है। मेरी और लौट आओ, और मैं तुम्हारी और लौट आऊँगा," सेनाओं के प्रभु कहते हैं। "परन्तु तुम कहते हो, 'हम कैसे लौटें?'<sup>8</sup> क्या कोई परमेश्वर को धोखा देगा? फिर भी तुम मुझे

धोखा दे रहे हो! परन्तु तुम कहते हो, 'हमने आपको कैसे धोखा दिया?' दशमांश और भेटों में।<sup>9</sup> तुम शाप से शापित हो, क्योंकि तुम मुझे धोखा दे रहे हो, तुम सब राष्ट्र।<sup>10</sup> संपूर्ण दशमांश भंडार में लाओ, ताकि मेरे घर में भोजन हो, और अब इस में मुझे परखो।" सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "क्या मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग के खिलकियाँ नहीं खोलूँगा और तुम्हारे लिए आशीर्वाद बरसाऊँगा जब तक कि वह भर न जाए।"<sup>11</sup> तब मैं तुम्हारे लिए नाशक को डांड़ूँगा, ताकि वह तुम्हारी भूमि के फल को नष्ट न करे; और न ही खेत में बेल तुम्हारे लिए फललीन होगी।" सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>12</sup> "सब राष्ट्र तुम्हे धन्य कहेंगे, क्योंकि तुम एक सुखद भूमि होगे," सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>13</sup> "तुम्हारे शब्द मेरे विरुद्ध अभिमानी रहे हैं," यहोवा कहता है।<sup>14</sup> फिर भी तुम करते हो, हमने आपके विरुद्ध क्या कहा है?<sup>15</sup> तुमने कहा है, "परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ है; और इसका क्या लाभ है कि हमने उसकी विधि का पालन किया है, और सेनाओं के यहोवा के सामने शोक में चले हैं?"<sup>16</sup> अब हम अभिमानियों को धन्य कहते हैं; न केवल दुष्टाने करनेवाले बनाए जाते हैं, बल्कि वे परमेश्वर को परखते हैं और दंड से बच जाते हैं।"<sup>17</sup> तब जो यहोवा से डरते थे, वे एक-दूसरे से बोले, और यहोवा ने ध्यान से सुना और सुना, और जो यहोवा से डरते थे और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके लिए उसके सामने एक स्मरण पुस्तक लिखी गई।<sup>18</sup> "और वे मेरे होंगे," सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "उस दिन जब मैं अपनी विशेष संपत्ति तैयार करूँगा, और मैं उनके लिए दया करूँगा जैसे एक व्यक्ति अपने सेवा करनेवाले पुत्र के लिए दया करता है।"<sup>19</sup> तब तुम फिर से धर्मी और दुष्ट के बीच, परमेश्वर की सेवा करनेवाले और उसकी सेवा न करनेवाले के बीच भेद करोगे।

**4** "क्योंकि देखो, वह दिन आ रहा है, जो भट्टी की तरह जलता है, और सभी अभिमानी और हर एक दुष्ट कुड़े की तरह होंगे; और वह दिन जो आ रहा है उन्हें भस्म कर देगा," सेनाओं के प्रभु कहते हैं, "ताकि वह उनके न तो जड़ छोड़ेंगे और न शाखाएँ।"<sup>2</sup> परन्तु तुम जो मेरे नाम का धय मानते हो, तुम्हारे लिए धर्म का सूर्य अपने पंखों में चंगाई लेकर उदय होगा; और तुम बाहर जाकर बाढ़े से निकले बछड़ों की तरह कूदोगे।<sup>3</sup> और तुम दुष्टों को अपने पैरों के नीचे कुचल दोगे, क्योंकि वे उस दिन तुम्हारे पैरों के तलवों के नीचे राख होंगे जो मैं तैयार कर रहा हूँ।<sup>4</sup> सेनाओं के प्रभु कहते हैं।<sup>5</sup> "मेरे दास मूसा की व्यवस्था को स्मरण करो, वे विधियाँ और नियम जो मैंने होरेब में समस्त इसाले के लिए उसे आज्ञा दी थीं।"<sup>6</sup> देखो, मैं तुम्हारे पास नबी एलियाथा को भेजूँगा, प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले।<sup>7</sup> वह

## **मलाकी**

पिताओं के हृदय को उनके बच्चों की ओर और बच्चों के हृदय को उनके पिताओं की ओर फेर देगा, ताकि मैं आकर देश को पूरी तरह से नष्ट न कर दूँ।"

## मत्ती

**१** यीशु मसीह की वंशावली का लेख, जो दाऊद का पुत्र, इब्राहीम का पुत्र है: <sup>२</sup> इब्राहीम ने इसहाक को जन्म दिया, इसहाक ने याकूब को जन्म दिया, और याकूब ने यहूदा और उसके भाइयों को जन्म दिया। <sup>३</sup> यहूदा ने तामार से पेरेज और जेरह को जन्म दिया, पेरेज ने हेजरेन को जन्म दिया, और हेजरेन ने राश को जन्म दिया। <sup>४</sup> राश ने अमीनादाब को जन्म दिया, अमीनादाब ने नहशेन को जन्म दिया, और नहशेन ने सलमोन को जन्म दिया। <sup>५</sup> सलमोन ने राहब से बोअज़ को जन्म दिया, बोअज़ ने रूत से ओबेद को जन्म दिया, और ओबेद ने पिशे को जन्म दिया। <sup>६</sup> पिशे ने राजा दाऊद को जन्म दिया जो रुरियाह की पत्नी थी। <sup>७</sup> सुलैमान ने रहवियाम को जन्म दिया, रहवियाम ने अबियाह को जन्म दिया, और अबियाह ने आसा को जन्म दिया। <sup>८</sup> आसा ने यहोशापात को जन्म दिया, यहोशापात ने योराम को जन्म दिया, और योराम ने उज्जियाह को जन्म दिया। <sup>९</sup> उज्जियाह ने योताम को जन्म दिया, योताम ने आहाज को जन्म दिया, और आहाज ने हिजकियाह को जन्म दिया। <sup>१०</sup> हिजकियाह ने मनश्वे को जन्म दिया, मनश्वे ने आमोन को जन्म दिया, और आमोन ने योशियाह को जन्म दिया। <sup>११</sup> योशियाह ने यहोनियाह और उसके भाइयों को जन्म दिया, जब बाबुल की बंधुआई हुई। <sup>१२</sup> बाबुल की बंधुआई के बाद: यहोनियाह ने शालिताल को जन्म दिया, और शालिताल ने जरुब्बाबेल को जन्म दिया। <sup>१३</sup> जरुब्बाबेल ने अबीहूद को जन्म दिया, अबीहूद ने एलियाकिम को जन्म दिया, और एलियाकिम ने अज़ोर को जन्म दिया। <sup>१४</sup> अज़ोर ने सादोक को जन्म दिया, सादोक ने अखीम को जन्म दिया, और अखीम ने एलियूद को जन्म दिया। <sup>१५</sup> एलियूद ने एलियाजर को जन्म दिया, एलियाजर ने मत्तान को जन्म दिया, और मत्तान ने याकूब को जन्म दिया। <sup>१६</sup> याकूब ने यूसुफ को जन्म दिया, जो मरियम का पति था, जिससे यीशु का जन्म हुआ, जिसे मसीह कहा जाता है। <sup>१७</sup> इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ हैं: दाऊद से बाबुल की बंधुआई तक चौदह पीढ़ियाँ; और बाबुल की बंधुआई से मसीह तक चौदह पीढ़ियाँ।

<sup>१८</sup> अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी माता मरियम की मांगनी यूसुफ के साथ हुई थी, तो उनके एक साथ आने से पहले वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती पाई गई। <sup>१९</sup> और उसका पति यूसुफ, धर्मी पुरुष होने के कारण और उसे अपमानित नहीं करना चाहता था, उसे गुप्त रूप से छोड़ने की योजना बनाई। <sup>२०</sup> परन्तु जब उसने यह विचार किया, तो देखो, प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर कहा, “दाऊद की

संतान यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में लेने से मत डर; क्योंकि जो बच्चा उसमें गर्भित है वह पवित्र आत्मा का है। <sup>२१</sup> वह एक पुत्र को जन्म देगी; और युम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।” <sup>२२</sup> अब यह सब इसलिये हुआ कि जो प्रभु ने भविष्यतका के द्वारा कहा था वह पूरा हो: <sup>२३</sup> “देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे,” जिसका अर्थ है, “ईश्वर हमारे साथ।” <sup>२४</sup> और यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के स्वर्गदूत की आज्ञा के अनुसार किया, और मरियम को अपनी पत्नी के रूप में लिया, <sup>२५</sup> परन्तु जब तक उसने एक पुत्र को जन्म नहीं दिया, तब तक उसे कुँवारी ही रखा; और उसने उसका नाम यीशु रखा।

**२** जब हेरोद राजा के दिनों में यीशु का जन्म यहूदिया के बेथलहम में हुआ, तब पूर्व से ज्योतिषी यरूशलैम में आए और उड़ने लगे, <sup>२</sup> “यहूदियों का राजा जो जन्मा है, वह कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसे प्रणाम करने आए हैं।” <sup>३</sup> जब हेरोद राजा ने यह सुना, तो वह व्याकुल हो गया, और उसके साथ सारा यरूशलैम भी। <sup>४</sup> और उसने लोगों के सब प्रधान याजकों और शास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए। <sup>५</sup> उन्होंने उससे कहा, “यहूदिया के बेथलहम में; क्योंकि यह मविष्यद्वक्ता के द्वारा लिखा गया है: <sup>६</sup> और तू, यहूदा की भूमि बेथलहम, यहूदा के प्रधानों में से किसी प्रकार से छोटा नहीं है; क्योंकि तुझ में से एक शासक निकलेगा जो मेरी प्रजा इसाएल की चरवाही करेगा।” <sup>७</sup> तब हेरोद ने गुप्त रूप से ज्योतिषियों को बुलाया और उनसे ठीक समय पूछा जब तारा दिखाई दिया था। <sup>८</sup> और उसने उन्हें बेथलहम भेजा और कहा, “जाओ, बालक के विषय में ठीक-ठीक खोज करो; और जब तुम उसे पा लो, तो मुझे समाचार दो, ताकि मैं भी आकर उसे प्रणाम करूँ।” <sup>९</sup> राजा की बात सुनकर वे चले गए; और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला, और जहाँ बालक था वहाँ आकर ठहर गया। <sup>१०</sup> जब उन्होंने तारे को देखा, तो वे अलंत आनंदित हुए। <sup>११</sup> और घर में आकर उन्होंने बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा; और वे गिरकर उसे प्रणाम करने लगे। तब उन्होंने अपने खुजाने खोले और उसे सोना, लोबान और गंधरस की भेट दी। <sup>१२</sup> और स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर कि हेरोद के पास न लौटें, ज्योतिषी दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गए।

<sup>१३</sup> जब वे चले गए, तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया और कहा, “उठो! बालक और

## मत्ती

उसकी माता को लेकर मिस्र को भाग जाओ, और वहाँ तब तक रहो जब तक मैं तुम्हें न कहूँ; क्योंकि हेरोद बालक को मार डालने के लिए उसे खोजने वाला है।<sup>14</sup> तब यूसुफ उठा और रात के समय बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चला गया।<sup>15</sup> और वह हेरोद की मृत्यु तक वहीं रहा। यह इसलिए हुआ कि जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो: "मिस्र से मैंने अपने पुत्र को बुलाया।"

<sup>16</sup> तब हेरोद ने देखा कि ज्योतिषियों ने उसे धोखा दिया है, वह अल्पतं क्राधित हुआ, और उसने लोगों को भेजकर बेथलहम और उसके आस-पास के सभी दो वर्ष और उससे छोटे लड़कों को मार डाला, जैसा कि उसने ज्योतिषियों से समय जानकर ठहराया था।<sup>17</sup> तब जो यिम्याह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ: <sup>18</sup> "रामाह में एक आवाज़ सुनी गई, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है; और वह सांत्वना नहीं चाहती, क्योंकि वे नहीं रहे।"

<sup>19</sup> परन्तु जब हेरोद मर गया, तो देखो, प्रभु का एक स्तरांतित यूसुफ को मिस्र में स्वप्न में दिखाई दिया,<sup>20</sup> कहते हुए, "उठो, बालक और उसकी माता को लेकर इसाएँ की भूमि में जाओ; क्योंकि जो बालक के प्राण के खोजी थे वे मर गए हैं।"<sup>21</sup> तब यूसुफ उठा, बालक और उसकी माता को लेकर इसाएँ की भूमि में आया।<sup>22</sup> परन्तु जब उसने सुना कि अर्केलाउस अपने पिता हेरोद की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, तो वह वहाँ जाने से डर गया। और परमेश्वर से स्वप्न में चेतावनी पाकर, वह गलील के प्रदेशों में चला गया,<sup>23</sup> और एक नगर में जाकर बसा जिसका नाम नासरत था। यह इसलिए हुआ कि जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: "वह नासरी कहलाएगा।"

**3** उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आया, जो यहूदिया के जंगल में प्रचार करता था, कहता था, <sup>2</sup> "मन फिराऊ, क्योंकि स्वर्ण का राज्य निकट है।"<sup>3</sup> यह वही है जिसके बारे में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था, "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी पगड़ियों की सीधा करो!"<sup>4</sup> अब यूहन्ना स्वयं ऊँट के बालों का वस्त्र और अपनी कमर में चमड़े की पेटी बैंध हुए था; और उसका भोजन टिड़ियाँ और जंगली शहद था।<sup>5</sup> उस समय यूर्लशलेम, और सारा यहूदिया, और यरदन के आस-पास का सारा प्रदेश उसके पास जा रहा था;<sup>6</sup> और वे अपने पापों को स्वीकार करते हुए यरदन नदी में उससे बपतिस्मा ले रहे थे।<sup>7</sup> परन्तु जब उसने फरीसियों और सदूकियों में से

बहुतों को बपतिस्मा के लिए आते देखा, तो उसने उनसे कहा, "हे साँपों की संतान, तुम्हें किसने चेतावनी दी कि आने वाले क्रोध से भागो?"<sup>8</sup> इसलिए मन फिराव के योग्य फल उत्पन्न करो;<sup>9</sup> और यह न सोचो कि तुम अपने आप से कह सकते हो, 'हमारे पिता तो इब्राहीम हैं; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्तरों से भी इब्राहीम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है।'<sup>10</sup> और कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा जाता है और आग में डाला जाता है।<sup>11</sup> जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तुम्हें मन फिराव के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु यों मेरे बाद आ रहा है वह मुझसे अधिक सामर्थी है, और मैं उसके जूँदों को उत्तराने के योग्य नहीं हूँ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।<sup>12</sup> उसके हाथ में फटकी है, और वह अपनी खलिहान को पूरी तरह साफ करेगा; और वह अपने गेहूँ को खलिहान में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूमी को बुझने वाली आग में जला देगा।"

<sup>13</sup> तब यीशु गलील से यरदन पर यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए आए।<sup>14</sup> परन्तु यूहन्ना ने उन्हें रोकने की कौशिश की, कहता था, "मुझे आपसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और फिर भी आप मेरे पास आते हैं?"<sup>15</sup> परन्तु यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "इस समय ऐसा होने दो; क्योंकि इस प्रकार हमारे लिए सारी धार्मिकता को पूरा करना उचित है।"<sup>16</sup> तब उसने उन्हें अनुमति दी।<sup>17</sup> जब वह बपतिस्मा ले उके, यीशु तुरंत पानी से ऊपर आए; और देखो, आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के रूप में उत्तरते और उन पर आते देखा,<sup>18</sup> और देखो, आकाश से एक आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।"

**4** तब यीशु आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान द्वारा परीक्षा ली जा सके।<sup>2</sup> और चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा हो गया।<sup>3</sup> और परीक्षा लेने वाला उसके पास आया और कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो इन पत्तरों से कहा कि वे रोटी बन जाएं।"<sup>4</sup> परंतु उसने उत्तर दिया और कहा, "यह लिखा है: 'मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीएगा, बल्कि हर वर्चन पर जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'<sup>5</sup> तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मंदिर के शिखर पर खड़ा कर दिया,<sup>6</sup> और उससे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो अपने आप को नीचे गिरा दो; क्योंकि यह लिखा है: 'वह अपने स्वर्णरूपों को तुम्हारे विषय में आदेश देगा; और वे तुम्हें अपने हाथों पर उठा लेंगे, ताकि तुम्हारा पैर पथर से न

## मत्ती

टकराए।<sup>7</sup> यीशु ने उससे कहा, "दूसरी ओर, यह भी लिखा है: तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लो।"<sup>8</sup> फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पर्वत पर ले गया और उसे संसार के सभी राज्य और उनकी महिमा दिखाईः<sup>9</sup> और उससे कहा, "मैं ये सब चीजें तुम्हें दूंगा, यदि तुम गिरकर मेरी उपासना करो।"<sup>10</sup> तब यीशु ने उससे कहा, "दूर हो जा, शैतान! क्योंकि यह लिखा है: 'तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और केवल उसी की सेवा करो।'<sup>11</sup> तब शैतान उसे छोड़कर चला गया; और देखो, स्वर्गदूत आए और उसकी सेवा करने लगे।

अब जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना बंदीगृह में डाला गया है, तो वह गलील में चला गया;<sup>13</sup> और नासरत को छोड़कर, वह कफरनहूम में आकर बसा, जो समुद्र के किनारे जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र में है।<sup>14</sup> यह इसलिए हुआ ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: <sup>15</sup> "जबूलून की भूमि और नप्ताली की भूमि, समुद्र के मार्ग से यरदन के पार, अय्याजातियों की गलील—<sup>16</sup> जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्होंने एक बड़ा प्रकाश देखा, और जो मृत्यु की छाया और भूमि में बैठे थे, उन पर एक प्रकाश उदय हुआ।"

उस समय से यीशु प्रचार करने और कहने लगे, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"<sup>18</sup> अब जब वह गलील के समुद्र के किनारे चल रहा था, उसने दो भाइयों को देखा, सिमोन जिसे पतरस कहा जाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को, जो समुद्र में जाल डाल रहे थे; क्योंकि वे मछुओं के मछुओं आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुओं आओ।"<sup>19</sup> और उसने उनसे कहा, "परे पीछे आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुओं आओ।"<sup>20</sup> वे तुरंत अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।<sup>21</sup> वहाँ से आगे बढ़कर, उसने दो और भाइयों को देखा, जब्ती के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को, जो अपने पिता जब्ती के साथ नाव में जाल सुधार रहे थे; और उसने उन्हें बुलाया।<sup>22</sup> वे तुरंत नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

यीशु पूरे गलील में धूमते हुए, उनके सभागृहों में शिक्षा दे रहे थे, और राज्य का सुसमाचार प्रचार कर रहे थे, और लोगों के बीच हर बीमारी और हर रोग को चंगा कर रहे थे।<sup>24</sup> और उसके विषय में समाचार पूरे सीरियों में फैल गया; और वे उसके पास सभी रोगियों को लाए, जो विभिन्न बीमारियों और गंभीर पीड़ा से प्रस्त थे, दुष्टात्मा-ग्रस्त लोग, मिर्गी के रोगी, और लकवे के रोगी; और उसने उन्हें चंगा किया।<sup>25</sup> बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली गलील और दस नगरों से, और यरूशलैम, और यहूदिया, और यरदन के पार से।

जब यीशु ने भीड़ को देखा, तो वह पहाड़ पर चढ़ गया; और जब वह बैठ गया, तो उसके शिष्य उसके पास आए।<sup>2</sup> और उसने अपना मुँह खोला और उन्हें सिखाने लगा, कहकर:

३ "धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।<sup>4</sup> धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें शाति मिलेगी।<sup>5</sup> धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पूर्थी के वारिस होंगे।<sup>6</sup> धन्य हैं वे जो धर्म की भूख और यास रखते हैं, क्योंकि वे तृप्त होंगे।<sup>7</sup> धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन्हें दया मिलेगी।<sup>8</sup> धन्य हैं वे जो हृदय में शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।<sup>9</sup> धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।<sup>10</sup> धन्य हैं वे जो धर्म के कारण साताए गए हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

११ धन्य हो तुम जब लोग तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सताएं, और मेरे कारण तुम्हारे विरुद्ध झूठ बोलकर सब प्रकार की बुराई करें।<sup>12</sup> आनंदित और प्रसन्न रहो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल बड़ा है, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे पहले के भविष्यद्वक्ताओं को भी इसी प्रकार सताया।

१३ तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद चला जाए, तो उसे फिर से नमकीन कैसे बनाया जा सकता है? वह फिर किसी काम का नहीं, सिवाय इसके कि उसे बाहर फेंक दिया जाए और लोगों द्वारा पैरों तले रौदा जाए।<sup>14</sup> तुम संसार की ज्योति हो। एक नगर जो पहाड़ पर बसा है, छिप नहीं सकता;<sup>15</sup> और लोग दीपक जलाकर उसे टोकरी के नीचे नहीं रखते, बल्कि दीपक पर रखते हैं, और वह घर में सबको प्रकाश देता है।<sup>16</sup> तुम्हारी ज्योति लोगों के सामने ऐसी चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें, और तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।

१७ यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को नष्ट करने आया हूँ; मैं नष्ट करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ।<sup>18</sup> क्योंकि मैं तुमसे सब कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाए, व्यवस्था से एक भी अक्षर या बिंदु नहीं टलेगा, जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए।<sup>19</sup> इसलिए, जो कोई इन सबसे छोटे आज्ञाओं में से एक को तोड़ा है, और दूसरों को ऐसा सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन्हें मानता और सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।<sup>20</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि

## मत्ती

तुम्हारा धर्म शास्त्रियों और फरीसियों से अधिक न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे।

<sup>21</sup> तुमने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था, 'तू हत्या न करना,' और 'जो कोई हत्या करेगा वह न्यायालय के अधीन होगा।'<sup>22</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रीधत होता है वह न्यायालय के अधीन होगा; और जो कोई अपने भाई से कहता है, 'तू मर्ख,' वह सर्वांच न्यायालय के अधीन होगा; और जो कोई कहता है, 'तू पापाल,' वह नरक की आग के बोय होगा।<sup>23</sup> इसलिए, यदि तू वेदी पर अपनी भेट चढ़ा रहा है, और वहाँ तुझे याद आता है कि तेरे भाई का तुझसे कुछ विरोध है,<sup>24</sup> तो अपनी भेट वहाँ वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर, फिर आकर अपनी भेट चढ़ा।<sup>25</sup> अपने विरोधी के साथ शीघ्रता से समझौता कर ले जब तक तू उसके साथ मार्ग में है, ताकि विरोधी तुझे न्यायालीश के हाथ में न सौंप दे, और न्यायालीश तुझे अधिकारी को न सौंप दे, और तुझे जेल में न डाला जाए।<sup>26</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक तू अंतिम पैसे का भुगतान नहीं कर देता, तब तक वहाँ से बाहर नहीं आएगा।

<sup>27</sup> तुमने सुना है कि कहा गया था, 'तू व्यभिचार न करना';<sup>28</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री को वासना से देखता है, वह अपने हृदय में उसके साथ पहले ही व्यभिचार कर चुका है।<sup>29</sup> अब यदि तेरा दाहिना अँख तुझे पाप में डालता है, तो उसे निकाल कर अपने से दूर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यह अच्छा है कि तेरे अंगों से एक नाश हो जाए, बजाय इसके कि तेरा पूरा शरीर नरक में डाला जाए।<sup>30</sup> और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे पाप में डालता है, तो उसे काट कर अपने से दूर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यह अच्छा है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए, बजाय इसके कि तेरा पूरा शरीर नरक में जाए।

<sup>31</sup> अब कहा गया था, जो कोई अपनी पत्नी को छोड़ता है, उसे तलाक का प्रमाण पत्र देना चाहिए;<sup>32</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को छोड़ता है, सिवाय व्यभिचार के कारण, वह उसे व्यभिचारिणी बनाता है; और जो कोई तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।

<sup>33</sup> फिर से, तुमने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था, 'तू इच्छी शपथ न खा, परन्तु अपनी शपथों को प्रभु के लिए पूरा कर।'<sup>34</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, बिल्कुल भी शपथ न खाओ, न स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन

है,<sup>35</sup> न पृथ्वी की, क्योंकि वह उसके पाँव की चौकी है, न यरूशलेम की, क्योंकि वह महान राजा का नगर है।

<sup>36</sup> और न अपने सिंह की शपथ खाओ, क्योंकि तुम एक भी बाल को सफेद या काला नहीं कर सकते।<sup>37</sup> परन्तु तुम्हारा कथन हाँ, हाँ या नहीं, नहीं होना चाहिए; इनके अलावा जो कुछ है वह बुराई से है।

<sup>38</sup> तुमने सुना है कि कहा गया था, 'आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।'<sup>39</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, बुरे व्यक्ति का विरोध न करो; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसके सामने दूसरा भी कर दे।<sup>40</sup> और यदि कोई तुझ पर मुकदमा करके तेरा कुर्ता लेना चाहता है, तो उसे अपनी चादर भी दे दे।<sup>41</sup> जो कोई तुझे एक कोस ले जाने के लिए मजबूर करे, उसके साथ दो कोस लेवा जा।<sup>42</sup> जो तुझसे माँग, उसे दे, और जो तुझसे उधार लेना चाहता है, उससे मुँह न मोड़।

<sup>43</sup> तुमने सुना है कि कहा गया था, 'तू अपने पड़ोसी से प्रेम कर, और अपने शत्रु से बैर रख।'<sup>44</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो,<sup>45</sup> ताकि तुम अपने स्वर्णीय पिता के पुत्र बन सको; क्योंकि वह अपने सूर्य को बुरे और अच्छे दोनों पर उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर वर्षा करता है।<sup>46</sup> क्योंकि यदि तुम केवल उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या प्रतिफल मिलेगा? क्या कर वसूलने वाले भी ऐसा नहीं करते?<sup>47</sup> और यदि तुम केवल अपने भाइयों और बहनों का स्वागत करते हो, तो तुम दूसरों से अधिक क्या कर रहे हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते?<sup>48</sup> इसलिए, तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्णीय पिता सिद्ध है।

**6** सावधान रहो कि अपनी धर्मिकता लोगों के सामने न करो, ताकि वे तुम्हें देख सकें; अन्यथा तुम्हें स्वर्ग में स्थित तुम्हारे पिता से कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा।<sup>2</sup> इसलिए जब तुम गरीबों को दान दो, तो अपने आगे तुरही मत बजाओ, जैसा कि कपटी लोग आराधनालयों और सड़कों पर करते हैं, ताकि लोग उनकी प्रशंसा करें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उत्तें उनका प्रतिफल पूरा मिल चुका है।<sup>3</sup> पर जब तुम गरीबों को दान दो, तो तुम्हारा बायां हाथ न जाने कि तुम्हारा दायां हाथ क्या कर रहा है,<sup>4</sup> ताकि तुम्हारा दान गुप्त रहे; और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा।

<sup>5</sup> और जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटी लोगों के समान न बनो; क्योंकि वे आराधनालयों और सड़कों के कोनों में

## मत्ती

खड़े होकर प्रार्थना करना पसंद करते हैं ताकि लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्हें उनका प्रतिफल पूरा मिल चुका है।<sup>6</sup> परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तो अपने कमर में जाओ, दरवाजा बंद करो और अपने पिता से प्रार्थना करो जो गुप्त में है; और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा।<sup>7</sup> और जब तुम प्रार्थना कर रहे हो, तो अन्यजातियों के समान व्यर्थ की पुनरावृत्ति मत करो, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन्हें सुना जाएगा।<sup>8</sup> इसलिए उनके समान मत बोने, क्योंकि तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें किस चीज की आवश्यकता है, इससे पहले कि तुम उससे मांगो।

° इस प्रकार प्रार्थना करो:

'हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, तेरा नाम पवित्र माना जाए।  
° तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो, जैसे स्वर्ग में है  
वैसे पृथ्वी पर भी।'<sup>11</sup> आज हमें हमारी दैनिक रोटी दे।  
° और हमारे अपराधों को क्षमा कर, जैसे हम भी  
अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं।<sup>13</sup> और हमें  
परीक्षा में न ले जा, परन्तु हमें दुराई से बचा।'

<sup>14</sup> क्योंकि यदि तुम लोगों के अपराधों को क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।<sup>15</sup> परन्तु यदि तुम लोगों को क्षमा नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता तुम्हारे अपराधों को भी क्षमा नहीं करेगा।

<sup>16</sup> अब जब भी तुम उपवास करो, तो कपटी लोगों के समान उदास वेहरा मत बनाओ, क्योंकि वे अपने वेहरे को विकृत करते हैं ताकि लोग उन्हें उपवास करते हुए देखें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्हें उनका प्रतिफल पूरा मिल चुका है।<sup>17</sup> परन्तु जब तुम उपवास करो, तो अपने सिर पर तेल लगाओ और अपना चेहरा धोओ,<sup>18</sup> ताकि तुम्हारा उपास लोगों द्वारा न देखा जाए, परन्तु तुम्हारे पिता द्वारा जो गुप्त में है; और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा।

<sup>19</sup> अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा मत करो, जहाँ कीड़ा और जंग नष्ट करते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।<sup>20</sup> परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न कीड़ा और न जंग नष्ट करते हैं, और जहाँ चोर सेंध नहीं लगाते और न चुराते हैं।<sup>21</sup> क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा हृदय भी होगा।

<sup>22</sup> अंख शरीर का दीपक है; इसलिए, यदि तुम्हारी अंख साफ है, तो तुम्हारा पूरा शरीर प्रकाश से भरा होगा।<sup>23</sup> परन्तु यदि तुम्हारी अंख खराब है, तो तुम्हारा पूरा शरीर

अंधकार से भरा होगा। इसलिए यदि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार है, तो वह अंधकार कितना बड़ा होगा!

<sup>24</sup> कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे को तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकते।

<sup>25</sup> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी जीवन के लिए चिंता मत करो, कि तुम क्या खाओगे या क्या पियोगे; और न ही अपने शरीर के लिए, कि तुम क्या पहनोगे। क्या जीवन भोजन से अधिक नहीं है, और शरीर वस्त्र से अधिक नहीं है?<sup>26</sup> आकाश के पक्षियों को देखो, वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न ही खलिहानों में इकट्ठा करते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे बहुत अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो? <sup>27</sup> और तुम में से कौन चिंता करके अपने जीवन के समय में एक दिन भी जोड़ सकता है? <sup>28</sup> और तुम वस्त्र के लिए क्यों चिंता करते हों? देखो मैदान के लियों को कैसे बढ़ते हैं; वे न श्रम करते हैं और न ही कपड़े के लिए धागा कातते हैं,<sup>29</sup> फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान भी अपनी सारी महिमा में उनमें से एक के समान वस्त्र नहीं पहन सका।<sup>30</sup> परन्तु यदि परमेश्वर मैदान की धास को ऐसे वस्त्र पहनाता है, जो आज जीवित है और कल भट्टी में डाल दी जाती है, तो क्या वह तुम्हें बहुत अधिक वस्त्र नहीं पहनाएगा? हे अल्पविश्वासियों!

<sup>31</sup> इसलिए चिंता मत करो, यह कहते हुए, 'हम क्या खाएंगे?' या 'हम क्या पिएंगे?' या हम क्या पहनेंगे?<sup>32</sup> क्योंकि अन्यजाति इन सब चीजों की बड़ी खोज करते हैं; क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीजों की आवश्यकता है।<sup>33</sup> परन्तु पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब चीजें तुम्हें दी जाएंगी।<sup>34</sup> इसलिए कल की चिंता मत करो; क्योंकि कल अपनी चिंता स्थायं करेगा। प्रत्येक दिन की अपनी ही परेशानी पर्याप्त है।

**7** न्याय न करो, ताकि तुम्हारा न्याय न किया जाए।<sup>2</sup> क्योंकि जिस प्रकार से तुम न्याय करते हो, उसी प्रकार से तुम्हारा न्याय किया जाएगा; और जिस मापदंड से तुम मापते हो, उसी से तुम्हारा लिए मापा जाएगा।<sup>3</sup> तुम अपने भाई की आँख में जो तिनका है, उसे क्यों देखते हो, पर अपनी ही आँख में जो लट्ठा है, उसे नहीं देखते? <sup>4</sup> या तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, 'आओ, मैं तुम्हारी आँख से तिनका निकाल दूँ' और देखो, तुम्हारी ही आँख

## मत्ती

मैं लट्ठा है? <sup>5</sup> हे कपटी, पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, तब तुम स्पष्ट रूप से देखोगे कि अपने भाई की आँख से तिनका कैसे निकालना है। <sup>6</sup> पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सुअरों के सामने न डालो, नहीं तो वे उहौं पैरों तले रौद देंगे, और मुड़कर तुम्हें फाड़ डालेंगे।

<sup>7</sup> मांगो, और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, और तुम पाओगे; खटखटाओ, और तुहारे लिए खोला जाएगा। <sup>8</sup> क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो खोजता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। <sup>9</sup> तुम मैं से कौन ऐसा व्यक्ति है, जिसका पुत्र जब रोटी मांगे, तो उसे पत्थर देगा? <sup>10</sup> या यदि वह मछली मांगे, तो उसे साँप देगा? <sup>11</sup> इसलिए यदि तुम, जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन लोगों को जो उससे मांगते हैं, कितनी अधिक अच्छी वस्तुएं देगा!

<sup>12</sup> इसलिए, हर बात में, लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें, क्योंकि ही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता है।

<sup>13</sup> संकरी फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि वह फाटक चौड़ा है और वह मार्ग विस्तृत है जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से लोग इससे प्रवेश करते हैं। <sup>14</sup> क्योंकि वह फाटक संकरा है और वह मार्ग संकीर्ण है जो जीवन की ओर ले जाता है, और कुछ ही लोग इसे पाते हैं।

<sup>15</sup> झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो तुम्हारे पास भेड़ों के वस्त में आते हैं, परंतु भीतर से भयंकर भेड़िये हैं। <sup>16</sup> तुम उहौं उनके फलों से पहचानोगे। क्या कांटों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर इकट्ठे किए जाते हैं? <sup>17</sup> इशी प्रकार हर अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है, लेकिन बुरा पेड़ बुरा फल लाता है। <sup>18</sup> अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न ही बुरा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। <sup>19</sup> हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा जाता है और आग में डाला जाता है। <sup>20</sup> इसलिए, तुम उहौं उनके फलों से पहचानोगे।

<sup>21</sup> हर कोई जो मुझसे कहता है, 'प्रभु, प्रभु' स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, बल्कि वही जो मेरे स्वर्णीय पिता की इच्छा को पूरा करता है, प्रवेश करेगा। <sup>22</sup> बहुत से लोग उस दिन मुझसे कहेंगे, 'प्रभु, प्रभु, क्या हमने आपके नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और आपके नाम से दुष्टामाओं को नहीं निकाला, और आपके नाम से कई

चमत्कार नहीं किए?' <sup>23</sup> और तब मैं उनसे कहूँगा, 'मैंने कभी तुम्हें नहीं जाना; मुझसे दूर हो जाओ, तुम जो अधर्म करते हो।'

<sup>24</sup> इसलिए, जो कोई मेरी इन बातों को सुनता है और उन पर अमल करता है, वह उस बुद्धिमान व्यक्ति के समान होगा जिसने अपनी घर चट्टान पर बनाया। <sup>25</sup> और बारिश हुई और बाढ़ आई, और हवाएँ चर्लीं और उस घर पर प्रहर किया; फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि वह चट्टान पर स्थापित था। <sup>26</sup> और जो कोई मेरी इन बातों को सुनता है और उन पर अमल नहीं करता, वह उस मूर्ख व्यक्ति के समान होगा जिसने अपनी घर रेत पर बनाया। <sup>27</sup> और बारिश हुई और बाढ़ आई, और हवाएँ चर्लीं और उस घर पर प्रहर किया; और वह गिर गया—और उसका पतन महान था।"

<sup>28</sup> जब यीशु ने ये बातें समाप्त कीं, तो भीड़ उसकी शिक्षा से चौकित थी; <sup>29</sup> क्योंकि वह उहौं एक अधिकार के साथ सिखा रहा था, न कि उनके शास्त्रियों के समान।

**8** जब यीशु पहाड़ से नीचे उतरे, तो बड़ी भीड़ उनके पीछे हो गई। <sup>2</sup> और एक कोढ़ी व्यक्ति उनके पास आया और उनके समाने झूककर कहा, 'प्रभु, यदि आप चाहें, तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।' <sup>3</sup> यीशु ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे झूककर कहा, 'मैं चाहता हूँ, तु शुद्ध हो जा।' और तुरत उसका कोढ़ दूर हो गया। <sup>4</sup> और यीशु ने उससे कहा, 'देख, किसी से मत कहना; परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा और वह भेट चढ़ा जो मूसा ने आज्ञा दी है, उनके लिए गवाही के रूप में।'

<sup>5</sup> जब यीशु कफरनहम में प्रवेश कर रहे थे, तो एक सूबेदार उनके पास आया और उनसे विनिती करने लगा, <sup>6</sup> और कहा, 'प्रभु, मेरा सेवक घर पर लकवग्रस्त पड़ा है, और भयंकर पीड़ा में है।' <sup>7</sup> यीशु ने उससे कहा, 'मैं आकर उसे चंगा कर दूँगा।' <sup>8</sup> पर सूबेदार ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैं इस सोयां नहीं कि आप मेरे छत के नीचे आएं, बस एक शब्द कह दीजिए, और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।' <sup>9</sup> क्योंकि मैं भी एक अधिकारी के अधीन हूँ, और मेरे अधीन सैनिक हैं, मैं इस से कहता हूँ, 'जाइ!' और वह जाता है, और दूसरे से, 'आ!' और वह आता है, और अपने दास से, 'यह कर!' और वह करता है।" <sup>10</sup> जब यीशु ने यह सुना, तो वह अव्यक्ति हुए और उन लोगों से कहा जो उनके पीछे चल रहे थे, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, मैंने इसाल में किसी में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया।' <sup>11</sup> और मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आएंगे, और स्वर्ग के राज्य में अब्राहम,

## मत्ती

इसहाक, और याकूब के साथ भोजन करेंगे;<sup>12</sup> परन्तु राज्य के पुत्र बाहर के अंधकार में डाल दिए जाएंगे; वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”<sup>13</sup> और यीशु ने सुबोदार से कहा, “जा; जैसा तुमे विश्वास किया है, वैसा ही तेरे लिए हो जाएगा।” और उसी घड़ी उसका सेवक चंगा हो गया।

<sup>14</sup> जब यीशु पतरस के घर में आए, तो उन्होंने उसकी सास को बुखार में बिस्तर पर पड़ा देखा।<sup>15</sup> और उन्होंने उसका हाथ छुआ, और बुखार उत्तर गया; और वह उठकर उनकी सेवा करने लगी।<sup>16</sup> जब संधा हुई, तो वे उसके पास बहुत से दुष्टामा ग्रस्त लोगों को लाए; और उसने एक शब्द से आत्माओं को बाहर निकाला, और सब बीमारों को चंगा किया।<sup>17</sup> यह इसलिए हुआ कि जो यशाया ह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो:

“उसने हमारे रोगों को लिया और हमारी बीमारियों को द्रूर किया।”

<sup>18</sup> जब यीशु ने अपने चारों ओर भीड़ देखी, तो उन्होंने समुद्र के दूसरी ओर जाने की आज्ञा दी।<sup>19</sup> तब एक शास्त्री उनके पास आया और कहा, “पुरु, मैं जहाँ कहीं भी आप जाएंगे, आपका अनुसरण करूँगा।”<sup>20</sup> यीशु ने उससे कहा, “तोमङ्गियों के बिल होते हैं और आकाश के पक्षियों के धोंसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर धरने की जगह नहीं है।”<sup>21</sup> उनके एक और शिष्य ने उनसे कहा, “प्रभु, मुझे पहले अपने पिता को दफनाने की अनुमति दें।”<sup>22</sup> परन्तु यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चल, और मेरे हुओं को अपने मेरे हुओं को दफनाने दे।”

<sup>23</sup> जब वह नाव में चढ़े, तो उनके शिष्य उनके पीछे हो लिए।<sup>24</sup> और देखो, समुद्र पर एक भयंकर तूफान आ गया, जिससे नाव लहरों से ढक गई; परन्तु यीशु स्वयं सो रहे थे।<sup>25</sup> और वे उनके पास आए और उन्हें जागाकर कहा, “प्रभु, हमें बांधो; हम नष्ट हो रहे हैं।”<sup>26</sup> उन्होंने उनसे कहा, “तुम क्यों डरते हो, हे अत्परिविश्वासियों?” तब वह उठे और उन्होंने पवनों और समुद्र को डाटा, और वह बिल्कुल शांत हो गया।<sup>27</sup> लोग अचंभित हुए और कहा, “यह कैसा व्यक्ति है, कि पवन और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं?”

<sup>28</sup> जब वह दूसरी ओर गदरेनियों के क्षेत्र में आए, तो दो दुष्टामा ग्रस्त व्यक्ति कब्जों से बाहर आते हुए उनसे मिले। वे इनसे अत्यंत हिंसक थे कि कोई उस रास्ते से नहीं जा सकता था।<sup>29</sup> और वे चिल्लाकर कहने लगे, “हे परमेश्वर के पुत्र, तेरा हमसे क्या काम? क्या तू यहाँ हमें समर्य से पहले कष्ट देने आया है?”<sup>30</sup> अब वहाँ उनसे कुछ दूरी

पर सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था।<sup>31</sup> और दुष्टामाओं ने उनसे विनती की, “यदि तू हमें बाहर निकालने जा रहा है, तो हमें सूअरों के झुंड में भेज दे।”<sup>32</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “जाओ!” और वे बाहर निकलकर सूअरों में चले गए; और देखो, पूरा झुंड खड़ी ढलान से समुद्र में दौड़ गया और पानी में डब गया।<sup>33</sup> और चरवाहे भाग गए, और नगर में जाकर सब कुछ बताया, यहाँ तक कि जो दुष्टामा ग्रस्त व्यक्तियों के साथ हुआ था।<sup>34</sup> और देखो, पूरा नगर यीशु से मिले बाहर आया; और जब उन्होंने उन्हें देखा, तो उनसे विनती की कि वे उनके क्षेत्र से चले जाएं।

**9** एक नाव में बैठकर, यीशु ने समुद्र को पार किया और अपने नगर में आए।<sup>2</sup> और लोग उसके पास के लकड़े के मारे हुए व्यक्ति को लाए, जो बिस्तर पर लेटा था। उनके विश्वास को देखकर, यीशु ने लकड़े के मारे हुए व्यक्ति से कहा, “साहस रखो, पुत्र, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं।”<sup>3</sup> और कुछ शास्त्रियों ने अपने मन में कहा, “यह मनुष्य निदा कर रहा है।”<sup>4</sup> और यीशु ने उनके विचारों को जानकर कहा, “तुम अपने हृदय में बुराई क्यों सोचते हो? <sup>5</sup> क्योंकि कौन सा आसान है, यह कहना, ‘तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं’, या यह कहना, ‘उठो और चलो?’<sup>6</sup> परन्तु ताकि तुम जानो कि मनुष्य का पुत्र पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार रखता है”— तब उसने लकड़े के मारे हुए व्यक्ति से कहा, “उठो, अपना बिस्तर उठाओ, और घर जाओ।”<sup>7</sup> और वह उठकर घर चला गया।<sup>8</sup> परन्तु जब भीड़ ने यह देखा, तो वे चकित हो गए, और परमेश्वर की महिमा की, जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया था।

<sup>9</sup> जब यीशु वहाँ से आगे बढ़े, तो उन्होंने मती नामक एक व्यक्ति को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा; और उन्होंने उससे कहा, “मेरे पीछे आओ!” और वह उठकर उनके पीछे हो लिया।<sup>10</sup> फिर ऐसा हुआ कि जब यीशु घर में मेज पर बैठे थे, तो देखो, बहुत से चुंगी लेने वाले और पापी आए और यीशु और उनके शिष्यों के साथ क्यों खाता है? <sup>11</sup> परन्तु जब यीशु ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, “जो स्वरूप हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु जो बीमार हैं उन्हें होती है।”<sup>12</sup> अब जब जाओ और सीखो कि इसका क्या अर्थ है: मैं दया चाहता हूँ, बलिदान नहीं; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।”

## मत्ती

<sup>14</sup> तब यूहन्ना के शिष्य उसके पास आए और पूछा, "हम और फरीसी तो अक्सर उपवास करते हैं, परन्तु आपके शिष्य क्यों नहीं उपवास करते?" <sup>15</sup> और यीशु ने उनसे कहा, "क्या दूल्हे के साथी तब तक शोक कर सकते हैं जब तक दूल्हा उनके साथ है? परन्तु वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा, और तब वे उपवास करेंगे। <sup>16</sup> कोई भी बिना सिकुड़े का पैबंद पुराने वस्त्र पर नहीं लगाता; क्योंकि पैबंद वस्त्र से खिंच जाता है, और फाड़ा और भी खराब हो जाता है। <sup>17</sup> और न ही लोग नए दाखरस को पुराने मटकों में डालते हैं; अन्यथा मटके फट जाते हैं, और दाखरस बह जाता है, और मटके नष्ट हो जाते हैं। परन्तु वे नए दाखरस को नए मटकों में डालते हैं, और दोनों सुरक्षित रहते हैं।"

<sup>18</sup> जब वह उनसे ये बातें कह रहा था, तो देखो, एक आराधनालालय का अधिकारी आया और उसके सामने छुक्कर कहा, "मेरी बेटी अभी मरी है; परन्तु आओ और उस पर अपना हाथ रखो, और वह जीवित हो जाएगी।"

<sup>19</sup> यीशु मेज से उठकर उसके साथ जाने लगे, और उनके शिष्य भी। <sup>20</sup> और देखो, एक स्त्री जो बारह वर्षों से रक्तसार से पीड़ित थी, उसके पीछे से आई और उसके वस्त्र के किनारे को छू लिया, <sup>21</sup> क्योंकि वह अपने आप से कह रही थी, "यदि मैं केवल उसके वस्त्र को छू लूं, तो मैं ठीक हो जाऊंगी।" <sup>22</sup> परन्तु यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, "पुत्री, साहस रखो; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें ठीक कर दिया है।" और तुरंत वह स्त्री ठीक हो गई। <sup>23</sup> जब यीशु अधिकारी के घर में आए और बांसुरी बजाने वालों और भीड़ को शोर करते देखा, <sup>24</sup> तो उन्होंने कहा, "जाओ; क्योंकि लड़की मरी नहीं है, परन्तु सो रही है।" और वे उस पर हँसने लगे। <sup>25</sup> परन्तु जब भीड़ को बाहर निकाल दिया गया, तो वह अंदर गए और उसका हाथ पकड़ लिया, और लड़की उठ गई। <sup>26</sup> और यह समाचार उस पूरे प्रदेश में फैल गया।

<sup>27</sup> जब यीशु वहां से आगे बढ़े, तो दो अंथे व्यक्ति उनके पीछे हो लिए, चिल्लाते हुए, "हम पर दया करो, दाऊद के पुत्र।" <sup>28</sup> और जब वह घर में प्रवेश कर चुके थे, तो अंथ व्यक्ति उनके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूँ?" उन्होंने उनसे कहा, "हाँ, प्रभु!" <sup>29</sup> तब उन्होंने उनकी अँखों को छुआ, कहते हुए, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए ऐसा हो।" <sup>30</sup> और उनकी अँखें खुल गईं। और यीशु ने उन्हें कहीं चेतावनी दी, "देखो कि कोई इस बारे में न जानो।" <sup>31</sup> परन्तु वे बाहर जाकर उस पूरे प्रदेश में उसके बारे में समाचार फैलाने लगे।

<sup>32</sup> और जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, एक दुष्टामा प्रस्त व्यक्ति जो बोल नहीं सकता था, उसके पास लाया गया। <sup>33</sup> और जब दुष्टामा को बाहर निकाला गया, तो वह व्यक्ति जो पहले बोल नहीं सकता था, बोलने लगा; और भीड़ चकित हो गई, और कहने लगी, "इसाएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।" <sup>34</sup> परन्तु फरीसी कह रहे थे, "वह दुष्टामाओं के प्रधान के द्वारा दुष्टामाओं को निकालता है।"

<sup>35</sup> यीशु सभी नगरों और गांवों में घूम रहे थे, उनके आराधनालालयों में शिक्षा दे रहे थे, और राज्य के सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, और हर बीमारी और हर रोग को चंगा कर रहे थे। <sup>36</sup> भीड़ को देखकर, उन्होंने उन पर दया की, क्योंकि वे परेशान और निराश थे, जैसे बिना चरवाहे की भेड़ें। <sup>37</sup> तब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "फसल तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं।" <sup>38</sup> इसलिए, फसल के प्रमुख से प्रार्थना करो कि वह अपनी फसल में मजदूर भेजे।

**10** यीशु ने अपने बारह चेतों को बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्मा और पर अधिकार दिया, ताकि वे उन्हें निकाल सकें, और हर बीमारी और हर रोग को चंगा कर सकें। <sup>2</sup> अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहला, शमैन, जिसे पतरस कहा जाता है, और उसका भाई अंद्रियास; और याकूब, जब्बी का पुत्र, और उसका भाई यूहन्ना; <sup>3</sup> फिलिप्पुस और बरयोलोमाय; थोमा और मत्ती, कर वसूलने वाला; अलफरइ का पुत्र याकूब, और थिद्युस; <sup>4</sup> शमीन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे धोखा दिया।

<sup>5</sup> इन बारहों को यीशु ने भेजा और उन्हें यह आदेश दिया, "अन्यजातियों के मार्ग पर न जाओ, और सामरियों के नगर में प्रवेश न करो; <sup>6</sup> बल्कि इसाएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ।" <sup>7</sup> और जाते समय प्रचार करो, कहो, स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। <sup>8</sup> बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोटियों को शुद्ध करो, दुष्टामाओं को निकालो। तुमने मुफ्त में पाया, मुफ्त में दो। <sup>9</sup> अपने धन की थेलियों में सोना, चाँदी, या ताँबा न लो, <sup>10</sup> न यात्रा के लिए कोई झोला, न दो कुरते, न जूते, न लाटी; क्योंकि काम करने वाला अपनी खुराक का हकदार है।

<sup>11</sup> और जिस किसी नगर या गाँव में प्रवेश करो, पता करो कि वहाँ कौन योग्य है, और जब तक वहाँ से न निकालो, वहीं ठहरो। <sup>12</sup> जब तुम घर में प्रवेश करो, तो उसे अपना अभिवादन दो। <sup>13</sup> यदि वह घर योग्य हो, तो

## मत्ती

तुम्हारी शांति का आशीर्वाद उस पर आए। पर यदि वह योग्य न हो, तो अपनी शांति का आशीर्वाद वापस ले लो। <sup>14</sup> और यदि कोई तुम्हें न ग्रहण करे, और न तुम्हारी बात सुने, तो उस घर या उस नगर से निकलकर अपने पैरों की धूल ज्ञाड़ दो। <sup>15</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, न्याय के दिन सदोम और अमोरा के देश की दशा उस नगर से अधिक सहनीय होगी।

<sup>16</sup> देखो, मैं तुम्हें भड़ों के सामन भेड़ियों के बीच में भेज रहा हूँ, इसलिए सौंपो के सामन चतुर और कबूलों के सामन भोले बनो। <sup>17</sup> परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें अदालतों में सौंपों और अपनी सभाओं में तुम्हें कोडे मारेंगे; <sup>18</sup> और तुम मेरे कारण शासकों और राजाओं के सामने लाए जाओगे, उनके और अन्यजातियों के लिए गवाही के रूप में। <sup>19</sup> पर जब वे तुम्हें सौंपें, तो इस बात की चिंता न करो कि तुम कैसे या क्या कहोगे; क्योंकि जो कुछ कहना होगा वह उसी समय तुम्हें दिया जाएगा। <sup>20</sup> क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे भीतर तुम्हारे पिता की आत्मा बोल रही है।

<sup>21</sup> अब भाई भाई को मृत्यु के लिए सौंप देगा, और पिता अपने बच्चे को; और बच्चे माता-पिता के विरुद्ध उठ खड़े होंगे और उन्हें मरव देंगे। <sup>22</sup> और मेरे नाम के कारण तुम सब से धृणा किए जाओगे, परन्तु जो अंत तक धैर्य धेर रहेगा वही उद्धार पाएगा। <sup>23</sup> पर जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम इसाएल के नगरों का दौरा पूरा नहीं करोगे जब तक मनुष्य का पुत्र न आए।

<sup>24</sup> शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, न सेवक अपने स्वामी से। <sup>25</sup> शिष्य के लिए यह पर्याप्त है कि वह अपने गुरु के समान बने, और सेवक अपने स्वामी के समान। यदि उन्होंने घर के स्वामी को बेलज़ेबूल कहा है, तो उसके घर के सदस्यों को किनाना अधिक अपमानित करेंगे।

<sup>26</sup> इसलिए उनसे मत डरो, क्योंकि ऐसा कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट न होगा, या गुप्त नहीं है जो जाना न जाएगा। <sup>27</sup> जो मैं तुम्हें अधिकार में कहता हूँ उसे प्रकाश में कहो; और जो तुम कान में फुसफुसाते सुनते हो, उसे छत्तों पर प्रचार करो। <sup>28</sup> और उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं लेकिन आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। <sup>29</sup> क्या दो गैरिया एक अस्सारियन में

नहीं बिकतीं? फिर भी तुम्हारे पिता के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिरता। <sup>30</sup> परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। <sup>31</sup> इसलिए मत डरो; तुम बहुत सी गैरियों से अधिक मूल्यवान हो।

<sup>32</sup> इसलिए जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे स्वीकार करता है, मैं भी उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करूँगा। <sup>33</sup> परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे अस्वीकार करता है, मैं भी उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने अस्वीकार करूँगा।

<sup>34</sup> यह मत सोचो कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूँ, मैं शांति लाने नहीं, बल्कि तलवार लाने आया हूँ। <sup>35</sup> क्योंकि मैं आया हूँ

मनुष्य को उसके पिता के विरुद्ध करने के लिए और बेटी को उसकी माता के विरुद्ध और बहू को उसकी सास के विरुद्ध, <sup>36</sup> और मनुष्य के शरु उसके ही घर के लोग होंगे।

<sup>37</sup> जो कोई पिता या माता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है; और जो कोई पुत्र या पुत्री को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है। <sup>38</sup> और जो कोई अपनी कूस लेकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं है। <sup>39</sup> जो कोई अपना जीवन पाएगा, वह उसे खो देगा, और जो कोई मेरे कारण अपना जीवन खोएगा, वह उसे पाएगा।

<sup>40</sup> जो कोई तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है। <sup>41</sup> जो कोई नबी के नाम पर नबी को ग्रहण करता है, वह नबी का प्रतिफल पाएगा; और जो कोई धर्मी के नाम पर धर्मी को ग्रहण करता है, वह धर्मी का प्रतिफल पाएगा। <sup>42</sup> और जो कोई इन छोटे लोगों में से एक को केवल एक कप ठंडा पानी पीने के लिए देता है शिष्य के नाम पर, मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह अपने प्रतिफल को किसी भी तरह से नहीं खोएगा।

**11** जब यीशु ने अपने बारह चेलों को निर्देश देने समाप्त किया, तो वह वहाँ से उनके नगरों में उपदेश देने और प्रचार करने चले गए।

<sup>2</sup> अब जब यूहन्ना जेल में था, उसने मारीह के कार्यों के बारे में सुना, और उसने अपने चेलों के द्वारा संदेश भेजा,

<sup>3</sup> और उससे कहा, “क्या आप वही आने वाले हैं, या हमें

## मत्ती

किसी और की प्रतीक्षा करनी चाहिए?"<sup>4</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "जाओं और यूहन्ना को जो तुम सुनते और देखते हो, वह बताओः<sup>5</sup> अंधे दृष्टि पाते हैं और लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं, मृतकों को जीवित किया जाता है, और गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाता है।<sup>6</sup> और धन्य है वह व्यक्ति जो मुझसे ठोकर नहीं खाता।"

<sup>7</sup> जब ये लोग जा रहे थे, यीशु ने भीड़ से यूहन्ना के बारे में बोलना शुरू किया। "तुम जगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हलिती हुई नरकट?<sup>8</sup> लेकिन तुम क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए व्यक्ति? जो कोमल वस्त्र पहनते हैं, वे राजाओं के महलों में होते हैं।<sup>9</sup> या तुम क्या देखने गए थे? क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ और वह जो नबी से भी बढ़कर है।<sup>10</sup> यह वही है जिसके बारे में लिखा है:

देखो, मैं अपने दृत को तुम्हारे आगे भेजता हूँ जो तुम्हारे मार्ग को तुम्हारे सामने तैयार करेगा।

<sup>11</sup> सच में मैं तुमसे कहता हूँ, स्त्रियों से जन्मे लोगों में से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ; फिर भी स्वर्ग के राज्य में जो सबसे छोटा है, वह उससे बड़ा है।<sup>12</sup> और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग का राज्य बलपूर्वक लिया गया है, और बलवान लोग इसे बलपूर्वक लेते हैं।<sup>13</sup> क्योंकि सभी नवियों और व्यवस्था ने यूहन्ना तक भविष्यवाणी की।<sup>14</sup> और यदि तुम इसे स्त्रीकार करने को तैयार हो, तो यूहन्ना ही वह एकियाह है जो अने वाला था।<sup>15</sup> जिसके कान सुनने के लिए है, वह सुन ले।

<sup>16</sup> "लेकिन मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे करूँ? यह बाजारों में बैठे बच्चों के समान है, जो दूसरे बच्चों को पुकारते हैं,"<sup>17</sup> और कहते हैं,

'हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई' और तुमने नृत्य नहीं किया; हमने शोकगीत गाया, और तुमने शोक नहीं किया।'

<sup>18</sup> क्योंकि यूहन्ना न तो खाता और न पीता आया, और वे कहते हैं, 'उसमें दुष्टिमा है!'<sup>19</sup> मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया, और वे कहते हैं, 'देखो, एक पेटू और भारी पीने वाला, कर वस्तुले वालों और पापियों का मित्र।' और फिर भी बुद्धि अपने कार्यों से सही ठहराई जाती है।"

<sup>20</sup> तब उसने उन नगरों को डांटना शुरू किया जिनमें उसके अधिकांश चमत्कार किए गए थे, क्योंकि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया।<sup>21</sup> "तुझ पर हाय, खोरजीन! तुझ पर हाय, बैतसैदा! क्योंकि यदि तेरे मैं हुए चमत्कार सूर और सैदा में हुए होते, तो वे बहुत पहले टाट और राख में पश्चात्ताप कर लेते।<sup>22</sup> फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के दिन सूर और सैदा के लिए तेरे मुकाबले सहन करना अधिक आसान होगा।<sup>23</sup> और तू, कफरनहम, क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा किया जाएगा? तुझे अधोलोक में गिरा दिया जाएगा। क्योंकि यदि तेरे मैं हुए चमत्कार सदोम में हुए होते, तो वह आज तक बनी रहती।<sup>24</sup> फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि न्याय के दिन सदोम की भूमि के लिए तेरे मुकाबले सहन करना अधिक आसान होगा।"

<sup>25</sup> उसी समय यीशु ने कहा, "मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, कि तूने इन बातों को बुद्धिमानों और समझदारों से छिपा रखा है, और उन्हें शिशुओं और प्रकट किया है।<sup>26</sup> हाँ, पिता, क्योंकि इस प्रकार करना तेरी दृष्टि में अच्छा था।<sup>27</sup> सभी बातें मेरे पिता द्वारा मुझे सौंप दी गई हैं, और पुत्र को कोई नहीं जानता सिवाय पिता के, और न ही कोई पिता को जानता है सिवाय पुत्र के, और जिसे पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है।

<sup>28</sup> मेरे पास आओ, सभी जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।<sup>29</sup> मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं कोमल और हृदय से नम्र हूँ, और तुम अपनी आस्माओं के लिए विश्राम पाओगो।<sup>30</sup> क्योंकि मेरा जूआ आरामदायक है, और मेरा बोझ हल्का है।"

**12** उसी समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहे थे, और उनके शिष्य भूखे हो गए और बालें तोड़कर खाने लगे।<sup>1</sup> जब फरीसियों ने यह देखा, तो उन्होंने उससे कहा, "देखो, तुम्हारे शिष्य सब्त के दिन ऐसा कर रहे हैं जो करना उचित नहीं है!"<sup>2</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब वह और उसके साथी भूखे थे—<sup>3</sup> कैसे वह परमेश्वर के घर में गया, और उन्होंने वह पवित्र रोटी खाई, जो उसके खाने के लिए उचित नहीं थी, न ही उसके साथियों के लिए, परन्तु केवल याजकों के लिए?<sup>5</sup> या क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि सब्त के दिन मंदिर में याजक सब्त का उल्लंघन करते हैं, और फिर भी निर्दोष होते हैं?<sup>6</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यहाँ मंदिर से भी बड़ा कुछ है।<sup>7</sup> परन्तु यदि तुमने यह समझा होता कि इसका क्या अर्थ है: मैं बलिदान से अधिक दया

## मत्ती

चाहता हूँ,’ तो तुम निर्दोषों को दोषी नहीं ठहराते।<sup>8</sup>  
क्योंकि मनुष्य का पुत्र सब्ल का भी प्रभु है।”

<sup>9</sup> वहाँ से निकलकर, वह उनकी आराधनालाय में गया।  
<sup>10</sup> और वहाँ एक व्यक्ति था जिसका हाथ सूखा हुआ था।  
और उन्होंने यीशु से पूछा, “व्या सब्ल के दिन चंगा  
करना उचित है?”—ताकि वे उसके विरुद्ध आरोप ला  
सके।<sup>11</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, “तुमसे से कौन ऐसा  
मनुष्य है जिसके पास एक भेड़ हो, और यदि वह सब्ल  
के दिन गढ़े में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर बाहर  
नहीं निकालेगा।<sup>12</sup> तो फिर एक व्यक्ति भेड़ से कितना  
अधिक मूल्यवान है। इसलिए, सब्ल के दिन भलाई करना  
उचित है।”<sup>13</sup> तब उसने उस व्यक्ति से कहा, “अपना  
हाथ बढ़ा!” उसने उसे बढ़ाया, और वह दूसरे के समान  
सामान्य हो गया।<sup>14</sup> परन्तु फरीसी बाहर जाकर उसके  
विरुद्ध शब्दंत्र करने लगे कि वे उसे कैसे नष्ट कर सकते  
हैं।

<sup>15</sup> परन्तु यीशु, यह जानकर, वहाँ से हट गए। बहुत से  
लोग उनके पीछे हो लिए, और उन्होंने उन सबको चंगा  
किया,<sup>16</sup> और उन्हे चेतावनी दी कि वे उसे प्रकट न करें,  
<sup>17</sup> ताकि जो यशायाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा  
हो:

<sup>18</sup> “देखो, मेरा सेवक, जिसे मैंने चुना है, मेरा प्रिय,  
जिसमें मेरी आत्मा प्रसन्न होती है, मैं अपनी आत्मा उस  
पर डालूँगा। और वह जातियों को न्याय की धौषणा  
करेगा।<sup>19</sup> वह न तो ज़गड़ेगा, न विलाएगा, और न ही  
कोई उसकी आवाज़ गतियों में सुनेगा।<sup>20</sup> वह दूर दूर  
सरकंडे को नहीं तोड़ेगा, और धूँधार बत्ती को नहीं  
बुझाएगा। जब तक वह न्याय को विजय तक न ले  
जाए।<sup>21</sup> और उसके नाम पर जातियाँ आशा करेंगी।”

<sup>22</sup> तब एक दुष्टामा ग्रस्त व्यक्ति जो अंधा और गूँगा था,  
यीशु के पास लाया गया, और उसने उसे चंगा किया  
ताकि वह व्यक्ति जो बोल नहीं सकता था, बोलने और  
देखने लगे।<sup>23</sup> और सारी भीड़ चकित हो गई, और  
कहने लगी, “क्या यह व्यक्ति दाऊद का पुत्र हो सकता  
है?”<sup>24</sup> परन्तु जब फरीसियों ने यह सुना, तो उन्होंने  
कहा, “यह व्यक्ति दुष्टामाओं को केवल बेलजेबुल,  
दुष्टामाओं के सासक के द्वारा निकालता है।”<sup>25</sup> उनके  
विचारों के जानकर, यीशु ने उनसे कहा, “हर राज्य जो  
अपने ही विरुद्ध विभाजित होता है, नष्ट हो जाता है; और  
कोई भी नगर या घर जो अपने ही विरुद्ध विभाजित होता  
है, स्थिर नहीं रहेगा।<sup>26</sup> और यदि शैतान शैतान को  
निकाल रहा है, तो वह अपने ही विरुद्ध विभाजित हो

गया है, तो फिर उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा?<sup>27</sup> और  
यदि मैं बेलजेबुल के द्वारा दुष्टामाओं को निकालता हूँ,  
तो तुम्हरे पुत्र किसके द्वारा उहें निकालते हैं? इसलिए वे  
तुम्हरे न्यायी होंगे।<sup>28</sup> परन्तु यदि मैं परमेश्वर की आत्मा  
के द्वारा दुष्टामाओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का  
राज्य तुम पर आ गया है।<sup>29</sup> या कोई कैसे बलवान  
व्यक्ति के घर में प्रवेश कर सकता है और उसकी संपत्ति  
को लूट सकता है, जब तक कि वह पहले बलवान  
व्यक्ति को बाँध न ले? और तब वह उसके घर को  
लूटेगा।<sup>30</sup> जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है, और  
जो मेरे साथ इकट्ठा नहीं करता, वह बिखेरता है।

<sup>31</sup> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, हर पाप और निदा लोगों  
को क्षमा की जाएगी, परन्तु आत्मा के विरुद्ध निंदा क्षमा  
नहीं की जाएगी।<sup>32</sup> और जो कोई मनुष्य के पुत्र के  
विरुद्ध कुछ कहता है, उसे क्षमा की जाएगी; परन्तु जो  
कोई परिव आत्मा के विरुद्ध कहता है, उसे क्षमा नहीं  
की जाएगी, न इस युग में और न आने वाले युग में।

<sup>33</sup> या तो पेड़ को अच्छा मानो और उसका फल भी  
अच्छा, या पेड़ को बुरा मानो और उसका फल भी बुरा;  
क्योंकि पेड़ अपने फल से जाना जाता है।<sup>34</sup> से जापों की  
संतान, तुम जो बुरे हो, कैसे कुछ अच्छा कह सकते हो?  
क्योंकि मुँह ही बोलता है जो हृदय से भरा होता है।<sup>35</sup>  
अच्छा व्यक्ति अपने अच्छे खाजने से अच्छी बातें  
निकालता है; और बुरा व्यक्ति अपने बुरे खाजने से बुरी  
बातें निकालता है।<sup>36</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो  
लोग हर निष्फल शब्द बोलते हैं, वे न्याय के दिन उसका  
हिसाब देंगे।<sup>37</sup> क्योंकि तुम्हरे शब्दों के द्वारा तुम धर्मी  
ठहराए जाओगे, और तुम्हरे शब्दों के द्वारा तुम दोषी  
ठहराए जाओगे।”

<sup>38</sup> तब कुछ सार्स्ती और फरीसी उससे कहने लगे, “गुरु,  
हम आपसे एक चिन्ह देखना चाहते हैं।”<sup>39</sup> परन्तु उसने  
उत्तर दिया और उनसे कहा, “एक दुष्ट और व्यभिचारी  
पीढ़ी एक चिन्ह की खोज करती है; और फिर भी उसे  
कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा सिवाय योना नबी के चिन्ह  
के;<sup>40</sup> क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रातें समुद्री  
जीव के पेट में था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और  
तीन रातें पृथ्वी के हृदय में रहेगा।<sup>41</sup> निनवे के लोग न्याय  
के समय इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे, और उसे दोषी  
ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना के प्रचार पर मन  
फिराया; और देखो, यहाँ योना से भी बड़ा कुछ है।<sup>42</sup>  
दक्षिण की रानी न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ खड़ी  
होगी और उसे दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह पृथ्वी के छोर

## मत्ती

से सुलैमान की बुद्धि सुनने आई थी; और देखो, यहाँ सुलैमान से भी बड़ा कुछ है।

<sup>43</sup> अब जब अशुद्ध आत्मा किसी व्यक्ति से बाहर निकलती है, तो वह विश्राम की खोज में जलहीन स्थानों से होकर गुजरती है, और उसे नहीं पाती। <sup>44</sup> तब वह कहती है, मैं अपने घर लौटूँगी जहाँ से मैं आई थी; और जब वह आती है, तो उसे खाली, साफ-सुधरा और व्यवस्थित पाती है। <sup>45</sup> तब वह जाती है और अपने से भी अधिक दुष्ट सात अन्य आत्माओं को साथ लाती है, और वे वहाँ आकर निवास करती हैं, और उस व्यक्ति की अंतिम स्थिति पहली से भी बदतर हो जाती है। यह इस दुष्ट पीढ़ी के साथ भी ऐसा ही होगा।"

<sup>46</sup> जब वह भीड़ से बात कर रहा था, देखो, उसकी माता और उसके भाई बाहर खड़े थे, उससे बात करने की इच्छा रखते थे। <sup>47</sup> किंतु ने उससे कहा, "देखो, तुम्हारी माता और तुम्हारे भाई बाहर खड़े हैं, तुमसे बात करने की इच्छा रखते हैं।" <sup>48</sup> परन्तु यीशु ने उसे उत्तर दिया जो उसे बता रहा था और कहा, "मेरी माता कौन है, और मेरे भाई कौन हैं?" <sup>49</sup> और अपने शिष्यों की ओर हाथ बढ़ाकर उसने कहा, "देखो: मेरी माता और मेरे भाई।" <sup>50</sup> क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है, वही मेरा भाई, बहन, और माता है।"

**13** उसी दिन यीशु घर से बाहर निकलकर समुद्र के किनारे बैठ गए। <sup>2</sup> और बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठी हो गई, इसलिए वह एक नाव में बैठ गए, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। <sup>3</sup> और उन्होंने उन्हें दृष्टियों में बहुत सी बातें बताई, कहा, "देखो, एक बोने वाला बीज बोने निकला; <sup>4</sup> और जब वह बो रहा था, कुछ बीज रास्ते के किनारे गिर गए, और पक्षी आए और उन्हें खा गए। <sup>5</sup> कुछ अन्य चट्टानी स्थानों पर गिरे, जहाँ अधिक मिट्टी नहीं थी; और वे तुरंत उग आए, क्योंकि उनके पास मिट्टी की गहराई नहीं थी। <sup>6</sup> परन्तु जब सूर्य उगा, तो वे झुलस गए; और क्योंकि उनकी जड़ नहीं थी, वे सूख गए। <sup>7</sup> कुछ अन्य काँटों के बीच गिर, और काँटे उग आए और उन्हें दबा दिया। <sup>8</sup> परन्तु कुछ अच्छे मिट्टी पर गिरे और फसल दी, कुछ सौ गुना, कुछ साठ, और कुछ तीस गुना। <sup>9</sup> जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुने।"

<sup>10</sup> और चेते उनके पास आए और उनसे कहा, "आप उनसे दृष्टियों में क्यों बोलते हैं?" <sup>11</sup> और यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम्हें स्वर्ग के राज्य के रहस्यों को जानने का वरदान दिया गया है, परन्तु उन्हें नहीं दिया गया है। <sup>12</sup> क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और

उसके पास प्रचुरता होगी; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है। <sup>13</sup> इसलिए मैं उनसे दृष्टियों में बोलता हूँ; क्योंकि

देखते हुए भी वे नहीं देखते, और सुनते हुए भी वे नहीं सुनते, न ही समझते हैं।"

<sup>14</sup> और उनके मामले में यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हो रही है, जो कहती है,

'तुम सुनते रहोगे, परन्तु नहीं समझोगे; और देखते रहोगे, परन्तु नहीं देखोगे;<sup>15</sup> क्योंकि इन लोगों का हृदय सुरक्षित हो गया है उनके कानों से वे मुश्किल से सुनते हैं, और उन्होंने अपनी अँखें बंद कर ली हैं अन्यथा वे अपनी अँखों से देख सकते थे, अपने कानों से सुन सकते थे, अपने हृदय से समझ सकते थे, और लौट सकते थे, और मैं उन्हें चंगा कर देता।'

<sup>16</sup> परन्तु धन्य हैं तुम्हारी अँखें, क्योंकि वे देखती हैं, और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। <sup>17</sup> क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मियों ने जो तुम देखते हो उसे देखने की लालसा की, और नहीं देखा, और जो तुम सुनते हो उसे सुनने की लालसा की, और नहीं सुना।

<sup>18</sup> "तो बोने वाले का दृष्टियां सुनो।" <sup>19</sup> जब कोई राज्य का वरचन सुनता है और उसे नहीं समझता, तो दुष्ट आता है और जो उसके हृदय में बोया गया था उसे छीन लेता है। यह वही है जो रास्ते के किनारे बोया गया था। <sup>20</sup> जो चट्टानी स्थानों पर बोया गया, वह वही है जो वरचन सुनता है और तुरंत आनन्द से उसे ग्रहण करता है; <sup>21</sup> फिर भी उसमें कोई दृढ़ जड़ नहीं है, परन्तु वह अस्थायी है, और जब वरचन के कारण करते या उत्पीड़न होता है, तो वह तुरंत गिर जाता है। <sup>22</sup> और जो काँटों के बीच बोया गया, वह वही है जो वरचन सुनता है, और संसार की चिंता और धन की धोखाधड़ी वरचन को दबा देती है, और वह निष्कल हो जाता है। <sup>23</sup> परन्तु जो अच्छे मिट्टी पर बोया गया, वह वही है जो वरचन सुनता है और समझता है, जो वास्तव में फल लाता है और उत्पन्न करता है, कुछ सौ गुना, कुछ साठ, और कुछ तीस गुना।"

<sup>24</sup> यीशु ने उन्हें एक और दृष्टियों प्रस्तुत किया, कहा, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।" <sup>25</sup> परन्तु जब उसके लोग सो रहे थे, उसका शत्रु आया और गेहूँ के बीच जगली घास बो दी, और चला गया। <sup>26</sup> और जब गेहूँ उग आया और

## मत्ती

फल उत्पन्न किया, तब जंगली धास भी प्रकट हो गई।<sup>27</sup> और भूमि के मालिक के दास उसके पास आए और उससे कहा, ‘स्वामी, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया? फिर इसमें जंगली धास कैसे है?’<sup>28</sup> और उसने उनसे कहा, ‘यह शत्रु ने किया है! दासों ने उससे कहा, ‘क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर उन्हें इकट्ठा करें?’<sup>29</sup> परन्तु उसने कहा, ‘नहीं; जब तुम जंगली धास इकट्ठा करोगे, तो तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ सकते हो।’<sup>30</sup> दोनों को फसल तक साथ बढ़ने दो; और फसल के समय मैं काटने वालों से कहूँगा, “पहले जंगली धास को इकट्ठा करो और उन्हें बंडलों में बाँध दो ताकि उन्हें जलाया जा सके, परन्तु गेहूँ को मेरे खतिहान में इकट्ठा करो।”<sup>31</sup>

<sup>31</sup> उन्होंने उन्हें एक और दृष्टांत प्रस्तुत किया, कहा, “स्वर्ग का राज्य सरसों के बीज के समान है, जिसे एक व्यक्ति ने लिया और अपने खेत में बोया;<sup>32</sup> और यह सभी बीजों में सबसे छोटा है, परन्तु जब यह पूरी तरह से बढ़ जाता है, तो यह बारीचे के पीथों से बड़ा होता है और एक पेड़ बन जाता है, ताकि आकाश के पक्षी आकर उसकी शाखाओं में बसेरा करें।”

<sup>33</sup> उन्होंने उन्हें एक और दृष्टांत कहा: “स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने लिया और तीन साता आटे में छिपा दिया जब तक कि वह सब खमीरित नहीं हो गया।”

<sup>34</sup> यीशु ने भीड़ से ये सभी बातें दृष्टांतों में कही, और उन्होंने उनसे दृष्टांत के बिना नहीं कहा।<sup>35</sup> यह इसलिए हुआ ताकि जो भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा गया था वह पूरा हो: “मैं अपने मुँह को दृष्टांतों में खोरूँगा; मैं उन बातों की धोषणा करूँगा जो संसार की नींव से छिपी हुई हैं।”

<sup>36</sup> तब उन्होंने भीड़ को छोड़ दिया और घर में चले गए। और उनके चेते उनके पास आए और कहा, “हमें खेत की जंगली धास के दृष्टांत को समझाइए।”<sup>37</sup> और उन्होंने कहा, “जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है,<sup>38</sup> और खेत संसार है, और अच्छे बीज के लिए, ये राज्य के पुत्र हैं; और जंगली धास दुष्ट के पुत्र हैं;<sup>39</sup> और जिसने उन्हें बोया वह शैतान है, और फसल युग का अंत है; और काटने वाले स्वर्गद्वार हैं।”<sup>40</sup> तो जैसे जंगली धास इकट्ठा की जाती है और आग में जला दी जाती है, वैसे ही युग के अंत में होगा।<sup>41</sup> मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गद्वारों को भेजेगा, और वे उसके राज्य से सभी ठोकरें खाने वाले और जो अधर्म करते हैं उन्हें इकट्ठा करेंगे,<sup>42</sup>

और उन्हें आग की भट्टी में डाल देंगे; उस स्थान में रोना और दाँत पीसना होगा।<sup>43</sup> तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुने।

<sup>44</sup> “स्वर्ग का राज्य उस खजाने के समान है जो खेत में छिपा हुआ है, जिसे एक मनुष्य ने पाया और फिर से छिपा दिया; और उसके ऊपर आनन्द से वह जाकर अपनी सारी संपत्ति बेच देता है, और वह खेत खरीद लेता है।”<sup>45</sup> फिर, स्वर्ग का राज्य उस व्यापारी के समान है जो उत्तम मोतियों की खोज में है,<sup>46</sup> और जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला, तो वह जाकर अपनी सारी संपत्ति बेच देता है और उसे खरीद लेता है।<sup>47</sup> फिर, स्वर्ग का राज्य उस जाल के समान है जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियाँ इकट्ठा कीं;<sup>48</sup> और जब वह भर गया, तो उन्होंने उसे किनारे पर खींच लिया; और वे बैठ गए और अच्छी मछलियों के बर्तनों में इकट्ठा किया, परन्तु बुरी मछलियों को फेंक दिया।<sup>49</sup> तो युग के अंत में ऐसा ही होगा: स्वर्गद्वार आएँगे और धर्मियों में से दुष्टों को अलग करेंगे,<sup>50</sup> और उन्हें आग की भट्टी में डाल देंगे; उस स्थान में रोना और दाँत पीसना होगा।

<sup>51</sup> “क्या तुमने इन सभी बातों को समझ लिया है?” उन्होंने उनसे कहा, “हाँ।”<sup>52</sup> और यीशु ने उनसे कहा, “इसलिए हर शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बन गया है उस घर के मुखिया के समान है, जो अपने खजाने से नई और पुरानी चीजें निकालता है।”

<sup>53</sup> जब यीशु ने ये दृष्टांत समाप्त किए, तो वे वहाँ से चले गए।<sup>54</sup> और वे अपने नगर में आए और उन्हें उनकी आराधनालय में सिखाने लगे, ताकि वे चकित हो गए, और कहा, “इस मनुष्य ने यह ज्ञान और ये अद्भुत शक्तियाँ कहाँ से प्राप्त कीं?”<sup>55</sup> क्या यह बदृक का पुत्र नहीं है? क्या उसकी माता का नाम मरियम नहीं है, और उसके भाई, याकूब, युसुफ, सिमोन, और यहूदा? <sup>56</sup> और उसकी बहनें, क्या वे सब हमारे साथ नहीं हैं? फिर इस मनुष्य ने ये सभी बातें कहाँ से प्राप्त कीं?”<sup>57</sup> और उन्होंने उससे ठोकर खाई। परन्तु यीशु ने उनसे कहा, “एक भविष्यवक्ता को उसके अपने नगर और उसके अपने घर में छोड़कर कहाँ भी अपमानित नहीं किया जाता।”<sup>58</sup> और उन्होंने वहाँ बहुत से अद्भुत कार्य नहीं किए क्योंकि उनके अविश्वास के कारण।

**14** उस समय चौथाई राज्य के शासक हेरोदेस ने यीशु के बारे में समाचार सुना,<sup>2</sup> और अपने सेवकों से कहा, “यह योहन बपतिस्पा देनेवाला है; वह मृतकों में से

## मत्ती

जी उठा है, और इसी कारण उसमें अद्भुत शक्तियाँ काम कर रही हैं।"

<sup>3</sup> क्योंकि जब हेरोदेस ने योहन को गिरफ्तार किया था, तो उसने उसे बाँधकर जेल में डाल दिया था, अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास के कारण। <sup>4</sup> क्योंकि योहन उससे कहता था, "तुझे उसके साथ रहना उचित नहीं है।"<sup>5</sup> हालांकि हेरोदेस उसे मार डालना चाहता था, परंतु वह भीड़ से डरता था, क्योंकि वे योहन को नवी मानते थे।

<sup>6</sup> परंतु जब हेरोदेस का जन्मदिन आया, तो हेरोदियास की बटी ने उनके सामने नृत्य किया और हेरोदेस को प्रसन्न किया, <sup>7</sup> इतना कि उसने शपथ लेकर उसे जो कुछ वह माँगी देने का चलन दिया। <sup>8</sup> और अपनी माँ के संकेत पर उसने कहा, "मुझे यहाँ एक थाल में योहन बपतिस्मा देनेवाले का सिर दे दो।"<sup>9</sup> राजा दुखी हुआ, परंतु अपनी शपथों और अपने भौजन के अतिथियों के कारण उसने आदेश भेजा और योहन का सिर जेल में कटवा दिया। <sup>10</sup> और उसका सिर एक थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया, और वह उसे अपनी माँ के पास ले गई। <sup>11</sup> योहन के शिष्यों ने आकर उसकी देह को लिया और उसे दफनाया; और वे जाकर यीशु को समाचार दिया।

<sup>12</sup> जब यीशु ने योहन के बारे में सुना, तो वह वहाँ से एक नाव में एकांत स्थान पर अकेले चले गए; और जब भीड़ ने यह सुना, तो वे नगरों से पैदल उनके पाठे हो लिए। <sup>14</sup> जब वह किनारे पर उतरे, तो उन्होंने एक बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया और उनके बीमारों को चंगा किया।

<sup>15</sup> जब संध्या हुई, तो शिष्य उनके पास आए और कहा, "यह स्थान एकांत है और समय भी बीत चुका है; भीड़ को विदा कर दीजिए ताकि वे गाँवों में जाकर अपने लिए भौजन खरीद सकें।"<sup>16</sup> परंतु यीशु ने उनसे कहा, "उन्हें जाने की आवश्यकता नहीं है; तुम उन्हें खाने के लिए कुछ दो।"<sup>17</sup> उन्होंने उनसे कहा, "वहाँ हमारे पास केवल पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"<sup>18</sup> और उन्होंने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास लाओ।"<sup>19</sup> और भीड़ को घास पर बैठने का आदेश देकर, उन्होंने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ली, और स्वर्ग की ओर देखकर भौजन को आशीर्वाद दिया, और रोटियों को तोड़कर शिष्यों को दिया, और शिष्यों ने उन्हें भीड़ को दिया। <sup>20</sup> और सब ने खाया और तृप्त हो गए, और उन्होंने बची हुई टुकड़ों को

उठाया: बारह टोकरी भर। <sup>21</sup> जो खाए थे वे लगभग पाँच हजार पुरुष थे, स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर।

<sup>22</sup> तुरंत बाद उन्होंने शिष्यों को नाव में चढ़ने के लिए बाध्य किया और उनसे पहले दूसरी ओर जाने के लिए कहा, जबकि उन्होंने भीड़ को विदा किया। <sup>23</sup> भीड़ को विदा करने के बाद, वह अकेले प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चले गए; और जब संध्या हुई, तो वह वहाँ अकेले थे। <sup>24</sup> परंतु नाव पहले से ही भूमि से काफी दूर थी, लहरों से पिरी हुई, क्योंकि हवा विपरीत थी। <sup>25</sup> और रात के बीच पहर में वह समुद्र पर चलते हुए उनके पास आए। <sup>26</sup> जब शिष्यों ने उन्हें समुद्र पर चलते देखा, तो वे भयभीत हो गए, और कहा, "यह एक भूत है।" और डर के मारे चिल्ला उठे। <sup>27</sup> परंतु तुरंत यीशु ने उनसे कहा, "दाढ़स बँधो, यह मैं हूँ; डरो मत।"<sup>28</sup> परतरस ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "प्रभु, यदि यह आप हैं, तो मुझे पानी पर आपके पास आने की आज्ञा दीजिए।"<sup>29</sup> और उन्होंने कहा, "आओ!" और परतरस नाव से बाहर निकला और पानी पर चला, और यीशु की ओर आया। <sup>30</sup> परंतु हवा को देखकर वह डर गया, और जब वह डूबने लगा, तो उसने चिल्लाकर कहा, "प्रभु, मुझे बचाओ।"<sup>31</sup> तुरंत यीशु ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, और उससे कहा, "अल्पविश्वसी, तूने संदेह क्यों किया?" <sup>32</sup> जब वे नाव में चढ़े, तो हवा थम गई। <sup>33</sup> और जो नाव में थे, उन्होंने उसे दंडवत किया और कहा, "आप सचमुच परमेश्वर के पुत्र हैं।"

<sup>34</sup> जब वे पार हो गए, तो वे गेनेसरेट की भूमि पर आए। <sup>35</sup> और जब उस स्थान के लोगों ने उन्हें पहचाना, तो उन्होंने उस पूरे क्षेत्र में समाचार भेजा और उनके पास सभी बीमारों को लाए; <sup>36</sup> और उनसे विनती की कि वे केवल उनके वस्त के किनारे को छू लें; और जितनों ने उसे छुआ, वे सब चंगे हो गए।

**15** तब कुछ फरीसी और शास्त्री यस्त्वालेम से यीशु के पास आए और बोले, <sup>2</sup> "आपके चेले पुरुषों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वे रोटी खाते समय अपने हाथ नहीं धोते।"<sup>3</sup> और उनसे उन्हें उत्तर दिया, "तुम भी अपनी परंपरा के लिए परमेश्वर की आज्ञा क्यों तोड़ते हो? "<sup>4</sup> क्योंकि परमेश्वर ने कहा, 'अपने पिता और माता का आदर करो'; और, 'जो कोई पिता या माता के विरुद्ध बुरा बोले, उसे मृत्यु दंड दिया जाए।'<sup>5</sup> परंतु तुम कहते हो, 'जो कोई अपने पिता या माता से कहे, "जो कुछ मेरे पास है जो तुम्हारी सहायता कर सकता है, वह परमेश्वर को अर्पित है,"<sup>6</sup> वह अपने पिता या माता का आदर नहीं करेगा।' और इस प्रकार तुमने अपनी परंपरा

## मत्ती

के लिए परमेश्वर के वचन को निष्फल कर दिया है।<sup>7</sup> हे कपटी लोगों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में ठीक भविष्यद्वाणी की थी, यह कहकर:

<sup>8</sup> 'यह लोग अपने हाँठों से मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका हृदय मुझसे दूर है।<sup>9</sup> और व्यर्थ में रे मेरी उपासना करते हैं, मनुष्यों की आज्ञाओं को उपदेश के रूप में सिखाते हैं।'

१० यीशु ने भीड़ को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, 'सुनो और समझोः<sup>11</sup> जो मुँह में प्रवेश करता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो मुँह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।'

<sup>12</sup> तब चेले उसके पास आकर बोले, 'क्या आप जानते हैं कि फरीसी इस बात को सुनकर ठेस खा गए?' <sup>13</sup> परन्तु उसने उत्तर दिया और कहा, 'हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा।' <sup>14</sup> उन्हें छोड़ दो; वे अंथों के अंधे मार्गदर्शक हैं। और यदि कोई अंथा अंधे का मार्गदर्शन करे, तो दोनों गड्ढे में गिरेंगे।'

<sup>15</sup> पतरस ने उससे कहा, 'हमें यह दृष्टांत समझ दीजिए।'<sup>16</sup> यीशु ने कहा, 'क्या तुम भी अब तक समझ नहीं रखते? <sup>17</sup> क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता है, वह पेट में जाता है और बाहर निकल जाता है? <sup>18</sup> परन्तु जो बातें मुँह से निकलती हैं, वे हृदय से आती हैं, और वे ही मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।<sup>19</sup> क्योंकि हृदय से बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, यौन अनैतिकता, चोरी, झूठी गवाही, बदनामी निकलती हैं।<sup>20</sup> ये ही बातें मनुष्य को अशुद्ध करती हैं; परन्तु बिना धोए हाथों से खाना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।'

<sup>21</sup> यीशु वहाँ से निकलकर, सूर और सिदोन के क्षेत्र में चला गया।<sup>22</sup> और देखो, उस क्षेत्र की एक कनानी स्त्री बाहर आकर चिल्लाने लगी, 'मुझ पर दया करो, प्रभु, दाकुद के पुत्र; मेरी बेटी पर भूत का बड़ा प्रभाव है।'<sup>23</sup> परन्तु उसने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया। और उसके चेले उसके पास आकर उससे विनीती करने लगे, 'उसे विदा कर दो, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्ला रही है।'<sup>24</sup> परन्तु उसने उत्तर दिया और कहा, 'मैं केवल इसाएं के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया हूँ।'<sup>25</sup> परन्तु वह आई और उसके सामने झुककर कहने लगी, 'प्रभु, मेरी सहायता कर।'<sup>26</sup> तब उसने उत्तर दिया और कहा, 'बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों को डालना अच्छा नहीं है।'<sup>27</sup> और उसने कहा, 'हाँ, प्रभु, परन्तु कुत्ते भी अपने स्वामियों की मेज से गिरने वाले टुकड़ों को

खाते हैं।'<sup>28</sup> तब यीशु ने उससे कहा, 'हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; तेरी इच्छा के अनुसार तेरा कार्य होगा।' और उसी क्षण उसकी बेटी चंगी हो गई।

<sup>29</sup> वहाँ से चलकर, यीशु गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया।<sup>30</sup> और बड़ी भीड़ उसके पास आई, उनके साथ लंगड़े, अपांग, अंधे, गूरे, और बहुत से अन्य लोग थे, और उन्होंने उन्हें उसके पैरों पर डाल दिया; और उसने उन्हें चंगा किया।<sup>31</sup> इसलिए भीड़ आश्वर्यकित हो गई जब उन्होंने गूरों को बौलते हुए देखा, अपांगों को स्वस्य होते, लंगड़ों को चलते और अंधों को देखते हुए; और उन्होंने इसाएं के परमेश्वर की महिमा की।

<sup>32</sup> अब यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, 'मुझे इन लोगों पर दया आती है, क्योंकि वे अब तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं है; और मैं उन्हें भूखा विदा नहीं करना चाहता, क्योंकि वे रास्ते में बैहोश हो सकते हैं।'<sup>33</sup> चेलों ने उससे कहा, 'इस निर्जन स्थान में इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करने के लिए हमें इतनी रोटियाँ कहाँ से मिलेंगी?'<sup>34</sup> और यीशु ने उनसे कहा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?' और उन्होंने कहा, 'सात, और कुछ छोटी मछलियाँ।'<sup>35</sup> और उसने लोगों को भूमि पर बैठने का निर्देश दिया;<sup>36</sup> और उसने सात रोटियाँ और मछलियाँ लीं; और धन्यवाद देने के बाद, उन्हें तोड़ा और चेलों को दिया, और चेलों ने लोगों को दिया।<sup>37</sup> और सब ने खाया और तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों को उठाया: सात बड़े टोकरे भरे हुए।<sup>38</sup> और खाने वाले चार हजार पुरुष थे, स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर।<sup>39</sup> और भीड़ को विदा करने के बाद, यीशु नाव में चढ़कर मगदन के क्षेत्र में आया।

**16** फरीसी और सद्गुरी यीशु के पास आए, और उसे परखने के लिए उन्होंने उससे स्वर्ग से एक चिन्ह दिखाने के लिए कहा।<sup>2</sup> लेकिन उसने उनसे कहा, 'जब शाम होती है, तो तुम कहते हो, 'आकाश लाल है, इसलिए मौसम साफ रहेगा।'<sup>3</sup> और सुबह में, 'आज तूफान आएगा, क्योंकि आकाश लाल और भयानक है।' तुम आकाश की स्थिति को समझना जानते हो, लेकिन क्या तुम समय के चिन्हों को नहीं समझ सकते? <sup>4</sup> एक दृष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह चाहती है; और इसलिए उसे कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा, सिवाय योना के चिन्ह के।'<sup>5</sup> और वह उन्हें छोड़कर चला गया।

<sup>5</sup> और चेले समुद्र के दूसरी ओर आए, लेकिन वे रोटी लाना भूल गए थे।<sup>6</sup> और यीशु ने उनसे कहा, 'सावधान

## मत्ती

रहो, और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से बचो।”<sup>7</sup> वे आपस में चर्चा करने लगे, कहने लगे, “उन्होंने यह इसलिए कहा क्योंकि हम रोटी नहीं लाए।”<sup>8</sup> लेकिन यीशु यह जानकर, बोला, “तुम अल्पविश्वासी हो, क्यों आपस में चर्चा कर रहे हो कि तुम्हारे पास रोटी नहीं हैं? उन्होंने यह जानकर, बोला, “तुम अब तक नहीं समझे और न ही याद किया कि पांच हजार की पांच रोटियाँ, और कितनी टोकरी तुमने उठाई थीं?”<sup>10</sup> और न ही चार हजार की सात रोटियाँ, और कितनी बड़ी टोकरी तुमने उठाई थीं?<sup>11</sup> तुम क्यों नहीं समझते कि मैं तुमसे रोटी के बारे में नहीं बोल रहा था? लेकिन फरीसियों और सदूकियों के खमीर से बचो।”<sup>12</sup> तब वे समझे कि उसने रोटी के खमीर से नहीं, बल्कि फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से बचने के लिए कहा था।

13 अब जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के क्षेत्र में आए, तो उन्होंने अपने चेलों से पूछा, “लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?”<sup>14</sup> और उन्होंने कहा, “कुछ कहते हैं बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना; और कुछ, एलियाह; और कुछ, पर्मियाह, या भविष्यद्वक्ता आं में से एक।”<sup>15</sup> उसने उनसे कहा, “लेकिन तुम स्वयं क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?”<sup>16</sup> शमैन पतरस ने उत्तर दिया, “तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र।”<sup>17</sup> और यीशु ने उससे कहा, “धर्य हो तुम, शमैन बारयोना, क्योंकि मांस और रक्त ने यह तुम पर प्रकट नहीं किया, बल्कि मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है।

18 और मैं तुमसे की रक्त हूँ कि तुम पतरस हो, और इस चट्ठान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा; और अधोलोक के द्वारा उस पर प्रबल नहीं होंगे।<sup>19</sup> मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; और जो कुछ तुम पृथीवी पर बैंधोगे, वह स्वर्ग में बैंधा होगा, और जो कुछ तुम पृथीवी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खोला होगा।”<sup>20</sup> तब उसने चेलों को कही आज्ञा दी कि वे किसी को न बताएं कि वह मरीह है।

21 उस समय से यीशु ने अपने चेलों को दिखाना शुरू किया कि उसे यरूशलैम जाना चाहिए, और पुरनियों, मुछ्य याजकों, और शास्त्रियों से बहुत कष्ट उठाना चाहिए, और मारा जाना चाहिए, और तीसरे दिन जी उठाना चाहिए।<sup>22</sup> और पतरस उसे अलग ले जाकर उसे डॉट्टने लगा, कहने लगा, “गगवान न करे, प्रभु! यह कभी तुम पर नहीं होगा!”<sup>23</sup> लेकिन उसने मुड़कर पतरस से कहा, “मेरे पीछे हट, शैतान! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि मनुष्य की बातों पर ध्यान दे रहा है।”

<sup>24</sup> तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को नकारे, अपनी क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।”<sup>25</sup> क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, वह उसे खो देगा; लेकिन जो कोई मेरे कारण अपना जीवन खो देता है, वह उसे पाएगा।<sup>26</sup> क्योंकि यदि कोई व्यक्ति सारे संसार को प्राप्त कर ले, लेकिन अपनी आत्मा को खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? या कोई व्यक्ति अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा?<sup>27</sup> क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में अपने सर्वाद्वृतों के साथ आने वाला है, और तब वह हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा।<sup>28</sup> सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख सकें।

**17** छह दिन बाद, यीशु ने पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ लिया, और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर अकेले ले गए।<sup>2</sup> और उनके सामने उनका रूपांतर हुआ; और उनका चेहरा सूर्य के समान चमकने लगा, और उनके वस्त्र प्रकाश के समान उज्ज्वल हो गए।<sup>3</sup> और देखो, मूसा और एलियाह उनके साथ बातें करते हुए दिखाई दिए।<sup>4</sup> पतरस ने उत्तर दिया और यीशु से कहा, “प्रभु! यह अच्छा है कि हम यहाँ हैं, यदि आप चाहें, तो मैं यहाँ तीन तंबू बनाऊँगा—एक आपके लिए, एक मूस के लिए, और एक एलियाह के लिए।”<sup>5</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें ढक लिया, और देखो, बादल से एक आवाज आई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ; उसकी सुनो!”<sup>6</sup> जब चेलों ने यह सुना, तो वे मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़े और बहुत डर गए।<sup>7</sup> और यीशु उनके पास आए और उन्हें छूकर कहा, “उठो, और मत डरो।”<sup>8</sup> और अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने यीशु के सिवा किसी को नहीं देखा।

9 जब वे पहाड़ से नीचे उत्तर रहे थे, यीशु ने उन्हें आज्ञा दी, “इस दर्शन को किसी से न कहो जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी न उठे।”<sup>10</sup> और चेलों ने उसने पूछा, “फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि पहले एलियाह आना चाहिए?”<sup>11</sup> और उन्होंने उत्तर दिया और कहा, “एलियाह आ रहा है और सब कुछ बहाल करेगा;<sup>12</sup> पर मैं तुमसे कहता हूँ कि एलियाह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, बल्कि उसके साथ जो चाहा वह किया। इसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथों दुःख ठाटाएगा।”<sup>13</sup> तब चेलों ने समझा कि उन्होंने उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहा था।

## मत्ती

<sup>14</sup> जब वे भीड़ के पास आए, तो एक आदमी यीशु के पास आया, उसके सामने घुटने टेककर कहने लगा, <sup>15</sup> “प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर, क्योंकि उसे मिर्रा आती है और वह बहुत कष्ट पाता है; क्योंकि वह अक्सर आग में गिर जाता है और अक्सर आनी में। <sup>16</sup> और मैं उसे आपके चेतों के पास लाया, और वे उसे चंगा नहीं कर सके।” <sup>17</sup> पर यीशु ने उत्तर दिया और कहा, “हे अविश्वासी और विकृत पीढ़ी, मैं कब तक तुहारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हें सहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” <sup>18</sup> और यीशु ने उसे डाला, और दुष्टामा उससे बाहर निकल गई, और लड़का उसी धड़ी चंगा हो गया।

<sup>19</sup> तब चेते यीशु के पास अलग आकर कहने लगे, “हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?” <sup>20</sup> और उहोंने उनसे कहा, “तुम्हारे अल्प विश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर हो, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘यहाँ से वहाँ चला जा,’ और वह चला जाएगा; और तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।” <sup>21</sup> [परंतु यह प्रकार प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलता।]

<sup>22</sup> और जब वे गलील में इकट्ठे हो रहे थे, यीशु ने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है;” <sup>23</sup> और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।” और वे बहुत दुखी हुए।

<sup>24</sup> जब वे कफरनहूम आए, तो दो-द्राचमा कर लेने वाले पतरस के पास आए और कहने लगे, “क्या तुम्हारा गुरु दो-द्राचमा कर नहीं देता?” <sup>25</sup> उसने कहा, “हाँ।” और जब वह घर में आया, तो यीशु ने पहले उससे कहा, “तुम क्या सोचते हो, शमोन? पृथी के राजा कर या चुरीं किससे लेते हैं, अपने पुत्रों से या परायों से?” <sup>26</sup> जब पतरस ने कहा, “परायों से,” यीशु ने उससे कहा, “तब पुत्र तो मुक्त है।” <sup>27</sup> फिर भी, ताकि हम उहें ठेस न पहुँचाएँ, समुद्र पर जाकर एक काँटा डालो, और जो पहली मछली निकले, उसे पकड़ो; और जब तुम उसका मुँह खोलोगे, तो उसमें एक स्टाटर पाओगे। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उहें दे देना।”

**18** उसी समय चेते यीशु के पास आए और कहा, “स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?” <sup>2</sup> और उसने एक बालक को अपने पास बुलाया और उहें उनके बीच खड़ा किया, <sup>3</sup> और कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक तुम न बदलो और बच्चों के समान न बनो, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे।” <sup>4</sup> इसलिए जो कोई अपने आप को इस बालक के समान नम्र करेगा,

वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है। <sup>5</sup> और जो कोई मेरे नाम में ऐसे एक बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; <sup>6</sup> पर जो कोई इन छोटे में से एक को, जो मुझ पर विश्वास करते हैं, पाप में गिराता है, उसके लिए यही अच्छा है कि उसके गले में एक भारी चक्की का पाट लटकाया जाए, और वह समुद्र की गहराई में डुबाया जाए।

<sup>7</sup> दुनिया पर ठोकरों के कारण हाय! क्योंकि ठोकरें आना अनिवार्य है, परंतु उस व्यक्ति पर हाय जिसके द्वारा ठोकर आती है। <sup>8</sup> और यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे पाप में गिराता है, तो उसे काटकर अपने से दूर फेंक दें; तेरे लिए यह अच्छा है कि तू जीवन में लंगड़ा या लुला होकर प्रवेश करे, बजाय इसके कि तेरे दो हाथ या दो पैर हों और तू अनन्त आग में डाला जाए। <sup>9</sup> और यदि तेरी आँख तुझे पाप में गिराती है, तो उसे निकालकर अपने से दूर फेंक दे। तेरे लिए यह अच्छा है कि तू एक आँख के साथ जीवन में प्रवेश करे, बजाय इसके कि तेरी दो आँखें हों और तू अग्नि के नरक में डाला जाए।

<sup>10</sup> देखो कि तुम इन छोटे में से एक को तुच्छ न समझो; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि स्वर्ग में उनके द्वारा निरंतर मेरे स्वर्गीय पिता का मुख देखते हैं। <sup>11</sup> [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को बचाने आया है।] <sup>12</sup> तुम क्या सौचते हो? यदि किसी मनुष्य के पास सौ भड़े हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्यानवे को पहाड़ों पर छोड़कर उस भटकी हुई को खोजने नहीं जाएगा? <sup>13</sup> और यदि वह उसे पा लेता है, तो मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह उसके लिए उन निन्यानवे से अधिक आनंदित होता है जो नहीं भटकी। <sup>14</sup> इसी प्रकार तुम्हारे स्वर्गीय पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटे में से एक भी नाश हो।

<sup>15</sup> अब यदि तेरा भाई पाप करता है, तो जाकर उसे अकेले में उसकी गलती दिखा; यदि वह तेरी सुने, तो उने अपने भाई को पा लिया है। <sup>16</sup> पर यदि वह न सुने, तो एक या दो और को अपने साथ ले जा, ताकि दो या तीन गवाहों की गवाही से हर बात की पूछि हो सके। <sup>17</sup> और यदि वह उनकी भी न सुने, तो कलीसिया से कह; और यदि वह कलीसिया की भी न सुने, तो उसे अन्यजाति और कर वसूलने वाले के समान समझ। <sup>18</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंध जाएगा; और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुल जाएगा। <sup>19</sup> फिर मैं तुमसे कहता हूँ, कि यदि तुम में से दो पृथ्वी पर किसी बात के लिए सहमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता के द्वारा उनके लिए पूरी की जाएगी। <sup>20</sup>

## मत्ती

क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच मैं हूँ।”

<sup>21</sup> तब पतरस ने उसके पास आकर कहा, “प्रभु, यदि मेरा भाई मेरे विरुद्ध पाप करता है, तो मैं उसे कितनी बार क्षमा करूँ? सात बार तक?” <sup>22</sup> यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझसे यह नहीं कहता कि सात बार तक, परंतु सत्तर बार सात तक।

<sup>23</sup> इस कारण स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने की इच्छा की। <sup>24</sup> और जब उसने हिसाब चुकता करना शुरू किया, तो एक को उसके पास लाया गया जो उसे दस हजार क्रिबिलियत का ऋणी था। <sup>25</sup> परंतु क्योंकि उसके पास चुकाने का साधन नहीं था, उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उसे उसकी पत्नी और बच्चों और जो कुछ उसके पास है, सब के साथ बेच दिया जाए, और ऋण चुकता किया जाए। <sup>26</sup> इसलिए वह दास भूमि पर गिर पड़ा और उससे प्रार्थना करने लगा, ‘मुझ पर धैर्य रख और मैं तुझे सब चुका दूँगा।’ <sup>27</sup> और उस दास के स्वामी ने दिया की, और उसे छोड़ दिया और उसका ऋण क्षमा कर दिया। <sup>28</sup> परंतु वह दास बाहर जाकर अपने एक साथी दास को पाया जो उसे सौ दीनार का ऋणी था; और उसने उसे पकड़ लिया और उसका गला घोंटने लगा, कहता, ‘जो तेरा बकाया है, चुका दो।’ <sup>29</sup> इसलिए उसका साथी दास भूमि पर गिर पड़ा और उससे विनती करने लगा, ‘मुझ पर धैर्य रख और मैं तुझे चुका दूँगा।’ <sup>30</sup> परंतु वह नहीं माना, और उसे जेल में डाल दिया जब तक वह बकाया चुका न दे। <sup>31</sup> इसलिए जब उसके साथी दासों ने जो हुआ देखा, तो वे बहुत दुखी हुए, और जाकर अपने स्वामी को सब कुछ बताया जो हुआ था। <sup>32</sup> तब उसके स्वामी ने उसे बुलाकर कहा, ‘हे दुष्ट दास, मैंने तेरा सारा ऋण क्षमा कर दिया क्योंकि तूने मुझसे विनती की थी।’ <sup>33</sup> क्या तुझे भी अपने साथी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी, जैसे मैंने तुझ पर दया की?’ <sup>34</sup> और उसके स्वामी ने क्रोधित होकर उसे जेलरों के हाथ सौंप दिया जब तक वह सारा बकाया चुका न दे। <sup>35</sup> मेरा स्वर्गीय पिता भी तुमसे ऐसा ही करेगा, यदि तुममें से हर एक अपने भाई को अपने हृदय से क्षमा न करे।”

**19** जब यीशु ने ये बातें समाप्त की, तो वह गलील से निकलकर यरदन के पार यहूदिया के क्षेत्र में आए, <sup>2</sup> और बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली, और उन्होंने वहाँ उर्वं चंगा किया।

<sup>3</sup> कुछ फरीसी यीशु के पास आए, उन्हें परखते हुए पूछा, “क्या किसी भी कारण से एक व्यक्ति के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना उचित है?” <sup>4</sup> और उन्होंने उत्तर दिया और कहा, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें आरंभ से बनाया, उसने उन्हें पुरुष और महिला बनाया, <sup>5</sup> और कहा, ‘इस कारण से एक व्यक्ति अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ जुड़ जाएगा, और दोनों एक शरीर हो जाएंगे?’ <sup>6</sup> इसलिए वे अब दो नहीं, बल्कि एक शरीर हैं। इसलिए, जिसे परमेश्वर ने एक साथ जोड़ा है, उसे कोई व्यक्ति अलग न करे।” <sup>7</sup> उन्होंने उनसे कहा, “फिर मूसा ने क्यों आदेश दिया कि उसे तलाक का प्रमाण पत्र देकर विदा कर दिया जाए?” <sup>8</sup> उन्होंने उनसे कहा, “तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण मूसा ने तुम्हें अपनी पत्नियों को तलाक देने की अनुमति दी; परंतु आरंभ से ऐसा नहीं था। <sup>9</sup> और मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई अपनी पत्नी को, यौन अनैतिकता को छोड़कर, तलाक देता है और दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह व्याभिचार करता है।”

<sup>10</sup> शिष्यों ने उनसे कहा, “यदि पति का अपनी पत्नी के साथ संबंध ऐसा है, तो विवाह न करना ही अच्छा है।” <sup>11</sup> परंतु उन्होंने उनसे कहा, “सभी लोग इस कथन को स्वीकार नहीं कर सकते, केवल वे ही जिन्हें यह दिया गया है।” <sup>12</sup> क्योंकि कुछ नपुंसक हैं जो अपनी माता के गर्भ से ऐसे जन्मे हैं; और कुछ नपुंसक हैं जिन्हें मुरुषों द्वारा नपुंसक बनाया गया है; और कुछ नपुंसक हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए स्वयं को नपुंसक बनाया है। जो इसे स्वीकार कर सकता है, वह इसे स्वीकार करे।”

<sup>13</sup> फिर कुछ बच्चे उनके पास लाए गए ताकि वह उन पर हाथ रखकर प्रार्थना करें; और शिष्यों ने उन्हें दांता।

<sup>14</sup> परंतु यीशु ने कहा, “बच्चों को अकेला छोड़ दो, और उन्हें मेरे पास आने से मत रोको; क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसे ही लोगों का है।” <sup>15</sup> उन पर हाथ रखने के बाद, वह वहाँ से चले गए।

<sup>16</sup> और कोई उनके पास आया और कहा, “गुरु, मैं कौन सा अच्छा काम करूँ ताकि मैं अनंत जीवन प्राप्त कर सकूँ?” <sup>17</sup> और उन्होंने उससे कहा, “तुम मुझसे अच्छे के बारे में क्यों पूछ रहे हो? केवल एक ही अच्छा है, परंतु यदि तुम जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन करो।” <sup>18</sup> तब उसने उनसे कहा, “कौन सी?” और यीशु ने कहा, “तू हत्या न करना; तू व्याभिचार न करना; तू चोरी न करना; तू झूँठी गवाही न देना; <sup>19</sup> अपने पिता और माता का सम्मान करना; और तू अपने पड़ोसी

## मत्ती

से अपने समान प्रेम करना।”<sup>20</sup> युवा व्यक्ति ने उनसे कहा, “मैंने ये सब रखा है; मुझे अब भी क्या कमी है?”<sup>21</sup> यीशु ने उससे कहा, “यदि तुम पूर्ण होना चाहते हो, तो जाकर अपनी संपत्ति बेचो और गरीबों को दे दो, और तुहँसे स्वर्ग में खजाना मिलेगा; और आओ, मेरा अनुसरण करो।”<sup>22</sup> परंतु जब युवा व्यक्ति ने यह बात सुनी, तो वह दुखी होकर चला गया; क्योंकि वह बहुत संपत्ति का मालिक था।

<sup>23</sup> और यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, एक धनी व्यक्ति के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा।”<sup>24</sup> और फिर मैं तुमसे कहता हूँ, एक ऊंठ के लिए सुई के छेद से गुजरना आसान है बजाय इसके कि एक धनी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे।”<sup>25</sup> जब शिष्यों ने यह सुना, तो वे बहुत आश्वर्यचकित हुए, और कहा, “फिर कौन बच सकता है?”<sup>26</sup> और उहँने देखते हुए, यीशु ने उनसे कहा, “मनुष्यों के लिए यह असंभव है, परंतु परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है।”

<sup>27</sup> तब पतरस ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “देखो, हमने सब कुछ छोड़ दिया और तुम्हारा अनुसरण किया; फिर हमारे लिए क्या होगा?”<sup>28</sup> और यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि तुम जो मेरा अनुसरण कर चुके हो, पुनर्जनन में जब मनुष्य का पुत्र अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा, तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठेगे, इसापल के बारह गोत्रों का न्याय करते हुए।”<sup>29</sup> और जो कोई घरों को, या भाइयों या बहनों को, या पिता या माता को, या बच्चों को, या खेतों को, मेरे नाम के लिए छोड़ देगा, वह कई गुना अधिक प्राप्त करेगा, और अनंत जीवन का उत्तराधिकारी होगा।<sup>30</sup> परंतु कई जो पहले हैं, वे अंतिम होंगे, और अंतिम, पहले।”

**20** “स्वर्ग का राज्य उस भूमिधर के समान है जो सुबह-सुबह अपने दाख की बारी के लिए मजदूरों को काम पर रखने निकला।”<sup>2</sup> और जब उसने मजदूरों के साथ एक दिन के लिए एक दीनार पर सहमति कर ली, तो उसने उहँने अपनी दाख की बारी में भेज दिया।<sup>3</sup> और वह तीसरे पहर के आसपास निकला और अन्य लोगों को बाजार में खाली खड़े देखा;<sup>4</sup> और उनसे कहा, “तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो उचित होगा, मैं तुम्हें द्वारा।” और वे चले गए।<sup>5</sup> फिर वह छठे और नौवें पहर के आसपास निकला, और वही किया।<sup>6</sup> और यारहवें पहर के आसपास वह निकला और अन्य लोगों को खड़े पाया, और उनसे कहा, “तुम यहां दिन भर खाली क्यों खड़े हो?”<sup>7</sup> उहँने उससे कहा, क्योंकि किसी ने हमें

काम पर नहीं रखा।” उसने उनसे कहा, “तुम भी दाख की बारी में जाओ।”

<sup>8</sup> अब जब शाम हुई, तो दाख की बारी के मालिक ने अपने प्रबंधक से कहा, मजदूरों को बुलाओ और उनकी मजदूरी दो, अंतिम समूह से शुरू करके पहले तक।<sup>9</sup> जब यारहवें पहर के आसपास काम पर रखे गए लोग आए, तो उहँने प्रत्येक को एक दीनार मिला।<sup>10</sup> और जब पहले काम पर रखे गए लोग आए, तो उहँने सोचा कि उहँने अधिक मिलेगा; लेकिन उहँने भी एक दीनार मिला।

<sup>11</sup> जब उहँने इसे प्राप्त किया, तो वे भूमिधर के खिलाफ बड़बड़ाने लगे,<sup>12</sup> कहते हुए, “जो लोग अंतिम में काम पर रखे गए, उहँने केवल एक धंटा काम किया, और आपने उहँने हमारे बराबर बना दिया जिहोंने दिन का बोझ और तपती धूप सहन की।”<sup>13</sup> लेकिन उसने उनमें से एक से कहा, मित्र, मैं तुम्हारे साथ अन्याय नहीं कर रहा हूँ; क्या तुमने मेरे साथ एक दीनार पर सहमति नहीं की थी?<sup>14</sup> जो तुहारा है उसे ले लो और जाओ; लेकिन मैं इस अंतिम व्यक्ति को तुम्हारे समान ही देना चाहता हूँ।<sup>15</sup> क्या यह मेरे लिए अपने धन के साथ जो मैं चाहता हूँ वह करने का अधिकार नहीं है? या तुहारी आँख इर्झालू है क्योंकि मैं उदार हूँ?<sup>16</sup> इसलिए अंतिम पहले होंगे, और पहले, अंतिम।”

<sup>17</sup> जब यीशु यरूशलेम जा रहे थे, तो उहँने बारह शिष्यों को एकांत में ले लिया, और मार्ग में उनसे कहा, “देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं; और मनुष्य का पुत्र मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथों में सौंपा जाएगा, और वे उसे मृत्यु की सजा देंगे,<sup>19</sup> और वे उसे अन्यजातियों के हाथों में सौंपेंगे ताकि वे उसका उपहास करें, कोइं मारें और क्रूस पर चढ़ाएं, और तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

<sup>20</sup> तब जब्दी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों के साथ उसके पास आई, और झुककर उससे एक निवेदन किया।<sup>21</sup> और उसने उससे कहा, “तुम क्या चाहती हो?” उसने उससे कहा, “कहिए कि आपके राज्य में ये मेरे दो पुत्र, एक आपके दाहिने और एक आपके बाएं बैठें।”<sup>22</sup> लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, “तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने वाला हूँ?” उहँने उससे कहा, “हम पी सकते हैं।”<sup>23</sup> उसने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला अवश्य पियोगे; लेकिन मेरे दाहिने और बाएं बैठेने का अधिकार मेरे पास नहीं है, बल्कि यह उन लोगों के लिए है जिनके लिए मेरे पिता ने इसे तैयार किया है।”<sup>24</sup> और जब दस अन्य शिष्यों ने यह सुना, तो वे उन दोनों भाइयों से क्रोधित हो

## मत्ती

गए।<sup>25</sup> लेकिन यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा, “तुम जानते हो कि अन्यजातियों के शासक उन पर अधिकार जाताते हैं, और उच्च पद वाले उन पर अधिकार करते हैं।<sup>26</sup> तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होगा, लेकिन जो तुम्हारे बीच प्रमुख बनना चाहता है वह तुम्हारा सेवक होगा,<sup>27</sup> और जो तुम्हारे बीच पहला बनना चाहता है वह तुम्हारा दास होगा;<sup>28</sup> जैसे मनुष्य का पुत्र सेवा करने के लिए नहीं आया, बल्कि सेवा करने के लिए आया है, और बहुतों के लिए अपनी जान फिरौती में देने के लिए।”

जब वे यीरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।<sup>29</sup> और दो अंथे लोग, जो मार्ग के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहे हैं, चिल्लाए, “प्रभु, दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।”<sup>30</sup> लेकिन भीड़ ने उन्हें चुप रहने की कड़ी चेतावनी दी; फिर भी वे और भी जोर से चिल्लाए, “प्रभु, दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।”<sup>32</sup> और यीशु रुक गए और उन्हें बुलाया, और कहा, “तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?”<sup>33</sup> उन्होंने उससे कहा, “प्रभु, हम चाहते हैं कि हमारी अँखें खुल जाएं।”<sup>34</sup> करुणा से प्रेरित होकर, यीशु ने उनकी अँखों को छुआ; और तुरंत उनकी दृष्टि लौट आई और वे उसके पीछे हो लिए।

**21** जब वे यस्तुशलेम के निकट पहुँचे और जैतुन पर्वत पर बेथपगे आए, तब यीशु ने दो चेलों को भेजा,<sup>2</sup> उनसे कहा, “सामने के गाँव में जाओ, और तुरंत तुम्हें वहाँ एक गधा बंधा हुआ मिलेगा और उसके साथ एक गदही का बच्चा भी; उहाँ खोलकर मेरे पास ले आओ।”<sup>3</sup> और यदि कोई तुमसे कुछ कहे, तो कहना, ‘‘प्रभु को उनकी आवश्यकता है,’’ और वह तुरंत उहाँ भेज देगा।”<sup>4</sup> यह इसलिए हुआ ताकि जो भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो।<sup>5</sup> परिष्योन की बेटी से कहो, ‘‘देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है, विनम्र और गधे पर सवार, यहाँ तक कि गदही के बच्चे पर।”<sup>6</sup> चेलों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें निर्देश दिया था, और गधा और गदही का बच्चा लाए, और उनके ऊपर अपने वस्त्र बिछाए; और वह उन वस्त्रों पर बैठ गया।<sup>8</sup> भीड़ के अधिकांश लोगों ने अपने वस्त्र रास्ते पर बिछा दिए, और अन्य लोग पेड़ों से डालियाँ काटकर उन्हें रास्ते पर बिछा रहे थे।<sup>9</sup> अब जो भीड़ उसके आगे जा रही थी, और जो पीछे आ रही थी, वे चिल्ला रहे थे, “दाऊद के पुत्र को होशना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है; आकाश में होशना!”<sup>10</sup> जब वह यस्तुशलेम में प्रवेश किया, तो सारा नगर हिल गया, यह कहते हुए, “यह कौन

है?”<sup>11</sup> और भीड़ कह रही थी, “यह यीशु नासरत का भविष्यवक्ता है, गलील से।”

और यीशु मंदिर में प्रवेश किया और उन सबको बाहर निकाल दिया जो मंदिर में खरीद-बिक्री कर रहे थे, और मुद्रा बदलने वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ उत्तर दीं।<sup>13</sup> और उसने उनसे कहा, “यह लिखा है: ‘मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; पर तुमने इसे ढाकूओं की गुफा बना दिया है।’”<sup>14</sup> और जो अंथे और लंगड़े थे वे मंदिर में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा किया।<sup>15</sup> पर जब महायाजक और शास्त्री उन अद्भुत कार्यों को देख रहे थे जो उसने किए, और बच्चों को मंदिर में चिल्लाते हुए, “दाऊद के पुत्र को होशना,” तो वे क्रोधित हो गए,<sup>16</sup> और उन्होंने उससे कहा, “क्या तुम सुनते हो कि ये बच्चे क्या कह रहे हैं?” यीशु ने उनसे कहा, “हाँ। क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा, ‘बच्चों और दूध पीत बच्चों के मुँह से तुमने अपने लिए स्तुति तैयार की है?’”<sup>17</sup> और वह उन्हें छोड़कर नगर से बाहर बेधानी चला गया, और वहाँ रात बिताई।

अब सुबह के समय, जब वह नगर की ओर लौट रहा था, उसे भूख लगी।<sup>19</sup> और उसने रास्ते में एक अकेला अंजीर का पेड़ देखा, और उसके पास जाकर उसमें केवल पत्तियाँ ही पाईं; और उसने उससे कहा, “अब से तुझमें कभी कोई फल न हो।”<sup>20</sup> और तुरंत अंजीर का पेड़ सूख गया।<sup>20</sup> यह देखकर, चेलों ने आश्चर्य किया और कहा, “अंजीर का पेड़ कैसे तुरंत सूख गया?”<sup>21</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “मैं तुमसे सब कहता हूँ, यदि तुम्हें विश्वास है और संदेह नहीं करते, तो तुम केवल अंजीर के पेड़ के साथ ही नहीं करोगे, बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, ‘उठ और समुद्र में गिर जा,’ तो वह ही जाएगा।”<sup>22</sup> और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास के साथ माँगोगे, वह तुम्हें मिटाएगा।”

जब वह मंदिर क्षेत्र में प्रवेश किया, तो महायाजक और लोगों के प्राचीन उसके पास आए जब वह शिक्षा दे रहा था, और कहा, “तुम ये काम किस अधिकार से कर रहे हो, और तुम्हें यह अधिकार किसने दिया?”<sup>24</sup> पर यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा, और यदि तुम मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।”<sup>25</sup> यूहन्ना का बपतिस्मा किस स्रोत से था: स्वर्ग से या मनुष्यों से?<sup>26</sup> और वे अपने आप में विचार करने लगे, “यदि हम कहें, ‘स्वर्ग से,’ तो वह हमसे कहेगा, ‘फिर तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?’”<sup>26</sup> पर यदि हम कहें, ‘‘मनुष्यों से,’ तो हम लोगों से डरते हैं; क्योंकि वे सब यूहन्ना को

## मत्ती

भविष्यवक्ता मानते हैं।”<sup>27</sup> और यीशु को उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, “हम नहीं जानते।” उसने भी उनसे कहा, “न तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।”

<sup>28</sup> “पर तुम क्या सोचते हो? एक व्यक्ति के दो बेटे थे, और वह पहले के पास गया और कहा, ‘बेटा, आज दाख की बारी में काम कर।’<sup>29</sup> पर उसने उत्तर दिया, ‘मैं नहीं जाऊँगा;’ फिर बाद में उसने पछताया और गया।<sup>30</sup> वह व्यक्ति दूसरे बेटे के पास गया और वही बात कही; और उसने उत्तर दिया, ‘मैं जाऊँगा, सर;’ पर वह नहीं गया।<sup>31</sup> इन दोनों में से किसने अपने पिता की इच्छा पूरी की?” उन्होंने कहा, “पहले ने।” यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि कर वसूलने वाले और वेश्याएँ तुमसे पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे।<sup>32</sup> क्योंकि यूहन्ना तुम्हारे पास धर्म के मार्ग में आया और तुमने उस पर विश्वास नहीं किया; पर कर वसूलने वालों और वेश्याओं ने उस पर विश्वास किया; और तुम, यह देखकर भी, बाद में पछताए नहीं ताकि उस पर विश्वास करते।”

<sup>33</sup> “एक और दृष्टांत सुनो। एक भूमि के मालिक ने एक दाख की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाद लगाई, और उसमें एक अंगूर का रस निकालने का कुण्ड खोदा, और एक मीनार बनाई, और उसे अंगूर के बागवानों को किराए पर दिया और यात्रा पर चला गया।<sup>34</sup> और जब फसल का समय निकट आया, तो उसने अपने दासों को बागवानों के पास भेजा ताकि वह अपना फल प्राप्त कर सके।<sup>35</sup> और बागवानों ने उसके दासों को पकड़ लिया और एक को पीटा, दूसरे को मार डाला, और तीसरे को पत्तरवाह किया।<sup>36</sup> फिर उसने पहले से अधिक दास भेजे; और उन्होंने उनके साथ भी वही किया।<sup>37</sup> पर अंत में उसने अपने बेटे को उनके पास भेजा, यह कहते हुए, वे मेरे बेटे का आदर करेंगे।<sup>38</sup> पर जब बागवानों ने बेटे को देखा, तो उन्होंने आपस में कहा, “यह वारिस है; आओ, उसे मार डालें और उसकी विरासत पर कब्जा कर लें।”<sup>39</sup> और उन्होंने उसे पकड़ लिया और दाख की बारी से बाहर फेंक दिया, और उसे मार डाला।<sup>40</sup> इसलिए, जब दाख की बारी का मालिक आएगा, तो वह उन बागवानों के साथ क्या करेगा?<sup>41</sup> उन्होंने उससे कहा, “वह उन दुष्टों को एक दृष्ट अंत देगा, और दाख की बारी को अन्य बागवानों को किराए पर देगा, जो उसे उचित समय पर फल देंगे।”<sup>42</sup> यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने शास्त्रों में कभी नहीं पढ़ा, ‘जिस पत्तर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य पत्तर बन गया; यह प्रभु की ओर से हुआ, और यह हमारी औँखों में अद्भुत है?’<sup>43</sup> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ।”

परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो इसका फल उत्पन्न करेंगे।<sup>44</sup> और जो इस पत्तर पर गिरेगा वह दुकड़े-दुकड़े हो जाएगा; और जिस पर यह गिरेगा, उसे चूर कर देगा।”<sup>45</sup> जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टांत सुने, तो उन्होंने समझा कि वह उनके बारे में कह रहा था।<sup>46</sup> और यद्यपि वे उसे पकड़ने की कोशिश कर रहे थे, वे भीड़ से डरते थे, क्योंकि वे उसे एक भविष्यवक्ता मानते थे।

**22** यीशु ने फिर उनसे दृष्टांतों में कहा, <sup>2</sup> “स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने पुत्र के लिए विवाह भोज किया।<sup>3</sup> और उसने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को बुलाएं जो विवाह भोज के लिए नियंत्रित थे, पर वे आने के लिए तैयार नहीं थे।<sup>4</sup> फिर उसने अन्य दासों को भेजा और कहा, ‘उन नियंत्रित लोगों से कहो, “देखो, मैंने अपना भोजन तैयार किया है; मेरे बैल और मौटे पशु मारे गए हैं, और सब कुछ तैयार है; विवाह भोज में आओ!”’<sup>5</sup> पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया और अपने-अपने मार्ग पर चले गए, कोई अपने खेत की ओर, कोई अपने व्यापार की ओर,<sup>6</sup> और बाकी ने उसके दासों को पकड़ लिया और उनका अपमान किया, और फिर उन्हें मार डाला।<sup>7</sup> अब राजा क्रोधित हुआ, और उसने अपनी सेनाओं को भेजा और उन हत्यारों को नष्ट कर दिया और उनके नगर को जला दिया।<sup>8</sup> फिर उसने अपने दासों से कहा, “विवाह भोज तैयार है, पर जो नियंत्रित थे वे योग्य नहीं थे।<sup>9</sup> इसलिए मुख्य मार्गों पर जाओ, और जिसे भी तुम वहां पाओ उसे विवाह भोज के लिए नियंत्रित करो।”<sup>10</sup> वे दास बाहर सड़कों पर गए और जिन्हें भी उन्होंने पाया, अच्छे और बुरे, सबको इकट्ठा किया; और विवाह का हॉल भोज के मेहमानों से भर गया।

<sup>11</sup> पर जब राजा अंदर आया और भोज के मेहमानों को देखा, तो उसने वहां एक व्यक्ति को देखा जो विवाह के वस्त्र में नहीं था,<sup>12</sup> और उसने उससे कहा, “मित्र, तुम यहां बिना विवाह के वस्त्र के कैसे आ गए?” और वह व्यक्ति मौन हो गया।<sup>13</sup> तब राजा ने सेवकों से कहा, “उसके हाथ-पैर बांधकर उसे बाहर के अंधकार में फेंक दो; वहां रोना और दांत पीसना होगा।”<sup>14</sup> क्योंकि बहुत से बुलाए गए हैं, पर थोड़े चुने गए हैं।”

<sup>15</sup> तब फरीसी गए और उन्होंने यह सोचकर एक साथ योजना बनाई कि वे उसे उसके कहे दुए में फंसाएं।<sup>16</sup> और उन्होंने अपने चेलों को हेरेदियों के साथ उसके पास भेजा, और कहा, “गुरु, हम जानते हैं कि आप

## मत्ती

सत्यवादी हैं और सत्य में परमेश्वर का मार्ग सिखाते हैं, और किसी की परवाह नहीं करते; क्योंकि आप किसी के पक्षपाती नहीं हैं।<sup>17</sup> तो हमें बताएं, आप क्या सोचते हैं? क्या कैसर को कर देना उचित है, या नहीं?<sup>18</sup> पर यीशु ने उनकी कपटता को जानकर कहा, “हे कपटियों, तुम मझे क्यों परखते हो? <sup>19</sup> मझे वह सिक्का दिखाओ जो कर के लिए उपयोग होता है।” और उन्होंने उसे एक दीनार दिया।<sup>20</sup> और उसने उनसे कहा, “यह छवि और लेख किसका है?”<sup>21</sup> उन्होंने उससे कहा, “कैसर का।” तब उसने उनसे कहा, “तो कैसर की वस्तुएं कैसर को दो; और परमेश्वर की वस्तुएं परमेश्वर को।”<sup>22</sup> और यह सुनकर, वे आश्चर्यचकित हुए; और उसे छोड़कर चले गए।

<sup>23</sup> उसी दिन कुछ सदूकी (जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है) उसके पास आए और उससे प्रश्न किया,<sup>24</sup> कहते हुए, “गुरु, मूसा ने कहा, ‘यदि कोई व्यक्ति बिना संतान के मर जाए, तो उसका भाई उसकी पती से विवाह करे, और अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे।’<sup>25</sup> अब हमारे बीच सात भाई थे; और पहले ने विवाह किया और मरा, और बिना संतान के अपनी पती को अपने भाई के लिए छोड़ दिया।<sup>26</sup> दूसरे और तीसरे के साथ भी ऐसा ही हुआ, सातवें तक।<sup>27</sup> अंत में, वह स्त्री भी मर गई।<sup>28</sup> तो पुनरुत्थान में, वह सातों में से किसकी पती होगी? क्योंकि वे सब उसके साथ विवाह कर चुके थे।”<sup>29</sup> पर यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “तुम भूमित हो, क्योंकि तुम न तो सातों को समझते हो, न परमेश्वर की शक्ति को।”<sup>30</sup> क्योंकि पुनरुत्थान में वे न तो विवाह करते हैं, न विवाह में दिए जाते हैं, बल्कि स्वर्ग के स्वर्गदूतों के समान होते हैं।<sup>31</sup> पर मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में, क्या तुमने नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुमसे कहा था:<sup>32</sup> मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूं, इसहाक का परमेश्वर हूं, और याकूब का परमेश्वर हूं? वह मृतकों का परमेश्वर नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।”<sup>33</sup> जब भीड़ ने यह सुना, तो वे उसकी शिक्षा से चकित हो गए।

<sup>34</sup> अब जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने सदूकियों को चुप कर दिया है, तो वे एकत्र हुए।<sup>35</sup> और उनमें से एक, जो एक वकील था, ने उसे परखने के लिए एक प्रश्न पूछा:

<sup>36</sup> “गुरु, व्यक्ति में कौन सी बड़ी आज्ञा है?”<sup>37</sup> और उसने उससे कहा, “तू अपने प्रभु परमेश्वर से अपने सारे हृदय से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर।”<sup>38</sup> यह बड़ी और प्रमुख आज्ञा है।<sup>39</sup> दूसरी इसके समान है, तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।”<sup>40</sup> इन दो आज्ञाओं पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।”

<sup>41</sup> अब जब फरीसी एकत्र थे, यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछा: <sup>42</sup> “मरीची के विषय में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?” उन्होंने उनसे कहा, “दाऊद का पुत्र।”

<sup>43</sup> उसने उनसे कहा, “फिर दाऊद आत्मा में उसे प्रभु क्यों कहता है, कहते हुए,

“प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, ‘मेरे दाहिने हाथ पर बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों के नीचे न कर दूँ?’

<sup>44</sup> इसलिए, यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे है?”<sup>45</sup> और कोई भी उसे एक प्रश्न का उत्तर देने में सक्षम नहीं था, और न ही उस दिन से किसी ने उसे और कोई प्रश्न पूछने का साहस किया।

### 23 तब यीशु ने भीड़ और अपने चेलों से कहा,

“शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठ गए हैं।<sup>3</sup> इसलिए, जो कुछ वे तुम्हें बताते हैं, वह सब करो और मानो, परंतु उनके कर्मों के अनुसार मत करो; क्योंकि वे करते हैं और करते नहीं हैं।<sup>4</sup> और वे भारी बोझ बांधकर लोगों के कंधों पर रखते हैं, परंतु वे स्वयं अपनी उंगली से भी उन्हें हिलाने को तैयार नहीं हैं।<sup>5</sup> वे अपने सारे काम लोगों द्वारा देखे जाने के लिए करते हैं; क्योंकि वे अपने तावीजों को चौड़ा करते हैं और अपने वस्त्रों के किनारों को लंबा करते हैं।<sup>6</sup> और भीजों में सम्मान के स्थान और आराधनालियों में प्रमुख स्थानों को पसंद करते हैं,<sup>7</sup> और बाजारों में व्यक्तिगत अभिवादन और लोगों द्वारा रब्बी कहलाना पसंद करते हैं।<sup>8</sup> परंतु तुम्हारे लिए, रब्बी मत कहलाओ; क्योंकि केवल एक ही तुम्हारा शिक्षक है, और तुम सब भाई-बहन हो।<sup>9</sup> और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता मत करो; क्योंकि केवल एक ही तुम्हारा पिता है, जो सर्व में है।<sup>10</sup> और नेता मत कहलाओ; क्योंकि केवल एक ही तुम्हारा नेता है, अर्थात् मसीह।<sup>11</sup> परंतु तुम में जो सबसे बड़ा है, वह तुम्हारा सेवक होगा।

<sup>12</sup> जो कोई ईस्वीं स्वयं को नीचा करेगा, वह नीचा किया जाएगा, और जो कोई स्वयं को नीचा करेगा, वह ऊँचा किया जाएगा।

<sup>13</sup> परंतु तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों, क्योंकि तुम लोगों के सामने स्वर्ग के राज्य को बंद कर देते हो; क्योंकि तुम स्वयं उसमें प्रवेश नहीं करते, और न ही उन लोगों को प्रवेश करने देते हो जो प्रवेश कर रहे हैं।<sup>14</sup> तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों, क्योंकि तुम विधवाओं के घरों को निगल जाते हो, और दिखावे के लिए लंबी प्रार्थनाएँ करते हो; इसलिए तुम्हें अधिक दंड मिलेगा।]<sup>15</sup> तुम पर हाय,

## मत्ती

शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों, क्योंकि तुम एक धर्मांतरित बनाने के लिए समुद्र और भूमि का चक्कर लगाते हो, और जब वह बन जाता है, तो तुम उसे अपने से दो गुना अधिक नरक का पुत्र बना देते हो।<sup>16</sup> तुम पर हाय, अंधे मार्गदर्शकों, जो कहते हो, जो कोई मंदिर की शपथ खाता है, वह कुछ नहीं है; परंतु जो कोई मंदिर के सोने की शपथ खाता है, वह बाध्य है।<sup>17</sup> मूर्ख और अंधे! कौन सा अधिक महत्वपूर्ण है, सोना या मंदिर जो सोने को पवित्र करता है? <sup>18</sup> और तुम कहते हो, जो कोई वेदी की शपथ खाता है, वह कुछ नहीं है; परंतु जो कोई उस पर चढ़ावी की शपथ खाता है, वह बाध्य है।<sup>19</sup> अंधे लोगों, कौन सा अधिक महत्वपूर्ण है, चढ़ावी या वेदी जो चढ़ावी को पवित्र करती है? <sup>20</sup> इसलिए, जो कोई वेदी की शपथ खाता है, वह वेदी और उस पर सब कुछ की शपथ खाता है।<sup>21</sup> और जो कोई मंदिर की शपथ खाता है, वह मंदिर और उसमें रहने वाले की शपथ खाता है।<sup>22</sup> और जो कोई स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन और उस पर बैठें वाले की शपथ खाता है।

<sup>23</sup> तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों, क्योंकि तुम पुरीना, सौफ़, और जीरा का दशमांश देते हो, और व्यवसा के भारी प्रावधानों को छोड़ देते हो: न्याय, दया, और विश्वास; परंतु इहैं किए बिना अन्य को नहीं छोड़ना चाहिए था।<sup>24</sup> अंधे मार्गदर्शकों, जो मच्छर को छानते हों और ऊँट को निगल जाते हों! <sup>25</sup> तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों: क्योंकि तुम आते और थाती के बाहर को साफ करते हो, परंतु अंदर वे डकैती और आम-संवेदनशीलता से भरे हैं।<sup>26</sup> अंधे फरीसी, पहले आते और थाती के अंदर को साफ करो, ताकि बाहर भी साफ हो सके।<sup>27</sup> तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों: क्योंकि तुम सफेद किए हुए कब्रों के समान हो, जो बाहर से सुंदर दिखाई देते हैं, परंतु अंदर मरे हुए लोगों की हड्डियों और सारी अशुद्धता से भरे हैं।<sup>28</sup> इसी प्रकार तुम भी बाहर से लोगों को धर्म दिखाई देते हो, परंतु अंदर कपट और अधर्म से भरे हो।<sup>29</sup> तुम पर हाय, शास्त्रियों और फरीसियों, कपटी लोगों: क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं की कर्त्तृ बनाते हों और धर्मियों के स्मारकों को सजाते हों,<sup>30</sup> और कहते हो, ‘यदि हम अपने पूर्जों के दिनों में होते, तो हम

भविष्यद्वक्ताओं के रक्त बहाने में उनके साथ भागीदार नहीं होते।<sup>31</sup> इस प्रकार तुम अपने विरुद्ध गवाही देते हो, कि तुम उन लोगों के पुत्र हो जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की।<sup>32</sup> तो अपने पूर्जों के अपराध का माप पूरा करो।<sup>33</sup> सांपों, विषेश सर्पों की संतानों, तुम नरक की सजा से कैसे बचोगे?<sup>34</sup> इसलिए, देखो, मैं तुम्हरे पास भविष्यद्वक्ता, बुद्धिमान लोग, और शास्त्री भेज रहा

हूँ; उनमें से कुछ को तुम मार डालोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे, और उनमें से कुछ को तुम अपनी आराधनालयों में कोड़े मारोगे, और नगर से नगर तक सत्ताओंगे,<sup>35</sup> ताकि तुम पर पृथ्वी पर बहाए गए सभी धर्मी रक्त का दोष आ जाए, धर्मी हाबिल के रक्त से लेकर जकर्याह, बेरेख्याह के पुत्र के रक्त तक, जिसे तुमने मंदिर और वेदी के बीच में मारा।<sup>36</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, ये सारी बातें इस पीढ़ी पर आएंगी।

<sup>37</sup> यरूशलेम, यरूशलेम, जो भविष्यद्वक्ताओं को मारती है और जो उसके पास भेजे गए हैं उन्हें पर्यातों से मारती है! मैं कितनी बार तुम्हारे बच्चों को इकट्ठा करना चाहता था, जैसे मुर्झी अपने बूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, और तुम नहीं चाहते थे।<sup>38</sup> देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जा रहा है।<sup>39</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, अब से तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब तक तुम यह न कहो, ‘धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।’

**24** यीशु मंदिर क्षेत्र से बाहर जा रहे थे जब उनके शिष्य उनके पास आए और उन्हें मंदिर की इमारतें दिखाने लगे।<sup>2</sup> परन्तु उन्होंने उत्तर दिया और उनसे कहा, ‘क्या तुम इन सब चीजों को नहीं देखते? मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहां एक पत्तर भी दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा, जो गिराया नहीं जाएगा।’

<sup>3</sup> और जब वह जैतून के पहाड़ पर बैठा था, तो शिष्य उसके पास अलग से आए और कहने लगे, “हमें बता, ये बातें कब होंगी, और तेरे आने का और युग के अंत का क्या चिन्ह होगा?”<sup>4</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “देखो, कोई तुम्हें भ्रमित न करे।<sup>5</sup> क्योंकि बहुत से लोग मेरे नाम में आएंगे, कहेंगे, मैं मसीह हूँ,” और वे बहुतों को भ्रमित करेंगे।<sup>6</sup> और तुम युद्धों और युद्धों की अफवाहें सुनोगे। देखो, तुम घबराओं मत, क्योंकि ये बातें अवश्य होंगी, परन्तु यह अंत नहीं है।<sup>7</sup> क्योंकि जाति जाति के विरुद्ध उठेगी, और राज्य राज्य के विरुद्ध, और विभिन्न स्थानों में अकाल और भूकंप होंगे।<sup>8</sup> परन्तु ये सब बातें प्रसव पीड़ा की शुरुआत मात्र हैं।

<sup>9</sup> तब वे तुम्हें क्लेश में डालेंगे और तुम्हें मार डालेंगे, और तुम मेरे नाम के कारण सभी जातियों से घृणा किए जाओगे।<sup>10</sup> और उस समय बहुत से लोग गिर जाएंगे, और वे एक दूसरे को धोखा देंगे और एक दूसरे से घृणा करेंगे।<sup>11</sup> और बहुत से जूँठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को भ्रमित करेंगे।<sup>12</sup> और क्योंकि अधर्म बढ़ेगा, अधिकांश लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जाएगा।<sup>13</sup>

## मत्ती

परन्तु जो अंत तक धैर्य धरेगा, वही उद्धार पाएगा।<sup>14</sup> राज्य का यह सुसमाचार सारे संसार में प्रचार किया जाएगा सभी जातियों के लिए एक गवाही के रूप में, और तब अंत आएगा।

<sup>15</sup> इसलिए, जब तुम उस उजाड़ने वाली धृणास्पद वस्तु को देखो, जिसके बारे में दानियिल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, पवित्र स्थान में खड़ा हुआ—पाठक समझे—<sup>16</sup> तब जो यहूदिया में हो, वे पहाड़ों की ओर भागें।<sup>17</sup> जो छत पर हो, वह अपने घर से समान लेने नीचे न उतरे।<sup>18</sup> और जो खेत में हो, वह अपनी चादर लेने के लिए पीछे न लौटे।<sup>19</sup> परन्तु उन स्त्रियों पर हाय जो उन दिनों में गर्भवती होंगी और जो बच्चों को दृथ पिलाती होंगी!<sup>20</sup> इसके अलावा, प्रार्थना करो कि जब तुम भागो, तो वह सर्वी में न हो, या सब्ल के दिन।<sup>21</sup> क्योंकि तब एक बड़ा क्लेश होगा, जैसा कि संसार के अराम्भ से अब तक नहीं हुआ है, और न कभी होगा।<sup>22</sup> और यदि उन दिनों को छोटा न किया जाता, तो कोई जीवन बचाया न जाता; परन्तु चुने हुए लोगों के कारण उन दिनों को छोटा किया जाएगा।

<sup>23</sup> तब यदि कोई तुमसे कहे, देखो, मसीह यहां है, या वह वहां है; तो विश्वास मत करो।<sup>24</sup> क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बड़े चिन्ह और चमकाकर दिखाएंगे, ताकि यदि संभव हो तो चुने हुए लोगों को भी भ्रमित कर सकें।<sup>25</sup> देखो, मैंने तुम्हें पहले ही बत दिया है।<sup>26</sup> इसलिए यदि वे तुमसे कहें, देखो, वह जंगल में है; तो बाहर मत जाओ, या, देखो, वह अंदर के कमरों में है; तो विश्वास मत करो।<sup>27</sup> क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से आती है और पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आगमन होगा।<sup>28</sup> जहां कहीं शव होगा, वहां गिर्द इकट्ठे होंगे।

<sup>29</sup> परन्तु उन दिनों के क्लेश के तुरंत बाद

सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चंद्रमा अपनी रोशनी नहीं देगा, और तारे आकाश से गिरेंगे, और स्वर्ग की शक्तियां हिलाई जाएंगी।

<sup>30</sup> और तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में प्रकट होगा, और तब पृथ्वी की सभी जातियां विलाप करेंगी, और वे मनुष्य के पुत्र को आकाश के बादलों पर सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ आते हुए देखेंगी।<sup>31</sup> और वह अपने स्वर्गदूतों को एक महान तुरंती के साथ भेजेगा, और वे उसके चुने हुए लोगों को चारों दिशाओं से इकट्ठा करेंगे, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक।

<sup>32</sup> अब अंजीर के पेड़ से दृष्टांत सीखो: जैसे ही उसकी शाखा कोमल हो जाती है और उसकी पत्तियां निकलती हैं, तुम जानते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है।<sup>33</sup> तो तुम भी, जब तुम इन सब चीजों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है, दरवाजे पर है।<sup>34</sup> मैं तुमसे सच कहता हूं, यह पीढ़ी तब तक नहीं गुजराई जब तक ये सब बातें न हो लें।<sup>35</sup> आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरे वचन कभी नहीं टलेंगे।

<sup>36</sup> परन्तु उस दिन और घड़ी के बारे में कोई नहीं जानता, न सर्वा के स्वर्गदूत, न पुत्र, केवल पिता ही।<sup>37</sup> क्योंकि मनुष्य के पुत्र का आगमन नूह के दिनों के समान होगा।<sup>38</sup> क्योंकि जैसे जलप्रलय से पहले के दिनों में लोग खाते-पीते थे, विवाह करते और विवाह में देते थे, जब तक कि नूह जहाज में प्रवेश न कर गया,<sup>39</sup> और वे नहीं समझे, जब तक जलप्रलय आकर उन्हें सबको न ले गया; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आगमन होगा।<sup>40</sup> उस समय दो व्यक्ति खेत में होंगे; एक लिया जाएगा और एक छोड़ दिया जाएगा।<sup>41</sup> दो स्त्रियां चक्रवी पर अनाज पीस रही होंगी; एक ली जाएगी और एक छोड़ दी जाएगी।

<sup>42</sup> इसलिए, सतर्क रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।<sup>43</sup> परन्तु यह जान लो कि यदि घर के मालिक को पता होता कि रात के किस पहर में चोर आएगा, तो वह सतर्क रहता और अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता।<sup>44</sup> इसी कारण तुम्हें भी तैयार रहना चाहिए, क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस घड़ी में आएगा जब तुम नहीं सोचते कि वह आएगा।

<sup>45</sup> फिर वह विश्वासयोग्य और समझदार दास कौन है जिसे उसके स्वामी ने अपने घर के लोगों पर नियुक्त किया है, कि वह उन्हें उचित समय पर भोजन दे?<sup>46</sup> धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी आते समय ऐसा करते हुए पाए।<sup>47</sup> मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर नियुक्त करेगा।<sup>48</sup> परन्तु यदि वह दृष्ट दास अपने मन में कहे, ‘मेरा स्वामी देर तक नहीं आएगा,’<sup>49</sup> और वह अपने सहदासों को मारने लगे, और पियकड़ों के साथ खाए और पिए,<sup>50</sup> तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उसे उमीद नहीं करता, और ऐसी घड़ी में जिसे वह नहीं जानता,<sup>51</sup> और वह उसे दो टुकड़े कर देगा, और उसे कपटियों के साथ स्थान देगा; वहां रोना और दांत पीसना होगा।

**25** तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा, जो अपनी दीपकें लेकर दूल्हे से मिलने निकलीं।<sup>2</sup>

## मत्ती

उनमें से पाँच मूर्ख थीं, और पाँच बुद्धिमान।<sup>3</sup> क्योंकि जब मूर्खों ने अपनी दीपकें लीं, तो उन्होंने अपने साथ अतिरिक्त तेल नहीं लिया;<sup>4</sup> परन्तु बुद्धिमानों ने अपनी दीपकों के साथ तेल की कुप्रियाँ भी लीं।<sup>5</sup> अब जब दूल्हा देर कर रहा था, तो वे सब ऊँधने लगीं और सो गईं।<sup>6</sup> परन्तु आधी रात को एक चिल्लाहट हुईः देखो, दूल्हा आ रहा है। उससे मिलने बाहर आओ।<sup>7</sup> तब वे सब कुंवारियाँ उठीं और अपनी दीपकें ठीक कीं।<sup>8</sup> परन्तु मूर्ख कुंवारियों ने बुद्धिमानों से कहा, हमें अपने तेल में से कुछ दो, क्योंकि हमारी दीपकें बुझ रही हैं।<sup>9</sup> तब बुद्धिमानों ने उत्तर दिया, नहीं, ऐसा न हो कि हमारे और तुम्हारे लिए पर्याप्त न हो; बल्कि व्यापारियों के पास जाओ और अपने लिए खरीद लो।<sup>10</sup> परन्तु जब वे तेल खरीदेने जा रही थीं, तब दूल्हा आ गया, और जो तैयार थीं वे उसके साथ विवाह भोज में चली गईं; और द्वार बंद हो गया।<sup>11</sup> बाद में, अन्य कुंवारियाँ भी आईं, कहती हुईः 'प्रभु, प्रभु, हमारे लिए द्वार खोलो।'<sup>12</sup> परन्तु उसने उत्तर दिया, मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।<sup>13</sup> इसलिए सचेत रहो, क्योंकि तुम न तो दिन जानते हो और न ही घड़ी।

<sup>14</sup> क्योंकि यह उस मनुष्य के समान है जो यात्रा पर जाने वाला था, जिसने अपने दासों को बुलाया और अपनी संपत्ति उन्हें सौंपी।<sup>15</sup> उसने एक को पाँच तोलन्त, दूसरे को दो, और तीसरे को एक दिया, प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार; और वह अपनी यात्रा पर चला गया।<sup>16</sup> जिसने पाँच तोलन्त प्राप्त किए थे, उसने तुरंत जाकर उनसे व्यापार किया, और पाँच और तोलन्त कमाए।<sup>17</sup> उसी प्रकार, जिसने दो तोलन्त प्राप्त किए थे, उसने दो और कमाए।<sup>18</sup> परन्तु जिसने एक तोलन्त प्राप्त किया था, वह चला गया, और जमीन में एक गड्ढा खोदकर अपने स्वामी का धन छिपा दिया।<sup>19</sup> अब बहुत समय बाट, उन दासों का स्वामी आया और उनके साथ विसाव किया।<sup>20</sup> जिसने पाँच तोलन्त प्राप्त किए थे, वह आया और पाँच और तोलन्त लाया, कहता हुआ, 'स्वामी, आपने मुझे पाँच तोलन्त सौंपे थे। देखिए, मैंने पाँच और तोलन्त कमाए हैं।'<sup>21</sup> उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास। तू थोड़े में विश्वासयोग्य था, मैं तुझे बहुतों पर अधिकारी बनाऊँगा; अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।'<sup>22</sup> जिसने दो तोलन्त प्राप्त किए थे, वह भी आया और कहा, 'स्वामी, आपने मुझे दो तोलन्त सौंपे थे। देखिए, मैंने दो और तोलन्त कमाए हैं।'<sup>23</sup> उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास। तू थोड़े में विश्वासयोग्य था, मैं तुझे बहुतों पर अधिकारी बनाऊँगा; अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।'<sup>24</sup> अब जिसने एक तोलन्त प्राप्त किया

था, वह भी आया और कहा, 'स्वामी, मैं जानता था कि आप कठोर व्यक्ति हैं, जहाँ आपने नहीं बोया वहाँ काटते हैं, और जहाँ आपने बीज नहीं बोया वहाँ से इकट्ठा करते हैं।<sup>25</sup> और मैं डर गया, इसलिए मैं चला गया और आपके पास जो है वह अभी भी आपके पास है।<sup>26</sup> परन्तु उसके स्वामी ने उत्तर दिया और उससे कहा, 'तू दुष्ट और आलसी दास, तू जानता था कि मैं वहाँ काटता हूँ जहाँ मैंने नहीं बोया और वहाँ से इकट्ठा करता हूँ जहाँ मैंने बीज नहीं बोया।'<sup>27</sup> तो तुझे मेरा धन बैक में रखना चाहिए था, और मेरे आने पर मुझे मेरा धन व्याज सहित मिल जाता।<sup>28</sup> इसलिए: उससे तोलन्त ले लो, और उसे दे दो जिसके पास दस तोलन्त हैं।<sup>29</sup> क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुतायत होगी; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।<sup>30</sup> और उस निकम्मे दास को बाहर के अंधकार में फेंक दो; वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

<sup>31</sup> परन्तु जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सभी स्वाधृत उसके साथ होंगे, तब वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा।<sup>32</sup> और सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जाएँगी; और वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है।<sup>33</sup> और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा, परन्तु बकरियों को बाईं ओर।<sup>34</sup> तब राजा उन लोगों से कहेगा जो उसकी दाहिनी ओर हैं, 'आओ, मेरे पिता के अशीर्वद प्राप्त लोग, उस राज्य को प्राप्त करो जो तुम्हारे लिए जगत की स्थापना से तैयार किया गया है।'<sup>35</sup> क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पीने को दिया; मैं परदेशी था, और तुमने मुझे अपनाया; <sup>36</sup> नग था, और तुमने मुझे कपड़े पहनाएँ; मैं बीमार था, और तुमने मेरी सुधि ली; मैं जेल में था, और तुम मुझसे मिलने आए।<sup>37</sup> तब धर्मी उससे उत्तर देंगे, 'प्रभु, कब हमने आपको भूखा देखा, और आपको खिलाया, या प्यासा देखा, और आपको पीने को दिया?'<sup>38</sup> और कब हमने आपको परदेशी देखा, और आपको अपनाया, या नग देखा, और आपको कपड़े पहनाएँ?<sup>39</sup> और कब हमने आपको बीमार या जेल में देखा, और आपसे मिलने आए?<sup>40</sup> और राजा उन्हें उत्तर देगा और कहेगा, मैं तुमसे सच कहता हूँ, जितना तुमने मेरे इन छोटे बाहियों या बहनों में से एक के लिए किया, तुमने मेरे लिए किया।<sup>41</sup> तब वह उन लोगों से भी कहेगा जो उसकी बाईं ओर हैं, 'मेरे से दूर हो जाओ, तुम शापित लोग, उस अनन्त अग्नि में जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है,'<sup>42</sup>

## मत्ती

क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पीने को नहीं दिया;<sup>43</sup> मैं परदेशी था, और तुमने मुझे अपनाया नहीं; नग्र था, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए; बीमार और जेल में था, और तुमने मेरी सुधि नहीं ली।<sup>44</sup> तब वे स्वयं भी उत्तर देंगे, प्रभु, कब हमने आपको भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नग्र, या बीमार, या जेल में देखा, और आपकी देखभाल नहीं की? <sup>45</sup> तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुमसे सच कहता हूँ, जितना तुमने इन छोटे लोगों में से एक के लिए नहीं किया, तुमने मेरे लिए भी नहीं किया।<sup>46</sup> ये अनन्त दंड में चले जाएँगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में।

**26** जब यीशु ने ये सभी बातें समाप्त कीं, तो उन्होंने अपने चेलों से कहा,<sup>2</sup> "तुम जानते हो कि दो दिन बाद फसह का पर्व आ रहा है, और मनुष्य का पुत्र कूप स पर ढाने के लिए सौंपा जाएगा।"

<sup>3</sup> तब महायाजक और लोगों के बुजुर्ग महायाजक कैफा के आँगन में इकट्ठे हुए; <sup>4</sup> और उन्होंने यीशु को गुप्त रूप से पकड़ने और मारने की साजिश रची। <sup>5</sup> पर वे कह रहे थे, "पर्व के दौरान नहीं, वरना लोगों में दंगा हो सकता है।"

<sup>6</sup> अब जब यीशु बेधानी में, शमैन कोढ़ी के घर में थे, <sup>7</sup> एक स्त्री उनके पास एक बहुत महंगे इत्र की अलबास्टर की शीशी लेकर आई, और उसने उसे उनके सिर पर डाला। जब वे मेज पर बैठे थे। <sup>8</sup> पर चेले यह देखकर क्रांथित हुए, और कहने लगे, "यह अपव्यय क्यों?" क्योंकि यह इत्र ऊँचे दाम पर बेचा जा सकता था और पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।<sup>9</sup> <sup>10</sup> पर यीशु, यह जानकर, उनसे कहा, "तुम इस स्त्री को क्यों परेशान कर रहे हो? उसने मेरे लिए एक अच्छा काम किया है।"<sup>11</sup> क्योंकि गरीब हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे; पर मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।<sup>12</sup> क्योंकि जब उसने यह इत्र मेरे शरीर पर डाला, तो उसने मेरे दफन के लिए तैयारी की।<sup>13</sup> सच में तुमसे कहता हूँ, जहाँ कहीं भी इस सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, जो इस स्त्री ने किया है वह भी उसकी सृति में बताया जाएगा।"

<sup>14</sup> तब बारह में से एक, जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, महायाजकों के पास गया<sup>15</sup> और कहा, "तुम मुझे उसे धोखा देने के लिए क्या देने को तैयार हो?" और उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के दिए।<sup>16</sup> और तब से वह यीशु को धोखा देने का अच्छा अवसर खोजने लगा।

<sup>17</sup> अब अखमीरी रोटी के पहले दिन चेले यीशु के पास आए और कहा, "आप कहाँ चाहते हैं कि हम आपके लिए फसह का भोजन तैयार करें?"<sup>18</sup> और उन्होंने कहा, "शहर में एक आदमी के पास जाओ, और उससे कहो, गुरु कहते हैं, 'मेरा समय निकट है; मैं अपने चेलों के साथ तुम्हारे घर में फसह मनाऊँगा।'"<sup>19</sup> चेलों ने जैसा यीशु ने उन्हें निर्देश दिया था वैसा ही किया; और उन्होंने फसह तैयार किया।

<sup>20</sup> अब जब शाप हुई, यीशु बारह के साथ मेज पर बैठे थे।<sup>21</sup> और जब वे खा रहे थे, उन्होंने कहा, "सच में मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे धोखा देगा।"<sup>22</sup> गहरे दुखी होकर, वे एक के बाद एक उनसे कहने लगे, "निश्चित रूप से यह मैं नहीं हूँ, प्रभु!"<sup>23</sup> और उन्होंने उत्तर दिया, "जिसने मेरे साथ कटोरे में हाथ डाला है, वही मुझे धोखा देगा।"<sup>24</sup> मनुष्य का पुत्र जा रहा है जैसा कि उसके बारे में लिखा है; पर उस आदमी पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र धोखा दिया जाता है! उस आदमी के लिए अच्छा होता कि वह पैदा न होता।"<sup>25</sup> और यहूदा, जो उसे धोखा दे रहा था, ने कहा, "निश्चित रूप से यह मैं नहीं हूँ, रब्बी!" यीशु ने उससे कहा, "तुमने स्वयं कहा है।"

<sup>26</sup> अब जब वे खा रहे थे, यीशु ने कुछ रोटी ली, और उसे आशीर्वाद देने के बाद, उसे तोड़ा और चेलों को दिया, और कहा, "लो, खाओ; यह मेरा शरीर है।"<sup>27</sup> और जब उन्होंने एक प्याला लिया और धन्यवाद दिया, उन्होंने उन्हें दिया, कहकर, "इससे पियो, तुम सब;"<sup>28</sup> क्योंकि यह मेरे वाचा का रक्त है, जो पापों की क्षमा के लिए बहुतों के लिए बहाया जा रहा है।<sup>29</sup> पर मैं तुमसे कहता हूँ, मैं अब से इस दाखरस का फल नहीं प्रिँगा जब तक कि मैं इसे तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पी रूँ।"<sup>30</sup> और एक भजन गाने के बाद, वे जैतूस के पहाड़ पर चले गए।

<sup>31</sup> तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब इस रात मेरे कारण गिर जाओगे, क्योंकि लिखा है:

'मैं चरवाहे को मारँगा, और झुंड की भेड़ तितर-बितर हो जाएँगी।'

<sup>32</sup> पर जब मैं पुनर्जीवित हो जाऊँगा, तो मैं तुम्हारे आगे गलील जाऊँगा।"<sup>33</sup> पर पतरस ने उनसे कहा, "यदि वे सब आपके कारण गिर भी जाएँ, तो भी मैं कभी नहीं गिरँगा!"<sup>34</sup> यीशु ने उससे कहा, "सच में मैं तुमसे कहता हूँ कि इस रात, मुर्गे के बांग देने से पहले, तुम मुझे तीन

## मत्ती

बार इंकार करोगे।"<sup>35</sup> पतरस ने उनसे कहा, "यदि मुझे आपके साथ मरना भी पड़े, तो भी मैं आपको इंकार नहीं करूँगा!" सभी चेलों ने भी यही बात कही।

<sup>36</sup> तब यीश उनके साथ गेटसमनी नामक स्थान पर आए, और अपने चेलों से कहा, "यहाँ बैठो जबकि मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।"<sup>37</sup> और उन्होंने पतरस और जब्दी के दो पुत्रों को अपने साथ लिया, और दुखी और व्याकुल होने लगे।<sup>38</sup> तब उन्होंने उनसे कहा, "मेरा मन अत्यधिक दुखी है, मृत्यु तक, यहाँ ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।"<sup>39</sup> और वे उनसे थोड़ा आगे बढ़े, और मुँह के बल गिरकर प्रार्थना की, कहकर, "मेरे पिता, यदि संभव हो, तो यह प्याला मुझसे हट जाए; फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जैसा आप चाहते हैं वैसा हो।"<sup>40</sup> और वे चेलों के पास आए और उन्हें सोते हुए पाया, और पतरस से कहा, "तो, तुम लोग मेरे साथ एक घंटा भी जाग नहीं सकें।"<sup>41</sup> जागते रहो और प्रार्थना करो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो; आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ार है।"<sup>42</sup> वे फिर दूसरी बार गए और प्रार्थना की, कहकर, "मेरे पिता, यदि यह प्याला मुझसे हट नहीं सकता जब तक कि मैं इसे पी न दूँ, तो आपकी इच्छा पूरी हो।"<sup>43</sup> फिर वे आए और उन्हें सोते हुए पाया, क्योंकि उनकी आँखें भारी थीं।<sup>44</sup> और वे उन्हें फिर छोड़कर चले गए और तीसरी बार प्रार्थना की, वही बात फिर से कहकर।<sup>45</sup> तब वे चेलों के पास आए और उनसे कहा, "क्या तुम अब भी सो रहे हो और आराम कर रहे हो? देखो, समय आ गया है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में धोखा दिया जा रहा है।"<sup>46</sup> उठो, चलो; देखो, जो मुझे धोखा दे रहा है वह निकट है।"

<sup>47</sup> जब वे अभी बौल ही रहे थे, देखो, यहूदा, बारह में से एक, आया, और उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस एक बड़ी भीड़, जो महायाजकों और लोगों के बुर्जों से आई थी।<sup>48</sup> अब जो उसे धोखा दे रहा था उसने पहले से उन्हें एक संकेत दिया था, कहकर, "जिसे मैं चूँगँगा, वही है; उसे पकड़ लो।"<sup>49</sup> और तुरंत यहूदा यीश के पास गया और कहा, "नमस्कार, रखी!" और उसे चूमा।<sup>50</sup> पर यीश ने उससे कहा, "मित्र, जो तुम करने आए हो वह करो।" तब वे आए और यीश पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया।<sup>51</sup> और देखो, जो यीश के साथ थे उनमें से एक ने हाथ बढ़ाया और अपनी तलवार खींची, और महायाजक के दास को मारा और उसका कान काट दिया।<sup>52</sup> तब यीश ने उससे कहा, "अपनी तलवार को उसके स्थान पर रखो; क्योंकि जो तलवार उठाते हैं वे तलवार से नष्ट हो जाएँगे।"<sup>53</sup> या क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से प्रार्थना नहीं कर सकता,

और वह तुरंत मेरे लिए बारह से अधिक सेना के स्वर्गदूतों को उपलब्ध करा देगा?<sup>54</sup> फिर शास्त्र कैसे पूरे होंगे, जो कहते हैं कि यह इस प्रकार होना चाहिए?"<sup>55</sup> उस समय यीश ने भीड़ से कहा, "क्या तुम तलवारों और लाठियों के साथ मुझे पकड़ने आए हो, जैसे कि एक विद्रोही के खिलाफ? हर दिन मैं मंदिर के मैदान में बैठकर सिखाता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा।"<sup>56</sup> पर यह सब इसलिए हुआ है ताकि भविष्यद्वक्ताओं के शास्त्र पूरे हों।" तब सभी चेले उन्हें छोड़कर भाग गए।

<sup>57</sup> जो यीश की पकड़ चुके थे, वे उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहाँ शास्त्री और बुजुर्ग इकट्ठे हुए थे।<sup>58</sup> पर पतरस द्वारा से उनका पीछा कर रहा था, महायाजक के आँगन तक, और अंदर जाकर, अधिकारियों के साथ बैठ गया ताकि परिणाम देख सके।<sup>59</sup> अब महायाजक और पूरी परिषद यीश के खिलाफ झूली गवाही प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे, ताकि वे उसे मौत के घाट उतार सकें।<sup>60</sup> और उन्हें काई नहीं मिला, हालाँकि कई झूठे गवाह आगे आए। पर बाद में दो अंगे आए,<sup>61</sup> और कहा, "इस आदमी ने कहा, मैं परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिनों में इसे फिर से बना सकता हूँ।"<sup>62</sup> और महायाजक खड़ा हुआ और उससे कहा, "क्या तुम इन लोगों के खिलाफ कोई जवाब नहीं देते तो तुम्हारे खिलाफ गवाही दे रहे हैं?"<sup>63</sup> पर यीश चुप रहे। और महायाजक ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें जीतिवाल परमेश्वर की शपथ दिलाता हूँ, हमें बताओ कि क्या तुम मसीह, परमेश्वर के पुत्र हो।"<sup>64</sup> यीश ने उससे कहा, "तुमने स्वयं कहा है। पर मैं तुमसे कहता हूँ, अब से तुम मनुष्य के पुत्र को शक्ति के दाहिने हाथ पर बैठे देखोगे, और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे।"<sup>65</sup> तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, "उसने निदा की है! हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? देखो, तुमने अब निदा सुनी है।"<sup>66</sup> तुम क्या सोचते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "वह मृत्यु के योग्य है।"<sup>67</sup> तब उन्होंने उसके चेहरे पर थूका और उसे मुट्ठियों से मारा; और दूसरों ने उसे थप्पड़ मारा,<sup>68</sup> और कहा, "हमसे भविष्यवाणी करो, हे मसीह; कौन है जिसने तुम्हें मारा?"

<sup>69</sup> अब पतरस बाहर आँगन में बैठा था, और एक दासी उसके पास आई और कहा, "तुम भी यीश गलीती के साथ थे।"<sup>70</sup> पर उसने सबके सामने इनकार किया, कहकर, "मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो।"<sup>71</sup> जब वह द्वार पर गया, तो एक और दासी ने उसे देखा और वहाँ के लोगों से कहा, "यह आदमी यीश नासीरी के साथ था।"<sup>72</sup> और उसने फिर से इनकार किया, शपथ लेकर: "मैं उस आदमी को नहीं जानता।"<sup>73</sup> थोड़ी देर

## मत्ती

बाद, वहाँ खड़े लोग पतरस के पास आए और कहा, "तुम सच में उसमें से एक हो, क्योंकि तुम्हारी बोली तुम्हें प्रकट करती है।"<sup>74</sup> तब उसने शाप देना और कसम खाना शुरू किया, "मैं उस आदमी को नहीं जानता!" और तुरंत एक मुर्गा बाँग देने लगा।<sup>75</sup> और पतरस को वह बात याद आई जो यीशु ने कही थी: "मुर्गे के बाँग देने से पहले, तुम मुझे तीन बार इनकार करोगे।" और वह बाहर जाकर कड़वे आँसू बहाने लगा।

**27** जब सुबह हुई, तो सब महायाजक और लोगों के बुजुर्ग यीशु को मृत्यु दंड देने के लिए एक साथ विचार-विमर्श करने लगे।<sup>2</sup> और उन्होंने उसे बाँधकर ले गए, और उसे राज्यपाल पीलातुस के पास सौंप दिया।

<sup>3</sup> तब यहूदा, जिसने उसे धोखा दिया था, जब उसने देखा कि उसे दोषी ठहराया गया है, तो वह पछताया और महायाजकों और बुजुर्गों को तीस चाँदी के सिक्के लौटाए, <sup>4</sup> कहते हुए, "मैंने निर्दोष रक्त को धोखा देकर पाप किया है।"<sup>20</sup> पर उन्होंने कहा, "पथ हमारे लिए क्या है? तुम खुद देखो!"<sup>5</sup> और उसने चाँदी के सिक्के मंदिर में फेंक दिए और चला गया; और उसने जाकर अपने आप को फांसी लगा ली।<sup>6</sup> महायाजकों ने चाँदी के सिक्के उठाए और कहा, "इहें मंदिर के खजाने में रखना उचित नहीं है, क्योंकि यह रक्त की कीमत है।"<sup>7</sup> और उन्होंने विचार-विमर्श किया और उस पैसे से कुम्हार का खेत खरीदा ताकि वह अजनबियों के लिए कब्रिस्तान हो।<sup>8</sup> इस कारण वह खेत आज तक रक्त का खेत कहलाता है।<sup>9</sup> तब पर्याप्त हवा के द्वारा जो कहा गया था, वह पूरा हुआ: "और उन्होंने तीस चाँदी के सिक्के लिए, उसकी कीमत जो इसाल के पुत्रों द्वारा निधारित की गई थी;<sup>10</sup> और उन्होंने उन्हें कुम्हार के खेत के लिए दिया, जैसा कि प्रभु ने मुझे निर्देश दिया था।"

<sup>11</sup> अब यीशु राज्यपाल के सामने खड़ा था, और राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" और यीशु ने कहा, "जैसा तुम कहते हो।"<sup>12</sup> और जब महायाजक और बुजुर्ग उस पर आरोप लगा रहे थे, तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।<sup>13</sup> तब पीलातुस ने उससे कहा, "क्या तुम नहीं सुनते कि वे तुम्हारे खिलाफ कितनी बातें गवाही दे रहे हैं?"<sup>14</sup> किर भी उसने उसे एक भी आरोप के संबंध में उत्तर नहीं दिया, इसलिए राज्यपाल अर्थत् आश्वर्यचिकित हुआ।

<sup>15</sup> अब फसह पर्व पर राज्यपाल भीड़ के लिए किसी एक कैदी को छोड़ने का आदी था जिसे वे चाहते थे।<sup>16</sup> और उस समय वे एक कुख्यात कैदी को पकड़ रहे थे

जिसका नाम बरअब्बा था।<sup>17</sup> तो जब लोग इकट्ठे हुए, पीलातुस ने उनसे कहा, "तुम किसे चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूँ: बरअब्बा, या यीशु जिसे मसीन कहा जाता है?"<sup>18</sup> क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे ईर्ष्या के कारण सौंप दिया था।<sup>19</sup> और जब वह न्यायासन पर बैठा था, उसकी पत्नी ने उसे एक संदेश भेजा, कहती हुई, "देखो कि तुम उस धर्मी व्यक्ति के साथ कुछ न करो; क्योंकि कल रात मैंने उसके कारण एक स्वप्न में बहुत कष्ट उठाया।"<sup>20</sup> पर महायाजकों और बुजुर्गों ने भीड़ की बरअब्बा की मांग करने और यीशु को मृत्यु दंड देने के लिए प्रेरित किया।<sup>21</sup> और राज्यपाल ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए किसे छोड़ दूँ?" और उन्होंने कहा, "बरअब्बा!"<sup>22</sup> पीलातुस ने उनसे कहा, "तो मैं यीशु के साथ क्या करूँ जिसे मसीन कहा जाता है?" वे सब बोले, "उसे कूस पर चढ़ाओ।"<sup>23</sup> पर उसने कहा, "क्यों, उसने क्या बुराई की है?" किर भी वे और भी जोर से चिल्लाते रहे, "उसे कूस पर चढ़ाओ।"<sup>24</sup> अब जब पीलातुस ने देखा कि वह कुछ नहीं कर रहा है, बल्कि एक दंगा शुरू हो रहा है, तो उसने पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ पोए, कहते हुए, "मैं इस व्यक्ति के रक्त से निर्दोष हूँ: तुम खुद देखो।"<sup>25</sup> और सभी लोगों ने उत्तर दिया, "उसका रक्त हम पर और हमारे बच्चों पर हो!"<sup>26</sup> तब उसने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया; लेकिन यीशु को कोड़े लगाने के बाद, उसने कूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

<sup>27</sup> तब राज्यपाल के सैनिक यीशु को प्रेटोरियम में ले गए, और उसके पास पूरी रोमन सेना को इकट्ठा किया।<sup>28</sup> और उन्होंने उसे कपड़े उतार दिए और उस पर लाल चोगा डाल दिया।<sup>29</sup> और कांटों का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रखा, और उसके दाहिने हाथ में एक सरकड़ा दिया; और वे उसके सामने घुटने टेककर उसका मजाक उड़ाने लगे, कहते हुए, "जय हो, यहूदियों के राजा!"<sup>30</sup> और उन्होंने उस पर थूका, और सरकड़ा लेकर उसके सिर पर मारा।<sup>31</sup> और जब उन्होंने उसका मजाक उड़ाया, तो उन्होंने उसका चोगा उतार दिया और उसके अपने स्वस्त उसे पहना दिए, और उसे कूस पर चढ़ाने के लिए ले गए।

<sup>32</sup> जब वे बाहर जा रहे थे, तो उन्होंने साइरेन के एक व्यक्ति को पाया जिसका नाम शमीन था, जिसे उन्होंने उसकी कूस को उठाने के लिए मजबूर किया।<sup>33</sup> और जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसे गोलागोथा कहा जाता है, जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान,<sup>34</sup> तो उन्होंने उसे पीने के लिए पित्त के साथ मिलाया हुआ दाखरस दिया; और

## मत्ती

चखने के बाद, उसने उसे पीने से इनकार कर दिया।<sup>35</sup> और जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, तो उन्होंने उसके वस्तों को आपस में बाँट लिया, लॉट डालकर।<sup>36</sup> और बैठकर, उन्होंने वहाँ उसकी पहरेदारी शुरू की।<sup>37</sup> और उसके सिर के ऊपर उन्होंने उसके खिलाफ आरोप लिखकर लगा दिया: “यह यीशु है, यहूदियों का राजा।”

<sup>38</sup> उस समय दो विद्रोही उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए, एक दाहिनी और और एक बाईं और।<sup>39</sup> और जो लोग वहाँ से गुजर रहे थे, वे उसका अपमान कर रहे थे, अपने सिर हिला रहे थे,<sup>40</sup> और कह रहे थे, “तुम जो मंदिर को नष्ट कर तीन दिन में फिर से बनाते हो, अपने आप को बचाओ। यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो क्रूस से नीचे उतर आओ।”<sup>41</sup> उसी तरह महायाजक भी, शास्त्रियों और बुजुर्गों के साथ, उसका मजाक उड़ाते हुए कह रहे थे,<sup>42</sup> “उसने दूसरों को बचाया; वह अपने आप को नहीं बचा सकता। वह इसाएल का राजा है; अब वह क्रूस से नीचे उतर आए, और हम उस पर विश्वास करेंगे।”<sup>43</sup> उसने परमेश्वर पर भरोसा किया; अब परमेश्वर उसे बचाए, यदि वह उस पर प्रसन्न है, क्योंकि उसने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।”<sup>44</sup> जो विद्रोही उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसी तरह उसका अपमान कर रहे थे।

<sup>45</sup> अब छठे घंटे से लेकर नीवें घंटे तक पूरे देश में अंधकार छा गया।<sup>46</sup> लगभग नीवें घंटे यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, “एली, एली, लमा सबकतानी?” अर्थात्, “मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”<sup>47</sup> और जो लोग वहाँ खड़े थे, जब उन्होंने यह सुना, तो कहा, “यह व्यक्ति ऐलियाह को बुला रहा है।”<sup>48</sup> और तुरंत उनमें से एक दौड़ा, और एक संजंग लेकर उसे खड़े दाखरस में भिगोया और सरकें पर रखकर उसे पीने के लिए दिया।<sup>49</sup> पर बाकी ने कहा, “देखें कि क्या ऐलियाह उसे बचाने आता है।”<sup>50</sup> और यीशु ने फिर से ऊँचे स्वर में पुकारा, और अपनी आत्मा को छोड़ दिया।

<sup>51</sup> और देखो, मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया; और धरती हिल गई और चट्टानें फट गईं।<sup>52</sup> और कब्रें खुल गईं, और कई संतों के शरीर जो सो गए थे, उठ खड़े हुए;<sup>53</sup> और उसकी पुनरुत्थान के बाद कब्रों से बाहर आकर, वे पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाइ दिए।<sup>54</sup> अब जब सेनापति और उसके साथ जो यीशु की पहरेदारी कर रहे थे, उन्होंने भूकंप और जो कुछ ही रहा था, देखा, तो वे अत्यंत भयभीत हो गए और कहा, “सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!”

<sup>55</sup> और वहाँ बहुत सी महिलाएँ दूर से देख रही थीं, जो गलील से यीशु के पीछे चलती आई थीं और उसकी सेवा करती थीं।<sup>56</sup> उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और यूसूफ की माता मरियम, और जब्दी के पुत्रों की माता थीं।

<sup>57</sup> अब जब शाम हुई, अरिमथिया का एक धनी व्यक्ति आया, जिसका नाम यूसूफ था, जो स्वयं भी यीशु का शिष्य बन गया था।<sup>58</sup> यह व्यक्ति पीलातुस के पास गया और यीशु के शरीर की माम की। तब पीलातुस ने उसे देने का आदेश दिया।<sup>59</sup> और यूसूफ ने शरीर को लिया और उसे एक साफ लिनन कपड़े में लेपटा,<sup>60</sup> और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जिसे उसने चट्टान में काटा था; और उसने कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया और चला गया।<sup>61</sup> और मरियम मगदलीनी वहाँ थी, और दूसरी मरियम, कब्र के सामने बैठी थी।

<sup>62</sup> अब अगले दिन, जो तैयारी के दिन के बाद था, महायाजक और फरीसी पीलातुस के साथ इकट्ठे हुए,<sup>63</sup> और उन्होंने कहा, “सर, हमें याद है कि जब वह धोखेबाज जीवित था, उसने कहा, ‘तीन दिन बाद मैं उठ रहा हूँ।’”<sup>64</sup> इसलिए, आदेश दें कि कब्र को तीसरे दिन तक सुरक्षित रखा जाए, अन्यथा उसके शिष्य आ सकते हैं और उसे चुरा सकते हैं और लोगों से कह सकते हैं, “वह मृतकों में से जी उठा है”; और अंतिम धोखा पहले से भी बुरा होगा।<sup>65</sup> पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास एक गार्ड है; जाओ, इसे जितना सुरक्षित कर सकते हो, उतना करो।”<sup>66</sup> और वे गए और गार्ड के साथ पत्थर को सील करके कब्र को सुरक्षित किया।

**28** सब्त के बाद, जब सप्ताह का पहला दिन शुरू हो रहा था, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई।<sup>2</sup> और देखो, एक बड़ा भूकंप आया, क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गद्वार स्वर्ग से उतरा और आकर पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।<sup>3</sup> और उसका रूप बिजली के समान था, और उसके वस्त्र बर्फ के समान सफेद थे।<sup>4</sup> रक्षक उससे डर के मारे कांप उठे और मृतकों के समान हो गए।

<sup>5</sup> और स्वर्गद्वार ने स्त्रियों से कहा, “दरो मत, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ रही हो जो क्रूस पर चढ़ाया गया था।<sup>6</sup> वह यहाँ नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है, जैसा उसने कहा था। आओ, वह स्थान देखो जहाँ वह पड़ा था।<sup>7</sup> और जल्दी से जाकर उसके चेलों से कहो कि वह मेरे हुओं में से जी उठा है; और देखो, वह तुमसे पहले गलील जा रहा है। वहाँ तुम उसे देखोगे; देखो, मैंने

## मत्ती

तुमसे कह दिया है।”<sup>8</sup> और वे डर और बड़े आनंद के साथ जल्दी से कब्र से निकलीं, और उसके चेलों को समाचार देने दौड़ीं।

° और देखो, यीशु उनसे मिला और कहा, “आनंदित हो!” और वे पास आकर उसके पैरों को पकड़कर उसकी आराधना करने लगीं।<sup>10</sup> तब यीशु ने उनसे कहा, “डरो मत; जाकर मेरे भाइयों को कहो कि वे गलील के लिए चले, और वहाँ वे मुझे देखेंगे।”

<sup>11</sup> अब जब वे रास्ते में थीं, कुछ रक्षक नगर में आए और महायाजकों को सब कुछ बताया जो हुआ था।<sup>12</sup> और जब उन्होंने पुणियों के साथ इकट्ठा होकर परामर्श किया, तो उन्होंने सैनिकों को बहुत सधन दिया,<sup>13</sup> और कहा, “तुम कहना, ‘उसके चेले रात में आए और जब हम सो रहे थे, उसे चुरा ले गए।’<sup>14</sup> और यदि यह राज्यपाल के कानों तक पहुँचे, तो हम उसे शात करेंगे और तुम्हें परेशानी से बचाएंगा।”<sup>15</sup> और उन्होंने धन लिया और जैसा उन्हें सिखाया गया था, वैसा ही किया; और यह कहानी यहूदियों में फैल गई, और आज तक है।

<sup>16</sup> परन्तु ग्यारह चेले गलील को उस पर्वत पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था।<sup>17</sup> जब उन्होंने उसे देखा, तो उसकी आराधना की; परन्तु कुछ संदेह कर रहे थे।<sup>18</sup> और यीशु उनके पास आकर उनसे कहा, “स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है।<sup>19</sup> इसलिये, जाओ, और सब जातियों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,<sup>20</sup> उन्हें वह सब कुछ मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है; और देखो, मैं संदेव तुम्हारे साथ हूँ, युग के अंत तक।”

## मरकुस

**1** यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र के सुसमाचार का आरंभ।<sup>2</sup> जैसा कि यशायाह भविष्यद्वक्ता में लिखा है:

“देखो, मैं अपने द्वृत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे मार्ग को तैयार करेगा;<sup>3</sup> जंगल में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी पगड़ियों को सीधा करो॥”

<sup>4</sup> यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में प्रकट हुआ, पापों की क्षामा के लिए मन-परिवर्तन के बपतिस्मा का प्रचार करता हुआ।<sup>5</sup> और यहूदिया का सारा प्रदेश और यूरूशलेम के सब लोग उसके पास आ रहे थे; और वे अपने पापों को स्वीकार करते हुए, यरदन नदी में उससे बपतिस्मा ले रहे थे।<sup>6</sup> यूहन्ना ऊँक के बालों से वस्त पहने हुए था और अपनी कमर में चमड़े की पेटी बाँधे हुए था, और उसका भोजन टिक्कियाँ और जंगली शहद था।<sup>7</sup> और वह प्रचार कर रहा था, कहता था, “मेरे बाद वह आ रहा है जो मुझसे अधिक सामर्थ्य है, और मैं उसके जूतों के फीटे खोलने के योग्य नहीं हूँ।<sup>8</sup> मैंने तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है; पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।”

<sup>9</sup> उन दिनों में यीशु गलील के नासरत से आया, और यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।<sup>10</sup> और तुरंत पानी से ऊपर आते ही, उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर के समान अपने ऊपर उतारते देखा;<sup>11</sup> और आकाश से एक आवाज़ आई: “तू मेरा प्रिय पुत्र है; तुझसे मैं अत्यंत प्रसरण हूँ।”

<sup>12</sup> और तुरंत आत्मा उसे जंगल में ले गया।<sup>13</sup> और वह जंगल में चाचीस दिन तक शैतान द्वारा परीक्षा में था; और वह जंगली जानवरों के साथ था, और र्वर्गदृत उसकी सेवा कर रहे थे।

<sup>14</sup> अब जब यूहन्ना बंदीगृह में डाला गया, यीशु गलील में आया, परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करता हुआ,<sup>15</sup> और कहता था, “समय पूरा हो गया है, और परमेश्वर का राज्य निकट है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।”

<sup>16</sup> जब वह गलील की झील के किनारे जा रहा था, उसने शमौन और उसके भाई अंद्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुओं थे।<sup>17</sup> और यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुओं बनाऊँगा।”<sup>18</sup> तुरंत उहोंने अपने जाल छोड़

दिए और उसके पीछे हो लिए।<sup>19</sup> और थोड़ा आगे बढ़कर उसने जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को देखा, जो नाव में जालों की मरमत कर रहे थे।<sup>20</sup> तुरंत उसने उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को नाव में मजदूरों के साथ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

<sup>21</sup> वे कफरनहूम में गए; और तुरंत सब्त के दिन यीशु सभा-गृह में प्रवेश कर शिक्षा देने लगा।<sup>22</sup> और वे उसकी शिक्षा से चकित हो गए; क्योंकि वह उहें शास्त्रियों के समान नहीं, पर अधिकार के साथ सिखा रहा था।<sup>23</sup> और उसी समय उनकी सभा-गृह में एक अशुद्ध आत्मा वाला मनुष्य था; और वह चिल्लाया,<sup>24</sup> कहता, “हे नासरी यीशु, तेरा हमसे क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं जानता हूँ कि तू कौन है—परमेश्वर का पवित्र जन!”<sup>25</sup> और यीशु ने उसे ढांटा, कहा, “चुप रह, और उसमें से बाहर निकल आ।”<sup>26</sup> तब वह अशुद्ध आत्मा उसे मरोड़कर और ऊँकी आवाज में चिल्लाकर उसमें से बाहर निकल गई।<sup>27</sup> और वे सब चकित हो गए, इसलिए वे आपस में विचार करने लगे, कहते, “यह क्या है? यह नई शिक्षा है, अधिकार के साथ! वह अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।”<sup>28</sup> तुरंत उसकी चर्चा गलील के आस-पास के सारे प्रदेश में फैल गई।

<sup>29</sup> और तुरंत वे सभा-गृह से निकलकर, शमौन और अंद्रियास के घर गए, याकूब और यूहन्ना के साथ।<sup>30</sup> अब शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी; और उहोंने तुरंत यीशु से उसके बारे में कहा।<sup>31</sup> और वह उसके पास आया और उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया, और ज्वर उसे छोड़ गया, और वह उनकी सेवा करने लगी।

<sup>32</sup> अब जब संधा हुई, सुर्पस्त के बाद, वे सब बीमारों और दुष्टामा-प्रस्त लोगों को उसके पास लाने लगे।<sup>33</sup> और पूरा नगर द्वारा पर इकट्ठा हो गया।<sup>34</sup> और उसने बहुतों को जो विभिन्न रोगों से पीड़ित थे, चंगा किया, और बहुत से दुष्टामाओं को निकाला; और वह दुष्टामाओं को बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानती थीं कि वह कौन है।

<sup>35</sup> और भोर को, जब अभी अंधेरा था, यीशु उठा, घर से निकला, और एक निर्जन स्थान में गया, और वहाँ प्रार्थना करने लगा।<sup>36</sup> शमौन और उसके साथी उसे खोजने लगे;<sup>37</sup> और उहोंने उसे पाया और उससे कहा, “सब लोग तुझे ढूँढ रहे हैं।”<sup>38</sup> उसने उनसे कहा, “आओ, हम कहीं और जाएं, आस-पास के गाँवों में, ताकि मैं वहाँ भी

## मरकुस

प्रचार कर सकूँ; क्योंकि मैं इसी लिए आया हूँ।"<sup>39</sup> और वह उनके सभा-गृहों में गलील भर में प्रचार करता और दुष्टामाओं को निकालता था।

<sup>40</sup> और एक कोढ़ी यीशु के पास आया, उसे बिनती करता और घुटनों के बल गिरकर कहता, "यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।"<sup>41</sup> यीशु ने करुणा से प्रेरित होकर अपना हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा, "मैं चाहता हूँ; तू शुद्ध हो जा।"<sup>42</sup> और तुरंत उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।<sup>43</sup> और उसने उसे कढ़ी बेतावी दी और तुरंत उसे भेज दिया,<sup>44</sup> और उससे कहा, "देख, किसी से कुछ न कहना; पर जा, अपने को याजक को दिखा और अपनी शुद्धि के लिए जो मूरा ने आज्ञा दी है, वह भेंट चढ़ा, ताकि उनके लिए गवाही हो।"<sup>45</sup> पर वह बाहर जाकर स्वतंत्र रूप से प्रचार करने और बात फैलाने लगा, यहाँ तक कि यीशु अब खुलाआम नगर में प्रेरणा नहीं कर सकता था, पर निजन स्थानों में रहता था; और लोग हर ओर से उसके पास आते थे।

**2** कुछ दिनों बाद जब वह फिर कफरनहूम आया, तो यह सुना गया कि वह घर में है।<sup>2</sup> और बहुत लोग इकट्ठे हो गए, यहाँ तक कि दरवाजे के पास भी जगह नहीं रही; और वह उन्हें बचन सुना रहा था।<sup>3</sup> और कुछ लोग एक लकड़े के मारे हुए व्यक्ति को, जिसे चार आदमी उठा रहे थे, उसके पास लाए।<sup>4</sup> और जब वे भीड़ के कारण उसे यीशु के पास नहीं ला सके, तो उन्होंने उस छत को खोल दिया जहाँ वह था; और छेद करके उस खाट को नीचे उतार दिया जिस पर लकड़ी का मारा हुआ व्यक्ति लेटा था।<sup>5</sup> यीशु ने उनका विश्वास देखकर लकड़ी के मारे हुए व्यक्ति से कहा, "बेटा, तेरे पाप क्षमा किए गए हैं।"<sup>6</sup> परंतु कुछ शास्त्री वहाँ बैठे हुए अपने मन में सोच रहे थे, <sup>7</sup> "यह व्यक्ति इस प्रकार क्यों बोलता है? यह तो ईश्वर-निदा कर रहा है! पापों को कौन क्षमा कर सकता है सिवाय परमेश्वर के?"<sup>8</sup> तुरंत यीशु ने अपनी आमा में जान लिया कि वे अपने मन में इस प्रकार सोच रहे हैं, और उनसे कहा, "तुम अपने मन में इन बातों के बारे में क्यों सोच रहे हो? क्या अधिक सरल है, लकड़े के मारे हुए व्यक्ति से कहना, तेरे पाप क्षमा किए गए हैं? या यह कहना, 'उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर?'<sup>10</sup> परंतु ताकि तुम जान सको कि मनुष्य का उत्र पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार रखता है"— उसने लकड़े के मारे हुए व्यक्ति से कहा,<sup>11</sup> "मैं तुझसे कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठा और अपने घर जा।"<sup>12</sup> और वह उठा और तुरंत अपनी खाट उठाकर सबके सामने बाहर चला गया, ताकि वे सब अंचभित हो गए और परमेश्वर की

महिमा करने लगे, यह कहते हुए, "हमने ऐसा कभी नहीं देखा!"

<sup>13</sup> और वह फिर समुद्र के किनारे गया; और सब लोग उसके पास आ रहे थे, और वह उहें सिखा रहा था।<sup>14</sup> जब वह वहाँ से गुजर रहा था, उसने अल्फ़र्ड का पुत्र लेवी को महसूल के दफ्तर में बैठे देखा, और उससे कहा, "मेरे पीछे चलो!" और वह उठकर उसके पीछे हो लिया।

<sup>15</sup> और ऐसा हुआ कि वह उसके घर में मेज पर बैठा था, और बहुत से महसूल लेने वाले और पापी यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन कर रहे थे; क्योंकि उनमें से बहुत से थे, और वे उसके पीछे हो लिए थे।<sup>16</sup> जब फरीसियों के शास्त्रियों ने देखा कि वह पापियों और महसूल लेने वालों के साथ खा रहा है, तो उन्होंने उसके चेलों से कहा, "वह महसूल लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?"<sup>17</sup> यह सुनकर, यीशु ने उनसे कहा, "जो स्वर्व्य हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, परंतु जो बीमार हैं उन्हें होती है, मैं धर्मियों को नहीं, परंतु पापियों को बुलाने आया हूँ।"

<sup>18</sup> यूहन्ना के चेले और फरीसी उपवास कर रहे थे; और वे आए और उससे कहा, "यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले उपवास क्यों करते हैं, परंतु आपके चेले उपवास नहीं करते?"<sup>19</sup> यीशु ने उनसे कहा, "जब तक दूल्हा उनके साथ है, दूल्हे के साथी उपवास नहीं कर सकते, क्या वे कर सकते हैं? जब तक उनके पास दूल्हा है, वे उपवास नहीं कर सकते।"<sup>20</sup> परंतु वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा, और तब वे उस दिन उपवास करेंगे।<sup>21</sup> कोई भी बिना सिकुड़े कपड़े का पैंबंद पुराने वस्त्र पर नहीं लगाता; अन्यथा, पैंबंद वस्त्र से अलग हो जाता है, नया पुराने से, और एक बड़ा फाड़ हो जाता है।<sup>22</sup> और कोई नया दाखरस पुराने मशक्कों में नहीं डालता; अन्यथा, दाखरस मशक्कों को फाड़ देता है, और दाखरस भी नष्ट हो जाता है, और मशक्क भी; बल्कि नया दाखरस नए मशक्कों में डाला जाता है।

<sup>23</sup> और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से गुजर रहा था, और उसके चेले रस्ते में चलते हुए अनाज के सिर तोड़ने लगे।<sup>24</sup> और फरीसी उससे कहने लगे, "देखो, वे सब्त के दिन ऐसा क्यों कर रहे हैं जो उचित नहीं है?"<sup>25</sup> और उसने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे आवश्यकता थी और वह और उसके साथी भूखे हो गए थे—<sup>26</sup> कैसे उसने अबियाथार महायाजक के समय में परमेश्वर के

## मरकुस

घर में प्रवेश किया, और पवित्र रोटी खाई, जो किसी के खाने के लिए उचित नहीं थी सिवाय याजकों के, और उसने उसे भी दिया जो उसके साथ थे।<sup>27</sup> यीशु ने उनसे कहा, 'सब्ल मनुष्य के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब्ल के लिए।<sup>28</sup> इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्ल का भी प्रभु है।'

**3** वह फिर से एक आराधनालय में प्रवेश किया; और वहाँ एक आदमी सा जिसकी हाथ सूखा हुआ था।<sup>2</sup> और वे उसे ध्यान से देख रहे थे कि क्या वह सब्ल के दिन उसे चंगा करेगा, ताकि वे उस पर आरोप लगा सकें।<sup>3</sup> उसने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, "उठो और आगे आओ!"<sup>4</sup> और उसने उनसे कहा, "क्या सब्ल के दिन भलाई करना उचित है या बुराई करना, जीवन बचाना या मार डालना?" पर वे चुप रहे।<sup>5</sup> उनकी कठोरता पर क्रीधित होकर और दुखी होकर, उसने उस आदमी से कहा, "अपना हाप बढ़ाओ!" और उसने उसे बढ़ाया, और उसका हाप फिर से स्वस्थ हो गया।<sup>6</sup> फरीसी बाहर गए और तुरंत हेरोडियों के साथ उसके खिलाफ पञ्चवंश रचने लगे, कि वे उसे कैसे मार डालें।

<sup>7</sup> यीशु अपने चेलों के साथ समुद्र की ओर चले गए; और गलील से एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली, और यहूदिया से भी,<sup>8</sup> और यरूशलेम से, और इदूमिया से, और यरदन के पार से, और सूर और सिदोन के आस-पास से, जब उन्होंने सुना कि वह क्या कर रहा है, तो बहुत से लोग उनके पास आए।<sup>9</sup> और उन्होंने अपने चेलों से कहा कि भीड़ के कारण उनके लिए एक नव तैयार रहे, ताकि वे उन्हें न घेर लें;<sup>10</sup> क्योंकि उन्होंने बहुतों को चंगा किया था, जिसके परिणामस्वरूप सभी रोगी लोग उन्हें कूने के लिए उनके चारों और धक्का देने लगे।<sup>11</sup> और जब भी अशुद्ध आत्मा उन्हें देखतीं, तो वे उनके सामने गिर पड़तीं और खिलातीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है!"<sup>12</sup> और उन्होंने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि वे यह प्रकट न करें कि वह कौन है।

<sup>13</sup> और वह पहाड़ पर गए और उन्होंने उन लोगों को बुलाया जिन्हें वह स्वयं चाहते थे, और वे उनके पास आए।<sup>14</sup> और उन्होंने बाहर को नियुक्त किया, ताकि वे उनके साथ रहें और वह उन्हें प्रचार करने के लिए भेज सकें,<sup>15</sup> और दुश्माओं को निकालने का अधिकार दें।

<sup>16</sup> और उन्होंने बाहर को नियुक्त किया: शमैन (जिसे उन्होंने पतरस नाम दिया),<sup>17</sup> ज़बदी के पुत्र याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना (उन्हें उन्होंने बोनर्नेस नाम दिया, जिसका अर्थ है, 'गर्जन के पुत्र');<sup>18</sup> और अन्द्रियास, और फिलिप्पस, और बरथोलोमीयस, और

मत्ती, और थोमा, और अल्फाई का पुत्र याकूब, और थद्वियस, और शमैन कनानी;<sup>19</sup> और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे धोखा दिया।

<sup>20</sup> और वह घर आए, और भीड़ फिर से इकट्ठा हो गई, इतनी कि वे भेजन भी नहीं कर सके।<sup>21</sup> और जब उनके अपने लोगों ने यह सुना, तो वे उसे पकड़ने के लिए बाहर आए; क्योंकि वे कह रहे थे, "वह अपनी सुध-बुध खो चुका है!"

<sup>22</sup> यरूशलेम से आए शास्त्री कह रहे थे, "वह बेलज़ेबुल से ग्रस्त है," और "वह दुष्टामाओं के प्रधान के द्वारा दुष्टामाओं को निकालता है।"<sup>23</sup> इसलिए उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाया और दृष्टांतों में उनसे बात करने लगे: "शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता है?"<sup>24</sup> और यदि एक राज्य अपने आप में विभाजित हो जाए, तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकता।<sup>25</sup> और यदि एक घर अपने आप में विभाजित हो जाए, तो वह घर स्थिर नहीं रह सकता।<sup>26</sup> और यदि शैतान अपने आप के खिलाफ उठ खड़ा हो और विभाजित हो जाए, तो वह स्थिर नहीं रह सकता, बल्कि उसका अंत हो गया है।<sup>27</sup> पर कोई भी बलवान आदमी के घर में प्रवेश करके उसकी संपत्ति को लूट नहीं सकता जब तक कि वह पहले उस बलवान आदमी को बांध न दे, और तब वह उसके घर को लूटेगा।<sup>28</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, मनुष्यों के पुत्रों और पुत्रियों के सभी पाप क्षमा किए जाएंगे, और जो भी निंदा वे करें;<sup>29</sup> पर जो पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा करता है, उसे कभी क्षमा नहीं मिलेगी, बल्कि वह एक अनंत पाप का दोषी है!—<sup>30</sup> क्योंकि वे कह रहे थे, "उसमें एक अशुद्ध आत्मा है।"

<sup>31</sup> तब उसकी माता और उसके भाई आए, और बाहर खड़े होकर उन्होंने उसे बुलाने के लिए संदेश भेजा।<sup>32</sup> और एक भीड़ उसके चारों ओर बैठी थी, और उन्होंने उससे कहा, "देखो, तुम्हारी माता और तुम्हारे भाई बाहर तुम्हें ढूँढ रहे हैं!"<sup>33</sup> और उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?"<sup>34</sup> और जो उसके चारों ओर बैठे थे, उनकी ओर देखकर, उसने कहा, "यहाँ मेरी माता और मेरे भाई हैं।"<sup>35</sup> क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वही मेरा भाई, और बहन, और माता है।"

**4** यीशु फिर से समुद्र के किनारे शिक्षा देने लगे। और उनके पास इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई कि वह समुद्र में एक नाव पर बैठ गए; और पूरी भीड़ भूमि पर समुद्र के किनारे थी।<sup>2</sup> और वह उन्हें दृष्टांतों में बहुत सी बातें

## मरकुस

सिखा रहे थे, और अपनी शिक्षा में उनसे कह रहे थे:<sup>3</sup> “इस पर ध्यान दो! देखो, एक बोने वाला बीज बोने निकला;<sup>4</sup> और जब वह बो रहा था, कुछ बीज रास्ते के किनारे पिर गए, और पक्षी आकर उन्हें खा गए।<sup>5</sup> कुछ बीज पत्थरीली भूमि पर पिरे जहाँ अधिक मिट्टी नहीं थी; और तुरंत उग आए, क्योंकि उनके पास मिट्टी की गहराई नहीं थी।<sup>6</sup> और जब सूरज उगा, तो वे झुलस गए; और क्योंकि उनकी जड़ नहीं थी, वे सूखे गए।<sup>7</sup> कुछ बीज काँटों के बीच पिरे, और काँट उग आए और उन्हें दबा दिया, और उन्होंने कोई फसल नहीं दी।<sup>8</sup> कुछ बीज अच्छी मिट्टी में पिरे, और जैसे-जैसे वे बढ़े और बढ़े, उन्होंने फसल दी और तीस, साठ, और सौ गुना अधिक उत्पन्न किया।<sup>9</sup> और वह कह रहे थे, “जिसके पास सुनने के कान हैं, वह सुनो।”

<sup>10</sup> जैसे ही वह अकेले थे, उनके अनुयायी, बारह के साथ, उनसे दृष्टितों के बारे में पूछने लगे।<sup>11</sup> और वह उनसे कह रहे थे, “तुम्हें परमेश्वर के राज्य का रहस्य दिया गया है, लेकिन जो बाहर हैं, उनके लिए सब कुछ दृष्टितों में कहा जाता है,<sup>12</sup> ताकि

देखते हुए, वे देखें और न समझें, और सुनते हुए, वे सुनें और न समझें, अन्यथा वे लौट आएंगे और क्षमा किए जाएंगे।”

<sup>13</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “क्या तुम इस दृष्टितों को नहीं समझते? तुम सब दृष्टितों को कैसे समझोगे?<sup>14</sup> बोने वाला वचन बोता है।<sup>15</sup> ये वे हैं जो रास्ते के किनारे हैं जहाँ वचन बोया जाता है, और जब वे सुनते हैं, तुरंत शैतान आता है और वचन को ले जाता है जो उनमें बोया गया है।<sup>16</sup> और इसी प्रकार वे हैं जो पत्थरीली जगहों पर बोए गए हैं, जो, जब वे वचन सुनते हैं, तुरंत आनन्द से उसे ग्रहण करते हैं,<sup>17</sup> और फिर भी उनके पास अपने आप में कोई दृढ़ जड़ नहीं है, बल्कि वे केवल अस्थायी हैं, फिर, जब वचन को कारण क्लेश या उत्तीर्ण होता है, वे तुरंत गर जाते हैं।<sup>18</sup> और अन्य वे हैं जो काँटों के बीच बोए गए हैं, ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना है,<sup>19</sup> लेकिन संसार की चिंताएँ, धन का धीखा, और अन्य चीजों की इच्छाएँ प्रवेश करती हैं और वचन को दबा देती हैं, और यह निष्फल हो जाता है।<sup>20</sup> और वे वे हैं जो अच्छी मिट्टी में बोए गए हैं, वे वचन को सुनते हैं और उसे स्वीकार करते हैं और फल उत्पन्न करते हैं—तीस, साठ, और सौ गुना अधिक।”

<sup>21</sup> और वह उनसे कह रहे थे, “क्या एक दीपक को टौकरी के नीचे या बिस्तर के नीचे रखने के लिए लाया

जाता है? क्या यह दीपकदान पर रखने के लिए नहीं लाया जाता? <sup>22</sup> क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं है, सिवाय इसके कि प्रकट किया जाए; न ही कुछ गुप्त है, परन्तु यह कि यह प्रकाश में आए।<sup>23</sup> यदि किसी के पास सुनने के कान हैं, तो वह सुने।”<sup>24</sup> और वह उनसे कह रहे थे, “जो तुम सुनते हो, उस पर ध्यान दो। जिस माप से तुम मापते हो, उसी से तुम्हारे लिए मापा जाएगा; और तुम्हें इसके अलावा और भी दिया जाएगा।<sup>25</sup> क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।”

<sup>26</sup> और वह कह रहे थे, “परमेश्वर का राज्य उस मनुष्य के समान है जो भूमि पर बीज डालता है,<sup>27</sup> और वह रात को सोने जाता है और प्रतिदिन उठता है, और बीज अंकुरित होता है और बढ़ता है—कैसे, वह स्वयं नहीं जानता।<sup>28</sup> भूमि अपने आप फसल उत्पन्न करती है: पहले तना, फिर सिर, फिर सिर में परिपक्व अनाज।<sup>29</sup> अब जब अनाज पक जाता है, तो वह तुरंत हस्तिया डालता है, क्योंकि फसल आ गई है।”

<sup>30</sup> और वह कह रहे थे, “हम परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे करें, या किस दृष्टितों से उसे प्रस्तुत करें?<sup>31</sup> यह राई के दाने के समान है, जो जब भूमि पर बोया जाता है, यद्यपि यह भूमि पर सभी बीजों से छोटा है,<sup>32</sup> फिर भी जब यह बोया जाता है, तो यह उगता है और सभी बीजें के पौधों से बड़ा हो जाता है और बड़ी शाखाएँ बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप आकाश के पक्षी उसकी छाया के नीचे धोसता बना सकते हैं।”

<sup>33</sup> और ऐसे कई दृष्टितों के साथ वह उन्हें वचन सुना रहे थे, जिनमा वे समझ सकते थे;<sup>34</sup> और वह उनसे दृष्टितों के बिना नहीं बोलते थे; परन्तु वह अपने शिष्यों को सब कुछ निजी रूप से समझाते थे।

<sup>35</sup> उस दिन, जब शाम हो गई, उन्होंने उनसे कहा, “आओ, हम दूसरी ओर चलो।”<sup>36</sup> और भीड़ को विदा करने के बाद, वे उसे उसी नाव में अपने साथ ले गए; और अन्य नावें भी उसके साथ थीं।<sup>37</sup> और एक तेज़ हवा का तूफान उठा, और लहरें नाव पर इतनी ज़ोर से टूट रही थीं कि नाव पहले से ही पानी से भर रही थी।<sup>38</sup> और फिर भी यीशु स्वयं नाव के पिछले हिस्से में एक गद्दे पर सो रहे थे; और उन्होंने उन्हें ज़गाया और उनसे कहा, “गुरु, क्या आपको परवाह नहीं कि हम नाश हो रहे हैं?”<sup>39</sup> और वह उठे और हवा को डांटा और समृद्ध से कहा, “शांत हो, थम जा।” और हवा थम गई और यह पूरी तरह से शांत हो गया।<sup>40</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “तुम क्यों

## मरकुस

डरते हो? क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं है?"<sup>41</sup> वे बहुत डर गए और एक-दूसरे से कहने लगे, "फिर यह कौन है, कि हवा और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं?"

**5** वे समुद्र के दूसरी ओर, गेरासीनों के क्षेत्र में आए।<sup>2</sup> और जब वह नाव से बाहर निकला, तो तुरंत कब्रों में से एक अशुद्ध आत्मा वाला व्यक्ति उससे मिला।<sup>3</sup> वह कब्रों के बीच रहता था। और कोई भी उसे अब और बांध नहीं सकता था, यहाँ तक कि जंजीर से भी नहीं,<sup>4</sup> क्योंकि उसे अक्सर बैंडियों और जंजीरों से बंधा गया था, और जंजीरे उसके द्वारा तोड़ी गई थीं, और बैंडियाँ टुकड़े-टुकड़े हो गई थीं, और कोई भी उसे वश में करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं था।<sup>5</sup> रात और दिन लगातार, वह कब्रों और पहाड़ों के बीच चिलाता रहता था, और पर्यांत से खुद को काटता था।

<sup>6</sup> दूर से यीशु को देखकर, वह दौड़कर उसके सामने झुक गया;<sup>7</sup> और ऊँची आवाज में चिलाकर कहा, "हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, तेरा मुझसे क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ, मुझे पीड़ा मत दे!"<sup>8</sup> क्योंकि वह पहले ही उससे कह रहा था, "तू अशुद्ध आत्मा, इस व्यक्ति से बाहर निकला!"<sup>9</sup> और वह उससे पूछ रहा था, 'तेरा नाम क्या है?' और उसने उससे कहा, "मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं!"<sup>10</sup> और उसने उससे विनती की कि उन्हें उसके क्षेत्र से बाहर न भेजे।

<sup>11</sup> अब पहाड़ पर पास में सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था।<sup>12</sup> और दुष्टामाँ उससे विनती करने लगीं, "हमें सूअरों में भेज दे ताकि हम उनमें प्रवेश कर सकें।"<sup>13</sup> यीशु ने उन्हें अनुमति दी। और बाहर आकर, अशुद्ध आत्माएँ सूअरों में प्रवेश कर गईं, और झुंड, लगभग दो हजार, खड़ी ढलान से समुद्र में दौड़ गया, और वे समुद्र में झूब गए।

<sup>14</sup> और उनके चरवाहे भाग गए और शहर और गाँव में इसकी सूचना दी। और लोग यह देखने आए कि क्या हुआ था।<sup>15</sup> और वे यीशु के पास आए और उस व्यक्ति को देखा जो दुष्टामा से ग्रस्त था, बैठा हुआ, कपड़े पहने और सही दिमाग में—वही व्यक्ति जिसमें पहले "सेना" थी; और वे डर गए।<sup>16</sup> जिन्होंने इसे देखा था, उन्होंने उन्हें बताया कि दुष्टामा से ग्रस्त व्यक्ति के साथ क्या हुआ था, और सूअरों के बारे में सब कुछ।<sup>17</sup> और वे उससे विनती करने लगे कि वह उनके क्षेत्र से चला जाए।

<sup>18</sup> और जब वह नाव में चढ़ रहा था, वह व्यक्ति जो दुष्टामा से ग्रस्त था, उससे विनती कर रहा था कि वह उसके साथ जा सके।<sup>19</sup> और उसने उसे अनुमति नहीं दी, लेकिन उससे कहा, "अपने लोगों के पास घर जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितने महान कार्य किए हैं, और कैसे उसने तुम पर दया की।"<sup>20</sup> और वह चला गया और दस नगरों में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उसके लिए कितने महान कार्य किए थे; और सभी लोग आश्वर्यचकित थे।

<sup>21</sup> जब यीशु फिर से नाव में समुद्र के दूसरी ओर पार कर गया, तो उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई; और वह समुद्र के किनारे पर रहा।<sup>22</sup> और आराधनालय के अधिकारियों में से एक, जिसका नाम याईर था, आया, और उसे देखकर उसके पैरों पर गिर पड़ा<sup>23</sup> और उससे गंभीरता से विनती की, "मेरी छोटी बेटी मृत्यु के कगार पर है; कृपया आकर उस पर अपने हाथ रखो, ताकि वह ठीक हो जाए और जीवित रहे।"<sup>24</sup> और वह उसके साथ चला गया; और एक बड़ी भीड़ उसके पैछे चल रही थी और उसे धक्का दे रही थी।

<sup>25</sup> एक स्त्री जो बारह वर्षों से रक्तसाव से पीड़िती थी,<sup>26</sup> और कई चिकित्सकों के हाथों बहुत कुछ सहन कर चुकी थी, और जो कुछ उसके पास था सब खर्च कर चुकी थी और उसे कोई लाभ नहीं हुआ, बल्कि और भी बुरा हो गया—<sup>27</sup> यीशु के बारे में सुनकर, वह भीड़ में पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया।<sup>28</sup> क्योंकि वह अपने आप से कह रही थी, 'अगर मैं केवल उसके वस्त्रों को छू लूँ तो मैं ठीक हो जाऊँगी।'<sup>29</sup> और तुरंत उसके रक्त का प्रवाह सूख गया; और उसने अपने शरीर में महसूस किया कि वह अपनी बीमारी से चंगी हो गई है।<sup>30</sup> और तुरंत यीशु ने अपने आप में महसूस किया कि उससे शक्ति निकली है, भीड़ में घूमकर कहा, "मेरे वस्त्रों को किसने छुआ?"<sup>31</sup> और उसके शिष्य उससे कहने लगे, "तू देखता है कि भीड़ तुम्हे पर धक्का दे रही है, और तू कहता है, किसने मुझे छुआ?"<sup>32</sup> और वह उस स्त्री को देखने के लिए इधर-उधर देखने लगा जिसने यह किया था।<sup>33</sup> लेकिन स्त्री, उत्तरे और काँपते हुए, यह जानकर कि उसके साथ क्या हुआ था, आकर उसके सामने गिर पड़ी और उसे सारी सच्चाई बता दी।<sup>34</sup> और उसने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; शांति से जा और अपनी बीमारी से मुक्त हो।"<sup>35</sup>

<sup>35</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, तो आराधनालय के अधिकारी के घर से लोग आए और कहने लगे, "तेरी बेटी मर गई है; अब शिक्षक को और कष्ट क्यों देना?"<sup>36</sup>

## मरकुस

लेकिन यीशु ने जो कहा जा रहा था उसे सुनकर, आराधनालय के अधिकारी से कहा, "मत डर, केवल विश्वास कर।"<sup>37</sup> और उसने किसी को भी अपने साथ आने की अनुमति नहीं दी, सिवाय पतरस, याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना के।<sup>38</sup> वे आराधनालय के अधिकारी के घर आए, और उसने हलचल देखी, और लोग जोर से रो रहे थे और विलाप कर रहे थे।<sup>39</sup> और अंदर जाकर, उसने उनसे कहा, "तुम हलचल क्यों मचा रहे हो और रो रहे हो? बच्ची मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।"<sup>40</sup> और वे उस पर हँसने लगे। लेकिन उसने उन्हें सब बाहर निकाल दिया, और बच्ची के पिता और माता और अपने साथियों को लेकर उस कमरे में गया जहाँ बच्ची थी।<sup>41</sup> और बच्ची का हाथ पकड़कर, उसने उससे कहा, "तालिथा, कुम!" (जिसका अनुवाद है, "छोटी लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ जा!").<sup>42</sup> और तुरंत लड़की उठकर चलने लगी, क्योंकि वह बारह साल की थी। और तुरंत वे पूरी तरह से आश्वस्तचित हो गए।<sup>43</sup> और उसने उन्हें सख्त आदेश दिया कि कोई भी इस बारे में न जाने, और उसने उन्हें उसे कुछ खाने के लिए देने को कहा।

**6** यीशु वहाँ से निकलकर ; और उनके बैले उनके पीछे ही लिए।<sup>2</sup> और जब सब्त का दिन आया, तो उन्होंने आराधनालय में उपदेश देना शुरू किया; और बहुत से सुनने वाले चकित होकर कहने लगे, "इस मनुष्य को ये बातें कहाँ से मिलीं, और इसे दी गई यह बुद्धि क्या है, और ये चमत्कार जो इसके हाथों से किए जाते हैं?"<sup>3</sup> क्या यह बढ़दई नहीं है, मरियम का पुत्र और याकूब, योसेस, यहूदा और शमैन का भाई? क्या इसकी बहनें हमारे साथ यहाँ नहीं हैं?" और उन्होंने उससे ठोकर खाई।<sup>4</sup> यीशु ने, "एक भविष्यद्वक्ता का आदर उसके अपने नगर और अपने रिश्टेदारों और अपने घर में छोड़कर कहीं नहीं होता।"<sup>5</sup> और वह वहाँ कोई चमत्कार नहीं कर सका, सिवाय इसके कि उसने कुछ बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।<sup>6</sup> और वह उनके अविश्वास से चकित हुआ। और वह गाँवों में घूम-घूमकर उपदेश देता रहा।

<sup>7</sup> और उसने बारहों को और उन्हें जोड़े-जोड़े भेजने लगा, और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया;<sup>8</sup> और उसने उन्हें आदेश दिया कि वे यात्रा के लिए कुछ भी न लें, सिवाय एक लाठी के—न रोटी, न शैला, न अपनी कमर में पैसा—<sup>9</sup> पर जूते पहरें; और उसने कहा, "दो कुर्ते न पहनें।"<sup>10</sup> और उसने उनसे कहा, "जिस घर में तुम प्रवेश करो, वहाँ तब तक रहो जब तक कि तुम उस नगर से बाहर न निकलो।<sup>11</sup> जो स्थान तुम्हें न

स्वीकारे और न तुम्हारी सुने, वहाँ से निकलते समय अपने पैरों की धूल झाड़ दो, उनके विरुद्ध गवाही के रूप में।"<sup>12</sup> और वे निकलकर प्रवार करने लगे कि लोग मन फिराएँ।<sup>13</sup> और वे बहुत से दुष्टामाओं को निकालते थे और बहुत से बीमारों को तेल लगाकर चंगा करते थे।

14 और राजा हेरोदेस ने इसके बारे में सुना, क्योंकि उसका नाम प्रसिद्ध हो गया था; और लोग कह रहे थे, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मरे हुओं में से जी उठा है, और इसलिए ये शक्तियाँ उसमें काम कर रही हैं।"<sup>15</sup> परंतु कुछ लोग कह रहे थे, "यह एलियाह है।"<sup>16</sup> और कुछ कह रहे थे, "यह एक भविष्यद्वक्ता है, पुराने भविष्यद्वक्ताओं की तरह।"<sup>17</sup> परंतु जब हेरोदेस ने इसके बारे में सुना, तो वह कहता रहा, "यूहन्ना, जिसका मैंने सिर काटा था, वह जी उठा है।"

17 क्योंकि हेरोदेस ने स्वयं लोगों को भेजकर यूहन्ना को गिरफ्तार करवाया और उसे जेल में बंद कर दिया था, हेरोदियास के कारण, जो उसके भाई फिलिप की पत्नी थी, क्योंकि उसने उससे विवाह कर लिया था।<sup>18</sup> क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस से कहता रहा था, "तेरा अपने भाई की पत्नी को रखना उचित नहीं है।"<sup>19</sup> और हेरोदियास उसे मार डालने की इच्छा रखती थी, और ऐसा नहीं कर सकती थी;<sup>20</sup> क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना से डरता था, यह जानते हुए कि वह एक धर्मी और पवित्र व्यक्ति है, और वह उसे सुरक्षित रखता था। और जब वह उसे सुनता, तो बहुत उलझन में पड़ता; फिर भी वह उसे सुनने में आनंदित होता था।

21 एक उपयुक्त दिन आया जब हेरोदेस ने अपने जन्मदिन पर अपने सरदारों, सेनापतियों और गलील के प्रमुख लोगों के लिए भोज दिया;<sup>22</sup> और जब हेरोदियास की बेटी ने आकर नृत्य किया, तो उसने हेरोदेस और उसके भोज के अतिथियों को प्रसन्न किया; और राजा ने लड़की से कहा, "जो कुछ तू चाहे, मुझसे माँग, और मैं तुझे दूँगा।"<sup>23</sup> और उसने उससे शपथ सार्व, "जो कुछ तू मुझसे माँगी, मैं तुझे दूँगा, मेरे राज्य का आधा भी।"<sup>24</sup> और वह बाहर जाकर अपनी माँ से पूछने लगी, "मैं क्या माँगूँ?" और उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर दे।"<sup>25</sup> और यद्यपि राजा बहुत दुखी हुआ, फिर भी अपनी शपथों और अपने भोज के अतिथियों के कारण, वह उसे इंकार करने के लिए तैयार नहीं था।<sup>26</sup> तुरंत राजा ने एक जल्दी को भेजा और उसे उसका सिर लाने का आदेश दिया। और वह

## मरकुस

गया और जेल में उसका सिर काट दिया,<sup>28</sup> और उसका सिर एक थाल में लाकर लड़की को दिया; और लड़की ने उसे अपनी माँ को दे दिया।<sup>29</sup> जब उसके चेलों ने इसके बारे में सुना, तो वे आए और उसका शरीर ले जाकर उसे कब्ज़ में रख दिया।

<sup>30</sup> प्रेरित , और उन्होंने उसे बताया कि उन्होंने क्या-क्या किया और क्या-क्या सिखाया।<sup>31</sup> और उसने, “मुम अकेले किसी सुनसान स्थान पर चलो और थोड़ी देर विश्राम करो।” (क्योंकि बहुत से लोग आ-जा रहे थे, और उन्हें खाने का भी समय नहीं मिला।)<sup>32</sup> और वे नाव में अकेले सुनसान स्थान की ओर चले गए।<sup>33</sup> लोगों ने उन्हें जाते देखा, और बहुतों ने उन्हें पहचान लिया, और वे सब नारों से पैदल दौड़कर वहाँ पहुँच गए और उनसे पहले पहुँच गए।<sup>34</sup> जब यीशु किनारे पर उतरे, तो उन्होंने एक बड़ी भीड़ देखी, और उन्हें उन पर दया आई क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान थे; और उन्होंने उन्हें बहुत सी बातें सिखाई।

<sup>35</sup> और जब बहुत देर हो गई, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, “यह स्थान सुनसान है और अब बहुत देर हो गई है;<sup>36</sup> उन्हें विदा कर दे ताकि वे आसपास के गाँवों और बस्तियों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को खरीद लें।”<sup>37</sup> परंतु उसने उन्हें उत्तर दिया, “तुम उन्हें खाने को दो।” और उन्होंने, “क्या हम दो सौ दीनार की रोटी खरीदकर उन्हें खाने को दें?”<sup>38</sup> परंतु उसने, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर देखो।” और जब उन्होंने पता लगाया, तो, “पाँच, और दो मछलियाँ।”<sup>39</sup> और उसने उन्हें हरे घास पर समूहों में बैठने का आदेश दिया।<sup>40</sup> और वे सैकड़ों और पचासों के समूहों में बैठ गए।<sup>41</sup> और उसने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, और सर्वा की ओर देखकर भोजन की आशीर्वाद दिया और रोटियों को तोड़कर बार-बार चेलों को देता गया कि वे उन्हें लोगों के सामने रखें; और उसने दो मछलियों को भी सबमें बाँट दिया।<sup>42</sup> और सब खाका तृप्त हो गए;<sup>43</sup> और उन्होंने बारह टोकरी भरकर रोटियों के टुकड़े और मछलियाँ उठाई।<sup>44</sup> रोटियाँ खाने वाले पाँच हजार पुरुष थे।

<sup>45</sup> और तुरंत यीशु ने अपने चेलों को नाव में बैठने और अपने से पहले दूसरी ओर, बेतसैदा की ओर जाने के लिए बाध्य किया, जबकि वह भीड़ को विदा कर रहा था।<sup>46</sup> और उन्हें विदा करने के बाद, वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चला गया।<sup>47</sup> जब शाम हुई, तो नाव समुद्र के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था।<sup>48</sup> उन्हें चप्पे चलाते हुए देखकर, क्योंकि हवा उनके विरुद्ध

थी, रात के चौथे पहर में वह , समुद्र पर चलते हुए; और वह उनके पास से आगे बढ़ने की इच्छा रखता था।<sup>49</sup> परंतु जब उन्होंने उसे समुद्र पर चलते देखा, तो वे सोचने लगे कि यह कोई भूत है, और वे चिल्ला उठे;<sup>50</sup> क्योंकि उन्होंने सबने उसे देखा और वे भयभीत हो गए। परंतु तुरंत उसने उनसे बात की ओर , “धैर्य रखो; यह मैं हूँ, डरो मत।”<sup>51</sup> तब वह उनके साथ नाव में चढ़ गया, और हवा थम गई; और वे अत्यंत चकित हो गए,<sup>52</sup> क्योंकि उन्होंने रोटियों के चमकार से कोई समझ प्राप्त नहीं की थी, बल्कि उनके हृदय कठोर हो गए थे।

<sup>53</sup> जब वे पार हो गए, तो वे गत्रेसरत के तट पर आए, और किनारे पर ठहर गए।<sup>54</sup> और जब वे नाव से बाहर निकले, तो तुरंत लोगों ने उसे पहचान लिया,<sup>55</sup> और वे उस पूरे क्षेत्र में दौड़ गए, और जहाँ कहीं उन्होंने सुना कि वह है, वहाँ बीमारों को खाटों पर ले जाने लगे।<sup>56</sup> और जहाँ कहीं वह गाँवों, नगरों, या देहातों में प्रवेश करता, वे बीमारों को बाजारों में लिटा देते, और उससे विनती करते कि वे केवल उसके वस्त के किनारे को छु लें; और जितनों ने उसे छुआ, वे सब चंगे हो गए।

**7** फरीसी और कुछ शास्त्री यरूशलेम से आकर उसके पास इकट्ठे हुए।<sup>2</sup> और उन्होंने देखा कि उसके कुछ चेले अपवित्र हाथों से, अर्थात् बिना धोई रोटी खा रहे हैं।<sup>3</sup> (क्योंकि फरीसी और सब यूदी जब तक अपने हाथों को अच्छी तरह न धो लें, नहीं खाते, इस प्रकार वे पुरखाओं की परंपरा को दृढ़ता से पकड़े रहते हैं;<sup>4</sup> और जब वे बाजार से आते हैं, तो बिना स्नान किए नहीं खाते; और कई अन्य बातें भी हैं, जिन्हें उन्होंने परंपरा के रूप में दृढ़ता से पकड़ा है, जैसे कि प्यालों, घड़ों, और तांबे के बर्टनों का धोना।)<sup>5</sup> तब फरीसियों और शास्त्रियों ने उससे पूछा, “तेरे चेले पुरखाओं की परंपरा के अनुसार क्यों नहीं चलते, बल्कि अपवित्र हाथों से रोटी खाते हैं?”<sup>6</sup> उसने उनसे कहा, “यशायाह ने तुम्हारे जैसे कपटी लोगों के विषय में ठीक भविष्यवाणी की, जैसा लिखा है:

‘यह लोग हौंठोंता से मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे द्वारा है।’<sup>7</sup> और व्यर्थ में वे मेरी उपासना करते हैं, मतुष्ठों की आज्ञाओं को उपदेश के रूप में सिखाते हैं।

<sup>8</sup> तुम परमेश्वर की आज्ञा को छोड़कर मनुष्यों की परंपरा को पकड़े रहते हो।”<sup>9</sup> वह उनसे यह भी कह रहा था, “तुम अपनी परंपरा को बनाए रखने के लिए परमेश्वर की आज्ञा को अच्छी तरह से छोड़ देते हो।”<sup>10</sup> क्योंकि मूसा ने कहा, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर कर;

## मरकुस

और, ‘जो कोई पिता या माता के विषय में बुरा बोले, वह अवश्य मारा जाएँ; <sup>11</sup> पर तुम कहते हो, ‘यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, “जो कुछ मेरे पास है, जो तुम्हारी सहायता कर सकता है, वह कोरबान है (अर्थात्, परमेश्वर को दिया गया है),” <sup>12</sup> तो तुम उसे अपने पिता या माता के लिए कुछ भी करने की अनुमति नहीं देते; <sup>13</sup> इस प्रकार तुम अपनी परंपरा के द्वारा, जो तुमने सिखाई है, परमेश्वर के वचन को निष्फल कर देते हों; और तुम ऐसी कई बातें करते हों।’

<sup>14</sup> फिर उसने भीड़ को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम सब मेरी सुनो और समझोः <sup>15</sup> कोई भी चीज़ जो व्यक्ति के बाहर से उसके अंदर जाती है, उसे अपवित्र नहीं कर सकती; परंतु जो चीज़ें व्यक्ति के अंदर से निकलती हैं, वही उसे अपवित्र करती हैं।” <sup>16</sup> [यदि किसी के सुनने के कान हों, तो वह सुने।]

<sup>17</sup> और जब वह भीड़ से दूर घर में गया, तो उसके चेले उससे उस दृष्टिंत के बारे में पूछने लगे। <sup>18</sup> उसने उनसे कहा, “क्या तुम भी इतनी समझ नहीं रखते? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ व्यक्ति के बाहर से उसके अंदर जाता है, वह उसे अपवित्र नहीं कर सकता, <sup>19</sup> क्योंकि वह उसके हृदय में नहीं, बल्कि पेट में जाता है और बाहर निकल जाता है?” [इस प्रकार उसने सब खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित किया।] <sup>20</sup> और वह कह रहा था, “जो कुछ व्यक्ति के अंदर से निकलता है, वही उसे अपवित्र करता है।” <sup>21</sup> क्योंकि भीतर से, मनुष्यों के हृदय से, बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, <sup>22</sup> लोभ, दुष्टा, छल, अश्लील व्यवहार, ईर्ष्या, निदा, घर्मड, और मूर्खता आती है। <sup>23</sup> ये सब बुरी बातें भीतर से आती हैं और व्यक्ति को अपवित्र करती हैं।”

<sup>24</sup> यीशु वहां से उठकर सोर के क्षेत्र में गया। और जब वह एक घर में प्रवेश किया, तो वह नहीं चाहता था कि कोई उसे जाने; फिर भी वह छिपा नहीं रह सका। <sup>25</sup> परंतु उसके विषय में सुनकर, एक स्त्री जिसकी छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, तुरंत आई और उसके पैरों पर गिर पड़ी। <sup>26</sup> अब वह स्त्री एक गैर-यहूदी ही, सीरियाई-फोनीशियाई वंश की। और वह बार-बार उससे अपनी बेटी से दुष्टामा को निकालने के लिए कह रही थी। <sup>27</sup> और वह उससे कह रहा था, “पहले बच्चों को तृप्त होने दो, क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं है।” <sup>28</sup> परंतु उसने उत्तर दिया और उससे कहा, “हाँ, प्रभु, परंतु कुत्ते भी मेज के नीचे बच्चों के टुकड़ों से खा लेते हैं।” <sup>29</sup> और उसने उससे कहा, “इस उत्तर के कारण, जाओ; दुष्टामा तुम्हारी बेटी से निकल

गई है।” <sup>30</sup> और जब वह अपने घर लौटी, तो उसने देखा कि बच्ची बिस्तर पर लेटी है और दुष्टामा निकल गई है।

<sup>31</sup> फिर वह सोर के क्षेत्र से निकलकर सिदोन के रास्ते गलील की झील के पास आया, देकापोलिस के क्षेत्र में।

<sup>32</sup> और वे उसके पास एक बहरे व्यक्ति को लाए जो बोलने में कठिनाई करता था, और उहोंने उससे विनती की कि वह उस पर हाथ रखें। <sup>33</sup> और यीशु ने उसे भीड़ से अलग ले जाकर, अपने उंगलियों को उसके कानों में डाला, और थूक कर उसकी जीभ को छुआ; <sup>34</sup> और स्वर्ण की ओर देखकर गहरी सांस ली, और उससे कहा, “एफकथा!” अर्थात्, “खुल जा!” <sup>35</sup> और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की रुकावट ढूर हो गई, और वह साफ-साफ बोलने लगा। <sup>36</sup> और उसने उहोंने किसी को न बताने की आज्ञा दी; परंतु जितना अधिक उसने उहोंने आदेश दिया, उतना ही अधिक वे इसे प्रवारित करते रहे। <sup>37</sup> और वे अत्यंत आश्चर्यव्यक्ति होकर कहने लगे, “उसने सब कुछ अच्छी तरह किया है; वह बहरे को सुनने और गूंगों को बोलने योग्य बनाता है।”

**8** उन दिनों में, जब फिर से एक बड़ी भीड़ थी और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था, यीशु ने अपने चेलों को बुलाया और उनसे कहा, <sup>2</sup> “मूझे इन लोगों पर दया आती है, क्योंकि वे पहले से ही तीन दिनों से मेरे साथ हैं और उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है।” <sup>3</sup>

और यदि मैं उहोंने भूखे उनके घरों को भेज दूँ, तो वे रास्ते में बेहोश हो जाएंगे; और उनमें से कुछ दूर से आए हैं।”

<sup>4</sup> और उसके चेले उससे बोले, “इस वीरान स्थान में कोई भी इन लोगों को तृप्त करने के लिए पर्याप्त रोटी कहां से पाएंगा?” <sup>5</sup> और वह उनसे पूछ रहा था, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” और उहोंने कहा, “सात।” <sup>6</sup> और उसने भीड़ की जमीन पर बैठने का निर्देश दिया; और सात रोटियाँ लेकर, उसने ध्यायाद दिया और उहोंने तोड़ा, और उहोंने अपने चेलों को देते रहे कि वे सेवा करें, और उहोंने उहोंने भीड़ को परोसा। <sup>7</sup> उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ भी थीं; और जब उसने उहोंने आशीर्वाद दिया, तो उसने चेलों से कहा कि वे इहोंने भी परोसें। <sup>8</sup> और उहोंने खाया और तृप्त हो गए; और उहोंने टूटे टुकड़ों में से जो बचा था, सात बड़े टोकरे भर लिए। <sup>9</sup> लगभग चार हजार पुरुष वहाँ थे; और उसने उहोंने विदा किया। <sup>10</sup> और तुरंत वह अपने चेलों के साथ नाव में चढ़ गया और दलमनूथा के क्षेत्र में आया।

<sup>11</sup> और फरीसी बाहर आए और उससे बहस करने लगे, उससे स्वर्ण से एक चिन्ह की मांग करने लगे, ताकि उसे परख सकें। <sup>12</sup> अपने आत्मा में गहराई से आह भरते हुए,

## मरकुस

उसने कहा, "यह पीढ़ी एक चिन्ह क्यों मांगती है? सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, इस पीढ़ी को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।"<sup>13</sup> और उन्हें छोड़कर, वह फिर से नाव में चढ़ गया और दूसरी ओर चला गया।

<sup>14</sup> और चेलों ने रोटी लेना भूल गए थे, और उनके पास नाव में एक से अधिक रोटी नहीं थी। <sup>15</sup> और वह उन्हें अदेश दे रहा था, "सावधान रहो! फरीसियों के खमीर और हेरोड के खमीर से बचो।"<sup>16</sup> और वे आपस में चर्चा करने लगे कि उनके पास रोटी नहीं है। <sup>17</sup> और यीशु यह जानकर, उनसे कहने लगे, "तुम इस बात की चर्चा क्यों कर रहे हो कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अभी तक समझते नहीं हो? क्या तुम्हारे दिल अभी भी कठोर है?" <sup>18</sup> अंखें होते हुए भी क्या तुम नहीं देखते? और कान होते हुए भी क्या तुम नहीं सुनते? और क्या तुम याद नहीं करते, <sup>19</sup> जब मैंने पांच हजार के लिए पांच रोटियाँ तोड़ीं, तो तुमने कितने टोकरे टूटे टुकड़ों से भरे थे?" उन्होंने उससे कहा, "बाहर हूँ।"<sup>20</sup> जब मैंने चार हजार के लिए सात तोड़ीं, तो तुमने कितने बड़े टोकरे टूटे टुकड़ों से भरे थे?" और उन्होंने कहा, "सात।"<sup>21</sup> और वह उनसे कह रहा था, "क्या तुम अभी तक नहीं समझते?"

<sup>22</sup> और वे बेथैदा आए। और कुछ लोग एक अंधे व्यक्ति को यीशु के पास लाए और उससे उसे छुने की विनती की। <sup>23</sup> अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़कर, वह उसे गाँव के बाहर ले गया; और उसकी अँखों में धूकने के बाद और उस पर हाथ रखकर, उसने उससे पूछा, "क्या तुम कुछ देखते हो?" <sup>24</sup> और उसने ऊपर देखा और कहा, "मैं लोगों को देखता हूँ, क्योंकि मैं उन्हें पेड़ों की तरह चलते हुए देखता हूँ।"<sup>25</sup> फिर उसने फिर से उसकी अँखों पर हाथ रखा; और उसने थान से देखा और बहात हो गया, और सब कुछ स्पष्ट रूप से देखने लगा। <sup>26</sup> और उसने उसे उसके घर भेज दिया, कहकर, "गाँव में भी मत जाना।"

<sup>27</sup> यीशु अपने चेलों के साथ कैसिरिया फिलिप्पी के गाँवों की ओर गए; और रास्ते में वह अपने चेलों से पूछ रहा था, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" <sup>28</sup> उन्होंने उससे कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; और कुछ कहते हैं एलियाह, परंतु कुछ, भविष्यद्वक्ताओं में से एक।"<sup>29</sup> और उसने उनसे फिर पूछा: "परंतु तुम स्वयं क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया और उससे कहा, "तुम मसीह है।"<sup>30</sup> और उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में किसी को न बताएं।

<sup>31</sup> और उसने उन्हें सिखाना शुरू किया कि मनुष्य के पुत्र को बहुत सी बातें सहनी होंगी, और पुरनियों, मुख्य याजकों, और शास्त्रियों द्वारा अस्वीकृत होना होगा, और मारा जाएगा, और तीन दिनों के बाद मृतकों में से जी उठेगा। <sup>32</sup> और वह इस बात को स्पष्ट रूप से कह रहा था। और पतरस उसे अलग ले जाकर उसे डांटने लगा। <sup>33</sup> परंतु उसने मुड़कर अपने चेलों को देखकर, पतरस को डांटा और कहा, "मेरे पीछे हट जा, शैतान; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर मन नहीं लगाता, परंतु मनुष्य की बातों पर।"

<sup>34</sup> और उसने भीड़ को अपने चेलों के साथ बुलाया, और उनसे कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो उसे स्वयं का इनकार करना होगा, अपनी दूसरों को उठाना होगा, और मेरे पीछे आना होगा।" <sup>35</sup> क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहता है, वह उसे खो देगा, परंतु जो कोई मेरे लिए और सुसमाचार के लिए अपनी जान खो देता है, वह उसे बचा लेगा। <sup>36</sup> क्योंकि यदि कोई व्यक्ति सारे संसार को प्राप्त कर ले, और अपनी आत्मा को खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? <sup>37</sup> क्योंकि कोई व्यक्ति अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है? <sup>38</sup> क्योंकि जो कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मुझसे और मेरे वरचनों से लजित होता है, मनुष्य का पुत्र भी उससे लजित होगा जब वह अपने पिता की महिमा में पवित्र सर्वद्वितीयों के साथ आएगा।"

**9** और यीशु उनसे कह रहे थे, "सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ लोग ऐसे हैं जो मृत्यु का स्वाद नहीं खण्डे जब तक वे परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते हुए न देख ले।"

<sup>2</sup> और छह दिन बाद, यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया, और उन्हें अकेले एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। और उनके सामने उनका रूपांतर हुआ;<sup>3</sup> और उनके वस्त्र चमकदार और अत्यधिक सफेद हो गए, जैसे पृथ्वी पर कोई धोबी उन्हें सफेद नहीं कर सकता।<sup>4</sup> और एलियाह उनके साथ मूसा के साथ प्रकट हुए; और वे यीशु से बातें कर रहे थे।<sup>5</sup> पतरस ने उत्तर दिया और यीशु से कहा, "गुरु, यह अच्छा है कि हम यहाँ हैं; चलो तीन तंबू बनाएं—एक आपके लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलियाह के लिए।"<sup>6</sup> क्योंकि वह नहीं जानता था कि कैसे उत्तर दे, क्योंकि वे भयभीत हो गए थे।<sup>7</sup> तब एक बादल बना, जो उन्हें ढक लिया, और बादल से एक आवाज आई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसे सुनो!"<sup>8</sup> और अचानक उन्होंने चारों ओर देखा और उनके साथ कोई और नहीं देखा, केवल यीशु अकेला।

## मरकुस

<sup>९</sup> जब वे पहाड़ से नीचे आ रहे थे, तो उसने उन्हें आदेश दिया कि जो कुछ उन्होंने देखा है उसे किसी से न कहें, जब तक कि मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे।<sup>१०</sup> उन्होंने उस कथन को पकड़ लिया, और आपस में चर्चा करने लगे कि मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है।<sup>११</sup> और उन्होंने उससे पूछा, "शास्त्री क्यों कहते हैं कि पहले एलियाह आना चाहिए?"<sup>१२</sup> और उसने उनसे कहा, "एलियाह सचमुच पहले आता है और सब कुछ बहाल करता है।" और फिर मनुष्य के पुत्र के बारे में यह कैसे लिखा है कि वह बहुत कुछ सहन करेगा और तिरस्कार किया जाएगा?<sup>१३</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि एलियाह सचमुच आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो चाहा किया, जैसा कि उसके बारे में लिखा है।"

<sup>१४</sup> जब वे शिष्यों के पास लौटे, तो उन्होंने उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखी, और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे थे।<sup>१५</sup> और तुरंत, जब पूरी भीड़ ने उसे देखा, तो वे चकित हो गए और उसे अभिवादन करने के लिए दौड़ पड़े।<sup>१६</sup> और उसने उनसे पूछा, "तुम उनके साथ क्या विवाद कर रहे हो?"<sup>१७</sup> और भीड़ में से एक व्यक्ति ने उसे उत्तर दिया, "युरु, मैं आपके पास अपने पुत्र को लाया, क्योंकि उसमें एक आत्मा है जो उसे बोलने में असमर्थ बनाती है,"<sup>१८</sup> और जब भी वह उसे पकड़ती है, तो उसे जमीन पर पटक देती है, और वह मुँह से झाग निकालता है, दाँत पीसता है, और अकड़ जाता है। और मैंने आपके शिष्यों से कहा कि उसे निकाल दें, पर वे ऐसा नहीं कर सके।"<sup>१९</sup> और उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हारे साथ सहन करूँगा? उसे मेरे पास लाओ।"<sup>२०</sup> और वे लड़के को उसके पास लाए। जब उसने उसे देखा, तो आत्मा ने तुरंत उसे मरोड़ में डाल दिया, और वह जमीन पर गिरकर लौटने लगा और मुँह से झाग निकालने लगा।<sup>२१</sup> और उसने उसके पिता से पूछा, "यह कब से उसके साथ हो रहा है?" और उसने कहा, "बचपन से।"<sup>२२</sup> यह उसे अवक्षर आग में और पानी में डालकर भार डालने की कोशिश करता है। पर यदि आप कुछ कर सकते हैं, तो हम पर दया करें और हमारी सहायता करें।"<sup>२३</sup> पर यीशु ने उससे कहा, "यदि आप कर सकते हैं? जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है।"<sup>२४</sup> तुरंत लड़के के पिता ने चिल्लाकर कहा, "मैं विश्वास करता हूँ; मेरी अविश्वास में सहायता करें।"<sup>२५</sup> जब यीशु ने देखा कि भीड़ तेजी से इकट्ठा हो रही है, तो उसने अशुद्ध आत्मा को डाटा, उससे कहा, "हे गूँजी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उससे बाहर निकल और उसमें फिर कभी प्रवेश न कर।"<sup>२६</sup> और चिल्लाने और उसे भयंकर मरोड़

में डालने के बाद, वह बाहर निकल गई, और लड़का इतना अधिक मृतक के समान हो गया कि उनमें से अधिकांश ने कहा, "वह मर गया है!"<sup>२७</sup> पर यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया।<sup>२८</sup> जब वह घर में आया, तो उसके शिष्यों ने उससे निजी तौर पर पूछा, "हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?"<sup>२९</sup> और उसने उनसे कहा, "यह प्रकार के वेल प्रार्थना के द्वारा ही बाहर आ सकता है।"

<sup>३०</sup> और वहाँ से वे बाहर निकलते और गलीलिया से होकर जाने लगे, और वह नहीं चाहता था कि कोई इसके बारे में जाने।<sup>३१</sup> क्योंकि वह अपने शिष्यों को सिखा रहा था और उनसे कह रहा था, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और जब वह मारा जाएगा, तो वह तीन दिन बाद जी उठेगा।"<sup>३२</sup> पर वे इस कथन को नहीं समझे, और वे उससे पूछने से डरते थे।

<sup>३३</sup> और वे कफरनहूम में आए; और जब वह घर में था, तो उसने उनसे पूछा, "तुम रास्ते में क्या चर्चा कर रहे थे?"<sup>३४</sup> पर वे चुप रहे, क्योंकि रास्ते में वे एक-दूसरे से चर्चा कर रहे थे कि उनमें से कौन सबसे बड़ा है।<sup>३५</sup> और बैठकर, उसने बारह को बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई पहले होना चाहता है, तो वह सबका अतिम और सबका सेवक होगा।"<sup>३६</sup> और उसने एक बच्चे को लिया और उसे उनके बीच में खड़ा किया, और उसे अपनी बाँहों में लेकर उनसे कहा,<sup>३७</sup> "जो कोई मेरे नाम में ऐसे एक बच्चे को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है वह मुझे नहीं, पर उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

<sup>३८</sup> यूहन्ना ने उससे कहा, "युरु, हमने किसी को आपके नाम में दुष्टाओं को निकालते देखा, और हमने उसे रोकने की कोशिश की क्योंकि वह हमारे साथ नहीं चल रहा था।"<sup>३९</sup> पर यीशु ने कहा, "उसे मत रोको, क्योंकि कोई भी जो मेरे नाम में चमलकार करेगा, वह तुरंत बाद में मेरे बारे में बुरा नहीं बोल सकेगा।"<sup>४०</sup> क्योंकि जो हमारे खिलाफ नहीं है वह हमारे लिए है।<sup>४१</sup> क्योंकि जो कोई तुम्हें मेरे नाम में पीने के लिए पानी का प्याला देगा, क्योंकि तुम मसीह के हो, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, वह अपना प्रतिफल खोएगा नहीं।"

<sup>४२</sup> "जो कोई इन छोटे विश्वासियों में से एक को ठोकर खिलाता है, उसके लिए यह अच्छा होगा कि उसके गले में एक भारी चक्की का पथर लटकाया जाए, और उसे समुद्र में फेंक दिया जाए।"<sup>४३</sup> और यदि तुम्हारा हाथ तुम्हें

## मरकुस

पाप करने के लिए प्रेरित करता है, तो उसे काट डालो; यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुम जीवन में अपंग होकर प्रवेश करो, बजाय इसके कि दो हाथों के साथ नरक में जाओ, उस अग्नि में जो बुझाई नहीं जा सकती।<sup>44</sup> [जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता, और अग्नि बुझाई नहीं जाती।]<sup>45</sup> और यदि तुम्हारा पैर तुम्हें पाप करने के लिए प्रेरित करता है, तो उसे काट डालो; यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुम जीवन में लंगड़ा होकर प्रवेश करो, बजाय इसके कि दो पैरों के साथ नरक में फेंके जाओ।<sup>46</sup> [जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता, और अग्नि बुझाई नहीं जाती।]<sup>47</sup> और यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप करने के लिए प्रेरित करती है, तो उसे निकाल फेंको; यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुम एक आँख के साथ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करो, बजाय इसके कि दो आँखों के साथ नरक में फेंके जाओ।<sup>48</sup> जहाँ

उनका कीड़ा नहीं मरता, और अग्नि बुझाई नहीं जाती।

<sup>49</sup> “क्योंकि हर कोई आग से नमकीन किया जाएगा।<sup>50</sup> नमक अच्छा है; पर यदि नमक बेस्वाद हो जाए, तो तुम उसे किससे नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और एक-दूसरे के साथ शांति में रहो।”

**10** वहाँ से निकलकर, यीशु यहूदिया के क्षेत्र और यरदन के पार आए; और भीड़ फिर से उनके पास इकट्ठा हुई, और, जैसा कि उनकी आदत थी, उन्होंने उन्हें फिर से सिखाना शुरू किया।<sup>2</sup> और कुछ फरीसी यीशु के पास आए, उन्हें प्रखेने के लिए, और उनसे पूछने लगे कि क्या किसी व्यक्ति के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना उचित है।<sup>3</sup> और उन्होंने उनसे उत्तर दिया और कहा, “मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी?”<sup>4</sup> उन्होंने कहा, “मूसा ने एक व्यक्ति को तलाक का प्रमाण पत्र लिखने और उसे भेजने की अनुमति दी।”<sup>5</sup> परन्तु यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण उसने तुम्हें यह आज्ञा लिखी।<sup>6</sup> परन्तु सृष्टि के आरम्भ से, परमेश्वर ने उहँने नर और नारी बनाया।<sup>7</sup> इसी कारण एक व्यक्ति अपने पिता और माता को छोड़ देगा,<sup>8</sup> और दोनों एक शरीर होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं, बल्कि एक शरीर हैं।<sup>9</sup> इसलिए, जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई व्यक्ति अलग न करे।”

<sup>10</sup> और घर में शिष्य फिर से इस विषय में उनसे पूछने लगे।<sup>11</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है और दूसरी स्त्री से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है;<sup>12</sup> और यदि वह

स्वयं अपने पति को तलाक देती है और किसी अन्य पुरुष से विवाह करती है, तो वह व्यभिचार करती है।”

<sup>13</sup> और वे बच्चों को उनके पास ला रहे थे ताकि वह उन्हें छुएं; परन्तु शिष्यों ने उन्हें डांटा।<sup>14</sup> परन्तु जब यीशु ने यह देखा, तो वह क्रोधित हुए और उनसे कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो; उन्हें मना मत करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है।<sup>15</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता, वह उसमें कभी प्रवेश नहीं करेगा।”<sup>16</sup> और उन्होंने उन्हें अपनी बाहों में लिया और उन्हें आशीर्वाद देना शुरू किया, उन पर अपने हाथ रखे।

<sup>17</sup> जब वह यात्रा पर निकल रहे थे, तो एक व्यक्ति उनके पास दौड़कर आया और उनके सामने घुटने टेककर पूछा, “अच्छे शिक्षक, मैं क्या करूँ ताकि अनन्त जीवन का वारिस बन सकूँ?”<sup>18</sup> परन्तु यीशु ने उससे कहा, “तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो? केवल परमेश्वर ही अच्छा है।

<sup>19</sup> तुम आज्ञाओं को जानते हो: ‘हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, द्युती गवाही न देना, खोखा न देना, अपने पिता और माता का सम्मान करना।’<sup>20</sup> और उसने उनसे कहा, “शिक्षक, मैंने अपनी जवानी से ये सब बातें मारी हैं।”<sup>21</sup> उसे देखकर, यीशु ने उससे प्रेम दिखाया और उससे कहा, “तुम एक बात की कमी है: जाओ और जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच दो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे पास सर्वग में खजाना होगा; और आओ, मेरा अनुसरण करो।”<sup>22</sup> परन्तु वह इन शब्दों से बहुत दुखी हुआ, और वह शोक करता हुआ चरा गया; क्योंकि वह बहुत संपत्ति का मालिक था।

<sup>23</sup> और यीशु ने चारों ओर देखकर, अपने शिष्यों से कहा, “जो धनवान हैं उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन होगा!”<sup>24</sup> शिष्य उनके शब्दों से चकित थे। परन्तु यीशु ने फिर से उत्तर दिया और उनसे कहा, “बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! <sup>25</sup> एक ऊंट के लिए सुई के छेद से गुजरना आसान है बजाय इसके कि एक धनवान व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे।”<sup>26</sup> और वे और भी अधिक चकित हुए, और उनसे कहा, “तो फिर कौन बच सकता है?”<sup>27</sup> उन्हें देखकर, यीशु ने कहा, “मनुष्यों के लिए यह असंभव है, परन्तु परमेश्वर के साथ नहीं; क्योंकि परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है।”

<sup>28</sup> पतरस ने उनसे कहना शुरू किया, “देखो, हमने सब कुछ छोड़ दिया है और आपका अनुसरण किया है।”<sup>29</sup> यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है

## मरकुस

जिसने घर, या भाई, या बहन, या माता, या पिता, या बच्चे, या खेत मेरे और सुसमाचार के लिए छोड़ा हो, <sup>30</sup> कि वह इस वर्धमान सुगा में सौ गुना अधिक न पाए—घर, भाई और बहन, माताएं, बच्चे, और खेत, सताव के साथ—और आने वाले युग में, अनन्त जीवन। <sup>31</sup> परन्तु बहुत से जो पहले हैं, वे अंतिम होंगे, और अंतिम, पहले।”

<sup>32</sup> अब वे यरूशलेम की ओर जा रहे थे, और यीशु उनके आगे चल रहे थे; और वे चकित थे, और जो लोग अनुसरण कर रहे थे वे भयभीत थे। और फिर उन्होंने बाहर की अलग ले जाकर उन्हें बताना शुरू किया कि उनके साथ क्या होने वाला है, <sup>33</sup> कहते हुए, “देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शासियों के हाथों सौंपा जाएगा; और वे उसे मनुष्य के लिए दंडित करेंगे और उसे अच्यजातियों के हाथों सौंप देंगे। <sup>34</sup> और वे उसका उपहास करेंगे, और उस पर धूंकेंगे, और उसे कोड़े मारेंगे, और उसे मार डालेंगे; और तीन दिन बाद वह मृतकों में से जी उठेगा।”

<sup>35</sup> याकूब और यूहन्ना, जब्दी के दो पुत्र, यीशु के पास आए, कहते हुए, “शिक्षक, हम चाहते हैं कि आप हमारे लिए जो कुछ हम आपसे मांगें, वह करें।” <sup>36</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?” <sup>37</sup> उन्होंने उनसे कहा, “हमें यह अनुग्रह दें कि हम आपकी महिमा में, एक आपके दाहिने और एक आपके बाएं बैठें।” <sup>38</sup> परन्तु यीशु ने उनसे कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांग रहे हो? क्या तुम वह यात्रा पी सकते हो जो मैं पीता हूँ, या उस बपतिस्मा से बपतिस्मा ले सकते हो जिससे मैं बपतिस्मा लेता हूँ?” <sup>39</sup> उन्होंने उनसे कहा, “हम सक्षम हैं।” और यीशु ने उनसे कहा, “जो यात्रा मैं पीता हूँ वह तुम पीओगे; और तुम उस बपतिस्मा से बपतिस्मा लोगे जिससे मैं बपतिस्मा लेता हूँ।” <sup>40</sup> परन्तु मेरे दाहिने या बाएं बैठना मेरा देने का नहीं है, बल्कि यह उन लोगों के लिए है जिनके लिए यह तैयार किया गया है।”

<sup>41</sup> यह सुनकर, अन्य दस याकूब और यूहन्ना से क्रीढ़ित होने लगे। <sup>42</sup> उन्हें अपने पास बुलाकर, यीशु ने उनसे कहा, “तुम जानते हो कि जो अच्यजातियों के शासक माने जाते हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं; और उनके उच्च पदों पर लोग उन पर अधिकार करते हैं। <sup>43</sup> परन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है; बल्कि, जो कोई तुम्हारे बीच प्रमुख बनना चाहता है वह तुम्हारा सेवक होगा; <sup>44</sup> और जो कोई तुम्हारे बीच पहला बनना चाहता है वह सबका दास होगा। <sup>45</sup> क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करने के

लिए नहीं आया, बल्कि सेवा करने के लिए, और बहुतों के लिए अपनी जान को फिरौती देने के लिए।”

<sup>46</sup> फिर वे यीशुहो आए। और जब वह यीशुहो से अपने शिष्यों और बड़ी भीड़ के साथ निकल रहे थे, तो तिर्माई का पुत्र, बरतिमाई नामक एक अंधा भिखारी, सङ्क के किनारे बैठा था। <sup>47</sup> जब उसने सुना कि यह यीशु नासरी है, तो वह चिल्लाने लगा और कहने लगा, “यीशु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया करें!” <sup>48</sup> बहुत से लोग उसे चुप रहने के लिए कड़ी चेतावनी दे रहे थे, परन्तु वह और भी अधिक चिल्लाता रहा, “दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया करें!” <sup>49</sup> और यीशु रुक गए और कहा, “उसे यहाँ बुलाओ।” तो उन्होंने उस अंथे व्यक्ति को बुलाया, उससे कहा, “साहस करो, खड़े हो जाओ! वह तुम्हें बुला रहा है।” <sup>50</sup> और अपनी चादर फेंककर, वह कूदकर यीशु के पास आया। <sup>51</sup> और यीशु ने उससे उत्तर दिया और कहा, “तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?” और उस अंथे व्यक्ति ने उनसे कहा, “रब्बी, मैं अपनी दृष्टि फिर से प्राप्त करना चाहता हूँ।” <sup>52</sup> और यीशु ने उससे कहा, “जाओ; तुम्हारे विक्षास ने तुम्हें अच्छा कर दिया है।” और तुरंत उसने अपनी दृष्टि प्राप्त की और सङ्क क पर उनका अनुसरण करने लगा।

**11** जब वे यरूशलेम के निकट बेथफगे और बेथानी के पास जैतून पर्वत के समीप पहुँचे, तो उसने अपने चेलों में से दो को भेजा, <sup>2</sup> और उनसे कहा, “सामने के गाँव में जाओ, और जैसे ही तुम उसमें प्रवेश करोगे, तुम्हें एक गधा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर कभी कोई नहीं बैठता; उसे खोलकर यहाँ ले आओ।” <sup>3</sup> और यदि कोई तुमसे कहे, “तुम यह क्यों कर रहे हो?” तो कहो, “प्रभु को इसकी आवश्यकता है;” और वह तुरंत इसे यहाँ भेज देगा। <sup>4</sup> वे चले गए और दरवाजे के बाहर गती में एक गधा बंधा हुआ पाया; और उन्होंने उसे खोल दिया। <sup>5</sup> और कुछ खड़े हुए लोग उनसे कहने लगे, “तुम यह क्या कर रहे हो, गधे को खोल रहे हो?” <sup>6</sup> और उन्होंने उनसे वही कहा जैसा यीशु ने कहा था, और उन्होंने उन्हें अनुमति दी। <sup>7</sup> वे गधे को यीशु के पास लाए और उस पर अपने वस्त्र डाले; और वह उस पर बैठ गया। <sup>8</sup> और बहुत से लोगों ने अपने वस्त्र मार्फ पर बिछा दिए, और दूसरों ने खेतों से काटी हुई पत्तेदार डालियाँ बिछाईं। <sup>9</sup> और जो आगे जा रहे थे और जो पीछे आ रहे थे, वे चिल्ला रहे थे:

“होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।  
धन्य है हमारे पिता दाऊद का आने वाला राज्य;  
आकाश में होशाना!”

## मरकुस

<sup>11</sup> और यीशु यरूशलेम में प्रवेश किया और मन्दिर क्षेत्र में आया; और सब कुछ देखकर, वह बारहों के साथ बेथानी के लिए चला गया, क्योंकि पहले ही देर हो चुकी थी।

<sup>12</sup> अगले दिन, जब वे बेथानी से निकले, तो वह भूखा हुआ। <sup>13</sup> दूर से एक अंजीर का पेड़ पत्तों से लादा हुआ देखकर, वह यह देखने गया कि शायद उसे उस पर कुछ मिले; और जब वह उसके पास पहुँचा, तो उसने केवल पते ही पाए, क्योंकि अंजीरों का मौसम नहीं था।  
<sup>14</sup> और उसने उससे कहा, "तुझ पर फिर कभी कोई फल न खाए!" और उसके चेले सुन रहे थे।

<sup>15</sup> फिर वे यरूशलेम आए। और वह मन्दिर क्षेत्र में प्रवेश किया और उन लोगों को बाहर निकालेन लगा जो मन्दिर के मैदान में बैठते और खरीदते थे, और उसने मुद्रा बदलने वालों की मेजों और कबूलगर बेचने वालों की कुर्सियों को उलट दिया;<sup>16</sup> और वह किसी की भी मन्दिर के मैदान से सामान ले जाने की अनुमति नहीं देता था।  
<sup>17</sup> और वह उन्हें सिखाने और कहने लगा, "क्या यह नहीं लिखा है: मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा?" पर तुमने इसे डाकूओं की गुफा बना दिया है।<sup>18</sup> और मुख्य याजक और शास्त्री यह सुनकर, उसे मार डालने का उपाय करने लगे; क्योंकि वे उससे डरते थे, क्योंकि सारी भीड़ उसकी शिक्षा से चकित थी।<sup>19</sup> और जब भी शाम होती, वे नगर छोड़ देते।

<sup>20</sup> जब वे सुबह के समय जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि अंजीर का पेड़ जड़ से सूख गया है।<sup>21</sup> और पतरस ने याद किया और उससे कहा, "रब्बि, देखो, वह अंजीर का पेड़ जिसे तूने शाप दिया था, सूख गया है!"<sup>22</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "परमेश्वर पर विश्वास रखो।<sup>23</sup> सच में तुमसे कहता हूँ, जो कोई इस पहाड़ से कहेगा, 'उठ और समुद्र में फेंका जा,' और अपने दिल में संदेह नहीं करेगा, पर विश्वास करेगा कि जो वह कहता है वह होने वाला है, तो वह उसके लिए हो जाएगा।<sup>24</sup> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, जिन सब बातों के लिए तुम प्रार्थना करते और मांगते हो, विश्वास करो कि तुमने उन्हें प्राप्त कर लिया है, और वे तुम्हारी होंगी।<sup>25</sup> और जब भी तुम खड़े होकर प्रार्थना करते हो, यदि तुम्हारे पास किसी के खिलाफ कुछ है, तो क्षमा करो, ताकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा करे।<sup>26</sup> [पर यदि तुम क्षमा नहीं करते, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा नहीं करेगा।]

<sup>27</sup> और वे फिर से यरूशलेम आए। और जब वह मन्दिर क्षेत्र में चल रहा था, मुख्य याजक, शास्त्री, और बुजुर्ग उसके पास आए,<sup>28</sup> और उससे कहने लगे, "तु ये काम किस अधिकार से करता है, या किसने तुझे ये अधिकार दिया है कि तु ये काम करे?"<sup>29</sup> पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, और तुम मुझे उत्तर दो, फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।"<sup>30</sup> क्या यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था, या मनुष्यों से? मुझे उत्तर दो।"<sup>31</sup> वे आपस में सौचने लगे, "यदि हम कहें, स्वर्ग से; तो वह कहेगा, फिर तुमने उस पर विश्वास करो नहीं किया?"<sup>32</sup> पर हम कहें, मनुष्यों से?"—वे लोगों से डरते थे, क्योंकि वे सब यूहन्ना को सच्चा नवी मानते थे।<sup>33</sup> यीशु को उत्तर देते हुए, उन्होंने कहा, "हम नहीं जानते!" और यीशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।"

**12** और उसने उनसे दृष्टांतों में बात करना शुरू किया: "एक अदमी ने एक दाख की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाड़ लगाई, और अंगूर के रस के लिए एक कुंड खोदा और एक मीनार बनाई, और उसने इसे अंगूर के बागवानों को किराए पर दिया और यात्रा पर चला गया।<sup>2</sup> फसल के समय उसने एक दास को अंगूर के बागवानों के पास भेजा, ताकि वह अंगूर के बागवानों से दाख की बारी का कुछ फल प्राप्त कर सके।<sup>3</sup> लेकिन उन्होंने उसे पकड़ लिया, उसे पीटा, और उसे खाली हाथ वापस भेज दिया।<sup>4</sup> फिर उसने उन्हें एक और दास भेजा, और उन्होंने उसके सिर पर चोट पहुँचाई, और उसे अपमानित किया।<sup>5</sup> और उसने एक और भेजा, और उसे उन्होंने मार डाला; इसी प्रकार कई औरों के साथ: कुछ को पीटा और कुछ को मार डाला।<sup>6</sup> उसके पास भेजने के लिए एक और था, एक प्रिय पुत्र, उसने उसे अंत में उनके पास भेजा, यह कहते हुए, वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।<sup>7</sup> लेकिन उन अंगूर के बागवानों ने एक-दूसरे से कहा, "यह उत्तराधिकारी है; आओ, हम उसे मार डालें, और विरासत हमारी हो जाएगी!"<sup>8</sup> और उन्होंने उसे पकड़ लिया और मार डाला, और उसे दाख की बारी से बाहर फेंक दिया।<sup>9</sup> दाख की बारी का मालिक क्या करेगा? वह आएगा और अंगूर के बागवानों को मार डालेगा, और दाख की बारी को दूसरों को दे देगा।<sup>10</sup> क्या तुमने इस शास्त्र को नहीं पढ़ा: एक पर्याप्त जिसे राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य पत्तर बन गया है;<sup>11</sup> यह प्रभु की ओर से खुआ है, और यह हमारी आँखों में अद्भुत है?"<sup>12</sup> और वे उसे पकड़ने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी वे भीड़ से डरते थे, क्योंकि उन्होंने समझा कि उसने यह दृष्टांत उनके

## मरकुस

खिलाफ कहा था। और इसलिए वे उसे छोड़कर चले गए।

<sup>13</sup> फिर उन्होंने उसके पास भेजा ताकि वे उसे किसी कथन में फँसा सकें। <sup>14</sup> वे आए और , "गुरु, हम जानते हैं कि आप सत्यवादी हैं और किसी की परवाह नहीं करते; क्योंकि आप किसी के प्रति पक्षपाती नहीं हैं, बल्कि आप ईश्वर के मार्ग को सत्य में सिखाते हैं। क्या कैसर को कर देना उचित है, या नहीं? <sup>15</sup> हमें देना चाहिए या नहीं देना चाहिए?" लेकिन वह, उनकी कपटता को जानकर, , "तुम मुझे क्यों परख रहे हो? मुझे एक दीनार लाओ ताकि मैं देख सकूँ।" <sup>16</sup> और वे एक लाए। और उसने , "यह और लेख है?" और उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" <sup>17</sup> और यीशु ने , "कैसर की चीजें कैसर को दो, और ईश्वर की चीजें ईश्वर को।" और वे उससे अत्यंत चिकित थे।

<sup>18</sup> कुछ सदूकी (जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है) , और उससे प्रश्न करने लगे, यह कहते हुए, <sup>19</sup> "गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा कि यदि किसी व्यक्ति का भाई मर जाए और पती छोड़ जाए, और कोई संतान न छोड़े, तो उसका भाई उस पती से विवाह करे और अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करे। <sup>20</sup> सात भाई थे; और पहले ने एक पती ली, और कोई संतान न छोड़कर मर गया। <sup>21</sup> दूसरे ने उससे विवाह किया, और कोई संतान न छोड़कर मर गया; और तीसरे ने भी ऐसा ही किया; <sup>22</sup> और इसी प्रकार सभी सात ने उससे विवाह किया और कोई संतान न छोड़ी। अंत में वह सभी भी मर गई। <sup>23</sup> पुनरुत्थान में, वह किसकी पती होगी? क्योंकि सभी सात ने उसे पती के रूप में लिया था।" <sup>24</sup> यीशु ने , "क्या यह कारण नहीं है कि तुम भ्रमित हो, कि तुम शास्त्रों को नहीं समझते, और न ही ईश्वर की शक्ति को? <sup>25</sup> क्योंकि जब वे मृतकों में से उठते हैं, तो वे न विवाह करते हैं और न विवाह में दिए जाते हैं, बल्कि स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होते हैं। <sup>26</sup> लेकिन इस तथ्य के बारे में कि मृतक फिर से उठते हैं, क्या तुमने मूसा की पुस्तक में नहीं पढ़ा, जलती हुई ज़ङ्गी के बारे में, कैसे ईश्वर ने उससे कहा, मैं अब्राहम का ईश्वर हूँ, इसहाक का ईश्वर हूँ, और याकूब का ईश्वर हूँ? <sup>27</sup> वह मृतकों का ईश्वर नहीं, बल्कि जीवितों का ईश्वर है; तुम बहुत गलत हो।"

<sup>28</sup> एक शास्त्री आया और उन्हें बहस करते हुए सुना, और वह पहचानते हुए कि उसने उन्हें अच्छी तरह से उत्तर दिया है, उससे पूछा, "सबसे प्रमुख आज्ञा कौन सी है?" <sup>29</sup> यीशु ने , "सबसे प्रमुख यह है, सुगो, इसाएल! प्रभु हमारा ईश्वर है, प्रभु एक है; <sup>30</sup> और तू अपने प्रभु

ईश्वर से अपने सारे हृदय से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करेगा।" <sup>31</sup> दूसरी यह है: "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करेगा।" इनसे बड़ी कोई और आज्ञा नहीं है।" <sup>32</sup> और शास्त्री ने , "अच्छा कहा, गुरु; आपने सच कहा है कि वह एक है, और उसके अलावा कोई नहीं है," <sup>33</sup> और उससे अपने सारे हृदय से, और सारी समझ से, और सारी शक्ति से प्रेम करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना, यह सब होमबलियों और बलिदानों से कहीं अधिक है।" <sup>34</sup> जब यीशु ने देखा कि उसने बुद्धिमानी से उत्तर दिया है, तो उसने , "तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है।" और फिर किसी ने भी उससे प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं की।

<sup>35</sup> और यीशु ने मंदिर क्षेत्र में सिखाते हुए कहना शुरू किया, "शास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? <sup>36</sup> दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा में कहा:

'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने हाथ पर बैठो, जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे न कर दूँ।"

<sup>37</sup> दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है; तो वह उसके पुत्र के रूप में कैसे है?" और बड़ी भीड़ उसे सुनकर आनंदित हुई।

<sup>38</sup> और अपनी शिक्षा में वह कह रहा था, "शास्त्रियों से सावधान रहो जो लंबे वस्तों में धूमना पसंद करते हैं, और बाजारों में व्यक्तिगत अभिवादन पसंद करते हैं, <sup>39</sup> और सभागृहों में समान की सीटें, और भोजों में समान के खान, <sup>40</sup> जो विधवाओं के घरों को निगल जाते हैं, और दिखावे के लिए लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं; इन पर अधिक डंड आएगा।"

<sup>41</sup> और यीशु खजाने के विपरीत बैठ रहा, और देख रहा था कि लोग खजाने में कैसे पैसा डाल रहे हैं, और कई धनी लोग बड़ी राशि डाल रहे थे। <sup>42</sup> और एक गरीब विधवा आई और उसने दो छोटे तांबे के सिक्के डाले, जो एक पैसे के बराबर थे। <sup>43</sup> अपने शिष्यों को बुलाकर, उसने , "सच में मैं तुमसे कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने खजाने में सभी योगदानकर्ताओं से अधिक डाला है; <sup>44</sup> क्योंकि उन्होंने अपनी अधिकता में से डाला, लेकिन उसने अपनी गरीबी में से, सब कुछ जो उसके पास था, अपना सारा जीवन यापन का साधन डाल दिया।"

## मरकुस

**13** जब वह मंदिर से बाहर जा रहे थे, उनके चेलों में से एक ने उनसे कहा, “गुरु, देखो! कितने अद्भुत पथर और कितनी अद्भुत इमारतें हैं!”<sup>2</sup> और यीशु ने उससे कहा, “क्या तुम इन महान इमारतों को देखते हो? यहाँ एक पथर भी दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा, जो गिराया नहीं जाएगा।”

<sup>3</sup> जब वह जैतून के पहाड़ पर मंदिर के सामने बैठा था, तब पतरस, याकूब, यूहन्ना और अद्वियास उससे व्यक्तिगत रूप से पूछने लगे,<sup>4</sup> “हमाँ बताओ, ये बातें कब होंगी, और इन सब बातों के पूरा होने का विन्ध क्या होगा?”<sup>5</sup> और यीशु ने उनसे कहना शुरू किया, “देखो, कोई तुम्हें भ्रमित न करे।<sup>6</sup> कई लोग मेरे नाम में आएंगे, कहेंगे, ‘मैं वही हूँ’! और वे बहुतों को भ्रमित करेंगे।<sup>7</sup> और जब तुम युद्धों और युद्धों की अफवाहें सुनोगे, तो घबराओ मत; ये बातें अवश्य घटित होंगी, परन्तु यह अंत नहीं है।<sup>8</sup> क्योंकि जाति जाति के विरुद्ध उठेगी, और राज्य राज्य के विरुद्ध; विभिन्न ख्यानों में भूकंप होंगे; अकाल भी होंगे। ये बातें केवल प्रसव पीड़ा की शुरुआत हैं।

<sup>9</sup> “परन्तु सावधान रहो; क्योंकि वे तुम्हें अदालतों में सौंप देंगे, और तुम्हें आराधनालयों में कोडे लगाए जाएंगे, और तुम मेरे कारण राज्यपालों और राजा-ओं के सामने खड़े होंगे, उनके लिए गवाही के रूप में।<sup>10</sup> और सुसमाचार को पहले सभी जातियों में प्रचारित किया जाना चाहिए।<sup>11</sup> और जब वे तुम्हें गिरफ्तार करेंगे और सौंप देंगे, तो पहले से चिंता मत करो कि तुम्हें क्या कहना है, परन्तु जो तुम्हें उस समय दिया जाएगा वही कहो; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।<sup>12</sup> और भाई भाई को मृत्यु के लिए सौंप देगा, और पिता अपने बच्चे को; और बच्चे माता-पिता के विरुद्ध उठ खड़े होंगे और उन्हें मराया देंगे।<sup>13</sup> और तुम मेरे नाम के कारण सबके द्वारा धृणा किए जाओगे, परन्तु जो अंत तक धैर्य धरेगा वही उद्धार पाएगा।

<sup>14</sup> “परन्तु जब तुम देखेंगे कि उजाइने वाली धृणास्पद वस्तु वहाँ खड़ी है जहाँ उसे नहीं होना चाहिए (पाठक समझे), तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की ओर भग जाएं।<sup>15</sup> जो छत पर हो वह नीचे न उतरे, न ही अपने घर से कुछ लेने के लिए भीतर जाए;<sup>16</sup> और जो खेत में हो वह अपनी चादर लेने के लिए वापस न लौटे।<sup>17</sup> परन्तु उन स्त्रियों पर हाय जो उन दिनों गर्भवती होंगी और जो बच्चों को दूध पिला रही होंगी।<sup>18</sup> और प्रार्थना करो कि यह शीतकाल में न हो।<sup>19</sup> क्योंकि वे दिन ऐसी विपत्ति के होंगे जैसी सृष्टि के आरंभ से अब तक नहीं हुई

है जो परमेश्वर ने बनाई है, और न कभी होगी।<sup>20</sup> और यदि प्रभु उन दिनों को छोटा न करता, तो कोई भी जीवन बचाया न जाता; परन्तु चुने हुए लोगों के कारण, जिन्हें उसने चुना, उसने उन दिनों को छोटा किया।

<sup>21</sup> और तब यदि कोई तुमसे कहे, ‘देखो, यहाँ मसीह है; या, देखो, वह वहाँ है’; तो विश्वास मत करना;<sup>22</sup> क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और विन्ह और चमकार दिखाएंगे, ताकि यदि संभव हो तो चुने हुए लोगों को भी भ्रमित कर सके।<sup>23</sup> परन्तु सावधान रहो; मैंने तुम्हें सब कुछ पहले ही बता दिया है।

<sup>24</sup> “परन्तु उन दिनों में, उस विपत्ति के बाद,

सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चंद्रमा अपनी ज्योति नहीं देगा;<sup>25</sup> और तारे आकाश से गिरेंगे, और आकाश में जो शक्तियाँ हैं वे हिलाई जाएंगी।

<sup>26</sup> और तब वे मनुष्य के पुत्र को बादलों में आते देखेंगे, बड़ी शक्ति और महिमा के साथ।<sup>27</sup> और तब वह स्वर्गदूतों को भेजेगा, और अपने चुने हुए लोगों को चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा, पृथ्वी के छोर से स्वर्ग के छोर तक।

<sup>28</sup> “अब अंजीर के पेड़ से दृष्टित सीखो; जैसे ही उसकी शाखा को माल ही जाती है और पते निकलते हैं, तुम जानते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है।<sup>29</sup> इसी प्रकार, जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है, दरवाजे पर ही है।<sup>30</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, यह पीढ़ी तब तक नहीं जाएगी जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएं।<sup>31</sup> आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरे वचन कभी नहीं टलेंगे।

<sup>32</sup> “परन्तु उस दिन या घटे के बारे में कोई नहीं जानता, न तो स्वर्गदूत, न पुत्र, केवल पिता ही।<sup>33</sup> सावधान रहो, जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि नियत समय कब है।<sup>34</sup> यह उस व्यक्ति के समान है जो यात्रा पर गया है, और अपने घर को छोड़ते समय, अपने दासों को जिम्मेदारी सौंपता है, प्रयेक को उसका कार्य सौंपता है, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा देता है।<sup>35</sup> इसलिए, जागते रहो—क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, चाहे शाम को, आधी रात को, मुर्मु के बांग देने पर, या सुबह—<sup>36</sup> ताकि वह अचानक आकर तुम्हें सोता हुआ न पाए।<sup>37</sup> जो मैं तुमसे कहता हूँ वह सब से कहता हूँ: ‘जागते रहो।’”

## मरकुस

**14** अब फसह और अखमीरी रोटी का पर्व दो दिन दूर था; और महायाजक और शास्त्री यह सोच रहे थे कि उसे गुप्त रूप से कैसे पकड़ें और मार डालें; <sup>2</sup> क्योंकि वे कह रहे थे, “पर्व के दौरान नहीं, नहीं तो लोगों का दंगा हो जाएगा।”

<sup>3</sup> जब वह बैतनियाह में शमैन कोढ़ी के घर में था, और मेज पर झुका हुआ था, एक स्त्री शुद्ध नर्द के बहुत महोगे इत्र की अलबास्टर की शीशी लेकर आई। उसने शीशी तोड़ी और इत्र को उसके सिर पर उंडेल दिया। <sup>4</sup> परंतु कुछ लोग एक-दूसरे से क्रोधित होकर कहने लगे, “यह इत्र क्यों व्यर्थ किया गया है? <sup>5</sup> क्योंकि यह इत्र तीन सौ दीनार से अधिक में बेचा जा सकता था, और पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।” और वे उसे ढांट रहे थे। <sup>6</sup> परंतु यीशु ने कहा, “उसे अकेला छोड़ दो; क्यों उसे परेशान कर रहे हो? उसने मेरे लिए एक अच्छा काम किया है। <sup>7</sup> क्योंकि गरीब तो तुम्हारे साथ हमेशा रहते हैं, और जब चाहों, उनके लिए अच्छा कर सकते हों; परंतु मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। <sup>8</sup> उसने जो कुछ उसके रक्त के लिए अभिषेक किया है। <sup>9</sup> सच में मैं तुमसे कहता हूँ, मैं दाख की बेल का फल फिर कभी नहीं पीऊँगा जब तक कि मैं उसे परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।” <sup>10</sup> और एक भजन गाने के बाद, वे जैतून के पहाड़ पर गए।

<sup>17</sup> जब संध्या हुई, वह बारह के साथ आया। <sup>18</sup> और जब वे मेज पर झुके हुए थे और खा रहे थे, यीशु ने कहा, “सच में मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा—जो मेरे साथ खा रहा है।” <sup>19</sup> वे दुखी होने लगे और एक-एक करके उससे कहने लगे, “क्या यह मैं नहीं हूँ?” <sup>20</sup> परंतु उसने उनसे कहा, “यह बारह में से एक है, जो मेरे साथ थाली में रोटी ढुबोता है।” <sup>21</sup> क्योंकि मनुष्य का पुत्र जैसा उसके विषय में लिखा है, चला जाता है; परंतु उस मनुष्य पर हाय, जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता कि वह जन्मा ही न होता।”

<sup>22</sup> जब वे खा रहे थे, उसने कुछ रोटी ली, और आशीर्वाद देने के बाद, उसे तोड़ा, और उर्वे दी, और कहा, “लो, यह मेरा शरीर है।” <sup>23</sup> और जब उसने एक प्याला लिया और धन्यवाद दिया, उसने उन्हें दिया, और उन्होंने सब पी लिया। <sup>24</sup> और उसने उनसे कहा, “यह मेरा वाचा का रक्त है, जो बहुतों के लिए बहाया जा रहा है।” <sup>25</sup> सच में मैं तुमसे कहता हूँ, मैं दाख की बेल का फल फिर कभी नहीं पीऊँगा जब तक कि मैं उसे परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।” <sup>26</sup> और एक भजन गाने के बाद, वे जैतून के पहाड़ पर गए।

<sup>27</sup> और यीशु ने उनसे कहा,

“तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: ‘मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें तिरत-बिरत हो जाएँगी।’

<sup>28</sup> परंतु मेरे जी उठने के बाद, मैं तुमसे पहले गलील में जाऊँगा।” <sup>29</sup> परंतु पतरस ने उससे कहा, “चाहे वे सब ठोकर खाएँ, परंतु मैं नहीं!” <sup>30</sup> और यीशु ने उससे कहा, “सच में मैं तुमसे कहता हूँ, कि इसी रात, मुझे के दो बार बांग देने से पहले, तुम स्वयं मुझे तीन बार इंकार करोगे।” <sup>31</sup> परंतु पतरस ने बार-बार जोर देकर कहा, “चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े, मैं आपको इंकार नहीं करूँगा!” और वे सब भी ऐसा ही कह रहे थे।

<sup>32</sup> वे गतसमनी नामक स्थान पर आए; और उसने अपने शिष्यों से कहा, “यहाँ बैठो जब तक मैं प्रार्थना करूँ।” <sup>33</sup> और उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया, और बहुत दुखी और परेशान होने लगा। <sup>34</sup> और उसने उनसे कहा, “मेरा मन बहुत दुखी है, यहाँ तक कि मृत्यु तक; यहाँ ठहरो और जागते रहो।” <sup>35</sup> और वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि सभव हो, तो यह घड़ी उससे टल जाए। <sup>36</sup> और वह कह रहा था, “अब्जा, पिता! आपके

## मरकुस

लिए सब कुछ संभव है; इस प्याले को मुझसे हटा लें, फिर भी जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं परंतु जो आप चाहते हैं।<sup>37</sup> और वह आया और उन्हें सोता पाया, और उसने पतरस से कहा, “शमौन, क्या तुम सो रहे हो? क्या तुम एक धंटे भी जाग नहीं सकते थे?<sup>38</sup> जागते रहो और प्रार्थना करो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो; आमा तो तैयार है, परंतु शरीर दुर्बल है।”<sup>39</sup> फिर वह गया और वही शब्द कहकर प्रार्थना की।<sup>40</sup> और फिर वह आया और उन्हें सोता पाया, क्योंकि उनकी अँखें भरी थीं, और वे नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।<sup>41</sup> और वह तीसरी बार आया और उनसे कहा, “क्या तुम अब भी सो रहे हो और आराम कर रहे हो? यह पर्याप्त है; घंटी आ गई है, देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया जा रहा है।”<sup>42</sup> उठो, चलो; देखो, जो मुझे पकड़वाने वाला है वह निकट है।”

“<sup>43</sup> और तुरंत, जब वह अभी बोल ही रहा था, यहदा, जो बारह में से एक था, आया, तलवारों और लाठियों के साथ एक भीड़ के साथ, जो महायाजकों, शासियों, और प्राचीनों से थी।<sup>44</sup> अब जो उसे पकड़वाने वाला था उसने उन्हें एक संकेत दिया था, कहकर, “जिसे मैं चूमूँगा, वही है, उसे पकड़ लेना और सावधानी से से जाना।”<sup>45</sup> और आकर, यहदा तुरंत उसके पास गया और कहा, “रब्बी!” और उसे चूमा।<sup>46</sup> और उन्होंने उस पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया।<sup>47</sup> परंतु जो वहाँ खड़े थे उनमें से एक ने अपनी तलवार खींची और महायाजक के दास को मारा, और उसका कान काट दिया।<sup>48</sup> और यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम तलवारों और लाठियों के साथ मुझे पकड़ने आए हो, जैसे कि किसी विद्रोही के खिलाफ़?”<sup>49</sup> हर दिन मैं तुम्हारे साथ मंदिर के आँगन में था, सिखा रहा था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा; परंतु यह इसलिए हुआ है ताकि शास्त्र पूरे हो।”<sup>50</sup> और उसके सभी शिष्य उसे छोड़कर भाग गए।

<sup>51</sup> एक युवक उसका पीछा कर रहा था, जो केवल एक लिन की चादर अपने नग्न शरीर पर डाले हुए था; और उन्होंने उसे पकड़ लिया।<sup>52</sup> परंतु वह लिन की चादर छोड़कर नग्न भाग गया।

<sup>53</sup> वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सभी महायाजक, प्राचीन, और शास्त्री एकत्र हुए।<sup>54</sup> पतरस ने उसे दूर से पीछा किया, महायाजक के आँगन तक, और वह अधिकारियों के साथ बैठा और आग ताप रहा था।

<sup>55</sup> अब महायाजक और पूरी परिषद यीशु के खिलाफ गवाही प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे ताकि उसे मृत्यु

दंड दिया जा सके, और वे कुछ नहीं पा रहे थे।<sup>56</sup> क्योंकि कई लोग उसके खिलाफ झूठी गवाही दे रहे थे, और उनकी गवाहियाँ संगत नहीं थीं।<sup>57</sup> और फिर कुछ खड़े हुए और उसके खिलाफ झूठी गवाही देने लगे, कहकर,<sup>58</sup> “हमने उसे कहते सुना, मैं इस मंदिर को जो हाथों से बनाया गया है, नष्ट कर द्वृग्ंा, और तीन दिनों में एक और बनाऊँगा जो बिना हाथों से बनाया गया है।”<sup>59</sup> और इस मामले में भी उनकी गवाही संगत नहीं थी।<sup>60</sup> और फिर महायाजक खड़ा हुआ और यीशु से प्रश्न करने लगा, कहकर, “क्या आप इन लोगों के खिलाफ कोई उत्तर नहीं देते?”<sup>61</sup> परंतु वह चुप रहा और कोई उत्तर नहीं दिया। फिर महायाजक उससे प्रश्न करने लगा, और उससे कहा, “क्या आप मरीह, धन्य के पुत्र हैं?”<sup>62</sup> यीशु ने कहा, “मैं हूँ; और तुम मनुष्य के पुत्र को शक्ति के दाहिने हाथ पर बैठे हुए देखोगे, और स्वर्ग के बादलों के साथ आते हुए।”<sup>63</sup> महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, “हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है?<sup>64</sup> तुमने निंदा सुनी है; तुम्हें कैसा लगता है?” और उन्होंने सबने उसे मृत्यु के योग्य ठहराया।<sup>65</sup> और कुछ ने उस पर धूका, और उसकी अँखों पर पट्टी बँधी, और उसे मुक्कों से मारा और उससे कहा, “भविष्यतापी करो!” फिर अधिकारियों ने उसे पकड़ लिया और उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा।

<sup>66</sup> और जब पतरस नीचे आँगन में था, महायाजक की एक दासी आई,<sup>67</sup> और पतरस को आग तापे हुए देखकर, उसने उसे देखा और कहा, “तुम भी यीशु नासरी के साथ थे।”<sup>68</sup> परंतु उसने इनकार किया, कहकर, “मैं न तो जानता हूँ, और न ही समझता हूँ कि तुम क्या कह रही हो।” और वह बाहर बरामदे में चला गया।<sup>69</sup> दासी ने उसे देखा, और फिर से पास खड़े लोगों से कहने लगी, “यह आदमी उनमें से एक है!”<sup>70</sup> परंतु उसने फिर से इनकार किया। और योड़ी देर बाद, पास खड़े लोग फिर से पतरस से कहने लगे, “तुम सच में उनमें से एक हो, क्योंकि तुम भी गलीती हो।”<sup>71</sup> परंतु उसने खुद को शापित करना और कसम खाना शुरू किया, “मैं इस आदमी को नहीं जानता जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो।”<sup>72</sup> और तुरंत मुर्गी ने दूसरी बार बांग दी। और पतरस को याद आया कि यीशु ने उससे क्या कहा था, “मुर्गी के दो बार बांग देने से पहले, तुम मुझे तीन बार इनकार करोगे।” और वह बाहर निकलकर कड़वे आँसू बहाने लगा।

**15** सुबह होते ही महायाजक, पुरनिये, शास्त्री और सारी महासभा ने तुरंत विचार-विमर्श किया; और उन्होंने यीशु को बाँधकर ले गए, और उसे पीलातुस के हवाले

## मरकुस

कर दिया।<sup>2</sup> और पीलातुस ने उससे पूछा, "क्या तुम हूदियों का राजा है?" और उसने उसे उत्तर दिया, "जैसा तुम कहते हो।"<sup>3</sup> और महायाजक उस पर बहुत सी बातें अरोपित करने लगे।<sup>4</sup> परन्तु पीलातुस फिर उससे पूछ रहा था, "क्या तुम कोई उत्तर नहीं देता? देख, वे तेरे विरुद्ध कितने आरोप लगा रहे हैं!"<sup>5</sup> परन्तु यीशु ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे पीलातुस अचंभित हुआ।

<sup>6</sup> अब फसह पर्व वह उनके लिए किसी एक कैदी को छोड़ दिया करता था, जिसे वे माँसते थे।<sup>7</sup> और जिसका नाम बरअब्बा था, वह विद्रोहियों के साथ बंदीगृह में था, जिन्होंने विद्रोह में हत्या की थी।<sup>8</sup> और भीड़ ऊपर आई और पीलातुस से अनुरोध करने लगी कि वह उनके लिए वही करे जो वह उनके लिए करता आया था।<sup>9</sup> पीलातुस ने उनसे कहा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?"<sup>10</sup> क्योंकि वह जानता था कि महायाजकों ने उसे ईर्ष्या के कारण सौंपा है।<sup>11</sup> परन्तु महायाजकों ने भीड़ को उकाया कि वह उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दे।<sup>12</sup> और फिर से उत्तर देते हुए, पीलातुस ने उनसे कहा, "तो फिर मैं उसके साथ क्या करूँ जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो?"<sup>13</sup> वे फिर से चिल्लाएं, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"<sup>14</sup> परन्तु पीलातुस ने उनसे कहा, "क्यों, उसने क्या बुरा किया है?" परन्तु वे और भी अधिक चिल्लाएं, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"<sup>15</sup> भीड़ को संतुष्ट करने के इशादे से, पीलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाने के बाद, उसे क्रूस पर ढाने के लिए सौंप दिया।

<sup>16</sup> अब सैनिक उसे महल (जो प्रेटोरियम है) में ले गए, और उन्होंने पूरी रोपी सेना को बुलाया।<sup>17</sup> और उन्होंने उसे बैगनी वस्त्र पहनाया, और कांटों का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रखा;<sup>18</sup> और वे उसे सालाम करने लगे: "यहूदियों के राजा, प्रणाम!"<sup>19</sup> और वे बार-बार उसके सिर पर सरकंडा मारते और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसके सामने प्रणाम करते।<sup>20</sup> और जब उन्होंने उसका उपहास कर लिया, तो उन्होंने उसके ऊपर से बैगनी वस्त्र उतार दिए और उसके अपने वस्त्र पहना दिए। और वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले गए।

<sup>21</sup> और उन्होंने एक राहगीर को, जो देश से आ रहा था, साईरन के शमैन को (जो अलेक्झेंडर और रुफुस का पिता था) उसके क्रूस को उठाने के लिए मजबूर किया।<sup>22</sup> तब वे उसे गुलगुता नामक स्थान पर ले गए, जिसका अर्थ है, खोपड़ी का स्थान।<sup>23</sup> और उन्होंने उसे मिर्मिली हुई दाखरस देने की कोशिश की; परन्तु उसने उसे

नहीं लिया।<sup>24</sup> और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और उसके वस्त्रों को आपस में बाँट लिया, उन पर चिट्ठियाँ डालकर यह तथ्य करने के लिए कि कौन क्या लेगा।<sup>25</sup> अब तीसरा पहर था जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।<sup>26</sup> उसके विरुद्ध आरोप की पट्टी पर लिखा था, "यहूदियों का राजा।"<sup>27</sup> और उन्होंने उसके साथ दो विद्रोहियों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को उसके दाहिने और एक को उसके बाएँ।<sup>28</sup> [और शास्त्र पूरा हुआ जो कहता है, "और वह अपराधियों के साथ मिना गया।"]<sup>29</sup> जो लोग वहाँ से गुजर रहे थे, वे उसके ऊपर अपशब्द कह रहे थे, अपने सिर हिला रहे थे और कह रहे थे, "हाँ! तू जो मंदिर को नष्ट कर तीन दिन में फिर बनाता हो, ३० अपने आप को बचा, और क्रूस से नीचे उतरा!"<sup>31</sup> उरी प्रकार, महायाजक भी शास्त्रियों के साथ, अपने आप में उसका उपहास कर रहे थे और कह रहे थे, "उसने दूसरों को बचाया, वह अपने आप को नहीं बचा सकता!"<sup>32</sup> यह मसीह, इसाएल का राजा, अब क्रूस से नीचे उतरे, ताकि हम देख सकें और विश्वास कर सकें। जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसे अपशब्द कह रहे थे।

<sup>33</sup> जब छठा पहर आया, तो पूरे देश पर नौवें पहर तक अंधकार छा गया।<sup>34</sup> नौवें पहर पर यीशु ने ऊचे स्वर में पुकारा, "एलोई, एलोई लमा सबकतानी?" जिसका अर्थ है, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"<sup>35</sup> और जब कुछ खड़े हुए लोगों ने उसे सुना, तो वे कहने लगे, "देखो! वह एलियाह को बुला रहा है!"<sup>36</sup> और किसी ने दौड़कर एक स्पंज को खट्टे दाखरस से भरकर, उसे सरकंडे पर रखकर उसे पीने के लिए दिया, और कहा, "देखों कि क्या एलियाह उसे नीचे उतारें आता है।"<sup>37</sup> परन्तु यीशु ने ऊचे स्वर में पुकारा, और प्राण त्याग दिए।<sup>38</sup> और मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया।<sup>39</sup> और जब सूबेदार, जो उसके सामने खड़ा था, ने देखा कि उसने इस प्रकार प्राण त्याग दिए, तो उसने कहा, "सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था!"

<sup>40</sup> वहाँ कुछ स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं, जिनमें मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और सलोमी थीं।<sup>41</sup> जब वह गलील में था, वे उसके पीछे चलती थीं और उसकी सेवा करती थीं; और बहुत सी अन्य स्त्रियाँ भी थीं जो उसके साथ यरूशलैम आई थीं।

<sup>42</sup> अब जब शाम हो चुकी थी, क्योंकि वह तैयारी का दिन था (अर्थात् सब्त के पहले का दिन),<sup>43</sup> अरिमथिया का यसुफ आया, जो परिषद का एक प्रमुख सदस्य था, जो स्वयं भी परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था; और उसने साहस जुटाकर पीलातुस के पास गया, और

## मरकुस

यीशु के शरीर की माँग की।<sup>44</sup> अब पीलातुस ने आश्वर्य किया कि क्या वह पहले ही मर चुका है, और सूबेदार को बुलाकर, उससे पूछा कि क्या वह पहले ही मर चुका है।<sup>45</sup> और सूबेदार से यह जानने के बाद, उसने यूसुफ को शरीर सौंप दिया।<sup>46</sup> यूसुफ ने एक मलमल का कपड़ा खीरी, उसे उतारा, मलमल में लेपेटा, और उसे एक कब्र में रखा यो चट्टान में काटी गई थी; और उसने कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया।<sup>47</sup> मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम देख रही थीं कि उसे कहाँ रखा गया है।

**16** जब सब्त का दिन समाप्त हो गया, तो मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और सलोमी ने सुनाधित वस्त्र खीरी, ताकि वे आकर उसे अभिषेक कर सकें।<sup>48</sup> और सप्ताह के पहले दिन बहुत सुबह, जब सूर्य उग चुका था, वे कब्र पर आईं।<sup>49</sup> वे आपस में कह रही थीं, "हमारे लिए कब्र के द्वार से पत्थर कौन हटाएगा?"<sup>50</sup> और ऊपर देखकर, उन्होंने देखा कि पत्थर हटा दिया गया था, क्योंकि वह बहुत बड़ा था।<sup>51</sup> और कब्र में प्रवेश करते हुए, उन्होंने दाहिनी ओर एक युवक को सफेद वस्त्र पहने बैठे देखा; और वे आश्वर्यचित हो गईं।<sup>52</sup> लेकिन उसने उनसे कहा, "आश्वर्यचित मत हो; तुम नासरी यीशु को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह जी उठा है; वह यहाँ नहीं है। देखो, यहाँ वह स्थान है जहाँ उन्होंने उसे रखा था।"<sup>53</sup> लेकिन जाँओ, उसके चेलों और पतरस से कहो, 'वह तुमसे पहले गलील में जा रहा है; वहाँ तुम उसे देखोगे, जैसा उसने तुमसे कहा था।'<sup>54</sup> और वे बाहर निकलकर कब्र से भाग गईं, क्योंकि डर और आश्वर्य ने उन्हें जकड़ लिया था; और उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे डर गई थीं।

**सबसे पुराने पांडुलिपियों और कुछ अन्य प्राचीन गवाहों में पद ९-२० नहीं हैं।**

<sup>9</sup> अब जब वह सप्ताह के पहले दिन सुबह जल्दी जी उठा, तो उसने सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दर्शन दिया, जिससे उसने सात दुष्टामाओं को निकाला था।<sup>10</sup> वह गई और उन लोगों को बताया जो उसके साथ थे, जब वे शोक और रो रहे थे।<sup>11</sup> और जब उन्होंने सुना कि वह जीतित है और उसे देखा गया है, तो उन्होंने विश्वास नहीं किया।

<sup>12</sup> अब इसके बाद, उसने उनमें से दो को एक अलग रूप में दर्शन दिया जब वे देश की ओर जा रहे थे।<sup>13</sup>

और वे लौटकर बाकी को बताया, लेकिन उन्होंने भी उन पर विश्वास नहीं किया।

<sup>14</sup> बाद में उसने ग्यारह चेलों को स्वयं दर्शन दिया जब वे मेज पर बैठे थे; और उसने उनकी अविश्वास और हृदय की कठोरता के लिए उन्हें फटकारा, क्योंकि उन्होंने उन लोगों पर विश्वास नहीं किया जिन्होंने उसे जी उठने के बाद देखा था।<sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, "सारी दुनिया में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ।<sup>16</sup> जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वह उद्धार पाएगा; लेकिन जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

<sup>17</sup> ये चिन्ह उन लोगों के साथ होंगे जो विश्वास करेंगे: मेरे नाम में वे दुष्टामाओं को निकालेंगे, वे नई भाषाएँ बोलेंगे;

<sup>18</sup> वे साँपों को उठाएंगे, और यदि वे कोई घातक विष पिंडे, तो वह उन्हें हानि नहीं पहुंचाएगा; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे स्वस्थ हो जाएंगे।"

<sup>19</sup> फिर, जब प्रभु यीशु ने उनसे बात की, तो वह स्वर्ग में उठा लिया गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया।<sup>20</sup> और वे बाहर जाकर हर जगह प्रचार करने लगे, जबकि प्रभु उनके साथ काम कर रहा था, और उन चिन्हों के द्वारा वचन की पुष्टि कर रहा था जो उनके साथ थे।

# लूका

**1** चूंकि बहुतों ने उन बातों का वर्णन करने का प्रयास किया है जो हमारे बीच पूरी हुई हैं,<sup>2</sup> जैसा कि उन्होंने हमें आरंभ से देखा और वचन के सेवक के रूप में हमें सौंपा,<sup>3</sup> तो मुझे भी यह उचित लगा, कि मैंने सब कुछ आरंभ से सावधानीपूर्वक जाँच लिया है, ताकि मैं इसे आपके लिए व्यवस्थित क्रम में लिख सकूँ, हे उक्ष्ट धियोफिलस;<sup>4</sup> ताकि आप उन बातों का सही सत्य जान सकें जो आपको सिखाइ गई हैं।

<sup>5</sup> यहौदिया के राजा हेरोदेस के दिनों में, अबियाह के विभाग का एक याजक था जिसका नाम जकरयाह था; और उसकी पती हारून की बेटियों में से थी, और उसका नाम एलिजाबेथ था।<sup>6</sup> वे दोनों परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी थे, और प्रभु की सभी आज्ञाओं और विधियों में निर्दोष चल रहे थे।<sup>7</sup> फिर भी उनके कोई संतान नहीं थी, क्योंकि एलिजाबेथ बांझ थी, और वे दोनों वृद्ध हो चुके थे।

<sup>8</sup> अब ऐसा हुआ कि जब वह अपने विभाग के क्रम में परमेश्वर के सामने याजकीय सेवा कर रहा था, <sup>9</sup> याजकीय कार्यालय की प्रथा के अनुसार, वह लॉट द्वारा चुना गया कि वह प्रभु के मंदिर में प्रवेश करे और धूप जलाए।<sup>10</sup> और धूप चढ़ाने के समय पर बाहर लोगों की पूरी भीड़ प्रार्थना कर रही थी।<sup>11</sup> अब प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ, धूप की वेदी के दाढ़िने खड़ा था।<sup>12</sup> जकरयाह स्वर्गदूत को देखकर घबरा गया, और उस पर भय छा गया।<sup>13</sup> लेकिन स्वर्गदूत ने उससे कहा, "डरो मत, जकरयाह, क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है, और तुम्हारी पती एलिजाबेथ तुम्हें एक पुत्र देगी, और तुम उसका नाम योहन रखोगे।<sup>14</sup> तुम्हें आनंद और खुशी होगी, और बहुत से लोग उसके जन्म पर अनंदित होंगे।<sup>15</sup> क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा; और वह न तो दाखरस और न ही मदिरा पिएगा, और वह अपनी माता के गर्भ में ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा।<sup>16</sup> और वह इसाएल के बहुत से पुत्रों को उनके परमेश्वर की ओर लौटाएगा।<sup>17</sup> और वह उसके आगे एलियाह की आत्मा और शक्ति में अप्रदूत के रूप में जाएगा, ताकि पिताओं के दिलों को बच्चों की ओर मोड़े, और अवज्ञाओं को धर्मियों की बुद्धि की ओर, ताकि प्रभु के लिए एक तैयार लोग तैयार कर सके।"

<sup>18</sup> जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं यह कैसे जानूँ? क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ, और मेरी पत्नी भी वृद्ध है।"<sup>19</sup> स्वर्गदूत ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मैं गब्रिएल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा हूँ, और मुझे तुम्हारे पास यह शुभ समाचार देने के लिए भेजा गया था।<sup>20</sup> और देखो,

तुम मूरक हो जाओगे और तब तक बोल नहीं सकोगे जब तक ये बातें पूरी न हो जाएं, क्योंकि तुमने मेरे वचनों पर विश्वास नहीं किया, जो अपने समय पर पूरी होंगी।"

<sup>21</sup> और लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे थे, और मंदिर में उसकी देरी पर आश्चर्य कर रहे थे।<sup>22</sup> लेकिन जब वह बाहर आया, तो वह उनसे बोल नहीं सका; और उन्होंने समझ लिया कि उसने मंदिर में एक दर्शन देखा है; और वह बार-बार उहाँ संकेत कर रहा था, और मूरक रहा।<sup>23</sup> जब उसकी याजकीय सेवा के दिन पूरे हो गए, तो वह अपने घर लौट गया।<sup>24</sup> अब इन दिनों के बाद उसकी पती एलिजाबेथ गर्भवती हुई, और उसने पांच महीने तक अपने को छिपाए रखा, यह कहते हुए,<sup>25</sup> "यह वही तरीका है जिससे प्रभु ने मुझ पर कृपा की है, जब उसने मुझ पर कृपा की दृष्टि डाली, ताकि लोगों में मेरी लज्जा को दूर करे।"

<sup>26</sup> अब छठे महीने में, स्वर्गदूत गब्रिएल को परमेश्वर की ओर से गलील के एक नगर नासरत में भेजा गया,<sup>27</sup> एक कुंवारी के पास जो एक पुरुष से मंगानी की हुई थी, जिसका नाम यूसुफ था, जो दाऊद के वंश का था; और उस कुंवारी का नाम मरियम था।<sup>28</sup> और अंदर आकर उसने उससे कहा, "नमस्कार, कृपा प्राप्त करने वाली! प्रभु तुम्हारे साथ है।"<sup>29</sup> लेकिन वह इस कथन से बहुत चकित हुई, और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभियान है।<sup>30</sup> और स्वर्गदूत ने उससे कहा, "डरो मत, मरियम, क्योंकि तुमने परमेश्वर की कृपा पाई है।"<sup>31</sup> और देखो, तुम अपने गर्भ में गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और तुम उसका नाम यीशु रखोगी।<sup>32</sup> वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा;<sup>33</sup> और वह याकूब के घराने पर सदा के लिए राज्य करेगा, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा।"<sup>34</sup> लेकिन मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे होगा, क्योंकि मैं कुंवारी हूँ?"<sup>35</sup> स्वर्गदूत ने उत्तर दिया और उससे कहा, "पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, और परमप्रधान की शक्ति तुम्हें छा जाएगी; इसलिए वह पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।"<sup>36</sup> और देखो, तुम्हारी रिश्तेदार एलिजाबेथ ने भी अपनी वृद्धावस्था में एक पुत्र को गर्भ धारण किया है; और जिसे बांझ कहा जाता था, वह अब छठे महीने में है।<sup>37</sup> क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।"<sup>38</sup> और मरियम ने कहा, "देखो, मैं प्रभु की दासी हूँ, तुम्हारे वचन के अनुसार मेरे साथ ऐसा ही है।" और स्वर्गदूत उससे चला गया।

# लूका

<sup>39</sup> अब इस समय मरियम जल्दी से पहाड़ी देश की ओर, यहूदा के एक नगर में गई,<sup>40</sup> और उसने जकरयाह के घर में प्रवेश किया और एलिजाबेथ का अभिवादन किया।<sup>41</sup> जब एलिजाबेथ ने मरियम का अभिवादन सुना, तो बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा; और एलिजाबेथ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई।<sup>42</sup> और उसने ऊँचे स्वर में चिल्लाकर कहा, “तुम स्त्रियों में धन्य हो, और तुम्हारे गर्भ का फल धन्य है।<sup>43</sup> और यह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?<sup>44</sup> क्योंकि देखो, जब तुम्हारे अभिवादन की धनि मेरे कानों तक पहुंची, तो बच्चा मेरे गर्भ में आनंद से उछल पड़ा।<sup>45</sup> और धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु ने उससे कही थीं, वे पूरी होंगी।”

<sup>46</sup> और मरियम ने कहा: “मेरी आत्मा प्रभु की महिमा करती है,<sup>47</sup> और मेरी आत्मा ने मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित किया है।<sup>48</sup> क्योंकि उसने अपनी दासी की दीन अवस्था पर ध्यान दिया है; क्योंकि देखो, अब से सभी पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी।<sup>49</sup> क्योंकि शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है।<sup>50</sup> और उसकी दया पीढ़ी दर पीढ़ी उन पर है जो उससे डरते हैं।<sup>51</sup> उसने अपनी भुजा से शक्तिशाली काम किए हैं, उसने उन लोगों को तितर-बितर किया है जो अपने दिलों के चिरांगों में गर्वित थे।<sup>52</sup> उसने शासकों को उनके सिंहासनों से नीचे गिराया है, और दीनों को ऊँचा किया है।<sup>53</sup> उसने खूनों को अच्छी चीजों से भर दिया है, और धनवानों को खाली हाथ भेज दिया है।<sup>54</sup> उसने अपने सेवक इसाएल की सहायता की है, अपनी दया की सृष्टि में,<sup>55</sup> जैसा कि उसने हमारे पिताओं से कहा था, अब्राहम और उसके वंशजों से सदा के लिए।”

<sup>56</sup> मरियम उसके साथ लगभग तीन महीने रही, और फिर अपने घर लौट गई।

<sup>57</sup> अब एलिजाबेथ के प्रसव का समय आ गया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।<sup>58</sup> उसके पड़ोसियों और उसके रिश्तेदारों ने सुना कि प्रभु ने उस पर अपनी बड़ी दया दिखाई है, और वे उसके साथ आनंदित हुए।<sup>59</sup> और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बच्चे का खतना करने आए, और वे उसे उसके पिता के नाम पर जकरयाह नाम देने जा रहे थे।<sup>60</sup> लेकिन उसकी माँ ने उत्तर दिया और कहा, “नहीं, बल्कि उसका नाम योहन होगा।”<sup>61</sup> और उहोंने उससे कहा, “तुम्हारे रिश्तेदारों में कोई भी इस नाम से नहीं बुलाया जाता।”<sup>62</sup> और उहोंने उसके पिता से संकेत किया कि वह उसे क्या नाम देना चाहता है।<sup>63</sup> और उसने एक पट्टी मांगी और लिखा: “उसका

नाम योहन है।” और वे सब आश्चर्यकित हुए।<sup>64</sup> और तुरंत उसका मुँह खुल गया और उसकी जीभ खुल गई, और वह परमेश्वर की स्तुति करने लगा।<sup>65</sup> और उन सब पर जो उनके आसपास रहते थे, भय छा गया; और ये सभी बातें यहूदिया के पहाड़ी देश में चर्चा का विषय बन गई।<sup>66</sup> और जो कोई उन्हें सुनता, उन्हें अपने मन में रखता, यह कहते हुए, “फिर यह बच्चा क्या बनेगा?” क्योंकि वास्तव में प्रभु का हाथ उसके साथ था।

<sup>67</sup> और उसके पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए, और भविष्यद्वाणी की, यह कहते हुए:

<sup>68</sup> “धन्य है इसाएल का परमेश्वर, क्योंकि उसने हमें देखा है और अपनी प्रजा के लिए उद्धार किया है<sup>69</sup> और उसने हमारे लिए उद्धार का सीधे उठाया है अपने सेवक दाऊद के घर में<sup>70</sup> जैसा कि उसने प्राचीन काल से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कहा था—<sup>71</sup> हमारे शत्रुओं से उद्धार, और उन सब के हाथ से जो हमारे धृणा करते हैं<sup>72</sup> हमारे पिताओं पर दया दिखाने के लिए, और अपनी पवित्र वाचा को स्मरण करने के लिए<sup>73</sup> वह शपथ जो उसने हमारे पिता अब्राहम से खार्झ थी<sup>74</sup> हमें यह देने के लिए कि हम, अपने शत्रुओं के हाथ से छुड़ाए गए, बिना भय के उसकी सेवा करें,<sup>75</sup> उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता में हमारे सभी दिनों में।<sup>76</sup> और तुम, बच्चा परमप्रधान का नबी कहलाओगे, क्योंकि तुम प्रभु के आगे उसके मार्ग तैयार करने के लिए जाओगे;<sup>77</sup> उसकी प्रजा को उद्धार का ज्ञान देने के लिए उनके पापों की क्षमा के द्वारा,<sup>78</sup> हमारे परमेश्वर की कोमल दया के कारण, जिसके साथ उच्च से सूर्योदय हमें दर्शन देगा,<sup>79</sup> उन पर प्रकाश डालने के लिए जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठते हैं, हमारे पैरों को शांति के मार्ग में ले जाने के लिए।”

<sup>80</sup> अब बच्चा बढ़ता गया और आत्मा में मजबूत होता गया, और वह इसाएल के सामने अपने सार्वजनिक प्रकट होने के दिन तक जंगलों में रहा।

**2** उन दिनों में कैसर ऑगस्टस की ओर से यह आज्ञा निकली कि सारी बसाई हुई पृथ्वी की जनगणना की जाए।<sup>2</sup> यह पहली जनगणना थी जब कुरिनियस सीरिया का राज्यपाल था।<sup>3</sup> और सब लोग जनगणना के लिए अपने-अपने नगर को जाने लगे।<sup>4</sup> अब यूसुफ भी गलील से, नासरत नगर से, यहूदिया के लिए गया, दाऊद के नगर, जिसे बेतलेहेम कहते हैं, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था,<sup>5</sup> ताकि वह मरियम के साथ, जो

## लूका

उससे मंगनी की हुई थी और गर्भवती थी, पंजीकृत हो सके।<sup>6</sup> जब वे वहाँ थे, तो उसके जन्म का समय आ पहुँचा।<sup>7</sup> और उसने अपने पहिले पुत्र को जन्म दिया; और उसे कपड़ों में लपेटकर चरनी में रखा, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी।

<sup>8</sup> उसी क्षेत्र में कुछ गड़ेरिये रात में अपने झुंड की रखवाली कर रहे थे।<sup>9</sup> और प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु की महिमा उनके चारों ओर चमकी, और वे अवश्य भयभीत हो गए।<sup>10</sup> तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "दरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनंद का सुसामाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा;<sup>11</sup> क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्घारकर्ता जन्मा है, जो मरीह प्रभु है।<sup>12</sup> और तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा: तुम एक बालक को कपड़ों में लिपटा और चरनी में पड़ा पाओगे।"<sup>13</sup> और अचानक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्णीय सेना का एक समूह प्रकट हुआ, जो परमेश्वर की स्तुति करते हुए कह रहा था,

<sup>14</sup> "सर्वोच्च में परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उन लोगों में शांति हो जिनसे वह प्रसन्न है।"

<sup>15</sup> जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग में चले गए, तो गड़ेरिये अपस में कहने लगे, "आओ, हम सीधे बेतलेहेम चलें और इस घटना को देखें, जो प्रभु ने हमें बताई है।"<sup>16</sup> और वे जल्दी से गए और मरियम और यूसुफ को पाया, और बालक को चरनी में पड़ा देखा।<sup>17</sup> जब उन्होंने उसे देखा, तो उन्होंने उस बात को बताया जो इस बालक के विषय में उन्हें कही गई थी।<sup>18</sup> और सभी जिन्होंने यह सुना, वे उन बातों से चकित हुए जो गड़ेरियों ने उन्हें बताई थीं।<sup>19</sup> परन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने हृदय में संजोकर रखा और उन पर विचार करती रही।<sup>20</sup> और गड़ेरिये लौट गए, उन सब बातों के लिए परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए, जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, जैसा उन्हें कहा गया था।

<sup>21</sup> और जब आठ दिन पूरे हो गए, ताकि उसका खतना किया जाए, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो नाम स्वर्गदूत ने उसके गर्भ में आने से पहले रखा था।

<sup>22</sup> और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनकी शुद्धि के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यरूशलेम ले आए, ताकि उसे प्रभु के सामने प्रस्तुत करें<sup>23</sup> (जैसा प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: "हर पलाता पुत्र जो गर्भ खोलता है, प्रभु के लिए परिव्रत कहा जाएगा"),<sup>24</sup> और प्रभु की व्यवस्था में लिखी

गई बात के अनुसार बलिदान चढ़ाने के लिए: "एक जोड़ी कबूतर या दो युवा कबूतर।"<sup>25</sup>

<sup>26</sup> और यरूशलेम में शमैन नाम का एक व्यक्ति था; और यह व्यक्ति धर्मी और भक्त था, इसाएल की सांत्वना की प्रतीक्षा कर रहा था; और पवित्र आत्मा उस पर था।

<sup>27</sup> और उसे पवित्र आत्मा के द्वारा यह प्रकट किया गया था कि वह मृत्यु को नहीं देखेगा जब तक कि वह प्रभु के मसीह को न देखे ले।<sup>28</sup> और वह आत्मा के द्वारा मंदिर में आया; और जब माता-पिता बालक यीशु को लाए, ताकि उसके लिए व्यवस्था की रीति पूरी करें,<sup>29</sup> तब उसने उसे अपनी बाहों में लिया, और परमेश्वर की स्तुति की, और कहा,

<sup>29</sup> "अब, प्रभु, तू अपने सेवक को शांति में विदा कर रहा है, अपनी बाणी के अनुसार,"<sup>30</sup> क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धर को देखा है,<sup>31</sup> जिसे तूने सब लोगों के सामने तेवर किया है;<sup>32</sup> अन्यजातियों के लिए प्रकाश के लिए और तेरे लोगों इसाएल की महिमा के लिए!"

<sup>33</sup> और उसके पिता और माता उन बातों से चकित थे जो उसके विषय में कही जा रही थीं।<sup>34</sup> और शमैन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी माता मरियम से कहा, "देख, यह बालक इसाएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए ठहराया गया है, और एक चिन्ह के लिए जिसका विरोध किया जाएगा—<sup>35</sup> और एक तलवार तुहारी आत्मा को भेदेगी—ताकि बहुतों के हृदयों के विचार प्रकट हों।"

<sup>36</sup> और अन्ना नाम की एक भविष्यद्वक्ती थी, फनुएल की पुत्री, आशेर के गोत्र की। वह बहुत वृद्ध थी और अपने विवाह के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रही थी,<sup>37</sup> और फिर विधवा होकर चौरासी वर्ष की आयु तक रही। वह मंदिर के प्रांगण को नहीं छोड़ती थी, उपवास और प्रार्थना के साथ रात-दिन सेवा करती थी।<sup>38</sup> और उसी समय वह आई और परमेश्वर का ध्यानवाद करने लगी, और उन सब से उसके विषय में बात करने लगी जो यरूशलेम के उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे थे।

<sup>39</sup> जब उन्होंने प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ पूरा कर लिया, तो वे गलील में अपने नगर नासरत लौट गए।<sup>40</sup> अब बालक बढ़ता और बलवान होता गया, और बुद्धि में बढ़ता गया; और परमेश्वर की कृपा उस पर थी।

<sup>41</sup> अब उसके माता-पिता हर वर्ष फसह के पर्व पर यरूशलेम जाते थे।<sup>42</sup> और जब वह बारह वर्ष का हुआ,

# लूका

तो वे पर्व के रीति के अनुसार वहाँ गए;<sup>43</sup> और जब वे पूरे दिन वहाँ रहे, तो बालक यीशु यरूशलेम में पीछे रह गया। परन्तु उसके माता-पिता को इसका पता नहीं था।<sup>44</sup> बल्कि, उन्होंने सोचा कि वह काफिले में है, और एक दिन की यात्रा की; और वे उसे अपने रिश्तेदारों और परिचितों के बीच ढूँढ़ने लगे।<sup>45</sup> और जब उन्होंने उसे नहीं पाया, तो वे उसे ढूँढ़ने के लिए यरूशलेम लौट गए।

<sup>46</sup> फिर, तीन दिन बाद, उन्होंने उसे मंटिर में पाया, शिक्षकों के बीच बैठा हुआ, उनसे सुनता और प्रश्न पूछता हुआ।<sup>47</sup> और जो कोई भी उसे सुनता था, उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित था।<sup>48</sup> जब यूसुफ और मरियम ने उसे देखा, तो वे चकित हुए; और उसकी माता ने उससे कहा, "बेटा, तूने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं चिंता में तुझे ढूँढ़ रहे थे!"<sup>49</sup> और उसने उनसे कहा, "बेटा, तूने यहारे साथ ऐसा क्यों किया?" देख, तेरा पिता और मैं चिंता में तुझे ढूँढ़ रहे थे!"<sup>50</sup> और उनसे उनसे कहा, "जो तुम्हें आदेश दिया गया है उससे अधिक कुछ न वसुला।"<sup>51</sup> और सैनिक भी उससे पूछ रहे थे, "हम क्या करें, हम भी?" और उसने उनसे कहा, "किसी से धन न छीनो, न किसी को परशान करो, और अपनी मजदूरी से संतुष्ट रहो।"

**3** तिबेरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में, जब पीलातुस यूहूदिया का राज्यपाल था, और हेरोदेस गलील का चौथाई शासक था, और उसका भाई फिलिप इशूरिया और त्रिसोनितिस के क्षेत्र का चौथाई शासक था, और लिसानियास अबिलीन का चौथाई शासक था,<sup>2</sup> अन्नास और कैफा के महायाजकल में, परमेश्वर का वन्न जंगल में जकर्यह के पुत्र यूहूना के पास आया।<sup>3</sup> और वह यरदन के आस-पास के सारे क्षेत्र में आया, पापों की क्षमा के लिए मन-परिवर्तन के बपतिस्मा का प्रचार करता हुआ;<sup>4</sup> जैसा कि यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक के शब्दों में लिखा है:

"ज़ंगल में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मारा  
तैयार करो उसकी पार्डिंडियों को सीधा करो<sup>5</sup> हर  
घाटी भरी जाएगी, और हर पहाड़ और टीला नीचा  
किया जाएगा, टेढ़ा सीधा हो जाएगा, और ऊबड़-  
खाबड़ रास्ते चिकने हो जाएंगे;<sup>6</sup> और सभी शरीर  
परमेश्वर के उद्घार को देखेंगे!"

<sup>7</sup> तो वह उन भीड़ों से कह रहा था जो उसके द्वारा बपतिस्मा लेने के लिए बाहर आ रही थीं, "हे साँपों की संतान, किसने तुम्हें आने वाले क्रोध से बचने की चेतावनी दी? <sup>8</sup> इसलिए मन-परिवर्तन के योग्य फल

उत्पन्न करो, और अपने आप से यह कहना शुरू न करो, 'हमारे पिता अब्राहम हैं' क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है।<sup>9</sup> लेकिन वास्तव में कुल्हाड़ी पहले से ही पेड़ों की जड़ पर रखी जा रही है; इसलिए हर पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा जाता है और आग में फेंका जाता है।"

<sup>10</sup> और भीड़ उससे पूछ रही थी, "तो हम क्या करें?"<sup>11</sup> और वह उन्हें उत्तर देता और कहता, "जिसके पास दो कुर्ते हैं, वह उसके साथ बैट जिसके पास कोई नहीं है; और जिसके पास भोजन है, वह भी ऐसा ही करे!"<sup>12</sup> अब यहाँ तक कि कर वसूलने वाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उन्होंने उससे कहा, "गुरु, हम क्या करें?"<sup>13</sup> और उसने उनसे कहा, "जो तुम्हें आदेश दिया गया है उससे अधिक कुछ न वसुला।"<sup>14</sup> और सैनिक भी उससे पूछ रहे थे, "हम क्या करें, हम भी?" और उसने उनसे कहा, "किसी से धन न छीनो, न किसी को परशान करो, और अपनी मजदूरी से संतुष्ट रहो।"

<sup>15</sup> अब जब लोग एक उम्मीद की स्थिति में थे और वे सब अपने दिलों में यूहूना के बारे में सोच रहे थे, कि शायद वह स्वर्य मरीह था,<sup>16</sup> यूहूना ने उन सबको उत्तर दिया, "जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ; लेकिन वह आ रहा है जो मुझसे अधिक शक्तिशाली है, और मैं उसकी जूतियों का फीता खोलने के योग्य नहीं हूँ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।"<sup>17</sup> उसके हाथ में फटकी है ताकि वह अपने खलिहान को पूरी तरह साफ कर सके, और गेहूँ को आने भंडार में इकट्ठा कर सके; लेकिन वह भूमी को बुझने वाली आग में जला देगा।"<sup>18</sup> तो उसने कई अन्य उपदेशों के साथ लोगों को सुसमाचार सुनाया।

<sup>19</sup> लेकिन जब हेरोदेस चौथाई शासक को उसके भाई की पत्नी हेरोदियास के बारे में, और हेरोदेस द्वारा किए गए सभी बुरे कामों के बारे में फटकारा गया,<sup>20</sup> हेरोदेस ने इन सब में यह भी जोड़ा: उसने यूहूना को जेल में बंद कर दिया।

<sup>21</sup> अब जब सभी लोग बपतिस्मा ले चुके थे, यीशु भी बपतिस्मा ले चुके थे, और जब वह प्रार्थना कर रहे थे, स्वर्ग खुल गया,<sup>22</sup> और पवित्र आत्मा कल्पुर के रूप में शारीरिक रूप में उन पर उत्तरा, और स्वर्ग से एक आवाज़ आई: "तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझे मैं प्रसन्न हूँ।"

# लूका

<sup>23</sup> जब उन्होंने अपनी सेवा शुरू की, यीशु स्वयं लगभग तीस वर्ष के थे, जैसा कि आमतौर पर माना जाता था, यूसुफ के पुत्र थे,

हेली के पुत्र,<sup>24</sup> मत्तत के पुत्र, लेणी के पुत्र मेल्की के पुत्र, यत्रहि के पुत्र यूसुफ के पुत्र<sup>25</sup> मत्ततियाह के पुत्र आमोस के पुत्र नहम के पुत्र, हस्ती के पुत्र, नग्नी के पुत्र,<sup>26</sup> मात के पुत्र, मत्ततियाह के पुत्र, शेमीन के पुत्र, योसेख के पुत्र, योदा के पुत्र<sup>27</sup> योहनान के पुत्र, रेसा के पुत्र, जरुब्बादेल के पुत्र, शालाइएल के पुत्र, नेरी के पुत्र,<sup>28</sup> मेल्की के पुत्र, अङ्गी के पुत्र, कोसम के पुत्र एलमादाम के पुत्र, एर के पुत्र<sup>29</sup> यीशु के पुत्र

एलीएजर के पुत्र, योरीम के पुत्र, मत्तत के पुत्र, लेणी के पुत्र,<sup>30</sup> शिमोन के पुत्र, यहदा के पुत्र, यूसुफ के पुत्र योहनान के पुत्र, एलियाकिम के पुत्र<sup>31</sup> मेलया के पुत्र मेन्ना के पुत्र, मत्तता के पुत्र, नाथान के पुत्र, दाकुद के पुत्र,<sup>32</sup> यिशे के पुत्र, ओबेद के पुत्र, बोअज के पुत्र सलमोन के पुत्र, नहशान के पुत्र<sup>33</sup> अमीन्नादाब के पुत्र, अदमिन के पुत्र, राम के पुत्र, हेजरान के पुत्र, ऐरेज़ के पुत्र, यहूदा के पुत्र,<sup>34</sup> याकूब के पुत्र, इसहाक के पुत्र, अब्राहम के पुत्र, तेरह के पुत्र, नाहार के पुत्र<sup>35</sup> सरगा के पुत्र, रेव के पुत्र, पेलेग के पुत्र, एबर के पुत्र, शेलह के पुत्र,<sup>36</sup> कैनान के पुत्र, अरफ़क्षद के पुत्र, शेम के पुत्र, तूह के पुत्र, लेमक के पुत्र<sup>37</sup> मदूरीलह के पुत्र हनोक के पुत्र, यारेद के पुत्र, महललेल के पुत्र, कैनान के पुत्र<sup>38</sup> एनोश के पुत्र, शेत के पुत्र, आदम के पुत्र, परमेश्वर के पुत्र।

**4** अब यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, यरदन से लौटे और आत्मा द्वारा जंगल में ले जाए गए।<sup>2</sup> चालीस दिनों तक, शैतान द्वारा परीक्षा में डाले गए। और उन दिनों में उन्होंने कुछ नहीं खाया, और जब वे समाप्त हो गए, तो उन्हें भूख लगी।<sup>3</sup> और शैतान ने उनसे कहा, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो इस पथर से कहें कि यह रोटी बन जाए।"<sup>4</sup> और यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यह लिखा है: मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीवित रहेगा।"

<sup>5</sup> और उसने उन्हें ऊपर ले जाकर एक क्षण में संसार के सभी राज्यों को दिखाया।<sup>6</sup> और शैतान ने उनसे कहा, "मैं आपको यह सब अधिकार और उसकी महिमा द्वारा, क्योंकि यह मुझे सौंपा गया है, और मैं इसे जिसे चाहूँ उसे देता हूँ।"<sup>7</sup> इसलिए, यदि आप मेरे सामने आराधना करेंगे, तो यह सब आपका हो जाएगा!"<sup>8</sup> यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यह लिखा है: तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना करो और केवल उसी की सेवा करो।"<sup>9</sup>

<sup>9</sup> और वह उन्हें यरूशलैम में ले गया और मंदिर के शिखर पर खड़ा कर दिया, और उनसे कहा, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो यहाँ से नीचे कूरें;<sup>10</sup> क्योंकि यह लिखा है: 'वह अपने स्वर्वद्वातों को आपके विषय में आदेश देगा, कि वे आपकी रक्षा करें,'<sup>11</sup> और, वे अपने हाथों पर आपको उठा लेंगे, ताकि आप अपने पैर को पथर से न टकराए।"<sup>12</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "यह कहा गया है: तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लो।"<sup>13</sup> और इस प्रकार शैतान, हर परीक्षा समाप्त कर, उसे छोड़कर एक उपयुक्त समय तक चला गया।

<sup>14</sup> और यीशु आत्मा की शक्ति में गलील में लौटे, और उनके विषय में समाचार चारों ओर के क्षेत्र में फैल गया।<sup>15</sup> और उन्होंने उनकी सभाओं में शिक्षा देना शुरू किया और सब ने उनकी प्रशंसा की।

<sup>16</sup> और वे नासरत आए, जहाँ वे पले-बढ़े थे; और जैसा कि उनकी आदत थी, वे सब्त के दिन सभा में गए, और पढ़ने के लिए खड़े हुए।<sup>17</sup> और यशायाह नबी का स्क्रॉल उन्हें दिया गया। और उन्होंने स्क्रॉल खोला और वह स्थान पाया जहाँ लिखा था:<sup>18</sup> "प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषेक किया है। उसने मुझे बंदियों का रिहाई की घोषणा करने के लिए भेजा है, और अंधों की दृष्टि की पुनःप्राप्ति के लिए, उत्तीर्णितों को स्वतंत्र करने के लिए,<sup>19</sup> प्रभु के अनुकूल वर्ष की घोषणा करने के लिए!"<sup>20</sup> और उन्होंने स्क्रॉल को लपेटा, उसे परिचारक को वापस दिया, और बैठ गए; और सभा में सभी की आँखें उन पर टिकी थीं।<sup>21</sup> अब उन्होंने उनसे कहना शुरू किया, "आज यह शास्त्र आपके सुनने में पूरा हुआ है।"<sup>22</sup> और सभी लोग उनकी प्रशंसा कर रहे थे, और उनके होठों से निकलने वाले अनुग्रहपूर्ण शब्दों की सराहना कर रहे थे; और वे कह रहे थे, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"<sup>23</sup> और उन्होंने उनसे कहा, "निस्संदेह आप यह कहावत मुझे उद्धृत करेंगे: चिकित्सक, अपने आप को ठीक करो। वे सभी चमत्कार जो हमने कफरनहम में सुने थे, यहाँ अपने गृहनगर में भी करो।"<sup>24</sup> लेकिन उन्होंने कहा, "सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, कोई नबी अपने गृहनगर में स्वीकार नहीं किया जाता।"<sup>25</sup> लेकिन मैं तुमसे सच कहता हूँ, एलियाह के दिनों में इसाएल में कई विधवाएँ थीं, जब आकाश तीन वर्ष और छह महीने के लिए बंद था, और पूरे देश में एक भयंकर अकाल पड़ा;<sup>26</sup> और फिर भी एलियाह उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सिदोन के देश में सारपत में, एक विधवा स्त्री के पास।<sup>27</sup> और एलिशा नबी के समय में इसाएल

# लूका

में कई कोड़ी थे, और उनमें से कोई भी शुद्ध नहीं किया गया, केवल सीरिया के नामान को।<sup>11</sup> <sup>28</sup> और सभा में सभी लोग जब ये बातें सुनीं तो क्रोध से भर गए; <sup>29</sup> और वे उठे और उन्हें नगर से बाहर निकाल दिया, और उन्हें उस पहाड़ी की चोटी पर ले गए जिस पर उनका नगर बना था, ताकि वे उन्हें चट्टान से नीचे गिरा सकें। <sup>30</sup> लेकिन वे उनके बीच से होकर निकल गए और अपने रास्ते चले गए।

<sup>31</sup> और वे गलील के एक नगर कफरनहूम में आए; और वे सब्के के दिन उन्हें सिखा रहे थे; <sup>32</sup> और वे उनकी शिक्षा से चकित थे, क्योंकि उनका संदेश अधिकार के साथ दिया गया था। <sup>33</sup> अब सभा में एक व्यक्ति था जो एक अशुद्ध दानव की आत्मा से ग्रस्त था, और उसने ऊँची आवाज में चिल्लाया, <sup>34</sup> हमें अकेला छोड़ दो! यीशु नासपरी, तुम्हारा हमसे क्या काम है? क्या तुम हमें नष्ट करने आए हो? मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो— परमेश्वर के पवित्र।<sup>12</sup> <sup>35</sup> लेकिन यीशु ने उसे डाटा, कहा, “चुप रहो और उससे बाहर आओ!” और जब दानव ने उसे लोगों के बीच में पटक दिया, तो वह उससे बाहर आ गया बिना उसे कोई हानि पहुँचाए। <sup>36</sup> और सभी पर आश्वर्य हुआ, और वे एक-दूसरे से बात करने लगे, कहने लगे, “यह क्या संदेश है? क्योंकि वह अधिकार और शक्ति के साथ अशुद्ध आत्माओं को आदेश देता है, और वे बाहर आ जाते हैं!” <sup>37</sup> और उनके विषय में समाचार चारों ओर के क्षेत्र के हर स्थान में फैल रहा था।

<sup>38</sup> फिर वे उठे और सभा से निकलकर शमैन के घर में गए। अब शमैन की सास तेज बुखार से पीड़ित थी, और उन्होंने उनसे उसकी मदद करने के लिए कहा। <sup>39</sup> और उनके ऊपर खड़े होकर, उन्होंने बुखार को डाटा, और वह चला गया; और वह तुरंत ठठकर उनकी सेवा करने लगी। <sup>40</sup> अब जब सूर्य अस्त हो रहा था, तो वे सभी जो विभिन्न बीमारियों से पीड़ित थे, उन्हें उनके पास लाए; और वे प्रत्येक पर अपने हाथ रखकर उन्हें चंगा कर रहे थे। <sup>41</sup> दानव भी कई से बाहर आ रहे थे, चिल्लाते हुए, “तुम परमेश्वर के पुराहो!” फिर भी वे उन्हें डांट रहे थे और उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दे रहे थे, क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीह हैं।

<sup>42</sup> अब जब दिन आया, यीशु एक एकांत स्थान पर चले गए; और भीड़ उन्हें खोज रही थी, और उनके पास आई और उन्हें अपने से दूर जाने से रोकने की कोशिश की।

<sup>43</sup> लेकिन उन्होंने उनसे कहा, “मुझे परमेश्वर के राज्य का प्रचार अन्य नगरों में भी करना चाहिए, क्योंकि मैं इसी

उद्देश्य के लिए भेजा गया था।”<sup>13</sup> <sup>44</sup> इसलिए वे यहूदिया की सभाओं में प्रचार करते रहे।

**5** अब ऐसा हुआ कि जब भीड़ उनके चारों ओर दबाव डाल रही थी और परमेश्वर के वचन को सुन रही थी, वह गत्रेसरत झील के किनारे खड़े थे; <sup>2</sup> और उन्होंने झील के किनारे दो नाव देखीं; लेकिन मछुआरे उनमें से बाहर निकल चुके थे और अपने जाल धो रहे थे। <sup>3</sup> और वह एक नाव में चढ़ गए, जो शमैन की थी, और उनसे कहा कि यीशुन से थोड़ी दूरी पर ले चलो। और वह बैठ गए और नाव से भीड़ को सिखाने लगे। <sup>4</sup> जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तो उन्होंने शमैन से कहा, “गहरे पानी में चलो और पकड़ के लिए अपने जाल डालो।”<sup>5</sup> <sup>9</sup> शमैन ने उत्तर दिया और कहा, “गुरु, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ नहीं पकड़ा, लेकिन मैं आपकी बात मानूंगा और जाल डालूंगा।”<sup>6</sup> <sup>10</sup> और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी, और उनके जाल फटने लगे; <sup>7</sup> तो उन्होंने दूसरी नाव में अपने साथियों को सूक्त दिया, कि आकर उनकी मदद करें। और वे आए और दोनों नावों को भर लिया, यहां तक कि वे ढूँबने लगीं। <sup>8</sup> लेकिन जब शमैन पतरस ने यह देखा, तो वह यीशु के घुटनों पर गिर पड़ा, और कहा, “मुझसे दूर हो जाओ, प्रभु, क्योंकि मैं एक पापी मनुष्य हूँ!”<sup>9</sup> क्योंकि मछलियों की पकड़ के कारण जो उन्होंने ली थी, वह और उसके सभी साथी आश्वर्यकित हो गए थे;<sup>10</sup> और इसी प्रकार याकूब और यूहना भी थे, जो जब्ती के पुत्र थे, जो शमैन के साथी थे। और यीशु ने शमैन से कहा, “डरो मत; अब से तुम मनुष्यों को पकड़ोगे।”<sup>11</sup> जब उन्होंने अपनी नावों को जमीन पर लाया, तो वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

<sup>12</sup> जब वह एक नगर में थे, तो देखो, एक व्यक्ति कोढ़ से भरा हुआ था; और जब उसने यीशु को देखा, तो वह अपने चेहरे पर गिर पड़ा और उनसे विनती करने लगा, “प्रभु, यदि आप चाहें, तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।”<sup>13</sup> और उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और उसे छकर कहा, “मैं चाहता हूँ, शुद्ध हो जाओ।” और तुरंत कोढ़ उससे चला गया। <sup>14</sup> और उन्होंने उसे किसी को न बताने की आज्ञा दी, कहा, “लेकिन जाओ और अपने आप को याजक को दिखाओ, और अपनी शुद्धि के लिए एक भेट चढ़ाओ, जैसा कि मूसा ने आज्ञा दी थी, उनके लिए एक गवाही के रूप में।”<sup>15</sup> लेकिन उनके बारे में खबर और भी दूर तक फैल रही थी, और बड़ी भीड़ उन्हें सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा इ पाने के लिए इकट्ठा हो रही थी। <sup>16</sup> लेकिन यीशु स्वयं अक्सर जंगल में चले जाते और प्रार्थना करते थे।

# लूका

<sup>17</sup> एक दिन वह सिखा रहे थे; और वहाँ कुछ फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक बैठे थे, जो गलील और यदृदिया के हर गाँव से और यरूशलेम से आए थे; और प्रभु की शक्ति उनके लिए चंगाई करने के लिए उपस्थित थी। <sup>18</sup> और कुछ लोग एक व्यक्ति को खाट पर ले जा रहे थे जो लकवाग्रस्त था; और वे उसे अंदर लाने और उसके सामने रखने की कोशिश कर रहे थे। <sup>19</sup> लेकिन जब उन्होंने भीड़ के कारण उसे अंदर लाने का कोई तरीका नहीं पाया, तो वे छत पर चढ़ गए और उसे खट सहित टाइलों के माध्यम से भीड़ के बीच में, यीशु के सामने उतार दिया। <sup>20</sup> और उनकी आस्था देखकर, उन्होंने कहा, “मित्र, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं”। <sup>21</sup> शास्त्री और फरीसी सोचने लगे, “यह व्यक्ति कौन है जो निंदा करता है? पापों को कौन क्षमा कर सकता है, सिवाय परमेश्वर के?” <sup>22</sup> लेकिन यीशु, उनके विचारों से अवगत होकर, उन्हें उत्तर दिया और कहा, “तुम अपने दिलों में इस तरह क्यों सोच रहे हो? <sup>23</sup> कौन सा आसान है, यह कहना, ‘तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं, या यह कहना, ‘उठो और चलो?’ <sup>24</sup> लेकिन ताकि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को पृथी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार है।” उन्होंने लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहा, “मैं तुमसे कहता हूँ, उठो, और अपनी खाट उठाओ, और घर जाओ।” <sup>25</sup> और तुरंत वह उनके सामने उठ खड़ा हुआ, और जिस पर वह लेटा था, उसे उठा लिया, और परमेश्वर की महिमा करता हुआ घर चला गया। <sup>26</sup> और वे सब आश्चर्यचित हो गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे; और वे डर से भर गए, कहते हुए, “हमने आज अद्भुत चीजें देखी हैं!”

<sup>27</sup> इसके बाद वह बाहर गए और एक कर वसूलने वाले को देखा जिसका नाम लेवी था, जो कर कार्यालय में बैठा था, और उन्होंने उससे कहा, “मेरे पीछे आओ।” <sup>28</sup> और उसने सब कुछ छोड़ दिया, और उठकर उनके पीछे हो लिया। <sup>29</sup> और लेवी ने अपने घर में उनके लिए एक बड़ा भोज दिया; और वहाँ कर वसूलने वालों और अन्य लोगों की बड़ी भीड़ थी जो उनके साथ मंजेर बैठे थे। <sup>30</sup> फरीसी और उनके शास्त्री उनके शिष्यों से बड़बड़ाने लगे, कहते हुए, “तुम कर वसूलने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते और पीते हो?” <sup>31</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “जो स्वरूप हैं उन्हें चिकित्सक की अवश्यकता नहीं होती, बल्कि जो बीमार हैं उन्हें होती है।” <sup>32</sup> मैं धर्मियों को पश्चाताप के लिए बुलाने नहीं आया, बल्कि पापियों को।”

<sup>33</sup> और उन्होंने उनसे कहा, “यूहन्ना के शिष्य अक्सर उपवास करते हैं और प्रार्थनाएँ करते हैं, फरीसियों के

शिष्य भी ऐसा ही करते हैं, लेकिन आपके शिष्य खाते और पीते हैं।” <sup>34</sup> लेकिन यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम दूल्हे के साथियों को उपवास करवा सकते हो जब तक दूल्हा उनके साथ है? <sup>35</sup> लेकिन दिन आएंगे; और जब दूल्हा उनसे लिया जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे।” <sup>36</sup> और उन्होंने उन्हें एक दृष्टंत भी बताया: “कोई भी नए वस्त्र से एक टुकड़ा नहीं फाड़ता और उसे पुराने वस्त्र पर नहीं लगाता; अन्यथा वह नया भी फाड़ देगा, और नए का टुकड़ा पुराने से मेल नहीं खाएगा।” <sup>37</sup> और कोई भी नया दाखरस पुराने मटकों में नहीं डालता; अन्यथा नया दाखरस मटकों को फाड़ देगा और वह बाहर गिर जाएगा, और मटके नष्ट हो जाएंगे। <sup>38</sup> लेकिन नया दाखरस नए मटकों में डाला जाना चाहिए। <sup>39</sup> और कोई भी, पुराना दाखरस पीने के बाद, नया नहीं चाहता; क्योंकि वह कहता है, ‘पुराना अच्छा है।’”

**6** अब ऐसा हुआ कि एक सब्त के दिन वह अनाज के खेतों से होकर जा रहे थे, और उसके चेले अनाज के बाल तोड़कर, उन्हें अपने हाथों में रगड़कर खा रहे थे। <sup>2</sup> पर कुछ फरीसी कहने लगे, “तुम सब्त के दिन ऐसा क्यों कर रहे हो जो व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है?” <sup>3</sup> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब वह भूखा था, वह और जो उसके साथ थे— <sup>4</sup> कैसे वह परमेश्वर के घर में गया, और उसने पवित्र रोटी ली और खाई, जो केवल याजकों के खाने के लिए वैध थी, और उसने अपने साथियों को भी दी?” <sup>5</sup> और वह उनसे कह रहा था, “मनुष्य का पुत्र सब्त का भी प्रभु है।”

**6** एक और सब्त के दिन वह आराधनालय में गया और शिक्षा देने लगा; और वहाँ एक व्यक्ति था जिसकी दाहिनी हाथ सूखी हुई थी। <sup>7</sup> अब शास्त्री और फरीसी उसे धान से देख रहे थे, कि क्या वह सब्त के दिन चांगा करेगा, ताकि वे उसे दोषी ठहरा सकें। <sup>8</sup> पर वह जानता था कि वे क्या सोच रहे थे, और उसने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, “उठो और आगे आओ।” और वह उठा और आगे आया। <sup>9</sup> और यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे पूछता हूँ क्या सब्त के दिन भला करना उचित है, या बुरा करना, जीवन बचाना या नष्ट करना?” <sup>10</sup> और उन सबको देखकर उसने उनसे कहा, “अपना हाथ बढ़ाओ।” और उसने ऐसा किया; और उसका हाथ फिर से स्वस्थ हो गया। <sup>11</sup> पर वे स्वर्य क्रोध से भर गए, और आपस में चर्चा करने लगे कि वे यीशु के साथ क्या करें।

**12** अब उसी समय वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चला गया, और उसने पूरी रात परमेश्वर के साथ प्रार्थना

# लूका

में बिताई।<sup>13</sup> और जब दिन हुआ, उसने अपने चेलों को बुलाया और उनमें से बारह को चुना, जिन्हें उसने प्रेरित भी कहा: <sup>14</sup> शमौन, जिसे उसने पतरस भी कहा, और उसका भाई अद्रियास; और याकूब और यूहन्ना, और फिलिप्पस और बरथोलोमाय; <sup>15</sup> और मत्ती और थोमा; अलफाई का पुत्र याकूब, और शमौन जो उसाई कहलाता था; <sup>16</sup> याकूब का पुत्र यहूदा, और यहूदा इस्करियोती, जो बाद में विश्वासघाती हो गया।

<sup>17</sup> और यीशु उनके साथ नीचे आया और एक समतल स्थान पर खड़ा हुआ; और उसके चेलों की बड़ी भीड़ थी, और यहूदिया और यरूशलेम से, और सूर और सैदा के समुद्र तट के क्षेत्र से बड़ी भीड़ थी, <sup>18</sup> जो उसे सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिए आए थे; और जो अशृद्ध आत्माओं से पीड़ित थे, वे चंगे हो रहे थे। <sup>19</sup> और सब लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उससे शक्ति निकल रही थी और सबको चंगा कर रही थी।

<sup>20</sup> और उसने अपनी आँखें अपने चेलों की ओर उठाई और कहना शुरू किया,

"धन्य हो तुम जो गरीब हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।<sup>21</sup> धन्य हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे।<sup>22</sup> धन्य हो तुम जब रोते हो क्योंकि तुम हँस्ये।<sup>23</sup> धन्य हो तुम जब लोग तुमसे धृणा करेंगे, और जब वे तुम्हें अलग करेंगे, और तुम्हारा अपमान करेंगे, और तुम्हारे नाम को बुरा कहेंगे, मनुष्य के पुत्र के कारण।

<sup>23</sup> उस दिन आनन्दित हो और खुशी से कूदो, क्योंकि देखो, तुम्हारा प्रतिफल स्वर्ग में बड़ा है। क्योंकि उनके पिताओं ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया था।

<sup>24</sup> पर हाय तुम जो धनी हो, क्योंकि तुम अपनी सांत्नना पूरी तरह प्राप्त कर रहे हो।<sup>25</sup> हाय तुम जो अब तृप्त हो क्योंकि तुम भूखे होगे। हाय तुम जो अब हँसते हो, क्योंकि तुम विलाप करोगे और रोओगे।<sup>26</sup> हाय तुम जब सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं क्योंकि उनके पिताओं ने ज़ुठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया था।

<sup>27</sup> पर मैं तुमसे जो सुनते हो कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे धृणा करते हैं उनके साथ भलाई करो, <sup>28</sup> जो तुम्हें श्राप देते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हारे प्रति अपमानजनक हैं उनके लिए प्रार्थना करो।

<sup>29</sup> जो तुम्हारे गाल पर मारता है, उसे दूसरा भी पेश करो; और जो तुम्हारी चादर लेता है, उसे कुर्ता भी न रोको। <sup>30</sup> जो कोई तुमसे माँगता है उसे दो, और जो तुम्हारा लेता है उससे वापस मत माँगो। <sup>31</sup> लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें।

<sup>32</sup> यदि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या श्रेय है? क्योंकि पापी भी उनसे प्रेम करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं। <sup>33</sup> और यदि तुम उनसे भलाई करते हो जो तुमसे भलाई करते हैं, तो तुम्हें क्या श्रेय है? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। <sup>34</sup> और यदि तुम उनसे उधार देते हो जिनसे तुम वापस प्राप्त करने की उम्मीद करते हो, तो तुम्हें क्या श्रेय है? यहाँ तक कि पापी भी पापियों को उधार देते हैं ताकि उतना ही वापस प्राप्त कर सके। <sup>35</sup> पर अपने शत्रुओं से प्रेम करो, और भलाई करो, और उधार दो, बिना कुछ वापस पाने की उम्मीद के; और तुम्हारा प्रतिफल बड़ा होगा, और तुम परमप्रधान के पुत्र कहलाओगे, क्योंकि वह स्वयं कृतज्ञ और बुरे के प्रति दयालु है। <sup>36</sup> दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पिता दयालु है।

<sup>37</sup> न्याय मत करो, और तुम्हारा न्याय नहीं होगा; दोष मत लगाओ, और तुम्हारा दोष नहीं लगेगा; क्षमा करो, और तुम्हें क्षमा किया जाएगा। <sup>38</sup> दो, और तुम्हें दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में अच्छा माप डालेंगे—दबाया हुआ, हिलाया हुआ, और उफानता हुआ। क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो, उसी से तुम्हें वापस मापा जाएगा।"

<sup>39</sup> अब उसने उन्हें एक दृष्टि भी कहा: "एक अंधा व्यक्ति दूसरे अंधे का मार्गदर्शन नहीं कर सकता, क्या वह कर सकता है? क्या वे दोनों गढ़े में नहीं रिहेंगे? <sup>40</sup> एक छात्र शिक्षक से ऊपर नहीं होता; परंतु हर कोई, जब वह पूरी तरह से प्रशिक्षित होता है, अपने शिक्षक के समान होगा। <sup>41</sup> तुम अपने भाई की आँख के तिनके को क्यों देखते हो, पर अपनी आँख के लट्ठे को नहीं देखते? <sup>42</sup> या तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, 'भाई, मुझे अपनी आँख के तिनके को निकालो दे'; जब तुम स्वयं अपनी आँख के लट्ठे को नहीं देखते? तुम कपटी हो, पहले अपनी आँख के लट्ठे को निकालो, और फिर तुम स्पष्ट रूप से देखोगे कि अपने भाई की आँख के तिनके को कैसे निकालना है।

<sup>43</sup> क्योंकि कोई अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं देता, और न ही, दूसरी ओर, कोई बुरा पेड़ अच्छा फल देता है। <sup>44</sup> क्योंकि प्रत्येक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है।

# लूका

क्योंकि लोग काँटों से अंजीर नहीं बीनते, और न ही वे बबूत की ज़ाड़ी से अंगूर तोड़ते हैं।<sup>45</sup> अच्छा व्यक्ति अपने हृदय के अच्छे खजाने से अच्छा निकालता है, और बुरा व्यक्ति बुरे खजाने से बुरा निकालता है; क्योंकि उसका मुँह उसी से बोलता है जो उसके हृदय को भरता है।

<sup>46</sup> अब तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो, और जो मैं कहता हूँ उसे नहीं करते? <sup>47</sup> हर कोई जो मेरे पास आता है और मेरी बातों को सुनता है और उन पर अमल करता है, मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि वह किसके समान है:<sup>48</sup> वह एक व्यक्ति के समान है जो धर बनाता है, जिसने गहराई तक खोदा और चट्ठान पर नींव रखी; और जब बढ़ आई, तो धारा उस धर पर टूट पड़ी और फिर भी उसे हिला नहीं सकी, क्योंकि वह अच्छी तरह से बना था।<sup>49</sup> परंतु जो सुनता है और उसके अनुसार कार्य नहीं करता, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव के जमीन पर धर बनाया; और धारा उस पर टूट पड़ी, और तुरंत वह गिर गया, और उस धर का विनाश बड़ा था।"

**7** जब यीशु ने लोगों के सुनने में अपनी सारी शिक्षा पूरी कर ली, तो वह कफरनहम गए।<sup>2</sup> अब एक सूबेदार का दास, जो उसके द्वारा अत्यधिक समानित था, बीमार था और मरने वाला था।<sup>3</sup> जब उसने यीशु के बारे में सुना, तो उसने कुछ यहूदी बुजुर्गों को उनके पास भेजा, उनसे अनुरोध किया कि वे आएं और उसके दास की जान बचाएं।<sup>4</sup> जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने उनसे जोर देकर कहा, "वह इसके योग्य है कि आप उसे यह अनुग्रह दें;"<sup>5</sup> क्योंकि वह हमरे राष्ट्र से प्रेम करता है, और उसी ने हमारे लिए आराधनालय का निर्माण किया।<sup>6</sup> अब यीशु उनके साथ चलने लगे; लेकिन जब वह धर से बहुत दूर नहीं थे, तो सूबेदार ने मित्रों को भेजा, उनसे कहा, "प्रभु, अपने आप को और कष्ट न दें, क्योंकि मैं योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे छत के नीचे आएं;<sup>7</sup> इसी कारण मैंने अपने आप को आपके पास आने के योग्य नहीं समझा; लेकिन केवल एक शब्द कहें, और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।"<sup>8</sup> क्योंकि मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो अधिकार के अधीन है, और मेरे अधीन सैनिक हैं; और मैं इस से कहता हूँ, 'जाओ!' और वह जाता है, और दूसरे से, 'आओ!' और वह आता है, और अपने दास से, यह करो! और वह करता है!"<sup>9</sup> अब जब यीशु ने यह सुना, तो वह उससे आश्वर्यकित हुए, और उस भीड़ से जो उनके पाले चल रही थी, कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, इसाएल में भी मैंने ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया।"<sup>10</sup> और जब वे लोग जो भेजे गए थे, धर लैटे, तो उन्होंने दास को अच्छी सेहत में पाया।

<sup>11</sup> इसके बाद, यीशु नाईन नामक एक नगर में गए; और उनके शिष्य उनके साथ जा रहे थे, और एक बड़ी भीड़ भी उनके साथ थी।<sup>12</sup> अब जब वह नगर के द्वार के पास पहुँचे, तो एक मरा हुआ व्यक्ति बाहर ले जाया जा रहा था, जो उसकी माँ का एकमात्र पुत्र था, और वह विधवा थी; और नगर से एक बड़ी भीड़ उसके साथ थी।<sup>13</sup> जब प्रभु ने उसे देखा, तो उसे उस पर दया आई और उसने उससे कहा, "रोना बंद करो।"<sup>14</sup> और वह पास गया और ताबूत को छू लिया; और जो उसे ले जा रहे थे, वे रुक गए। और उसने कहा, "युवा व्यक्ति, मैं तुमसे कहता हूँ, उठो!"<sup>15</sup> और मरा हुआ व्यक्ति उठ बैठा और बोलने लगा। और यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया।<sup>16</sup> सभी को भय ने घेर लिया, और वे परमेश्वर की महिमा करने लगे, कहते हुए, "हमारे बीच एक महान नवी प्रकट हुआ है!" और, "परमेश्वर ने अपने लोगों का दौरा किया है!"<sup>17</sup> और उसके बारे में यह खबर यहूदिया और आसपास के सभी क्षेत्र में फैल गई।

<sup>18</sup> यूहन्ना के शिष्यों ने भी उसे इन सब बातों के बारे में बताया।<sup>19</sup> और अपने दो शिष्यों को बुलाकर, यूहन्ना ने उन्हें प्रभु के पास भेजा, कहते हुए, "क्या आप वह आने वाले हैं, या हमें किसी और की प्रतीक्षा करनी चाहिए?"<sup>20</sup> जब वे लोग उसके पास आए, तो उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले न हमें आपके पास भेजा है, यह पूछने के लिए, क्या आप वह आने वाले हैं, या हमें किसी और की प्रतीक्षा करनी चाहिए?"<sup>21</sup> उसी समय उसने कई लोगों को बीमारियों, कष्टों, और दुष्ट आमाओं से चंगा किया; और उसने कई अंधों को दृष्टि दी।<sup>22</sup> और उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "जाओ और यूहन्ना को बताओ जो तुमने देखा और सुना है: अधे दृष्टि पाते हैं, लगड़े चलते हैं, कोहीं शुद्ध होते हैं और बहरे सुनते हैं, मरे हुए उठाए जाते हैं, और गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"<sup>23</sup> और धन्य है वह जो मुझसे ठोकर नहीं खाता।"

<sup>24</sup> जब यूहन्ना के दूत चले गए, तो उसने भीड़ से यूहन्ना के बारे में कहना शुरू किया: "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से हिलती हुई एक सरकंडा?"<sup>25</sup> लेकिन तुम क्या देखने गए थे? नरम कपड़ों में पहना हुआ एक आदमी? जो शानदार कपड़े पहनते हैं और विलासिता में रहते हैं वे राजमहलों में पाए जाते हैं।<sup>26</sup> लेकिन तुम क्या देखने गए थे? एक नबी? हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, और वह जो एक नबी से भी बढ़कर है।<sup>27</sup> यह वही है जिसके बारे में लिखा गया है:

## लूका

‘देखो, मैं तुम्हारे आगे अपने दृत को भेज रहा हूँ जो तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।’

<sup>28</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, स्थियों से जन्मे लोगों में से कोई भी यूहना से बड़ा नहीं है; फिर भी जो परमेश्वर के राज्य में सबसे थोटा है, वह उससे बड़ा है।<sup>29</sup> जब सभी लोग और कर संग्रहकर्ता ने यह सुना, तो उन्होंने परमेश्वर की चाय को स्वीकार किया, यूहना के बपतिस्मा से बपतिस्मा लेकर।<sup>30</sup> लेकिन फरीसी और वकील ने अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया, यूहना द्वारा बपतिस्मा न लेकर।

<sup>31</sup> ‘फिर मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूँ, और वे कैसे हैं?’<sup>32</sup> वे उन बच्चों के समान हैं जो बाजार में बैठते हैं और एक-दूसरे को पुकारते हैं, और कहते हैं,

‘हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, और तुमने नृत्य नहीं किया; हमने शोकगीत गाया, और तुमने रोया नहीं।’

<sup>33</sup> क्योंकि यूहना बपतिस्मा देने वाला न तो रोटी खाता हुआ आया और न ही दाखरस पीता हुआ, और तुम कहते हो, ‘उसमें दुष्टाता है।’<sup>34</sup> मनुष्य का पुत्र खाता और पीता हुआ आया, और तुम कहते हो, ‘देखो, एक पेट व्यक्ति और भारी पीने वाला, कर संग्रहकर्ताओं और पापियों का मित्र।’<sup>35</sup> और फिर भी बुद्धि अपने सभी बच्चों द्वारा सिद्ध होती है।”

<sup>36</sup> अब एक फरीसी ने उसे अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया, और वह फरीसी के घर में प्रवेश किया और मेज पर बैठ गया।<sup>37</sup> और नगर में एक स्त्री थी जो पापिनी थी; और जब उसने सुना कि वह फरीसी के घर में मेज पर बैठा है, तो वह एक अलबास्टर की शीशी में इत्र लेकर आई,<sup>38</sup> और, उसके पैरों के पास खड़ी होकर, रोटी हुई, उसने उसके पैरों को अपने आँखों से भिगोना शुरू किया, और अपने सिर के बालों से उन्हें पौछा, और उसके पैरों को चूमने और इत्र से अधिष्ठिक करने लगी।<sup>39</sup> अब जब फरीसी जिसने उसे आमंत्रित किया था, यह देखा, तो उसने अपने मन में कहा, “यदि यह व्यक्ति नबी होता, तो वह जानता कि यह स्त्री कौन है और कैसी है जो उसे छू रही है, कि वह पापिनी है!”<sup>40</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “सिमोन, मूझे तुमसे कुछ कहना है।” और उसने, “कहिए, शिक्षक!”<sup>41</sup> “एक साहूकार के दो ऋणी थे: एक पर पाँच सौ दीनार और दूसरे पर पचास।<sup>42</sup> जब वे चुकाने में असमर्थ थे, तो उसने दोनों का ऋण माफ कर दिया। तो उनमें से कौन उसे अधिक प्रेम करेगा?”<sup>43</sup>

सिमोन ने उत्तर दिया और कहा, “मुझे लगता है वह जिसे उसने बड़ा ऋण माफ किया।” और उसने उससे कहा, “तुमने सही निर्णय लिया है।”<sup>44</sup> और उस स्त्री की ओर मुड़कर, उसने सिमोन से कहा, “क्या तुम इस स्त्री को देखते हो? मैं तुम्हारे घर में आया; तुमने मेरे पैरों के लिए पानी नहीं दिया, लेकिन उसने मेरे पैरों को अपने आँखों से भिगोया और अपने बालों से पौछा।<sup>45</sup> तुमने मुझे चुम्बन नहीं दिया; लेकिन जब से मैं आया हूँ, उसने मेरे पैरों को चूमना बंद नहीं किया।<sup>46</sup> तुमने मेरे सिर को तेल से अभिषेक नहीं किया, लेकिन उसने मेरे पैरों को इत्र से अभिषेक किया।<sup>47</sup> इसी कारण मैं तुमसे कहता हूँ: उसके पाप, जो बहुत हैं, क्षमा किए गए हैं, क्योंकि उसने बहुत प्रेम किया; लेकिन जिसे थोड़ा क्षमा किया गया है, वह वह थोड़ा प्रेम करता है।”<sup>48</sup> और उसने उससे कहा, “तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।”<sup>49</sup> और फिर जो लोग उसके साथ मेज पर बैठे थे, वे अपने आप में कहने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?”<sup>50</sup> लेकिन उसने उस स्त्री से कहा, “तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचा लिया है; शांति से जाओ।”

**8** इसके बाद वह एक नगर और गाँव से दूसरे नगर और गाँव में जाने लगे, और परमेश्वर के राज्य का प्रचार और उपदेश करने लगे; और बारह उनके साथ थे,<sup>2</sup> और कुछ स्थियाँ भी थीं जिन्हें बुरी आत्माओं और बीमारियों से चंगा किया गया था: मरियम, जिसे मगदलीनी कहा जाता था, जिससे सात दुष्टात्माएँ निकली थीं,<sup>3</sup> और योअन्ना, चूजा की पत्नी, जो हेरेदेस का भंडारी था, और सुजना, और कई अन्य जो अपनी निजी संपत्ति से उनकी सहायता कर रही थीं।

<sup>4</sup> जब एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही थी, और विभिन्न नगरों से लोग उनके पास आ रहे थे, उन्होंने एक दृष्टांत के रूप में कहा: <sup>5</sup> “बीज बोने वाला बीज बोने के लिए निकला; और जब वह बो रहा था, कुछ बीज रास्ते के किनारे गिर गए, और पैरों तले रोंदे गए, और आकाश के पक्षियों ने उन्हें खा लिया।<sup>6</sup> कुछ बीज चट्टानी भूमि पर गिरे, और जब वे उगे, तो नमी न होने के कारण सूखे गए।<sup>7</sup> कुछ बीज कांटों के बीच गिरे; और कांटे उनके साथ उग आए और उन्हें दबा दिया।<sup>8</sup> और कुछ बीज अच्छी भूमि में गिरे, और उगकर सौ गुना फसल उत्पन्न की।” जब वह ये बाते कह रहे थे, तो उन्होंने पुकार कर कहा, “जिसके सुनने के कान हों, वह सुने।”

<sup>9</sup> अब उनके शिष्य उनसे पूछने लगे कि यह दृष्टांत क्या अर्थ रखता है।<sup>10</sup> और उन्होंने कहा, “तुम्हें परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को जानने का अधिकार दिया गया है,

## लूका

परंतु बाकी लोगों के लिए यह दृष्टितौ में कहा जाता है, ताकि:

देखते हुए भी न देखें और सुनते हुए भी न समझें।

<sup>11</sup> अब यह दृष्टितौ प्रहृष्ट है: बीज परमेश्वर का वचन है। <sup>12</sup> जो रास्ते के किनारे हैं वे वे हैं जिन्होंने सुना; तब शैतान आता है और उनके हृदय से वचन को ले जाता है, ताकि वे विश्वास न करें और उद्धार न पाएं। <sup>13</sup> जो चट्ठानी भूमि पर हैं वे वे हैं जो सुनते हैं, वचन को आनंद के साथ ग्रहण करते हैं; और फिर भी उनमें कोई दृढ़ जड़ नहीं होती; वे कुछ समय के लिए विश्वास करते हैं, और परीक्षा के समय में गिर जाते हैं। <sup>14</sup> जो बीज कांटों के बीच गिरे, वे वे हैं जिन्होंने सुना, और जब वे अपने रास्ते पर जाते हैं, तो जीवन की वित्ताओं, धन और सुखों से दब जाते हैं, और वे कोई फल परिपक्व नहीं करते। <sup>15</sup> परंतु जो बीज अच्छी भूमि में हैं—वे वे हैं जिन्होंने वचन को अच्छे और नेकदिल से सुना, और उसे दृढ़ता से पकड़ रहते हैं, और धैर्य के साथ फल उत्पन्न करते हैं।

<sup>16</sup> “अब कोई भी दीपक जलाकर उसे बर्तन से ढकता नहीं है, या उसे बिस्तर के नीचे नहीं रखता; बल्कि वह उसे दीपसंभंध पर रखता है, ताकि जो अंदर आए वे प्रकाश देख सकें। <sup>17</sup> क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट न होगा, न ही कुछ गुप्त है जो ज्ञात न होगा और प्रकाश में न आएगा। <sup>18</sup> इसलिए ध्यान से सुनो; क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो वह सोचता है कि उसके पास है।”

<sup>19</sup> अब उसकी माता और भाई उसके पास आए, और वे भीड़ के कारण उसके पास नहीं पहुँच सके। <sup>20</sup> और उसे बताया गया, “तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, तुझसे मिलना चाहते हैं।” <sup>21</sup> परंतु उसने उत्तर दिया और उनसे कहा, “मेरी माता और मेरे भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसे करते हैं।”

<sup>22</sup> अब उन दिनों में से एक दिन यीशु और उसके शिष्य एक नाव में सवार हुए, और उसने उनसे कहा, “आओ, झील के दूसरी ओर चलें।” तो वे चल पड़े। <sup>23</sup> परंतु जब वे नौका चला रहे थे, वह सो गया; और झील पर एक तेज हवा का झोंका आया, और वे डूबने लगे और खतरे में पड़ गए। <sup>24</sup> वे उसके पास आए और उसे जगाते हुए कहा, “युरु, युरु, हम नष्ट हो रहे हैं।” और वह उठकर हवा और लहरों को डांटा, और वे रुक गए, और शांति हो गई। <sup>25</sup> और उसने उनसे कहा, “तुम्हारा विश्वास कहाँ

है?” परंतु वे डर गए और आश्वर्यकित होकर एक दूसरे से कहने लगे, “यह कौन है, कि वह हवाओं और पानी को भी आदेश देता है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं?”

<sup>26</sup> तब वे गेरासेनों के क्षेत्र में पहुँचे, जो गलील के विपरीत है। <sup>27</sup> और जब वह भूमि पर उतरा, तो एक व्यक्ति जो नगर से सा और दुष्टामाओं से ग्रस्त था, उससे मिला; और उसने लंबे समय से कोई वस्त नहीं पहना था, और वह घर में नहीं, बल्कि कर्बों में रहता था। <sup>28</sup> और यीशु को देखकर, वह चिल्लाया और उसके सापेने गिर पड़ा, और ऊँची आवाज में कहा, “तुझसे मेरा क्या काम, यीशु परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र? मैं तुझसे बिनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दो।” <sup>29</sup> क्योंकि उसने पहले ही उस अशुद्ध आन्ता को उस व्यक्ति से बाहर आने का आदेश दिया था। क्योंकि वह उसे कई बार पकड़ चुका था; और उसे जंजीरे और बेड़ियों से बाँधा गया था और पहरे में रखा गया था, फिर भी वह बंधनों को तोड़ देता था और दुष्टामा द्वारा जंगलों में ले जाया जाता था। <sup>30</sup> और यीशु ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?” और उसने कहा, “लीजन”; क्योंकि उसमें कई दुष्टामाएँ प्रवेश कर चुकी थीं। <sup>31</sup> और वे उससे बिनती कर रहे थे कि उन्हें गहरे में जाने का आदेश न दे। <sup>32</sup> अब वहाँ पहाड़ पर कई सूअरों का झुंड चर रहा था; और दुष्टामाओं उससे बिनती कर रही थीं कि उन्हें सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति दे। और उसने उन्हें अनुमति दी। <sup>33</sup> और दुष्टामाएँ उस व्यक्ति से बाहर आकर सूअरों में प्रवेश कर गईं; और झुंड तेज ढलान से झील में दौड़ गया और डूब गया।

<sup>34</sup> अब जब चरवाहों ने देखा कि क्या हुआ, तो वे भाग गए और नगर और गाँव में इसकी सूचना दी। <sup>35</sup> और लोग देखने के लिए बाहर आए कि क्या हुआ; और वे यीशु के पास आए और उस व्यक्ति को पाया जिससे दुष्टामाएँ निकली थीं, यीशु के पैरों में बैठा हुआ, वस्त पहने और सही मन में; और वे डर गए। <sup>36</sup> जिन्होंने सब कुछ देखा था, उन्होंने उन्हें बताया कि कैसे वह व्यक्ति जो दुष्टामाओं से ग्रस्त था, अच्छा हो गया था। <sup>37</sup> और गेरासेनों के क्षेत्र के सभी लोगों ने उससे अनुरोध किया कि वह उन्हें छोड़ दे, क्योंकि वे बड़े डर से अभिभूत थे; और वह नाव में चढ़कर लौट गया। <sup>38</sup> परंतु वह व्यक्ति जिससे दुष्टामाएँ निकली थीं, उससे बिनती कर रहा था कि वह उसके साथ जा सके; परंतु उसने उसे यह कहकर भेज दिया, <sup>39</sup> “अपने घर लौट जा और बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कितने बड़े काम किए हैं।” तो वह चला गया, नगर भर में प्रचार करता हुआ कि यीशु ने उसके लिए कितने बड़े काम किए थे।

## लूका

<sup>40</sup> अब जब यीशु लौट रहे थे, तो लोगों ने उनका स्वागत किया, क्योंकि वे सब उनके लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। <sup>41</sup> और एक व्यक्ति जिसका नाम याईर था, आया, और वह आराधनालाय का अधिकारी था; और वह यीशु के पैरों में गिरकर उससे अपने घर आने की विनती करने लगा; <sup>42</sup> क्योंकि उसकी एकमात्र बेटी, लगभग बारह वर्ष की, मर रही थी। परंतु जब वह जा रहे थे, भीड़ उन पर दबाव डाल रही थी। <sup>43</sup> और एक स्त्री जो बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी, और उसने डॉक्टरों पर अपनी सारी संपत्ति खर्च कर दी थी और किसी से भी चंगा नहीं हो सकी थी, <sup>44</sup> उसके पीछे से आई और उसके वस्त के किनारों को कूल लिया, और तुरंत उसका रक्तस्राव बंद हो गया। <sup>45</sup> और यीशु ने कहा, “मुझे किसने छुआ?” और जब सब इनकार कर रहे थे, तो पतरस ने कहा, “गुरु, लोग आप पर भीड़ कर रहे हैं और आप पर दबाव डाल रहे हैं।” <sup>46</sup> परंतु यीशु ने कहा, “किसी ने मुझे छुआ, क्योंकि मुझे पता चल कि मुझसे शक्ति निकली है।” <sup>47</sup> अब जब स्त्री ने देखा कि वह ध्यान से नहीं बची है, तो वह कांपती हुई आई और उसके सामने गिर पड़ी, और सब लोगों के सामने स्वीकार किया कि उसने उसे क्यों छुआ, और कैसे वह तुरंत चंगा हो गई थी। <sup>48</sup> और उसने उससे कहा, “बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया है, शांति से जा।”

<sup>49</sup> जब वह अभी भी बोल रहे थे, तो किसी ने आराधनालाय के अधिकारी के घर से आकर कहा, “तेरी बेटी मर गई है; अब शिक्षक को प्रेरणान मत करा।” <sup>50</sup> परंतु जब यीशु ने यह सुना, तो उसने उससे कहा, “डर मत, केवल विश्वास कर, और वह अच्छी हो जाएगी।” <sup>51</sup> जब वह घर पहुँचे, तो उन्होंने किसी को भी अपने साथ अंदर जाने की अनुमति नहीं दी, सिवाय पतरस, यूहन्ना, और याकूब के, और लड़की के पिता और माता के। <sup>52</sup> अब वे सब उसके लिए रो रहे थे और विलाप कर रहे थे, परंतु उसने कहा, “रोना बंद करो, क्योंकि वह मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।” <sup>53</sup> और वे उस पर हँसने लगे, यह जानते हुए कि वह मर गई थी। <sup>54</sup> फिर भी, उसने उसका हाथ पकड़कर जोर से कहा, “बालिका, उठा।” <sup>55</sup> और उसकी आत्मा लौट आई, और वह तुरंत उठ गई; और उसने आदेश दिया कि उसे कुछ खाने के लिए दिया जाए। <sup>56</sup> उसके माता-पिता आश्वर्यवकित हो गए; परंतु उसने उन्हें निर्देश दिया कि जो हुआ है, उसे किसी को न बताएं।

**९** अब उसने बारहों को बुलाया और उन्हें सब दुष्टात्माओं पर अधिकार और बीमारियों को चंगा करने की शक्ति दी। <sup>2</sup> और उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का

प्रचार करने और चंगाई करने के लिए भेजा। <sup>3</sup> और उसने उनसे कहा, “अपने यात्रा के लिए कुछ भी न लो, न तो लाठी, न झोला, न रोटी, न पैसा; और न ही दो कुर्ते रखो।” <sup>4</sup> और जिस भी घर में प्रवेश करो, उसी में रहो जब तक कि उस नगर को छोड़ न दो। <sup>5</sup> और जो तुर्हे ग्रहण नहीं करते, जब तुम उस नगर को छोड़ो, तो उनके खिलाफ गवाही के रूप में अपने पैरों की धूल झाड़ दो।” <sup>6</sup> और जब वे जा रहे थे, तो वे गाँवों में धूमने लगे, सुसमाचार का प्रचार करते और हर जगह चंगाई करते।

<sup>7</sup> अब चौथाई राजा हेरोदेस ने जो कुछ हो रहा था उसके बारे में सुना; और वह बहुत उलझन में था, क्योंकि कुछ लोग कहते थे कि यूहन्ना भूतकों में से जी उठा है। <sup>8</sup> और कुछ कहते थे कि एलियाह प्रकट हुआ है, और अन्य कहते थे कि प्राणे नबियों में से कोई जी उठा है। <sup>9</sup> हेरोदेस ने कहा, “मैंने स्वयं यूहन्ना का सिर कटवाया था; तो यह कौन है जिसके बारे में मैं ऐसी बातें सुनता हूँ?” और वह उसे देखने की कोशिश करता रहा।

<sup>10</sup> जब प्रेरित लौटे, तो उन्होंने जो कुछ किया था उसका विवरण उसे दिया। और उन्हें अपने साथ तेकर, वह एकांत में बेथसैदा नामक नगर में चला गया। <sup>11</sup> लेकिन भीड़ को इसका पता चला और वे उसके पीछे चल पड़े; और उसने उनका स्वागत किया और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने लगा, और जो चंगाई की आवश्यकता में थे उन्हें चंगा करने लगा। <sup>12</sup> अब दिन समाप्त हो रहा था, और बारह उसके पास आए और उससे कहा, “भीड़ को विदा कर, ताकि वे आसपास के गाँवों और देहातों में जाकर ठहरने का स्थान और खाने के लिए कुछ प्राप्त कर सकें; क्योंकि हम यहाँ एकांत स्थान में हैं।” <sup>13</sup> लेकिन उसने उनसे कहा, “तुम उन्हें खाने के लिए कुछ दो।” लेकिन उन्होंने कहा, “हमारे पास पाँच रोटी और दो मछली से अधिक कुछ नहीं है, जब तक कि हम जाकर इन सब लोगों के लिए भोजन न खरीदें।” <sup>14</sup> (क्योंकि वहाँ लगभग पाँच हजार पुरुष थे।) लेकिन उसने अपने शिष्यों से कहा, “उन्हें लगभग पचास-पचास के समूहों में बैठा दो।” <sup>15</sup> उन्होंने ऐसा किया, और उन्हें सबको बैठा दिया। <sup>16</sup> और उसने पाँच रोटी और दो मछली लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर, उन्हें आशीर्वाद दिया, और तोड़कर, उन्हें भीड़ के सामने रखने के लिए शिष्यों को देता रहा। <sup>17</sup> और सबने खाया और तृप्त हो गए; और जो टुकड़े बच गए थे, उन्हें बारह टोकरी भरकर उठा लिया गया।

<sup>18</sup> और ऐसा हुआ कि जब वह अकेला प्रार्थना कर रहा था, तो शिष्य उसके साथ थे, और उसने उनसे पूछा,

## लूका

“लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?”<sup>19</sup> उन्होंने उत्तर दिया और कहा, “बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना, और अन्य कहते हैं एलियाह, और अन्य, कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है!”<sup>20</sup> और उसने उनसे कहा, “लेकिन तुम स्वयं क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?” और पतरस ने उत्तर दिया और कहा, “परमेश्वर का मरीही।”

<sup>21</sup> लेकिन उसने उहें चेतावनी दी और उहें किसी से यह न कहने की आशा दी,<sup>22</sup> कहते हुए, “मनुष्य के पुत्र को बहुत सी बातें सही होंगी और पुरानियों, मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा तिरस्कृत होना होगा, और मारा जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।”

<sup>23</sup> और वह सब से कह रहा था, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो उसे स्वयं का इनकार करना होगा, अपनी कूस को प्रतिदिन उठाना होगा, और मेरे पीछे आना होगा।<sup>24</sup> क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहता है वह उसे खो देगा, लेकिन जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खो देगा, वही उसे बचाएगा।<sup>25</sup> क्योंकि यदि कोई व्यक्ति पूरे संसार को प्राप्त कर ले, लेकिन स्वयं को खो दे या हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?<sup>26</sup> क्योंकि जो कोई मुझसे और मेरे वरचनों से लजित होगा, मनुष्य का पुत्र भी उससे लजित होगा जब वह अपनी महिमा में आएगा, और पिता और पवित्र स्वर्गद्वारों की महिमा में।<sup>27</sup> लेकिन मैं तुमसे सब कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ ऐसे हैं जो मृत्यु का स्वाद नहीं खण्डे जब तक कि वे परमेश्वर के राज्य को न देख लें।”

<sup>28</sup> इन बातों के लगभग आठ दिन बाद, वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को लेकर, प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।<sup>29</sup> और जब वह प्रार्थना कर रहा था, उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसके वस्त्र उज्ज्वल और चमकदार हो गए।<sup>30</sup> और देखो, दो पुरुष उसके साथ बात कर रहे थे; और वे मूसा और एलियाह थे,<sup>31</sup> जो महिमा में प्रकट होकर, उसके प्रस्तावन के बारे में बात कर रहे थे, जो वह यरूशलैम में पूरा करने वाला था।<sup>32</sup> अब पतरस और उसके साथी नींद से अभिभूत हो गए थे; लेकिन जब वे पूरी तरह जाग गए, तो उन्होंने उसकी महिमा देखी, और उन दो पुरुषों को जो उसके साथ खड़े थे।<sup>33</sup> और जब ये दो पुरुष उससे विदा हो रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, “गुरु, यह अच्छा है कि हम यहाँ हैं; चलो तीन तंबू बनाएँ; एक आपके लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलियाह के लिए—” यह न जानते हुए कि वह क्या कह रहा था।<sup>34</sup> लेकिन जब वह यह कह रहा था, एक बादल आया और उहें ढकने लगा; और वे डर गए जब वे बादल में प्रवेश कर रहे थे।<sup>35</sup> और फिर

बादल से एक आवाज आई, कहती हुर्र, “यह मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ; उसकी सुनो!”<sup>36</sup> और जब आवाज ने बात की, यीशु अकेला पाया गया। और उन्होंने चुप्पी साध ली, और उन दिनों में उन्होंने जो देखा था उसे किसी को नहीं बताया।

<sup>37</sup> अगले दिन, जब वे पहाड़ से नीचे आए, तो एक बड़ी भीड़ ने उसे मिला।<sup>38</sup> और भीड़ में से एक व्यक्ति विलाया, कहता हुआ, “गुरु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरे पुत्र को देखें, क्योंकि वह मेरा एक मात्र पुत्र है,<sup>39</sup> और एक आत्मा उसे पकड़ लेती है, और वह अचानक विलाये लगता है, और उसे इटके में डाल देती है और मुँह से ज्ञाग निकालता है; और केवल कठिनाई से वह उसे छोड़ती है, उसे चोट पहुँचाते हुए जाती है।<sup>40</sup> और मैंने आपके शिष्यों से उसे बाहर निकालने की विनती की, और वे नहीं कर सके।”<sup>41</sup> यीशु ने उत्तर दिया और कहा, “हे अविश्वासी और विकृत पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारे साथ सहन करूँगा? अपने पुत्र को यहाँ लाओ।”<sup>42</sup> अब जब वह अपी भी आ रहा था, दुष्टाना ने उसे जमीन पर पटक दिया और उसे झटके में डाल दिया। लेकिन यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा, और लड़के को चंगा किया, और उसे उसके पिता को लौटा दिया।<sup>43</sup> और वे सब परमेश्वर की महानता से चकित थे। लेकिन जब हर कोई उसके द्वारा किए जा रहे सब कुछ से अवंगित था, उसने अपने शिष्यों से कहा,<sup>44</sup> “तुम्हारे लिए, ये शब्द अपने कानों में डाल लो: क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है।”<sup>45</sup> लेकिन वे इस कथन को नहीं समझ सकें; और वे उससे इस कथन के बारे में पूछने से डरते थे।

<sup>46</sup> अब उनके बीच यह विवाद शुरू हुआ कि उनमें से कौन सबसे बड़ा हो सकता है।<sup>47</sup> लेकिन पीशु, यह जानते हुए कि वे अपने दिल में क्या सोच रहे थे, एक बच्चे को लिया और उसे अपने पास खड़ा कर दिया,<sup>48</sup> और उनसे कहा, “जो कोई इस बच्चे को मेरे नाम में ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई मुझे ग्रहण करता है वह उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है, क्योंकि जो तुम सब में सबसे छोटा है, वही सबसे बड़ा है।”

<sup>49</sup> यूहन्ना ने उत्तर दिया और कहा, “गुरु, हमने किसी को आपके नाम में दुष्टानाओं को निकालते देखा, और हमने उसे रोकने की कोशिश की क्योंकि वह हमारे साथ नहीं चलता।”<sup>50</sup> लेकिन यीशु ने उससे कहा, “उसे मत रोको; क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ नहीं है वह तुम्हारे लिए है।”

# लूका

<sup>51</sup> जब उसके आरोहण के दिन निकट आ रहे थे, वह युरशलेम जाने के लिए दृढ़ था; <sup>52</sup> और उसने अपने आगे दूत भेजे, और वे गए और सामरियों के एक गाँव में प्रवेश किया ताकि उसके लिए व्यवस्था कर सकें। <sup>53</sup> और उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया, क्योंकि वह युरशलेम की ओर यात्रा कर रहा था। <sup>54</sup> जब उसके शिष्यों याकूब और यूहन्ना ने यह देखा, तो उन्होंने कहा, “प्रभु, क्या आप चाहते हैं कि हम आकाश से आग को बुलाएं और उन्हें भस्म कर दें?” <sup>55</sup> लेकिन उसने मुड़कर उन्हें डांटा। <sup>56</sup> और वे दूसरे गाँव की ओर चले गए।

<sup>57</sup> जब वे मार्ग पर जा रहे थे, तो किसी ने उससे कहा, “मैं जहाँ कहीं भी जाऊँगा, मैं आपके पीछे चलूँगा।” <sup>58</sup> और यीशु ने उससे कहा, “लोमाडियों के बिल होते हैं और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, लेकिन मनुष्य के पुरु के पास सिर रखने के लिए कोई स्थान नहीं है।” <sup>59</sup> और उसने दूसरे से कहा, “मेरे पीछे चल।” लेकिन उसने कहा, “प्रभु, मुझे पहले अपने पिता को दफनाने की अनुमति दें।” <sup>60</sup> लेकिन उसने उससे कहा, “वृत्कर्तों को अपने मृतकों को दफनाने दो; लेकिन तुम्हारे लिए, हर जगह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो।” <sup>61</sup> एक और ने भी कहा, “मैं आपके पीछे चलूँगा, प्रभु; लेकिन पहले मुझे अपने घर के लोगों को अलविदा कहने की अनुमति दें।” <sup>62</sup> लेकिन यीशु ने उससे कहा, “कोई भी, जो हल पर हाथ रखता है और पीछे देखता है, परमेश्वर के राज्य के लिए योग्य नहीं है।”

**10** इसके बाद प्रभु ने बहतर और लोगों को नियुक्त किया, और उन्हें जोड़े में अपने से पहले हर नगर और स्थान पर भेजा जहाँ वह स्वयं आने वाले थे। <sup>2</sup> और वह उनसे कह रहे थे, “फसल बहुत है, परंतु मजदूर थोड़े हैं; इसलिए, फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि वह अपनी फसल में मजदूर भेजे।” <sup>3</sup> जायो, देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेडियों के बीच भेज रहा हूँ। <sup>4</sup> कोई धन की धैरी, कोई झोला, कोई जूते न ले जाओ, और रास्ते में किसी से नमस्ते न करो। <sup>5</sup> और जिस भी घर में प्रवेश करो, पहले कहो, इस घर में शांति हो। <sup>6</sup> और यदि वहाँ शांति का कोई व्यक्ति होगा, तो तुम्हारी शांति उस पर ठहरेगी; परंतु यदि नहीं, तो वह तुम्हारे पास लौट आएगी। <sup>7</sup> उसी घर में ठहरो, जो कुछ वे तुम्हें खाने-पीने के लिए दें, वही खाओ-पीओ; क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है। घर से घर न बदलो। <sup>8</sup> जिस भी नगर में प्रवेश करो और वे तुम्हें स्वीकार करें, जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए, वही खाओ; <sup>9</sup> और जो वहाँ बीमार हों, उन्हें चंगा करो, और उनसे कहो, ‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है।’ <sup>10</sup> परंतु जिस भी नगर में प्रवेश करो और वे

तुम्हें स्वीकार न करें, उसकी गलियों में जाकर कहो, <sup>11</sup> यहाँ तक कि तुम्हारे नगर की धूल जो हमारे पैरों से चिपकी है, हम तुम्हारे खिलाफ गवाही के लिए ज्ञाड़ देते हैं; फिर भी यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है। <sup>12</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, उस दिन सदोम के लिए उस नगर से अधिक सहनीय होगा।

<sup>13</sup> हाय तुम पर, खोराजीन! हाय तुम पर, बेतसैदा! क्योंकि यदि वे चमकारा जो तुम में हुए, सोर और सिदोन में होते, तो वे बहुत पहले टाट और राख में बैठकर पश्चातप कर लेते। <sup>14</sup> परंतु यथा मैं सोर और सिदोन के लिए तुमसे अधिक सहनीय होगा। <sup>15</sup> और तुम, कफरनहूम, क्या तुम स्वर्ग तक ऊँचे उठाए जाओगे? तुम अधोलोक तक नीचे गिराए जाओगे! <sup>16</sup> जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें अस्वीकार करता है, वह मुझे अस्वीकार करता है; परंतु जो मुझे अस्वीकार करता है, वह उसे अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।

<sup>17</sup> अब वे बहतर आनन्द के साथ लौटे, कह रहे थे, “प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टामाँ भी आपके नाम में हमारे अधीन हैं।” <sup>18</sup> और उसने उनसे कहा, “मैं शैतान को आकाश से बिजली की तरह गिरते देख रहा था।” <sup>19</sup> देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिछुओं पर चलने का अधिकार दिया है, और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है, और कुछ भी तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा। <sup>20</sup> फिर भी, इस बात से आनन्दित न हो कि आसाँ तुम्हारे अधीन हैं, बल्कि इस बात से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं।”

<sup>21</sup> उसी समय उसने पवित्र आत्मा में अत्यधिक आनन्दित होकर कहा, “मैं आपकी स्तुति करता हूँ, पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, कि आपने इन बातों को बुद्धिमानों और समझदारों से छिपा रखा है, और इन्हें बच्चों पर प्रकट किया है। हाँ, पिता, क्योंकि यह आपके दृष्टिकोण में अच्छा था। <sup>22</sup> मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है, और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है सिवाय पिता के, और पिता कौन है सिवाय पुत्र के, और जिसे पुत्र प्रकट करना चाहता है।” <sup>23</sup> शिष्यों की ओर मुड़कर उसने निजी तौर पर कहा, “धन्य हैं वे आँखें जो वे बातें देखती हैं जो तुम देखते हों; <sup>24</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि कई भविष्यद्वक्ता और राजा वे बातें देखना चाहते थे जो तुम देखते हों, और नहीं देख सके, और वे बातें सुनना चाहते थे जो तुम सुनते हों, और नहीं सुन सके।”

# लूका

<sup>25</sup> और देखो, एक विधिवेत्ता खड़ा हुआ और उसे परखने के लिए कहा, “गुरु, मैं अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी कैसे बन सकता हूँ?” <sup>26</sup> और उसने उससे कहा, “व्यवस्था में क्या लिखा है? तुम इसे कैसे पढ़ते हो?” <sup>27</sup> और उसने उत्तर दिया, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे हृदय से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी शक्ति से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम करो; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।” <sup>28</sup> और उसने उससे कहा, “तुमने सही उत्तर दिया है; ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे।”

<sup>29</sup> परंतु अपने आप को धर्मी ठहराने के लिए, उसने यीशु से कहा, “और मेरा पड़ोसी कौन है?” <sup>30</sup> यीशु ने उत्तर दिया और कहा, “एक मनुष्य यरूशलैम से यरीहो की ओर जा रहा था, और वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया, और उहोंने उसे लूट लिया और मार-पीट कर उसे अधमरा छोड़ दिया।” <sup>31</sup> और संयोग से एक याजक उस मार्ग से जा रहा था, और जब उसने उसे देखा, तो दूसरी ओर से निकल गया। <sup>32</sup> इसी प्रकार एक लेटी भी, जब वह उस स्थान पर आया और उसे देखा, तो दूसरी ओर से निकल गया। <sup>33</sup> परंतु एक सामरी, जो यात्रा कर रहा था, उसके पास आया; और जब उसने उसे देखा, तो उसे दया आई, <sup>34</sup> और उसके पास जाकर उसके घावों पर पट्टी बँधी, उन पर तेल और दाखरस डाला; और उसे अपने पशु पक्षी बैठाकर एक सराय में ले गया और उसकी देखाल की। <sup>35</sup> अगले दिन उसने दो दिनार निकाले और उन्हें सराय के मालिक को देकर कहा, “इसकी देखाल करना, और जो कुछ और खर्च होगा, मैं लौटकर तुम्हें चुका दूँगा।” <sup>36</sup> इन तीनों में से कौन तुम्हें लगता है कि उस व्यक्ति का पड़ोसी साबित हुआ जो डाकुओं के हाथों में पड़ा था?” <sup>37</sup> और उसने कहा, “वह जिसने उस पर दया दिखाई।” तब यीशु ने उससे कहा, “जाओ और तुम भी ऐसा ही करो।”

<sup>38</sup> अब जब वे यात्रा कर रहे थे, वह एक गाँव में प्रवेश किया; और एक स्त्री जिसका नाम मार्था था, ने उसे अपने घर में स्वागत किया। <sup>39</sup> और उसकी एक बहन थी जिसका नाम मरियम था, जो प्रभु के पैरों के पास बैठी थी, और उसके बचन सुन रही थी। <sup>40</sup> परंतु मार्था अपनी सारी तैयारियों में व्यस्त थी; और वह उसके पास आकर कहने लगी, “प्रभु, क्या आपको परवाह नहीं कि मेरी बहन ने मुझे अकेले सेवा करने के लिए छोड़ दिया है? फिर उसे कहें कि मेरी मदद करो।” <sup>41</sup> परंतु प्रभु ने उससे उत्तर दिया और कहा, “मार्था, मार्था, तुम बहुत सी बातों के लिए चिंतित और व्याकुल हो;” <sup>42</sup> परंतु केवल एक ही

बात आवश्यक है; क्योंकि मरियम ने उत्तम भाग चुना है, जो उससे नहीं छीना जाएगा।”

**11** यह हुआ कि जब यीशु एक निश्चित स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे, और जब उहोंने समाप्त किया, उनके एक शिष्य ने उनसे कहा, “प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाओ, जैसे यूहन्ना ने भी अपने शिष्यों को सिखाया था।” <sup>2</sup> और उहोंने उनसे कहा, “जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो:

‘पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए।<sup>3</sup>  
हमें प्रतिदिन की रोटी दे।<sup>4</sup> और हमारे पापों को क्षमा कर क्योंकि हम भी हर एक को क्षमा करते हैं जो हमारे प्रति ऋणी है। और हमें परीक्षा में न ला।’<sup>5</sup>

<sup>5</sup> और उहोंने उनसे कहा, “मान लो तुममें से किसी का एक मित्र है, और वह आधी रात को उसके पास जाकर कहता है, ‘मित्र, मुझे तीन रोटियाँ उधार दे, <sup>6</sup> क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा से मेरे पास आया है और मेरे पास उसे परोसने के लिए कुछ नहीं है;’ <sup>7</sup> और अंदर से वह उत्तर देता है और कहता है, ‘मुझे परेशान मत कर; दरवाजा पहले ही बंद हो चुका है और मेरे बच्चे और मैं बिस्तर में हैं; मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता।’ <sup>8</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, भले ही वह सिर्फ इसलिए नहीं उठेगा और उसे कुछ देगा क्योंकि वह उसका मित्र है, फिर भी उसकी निर्जनता के कारण वह उठेगा और उसे जितना चाहिए उतना देगा। <sup>9</sup> इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, मार्गो, और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, और तुम पाओगें; खटखटाओं, और तुम्हारे लिए खोला जाएगा। <sup>10</sup> क्योंकि जो कोई मार्गाता है उसे मिलता है, और जो खोजता है वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। <sup>11</sup> अब तुममें से कौन पिता है जिसका पुत्र मछली मार्गों, और वह उसे मछली के बदले सांप देगा?

<sup>12</sup> या वह अंडा मार्गोंगा, और उसका पिता उसे बिच्छू देगा? <sup>13</sup> इसलिए यदि तुम, बुरे होते हुए भी, अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता कितना अधिक पवित्र आत्मा उन लोगों को देगा जो उससे मांगते हैं?”

<sup>14</sup> और वह एक दुष्टात्मा को निकाल रहा था, और वह गूँगा था; जब दुष्टात्मा बाहर निकल गई, तो वह व्यक्ति जो पहले बोल नहीं सकता था, बोलने लगा, और भीड़ आश्र्वयचकित हो गई। <sup>15</sup> पर उनमें से कुछ ने कहा, “वह दुष्टात्माओं को बेलजेबुल के द्वारा निकालता है, जो दुष्टात्माओं का शासक है।” <sup>16</sup> अन्य, उसे परखने के लिए, उससे स्वर्ग से एक चिन्ह मांग रहे थे। <sup>17</sup> पर उसने उनके

## लूका

विचार जान लिए और उनसे कहा, “हर एक राज्य जो अपने आप में विभाजित होता है, नष्ट हो जाता है; और एक घर जो अपने आप में विभाजित होता है, गिर जाता है।<sup>18</sup> और यदि शैतान भी अपने आप में विभाजित हो गया है, तो उसका राज्य कैसे खड़ा रहेगा? क्योंकि तुम दावा करते हो कि मैं दुष्टामाओं को बेलजेबुल के द्वारा निकालता हूँ।<sup>19</sup> फिर भी यदि मैं दुष्टामाओं को बेलजेबुल के द्वारा निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र उन्हें किसके द्वारा निकालते हैं? इसलिए, वे तुम्हारे व्यायाधीश होंगे।<sup>20</sup> पर यदि मैं दुष्टामाओं को परमेश्वर की उंगली के द्वारा निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम पर आ गया है।<sup>21</sup> जब एक शक्तिशाली व्यक्ति, पूरी तरह से सशस्त्र, अपने घर की रक्षा करता है, तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है।<sup>22</sup> पर जब कोई उससे अधिक शक्तिशाली उस पर हमला करता है और उसे पराजित करता है, तो वह उसकी वह कवच ले लेता है जिस पर उसने भरोसा किया था, और उसकी लूट को बांट देता है।<sup>23</sup> जो मेरे साथ नहीं है वह मेरे विराध में है; और जो मेरे साथ इकट्ठा नहीं करता वह बिखरता है।

<sup>24</sup> “जब अशुद्ध आत्मा किसी व्यक्ति से बाहर निकलती है, तो वह विश्राम की खोज में जलहीन स्थानों से होकर गुजरती है, और जब उसे कोई नहीं मिलता, तो वह कहती है, ‘मैं अपने उस घर में लौट जाऊँगी जहाँ से मैं आई थी।’<sup>25</sup> और जब वह आती है, तो उसे साफ-सुधरा और व्यवस्थित पाता है।<sup>26</sup> फिर वह जाती है और अपने से भी अधिक बुरी सात अन्य आत्माओं को लाती है, और वे वहाँ आकर रहती हैं; और उस व्यक्ति की अंतिम स्थिति पहले से भी बदतर हो जाती है।”

<sup>27</sup> जब यीशु ये बातें कह रहे थे, भीड़ में से एक स्त्री ने अपनी आवाज़ उठाई और उनसे कहा, “धन्य है वह गर्भ जिसने आपको धारण किया, और वे स्तन जिसने अपने दूध पिया!”<sup>28</sup> पर उन्होंने कहा, “इसके विपरीत, धन्य हैं वे जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं, और उसका पालन करते हैं।”

<sup>29</sup> अब जैसे-जैसे भीड़ बढ़ रही थी, उन्होंने कहना शुरू किया, “यह पीढ़ी एक दुष्ट पीढ़ी है; यह एक विन्ह की मांग करती है, और इसलिए इसे कोई विन्ह नहीं दिया जाएगा सिवाय योना के विन्ह के।<sup>30</sup> क्योंकि जैसे योना नीनवे के लोगों के लिए एक विन्ह बन गया, वैसे ही मनुष्य का पुत्र इस पीढ़ी के लिए होगा।<sup>31</sup> दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ न्याय में उठेगी और उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से आई थी; और देखो, यहाँ

सुलैमान से भी बड़ा कुछ है।<sup>32</sup> नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय में खड़े होंगे और इसे दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना की प्रचार के समय पक्षात्पाप किया; और देखो, यहाँ योना से भी बड़ा कुछ है।

<sup>33</sup> “कोई भी दीपक जलाकर उसे तहखाने में नहीं रखता, न ही टोकरी के नीचे, बल्कि दीपक के स्टैंड पर, ताकि जो प्रवेश करें वे प्रकाश देख सकें।<sup>34</sup> आँख तुम्हारे शरीर का दीपक है, जब तुम्हारी आँख साफ होती है, तो तुम्हारा पूरा शरीर भी प्रकाश से भरा होता है; पर जब यह खराब होती है, तो तुम्हारा शरीर भी अंधकार से भरा होता है।<sup>35</sup> इसलिए ध्यान रखो कि तुम्हारे अंदर का प्रकाश अंधकार न हो।<sup>36</sup> यदि, इसलिए, तुम्हारा पूरा शरीर प्रकाश से भरा है, और उसमें कोई अंधकार का भाग नहीं है, तो यह पूरी तरह से प्रकाशित होगा, जैसे जब दीपक अपनी किरणों से तुम्हें प्रकाशित करता है।”

<sup>37</sup> अब जब उन्होंने यह कहा, एक फरीसी ने दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया; और वह अंदर गए और मेज पर झुक गए।<sup>38</sup> जब फरीसी ने यह देखा, तो वह आश्वर्यचकित हुआ कि उन्होंने भोजन से फहले विधिपूर्वक हाथ नहीं धोए।<sup>39</sup> पर प्रभु ने उससे कहा, “अब, तुम फरीसी कप पूरा और बर्टन के बाहर को साफ करते हो, पर अंदर तुम लालच और दुष्टा से भरे हो।<sup>40</sup> तुम मर्ख, क्या जिसने बाहर को बनाया, उसने अंदर को भी नहीं बनाया? <sup>41</sup> पर जो अंदर है उसे दान के रूप में दो, और तब सब चीजें तुम्हारे लिए साफ होंगी।

<sup>42</sup> “पर तुम पर हाय, फरीसियों! क्योंकि तुम पुर्दीना, रुए, और हर बगीचे की जड़ी-बूटी का दशमांश देते हो, और फिर भी न्याय और परमेश्वर के प्रेम की नजर अंदाज करते हो; पर ये वे चीजें हैं जिन्हें तुम्हें करना चाहिए था बिना अन्य को नजर अंदाज किए।<sup>43</sup> तुम पर हाय, फरीसियों! क्योंकि तुम आराधनालायों में समान की सीट और बाजारों में व्यक्तिगत अभिवादन पसंद करते हो।<sup>44</sup> तुम पर हाय! क्योंकि तुम अदृश्य कब्रों के समान हो, और लोग जो उन पर चलते हैं, उन्हें इसका पता नहीं होता।”

<sup>45</sup> वकीलों में से एक ने, “गुरु, जब आप ये बातें कहते हैं, तो आप हमें भी अपमानित करते हैं।”<sup>46</sup> पर उन्होंने कहा, “तुम पर हाय, वकीलों! क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ डालते हो जो उठाना कठिन है, जबकि तुम स्वयं उन बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं छुटे।<sup>47</sup> तुम पर हाय! क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, और यह तुम्हारे पूर्वज थे जिन्होंने उन्हें मारा था।<sup>48</sup>

# लूका

इसलिए, तुम गवाह हो और अपने पूर्जों के कार्यों को मंजूरी देते हों, क्योंकि उन्होंने उन्हें मारा, और तुम उनकी कब्रें बनाते हो।<sup>49</sup> इसी कारण से, परमेश्वर की तुद्धि ने कहा, ‘मैं उन्हें भविष्यद्वक्ता और प्रेरित भजूँगा, और उनमें से कुछ को वे मार डालेंगे, और कुछ को सताएंगे,<sup>50</sup> ताकि सभी भविष्यद्वक्ताओं का खन, जो संसार की नींव से बढ़ाया गया है, इस पीढ़ी के खिलाफ आरोपित किया जा सके,<sup>51</sup> हाबिल के खून से लेकर जकर्याह के खून तक, जो तेवी और परमेश्वर के घर के बीच मारा गया था; हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, यह इस पीढ़ी के खिलाफ आरोपित किया जाएगा।’<sup>52</sup> तुम पर हाय, वकीलों! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी छीन ली है; तुम स्वयं प्रवेश नहीं करते, और जो प्रवेश कर रहे थे उन्हें बाधित किया।’

<sup>53</sup> जब वह वहाँ से चले गए, तो शास्त्री और फरीसी बहुत श्रुतापूर्ण हो गए और उन्हें कई विषयों पर करीब से पूछताछ करने लगे,<sup>54</sup> उनके खिलाफ शड्यंत्र रचते हुए कि वे उन्हें किसी ऐसी बात में फंसा सकें जो वह कह सकते हैं।

**12** इन परिस्थितियों में, जब हजारों लोग इकट्ठे हो गए थे कि वे एक-दूसरे पर पैर रख रहे थे, उन्होंने पहले अपने चेलों से कहा, “फरीसियों के खीमीर से सावधान रहो, जो कि कपट है।”<sup>2</sup> लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है जो छिपा हुआ हो और प्रकट न किया जाएगा, और न ही ऐसा कुछ छिपा हुआ है जो ज्ञात न होगा।<sup>3</sup> इसलिए, जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह प्रकाश में सुना जाएगा, और जो तुमने अंदर के कमरों में फुसफुसाया है वह घर की छतों पर धोषित किया जाएगा।

<sup>4</sup> अब मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे मित्रों, उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं और उसके बाद कुछ नहीं कर सकते।<sup>5</sup> लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि किससे डरना चाहिए: उससे डरें जो मारने के बाद, नरक में डालने का अधिकार रखता है; हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, उससे डरें।<sup>6</sup> क्या पाँच गौरैयों दो असारियों में नहीं बिकतीं? और फिर भी उनमें से एक भी परमेश्वर की दृष्टि में अनदेखा नहीं होता।<sup>7</sup> लेकिन तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। मत डरो; तुम बहुत सारे गौरैयों से अधिक मूल्यवान हो।

<sup>8</sup> “अब मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई मुझे लोगों के सामने स्वीकार करता है, मनुष्य का पूत्र भी उसे परमेश्वर के स्वर्गद्वारों के सामने स्वीकार करेगा;”<sup>9</sup> लेकिन जो कोई मुझे लोगों के सामने नकारता है, उसे परमेश्वर के

स्वर्गद्वारों के सामने नकारा जाएगा।<sup>10</sup> और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध एक शब्द बोलता है, उसे क्षमा किया जाएगा; लेकिन जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध निंदा करता है, उसे क्षमा नहीं किया जाएगा।<sup>11</sup> अब जब वे तुम्हें सभाओं और शासकों और अधिकारियों के सामने लाते हैं, तो चिंता मत करो कि तुम्हें अपने बचाव में क्या बोलना है, या क्या कहना है;<sup>12</sup> क्योंकि पवित्र आत्मा उसी समय तुम्हें सिखाएगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए।”

<sup>13</sup> अब भीड़ में से किसी ने उनसे कहा, “गुरु, मेरे भाई से कहो कि वह पारिवारिक विरासत को मेरे साथ बांट ले।”

<sup>14</sup> लेकिन उन्होंने उससे कहा, “तुम वहाँ—किसने मुझे तुम्हारे बीच यायाधीश या मध्यस्थ नियुक्त किया है?”<sup>15</sup> लेकिन उन्होंने उनसे कहा, “सावधान रहो, और हर प्रकार के लालच के खिलाफ सतर्क रहो;” क्योंकि जब किसी के पास बहुतायत होती है, तब भी उसका जीवन उसकी संपत्ति में नहीं होता।”<sup>16</sup> और उन्होंने उन्हें एक दृष्टांत बताया, “एक धनी व्यक्ति की भूमि बहुत उपजाऊ थी।”<sup>17</sup> और वह अपने आप से सोचने लगा, ‘मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे पास अपनी फसल को रखने के लिए कोई जगह नहीं है?’<sup>18</sup> फिर उसने कहा, ‘यह मैं करूँगा: मैं अपने खिलाहन को तोड़ दूँगा और बड़े खिलाहन बनाऊँगा, और वहाँ मैं अपनी सारी अनाज और सामान रखूँगा।’<sup>19</sup> और मैं अपने आप से कहूँगा, “तुम्हारे पास कई वर्षों के लिए बहुत सारा सामान है; आराम करो, खाओ, पियो, और आनंद करो!”<sup>20</sup> लेकिन परमेश्वर ने उससे कहा, ‘मूर्ख! इसी रात तुम्हारी आत्मा की माँग की जाएगी; और जो कुछ तुमने तैयार किया है, वह अब किसका होगा?’<sup>21</sup> ऐसा ही वह व्यक्ति है जो अपने लिए खजाना इकट्ठा करता है, और परमेश्वर के संबंध में धनी नहीं है।”

<sup>22</sup> और उन्होंने अपने चेलों से कहा, “इसी कारण मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो, कि तुम क्या खाओगे; और न ही अपने शरीर की, कि तुम क्या पहनोगे।”<sup>23</sup> क्योंकि जीवन भोजन से अधिक है, और शरीर वस्त्र से अधिक है।<sup>24</sup> कौवों पर विचार करो, कि वे न तो बोते हैं और न ही काटते हैं; उनके पास न तो भंडारघर होता है और न ही खलिहान, और फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है; तुम पक्षियों से कितने अधिक मूल्यवान हो!<sup>25</sup> और तुमसे कोन चिंता करके अपनी जीवन की अवधि में एक दिन जोड़ सकता है?<sup>26</sup> इसलिए, यदि तुम एक बहुत छोटी चीज भी नहीं कर सकते, तो अन्य जीवों की चिंता क्यों करते हो?<sup>27</sup> लिलियों पर विचार करो, कि वे कैसे बढ़ती हैं: वे न तो मेहनत करती हैं और न ही कातती हैं; लेकिन मैं तुमसे

## लूका

कहता हूँ, कि सुलैमान भी अपनी सारी महिमा में उनमें से एक के समान वस्तु नहीं पहनता था।<sup>28</sup> अब यदि परमेश्वर मैदान की धास को ऐसे वस्तु पहनाता है, जो आज जीवित है और कल भट्टी में डाल दी जाएगी, तो वह तुहँसे कितना अधिक वस्तु पहनाएगा, तुम अत्प्रविश्वासियों।<sup>29</sup> और यह मत सोचो कि तुम क्या खाओगे और क्या पियोगे, और चिंता मत करो।<sup>30</sup> क्योंकि ये सब चीजें संसार की जातियाँ उत्सुकता से खोजती हैं, और तुम्हारा पिता जानता है कि तुहँसे इन चीजों की आवश्यकता है।<sup>31</sup> लेकिन उसके राज्य की खोज करो, और ये चीजें तुहँसे प्रदान की जाएँगी।<sup>32</sup> मत डरो, छोटे झुंड, क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुहँसे राज्य देने का निर्णय लिया है।<sup>33</sup> अपनी संपत्ति बेचो और दान दो; अपने लिए ऐसे धन की धैलियाँ बनाओ जो पुरानी नहीं होतीं, स्वर्ग में एक अपरिमेय खजाना, जहाँ कोई चोर पास नहीं आता, और न ही कोई कीड़ा नष्ट करता है।<sup>34</sup> क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहाँ तुम्हारा हृदय भी होगा।

<sup>35</sup> “तैयार रहो, और अपने दीपक जलाए रखो।<sup>36</sup> तुम भी उन लोगों के समान हो जो अपने स्वामी का इंतजार कर रहे हैं जब वह विवाह भोज से लौटता है, ताकि जब वह आए और खटखटाए, तो वे तुरंत उसके लिए दरवाजा खोल सकें।<sup>37</sup> धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी सतर्क पात है जब वह आता है; सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ कि वह स्वयं सेवा करने के लिए तैयार होगा, और उहँसे मेज पर बैठाएगा, और वह आकर उनकी सेवा करेगा।<sup>38</sup> चाहे वह दूसरे पहर में आए, या तीसरे में भी, और उहँसे ऐसा पाप, तो वे दास धन्य हैं।<sup>39</sup> लेकिन यह निश्चित जानो, कि यदि घर के मालिकों को पता होता कि चोर किस समय आएगा, तो वह अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता।<sup>40</sup> तुम भी तैयार रहो; क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस समय आएगा जब तुम नहीं रोचते।”

<sup>41</sup> पतरस ने कहा, “प्रभु, क्या आप यह वृद्धित हमसे कह रहे हैं, या सभी से भी?”<sup>42</sup> और प्रभु ने कहा, “फिर वह विश्वासयोग्य और समझदार प्रबंधक कौन है, जिसे उसका स्वामी अपने सेवकों के ऊपर नियुक्त करेगा, ताकि वह उहँसे उचित समय पर उनका भीजन दे सके? <sup>43</sup> धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी ऐसा करते हुए पाता है जब वह आता है।<sup>44</sup> सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ कि वह उसे अपनी सारी संपत्ति का प्रबंधक बना देगा।<sup>45</sup> लेकिन यदि वह दास अपने दिल में कहता है, ‘मेरा स्वामी आने में देर करेगा,’ और वह अन्य दासों को, पुरुषों और महिलाओं को मारने लगता है, और खानेपीने और नशे में धूत होने लगता है,<sup>46</sup> तो उस दास का

स्वामी एक ऐसे दिन आएगा जब वह उम्मीद नहीं करता, और एक ऐसे समय पर जब वह नहीं जानता, और उसे दो टुकड़े कर देगा, और उसे अविश्वासियों के साथ स्थान देगा।<sup>47</sup> और वह दास जिसने अपने स्वामी की इच्छा को जाना और तैयार नहीं हुआ था उसकी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं किया, उसे बहुत मार पड़ीगी,<sup>48</sup> लेकिन जिसने इसे नहीं जाना, और ऐसे कार्य किए जो मार के योग्य थे, उसे कम मार पड़ीगी। जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मार्गँग जाएगा; और जिसे उहँसे बहुत सौंपा है, उससे वे और अधिक मार्गँगी।

<sup>49</sup> “मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ; और मैं चाहता हूँ कि यह पहले से ही जल रही होती।<sup>50</sup> लेकिन मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक यह पूरा नहीं होता, मैं कितना चिंतित हूँ।<sup>51</sup> क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर शांति देने आया हूँ? नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, बल्कि विभाजन;<sup>52</sup> क्योंकि अब से एक घर में पाँच सदस्य विभाजित होंगे, तीन दो के खिलाफ और दो तीन के खिलाफ।<sup>53</sup> वे विभाजित होंगे; पिता पुत्र के खिलाफ, और पुत्र पिता के खिलाफ; माँ बेटी के खिलाफ, और बेटी माँ के खिलाफ; सास बहू के खिलाफ, और बहू सास के खिलाफ।”

<sup>54</sup> और वह भीड़ से कह रहे थे, “जब तुम पश्चिम में एक बादल उठते देखते हो, तो तुरंत कहते हो, ‘एक बारिश आ रही है,’ और ऐसा होता है।<sup>55</sup> और जब तुम दक्षिण की हवा बहते देखते हो, तो कहते हो, ‘यह एक गर्म दिन होगा,’ और ऐसा होता है।<sup>56</sup> तुम कपटी हो! तुम धरती और आकाश की उपस्थिति का विश्लेषण करना जानते हो, लेकिन यह कैसे है कि तुम इस वर्तमान समय का विश्लेषण नहीं करते?

<sup>57</sup> “और तुम स्वयं भी यह क्यों नहीं समझते कि क्या सही है?<sup>58</sup> क्योंकि जब तुम अपने अभियोगकर्ता के साथ मजिस्ट्रेट के सामने पेश होने जा रहे हो, रास्ते में, उसके साथ समझौता करने का प्रयास करो, ताकि वह तुहँसे न्यायाधीश के सामने न घसीटे, और न्यायाधीश तुहँसे अधिकारी के हवाले न कर दे, और अधिकारी तुहँसे जेल में न डाल दे।<sup>59</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, तुम वहाँ से बाहर नहीं निकलोगे जब तक कि तुमने आखिरी लेणून भी न चुका दिया हो।”

**13** उसी समय कुछ लोग वहाँ उपस्थित थे जिन्होंने यीशु को गलीलियों के बारे में बताया जिनका रक्त पीलातुस ने उनके बलिदानों के साथ मिला दिया था।<sup>2</sup> और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “क्या तुम

## लूका

सोचते हो कि ये गतीली अन्य सभी गतीलियों से अधिक पापी थे क्योंकि उन्होंने यह दुख सहा? <sup>3</sup> नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, परन्तु यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, तो तुम सब भी इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे। <sup>4</sup> या क्या तुम सोचते हो कि वे अठारह लोग जिन पर सिलोह का गुप्तद पिरा और उन्हें मार डाला अन्य सभी यरूशलेम में रहने वाले लोगों से अधिक अपराधी थे? <sup>5</sup> नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, परन्तु यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, तो तुम सब भी इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे।”

<sup>6</sup> और उसने यह दृष्टांत सुनाना शुरू किया: “एक आदमी की दाख की बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था; और वह उस पर फल देखने आया और कोई नहीं पाया। <sup>7</sup> और उसने दाख की बारी के रखवाले से कहा, ‘देखो, तीन साल से मैं इस अंजीर के पेड़ पर फल देखने आ रहा हूँ और कोई नहीं पाता। इसे काट डालो। यह भूमि को क्यों धेर हुए है?’ <sup>8</sup> परन्तु उसने उत्तर दिया और उससे कहा, ‘स्वामी, इसे इस वर्ष भी छोड़ दो, जब तक मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद ढालूँ।’ <sup>9</sup> और यदि यह अगले वर्ष फल दे, तो अच्छा; परन्तु यदि नहीं, तो इसे काट डालना।”

<sup>10</sup> अब वह सब्त के दिन एक आराधनालय में शिक्षा दे रहा था। <sup>11</sup> और वहाँ एक स्त्री भी जो अठारह वर्षों से एक आमा के कारण बीमारी थी; और वह झुकी हुई थी और बिल्कुल सीधी नहीं हो सकती थी। <sup>12</sup> जब पीशु ने उसे देखा, तो उसने उसे बुलाया और उससे कहा, “स्त्री, तू अपनी बीमारी से मुक्त है।” <sup>13</sup> और उसने उस पर अपने हाथ रखे; और तुरंत वह फिर से सीधी खड़ी हो गई, और परमेश्वर की महिमा करने लगी। <sup>14</sup> परन्तु आराधनालय का नेता, इस बात से क्रांतिक होकर कि पीशु ने सब्त के दिन चंगा किया था, भीड़ से कहने लगा, “छह दिन हैं जिनमें काम किया जाना चाहिए; तो उन्हीं दिनों में आओ और चंगा हो जाओ, और सब्त के दिन नहीं।” <sup>15</sup> परन्तु प्रभु ने उसे उत्तर दिया और कहा, “तुम कपटी हो, क्या तुम मैं से प्रत्येक सब्त के दिन अपने बैल या गधे को खूँटी से नहीं खोलता और उसे पानी पिलाने नहीं ले जाता? <sup>16</sup> और यह स्त्री, जो अब्राहम की पुत्री है, जिसे शैतान ने अठारह लंबे वर्षों से बँध रखा था, क्या इसे सब्त के दिन इस बंधन से मुक्त नहीं किया जाना चाहिए?” <sup>17</sup> और जब उसने यह कहा, तो उसके सभी विरोधी लजित हो गए; और सारी भीड़ उसके द्वारा किए जा रहे सभी महिमामय कार्यों पर अनन्दित हो रही थी।

<sup>18</sup> तो वह कह रहा था, “परमेश्वर का राज्य किसके समान है, और मैं इसकी तुलना किससे करूँ? <sup>19</sup> यह

राई के दाने के समान है, जिसे एक आदमी ने लेकर अपने बगीचे में बो दिया; और यह बढ़कर एक वृक्ष बन गया, और आकाश के पक्षी इसकी शाखाओं में बसेरा करने लगे।”

<sup>20</sup> और फिर उसने कहा, “मैं परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे करूँ? <sup>21</sup> यह स्थानीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन माप आटे में छिपा दिया जब तक कि वह सब खमीरित नहीं हो गया।”

<sup>22</sup> और वह एक नगर और गाँव से दूसरे नगर और गाँव में होकर जा रहा था, शिक्षा दे रहा था, और यरूशलेम की ओर बढ़ रहा था। <sup>23</sup> और किसी ने उससे कहा, “प्रभु, क्या केवल कुछ ही लोग उद्धर पार हैं?” और उसने उनसे कहा, <sup>24</sup> “संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने का प्रयास करो; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, बहुत से लोग प्रवेश करने का प्रयास करेंगे और सक्षम नहीं होंगे।” <sup>25</sup> जब घर का मालिक उठकर द्वार बंद कर देगा, और तुम बाहर खड़े होकर द्वार पर खटकाने लगोगे, कहोगे, “प्रभु, हमारे लिए द्वार खोलो!” और तब वह उत्तर देगा और तुमसे कहेगा, “मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से हो;” <sup>26</sup> तब तुम कहने लगोगे, “हमने आपके सामने खाया और पिया, और आपने हमारी गलियों में शिक्षा दी।” <sup>27</sup> और फिर भी वह कहेगा, “मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से हो; मुझसे दूर हो जाओ, सभी दुष्कर्मियों।” <sup>28</sup> उस स्थान पर रोना और दाँत पीसना होंगा जब तुम अब्राहम, इसहाक, याकूब, और सभी भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में देखोगे, परन्तु तुम स्थय बाहर फैके जाओगे। <sup>29</sup> और वे पूर्व और पश्चिम से, और उत्तर और दक्षिण से आएंगे, और परमेश्वर के राज्य में मेज पर बैठेंगे। <sup>30</sup> और देखो, कुछ जो अंतिम है वे पहले होंगे, और कुछ जो पहले हैं वे अंतिम होंगे।”

<sup>31</sup> उसी समय कुछ फरीसी उसके पास आए, कहने लगे, “यह स्थान छोड़कर चले जाओ, क्योंकि हेरोद तुम्हें मार डालना चाहता है।” <sup>32</sup> और उसने उनसे कहा, “जाकर उस लोमाड़ी से कहो, देखो, मैं आज और कल दुश्मानों को निकाल रहा हूँ और चंगाई कर रहा हूँ, और तीसरे दिन मैं अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा।” <sup>33</sup> फिर भी, मुझे आज और कल और अगले दिन अपनी यात्रा पर जाना चाहिए; क्योंकि यह नहीं हो सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर नाश हो जाए।

<sup>34</sup> यरूशलेम, यरूशलेम, जो भविष्यद्वक्ताओं को मारता है और उन लोगों को पथर मारता है जो उसके पास भेजे गए हैं; मैं कितनी बार तुम्हारे बच्चों को इकट्ठा

# लूका

करना चाहता था, जैसे एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, और तुम अनिच्छुक थे! <sup>35</sup> देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ दिया गया है; और मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब तब वह समय नहीं आता जब तुम कहाँगे, 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!"

**14** ऐसा हुआ कि जब यीशु सब्त के दिन एक फरीसी नेताओं में से एक के घर रोटी खाने गए, तो वे उसे ध्यान से देख रहे थे। <sup>2</sup> और उनके समाने एक व्यक्ति था जो जलोदर से पीड़ित था। <sup>3</sup> और यीशु ने वकीलों और फरीसियों से कहा, "व्या सब्त के दिन चंगा करना वैध है, या नहीं?" <sup>4</sup> पर वे चुप रहे। और उन्होंने उस व्यक्ति को पकड़ा, चंगा किया, और उसे भेज दिया। <sup>5</sup> और उन्होंने उनसे कहा, "तुम मैं से कौन है जिसका पुर या बैल कुएं में गिर जाए, और वह उसे सब्त के दिन तुरंत बाहर नहीं निकालेगा?" <sup>6</sup> और वे इसका कोई उत्तर नहीं दे सके।

<sup>7</sup> अब उन्होंने आमंत्रित मेहमानों को एक दृष्टित सुनाना शुरू किया जब उन्होंने देखा कि वे कैसे मेज पर सम्मान की जगहें चुन रहे थे। <sup>8</sup> "जब तुम्हें किसी के द्वारा विवाह भोज के लिए आमंत्रित किया जाए, तो सम्मान की जगह न लेना, क्योंकि उससे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी उसने आमंत्रित किया हो सकता है," <sup>9</sup> और जिसने तुम्हें और उसे आमंत्रित किया है, वह आकर तुमसे कहेगा, "इस व्यक्ति को अपनी जगह दे दो;" और तब अपमान में तुम अंतिम स्थान पर बैठोगे। <sup>10</sup> पर जब तुम्हें आमंत्रित किया जाए, तो अंतिम स्थान पर जाओ, ताकि जब जिसने तुम्हें आमंत्रित किया है वह आए, तो वह तुमसे कहेगा, "मित्र, ऊपर आओ;" तब तुम्हें उन सबके सामने सम्मान मिलेगा जो तुम्हारे साथ मेज पर भोजन कर रहे हैं। <sup>11</sup> क्योंकि जो कोई अपने आप को ऊँचा करेगा, वह नीचा किया जाएगा, और जो अपने आप को नीचा करेगा, वह ऊँचा किया जाएगा।"

<sup>12</sup> अब उन्होंने उसे भी कहा जिसने उन्हें आमंत्रित किया था, "जब तुम दोपहर का भोजन या रात का भोजन देते हो, तो अपने मित्रों को, न अपने भाइयों को, न अपने रिश्तेदारों को, न धनी पड़ोसियों को आमंत्रित करो, अन्यथा वे भी तुम्हें बदले में आमंत्रित कर सकते हैं और वही तुम्हारा प्रतिफल होगा। <sup>13</sup> पर जब तुम भोज देते हो, तो गरीबों, विकलांगों, लंगड़ों, अंधों को आमंत्रित करो; <sup>14</sup> और तुम धन्य होगे, क्योंकि उनके पास तुम्हें चुकाने का साधन नहीं है; क्योंकि तुम्हें धर्मियों के पुनरुत्थान पर प्रतिफल मिलेगा।"

<sup>15</sup> जब उनमें से एक जिसने उसके साथ मेज पर बैठा था, यह सुना, तो उसने उससे कहा, "धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा!" <sup>16</sup> पर उसने उससे कहा, "एक व्यक्ति ने बड़ा भोज दिया, और उसने बहुतों को आमंत्रित किया; <sup>17</sup> और भोज के समय उसने अपने दास को उन लोगों से कहने के लिए भेजा जो आमंत्रित थे, 'आओ, क्योंकि सब कुछ अब तैयार है।' <sup>18</sup> और फिर भी वे सब एक जैसे बहाने बनाने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक खेत खरीदा है और मुझे उसे देखने जाना है; कृपया मुझे माफ करो।' <sup>19</sup> दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे हैं, और मैं उन्हें आजमाने जा रहा हूँ; कृपया मुझे माफ करो।' <sup>20</sup> एक और ने कहा, 'मैंने एक पत्नी से विवाह किया है, और इसलिए मैं नहीं आ सकता।' <sup>21</sup> और दास लौटकर अपने स्वामी को यह सब बताया। तब घर के मालिक को क्रोध आया और उसने अपने दास से कहा, 'जल्दी से नगर की गलियों और गली-कुर्चों में जाओ, और यहाँ गरीबों, विकलांगों, अंधों, और लंगड़ों को ले आओ।' <sup>22</sup> और बाद में दास ने कहा, 'स्वामी, जो अपने आदेश दिया था वह किया गया है, और फिर भी जगह है।' <sup>23</sup> और स्वामी ने दास से कहा, 'सड़कों और बाड़ों में जाओ, और उन्हें आने के लिए मजबूर करो, ताकि मेरा घर भर जाए।' <sup>24</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, उन आमंत्रित लोगों में से कोई भी मेरे भोज का स्वाद नहीं चखेगा।"

<sup>25</sup> अब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, और उसने उनकी ओर मुड़कर कहा, <sup>26</sup> "यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाइयों, और बहनों से हाँ, और यहाँ तक कि अपने जीवन से भी बैर नहीं करता, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" <sup>27</sup> जो कोई अपनी कूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं आता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

<sup>28</sup> क्योंकि तुम मैं से कौन है, जब वह एक मीनार बनाना चाहता है, तो पहले बैठकर लागत की गणना नहीं करता, यह देखने के लिए कि क्या उसके पास उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त है? <sup>29</sup> अन्यथा, जब उसने नींव रखी है और पूरा करने में असमर्थ है, तो सभी जो इसे देख रहे हैं, उसका मजाक उड़ाना शुरू कर देंगे, <sup>30</sup> कहते हुए, इस व्यक्ति ने निर्माण शुरू किया, और पूरा करने में असमर्थ था। <sup>31</sup> या कौन सा राजा, जब वह दूसरे राजा से युद्ध करने के लिए निकलता है, पहले बैठकर यह विचार नहीं करेगा कि क्या वह दस हजार लोगों के साथ उससे मिलने के लिए पर्याप्त मजबूत है जो बीस हजार के साथ उसके खिलाफ आ रहा है? <sup>32</sup> अन्यथा, जबकि दूसरा अभी भी दूर है, वह एक प्रतिनिधिमंडल भेजता है और

# लूका

शांति की शर्तें मांगता है।<sup>33</sup> इसलिए, तुम में से कोई भी मेरा चेला नहीं हो सकता जो अपनी सभी संपत्ति नहीं छोड़ता।

<sup>34</sup> “इसलिए, नमक अच्छा है; परंतु यदि नमक ने भी अपना स्वाद खो दिया है, तो उसे किससे सीज़न किया जाएगा? <sup>35</sup> यह न तो मिट्टी के लिए उपयोगी है और न ही खाद के ढेर के लिए, इसलिए इसे बाहर फेक दिया जाता है। जिसके कान सुनने के लिए हैं, वह सुने।”

**15** अब सब कर संग्रहकर्ता और पापी यीशु के पास आकर उसकी सुनने लगे।<sup>2</sup> और फरीसी और शास्ती कुँड़कुँड़ाने लगे, कहने लगे, “यह आदमी पापियों को ग्रहण करता है और उनके साथ खाता है।”

<sup>3</sup> तब उसने उहें यह दृष्टांत सुनाया, <sup>4</sup> “तुम में से कौन व्यक्ति, जिसके पास सी भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए, तो वह निन्यानवे को खुले मैदान में छोड़कर खोई हुई को तब तक नहीं ढूढ़ता जब तक वह उसे पा न ले? <sup>5</sup> और जब वह उसे पा लेता है, तो वह उसे अपने कंधों पर रखकर आनंदित होता है। <sup>6</sup> और जब वह घर आता है, तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाकर कहता है, ‘मेरे साथ आनंद करो, क्योंकि मैंने अपनी खोई हुई भेड़ को पा लिया है।’ <sup>7</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, इसी प्रकार, एक पापी के पश्चाताप करने पर स्वर्ग में अधिक आनंद होगा बजाय नियानवे धर्मियों के जिनको पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है।

<sup>8</sup> “पा कैन स्त्री, जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हों और एक सिक्का खो जाए, तो वह दीपक जलाकर घर को साफ नहीं करती और ध्यानपूर्वक तब तक नहीं खोजती जब तक वह उसे पा न ले? <sup>9</sup> और जब वह उसे पा लेती है, तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाकर कहती है, ‘मेरे साथ आनंद करो, क्योंकि मैंने वह सिक्का पा लिया है जो खो गया था।’ <sup>10</sup> इसी प्रकार, मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर के स्वर्गद्वारों के सामने एक पापी के पश्चाताप करने पर आनंद होता है।”

<sup>11</sup> और उसने कहा, “एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। <sup>12</sup> उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा, ‘पिता, मुझे संपत्ति का वह हिस्सा दे दो जो मेरे लिए है।’ और उसने अपनी संपत्ति उनके बीच बांट दी। <sup>13</sup> और कुछ दिनों बाद, छोटे पुत्र ने सब कुछ इकट्ठा किया और एक दूर देश की यात्रा पर चला गया, और वहाँ उसने अपनी संपत्ति को उन्मुक्त जीवन में बर्बाद कर दिया। <sup>14</sup> अब जब उसने सब कुछ खर्च कर दिया, तो उस देश में एक भयंकर अकाल पड़ा,

और वह अभाव में रहने लगा। <sup>15</sup> इसलिए वह जाकर उस देश के एक नागरिक के पास काम करने लगा, और उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने भेज दिया। <sup>16</sup> और वह उन फलियों से पेट भरने के लिए तरसता था जो सूअर खा रहे थे, और कोई उसे कुछ नहीं देता था। <sup>17</sup> लेकिन जब वह अपने होश में आया, तो उसने कहा, ‘मेरे पिता के कितने ही मजदूरों के पास भरपूर रोटी है, और मैं यहाँ भ्रूख से पर रहा हूँ।’ <sup>18</sup> मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा, और उससे कहूँगा, ‘पिता, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके सामने पाप किया है।’ <sup>19</sup> मैं अब आपके पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ; मुझे अपने मजदूरों में से एक के समान मान लीजिए।’” <sup>20</sup> तो वह उठकर अपने पिता के पास चला गया। लेकिन जब वह अभी दूर ही था, उसके पिता ने उसे देखा और उसके प्रति करुणा महसूस की, और दौड़कर उसे गते लगाया और चूमा। <sup>21</sup> और पुत्र ने उससे कहा, ‘पिता, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके सामने पाप किया है; मैं अब आपके पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ।’ <sup>22</sup> लेकिन पिता ने अपने दासों से कहा, ‘जल्दी से सबसे अच्छा वस्त्र लाओ और उसे पहनाओ, और उसकी उंगली में अंगूठी और उसके पैरों में जूते पहनाओ;’ <sup>23</sup> और मोटा बछड़ा लाओ, उसे मारो, और हम खाएं और आनंद मनाएँ; <sup>24</sup> क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था और फिर जीवित हो गया है; वह खो गया था और पाया गया है।’ और वे आनंद मनाने लगे।

<sup>25</sup> “अब उसका बड़ा पुत्र खेत में था; और जब वह आया और घर के पास पहुँचा, तो उसने संगीत और नृत्य सुना। <sup>26</sup> और उसने एक दास को बुलाया और पूछा कि ये क्या बातें हो रही हैं।” <sup>27</sup> और उसने उससे कहा, ‘तेरा भाई आ गया है, और तेरे पिता ने मोटा बछड़ा मार दिया है क्योंकि उसने उसे सुक्षित और स्वरूप पाया है।’ <sup>28</sup> लेकिन वह क्रोधित हो गया और अंदर जाने को तैयार नहीं था, और उसके पिता बाहर आकर उससे बिनती करने लगे। <sup>29</sup> लेकिन उसने अपने पिता से कहा, ‘देखो! इतने वर्षों से मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ, और मैंने कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया; और फिर भी आपने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी नहीं दिया, ताकि मैं अपने मित्रों के साथ आनंद मना सकूँ;’ <sup>30</sup> लेकिन जब आपका यह पुत्र आया, जिसने आपकी संपत्ति को वेश्याओं के साथ नष्ट कर दिया, आपने उसके लिए मोटा बछड़ा मार दिया। <sup>31</sup> और उसने उससे कहा, ‘पुत्र, तू हमेशा मेरे साथ है, और जो कुछ मेरा है वह तेरा है।’ <sup>32</sup> लेकिन हमें आनंद मनाना और खुश होना चाहिए, क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था और जीवित हो गया है, और खो गया था और पाया गया है।”

# लूका

**16** अब वह चेलों से भी कह रहा था, "एक धनी व्यक्ति था जिसके पास एक प्रबंधक था, और इस प्रबंधक की उसके पास शिकायत की गई कि वह उसकी संपत्ति को बर्बाद कर रहा है।"<sup>2</sup> और उसने उसे बुलाया और कहा, 'यह मैं तुम्हारे बारे में क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबंधन का हिसाब दो, क्योंकि तुम अब और प्रबंधक नहीं रह सकते।'<sup>3</sup> और प्रबंधक ने अपने आप से कहा, मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरा मालिक मुझसे प्रबंधन ले रहा है? मैं खोदने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हूँ, मैं भी ऐसे माँगने में शर्मिदा हूँ।<sup>4</sup> मुझे पता है कि मैं क्या करूँगा, ताकि जब मुझे प्रबंधन से हटा दिया जाए तो लोग मुझे अपने घरों में स्वागत करें।<sup>5</sup> और उसने अपने मालिक के प्रत्येक ऋणी को बुलाया, और पहले से कहने लगा, 'तुम मेरे मालिक को कितना देते हो?'<sup>6</sup> और उसने कहा, 'सौ धड़े तेल।' तो उसने उससे कहा, 'अपना बिल लो, और जल्दी से बैठकर पचास लिखो।'<sup>7</sup> फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुम कितना देते हो?' और उसने कहा, 'सौ कोर गेहूँ।' उसने उसके कहा, 'अपना बिल लो, और अस्सी लिखो।'<sup>8</sup> और उसके मालिक ने उस अन्यायी प्रबंधक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम किया था; क्योंकि इस युग के पुत्र अपने ही प्रकार के संबंध में ज्योति के पुत्रों से अधिक चतुर होते हैं।<sup>9</sup> और मैं तुमसे कहता हूँ, अन्याय के धन के माध्यम से अपने लिए मित्र बनाओ, ताकि जब वह सब समाप्त हो जाए, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ग्रहण करें।

<sup>10</sup> 'जो बहुत थोड़ी बात में विश्वासयोग्य है वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है; और जो बहुत थोड़ी बात में अन्यायी है वह बहुत में भी अन्यायी है।'<sup>11</sup> इसलिए, यदि तुम अन्याय के धन के उपयोग में विश्वासयोग्य नहीं रहे हो, तो कौन तुम्हें सच्चा धन सौंपेगा?<sup>12</sup> और यदि तुम दूसरे के उपयोग में विश्वासयोग्य नहीं रहे हो, तो कौन तुम्हें वह देगा जो तुझारा है?<sup>13</sup> काई भी सेवक दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि या तो वह एक से धृणा करेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे को तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकते।'

<sup>14</sup> अब फरीसी, जो धन के प्रेमी थे, ये सब बातें सुन रहे थे और उसका उपहास कर रहे थे।<sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, 'तुम वे हो जो लोगों को दृष्टि में अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परंतु परमेश्वर तुम्हारे हृदयों को जानता है, क्योंकि जो लोगों में अत्यधिक प्रतिष्ठित है वह परमेश्वर की दृष्टि में धृणास्पद है।'

<sup>16</sup> "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का प्रचार तब तक किया गया जब तक यूहन्ना आया; उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया जा रहा है, और हर कोई उसमें प्रवेश करने के लिए जोर दे रहा है।"<sup>17</sup> परंतु यह आकाश और पृथ्वी के टल जाने से आसान है कि व्यवस्था के एक अक्षर का भी असफल होना।<sup>18</sup> हर कोई जो अपनी पती को तलाक देता है और दूसरी से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है, और जो तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है वह व्यभिचार करता है।

<sup>19</sup> "अब एक धनी व्यक्ति था, और वह प्रतिदिन बैंगनी और उत्तम मलमल में वस्त्र धारण करता था, और प्रतिदिन भवता में आनंद लेता था।"<sup>20</sup> और लाज़र नामक एक गरीब व्यक्ति उसके द्वारा पर रखा गया था, जो घावों से ढका हुआ था,<sup>21</sup> और वह उस धनी व्यक्ति की मेज से गिरने वाले टुकड़ों से तृप्त होने की लालसा करता था। इतना ही नहीं, कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।<sup>22</sup> अब ऐसा हुआ कि वह गरीब व्यक्ति मर गया और सर्वग्रन्थों द्वारा अब्राहम की गोद में ले जाया गया; और वह धनी व्यक्ति भी मर गया और दफनाया गया।<sup>23</sup> और अधीलोक में उसने अपनी आँखें उठाई, पीड़ा में रहते हुए, और अब्राहम को दूर से देखा और लाज़र को उसकी गोद में।<sup>24</sup> और उसने पुकार कर कहा, पिता अब्राहम, मुझ पर दया करो, और लाज़र को भेजो ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में डुबोकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में पीड़ा मैं हूँ।<sup>25</sup> परंतु अब्राहम ने कहा, 'बेटा, स्मरण करो कि अपने जीवन में तुमने अपनी अच्छी चीजें प्राप्त कीं, और इसी प्रकार लाज़र ने बुरी चीजें; परंतु अब वह यहाँ शति में है, और तुम पीड़ा मैं हो।'<sup>26</sup> और इन सब के अलावा, हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ा साईर खपायित किया गया है, ताकि जो यहाँ से तुझारे पास जाना चाहते हैं वे न जा सकें, और न ही कोई वहाँ से हमारे पास आ सके।<sup>27</sup> और उसने कहा, 'तब मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ, पिता, कि तुम उसे मेरे पिता के घर भेजो—<sup>28</sup> क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं—ताकि वह उन्हें चेतावनी दे, ताकि वे भी इस पीड़ा के स्थान पर न आएं।'

<sup>29</sup> परंतु अब्राहम ने कहा, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; उन्हें उनकी सुनने दो।'<sup>30</sup> परंतु उसने कहा, 'नहीं, पिता अब्राहम; परंतु यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे पश्चाताप करेंगे।'<sup>31</sup> परंतु उसने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो वे तब भी विश्वास नहीं करेंगे यदि कोई मरे हुओं में से जी उठे।'

# लूका

**17** अब उसने अपने शिष्यों से कहा, “यह अनिवार्य है कि ठोकर खाने के कारण आएंगे, परन्तु उस व्यक्ति पर हाय है जिसके द्वारा वे आते हैं।<sup>2</sup> उसके लिए यह अच्छा है कि उसके गते में चक्की का पाट लटका दिया जाए और उसे समुद्र में फेंक दिया जाए, इससे कि वह इन छोटे लोगों में से किसी को पाप में डाल दे।<sup>3</sup> अपनी रक्षा करो! यदि तुम्हारा भाई पाप करे, तो उसे डांटो; और यदि वह पश्चातप करे, तो उसे क्षमा करो।<sup>4</sup> और यदि वह दिन में सात बार तुम्हारे विश्वद्व पाप करे, और सात बार तुम्हारे पास लौटकर कहे, ‘मैं पश्चातप करता हूँ’ तो तुम उसे क्षमा करोगे।”

<sup>5</sup> प्रेरितों ने प्रभु से कहा, “हमारा विश्वास बढ़ा!”<sup>6</sup> परन्तु प्रभु ने कहा, “यदि तुम्हारे पास राई के दाने के बराबर विश्वास होता, तो तुम इस शहरतू के पेड़ से कह सकते, ‘उखड़ जा और समुद्र में लग जा,’ और वह तुम्हारी बात मान लेता।

<sup>7</sup> “अब तुम मैं से कौन है, जिसके पास एक दास हल चला रहा हो या भेड़-बकरियों की देखभाल कर रहा हो, जब वह खेत से आए, तो उससे कहे, ‘तुरंत आओ और खाने के लिए मेज पर बैठो?’<sup>8</sup> इसके विपरीत, क्या वह उससे नहीं कहेगा, ‘मेरे लिए खाने के लिए कुछ तैयार करो, और ठीक से कपड़े पहनकर मेरी सेवा करो जब तक मैं खाऊं और पीऊं; और बाद मैं तुम खा और पी सकते हो?’<sup>9</sup> क्या वह दास को ध्यावाद देता है क्योंकि उसने वे काम किए जो उसे आदेश दिए गए थे, क्या वह करता है?<sup>10</sup> तो तुम भी, जब तुम वे सब काम कर लो जो तुम्हें आदेश दिए गए हैं, कहो, ‘हम अयोग्य दास हैं; हमने केवल वही किया जो हमें करना चाहिए था।’”

<sup>11</sup> जब वह यरुशलैम की ओर जा रहा था, वह सामरिया और गलील के बीच से गुजर रहा था।<sup>12</sup> और जब वह एक गाँव में प्रवेश कर रहा था, तो दस कोढ़ी जो दूर खड़े थे, उससे मिले;<sup>13</sup> और उन्होंने अपनी आवाजें उठाई, कहते हुए, “यीशु, स्वामी, हम पर दया करो।”<sup>14</sup> जब उसने उन्हें देखा, तो उनसे कहा, “जाओ और अपने आप को याजकों को दिखाओ।” और जैसे ही वे जा रहे थे, वे शुद्ध हो गए।<sup>15</sup> अब उनमें से एक, जब उसने देखा कि वह चंगा हो गया है, लौट आया, उच्च स्तर में परमेश्वर की महिमा करता हुआ,<sup>16</sup> और वह उसके पैरों पर गिर पड़ा, उसे ध्यावाद देता हुआ। और वह एक सामरी था।<sup>17</sup> परन्तु यीशु ने उत्तर दिया और कहा, “क्या दस शुद्ध नहीं हुए? परन्तु वे नौ कहाँ हैं?<sup>18</sup> क्या कोई नहीं मिला जो परमेश्वर की महिमा करने के लिए लौटे, सिवाय इस

विदेशी के?”<sup>19</sup> और उसने उससे कहा, “उठो और जाओ; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें अच्छा किया है।”

<sup>20</sup> अब जब फरीसियों ने पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आ रहा है, तो उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा, “परमेश्वर का राज्य उन संकेतों के साथ नहीं आ रहा है जिन्हें देखा जा सके;<sup>21</sup> और न ही वे कहेंगे, ‘देखो, यहाँ है!’ या, ‘वहाँ है!’ क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।”

<sup>22</sup> और उसने शिष्यों से कहा, “वे दिन आएंगे जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक को देखने की लालसा करोगे, और तुम उसे नहीं देखोगे।”<sup>23</sup> और वे तुमसे कहेंगे, ‘वहाँ देखो,’ या, ‘यहाँ देखो!’ मत जाओ, और उनके पीछे मत दौड़ो।<sup>24</sup> क्योंकि जैसे बिजली एक आकाश के हिस्से से चमकती है और आकाश के दूसरे हिस्से तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र अपने दिन में होगा।<sup>25</sup> परन्तु पहले उसे बहुत सी बातें सहनी होंगी और इस पीढ़ी द्वारा अस्वीकार किया जाएगा।

<sup>26</sup> और जैसे नृह के दिनों में हुआ था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में ही होगा;<sup>27</sup> लोग खा रहे थे, पी रहे थे, विवाह कर रहे थे, और विवाह में दिए जा रहे थे, जब तक कि नृह ने जहाज में प्रवेश नहीं किया, और बाढ़ आई और उन सबको नष्ट कर दिया।<sup>28</sup> यह लूट के दिनों में ऐसा ही हुआ: वे खा रहे थे, पी रहे थे, खरीद रहे थे, बेच रहे थे, पौधे लगा रहे थे, निर्माण कर रहे थे;<sup>29</sup> परन्तु जिस दिन लूट सदोम से निकला, आकाश से आग और गंधक की वर्षा हुई और उन सबको नष्ट कर दिया।<sup>30</sup> यह उसी दिन होगा जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा।

<sup>31</sup> उस दिन, जो छत पर होगा, उसके सामान घर में होंगे, उसे उन्हें लेने के लिए नीचे नहीं जाना चाहिए; और वैसे ही जो खेत में होगा उसे पीछे नहीं मुड़ना चाहिए।<sup>32</sup> लूट की पत्नी को याद करो।<sup>33</sup> जो कोई अपने जीवन को बचाने का प्रयास करेगा, वह उसे खो देगा, और जो कोई अपने जीवन को खोएगा, वह उसे सुरक्षित रखेगा।

<sup>34</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, उस रात दो एक बिस्तर में होंगे; एक लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।<sup>35</sup> दो महिलाएँ एक ही स्थान पर अनाज पीस रही होंगी; एक ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।<sup>36</sup> दो पुरुष खेत में होंगे; एक लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।”]

# लूका

<sup>37</sup> और उत्तर देते हुए, उन्होंने उससे कहा, “कहाँ, प्रभु?” और उसने उनसे कहा, “जहाँ शरीर होगा, वहाँ गिर्द भी इकट्ठे होंगे।”

**18** अब वह उन्हें एक दृष्टित सुनाने लगे ताकि यह दिखा सके कि हर समय उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए और निराश नहीं होना चाहिए,<sup>2</sup> कहते हुए, “एक नगर में एक चायाधीश था जो न तो परमेश्वर से डरता था और न ही किसी व्यक्ति का सम्मान करता था।<sup>3</sup> अब उस नगर में एक विधावा थी, और वह उसके पास बार-बार आकर कहती थी, ‘मेरे विरोधी के खिलाफ मुझे न्याय दिलाओ।’<sup>4</sup> कुछ समय तक वह अनिच्छुक था; लेकिन बाद में उसने अपने आप से कहा, ‘यद्यपि मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ और न ही किसी व्यक्ति का सम्मान करता हूँ,<sup>5</sup> फिर भी क्योंकि यह विधावा मुझे परेशान कर रही है, मैं उसे न्याय दिलाऊंगा; अन्यथा वह लगातार आकर मुझे थका देगी।’<sup>6</sup> और प्रभु ने कहा, “उस अन्यायी चायाधीश ने क्या कहा, सुनो;<sup>7</sup> अब, क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों के लिए चायाय नहीं करेगा जो दिन और रात उसे पुकारते हैं, और क्या वह उनके लिए देर करेगा?<sup>8</sup> मैं तुमसे कहता हूँ कि वह उनके लिए जल्दी न्याय करेगा। हालांकि, जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?”

<sup>9</sup> अब उसने यह दृष्टित कुछ लोगों को सुनाया जो अपने आप पर भरोसा करते थे कि वे धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ समझते थे:<sup>10</sup> “दो व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए मंदिर में गए, एक फरीसी और दूसरा कर वसूलने वाला।<sup>11</sup> फरीसी खड़ा होकर अपने बारे में यह प्रार्थना करने लगा: परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूँ: ठग, बैरीमान, व्यभिचारी, या इस कर वसूलने वाले की तरह भी नहीं।<sup>12</sup> मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ; मैं जो कुछ भी प्राप्त करता हूँ उसका दाशमंश देता हूँ।”<sup>13</sup> लेकिन कर वसूलने वाला, कुछ दूरी पर खड़ा होकर, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाने के लिए भी अनिच्छुक था, बल्कि अपनी छाती पीटते हुए कह रहा था, ‘परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।’<sup>14</sup> मैं तुमसे कहता हूँ, यह व्यक्ति अपने घर धर्मी ठहरकर गया न कि दूसरा; क्योंकि जो कोई अपने आप को ऊँचा करता है वह नीचा किया जाएगा, लेकिन जो अपने आप को नीचा करता है वह ऊँचा किया जाएगा।”

<sup>15</sup> अब वे अपने बच्चों को भी उसके पास ला रहे थे ताकि वह उन्हें छुए; लेकिन जब चेलों ने यह देखा, तो वे उन्हें डाँठें लगे।<sup>16</sup> लेकिन यीशु ने छोटे बच्चों को बुलाया, कहते हुए, ‘बच्चों को मेरे पास आने दो, और

उन्हें मना मत करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है।<sup>17</sup> सच में मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता, वह उसमें प्रवेश नहीं करेगा।”

<sup>18</sup> एक शासक ने उससे पूछा, “अच्छे शिक्षक, अनंत जीवन का वारिस होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”

<sup>19</sup> लेकिन यीशु ने उससे कहा, “तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो? केवल परमेश्वर ही अच्छा है।<sup>20</sup> तुम आजाओं को जानते हों: व्यभिचार मत करो, हत्या मत करो, चोरी मत करो, झूठी गवाही मत दो, अपने पिता और माता का सम्मान करो।”<sup>21</sup> और उसने कहा, “ये सब बातें मैंने अपनी जावानी से ही मानी हैं।”<sup>22</sup> अब जब यीशु ने यह सुना, तो उसने उससे कहा, “एक बात की तुहाँ अभी भी कमी है; जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच दो और धन गरीबों में बाँट दो, और तुहाँ स्वर्ग में खेजाना मिलेगा; और आओ, मेरा अनुसरण करो।”<sup>23</sup> लेकिन जब उसने ये बातें सुनीं, तो वह बहुत दुखी हो गया, क्योंकि वह अत्यंत धनी था।

<sup>24</sup> और यीशु ने उसे देखकर कहा, “परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए धनियों के लिए कितना कठिन है।<sup>25</sup> क्योंकि एक ऊँट का सुई के छेद से गुजरना आसान है, बजाय इसके कि एक धनी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे।”<sup>26</sup> जो लोग उसे सुन रहे थे, उन्होंने कहा, “तो फिर कौन बच सकता है?”<sup>27</sup> लेकिन उसने कहा, “जो बातें मनुष्यों के लिए असंभव हैं, वे परमेश्वर के लिए संभव हैं।”

<sup>28</sup> पतरस ने कहा, “देखो, हमने अपने घर छोड़ दिए हैं और तेरा अनुसरण किया है।”<sup>29</sup> और उसने उनसे कहा, “सच में मैं तुमसे कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने घर, या पत्नी, या भाई, या माता-पिता, या बच्चों को छोड़ा हो, परमेश्वर के राज्य के लिए,<sup>30</sup> जो इस समय में कई गुना अधिक प्राप्त नहीं करेगा, और आने वाले युग में, अनंत जीवन।”

<sup>31</sup> अब उसने बारहों को अलग ले जाकर उनसे कहा, “देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं, और मनुष्य के पुत्र के बारे में जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखा गया है, वह पूरा होगा।<sup>32</sup> क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथों में सौंपा जाएगा, और उसका उपहास किया जाएगा, और दुर्व्यवहार किया जाएगा, और उस पर थूका जाएगा;<sup>33</sup> और जब वे उसे कोडे मारेंगे, तो वे उसे मार डालेंगे; और तीसरे दिन वह जी उठेगा।”<sup>34</sup> चेलों ने इन बातों में से

# लूका

कुछ भी नहीं समझा, और इस कथन का अर्थ उनसे छिपा रहा, और वे कहीं गई बातों को नहीं समझे।

<sup>35</sup> अब जब यीशु यरीहो के पास आ रहे थे, एक अंधा व्यक्ति सड़क के किनारे बैठा भीख माँग रहा था। <sup>36</sup> लेकिन जब उसने एक भीड़ को जाते हुए सुना, तो वह पूछने लगा कि यह क्या है। <sup>37</sup> उन्होंने उसे बताया, "नासरत का यीशु जा रहा है।" <sup>38</sup> और उसने पुकारते हुए कहा, "दाऊद के पुत्र यीशु, मुझ पर दया कर।" <sup>39</sup> जो लोग आगे बढ़ रहे थे, वे उसे चुप रखने के लिए कहीं चेतावनी दे रहे थे; लेकिन वह और भी जोर से चिल्लता रहा, "दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर।" <sup>40</sup> और यीशु रुक गए और आदेश दिया कि उसे उनके पास लाया जाए; और जब वह पास आया, तो उसने उससे पूछा, <sup>41</sup> "तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?" और उसने कहा, "प्रभु, मैं अपनी दृष्टि फिर से प्राप्त करना चाहता हूँ।" <sup>42</sup> और यीशु ने उससे कहा, "अपनी दृष्टि फिर से प्राप्त करो; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें अच्छा किया है।" <sup>43</sup> और तुरंत उसने अपनी दृष्टि फिर से प्राप्त की और उसका अनुसरण करने लगा, परमेश्वर की महिमा करता हुआ; और जब सभी लोगों ने इसे देखा, तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

**19** यीशु यरीहो में प्रवेश कर रहे थे और वहाँ से गुजर रहे थे। <sup>2</sup> और वहाँ एक व्यक्ति था जिसका नाम जकर्कई था; वह एक मुख्य कर संग्रहकर्ता था और वह धनी था। <sup>3</sup> जकर्कई यह देखने का प्रयास कर रहा था कि यीशु कौन है, और वह भीड़ के कारण ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि वह कद में छोटा था। <sup>4</sup> इसलिए वह आगे दौड़कर एक गूँह के पेड़ पर चढ़ गया ताकि उसे देख सके, क्योंकि वह उस रास्ते से गुजरने वाला था। <sup>5</sup> जब यीशु उस स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने ऊपर देखा और उससे कहा, "जकर्कई, जल्दी करो और नीचे आओ, क्योंकि आज मुझे तुम्हारे घर में ठहरना है।" <sup>6</sup> और उसने जल्दी की और नीचे आया, और उसे खुशी से ग्रहण किया। <sup>7</sup> जब लोगों ने यह देखा, तो वे सब शिकायत करने लगे, "वह एक पापी व्यक्ति के अतिथि बनने गया है।" <sup>8</sup> लेकिन जकर्कई ने रुककर प्रभु से कहा, "देखो, प्रभु, मैं अपनी आधी संपत्ति गरीबों को दे रहा हूँ, और यदि मैंने किसी से कुछ भी धोखे से लिया है, तो मैं उसे चार गुना लौटा रहा हूँ।" <sup>9</sup> यीशु ने उससे कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि वह भी अब्राहम का पुत्र है।" <sup>10</sup> क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को खोजने और बचाने आया है।"

<sup>11</sup> अब जब वे ये बातें सुन रहे थे, यीशु ने एक दृष्टिंत सुनाया, क्योंकि वह यरूशलेम के निकट था, और वे सोच रहे थे कि परमेश्वर का राज्य तुरंत प्रकट होने वाला है। <sup>12</sup> इसलिए उन्होंने कहा, "एक कुलीन व्यक्ति एक दूर देश में गया ताकि अपने लिए एक राज्य प्राप्त कर सके, और फिर लौट आए।" <sup>13</sup> और उसने अपने दस दासों को बुलाया, और उन्हें दस मीनस दिए, और उनसे कहा, "इस धन से व्यापार करो जब तक मैं वापस न आऊँ।" <sup>14</sup> लेकिन उसके नागरिक उससे नफरत करते थे और उसके पीछे एक प्रतिनिधिमंडल भेजा, हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर शासन करे।" <sup>15</sup> जब वह राज्य प्राप्त करने के बाद लौटा, तो उसने उन दासों को बुलाया, जिन्हें उसने धन दिया था, ताकि वह जान सके कि उन्होंने व्यापार करके कितना कमाया है। <sup>16</sup> पहला आया, कहता है, "स्वामी, आपके मीनस ने दस मीनस और बनाए हैं।" <sup>17</sup> और उसने उससे कहा, "शाबाश, अच्छे दास, क्योंकि तुमने बहुत थोड़े मैं विश्वासयोग्य रहे हो, तुम्हें दस नारों पर अधिकार होगा।" <sup>18</sup> दूसरा आया, कहता है, "आपके मीनस, स्वामी, ने पाँच मीनस बनाए हैं।" <sup>19</sup> और उसने उससे भी कहा, "और तुम पाँच नगरों पर अधिकार करोगे।" <sup>20</sup> और फिर एक और आया, कहता है, "स्वामी, यहाँ आपका मीनस है, जिसे मैंने एक रूमाल में लपेटकर रखा था;" <sup>21</sup> क्योंकि मैं आपसे डरता था, क्योंकि आप एक कठोर व्यक्ति हैं: आप वह उठाते हैं जो आपने नहीं रखा, और वह काटते हैं जो आपने नहीं बोया।" <sup>22</sup> उसने उससे कहा, मैं तुम्हारे ही शब्दों से तुम्हारा नाया करूँगा, तुम निकम्मे दास। क्या तुम जानते थे कि मैं एक कठोर व्यक्ति हूँ, जो वह उठाता हूँ जो मैंने नहीं रखा और वह काटता हूँ जो मैंने नहीं बोया? <sup>23</sup> फिर तुमने मेरा धन बैंक में क्यों नहीं रखा, और जब मैं आया, तो मैं उसे ब्याज सहित प्राप्त कराता? <sup>24</sup> और फिर उसने उपस्थित दासों से कहा, 'उससे मीनस ले लो और उसे दे दो जिसके पास दस मीनस हैं।' <sup>25</sup> और उन्होंने उससे कहा, "स्वामी, उसके पास पहले से ही दस मीनस हैं।" <sup>26</sup> मैं तुमसे कहता हूँ कि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है। <sup>27</sup> लेकिन मेरे उन शत्रुओं के बारे में जिन्होंने नहीं चाहा कि मैं उन पर शासन करूँ, उन्हें यहाँ लाओ और मेरे सामने मार डालो।"

<sup>28</sup> इन बातों को कहने के बाद, वह आगे बढ़ रहे थे, यरूशलेम की ओर जा रहे थे। <sup>29</sup> जब वह बेथफगे और बेथानी के निकट पहुँचे, जो जैतून के पहाड़ के पास है, उन्होंने दो चेतों को भेजा, <sup>30</sup> कहते हुए, "तुम्हारे सामने के गाँव में जाओ; वहाँ, जैसे ही तुम प्रवेश करोगे, तुम्हें

# लूका

एक गधा बंधा हुआ मिलेगा जिस पर कभी कोई नहीं बैठा; उसे खोलकर यहाँ लाओ।<sup>31</sup> और यदि कोई तुमसे पूछे, तुम उसे क्यों खोल रहे हो? तो तुम यह कहना, 'प्रभु को उसकी आवश्यकता है!'<sup>32</sup> तो जिहें भेजा गया था, वे गए और जैसा उन्होंने उत्थें बताया था, वैसा ही पाया।<sup>33</sup> और जब वे गधे को खोल रहे थे, उसके मालिकों ने उनसे कहा, 'तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?'<sup>34</sup> उन्होंने कहा, 'प्रभु को उसकी आवश्यकता है।'<sup>35</sup> और वे उसे यीशु के पास लाए, और उन्होंने अपने वस्त गध पर डाले और यीशु को उस पर बैठाया।<sup>36</sup> अब जब वह जा रहे थे, वे अपने वस्त रास्ते पर बैछा रहे थे।<sup>37</sup> जैसे ही वह जैतून के पहाड़ की ढालान के निकट पहुँचे, चेतों की पूरी भीड़ ने उन सभी चमत्कारों के लिए जो उन्होंने देखे थे, उच्च स्तर में आनन्दपूर्वक परमेश्वर की स्तुति करना शुरू कर दिया,<sup>38</sup> चिल्लाते हुए: 'धन्य है राजा, जो प्रभु के नाम से आता है; स्वर्ग में शांति और उच्चतम में महिमा।'<sup>39</sup> और फिर भी भीड़ में कुछ फरीसीयों ने उनसे कहा, 'गुरु, अपने चेतों को डालो।'<sup>40</sup> यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ये बोलना बंद कर दें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।'

<sup>41</sup> जब वह यरूशलैम के निकट पहुँचे, तो उन्होंने नगर को देखा और उस पर रोए,<sup>42</sup> कहते हुए, 'यदि तुमने इस दिन पर जाना होता, यहाँ तक कि तुमने, शांति की शर्तें लेकिन अब वे तुम्हारी आँखों से छिपी हुई हैं।'<sup>43</sup> क्योंकि वे दिन तुम पर आएंगे जब तुम्हारे शर्तु तुम्हारे खिलाफ एक अरोध खड़ा करेंगे, और तुम्हें चारों ओर से धेर लेंगे और तुम्हें हर तरफ से धेर लेंगे,<sup>44</sup> और वे तुम्हें और तुम्हारे भीतर के बच्चों को जमीन पर गिरा देंगे, और वे तुम्हारे भीतर एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि तुमने अपने दर्शन के समय को नहीं पहचाना।<sup>45</sup>

<sup>45</sup> यीशु मंदिर के मैदान में प्रवेश किए और बेचने वालों को बाहर निकालना शुरू किया,<sup>46</sup> उनसे कहते हुए, 'यह लिखा है: 'और मेरा धर प्रार्थना का धर होगा,' लेकिन तुमने इसे डाकूओं की गुफा बना दिया है।'<sup>47</sup> और वह प्रतिदिन मंदिर में शिक्षा दे रहे थे; लेकिन मुख्य याजक और शास्त्री और लोगों में प्रमुख व्यक्ति उन्हें मार डालने की कोशिश कर रहे थे,<sup>48</sup> और फिर भी वे कुछ भी नहीं कर सके जो वे कर सकते थे, क्योंकि सभी लोग उनके कहे हर शब्द पर लटके हुए थे।

**20** उन दिनों में से एक दिन जब वह मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहे थे और सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, महायाजक और शास्त्री, बुजुर्गों के साथ, उसके पास

आए।<sup>2</sup> और उन्होंने उससे कहा, 'हमें बताओ कि तुम ये काम किस अधिकार से कर रहे हो, या वह कौन है जिसने तुम्हें यह अधिकार दिया है?'<sup>3</sup> परन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, 'मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, और तुम मुझे बताओ: क्या यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था, या मनुष्यों से?'<sup>5</sup> उन्होंने आपस में विचार किया, 'यदि हम कहें, स्वर्ग से,' तो वह कहेगा, 'तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?'<sup>6</sup> परन्तु यदि हम कहें, 'मनुष्यों से,' तो सब लोग हमें पसराएंगे मार डालेंगे, क्योंकि वे विश्वास करते हैं कि यूहन्ना एक नन्ही था।'<sup>7</sup> और उन्होंने उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से आया था।<sup>8</sup> और यीशु ने उनसे कहा, 'ना ही मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।'

<sup>9</sup> फिर उसने लोगों को यह दृष्टांत सुनाना शुरू किया: 'एक व्यक्ति ने एक दाख की बारी लगाई, और उसे बागवानों को किराए पर दिया, और एक लंबे समय के लिए यात्रा पर चला गया।<sup>10</sup> फसल के समय उसने एक दास को बागवानों के पास भेजा, ताकि वे उसे दाख की बारी के कुछ फल दें; परन्तु बागवानों ने उसे पीटा और खाली हाथ लौटा दिया।<sup>11</sup> और उसने एक और दास को भेजा; परन्तु उन्होंने उसे भी पीटा और अपमानित किया, और खाली हाथ लौटा दिया।<sup>12</sup> और उसने तीसरे को भेजा; परन्तु इसको भी उन्होंने घायल किया और बाहर फेंक दिया।<sup>13</sup> अब दाख की बारी के मालिक ने कहा, 'मैं क्या करूँ?' मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा; शायद वे उसका आदर करेंगे।<sup>14</sup> परन्तु जब बागवानों ने उसे देखा, तो उन्होंने आपस में विचार किया, यह वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें ताकि विरासत हमारी हो जाए।<sup>15</sup> और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर फेंक दिया और मार डाला। फिर, दाख की बारी का मालिक उनके साथ क्या करेगा?<sup>16</sup> वह आएगा और इन बागवानों को मार डालेगा, और दाख की बारी को दूसरों को दे देगा।<sup>17</sup> जब उन्होंने यह सुना, तो कहा, 'ऐसा कभी न हो।'<sup>18</sup> परन्तु यीशु ने उन्हें देखा और कहा, 'फिर यह वरचन क्या है जो लिखा गया?

'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया है?

<sup>18</sup> जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा, वह चूर-चूर हो जाएगा; परन्तु जिस पर वह गिरेगा, उसे कुचल देगा।'<sup>19</sup> यास्ती और महायाजक उसी घड़ी उसे पकड़ने का प्रयास कर रहे थे, फिर भी वे लोगों से डरते थे; क्योंकि वे समझ गए थे कि उसने यह दृष्टांत उनके विरुद्ध कहा था।

# लूका

२० और उन्होंने उसे ध्यान से देखा, और जासूस भेजे जो धार्मिक होने का ढींग करते थे, ताकि वे उसे किसी बात में पकड़ सकें, ताकि वे उसे राज्यपाल के अधिकार और अधिकार में सौंप सकें।<sup>21</sup> और उन्होंने उससे प्रश्न किया, “गुरु, हम जानते हैं कि आप सही बोलते और सिखाते हैं, और किसी के प्रति पक्षपाती नहीं हैं, परन्तु आप सत्य के आधार पर परमेश्वर का मार्ग सिखाते हैं।<sup>22</sup> क्या हमारे लिए कैसर को कर देना उचित है, या नहीं?”<sup>23</sup> परन्तु उसने उनकी चालाकी को समझ लिया और उनसे कहा, <sup>24</sup> “मुझे एक दीनार दिखाओ। उस पर किसकी छवि और लेख है?” उन्होंने कहा, “कैसर की!”<sup>25</sup> और उसने उनसे कहा, “फिर कैसर की वस्तुएँ कैसर को दो, और परमेश्वर की वस्तुएँ परमेश्वर को।”<sup>26</sup> और वे लोगों के समाने उसे किसी बात में पकड़ने में असमर्थ थे; और वे उसके उत्तर से चकित हो गए, और कुछ नहीं कहा।

२७ अब सदूकी (जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है) उसके पास आए,<sup>28</sup> और उन्होंने उससे प्रश्न किया, “गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा कि यदि किसी मनुष्य का भाई मर जाए, और उसकी पत्नी हो, और वह निःसंतान हो, तो उसका भाई उस पत्नी से विवाह करें और अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करें।<sup>29</sup> तो फिर, सात भाई थे; और पहले ने एक पत्नी ली और निःसंतान मर गया,<sup>30</sup> और दूसरे ने,<sup>31</sup> और तीसरे ने उससे विवाह किया; और इसी प्रकार सभी सात मर गए, और कोई संतान नहीं छोड़ी।<sup>32</sup> अंत में वह स्त्री भी मर गई।<sup>33</sup> पुनरुत्थान में, इसलिए, वह स्त्री किसकी पत्नी बनेगी? क्योंकि सभी सात ने उससे विवाह किया था।”<sup>34</sup> यीशु ने उनसे कहा, “इस युग के पुत्र विवाह करते हैं और स्त्रियाँ विवाह में दी जाती हैं,<sup>35</sup> परन्तु जो उस युग और मृतकों के पुनरुत्थान को प्राप्त करने के योग्य माने जाते हैं, वे न तो विवाह करते हैं और न विवाह में दिए जाते हैं;<sup>36</sup> क्योंकि वे अब और मर नहीं सकते, क्योंकि वे स्वर्वद्वितीयों के समान हैं, और परमेश्वर के पुत्र हैं, पुनरुत्थान के पुत्र होने के कारण।<sup>37</sup> परन्तु इस बात के बारे में कि मृतकों को उठाया जाता है, यह भी मूसा ने जलती हुई झाड़ी के प्रसंग में प्रकट किया, जहाँ वह प्रभु को अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर कहता है।<sup>38</sup> अब वह मृतकों का परमेश्वर नहीं है, परन्तु जीवितों का है; क्योंकि सभी उसके लिए जीवित हैं।<sup>39</sup> कुछ शास्त्रियों ने उत्तर दिया और कहा, “गुरु, आपने अच्छा कहा है।”<sup>40</sup> क्योंकि उनमें से किसी को भी अब और किसी बात के लिए उससे प्रश्न पूछने का साहस नहीं था।

<sup>41</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, “वे मसीह को दाऊद का पुत्र कैसे कहते हैं? <sup>42</sup> क्योंकि दाऊद स्वयं भजनों की पुस्तक में कहता है,

‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने हाथ बैठ, <sup>43</sup> जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”’

<sup>44</sup> इसलिए दाऊद उसे ‘प्रभु’ कहता है, और वह उसका पुत्र कैसे है?”

<sup>45</sup> और जब सब लोग सुन रहे थे, उसने अपने शिष्यों से कहा, <sup>46</sup> “शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लाज्ब वस्त्र पहनकर घूमाना पसंद करते हैं, और बाजारों में व्यक्तिगत अभिवादन से प्रेम करते हैं, और सभगृहों में समान की सीटें, और भोजों में समान के स्थान,<sup>47</sup> जो विधवाओं के घरों को निगल जाते हैं, और दिखावे के लिए लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। इनको अधिक दंड मिलाया।”

**21** अब उसने ऊपर देखा और देखा कि धनी लोग मंदिर के खजाने में अपने उपहार डाल रहे हैं।<sup>2</sup> और उसने एक गरीब विधवा को देखा जो दो लेण्ठ सिक्के डाल रही थी।<sup>3</sup> और उसने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने उन सब से अधिक डाला है;<sup>4</sup> क्योंकि उन्होंने अपनी अधिकता में से चढ़ावा दिया, पर उसने अपनी गरीबी में से सब कुछ डाल दिया जो उसके पास जीने के लिए था।”

<sup>5</sup> और जब कुछ लोग मंदिर के बारे में बात कर रहे थे, कि यह सुंदर पत्तरों और मन्त्रत के उपहारों से सजाया गया था, उसने कहा, <sup>6</sup> “इन चीजों के बारे में जो तुम देख रहे हो, दिन आएंगे जब एक पत्तर पर दूसरा पत्तर नहीं रहेगा, जो गिराया नहीं जाएगा।”<sup>7</sup> उन्होंने उससे पूछा, “गुरु, ये बातें कब होंगी? और जब ये बातें होने वाली होंगी तो क्या चिन्ह होगा?”

<sup>8</sup> और उसने कहा, “देखो कि तुम धोखा न खाओ; क्योंकि बहुत से मेरे नाम में आएंगे, कहते हुए, मैं वही हूँ; और, समय निकट है।” उनके पीछे मत जाओ।<sup>9</sup> और जब तुम युद्धों और विद्रोहों की बातें सुनो, तो घबराओ मत; क्योंकि ये बातें पहले होनी चाहिए, परन्तु अंत तुरंत नहीं आएगा।<sup>10</sup> फिर उसने उनसे कहा, “राष्ट्र राष्ट्र के विसर्द उठाएं, और राज्य राज्य के विसर्द,<sup>11</sup> और बड़े भूकप होंगे, और विभिन्न स्थानों में महामारियाँ और अकाल होंगे; और भयानक दृश्य और स्वर्ग से बड़े चिन्ह प्रकट होंगे।

# लूका

<sup>12</sup> “परंतु इन सब बातों से पहले, वे तुम पर हाथ डालेंगे और तुम्हें सताएंगे, तुम्हें आराधनालयों और जेलों में सौंपेंगे, और तुम्हें राजाओं और शासकों के सामने मेरे नाम के कारण लाएंगे। <sup>13</sup> यह तुम्हारी गवाही के लिए एक अवसर होगा। <sup>14</sup> इसलिए अपने मन में ठान लो कि पहले से अपनी रक्षा के लिए तैयारी न करो; <sup>15</sup> क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी वाक्पटुता और बुद्धि द्वांग जिसे तुम्हारे विरोधी विरोध या खंडन नहीं कर सकेंगे। <sup>16</sup> परंतु तुम्हारे मातापिता, भाई-बहन, अन्य संबंधी और मित्र भी तुम्हें खोखा देंगे, और वे तुम्हें से कुछ को मृत्यु के घाट उतार देंगे, <sup>17</sup> और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम्हें धूमा करेंगे। <sup>18</sup> फिर भी तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट नहीं होगा। <sup>19</sup> तुम्हारी धैर्य से, तुम अपने जीवन को प्राप्त करोगे।

<sup>20</sup> “परंतु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से धिरा हुआ देखेंगे, तब जान लो कि उसकी विनाशता निकट है। <sup>21</sup> तब जो यहूदिया में हैं वे पहाड़ों की ओर भागें, और जो नगर के भीतर हैं वे बाहर निकलें, और जो देश में हैं वे नगर में प्रवेश न करें; <sup>22</sup> क्योंकि ये दंड के दिन हैं, ताकि जो कुछ लिखा गया है वह सब पूरा हो। <sup>23</sup> उन महिलाओं पर हाय जो उन दिनों में गर्भवती हैं, और जो बच्चों को दूध पिला रही हैं, क्योंकि देश पर बड़ा संकट होगा, और इस लोगों पर क्रीध होगा; <sup>24</sup> और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब राणों में बंदी बनाकर ले जाएंगे; और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो, यरूशलेम अन्यजातियों द्वारा रौंदा जाएगा।

<sup>25</sup> “सूर्य, चंद्रमा, और तारों में चिन्ह होंगे, और पृथ्वी पर राणों के बीच सकट होगा, समुद्र और लहरों के गर्जन से उलझन में, <sup>26</sup> लोग भय और उन चीजों की आशंका से मूँछित होंगे जो संसार पर आने वाली हैं; क्योंकि स्वर्ग की शक्तियाँ हिलाई जाएंगी। <sup>27</sup> और तब वे मनुष्य के पुत्र को बादल में आते हुए देखेंगे, सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ। <sup>28</sup> परंतु जब ये बातें होने लगें, तो सीधे खड़े हो जाओ और अपने सिर उठाओ, क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट है।”

<sup>29</sup> और उसने उहें एक दृष्टांत सुनाया: “अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो: <sup>30</sup> जैसे ही वे पते निकालते हैं, तुम इसे देखते हो और अपने आप जानते हो कि ग्रीष्मकाल अब निकट है। <sup>31</sup> तो तुम भी, जब तुम इन चीजों को होते हुए देखो, जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। <sup>32</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ, यह पीढ़ी तब तक नहीं गुजरेगी जब तक सब बातें पूरी न हो जाएं। <sup>33</sup> स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे, परंतु मेरे वरचन कभी नहीं टलेंगे।

<sup>34</sup> “परंतु सावधान रहो, ताकि तुम्हारे दिलों पर भोग-विलास, नशे, और जीवन की चिंताओं का बोझ न पड़े, और वह दिन तुम्हारे ऊपर अचानक जाल की तरह न आए; <sup>35</sup> क्योंकि यह उन सब पर आएगा जो पृथ्वी के सारे चेहरे पर रहते हैं। <sup>36</sup> परंतु हर समय सर्वक रहो, प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब चीजों से बचने की शक्ति पाओ जो होने वाली हैं, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के लिए।”

<sup>37</sup> अब दिन के समय वह मंदिर में शिक्षा देता था, परंतु रात को वह बाहर जाकर उस पर्वत पर रात बिताता था जिसे जैतून का पर्वत कहा जाता है। <sup>38</sup> और सब लोग बहुत सुबह उठकर मंदिर में उसके पास आते थे ताकि उसकी बातें सुन सकें।

**22** अब बिना खमीर की रोटी का पर्व, जिसे फसह कहा जाता है, निकट आ रहा था। <sup>2</sup> और महायाजक और शास्त्रीय हृदृढ़ रहे थे कि उसे किस प्रकार मार डालें, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। <sup>3</sup> और शैतान यहूदा में समा गया, जिसे इस्करियोती कहा जाता था, जो बारह में से एक था। <sup>4</sup> और वह चला गया और महायाजकों और अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करने लगा कि वह उसे उनके हाथों कैसे सौंपे। <sup>5</sup> और वे प्रसन्न हुए, और उसे धन देने पर सहमत हुए। <sup>6</sup> इसलिए उसने सहमति दी, और भीड़ से दूर उसे उनके हाथों सौंपने के लिए एक अच्छा अवसर खोजने लगा।

<sup>7</sup> अब बिना खमीर की रोटी का पहला दिन आया, जिस पर फसह का मेमणा बलिदान किया जाना था। <sup>8</sup> और यीशु ने पतरस और यूहन्ना को भेजा, कहा, “जाओ और हमारे लिए फसह तैयार करो, ताकि हम उसे खा सकें।” <sup>9</sup> उन्होंने उससे कहा, “आप चाहते हैं कि हम इसे कहाँ तैयार करें?” <sup>10</sup> और उसने उनसे कहा, “जब तुम नगर में प्रवेश करोगे, तो एक आदमी पानी का घड़ा लिए हुए तुमसे मिलेगा; उसके पीछे उस घर में जाओ जहाँ वह प्रवेश करता है।” <sup>11</sup> और घर के मालिक से कहो, “गुरु तुमसे कहते हैं, ‘मेरे शिष्यों के साथ फसह खाने के लिए अतिथि कक्ष कहाँ है?’” <sup>12</sup> और वह तुम्हें एक बड़ा, सुसज्जित ऊपरी कमरा दिखाएगा; वहाँ इसे तैयार करो।” <sup>13</sup> और वे चले गए और सब कुछ वैसा ही पाया जैसा उसने उनसे कहा था; और उन्होंने फसह तैयार किया।

<sup>14</sup> जब समय आया, वह मेज पर बैठा, और प्रेरित उसके साथ थे। <sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, “मैंने बड़ी इच्छा के साथ तुम्हारे साथ यह फसह खाने की इच्छा की है, इससे

## लूका

पहते कि मैं दुख उठाऊँ; <sup>16</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ,  
मैं इसे फिर से नहीं खाऊंगा जब तक कि यह परमेश्वर  
के राज्य में पूरा न हो जाए।<sup>17</sup> और जब उसने एक  
प्याला लिया और धन्यवाद दिया, उसने कहा, “इसे तो  
और आपस में बाँट लो;<sup>18</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, मैं  
अब से दाखलता के फल को नहीं पाऊंगा जब तक कि  
परमेश्वर का राज्य न आ जाए।”<sup>19</sup> और जब उसने कुछ  
रोटी ली और धन्यवाद दिया, उसने उसे तोड़ा और उहें  
दिया, कहा, “यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया  
गया है; मेरे स्मरण में यह करो।”<sup>20</sup> और उसी प्रकार  
उसने भोजन के बाद प्याला लिया, कहा, “यह प्याला, जो  
तुम्हारे लिए उंडेला गया है, मेरे लहू में नई वाचा है।

<sup>21</sup> परन्तु देखो, जो मुझे धोखा दे रहा है उसका हाथ मेरे  
साथ मेज पर है।<sup>22</sup> क्योंकि वास्तव में, मनुष्य का पुत्र  
जैसा ठहराया गया है, जा रहा है; परन्तु उस मनुष्य पर  
हाय, जिसके द्वारा वह धोखा दिया गया है।<sup>23</sup> और वे  
आपस में बहस करने लगे कि उनमें से कौन यह करने  
जा रहा था।

<sup>24</sup> अब उनके बीच यह विवाद भी उत्पन्न हुआ कि उनमें  
से कौन सबसे बड़ा समझा जाता है।<sup>25</sup> और उसने उनसे  
कहा, “जातियों के राजा उन पर प्रभुत्व करते हैं, और जो  
उन पर अधिकार रखते हैं उहें ‘उपकारी’ कहा जाता है।<sup>26</sup>  
परन्तु तुम्हारे लिए ऐसा नहीं है, बल्कि, जो तुम्हारे बीच  
सबसे बड़ा है वह सबसे छोटा बने, और नेता संवक के  
समान बने।<sup>27</sup> क्योंकि कौन बड़ा है? जो मेज पर बैठता  
है, या जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो मेज पर  
बैठता है? परन्तु मैं तुम्हारे बीच सेवा करने वाले के  
समान हूँ।<sup>28</sup> तुम वही हो जिन्होंने मेरी परीक्षाओं में मेरा  
साथ दिया है, <sup>29</sup> और जैसे मेरी पिता ने मुझे एक राज्य  
दिया है, मैं तुम्हें देता हूँ<sup>30</sup> कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज  
पर खाओ और पियो, और तुम इस्राएल के बारह गोत्रों  
का न्याय करने के लिए सिंहासन पर बैठोगे।

<sup>31</sup> “शमैन, शमैन, देखो, शैतान ने तुम्हें गौँ की तरह  
छानने की माँग की है;<sup>32</sup> परन्तु मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना  
की है, कि तुम्हारा विश्वास न घटे; और तुम, जब तुम लौट  
आओ, अपने भाइयों को मजबूत करो।”<sup>33</sup> परन्तु उसने  
उससे कहा, “प्रभु, मैं आपके साथ जेल और मृत्यु तक  
जाने के लिए तैयार हूँ।”<sup>34</sup> परन्तु उसने कहा, “मैं तुमसे  
कहता हूँ, पतरस, आज मुर्मा नहीं बोलेगा जब तक कि  
तुम तीन बार यह न कह दो कि तुम मुझे नहीं जानते।”

<sup>35</sup> और उसने उनसे कहा, “जब मैंने तुम्हें बिना धन की  
थैली, झोला, या जूते के बाहर भेजा, तो क्या तुम्हें किसी

चीज़ की कमी हुई?” उन्होंने कहा, “नहीं, कुछ भी नहीं।”<sup>36</sup>  
और उसने उनसे कहा, “परन्तु अब, जिसके पास धन  
की थैली है, उसे साथ ले ले, वैसे ही झोला भी, और  
जिसके पास तलवार नहीं है, वह अपनी चादर बेचकर  
एक खरीद ले।”<sup>37</sup> क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जो  
लिखा है वह मुझमें पूरा होना चाहिए: “और वह  
अपराधियों के साथ गिना गया”; क्योंकि जो मुझसे  
संबंधित है उसका पूरा होना है।”<sup>38</sup> उन्होंने कहा, “प्रभु,  
देखो, यहाँ दो तलवारें हैं।” और उसने उनसे कहा, “यह  
पर्याप्त है।”

<sup>39</sup> और वह बाहर गया और जैतून के पहाड़ पर गया,  
जैसा कि उसकी आदत थी; और शिष्य भी उसके पीछे  
हो लिए।<sup>40</sup> अब जब वह उस स्थान पर पहुँचा, तो उसने  
उनसे कहा, “प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो।”<sup>41</sup>  
और वह उनसे एक पत्तर की दूरी पर हट गया, और  
घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगा,<sup>42</sup> कहते हुए,  
“पिता, यदि आप चाहें, तो इस प्याले को मुझसे हटा दें;  
फिर भी मेरी इच्छा नहीं, परन्तु आपकी पूरी हो।”<sup>43</sup>  
[अब स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ, उसे  
मजबूत करते हुए।]<sup>44</sup> और पीड़ा में होते हुए, वह बहुत  
ही गंभीरता से प्रार्थना कर रहा था; और उसका पसीना  
रक्त की बूंदों के समान हो गया, जो भूमि पर गिर रहा  
था।<sup>45</sup> जब वह प्रार्थना से उठा, तो वह शिष्यों के पास  
आया और उहें दुःख के कारण सोते हुए पाया,<sup>46</sup> और  
उनसे कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठो और प्रार्थना करो  
कि तुम परीक्षा में न पड़ो।”

<sup>47</sup> जब वह अभी बोल ही रहा था, तो देखो, एक भीड़  
आई, और जिसे यहूदा कहा जाता था, जो बारह में से  
एक था, उनके लिए मार्गदर्शन कर रहा था; और वह  
यीशु के पास आया और उसे चूमने लगा।<sup>48</sup> परन्तु यीशु  
ने उससे कहा, “यहूदा, क्या तुम मनुष्य के पुत्र को  
चूपकर धोखा दे रहे हो?”<sup>49</sup> जब उसके आस-पास के  
लोगों ने देखा कि क्या होने वाला है, तो उन्होंने कहा,  
“प्रभु, क्या हम तलवार से वार करें?”<sup>50</sup> और उनमें से  
एक ने महायाजक के दास पर वार किया और उसका  
दाहिना कान काट दिया।<sup>51</sup> परन्तु यीशु ने उत्तर दिया  
और कहा, “रुको! अब और नहीं।” और उसने उसके  
कान को छूकर उसे चंगा किया।<sup>52</sup> और यीशु ने  
महायाजकों और मंदिर के अधिकारियों और प्राचीनों से  
कहा जो उसके खिलाफ आए थे, “क्या तुम तलवारों और  
लाठियों के साथ आए हो, जैसे कि एक विद्रोह करने  
वाले व्यक्ति के खिलाफ?”<sup>53</sup> जब मैं प्रतिदिन मंदिर में  
तुम्हारे साथ था, तो तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला; परन्तु  
यह समय और अंधकार की शक्ति तुम्हारी है।”

# लूका

५४ अब उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया और उसे महायाजक के घर ले गए; परन्तु पतरस दूर से उसका पीछा कर रहा था। ५५ जब उन्होंने आँगन के बीच में आग जलाई और एक साथ बैठ गए, तो पतरस उनके बीच बैठा था। ५६ और एक दासी ने उसे आग की रोशनी में बैठे देखा, और उसे धूरते हुए कहा, “यह आदमी भी उसके साथ था।” ५७ परन्तु उसने इनकार किया, कहा, “मैं उसे नहीं जानता, महिला!” ५८ और थोड़ी देर बाद, एक अन्य व्यक्ति ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उनमें से एक हो।” परन्तु पतरस ने कहा, “मनुष्य, मैं नहीं हूँ।” ५९ और लगभग एक घंटे के बाद, एक अन्य व्यक्ति ने जोर देकर कहा, “निश्चित रूप से यह आदमी भी उसके साथ था, क्योंकि वह भी गलीली है।” ६० परन्तु पतरस ने कहा, “मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो।” ६१ और तुरंत, जब वह अभी भी बोल रहा था, तो एक मुर्मा बोला। ६२ और तब प्रभु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा। और पतरस को प्रभु का वचन याद आया, कि उसने उससे कहा था, “आज मुर्मा बोलने से पहले, तुम तीन बार मेरा इनकार करोगे।” ६३ और वह बाहर गया और कड़वे अँसू बहाए।

६४ जो लोग यीशु को हिरासत में ले रहे थे, वे उसका मजाक उड़ा रहे थे और उसे मार रहे थे, ६४ और उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी और बार-बार उससे पूछा, “भविष्यवाणी करो, तुम्हें किसने मारा?” ६५ और वे उसके खिलाफ कई अन्य बारें कह रहे थे, निंदा करते हुए।

६६ जब दिन हुआ, तो लोगों के प्राचीनों की परिषद, दोनों महायाजक और शास्त्री, इकट्ठे हुए, और उन्होंने उसे अपनी महासभा के सामने लाया, ६७ कहते हुए, “यदि तुम मरीसी हो, तो हमें बताओ।” परन्तु उसने उनसे कहा, “यदि मैं तुमसे कहूँ, तो तुम विश्वास नहीं करोगे; ६८ और यदि मैं प्रश्न पूछूँ, तो तुम उत्तर नहीं दोगे।” ६९ परन्तु अब से मनुष्य का पुरा परमेश्वर की शक्ति के दाहिने हाथ पर बैठेगा।” ७० और उन्होंने सब कहा, “तो तुम परमेश्वर के पुरा हो?” और उसने उनसे कहा, “तुम सही कहते हो कि मैं हूँ।” ७१ और तब उन्होंने कहा, “हमें और गवाही की क्या आवश्यकता है? क्योंकि हमने इसे स्वयं उसके मुँह से सुना है।”

**23** फिर उनकी पूरी सभा उठकर उसे पीलातुस के सामने ले गई।<sup>२</sup> और उन्होंने उस पर आरोप लगाना शुरू किया, कहकर, “हमने इस व्यक्ति को हमारी जाति को गुमराह करते हुए पाया और कैसर को कर देने से मना करते हुए, और यह कहते हुए कि वह स्वयं मसीह

है, एक राजा है।”<sup>३</sup> अब पीलातुस ने उससे पूछा, “तो तुम यहूदियों के राजा हो?” और उसने उत्तर दिया और कहा, “जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है।”<sup>४</sup> लेकिन पीलातुस ने महायाजकों और भीड़ से कहा, “मैं इस व्यक्ति के मामले में कोई आरोप का आधार नहीं पाता।”<sup>५</sup> लेकिन वे जोर देते रहे, कहकर, “वह लोगों को उकसा रहा है, पूरे यहूदियों में शिक्षा दे रहा है, गलील से शुरू करके यहाँ तक!”

६ अब जब पीलातुस ने यह सुना, तो उसने पूछा कि क्या वह व्यक्ति गलीली है।<sup>७</sup> और जब उसने जाना कि वह हेरोद के अधिकार क्षेत्र का है, तो उसने उसे हेरोद के पास भेजा, क्योंकि वह भी उस समय यरूशलम में था।<sup>८</sup> अब हेरोद यीशु को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ; क्योंकि वह उसे लंबे समय से देखना चाहता था, क्योंकि वह उसके बारे में सुनता आया था, और आशा करता था कि वह उसके द्वारा कुछ चमत्कार देखेगा।<sup>९</sup> और उसने उससे कुछ देर तक प्रश्न किए; लेकिन उसने उसे कोई उत्तर नहीं दिया।<sup>१०</sup> अब महायाजक और शास्त्री वहाँ खड़े होकर उस पर जोरदार आरोप लगा रहे थे।<sup>११</sup> और हेरोद ने अपने सैनिकों के साथ मिलकर उसे तिरस्कार के साथ व्यवहार किया और उसका मजाक उड़ाया, उसे एक चमकदार वस्त्र पहनाया, और उसे पीलातुस के पास वापस भेज दिया।<sup>१२</sup> और उसी दिन हेरोद और पीलातुस एक-दूसरे के मित्र बन गए; क्योंकि पहले वे एक-दूसरे के प्रति शत्रु थे।

१३ अब पीलातुस ने महायाजकों, शासकों और लोगों को बुलाया,<sup>१४</sup> और उनसे कहा, “तुमने इस व्यक्ति को मेरे पास इस आधार पर लाया कि वह लोगों को विद्रोह के लिए उकसा रहा है, और देखो, तुम्हारे सामने उसकी परीक्षा करने के बाद, मैंने इस व्यक्ति के मामले में तुम्हारे द्वारा लगाए गए आरोपों के लिए कोई आधार नहीं पाया।<sup>१५</sup> नहीं, न ही हेरोद ने, क्योंकि उसने उसे हमारे पास वापस भेजा; और देखो, उसने ऐसा कुछ नहीं किया है जो मृत्यु के योग्य हो।<sup>१६</sup> इसलिए मैं उसे दंड ढंगा और उसे रिहा कर दंगा।”<sup>१७</sup> [अब वह पर्व पर उत्तें एक कैदी रिहा करने के लिए बाध्य था।]<sup>१८</sup> लेकिन वे सब एक साथ चिल्ला उठे, कहकर, “इस व्यक्ति को हटा दो, और हमारे लिए बरअब्जा को रिहा करो।”<sup>१९</sup> [वह वह था जिसे नगर में हुए विद्रोह और हत्या के लिए जेल में डाला गया था।]<sup>२०</sup> लेकिन पीलातुस, यीशु को रिहा करना चाहता था, उनसे फिर से बात की,<sup>२१</sup> लेकिन वे चिल्लाते रहे, कहकर, “उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।”<sup>२२</sup> और उसने उनसे तीसरी बार कहा, “क्यों, इस व्यक्ति ने क्या गलत किया है? मैंने उसके मामले में मृत्यु की

## लूका

सजा के लिए कोई आधार नहीं पाया है, इसलिए मैं उसे दंड दूंगा और उसे रिहा कर दूंगा।<sup>23</sup> लेकिन वे जोर देते रहे, ऊँची आवाज में, यह मांग करते हुए कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। और उनकी आवाजें हावी होने लगीं।<sup>24</sup> और इसलिए पीलातुस ने उनकी मांग को पूछा करने का निर्णय लिया।<sup>25</sup> और उसने उस व्यक्ति को रिहा कर दिया जिसके लिए वे मांग कर रहे थे, जो विद्रोह और हत्या के लिए जेल में डाला गया था; लेकिन उसने यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया।

<sup>26</sup> और जब वे उसे ले जा रहे थे, तो उन्होंने साइरेन के सिमोन नामक एक व्यक्ति को पकड़ा, जो देश से आ रहा था, और उसे यीशु के पीछे क्रूस ले जाने के लिए रखा।<sup>27</sup> अब उसके पीछे एक बड़ी भीड़ थी, और महिलाएँ जो उसके लिए विलाप और शोक कर रही थीं।<sup>28</sup> लेकिन यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, “यस्त्वातेम की बेटियों, मेरे लिए मत रोओ, बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ।<sup>29</sup> क्योंकि देखो, दिन आ रहे हैं जब वे कहेंगे, ‘ध्य हैं वे जो संतानहीन हैं, और वे गर्भ जा जन्म नहीं देते, और वे स्तन जो दूध नहीं पिलाते।<sup>30</sup> तब

वे हाफ़ाङ्गों से कहने लगेंगे, ‘हम पर गिरे’ और पहाड़ियों से, ‘हमें ढँक लो।’

<sup>31</sup> क्योंकि यदि वे ये काम हरे पेड़ के साथ करते हैं, तो सूखे के समय क्या होगा?”

<sup>32</sup> अब दो अन्य, जो अपराधी थे, भी उसके साथ मृत्यु के लिए ले जा रहे थे।<sup>33</sup> और जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसे खोपड़ी कहा जाता है, वहाँ उन्होंने उसे और अपराधियों को क्रूस पर चढ़ाया, एक दाँए और दूसरा बाँह।<sup>34</sup> लेकिन यीशु कह रहा था, “पिता, उन्हें क्षमा कर; क्योंकि वे नहीं जाते कि वे क्या कर रहे हैं।” और उन्होंने उसके वस्तों को बाँटने के लिए चिट्ठियाँ डालीं।<sup>35</sup> और लोग खड़े होकर देख रहे थे। और यहाँ तक कि शासक भी उस पर हँस रहे थे, कहकर, “उसने दूसरों को बचाया; यदि यह परमेश्वर का मसीह है, उसका चुना हुआ, तो स्वयं को बचाए।”<sup>36</sup> सैनिक भी उसका मजाक उड़ाते हुए उसके पास आए, उसे खट्टा दाखरस पेश करते हुए,<sup>37</sup> और कहकर, “यदि तुम यहूदियों के राजा हो, तो स्वयं को बचाओ!”<sup>38</sup> अब उसके ऊपर एक शिलालेख भी था, “यह यहूदियों का राजा है।”

<sup>39</sup> उन अपराधियों में से एक जो वहाँ लटका गए थे, उस पर अपशब्द कह रहा था, “क्या तुम मरीह नहीं हो? स्वयं को और हमें बचाओ!”<sup>40</sup> लेकिन दूसरा उत्तर

देकर, उसे डॉटते हुए कहने लगा, “क्या तुम परमेश्वर से भी नहीं डरते, जब तुम भी वही दंड भुगत रहे हो? ”<sup>41</sup> और हम वास्तव में न्यायसंगत रूप से पीड़ित हो रहे हैं, क्योंकि हम अपने अपराधों के लिए जो योग्य हैं, वही प्राप्त कर रहे हैं; लेकिन इस व्यक्ति ने कुछ भी गलत नहीं किया है।<sup>42</sup> और वह कह रहा था, “यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे स्मरण करना।”<sup>43</sup> और उसने उससे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे।”

<sup>44</sup> अब यह लगभग छठे घंटे का समय था, और पूरे देश में नौवें घंटे तक अंधेरा छा गया,<sup>45</sup> क्योंकि सूर्य की रोशनी रुक गई; और मंदिर का पर्दा दो टुकड़ों में फट गया।<sup>46</sup> और यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा, “पिता, मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” और यह कहकर, उसने प्राण त्याग दिए।<sup>47</sup> अब जब सूबेदार ने देखा कि क्या हुआ, तो वह परमेश्वर की स्तुति करने लगा, कहकर, “यह व्यक्ति वास्तव में निर्दोष था।”<sup>48</sup> और सभी भीड़ जो इस दृश्य के लिए इकट्ठी हुई थीं, जो हुआ था उसे देखकर, अपने सीने पीटते हुए घर लौटने लगीं।<sup>49</sup> और उसके सभी परिवित, और वे महिलाएँ जो गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी होकर इन बातों को देख रही थीं।

<sup>50</sup> और युसुफ नामक एक व्यक्ति, जो परिषद का सदस्य था, एक अच्छा और धर्मी व्यक्ति<sup>51</sup> (उसने उनकी योजना और कार्य में सहमति नहीं दी थी), अरिमथिया का एक व्यक्ति, यहूदियों के एक नगर का, जो परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था—<sup>52</sup> यह व्यक्ति पीलातुस के पास गया और यीशु के शरीर की मांग की।<sup>53</sup> और उसने उसे उतारकर एक लिन कपड़े में लपेटा, और उसे एक चट्टान में काटी गई कब्र में रखा, जहाँ पहले कोई नहीं रखा गया था।<sup>54</sup> यह तैयारी का दिन था, और एक सब्त शुरू होने वाला था।<sup>55</sup> अब वे महिलाएँ जो गलील से उसके साथ आई थीं, पीछे चलीं, और उन्होंने कब्र और उसके शरीर को कैसे रखा गया देखा।<sup>56</sup> और फिर वे लौट गईं और मसाले और इत्र तैयार किए। और सब्त के दिन उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।

**24** लेकिन सप्ताह के पहले दिन, सुबह के समय, वे कब्र पर आए, वे मसाले लाए जो उन्होंने तैयार किए थे।<sup>2</sup> और उन्होंने देखा कि पथर कब्र से लुढ़का हुआ था,<sup>3</sup> पर जब वे अंदर गए तो उन्होंने प्रभु यीशु का शरीर नहीं पाया।<sup>4</sup> जब वे इस बारे में उलझन में थे, तो देखो, दो पुरुष अचानक उनके पास चमकदार वस्तों में खड़े थे;

## लूका

और जब महिलाएं डर गईं और उन्होंने अपना चेहरा जमीन पर दूका लिया, तो पुरुषों ने उनसे कहा, "तुम जीवित को मृतकों में क्यों खोज रही हो?"<sup>6</sup> वह यहाँ नहीं है, बल्कि वह जी उठा है। याद करो कि उसने गली में तुहाँ क्या कहा था,<sup>7</sup> कि मनुष्य के पुत्र को पापी मनुष्यों के हाथों सौंपा जाना चाहिए, और कूस पर चढ़ाया जाना चाहिए, और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठाना चाहिए।"<sup>8</sup> और उन्होंने उसके शब्दों को याद किया,<sup>9</sup> और कब्र से लौटकर इन सब बातों को ग्यारह और बाकी सभी को बताया।<sup>10</sup> अब ये महिलाएं मरियम मगदलीनी, योअना, और याकूब की माता मरियम थीं; उनके साथ अन्य महिलाएं भी थीं जो ये बातें प्रेरितों को बता रही थीं।<sup>11</sup> लेकिन ये शब्द उन्हें बकवास लगे, और वे महिलाओं पर विश्वास नहीं कर सके।<sup>12</sup> फिर भी, पतसर उठकर कब्र की ओर दौड़ा; और जब उसने दूकान कर अंदर देखा, तो उसने केवल लिन की पटियाँ देखीं; और वह जो हुआ था उस पर आश्वर्य करता हुआ अपने घर चला गया।

<sup>13</sup> और देखो, उसी दिन उनमें से दो एक गांव की ओर जा रहे थे जिसका नाम एम्माउस था, जो यरूशलेम से साठ शैडिया दूर था।<sup>14</sup> और वे उन सभी बातों के बारे में आपस में बात कर रहे थे जो हुई थीं।<sup>15</sup> जब वे बात कर कर रहे थे और चर्चा कर रहे थे, यीशु स्वयं उनके पास आया और उनके साथ यात्रा करने लगा।<sup>16</sup> लेकिन उनकी आँखें उसे पहचानने से रोकी गईं।<sup>17</sup> और उसने उनसे कहा, "ये कौन से शब्द हैं जो तुम चलते-चलते एक-दूसरे से कह रहे हो?" और वे रुक गए, उदास दिखते हुए।<sup>18</sup> उनमें से एक, जिसका नाम कले औपास था, ने उससे कहा, "क्या तुम यरूशलेम के पास रहने वाले एकमात्र व्यक्ति हो जो नहीं जानता कि इन दिनों यहाँ क्या हुआ है?"<sup>19</sup> और उसने उनसे कहा, "किस तरह की बातें?" और उन्होंने उससे कहा, "यीशु नासरी के बारे में, जो कार्य और वचन में परमेश्वर और सभी लोगों के सामने एक शक्तिशाली भविष्यवक्ता साबित हुआ,"<sup>20</sup> और कैसे मुख्य याजकों और हमारे शासकों ने उसे मरु की सजा सुनाने के लिए सौंप दिया, और उसे कूस पर चढ़ा दिया।<sup>21</sup> लेकिन हम आशा कर रहे थे कि वही इसाएल को छुड़ाएगा। वास्तव में, इन सब बातों के अलावा, अब यह तीसरा दिन है जब ये बातें हुईं।<sup>22</sup> लेकिन हमारे बीच कुछ महिलाएं भी हमें उलझन में डाल गईं। जब वे सुबह-सुबह कब्र पर थीं,<sup>23</sup> और उसका शरीर नहीं पाया, तो वे कहने लगी कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन भी देखा, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है।<sup>24</sup> और इसलिए हमारे साथ कुछ लोग कब्र पर गए और उन्होंने इसे ठीक वैसा ही पाया जैसा महिलाओं ने कहा था; लेकिन उसे उन्होंने नहीं देखा।"<sup>25</sup>

और उसने उनसे कहा, "तुम मूर्ख लोग और जो भविष्यवक्ताओं ने कहा है उस पर विश्वास करने में धीमे हो!"<sup>26</sup> क्या यह आवश्यक नहीं था कि मसीह इन बातों को सहन करे और अपनी महिला में प्रवेश करे?"<sup>27</sup> फिर मूसा से शुरू करके और सभी भविष्यवक्ताओं के साथ, उसने उन्हें उन बातों को समझाया जो उसके बारे में सभी शास्त्रों में लिखी गई थीं।

28 और वे उस गांव के पास पहुंचे जहाँ वे जा रहे थे, और उसने यह आभास दिया कि वह आगे जा रहा है।<sup>29</sup> और उन्होंने उसे जोर देकर कहा, "हमारे साथ रहो, क्योंकि शाम हो रही है, और दिन अब लगभग सामाप्त हो गया है।"<sup>30</sup> इसलिए वह उनके साथ रहने के लिए अंदर राया।<sup>31</sup> और ऐसा हुआ, जब वह उनके साथ मेज पर बैठा, कि उसने रोटी ली और उसे आशीर्वाद दिया, और उसे तोड़ा और उन्हें देने लगा।<sup>32</sup> और फिर उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचाना; और वह उनकी दृष्टि से गायब हो गया।<sup>33</sup> उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "क्या हमारे दिल हमारे भीतर नहीं जल रहे थे जब वह रास्ते में हमसे बात कर रहा था, जब वह हमें शास्त्रों को समझा रहा था?"<sup>34</sup> और वे उसी धंटे उठे और यरूशलेम लौट आए, और ग्यारह को इकट्ठा पाया और जो उनके साथ थे,<sup>35</sup> कहते हुए, "प्रभु वास्तव में जी उठा है और उसने शमीन को दर्शन दिया है!"<sup>36</sup> उन्होंने रास्ते में अपने अनुभवों को बताना शुरू किया, और कैसे उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय पहचाना।

37 36 अब जब वे ये बातें बता रहे थे, यीशु स्वयं अचानक उनके बीच खड़ा हो गया और उनसे कहा, "तुम्हें शांति मिले।"<sup>37</sup> लेकिन वे चौक गए और डर गए, और सोचने लगे कि वे एक आत्मा देख रहे हैं।<sup>38</sup> और उसने उनसे कहा, "तुम क्यों डर गए हों, और क्यों तुम्हारे दिलों में सदेह उठ रहे हैं?"<sup>39</sup> मेरे हाथ और मेरे पैर देखो, कि यह मैं स्वयं हूँ; मुझे छूओ और देखो, क्योंकि आत्मा के पास मांस और हृदयाँ नहीं होतीं जैसा कि तुम स्पष्ट रूप से देखते हो कि मेरे पास है।"<sup>40</sup> और जब उसने यह कहा, तो उसने उन्हें अपने हाथ और अपने पैर दिखाए।<sup>41</sup> जब वे अभी भी अपनी खुरी और आश्वर्य के कारण विश्वास नहीं कर सके, तो उसने उनसे कहा, "क्या तुम्हारे पास यहाँ खाने के लिए कुछ है?"<sup>42</sup> उन्होंने उसे भूनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया;<sup>43</sup> और उसने उसे लिया और उनके सामने खाया।

44 44 अब उसने उनसे कहा, "ये मेरे शब्द हैं जो मैंने तुम्हें तब कहे थे जब मैं अभी भी तुम्हारे साथ था, कि वे सभी बातें जो मेरे बारे में मूसा की व्यवस्था, भविष्यवक्ताओं

## लूका

और भजनों में लिखी गई हैं, पूरी होनी चाहिए।"<sup>45</sup> फिर उसने उनके मन को शास्त्रों को समझने के लिए खोला,<sup>46</sup> और उसने उनसे कहा, "तो यह लिखा है, कि मसीह को दुख सहना होगा और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठना होगा,<sup>47</sup> और पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का प्रचार उसके नाम में सभी राष्ट्रों में, यरूशलेम से शुरू होकर किया जाएगा।<sup>48</sup> तुम इन बातों के साक्षी हो।<sup>49</sup> और देखो, मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा तुम पर भेज रहा हूँ;  
लेकिन तुम्हें शहर में रहना चाहिए जब तक कि तुम ऊपर से शक्ति से परिपूर्ण न हो जाओ।"

<sup>50</sup> और वह उन्हें बेथानी तक ले गया, और उसने अपने हाथ उठाए और उन्हें आशीर्वाद दिया।<sup>51</sup> जब वह उन्हें आशीर्वाद दे रहा था, वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग में उठा लिया गया।<sup>52</sup> और उन्होंने, उसकी आराधना करने के बाद, यरूशलेम में बड़ी खुशी के साथ लौट आए,<sup>53</sup> और निरंतर मंदिर में, परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।

## यूहन्ना

**1** आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।<sup>2</sup> वह आदि में परमेश्वर के साथ था।<sup>3</sup> सभी वस्तुएं उसी के द्वारा उत्पन्न हुईं, और उसके बिना एक भी वस्तु उत्पन्न नहीं हुई जो उत्पन्न हुई है।<sup>4</sup> उसी में जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।<sup>5</sup> और ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उसे नहीं समझा।

<sup>6</sup> एक मनुष्य आया, जो परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, जिसका नाम यूहन्ना था।<sup>7</sup> वह साक्षी के रूप में आया, ताकि वह ज्योति के विषय में गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास करें।<sup>8</sup> वह स्वयं ज्योति नहीं था, परन्तु वह ज्योति के विषय में गवाही देने आया था।

<sup>9</sup> यह सच्ची ज्योति थी, जो संसार में आकर हर व्यक्ति को प्रकाशित करती है।<sup>10</sup> वह संसार में था, और संसार उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और फिर भी संसार ने उसे नहीं पहचाना।<sup>11</sup> वह अपने लोगों के पास आया, और उसके लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया।<sup>12</sup> परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उन्हें उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया, उनको जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं,<sup>13</sup> जो न तो रक्त से, न शरीर की इच्छा से, और न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए।

<sup>14</sup> और वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच में वास किया; और हमने उसकी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।<sup>15</sup> यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी और पुकार कर कहा, “यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, जो मेरे बाद आ रहा है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।”<sup>16</sup> क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हमने सब प्राप्त किया, और अनुग्रह पर अनुग्रह।<sup>17</sup> क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई, अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त हुए।<sup>18</sup> किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; पिता की गोद में स्थित एकलौता परमेश्वर पुत्र, उसी ने उसे प्रकट किया।

<sup>19</sup> यह यूहन्ना की गवाही है, जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उसके पास भेजा कि उससे पूछें, “तू कौन है?”<sup>20</sup> और उसने स्वीकार किया और इनकार नहीं किया; और यह उसकी स्वीकारोक्ति थी: “मैं मसीह नहीं हूँ।”<sup>21</sup> तब उन्होंने उससे पूछा, “तो फिर तू कौन है? क्या तू एलियाह है?” और उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।”<sup>22</sup> क्या तू वह नबी है?” और उसने उत्तर दिया,

“नहीं।”<sup>23</sup> तब उन्होंने उससे कहा, “तू कौन है? हमें बता, ताकि हम उन लोगों को उत्तर दे सकें जिन्होंने हमें भेजा है। तू अपने विषय में क्या कहता है?”<sup>24</sup> उसने कहा, “मैं जंगल में पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, ‘प्रभु का मार्ग सीधा करो,’ जैसा यशायाह नबी ने कहा।”

<sup>25</sup> और सदेशवाहक फरीसियों से भेजे गए थे।<sup>26</sup> उन्होंने उससे पूछा, और उससे कहा, “फिर तू क्यों बपतिस्मा देता है, यदि तू मसीह नहीं है, न एलियाह, न वह नबी?”<sup>27</sup> यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं पानी में बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु तुम्हारे बीच में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते।”<sup>28</sup> वह वही है जो मेरे बाद आता है, जिसका जूते का फीता खोलने के योग्य भी मैं नहीं हूँ।”<sup>29</sup> ये बातें यरदन के पार बैठनियाह में हुईं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था।

<sup>30</sup> अगले दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखा और कहा, “देखो, परमेश्वर का मेस्ट्रा जो संसार के पाप को दूर करता है।”<sup>31</sup> यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, “मेरे बाद एक मनुष्य आ रहा है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।”<sup>32</sup> और मैं उसे नहीं जानता था, परन्तु इसलिये आया कि वह इसाल को प्रकट हो, मैं पानी में बपतिस्मा देता हूँ।”<sup>33</sup> और यूहन्ना ने गवाही दी, “मैंने आत्मा को कबूतर के समान सर्वा से उत्तरते और उस पर ठहरते देखा।”<sup>34</sup> और मैं उसे नहीं जानता था, परन्तु जिसने मुझे पानी में बपतिस्मा देने के लिये भेजा, उसने मुझसे कहा, “जिस पर तू आत्मा को उत्तरते और ठहरते देखो, वही है जो पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देता है।”<sup>35</sup> और मैंने देखा, और गवाही दी कि यह परमेश्वर का पुत्र है।”

<sup>36</sup> फिर अगले दिन, यूहन्ना अपने दो शिष्यों के साथ खड़ा था,<sup>37</sup> और उसने यीशु को चताते हुए देखा और कहा, “देखो, परमेश्वर का मेस्ट्रा!”<sup>38</sup> और दोनों शिष्यों ने उसे बोलते सुना, और उन्होंने यीशु का अनुसरण किया।<sup>39</sup> और यीशु ने मुड़कर उन्हें पीछे आते देखा और उनसे कहा, “तुम क्या खोज रहे हो?” उन्होंने उससे कहा, “रब्बी (जिसका अनुवाद शिक्षक होता है), आप कहाँ ठहरे हुए हैं?”<sup>40</sup> उसने उनसे कहा, “आओ, और देखो।” इसलिये वे आए और देखा कि वह कहाँ ठहरा हुआ है, और उस दिन उसके साथ रहे। यह लगभग दसवां घंटा था।<sup>41</sup> उन दो में से एक जिसने यूहन्ना को बोलते सुना और उसका अनुसरण किया, अन्द्रियास था, जो शमैन पतरस का भाई था।<sup>42</sup> उसने पहले अपने भाई शमैन को पाया और उससे कहा, “हमने मसीह को पाया” (जिसका अनुवाद मसीह होता है)।<sup>43</sup> वह उसे यीशु के

## यूहन्ना

पास लाया। यीशु ने उसे देखा और कहा, “तू शमैन योहन का पुत्र है; तुझे केफा कहा जाएगा” (जिसका अनुवाद पतरस होता है)।

<sup>43</sup> अगले दिन उसने गलील जाने का निश्चय किया, और उसने फिलिप्पस को पाया। और यीशु ने उससे कहा, “मेरे पांचे आओ!”<sup>44</sup> अब फिलिप्पस बैतसैदा का था, अन्द्रियास और पतरस का नगर।<sup>45</sup> फिलिप्पस ने नथनएल को पाया और उससे कहा, “हमने उसे पाया जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्था में लिखा है, और भविष्यद्वक्ताओं ने भी: यीशु यूसुफ का पुत्र, नासरत का!”<sup>46</sup> नथनएल ने उससे कहा, “क्या नासरत से कोई अच्छी वस्तु आ सकती है?” फिलिप्पस ने उससे कहा, “आओ और देखो।”<sup>47</sup> यीशु ने नथनएल को अपनी ओर आते देखा और उसके विषय में कहा, “देखो, यह वास्तव में एक इसाएली है, जिसमें कोई छल नहीं है!”<sup>48</sup> नथनएल ने उससे कहा, “आप मुझे कैसे जानते हैं?” यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “फिलिप्पस के तुझे बुलाने से पहले, जब तू अंजीर के पेड़ के नीचे था, मैंने तुझे देखा।”<sup>49</sup> नथनएल ने उससे कहा, “रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इसाएल के राजा हैं!”<sup>50</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “क्योंकि मैंने तुझसे कहा कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के नीचे देखा, क्या तू विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े काम देखेगा।”<sup>51</sup> और उसने उससे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गद्वारों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उत्तरते देखोगे।”

**2** तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह हुआ, और यीशु की माता वहाँ थीं;<sup>2</sup> और यीशु और उसके चेले भी विवाह में बुलाए गए थे।<sup>3</sup> जब दाखरस समाप्त हो गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, “उनके पास दाखरस नहीं है।”<sup>4</sup> यीशु ने उससे कहा, “हे स्त्री, तुझको मुझसे क्या काम? मेरा समय अभी नहीं आया।”<sup>5</sup> उसकी माता ने सेवकों से कहा, “जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।”<sup>6</sup> वहाँ यहूदियों को शुद्धिकरण की रीति के अनुसार छह पत्तर के जलपात्र रखे थे, जिनमें प्रयोक में दो या तीन माप समा सकता था।<sup>7</sup> यीशु ने उनसे कहा, “इन जलपात्रों को पानी से भर दो।”<sup>8</sup> और उन्होंने उन्हें किनारे तक भर दिया।<sup>9</sup> फिर उसने उनसे कहा, “अब कुछ निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।”<sup>10</sup> और वे उसे ले गए।<sup>9</sup> जब भोज के प्रधान ने वह पानी चांचा जो दाखरस बन गया था, और यह नहीं जानता था कि यह कहाँ से आया है (परन्तु सेवक जो पानी निकाल चुके थे, जानते थे), तो भोज के प्रधान ने दूर्घट्टना को बुलाया,<sup>10</sup> और उससे कहा, “हर व्यक्ति पहले

अच्छा दाखरस परोसता है, और जब लोग पीकर तृप्त हो जाते हैं, तब घटिया दाखरस, परन्तु तुमने अच्छा दाखरस अब तक बचा रखा है।”<sup>11</sup> यीशु ने गलील के काना में अपनी इस पहली निशानी के द्वारा अपनी महिमा प्रकट की; और उसके चेले ने उस पर विश्वास किया।

**12** इसके बाद वह कफरनहूम गया, वह और उसकी माता, उसके भाई, और उसके चेले; और वे वहाँ कुछ दिन रहे।

**13** यहूदियों का फसह निकट था, और यीशु यरूशलेम गया।<sup>14</sup> और उसने मंदिर के अंगन में देखा कि बैल, भेड़, और कबूतर बेचने वाले बैठे हैं, और मुद्रा बदलने वाले अपनी मेजों पर बैठे हैं।<sup>15</sup> और उसने रसियों का कोड़ा बनाकर उहें सबको मंदिर के अंगन से बाहर निकाल दिया, भेड़ और बैल सहित; और उसने मुद्रा बदलने वालों के सिकंके बिखेर दिए और उनकी मेजों को उलट दिया;<sup>16</sup> और कबूतर बेचने वालों से कहा, “इन चीजों को यहाँ से हटा दो; मेरे पिता के घर को व्यापार का घर न बनाओ।”<sup>17</sup> उसके चेलों को स्मरण हुआ कि लिखा है: “तेरे घर के लिए उत्साह मुझे खा जाएगा।”

**18** तब यहूदियों ने उससे कहा, “तू हमें कौन सी निशानी दिखाता है कि तू ये काम करता है?”<sup>19</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “इस मंदिर को नष्ट कर दो, और मैं इसे तीन दिनों में फिर खड़ा कर दूँगा।”<sup>20</sup> यहूदियों ने कहा, “इस मंदिर को बनाने में छियालीस वर्ष लगे, और तू इसे तीन दिनों में खड़ा करेगा?”<sup>21</sup> परन्तु वह अपने शरीर के मंदिर के विषय में कह रहा था।<sup>22</sup> इसलिए जब वह मृतकों में से जी उठा, उसके चेलों को स्मरण हुआ कि उसने यह कहा था; और उन्होंने पवित्रशास्त्र और उस वचन पर विश्वास किया जो यीशु ने कहा था।

**23** अब जब वह यरूशलेम में फसह के समय, पर्व के दौरान था, कई लोगों ने उसके नाम पर विश्वास किया जब उन्होंने उसकी निशानियों को देखा जो वह कर रहा था।<sup>24</sup> परन्तु यीशु ने अपनी ओर से उन्हें नहीं सौंपा, क्योंकि वह सब लोगों को जानता था,<sup>25</sup> और क्योंकि उसे मनुष्य के विषय में किसी की गवाही की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह स्वयं जानता था कि मनुष्य के भीतर क्या है।

**3** फरीसियों में से एक व्यक्ति था, जिसका नाम निकोदेमस था, जो यहूदियों का एक शासक था;<sup>2</sup> यह व्यक्ति रात को यीशु के पास आया और उससे कहा, “रब्बी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से एक

## यूहन्ना

शिक्षक के रूप में आए हैं, क्योंकि कोई भी ये चिन्ह नहीं कर सकता जो आप करते हैं, जब तक कि परमेश्वर उसके साथ न हो।<sup>1</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई फिर से जन्म नहीं लेता, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।”<sup>2</sup> निकोटेमुस ने उससे कहा, “जब कोई बुद्ध हो जाता है तो वह कैसे जन्म ले सकता है? वह अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है क्या?”<sup>3</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।”<sup>4</sup> यो मांस से जन्मा है वह मांस है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।<sup>5</sup> तुम आश्वर्य मत करो कि मैंने तुमसे कहा, ‘‘तुम्हें फिर से जन्म लेना चाहिए।’’<sup>6</sup> हवा जहाँ चाहती है वहाँ चलती है, और तुम उसकी धनि सुनते हो, पर यह नहीं जानते कि वह कहाँ से आती है और कहाँ जाती है; ऐसे ही हर वह व्यक्ति है जो आत्मा से जन्मा है।

निकोटेमुस ने उत्तर दिया और उससे कहा, “ये बातें कैसे हो सकती हैं?”<sup>7</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “तुम इस्साएल के शिक्षक हो, और फिर भी तुम ये बातें नहीं समझते।”<sup>8</sup> मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, हम वही बोलते हैं जो हम जानते हैं और वही गवाही देते हैं जो हमने देखा है, और तुम लोग हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते।<sup>9</sup> यदि मैंने तुमसे सांसारिक बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुमसे स्वर्णीय बातें कहूँ तो तुम कैसे विश्वास करोगे? कोई भी स्वर्ग में नहीं चढ़ा, सिवाय उसके जो स्वर्ग से उत्तरा: मनुष्य का पुत्र।<sup>10</sup> और जैसे मूसा ने जंगल में सौंप को ऊँचा उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊँचा उठाया जाना चाहिए,<sup>11</sup> ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे, उसके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करे।

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।<sup>12</sup> क्योंकि परमेश्वर ने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार का न्याय करे, परन्तु इसलिए कि संसार उसके द्वारा उद्धरण पाए।<sup>13</sup> जो उसमें विश्वास करता है उसका न्याय नहीं होता; जो विश्वास नहीं करता उसका न्याय पहले ही हो चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।<sup>14</sup> और यह न्याय है: कि ज्योति संसार में आई है, और लोगों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार को अधिक प्रेम किया;

क्योंकि उनके काम बुरे थे।<sup>15</sup> क्योंकि जो कोई बुराई करता है वह ज्योति से बैर करता है, और ज्योति के पास

नहीं आता, ताकि उसके काम प्रकट न हों।<sup>16</sup> परन्तु जो सत्य को मानता है वह ज्योति के पास आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों कि वे परमेश्वर में किए गए हैं।

इन बातों के बाद यीशु और उसके चेले यूहन्दिया के देश में आए, और वह वहाँ उनके साथ समय बिताने और बपतिस्मा देने लगे।<sup>17</sup> अब यूहन्ना भी ऐनोन में सालिम के पास बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आ रहे थे और बपतिस्मा ले रहे थे—<sup>18</sup> क्योंकि यूहन्ना अभी तक जेल में नहीं डाला गया था।

तब यूहन्ना के चेलों की ओर से एक यहूदी के साथ शुद्धिकरण के विषय में विवाद उत्पन्न हआ।<sup>19</sup> और वे यूहन्ना के पास आए और उससे कहा, “ब्ल्डी, वह जो यरदन के पार आपके साथ था, जिसके विषय में आपने गवाही दी थी—देखो, वह बपतिस्मा दे रहा है, और सब लोग उसके पास आ रहे हैं!”<sup>20</sup> यूहन्ना ने उत्तर दिया, “कोई भी व्यक्ति एक भी चीज़ नहीं प्राप्त कर सकता जब तक कि वह उसे स्वर्ग से न दी गई हो।”<sup>21</sup> तुम स्वयं मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, मैं मसीह नहीं हूँ; परन्तु, मैं उसके आगे भेजा गया हूँ।<sup>22</sup> जिसके पास दुल्हन है वही दूल्हा है; परन्तु दूल्हे का मित्र, जो खड़ा रहता है और उसे सुनता है, दूल्हे की आवाज से अत्यंत आनंदित होता है। इस प्रकार मेरा यह आनंद पूर्ण हो गया है।<sup>23</sup> उसे बढ़ना चाहिए, पर मुझे घटना चाहिए।

जो ऊपर से आता है वह सबके ऊपर है; जो केवल पृथ्वी से है वह पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें कहता है। जो स्वर्ग से आता है वह सबके ऊपर है।<sup>24</sup> जो उसने देखा और सुना है, उसी की वह गवाही देता है, और कोई उसकी गवाही स्वीकार नहीं करता।<sup>25</sup> जिसने उसकी गवाही स्वीकार की है उसने इस बात को पुष्टि की है कि परमेश्वर सत्य है।<sup>26</sup> क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है वह परमेश्वर के बचन बोलता है; क्योंकि वह आत्मा को माप से नहीं देता।<sup>27</sup> पिता पुत्र से प्रेम करता है और सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है।<sup>28</sup> जो पुत्र में विश्वास करता है उसके पास अनन्त जीवन है; परन्तु जो पुत्र की आज्ञा नहीं मानता वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।

अब जब यीशु ने यह सुना कि फरीसियों ने यह सुना है कि वह यूहन्ना से अधिक चेलों को बना रहा है और बपतिस्मा दे रहा है—<sup>29</sup> हालांकि यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं दे रहा था; बल्कि, उसके चेले दे रहे थे—<sup>30</sup> वह यहूदिया छोड़कर फिर से गलील की ओर चला गया।<sup>31</sup> और उसे सामरिया से होकर जाना पड़ा।<sup>32</sup> इसलिए वह

## यूहन्ना

सामरिया के एक नगर में आया जिसे सिखार कहते हैं, उस भूमि के पास जो याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दी थी; <sup>6</sup> और याकूब का कुआँ वहाँ था। इसलिए यीशु, अपनी यात्रा से थका हुआ, कुएँ के पास बैठा था; यह लगभग छठे घंटे का समय था।

<sup>7</sup> सामरिया की एक स्ती पानी भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे पानी पिलाओ।" <sup>8</sup> क्योंकि उसके चेले भोजन खरीदने के लिए नगर में गए थे। <sup>9</sup> इसलिए सामरी स्ती ने उससे कहा, "आप, जो यहूदी हैं, मुझसे, जो एक सापी स्ती हूँ, पानी क्यों माँग रहे हैं?" (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ मेलजोल नहीं रखते।) <sup>10</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानती होती, और यह जानती होती कि वह कौन है जो तुमसे कह रहा है, मुझे पानी पिलाओ; तो तुम उससे मांगती, और वह तुम्हें जीवन का जल देता।" <sup>11</sup> उसने उससे कहा, "हे स्वामी, आपके पास खींचने के लिए कोई बर्तन नहीं है और कुआँ गहरा है; फिर यह जीवन का जल आप कहाँ से लाते हैं?" <sup>12</sup> क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं, जिसने हमें यह कुआँ दिया और स्वयं इससे पिया, और उसके पुरों और मवेशियों ने भी? <sup>13</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "जो कोई इस जल को पीता है वह फिर यासा होगा;" <sup>14</sup> परन्तु जो कोई उस जल को पीएगा जो मैं उसे ढूँगा, वह कभी यासा न होगा; परन्तु वह जल जो मैं उसे ढूँगा, उसमें एक जल का सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" <sup>15</sup> स्ती ने उससे कहा, "हे स्वामी, मुझे यह जल दीजिए, ताकि मैं यासा न होऊँ और यहाँ पानी खींचने न आऊँ।"

<sup>16</sup> उसने उससे कहा, "जाओ, अपने पति को बुलाओ और यहाँ आओ।" <sup>17</sup> स्ती ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मेरे पास कोई पति नहीं है।" यीशु ने उससे कहा, "तुमने सही कहा, मेरे पास कोई पति नहीं है;" <sup>18</sup> क्योंकि तुम्हरे पाँच पति हो चुके हैं, और जो अब तुम्हरे पास है वह तुम्हारा पति ही नहीं है; यह तुमने सच कहा।" <sup>19</sup> स्ती ने उससे कहा, "हे स्वामी, मैं समझती हूँ कि आप एक नबी हैं।" <sup>20</sup> हमारे पितरों हैं इस पर्वत पर उपासना की, और आप यहूदी कहते हैं कि यरूशलैम में वह स्थान है जहाँ उपासना करनी चाहिए।" <sup>21</sup> यीशु ने उससे कहा, "मुझ पर विश्वास करो, स्ती, वह समय आ रहा है जब तुम न तो इस पर्वत पर और न यरूशलैम में पिता की उपासना करोगी।" <sup>22</sup> तुम सामरी लोग जिसे नहीं जानते उसकी उपासना करते हो; हम जिसे जानते हैं उसकी उपासना करते हैं, क्योंकि उद्धर यहूदियों में से है।" <sup>23</sup> परन्तु वह समय आ रहा है, और अब है, जब सच्चे उपासक पिता की उपासना आत्मा और सत्य में करेंगे; क्योंकि पिता

ऐसे उपासकों को चाहता है। <sup>24</sup> परमेश्वर आत्मा है, और जो उसकी उपासना करते हैं उन्हें आत्मा और सत्य में उपासना करनी चाहिए।" <sup>25</sup> स्ती ने उससे कहा, "मुझे पता है कि मर्सीह आ रहा है (जिसे मर्सीहा कहते हैं); जब वह आएगा, वह हमें सब बातें बताएगा।" <sup>26</sup> यीशु ने उससे कहा, "मैं वही हूँ, जो तुमसे बोल रहा हूँ।"

<sup>27</sup> और इसी समय उसके चेले आए, और वे आश्वर्चकित हुए कि वह एक स्ती से बात कर रहा था, फिर भी किसी ने नहीं कहा, "आप क्या चाहते हैं?" या, "आप उससे क्यों बात कर रहे हैं?" <sup>28</sup> इसलिए स्ती अपना पानी का घडा छोड़कर नगर में गई, और लोगों से कहा, "आओ, एक व्यक्ति को देखो जिसने मुझे वे सब बातें बताई जो मैंने की हैं; क्या यह मर्सीह नहीं है?" <sup>29</sup> वे ने नगर से बाहर निकलकर उसके पास आ रहे थे।

<sup>31</sup> इस बीच, चेले उससे आग्रह कर रहे थे, "रब्बी, कुछ खाओ।" <sup>32</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" <sup>33</sup> इसलिए चेले उपस में कह रहे थे, "क्या किसी ने उसे कुछ खाने को दिया है?" <sup>34</sup> यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि मैं उसके इच्छा को पूरा करूँ जिसने मुझे भेजा है, और उसके कार्य को पूरा करूँ।" <sup>35</sup> क्या तुम नहीं कहते, 'अभी चार महीने हैं, और फिर फसल आएगी?' देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी अँखें उठाओ और खेतों को देखो, कि वे फसल के लिए सफेद हैं।" <sup>36</sup> जो काटता है वह पहले से ही मजदूरी प्राप्त कर रहा है और अनन्त जीवन के लिए फल इकट्ठा कर रहा है, ताकि जो बोता है और जो काटता है वे दोनों मिलकर आनन्दित हो।" <sup>37</sup> क्योंकि इस मामले में कहावत सच है: एक बोता है और दूसरा काटता है।" <sup>38</sup> मैंने तुम्हें भेजा कि तुम वह काटो जिसके लिए तुमने परिश्रम नहीं किया; दूसरों ने परिश्रम किया, और तुम उनके परिश्रम में आ गए।"

<sup>39</sup> अब उस नगर के बहुत से सामरी उस पर विश्वास करने लगे क्योंकि उस स्त्री के वचन के कारण जिसने गवाही दी, "उसने मुझे वे सब बातें बताई जो मैंने की हैं।" <sup>40</sup> इसलिए जब सामरी यीशु के पास आए, तो वे उससे आग्रह करने लगे कि वह उनके साथ रहे; और वह वहाँ दो दिन रहा। <sup>41</sup> उसके वचन के कारण और भी बहुत से विश्वास करने लगे, <sup>42</sup> और वे स्त्री से कह रहे थे, "अब यह तुम्हारे कहने के कारण नहीं है कि हम विश्वास करते हैं, क्योंकि हमने स्वयं सुना है और जानते हैं कि वह वास्तव में संसार का उद्धरकर्ता है।"

## यूहन्ना

<sup>43</sup> और दो दिन के बाद, वह वहाँ से गलील के लिए चला गया। <sup>44</sup> क्योंकि यीशु ने स्वयं गवाही दी कि एक नबी को अपने देश में सम्मान नहीं मिलता। <sup>45</sup> इसलिए जब वह गलील आया, तो गलीली लोगों ने उसे स्वीकार किया, केवल इसलिए कि उन्होंने वे सब बातें देखीं जो उसने यूरूशलेम में पर्व पर की थीं; क्योंकि वे स्वयं भी पर्व पर गए थे।

<sup>46</sup> इसलिए वह फिर से गलील के काना में आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस में बदल दिया था। और वहाँ एक राजकीय अधिकारी था जिसका पुत्र कफरनहम में बीमार था। <sup>47</sup> जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में आया है, तो वह उसके पास गया और उससे आग्रह करने लगा कि वह नीचे आए और उसके पुत्र को चंगा करें; क्योंकि वह मृसु के कगार पर था। <sup>48</sup> तब यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग चिन्ह और अद्भुत कार्य नहीं देखोगे, तुम विश्वास नहीं करोगे।" <sup>49</sup> राजकीय अधिकारी ने उससे कहा, "हे स्वामी, मेरे बच्चे के मरने पर हमें नीचे आओ।" <sup>50</sup> यीशु ने उससे कहा, "जाओ; तुम्हारा पुत्र जीवित है।" उस व्यक्ति ने उस वचन पर विश्वास किया जो यीशु ने उससे कहा और वह चला गया। <sup>51</sup> और जब वह नीचे जा रहा था, उसके दास उससे मिले, यह कहते हुए कि उसका पुत्र जीवित है। <sup>52</sup> इसलिए उसने उनसे पूछा कि वह किस घंटे में अच्छा होने लगा। तब उन्होंने उससे कहा, "कल सातवें घंटे में बुखार उसे छोड़ गया।" <sup>53</sup> इसलिए पिता ने जान लिया कि यह वही धंटा था जिसमें यीशु ने उससे कहा, "तुम्हारा पुत्र जीवित है"; और उसने स्वयं विश्वास किया, और उसका पूरा घराना। <sup>54</sup> यह फिर से दूसरा चिन्ह है जो यीशु ने किया जब वह यहूदिया से गलील में आया।

**5** इन बातों के बाद यहूदियों का एक पर्व हुआ, और यीशु यूरूशलेम गया। <sup>2</sup> अब यूरूशलेम में, भेड़ द्वारा के पास, एक कुंड है, जिसे इब्रानी में बेथेस्दा कहा जाता है, जिसके पाँच बरामदे हैं। <sup>3</sup> इन बरामदों में बहुत से बीमार, अंधे, लंगड़े, या लकवाग्रस्त लोग पड़े थे। <sup>4</sup> क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गीय कुछ समय पर कुंड में उतरता और पानी को हिलाता था; जो कोई फिर पहले, पानी के हिलने के बाद, उसमें उतरता था, वह जिस किसी बीमारी से ग्रस्त था, उससे चंगा हो जाता था। <sup>5</sup> अब वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्षों से बीमार था। <sup>6</sup> यीशु ने उसे वहाँ पड़े हुए देखा, और यह जानकर कि वह पहले से ही लंबे समय से उस स्थिति में है, "क्या तुम चंगा होना चाहते हो?" <sup>7</sup> बीमार व्यक्ति ने उससे उत्तर दिया, "हे स्वामी, मेरे पास कोई नहीं है जो मुझे कुंड में डाल दे जब पानी हिलाया जाता है, लेकिन जब मैं

आता हूँ, तो कोई और मुझसे पहले उतर जाता है।" <sup>8</sup> यीशु ने, "उठो, अपनी चटाई उठाओ, और चलो।" <sup>9</sup> तुरंत वह मनुष्य चंगा हो गया, और उसने अपनी चटाई उठाई और चलने लगा। अब वह सब्त था।

<sup>10</sup> इसलिए यहूदी उस व्यक्ति से कहने लगे जो चंगा हुआ था, "यह सब्त है, और तुम्हारे लिए अपनी चटाई उठाना उचित नहीं है।" <sup>11</sup> लेकिन उसने उन्हें उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति ने मुझे चंगा किया, वही मुझसे कहने वाला था, 'अपनी चटाई उठाओ और चलो।'" <sup>12</sup> उन्होंने उससे पूछा, "वह कौन व्यक्ति है जिसने तुमसे कहा, 'इसे उठाओ और चलो?'" <sup>13</sup> लेकिन जो व्यक्ति चंगा हुआ था, वह नहीं जानता था कि वह कौन था, क्योंकि यीशु भी उन्हें से निकल गया था।

<sup>14</sup> बाद में, यीशु और उससे कहा, "देखो, तुम चंगे हो गए हों; अब और पाप मत करो, ताकि तुम्हारे साथ कुछ बुरा न हो।" <sup>15</sup> वह व्यक्ति चला गया, और यहूदियों को बताया कि वही यीशु था जिसने उसे चंगा किया था। <sup>16</sup> इसी कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह सब्त के दिन ये काम कर रहा था। <sup>17</sup> लेकिन उसने उन्हें उत्तर दिया, "मेरा पिता अब तक काम कर रहा है, और मैं भी काम कर रहा हूँ।" <sup>18</sup> इसी कारण यहूदी उसे और भी मार डालने का प्रयास कर रहे थे, क्योंकि वह न केवल सब्त का उल्लंघन कर रहा था, बल्कि यह भी कह रहा था कि परमेश्वर उसका अपना पिता है, जिससे वह अपने आप को परमेश्वर के बराबर बना रहा था।

<sup>19</sup> इसलिए यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, पुत्र अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, जब तक कि वह पिता को कुछ करते हुए न देखे; क्योंकि जो कुछ पिता करता है, वही पुत्र भी उसी तरह करता है।" <sup>20</sup> क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम करता है, और उसे वे सब बातें दिखाता है जो वह स्वयं करता है; और पिता उसे इनसे भी बड़े काम दिखाएगा, ताकि तुम चकित हो जाओ। <sup>21</sup> क्योंकि जैसे पिता मरे हुओं को उठाता है और उन्हें जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहता है उसे जीवन देता है। <sup>22</sup> क्योंकि पिता किसी का भी न्याय नहीं करता, बल्कि उसने सारा न्याय पुत्र को सौंप दिया है, <sup>23</sup> ताकि सब लोग पुत्र का आदर करें जैसे वे पिता का आदर करते हैं। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

<sup>24</sup> "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो कोई मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा

## यूहन्ना

है, उसके पास अनंत जीवन है, और वह न्याय में नहीं आता, बल्कि मृत्यु से जीवन में पार हो गया है।<sup>25</sup> मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, एक समय आ रहा है, और अब आ गया है, जब मरे हुए परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवित होंगे।<sup>26</sup> क्योंकि जैसे पिता में स्वयं जीवन है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने का अधिकार दिया है;<sup>27</sup> और उसने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है, क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है।<sup>28</sup> इस पर अश्वर्य मत करो; क्योंकि एक समय आ रहा है जब सब जो कब्डी में हैं, उसकी आवाज़ सुनेंगे,<sup>29</sup> और बाहर आएंगे: जिन्होंने अच्छे काम किए हैं वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए, और जिन्होंने बुरे काम किए हैं वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए।

<sup>30</sup> “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता। जैसा मैं सुनता हूँ, मैं न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सही है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बल्कि उसकी इच्छा चाहता हूँ जिसने मुझे भेजा है।<sup>31</sup> यदि मैं अपने बारे में अकेला गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सत्य नहीं है।<sup>32</sup> एक और है जो मेरे बारे में गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि जो गवाही वह मेरे बारे में देता है वह सत्य है।

<sup>33</sup> तुमने यूहन्ना के पास दूत भेजे, और उसने सत्य की गवाही दी।<sup>34</sup> लेकिन जो गवाही मैं प्राप्त करता हूँ वह मनुष्य से नहीं है, बल्कि मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ ताकि तुम बच जाओ।<sup>35</sup> वह जलता और चमकता हुआ दीपक था, और तुम थोड़ी देर के लिए उसकी रोशनी में आनंदित होना चाहते थे।<sup>36</sup> लेकिन जो गवाही मेरे पास है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने के लिए दिए हैं—ये वही काम जो मैं करता हूँ—मेरे बारे में गवाही देते हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।

<sup>37</sup> और पिता जिसने मुझे भेजा है, उसने मेरे बारे में गवाही दी है। तुमने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न ही उसका रूप देखा है।<sup>38</sup> तुम्हारे पास उसका वचन भी नहीं है, क्योंकि तुम उस पर विश्वास नहीं करते जिसे उसने भेजा है।<sup>39</sup> तुम शास्त्रों की जांच करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें तुम्हारे पास अनंत जीवन है; और वे वहीं शास्त्र हैं जो मेरे बारे में गवाही देते हैं,<sup>40</sup> और फिर भी तुम मेरे पास आने के लिए तैयार नहीं हो ताकि तुम्हारे पास जीवन हो।

<sup>41</sup> मैं लोगों से महिमा नहीं प्राप्त करता;<sup>42</sup> लेकिन मैं तुम्हें जानता हूँ, कि तुम्हारे अंदर परमेश्वर का प्रेम नहीं है।<sup>43</sup> मैं अपने पिता के नाम में आया हूँ, और तुम मुझे स्वीकार

नहीं करते; यदि कोई और अपने नाम में आता है, तो तुम उसे स्वीकार करोगे।<sup>44</sup> तुम कैसे विश्वास कर सकते हो, जब तुम एक-दूसरे से महिमा स्वीकार करते हो और तुम उस महिमा की खोज नहीं करते जो एकमात्र परमेश्वर से है?<sup>45</sup> यह मत सोचो कि मैं तुम्हें पिता के सामने दोषी ठहराऊँगा; जो तुम्हें दोषी ठहराता है वह मूसा है, जिसमें तुमने अपनी आशा रखी है।<sup>46</sup> क्योंकि यदि तुम मूसा पर विश्वास करते, तो मुझ पर विश्वास करते; क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा था।<sup>47</sup> लेकिन यदि तुम उसकी लेखनी पर विश्वास नहीं करते, तो तुम मेरे बचनों पर कैसे विश्वास करोगे?"

**6** इन बातों के बाद यीशु गलील सागर (या तिबेरियास) के दूसरी ओर चले गए।<sup>2</sup> एक बड़ी भीड़ उनका अनुसरण कर रही थी, क्योंकि वे उन विच्छिन्नों को देख रहे थे जो वह बीमारों पर कर रहे थे।<sup>3</sup> परन्तु यीशु पहाड़ पर चढ़ गए, और वहाँ अपने चेलों के साथ बैठे।<sup>4</sup> अब यहूदियों का पर्व पास्का निकट था।<sup>5</sup> इसलिए यीशु ने अपनी आँखें उठाई और देखा कि एक बड़ी भीड़ उनकी ओर आ रही है, तो उन्होंने फिलिप्पुस से कहा, “हम कहाँ से रोती खरीदें ताकि ये लोग खा सकें?”<sup>6</sup> परन्तु वह यह केवल उसे परखने के लिए कह रहे थे, क्योंकि वह स्वयं जानते थे कि वह क्या करने वाले हैं।<sup>7</sup> फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, “दो सौ दीनार की रोटी भी उनके लिए पर्याप्त नहीं होगी, ताकि प्रत्येक को थोड़ा-थोड़ा मिल सके!”<sup>8</sup> उनके चेलों में से एक, अद्वियास, शमौन पतरस का भाई, ने उनसे कहा, “यहाँ एक लड़का है जिसके पास पाँच जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं; परन्तु इतने लोगों के लिए ये क्या हैं?”<sup>9</sup> यीशु ने कहा, “लोगों को बैठा दो।”<sup>10</sup> अब उस स्थान पर बहुत धास थी। इसलिए पुरुष बैठे, लाभग पाँच हजार की संख्या में।<sup>11</sup> तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद देने के बाद उन्हें उन लोगों में बैठ दिया जो बैठे थे; इसी प्रकार मछलियों का भी, जितना वे चाहते थे।<sup>12</sup> और जब वे तुम हो गए, तो उन्होंने अपने चेलों से कहा, “बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा करो ताकि कुछ खो न जाए।”<sup>13</sup> इसलिए उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया, और पाँच जौ की रोटियाँ के टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं जो खाने वालों से बच गई थीं।<sup>14</sup> इसलिए जब लोगों ने वह चिन्ह देखा जो उसने किया था, तो वे कहने लगे, “यह सचमुच वही नबी है जो संसार में आने वाला है।”

<sup>15</sup> इसलिए यीशु, यह जानकर कि वे उसे बलपूर्वक राजा बनाने के लिए आने वाले हैं, फिर से अकेले पहाड़ पर चले गए।<sup>16</sup> अब जब संध्या हुई, तो उनके चेले समुद्र के किनारे गए,<sup>17</sup> और एक नाव में चढ़कर वे कफरनहम

## यूहन्ना

की ओर समुद्र पार करने लगे। अंधेरा हो चुका था, और यीशु अब तक उनके पास नहीं आए थे।<sup>18</sup> इसके अलावा, समुद्र में तेज हवा चलने के कारण लहरें उठने लगीं।<sup>19</sup> तब, जब उन्होंने लगभग पच्चीस या तीस स्टेडिया तक नाव खेई, तो उन्होंने यीशु को समुद्र पर चलते हुए और नाव के पास आते देखा; और वे डर गए।<sup>20</sup> परन्तु उन्होंने उनसे कहा, "यह मैं हूँ, डरो मत।"<sup>21</sup> इसलिए वे उसे नाव में लेने के लिए तैयार हो गए, और तुरंत नाव उस भूमि पर पहुँच गई जहाँ वे जा रहे थे।

<sup>22</sup> अगले दिन भीड़ ने जो समुद्र के दूसरी ओर खड़ी थी देखा कि वहाँ कोई और छोटी नाव नहीं थी सिवाय एक के, और यीशु ने अपने चेलों के साथ उस नाव में सवार नहीं हुए थे, परन्तु उनके चेले अकेले चले गए थे।<sup>23</sup> अन्य छोटी नावें तिबेरियास से उस स्थान के पास आईं जहाँ उन्होंने रोटी खाई थी जब प्रभु ने ध्यावाद दिया था।<sup>24</sup> इसलिए जब भीड़ ने देखा कि यीशु वहाँ नहीं है, और न ही उनके चेले, तो वे स्वयं छोटी नावों में चढ़कर कफरनहूम आए, यीशु को खोजते हुए।

<sup>25</sup> और जब उन्होंने उन्हें समुद्र के दूसरी ओर पाया, तो उन्होंने उनसे कहा, "रब्बी, आप यहाँ कब आए?"<sup>26</sup> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं खोजते क्योंकि तुमने चिन्ह देखे, बल्कि इसलिए कि तुमने रोटियाँ खाई और तुम हुए।"<sup>27</sup> उस भोजन के लिए परिश्रम मत करो जो नाशवान है, बल्कि उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन के लिए बना रहता है, जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा; क्योंकि उस पर पिता, परमेश्वर ने अपनी मुहर लगाई है।<sup>28</sup> इसलिए उन्होंने उनसे कहा, "हम क्या करें, ताकि हम परमेश्वर के कार्य कर सकें?"<sup>29</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "यह परमेश्वर का कार्य है, कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।"

<sup>30</sup> इसलिए उन्होंने उनसे कहा, "तब आप क्या चिन्ह दिखाते हैं, ताकि हम देखें और आप पर विश्वास करें? आप क्या कार्य कर रहे हैं?"<sup>31</sup> हमारे पितरों ने जंगल में मत्रा खाया; जैसा लिखा है: उसने उन्हें स्वर्ग से रोटी खाने के लिए दी।"<sup>32</sup> तब यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, यह मूसा नहीं था जिसने तुम्हें स्वर्ग से रोटी दी, बल्कि यह मेरा पिता है जो तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है।"<sup>33</sup> क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उत्तरती है और संसार को जीवन देती है।<sup>34</sup> तब उन्होंने उनसे कहा, "प्रभु, हमें हमेशा यह रोटी दीजिए।"

<sup>35</sup> यीशु ने उनसे कहा, "मैं जीवन की रोटी हूँ, जो मेरे पास आता है वह भूखा नहीं होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा नहीं होगा।"<sup>36</sup> परन्तु मैंने तुमसे कहा कि तुमने मुझे देखा है, और फिर भी तुम विश्वास नहीं करते।<sup>37</sup> जो कुछ पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आता है उसे मैं कभी बाहर नहीं निकालूँगा।<sup>38</sup> क्योंकि मैं स्वर्ग से उत्तरा हूँ, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए नहीं, बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने के लिए जिसने मुझे भेजा है।<sup>39</sup> और यह उसकी इच्छा है जिसने मुझे भेजा है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन पर उठाऊँ।<sup>40</sup> क्योंकि यह मेरे पिता की इच्छा है, कि जो कोई पुत्र को देखता है और उस पर विश्वास करता है उसे अनन्त जीवन मिले, और मैं स्वर्यं उसे अंतिम दिन पर उठाऊँगा।"

<sup>41</sup> इसलिए यहूदी उनके बारे में कुङ्कुङ्डाने लगे क्योंकि उन्होंने कहा, "मैं वह रोटी हूँ जो स्वर्ग से उत्तरी है।"<sup>42</sup> और वे कहने लगे, "क्या यह यीशु नहीं है, यूसूफ का पुत्र, जिसके पिता और माता को हम जानते हैं? अब वह कैसे कहता है, मैं स्वर्ग से उत्तरा हूँ?"<sup>43</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "अपने बीच में कुङ्कुङ्डाना बंद करो।<sup>44</sup> कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले; और मैं उसे अंतिम दिन पर उठाऊँगा।"<sup>45</sup> यह भविष्यद्वक्ताओं में लिखा है: 'और वे सब परमेश्वर के द्वारा सिखाए जाएंगे।' जो कोई पिता से सुनता है और सीखता है वह मेरे पास आता है।<sup>46</sup> यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है, सिवाय उसके जो परमेश्वर से है: उसने पिता को देखा है।<sup>47</sup> मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो विश्वास करता है उसके पास अनन्त जीवन है।<sup>48</sup> मैं जीवन की रोटी हूँ।<sup>49</sup> तुहारे पितरों ने जंगल में मत्रा खाया, और वे मर गए।<sup>50</sup> यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उत्तरी है, ताकि कोई उससे खाए और न मरे।<sup>51</sup> मैं जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उत्तरी है; यदि कोई इस रोटी से खाएगा, तो वह सदा जीवित रहेगा; और वह रोटी जो मैं संसार के जीवन के लिए दूँगा वह मेरा मांस है।"<sup>52</sup>

<sup>52</sup> तब यहूदी एक-दूसरे से झगड़ने लगे, कहने लगे, "यह मनुष्य हमें अपना मांस खाने के लिए कैसे दे सकता है?"

<sup>53</sup> इसलिए यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस नहीं खाते और उसका रक्त नहीं पीते, तुममें जीवन नहीं है।"<sup>54</sup> जो मेरा मांस खाता है और मेरा रक्त पीता है उसके पास अनन्त जीवन है, और मैं उसे अंतिम दिन पर उठाऊँगा।

<sup>55</sup> क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है, और मेरा रक्त

## यूहन्ना

सच्चा पेय है।<sup>56</sup> जो मेरा मांस खाता है और मेरा रक्त पीता है वह मुझमें बना रहता है, और मैं उसमें।<sup>57</sup> जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, जो मुझे खाता है, वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा।<sup>58</sup> यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, जैसे पितरों ने खाइ और मर गए; जो इस रोटी को खाता है वह सदा जीवित रहेगा।<sup>59</sup> ये बातें उहोंने कफरनहूम में उपदेश देते हुए आराधनालय में कहीं।

<sup>60</sup> इसलिए जब उनके बहुत से चेलों ने यह सुना, तो कहा, “यह वचन बहुत कठोर है; इसे कौन सुन सकता है?”<sup>61</sup> परन्तु यीशु यह जानते हुए कि उनके चेले इस पर कुदकुड़ा रहे हैं, उनसे कहा, “क्या यह तुम्हें ठेस पहुँचाता है?”<sup>62</sup> तब क्या होगा यदि तुम मनुष्य के पुत्र को वहाँ चढ़ते हुए देखो जहाँ वह पहले था? <sup>63</sup> यह आत्मा है जो जीवन देती है; मांस का कोई लाभ नहीं है; जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे आत्मा हैं, और जीवन हैं।<sup>64</sup> परन्तु तुममें से कुछ हैं जो विश्वास नहीं करते।<sup>65</sup> क्योंकि यीशु शुरू से जानता था कि कौन विश्वास नहीं करते, और कौन उसे धोखा देगा।<sup>66</sup> और वह कह रहे थे, “इसी कारण मैंने तुमसे कहा कि कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि यह पिता से उसे दिया न गया हो।”

<sup>66</sup> इस कारण से उसके बहुत से चेले चले गए, और अब उसके साथ नहीं चलते थे।<sup>67</sup> इसलिए यीशु ने बारह से कहा, “क्या तुम भी जाना चाहते हो?”<sup>68</sup> शमौन परस ने उत्तर दिया, “प्रभु, हम किसके पास जाएँ? आपके पास अनन्त जीवन के वचन हैं।”<sup>69</sup> और हम पहले से ही विश्वास कर चुके हैं और जानते हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र हैं।<sup>70</sup> यीशु ने उनसे कहा, “क्या मैंने स्वयं तुम्हें बारह को नहीं चुना? और फिर भी तुममें से एक शैतान है?”<sup>71</sup> अब वह शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदिया के बारे में कह रहे थे; क्योंकि वह, बारह में से एक, उन्हें धोखा देने वाला था।

**7** इन बातों के बाद यीशु गलील में चल रहा था; क्योंकि वह यहूदिया में चलना नहीं चाहता था, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने की खोज में थे।<sup>72</sup> अब यहूदियों का पर्व, झोपड़ियों का पर्व, निकट था।<sup>73</sup> इसलिए उसके भाइयों ने उससे कहा, “यहाँ से चलकर यहूदिया में जाओ, ताकि तुम्हारे चेले भी तुम्हारे काम देखें जो तुम कर रहे हो।”<sup>74</sup> क्योंकि कोई भी व्यक्ति गुरुत रूप से कुछ नहीं करता जब वह स्वयं सार्वजनिक रूप से जाना चाहता है। यदि तुम ये काम कर रहे हो, तो अपने आप को संसार को दिखाओ।<sup>75</sup> क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।<sup>76</sup> इसलिए यीशु ने उनसे कहा,

“मेरा समय अभी नहीं आया है, परन्तु तुम्हारा समय सदा तैयार है।”<sup>77</sup> संसार तुमसे बैर नहीं कर सकता, परन्तु मुझसे बैर करता है क्योंकि मैं उसके बारे में गवाही देता हूँ, कि उसके काम बुरे हैं।<sup>78</sup> तुम पर्व में जाओ; मैं इस पर्व में नहीं जा रहा हूँ क्योंकि मेरा समय अभी पूरी तरह नहीं आया है।”<sup>79</sup> अब उसने ये बातें उनसे कहकर, गलील में ठहर गया।

<sup>10</sup> परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तब वह भी गया, न कि सार्वजनिक रूप से, परन्तु जैसे गुजर रूप से।

<sup>11</sup> इसलिए यहूदी पर्व में उसकी खोज कर रहे थे और कह रहे थे, “वह कहाँ है?”<sup>12</sup> और भीड़ में उसके बारे में बहुत बातें हो रही थीं: कुछ कह रहे थे, “वह अच्छा मनुष्य है”; अन्य कह रहे थे, “नहीं, इसके विपरीत, वह लोगों को भटका रहा है!”<sup>13</sup> फिर भी, कोई भी उसके बारे में खुलकर नहीं बोल रहा था, यहूदियों के डर के कारण।

<sup>14</sup> परन्तु जब पर्व का मध्य हो गया, यीशु मंदिर क्षेत्र में गया, और शिक्षा देने लगा।<sup>15</sup> यहूदी तब आश्वर्यचकित होकर कहने लगे, “इस मनुष्य ने बिना शिक्षा पाए कैसे ज्ञान प्राप्त कर लिया?”<sup>16</sup> इसलिए यीशु ने उहें उत्तर दिया और कहा, “मेरी शिक्षा मेरी अपनी नहीं है, परन्तु उसकी है जिसने मुझे भेजा है।”<sup>17</sup> यदि कोई उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार है, तो वह इस शिक्षा के बारे में जान जाएगा, कि यह परमेश्वर की है, या मैं अपने आप से बोल रहा हूँ।<sup>18</sup> जो अपने आप से बोलता है वह अपनी महिमा चाहता है; परन्तु जो उसे भेजने वाले की महिमा चाहता है, वह सच्चा है, और उसमें कोई अन्याय नहीं है।<sup>19</sup> क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी, और फिर भी तुम में से कोई भी व्यवस्था का पालन नहीं करता? तुम मुझे मारने की खोज कर्यों कर रहे हो?”<sup>20</sup> भीड़ ने उत्तर दिया, “तुम्हारे अंदर दुष्टामा है।” कौन तुम्हें मारने की खोज कर रहा है?<sup>21</sup> यीशु ने उहें उत्तर दिया, “मैंने एक काम किया, और तुम सब आश्वर्यचकित हो।”<sup>22</sup> इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतना दिया (यह मूसा से नहीं, परन्तु पिताओं से है), और सब्ल के दिन भी तुम मनुष्य का खतना करते हो।<sup>23</sup> यदि सब्ल के दिन मनुष्य का खतना होता है ताकि मूसा की व्यवस्था न टूटे, तो क्या तुम मुझसे क्रोधित हो क्योंकि मैंने सब्ल के दिन एक पूरे मनुष्य को अच्छा कर दिया? <sup>24</sup> बाहरी रूप से न्याय मत करो, परन्तु धर्मी न्याय से न्याय करो।”

<sup>25</sup> इसलिए यरूशलेम के कुछ लोग कह रहे थे, “क्या यह वही मनुष्य नहीं है जिसे वे मारने की खोज कर रहे हैं?

<sup>26</sup> और फिर देखो, वह सार्वजनिक रूप से बोल रहा है,

# यूहन्ना

और वे उससे कुछ नहीं कह रहे हैं। क्या शासक सचमुच जानते हैं कि यह मसीह है? <sup>27</sup> हालांकि, हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहाँ से है; परन्तु जब मसीह आएगा, तो कोई नहीं जानता कि वह कहाँ से है।” <sup>28</sup> तब यीशु ने मंदिर में पुकारकर कहा, “तुम मुझे जानते हो और जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ, और मैं अपने आप से नहीं आया, परन्तु वह जिसने मुझे भेजा है, सच्चा है, जिसे तुम नहीं जानते।” <sup>29</sup> मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उससे हूँ, और उसने मुझे भेजा है।” <sup>30</sup> इसलिए वे उसे गिरफ्तार करने की खोज कर रहे थे; फिर भी किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला, क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। <sup>31</sup> परन्तु भीड़ में से बहुत से लोग उस पर विश्वास करने लगे; और वे कह रहे थे, “जब मसीह आएगा, तो क्या वह इस मनुष्य से अधिक चिन्ह दिखाएगा?”

<sup>32</sup> फरीसियों ने भीड़ को उसके बारे में ये बातें फुसफुसाते सुना, और मुख्य याजकों और फरीसियों ने उसे गिरफ्तार करने के लिए अधिकारियों को भेजा। <sup>33</sup> इसलिए यीशु ने कहा, “पोड़े समय के लिए मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, और फिर मैं उसके पास जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है।” <sup>34</sup> तुम मुझे खोजोगे, और नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।” <sup>35</sup> यहूदी तब एक-दूसरे से कहने लगे, “यह मनुष्य कहाँ जाने का इरादा करता है कि हम उसे नहीं पाएँगे? क्या वह यूनानियों के बीच बिखरे हुए लोगों के पास जाकर यूनानियों को सिखाने का इरादा रखता है? <sup>36</sup> यह कथन क्या है जो उसने कहा, ‘तुम मुझे खोजोगे, और नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?’”

<sup>37</sup> अब पर्व के अंतिम दिन, महान दिन, यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहा, “यदि कोई यासा है, तो वह मेरे पास आए और पीए।” <sup>38</sup> जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि शास्त्र ने कहा है, “उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।” <sup>39</sup> परन्तु यह उसने आत्मा के संदर्भ में कहा, जिसे वे प्राप्त करने वाले थे जो उस पर विश्वास करते थे; क्योंकि आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु अभी तक महिमा नहीं पाया था।

<sup>40</sup> इसलिए कुछ लोग, जब उन्होंने ये बातें सुनीं, कहने लगे, “यह वास्तव में भविष्यद्वक्ता है।” <sup>41</sup> अन्य कह रहे थे, “यह मसीह है।” परन्तु अन्य कह रहे थे, “क्या मसीह गतील से आने वाला है? <sup>42</sup> क्या शास्त्र ने नहीं कहा कि मसीह दाऊद के वंश से आएगा, और बेतलेहेम से, गाँव जहाँ दाऊद था?” <sup>43</sup> इसलिए भीड़ में उसके कारण एक मतभेद उत्पन्न हुआ। <sup>44</sup> और उनमें से कुछ उसे

गिरफ्तार करना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला।

<sup>45</sup> तब अधिकारी मुख्य याजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?” <sup>46</sup> अधिकारियों ने उत्तर दिया, “कभी किसी मनुष्य ने इस प्रकार नहीं बोला।” <sup>47</sup> फरीसियों ने तब उनसे कहा, “क्या तुम भी बहक गए हो? <sup>48</sup> क्या शासकों या फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है? <sup>49</sup> परन्तु यह भीड़ जो व्यवस्था को नहीं जानती, शापित है।” <sup>50</sup> निकोदेमस (जो पहले उसके पास आया था, उनमें से एक था) ने उनसे कहा, <sup>51</sup> “हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति का याय नहीं करती जब तक कि पहले उससे सुन न ले और यह न जान ले कि वह क्या कर रहा है, क्या ऐसा नहीं है?” <sup>52</sup> उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, “क्या तुम भी गलील से कोई भविष्यद्वक्ता नहीं आता।” <sup>53</sup> कुछ प्रारंभिक पांडुलिपियों में यूहन्ना 7:53 इस स्थान पर नहीं है, परन्तु इसे शामिल किया गया है

<sup>53</sup> [और हर कोई अपने घर चला गया।]

## 8

कुछ प्रारंभिक पांडुलिपियों में यूहन्ना 8:1 - 8:11 इस स्थान पर नहीं है, लेकिन इसे शामिल किया गया है

<sup>1</sup> परन्तु यीशु जैतून के पर्वत पर गए। <sup>2</sup> और सुबह-सेरे वह फिर मंदिर क्षेत्र में आए, और सब लोग उनके पास आ रहे थे; और वह बैठ गए और उन्हें शिक्षा देने लगे। <sup>3</sup> अब शास्त्री और फरीसी, और उसे अंगन के बीच में खड़ा कर दिया। <sup>4</sup> उन्होंने उनसे कहा, “गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है।” <sup>5</sup> अब व्यवस्था में, मूसा ने हमें ऐसी स्तिथियों को पश्चात मारने की आज्ञा दी है; तो फिर आप क्या कहते हैं?” <sup>6</sup> वे यह कहकर उनकी परीक्षा ले रहे थे, ताकि उनके खिलाफ आरोप लगाने का कोई आधार मिल सके। परन्तु यीशु नीचे झुक गए और अपनी उंगली से भूमि पर लिखने लगे। <sup>7</sup> जब वे उनसे पूछते रहे, तो उन्होंने सीधा होकर उनसे कहा, “तुम मैं से जो बिना पाप के है, वही पहले उस पर पत्तर फेंके।” <sup>8</sup> और फिर वह नीचे झुक गए और भूमि पर लिखने लगे। <sup>9</sup> अब जब उन्होंने यह सुना, तो वे एक-एक करके चले गए, सबसे पहले बूढ़े लोग, और वह अकेले रह गए, और स्त्री वहीं थी, अंगन के बीच में। <sup>10</sup> और सीधा होकर, यीशु ने उनसे कहा, “स्त्री, वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुझे

## यूहन्ना

दोषी नहीं ठहराया?"<sup>11</sup> उसने कहा, "कोई नहीं, प्रभु!" और यीशु ने कहा, "मैं भी तुझे दोषी नहीं ठहराता; जा। अब से और पाप मत करना।"

<sup>12</sup> तब यीशु ने फिर उनसे कहा, "मैं संसार का प्रकाश हूँ; जो मेरा अनुसरण करता है वह अंधकार में नहीं चलेगा, बल्कि जीवन का प्रकाश पाएगा।"<sup>13</sup> तो फरीसियों ने उनसे कहा, "तू अपने बारे में गवाही दे रहा है, तो तेरी गवाही सत्य नहीं है।"<sup>14</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "यदि मैं अपने बारे में गवाही देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सत्य है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ, परंतु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ जा रहा हूँ।"<sup>15</sup> तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।<sup>16</sup> परंतु यदि मैं न्याय करता भी हूँ, तो मेरा न्याय सत्य है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ, बल्कि मैं और पिता जिसने मुझे भेजा है।<sup>17</sup> तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो व्यक्तियों की गवाही सत्य है।<sup>18</sup> मैं वही हूँ जो अपने बारे में गवाही देता हूँ, और पिता जिसने मुझे भेजा है, मेरे बारे में गवाही देता है।"<sup>19</sup> तो वे उनसे कहने लगे, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम न मुझे जानते हो और न मेरे पिता को; यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते!"<sup>20</sup> ये बातें उन्होंने खाने में कहीं, जब वह मंदिर क्षेत्र में शिक्षा दे रहे थे; और किसी ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया, क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था।

<sup>21</sup> तब उन्होंने फिर उनसे कहा, "मैं जा रहा हूँ, और तुम मुझे खोजोगे, और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।"<sup>22</sup> तो यहूदी कहने लगे, "व्या वह अपने आप को मारने जा रहा है, क्योंकि वह कहता है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?'"<sup>23</sup> और वह उनसे कह रहे थे, "तुम नीचे से हो, मैं ऊपर से हूँ; तुम इस संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं हूँ।"<sup>24</sup> इसलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोग।"<sup>25</sup> तब वे उनसे कहने लगे, "तू, कौन है?" यीशु ने उनसे कहा, "मैं वही हूँ जो मैंने तुहं आरंभ से कहा है।"<sup>26</sup> मेरे पास तुम्हारे बारे में कहने और न्याय करने के लिए बहुत कुछ है, परंतु जिसने मुझे भेजा है वह सत्य है; और जो बात मैंने उससे सुनी है, वही मैं संसार से कहता हूँ।"<sup>27</sup> वे नहीं समझे कि वह उनसे पिता के बारे में कह रहे थे।<sup>28</sup> तब यीशु ने कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाओगे, तब तुम जानोगे कि मैं वही हूँ, और मैं अपने आप से कुछ नहीं करता, बल्कि जो बातें पिता ने मुझे सिखाई हैं, वही कहता हूँ।"<sup>29</sup>

और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे प्रसन्न करता है।"<sup>30</sup> जब उन्होंने ये बातें कहीं, तो बहुत से लोग उन पर विश्वास करने लगे।

<sup>31</sup> तब यीशु उन यहूदियों से कहने लगे जिन्होंने उन पर विश्वास किया था, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो तुम वास्तव में मेरे चेले हों";<sup>32</sup> और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"<sup>33</sup> उन्होंने उत्तर दिया, "हम अब्राहम के वंशज हैं और कभी किसी के दास नहीं रहे, तू कैसे कहता है, 'तुम स्वतंत्र हो जाओगे?'"<sup>34</sup> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो कोई पाप करते हैं वह पाप का दास है।"<sup>35</sup> अब दास सदा धर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।<sup>36</sup> इसलिए यदि पुत्र तुहं स्वतंत्र करता है, तो तुम वास्तव में स्वतंत्र हो जाओगे।<sup>37</sup> मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंशज हो; फिर भी तुम मुझे मारने का प्रयास कर रहे हो, क्योंकि मेरे वचन का तुहारे भीतर कोई स्थान नहीं है।<sup>38</sup> मैं उन बातों को कहता हूँ जो मैंने अपने पिता के साथ देखी हैं; इसलिए तुम भी उन बातों को करते हो जो तुमने अपने पिता से सुनी हैं।"

<sup>39</sup> उन्होंने उत्तर दिया और उनसे कहा, "अब्राहम हमारा पिता है।"<sup>40</sup> यीशु, "यदि तुम अब्राहम के बच्चे होते, तो अब्राहम के काम करते।"<sup>41</sup> परंतु अब तुम मुझे मारने का प्रयास कर रहे हो, एक मनुष्य जिसने तुहं सत्य बताया, जो मैंने परमेश्वर से सुना; यह अब्राहम ने नहीं किया।<sup>41</sup> तुम अपने पिता के काम कर रहे हो।"<sup>42</sup> उन्होंने उससे कहा, "हम व्याख्याता से उत्तर नहीं हुए; हमारा एक ही पिता है: परमेश्वर।"<sup>43</sup> यीशु ने उनसे कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम करते, क्योंकि मैं परमेश्वर से आया हूँ और यहाँ हूँ; क्योंकि मैं अपने आप से नहीं आया, परंतु उसने मुझे भेजा है।"<sup>43</sup> तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? क्योंकि तुम मेरे वचन को सुन नहीं सकते।<sup>44</sup> तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह आरंभ से ही हत्यारा था, और सत्य में स्थिर नहीं रहता क्योंकि उसमें सत्य नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो अपने स्वभाव से बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।<sup>45</sup> परंतु क्योंकि मैं सत्य कहता हूँ, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते।<sup>46</sup> तुम में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है? यदि मैं सत्य कहता हूँ, तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते?<sup>47</sup> जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर के वचन सुनता है; इसी कारण तुम उन्हें नहीं सुनते, क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

## यूहन्ना

<sup>48</sup> यहूदियों ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “क्या हम सही नहीं कहते कि तू सामरी है, और तुझमें दुष्टामा है?” <sup>49</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “मूँझमें दुष्टामा नहीं है; इसके विपरीत, मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा अपमान करते हो।” <sup>50</sup> परंतु मैं अपनी महिमा नहीं चाहता; एक है जो इसे चाहता है, और वही न्याय करता है। <sup>51</sup> मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, यदि कोई मेरे वचन का पालन करता है, तो वह कभी मृत्यु नहीं देखेगा।” <sup>52</sup> यहूदियों ने उनसे कहा, “अब हम जानते हैं कि तुझमें दुष्टामा है। अब्राहम मरे, और भविष्यद्वक्ता भी; फिर भी तू कहता है, ‘यदि कोई मेरे वचन का पालन करता है, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं खेगा।’” <sup>53</sup> क्या तू हमारे पिता अब्राहम से बड़ा है जो मरे, और भविष्यद्वक्ता भी मरे; तू अपने आप को क्या बनाता है?” <sup>54</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं अपनी महिमा करता हूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं है; यह मेरा पिता है जो मेरी महिमा करता है, जिसके बारे में तुम कहते हो, ‘वह हमारा परमेश्वर है,’” <sup>55</sup> और तुमने उसे नहीं जाना, परंतु मैं उसे जानता हूँ। और यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूँठा हो जाऊँगा; परंतु मैं उसे जानता हूँ, और उसके वचन का पालन करता हूँ।” <sup>56</sup> तुम्हारा पिता अब्राहम यह देखकर आनन्दित था कि वह मेरा दिन देखेगा, और उसने देखा और आनन्दित हुआ।” <sup>57</sup> तो यहूदियों ने उनसे कहा, “तू अभी पवास वर्ष का नहीं है, और तूने अब्राहम को देखा है?” <sup>58</sup> यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, अब्राहम के जन्म से पहले, मैं हूँ।” <sup>59</sup> इसलिए उन्होंने उसे पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाए, परंतु यीशु ने अपने आप को छिपा लिया और मंदिर के मैदान से बाहर चले गए।

**९** जब यीशु वहाँ से जा रहे थे, तो उन्होंने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था। <sup>2</sup> और उनके चेलों ने उनसे पूछा, “रब्बी, किसने पाप किया, इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने, कि वह अंधा जन्मा?” <sup>3</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “न तो इस मनुष्य ने पाप किया, न उसके माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रकट हो।” <sup>4</sup> हमें उसके कार्यों को करना चाहिए जिसने मुझे भेजा है, जब तक दिन है; रात आ रही है, जब कोई काम नहीं कर सकता। <sup>5</sup> जब तक मैं संसार में हूँ, मैं संसार की ज्योति हूँ।”

<sup>6</sup> जब उन्होंने यह कहा, तो उन्होंने जमीन पर धूका, धूक से मिट्टी बनाई, और उस मिट्टी को उसके अँखों पर लगाया, <sup>7</sup> और उससे कहा, “जा, शीलोह के कुंड में धो ले” (जिसका अर्थ है, भेजा गया)। तो वह गया और धोया, और देखने लगा। <sup>8</sup> तो पड़ोसी और जो पहले उसे

भिखारी के रूप में देखते थे, कहने लगे, “क्या यह वही नहीं है जो बैठता और भीख माँगता था?” <sup>9</sup> कुछ लोग कह रहे थे, “यह वही है,” जबकि अन्य कह रहे थे, “नहीं, पर वह उसके जैसा है।” वह कहता रहा, “मैं वही हूँ।” <sup>10</sup> तो वे उससे कहने लगे, “फिर तेरी अँखें किसे खुल गईं?” <sup>11</sup> उसने उत्तर दिया, “जिस मनुष्य को यीशु कहा जाता है उसने मिट्टी बनाई, और उसे मेरी अँखों पर लगाया, और मुझसे कहा, ‘शीलोह में जा और धो लो; तो मैं गया और धोया, और मुझे दृष्टि मिली।’” <sup>12</sup> और उन्होंने उससे कहा, “वह कहाँ है?” उसने कहा, “मुझे नहीं पता।”

<sup>13</sup> वे उस मनुष्य को जो पहले अंधा था फरीसियों के पास ले आए। <sup>14</sup> अब वह सब्त का दिन था जब यीशु ने मिट्टी बनाई और उसकी अँखें खोलीं। <sup>15</sup> तब फरीसी भी उससे फिर पूछने लगे कि उसे दृष्टि किसे मिली। और उसने उनसे कहा, “उसने मेरी अँखों पर मिट्टी लगाई, और मैंने धोया, और मैं देखता हूँ।” <sup>16</sup> इसलिए कुछ फरीसी कहने लगे, “यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह सब्त का पालन नहीं करता।” परन्तु अन्य कहने लगे, “एक पापी मनुष्य ऐसे विन्दू किसे कर सकता है?” और उनमें मतभेद था। <sup>17</sup> तो उन्होंने फिर उस अंधे मनुष्य से कहा, “तू उसके विषय में क्या कहता है, क्योंकि उसने तेरी अँखें खोलीं?” और उसने कहा, “वह एक नबी है।”

<sup>18</sup> तब यहूदियों ने उसके विषय में विश्वास नहीं किया, कि वह अंधा था और उसे दृष्टि मिली, जब तक कि उन्होंने उसके माता-पिता को नहीं बुलाया, जिसने दृष्टि पाई थी। <sup>19</sup> और उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा था? फिर अब वह कैसे देखता है?” <sup>20</sup> उसके माता-पिता ने उत्तर दिया और कहा, “हम जानते हैं कि वह हमारा पुत्र है, और यह अंधा जन्मा था;” <sup>21</sup> परन्तु अब वह कैसे देखता है, हम नहीं जानते, या किसने उसके अँखें खोलीं, हम नहीं जानते। उससे पूछो; वह वयस्क है, वह स्वयं अपने लिए बोलेगा।” <sup>22</sup> उसके माता-पिता ने यह इसलिए कहा क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदियों ने पहले ही यह निर्णय कर लिया था कि यदि कोई उसे मसीह मान ले, तो उसे आराधनालाय से निकाल दिया जाएगा। <sup>23</sup> इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, “वह वयस्क है; उससे पूछो।”

<sup>24</sup> तो उन्होंने दूसरी बार उस मनुष्य को बुलाया जो अंधा था, और उससे कहा, “परमेश्वर की महिमा करो; हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है।” <sup>25</sup> तब उसने उत्तर दिया, “चाहे वह पापी है, मैं नहीं जानता; एक बात मैं

## यूहन्ना

जानता हूँ, कि मैं अंधा था, और अब देखता हूँ।<sup>26</sup> तो उन्होंने उससे कहा, “उसने तुझसे क्या किया? उसने तेरी अँखें कैसे खोली?”<sup>27</sup> उसने उन्हें उत्तर दिया, “मैंने तुमसे पहले ही कहा और तुमने नहीं सुना; तुम फिर से क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले बनना चाहते हो?”<sup>28</sup> उन्होंने उससे अपशब्द कहे और कहा, “तू उसका चेला है, परन्तु हम मूसा के चेले हैं।”<sup>29</sup> हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की, परन्तु इस मनुष्य के विषय में, हम नहीं जानते कि वह कहाँ से है।<sup>30</sup> उस मनुष्य ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “खैर, यह तो आश्वर्य की बात है, कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से है, और फिर भी उसने मेरी अँखें खोली।”<sup>31</sup> हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता; परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त है और उसकी इच्छा पूरी करता है, तो वह उसकी सुनता है।<sup>32</sup> समय की शुरुआत से यह कभी नहीं सुना गया कि किसी ने जन्म से अंधे व्यक्ति की अँखें खोली हैं।<sup>33</sup> यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से न होता, तो वह कुछ भी नहीं कर सकता था।<sup>34</sup> उन्होंने उसे उत्तर दिया, “तू पूरी तरह से पापों में जन्मा है, और फिर भी तू हमें सिखा रहा है?” इसलिए उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

<sup>35</sup> यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है, और जब उन्होंने उसे पापा, तो उन्होंने कहा, “क्या तू मनुष्य के पुत्र में विश्वास करता है?”<sup>36</sup> उसने उत्तर में कहा, “और वह कौन है, प्रभु, कि मैं उस पर विश्वास करूँ?”<sup>37</sup> यीशु ने उससे कहा, “तू तो उसे देखा है, और वह जो तुझसे बात कर रहा है वही है।”<sup>38</sup> और उसने कहा, “मैं विश्वास करता हूँ, प्रभु!” और उसने उसकी आराधना की।

<sup>39</sup> और यीशु ने कहा, “मैं इस संसार में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।”<sup>40</sup> जो फरीसी उसके साथ थे, उन्होंने ये बातें सुनीं और उससे कहा, “क्या हम भी अंधे हैं?”<sup>41</sup> यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते, तो तुम्हारा कोई पाप नहीं होता; परन्तु अब जबकि तुम कहते हो, ‘हम देखते हैं,’ तुम्हारा पाप बना रहता है।”

**10** “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो कोई भेड़ों के बाड़े में दरवाजे से प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी ओर रास्ते से चढ़ता है, वह चोर और डाकू है।”<sup>2</sup> परन्तु जो दरवाजे से प्रवेश करता है, वही भेड़ों का चरवाहा है।<sup>3</sup> उसके लिए द्वारपाल दरवाजा खोलता है, और भेड़े उसकी आवाज सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है।<sup>4</sup> जब वह

अपनी सारी भेड़ों को बाहर निकाल चुका होता है, तो वह उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़े उसके पीछे-पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ को जानती हैं।<sup>5</sup> परन्तु वे किसी अजनबी के पीछे नहीं जाएंगी, बल्कि उससे भाग जाएंगी, क्योंकि वे अजनबियों की आवाज़ को नहीं जानती।<sup>6</sup> यीशु ने उन्हें यह दृष्टिंत कहा, परन्तु वे नहीं समझे कि वह उनसे क्या कह रहा था।

<sup>7</sup> इसलिए यीशु ने उनसे फिर कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, मैं भेड़ों का दरवाजा हूँ।”<sup>8</sup> जो मुझसे पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी।<sup>9</sup> मैं दरवाजा हूँ, यदि कोई मुझसे होकर प्रवेश करेगा, तो वह उद्धार पाएगा, और वह भीतर-बाहर जाएगा और चराई पाएगा।<sup>10</sup> चोर केवल चोरी करने और मार डालने और नष्ट करने के लिए आता है, मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएं, और वह भी भरपूर पाएं।

<sup>11</sup> मैं अच्छा चरवाहा हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है।<sup>12</sup> जो मजदूरी पर रखा गया है, और चरवाहा नहीं है, जो भेड़ों का मालिक नहीं है, वह भेड़िये को आते देखकर भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िये उन्हें पकड़ लेता है और झुंड को तितर-बितर कर देता है।<sup>13</sup> वह इसलिए भाग जाता है क्योंकि वह मजदूरी पर रखा गया है और भेड़ों की चिंता नहीं करता।<sup>14</sup> मैं अच्छा चरवाहा हूँ, और मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं,<sup>15</sup> जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ, और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ।<sup>16</sup> और मेरी और भी भेड़े हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं, मुझे उन्हें भी लाना चाहिए, और वे मेरी आवाज सुनेंगी, और वे एक झुंड बन जाएंगी, एक चरवाहे के साथ।<sup>17</sup> इसी कारण पिता मुझसे प्रेम करता है, क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूँ ताकि मैं उसे फिर से ले सकूँ।<sup>18</sup> कोई इसे मुझसे नहीं लेता, परन्तु मैं इसे अपनी इच्छा से देता हूँ। मैं पास इसे देने का अधिकार है, और मेरे पास इसे फिर से लेने का अधिकार है। यह आज्ञा मैंने अपने पिता से प्राप्त की है।”

<sup>19</sup> यहूदियों के बीच फिर से इन बातों के कारण विवाद हुआ।<sup>20</sup> उनमें से कई कह रहे थे, “उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल है। तुम उसकी क्यों सुनते हो?”<sup>21</sup> अन्य लोग कह रहे थे, “ये बातें दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति की नहीं हैं। क्या दुष्टात्मा अंधों की अँखें खोल सकता है?”

<sup>22</sup> उस समय यरूशलेम में समर्पण का पर्व हो रहा था; यह सर्दी का समय था,<sup>23</sup> और यीशु मंटिर के क्षेत्र में,

## यूहन्ना

सुलैमान के बरामदे में टहल रहे थे।<sup>24</sup> यहूदियों ने उन्हें धेर लिया और कहने लगे, “तू हमें कब तक उलझाए रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हमें स्पष्ट बता।”<sup>25</sup> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैंने तुमसे कहा, और तुम विश्वास नहीं करते; जो काम मैं अपने पिता के नाम में करता हूँ, वे मेरे विषय में गवाही देते हैं।”<sup>26</sup> परन्तु तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।<sup>27</sup> मेरी भेड़े मेरी आवाज सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं;<sup>28</sup> और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी; और कोई उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता।<sup>29</sup> मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है; और कोई उन्हें पिता के हाथ से नहीं छीन सकता।<sup>30</sup> मैं और पिता एक हैं।”

<sup>31</sup> यहूदियों ने फिर से पथर उठाए ताकि उसे पथरवाह करें।<sup>32</sup> यीशु ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें पिता की ओर से कई अच्छे काम दिखाए हैं; उनमें से किसके लिए तुम मुझे पथरवाह कर रहे हो?”<sup>33</sup> यहूदियों ने उत्तर दिया, “हम तुझे अच्छे काम के लिए नहीं, परन्तु निन्दा के लिए पथरवाह कर रहे हैं, और क्योंकि तू जो मनुष्य है, अपने को परमेश्वर बना रहा है।”<sup>34</sup> यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है: ‘मैंने कहा, तुम देवता हो।’”<sup>35</sup> यदि उसने उन्हें देवता कहा, जिनके पास परमेश्वर का वचन आया (और शास्त्र को रद्द नहीं किया जा सकता),<sup>36</sup> तो तुम उस पर जिसे पिता ने पवित्र किया और संसार में भेजा, “तू निन्दा कर रहा है।” क्योंकि कहते हो, क्योंकि मैंने कहा, तू परमेश्वर का पुत्र हूँ?<sup>37</sup> यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मुझ पर विश्वास मत करो;<sup>38</sup> परन्तु यदि मैं उन्हें करता हूँ, तो यदि तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते, तो उन कामों पर विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है, और मैं पिता मैं हूँ।”<sup>39</sup> इसलिए वे फिर से उसे पकड़ने का प्रयास कर रहे थे, और वह उनके हाथ से बच निकला।

<sup>40</sup> और वह फिर से यर्दन के पार उस स्थान पर गया जहाँ यूहन्ना पहले बपतिस्मा देता था, और वह वहाँ ठहरा।<sup>41</sup> कई लोग उसके पास आए और कहने लगे, “यूहन्ना ने कोई चिन्ह नहीं दिखाया, फिर भी यूहन्ना ने इस व्यक्ति के बारे में जो कुछ कहा वह सत्य था।”<sup>42</sup> और वहाँ पर कई लोग उस पर विश्वास करने लगे।

**11** अब एक व्यक्ति बीमार था, बेथानी का लाज़र, मरियम और उसकी बहन मार्था का गाँव।<sup>2</sup> यह वही मरियम थी जिसने प्रभु का अभिषेक इत्र से किया और अपने बालों से उसके पाँव पोछे, जिसका भाई लाज़र बीमार था।<sup>3</sup> इसलिए बहनों ने उसे संदेश भेजा, “प्रभु

देखो, वह जिसे आप प्रेम करते हैं, बीमार है।”<sup>4</sup> परन्तु जब यीशु ने यह सुना, तो उसने कहा, “यह बीमारी मृत्यु के लिए नहीं है, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, ताकि परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो सके।”

<sup>5</sup> अब यीशु मार्था और उसकी बहन और लाज़र से प्रेम करता था।<sup>6</sup> इसलिए जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो वह जहाँ से वहाँ दो दिन और ठहरा।<sup>7</sup> इसके बाद उसने चेलों से कहा, “आओ, फिर से यहूदिया चलें।”<sup>8</sup> चेलों ने उससे कहा, “रब्बी, यहूदी अभी-अभी आपको पत्थरवाह करने की कोशिश कर रहे थे, और फिर भी आप वहाँ जा रहे हैं?”<sup>9</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “क्या दिन में बाहर घटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चलता है, तो वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस संसार का प्रकाश देखता है।”<sup>10</sup> परन्तु यदि कोई रात में चलता है, तो वह ठोकर खाता है, क्योंकि प्रकाश उसमें नहीं है।”

<sup>11</sup> यह उसने कहा, और इसके बाद उसने उनसे कहा, “हमारा मित्र लाज़र सो गया है; परन्तु मैं उसे जगाने के लिए जा रहा हूँ।”<sup>12</sup> तब चेलों ने उससे कहा, “प्रभु, यदि वह सो गया है, तो वह ठीक हो जाएगा।”<sup>13</sup> अब यीशु ने उसकी मृत्यु के बारे में कहा था, परन्तु वे समझे कि वह सामान्य नींद के बारे में कह रहा था।<sup>14</sup> इसलिए यीशु ने उन्हें स्पष्ट रूप से कहा, “लाज़र मर गया है,<sup>15</sup> और मैं तुम्हारे लिए प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, ताकि तुम विश्वास करो; परन्तु आओ, हम उसके पास चलें।”<sup>16</sup> इसलिए थोमा, जिसे दिदिमुस कहा जाता है, ने अपने साथी चेलों से कहा, “आओ, हम भी चलें, ताकि हम उसके साथ मर सकें।”

<sup>17</sup> इसलिए जब यीशु आया, तो उसने पाया कि वह पहले से ही चार दिन से कब्र में था।<sup>18</sup> अब बेथानी यरूशलैम के पास थी, लागभाग पंद्रह हस्तिया दूर;<sup>19</sup> और बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास आए थे, उनके भाई के बारे में उन्हें सांत्वना देने के लिए।<sup>20</sup> इसलिए जब मार्था ने सुना कि यीशु आ रहा है, तो वह उससे मिलने गई; परन्तु मरियम घर में ही रही।<sup>21</sup> मार्था ने यीशु से कहा, “प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई न मरता।”<sup>22</sup> फिर भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ आप परमेश्वर से माँगेंगे, परमेश्वर आपको देगा।<sup>23</sup> यीशु ने उससे कहा, “तुम्हारा भाई पुनर्जीवित होगा।”<sup>24</sup> मार्था ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि वह अतिम दिन के पुनरुत्थान में उठेगा।”<sup>25</sup> यीशु ने उससे कहा, “मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ; जो मुझ पर विश्वास करता है वह जीवित रहेगा, चाहे वह मर भी जाए,

## यूहन्ना

करती हो?"<sup>27</sup> उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु, मैंने विश्वास किया है कि आप मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र हैं, और वह जो संसार में आने वाला है।"

<sup>28</sup> जब उसने यह कहा, तो वह गई और अपनी बहन मरियम को बुलाया, चुपके से कहती हुई, "गुरु यहाँ है और तुम्हें बुला रहे हैं।"<sup>29</sup> और जब उसने यह सुना, तो वह जल्दी से उठी और उसके पास आई।<sup>30</sup> अब यीशु अभी तक गाँव में नहीं आया था, परन्तु वहीं था जहाँ मार्था उससे मिली थी।<sup>31</sup> तब यहूदी जो उसके साथ घर में थे और उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि मरियम जल्दी से उठी और बाहर गई, तो वे उसके पीछे हो लिए, यह सोचते हुए कि वह कब्र पर रोने जा रही है।<sup>32</sup> इसलिए जब मरियम उस स्थान पर पहुँची जहाँ यीशु था, उसने उसे देखा और उसके पाँवों पर गिरकर कहा, "प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई न मरता।"

<sup>33</sup> इसलिए जब यीशु ने उसे रोते हुए देखा, और यहूदी जो उसके साथ आए थे उन्हें भी रोते हुए देखा, तो वह आत्मा में गहराई से हिल गया और व्याकुल हो गया,<sup>34</sup> और उसने कहा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?" उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, आओ और देखो।"<sup>35</sup> यीशु रोया।<sup>36</sup> इसलिए यहूदी कहने लगे, "देखो, वह उससे कितना प्रेम करता था!"<sup>37</sup> परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "क्या यह व्यक्ति, जिसने अंधे व्यक्ति की अँखें खोली, इस व्यक्ति को मरने से नहीं रोक सकता था?"

<sup>38</sup> इसलिए यीशु, किर से भीतर से गहराई से हिलते हुए, कब्र पर आया। अब यह एक गुफा थी, और एक पत्थर उसके खिलाफ रखा हुआ था।<sup>39</sup> यीशु ने कहा, "पत्थर को हटाओ।"<sup>40</sup> मृतक की बहन मार्था ने उससे कहा, "प्रभु, इस समय तक उसमें से दुर्धां आ रही होगी, क्योंकि वह चार दिन से मरा हुआ है।"<sup>41</sup> यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी, तो तुम परमेश्वर की महिमा देखोगी?"<sup>42</sup> इसलिए उन्होंने पथर को हटा दिया। और यीशु ने अपनी अँखें उठाईं और कहा, "पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुनी है।<sup>43</sup> परन्तु मुझे पता था कि तू हमेशा मेरी सुनता है, किर भी, जो लोग यहाँ खड़े हैं उनके कारण मैंने यह कहा, ताकि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।"<sup>44</sup> और जब उसने ये बातें कहीं, तो उसने ऊँची आवाज में पुकारा, "लाज़र, बाहर आओ।"<sup>45</sup> तब व्यक्ति जो मरा हुआ था बाहर आया, हाथ और पैर पटियों से बंधे हुए, और उसका चेहरा कपड़े से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो, और उसे जाने दो।"

<sup>45</sup> इसलिए बहुत से यहूदी जो मरियम के पास आए थे, और जो उसने किया था उसे देखा, उस पर विश्वास किया।<sup>46</sup> परन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास गए और उन्हें वे बातें बताई जो यीशु ने की थीं।

<sup>47</sup> इसलिए मुख्य याजकों और फरीसियों ने एक सभा बुलाई, और वे कहने लगे, "हम इस बात के संबंध में क्या कर रहे हैं कि यह व्यक्ति बहुत से विन्ह कर रहा है?"<sup>48</sup> यदि हम उसे इसी तरह जाने दें, तो सब लोग उस पर विश्वास करेंगे, और रोम के लोग आकर हमारे स्थान और हमारे राष्ट्र को तो लेंगे।"<sup>49</sup> परन्तु उनमें से एक, कैफा, जो उस वर्ष का महायाजक था, ने उनसे कहा, "तुम कुछ भी नहीं जानते,"<sup>50</sup> और न ही यह ध्यान में रखते हो कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि एक व्यक्ति लोगों के लिए मरे, और पूरा राष्ट्र नष्ट न हो।"<sup>51</sup> अब उसने यह अपनी और से नहीं कहा, परन्तु क्योंकि वह उस वर्ष का महायाजक था, उसने भविष्यवाणी की कि यीशु राष्ट्र के लिए मरने वाला है;<sup>52</sup> और न केवल राष्ट्र के लिए, बल्कि इसलिए भी कि वह परमेश्वर के बच्चों को जो दूर-दूर फैले हुए हैं, एकत्रित कर सके।<sup>53</sup> इसलिए उस दिन से उन्होंने उसे मारने की योजना बनाई।

<sup>54</sup> इसलिए यीशु अब यहूदियों के बीच सार्वजनिक रूप से चलना जारी नहीं रखा, परन्तु वहाँ से जंगल के पास के क्षेत्र में चला गया, एक शहर जिसे एकैम कहा जाता है; और वहाँ वह चेलों के साथ रहा।<sup>55</sup> अब यहूदियों का फसह निकट था, और बहुत से लोग फसह से पहले अपने को शुद्ध करने के लिए देश से यरूशलाम गए।<sup>56</sup> इसलिए वे यीशु को ढूढ़ रहे थे, और मदिर क्षेत्र में खड़े होकर एक-दूसरे से कह रहे थे, "युम क्या सोचते हों? कि वह बिल्कुल भी पर्व में नहीं आएगा?"<sup>57</sup> अब मुख्य याजकों और फरीसियों ने आदेश दिया था कि यदि कोई जानता है कि वह कहाँ है, तो वह इसकी सूचना दे, ताकि वे उसे पकड़ सकें।

**12** अब फसह से छह दिन पहले, यीशु बेथानी आए, जहाँ लाज़र था, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था।<sup>2</sup> तो उन्होंने वहाँ उसके लिए एक भोजन तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही थी; और लाज़र उन लोगों में से एक था जो उसके साथ मेज पर बैठे थे।<sup>3</sup> तब मरियम ने एक पौड़ बहुत महंगा इत्र, शुद्ध नद का लिया, और यीशु के पैरों पर डाला और अपने बालों से उसके पैर पोछे; और घर इत्र की सुर्खंध से भर गया।<sup>4</sup> परन्तु यहूदा इस्करियोती, उसके चेतों में से एक, जो उसे धोखा देने की सोच रहा था, ,<sup>5</sup> "यह इत्र तीन सौ दीनार में क्यों नहीं बेचा गया, और उसकी रकम गरीबों को क्यों

## यूहन्ना

नहीं दी गई?"<sup>6</sup> उसने यह इसलिए नहीं कहा कि उसे गरीबों की चिंता थी, बल्कि इसलिए कि वह एक चोर था, और वह धन की थैली रखता था, और उसमें से चुराया करता था।<sup>7</sup> इसलिए यीशु ने कहा, "उसे अकेला छोड़ दो, ताकि वह इसे मेरे दफन के दिन के लिए रख सके।<sup>8</sup> क्योंकि तुम हमेशा गरीबों को अपने साथ पाओगे, परन्तु मुझे हमेशा नहीं पाओगे।"

<sup>9</sup> तब यूहूदियों की बड़ी भीड़ ने जान लिया कि वह वहाँ है, और वे आए, न केवल यीशु के कारण, बल्कि इसलिए भी कि वे लाज़र को देख सकें, जिसे उसने मेरे हुओं में से जिलाया था।<sup>10</sup> परन्तु महायाजकों ने लाज़र को भी मार डालने की योजना बनाई,<sup>11</sup> क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी जा रहे थे और यीशु पर विश्वास कर रहे थे।

<sup>12</sup> अगले दिन, जब बड़ी भीड़ जो पर्व में आई थी, ने सुना कि यीशु यूरूपालेम आ रहा है,<sup>13</sup> उहोंने खजूर की डालियाँ लीं और उससे मिलने के लिए बाहर गए, और विल्लाने लगे,

"होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, वास्तव में, इसाएल का राजा!"

<sup>14</sup> यीशु ने एक युवा गधे को पाया और उस पर बैठ गया; जैसा कि लिखा है:

"डर मत, सियोन की बेटी, देख, तेरा राजा आ रहा है, गधे के बच्चे पर बैठा हुआ!"

<sup>15</sup> इन बातों को उसके चेले पहले नहीं समझे; परन्तु जब यीशु की महिमा हुई, तब उन्हें याद आया कि ये बातें उसके बारे में लिखी गई थीं, और उन्होंने उसके लिए ये बातें की थीं।<sup>17</sup> तो लोग, जो उसके साथ थे जब उसने लाज़र को कब्र से बाहर बुलाया और उसे मेरे हुओं में से जिलाया, उसके बारे में गवाही देते रहे।<sup>18</sup> इसी कारण से लोग उससे मिलने आए, क्योंकि उन्होंने सुना था कि उसने यह चमत्कार किया है।<sup>19</sup> तो फरीसियों ने एक-दूसरे से कहा, "तुम देख रहे हो कि तुम कुछ नहीं कर रहे हो; देखो, सारी दुनिया उसके पीछे चली गई है!"

<sup>20</sup> अब कुछ यूनानी थे जो पर्व में पूजा करने के लिए जा रहे थे;<sup>21</sup> ये लोग किर फिलिप्पस के पास आए, जो गलीलिया के बेथैदा का था, और उससे अनुरोध कर रहे थे, कह रहे थे, "श्रीमान, हम यीशु को देखना चाहते हैं!"<sup>22</sup> फिलिप्पस ; किर अन्द्रियास और फिलिप्पस ।<sup>23</sup> परन्तु यीशु ने "मनुष्य के पुत्र की महिमा का समय

आ गया है।<sup>24</sup> सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक गेहूँ का दाना धरती में गिरकर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।<sup>25</sup> जो अपने जीवन से प्रेम करता है, वह उसे खो देगा, और जो इस संसार में अपने जीवन से धृणा करता है, वह उसे अनन्त जीवन के लिए सुरक्षित रखेगा।<sup>26</sup> यदि कोई मेरी सेवा करता है, तो उसे मेरे पीछे आना चाहिए; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करता है, तो पिता उसका सम्मान करेगा।

<sup>27</sup> "अब मेरी आत्मा व्याकुल हो गई है, और मैं क्या कहूँ? 'पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' परन्तु इसी उद्देश्य के लिए मैं इस घड़ी में आया हूँ।"<sup>28</sup> पिता, अपने नाम की महिमा कर।" तब सर्वा से एक आवाज़ आई: "मैंने उसकी महिमा की है, और फिर से उसकी महिमा करूँगा।"<sup>29</sup> तो लोगों की भीड़ जो वहाँ खड़ी थी और उसे सुना, कहने लाई कि यह गरज़ा है; दूसरे कह रहे थे, "एक सर्गीरूप ने उससे बात की है।"<sup>30</sup> यीशु ने उत्तर दिया और कहा, "यह आवाज़ मेरे लिए नहीं, बल्कि तुम्हारे लिए आई है।"<sup>31</sup> अब इस संसार पर न्याय है; अब इस संसार का शासक बाहर निकाला जाएगा।<sup>32</sup> और मैं, यदि मैं पृथ्वी से ऊपर उठाया जाऊँ, तो सब लोगों को अपनी ओर खींच लूँगा।"<sup>33</sup> अब वह यह कह रहा था कि वह किस प्रकार की मृत्यु मरने वाला था।

<sup>34</sup> तब भीड़ ने उससे उत्तर दिया, "हमने व्यवस्था से सुना है कि मसीह सदा के लिए रहेगा; और तू कैसे कहता है, 'मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाया जाना चाहिए?' यह मनुष्य का पुत्र कौन है?"<sup>35</sup> तो यीशु ने उनसे कहा, "योद्धे समय के लिए और प्रकाश तुम्हारे बीच है। जब तक तुम्हारे पास प्रकाश है, तब तक चलो, ताकि अंधकार तुम्हें न धेर ले, और जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है।"<sup>36</sup> जब तक तुम्हारे पास प्रकाश है, प्रकाश में विश्वास करो, ताकि तुम प्रकाश के पुत्र बन सको।" यीशु ने ये बातें कहीं, और वह चला गया और उनसे छिप गया।

<sup>37</sup> परन्तु उसने उनके सामने इतने चमत्कार किए, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे।<sup>38</sup> यह इसलिए हुआ कि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो, जो उसने कहा था:

"प्रभु हमारे समाचार पर किसने विश्वास किया? और प्रभु का भुजा किस पर प्रकट हुई है?"

# यूहन्ना

<sup>39</sup> इस कारण वे विश्वास नहीं कर सकते थे, क्योंकि यशायाह ने फिर कहा,

<sup>40</sup> “उसने उनकी अँखें अधी कर दी हैं और उसने उनका हृदय कठोर कर दिया है ताकि वे अपनी अँखों से न देखें और अपने हृदय से न समझें और न फिरें और मैं उन्हें चंगा न करौं।”

<sup>41</sup> यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी, और उसके बारे में कहा।

<sup>42</sup> फिर भी, बहुत से शासकों ने भी उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण वे उसे स्वीकार नहीं कर रहे थे, ताकि वे आराधनालय से बाहर न निकाले जाएँ; <sup>43</sup> क्योंकि वे लोगों की प्रशंसा की परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रेम करते थे।

<sup>44</sup> अब यीशु ने पुकार कर कहा, “जो मुझ पर विश्वास करता है वह केवल मुझ पर विश्वास नहीं करता, बल्कि उस पर भी जो मुझे भेजता है।” <sup>45</sup> और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। <sup>46</sup> मैं संसार में प्रकाश के रूप में आया हूँ, ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह अंधकार में न रहे। <sup>47</sup> यदि कोई मेरी शिक्षाएँ सुनता है और उन्हें नहीं मानता, तो मैं उसे याप नहीं करता, क्योंकि मैं संसार का याप करने नहीं, बल्कि संसार को बचाने आया हूँ। <sup>48</sup> जो मुझे अस्वीकार करता है और मेरी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करता, उसके पास एक है जो उसका याप करेगा: वचन जो मैंने कहा। वही उसे अंतिम दिन याप करेगा। <sup>49</sup> क्योंकि मैंने अपनी ओर से नहीं कहा, बल्कि पिता ने स्वयं जिसने मुझे भेजा है, मुझे यह आज्ञा दी है कि क्या कहना है और क्या बोलना है। <sup>50</sup> और मैं जानता हूँ कि उसका समय आ गया है कि वह इस संसार से पिता के पास चला जाएगा, उसने अपने उन लोगों से प्रेम किया जो संसार में थे, और उसने अंत तक उनसे प्रेम किया। <sup>2</sup> और भोजन के दौरान, शैतान ने पहले ही शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के दिल में डाल दिया था कि वह उसे धोखा दे, <sup>3</sup> यीशु यह जानते हुए कि पिता ने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है, और वह परमेश्वर से आया है और परमेश्वर के पास लौट रहा है, <sup>4</sup> भोजन से और ; और उसने एक तौलिया लिया और उसे अपने चारों ओर बांध लिया। <sup>5</sup> फिर उसने , और

चेलों के पांव धोने और उन्हें उस तौलिये से पौछने लगा जो उसने अपने चारों ओर बांध रखा था।

<sup>6</sup> तब वह शमौन पतरस के पास । उसने उससे , “प्रभु, क्या आप मेरे पांव धो रहे हैं?” <sup>7</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “जो मैं कर रहा हूँ, उसे तुम अभी नहीं समझते, परन्तु बाद में समझोगे।” <sup>8</sup> पतरस ने उससे , “आप कभी मेरे पांव नहीं धोएंगे!” यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैं तुम्हें नहीं धोऊं, तो तुम्हारा मुझसे कोई संबंध नहीं।” <sup>9</sup> शमौन पतरस ने उससे , “प्रभु, किर मेरे पांव ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और सिर भी धो दीजिए।”

<sup>10</sup> यीशु ने उससे , “जो स्नान कर चुका है उसे केवल पांव धोने की आवश्यकता है; अन्यथा वह पूरी तरह से शुद्ध है। और तुम शुद्ध हो—परन्तु तुम सब नहीं।” <sup>11</sup> क्योंकि वह जानता था कि कौन उस धोखा दे रहा है; इसीलिए उसने कहा, “तुम सब शुद्ध नहीं हो।”

<sup>12</sup> फिर, जब उसने उनके पांव धोए, और अपने वस्त्र लिए और फिर से मेज पर बैठ गया, तो उसने उनसे , “क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है?

<sup>13</sup> तुम मुझे ‘रुरु’ और ‘प्रभु’ कहते हों; और तुम सही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। <sup>14</sup> तो यदि मैं, प्रभु और गुरु, तुम्हारे पांव धोऊं, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोने चाहिए। <sup>15</sup> क्योंकि मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है, ताकि तुम भी वैसे ही करो जैसे मैंने तुम्हारे लिए किया है। <sup>16</sup> सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, न ही वह जो भेजा गया है उससे बड़ा होता है जिसने उसे भेजा है। <sup>17</sup> यदि तुम इन बातों को जानते हो, तो तुम धन्य हो यदि तुम इन्हें करते हो।

<sup>18</sup> मैं तुम सबके बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ जिन्हें मैंने चुना है; परन्तु यह इसलिए हो रहा है ताकि शास्त्र पूरा हो: ‘जो मेरी रोटी स्नाता है उसने मेरे विश्वद्व अपनी एड़ी उठाई है।’ <sup>19</sup> अब से मैं तुम्हें पहले से भौंता रहा हूँ, ताकि जब यह हो, तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ। <sup>20</sup> सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई भी मेरे द्वारा भेज गए को स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है; और जो मुझे स्वीकार करता है वह उसे स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।”

<sup>21</sup> जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो वह आत्मा में व्याकुल हो गया, और गगाही दी और कहा, “सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे धोखा देगा।” <sup>22</sup> चेले एक-दूसरे की ओर देखने लगे, यह जानने में असमर्थ कि वह किसके बारे में कह रहा था। <sup>23</sup> यीशु के

## यूहन्ना

सीने पर द्युका हुआ उसका एक चेला था, जिसे यीशु प्रेम करता था।<sup>24</sup> तो शमौन पतरस ने इस चेते को और उससे, “हमें बताओ कि वह किसके बारे में कह रहा है।”<sup>25</sup> तब वह बस यीशु के सीने पर द्युक गया और उससे, “प्रभु, वह कौन है?”<sup>26</sup> यीशु ने तब, “वह व्यक्ति है जिसके लिए मैं रोटी का टुकड़ा डुबोकर उसे द्यांगा।” तो जब उसने रोटी का टुकड़ा डुबोया, तो उसने उसे यहदा को, शमौन इकरियोती के पुत्र को।<sup>27</sup>

इसके बाद, शैतान उसमें प्रवेश कर गया। इसलिए यीशु ने उससे, “जो तुम कर रहे हो, उसे जल्दी करो।”<sup>28</sup> अब मेज पर बैठे हुए किसी को भी यह नहीं पता था कि उसने उससे यह क्यों कहा।<sup>29</sup> क्योंकि कुछ सोच रहे थे, क्योंकि यहदा के पास धन का बक्सा था, कि यीशु उससे कह रहा था, “वर्ष के लिए जो चीजें हमें चाहिए उन्हें खरीदो”; या फिर, कि वह गरीबों को कुछ दे।<sup>30</sup> तो रोटी का टुकड़ा लेने के बाद, वह तुरंत चला गया; और वह रात थी।

<sup>31</sup> इसलिए, जब वह चला गया, यीशु ने, “अब मनुष्य का पुत्र महिमा प्राप्त करता है, और परमेश्वर उसमें महिमा प्राप्त करता है, तो परमेश्वर उसे अपने में भी महिमा देगा, और तुरंत उसे महिमा देगा।”<sup>31</sup> छोटे बच्चों, मैं अभी थोड़ी देर और तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे खोजोगे; और जैसे मैंने यहदियों से कहा, अब मैं तुमसे भी कहता हूँ: “जहाँ मैं जा रहा हूँ, तुम नहीं आ सकते।”<sup>32</sup> मैं तुम्हें एक नई आज्ञा दे रहा हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो; जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।<sup>33</sup> इससे सभी लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो: यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखते हो।”

<sup>36</sup> शमौन पतरस ने उससे, “प्रभु, आप कहाँ जा रहे हैं?” यीशु ने उत्तर दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ, तुम अभी मेरे पीछे नहीं आ सकते; परन्तु बाद में तुम आओगो।”<sup>37</sup> पतरस ने उससे, “प्रभु, मैं अभी आपके पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं आपके लिए अपना जीवन दे द्यांगा!”<sup>38</sup> यीशु ने, “क्या तुम मेरे लिए अपना जीवन दोगे? सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, मुर्गा बांग नहीं देगा जब तक तुम मुझे तीन बार इनकार नहीं करोगे।”

**14** “तुम्हारे हृदय व्याकुल न हों; तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, मुझ पर भी विश्वास करो।”<sup>2</sup> मेरे पिता के घर में बहुत से निवास स्थान हैं; यदि ऐसा न होता, तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जा रहा हूँ?<sup>3</sup> और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ, तो मैं फिर आऊँगा और तुम्हें अपने

पास ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम भी रहो।<sup>4</sup> और तुम जानते हो कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।”<sup>5</sup> धॉमस ने उससे कहा, “प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं; हम मार्ग कैसे जानें?”<sup>6</sup> यीशु ने उससे कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ, और जीवन हूँ; कोई भी मेरे बिना पिता के पास नहीं आता।”<sup>7</sup> यदि तुमने मुझे जाना होता, तो तुम मेरे पिता को भी जानते; अब से तुम उसे जानते हो, और उसे देख चुके हो।”

<sup>8</sup> फिलिप्पस ने उससे कहा, “प्रभु, हमें पिता को दिखा दीजिए, और यह हमारे लिए पर्याप्त है।”<sup>8</sup> यीशु ने उससे कहा, “क्या मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, और फिर भी तुमने मुझे नहीं जाना, फिलिप्पस? जिसने मुझे देखा है उससे पिता को देखा है; तुम कैसे कह सकते हो, ‘हमें पिता को दिखा दीजिए?’<sup>10</sup> क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता मैं हूँ, और पिता मुझ में है? जो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ, वे मैं अपनी ओर से नहीं बोलता, परंतु पिता, जो मुझ में रहता है, वही अपने कार्य करता है।”<sup>11</sup> मुझ पर विश्वास करो कि मैं पिता मैं हूँ और पिता मुझ में है; अन्यथा उन कार्यों के कारण विश्वास करो।<sup>12</sup> सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, जो मुझ पर विश्वास करता है, वही कार्य जो मैं करता हूँ, वह भी करेगा; और इनसे भी बड़े कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ।<sup>13</sup> और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगोगे, मैं वही करूँगा, ताकि पुत्र मैं पिता की महिमा हो।<sup>14</sup> यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।

<sup>15</sup> “यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।”<sup>15</sup> मैं पिता से प्रार्थना करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, ताकि वह संदेव तुम्हारे साथ रहे,<sup>16</sup> वह सहायक सत्य की आत्मा है, जिसे संसार प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसे देखता नहीं और न ही उसे जानता है, परंतु तुम उसे जानते हो।<sup>17</sup> क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम मैं होगा।<sup>18</sup> मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा; मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ।<sup>19</sup> यो ठांडे समय बाद, संसार मुझे नहीं देखेगा, परंतु तुम मुझे देखेगे; क्योंकि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।<sup>20</sup> उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता मैं हूँ, और तुम मुझे मैं हो, और मैं तुम मैं हूँ।<sup>21</sup> जो मेरी आज्ञाओं को रखता है और उनका पालन करता है, वह मेरे पिता द्वारा प्रेम किया जाएगा, और मैं उससे प्रेम करूँगा और अपने आप को उसे प्रकट करूँगा।”

<sup>22</sup> यहदा (इकरियोती नहीं) ने उससे कहा, “प्रभु, क्या हुआ कि आप हमें अपने आप को प्रकट करने जा रहे हैं,

## यूहन्ना

और संसार को नहीं?”<sup>23</sup> यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “यदि कोई मुझसे प्रेम करता है, तो वह मेरे वचन का पालन करेगा; और मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे।

<sup>24</sup> जो मुझसे प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचनों का पालन नहीं करता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं है, परंतु पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

<sup>25</sup> ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमसे कही हैं।<sup>26</sup> परंतु सहायक, पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम में भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह तुम्हें स्मरण कराएगा।<sup>27</sup> मैं तुम्हें शांति छोड़ता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ; जैसा संसार देता है वैसा मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारे हृदय व्याकुल न हों, और न भयभीत हों।<sup>28</sup> तुमने सुना कि मैंने तुमसे कहा, मैं जा रहा हूँ, और मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ।<sup>29</sup> यदि तुम मुझसे प्रेम करते, तो तुम आनंदित होते, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ, क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है।<sup>29</sup> और अब मैंने तुम्हें पहले से बता दिया है, ताकि जब यह हो, तो तुम विश्वास करो।<sup>30</sup> मैं अब तुम्हारे साथ अधिक बातें नहीं करूँगा, क्योंकि संसार का शासक आ रहा है, और उसका मुझ पर कुछ नहीं है,<sup>31</sup> परंतु ताकि संसार जान सके कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ, मैं वही करता हूँ जो पिता ने मुझे आज्ञा दी है। उठो, यहाँ से चलें।

### 15

“मैं सच्ची दाखलता हूँ, और मेरा पिता माली है।

<sup>2</sup> मुझ में जो हर डाल फल नहीं लाती, उसे वह काट डालता है; और जो फल लाती है, उसे वह छाँटता है ताकि वह और अधिक फल लाए।<sup>3</sup> तुम पहले ही उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, शुद्ध हो चुके हो।<sup>4</sup> मुझ में बने रहो, और मैं तुम मैं। जैसे डाल अपने आप फल नहीं ला सकती जब तक कि वह दाखलता में न बढ़ी रहे, वैसे ही तुम भी नहीं जब तक कि तुम मुझ में न बढ़े रहो।<sup>5</sup> मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वही बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते।<sup>6</sup> यदि कोई मुझ में नहीं बना रहता, तो वह डाल के समान बाहर फेंका जाता है और सूखा जाता है; और लोग उन्हें इकट्ठा करके आग में डाल देते हैं, और वे जल जाती हैं।<sup>7</sup> यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरे वचन तुम में बने रहें, तो जो कुछ तुम चाहोगे, मांगो, और वह तुम्हारे लिए किया जाएगा।<sup>8</sup> मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत फल लाओ, और इस प्रकार मेरे चेते सिद्ध हो।

<sup>9</sup> जैसे पिता ने मुझ से प्रेम किया, वैसे ही मैंने तुम से प्रेम किया; मेरे प्रेम में बने रहो।<sup>10</sup> यदि तुम मेरी आज्ञाओं को

मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना हूँ।<sup>11</sup> मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि मेरा आनंद तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनंद परिपूर्ण हो।

<sup>12</sup> “यह मेरी आज्ञा है, कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो, जैसा कि मैंने तुमसे प्रेम किया है।<sup>13</sup> इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं है कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना जीवन दे।<sup>14</sup> यदि तुम वह करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तो तुम मेरे प्रिय हो।<sup>15</sup> अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैंने अपने पिता से सुना है, वह सब मैंने तुम्हें बताया है।<sup>16</sup> तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है, और तुम्हें ठहराया है कि तुम जाकर फल लाओ, और तुम्हारा फल बना रहे, ताकि जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगोगे, वह तुम्हें दे।<sup>17</sup> मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूँ, कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो।

<sup>18</sup> “यदि संसार तुमसे बैर करता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुमसे पहले मुझसे बैर किया है।<sup>19</sup> यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपने लोगों से प्रेम करता; परन्तु क्योंकि तुम संसार के नहीं हो, परन्तु मैंने तुम्हें संसार से चुना है, इसलिए संसार तुमसे बैर करता है।<sup>20</sup> वह वचन स्मरण रखो जो मैंने तुमसे कहा था, ‘दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।’ यदि उन्होंने मुझ पर अत्याचार किया, तो वे तुम पर भी अत्याचार करेंगे; यदि उन्होंने मेरे वचन को माना, तो वे तुम्हारे वचन को भी मानेंगे।<sup>21</sup> परन्तु ये सब बातें वे तुम्हारे साथ मेरे नाम के कारण करेंगे, क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है।<sup>22</sup> यदि मैं नहीं आया होता और उनसे बातें नहीं की होतीं, तो उनके पास पाप नहीं होता; परन्तु अब उनके पास उनके पाप का कोई बहाना नहीं है।<sup>23</sup> जो मुझसे बैर करता है, वह मेरे पिता से भी बैर करता है।<sup>24</sup> यदि मैंने उनके बीच वे काम नहीं किए होते जो किसी और ने नहीं किए, तो उनके पास पाप नहीं होता; परन्तु अब उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और बैर किया है।<sup>25</sup> परन्तु यह इसलिए हुआ कि जो वचन उनकी व्यवस्था में लिखा है वह पूरा हो: ‘उन्होंने मुझसे बिना कारण बैर किया।’

<sup>26</sup> जब सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता से आता है, वह मेरी गवाही देगा,<sup>27</sup> और तुम भी गवाही दोगे, क्योंकि तुम आरंभ से मेरे साथ रहे हो।

## यूहन्ना

**16** <sup>१</sup>ये बातें मैंने तुमसे कही हैं ताकि तुम पाप में न पड़ो। <sup>२</sup> वे तुम्हें आराधनालय से बाहर निकाल देंगे, फिर भी एक समय आएगा जब जो कोई तुम्हें मारेगा, वह सोचेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। <sup>३</sup> ये बातें वे इसलिए करेंगे क्योंकि उहोंने न तो पिता को जाना है और न मुझे। <sup>४</sup> परंतु ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, ताकि जब उनका समय आए, तुम याद करो कि मैंने तुम्हें उनके बारे में बताया था। हालांकि, मैंने ये बातें तुमसे अरंभ में नहीं कहीं, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

<sup>५</sup> <sup>६</sup>परंतु अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है, और तुममें से कोई मुझसे नहीं पृछता, तु कहाँ जा रहा है? <sup>७</sup> <sup>८</sup>परंतु क्योंकि मैंने ये बातें तुमसे कही हैं, तुम्हारे हृदय में शोक भर गया है। <sup>९</sup> परंतु मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: तुम्हारे लिए यह लाभदायक है कि मैं चला जाऊँ; क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा; परंतु यदि मैं जाऊँ, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। <sup>१०</sup> और जब वह आएगा, तो वह सासार को पाप, धर्म, और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा। <sup>११</sup> पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते, <sup>१२</sup> और धर्म के विषय में, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब नहीं देखोगे; <sup>१३</sup> और न्याय के विषय में, क्योंकि इस संसार का शासक न्याय किया गया है।

<sup>१२</sup> <sup>१३</sup>मेरे पास तुम्हें कहने के लिए और भी बहुत बातें हैं, परंतु तुम उहोंने इस समय सहन नहीं कर सकते। <sup>१४</sup> परंतु जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, वह तुम्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, परंतु जो कुछ वह सुनेगा, वही बोलेगा, और वह तुम्हें अने वाली बातों का खुलासा करेगा। <sup>१५</sup> वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मुझसे लेगा और तुम्हें प्रकट करेगा। <sup>१६</sup> पिता की सारी बातें मेरी हैं; इसलिए मैंने कहा कि वह मुझसे लेता है और तुम्हें प्रकट करेगा।

<sup>१६</sup> <sup>१७</sup>"थोड़ी देर में, तुम मुझे अब नहीं देखोगे; और फिर थोड़ी देर में, तुम मुझे देखोगे।" <sup>१८</sup> तब उसके कुछ स्थिरों ने एक दूसरे से कहा, "यह क्या है जो वह हमें कह रहा है, थोड़ी देर में, और तुम मुझे नहीं देखोगे; और फिर थोड़ी देर में, और तुम मुझे देखोगे; और, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ?" <sup>१९</sup> तो वे कह रहे थे, "यह क्या है जो वह कहता है, 'थोड़ी देर?' हम नहीं जानते कि वह किस बारे में बात कर रहा है!"

<sup>२०</sup> यीशु ने जान लिया कि वे उससे प्रश्न करना चाहते हैं, और उसने उनसे कहा, "क्या तुम इस बारे में विचार कर रहे हो, जो मैंने कहा, 'थोड़ी देर में, और तुम मुझे नहीं

देखोगे; और फिर थोड़ी देर में, और तुम मुझे देखोगे?' <sup>२१</sup> मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परंतु संसार आनन्दित होगा; तुम शोक करोगे, परंतु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा। <sup>२२</sup> जब भी कोई स्त्री प्रसव में होती है, उसे पीड़ा होती है, क्योंकि उसका समय आ गया है; परंतु जब वह बच्चे को जन्म देती है, तो वह कष्ट को याद नहीं करती, क्योंकि इस आनन्द के कारण कि एक बच्चा संसार में जन्मा है। <sup>२३</sup> इसलिए अब तुम्हें भी शोक है; परंतु मैं तुम्हें फिर देखूँगा, और तुम्हारा हृदय आनन्दित होगा, और कोई तुम्हारा आनन्द तुमसे नहीं छीन सकेगा।

<sup>२४</sup> और उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, यदि तुम पिता से मेरे नाम में कुछ भी मांगोगे, तो वह तुम्हें देगा। <sup>२५</sup> अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं मांगा है; मांगो और तुम्हें मिलेगा, ताकि तुम्हारा आनन्द पूर्ण हो सके।

<sup>२६</sup> <sup>२७</sup> <sup>२८</sup> <sup>२९</sup>ये बातें मैंने तुमसे दृष्टितों में कही हैं; एक समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टितों में नहीं बोलूँगा, परंतु तुम्हें पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बताऊँगा। <sup>३०</sup> उस दिन तुम मेरे नाम में मांगोगे, और मैं तुमसे यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं तुम्हारे लिए पिता से निवेदन करूँगा; <sup>३१</sup> क्योंकि पिता स्वयं तुमसे प्रेम करता है, क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम किया है, और विश्वास किया है कि मैं पिता से आया हूँ। <sup>३२</sup> मैं पिता से आया और संसार में आया; फिर, मैं संसार को छोड़ रहा हूँ और पिता के पास जा रहा हूँ।"

<sup>३३</sup> उसके शिष्यों ने कहा, "देखो, अब तुम स्पष्ट रूप से बोल रहे हो और कोई दृष्टित नहीं उपयोग कर रहे हो।" <sup>३४</sup> अब हम जानते हैं कि तुम सब कुछ जानते हो, और तुम्हें किसी से प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं है; इसलिए हम विश्वास करते हैं कि तुम परमेश्वर से आए हो।" <sup>३५</sup> यीशु ने उनसे उत्तर दिया, "क्या अब तुम विश्वास करते हो?" <sup>३६</sup> देखो, एक समय आ रहा है, और अब आ गया है, जब तुम तिर-बितर हो जाओगे, प्रयोक्त अपने घर की ओर, और मुझे अकेला छोड़ देगे, फिर भी मैं अकेला नहीं हूँ, क्योंकि पिता मेरे साथ है। <sup>३७</sup> ये बातें मैंने तुमसे कही हैं ताकि मुझमें तुम्हें शांति मिले। संसार में तुम्हें करोश होगा, परंतु साहस रखो; मैंने संसार पर विजय प्राप्त की है।"

**१७** यीशु ने ये बातें कहीं; और अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर कहा, "पिता, वह घड़ी आ गई है; अपने पुत्र की महिमा कर, ताकि पुत्र तेरी महिमा करे, <sup>२</sup> जैसे तूने उसे सब मनुष्यों पर अधिकार दिया है, ताकि वह

## यूहन्ना

उन सबको, जिन्हें तूने उसे दिया है, अनन्त जीवन दे सके।<sup>3</sup> और अनन्त जीवन यही है कि वे तुझे, जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें।<sup>4</sup> मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की, उस काम को पूरा करके जो तूने मुझे करने के लिए दिया था।<sup>5</sup> और अब, हे पिता, तू मुझे अपनी ही साथ महिमा कर, उस महिमा के साथ जो मेरे पास तेरे साथ थी, जब संसार नहीं था।

<sup>6</sup> मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने मुझे संसार से दिया; वे तेरे थे, और तूने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया है।<sup>7</sup> अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, वह सब तुझे से है;<sup>8</sup> क्योंकि जो वचन तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें दे दिए; और उन्होंने उन्हें ग्रहण किया और सचमुच समझ लिया कि मैं तुझे से आया हूँ, और उन्होंने विश्वास किया कि तूने मुझे भेजा है।

<sup>9</sup> मैं उनके लिए विनती करता हूँ, मैं संसार के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए जो तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं;<sup>10</sup> और जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा है, और जो तेरा है, वह मेरा है; और मैं उनमें महिमा पा चुका हूँ।<sup>11</sup> मैं अब संसार में नहीं रहूँगा; परन्तु वे संसार में हैं, और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। पवित्र पिता, उन्हें अपने नाम में रख, जो तूने मुझे दिया है, ताकि वे एक हों, जैसे हम हैं।<sup>12</sup> जब तक मैं उनके साथ था, मैं उन्हें तेरे नाम में रखता था, जो तूने मुझे दिया है; और मैंने उनकी रक्षा की, और उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ सिवाय विनाश के पुत्र के, ताकि पवित्र शास्त्र पूरा हो।

<sup>13</sup> परन्तु अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ; और ये बातें मैं संसार में कहता हूँ ताकि वे मेरे अनन्द को अपने में पूरा करें।<sup>14</sup> मैंने उन्हें तेरा वचन दिया है; और संसार ने उनसे बैर किया है, क्योंकि वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं संसार का नहीं हूँ।<sup>15</sup> मैं तुझे से यह नहीं माँगता कि तू उन्हें संसार से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुर्घ से बचा।<sup>16</sup> वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं संसार का नहीं हूँ।<sup>17</sup> सत्य में उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।<sup>18</sup> जैसे तूने मुझे संसार में भेजा, वैसे ही मैंने उन्हें संसार में भेजा।<sup>19</sup> और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी सत्य में पवित्र किए जाएँ।

<sup>20</sup> मैं केवल इनके लिए ही विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे,<sup>21</sup> कि वे सब एक हों; जैसे तू, पिता, मुझे मैं हूँ और मैं तुझे मैं हूँ, कि वे भी हम में एक हों, ताकि संसार

विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।<sup>22</sup> जो महिमा तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दी है, ताकि वे एक हों, जैसे हम एक हैं;<sup>23</sup> मैं उनमें और तू मुझ में, ताकि वे एकता में सिद्ध हों, ताकि संसार जान ले कि तूने मुझे भेजा है, और तूने उनसे प्रेम किया, जैसे तूने मुझ से प्रेम किया।

<sup>24</sup> पिता, मैं चाहता हूँ कि वे भी, जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरे साथ हों, ताकि वे मेरी महिमा देखें, जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने मुझ से प्रेम किया है, जब से संसार की नीव नहीं रखी गई थी।<sup>25</sup> धर्मीय, यद्यपि संसार ने तुझे नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना है, और इन लोगों ने जाना है कि तूने मुझे भेजा है;<sup>26</sup> और मैंने उन्हें तेरा नाम बताया है, और बताता रहूँगा, ताकि वह प्रेम, जिससे तूने मुझ से प्रेम किया, उनमें हो, और मैं उनमें।

**18** जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो वह अपने चेलों के साथ किंद्रीन धाटी के पार चला गया, जहाँ एक बगीचा था जिसमें वह और उसके चेले प्रवेश किए।<sup>2</sup> अब यहूदा, जो उसे धोखा दे रहा था, उस थान को भी जानता था, क्योंकि यीशु अक्सर वहाँ अपने चेलों के साथ मिला करता था।<sup>3</sup> इसलिए यहूदा, रोमी सैनिकों और महायाजकों और फरीसियों के अधिकारियों को लेकर, लालटेन, मशालें और हथियार लेकर वहाँ आया।<sup>4</sup> यीशु, जो सब बातें जानता था जो उस पर आने वाली थीं, खुलकर बाहर आया और उनसे कहा, "तुम किसे खोज रहे हो?"<sup>5</sup> उन्होंने उसे उत्तर दिया, "नासरी यीशु!"<sup>6</sup> उसने उनसे कहा, "मैं वही हूँ।"<sup>7</sup> और यहूदा भी, जो उसे धोखा दे रहा था, उनके साथ खड़ा था।<sup>8</sup> अब जब उसने उनसे कहा, "मैं वही हूँ," तो वे पीछे हट गए और भूमि पर गिर पड़े।<sup>9</sup> उसने फिर उनसे पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो?"<sup>10</sup> और उन्होंने कहा, "नासरी यीशु!"<sup>11</sup> यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने तुमसे कहा कि मैं वही हूँ।" इसलिए पदि तुम मुझे खोज रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो।"<sup>12</sup> <sup>13</sup> यह इसलिए हुआ कि जो वचन उसने कहा था वह पूरा हो सके: "जो तूने मुझे दिए उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया।"<sup>14</sup> तब शमैन पतरस, जिसके पास तलवार थी, उसे खींचकर महायाजक के दास पर बार किया, और उसका दाहिना कान काट दिया; और दास का नाम मलखुस था।<sup>15</sup> इसलिए यीशु ने पतरस से कहा, "तलवार को म्यान में रख; जो याला पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे नहीं पीकूँगा?"

<sup>12</sup> इसलिए रोमी सैनिकों, सेनापति और यहूदियों के अधिकारियों ने यीशु को गिरफ्तार किया और उसे बाँध लिया,<sup>13</sup> और उसे पहले हन्ता के पास ले गए, क्योंकि वह

## यूहन्ना

कैफा का ससुर था, जो उस वर्ष का महायाजक था।<sup>14</sup> अब यह कैफा ही था जिसने यहूदियों को सलाह दी थी कि लोगों के लिए एक आदमी का मरना उनके हित में है।

<sup>15</sup> शमौन पतरस यीशु का अनुसरण कर रहा था, और एक और चेला भी। अब वह चेला महायाजक को जानता था, और वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में प्रवेश किया,<sup>16</sup> परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा था। इसलिए दूसरा चेला, जो महायाजक को जानता था, बाहर गया और द्वारपाल से बात की, और पतरस को अंदर लाया।<sup>17</sup> तब द्वारपाल दासी ने पतरस से कहा, "क्या तू भी इस मनुष्य का चेला नहीं है?" उसने कहा, "मैं नहीं!"<sup>18</sup> अब दास और अधिकारी वहाँ खड़े थे, उन्होंने एक अंगीठी जलाई थी, क्योंकि ठंड थी और वे अपने आप को गर्म कर रहे थे; और पतरस भी उनके साथ खड़ा होकर अपने आप को गर्म कर रहा था।

<sup>19</sup> तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों और उसकी शिक्षा के बारे में प्रश्न किया।<sup>20</sup> यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैंने संसार से खुले आम बातें की हैं। मैंने हमेशा आराधनालयों और मंदिर क्षेत्र में सिखाया है, जहाँ सभी यहूदी इकट्ठा होते हैं; और मैंने कुछ भी गुप्त नहीं कहा।<sup>21</sup> तू मुझसे क्यों पूछता है? उनसे पूछ जो सुन चुके हैं कि मैंने उनसे क्या कहा। देख, ये लोग जानते हैं कि मैंने क्या कहा।"<sup>22</sup> परन्तु जब उसने यह कहा, तो पास खड़े अधिकारियों में से एक ने यीशु को मारा, यह कहते हुए, "क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?"<sup>23</sup> यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि मैंने गलत कहा है, तो गलत का प्रमाण दे; परन्तु यदि सही कहा है, तो तू मुझे क्यों मारता है?"<sup>24</sup> इसलिए हन्ना ने उसे बाँधकर कैफा महायाजक के पास भेज दिया।

<sup>25</sup> अब शमौन पतरस अभी भी खड़ा होकर अपने आप को गर्म कर रहा था। इसलिए उन्होंने उससे कहा, "क्या तू भी उसके चेलों में से एक नहीं है?" उसने इनकार किया, और कहा, "मैं नहीं!"<sup>26</sup> महायाजक के दासों में से एक, जो उस व्यक्ति का रिश्टेदार था जिसका कान पतरस ने काट दिया था, ने कहा, "क्या मैंने तुझे उसके साथ बगीचे में नहीं देखा?"<sup>27</sup> तब पतरस ने फिर से इनकार किया, और तुरंत एक मुर्गा बांग दिया।

<sup>28</sup> तब वे यीशु को कैफा से प्रेटोरियम में ले गए, और यह सुबह का समय था; और वे स्वयं प्रेटोरियम में प्रवेश नहीं किए, ताकि वे अशुद्ध न हों, परन्तु पास्का खा सकें।<sup>29</sup> इसलिए पीलातुस बाहर आया और उनसे कहा, "तुम इस

मनुष्य के विरुद्ध क्या आरोप लाते हो?"<sup>30</sup> उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, "यदि यह मनुष्य अपराधी न होता, तो हम इसे तो पास न लाते।"<sup>31</sup> इसलिए पीलातुस ने उनसे कहा, "तुम इसे ले जाओ, और अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करो!" यहूदियों ने उससे कहा, "हमारे लिए किसी को मृत्यु दंड देना उचित नहीं है।"<sup>32</sup> यह इसलिए हुआ कि यीशु का वह वचन पूरा हो सके, जिसमें उसने कहा था कि वह किस प्रकार की मृत्यु मरेगा।

<sup>33</sup> इसलिए पीलातुस फिर से प्रेटोरियम में गया, और यीशु को बुलाकर उससे कहा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"<sup>34</sup> यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू यह अपनी ओर से कहता है, या दूसरों ने तुझसे मेरे बारे में कहा?"<sup>35</sup> पीलातुस ने उत्तर दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी अपनी जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौंप दिया है; तूने क्या किया है?"<sup>36</sup> यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ में न सौंप जाऊँ; परन्तु जैसा है, मेरा राज्य इस लोक का नहीं है।"<sup>37</sup> इसलिए पीलातुस ने उससे कहा, "तो तू राजा है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तू सही कहता है कि मैं राजा हूँ। इसी उद्देश्य के लिए मैं जन्मा हूँ, और इसी के लिए मैं संसार में आया हूँ; सत्य की गवाही देने के लिए। जो कोई सत्य का है, वह मेरी आवाज़ सुनता है!"<sup>38</sup> पीलातुस ने उससे कहा, "सत्य क्या है?" और यह कहने के बाद, वह फिर से यहूदियों के पास आया और उनसे कहा, "मैं उसके मामले में कोई दोष नहीं पाता।"<sup>39</sup> हालांकि, तुम्हारी एक प्रथा है कि मैं पास्का पर तुम्हारे लिए एक कैटी को छोड़ दूँ। इसलिए क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?"<sup>40</sup> तो उन्होंने फिर से चिल्लाकर कहा, "इस मनुष्य को नहीं, बल्कि बरअब्बा को!" अब बरअब्बा एक विद्रोही था।

**19** तब पीलातुस ने यीशु को लिया और उसे कोडे लगवाए।<sup>2</sup> और सैनिकों ने कॉटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंगनी वस्त्र पहनाया;<sup>3</sup> और वे बार-बार उसके पास आकर कहते, "यहूदियों के राजा को नमस्कार!" और उसके चेहरे पर बार-बार थप्पड़ मारा।<sup>4</sup> फिर पीलातुस बाहर आया और उनसे कहा, "देखो, मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ ताकि तुम जान लो कि मैं उसके विरुद्ध काई दोष नहीं पाता।"<sup>5</sup> यीशु फिर बाहर आया, कॉटों का मुकुट और बैंगनी वस्त्र पहने हुए। और पीलातुस ने उनसे कहा, "देखो, यह मनुष्य है!"<sup>6</sup> जब प्रधान याजकों ने उसे देखा, तो उन्होंने चिल्लाकर कहा, "क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस

## यूहन्ना

पर चढ़ाओ!” पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम उसे ले जाकर कूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उसके विरुद्ध कोई दोष नहीं पाता।”<sup>7</sup> यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, “हमारे पास एक व्यवस्था है, और उस व्यवस्था के अनुसार उसे मरना चाहिए, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।”<sup>8</sup> इसलिए जब पीलातुस ने यह बात सुनी, तो वह और भी डर गया;<sup>9</sup> और वह फिर प्रतीरियम में गया और यीशु से कहा, “तू कहाँ से है?” परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया।<sup>10</sup> तब पीलातुस ने उससे कहा, “या तू मुझसे बात नहीं कर रहा है? क्या तू नहीं जानता कि मुझे तुझे छोड़ने का अधिकार है, और मुझे तुझे कूस पर चढ़ाने का अधिकार है?”<sup>11</sup> यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तेरे पास मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता, यदि वह तुझे ऊपर से न दिया गया होता; इसी कारण जिसने मुझे तेरे हाथ में सौंपा है उसका पाप अधिक है।”<sup>12</sup> इस कारण से, पीलातुस उसे छोड़ने का प्रयास करने लगा; परन्तु यहूदी चिल्लाकर कहने लगे, “यदि तू इस मनुष्य को छोड़ता हो, तो तू कैसर का मित्र नहीं होता, जो कोई अपने आप को राजा बनाता है, वह कैसर का विरोधी है।”

<sup>13</sup> इसलिए जब पीलातुस ने ये बातें सुनीं तो वह यीशु को बाहर लाया, और न्यायासन पर बैठा, जिसे द पवर्मेंट कहा जाता है—परन्तु इत्तानी में, गब्बाथा।<sup>14</sup> अब यह फसह की तैयारी का दिन था; यह लगभग छठे घंटे का समय था। और उसने यहूदियों से कहा, “देखो, तुम्हारा राजा।”<sup>15</sup> तब वे चिल्लाएं, “उसे हटा दो, उसे हटा दो, कूस पर चढ़ाओ!” पीलातुस ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को कूस पर चढ़ाऊँ?” प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, “हमारा कोई राजा नहीं है सिवाय कैसर के।”

<sup>16</sup> तब उसने उसे कूस पर चढ़ाने के लिए उनके हाथ में सौंप दिया।

<sup>17</sup> वे यीशु को ले गए, और वह अपनी कूस को उठाकर बाहर गया, उस स्थान की ओर जिसे खोपड़ी का स्थान कहा जाता है, जो इत्तानी में गोलगोथा है।<sup>18</sup> वहाँ उन्होंने उसे कूस पर चढ़ाया, और उसके साथ दो अन्य मनुष्यों को, एक को एक और और यीशु को बीच में।<sup>19</sup> अब पीलातुस ने भी एक शिलालेख लिखा और उसे कूस पर रखा। उस पर लिखा था: “यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।”<sup>20</sup> इसलिए बहुत से यहूदियों ने इस शिलालेख को पढ़ा, क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु को कूस पर चढ़ाया गया था, नगर के निकट था; और यह इत्तानी, लैटिन और धूनानी में लिखा गया था।<sup>21</sup> इसलिए

यहूदियों के प्रधान याजक पीलातुस से कहने लगे, “यहूदियों का राजा” मत लिखो; बल्कि, ‘उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ।’<sup>22</sup> पीलातुस ने उत्तर दिया, “जो मैंने लिखा है, वही लिखा है।”

<sup>23</sup> तब सैनिकों ने जब उन्होंने यीशु को कूस पर चढ़ाया, उसके बाहरी वस्त्र लिए और चार भाग किए, प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग; और उन्होंने उसकी अंगरखा भी ली—अब वह अंगरखा बिना सिलाई का था, एक ही टुकड़े में बुना हुआ।<sup>24</sup> इसलिए उन्होंने एक दूसरे से कहा, “आओ, इसे न फाढ़ें, बल्कि इसके लिए चिठ्ठी डालें, ताकि यह तय हो सके कि यह किसका होगा।” यह इसलिए हुआ ताकि पवित्रशस्त्र पूरा हो: “उन्होंने मेरे वस्त्र आपस में बाँट लिए, और मेरे कपड़े के लिए चिठ्ठी डाली।” इसलिए सैनिकों ने ये बातें कीं।

<sup>25</sup> अब यीशु के कूस के पास उसकी माता खड़ी थी, और उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी।<sup>26</sup> जब यीशु ने अपनी माता को और उस शिष्य को देखा जिसे वह प्रेम करता था, पास खड़े हुए, तो उसने अपनी माता से कहा, “स्त्री देख, तेरा पुत्र!”<sup>27</sup> फिर उसने उस शिष्य से कहा, “देख, तेरी माता!” और उसी घड़ी से उस शिष्य ने उसे अपने घर में ले लिया।

<sup>28</sup> इसके बाद, यीशु ने यह जानते हुए कि सब बातें पूरी हो चुकी हैं, ताकि पवित्रशस्त्र पूरा हो, कहा, “मैं प्राया हूँ।”<sup>29</sup> वहाँ खट्टे दाखरस से भरा एक बर्टन रखा था; इसलिए उन्होंने खट्टे दाखरस से भरा एक स्प्यांज लेकर उसे जंगली सोप के ढंगल पर रखा और उसके मुँह के पास लाया।<sup>30</sup> इसलिए जब यीशु ने खट्टा दाखरस लिया, तो उसने कहा, “यह पूरा हुआ!” और उसने अपना सिर झुकाया और अपनी आत्मा को छोड़ दिया।

<sup>31</sup> अब चूँकि यह तैयारी का दिन था, ताकि शर कूस पर सब्त के दिन न रहे (क्योंकि वह सब्त एक महान दिन था), यहूदियों ने पीलातुस से अनुरोध किया कि उनकी टाँगें तोड़ी जाएँ, और शर्वों को हटा दिया जाए।<sup>32</sup> इसलिए सैनिक आए और पहले व्यक्ति की टाँगें तोड़ीं, और दूसरे की जो उसके साथ कूस पर चढ़ाया गया था;<sup>33</sup> परन्तु जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर चुका है, इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं।<sup>34</sup> फिर भी एक सैनिक ने उसके पार्श्व को भाला मारा, और तुरंत रक्त और पानी बह निकला।<sup>35</sup> और जिसने देखा है उसने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है कि वह सत्य कह

## यूहन्ना

रहा है, ताकि तुम भी विश्वास करो।<sup>36</sup> क्योंकि ये बातें इसलिए हुईं ताकि पवित्रशास्त्र पूरा हो: "उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ी जाएगी।"<sup>37</sup> और फिर एक और पवित्रशास्त्र कहता है, "वे उसे देखेंगे जिसे उन्होंने बेथा।"

<sup>38</sup> अब इन बातों के बाद अरिमथिया का यूसुफ, जो यीशु का शिष्य था, परन्तु यहूदियों के डर से गुप्त रूप से, पीलातुस से अनुरोध किया कि वह यीशु का शरीर ले जाए; और पीलातुस ने अनुमति दी। इसलिए वह आया और उसका शरीर ले गया।<sup>39</sup> निकुदेमुस, जो पहले रात को उसके पास आया था, भी आया, लगभग सौ पाँड वजन की गंधरस और ऐसों का मिश्रण लाते हुए।<sup>40</sup> इसलिए उन्होंने यीशु के शरीर को लिया और उसे मसालों के साथ लिनन के कपड़ों में लपेटा, जैसा कि यहूदियों की दफनाने की रीति है।<sup>41</sup> अब जहाँ वह कूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ एक बगीचा था, और बगीचे में एक नई कब्र थी जिसमें अभी तक कोई नहीं रखा गया था।<sup>42</sup> इसलिए, यहूदियों के तैयारी के दिन के कारण, क्योंकि कब्र पास थी, उन्होंने यीशु को वहाँ रखा।

**20** सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी सुबह-सुबह कब्र पर आई, जब अभी अधेरा था, और कि पथर कब्र से पहले ही हटा हुआ था।<sup>2</sup> इसलिए वह दौड़कर, और, "वे प्रभु को कब्र से ले गए हैं, और हम नहीं जानते कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है!"<sup>3</sup> इसलिए पतरस और दूसरा चेला निकल पड़े, और वे कब्र की ओर जा रहे थे।<sup>4</sup> दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे; और दूसरा चेला पतरस से तेज़ दौड़ा, और पहले कब्र पर पहुँचा;<sup>5</sup> और उसने झुककर देखा, और कि लिनन की पटियाँ वहाँ पड़ी हैं; परन्तु वह अंदर नहीं गया।<sup>6</sup> इसलिए साइमन पतरस भी, उसके पीछे, और वह ; और उसने कि लिन की पटियाँ वहाँ पड़ी हैं,<sup>7</sup> और वह कपड़ा जो उसके सिर पर था, लिन की पटियों के साथ नहीं पड़ा था, बल्कि अलग से लपेटा हुआ था।<sup>8</sup> इसलिए वह दूसरा चेला जो पहले कब्र पर आया था, वह भी अंदर गया, और उसने देखा और विश्वास किया।<sup>9</sup> क्योंकि वे अब तक शास्त्र को नहीं समझते थे, कि उसे मृतकों में से जी उठना चाहिए।<sup>10</sup> इसलिए वेले फिर से अपने-अपने घर चले गए।

<sup>11</sup> परन्तु मरियम कब्र के बाहर खड़ी रो रही थी; इसलिए, जब वह रो रही थी, उसने झुककर कब्र में देखा;<sup>12</sup> और उसने कि दो स्वर्गदूत सफेद वस्त्र में बैठे हैं, एक सिरहने और एक पैताने, जहाँ यीशु का शरीर पड़ा था।<sup>13</sup> और उन्होंने, "स्त्री, तू क्यों रो रही है?" उसने , "क्योंकि वे मेरे प्रभु को ले गए हैं, और मैं नहीं जानती कि

उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"<sup>14</sup> जब उसने यह कहा, तो वह पीछे मुड़ी और कि यीशु वहाँ खड़ा है, परन्तु वह नहीं जानती थी कि वह यीशु है।<sup>15</sup> यीशु ने, "स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू किसे छूँढ़ रही है?" यह सोचकर कि वह माली है, उसने, "स्वामी, यदि आपने उसे यहाँ से उठाया है, तो मुझे बताइए कि आपने उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।"<sup>16</sup> यीशु ने, "मरियम!" वह मुड़ी और, "रब्बोनी!" (जिसका अर्थ है, शिक्षक)।<sup>17</sup> यीशु ने, "मुझे मत छू, क्योंकि मैं अभी तक पिता के पास नहीं गया हूँ, परन्तु मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह, मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास जा रहा हूँ।"<sup>18</sup> मरियम मगदलीनी, "मैंने प्रभु को देखा है," और यह कि उसने उससे ये बातें कही थीं।

<sup>19</sup> अब उस दिन की शाम को, सप्ताह के पहले दिन, और जब दरवाजे बंद थे जहाँ वेले यहूदियों के डर से इकट्ठे थे, यीशु आया और उनके बीच खड़ा हुआ, और, "तुम्हें शांति मिले।"<sup>20</sup> और जब उसने यह कहा, तो उसने उन्हें अपने हाथ और अपनी पसलियाँ दिखाई। तब वेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।<sup>21</sup> इसलिए यीशु ने, "तुम्हें शांति मिले, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।"<sup>22</sup> और जब उसने यह कहा, तो उसने उन पर फूंका और, "पवित्र आत्मा को प्राप्त करो।<sup>23</sup> यदि तुम किसी के पापों को क्षमा करोगे, तो उनके पाप क्षमा किए गए हैं; यदि तुम किसी के पापों को रोकोगे, तो वे रोके गए हैं।"

<sup>24</sup> परन्तु थोमा, बारह में से एक, जिसे दिदुमुस कहा जाता था, उनके साथ नहीं था जब यीशु आया।<sup>25</sup> इसलिए दूसरे वेले उससे कह रहे थे, "हमने प्रभु को देखा है।" परन्तु उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान नहीं देख लौंगा, और अपनी उंगली कीलों के स्थान पर नहीं डालूँगा, और अपनी हाथ उसकी पसली में नहीं डालूँगा, मैं विश्वास नहीं करूँगा।"

<sup>26</sup> आठ दिन बाद उसके वेले पिर से अंदर थे, और थोमा उनके साथ था। यीशु, दरवाजे बंद थे, और उनके बीच खड़ा हुआ और, "तुम्हें शांति मिले।"<sup>27</sup> फिर उसने, "अपनी उंगली यहाँ रख, और मेरे हाथ देख; और अपना हाथ ले और मेरी पसली में डाल। और अविश्वासी न बन, परन्तु विश्वास करने वाला बन।"<sup>28</sup> थोमा ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर!"<sup>29</sup> यीशु ने, "क्योंकि तूने मुझे देखा है, क्या तूने अब विश्वास किया है? ध्यन हैं वे जिन्होंने नहीं देखा, और फिर भी विश्वास किया।"

## यूहन्ना

<sup>३०</sup> इसलिए, यीशु ने और भी कई चिन्ह चेलों के सामने किए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं; <sup>३१</sup> परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु मर्सीह है, परमेश्वर का पुत्र; और विश्वास करके तुम उसके नाम में जीवन पाओ।

**21** इन बातों के बाद यीशु ने फिर से अपने आप को तिबेरियास की झील पर चेलों को प्रकट किया, और उसने अपने आप को इस प्रकार प्रकट किया: <sup>२</sup> शमौन पतरस थोमा जो टिदुमुस कहलाता था, गलील के काना का नन्धनएल, जब्दी के पुत्र, और उसके दो अन्य चेले एक साथ थे। <sup>३</sup> शमौन पतरस ने उससे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" उन्होंने उससे कहा, "हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।" वे बाहर गए और नाव में बैठ गए; और उस रात उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा। <sup>४</sup> पर जब दिन निकल रहा था, यीशु किनारे पर खड़ा था, फिर भी चेलों ने नहीं पहचाना कि वह यीशु था। <sup>५</sup> तब यीशु ने उनसे कहा, "बच्चों, क्या तुम्हारे पास खाने के लिए मछली नहीं है?" उन्होंने उसे उत्तर दिया, "नहीं।" <sup>६</sup> और उसने उनसे कहा, "नाव के दाहिने ओर जाल डालो, और तुम्हें मछली मिलेगी।" इसलिए उन्होंने जाल डाला, और फिर वे उसे खींच नहीं सके क्योंकि मछलियों की बड़ी मात्रा थी। <sup>७</sup> इसलिए वह चेला जिसे यीशु प्रेम करता था, पतरस से कहता है, "यह प्रभु है।" जब शमौन पतरस ने सुना कि यह प्रभु है, तो उसने अपना बाहरी वस्त्र पहना (स्पोकिं वह काम के लिए कपड़े उतार चुका था), और समुद्र में कूद पड़ा। <sup>८</sup> परंतु अन्य चेले छोटी नाव में आए, क्योंकि वे भूमि से दूर नहीं थे, बल्कि लगभग दो सौ हाथ दूर थे, मछलियों से भरा जाल खींचते हुए। <sup>९</sup> जब वे भूमि पर आए, तो उन्होंने देखा कि कोयले की आग पहले से जल रही थी और उस पर मछली रखी थी, और रोटी भी। <sup>१०</sup> यीशु ने उनसे कहा, "कुछ मछलियाँ लाओ जो तुमने अब पकड़ी हैं।" <sup>११</sup> इसलिए शमौन पतरस ऊपर गया और जाल को भूमि पर खींच लाया, बड़ी मछलियों से भरा हुआ, <sup>१२</sup> और यद्यपि वे इतनी अधिक थीं, फिर भी जाल नहीं फटा। <sup>१३</sup> यीशु ने उनसे पूछने का साहस नहीं किया, "तुम कौन हो?" यह जानते हुए कि यह प्रभु है। <sup>१४</sup> यीशु आया और रोटी ली और उहें दी, और वैसे ही मछली भी। <sup>१५</sup> यह अब तीसरी बार था जब यीशु ने अपने आप को चेलों को प्रकट किया, जब वह मृतकों में से जी उठा था।

<sup>१५</sup> अब जब उन्होंने नाश्ता समाप्त कर लिया, यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "शमौन, योहन के पुत्र, क्या तुम मुझसे इनसे अधिक प्रेम करते हो?" उसने उससे कहा,

"हाँ, प्रभु! आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।"<sup>१६</sup> उसने उससे कहा, "मेरे मेमनों को चराओ।"<sup>१७</sup> उसने उससे फिर दूसरी बार कहा, "शमौन, योहन के पुत्र, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु! आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।" उसने उससे कहा, "मेरी भेड़ों की देखभाल करो।"<sup>१८</sup> उसने उससे तीसरी बार कहा, "क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" और उसने उससे कहा, "प्रभु! आप सब कुछ जानते हैं; आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।"<sup>१९</sup> यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चराओ।"<sup>२०</sup> सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ, जब तुम जवान थे, तुम अपनी कमर बांधते थे और जहाँ चाहते थे तबहाँ जाते थे; पर जब तुम बढ़े हो जाओगा, तो तुम अपने हाथ फैलाओगे और कोई और तुम्हारी कमर बांधेगा, और तुम्हें वहाँ ले जाएगा जहाँ तुम नहीं जाना चाहते।<sup>२१</sup> अब उसने यह कहा, यह संकेत देते हुए कि किस प्रकार की मृत्यु से वह परमेश्वर की महिमा करेगा। और जब उसने यह कहा, तो उसने उससे कहा, "मेरे पीछे आओ!"

<sup>२०</sup> पतरस ने मुड़कर देखा कि वह चेला जो यीशु से प्रेम करता था, उनके पीछे आ रहा है, वह जो भोजन के समय उसकी छाती पर ढूका था और कहा था, "प्रभु, वह कौन है जो आपको धोखा दे रहा है?"<sup>२१</sup> इसलिए पतरस ने उसे देखकर यीशु से कहा, "प्रभु! और इस आदमी का क्या होगा?"<sup>२२</sup> यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहता हूँ कि वह तब तक रहे जब तक मैं आऊँ, तो तुम्हें क्या? तुम मेरे पीछे आओ!"<sup>२३</sup> इसलिए यह बात भाइयों में फैल गई कि यह चेला नहीं मरेगा, फिर भी यीशु ने उससे यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा, बल्कि केवल, "यदि मैं चाहता हूँ कि वह तब तक रहे जब तक मैं आऊँ, तो तुम्हें क्या?"

<sup>२४</sup> यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही दे रहा है और इन बातों को लिखा है, और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सत्य है।<sup>२५</sup> परंतु और भी बहुत सी बातें हैं जो यीशु ने कीं, जो, यदि विस्तार से लिखी जातीं, तो मुझे लगता है कि स्वयं संसार भी उन पुस्तकों को नहीं समा सकता जो लिखी जातीं।

## प्रेरितों के काम

**1** पहला लेख मैंने, थियुक्पिलुस, यीशु ने जो कुछ करना और सिखाना शुरू किया, उसके बारे में लिखा था,<sup>2</sup> उस दिन तक जब वह ऊपर उठा लिया गया, जब उसने पवित्र आत्मा के द्वारा उन प्रेरितों को आदेश दिए जिन्हें उसने चुना था।<sup>3</sup> उनके सामने उसने अपने दुःख सहने के बाद, बहुत से प्रमाणों के द्वारा अपने को जीवित प्रस्तुत किया, और चालीस दिनों तक उन्हें दिखाइ दिया और परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें कीं।<sup>4</sup> उन्हें इकट्ठा करके, उसने उन्हें यरूशलेम से न जाने की अज्ञा दी, बल्कि पिता की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने को कहा, "जो," उसने कहा, "तुमने मुझसे सुनी है;<sup>5</sup> क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम कुछ दिनों के बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे!"

<sup>6</sup> इसलिए, जब वे इकट्ठा हुए, तो उन्होंने उससे पूछा, "प्रभु, क्या इस समय तू इसाएल के लिए राज्य को पूनःस्थापित कर रहा है?"<sup>7</sup> परन्तु उसने उनसे कहा, "यह तुम्हारे लिए नहीं है कि समर्पों या नियत समर्पों को जानो, जिन्हें पिता ने अपनी स्वयं की अधिकार रखा। ठहराया है,<sup>8</sup> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम सामर्थ्य पाओगे; और तुम मेरे गवाह बनोगे यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक।"

<sup>9</sup> और जब उसने ये बातें कहीं, तो वह ऊपर उठा लिया गया, और वे देखते रहे, और एक बादल ने उसे उनकी दृष्टि से छिपा लिया।<sup>10</sup> और जब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तब देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्रों में उनके पास खड़े हो गए,<sup>11</sup> और उन्होंने कहा, "गलील के पुरुषों, तुम आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यह यीशु, जो तुमसे स्वर्ग में उठा लिया गया है, उसी प्रकार आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।"

<sup>12</sup> तब वे यरूशलेम लौट आए जैतून नामक पहाड़ से, जो यरूशलेम के निकट है, एक सब्त के दिन की यात्रा की दूरी पर।<sup>13</sup> जब वे नगर में प्रवेश कर गए, तो वे उस ऊपरी कर्मरों में गए जहाँ वे ठहरे हुए थे, अर्थात् पतरस, यूहन्ना, याकूब, और अन्द्रियास, फिलिप्पस और थोमा, ब्रह्मोलोमाय और मती, अलफियस का पुत्र याकूब, उत्साही शमैन, और याकूब का पुत्र यहूदा।<sup>14</sup> ये सब एक मन होकर प्रार्थना में लगे रहते थे, स्तिथियों के साथ, और यीशु की माता मरियम के साथ, और उसके भाइयों के साथ।

<sup>15</sup> इस समय पतरस भाइयों और बहनों के बीच खड़ा हुआ (लगभग 120 लोगों का समूह इकट्ठा था), और कहा,<sup>16</sup> "भाइयों, वह शास्त्र पूरा होना चाहिए, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में पहले से कहा था, जो यीशु को पकड़वाने वालों का मार्गदर्शक बना।"<sup>17</sup> क्योंकि वह हमारे साथ गिना गया और इस सेवा में उसका हिस्सा मिला।"<sup>18</sup> (अब इस व्यक्ति ने अपनी दृष्टा की कीमत पर एक खेत खरीदा, और सिर के बल पिरकर, वह बीच में फट गया, और उसकी सारी अंतिडियाँ बाहर निकल गईं।)<sup>19</sup> और यह यरूशलेम के सभी निवासियों को जात हो गया; इसलिए उनकी अपनी भाषा में उस खेत को हकेलदमा कहा गया, अर्थात् रक्त का खेत।)<sup>20</sup> क्योंकि यह भजन सहिता की पुस्तक में लिखा है:

'उसका निवास उजाड़ हो जाए और उसमें कोई न रहे;

और,

'उसका धर्द कोई और ले ले।'

<sup>21</sup> इसलिए, यह आवश्यक है कि उन पुरुषों में से, जो हमारे साथ उस समय के दौरान रहे जब प्रभु यीशु हमारे बीच आते-जाते थे—<sup>22</sup> यूहन्ना के बपतिस्मा से शुरू करके उस दिन तक जब वह हमसे ऊपर उठा लिया गया—उनमें से एक हमारे साथ उसकी पुनरुत्थान का गवाह बने।"<sup>23</sup> इसलिए उन्होंने दो पुरुषों को प्रस्तुत किया: पूरुष जिसे बरसबा कहा जाता था (जिसे पुरस्स भी कहा जाता था), और मतियाह।<sup>24</sup> और उन्होंने प्रार्थना की और कहा, "तू, प्रभु, जो सब लोगों के हृदयों को जानता है, दिखा कि इनमें से किसे तूने चुना है<sup>25</sup> इस सेवा और प्रेरिताई का स्थान लेने के लिए, जिससे यहूदा अपने स्थान पर जाने के लिए हट गया।"<sup>26</sup> और उन्होंने उनके लिए चिदियाँ डालीं, और चिदियाँ मतियाह पर पड़ीं; और वह ग्यारह प्रेरितों में जोड़ा गया।

**2** जब पिन्नेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे।<sup>2</sup> और अचानक स्वर्ग से एक प्रचंड तेज़ हवा की तरह आवाज़ आई, और उसने उस पूरे घर को भर दिया जहाँ वे बैठे थे।<sup>3</sup> और आग की तरह दिखने वाली जीभें उन्हें दिखाइ दीं, जो बंद गईं, और उनमें से एक-एक जीभ उन पर ठहर गई।<sup>4</sup> और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और विभिन्न भाषाओं में बोलने लगे, जैसा कि आत्मा ने उन्हें बोलने की क्षमता दी।

## प्रेरितों के काम

<sup>5</sup> अब यरूशलेम में यहूदी निवास कर रहे थे, जो स्वर्ग के नीचे हर रात्रि से आए हुए भक्त लोग थे। <sup>6</sup> और जब यह आवाज़ हुई, तो भीड़ इकट्ठी हो गई, और वे चकित हो गए, क्योंकि उनमें से हर एक उह्वे अपनी भाषा में बोलते हुए सुन रहा था। <sup>7</sup> वे आश्वर्यचकित और अचंभित होकर कहने लगे, “क्या ये सब जो बोल रहे हैं गलीली नहीं हैं? <sup>8</sup> तो फिर हम में से हर एक उह्वे अपनी

जन्मभूमि की भाषा में कैसे सुन रहा है? <sup>9</sup> पार्थी, मारी, एलामी, और मेसोपोटामिया, यहूदिया और कप्पदुकिया, पॉटुस और पश्चिया के निवासी, <sup>10</sup> फ्रूगिया और पंफूलिया, मिस्र और लिबिया के साइरीन के आस-पास के हिस्सों के निवासी, और रोम से आए हुए यात्री, यहूदी और धर्मांतरित, <sup>11</sup> क्रेती और अरब—हम उह्वे अपनी भाषाओं में परमेश्वर के महान कार्यों को बोलते हुए सुनते हैं। <sup>12</sup> और वे सब आश्वर्यचकित और बहुत उलझन में थे, एक-दूसरे से कहने लगे, “इसका क्या अर्थ है?” <sup>13</sup> परंतु अन्य लोग उपहास करते हुए कहने लगे, “वे मीठी दाखरस से भरे हुए हैं!”

<sup>14</sup> परंतु पतरस ने ग्यारह अन्य के साथ खड़े होकर अपनी आवाज़ उठाई और उनसे कहा: “यहूदिया के लोगों और यरूशलेम के सभी निवासियों, यह जान लो और मेरे शब्दों पर ध्यान दो। <sup>15</sup> क्योंकि ये लोग नशे में नहीं हैं, जैसा कि आप मानते हैं, क्योंकि यह दिन का केवल तीसरा घंटा है; <sup>16</sup> परंतु यह वही है जो भविष्यवक्ता योएल के माध्यम से कहा गया था:

<sup>17</sup> ‘और यह अंतिम दिनों में होगा’ परमेश्वर कहता है, कि मैं अपनी आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेल द्वाग़, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दरशन देखेंगे, और तुम्हारे बृहदे स्वप्न देखेंगे; <sup>18</sup> और उन दिनों में मैं अपने दासों और दासियों पर भी अपनी आत्मा उड़ेल द्वाग़, और वे भविष्यवाणी करेंगे। <sup>19</sup> और मैं आकाश में अद्भुत कार्य दिखाऊंगा और पृथ्वी पर विह दिखाऊंगा, रक्त आग, और ध्रुव एक बादल। <sup>20</sup> सुर्य अंधकार में बदल जाएगा और चंद्रमा रक्त में प्रभु के महान और महिमामय दिन के आने से पहले। <sup>21</sup> और यह होगा कि जो कोई प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।”

<sup>22</sup> “इसाएल के लोगों, इन शब्दों को सुनो: यीशु नासरी, एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने आपके सामने चमत्कारों और अद्भुत कार्यों और चिह्नों के साथ प्रमाणित किया, जो परमेश्वर ने उसके माध्यम से आपके बीच किया, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं—<sup>23</sup> इस व्यक्ति को,

परमेश्वर की पूर्णिधर्मीत योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार सौंप दिया गया, आपने अधर्मी लोगों के हाथों से कूस पर चढ़ा दिया और उसे मार डाला। <sup>24</sup> परंतु परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया, मृत्यु की पीड़ा का अंत करते हुए, क्योंकि उसके लिए उसकी शक्ति में बंधे रहना असंभव था। <sup>25</sup> क्योंकि दाऊद उसके बारे में कहता है:

‘मैंने प्रभु को निरंतर अपने सामने देखा, क्योंकि वह मेरे दाहिने हाथ पर है, ताकि मैं डगमगाऊं नहीं।’ <sup>26</sup> इसलिए मेरा हृदय आनंदित हुआ और मेरी जीभ अति आनंदित हुई, और इसके अलावा मेरा शरीर भी आशा में रहे। <sup>27</sup> क्योंकि आप मेरी आत्मा को अधोलोक में नहीं छोड़ेंगे, और न ही अपने पवित्र जन को सङ्ग न देंगे। <sup>28</sup> आपने मुझे जीवन के मार्ग दिखाए हैं, आप अपनी उपस्थिति के साथ मुझे पूर्ण आनंद देंगे।’

<sup>29</sup> “भाइयों, मैं आपसे निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि पितामह दाऊद की बात करते हुए कि वह मरा और दफनाया गया, और उसकी कब्र आज तक हमारे साथ है। <sup>30</sup> इसलिए क्योंकि वह एक भविष्यवक्ता था और जानता था कि परमेश्वर ने उसे शपथ के साथ वचन दिया था कि वह उसकी संतानों में से एक को उसके सिंहासन पर बैठाएगा, <sup>31</sup> उसने मसीह के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की, कि उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया, और न ही उसका शरीर सङ्घा। <sup>32</sup> यह वही यीशु है जिसे परमेश्वर ने जीवित किया, जिसका हम सब गवाह हैं। <sup>33</sup> इसलिए, क्योंकि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उच्च किया गया है, और पिता से पवित्र आत्मा का वादा प्राप्त किया है, उसने यह उडेला है जिसे आप देख रहे हैं और सुन रहे हैं। <sup>34</sup> क्योंकि यह दाऊद नहीं था जो स्वर्ग में चढ़ा, परंतु उसने स्वयं कहा:

‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने हाथ पर बैठो, <sup>35</sup> जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों की चौकी की बना दूँ”।’

<sup>36</sup> इसलिए इसाएल का सारा घर निश्चयपूर्वक जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह बनाया है—यह वही यीशु है जिसे आपने कूस पर चढ़ाया।”

<sup>37</sup> अब जब उन्होंने यह सुना, तो वे हृदय में छिद गए, और पतरस और अन्य प्रेरितों से कहा, “भाइयों, हमें क्या करना चाहिए?” <sup>38</sup> पतरस ने उनसे कहा, “पश्चातप करो, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लो; और तुम पवित्र

## प्रेरितों के काम

आत्मा का वरदान प्राप्त करोगे।<sup>39</sup> क्योंकि यह वादा तुम्हरे और तुम्हरे बच्चों के लिए है, और उन सबके लिए जो दूँहें हैं, जितनों को भी हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"<sup>40</sup> और उसने और भी कई शब्दों के साथ गंभीरता से गवाही दी और उन्हें लगातार आग्रह करते हुए कहा, "इस विकृत पीढ़ी से बचो।"<sup>41</sup> इसलिए, जिन्होंने उसके वचन को स्वीकार किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उस दिन लगभग तीन हजार आत्माएँ जोड़ी गईं।

<sup>42</sup> वे लगातार प्रेरितों की शिक्षा और संगति में लगे रहते थे, रोटी तोड़ने और प्रार्थना में।<sup>43</sup> हर कोई विश्वमय का अनुभव करता रहा; और प्रेरितों के माध्यम से कई अद्भुत कार्य और चिन्ह हो रहे थे।<sup>44</sup> और सभी विश्वासियों ने एक साथ रहकर सब कुछ साझा किया;<sup>45</sup> और वे अपनी संपत्ति और वस्त्र बेचते और सबके साथ बांटते थे, जितनी किसी को आवश्यकता होती थी।<sup>46</sup> दिन-प्रतिदिन मंदिर में एक मन से रहते हुए, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए, वे हर्ष और हृदय की स्वाच्छा के साथ भोजन करते थे,<sup>47</sup> परमेश्वर की स्तुति करते हुए और सभी लोगों के साथ अनुग्रह प्राप्त करते हुए। और प्रभु प्रतिदिन उनकी संख्या में उन लोगों को जोड़ता रहा जो उद्धार पा रहे थे।

**3** अब पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के समय, जो कि नौवँ घंटा था, मंदिर की ओर जा रहे थे।<sup>2</sup> और एक व्यक्ति जो जन्म से ही चलने में असमर्थ था, उसे लाया जा रहा था, जिसे वे हर दिन मंदिर के उस द्वार पर बैठाते थे, जिसे सुंदर कहा जाता है, ताकि वह मंदिर में प्रवेश करने वालों से दान मांग सके।<sup>3</sup> जब उसने पतरस और यूहन्ना को मंदिर में प्रवेश करने के लिए देखा, तो उसने उनसे दान मांगना शुरू किया।<sup>4</sup> परन्तु पतरस ने यूहन्ना के साथ मिलकर उसे ध्यान से देखा और कहा, "हमारी ओर देखो!"<sup>5</sup> और उनसे उनसे कुछ प्राप्त करने की आशा में उनकी ओर ध्यान दिया।<sup>6</sup> परन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास चाँदी और सोना नहीं है, परन्तु जो मेरे पास है, वह मैं तुम्हें देता हूँ—नासी यीशु मसीह के नाम में, चलो!"<sup>7</sup> और उसने उस दाहिने हाथ से पकड़कर उठाया; और तुरंत उसके पैर और टखने मजबूत हो गए।<sup>8</sup> और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने लगा; और वह उनके साथ मंदिर में प्रवेश किया, चलते और कूदते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए।<sup>9</sup> और सभी लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देखा;<sup>10</sup> और उन्होंने उसे पहचान लिया कि वह वही व्यक्ति है जो मंदिर के सुंदर द्वार पर बैठकर दान मांगता

था, और वे उसके साथ जो हुआ था, उस पर आश्वर्य और विस्मय से भर गए।

<sup>11</sup> जब वह पतरस और यूहन्ना से चिपका हुआ था, सभी लोग उनके पास सुलैमान के बरामदे में ढौङ्कर आए, पूरी तरह से आश्वर्यचित।<sup>12</sup> परन्तु जब पतरस ने यह देखा, तो उसने लोगों से कहा, "इसाएल के लोगों, तुम इस पर क्यों आश्वर्य करते हों, या क्यों हमारी ओर देखते हों, जैसे कि हमारे अपने सामर्थ्य वा धर्म के कारण हमने उसे चलाया हो?"<sup>13</sup> अब्राहम, इस्लाम के और याकूब के परमेश्वर, हमारे पिताओं के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की है, जिसे तुमने पीलातुस के सामने सौंप दिया और अस्वीकार कर दिया, जब उसने उसे छोड़ने का निर्णय लिया था।<sup>14</sup> परन्तु तुमने पवित्र और धर्म को अस्वीकार कर दिया, और एक हत्यारे को तुम्हरे लिए छोड़ने की मांग की,<sup>15</sup> परन्तु जीवन के राजकुमार को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया—जिसके हम गवाह हैं।<sup>16</sup> और उसके नाम में विश्वास के आधार पर, यह यीशु का नाम है जिसने इस व्यक्ति को जिसे तुम देखते और जानते हों, मजबूत किया है, और वह विश्वास जो उसके माध्यम से आता है, उसने उसे तुम सबके सामने यह पूर्ण स्वास्थ्य दिया है।

<sup>17</sup> "और अब, भाइयों, मैं जानता हूँ कि तुमने अज्ञानता में कार्य किया, जैसे तुम्हरे शासकों ने भी किया।"<sup>18</sup> परन्तु जो बातें परमेश्वर ने पहले से सभी भविष्यद्वक्ताओं के मुख से घोषित की थीं, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा, उसने इस प्रकार पूरी की है।<sup>19</sup> इसलिए पश्चाताप करो और लौट आओ, ताकि तुम्हरे पाप मिट जाएं, ताकि प्रभु की उपस्थिति से ताजगी के समय आएं;<sup>20</sup> और वह यीशु को भेजो, जो तुम्हरे लिए नियुक्त मसीह है,<sup>21</sup> जिसे स्वर्ण को तब तक ग्रहण करना चाहिए जब तक कि सभी चीजों की पुनर्स्थापना का समय न आ जाए, जिसके बारे में परमेश्वर ने प्राचीन काल से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कहा था।

<sup>22</sup> मूसा ने कहा, "प्रभु परमेश्वर तुम्हरे लिए तुम्हारे देशवासियों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा; तुम उसके सब बातों के विषय में सुनोगे जो वह तुम्हें कहेगा।"<sup>23</sup> और यह होगा कि जो कोई उस भविष्यद्वक्ता की नहीं सुनेगा, वह लोगों में से पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।<sup>24</sup> और इसी प्रकार, सभी भविष्यद्वक्ताओं ने जो शमूल और उसके उत्तराधिकारियों से बोल चुके हैं, उन्होंने भी इन दिनों की घोषणा की है।<sup>25</sup> तुम वही हो जो भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र और उस वाचा के हो जिसे परमेश्वर ने तुम्हरे पिताओं के साथ ठहराया, अब्राहम से

## प्रेरितों के काम

कहकर, ‘और तुम्हारे वंश में पृथ्वी के सभी परिवार आशीर्वादित होंगे।’<sup>26</sup> परमेश्वर ने पहले तुम्हारे लिए अपने सेवक को उठाया, और उसे तुम्हें आशीर्वाद देने के लिए भेजा ताकि तुम में से हर एक को तुम्हारी दुष्ट तरीकों से दूर कर सके।’

**4** जब वे लोगों से बात कर रहे थे, तो याजक और मंदिर के प्रहरी का कपान और सदूकी उनके पास आए, <sup>2</sup> क्योंकि वे लोग शिक्षा दे रहे थे और यीशु में मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे थे, इससे वे बहुत परेशान थे। <sup>3</sup> और उन्होंने उन पर हाथ डाला और उन्हें अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि पहले ही शाम ही चुकी थी। <sup>4</sup> परन्तु उन में से बहुत से जिह्वोंने यह संदेश सुना, विश्वास किया; और पुरुषों की संख्या लगभग पाँच हजार हो गई।

<sup>5</sup> अगले दिन, उनके शासक, पुरनिये, और शास्ती यूरुशलेम में एकत्र हुए; <sup>6</sup> और महायाजक हन्ना वहाँ था, और कैफा, यूहन्ना, अलेक्जेंडर, और सभी जो महायाजकीय वंश के थे। <sup>7</sup> जब उन्होंने उन्हें बीच में रखा, तो उन्होंने पूछा शुरू किया, “तुमने यह किस शक्ति से, या किस नाम से किया है?” <sup>8</sup> तब पतरस, पवित्र आत्मा से भरा हुआ, उनसे कहने लगा, “लोगों के शासक और पुरनिये, <sup>9</sup> यदि आज हमें एक बीमार व्यक्ति के लिए किए गए अच्छे काम के लिए जांचा जा रहा है, कि यह व्यक्ति कैसे स्वस्थ हुआ है, <sup>10</sup> तो तुम सबको और इसाएल के सभी लोगों को यह जात हो, कि यीशु मरीही नासरी के नाम से, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया— इसी नाम से यह व्यक्ति तुम्हारे सामने अच्छे स्वास्थ्य में खड़ा है। <sup>11</sup> वह है

वह पत्थर जिसे तुम् निमणिकर्ताओं ने ठुकरा दिया,  
परन्तु जो मुख्य कोने का पत्थर बन गया।

<sup>12</sup> और किसी और में उद्धार नहीं है; क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों के बीच कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिससे हमें उद्धार पाना चाहिए।”

<sup>13</sup> अब जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की आत्मविश्वास को देखा और समझा कि वे अनपढ़ और अप्रशिक्षित व्यक्ति थे, वे चकित हो गए, और उन्हें पहचानने लगे कि वे यीशु के साथ थे। <sup>14</sup> और उस व्यक्ति को जो चंगा हो गया था उनके साथ खड़ा देखकर, उनके पास उत्तर में कुछ कहने को नहीं था। <sup>15</sup> परन्तु जब उन्होंने उन्हें परिषद से बाहर जाने का आदेश दिया, तो वे एक दूसरे से विचार-विमर्श करने लगे, <sup>16</sup> कहते हुए, “हम इन लोगों

के साथ क्या करें? क्योंकि यह तथ्य कि उनके माध्यम से एक उल्लेखनीय चमत्कार हुआ है, यूरुशलेम में रहने वाले सभी लोगों के लिए स्पष्ट है, और हम इसे नकार नहीं सकते। <sup>17</sup> परन्तु ताकि यह लोगों में और अधिक न फैले, आइए उन्हें चेतावनी दें कि वे इस नाम में किसी भी व्यक्ति से और बात न करें।” <sup>18</sup> और जब उन्होंने उन्हें बुलाया, तो उन्होंने उन्हें यीशु के नाम में बिल्कुल भी बोलने या सिखाने का आदेश दिया। <sup>19</sup> परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, “या यह परमेश्वर की छृण में सही है कि हम तुम्हारी सुने बजाय परमेश्वर के, यह तुम स्वयं निर्णय करो; <sup>20</sup> क्योंकि हम जो देखा और सुना है, उसके बारे में बोलना नहीं रोक सकते।” <sup>21</sup> जब उन्होंने उन्हें और धमकी दी, तो उन्होंने उन्हें छोड़ दिया (उन पर दंड देने के लिए कोई आधार न पाकर) लोगों के कारण, क्योंकि वे सभी उस घटना के लिए परमेश्वर की महिमा कर रहे थे; <sup>22</sup> क्योंकि जिस व्यक्ति पर यह चंगाई का चमत्कार किया गया था, वह चालीस वर्ष से अधिक का था।

<sup>23</sup> जब उन्हें रिहा किया गया, तो वे अपने साथियों के पास गए और उन्होंने सब कुछ बताया जो मुख्य याजकों और पुरनियों ने उनसे कहा था। <sup>24</sup> और जब उन्होंने यह सुना, तो उन्होंने एक मन से परमेश्वर की ओर आवाज उठाई और कहा, “प्रभु, यह आप ही हैं जिह्वोंने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें सब कुछ बनाया, <sup>25</sup> जिह्वोंने पवित्र आत्मा के द्वारा, हमारे पिता दाऊद आपके सेवक के मुख से कहा,

‘जातियाँ क्यों क्रोधित हुईं और लोग व्यार्थ में झड़ांत्र कर रहे हैं? <sup>26</sup> पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और शासक एकत्र हुए प्रभु और उसके मरीह के विरुद्ध।’

<sup>27</sup> क्योंकि वास्तव में इस नगर में आपके पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध, जिसे आपने अभिषिक्त किया, हेरोद और पीलातुस पंतियुस, अन्यजातियों और इसाएल के लोगों के साथ एकत्र हुए, <sup>28</sup> जो कुछ भी आपकी हाथ और उद्देश्य ने पूर्वानुरित किया था, उसे करने के लिए। <sup>29</sup> और अब, प्रभु, उनकी धमकियों को देख, और अपने दासों को अपना वचन पूरे आत्मविश्वास के साथ बोलने की अनुमति दें, <sup>30</sup> जबकि आप चंगाई के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं, और आपके पवित्र सेवक यीशु के नाम से चिह्न और चमत्कार होते हैं।” <sup>31</sup> और जब उन्होंने प्रार्थना की, तो वह स्थान हिल गया जहाँ वे एकत्र हुए थे, और वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर का वचन साहस के साथ बोलने लगे।

## प्रेरितों के काम

<sup>32</sup> और जो विश्वास करते थे उनकी मंडली एक हृदय और आत्मा की थी; और उनमें से किसी ने भी यह दावा नहीं किया कि जो कुछ उसका है वह उसका अपना है, परन्तु सब कुछ उनके लिए सामान्य संपत्ति थी। <sup>33</sup> और महान शक्ति के साथ प्रेरित प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की गवाही दे रहे थे, और उन सभी पर प्रवृत्त अनुग्रह था। <sup>34</sup> क्योंकि उनमें कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति नहीं था, क्योंकि जो भूमि या धरों के मालिक थे वे उन्हें बेचते और बिक्री की आय लाते थे <sup>35</sup> और उन्हें प्रेरितों के पैरों पर रखते थे, और उन्हें प्रत्येक को उनकी आवश्यकता के अनुसार वितरित किया जाता था। <sup>36</sup> अब यूसुफ, कुप्रियन जन्म का एक लेवी, जिसे प्रेरितों द्वारा बरनबास भी कहा जाता था (जिसका अनुवाद है, प्रोत्साहन का पुरा), <sup>37</sup> उसके पास भूमि का एक टुकड़ा था। इसलिए उसने उसे बेचा, और पैसे लाकर प्रेरितों के पैरों पर रख दिया।

**5** परन्तु हन्याह नामक एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी सफीरा के साथ मिलकर एक संपत्ति बेची, <sup>2</sup> और अपनी पत्नी की पूरी जानकारी के साथ, कुछ धन अपने लिए रख लिया, और उसका एक हिस्सा लाकर, उसने प्रेरितों के पैरों में रख दिया। <sup>3</sup> परन्तु पतरस ने कहा, “हन्याह, क्यों शैतान ने तुम्हारे हृदय को भर दिया है कि तुम पवित्र आत्मा से झूठ बोलो और भूमि के कुछ धन को अपने लिए रख लो? <sup>4</sup> जब तक वह बिकी नहीं थी, क्या वह तुम्हारी नहीं थी? और जब वह बिक गई, तो क्या वह तुम्हारे नियंत्रण में नहीं थी? तुमने यह काम अपने हृदय में क्यों सोचा? तुमने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।” <sup>5</sup> और जब उसने ये बातें सुनी, तो हन्याह गिर पड़ा और मर गया; और उन सब पर बड़ा भय छा गया जिन्होंने इसके बारे में सुना। <sup>6</sup> युक्त उठे और उसे ढक दिया, और उसे बाहर ले जाकर दफनाया।

<sup>7</sup> अब लगभग तीन घंटे का अंतराल बीत गया, और उसकी पत्नी अंदर आई, यह नहीं जानती थी कि क्या हुआ था। <sup>8</sup> और पतरस ने उससे कहा, “मुझे बताओ कि क्या तुमने भूमि को इस मूल्य पर बेचा था?” और उसने कहा, “हाँ, इसी मूल्य पर।” <sup>9</sup> तब पतरस ने उससे कहा, “तुमने क्यों मिलकर प्रभु की आत्मा को परखने का विचार किया? देखो, जो तुम्हारे पाति को दफनाने आए थे उनके पैर दरवाजे पर हैं, और वे तुम्हें भी बाहर ले जाएंगे।” <sup>10</sup> और तुरंत वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और मर गई, और युक्त अंदर आए और उसे मरा हुआ पाया, और उसे बाहर ले जाकर उसके पाति के पास दफनाया।

<sup>11</sup> और पूरी कत्तीसिया पर और उन सब पर जो इन बातों के बारे में सुने, बड़ा भय छा गया।

<sup>12</sup> प्रेरितों के हाथों से लोगों के बीच कई चिन्ह और चमत्कार हो रहे थे; और वे सब सुलैमान के मण्डप में एक साथ थे। <sup>13</sup> परन्तु बाकी में से कोई भी उनके साथ जुड़ने का साहस नहीं करता था; फिर भी, लोग उन्हें उच्च सम्मान में रखते थे। <sup>14</sup> और प्रभु में विश्वास करने वाले, बड़ी संख्या में पुरुष और महिलाएँ, उनकी संख्या में जोड़े जा रहे थे, <sup>15</sup> यहाँ तक कि वे बीमारों को सङ्कोच पर ले जाकर खाटों और बिस्तरों पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस आए तो कम से कम उसकी छाया उन पर पड़ सके। <sup>16</sup> यरूशलेम के आस-पास के नगरों के लोग भी एकत्र हो रहे थे, बीमारों और अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित लोगों को लाते थे, और वे सब चंगे हो रहे थे।

<sup>17</sup> परन्तु महायाजक और उसके सभी साथी (जो सड़कीयों का संप्रदाय है) खड़े हुए, और वे ईर्ष्या से भर गए। <sup>18</sup> उन्होंने प्रेरितों पर हाथ डाला और उन्हें सार्वजनिक जेल में डाल दिया। <sup>19</sup> परन्तु रात के समय प्रभु के एक सर्वादृत ने जेल के द्वारा खोले, और उन्हें बाहर ले जाकर कहा, <sup>20</sup> “जाओ, मंदिर क्षेत्र में खड़े होकर लोगों को इस जीवन का पूरा संदेश सुनाओ।” <sup>21</sup> यह सुनकर, वे भीर के समय मंदिर क्षेत्र में गए और शिक्षा देने लगे। अब जब महायाजक और उसके साथी आए, तो उन्होंने परिषद को बुलाया, अर्थात् इसाए के पुत्रों की पूरी परिषद, और उन्हें लाने के लिए जेल में आदेश भेजा। <sup>22</sup> परन्तु जो अधिकारी आए, उन्होंने उन्हें जेल में नहीं पाया; और वे लौटकर रिपोर्ट दी, <sup>23</sup> कहते हुए, “हमने जेल को बहुत सुरक्षित रूप से बंद पाया और दरवाजों पर पहरेदार खड़े थे; परन्तु जब हमने उन्हें खोला, तो अंदर कोई नहीं पाया।” <sup>24</sup> अब जब मंदिर के पहरेदार के कपान और मुख्य याजकों ने ये बातें सुनी, तो वे उनके बारे में बहुत उलझन में थे कि इसका क्या होगा। <sup>25</sup> परन्तु कोई आया और उन्हें बताया, “जिन पुरुषों को तुमने जेल में डाला था, वे मंदिर क्षेत्र में खड़े होकर लोगों को शिक्षा दे रहे हैं।”

<sup>26</sup> तब कपान अधिकारियों के साथ गया और उन्हें बिना हिसा के वापस लाया (क्योंकि वे लोगों से डरते थे कि कहीं वे उन्हें पत्थरवाह न करें)। <sup>27</sup> जब उन्होंने उन्हें लाया, तो उन्होंने उन्हें परिषद के समाने खड़ा किया। महायाजक ने उनसे पूछताछ की, <sup>28</sup> कहते हुए, “हमने तुम्हें इस नाम में शिक्षा देने से सख्ती से मना किया था, और फिर भी, तुमने यरूशलेम को अपनी शिक्षा से भर दिया है, और इस मनुष्य का लहू हम पर लाना चाहते

## प्रेरितों के काम

हो!”<sup>29</sup> परन्तु पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, “हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए।<sup>30</sup> हमारे पितरों के परमेश्वर ने यीशु को जीवित किया, जिसे तुमने कूक्स पर लटकाकर मार डाला।<sup>31</sup> उसी को परमेश्वर ने अपने दाहिने हाथ से एक प्रधान और उद्धारकर्ता के रूप में ऊचा किया, ताकि इसाएल को पश्चात्पाप और पापों की क्षमा प्रदान करे।<sup>32</sup> और हम इन बातों के गवाह हैं; और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन लोगों को दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं।”

<sup>33</sup> परन्तु जब उन्होंने यह सुना, तो वे क्रोधित हो गए और उहें मार डालने का विचार करने लगे।<sup>34</sup> परन्तु गमतीएल नामक एक फरीसी, जो व्यवस्था का शिक्षक था, और सभी लोगों द्वारा सम्मानित था, परिषद में खड़ा हुआ और थोड़ी देर के लिए उन पुरुषों को बाहर भेजने का आदेश दिया।<sup>35</sup> और उसने उनसे कहा, “इसाएल के लोगों, इन पुरुषों के साथ क्या करने जा रहे हों, इस पर ध्यान दो।<sup>36</sup> क्योंकि, कुछ समय पहले थूदास प्रकट हुआ, जो कुछ होने का दावा करता था, और लाभगा चार सौ पुरुष उसके साथ जुड़ गए। परन्तु वह मारा गया, और जो उसके पीछे चले थे वे तितर-बितर हो गए और कुछ भी नहीं हुआ।<sup>37</sup> इसके बाद, गलील का यहदा जनगणना के दिनों में प्रकट हुआ और कुछ लोगों को अपने पीछे खींच लिया; वह भी नष्ट हो गया, और जो उसके पीछे चले थे वे बिखर गए।<sup>38</sup> और इसलिए वर्तमान मामले में, मैं तुमसे कहता हूँ, इन पुरुषों से दूर रहो और उन्हें अकेला छोड़ दो, क्योंकि यदि इस योजना या आंदोलन का स्रोत मनुष्य है, तो यह नष्ट हो जाएगा;<sup>39</sup> परन्तु यदि स्रोत परमेश्वर है, तो तुम उन्हें नष्ट नहीं कर पाओगे; अन्यथा तुम परमेश्वर के खिलाफ लड़ने वाले पाए जा सकते हो।”

<sup>40</sup> उन्होंने उसकी सलाह मानी; और प्रेरितों को बुलाकर, उहें कोडे मारे और यीशु के नाम में बोलने से मना किया, और फिर उन्हें छोड़ दिया।<sup>41</sup> सो वे परिषद की उपस्थिति से चले गए, इस बात से आनादित होते हुए कि उहें उसके नाम के लिए अपमान सहने योग्य समझा गया।<sup>42</sup> और हर दिन, मंदिर में और घर-घर में, वे यीशु को मरीह के रूप में सिखाना और प्रचार करना नहीं छोड़ते थे।

**6** उसी समय, जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी, तो यूनानी यहूदियों की ओर से देशी इब्रानियों के विरुद्ध एक शिकायत उत्पन्न हुई, क्योंकि उनकी विधाओं को दैनिक भोजन सेवा में अनदेखा किया जा रहा था।<sup>2</sup> तब

बारहों ने चेलों की मण्डली को बुलाया और कहा, “यह हमारे लिए उचित नहीं है कि हम परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करें और मेजों की सेवा करें।<sup>3</sup> इसके बजाय, भाइयों और बहनों, अपने में से सात अच्छे प्रतिष्ठा वाले पुरुषों का चयन करें, जो आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, जिन्हें हम इस कार्य के प्रभार में रख सकें।<sup>4</sup> पर हम प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।”<sup>5</sup> यह घोषणा पूरी मण्डली को स्वीकार्य लगी; और उन्होंने स्टेफन को चुना, जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप, प्रबोरुस, निकानोर, तिमोन, परमेनास, और निकोलास, जो अंताकिया का एक धर्मतिरित था।<sup>6</sup> और उन्होंने इन पुरुषों को प्रेरितों के सामने लाया; और प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन पर अपने हाथ रखे।

**7** परमेश्वर का वचन फैलता गया; और यरूशलैम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ती गई, और बहुत से याजक विश्वास के प्रति आज्ञाकारी हो रहे थे।

<sup>8</sup> अब स्टेफन, अनुग्रह और शक्ति से परिपूर्ण, लोगों के बीच महान चमत्कार और विन्ध कर रहा था।<sup>9</sup> परंतु कुछ लोग, जो स्वतंत्रों की आराधनात्य कहलाते थे, जिनमें साइरेनी और अलेक्झेंड्रिया के लोग शामिल थे, और कुछ किलिकिया और एशिया से, उठे और स्टेफन के साथ तर्क करने लगे।<sup>10</sup> पर वे उस बुद्धि और आत्मा का सामना करने में असमर्थ थे, जिससे वह बोल रहा था।<sup>11</sup> तब उन्होंने गुप्त रूप से लोगों को प्रेरित किया कि वे कहें, “हमने उसे मूसा और परमेश्वर के विरुद्ध निन्दासक शब्द बोलते सुना है।”<sup>12</sup> और उन्होंने लोगों, प्राचीनों, और शासियों को उकसाया, और वे उसके पास आए, उसे घरीटकर ले गए, और उसे परिषद के सामने लाए।<sup>13</sup> उन्होंने इन्हें गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, “यह व्यक्ति इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरुद्ध बोलना बंद नहीं करता;<sup>14</sup> क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना है कि यह नासरी यीशु इस स्थान को नष्ट करेगा और उन रीति-रिवाजों को बदल देगा जो मूसा ने हमें सौंपे थे।”<sup>15</sup> और जो सभी परिषद में बैठे थे, उन्होंने उसकी ओर धूरकर देखा, और उन्होंने उसका चेहरा देखा, जो एक सर्वादृत के चेहरे के समान था।

**7** अब महायाजक ने कहा, “क्या ये बातें सच हैं?”<sup>2</sup> और स्टिफनुस ने कहा, “भाइयों और पिताओं, सुनो: जब हमारे पिता अब्राहम मेसोपोटामिया में थे, तब महिमा के परमेश्वर ने उहें दर्शन दिया, इससे पहले कि वे हारान में बसे,<sup>3</sup> और उनसे कहा, ‘अपने देश और अपने रिश्तेदारों से निकलकर उस देश में जाओ, जिसे मैं तुम्हें दिखाऊंगा।’<sup>4</sup> तब उन्होंने कसदियों के देश को छोड़

## प्रेरितों के काम

दिया और हारान में बस गए। और वहाँ से, उनके पिता की मृत्यु के बाद, परमेश्वर ने उन्हें इस देश में ले आया, जिसमें आप अब रह रहे हैं।<sup>5</sup> परंतु उसने उन्हें उसमें कोई विरासत नहीं दी, यहाँ तक कि एक पग धरती भी नहीं, और फिर भी, जब उनके पास कोई संतान नहीं थी, उसने वादा किया कि वह इसे उन्हें एक संपत्ति के रूप में देगा, और उनके बाद उनकी संतानों को भी।<sup>6</sup> परंतु परमेश्वर ने यह कहा कि उनकी संतानें एक विदेशी देश में परदेशी होंगी, और वे चार सौ वर्षों तक दासता और दुर्व्वाहर सहेंगी।<sup>7</sup> और जिस राष्ट्र को वे दासता में होंगे, मैं स्वयं उसका न्याय करूँगा; परमेश्वर ने कहा, 'और उसके बाद वे बाहर आएंगे और इस खण्ड में मेरी सेवा करेंगे।'<sup>8</sup> और उसने उन्हें खतना का वाचा दिया; और इस प्रकार अब्राहम ने इसहाक को जन्म दिया, और आठवें दिन उसका खतना किया; और इसहाक ने याकूब को जन्म दिया, और याकूब ने बारह पिताओं को जन्म दिया।

<sup>9</sup> पिताओं ने यूसुफ से ईर्ष्या की और उसे मिस्र में बेच दिया। फिर भी परमेश्वर उसके साथ था,<sup>10</sup> और उसे उसके सभी कष्टों से बचाया, और मिस्र के राजा फिरौन की दृष्टि में उसे अनुग्रह और बुद्धि दी, और उसने उसे मिस्र और अपने पूरे घर का राज्यपाल बना दिया।<sup>11</sup> अब एक अकाल मिस्र और कनान में आया, और उसके साथ बड़ी विपत्ति भी, और हमारे पिताओं को कोई भोजन नहीं मिला।<sup>12</sup> परंतु जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अनाज है, तो उसने हमारे पिताओं को पहली बार वहाँ भेजा।<sup>13</sup> और दूसरी यात्रा पर, यूसुफ ने अपने भाइयों को अपने बारे में बताया, और यूसुफ का परिवार फिरैन को प्रकट हुआ।<sup>14</sup> तब यूसुफ ने संदेश भेजा और अपने पिता याकूब और अपने सभी शिशेदारों को बुलाया, कुल मिलाकर पचहत्तर लोग।<sup>15</sup> और याकूब मिस्र में गया, और वह और हमारे पिताओं की वहाँ मृत्यु हो गई।<sup>16</sup> और उन्हें वहाँ से शेखेम लाया गया और उस कब्र में रखा गया, जिसे अब्राहम ने शेखेम में हमोर के बेटों से चाँदी की कीमत पर खरीदा था।

<sup>17</sup> परंतु जैसे-जैसे वह समय निकट आया, जो परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था, लोग मिस्र में बढ़े और बहुतायत में हो गए,<sup>18</sup> जब तक कि मिस्र पर एक और राजा न आया, जो यूसुफ को नहीं जानता था।<sup>19</sup> वही था जिसने हमारे राष्ट्र का लाभ उठाया और हमारे पिताओं के साथ दुर्व्वाहर किया, यहाँ तक कि उन्होंने अपने बच्चों को छोड़ दिया ताकि वे जीवित न रहें।<sup>20</sup> इसी समय मूसा का जन्म हुआ; और वह परमेश्वर के लिए सुंदर था। वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में

पाला गया।<sup>21</sup> और जब उसे बाहर रखा गया, तो फिरौन की बेटी ने उसे ले लिया और उसे अपने बेटे के रूप में पाला।<sup>22</sup> मूसा मिसियों की सारी बुद्धि में शिक्षित हुआ, और वह बोलने और कार्य करने में कुशल था।<sup>23</sup> परंतु जब वह चालीस वर्ष का होने के करीब था, तो उसके मन में अपने देशवासियों, इस्राएल के पुत्रों से मिलने का विचार आया।<sup>24</sup> और जब उसने देखा कि उनमें से एक के साथ अन्याय हो रहा है, तो उसने उसका बचाव किया और पीड़ित व्यक्ति के लिए प्रतिशोध लिया मिसी को मारकर।<sup>25</sup> और उसने सोचा कि उसके भाई समझेंगे कि परमेश्वर उन्हें उसके माध्यम से मुक्ति दे रहा है; परंतु वे नहीं समझे।<sup>26</sup> अगले दिन वह उनके पास आया जब वे आपस में लड़ रहे थे, और उसने उन्हें शांति से समझाने की कशिश की, कहते हुए, 'पुरुषों, आप भाई हैं, आप एक-दूसरे को क्यों चोट पहुँचा रहे हैं?'<sup>27</sup> परंतु जो अपने पड़ोसी को चोट पहुँचा रहा था, उसने उसे धक्का दिया, कहते हुए, कि साने तुम्हें हमारे ऊपर शासक और न्यायाधीश बनाया? <sup>28</sup> क्या तुम मुझे भी मारना चाहते हो जैसे तुमने कल मिसी को मारा था?<sup>29</sup> इस इतिपीणी पर, मूसा भाग गया और मिद्यान देश में एक अजनबी बन गया, जहाँ उसने दो पुत्रों को जन्म दिया।

<sup>30</sup> 'चालीस वर्ष बीतने के बाद, एक स्वर्गद्वार ने उसे सीने पर्वत के जंगल में दर्शन दिया, जलते हुए काटेदार झाड़ी की लपट में।<sup>31</sup> जब मूसा ने इसे देखा, तो वह इस दृश्य से चकित हुआ; और जब वह और करीब से देखने के लिए आगे बढ़ा, तो प्रभु की आवाज आई:<sup>32</sup> मैं तुम्हारे पिताओं का परमेश्वर हूँ, अब्राहम, इसहाक, और याकूब का परमेश्वर।' मूसा डर से काँप उठा और देखने की हिम्मत नहीं की।<sup>33</sup> परंतु प्रभु ने उससे कहा, 'अपने पैरों से अपनी जूतियाँ उतार दो, क्योंकि जिस खण्ड पर तुम खड़े हो वह पवित्र भूमि है।'<sup>34</sup> मैंने निश्चित रूप से मिस्र में अपने लोगों की पीड़ा देखी है, और उनकी कराह सुन ली है, और मैं उन्हें बचाने के लिए नीचे आया हूँ, अब आओ, मैं तुम्हें मिस्र भेजूँगा।'

<sup>35</sup> 'यह वही मूसा है जिसे उन्होंने अस्वीकार किया, कहते हुए, 'किसने तुम्हें शासक और न्यायाधीश बनाया?' वही है जिसे परमेश्वर ने शासक और उद्धारकर्ता बनाने के लिए भेजा, उस स्वर्गद्वार की मदद से जो उसे काटेदार झाड़ी में दिखाई दिया।<sup>36</sup> यह वही व्यक्ति है जिसने उन्हें बाहर निकाला, मिस्र देश में, लाल समुद्र पर, और जंगल में चालीस वर्षों तक चमक्तार और चिन्ह दिखाए।<sup>37</sup> यह वही मूसा है जिसने इस्राएल के पुत्रों से कहा, 'परमेश्वर तुम्हारे लिए तुम्हारे देशवासियों में से मेरे समान एक भविष्यवक्ता उठाएगा।'<sup>38</sup> यह वही है जो जंगल में सभा

## प्रेरितों के काम

में स्वर्गदूत के साथ था जिसने उससे सीनै पर्वत पर बात की, और जो हमारे पिताओं के साथ था; उसने जीवित चर्चन प्राप्त किए जिन्हें तुम्हें सौंपना था।<sup>39</sup> हमारे पिताओं ने उसकी आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया; इसके विपरीत उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया, और अपने दिल में मिस की ओर लौट गए,<sup>40</sup> हारून से कहते हुए, हमारे लिए देवता बनाओ जो हमारे अगे चलें; क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस देश से बाहर ले आया, हम नहीं जानते कि उसके साथ क्या हुआ।<sup>41</sup> उस समय उन्होंने एक बछड़ा बनाया और मूर्ति के लिए बिलिदान बढ़ाया, और अपने हाथों के कामों में अनन्दित हुए।<sup>42</sup> परंतु परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया और उन्हें आकाशीय ज्योतियों की सेवा करने के लिए दे दिया, जैसा कि भविष्यवक्ता ओं की पुस्तक में लिखा है:

'तुमने मुझे जंगल में चालीस वर्षों तक बिलिदान और भेंट नहीं चढ़ाई क्या तुमने इसाएल के घराने'<sup>43</sup>  
तुमने मोलोक के तम्बू को भी साध लिया और अपने देवता रोम्फा का तारा, वे प्रतिमाएं जिन्हें तुमने पूरा के लिए बनाया था। मैं भी तुम्हें बाबुल से परे निवासित कर द्वागा।'

<sup>44</sup> "हमारे पिताओं के पास जंगल में गवाही का तम्बू था, जैसा कि उसने मूसा से कहा था कि उसे उस नमूने के अनुसार बनाओ जो उसने देखा था।<sup>45</sup> हमारे पिताओं ने इसे जोशुआ के साथ लाया जब उन्होंने उन राणों को बाहर निकाला जिन्हें परमेश्वर के द्वारा नहीं हमारे पिताओं के सामने से बाहर निकाला, जब तक कि दाऊद का समय नहीं आया।<sup>46</sup> दाऊद ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया, और याकूब के घर के लिए एक निवास स्थान पाने की इच्छा की।<sup>47</sup> परंतु यह सुलैमान था जिसने उसके लिए एक घर बनाया।<sup>48</sup> हाताँकि, परमप्रधान मानव हाथों से बने घरों में नहीं रहता; जैसा कि भविष्यवक्ता कहता है:

<sup>49</sup> 'स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे पैरों की चौकी है; तुम मेरे लिए किस प्रकार का घर बनाओगे? प्रभु कहता है, या मेरे विश्राम के लिए कौन सी जगह है?<sup>50</sup> क्या यह मेरा हाथ नहीं था जिसने ये सब चीजें बनाई?

<sup>51</sup> "तुम लोग जो कठोर गर्दन वाले और कानों में खतनारहित हो, हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो; तुम वही कर रहे हो जो तुम्हारे पिताओं ने किया।<sup>52</sup> तुम्हारे पिताओं ने किस भविष्यवक्ता को नहीं सताया? उन्होंने उन लोगों को मार डाला जिन्होंने पहले से धर्मी जन के आने की घोषणा की थी, जिनके विश्वासघाती और

हत्यारे तुम अब बन गए हो; <sup>53</sup> तुम्हें जो व्यवस्था स्वर्गदूतों द्वारा दी गई थी, तुमने उसे नहीं रखा।"

<sup>54</sup> अब जब उन्होंने यह सुना, तो वे क्रोधित हो गए, और स्तिफनुस पर दाँत पीसने लगे।<sup>55</sup> परंतु वह, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, स्वर्ग की ओर आग्नपूर्वक देखता रहा और परमेश्वर की महिमा देखी, और यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर खड़ा देखा;<sup>56</sup> और उसने कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला देखता हूँ और मूरुष के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर खड़ा देखता हूँ।"<sup>57</sup> परंतु उन्होंने ऊँची आवाज में चिल्लाया, और अपने कान बंद कर लिए और एक मन से उस पर दौड़ पड़े।<sup>58</sup> जब उन्होंने उस नगर से बाहर निकाल दिया, तो उन्होंने उसे पत्तरवाह किया; और गवाहों ने अपने वस्त्र एक युवक के पैरों के पास रख दिए, जिसका नाम शाऊल था।<sup>59</sup> उन्होंने स्तिफनुस को पत्तरवाह किया जब वह प्रभु को पुकार रहा था और कह रहा था, "प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।"<sup>60</sup> तब वह अपने घुटनों पर गिरा और ऊँची आवाज में चिल्लाया, "प्रभु, इस पाप को उनके खिलाफ न शिना!" यह कहते हुए, वह सो गया।

**8** अब शाऊल ने स्तेफन को मृत्यु देने की स्वीकृति दी। और उसी दिन यरूशलेम में कलीसिया के विरुद्ध बड़ा उत्तीर्ण शुरू हुआ, और वे सब यहूदिया और सामरिया के क्षेत्रों में तितर-बितर हो गए, केवल प्रेरितों को छोड़कर।<sup>2</sup> कुछ भक्त पुरुषों ने स्तेफन को दफनाया, और उसके लिए जोर से विलाप किया।<sup>3</sup> परन्तु शाऊल ने कलीसिया को उजाड़ना शुरू किया, घर-घर में प्रवेश करके; और वह पुरुषों और स्त्रियों को घसीटकर जेल में डाल देता था।

<sup>4</sup> इसलिए, जो तितर-बितर हो गए थे, वे स्थान-स्थान पर चर्चन का प्रचार करते गए।<sup>5</sup> फिलिप्पस सामरिया के नगर में गया और उन्हें मसीह का प्रचार करने लगा।<sup>6</sup> भीड़ एक मन से फिलिप्पस की कही बातों पर ध्यान दे रही थी, क्योंकि वे सुनते और देखते थे कि वह कौन-कौन से चिह्न कर रहा था।<sup>7</sup> क्योंकि बहुतों के मामले में जिनमें अशुद्ध आत्माएँ थीं, वे ऊँची आवाज में चिल्लाते हुए उनसे बाहर आ रही थीं; और बहुत से जलकाग्रस्त या लंगड़े थे, चंगे हो गए।<sup>8</sup> इसलिए उस नगर में बहुत आनंद था।

<sup>9</sup> अब एक व्यक्ति जिसका नाम शमौन था, पहले से ही नगर में जादू कर रहा था और सामरिया के लोगों को चकित कर रहा था, यह दावा करते हुए कि वह कोई महान व्यक्ति है,<sup>10</sup> और सभी लोग, छोटे से लेकर बड़े

## प्रेरितों के काम

तक, उस पर ध्यान दे रहे थे, यह कहते हुए, “यह व्यक्ति वह परमेश्वर की शक्ति है जिसे महान कहा जाता है।”<sup>11</sup> और वे उस पर ध्यान दे रहे थे क्योंकि वह लंबे समय से अपनी जादूगारी से उन्हें चकित कर रहा था।<sup>12</sup> परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पस पर विश्वास किया, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम के विषय में सुसमाचार सुना रहा था, तो पुरुष और स्त्रियाँ दोनों बपतिस्मा लेने लगे।<sup>13</sup> अब स्वयं शमैन ने भी विश्वास किया; और बपतिस्मा लेने के बाद, वह फिलिप्पस के साथ रहा, और जब वह चिन्ह और महान चमकार होते देखता, तो बार-बार चकित होता।

<sup>14</sup> अब जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरिया ने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा,<sup>15</sup> जो नीचे आए और उनके लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा प्राप्त करें।<sup>16</sup> क्योंकि वह उनमें से किसी पर नहीं उत्तरा था; वे केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिए गए थे।<sup>17</sup> तब उन्होंने उन पर अपने हाथ रखना शुरू किया, और वे पवित्र आत्मा प्राप्त कर रहे थे।<sup>18</sup> अब जब शमैन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा आत्मा दिया जा रहा है, तो उसने उन्हें धन की पेशकश की,<sup>19</sup> कहते हुए, “यह अधिकार मुझे भी दो, ताकि जिस पर मैं अपने हाथ रखूँ वह पवित्र आत्मा प्राप्त करे।”<sup>20</sup> परन्तु पतरस ने उससे कहा, “तेरा चाँदी तेरे साथ नहीं हो, क्योंकि तुमें सोचा कि तू परमेश्वर के वरदान को धन से प्राप्त कर सकता है।”<sup>21</sup> तेरा इस मामले में कोई हिस्सा या भाग नहीं है, क्योंकि तेरा हृदय परमेश्वर के समाने सही नहीं है।<sup>22</sup> इसलिए, अपनी इस दुष्टा से पश्चातप कर, और प्रभु से प्रार्थना कर, यदि संभव हो, तो तेरे हृदय की मंशा तुझे क्षमा की जाएगी।<sup>23</sup> क्योंकि मैं देखता हूँ कि तू कड़वाहट के पित्त में और अधर्म की बंधन में है।”<sup>24</sup> परन्तु शमैन ने उत्तर दिया और कहा, “आप स्वयं मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, ताकि जो कुछ आपने कहा है, वह मुझ पर न आए।”

<sup>25</sup> इसलिए, जब उन्होंने गंभीरता से गवाही दी और प्रभु का वचन कहा, तो वे यरूशलेम की ओर लौटने लगे, और सामरियों के कई गाँवों में सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे।

<sup>26</sup> परन्तु प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पस से कहा, “तैयार हो जाओ और दक्षिण की ओर उस सड़क पर जाओ जो यरूशलेम से गाजा की ओर उत्तरती है।” (यह एक मरुस्थलीय सड़क है।)<sup>27</sup> इसलिए वह तैयार हो गया और यहाँ एक इथियोपियाई नपुंसक था,

कैंडेस की रानी का दरबारिक अधिकारी, जो उसके सारे खजाने का प्रभारी था; और वह यरूशलेम में पूजा करने आया था,<sup>28</sup> और वह लौट रहा था और अपने रथ में बैठा था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता को पढ़ रहा था।<sup>29</sup> तब आत्मा ने फिलिप्पस से कहा, “इस रथ के पास जाकर शामिल हो।”<sup>30</sup> फिलिप्पस दौड़कर उसके पास गया और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता को पढ़ते हुए सुना, और कहा, “क्या तुम समझते हो कि तुम क्या पढ़ रहे हो?”<sup>31</sup> और उसने कहा, “अच्छा, मैं कैसे समझ सकता हूँ, जब तक कोई मुझे मार्गदर्शन न करे?” और उसने फिलिप्पस को ऊपर आकर उसके साथ बैठने के लिए आमंत्रित किया।<sup>32</sup> अब जो शास्त्र का अंश वह पढ़ रहा था वह यह था:

“वह वध के लिए भेड़ के समान ले जाया गया, और जैसे मैमना अपने कतरने वाले के सामने मौन रहता है, वैसे ही वह अपना मुँह नहीं खोलता।”<sup>33</sup> अपमान में उसका न्याय लिया गया, कौन उसकी पीढ़ी का वर्णन करेगा? क्योंकि उसका जीवन पृथ्वी से उठा लिया गया है।”

<sup>34</sup> नपुंसक ने फिलिप्पस से उत्तर दिया और कहा, “कृपया मुझे बताओ, भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है? अपने विषय में, या किसी और के?”<sup>35</sup> तब फिलिप्पस ने अपना मुँह खोला, और इस शास्त्र से शुरू करके उसने उसे यीशु का प्रचार किया।<sup>36</sup> जब वे सड़क के साथ जा रहे थे, तो वे कुछ पानी के पास आए; और नपुंसक ने कहा, “देखो! पानी! मुझे बपतिस्मा लेने से क्या रोकता है?”<sup>37</sup> [और फिलिप्पस ने कहा, “यदि तुम पूरे दिल से विश्वास करते हो, तो तुम कर सकते हो।”] और उसने उत्तर दिया और कहा, “मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।”<sup>38</sup> और उसने आदेश दिया कि रथ रुक जाएँ; और वे दोनों पानी में उत्तर गए, फिलिप्पस और नपुंसक दोनों, और उसने उसे बपतिस्मा दिया।<sup>39</sup> जब वे पानी से ऊपर आए, तो प्रभु की आत्मा ने फिलिप्पस को उठा लिया; और नपुंसक ने उसे फिर नहीं देखा, परन्तु वह अपने मार्ग पर आगामी होकर चला गया।<sup>40</sup> परन्तु फिलिप्पस ने अपने आप को अजोतुस में पाया, और जैसे वह वहाँ से गुजरा, वह सभी नगरों में सुसमाचार का प्रचार करता रहा, जब तक कि वह कैसरिया न पहुँचा।

**9** अब शाऊल, प्रभु के चेलों के विरुद्ध धमकी और हत्या की साँस लेते हुए, महायाजक के पास गया,<sup>2</sup> और उसने दमिशक के आराधनालयों के लिए उनसे पत्र मांगे, ताकि यदि वह किसी को मार्ग के अनुयायी पाए, चाहे

## प्रेरितों के काम

पुरुष हो या महिला, उन्हें जंजीरों में बाँधकर यस्तूशलेम लाए।<sup>3</sup> अब जब वह यात्रा कर रहा था, ऐसा हुआ कि वह दमिश्क के निकट पहुँच रहा था, और अचानक आकाश से एक प्रकाश उसके चारों ओर चमका;<sup>4</sup> और वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"<sup>5</sup> उसने कहा, "हे प्रभु, आप कौन हैं?" और उसने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है, ६ परंतु उठ और नारा में प्रवेश कर, और तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना चाहिए।"<sup>7</sup> जो लोग उसके साथ यात्रा कर रहे थे, वे अवाक खड़े थे, आवाज़ सुन रहे थे पर किसी को देख नहीं रहे थे।<sup>8</sup> शाऊल भूमि से उठा, और यद्यपि उसकी अँखें खुली थीं, वह कुछ देख नहीं सकता था; और उसे हाथ पकड़कर, वे उसे दमिश्क में ले गए।<sup>9</sup> और तीन दिनों तक वह दृष्टिहीन रहा, और न कुछ खाया न पिया।

१० अब दमिश्क में अननियास नामक एक चेला था; और प्रभु ने उसे दर्शन में कहा, "अननियास!" और उसने कहा, "हे प्रभु, मैं यहाँ हूँ।"<sup>11</sup> और प्रभु ने उससे कहा, "उठ और सीधे नामक गली में जा, और यहूदा के घर में पूछताछ कर तारसुस के शाऊल नामक व्यक्ति के लिए, क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है,"<sup>12</sup> और उसने दर्शन में अननियास नामक एक व्यक्ति को आते और उस पर हाथ रखते देखा है, ताकि वह अपनी दृष्टि पुनः प्राप्त कर सके।<sup>13</sup> परंतु अननियास ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुतों से सुना है, कि उसने यस्तूशलेम में आपके संतों के साथ कितना बुरा किया है;<sup>14</sup> और यहाँ उसे महायाजकों से अधिकार प्राप्त है कि जो भी आपके नाम का आह्वान करते हैं, उन्हें गिरफ्तार करें।"<sup>15</sup> परंतु प्रभु ने उससे कहा, "जाओ, क्योंकि वह मेरा चुना हुआ पात्र है, ताकि वह अन्यजातियों और राजाओं और इसाएल के पुत्रों के सामने मेरा नाम ले जाए;<sup>16</sup> क्योंकि मैं उसे दिखाऊँगा कि उसे मेरे नाम के लिए कितना कष्ट सहना होगा।"

१७ इसलिए अननियास गया और घर में प्रवेश किया, और उस पर हाथ रखकर कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु, जो तुझे उस मार्ग पर दिखाई दिए थे जिस पर तू आ रहा था, ने मुझे भेजा है ताकि तू अपनी दृष्टि पुनः प्राप्त कर सके और पवित्र आत्मा से भर जाए।"<sup>18</sup> और तुरंत उसकी अँखों से कुछ तराजू की तरह गिरा, और उसने अपनी दृष्टि पुनः प्राप्त की, और वह उठकर बपतिस्मा लिया;<sup>19</sup> और उसने भोजन लिया और बल प्राप्त किया। अब कई दिनों तक वह दमिश्क में चेलों के साथ था,<sup>20</sup> और तुरंत उसने आराधनालयों में यीशु का प्रचार करना शुरू कर दिया, कहते हुए, "वह परमेश्वर का पुत्र है।"

<sup>21</sup> सभी जो उसे सुन रहे थे, चकित होते रहे, और कह रहे थे, "क्या यह वही नहीं है जिसने यस्तूशलेम में उन लोगों को नष्ट किया जो इस नाम का आह्वान करते थे, और यहाँ इसी उद्देश्य से आया था कि उन्हें महायाजकों के सामने बंधन में लाए?"<sup>22</sup> परंतु शाऊल शक्ति में बढ़ता गया और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को चकित करता गया यह सिद्ध करके कि यह यीशु ही मसीह है।

<sup>23</sup> जब कई दिन बीत गए, तो यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने की योजना बनाई,<sup>24</sup> परंतु उनकी योजना शाऊल को पता चल गई। वे उसे मारने के लिए दिन-रात द्वारा पर पहरा दे रहे थे;<sup>25</sup> परंतु उसके चेलों ने उसे रात में लिया और दीवार में एक खिड़की से नीचे उतार दिया, उसे एक बड़े टोकरे में नीचे लटकाकर।

<sup>26</sup> जब वह यस्तूशलेम आया, तो उसने चेलों के साथ जुड़ने की कोशिश की; परंतु वे सभी उससे डरते थे, यह विश्वास नहीं करते थे कि वह चेला है।<sup>27</sup> परंतु बरनबास ने उसे पकड़ लिया और प्रेरितों के पास ले गया और उन्हें बताया कि कैसे उसने मार्ग में प्रभु को देखा था, और कैसे उसने उससे बात की थी, और कैसे उसने दमिश्क में यीशु के नाम में साहसपूर्वक बोला था।<sup>28</sup> और वह उनके साथ था, यस्तूशलेम में स्वतंत्र रूप से घूमता रहा, प्रभु के नाम में साहसपूर्वक बोलता रहा।<sup>29</sup> और वह यूनानी यहूदियों के साथ बातचीत और तर्क करता रहा; परंतु वे उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे।<sup>30</sup> अब जब भाइयों ने यह जाना, तो उन्होंने उसे कैसरिया ले जाकर तारसुस भेज दिया।

<sup>31</sup> इसलिए यहूदिया, गलील, और सामरिया में कालीसिया को शांति मिली, जैसा कि वह निर्मित हो रही थी; और जैसे वह प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की सांत्वना में बढ़ती रही, वह बढ़ती रही।

<sup>32</sup> अब जब पतरस उन सभी क्षेत्रों में यात्रा कर रहा था, वह लुद्दा में रहने वाले संतों के पास भी आया।<sup>33</sup> वहाँ उसने एनेस नामक एक व्यक्ति को पाया जो आठ वर्षों से बिस्तर पर पड़ा था, क्योंकि वह लकवाग्रस्त था।<sup>34</sup> पतरस ने उससे कहा, "एनेस, यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ और अपना बिस्तर बना।"<sup>35</sup> तुरंत वह उठ खड़ा हुआ।<sup>36</sup> और लुद्दा और शरोन में रहने वाले सभी ने उस देखा, और वे प्रभु की ओर मुड़ गए।

<sup>36</sup> अब योप्पा में तबीथा नामक एक चेला थी, जिसे ग्रीक में डोरकस कहा जाता है। यह महिला दया के कार्यों

## प्रेरितों के काम

और दान में उल्कृष्ट थी जो वह नियमित रूप से करती थी।<sup>37</sup> परंतु उस समय ऐसा हुआ कि वह बीमार पड़ गई और मर गई; और जब उन्होंने उसके शरीर को धोया, तो उसे ऊपर के कमरे में रखा।<sup>38</sup> चूंकि लुद्ध योप्पा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहाँ है, उसके पास दो व्यक्तियों को भेजा, उनसे आग्रह करते हुए, "हमारे पास आने में देरी न करें।"<sup>39</sup> इसलिए पतरस तैयार होकर उनके साथ गया। जब वह पहुँचा, तो उन्होंने उसे ऊपर के कमरे में ले गए; और सभी विधाएँ उसके पास खड़ी होकर रो रही थीं और सभी ठग्निक्स और वस्त दिखा रही थीं जो डोरकस उनके साथ रहते हुए बनाती थीं।<sup>40</sup> परंतु पतरस ने उन्हें सब बाहर भेजा और घुटने टेककर प्रार्थना की, और शरीर की ओर मुड़कर कहा, "तीर्था, उठ!"<sup>41</sup> और उसने अपनी आँखें खोलीं, और जब उसने पतरस को देखा, तो वह बैठ गई।<sup>42</sup> और उसने उसे हाथ देकर उठाया; और संतों और विधाओं को बुलाकर, उसने उसे जीवित प्रस्तुत किया।<sup>43</sup> यह योप्पा में सब जगह जात हो गया, और बहुतों ने प्रभु में विश्वास किया।<sup>44</sup> और पतरस योप्पा में कई दिनों तक शमौन नामक एक चर्मकार के साथ रहा।

## 10

अब कैसरिया में एक व्यक्ति था जिसका नाम कुरनेलियुस था, जो इतालवी सेना का एक सूबेदार था,<sup>2</sup> वह एक भक्त व्यक्ति था और अपने सारे घराने के साथ परमेश्वर से डरता था, और यहूदियों को बहुत दान देता था और निरंतर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।<sup>3</sup> दिन के नौवें घंटे के लगभग उसने स्पृष्ट रूप से एक दर्शन में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा जो उसके पास आया और उससे कहा, "कुरनेलियुस!"<sup>4</sup> उसने ध्यान से उसकी ओर देखा और डर गया, और कहा, "हे प्रभु, यह क्या है?"<sup>5</sup> और उसने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और दान परमेश्वर के सामने स्परण के लिए चढ़ाई गई हैं।"<sup>6</sup> अब कुछ लोगों को याका भेज और शमौन नामक व्यक्ति को बुला, जो पतरस भी कहलाता है;<sup>7</sup> वह एक चर्मकार शमौन के साथ ठहरा हुआ है, जिसका घर समृद्ध के किनारे है।<sup>8</sup> जब स्वर्गदूत जो उससे बात कर रहा था चला गया, तो उसने अपने दो सेवकों और अपने निजी सेवकों में से एक भक्त सैनिक को बुलाया,<sup>9</sup> और जब उसने उन्हें सब कुछ समझा दिया, तो उन्हें याका भेज दिया।

<sup>9</sup> अगले दिन, जब वे अपने रास्ते पर थे और शहर के पास पहुँच रहे थे, पतरस छठे घंटे के लगभग प्रार्थना करने के लिए छत पर गया।<sup>10</sup> लेकिन वह खूबा हो गया और कुछ खाना चाहता था; परन्तु जब वे भोजन तैयार कर रहे थे, वह ध्यानमग्न हो गया;<sup>11</sup> और उसने देखा कि

आकाश खुल गया है, और एक वस्तु जैसे एक बड़ा चादर नीचे आ रहा है, जो चारों कोनों से धरती पर उतारा गया है,<sup>12</sup> और उस पर सभी प्रकार के चार पैर वाले जानवर और पृथ्वी के रेंगने वाले जीव और आकाश के पक्षी थे।<sup>13</sup> उसके पास एक आवाज आई, "उठ, पतरस, मार और खा!"<sup>14</sup> परन्तु पतरस ने कहा, "कदापि नहीं, प्रभु, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाया है!"<sup>15</sup> फिर दूसरी बार उसके पास एक आवाज आई, "जिसे परमेश्वर ने शुद्ध किया है, उसे अब अपवित्र न मान।"<sup>16</sup> यह तीन बार हुआ, और तुरंत वह वस्तु आकाश में उठा ली गई।

<sup>17</sup> अब जबकि पतरस इस दर्शन के बारे में बहुत उलझन में था कि उसने जो देखा था उसका क्या अर्थ हो सकता है, देखो, वे लोग जो कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए थे, शमौन के घर का पता पूछते हुए आए, और वे द्वारा पर प्रकट हुए;<sup>18</sup> और पुकारते हुए, वे पूछ रहे थे कि क्या शमौन, जो पतरस भी कहलाता है, वहाँ ठहरा हुआ है।<sup>19</sup> जब पतरस उस दर्शन पर विचार कर रहा था, आत्मा ने उससे कहा, "देखो, तीन व्यक्ति तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं।"<sup>20</sup> परन्तु उठ, नीचे जाओ और उनके साथ बिना किसी संकोच के जाओ, क्योंकि मैंने उन्हें स्वयं भेजा है!"

<sup>21</sup> पतरस उन लोगों के पास नीचे गया और कहा, "देखो, मैं वही हूँ जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो; तुम किस कारण से आए हो?"<sup>22</sup> उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस, एक सूबेदार, एक धर्मी और परमेश्वर से डरने वाला व्यक्ति, जो यहूदियों की पूरी जाति द्वारा प्रशंसा किया जाता है, एक पवित्र स्वर्गदूत द्वारा निर्देशित किया गया था कि वह तुम्हें अपने घर बुलाए और तुमसे एक सदेश सुनो।"<sup>23</sup> इसलिए उसने उन्हें अंदर बुलाया और उन्हें ठहरने की जगह दी। अब अगले दिन वह तैयार होकर उनके साथ चला गया, और याका के कुछ भाई उसके साथ गए।

<sup>24</sup> अगले दिन वह कैसरिया में प्रवेश किया। अब कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा कर रहा था और उसने अपने रिस्तेदारों और करीबी दोस्तों को बुलाया था।<sup>25</sup> जब पतरस अंदर आया, तो कुरनेलियुस उससे मिला, और उसके पैरों पर गिरकर उसे प्रणाम किया।<sup>26</sup> परन्तु पतरस ने उसे उठाया, यह कहते हुए, "खुँड़े हो जाओ; मैं भी एक मनुष्य ही हूँ।"<sup>27</sup> जब वह उससे बात कर रहा था, तो वह अंदर गया और उसने देखा कि बहुत से लोग इकट्ठे हुए हैं।<sup>28</sup> और उसने उनसे कहा, "तुम स्वयं जानते हो कि यह एक यहूदी व्यक्ति के लिए किसी विदेशी के साथ मेल-जोल करना या उसके पास जाना मना है; फिर भी परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी

## प्रेरितों के काम

भी व्यक्ति को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ।<sup>29</sup> इसलिए जब मुझे बुलाया गया तो मैंने बिना किसी आपति के आ गया। तो मैं पूछता हूँ, तुमने मुझे किस कारण से बुलाया?"

<sup>30</sup> कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन पहले इस समय, मैं अपने घर में नौवें छठे में प्रार्थना कर रहा था; और देखो, एक व्यक्ति मेरे सामने चमकदार वस्त्रों में खड़ा था,<sup>31</sup> और उसने कहा, 'कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं।'<sup>32</sup> इसलिए कुछ लोगों को याफा भेज और शमीन को बुला, जो पतरस भी कहलाता है; वह समृद्ध के किनारे चर्चकार शमीन के घर में ठहरा हुआ है।"<sup>33</sup> इसलिए मैंने तुरंत तुम्हारे पास लोगों को भेजा, और तुम आने के लिए कृपा कर चुके हो। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित हैं कि जो कुछ तुम्हें प्रभु द्वारा आज्ञा दी गई है, उसे सुनें।"

<sup>34</sup> पतरस ने अपना मुँह खोला और कहा: "अब मैं निष्ठित रूप से समझता हूँ कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता,<sup>35</sup> परन्तु हर जाति में जो उससे डरता है और जो सही करता है, वह उसके लिए स्वीकार्य है।"<sup>36</sup> वह वचन जो उसने इसाएल के पुरों को भेजा, यीशु मसीह के द्वारा शांति का प्रचार करते हुए (वह सबका प्रभु है)—<sup>37</sup> तुम स्वयं जानते हो कि यहूदिया में क्या हुआ, गलील से शरू होकर, उस बपतिस्मा के बाद जो यूहन्ना ने प्रचार किया।<sup>38</sup> तुम जानते हो नासरत के यीशु के बारे में, कि कैसे परमेश्वर ने उसे पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषित किया, और कैसे वह भलाई करता हुआ और शैतान के द्वारा सताए हुए सबको चंगा करता हुआ फिरता था, व्यक्ति परमेश्वर उसके साथ था।<sup>39</sup> हम उन सब बातों के साक्षी हैं जो उसने यहूदियों के देश और यस्तलाम में कीं। उन्होंने उसे क्रूस पर लटकाकर मार डाला।<sup>40</sup> परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिलाया और उसे प्रकट होने का आदेश दिया,<sup>41</sup> सभी लोगों को नहीं, परन्तु उन गवाहों को जो परमेश्वर ने पहले से चुने थे, अर्थात् हम जो उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाए और पिए।<sup>42</sup> और उसने हमें लोगों को प्रचार करने और गवाही देने का आदेश दिया कि यही वह है जो जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है।<sup>43</sup> सभी नबी उसकी गवाही देते हैं, कि उसके नाम के द्वारा जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"

44 जब पतरस ये बातें कह ही रहा था, तो पवित्र आत्मा उन सब पर आ गया जो संदेश सुन रहे थे।<sup>45</sup> सभी

यहूदी विश्वासियों ने जो पतरस के साथ आए थे, आक्षर्य किया, व्यक्तिकि पवित्र आत्मा का वरदान अन्यजातियों पर भी उंडेला गया था।<sup>46</sup> व्यक्तिकि वे उन्हें अन्य भाषाओं में बोलते और परमेश्वर की महिमा करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस ने उत्तर दिया,<sup>47</sup> "निष्ठित रूप से कोई भी इन लोगों को बपतिस्मा के लिए जल देने से माना नहीं कर सकता, जिन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है जैसे हमने किया, क्या वह कर सकता है?"<sup>48</sup> और उसने उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने का आदेश दिया। तब उन्होंने उससे कुछ दिन और रहने के लिए कहा।

**11** अब प्रेरितों और भाइयों और बहनों ने जो यहूदिया में थे, सुना कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है।<sup>2</sup> और जब पतरस यस्तशतेम आया, तो यहूदी विश्वासियों ने उससे विवाद किया,<sup>3</sup> कहते हुए, "तुम खतना न किए हुए लोगों के पास गए और उनके साथ खाया!"<sup>4</sup> परंतु पतरस ने उन्हें क्रमबद्ध तरीके से विस्तार से समझाना शुरू किया, कहते हुए,<sup>5</sup> "मैं योप्पा नगर में प्रार्थना कर रहा था; और एक ध्यान में मैंने एक दर्शन देखा, एक वस्तु जो आकाश से चार कोनों द्वारा उतारी गई एक बड़ी चादर की तरह नीचे आ रही थी, और वह मेरे पास आ गई,"<sup>6</sup> और मैंने उसे घूर कर देखा और उसके बारे में सोचने लगा, और मैंने पृथ्वी के चार पैर वाले जानवर, जंगली जानवर, रोगने वाले जीव, और आकाश के पक्षी देखे।<sup>7</sup> मैंने एक आवाज भी सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'उठो, पतरस; मारो और खाओ।'<sup>8</sup> परंतु मैंने कहा, 'कदापि नहीं, प्रभु, व्यक्तिकि कोई भी अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुह में कभी नहीं गई।'<sup>9</sup> परंतु स्वर्ग से दूसरी बार एक आवाज ने उत्तर दिया, जिसे परमेश्वर ने शुद्ध किया है, उसे अब अपवित्र न मानो।<sup>10</sup> यह तीन बार हुआ, और सब कुछ फिर से आकाश में खींच लिया गया।<sup>11</sup> और देखो, तुरंत ही तीन आदमी जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर में आए जहां हम ठहरे थे।<sup>12</sup> और आत्मा ने मुझसे कहा कि उनके साथ बिना किसी संकोच के जाओ। ये छह भाई भी मेरे साथ गए, और हम उस आदमी के घर में प्रवेश किए।<sup>13</sup> और उसने हमें बताया कि उसने अपने घर में एक स्वर्गद्वार को खड़े देखा और कहते हुए सुना, कुछ लोगों को योप्पा भेजो और सिमोन को बुलवाओ, जिसे पतरस भी कहा जाता है;<sup>14</sup> और वह तुम्हें ऐसे वचन कहेगा जिनके द्वारा तुम और तुहारा सारा घराना उद्धार पाएगा।<sup>15</sup> और जब मैंने बोलना शुरू किया, तो पवित्र आत्मा उन पर उत्तरा जैसे कि वह आरंभ में हम पर उत्तरा था।<sup>16</sup> और मुझे प्रभु का वचन याद आया, कि वह कहा करता था, 'यूहन्ना ने जल से बपतिस्मा दिया, परंतु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'<sup>17</sup> इसलिए, यदि

## प्रेरितों के काम

परमेश्वर ने उन्हें वही वरदान दिया जैसा उसने हमें दिया था जब हमने प्रभु वीशु मसीह पर विश्वास किया, तो मैं कौन था जिसे मैं परमेश्वर के मार्ग में खड़ा हो सकता था?"<sup>18</sup> जब उन्होंने यह सुना, तो वे शांत हो गए और परमेश्वर की महिमा की, कहते हुए, "तो फिर, परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी वह पक्षातप दिया जो जीवन की ओर ले जाता है।"

<sup>19</sup> तो फिर जो लोग स्टेफन्स के संबंध में हुई उत्पीड़न के कारण तितर-कितर हो गए थे वे फोनीशिया, कुप्रूस, और अंताकिया तक पहुंच गए, केवल यहूदियों को ही बचन सुनाते हुए। <sup>20</sup> परंतु उनमें से कुछ, कुप्रूस और कुर्ची के लोग, अंताकिया आए और सूनानियों से भी बाहर करने लगे, प्रभु वीशु का सुसामाचा सुनाते हुए। <sup>21</sup> और प्रभु का हाथ उनके साथ था, और बड़ी संख्या में विश्वास करने वाले प्रभु की ओर मुड़े। <sup>22</sup> उनके बारे में खबर यरूशलैम की कलीसिया के कानों तक पहुंची, और उन्होंने बरनबास की अंताकिया भेजा। <sup>23</sup> फिर जब वह आया और परमेश्वर की कृपा को देखा, तो वह आनंदित हुआ और उसने उन्हें सबको प्रोत्साहित करना शुरू किया कि वे दृढ़ हृदय से प्रभु के प्रति सत्ये बने रहें; <sup>24</sup> क्योंकि वह एक अच्छा आदमी था, और पवित्र आत्मा और विश्वास से भरा हुआ था। और बड़ी संख्या में लोग प्रभु में जोड़े गए। <sup>25</sup> और वह शाऊल को खोजने के लिए तर्सूस गया; <sup>26</sup> और जब उसने उसे पाया, तो वह उसे अंताकिया ले आया। और पूरे एक वर्ष तक उन्होंने कलीसिया के साथ मिलकर बड़ी संख्या में लोगों को सिखाया; और शिष्यों को पहली बार अंताकिया में मसीही कहा गया।

<sup>27</sup> अब इस समय कुछ भविष्यद्वक्ता यरूशलैम से अंताकिया आए। <sup>28</sup> उनमें से एक, जिसका नाम अगबुस था, खड़ा हुआ और आत्मा के द्वारा संकेत किया कि एक भयंकर अकाल सारी दुनिया में पड़ेगा। और यह क्लौदियुस के शासनकाल में हुआ। <sup>29</sup> और जितना किसी भी शिष्य के पास साधन था, उतना ही उन्होंने यहूदियों में रहने वाले भाइयों और बहनों की राहत के लिए योगदान भेजने का निश्चय किया। <sup>30</sup> और उन्होंने यह किया, इसे बरनबास और शाऊल के साथ प्राचीनों के पास भेजा।

**12** उसी समय के आसपास राजा हेरोद ने कलीसिया के कुछ लोगों पर हाथ डाला, उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए। <sup>2</sup> और उसने याकूब, जो यहून्ना का भाई था, को तलवार से मार डाला। <sup>3</sup> जब उसने देखा कि यह यहूदियों को प्रसन्न करता है, तो उसने पतरस को भी

गिरफ्तार कर लिया। अब यह अखमीरी रोटी के दिनों के दौरान था। <sup>4</sup> जब उसने उसे गिरफ्तार किया, तो उसे जेल में डाल दिया, उसे चार सैनिकों की टुकड़ियों को सौंप दिया ताकि वे उसकी रक्षा करें, यह इरादा करते हुए कि केवल फसह के बाद ही उसे लोगों के सामने लाया जाए। <sup>5</sup> इसलिए पतरस को जेल में रखा गया, लेकिन उसके लिए कलीसिया द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना की जा रही थी।

<sup>6</sup> उसी रात जब हेरोद उसे लाने वाला था, पतरस दो सैनिकों के बीच सो रहा था, दो जंजीरों से बंधा हुआ, और दरवाजे के सामने पहरेदार जेल की निगरानी कर रहे थे। <sup>7</sup> और देखो, प्रभु का एक स्वर्णद्वृत अचानक पास खड़ा हो गया, और कोठरी में एक प्रकाश चमका; और उसने पतरस की बगल को मारा और उसे जागाया, कहा, "जल्दी उठो।" और उसकी जंजीरें उसके हाथों से गिर गई। <sup>8</sup> और स्वर्णद्वृत ने उससे कहा, "अपनी कमर कसो और अपनी चप्पलें पहन लो।" और उसने ऐसा किया। और उसने उससे कहा, "अपनी चादर लपेट लो और मेरे पीछे चलो।" <sup>9</sup> और वह बाहर चला गया और उसका पीछा करता रहा, और फिर भी वह नहीं जानता था कि स्वर्णद्वृत द्वारा जो किया जा रहा था वह वास्तविक था, बल्कि उसने सोचा कि वह एक दरशन देख रहा है। <sup>10</sup> अब जब वे पहले और दूसरे पहरे से गुजर चुके थे, वे उस लोहे के द्वार पर आए जो नगर की ओर ले जाता था, जो स्वयं ही खुल गया; और वे बाहर गए और एक गली में चले गए, और तुरंत स्वर्णद्वृत उससे विदा हो गया।

<sup>11</sup> जब पतरस ने अपने आप को संभाला, तो उसने कहा, "अब मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि प्रभु ने अपने स्वर्णद्वृत को भेजा और मुझे हेरोद के हाथ से बचाया और उन सभी से जो यहूदी लोग उम्मीद कर रहे थे।" <sup>12</sup> और जब उसने घर समझा, तो वह मरियम के घर गया, जो यूहन्ना की माँ थी, जिसे मरकुस भी कहा जाता था, जहाँ कई लोग एकत्रित थे और प्रार्थना कर रहे थे। <sup>13</sup> जब उसने द्वार पर दस्तक दी, तो एक दासी जिसका नाम रोडा था, उत्तर देने आई। <sup>14</sup> जब उसने पतरस की आवाज पहचानी, तो अपनी खुशी के कारण उसने द्वार नहीं खोला, बल्कि अंदर दौड़ी और घोषणा की कि पतरस द्वार के सामने खड़ा है। <sup>15</sup> उन्होंने उससे कहा, "तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है!" लेकिन वह जोर देती रही कि ऐसा ही है। उन्होंने कहा, "यह उसका स्वर्णद्वृत है।" <sup>16</sup> लेकिन पतरस दस्तक देता रहा; और जब उन्होंने दरवाजा खोला, तो उन्होंने उसे देखा और चकित हो गए। <sup>17</sup> लेकिन उसने उन्हें चुप रहने के लिए हाथ से इशारा किया, और उन्हें बताया कि प्रभु ने उसे जेल से

## प्रेरितों के काम

कैसे बाहर निकाला। और उसने कहा, “इन बातों की याकूब और भाइयों को सुचना दो।” फिर वह चला गया और किसी अन्य स्थान पर गया।

<sup>18</sup> अब जब दिन आया, तो सैनिकों के बीच कोई छोटी हलचल नहीं थी कि पतरस का क्या हो सकता था।<sup>19</sup> जब हेरोद ने उसकी खोज की और उसे नहीं पाया, तो उसने पहरेदारों की जांच की और आदेश दिया कि उन्हें फांसी दी जाए। फिर वह यहूदिया से कैसरिया गया, और वहाँ ठहरा।

<sup>20</sup> अब वह सोर और सिदोन के लोगों से बहुत क्रोधित था; और एक मन से वे उसके पास आए, और राजा के कक्षपाल ब्लास्टस को जीतकर, वे शांति की मांग कर रहे थे, क्योंकि उनका देश राजा के देश से भोजन के साथ समर्थित था।<sup>21</sup> एक नियत दिन पर, अपनी राजसी पोशाक पहनकर, हेरोद ने मंच पर अपनी सीट ली और उन्हें संबोधित करना शुरू किया।<sup>22</sup> लोग बार-बार चिल्ला रहे थे, “यह किसी मनुष्य की नहीं, बल्कि एक देवता की आवाज़ है।”<sup>23</sup> और तुरंत प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं दी, और वह कीड़ों द्वारा खा लिया गया और मर गया।

<sup>24</sup> लेकिन प्रभु का वचन बढ़ता और फैलता गया।<sup>25</sup> और बरनबास और शाऊल यूरशलेम से लौट आए जब उन्होंने अपना मिशन पूरा कर लिया, अपने साथ यहूदा को ले गए, जिसे मरकुस भी कहा जाता था।

**13** अब अंताकिया में, जो वहाँ की कलीसिया थी, भविष्यवक्ता और शिक्षक थे: बरनबास, सिमोन जिसे नीगर कहा जाता था, कुरेनी लूकियस, मनेहेन जो हेरोद चौथी शासक के साथ पले-बढ़े थे, और शाऊल।<sup>2</sup> जब वे प्रभु की सेवा कर रहे थे और उपवास कर रहे थे, पवित्र आत्मा ने कहा, “बरनबास और शाऊल को मेरे लिए उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।”<sup>3</sup> तब, जब उन्होंने उपवास किया, प्राप्तना की, और उन पर हाथ रखे, तो उन्होंने उन्हें भेज दिया।

<sup>4</sup> इसलिए, पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर, वे सेलुसिया गए, और वहाँ से वे कुप्रस के लिए जहाज पर चढ़े।<sup>5</sup> जब वे सलामीस पहुंचे, तो उन्होंने यहूदियों की आराधनालालों में परमेश्वर का वचन सुनाना शुरू किया; और उनके साथ यहूदा सहायक के रूप में था।<sup>6</sup> जब वे पूरे द्वीप में पाफीस तक गए, तो उन्होंने एक जादूगर को पाया, जो एक यहूदी झूठा भविष्यवक्ता था, जिसका नाम बार-यीशु

था,<sup>7</sup> जो प्रोकॉन्सुल, सेरियस पौलुस के साथ था, जो एक बुद्धिमान व्यक्ति था। इस व्यक्ति ने बरनबास और शाऊल को बुलाया और परमेश्वर का वचन सुने की इच्छा की।<sup>8</sup> लेकिन एलिमास जाओगर (क्योंकि उसका नाम ऐसा अनुवादित है) उनका विरोध कर रहा था, प्रोकॉन्सुल को विश्वास से दूर करने की कोशिश कर रहा था।<sup>9</sup> लेकिन शाऊल, जो पौलुस भी कहलाता था, पवित्र आत्मा से भरा हुआ, उसे घूसकर देखा,<sup>10</sup> और कहा, “तू जो सब धोखे और छल से भरा है, तू शैतान का पुत्र है, तू सब धार्मिकता का शत्रु है, क्या तू प्रभु के सीधे रास्तों को टेढ़ा करना बंद नहीं करेगा?”<sup>11</sup> अब, देख, प्रभु का हाथ तुझ पर है, और तू अंधा हो जाएगा और कुछ समय के लिए सूर्य को नहीं देख पाएगा।”<sup>12</sup> और तुरंत उस पर धूंध और अंधकार छा गया, और वह लोगों को हाथ से ले जाने के लिए खोजने लगा।<sup>13</sup> तब प्रोकॉन्सुल ने विश्वास किया जब उसने देखा कि क्या हुआ था, प्रभु की शिक्षा से चकित होकर।

<sup>13</sup> अब पौलुस और उसके साथी पाकोस से समुद्र के रास्ते पम्फूलिया के पेरगा आए; लेकिन यहूदा उन्हें छोड़कर यूरशलेम लौट गया।<sup>14</sup> लेकिन पेरगा से आगे बढ़कर, वे पिसिदिया के अंताकिया पहुंचे, और सब्ज के दिन वे आराधनालय में गए और बैठ गए।<sup>15</sup> व्यवस्था और भविष्यवक्ता अंतों के पढ़ने के बाद, आराधनालय के अधिकारियों ने उन्हें संदेश भेजा, कहा, “भाइयों, यदि आपके पास लोगों के लिए कोई उपदेश का वचन है, तो कहें।”<sup>16</sup> पौलुस खड़ा हुआ, और अपने हाथ से संकेत करते हुए कहा, “इसाएल के पुरुषों, और तुम जो परमेश्वर का धर्म मानते हो, सुनो:<sup>17</sup> इस लोगों के परमेश्वर ने हमारे पिता और लोगों को महान बनाया जब वे मिस देश में रहते थे, और एक उठे हुए हाथ से उन्हें वहाँ से बाहर निकाला।<sup>18</sup> लगभग चालीस वर्ष तक उसने जगल में उनके साथ सहन किया।<sup>19</sup> जब उसने कानान देश में सात जातियों को नष्ट कर दिया, तो उसने उनकी भूमि को एक विरासत के रूप में बांट दिया—जिसमें लगभग 450 वर्ष लगे।<sup>20</sup> इन बातों के बाद उसने उठे शम्पूल भविष्यवक्ता तक न्यायाधीश दिए।<sup>21</sup> तब उन्होंने एक राजा की मांग की, और परमेश्वर ने उन्हें किश के पुत्र शाऊल को दिया, जो बिन्यामीन के गोत्र का व्यक्ति था, चालीस वर्षों के लिए।<sup>22</sup> जब उसने उसे हटा दिया, तो उसने दाऊद को उनका राजा बनाया, जिसके बारे में उसने भी गवाही दी और कहा, “मैंने पिशे के पुत्र दाऊद को पाया है, जो मेरे हृदय के अनुसार है, जो मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।”<sup>23</sup> इस व्यक्ति के वंशजों से, वचन के अनुसार, परमेश्वर ने इसाएल के लिए एक उद्धारकर्ता, यीशु को लाया है,<sup>24</sup>

## प्रेरितों के काम

जब यूहन्ना ने उसके आने से पहले, इस्राएल के सभी लोगों को मन परिवर्तन का बपतिस्मा सुनाया था।<sup>25</sup> और जब यूहन्ना अपनी सेवा पूरी कर रहा था, तो वह कहता रहा, ‘तुम क्या सोचते हो कि मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ। लेकिन देखो, मेरे बाद एक आ रहा है जिसके पांव की जूतियों का फीता खोलने के योग्य मैं नहीं हूँ।’

<sup>26</sup> “भाइयों, इब्राहीम के परिवार के पुत्रों, और तुम में से जो परमेश्वर का भय मानते हों, हमारे पास इस उद्धार का संदेश भेजा गया है।<sup>27</sup> क्योंकि जो यरूशलैम में रहते हैं, और उनके शासक, न तो उसे और न ही भविष्यवक्ताओं की घोषणाओं को पहचानते हैं जो हर सबके को पढ़ी जाती हैं, उन्होंने उसे दोषी ठहराकर इनका पातन किया।<sup>28</sup> और यद्यपि उन्होंने उसे मृत्यु के योग्य कोई कारण नहीं पाया, उन्होंने पीलातुस से उसे मार डालने की मांग की।<sup>29</sup> जब उन्होंने उसके बारे में लिखी गई सब बातें पूरी कर लीं, तो उन्होंने उसे कूस से उतारकर एक कब्र में रख दिया।<sup>30</sup> लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतों में से जिलाया;<sup>31</sup> और कई दिनों तक वह उन लोगों को दिखाई दिया जो गलील से यरूशलैम उसके साथ आए थे, वही लोग अब लोगों के लिए उसके गवाह हैं।<sup>32</sup> और हम तुम्हें उन प्रतिज्ञाओं की शुभ सूचना देते हैं जो पिताओं से की गई थीं,<sup>33</sup> कि परमेश्वर ने इस प्रतिज्ञा को हमारे बच्चों के लिए पूरा किया है यीशु को जिलाकर, जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है:

‘तू मेरा पुत्र है आज मैंने तुझे जन्म दिया है।’

<sup>34</sup> जहां तक इस बात का सवाल है कि उसने उसे मृतकों में से उठाया, फिर कभी सड़ने के लिए नहीं, उसने इस प्रकार कहा है:

‘मैं तुम्हें दाऊद की पवित्र और विश्वासी दया द्वांगा।’

<sup>35</sup> इसलिए वह एक अन्य भजन में भी कहता है:

‘तू अपने पवित्र को सड़ने नहीं देगा।’

<sup>36</sup> क्योंकि दाऊद, जब उसने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर की योजना पूरी की, तो वह सो गया, और अपने पिताओं के साथ दफनया गया और सड़ गया;<sup>37</sup> लेकिन जिसे परमेश्वर ने उठाया, वह सड़ा नहीं।<sup>38</sup> इसलिए भाइयों, तुम्हें यह जात हो कि इस व्यक्तिके माध्यम से पापों की क्षमा तुम्हें सुनाई जाती है,<sup>39</sup> और उसके माध्यम से हर कोई जो विश्वास करता है, सभी बातों से मुक्त हो जाता है, जिनसे तुम मूसा की व्यवस्था के माध्यम से मुक्त नहीं

हो सकते थे।<sup>40</sup> इसलिए, देखो कि भविष्यवक्ताओं में कहीं गई बात तुम्हारे ऊपर न आ जाए:

<sup>41</sup> ‘देखो, तुम उपहास करने वालों और चकित हो जाओ, और नष्ट हो जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम कर रहा हूँ एक काम जिसे तुम कभी विश्वास नहीं करोगे, यद्यपि कोई तुम्हें इसे वर्णन करे।’

<sup>42</sup> जब पौलुस और बरनबास बाहर जा रहे थे, तो लोग बार-बार उनसे आगे सब्द को ये बातें सुनाने की विनती करने लगे।<sup>43</sup> अब जब आराधनालालय की सभा समाप्त हो गई, तो कई यहूदी और परमेश्वर का भय मानने वाले धर्मान्वित पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, जो उनसे बात कर रहे थे और उन्हें परमेश्वर की अनुग्रह में बने रहने के लिए प्रेरित कर रहे थे।

<sup>44</sup> अगले सब्द को, लगभग पूरा शहर प्रभु का वचन सुनने के लिए इकट्ठा हुआ।<sup>45</sup> लेकिन जब यहूदियों ने भीड़ को देखा, तो वे ईर्ष्या से भर गए और पौलुस द्वारा कही गई बातों का विरोध करने लगे, और निंदा करने लगे।<sup>46</sup> पौलुस और बरनबास ने साहसपूर्वक कहा, “यह आवश्यक था कि पहले तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया जाए; चूंकि तुम इसे अस्वीकार करते हो और अपने आप को अनंत जीवन के योग्य नहीं मानते, देखो, हम अन्यजातियों की ओर मुड़ रहे हैं।<sup>47</sup> क्योंकि प्रभु न हमें इस प्रकार आज्ञा दी है:

‘मैंने तुझे अन्यजातियों के लिए एक ज्योति नियुक्त किया है, ताकि तू पृथ्वी के अंत तक उद्धार ला सके।’

<sup>48</sup> जब अन्यजातियों ने यह सुना, तो वे आनन्दित हुए और प्रभु के वचन की महिमा करने लगे; और सभी जिह्वोंने अनंत जीवन के लिए नियुक्त किया गया था, विश्वास किया।<sup>49</sup> और प्रभु का वचन पूरे क्षेत्र में फैल रहा था।<sup>50</sup> लेकिन यहूदियों ने प्रमुख महिलाओं और शहर के प्रमुख पुरुषों को उकासाया, और पौलुस और बरनबास के खिलाफ उत्तीड़न शुरू किया, और उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर निकाल दिया।<sup>51</sup> लेकिन उन्होंने उनके खिलाफ विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़ दी और इकोनियम चले गए।<sup>52</sup> और शिष्य लगातार आनन्द और पवित्र आत्मा से भरे रहते थे।

**14** इकोनियम में वे यहूदियों के आराधनालालय में एक साथ प्रवेश किए, और इस प्रकार बोले कि बहुत से लोगों ने विश्वास किया, दोनों यहूदी और यूनानी।<sup>2</sup> परंतु जो यहूदी विश्वास नहीं करते थे, उन्होंने गैर-यहूदियों के

## प्रेरितों के काम

मन को भड़काया और भाइयों के विरुद्ध उहें कड़वा बना दिया।<sup>3</sup> इसलिए वे वहाँ लंबे समय तक रहे, प्रभु पर निर्भर होकर साहसर्वक बोलते रहे, जो अपनी कृपा के वचन की गवाही दे रहा था, और उनके हाथों से चमत्कार और अद्भुत कार्य करवा रहा था।<sup>4</sup> परंतु नगर के लोग विभाजित हो गए; कुछ यहूदियों के पक्ष में थे, और कुछ प्रेरितों के साथ।<sup>5</sup> और जब गैर-यहूदियों और यहूदियों ने, अपने शासकों के साथ मिलकर, उहें अपमानित करने और पथरवाह करने का प्रयास किया,<sup>6</sup> तो वे इसे जानकर लुकाओनिया के नगरों, लुस्ता और डर्बे, और आसपास के क्षेत्र में भाग गए;<sup>7</sup> और वहाँ वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे।

° लुस्ता में एक व्यक्ति बैठा था जिसके पैर बेकार थे, जो अपनी माँ के गर्भ से विकलांग था, जिसने कभी नहीं चला था।<sup>8</sup> यह व्यक्ति पौलुस को सुन रहा था जब वह बोल रहा था, और जब उसने उस पर ध्यान केंद्रित किया और देखा कि उसके पास स्वरूप होने का विश्वास है,<sup>10</sup> तो उसने ऊँची आवाज़ में कहा, “अपने पैरें पर सीधे खड़े हो जाओ!” और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने लगा।<sup>11</sup> जब भीड़ ने देखा कि पौलुस ने क्या किया, तो उन्होंने लुकाओनियन भाषा में ऊँची आवाज़ में कहा, “देवता मनुषों के समान बन गए हैं और हमारे पास आ गए हैं”<sup>12</sup> और उन्होंने बरनबास को ज्यूस और पौलुस को हर्मीस कहना शुरू किया, क्योंकि वह मुख्य वक्ता था।<sup>13</sup> इसके अलावा, ज्यूस के पुजारी, जिसका मंदिर नगर के बाहर था, वह बैल और पुष्टमालाएँ द्वारा पर लाया, और भीड़ के साथ बलिदान करना चाहता था।

¹⁴ परंतु जब प्रेरित बरनबास और पौलुस ने इसके बारे में सुना, तो उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े और भीड़ में दौड़ते हुए चिल्लाते हुए कहा<sup>15</sup> “पुरुषों, आप ये काम क्यों कर रहे हैं? हम भी आपके समान प्रकृति के मनुष्य हैं, और आपको सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं कि आप इन व्यर्थ चीजों से जीवित परमेश्वर की ओर मुड़ें, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें सब कुछ बनाया।<sup>16</sup> पिछली पीढ़ियों में उसने सभी राष्ट्रों को अपनी राह पर चलने दिया;<sup>17</sup> फिर भी उसने अपने आप को गवाह के बिना नहीं छोड़ा, क्योंकि उसने भलाई की और आपको स्वर्ग से वर्षा और फलदायी क्रतु दी, आपके हृदय को भोजन और आनंद से संतुष्ट किया।”<sup>18</sup> और ये बातें कहकर भी, उन्होंने बड़ी कठिनाई से भीड़ को उहें बलिदान करने से रोका।

¹⁹ परंतु यहूदी अंताकिया और इकोनियम से आए, और भीड़ को जीतने के बाद, उन्होंने पौलुस को पथरवाह

किया और उसे नगर से बाहर घसीटकर ले गए, यह सोचकर कि वह मर गया है।<sup>20</sup> परंतु जब चेले उसके चारों ओर खड़े थे, तो वह उठकर नगर में चला गया। अगले दिन वह बरनबास के साथ डर्बे के लिए चला गया।

²¹ और जब उहेंने उस नगर में सुसमाचार का प्रचार किया और बहुत से चेलों को बनाया, तो वे लुस्ता, इकोनियम, और अंताकिया लौट आए,<sup>22</sup> चेलों के आत्माओं को मजबूत करते हुए, उहें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, और कहते हुए, “हमें बहुत सी कठिनाइयों के माध्यम से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।”<sup>23</sup> जब उन्होंने हर कलीसिया में उनके लिए प्राचीनों को नियुक्त किया, उपवास के साथ प्रार्थना करके, उहेंने उहें प्रभु को सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास किया था।

²⁴ वे पिसिदिया से होकर पंफूलिया में आए।<sup>25</sup> जब उहेंने पेरगा में वचन बोला, तो वे अत्तालिया गए।<sup>26</sup> वहाँ से वे अंताकिया के लिए जहाज पर चढ़े, जहाँ से उहें परमेश्वर की कृपा के लिए सौंपा गया था उस काम के लिए जिसे उन्होंने पूरा किया था।<sup>27</sup> जब वे पहुँचे और कलीसिया को इकट्ठा किया, तो उन्होंने उन सभी बातों की रिपोर्ट करना शुरू किया जो परमेश्वर ने उनके साथ की थीं, और कैसे उसने गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का द्वारा खोला था।<sup>28</sup> और उन्होंने चेलों के साथ लंबे समय तक बिताया।

**15** कुछ लोग यहूदिया से आए और भाइयों को सिखाने लगे, “जब तक तुम मूसा की रीति के अनुसार खतना नहीं करोगे, तुम उद्धार नहीं पा सकते।”<sup>2</sup> और जब पौलुस और बरनबास का उनसे तीव्र विवाद और बहस हुई, तो भाइयों ने यह तय किया कि पौलुस और बरनबास और उनमें से कुछ अन्य यरूशलैम जाएं इस मुद्दे के संबंध में प्रेरितों और प्राचीनों के पास।<sup>3</sup> इसलिए, जब उहें कलीसिया द्वारा विदा किया गया, वे फोनीशिया और सामरिया से होकर जा रहे थे, जातियों के परिवर्तन का विस्तार से वर्णन करते हुए, और वे सभी भाइयों और बहनों को बड़ी खुशी दे रहे थे।<sup>4</sup> जब वे यरूशलैम पहुँचे, तो कलीसिया, प्रेरितों और प्राचीनों ने उनका स्वागत किया, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ क्या-क्या किया था।<sup>5</sup> परंतु फरीसियों के संप्रदाय के कुछ विश्वासियों ने खड़े होकर कहा, “उनका खतना करना आवश्यक है और उहें मूसा की व्यवस्था का पालन करने का निर्देश देना चाहिए।”<sup>6</sup>

## प्रेरितों के काम

<sup>६</sup> प्रेरित और प्राचीन इस मामले की जांच करने के लिए एकत्र हुए। <sup>७</sup> बहुत बहस के बाद, पतरस ने खड़े होकर उनसे कहा, "भाइयों, तुम जानते हो कि प्रारंभिक दिनों में परमेश्वर ने तुम्हारे बीच एक चुनाव किया, कि मेरे मुख से जातियों को सुसमाचार का वचन सुनना और विश्वास करना चाहिए। <sup>८</sup> और परमेश्वर, जो हृदय को जानता है, ने उन्हें पवित्र आत्मा देकर गवाही दी, जैसे उसने हमें भी दी। <sup>९</sup> और उसने हमारे और उनके बीच कोई भेदभाव नहीं किया, उनके हृदयों को विश्वास के द्वारा शुद्ध किया। <sup>१०</sup> चूंकि यह मामला है, तुम परमेश्वर की परीक्षा क्यों ले रहे हो शिष्यों की गर्दन पर ऐसा जुआ रखकर जिस न तो हमारे पूर्वज और न ही हम सहन कर सके? <sup>११</sup> परंतु हम विश्वास करते हैं कि हम प्रभु यीशु की कृपा के द्वारा उद्धार पाते हैं, जैसे वे भी पाते हैं।<sup>१२</sup>

<sup>12</sup> सभी लोग चुप रहे, और वे बरनबास और पौलुस को सुन रहे थे जब वे उन सभी चिह्नों और चमत्कारों का वर्णन कर रहे थे जो परमेश्वर ने उनके माध्यम से जातियों के बीच किए थे। <sup>१३</sup> जब वे बोलना बंद कर चुके, तो याकूब ने उत्तर दिया, "भाइयों, मेरी सुनो। <sup>१४</sup> शम्पैन ने वर्णन किया है कि कैसे परमेश्वर ने पहले जातियों में से अपने नाम के लिए एक लोगों को लेने की चिंता की। <sup>१५</sup> भविष्यद्वक्ताओं के वचन इससे सहमत हैं, जैसे लिखा है:

<sup>१६</sup> 'इन बातों के बाद मैं लौटूंगा, और मैं डाऊँट के गिरे हुए तंबू को फिर से बनाऊँगा, और मैं उसके छंडहरों को फिर से बनाऊँगा, और मैं उसे बहाल करूँगा,<sup>१७</sup> ताकि शेष मानवजाति प्रभु को खोजे और सभी जातियाँ जो मेरे नाम से पुकारे जाते हैं,<sup>१८</sup> प्रभु कहते हैं, जो बहुत पहले से इन बातों को प्रकट करता है।'

<sup>१९</sup> इसलिए, मेरा निर्णय है कि हम उन जातियों के लिए परेशानी न खड़ी करें जो परमेश्वर की ओर मुड़ रहे हैं, <sup>२०</sup> बल्कि हम उन्हें लिखें कि वे मूर्तियों से दूषित चीजों से बचें, यौन अनैतिकता से, गला घोटे गए और रक्त से। <sup>२१</sup> क्योंकि प्राचीन पीढ़ियों से मूसा के प्रचारक हर नगर में हैं, क्योंकि वह हर सब्त को आराधनालालों में पढ़ा जाता है।<sup>२२</sup>

<sup>२२</sup> फिर प्रेरितों और प्राचीनों को, पूरी कलीसिया के साथ, उनके बीच से पुरुषों को चुनकर पौलुस और बरनबास के साथ अंताकिया भजने की इच्छा हुई: यहूदा जिसे बरसबस कहा जाता था, और सिलास, भाइयों के बीच प्रमुख पुरुष, <sup>२३</sup> और उन्होंने उनके साथ यह पत्र भेजा: "प्रेरित और प्राचीन भाई, अंताकिया, सीरिया, और किलिकिया के भाइयों और बहनों को जो जातियों में से

हैं: नमस्कार। <sup>२४</sup> चूंकि हमने सुना है कि हमारे कुछ लोग, जिन्हें हमने कोई निर्देश नहीं दिया, तुम्हें उनकी शिक्षा से भ्रमित कर रहे हैं, तुम्हारी आत्माओं को परेशान कर रहे हैं, <sup>२५</sup> इसलिए हमें एक मन होकर तुम्हारे पास हमारे प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ पुरुषों को भेजने का निर्णय हुआ, <sup>२६</sup> वे पुरुष जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए अपने जीवन को जोखिम में डाला है। <sup>२७</sup> इसलिए, हमने यहूदा और सिलास को भेजा है, जो स्वयं भी मौखिक रूप से वही बातें बताएंगे। <sup>२८</sup> क्योंकि पवित्र आत्मा और हमें यह अच्छा लगा कि तुम पर इन आवश्यकताओं के अलावा कोई बड़ा बोझ न ढालो: <sup>२९</sup> कि तुम मूर्तियों के लिए बलिदान की गई चीजों से, रक्त से, गला घोटे गए और यौन अनैतिकता से बचो; यदि विदा इन चीजों से दूर रहोगे, तो तुम अच्छा करोगे। विदा।"

<sup>३०</sup> तो जब उन्हें विदा किया गया, वे अंताकिया गए; और जब उन्होंने मण्डली को इकट्ठा किया, उन्होंने पत्र सौंपा। <sup>३१</sup> जब उन्होंने इसे पढ़ा, तो वे इसके प्रोत्साहन के कारण आनंदित हुए। <sup>३२</sup> यहूदा और सिलास, जो स्वयं भी भविष्यद्वक्ता थे, भाइयों और बहनों को एक लंबा संदेश देकर प्रोत्साहित और मजबूत किया। <sup>३३</sup> जब उन्होंने वहाँ समय बिताया, तो उन्हें शांति से उन भाइयों और बहनों से विदा किया गया जिन्होंने उन्हें भेजा था। <sup>३४</sup> [परंतु सिलास को वहाँ रहना अच्छा लगा।] <sup>३५</sup> परंतु पौलुस और बरनबास अंताकिया में रहे, प्रभु का वचन सिखाते और प्रचार करते रहे, और भी कई अन्य लोगों के साथ।

<sup>३६</sup> अब कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "आओ, हम उस सभी नगरों में लौटकर भाइयों और बहनों से मिलें जहाँ हमने प्रभु का वचन सुनाया था, और देखें कि वे कैसे हैं।"<sup>३७</sup> बरनबास ने भी युहन्ना को, जिसे मरकुस कहा जाता था, उनके साथ ले जाने की इच्छा की। <sup>३८</sup> परंतु पौलुस का विचार था कि उन्हें उसे साथ नहीं ले जाना चाहिए, जिसने पृथुलिया में उन्हें छोड़ दिया था और उनके साथ काम करने नहीं गया था। <sup>३९</sup> अब यह एक तीव्र असहमति में बदल गया कि वे एक-दूसरे से अलग हो गए, और बरनबास मरकुस को लेकर कुप्रुस के लिए रवाना हो गए। <sup>४०</sup> परंतु पौलुस ने सिलास को चुना और भाइयों द्वारा प्रभु की कृपा को सौंपकर रवाना हो गए। <sup>४१</sup> और वह सीरिया और किलिकिया से होकर कलीसियाओं को मजबूत करते हुए यात्रा कर रहे थे।

**16** अब पौलुस भी डर्बे और लुस्ता में आया। और वहाँ एक शिष्य था, जिसका नाम तीमुथियस था, जो एक यहूदी महिला का पुत्र था जो एक विश्वासी थी, परंतु

## प्रेरितों के काम

उसके पिता यूनानी थे।<sup>2</sup> वह लुस्ता और इकुनियुम के भाइयों और बहनों द्वारा अच्छी तरह से बोला गया था।<sup>3</sup> पौलुस चाहता था कि यह व्यक्ति उसके साथ चले, और उसने उसे लिया और उसका खतना किया उन यहूदियों के कारण जो उन भागों में थे, क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसके पिता यूनानी थे।<sup>4</sup> अब जब वे नगरों से गुजर रहे थे, तो वे उन नियमों को उन्हें पालन करने के लिए दे रहे थे जो यरूशलैम में प्रेरितों और प्राचीनों द्वारा निर्धारित किए गए थे।<sup>5</sup> इस प्रकार चर्च विश्वास में मजबूत हो रहे थे, और संख्या में प्रतिदिन बढ़ रहे थे।

<sup>6</sup> वे फ्रिजिया और गालातिया क्षेत्र से गुजरे, पवित्र आत्मा द्वारा एशिया में वर्चन बोलने से मना किए जाने के बाद;<sup>7</sup> और जब वे मिसिया आए, तो वे विधिनिया में जाने का प्रयास कर रहे थे, और यीशु की आत्मा ने उन्हें अनुमति नहीं दी;<sup>8</sup> और मिसिया से गुजरते हुए, वे त्रौआस में गए।<sup>9</sup> और रात में पौलुस को एक दर्शन दिखाई दिया:

मकिदुनिया का एक व्यक्ति खड़ा था और उससे प्रार्थना कर रहा था, और कह रहा था, "मकिदुनिया आओ और हमारी सहायता करो!"<sup>10</sup> जब उसने दर्शन देखा, तो हम तुरंत मकिदुनिया के लिए प्रस्थान करने की कोशिश करने लगे, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि परमेश्वर ने हमें उनके लिए सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाया था।

<sup>11</sup> इसलिए त्रौआस से जहाज पर चढ़ने के बाद, हम सीधे सामोधारके गए, और अगले दिन निआपोलिस पहुंचे,<sup>12</sup> और वहाँ से फिलिप्पी पहुंचे, जो मकिदुनिया के जिले का एक प्रमुख नगर है, एक रोमन उपनिवेश, और हम इस नगर में कुछ दिन बिता रहे थे।<sup>13</sup> और सब्ज के दिन हम फाटक के बाहर नदी के किनारे गए, जहाँ हमें लगा कि प्रार्थना का स्थान होगा; और हम बैठ गए और उन महिलाओं से बात करने लगे जो इकट्ठा हुई थीं।<sup>14</sup> लुटिया नाम की एक महिला सुन रही थी, वह थुआतीरा नगर की बैंगनी कपड़ों की विक्रेता थी, और परमेश्वर की उपासक थी। प्रभु ने उसके हृदय को खोल दिया ताकि वह पौलुस द्वारा कही गई बातों पर ध्यान दे सके।<sup>15</sup> अब जब उसने और उसके घराने ने बपतिस्मा लिया, तो उसने हमसे आग्रह किया, "यदि आपने मुझे प्रभु के प्रति विश्वासयोग समझा है, तो मेरे घर में आकर ठहरें।"<sup>16</sup> और उसने हमें राजी कर लिया।

<sup>16</sup> ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना के स्थान पर जा रहे थे, एक दासी महिला, जिसमें भविष्यवाणी की आत्मा थी, हमसे मिली, जो अपने स्वामियों को भविष्यवाणी करके बहुत लाभ दिला रही थी।<sup>17</sup> वह पौलुस और हमारे पैछे चलती रही और बार-बार चिल्लाती रही, "ये लोग

परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें उद्धार का मार्ग बता रहे हैं!"<sup>18</sup> अब वह कई दिनों तक ऐसा करती रही। लेकिन पौलुस बहुत परेशान हो गया, और उसने आत्मा से कहा, "मैं तुम्हें यीशु मसीह के नाम में आदेश देता हूँ कि उससे बाहर आओ!" और वह उसी क्षण बाहर आ गई।

<sup>19</sup> लेकिन जब उसके स्वामियों ने देखा कि उनके लाभ की आशा अचानक चली गई है, उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ लिया और उन्हें अधिकारियों के सामने बाजार में खींच लाए,<sup>20</sup> और जब उन्होंने उन्हें मुख्य मजिस्ट्रेटों के पास लाया, तो उन्होंने कहा, "ये लोग, यहूदी होने के नाते, हमारे नगर में परेशानी पैदा कर रहे हैं,"<sup>21</sup> और वे ऐसे रीति-रिवाजों का प्रचार कर रहे हैं जो हमारे लिए स्वीकार्य नहीं हैं या अभ्यास करने योग्य नहीं हैं, क्योंकि हम रोमाइंहैं।"<sup>22</sup> भीड़ ने उनके खिलाफ हमला किया, और मुख्य मजिस्ट्रेटों ने उनके कपड़े फाड़ दिए और उन्हें डंडों से पीटने का आदेश दिया।<sup>23</sup> जब उन्होंने उन्हें कई बार मारा, तो उन्हें जेल में डाल दिया, जेलर को उन्हें सुरक्षित रखने का आदेश दिया;<sup>24</sup> और उसने, ऐसा आदेश प्राप्त करने के बाद, उन्हें अंतरिक जेल में डाल दिया और उनके पैरों को बेड़ियों में जकड़ दिया।

<sup>25</sup> अब आधी रात के करीब पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर की सृति के भजन गा रहे थे, और कैदी उन्हें सुन रहे थे;<sup>26</sup> और अचानक एक बड़ा भूकंप आया, जिससे जेल की नींव हिल गई, और तुरंत सभी दरवाजे खुल गए, और सभी की जंजीरें खुल गईं।<sup>27</sup> जब जेलर जागा और जेल के दरवाजे खुले देखे, तो उसने अपनी तलवार खींच ली और खुद को मारने वाला था, यह सोचकर कि कैदी भाग गए हैं।<sup>28</sup> लेकिन पौलुस ने ज़ँगी आवाज में पुकार कर कहा, "अपने आप को नुकसान मत पहुँचाओ, क्योंकि हम सब यहाँ हैं!"

<sup>29</sup> और जेलर ने रोशनी मंगवाई और अंदर दौड़ा, और डर से कांपते हुए, पौलुस और सीलास के सामने गिर पड़ा;<sup>30</sup> और जब उसने उन्हें बाहर लाया, तो उसने कहा, "महाशय, मुझे बचने के लिए क्या करना चाहिए?"<sup>31</sup> उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु पर विश्वास करो, और तुम उद्धार पाओगे, तुम और तुम्हारा घराना।"<sup>32</sup> और उन्होंने उसके साथ-साथ उसके घर के सभी लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाया।<sup>33</sup> और उसने उसी रात के समय उन्हें लेकर उनके घार धोए और तुरंत उसने और उसके पूरे घराने ने बपतिस्मा लिया।<sup>34</sup> और उसने उन्हें अपने घर में लाकर उनके सामने भोजन रखा, और वह बहुत खुश

## प्रेरितों के काम

हुआ, क्योंकि वह अपने पूरे घराने के साथ परमेश्वर में विश्वास करने वाला बन गया था।

<sup>35</sup> अब जब दिन हुआ, तो मुख्य मजिस्ट्रेटों ने अपने अधिकारियों को भेजा, यह कहते हुए, "उन लोगों को रिहा कर दो।"<sup>36</sup> और जेलर ने ये शब्द पौलस को बताए, यह कहते हुए, "मुख्य मजिस्ट्रेटों ने कहा है कि उन्हें रिहा किया जाए। तो अब बाहर आओ और शांति से जाओ।"<sup>37</sup> लेकिन पौलस ने उनसे कहा, "उन्होंने हमें बिना उचित प्रक्रिया के सार्वजनिक रूप से पीटा है—जो कि हम रोमी हैं—और हमें जेल में डाल दिया है; और अब वे हमें चुपके से भेज रहे हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत, उन्हें स्वयं आकर हमें बाहर ले जाने दें।"<sup>38</sup> अधिकारियों ने ये शब्द मुख्य मजिस्ट्रेटों को बताए। और जब उन्होंने सुना कि वे रोमी हैं, तो वे डर गए,<sup>39</sup> और वे आए और उनसे प्रार्थना की, और जब उन्होंने उन्हें बाहर निकाला, तो बार-बार उनसे नगर छोड़ने का अनुरोध किया।<sup>40</sup> वे जेल से बाहर आए और लुदिया के घर में गए, और जब उन्होंने भाइयों और बहनों को देखा, तो उन्हें प्रोत्साहित किया और चले गए।

**17** अब जब वे एम्फिपोलिस और अपेलोनिया से होकर यात्रा कर चुके, तो वे थिस्सलुनीका आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था।<sup>2</sup> और पौलस की रीति के अनुसार, वह उनके पास गया, और तीन सब्जों तक शास्त्रों से उनके साथ तर्क करता रहा,<sup>3</sup> समझाते हुए और प्रमाण देते हुए कि मसीह का दुख उठाना और मृतकों में से जी उठाना आशयक था, और कहता, "यह यीशु जिसे मैं तुम्हें प्रचार कर रहा हूँ, वही मसीह है।"<sup>4</sup> और उनमें से कुछ विश्वास में आ गए और पौलस और सिलास के साथ मिल गए, साथ ही बड़ी संख्या में परमेश्वर से डरने वाले यूनानी और प्रमुख महिलाओं की एक महत्वपूर्ण संख्या भी।<sup>5</sup> परन्तु पृथकी ईर्ष्या से भर गए और बाजार से कुछ दुष्ट लोगों को साथ लेकर, भीड़ बनाई और नगर में उपद्रव मचाया। उन्होंने यासोन के घर पर हमला किया और उन्हें बाहर लाने के लिए खोजने लगो।<sup>6</sup> जब उन्हें नहीं पाया, तो वे यासोन और कुछ भाइयों को नगर के अधिकारियों के समने घसीटते हुए ले गए, चिल्लाते हुए,<sup>7</sup> ये लोग जिन्होंने संसार को उलट-पुलट कर दिया है, यहाँ भी आ गए हैं,<sup>7</sup> और यासोन ने उनका स्वागत किया है, और ये सब केसर की आजाओं के विपरीत कार्य करते हैं, कहते हैं कि एक और राजा है, यीशु।<sup>8</sup> उन्होंने भीड़ और नगर के अधिकारियों को इन बातों से उत्तेजित कर दिया।<sup>9</sup> और जब उन्होंने यासोन और अन्य से एक प्रतिज्ञा प्राप्त की, तो उन्हें छोड़ दिया।

<sup>10</sup> भाइयों ने तुरंत पौलुस और सिलास को रातोंरात बेरिया भेज दिया, और जब वे वहाँ पहुँचे, तो यहूदियों के आराधनालय में गए।<sup>11</sup> अब ये थिस्सलुनीका के लोगों से अधिक उदार मन के थे, क्योंकि उन्होंने वचन को बड़ी उत्सुकता से ग्रहण किया, और प्रतिदिन शास्त्रों की जाँच करते थे कि क्या ये बातें सच हैं।<sup>12</sup> इसलिए, उनमें से कई विश्वास में आ गए, साथ ही प्रमुख यूनानी महिलाओं और पुरुषों की एक महत्वपूर्ण संख्या भी।<sup>13</sup> परन्तु जब थिस्सलुनीका के यहूदियों ने जान लिया कि परमेश्वर का वचन पौलुस के द्वारा बेरिया में भी प्रचारित किया गया है, तो वे वहाँ भी आए, भीड़ को उत्तेजित और उकसाने लगे।<sup>14</sup> तब भाइयों ने तुरंत पौलुस को समुद्र तक जाने के लिए भेज दिया, और सिलास और तीमुथियुस वहाँ रहे।<sup>15</sup> अब जो पौलुस को ले गए, उन्होंने उसे एथेस तक पहुँचाया, और सिलास और तीमुथियुस के लिए एक आदेश प्राप्त कर उन्हें जल्द से जल्द उसके पास आने के लिए कहा, और वे चले गए।

<sup>16</sup> अब जब पौलुस एथेस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो उसकी आमा उसके भीतर उत्तेजित हो गई क्योंकि उसने देखा कि नगर मूर्तियों से भरा हुआ था।<sup>17</sup> इसलिए वह आराधनालय में यहूदियों और परमेश्वर से डरने वाले अन्यजातियों के साथ तर्क करने लगा, और प्रतिदिन बाजार में उन लोगों के साथ जो वहाँ उपस्थित होते थे।<sup>18</sup> और कुछ एपिक्यूरियन और स्टोइक दाशशिनिक भी उसके साथ बातचीत कर रहे थे। कुछ कह रहे थे, "यह टुकड़ों का संग्रहकर्ता क्या कहने की कोशिश कर रहा है?" अन्य, "वह अजीब देवताओं का प्रचारक लगता है"—क्योंकि वह यीशु और पुनरुत्थान का प्रचार कर रहा था।<sup>19</sup> और वे उसे पकड़कर एरियोपागुस पर ले गए, कहते हुए, "या हम जान सकते हैं कि यह नया उपदेश क्या है जिसे आप प्रचार कर रहे हैं?"<sup>20</sup> क्योंकि आप हमारे कानों में कुछ अजीब बातें ला रहे हैं, इसलिए हम जाना चाहते हैं कि ये बातें क्या अर्थ रखती हैं।<sup>21</sup> (अब सभी एथेनियन और वहाँ के आगांतुक अपना समय कुछ नया कहने या सुनने में ही बिताते थे।)

<sup>22</sup> इसलिए पौलुस एरियोपागुस के बीच में खड़ा होकर कहने लगा, "एथेस के लोगों, मैं देखता हूँ कि आप सभी बातों में बहुत धार्मिक हैं।"<sup>23</sup> क्योंकि जब मैं गुजर रहा था और आपकी पूजा की वस्तुओं का निरीक्षण कर रहा था, तो मैंने एक वेदी भी पाई जिस पर यह लेखा था: 'अज्ञात देवता को।' इसलिए, जिसे आप अज्ञानता में पूजते हैं, उसे मैं आपको प्रचार करता हूँ।<sup>24</sup> वह परमेश्वर जिसने संसार और जो कुछ उसमें है, बनाया, क्योंकि वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, हाथों से बने मंदिरों में नहीं रहता;

## प्रेरितों के काम

<sup>25</sup> और न ही वह मानव हाथों से सेवा किया जाता है, जैसे उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो, क्योंकि वही सभी लोगों को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है; <sup>26</sup> और उसने एक मनुष्य से सभी मानव जातियों को पृथी के सभी चेहरे पर रहने के लिए बनाया, उनके नियुक्त समय और उनके भूमि की सीमाओं को निर्धारित करते हुए, <sup>27</sup> ताकि वे परमेश्वर का खोजें, यदि संभव हो तो उसे टटोलकर पा सकें, हालांकि वह हम में से प्रत्येक से दूर नहीं है; <sup>28</sup> क्योंकि उसी में हम जीवित रहते हैं और चलते हैं और अस्तित्व में हैं, जैसा कि आपके अपने कुछ कवियों ने कहा है, 'क्योंकि हम भी उसके वंशज हैं।' <sup>29</sup> इसलिए, छूकि हम परमेश्वर के वंशज हैं, हमें नहीं सोचना चाहिए कि दिव्य प्रकृति सोने या चाँदी या पत्थर के समान है, मानव कौशल और विचार से बनी एक छवि। <sup>30</sup> इसलिए अज्ञानता के समयों को अनदेखा करते हुए, परमेश्वर अब मानव जाति को यह प्रचार कर रहा है कि सभी लोग हर जगह पश्चातप करें, <sup>31</sup> क्योंकि उसने एक दिन निर्धारित किया है जिस पर वह संसार का न्याय धर्म में करेगा एक मनुष्य के द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया है, सभी लोगों को प्रमाण देकर उसे मृतकों में से उठाकर।"

<sup>32</sup> अब जब उन्होंने मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में सुना, तो कुछ उपहास करने लगे, परन्तु अन्य ने कहा, "हम फिर से आपसे इस विषय में सुनेंगे।" <sup>33</sup> इसलिए पौतुस उनके बीच से चला गया। <sup>34</sup> परन्तु कुछ लोग उसके साथ मिल गए और विश्वास किया, जिनमें एरियोपायुस का दियोनिसियस, और एक रसी जिसका नाम दमरीस था, और उनके साथ अन्य लोग भी थे।

**18** इन घटनाओं के बाद पौतुस ऐथेस से निकलकर कुरिन्युस गया। <sup>2</sup> और उसने अकिला नामक एक यहूदी को पाया, जो पौटुस का निवासी था, जो हाल ही में अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था, क्योंकि कल्लोडियस ने सभी यहूदियों को रोम छोड़ने का आदेश दिया था। वह उनके पास आया, <sup>3</sup> और क्योंकि वह भी उसी व्यवसाय का था, वह उनके साथ रहने लगा, और वे साथ में काम करने लगे, क्योंकि वे व्यवसाय से तंबू बनाने वाले थे। <sup>4</sup> और पौतुस हर सब्त को आराधनालाय में तक करता था और यहूदियों और यूनानियों को मनाने की कोशिश करता था।

<sup>5</sup> लेकिन जब सिलास और तीमुथियुस मकिदोनिया से आए, तो पौतुस ने पूरी तरह से वचन को समर्पित कर दिया, यहूदियों को गवाही देते हुए कि यीशु ही मसीह है। <sup>6</sup> लेकिन जब उन्होंने विरोध किया और निंदा की, तो

उसने अपने वस्त्र झाड़कर उनसे कहा, "तुम्हारा खुन तुम्हारे अपने सिर पर है! मैं निर्दोष हूँ। अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।" <sup>7</sup> तब वह वहाँ से चला गया और तिस्तुस जस्टस नामक एक व्यक्ति के घर गया, जो परमेश्वर का उपासक था, जिसका घर आराधनालाय के पास था। <sup>8</sup> कुरिन्युस के आराधनालाय के नेता किस्तुस ने अपने पूरे घराने के साथ प्रभु में विश्वास किया, और जब कुरिन्युस के कई लोग पौतुस को सुन रहे थे, तो वे विश्वास कर रहे थे और बपतिस्मा ले रहे थे।

<sup>9</sup> और प्रभु ने रात में एक दर्शन के द्वारा पौतुस से कहा, "डरो मत, बोलते रहो और चुप मत रहो; <sup>10</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और कोई भी तुम्हें नुकसान पहुँचाने के लिए हमला नहीं करेगा, क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" <sup>11</sup> और वह वहाँ एक वर्ष और छह महीने तक रहा, उनके बीच परमेश्वर का वचन सिखाता रहा।

<sup>12</sup> लेकिन जब गल्लियो अवैया का प्रोकान्सल था, तो यहूदी एक साथ पौतुस के खिलाफ उठ खड़े हुए और उसे न्यायासन के सामने लाए, <sup>13</sup> कहते हुए, "यह व्यक्ति लोगों को कानून के विपरीत परमेश्वर की आराधना करने के लिए उकसा रहा है।" <sup>14</sup> लेकिन जब पौतुस मूँह खोलने ही वाला था, गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "यदि यह कोई अपराध या दुष्ट, अनैतिक कार्य होता, हे यहूदियों, तो तुम्हारे साथ सहन करना उचित होता; <sup>15</sup> लेकिन यदि यह शिक्षाओं और व्यक्तियों और तुम्हारे अपने कानून के प्रश्न हैं, तो इसे तुम स्वयं देखो; मैं इन मामलों में न्यायाधीश बनने को तैयार नहीं हूँ।" <sup>16</sup> और उसने उन्हें न्यायासन से दूर कर दिया। <sup>17</sup> लेकिन उन्होंने सोस्थेनेस, आराधनालाय के नेता को पकड़ लिया और न्यायासन के सामने उसे पीटना शुरू कर दिया। लेकिन गल्लियो को इन बातों की कोई वित्त नहीं थी।

<sup>18</sup> अब पौतुस, कई और दिन वहाँ रहने के बाद, भाइयों और बहनों से विदा लेकर सीरिया के लिए रवाना हुआ, और प्रिस्किल्ला औं अकिला उसके साथ थे। उसने केंक्रिया में अपने बाल कटवाए, क्योंकि वह एक मन्त्र पूरी कर रहा था। <sup>19</sup> वे इफिसुस पहुँचे, और उसने उन्हें वहाँ छोड़ दिया। अब वह स्वयं आराधनालाय में गया और यहूदियों से तर्क करने लगा। <sup>20</sup> जब उन्होंने उससे अधिक समय तक रहने के लिए कहा, तो उसने सहमति नहीं दी, <sup>21</sup> लेकिन उनसे विदा लेकर कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा होगी तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा," और वह इफिसुस से रवाना हो गया।

## प्रेरितों के काम

<sup>22</sup> जब वह कैसरिया में उतरा, तो वह यरूशलैम गया और कलीसिया को नमस्कार किया, और अंताकिया चला गया। <sup>23</sup> और वहाँ कुछ समय बिताने के बाद, वह चला गया और गालातिया क्षेत्र और प्रूगिया से होकर लगातार गुजरा, सभी शिष्यों को मजबूत करता हुआ।

<sup>24</sup> अब अपेल्लोस नामक एक यहूदी, जो जन्म से अलेक्जेंड्रिया का था, एक विद्वान् व्यक्ति, इफिसुस आया; और वह सास्त्रों में निपुण था। <sup>25</sup> इस व्यक्ति को प्रभु के मार्ग में प्रशिक्षित किया गया था, और आत्मा में उत्साही होकर, वह यीशु के विषय में बातें सही ढंग से बोल और सिखा रहा था, केवल योहन के बपतिस्मा से परिवित था। <sup>26</sup> और वह आराधनालय में साहसर्पूर्क बोलने लगा। लेकिन जब प्रिस्किल्ला और अकिला ने उसे सुना, तो वे उसे अलग ले गए और उसे परमेश्वर के मार्ग को और अधिक सही ढंग से समझाया। <sup>27</sup> और जब वह अचैया जाना चाहता था, तो भाइयों ने उसे प्रोत्साहित किया और शिष्यों को उसे स्वागत करने के लिए लिखा, और जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने उन लोगों की बहुत मदद की जो अनुग्रह के माध्यम से विश्वास कर चुके थे, <sup>28</sup> क्योंकि उसने सार्वजनिक रूप से यहूदियों का जोरदार खंडन किया, शास्त्रों के द्वारा यह सिद्ध करते हुए कि यीशु ही मसीह है।

**19** अब ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्य में था, पौलुस ऊपरी देश से होकर इफिसुस आया, और कुछ चेलों को पाया। <sup>2</sup> उसने उनसे कहा, "क्या तुमने विश्वास करने पर पवित्र आत्मा प्राप्त किया?" और उहोंने उससे कहा, "इसके विपरीत, हमने तो यह भी नहीं सुना कि कोई पवित्र आत्मा है।" <sup>3</sup> और उसने कहा, "तो फिर तुम किसमें बपतिस्मा लिए गए?" उहोंने कहा, "यूहन्ना के बपतिस्मा में।" <sup>4</sup> पौलुस ने कहा, "यूहन्ना ने मन-परिवर्तन के बपतिस्मा से बपतिस्मा दिया, लोगों से यह कहते हुए कि जो उसके बाद आने वाला है, उस पर विश्वास करें, अर्थात् यीशु पर।" <sup>5</sup> जब उहोंने यह सुना, तो वे प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिए गए। <sup>6</sup> और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखा, तो पवित्र आत्मा उन पर आया, और वे भाषाओं में बोलने और भविष्यवाणी करने लगे। <sup>7</sup> कुल मिलाकर लगभग बारह पुरुष थे।

<sup>8</sup> और वह आराधनालय में प्रवेश किया और तीन महीने तक साहसर्पूरक बोलता रहा, विचार-विमर्श करता और उहें परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाता रहा। <sup>9</sup> परन्तु जब कुछ कठोर और अवज्ञाकारी हो गए, और लोगों के सामने मार्ग के विषय में बुरा बोलने लगे, तो उसने उनसे अलग होकर चेलों को अपने साथ ले लिया,

और प्रतिदिन तिरान्त्रुस के व्याख्यान कक्ष में विचार-विमर्श करता रहा। <sup>10</sup> यह दो वर्ष तक चलता रहा, ताकि एशिया में रहने वाले सभी लोगों ने, यहूदी और यूनानी दोनों ने, प्रभु का वचन सुना।

<sup>11</sup> परमेश्वर पौलुस के हाथों से अद्भुत चमकार कर रहा था, <sup>12</sup> यहाँ तक कि रुमाल या एप्रन जो उसकी लवा को क्लू चुके थे, बीमारों के पास लाए जाते थे, और बीमारियाँ उनसे दूर हो जाती थीं और दुष्ट आत्माएँ बाहर निकल जाती थीं।

<sup>13</sup> लेकिन कुछ यहूदी झाड़-फूँक करने वाले, जो जगह-जगह जाते थे, प्रभु यीशु के नाम का उपयोग करने का प्रयास करते थे उन पर जिनमें दुष्ट आत्माएँ थीं, कहते थे, "मैं तुम्हें यीशु के नाम में आदेश देता हूँ, जिसे पौलुस प्रचार करता है!" <sup>14</sup> अब स्केवा नामक एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र यह कर रहे थे। <sup>15</sup> लेकिन दुष्ट आत्मा ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "मैं यीशु को पहचानता हूँ, और पौलुस को जानता हूँ, लेकिन तुम कौन हो?" <sup>16</sup> और जिस व्यक्ति में दुष्ट आत्मा थी, वह उन पर झटपट पड़ा और उन सभी को पराजित कर दिया और उन पर हावी हो गया, ताकि वे उस घर से नम्र और घायल होकर भागे। <sup>17</sup> यह इफिसुस में रहने वाले सभी लोगों को, यहूदी और यूनानी दोनों को, जात हो गया; और उन सभी पर भय छा गया, और प्रभु यीशु का नाम महिमा प्राप्त कर रहा था। <sup>18</sup> और जो लोग विश्वास कर चुके थे, वे आते रहे, अपने कार्यों को स्वीकार करते और प्रकट करते रहे। <sup>19</sup> और जो लोग जादू-टोना करते थे, उहोंने अपनी पुस्तकें इकट्ठी कीं और सबके सामने जलाना शुरू कर दिया; और उहोंने पुस्तकों की मीमत जोड़ी, और पाया कि वह पचास हजार चाँदी के सिक्के थे। <sup>20</sup> इस प्रकार प्रभु का वचन बढ़ता और प्रबल होता गया।

<sup>21</sup> अब जब ये बातें समाप्त हो गईं, पौलुस ने आत्मा में निश्चय किया कि वह यरूशलैम जाएगा जब वह मकिदुनिया और अखेया से होकर जा चुका होगा, यह कहते हुए, "जब मैं वहाँ हो लूँगा, तो मुझे रोम भी देखना चाहिए।" <sup>22</sup> और जब उसने अपने दो सहायकों, तीमुथियुस और एरास्तुस को मकिदुनिया भेजा, तो वह स्वयं एशिया में कुछ समय तक रहा।

<sup>23</sup> उसी समय मार्ग के विषय में एक बड़ा उपद्रव हुआ।

<sup>24</sup> क्योंकि एक व्यक्ति जिसका नाम देमेत्रियुस था, जो चाँदी के आर्तेमिस के मंदिर बनाता था, कला के कारीगरों को बहुत काम देता था; <sup>25</sup> उसने इन लोगों को

## प्रेरितों के काम

और इसी प्रकार के व्यापारियों को इकट्ठा किया और कहा, “पुरुषों, तुम जानते हो कि हमारी समृद्धि इस व्यवसाय पर निर्भर करती है।<sup>25</sup> तुम देखते और सुनते हो कि न केवल इफिसुस में, बल्कि लगभग पूरे एशिया में, इस पौलुस ने बहुत से लोगों को समझाया और उन्हें मोड़ दिया है, यह कहते हुए कि हाथों से बनाए गए देवता देवता नहीं होते।<sup>26</sup> न केवल इस व्यापार के बदनाम होने का खतरा है, बल्कि महान देवी आर्तीमिस का मंदिर भी तुच्छ समझा जाएगा, और जिसे पूरा एशिया और सासारा पूजता है, वह अपनी महिमा से भी बचित हो जाएगी।”

<sup>28</sup> जब उन्होंने यह सुना और क्रोध से भर गए, तो वे चिल्लाने लगे, “महान है इफिसुस की आर्तीमिस!”<sup>29</sup> शहर में भ्रम फैल गया, और वे सब एक साथ रंगमंच में दौड़े, गयुस और अरिस्तार्खस को खींचते हुए, जो पौलुस के मकिदुनिया से यात्रा करने वाले साथी थे।<sup>30</sup> और जब पौलुस सभा में जाना चाहता था, तो चेतों ने उसे नहीं जाने दिया।<sup>31</sup> एशिया के कुछ अधिकारी जो उसके मित्र थे, ने भी उसे संदेश भेजा और बार-बार आग्रह किया कि वह रंगमंच में न जाए।<sup>32</sup> इसलिए, कुछ लोग एक बात चिल्ला रहे थे और कुछ दूसरी, क्योंकि सभा में भ्रम था, और अधिकांश को यह भी नहीं पता था कि वे किस कारण से इकट्ठे हुए हैं।<sup>33</sup> भीड़ में से कुछ ने अलेक्जेंडर को आगे बढ़ाया, क्योंकि यहूदियों ने उसे आगे किया था; और अलेक्जेंडर ने हाथ से संकेत करते हुए सभा के सामने बचाव करना चाहा।<sup>34</sup> लेकिन जब उन्होंने पहचाना कि वह यहूदी है, तो सभी से एक ही स्वर में चिल्लाते हुए लगभग दो घंटे तक कहा, “महान है इफिसुस की आर्तीमिस!”

<sup>35</sup> भीड़ को शांत करने के बाद, नगर के क्लर्क ने कहा, “इफिसुस के पुरुषों, कौन व्यक्ति नहीं जानता कि इफिसुस का नगर महान आर्तीमिस के मंदिर का संरक्षक है, और उस छवि का जो स्वर्ण से गिरी थी? <sup>36</sup> इसलिए, क्योंकि ये बातें अस्वीकार्य हैं, तुम्हें शांत रहना चाहिए और कुछ भी उतावली में नहीं करना चाहिए।<sup>37</sup> क्योंकि तुमने इन लोगों को यहाँ लाया है जो न तो मंदिर के चोर हैं और न ही हमारी देवी के निंदा करने वाले हैं।<sup>38</sup> इसलिए, यदि देमेत्रियुस और उसके साथ के कारीगरों को किसी के खिलाफ शिकायत है, तो अदालतें चल रही हैं और प्रांतीय अधिकारी उपलब्ध हैं; उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ आरोप लाने दें।<sup>39</sup> लेकिन यदि तुम इससे आगे कुछ चाहते हो, तो इसे विधिपूर्ण सभा में निपटाया जाएगा।<sup>40</sup> क्योंकि वास्तव में, हम आज की घटनाओं के संबंध में दंगा करने का आरोप लगाए जाने के खतरे में

हैं, क्योंकि इसके लिए कोई वास्तविक कारण नहीं है, और इस संबंध में हम इस अव्यवस्थित सभा का हिसाब नहीं दे पाएंगे।<sup>41</sup> यह कहने के बाद, उसने सभा को भंग कर दिया।

**20** जब हंगामा समाप्त हो गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलाया, और जब उसने उन्हें प्रोत्साहित किया और विदाई दी, तो वह मकिदुनिया जाने के लिए निकल पड़ा।<sup>2</sup> जब वह उन क्षेत्रों से गुजरा और उन्हें बहुत प्रोत्साहन दिया, तो वह यूनान आया।<sup>3</sup> और उसने वहाँ तीन महीने बिताए। जब यहूदियों ने उसके खिलाफ एक साजिश रची, जब वह सीरिया के लिए जहाज पर चढ़ने वाला था, तो उसने मकिदुनिया के रास्ते लौटने का निर्णय लिया।<sup>4</sup> और उसके साथ बेरेआ का संपत्तर, पिरहस का पुत्र, और यिस्सलुनीकियों के अस्तरख्स और सेकुन्दुस, और डर्ब का गयुस, और तीमुथियुस, और एशिया के तुखिकुस और त्रैफिमुस थे।<sup>5</sup> अब ये लोग आगे बढ़ चुके थे और त्रोआस में हमारा इंतजार कर रहे थे।<sup>6</sup> हमने अखुमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़े, और पाँच दिनों में त्रोआस में उनके पास पहुँचे; और हम वहाँ सात दिन रहे।

<sup>7</sup> सप्ताह के पहले दिन, जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने उनसे बात करना शुरू किया, अगले दिन जाने का इरादा रखते हुए, और उसने अपना संदेश आधी रात तक बढ़ाया।<sup>8</sup> ऊपरी कमरे में जहाँ हम इकट्ठे हुए थे, कई दीपक थे।<sup>9</sup> और यूत्खुस नाम का एक युगा खिड़की पर बैठा था, गहरी नींद में ड्रूब रहा था क्योंकि पौलुस बात करता जा रहा था; और नींद से पराजित होकर, वह तीसरी मंजिल से गिर गया और मरा हुआ उठाया गया।<sup>10</sup> लेकिन पौलुस नींदे गया और उस पर गिर पड़ा, और उसे गले लगाकर कहा, “चिंता मत करो, क्योंकि वह जीवित है।”<sup>11</sup> जब पौलुस ऊपर गया और रोटी तोड़ी और खाई, तो उसने उनसे लंबी बातचीत की, दिन के उजाले तक, और फिर चला गया।<sup>12</sup> उन्होंने लड़के को जीवित ले लिया, और बहुत सांत्वना पाई।

<sup>13</sup> लेकिन हम जहाज के लिए आगे बढ़े और अस्सोस के लिए रवाना हुए, वहाँ पौलुस को जहाज पर लेने का इरादा रखते हुए; क्योंकि उसने ऐसा ही तय किया था, स्वयं भूमि के रास्ते जाने का इरादा रखते हुए।<sup>14</sup> और जब वह अस्सोस में हमसे मिला, तो हमने उसे जहाज पर लिया और मित्यालीन आए।<sup>15</sup> वहाँ से जहाज पर चढ़कर, हम अगले दिन खियोस के सामने पहुँचे; और अगले दिन सामोस को पार किया; और उसके अगले दिन मीलितुस पहुँचे।<sup>16</sup> क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के

## प्रेरितों के काम

पास से जहाज पर चढ़ने का निर्णय लिया था ताकि वह एशिया में समय न गवाएं; क्योंकि वह जल्दी में था, अगर संभव हो तो पेटेकोस्ट के दिन यरूशलेम में होने के लिए।

<sup>17</sup> मीलितुस से उसने इफिसुस को संदेश भेजा और चर्च के प्राचीनों को बुलाया। <sup>18</sup> और जब वे उसके पास आए, तो उसने उनसे कहा, "तुम स्वयं जानते हो, जिस दिन से मैंने एशिया में कदम रखा, मैं तुम्हारे साथ पूरे समय कैसे रहा," <sup>19</sup> प्रभु की सेवा करता हां, पूरी विनाप्रता और अँसुओं और परीक्षाओं के साथ जो यहूदियों की साजिशों के कारण मुझ पर आई, <sup>20</sup> मैंने तुम्हें लाभकारी कोई भी बात बताने से नहीं हिचकिचाया, और तुम्हें सार्वजनिक रूप से और घर-घर सिखाया, <sup>21</sup> यहूदियों और यूनानियों दोनों को गवाही देते हुए कि परमेश्वर की ओर पश्चात्पाप और हमारे प्रभु यीशु में विश्वास करें।

<sup>22</sup> और अब, देखो, आत्मा से बंधा हुआ, मैं यरूशलेम जा रहा हूँ, यह नहीं जानता कि वहाँ मेरे साथ क्या होगा, <sup>23</sup> सिवाय इसके कि पवित्र आत्मा हर शहर में मुझसे गवाही देता है, यह कहते हुए कि जींजीरे और कष्ट मेरा इंतजार कर रहे हैं। <sup>24</sup> लेकिन मैं अपने जीवन को किसी भी रूप में अपने लिए प्रिय नहीं मानता, ताकि मैं अपनी दौड़ और वह सेवा पूरी कर सकूं जो मैंने प्रभु यीशु से प्राप्त की, परमेश्वर की अनुग्रह की सुसमाचार की गवाही देने के लिए।

<sup>25</sup> "और अब देखो, मैं जानता हूँ कि तुम सब, जिनके बीच मैं राज का प्रचार करता गया, अब मेरा चेहरा नहीं देखेंगे। <sup>26</sup> इसलिए, मैं आज तुम्हें गवाही देता हूँ कि मैं सभी लोगों के खून से निर्दोष हूँ। <sup>27</sup> क्योंकि मैंने तुम्हें परमेश्वर की पूरी योजना बताने से नहीं हिचकिचाया। <sup>28</sup> अपने लिए और पूरे झुंड के लिए सावधान रहो, जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें निरीक्षक बनाया है, परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल करने के लिए जिसे उसने अपने ही खून से खरीदा। <sup>29</sup> मुझे पता है कि मेरे जाने के बाद निर्दीयी भेड़िए तुम्हारे बीच आएंगे, झुंड को नहीं छोड़ेंगे; <sup>30</sup> और तुम्हारे अपने बीच से लोग उठेंगे, विकृत बातें बोलेंगे ताकि चेलों को अपने पीछे छीच ले। <sup>31</sup> इसलिए, सतर्क रहो, यह याद करते हुए कि तीन साल की अवधि में रात और दिन मैंने अँसुओं के साथ प्रत्येक को चेतावनी देने से नहीं रुका।

<sup>32</sup> और अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके अनुग्रह के बचन को सौंपता हूँ, जो तुम्हें निर्माण करने और सभी पवित्र लोगों के बीच विरासत देने में सक्षम है। <sup>33</sup> मैंने

किसी के चांदी, सोने या कपड़ों की लालसा नहीं की। <sup>34</sup> तुम स्वयं जानते हो कि इन हाथों ने मेरी अपनी आवश्यकताओं और मेरे साथ के लोगों की सेवा की। <sup>35</sup> मैंने तुम्हें सब कुछ दिखाया कि इस तरह से मेहनत करके तुम्हें कमज़ोरों की मदद करनी चाहिए, और प्रभु यीशु के शब्दों को याद रखना चाहिए, कि उन्होंने स्वयं कहा, "लेने से देने में अधिक आशीर्वाद है!"

<sup>36</sup> जब उसने ये बातें कहीं, तो वह घुटने टेककर सबके साथ प्रार्थना करने लगा। <sup>37</sup> और वे सब जोर से रोने लगे और पौलुस को गले लगाया, और बार-बार उसे चूमा, <sup>38</sup> विशेष रूप से उस शब्द के कारण दुखी थे जो उसने कहा था, कि वे उसका चेहरा फिर नहीं देखेंगे। और वे उसे जहाज तक पहुँचाने लगे।

**21** अब जब हम उनसे विदा होकर जहाज पर चढ़े, तो हमने सीधे कोस की ओर यात्रा की, और अगले दिन रोड़स की ओर, और वहाँ से पतारा की ओर चले गए; <sup>2</sup> और जब हमें फोनीशिया की ओर जाने वाला एक जहाज मिला, तो हम उस पर चढ़ गए और यात्रा शुरू की। <sup>3</sup> जब हम साइप्रस के दर्शन में आए, उसे बाई और छोड़ते हुए, हम सीरिया की ओर यात्रा करते रहे और टायर में उतरे; क्योंकि वहाँ जहाज को अपना माल उतारना था। <sup>4</sup> शिष्यों को खोजने के बाद, हम वहाँ सात दिन रहे; और वे आत्मा के द्वारा पौलुस से कहते रहे कि यरूशलेम में पैर न रखें। <sup>5</sup> जब हमारे वहाँ के दिन समाप्त हो गए, तो हम यात्रा पर निकल पड़े, जबकि वे सब, अपनी पतियों और बच्चों के साथ, हमें शहर के बाहर तक विदा करने आए। समुद्र तट पर घुटने टेककर प्रार्थना करने के बाद, हमने एक-दूसरे से विदा ली। <sup>6</sup> फिर हम जहाज पर चढ़ गए, और वे अपने घर लौट गए।

<sup>7</sup> जब हमने टायर से यात्रा पूरी की, तो हम प्लोलमैस पहुँचे, और भाइयों और बहनों का अभिवादन करने के बाद, हम उनके साथ एक दिन रहे। <sup>8</sup> अगले दिन हम वहाँ से निकलकर कैसिरिया पहुँचे, और सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पस के घर में प्रवेश किया, जो सात में से एक था, और उसके साथ रहे। <sup>9</sup> अब इस व्यक्ति की चार कुवारी बेटियाँ थीं जो भविष्यवक्तियाँ थीं। <sup>10</sup> जब हम वहाँ कुछ दिन रहे, तो यहूदिया से अगालुस नामक एक भविष्यवक्ता आया। <sup>11</sup> और वह हमारे पास आया और पौलुस की कमरबंद लेकर अपने पैर और हाथ बाँधकर कहा, "पवित्र आत्मा यह कहता है: यरूशलेम में यहूदी इस कमरबंद के मालिक को इसी प्रकार बाँधेंगे और उसे अन्यजातियों के हाथ में सौंप देंगे।" <sup>12</sup> जब हमने यह सुना, तो हम और स्थानीय निवासियों ने भी उससे

## प्रेरितों के काम

यरूशलेम न जाने की विनती की।<sup>13</sup> तब पौलुस ने उत्तर दिया, “तुम क्या कर रहे हो, रो रहे हो और मेरा दिल तोड़ रहे हो? क्योंकि मैं न केवल बाँधने के लिए, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार हूँ”<sup>14</sup> चूंकि वह राजी नहीं हुआ, हम चुप हो गए, यह कहते हुए, “प्रभु की इच्छा पूरी हो”।

<sup>15</sup> इन दिनों के बाद हम तैयार होकर यरूशलेम की ओर चल पड़े।<sup>16</sup> कैसरिया के कुछ शिष्य भी हमारे साथ आए, हमें साइप्रस के मगासोन के पास ले गए, जो एक पुराने शिष्य थे, जिनके साथ हमें रहना था।

<sup>17</sup> जब हम यरूशलेम पहुँचे, तो भाइयों और बहनों ने हमें खुशी से स्वागत किया।<sup>18</sup> अगले दिन पौलुस हमारे साथ याकूब के पास गया, और सभी प्राचीन उपस्थिति थे।<sup>19</sup> उनका अभिवादन करने के बाद, उन्होंने एक-एक करके उन बातों को बताना शुरू किया जो परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच उनकी सेवकाई के माध्यम से की थी।<sup>20</sup> और जब उन्होंने यह सुना, तो वे परमेश्वर की महिमा करने लगे; और उन्होंने उससे कहा, “भाई, देखो, यहूदियों में से कितने हजारों लोग विश्वास कर चुके हैं, और वे सब व्यवस्था के प्रति उसाही हैं।<sup>21</sup> लेकिन उन्हें तुम्हारे बारे में बताया गया है, कि तुम अन्यजातियों के बीच रहने वाले सभी यहूदियों को मूसा को छोड़ने की शिक्षा दे रहे हो, उहाँ अपने बच्चों का खतना न करने और रीति-रिवाजों के अनुसार न चलने के लिए कह रहे हो।<sup>22</sup> तो क्या किया जाना चाहिए? वे निश्चित रूप से सुनेंगे कि तुम आ गए हो।<sup>23</sup> इससिए, जैसा हम तुम्हें बताते हैं, वैसा करो: हमारे पास चार व्यक्ति हैं जिन पर मन्त्रत है, <sup>24</sup> उन्हें अपने साथ ले जाओ और उनके साथ शुद्ध हो जाओ, और उनके खर्चों का भुगतान करो ताकि वे अपने सिर मुंदवा सकें; तब हर कोई जान जाएगा कि तुम्हारे बारे में जो बातें कही गई हैं, उनमें कुछ भी नहीं है, बल्कि तुम स्वयं भी व्यवस्था का पालन करते हो।<sup>25</sup> लेकिन जो अन्यजाति विश्वास कर चुके हैं, उनके लिए हमने एक पत्र भेजा है, यह निर्णय तोते हुए कि उन्हें मर्मितियों को चढ़ाए गए मास से, रक्त से, गला घोंटे हुए से, और यौन अनैतिकता से बचना चाहिए।<sup>26</sup> तब पौलुस ने उन पुरुषों को लिया, और अगले दिन, उनके साथ शुद्ध होकर, मंदिर में प्रवेश किया, यह धोणा करते हुए कि शुद्धिकरण के दिन पूरे हो गए हैं, जब तक कि प्रत्येक के लिए बलिदान नहीं चढ़ाया गया।

<sup>27</sup> जब सात दिन लगभग समाप्त हो गए, तो एशिया के यहूदियों ने उसे मंदिर में देखा, और भीड़ को उकसाना शुरू कर दिया और उस पर हाथ डाला,<sup>28</sup> चिलाते हुए,

“इसाएल के पुरुषों, मदद करो! यह वही व्यक्ति है जो हर जगह सभी लोगों को हमारे लोगों के खिलाफ़, व्यवस्था के खिलाफ़, और इस स्थान के खिलाफ़ शिक्षा देता है; और इसके अलावा, उसने यूनानियों को मंदिर में भी लाया है और इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया है!”<sup>29</sup> क्योंकि उन्होंने उसे शहर में ट्रोफिमस एफिसी के साथ पहले देखा था, और उन्होंने यह मान लिया कि पौलुस उसे मंदिर में लाया है।<sup>30</sup> तब पूरा शहर उत्तेजित हो गया और लोग एकत्र हो गए, और पौलुस को पकड़कर, उन्होंने उसे मंदिर से बाहर खींच लिया, और तुरंत द्वार बंद कर दिए गए।<sup>31</sup> जब वे उसे मारने की कोशिश कर रहे थे, तो रोमन सेना के कमांडर को यह सूचना मिली कि पूरा यरूशलेम भ्रम में है।<sup>32</sup> वह तुरंत कुछ सैनिकों और सेनापतियों को लेकर उनके पास दौड़ा; और जब उन्होंने कमांडर और सैनिकों को देखा, तो उन्होंने पौलुस को पीटना बंद कर दिया।<sup>33</sup> तब कमांडर ने आकर उसे पकड़ लिया, और आदेश दिया कि उसे दो जंजीरों से बाँधा जाए; और वह पूछने लगा कि वह कौन है और उसने क्या किया है।<sup>34</sup> लेकिन भीड़ में से कुछ एक बात चिल्ला रहे थे और कुछ दूसरी, और जब वह शोर के कारण तथ्य नहीं जान सका, तो उसने आदेश दिया कि पौलुस को बैरकों में ले जाया जाए।<sup>35</sup> जब पौलुस सीढ़ियों पर पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि उसे भीड़ की हिसास के कारण सैनिकों द्वारा उठाया गया;<sup>36</sup> क्योंकि लोगों की भीड़ उनके पीछे चलती रही, चिल्लाते हुए, “उसे हटा दो!”

<sup>37</sup> जब पौलुस को बैरकों में ले जाया जा रहा था, तो उसने कमांडर से कहा, “क्या मुझे आपसे कुछ कहने की अनुमति है?” और उसने कहा, “क्या तुम ग्रीक जानते हो? <sup>38</sup> तो तुम वह मिसी नहीं हो जो कुछ समय पहले विद्रोह भड़काकर चार हजार हस्तारों को जंगल में ले गया था?”<sup>39</sup> लेकिन पौलुस ने कहा, “मैं किलिकिया के तर्फस का यहूदी हूँ, एक नगाण्य शहर का नागरिक नहीं, और मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे लोगों से बात करने की अनुमति दें।”<sup>40</sup> जब उसे अनुमति दी गई, तो पौलुस, सीढ़ियों पर खड़ा होकर, लोगों को अपने हाथ से इशारा किया। और जब बड़ी चुप्पी हो गई, तो उसने उन्हें इब्रानी भाषा में कहा:

**22** “भाइयों और पिताओं, मेरी रक्षा सुनो जो मैं अब तुम्हें पेश कर रहा हूँ।”<sup>2</sup> और जब उन्होंने सुना कि वह उन्हें इब्रानी भाषा में संबोधित कर रहा है, तो वे और भी शांत हो गए; और उसने,<sup>3</sup> “मैं एक यहूदी हूँ, किलिकिया के तारसुस में जन्मा, परंतु इस नगर में पला-बढ़ा, गमलीएल के अधीन शिक्षा प्राप्त की, हमारे पूर्वजों

## प्रेरितों के काम

की व्यवस्था के अनुसार कठोरता से, परमेश्वर के लिए उत्साही होकर जैसे कि तुम सब आज हो।<sup>4</sup> मैंने इस मार्ग का मृत्यु तक उत्तीर्ण किया, पुरुषों और स्त्रियों दोनों को बंधन में डालकर जेलों में डाल दिया,<sup>5</sup> जैसा कि महायाजक और सभी पुरनियों की परिषद भी गवाही दे सकती है। उनसे मैंने भाइयों के लिए पत्र भी प्राप्त किए, और दमिश्क के लिए खाना हुआ ताकि वहाँ के लोगों को भी यरूशलेम में कैदी बनाकर दंड दिलाने के लिए लाऊं।

<sup>6</sup> लेकिन ऐसा हुआ कि जब मैं अपने रास्ते पर था, दोपहर के समय दमिश्क के पास पहुँचते हुए, एक बहुत तेज़ प्रकाश अचानक सर्वग्र से मेरे चारों ओर चमका,<sup>7</sup> और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, ‘सौल, सौल, तु मेरा उत्तीर्ण क्यों कर रहा है?’<sup>8</sup> और मैंने उत्तर दिया, हे प्रभु, आप कौन हैं?<sup>9</sup> और उनसे मुझसे कहा, मैं नासरी यीशू हूँ, जिसे तू उत्तीर्ण कर रहा है।<sup>10</sup> और जो मेरे साथ थे उहोंने प्रकाश देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए, परंतु उस आवाज़ की नहीं समझ सके जो मुझसे बोल रही थी।<sup>11</sup> और मैंने कहा, ‘प्रभु, मैं क्या करूँ?’ और प्रभु ने मुझसे कहा, ‘उठ और दमिश्क में जा, और वहाँ तुझे सब कुछ बताया जाएगा जो तेरे लिए करने के लिए नियुक्त किया गया है।’<sup>12</sup> लेकिन चूंकि मैं उस प्रकाश की चमक के कारण देख नहीं सका, मुझे मेरे साथियों द्वारा हाथ पकड़कर दमिश्क में लाया गया।

<sup>12</sup> अब अनन्यियास नामक एक व्यक्ति, जो व्यवस्था के अनुसार धर्मी व्यक्ति था, और वहाँ रहने वाले सभी यहूदियों द्वारा प्रशंसित था,<sup>13</sup> मेरे पास आया, और पास खड़े होकर मुझसे कहा, ‘भाई सौल, अपनी दृष्टि प्राप्त कर!’ और उसी क्षण मैंने उसकी ओर देखा।<sup>14</sup> और उसने कहा, ‘हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे उसकी इच्छा जानने और धर्मी को देखने, और उसके मुख से एक संदेश सुनने के लिए नियुक्त किया है।’<sup>15</sup> क्योंकि तू उन सब लोगों के लिए उसकी गवाही देगा जो तूने देखा और सुना है।<sup>16</sup> अब तू क्यों देरी कर रहा है? उठ और बपतिस्मा ले, और उसके नाम का आह्वान करके अपने पापों को थोड़ा डाल।’

<sup>17</sup> यह हुआ जब मैं यरूशलेम लौटा और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, कि मैं एक ध्यान में पड़ गया,<sup>18</sup> और मैंने उसे मुझसे कहते हुए देखा, जल्दी कर और यरूशलेम से जल्दी निकल जा, क्योंकि वे मेरे बारे में तेरी गवाही को स्वीकार नहीं करेंगे।<sup>19</sup> और मैंने कहा, ‘प्रभु, वे स्वयं जानते हैं कि एक सभा से दूसरी सभा में

मैंने उन लोगों को कैद किया और पीटा जो आप पर विश्वास करते थे।<sup>20</sup> और जब आपके गवाह स्टेफन का रक्त बहाया जा रहा था, मैं भी पास खड़ा था और सहमति दे रहा था, और उन लोगों के कपड़ों की देखभाल कर रहा था जो उसे मार रहे थे।<sup>21</sup> और उसने मुझसे कहा, ‘जा! क्योंकि मैं तुझे दूर अन्यायियों के पास भेजूँगा।’

<sup>22</sup> वे इस कथन तक उसकी सुनते रहे, और फिर उन्होंने अपनी आवाज़ उठाई और कहा, “ऐसे व्यक्ति को पृथ्वी से दूर कर दो, क्योंकि उसे जीवित रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए!”<sup>23</sup> और जैसे वे चिल्ला रहे थे और अपने कपड़े उतार रहे थे और धूल को हवा में उछाल रहे थे,<sup>24</sup> कमांडर ने आदेश दिया कि उसे बैरकों में लाया जाए, यह कहते हुए कि उसे कोडे मारकर पूछताछ की जाए ताकि वह यह पता लाया सके कि वे उसके खिलाफ इस तरह क्यों चिल्ला रहे थे।<sup>25</sup> लेकिन जब उहोंने उसे पट्टियों से बांधा, पौलुस ने पास खड़े सेंयुरियन से कहा, ‘क्या यह वैध है कि आप एक रोमी और बिना दोषी ठहराए गए व्यक्ति को कोडे मारें?’<sup>26</sup> जब सेंयुरियन ने यह सुना, तो वह कमांडर के पास गया और उसे बताया, कहते हुए, “आप क्या करने जा रहे हैं? क्योंकि यह व्यक्ति एक रोमी है!”<sup>27</sup> कमांडर आया और उससे कहा, “मुझे बताओ, क्या तुम रोमी हो?” और उसने कहा, “हाँ।”<sup>28</sup> कमांडर ने उत्तर दिया, “मैंने यह नागरिकता बड़ी रकम देकर प्राप्त की।” और पौलुस ने कहा, “लेकिन मैं वास्तव में एक नागरिक के रूप में जन्मा था।”<sup>29</sup> इसलिए, जो लोग उसे पूछताछ करने वाले थे वे तुरंत उससे पीछे हट गए; और कमांडर भी डर गया जब उसे पता चला कि वह एक रोमी है, और क्योंकि उसने उसे जंजीरों में डाल दिया था।

<sup>30</sup> अब अगले दिन, यह निश्चित रूप से जानने की इच्छा रखते हुए कि यहूदियों द्वारा पौलुस पर आरोप क्यों लगाया गया था, उसने उसे रिहा कर दिया और महायाजकों और सभी परिषद को इकट्ठा होने का आदेश दिया, और उसने पौलुस को नीचे लाया और उन्हें उनके सामने खड़ा किया।

**23** अब सभा की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए, पौलुस ने कहा, “भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के सामने पूरी तरह से अच्छे विवेक के साथ अपना जीवन जिया है।”<sup>2</sup> पर महायाजक हन्याह ने उसके पास खड़े लोगों को उसे मूँह पर मारने का आदेश दिया।<sup>3</sup> तब पौलुस ने उससे कहा, “परमेश्वर तुझे मारेगा, तू सफेदी की हुई दीवार! क्या तू मुझे व्यवस्था के अनुसार परखता है, और

## प्रेरितों के काम

व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए मुझे मारने का आदेश देता है?”<sup>4</sup> पर उपस्थित लोगों ने कहा, “क्या तू परमेश्वर के महायाजक का अपमान कर रहा है?”<sup>5</sup> और पौलुस ने कहा, “मुझे पता नहीं था, भाइयों, कि वह महायाजक है; क्योंकि लिखा है: ‘तू अपनी प्रजा के शासक के बारे में बुरा नहीं बोलोगा।’”

<sup>6</sup> पर पौलुस, यह जानकर कि एक समूह सदूकियों का था और दूसरा फरीसियों का, सभा में विलाने लगा, “भाइयों, मैं एक फरीसी हूँ, फरीसियों का पुत्र हूँ, मैं मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के लिए परखा जा रहा हूँ।”<sup>7</sup> जब उसने यह कहा, तो फरीसियों और सदूकियों के बीच विवाद हो गया, और सभा विभाजित हो गई।<sup>8</sup> क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न तो पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत, न आत्मा, पर फरीसी इन संबंधों मानते हैं।<sup>9</sup> और एक बड़ा हंगामा हुआ; और फरीसियों के दल के कुछ चार्सी खड़े होकर जौर से तर्क करने लगे, “हम इस आदमी में कुछ भी गलत नहीं पाते; मान लो कि एक आत्मा या स्वर्गदूत न उससे बात की है!”<sup>10</sup> और जब एक बड़ा विवाद हुआ, तो सेनापति डर गया कि कहीं पौलुस उनके द्वारा टुकड़े-टुकड़े न कर दिया जाए, और उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे नीचे जाएं और उसे बलपूर्वक उनसे दूर ले जाएं, और उसे बैरकों में ले आएं।

<sup>11</sup> पर अगले रात, प्रभु उसके पास खड़ा हुआ और कहा, “साहस रखो; क्योंकि जैसे तुमने यरूशलैम में मेरे बारे में गंभीरता से गवाही दी है, वैसे ही तुम्हें रोम में भी गवाही देनी होगी।”

<sup>12</sup> जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एक साजिश रची और एक शापथ के तहत खुद को रखा, कहते हुए कि वे न तो खाएंगे और न पिएंगे जब तक कि वे पौलुस को मार न डालें।<sup>13</sup> इस साजिश में शामिल होने वाले चालीस से अधिक थे।<sup>14</sup> वे महायाजकों और बुजुर्गों के पास आए और कहा, “हमें पौलुस को मारने तक कुछ भी न चखने की शरण ली है।”<sup>15</sup> अब इसलिए, आप और सभा सेनापति को सूचित करें कि उसे आपके पास लाए, जैसे कि आप उसके मामले को अधिक गहराई से निर्धारित करने जा रहे हैं; और हम, अपनी ओर से, उसे स्थान के पास आने से पहले मारने के लिए तैयार हैं।”

<sup>16</sup> पर पौलुस की बहन के बेटे ने उनकी घात के बारे में सुना, और वह आया और बैरकों में प्रवेश किया और पौलुस को बताया।<sup>17</sup> पौलुस ने एक सेनापति को अपने पास बुलाया और कहा, “इस युवक को सेनापति के पास

ले जाओ, क्योंकि उसके पास उसे बताने के लिए कुछ है।”<sup>18</sup> तो उसने उसे लिया और सेनापति के पास ले गया और कहा, “कैदी पौलुस ने मुझे बुलाया और मुझसे कहा कि इस युवक को आपके पास ले जाऊं, क्योंकि उसके पास आपको बताने के लिए कुछ है।”<sup>19</sup> सेनापति ने उसका हाथ पकड़ लिया और अतंग हटकर उससे निजी तौर पर पूछताछ करने लगा, “तुम्हें मुझे क्या रिपोर्ट करनी है?”<sup>20</sup> और उसने कहा, “यहूदियों ने आपसे पौलुस को कल सभा में लाने के लिए सहमति की है, जैसे कि वे उसके बारे में कुछ अधिक गहराई से पूछताछ करने जा रहे हैं।”<sup>21</sup> इसलिए उनकी बात न सुनें, क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक लोग उसे घात लगाने के लिए छिपे हुए हैं, और उन्होंने खुद को शापथ के तहत रखा है कि जब तक वे उसे मार न डालें, तब तक न खाएंगे और न पिएंगे; और अब वे तैयार हैं, आपके बाद की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”<sup>22</sup> तो सेनापति ने युवक को जाने दिया, उसे निर्देश देते हुए, “किसी को मत बताना कि तुमने मुझे इन बातों की सूचना दी है।”

<sup>23</sup> और उसने दो सेनापतियों को बुलाया और कहा, “रात के तीसरे पहर तक दो सौ सैनिकों को कैसरिया के लिए तैयार कर लो, सतर घुड़सवार और दो सौ भालाधारी।”<sup>24</sup> उन्हें पौलुस को घोड़े पर ढाने और उसे सुरक्षित रूप से राज्यपाल फेलिक्स के पास ले जाने के लिए भी प्रबंध करना था।

<sup>25</sup> और उसने निम्नलिखित सामग्री के साथ एक पत्र लिखा: <sup>26</sup> “क्लोडियस लिसियास, महान राज्यपाल फेलिक्स को: नमस्कर।”<sup>27</sup> जब इस आदमी को यहूदियों द्वारा पकड़ लिया गया था और वे उसे मारने वाले थे, मैं सैनिकों के साथ उनके पास गया और उसे बचाया, यह जानने के बाद कि वह एक रोमी है।<sup>28</sup> और यह जानने की इच्छा रखते हुए कि वे उसके खिलाफ आरोप किस आधार पर ला रहे थे, मैं उसे उनकी सभा में ले गया;<sup>29</sup> और मैंने पाया कि वह उनकी व्यवस्था के प्रत्रों के संबंध में आरोपित किया जा रहा था, परंतु उस पर कोई ऐसा आरोप नहीं था जो मृत्यु या कारावास के योग्य हो।<sup>30</sup> जब मुझे सूचित किया गया कि इस आदमी के खिलाफ एक साजिश होगी, मैंने उसे तुरंत आपके पास भेज दिया, साथ ही उसके आरोपियों को आपके सामने आरोप लाने का निर्देश दिया।”

<sup>31</sup> तो सैनिकों ने अपने आदेशों के अनुसार पौलुस को लिया और रात में उसे अंतिप्रिस ले गए।<sup>32</sup> पर अगले दिन, घुड़सवारों को उसके साथ जाने के लिए छोड़कर, वे बैरकों में लौट आए।<sup>33</sup> जब ये घुड़सवार कैसरिया

## प्रेरितों के काम

पहुँचे और राज्यपाल को पत्र सौंप दिया, उन्होंने पौलुस को भी उसके सामने प्रस्तुत किया।<sup>34</sup> अब जब उसने पत्र पढ़ा, तो उसने पूछा कि वह किस प्रांत से है, और जब उसने सीलिसिया से होने की बात जानी,<sup>35</sup> उसने कहा, “मैं तुम्हें सुनवाई दूंगा जब तुम्हरे आरोपकर्ता भी आएंगे,” उसे हेरोदेस के प्रेटोरियम में रखने का आदेश देते हुए।

**24** अब पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ प्राचीनों और तर्तुलुस नाम के एक वकील के साथ आए, और उन्होंने राज्यपाल के सामने पौलुस के खिलाफ आरोप लगाए।<sup>2</sup> जब पौलुस को बुलाया गया, तो तर्तुलुस ने राज्यपाल से कहा, “चूंकि हमने आपके माध्यम से महान शांति प्राप्त की है, और आपकी दूरदर्शिता से इस राष्ट्र के लिए सुधार किए जा रहे हैं।<sup>3</sup> हम इसे हर तरह से और हर जगह स्वीकार करते हैं, सबसे उत्तम फेलिक्स, पूरी कृतज्ञता के साथ।<sup>4</sup> लेकिन, ताकि मैं आपको और अधिक थकाऊ नहीं, मैं आपसे विनंती करता हूँ कि कृपया हमें एक संक्षिप्त सुनावाइ दें।<sup>5</sup> क्योंकि हमने पाया है कि यह व्यक्ति एक सार्वजनिक संकट है और वह पूरी दुनिया में सभी यहूदियों के बीच विवाद उत्पन्न करता है, और नासीरी संप्रदाय का नेता है।<sup>6</sup> और उसने मंदिर को अपवित्र करने की भी कोशिश की, इसलिए हमने उसे गिरफ्तार कर लिया।<sup>7</sup> कुछ पांडुलिपियों में छोड़ा गया।<sup>11</sup> इन सभी मामलों के बारे में स्वयं उससे पूछताछ करके, आप यह जानने में सक्षम होंगे कि हम जिन चीजों का आरोप लगा रहे हैं।<sup>10</sup> यहूदी भी हमले में शामिल हो गए, यह दावा करते हुए कि ये बातें सच हैं।

<sup>10</sup> और जब राज्यपाल ने उसे बोलने के लिए इशारा किया, तो पौलुस ने उत्तर दिया: “यह जानते हुए कि आप कई वर्षों से इस राष्ट्र के न्यायाधीश रहे हैं, मैं खुशी से अपनी रक्षा करता हूँ।<sup>11</sup> क्योंकि आप इस तथ्य पर ध्यान दे सकते हैं कि बारह दिन से अधिक नहीं हुए जब मैं यरूशलेम उपासना करने गया था।<sup>12</sup> और न तो उन्होंने मंदिर में मुझे किसी के साथ चर्चा करते हुए पाया और न ही दंगा करते हुए, न ही आराधनालोगों में, न ही स्वयं शहर में।<sup>13</sup> और न ही वे आपको उन चीजों को साबित कर सकते हैं जिनका वे अब मुझ पर आरोप लगा रहे हैं।<sup>14</sup> लेकिन मैं आपको यह स्वीकार करता हूँ, कि उस मार्ग के अनुसार, जिसे वे संप्रदाय कहते हैं, मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ, हर उस चीज पर विश्वास करते हुए जो व्यवस्था के अनुसार है और भविष्यद्वक्ताओं में लिखा है;<sup>15</sup> परमेश्वर में आशा रखते हुए, जिसे ये लोग स्वयं *cherish* करते हैं, कि निश्चित

रूप से धर्मी और अधर्मी दोनों का पुनरुत्थान होगा।<sup>16</sup> इस दृष्टिकोण से मैं भी अपना सर्वश्रेष्ठ करता हूँ कि मैं हमेशा परमेश्वर और अन्य लोगों के सामने एक निर्दोष विवेक बनाए रखूँ।

<sup>17</sup> अब कई वर्षों के बाद मैं अपने राष्ट्र के लिए दान देने और भेट चढ़ाने आया,<sup>18</sup> जिसमें उन्होंने मुझे मंदिर में पाया, शुद्धिकरण के बाद, बिना किसी भी दया हगामे के। लेकिन कुछ यहूदी ऐश्या से थे—<sup>19</sup> जिन्हें आपके सामने उपस्थित होना चाहिए था और आरोप लगाना चाहिए था, यदि उनके पास मेरे खिलाफ कुछ होता।<sup>20</sup> या फिर ये लोग स्वयं यह घोषित करें कि जब मैं परिषद के सामने खड़ा था तो उन्होंने क्या गलत किया पाया,<sup>21</sup> इसके अलावा इस एक घोषणा के संबंध में जिसे मैंने उनके बीच खड़े होकर चिल्लाया: ‘‘मृतकों के पुनरुत्थान के लिए मैं आज आपके सामने मुकदमे में हूँ।’’

<sup>22</sup> लेकिन फेलिक्स, मार्ग के बारे में अधिक सटीक समझ रखते हुए, उन्हें टाल दिया, यह कहते हुए, “जब लिसियास कम्पांडर आएगा, तब मैं आपके मामले का निर्णय करूँगा।”<sup>23</sup> उसने सेंयुरियन को आदेश दिया कि पौलुस को हिरासत में रखा जाए और फिर भी कुछ स्वतंत्रता दी जाए, और उसके दोस्तों को उसकी जरूरतों को पूरा करने से न रोका जाए।

<sup>24</sup> अब कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्वूसीला के साथ आए, जो यहूदी थी, और उन्होंने पौलुस को बुलाया और मरीह यीशु में विश्वास के बारे में उससे सुना।<sup>25</sup> लेकिन जब वह धार्मिकता, अत्म-संयम, और अने वाले न्याय के बारे में वर्चा कर रहा था, फेलिक्स डर गया और उत्तर दिया, “अभी के लिए चले जाओ, और जब मुझे अवसर मिलेगा, मैं तुम्हें बुलाऊंगा।”<sup>26</sup> उसी समय वह यह भी उम्मीद कर रहा था कि पौलुस द्वारा उसे पैसा दिया जाएगा; इसलिए वह उसे अवसर बुलाता और उससे बात करता था।<sup>27</sup> लेकिन दो साल बीतने के बाद, फेलिक्स यहूदियों को एक उपकार करना चाहता था, पौलुस को कैद में छोड़ दिया।

**25** अब फेस्टस, प्रांत में आने के बाद, तीन दिन बाद कैसरिया से यरूशलेम गया।<sup>2</sup> और महायाजकों और यहूदियों के प्रमुख पुरुषों ने पौलुस के विरुद्ध आरोप लगाए, और वे फेस्टस से विनाशी कर रहे थे,<sup>3</sup> पौलुस के खिलाफ एक रियायत की मांग करते हुए, कि उसे यरूशलेम लाया जाए (उसी समय, वे उसे रास्ते में मारने के लिए घात लगाकर बैठे थे)।<sup>4</sup> फेस्टस ने तब

## प्रेरितों के काम

उत्तर दिया कि पौलुस कैसरिया में हिरासत में रखा गया है, और वह स्वयं जल्द ही वहाँ से निकलने वाला है।<sup>5</sup> “इसलिए,” उसने, “तुम में से प्रभावशाली पुरुष मेरे साथ वहाँ जाएं, और यदि उस व्यक्ति के बारे में कुछ गलत है, तो वे उसके खिलाफ आरोप लगाएं।”

<sup>6</sup> फेस्टस ने उनके बीच आठ या दस दिन से अधिक समय नहीं बिताया, वह कैसरिया गया, और अगले दिन उसने न्यायालय में अपनी सीट ली और पौलुस को लाने का आदेश दिया।<sup>7</sup> जब पौलुस आया, तो यूरुशलेम से आए यहूदी उसके चारों ओर खड़े हो गए, उसके खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाए जिन्हें वे साकित नहीं कर सके,<sup>8</sup> जबकि पौलुस ने अपनी रक्षा में कहा, “मैंने यहूदियों की व्यवस्था के खिलाफ, या मंदिर के खिलाफ, या कैसर के खिलाफ कुछ भी गलत नहीं किया है।”<sup>9</sup> लेकिन फेस्टस, यहूदियों को एक उपकार करना चाहता था, पौलुस से कहा, “क्या तुम यूरुशलेम जाने और इन आरोपों पर मेरे सामने मुकदमा चलाने के लिए तैयार हो?”<sup>10</sup> लेकिन पौलुस ने कहा, “मैं कैसर के न्यायालय के सामने खड़ा हूँ, जहाँ मुझे मुकदमा चलाना चाहिए। मैंने यहूदियों के खिलाफ कुछ भी गलत नहीं किया है, जैसा कि आप भी अच्छी तरह जानते हैं।”<sup>11</sup> यदि, इसलिए, मैं गलत हूँ और कुछ ऐसा किया है जो मृत्यु के योग्य है, तो मैं फांसी से बचने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। लेकिन यदि इन पुरुषों द्वारा मेरे खिलाफ लगाए गए आरोपों में कुछ नहीं है, तो कोई भी मुझे उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं कैसर से अपील करता हूँ।”<sup>12</sup> तब फेस्टस ने अपनी परिषद से परामर्श करने के बाद उत्तर दिया, “तुमने कैसर से अपील की है; कैसर के पास जाओगे।”

<sup>13</sup> अब जब कई दिन बीत गए, तो राजा अग्रिप्पा और बर्निस कैसरिया आए, फेस्टस को सम्मान देने के लिए।

<sup>14</sup> और जब वे वहाँ कई दिन बिता रहे थे, फेस्टस ने राजा के सामने पौलुस का मामला प्रस्तुत किया, कहते हुए, “एक व्यक्ति है जिसे फेलिस ने कैदी के रूप में छोड़ा था;<sup>15</sup> और जब वे यूरुशलेम में था, महायाजकों और यहूदियों के बुजुर्गों ने उसके खिलाफ आरोप लगाए, उसके खिलाफ एक सजा की मांग करते हुए।”<sup>16</sup> मैंने उहाँ उत्तर दिया कि यह रोमनों की प्रथा नहीं है कि किसी व्यक्ति को सौंप दिया जाए इससे पहले कि आरोपी अपने आरोपियों से आमने-सामने मिले, और उसके पास आरोपी के खिलाफ अपनी रक्षा करने का अवसर हो।<sup>17</sup> इसलिए जब वे यहाँ इकट्ठे हुए, मैंने देशी नहीं की; अगले दिन मैंने न्यायालय में अपनी सीट ली और उस व्यक्ति को मेरे सामने लाने का आदेश दिया।

<sup>18</sup> जब आरोप लगाने वाले खड़े हुए, तो उन्होंने उसके खिलाफ कोई ऐसा आरोप नहीं लगाया जैसा मैंने सोचा था,<sup>19</sup> लेकिन उनके पास अपनी ही धर्म के बारे में और एक मृत व्यक्ति, यीशु के बारे में कुछ असहमति के बिंदु थे, जिसे पौलुस जीवित होने का दावा करता था।<sup>20</sup> और ऐसे मामलों की जांच कैसे की जाए, यह समझने में असमर्थ होने के कारण, मैंने पूछा कि क्या वह यूरुशलेम जाने और वहाँ इन मामलों पर मुकदमा चलाने के लिए तैयार है?<sup>21</sup> लेकिन जब पौलुस ने सम्राट के निर्णय के लिए हिरासत में रहने की अपील की, मैंने आदेश दिया कि उसे हिरासत में रखा जाए जब तक कि मैं उसे कैसर के पास न भेज दूँ।”<sup>22</sup> तब अग्रिप्पा ने, “मैं भी स्वयं उस व्यक्ति को सुनना चाहूँगा।” “कल,” उसने, “तुम उसे सुनोगे।”

<sup>23</sup> इसलिए, अगले दिन जब अग्रिप्पा और बर्निस बड़ी धूमधार्म के साथ आए और सभागार में प्रवेश किया, कमांडरों और शहर के प्रमुख पुरुषों के साथ, फेस्टस के आदेश पर, पौलुस को लाया गया।<sup>24</sup> और फेस्टस ने, “राजा अग्रिप्पा, और आप सभी सजानों जो हमारे साथ उपस्थित हैं, आप इस व्यक्ति को देखते हैं जिसके बारे में सभी यहूदियों के लोग मुझसे अपील कर रहे थे, यूरुशलेम में और यहाँ भी, चिल्लाते हुए कि उसे अब और जीति नहीं रहना चाहिए।”<sup>25</sup> लेकिन मैंने पाया कि उसने कुछ भी ऐसा नहीं किया है जो मृत्यु के योग्य हो; और चूंकि उसने स्वयं सम्राट से अपील की, मैंने उसे भेजने का निर्णय लिया।<sup>26</sup> किर भी, मेरे पास उसके बारे में अपने प्रभु को लिखने के लिए कुछ निश्चित नहीं है। इसलिए, मैंने उसे आप सभी के सामने, और विशेष रूप से आपके सामने, राजा अग्रिप्पा, लाया है, ताकि जांच के बाद, मेरे पास लिखने के लिए कुछ हो।<sup>27</sup> क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि एक कैदी को भेजना, उसके खिलाफ आरोपी को भी निर्दिष्ट किए बिंगा, बेतुका है।”

**26** अब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “तुम्हें अपने पक्ष में बोलने की अनुमति है।” तब पौलुस ने अपना हाथ बढ़ाया और अपनी रक्षा करने लगा: <sup>2</sup> “राजा अग्रिप्पा, मैं अपने आपको भायशाली मानता हूँ कि आज मैं आपके सामने उन सभी आरोपों के खिलाफ अपनी रक्षा कर रहा हूँ जो यहूदियों द्वारा लगाए गए हैं, <sup>3</sup> विशेष रूप से क्योंकि आप यहूदियों के सभी रीति-रिवाजों और प्रश्नों में विशेषज्ञ हैं; इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ कि धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनें।” तब से, सभी यहूदी मेरी जीवन के तरीके को जानते हैं, जो मेरी युवावस्था से मेरी अपनी जाति और यूरुशलेम में बिताया गया था,<sup>5</sup> क्योंकि वे मुझे लंबे समय से जानते हैं, यदि वे गवाही देने को तैयार

## प्रेरितों के काम

हैं, कि मैंने हमारे धर्म के सबसे कठोर संप्रदाय के अनुसार एक फरीसी के रूप में जीवन व्यतीत किया।<sup>6</sup> और अब मैं उस आशा के लिए मुकदमे में खड़ा हूँ जो हमारा पूर्वजों से परमेश्वर ने की थी; <sup>7</sup> वह प्रतिज्ञा जिसे हमारी बारह जातियाँ प्राप्त करने की आशा करती हैं, जैसे वे रात और दिन परमेश्वर की सेवा करती हैं। इस आशा के लिए, हे राजा, मुझे यहदियों द्वारा आरोपित किया जा रहा है! <sup>8</sup> आप लोगों के बीच यह क्यों अविश्वसनीय माना जाता है कि परमेश्वर मृतकों को जीवित करता है?

<sup>9</sup> तो मैंने अपने आप से सोचा कि मुझे नासरी यीशु के नाम के खिलाफ कई शत्रुतार्ण काम करने चाहिए।<sup>10</sup> और यही मैंने यरुशलेम में किया; न केवल मैंने कई संतों को जेलों में बंद किया, मुख्य पुजारियों से अधिकार प्राप्त करने के बाद, बल्कि जब उन्हें मौत की सजा दी जा रही थी, तब मैंने उनके खिलाफ अपना मत दिया।<sup>11</sup> और जैसे मैं उन्हें सभी अक्सर दंडित करता था, मैंने उन्हें निंदा करने के लिए मजबूर करने की कांशिश की; और चूंकि मैं उन पर अत्यधिक क्रोधित था, मैंने उन्हें विदेशी शहरों तक पीछा किया।

<sup>12</sup> जब मैं इस तरह व्यस्त था, तब मैं मुख्य पुजारियों से अधिकार और आदेश के साथ दमिश्क की यात्रा कर रहा था,<sup>13</sup> दोपहर के समय, हे राजा, मैंने रास्ते में आकाश से एक प्रकाश देखा, जो सूर्य से भी अधिक चमकीला था, जो मेरे और मेरे साथ यात्रा करने वालों के चारों ओर चमक रहा था।<sup>14</sup> और जब हम सब जमीन पर गिर गए, तो मैंने एक आवाज सुनी जो मुझसे इब्रानी भाषा में कह रही थी, सौल, सौल, तू मुझे क्यों सताता है? कांटों के खिलाफ लात मारना देरे लिए कठिन है।<sup>15</sup> और मैंने कहा, 'हे प्रभु, आप कौन हैं?' और प्रभु ने कहा, मैं वही यीशु हूँ जिसे तू सताता है।<sup>16</sup> लेकिन उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो, क्योंकि इस उद्देश्य के लिए मैंने तुझे प्रकट किया है, कि तुझे एक सेवक और गवाह नियुक्त करूँ न केवल उन बातों का जिनमें तूने मुझे देखा है, बल्कि उन बातों का भी जिनमें तूने प्रकट करूँगा,<sup>17</sup> तुझे यहदी लोगों से और अन्यजातियों से बचाते हुए, जिनके पास मैं तुझे भेज रहा हूँ,<sup>18</sup> उनकी अँखें खोलने के लिए ताकि वे अंधकर से प्रकाश की ओर, और शेतान की शक्ति से परमेश्वर की ओर मुड़ें, कि वे पापों की क्षमा प्राप्त करें और उन लोगों के बीच एक विरासत प्राप्त करें जो मुझ पर विश्वास द्वारा पवित्र किए गए हैं।'

<sup>19</sup> "इस कारण, राजा अग्रिष्मा, मैं स्वर्णीय दर्शन के प्रति अवज्ञाकारी नहीं था,"<sup>20</sup> बल्कि मैंने पहले दमिश्क में, और यरुशलेम में, और फिर यहूदिया के सभी क्षेत्र में, और यहां तक कि अन्यजातियों को भी निरंतर प्रचार किया, कि वे पश्चाताप करें और परमेश्वर की ओर मुड़ें, पश्चाताप के अनुरूप कार्य करते हुए।<sup>21</sup> इन कारणों से कुछ यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़ लिया और मुझे मारने की कोशिश की।<sup>22</sup> तो, परमेश्वर से सहायता प्राप्त करने के बाद, मैं आज तक खड़ा हूँ, छोटे और बड़े दोनों को गवाही देते हुए, केवल वही कहता हूँ जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने कहा था कि होने वाला है,<sup>23</sup> कि मसीह को कष्ट सहना पड़ेगा, और कि, मृतकों में से पहले उठकर, वह यहूदी लोगों और अन्यजातियों दोनों के लिए प्रकाश की घोषणा करेगा।"

<sup>24</sup> जब पौलस अपनी रक्षा में ये बातें कह रहा था, तो फेस्तुस ने ऊँची आवाज में कहा, "पौलस, तुम पागल हो! महान शिक्षा तुम्हें पागल बना रही है!"<sup>25</sup> लेकिन पौलस ने कहा, "मैं पागल नहीं हूँ, सबसे उत्कृष्ट फेस्तुस; इसके विपरीत, मैं वास्तविक और तकसंगत शब्द बोल रहा हूँ।<sup>26</sup> क्योंकि राजा इन मामलों के बारे में जानता है, और मैं उससे आम्विश्वास के साथ बात करता हूँ, क्योंकि मैं आश्वस्त हूँ कि इनमें से कोई भी बात उसकी दृष्टि से छिपी नहीं है; क्योंकि यह किसी कोने में नहीं किया गया है।<sup>27</sup> राजा अग्रिष्मा, क्या आप भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं? मुझे पता है कि आप विश्वास करते हैं।"<sup>28</sup> अग्रिष्मा ने पौलस से कहा, "थोड़े समय में तुम मुझे ईसाई बनाने के लिए राजी कर लोगे।"<sup>29</sup> और पौलस ने कहा, "मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि, चाहे थोड़े समय में या लंबे समय में, न केवल आप, बल्कि सभी जो आज मुझे सुनते हैं, ऐसे बन जाएँ जैसे मैं हूँ, सिवाय इन जंजीरों के।"

<sup>30</sup> राजा उठ खड़ा हुआ, और राज्यपाल और बर्निस, और जो उनके साथ बैठे थे,<sup>31</sup> और जब वे बाहर गए, तो वे एक-दूसरे से बात करने लगे, कह रहे थे, "यह आदमी कुछ भी ऐसा नहीं कर रहा है जो मृत्यु या कैद के योग्य हो।"<sup>32</sup> और अग्रिष्मा ने फेस्तुस से कहा, "यह आदमी स्वतंत्र किया जा सकता था यदि उसने कैसर के पास अपील नहीं की होती।"

**27** जब यह निर्णय लिया गया कि हम इटली के लिए जहाज से जाएंगे, तो उन्होंने पौलस और कुछ अन्य कैदियों को अगस्तान दल के एक सेनापति जिसका नाम यूलियस था, के हवाले कर दिया।<sup>2</sup> और हमने अद्रामितियुम के एक जहाज पर चढ़ाई की जो एशिया

## प्रेरितों के काम

के तट के क्षेत्रों की ओर जाने वाला था, और समुद्र में निकल पड़े, यिस्सलुनीके के एक मकिदुनी अरीस्टर्स्बुस के साथ।<sup>3</sup> अगले दिन हम सिदोन में उतरे; और यूलियस ने पौत्रुस के साथ विचारशीलता से व्यवहार किया और उसे अपने मित्रों के पास जाकर देखभाल प्राप्त करने की अनुमति दी।<sup>4</sup> वहाँ से हम समुद्र में निकल पड़े और कुप्रुस की आङ में चले गए, क्योंकि हवाएं विपरीत थीं।<sup>5</sup> जब हम किलिकिया और पैफूलिया के तट के साथ समुद्र में चले गए, तो हम लुकिया के स्फूर्ति में उतरे।<sup>6</sup> वहाँ सेनापति को इटली के लिए जाने वाला एक अलेक्झान्ड्रियन जहाज मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।<sup>7</sup> जब हम कई दिनों तक धीर-धीरे चले और कठिनाई से क्लीटुस के पास पहुंचे, क्योंकि हवा ने हमें आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी, तो हम सलमोने के पास पहुंचे, क्योंकि हवा ने हमें आगे बढ़ने की आङ में चले गए;<sup>8</sup> और कठिनाई से उसके साथ चलते हुए, हम एक स्थान पर पहुंचे जिसे फेयर हेवन्स कहा जाता है, जिसके पास लासेआ नगर था।

<sup>9</sup> जब काफी समय बीत गया और यात्रा अब खतरनाक हो गई, क्योंकि उपवास भी समाप्त हो चुका था, पौत्रुस ने उन्हें बार-बार चेतावनी दी,<sup>10</sup> और उनसे कहा, "पुरुषों, मैं देखता हूँ कि यह यात्रा निश्चित रूप से नुकसान और बड़ी हानि के साथ होगी, केवल माल और जहाज का ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन का भी।"<sup>11</sup> लेकिन सेनापति जहाज के पायलट और कप्तान की बातों से अधिक प्रभावित हुआ, बजाय पौलुस की बातों के।<sup>12</sup> चूंकि बंदरगाह सर्दियों के लिए उपयुक्त नहीं था, अधिकांश ने यह निर्णय लिया कि वहाँ से समुद्र में निकलें, यदि वे किसी तरह फीनिक्स पहुंच सकें, जो क्रेते का एक बंदरगाह है जो दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर है, और वहाँ सर्दी बिताएं।

<sup>13</sup> जब एक मध्यम दक्षिणी हवा चली, तो उन्होंने सोचा कि उन्होंने अपना उद्देश्य प्राप्त कर लिया है, उन्होंने लंगर उठाया और क्रेते के साथ-साथ तट के करीब चलने लगा।<sup>14</sup> लेकिन बहुत जल्द एक हिंसक हवा, जिसे यूराकिलो कहा जाता है, जमीन से ऊचे आई,<sup>15</sup> और जब जहाज उसमें फंस गया और हवा के खिलाफ नहीं जा सका, तो हमने हार मान ली और उसे बहने दिया।<sup>16</sup> काउडा नामक एक छोटे द्वीप की आङ में चलते हुए, हम केवल कठिनाई से जहाज की नाव की नियंत्रण में ला सके।<sup>17</sup> जब उन्होंने उसे ऊपर उठा लिया, तो उन्होंने जहाज को सहारा देने के लिए सहायक केबलों का उपयोग किया; और डरते हुए कि वे सिरतीस की उथल-पुथल में फंस सकते हैं, उन्होंने समुद्री लंगर को

नीचे कर दिया और इस तरह बहने दिया।<sup>18</sup> अगले दिन जब हम तूफान से बुरी तरह से फेंके जा रहे थे, उन्होंने माल को फेंकना शुरू कर दिया;<sup>19</sup> और तीसरे दिन उन्होंने जहाज के उपकरणों को अपने हाथों से समुद्र में फेंक दिया।<sup>20</sup> कई दिनों तक न तो सूर्य और न ही तारे दिखाई दिए, और कोई छोटा तूफान हमें नहीं घेर रहा था, तब से हमारी बचने की सारी आशा धीर-धीरे छोड़ दी गई।

<sup>21</sup> जब कई लोग लंबे समय तक बिना खाए रहे, पौलुस उनके बीच खड़ा हुआ और कहा, "पुरुषों, आपको मेरी सलाह का पालन करना चाहिए था और क्रेते से नहीं निकलना चाहिए था, और इस प्रकार अपने आप को इस नुकसान और हानि से बचा सकते थे।"<sup>22</sup> और फिर भी अब मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप अपनी हिम्मत बनाए रखें, क्योंकि आपके बीच कोई जीवन का नुकसान नहीं होगा, केवल जहाज का।<sup>23</sup> क्योंकि इसी रात मेरे परमेश्वर का एक द्रूत, जिसका मैं बूझ सकता था, करता हूँ, मेरे पास आया,<sup>24</sup> कहते हुए, 'डरो मत, पौलुस; तुम्हें केरस के सामने खड़ा होना होगा; और देखो, परमेश्वर ने तुम्हें उन सभी को अनुग्रहपूर्वक दिया है जो तुम्हारे साथ जहाज में हैं।'<sup>25</sup> इसलिए, पुरुषों, अपनी हिम्मत बनाए रखें, क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ कि यह ठीक उसी प्रकार होगा जैसा मुझे बताया गया है।<sup>26</sup> लेकिन हमें एक निश्चित द्वीप पर फंसना होगा।"

<sup>27</sup> लेकिन जब चौदहवीं रात आई, जब हम एड्रियाटिक समुद्र में बह रहे थे, आधी रात के आसपास नाविकों को सदेह हुआ कि वे कुछ भूमि के पास पहुंच रहे हैं।<sup>28</sup> उन्होंने गहराई मापी और पाया कि यह बीस फाथम है; और थोड़ी दूर आगे उन्होंने फिर से मापा और पाया कि यह पंद्रह फाथम है।<sup>29</sup> और डरते हुए कि हम कहीं बहाने पर फंस सकते हैं, उन्होंने जहाज के पिछले हिस्से से चार लंगर डाले और दिन के उजाले के लिए प्रार्थना की।<sup>30</sup> लेकिन जब नाविक जहाज से बचने की कोशिश कर रहे थे और बहाने से जहाज की नाव को समुद्र में उतार रहे थे कि वे धनुष से लंगर डालें जा रहे हैं,<sup>31</sup> पौलुस ने सेनापति और सैनिकों से कहा, "जब तक ये लोग जहाज पर नहीं रहते, आप स्वयं नहीं बच सकते।"<sup>32</sup> तब सैनिकों ने जहाज की नाव की रस्सियों को काट दिया और उसे बहने दिया।

<sup>33</sup> जब तक दिन निकलने वाला था, पौलुस ने उन्हें सबको कुछ भजन लेने के लिए प्रोत्साहित किया, कहते हुए, "आज चौदहवीं दिन है जब आप लगातार देख रहे हैं और बिना खाए रह रहे हैं, कुछ नहीं लिया है।"<sup>34</sup>

## प्रेरितों के काम

इसलिए, मैं आपको कुछ भोजन लेने के लिए प्रोत्साहित करता हूं, क्योंकि यह आपके जीवित रहने के लिए है, क्योंकि आप में से किसी के सिर का एक बाल भी नष्ट नहीं होगा।<sup>11</sup> <sup>35</sup> यह कहने के बाद, उसने रोटी ली और सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर खाने लगा। <sup>36</sup> उन सबने हम्मत पाई और उन्होंने भी भोजन लिया। <sup>37</sup> हम जहाज पर कुल 276 लोग थे। <sup>38</sup> जब उन्होंने पर्याप्त खा लिया, तो उन्होंने जहाज को हल्का करने के लिए गेहूं को समुद्र में फेंकना शुरू कर दिया।

<sup>39</sup> अब जब दिन आया, तो वे भूमि को पहचान नहीं सके; लेकिन उन्होंने एक खाड़ी को देखा जिसमें एक समुद्र तट था, और उन्होंने निर्णय लिया कि यदि वे कर सकते हैं तो जहाज को वहां किनारे पर ले जाएँ। <sup>40</sup> और लंगर छोड़कर, उन्होंने उन्हें समुद्र में छोड़ दिया, उसी समय उन्होंने पतवारों की रस्सियों का ढीला कर दिया; और अग्रभाग की पाल को हवा में उठाकर, वे समुद्र तट की ओर बढ़े। <sup>41</sup> लेकिन वे एक चट्टान पर जा लगे जहां दो समुद्र मिलते थे, और उन्होंने जहाज को किनारे पर चला दिया; और धनुष दृढ़ता से फंसी रही और अचल रही, लेकिन पिछला हिस्सा लहरों की ताकत से टूटे लगा। <sup>42</sup> अब सैनिकों की योजना थी कि कैदियों को मार डालें, ताकि उनमें से कोई तैरकर भाग न सके; <sup>43</sup> लेकिन सेनापति, पौलुस को सुरक्षित लाने की इच्छा से, उन्हें अपनी योजना को पूरा करने से रोका, और उसने आदेश दिया कि जो तैर सकते हैं वे पहले कूदकर किनारे पर पहुंचें, <sup>44</sup> और बाकी लोग पीछे आएँ, कुछ तख्तों पर, और कुछ जहाज की विभिन्न ओरों पर। और ऐसा हुआ कि वे सभी सुरक्षित रूप से किनारे पर पहुंच गए।

**28** जब वे सुरक्षित रूप से बाहर आ गए, तब हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा था। <sup>2</sup> स्थानीय लोगों ने हमें असाधारण दया दिखाई, क्योंकि बारिश हो रही थी और ठंड थी, उन्होंने आग जलाई और हम सबको ग्रहण किया। <sup>3</sup> लेकिन जब पौलुस ने लकड़ियों का एक गढ़ इकट्ठा किया और उसे आग पर रखा, तो गर्मी के कारण एक विषधर बाहर आया और उसके हाथ पर लटक गया। <sup>4</sup> जब स्थानीय लोगों ने उस जीव को उसके हाथ से लटकते देखा, तो वे एक-दूसरे से कहने लगे, “निस्सदेह यह आदमी एक हत्यारा है, और यद्यपि वह समुद्र से बच गया है, न्याय ने उसे जीवित नहीं रहने दिया है।” <sup>5</sup> हालांकि, उसने उस जीव को आग में झटक दिया और उसे कोई नुकसान नहीं हुआ। <sup>6</sup> वे उम्मीद कर रहे थे कि वह सूज जाएगा या अचानक मर जाएगा। लेकिन जब उन्होंने लंबे समय तक इंतजार किया और

उसके साथ कुछ भी असामान्य नहीं देखा, तो उन्होंने अपना मन बदल लिया और कहने लगे कि वह एक देवता है।

<sup>7</sup> अब उस स्थान के पड़ोस में द्वीप के प्रमुख व्यक्ति के पास भूमि थी, जिसका नाम पब्लियस था, जिसने हमें स्वागत किया और तीन दिनों तक शिशाचार से हमारा आतिथ्य किया। <sup>8</sup> और ऐसा हुआ कि पब्लियस का पिता बुखार और पेविश से पीड़ित बिस्तर पर पड़ा था; और पौलुस उसे देखने गया, और प्रार्थना करने के बाद, उसने अपने हाथ उस पर रखे और उसे चंगा किया। <sup>9</sup> इसके बाद, द्वीप के बाकी लोग जो बीमार थे, उसके पास आने लगे और चंगे हो गए। <sup>10</sup> उन्होंने हमें कई समान भी दिखाएँ; और जब हम जहाज पर चढ़ने वाले थे, तो उन्होंने हमें वह सब कुछ दिया जिसकी हमें आवश्यकता थी।

<sup>11</sup> तीन महीने बाद हम एक असेक्जेंट्रियन जहाज पर चढ़े जो द्वीप पर सर्दी बिता चुका था, और जिसका अग्रभाग जुड़वां भाइयों का था। <sup>12</sup> सिराक्यूज़ में पहुंचने के बाद, हम वहां तीन दिन रहे। <sup>13</sup> वहां से हम यात्रा करते हुए रेजियम पहुंचे, और एक दिन बाद दक्षिणी हवा चलने लगी, और दूसरे दिन हम पुटियोली पहुंचे। <sup>14</sup> वहां हमें कुछ भाई मिले और हमें उनके साथ सात दिन रहने का निमंत्रण मिला; और इस प्रकार हम रोम पहुंचे। <sup>15</sup> और वहां से भाई, जब उन्होंने हमारे बारे में सुना, तो वे अप्पियस के बाजार और तीन सराय तक हमसे मिलने आएँ; और जब पौलुस ने उन्हें देखा, तो उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया और साहस प्राप्त किया।

<sup>16</sup> जब हम रोम में पहुंचे, पौलुस को अकेले रहने की अनुमति दी गई, उस सैनिक के साथ जो उसकी रक्षा कर रहा था।

<sup>17</sup> तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए, तो उसने उनसे कहना शुरू किया, “भाइयों, यद्यपि मैंने अपनी जाति या हमारे पूर्वजों की रीति-रिवाजों के विरुद्ध कुछ नहीं किया, फिर भी मुझे यस्तूलिम से रोमन लोगों को कैटी के रूप में सौंप दिया गया।” <sup>18</sup> और जब उन्होंने मेरी जांच की, तो वे मुझे छोड़ने के लिए तैयार थे क्योंकि मेरे खिलाफ मृत्यु दंड का कोई आधार नहीं था। <sup>19</sup> लेकिन जब यहूदियों ने विरोध किया, तो मुझे कैसर के पास अपील करने के लिए मजबूर होना पड़ा, न कि मेरे राष्ट्र के खिलाफ कोई आरोप था। <sup>20</sup> इसी कारण से, मैंने आपसे मिलने और आपसे बात करने का अनुरोध किया, क्योंकि मैं इसाएँ

## प्रेरितों के काम

की आशा के लिए इस जंजीर को पहन रहा हूं।”<sup>21</sup> उन्होंने उससे कहा, “हमने न तो यहूदिया से आपके बारे में कोई पत्र प्राप्त किया है, और न ही यहां कोई भाई आया है और आपके बारे में कुछ भी बुरा बताया या कहा है।<sup>22</sup> लेकिन हम आपसे सुनना चाहते हैं कि आपके विचार क्या हैं; क्योंकि इस संप्रदाय के बारे में हमें पता है कि हर जगह इसके खिलाफ बोला जाता है।”

<sup>23</sup> जब उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन निर्धारित किया, तो वे बड़ी संख्या में उसके निवास स्थान पर आए, और वह उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में गंभीरता से गवाही देकर समझा रहा था और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं से यीशु के बारे में उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था, सुबह से शाम तक।<sup>24</sup> कुछ लोग पौलुस की बातों से प्रभावित हो रहे थे, लेकिन अन्य विश्वास नहीं कर रहे थे।<sup>25</sup> और जब वे एक-दूसरे से असहमत हो गए, तो वे पौलुस के एक विदाइ कथन के बाद छोड़ने लगे: “पवित्र आत्मा ने सही कहा था जब उसने यशायाह भविष्यद्वक्ता के माध्यम से आपके पूर्वजों से कहा,<sup>26</sup> कहते हुए,

‘इस लोगों के पास जाओ और कहो “तुम सुनते रहोगे और नहीं समझोगे; और तुम देखते रहोगे, और नहीं पहचानोगे;<sup>27</sup> क्योंकि इस लोगों के दिल असंवेदनशील हो गए हैं, और उनके कानों से वे मुश्किल से सुनते हैं और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं, अन्यथा वे अपनी आँखों से देख सकते थे, अपने कानों से सुन सकते थे, अपने दिल से समझ सकते थे, और लौट सकते थे, और मैं उन्हें चाग कर देता।’”

<sup>28</sup> इसलिए, यह आपको ज्ञात हो कि यह परमेश्वर की मुक्ति अन्यजातियों को भेजी गई है; वे भी सुनेंगे।”

<sup>29</sup> [जब उसने ये बातें कही, तो यहूदी चले गए, आपस में बड़ी बहस करते हुए।]<sup>30</sup> अब पौलुस दो पूर्ण वर्षों तक अपने किराए के निवास में रहा और जो भी उसके पास आया, उसका स्वागत किया,<sup>31</sup> परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते हुए और प्रभु यीशु मसीह के बारे में सब कुछ खुलेपन से और बिना किसी बाधा के सिखाते हुए।

## रोमियों

**1** पौलुस, मसीह यीशु का दास, प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया गया,<sup>2</sup> जिसे उसने पवित्र शास्त्रों में अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहले से वादा किया था,<sup>3</sup> अपने पुत्र के विषय में, जो शरीर के अनुसार दाऊद के बंश से उत्पन्न हुआ,<sup>4</sup> जो पवित्रता की आत्मा के अनुसार सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहराया गया, मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा—हमारे प्रभु यीशु मसीह,<sup>5</sup> जिसके द्वारा हमने अनुग्रह और प्रेरिताई प्राप्त की, ताकि सभी अन्यजातियों में उसके नाम के लिए विश्वास की आज्ञाकारिता उत्पन्न हो,<sup>6</sup> जिनमें से आप भी यीशु मसीह के बुलाए हुए हैं;<sup>7</sup> रोम में परमेश्वर के पिय सभी लोगों के लिए, जो संत कहलाए जाते हैं: हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से आपको अनुग्रह और शांति मिले।

<sup>8</sup> पहले, मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ यीशु मसीह के द्वारा आप सभी के लिए, क्योंकि आपकी विश्वास की चर्चा सारे संसार में हो रही है।<sup>9</sup> क्योंकि परमेश्वर, जिसकी मैं अपने आत्मा में उसके पुत्र के सुसमाचार के प्रवार में सेवा करता हूँ, मेरा साक्षी है कि मैं कैसे निरंतर आपकी चर्चा करता हूँ。<sup>10</sup> हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में निवेदन करता हूँ, कि शायद अब अंत में परमेश्वर की इच्छा से मैं आपके पास आने में सफल हो सकूँ।<sup>11</sup> क्योंकि मैं आपको देखने की लालसा करता हूँ ताकि मैं आपको कुछ आनिक वरदान दे सकूँ, जिससे आप स्थिर हो सकें;<sup>12</sup> अर्थात्, कि मैं आपके बीच में रहकर आपसे और आप मुझसे, एक दूसरे के विश्वास के द्वारा प्रोत्साहित हो सकूँ।<sup>13</sup> मैं नहीं चाहता कि आप अनजान रहें, भाइयों और बहनों, कि मैंने अक्सर आपके पास आने की योजना बनाई है (और अब तक रोका गया है), ताकि मैं आपके बीच में भी कुछ फल प्राप्त कर सकूँ, जैसे अन्य अन्यजातियों के बीच में।<sup>14</sup> मैं यूनानियों और अनपढ़ों, दोनों के लिए, बुद्धिमानों और मूर्खों, दोनों के लिए ऋणी हूँ।<sup>15</sup> इसलिए, मेरी ओर से, मैं रोम में आप लोगों को भी सुसमाचार सुनाने के लिए उत्सुक हूँ।

<sup>16</sup> क्योंकि मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि यह हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है, पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए।<sup>17</sup> क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है; जैसा लिखा है: “परन्तु धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा।”

<sup>18</sup> क्योंकि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है सभी अधर्म और लोगों की अन्याय के विरुद्ध जो अन्याय में सत्य को दबाते हैं,<sup>19</sup> क्योंकि जो परमेश्वर के विषय में

जाना जा सकता है वह उनके भीतर प्रकट है; क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें प्रकट किया है।<sup>20</sup> क्योंकि संसार की सृष्टि से उसकी अदृश्य गुण, अर्थात् उसकी अनन्त सामर्थ्य और दिव्य स्वभाव, स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं, जो बनाई गई वस्तुओं के द्वारा समझे जाते हैं, ताकि वे बिना बहाने के हैं।<sup>21</sup> क्योंकि यद्यपि उन्होंने परमेश्वर को जाना, उन्होंने उस परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं दिया और न धन्यवाद किया, परन्तु वे अपनी तर्कों में वर्य हो गए, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए।<sup>22</sup> बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए,<sup>23</sup> और उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, पक्षियों, चौपायों और रेंगने वाले जीवों की प्रतिमा के रूप में बदल दिया।

<sup>24</sup> इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके हृदय की वासनाओं में अपवित्रता के लिए छोड़ दिया, ताकि उनके शरीर उनके बीच अपमानित हों।<sup>25</sup> क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के सत्य को झूठ में बदल दिया, और सृष्टि की बजाय सृष्टिकर्ता की आराधना और सेवा की, जो सदा धन्य है। आमीन।

<sup>26</sup> इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें अपमानजनक वासनाओं के लिए छोड़ दिया; क्योंकि उनकी स्थियों ने प्राकृतिक संबंधों को प्रकृति के विपरीत बदल दिया,<sup>27</sup> और वैसे ही पुरुषों ने भी, स्त्रियों के साथ प्राकृतिक संबंधों को छोड़ दिया और एक-दूसरे के प्रति अपनी वासना में जल उठे: पुरुषों ने पुरुषों के साथ लज्जाजनक कार्य किए और अपनी गलती का उचित दंड अपने शरीर में प्राप्त किया।

<sup>28</sup> और जैसे उन्होंने परमेश्वर को जानने योग्य नहीं समझा, परमेश्वर ने उन्हें विकृत मन के लिए छोड़ दिया, ताकि वे ते कार्य करें जो उचित नहीं हैं,<sup>29</sup> लोग सभी प्रकार की अधर्मता, दुष्टता, लोभ, और बुराई से भरे हुए हैं; ईर्ष्या, हत्या, कलह, छल, और द्वेष से भरे हुए हैं; वे चुगली करने वाले हैं,<sup>30</sup> निंदा करने वाले, परमेश्वर से धृणा करने वाले, अपमानजनक, अभिमानी, डींग मारने वाले, बुराई के आविष्कारक, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले,<sup>31</sup> समझ के बिना, विश्वासघाती, प्रेमहीन, निर्दयी;<sup>32</sup> और यद्यपि वे परमेश्वर की विधि को जानते हैं, कि जो ऐसे कार्य करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं, वे न केवल वहीं करते हैं, बल्कि जो उन्हें करते हैं उन्हें भी अनुमोदन देते हैं।

**2** इसलिए, हे मूर्ख व्यक्ति, जो भी न्याय करता है, तुझे कोई बहाना नहीं है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरों का न्याय करता है, उसी में तू अपने आप को दोषी ठहराता

## रोमियों

है, क्योंकि तू जो न्याय करता है, वही काम करता है।<sup>2</sup> और हम जानते हैं कि परमेश्वर का न्याय उन पर सही ढंग से होता है जो ऐसे काम करते हैं।<sup>3</sup> परन्तु क्या तू यह सोचता है, हे मूर्ख व्यक्ति, जो उन पर न्याय करता है जो ऐसे काम करते हैं, और स्वयं भी वही करता है, कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा? <sup>4</sup> या तू उसकी कृपा, संयम, और धैर्य के धन को तुच्छ समझता है, यह न जानते हुए कि परमेश्वर की कृपा तुझे पश्चातप की ओर ले जाती है? <sup>5</sup> परन्तु तेरे हठ और अप्राप्यक्षित हृदय के कारण, तू अपने लिए क्रोध के दिन के लिए क्रोध संचित कर रहा है, जब परमेश्वर का धर्मी न्याय प्रकट होगा,<sup>6</sup> जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा;<sup>7</sup> जो भलाई में दृढ़ता से महिमा, सम्मान, और अमरता की खोज करते हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा;<sup>8</sup> परन्तु जो स्वार्थी हैं और सत्य का पालन नहीं करते, परन्तु अर्थम् का पालन करते हैं, उन्हें वह क्रोध और रोष देगा।<sup>9</sup> हर उस व्यक्ति के लिए क्लेश और संकट होगा जो बुराई करता है, पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए भी,<sup>10</sup> परन्तु महिमा, सम्मान, और शांति हर उस व्यक्ति के लिए जो भलाई करता है, पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए भी।<sup>11</sup> क्योंकि परमेश्वर के साथ कोई पक्षपात नहीं है।

<sup>12</sup> क्योंकि जितने बिना व्यवस्था के पाप करते हैं, वे बिना व्यवस्था के नष्ट हो जाएंगे, और जितने व्यवस्था के अधीन पाप करते हैं, वे व्यवस्था द्वारा न्याय किए जाएंगे;<sup>13</sup> क्योंकि परमेश्वर के सामने धर्मी वे नहीं हैं जो व्यवस्था को सुनते हैं, परन्तु वे जो व्यवस्था का पालन करते हैं, वे धर्मी ठहराए जाएंगे।<sup>14</sup> क्योंकि जब अन्यजाति, जिनके पास व्यवस्था नहीं है, स्वभाविक रूप से व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, तो ये, जिनके पास व्यवस्था नहीं है, अपने आप में एक व्यवस्था हैं,<sup>15</sup> इसमें कि वे अपने हृदयों में लिखी हुई व्यवस्था के कार्य को दिखाते हैं, उनका विवेक गवाही देता है और उनके विचार बारी-बारी से उन्हें दोषी ठहराते या बचाते हैं,<sup>16</sup> उस दिन जब, मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर मसीह धीशु के द्वारा मनुष्यों के गुप्त विचारों का न्याय करेगा।

<sup>17</sup> परन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था पर निर्भाव करता है और परमेश्वर में घमण्ड करता है,<sup>18</sup> और उसकी इच्छा को जानता है और जो बातें महत्वपूर्ण हैं उन्हें पहचानता है, व्यवस्था से सिखाया गया है,<sup>19</sup> और इस बात में आत्मविभास रखता है कि तू अंधों के लिए मार्गदर्शक है, अंधकार में रहने वालों के लिए प्रकाश है,<sup>20</sup> मूर्खों का सुधारक, अपरिषदों का

शिक्षक, व्यवस्था में ज्ञान और सत्य का अवतार है—<sup>21</sup> तू जो किसी ओर को सिखाता है, क्या तू अपने आप को नहीं सिखाता? तू जो उपदेश देता है कि चोरी नहीं करनी चाहिए, क्या तू चोरी करता है?<sup>22</sup> तू जो कहता है कि व्यभिचार नहीं करना चाहिए, क्या तू व्यभिचार करता है? तू जो मूर्खियों से घुणा करता है, क्या तू मूर्खियों को लूटता है?<sup>23</sup> तू जो व्यवस्था में घमण्ड करता है, क्या तू व्यवस्था का उल्लंघन करके परमेश्वर का अपमान करता है?<sup>24</sup> क्योंकि “परमेश्वर का नाम अन्यजातियों में तेरे कारण निदित होता है,” जैसा कि लिखा है।

<sup>25</sup> क्योंकि वास्तव में खतना का मूल्य है यदि तू व्यवस्था का पालन करता है; परन्तु यदि तू व्यवस्था का उल्लंघन करता है, तो तेरा खतना खतनारहित हो गया है।<sup>26</sup> तो यदि खतनारहित व्यक्ति व्यवस्था की आवश्यकताओं का पालन करता है, क्या उसकी खतनारहितता खतना के रूप में नहीं मानी जाएगी?<sup>27</sup> और जो शारीरिक रूप से खतनारहित है, यदि वह व्यवस्था का पालन करता है, क्या वह तुझे न्याय नहीं करेगा, जो कि व्यवस्था के अक्षर और खतना होने के बावजूद व्यवस्था का उल्लंघन करता है?<sup>28</sup> क्योंकि वह यहूदी नहीं है जो बाहरी रूप से है, और न ही वह खतना है जो शरीर में बाहरी है,<sup>29</sup> परन्तु वह यहूदी है जो आंतरिक रूप से है; और खतना हृदय का है, आत्मा द्वारा, अक्षर द्वारा नहीं; और उसकी प्रशंसा मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से है।

**3** तो यहूदी का क्या लाभ है? या खतना का क्या लाभ है?<sup>2</sup> हर प्रकार से बहुत। सबसे पहले, उन्हें परमेश्वर के वचनों का उत्तरदायित्व सौंपा गया था।<sup>3</sup> तो फिर क्या? यदि कुछ ने विश्वास नहीं किया, तो क्या उनकी अविश्वास परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को निरस्त कर देरी?<sup>4</sup> कदापि नहीं! बल्कि, परमेश्वर को सच्चा ठहराया जाना चाहिए, चाहे हर व्यक्ति झूठा पाया जाए, जैसा कि लिखा है:

“कि तू अपने वचनों में धर्मी ठहर सके, और जब तुझ पर निर्णय हो, तब तू विजयी हो।”

<sup>5</sup> पर यदि हमारी अधर्मता परमेश्वर की धर्मता को प्रदर्शित करती है, तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर, जो क्रोध लाता है, अधर्मी है? (मैं मानव दृष्टिकोण से बोल रहा हूँ।)<sup>6</sup> कदापि नहीं! क्योंकि अन्यथा, परमेश्वर संसार का न्याय कैसे करेगा?<sup>7</sup> पर यदि मेरे ज्ञाते के द्वारा परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिए बढ़ी है, तो मुझे अभी भी पापी के रूप में क्यों न्याय किया जा रहा है?<sup>8</sup> और क्यों न कहें—जैसा कि हम पर झूठा आरोप

## रोमियों

लगाया जाता है, और जैसा कि कुछ दावा करते हैं कि हम कहते हैं—“आओ बुराई करें कि भलाई आए”? उनका दंड उचित है।<sup>9</sup> तो फिर क्या? क्या हम उनसे बेहतर हैं? बिल्कुल नहीं; क्योंकि हमने पहले ही आरोप लगाया है कि यहूदी और यूनानी दोनों पाप के अधीन हैं।<sup>10</sup> जैसा कि लिखा है:

“कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं<sup>11</sup> कोई नहीं है जो समझता है, कोई नहीं है जो परमेश्वर को खोजता है,<sup>12</sup> वे सब भटक गया हैं—साथ ही भ्रष्ट हो गए हैं, कोई नहीं है जो भला करता है, एक भी नहीं।”<sup>13</sup> “उनका गला खुली कबड़ी है, अपनी जीभें से वे खोखा देते रहते हैं।” “उनके होठों के नीचे नाग का विष है,”<sup>14</sup> “उनका मुँह शाप और कड़वाहट से भरा है,”<sup>15</sup> “उनके पैर रक्त बहने में शीघ्र हैं”<sup>16</sup> विनाश और दुख उनके मार्गों में हैं,<sup>17</sup> और उन्होंने शांति का मार्ग नहीं जाना।”<sup>18</sup> “उनकी अँखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं है।”

<sup>19</sup> अब हम जानते हैं कि जो कुछ व्यवस्था कहती है, वह उन लोगों से कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं, ताकि हर मुँह बंद हो जाए, और सारी दुनिया परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हो जाए।<sup>20</sup> क्योंकि व्यवस्था के कार्यों के द्वारा कोई भी शरीर उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहरेगा; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान होता है।<sup>21</sup> पर अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की धर्मता प्रकट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं ने दी है,<sup>22</sup> परमेश्वर की धर्मता यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उन सब के लिए है जो विश्वास करते हैं; क्योंकि कोई भेद नहीं है,<sup>23</sup> क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं,<sup>24</sup> उसके अनुग्रह के द्वारा मसीह यीशु में छुटकारे के माध्यम से मुक्त में धर्मी ठहरा जाते हैं,<sup>25</sup> जिसे परमेश्वर ने उसके लहू में विश्वास के द्वारा प्रायोगित के रूप से सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया। यह उसकी धर्मता को प्रदर्शित करने के लिए था, क्योंकि परमेश्वर की दायतु संयम में उसने पहले किए गए पापों को बिना दंड के छोड़ दिया;<sup>26</sup> वर्तमान समय में उसकी धर्मता के प्रदर्शन के लिए, ताकि वह धर्मी हो और जो यीशु में विश्वास करता है उसका धर्मी ठहराने वाला हो।<sup>27</sup> तो फिर धर्मांड कहाँ है? यह बाहर कर दिया गया है। किस प्रकार की व्यवस्था से? कार्यों की? नहीं, बल्कि विश्वास की व्यवस्था से।<sup>28</sup> क्योंकि हम मानते हैं कि एक व्यक्ति विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है, व्यवस्था के कार्यों के बिना।<sup>29</sup> क्या परमेश्वर के लिए यहूदियों का परमेश्वर है? क्या वह अन्यजातियों का भी परमेश्वर नहीं है? हाँ, अन्यजातियों का भी,<sup>30</sup> क्योंकि वास्तव में परमेश्वर, जो खतना किए गए को विश्वास के द्वारा और

खतना न किए गए को विश्वास के माध्यम से धर्मी ठहराएगा, एक ही है।<sup>31</sup> तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को निरस्त करते हैं? कदापि नहीं! इसके विपरीत, हम व्यवस्था को स्थापित करते हैं।

**4** तो फिर हम क्या कहें कि हमारे पूर्ज अब्राहम ने शरीर के अनुसार क्या पाया?<sup>2</sup> क्योंकि यदि अब्राहम कर्मों से धर्मी ठहराया गया होता, तो उसके पास धर्मांड करने का कुछ होता—परन्तु परमेश्वर के सामने नहीं।<sup>3</sup> क्योंकि पवित्र शास्त्र क्या कहता है? “अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धर्म के रूप में गिना गया।”<sup>4</sup> अब जो काम करता है, उसके लिए मजाहदी कृपा के रूप में नहीं, बल्कि जो उसका हक है, उसके रूप में गिनी जाती है।<sup>5</sup> परन्तु जो काम नहीं करता, परन्तु उस पर विश्वास करता है जो अधर्मी को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धर्म के रूप में गिना जाता है,<sup>6</sup> जैसे दाऊद भी उस व्यक्ति की आशीष के बारे में कहता है, जिसे परमेश्वर कर्मों के बिना धर्म के रूप में गिनता है:

“धन्य हैं दे जिनके अधर्म के काम क्षमा किए गए और जिनके पाप ढके गए हैं।”<sup>7</sup> “धन्य है वह मनुष्य जिसका पाप प्रभु हिसाब में नहीं लाएगा।”

<sup>9</sup> तो क्या यह आशीष के बल खतना किए हुए लोगों के लिए है, या खतना न किए हुए लोगों के लिए भी? क्योंकि हम कहते हैं, “अब्राहम के लिए विश्वास धर्म के रूप में गिना गया।”<sup>10</sup> तो फिर यह कैसे गिना गया? जब वह खतना किया हुआ था, या जब वह खतना नहीं किया हुआ था? न कि खतना किए हुए में, परन्तु खतना न किए हुए में।<sup>11</sup> और उसने खतना का चिन्ह प्राप्त किया, उस विश्वास की धर्मिता की मुद्रा के रूप में जो उसने खतना न किए हुए में किया था, ताकि वह उस सबका पिता हो जो बिना खतना किए विश्वास करते हैं, कि उनके लिए भी धर्म गिना जाए,<sup>12</sup> और खतना किए हुए लोगों का भी पिता, जो न केवल खतना किए हुए हैं, बल्कि हमारे पिता अब्राहम के विश्वास के पदचिन्हों पर चलते हैं, जो उसने खतना न किए हुए में किया था।<sup>13</sup> क्योंकि अब्राहम या उसके वंशजों के लिए यह प्रतिज्ञा कि वह संसार का वारिस होगा, व्यवस्था के द्वारा नहीं थी, बल्कि विश्वास की धर्मिता के द्वारा थी।<sup>14</sup> क्योंकि यदि वे जो व्यवस्था के हैं, वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ हो जाता है और प्रतिज्ञा निरस्त हो जाती है;<sup>15</sup> क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है, परन्तु जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ कोई उल्लंघन भी नहीं है।<sup>16</sup> इस कारण यह विश्वास के द्वारा है, ताकि यह कृपा के अनुसार हो, ताकि प्रतिज्ञा सभी वंशजों के लिए

## रोमियों

सुनिश्चित हो—न केवल उन लोगों के लिए जो व्यवस्था के हैं, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो अब्राहम के विश्वास के हैं, जो हम सबका पिता है, <sup>17</sup> जैसा कि लिखा है: ‘मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता बनाया है।’<sup>18</sup> उसके सामने जिसने विश्वास किया, अर्थात् परमेश्वर, जो मरे हुओं को जीवन देता है और जो चीजें अस्तित्व में नहीं हैं उन्हें बुलाता है। <sup>19</sup> आशा के विरुद्ध आशा में उसने विश्वास किया, ताकि वह बहुत सी जातियों का पिता बन सके, जैसा कि कहा गया था: “तेरे वंशज ऐसे ही होंगे।” <sup>20</sup> बिना विश्वास में कमज़ोर हुए, उसने अपने शरीर पर ध्यान दिया, जो अब लगभग मृत था क्योंकि वह लगभग सौ वर्ष का था, और सारा की गर्भशय की मृतता पर भी। <sup>21</sup> फिर भी, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के संबंध में, वह अविश्वास में डगमगाया नहीं, बल्कि विश्वास में ढूँढ़ तुआ, परमेश्वर को महिमा देते हुए, <sup>22</sup> और पूरी तरह से आश्वस्त था कि जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में सक्षम है। <sup>23</sup> इसलिए यह यही उसके लिए धर्म के रूप में गिना गया। <sup>24</sup> अब यह केवल उसके लिए नहीं लिखा गया था कि यह उसके लिए गिना गया, <sup>25</sup> बल्कि हमारे लिए भी, जिनके लिए यह गिना जाएगा—हम जो उस पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, <sup>26</sup> वह जो हमारे अपराधों के कारण सोंपा गया, और हमारे धर्मी ठहराने के कारण जिलाया गया।

**5** इसलिए, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के कारण, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारी शांति है। <sup>2</sup> जिसके द्वारा हमने विश्वास के द्वारा उस अनुग्रह में प्रवेश पाया है, जिसमें हम स्थिर हैं; और हम परमेश्वर की महिमा की आशा में अनन्दित होते हैं। <sup>3</sup> और न केवल यह, परन्तु हम अपने क्लेशों में भी अनन्दित होते हैं, यह जानते हुए कि क्लेश धैर्य उत्पन्न करता है; <sup>4</sup> और धैर्य, खरा चरित्र; और खरा चरित्र, आशा; <sup>5</sup> और आशा निराश नहीं करती, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा उंडेला गया है, जो हमें दिया गया है। <sup>6</sup> क्योंकि जब हम अभी भी असहाय थे, ठीक समय पर मसीह अधिर्मियों के लिए मरा। <sup>7</sup> क्योंकि कोई धर्म व्यक्ति के लिए शायद ही मरेगा; यद्यपि शायद किसी अच्छे व्यक्ति के लिए कोई मरने का साहस कर सकता है। <sup>8</sup> परन्तु परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार दिखाता है, कि जब हम अभी भी पापी थे, मसीह हमारे लिए मरा। <sup>9</sup> तो अब जब हम उसके द्वारा क्रांति से बचेंगे। <sup>10</sup> क्योंकि यदि जब हम शत्रु थे, तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल मिलाप हुआ, तो अब जब हम मेल मिलाप कर चुके हैं, तो हम उसके जीवन के द्वारा बचेंगे। <sup>11</sup> और न केवल

यह, परन्तु हम परमेश्वर में भी अनन्दित होते हैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा अब हमने मेल मिलाप प्राप्त किया है। <sup>12</sup> इसलिए, जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु, वैसे ही मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सबने पाप किया— <sup>13</sup> क्योंकि व्यवस्था के पहले पाप संसार में था, परन्तु जब कोई व्यवस्था नहीं होती, तो पाप किसी के विरुद्ध नहीं गिना जाता। <sup>14</sup> फिर भी मृत्यु आदम से लेकर मूसा तक राज्य करती रही, यहाँ तक कि उन पर भी जिह्वने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था, जो आने वाले का प्रतीक था। <sup>15</sup> परन्तु अनुग्रह का उपहार अपराध के समान नहीं है। क्योंकि यदि एक के अपराध के द्वारा बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और एक मनुष्य, यीशु मसीह के अनुग्रह का उपहार बहुतों पर अधिकता से बरसा। <sup>16</sup> उपहार उस के समान नहीं है जो पाप के द्वारा आया; क्योंकि एक अपराध के द्वारा दण्ड का निर्णय हुआ, परन्तु अनुग्रह का उपहार बहुत अपराधों के बाद धर्मी ठहराने के लिए हुआ। <sup>17</sup> क्योंकि यदि एक के अपराध के द्वारा मृत्यु ने एक के द्वारा राज्य किया, तो जो अनुग्रह की बहुतायत और धर्म के उपहार को प्राप्त करते हैं, वे एक के द्वारा, यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे। <sup>18</sup> तो फिर, जैसे एक अपराध के द्वारा सब मनुष्यों के लिए दण्ड का निर्णय हुआ, वैसे ही एक धर्म के कार्य के द्वारा सब मनुष्यों के लिए जीवन का धर्मी ठहराना हुआ। <sup>19</sup> क्योंकि जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा के द्वारा बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक की आज्ञाकारिता के द्वारा बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। <sup>20</sup> व्यवस्था इसलिये आई कि अपराध बढ़े; परन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी बढ़ गया, <sup>21</sup> ताकि, जैसे पाप ने मृत्यु में राज्य किया, वैसे ही अनुग्रह भी धर्म के द्वारा अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा राज्य करे।

## रोमियों

रहें, <sup>7</sup> क्योंकि जो मर गया है, वह पाप से मुक्त हो गया है। <sup>8</sup> अब यदि हम मसीह के साथ मर गए हैं, तो हमें विश्वास है कि हम उसके साथ जीवित भी रहेंगे, <sup>9</sup> यह जानते हुए कि मसीह, मेरे हुओं में से जी उठकर, फिर कभी नहीं मरेगा; मर्यु अब उस पर अधिकार नहीं रखती। <sup>10</sup> क्योंकि जो मर्यु उसने मरी, वह पाप के लिए एक बार मरी; पर जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। <sup>11</sup> तो आप भी अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ, पर मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित मानें। <sup>12</sup> इसलिए पाप आपके नाशवान शरीर में राज्य न करे ताकि आप उसकी वासनाओं को मानें, <sup>13</sup> और अपने शरीर के अंगों को पाप के लिए अधर्म के हथियार के रूप में प्रस्तुत न करें; पर अपने आप को परमेश्वर के लिए प्रस्तुत करें जैसे मेरे हुओं में से जीवित हुए हैं, और अपने शरीर के अंगों को परमेश्वर के लिए धर्म के हथियार के रूप में प्रस्तुत करें। <sup>14</sup> क्योंकि पाप आपका स्वामी नहीं होगा, क्योंकि आप व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं। <sup>15</sup> तो क्या? क्या हम पाप करें क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं! <sup>16</sup> क्या आप नहीं जानते कि जिसे आप अपने आप को दास के रूप में आज्ञाकारिता के लिए प्रस्तुत करते हैं, आप उसी के दास हैं जिसे आप मानते हैं, चाहे पाप के जो मर्यु की ओर ले जाता है, या आज्ञाकारिता के जो धर्म की ओर ले जाती है? <sup>17</sup> परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि, यद्यपि आप पाप के दास थे, आप दिल से उस शिक्षा के रूप में आज्ञाकारी हो गए जिसमें आपको सौंपा गया था, <sup>18</sup> और पाप से मुक्त होकर, आप धर्म के दास बन गए। <sup>19</sup> मैं आपके शरीर की कमजोरी के कारण मानव शब्दों में बोल रहा हूँ। क्योंकि जैसे आपने अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और अधर्म के दास के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे और अधिक अधर्म हुआ, वैसे ही अब अपने शरीर के अंगों को धर्म के दास के रूप में प्रस्तुत करें, जिससे पवित्रीकरण हो। <sup>20</sup> क्योंकि जब आप पाप के दास थे, तो आप धर्म के संबंध में स्वतंत्र थे। <sup>21</sup> इसलिए, उन चीजों से आपको क्या लाभ हुआ जिनके लिए अब आप लजित हैं? क्योंकि उन चीजों का परिणाम मर्यु है। <sup>22</sup> परंतु अब, पाप से मुक्त होकर और परमेश्वर के दास बनकर, आप अपना लाभ प्राप्त करते हैं, जो पवित्रीकरण में परिणत होता है, और परिणामस्वरूप, अनंत जीवन। <sup>23</sup> क्योंकि पाप की मजदूरी मर्यु है, परंतु परमेश्वर का अनुग्रह का उपहार हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन है।

**7** क्या आप नहीं जानते, भाइयों और बहनों—क्योंकि मैं उन लोगों से बात कर रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते

हैं—कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, व्यवस्था का उस पर अधिकार होता है? <sup>2</sup> क्योंकि विवाहित स्त्री अपने पति के जीवित रहने तक व्यवस्था द्वारा अपने पति से बंधी रहती है; परन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह पति के संबंध में व्यवस्था से मुक्त हो जाती है। <sup>3</sup> इसलिए, यदि वह अपने पति के जीवित रहते हुए किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध रखती है, तो वह व्यभिचारिणी कहलाएगी; परन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह उस व्यवस्था से मुक्त है, ताकि वह किसी अन्य पुरुष की होते हुए भी व्यभिचारिणी न हो। <sup>4</sup> इसलिए, मेरे भाइयों और बहनों, आप भी मसीह के शरीर के द्वारा व्यवस्था के संबंध में मरे हुए हैं, ताकि आप दूसरे के हो सकें, अर्थात उसके जो मरे हुओं में से जी उठा, ताकि हम परमेश्वर के लिए फल उत्पन्न कर सकें। <sup>5</sup> क्योंकि जब हम शरीर में थे, तो पापमय इच्छाएँ, जो व्यवस्था के द्वारा प्रकट हुई थीं, हमारे शरीर के अंगों में मर्यु हो लिए फल उत्पन्न करने के लिए कार्यरत थीं। <sup>6</sup> परन्तु अब हम व्यवस्था से मुक्त हो गए हैं, उस से मर गए हैं जिससे हम बंधे हुए थे, ताकि हम आमा की नईता में सेवा करें और अक्षर की पुरानीता में नहीं। <sup>7</sup> तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! बल्कि, मैंने पाप को व्यवस्था के द्वारा ही जाना। क्योंकि यदि व्यवस्था ने यह न कहा होता, “तू लालच न कर,” तो मैं लालच को न जानता। <sup>8</sup> परन्तु पाप ने आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझ में हर प्रकार का लालच उत्पन्न किया; क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मृत है। <sup>9</sup> मैं एक बार बिना व्यवस्था के जीवित था; परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जीवित हो गया, और मैं मर गया; <sup>10</sup> और वह आज्ञा, जो जीवन देने के लिए थी, मेरे लिए मर्यु का कारण बन गई; <sup>11</sup> क्योंकि पाप ने आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझे खोखा दिया, और उसके द्वारा मुझे मार डाला। <sup>12</sup> तो फिर, व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र और धर्मी और अच्छी है। <sup>13</sup> तो क्या वह जो अच्छा है मेरे लिए मर्यु का कारण बन गया? कदापि नहीं! बल्कि, यह पाप था, ताकि यह पाप के रूप में प्रकट हो सके, जो अच्छे के द्वारा मेरे लिए मर्यु लाया, ताकि आज्ञा के द्वारा पाप अलंकृत पापमय बन सके। <sup>14</sup> क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक हूँ, पाप के अधीन बेचा गया हूँ। <sup>15</sup> क्योंकि मैं नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, क्योंकि मैं वह नहीं करता जो मैं चाहता हूँ, बल्कि वही करता हूँ जिससे मैं धूणा करता हूँ। <sup>16</sup> फिर भी, यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं चाहता, तो मैं इस बात से सहमत हूँ कि व्यवस्था अच्छी है। <sup>17</sup> परन्तु अब, मैं नहीं, बल्कि वह पाप जो मुझ में वास करता है, वही यह कर रहा है। <sup>18</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में, अर्थात मेरे शरीर में, कोई अच्छा नहीं रहता; क्योंकि इच्छा तो मुझ में है, परन्तु

## रोमियों

अच्छा करना नहीं। <sup>19</sup> क्योंकि जो अच्छा मैं चाहता हूँ, वह मैं नहीं करता, बल्कि वही बुरा करता हूँ जो मैं नहीं चाहता। <sup>20</sup> परन्तु यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं चाहता, तो अब मैं नहीं, बल्कि वह पाप जो मुझे में गास करता है, वही यह कर रहा है। <sup>21</sup> इसलिए मैं यह सिद्धांत पाता हूँ कि बुराई मुझे में उपस्थित है, जो अच्छा करना चाहता हूँ। <sup>22</sup> क्योंकि मैं अपने भीतरी व्यक्ति में परमेश्वर की व्यवस्था से आनंदित हूँ, <sup>23</sup> परन्तु मैं अपने शरीर के अंगों में एक भिन्न व्यवस्था देखता हूँ, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध कर रही है और मुझे पाप की व्यवस्था का बंदी बना रही है, जो मेरे शरीर के अंगों मैं है। <sup>24</sup> मैं कैसा अभाग मनुष्य हूँ? इस मृत्यु के शरीर से मुझे कौनछुड़ाएगा? <sup>25</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का ध्यायाद हो: इसलिए, एक ओर मैं अपनी बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था की सेवा करता हूँ, परन्तु दूसरी ओर, अपने शरीर से पाप की व्यवस्था की।

**8** इसलिए अब उन लोगों के लिए जो मसीह यीशु मैं हैं, कोई दंद नहीं है। <sup>2</sup> क्योंकि मसीह यीशु मैं जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से खतरन कर दिया है। <sup>3</sup> क्योंकि जो व्यवस्था शरीर की कमजोरी के कारण नहीं कर सकती थी, वह परमेश्वर ने किया: उसने अपने पुत्र को पापी शरीर की समानता में और पाप के लिए बलिदान के रूप में भेजा, उसने शरीर में पाप को दिलित किया, <sup>4</sup> ताकि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं। <sup>5</sup> क्योंकि जो लोग शरीर के अनुसार हैं, वे शरीर की बातों पर ध्यान देते हैं, लेकिन जो लोग आत्मा के अनुसार हैं, वे आत्मा की बातों पर ध्यान देते हैं। <sup>6</sup> क्योंकि शरीर पर ध्यान देना मृत्यु है, लेकिन आत्मा पर ध्यान देना जीवन और शांति है, <sup>7</sup> क्योंकि शरीर पर ध्यान देना परमेश्वर के प्रति शत्रुता है, क्योंकि यह परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं होता, और यह ऐसा करने में सक्षम भी नहीं है, <sup>8</sup> और जो लोग शरीर मैं हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। <sup>9</sup> हालांकि, यदि वास्तव में परमेश्वर की आत्मा तुम मैं निवास करती है, तो तुम शरीर में नहीं बल्कि आत्मा मैं हो। लेकिन यदि किसी के पास मसीह की आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है। <sup>10</sup> यदि मसीह तुम मैं है, तो शरीर पाप के कारण मृत है, फिर भी आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है। <sup>11</sup> लेकिन यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मृतकों मैं से जिलाया, तुम मैं निवास करती है, तो वह जिसने मसीह यीशु को मृतकों मैं से जिलाया, तुम्हरे नक्श शरीरों को भी जीवन देगा अपनी आत्मा के द्वारा जो तुम मैं निवास करती है। <sup>12</sup> तो फिर, भाइयों और बहनों, हम शरीर के अनुसार जीने के लिए शरीर के

अधीन नहीं हैं— <sup>13</sup> क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जी रहे हो, तो तुम मरने वाले हो; लेकिन यदि आत्मा के द्वारा तुम शरीर के कार्यों को मार रहे हो, तो तुम जीवित रहोगे। <sup>14</sup> क्योंकि जो लोग परमेश्वर की आत्मा के द्वारा संचालित होते हैं, वे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं। <sup>15</sup> क्योंकि तुमने दासता की आत्मा को फिर से भय के लिए नहीं पाया, बल्कि तुमने पुत्र और पुत्रियों के रूप में गोद लेने की आत्मा पाई है जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, "अब्जा! पिता!" <sup>16</sup> आत्मा स्वर्यं हमारी आत्मा के साथ गवाई देता है कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, <sup>17</sup> और यदि बच्चे हैं, तो वारिस भी—परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ सहवारिस, यदि वास्तव मैं हम उसके साथ दुःख उठाते हैं ताकि हम उसके साथ महिमा भी प्राप्त कर सकें। <sup>18</sup> क्योंकि मैं मानता हूँ कि इस वर्तमान समय के दुःख उस महिमा की तुलना मैं योग्य नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है। <sup>19</sup> क्योंकि उत्सुकता से प्रतीक्षा करने वाली सृष्टि परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रतीक्षा करती है। <sup>20</sup> क्योंकि सृष्टि को व्यर्थता के अधीन किया गया था, स्वेच्छा से नहीं, बल्कि उसके कारण जिसने इसे अधीन किया, आशा मैं <sup>21</sup> कि सृष्टि स्वर्यं भी भ्राताचार के दासत्व से परमेश्वर के बच्चों की महिमा की स्वतंत्रता में मुक्त हो जाएगी। <sup>22</sup> क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक एक साथ कराहती है और प्रसव पीड़ा सही है। <sup>23</sup> और न केवल यह, बल्कि हम स्वर्यं भी, जिनके पास आत्मा के पहले फल हैं, हम भी अपने भीतर कराहते हैं, उत्सुकता से पुत्र और पुत्रियों के रूप में गोद लिए जाने की प्रतीक्षा करते हैं, हमारे शरीर का उद्धार। <sup>24</sup> क्योंकि आशा मैं हम बचाए गए हैं, लेकिन जो आशा देखी जाती है वह आशा नहीं है, क्योंकि जो वह पहले से देखता है उसके लिए कौन आशा करता है? <sup>25</sup> लेकिन यदि हम उस चीज़ की आशा करते हैं जो हम नहीं देखते, तो ऐस्य के साथ हम उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। <sup>26</sup> अब उसी तरह आत्मा भी हमारी कमजोरी मैं हमारी सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन आत्मा स्वर्यं हमारे लिए शब्दों से परे कराहने के साथ मध्यस्थिता करता है, <sup>27</sup> और वह जो दिलों की खोज करता है, जानता है कि आत्मा का मन क्या है, क्योंकि वह संतों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थिता करता है। <sup>28</sup> और हम जानते हैं कि परमेश्वर उन सभी चीजों को मिलकर भलाई के लिए काम करता है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जो उसकी योजना के अनुसार बुलाए गए हैं। <sup>29</sup> क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जाना, उर्वं उसने अपने पुत्र की छवि के अनुरूप होने के लिए भी ठहराया, ताकि वह कई भाइयों और बहनों मैं पहिलौठा हो; <sup>30</sup> और जिन्हें उसने ठहराया, उन्हें उसने

## रोमियों

बुलाया भी; और जिन्हें उसने बुलाया, उहें उसने धर्मी ठहराया भी; और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उहें उसने महिमा भी दी।<sup>31</sup> तो हम इन बातों के बारे में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है, तो कौन हमारे खिलाफ है?<sup>32</sup> वह जिसने अपने पुत्र को नहीं छोड़ा, बल्कि उसे हम सब के लिए सौंप दिया, वह उसके साथ हमें सब चीजें स्वतंत्र रूप से कैसे नहीं देगा?<sup>33</sup> कौन परमेश्वर के चुने हुओं के खिलाफ आरोप लगाएगा? परमेश्वर वह है जो धर्मी ठहराता है;<sup>34</sup> कौन वह है जो दोंडत करता है? मसीह यीशु वही है जो मरा, बल्कि, जी उठा, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है, जो हमारे लिए मध्यस्थता भी करता है।<sup>35</sup> कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उत्पीड़न, या अकाल, या नम्रता, या खतरा, या तलवार?<sup>36</sup> जैसा कि लिखा है:

‘तेरे लिए हम दिन भर मारे जाते हैं हम वध के लिए भड़ों के समान गिने गए।’

<sup>37</sup> लेकिन इन सभी चीजों में हम उससे जो हमसे प्रेम करता है, अत्यधिक विजय प्राप्त करते हैं।<sup>38</sup> क्योंकि मैं निश्चित हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न सर्वादूर, न प्रधानताएँ, न वर्तमान की बातें, न आने वाली बातें, न शक्तियाँ,<sup>39</sup> न ऊँचाई, न गहराई, न कोई अन्य सृजित वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो मसीह यीशु हमारे प्रभु में है, अलग कर सकेगी।

**९** मैं मसीह में सत्य कहता हूँ, मैं झूठ नहीं बोलता; मेरी अंतरात्मा पवित्र आत्मा में मेरे साथ गवाही देती है,<sup>2</sup> कि मेरे हृदय में महान शोक और निरत दुःख है।<sup>3</sup> क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मैं स्वयं शापित होता, मसीह से अलग होता अपने देशवासियों के लिए जो शरीर के अनुसार मेरे कुटुंबी हैं,<sup>4</sup> जो इसाएली हैं, जिनके लिए पुत्र और पुत्रियों के रूप में ग्रहण किया जाना, महिमा, वाचा, व्यवस्था का दिया जाना, मंदिर की सेवा, और प्रतिज्ञाएँ हैं,<sup>5</sup> जिनके पूर्वज हैं, और जिनसे मसीह शरीर के अनुसार उत्पन्न हुआ, जो सबके ऊपर है, सदा के लिए धन्य परमेश्वर। आमीन।<sup>6</sup> परन्तु ऐसा नहीं है कि परमेश्वर का वचन विफल हो गया है। क्योंकि वे सब इसाएल नहीं हैं जो इसाएल से उत्पन्न हुए हैं;<sup>7</sup> और न ही वे सब बच्चे हैं क्योंकि वे इब्राहीम की संतान हैं, परन्तु “इसहाक के द्वारा तुम्हारी संतान कहलाएगी!”<sup>8</sup> अर्थात्, यह शरीर के बच्चे नहीं हैं जो परमेश्वर के बच्चे हैं, परन्तु प्रतिज्ञा के बच्चे वंश माने जाते हैं।<sup>9</sup> क्योंकि यह प्रतिज्ञा का वचन है: “इस समय मैं आऊँगा, और सारा का एक पुत्र होगा।”<sup>10</sup> और न केवल यह, परन्तु रिकबा भी थी, जब उसने एक ही व्यक्ति, हमारे पिता इसहाक के द्वारा जुड़वाँ गर्भ

धारण किया;<sup>11</sup> क्योंकि यद्यपि जुड़वाँ अभी जन्मे नहीं थे और न ही कुछ अच्छा या बुरा किया था, ताकि परमेश्वर की योजना उसके चुनाव के अनुसार स्थिर रहे, न कि कर्मों के कारण बल्कि उसके कारण जो बुलाता है,<sup>12</sup> उसे कहा गया, “बड़ा छोटे की सेवा करेगा।”<sup>13</sup> जैसा कि लिखा है: “याकूब से मैंने प्रेम किया, परन्तु एसाव से मैंने बैर किया।”<sup>14</sup> तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के साथ अन्याय है? कदापि नहीं!<sup>15</sup> क्योंकि वह मूसा से कहता है,

“मैं जिस पर दया करूँगा, उस पर दया करूँगा, और जिस पर अनुग्रह करूँगा, उस पर अनुग्रह करूँगा।”

<sup>16</sup> तो फिर, यह न चाहने वाले पर निर्भर करता है और न दौड़ने वाले पर, बल्कि परमेश्वर पर जो दया करता है।<sup>17</sup> क्योंकि शास्त्र फिरैन से कहता है, “इसी कारण मैंने तुझे उठाया, ताकि मैं तुझ में अपनी शक्ति दिखाऊँ, और मेरा नाम सारी पृथ्वी पर प्रचारित हो।”<sup>18</sup> तो फिर वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है, और जिसे चाहता है, उसे कठोर करता है।<sup>19</sup> तब तुम मुझसे कहोगे, “वह फिर वक्तों दोष लगाता है? क्योंकि कौन उसकी इच्छा का विरोध करता है?”<sup>20</sup> इसके विपरीत, हे मनुष्य, तू कौन है जो परमेश्वर को उत्तर देता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़ने वाले से कहेगी, “तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?”<sup>21</sup> क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं है, कि एक ही लोधड़े से एक पात्र आदरणीय उपयोग के लिए बनाए, और दूसरा सामार्य उपयोग के लिए?<sup>22</sup> यदि परमेश्वर, यद्यपि अपने कोध को दिखाने और अपनी शक्ति को प्रकट करने की इच्छा रखते हुए, विनाश के लिए तैयार ब्रोध के पात्रों को बड़े धैर्य से सहन करता है?<sup>23</sup> और उसने ऐसा इसलिए किया कि दया के पात्रों पर अपनी महिमा की धन्यता प्रकट करे, जिन्हें उसने महिमा के लिए पहले से तैयार किया,<sup>24</sup> अर्थात् हम, जिन्हें उसने बुलाया, न केवल यहूदियों में से, बल्कि अन्यजातियों में से भी;<sup>25</sup> जैसा कि वह होश में भी कहता है:

“मैं उन्हें जो मेरी प्रजा नहीं थीं, मेरी प्रजा कहूँगा, और जिसे प्रिय नहीं थीं, उसे प्रिय कहूँगा।”<sup>26</sup> और ऐसा होगा कि जिस स्थान पर उनसे कहा गया था, ‘तुम मेरी प्रजा नहीं होंगे, वहाँ ते जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।’

<sup>27</sup> यशायाह इसाएल के विषय में पुकारता है,

“यद्यपि इसाएल के पुत्रों की संख्या समुद्र की बालू के समान हो, केवल बचे हुए ही बचाए जाएँगे;<sup>28</sup> क्योंकि

## रोमियों

प्रभु पृथ्वी पर अपना वचन पूरी तरह और शीघ्रता से पूरा करेगा।<sup>29</sup>

<sup>29</sup> और जैसा कि यशायाह ने पहले से कहा था:

"यदि सेनाओं के प्रभु ने हमें वंशज न छोड़ होते, तो हम सदोगम के समान हो जाते और गमोरा के समान हो जाते।"

<sup>30</sup> तो हम क्या कहें? कि अन्यजाति, जिहोंने धार्मिकता का पीछा नहीं किया, उन्होंने धार्मिकता प्राप्त की, परन्तु वह धार्मिकता जो विश्वास से है; <sup>31</sup> फिर भी, इसाएल, जो धार्मिकता की व्यवस्था का पीछा कर रहा था, उस व्यवस्था तक नहीं पहुँचा। <sup>32</sup> क्यों? क्योंकि यह विश्वास से नहीं था, बल्कि जैसे कि यह कर्मों से था। वे ठोकर खाकर गिर पड़े ठोकर के पत्थर पर, <sup>33</sup> जैसा कि लिखा है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक ठोकर का पत्थर और ठेस का चढ़ान रख रहा हूँ, और जो उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित नहीं होगा।"

**10** भाइयों और बहनों, मेरे हृदय की इच्छा और उनके लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना उनके उद्धार के लिए है। <sup>1</sup> क्योंकि मैं उनके बारे में गवाही देता हूँ कि उनके पास परमेश्वर के लिए उत्साह है, परन्तु ज्ञान के अनुसार नहीं। <sup>2</sup> क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं जानते और अपनी खुद की स्थापित करने का प्रयास करते हैं, उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन नहीं किया। <sup>3</sup> क्योंकि मसीह हर एक विश्वास करने वाले के लिए धर्म के लिए व्यवस्था का अंत है। <sup>4</sup> क्योंकि मूसा उस धर्म के बारे में लिखता है जो व्यवस्था पर आधारित है, कि जो व्यक्ति उन्हें पूरा करता है वह उनके द्वारा जीवन प्राप्त करेगा। <sup>5</sup> परन्तु विश्वास पर आधारित धर्म इस प्रकार कहता है: "अपने हृदय में यह न कहो, 'कौन सर्वा में जाएगा?' (अर्थात मसीह को नीचे लाने के लिए), <sup>6</sup> या 'कौन गहरे में उतरेगा?' (अर्थात मसीह को मृतकों में से ऊपर लाने के लिए)।" <sup>7</sup> परन्तु यह क्या कहता है? "वचन तुम्हारे निकट है, तुम्हारे मुँह में और तुम्हारे हृदय में— यह वही विश्वास का वचन है जिसे हम प्रचार कर रहे हैं, <sup>8</sup> कि यदि तुम अपने मुँह से यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार करो, और अपने हृदय में विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया, तो तुम उद्धार पाओगे; <sup>9</sup> क्योंकि हृदय से व्यक्ति विश्वास करता है, जिससे धर्म की प्राप्ति होती है, और मुँह से अंगीकार करता है, जिससे उद्धार की प्राप्ति होती है। <sup>10</sup> क्योंकि

पवित्र शास्त्र कहता है, "जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित नहीं होगा।" <sup>12</sup> क्योंकि यहूदी और यूनानी के बीच कोई भेद नहीं है, क्योंकि वही प्रभु सबका प्रभु है, जो सब पर धनी है जो उसे पुकारते हैं; <sup>13</sup> क्योंकि "जो कोई प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।" <sup>14</sup> फिर वे उसे कैसे पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसे उन्होंने सुना नहीं? और वे बिना प्रचारक के कैसे सुनेंगे? <sup>15</sup> परन्तु वे कैसे प्रचार करेंगे जब तक कि उन्हें भेजा न जाए? जैसा कि लिखा है: "वे कितने सुन्दर हैं जो अच्छी बातें सुनाते हैं।" <sup>16</sup> फिर भी, उन्होंने सभी ने सुसमाचार का पालन नहीं किया; क्योंकि यशायाह कहता है, "प्रभु हमारे समाचार पर किसने विश्वास किया?" <sup>17</sup> इसलिए विश्वास सुनने से आता है, और सुनना मसीह के वचन से। <sup>18</sup> परन्तु मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने कभी नहीं सुना, क्या उन्होंने? इसके विपरीत:

"उनकी अवाज सारी पृथ्वी पर फैल गई है, और उनके शब्द संसार के छार तक।"

<sup>19</sup> परन्तु मैं कहता हूँ, क्या इसाएल ने नहीं जाना, क्या उन्होंने? पहले मूसा कहता है:

"मैं तुम्हें एक ऐसी जाति से ईर्ष्या कराऊँगा जो जाति नहीं है, एक मूर्ख जाति से मैं तुम्हें क्रोधित करूँगा।"

<sup>20</sup> और यशायाह बहुत साहसी होकर कहता है,

"मैं उन लोगों द्वारा पाया गया जो मुझे नहीं छूँड़ रहे थे मैंने अपने आप को उन पर प्रकट किया जो मुझसे नहीं पूछ रहे थे।"

<sup>21</sup> परन्तु इसाएल के बारे में वह कहता है,

"मैंने अपने हाथों को पूरे दिन फैलाया है एक अवज्ञाकारी और हठीले लोगों के लिए।"

**11** तो मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया है? कदापि नहीं! क्योंकि मैं भी एक इसाएली हूँ, अब्राहम का वंशज, बिन्यामीन के गोत्र का। <sup>2</sup> परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को त्याग नहीं दिया जिसे उसने पहले से जान लिया था। क्या तुम नहीं जानते कि शास्त्र एतियाह के बारे में क्या कहता है, कि वह इसाएल के विरुद्ध परमेश्वर से प्रार्थना करता है? <sup>3</sup> "हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला, उन्होंने तेरी वैदियों

## रोमियों

को गिरा दिया, और मैं अकेला बचा हूँ, और वे मेरे प्राण  
लेने की खोज में हैं।<sup>4</sup> परन्तु परमेश्वर का उत्तर उसे क्या  
मिला? "मैंने अपने लिए सात हजार पुरुषों को बचा रखा  
है जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके।"<sup>5</sup> उसी प्रकार  
इस समय भी परमेश्वर की कृपा से चुने हुए कुछ लोग  
बचे हैं।<sup>6</sup> और यदि यह कृपा से है, तो फिर यह कर्मों के  
आधार पर नहीं है, अन्यथा कृपा फिर कृपा नहीं रहती।<sup>7</sup>  
तो फिर क्या? इसाएल जो खोज रहा था, वह उसे नहीं  
मिला, परन्तु चुने हुए लोगों को मिल गया, और बाकी के  
लोग कठोर हो गए;<sup>8</sup> जैसा लिखा है:

"परमेश्वर ने उहाँ सुस्ती की आत्मा दी, अँखें जो नहीं  
देखतीं और कान जो नहीं सुनते, आज तक।"

९ और दाऊद कहता है,

"उनकी मेज उनके लिए जाल और फंदा बन जाए  
और ठोकर का कारण और प्रतिफल बन जाए।<sup>10</sup>  
उनकी अँखें अंधेरी हो जाएं ताकि वे न देखें, और  
उनकी पीठ सदैव झुकी रहें।"

११ तो मैं कहता हूँ, क्या वे इस प्रकार ठोकर खाकर गिर  
गए हैं? कदापि नहीं! परन्तु उनके अपराध के कारण  
अन्यजातियों के लिए उद्धार आया है, ताकि उन्हें ईर्ष्या  
हो।<sup>12</sup> अब यदि उनका अपाध संसार के लिए धन है,  
और उनकी असफलता अन्यजातियों के लिए धन है, तो  
उनकी पूर्णता कितनी अधिक होगी।<sup>13</sup> परन्तु मैं तुमसे,  
जो अन्यजाति हो, कह रहा हूँ। इसलिए कि मैं  
अन्यजातियों का प्रेरित हूँ, मैं अपनी सेवकाई को महिमा  
देता हूँ,<sup>14</sup> यदि किसी प्रकार मैं अपनी जाति के लोगों को  
ईर्ष्या में डाल सकूँ और उनमें से कुछ को बचा सकूँ।<sup>15</sup>  
क्योंकि यदि उनका त्याग संसार के लिए ऐसा-मिलाया है,  
तो उनका ग्रहण किया जाना मेरे हाथों में से जीवन के  
समान क्या होगा?<sup>16</sup> यदि पहले फल पवित्र है, तो सारा  
आटा भी; और यदि जड़ पवित्र है, तो डालियाँ भी।<sup>17</sup>  
परन्तु यदि कुछ डालियाँ तोड़ी गईं, और तुम जो जगती  
जैतून हो, उनमें कलम किए गए और जैतून के पेड़ की  
समृद्ध जड़ के सहभागी बन गए,<sup>18</sup> तो डालियों के प्रति  
घंटं मत करो; परन्तु यदि तुम घंटं करते हो, तो याद  
रखो कि तुम जड़ को नहीं सहारा देते, परन्तु जड़ तुम्हें  
सहारा देती है।<sup>19</sup> तब तुम कहोगे, "डालियाँ तोड़ी गईं  
ताकि कलम किया जाऊ।"<sup>20</sup> सही है, वे अविश्वास के  
कारण तोड़ी गईं, परन्तु तुम विश्वास के द्वारा खड़े हो।  
घंटं मत करो, परन्तु भय करो;<sup>21</sup> क्योंकि यदि परमेश्वर  
ने प्राकृतिक डालियों को नहीं छोड़ा, तो वह तुम्हें भी नहीं  
छोड़ेगा।<sup>22</sup> इसलिए परमेश्वर की कृपा और कठोरता को

देखो: जो गिरे, उनके प्रति कठोरता; परन्तु तुम्हारे प्रति  
परमेश्वर की कृपा, यदि तुम उसकी कृपा में बने रहो;  
अन्यथा तुम भी काट दिए जाओगे।<sup>23</sup> और वे भी, यदि वे  
अपने अविश्वास में नहीं बने रहते, तो कलम किए जाएंगे,  
क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर से कलम करने में सक्षम है।  
<sup>24</sup> क्योंकि यदि तुम प्राकृतिक रूप से जंगली जैतून के  
पेड़ से काटे गए और प्रकृति के विपरीत एक अच्छे  
जैतून के पेड़ में कलम किए गए, तो ये, जो प्राकृतिक  
डालियाँ हैं, अपने ही जैतून के पेड़ में कितने अधिक  
कलम किए जाएंगे।<sup>25</sup> क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम,  
भाइयों और बहनों, इस रहस्य से अनजान रहो—ताकि  
तुम अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न बनो—कि इसाएल पर  
अंशिक कठोरता आई है जब तक कि अन्यजातियों की  
पूर्णता न आ जाए;<sup>26</sup> और इस प्रकार सारा इसाएल  
उद्धर पाएगा; जैसा लिखा है:

"उद्धरकर्ता सियोन से आएगा, वह याकूब से अधर्म  
को दूर करगा।"<sup>27</sup> यह मेरी उनसे वाचा है, जब मैं  
उनके पापों को दूर कर द्यूगा।"

<sup>28</sup> सुसमाचार के संबंध में वे तुम्हारे कारण शत्रु हैं, परन्तु  
परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा के संबंध में वे पितरों के  
कारण प्रिय हैं;<sup>29</sup> क्योंकि परमेश्वर के वरदान और  
बुलाहट अपरिवर्तनीय हैं।<sup>30</sup> क्योंकि जैसे तुम एक समय  
परमेश्वर की अवज्ञा करते थे, परन्तु अब उनकी अवज्ञा  
के कारण तुम पर दया की गई है,<sup>31</sup> वैसे ही ये भी अब  
अवज्ञाकारी हो गए हैं, ताकि तुम्हें दिखाई गई दया के  
कारण अब उन पर भी दया की जाए।<sup>32</sup> क्योंकि  
परमेश्वर ने सबको अवज्ञा में बंद कर दिया है, ताकि वह  
सब पर दया कर सके।

<sup>33</sup> ओह, परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान की गहराई!  
उसके निर्णय कितने अग्रणी हैं और उसके मार्ग कितने  
अव्याप्तियाँ हैं;<sup>34</sup> क्योंकि किसने प्रभु की बुद्धि को  
जाना है, या कौन उसका सलाहकार बना है?<sup>35</sup> या  
किसने पहले उसे कुछ दिया है, कि उसे उसे लौटाया  
जाए;<sup>36</sup> क्योंकि उसी से, और उसी के द्वारा, और उसी  
के लिए सब कुछ है। उसी की महिमा सदा के लिए  
हो। आमीन।

**12** इसलिए, हे भाइयों और बहनों, मैं तुम्हें परमेश्वर  
की दया के द्वारा विनती करता हूँ कि तुम अपने शरीरों  
को जीवित और पवित्र बलिदान के रूप में प्रस्तुत करो,  
जो परमेश्वर को स्वीकार्य हो, जो तुम्हारी आस्तिक  
उपासना की सेवा है।<sup>2</sup> और इस संसार के अनुसार न  
ढलें, परन्तु अपने मन के नवीकरण के द्वारा रूपांतरित

## रोमियों

हो जाओ, ताकि तुम यह प्रमाणित कर सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है, जो उत्तम, स्वीकार्य और सिद्ध है।<sup>3</sup> क्योंकि मुझ पर दी गई अनुग्रह के द्वारा मैं तुम में से हर एक से कहता हूँ कि वह अपने विषय में जितना सोचना चाहिए उससे अधिक ऊँचा न सोचे, परन्तु संयमित विचार करे, जैसा कि परमेश्वर ने प्रयेक को विश्वास की एक माप दी है।<sup>4</sup> क्योंकि जैसे हमारे एक शरीर में बहुत से अंग हैं और सभी अंगों का एक ही कार्य नहीं होता,<sup>5</sup> वैसे ही हम, जो बहुत हैं, मसीह में एक शरीर हैं, और व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे के अंग हैं।<sup>6</sup> फिर भी, चूँकि हमारे पास दिए गए अनुग्रह के अनुसार यिन्न-भिन्न वरदान हैं, हमें उनका सही उपयोग करना चाहिए; यदि भविष्यवाणी, तो विश्वास के अनुपात में;<sup>7</sup> यदि सेवा, तो सेवा के कार्य में; या जो सिखाता है, वह शिक्षा के कार्य में;<sup>8</sup> या जो उपदेश देता है, वह उपदेश के कार्य में; जो देता है, उदारता के साथ; जो नेतृत्व करता है, परिश्रम के साथ; जो दया दिखाता है, प्रसन्नता के साथ।<sup>9</sup> प्रेम कपट रहित है। जो बुरा है उससे घृणा करो; जो अच्छा है उससे चिपके रहो।<sup>10</sup> भाईचारे के प्रेम में एक-दूसरे के प्रति समर्पित रहो; एक-दूसरे को सम्मान में प्राथमिकता दो;<sup>11</sup> परिश्रम में पीछे न रहो, आत्मा में उत्साही रहो, प्रभु की सेवा करो;<sup>12</sup> आशा में आनंदित रहो, क्लेश में धैर्यवान रहो, प्रार्थना में निष्ठावान रहो,<sup>13</sup> पवित्र जनों की आवश्यकताओं में योगदान दो, आतिथ्य का अभ्यास करो।<sup>14</sup> जो तुम्हें सताते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो; आशीर्वाद दो और शाप मत दो।<sup>15</sup> जो आनंदित होते हैं उनके साथ आनंदित हो, और जो रोते हैं उन्नें साथ रोओ।<sup>16</sup> एक-दूसरे के प्रति समान मनोभाव रखो; मन में ऊँचे न बनो, परन्तु नीचों के साथ संगति करो। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न बनो।<sup>17</sup> कभी भी किसी के प्रति बुराई का बदला बुराई से न दो। सभी लोगों के दृष्टिकोण में जो सही है उसका सम्मान करो।<sup>18</sup> यदि संभव हो, तो जितना तुम पर निर्भर है, सभी लोगों के साथ शांति में रहो।<sup>19</sup> प्रियजनों, कभी भी अपनी प्रतिशोध न लो, परन्तु परमेश्वर के क्रोध के लिए स्थान छोड़ो, क्योंकि लिखा है: "प्रतिशोध मेरा है, मैं चुकाऊँगा," प्रभु कहता है।

<sup>20</sup> "परन्तु यदि तुम्हारा शब्द भूखा हो, तो उसे खिलाओ; यदि वह प्यासा हो, तो उसे पानी पिलाओ; क्योंकि ऐसा करने से तुम उसके सिर पर जलते अंगरों का ढेर लगा ऊँगे।"

<sup>21</sup> बुराई से पराजित न हो, परन्तु भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त करो।

**13** हर व्यक्ति को शासकीय अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। क्योंकि कोई भी अधिकार परमेश्वर से अलग नहीं होता, और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर द्वारा स्थापित किए गए हैं।<sup>2</sup> इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करता है; और जो विरोध करते हैं, वे अपने ऊपर दंड लाएंगे।<sup>3</sup> क्योंकि शासक अच्छे व्यवहार के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए डर का कारण होते हैं। या तुम चाहते हो कि अधिकार से डर न लगे? अच्छा करो और तुम्हें उनसे प्रशंसा मिलेगी।<sup>4</sup> क्योंकि यह तुम्हारे लिए भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। लेकिन यदि तुम बुराई करते हो, तो डरना चाहिए; क्योंकि यह तलवार व्यर्थ नहीं धारण करता। यह परमेश्वर का सेवक है, जो बुराई करने वाले पर क्रोध लाता है।<sup>5</sup> इसलिए अधीन रहना आशयक है, न केवल क्रोध के कारण, बल्कि विवेक के कारण भी।<sup>6</sup> इसी कारण से तुम कर भी देते हो, क्योंकि शासक परमेश्वर के सेवक हैं, जो इसी कार्य में लगे रहते हैं।<sup>7</sup> जिसका जो कुछ देना है, उसे दो; जिसे कर देना है, उसे कर दो, जिसे रीत देना है, उसे रीत दो, जिसे आदर देना है, उसे आदर दो, जिसे सम्मान देना है, उसे सम्मान दो।<sup>8</sup> किसी के प्रति कुछ भी बकाया न रखो, सिवाय एक-दूसरे से प्रेम करने के; क्योंकि जो अपने पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है।<sup>9</sup> क्योंकि यह, "तू व्यभिचार न करना, तू हत्या न करना, तू चोरी न करना, तू लालच न करना," और यदि कोई और आज्ञा है, तो यह इस कथन में संक्षेपित है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।"<sup>10</sup> प्रेम पड़ोसी के प्रति कोई बुराई नहीं करता; इसलिए प्रेम व्यवस्था की पूर्ति है।<sup>11</sup> यह करो, समय को जानते हुए, कि यह पहले से ही तुम्हारे लिए नींद से जागने का समय है; क्योंकि अब उद्धार हमारे लिए पहले की अपेक्षा निकट है जब हमने विश्वास किया था।<sup>12</sup> रात लालग बीत चुकी है, और दिन निकट है। इसलिए हमें अंधकार के कार्यों को छोड़ देना चाहिए और प्रकाश के कवच को धारण करना चाहिए।<sup>13</sup> हमें दिन के समान उचित व्यवहार करना चाहिए, न कि दावतों और मद्यापन में, न ही यौन अनेकता और दुराचार में, न ही झगड़े और ईर्ष्या में।<sup>14</sup> परन्तु प्रभु यीशु मसीह को धारण करो, और शरीर की वासनाओं के लिए कोई प्रावधान न करो।

**14** जो विश्वास में कमज़ोर है, उसे स्वीकार करो, परंतु विचारों पर विवाद करने के लिए नहीं।<sup>2</sup> एक व्यक्ति को विश्वास है कि वह सब कुछ खा सकता है, लेकिन जो कमज़ोर है वह केवल सब्जियाँ खाता है।<sup>3</sup> जो खाता है वह उसे तुच्छ न समझे जो नहीं खाता, और जो नहीं खाता वह उसे न्याय न करे जो खाता है, क्योंकि

## रोमियों

परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया है।<sup>4</sup> तुम कौन होते हो दूसरे के सेवक का न्याय करने वाले? वह अपने स्वामी के सामने खड़ा होता है या गिरता है; और वह खड़ा रहेगा, क्योंकि प्रभु उसे खड़ा करने में सक्षम है।<sup>5</sup> एक व्यक्ति एक दिन को दूसरे से अधिक महत्व देता है, दूसरा हर दिन को समान मानता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन में पूरी तरह से आश्रित होना चाहिए।<sup>6</sup> जो दिन को मानता है, वह प्रभु के लिए मानता है, और जो खाता है, वह प्रभु के लिए खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है; और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिए नहीं खाता, और वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है।<sup>7</sup> हम में से कोई भी अपने लिए नहीं जीता, और न ही कोई अपने लिए मरता है,<sup>8</sup> क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं। या यदि हम मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं।<sup>9</sup> इसलिए चाहे हम जीवित हों या मरें, हम प्रभु के हैं।<sup>10</sup> क्योंकि इसी उद्देश्य के लिए मसीह मरे और जीवित हुए, कि वह मृतकों और जीवितों दोनों के प्रभु हो सकें।<sup>11</sup> परंतु तुम क्यों अपने भाई या बहन का न्याय करते हो? या तुम भी, क्यों अपने भाई या बहन को तुच्छ समर्थते हो? क्योंकि हम सब परमेश्वर के न्यायासन के सामने उपस्थित होंगे।<sup>12</sup> क्योंकि लिखा है:

“जैसे मैं जीवित हूँ, प्रभु कहता है, मेरे सामने हर घुटना झुकेगा, और हर जीभ परमेश्वर की स्तुति करेगा।”

<sup>12</sup> इसलिए हम में से प्रत्येक परमेश्वर को अपने आप का लेखा देना।<sup>13</sup> इसलिए अब हम एक-दूसरे का न्याय न करें, बल्कि यह ठान लें: अपने भाई के मार्ग में कोई बाधा या ठोकर न रखें।<sup>14</sup> मैं प्रभु यीशु में जनना और आशुद्ध हूँ कि कुछ भी अपने आप में अशुद्ध नहीं है; परंतु जो कोई कुछ अशुद्ध मानता है, उसके लिए वह अशुद्ध है।<sup>15</sup> क्योंकि यदि भोजन के कारण तुम्हारा भाई या बहन दुखी होता है, तो तुम अब प्रेम के अनुसार नहीं चल रहे हो। अपने भोजन के कारण उसे नष्ट न करो जिसके लिए मसीह मरे।<sup>16</sup> इसलिए जो तुम्हारे लिए अच्छा है उसे बुराई के रूप में कर कहा जाए;<sup>17</sup> क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं है, बल्कि पावित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद है।<sup>18</sup> क्योंकि जो इस प्रकार मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को स्वीकार्य है और अन्य लोगों द्वारा अनुमोदित है।<sup>19</sup> इसलिए, हम उन चीजों का पैछाकरे जो शांति और एक-दूसरे के निर्माण के लिए होती हैं।<sup>20</sup> भोजन के कारण परमेश्वर के कार्य को नष्ट न करें। वास्तव में सभी चीजें शुद्ध हैं, लेकिन वे उस व्यक्ति के लिए बुरी हैं जो खाता है और अपराध करता है।<sup>21</sup> मांस न खाना या शराब न पीना, या कुछ भी न करना जिससे तुम्हारा भाई

या बहन ठोकर खाए, अच्छा है।<sup>22</sup> जो विश्वास तुम्हारे पास है, वह परमेश्वर के सामने तुम्हारा अपना विश्वास हो। धन्य है वह जो अपने आप को उस चीज़ में दोषी नहीं ठहराता जिसे वह स्वीकार करता है।<sup>23</sup> परंतु जो संदेह करता है वह दोषी ठहराया जाता है यदि वह खाता है, क्योंकि उसका खाना विश्वास से नहीं है; और जो कुछ विश्वास से नहीं है वह पाप है।

**15** अब हम जो बलवान हैं, उन्हें निर्बलों की दुर्बलताओं को सहन करना चाहिए, और केवल अपनी ही प्रसन्नता नहीं करनी चाहिए।<sup>2</sup> हम में से प्रत्येक को अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए प्रसन्न करना चाहिए, ताकि वह उत्तरित करे।<sup>3</sup> क्योंकि मसीह ने भी अपनी प्रसन्नता नहीं की, परन्तु जैसा लिखा है: “जो लोग तुझे अपमानित करते हैं, उनके अपमान मुझ पर पड़े हैं।”<sup>4</sup> क्योंकि जो कुछ पहले के समय में लिखा गया था, वह हमारी शिक्षा के लिए लिखा गया था, ताकि धैर्य और शास्त्रों के प्रोत्साहन के द्वारा हमें आशा प्राप्त हो।<sup>5</sup> अब धैर्य और प्रोत्साहन का परमेश्वर तुम्हें मसीह धीशु के अनुसार एक-दूसरे के साथ एक ही मन का होने का वरदान दे,<sup>6</sup> ताकि तुम एक मन और एक स्वर से हमारे प्रभु धीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की महिमा करो।<sup>7</sup> इसलिए एक-दूसरे को स्वीकार करो, जैसे मसीह ने भी हमें परमेश्वर की महिमा के लिए स्वीकार किया।<sup>8</sup> क्योंकि मैं कहता हूँ कि मसीह परमेश्वर की सच्चाई के लिए खतना वातों का सेवक बना, ताकि पितरों को दिए गए प्रतिज्ञाओं की पुष्टि हो,<sup>9</sup> और अन्यजातियों को उसकी दया के लिए परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए; जैसा लिखा है:

“इसलिए मैं अन्यजातियों में तेरा गुणगान करूँगा, और तेरे नाम की स्तुति करूँगा।”

<sup>10</sup> फिर यह कहता है,

“हे अन्यजातियों, उसकी प्रजा के साथ अनन्दित हो।”

<sup>11</sup> और फिर,

“हे सभी अन्यजातियों, प्रभु की स्तुति करो, और सभी लोग उसकी स्तुति करें।”

<sup>12</sup> फिर यशायाह कहता है,

## रोमियों

“यिशै की जड़ आएगी, और वह जो अन्यजातियों पर शासन करने के लिए उठेगा, उसी में अन्यजातियों को आशा होगी।”

<sup>13</sup> अब आशा का परमेश्वर तुम्हें विश्वास में सभी आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे, ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा में भरभूत हो सको। <sup>14</sup> और तुम्हारे विषय में, मेरे भाइयों और बहनों, मैं स्वयं भी आश्वस्त हूँ कि तुम स्वयं भलाई से परिपूर्ण हो, सभी ज्ञान से परिपूर्ण हो, और एक दूसरे को चेतावनी देने में सक्षम हो। <sup>15</sup> परन्तु मैंने कुछ बिंदुओं पर तुम्हें फिर से स्परण दिलाने के लिए बहुत साहसपूर्वक लिखा है, क्योंकि मुझे परमेश्वर से जो अनुग्रह मिला है, <sup>16</sup> अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का सेवक बनने के लिए, परमेश्वर के सुसमाचार का याजक रूप में सेवा करने के लिए, ताकि अन्यजातियों की मेरी भेंट पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र की ही स्वीकार्य हो। <sup>17</sup> इसलिए मुझे मसीह यीशु में परमेश्वर के विषय में गर्व करने का कारण है। <sup>18</sup> क्योंकि मैं कुछ भी बोलने का साहस नहीं करूँगा सिवाय इसके कि मसीह ने मेरे द्वारा क्या किया है, जिससे अन्यजातियों की आज्ञाकारिता शब्द और कर्म द्वारा हुई, <sup>19</sup> विन्होंने और चमत्कारों की शक्ति में, आत्मा की शक्ति में, ताकि यरूशलैम से लेकर इलिरिकुम तक मैंने मसीह के सुसमाचार का पूरा प्रचार किया। <sup>20</sup> और इस प्रकार मैंने सुसमाचार का प्रचार करने की आकांक्षा की, न कि जहाँ मसीह का नाम पहले से लिया गया था, ताकि मैं किसी अन्य व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ; <sup>21</sup> परन्तु जैसा लिखा है:

“जो उसके बारे में नहीं बताया गया है वे देखेंगे, और जिन्होंने नहीं सुना है वे समझेंगे।”

<sup>22</sup> इसी कारण से मैं अक्सर तुम्हारे पास आने से रोका गया हूँ, <sup>23</sup> परन्तु अब, जब इन क्षेत्रों में मेरे लिए कोई और स्थान नहीं है, और चूंकि मैं कई वर्षों से तुम्हारे पास आने की लालसा रखता हूँ <sup>24</sup> जब भी मैं स्पेन जाऊँगा— क्योंकि मैं तुमसे मिलते हुए तुम्हें देखने की आशा करता हूँ, और जब मैंने थोड़ी दर के लिए तुम्हारी संगति का अनंद लिया होगा, तब तुम्हारे द्वारा वहाँ जाने में सहायता प्राप्त करूँगा— <sup>25</sup> परन्तु अब, मैं यरूशलैम जा रहा हूँ, संतों की सेवा करने के लिए। <sup>26</sup> क्योंकि मकिदुनिया और अखेया यरूशलैम में संतों में से गरीबों के लिए योगदान देने में प्रसन्न थे। <sup>27</sup> हाँ, वे ऐसा करने में प्रसन्न थे, और वे उनके ऋणी हैं। क्योंकि यदि अन्यजातियों ने उनकी आमिक वस्तुओं में भाग लिया है, तो वे भौतिक वस्तुओं में भी उनकी सेवा करने के ऋणी हैं। <sup>28</sup> इसलिए, जब मैं इसे पूरा कर लूँगा और उनके इस फल पर अपनी मुहर

लगा ढूँगा, तब मैं तुम्हारे द्वारा स्पेन जाऊँगा। <sup>29</sup> मुझे पता है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो मसीह के आशीर्वाद की पूर्णता में आऊँगा। <sup>30</sup> अब मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा और आत्मा के प्रेम के द्वारा, कि तुम मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना में मेरे साथ संघर्ष करो, <sup>31</sup> कि मैं यहूदिया में अवज्ञाकारी लोगों से बचाया जाऊँ, और यरूशलैम के लिए मेरी सेवा संतों के लिए स्वीकार्य हो; <sup>32</sup> ताकि मैं परमेश्वर की इच्छा से आनन्द के साथ तुम्हारे पास आ सकूँ और तुम्हारी संगति में विश्राम कर सकूँ। <sup>33</sup> अब शांति का परमेश्वर तुम सबके साथ हो। आमीन।

**16** मैं तुम्हें हमारी बहन फोएबे के बारे में सिफारिश करता हूँ, जो केंखिया की कलीसिया की सेविका है, <sup>2</sup> कि तुम उसे प्रभु में संतों के योग्य रीति से स्वीकार करो, और जो कुछ भी उसे तुम्हारी आवश्यकता हो, उसमें उसकी सहायता करो; क्योंकि उसने भी बहुतों की, और मेरी भी सहायता की है। <sup>3</sup> प्रिस्का और अकिला को नमस्कार कहो, जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, <sup>4</sup> जिन्होंने मेरे जीवन के लिए अपनी गर्दन जोखिम में ढाली, जिनके लिए मैं ही नहीं, बल्कि अन्यजातियों की सभी कलीसियाँ भी धन्यवाद देती हैं, <sup>5</sup> उनके घर में जो कलीसिया है, उसे भी नमस्कार कहो। एपेनेटुस को नमस्कार कहो, जो मेरा प्रिय है, और एशिया में मसीह का पहला फल है। <sup>6</sup> मरियम को नमस्कार कहो, जिसने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम किया है। <sup>7</sup> अंद्रोनिकस और युनिया को नमस्कार कहो, जो मेरे कुटुंबी और मेरे सहबंदी हैं, जो प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं, और मुझसे पहले मसीह में थे। <sup>8</sup> अम्लियातुस को नमस्कार कहो, जो प्रभु में मेरा प्रिय है। <sup>9</sup> अर्बनुस को नमस्कार कहो, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और स्ताखिस को, जो मेरा प्रिय है। <sup>10</sup> अपेलेस को नमस्कार कहो, जो मसीह में स्त्रीकृत है। अरिस्तोबुलुस के घराने के लोगों को नमस्कार कहो। <sup>11</sup> हेरोदियन को नमस्कार कहो, जो मेरा कुटुंबी है। नर्किस के घराने के उन लोगों को नमस्कार कहो जो प्रभु में हैं। <sup>12</sup> त्रिफेना और त्रिफोसा को नमस्कार कहो, जो प्रभु में परिश्रम करती हैं। परिस को नमस्कार कहो, जो प्रिय है और जिसने प्रभु में बहुत परिश्रम किया है। <sup>13</sup> रुफुस को नमस्कार कहो, जो प्रभु में चुना हुआ है, और उसकी माता को भी, जो मेरी भी माता है। <sup>14</sup> असिनकितुस, फलेगोन, हर्मेस, पट्रोबस, हर्मास, और उनके साथ के भाइयों और बहनों को नमस्कार कहो। <sup>15</sup> फिलोलोगुस और जूलिया, नेरेउस और उसकी बहन, और ओलिपास, और उनके साथ के सभी संतों को नमस्कार कहो। <sup>16</sup> एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। मसीह की सभी कलीसियाँ

## रोमियों

तुम्हें नमस्कार कहती हैं।<sup>17</sup> अब मैं तुमसे आग्रह करता हूँ भाइयों और बहनों, उन लोगों पर ध्यान दो जो उस शिक्षा के विपरीत विभाजन और बाधाएँ उत्पन्न करते हैं जिसे तुमने सीखा है, और उनसे दूर रहो।<sup>18</sup> क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह के नहीं, बल्कि अपने ही पेट के दास होते हैं, और अपनी चिकनी और चापलूसी भरी बातों से वे निर्दोषों के हृदयों को थोखा देते हैं।<sup>19</sup> क्योंकि तुम्हारी आज्ञाकारिता की चर्चा सब जगह पहुँच गई है; इसलिए मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ, परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छे में बुद्धिमान और बुरे में निर्दोष बनो।<sup>20</sup> शांति का परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों के नीचे कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु की अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।<sup>21</sup> तिमुथियुस, मेरा सहकर्मी, तुम्हें नमस्कार कहता है, और लूकियुस, यासोन, और सोसिपातर, मेरे कुटुंबी भी।<sup>22</sup> मैं तरियुस, जिसने यह पत्र लिखा है, प्रभु में तुम्हें नमस्कार कहता हूँ।<sup>23</sup> गयुस, जो मेरे और सारी कलीसिया के मेजबान है, तुम्हें नमस्कार कहता है। एरास्तुस, नगर का कोषाध्यक्ष, तुम्हें नमस्कार कहता है, और कार्तुस, भाई भी।<sup>24</sup> [यह पद कुछ पांडुलिपियों में नहीं है।]<sup>25</sup> अब जो तुम्हें मेरे सुसमाचार और यीशु मसीह के प्रचार के अनुसार स्विर कर सकता है, उस रहस्य के प्रकाशन के अनुसार, जो अनंत काल से गुप्त रखा गया था,<sup>26</sup> पर अब प्रकट किया गया है, और भविष्यद्वक्ताओं के शास्त्रों के द्वारा, अनंत परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, सभी जातियों को विश्वास की आज्ञाकारिता के लिए प्रकट किया गया है;<sup>27</sup> केवल बुद्धिमान परमेश्वर को, यीशु मसीह के द्वारा, अनंतकाल तक महिमा हो। आमीन।

## 1 कुरिन्यियों

१ पौत्रस, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित बुलाया गया, और हमारे भाई सोसपीस, २ परमेश्वर की कलीसिया को जो कुरिन्य में है, उन लोगों को जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं, संत कहलाए गए हैं, उन सब के साथ जो हर स्थान में हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते हैं, जो उनका और हमारा प्रभु है: ३ हमारे परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह से तुहें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो। ४ मैं अपने परमेश्वर का सदा तुम्हारे विषय में धन्यवाद करता हूँ, उस अनुग्रह के लिए जो तुम्हें मसीह यीशु में दिया गया, ५ कि हर बात में तुम उसमें समृद्ध हुए, हर वाणी और हर जान में, ६ जैसे मसीह के विषय में गवाही तुहारे बीच में स्थिर हुई, ७ ताकि तुम किसी भी वरदान में कमी न रहो, जब तक हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशन हो। ८ जो तुहें अंत तक स्थिर रखेगा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन निर्दोष। ९ परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसके द्वारा तुम उसके पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के संग संगति में बुलाए गए। १० अब मैं तुहें, भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से अग्रह करता हूँ कि तुम सब एकमत रहो और तुम्हारे बीच कोई विभाजन न हो, बल्कि तुम एक ही मन और एक ही विचार में पूर्ण बनो। ११ क्योंकि मुझे तुम्हारे विषय में, मेरे भाइयों और बहनों, क्तोए के लोगों द्वारा सूचित किया गया है कि तुहारे बीच झगड़े हैं। १२ अब मेरा मतलब यह है कि तुम मैं से हर एक कहता है, “मैं पौत्रस का हूँ” और “मैं अपोलोस का हूँ”, और “मैं कैफास का हूँ” और “मैं मसीह का हूँ”। १३ क्या मसीह विभाजित हो गया है? क्या पौत्रस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था? या तुम पौत्रस के नाम में बपतिस्मा लिए गए थे? १४ मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने तुम मैं से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया, सिवाय किस्सप्स और गयुस के, १५ ताकि कोई यह न कहे कि तुम मेरे नाम में बपतिस्मा लिए गए थे। १६ लेकिन मैंने स्टेफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इसके अलावा, मुझे नहीं पता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया। १७ क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा, न कि वाणी की चुराई में, ताकि मसीह का क्रूस व्यथ न हो। १८ क्योंकि क्रूस का वचन नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परंतु हम जो उद्धार पा रहे हैं उनके लिए परमेश्वर की शक्ति है। १९ क्योंकि यह लिखा है:

“मैं बुद्धिमानों की बुद्धि को नष्ट कर दूंगा, और समझदारों की समझ को उलझा दूंगा।”

२० बुद्धिमान कहाँ है? शास्त्री कहाँ है? इस युग का वाद-विवाद करने वाला कहाँ है? क्या परमेश्वर ने संसार की

बुद्धि को मूर्खता नहीं बना दिया? २१ क्योंकि जब परमेश्वर की बुद्धि में संसार अपनी बुद्धि के द्वारा परमेश्वर को नहीं जान सका, तो परमेश्वर ने प्रचार के मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को बचाने में प्रसन्नता पाई। २२ क्योंकि यहूदी विह मांगते हैं, और यूनानी ज्ञान खोजते हैं; २३ परंतु हम मसीह को क्रूस पर चढ़ाया हुआ प्रचार करते हैं, यहूदियों के लिए ठांकर और अन्यजातियों के लिए मूर्खता, २४ परंतु बुलाए हुए लोगों के लिए, चाहे यहूदी हों या यूनानी, मसीह परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि है। २५ क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान है, और परमेश्वर की दुर्बलता मनुष्यों से अधिक बलवान है। २६ क्योंकि अपने बुलाए जाने को देखो, भाइयों और बहनों, कि शरीर के अनुसार बहुत से बुद्धिमान नहीं, बहुत से शक्तिशाली नहीं, बहुत से कुलीन नहीं थे; २७ परंतु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुना ताकि बुद्धिमानों को लजित करे, और परमेश्वर ने संसार के दुर्बलों को चुना ताकि शक्तिशालियों को लजित करे, २८ और संसार के तुच्छ और तिरकृत को परमेश्वर ने चुना, जो नहीं हैं, ताकि जो हैं उन्हें निष्पल कर दे, २९ ताकि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के सामने घमंड न करे। ३० परंतु यह उसी के कारण है कि तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से बुद्धि, धर्म, पवित्रता और मुक्ति बन गया, ३१ ताकि, जैसा लिखा है: “जो घमंड करे, वह प्रभु में घमंड करे।”

२ और जब मैं तुम्हारे पास आया, भाइयों और बहनों, तो मैं बोलने की क्षमता या बुद्धि में श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में नहीं आया, जैसा कि मैंने तुहें परमेश्वर की गवाही सुनाई। २ क्योंकि मैंने तुहारे बीच कुछ भी नहीं जानने का निश्चय किया सिवाय यीशु मसीह के, और उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। ३ मैं तुम्हारे साथ कमज़ोरी, डर और बहुत कांपते हुए भी था, ४ और मेरा संदेश और मेरा प्रचार बुद्धि के प्रेरक शब्दों में नहीं था, ५ ताकि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों की बुद्धि पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की शक्ति पर आधारित हो। ६ फिर भी हम परिपक्व लोगों के बीच बुद्धि की बात करते हैं—एक ऐसी बुद्धि, जो इस युग की नहीं है और न ही इस युग के शासकों की है, जो नाश हो रहे हैं; ७ परन्तु हम परमेश्वर की बुद्धि को एक रहस्य में बोलते हैं, वह छिपी हुई बुद्धि जिसे परमेश्वर ने युगों से पहले हमारी महिमा के लिए ठहराया था, ८ वह बुद्धि जिसे इस युग के किसी भी शासक ने नहीं समझा; क्योंकि यदि वे इसे समझते, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते। ९ परन्तु जैसा लिखा है:

## 1 कुरिन्यियों

"वे बातें जो अँखें ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं,  
और जो मनुष्य के हृदय में नहीं आईं वे सब बातें  
परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार की हैं जो उससे  
प्रेम करते हैं।"

<sup>10</sup> क्योंकि हमें परमेश्वर ने उहें आत्मा के द्वारा प्रकट किया; क्योंकि आत्मा सब कुछ खोजता है, यहाँ तक कि परमेश्वर की गहराइयों को भी। <sup>11</sup> क्योंकि कौन मनुष्यों में से किसी व्यक्ति के विचारों को जानता है सिवाय उस व्यक्ति की आत्मा के जो उसमें है? इसी प्रकार परमेश्वर के विचारों को कोई नहीं जानता, सिवाय परमेश्वर की आत्मा के। <sup>12</sup> अब हमने संसार से आत्मा को नहीं, बल्कि उस आत्मा को प्राप्त किया है जो परमेश्वर की ओर से है, ताकि हम उन बातों को जान सकें जो परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र रूप से दी हैं। <sup>13</sup> हम इन बातों को भी बोलते हैं, न कि उन शब्दों में जो मनुष्य की बुद्धि द्वारा सिखाए गए हैं, बल्कि उन शब्दों में जो आत्मा द्वारा सिखाए गए हैं, आमिक विचारों को आमिक शब्दों के साथ मिलाते हुए। <sup>14</sup> परन्तु एक प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा की बातों को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खता हैं; और वह उहें समझ नहीं सकता, क्योंकि वे आमिक रूप से समझी जाती हैं। <sup>15</sup> परन्तु जो आमिक है वह सब बातों को समझता है, फिर भी उसे कोई नहीं समझता। <sup>16</sup> क्योंकि

"किसने प्रभु की बुद्धि को जाना, कि वह उसे सिखाए?"

परन्तु हमारे पास मसीह की बुद्धि है।

**3** और हे भाइयों और बहनों, मैं तुमसे आमिक लोगों के रूप में नहीं, बल्कि शारीरिक लोगों के रूप में, मसीह में शिशुओं के रूप में बात कर सका। <sup>2</sup> मैंने तुम्हें दूध पिलाया, ठोस भोजन नहीं; क्योंकि तुम उसे ग्रहण करने योग्य नहीं थे। परन्तु अब भी तुम उसे ग्रहण करने योग्य नहीं हो, <sup>3</sup> क्योंकि तुम अभी भी शारीरिक हो। क्योंकि जब तक तुम्हारे बीच ईर्ष्या और झाड़ा है, क्या तुम शारीरिक नहीं हो, और क्या तुम साधारण लोगों की तरह नहीं चल रहे हो? <sup>4</sup> क्योंकि जब एक व्यक्ति कहता है, "मैं पौलुस के साथ हूँ," और दूसरा, "मैं अपोलोस के साथ हूँ," तो क्या तुम साधारण मनुष्यों की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हो? <sup>5</sup> तो फिर अपोलोस क्या है? और पौतुस क्या है? सेवक जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया, जैसे कि प्रभु ने प्रयेक को अवसर दिया। <sup>6</sup> मैंने लगाया, अपोलोस ने पानी दिया, परन्तु परमेश्वर ने वृद्धि दी। <sup>7</sup> तो फिर न तो वह जो लगाता है कुछ है, न वह जो पानी देता है, परन्तु परमेश्वर जो वृद्धि देता है। <sup>8</sup> अब वह जो लगाता है और

वह जो पानी देता है एक हैं; परन्तु प्रयेक को उसके अपने श्रम के अनुसार उसका प्रतिफल मिलेगा। <sup>9</sup> क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर का खेत हो, परमेश्वर की इमारत हो। <sup>10</sup> परमेश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैंने एक बुद्धिमान मुख्य निर्माणकर्ता के रूप में नीव रखी, और कोई दूसरा उस पर निर्माण कर रहा है। परन्तु प्रयेक व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए कि वह उस पर केसे निर्माण करता है। <sup>11</sup> क्योंकि कोई भी उस नीव के अलावा दूसरी नीव नहीं रख सकता, जो रखी गई है, जो यीशु मसीह है। <sup>12</sup> अब यदि कोई उस नीव पर सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्तर, लकड़ी, धास, या भूसा से निर्माण करता है, <sup>13</sup> प्रयेक का काम प्रकट होगा; क्योंकि वह दिन उसे दिखाएगा क्योंकि वह आग से प्रकट होगा, और आग स्वर्य प्रयेक के काम की गुणवत्ता का परीक्षण करेगी। <sup>14</sup> यदि किसी का काम जो उसने उस पर निर्माण किया है, बना रहता है, तो वह प्रतिफल प्राप्त करेगा। <sup>15</sup> यदि किसी का काम जल जाता है, तो वह हानि उठाएगा; परन्तु वह स्वयं बच जाएगा, परन्तु जैसे आग के माध्यम से। <sup>16</sup> क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है? <sup>17</sup> यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नष्ट करता है, तो परमेश्वर उस व्यक्ति को नष्ट करेगा, क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है, और वही तुम हो। <sup>18</sup> सावधान रहो कि कोई स्वर्य की धोखा न दे। यदि तुम में से कोई सूचता है कि वह इस युग में बुद्धिमान है, तो उसे मूर्ख बनना चाहिए, ताकि वह बुद्धिमान बन सके। <sup>19</sup> क्योंकि इस संसार की बुद्धि परमेश्वर की वृद्धि में मूर्खता है। क्योंकि लिखा है: "वह चालाकियों से बुद्धिमानों को पकड़ता है"। <sup>20</sup> और फिर से, "प्रभु बुद्धिमानों के विचारों को जानता है, कि वे व्यर्थ हैं।" <sup>21</sup> तो फिर, कोई भी मनुष्यों में घमंड न करे। क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है, <sup>22</sup> चाहे पौतुस, या अपोलोस, या कैफास, या संसार, या जीवन, या मनुष्य, या वर्तमान चीजें, या आने वाली चीजें; सब कुछ तुम्हारा है, <sup>23</sup> और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का हो।

**4** इस प्रकार कोई भी व्यक्ति हमें इस रूप में माने: मसीह के सेवक और परमेश्वर के रहस्यों के भण्डारी। <sup>2</sup> इसके अलावा, भण्डारियों से यह अपेक्षित है कि वे विश्वासयोग्य पाए जाएं। <sup>3</sup> परन्तु मेरे लिए यह एक तुच्छ बात है कि मैं तुम्हारे द्वारा या किसी मानव न्यायालय द्वारा जांचा जाऊँ; वास्तव में, मैं स्वयं को भी नहीं जांचता। <sup>4</sup> क्योंकि मुझे अपने विरुद्ध कुछ भी जात नहीं है; फिर भी, मैं इससे निर्दोष नहीं ठहराया गया हूँ, परन्तु जो मुझे जांचता है वह प्रभु है। <sup>5</sup> इसलिए समय से पहले न्याय न करो, परन्तु प्रभु के आने तक प्रतीक्षा करो, जो

## 1 कुरिन्यियों

अंधकार में छिपी हुई बातों को उजागर करेगा और मानव हृदयों के उद्देश्यों को प्रकट करेगा; और तब प्रयेक व्यक्ति को परमेश्वर से प्रशंसा मिलेगी।<sup>6</sup> अब ये बातें, भाइयों और बहनों, मैंने तुम्हरे लिए अपने और अपोलोस के लिए रूपक रूप में लागू की हैं, ताकि तुम हम में यह सीख सको कि जो लिखा गया है उससे आगे न बढ़ो, ताकि तुम में से कोई भी एक के पक्ष में दूसरे के विरुद्ध अहंकारी न बने।<sup>7</sup> क्योंकि कौन तुम्हें श्रेष्ठ मानता है? और तुम्हरे पास क्या है जो तुमने प्राप्त नहीं किया? परन्तु यदि तुमने इसे प्राप्त किया, तो वर्णों ऐसा घंटड करते हो जैसे कि तुमने इसे प्राप्त नहीं किया?<sup>8</sup> तुम पहले से ही तृप्त हो, तुम पहले से ही धनी हो गए हो, तुम हमारे बिना राजा बन गए होते ताकि हम भी तुम्हरे साथ राज्य कर सकें।<sup>9</sup> क्योंकि, मैं सोचता हूँ, परमेश्वर ने हमें, प्रेरितों को, सबसे अंत में प्रदर्शित किया है, जैसे मृत्यु के लिए निंदा किए गए मनुष्य, क्योंकि हम संसार के लिए, स्वर्गदूतों और मानवजाति दोनों के लिए एक तमाशा बन गए हैं।<sup>10</sup> हम मरीह के कारण मूर्ख हैं, परन्तु तुम मरीह में बुद्धिमान हो; हम कमज़ोर हैं, परन्तु तुम बलवान हो; तुम प्रतिष्ठित हो, परन्तु हम बिना सम्मान के हैं।<sup>11</sup> इस वर्तमान समय तक हम भूखे और प्यासे हैं, और खराब वस्त्रों में हैं और कठोरता से व्यवहार किया गया है और बेघर हैं;<sup>12</sup> और हम परिश्रम करते हैं, अपने हाथों से काम करते हैं; जब हमें मौखिक रूप से गाती दी जाती है, तो हम आशीर्वद देते हैं; जब हमें बदनाम किया जाता है, तो हम सहन करते हैं;<sup>13</sup> जब हमें बदनाम किया जाता है, तो हम मित्रों की तरह जवाब देते हैं; हम संसार की गंदी, सभी वीजों की तलछट बन गए हैं, अब तक क।<sup>14</sup> मैं ये बातें तुम्हें शर्मिदा करने के लिए नहीं लिखता, परन्तु तुम्हें अपने प्रिय बच्चों के रूप में चेतावनी देने के लिए लिखता हूँ।<sup>15</sup> क्योंकि यदि तुम्हरे पास मरीह में असंख्य शिक्षक हों, तो भी तुम्हारे पास बहुत से पिता नहीं होंगे; क्योंकि मरीह यीशु में मैं सुसमाचार के माध्यम से तुम्हारा पिता बन गया हूँ।<sup>16</sup> इसलिए मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, मेरे अनुकरणकर्ता बनो।<sup>17</sup> इसी कारण से मैंने तुम्हरे पास तीमुखियस को भेजा है, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य बच्चा है, और वह तुम्हें मेरी उन तरीकों की धाद दिलाएगा जो मरीह में हैं, जैसे मैं हर जगह हर कलीसिया में सिखाता हूँ।<sup>18</sup> अब कुछ अहंकारी हो गए हैं, जैसे कि मैं तुम्हारे पास नहीं आ रहा हूँ।<sup>19</sup> परन्तु मैं श्रीग्री ही तुम्हारे पास आऊँगा, यदि प्रभु की इच्छा होगी, और मैं उन अहंकारी लोगों के शब्दों को नहीं, बल्कि उनकी शक्ति को जानूँगा।<sup>20</sup> क्योंकि परमेश्वर का राज्य शब्दों में नहीं, बल्कि शक्ति में है।<sup>21</sup> तुम क्या चाहते हो?

कि मैं तुम्हारे पास छड़ी के साथ आऊँ, या प्रेम और कोमलता की आत्मा के साथ?

**5** वास्तव में यह सुना गया है कि तुम्हारे बीच व्यभिचार है, और ऐसा व्यभिचार जो अयजातियों में भी नहीं पाया जाता, अर्थात् किसी ने अपने पिता को रखा है।<sup>2</sup> तुम घमंडी हो गए हो और इसके बजाय शोक नहीं किया, ताकि जिसने यह काम किया है उसे तुम्हारे बीच से निकाल दिया जाए।<sup>3</sup> क्योंकि मैं, अपनी ओर से, शरीर में अनुपस्थित रोते हुए भी आत्मा में उपस्थित होकर, उसे पहले ही न्याय दे चुका हूँ, जिसने यह किया है, मानो मैं उपस्थित होता।<sup>4</sup> हमार प्रभु यीशु के नाम में, जब तुम इकट्ठे हो, और मैं आत्मा में तुम्हारे साथ हूँ, हमारे प्रभु यीशु की शक्ति के साथ, मैंने ऐसे व्यक्ति को शैतान के हवाले करने का निर्णय लिया है ताकि उसके शरीर का नाश हो, जिससे उसके आत्मा का उद्धार प्रभु के दिन हो सके।<sup>5</sup> तुम्हारा घंटड अच्छा नहीं है। क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर सारे आटे को खमीर कर देता है?<sup>6</sup> पुराने खमीर को निकाल दो, ताकि तुम न्याय आटा बन जाओ, जैसे कि वास्तव में तुम बिना खमीर के हो। क्योंकि हमारा फसह मरीह बलिदान किया गया है।<sup>8</sup> इसलिए पर्व मनाएं, न कि पुराने खमीर के साथ, न ही दुष्टा और बुराई के खमीर के साथ, बल्कि ईमानदारी और सत्य के बिना खमीर की रोटी के साथ।<sup>9</sup> मैंने तुम्हें अपने पत्र में लिखा था कि व्यभिचारी लोगों के साथ संगति न करना;<sup>10</sup> मैंने बिल्कुल भी इस संसार के व्यभिचारी लोगों, या लालची और ठांगों, या मूर्तिरूपजकों के साथ संगति करने का मतलब नहीं किया था, क्योंकि तब तुम्हें संसार छोड़ना पड़ेगा।<sup>11</sup> लेकिन वास्तव में, मैंने तुम्हें लिखा था कि किसी भी तथाकथित भाई के साथ संगति न करो, यदि वह व्यभिचारी, या लालची, या मूर्तिरूपजक, या गाती देने वाला, या शराबी, या ठग हो—ऐसे व्यक्ति के साथ तो खाना भी न खाओ।<sup>12</sup> क्योंकि बाहरी लोगों का न्याय करना मेरा काम क्या है? क्या तुम चर्च के भीतर के लोगों का न्याय नहीं करते?<sup>13</sup> लेकिन जो बाहर हैं, उनका न्याय परमेश्वर करता है। अपने बीच से दृष्ट व्यक्ति को निकाल दो।

**6** क्या तुमसे कोई, जब उसका किसी दूसरे के साथ मुकदमा होता है, तो क्या वह अधर्मी के सामने न्याय के लिए जाता है और संतों के सामने नहीं?<sup>2</sup> क्या तुम नहीं जानते कि संत संसार का न्याय करेंगे? यदि संसार का न्याय तुमसे होगा, तो क्या तुम तुच्छ मामलों का न्याय करने में सक्षम नहीं हो?<sup>3</sup> क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो फिर इस जीवन के मामलों

## 1 कुरिन्यियों

का कितना अधिक? <sup>4</sup> तो यदि तुम्हारे पास इस जीवन के मामलों से संबंधित मुकदमे हैं, तो क्या तुम उन्हें न्यायाधीश नियुक्त करते हों जो कलीसिया में कोई महत्व नहीं रखते? <sup>5</sup> मैं यह तुम्हारी लज्जा के लिए कहता हूँ क्या वास्तव में ऐसा है कि तुम्हारे बीच एक भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं है जो अपने भाइयों या बहनों के बीच निर्णय कर सके? <sup>6</sup> परंतु भाई, भाई के साथ मुकदमे में जाता है, और वह भी अविश्वासियों के सामने! <sup>7</sup> वास्तव में, यह पहले से ही तुम्हारी हार है, कि तुम्हारे बीच मुकदमे होते हैं। क्यों न अन्याय सह लिया जाए? क्यों न ठगा जाए? <sup>8</sup> इसके विपरीत, तुम स्वयं अन्याय करते हों और धोखा देते हों, और यह अपने भाइयों और बहनों के साथ! <sup>9</sup> क्या तुम नहीं जानते कि अधर्मी परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे? धोखा न खाओ; न तो यौन अनैतिक, न मूर्तिपूजक, न व्यभिचारी, न कोमल, न समलैंगिक, <sup>10</sup> न चार, न लोभी, न नशे में रहने वाले, न गाली देने वाले, न ठग, परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। <sup>11</sup> तुम्हें से कुछ ऐसे ही थे; परंतु तुम धोए गए, परंतु तुम पवित्र किए गए, परंतु तुम धर्मी ठहराए गए, प्रभु यीशु मसीह के नाम में और हमारे परमेश्वर के आत्मा में। <sup>12</sup> सभी बातें मेरे लिए अनुमत हैं, परंतु सभी बातें लाभदायक नहीं हैं। सभी बातें मेरे लिए अनुमत हैं, परंतु मैं किसी भी चीज़ का दास नहीं बनूँगा। <sup>13</sup> भोजन पेट के लिए है और पेट भोजन के लिए, परंतु परमेश्वर दोनों का अंत करेगा। फिर भी शरीर यौन अनैतिकता के लिए नहीं, परंतु प्रभु के लिए है, और प्रभु शरीर के लिए है। <sup>14</sup> अब परमेश्वर ने न केवल प्रभु को उठाया, परंतु अपनी शक्ति के द्वारा हमें भी उठाएगा। <sup>15</sup> क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर मसीह के अंग हैं? क्या मैं तब मसीह के अंगों को लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊँगे? ऐसा न हो! <sup>16</sup> या क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई वेश्या के साथ जुड़ता है वह उसके साथ एक शरीर होता है? क्योंकि वह कहता है, "दो एक मास हो जाओगे!" <sup>17</sup> परंतु जो कोई प्रभु के साथ जुड़ता है वह उसके साथ एक आत्मा होता है। <sup>18</sup> यौन अनैतिकता से भागो। हर अन्य पाप जो व्यक्ति करता है वह शरीर के बाहर होता है, परंतु यौन अनैतिक व्यक्ति अपने ही शरीर के विरुद्ध पाप करता है। <sup>19</sup> या क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर तुम्हारे भीतर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम्हें परमेश्वर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? <sup>20</sup> क्योंकि तुम एक मूल्य के लिए खरीदे गए हो: इसलिए अपने शरीर में परमेश्वर की महिमा करो।

**7** अब उन बातों के विषय में जो तुमने लिखी हैं: यह अच्छा है कि पुरुष स्त्री को न छुए। <sup>2</sup> परंतु व्यभिचार के कारण, प्रत्येक पुरुष को अपनी पत्नी होनी चाहिए, और

प्रत्येक स्त्री को अपना पति होना चाहिए। <sup>3</sup> पति को अपनी पत्नी के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए, और इसी प्रकार पत्नी को भी अपने पति के प्रति। <sup>4</sup> पत्नी का अपने शरीर पर अधिकार नहीं है, परन्तु पति का है; और इसी प्रकार पति का भी अपने शरीर पर अधिकार नहीं है, परन्तु पत्नी का है। <sup>5</sup> एक दूसरे को विचित न करे, सिवाय सहमति से कुछ समय के लिए ताकि तुम प्रार्थना में ध्यान देसको, और फिर से एक साथ आओ ताकि शैतान तुम्हें आत्म-संयम की कमी के कारण प्रलोभित न करे। <sup>6</sup> परन्तु मैं यह एक रियायत के रूप में कहता हूँ, आज्ञा के रूप में नहीं। <sup>7</sup> फिर भी मैं चाहता हूँ कि सब लोग मेरे जैसे ही हों। परन्तु प्रत्येक के पास परमेश्वर से अपना-अपना वरदान है, एक इस प्रकार और दूसरा उस प्रकार। <sup>8</sup> परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं से कहता हूँ कि यदि वे मेरे जैसे रहें तो यह उनके लिए अच्छा है। <sup>9</sup> परन्तु यदि वे आत्म-संयम नहीं कर सकते, तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिए; क्योंकि विवाह करना जलने से बेहतर है। <sup>10</sup> परन्तु विवाहितों को मैं आज्ञा देता हूँ, मैं नहीं, परन्तु प्रभु कि पत्नी अपने पति को न छोड़े। <sup>11</sup> (परन्तु यदि वह छोड़ देती है, तो उसे अविवाहित रहना चाहिए, या अपने पति के साथ मेल करना चाहिए), और पति को अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए। <sup>12</sup> परन्तु शेष लोगों से मैं कहता हूँ, प्रभु नहीं, कि यदि किसी भाई की अविश्वासी पत्नी है और वह उसके साथ रहने के लिए सहमत है, तो उसे उसे तलाक नहीं देना चाहिए। <sup>13</sup> और यदि किसी स्त्री का अविश्वासी पति है, और वह उसके साथ रहने के लिए सहमत है, तो उसे अपने पति को तलाक नहीं देना चाहिए। <sup>14</sup> क्योंकि अविश्वासी पति अपनी पत्नी के द्वारा पवित्र होता है, और अविश्वासी पत्नी विश्वास करने वाले पति के द्वारा पवित्र होती है: नहीं तो तुम्हारे बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब वे पवित्र हैं। <sup>15</sup> फिर भी यदि अविश्वासी छोड़ता है, तो उसे छोड़ने दो; ऐसे मामलों में भाई या बहन बंधन में नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर ने हमें शांति के लिए बुलाया है। <sup>16</sup> क्योंकि तुम कैसे जानती हो, पत्नी, कि तुम अपने पति को बचाओगी? या तुम कैसे जानते हो, पति, कि तुम अपनी पत्नी को बचाओगी? <sup>17</sup> केवल, जैसा कि प्रभु ने प्रत्येक को नियुक्त किया है, जैसा कि परमेश्वर ने प्रत्येक को बुलाया है, उसी प्रकार वह चले। और मैं सभी कलीसियाओं में यही निर्देश देता हूँ। <sup>18</sup> क्या कोई व्यक्ति बुलाया गया था जब वह पहले से खतना किया हुआ था? उसे खतनारहित बुलाया गया था? उसे खतना नहीं करना चाहिए। क्या किसी को खतनारहित बुलाया गया था? उसे खतना नहीं है, और खतनारहित होना भी कुछ नहीं है, परन्तु जो महत्वपूर्ण है वह है परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना। <sup>19</sup> प्रत्येक व्यक्ति उसी स्थिति में बना रहे जिसमें

## 1 कुरिन्यियों

उसे बुलाया गया था।<sup>21</sup> क्या तुम दास के रूप में बुलाए गए थे? इसे लेकर चित्ति न हो। परन्तु यदि तुम्हें स्वतंत्र होने का अवसर मिलता है, तो उसका लाभ उठाओ।<sup>22</sup> क्योंकि जो प्रभु में दास के रूप में बुलाया गया था, वह प्रभु का स्वतंत्र व्यक्ति है; इसी प्रकार जो स्वतंत्र के रूप में बुलाया गया था, वह मसीहा का दास है।<sup>23</sup> तुम एक मूल्य के लिए खरीदे गए थे; लोगों के दास मत बनो।<sup>24</sup> भाइयों और बहनों, प्रत्येक व्यक्ति उसी स्थिति में परमेश्वर के साथ बना रहे जिसमें उसे बुलाया गया था।<sup>25</sup> अब कुँवारियों के विषय में, मेरे पास प्रभु की कोई आत्मा नहीं है, परन्तु मैं एक राय देता हूँ जो प्रभु की दया से विश्वसनीय है।<sup>26</sup> मृशों लगता है, फिर, कि यह वर्तमान संकट के दृष्टिकोण से अच्छा है, कि व्यक्ति जैसा है वैसा ही बना रहे।<sup>27</sup> क्या तुम पत्नी से बंधे हो? मुक्त होने की कोशिश मत करो। क्या तुम पत्नी से मुक्त हो? पत्नी की तलाश मत करो।<sup>28</sup> परन्तु यदि तुम विवाह करते हो, तो तुमने पाप नहीं किया; और यदि कोई कुँवारी विवाह करती है, तो उसने पाप नहीं किया। फिर भी ऐसे लोगों को इस जीवन में कठिनाई होगी, और मैं तुम्हें बचाने की कोशिश कर रहा हूँ।<sup>29</sup> परन्तु मैं यह कहता हूँ, भाइयों और बहनों: समय कम हो गया है, ताकि अब से जो लोग पतियों रखते हैं वे ऐसे हों जैसे उनके पास कोई नहीं है,<sup>30</sup> और जो लोग रोते हैं, जैसे वे नहीं रोते; और जो लोग अनन्दित होते हैं, जैसे वे अनन्दित नहीं होते; और जो लोग खरीदते हैं, जैसे वे कुछ भी नहीं खरेते;<sup>31</sup> और जो लोग संसार का उपयोग करते हैं, जैसे वे उसका पूरा उपयोग नहीं करते; क्योंकि इस संसार का रूप बीत रहा है।<sup>32</sup> परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम चिंताओं से मुक्त रहो। अविवाहित व्यक्ति प्रभु की बातों की चिंता करता है, कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करें;<sup>33</sup> परन्तु विवाहित व्यक्ति संसार की बातों की चिंता करता है, कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न करें,<sup>34</sup> और उसकी रुचियाँ विभाजित होती हैं। अविवाहित स्त्री, और कुँवारी, प्रभु की बातों की चिंता करती है, ताकि वह शरीर और आत्मा दोनों में पवित्र हो सके; परन्तु जो विवाहित है वह संसार की बातों की चिंता करती है, कि वह अपने पति को कैसे प्रसन्न करे।<sup>35</sup> मैं यह तुम्हारे लाभ के लिए कहता हूँ, तुम्हें प्रतिबंधित करने के लिए नहीं, परन्तु जो उचित है उसे बढ़ावा देने के लिए, और प्रभु के प्रति अविभाजित भक्ति को सुरक्षित करने के लिए।<sup>36</sup> परन्तु यदि कोई सोचता है कि वह अपनी कुँवारी के प्रति अपमानजनक व्यवहार कर रहा है, यदि वह अपनी युवावस्था से आगे बढ़ चुकी है और ऐसा होना चाहिए, तो उसे जो वह चाहता है करने दो, वह पाप नहीं कर रहा है; उन्हें विवाह करना चाहिए।<sup>37</sup> परन्तु जो अपने हृदय में दृढ़ खड़ा है, बिना किसी दबाव के, परन्तु अपनी इच्छा पर अधिकार रखता है,

और अपने हृदय में यह निर्णय लिया है, अपनी कुँवारी को बनाए रखने के लिए, वह अच्छा करेगा।<sup>38</sup> तो फिर, जो अपनी कुँवारी को विवाह में देता है वह अच्छा करता है, और जो उसे विवाह में नहीं देता वह और भी अच्छा करेगा।<sup>39</sup> पत्नी अपने पति के जीवित रहने तक बंधी रहती है; परन्तु यदि उसका पति मर गया है, तो वह जिसे चाह उससे विवाह करने के लिए स्वतंत्र है, केवल प्रभु में।<sup>40</sup> परन्तु मेरी राय में वह अधिक सुखी है यदि वह जैसी है कि वही ही बनी रहती है; और मुझे लगता है कि मेरे पास भी परमेश्वर का आत्मा है।

**8** अब मूर्तियों को बलि किए गए भोजन के विषय में, हम जानते हैं कि हम सबके पास ज्ञान है। ज्ञान घमंड पैदा करता है, परन्तु प्रेम उत्तमि करता है।<sup>1</sup> यदि कोई सोचता है कि वह कुछ जानता है, तो उसने अभी तक वैसा नहीं जाना जैसा उसे जानना चाहिए;<sup>2</sup> परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, तो वह उसके द्वारा जाना जाता है।<sup>3</sup> इसलिए, मूर्तियों को बलि किए गए भोजन के खाने के विषय में, हम जानते हैं कि मूर्ति संसार में कुछ भी नहीं है, और एक ही परमेश्वर है।<sup>4</sup> क्योंकि यदि स्वर्ण में या पृथ्वी पर तथाकथित देवता है, जैसे कि वास्तव में कई देवता और कई प्रभु हैं,<sup>5</sup> तो भी हमारे लिए एक ही परमेश्वर है, पिता, जिससे सब कुछ है, और हम उसके लिए हैं; और एक ही प्रभु, पीशु मरीह, जिसके द्वारा सब कुछ है, और हम उसके द्वारा हैं।<sup>6</sup> हालांकि, सभी लोगों के पास यह ज्ञान नहीं है; परंतु कुछ, जो अब तक मूर्ति के आदी हैं, भोजन को मूर्ति के लिए बलि किया हुआ मानकर खाते हैं, और उनकी अंतरात्मा, जो कमज़ोर है, अशुद्ध हो जाती है।<sup>7</sup> अब भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं लाएगा; यदि हम नहीं खाते तो हम बुरे नहीं होते, और यदि खाते हैं तो अच्छे नहीं होते।<sup>8</sup> परन्तु यान रखें कि आपकी यह स्वतंत्रता किसी प्रकार से कमज़ोरों के लिए ठोकर का कारण न बने।<sup>9</sup> क्योंकि यदि कोई आपको, जो ज्ञान रखते हैं, मूर्ति के मदिर में भोजन करते हुए देखे, तो क्या उसकी अंतरात्मा, यदि वह कमज़ोर है, मूर्तियों को बलि किए गए वस्त्र खाने के लिए प्रोत्साहित नहीं होगी?<sup>10</sup> क्योंकि आपके ज्ञान के कारण वह कमज़ोर व्यक्ति नष्ट हो जाता है, वह भाई या बहन जिसके लिए मरीह मरे।<sup>11</sup> और इस प्रकार, भाइयों और बहनों के विरुद्ध पाप करके और उनकी अंतरात्मा को जब वह कमज़ोर होती है, आहत करके, आप मरीह के विरुद्ध पाप करते हैं।<sup>12</sup> इसलिए, यदि भोजन मेरे भाई को पाप में डालता है, तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊंगा, ताकि मैं अपने भाई को पाप में न डालू।

## 1 कुरिन्यियों

१ क्या मैं स्वतंत्र नहीं हूँ? क्या मैं प्रेरित नहीं हूँ? क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु को नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे कार्य नहीं हो? <sup>२</sup> यदि मैं दूसरों के लिए प्रेरित नहीं हूँ, तो कम से कम तुम्हारे लिए तो हूँ; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताइ की मुहर हो। <sup>३</sup> जो लोग मेरी परीक्षा लेते हैं, उनके लिए मेरी यह प्रतिरक्षा है: <sup>४</sup> क्या हमें खेन और पीने का अधिकार नहीं है? <sup>५</sup> क्या हमें एक व्यवसायोग्य पती को साथ ले जाने का अधिकार नहीं है, जैसे कि बाकी प्रेरितों, प्रभु के भाइयों और कैफा को है? <sup>६</sup> या केवल बरनबास और मुझे ही काम न करने का अधिकार नहीं है? <sup>७</sup> कौन कभी अपनी खर्च पर सैनिक के रूप में सेवा करता है? कौन एक दाख की बारी लगाता है और उसका फल नहीं खाता? या कौन एक झुंड की देखभाल करता है और झुंड का दूध नहीं पीता? <sup>८</sup> क्या मैं ये बातें मानव निर्णय के अनुसार कह रहा हूँ? या क्या व्यवस्था भी ये बातें नहीं कहती? <sup>९</sup> क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है: “जब बैल दाना ओसता है, तब उसका मुँह न बाँधना!” क्या परमेश्वर बैलों की चिंता करता है? <sup>१०</sup> या वह पूरी तरह से हमारे लिए कह रहा है? हाँ, यह हमारे लिए लिखा गया था, क्योंकि हल चलाने वाला आशा में हल चलाना चाहिए, और दाने औसते वाला आशा में फसल में भाग लेने के लिए औसता चाहिए। <sup>११</sup> यदि हमने तुम्हें आत्मिक बातें बोई, तो क्या यह अधिक है यदि हम तुमसे भौतिक चीजें काटें? <sup>१२</sup> यदि दिव्य लोग तुम पर अधिकार रखते हैं, तो क्या हम नहीं? फिर भी, हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया, बल्कि हम सब कुछ सहते हैं ताकि मसीह के सुसमाचार में कोई बाधा न डालें। <sup>१३</sup> क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र सेवाएँ करते हैं, वे मंदिर का भोजन खाते हैं, और जो नियमित रूप से वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी से अपना हिस्सा प्राप्त करते हैं? <sup>१४</sup> इसी प्रकार प्रभु ने निर्देश दिया कि जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं, वे सुसमाचार से अपनी जीविका प्राप्त करें। <sup>१५</sup> पर मैंने इन अधिकारों में से किसी का उपयोग नहीं किया है, और मैं ये बातें इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि मेरे मामले में ऐसा किया जाए; क्योंकि मेरे लिए भर जाना बेहतर होगा बजाय इसके कि कोई मेरे गर्व को खाली कर दे। <sup>१६</sup> क्योंकि यदि मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ, तो मुझे गर्व करने के लिए कुछ नहीं है, क्योंकि मैं बाध्य हूँ; यदि मैं सुसमाचार का प्रचार नहीं करता, तो मुझ पर विपत्ति हो! <sup>१७</sup> क्योंकि यदि मैं इसे स्वेच्छा से करता हूँ, तो मुझे पुरस्कार मिलता है, पर यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध, तो मुझे एक कमीशन सौंपा गया है। <sup>१८</sup> तो मेरा पुरस्कार क्या है? कि जब मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ, तो मैं सुसमाचार को बिना शुल्क के प्रस्तुत कर सकता हूँ, ताकि मैं सुसमाचार में अपने अधिकार का पूरा उपयोग

न करूँ। <sup>१९</sup> क्योंकि यद्यपि मैं सभी लोगों से स्वतंत्र हूँ, मैंने अपने आप को सभी का दास बना लिया है, ताकि मैं अधिक प्राप्त कर सकूँ। <sup>२०</sup> यहूदियों के लिए मैं यहूदी बन गया, ताकि मैं यहूदियों को प्राप्त कर सकूँ जो व्यवस्था के अधीन है, उनके लिए मैं व्यवस्था के अधीन बन गया, यद्यपि मैं स्वयं व्यवस्था के अधीन नहीं हूँ ताकि मैं उन्हें प्राप्त कर सकूँ जो बिना व्यवस्था के बन गया, यद्यपि मैं परमेश्वर की व्यवस्था के बिना नहीं हूँ बल्कि मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ ताकि मैं उन्हें प्राप्त कर सकूँ जो बिना व्यवस्था के हैं। <sup>२१</sup> जो कमजोर हैं, उनके लिए मैं कमजोर बन गया, ताकि मैं कमजोरों को प्राप्त कर सकूँ; मैं सभी लोगों के लिए सब कुछ बन गया हूँ ताकि मैं किसी भी तरह से कुछ को बाबा सकूँ। <sup>२२</sup> मैं सुसमाचार के लिए सब कुछ करता हूँ ताकि मैं उसका सहभागी बन सकूँ। <sup>२३</sup> क्या तुम नहीं जानते कि जो दौड़ में दौड़ते हैं, वे सब दौड़ते हैं, पर केवल एक ही पुरस्कार प्राप्त करता है? इस प्रकार दौड़ों कि तुम जीत सको। <sup>२५</sup> जो कोई खेलों में प्रतिष्पर्धा करता है, वह सभी चीजों में आत्म-संयम का अभ्यास करता है। वे इसे एक नाशवान मुकुट प्राप्त करने के लिए करते हैं, पर हम एक अविनाशी के लिए। <sup>२६</sup> इसलिए मैं बिना उद्देश्य के नहीं दौड़ता; न ही मैं अपने हाथों को इस तरह से फेंकता हूँ जैसे कि एक मुक्के बाज हवा में मार रहा हो। <sup>२७</sup> इसके बजाय मैं अपने शरीर को सख्ती से अनुशासित करता हूँ और इसे अपना दास बनाता हूँ, ताकि जब मैं दूसरों को प्रचार किया हो, तो मैं अयोग्य न हो जाऊँ।

**10** माझों और बहनों, मैं नहीं चाहता कि तुम अनजान रहो कि हमारे पूर्वज सभी बादल के नीचे थे और सभी समुद्र के माथ्यम से पार हुए, <sup>२</sup> और वे सभी बादल और समुद्र में मूसा में बपतिस्थान लिए गए; <sup>३</sup> और उन्होंने सभी एक ही आत्मिक भोजन खाया, <sup>४</sup> और सभी ने एक ही आत्मिक पेय पिया, क्योंकि वे एक आत्मिक चट्ठान से पी रहे थे जो उनके पीछे चल रही थी; और वह चट्ठान मसीही था। <sup>५</sup> फिर भी, उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था; क्योंकि उनके मृत शरीर जंगल में बिखरे हुए थे। <sup>६</sup> अब ये बातें हमारे लिए उदाहरण के रूप में घटित हुईं, ताकि हम बुरी चीजों की लालसा न करें जैसे उन्होंने की थी। <sup>७</sup> मूर्तिपूजक मत बनो, जैसे उनमें से कुछ थे; जैसा कि लिखा है: “लोग खाने और पीने के लिए बैठें, और खेलने के लिए उठें।” <sup>८</sup> न ही हमें व्यभिचार करना चाहिए, जैसे उनमें से कुछ ने किया, और एक दिन में तेझिस हजार गिर गए। <sup>९</sup> न ही हमें प्रभु की परीक्षा लेनी चाहिए, जैसे उनमें से कुछ ने किया, और सांपों द्वारा मारे गए। <sup>१०</sup> न ही कुँडकुँडाओं, जैसे उनमें से

# 1 कुरिन्यियों

कुछ ने किया, और विनाशक द्वारा मारे गए।<sup>11</sup> अब ये बातें उनके लिए एक उदाहरण के रूप में घटित हुईं, और हमारे निर्देश के लिए लिखी गईं, जिन पर युगों का अंत आ गया है।<sup>12</sup> इसलिए जो सोचता है कि वह खड़ा है, वह सावधान रहे कि वह गिर न जाए।<sup>13</sup> कोई भी परीक्षा तुम्हें नहीं आई है सिवाय इसके जो मानव जाति के लिए सामान्य है; और परमेश्वर विश्वासयोग्य है, इसलिए वह तुम्हें तुम्हारी क्षमता से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, बल्कि परीक्षा के साथ-साथ बचने का मार्ग भी प्रदान करेगा, ताकि तुम उसे सहन कर सको।<sup>14</sup> इसलिए, मेरे प्रिय, मूर्तिंज्ञा से भागो।<sup>15</sup> मैं समझदार लोगों से बात कर रहा हूँ; तुम फिर, जो मैं कहता हूँ उसका न्याय करो।<sup>16</sup> क्या वह आशीर्वद का प्याला जिसे हम आशीर्वद देते हैं, मसीह के रक्त में सहभागिता नहीं है? क्या वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, मसीह के शरीर में सहभागिता नहीं है?<sup>17</sup> चौंकि एक रोटी है, हम जो कई हैं एक शरीर हैं; क्योंकि हम सभी एक ही रोटी में भाग लेते हैं।<sup>18</sup> इसाएल के लोगों को देखो; क्या वे जो बलिदान खाते हैं वे वेदी के सहभागी नहीं हैं?<sup>19</sup> फिर मैं क्या कहता हूँ? कि मूर्तियों को बलिदान किया गया भोजन कुछ है, या कि एक मूर्ति कुछ है?<sup>20</sup> नहीं, पर मैं कहता हूँ कि जो बाते गृह-यद्यपी बलिदान करते हैं, वे राक्षसों को बलिदान करते हैं और परमेश्वर को नहीं, और मैं नहीं चाहता कि तुम राक्षसों के सहभागी बनो।<sup>21</sup> तुम प्रभु का प्याला और राक्षसों का प्याला नहीं पी सकते; तुम प्रभु की मेज़ और राक्षसों की मेज़ में भाग नहीं ले सकते।<sup>22</sup> या क्या हम प्रभु को ईर्ष्या दिलाते हैं? हम उससे अधिक शक्तिशाली नहीं हैं, क्या हम?<sup>23</sup> सभी चीजें अनुमत हैं, लेकिन सभी चीजें लोगों को नहीं बनातीं।<sup>24</sup> कोई भी अपने लाभ की तलाश न करे, बल्कि अपने पड़ोसी की लाभ की।<sup>25</sup> मांस बाजार में जो कुछ बेचा जाता है उसे बिना प्रश्न पूछे खाओ, विवेक के लिए;<sup>26</sup> क्योंकि पृथक् प्रभु की है, और जो कुछ उसमें है।<sup>27</sup> यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें आमंत्रित करता है और तुम जाना चाहते हो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाता है उसे बिना प्रश्न पूछे खाओ, विवेक के लिए।<sup>28</sup> लेकिन यदि कोई तुमसे कहता है, "यह मूर्तियों को बलिदान किया गया मांस है," तो उसे मत खाओ, जिसने तुम्हें सुचित किया उसके लिए, और विवेक के लिए;<sup>29</sup> अब "विवेक" से मेरा मतलब तुम्हारा अपना नहीं है, बल्कि दूसरे व्यक्ति का; क्योंकि मेरी स्वतंत्रता का न्याय दूसरे के विवेक से क्यों किया जाता है?<sup>30</sup> यदि मैं धन्यवाद के साथ भाग लेता हूँ, तो मैं उस चीज़ के लिए बदनाम क्यों हूँ जिसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ?<sup>31</sup> इसलिए, चाहे तुम खाओ या पियो, या जो कुछ भी करो,

सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।<sup>32</sup> यहूदियों या यूनानियों को, या परमेश्वर की कलीसिया को ठेस मत पहुँचाओ; <sup>33</sup> जैसे मैं भी सभी चीजों में सभी को प्रसन्न करता हूँ न कि अपने लाभ की तलाश में, बल्कि कई लोगों के लाभ की, ताकि वे बच सकें।

**11** मेरे अनुकरणकर्ता बनो, जैसे मैं मसीह का अनुकरण करता हूँ।<sup>1</sup> अब मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ क्योंकि तुम बर बात में मुझे याद रखते हो, और उन परंपराओं को दृष्टा से थामे रहते हो, जैसे मैंने उन्हें दिया था।<sup>2</sup> परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम समझो कि मसीह हर पुरुष का सिर है, और पुरुष स्त्री का सिर है, और परमेश्वर मसीह का सिर है।<sup>4</sup> हर पुरुष जो प्रार्थना करते समय या भविष्यवाणी करते समय अपने सिर को ढोके बिना रहती है, अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह उस स्त्री के समान है जिसका सिर मुंदा हुआ है।<sup>6</sup> क्योंकि यदि कोई स्त्री अपने सिर को नहीं ढकती है, तो उसका बाल भी कटवा ले; परन्तु यदि किसी स्त्री के लिए यह अपमानजनक है कि उसका बाल कर्ते या उसका सिर मुंदा जाए, तो वह अपने सिर को ढके।<sup>7</sup> क्योंकि एक पुरुष को अपने सिर को ढकना नहीं चाहिए, क्योंकि वह परमेश्वर की छवि और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है।<sup>8</sup> क्योंकि पुरुष स्त्री से उत्पन्न नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से उत्पन्न हुई,<sup>9</sup> क्योंकि वास्तव में पुरुष स्त्री के लिए नहीं, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए बनाई गई थी।<sup>10</sup> इसलिए स्त्री को अपने सिर पर अधिकार का एक चिह्न होना चाहिए, स्वर्गद्वारों के कारण।<sup>11</sup> हालांकि, प्रभु में, न तो स्त्री पुरुष से स्वतंत्र है, और न ही पुरुष स्त्री से स्वतंत्र है।<sup>12</sup> क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से उत्पन्न होती है, वैसे ही पुरुष का जन्म स्त्री के माध्यम से होता है, और सभी चीजें परमेश्वर से उत्पन्न होती हैं।<sup>13</sup> अपने आप निर्णय करो: क्या यह उचित है कि कोई स्त्री अपने सिर को ढके बिना परमेश्वर से प्रार्थना करे?<sup>14</sup> क्या प्रकृति स्वयं तुम्हें यह नहीं सिखाती कि यदि किसी पुरुष के लंबे बाल होते हैं, तो यह उसके लिए अपमानजनक है,<sup>15</sup> परन्तु यदि किसी स्त्री के लंबे बाल होते हैं, तो यह उसके लिए महिमा है? क्योंकि उसके बाल उसे आवरण के रूप में दिए गए हैं।<sup>16</sup> परन्तु यदि कोई विवाद करने के इच्छुक है, तो हमारे पास ऐसी कोई प्रथा नहीं है, और न ही परमेश्वर की कलीसियाँ मैं हैं।<sup>17</sup> अब इस अगले निर्देश को देते समय मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता, क्योंकि तुम एकत्र होते हो न कि अच्छे के लिए बल्कि बुरे के लिए।<sup>18</sup> क्योंकि, पहले स्थान पर, जब तुम कलीसिया के रूप में

## 1 कुरिन्यियों

एकत्र होते हो, तो मैं सुनता हूँ कि तुम्हारे बीच विभाजन हैं, और आंशिक रूप से मैं इसे मानता हूँ।<sup>19</sup> क्योंकि तुम्हारे बीच गुट भी होने चाहिए, ताकि जो स्वीकृत हैं वे तुम्हारे बीच प्रकट हो सकें।<sup>20</sup> इसलिए जब तुम एकत्र होते हो, तो यह प्रभु का भोज खाने के लिए नहीं है,<sup>21</sup> क्योंकि जब तुम खोते हो, तो हर एक पहले अपना भोजन लेता है, और एक भूखा रहता है जबकि दूसरा नशे में हो जाता है।<sup>22</sup> क्या? क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए घर नहीं हैं? या क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया का अपमान करते हों और जिनके पास कुछ नहीं है उन्हें सर्विदा करते हों? मैं तुम्हें क्या कहूँ? क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ? इसमें मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता।<sup>23</sup> क्योंकि मैंने प्रभु से वही प्राप्त किया जो मैंने तुम्हें दिया, कि प्रभु यीशु ने, जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली;<sup>24</sup> और धन्यवाद देने के बाद, उसने उसे तोड़ा और कहा, "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए है; इसे मेरी स्मृति में करो।"<sup>25</sup> उसी प्रकार उसने भोजन के बाद प्याला लिया और कहा, "यह प्याला मेरे लाह में नई वाचा है; इसे, जब भी तुम पीते हो, मेरी स्मृति में करो।"<sup>26</sup> क्योंकि जब भी तुम रोटी को खाते हों और प्याला पीते हों, तो तुम प्रभु की मृत्यु की धोषणा करते हो जब तक वह नहीं आता।<sup>27</sup> इसलिए जो कोई प्रभु की रोटी खाता है या प्याला पीता है, वह प्रभु के शरीर और लाह का दोषी होगा।<sup>28</sup> परन्तु एक व्यक्ति को अपने आप को जंचना चाहिए, और ऐसा करते हुए उसे रोटी खानी चाहिए और प्याला पीना चाहिए।<sup>29</sup> क्योंकि जो खाता और पीता है वह अपने आप पर न्याय खाता और पीता है यदि वह शरीर को सही ढंग से नहीं पहचानता।<sup>30</sup> इसी कारण तुम में से कई लोग कमज़ोर और बीमार हैं, और कुछ सो गए हैं।<sup>31</sup> परन्तु यदि हम अपने आप को सही ढंग से जांचते, तो हम पर न्याय नहीं होता।<sup>32</sup> परन्तु जब हम पर न्याय होता है, तो हम पर प्रभु द्वारा अनुशासित होते हैं ताकि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।<sup>33</sup> इसलिए, मेरे भाइयों और बहनों, जब तुम खाने के लिए एकत्र होते हो, तो एक दूसरे की प्रतीक्षा करो।<sup>34</sup> यदि कोई भूखा है तो उसे घर पर खा लेने दो, ताकि तुम न्याय के लिए एकत्र न हो। शेष मामलों के लिए, मैं आने पर निर्देश द्वांग।

**12** अब आंतिक वरदानों के विषय में, भाइयों और बहनों, मैं नहीं चाहता कि तुम अनजान रहो।<sup>2</sup> तुम जानते हो कि जब तुम मूर्तिपूजक थे, तो तुम गूंगी मूर्तियों की ओर खींचे जाते थे, जैसे भी तुम खींचे जाते थे।<sup>3</sup> इसलिए मैं तुम्हें यह बताता हूँ कि कोई भी जो परमेश्वर के आत्मा से बोलता है, यह नहीं कहता, "यीशु शापित है," और कोई भी "यीशु प्रभु है" नहीं कह सकता, सिवाय

पवित्र आत्मा के द्वारा।<sup>4</sup> अब वरदानों की विभिन्नताएँ हैं, परंतु आत्मा एक ही है।<sup>5</sup> और सेवाओं की विभिन्नताएँ हैं, और प्रभु एक ही है।<sup>6</sup> प्रभावों की विभिन्नताएँ हैं, परंतु परमेश्वर एक ही है जो सब कुछ सब व्यक्तियों में करता है।<sup>7</sup> परंतु प्रयेक को आत्मा का प्रकट होना सामान्य भलाई के लिए दिया गया है।<sup>8</sup> क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा ज्ञान का वचन दिया जाता है, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान का वचन;<sup>9</sup> दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा विश्वास, और दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा चंगाई के वचन,<sup>10</sup> और दूसरे को चमकलार करने की शक्ति, और दूसरे को भविष्यवाणी, और दूसरे को आत्माओं की पहचान, दूसरे को विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, और दूसरे को भाषाओं का अर्थ।<sup>11</sup> परंतु वही एक आत्मा इन सब चीजों को करता है, प्रयेक को व्यक्तिगत रूप से अपनी इच्छा के अनुसार बांटता है।<sup>12</sup> क्योंकि जैसे शरीर एक है और उसके कई अंग हैं, और शरीर के सभी अंग, यथापि वे कई हैं, एक ही शरीर है, वैसे ही मसीह भी है।<sup>13</sup> क्योंकि एक आत्मा के द्वारा हम सब एक शरीर में बपतिस्मा लिए गए, चाहे यहूदी हों या यूनानी, चाहे दास हों या स्वतंत्र, और हम सब एक आत्मा को पीने के लिए दिए गए।<sup>14</sup> क्योंकि शरीर एक अंग नहीं है, बल्कि कई हैं।<sup>15</sup> यदि पैर कहे, "क्योंकि मैं हाथ नहीं हूँ, मैं शरीर का अंग नहीं हूँ," तो यह इस कारण से शरीर का अंग नहीं है।<sup>16</sup> और यदि कान कहे, "क्योंकि मैं ऊंख नहीं हूँ, मैं शरीर का अंग नहीं हूँ," तो यह इस कारण से शरीर का अंग नहीं है।<sup>17</sup> यदि पूरा शरीर ऊंख होता, तो सुनना कहां होता? यदि पूरा सुनना होता, तो सूंधने की भावना कहां होती है?<sup>18</sup> परंतु अब परमेश्वर ने शरीर में अंगों को, प्रत्येक को अपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्थित किया है।<sup>19</sup> यदि वे सब एक अंग होते, तो शरीर कहां होता?<sup>20</sup> परंतु अब कई अंग हैं, परंतु एक शरीर।<sup>21</sup> और अंख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है"; या फिर सिर पैरों से, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है!"<sup>22</sup> इसके विपरीत, यह अधिक सत्य है कि शरीर के वे अंग जो कमज़ोर प्रतीत होते हैं, आवश्यक हैं;<sup>23</sup> और शरीर के वे अंग जिन्हें हम कम सम्माननीय मानते हैं, उन पर हम अधिक सम्मान देते हैं, और हमारे कम प्रस्तुत अंगों को अधिक सज्जा के साथ व्यवहार किया जाता है,<sup>24</sup> जबकि हमारे अधिक प्रस्तुत अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं है। परंतु परमेश्वर ने शरीर को इस प्रकार से बनाया है, कि जिस अंग में कमी थी, उसे अधिक सम्मान दिया जाए,<sup>25</sup> ताकि शरीर में कोई विभाजन न हो, परंतु अंग एक-दूसरे की समान देवताभाल करें।<sup>26</sup> और यदि शरीर का एक अंग दुखी होता है, तो सभी अंग उसके साथ दुखी होते हैं, यदि एक अंग का सम्मान होता है, तो सभी अंग

## 1 कुरिन्यियों

उसके साथ आनंदित होते हैं।<sup>27</sup> अब तुम मसीह का शरीर हो, और व्यक्तिगत रूप से उसके अंग हो।<sup>28</sup> और परमेश्वर ने कलीसिया में नियुक्त किया है, पहले प्रेरित, दूसरे भविष्यवक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर चमत्कार, फिर चार्गाई के वरदान, सहायता, प्रशासन, और विभिन्न प्रकार की भाषाएँ।<sup>29</sup> क्या सभी प्रेरित हैं? क्या सभी भविष्यवक्ता हैं? क्या सभी शिक्षक हैं? क्या सभी चमत्कार करने वाले हैं?<sup>30</sup> क्या सभी के पास चार्गाई के वरदान हैं? क्या सभी भाषाओं में बोलते हैं? क्या सभी अर्थ करते हैं?<sup>31</sup> परंतु बड़े वरदानों की उत्सुकता से इच्छा करो। और फिर भी, मैं तुम्हें एक बहुत ही उत्तम मार्ग दिखाने जा रहा हूँ।

**13** यदि मैं मनुषों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलूँ, परंतु प्रेम न रखूँ, तो मैं एक बजता हुआ घड़ियाल या झनझनाता हुआ झाझा बन गया हूँ।<sup>2</sup> यदि मुझे भविष्यवाणी करने का वरदान हो और सब भेदों और सब ज्ञान की समझ हो, और यदि मेरे पास विश्वास हो कि पहाड़ों को हटा सकूँ, परंतु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ।<sup>3</sup> और यदि मैं अपनी सारी संपत्ति दान में दें दूँ, और यदि मैं अपने शरीर को इस प्रकार सौंप दूँ कि मैं धमंड कर सकूँ, परंतु प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं होता।<sup>4</sup> प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है, यह ईर्ष्या नहीं करता; प्रेम धमंड नहीं करता, यह अहंकारी नहीं है।<sup>5</sup> यह अनुचित व्यवहार नहीं करता, यह अपने लाभ की खोज नहीं करता; यह उत्तेजित नहीं होता, यह बुराई का लेखा नहीं रखता,<sup>6</sup> यह अधर्म में आनंदित नहीं होता, परंतु सत्य के साथ आनंदित होता है;<sup>7</sup> यह सब कुछ सहन करता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा करता है, सब कुछ सहता है।<sup>8</sup> प्रेम कभी असफल नहीं होता; परंतु यदि भविष्यवाणियों के वरदान हैं, तो वे समाप्त हो जाएंगे; यदि भाषाएँ हैं, तो वे थप जाएंगी; यदि ज्ञान है, तो वह समाप्त हो जाएगा।<sup>9</sup> क्योंकि हम आंशिक रूप से जानते हैं, और आंशिक रूप से भविष्यवाणी करते हैं;<sup>10</sup> परंतु जब पूर्णता आएगी, तो आंशिक समाप्त हो जाएगा।<sup>11</sup> जब मैं बच्चा था, तो बच्चे की तरह बोलता था, बच्चे की तरह सोचता था, बच्चे की तरह तर्क करता था; जब मैं पुरुष बन गया, तो मैंने बचपन की बातें छोड़ दीं।<sup>12</sup> क्योंकि अब हम दर्पण में धृथला देखते हैं, परंतु तब आमने-सामने; अब मैं आंशिक रूप से जानता हूँ, परंतु तब मैं पूरी तरह जानूरा, जैसे मैं पूरी तरह जाना गया हूँ।<sup>13</sup> परंतु अब विश्वास, आशा, और प्रेम बने रहते हैं, ये तीन; परंतु इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

**14** प्रेम का अनुसरण करो, फिर भी आत्मिक वरदानों की तीव्र इच्छा करो, पर विशेष रूप से कि तुम भविष्यवाणी कर सको।<sup>2</sup> क्योंकि जो व्यक्ति भाषा में बोलता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बोलता है; क्योंकि कोई नहीं समझता, परन्तु अपनी आत्मा में वह रहस्यों की बातें करता है।<sup>3</sup> परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उत्त्रति, प्रोत्साहन, और सांत्वना के लिए बोलता है।<sup>4</sup> जो व्यक्ति भाषा में बोलता है, वह अपनी उत्त्रति करता है; परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह कलीसिया की उत्त्रति करता है।<sup>5</sup> अब मैं चाहता हूँ कि तुम सब भाषा में बोलो, परन्तु विशेष रूप से कि तुम भविष्यवाणी करो; और जो भविष्यवाणी करता है वह उस व्यक्ति से बड़ा है जो भाषा में बोलता है, जब तक कि वह व्याख्या न कर, ताकि कलीसिया उत्त्रति प्राप्त कर सके।<sup>6</sup> परन्तु अब, भाइयों और बहनों, यदि मैं तुम्हारे पास भाषा में बोलते हुए आँऊँ, तो मैं तुम्हें कैसे लाभान्वित करूँगा जब तक कि मैं तुम्हारे साथ प्रकाशन, या ज्ञान, या भविष्यवाणी, या शिक्षा के माध्यम से न बोलूँ।<sup>7</sup> यहाँ तक कि निर्जीव वाद्ययंत्र, चाहे बांसुरी ही या वीणा, ध्वनि उत्पन्न करते समय, यदि वे स्वरों में भेद उत्पन्न नहीं करते, तो कैसे जाना जाएगा कि बांसुरी या वीणा पर क्या बजाया गया है?<sup>8</sup> क्योंकि यदि तुरहीं अस्पृश ध्वनि उत्पन्न करती है, तो कौन युद्ध के लिए तैयार होगा?<sup>9</sup> तो तुम भी, जब तक तुम भाषा के साथ समझने योग्य वाणी उत्पन्न नहीं करते, कैसे जाना जाएगा कि क्या बोला गया है? क्योंकि तुम केवल हवा से बातें कर रहे होगो।<sup>10</sup> संभवतः, संसार में बहुत सी भाषाएँ हैं, और कोई भी अर्थीहीन नहीं है।<sup>11</sup> तो यदि मैं भाषा का अर्थ नहीं जानता, तो मैं बोलने वाले के लिए विदेशी हो जाऊँगा, और बोलने वाला मेरे लिए विदेशी होगा।<sup>12</sup> तो तुम भी, चूँकि तुम आत्मिक वरदानों को प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो, कलीसिया की उत्त्रति के लिए उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करो।<sup>13</sup> इसलिए, जो व्यक्ति भाषा में बोलता है, उसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह व्याख्या कर सके।<sup>14</sup> क्योंकि यदि मैं भाषा में प्रार्थना करता हूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि निष्कल है।<sup>15</sup> तो परिणाम क्या है? मैं आत्मा के साथ प्रार्थना करूँगा, परन्तु मैं बुद्धि के साथ भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा के साथ गाऊँगा, और मैं बुद्धि के साथ भी गाऊँगा।<sup>16</sup> क्योंकि अन्यथा, यदि तुम केवल आत्मा में परमेश्वर को आशीर्वाद देते हो, तो बाहरी व्यक्ति तुम्हारे धन्यवाद देने पर "आमीन" कैसे कहेगा, क्योंकि वह नहीं समझता कि तुम क्या कह रहे हो?<sup>17</sup> क्योंकि तुम अच्छी तरह से धन्यवाद दे रहे हो, परन्तु दूसरों व्यक्ति उत्त्रति नहीं प्राप्त कर रहा है।<sup>18</sup> मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सब से अधिक भाषाओं में बोलता हूँ,<sup>19</sup> फिर भी,

# 1 कुरिन्यियों

कलीसिया में मैं अपनी बुद्धि के साथ पाँच शब्द बोलना परसंद करता हूँ ताकि मैं दूसरों को भी सिखा सकूँ, बजाय दस हजार शब्द भाषा में बोलने के।<sup>20</sup> भाइयों और बहनों, अपनी सोच में बच्चों की तरह न बनो; परन्तु बुराई में शिशु बनो, परन्तु अपनी सोच में परिपक्व बनो।<sup>21</sup> व्यवस्था में लिखा है:

"अजीब भाषाओं के लोगों द्वारा और विदेशियों के होंठों द्वारा मैं इस लोगों से बोलूँगा, और तब भी वे मेरी नहीं सुनेंगे" प्रभु कहता है।

<sup>22</sup> तो फिर, भाषाएँ एक चिन्ह हैं, विश्वासियों के लिए नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिए; परन्तु भविष्यवाणी अविश्वासियों के लिए नहीं, बल्कि विश्वासियों के लिए है।<sup>23</sup> इसलिए यदि पूरी कलीसिया एकत्र होती है और सभी लोग भाषाओं में बोलते हैं, और बाहरी या अविश्वासी प्रवेश करते हैं, तो क्या वे नहीं कहेंगे कि तुम पागल हो? <sup>24</sup> परन्तु यदि सभी भविष्यवाणी करते हैं, और एक अविश्वासी या बाहरी प्रवेश करता है, तो वह सब के द्वारा दोषी ठहराया जाता है, वह सब के द्वारा उत्तरदायी ठहराया जाता है;<sup>25</sup> उसके हृदय के रहस्य प्रकट होते हैं; और इसलिए वह अपने चेहरे पर गिरकर परमेश्वर की आराधना करेगा, यह घोषित करते हुए कि परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारे बीच है।<sup>26</sup> तो परिणाम क्या है, भाइयों और बहनों? जब तुम एकत्र होते हो, प्रत्येक के पास एक भजन है, एक शिक्षा है, एक प्रकाशन है, एक भाषा है, एक व्याख्या है। सभी चीजें उत्पन्नि के लिए की जानी चाहिए।<sup>27</sup> यदि कोई भाषा में बोलता है, तो यह दो या अधिकतम तीन के द्वारा हीना चाहिए, और प्रत्येक बारी-बारी से, और एक को व्याख्या करनी चाहिए;<sup>28</sup> परन्तु यदि कोई व्याख्याता नहीं है, तो उसे कलीसिया में चुप रहना चाहिए, और उसे अपने आप से और परमेश्वर से बोलना चाहिए।<sup>29</sup> दो या तीन भविष्यवक्ता बोलें, और अन्य लोग निर्णय लें।<sup>30</sup> परन्तु यदि किसी और को जो बैठा है, एक प्रकाशन मिलता है, तो पहले व्यक्ति को चुप रहना चाहिए।<sup>31</sup> क्योंकि तुम सभी एक-एक करके भविष्यवाणी कर सकते हो, ताकि सभी सीख सके और सभी को प्रोत्साहन मिले,<sup>32</sup> और भविष्यवक्ताओं की आत्माएँ भविष्यवक्ताओं के अधीन होती हैं;<sup>33</sup> क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है, परन्तु शांति का। जैसे सभी संतों की कलीसियाओं में है,<sup>34</sup> स्त्रियों को कलीसियाओं में चुप रहना चाहिए; क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, परन्तु उन्हें अपने आप को अधीन करना चाहिए, जैसे कि व्यवस्था भी कहती है।<sup>35</sup> यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं, तो उन्हें अपने पति से घर पर पूछना चाहिए; क्योंकि कलीसिया में स्त्री के लिए बोलना

अनुचित है।<sup>36</sup> या क्या यह तुमसे था कि परमेश्वर का वचन पहले निकला? या क्या यह केवल तुम्हारे पास आया है?<sup>37</sup> यदि कोई सोचता है कि वह भविष्यवक्ता है या आस्तिक है, तो उसे यह पहचानना चाहिए कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ वे प्रभु की आज्ञा हैं।<sup>38</sup> परन्तु यदि कोई इसे नहीं पहचानता, तो वह नहीं पहचाना जाएगा।<sup>39</sup> इसलिए, मेरे भाइयों और बहनों भविष्यवाणी करने की तीव्र इच्छा करो, और भाषाओं में बोलने से मना मत करो।<sup>40</sup> परन्तु सभी चीजें उचित और व्यवस्थित रूप से की जानी चाहिए।

**15** अब मैं तुम्हें, भाइयों और बहनों, उस सुसमाचार को बताता हूँ, जो मैंने तुम्हें सुनाया था, जिसे तुमने भी ग्रहण किया, जिसमें तुम शिर भी हो,<sup>2</sup> जिसके द्वारा तुम भी उद्धार पाते हो, यदि तुम उस वचन को दृढ़ता से थामे रहते हो, जो मैंने तुम्हें सुनाया था, अन्यथा तुमने व्यर्थ विश्वास किया।<sup>3</sup> क्योंकि मैंने तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण बात सौंपी, जो मैंने भी प्राप्त की, कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा, जैसा कि शास्त्रों में लिखा है,<sup>4</sup> और कि वह गाढ़ा गया, और कि वह तीसरे दिन जी उठा, जैसा कि शास्त्रों में लिखा है,<sup>5</sup> और कि वह कैफा को दिखाई दिया, फिर बारह को।<sup>6</sup> इसके बाद, वह एक समय में पाँच सौ से अधिक भाइयों और बहनों का दिखाई दिया, जिनमें से अधिकांश अब तक जीवित हैं, परंतु कुछ सो गए हैं।<sup>7</sup> फिर वह याकूब को दिखाई दिया, फिर सभी प्रेरितों को;<sup>8</sup> और सबसे अंत में, जैसे समय से पहले जन्मे को, वह मुझे भी दिखाई दिया।<sup>9</sup> क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, और प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं हूँ, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया।<sup>10</sup> परंतु परमेश्वर की अनुग्रह से मैं जो हूँ, वह हूँ, और उसका अनुग्रह मुझ पर व्यर्थ नहीं हुआ; परंतु मैंने उन सब से अधिक परिश्रम किया, फिर भी मैं नहीं परंतु परमेश्वर का अनुग्रह जो मुझ में है।<sup>11</sup> वाहे वह मैं हूँऊँ या वे, हम ऐसे ही प्रचार करते हैं और तुमने ऐसे ही विश्वास किया।<sup>12</sup> अब यदि मसीह का प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है, तो तुम मैं से कुछ किसे कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं होता? <sup>13</sup> परंतु यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं होता, तो मसीह भी नहीं जी उठा;<sup>14</sup> और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार व्यर्थ है, तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।<sup>15</sup> इसके अलावा, हम परमेश्वर के झूठे साक्षी भी पाए जाते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के विरुद्ध साक्षी देते हैं कि उसने मसीह को उठाया, जिसे उसने नहीं उठाया, यदि वास्तव में मरे हुए नहीं उठते।<sup>16</sup> क्योंकि यदि मरे हुए नहीं उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा;<sup>17</sup> और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; तुम अब भी अपने पापों में हो।

## 1 कुरिन्यियों

<sup>18</sup> तब वे भी जो मसीह में सो गए हैं, नष्ट हो गए हैं। <sup>19</sup> यदि हमने केवल इस जीवन में मसीह में आशा की है, तो हम सबसे अधिक दया के पात्र हैं। <sup>20</sup> परंतु अब मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, जो सो गए हैं उनमें से पहला फल है। <sup>21</sup> क्योंकि जैसे एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, वैसे ही एक मनुष्य के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। <sup>22</sup> क्योंकि जैसे आदम में सब बरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जीवित किए जाएँगे। <sup>23</sup> परंतु प्रयेक अपनी अपनी बारी में: मसीह पहला फल, उसके बाद वे जो मसीह के हैं, उसके आगमन पर, <sup>24</sup> तब अंत आएगा, जब वह राज्य को हमारे परमेश्वर और पिता को सौंप देगा, जब वह सभी शासन और सभी अधिकार और शक्ति को समाप्त कर देगा। <sup>25</sup> क्योंकि उसे राज्य करना चाहिए जब तक कि वह अपने सभी शत्रुओं को अपने पैरों के नीचे न कर दे। <sup>26</sup> अंतिम शत्रु जो समाप्त किया जाएगा वह मृत्यु है। <sup>27</sup> क्योंकि उसने सभी चीजों को उसके पैरों के नीचे अधीन कर दिया है। परंतु जब वह कहता है, “सभी चीजें अधीन कर दी गई हैं,” तो यह स्पष्ट है कि यह उसे छोड़कर है जिसने सभी चीजों को उसके अधीन किया। <sup>28</sup> जब सभी चीजें उसके अधीन कर दी जाएँगी, तब पुत्र स्वयं भी उसके अधीन हो जाएगा जिसने सभी चीजों को उसके अधीन किया, ताकि परमेश्वर सब में सब हो सके। <sup>29</sup> अन्यथा, वे जो मरे हुओं के लिए बपतिस्मा लेते हैं, क्या करेंगे? यदि मरे हुए बिल्कुल नहीं उठते, तो उनके लिए बपतिस्मा क्यों लिया जाता है? <sup>30</sup> हम हर घंटे खतरे में क्यों हैं? <sup>31</sup> मैं तुम्हारे लिए, भाइयों और बहनों, मसीह यीशु हमारे प्रभु में तुम्हारे ऊपर गर्व करता हूँ कि मैं प्रतिदिन मरता हूँ। <sup>32</sup> यदि मैंने मानव उद्देश्यों से इफिसुस में जंगली जानवरों से लड़ाई की, तो मुझे क्या लाभ है? यदि मरे हुए नहीं उठते,

“आओ खाएँ और पिएँ, क्योंकि कल हम मर जाएँगे”

<sup>33</sup> धोखा मत खाओ: “बुरी संगति अच्छे आचरण को बिघाड़ देती है।” <sup>34</sup> नैतिक रूप से सचेत हो जाओ और पाप करना बंद करो, क्योंकि कुछ के पास परमेश्वर का ज्ञान नहीं है। मैं यह तुम्हारी लज्जा के लिए कहता हूँ। <sup>35</sup> परंतु कोई कहेगा, “मरे हुए कैसे उठाए जाते हैं?” और वे किस प्रकार के शरीर के साथ आते हैं? <sup>36</sup> तू मूर्ख हैं! जो तू बोता है, वह तब तक जीवित नहीं होता जब तक कि वह मर न जाए, <sup>37</sup> और जो तू बोता है, तू वह शरीर नहीं बोता जो होना है, परंतु एक नंगा दाना, शायद गोहूँ का या किसी और का। <sup>38</sup> परंतु परमेश्वर उसे एक शरीर देता है जैसा वह चाहता है, और प्रत्येक बीज को उसका अपना शरीर। <sup>39</sup> सभी मांस एक जैसा नहीं होता, परंतु एक प्रकार का मांस मनुष्यों का होता है, दूसरा पशुओं का,

दूसरा पक्षियों का, और दूसरा मछलियों का। <sup>40</sup> आकाशीय शरीर भी होते हैं और पृथ्वी के शरीर भी, परंतु आकाशीय की महिमा एक होती है, और पृथ्वी की महिमा दूसरी। <sup>41</sup> सूर्य की एक महिमा होती है, चंद्रमा की दूसरी महिमा होती है, और तारों की दूसरी महिमा होती है; क्योंकि तारे की महिमा तारे से भिन्न होती है। <sup>42</sup> इसी प्रकार मरे हुओं का पुनरुत्थान भी होता है। यह नाशवान शरीर बोया जाता है, यह अविनाशी शरीर उठाया जाता है, <sup>43</sup> यह अपमान में बोया जाता है, यह महिमा में उठाया जाता है, यह कमज़ोरी में बोया जाता है, यह शक्ति में उठाया जाता है, <sup>44</sup> यह प्राकृतिक शरीर बोया जाता है, यह अतिक शरीर उठाया जाता है। यदि प्राकृतिक शरीर है, तो अतिक शरीर भी है। <sup>45</sup> इसी प्रकार लिखा है: “पहला मनुष्य, आदम, जीवित व्यक्ति बना।” <sup>46</sup> अंतिम आदम जीवन देने वाली आत्मा बना। <sup>47</sup> हालांकि, आत्मिक पहले नहीं है, परंतु प्राकृतिक; फिर आत्मिक। <sup>48</sup> पहला मनुष्य पृथ्वी से है, मिट्टी का; दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है। <sup>49</sup> जैसा मिट्टी का है, वैसे ही वे भी हैं जो मिट्टी के हैं; और जैसा स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। <sup>50</sup> जैसे हमने मिट्टी के स्वरूप को धारण किया है, वैसे ही हम स्वर्गीय के स्वरूप को भी धारण करेंगे। <sup>51</sup> अब मैं यह कहता हूँ, भाइयों और बहनों, कि मांस और रक्त परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकते; न ही नाशवान अविनाशी का उत्तराधिकारी होता है। <sup>52</sup> देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब नहीं साझेंगे, परंतु हम सब बदल जाएँगे, <sup>53</sup> एक पल में, एक आँख के झपकने में, अंतिम तुरही पर, क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। <sup>54</sup> क्योंकि इस नाशवान को अविनाशी धारण करना चाहिए, और इस मर्त्य को अमरता धारण करनी चाहिए। <sup>55</sup> परंतु जब यह नाशवान अविनाशी धारण करेगा, और यह मर्त्य अमरता धारण करेगा, तब वह चंद्रमा पूरा होगा जो लिखा है: “मृत्यु विजय में निगल ली गई है।

<sup>56</sup> हे मृत्यु तेरी विजय कहाँ है? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ है?

<sup>57</sup> मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है; <sup>58</sup> परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजय देता है। <sup>59</sup> इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, दृढ़ रहो, अचल रहो, प्रभु के कार्य में हमेशा उत्तराति करते रहो, यह जानते हुए कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।

## 1 कुरिन्यियों

**16** अब पवित्र जनों के लिए चंदा इकट्ठा करने के विषय में, जैसा मैंने गलातिया की कलीसियाँ औं को निर्देश दिया था, वैसे ही तुम भी करो।<sup>2</sup> हर सप्ताह के पहले दिन, तुम में से हर एक को अपनी समृद्धि के अनुसार कुछ अलग रखकर बचाना चाहिए, ताकि जब मैं आऊं, तो कोई संग्रह करने की आवश्यकता न हो।<sup>3</sup> जब मैं आऊंगा, तो जिन्हें तुम स्वीकृति दोगे, मैं उन्हें पत्रों के साथ तुम्हारा उपहार यरूशलेम ले जाने के लिए भेजूंगा;<sup>4</sup> और यदि मेरे लिए भी जाना उचित हो, तो वे मेरे साथ जाएंगे।<sup>5</sup> परन्तु मैं मकिदुनिया होकर जा रहा हूँ;<sup>6</sup> और शायद मैं तुम्हारे साथ ठहरूं, या सर्वियों तक भी रहूँ, ताकि तुम मुझे जहाँ कहीं मैं जाऊं, वहाँ भेज सको।

<sup>7</sup> क्योंकि मैं अब तुम्हें केवल जाते समय नहीं देखना चाहता; क्योंकि मैं आशा करता हूँ कि यदि प्रभु की इच्छा हो, तो कुछ समय तुम्हारे साथ रहूँ।<sup>8</sup> परन्तु मैं पिन्नेकुस्त तक इफिसुस में रहूंगा;<sup>9</sup> क्योंकि प्रभावी सेवा के लिए एक व्यापक द्वार मेरे लिए खुला है, और बहुत से विरोधी भी हैं।<sup>10</sup> अब यदि तीमुथियुस आता है, तो देखो कि जब वह तुम्हारे साथ हो, तो उसे किसी बात का भय न हो, क्योंकि वह भी प्रभु का कार्य कर रहा है, जैसा मैं भी कर रहा हूँ।<sup>11</sup> इसलिए उसे तुच्छ न समझो। परन्तु उसे शांति से भेजो, ताकि वह मेरे पास आ सके; क्योंकि मैं उसे भाइयों के साथ आने की अपेक्षा करता हूँ।<sup>12</sup> अब हमारा भाई अपुल्लोस के विषय में, मैंने उसे भाइयों के साथ तुम्हारे पास आने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया; और यह उसका अभी आने का कोई इरादा नहीं था, परन्तु वह अवसर मिलने पर आएगा।<sup>13</sup> सावधान रहो, विश्वास में ढूँ रहो, पुरुषों की तरह आचरण करो, बलवान बनो।<sup>14</sup> तुम जो कुछ भी करो, वह प्रेम में किया जाए।<sup>15</sup> अब मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, भाइयों और बहनों: तुम स्टेफनास के घराने को जानते हो, कि वे अखेया के पहले फल हैं, और उन्होंने अपने आप को पवित्र जनों की सेवा के लिए समर्पित किया है,<sup>16</sup> कि तुम भी ऐसे लोगों के अधीन रहो और उन सभी के जो कार्य में सहायता करते हैं और परिश्रम करते हैं।<sup>17</sup> मैं स्टेफनास, फुर्तुनातुस, और अखाइकुस के आने से आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी ओर से जो कमी थी, उसे पूरा किया।<sup>18</sup> क्योंकि उन्होंने मेरी आत्मा और तुम्हारी आत्मा को ताजगी दी है। इसलिए, ऐसे पुरुषों को मान्यता दो।<sup>19</sup> आशिया की कलीसियाँ तुम्हें नमस्कार करती हैं। अकिला और प्रिस्का तुम्हें प्रभु में हार्दिक नमस्कार करते हैं, उनके घर में जो कलीसिया है, उसके साथ।<sup>20</sup> सभी भाई और बहनें तुम्हें नमस्कार करते हैं। एक दूसरे को पवित्र चुम्बन के साथ नमस्कार करो।<sup>21</sup> नमस्कार मेरे अपने हाथ से है—पौतुस का।<sup>22</sup> यदि कोई

प्रभु से प्रेम नहीं करता, तो वह शापित हो। मरानाथा!<sup>23</sup> प्रभु यीशु की कृपा तुम्हारे साथ हो।<sup>24</sup> मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सबके साथ हो। आमीन।

## 2 कुरिन्यों

**1** पौत्रस, जो मरीह यीशु का प्रेरित है परमेश्वर की इच्छा से, और हमारा भार्त तीमुथियुस, कोरिन्य में परमेश्वर की कलीसिया के लिए और सभी पवित्र जनों के लिए जो अखेया में हैं: <sup>2</sup> हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। <sup>3</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का ध्यावाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शांति का परमेश्वर है। <sup>4</sup> जो हमारे सब क्लेशों में हमें शांति देता है ताकि हम भी उन लोगों को शांति दे सकें जो किसी भी क्लेश में हैं, उसी शांति के साथ जिससे हम स्वयं परमेश्वर से शांति पाते हैं। <sup>5</sup> क्योंकि जैसे मरीह के दुख हमारे लिए प्रसुर मात्रा में हैं, कैसे ही हमारी शांति भी मरीह के द्वारा प्रसुर मात्रा में है। <sup>6</sup> यदि हम क्लेश में हैं, तो वह तुम्हारी शांति और उद्धार के लिए है, या यदि हम शांति में हैं, तो वह तुम्हारी शांति के लिए है, जो उसी दुखों के थैर्यूर्ध्स सहन में प्रभावी है जिन्हें हम भी सहते हैं; <sup>7</sup> और तुम्हारे लिए हमारी आशा दृढ़ है, यह जानते हुए कि जैसे तुम हमारे दुखों के सहभागी हो, वैसे ही तुम हमारी शांति के भी सहभागी हो। <sup>8</sup> क्योंकि हम नहीं चाहते कि तुम अनजान रहो, बाड़ों और बहनों, हमारे उस क्लेश के बारे में जो एशिया में हुआ, कि हम अत्यधिक बोझ से दबे हुए थे, अपनी शक्ति से परे, यहाँ तक कि हमने जीवन की आशा छोड़ दी थी। <sup>9</sup> वास्तव में, हमारे भीतर मृत्यु का निर्णय था, ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें, परंतु उस परमेश्वर पर जो मरे हुओं को जीवित करता है; <sup>10</sup> जिसने हमें इतनी बड़ी मृत्यु के खतरे से बचाया, और बचाएगा, उसी पर हमने अपनी आशा तगार्ह है। और वह हमें फिर से बचाएगा, <sup>11</sup> यदि तुम भी अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा हमारी सहायता में शामिल हो, ताकि हमारे लिए बहुत से लोगों द्वारा ध्यावाद दिया जा सके, उस कृपा के लिए जो हमें बहुतों की प्रार्थनाओं के माध्यम से मिली है। <sup>12</sup> क्योंकि हमारा गर्व यह है, हमारी अतरात्मा की गवाही, कि पवित्रता और परमेश्वर की सच्चाई में, न कि शारीरिक बुद्धि में, परंतु परमेश्वर के अनुग्रह में, हमने संसार में और विशेष रूप से तुम्हारे प्रति आचरण किया है। <sup>13</sup> क्योंकि हम तुम्हें वही लिखते हैं जो तुम पढ़ते और समझते हो, और मुझे आशा है कि तुम पूरी तरह समझोगे, <sup>14</sup> जैसा कि तुमने अंशिक रूप से हमें समझा, कि हम तुम्हारे गर्व का कारण हैं जैसे तुम भी हमारे हो, हमारे प्रभु यीशु के दिन में। <sup>15</sup> इस विश्वास में मैंने पहले तुम्हारे पास आने का इरादा किया, ताकि तुम दो बार आशीर्वद प्राप्त कर सको; <sup>16</sup> अर्थात्, मकेदोनिया की ओर जाते हुए तुम्हारे पास से गुज़रन्, और फिर मकेदोनिया से तुम्हारे पास आऊं, और तुम्हारे द्वारा यहूदिया की ओर मेरी यात्रा में सहायता प्राप्त करूँ। <sup>17</sup> इसलिए, जब मैंने ऐसा करने का इरादा किया,

तो क्या मैं डगमगाया था? या जो मैं निर्णय करता हूँ, क्या मैं शरीर के अनुसार निर्णय करता हूँ, ताकि मेरे साथ “हाँ, हाँ” और “नहीं, नहीं” एक ही समय में हो? <sup>18</sup> परंतु जैसा कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, हमारा वचन तुम्हारे लिए “हाँ और नहीं” नहीं है। <sup>19</sup> क्योंकि परमेश्वर का पुत्र, मसीह यीशु, जो तुम्हारे बीच हमारे द्वारा प्रवाचित किया गया—मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा—वह “हाँ और नहीं” नहीं था, परंतु उसमें “हाँ” है। <sup>20</sup> क्योंकि परमेश्वर की जितनी भी प्रतिज्ञाएँ हैं, उनमें “हाँ” है; इसलिए उसके द्वारा हमारा “आपीन” परमेश्वर की महिमा के लिए है। <sup>21</sup> अब वह जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में स्थिर करता है और हमें अभिषिक्त करता है, वह परमेश्वर है, <sup>22</sup> जिसने हमें भी मुहर लगाई और हमारे दिलों में आत्मा को प्रतिज्ञा के रूप में दिया। <sup>23</sup> परंतु मैं परमेश्वर को अपनी आत्मा का साक्षी बनाता हूँ, कि तुम्हें बचाने के लिए मैंने फिर से कोरिन्य नहीं आने का निर्णय किया। <sup>24</sup> यह नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास पर प्रभुत्व करते हैं, परंतु तुम्हारी खुशी के लिए तुम्हारे सहकर्त्ता हैं; क्योंकि तुम्हारे विश्वास में तुम दृढ़ खड़े हो।

**2** लेकिन मैंने अपने लिए यह तय किया कि मैं फिर से तुम्हारे पास दुख में नहीं आऊंगा। <sup>2</sup> क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुखी करूँ, तो फिर मुझे कौन प्रसन्न करेगा, सिवाय उसके जो मेरे द्वारा दुखी किया गया है? <sup>3</sup> यही बात मैंने तुम्हें लिखी थी, ताकि जब मैं आऊं, तो मुझे उन लोगों से दुख न हो जो मुझे आनन्दित करना चाहिए; तुम सब पर विश्वास रखते हुए कि मेरा आनन्द तुम सबका आनन्द होगा। <sup>4</sup> क्योंकि मैंने बहुत पीड़ा और हृदय की व्याकुलता से तुम्हें बहुत आँसुओं के साथ लिखा; ताकि तुम दुखी न हो, बल्कि तुम जान सको कि मैं तुम्हारे लिए विशेष प्रेम रखता हूँ। <sup>5</sup> लेकिन यदि किसी ने दुख पहुँचाया है, तो उसने मुझे नहीं, बल्कि कुछ हृद दर्क यह न करें कि बहुत अधिक—तुम सबको दुख पहुँचाया है। <sup>6</sup> ऐसे व्यक्ति के लिए यह दंड पर्याप्त है जो बहुमत द्वारा लगाया गया था, <sup>7</sup> इसलिए इसके विपरीत तुम्हें उसे क्षमा और सांत्वना देनी चाहिए, अन्यथा ऐसा व्यक्ति अत्यधिक दुख से अभिभूत हो सकता है। <sup>8</sup> इसलिए मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि उसके लिए अपने प्रेम की पुनः पृष्ठि करो। <sup>9</sup> क्योंकि इसी उद्देश्य के लिए मैंने भी लिखा, ताकि मैं तुम्हें परख सकूँ, कि क्या तुम सब बातों में आज्ञाकारी हो। <sup>10</sup> लेकिन जिसे तुम कुछ भी क्षमा करते हो, मैं भी क्षमा करता हूँ; वास्तव में जो मैंने क्षमा किया है, यदि मैंने कुछ भी क्षमा किया है, तो मैंने तुम्हारे लिए मसीह की उपस्थिति में किया है, <sup>11</sup> ताकि शैतान हम पर कोई लाभ न उठा सके, क्योंकि हम उसकी योजनाओं से अनजान नहीं हैं। <sup>12</sup> अब जब मैं मसीह के

## 2 कुरिन्यियों

सुसमाचार के लिए त्रौआस आया और प्रभु में मेरे लिए एक द्वारा खोला गया,<sup>13</sup> तो मूँझे अपनी आत्मा के लिए कोई विश्राम नहीं मिला, क्योंकि मैंने तीतुस, अपने भाई को नहीं पाया; लेकिन उनसे विदा लेकर, मैं मकिदुनिया छला गया।<sup>14</sup> लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें हमेशा मसीह में विजय दिलाता है, और हमारे माथ्यम से हर स्थान में उसके ज्ञान की सुगंध प्रकट करता है।<sup>15</sup> क्योंकि हम परमेश्वर के लिए मसीह की सुगंध है, उन लोगों के बीच जो बचा जा रहे हैं और उन लोगों के बीच जो नष्ट हो रहे हैं।<sup>16</sup> एक के लिए मृत्यु से मृत्यु तक की सुगंध, दूसरे के लिए जीवन से जीवन तक की सुगंध। और इन बातों के लिए कौन उपयुक्त है?<sup>17</sup> क्योंकि हम कई लोगों की तरह नहीं हैं, जो परमेश्वर के वचन का व्यापार करते हैं, बल्कि ईमानदारी से, बल्कि परमेश्वर से, हम मसीह में परमेश्वर की दृष्टि में बोतते हैं।

**3** क्या हम फिर से अपने आप की प्रशंसा करने लगे हैं? या क्या हमें तुम्हारे पास या तुमसे सिफारिश के पत्रों की आवश्यकता है, जैसे कुछ लोगों को होती है? <sup>2</sup> तुम हमारे पत्र हो, जो हमारे हृदयों में लिखा है, जिसे सभी लोग जानते और पढ़ते हैं,<sup>3</sup> अपने आप को मसीह के पत्र के रूप में प्रकट करते हुए, जो हमारे द्वारा दिया गया है, स्याही से नहीं बल्कि जीवित परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है, पत्थर की पट्टिकाओं पर नहीं बल्कि मानव हृदय की पट्टिकाओं पर।<sup>4</sup> ऐसा आत्मविभास हमें मसीह के माथ्यम से परमेश्वर के प्रति है।<sup>5</sup> यह नहीं कि हम अपने आप में सक्षम हैं कि कुछ भी अपने आप से आया है, बल्कि हमारी क्षमता परमेश्वर से है, <sup>6</sup> जिसने हमें एक नए वाचा के सेवकों के रूप में सक्षम बनाया, जो अक्षर का नहीं बल्कि आत्मा का है, क्योंकि अक्षर मारता है, पर आत्मा जीवन देती है।<sup>7</sup> पर यदि मृत्यु की सेवा, जो पर्याप्तों पर अक्षरों में अकित थी, महिमा के साथ आई, ताकि इस्साएल के पुत्र मूसा के बेहोरे की महिमा के कारण उसके बेहोरे को ध्यान से न देख सके, क्योंकि वह मुरझा रही थी,<sup>8</sup> तो आत्मा की सेवा कितनी अधिक महिमामयी नहीं होगी?<sup>9</sup> क्योंकि यदि दंड की सेवा में महिमा है, तो धार्मिकता की सेवा महिमा में बहुत अधिक श्रृङ्खला है।<sup>10</sup> क्योंकि वास्तव में जो महिमा में था, इस मामले में उसकी कोई महिमा नहीं है, क्योंकि उससे बढ़कर महिमा है।<sup>11</sup> क्योंकि यदि वह जो मूरझा रहा था, महिमा के साथ था, तो वह जो स्थायी है, महिमा में बहुत अधिक है।<sup>12</sup> इसलिए, ऐसी आशा रखते हुए, हम अपने भाषण में बड़ी साहसिकता का उपयोग करते हैं,<sup>13</sup> और हम मूसा के समान नहीं हैं, जो अपने बेहोरे पर एक आवरण डालता था ताकि इस्साएल के पुत्र उस अंत को न देख सकें जो मुरझा रहा था।<sup>14</sup> पर उनकी बुद्धि कठोर हो

गई, क्योंकि आज तक पुराने वाचा के पढ़ने पर वही आवरण उठा नहीं है, क्योंकि यह मसीह में हटा दिया जाता है।<sup>15</sup> पर आज तक जब भी मूसा पढ़ा जाता है, एक आवरण उनके हृदयों पर पड़ा रहता है;<sup>16</sup> पर जब कोई प्रभु की ओर मुड़ता है, तो आवरण हटा दिया जाता है।<sup>17</sup> अब प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।<sup>18</sup> पर हम सब, बिना आवरण के चेहरे के साथ, जैसे दर्पण में प्रभु की महिमा को देखते हुए, उसी छवि में महिमा से महिमा में परिवर्तित होते जा रहे हैं, जैसे कि प्रभु आत्मा से।

**4** इसलिए, जब से हमें यह सेवा मिली है, जैसे हमें दया मिली है, हम हिम्मत नहीं हारते,<sup>2</sup> परन्तु हमने लज्जा के कारण छिपी हुई बातों को त्याग दिया है, न तो चालाकी से चलते हैं और न ही परमेश्वर के वचन को विकृत करते हैं, बल्कि सत्य की खुली घोषणा के द्वारा हम परमेश्वर के सामने हर व्यक्ति की अंतरात्मा को प्रस्तुत करते हैं।<sup>3</sup> और यदि हमारा सुसमाचार छिपा हुआ है, तो यह उन लोगों के लिए छिपा हुआ है जो नाश हो रहे हैं,<sup>4</sup> जिनके मामले में इस संसार के ईश्वर ने अविश्वसियों के मनों को अंधा कर दिया है ताकि वे मसीह की महिमा के सुसमाचार के प्रकाश को न देख सकें, जो परमेश्वर की छवि है।<sup>5</sup> क्योंकि हम अपने आप को नहीं, बल्कि मसीह यीशु को प्रभु के रूप में प्रचार करते हैं, और अपने आप को यीशु के कारण आपके सेवक के रूप में।<sup>6</sup> क्योंकि परमेश्वर, जिसने कहा, "अंधकार से प्रकाश चमकेगा," वही है जिसने हमारे हृदयों में चमकाया है ताकि मसीह के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश दे सके।<sup>7</sup> परन्तु हमारे पास यह खजाना मिट्टी के बर्तनी में है, ताकि शक्ति की असाधारण महानता परमेश्वर की हो और हमारी नहीं;<sup>8</sup> हम हर तरह से पीड़ित हैं, परन्तु कुछ बत्ते नहीं गए; उलजन में हैं, परन्तु निराश नहीं है;<sup>9</sup> उत्पीड़ित हैं, परन्तु त्यागे नहीं गए; गिराए गए हैं, परन्तु नष्ट नहीं हुए;<sup>10</sup> हमेशा शरीर में यीशु को प्रस्तुत करते हैं, ताकि यीशु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रकट हो सके।<sup>11</sup> क्योंकि हम जो जीवित हैं, यीशु के कारण लगातार मृत्यु के हवाले के द्वारा रखते हुए, ताकि यीशु का जीवन भी हमारे नश्वर शरीर में प्रकट हो सके।<sup>12</sup> इसलिए मृत्यु हम में काम करती है, परन्तु जीवन तुम में।<sup>13</sup> परन्तु विश्वास की वही आत्मा रखते हुए, जैसा सिखा है: "मैंने विश्वास किया, इसलिए मैंने कहा," हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए हम भी कहते हैं,<sup>14</sup> यह जानते हुए कि जिसने प्रभु यीशु को उठाया, वह हमें भी यीशु के साथ उठाएगा, और तुम्हारे साथ प्रस्तुत करेगा।<sup>15</sup> क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिए है, ताकि अनुग्रह, जो अधिक से अधिक

## 2 कुरिन्यियों

लोगों तक फैला है, परमेश्वर की महिमा के लिए धन्यवाद को बढ़ा सके।<sup>16</sup> इसलिए हम हिम्मत नहीं हारते, परन्तु यद्यपि हमारा बाहरी व्यक्ति क्षय हो रहा है, फिर भी हमारा आंतरिक व्यक्ति दिन-प्रतिदिन नया होता जा रहा है।<sup>17</sup> क्योंकि हमारी क्षणिक, हल्की पीड़ा हमारे लिए एक अनंत महिमा का भार उत्पन्न कर रही है जो सभी तुलना से पेरे है,<sup>18</sup> जबकि हम उन चीजों को नहीं देखते जो देखी जाती हैं, बल्कि उन चीजों को देखते हैं जो नहीं देखी जाती हैं; क्योंकि जो चीजें देखी जाती हैं वे अस्थायी हैं, परन्तु जो चीजें नहीं देखी जाती हैं वे अनंत हैं।

**5** क्योंकि हम जानते हैं कि यदि हमारी पृथ्वी की तम्बू जो हमारा घर है, गिरा दी जाती है, तो हमारे पास परमेश्वर की ओर से एक इमारत है, एक घर जो हाथों से नहीं बना, स्वर्ग में अनन्त है।<sup>2</sup> क्योंकि वास्तव में, इस तम्बू में हम कराहते हैं, स्वर्ग से हमारे निवास से वस्त्र पहनने की लालसा करते हैं,<sup>3</sup> क्योंकि वास्तव में इसे पहनने के बाद, हम नम नहीं पाए जाएंगे।<sup>4</sup> क्योंकि वास्तव में, हम जो इस तम्बू में हैं, बोझ से दबे हुए हैं, क्योंकि हम नम नहीं होना चाहते बल्कि वस्त्र पहने रहना चाहते हैं, ताकि जो नश्वर है वह जीवन द्वारा निगल लिया जाए।<sup>5</sup> अब जिसने हमें इस उद्देश्य के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें आत्मा को एक प्रतिज्ञा के रूप में दिया।<sup>6</sup> इसलिए, हमेशा अच्छे साहस में रहते हुए, और यह जानते हुए कि जब हम शरीर में घर पर होते हैं तो प्रभु से अनुपस्थित होते हैं—<sup>7</sup> क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, दृष्टि से नहीं—<sup>8</sup> लेकिन हम अच्छे साहस में हैं और शरीर से अनुपस्थित रहकर प्रभु के साथ घर पर रहना पसंद करते हैं।<sup>9</sup> इसलिए हम भी अपनी महत्वाकांक्षा रखते हैं, चाहे घर पर हीं या अनुपस्थित, उसे प्रसन्न करने के लिए।<sup>10</sup> क्योंकि हमें सबको मसीह के न्यायासन के सामने प्रकट होना होगा, ताकि प्रयोग व्यक्ति अपने शरीर के माध्यम से किए गए कार्यों के लिए प्रतिफल प्राप्त कर सके, उसके अनुसार जो उसने किया है, चाहे अच्छा हो या बुरा।<sup>11</sup> इसलिए, प्रभु के भय को जानते हुए, हम लोगों को समझाते हैं, लेकिन हम परमेश्वर के सामने प्रकट हैं, और मुझे आशा है कि हम आपके विवेक में भी प्रकट हैं।<sup>12</sup> हम फिर से अपने आपको आपके सामने प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं, बल्कि आपको हमारे बारे में गर्व करने का अवसर दे रहे हैं, ताकि आपके पास उन लोगों के लिए उत्तर ही जो बाहरी रूप में गर्व करते हैं और दिल में नहीं।<sup>13</sup> क्योंकि यदि हमने अपनी समझ खो दी है, तो यह परमेश्वर के लिए है; यदि हम स्वतंत्र मन में हैं, तो यह आपके लिए है।<sup>14</sup> क्योंकि मसीह का प्रेम हमें नियंत्रित करता है, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि एक ने सबके लिए मृत्यु पाई,

इसलिए सब मर गए;<sup>15</sup> और उसने सबके लिए मृत्यु पाई, ताकि जो जीवित हैं वे अब अपने लिए न जीएं, बल्कि उसके लिए जो उनके लिए मरा और जी उठा।<sup>16</sup> इसलिए अब से हम किसी को शरीर के द्वारा नहीं पहचानते; यद्यपि हमने मसीह को शरीर के द्वारा जाना है, फिर भी अब हम उसे इस प्रकार नहीं जानते।<sup>17</sup> इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो यह व्यक्ति एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं, देखो, नई बातें आ गईं।<sup>18</sup> अब ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के माध्यम से हमें अपने साथ मेल मिलाप कराया और हमें मेल मिलाप की सेवा दी।<sup>19</sup> अर्थात्, परमेश्वर मसीह में हीकर संसार को अपने साथ मेल मिलाप करा रहा था, उनकी गलतियों को उनके खिलाफ नहीं गिनते हुए, और उसने हमें मेल मिलाप का वरचन सौंपा है।<sup>20</sup> इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं, जैसे कि परमेश्वर हमारे माध्यम से अपील कर रहा हो; हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं, परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करें।<sup>21</sup> उसने उसें, जो पाप को नहीं जानता था, हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।

**6** और उसके साथ मिलकर काम करते हुए, हम भी आपसे आग्रह करते हैं कि परमेश्वर की कृपा को व्यर्थ न प्राप्त करें—<sup>2</sup> क्योंकि वह कहता है,

"सुविधाजनक समय पर मैंने तुम्हारी सुनी, और उद्धार के दिन मैंने तुम्हारी सहायता की।" देखो, अब "सुविधाजनक समय" है, देखो, अब "उद्धार का दिन है—

<sup>3</sup> किसी भी बात में ठोकर खाने का कारण न देते हुए, ताकि सेवा बदनाम न हो,<sup>4</sup> परंतु हर बात में अपने को परमेश्वर के सेवक के रूप में प्रस्तुत करते हुए, बहुत धैर्य में, कष्टों में, कठिनाइयों में, कठिन परिस्थितियों में,<sup>5</sup> मारपीट में, कैद में, भीड़ के हमलों में, महनत में, जागरण में, भूख में, <sup>6</sup> पवित्रता में, ज्ञान में, शैर्ष में, दया में, पवित्र आत्मा में, सच्चे प्रेम में,<sup>7</sup> सत्य के वरचन में, और परमेश्वर की शक्ति में; दाहिने और बाएं हाथ के लिए धार्मिकता के हथियारों द्वारा,<sup>8</sup> महिमा और अपमान द्वारा, लुरे और अच्छे रिपोर्ट द्वारा; धीखेबाज माने जाते हैं और फिर भी सत्य हैं;<sup>9</sup> अज्ञात और फिर भी प्रसिद्ध, मरते हुए और फिर देखो, हम जीवित हैं, दंडित होते हुए और फिर भी मृत्यु को प्राप्त नहीं,<sup>10</sup> दुखी होते हुए फिर भी हमेशा आनन्दित, गरीब होते हुए फिर भी बहुतों को धनी बनाते हुए, कुछ भी न होते हुए फिर भी सब कुछ के स्वामी।<sup>11</sup> हमारे मुख ने आपसे स्वतंत्रता से बात की

## 2 कुरिन्यियों

है, कुरिन्यियों, हमारा हृदय खुला है।<sup>12</sup> आप हमारे द्वारा संकुचित नहीं हैं, बल्कि आप अपनी ही भावनाओं में संकुचित हैं।<sup>13</sup> अब उसी प्रकार से बदले में—मैं बच्चों से बात कर रहा हूँ—अपने हृदय को भी चौड़ा करें।<sup>14</sup> अविश्वासियों के साथ असमान न हो; क्योंकि धर्म और अधर्म का क्या साइदारी है, या प्रकाश का अंधकार के साथ क्या संबंध है?<sup>15</sup> या मसीह का बेलियाल के साथ क्या मेल है, या एक विश्वास करने वाले का अविश्वासी के साथ क्या साझा है?<sup>16</sup> या परमेश्वर के मंदिर का मूरियों के साथ क्या समझौता है? क्योंकि हम जीवित परमेश्वर का मंदिर हैं, जैसे परमेश्वर ने कहा:

“मैं उनके बीच निवास करूँगा और उनके बीच चलूँगा;  
और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।”

<sup>17</sup> इसलिए,

“उनके बीच से निकलकर अलग हो जाओ,” प्रायु  
कहता है। “और जो अशुद्ध है उसे नछुओ, और मैं  
तुम्हें स्वीकार करूँगा।”

<sup>18</sup> और

“मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, और तुम मेरे पुत्र और पुत्रियाँ  
बनोगे,” सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है।

**7** इसलिए, प्रियजनों, जब हमारे पास ये प्रतिज्ञाएँ हैं, तो हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सभी अशुद्धियों से शुद्ध करें, और परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करें।<sup>2</sup> हमारे लिए अपने दिलों में जगह बनाएं; हमने किसी के साथ गलत नहीं किया, हमने किसी को भ्रष्ट नहीं किया, हमने किसी का लाभ नहीं उठाया।<sup>3</sup> मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिए नहीं कहता, क्योंकि मैंने पहले ही कहा है कि तुम हमारे दिलों में हो, साथ मरने और साथ जीने के लिए।<sup>4</sup> तुम पर मेरा विश्वास महान है; तुम्हारे पक्ष में मेरा घंटंड महान है। मैं सांत्वना से भरा हूँ; मैं हमारे सभी क्लोसों में आनंद से भरपूर हूँ।<sup>5</sup> क्योंकि जब हम मकिनुनिया में आए, तो हमारे शरीर को कोई विश्राम नहीं मिला, बल्कि हम हर तरफ से क्लोस में थे: बाहर संघर्ष, भीतर भय।<sup>6</sup> परंतु परमेश्वर, जो निराश लोगों को सांत्वना देता है, उसने तीतुस के आगमन से हमें सांत्वना दी;<sup>7</sup> और न केवल उसके आगमन से, बल्कि उस सांत्वना से भी जो उसे तुम्हारे बीच मिली, जब उसने हमें तुम्हारी लालसा, तुम्हारा शोक, मेरे लिए तुम्हारा उत्साह बताया; जिससे मैं और भी अधिक आनंदित हुआ।<sup>8</sup> क्योंकि यद्यपि मैंने तुम्हें अपने पत्र से

दुखी किया, मैं इसे पछताता नहीं हूँ; यद्यपि मैंने इसे पछताता—क्योंकि मैं देखता हूँ कि पत्र ने तुम्हें दुखी किया, यद्यपि केवल थोड़ी देर के लिए—<sup>9</sup> अब मैं आनंदित हूँ, न कि तुम दुखी हुए, बल्कि तुम उस बिंदु तक दुखी हुए कि तुमने पश्चाताप किया; क्योंकि तुम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुखी हुए, ताकि तुमने हमसे कोई हानि नहीं उठाई।<sup>10</sup> क्योंकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख पश्चाताप उत्पन्न करता है जो बिना पछतावे के उद्धार की ओर ले जाता है, परंतु संसार का दुख मृत्यु उत्पन्न करता है।<sup>11</sup> क्योंकि देखो, इस बात ने—इस परमेश्वर के दुख ने—तुम में क्या उत्सुकता उत्पन्न की है: तुम्हारे अपने बचाव का क्या प्रमाण, क्या क्रोध, क्या भय, क्या लालसा, क्या उत्साह, क्या गलत का दंड! हर चीज में तुमने इस मामले में अपने आप को निर्दोष साबित किया है।<sup>12</sup> इसलिए यद्यपि मैंने तुम्हें लिखा, यह न तो अपराधी के लिए था और न ही अपमानित के लिए, बल्कि ताकि तुम्हारी हमारे प्रति उत्सुकता परमेश्वर के सामने तुम्हें प्रकट हो सके।<sup>13</sup> इस कारण से हम सांत्वना प्राप्त कर चुके हैं। और हमारी अपनी सांत्वना के अलावा, हम तीतुस की खुशी के लिए और भी अधिक आनंदित हुए, क्योंकि उसकी आत्मा तुम सबके द्वारा ताजा की गई है।<sup>14</sup> क्योंकि यदि मैंने उसके सामने तुम्हारे बारे में किसी बात में घंटंड किया, तो मैं लजित नहीं हुआ; लेकिन जैसे हमने तुम्हें सभी बातें सत्य में कही, वैसे ही तीतुस के सामने हमारा घंटंड भी सत्य साबित हुआ।<sup>15</sup> उसका सेह तुम्हारे प्रति और भी बढ़ता है, जब वह तुम सबकी आज्ञाकारिता को याद करता है, कि तुमने उसे भय और कांपते हुए कैसे स्वीकार किया।<sup>16</sup> मैं आनंदित हूँ कि हर चीज में मुझे तुम पर विश्वास है।

**8** अब, भाईयों और बहनों, हम आपको उस परमेश्वर की कृपा के बारे में बताते हैं जो मकिनुनिया की कर्तीसियाओं में दी गई है,<sup>2</sup> कि बड़ी क्लेश की परीक्षा में उनकी अत्यधिक आनंद और उनकी गहरी गरीबी ने उनकी उदात्ता की संपत्ति में उफान मारा।<sup>3</sup> क्योंकि मैं गवाही देता हूँ कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार, और अपनी सामर्थ्य से परे, उन्होंने सेच्छा से दिया, “संतों की सहायता में भागीदारी के अनुग्रह के लिए हमसे बहुत आग्रह के साथ विनती करते हुए,<sup>5</sup> और यह, जैसा कि हमने अपेक्षा नहीं की थी, लेकिन उन्होंने पहले अपने आप को प्रभु को और हमें परमेश्वर की इच्छा से समर्पित किया।<sup>6</sup> इसलिए हमने तीतुस से आग्रह किया कि जैसा उसने पहले एक शुरुआत की थी, वैसे ही वह आप में भी इस अनुग्रहकारी कार्य को पूरा करे।<sup>7</sup> लेकिन जैसे आप हर चीज में उत्कृष्ट हैं—विश्वास में, वचन में, ज्ञान में, सभी उत्साह में, और उस प्रेम में जो हमने आप में प्रेरित

## 2 कुरिन्यियों

किया—देखें कि आप इस अनुग्रहकारी कार्य में भी उत्कृष्ट हों।<sup>8</sup> मैं इसे एक आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा हूं; बल्कि दूसरों की उत्सुकता के माध्यम से आपके प्रेम की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए।<sup>9</sup> क्योंकि आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा को जानते हैं, कि वह धनी होते हुए भी, आपके लिए गरीब बन गए, ताकि आप उनकी गरीबी के माध्यम से धनी बन सकें।<sup>10</sup> मैं इस मामले में अपनी राय देता हूं, क्योंकि यह आपके लाभ के लिए है, आप जो एक साल पहले इसे करने के लिए न केवल शुरू करने वाले थे, बल्कि इसे करने की इच्छा भी रखते थे।<sup>11</sup> लेकिन अब इसे पूरा भी करें, ताकि जैसे इसे करने की इच्छा भी, वैसे ही आपकी सामर्थ्य के अनुसार इसे पूरा कीया जा सके।<sup>12</sup> क्योंकि यदि इच्छा उपस्थित है, तो यह उस अनुसार स्वीकार है जो किसी व्यक्ति के पास है, न कि उस अनुसार जो उसके पास नहीं है।<sup>13</sup> क्योंकि यह दूसरों के राहत के लिए और आपके कष्ट के लिए नहीं है, बल्कि समानता के लिए है—<sup>14</sup> इस वर्तमान समय में आपकी प्रवृत्ता उनकी आवश्यकता के लिए सहायता के रूप में काम करेगी, ताकि उनकी प्रवृत्ता भी आपकी आवश्यकता के लिए सहायता के रूप में काम करे, ताकि समानता हो;<sup>15</sup> जैसा लिखा है: “जिसने बहुत इकट्ठा किया, उसके पास बहुत अधिक नहीं था, और जिसने थोड़ा इकट्ठा किया, उसके पास बहुत कम नहीं था।”<sup>16</sup> लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो जो तीतुस के हृदय में आपके लिए वही उत्सुकता डालता है।<sup>17</sup> क्योंकि उसने न केवल हमारी अपील को स्वीकार किया, बल्कि स्वयं बहुत उत्सुक होकर, वह अपनी इच्छा से आपके पास गया है।<sup>18</sup> हमने उसके साथ उस भाई को भेजा है जिसकी सुसमाचार के मामलों में प्रसिद्ध सभी कलीसियाओं में फैली है;<sup>19</sup> और न केवल यह, बल्कि उसे कलीसियाओं द्वारा हमारे साथ इस अनुग्रहकारी कार्य में यात्रा करने के लिए नियुक्त किया गया है, जो हमारे द्वारा प्रभु की महिमा के लिए और हमारी उत्पत्ता दिखाने के लिए प्रशासित किया जा रहा है。<sup>20</sup> सावधानी बरतते हुए कि कोई भी इस उदार उपहार के हमारे प्रशासन में हमें बदनाम न करें;<sup>21</sup> क्योंकि हम जो समाननीय हैं, उसका ध्यान रखते हैं, न केवल प्रभु की दृष्टि में, बल्कि लोगों की दृष्टि में भी।<sup>22</sup> हमने उनके साथ अपने भाई को भेजा है, जिसे हमने कई बार परखा है और कई चीजों में मेहनती पाया है, लेकिन अब आपके प्रति उसकी बड़ी आस्मविश्वास के कारण और भी अधिक मेहनती है।<sup>23</sup> जहां तक तीतुस का सवाल है, वह मेरे साथी और आपके बीच सहकर्मी है, जहां तक हमारे भाइयों का सवाल है, वे कलीसियाओं के दूर हैं, मरीह की महिमा।<sup>24</sup> इसलिए, कलीसियाओं

के सामने खुले तौर पर, उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण और आपके बारे में हमारे गर्व का कारण दिखाएं।

**9** क्योंकि पवित्र जनों की सेवा के विषय में तुम्हें लिखना मेरे लिए अनावश्यक है,<sup>2</sup> क्योंकि मैं तुम्हारी उत्पत्ता को जानता हूं, जिसके विषय में मैं मकिदोनियों के सामने तुम्हारा घमण्ड करता हूं, अर्थात् अखेया पिछले वर्ष से तैयार है, और तुम्हारे उत्साह ने उनमें से अधिकांश को प्रेरित किया है।<sup>3</sup> परन्तु मैंने भाइयों को भेजा है, ताकि हमारा तुम्हारे विषय में किए गए घमण्ड का इस मामले में कोई अर्थ न रह जाए, ताकि जैसा मैंने कहा था, तुम तैयार रहो; <sup>4</sup> अन्यथा, यदि कोई मकिदोनी मेरे साथ आए और तुम्हें तैयार न पाए, तो इस विश्वास में हम—तुम्हारा उल्लेख न करते हुए—लजित होंगे।<sup>5</sup> इसलिए मैंने भाइयों को यह आवश्यक समझा कि वे पहले से तुम्हारे पास जाएँ और तुम्हारे पहले से वचन दिए गए उदार उपहार को पहले से तैयार कर लें, ताकि यह उदार उपहार के रूप में तैयार हो, और लोभ के कारण अनिच्छा से दिया गया न हो।<sup>6</sup> अब मैं यह कहता हूं: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा ही काटेगा, और जो उदारता से बोता है वह उदारता से काटेगा।<sup>7</sup> प्रयेक व्यक्ति को अपने हृदय में ठान के अनुसार देना चाहिए, न कि अनिच्छा से या दबाव में, क्योंकि परमेश्वर प्रसन्नचित दाता से प्रेम करता है।<sup>8</sup> और परमेश्वर तुम्हारे लिए हर प्रकार की अनुग्रह को प्रचुर मात्रा में प्रदान करने में सक्षम है, ताकि तुम्हारे पास हर अच्छे कार्य के लिए पर्याप्तता हो; <sup>9</sup> जैसा कि लिखा है:

“उसने बिल्लेग, उसने गरीबों को दिया, उसकी धार्मिकता सदा के लिए बनी रहती है।”

<sup>10</sup> अब वह जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी प्रदान करता है, तुम्हारे बोने के लिए बीज को प्रदान करेगा और तुम्हारी धार्मिकता की फसल को बढ़ाएगा;<sup>11</sup> तुम हर चीज़ में समृद्ध होगे सभी उदारता के लिए, जो हमारे माध्यम से परमेश्वर के प्रति कई धन्यवादों के माध्यम से भी प्रचुर मात्रा में हो रहा है।<sup>12</sup> इस सेवा द्वारा दिए गए प्रमाण के कारण, वे तुम्हारी मसीह के सुसमाचार की स्वीकारोक्ति के प्रति आज्ञाकारिता और उनके प्रति तुम्हारे योगदान की उदारता के लिए परमेश्वर की महिमा करेंगे;<sup>13</sup> जब वे तुम्हारे लिए प्रार्थना में तुम्हारी लालसा करेंगे क्योंकि तुम्हारे अंदर परमेश्वर की अद्वितीय अनुग्रह

## 2 कुरिन्यियों

है।<sup>15</sup> उसके अवर्णनीय उपहार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो!

**10** अब मैं, पौलस, मसीह की नम्रता और कोमलता के द्वारा तुमसे विनती करता हूँ—मैं जो तुम्हारे सामने होते हुए नम्र हूँ, पर अनुपस्थित होते हुए तुम्हारे प्रति साहसी हूँ।<sup>2</sup> मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि जब मैं उपस्थित होऊँ, तो मुझे उस आत्मविश्वास के साथ साहसी होने की आवश्यकता न पड़े, जिसके साथ मैं कुछ लोगों के विरुद्ध साहसी होने का इरादा रखता हूँ, जो हमें ऐसा मानते हैं जैसे हम शरीर के अनुसार चलते हैं।<sup>3</sup> क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते हैं, हम शरीर के अनुसार युद्ध नहीं करते, <sup>4</sup> क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शरीर के नहीं हैं, परन्तु गढ़ों के विनाश के लिए दिव्य सामर्थ्य से युक्त हैं।<sup>5</sup> हम तर्की और सभी अहंकार को जो परमेश्वर की ज्ञान के विरुद्ध उठता है, नष्ट कर रहे हैं, और हम हर विचार को मरीह की आज्ञाकारिता के लिए बंदी बना रहे हैं,<sup>6</sup> और हम सभी अवज्ञा को ढंड देने के लिए तैयार हैं, जब तुम्हारी आज्ञाकारिता पूरी हो जाएगी।<sup>7</sup> तुम बाहरी रूप से चीजों को देख रहे हो। यदि कोई अपने आप में विश्वास करता है कि वह मसीह का है, तो उसे अपने आप में फिर से यह विचार करना चाहिए कि जैसे वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं।<sup>8</sup> क्योंकि यदि मैं हमारी अधिकार के विषय में कुछ अधिक घमंड करूँ, जो प्रभु ने तुम्हें बढ़ाने के लिए और तुम्हें नष्ट करने के लिए नहीं दिया, तो मैं लजित नहीं होऊँगा,<sup>9</sup> ताकि मैं ऐसा न दिखूँ जैसे मैं तुम्हें अपने पत्रों द्वारा डराना चाहता हूँ।<sup>10</sup> क्योंकि वे कहते हैं, “उसके पत्र भारी और शक्तिशाली हैं, परन्तु उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति प्रभावहीन है और उसका भाषण तुच्छ है।”<sup>11</sup> ऐसे व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि हम जो पत्रों में अनुपस्थित होते हुए शब्दों में हैं, हम उपस्थित होते हुए कर्मों में भी वैसे ही हैं।<sup>12</sup> क्योंकि हम अपने आप को कुछ उन लोगों के साथ श्रेणीबद्ध करने या तुलना करने का साहस नहीं करते जो अपने आप को प्रशंसा करते हैं; परन्तु जब वे अपने आप को अपने आप से मापते हैं और अपने आप को अपने आप से तुलना करते हैं, तो उनमें समझ नहीं होती।<sup>13</sup> परन्तु हम अपने माप से परे घमंड नहीं करेंगे, परन्तु उस प्रभाव के क्षेत्र के माप के भीतर, जिसे परमेश्वर ने हमें माप के रूप में सौंपा है, तुम्हारे पास पहुँचने के लिए।<sup>14</sup> क्योंकि हम अपने आप को अधिक नहीं बढ़ा रहे हैं, जैसे कि हम तुम्हारे पास नहीं पहुँचे, क्योंकि हम मसीह के सुसमाचार में तुम्हारे पास पहले पहुँचने वाले थे;<sup>15</sup> अपने माप से परे घमंड नहीं करना, अर्थात् दूसरों के परिश्रम में, परन्तु इस आशा के साथ कि जैसे तुम्हारा विश्वास बढ़ता है, हम तुम्हारे द्वारा

हमारे सौंपे गए क्षेत्र में और भी अधिक बढ़ेंगे,<sup>16</sup> ताकि सुसमाचार को तुम्हारे परे के क्षेत्रों में भी प्रचार कर सकें, और किसी और के क्षेत्र में जो पूरा हो चुका है उसमें घमंड न करें।<sup>17</sup> परन्तु जो घमंड करता है, वह प्रभु में घमंड करे।<sup>18</sup> क्योंकि वह नहीं जो अपने आप को प्रशंसा करता है, स्वीकृत होता है, परन्तु वह जिसे प्रभु प्रशंसा करता है।

**11** मैं चाहता हूँ कि तुम धोटी मूर्खता में मेरे साथ सहन करो; परंतु वास्तव में तुम मेरे साथ सहन कर रहे हो।<sup>1</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर की ईर्ष्या से ईर्ष्या करता हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हें एक पति के लिए व्याह दिया है, ताकि तुम्हें मसीह के रूप प्रस्तुत कर सकूँ।<sup>2</sup> परंतु मुझे डर है कि जैसे सर्प ने अपनी चतुराई से हव्वा को धीखा दिया, वैसे ही तुम्हारे मन मसीह के प्रति सच्ची और शुद्ध भक्ति से भक्त न जाएँ।<sup>3</sup> क्योंकि यदि कोई आकर किसी और यीशु का प्रचार करता है जिसे हमने प्रचार नहीं किया, या तुम किसी और आत्मा को ग्रहण करते हो जिसे तुमने ग्रहण नहीं किया, या किसी और सुसमाचार को स्वीकार करते हो जिसे तुमने स्वीकार नहीं किया, तो तुम इसे बहुत अच्छी तरह सहन करते हो!<sup>4</sup> क्योंकि मैं अपने आप को सबसे प्रमुख प्रेरितों से कम नहीं मानता।<sup>5</sup> परंतु यदि मैं वाणी में अशक्ति हूँ, तो भी ज्ञान में ऐसा नहीं हूँ; वास्तव में, हर प्रकार से हमने यह सब तुम्हें सभी बातों में स्पष्ट कर दिया है।<sup>6</sup> या मैंने अपने आप को नीचा करके तुमको ऊँचा करने के लिए पाप किया, क्योंकि मैंने परमेश्वर का सुसमाचार बिना किसी शुल्क के तुम्हें सुनाया;<sup>7</sup> मैंने अन्य कलीसियाओं को लूट लिया, उनसे वेतन लेकर तुम्हारी सेवा की;<sup>8</sup> और जब मैं तुम्हारे साथ था और मुझे आवश्यकता थी, तो मैं किसी पर भार नहीं बना; क्योंकि जब मकिदुनिया से भार्ता आए, उन्होंने मेरी आवश्यकता को पूरी तरह से पूरा किया, और हर बात में मैंने अपने आप को तुम पर भार बनने से बचाए रखा, और आगे भी ऐसा ही करता रहँगा।<sup>9</sup> जैसे मसीह की सच्चाई मुझ में है, यह मेरी शेषी अवैया के क्षेत्रों में नहीं रोकी जाएगी।<sup>10</sup> क्यों? क्या इसलिए कि मैं तुम्हें प्रेम नहीं करता? परमेश्वर जानता है कि मैं करता हूँ।<sup>11</sup> परंतु जो मैं कर रहा हूँ, वह करता रहँगा, ताकि उन लोगों से अवसर छीन लूँ जो अवसर चाहते हैं कि वे उसी बात में हमारे समान समझे जाएँ जिसके बारे में वे शेषी मारते हैं।<sup>12</sup> क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं, धोखेबाज काम करने वाले हैं, जो अपने आप को मसीह के प्रेरितों के रूप में प्रकट करते हैं।<sup>13</sup> कोई आश्र्य नहीं, क्योंकि शैतान भी अपने आप को ज्योति के स्वर्गरूप के रूप में प्रकट करता है।<sup>14</sup> इसलिए यह कोई आश्र्य की बात

## 2 कुरिन्यियों

नहीं है यदि उसके सेवक भी अपने आप को धर्म के सेवकों के रूप में प्रकट करते हैं, जिनका अंत उनके कर्मों के अनुसार होगा।<sup>16</sup> मैं फिर कहता हूँ, कोई मुझे मूर्ख न समझ़; परंतु यदि तुम करते हो, तो मुझे मूर्ख के रूप में खीकार करो, ताकि मैं भी थोड़ी शेखी मार सकूँ।<sup>17</sup> जो मैं कह रहा हूँ, वह मैं प्रभु के रूप में नहीं कह रहा हूँ, बल्कि मूर्खता में, इस शेखी के विश्वास में।<sup>18</sup> क्योंकि बहुत से लोग शरीर के अनुसार शेखी मारते हैं, मैं भी शेखी माऱू़गा।<sup>19</sup> क्योंकि तुम, इतने बुद्धिमान होते हुए, मूर्खों को खुशी से सहन करते हो।<sup>20</sup> क्योंकि तुम इसे सहन करते हो यदि कोई तुम्हें दास बना लेता है, तुम्हें खा जाता है, तुम्हारा लाभ उठाता है, अपने आप को ऊँचा करता है, या तुम्हारे मुँह पर मारता है।<sup>21</sup> मुझे लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि हम तुलना में कमज़ोर रहे हैं। परंतु जिस किसी भी बात में कोई और साहसी है—मैं मूर्खता में बोल रहा हूँ—मैं भी साहसी हूँ।<sup>22</sup> क्या वे इब्रानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वे इसाएली हैं? मैं भी हूँ। क्या वे अब्राहम की संतान हैं? मैं भी हूँ।<sup>23</sup> क्या वे मसीह के सेवक हैं?—मैं पागल की तरह बोल रहा हूँ—मैं उनसे अधिक हूँः अधिक परिश्रम में, अधिक कैद में, अनगिनत बार मार खा चुका हूँ, मूल्य के खतरे में अक्सर रहा हूँ।<sup>24</sup> पाँच बार मैंने यहौदियों से उन्तालीस कोड़े खाए।<sup>25</sup> तीन बार मुझे लाठियों से पीटा गया, एक बार मुझे पथरों से मारा गया, तीन बार मेरा जहाज़ टूट गया, एक रात और एक दिन मैंने समुद्र में बिताया।<sup>26</sup> मैंने बार-बार यात्राएँ की हैं, नदियों के खतरों में, डाकूओं के खतरों में, अपने देशवासियों के खतरों में, अन्यजातियों के खतरों में, शहर के खतरों में, जंगल के खतरों में, समुद्र के खतरों में, झूठे भाइयों के खतरों में;<sup>27</sup> मैंने परिश्रम और कठिनाई में, कई रातों की नींद में, भूख और प्यास में, अक्सर बिना भोजन के, ठंड और नग्रता में बिताया है।<sup>28</sup> ऐसी बाहरी बातों के अलावा, सभी कलीसियाओं की विंता का दैनिक दबाव मुझ पर है।<sup>29</sup> कौन कमज़ोर है बिना मेरे कमज़ोर हुए? कौन पाप में गिराया जाता है बिना मेरे गहरे चिंता के?<sup>30</sup> यदि मुझे शेखी मारनी है, तो मैं अपनी कमज़ोरी की बातों पर शेखी माऱू़गा।<sup>31</sup> प्रभु यीशु के परमेश्वर और पिता, जो सदा के लिए धन्य है, जानता है कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।<sup>32</sup> दमिश्क में, अरेतास राजा के अधीन एथनार्क दमिश्कियों के शहर की रखवाली कर रहा था ताकि मुझे पकड़ सके,<sup>33</sup> और मुझे एक टोकरी में खिड़की के माध्यम से दीवार से नीचे उतारा गया, और इस प्रकार मैं उसके हाथों से बच निकला।

**12** घमंड करना आवश्यक है, यद्यपि यह लाभदायक नहीं है; परन्तु मैं प्रभु के दर्शन और

प्रकाशनों की ओर बढ़ूँगा।<sup>2</sup> मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ, जो चौदह वर्ष पहले—चाहे शरीर में था, मैं नहीं जानता, या शरीर के बाहर, मैं नहीं जानता, परमेश्वर जानता है—ऐसा व्यक्ति तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया था।<sup>3</sup> और मैं जानता हूँ कि ऐसा मनुष्य—चाहे शरीर में था या शरीर के बाहर, मैं नहीं जानता, परमेश्वर जानता है।<sup>4</sup> स्वर्गलोक में उठा लिया गया और उसने अवर्णनीय वचन सुने, जिसने मनुष्य बोलने की अनुमति नहीं है।<sup>5</sup> ऐसे मनुष्य के लिए मैं घमंड करू़गा; परन्तु अपनी ओर से मैं केवल अपनी दुर्बलताओं के विषय में ही घमंड करू़गा।<sup>6</sup> क्योंकि यदि मैं घमंड करना चाहूँ, तो मैं मूर्ख नहीं होऊँगा, क्योंकि मैं सत्य ही बोलूँगा; परन्तु मैं इससे बचता हूँ, ताकि कोई मुझे उससे अधिक न समझे जो वह मुझ में देखता है या मुझसे सुनता है।<sup>7</sup> प्रकाशनों की अत्यधिक महानता के कारण, इस कारण, मुझे अपने आप को ऊँचा करने से रोकने के लिए, मेरे शरीर में एक काँचा दिया गया, शैतान का एक दूत मुझे पीड़ा देने के लिए—ताकि मैं अपने आप को ऊँचा न करूँ।<sup>8</sup> इस विषय में मैंने प्रभु से तीन बार विनती की कि यह मुझसे दूर हो जाए।<sup>9</sup> और उसने मुझसे कहा, ‘मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि शक्ति दुर्बलता में सिद्ध होती है।’<sup>10</sup> इसलिए मैं अपनी दुर्बलताओं पर अधिक खुशी से घमंड करू़गा, ताकि मसीह की शक्ति मुझ में निवास करे।<sup>11</sup> इसलिए मैं मसीह के लिए दुर्बलताओं, अपमानों, संकरों, उत्तीर्णों, कठिनाइयों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं दुर्बल होता हूँ, तब मैं बलवान होता हूँ।<sup>12</sup> मैं मूर्ख बन गया हूँ; अपने ही मुझे विवश किया। वास्तव में, मुझे आपके द्वारा प्रशंसा की जानी चाहिए थी, क्योंकि मैं किसी भी दृष्टि से सबसे प्रमुख प्रेरितों से कम नहीं था, यद्यपि मैं कुछ नहीं हूँ।<sup>13</sup> सच्चे प्रेरित के विशेष चिह्न आपके बीच सभी धैर्य के साथ, चिह्नों, अद्भुत कार्यों और चमकारों के द्वारा प्रकट किए गए।<sup>14</sup> किस दृष्टि से आपको अच कलीसियाओं से कम आका गया, सिवाय इसके कि मैंने स्वयं आपको बोझ नहीं बनाया? इस अन्याय के लिए मुझे क्षमा करो! यहाँ तीसी बार मैं आपके पास आने के लिए तैयार हूँ, और मैं आपको बोझ नहीं बनाऊँगा; क्योंकि मैं आपकी वस्तुओं को नहीं, बल्कि आपको चाहता हूँ। क्योंकि बच्चों का यह कर्तव्य नहीं है कि वे अपने माता-पिता के लिए बचत करें, बल्कि माता-पिता का अपने बच्चों के लिए।<sup>15</sup> मैं आपके आत्माओं के लिए खुशी से खर्च करू़गा और स्वर्च किया जाऊ़गा। यदि मैं आपको अधिक प्रेम करता हूँ, तो क्या मुझे कम प्रेम किया जाएगा?<sup>16</sup> परन्तु यह जैसा भी हो, मैंने स्वयं आपको बोझ नहीं बनाया; फिर भी, चतुर व्यक्ति जो मैं हूँ, मैंने आपको धोखे से पकड़ लिया।<sup>17</sup> निश्चित रूप से मैंने आपके पास भेजे गए किसी भी

## 2 कुरिन्यियों

व्यक्ति के माध्यम से आपका लाभ नहीं उठाया, क्या मैंने? <sup>18</sup> मैंने तीतुस को जाने के लिए प्रेरित किया, और उसके साथ भाई को भेजा। तीतुस ने आपका कोई लाभ नहीं उठाया, क्या उसने? क्या हमने एक ही आत्मा में अवधारण नहीं किया और एक ही कदमों में नहीं चले? <sup>19</sup> इस पूरे समय आप सोच रहे हैं कि हम आपके सामने अपनी रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में, यह परमेश्वर के सामने है कि हम मसीह में बोल रहे हैं, और यह सब आपके निर्माण के लिए है, प्रिय। <sup>20</sup> क्योंकि मुझे डर है कि शायद जब मैं आऊं, तो मैं आपको वैसा न पाएं जैसा आप चाहते हैं कि शायद वहाँ झगड़े, ईर्ष्या, क्रोध, स्वाध, निदा, चुप्पती, अभिमान, और अशांति हों; <sup>21</sup> मुझे डर है कि जब मैं फिर से आऊं, तो मेरा परमेश्वर मुझे आपके सामने अपमानित कर सकता है, और मैं उन बहुतों के लिए शोक कर सकता हूँ जिन्होंने पहले पाप किया है और अशुद्धता, यौन अनैतिकता, और अशोभनीय व्यवहार से पश्चात्तप नहीं किया है जो उन्होंने किया है।

**13** यह तीसरी बार है जब मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। हर मामले की पुष्टि दो या तीन गवाहों की गवाही से की जानी चाहिए। <sup>2</sup> मैंने पहले दूसरी बार उपस्थित रहते हुए कहा था, और अब अनुपस्थित रहते हुए मैं पहले से उन लोगों से कहता हूँ जिन्होंने पहले पाप किया है और बाकी सभी से भी, कि यदि मैं फिर आँऊं तो मैं किसी को नहीं बछूँगा, <sup>3</sup> क्योंकि तुम मुझमें बोलने वाले मसीह का प्रमाण चाहते हो, जो तुम्हारे प्रति निर्बल नहीं है, बल्कि तुम में शक्तिशाली है। <sup>4</sup> क्योंकि वह वास्तव में निर्बलता के कारण कूस पर चढ़ाया गया था, फिर भी वह परमेश्वर की शक्ति के कारण जीवित है। क्योंकि हम भी उसमें निर्बल हैं, फिर भी हम उसके साथ जीवित रहेंगे क्योंकि परमेश्वर की शक्ति तुम्हारी ओर निर्देशित है। <sup>5</sup> अपने आप को परखो कि तुम विश्वास में हो; अपने आप को जांचो! या क्या तुम अपने बारे में यह नहीं पहचानते कि यीशु मसीह तुम में है—जब तक कि तुम वास्तव में परीक्षा में असफल न हो? <sup>6</sup> लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम यह समझ जाओगे कि हम स्वयं परीक्षा में असफल नहीं होते। <sup>7</sup> अब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कुछ भी गलत न करो; न कि इसलिए कि हम परीक्षा में सफल दिखाई दें, बल्कि इसलिए कि तुम सही काम करो, भले ही हम असफल दिखाई दें। <sup>8</sup> क्योंकि हम सत्य के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते, बल्कि केवल सत्य के लिए ही कर सकते हैं। <sup>9</sup> क्योंकि हम आनंदित होते हैं जब हम स्वयं निर्बल होते हैं तोकिन तुम शक्तिशाली होते हो; यह भी हम प्रार्थना करते हैं कि तुम पूरी तरह से परिपक्व बनो। <sup>10</sup> इसी कारण मैं ये बातें अनुपस्थित रहते

हुए लिख रहा हूँ, ताकि उपस्थित रहते हुए मुझे कठोरता का प्रयोग न करना पड़े, उस अधिकार के अनुसार जो प्रभु ने मुझे निर्माण के लिए दिया है, और न कि नष्ट करने के लिए। <sup>11</sup> अंत में, भाइयों और बहनों, आनंदित रहो, अपनी राहें सुधारो, सांत्वना प्राप्त करो, एक समान विचारधारा रखो, शांति से रहो; और प्रेम और शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। <sup>12</sup> एक-दूसरे का पवित्र चुम्बन के साथ अभिवादन करो। <sup>13</sup> सभी संत तुम्हें अभिवादन करते हैं। <sup>14</sup> प्रभु यीशु मसीह की कृपा, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति, तुम सबके साथ हो।

## गलातियों

**१** पौत्रुस, एक प्रेरित— न मनुष्यों से भेजा गया, न ही मनुष्य के माध्यम से, बल्कि यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिह्वोंने उसे मृतकों में से जिलाया—<sup>२</sup> और सभी भाई जो मेरे साथ हैं, गलातिया की कलीसियाओं कोः ३ हमारे परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले, <sup>४</sup> जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया ताकि वह हमें इस वर्तमान दृष्ट युग से बचा सके, हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार, <sup>५</sup> जिसको युगानुयुग महिमा मिले। अमीन। <sup>६</sup> मैं अर्थव्याचिकत हूँ कि तुम इतनी जल्दी उसे छोड़ रहे हो जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह के द्वारा बुलाया, और एक भिन्न सुसमाचार की ओर मुड़ रहे हो, <sup>७</sup> जो वास्तव में कोई दूसरा नहीं है; परंतु कुछ लोग हैं जो तुम्हें परेशन कर रहे हैं और मसीह के सुसमाचार को विकृत करना चाहते हैं। <sup>८</sup> परंतु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दृढ़ तुम्हें कोई ऐसा सुसमाचार सुनाए जो हमने तुम्हें सुनाया है उससे भिन्न हो, तो वह शापित हो! <sup>९</sup> जैसा कि हमने पहले कहा है, अब मैं फिर से कहता हूँ: यदि कोई तुम्हें ऐसा सुसमाचार सुनाए जो तुमने प्राप्त किया है उससे भिन्न हो, तो वह शापित हो! <sup>१०</sup> क्या मैं अब मनुष्यों की प्रसन्नता चाहता हूँ, या परमेश्वर की? या क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूँ? यदि मैं अब भी मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास करता, तो मैं मसीह का दास नहीं होता। <sup>११</sup> क्योंकि मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ, भाइयों और बहनों, कि जो सुसमाचार मेरे द्वारा प्रचारित किया गया था वह मनुष्य की उत्पत्ति का नहीं है। <sup>१२</sup> क्योंकि मैंने न तो इसे मनुष्य से प्राप्त किया, न ही मुझे यह सिखाया गया, बल्कि मैंने इसे यीशु मसीह के प्रकाशन के माध्यम से प्राप्त किया। <sup>१३</sup> क्योंकि तुमने मेरे पूर्व जीवन के यहूदी धर्म के बारे में सुना है, कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को अत्यधिक सताता था और उसे नष्ट करने का प्रयास करता था, <sup>१४</sup> और मैं अपने देशवासियों में से कई समकालीनों से आगे बढ़ रहा था, अपने पूर्वजों की परंपराओं के लिए अत्यधिक उत्साही होकर। <sup>१५</sup> परंतु जब उसने, जिसने मुझे मेरी माता के गर्भ से ही अलग कर दिया और अपनी कृपा के द्वारा बुलाया, प्रसन्न हुआ <sup>१६</sup> कि वह अपने पुत्र को मुझे में प्रकट करे ताकि मैं उसे अन्यजातियों में प्रचार कर सकूँ, तो मैंने तुरंत मांस और रक्त से परामर्श नहीं किया, <sup>१७</sup> और न ही मैं यरूशलैम गया उन लोगों के पास जो मुझसे पहले प्रेरित थे; बल्कि मैं अरब गया, और फिर से दामिश्क लौट आया। <sup>१८</sup> फिर तीन वर्ष बाद मैं यरूशलैम गया कि केफा से परिचित हो सकूँ, और उसके साथ पंद्रह दिन रहा। <sup>१९</sup> परंतु मैंने प्रेरितों में से और किसी को नहीं देखा सिवाय प्रभु के भाई याकूब के। <sup>२०</sup> (अब जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, मैं परमेश्वर के सामने आश्वासन देता हूँ

कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।) <sup>२१</sup> फिर मैं सीरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में गया। <sup>२२</sup> मैं अब भी यहूदिया की कलीसियाओं के लिए दृष्टि से अज्ञातथा जो मसीह में हैं; <sup>२३</sup> परंतु वे केवल सुनते थे, "वह व्यक्ति जिसने कभी हमें सताया था अब उस विश्वास का प्रचार कर रहा है जिसे वह कभी नष्ट करने का प्रयास करता था।" <sup>२४</sup> और वे मेरे कारण परमेश्वर की महिमा कर रहे थे।

**२** फिर चौदह वर्ष के अंतराल के बाद मैं बरनबास के साथ यरूशलैम गया, और तीतुस की १८ी साथ ले गया। <sup>२</sup> यह एक प्रकाशना के कारण था कि मैं गया; और मैंने उर्वें वह सुसमाचार प्रस्तुत किया जो मैं अन्यजातियों के बीच प्रचार करता हूँ, परंतु मैंने ऐसा प्रतिष्ठित लोगों के सामने निजी रूप से किया, इस डर से कि कहीं मैं व्यर्थ में दौड़ न रहा हूँ, या दौड़ चुका हूँ। <sup>३</sup> परंतु तीतुस, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी था, उसे खतना करने के लिए बाध्य नहीं किया गया। <sup>४</sup> फिर भी यह झूठे भाइयों के कारण था, जो गुरुत रूप से लाए गए थे, जिह्वोंने हमारे मसीह यीशु में जो स्वतंत्रता है, उस पर जासूसी करने के लिए चुपके से घुसपैठ की थी, ताकि हमें दास बना सकें। <sup>५</sup> परंतु हम उनके अधीन नहीं हुए, यहाँ तक कि एक घटे के लिए भी नहीं, ताकि सुसमाचार का सत्य आपके साथ बना रहे। <sup>६</sup> परंतु जो प्रतिष्ठित माने जाते थे—वे क्या थे, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता; परमेश्वर पक्षपात नहीं करता—खैर, जो प्रतिष्ठित थे उहोंने मुझे कुछ भी नहीं जोड़ा। <sup>७</sup> बल्कि इसके विपरीत, यह देखकर कि मुझे खतनारहितों के लिए सुसमाचार सौंपा गया था, जैसे पतरस को खतनारहितों के लिए <sup>८</sup> (क्योंकि वही जो पतरस के लिए खतनारहितों के लिए प्रेरिताई में कार्यरत था, वही मेरे लिए भी अन्यजातियों के लिए कार्यरत था), <sup>९</sup> और यह पहचानते हुए कि मुझे दी गई अनुग्रह, याकूब, केफा और यूहन्ना, जो संभ माने जाते थे, ने मुझे और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया, ताकि हम अन्यजातियों के पास जाएं और वे खतनारहितों के पास। <sup>१०</sup> उहोंने हमसे केवल यह अनुरोध किया कि हम गरीबों को याद रखें—वही बात जिसे करने के लिए मैं भी उत्सुक था। <sup>११</sup> परंतु जब केफा अंताकिया आया, तो मैंने उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी था। <sup>१२</sup> क्योंकि याकूब से कुछ लोगों के आने से पहले, वह अन्यजातियों के साथ खाता था; परंतु जब वे आए, तो वह अलग हो गया और खुद को अलग कर लिया, खतनारहितों से डरते हुए। <sup>१३</sup> बाकी यहूदी भी उसके साथ कपट में शामिल हो गए, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ तक कि बरनबास भी उनके कपट से बहक गया। <sup>१४</sup> परंतु जब मैंने देखा कि वे सुसमाचार के सत्य के बारे में सीधे नहीं चल रहे हैं, तो मैंने केफा से सबके सामने कहा, "यदि

## गलातियों

तुम, यहूदी होते हुए, अन्यजातियों की तरह जीते हो और यहूदियों की तरह नहीं, तो तुम अन्यजातियों को यहूदियों की तरह जीने के लिए कैसे बाध्य करते हो? <sup>15</sup> हम स्वाभाविक रूप से यहूदी हैं और अन्यजातियों के पापी नहीं; <sup>16</sup> फिर भी, यह जानते हुए कि व्यक्ति व्यवस्था के कार्यों से नहीं, बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा धर्म ठहरता है, हमने भी मसीह यीशु में विश्वास किया है ताकि हम मसीह में विश्वास के द्वारा धर्म ठहरें और व्यवस्था के कार्यों से नहीं; क्योंकि व्यवस्था के कार्यों से कोई भी प्राणी धर्मी नहीं ठहर सकता। <sup>17</sup> परंतु यदि, मसीह में धर्म ठहरने की खोज में, हम स्वयं भी पापी पाए जाते हैं, तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं! <sup>18</sup> क्योंकि यदि मैं वही पुनः निर्माण करता हूँ जो मैंने एक बार नष्ट किया था, तो मैं स्वयं को अपराधी सिद्ध करता हूँ। <sup>19</sup> क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के लिए मर गया, ताकि मैं परमेश्वर के लिए जीति रह सकूँ। <sup>20</sup> मैं मसीह के साथ कूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं नहीं, बल्कि मसीह मुझे मैं जीति है, और जो जीवन मैं अब शरीर में जीता हूँ, वह मैं परमेश्वर के पुत्र में विश्वास के द्वारा जीता हूँ, जिसने मुझसे प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया। <sup>21</sup> मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करता, क्योंकि यदि धर्म व्यवस्था के द्वारा आता है, तो मसीह व्यर्थ में मरा।

**3** हे मूर्ख गलातियों, किसने तुम्हें मोहित कर दिया, जिनकी अँखों के सामने यीशु मसीह को कूस पर चढ़ाया हुआ चित्रित किया गया था? <sup>2</sup> मैं तुमसे केवल यह जानना चाहता हूँ: क्या तुमने आत्मा को व्यवस्था के कामों से पाया, या विश्वास से सुनकर? <sup>3</sup> क्या तुम इन्हें मूर्ख हो? आत्मा से आरंभ करके, क्या अब तुम शरीर से सिद्ध हो रहे हो? <sup>4</sup> क्या तुमने इतनी बातें व्यर्थ में सहन कीं—यदि वास्तव में यह व्यर्थ था? <sup>5</sup> तो फिर, क्या वह जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और तुम्हारे बीच चमकार करता है, वह यह व्यवस्था के कामों से करता है, या विश्वास से सुनकर? <sup>6</sup> जैसे अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया। <sup>7</sup> इसलिए, यह जान लो कि जो विश्वास से है, वही अब्राहम के पुत्र है। <sup>8</sup> स्वास्त, यह पूर्वानुमान करते हुए कि परमेश्वर विश्वास के द्वारा अन्यजातियों को धर्म ठहराएगा, अब्राहम को पहले से सुसमाचार सुनाया, यह कहते हुए, “सभी जातियाँ तुझमें आशीर्वाद पाएंगी!” <sup>9</sup> तो फिर, जो विश्वास से हैं, वे अब्राहम, विश्वास करने वाले के साथ अशीर्वादित हैं। <sup>10</sup> क्योंकि जो सभी व्यवस्था के कामों से हैं, वे शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है: “शापित है हर कोई जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता।” <sup>11</sup> अब, यह स्पष्ट है

कि कोई भी परमेश्वर के सामने व्यवस्था से धर्मी नहीं ठहराया जाता; क्योंकि, “धर्मी व्यक्ति विश्वास से जीवित रहेगा।” <sup>12</sup> हालाँकि, व्यवस्था विश्वास की नहीं है, इसके विपरीत, “जो व्यक्ति उन्हें करता है, वह उनके द्वारा जीवित रहेगा।” <sup>13</sup> मसीह ने हमें व्यवस्था के शाप से मुक्त किया, हमारे लिए शाप बनकर—क्योंकि लिखा है: “शापित है हर कोई जो पेड़ पर लटकता है”— <sup>14</sup> ताकि मसीह यीशु में अब्राहम का आशीर्वाद अन्यजातियों पर आ सके, ताकि हम विश्वास के माध्यम से आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त कर सकें। <sup>15</sup> भाइयों और बहनों, मैं मानव संबंधों की दृष्टि से कहता हूँ, यद्यपि यह केवल एक मनुष्य की वाचा है, एक बार इसे अनुमोदित कर दिया गया, कोई इसे रद्द नहीं करता या इसमें शर्तें नहीं जोड़ता। <sup>16</sup> अब प्रतिज्ञाँ अब्राहम और उसके वंशज से कहीं गई थीं। वह नहीं कहता, “और वंशजों से,” जैसे कि कई के संदर्भ में, बल्कि एक के संदर्भ में, “और तेरे वंशज से,” जो मसीह है। <sup>17</sup> मैं यह कह रहा हूँ: व्यवस्था, जो चार सौ तीस वर्ष बाद अई, परमेश्वर द्वारा पहले से अनुमोदित वाचा को रद्द नहीं करती, ताकि प्रतिज्ञा को निरस्त कर सके। <sup>18</sup> क्योंकि यदि विरासत व्यवस्था पर आधारित है, तो यह अब प्रतिज्ञा पर आधारित नहीं है; लेकिन परमेश्वर ने इसे अब्राहम को प्रतिज्ञा के माध्यम से प्रदान किया। <sup>19</sup> फिर व्यवस्था क्यों? यह अपराधों के कारण जोड़ी गई थी, स्वर्गद्वारों के माध्यम से एक मध्यस्थ के हाथ से आदेशित की गई थी, जब तक कि वह वंशज न आए जिसे प्रतिज्ञा की गई थी। <sup>20</sup> अब एक मध्यस्थ केवल एक पक्ष के लिए नहीं होता; लेकिन परमेश्वर केवल एक है। <sup>21</sup> तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विपरीत है? कदापि नहीं! क्योंकि यदि कोई ऐसी व्यवस्था दी गई होती जो जीवन प्रदान कर सकती, तो वास्तव में धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा होती। <sup>22</sup> लेकिन शास्त्र ने सभी को पाप के अधीन कर दिया है, ताकि यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा प्रतिज्ञा उन लोगों को दी जा सके जो विश्वास करते हैं। <sup>23</sup> लेकिन विश्वास के आने से पहले, हम व्यवस्था के अधीन रखे गए थे, उस विश्वास के लिए बदी बनाए गए थे जो प्रकट होने के लिए था। <sup>24</sup> इसलिए व्यवस्था हमारा संरक्षक बन गई है ताकि वह हमें मसीह तक ले जाए, ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्म ठहराए जा सकें। <sup>25</sup> लेकिन अब जब विश्वास आ गया है, हम अब संरक्षक के अधीन नहीं हैं। <sup>26</sup> क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हो। <sup>27</sup> क्योंकि तुम मैं से सभी जिहँनें मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को धारण कर लिया है। <sup>28</sup> यहाँ न तो यहूदी है, न यूनानी; न दास है, न स्वतंत्र; न पुरुष है, न स्त्री; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक सभी बातों का पालन नहीं करता।” <sup>29</sup> अब, यह स्पष्ट है

# गलातियों

हो।<sup>20</sup> और यदि तुम मसीह के हो, तो तुम अब्राहम के वंशज हो, प्रतिज्ञा के अनुसार उत्तराधिकारी हो।

**4** अब मैं कहता हूँ, जब तक वारिस बच्चा है, वह दास से बिल्कुल भिन्न नहीं होता, यद्यपि वह सब कुछ का स्वामी है<sup>2</sup> परन्तु वह पिता द्वारा निर्धारित तिथि तक अभिभावकों और प्रबंधकों के अधीन रहता है।<sup>3</sup> इसी प्रकार हम भी, जब हम बच्चे थे, संसार के प्रारंभिक सिद्धांतों के अधीन बंधन में थे।<sup>4</sup> परन्तु जब समय की पूर्णांता आई, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो एक स्त्री से जन्मा, जो व्यवस्था के अधीन जन्मा,<sup>5</sup> ताकि वह उन लोगों को छुड़ा सके जो व्यवस्था के अधीन थे, ताकि हम पुत्र और पुत्रियाँ होने का अधिकार प्राप्त कर सकें।<sup>6</sup> क्योंकि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा है, जो पुकारता है, "अब्ज़! पिता!"<sup>7</sup> इसलिए तुम अब दास नहीं, परन्तु पुत्र हो; और यदि पुत्र हो, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हो।<sup>8</sup> फिर भी उस समय, जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते थे, तुम उन लोगों के दास थे जो स्वभाव से देवता नहीं हैं।<sup>9</sup> परन्तु अब जब तुमने परमेश्वर को जान लिया है, या यों कहें कि परमेश्वर ने तुम्हें जान लिया है, तो कैसे तुम फिर से उन दुर्बल और तुच्छ प्रारंभिक सिद्धांतों की ओर लौट रहे हो, जिनके तुम फिर से दास बनना चाहते हो?<sup>10</sup> तुम दिन, महीने, ऋतुँयाँ और वर्ष बड़े ध्यान से मानते हो।<sup>11</sup> मुझे तुम्हारे लिए डढ़ है, कि कहीं मैंने तुम्हारे लिए व्यर्थ ही परिश्रम तो नहीं किया।<sup>12</sup> मैं तुमसे विनती करता हूँ, भाइयों और बहनों, जैसे मैं हूँ वैसे ही बनो, क्योंकि मैं भी तुम्हारे जैसा बन गया हूँ। तुमने मुझे कोई गलत नहीं किया;<sup>13</sup> परन्तु तुम जानते हो कि यह एक शारीरिक बीमारी के कारण था कि मैंने पहली बार तुम्हें सुसामाचार सुनाया;<sup>14</sup> और तुमने मेरी शारीरिक स्थिति में जो तुम्हारे लिए एक परीक्षा थी, उसे तुच्छ नहीं जाना, न ही तिरस्कार किया, बल्कि तुमने मुझे परमेश्वर के दूत के रूप में, स्वयं मसीह यीशु के रूप में स्वीकार किया।<sup>15</sup> फिर वह आशीर्वाद की भावना कहाँ है जो तुम्हारे पास थी? क्योंकि मैं तुम्हें गवाही देता हूँ कि, यदि संभव होता, तो तुम अपनी अँखें निकालकर मुझे दे देते।<sup>16</sup> तो क्या मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हूँ क्योंकि मैंने तुम्हें सत्य बताया है?<sup>17</sup> वे तुम्हें उत्सुकता से खोजते हैं, परन्तु प्रशंसनीय तरीके से नहीं, बल्कि वे तुम्हें अलग करना चाहते हैं ताकि तुम उन्हें खोजो।<sup>18</sup> परन्तु यह हमेशा प्रशंसनीय तरीके से उत्सुकता से खोजा जाना अच्छा है, और न केवल जब मैं तुम्हारे साथ उपस्थित हूँ।<sup>19</sup> मेरे बच्चे, जिनके साथ मैं फिर से प्रसव पीड़ा मैं हूँ जब तक कि मसीह तुम में रूप नहीं ले लेता—<sup>20</sup> परन्तु मैं चाहता हूँ कि मैं अब तुम्हारे साथ उपस्थित होता और अपने स्वर

को बदलता, क्योंकि मैं तुम्हारे बारे में उलझन मैं हूँ।<sup>21</sup> मुझे बताओ, तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, क्या तुम व्यवस्था को नहीं सुनते? <sup>22</sup> क्योंकि लिखा है कि अब्राहम के दो पुत्र थे, एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से।<sup>23</sup> परन्तु दासी से जन्मा पुत्र शरीर के अनुसार जन्मा, और स्वतंत्र स्त्री से जन्मा पुत्र प्रतिज्ञा के अनुसार।<sup>24</sup> यह रूपक स्पष्ट में कहा जा रहा है, क्योंकि ये स्त्रियाँ दो बाचाएँ हैं: एक माउंट सीने से आती है जो दास बनने वाले बच्चों को जन्म देती है, वह हाजिरा है।<sup>25</sup> अब यह हाजिरा अरब में माउंट सीने है और वर्तमान यरूशलैम के अनुरूप है, क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ दासता मैं है।<sup>26</sup> परन्तु ऊपर का यरूशलैम स्वतंत्र है; वह हमारी माता है।<sup>27</sup> क्योंकि लिखा है:

"आनंदित हो, बाँझ, जो जन्म नहीं देती फूट पड़ और चिल्ला, तू जो प्रसव पीड़ा में नहीं है, क्योंकि उजाड़ की संतानें अधिक हैं उस से जो पति वाली है।"

<sup>28</sup> और तुम, भाइयों और बहनों, इसहाक के समान, प्रतिज्ञा के बच्चे हो।<sup>29</sup> परन्तु जैसे उस समय शरीर के अनुसार जन्मा पुत्र आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसे ही अब भी है।<sup>30</sup> परन्तु शास्त्र क्या कहता है? "दासी और उसके पुत्र को निकाल दो, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ वारिस नहीं होगा।"<sup>31</sup> तो फिर, भाइयों और बहनों, हम दासी की संतान नहीं, बल्कि स्वतंत्र स्त्री की संतान हैं।

**5** मसीह ने हमें स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्र किया है; इसलिए दृढ़ रहो और फिर से दासता के जुए मैं न फेंसो।<sup>2</sup> देखो, मैं, पौलुस, तुमसे कहता हूँ कि यदि तुम खतना करवाते हो, तो मसीह तुम्हारे लिए कोई लाभ नहीं होगा।<sup>3</sup> और मैं फिर से हर उस व्यक्ति को गवाही देता हूँ जो खतना करवाता है, कि उसे पूरी व्यवस्था का पालन करना अनिवार्य है।<sup>4</sup> तुम मसीह से अलग हो गए हो, तुम जो व्यवस्था द्वारा धर्मी ठहरने की कोशिश कर रहे हो; तुम अनुग्रह से गिर गए हो।<sup>5</sup> क्योंकि हम आत्मा के द्वारा, विश्वास से, धर्म की आशा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।<sup>6</sup> क्योंकि मसीह यीशु में न तो खतना कुछ अर्थ रखता है और न ही अखतना, परंतु प्रेम के द्वारा कार्यरत विश्वास।<sup>7</sup> तुम अच्छी तरह दौड़ रहे थे; किसने तुम्हें सत्य का पालन करने से रोका? <sup>8</sup> यह प्रेरणा उस से नहीं आई जिसने तुम्हें बुलाया।<sup>9</sup> थोड़ा सा खमीर सारे आटे को खमीर कर देता है।<sup>10</sup> मुझे प्रभु मैं तुम पर विश्वास है, कि तुम कोई और दृष्टिकोण नहीं अपनाओगे; परंतु जो तुम्हें परेशान कर रहा है वह दंड भोगेगा, चाहे वह कोई भी हो।<sup>11</sup> परंतु मेरे लिए, भाइयों और बहनों, यदि मैं अब भी

## गलातियों

खतना का प्रचार करता हूँ, तो मुझे अब भी क्यों सताया जाता है? तब क्रूस की ठोकर हट गई है।<sup>12</sup> मैं चाहता हूँ कि जो तुम्हें परेशान कर रहे हैं वे स्वयं को भी काट डालें।<sup>13</sup> क्योंकि, भाइयों और बहनों, तुम स्वतंत्रता के लिए बुलाए गए थे; केवल अपनी स्वतंत्रता को शरीर के लिए अवसर न बनाने दो, परंतु प्रेम के द्वारा एक-दूसरे की सेवा करो।<sup>14</sup> क्योंकि पूरी व्यवस्था एक शब्द में पूरी होती है, इस कथन में, “तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।”<sup>15</sup> परंतु यदि तुम एक-दूसरे को काटते और खा जाते हो, तो सावधान रहो कि तुम एक-दूसरे से नष्ट न हो जाओ।<sup>16</sup> परंतु मैं कहता हूँ आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की इच्छा को पूरा नहीं करोगे।<sup>17</sup> क्योंकि शरीर की इच्छा आत्मा के विरुद्ध है, और आत्मा शरीर के विरुद्ध; क्योंकि ये एक-दूसरे के विरोध में हैं, ताकि तुम वह न कर सको जो तुम चाहते हो।<sup>18</sup> परंतु यदि तुम आत्मा के द्वारा संचालित हो, तो तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो।<sup>19</sup> अब शरीर के कार्य प्रकट हैं, जो हैं: यौन अनैतिकता, अशुद्धता, अश्लील व्यवहार,<sup>20</sup> मूर्ति पूजा, जादू-टोना, सत्रुता, कालह, ईर्ष्णा, क्रोध के प्रकोप, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, विभाजन, गुट,<sup>21</sup> डाह, मद्यपान, उच्छ्वसलता, और ऐसी ही बातें जिनके बारे में मैं तुम्हें पहले से चेतावनी देता हूँ, जैसे मैंने पहले चेतावनी दी थी, कि जो लोग ऐसी बातें करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे।<sup>22</sup> परंतु आत्मा का फल है प्रेम, आनंद, शांति, ईर्ष, दया, भलाई, विश्वास,<sup>23</sup> नम्रता, आत्म-संयम; ऐसी बातें के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है।<sup>24</sup> अब जो मसीह यीशु के हैं उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और इच्छाओं के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया है।<sup>25</sup> यदि हम आत्मा के द्वारा जीवन जीते हैं, तो हम आत्मा के अनुसार चलें।<sup>26</sup> हम घमंडी न बनें, एक-दूसरे को चुनौती न दें, एक-दूसरे से ईर्ष्णा न करें।

**6** भाइयों और बहनों, यदि कोई व्यक्ति किसी अपग्राध में पकड़ा जाता है, तो आप जो आसिकि हैं, उसे नम्रता की आत्मा में सुधारें; प्रयेक व्यक्ति अपने आप को देखें, ताकि आप भी परीक्षा में न पड़ें।<sup>2</sup> एक दूसरे के बोझ उठाओं, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो।<sup>3</sup> क्योंकि यदि कोई सोचता है कि वह कुछ है, जबकि वह कुछ नहीं है, तो वह अपने आप को धोखा देता है।<sup>4</sup> परंतु प्रत्येक व्यक्ति को अपने काम की जांच करनी चाहिए, और तब वह अपने आप में गर्व करने का कारण पाएगा, और किसी दूसरे में नहीं।<sup>5</sup> क्योंकि प्रयेक व्यक्ति अपना बोझ उठाएगा।<sup>6</sup> जो वचन सिखाया जाता है, वह उसे सिखाने वाले के साथ सभी अच्छी चीजें साझा करें।<sup>7</sup> धोखा न खाओ, परमेश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता; क्योंकि जो कुछ कोई

बोता है, वही वह काटेगा।<sup>8</sup> क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर से विनाश काटेगा, परंतु जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा से अनन्त जीवन काटेगा।<sup>9</sup> अच्छा करने में हिम्मत न हारें, क्योंकि उचित समय पर हम काटेंगे, यदि हम थकेंगे नहीं।<sup>10</sup> इसलिए जब तक हमारे पास अवसर है, हम सभी लोगों के साथ भलाई करें, विशेषकर उन लोगों के साथ जो विश्वास के घराने के हैं।<sup>11</sup> देखो, मैंने अपने हाथ से तुम्हें कितने बड़े अक्षरों में लिखा है।<sup>12</sup> जो लोग शरीर में अच्छा दिखावा करना चाहते हैं, वे तुम्हें खतना करने के लिए मजबूर करते हैं, केवल इसलिए कि वे मसीह के क्रूस के लिए सताए न जाएं।<sup>13</sup> क्योंकि जो खतना किए गए हैं, वे स्वयं भी व्यवस्था का पालन नहीं करते, परंतु वे चाहते हैं कि तुम खतना कराओ ताकि वे तुम्हारे शरीर में गर्व कर सकें।<sup>14</sup> परंतु मुझसे यह दूर हो कि मैं किसी भी चीज में गर्व करूँ, सिवाय हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के, जिसके द्वारा संसार मेरे लिए क्रूस पर चढ़ा है, और मैं संसार के लिए।<sup>15</sup> क्योंकि न तो खतना कुछ है, न ही खतना रहित होना, बल्कि एक नई सृष्टि।<sup>16</sup> और जो इस नियम का पालन करेंगे, उन पर और परमेश्वर के इस्साएल पर शांति और दया हो।<sup>17</sup> अब से कोई मुझे परेशान न करें, क्योंकि मैं अपने शरीर पर यीशु के निशान धारण करता हूँ।<sup>18</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा तुम्हारी आत्मा के साथ हो, भाइयों और बहनों। आमीन।

## इफिसियों

**1** पौत्रुस, जो मसीह यीशु का प्रेरित है परमेश्वर की इच्छा से, उन संतों के लिए जो इफिसुस में हैं और मसीह यीशु में विश्वासयोग्य हैं।<sup>2</sup> हमारे परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती।<sup>3</sup> धन्य है हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आत्मिक आशीर्वाद के साथ आशीर्वादित किया है,<sup>4</sup> जैसे उसने हमें दुनिया की नींव डाले जाने से पहले उसमें बुना, कि हम उसके सामने पवित्र और निर्दोष हों। प्रेम में<sup>5</sup> उसने हमें अपनी इच्छा की अच्छी प्रसन्नता के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा अपने लिए पुत्र और पुत्रियाँ बनने के लिए पूर्वीनिधरित किया,<sup>6</sup> उसकी महिमा के अनुग्रहित क्रिया।<sup>7</sup> उसी में हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है, हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह की धन्यता के अनुसार।<sup>8</sup> जिसे उसने हम पर अत्यधिक रूप से उंडेला। सारी बुद्धि और समझ में<sup>9</sup> उसने अपनी इच्छा का रहस्य हमें प्रकट किया, अपनी अच्छी प्रसन्नता के अनुसार जो उसने उसमें ठहराई।<sup>10</sup> उसकी योजना के समय की परिपूर्णता के अनुसार, सब चीजों को मसीह में एकत्रित करने के लिए, स्वर्ग में की चीजें और पृथ्वी पर की चीजें।<sup>11</sup> उसी में हमें भी एक विरासत मिलती है, जो उसकी योजना के अनुसार सब कुछ करता है,<sup>12</sup> इस उद्देश्य के लिए कि हम जो मसीह में पहले आशा रखते थे, उसकी महिमा की ग्रंथांस के लिए हों।<sup>13</sup> उसी में, तुम भी, सत्य के संदेश को सुनने के बाद, तुम्हारे उद्घार के सुसमाचार को—विश्वास करने के बाद—उसमें पवित्र आत्मा के साथ मुहरबद किए गए,<sup>14</sup> जो हमारी विरासत की पहली किस्त है, परमेश्वर की अपनी संपत्ति के छुटकारे के संबंध में, उसकी महिमा की ग्रंथांस के लिए।<sup>15</sup> इसी कारण से मैं भी, प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुनने के बाद,<sup>16</sup> तुम्हारे लिए धन्यवाद देना बांद नहीं करता, अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए;<sup>17</sup> कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, महिमा का पिता, तुम्हें उसकी जानकारी में बुद्धि और प्रकाशना की आत्मा दे।<sup>18</sup> मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे हृदय की अँखें प्रकाशित हों, ताकि तुम जान सको कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, संतों में उसकी विरासत की महिमा की धन्यता क्या है,<sup>19</sup> और हम विश्वास करने वालों के प्रति उसकी शक्ति की अपरिमित महानाता क्या है। ये उसकी शक्ति की ताकत के कार्य के अनुसार हैं<sup>20</sup> जो उसने मसीह में किया, जब उसने उसे मृतकों में से जिलाया और स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ पर बैठाया,<sup>21</sup> सभी शासन और अधिकार और शक्ति और प्रभुत्व से बहुत ऊपर,

और हर नाम से जो नामित है, न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी।<sup>22</sup> और उसने सब चीजों को उसके पैरों के अधीन कर दिया, और उसे कलीसिया के लिए सब चीजों का सिर बना दिया,<sup>23</sup> जो उसका शरीर है, उसकी परिपूर्णता जो सब में सब कुछ भरता है।

**2** और तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे,<sup>2</sup> जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर चलते थे, उस वायु के अधिकार के प्रधान के अनुसार, उस आत्मा के अनुसार जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य कर रही है।<sup>3</sup> उनमें हम भी पहले अपने शरीर की अभिलाषाओं में जीवन बिताते थे, शरीर और मन की इच्छाओं को पूरा करते थे, और स्वभाव से क्रोध के संतान थे, जैसे और लोग भी हैं।<sup>4</sup> परन्तु परमेश्वर, जो दया में धनी है, अपनी बड़ी प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया,<sup>5</sup> जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, हमें मसीह के साथ जीवित किया (अनुग्रह से तुम उद्धार पाए हो),<sup>6</sup> और हमें उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया,<sup>7</sup> ताकि आने वाले युगों में वह मसीह यीशु में हमारे प्रति अपनी अनुग्रह की असीम धन्यता को दिखा सके।<sup>8</sup> क्योंकि अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का वरदान है,<sup>9</sup> कर्मों का फल नहीं, ताकि कोई घमण्ड न करे।<sup>10</sup> क्योंकि हम उसी की कृति हैं, मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए सूजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया, ताकि हम उनमें चर्चें।<sup>11</sup> इसलिए स्वरण रखो कि पहले तुम—शरीर में अन्यजाति, जिन्हें तथाकथित “खतना” करने वाले “अखतना” कहते हैं, जो शरीर में हाथों से किया जाता है—<sup>12</sup> स्वरण रखो कि उस समय तुम मसीह से अलग थे, इसालाल की प्रजा से बाहर थे, और प्रतिज्ञा के वाचाओं से अपरिचित थे, बिना आशा और बिना परमेश्वर के संसार में थे।<sup>13</sup> परन्तु अब मसीह यीशु में तुम, जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।<sup>14</sup> क्योंकि वही हमारी शांति है, जिसने दोनों को एक कर दिया और बीच की विभाजन की दीवार को गिरा दिया,<sup>15</sup> अपनी देह में शत्रुता को, जो विधियों की आज्ञाओं में था, समाप्त कर दिया, ताकि वह अपने मैं से दोनों को एक नया मनुष्य बना सके, इस प्रकार शांति स्थापित कर सके;<sup>16</sup> और कि वह दोनों को एक शरीर में कूस के द्वारा परमेश्वर से मेल कराए, शत्रुता को मारे डाले।<sup>17</sup> और उसने आकर तुम्हें, जो दूर थे, और उहें, जो निकट थे, शांति का सुसमाचार सुनाया;<sup>18</sup> क्योंकि उसके द्वारा हम दोनों का एक आत्मा में पिता के पास प्रवेश है।<sup>19</sup> इसलिए अब तुम विदेशी और परदेशी नहीं रहे, परन्तु संतों के साथ नागरिक हो, और परमेश्वर के परिवार के

## इफिसियों

हो, <sup>20</sup> जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाए गए हैं, मसीह यीशु स्वयं कोने के पत्थर हैं, <sup>21</sup> जिसमें सारी इमारत, एक साथ फिट होकर, प्रभु में एक पवित्र मंदिर के रूप में बढ़ रही है, <sup>22</sup> जिसमें तुम भी आत्मा में परमेश्वर का निवास स्थान बनने के लिए एक साथ बनाए जा रहे हो।

**3** इसी कारण मैं, पौलस, मसीह यीशु का बंदी, तुम अन्यजातियों के लिए— <sup>2</sup> यदि वास्तव में तुमने परमेश्वर की उस कृपा के प्रबंध के विषय में सुना है, जो मेरे द्वारा तुम्हारे लिए दी गई है, <sup>3</sup> कि प्रकाशना के द्वारा मुझे वह रहस्य ज्ञात कराया गया, जैसा कि मैंने पहले संक्षेप में लिखा था। <sup>4</sup> इसका उल्लेख करते हुए, जब तुम पढ़ोगे, तो मसीह के रहस्य में मेरी समझ को जान सकोगे, <sup>5</sup> जो अन्य पीढ़ियों में मनुष्यों को ज्ञात नहीं हुआ, जैसा कि अब आत्मा में उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किया गया है: <sup>6</sup> कि अन्यजाति भी उत्तराधिकारी हैं और शरीर के सह-सदस्य हैं, और सुसमाचार के द्वारा मसीह यीशु में प्रतिज्ञा के सह-भागी हैं, <sup>7</sup> जिसका मैं सेवक बनाया गया, परमेश्वर की उस कृपा के वरदान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ्य के कार्य के अनुसार मुझे दी गई। <sup>8</sup> मुझे, जो सभी संतों में सबसे छोटा हूँ, यह कृपा दी गई, कि मैं अन्यजातियों को मसीह की अगम्य धन-सम्पत्ति का प्रचार करूँ, <sup>9</sup> और सब लोगों को यह प्रकट करूँ कि वह रहस्य की योजना क्या है, जो युगों से परमेश्वर में छिपी हुई थी, जिसने सब कुछ रचा; <sup>10</sup> ताकि परमेश्वर की बहुविध बुद्धि अब कलीसिया के द्वारा स्वर्गीय स्थानों में प्रधानों और अधिकारियों को प्रकट की जाए। <sup>11</sup> यह उस अनन्त उद्देश्य के अनुसार था, जिसे उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूरा किया, <sup>12</sup> जिसमें हमें विश्वास के द्वारा उसमें निर्भीत और आत्मविश्वास के साथ प्रवेश है। <sup>13</sup> इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी क्लेशों के कारण निराश न हो, क्योंकि ये तुम्हारी महिमा के लिए हैं। <sup>14</sup> इसी कारण मैं पिता के सामने छुट्टें टेकता हूँ, <sup>15</sup> जिससे स्वर्ण और पूर्वी पर हर परिवार का नाम मिलता है, <sup>16</sup> कि वह अपनी महिमा की धन-सम्पत्ति के अनुसार तुम्हें यह अनुग्रह दे, कि तुम उसकी आत्मा के द्वारा अंतरिक व्यक्ति में सामर्थ्य से बलवंत हो जाओ, <sup>17</sup> ताकि मसीह विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में वास करें; और तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और स्थिर होकर, <sup>18</sup> सभी संतों के साथ यह समझ सको कि चौड़ाई और लंबाई और ऊँचाई और गहराई क्या है, <sup>19</sup> और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, ताकि तुम परमेश्वर की सारी परिपूर्ति से भर जाओ। <sup>20</sup> अब जो हमें हमारी प्रार्थना या विचार से कहीं अधिक प्रचुरता से करने में समर्थ है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो

हम में कार्य करता है, <sup>21</sup> उसे कलीसिया में और मसीह यीशु में सभी पीढ़ियों में युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

**4** इसलिए मैं, जो प्रभु में बंदी हूँ, तुमसे बिनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम्हें बुलाया गया है, उसके योग्य चाल चलो। <sup>2</sup> सारी नम्रता और कोमलता के साथ, धैर्य के साथ, प्रेम में एक दूसरे को सहन करते हुए, <sup>3</sup> शति के बधन में आत्मा की एकता को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहो। <sup>4</sup> एक ही शरीर और एक ही आत्मा है, जैसे तुम्हारी बुलाहट की एक ही आशा में तुम्हें बुलाया गया है, <sup>5</sup> एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, <sup>6</sup> एक ही परमेश्वर और सबका पिता, जो सबके ऊपर, सबके द्वारा और सब में है। <sup>7</sup> परंतु हम में से प्रत्येक को मसीह के वरदान की माप के अनुसार अनुग्रह दिया गया है। <sup>8</sup> इसलिए यह कहता है,

"जब वह ऊँचाई पर चढ़ा, उसने बंदियों को बंदी बना लिया, और उसने लोगों को वरदान दिए।"

<sup>9</sup> अब यह वाक्य, "वह चढ़ा," इसका क्या अर्थ है सिवाय इसके कि वह पृथ्वी के निचले भागों में भी उत्तरा था? <sup>10</sup> वही जो उत्तरा था, वही है जो सब आकाशों के ऊपर चढ़ा, ताकि वह सब चीजों को भर सके। <sup>11</sup> और उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार प्रवारक, कुछ को पास्टर और शिक्षक बनाया, <sup>12</sup> संतों को सेवा के कार्य के लिए, मसीह के शरीर के निर्माण के लिए तैयार करने के लिए; <sup>13</sup> जब तक हम सब विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र की जानकारी में, एक परिपक्व मनुष्य में, मसीह की पूर्णता की माप तक नहीं पहुँच जाते। <sup>14</sup> परिणामस्वरूप, हम अब बच्चों की तरह नहीं रहेंगे, जो लहरों से इधर-उधर फेंके जाते हैं और हर प्रकार की शिक्षा की हवा से, लोगों की चालाकी से, धोखेबाज़ योजनाओं से बहकाए जाते हैं; <sup>15</sup> परंतु प्रेम में सत्य बोतते हुए, हम सब बातों में उसके समान बढ़ते जाएँ जो सिर है, अर्थात् मसीह, <sup>16</sup> जिससे पूरा शरीर, हर जोड़ की आपूर्ति के अनुसार, उचित कार्य के द्वारा, एक साथ फिट और बंधा हुआ है, प्रेम में अपने आप को बनाने के लिए शरीर की बुद्धि का कारण बनता है। <sup>17</sup> इसलिए मैं यह कहता हूँ, और प्रभु में पूष्टि करता हूँ, कि तुम अब और अन्यजातियों की तरह नहीं चलो, जो अपने मन की व्यर्थता में चलते हैं, <sup>18</sup> जो अपनी समझ में अंधकारमय है, परमेश्वर के जीवन से बाहर हैं, क्योंकि उनमें अज्ञानता है, उनके हृदय की कठोरता के कारण; <sup>19</sup> और वे, कठोर होकर, अश्लील व्यवहार के लिए अपने आप को दे चुके हैं, हर प्रकार की अशुद्धता को लालच के साथ करने के लिए। <sup>20</sup> परंतु तुमने मसीह

## इफिसियों

को इस प्रकार नहीं सीखा, <sup>21</sup> यदि वास्तव में तुमने उसे सुना है और उसमें सिखाए गए हो, जैसे कि यीशु में सत्य है, <sup>22</sup> कि, तुम्हारे पूर्व जीवन के संदर्भ में, तुम पुराने स्व को उतार दो, जो धोखे की वासनाओं के अनुसार भ्रष्ट हो रहा है, <sup>23</sup> और तुम्हारे मन की आत्मा में नया बोगे, <sup>24</sup> और नए स्व को पहन लो, जो परमेश्वर की समानता में, सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में बनाया गया है। <sup>25</sup> इसलिए, झूठ को उतार कर, तुम में से हर एक अपने पड़ोसी के साथ सत्य बोलो, क्योंकि हम एक दूसरे के अंग हैं। <sup>26</sup> क्रोधित होओ, और फिर भी पाप मत करो; अपने क्रोध पर सूर्यस्त न होने दो, <sup>27</sup> और शैतान को अवसर न दो। <sup>28</sup> जो चोरी करता है वह अब और चोरी न करें; बल्कि उसे परिष्रम करना चाहिए, अपने हाथों से अच्छा उत्पादन करना चाहिए, ताकि उसके पास उस व्यक्ति के साथ साझा करने के लिए कुछ हो जो आवश्यकता में है। <sup>29</sup> तुम्हारे मुँह से कोई अशुद्ध शब्द न निकलो, बल्कि केवल वही शब्द जो निर्माण के लिए अच्छा हो, क्षण की आवश्यकता के अनुसार, ताकि सुनने वालों को अनुग्रह मिल सके। <sup>30</sup> परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित न करो, जिसके द्वारा तुम मुकित के दिन के लिए सील किए गए थे। <sup>31</sup> सारी कढ़वाहट, क्रोध, गुस्सा, शोरगुल, और निदा तुम्हसे दूर हो जाए, साथ ही सारा द्वेष भी। <sup>32</sup> एक दूसरे के प्रति दयालु बनो, करुणामय, एक दूसरे को क्षमा करो, जैसे कि परमेश्वर ने भी मरीह में तुम्हें क्षमा किया है।

**5** इसलिए परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनो, जैसे प्रिय बच्चे; <sup>2</sup> और प्रेम में चलो, जैसे मरीह ने भी हमसे प्रेम किया और हमारे लिए स्वर्यं को अर्पण कर दिया, परमेश्वर के लिए एक सुगीथित भेट और बलिदान के रूप में। <sup>3</sup> परन्तु व्यभिचार, या कोई अशुद्धता या लालच, तुम्हारे बीच में कभी भी उल्लेखित न हो, जैसा कि संतों के बीच उचित है, <sup>4</sup> और कोई अशीलता, या मूर्खतागूण बातें, या अशील मजाक नहीं होना चाहिए, जो उपयुक्त नहीं हैं, बल्कि धन्यवाद देना चाहिए। <sup>5</sup> क्योंकि तुम यह निश्चित रूप से जानते हो, कि कोई भी व्यभिचारी या अशुद्ध या लालची व्यक्ति, जिसका अर्थ है मूर्खपूजक, मरीह और परमेश्वर के राज्य में कोई उत्तराधिकार नहीं रखता। <sup>6</sup> देखो कि कोई तुम्हें खाली शब्दों से धोखा न दे, क्योंकि इन चीजों के कारण परमेश्वर का क्रोध अवश्या के पुत्रों पर आता है। <sup>7</sup> इसलिए उनके साथ सहभागी न बनो; <sup>8</sup> क्योंकि तुम एक बार अंधकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो; ज्योति के बच्चों की तरह चलो। <sup>9</sup> (क्योंकि ज्योति का फल सब भलाई, धर्म और सत्य में होता है), <sup>10</sup> जैसे तुम यह जानने का प्रयास करते हो कि प्रभु को क्या प्रसन्न करता है। <sup>11</sup> अंधकार के व्यर्थ कर्मों में सहभागी न

बनो, बल्कि उन्हें प्रकट भी करो; <sup>12</sup> क्योंकि जो बातें वे गुप्त में करते हैं, उनका उल्लेख करना भी लज्जाजनक है। <sup>13</sup> परन्तु जब वे ज्योति से प्रकट होते हैं, तो सब बातें प्रकट हो जाती हैं, क्योंकि जो कुछ प्रकट होता है वह ज्योति है। <sup>14</sup> इसीलिए यह कहता है,

“जागो, हे सुनो वाले, और मरे हुओं में से उठो, क्योंकि मरीह की ज्योति तुम पर चमकेगी।”

<sup>15</sup> इसलिए, ध्यान से देखो कि तुम कैसे चलते हो, मर्खों की तरह नहीं बल्कि बुद्धिमानों की तरह, <sup>16</sup> अपने समय का सदृप्योग करते हुए, क्योंकि दिन बुढ़े हैं। <sup>17</sup> इसलिए मूर्ख मत बनो, बल्कि यह समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है। <sup>18</sup> और दाखरस में मत बहको, जिसमें उच्छृंखलता है, बल्कि आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ, <sup>19</sup> भजनों और स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों में एक-दूसरे से बात करते हुए, अपने हृदयों में प्रभु के लिए गाते और संगीत बनाते हुए; <sup>20</sup> हमेशा हमारे प्रभु यीशु मरीह के नाम में हमारे परमेश्वर और पिता को सब बातों के लिए धन्यवाद देते हुए, <sup>21</sup> और मरीह के भय में एक-दूसरे के अधीन होते हुए। <sup>22</sup> पत्नी, अपने स्वर्यं के पति के अधीन रहो, जैसे कि प्रभु के लिए। <sup>23</sup> क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे मरीह भी कलीसिया का सिर है, वह स्वर्यं शरीर का उद्धारकर्ता है। <sup>24</sup> परन्तु जैसे कलीसिया मरीह के अधीन है, वैसे ही पतियों को भी अपने पतियों के अधीन हर बात में होना चाहिए। <sup>25</sup> पति, अपनी पतियों से प्रेम करो, जैसे मरीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए स्वर्यं को अर्पण कर दिया, <sup>26</sup> ताकि वह उसे पवित्र कर सके, उसे वहन के द्वारा जल से धोकर शुद्ध कर सके, <sup>27</sup> ताकि वह कलीसिया को अपनी महिमा में प्रस्तुत कर सके, जिसमें कोई दाग या शिकन या ऐसी कोई चीज न हो; परन्तु वह पवित्र और निर्दिष्ट हो। <sup>28</sup> इसलिए पतियों को भी अपनी पतियों से अपने शरीर की तरह प्रेम करना चाहिए। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह स्वर्यं से प्रेम करता है; <sup>29</sup> क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से घुणा नहीं की, बल्कि उसे पोषण और संवरता है, जैसे मरीह भी कलीसिया करता है, <sup>30</sup> क्योंकि हम उसके शरीर के अंग हैं। <sup>31</sup> इसी कारण मनुष्य अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहेगा, और वे दोनों एक शरीर होंगे। <sup>32</sup> यह रहस्य महान है; परन्तु मैं मरीह और कलीसिया के संदर्भ में बोल रहा हूँ। <sup>33</sup> किंतु भी, आप में से प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी से उसी तरह प्रेम करे जैसे स्वर्यं से करता है, और पत्नी को यह देखना चाहिए कि वह अपने पति का समान करती है।

## इफिसियों

**६** हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि यह उचित है।<sup>२</sup> अपने पिता और माता का आदर करो (जो वचन के साथ पहला आदेश है),<sup>३</sup> ताकि तुम्हारा भला हो और तुम पृथ्वी पर दीर्घायु हो सको।<sup>४</sup> हे पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, परंतु उन्हें प्रभु की शिक्षा और अनुसासन में बढ़ाओ।<sup>५</sup> हे दासों, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, उनके प्रति मसीह के समान भय और कांपते हुए, अपने हृदय की सच्चाई से आज्ञाकारी बनो;<sup>६</sup> अंखों की सेव के रूप में नहीं, जैसा कि मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले करते हैं, परंतु मसीह के दासों के रूप में, हृदय से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हुए।<sup>७</sup> भलाई के साथ सेवा करो, जैसे कि प्रभु के लिए, न कि मनुष्यों के लिए,<sup>८</sup> यह जानते हुए कि जो भी अच्छा काम कोई करता है, उसे प्रभु से वापस मिलेगा, चाहे वह दास हो या स्वतंत्र।<sup>९</sup> और हे स्वामियों, उनके प्रति भी वही बातें करो, और धमकी देना छोड़ दो, पह जानते हुए कि उनका और तुम्हारा स्वामी स्वर्ग में है, और उसके साथ कोई पक्षपात नहीं है।<sup>१०</sup>

अंत में, प्रभु में और उसकी शक्ति के सामर्थ्य में बलवान बनो।<sup>११</sup> परमेश्वर के पूरे कवच को धारण करो, ताकि तुम शैतान की योजनाओं के विरुद्ध दृढ़ रह सको।<sup>१२</sup> क्योंकि हमारा संघर्ष मांस और रक्त के विरुद्ध नहीं है, परंतु प्रथानाताओं के विरुद्ध, शक्तियों के विरुद्ध, इस अंधकार के संसार के शासकों के विरुद्ध, स्वर्गीय स्थानों में दुष्टा की आन्तिक शक्तियों के विरुद्ध है।<sup>१३</sup> इसलिए, परमेश्वर के पूरे कवच को धारण करो, ताकि तुम बुरे दिन में प्रतिरोध कर सको, और सब कुछ करने के बाद, दृढ़ रह सको।<sup>१४</sup> इसलिए, दृढ़ रहो, सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता के ब्रेस्टलेट को धारण करके,<sup>१५</sup> और शांति के सुसमाचार की तैयारी को अपने पैरों पर बांधकर;<sup>१६</sup> इन सबके अलावा, विश्वास की ढाल को उठाओ, जिससे तुम दुष्ट के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सको।<sup>१७</sup> और उद्धर का हेलमेट और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, को धारण करो।<sup>१८</sup> हर प्रार्थना और निवेदन के साथ, आत्मा में हर समय प्रार्थना करो, और इस दृष्टिकोण के साथ, सभी संतों के लिए हर निवेदन के साथ सतर्क रहो,<sup>१९</sup> और मेरे लिए प्रार्थना करो, कि जब मैं अपना मुँह खोलूं, तो मुझे वाणी दी जाए, ताकि मैं सुसमाचार के रहस्य को निर्भकिता से प्रकट कर सकूं,<sup>२०</sup> जिसके लिए मैं जंजीरों में एक राजदूत हूं; ताकि इसे प्रवार करते समय मैं निर्भकिता से बोल सकूं, जैसा कि मुझे बोलना चाहिए।<sup>२१</sup> अब, ताकि तुम भी मेरे हालात के बारे में जान सको कि मैं क्या कर रहा हूं, तुम्हिंसु, जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब कुछ बताएगा।<sup>२२</sup> मैंने उसे तुम्हारे पास इसी उद्देश्य के लिए भेजा है, ताकि तुम हमारे बारे में जान

सको, और वह तुम्हारे दिलों को सांत्वना दे सके।<sup>२३</sup> भाइयों और बहनों के लिए शांति हो, और विश्वास के साथ प्रेम, परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह से।<sup>२४</sup> अनुग्रह उन सभी के साथ हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह को अविनाशी प्रेम के साथ प्रेम करते हैं।

## फिलिप्पियों

**1** पौलुस और तीमुथियुस, मसीह यीशु के दास, फिलिप्पी में मसीह यीशु में सभी संतों को, जिनमें अगुवे और सेवक भी शामिल हैं: <sup>2</sup> हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलें। <sup>3</sup> मैं अपने हर स्मरण में तुम्हारे लिए अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। <sup>4</sup> हमेशा अपनी हर प्रार्थना में तुम्हारे लिए खुशी के साथ प्रार्थना करता हूँ। <sup>5</sup> सुसमाचार में तुम्हारी सहभागिता को देखते हुए, पहले दिन से लेकर अब तक। <sup>6</sup> क्योंकि मैं इस बात के लिए आश्वस्त हूँ कि जिसने तुम में अच्छा काम शुरू किया है, वह इसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा। <sup>7</sup> क्योंकि यह मेरे लिए उत्तिष्ठित है कि मैं तुम सबके बारे में ऐसा महसूस करूँ, क्योंकि तुम मेरे हृदय में हो, क्योंकि मेरी कैद में और सुसमाचार की रक्षा और पुष्टि में, तुम सब मेरे साथ अनुग्रह के सहभागी हो। <sup>8</sup> क्योंकि परमेश्वर मेरा साक्षी है, कि मैं तुम सबके लिए मसीह यीशु की करुणा के साथ कितना लालायित हूँ। <sup>9</sup> और मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम वास्तविक ज्ञान और सभी विकेत में और अधिक बढ़े, <sup>10</sup> ताकि तुम उत्तम बातों को पहचान सको, कि तुम मसीह के दिन के लिए निष्कप्त और निर्दोष रहो; <sup>11</sup> यीशु मसीह के द्वारा आने वाले धर्म के फल से भरे हुए, परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए। <sup>12</sup> अब मैं चाहता हूँ कि तुम जानो, भाइयों और बहनों, कि मेरी परिस्थितियाँ सुसमाचार की अधिक प्रगति के लिए हुई हैं, <sup>13</sup> ताकि मसीह के कारण मेरी कैद प्रेटोरियन गार्ड और सभी अन्य लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गई है, <sup>14</sup> और अधिकांश भाइयों और बहनों ने, मेरी कैद के कारण प्रभु पर विश्वास करते हुए, परमेश्वर का बचन बिना डर के बोलने का अधिक सहास किया है। <sup>15</sup> कुछ, निस्देह, ईर्ष्या और कलह से मसीह का प्रचार कर रहे हैं, लेकिन कुछ भी सन्दावना से, <sup>16</sup> उत्तरार्द्ध इसे प्रेम से करते हैं, यह जानते हुए कि मैं सुसमाचार की रक्षा के लिए नियुक्त हूँ। <sup>17</sup> पूर्वांक स्वार्थी महत्वांकांका से मसीह का प्रचार करते हैं, न कि शुद्ध उद्देश्यों से, यह सोचते हुए कि वे मेरी कैद में मुझे कष्ट दे रहे हैं। <sup>18</sup> तो क्या? केवल यह कि हर तरीके से, चाहे दिखावे में हो या सच्चाई में, मसीह का प्रचार किया जाता है; और इसमें मैं अनन्दित हूँ। हाँ, और मैं अनन्दित रहूँगा, <sup>19</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह की आत्मा की आपूर्ति के माध्यम से मेरी मुक्ति के लिए होगा, <sup>20</sup> मेरी उत्सुक अपेक्षा और आशा के अनुसार, कि मैं किसी भी चीज़ में लजित नहीं होऊँगा, बल्कि पूरी निर्भकता के साथ, मसीह अब भी, हमेशा की तरह, मेरे शरीर में महिमा पाएगा, चाहे जीवन से हो या मृत्यु से। <sup>21</sup> क्योंकि मेरे लिए, जीना मसीह है, और मरना लाभ है। <sup>22</sup> लेकिन यदि मैं शरीर में जीवित रहूँ, तो यह मेरे लिए फलदायी

श्रम होगा, और मैं नहीं जानता कि किसे चुँगँ। <sup>23</sup> लेकिन मैं दोनों दिशाओं से दबाव में हूँ, मसीह के साथ रहने की इच्छा रखते हुए, क्योंकि यह बहुत बेहतर है; <sup>24</sup> फिर भी शरीर में रहना तुम्हारे लिए अधिक आवश्यक है। <sup>25</sup> इस बात के लिए आश्वस्त होकर, मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारे विश्वास में प्रगति और खुशी के लिए तुम्हारे साथ रहूँगा, <sup>26</sup> ताकि मसीह यीशु में तुम्हारा गर्व मेरे कारण अधिक हो, मेरे तुम्हारे पास फिर से आने से। <sup>27</sup> केवल अपने आप को मसीह के सुसमाचार के योग्य आवरण करो, ताकि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ या अनुपस्थित रहूँ, मैं तुम्हारे बारे में सुनूँ कि तुम एक आत्मा में स्थिर खड़े हो, एक मन से सुसमाचार के विश्वास के लिए मिलकर प्रयास कर रहे हो; <sup>28</sup> और किसी भी तरह से अपने विशेषियों से भयभीत न हो—जो उनके लिए विनाश का संकेत है, लेकिन तुम्हारे लिए उद्घार का, और यह भी, परमेश्वर से। <sup>29</sup> क्योंकि तुम्हें मसीह के लिए यह दिया गया है, न केवल उसमें विश्वास करने के लिए, बल्कि उसके लिए कष्ट सहने के लिए भी, <sup>30</sup> उसी संघर्ष का अनुभव करते हुए जो तुमने मुझ में देखा, और अब सुनते हो कि मुझ में है।

**2** इसलिए यदि मसीह में कोई प्रोत्साहन है, यदि प्रेम की कोई सांत्वना है, यदि आत्मा की कोई सहभागिता है, यदि कोई सेह और करुणा है, <sup>2</sup> तो मेरी खुशी को इस प्रकार पूर्ण करो कि तुम एक ही मन के हो, एक ही प्रेम बनाए रखो, आत्मा में एकजुट रहो, और एक ही उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करो। <sup>3</sup> स्वार्थ या खोखले घंटंड से कुछ न करो, परंतु नम्रता से एक-दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझो; <sup>4</sup> केवल अपनी व्यक्तिगत रुचियों का ध्यान न रखो, बल्कि दूसरों की रुचियों का भी ध्यान रखो। <sup>5</sup> वह मनोभाव अपने में रखो जो मसीह यीशु में भी था,

<sup>6</sup> जो, जब वह पहले से ही परमेश्वर के रूप में विद्यमान थे, परमेश्वर के साथ समानता को पकड़ने योग्य कुछ नहीं समझा। <sup>7</sup> परंतु स्वयं की खाली कर दिया और दास का रूप धारण कर लिया और मनुष्यों के समान जन लिया। <sup>8</sup> और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर, उन्होंने स्वयं को नम्र किया, मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर यहाँ तक कि कूस पर मृत्यु। <sup>9</sup> इसी कारण परमेश्वर ने भी उन्हें अत्यधिक महिमा दी, और उन्हें वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है। <sup>10</sup> ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे के लोग, <sup>11</sup> और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु हैं परमेश्वर पिता की महिमा के लिए।

## फिलिप्पियों

<sup>12</sup> इसलिए, मेरे प्रिय, जैसे तुमने हमेशा आज्ञा मानी है, न केवल मेरी उपस्थिति में, बल्कि अब मेरे अनुपस्थिति में और भी अधिक, अपने उद्धर को डर और कांप के साथ पूरा करो; <sup>13</sup> क्योंकि परमेश्वर ही है जो तुम्हारे अंदर कार्य कर रहा है, अपनी इच्छा और अपने अच्छे उद्देश्य के लिए। <sup>14</sup> सभी काम बिना शिकायत और तर्क के करो; <sup>15</sup> ताकि तुम एक टेढ़ी और विकृत पीढ़ी के बीच निर्देष और निर्देष परमेश्वर के बच्चे साबित हो, जिनके बीच तुम दुनिया में ज्योति के रूप में चमकते हो, <sup>16</sup> जीवन के बचन को बढ़ता से थामे रहो, ताकि मसीह के दिन पर मैं गर्व कर सकूँ क्योंकि मैंने व्यर्थ नहीं दौड़ा और न ही व्यर्थ परिष्रम किया। <sup>17</sup> परंतु यदि मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा पर एक पेय बलिदान के रूप में उंडेला जा रहा हूँ, तो मैं आनन्दित हूँ और तुम सब के साथ अपनी खुशी साझा करता हूँ। <sup>18</sup> तुम भी, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, उसी तरह आनन्दित हो और अपनी खुशी मेरे साथ साझा करो। <sup>19</sup> परंतु मैं प्रभु यीशु में अंशा करता हूँ कि तुम्हारे पास शीर्षी ही तीमुथियुस को भेजूँ, ताकि जब मैं तुम्हारी स्थिति के बारे में जानूँ तो मैं भी प्रोत्साहित हो सकूँ। <sup>20</sup> क्योंकि मेरे पास कोई और नहीं है जो तुम्हारी भलाई के लिए वास्तव में चिंतित होगा। <sup>21</sup> क्योंकि वे सभी अपने स्वयं के हितों की खोज करते हैं, न कि मसीह यीशु के। <sup>22</sup> परंतु तुम उसके प्रमाणित चरित्र को जानते हो, कि उसने सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ एक बच्चे की तरह अपने पिता की सेवा की। <sup>23</sup> इसलिए मैं उसे तुरंत भेजने की आशा करता हूँ, जैसे ही मैं देखता हूँ कि मेरे साथ क्या होता है; <sup>24</sup> और मैं प्रभु में विश्वास करता हूँ कि मैं स्वयं भी भीष्म ही आऊंगा। <sup>25</sup> परंतु मैंने तुम्हारे पास इपफ्लैटीस को भेजना आवश्यक समझा, जो मेरा भाई, सहकर्मी, और सह-सैनिक है, जो तुम्हारा संदेशवाहक और मेरी अवश्यकता का सेवक भी है, <sup>26</sup> क्योंकि वह तुम सब के लिए लालायित था और चिंतित था क्योंकि तुमने सुना था कि वह बीमार था। <sup>27</sup> वास्तव में वह बीमार था, मृत्यु के कागार पर, परंतु परमेश्वर ने उस पर दया की, और न केवल उस पर बल्कि मुझे दुःख पर दुःख न हो। <sup>28</sup> इसलिए मैंने उसे और भी उत्सुकता से भेजा है, ताकि जब तुम उसको और मैं कम चिंतित रहो। <sup>29</sup> फिर उसे प्रभु में सभी खुशी के साथ स्वीकार करो, और उसके जैसे लोगों को उच्च समान में रखो, <sup>30</sup> क्योंकि वह मसीह के कार्य के लिए मृत्यु के करीब आ गया, अपनी जान जोखिम में डालकर तुम्हारी सेवा में मेरी अनुपस्थिति की भरपाई करने के लिए।

**3** अंत में, मेरे भाइयों और बहनों, प्रभु में आनन्दित रहो। वही बातें फिर से लिखना मेरे लिए कोई परेशानी नहीं है, और यह तुम्हारे लिए एक सुरक्षा है। <sup>2</sup> कुत्तों से सावधान रहो, बुरे काम करने वालों से सावधान रहो, ज़हर खतना करने वालों से सावधान रहो; <sup>3</sup> क्योंकि हम ही सच्चे खतना वाले हैं, जो परमेश्वर के आमा में उपासना करते हैं और मसीह यीशु में गर्व करते हैं, और शरीर में कोई भरोसा नहीं रखते, <sup>4</sup> हालांकि मैं स्वयं शरीर में भरोसा रखने के योग्य ही सकता हूँ। यदि कोई और सोचता है कि वह शरीर में भरोसा रख सकता है, तो मैं और भी अधिकः <sup>5</sup> अठवैं दिन खतना हुआ, इसाएल के राष्ट्र का, बिन्यामीन के गोत्र का, इब्रानीयों का इब्रानी; व्यवस्था के अनुसार, एक फरीसी; <sup>6</sup> उत्साह के अनुसार, कलीसिया का सताने वाला; व्यवस्था में जो धार्मिकता है, उसमें निर्दोष पाया गया। <sup>7</sup> परन्तु जो बातें मेरे लिए लाभकारी थीं, उन्हें मैंने मसीह के कारण हानि समझा है। <sup>8</sup> इसके अलावा, मैं सभी चीजों को हानि मानता हूँ, मेरे प्रभु मसीह यीशु को जानने के असीम मृत्यु के कारण, जिसके लिए मैंने सभी चीजों की हानि सही है, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त कर सकूँ, <sup>9</sup> और उसमें पाया जाऊँ, न कि अपनी खुद की धार्मिकता के साथ जो व्यवस्था से आती है, बल्कि वह जो मसीह में विश्वास के द्वारा है, वह धार्मिकता जो परमेश्वर से विश्वास के आधार पर आती है, <sup>10</sup> कि मैं उसे और उसके पुनरुत्थान की शक्ति को जान सकूँ, और उसके कष्टों की सहभागिता को, उसकी मृत्यु के अनुरूप बनकर; <sup>11</sup> यदि किसी प्रकार मैं मेरे बुहाउं में से पुनरुत्थान को प्राप्त कर सकूँ। <sup>12</sup> यह नहीं कि मैंने इसे सब कुछ पकड़ लिया है या पहले से ही सिद्ध हो गया हूँ, परन्तु मैं अगे बढ़ता हूँ कि मैं भी उसे पकड़ सकूँ जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। <sup>13</sup> भाइयों और बहनों, मैं यह नहीं मानता कि मैंने इसे पकड़ लिया है; परन्तु एक बात मैं करता हूँ: जो पीछे है उसे भूलकर और जो आगे है उसकी ओर बढ़ता हूँ, <sup>14</sup> मैं लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ, उस पुरस्कार के लिए जो मसीह यीशु में परमेश्वर की ऊपर की बुलाहट का है। <sup>15</sup> इसलिए, सभी जो परिपक्व हैं, इस दृष्टिकोण को अपाराण्, और यदि किसी बात में तुम्हारा दृष्टिकोण भिन्न है, तो परमेश्वर तुम्हें वह भी प्रकट करेगा; <sup>16</sup> फिर भी, उसी मानक के अनुसार जीते रहें जिसे हमने प्राप्त किया है। <sup>17</sup> भाइयों और बहनों, मेरे उदाहरण का अनुसरण करने में शामिल हो जाओ, और उन लोगों को देखो जो हमारे पास तुम्हारे लिए दिए गए नमूने के अनुसार चलते हैं। <sup>18</sup> क्योंकि बहुत से लोग चलते हैं—जिनके बारे में मैंने तुम्हें अक्सर बताया, और अब भी रोते हुए बताता हूँ—जो मसीह के कूस के शत्रु हैं, <sup>19</sup> जिनका अंत विनाश है, जिनका ईश्वर

## फिलिप्पियों

उनकी भूख है, और जिनकी महिमा उनके लज्जा में है,  
जो अपनी सोच को सांसारिक चीजों पर लगाते हैं।<sup>29</sup>  
क्योंकि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, जहाँ से हम  
उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह की उत्सुकता से प्रतीक्षा  
करते हैं;<sup>21</sup> जो हमारे नीच शरीर को अपने महिमामय  
शरीर के अनुरूप रूपांतरित करेगा, उस शक्ति के द्वारा  
जो उसे सभी चीजों को अपने अधीन करने में सक्षम  
बनाती है।

4 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, जिन्हें मैं देखने  
के लिए तरसता हूँ, मेरी खुशी और मुकुट, प्रभु में इस  
प्रकार दृढ़ रहो, मेरे प्रिय।<sup>2</sup> मैं इवोदिया से आग्रह करता  
हूँ और मैं सिथिकी से आग्रह करता हूँ कि वे प्रभु में  
एकता से रहें।<sup>3</sup> वास्तव में, मैं आपसे भी अनुरोध करता  
हूँ, सच्चे साथी, इन स्त्रियों की सहायता करें जिन्होंने  
सुसमाचार के कार्य में मेरे संघर्ष में भाग लिया है, क्लेमेंट  
के साथ-साथ मेरे अन्य सहकर्मियों के साथ, जिनके नाम  
जीवन की पुस्तक में हैं।<sup>4</sup> प्रभु में सदा आनन्दित रहो;  
फिर मैं कहता हूँ, आनन्दित रहो!<sup>5</sup> आपकी कोमल  
आत्मा सभी लोगों के लिए प्रकट हो। प्रभु निकट है।<sup>6</sup>  
किसी भी बात की चिंता मत करो, बल्कि हर बात में  
प्रार्थना और विनीती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी  
याचिकाएँ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करो।<sup>7</sup> और  
परमेश्वर की शांति, जो सभी समझ से परे है, मसीह यीशु  
में आपके हृदयों और मनों की रक्षा करेगी।<sup>8</sup> अंत में,  
भाइयों और बहनों, जो कुछ सत्य है, जो कुछ आदरणीय है,  
जो कुछ सही है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ मनोहर है,  
जो कुछ प्रशंसनीय है, यदि कोई उत्कृष्टता है और यदि  
कोई प्रशंसना के योग्य है, तो इन बातों पर विचार करो।<sup>9</sup>  
जिन बातों को आपने मुझ में सीखा, प्राप्त किया, सुना  
और देखा है, उन पर अमल करो, और शांति का  
परमेश्वर तुम्हरे साथ रहोगा।<sup>10</sup> परन्तु मैं प्रभु में अत्यधिक  
आनन्दित हुआ कि अब अंततः आपने मेरे लिए अपनी  
चिंता को पुजारीवित किया है, वास्तव में, आप पहले भी  
चिंतित थे, परन्तु आपके पास अवसर नहीं था।<sup>11</sup> यह  
नहीं कि मैं आवश्यकता से बोलता हूँ, क्योंकि मैंने सीखा  
है कि मैं जिस भी परिस्थिति में हूँ, संतुष्ट रहना।<sup>12</sup> मैं  
जानता हूँ कि कैसे थोड़े में रहना है, और मैं यह भी  
जानता हूँ कि समृद्धि में कैसे रहना है; किसी भी और हर  
परिस्थिति में मैंने भरे रहने और भूखे रहने का रहस्य  
सीखा है, दोनों ही प्रचुरता में और आवश्यकता में रहना।  
<sup>13</sup> मैं सब कुछ कर सकता हूँ उस के द्वारा जो मुझे  
सामर्थ्य देता है।<sup>14</sup> फिर भी, आपने मेरी कठिनाई में मेरे  
साथ साझेदारी करके अच्छा किया।<sup>15</sup> आप स्वयं भी  
जानते हैं, फिलिप्पियों, कि सुसमाचार के पहले प्रचार में,  
जब मैंने मकिनुया छोड़ा, तो देने और प्राप्त करने के

मामले में कोई भी कलीसिया मेरे साथ साझेदारी नहीं  
कर रही थी, केवल आप ही;<sup>16</sup> क्योंकि धिस्सातुनीके में  
भी आपने मेरी आवश्यकताओं के लिए एक से अधिक  
बार उपहार भेजा।<sup>17</sup> यह नहीं कि मैं उपहार की खोज  
करता हूँ, परन्तु मैं उस लाभ की खोज करता हूँ जो  
आपके खाते में बढ़ता है।<sup>18</sup> परन्तु मैंने सब कुछ पूर्ण  
रूप से प्राप्त किया है और मेरे पास प्रचुरता है; मुझे  
एपफ्रोदितुस से वह प्राप्त हुआ है जो आपने भेजा है, एक  
सुगीथित सुगंध, एक स्वीकार्य बलिदान, जो परमेश्वर को  
प्रसन्न करता है।<sup>19</sup> और मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में  
अपनी महिमा के धन के अनुसार आपकी सभी  
आवश्यकताओं को पूरा करेगा।<sup>20</sup> अब हमारे परमेश्वर  
और पिता को युग्मानुग्रह महिमा मिले। आपीन।<sup>21</sup> मसीह  
यीशु में हर संत को नमस्कार। मेरे साथ जो भाई हैं, वे  
आपको नमस्कार करते हैं।<sup>22</sup> सभी संत आपको  
नमस्कार करते हैं, विशेष रूप से कैसर के घराने के।<sup>23</sup>  
प्रभु यीशु मसीह की कृपा आपके आत्मा के साथ बनी  
रहे।

## कुलस्सियों

**१** पौलुस, जो मसीह यीशु का प्रेरित है परमेश्वर की इच्छा से, और हमारे भाई तीमुथियुस,<sup>२</sup> कुलुस्से में मसीह में विश्वासयोग्य पवित्र जनों और भाइयों और बहनों के नामः हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।<sup>३</sup> हम अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता

परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, हमेशा तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए,<sup>४</sup> क्योंकि हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास और सभी पवित्र जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है;<sup>५</sup> उस आशा के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में

सुरक्षित है, जिसके बारे में तुमने पहले सत्य के वचन, सुसमाचार में सुना था<sup>६</sup> जो तुम्हारे पास आया है, जैसे कि यह सारी दुनिया में भी फल ला रहा है और बढ़ रहा है, जैसे कि यह तुम्हारे बीच भी कर रहा है जब से तुमने इसे सुना और परमेश्वर के अनुग्रह को सत्य में समझा;<sup>७</sup> जैसा कि तुमने इसे हमारे प्रिय सहकर्मी एप्रक्रास से सीखा, जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है,<sup>८</sup> और उसने हमें आत्मा में तुम्हारे प्रेम के बारे में भी बताया।<sup>९</sup>

इसी कारण से हम भी, जिस दिन से हमने इसके बारे में सुना है, तुम्हारे लिए प्रार्थना करना और यह मांगना नहीं छोड़ा है कि तुम उसकी इच्छा के ज्ञान से सभी आत्मिक बुद्धि और समझ में भर जाओ।<sup>१०</sup> ताकि तुम प्रभु के

योग्य चाल चलो, उसे हर प्रकार से प्रसन्न करो, हर अच्छे काम में फल लाओ और परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ो;<sup>११</sup> सभी शक्ति से मजबूत बनो, उसकी महिमा की सामर्थ्य के अनुसार, सभी धैर्य और सहनशीलता प्राप्त करने के लिए, आनंदपूर्वक<sup>१२</sup> पिता का धन्यवाद करते हुए, जिसने हमें प्रकाश में पवित्र जनों की विरासत में भाग लेने के योग्य बनाया है।<sup>१३</sup> क्योंकि उसने हमें अंधकार के अधिकारा से छुड़ाया, और हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानान्तरित किया,<sup>१४</sup> जिसमें हमें छुटकारा मिला है, पापों की क्षमा।<sup>१५</sup> वह अदृश्य परमेश्वर की छिपी है, सारी सृष्टि में पहिलौठ।<sup>१६</sup> क्योंकि उसी के द्वारा सब कुछ सृजा गया, चाहे स्वर्ग में हो या पृथी पर, वृश्य ही या अदृश्य, चाहे सिंहासन हों, या प्रभुत्व, या शासक, या अधिकारी— सब कुछ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजा गया है।<sup>१७</sup> वह सब चीजों से पहले है, और उसी में सब चीजें एक साथ बनी रहती हैं।<sup>१८</sup> वह शारीर का सिर भी है, जो कि कलीसिया है, और वह आरंभ है, मेरे हुओं में से पहिलौठा, ताकि वह सब चीजों में प्रथम स्थान प्राप्त करे।<sup>१९</sup> क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में थी कि सारी परिपूर्णता उसी में वास करे,<sup>२०</sup> और उसी के द्वारा सब चीजों को अपने साथ मेल कर ले, ताहे पृथी पर की चीजें हीं या स्वर्ग में की चीजें, उसके क्रूस के लहू के द्वारा शांति बनाकर।<sup>२१</sup> और यद्यपि तुम पहले पराये और मन में शत्रु थे, बुरे कामों में लगे हुए,<sup>२२</sup> फिर भी उसने अब तुम्हें अपने शारीर के मांस में मृत्यु के द्वारा मेल कर लिया

है, ताकि वह तुम्हें अपने सामने पवित्र और निर्दोष और निंदा से परे प्रस्तुत कर सके—<sup>२३</sup> यदि तुम विश्वास में स्थिर रहो, दृढ़ता से स्थापित और अटल, और उस सुसमाचार की आशा से न हटो जिसे तुमने सुना है, जो स्वर्ग के नीचे सारी सृष्टि में प्रचारित किया गया है, और जिसका मैं, पौलुस, सेवक बना।<sup>२४</sup> अब मैं तुम्हारे लिए अपनी पीड़ाओं में अनन्दित हूँ, और मसीह की क्लेशों में जो कमी है उसे अपनी देह में पूरी करता हूँ, उसके शरीर के लिए, जो कि कलीसिया है,<sup>२५</sup> जिसका मैं सेवक बना, परमेश्वर की ओर से तुम्हारे लाभ के लिए मुझे दी गई आज्ञा के अनुसार, ताकि मैं परमेश्वर के वचन का पूरा प्रचार कर सकूँ,<sup>२६</sup> अर्थात् वह रहस्य जो पिछले युगों और पीढ़ियों से छिपा हुआ था, तैकिन अब उसके पवित्र जनों पर प्रकट हुआ है,<sup>२७</sup> जिन्हें परमेश्वर ने यह प्रकट करना चाहा कि अन्यजातियों में इस रहस्य की महिमा का धन क्या है, जो मसीह तुम में है, महिमा की आशा।<sup>२८</sup> हम उसी का प्रचार करते हैं, हर व्यक्ति को चेतावनी देते हैं और हर व्यक्ति को सारी बुद्धि के साथ सिखाते हैं, ताकि हम हर व्यक्ति को मसीह में पूर्ण प्रस्तुत कर सकें।<sup>२९</sup> इसी उद्देश्य के लिए मैं भी परिश्रम करता हूँ, उसकी शक्ति के अनुसार संघर्ष करता हूँ, जो मुझ में सामर्थ्य से काम करती है।

**२** क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि तुम्हारे लिए, और लौदीकिया के लोगों के लिए, और उन सबके लिए जिनने मेरा चेहरा व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है, मेरे पास कितनी बड़ी संघर्ष है,<sup>३</sup> कि उनके हृदय प्रोत्साहित हों, प्रेम में एक साथ बंधे हुए, और समझ की पूर्ण आश्वासन से आने वाले सभी धन को प्राप्त करें, जो परमेश्वर के रहस्य का सच्चा ज्ञान है— अर्थात्, मसीह स्वर्य,<sup>४</sup> जिसमें ज्ञान और समझ के सभी खजाने छिपे हुए हैं।<sup>५</sup> मैं यह इसलिए कहता हूँ ताकि कोई भी तुम्हें प्रभावशाली तर्कों से धोखा न दे।<sup>६</sup> क्योंकि यद्यपि मैं शरीर में अनुपस्थित हूँ, फिर भी आत्मा में तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारे सुव्यवस्थित आचरण और मसीह में तुम्हारे विश्वास की स्थिरता को देखकर अनन्दित हूँ।<sup>७</sup> इसलिए, जैसे तुमने प्रभु मसीह यीशु को ग्रहण किया है, वैसे ही उसमें चरों,<sup>८</sup> उसमें दृढ़ता से जड़ पकड़कर और अब उसमें निर्मित होकर और अपने विश्वास में स्थिर होकर, जैसे तुम्हें सिखाया गया था, और कृतज्ञता से भरपूर होकर।<sup>९</sup> देखो कि कोई तुम्हें दर्शनशस्त्र और खाखले धोखे के माध्यम से बंदी न बनाए, मानव परंपरा के अनुसार, संसार के प्रारंभिक सिद्धांतों के अनुसार, मसीह के अनुसार नहीं।<sup>१०</sup> क्योंकि उसमें देवत की सारी परिपूर्णता शारीरिक रूप में निवास करती है,<sup>११</sup> और उसमें तुम पूर्ण हो गए हो, और वह हर शासक और

## कुलस्सियों

अधिकार के ऊपर प्रधान है; <sup>11</sup> और उसमें तुम्हारा भी ऐसा खतना हुआ है जो हाथों से नहीं किया गया, मसीह के खतने द्वारा शरीर की मांस की देह को हटाने में, <sup>12</sup> जिसमें तुम भी परमेश्वर की कार्यशीलता में विश्वास के माध्यम से उसके साथ उठाए गए, जिसने उसे मृतकों में से उठाया। <sup>13</sup> और तुम, जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित अवस्था में मरे हुए थे, उसने उसे तुम्हारे साथ जीतित किया, हमारे सभी अपराधों को क्षमा करके, <sup>14</sup> हमारे छिलाफ आदेशों से बेंगण के प्रमाणपत्र को रद्द करके, जो हमारे प्रति शुतापूर्ण था; और उसने उसे क्रूस पर ठोककर हटा दिया है। <sup>15</sup> जब उसने शासकों और अधिकारियों को निहत्या कर दिया, तो उसने उनका सार्वजनिक प्रदर्शन किया, उन पर विजय प्राप्त की। <sup>16</sup> इसलिए, कोई भी तुम्हें भोजन या धेय के संबंध में, या किसी पर्व, या नए चाँद, या सब्ज़ के दिन के संबंध में घ्यायाधीश न बने— <sup>17</sup> जो आने वाली चीज़ों की केवल छाया है, लेकिन वास्तविकता मसीह की है। <sup>18</sup> सावधान रहो कि कोई भी तुम्हें तुम्हारे पुरस्कर से वीचित न करे, नम्रता और स्वर्गदूतों की उपासना में आनंद लेकर, उसने जो दर्शन देखे हैं उस पर खड़ा होकर, बिना कारण अपने शारीरिक मन से फूला हुआ, <sup>19</sup> और सिर को ढूढ़ता से नहीं पकड़ता, जिससे पूरा शरीर, जोड़ों और सायुओं द्वारा आपूर्ति और एक साथ बंधा हुआ, परमेश्वर से आने वाली वृद्धि के साथ बढ़ता है। <sup>20</sup> यदि तुम मसीह के साथ संसार के प्रारंभिक सिद्धांतों के लिए मर गए हो, तो क्यों, जैसे तुम संसार में जी रहे हो, अपने आप की नियमों के अधीन करते हो? <sup>21</sup> “हाथ न लगाओ, स्वाद न लो, स्पर्श न करो!”— <sup>22</sup> जो सभी उपयोग के साथ नष्ट होने वाली चीज़ों का संदर्भ देते हैं—मनुष्य की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार? <sup>23</sup> ये ऐसे मामले हैं जिनमें आत्मनिर्भित धर्म में बुद्धि का आभास होता है और नम्रता और शरीर के साथ कठोरता होती है, लेकिन वे किसी भी मूल्य के नहीं हैं।

**3** इसलिए, यदि आप मसीह के साथ उठाए गए हैं, तो उन चीज़ों को खोजते रहें जो ऊपर हैं, जहाँ मसीह हैं, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हैं। <sup>2</sup> अपने मन को उन चीज़ों पर लगाओ जो ऊपर हैं, न कि उन चीज़ों पर जो पृथ्वी पर हैं। <sup>3</sup> क्योंकि आप मर चुके हैं, और आपका जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। <sup>4</sup> जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब आप भी उसके साथ महिमा में प्रकट होंगे। <sup>5</sup> इसलिए, अपने सांसारिक शरीर के अंगों को व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, बुरी इच्छा, और लोभ के लिए मृत मानो, जो मूर्तिपूजा के बराबर है। <sup>6</sup> क्योंकि इन्हीं के कारण

परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर आता है, <sup>7</sup> और उनमें आप भी कभी चलते थे, जब आप उनमें रहते थे। <sup>8</sup> पर अब आप भी इन सब से छुटकारा पाएँ: क्रोध, रोष, दुष्टता, निंदा, और अपने मुँह से अश्लील बातें। <sup>9</sup> एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि आपने पुराने स्वभाव को उसकी बुरी आदाओं के साथ उतार दिया है, <sup>10</sup> और नए स्वभाव को पहन लिया है, जो अपने सृजनकर्ता की छवि के अनुसार सच्चे ज्ञान में नया होता जा रहा है— <sup>11</sup> एक ऐसा नवीनीकरण जिसमें यूतानी और यहूदी, खतना किए हुए और बिना खतना किए हुए, बर्बर, स्किथियन, दास और स्वतंत्र के बीच कोई भेद नहीं है, पर मसीह सब कुछ है, और सब में है। <sup>12</sup> इसलिए, जैसे परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय लोग, करुणा, दया, नम्रता, कामलता, और धैर्य का हृदय धारण करें, <sup>13</sup> एक दूसरे के साथ सहनशीलता रखें, और एक दूसरे को क्षमा करें, यदि किसी के पास किसी के खिलाफ शिकायत हो; जैसे प्रभु ने आपको क्षमा किया, वैसे ही आपको भी करना चाहिए। <sup>14</sup> इन सब चीज़ों के अलावा, प्रेम को धारण करें, जो एकता का परिपूर्ण बंधन है। <sup>15</sup> मसीह की शांति, जिसके लिए आप वास्तव में एक शरीर में बुलाए गए थे, आपके दिलों में शासन करें; और आभारी रहें। <sup>16</sup> मसीह का वचन आप में समृद्धि से वास करें, सभी ज्ञान के साथ एक दूसरे को भजन, त्वचि गीतों, और आत्मिक गीतों के साथ सिखाते और चेतावनी देते हुए, अपने दिलों में परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के साथ गाते हुए। <sup>17</sup> जो कुछ भी आप वचन या कर्म में करते हैं, सब कुछ प्रभु यीशु के नाम में करें, उसके माध्यम से परमेश्वर पिता को धन्यवाद देते हुए। <sup>18</sup> पत्नी, अपने पतियों के अधीन रहें, जैसा कि प्रभु में उचित है। <sup>19</sup> पति, अपनी पतियों से प्रेम करें और उनके प्रति कटु न बनें। <sup>20</sup> बच्चों, हर चीज़ में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करें, क्योंकि यह प्रभु को प्रसन्न करता है। <sup>21</sup> पिता, अपने बच्चों को उत्तेजित न करें, ताकि वे निराश न हों। <sup>22</sup> दासों, जो आपके मानव स्वामी हैं, हर चीज़ में उनकी आज्ञा का पालन करें, न कि केवल आँखों की सेवा के साथ, जैसे लोग-प्रसन्न करने वाले, बल्कि दिल की सच्चाई के साथ, प्रभु का भय मानते हुए। <sup>23</sup> जो कुछ भी आप करते हैं, उसे पूरे मन से करें, जैसे कि प्रभु के लिए कर रहे हों, न कि लोगों के लिए, <sup>24</sup> यह जानते हुए कि यह प्रभु से है कि आप विरासत का पुरस्कार प्राप्त करेंगे। यह प्रभु मसीह है जिसकी आप सेवा करते हैं। <sup>25</sup> क्योंकि जो गलत करता है, वह उस गलत का परिणाम प्राप्त करेगा जो उसने किया है, और वह बिना पक्षपात के होगा।

## कुलुस्सियों

4 हे स्वामियों, अपने दासों के साथ न्याय और समानता का व्यवहार करो, यह जानते हुए कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।<sup>2</sup> प्रार्थना में लगे रहो, धन्यवाद के साथ उसमें जागरूक रहते हुए; <sup>3</sup> हमारा लिए भी प्रार्थना करो, कि परमेश्वर हमारे लिए वचन का एक द्वार खोले, ताकि हम मसीह के रहस्य का प्रचार कर सकें, जिसके लिए मैं बंदीगृह में भी हूँ; <sup>4</sup> कि मैं इसे स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकूँ जैसे मुझे इसे प्रचार करना चाहिए।<sup>5</sup> बाहर के लोगों के प्रति बुद्धिमानी से व्यवहार करो, अवसर का पूरा लाभ उठाते हुए।<sup>6</sup> तुम्हारी वाणी हमेशा अनुग्रह से भरी हो, जैसे नमक से सजी हो, ताकि तुम जान सको कि प्रत्येक व्यक्ति को कैसे उत्तर देना चाहिए।<sup>7</sup> मेरे सभी मामलों के बारे में, तुखिकुस, हमारा प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक और प्रधु में सह-दास, तुम्हें जानकारी देगा।<sup>8</sup> क्योंकि मैंने उसे तुम्हारे पास इसी उद्देश्य के लिए भेजा है, ताकि तुम हमारे हालात के बारे में जान सको और वह तुम्हारे दिलों को प्रोत्साहित कर सकें;<sup>9</sup> और उसके साथ ओनेसियुस, हमारा विश्वासयोग्य और प्रिय भाई, जो तुम्हारा ही है। वे तुम्हें यहाँ की पूरी स्थिति के बारे में बताएंगे।<sup>10</sup> अरिस्तारखुस, मेरा सह-बंदी, तुम्हें अभिवादन भेजता है, और बराबास का चर्चेश भाई मरकुस भी (जिसके बारे में तुमने निर्देश प्राप्त किए हैं; यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उसका स्वागत करो);<sup>11</sup> और यीशु भी जो युस्तुस कहलाता है। ये परमेश्वर के राज्य के लिए केवल वही सहकर्मी हैं जो खतना से हैं, और उन्होंने मैं लिए प्रोत्साहन साबित किया है।<sup>12</sup> एपक्रास, जो तुम्हारा ही है, मसीह यीशु का दास, तुम्हें अभिवादन भेजता है, हमेशा तुम्हारे लिए अपनी प्रार्थनाओं में ईमानदारी से प्रयास करता है, कि तुम परमेश्वर की सारी इच्छा में परिपक और पूरी तरह आश्रस्त खड़े रहो।<sup>13</sup> क्योंकि मैं उसके लिए गवाही देता हूँ कि वह तुम्हारे लिए और लौटीकिया और हिएरापोलिस में जो हैं उनके लिए गहरी चिंता करता है।<sup>14</sup> लूका, प्रिय चिकित्सक, तुम्हें अभिवादन भेजता है, और देमास भी।<sup>15</sup> लौटीकिया में जो भाई-बहन है, और निम्फा और उसके घर में जो कलीसिया है, उनका अभिवादन करो।<sup>16</sup> जब यह पत्र तुम्हारे बीच पढ़ा जाए, तो इसे लौटीकियों की कलीसिया में भी पढ़वाना; और तुम, अपनी ओर से, मेरा वह पत्र पढ़ो जो लौटीकिया से आ रहा है।<sup>17</sup> अर्खिष्पुस से कहो, "उस सेवा को देखो जो तुमने प्रभु में प्राप्त की है, ताकि तुम उसे पूरा कर सको।"<sup>18</sup> मैं, पौत्रुस, अपने हाथ से यह अभिवादन लिखता हूँ। मेरी कैद को याद रखो। अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

# 1 यिस्सलुनीकियों

**1** पौत्रस, सिलवानुस, और तीमुथियुस की ओर से, पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में यिस्सलुनीकियों की कलीसिया को: तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।<sup>2</sup> हम सदा तुम सब के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते हैं।<sup>3</sup> हमारे परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के कार्य, प्रेरणा का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धैर्य को निरंतर स्मरण करते हैं।<sup>4</sup> यह जानते हुए, भाइयों और बहनों, जो परमेश्वर के प्रिय हैं, कि उसने तुम्हें चुना है;<sup>5</sup> क्योंकि हमारा सुसमाचार के बाल वचन में ही नहीं, परन्तु सामर्थ्य, पवित्र आत्मा और पूर्ण विश्वास के साथ तुम्हारे पास आया—जैसा कि तुम जानते हो कि तुम्हारे बीच तुम्हारे लिए हम कैसे लोग थे।<sup>6</sup> तुम हमारे और प्रभु के अनुकरणकर्ता बन गए, क्योंकि तुमने वचन को बड़ी कलेश में पवित्र आत्मा के आनंद के साथ ग्रहण किया,<sup>7</sup> ताकि तुम मकिंटुनिया और अखाया के सब विश्वासियों के लिए उदाहरण बन गए।<sup>8</sup> क्योंकि प्रभु का वचन तुमने निकलकर न कैवल मकिंटुनिया और अखाया में, बल्कि हर जगह तुम्हारे परमेश्वर के प्रति विश्वास की चर्चा फैल गई है, ताकि हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं रही।<sup>9</sup> क्योंकि वे स्वयं हमारे विषय में बताते हैं कि हमने तुम्हारे साथ कैसा स्वागत पाया, और तुमने कैसे मूर्तियों से परमेश्वर की ओर फिरकर जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा की,<sup>10</sup> और उसके पुत्र के रूप से आने की प्रतीक्षा की, जैसे उसने मरे हुओं में से जिलाया—यीशु, जो हमें आने वाले क्रोध से बचाता है।

**2** क्योंकि आप स्वयं जानते हैं, भाइयों और बहनों, कि हमारे आपके बीच आने का स्वागत व्यर्थ नहीं था।<sup>1</sup> परन्तु फिलिप्पी में दुःख उठाने और अपमानित होने के बाद, जैसा कि आप जानते हैं, हमने अपने परमेश्वर में साहस पाया कि हम परमेश्वर के सुसमाचार को आपके सामने बहुत विरोध के बीच सुआए।<sup>3</sup> क्योंकि हमारी प्रेरणा न तो किसी त्रुटि से आती है, न अशुद्धता से, और न ही छल से;<sup>4</sup> परन्तु जैसे परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के साथ विश्वासयोग ठहराया है, वैसे ही हम बोलते हैं, न कि लोगों को प्रसन्न करने के लिए बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए, जो हमारे हृदयों की परीक्षा करता है।<sup>5</sup> क्योंकि हम कभी चापलूसी की बातों के साथ नहीं आए, जैसा कि आप जानते हैं, और न ही लोभ के बहाने से—परमेश्वर हमारा साक्षी है—<sup>6</sup> और न ही हमने लोगों से सम्मान चाहा, न आपसे और न ही दूसरों से, यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपनी अधिकारिता का दावा कर सकते थे।<sup>7</sup> परन्तु हम आपके बीच कोमल सिद्ध हुए। जैसे एक दूध पिलाने वाली माता अपने बच्चों की कोमलता से देखभाल करती है,<sup>8</sup> उसी प्रकार हमने

आपके प्रति स्नेह किया और हम परमेश्वर के सुसमाचार के साथ-साथ अपनी जान भी आपके साथ बांटने के लिए प्रसन्न थे, क्योंकि आप हमारे लिए बहुत प्रिय हो गए थे।<sup>9</sup> क्योंकि आप याद करते हैं, भाइयों और बहनों, हमारे श्रम और कठिनाई को: यह रात और दिन काम करने के द्वारा था ताकि हम में से किसी पर भार न ढालें, कि हमने आपको परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया।<sup>10</sup> आप गवाह हैं, और परमेश्वर भी, कि हम विश्वासियों के प्रति कितनी भक्ति, सही और निरोषिता से व्यवहार करते थे;<sup>11</sup> जैसे कि आप जानते हैं कि हम प्रत्येक एक को कैसे प्रेरित करते और प्रोत्साहित करते और आग्रह करते थे जैसे एक पिता अपने बच्चों को करता है,<sup>12</sup> ताकि आप उस परमेश्वर के योग्य चलें जो आपको अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।<sup>13</sup> इसी कारण से हम निरंतर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि जब आपने परमेश्वर का वचन सुना जो आपने हमसे सुना, तो आपने उसे कैवल मनुष्यों का वचन नहीं, बल्कि जैसा कि वास्तव में है, परमेश्वर का वचन स्वीकार किया, जो आप में काम कर रहा है जो विश्वास करते हैं।<sup>14</sup> क्योंकि आप, भाइयों और बहनों, यहौदियों में मसीह यीशु में परमेश्वर की कलीसियाओं के अनुकरणकर्ता बन गए, क्योंकि आपने भी अपने ही देशवासियों के हाथों वही कष्ट सहन किए, जैसे उन्होंने यहौदियों से किया,<sup>15</sup> जिन्होंने प्रभु यीशु और भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला, और हमें बाहर निकाल दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते, बल्कि सभी लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं,<sup>16</sup> हमें अन्यजातियों से बात करने से रोकते हैं ताकि वे उद्धार पा सकें; जिसके परिणामस्वरूप वे हमेशा अपने पापों की सीमा तक पहुँचते हैं। क्रोध उन पर पूरी तरह आ गया है।<sup>17</sup> परन्तु हम, भाइयों और बहनों, थोड़े समय के लिए आपसे अलग हो गए थे—शरीर में, आत्मा में नहीं—आपका चेहरा देखने की बड़ी इच्छा के साथ और भी अधिक उत्सुक थे।<sup>18</sup> क्योंकि हम आपके पास आना चाहत थे—मैं, पौत्रस, एक से अधिक बार—और फिर भी शैतान ने हमें रोका।<sup>19</sup> क्योंकि हमारी आशा, या आनंद, या गर्व का मुकुर कौन है? क्या यह वास्तव में आप नहीं हैं, हमारे प्रभु यीशु की उपस्थिति में उसके आगमन पर?<sup>20</sup> क्योंकि आप हमारी महिमा और आनंद हैं।

**3** इसलिए, जब हम इसे और सहन नहीं कर सके, तो हमने एथेस में अकेले पीछे रह जाने का निर्णय लिया,<sup>2</sup> और हमने तीमुथियुस को भेजा, जो हमारा भाई और मसीह के सुसमाचार में परमेश्वर का सहकर्मी है, ताकि वह आपके विश्वास के लाभ के लिए आपको सुदृढ़ और प्रोत्साहित कर सके,<sup>3</sup> ताकि कोई भी इन कष्टों से विचलित न हो; क्योंकि आप स्वयं जानते हैं कि हम

# 1 यिस्सलुनीकियों

इसके लिए नियत किए गए हैं।<sup>4</sup> क्योंकि जब हम आपके साथ थे, तब भी हम आपको पहले से ही बता रहे थे कि हमें कष्ट सहना होगा; और जैसा कि आप जानते हैं, ऐसा ही हुआ।<sup>5</sup> इसी कारण से, जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका, तो मैंने आपके विश्वास के बारे में जानने के लिए भी भेजा, इस डर से कि कहीं प्रलोभक ने आपको प्रलोभित न किया हो, और हमारी मेहनत व्यर्थ न हो जाए।<sup>6</sup> परन्तु अब जब तीमुथियुस आपके पास से हमारे पास आया है, और आपके विश्वास और प्रेम की अच्छी खबर लाया है, और यह कि आप हमेशा हमारे बारे में दयालुता से सोचते हैं, हमें देखने की लालसा रखते हैं जैसे हम भी आपको देखने की लालसा रखते हैं,<sup>7</sup> इसी कारण से, भाइयों और बहनों, हमारे सभी संकट और कष्टों में हम आपके विश्वास के माध्यम से आपके बारे में सांत्वना प्राप्त करते हैं;<sup>8</sup> क्योंकि अब हम वास्तव में जीते हैं, यदि आप प्रभु में दृढ़ रहते हैं।<sup>9</sup> क्योंकि हम आपके लिए परमेश्वर को क्या धन्यवाद दे सकते हैं, उस सारी खुशी के बदले में जिसके साथ हम आपके कारण अनें परमेश्वर के सामने आनन्दित होते हैं,<sup>10</sup> जैसे हम रात और दिन बड़ी उत्सुकता से प्रार्थना करते रहते हैं, कि हम आपके चेहरे देख सके और आपके विश्वास में जो कमी है उसे पूरा कर सकें;<sup>11</sup> अब हमारा परमेश्वर और पिता स्वयं, और हमारा प्रभु यीशु, हमारे मार्ग को आपके पास निर्देशित करें;<sup>12</sup> और प्रभु आपको एक-दूसरे के लिए और सभी लोगों के लिए प्रेम में बढ़ने और उमड़ने का कारण बनाएं, जैसे हम भी आपके लिए करते हैं;<sup>13</sup> ताकि वह हमारे परमेश्वर और पिता के सामने आपके हृदयों को पवित्रता में निर्देश ठहरा सके, जब हमारे प्रभु यीशु अपने सभी संतों के साथ आएंगे।

**4** अंत में, भाइयों और बहनों, हम आपसे प्रभु यीशु में आग्रह करते हैं कि जैसे आपने हमसे यह शिक्षा प्राप्त की है कि आपको कैसे चलना चाहिए और परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहिए (जैसा कि आप वास्तव में चलते हैं), कि आप और भी अधिक उल्कृष्टा प्राप्त करें।<sup>2</sup> क्योंकि आप जानते हैं कि हमने आपको प्रभु यीशु के अधिकार से क्या निर्देश दिए।<sup>3</sup> क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है, आपकी पवित्रीकरण: कि आप यौन अनैतिकता से दूर रहें;<sup>4</sup> कि आप में से प्रत्येक अनें बर्तन को पवित्रीकरण और सम्मान में कैसे धारण करना जानें;<sup>5</sup> कामुक वासना में नहीं, जैसे अन्यजाति जो परमेश्वर को नहीं जानते;<sup>6</sup> और कि कोई भी अपने भाई या बहन के अधिकारों का उल्लंघन न करे और इस मामले में लाभ न उठाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों में प्रतिशोधी है, जैसा कि हमने आपको पहले भी बताया और गंभीरता से चेतावनी दी।<sup>7</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिए नहीं, बल्कि

पवित्रीकरण में बुलाया है।<sup>8</sup> इसलिए, जो इसको अस्वीकार करता है वह मनुष्य को नहीं, बल्कि उस परमेश्वर को अस्वीकार कर रहा है जो आपको अपनी पवित्र आत्मा देता है।<sup>9</sup> अब भाइयों और बहनों के प्रेम के विषय में, आपको किसी के लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप स्वयं परमेश्वर से एक-दूसरे से प्रेम करना सीख चुके हैं;<sup>10</sup> क्योंकि वास्तव में आप इसे सभी भाइयों और बहनों के प्रति जो समस्त मकिनुलिया में हैं, करते हैं। लेकिन हम आपसे आग्रह करते हैं, भाइयों और बहनों, कि आप और भी अधिक उल्कृष्टा प्राप्त करें,<sup>11</sup> और इसे अपनी महत्वाकांक्षा बनाएं कि आप शांत जीवन यीएं और अपने ही काम में धन दें और अपने हाथों से काम करें, जैसा कि हमने आपके निर्देश दिया,<sup>12</sup> ताकि आप बाहरी लोगों के प्रति सही व्यवहार करें और किसी भी आवश्यकता में न रहें।<sup>13</sup> लेकिन हम नहीं चाहते कि आप, भाइयों और बहनों, उन लोगों के बारे में जो सो गए हैं, अनजान रहें, ताकि आप शोक न करें जैसे कि बाकी मानवजाति करती है, जिनके पास कोई आशा नहीं है।<sup>14</sup> क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और जी उठे, तो परमेश्वर भी उन्हीं के साथ उन लोगों को लाएगा जो यीशु के माध्यम से सो गए हैं।<sup>15</sup> क्योंकि हम आपको प्रभु के बचन द्वारा यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आगमन तक बने रहते हैं, उन लोगों से पहले नहीं जाएंगे जो सो गए हैं।<sup>16</sup> क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ण से एक पुकार के साथ, महाद्रूत की आवाज़ और परमेश्वर की तुरही के साथ उत्तरेगा, और मरीझ में मरे हुए पहले उठेंगे।<sup>17</sup> तब हम जो जीवित हैं, जो बने रहते हैं, उनके साथ बादलों में प्रभु से मिलने के लिए हवा में उठा लिए जाएंगे, और इस प्रकार हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे।<sup>18</sup> इसलिए, इन शब्दों के साथ एक-दूसरे को सांत्वना दें।

# १ यिस्सलुनीकियों

उद्धार की आशा का टोप पहने हुए।<sup>९</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिए नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए ठहराया है,<sup>१०</sup> जो हमारे लिए मरे, ताकि हम जागते हों या सोते हों, उसके साथ जीवित रहें।<sup>११</sup> इसलिए, एक दूसरे को प्रोत्साहित करो और एक दूसरे को बढ़ाओ, जैसा कि तुम कर भी रहे हो।<sup>१२</sup> परन्तु हम तुमसे दिनती करते हैं, हे भाइयों और बहनों, कि तुम उन लोगों को पहचानो जो तुहारे बीच परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुहारे ऊपर नेतृत्व करते हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं,<sup>१३</sup> और उनके काम के कारण उन्हें बहुत प्रेम से सम्मान दो। एक दूसरे के साथ शांति से रहो।<sup>१४</sup> हम तुमसे आग्रह करते हैं, हे भाइयों और बहनों, अनुशासनहीनों को चेतावनी दो, निर्बलों को प्रोत्साहित करो, कमजोरों की सहायता करो, सबके प्रति धैर्यवान रहो।<sup>१५</sup> देखो कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे, परन्तु हमेशा एक दूसरे के और सब लोगों के लिए भलाई का प्रयास करो।<sup>१६</sup> सदा अनन्दित रहो,<sup>१७</sup> निरंतर प्रार्थना करो,<sup>१८</sup> हर बात में धैर्यवाद दो;

क्योंकि मसीह यीशु में तुहारे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।<sup>१९</sup> आत्मा को न बुझाओ,<sup>२०</sup> भविष्यवाणियों को तुच्छ न जानो।<sup>२१</sup> परन्तु सब कुछ जांचो; जो अच्छा है उसे दृढ़ता से पकड़े रहो,<sup>२२</sup> हर प्रकार की बुराई से दूर रहो।<sup>२३</sup> अब शांति का परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करें; और तुम्हारी आत्मा, प्राण, और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन पर निर्दोष बनाए रखें।<sup>२४</sup> वह जो तुम्हें बुलाता है, विश्वासयोग्य है, और वही इसे पूरा करेगा।<sup>२५</sup> हे भाइयों और बहनों, हमारे लिए प्रार्थना करो।<sup>२६</sup> सभी भाइयों और बहनों को पवित्र चुम्बन के साथ नमस्कार करो।<sup>२७</sup> मैं तुम्हें प्रभु की शाप्त दिलाता हूँ कि इस पत्र को सभी भाइयों और बहनों को पढ़कर सुनाया जाए।<sup>२८</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुहारे साथ हो।

## २ यिस्सलुनीकियों

**१** पौत्रस, सिलवानुस, और तीमुथियुस, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में यिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नामः <sup>२</sup> हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो। <sup>३</sup> हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, भाइयों और बहनों, जैसा कि उचित है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास अत्यधिक बढ़ रहा है, और तुम्हें से प्रत्येक की एक-दूसरे के प्रति प्रेम और भी बढ़ता जा रहा है। <sup>४</sup> इसलिए, हम स्वयं परमेश्वर की कलीसियाओं में तुम्हारे धैर्य और विश्वास के बारे में गर्व से बात करते हैं, उन सभी उर्ध्वीङ्गों और कष्टों के बीच जो तुम सहते हो। <sup>५</sup> यह परमेश्वर के धार्मिक न्याय का स्पष्ट संकेत है, ताकि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य माने जाओ, जिसके लिए तुम वास्तव में कष्ट सह रहे हो। <sup>६</sup> क्योंकि आखिरकार, यह उचित है कि परमेश्वर उन लोगों को कष्ट के साथ प्रतिफल दे जो तुम्हें कष्ट देते हैं, <sup>७</sup> और तुम्हें, जो कष्ट में हो, हमारे साथ राहत दे, जब प्रभु यीशु अपने शक्तिशाली स्वर्गद्वारों के साथ अधि की ज्वाला में स्वर्ग से प्रकट होंगे, <sup>८</sup> उन लोगों को प्रतिशोध देंगे जो परमेश्वर को नहीं जानते, और जो हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार का पालन नहीं करते। <sup>९</sup> ये लोग अनंत विनाश की सजा भुगतेंगे, प्रभु की उपस्थिति और उसकी शक्ति की महिमा से दूर, <sup>१०</sup> जब वह उस दिन अपने संतों के बीच महिमा पाने के लिए आएंगे, और उन सभी के बीच आश्चर्यचकित होंगे जिन्होंने विश्वास किया— क्योंकि हमारी गवाही तुम पर विश्वास की गई थी। <sup>११</sup> इस उद्देश्य के लिए हम भी तुम्हारे लिए सदा प्रार्थना करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे बुलावे के योग्य माने, और भलाई की हर इच्छा और विश्वास के कार्य को सामर्थ्य के साथ पूरा करे, <sup>१२</sup> ताकि हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उसमें, हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार।

**२** अब हम आपसे, भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन और उनके साथ हमारी एकत्रित होने के विषय में पूछते हैं, <sup>२</sup> कि आप अपनी स्थिरता से जल्दी न डगमगायं या किसी आत्मा, संदेश, या पत्र के द्वारा, जो कि हमारे द्वारा आया हो, यह सोचकर परेशान न हों कि प्रभु का दिन आ गया है। <sup>३</sup> कोई भी आपको किसी भी प्रकार से खोखा न दे। क्योंकि यह तब तक नहीं आएगा जब तक कि पहले धर्मत्याग न हो जाए, और अधर्म का मनुष्य प्रकट न हो, जो विनाश का पूत्र है, <sup>४</sup> जो हर तथाकथित देवता या पूजा की वस्तु के ऊपर स्वयं को ऊँचा करता है, ताकि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठ जाए, स्वयं को परमेश्वर के ऊपर में प्रदर्शित करता है। <sup>५</sup> क्या आप याद नहीं करते कि जब मैं अभी भी आपके साथ था, तो मैं आपको ये बातें बता रहा था? <sup>६</sup> और आप

जानते हैं कि उसे अब क्या रोक रहा है, ताकि वह अपने समय पर प्रकट हो सके। <sup>७</sup> क्योंकि अधर्म का रहस्य पहले से ही कार्य कर रहा है; केवल वही जो अब रोक रहा है, तब तक ऐसा करेगा जब तक वह हटा न लिया जाए। <sup>८</sup> तब वह अधर्म प्रकट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुख की सांस से समाप्त कर देंगे; <sup>९</sup> यानी, वह जिसका आगमन शैतान की गतिविधि के अनुसार है, सारी शक्ति और इूठे जिन्हों और चमत्कारों के साथ, <sup>१०</sup> और सारी दुष्टता की धीर्खाधड़ी के साथ उनके लिए जो नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को स्वीकार नहीं किया ताकि वे बच सकें। <sup>११</sup> इसी कारण से परमेश्वर उन पर एक भ्रमकारी प्रभाव भेजेगा ताकि वे झूठ पर विश्वास करें, <sup>१२</sup> ताकि वे सभी न्याय किए जाएं जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया, बल्कि दुष्टता में अनंद लिया। <sup>१३</sup> लेकिन हमें हमेशा आपके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, प्रभु के प्रिय भाइयों और बहनों, क्योंकि परमेश्वर ने आपको आत्मा के द्वारा पवित्रीकरण और सत्य में विश्वास के माध्यम से उद्घार के लिए शुरू से ही चुना है। <sup>१४</sup> इसी के लिए उसने आपको हमारे सुसमाचार के माध्यम से बुलाया, ताकि आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त कर सकें। <sup>१५</sup> तो फिर, भाइयों और बहनों, दृढ़ रहो और उन परंपराओं की धारे रहो जो आपको सिखाई गई थीं, वाहे हमारे युग्म से या हमारे पत्र के द्वारा। <sup>१६</sup> अब हमारा प्रभु यीशु मसीह स्वयं और हमारा परमेश्वर पिता, जिसने हमें प्रेम किया और अनुग्रह से अनन्त सांत्वना और अच्छी आशा दी है, <sup>१७</sup> आपके हृदयों को हर अच्छे काम और वचन में सांत्वना और शक्ति प्रदान करें।

**३** अंत में, भाइयों और बहनों, हमारे लिए प्रार्थना करें कि प्रभु का वचन तेजी से फैले और महिमा पाए, जैसे कि यह आपके साथ भी हुआ था; <sup>२</sup> और कि हम विकृत और दुष्ट लोगों से बचाए जाएं; क्योंकि सभी मैं विश्वास नहीं होता। <sup>३</sup> परन्तु प्रभु विश्वस्याय्य है, और वह तुम्हें सामर्थ्य देगा और दृष्टि से बचाएगा। <sup>४</sup> हमें प्रभु मैं तुम्हारे विषय में विश्वास है, कि तुम वरी कर रहे हो, और करते रहोगे, जो हम आज्ञा देते हैं। <sup>५</sup> प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धैर्य की ओर निर्देशित करे। <sup>६</sup> अब हम तुम्हें आज्ञा देते हैं, भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में, कि तुम हर उस भाई या बहन से दूर रहो जो अव्यवस्थित जीवन जीता है और उस परंपरा के अनुसार नहीं चलता जो तुमने हमसे प्राप्त की। <sup>७</sup> क्योंकि तुम स्वयं जानते हो कि तुम्हें हमारे उदाहरण का अनुसारण कैसे करना चाहिए, क्योंकि हमने तुम्हारे बीच अनुशासनहीन तरीके से व्यवहार नहीं

## २ धिस्सलुनीकियों

किया, <sup>८</sup> और न ही हमने किसी का रोटी बिना मूल्य  
चुकाए खाई, बल्कि परिश्रम और कठिनाई के साथ हमने  
रात और दिन काम किया ताकि हम में से किसी पर  
बोझ न बनें; <sup>९</sup> यह नहीं कि हमारे पास इस अधिकार का  
अभाव था, बल्कि इसलिए कि हम तुम्हारे उदाहरण का  
आदर्श प्रस्तुत करें, ताकि तुम हमारे उदाहरण का  
अनुसरण करो। <sup>१०</sup> क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे, तब  
भी हमने तुम्हें यह आदेश दिया था: यदि कोई काम  
करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने का भी अधिकार  
नहीं है। <sup>११</sup> क्योंकि हम सुनते हैं कि तुम में से कुछ लोग  
अनुशासनहीन जीवन जी रहे हैं, बिल्कुल भी काम नहीं  
कर रहे हैं, बल्कि व्यर्थ की बातें कर रहे हैं। <sup>१२</sup> अब हम  
प्रभु यीशु मसीह में ऐसे लोगों को आदेश और उपदेश  
देते हैं कि वे शांति से काम करें और अपनी ही रोटी  
खाएं। <sup>१३</sup> परन्तु तुम्हारे लिए, भाइयों और बहनों, भलाई  
करने में थक मत जाओ। <sup>१४</sup> यदि कोई इस पत्र में हमारी  
आज्ञा का पालन नहीं करता, तो उस व्यक्ति पर विशेष  
ध्यान दो ताकि उसके साथ मेलाजोल न रखो, जिससे उसे  
लज्जित किया जा सके। <sup>१५</sup> फिर भी उसे शत्रु के रूप में  
न देखो, बल्कि उसे भाई के रूप में चेतावनी दो। <sup>१६</sup> अब  
शांति का प्रभु स्वयं तुम्हें हर परिस्थिति में निरंतर शांति  
प्रदान करें। प्रभु तुम सब के साथ हो! <sup>१७</sup> मैं, पौत्रुस, अपने  
हाथ से यह अभिवादन लिखता हूँ, और यह हर पत्र में  
एक विशिष्ट चिन्ह है; यही मेरा लिखने का तरीका है। <sup>१८</sup>  
हमारे प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह तुम सब के साथ हो।

# 1 तीमुथियुस

**1** हमारे उद्घारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और मसीह यीशु, जो हमारी आशा हैं, के प्रेरित पौलस,<sup>2</sup> तीमुथियुस को, जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र हैः परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु से अनुग्रह, दर्मा और शांति मिले।<sup>3</sup> जैसा कि मैंने तुम्हें मकेदोनिया जाते समय आग्रह किया था, इफिसुस में रहो ताकि तुम कुछ लोगों को अजीब शिक्षाएँ न देने की आज्ञा दे सको, <sup>4</sup> और न मिथ्कों और अनंत वंशावलियों पर ध्यान दें, जो परमेश्वर की योजना को आगे बढ़ाने के बजाए व्यर्थ अटकलों को जन्म देती हैं, जो विश्वास के द्वारा है।<sup>5</sup> परंतु हमारी शिक्षा का लक्ष्य है शुद्ध हृदय से प्रेम, अच्छे विवेक से, और निष्कपट विश्वास से।<sup>6</sup> कुछ लोग इन बातों से भटक गए हैं और व्यर्थ चर्चा की ओर मुड़ गए हैं, <sup>7</sup> वे व्यवस्था के शिक्षक बनना चाहते हैं, यद्यपि वे न तो समझते हैं कि वे क्या कह रहे हैं और न ही उन विषयों को जिन पर वे ढृता से दावा करते हैं।<sup>8</sup> परंतु हम जानते हैं कि व्यवस्था अच्छी है, यदि कोई इसे विधिपूर्वक उपयोग करे, <sup>9</sup> यह समझते हुए कि व्यवस्था धर्मी व्यक्ति के लिए नहीं बनाई गई है, बल्कि अधर्मी और विद्रोही, अधारिक और पापियों, अपवित्र और अपमानजनक, जो अपने पिता या माता को मारते हैं, हत्यारों के लिए है।<sup>10</sup> व्यभिचारियों, समलैंगिकों, दास व्यापारियों, झूठों, झूठी गवाही देने वालों और जो भी सत्य शिक्षा के विपरीत है, <sup>11</sup> धन्य परमेश्वर के महिमामय सुसमाचार के अनुसार, जिसे मेरे ऊपर सौंपा गया है।<sup>12</sup> मैं हमारे प्रभु मसीह यीशु का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे सामर्थ दी, क्योंकि उन्होंने मुझे विश्वासयोग्य समझा और सेवा में नियुक्त किया,<sup>13</sup> यद्यपि मैं पहले निन्दक, अत्याचारी और हिंसक था। फिर भी मुझ पर दया की गई क्योंकि मैंने अविश्वास में अज्ञानता से कार्य किया;<sup>14</sup> और हमारे प्रभु का अनुग्रह अत्यधिक प्रदूर था, उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में पाया जाता है।<sup>15</sup> यह एक विश्वासयोग्य कथन है जो पूर्ण स्वीकृति के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों को बचाने के लिए संसार में आए, जिनमें मैं सबसे प्रमुख हूँ।<sup>16</sup> फिर भी इस कारण मुझ पर दया की गई, ताकि मुझमें, जो सबसे प्रमुख पापी हूँ, यीशु मसीह अपनी पूर्ण धैर्य का प्रदर्शन कर सकें, उन लोगों के लिए एक उदाहरण के रूप में जो अनन्त जीवन के लिए उन पर विश्वास करेंगे।<sup>17</sup> अब अनन्त, अमर, अदृश्य, एकमात्र परमेश्वर को सदा सर्वदा समान और महिमा मिले। आमीन।<sup>18</sup> यह आज्ञा मैं तुम्हें सौंपता हूँ, तीमुथियुस, मेरे पुत्र, उन भविष्यवाणियों के अनुसार जो पहले तुम्हारे बारे में की गई थीं, कि उनके द्वारा तुम अच्छा युद्ध लड़ सको,<sup>19</sup> विश्वास और अच्छे विवेक को बनाए रखते हुए, जिसे कुछ ने अस्वीकार कर दिया है और अपनी विश्वास में जहाज़ की तरह टूट गए हैं।<sup>20</sup>

इनमें से हुमिनियुस और सिंकंदर हैं, जिन्हें मैंने शैतान के हवाले कर दिया है, ताकि वे निन्दा न करने का सबक सीखें।

**2** सबसे पहले, मैं यह आग्रह करता हूँ कि सभी लोगों के लिए निवेदन, प्रार्थनाएँ, मध्यस्थता, और धन्यवाद किए जाएँ,<sup>2</sup> राजाओं और सभी अधिकार में रहने वालों के लिए, ताकि हम सब भक्ति और गरिमा में शांत और स्थिर जीवन जी सकें।<sup>3</sup> यह हमारे उद्घारकर्ता परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा और स्थीकार्य है, <sup>4</sup> जो चाहता है कि सभी लोग उद्घार पाएँ और सत्य के ज्ञान में आएँ।<sup>5</sup> क्योंकि एक ही परमेश्वर है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, मनुष्य मसीह यीशु,<sup>6</sup> जिसने अपने आप को सभी के लिए फिराती के रूप में दिया, जो उचित समय पर गवाही दी गई।<sup>7</sup> इसलिए मैं एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया (मैं सत्य कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता), विश्वास और सत्य में अन्यजातियों का शिक्षक।<sup>8</sup> इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर जागह पुरुष प्रार्थना करें, पवित्र हाथ उठाएँ, बिना क्रोध और विवाद के।<sup>9</sup> इसी प्रकार, मैं चाहता हूँ कि स्त्रियाँ उचित वस्त्रों में, शालीनता और विवेक के साथ, न कि गंथे हुए बाल, सोना, मोती, या महंगे वस्त्रों के साथ सजें,<sup>10</sup> बल्कि अच्छे कार्यों के माध्यम से, जैसा कि भक्ति का दावा करने वाली स्त्रियों के लिए उचित है।<sup>11</sup> एक स्त्री को पूरी विनम्रता के साथ उपचाप शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।<sup>12</sup> लेकिन मैं स्त्री को शिक्षा देने या पुरुष पर अधिकार करने की अनुमति नहीं देता, बल्कि चुप रहने की।<sup>13</sup> क्योंकि पहले आदम बनाया गया, और फिर हव्वा।<sup>14</sup> और आदम धोखा नहीं खाया गया, बल्कि स्त्री धोखा खाकर अपराधी बन गई।<sup>15</sup> लेकिन स्त्रियाँ प्रसव के माध्यम से सुखित रहें—यदि वे विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में संयम के साथ बनी रहती हैं।

**3** यह एक विश्वासनीय कथन है: यदि कोई व्यक्ति पर्यवेक्षक के पद की आकांक्षा करता है, तो वह एक उत्तम कार्य की इच्छा करता है।<sup>2</sup> इसलिए, एक पर्यवेक्षक को निर्दोष होना चाहिए, एक पवित्री का पाति, संयमी, आत्म-नियंत्रित, सम्माननीय, अतिश्चील, सिखाने में सक्षम,<sup>3</sup> अधिक शराब का सेवन न करने वाला, न झगड़ालू, बल्कि कोमल, विवादप्रिय नहीं, धन के प्रेम से मुक्त।<sup>4</sup> उसे अपने घर का अच्छा प्रबंधक होना चाहिए, अपने बच्चों को संपूर्ण गरिमा के साथ नियंत्रण में रखना चाहिए<sup>5</sup> (परंतु यदि कोई अपने घर का प्रबंधन करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?);<sup>6</sup> और नया धर्मांतरित नहीं होना चाहिए, ताकि वह अभिमानी न हो

## 1 तीमुथियुस

जाए और शैतान द्वारा लाई गई निंदा में न गिर जाए।<sup>7</sup> और उसे कलीसिया के बाहर के लोगों के साथ भी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए, ताकि वह अपमान और शैतान के जाल में न फँसे।<sup>8</sup> उसी प्रकार, सेवक भी गरिमा वाले पुरुष होने चाहिए, कपटी नहीं, अधिक शराब पीने के इच्छुक नहीं, धन के लालची नहीं,<sup>9</sup> बल्कि स्पष्ट विवेक के साथ विश्वास के रहस्य को थामे हुए।<sup>10</sup> इन पुरुषों को भी पहले परखा जाना चाहिए; यदि वे निर्दोष हों तो उन्हें सेवक के रूप में सेवा करने दें।<sup>11</sup> महिलाओं को भी गरिमामय होना चाहिए, द्वेषपूर्ण चुगली करने वाली नहीं, बल्कि संयमी, सभी बातों में विश्वासयोग्य।<sup>12</sup> सेवक एक पनी के पति होने चाहिए, और अपने बच्चों और अपने घरों के अच्छे प्रबंधक होने चाहिए।<sup>13</sup> क्योंकि जिन्होंने सेवक के रूप में अच्छी सेवा की है, वे अपने लिए एक उच्च स्थान और मसीह यीशु में विश्वास में महान आमविश्वास प्राप्त करते हैं।<sup>14</sup> मैं ये बातें तुम्हें लिख रहा हूँ, यह आशा करते हुए कि मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आऊं;<sup>15</sup> परंतु यदि मैं लिंबित हो जाऊं, तो मैं इसलिए लिखता हूँ कि तुम जान सको कि परमेश्वर के घर में कैसे आचरण करना चाहिए, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, सत्य का स्तंभ और आधार।<sup>16</sup> निसंदेह, भक्ति का रहस्य महान है:

वह जो शरीर में प्रकट हुआ, आत्मा में व्यायसिद्ध हुआ,  
स्वर्गद्वारों द्वारा देखा गया, राष्ट्रों में प्रचारित हुआ, संसार  
में विश्वास किया गया, महिमा में ऊपर उठाया गया।

**4** परन्तु आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है कि अन्तिम समय में कुछ लोग विश्वास से गिर जाएंगे, धारेखबाज आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर ध्यान देंगे,<sup>2</sup> उन झूठों के पाखंड के माध्यम से जिनका विवेक जैसे दागने वाले लोहे से जल चुका है,<sup>3</sup> जो विवाह करने से मना करते हैं और उन भेजन पदार्थों से परहेज करने की सलाह देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उन लोगों के द्वारा धन्यवाद के साथ साझा करने के लिए बनाया है जो विश्वास करते हैं और सत्य को जानते हैं।<sup>4</sup> क्योंकि परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर वस्तु अच्छी है, और यदि उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाए तो उसे अस्तीकार नहीं किया जाना चाहिए;<sup>5</sup> क्योंकि यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के माध्यम से पवित्र किया गया है।<sup>6</sup> इन बातों को भाइयों और बहनों को बताते हुए, तुम मसीह यीशु के एक अच्छे सेवक बनोगे, विश्वास के शब्दों और उस अच्छी शिक्षा से निरंतर पोषित होते रहोगे जिसका तुम अनुसरण कर रहे हो।<sup>7</sup> परन्तु उन व्यर्थ कहानियों से दूर रहो जो बूढ़ी औरतों की विशेषता होती हैं, और भक्ति के उद्देश्य के लिए स्वयं को

अनुशासित करो;<sup>8</sup> क्योंकि शारीरिक प्रशिक्षण का थोड़ा ही लाभ है, परन्तु भक्ति सब बातों के लिए लाभकारी है, क्योंकि यह वर्तमान जीवन और आने वाले जीवन दोनों के लिए प्रतिष्ठा रखती है।<sup>9</sup> यह एक विश्वसनीय कथन है, जो पूर्ण स्वीकृति के योग्य है।<sup>10</sup> क्योंकि हम इसी के लिए परिश्रम करते हैं और संघर्ष करते हैं, क्योंकि हमने जीवित परमेश्वर पर अपनी आशा रखी है, जो सभी मनुष्यों का उद्धारकर्ता है, विशेष रूप से विश्वासियों का।<sup>11</sup> इन बातों को आदेश दो और सिखाओ।<sup>12</sup> कोई भी तुम्हारी युवावस्था को तुच्छ न समझे, परन्तु विश्वास करने वालों के लिए वचन, आचरण, प्रेम, विश्वास और पवित्रता में एक आदर्श बनो।<sup>13</sup> जब तक मैं न आऊं, सार्वजनिक पठन, उपदेश और शिक्षा पर ध्यान दो।<sup>14</sup> अपने भीतर की आत्मिक वरदान की उपेक्षा न करो, जो तुम्हें भवित्वाणी के माध्यम से और प्राचीरों की परिषद द्वारा हाथ रखने के द्वारा दिया गया था।<sup>15</sup> इन बातों में परिश्रम करो; उनमें लीन रहो, ताकि तुम्हारी प्रगति सबके लिए स्पष्ट हो।<sup>16</sup> अपने और अपनी शिक्षा पर ध्यान दो; इन बातों में दृढ़ रहो, क्योंकि ऐसा करते हुए तुम अपने और अपने सुनने वालों के उद्धार का कारण बनोगे।

**5** एक बृद्ध पुरुष को कठोरता से न डांटो, बल्कि उसे पिता के समान समझाओ, और युवकों को भाइयों के समान।<sup>2</sup> बृद्ध स्त्रियों को माताओं के समान, और युवा स्त्रियों को बहनों के समान, पूरी पवित्रता के साथ।<sup>3</sup> उन विधाओं का समान करो जो वास्तव में विधवा हैं;<sup>4</sup> परंतु यदि किसी विधवा के बच्चे या पोते हैं, तो उन्हें अपने घर का उचित सम्मान करना सीखना चाहिए और अपने माता-पिता को कुछ प्रतिफल देना चाहिए; क्योंकि यह परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य है।<sup>5</sup> अब वह जो वास्तव में विधवा है और अकेली छोड़ दी गई है, उसने अपनी आशा परमेश्वर पर रखी है, और वह रात और दिन प्रार्थनाओं और निवेदनों में लागी रहती है।<sup>6</sup> परंतु वह जो विलासिता में लिप्त है, वह जीवित रहते हुए भी मृत है।<sup>7</sup> इन निर्देशों को भी दो, ताकि वे निंदा से ऊपर रहें।<sup>8</sup> परंतु यदि कोई अपने लोगों की, विशेष रूप से अपने घर की देखभाल नहीं करता, तो उसने विश्वास का इन्कार किया है और वह अविश्वासी से भी बुरा है।<sup>9</sup> एक विधवा को सूची में तभी रखा जाए जब वह साठ वर्ष से कम न हो, और एक ही पुरुष की पत्नी रही हो,<sup>10</sup> अच्छे कार्यों की प्रतिष्ठा रखती हो; यदि उसने बच्चों को पाला है, यदि उसने अजनबियों का आतिथ्य किया है, यदि उसने संतों के पांव धोए हैं, यदि उसने संकट में पँडे लोगों की सहायता की है, और यदि उसने हर अच्छे कार्य में खुद को समर्पित किया है।<sup>11</sup> परंतु युवा विधाओं को सूची में न लो, क्योंकि जब वे मसीह से

# 1 तीमुथियुस

अलग होने की शारीरिक इच्छाओं को महसूस करती हैं, तो वे विवाह करना चाहती हैं, १२ निंदा का सामना करती हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ दिया है। १३ उसी समय वे आलसी होना भी सीखती हैं, घर-घर घूमती हैं; और न केवल आलसी, बल्कि चुगलखोर और व्यस्त, ऐसी बातें करती हैं जो कहना उचित नहीं है। १४ इसलिए, मैं चाहता हूँ कि युवा विधावाएं विवाह करें, बच्चे पैदा करें, अपने घरों का प्रबंधन करें, और शत्रु को निंदा का कोई अवसर न दें; १५ क्योंकि कुछ पहले ही शैतान का अनुसरण करने के लिए मुझ चुके हैं। १६ यदि कई स्त्री जो विश्वासी हैं, आश्रित विधावाएं रखती हैं, तो उसे उनकी सहायता करनी चाहिए और कलीसिया पर बोझ नहीं डालना चाहिए, ताकि वह उन विधावाओं की सहायता कर सके जो वास्तव में विधावा हैं। १७ जो प्राचीन अच्छी तरह से नेतृत्व करते हैं, उन्हें दोहरे सम्मान के योग्य माना जाना चाहिए, विशेष रूप से वे जो प्रचार और शिक्षा में मेहनत करते हैं। १८ क्योंकि पवित्र सास्त्र कहता है "जब बैल दाना कूट रहा हो, तो उसका मुंह न बाधे," और "मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।" १९ किसी प्राचीन के विरुद्ध आरोप की दो या तीन गवाहों के आधार पर ही स्वीकार करो। २० जो पाप में लगे रहते हैं, उन्हें सबके सामने डाँठी, ताकि बाकी भी भयभीत हों। २१ मैं तुम्हें परमेश्वर और मसीही यीशु और उसके चुने हुए सर्वांगिनों की उपस्थिति में गंभीरता से उपदेश देता हूँ कि इन सिद्धांतों को बिना पक्षपात के बनाए रखो, और कुछ भी पक्षपात की भावना में न करो। २२ किसी पर जल्दी से हाथ न रखो, और इस प्रकार दूसरों के पापों की जिम्मेदारी में भागीदार न बनो; अपने आप को पाप से मुक्त रखो। २३ केवल पानी पीते न रहो, बल्कि अपने पेट और अपनी बार-बार की बीमारियों के कारण थोड़ा-सा दाखमधू भी प्रयोग करो। २४ कुछ लोगों के पाप स्पष्ट होते हैं, जो न्याय के लिए पहले से ही जाते हैं; दूसरों के पाप उनके पीछे आते हैं। २५ इसी प्रकार, जो कार्य अच्छे हैं, वे भी स्पष्ट होते हैं, और जो अन्यथा हैं, वे छिपाए नहीं जा सकते।

**6** जो लोग दास के रूप में जुए के नीचे हैं, वे अपने स्वामियों को सब प्रकार के आदर के योग्य मानें, ताकि परमेश्वर के नाम और हमारी शिक्षा की निंदा न हो। २ जिनके स्वामी विश्वासी हैं, वे उन्हें इसलिए तुच्छ न समझें क्योंकि वे भाईं या बहन हैं, बल्कि उन्हें और भी अधिक सेवा करें, क्योंकि जो लाभ प्राप्त करते हैं वे विश्वासी और प्रिय हैं। इन सिद्धांतों को सिखाओं और प्रचार करो। ३ यदि कोई भिन्न सिद्धांत का समर्थन करता है और हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप वचनों और धर्मपरायणता के अनुरूप सिद्धांत से सहमत नहीं होता, ४ तो वह घमंडी है

और कुछ नहीं समझता; बल्कि वह विवादास्पद प्रश्नों और शब्दों के विवाद के लिए बीमार लालसा रखता है, जिससे ईर्ष्या, झगड़ा, अपमानजनक भाषा, बुरी शंकाएँ उत्पन्न होती हैं, ५ और भ्रष्ट मन और सत्य से वंचित लोगों के बीच निरंतर धर्षण होता है, जो सोचते हैं कि धर्मपरायणता लाभ का एक साधन है। ६ लेकिन धर्मपरायणता वास्तव में एक महान लाभ का साधन है जब संतोष के साथ होती है। ७ क्योंकि हम इस संसार में कुछ भी नहीं लाए हैं, इसलिए हम कुछ भी बाहर नहीं ले जा सकते। ८ यदि हमारे पास भेजन और वस्तु हैं, तो हम इनसे संतुष्ट रहेंगे। ९ लेकिन जो लोग धनी बनना चाहते हैं, वे प्रलोभन और जाल में पड़ते हैं, और कई मूर्ख और हानिकारक इच्छाओं में पड़ते हैं, जो लोगों को विनाश और नाश में डाल देती हैं। १० क्योंकि धन का प्रेम सभी प्रकार की बुराइयों की जड़ है, और कुछ लोग इसकी लालसा में विश्वास से भटक गए हैं और अपने आप को कई दुखों से छेद लिया है। ११ लेकिन हे परमेश्वर के मनुष्य, इन चीजों से भागो, और धार्मिकता, धर्मपरायणता, विश्वास, प्रेम, धैर्य, और कोमलता का अनुसरण करो। १२ विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ो; उस अनंत जीवन को पकड़ लो जिसके लिए तुम बुलाए गए थे, और जिसके लिए तुमने कई गवाहों के सामने अच्छी अंगीकार की थी। १३ मैं तुम्हें परमेश्वर की उपस्थिति में निर्देश देता हूँ, जो सभी चीजों को जीवन देता है, और मसीह यीशु की उपस्थिति में, जिन्होंने पौत्रियुस पीलातुस के सामने अच्छी अंगीकार की थी, १४ कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक आज्ञा को बिना दोष या निंदा के रखो, १५ जिसे वह उचित समय पर लाएगा—वह जो धन्य और एकमात्र सार्वभौम है, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु, १६ जो अकेले अमरता का अधिकारी है और अप्राप्य प्रकाश में निवास करता है, जिसे किसी ने नहीं देखा है और न देख सकता है। उसे आदर और अनंत प्रभुत्व प्राप्त हो: आपीना। १७ इस वर्तमान संसार में जो धनी हैं, उन्हें निर्देश दो कि वे घमंडी न हों या धन की अनिष्टिता पर अपनी आशा न रखें, बल्कि परमेश्वर पर रखें, जो हमें अनंद के लिए सभी चीजें समृद्ध रूप से प्रदान करता है। १८ उन्हें अच्छा करने के लिए, अच्छे कार्यों में धनी होने के लिए, उदार और साझा करने के लिए तैयार रहने के लिए निर्देश दो, १९ अपने लिए भविष्य के लिए एक अच्छे आधार का खजाना संचित करने के लिए, ताकि वे उस जीवन को पकड़ सकें जो वास्तव में जीवन है। २० तीमुथियुस, जो तुम्हें सौंपा गया है उसकी रक्षा करो, सांसारिक, खाली बकवास और जो झूठा "ज्ञान" कहा जाता है उसके विरोधी तर्कों से बचो— २१ जिसे कुछ ने स्वीकार किया है

## 1 तीमुथियुस

और इस प्रकार विश्वास से भटक गए हैं। तुम पर अनुप्रह हो।

## 2 तीमुथियुस

**1** पौत्रुस, मरीह यीशु का प्रेरित, परमेश्वर की इच्छा से, मरीह यीशु में जीवन की प्रतिशो के अनुसार,<sup>2</sup> तीमुथियुस को, मेरे प्रिय पुत्रः अनुप्रह, दया, और शांति परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मरीह यीशु से मिले।<sup>3</sup> मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जिसकी सेवा मैं अपने पूर्वजों की तरह शुद्ध विवेक से करता हूँ, जब मैं रात और दिन तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में निरतर स्मरण करता हूँ।<sup>4</sup> तुम्हें देखने की लालसा करता हूँ, तुम्हारे अँसुओं को याद करते हुए, ताकि मैं आनन्द से भर जाऊँ।<sup>5</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे भीतर की निष्कृप्त विश्वास को याद करता हूँ, जो पहले तुम्हारी दादी लोइस और तुम्हारी माता यूटीकी में था, और मुझे विश्वास है कि वह तुम्हारे भीतर भी है।<sup>6</sup> इसी कारण मैं तुम्हें स्मरण दिलाता हूँ कि तुम परमेश्वर के उस वरदान को फिर से जागृत करो जो तुम्हारे भीतर मेरे हाथ रखने के द्वारा है।<sup>7</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमें डर का आत्मा नहीं दिया, परन्तु सामर्थ्य, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है।<sup>8</sup> इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, या मुझसे जो उसका बंदी हूँ, लजित न हो; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ कष्ट सहन करो,<sup>9</sup> जिसने हमें बचाया और एक पवित्र बुलाहट के साथ हमें बुलाया, न कि हमारे कर्मों के अनुसार, परन्तु अपनी ही इच्छा और अनुग्रह के अनुसार, जो हमें मरीह यीशु में अनादिकाल से दिया गया था,<sup>10</sup> परन्तु अब हमारे उद्घारकर्ता मरीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकट हुआ है, जिसने मृत्यु को नष्ट किया और सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता को प्रकाश में लाया,<sup>11</sup> जिसके लिए मैं प्रचारक, प्रेरित, और शिक्षक नियुक्त किया गया।<sup>12</sup> इसी कारण मैं ये कष्ट सहता हूँ, परन्तु मैं लजित नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे विश्वास है कि वह उस दिन तक मेरी जमा की हुई चीज़ की रक्षा करने में समर्थ है।<sup>13</sup> उन स्वस्य शब्दों के उदाहरण को धर्मे रहो जो तुमने मुझसे सुने हैं, उस विश्वास और प्रेरण में जो मरीह यीशु में हैं।<sup>14</sup> उस खजाने की रक्षा करो जो तुम्हें सौंपा गया है, हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा।<sup>15</sup> तुम इस तथ्य से अवगत हो कि एशिया में सभी ने मुझसे मुँह मोड़ लिया, जिनमें फ्यूरोलुस और हमर्जेनेस भी हैं।<sup>16</sup> प्रभु ओनेसिफोरुस के घराने पर दया करे, क्योंकि उसने मुझे अक्सर ताजीगी दी और मेरी जंजीरों से लजित नहीं हुआ;<sup>17</sup> परन्तु जब वह रोम में था, उसने उत्सुकता से मुझे खोजा और पाया—<sup>18</sup> प्रभु उसे उस दिन प्रभु से दया पाने की अनुमति दे—और तुम अच्छी तरह जानते हो कि उसने इफिसुस में क्या सेवाएँ दी।

**2** इसलिये, मेरे पुत्र, उस अनुप्रह में दृढ़ रहो जो मरीह यीशु में है।<sup>2</sup> जो बातें तुमने मुझसे बहुत से गवाहों के सामने सुनी हैं, उहें विश्वासयोग्य लोगों को सौंप दो, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।<sup>3</sup> मेरे साथ कष्ट सहन करो, जैसे मरीह यीशु का एक अच्छा सैनिक।<sup>4</sup> कोई भी सैनिक जो सक्रिय सेवा में है, अपने आप को दैनिक जीवन के मामलों में नहीं उलझाता, ताकि वह उसे प्रसन्न कर सके जिसने उसे भर्ती किया है।<sup>5</sup> और यदि कोई व्यक्ति एक खिलाड़ी के रूप में प्रतिस्पर्धा करता है, तो उसे विजेता का मुकुट नहीं मिलता जब तक कि वह नियमों के अनुसार प्रतिस्पर्धा न करे।<sup>6</sup> मेहनती किसान को फसल का हिस्सा सबसे पहले मिलना चाहिए।<sup>7</sup> जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दो, क्योंकि प्रभु तुम्हें सब बातों में समझ देगा।<sup>8</sup> यीशु मरीह को स्मरण रखो, जो मृतकों में से जी उठा, दाऊद के वंशज के रूप में, मेरे सुसमाचार के अनुसार।<sup>9</sup> जिसके लिये मैं अपराधी के रूप में बंदीगृह तक कष्ट सहता हूँ; परन्तु परमेश्वर का वचन बंदी नहीं है।<sup>10</sup> इसी कारण मैं सब कुछ सहता हूँ चुने हुए लोगों के लिये, ताकि वे भी मरीह यीशु में उद्घार प्राप्त करें और इसके साथ अनन्त महिमा।<sup>11</sup> यह कथन विश्वासयोग्य है:

यदि हम उसके साथ मरे हैं तो हम उसके साथ जीवित भी रहेंगे।<sup>12</sup> यदि हम सहन करें, तो हम उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसे अस्वीकार करेंगे, तो वह भी हमें अस्वीकार करेगा;<sup>13</sup> यदि हम अविश्वासी होंगे, तो भी वह विश्वासयोग्य रहेगा, क्योंकि वह स्वयं को अस्वीकार नहीं कर सकता।

<sup>14</sup> उहें इन बातों की याद दिलाओ, और परमेश्वर के सामने उहें गंभीरता से समझाओ कि शब्दों पर विवाद न करें, जो अर्थ है और सुनने वालों के विनाश का कारण बनता है।<sup>15</sup> परमेश्वर के सामने अपने आप को एक कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करो, जिसे लजित होने की आवश्यकता नहीं है, जो सत्य के वचन को सही ढंग से संभालता है।<sup>16</sup> परन्तु सांसारिक और खाली बातों से बचो, क्योंकि यह और अधिक अधर्म की ओर ले जाएगी,<sup>17</sup> और उनकी बातें ग्रीनगैपरीन की तरह फैलेंगी। उनमें से हुमिनिपस और फिलेतुस हैं,<sup>18</sup> जो सत्य से भटक गए हैं, यह दावा करते हुए कि पुनरुत्थान हो चुका है, और कुछ की आस्था को खतरे में डाल रहे हैं।<sup>19</sup> फिर भी, परमेश्वर की दृढ़ नींव स्थिर है, इस मुहर के साथ: “प्रभु उन्हें जानता है जो उसके हैं”<sup>20</sup> और, “जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अर्थम् से दूर रहे।”<sup>21</sup> अब एक बड़े घर में न केवल सोने और चांदी के बर्तन होते हैं, बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी, और कुछ सम्मान के

## 2 तीमुथियुस

लिये होते हैं, जबकि अन्य अपमान के लिये।<sup>21</sup> इसलिये, यदि कोई इन बातों से अपने आप को शुद्ध करता है, तो वह सम्मान के लिये एक बर्तन होगा, पवित्र, स्वामी के लिये उपयोगी, हर अच्छे काम के लिये तैयार।<sup>22</sup> अब युवा वासनाओं से भागों और धर्म, विश्वास, प्रेम, और शांति का पीछा करो उन लोगों के साथ जो शुद्ध हृदय से प्रभु का आह्वान करते हैं।<sup>23</sup> परन्तु मूर्खतापूर्ण और अज्ञानी अटकलों को अस्वीकार करो, यह जानते हुए कि वे झगड़े उत्पन्न करते हैं।<sup>24</sup> प्रभु के सेवक को शगाड़ालू नहीं होना चाहिए, बल्कि सभी के प्रति दयालु, शिक्षण में कुशल, गलत होने पर धैर्यवान होना चाहिए,<sup>25</sup> विरोध करने वालों को कोमलता से सुधारना चाहिए, यदि संभव हो तो परमेश्वर उन्हें सत्य की जानाकारी की ओर ले जाने के लिये पश्चात्पाप प्रदान करे,<sup>26</sup> और वे अपनी इंद्रियों में आकर शैतान के जाल से बच सकें, जो उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिये बंदी बना चुका है।

**3** परन्तु यह जान लो कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।<sup>2</sup> क्योंकि लोग स्वार्थी, धन के प्रेमी, डॉग मारने वाले, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की अज्ञा न मानने वाले, कृतज्ञ, अपवित्र होंगे,<sup>3</sup> प्रेमहीन, मेल न करने वाले, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भलाई के बैरी,<sup>4</sup> विश्वासघाती, उतावले, घमण्डी, परमेश्वर से अधिक सुख के प्रेमी होंगे,<sup>5</sup> भक्ति का ढोंग तो करेंगे, परन्तु उसकी शक्ति को नकरेंगे; ऐसे लोगों से रह रहो।<sup>6</sup> क्योंकि उनमें से कुछ ऐसे हैं जो घरों में घुसकर पापों से लदी हुई और विभिन्न इच्छाओं से प्रेरित दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं,<sup>7</sup> जो सदा सीखती तो रहती हैं, परन्तु सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुँच पातीं।<sup>8</sup> जैसे यज्ञेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग भी सत्य का विरोध करते हैं, ये भ्रष्ट मन के और विश्वास के विषय में निकम्पे हैं।<sup>9</sup> परन्तु वे आगे नहीं बढ़ेंगे, क्योंकि उनका मूर्खता सब पर प्रकट हो जाएगी, जैसे यज्ञेस और यम्ब्रेस की भी हुई थी।<sup>10</sup> परन्तु तुमने मेरी शिक्षा, चाल-चलन, उद्देश्य, विश्वास, धैर्य, प्रेम, सहनशीलता का अनुसरण किया है,<sup>11</sup> साथ ही मेरे सतावों और कष्टों का भी, जो मुझे पर अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्ता में आए थे—किस प्रकार के सताव मैंने सहन किए, और उन सब में से प्रभु ने मुझे छुड़ा लिया!<sup>12</sup> वास्तव में, जो मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सताए जाएंगे।<sup>13</sup> परन्तु दुष्ट लोग और धोखेबाज बद से बदरत होते जाएंगे, धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए।<sup>14</sup> परन्तु तुम उन बातों में बने रहो जो तुमने सीखी हैं और जिनके विषय में तुमने विश्वास किया है, वह जानते हुए कि तुमने उन्हें किससे सीखा है,<sup>15</sup> और यह कि बचपन से ही तुमने पवित्र

शास्त्रों को जाना है, जो तुम्हें वह बुद्धि देने में समर्थ हैं जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार की ओर ले जाती है।<sup>16</sup> संपूर्ण शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार, और धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है;<sup>17</sup> ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध हो, और हर एक भले काम के लिए तैयार हो।

**4** मैं तुम्हें परमेश्वर और मसीह यीशु के सामने, जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने वाले हैं, और उनके प्रकट होने और उनके राज्य के द्वारा गंभीरता से आग्रह करता हूँ;<sup>2</sup> वचन का प्रचार करो; समय पर और समय के बाहर तैयार रहो; सुधारो, डांटो, और प्रोत्साहित करो, बड़े धैर्य और शिक्षा के साथ।<sup>3</sup> क्योंकि समय आएगा जब वे स्वस्य शिक्षा को सहन नहीं करेंगे; लेकिन अपने कानों को खुजाने के लिए, वे अपनी इच्छाओं के अनुसार अपने लिए शिक्षक इकट्ठा करेंगे,<sup>4</sup> और वे सत्य से अपने कान मोड़ लेंगे और मिथकों की ओर मुड़ जाएंगे।<sup>5</sup> लेकिन तुम्हारे लिए, सभी बातों में आम-संयम का उपयोग करो, कठिनाई सहो, सुसमाचार प्रचारक का काम करो, अपनी सेवा पूरी करो।<sup>6</sup> क्योंकि मैं पहले से ही एक पेय भेंट के रूप में उंडेला जा रहा हूँ, और मेरे प्रस्थान का समय आ गया है।<sup>7</sup> मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी की है, मैंने विश्वास बनाए रखा है;<sup>8</sup> भवित्व में मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा गया है, जिसे प्रभु धर्मी न्यायाधीश, मुझे उस दिन प्रदान करेंगे; और न केवल मुझे, बल्कि उन सभी को भी जो उनके प्रकट होने को प्रेम करते हैं।<sup>9</sup> मेरे पास जल्दी आने का हर संभव प्रयास करो;<sup>10</sup> क्योंकि देमास ने इस वर्तमान संसार से प्रेम करके मुझे छोड़ दिया है और शिस्सलुनीके चला गया है; क्रेसेस गलातिया गया है, तीतुस दलमातिया।<sup>11</sup> केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को साथ ले आओ और उसे अपने साथ लाओ, क्योंकि वह सेवा के लिए मेरे लिए उपयोगी है।<sup>12</sup> लेकिन मैंने तुखिकुस को इफिसुस भेजा है।<sup>13</sup> जब तुम आओ, तो वह चोगा लाना जो मैंने त्रैआस में करपुस के पास छोड़ा था, और पुस्तकें, विशेष रूप से पत्र-पत्रिकाएँ।<sup>14</sup> तांबे का काम करने वाले सिंकंदर ने मुझे बहुत हानि पहँचायी; प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देंगे।<sup>15</sup> तुम भी उसके खिलाफ सावधान रहो, क्योंकि उसने हमारे शिक्षण का जोरदार विरोध किया।<sup>16</sup> मेरे पहले बचाव में किसी ने मेरा समर्थन नहीं किया, बल्कि सभी ने मुझे छोड़ दिया; यह उनके खिलाफ नहीं गिना जाए।<sup>17</sup> लेकिन प्रभु मेरे साथ खड़े रहे और मुझे मंजबूत किया, ताकि मेरे माध्यम से प्रचार पूरी तरह से पूरा हो सके, और सभी अन्यजातियों को सुनाई दे; और मैं रेशे के मुँह से बचाया गया।<sup>18</sup> प्रभु मुझे हर बुरे काम से बचाएंगे,

## 2 तीमुथियुस

और मुझे सुरक्षित रूप से अपने स्वर्गीय राज्य में लाएंगे;  
उन्हें सदा और सदा महिमा मिले। आमीन।<sup>19</sup> प्रिस्का  
और अकिला को नमस्कार कहो, और ओनेसिफोरस के  
घर को भी।<sup>20</sup> एरास्टुस कुरिच्य में रहा, लेकिन मैंने  
ट्रैफिमुस को मीलितुस में बीमार छोड़ दिया।<sup>21</sup> सर्दी से  
पहले आने का हर संभव प्रयास करो। यूब्लुस तुम्हें  
नमस्कार कहता है, साथ ही पुरेस, लिनुस, क्लौदिया,  
और सभी भाई-बहन।<sup>22</sup> प्रभु तुम्हारी आत्मा के साथ हों।  
तुम्हारे साथ अनुग्रह हो।

## तीतुस

**१** पौतुस, जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास और उस सत्य की जानकारी के लिए जो भक्ति के अनुसार है,<sup>२</sup> अनन्त जीवन की आशा में, जिसे परमेश्वर, जो झूठ नहीं बोल सकता, ने बहुत समय पहले वादा किया था,<sup>३</sup> परन्तु उचित समय पर अपने वचन को प्रकट किया, उस प्रवार में जिसके लिए मुझे हमारे उद्घारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सौंपा गया था;<sup>४</sup> तीतुस के लिए, जो सामान्य विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर और हमारे उद्घारकर्ता मरीह यीशु से अनुग्रह और शांति।<sup>५</sup> इसी कारण मैंने तुम्हें क्रेते में छोड़ा, ताकि तुम जो बाकी है उसे व्यवस्थित कर सको और हर नार में प्राचीनों को नियुक्त कर सको जैसा मैंने तुम्हें निर्देश दिया था,<sup>६</sup>

अर्थात्, यदि कोई व्यक्ति निर्दा से परे है, एक पती का पति है, और उसके बच्चे विश्वास करते हैं, जिन पर अशिष्ट व्यवहार या विद्रोह का आरोप नहीं है।<sup>७</sup> क्योंकि निरीक्षक को परमेश्वर के भण्डारी के रूप में निर्दा से परे होना चाहिए, आत्म-इच्छाशील नहीं, जल्दी गुस्सा करने वाला नहीं, शराब का अधिक सेवन करने वाला नहीं, न ही मारपीट करने वाला, न ही धन का लालची,<sup>८</sup> परन्तु अतिथशील, जो अच्छा है उसे प्रेम करने वाला, आत्म-संयमी, धर्मी, पवित्र, अनुशासित,<sup>९</sup> विश्वासयोग्य वचन को दृढ़ता से पकड़े हुए जो शिक्षा के अनुसार है, ताकि वह स्वस्य उपदेश में प्रोत्साहित कर सके और उन लोगों का खंडन कर सके जो इसका विरोध करते हैं।<sup>१०</sup> क्योंकि बहुत से विद्रोही लोग, खाली बातें करने वाले और धोखेबाज हैं, विशेष रूप से खतना वाले,<sup>११</sup> जिन्हें चुप कराना आवश्यक है क्योंकि वे पूरे परिवारों को परेशान कर रहे हैं, ऐसी बातें सिखा रहे हैं जो उन्हें अनुचित लाभ के लिए नहीं सिखानी चाहिए।<sup>१२</sup> उनमें से एक, उनके अपने नवी ने कहा, "क्रेती लोग हमेशा झूठे, दुष्ट जानवर, आलसी पेटू होते हैं!"<sup>१३</sup> यह गवाही सत्य है। इस कारण से उन्हें कड़ी फटकार दी ताकि वे विश्वास में स्वस्य हो सकें,<sup>१४</sup> यहूदी मिथ्यों की आज्ञाओं पर ध्यान न दें जो सत्य से भटक जाते हैं।<sup>१५</sup> शुद्ध लोगों के लिए, सब कुछ शुद्ध है, परन्तु जो अशुद्ध और अविश्वासी हैं, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है, बल्कि उनकी बुद्धि और उनकी विवेक दोनों अशुद्ध हैं।<sup>१६</sup> वे परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं, परन्तु अपने कर्मों से उसे अस्वीकार करते हैं, घृणित और अवश्वाकारी और किसी भी अच्छे काम के लिए अयोग्य होते हैं।

**२** परन्तु तुम उन बातों का प्रचार करो जो सही शिक्षा के लिए उपयुक्त हैं।<sup>१</sup> बुजुर्ग पुरुषों को संयमी, प्रतिष्ठित, आत्म-संयमी, विश्वास में दृढ़, प्रेम में और धैर्य में होना चाहिए।<sup>३</sup> उसी प्रकार बुजुर्ग स्त्रियों को भी अपने

व्यवहार में श्रद्धालु होना चाहिए, न कि निंदक, न अधिक शराब की दासी, बल्कि अच्छी बातें सिखाने वाली,<sup>४</sup> ताकि वे युगा स्त्रियों को अपने पतियों से प्रेम करने, अपने बच्चों से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकें,<sup>५</sup> आत्म-संयमी, पवित्र, घर के कामों में निपुण, दयालु, अपने-अपने पतियों के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन का अपमान न हो।<sup>६</sup> उसी प्रकार युवा पुरुषों को आत्म-संयमी होने के लिए प्रोत्साहित करो,<sup>७</sup> सभी बातों में अपने आप को अच्छे कर्मों का उदाहरण दिखाओ, शिक्षा में पवित्रता, प्रतिष्ठा के साथ,<sup>८</sup> ऐसी वाणी में जो निर्दा से परे हो, ताकि विरोधी लजित हो, हमारे बारे में कुछ भी बुरा कहने के लिए कुछ न रहे।<sup>९</sup> दासों को अपने-अपने स्वामियों के अधीन रहने के लिए प्रोत्साहित करो, हर बात में प्रसन्न करने वाले, विवाद न करने वाले,<sup>१०</sup> चोरी न करने वाले, बल्कि पूरी भक्ति दिखाने वाले, ताकि वे हर प्रकार से हमारे उद्घारकर्ता परमेश्वर की शिक्षा को शोभायमान करें।<sup>११</sup> क्योंकि परमेश्वर की कृपा प्रकट हुई है, जो सभी लोगों के लिए उद्घार लाती है,<sup>१२</sup> हमें यह सिखाते हुए कि हम अर्धम और सांसारिक इच्छाओं का इनकार करें और इस वर्तमान युग में संयम, धार्मिकता, और भक्ति के साथ जीवन जौएं,<sup>१३</sup> उस धन्य आशा की प्रतीक्षा करते हुए और हमारे महान परमेश्वर और उद्घारकर्ता मरीह यीशु की महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हुए,<sup>१४</sup> जिसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि वह हमें हर अर्धम के कार्य से छुड़ाए, और अपने लिए एक विशेष लोग शुद्ध करे, जो अच्छे कर्मों के लिए उत्सुक हों।<sup>१५</sup> इन बातों का प्रचार करो और प्रोत्साहित करो, और पूरे अधिकार के साथ ढांटो। कोई तुम्हें तुच्छ न समझो।

**३** उन्हें स्मरण दिलाओ कि शासकों और अधिकारियों के अधीन रहें, आज्ञाकारी बनें, हर अच्छे काम के लिए तैयार रहें,<sup>२</sup> किसी की निर्दा न करें, झङ्गालू न बनें, कोमल बनें, सभी लोगों के प्रति हर प्रकार की विचारशीलता दिखाएं।<sup>३</sup> क्योंकि हम भी कभी मूर्ख, आज्ञा न मानने वाले, धोखा खाए हुए, विभिन्न वासनाओं और सुखों के दास थे, अपने जीवन को द्वेष और ईर्ष्या में बिताते थे, घृणास्पद और एक-दूसरे से घृणा करते थे।<sup>४</sup> परन्तु जब हमारे उद्घारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों के प्रति उसका प्रेम प्रकट हुआ,<sup>५</sup> तो उसने हमें बचाया, न कि उन कार्यों के आधार पर जो हमने धार्मिकता में किए थे, बल्कि अपनी दया के अनुसार, पुनर्जनन के सान और पवित्र आत्मा के द्वारा<sup>६</sup> नवीनीकरण के द्वारा,<sup>७</sup> जिसे उसने हमारे उद्घारकर्ता यीशु मरीह के माध्यम से हम पर प्रचुरता से उड़ेला,<sup>८</sup>

## तीतुस

ताकि उसकी कृपा से धर्मी ठहरकर हम अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बन सकें।<sup>8</sup> यह कथन विश्वसनीय है; और इन बातों के विषय में मैं चाहता हूँ कि तुम आत्मविश्वास से बोलो, ताकि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है वे अच्छे कार्यों में संलग्न होने का ध्यान रखें। ये बातें लोगों के लिए अच्छी और लाभकारी हैं।<sup>9</sup> परन्तु मूर्खतापूर्ण विवादों, वंशावलियों, झगड़ों और व्यवस्था के विषय में विवादों से बचो, क्योंकि वे निरर्थक और व्यर्थ हैं।<sup>10</sup> एक विभाजनकारी व्यक्ति को पहली और दूसरी चेतावनी के बाद अस्वीकार कर दो,<sup>11</sup> यह जानते हुए कि ऐसा व्यक्ति सत्य से भटक गया है और पाप कर रहा है, आत्म-निर्दा में है।<sup>12</sup> जब मैं आर्तमास या तुखिकुस को तुम्हरे पास भेजूँ, तो निकोपेलिस में मेरे पास आने का हर प्रयास करो, क्योंकि मैंने वहां सदी बिताने का निश्चय किया है।<sup>13</sup> वकील जेनास और अपोलोस की उनके मार्ग में पूरी सहायता करो ताकि उनके लिए कुछ भी कमी न हो।<sup>14</sup> हमारे लोगों को भी यह सीखना चाहिए कि वे अच्छे कार्यों में संलग्न हाँ ताकि अवश्यकताओं को पूरा कर सकें, ताकि वे अनुपयोगी न हों।<sup>15</sup> जो मेरे साथ हैं वे सब तुहाँ नमस्कार कहते हैं। जो विश्वास में हमसे प्रेम करते हैं उन्हें नमस्कार कहना। आप सब पर अनुग्रह हो।

## फिलेमोन

**१** पौलुस, मसीह यीशु का कैटी, और हमारा भाई  
तीमुथियुस, हमारे प्रिय भाई और सहकर्मी फिलेमोन को,  
<sup>२</sup> और हमारी बहन अफिया को, और हमारे सहयोद्धा  
अकिंप्युस को, और तुम्हारे घर में जो कलीसिया है उसे:  
<sup>३</sup> हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से  
तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। <sup>४</sup> मैं अपने परमेश्वर का  
सदा धन्यवाद करता हूँ, जब मैं अपनी प्रार्थनाओं में  
तुम्हारा स्मरण करता हूँ, <sup>५</sup> क्योंकि मैं तुम्हारे प्रेम और  
विश्वास के विषय में सुनता हूँ, जो तुम्हारे पास प्रभु यीशु  
और सभी संतों के प्रति है; <sup>६</sup> और मैं प्रार्थना करता हूँ कि  
तुम्हारे विश्वास की सहभागिता मसीह के लिए हर अच्छे  
कार्य की जानकारी के माध्यम से प्रभावी हो जाए। <sup>७</sup>  
क्योंकि तुम्हारे प्रेम में मुझे बड़ी खुशी और सांत्वना मिली  
है, क्योंकि संतों के हृदय तुम्हारे द्वारा ताजगी पाते हैं,  
भाई। <sup>८</sup> इसलिए, यद्यपि मुझे मसीह में तुम्हें उचित कार्य  
करने का आदेश देने का पूरा विश्वास है, <sup>९</sup> फिर भी प्रेम  
के कारण मैं तुमसे विनती करता हूँ—क्योंकि मैं पौलुस  
जैसा व्यक्ति हूँ, एक बूढ़ा आदमी, और अब मसीह यीशु  
का कैटी भी—<sup>१०</sup> मैं तुम्हें अपने पुत्र ओनेसिम्पस के लिए  
विनती करता हूँ, जिसे मैंने अपनी कैद में जन्म दिया है,  
<sup>११</sup> जो पहले तुम्हारे लिए बेकार था, लेकिन अब तुम्हारे  
और मेरे लिए उपयोगी है। <sup>१२</sup> मैंने उसे तुम्हारे पास  
व्यक्तिगत रूप से भेजा है, अर्थात्, अपने हृदय को भेजा  
है, <sup>१३</sup> जिसे मैं अपने पास रखना चाहता था, ताकि तुम्हारी  
ओर से वह सुसमाचार के लिए मेरी कैद में मेरी सेवा  
करें; <sup>१४</sup> लेकिन मैं तुम्हारी सहमति के बिना कुछ भी नहीं  
करना चाहता था, ताकि तुम्हारी भलाई, प्रभाव में,  
बाध्यता से नहीं, बल्कि तुम्हारी अपनी स्वतंत्र इच्छा से  
हो। <sup>१५</sup> क्योंकि शायद इसी कारण से वह थोड़ी देर के  
लिए तुमसे अलग हो गया था, ताकि तुम उसे हमेशा के  
लिए वापस पा सको, <sup>१६</sup> अब एक दास के रूप में नहीं,  
बल्कि एक दास से अधिक, एक प्रिय भाई के रूप में,  
विशेष रूप से मेरे लिए, लेकिन तुम्हारे लिए कितना  
अधिक, शरीर में भी और प्रभु में भी। <sup>१७</sup> यदि तुम मुझे  
एक साथी के रूप में मानते हो, तो उसे वैसे ही स्वीकार  
करो जैसे तुम मुझे स्वीकार करते हो। <sup>१८</sup> लेकिन यदि  
उसने किसी भी तरह से तुम्हारा अपमान किया है या  
तुमसे कुछ भी बकाया है, तो उसे मेरे खाते में डाल दो;  
<sup>१९</sup> मैं, पौलुस, इसे अपनी ही हस्तलिपि में लिख रहा हूँ, मैं  
इसे चुकाऊंगा (तुम्हें यह बताने का उल्लेख नहीं करूँगा  
कि तुम मुझ पर अपने आप को भी बकाया हो)। <sup>२०</sup> हाँ,  
भाई, मुझे प्रभु में तुमसे लाभ होने दो; मसीह में मेरे हृदय  
को ताजगी दो। <sup>२१</sup> तुम्हारी आज्ञाकारिता में विश्वास रखते  
हए, मैं तुम्हें लिखता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि तुम मेरे  
कहने से भी अधिक करोगे। <sup>२२</sup> साथ ही मेरे लिए एक  
अतिथि कक्ष तैयार करो, क्योंकि मुझे आशा है कि

तुम्हारी प्रार्थनाओं के माध्यम से मैं तुम्हें दिया जाऊंगा।

<sup>२३</sup> एपफ्रास, मसीह यीशु में मेरा साथी कैटी, तुम्हें  
नमस्कार कहता है, <sup>२४</sup> जैसे कि मरकुस, अरिस्तारखुस,  
देमास, और लूका, मेरे सहकर्मी भी। <sup>२५</sup> प्रभु यीशु मसीह  
का अनुग्रह तुम्हारी आमा के साथ रहे।

## इत्रानियों

**१** परमेश्वर ने प्राचीन काल में हमरे पूर्वजों से पविष्ट्यद्वक्ताओं के माध्यम से कई प्रकार से और कई तरीकों से बातें की।<sup>२</sup> इन अंतिम दिनों में, उसने हमसे अपने पुत्र के माध्यम से बातें की हैं, जिसे उसने सब वस्तुओं का उत्तराधिकारी ठहराया, और जिसके द्वारा उसने संसार की रचना की।<sup>३</sup> वह उसकी महिमा की ज्ञाति और उसके स्वरूप की सच्ची छवि है, और अपनी शक्ति के वचन के द्वारा सब वस्तुओं को संभाले हुए है। जब उसने पापों का शुद्धिकरण किया, तो वह उच्च स्थान पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया।<sup>४</sup> वह स्वर्गद्वारों से इतना श्रेष्ठ हो गया, जितना कि उसने उनसे अधिक उत्तम नाम का उत्तराधिकारी बनकर पाया।<sup>५</sup> क्योंकि किस स्वर्गद्वार से उसने कभी कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया?

और फिर,

"मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा पुत्र होगा?"

६ और जब वह फिर से अपने पहलौठे को संसार में लाता है, तो कहता है,

"और परमेश्वर के सब स्वर्गद्वार उसकी आराधना करें।"

७ और स्वर्गद्वारों के बारे में वह कहता है,

"वह अपने स्वर्गद्वारों को पवन बनाता है, और अपने सेवकों को अग्नि की ज्वाला।"

८ परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है,

"तेरा सिंहासन, है परमेश्वर, युगानुयग रहेगा, और न्याय का राजदण्ड तेरे राज्य का राजदण्ड है।<sup>९</sup> तूने धर्म से प्रेम किया और अर्धम से धृष्णा की, इसलिए परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तुझे आनंद के तेल से अभिषेक किया, तेरे साधियों से अधिक।"

१० और,

"हे प्रभु, तूने आदि में पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों की कृति हैं;<sup>११</sup> वे नाश हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा, और वे सब वस्त की तरह पुराने हो जाएंगे,<sup>१२</sup> और वस्त की तरह तू उन्हें लपेटेगा, वे

वस्त की तरह बदल जाएंगे। परन्तु तू वही है और तेरे वर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे।"

<sup>१३</sup> परन्तु किस स्वर्गद्वार से उसने कभी कहा,

"मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न बना दूँ?"

<sup>१४</sup> क्या वे सब सेवा करने वाली आत्माएं नहीं हैं, जो उन लोगों की सेवा के लिए भेजी जाती हैं जो उद्धर के उत्तराधिकारी होंगे?

**२** इसी कारण हमें जो बातें हमने सुनी हैं, उन पर अधिक ध्यान देना चाहिए, ताकि हम उनसे बहक न जाएं।<sup>२</sup> क्योंकि यदि स्वर्गद्वारों के द्वारा कहा गया वचन अटल सिद्ध हुआ, और हर अपराध और अवज्ञा का उचित दंड मिला,<sup>३</sup> तो हम कैसे बच सकते हैं यदि हम इतनी महान उद्धर की उपेक्षा करते हैं? जब यह पहले प्रभु के द्वारा कहा गया, तो इसे सुनने वालों ने हमारे लिए पूछि की,<sup>४</sup> और परमेश्वर ने भी उनके साथ गवाही दी, चिह्नों और अद्भुत कार्यों के द्वारा, और विभिन्न चमत्कारों और अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा।<sup>५</sup> क्योंकि उसने आने वाली दुनिया को, जिसके बारे में हम बोल रहे हैं, स्वर्गद्वारों के अधीन नहीं किया।<sup>६</sup> परंतु किसी ने कहीं गवाही दी है, कहते हुए,

"मनुष्य क्या है, कि आप उसकी सुधि लेते हैं? या मनुष्य का पुत्र, कि आप उसकी चिंता करते हैं?<sup>७</sup> अपने उसे थोड़े समय के लिए स्वर्गद्वारों से नीचा बनाया, अपने उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया;<sup>८</sup> अपने सब कुछ उसके पैरों के अधीन कर दिया।"

क्योंकि सब कुछ उसके अधीन करने में, उसने कुछ भी नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो। परंतु अब हम अभी तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते हैं।<sup>९</sup> परंतु हम उसे देखते हैं जो थोड़े समय के लिए स्वर्गद्वारों से नीचा बनाया गया था, अर्थात् यीशु, जो अपनी मृत्यु के कष्ट के कारण महिमा और सम्मान का मुकुट पहने हुए है, ताकि परमेश्वर की कृपा से वह सबके लिए मृत्यु का स्वाद चर्खे।<sup>१०</sup> क्योंकि उसके लिए, जिसके लिए सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, यह उचित था कि वह बहुत से पुरों को महिमा में लाने के लिए उनके उद्धर के प्रवर्तक को कष्टों के द्वारा सिद्ध करे।<sup>११</sup> क्योंकि जो पवित्र करता है और जो पवित्र किए जाते हैं, वे सब एक

## इब्रानियों

ही पिता से हैं; इस कारण वह उन्हें भाई और बहनें कहते हैं जो शर्मिदा नहीं है, <sup>12</sup> कहते हुए,

"मैं आपके नाम की धोषणा अपने भाइयों से करूँगा,  
सभा के बीच मैं मैं आपकी स्तुति गाऊँगा।"

<sup>13</sup> और फिर,

"मैं उस पर अपना विश्वास रखूँगा।"

और फिर,

"देखो, मैं और वे बच्चे जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

<sup>14</sup> इसलिए, चूंकि बच्चे मांस और रक्त में भागीदार हैं, वह स्वयं भी उसी में भागीदार हुआ, ताकि मृत्यु के द्वारा वह उसे नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान, <sup>15</sup> और उन लोगों को स्वतंत्र कर सके जो मृत्यु के भय के कारण अपने जीवन भर दासता में थे। <sup>16</sup> क्योंकि स्पष्ट रूप से वह स्वर्गदूतों की सहायता करता, बल्कि वह अब्राहम के वंशजों की सहायता करता है। <sup>17</sup> इसलिए, उसे हर बात में अपने भाइयों के समान बनना पड़ा, ताकि वह परमेश्वर के संबंध में दयालु और विश्वासोग्य महायाजक बन सके, लोगों के पापों के लिए प्राप्याधित करने के लिए। <sup>18</sup> क्योंकि चूंकि वह स्वयं उस में परीक्षा में पड़ा जिसमें उसने कष्ट सहा, वह उन लोगों की सहायता करने में सक्षम है जो परीक्षा में पड़ते हैं।

**3** इसलिए, पवित्र भाइयों और बहनों, जो स्वर्गीय बुलाहट के सहभागी हैं, हमारे अंगीकार के प्रेरित और महायाजक यीशु पर ध्यान दें, <sup>2</sup> वह उसके प्रति विश्वासयोग्य था जिसने उसे नियुक्त किया, जैसे मूसा भी उसके सारे घर में था। <sup>3</sup> क्योंकि उसे मूसा से अधिक महिमा के योग्य गिना गया है, ठीक वैसे ही जैसे घर बनाने वाले को घर से अधिक सम्मान मिलता है। <sup>4</sup> क्योंकि हर घर किसी न किसी के द्वारा बनाया जाता है, लेकिन सब चीजों का निर्माता परमेश्वर है। <sup>5</sup> अब मूसा उसके सारे घर में एक सेवक के रूप में विश्वासयोग्य था, उन बातों की गवाही के लिए जो बाद में कही जानी थीं; <sup>6</sup> परन्तु मरीह उसके घर पर पुत्र के रूप में विश्वासयोग्य था—जिसका घर हम हैं, यदि हम अपने आत्मविश्वास और आशा के घंटड को दृढ़ता से थामे रहें। <sup>7</sup> इसलिए, जैसा कि पवित्र आत्मा कहता है,

"आज यदि तुम उसकी आवाज सुनते हो, <sup>8</sup> तो अपने हृदय को कठोर मत करो जैसे उन्होंने मुझे उकसाया, जंगल में परीक्षा के दिन की तरह, <sup>9</sup> जहाँ तुम्हारे पिता औं ने मुझे परखा, और चालीस वर्षों तक मेरे काम देखे। <sup>10</sup> इसलिए मैं उस पीढ़ी से क्रोधित था, और कहा, 'वे हमेशा अपने हृदय में भटकते रहते हैं, और उन्होंने मेरे मार्गों को नहीं जाना'; <sup>11</sup> जैसा मैंने अपने क्रोध में शपथ ली, 'वे निश्चित रूप से मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।'"

<sup>12</sup> भाइयों और बहनों, ध्यान रखें कि तुम में से किसी में भी एक बुरा, अविश्वासी हृदय न हो जो जीवित परमेश्वर से दूर हो जाए। <sup>13</sup> परन्तु एक दूसरे को हर दिन प्रोसाहित करें, जब तक कि इसे "आज" कहा जाता है, ताकि तुम में से कोई भी पाप की छल से कठोर न हो जाए। <sup>14</sup> क्योंकि हम मरीह के सहभागी बन गए हैं, यदि हम अपनी प्रारंभिक आश्वासन को अंत तक दृढ़ता से धारे रहें, <sup>15</sup> जब यह कहा जाता है,

"आज यदि तुम उसकी आवाज सुनते हो, तो अपने हृदय को कठोर मत करो, जैसे उन्होंने मुझे उकसाया।"

<sup>16</sup> क्योंकि किसने उसे उकसाया जब उन्होंने सुना? वास्तव में, क्या वे सभी नहीं थे जो मूसा के नेतृत्व में मिस्से से बाहर आए थे? <sup>17</sup> और वह चालीस वर्षों तक किससे क्रोधित था? क्या वे नहीं थे जिन्होंने पाप किया, जिनकी मृत देहें जंगल में परिगी? <sup>18</sup> और उसने किससे शपथ ली कि वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे, परन्तु उनसे जो अवश्याकारी थी? <sup>19</sup> इसलिए हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश करने में असमर्थ थे।

**4** इसलिए, जब उसके विश्राम में प्रवेश करने का वादा बना हुआ है, तो हमें डरना चाहिए कि कहीं आप में से कोई उस तक पहुँचने में पीछे न रह जाए। <sup>2</sup> क्योंकि वास्तव में हमें भी शुभ समाचार सुनाया गया है, जैसे उन्हें भी; लेकिन जो वचन उन्होंने सुना, वह उनके लिए लाभकारी नहीं हुआ, क्योंकि वे विश्वास के साथ सुनने वालों के साथ नहीं जुड़े थे। <sup>3</sup> क्योंकि हम जो विश्वास करते हैं, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं, जैसा कि उसने कहा है,

"जैसा मैंने अपने क्रोध में शपथ ली, वे निश्चित रूप से मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे" यद्यपि उसके कार्य संसार की स्थापना से पूर्ण हो चुके थे।

## इत्रानियों

<sup>४</sup> क्योंकि उसने कहीं सातवें दिन के विषय में कहा है: "और परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सभी कार्यों से विश्राम किया"; <sup>५</sup> और फिर इस वचन में, "वे निश्चित रूप से मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।" <sup>६</sup> इसलिए, चूंकि कुछ के लिए उसमें प्रवेश करना बाकी है, और जिन्होंने पहले शुभ समाचार सुना था, वे अवज्ञा के कारण प्रवेश करने में असफल रहे, <sup>७</sup> वह फिर एक निश्चित दिन, "आज," निर्धारित करता है, दाऊद के माध्यम से इतने लंबे समय के बाद कहता है जैसा पहले कहा गया है,

"आज, यदि आप उसकी आवाज सुनते हैं तो अपने दिलों को कठोर न करें।"

<sup>८</sup> क्योंकि यदि यहोश ने उन्हें विश्राम दिया होता, तो वह उसके बाद किसी अन्य दिन के बारे में नहीं बोलता। <sup>९</sup> इसलिए परमेश्वर के लोगों के लिए एक सब्ल का विश्राम बाकी है। <sup>१०</sup> क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी अपने कार्यों से विश्राम किया है, जैसा कि परमेश्वर ने अपने कार्यों से किया। <sup>११</sup> इसलिए हम उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए हर प्रयास करें, ताकि कोई भी अवज्ञा के उसी उदाहरण का अनुसरण करके गिर न जाए। <sup>१२</sup> क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है, और किसी भी दोधारी तलवार से अधिक तेज है, आत्मा और आत्मा के विभाजन तक, जोड़ों और मज्जा के भी, और हृदय के विचारों और इरादों का न्याय करने में सक्षम है। <sup>१३</sup> और उसकी दृष्टि से कोई भी प्राणी छिपा नहीं है, बल्कि सभी चीजें उसके सामने खुली और उजागर हैं, जिसे हमें उत्तर देना है। <sup>१४</sup> इसलिए, चूंकि हमारे पास एक महान महायाजक है जो स्वर्गों के पार चला गया है, परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। <sup>१५</sup> क्योंकि हमारे पास ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के साथ सहानुभूति न रख सके, बल्कि वह है जो सभी बातों में हमारी तरह परीक्षा में पड़ा, फिर भी बिना पाप के। <sup>१६</sup> इसलिए हम अनुग्रह के सिंहासन के पास आकर्विश्वास के साथ आएं, ताकि हमें दया प्राप्त हो और हमारी आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह मिल सके।

**५** क्योंकि हर महायाजक जो मनुष्यों में से लिया जाता है, वह लोगों के लिए परमेश्वर से संबंधित बातों में नियुक्त होता है, ताकि वह पापों के लिए भेंट और बलिदान चढ़ा सके; <sup>२</sup> वह अज्ञानियों और भटके हुए लोगों के साथ कोमलता से व्यवहार कर सकता है, क्योंकि वह स्वयं भी दुर्बलता में लिपटा हुआ है; <sup>३</sup> और इसी कारण से वह अपने लिए, जैसे लोगों के लिए, पापों के लिए बलिदान

चढ़ाने के लिए बाध्य है। <sup>४</sup> और कोई भी इस सम्मान को स्वयं के लिए नहीं लेता, बल्कि जब वह परमेश्वर द्वारा बुलाया जाता है, जैसे हारून भी था। <sup>५</sup> इसी प्रकार मसीह ने भी महायाजक बनने में स्वयं को महिमा नहीं दी, बल्कि यह वही था जिसने उससे कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया;

<sup>६</sup> जैसे कि वह एक अन्य स्थान पर भी कहता है,

"तू सदा के लिए याजक है मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार।"

<sup>७</sup> अपने मानवता के दिनों में, उसने प्रार्थनाएँ और विनती की, उँची आवाज में रोते और अँसू बहाते हुए उस से जो उसे मत्यु से बचा सकता था, और वह अपनी भक्ति के कारण सुना गया। <sup>८</sup> यद्यपि वह पुत्र था, उसने उन बातों से आज्ञाकारिता सीखी जो उसने सहन की। <sup>९</sup> और सिद्ध होने के बाद, वह उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा मानते हैं, अनन्त उद्घार का स्रोत बन गया, <sup>१०</sup> परमेश्वर द्वारा मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार महायाजक के रूप में नियुक्त किया गया। <sup>११</sup> उसके विषय में हमारे पास बहुत कुछ कहने के लिए है, और इसे समझाना कठिन है, क्योंकि तुम सुनने में सुरु हो गए हो। <sup>१२</sup> क्योंकि इस समय तक तुम्हें शिक्षक होना चाहिए था, तुम्हें फिर से किसी की आवश्यकता है जो तुम्हें परमेश्वर के वास्तविक शब्दों के प्राथमिक सिद्धांत सिखाए, और तुम्हें दूध की आवश्यकता है न कि ठोस भोजन की। <sup>१३</sup> क्योंकि जो केवल दूध का भागी होता है वह धर्म के वचन से अपरिचित होता है, क्योंकि वह एक शिशु है। <sup>१४</sup> परन्तु ठोस भोजन परिपक लोगों के लिए है, जो अभ्यास के कारण अपने ईंद्रियों को अच्छे और बुरे के बीच भेद करने के लिए प्रशिक्षित कर चुके हैं।

**६** इसलिए, मसीह के बारे में प्रारंभिक शिक्षा को छोड़कर, हम परिपक्ता की ओर बढ़ें, मृत कर्मों से पश्चात्पाप और परमेश्वर की ओर विश्वास की नीति फिर से न डालें। <sup>२</sup> धोने की विधियों और हाथ रखने की शिक्षा, और मृतकों के पुनरुत्थान और अनन्त न्याय के बारे में।

<sup>३</sup> और यह हम करेंगे, यदि परमेश्वर अनुमति देता है। <sup>४</sup> क्योंकि यह असंभव है, उन लोगों के लिए जो एक बार प्रकाशित हो चुके हैं, और स्वर्गीय उपहार का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के सहभागी बन चुके हैं, <sup>५</sup> और परमेश्वर के अच्छे वचन और आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चख चुके हैं, <sup>६</sup> और फिर गिर गए हैं, उन्हें फिर से पश्चात्पाप की ओर बहाल करना, क्योंकि वे फिर से

## इत्तमानियों

परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए कूस पर चढ़ाते हैं और उसे सार्वजनिक अपमान में डालते हैं।<sup>7</sup> क्योंकि वह भूमि जो उस पर बार-बार गिरने वाली वर्षा को पीती है और उन लोगों के लिए उपयोगी वनस्पति उत्पन्न करती है जिनके लिए वह भी जोती जाती है, परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त करती है।<sup>8</sup> परन्तु यदि वह काटे और ऊँटकटरे उत्पन्न करती है, तो वह बेकार है और शापित होने के निकट है, और अंततः जल जाती है।<sup>9</sup> परन्तु, प्रिय जनों, हम आपके विषय में बेहतर बातों और उन बातों के बारे में जो उद्घार के साथ होती हैं, आश्वस्त हैं, यद्यपि हम इस प्रकार बोल रहे हैं।<sup>10</sup> क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं है कि आपके कार्य और उस प्रेम की भूल जाओ जो आपने उसके नाम की ओर दिखाया है, संतों की सेवा करके और अब भी सेवा कर रखे हैं।<sup>11</sup> और हम चाहते हैं कि आप में से प्रत्येक व्यक्ति वहीं परिश्रम दिखाए ताकि अंत तक आशा की पूर्ण आश्वासन का प्राप्त कर सके,<sup>12</sup> ताकि आप सुस्त न हों, परन्तु उन लोगों के अनुकरणकर्ता बनें जो विश्वास और धैर्य के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।<sup>13</sup> क्योंकि जब परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की, तो उसने अपने से बड़े किसी के द्वारा शपथ नहीं खा सकता था, उसने स्वयं के द्वारा शपथ खाई,<sup>14</sup> कहते हुए, "निश्चय ही मैं तुम्हें बहुत आशीर्वाद दंगा और तुम्हें बहुत बढ़ाऊंगा!"<sup>15</sup> और इस प्रकार, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के बाद, उसने प्रतिज्ञा प्राप्त की।<sup>16</sup> क्योंकि लोग अपने से बड़े किसी के द्वारा शपथ खाते हैं, और उनके लिए शपथ पुष्टि के रूप में हर विवाद का अंत होता है।<sup>17</sup> उसी प्रकार परमेश्वर, प्रतिज्ञा के वारिसों को यह दिखाने की ओर भी अधिक इच्छा रखते हुए कि उसका उद्देश्य अपरिवर्तनीय है, उसने इसे शपथ के साथ पुष्टि की,<sup>18</sup> ताकि दो अपरिवर्तनीय बातों के द्वारा जिनमें परमेश्वर के लिए छूट बोलना असंभव है, हम जिन्होंने शरण ली है, हमारे सामने रखी गई आशा को ढहता से पकड़ने के लिए प्रबल प्रोत्साहन प्राप्त करें।<sup>19</sup> यह आशा हमारे पास आत्मा का लंगर है, एक आशा जो निश्चित और विश्वसनीय है और जो पर्दे के भीतर प्रवेश करती है,<sup>20</sup> जहां यीशु हमारे लिए अग्रदूत के रूप में प्रवेश कर चुका है, मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार सदा के लिए महायाजक बनकर।

**7** क्योंकि यह मेल्कीसेदेक, सालेम का राजा, परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, जिसने अब्राहम से उन राजाओं की हत्या से लौटे समय भेट की और उसे आशीर्वाद दिया।<sup>21</sup> जिसे अब्राहम ने भी सब लूट का दसवां हिस्सा दिया, वह पहले तो उसके नाम के अर्थ के अनुसार धर्म का राजा था, और फिर सालेम का राजा, अर्थात् शांति का राजा।<sup>22</sup> बिना पिता, बिना माता, बिना

वंशावली, न तो दिनों की शुरुआत और न जीवन का अंत, परंतु परमेश्वर के पुत्र के समान बनाया गया, वह सदा के लिए याजक बना रहता है।<sup>23</sup> अब देखो कि यह व्यक्ति कितना महान था, जिसे अब्राहम, पितामह, ने सबसे उत्तम लूट का दसवां हिस्सा दिया।<sup>24</sup> और लेवी के पुत्रों में से जो याजक का पद प्राप्त करते हैं, उन्हें व्यवस्था में लोगों से, अर्थात् अपने भाइयों से, जो अब्राहम की संतान हैं, दसवां हिस्सा लेने की आज्ञा है।<sup>25</sup> परंतु जिसने अपनी वंशावली उनसे नहीं जोड़ी, उसने अब्राहम से दसवां हिस्सा लिया और उसे आशीर्वाद दिया जो प्रतिज्ञाओं का धारक था।<sup>26</sup> परंतु बिना किसी विवाद के, छोटे व्यक्ति को बड़े द्वारा आशीर्वाद दिया जाता है।<sup>27</sup> इस मामले में नश्वर मनुष्य दशमांश लेते हैं, परंतु उस मामले में वह लेता है, जिसके बारे में यह गवाही दी गई है कि वह जीत रहता है।<sup>28</sup> और, इस प्रकार कहें तो, अब्राहम के माध्यम से लेवी ने भी, जिसने दशमांश लिया, दशमांश दिया,<sup>29</sup> क्योंकि वह अभी भी अपने पूर्जन के कम्पर में था जब मेल्कीसेदेक ने उससे भेट की।<sup>30</sup> तो यदि लेवियों की याजकता के माध्यम से सिद्धता होती (क्योंकि उसके आधार पर लोगों को व्यवस्था मिली), तो मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार एक और याजक के उठने की क्या आवश्यकता थी, और हारून के क्रम के अनुसार नामित नहीं किया गया?<sup>31</sup> क्योंकि जब याजकता बदलती है, तो अनिवार्य रूप से व्यवस्था का परिवर्तन भी होता है।<sup>32</sup> क्योंकि जिसके बारे में ये बातें कही गई हैं, वह एक अन्य गोत्र का है, जिससे कोई भी वैदी पर सेवा नहीं करता।<sup>33</sup> क्योंकि यह स्पष्ट है कि हमारा प्रभु यहदा से उत्पन्न हुआ था, एक गोत्र जिससे संबंधित होकर मूसा ने याजकों के बारे में कुछ नहीं कहा।<sup>34</sup> और यह और भी स्पष्ट है, यदि मेल्कीसेदेक के समान एक और याजक उठता है,<sup>35</sup> जो शारीरिक आवश्यकता की व्यवस्था के आधार पर नहीं, बल्कि अविनाशी जीवन की शक्ति के अनुसार याजक बना है।<sup>36</sup>

**17** क्योंकि उसके बारे में यह गवाही दी गई है,

"तू सदा के लिए याजक है मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार।"

**18** क्योंकि, एक ओर, एक पूर्व आज्ञा की निष्पलता है क्योंकि उसकी कमजोरी और निर्वर्धकता के कारण<sup>37</sup> (क्योंकि व्यवस्था ने कुछ भी सिद्ध नहीं किया); दूसरी ओर, एक बेहतर आशा की शुरुआत है, जिसके माध्यम से हम परमेश्वर के निकट आते हैं।<sup>38</sup> और इस हड तक कि यह बिना शपथ के नहीं था—<sup>39</sup> क्योंकि वे तो बिना शपथ के याजक बने, परंतु वह शपथ के साथ, उस एक के माध्यम से जिसने उससे कहा,

## इत्रानियों

"प्रभु ने शपथ खाई है और वह अपना मन नहीं बदलेगा, 'तू सदा के लिए याजक है'—

<sup>22</sup> उसी हद तक यीशु भी एक बेहतर वाचा का गारंटर बन गया है। <sup>23</sup> पूर्व याजक, एक ओर, अधिक संख्या में थे क्योंकि उन्हें मृत्यु द्वारा जारी रखने से रोका गया था; <sup>24</sup> परंतु यीशु दूसरी ओर, क्योंकि वह सदा के लिए रहता है, अपनी याजकता को साथी रूप से धारण करता है। <sup>25</sup> इसलिए वह उन लोगों को सदा के लिए बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है। <sup>26</sup> क्योंकि हमारे लिए ऐसा उच्च याजक होना उचित था, पवित्र, निर्दोष, अशुद्ध, पापियों से अलग, और स्वर्णों से ऊपर उठाया गया; <sup>27</sup> जिसे अन्य उच्च याजकों की तरह, अपने पापों के लिए पहले और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाने की दैनिक आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसने यह एक बार सभी समय के लिए किया जब उसने स्वयं को अर्पित किया। <sup>28</sup> क्योंकि व्यवस्था कमज़ोर मनुष्यों को उच्च याजक नियुक्त करती है, परंतु शपथ का वर्चन, जो व्यवस्था के बाद आया, एक पुत्र को नियुक्त करता है, जो सदा के लिए सिद्ध बना है।

**8** अब जो मुख्य बात कही गई है वह यह है: हमारे पास ऐसा महायाजक है, जिसने स्वर्ण में महिमा के सिंहासन के दाढ़िने हाथ पर स्थान लिया है, <sup>2</sup> वह पवित्र स्थान और सच्चे तंबू में सेवक है, जिसे प्रभु ने स्थापित किया है, न कि मनुष्य ने। <sup>3</sup> क्योंकि हर महायाजक को उपहार और बलिदान चढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि इस महायाजक के पास भी कुछ चढ़ाने के लिए हो। <sup>4</sup> अब यदि वह पृथ्वी पर होता, तो वह बिल्कुल भी याजक नहीं होता, क्योंकि वहाँ वे हैं जो व्यवस्था के अनुसार उपहार चढ़ाते हैं, <sup>5</sup> जो स्वर्णीय वस्तुओं की प्रतिलिपि और छाया की सेवा करते हैं जैसे कि जब मूसा तंबू खड़ा करने वाला था, तब उसे परमेश्वर द्वारा चेतावनी दी गई थी; क्योंकि, "देखो कि तुम सब कुछ उसी नमूने के अनुसार बनाओ जो तुम्हें पहाड़ पर दिखाया गया था।" <sup>6</sup> परंतु अब उसने एक अधिक उत्कृष्ट सेवा प्राप्त की है, क्योंकि वह एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ भी है, जो बेहतर प्रतिज्ञाओं पर स्थापित की गई है। <sup>7</sup> क्योंकि यदि वह पहली वाचा दोषरहित होती, तो दूसरी के लिए कोई अवसर नहीं खो जाता। <sup>8</sup> क्योंकि लोगों में दोष पाकर, वह कहता है,

"देखो, दिन आ रहे हैं, प्रभु कहता है, जब मैं इसाएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा

स्थापित करूँगा।" उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पितरों के साथ की थी जिस दिन मैंने उन्हें मिस देश से बाहर ले जाने के लिए उनके हाथ से पकड़ा था; क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा में बने नहीं रह, और मैंने उनके विषय में ध्यान नहीं दिया, प्रभु कहता है। <sup>10</sup> क्योंकि यह वह वाचा है जो मैं उन दिनों के बाद इसाएल के घराने के साथ करूँगा, प्रभु कहता है मैं अपनी विशियों को उनके मन में डालूँगा, और उन्हें उनके हृदयों पर लिखूँगा और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे लोग होंगे। <sup>11</sup> और वे नहीं सिखाएंगे, हर एक अपने साथी नागरिक को, और हर एक अपने भाई को, यह कहते हुए 'प्रभु' को जानों; क्योंकि वे सब मुझे जानेंगे, उनमें से सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक। <sup>12</sup> क्योंकि मैं उनकी गतियों के प्रति दयालु रहूँगा, और उनके पापों को मैं अब और स्मरण नहीं करूँगा।"

<sup>13</sup> जब उसने कहा, "एक नई वाचा," उसने पहली को पुरानी बना दिया है। परंतु जो कुछ पुराना और वृद्ध हो रहा है वह लुप्त होने के कागर पर है।

**9** अब पहले वाचा में भी दिव्य उपासना और सांसारिक पवित्रस्थान के लिए नियम थे। <sup>2</sup> क्योंकि एक तंबू तैयार किया गया था, बाहरी पवित्रस्थान, जिसमें दीपसंभं, मेज, और पवित्र रोटी थी; इसे पवित्र स्थान कहा जाता है। <sup>3</sup> दूसरे पर्दे के पांछे एक तंबू था जिसे परमपवित्र स्थान कहा जाता है, <sup>4</sup> जिसमें सोने की धूप की वेदी और वाचा का सन्दूक था, जो चारों ओर से सोने से ढाका हुआ था, जिसमें सोने का मटका था जिसमें मत्ता था, हारून की वह छड़ी थी जो फूली थी, और वाचा की पट्टियाँ थीं; <sup>5</sup> और इसके ऊपर महिमा के करूब थे जो प्रायश्चित्त के ढक्कन को छाया देते थे; परंतु इन बातों के बारे में हम अब विस्तार से नहीं कह सकते। <sup>6</sup> अब जब ये चीजें इस प्रकार तैयार की गई थीं, तो याजक बाहरी तंबू में लगातार प्रवेश करते हैं, दिव्य उपासना करते हुए, <sup>7</sup> परंतु दूसरे में केवल महायाजक वर्ष में एक बार प्रवेश करता है, बिना रक्त लिए नहीं, जिसे वह अपने लिए और लोगों के अज्ञान में किए गए पापों के लिए अर्पित करता है। <sup>8</sup> पवित्र आत्मा यह संकेत कर रहा है कि पवित्र स्थान का मार्ग तब तक प्रकट नहीं हुआ जब तक बाहरी तंबू खड़ा है, <sup>9</sup> जो वर्तमान समय के लिए एक प्रतीक है। इसलिए उपराह और बलिदान अर्पित किए जाते हैं जो उपासक को विवेक में सिद्ध नहीं कर सकते, <sup>10</sup> क्योंकि वे केवल भीजन, पैय, और विभिन्न धुलाइयों से संबंधित हैं, शरीर के लिए नियम जो सुधार के समय तक लगाए गए थे। <sup>11</sup> परंतु जब मसीह अच्छे चीजों के महायाजक

## इत्रानियों

के रूप में प्रकट हुए, तो उन्होंने हाथों से नहीं बनाए गए, अर्थात् इस सुधि के नहीं, अधिक महान और सिद्ध तंत्र के माध्यम से प्रवेश किया; <sup>12</sup> और बकरों और बछड़ों के रक्त के माध्यम से नहीं, परंतु अपने ही रक्त के माध्यम से उन्होंने एक बार के लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया, अनन्त मृत्यु प्राप्त करते हुए। <sup>13</sup> क्योंकि यदि बकरों और बैलों का रक्त, और गाय की राख उन लोगों पर छिड़कर कर जो अशुद्ध हो गए हैं, शरीर की शुद्धि के लिए पवित्र करता है, <sup>14</sup> तो मसीह का रक्त कितना अधिक, जिसने अनन्त आत्मा के माध्यम से स्वयं को बिना दोष के परमेश्वर को अर्पित किया, आपके विवेक को मृत कर्मों से शुद्ध करेगा ताकि जीवित परमेश्वर की सेवा कर सके? <sup>15</sup> इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि, चूंकि पहली वाचा के अंतर्गत किए गए अपराधों के लिए मृत्यु हो चुकी है, जिन्हें बुलाया गया है वे अनन्त विरासत का बादा प्राप्त कर सकें। <sup>16</sup> क्योंकि जहां वाचा है, वहां वाचा करने वाले की मृत्यु का होना आवश्यक है। <sup>17</sup> क्योंकि वाचा केवल तब ही प्रभावी होती है जब लोग मर चुके होते हैं, क्योंकि यह कभी भी प्रभाव में नहीं होती जब तक वाचा करने वाला जीवित है। <sup>18</sup> इसलिए पहली वाचा भी बिना रक्त के आंखं नहीं की गई थी। <sup>19</sup> क्योंकि जब मूसा ने सब लोगों को व्यवस्था के अनुसार हर आज्ञा सुनाई, तो उसने बछड़ों और बकरों का रक्त, पानी और लाल ऊन और जड़ी-बूटी के साथ लिया, और पुस्तक और सब लोगों पर छिड़का, <sup>20</sup> कहते हुए, “यह वाचा का रक्त है जिसे परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा दी है।” <sup>21</sup> और उसी प्रकार उसने तंत्र और सेवा के सभी पात्रों पर भी रक्त छिड़का। <sup>22</sup> और लगभग सभी चीजें व्यवस्था के अनुसार रक्त के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना रक्त बहाए क्षमा नहीं होती। <sup>23</sup> इसलिए यह आवश्यक था कि सर्वर्गीय चीजों की प्रतियों को इन चीजों से शुद्ध किया जाए, परंतु सर्वर्गीय चीजों को इनसे बेहतर बलिदानों से। <sup>24</sup> क्योंकि मसीह हाथों से बनाए गए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया, जो सच्चे का केवल प्रतिरूप है, परंतु स्वर्ण में ही, अब हमारे लिए परमेश्वर के सामने प्रकट होने के लिए; <sup>25</sup> और न ही यह कि वह स्वयं को बार-बार अर्पित करें, जैसे महायाजक हर वर्ष अपने नहीं, परंतु दूसरों के रक्त के साथ पवित्र स्थान में प्रवेश करता है। <sup>26</sup> अन्यथा, उसे संसार की स्थापना के बाद से बार-बार पीड़ित होना पड़ता; परंतु अब युगों के समाप्तन पर वह एक बार प्रकट हुआ है ताकि अपने बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर सके। <sup>27</sup> और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना निश्चित है, और इसके बाद न्याय आता है, <sup>28</sup> वैसे ही मसीह भी, कई लोगों के पापों को उठाने के लिए एक बार अर्पित किया गया, वह दूसरी बार बिना पाप के

उद्धार के लिए प्रकट होगा, उन लोगों के लिए जो उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

**10** क्योंकि व्यवस्था में आने वाली अच्छी वस्तुओं की केवल छाया है, और उन वस्तुओं का वास्तविक रूप नहीं है, इसलिए वे कभी भी उन ही बलिदानों के द्वारा, जो वे हर साल लगातार चढ़ाते हैं, पास आने वालों को सिद्ध नहीं कर सकते। <sup>2</sup> अन्यथा, क्या वे चढ़ाना बंद नहीं कर देते, क्योंकि उपासक, एक बार शुद्ध हो जाने के बाद, पापों की चेतना नहीं रखते? <sup>3</sup> परंतु उन बलिदानों में हर साल पापों की याद दिलाई जाती है। <sup>4</sup> क्योंकि बैलों और बकरों के लहू से पापों को दूर करना असंभव है। <sup>5</sup> इसलिए, जब वह संसार में आता है, तो कहता है,

“तूने बलिदान और भेंट की इच्छा नहीं की, परंतु मेरे लिए एक शरीर तैयार किया है” <sup>6</sup> तूने होमबलि और पापबलियों में प्रसन्नता नहीं ली। <sup>7</sup> तब मैंने कहा, ‘देख, मैं आया हूँ’ (मेरे विषय में पुस्तक के पत्र में लिखा है) है परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करने के लिए।”

<sup>8</sup> ऊपर कहने के बाद, “बलिदान और भेंट और होमबलि और पापबलियों में तूने इच्छा नहीं की, न उनमें प्रसन्नता ली” (जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं), <sup>9</sup> तब उसने कहा, ‘देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।’ वह पहले को हटा देता है ताकि दूसरे को स्थापित कर सके। <sup>10</sup> इस इच्छा के द्वारा, हम यीशु मसीह के शरीर के एक बार के बलिदान के द्वारा पवित्र किए गए हैं। <sup>11</sup> हर याजक प्रतिदिन सेवा करता है और बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है, जो कभी पापों को दूर नहीं कर सकते, <sup>12</sup> परंतु उसने, पापों के लिए एक ही बलिदान चढ़ाकर, सदा के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया,

<sup>13</sup> उस समय से आगे अपने शरुओं के अपने पैरों के नीचे की चौकी बनने की प्रतीक्षा करता है। <sup>14</sup> क्योंकि एक ही बलिदान के द्वारा उसने उन लोगों को सदा के लिए सिद्ध कर दिया है, जो पवित्र किए जा रहे हैं। <sup>15</sup> और पवित्र आत्मा भी हमें गवाही देता है, क्योंकि कहने के बाद,

<sup>16</sup> “यह वह वाचा है जो मैं उनके साथ करूँगा उन दिनों के बाद, प्रायुक्त होता है मैं अपनी व्यवस्थाएँ उनके हृदयों पर रखूँगा, और उन्हें उनकी बुद्धि पर लिखूँगा।”

<sup>17</sup> फिर वह कहता है,

“और उनके पापों और उनके अधर्म के कार्यों को मैं अब और स्मरण नहीं करूँगा।”

## इत्तमानियों

<sup>18</sup> अब जहाँ इन चीजों की क्षमा है, वहाँ पाप के लिए बलिदान की अब और आवश्यकता नहीं है। <sup>19</sup> इसलिए, भाइयों और बहनों, चूंकि हमारे पास पीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस है, <sup>20</sup> एक नए और जीवित मार्ग के द्वारा जो उसने हमारे लिए परदे के माध्यम से उत्थापित किया है, अर्थात्, अपने शरीर के माध्यम से, <sup>21</sup> और चूंकि हमारे पास परमेश्वर के घर पर एक महान याजक है, <sup>22</sup> आओ हम सच्चे हृदय के साथ विश्वास की पूर्ण आश्वस्तन में पास आएँ, हमारे हृदयों को डुए विवेक से शुद्ध किया गया है और हमारे शरीरों को शुद्ध जल से धोया गया है। <sup>23</sup> आओ हम बिना डगमगाए अपनी आशा की स्वीकारोक्ति को ढट्टा से थामे रहें, क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्वासयोग्य है, <sup>24</sup> और आओ हम एक-दूसरे को प्रेम और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने पर विचार करें, <sup>25</sup> अपने स्वयं के मिलन को छोड़ने के बिना, जैसा कि कुछ लोगों की आदत है, परंतु एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हुए; और जितना अधिक अप उस दिन को निकट आते देखते हैं। <sup>26</sup> क्योंकि यदि हम सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने के बाद जानबूझकर पाप करते रहते हैं, तो पापों के लिए कोई बलिदान शेष नहीं रहता, <sup>27</sup> परंतु न्याय की एक भयानक अपेक्षा और आग की क्रोध जो विरोधियों को भस्म कर देती। <sup>28</sup> जो कोई मूसा की व्यवस्था की अवहेलना करता है, वह दो या तीन गवाहों की गवाही पर बिना दया के मारा जाता है। <sup>29</sup> तो आप कितना अधिक कठोर दंड सोचते हैं कि वह योग्य होगा जिसने परमेश्वर के पुत्र को पैरों तले रींदा है, और उस वाच के लहू को अशुद्ध माना है जिसके द्वारा वह पवित्र किया गया था, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया है? <sup>30</sup> क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा, "प्रतिशोध मेरा है, मैं चुकाऊंगा।" और फिर, "प्रभु अपनी प्रजा का न्याय करेगा।" <sup>31</sup> जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है। <sup>32</sup> परंतु उन पूर्व दिनों को याद करो, जब, ज्ञानप्राप्ति के बाद, तुमने कष्टों के एक बड़े संघर्ष को सहा, <sup>33</sup> आंशिक रूप से अपमान और संकट के माध्यम से सार्वजनिक तमाशा बनकर, और आंशिक रूप से उन लोगों के साथी बनकर जो इस प्रकार से व्यवहार किए गए थे। <sup>34</sup> क्योंकि तुमने कैदियों के प्रति सहानुभूति दिखाई और अपनी संपत्ति की जब्ती को खुशी से स्वीकार किया, यह जानते हुए कि तुम्हरे पास एक बेहतर और स्थायी संपत्ति है। <sup>35</sup> इसलिए, अपने साहस को मत फेंको, जिसका एक बड़ा प्रतिफल है। <sup>36</sup> क्योंकि तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है, ताकि जब तुमने परमेश्वर की इच्छा पूरी कर ली हो, तो तुम वह प्राप्त कर सकोंगे जो वादा किया गया था।

<sup>37</sup> क्योंकि थोड़े ही समय में आने वाला आएगा, और विलंब नहीं करेगा। <sup>38</sup> परंतु मेरा धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हटता है, तो मेरी आत्मा उसमें प्रसन्न नहीं होगी।

<sup>39</sup> परंतु हम उन लोगों में से नहीं हैं जो विनाश के लिए पीछे हटते हैं, बल्कि उन लोगों में से हैं जो आत्मा की सुरक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।

**11** अब विश्वास उन वस्तुओं की निश्चितता है जिनकी आशा की जाती है, उन वस्तुओं का प्रमाण है जो देखी नहीं जाती। <sup>2</sup> क्योंकि इसके द्वारा पुराने समय के लोगों ने स्वीकृति प्राप्त की। <sup>3</sup> विश्वास के द्वारा हम समझते हैं कि संसार परमेश्वर के बनने द्वारा राखा गया है, ताकि जो देखा जाता है वह उन वस्तुओं से नहीं बना है जो दिखाई देती हैं। <sup>4</sup> विश्वास के द्वारा हबिल ने परमेश्वर को कैन से उत्तम बलिदान चढ़ाया, जिसके द्वारा वह धर्मी ठहराया गया, परमेश्वर ने उसके उपहारों के विषय में गवाही दी, और विश्वास के द्वारा, यद्यपि वह मर चुका है, वह अब भी बोलता है। <sup>5</sup> विश्वास के द्वारा हनोक उठा लिया गया ताकि वह मृत्यु को न देखे; और वह नहीं पाया गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था; क्योंकि उठाए जाने से पहले, उसे यह गवाही मिली थी कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करता था। <sup>6</sup> और विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो परमेश्वर के पास आता है उसे विश्वास करना चाहिए कि वह अस्तित्व में है, और वह उन लोगों को प्रतिफल देता है जो उसे खोजते हैं। <sup>7</sup> विश्वास के द्वारा नूह, परमेश्वर द्वारा उन वस्तुओं के बारे में चेतावनी पाकर जो अभी तक नहीं देखी गई थीं, श्रद्धा में अपने परिवार के उद्धार के लिए एक जहाज तैयार किया, जिसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया, और विश्वास के अनुसार धर्म का वारिस बन गया। <sup>8</sup> विश्वास के द्वारा अब्राहम, जब उसे बुलाया गया, आज्ञा मानकर उस स्थान पर गया जिसे उसे विरासत में प्राप्त करना था; और वह चला गया, यह न जानते हुए कि वह कहाँ जा रहा था। <sup>9</sup> विश्वास के द्वारा उसने प्रतिज्ञा की भूमि में एक परदेशी के रूप में निवास किया, जैसे कि एक विदेशी भूमि में, तुम्हारों में इसहाक और याकूब के साथ रहते हुए, जो उसी प्रतिज्ञा के सह-वारिस थे; <sup>10</sup> क्योंकि वह उस नगर की खोज में था जिसकी नींव है, जिसका वास्तुकार और निर्माता परमेश्वर है। <sup>11</sup> विश्वास के द्वारा सारा ने भी गर्भ धारण करने की क्षमता प्राप्त की, जीवन के उचित समय से पहे, क्योंकि उसने उसे विश्वासयोग्य माना जिसने प्रतिज्ञा की थी। <sup>12</sup> इसलिए एक व्यक्ति से, और वह भी जो मृत के समान था, वंशज उत्पन्न हुए जो आकाश के तारों के समान

## इत्तमानियों

संख्या में थे, और समृद्ध के किनारे की अनगिनत रेत के समान थे।<sup>13</sup> इन सबने विश्वास में मर गए, बिना प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किए, परंतु उन्हें दूर से देखकर और उनका स्वागत करके, और यह स्वीकार करते हुए कि वे पृथ्वी पर परदेशी और निर्वासित थे।<sup>14</sup> क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं, वे स्पष्ट करते हैं कि वे अपने देश की खोज में हैं।<sup>15</sup> और वास्तव में यदि वे उस देश के बारे में सोचते होते जिसे उन्होंने छोड़ा था, तो उनके पास लौटने का अवसर होता।<sup>16</sup> परंतु जीसा है, वे एक उत्तम देश की इच्छा रखते हैं, अर्थात् एक सर्गार्थी। इसलिए, परमेश्वर उनके परमेश्वर कहलाने में लजित नहीं है; क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।<sup>17</sup> विश्वास के द्वारा अब्राहम, जब उसकी परीक्षा हुई, इसहाक को चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाएं प्राप्त की थी, वह अपने एकमात्र पुत्र को चढ़ा रहा था;<sup>18</sup> यह वही था जिसे कहा गया था, “तेरे वंशज इसहाक के द्वारा कहलाए जाएंगे।”<sup>19</sup> उसने यह विचार किया कि परमेश्वर लोगों को मृतकों में से भी जीवित करने में सक्षम है, जिससे उसने उसे एक प्रकार के रूप में वापस प्राप्त किया।<sup>20</sup> विश्वास के द्वारा इसहाक ने याकूब और एसाव को आशीर्वाद दिया, भविष्य की बातों के विषय में।<sup>21</sup> विश्वास के द्वारा याकूब ने, जब वह मर रहा था, यूसुफ के प्रत्येक पुत्र को आशीर्वाद दिया, और अपने दंड के शीर्ष पर झुककर उपासना की।<sup>22</sup> विश्वास के द्वारा यूसुफ ने, जब वह मर रहा था, इसाए के पुत्रों के प्रस्थान का उल्लेख किया, और अपनी हँड़ियों के विषय में निर्देश दिए।<sup>23</sup> विश्वास के द्वारा मूसा, जब वह जन्मा, तीन महीने तक उसके माता-पिता द्वारा छिपाया गया, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह एक सुंदर बालक था; और वे राजा के आदेश से नहीं डोरे।<sup>24</sup> विश्वास के द्वारा मूसा, जब वह बड़ा हुआ, फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इनकार कर दिया, 25 बल्कि परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्योगवाहर सहने का चुनाव किया, बजाय पाप के अस्तायी सुखों का आनंद लेने के,<sup>26</sup> मसीह के अपमान को मिस के खजानों से अधिक धन मानते हुए; क्योंकि वह प्रतिफल की ओर देख रहा था।<sup>27</sup> विश्वास के द्वारा उसने मिस को छोड़ दिया, राजा के क्रोध से नहीं ढरते हुए; क्योंकि उसने धैर्यपूर्वक सहन किया, जैसे कि उसे देखा जो अदृश्य है।<sup>28</sup> विश्वास के द्वारा उसने फसह और रक्त के छिड़काव को रखा, ताकि पहलीठे का नाश करने वाला उन्हें न छुए।<sup>29</sup> विश्वास के द्वारा वे लाल समृद्ध से सूखी भूमि के समान पार हुए; और मिसियों ने जब इसे करने का प्रयास किया, तो वे झुक गए।<sup>30</sup> विश्वास के द्वारा यरीहों की दीवारें गिर गईं, जब इसाएलियों ने सात दिन तक उनके चारों ओर परिक्रमा की।<sup>31</sup> विश्वास के द्वारा राहाब वैश्या उन लोगों के साथ नष्ट नहीं हुई जो अवज्ञाकारी थे, जब

उसने जासूसों का शांति से स्वागत किया।<sup>32</sup> और मैं और क्या कहूँ? क्योंकि यदि मैं गिदोन, बराक, शमशीन, यिफ्तह, दाऊद और शमूएल और भविष्यद्वक्ताओं के विषय में कहूँ तो समय समाप्त हो जाएगा,<sup>33</sup> जिन्होंने विश्वास के द्वारा राज्यों को जीता, धर्म के कार्य किए, प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया, सिंहों के मुंह बंद किए,<sup>34</sup> आग की शक्ति को बुझाया, तलवार की धार से बच निकले, कमज़ोरी से बलवान बने, युद्ध में शक्तिशाली बने, विदेशी सेनाओं को भगाया।<sup>35</sup> स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को पुनरुत्थान के द्वारा वापस प्राप्त किया; और अन्य लोगों ने उपहास और कोड़े का अनुभव किया, और आगे, जंजीरों और कैट का भी।<sup>36</sup> उन्हें पत्तरों से मारा गया, उन्हें दो टुकड़ों में चीर दिया गया, उन्हें परीक्षा में डाला गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया; वे भेड़ की खालों में, बकरी की खालों में घूमते रहे, दरिद्र, पीड़ित, सताए गए<sup>38</sup> (दुनिया उनके योद्धा नहीं थी), रेगिस्तानों में, पहाड़ों पर, और गुफाओं और जमीन के गड्ढों में आश्रय लेते हुए।<sup>39</sup> और इन सबने, अपने विश्वास के द्वारा स्वीकृति प्राप्त की, जो प्रतिज्ञा की गई थी उसे प्राप्त नहीं किया,<sup>40</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए कुछ बेहतर प्रदान किया था, ताकि हमारे बिना वे सिद्ध न हों।

**12** इसलिए, जब हमारे चारों ओर गवाहों का इतना बड़ा बादल है, तो हम हर बाधा और उस पाप को दूर कर दें जो हमें आसानी से उलझा देता है, और हमारे सामने रखी दौड़ की ईर्ष्य के साथ दौड़ें।<sup>2</sup> केवल यीशु की ओर देखें, जो विश्वास के आरंभकर्ता और सिद्ध करने वाले हैं, जिन्होंने अपने सामने रखी आनन्द के लिए कूस की सहा, लज्जा की उपेक्षा की, और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठ गए हैं।<sup>3</sup> क्योंकि उस पर विचार करो जिसने पापियों के द्वारा अपने विरुद्ध ऐसी विरोध सहन की, ताकि तुम थक कर निराश न हो जाओ।<sup>4</sup> तुमने पाप के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अभी तक रक्त बहाने तक का प्रतिरोध नहीं किया है,<sup>5</sup> और तुमने उस उद्देश को भूल गए हो जो तुम्हें पुत्रों के रूप में संबोधित करता है,

“मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्के में न लो और जब वह तुम्हें दंड दे, तब निराश न हो।”<sup>6</sup> <sup>6</sup> क्योंकि जिसे प्रभु प्रेम करता है, उसे ताड़ना देता है, और जिसे वह युत्र रूप में स्वीकार करता है, उसे दंड देता है।”

## इत्रानियों

<sup>7</sup> यह ताड़ना के लिए है कि तुम सहते हो; परमेश्वर तुम्हारे साथ पुत्रों के रूप में व्यवहार करता है; क्योंकि कौन सा पुत्र है जिसे उसका पिता ताड़ना नहीं देता? <sup>8</sup> पर यदि तुम ताड़ना के बिना हो, जिसमें सब सहभागी होते हैं, तो तुम अवैध संतान हो और पुत्र नहीं। <sup>9</sup> इसके अलावा, हमारे पास सांसारिक पिता थे जो हमें ताड़ना देते थे, और हम उनका आदर करते थे; तो क्या हम आत्माओं के पिता के अधीन होकर अधिक जीवित नहीं रहेंगे? <sup>10</sup> क्योंकि उन्होंने थोड़े समय के लिए हमें ताड़ना दी जैसा उन्हें उचित लगा, परंतु वह हमारे भ्रते के लिए हमें ताड़ना देता है, ताकि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हों। <sup>11</sup> उस समय, सभी ताड़ना सुखद नहीं लगती, बल्कि दुखद होती है; फिर भी जो इसके द्वारा प्रणिष्ठित होते हैं, बाद में यह धर्मिकता का शास्त्रिपूर्ण फल उत्पन्न करती है। <sup>12</sup> इसलिए, कमज़ोर हाथों और थके हुए घुटनों को मजबूत करो, <sup>13</sup> और अपने पैरों के लिए सीधे रस्ते बनाओ, ताकि जो अंग दुर्बल है वह विस्थापित न हो, बल्कि ठीक हो जाए। <sup>14</sup> सभी लोगों के साथ शांति का पीछा करो, और उस पवित्रता का भी, जिसके बिना कोई प्रभु को नहीं देखेगा। <sup>15</sup> ध्यान दो कि कोई भी परमेश्वर की कृपा से विचित्र न हो; कि कोई कढ़वाहट की जड़ उगाकर परसानी न पैदा करे, और इसके द्वारा कई लोग अशुद्ध न हो जाएं; <sup>16</sup> कि कोई भी यौन अनैतिक या अर्धमूर्च्छिक न हो, जैसा कि एसाव था, जिसने एक ही भोजन के लिए अपनी पैतृक अधिकार बेच दी। <sup>17</sup> क्योंकि तुम जानते हो कि बाद में, जब उसने आशीर्वाद प्राप्त करना चाहा, तो वह अस्वीकृत कर दिया गया, क्योंकि उसने पश्चाताप के लिए कोई ख्यान नहीं पाया, व्यधि उसने इसे आंसुओं के साथ खोजा। <sup>18</sup> क्योंकि तुम उस पर्वत के पास नहीं आए हो जिसे छुआ जा सकता है और धधकती आग, अंधकार, उदासी, और बवंडर के पास, <sup>19</sup> और तुरही की धनि और शब्दों की धनि के पास, जिसकी धनि ऐसी थी कि सुनने वालों ने विनती की कि उन्हें और कुछ न कहा जाए। <sup>20</sup> क्योंकि वे उस आज्ञा को सहन नहीं कर सके, "यदि कोई पशु भी पर्वत को छू ले, तो उसे पत्थरवाह किया जाएगा।" <sup>21</sup> और दृश्य इतना भयावह था कि मूसा ने कहा, "मैं भयीत और कांप रहा हूँ।" <sup>22</sup> परंतु तुम सियोन पर्वत और जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और अनगिनत स्वर्गद्वारों के पास आए हो, <sup>23</sup> सामान्य सभा और स्वर्ग में नामांकित पाहिलौठे की कलीसिया के पास, और सबके न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए गए धर्मियों की आत्माओं के पास, <sup>24</sup> और यीशु के पास, जो नई वाचा के मध्यस्थ है, और छिड़के गए लहू के पास, जो हाबिल के लहू से बेहतर बोलता है। <sup>25</sup> ध्यान दो कि तुम उसे न ठुकराओ जो बोल-

रहा है। क्योंकि यदि वे नहीं बच सके जब उन्होंने उसे ठुकराया जो पृथ्वी पर चेतावनी देता था, तो हम कैसे बचेंगे यदि हम उसे ठुकराते हैं जो स्वर्ग से चेतावनी देता है? <sup>26</sup> उसकी आवाज़ ने तब पृथ्वी को हिला दिया, परंतु अब उसने वादा किया है, "फिर एक बार मैं न केवल पृथ्वी को, बल्कि आकाश को भी हिलाऊंगा।" <sup>27</sup> यह अभिव्यक्ति, "फिर एक बार," उन चीजों को हटाने का संकेत देती है जो हिलाई जा सकती हैं, जैसे कि बनाई गई चीजें, ताकि वे चीजें जो हिलाई नहीं जा सकतीं, बनी रहें। <sup>28</sup> इसलिए, जब हम एक ऐसा राज्य प्राप्त करते हैं जिसे हिलाया नहीं जा सकता, तो आओ हम कृतज्ञता दिखाएं, जिसके द्वारा हम परमेश्वर को स्वीकार्य सेवा श्रद्धा और भय के साथ अप्रित कर सकें; <sup>29</sup> क्योंकि हमारा परमेश्वर एक भस्म करने वाली आग है।

**13** भाइयों और बहनों के प्रति प्रेम बना रहे। <sup>2</sup> अतिथियों के प्रति आतिथ्य को न भूलें, क्योंकि इसके द्वारा कुछ ने अनजाने में स्वर्गद्वारों की सेवा की है। <sup>3</sup> कैदियों को याद रखें, जैसे कि आप उनके साथ केंद्र में हैं, और जो बुरी तरह से व्यवहार किए जा रहे हैं, क्योंकि आप स्वयं भी शरीर में हैं। <sup>4</sup> विवाह सबके बीच आदर के योग्य है, और विवाह शया अशुद्ध न हो; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्तीगामियों का न्याय करेगा। <sup>5</sup> सुनिष्ठित करें कि आपका स्वभाव धन के प्रेम से मुक्त हो, और जो आपके पास है उसी में संतुष्ट रहें; क्योंकि उसने स्वयं कहा है,

"मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा, और न ही तुझे कभी त्यागूंगा।"

<sup>6</sup> ताकि हम निराकर कह सकें,

"प्रभु मेरा सहायक है, मैं नहीं डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या करेगा?"

<sup>7</sup> उनको याद रखें जो आपके अगुवे थे, जिन्होंने आपको परमेश्वर का वचन सुनाया; और उनके जीवन के परिणाम को देखते हुए, उनके विश्वास का अनुकरण करें। <sup>8</sup> यीशु मरीह कल और आज और सदा के लिए वही है। <sup>9</sup> विविध और अजीब शिक्षाओं से भ्रमित न हों; क्योंकि अनुग्रह से हृदय का मजबूत होना अच्छा है, न कि उन खाद्य पदार्थों से, जिनसे जो लोग इनका पालन करते थे, लाभावित नहीं हुए। <sup>10</sup> हमारे पास एक वेदी है, जिससे वे जो तूबू की सेवा करते हैं, खाने का अधिकार नहीं रखते। <sup>11</sup> क्योंकि उन पशुओं के शरीर, जिनका रक्त महायाजक द्वारा पाप के लिए पवित्र स्थान में लाया

## इब्रानियों

जाता है, शिविर के बाहर जलाए जाते हैं।<sup>12</sup> इसलिए यीशु ने भी फाटक के बाहर दुख सहा, ताकि वह अपने ही रक्त के द्वारा लोगों को पवित्र कर सके।<sup>13</sup> इसलिए, हम उसके पास शिविर के बाहर चलें, उसकी निंदा सहते हुए।<sup>14</sup> क्योंकि यहाँ हमारे पास एक खायी नगर नहीं है, परन्तु हम उस नगर की खोज कर रहे हैं जो अने वाला है।<sup>15</sup> उसके द्वारा, हम परमेश्वर को निरंतर सुन्ति का बलिदान चढ़ाएं, अर्थात् उसके नाम की सुन्ति करने वाले हौंठों का फल।<sup>16</sup> और भलाई करने और बाटने को न भूलें, क्योंकि ऐसे बलिदानों से परमेश्वर प्रसन्न होता है।<sup>17</sup> अपने अगुवों की आज्ञा मानें और उनके अधीन रहें—क्योंकि वे आपकी आत्माओं की देखभाल करते हैं जैसे कि उन्हें हिसाब देना होगा—ताकि वे यह काम आनन्द से करें, न कि दुष्टी होकर; क्योंकि यह आपके लिए लाभदायक नहीं होगा।<sup>18</sup> हमारे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि हमें विश्वास है कि हमारी अंतरात्मा शुद्ध है, और हम सब बातों में सम्मानपूर्वक आचरण करने की इच्छा रखते हैं।<sup>19</sup> और मैं आपसे और अधिक आग्रह करता हूं कि आप यह करें, ताकि मैं शीघ्र ही आपके पास लौट आऊं।<sup>20</sup> अब शांति का परमेश्वर, जिसने हमारे प्रभु यीशु को, जो भेड़ों का महान चरवाहा है, अनन्त वाचा के रक्त के द्वारा मरे हुओं में से जीवित किया,<sup>21</sup> आपको हर अच्छे काम में उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सुसज्जित करें, और हमारे भीतर वह कार्य करे जो उसकी दृष्टि में प्रसन्नकारी है, यीशु मसीह के द्वारा, जिसे युगानुयुग महिमा हो। आमीन।<sup>22</sup> लेकिन मैं आपसे आग्रह करता हूं, भाइयों और बहनों, इस उपदेश के वचन को धैर्यपूर्वक सुनें, क्योंकि मैंने आपको संक्षेप में लिखा है।<sup>23</sup> जान लें कि हमारा भाई तीमुथियुस रिहा हो गया है, और यदि वह शीघ्र आता है, तो मैं उसे लेकर आपस मिलूंगा।<sup>24</sup> अपने सभी अगुवों और सभी संतों को नमस्कार करें। इटली के लोग आपको नमस्कार कहते हैं।<sup>25</sup> आप सभी के साथ अनुग्रह हो।

## याकूब

**1** याकूब, परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास, उन बारह गोत्रों को जो विदेश में फैले हुए हैं: नमस्कार।<sup>2</sup> हे मेरे भाइयों और बहनों, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो, तो इसे सब आनंद की बात समझों,<sup>3</sup> यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा धैर्य उत्पन्न करती है।<sup>4</sup> और धैर्य को अपना सिद्ध परिणाम प्राप्त करने दो, ताकि तुम सिद्ध और संपूर्ण हो जाओ, और किसी बात में कमी न रहो।<sup>5</sup> पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो, तो वह परमेश्वर से मांगे, जो सबको उदारता से और बिना उलाहना दिए देता है, और उसे दी जाएगी।<sup>6</sup> पर उसे विश्वास में बिना संदेह के मांगना चाहिए, क्योंकि जो संदेह करता है वह समुद्र की लहरों के समान है, जो हवा से चलाई जाती और उचाली जाती है।<sup>7</sup> क्योंकि ऐसा व्यक्ति यह अपेक्षा न करे कि उसे प्रभु से कुछ मिलेगा,<sup>8</sup> वह दो मन का व्यक्ति है, अपने सब मार्गों में अस्थिर।<sup>9</sup> अब जो भाई या बहन नम्र परिस्थितियों में है, वह अपनी उच्च स्थिति में गर्व करें;<sup>10</sup> परंतु धनी व्यक्ति अपनी नीचता में गर्व करे, क्योंकि वह फूल की तरह लिली हो जाएगा।<sup>11</sup> क्योंकि सूर्य अपनी प्रचंड गर्मी के साथ उगता है और घास को सुखा देता है, और उसका फूल गिर जाता है और उसके रूप की शोभा नष्ट हो जाती है; इसी प्रकार धनी व्यक्ति अपनी गतिविधियों के बीच में मर जाएगा।<sup>12</sup> धन्य है वह व्यक्ति जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि जब वह स्वीकृत हो जाएगा, तो वह जीवन का मुकुट प्राप्त करेगा, जिसे प्रभु ने उन से प्रतिका की है जो उससे प्रेम करते हैं।<sup>13</sup> जब कोई परीक्षा में पड़े, तो यह न कहें, “मैं परमेश्वर द्वारा परीक्षा में डाला जा रहा हूँ”; क्योंकि परमेश्वर बुराई से परीक्षा में नहीं डाला जा सकता, और वह स्थृत किसी को परीक्षा में नहीं डालता।<sup>14</sup> परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही वासना से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है।<sup>15</sup> फिर वासना जब गर्भवती होती है, तो पाप को जन्म देती है; और पाप, जब पूरा हो जाता है, तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।<sup>16</sup> मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, धोखा न खाओ।<sup>17</sup> हर अच्छा वरदान और हर सिद्ध उपहार ऊपर से है, जो ज्योतियों के पिता की ओर से आता है, जिसमें कोई परिवर्तन या छाया का फेर नहीं है।<sup>18</sup> उसने अपनी इच्छा के अनुसार हमें सत्य के वचन के द्वारा जन्म दिया, ताकि हम उसकी सृष्टियों में से एक प्रकार के पहिलाठे फल हों।<sup>19</sup> तुम यह जानते हो, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों। अब हर एक को सुनने में शीघ्र, बोलने में धीमा और क्रोध में धीमा होना चाहिए;<sup>20</sup> क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता को उत्पन्न नहीं करता।<sup>21</sup> इसलिए, सारी अशुद्धता और बुराई के अवशेष को दूर करके, नम्रता से उस वचन को ग्रहण करो, जो तुम्हारी आत्माओं को बचाने में समर्प्य है।<sup>22</sup> परंतु वचन

के करने वाले बनो, न कि केवल सुनने वाले, जो स्वयं को धोखा देते हैं।<sup>23</sup> क्योंकि यदि कोई वचन का सुनने वाला है और करने वाला नहीं है, तो वह उस व्यक्ति के समान है जो अपने प्राकृतिक चेहरे को दर्पण में देखता है;<sup>24</sup> क्योंकि वह अपने आप को देखता है और चला जाता है, और तुंत भूल जाता है कि वह कैसा था।<sup>25</sup> परंतु जो व्यक्ति स्वतंत्रता के सिद्ध नियम पर ध्यानपूर्वक देखता है और उसमें बना रहता है, वह भूलने वाला सुनने वाला नहीं, बल्कि कार्य करने वाला होता है, वह अपने कार्य में धन्य होगा।<sup>26</sup> यदि कोई अपने आप को धार्मिक समझता है, फिर भी अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता, बल्कि अपने हृदय की धोखा देता है, तो उस व्यक्ति का धर्म व्यर्थ है।<sup>27</sup> हमारे परमेश्वर और पिता की दृष्टि में शुद्ध और निष्कर्तक धर्म यह है: संकट में अनाथों और विधवाओं की सुधि लेना, और अपने आप को संसार से अशुद्ध न रखना।

**2** मेरे भाइयों और बहनों, हमारे महिमामय प्रभु यीशु मसीह में विश्वास को व्यक्तिगत पक्षपात के साथ न रखें।<sup>2</sup> क्योंकि यदि तुम्हारी सभा में कोई सोने की अंगूठी पहने और चमकीले कपड़े पहने आता है, और एक गरीब व्यक्ति गंदे कपड़े पहने भी आता है,<sup>3</sup> और तुम उस पर विशेष ध्यान देते हो जो चमकीले कपड़े पहने हैं, और कहते हों, “तुम यहाँ एक अच्छे स्थान पर बैठो,” और गरीब व्यक्ति से कहते हों, “तुम वहाँ खड़े रहो, या मेरे पायदान के पास बैठ जाओ,”<sup>4</sup> क्या तुमने अपने बीच भेदभाव नहीं किया है, और बुरे इरादों के साथ न्यायाधीश बन गए हो?<sup>5</sup> सुनो, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों: क्या परमेश्वर ने इस संसार के गरीबों को विश्वास में धनी और उस राज्य के वारिस बनने के लिए नहीं चुना जिसे उसने अपने प्रेमियों से वादा किया है?<sup>6</sup> परंतु तुमने गरीब व्यक्ति का अपमान किया है। क्या धनी लोग तुम्हें दबाते नहीं हैं और व्यक्तिगत रूप से तुम्हें अदालत में घरीटते नहीं हैं?<sup>7</sup> क्या वे उस अच्छे नाम की निदा नहीं करते जिससे तुम्हें बुलाया गया है?<sup>8</sup> यदि, तथापि, तुम शास्त्र के अनुसार राजकीय नियम का पालन कर रहे हो, “तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो,” तो तुम अच्छा कर रहे हो।<sup>9</sup> परंतु यदि तुम पक्षपात देखाते हो, तो तुम पाप कर रहे हो और व्यवस्था द्वारा अपराधी ठहराए जाते हो।<sup>10</sup> क्योंकि जो कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता है, फिर भी एक बिंदु में ठाकर खाता है, वह सबका दोषी हो गया है।<sup>11</sup> क्योंकि जिसने कहा, “व्यभिचार न करना。” उसने यह भी कहा, “हत्या न करना।” अब यदि तुम व्यभिचार नहीं करते, परंतु हत्या करते हो, तो तुम व्यवस्था के अपराधी बन गए हो।<sup>12</sup> इस प्रकार बोलो, और इस प्रकार कार्य करो, जैसे कि वे

## याकृब

जो स्वतंत्रता की व्यवस्था द्वारा न्याय किए जाएंगे।<sup>13</sup> क्योंकि न्याय उस पर निर्देश होगा जिसने दया नहीं दिखाई; दया न्याय पर विजय प्राप्त करती है।<sup>14</sup> मेरे भाइयों और बहनों, यदि कोई कहता है कि उसके पास विश्वास है, परन्तु उसके पास कर्म नहीं हैं, तो उसका क्या उपयोग है? क्या वह विश्वास उसे बचा सकता है?<sup>15</sup> यदि कोई भाई या बहन बिना कपड़ों के है और दैनिक भोजन की आवश्यकता में है,<sup>16</sup> और तुम में से कोई उनसे कहता है, "शांति में जाओ, गर्म और भरे रहो," फिर भी तुम उन्हें उनके शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएं नहीं देते, तो उसका क्या उपयोग है?<sup>17</sup> उसी प्रकार, विश्वास भी, यदि उसके पास कर्म नहीं हैं, तो वह स्वयं में मृत है।<sup>18</sup> परन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है और मेरे पास कर्म हैं, अपने विश्वास को कर्मों के बिना दिखाओ, और मैं तुम्हें अपने कर्मों द्वारा अपना विश्वास दिखाऊंगा।"<sup>19</sup> तुम मानते हो कि परमेश्वर एक है। तुम अच्छा करते हो; दुष्टत्वाएँ भी मानती हैं, और कंपती हैं।<sup>20</sup> परन्तु क्या तुम यह स्वीकार करने के लिए तैयार हो, हे मूर्ख व्यक्ति, कि कर्मों के बिना विश्वास बेकार है?<sup>21</sup> क्या हमारे पिता अब्राहम कर्मों द्वारा धर्मी नहीं ठहराए गए जब उन्होंने अपने पुत्र इस्हाक को वेदी पर ढाया?<sup>22</sup> तुम देखते हो कि विश्वास उसके कर्मों के साथ काम कर रहा था, और कर्मों के परिणामस्वरूप, विश्वास सिद्ध हुआ;<sup>23</sup> और शास्त्र पूरा हुआ जो कहता है, "और अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया," और उसे परमेश्वर का मित्र कहा गया।<sup>24</sup> तुम देखते हो कि व्यक्ति कर्मों द्वारा धर्मी ठहराया जाता है और केवल विश्वास से नहीं।<sup>25</sup> उसी प्रकार, क्या राहाक वेश्या भी कर्मों द्वारा धर्मी नहीं ठहराइ गई जब उसने दूतों को ग्रहण किया और उन्हें दूसरे मारा से बाहर भेजा? <sup>26</sup> क्योंकि जैसे शरीर आत्मा के बिना मृत है, वैसे ही कर्मों के बिना विश्वास भी मृत है।

**3** हे मेरे भाइयों और बहनों, बड़ी संख्या में शिक्षक न बनो, क्योंकि तुम जानते हो कि हम जो शिक्षक हैं, उन पर अधिक कठोर न्याय होगा।<sup>2</sup> क्योंकि हम सब कई तरीकों से ठोकर खाते हैं। यदि कोई अपने कहे में ठोकर नहीं खाता, तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है, जो पूरे शरीर को भी वश में कर सकता है।<sup>3</sup> अब यदि हम घोड़ों के मुंह में लगाम डालते हैं ताकि वे हमारी आज्ञा मानें, तो हम उनके पूरे शरीर को भी निर्देशित करते हैं।<sup>4</sup> जहाजों को भी देखो: यद्यपि वे इन्हें बढ़े होते हैं और प्रबल वायु से चलाए जाते हैं, फिर भी वे एक बहुत छोटे पतंगवार द्वारा निर्देशित होते हैं, जहां भी चालक की इच्छा होती है।<sup>5</sup> इसी प्रकार जीभ भी शरीर का एक छोटा

हिस्सा है, और फिर भी यह बड़ी-बड़ी बातें करती है। देखो, एक छोटा सा आग का टुकड़ा कितना बड़ा जंगल जला देता है!<sup>6</sup> और जीभ एक आग है, अधर्म का एक संसार; जीभ हमारे शरीर के अंगों के बीच इस प्रकार स्थित है कि यह पूरे शरीर को अशुद्ध करती है और हमारे जीवन की दिशा को आग लगा देती है, और यह नरक की आग से जलती है।<sup>7</sup> क्योंकि हर प्रकार के पशु और पक्षी, रेंगने वाले जीव और समुद्री जीवों को मानव जाति द्वारा वश में किया गया है और किया जा चुका है,<sup>8</sup> परन्तु मनुष्य जाति में से कोई भी जीभ को वश में नहीं कर सकता; यह एक अशांत बुझाई है, घातक विष से भरी हुर्झ।<sup>9</sup> इसी से हम अपने प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से हम उन लोगों को शाप देते हैं, जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं;<sup>10</sup> उसी मुह से आशीर्वाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयों और बहनों, यह बातें इस प्रकार नहीं होनी चाहिए।<sup>11</sup> क्या एक सोत से ताजा और कडवा पानी दोनों निकलते हैं?<sup>12</sup> हे मेरे भाइयों और बहनों, क्या एक अंजीर का पेड़ जैतून उत्पन्न कर सकता है, या एक बेल अंजीर? इसी प्रकार खारा पानी ताजा नहीं उत्पन्न कर सकता।<sup>13</sup> तुम में से कौन बुद्धिमान और समझदार है? उसे अपनी अच्छी चालचलन से अपनी बुद्धि की कोमलता में अपने काम दिखाने दो।<sup>14</sup> परन्तु यदि तुम्हारे दिल में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो अहंकारी मत बनो और सत्य के विरुद्ध झूठ मत बोलो।<sup>15</sup> यह बुद्धि वह नहीं है जो ऊपर से आती है, बल्कि यह सांसारिक, प्राकृतिक, दानवीय है।<sup>16</sup> क्योंकि जहां ईर्ष्या और स्वार्थी महत्वाकांक्षा होती है, वहां अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बात होती है।<sup>17</sup> परन्तु जो बुद्धि ऊपर से आती है वह पहले शुद्ध होती है, फिर शांतिपूर्ण, कोमल, विचारशील, दया और अच्छे फलों से भरी हुई, पक्षपात रहित, कपट रहित होती है।<sup>18</sup> और धार्मिकता का फल उन लोगों द्वारा शांति में बोया जाता है जो शांति बनाते हैं।

**4** तुम्हारे बीच झगड़ों और संघर्षों का स्रोत क्या है? क्या यह सोत तुम्हारी वासनाएँ नहीं हैं जो तुम्हारे शरीर के अंगों में युद्ध करती हैं?<sup>2</sup> तुम लालसा करते हो और नहीं पाते, इसलिए हत्या करते हो। और तुम ईर्ष्या करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए लड़ते और झगड़ते हो। तुम्हारे पास नहीं है क्योंकि तुम मांगते नहीं हो।<sup>3</sup> तुम मांगते हो और प्राप्त नहीं करते हो, त्योंकि तुम गलत उद्देश्यों से मांगते हो, ताकि तुम अपनी वासनाओं पर खर्च कर सको।<sup>4</sup> हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानते कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से शत्रुता करना है? इसलिए, जो कोई संसार का मित्र बनना

## याकृब

चाहता है, वह स्वयं को परमेश्वर का शत्रु बनाता है।<sup>5</sup> या तुम सोचते हो कि शास्त्र व्यर्थ कहता है, "वह आत्मा को जो उसने हम में वास करने के लिए बनाया है, ईर्ष्या से चाहता है"?<sup>6</sup> परंतु वह और अधिक अनुग्रह देता है। इसलिए यह कहता है,

"परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परंतु नन्हों को अनुग्रह देता है!"

<sup>7</sup> इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ। परंतु शैतान का विरोध करो, और वह तुमसे भाग जाएगा। <sup>8</sup> परमेश्वर के निकट आओ और वह तुम्हारे निकट आएगा। अपने हाथों को शुद्ध करो, हे पापियों; और अपने हृदयों को शुद्ध करो, हे दो मन के। <sup>9</sup> दुखित हो, और खिलाप करो, और रोओ; तुम्हारी हँसी शोक में बदल जाए, और तुम्हारी खुशी उदासी में। <sup>10</sup> प्रभु की उपस्थिति में स्वयं को नम्र करो, और वह तुम्हें ऊँचा उठाएगा। <sup>11</sup> एक-दूसरे के विरुद्ध मत बोलो, भाइयों और बहनों। जो कोई भाई या बहन के विरुद्ध बोलता है, या अपने भाई या बहन का न्याय करता है, वह व्यवस्था के विरुद्ध बोलता है और व्यवस्था का न्याय करता है; परंतु यदि तुम व्यवस्था का न्याय करते हो, तो तुम व्यवस्था के करने वाले नहीं बल्कि उसके न्यायी हो। <sup>12</sup> केवल एक ही व्यवस्थाप्रदाता और न्यायी है, जो बचाने और नष्ट करने में सक्षम है; परंतु तुम कौन हो, जो अपने पड़ोसी का न्याय करते हो? <sup>13</sup> अब आओ, तुम जो कहते हो, "आज या कल हम इस या उस नगर में जाएंगे, और वहाँ एक वर्ष बिताएंगे और व्यापार करेंगे और लाभ कमाएंगे।" <sup>14</sup> फिर भी तुम नहीं जानते कि तुम्हारा जीवन कल कैसा होगा। क्योंकि तुम केवल एक वाप्त हो जो थोड़ी देर के लिए प्रकट होती है, और फिर गायब हो जाती है। <sup>15</sup> इसके बजाय, तुम्हें कहना चाहिए, "यदि प्रभु की इच्छा होगी, तो हम जीवित रहेंगे और यह या वह करेंगे।" <sup>16</sup> परंतु जैसा है, तुम अपने घमंड में डींग मारते हो; ऐसी सभी डींग मारना बुरा है। <sup>17</sup> इसलिए जो कोई सही काम करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है।

**5** अब सुनो, हे धनवान लोगों, अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों के लिए रोओ और खिलाओ। <sup>2</sup> तुम्हारी संपत्ति सड़ गई है और तुम्हारे वस्त्र कीड़े खा गए हैं। <sup>3</sup> तुम्हारा सोना और चांदी जंग खा गए हैं, और उनका जंग तुम्हारे खिलाफ गवाही देगा और आग की तरह तुम्हारे शरीर को खा जाएगा। यह अतिम दिनों में है कि तुमने अपना खजाना इकट्ठा किया है। <sup>4</sup> देखो, तुम्हारे खेतों की कटाई करने वाले मजदूरों की मजदूरी, जिसे तुमने रोक रखा है,

तुम्हारे खिलाफ खिला रही है, और जो फसल काटने वालों की पुकार है वह सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है। <sup>5</sup> तुमने पृथ्वी पर सुख-भोग किया और विलासिता में जीवन बिताया; तुमने वध के दिन में अपने हृदयों को मोटा किया है। <sup>6</sup> तुमने धर्मी व्यक्ति को दोषी ठहराया और मार डाला; वह तुम्हारा विरोध नहीं करता। <sup>7</sup> इसलिए, भाइयों और बहनों, प्रभु के अने तक धैर्य रखो। किसान भूमि की बहुमूल्य उपज के लिए प्रतीक्षा करता है, उसके लिए धैर्य रखता है, जब तक कि उसे प्राप्तिक और अंतिम वर्षा नहीं मिलती। <sup>8</sup> तुम भी धैर्य रखो; अपने हृदयों को मजबूत करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। <sup>9</sup> भाइयों और बहनों, एक-दूसरे के खिलाफ शिकायत मत करो, ताकि तुम पर न्याय न हो; देखो, न्यायाधीश दरवाजे पर खड़ा है। <sup>10</sup> उदाहरण के लिए, भाइयों और बहनों, कष्ट और धैर्य के, उन नक्षियों को लो जिन्होंने प्रभु के नाम में बोला। <sup>11</sup> हम उन्हें धन्य मानते हैं जिन्होंने सहन किया। तुमने अश्वकी सहनशीलता के बारे में सुना है, और प्रभु के कार्यों के परिणाम देखे हैं, कि प्रभु करुणा से परिपूर्ण और दयालु है। <sup>12</sup> परंतु सबसे ऊपर, मेरे भाइयों और बहनों, शपथ मत खाओ, न सर्वा की, न पृथ्वी की, न किसी और शपथ की; परंतु तुम्हारा हाँ, हाँ हो, और तुम्हारा नहीं, नहीं हो, ताकि तुम न्याय के अधीन न पड़ो। <sup>13</sup> क्या तुम्हें से कोई कष्ट में है? तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए। क्या कोई खुश है? उसे स्तुति गीत गाना चाहिए। <sup>14</sup> क्या तुम्हें से कोई बीमार है? तो उसे कलीसिया के प्राचीनों को बुलाना चाहिए और वे उसके लिए प्रार्थना करें, प्रभु के नाम में उसे तेल से अभिषेक करें; <sup>15</sup> और विश्वास की प्रार्थना बीमार को ठीक करेगी, और प्रभु उसे उठाएगा, और यदि उसने पाप किए हैं, तो उन्हें क्षमा किया जाएगा। <sup>16</sup> इसलिए, एक-दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो, और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम चंगे हो जाओ। <sup>17</sup> एक धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना, जब वह प्रभावी होती है, बहुत कुछ कर सकती है। <sup>18</sup> ऐसियाहौ हमारे जैसा एक व्यक्ति था, और उसने प्रार्थना की कि वर्षा न हो, और तीन वर्ष और छह महीने तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं हुई। <sup>19</sup> फिर उसने फिर से प्रार्थना की, और आकाश ने वर्षा दी और पृथ्वी ने अपनी उपज उत्पन्न की। <sup>20</sup> मेरे भाइयों और बहनों, यदि तुम्हें से कोई सत्य से भटक जाए और कोई उसे वापस लाए, <sup>21</sup> तो उसे जान लेना चाहिए कि जिसने पापी को उसकी गलत राह से मोड़ा है, वह उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाएगा और पापों की भीड़ को ढक देगा।

## 1 पतरस

**1** यीशु मसीह के प्रेरित पतरस की ओर से, उन चुने हुए लोगों के लिए जो परदेशी हौकर पोतुस, गलातिया, कप्पडुकिया, एशिया, और बिथिनिया में तितर-बितर हैं।<sup>2</sup> परमेश्वर पिता की पूर्वजान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के कार्य द्वारा, यीशु मसीह की आज्ञा मानने और उसके लहू से छिड़के जाने के लिए; तुम पर अनुग्रह और शांति की बहुतायत हो।<sup>3</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो, जिसने अपनी बड़ी दया के अनुसार हमें यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के द्वारा एक जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया है,<sup>4</sup> एक ऐसी विरासत प्राप्त करने के लिए जो अविनाशी, निर्मल, और कभी न मिटने वाली है, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है,<sup>5</sup> जो परमेश्वर की शक्ति द्वारा विश्वास के माध्यम से उस उद्धार के लिए सुरक्षित रखे गए हैं जो अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार है।<sup>6</sup> इसमें तुम अत्यंत आनंदित होते हो, यद्यपि अब थोड़ी देर के लिए, यदि आवश्यक हो, तो विभिन्न परीक्षाओं से दुखी हो गए हो,<sup>7</sup> ताकि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा, जो आग में परखे जाने पर भी नाशवान सोने से अधिक मूल्यवान है, यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रसाना, महिमा, और सम्मान का कारण बने;<sup>8</sup> और यद्यपि तुमने उसे नहीं देखा है, तुम उससे प्रेम करते हो, और यद्यपि अब तुम उसे नहीं देखते हो, परंतु उस पर विश्वास करते हो, तुम अवरणीय और महिमा से भरे आनंद के साथ अत्यंत अनंदित होते हो।<sup>9</sup> अपने विश्वास के परिणामस्वरूप अपनी आत्मा ओं का उद्धार प्राप्त करते हो।<sup>10</sup> इस उद्धार के विषय में, उन भविष्यद्वक्ताओं ने, जिन्होंने तुम्हारे लिए आने वाले अनुग्रह के विषय में भविष्यवाणी की थी, सावधानीपूर्वक खोज और पूछताछ की,<sup>11</sup> यह जानने की कोशिश करते हुए कि किस समय या किस प्रकार के समय की आत्मा ने उनके भीतर संकेत दिया था जब उसने मसीह की पीड़ाओं और उसके बाद की महिमाओं की भविष्यवाणी की थी।<sup>12</sup> उन पर यह प्रकट हुआ कि वे अपने लिए नहीं, बल्कि तुम्हारे लिए सेवा कर रहे थे, उन बातों में जो अब तुम्हें उन लोगों के माध्यम से सुनाई गई हैं जिन्होंने तुम्हें स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा द्वारा सुसामाचार सुनाया—वे बातें जिनमें स्वर्गदूत भी ज्ञानके की लालसा रखते हैं।<sup>13</sup> इसलिए, अपने मन को कार्य के लिए तैयार करो, आत्मा में संयमित रहो, और अपनी आशा को पूरी तरह उस अनुग्रह पर लगाओ जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें दिया जाएगा।<sup>14</sup> आज्ञाकारी बच्चों के समान, अपनी अज्ञानता में जो पूर्व की वासनाएँ थीं, उनके अनुसार न ढांतें,<sup>15</sup> परंतु जैसे वह पवित्र है जिसने तुम्हें बुलाया है, वैसे ही तुम भी अपने सारे आचरण में पवित्र बनो;<sup>16</sup> क्योंकि लिखा है: “तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।”<sup>17</sup> यदि तुम उस पिता

को पुकारते हो जो प्रत्येक के कार्य के अनुसार बिना पक्षपात के ग्याय करता है, तो पृथ्वी पर अपने निवास के समय में भय के साथ आचरण करो;<sup>18</sup> यह जानते हुए कि तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से प्राप्त व्यर्थ जीवन से चांदी या सोने जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं छुड़ाया गया,<sup>19</sup> बल्कि मसीह के निर्दोष और निष्कर्तक मेमने के बहुमूल्य लहू से।<sup>20</sup> क्योंकि वह संसार की नींव रखने से पहले से ही जात था, परंतु तुम्हारे कारण इन अंतिम समयों में प्रकट हुआ है<sup>21</sup> जो उसके माध्यम से परमेश्वर में विश्वास करते हो, जिसने उसे मृतकों में से उठाया और उसे महिमा दी, ताकि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर में हो।<sup>22</sup> चूंकि तुमने सत्य के प्रति आज्ञाकारिता में अपनी आत्माओं को शुद्ध किया है भाई-बहनों के प्रति निष्कर्पट प्रेम के लिए, तो हृदय से एक-दूसरे से गहन प्रेम करो,<sup>23</sup> क्योंकि तुमने नाशवान बीज से नहीं, बल्कि अविनाशी से, अर्थात् परमेश्वर के जीवित और शायी वचन के माध्यम से नया जन्म लिया है।<sup>24</sup> क्योंकि,

“सारा शरीर धास के समान है, और उसकी सारी महिमा धास के फूल के समान है। धास सूख जाती है, और फूल गिर जाता है,<sup>25</sup> परंतु प्रभु का वचन सदा के लिए स्थिर रहता है।”

और यही वह वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।

**2** इसलिए, सब प्रकार की बुराई, छल, कपट, डाह, और सब प्रकार की निंदा को दूर कर दो,<sup>2</sup> और नवजात शिशुओं की तरह, वचन के शुद्ध दृढ़ की लालसा करो, ताकि इसके द्वारा तुम उद्धार के लिए बढ़ सकों।<sup>3</sup> यदि तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चखा है।<sup>4</sup> और उसके पास आओ जो एक जीवित पर्याह है, जिसे लोगों ने ठुकरा दिया, परन्तु वह परमेश्वर की दृष्टि में चुना हुआ और अनमोल है,<sup>5</sup> तुम भी, जीवित पर्याहों के रूप में, एक अतिक्रम घर के रूप में निर्मित हो रहे हो, एक पवित्र याजकता के लिए, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य आस्तिक बलिदान चढ़ाने के लिए है।<sup>6</sup> क्योंकि यह शास्त्र में लिखा है:

“देखो, मैं सिय्योन में एक चुना हुआ पत्थर रख रहा हूँ एक अनमोल कोने का पत्थर, और जो उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित नहीं होगा।”

7 तो यह अनमोल मूल्य तुम्हारे लिए है जो विश्वास करते हो; परन्तु अविश्वसियों के लिए,

# 1 पतरस

"एक पत्थर जिसे राजमिस्तियों ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया,"

<sup>८</sup> और,

"एक ठोकर खाने का पत्थर और ठेस लगने की चट्टानः; क्योंकि वे वचन के प्रति अवश्याकारी होने के कारण ठोकर खाते हैं, और इसी के लिए वे नियुक्त भी किए गए थे।"

<sup>९</sup> परन्तु तुम एक चुनी हुई जाति हो, एक राजकीय याजकता, एक पवित्र राष्ट्र, एक लोग जो परमेश्वर की विशेष संपत्ति है, ताकि तुम उसकी उल्लङ्घाताओं का प्रचार कर सको जिसने तुम्हें अंधकारा से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है; <sup>१०</sup> क्योंकि तुम पहले लोग नहीं थे, परन्तु अब तुम परमेश्वर के लोग हो; तुमने पहले दया नहीं पाई थी, परन्तु अब तुमने दया पाई है। <sup>११</sup> प्रिय जनों, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि परदेशियों और अजनबियों के रूप में उन शारीरिक अभिलाषाओं से बचो, जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं। <sup>१२</sup> जातियों के बीच अपने आचरण को उल्कृष्ट बनाए रखो, ताकि जिस बात में वे तुम्हें कुकर्मी कहकर निंदा करते हैं, वे तुम्हारे अच्छे कामों के कारण, जब वे उहें देखें, दर्शन के दिन परमेश्वर की महिमा करें। <sup>१३</sup> प्रभु के कारण हर मानव संस्था के अधीन रहो, चाहे राजा के, जो सर्वोच्च है, <sup>१४</sup> या उन राज्यपालों के, जिन्हें उसने कुकर्मियों की सजा और जो सही करते हैं उनकी प्रशंसा के लिए भेजा है। <sup>१५</sup> क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है, कि सही काम करके तुम मूर्ख लोगों की अज्ञानता को शांत कर दो। <sup>१६</sup> स्वतंत्र लोगों के रूप में कार्य करो, और अपनी स्वतंत्रता को बुराई के लिए आवरण के रूप में उपयोग न करो, परन्तु इसे परमेश्वर के दासों के रूप में उपयोग करो। <sup>१७</sup> सभी लोगों का समान करो, भाईचारे से प्रेम करो, परमेश्वर का भय मानो, राजा का समान करो। <sup>१८</sup> सेवकों, अपने स्वामियों के अधीन रहो, पूरे समान के साथ, न केवल उन अच्छे और कोमल स्वामियों के, बल्कि उन कठोर स्वामियों के भी। <sup>१९</sup> क्योंकि यह अनुग्रह है, यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रति विवेक के कारण अन्यायपूर्ण दुख सहते हुए दुख सहता है। <sup>२०</sup> क्योंकि यदि तुम पाप करते हो और कठोरता से व्यवहार किया जाता है, और धैर्यपूर्वक सहते हो, तो इसमें क्या श्रेय है? परन्तु यदि जब तुम सही करते हो और इसके लिए दुख सहते हो, और धैर्यपूर्वक सहते हो, तो यह परमेश्वर के साथ अनुग्रह प्राप्त करता है। <sup>२१</sup> क्योंकि तुम इसी उद्देश्य के लिए बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख

सहा, तुम्हें एक उदाहरण छोड़कर, ताकि तुम उसके पदचिन्हों पर चल सको,

<sup>२२</sup> जिसने कोई पाप नहीं किया, और उसके मुँह में कोई छल नहीं पाया गया।

<sup>२३</sup> और जब उसे अपमानित किया गया, तो उसने बदले में अपमान नहीं किया; जब वह दुख सह रहा था, तो उसने धमकी नहीं दी, परन्तु अपने को उस पर सौंप दिया जो च्याय से च्याय करता है, <sup>२४</sup> और उसने स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर में कूस पर उठा लिया, ताकि हम पाप के लिए मर जाएं और धार्मिकता के लिए जीवित रहें; उसकी चोटों के द्वारा तुम चंगे हुए हो। <sup>२५</sup> क्योंकि तुम भेड़ों की तरह भटकते रहते थे, परन्तु अब तुम अपनी आत्माओं के चरवाहे और संरक्षक के पास लौट आए हो।

**३** उसी प्रकार, हे पतियों, अपने अपने पतियों के अधीन रहो, ताकि यदि उनमें से कुछ वचन के प्रति आज्ञाकारी न हों, तो वे तुम्हारे आचरण के द्वारा बिना वचन के भी जीते जाएं, <sup>२</sup> जब वे तुम्हारे शुद्ध और आदरपूर्ण आचरण को देखें। <sup>३</sup> तुम्हारा शृंगार बाहीर न हो—जिसे बालों की गूँथ, सोने के गहने पहनना, या वस्त्र धारण करना; <sup>४</sup> परन्तु वह हृदय का छुपा हुआ व्यक्ति हो, जो कोमल और शांत आत्मा के अविनाशी गुण के साथ हो, जो परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है। <sup>५</sup> क्योंकि पूर्विकाल की पवित्र स्त्रियाँ, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, इसी प्रकार अपने आप को सजाती थीं, और अपने अपने पतियों के अधीन रहती थीं, <sup>६</sup> जैसे सारा ने अब्राहम की आज्ञा मानी, और उसे स्वामी कहकर पुकारा; और तुम उसकी संतान सिद्ध होती हो यदि तुम भलाई करती हो और किसी भी भय से नहीं डरती। <sup>७</sup> हे पतियों, उसी प्रकार अपनी पतियों के साथ समझदारी से रहो, जैसे किसी दुर्लभ पात्र के साथ, क्योंकि वह स्त्री है, और जीवन के अनुग्रह के सह-वारिस के रूप में उसका सम्मान करो, ताकि तुम्हारी प्रार्थनाएं रुकावट में न पड़ें। <sup>८</sup> अन्त में, तुम सब एक मन के, सहानुभूतिपूर्ण, प्रेमी, करुणामय, और नम्र बनो, <sup>९</sup> बुराई के बदले बुराई या अपमान के बदले अपमान न करो, परन्तु इसके बाजाय आशीर्वाद दो; क्योंकि तुम इसी उद्देश्य के लिए बुलाए गए थे कि तुम आशीर्वाद के वारिस बनो। <sup>१०</sup> क्योंकि,

"जो जीवन की इच्छा करता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, उसे अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल बोलने से रोकना चाहिए।" <sup>११</sup> "उसे बुराई से मुड़कर भलाई करनी चाहिए, उसे शांति की खाज

## 1 पतरस

करनी चाहिए और उसका पीछा करना चाहिए।<sup>12</sup> “क्योंकि प्रभु की अँखें धर्मियों की ओर होती हैं, और उसके कान उनकी प्रार्थना पर ध्यान देते हैं, परन्तु प्रभु का मुख बुराई करने वालों के विरुद्ध होता है।”

<sup>13</sup> और यदि तुम भलाई के लिए उत्सुक हो तो तुम्हें कौन हानि पहुंचा सकता है? <sup>14</sup> परन्तु यदि तुम धर्म के कारण दुख उठाओ, तो तुम धन्य हो। और उनकी धर्मिकियों से मत डरो, और न ही भयभीत हो, <sup>15</sup> परन्तु मसीह को अपने हृदयों में प्रभु के रूप में पवित्र मानो, और सदा तैयार रहो कि जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में प्रश्न करे, उसे उत्तर दो, परन्तु कोमलता और आदर के साथ; <sup>16</sup> और एक अच्छा विवेक बनाए रखो ताकि जिस बात में तुम्हें बदलाना म किया जाता है, उसमें वे लोग जो मसीह में तुम्हारे अच्छे आचरण की निंदा करते हैं, लजित हों। <sup>17</sup> क्योंकि यह बहर है, यदि परमेश्वर की इच्छा हो, कि तुम भलाई करने के लिए। <sup>18</sup> क्योंकि मसीह ने भी पापों के लिए एक बार दुख उठाया, धर्मी ने अधर्मियों के लिए, ताकि वह हमें परमेश्वर के पास ले आए, शरीर में मारा गया, परन्तु आत्मा में जीवित किया गया; <sup>19</sup> जिसमें उसने जाक कैद में आत्माओं को प्रचार किया, <sup>20</sup> जो एक समय अवज्ञाकारी थे, जब परमेश्वर का धैर्य नूह के दिनों में प्रतीक्षा करता रहा, जब जहाज का निर्माण हो रहा था, जिसमें कुछ, अर्थात आठ व्यक्ति, जल के द्वारा सुरक्षित बचाए गए। <sup>21</sup> उसके अनुरूप, बपतिस्मा अब तुम्हें बचाता है—शरीर की गंदगी का हटाना नहीं, परन्तु एक अच्छे विवेक के लिए परमेश्वर से अपील—यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा, <sup>22</sup> जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है, स्वर्ग में जाने के बाट, जब स्वर्गदूत और अधिकारी और शक्तियाँ उसके अधीन कर दी गई।

**4** इसलिए, जब मसीह ने शरीर में दुख सहा है, तो तुम भी उसी उद्देश्य से अपने आपको सुसज्जित करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुख सहा है, उसने पाप से विराम लिया है, <sup>2</sup> ताकि शेष समय को शरीर में अब और मानव वासनाओं के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के लिए जिए। <sup>3</sup> क्योंकि जो समय पहले बीत चुका है, वह तुम्हारे लिए अन्यजातियों की इच्छा को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, जिसमें तुमने अश्लील व्यवहार, वासनाएँ, मद्यपान, धूमधाम, पीने की पार्टीयाँ, और निर्लज्ज मूर्तिपूजाएँ कीं। <sup>4</sup> इन सब में वे आश्वर्यकित होते हैं कि तुम उनके साथ उसी अति व्यभिचार में नहीं दौड़ते, और वे तुम्हारी निंदा करते हैं; <sup>5</sup> परन्तु वे उसे हिसाब देंगे जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए तैयार है।

<sup>6</sup> क्योंकि सुसमाचार इस उद्देश्य के लिए मरे हुओं को भी सुनाया गया है, ताकि यद्यपि वे शरीर में लोगों के समान न्याय किए जाते हैं, वे आत्मा में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवित रहें। <sup>7</sup> सब वस्तुओं का अंत निकट है; इसलिए, प्रार्थना के उद्देश्य से विवेकपूर्ण और संयमी आत्मा के बनो। <sup>8</sup> सबसे ऊपर, एक-दूसरे के प्रति अपने प्रेम में उत्साही रहो, क्योंकि प्रेम पापों की बहुतायत को ढक देता है। <sup>9</sup> बिना शिकायत एक-दूसरे के प्रति आतिथ्यशील बनो। <sup>10</sup> जैसा कि प्रयेक ने एक विशेष वरदान प्राप्त किया है, उसे एक-दूसरे की सेवा में उपयोग करो जैसे कि परमेश्वर की बहुआयामी अनुग्रह के अच्छे प्रबंधक। <sup>11</sup> जो कोई बोलता है, वह ऐसे बोले जैसे परमेश्वर के वास्तविक वर्चन बोल रहा हो; जो कोई सेवा करता है, वह ऐसे करे जैसे परमेश्वर द्वारा प्रदत्त शक्ति से सेवा कर रहा हो; ताकि सब बातों में परमेश्वर की महिमा यीशु मसीह के माध्यम से हो, जिसे अनंतकाल तक महिमा और प्रभुत्व प्राप्त है। आमीन। <sup>12</sup> प्रिय, अपने बीच की अग्नि परीक्षा से आश्वर्यकित न हो, जो तुम्हारे परीक्षण के लिए आती है, जैसे कि तुम्हारे साथ कुछ अजीब हो रहा हो; <sup>13</sup> परन्तु जितना तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, उतना ही आनन्दित रहो, ताकि उसकी महिमा के प्रकट होने पर तुम भी आनन्दित और अत्यधिक प्रसन्न हो सको। <sup>14</sup> यदि तुम मसीह के नाम के लिए अपमानित होते हो, तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा की आत्मा, और परमेश्वर की आत्मा, तुम पर ठहरती है। <sup>15</sup> सुनिश्चित करो कि तुम में से कोई भी हत्यारा, या चोर, या कुकर्मी, या परेशान करने वाला मध्यस्थ के रूप में दुख न सहे; <sup>16</sup> परन्तु यदि कोई मसीही के रूप में दुख सहता है, तो उसे लजित नहीं होना चाहिए, बल्कि इस नाम में परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। <sup>17</sup> क्योंकि यह समय है कि न्याय परमेश्वर के घर से शुरू हो; और यदि यह पहले हमसे शुरू होता है, तो उन लोगों के लिए क्या परिणाम होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं करते? <sup>18</sup> और

यदि धर्मी को कठिनाई से बचाया जाता है, तो अधर्मी और पापी का क्या होगा?

<sup>19</sup> इसलिए, जो लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख सहते हैं, उन्हें अपने प्राप्तों को एक विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथ में सौंप देना चाहिए, जो सही है उसे करते हुए।

**5** इसलिए, मैं तुम्हारे बीच के प्राचीनों से आग्रह करता हूँ, तुम्हारे साथी प्राचीन और मसीह के कष्टों का साक्षी होने के नाते, और उस महिमा का सहभागी होने के नाते जो प्रकट होने वाली है: <sup>2</sup> तुम्हारे बीच परमेश्वर के झुंड

# 1 पतरस

की चरवाही करो, देखरेख करते हुए, बाथ होकर नहीं,  
बल्कि स्वेच्छा से, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार; और  
लोभ से नहीं, बल्कि उत्साह से;<sup>३</sup> और न ही उन पर  
प्रभुत्व जमाते हुए जो तुम्हारी देखरेख में हैं, बल्कि झुंड  
के लिए उदाहरण बनकर।<sup>४</sup> और जब प्रधान चरवाहा  
प्रकट होगा, तो तुम्हें महिमा का अविनाशी मुकुट प्राप्त  
होगा।<sup>५</sup> तुम युवा लोग भी, वैसे ही, अपने प्राचीनों के  
अधीन रहो; और तुम सब, एक दूसरे के प्रति नम्रता से  
वस्त धारण करो, क्योंकि

“परमेश्वर अभिमानी का विरोध करता है, लेकिन नम्र  
को अनुग्रह देता है।”

<sup>६</sup> इसलिए, परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ के नीचे अपने  
आप को नम्र करो, ताकि वह उचित समय पर तुम्हें  
ऊँचा करे,<sup>७</sup> अपनी सारी चिंता उसी पर डाल दो, क्योंकि  
वह तुम्हारी चिंता करता है।<sup>८</sup> सतर्क रहो, सावधान रहो।  
तुम्हारा विरोधी, शैतान, गरजते हुए सिंह की तरह धूम्रता  
है, किसी को निगलने की खोज में।<sup>९</sup> इसलिए, उसे  
प्रतिरोध करो, अपने विश्वास में दृढ़ रहो, यह जानते हुए  
कि वही कष्टों का अनुभव तुम्हारे भाई-बहनों द्वारा  
दुनिया में किया जा रहा है।<sup>१०</sup> थोड़ी देर के लिए कष्ट  
सहने के बाद, सब अनुग्रह का परमेश्वर, जिसने तुम्हें  
मरींह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है, स्वयं  
तुम्हें सिद्ध, पुष्टि, सशक्त और स्थापित करेगा।<sup>११</sup> उसी  
को सदा-सर्वदा राज्य हो। आमीन।<sup>१२</sup> सिलवानुस के  
माध्यम से, हमारे विश्वासयोग्य भाई (जैसा कि मैं उसे  
मानता हूँ), मैंने तुम्हें संक्षेप में लिखा है, तुम्हें प्रोत्साहित  
करने और यह गवाही देने के लिए कि यह परमेश्वर का  
सच्चा अनुग्रह है। इसमें दृढ़ रहो!<sup>१३</sup> जो बाबूल मैं हूँ,  
तुम्हारे साथ चुनी गई हूँ, तुम्हें नमस्कार भेजती हूँ, और  
मेरा पुत्र, मरकुस भी।<sup>१४</sup> प्रेम के चुबन के साथ एक दूसरे  
का अभिवादन करो। तुम सबको जो मरीह में हो, शांति  
मिले।

## 2 पतरस

**1** शमौन पतरस, यीशु मसीह का दास और प्रेरित, उन लोगों के लिए जिन्होंने हमारे समान विश्वास प्राप्त किया है, हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा;<sup>2</sup> अनुग्रह और शक्ति तुम में परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु की जानकारी में बढ़ती जाए,<sup>3</sup> क्योंकि उसकी दिव्य शक्ति ने हमें जीवन और भक्ति से संबंधित सब कुछ प्रदान किया है, उसके सच्चे ज्ञान के माध्यम से जिसने हमें अपनी महिमा और उल्लङ्घन के द्वारा बुलाया है।<sup>4</sup> इनके माध्यम से उसने हमें अपने बहुमूल्य और महान वादे दिए हैं, ताकि उनके द्वारा तुम दिव्य प्रकृति के सहभागी बन सको, संसार में वासना के कारण जो भ्रष्टाचार है उससे बचकर।<sup>5</sup> अब इसी कारण से, सभी परिश्रम की लागू करते हुए, अपने विश्वास में नैतिक उल्लङ्घन जोड़ो, और अपनी नैतिक उल्लङ्घन में, ज्ञान,<sup>6</sup> और अपने ज्ञान में, आत्म-संयम, और अपने आत्म-संयम में, धैर्य, और अपने धैर्य में, भक्ति,<sup>7</sup> और अपनी भक्ति में, भाईचारे की दया, और अपने भाईचारे की दया में, प्रेम।<sup>8</sup> क्योंकि यदि ये गुण तुम्हारे हैं और बढ़ रहे हैं, तो वे तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के सच्चे ज्ञान में न तो बेकार और न ही अप्रभावी बनाते हैं।<sup>9</sup> क्योंकि जो इन गुणों की कमी में है वह अंधा या निकटदृष्टि है, अपने पूर्व पापों से शुद्धिकरण को भूल चुका है।<sup>10</sup> इसलिए, भाईयों और बहनों, उसके बुलाहट और चुनाव को सुनिश्चित करने के लिए और अधिक परिश्रम करो, क्योंकि जब तक तुम इन बातों का अभ्यास करते हो, तुम कभी ठोकर नहीं खा ओगे;<sup>11</sup> क्योंकि इस प्रकार हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में प्रवेश तुम्हारे लिए भरपूर रूप से प्रदान किया जाएगा।<sup>12</sup> इसलिए, मैं हमेशा तुम्हें इन बातों की याद दिलाने के लिए तैयार रहूंगा, भले ही तुम पहले से उत्तरे जानते हो, और उस सत्य में स्थापित हो जो तुम्हारे साथ है।<sup>13</sup> जब तक मैं इस सांसारिक निवास में हूँ, मैं तुम्हें याद दिलाने के माध्यम से उत्तेजित करना उचित समझता हूँ,<sup>14</sup> यह जानते हुए कि मेरे सांसारिक निवास को छोड़ने का समय निकट है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे सप्त किया है।<sup>15</sup> और मैं यह भी परिश्रम करूँगा कि मेरे प्रस्तावन के बाद किसी भी समय तुम इन बातों को याद कर सको।<sup>16</sup> क्योंकि जब हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और आगमन के बारे में बताया, तो हमने चतुराई से गढ़ी गई मिथकों का अनुसरण नहीं किया, बल्कि हम उसकी महिमा के प्रयोगक्षमदर्शी थे।<sup>17</sup> क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से समान और महिमा प्राप्त की, तो उसे इस प्रकार की घोषणा की गई: “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ”<sup>18</sup> और हमने स्वयं यह घोषणा स्वर्ग से सुनी जब हम उसके साथ पवित्र पर्वत पर थे।<sup>19</sup> और इसलिए

हमारे पास भविष्यवाणी का वचन और भी निश्चित है, जिस पर ध्यान देना तुम अच्छा करते हो जैसे एक अंधेरे थान में चमकने वाले दीपक पर, जब तक कि दिन न फूटे और तुम्हारे हृदयों में सुबह का तारा न उदय हो।<sup>20</sup> लेकिन सबसे पहले यह जान लो, कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने व्याख्या का विषय नहीं बनती,<sup>21</sup> क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी कभी भी मनुष्य की इच्छा के द्वारा नहीं की गई, बल्कि पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर मनुष्यों ने परमेश्वर की ओर से बोला।

**2** परन्तु इठे भविष्यद्वक्ता लोगों के बीच में प्रकट हुए, जैसे तुम्हारे बीच में भी इठे शिक्षक होंगे, जो गुप्त रूप से विनाशकारी विधर्मों को प्रवेश कराएँगे, यहाँ तक कि उस स्वामी का भी इनकार करेंगे जिसने उन्हें खरीदा, और अपने ऊपर शीघ्र विनाश लाएँगे।<sup>2</sup> बहुत से लोग उनकी अश्लील आचरण का अनुसरण करेंगे, और उनके कारण सत्य के मार्ग की निंदा की जाएगी;<sup>3</sup> और अपने लोभ में वे तुम्हें इठे शब्दों से शोषित करेंगे; उनका न्याय जो बहुत पहले से तय है, वह निकियंग नहीं है, और उनका विनाश सोया नहीं है।<sup>4</sup> क्योंकि यदि परमेश्वर ने स्वर्गद्वारों को नहीं बख्ता जब उत्सैने पाप किया, परन्तु उत्तेजना नरक में डाल दिया और अंधकार के गह्रों में न्याय के लिए रखा;<sup>5</sup> और प्राचीन संसार को नहीं बख्ता, परन्तु नूह को, जो धर्म का प्रचारक था, सात अन्य लोगों के साथ सुरक्षित रखा, जब उसने अधर्मी संसार पर जलप्रलय लाया;<sup>6</sup> और यदि उसने सदोम और अमोरा के नगरों को राख में बदलकर नष्ट कर दिया, उत्तेजनाधर्मी को लिए एक उदाहरण बना दिया जो आने वाला है;<sup>7</sup> और यदि उसने धर्मी लूट की बचाया, जो निर्दिष्टी लोगों की विकृत आचरण से पीड़ित था<sup>8</sup> (क्योंकि जो कुछ उसने देखा और सुना, उस धर्मी व्यक्ति ने, उनके बीच रहते हुए, अपने धर्मी आत्मा को उनके अधर्मी कर्मों से दिन-प्रतिदिन पीड़ित पाया),<sup>9</sup> तो प्रभु जानता है कि कैसे धर्मियों को परीक्षा से बचाना है, और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दंड के लिए रखना है,<sup>10</sup> और विशेष रूप से उन लोगों को जो भ्रष्ट वासना में शरीर का आनंद लेते हैं, और अधिकार का तिरस्कार करते हैं। निर्भीक, आस-केंद्रित, वे स्वर्गद्वारों की महिमा के बारे में अपमानजनक बातें बोलते हैं बिना कांपते हुए,<sup>11</sup> जबकि स्वर्गद्वार, जो शक्ति और सामर्थ्य में बड़े हैं, प्रभु के सामने उनके खिलाफ अपमानजनक निर्णय नहीं लाती।<sup>12</sup> परन्तु ये, बिना समझ के जानवरों की तरह, जो पकड़े जाने और मारे जाने के लिए पैदा हुए हैं, जिन बातों में वे अज्ञानी हैं, उनमें अपमानजनक बातें बोलते हैं, उन प्राणियों के विनाश में नष्ट हो जाएंगे,<sup>13</sup> गलत करने का वेतन भुगतते हुए। वे दिन में आनंद मनाने को सुख

## 2 पतरस

मानते हैं। वे धब्बे और कलंक हैं, जो तुम्हारे साथ भेज करते समय अपनी धोखाधड़ी में आनंदित होते हैं,<sup>14</sup> उनकी आँखें व्यभिचार से भरी हैं जो कभी पाप से नहीं रुकतीं, अस्थिर आत्माओं को फुसलाते हैं, उनके दिल लोभ में प्रशिक्षित हैं, श्रापित बच्चे;<sup>15</sup> सही मार्ग को छोड़कर, वे भटक गए हैं, बोर के पुत्र बिलाम के मार्ग का अनुसरण करते हुए, जिसने अधर्म का प्रतिफल प्रेम किया;<sup>16</sup> परन्तु उसने अपने अपराध के लिए फटकार पाई, क्योंकि एक ग्रूंगा गथ, मानव आवाज में बोलते हुए, भविष्यद्वक्ता की पाणलापन को रोक दिया।<sup>17</sup> ये बिना पानी के सोते हैं और तूफान से उड़ाए गए धूंध हैं, जिनके लिए काले अंधकार को सुरक्षित रखा गया है।<sup>18</sup> क्योंकि, जब वे अहंकारी और मूल्यहीन शब्द बोलते हैं, तो वे शरीर की इच्छाओं से, अश्लील आचरण से, उन लोगों को फुसलाते हैं जो गलती में जीने वालों से मुश्किल से बचते हैं,<sup>19</sup> उन्हें स्वतंत्रता का वादा करते हुए, जबकि वे स्थाय भृष्टाचार के दास हैं; क्योंकि जो कोई किसी से पराजित होता है, वह उसी का दास बन जाता है।<sup>20</sup> क्योंकि यदि, वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान के द्वारा संसार की अशुद्धियों से बच गए हैं, और पिर उनमें उलझ गए हैं और पराजित हो गए हैं, तो उनके लिए अंतिम अवस्था पहली से भी बदतर हो गई है।<sup>21</sup> क्योंकि उनके लिए यह बेहतर होता कि उन्होंने धर्म का मार्ग न जाना होता, बजाय इसके कि जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाएं जो उन्हें सौंपी गई थी।<sup>22</sup> उनके साथ सच्च कहावत के अनुसार हुआ है, "कुत्ता अपनी उल्टी की ओर लौटता है," और, "धोने के बाद सूअर कीचड़ में लौटता है!"

**3** प्रिय जनों, यह अब दूसरा पत्र है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जिसमें मैं तुम्हारे सच्चे मन को स्मरण दिलाकर जाग्रत कर रहा हूँ,<sup>2</sup> कि तुम पवित्र भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से कहे गए वरनों और तुम्हारे प्रेरितों द्वारा प्रभु और उद्धारकर्ता की आज्ञा को स्मरण करो।<sup>3</sup> सबसे पहले यह जान लो, कि अंतिम दिनों में ठाठा करने वाले आएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे,<sup>4</sup> और कहेंगे, "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ है?" क्योंकि जब से पिरूग्न सो गए हैं, सब कुछ उसी प्रकार बना हुआ है जैसा सहि के आरम्भ से था।<sup>5</sup> क्योंकि जब वे ऐसा कहते हैं, तो यह उनकी दृष्टि से छिपा रहता है कि परमेश्वर के वरचन द्वारा आकाश बहुत पहले से अस्तित्व में था और पृथ्वी जल से और जल के द्वारा बनी थी,<sup>6</sup> जिसके द्वारा उस समय की दुनिया जल से ढूबकर नष्ट हो गई थी।<sup>7</sup> परन्तु उसके वरचन द्वारा वर्तमान आकाश और पृथ्वी आग के लिए सुरक्षित रखे गए हैं, न्याय के दिन और अर्धमालोगों के विनाश के लिए रखे गए हैं।<sup>8</sup>

परन्तु प्रिय जनों, यह एक बात तुम्हारी दृष्टि से छिपी न रहे कि प्रभु के साथ एक दिन हजार वर्षों के समान है, और हजार वर्ष एक दिन के समान।<sup>9</sup> प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में धीमा नहीं है, जैसा कुछ लोग धीमा समझते हैं, परन्तु तुम्हारे प्रति धैर्य रखता है, यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु यह कि सब मन फिराव के लिए आए।<sup>10</sup> परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आएगा, जिसमें आकाश बड़ी धनि के साथ विलीन हो जाएंगे और तत्व प्रवंठ ताप से पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उसके कार्य प्रकट होंगे।<sup>11</sup> चूंकि ये सब चीजें इस प्रकार नष्ट होनी हैं, तो तुम्हें किस प्रकार के लोगों के रूप में पवित्र आचरण और भक्ति में होना चाहिए,<sup>12</sup> परमेश्वर के दिन की प्रतीक्षा करते हुए और उसके आगमन को शीघ्र लाने का प्रयास करते हुए, जिसके कारण आकाश आग से नष्ट हो जाएंगे और तत्व प्रवंठ ताप से पिघल जाएंगे।<sup>13</sup> परन्तु उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथ्वी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसमें धार्मिकता वास करती है।<sup>14</sup> इसलिए, प्रिय जनों, चूंकि तुम इन चीजों की प्रतीक्षा कर रहे हो, तो उसे निर्दोष और निर्द्वंद्व पाए जाने के लिए प्रयासरत रहो, शांति में,<sup>15</sup> और हमारे प्रभु के धैर्य को उद्धार समझो; जैसे हमारे प्रिय भाई पौत्रुस ने भी, उसे दी गई बुद्धि के अनुसार, तुम्हें लिखा है,<sup>16</sup> जैसा उसने अपनी सभी पत्रियों में भी लिखा है, जिनमें कुछ बातें कठिन हैं, जिन्हें अज्ञानी और अस्थिर लोग तोड़-मरोड़ कर समझते हैं, जैसे वे शास्त्रों के अन्य भागों को भी करते हैं, अपने ही विनाश के लिए।<sup>17</sup> इसलिए, प्रिय जनों, यह पहले से जानते हुए, सावधान रहो कि तुम तुष्ट लोगों की भूल में फंसकर अपनी दृढ़ता से न गिर जाओ,<sup>18</sup> परन्तु हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा हो, अब और अनन्त काल के दिन तक। आमीन।

## 1 यूहन्ना

**1** जो आदि से था, जिसे हमने सुना, जिसे अपनी आँखों से देखा, जिसे हमने ध्यानपूर्वक देखा और अपने हाथों से छुआ, वह जीवन का वचन है—<sup>2</sup> और वह जीवन प्रकट हुआ, और हमने देखा और गवाही दी और तुम्हें उस अनन्त जीवन का प्रचार किया, जो पिता के साथ था और हमारे लिए प्रकट हुआ—<sup>3</sup> जो हमने देखा और सुना, उसका प्रचार हम तुम्हें भी करते हैं, ताकि तुम भी हमारे साथ संगति में रहो, और वास्तव में हमारी संगति पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।<sup>4</sup> ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, ताकि हमारी खुशी पूरी हो सके।<sup>5</sup> यह वह संदेश है जो हमने उससे सुना और तुम्हें सुनाते हैं, कि परमेश्वर ज्योति है, और उसमें बिल्कुल भी अंधकार नहीं है।<sup>6</sup> यदि हम कहते हैं कि हम उसके साथ संगति में हैं और फिर भी अंधकार में चलते हैं, तो हम झूँ बोलते हैं और सत्य का पालन नहीं करते;<sup>7</sup> परंतु यहि हम ज्योति में चलते हैं जैसे वह स्वयं ज्योति में है, तो हम एक दूसरे के साथ संगति में हैं, और उसके पुत्र यीशु का लाहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।<sup>8</sup> यदि हम कहते हैं कि हमारे पास कोई पाप नहीं है, तो हम स्वयं को धोखा देते हैं और सत्य हमारे अंदर नहीं है।<sup>9</sup> यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह विश्वासयोग और धर्मी है, ताकि वह हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे।<sup>10</sup> यदि हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हमारे अंदर नहीं है।

**2** मेरे घरे बच्चों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। और यदि कोई पाप करता है, तो हमारे पास पिता के साथ एक मध्यस्थि है, जो धर्मी यीशु मसीह है;<sup>2</sup> और वही हमारे पापों के लिए प्रायश्चित्त है; और न केवल हमारे लिए, बल्कि पूरे संसार के पापों के लिए भी।<sup>3</sup> इसी से हम जानते हैं कि हम उसे जानते हैं, यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।<sup>4</sup> जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ,” और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं है;<sup>5</sup> परन्तु जो कोई उसके वचन का पालन करता है, उसमें परमेश्वर का प्रेम वास्तव में सिद्ध हो गया है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं;<sup>6</sup> जो कहता है कि वह उसमें बना रहता है, उसे भी उसी प्रकार चलाना चाहिए जैसे वह चलता।<sup>7</sup> प्रिय, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि एक पुरानी आज्ञा जो तुम्हारे पास आरंभ से थी; पुरानी आज्ञा वही वचन है जो तुमने सुना है।<sup>8</sup> दूसरी ओर, मैं तुम्हें एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुममें सत्य है, क्योंकि अंधकार दूर हो रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।<sup>9</sup> जो कहता है कि वह प्रकाश में है और फिर भी अपने भाई या बहन से बैर

करता है, वह अब तक अंधकार में है।<sup>10</sup> जो अपने भाई और बहन से प्रेम करता है, वह प्रकाश में बना रहता है, और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं है।<sup>11</sup> परन्तु जो अपने भाई या बहन से बैर करता है, वह अंधकार में है और अंधकार में चलता है, और नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।

<sup>12</sup> मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, घरे बच्चों, क्योंकि तुम्हारे पाप उसके नाम के कारण क्षमा कर दिए गए हैं।<sup>13</sup> मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, पिताओं, क्योंकि तुम उसे जानते हो मौजों आरंभ से है। मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जवानों, क्योंकि तुमने उस दृष्टि को जीत लिया है। मैंने तुम्हें लिखा है, जवानों, क्योंकि तुमने उस दृष्टि को जीत लिया है।<sup>14</sup> मैंने तुम्हें लिखा है, बच्चों, क्योंकि तुम पिता को जानते हो। मैंने तुम्हें लिखा है, पिताओं, क्योंकि तुम उसे जानते हो जो आरंभ से है। मैंने तुम्हें लिखा है, जवानों, क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुमने उस दृष्टि को जीत लिया है।

<sup>15</sup> संसार से या संसार की वस्तुओं से प्रेम मत करो। यदि कोई संसार से प्रेम करता है, तो पिता का प्रेम उसमें नहीं है।<sup>16</sup> क्योंकि जो कुछ संसार में है, शरीर की वासना, आँखों की वासना, और जीवन का घंटंड, वह पिता से नहीं, परन्तु संसार से है।<sup>17</sup> संसार और उसकी वासनाएँ समाप्त हो रही हैं, परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह सदा के लिए बना रहता है।<sup>18</sup> बच्चों, यह अंतिम समय है, और जैसे तुमने सुना है कि मसीह-विरोधी आ रहा है, तैसे ही अब भी बहुत से मसीह-विरोधी प्रकट हो गए हैं, इससे हम जानते हैं कि यह अंतिम समय है।<sup>19</sup> वे हम में से निकले, परन्तु वास्तव में हमारे नहीं थे; क्योंकि यदि वे हमारे होते, तो हमारे साथ बने रहते; परन्तु वे निकले, ताकि यह प्रकट हो कि वे सब हमारे नहीं हैं।<sup>20</sup> परन्तु तुम्हारे पास पवित्र से अभिषेक है, और तुम सब जानते हो।<sup>21</sup> मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झूठ सत्य से नहीं है।<sup>22</sup> झूठा कौन है, सिवाय उसके जो यह इनकार करता है कि यीशु मसीह है? यह मसीह-विरोधी है, जो पिता और पुत्र का इनकार करता है।<sup>23</sup> जो कोई पुत्र का इनकार करता है, उसके पास पिता भी नहीं है; जो पुत्र को स्वीकार करता है, उसके पास पिता भी है।<sup>24</sup> तुम्हारे लिए, देखो कि जो तुमने आरंभ से सुना है वह तुम में बना रहे। यदि जो तुमने आरंभ से सुना है वह तुम में बना रहता है, तो तुम भी पुत्र और पिता में बना रहता है, तो तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे।<sup>25</sup> यह वही वादा है जो उसने हमें किया: अनन्त जीवन।<sup>26</sup> ये

# 1 यूहन्ना

बातें मैंने तुम्हें उन लोगों के विषय में लिखी हैं जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं।<sup>27</sup> तुम्हारे लिए, वह अधिष्ठक जो तुमने उससे प्राप्त किया है, वह तुम में बना रहता है, और तुम्हें किसी के सिखाने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु जैसा उसका अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है, और वह सत्य है और झूँठ नहीं है, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो।<sup>28</sup> अब, यदि बच्चों, उसमें बने रहो, ताकि जब वह प्रकट हो, तो हम में आत्मविश्वास हो और उसके आने पर हम उससे लजित होकर पीछे न हटें।<sup>29</sup> यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम जानते हो कि जो कोई धर्म का अध्यास करता है, वह भी उससे जन्मा है।

**3** देखो, पिता ने हमसे कैसा महान प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर के बच्चे कहलाएँ; और वास्तव में हम हैं। इसी कारण संसार हमें नहीं जानता; क्योंकि उसने उसे नहीं जाना।<sup>2</sup> प्रिय जनों, अब हम परमेश्वर के बच्चे हैं, और यह अभी प्रकट नहीं हुआ है कि हम क्या होंगे। हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसे वैसे ही देखेंगे जैसे वह है।<sup>3</sup> और जो कोई इस आशा को उस पर रखता है, वह अपने आप को शुद्ध करता है, जैसे वह शुद्ध है।<sup>4</sup> जो कोई पाप करता है, वह अधर्म भी करता है; और पाप अधर्म है।<sup>5</sup> तुम जानते हो कि वह पापों को दूर करने के लिए प्रकट हुआ; और उसमें कोई पाप नहीं है।<sup>6</sup> जो कोई उसमें बना रहता है, वह निरंतर पाप नहीं करता; जो कोई निरंतर पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न उसे जाना है।<sup>7</sup> हे बालकों, सावधान रहो कि कोई तुम्हें धोखा न दें; जो कोई धर्म का आचरण करता है, वह धर्मी है, जैसे वह धर्मी है;<sup>8</sup> जो कोई पाप करता है, वह शैतान का है; क्योंकि शैतान आरंभ से पाप करता वाया है। परमेश्वर का पुत्र इसी उद्देश्य के लिए प्रकट हुआ, कि वह शैतान के कार्यों को नष्ट करे।<sup>9</sup> जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह निरंतर पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।<sup>10</sup> इसी से परमेश्वर के बच्चे और शैतान के बच्चे प्रकट होते हैं; जो कोई धर्म का आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है, और न वह जो अपने भाई या बहन से प्रेम नहीं करता।<sup>11</sup> क्योंकि यह वही सदेश है जो तुमने आरंभ से सुना है, कि हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए;<sup>12</sup> कैइन के समान नहीं, जो उस दुष्ट का था और जिसने अपने भाई की हत्या की। और उसने उसकी हत्या क्यों की? क्योंकि उसके काम बुरे थे, परन्तु उसके भाई के धर्मी थे।<sup>13</sup> भाइयों और बहनों, यदि संसार तुमसे बैर करता है, तो आश्रय मत करो।<sup>14</sup> हम जानते हैं कि हम

मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुके हैं, क्योंकि हम भाइयों और बहनों से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में बना रहता है।<sup>15</sup> जो कोई अपने भाई या बहन से बैर करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं रहता।<sup>16</sup> हम इसी से प्रेम को जानते हैं, कि उसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया; और हमें भी भाइयों और बहनों के लिए अपना जीवन देना चाहिए।<sup>17</sup> परन्तु जो कोई सांसारिक संपत्ति रखता है और अपने भाई या बहन को आवश्यकता में देखता है, और अपने हृदय को उसके प्रति बंद कर लेता है, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रहता है?<sup>18</sup> हे बालकों, हम शब्द या जीभ से नहीं, बल्कि कर्म और सत्य से प्रेम करें।<sup>19</sup> हम इसी से जानों कि हम सत्य के हैं, और उसके सामने अपने हृदय को शांत करें,<sup>20</sup> कि यदि हमारा हृदय हमें दोषी ठहराता है, तो परमेश्वर हमारे हृदय से बड़ा है, और वह सब कुछ जानता है।<sup>21</sup> प्रिय जनों, यदि हमारा हृदय हमें दोषी नहीं ठहराता, तो हमारे पास परमेश्वर के सामने विश्वास है;<sup>22</sup> और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हम उससे प्राप्त करते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उसकी दृष्टि में प्रसन्न करने वाले कार्य करते हैं।<sup>23</sup> यह उसकी आज्ञा है, कि हम उसके पुत्र धीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें, और एक दूसरे से प्रेम करें, जैसा उसने हमें आज्ञा दी है।<sup>24</sup> जो कोई उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह उसमें बना रहता है, और वह उसमें। हम इसी से जानते हैं कि वह हम में बना रहता है, उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दिया है।

**4** प्रिय जनों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता संसार में निकल गए हैं।<sup>2</sup> इससे तुम परमेश्वर की आत्मा को जान सकते हो; हर वह आत्मा जो यह स्वीकार करती है कि पीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से है;<sup>3</sup> और हर वह आत्मा जो धीशु का स्वीकार नहीं करती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना है कि वह आ रही है, और अब वह पहले से ही संसार में है।<sup>4</sup> तुम परमेश्वर की ओर से हो, हे बालकों, और तुमने उन्हें जीत लिया है; क्योंकि जो तुम में है वह उससे बड़ा है जो संसार में है।<sup>5</sup> वे संसार की ओर से हैं; इसलिए वे संसार के अनुसार बोलते हैं, और संसार उनकी सुनता है।<sup>6</sup> हम परमेश्वर की ओर से हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, वह हमारी नहीं सुनता है। इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को जानते हैं।<sup>7</sup> प्रिय जनों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम

## 1 यूहन्ना

करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से है; और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।<sup>8</sup> जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।<sup>9</sup> इससे परमेश्वर का प्रेम हम में प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलाते पुत्र को संसार में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जीवित रहें।<sup>10</sup> प्रेम इसमें है, न कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को प्रायश्चित्त के रूप में भेजा।<sup>11</sup> प्रिय जनों, यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।<sup>12</sup> किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; यदि हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है।<sup>13</sup> इससे हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में, क्योंकि उसने हमें अपनी आसा दी है।<sup>14</sup> हमने देखा है और गवाही दी है कि पिता ने पुत्र को संसार का उद्धारकर्ता बनाकर भेजा है।<sup>15</sup> जो कोई यह स्वीकार करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में।<sup>16</sup> हमने उस प्रेम को जान लिया है और उस पर विश्वास किया है जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें।<sup>17</sup> इससे प्रेम हम में सिद्ध होता है, ताकि हम न्याय के दिन में साहस कर सकें, क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं।<sup>18</sup> प्रेम में कोई भय नहीं होता, परन्तु सिद्ध प्रेम भय को बाहर निकाल देता है, क्योंकि भय में दण्ड होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।<sup>19</sup> हम प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया।<sup>20</sup> यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ," और फिर भी अपने भाई या बहन से बैर करता है, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने देखे हुए भाई या बहन से प्रेम नहीं करता, वह उस परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता, जिसे उसने नहीं देखा।<sup>21</sup> और यह आज्ञा हमें उससे मिली है, कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने भाई और बहन से भी प्रेम करे।

**5** हर कोई जो यह मानता है कि यीशु मसीह है, परमेश्वर से जन्मा है, और जो कोई पिता से प्रेम करता है, वह उसके संतान से भी प्रेम करता है।<sup>2</sup> इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतान से प्रेम करते हैं: जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।<sup>3</sup> क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यही है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं।<sup>4</sup> क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और यह वह विजय है

जिसने संसार पर जय प्राप्त की है: हमारा विश्वास।<sup>5</sup> वह कौन है जो संसार पर जय प्राप्त करता है, सिवाय उसके जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?<sup>6</sup> यह वही है जो जल और रक्त के द्वारा आया, यीशु मसीह; केवल जल के साथ नहीं, बल्कि जल और रक्त के साथ। यह आत्मा है जो गवाही देता है, क्योंकि आत्मा सत्य है।<sup>7</sup> क्योंकि तीन हैं जो गवाही देते हैं: आत्मा, जल, और रक्त; और ये तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।<sup>8</sup> यदि हम मरुषों की गवाही को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की गवाही बड़ी है; क्योंकि परमेश्वर की गवाही यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है।<sup>10</sup> जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके भीतर गवाही है, जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने उसे झूटा ठहराया है, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।<sup>11</sup> और गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है।<sup>12</sup> जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है उसके पास जीवन नहीं है।<sup>13</sup> ये बात मैंने तुम्हें लिखी हैं जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है।<sup>14</sup> यह वह विश्वास है जो हमारे पास उसके सामने है, कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।<sup>15</sup> और यदि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है जो कुछ भी हम मांगते हैं, तो हम जानते हैं कि हमारे पास वे अनुरोध हैं जो हमने उससे मांगे हैं।<sup>16</sup> यदि कोई अपने भाई या बहन को ऐसा पाप करते देखता है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता, तो वह प्रार्थना करे और परमेश्वर उसे जीवन देगा, उन लोगों के लिए जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाने वाला पाप करते हैं। मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप है; मैं यह नहीं कह रहा कि वह उसके लिए प्रार्थना करे।<sup>17</sup> सभी अपर्याप्त पाप हैं, और ऐसा पाप है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता।<sup>18</sup> हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह निरंतर पाप नहीं करता; बल्कि वह जो परमेश्वर से जन्मा है उसे सुरक्षित रखता है, और दुष्ट उसे झूटा नहीं है।<sup>19</sup> हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, और कि सारी दुनिया दुष्ट के अधीन है।<sup>20</sup> और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है, और उसने हमें समझ दी है ताकि हम उसे जान सकें जो सत्य है; और हम उसमें हैं जो सत्य है, उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है।<sup>21</sup> हे बालकों, अपने आप को मूर्तियों से बचाए रखो।

## 2 यूहन्ना

**1** प्राचीन, चुनी हुई श्रीमती और उसके बच्चों के नाम, जिन्हें मैं सत्य में प्रेम करता हूँ; और न केवल मैं, बल्कि वे सब भी जो सत्य को जानते हैं, <sup>2</sup> क्योंकि वह सत्य जो हम में बना रहता है और सदा हमारे साथ रहेगा: <sup>3</sup> अनुग्रह, दया, और शांति हमारे साथ रहेगी परमेश्वर पिता से और पिता के पुत्र यीशु मसीह से, सत्य और प्रेम में। <sup>4</sup> मैं बहुत आनन्दित हुआ कि मैंने आपके कुछ बच्चों को सत्य में चलते हुए पाया, जैसा कि हमें पिता से आज्ञा मिली है। <sup>5</sup> अब मैं आपसे निवेदन करता हूँ, श्रीमती, ऐसा नहीं कि मैं आपको कोई नई आज्ञा लिख रहा हूँ, बल्कि वह जो हमारे पास आरंभ से है, कि हम एक-दूसरे से प्रेम करें। <sup>6</sup> और यह प्रेम है, कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें। यह वही आज्ञा है, जैसा कि आपने आरंभ से सुना है, कि आपको इसमें चलना चाहिए। <sup>7</sup> क्योंकि बहुत से धोखेबाज संसार में निकल गए हैं, जो यह स्वीकार नहीं करते कि यीशु मसीह शरीर में आया है। यह धोखेबाज और मसीह-विरोधी है। <sup>8</sup> अपने आप पर ध्यान दें, ताकि आप वह न खो दें जो हमने प्राप्त किया है, बल्कि आप पूर्ण प्रतिफल प्राप्त कर सकें। <sup>9</sup> जो कोई बहुत आगे बढ़ जाता है और मसीह की शिक्षा में नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं है; जो शिक्षा में रहता है उसके पास पिता और पुत्र दोनों हैं। <sup>10</sup> यदि कोई आपके पास आता है और यह शिक्षा नहीं लाता, तो उसे अपने घर में न लें, और न ही उसे अभिवादन दें; <sup>11</sup> क्योंकि जो उसे अभिवादन देता है वह उसके बुरे कार्यों में सहभागी होता है। <sup>12</sup> हालांकि मेरे पास आपको लिखने के लिए बहुत सी बातें हैं, मैं उन्हें कागज और स्थाही से नहीं करना चाहता; बल्कि मैं आशा करता हूँ कि आपके पास आंकड़ और आपने-सामने बात करें, ताकि आपका आनन्द पूर्ण हो सके। <sup>13</sup> आपकी चुनी हुई बहन के बच्चे आपको नमस्कार करते हैं।

### ३ यूहन्ना

**१** प्राचीन की ओर से, प्रिय गयुस के नाम, जिसे मैं सच्चाई में प्रेम करता हूँ। <sup>२</sup> प्रिय, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हर प्रकार से तुम समृद्ध हो और अच्छे स्वास्थ्य में रहो, जैसे तुम्हारी आत्मा समृद्ध है। <sup>३</sup> क्योंकि मैं अत्यंत आनन्दित हुआ जब भाइयों ने आकर तुम्हारी सच्चाई की गवाही दी, अर्थात् तुम सच्चाई में कैसे चलते हो। <sup>४</sup> मुझे इससे अधिक कोई आनन्द नहीं है कि मैं अपने बच्चों को सच्चाई में चलते हुए सुनूँ। <sup>५</sup> प्रिय, तुम जो कुछ भी भाइयों और बहनों के लिए करते हो, उसमें विश्वासयोग्य हो, विशेष रूप से जब वे अजनबी होते हैं, <sup>६</sup> और उन्होंने कलीसिया के सामने तुम्हरे प्रेम की गवाही दी है। तुम उन्हें इस प्रकार विदा करोगे जो परमेश्वर के योग्य है। <sup>७</sup> क्योंकि वे नाम के लिए निकले हैं, अन्यजातियों से कुछ भी स्वीकार नहीं करते। <sup>८</sup> इसलिए, हमें ऐसे लोगों का समर्थन करना चाहिए, ताकि हम सच्चाई के सहकर्मी साक्षित हो सकें। <sup>९</sup> मैंने कलीसिया को कुछ लिखा; परंतु दियोत्रेफेस, जो उनमें पहले स्थान पर रहना पसंद करता है, हमारे कहे को स्वीकार नहीं करता। <sup>१०</sup> इस कारण, यदि मैं आऊं, तो मैं उसके उन कामों का उल्लेख करूँगा जो वह करता है, हमें बुरी बातों के साथ अनुचित रूप से आरोपित करता है; और इससे संतुष्ट न होकर, वह स्वयं भाइयों को भी स्वीकार नहीं करता, और जो ऐसा करना चाहते हैं उन्हें मना करता है और उन्हें कलीसिया से बाहर निकालता है। <sup>११</sup> प्रिय, जो बुरा है उसकी नकल मत करो, परंतु जो अच्छा है उसका करो। जो अच्छा करता है वह परमेश्वर का है; जो बुरा करता है उसने परमेश्वर को नहीं देखा है। <sup>१२</sup> देमेत्रियुस को सब से, और स्वयं सच्चाई से अच्छी गवाही मिली है; और हम अपनी गवाही भी जोड़ते हैं, और तुम जानते हो कि हमारी गवाही सत्य है। <sup>१३</sup> मेरे पास तुम्हें लिखने के लिए बहुत सी बातें थीं, परंतु मैं कलम और स्पाही से तुम्हें लिखना नहीं चाहता; <sup>१४</sup> परंतु मुझे आशा है कि शीघ्र ही तुम्हें देखूँगा, और हम आमने-सामने बातें करेंगे। <sup>१५</sup> तुम्हें शांति मिले। मित्र तुम्हें नमस्ते कहते हैं। मित्रों को नाम लेकर नमस्ते कहना।

## यहूदा

**१** यहूदा, यीशु मसीह का सेवक और याकूब का भाई, उनके लिए जो बुलाए गए हैं, परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिए सुरक्षित रखे गए हैं।<sup>२</sup> दया, शांति, और प्रेम तुम्हारे लिए बढ़ते रहें।<sup>३</sup> प्रिय जनों, जब मैं तुम्हें हमारे सामान्य उद्धार के विषय में लिखने का हर संभव प्रयास कर रहा था, तो मुझे यह आवश्यक लगा कि मैं तुम्हें लिखूँ, और आग्रह करूँ कि तुम उस विश्वास के लिए गंभीरता से संघर्ष करो जो संतों को एक बार हमेशा के लिए सौंपा गया था।<sup>४</sup> क्योंकि कुछ लोग बिना ध्यान दिए छुए आए हैं, जो पहले से ही इस दंड के लिए चिह्नित किए गए थे, अधर्मी लोग जो हमारे परमेश्वर की कृपा को अश्लील व्यवहार में बदलते हैं और हमारे एकमात्र स्थामी और प्रभु, यीशु मसीह का इनकार करते हैं।<sup>५</sup> अब मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ, यद्यपि तुम सब कुछ एक बार और हमेशा के लिए जानते हो, कि प्रभु, मिस देश से लोगों को बचाने के बाद, बाद में उन लोगों को नष्ट कर दिया जिन्होंने विश्वास नहीं किया।<sup>६</sup> और स्वर्गदूत जिन्होंने अपनी सीमा में नहीं रहे बल्कि अपने उचित निवास स्थान को छोड़ दिया, उर्वे उसने महान दिन के न्याय के लिए अंधकार में अनन्त बंधनों में रखा है।<sup>७</sup> जैसे कि सदोम और अमोरा और उनके आस-पास के नगर, जिन्होंने इन स्वर्गदूतों की तरह ही यौन विकृति में लिप्त होकर अजीब मास का पीछा किया, अनन्त अशि के दंड को सहते हुए एक उदाहरण के रूप में प्रदर्शित किए गए हैं।<sup>८</sup> किर भी इसी तरह ये लोग भी, स्वप्न देखते हुए, शरीर को दूषित करते हैं, अधिकार को अस्वीकार करते हैं, और स्वर्गदूतों की महिमा के विरुद्ध अपमानजनक बातें करते हैं।<sup>९</sup> परंतु महादूत मीकाएल, जब वह शैतान के साथ विवाद कर रहा था और मूरा के शरीर के विषय में बहस कर रहा था, तो उसने उसके विरुद्ध अपमानजनक निर्णय देने का साहस नहीं किया, बल्कि कहा, "प्रभु तुझे डांटो!"<sup>१०</sup> लेकिन ये लोग उन सभी बातों को तुच्छ समझते हैं जिन्हें वे नहीं समझते, और उन सभी बातों को जो वे स्वाभाविक रूप से जानते हैं, बिना समझ वाले पशुओं की तरह—इन बातों से वे नष्ट हो जाते हैं।<sup>११</sup> उन पर हाय! क्योंकि वे कैन के मार्ग पर चले गए हैं, और वेतन के लिए बालाम की गलती में पड़ गए हैं, और कोरह के विद्रोह में नष्ट हो गए हैं।<sup>१२</sup> ये वे हैं जो तुम्हारे प्रेम भोजों में छिपे हुए चट्टानें हैं जब वे तुम्हारे साथ बिना डर के भोज करते हैं, जैसे चरवाहे जो केवल अपने लिए देखभाल करते हैं, बिना पानी के बादल, जो हवाओं द्वारा इधर-उधर उड़ाए जाते हैं; पतझड़ के पेड़ बिना फल के, दो बार मरे हुए, उखाङ्गे गए;<sup>१३</sup> समुद्र की जंगली लहरें, अपनी ही लज्जा को फेन की तरह उछालती हैं; भटकते हुए तारे, जिनके लिए अनन्त अंधकार सुरक्षित रखा गया है।<sup>१४</sup> यह भी उन्हीं लोगों के

बारे में था कि हनोक, जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, ने भविष्यवाणी की थी, "देखो, प्रभु अपने हजारों पवित्र जनों के साथ आया है,<sup>१५</sup> सभी पर न्याय करने के लिए, और सभी अधर्मी लोगों को उनके सभी अधर्मी कार्यों के लिए दोषी ठहराने के लिए जो उहोंने अधर्मी तरीके से किए हैं, और उन सभी कठोर बातों के लिए जो अधर्मी पापियों ने उसके विरुद्ध कहीं हैं।"<sup>१६</sup> ये लोग कुँडकड़ाने वाले हैं, दोष ढूँढ़ने वाले, अपनी ही इच्छाओं के पीछे चलने वाले; वे घमंड से बोलते हैं, लाभ के लिए लोगों की चापलसी करते हैं।<sup>१७</sup> परंतु तुम, प्रिय जनों, उन शब्दों को याद रखो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा पहले से कहे गए थे,<sup>१८</sup> कि वे तुमसे कहते थे, "अंतिम समय में उपहास करने वाले होंगे, जो अपनी अधर्मी इच्छाओं के पीछे चलेंगे।"<sup>१९</sup> ये वे हैं जो विभाजन उत्पन्न करते हैं, सांसारिक मन बाले, आत्मा से रहित।<sup>२०</sup> परंतु तुम, प्रिय जनों, अपनी परम पवित्र विश्वास पर अपने आप को निर्माण करते हुए, पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,<sup>२१</sup> अनन्त आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो, हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की प्रतीक्षा करते हुए अनन्त जीवन के लिए।<sup>२२</sup> और कुछ पर दया करो, जो सदेह में हैं;<sup>२३</sup> दूसरों को बचाओ, उहों आग से खींचते हुए; और कुछ पर भय के साथ दया करो, यहां तक कि मास से दूषित वस्त्र से भी धृणा करते हुए।<sup>२४</sup> अब उसे जो तुम्हें ठोकर खाने से बचाने में सक्षम है, और अपनी महिमा की उपरिक्षिति में तुम्हें निर्दोष और महान आनंद के साथ खड़ा करने में सक्षम है,<sup>२५</sup> केवल परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता के लिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से, महिमा, महत्ता, प्रभुत्व, और अधिकार, सभी समय से पहले और अब और हमेशा के लिए। आमीन।

## प्रकाशितवाक्य

**1** यीशु मसीह का प्रकाशन, जो परमेश्वर ने उसे दिया कि वह अपने दासों को वे बातें दिखाएं जो शीघ्र ही होने वाली हैं; और उसने अपने दास यूहन्ना के पास अपने स्वर्गद्वार के द्वारा इसे भेजा और प्रकट किया।<sup>2</sup> जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही की, अर्थात् जो कुछ उसने देखा, उसकी गवाही दी।<sup>3</sup> यथ्य है वह जो पढ़ता है और वे जो इस भविष्यताणी के वचन को सुनते हैं और जो कुछ इसमें लिखा है, उसे मानते हैं: क्योंकि समय निकट है।<sup>4</sup> यूहन्ना की ओर से एशिया की सात कलीसियाँ जो: तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले उससे जो है, और जो था, और जो आने वाला है, और उसके सिंहासन के सामने के सात आत्माओं से,<sup>5</sup> और यीशु मसीह से, जो विश्वसयोग गवाह है, मरे हुओं में से प्रथम जन्मा है, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है। उसे जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें हमारे पायों से मुक्त किया—<sup>6</sup> और जिसने हमें एक राज्य बनाया, अपने परमेश्वर और पिता के लिए याजक—उसे महिमा और अधिकार सदा-सर्वदा के लिए हो। आमीन।

<sup>7</sup> देखो, वह बादलों के साथ आ रहा है, और हर आंख उसे देखी, यहां तक कि जिन्होंने उसे बेधा था; और पृथ्वी के सभी कुल उसके कारण विलाप करेगे। ऐसा ही होगा। आमीन।

<sup>8</sup> “मैं अत्का और ओमेगा हूं,” प्रभु परमेश्वर कहता है, “जो है, और जो था, और जो आने वाला है, सर्वशक्तिमान।”<sup>9</sup> मैं, यूहन्ना, तुम्हारा भाई और यीशु में क्लेश और राज्य और धैर्य में सहभागी, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पठमोस नामक द्वीप पर था।<sup>10</sup> मैं प्रभु के दिन आत्मा में था, और मैंने अपने पीछे तुरही की धनि जैसी एक ऊँची आवाज सुनी,<sup>11</sup> जो कह रही थी, “जो कुछ तू देखता है, उसे एक पुस्तक में लिख और उसे सात कलीसियाँ जो भेज, इफिसुस, सुन्ना, पर्मुम, धुआतीरा, सार्दिस, फिलाडेलिया, और लौदीकिया।”<sup>12</sup> तब मैंने उस आवाज को देखने के लिए मुझसे बोल रही थी। और जब मैं मुड़ा, तो मैंने सात सोने के दीपदान देखे;<sup>13</sup> और दीपदानों के बीच मैं मैंने मनुष्य के पुरु के समान एक को देखा, जो पैरों तक पहुंचने वाले वस्त्र में लिपटा हुआ था, और छाती के चारों ओर सोने की पट्टी थी।<sup>14</sup> उसका सिर और उसके बाल ऊन की तरह सफेद थे, जैसे बर्फ; और उसकी ऊँचें आग की ज्वाला के समान थीं।<sup>15</sup> उसके पैर भट्टी में तपाए हुए कांसे के समान थे, और उसकी आवाज बहुत से जल की धनि के समान थी।<sup>16</sup> उसके दाहिने हाथ में सात तरे थे, और उसके मुह से दोधारी तेज ललाच निकल रही

थी; और उसका चेहरा अपनी शक्ति में चमकते सूर्य के समान था।<sup>17</sup> जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर मृतक के समान गिर पड़ा। और उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखा, यह कहते हुए, “मत डर; मैं प्रथम और अंतिम हूं,<sup>18</sup> और जीवित हूं; और मैं मर गया था, और देखो, मैं सदा सर्वदा के लिए जीवित हूं, और मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं।<sup>19</sup> इसलिए, जो बातें तूने देखी हैं, और जो हैं, और जो इन बातों के बाद घटित होंगी, उन्हें लिखा।<sup>20</sup> जो सात तरे तूने मेरे दाहिने हाथ में देखे, और जो सात सोने के दीपदान हैं, उनका रहस्य यह है: सात तरे सात कलीसियाँ जो के स्वर्गद्वार हैं, और सात दीपदान सात कलीसियाँ हैं।

**2** “इफिसुस की कलीसिया के द्रूत को लिखो: जो अपने दाहिने हाथ में सात सितारे रखता है, जो सात सुनहरे दीपदानों के बीच चलता है, वह यह कहता है: <sup>2</sup> मैं तुम्हारे कामों और तुम्हारी मेहनत और धैर्य को जानता हूं, और यह कि तुम बुरे लोगों को सहन नहीं कर सकते, और तुमने उन लोगों को परखा है जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और वे नहीं हैं, और तुमने उन्हें झटा पाया हो; <sup>3</sup> और तुम्हारे पास धैर्य है और तुमने मेरे नाम के कारण सहन किया है, और थके नहीं हो। <sup>4</sup> परन्तु मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है, कि तुमने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया है। <sup>5</sup> इसलिए, स्मरण करो कि तुम कहाँ से गिर गए हो, और पक्षाताप करो, और पहले के काम करो: नहीं तो मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हारे दीपदान को उसकी जगह से हटा दूँगा—यदि तुम पश्चाताप नहीं करते। <sup>6</sup> परन्तु तुम्हारे पास यह है, कि तुम निकोलाइयों के कामों से घृणा करते हो, जिससे मैं भी घृणा करता हूं। <sup>7</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाँ जो क्या कहता है। जो विजयी होगा, उसे मैं जीवन के वृक्ष से खाने का अधिकार दूँगा, जो परमेश्वर के सर्वांग में है।<sup>8</sup> और सुन्ना की कलीसिया के द्रूत को लिखो: पहला और अंतिम, जो मरा था, और जीवित हो गया, वह यह कहता है: <sup>9</sup> मैं तुम्हारी क्लेश और तुम्हारी गरीबी को जानता हूं—परन्तु तुम धनी हो—और उन लोगों की निंदा को भी जो यहदी कहते हैं, और नहीं हैं, परन्तु शैतान की सभा है। <sup>10</sup> तुम मत डरो जो तुम सहने वाले हो। देखो, शैतान तुम में से कुछ को जेल में डालने वाला है, ताकि तुम परखा जाओ, और तुम दस दिन तक क्लेश में रहोगे। मृत्यु तक विश्वसयोग रहे, और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूँगा। <sup>11</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाँ जो क्या कहता है। जो विजयी होगा, उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं होगी।<sup>12</sup> और पर्मुम की कलीसिया के द्रूत को लिखो: जिसके पास तीखी दोधारी तलवार है, वह यह कहता है:

## प्रकाशितवाक्य

<sup>13</sup> मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ रहते हो, जहाँ शैतान का सिंहासन है; और तुम मेरे नाम को दृढ़ता से पकड़े हुए हो, और मेरे विश्वास का इन्कार नहीं किया, यहाँ तक कि उन दिनों में भी जब मेरा साक्षी, मेरा विश्वासयोग्य

अंतीपास, तुम्हारे बीच मारा गया, जहाँ शैतान रहता है।

<sup>14</sup> परन्तु मुझे तुम्हारे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तुम्हारे पास कुछ ऐसे हैं जो बालाम की शिक्षा को पकड़े हुए हैं, जिसने बालाक को इसाएल के पुत्रों के सामने ठोकर का कारण रखने की शिक्षा दी, कि वे मूर्तियों को बलि की गई वस्तुएँ खाएँ और व्यभिचार करें। <sup>15</sup> इसी प्रकार तुम्हारे पास भी कुछ ऐसे हैं जो निकोलाइयों की शिक्षा को पकड़े हुए हैं। <sup>16</sup> इसलिए पश्चाताप करो; नहीं तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र आऊँगा, और अपने मुँह की तलवार से उनके विरुद्ध युद्ध करूँगा। <sup>17</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो विजयी होगा, उसे मैं छिपा हुआ मना दूँगा, और उसे एक सफेद पश्यर दूँगा, और उस पश्यर पर एक नाम नाम लिखा होगा जिसे कोई नहीं जानता सिवाय उसके जो उसे प्राप्त करता है। <sup>18</sup> और थुआतीरा की कलीसिया के द्रूत को लिखो: परमेश्वर का पुत्र, जिसकी अँखें आग की ज्वाला जैसी हैं, और जिसके पैर चमकते पीतल जैसे हैं, वह यह कहता है: <sup>19</sup> मैं तुम्हारे कामों, और तुम्हारे प्रेम और विश्वास, और सेवा और धैर्य को जानता हूँ, और यह कि तुम्हारे हाल के काम पहले से अधिक हैं। <sup>20</sup> परन्तु मुझे तुम्हारे विरुद्ध यह कहना है, कि तुम उस स्त्री ईजेबेल को सहन करते हो, जो अपने आप को भविष्यद्वक्ती कहती है, और वह मेरी दासियों को व्यभिचार करने और मूर्तियों को बलि की गई वस्तुएँ खाने के लिए बहकाती है। <sup>21</sup> मैंने उसे पश्चाताप करने का समय दिया, और वह अपने व्यभिचार से पश्चाताप करना नहीं चाहती। <sup>22</sup> देखो, मैं उसे रोग के बिस्तर पर डालूँगा, और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं उन्हें बड़ी क्लेश में डालूँगा, यदि वे उसके कामों से पश्चाताप नहीं करते। <sup>23</sup> और मैं उसके बच्चों की मृत्यु से मारूँगा, और सभी कलीसियाएँ जानेंगी कि मैं वही हूँ जो मन और हृदय की खोज करता हूँ, और मैं तुम में से प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार ढूँगा। <sup>24</sup> परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो थुआतीरा में बाकी है, जो इस शिक्षा को नहीं पकड़े हैं, जिन्होंने शैतान की गहरी बातों को नहीं जाना है, जैसा कि वे कहते हैं—मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं डालता। <sup>25</sup> फिर भी, जो तुम्हारे पास है, उसे तब तक दृढ़ता से पकड़े रहो जब तक मैं आऊँ। <sup>26</sup> जो विजयी होगा, और जो अंत तक मेरे कामों को बनाए रखेगा, उसे मैं राश्ट्रों पर अधिकार दूँगा; <sup>27</sup> और वह उन्हें लोहे की छड़ी से शासन करेगा, जैसे कुम्हार के बर्तन टुकड़े टुकड़े किए जाते हैं, जैसा कि मैंने भी अपने पिता से

अधिकार प्राप्त किया है, <sup>28</sup> और मैं उसे भोर का तारा दूँगा। <sup>29</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

**3** "सर्दिस की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिखो:

जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ और सात तारे हैं, वह यह कहता है: मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ, कि तुम्हारा नाम है कि तुम जीवित हो, और फिर भी तुम मरे हुए हो। <sup>2</sup> सदैव सर्तक रहो, और उन वीजों को मजबूत करो जो बाकी हैं, जो मरने के कागड़ पर थीं, क्योंकि मैंने तुम्हारे कामों को अपने परमेश्वर की दृष्टि में पूरा नहीं पाया है। <sup>3</sup> इसलिए याद करो कि तुमने क्या प्राप्त किया और सुना है; और उसे बनाए रखो, और पश्चाताप करो। फिर यदि तुम सर्तक नहीं हो, तो मैं चोर की तरह आऊँगा, और तुम नहीं जानोगे कि किस घड़ी मैं तुम्हारे पास आऊँगा। <sup>4</sup> परन्तु तुम्हारे पास सर्दिस में कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने वर्तों को मलिन नहीं किया है, और वे मेरे साथ सफेद वस्तों में चलेंगे, क्योंकि वे योग्य हैं। <sup>5</sup> जो विजयी होगा, वह भी इसी प्रकार सफेद वस्तों में पहना जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक से नहीं मिटाऊँगा, और मैं उसके नाम को अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करूँगा। <sup>6</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। <sup>7</sup> "फिलाडेलिफ्या की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिखो: वह जो पवित्र है, जो सत्य है, जिसके पास दाऊद की कुंजी है, जो खोलता है और कोई बंद नहीं कर सकता, और जो बंद करता है और कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है: <sup>8</sup> मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ। देखो, मैंने तुम्हारे सामने एक खुला द्वार रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता, क्योंकि तुम्हारी शक्ति कम है, और फिर भी तुमने मेरे वचन को बनाए रखा है और मेरे नाम का इकार नहीं किया है। <sup>9</sup> देखो, मैं शैतान की सभा के उन लोगों को बनाऊँगा, जो कहते हैं कि वे यहदी हैं और नहीं हैं, बल्कि इश्तु बोलते हैं—मैं उन्हें बनाऊँगा कि वे आकर तुम्हारे पैरों के सामने सूक्ष्म, और उन्हें यह जानने दूँगा कि मैंने तुमसे प्रेम किया है। <sup>10</sup> क्योंकि तुमने मेरे धैर्य के वचन को बनाए रखा है, मैं भी तुम्हें उस परीक्षा की घड़ी से बचाऊँगा, जो पूरे संसार पर आने वाली है, उन लोगों की परीक्षा करने के लिए जो पृथ्वी पर रहते हैं। <sup>11</sup> मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ; जो तुम्हारे पास है उसे दृढ़ता से थामे रहा, ताकि कोई तुम्हारा मुकुट न छीन ले। <sup>12</sup> जो विजयी होगा, मैं उसे अपने परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर नहीं जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, नया यरूशलैम, जो मेरे परमेश्वर से स्वर्ग से उत्तरता है, और

## प्रकाशितवाक्य

मेरा नया नाम लिखूँगा।<sup>13</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।<sup>14</sup> “लाओदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिखो: आमीन, विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी, परमेश्वर की सुषि का आरंभ, यह कहता है।<sup>15</sup> मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ कि तुम न तो ठंडे हो और न ही गर्म; काश तुम ठंडे या गर्म होते।<sup>16</sup> इसलिए क्योंकि तुम गुनगुने हो, और न तो गर्म हो और न ही ठंडे, मैं तुम्हें अपने मुँह से उगल द्वांगा।<sup>17</sup> क्योंकि तुम कहते हो, “मैं धनी हूँ” और धनवान हो गया हूँ, और मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है,” और तुम यह नहीं जानते कि तुम दयनीय, दुखी, गरीब, अधेर, और नम्र हो,<sup>18</sup> मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि मुझसे आग में तपा हुआ सोना खरीदो ताकि तुम धनी बन सको, और सफेद वस्त्र ताकि तुम अपने को पहन सको और तुम्हारी नग्रता की लज्जा प्रकट न हो; और आँखों में लगाने की दवा ताकि तुम देख सको।<sup>19</sup> जिसे मैं प्रेम करता हूँ, उहें मैं डॉट्टा और अनुशासित करता हूँ, इसलिए उसाही बनो और पश्चात्याप करो।<sup>20</sup> देखो, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है, तो मैं उसके पास आँऊँगा और उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।<sup>21</sup> जो विजयी होगा, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का अधिकार द्वांगा, जैसा कि मैं भी विजयी हुआ और अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा।<sup>22</sup> जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।<sup>23</sup>

**4** इन बातों के बाद मैंने देखा, और देखो, स्वर्ग में एक द्वार खुला हआ था, और पहली आवाज जो मैंने सुनी थी, जो तुम्हीं की ध्वनि के समान मुझसे बोल रही थी, उसने कहा, “पहाँऊँ ऊपर आओ, और मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि इन बातों के बाद क्या होना चाहिए।”<sup>24</sup> तुरंत मैं आमा में था; और देखो, स्वर्ग में एक सिंहासन खड़ा था, और कोई उस सिंहासन पर बैठा था।<sup>25</sup> और जो बैठा था, वह यशब पथर और सर्वियुस के समान दिखाई देता था; और सिंहासन के चारों ओर एक इंद्रधनुष था, जो पत्रा के समान दिखाई देता था।<sup>26</sup> सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे; और उन सिंहासनों पर मैंने चौबीस प्राचीनों को बैठे देखा, जो श्वेत वस्त्र पहने हुए थे, और उनके सिरों पर स्वर्ण मुकुट थे।<sup>27</sup> सिंहासन से बिजली की चमक और आवज़ों और गर्जन निकल रहे थे। और सिंहासन के सामने सात अशि के दीपक जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं; और सिंहासन के सामने काँच के समुद्र के समान कुछ था, जो क्रिस्टल के समान था; और सिंहासन के बीच में और उसके चारों ओर चार जीवित प्राणी थे, जिनके आगे और पीछे आँखें भरी हुईं

थीं।<sup>28</sup> पहला प्राणी सिंह के समान था, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान, और तीसरे प्राणी का चेहरा मनुष्य के समान था, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान था।<sup>29</sup> और चारों जीवित प्राणियों में से प्रत्येक के पास छह पंख थे, और वे चारों ओर और भीतर आँखों से भरे हुए थे; और वे दिन और रात यह कहते हुए नहीं थकते,

“पवित्र, पवित्र, पवित्र है प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान् जो था, और जो है, और जो आने वाला है।”

**9** और जब जीवित प्राणी उस पर महिमा, आदर, और धन्यवाद देते हैं जो सिंहासन पर बैठा है, जो युगानुयुग जीवित है,<sup>30</sup> तो चौबीस प्राचीन उस पर गिर पड़ते हैं जो सिंहासन पर बैठा है, और वे उसकी आराधना करते हैं जो युगानुयुग जीवित है, और अपने मुकुट सिंहासन के सामने डालते हैं, कहते हुए,

“11” तू योग्य है हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर, महिमा और आदर और सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए क्योंकि तूने सब कुछ सुजा, और तेरी इच्छा के कारण वे अस्तित्व में आए, और सुजे गए।”

**5** मैंने सिंहासन पर बैठे हुए के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखा, जो भीतर और पीछे लिखी हुई थी, और सात मुहरों से बंद थी।<sup>2</sup> और मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को ऊँचे स्वर में यह घोषणा करते हुए देखा, “कौन इस पुस्तक को खोलने और इसकी मुहरों को तोड़ने के योग्य है?”<sup>3</sup> और स्वर्ग में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे कोई भी इस पुस्तक को खोलने या उसमें देखने के योग्य नहीं था।<sup>4</sup> तब मैं बहुत रोने लगा क्योंकि कोई भी इस पुस्तक को खोलने या उसमें देखने के योग्य नहीं पाया गया।<sup>5</sup> और प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, “रो मत, देख, यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद की जड़, विजयी हुआ है ताकि वह पुस्तक और उसकी सात मुहरों को खोल सके।”<sup>6</sup> और मैंने सिंहासन के बीच (चार जीवित प्राणियों के साथ) और प्राचीनों के बीच एक मेघा खड़ा देखा, जैसे कि वध किया गया हो, जिसके सात सींग और सात आँखें थीं, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं।<sup>7</sup> और वह आया और उसने सिंहासन पर बैठे हुए के दाहिने हाथ से पुस्तक को लिया।<sup>8</sup> जब उसने पुस्तक को लिया, तो चार जीवित प्राणी और चौबीस प्राचीन मेघा के सामने गिर पड़े, प्रत्येक के हाथ में एक वींग और सोने के कटोरे थे, जो धूप से भरे हुए थे, जो संतों की प्रार्थनाएँ हैं।<sup>9</sup> और उहोंने एक नया गीत गाया, कहते हुए,

## प्रकाशितवाक्य

"तू पुस्तक लेने और उसकी मुहरों को तोड़ने के योग्य है व्यक्तिकि तू वध किया गया था, और तूने अपने लह से परमेश्वर के लिए लोगों को खरीदा हर गोत्र भाषा जाति, और राष्ट्र से।<sup>10</sup> तूने उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बना दिया है, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।"

11 तब मैंने देखा, और मैंने सिंहासन के चारों ओर और जीवित प्राणियों और प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गद्वारों की आवाज़ सुनी; और उनकी संखा लाखों लाख और हजारों हजार थी, <sup>12</sup> ऊँचे स्वर में कहते हुए,

"वध किया गया मेघा योग्य है शक्ति, धन, बुद्धि, समर्थ, सम्मान, महिमा, और आशीर्वद प्राप्त करने के लिए।"

<sup>13</sup> और मैंने हर सृजित वस्तु को सुना जो स्वर्ग में है, या पृथ्वी पर है, या पृथ्वी के नीचे है, या समुद्र पर है, और उनमें सब कुछ कहते हुए,

"जो सिंहासन पर बैठा है और मेघा को आशीर्वदि, सम्मान, महिमा, और प्रभुत्व सदा-सर्वदा के लिए हो।"

14 और चार जीवित प्राणी कह रहे थे, "आमीन!" और प्राचीन गिर पढ़े और अराधना की।

**6** तब मैंने देखा कि मेर्वे ने सात मुहरों में से एक को तोड़ा, और मैंने चार जीवित प्राणियों में से एक को गरज की आवाज के समान कहते सुना, "आ!"<sup>2</sup> मैंने देखा, और देखो, एक सफेद घोड़ा, और जो उस पर बैठा था उसके पास एक धनुष था; और उसे एक मुकुट दिया गया, और वह विजय करता हुआ निकला, और विजय प्राप्त करने के लिए।<sup>3</sup> जब उसने दूसरी मुहर तोड़ी, तो मैंने दूसरे जीवित प्राणी को कहते सुना, "आ!"<sup>4</sup> और एक और, एक लाल घोड़ा, बाहर निकला; और जो उस पर बैठा था, उसे पृथ्वी से शांति छीनने की अनुमति दी गई, ताकि लोग एक-दूसरे को मारें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई।<sup>5</sup> जब उसने तीसरी मुहर तोड़ी, तो मैंने तीसरे जीवित प्राणी को कहते सुना, "आ!" मैंने देखा, और देखो, एक काला घोड़ा, और जो उस पर बैठा था उसके हाथ में तराजू था।<sup>6</sup> और मैंने चार जीवित प्राणियों के बीच से एक आवाज सुनी, जो कह रही थी, "एक दीनार के लिए एक कार्टर गेहूँ, और एक दीनार के लिए तीन कार्टर जौ; और तेल और दाखमधु को नुकसान न पहुँचाओ।"<sup>7</sup> जब उसने चौथी मुहर तोड़ी, तो मैंने चौथे जीवित प्राणी की आवाज सुनी, जो कह रही थी, "आ!"<sup>8</sup>

मैंने देखा, और देखो, एक पीला घोड़ा; और जो उस पर बैठा था उसका नाम मृत्यु था, और अधोलोक उसके साथ था। उन्हें पृथ्वी के एक चौथाई हिस्से पर तलवार, अकाल, महामारी, और पृथ्वी के जंगली जानवरों के द्वारा माने का अधिकार दिया गया।<sup>9</sup> जब मेर्वे ने पांचवीं मुहर तोड़ी, तो मैंने वेदी के नीचे उन लोगों की आमाओं को देखा जो परमेश्वर के वर्चन के कारण, और उस गवाही के कारण मारे गए थे, जिसे उन्होंने बनाए रखा था;<sup>10</sup> और उन्होंने ऊँची आवाज में पुकार कर कहा, "हे प्रभु, पवित्र और सत्य, कब तक तू न्याय करने और पृथ्वी पर रहने वालों से हमारे खून का बदला लेने से रुकेगा?"<sup>11</sup> और उन प्रत्येक को एक सफेद वस्त दिया गया; और उन्हें बताया गया कि उन्हें थोड़ी देर और विश्राम करना चाहिए, जब तक कि उनके सहकर्मी सेवक और उनके भाई-बहन, जिन्हें उनके समान मारा जाना था, की संख्या पूरी न हो जाए।<sup>12</sup> और मैंने देखा जब उसने छठी मुहर तोड़ी, और एक बड़ा भूकंप आया, और सूर्य बालों से बने टाट के समान काला हो गया, और पूरा चंद्रमा खून के समान हो गया;<sup>13</sup> और आकाश के तारे पृथ्वी पर पिर पड़े, जिसे एक अंजीर का पेड़ अपनी कच्ची अंजीर गिरा देता है जब एक बड़ी हवा से हिलाया जाता है।<sup>14</sup> आकाश एक स्कॉर्पिं की तरह फट गया जब उसे लपेटा जाता है, और हर पहाड़ और द्वीप अपनी जगह से हटा दिया गया।<sup>15</sup> तब पृथ्वी के राजा और प्रमुख लोग, और सेनापति और धनी और शक्तिशाली, और हर दास और स्वतंत्र व्यक्ति, गुफाओं और पहाड़ों की छटानों में छिप गए;<sup>16</sup> और उन्होंने पहाड़ों और छटानों से कहा, "हम पर गिरो और हमें उसके दृष्टि से छिपा तो जो सिंहासन पर बैठा है, और मेर्वे के क्रोध से;<sup>17</sup> क्योंकि उनके क्रोध का महान दिन आ गया है, और कौन खड़ा रह सकता है?"

**7** इसके बाद मैंने चार स्वर्गद्वारों को पृथ्वी के चार कोनों पर खड़े देखा, जो पृथ्वी की चारों हवाओं को रोक रहे थे, ताकि कोई हवा न तो पृथ्वी पर चले, न समुद्र पर, और न किसी वृक्ष पर।<sup>2</sup> और मैंने एक और स्वर्गद्वार को सूर्य के उदय की दिशा से आते हुए देखा, जिसके पास जीवित परमेश्वर की मुहर थी; और उसने उन चार स्वर्गद्वारों को ऊँची आवाज में पुकारा, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र को हानि पहुँचाने का अधिकार दिया गया था,<sup>3</sup> कहते हुए, "जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी, समुद्र, या वृक्षों को हानि न पहुँचाओ।"<sup>4</sup> और मैंने उन लोगों की संख्या सुनी जिन पर मुहर लगाई गई थी: 1,44,000, जो इसाएल की प्रत्येक गोत्र से मुहर लगाए गए थे—

## प्रकाशितवाक्य

<sup>५</sup> यहुदा की गोत्र से बारह हजार मुहर लगाए गए।  
स्कूबेन की गोत्र से बारह हजार, गाद की गोत्र से बारह  
हजार। <sup>६</sup> आशेर की गोत्र से बारह हजार, नपताली की  
गोत्र से बारह हजार, मनश्शे की गोत्र से बारह हजार। <sup>७</sup>  
शिमोन की गोत्र से बारह हजार, लेवी की गोत्र से बारह  
हजार, इस्साकार की गोत्र से बारह हजार। <sup>८</sup> जबलून  
की गोत्र से बारह हजार, यूसूफ की गोत्र से बारह  
हजार, बिन्यामीन की गोत्र से बारह हजार मुहर लगाए  
गए।

<sup>९</sup> इन बातों के बाद मैंने देखा, और देखो, एक बड़ी भीड़  
जिसे कोई गिन नहीं सकता था, प्रत्येक राष्ट्र और सभी  
गोत्रों, लोगों, और भाषाओं से, सिंहासन के सामने और  
मेर्मे के सामने खड़ी थी, सफेद वस्त्र पहने हुए, और  
उनके हाथों में खजूर की डालियाँ थीं; <sup>१०</sup> और वे ऊँची  
आवाज़ में पुकार रहे थे, कहते हुए,

"उद्धार हमारे परमेश्वर का है जो सिंहासन पर बैठा है,  
और मेर्मे का है।"

<sup>११</sup> और सभी स्वर्गद्वार सिंहासन के चारों ओर और  
प्राचीनों और चार जीवों के चारों ओर खड़े थे; और वे  
सिंहासन के सामने अपने मुँह के बल गिर पड़े और  
परमेश्वर की आराधना की, <sup>१२</sup> कहते हुए,

"आमीन, आशीकर्द, महिमा, बुद्धि, धन्यवाद, सम्मान  
शक्ति और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर के हैं युग्मानुयुगा।  
आमीन!"

<sup>१३</sup> तब प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, "ये जो सफेद  
वस्त्र पहने हुए हैं, ये कौन हैं, और कहाँ से आए हैं?" <sup>१४</sup>  
मैंने उससे कहा, "मेरे प्रभु, आप जानते हैं।" और उसने  
मुझसे कहा, "ये वे हैं जो बड़ी क्लेश से बाहर आए हैं,  
और उन्होंने अपने वस्त्र धोकर मेर्मे के लहू में सफेद कर  
लिए हैं।"

<sup>१५</sup> इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं  
और वे उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते  
हैं, और जो सिंहासन पर बैठा है वह उन पर अपनी  
छाया फैलाएगा। <sup>१६</sup> वे न तो अब भूखे रहेंगे, न प्यासे, न  
उन पर सूर्य की तपन पड़ेगी, न कोई जलती हुई गर्मी  
<sup>१७</sup> क्योंकि सिंहासन के बीच में जो मेघा है वह उनका  
चरवग्न होगा, और उन्हें जीवन के जल के स्रोतों तक  
ले जाएगा, और परमेश्वर उनकी अँखों से हर आँसू  
पांछ देगा।"

**८** जब मेर्मे ने सातवीं मुहर खोली, तो स्वर्ग में लगभग  
आधे घंटे तक मौन रहा। <sup>२</sup> और मैंने उन सात स्वर्गद्वारों  
को देखा जो परमेश्वर के सामने खड़े थे, और उन्हें सात  
तुराहियाँ दी गईं। <sup>३</sup> एक और स्वर्गद्वार आया और वेदी के  
पास खड़ा हुआ, जिसके हाथ में सोने की धूपदानथी;  
और उसे बहुत धूप दी गई, ताकि वह उसे सब पवित्र  
जनों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की वेदी पर जो  
सिंहासन के सामने थी, चढ़ा सके। <sup>४</sup> और धूप का धुआँ,  
पवित्र जनों की प्रार्थनाओं के साथ, स्वर्गद्वार के हाथ से  
परमेश्वर के सामने ऊपर गया। <sup>५</sup> तब स्वर्गद्वार ने धूपदान  
लिया और उसे वेदी की आग से भर दिया, और उसे  
पृथ्वी पर फेंक दिया; और गर्जन और आवाजें, और  
बिजली की चमक और भूकंप हुआ। <sup>६</sup> और जिन सात  
स्वर्गद्वारों के पास सात तुराहियाँ थीं, उन्होंने उन्हें बजाने  
के लिए तैयार किया। <sup>७</sup> पहले ने तुरही बजाई, और ओले  
और आग खून के साथ मिलकर आए, और उन्हें पृथ्वी  
पर फेंक दिया गया; और पृथ्वी का एक तिहाई भाग जल  
गया, और पेंडों का एक तिहाई भाग जल गया, और सारी  
हरी धास जल गई। <sup>८</sup> दूसरे स्वर्गद्वार ने तुरही बजाई, और  
कुछ ऐसा जैसे आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़  
समुद्र में फैका गया, और समुद्र का एक तिहाई भाग  
खून बन गया, <sup>९</sup> और समुद्र में जो जीवित प्राणी थे,  
उनका एक तिहाई भाग मर गया; और जहाजों का एक  
तिहाई भाग न हो गया। <sup>१०</sup> तीसरे स्वर्गद्वार ने तुरही  
बजाई, और आकाश से एक बड़ा तारा गिरा, जो मशाल  
की तरह जल रहा था, और यह नदियों के एक तिहाई  
भाग और जल के स्रोतों पर गिरा। <sup>११</sup> उस तारे का नाम  
नागदौना है; और जल का एक तिहाई भाग नागदौना बन  
गया, और बहुत से लोग उस जल के कारण मर गए,  
क्योंकि वे कड़वे हो गए थे। <sup>१२</sup> चौथे स्वर्गद्वार ने तुरही  
बजाई, और सूर्य का एक तिहाई भाग, चंद्रमा का एक  
तिहाई भाग, और तारों का एक तिहाई भाग मार दिया  
गया, ताकि उनका एक तिहाई भाग न चमके, और रात भी  
उसी तरह। <sup>१३</sup> तब मैंने देखा, और मैंने आकाश के बीच  
में उड़ते हुए एक गरुड़ को सुना, जो ऊँचे स्वर में कह  
रहा था, "हाय, हाय, हाय पृथ्वी पर रहने वाली के लिए,  
उन तीन स्वर्गद्वारों की तुराहियों के कारण जो बजने वाली  
हैं!"

**९** फिर पाँचवें स्वर्गद्वार ने तुरही बजाई, और मैंने देखा  
कि स्वर्ग से एक तारा पृथ्वी पर गिरा, और उसे अथाह  
गड़े की कुँजी दी गई। <sup>२</sup> उसने अथाह गड़े को खोला,  
और गड़े से धुआँ निकला जैसे किसी बड़ी मटी का धुआँ;  
और सूर्य और वायु धुएँ से अंधेरे हो गए। <sup>३</sup> फिर धुएँ से  
पृथ्वी पर टिड़ियाँ निकलीं, और उन्हें शक्ति दी गई, जैसे

## प्रकाशितवाक्य

पृथ्वी के बिच्छुओं को शक्ति होती है।<sup>4</sup> उन्हें कहा गया कि वे पृथ्वी के घास को, न किसी वृक्ष को हानि न पहुँचाएँ, बल्कि केवल उन लोगों को जो अपने माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं रखते।<sup>5</sup> और उन्हें किसी को मार डालने की अनुमति नहीं थी, बल्कि पाँच महीने तक पीड़ा देने की; और उनकी पीड़ा ऐसी थी जैसे बिच्छु के डंक मारने पर होती है।<sup>6</sup> और उन दिनों में लोग मत्स्य की खोज करेंगे और उसे नहीं पाएंगे; वे मरने की लालसा करेंगे, और मत्स्य उनसे भगायाएंगी।<sup>7</sup>

टिङ्गुओं का रूप उन घोड़ों के समान था जो युद्ध के लिए तैयार किए गए हैं; और उनके सिर पर सोने के समान मुकुट दिखाई दिए, और उनके वेहरे मनुष्यों के वेहरे के समान थे।<sup>8</sup> उनके बाल स्त्रियों के बालों के समान थे, और उनके डाँत सिंहों के दाँत के समान थे।<sup>9</sup> उनके पास लोडे के कवच के समान कवच थे; और उनके पंखों की आवाज़ युद्ध के लिए दौड़ते हुए कई घोड़ों के रखों की आवाज़ के समान थी।<sup>10</sup> उनकी पूँछ बिच्छुओं के समान थी, और डंक थे; और उनकी पूँछ में पाँच महीने तक लोगों को हानि पहुँचाने की शक्ति थी।<sup>11</sup> उनके ऊपर एक राजा था, अथाह गड्ढे का स्वर्गद्वार; उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन है, और यूनानी में उसका नाम अपोलोन है।<sup>12</sup> पहला हाय बीत चुका है; देखो, इसके बाद दो और हाय आने वाले हैं।<sup>13</sup> फिर छठे स्वर्गद्वार ने तुरही बजाई, और मैने सोने की वेदी के चार सींगों से एक आवाज़ सुनी जो परमेश्वर के समान है,<sup>14</sup> जो छठे स्वर्गद्वार से कह रही थी जिसके पास तुरही थी, "उन चार स्वर्गद्वारों का छोड़ दो जो महान नदी यूफ्रेट द्वारा बंधे हुए हैं!"<sup>15</sup> और वे चार स्वर्गद्वार, जो उस घोड़ी और दिन और महीने और वर्ष के लिए तैयार किए गए थे, छोड़ दिए गए, ताकि वे मनुष्यों के एक तिहाई को मार डालें।<sup>16</sup> घुड़सवारों की सेनाओं की संख्या दो सौ मिलियन थी; मैने उनकी संख्या सुनी।<sup>17</sup> और मैने दर्शन में घोड़ों और उन पर बैठे हुए लोगों को इस प्रकार देखा: सवारों के पास आग, जैकिथ, और गंधक के रेग के कवच थे; और घोड़ों के सिर सिंहों के सिर के समान थे; और उनके मुँह से आग, धुआँ, और गंधक निकलते थे।<sup>18</sup> इन तीन विपत्तियों से मनुष्यों का एक तिहाई मारा गया: आग, धुआँ, और गंधक से जो उनके मुँह से निकलते थे।<sup>19</sup> क्योंकि घोड़ों की शक्ति उनके मुँह और उनकी पूँछ में है; उनकी पूँछ साँपों के समान हैं और उनके सिर हैं, और उनसे वे हानि पहुँचाते हैं।<sup>20</sup> बाकी मनुष्य, जो इन विपत्तियों से नहीं मरे, उन्होंने अपने हाथों के कामों से प्रश्नात्पर नहीं किया, ताकि वे दुश्मानों की पूजा न करें, और न सोने, चाँदी, पीतल, पत्तर, और लकड़ी की मूर्तियों की, जो न देख सकती हैं, न सुन सकती हैं, न चल सकती हैं,<sup>21</sup> और उन्होंने न तो अपनी हत्याओं से, न

अपनी जादूगारी से, न अपनी व्यभिचार से, और न अपनी चोरियों से पश्चातप किया।

**10** मैने स्वर्ग से एक और बलवान स्वर्गद्वार को उत्तर देखा, जो बादल से आवृत था; और उसके सिर पर इंद्रधनुष था, और उसका मुख सूर्य के समान था, और उसके पाँव आग के खंभों के समान थे;<sup>2</sup> और उसके हाथ में एक छोटी पुस्तक थी, जो खुली हुई थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर और बायाँ पाँव भूमि पर रखा;<sup>3</sup> और वह सिंह के गरजने के समान झूँचे स्वर से चिल्लाया; और जब उसने चिल्लाया, तो सात गर्जनाओं ने अपनी आवाजें प्रकट कीं।<sup>4</sup> जब सात गर्जनाओं ने बोला, तो मैं लिखने ही वाला था; और मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी, जो कह रही थी, "जो बातें सात गर्जनाओं ने कही हैं, उन्हें सील कर दो, और उन्हें मत लिखो।"<sup>5</sup> फिर वह स्वर्गद्वार, जिसे मैने समुद्र और भूमि पर खड़ा देखा, उसने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया,<sup>6</sup> और उस पर शाप्त खाई जो युगानुयुग जीवित है, जिसने स्वर्ग और उसमें की वस्तुओं को, और पृथ्वी और उसमें की वस्तुओं को बनाया, कि अब और विलंब न होगा,<sup>7</sup> परन्तु सातवें स्वर्गद्वार की आवाज़ के दिनों में, जब वह फूँकने लगेगा, तब परमेश्वर का रहस्य पूरा होगा, जैसा उसने अपने दासों, भविष्यद्वासाओं को बताया था।<sup>8</sup> फिर वह आवाज़, जो मैने स्वर्ग से सुनी थी, मुझसे फिर बोलने लगी, और कहने लगी, "जाओ, उस स्वर्गद्वार के हाथ से वह पुस्तक ले लो, जो समुद्र और भूमि पर खड़ा है।"<sup>9</sup> तब मैं स्वर्गद्वार के पास गया, और उससे कहा कि वह मुझे वह छोटी पुस्तक दे। और उसने मुझसे कहा, "इसे ले और खा ले; यह तेरे पेट को कड़वा कर देगा, परन्तु तेरे मुँह में यह मधु के समान मीठा होगा।"<sup>10</sup> मैने स्वर्गद्वार के हाथ से वह छोटी पुस्तक ली और उसे खा लिया, और मेरे मुँह में वह मधु के समान मीठी थी; और जब मैने उसे खा लिया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।<sup>11</sup> और उन्होंने मुझसे कहा, "तुझे फिर से बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं, और राजाओं के विषय में भविष्यवाणी करनी होगी।"

**11** फिर मुझे एक नापने की छड़ी दी गई, जो एक डंडे की तरह थी, और किसी ने कहा, "उठो और परमेश्वर के मीदर और वेदी को नापो, और जो उसमें उपासना करते हैं उन्हें मृत।"<sup>2</sup> मंदिर के बाहर के आंगन को छोड़ दो और उसे मत नापो, क्योंकि वह जातियों को दे दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौदेंगे।<sup>3</sup> और मैं अपने दो गवाहों को अधिकार दूँगा, और वे 1,260 दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे, टाट

## प्रकाशितवाक्य

पहने हुए।<sup>4</sup> ये दो जैतून के पेड़ और दो दीपस्तंभ हैं जो पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े हैं।<sup>5</sup> और यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकलती है और उनके शत्रुओं को भस्म कर देती है; और यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है, तो उसे इसी प्रकार मारा जाना चाहिए।<sup>6</sup> इनके पास आकाश को बंद करने की शक्ति है, ताकि उनके भविष्यवाणी के दिनों में वर्षा न हो; और उनके पास जल को रक्त में बदलने की शक्ति है, और पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाने की, जब तक वे चाहें।<sup>7</sup> जब वे अपनी गवाही समाप्त कर चुके होंगे, तो वह पशु जो गहरे गड्ढे से निकलता है, उनके साथ युद्ध करेगा, और उन्हें पराजित करेगा, और उन्हें मार डालेगा।<sup>8</sup> और उनके मृत शरीर उस महान नगर की सड़क पर पड़े रहेंगे, जो अतिक रूप से सदोम और मिस्त कहलाता है, जहाँ उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था।<sup>9</sup> लोगों, जातियों, भाषाओं, और राष्ट्रों में से लोग उनके मृत शरीर को तीन दिन और आधे दिन तक देखेंगे, और उनके मृत शरीर को कब्र में रखने की अनुमति नहीं देंगे।<sup>10</sup> और जो पृथ्वी पर रहते हैं वे उनके ऊपर आनन्दित होंगे और उत्सव मनाएंगे; और वे एक-दूसरे को उपहार भेजेंगे, क्योंकि इन दो भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी पर रहने वालों को पीड़ा दी थी।

<sup>11</sup> परन्तु तीन दिन और आधे दिन के बाद, परमेश्वर की ओर से जीवन की सांस उनमें आई, और वे अपने पैरों पर खड़े हो गए, और जो उन्हें देख रहे थे उन पर बड़ा भय छा गया।<sup>12</sup> और उन्होंने स्वर्ग से एक ऊँची आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी, “यहाँ ऊपर आओ।” और वे बादल में स्वर्ग में चले गए, और उनके शत्रुओं ने उन्हें देखा।<sup>13</sup> और उसी समय एक बड़ा भूकंप आया, और नगर का दसवां हिस्सा गिर गया; भूकंप में सात हजार लोग मारे गए, और बाकी लोग भयभीत हो गए और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की।<sup>14</sup> द्वासरा हाय बीत चुका है; देखो, तीसरा हाय श्रीघ आ रहा है।<sup>15</sup> फिर सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजाई; और स्वर्ग में ऊँची आवाज़ आई, जो कह रही थी,

“संसार का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का राज्य बन गया है, और वह युग्मानुयग राज्य करेगा।”

<sup>16</sup> और चौबीस प्राचीन, जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासनों पर बैठे थे, अपने मुँह के बल गिरे और परमेश्वर की आराधना की,<sup>17</sup> कहते हुए,

“हम तेरा धन्यवाद करते हैं प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो है और जो था, क्योंकि तूने अपनी बड़ी शक्ति ली और राज्य करना शुरू किया।<sup>18</sup> और

जातियाँ क्रोधित हो गईं, और तेरा क्रोध आया, और मरे हुओं के न्याय का समय आ गया, और तेरे दासों को, भविष्यद्वक्ताओं को और पवित्र जनों को और जो तेरे नाम से डरते हैं, छाटे और बढ़े, को प्रतिफल देने का समय आ गया, और जो पृथ्वी को नष्ट करते हैं उन्हें नष्ट करने का।”

<sup>19</sup> और स्वर्ग में परमेश्वर का मंदिर खुल गया; और उसके मंदिर में उसकी वाचा का सन्दूक दिखाई दिया, और बिजली की चमक और आवाजें और गर्जन और भूकंप और बड़ा ओले का तूफान आया।

**12** स्वर्ग में एक बड़ा विन्ह प्रकट हुआ: एक स्त्री जो सूर्य से वस्त घने थी, उसके पैरों के नीचे चंद्रमा था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था;<sup>2</sup> वह गर्भवती थी और प्रसव पीड़ा में चिल्ला रही थी।<sup>3</sup> फिर स्वर्ग में एक और विन्ह प्रकट हुआ: देखो, एक बड़ा लाल अजगर था जिसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात मुकुट थे।<sup>4</sup> उसकी पूछ ने स्वर्ग के एक तिहाई तारों को बहा दिया और उन्हें पृथ्वी पर फेंक दिया। और अजगर उस स्त्री के सामने खड़ा था जो जन्म देने वाली थी, ताकि जब वह जन्म दे तो वह उसके बालक को निगल जाए।<sup>5</sup> और उसने एक पुत्र, एक पुरुष, को जन्म दिया, जो लोहे की छड़ी से सभी राष्ट्रों पर शासन करने वाला है; और उसका बालक परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठा लिया गया।<sup>6</sup> तब वह स्त्री जंगल में भाग गई जहाँ उसके लिए परमेश्वर द्वारा एक स्थान तैयार किया गया था, ताकि वह वहाँ 1,260 दिनों तक पोषित हो सके।<sup>7</sup> और स्वर्ग में युद्ध हुआ, मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों ने अजगर के साथ युद्ध किया। अजगर और उसके स्वर्गदूतों ने युद्ध किया,<sup>8</sup> और वे प्रबल नहीं हुए, और उनके लिए स्वर्ग में अब कोई स्थान नहीं मिला।<sup>9</sup> और वह बड़ा अजगर नीचे फेंक दिया गया, वह पुराना सर्प जिसे शैतान और शैतान कहा जाता है, जो पूरे संसार को धोखा देता है; उसे पृथ्वी पर फेंक दिया गया, और उसके स्वर्गदूत उसके साथ फेंक दिए गए।<sup>10</sup> तब मैंने स्वर्ग में एक ऊँची आवाज़ सुनी, जो कह रही थी,

“अब उद्धार सामर्थ्य, और हमारे परमेश्वर का राज्य और उसके मसीह का अधिकार आ गया है, क्योंकि हमारे भाइयों और बहनों का अभियुक्त नीचे फेंक दिया गया है, जो दिन-रात हमारे परमेश्वर के सामने उनका अभियोग लगाता है।<sup>11</sup> और उन्होंने उसे पराजित किया मैमने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण, और उन्होंने अपने जीवन से प्रेम नहीं किया यहाँ तक कि मृत्यु का सामना करते

## प्रकाशितवाक्य

समय भी।<sup>12</sup> इस कारण, आनंदित हो, हे सर्वगं और तुम जो उनमें निवास करते हो। पृथ्वी और समुद्र पर हाय, क्योंकि शैतान तुम्हारे पास बड़े क्रोध के साथ आ गया है, यह जानते हुए कि उसके पास केवल थोड़े समय के लिए है।"

13 और जब अजगर ने देखा कि वह पृथ्वी पर फेंक दिया गया है, तो उसने उस स्त्री को सताया जिसने पुरुष बालक को जन्म दिया था।<sup>14</sup> लेकिन उस स्त्री को महान उत्काब के दो पंख दिए गए, ताकि वह सर्प की उपस्थिति से दूर, अपने स्थान पर उड़ सके, जहाँ वह एक समय, समय और आधे समय के लिए पोषित हो सके।<sup>15</sup> और सर्प ने अपने मुँह से स्त्री के पीछे नदी की तरह पानी फेंका, ताकि वह उसे बाढ़ के साथ बहा ले जाए।<sup>16</sup> लेकिन पृथ्वी ने उस स्त्री की मदद की, और पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और उस नदी को पी लिया जिसे अजगर ने अपने मुँह से फेंका था।<sup>17</sup> तो अजगर उस स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसके बाकी बच्चों के साथ युद्ध करने चला गया, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु की गवाही की थामे रहते हैं।

**13** और अजगर समुद्र के किनारे की रेत पर खड़ा था। तब मैंने समुद्र से एक पशु को निकलते देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे, और उसके सींगों पर दस मुकुट थे, और उसके सिरों पर निन्दामुक नाम लिखे थे।<sup>2</sup> और जो पशु मैंने देखा वह तेंदुए के समान था, और उसके पैर भालू के पैरों के समान थे, और उसका मुँह सिंह के मुँह के समान था। और अजगर ने उसे अपनी शक्ति, अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार दिया।<sup>3</sup> मैंने उसके सिरों में से एक को देखा, मानो वह घातक रूप से धायल हो गया था, और उसका घातक घाव ठीक हो गया। और सारी पृथ्वी आश्वर्यकित होकर उस पशु के पीछे चलने लगी;<sup>4</sup> उन्होंने अजगर की पूजा की क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दिया; और उन्होंने पशु की भी पूजा की, यह कहते हुए, "पशु के समान कौन है, और कौन उसके साथ युद्ध कर सकता है?"<sup>5</sup> उसे एक मुँह दिया गया जो अंहकारी शब्द और निन्दाएँ बोलता था, और उसे बालीस महीने तक कार्य करने का अधिकार दिया गया।<sup>6</sup> और उसने परमेश्वर के विरुद्ध निन्दाएँ करने के लिए अपना मुँह खोला, उसके नाम और उसके मण्डप की निन्दा करने के लिए, अपीत स्वर्ग में निवास करने वालों की।<sup>7</sup> उसे पवित्र लोगों के साथ युद्ध करने और उन्हें पराजित करने का भी अधिकार दिया गया, और उसे हर जाति, लोग, भाषा और राष्ट्र पर अधिकार दिया गया।<sup>8</sup> पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग उसकी पूजा करेंगे, जिनके नाम जगत की

नींव से मेमने के जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, जो बलिदान किया गया है।<sup>9</sup> यदि किसी के पास कान हैं, तो वह सुन तो।

10 यदि कोई बंदीगृह के लिए नियत है, तो वह बंदीगृह में जाएगा, यदि कोई तलवार से मारता है, तो उसे तलवार से मारा जाएगा।

यहाँ पवित्र लोगों का धैर्य और विश्वास है।<sup>11</sup> तब मैंने एक और पशु को पृथ्वी से निकलते देखा, और उसके दो सींग मेमने के समान थे, और वह अजगर के समान बोलता था।<sup>12</sup> वह पहले पशु के सामने उसका सारा अधिकार चलाता है। और वह पृथ्वी और उस पर रहने वालों को पहले पशु की पूजा करने के लिए बाध्य करता है, जिसका घातक घाव ठीक हो गया था।<sup>13</sup> वह बड़े चिह्न दिखाता है, यहाँ तक कि वह लोगों के सामने आकाश से पृथ्वी पर आग शिराता है।<sup>14</sup> और वह पृथ्वी पर रहने वालों को उन चिह्नों के कारण धोखा देता है, जिन्हें उसे पशु के सामने दिखाने के लिए दिया गया था, यह कहते हुए कि पृथ्वी पर रहने वाले उस पशु की एक मूर्ति बनाएं, जो तलवार के घाव से धायल ढुआ और जीवित हो गया।<sup>15</sup> और उसे यह अधिकार दिया गया कि वह पशु की मूर्ति में प्राण पूँके, ताकि पशु की मूर्ति बोल सके और उन सभी को मरवा सके जो पशु की मूर्ति की पूजा नहीं करते।<sup>16</sup> और वह छोटे और बड़े, धनी और गरीब, स्वतंत्र और दास सभी को उनके दाहिने हाथों या माथे पर एक निशान देने के लिए बाध्य करता है,<sup>17</sup> और वह यह आदेश देता है कि कोई भी खरीद या बिक्री नहीं कर सकेगा, सिवाय उसके जिसके पास वह निशान हो, चाहे वह पशु का नाम हो या उसके नाम की संख्या।<sup>18</sup> यहाँ बुद्धि है। जो समझ रखता है, वह पशु की संख्या को गिने, क्योंकि वह मनुष्य की संख्या है, और उसकी संख्या छह सौ छियासठ है।

**14** तब मैंने देखा, और देखो, मेम्ना सियोन पर्वत पर खड़ा था, और उसके साथ 144,000 लोग थे जिनके माथे पर उसका नाम और उसके पिता का नाम लिखा हुआ था।<sup>2</sup> और मैंने सर्वगं से एक आवाज़ सुनी, जो बहुत से जल के शब्द और बड़े गजन के समान थी, और जो आवाज़ मैंने सुनी वह वीणा बजाने वालों के वीणा बजाने के समान थी।<sup>3</sup> और उन्होंने सिंहासन के सामने और चार जीवित प्राणियों और प्राचीनों के सामने एक नया गीत गया; और कोई भी उस गीत को नहीं सीख सका सिवाय उन 144,000 के जो पृथ्वी से खरीदे गए थे।<sup>4</sup> ये वे हैं जिन्होंने अपने आप को स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं किया, क्योंकि वे पवित्र हैं। ये वे हैं जो मेम्ना का

## प्रकाशितवाक्य

अनुसरण करते हैं जहाँ भी वह जाता है। इहें मनुष्यों में से परमेश्वर और मेष्ट्रा के लिए पहले फल के रूप में खरीदा गया है।<sup>5</sup> और उनके मुँह में कोई झुठ नहीं पाया गया; वे निर्दोष हैं।<sup>6</sup> और मैंने एक और स्वर्गद्वात को आकाश के बीच उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर रहने वालों और हर जाति, कुल, भाषा और लोगों को सुनाने के लिए एक शाश्वत सुसमाचारथा;<sup>7</sup> और उसने ऊँचे स्वर में कहा, “परमेश्वर का भय मानो और उसे महिमा दो, क्योंकि उसके न्याय का समय आ गया है; उसकी आराधना करो जिसने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र और जल के सोते बनाए।”<sup>8</sup> और एक और स्वर्गद्वात, दुसरा, उसके पीछे आया, यह कहते हुए, “गिर गई, गिर गई महान बाबुल, जिसने सभी राष्ट्रों को अपनी व्यविचार की मदिरा पिलाई है।”<sup>9</sup> फिर एक और स्वर्गद्वात, तीसरा, उनके पीछे आया, ऊँचे स्वर में कहता हुआ, “यदि कोई पश्च और उसकी मूर्ति की पूजा करता है, और अपने माथे या हाथ पर एक चिह्न प्राप्त करता है,<sup>10</sup> वह भी परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पिलाए, जो उसके क्रोध के प्याले में बिना मिलावट के भरी गई है; और वह पवित्र स्वर्गद्वातों और मेष्ट्रा की उपस्थिति में आग और गंधक के साथ पीड़ा में रहेगा।<sup>11</sup> और उनकी पीड़ा का धुर्मीं युग्मानुग्रह उठता रहेगा; उन्हें दिन और रात कोई विश्राम नहीं मिलेगा, जो पश्च और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो कोई उसके नाम का चिह्न प्राप्त करता है।<sup>12</sup> यहाँ संतों का धैर्य है जो परमेश्वर की आज्ञाओं और धीशु में अपने विश्वास को बनाए रखते हैं।<sup>13</sup> और मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी, यह कहते हुए, “लिखो: ‘धन्य हैं वे मेरे हुए जो अब से प्रभु में मरते हैं।’” हाँ,” आत्मा कहता है, “ताकि वे अपने श्रमों से विश्राम करें, क्योंकि उनके काम उनके साथ चलते हैं।”<sup>14</sup> तब मैंने देखा, और देखो, एक सफेद बादल, और बादल पर एक मनुष्य के पुत्र के समान बैठा हुआ था, जिसके सिर पर एक सुनहरा मुकुट और उसके हाथ में एक तेज दरांती थी।<sup>15</sup> और एक और स्वर्गद्वात मंदिर से बाहर आया, बादल पर बैठे हुए को ऊँचे स्वर में पुकारते हुए, “अपनी दरांती डालो और काटो, क्योंकि काटने का समय आ गया है, क्योंकि पृथ्वी की फसल पक गई है।”<sup>16</sup> तब बादल पर बैठे हुए ने अपनी दरांती पृथ्वी पर डाली, और पृथ्वी की फसल काटी गई।<sup>17</sup> और एक और स्वर्गद्वात स्वर्ग में स्थित मंदिर से बाहर आया, और उसके पास भी एक तेज दरांती थी।<sup>18</sup> फिर एक और स्वर्गद्वात, जो आग पर अधिकार रखता था, वेदी से बाहर आया; और उसने ऊँचे स्वर में उसे पुकारा जिसके पास तेज दरांती थी, यह कहते हुए, “अपनी तेज दरांती डालो और पृथ्वी की दाखलताओं के गुच्छों को इकट्ठा करो, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।”<sup>19</sup> इसलिए स्वर्गद्वात ने अपनी दरांती

पृथ्वी पर डाली और पृथ्वी की दाखलताओं के गुच्छों को इकट्ठा किया, और उन्हें परमेश्वर के क्रोध की बड़ी अंगूर रौंदने की जगह में डाल दिया।<sup>20</sup> और अंगूर रौंदने की जगह नगर के बाहर रौंदी गई, और अंगूर रौंदने की जगह से रक्त निकला, घोड़ों की लगाम तक, लगभग 1600 स्टेडिया की दूरी तक।

**15** फिर मैंने स्वर्ग में एक और चिन्ह देखा, बड़ा और अद्भुत, सात स्वर्गद्वात जिनके पास सात विपत्तियाँ थीं, जो अतिम हैं, क्योंकि उनमें परमेश्वर का क्रोध समाप्त होता है।<sup>2</sup> और मैंने कांच के समुद्र के समान कुछ देखा जो आग के साथ मिला हुआ था, और उन लोगों को देखा जो पश्च और उसकी मूर्ति और उसके नाम की संख्या पर जयवंत हुए थे, वे कांच के समुद्र पर खड़े थे, परमेश्वर की वीणाएँ पकड़े हुए।<sup>3</sup> और उन्होंने मूसा का गीत, जो परमेश्वर का दास था, और मैमने का गीत गाया, कहते हुए,

“महान और अद्भुत हैं तेरे कार्य प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान् धर्मी और सत्य हैं तेरी राहें राष्ट्रों के राजा।”<sup>4</sup> “कौन तुझसे नहीं डरेगा, प्रभु और तेरे नाम की महिमा नहीं करेगा। क्योंकि केवल तु ही पवित्र है, क्योंकि सब राष्ट्र तेरे सामने आकर उपासना करेंगे, क्योंकि तेरे धर्मी कार्य प्रकट हो गए हैं।”

5 इन बातों के बाद मैंने देखा, और स्वर्ग में गवाही के तंबू का मंदिर खुल गया,<sup>6</sup> और सात स्वर्गद्वात जिनके पास सात विपत्तियाँ थीं, मंदिर से बाहर आए, जो शुद्ध और चमकदार मलमत पहने हुए थे, और उनके लीने पर सुनहरे परें बंधे हुए थे।<sup>7</sup> फिर चार जीवित प्राणियों में से एक ने सात स्वर्गद्वातों को सात सुनहरे कटोरे दिए जो परमेश्वर के क्रोध से भरे हुए थे, जो युग्मानुग्रह जीवित रहता है।<sup>8</sup> और मंदिर परमेश्वर की महिमा और उसकी शक्ति से धूँए से भर गया; और कोई भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर सका जब तक कि सात स्वर्गद्वातों की सात विपत्तियाँ समाप्त नहीं हो गईं।

**16** तब मैंने मंदिर से एक ऊँची आवाज़ सुनी, जो सात स्वर्गद्वातों से कह रही थी, “जाओ और पृथ्वी पर परमेश्वर के क्रोध के सात कटोरे उडेल दो।”<sup>2</sup> तो पहला स्वर्गद्वात गया और उसने अपना कटोरा पृथ्वी पर उडेला, और एक हानिकारक और दर्दनाक फोड़ा उन लोगों को हुआ जिनके पास पश्च का चिह्न था और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे।<sup>3</sup> दूसरे स्वर्गद्वात ने अपना कटोरा समुद्र में उडेला, और वह मरे हुए व्यक्ति के रक्त के समान हो गया; और समुद्र में हर जीवित प्राणी मर गया।

## प्रकाशितवाक्य

<sup>४</sup> फिर तीसरे स्वर्गद्वूत ने अपना कटोरा नदियों और जल के स्रोतों में उड़ेला, और वे रक्त बन गए। <sup>५</sup> और मैंने जल के स्वर्गद्वृत को कहते सुना,

"तू धर्मी है, जो है और जो था, है पवित्र, क्योंकि तूने इन बातों का न्याय किया है। <sup>६</sup> क्योंकि उन्होंने संतों और नवियों का रक्त बहाया, और तूने उन्हें पीने के लिए रक्त दिया। वे इसके योग्य हैं।"

<sup>७</sup> और मैंने वेदी को कहते सुना,

"हाँ, प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान्, सत्य और धर्म हैं तेरे न्याय।"

<sup>८</sup> और चौथे स्वर्गद्वूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उड़ेला, और उसे लोगों को आग से जलाने की शक्ति दी गई। <sup>९</sup> और लोग प्रचंड गर्भ से जल गए, और उन्होंने परमेश्वर के नाम की निंदा की, जिसके पास इन विपत्तियों पर अधिकार है, और उन्होंने पश्चातप नहीं किया ताकि उसे माहिमा दें। <sup>१०</sup> फिर पाँचवें स्वर्गद्वूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उड़ेला, और उसका राज्य अंधकारमय हो गया; और उन्होंने दर्द के कारण अपनी जीभें चबाईं, <sup>११</sup> और उन्होंने अपने दर्द और फोड़ों के कारण स्वर्ण के परमेश्वर की निंदा की, और उन्होंने अपने कार्यों का पश्चातप नहीं किया। <sup>१२</sup> छठे स्वर्गद्वूत ने अपना कटोरा महान नदी, यूफेट्स पर उड़ेला, और उसका जल सूख गया, ताकि पूरब से आने वाले राजा औं के लिए मार्ग तैयार हो सके। <sup>१३</sup> और मैंने अजगर के मुँह से, और पशु के मुँह से, और दूठे नदी के मुँह से तीन अशुद्ध आस्माँ मेंढकों के समान निकलते देखा; <sup>१४</sup> क्योंकि वे दुष्टात्माओं की आत्माएँ हैं, चमत्कार करती हैं, जो पूरे संसार के राजा औं के पास जाती हैं, उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान दिन के युद्ध के लिए इकट्ठा करने के लिए। <sup>१५</sup> ("देखो, मैं चौर की तरह आता हूँ।" धन्य है वह जो जागता रहता है और अपने वस्त्रों को संभालता है, ताकि वह न नम होकर न चले और लोग उसकी लज्जा न दें।) <sup>१६</sup> और उन्होंने उन्हें उस स्थान पर इकट्ठा किया जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है। <sup>१७</sup> फिर सातवें स्वर्गद्वूत ने अपना कटोरा वायु पर उड़ेला, और सिंहासन से मंदिर से एक ऊँची आवाज आई, जो कह रही थी, "यह हो गया।" <sup>१८</sup> और बिजली की चमकें और आवाजें और गर्जन हुए; और एक बड़ा भूकंप आया, जैसा कि मनुष्य के पृथ्वी पर होने के बाद से नहीं हुआ था—इतना बड़ा भूकंप था, और इतना शक्तिशाली। <sup>१९</sup> महान नगर तीन भागों में विभाजित हो गया, और राष्ट्रों के नगर गिर गए। महान बाबुल परमेश्वर के सामने याद किया गया, ताकि उसे

उसके प्रवंड क्रोध के मंदिरा के प्याले का दिया जाए। <sup>२०</sup> और हर द्वीप भाग गया, और कोई पहाड़ नहीं मिला। <sup>२१</sup> और बड़े ओरे, प्रस्तेक का वजन लगभग एक टैलेंट, स्वर्ग से लोगों पर गिरे; और लोगों ने ओरों की विपत्ति के कारण परमेश्वर की निंदा की, क्योंकि उसकी विपत्ति अस्त्यंग भी थी।

**१७** फिर उन सात स्वर्गद्वूतों में से एक, जिनके पास सात कटोरे थे, मेरे पास आया और मुझसे बात की, कहता, "आओ, मैं तुम्हें उस बड़ी वेश्या का न्याय दिखाऊँगा जो बहुत से जलों पर बैठी है, <sup>२</sup> जिसके साथ पृथ्वी के राजा औं ने व्यभिचार किया, और पृथ्वी पर रहने वाले उसके व्यभिचार के मंदिरा से मतवाले हो गए।" <sup>३</sup> और उसने मुझे आसा में एक जंगल में ले गया; और मैंने एक स्त्री को एक लाल रंग के पश्च पर बैठे देखा, जो निन्दाम्बक नामों से भरा हुआ था, जिसके सात सिर और दस सींग थे। <sup>४</sup> वह स्त्री बैंगी और लाल रंग के वस्त्र पहने थी, और सोने, बहुमूल्य रत्नों, और मोतियों से सजी हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का प्याला था जो धृणित वस्तुओं और उसके व्यभिचार की अशुद्ध जीजों से भरा हुआ था, <sup>५</sup> और उसके माथे पर एक नाम लिखा हुआ था, एक रहस्य: "महान बाबुल, वेश्या औं की माता और पृथ्वी की धृणित वस्तुओं की।" <sup>६</sup> और मैंने उस स्त्री को संतों के लहू से और यीशु के साक्षियों के लहू से मतवाली देखा। जब मैंने उसे देखा, तो मैं बहुत चकित हुआ। <sup>७</sup> और स्वर्गद्वूत ने मुझसे कहा, "तुम क्यों चकित हुए? मैं तुम्हें उस स्त्री और उस पश्च का रहस्य बताऊँगा जो उसे उठाए हुए है, जिसके सात सिर और दस सींग हैं।" <sup>८</sup> वह पश्च जिसे तुमने देखा, वह था, और नहीं है, और वह गहराई से निकलकर विनाश की ओर जाएगा। और पृथ्वी पर रहने वाले, जिनके नाम संसार की नीव से जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, जब वे उस पश्च को देखें, जो था, और नहीं है, और आप्या, तो वे चकित होंगे। <sup>९</sup> वह वह बुझ्दी है जिसमें ज्ञान है। सात सिर सात पहाड़ हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है, <sup>१०</sup> और वे सात राजा हैं; पाँच गिर चुके हैं, एक है, दूसरा अभी तक नहीं आया है; और जब वह आएगा, तो उसे थोड़े समय के लिए रहना होगा। <sup>११</sup> वह पश्च जो था और नहीं है, वह स्वयं भी आठवाँ है और सात में से एक है, और वह विनाश की ओर जाता है। <sup>१२</sup> दस सींग जो तुमने देखे, वे दस राजा हैं जिहोंने अभी तक राज्य नहीं प्राप्त किया है, परंतु वे एक घंटे के लिए पश्च के साथ राजा के रूप में अधिकार प्राप्त करते हैं। <sup>१३</sup> इनका एक ही उद्देश्य है, और वे अपनी शक्ति और अधिकार पश्च को दे देते हैं। <sup>१४</sup> ये मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे, और मेमना उन्हें पराजित करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजा औं का राजा है;

## प्रकाशितवाक्य

और जो उसके साथ हैं वे बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य हैं।<sup>15</sup> और उसने मुझसे कहा, ‘वे जल जिन्हें तुमने देखा जहाँ वेश्य बैठी है, वे लोग, भीड़, जातियाँ, और भाषाएँ हैं।<sup>16</sup> और वे दस सींग जो तुमने देखे, और वह पशु, ये वेश्या से घृणा करेंगे और उसे उजाड़ और नम्र कर देंगे, और उसके मांस को खा जाएंगे और उसे आग में जला देंगे।<sup>17</sup> क्योंकि परमेश्वर ने उनके हृदय में अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए, और एक ही उद्देश्य रखने के लिए, और अपने राज्य को पशु को देने के लिए डाल दिया है, जब तक कि परमेश्वर के वचन पूरे न हो जाए।<sup>18</sup> वह स्त्री जिसे तुमने देखा, वह महान नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करती है।<sup>19</sup>

**18** इन बातों के बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उत्तरते देखा, जिसके पास महान अधिकार था, और उसकी महिमा से पृथ्वी प्रकाशित हो गई।<sup>20</sup> और उसने एक शक्तिशाली आवाज में पुकार कर कहा,

“गिर गई, गिर गई वह महान बाबुला वह दुष्टात्माओं का निवास स्थान बन गई है और हर अशुद्ध आत्मा का कारागार, और हर अशुद्ध और धूषिण पक्षी का कारागार।<sup>21</sup> क्योंकि सभी राष्ट्र उसके व्यभिचार के मद्य के कारण गिर गए हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसकी विलासिता की अधिकता से धनी हो गए हैं।”

\* मैंने स्वर्ग से एक और आवाज सुनी, जो कह रही थी,

“मेरे लोग, उससे बाहर निकल आओ, ताकि तुम उसके पापों में भागीदार न बनो और उसकी विपत्तियों में से कोई न पाओ।<sup>22</sup> क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अपराधों को याद किया है।<sup>23</sup> उसको वैसा ही प्रतिफल दी जैसा उसने दिया है, और उसके कर्मों के अनुसार उसे दुगाना लौटायें, जिस प्याले को उसने मिलाया है, उसमें उसके लिए दुगाना मिलाओ।”<sup>24</sup> जिस हृद तक उसने अपनी महिमा की ओर विलासिता में रही, उसी हृद तक उसे यातना और शोक दो; क्योंकि वह अपने हृदय में कहती है, ‘मैं रानी के रूप में बैठी हूँ और मैं विधवा नहीं हूँ, और कभी शोक नहीं देखूँगी।’<sup>25</sup> इस कारण एक दिन में उसकी विपत्तियाँ आएँगी, विपत्ति और शोक और अकाल, और वह आग से जला दी जाएगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर जो उसका न्याय करता है, बलवान है।

\* और पृथ्वी के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और विलासिता में रहे, उसके जलने के धूएँ को देखकर उसके लिए विलाप करेंगे और शोक करेंगे,<sup>26</sup> उसकी यातना के डर के कारण दूर खड़े होकर कहेंगे,

‘हाय, हाय, महान नगर, बाबुल, शक्तिशाली नगर। क्योंकि एक धंटे में तेरा न्याय आ गया है।’

11 और पृथ्वी के व्यापारी उसके लिए विलाप और शोक करेंगे, क्योंकि अब कोई उनकी वस्तुएँ नहीं खरीदता—<sup>27</sup> सोने, चाँदी, बहुमूल्य पत्थरों, मोतियों, उत्तम मलमल, बैंगनी, रेशम, और लाल वस्तों का माल, हर प्रकार की नींबू की लकड़ी, हर प्रकार की हाथी ढाँत की वस्तुएँ, हर प्रकार की बहुमूल्य लकड़ी, पीतल, लोहे, और संगमरमर की वस्तुएँ,<sup>28</sup> दालचीनी, मसाला, धूप, इत्र, लोबान, मद्य, जैदून का तेल, उत्तम आटा, गेहूँ, गाय-बैल, भेड़, घोड़ों का माल, रथ, और मनुष्यों की आत्माएँ और जीवन।<sup>29</sup> वह फल जिसकी तुम्हें लालसा थी, तुमसे दूर हो गया है, और जो कुछ विलासिता और भवता की वस्तुएँ थीं, वे तुमसे चली गई हैं, और लोग उन्हें अब नहीं पाएँगे।<sup>30</sup> इन वस्तुओं के व्यापारी, जो उससे धनी हो गए थे, उसकी यातना के डर के कारण दूर खड़े होकर विलाप और शोक करेंगे,<sup>31</sup> कहते हुए,

‘हाय, हाय, महान नगर— जो उत्तम मलमल और बैंगनी और लाल वस्तों में वस्तिथी, और सोने, बहुमूल्य पत्थरों और मोतियों से अलंकृत थीं।

17 क्योंकि एक धंटे में इतनी बड़ी धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई! और हर जहाज का कप्तान, हर यात्री, नाविक, और जो भी समुद्र से अपनी जीविका कमाते थे, दूर खड़े थे,<sup>32</sup> और उसके जलने के धूएँ को देखकर पुकार रहे थे, ‘कौन सा नगर महान नगर के समान है?’<sup>33</sup> और उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली और पुकार रहे थे, विलाप और शोक करते हुए कह रहे थे,

‘हाय, हाय, महान नगर, जिसमें समुद्र में जहाज रखने वाले सभी लोग उसकी समृद्धि से धनी हो गए थे, क्योंकि एक धंटे में वह नष्ट हो गया है।’<sup>34</sup> हे स्वर्ग, और तुम संत, प्रेरित, और भविष्यद्वक्ता, उसके ऊपर आनन्दित हो, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए उसके खिलाफ न्याय किया है।

21 तब एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने एक बड़े चक्री के पत्थर के समान एक पत्थर उठाया और उसे समुद्र में फेंक दिया, कहते हुए,

## प्रकाशितवाक्य

‘इस प्रकार बाबुल, महान नगर, हिंसा के साथ गिरा दिया जाएगा, और फिर कभी नहीं पाया जाएगा।’<sup>22</sup> और वीणावादकों, संगीतकारों, बांसुरीवादकों, और तुरहीवादकों की धनि फिर कभी तुममें नहीं सुनी जाएगी; और किसी भी कला का कोई कारीगर फिर कभी तुममें नहीं पाया जाएगा, और चक्री की धनि फिर कभी तुममें नहीं सुनी जाएगी;<sup>23</sup> और दीपक की रोशनी फिर कभी तुममें नहीं चमकेगी; और द्रुहना और द्रुहन की आवाज फिर कभी तुममें नहीं सुनी जाएगी; क्योंकि तुहारे व्यापारी पृथी के शक्तिशाली लोग थे क्योंकि सभी राष्ट्र तुम्हारे जात्र से धोखा खा गए थे।<sup>24</sup> और उसमें भविष्यद्वक्ताओं और सतों का रक्त पाया गया, और उन सभी का जो पृथी पर मारे गए थे।’

**19** इन बातों के बाद मैंने स्वर्ग में एक बड़ी भीड़ की ऊँची आवाज़ सुनी, जो कह रही थी,

“हल्लेलूयाह! उद्धार, महिमा, और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर के हैं,<sup>2</sup> क्योंकि उसके सच्चे और धर्म हैं। क्योंकि उसने उस बड़ी वेश्या का न्याय किया जिसने अपनी व्यभिचार से पृथी को भ्रष्ट किया, और उसने अपने दासों के लहू का बदला उससे लिया है।”

<sup>3</sup> और दूसरी बार उर्होंने कहा,

“हल्लेलूयाह! उसका धुअं युगानुयुग उठता रहेगा।”

<sup>4</sup> और चौबीस प्राचीन और चार जीवित प्राणी सिंहासन पर बैठे परमेश्वर को दण्डवत करके आराधना करने लगे, और कहा,

“आमीन! हल्लेलूयाह!”

<sup>5</sup> और सिंहासन से एक आवाज़ आई, जो कह रही थी,

“हमारे परमेश्वर की स्तुति करो, तुम सब उसके दास, जो उससे डरते हों, छोटे और बड़े।”

<sup>6</sup> तब मैंने एक बड़ी भीड़ की आवाज़ के समान, और बहुत से जल के शब्द के समान, और प्रबल गर्जनाओं के शब्द के समान सुना, जो कह रहे थे,

“हल्लेलूयाह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान, राज्य करता है।” हम आनंदित हों और प्रसन्न हों और उसकी महिमा करें, क्योंकि मैमने का

विवाह आ गया है, और उसकी दुल्हन ने अपने को तैयार कर लिया है।”<sup>8</sup> उसे उज्ज्वल और स्वच्छ महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया; क्योंकि महीन मलमल पवित्र लोगों के धर्म के कार्य हैं।

<sup>9</sup> तब उसने मुझसे कहा, “लिखो: ‘धर्म है वे जो मैमन के विवाह भोज के लिए बुलाए गए हैं।’” और उसने मुझसे कहा, “ये परमेश्वर के सच्चे वचन हैं।”<sup>10</sup> तब मैं उसकी आराधना करने के लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा।

लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत करो, मैं तुहारा और तुहारे भाइयों का जो यीशु की गवाही रखते हैं, सहकर्मी हूँ। परमेश्वर की आराधना करो! क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।”<sup>11</sup> और मैंने स्वर्ग को खुला देखा, और देखो, एक बैठत घोड़ा, और जो उस पर बैठा है उसे विश्वासयोग्य और सच्च कहा जाता है, और वह धर्म के साथ न्याय करता है और युद्ध करता है।

<sup>12</sup> उसकी ऊँछें अग्नि की ज्वाला के समान हैं, और उसके सिर पर बहुत से मुकुट हैं; और उसके पास एक नाम लिखा हुआ है जिसे उसके सिवा कोई नहीं जानता।<sup>13</sup> वह लहू में झूँबी हुई वस्त फहने हुए है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता है।<sup>14</sup> और स्वर्ग की सेनाएँ, जो उज्ज्वल और स्वच्छ महीन मलमल पहने हुए थीं, बैठत घोड़ों पर उसके पीछे-पीछे चल रही थीं।<sup>15</sup>

उसके मूँह से एक तीखी तलवार निकलती है, जिससे वह जातियों को मार सके, और वह उर्हे लोटे की छड़ी से शासन करेगा; और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रचंड क्रोध की मदिरा के कुण्ड को रौद्रता है।<sup>16</sup> और उसके वस्त और उसकी ऊँध पर यह नाम लिखा हुआ है: “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु”<sup>17</sup> तब मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा देखा, और उसने ऊँची आवाज़ में पुकार कर आकाश के बीच उड़ने वाले सभी पक्षियों से कहा, “आओ, परमेश्वर के महान भोज के लिए इकट्ठे हो जाओ,”<sup>18</sup> ताकि तुम राजाओं का मास खाओ, और सेनापतियों का मास, और वीर पुरुषों का मास, और घोड़ों का और उन पर बैठने वालों का मास, और सब लोगों का मास, स्वर्तंत्र और दास, छोटे और बड़े।<sup>19</sup> और मैंने उस पशु को और पृथी के राजाओं को और उनकी सेनाओं को उस पर जो घोड़े पर बैठा था और उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इकट्ठा देखा।

<sup>20</sup> और उस पशु को पकड़ लिया गया, और उसके साथ वह झूँठा भविष्यद्वक्ता भी था जिसने उसके सामने चिन्ह दिखाए थे, जिनके द्वारा उसने उन लोगों को धोखा दिया जिन्होंने पशु की छाप ली थी और उसकी मूर्ति की आराधना की थी; इन दोनों को जीवित गंधक से जलती हुई आग की झील में डाल दिया गया।<sup>21</sup> और बाकी लोग उस तलवार से मारे गए जो घोड़े पर बैठे हुए के

## प्रकाशितवाक्य

मुँह से निकलती थी, और सभी पक्षी उनके मांस से तृप्त हो गए।

**20** फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उत्तरते देखा, जिसके हाथ में अथाह कुँड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी।<sup>2</sup> और उसने उस अजगर को, जो प्राचीन सर्प है, जो शैतान और इल्लीस है, पकड़ लिया और उसे हजार वर्षों के लिए बांध दिया;<sup>3</sup> और उसे अथाह कुँड में डाल दिया, और उसे बंद कर दिया और उस पर मुहर लगा दी, ताकि वह राष्ट्रों को अब और धोखा न दे सके, जब तक कि हजार वर्ष पूरे न हो जाएँ; इन बातों के बाद उसे थोड़े समय के लिए छोड़ा जाना चाहिए।<sup>4</sup> फिर मैंने सिंहासन देखे, और वे उन पर बैठे, और उन्हें न्याय दिया गया। और मैंने उन लोगों की आमाओं को देखा जो योशु की गवाही के कारण और परमेश्वर के वचन के कारण सिर काटे गए थे, और जिहोने न तो पशु की पूजा की थी और न ही उसकी मूर्ति की, और न ही उनके माथे और न ही उनके हाथों पर चिह्न लिया था; और वे जीवित हो गए और मसीह के साथ हजार वर्षों तक राज्य किया।<sup>5</sup> बाकी मृतक तब तक जीवित नहीं हुए जब तक कि हजार वर्ष पूरे नहीं हो गए। यह पहला पुनरुत्थान है।<sup>6</sup> धन्य और पवित्र है वह जो पहले पुनरुत्थान में भगीदार है, इन पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्षों तक राज्य करेंगे।<sup>7</sup> जब हजार वर्ष पूरे हो जाएंगे, शैतान को उसके कारागार से छोड़ा जाएगा,<sup>8</sup> और वह पृथी के चारों कोनों में स्थित राष्ट्रों को, गोग और मागोग को, धोखा देने के लिए बाहर आएगा, ताकि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा कर सके; उनकी संख्या समुद्र के किनारे की रेत के समान है।<sup>9</sup> और वे पृथी के विस्तृत मैदान पर चढ़ आए और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लिया, और स्वर्ग से आग उत्तरी और उत्तें भस्म कर दिया।<sup>10</sup> और शैतान, जिसने उन्हें धोखा दिया था, आग और गंधक की झील में डाल दिया गया, जहाँ पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी हैं; और वे सुगानुगा पीड़ा में रहेंगे।<sup>11</sup> फिर मैंने एक बड़ा सफेद सिंहासन और उसे देखा जो उस पर बैठा था, जिसके सामने से पृथी और आकाश भाग गए, और उनके लिए कोई स्थान नहीं पाया गया।<sup>12</sup> और मैंने मृतकों को, बड़े और छोटे, सिंहासन के सामने खड़े देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है; और मृतकों का न्याय उन बातों के अनुसार किया गया जो पुस्तकों में लिखी गई थीं, उनके कर्मों के अनुसार।<sup>13</sup> और समुद्र ने उन मृतकों को दे दिया जो उसमें थे, और मृत्यु और अधीलोक ने उन मृतकों को दे दिया जो उनमें थे; और उनका न्याय किया

गया, प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों के अनुसार।<sup>14</sup> फिर मृत्यु और अधीलोक को आग की झील में डाल दिया गया। यह दूसरी मृत्यु है, आग की झील।<sup>15</sup> और यदि किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, तो उसे आग की झील में डाल दिया गया।

**21** तब मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथी देखी, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथी बीत चुकी थी, और अब समुद्र नहीं रहा।<sup>2</sup> और मैंने पवित्र नगर, नया यरूशलैम, को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उत्तरते देखा, जो अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान तैयार था।<sup>3</sup> और मैंने सिंहासन से एक ऊँची आवाज़ सुनी, कोह कह रही थी, “देखो, परमेश्वर का निवास मनुष्यों के बीच है, और वह उनके बीच वास करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और स्वयं परमेश्वर उनके साथ होगा,<sup>4</sup> और वह उनकी आँखों से हर अँसू पौछ देगा; और अब मृत्यु नहीं होगी; अब शोक, या रोना, या पीड़ा नहीं होगी; पहली बातें बीत चुकी हैं।”<sup>5</sup> और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, “देखो, मैं सब कुछ नया कर रहा हूँ।”<sup>6</sup> और उसने कहा, “लिखो, क्योंकि ये वचन विश्वासोग्य और सत्य हैं।”<sup>7</sup> तब उसने मुझसे कहा, “यह हो चुका है। मैं अल्पा और ओमेगा हूँ, आदि और अंत। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते से बिना मूल्य जल द्वांगा।”<sup>8</sup> जो विजय प्राप्त करता है, वह इन सब चीजों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर बनँगा और वह मेरा पुत्र होगा।<sup>9</sup> परंतु डरपोक, अविश्वासी, घणित, हस्तरे, व्यभिचारी, जादूगर, मूर्तिपूजक, और सभी झूठे, उनका भाग आग और गंधक से जलने वाली झील में होगा, जो दूसरी मृत्यु है।<sup>10</sup> तब उन सात स्वर्गदूतों में से एक, जिनके पास सात अतिम विपत्तियों से भरे सात कटोरे थे, मेरे पास आया और मुझसे कहा, “यहाँ आ, मैं तुझे मेघ की पत्नी, दुल्हन दिखाऊंगा।”<sup>11</sup> और उसने मुझे आत्मा में एक बढ़े और ऊँचे पर्वत पर ले जाकर परमेश्वर के पास से स्वर्ग से उत्तरते हुए पवित्र नगर, यरूशलैम, को दिखाया,<sup>12</sup> जिसमें परमेश्वर की महिमा थी। उसकी चमक बहुत मूर्त्यवान पथर के समान थी, जैसे क्रिस्टल के समान स्पृष्ट जैस्यर पथर।<sup>13</sup> उसकी एक बड़ी और ऊँची दीवार थी, जिसमें बारह फाटक थे, और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और फाटकों पर नाम लिखे थे, जो इसाएल के बारह गोत्रों के नाम हैं।<sup>14</sup> पूर्व दिशा में तीन फाटक, उत्तर दिशा में तीन फाटक, दक्षिण दिशा में तीन फाटक, और पश्चिम दिशा में तीन फाटक थे।<sup>15</sup> और नगर की दीवार की बारह नींव पथर थे, और उन पर मेघों के बारह प्रेरितों के नाम लिखे थे।<sup>16</sup> जो मुझसे बात कर रहा था, उसके पास नगर, उसके फाटकों, और उसकी दीवार को मापने के लिए एक सोने

## प्रकाशितवाक्य

की मापने की छड़ी थी।<sup>16</sup> नगर एक वर्ग के रूप में बसा हुआ है, और उसकी लंबाई चौड़ाई के बारबर है; और उसने नगर को छड़ी से मापा, बारह हजार स्टेडिया; उसकी लंबाई, चौड़ाई, और ऊँचाई समान हैं।<sup>17</sup> और उसने उसकी दीवार को मापा, 144 हाथ, मानव माप के अनुसार, जो स्वर्गदूतों का भी माप है।<sup>18</sup> दीवार का पदार्थ जैस्थरथ; और नगर शुद्ध सोने का था, जैसे स्पष्ट काँच।<sup>19</sup> नगर की दीवार की नींव के पथर हर प्रकार के मूल्यवान पथरों से सजाए गए थे। पहली नींव जैस्पर थी; दूसरी, नीलम; तीसरी, कैल्सेडोनी; चौथी, पत्रा;<sup>20</sup> पांचवीं, सर्वनिक्ष; छठी, सर्दियस; सातवीं, क्रिसोलाइट; आठवीं, बेरिल; नौवीं, टोपाज; दसवीं, क्रिसोप्रेज़; ग्यारहवीं, जैसिथ; बारहवीं, नीलमणि।<sup>21</sup> और बारह फाटक बारह मोती थे; प्रत्येक फाटक एक ही मोती का था। और नगर को सङ्क शुद्ध सोने की थी, जैसे पारदर्शक काँच।<sup>22</sup> मैंने उसमें कोई मंदिर नहीं देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की मेघा ही उसका मंदिर है।<sup>23</sup> और नगर को सूर्य या चंद्रमा की रोशनी की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की महिमा ने उसे प्रकाशित किया है, और उसका दीपक मेघा है।<sup>24</sup> राष्ट्र उसकी रोशनी में चलें, और पृथ्वी के राजा अपनी महिमा उसमें लाएँगे।<sup>25</sup> दिन के समय (क्योंकि वहाँ रात नहीं होगी) उसके फाटक कभी बंद नहीं होगे;<sup>26</sup> और वे राष्ट्र की महिमा और समान उसमें लाएँगे;<sup>27</sup> और उसमें कोई अपवित्र वस्तु, और कोई भी जो धृतिं और झुठ बोलता है, कभी प्रवेश नहीं करेगा, बल्कि केवल वे जिनके नाम मेघे की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

**22** और उसने मुझे जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो क्रिस्टल के समान साफ़ थी, जो परमेश्वर और मेरे सिंहासन से निकल रही थी।<sup>2</sup> इसके सङ्क के बीच में। नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष था, जो बारह प्रकार के फल देता था, हर महीने अपना फल देता था; और वृक्ष की पत्तियाँ राष्ट्रों के उपचार के लिए थीं।<sup>3</sup> अब और कई शाप नहीं होगा; और परमेश्वर और मेरे का सिंहासन उसमें होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।<sup>4</sup> वे उसका मुख देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर होगा।<sup>5</sup> और अब रात नहीं होगी; और उन्हें दीपक के प्रकाश या सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाशित करेगा; और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।<sup>6</sup> और उसने मुझसे कहा, "ये वर्तन विश्वासोय्य और सत्य हैं"; और प्रभु भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं के परमेश्वर ने अपने दूत को भेजा है, ताकि वह अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र ही घटित होने वाली हैं।<sup>7</sup> "और देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूँ। धन्य है वह जो इस पुस्तक की

भविष्यवाणी के वचनों को मानता है।"<sup>8</sup> मैं, यूहन्ना, वही हूँ जिसने ये बातें सुनीं और देखीं। और जब मैंने उन्हें सुना और देखा, तो मैं उन चीजों को दिखाने वाले स्वर्गदूत के पैरों पर पिरकर उसे प्रणाम करने लगा।<sup>9</sup> और उसने मुझसे कहा, "ऐसा मत करो; मैं तुम्हारा और तुम्हरे भाइयों भविष्यद्वक्ताओं का, और इस पुस्तक के वचनों को मानने वालों का सहकर्मी हूँ। परमेश्वर की आराधना करो।"<sup>10</sup> और उसने मुझसे कहा, "इस पुस्तक की भविष्यवाणी के वचनों को बद मत करो, क्योंकि समय निकट है।"<sup>11</sup> जो अन्याय करता है वह अब भी अन्याय करता रहे, और जो अशुद्ध है वह अब भी अशुद्ध बना रहे; और जो धर्म है वह अब भी धर्म का पालन करता रहे, और जो पवित्र है वह अब भी अपने को पवित्र बनाए रखे।"<sup>12</sup> "देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूँ, और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, ताकि हर एक को उसके काम के अनुसार प्रतिफल हूँ।"<sup>13</sup> मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, पहला और अंतिम, आदि और अंत।"<sup>14</sup> धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धोते हैं, ताकि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले, और वे फाटकों से नगर में प्रवेश कर सकें।<sup>15</sup> बाहर कुत्ते, जादूगर, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक, और हर एक जो झूठ से प्रेम करता है और उसका अभ्यास करता है।<sup>16</sup> मैं, यीशु, ने अपने दूत को तुम्हारे पास इन बातों की गवाही देने के लिए भेजा है। मैं दाऊद की जड़ और वंश हूँ, उज्ज्वल भीर का तारा।"<sup>17</sup> आत्मा और दुल्हिन कहती हैं, "आओ।"<sup>18</sup> और जो सुनता है वह कहे, "आओ।"<sup>19</sup> और जो ध्यासा है वह आए; जो जाहे, जीवन का जल बिना मूल्य ले तो।<sup>20</sup> मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के वचनों को सुनता है, गवाही देता हूँ: यदि कोई इन में कुछ जोड़ता है, तो परमेश्वर उस पर इस पुस्तक में लिखी हुई विपत्तियाँ बढ़ा देगा;<sup>21</sup> और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक के वचनों में से कुछ निकालता है, तो परमेश्वर उसका हिस्सा जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर से निकाल देगा, जो इस पुस्तक में लिखे गए हैं।<sup>22</sup> जो इन बातों की गवाही देता है वह कहता है, "हाँ, मैं शीघ्र आ रहा हूँ।"<sup>23</sup> आमीन। आओ, प्रभु यीशु।<sup>24</sup> प्रभु यीशु की कृपा सब पर बनी रहे। आमीन।